आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

। 2241/57 पौष कृष्ण 9 रविवार, संवत् 2045 वि0, दिनांक । जनवरी 1989 घोषणा पत्र सं0 7/28-2-85



शुभास्ते पन्थानः सन्तु

नव-वर्ष की पावन बेला में -
हम सब मिलकर करें कामना-
शान्ति की, समृद्धि की,
"कृण्वन्तो विश्व-मार्यम्" की,
जगती में आर्यों के-
उत्थान की,
प्रगति की,
मंगलमय भविष्य की।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम0ए0,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

जीवन सदस्य	रु0251/-
वार्षिक	रु0 30/-
छमाही	रु0 15/-
विदेश में	15 पौंड

92

1

गुरूकुल प्रभात आश्रम (टीकरी) भोला झाल मेरठ द्वारा

उड़ीसा के वन प्रदेश में महायज्ञ का आयोजन

"शतहस्तं समाहर सहस्र हस्तं संकिर"

"सौ हाथों से कमाया हुआ धन, धर्म के लिए हजार हाथों से दान कर दे"

दिनांक- 9-2-89 से 12-2-89 तक उड़ीसा के वन प्रदेश-सम्बलपुर जिले के नूआपाली ग्राम में गुरुकुल प्रभात आश्रम {टीकरी} भोलाझाल, मेरठ द्वारा विश्व कल्याणार्थ वृहत् यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर विश्वकल्याण महासम्मेलन/धर्म महासम्मेलन/योग महासम्मेलन/नवयुवक-सम्मेलन/वेदसम्मेलन आदि भी सम्पन्न होंगे जिनमें आर्यजगत के प्रख्यात् सन्यासी, मनीषी, विद्वान भाग ले रहे हैं ।

उड़ीसा में गरीबी बहुत है। विदेशी शक्तियाँ इसका लाभ उठा कर इस सारे देश का ईसाईकरण करने का षडयन्त्र कर रही हैं। ईसाई मिशन चिकित्सा और शिक्षा के बहाने देश को तोड़ने का बहुत बड़ा षडयन्त्र कर रहे हैं। गरीबी से जूझता हुआ साधारण व्यक्ति इनके चंगुल में आसानी से आ जाता है। अन्दर-2 चुपके-2 धर्म परिवर्तन का कार्य तेजी से चल रहा है। सारे देश का ईसाईकरण करके देश की स्वतन्त्रता को हथियाना विदेशी शक्तियों का बहुत बड़ा षड्यन्त्र है। भारत में, गरीबी, जातिवाद ऊँच-नीच के आधार पर घृणा परस्पर की फूट और विकास के साधनों का पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध न होना एवं अपने धर्म संस्कृति और सभ्यता को न जानना तथा इससे विमुख होना आदि अनेकों ऐसे कारण हैं जिन का प्रत्यक्ष लाभ इन विदेशी एवं देशी ईसाई मिशनरियों को सहज ही उपलब्ध हो जाता है और इसके आधार पर ही देश में यहाँ षडयन्त्रकारी कार्य हो रहे हैं जिससे हमारी स्वतन्त्रता अखण्डता और प्रभुसत्ता पर प्रश्न चिन्ह् लगता जा रहा है। इस स्व अस्तित्व के संघर्ष मे आर्यसमाज सभी राष्ट्वादी शक्तियों का आह्वान करता है। आर्यसमाज की ओर से गुरुकुल प्रभात आश्रम {टीकरी} भोलाझाल, मेरठ ने उड़ीसा में विश्व कल्याण यज्ञ का आयोजन किया है। चार दिन के इस यज्ञ में निरन्तर गरीब लोगो को वस्त्र वितरित किये जायेंगे और निःशुल्क भोजन की व्यवस्था रहेगी तत्पश्चात वहाँ प्रतिमा आश्रम की स्थापना की जायेगी ताकि उड़ीसा मे निरन्तर वैदिक ज्योति का प्रकाश फैलाया जाये। राष्ट्वादी शक्तियों के सहयोग से षडयन्त्रकारियों के प्रयत्नों को विफल किया जाय। शिक्षा के माध्यम से गरीब जनता की सेवा कर अपने राष्ट् को दृढ और समृद्ध बनाया जाये तथा वहाँ निःशुल्क चिकित्सा भी उपलब्ध करवाई जायेगी ।

अतः जनता से प्रार्थना है कि इस अवसर पर अन्न, वस्त्र, घी-सामाग्री और धन आदि से सहयोग कर विश्व कल्याण यज्ञ के माध्यम से जनता जनार्दन की सेवा में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करें ।

कृपया धनादेश बैंक, ड्राफ्ट गुरुकुल प्रभात आश्रम {टीकरी} भोलाझाल, मेरठ, उ0प्र0 के नाम से भेजें ।

{इन्द्र राज}
मन्त्री,
गुरुकुल प्रभात आश्रम {टीकरी}
भोलाझाल-मेरठ एवं प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा,उ0प्र0 ।

{मनमोहन तिवारी}
मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा,
उत्तर-प्रदेश।

> हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
> आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
> --राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

आर्यमित्र

लखनऊ- पौष कृष्ण 9 ।2संवत् 2045,रविवार। जनवरी 1989
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

एतद्देश प्रसूतस्य

राजीव की चीन यात्रा

भारत के प्रधानमन्त्री **श्री राजीव गाँधी** पांच दिवसीय यात्रा पर चीन गये और विश्व के इन दो विशाल देशों में निवास करने वाली विश्व की लगभग एक तिहाई जनसंख्या के आपसी हितों से सम्बन्धित अनेक समझौते करके वापस आ गये हैं। इन समझौतों में विज्ञान तथा टेक्नालॉजी, नागरिक उड्डयन तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान प्रमुख हैं। दोनो देशों के मध्य मुख्य विवादास्पद विषय सीमानिर्धारण पर भी खुले मस्तिष्क से विचार हुआ है और समझौते का मार्ग प्रशस्त हो गया है- ऐसा विश्वास व्यक्त किया गया है। भारत और चीन का हजारों वर्षों से ऐतिहासिक सम्बन्ध रहा है। भारत के प्रधानमन्त्री का जिस उत्साह से चीन की भूमि पर स्वागत हुआ है वह इतिहास के उस स्वर्णिम काल की याद दिलाता है जब आज से 2000 वर्ष से पूर्व प्रियदर्शी सम्राट अशोक के पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा ने बौद्धधर्म की दीक्षा लेकर भारत के दक्षिण-पूर्व एशिया के समस्त छोटे बड़े देशों में, चीन, जापान, मलेशिया, इन्डोनेशिया, जावा, सुमात्रा, बोर्नियो आदि में जाकर धर्म का बिगुल बजाया था और वहाँ बौद्धधर्म का प्रचार किया था। महाराज मनु ने लिखा है -

> **एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।**
> **स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः ।।**

अर्थात् आर्यों ने इसी आर्यावर्त की पवित्रभूमि पर जन्म लेकर समग्र पृथ्वी पर मानवों को चरित्र की शिक्षा दी थी। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने लिखा है कि यह आर्यावर्त संसार का जगद्‌गुरु था। यहाँ के गुरुकुलों में पढ़ने वाले ब्रह्मचारी ओज और तेज के मूर्तिमन्त प्रतिमान हुआ करते थे। उनकी मेधा ज्ञानकोश का अक्षय-भण्डार थी। पूरी पुस्तकों को कण्ठस्थ करने की अक्षुण्ण परम्परा उनकी कुशाग्र बुद्धि की द्योतक थी। यद्यपि उस समय वैदिक संस्कृति कुछ विकृत रूप ले चुकी थी फिर भी वैदिक धर्म के प्रति अटूट श्रद्धा और समाज का उदात्त चरित्र अपने मूल रूप में विद्यमान था। लोग घरों में ताले नहीं लगाते थे, स्त्रियों को पूर्ण सम्मान दिया जाता था, राज्यदरबार में ब्राह्मणों, विद्वानों का अत्यधिक सत्कार होता था, देश धनधान्य से परिपूर्ण था ।

हिमालय के दोनों ओर बसे हुए यह दोनों विशाल भूखण्ड सांस्कृतिक परिवेश में हजारों वर्षों से एक दूसरे से जुड़े रहे हैं। दक्षिण पूर्व एशिया के जिन उपनिवेशों में आज भारतीय संस्कृति के दर्शन होते हैं वह भारत से ही गये हुए युवा धर्मप्रचारकों, सन्तों और मनीषियों की ही देन है। वह युग धार्मिक था राजनीति उसका अंगमात्र थी। राजनीति में सौदेबाजी चलती है, उसके रूपों में परिवर्तन होता रहता है। शत्रु-मित्र और मित्र-शत्रु बन जाते हैं। एक कवि ने कहा है- "वेश्यांगनेव नृपनीतिरनेक रूपा:" । परन्तु धर्म का रूप शाश्वत होता है। उसमें सौदे-बाजी का कोई प्रश्न ही नहीं है। इसी शाश्वत व्यवस्था के अधीन वृहत्तर भारत की विशाल कल्पना का साकार रूप हमें इतिहास के गुप्तकाल में जिसे हम स्वर्णयुग भी कहते हैं- देखने को मिलता है। उस समय दक्षिण पूर्व एशिया के यह सभी देश चाहे चीन हो या जापान अथवा कोई अन्य, भारतभूमि को पुण्यभूमि और धर्मभूमि समझकर नमन करते थे और यहाँ के बौद्ध स्तूपों, धार्मिक केन्द्रों की तीर्थयात्रा कर अपने को पुण्य का भागी मानते थे।

कालान्तर मे यह व्यवस्था अर्थमूलक हो गई। आर्थिक विषमता ने युग के स्वरूप को बदल दिया। सोवियत रूस में अभूतपूर्व खूनी क्रान्ति हो गई और वहाँ कम्युनिस्ट शासन स्थापित हो गया। उसी प्रकार चीन की लाल सेना ने च्यांगकाई शेक के शासन को उखाड़ फेंका और कट्टर समाजवादी विचारधारा वाले चाऊ0एन0लाई0 चीन के प्रशासक बने। चाउ-एन0लाइ0और जवाहरलाल नेहरु दोनों ही कालमार्क्स के सिद्धान्तों से प्रभावित थे और समाजवादी विचारों के पोषक थे। इसलिए नेहरु जी स्वयं उन्हें अपने साथ भारत की प्रथम यात्रा पर लाए थे। चाउ0एन0लाई0 के भारत आगमन पर उनका इस भारत भूमि पर जो अभूतपूर्व स्वागत हुआ था वह इतिहास की अविस्मरणीय घटना मानी जाती है। उसी समय "हिन्दी चीनी भाई-भाई" का नारा बुलन्द हुआ लेकिन हमारे दृष्टिकोण से यह समझौता राजनैतिक था जो स्थिर न रह सका और सीमा के प्रश्न पर दोनों देशों में टकराव हो गया और तब से चीन ने सदा काश्मीर के मामले में भारत के विरुद्ध पाकिस्तान के पक्ष का समर्थन किया और कर रहा है। चीन हमारा पड़ोसी है, शक्तिशाली देश है यदि वह हमारा परममित्र बन जाये तो यह दोनों महाशक्तियाँ संसार की अजेय शक्ति बन सकती है।

हमारे युवा प्रधानमन्त्री राजनैतिक पुरुष हैं। दोनों देशों के बीच प्रगाढ़ मैत्री की आधार शिला बनकर वह चीन गये और कुछ समझौते भी किए परन्तु पड़ोसी की मित्रता और शत्रुता दोनों भयानक मानी जाती है। पड़ोसी यदि मित्र बन जाये तो क्या कहने आकाश-पाताल एक कर सकते हैं और यदि शत्रु बन जाये तो जड़मूल से नष्ट करने के लिए पर्याप्त है। महाकवि माघ ने लिखा है -

> **सखा गरीयान् शत्रुश्च कृत्रिमस्तौ हि कार्यतः ।**
> **स्याताममित्रौ मित्रो च सहजप्राकृतावपि ।। माघ 2/36।।**

अतः मित्रता वही मूल्यवान है जो शावत सिद्धान्तों पर आधारित हो और सहज वास्तविकता से परिपूर्ण हो ।

अतः क्या ही अच्छा होता उस देश को वैदिक संस्कृति की पावन धारा से जोड़ने के लिए एक वैदिक शिष्ट मण्डल भी चीन जाता और धर्म की प्यासी वहाँ की जनता को प्रियदर्शी सम्राट अशोक के पुत्र एवं पुत्री की भाँति उन्हें आर्य संस्कृति का अंग बनाकर शाश्वत स्नेह के बन्धन में बान्धता तथा समझौतों को शाश्वत एव स्थायी बना देता ।

xxxxxxxxxxx

नव-वर्षाभिनन्दन

§1§

नव वर्ष की यह अरुण आभा,
विश्व को नव-ज्योति दे ।
सुख, शान्ति, वैभव, ज्ञान-ज्योत्स्ना,
कीर्ति, प्रीति, सुशक्ति दे ।।
धन, धान्य, गरिमा, शील, सद्‌गुण,
धर्म - कर्म - प्रवृत्ति दे ।
सत्यनिष्ठा, आत्मसंयम,
दीर्घ - जीवन, भक्ति दे ।।

§2§

स्नेह, सद्‌गुण, शान्ति, सुषमा,
सौख्य का सुनिवास हो ।
वेदधर्म - प्रवृत्ति हो,
सद्भाव का सुविकास हो ।।
रोग - शोक - विवाद - दुर्गुण -
दम्भ - दैन्य - निवृत्ति हो ,
प्रेम का पाथोधि फैले,
सत्त्वगुण की वृद्धि हो ।।

--डा0 कपिल देव द्विवेदी,कुलपति
गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर।

न मुच्यते पाप कर्मा

प्रियव्रत शास्त्री, साहित्यरत्न एम·ए·
सरधना।

पाप की उत्पत्ति का प्रश्न सनातन है। जब से मनुष्य है तभी से यह प्रश्न मानव के मन व बुद्धि को मथ रहा है। यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि मनुष्य अपनी त्रुटि या भूल के कारण को अपने में न खोजकर अन्यत्र खोजता है। पाप की उत्पत्ति आत्मा के निर्बल हो जाने पर होती है इस ही पाप का फल भी आत्मा को ही भोगना पड़ता है। वेद में लिखा है कि :

अक्षद्रुग्धो राजन्यः पाप आत्म पराजितः।

जब मनुष्य की आत्मा हार मान बैठती है तब इन्द्रिय वर्ग के विद्रोह के कारण पाप की उत्पत्ति होती है।

चोरी करना, झूठ बोलना, बलात्कार करना, डाके डालना, दूसरों की हिंसा करना, आदि ऐसे पाप कर्म हैं जिन्हें समाचार पत्रों में नित्य पढ़ते हैं। ऐसे पापों के करने से पहले आत्मा की ओर से प्रेरणा होती है कि ऐसा नहीं करना चाहिये, यह पाप कर्म है, परन्तु उस प्रेरणा की अवहेलना करके मनुष्य पाप कर्म करने में प्रवृत्त हो जाता है, और एक कवि के शब्दों में:

पापो पि पश्यति भद्रं यावत् पाप न पच्यते।
यदा च पच्यते पापं अथ पापानि पश्यति।।

पाप कर्म करने में मनुष्य तब तक उस पाप को अच्छा सुखदायक ही मानता है जब तक वह पाप पचता नहीं। जब वह पाप पच जाता है तब मनुष्य द्वारा किया हुआ कर्म पाप कर्म प्रतीत होता है।

भगवान ने शरीर रचना इस प्रकार की है कि पाप और पुण्य के साक्षी प्रतिक्षण मनुष्य के साथ रहते हैं परन्तु वह विचार नही करता, और जो साक्षी हैं उन्हीं के सामने पाप या पुण्य कर देता है। संसार के न्यायालय में पापकर्मा छूट सकता है परन्तु परमात्मदेव के न्यायालय से कभी भी नहीं छूट सकता। क्योंकि पाँच (ज्ञानेन्द्रियाँ) आँख, नाक, कान, रसना तथा त्वचा उसके सर्वन्देव साक्षी हैं।

साक्षी अन्य भी हैं चाहे पापकर्मा कहीं भी छिपकर पाप करे। एक कवि ने लिखा है :

नान्तरिक्षे न समुद्र मध्ये न पर्वतानां विवरं प्रविश्य।
न विद्यते स जगति प्रदेशो यत्र मुच्यते पाप कर्मा।।

सर्वदा साथ रहने वाले उपरिलिखित पाँच साक्षियों के अतिरिक्त भी

आदित्य चंद्रावनिलो नलच द्यौ भूमिरापो हृदयं यमश्च।
अहश्च रात्रिश्च उभेच सन्ध्ये धर्मो हि जानाति नरस्य वृत्तम्।

मनुष्य के आचार के आदित्य (सूर्य), चन्द्र, अनिल (अग्नि), अनल (वायु), द्यौ (भूमि), आपः (जल), हृदय, मन, अहः (दिन) रात्रि, दोनों सन्ध्याकाल तथा धर्म भी साक्षी हैं। इन सबको ध्यान में रखकर ही एक कवि ने लिखा है :

वृत्तं यत्नेन संरक्षेद् वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्तः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः।।

मनुष्य को धन मद मे आकर दुराचार (पापकर्म) नही करना चाहिये। धन तो आनी जानी वस्तु है परन्तु आचार ऐसा नहीं है। सदैव सदाचारी होना चाहिये। क्योंकि **"आचार हीनं न पुनन्ति वेदाः"** आचारहीन अर्थात् पापकर्मा पुरुष का वेद भी उद्धार नही करते। चाहे वह नित्य वेदों का स्वाध्याय क्यों न करता रहे। महाराज विदुर ने राजा धृतराष्ट्र से कहा थाः

समृद्धाः गुणतः केचित् भवन्ति धनतो परे।
धन वृद्धान् गुणैर्हीनान् धृतराष्ट्र विवर्जय।।

किसी भी प्रकार का पापकर्मा परमात्मा के न्याय से नही बच सकता। अतः दुखों से बचने के लिए कभी भी यह विचार कर कि मुझे पाप करते हुए कोई नही देखता, पाप या दुष्कर्म आदि नहीं करना चाहिये। सुख प्राप्त करने के लिये पापकर्मा न होकर सदाचारवान् ही होना चाहिये।

भारत में राष्ट्रीय चेतना और देशभक्ति

सत्य प्रकाश गुप्त, एम·ए·,
मक्खनपुर, मैनपुरी।

भारत भूमि अमर धरा है यहाँ पर जन्मा हुआ व्यक्ति स्वभाव से दार्शनिक होता आया है और मरने के पश्चात मोक्ष पद को प्राप्त होता है। हमारा देश विश्व का प्राचीन देश है, संस्कृति और सभ्यता एवं चारित्रिक विकास यहाँ बहुत पुराना है। भारत के प्रति मातृभूमि का भाव तथा राष्ट्रीय चेतना भी यहाँ उतनी ही पुरानी है। हमारे देश का ऐतिहासिक स्वरूप व भौगोलिक विस्तार संसार के सभी देशों से महान रहा है। विदेशी विजेताओं ने हमें दासता के बन्धन में बाँधे रखने हेतु जब विपरीत विचार फैलाए तो भारतीय विद्वानों ने स्थिति को स्पष्ट किया। आधुनिक काल में इस दिशा में महर्षि दयानन्द तथा लोक मान्य तिलक का नाम विशेष उल्लेखनीय है। प्रस्तुत लेख में प्राचीन काल से आधुनिक काल तक के अनेक उद्धरणों द्वारा भारतीयों के हृदय में विद्यमान मातृभूमि तथा राष्ट्र की भावना की पुष्टि की गई है।

वैदिक साहित्य विश्व की प्राचीनतम साहित्यिक धरोहर है। इसके पृथ्वी सूक्त में भारत भूमि को माता मानकर उसकी वन्दना करते हुए उसके लिए बलिदान होने की भावना व्यक्त की गई है। अथर्व वेद के एक मंत्र में कहा है कि "मैं अपनी मातृभूमि का दुख दूर करने के लिए सब कठिनाइयाँ सहने को तैयार हूँ।" जिस पृथ्वी पर हमारे पूर्वजों ने पुरुषार्थ के अनेक कार्य किये और जिसपर दिव्य शक्ति सम्पन्न देवताओं ने पराक्रमी असुरों का दमन किया तथा जो गौवों, घोड़ों एवं पक्षियों का निवास स्थान है, वह भूमि हमें तेज और सम्पत्ति प्रदान करे। हे मातृभूमि हमें ऐसी सद्बुद्धि दे कि हम ग्रामों, नगरों, वन उपवनों, सभा समितियों, उत्सव सम्मेलनों, कलह संघर्षों व युद्ध संग्रामों आदि जो कुछ कहे या करे वह तेरे हित की दृष्टि से करें। अर्थात मातृभूमि का हित सदा सर्वदा हमारे मन, वाणी, कर्म में सर्वोपरि हो "राष्ट्रभूमि हमारी माता और हम सब राष्ट्रवासी उसके पुत्र हैं वह मातृभूमि हमें ऐसी बुद्धि और प्रदान करे कि हम उसके लिये सर्वस्व बलिदान करने वाले उसके बलिदानी पुत्र बनें।"

भारत भूमि की वन्दना में पुराणकार भी पीछे नही रहे। विष्णु पुराण के अनुसार स्वर्ग के देवता भी भारत भूमि में जन्म लेने वालों को अपने से सौभाग्यशाली मानते हैं-

गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ये भारतभूमि भागे।
स्वर्गापि वर्गास्पद मार्ग भूते,भवन्ति, भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।।

वाल्मीकि रामायण तथा व्यास कृत महाभारत भी राष्ट्रभक्ति की इसी भावना से ओत प्रोत है। लंका विजय के बाद जब श्री राम-लक्ष्मण लंका के वैभव की चर्चा करते हैं तो श्री राम कहते हैं **"जननी जन्मभूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी"** हे लक्ष्मण, यह सोने की लंका मुझे नहीं भाती। हमारी मातृभूमि (भारतवर्ष) स्वर्ग से भी श्रेयस्कर है। "भारत भक्ति एवं देश प्रेम के इन श्लोकों के अनुसार हिमालय से समुद्र तक फैली भारत भूमि ही हमारी मातृभूमि और पुण्यभूमि तथा पवित्र कर्मस्थली है, इसी की कोख से जन्मे लोग अपने उत्तम चरित्र से पृथ्वी के समस्त मानवों को संस्कारित करते हैं।"

संस्कृत काव्य के श्रेष्ठ कवियों में महाकवि कालीदास, माघ, भारवी, कल्हण आदि सभी ने अपनी समस्त काव्य प्रतिभा से भारत भूमि की महिमा का गान किया है, तो कात्यायन, पातंजलि, कौटिल्य और वराहमिहिर ने इसे अर्चा चढ़ाई है। मध्यकाल में सन्त कवि तुलसीदास जी द्वारा लिखित श्री रामचरित मानस तो तत्कालीन परिस्थितियों में एक राष्ट्रीय महाकाव्य होने के नाते ही प्रतिष्ठित हुए तथा उसने पराधीन भारत को नया जीवन और नई चेतना प्रदान की। समर्थ गुरु रामदास तथा गुरु गोबिन्द सिंह की समूची रचनाएँ राष्ट्रदेवता तथा भारतभूमि को समर्पित है। मन की आँखें खोलकर यदि हम उन्हें पढ़ेंगे तो हम सहज ही भारत माता की जय-जयकार कर उठेंगे। भारतीय कवियों की श्रेष्ठ रचनाओं से युक्त श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब तो वस्तुतः एक महिमावंत राष्ट्रीय ग्रन्थ है। भारत भक्ति और राष्ट्रीय भक्ति की यह भावना आधुनिक काल के कवियों के हृदय से बरबस फूट पड़ी। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, श्रीधर पाठक, राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त और निराला प्रभृति महानुभाव भी अपनी काव्य रचना मे भारत भूमि पर फिदा है :जाके जय की उज्जवल गाथा, गावत सब महिमंगल माथा।" अन्त में मैं अपने देशवासियों से विशेष रूप से आर्यसमाज के लेख के माध्यम से यही अपील कर सकता हूँ कि वह अमर धरा माँ भारती से परम् देशानुराग करें और सहज ही मोक्ष पद के भागीदार बने।

शास्त्रार्थ-युग समाप्त कैसे हुआ ?
उसके दुष्परिणाम

शास्त्रार्थ युग कैसे आये?

{-आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास, वेदाचार्य, बरेली}

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज वैदिकधर्म का प्रचार भी करते थे और सभी मतावलम्बियों से शास्त्रार्थ भी करते थे यही परम्परा आगे रही, स्वामी दर्शनानन्द जो व्याख्यान भी देते थे और शास्त्रार्थ भी करते थे, पं0 भगवद्दत्त जी वैदिक रिसर्च स्कालर लाहौर, पं0 चमूपति जी, पं0 धर्मभिक्षु जी, आर्यभिक्षु जी, पं0 रामचन्द्र देहलवी, पं0 कालीचरन, आर्य-मुसाफिर अमर स्वामी जी, पं0 बुद्धदेव मीरपुरी, पं0 बुद्धदेव विद्यालंकार, पं0 बसन्तलाल जी, पं0 इन्द्रमणि जी, पं0 शिवशर्मा जी आदि सब विद्वान आर्यसमाजों के उत्सवों पर व्याख्यान भी देते थे, और शास्त्रार्थ भी करते थे, दूसरी ओर महा-महोपाध्याय, पं0 गिरधर शर्मा जी, माधवाचार्य, श्री कृष्ण शास्त्री, प0 रामाचार्य, पं0 अखिलानन्द-जी आदि विद्वान शास्त्रार्थ को सदा आते रहते थे, मुसलमानों और ईसाइयों के साथ-साथ शास्त्रार्थ करने वाले भी आर्यसमाज में बहुत से विद्वान थे, और जैनियों के साथ भी शास्त्रार्थ हुआ करते थे, उस काल में खंडन-मण्डन के भी ग्रन्थ बहुत निकलते थे। पं0 कालूराम शास्त्री के अनेक ग्रन्थ छपे, मूर्तिवाद मीमांसा, अवतारवाद मीमांसा, श्राद्ध मीमांसा, आर्य विद्वानो ने उसी समय उनके खण्डन में ग्रन्थ छापे, सत्यार्थप्रकाश के खण्डन पर पं0ज्वाला-प्रसाद मिश्र ने एक बहुत बड़ा ग्रन्थ दयानन्द तिमिरभास्कर छापा, पं0 तुलसीराम स्वामी ने भास्कर प्रकाश नामक ग्रन्थ छाप कर उसका मुँहतोड़ उत्तर दिया ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के खण्डन पर भूमिकाधिक्कार नाम का ग्रन्थ छपा, उसी समय पं0 द्विजेन्द्रनाथ जी ने भूमिका प्रकाश नाम का ग्रन्थ लिख कर उसका जवाब दिया। दूसरा ग्रन्थ ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका के खण्डन पर ऋगादि-भूमिकेन्दु ग्रन्थ छपा, आर्यसमाज की ओर से तत्काल ऋगादिभूमिकेन्दु-पराग नाम का ग्रन्थ छपा अमर स्वामी पं0 बुद्धदेव मीरपुरी आदि ने खंडन मण्डन पर बहुत से ग्रन्थ लिखे, इस प्रकार सैकड़ों ग्रन्थ खण्डन मण्डन के उस युग में छपे, वे ग्रन्थ हमारे पास सब हैं। उस युग मे भजनोपदेशक भी खण्डन पर भजन गाया करते थे ठा0 गंगासिंह के कुछ भजन प्रसिद्ध थे, "बदरा फर डारे रे पोपो ने पुजाये पथरा" "सो एक दिन देवसभा में रंग छाये" यह इतना लम्बा गाना था, कि अठारह पुराणों में जो देवताओं की दुर्दशा है वह भजन में दिखाते थे इस प्रकार आर्य समाज का वह स्वर्णयुग था, जब उपदेशक और भजनोपदेशक दोनों पाखण्डों का खण्डन करते थे, उस समय आर्यसमाज के उत्सवों पर स्त्री उपदेशिकाओ का भी जन्म नही हुआ था, क्योंकि ऐसा कोई भी व्यक्ति नही आता था, जो शास्त्रार्थ करने की शक्ति न रखता हो, उस समय तक स्त्री उपदेशिकाओं का भी जन्म नही हुआ था, क्योंकि कोई महिला शास्त्रार्थ करने की योग्यता नहीं रखती थी ।

यह शास्त्रार्थ-युग समाप्त कैसे हुआ?

यह शास्त्रार्थ-युग हमने अपने जीवन में देखा और हमारे देखते-देखते यह शास्त्रार्थ-युग समाप्त भी हो गया, इस शास्त्रार्थ-युग की समाप्ति की कहानी इस प्रकार है--

1- दिल्ली के 3 युवक आर्यसमाज के नेता बने, उनकी शिक्षा सम्बन्धी योग्यता अधिक नहीं थी, न वे आचार्य परीक्षा पास थे न एम0ए0, पी0एच0डी0, वे एक दूसरे को युवक हृदयसम्राट कहते थे, यह व्याख्यान देने में बहुत चतुर थे, और यह एम0पी0 बनना चाहते थे, वह यह जानते थे कि केवल आर्यसमाज के वोट से हम एम0पी0 नहीं बन सकेंगे, इन शास्त्रार्थो के होने से हमें हिन्दू वोट नहीं मिलेंगे। इन्होंने अन्दोलन आरम्भ किया कि अब शास्त्रार्थ का जमाना गया; अब मिल कर बैठने का समय है, यह अन्दोलन इन तीनों ने कई वर्ष किया। प्रोपेगण्डे का प्रभाव होता ही है, जैसे महाभारत काल में हस्तिनापुर से अलग दूर वारणावत नगर बसाया गया और उस नगर में लाक्षागृह पांडवो को जलाने के लिये बनाया गया, धृतराष्ट्र ने कुछ आदमियों को इस बात के लिये नियुक्त किया कि वे दिन-रात यह प्रोपेगण्डा करें कि वारणावत नगर बहुत सुन्दर है, बहुत सुन्दर है ।

यह सुनते-सुनते पाडवों को स्वंयमेव इच्छा हुई और धृतराष्ट्र जी से कहा कि हम वारणावत नगर देखने जाना चाहते हैं। प्रोपेगण्डे का असर आर्यसमाज पर हो गया और उन्होंने शास्त्रार्थ की इच्छाएं छोड़ दीं ।

2- आर्यसमाज में कुछ पं0 ऐसे थे जिन्हे शास्त्रार्थ करना नहीं आता था उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये यह कहना आरम्भ किया कि अब शास्त्रार्थ की आवश्यकता नहीं है।

3- जिन आर्यसमाजियों ने संस्थायें खोल रखी थीं उन्हें हिन्दूमात्र से चन्दा मांगना होता था, उन्होंने भी इस अन्दोलन में साथ दिया कि अब शास्त्रार्थ बेकार हैं, भजनीकों के भजन भी बदल गये, अब ऐसे भजन गाये जाने लगे जिन को सुनकर आर्यसमाज के भजनोपदेशकों को रामलीला वाले, गणेश पूजन वाले, सनातनी धर्मसभा वाले भी निमन्त्रण देने लगे। एक भजनोपदेशक ने "म" पर भजन बनाया हुआ है और अपनी पुस्तक छापी हुई है। एकभजन आर्यसमाज के जल्सों पर प्रायः बोला जाता है, जो पौराणिक विचारों का प्रचारक है ।

भजन इस प्रकार है--

देवन को दरबार जुड़ो सो पिंगल छन्द बनाय के गायो।
काहू सो अर्थ करो न गयो, तब नारद ने प्रसंग चलायो।।
मृत्युलोक में है एक गंग कवि, सो गंग को नाम सभा में सुनायो ।
चाह भई परमेश्वर को तो गंग को लेन गणेश पठायो।।

यह वर्णन उस समय का है जब एक मुसलमान बादशाह ने गंग कवि को हाथी से कुचलवा कर मारा था, इस प्रकार धीरे-धीरे आर्यसमाज के शास्त्रार्थ का युग समाप्त हो गया और आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार भी बन्द हो गया, और खण्डन-मण्डन के ग्रन्थ भी लिखने बन्द हो गये और प्रायः अधिकांश आर्यसमाजियों का स्वाध्याय भी समाप्त हो गया, अब आर्यसमाज और हिन्दूसभा में कोई अन्तर नहीं रहा।

आर्यसमाज का सत्याग्रह युग

हैदराबाद में और सिन्ध में जो सत्याग्रह हुए थे, उस सम्बन्ध में पं0 व्यास देव जी ने एक निबन्ध छापा था, जिसका नाम था "क्या खोया क्या पाया" वह पर्याप्त है उसकी चर्चा हम नहीं करते। पंजाब में जो हिन्दी सत्याग्रह हुआ, उसका प्रथम सर्वाधिकारी मैं ही था। वहाँ पुलिस का इतना बड़ा आतंक था कि डर के मारे कोई नहीं जाता था। स्वामी-आत्मानन्द जी, स्वामी रामेश्वरानन्द जी, महाशय कृष्ण जी के सुपुत्र बा0 वीरेन्द्र जी प्रधान पंजाब सभा ने सत्याग्रह किया, स्वामी आत्मानन्द जी को किसी ने कुछ नहीं कहा, परन्तु स्वामी-रामेश्वरानन्द जी तथा बा0 वीरेन्द्र जी को पुलिस ने डंडों से बहुत मारा, हिन्दी सत्याग्रह बहुत जोरों से चला। हजारों व्यक्ति जेल गये और लाखों रूपयों की सहायता जनता ने की। उस अवसर पर पुलिस के भय से किसी नेता ने सत्याग्रह नहीं किया,सब अण्डर ग्राउन्ड काम करते रहे, परन्तु महिलाओं ने सत्याग्रह किया, एक दिन हम सार्वदेशिक सभा के कार्यालय बलिदान-भवन में बैठे बातें कर रहे थे। रात का समय था, एकदम समाचार आया कि चण्डीगढ़ की पुलिस गिरफ्तार करने दिल्ली आई हुई है, यह सुन कर सब नेता वहां से चले गये, केवल स्वामी अभेदानन्द जी प्रधान सार्वदेशिक सभा, पं0 बुद्धदेव जी विद्यालंकार और मैं कुल तीन व्यक्ति रह गये, अन्य सब लोग फुटपाथों पर लेटे रहे और सभी ने अपने नाम बदले। सबसे बड़े नेता ने अपना नाम कमल रखा था। इन नामों से वह फोन से बातचीत करते थे, कुछ कोट पैन्ट पहन कर दिल्ली में घूमते थे, परन्तु सत्याग्रही आते रहे, फिर जनता में विद्रोह पैदा हुआ कि नेतागण जेल क्यों नहीं जाते, तब इन नेताओं ने पं0 इन्द्र जी विद्यावाचस्पति से कहा कि सत्याग्रह समाप्त करवा दीजिये, पं0 इन्द्र जी बाबू घनश्यामसिंह गुप्त जो हिन्दी सत्याग्रह के प्रधान थे, उनको लेकर पं0 गोविन्दवल्लभ-पन्त जो भारत सरकार के गृहमन्त्री थे उनके पास गये, और कहा हम सत्याग्रह समाप्त करने आये हैं। पं0 जी ने कहा कि हम आपकी शर्तें कोई नही मानते, आपको समाप्त करना है समाप्त कर दीजिये। हम आपके कैदी छोड़ देंगे और जुर्माने माफ कर देंगे। इन्होंने स्वीकार कर लिया, हिन्दी सत्याग्रह की शर्तों वाला छपा हुआ कागज फाड़ कर फेंक दिया।

पं0 इन्द्रराज जी कार से अपनी कोठी चले गये, बाहर भीड़ लगी हुई थी, सब ने घनश्याम सिंह गुप्त को घेर लिया और पूछा कि क्या तय हुआ तब गुप्त जी ने कहा आपकी

सभी बातें मान ली गई हैं, सरकार की बातें बताने की नहीं होती हैं, इस प्रकार झूठ बोल दिया, इन्हीं गुप्त ने हैदराबाद सत्याग्रह में महात्मा गांधी के कहने से धोखा दिया था। तब मैंने उन दिनों इनके विपरीत एक निबन्ध लिखा था, जिसका नाम था {सन्धि कराने घनश्याम} जनता में असन्तोष फैल रहा था। पं0 रघुवीरसिंह शास्त्री जो हिन्दी सत्याग्रह के मन्त्री थे, उन्होंने पन्त जी से मिलने की इच्छा प्रकट की। पन्त जी ने कहा आप पं0 इन्द्र जी तथा घनश्यामसिंह गुप्त को लेकर आइये, शास्त्री जी दोनों को लेकर पन्त जी के पास गये, पन्त जी ने कहा कि आप लोग मुझे झूठा बदनाम करते हैं कि मैंने धोखा दिया, यह लोग बैठे हैं इनसे पूछो कि यह लोग बिना शर्त के सत्याग्रह समाप्त कर गये थे। शास्त्री जी चुप हो गये सभी लोग उठ कर चले आये, इस पंजाब सत्याग्रह पर लाखों रुपया व्यय हुआ, लाखों रुपया बटा, और लाखों रुपया बचा, जिससे दयानन्दभवन की इमारत खरीदी गयी।

{क्रमशः----}

नववर्ष सभी का हो मंगलमय

नव-वर्ष सभी का हो मंगलमय, करो कृपा हे देव दयामय।
सच्चरित्रता से हो पुलकित, जीवन सबका होनत मधुमय।।टेक।।

भारत का सिरमौर पंचनद, आज वहाँ पर मचा प्रलय।
नव-वर्ष सभी का हो मंगलमय, करो कृपा हे देव दयामय।।

हिंसा-अत्याचार मिटाओ, जन-जन की है यही विनय।
नव-वर्ष सभी का हो मंगलमय, करो कृपा हे देव दयामय।।1।।

सनाखून से वर्ष अठासी, किसी तरह यह बीत गया।
पंजाबी जनता का हर क्षण हाय महाभयभीत गया।
हिंसा और आतंकवाद पर, आज अहिंसा की हो जय।
नव-वर्ष सभी का हो मंगलमय, करो कृपा हे देव दयामय।।3।।

आज इसी पावन बेला में,नये वर्ष का अभिनन्दन।
नवासी में सत्य-अहिंसा की सुगन्ध हो जैसे चन्दन।
त्राण मिले हिंसा से सबको, जनमानस को करो अभय।
नव-वर्ष सभी का हो मंगलमय, करो कृपा हे देव दयामय।।4।।

उन्नति पर विज्ञान बहुत है, पर अशान्ति ही लेकर आया।
दिया बहुत कुछ माना हमने, शान्ति नहीं यह दे पाया।
बन्द करो निर्माण बमों का, और शान्ति का हो सूर्योदय।
नव-वर्ष सभी का हो मंगलमय, करो कृपा हे देव दयामय।।5।।

शान्ति-उपासक देश हमारा, सभी जानते इसकी ताकत।
शान्ति-अहिंसा के ही बल पर, देश स्वतन्त्र हुआ यह भारत।
शान्ति-नीति से प्राणिमात्र का, जीवन "ईश्वर" बने शान्तिमय।
नव-वर्ष सभी का हो मंगलमय, करो कृपा हे देव दयामय।।7।।

-ईश्वर चन्द्र,
सा0ला0उ0का0 शिक्षक,
केन्द्रीय विद्यालय, फतेहगढ़।

धर्मांतरण की प्रवृत्ति खतरनाक: आनन्द बोध

बागपत 20 दिसम्बर {वा0स0}: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने देश में बढ़ रही धर्मांतरण की प्रवृत्ति पर गहरी चिन्ता व्यक्त करते हुए सरकार से उसे रोकने हेतु-तुरन्त कड़े कदम उठाए जाने की मांग की।

स्वामी आनन्द बोध आर्य समाज बागपत के तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव के समापन में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि देश में अल्पसंख्यक सरकार की ढुलमुल नीति का लाभ उठाकर हिन्दुओं के निर्बल वर्ग को लालच के वशीभूत कर धर्मांतरण को बढ़ावा दे रहे हैं।

केसरी से साभार

xxxxx

आर्य समाज और राजनीति

{श्री प्रभात कुमार,
एडवोकेट, इलाहाबाद}

आर्य समाज अपने प्रारम्भिक काल से राजनीति से विरक्त रहा है इसका कारण यह बताया जाता है कि आर्य समाज एक विशुद्ध धार्मिक संस्था है जैसे धर्म का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है। महर्षि ने आर्यसमाज की स्थापना अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की थी। उनका उद्देश्य न केवल समाज के कुरीतियों पाखंड आडम्बरों को दूर करने का था अपितु भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र में परिवर्तित करने का था उनका सारा जीवन इसका साक्षी है। आर्य समाज को राजनीति मे सक्रिय भाग लेना चाहिए या नहीं उसके लिए हमें स्वयं स्वामी जी के जीवन व उनके कार्यों को देखना होगा हम पर तो बड़े अभिमान से कहते हैं कि महर्षि ने सबसे पहले अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में स्वराज्य की आवश्यकता एवं महत्ता का वर्णन किया उन्होंने श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा को इंग्लैण्ड भेजा वहाँ उन्होने भारत की स्वाधीनता के लिए बहुत कुछ काम किया। स्वामी जी के व्याख्यानों में राजनीति का पुट रहता था उनके व्याख्यानों से भयभीत होकर भारत के तत्कालीन वायसराय ने पार्लियामेन्ट को पत्र भेजा था और लिखा था कि स्वामी जी से ब्रिटिश राज्य को भय है। बरेली में उनके व्याख्यानों को सुनकर बरेली के कमिश्नर ने उनसे निवेदन किया था कि वे अपने व्याख्यानों में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध कुछ न कहा करें दूसरे दिन स्वामी जी ने अपने व्याख्यान में विदेशी शासन की कठोर शब्दों मे निन्दा की। अब तो यह भी कहा जा रहा है कि 1857 की क्रान्ति में महर्षि का महान् योगदान था यदि यह बात सच है तो कोई कारण नहीं कि आर्य समाज राजनीति में क्यों न भाग ले।

राजनीति का हम सब के जीवन पर प्रभाव पड़ता है। आज जिनके हाथों में शासन की बागडोर है वे न केवल भारतीय सांस्कृतिक व प्राचीन सभ्यता से अनभिज्ञ हैं अपितु ये पश्चात्य सभ्यता शिक्षा से बहुत अधिक प्रभावित हैं। आज देश में वोट की राजनीति का वर्चस्व है, और शासन में बने रहने के लिए मुसलमानों को संतुष्ट रखने के लिए बुद्धि जीवी राष्ट्रीय विचार रखने वाले मुसलमानों के विरोध करने पर भी कानून बनाये गये हैं। नेहरू जी ने हिन्दू कोड तो बनवाया जिससे हमारे प्राचीन शास्त्रोक्त विधानों को बदल दिया किन्तु तलाक के सुधार और मुसलमानों के बहुविवाह प्रथा को रोकने के लिए कोई कानून बनवाने का वे साहस नहीं कर सके। अब नयी शिक्षा पद्धति चलायी जा रही है जिसमे संस्कृत की पूर्णतया उपेक्षा की गयी है। इसी प्रकार के राष्ट्र विरोधी कानून बनाये जा सकते हैं और आर्य समाज उनके विरुद्ध प्रभावहीन प्रस्ताव ही पास कर सकता है। समय की अपेक्षा यह नहीं है कि हम राजनीति से विरक्त रहें और अपना समय क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान है मुक्ति का समय कितना है ऐसे गूढ़ विषयों पर विचार करते रहें। राजनीतिक एक शक्ति है जिसकी सहायता से हम सामाजिक, राजनीतिक सुधार कर सकते हैं। स्वामी जी के समय की अपेक्षा देश इस समय अधिक संकटग्रस्त है। खाड़ी देशों से हिन्दुओं से मुसलमान बनाने के लिए अपार धन आ रहा है। धर्म निरपेक्षता की आड़ में आज इसाइयों को आदिवासी आदि पिछड़ी जाति को ईसाई बनाने की खुली छूट है। उनके बहुसंख्यक होने के कारण प्रदेशों में अलग राज्य बनाने की माँग हो रही है। श्रीमती सोनिया गाँधी के प्रभाव के कारण ईसाइयों के धार्मिक नेता पोप को राजनैतिक अतिथि के रूप में सम्मान मिला। मदरटेरसा भी ईसाइयों के प्रचार में सक्रिय भाग लेती रहीं और उनके ऊपर शासन का वरद हाथ रहा। हम राजनीति से विरक्त अवश्य हैं किन्तु अपने समारोहों में केन्द्रीय मंत्रियों या प्रदेश के मन्त्रियों को बुलाकर अपना अहोभाग्य समझते हैं। राष्ट्रीय विचारधारा से अलग होकर आर्य समाज देश की समस्याओं से विरक्त सा ही है। इस प्रकार से राजनीति से अलग रहते हुए हम आर्यसमाज के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भी असहाय से हैं। आवश्यकता है कि आर्यसमाज के नेता बदली हुई परिस्थितियों को दृष्टि मे रखते हुये निश्चय करें कि आर्यसमाज को राजनीति से अलग रहना कहाँ तक उचित है-।

भूल स्वीकार कर लें

श्री विट्ठलराव आर्य,
एम०एस०सी०, एल०एल०बी०
आन्ध्र प्रदेश।

स्वामी विवेकानन्द जी ने संस्कार विधि से कुछ उदाहरण देकर सिद्ध करने का प्रयास किया है कि हर संस्कार के बाद पूर्णाहुति का विधान है। उनका कहना है कि स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती असत्य का प्रचार कर रहे हैं। पाठकों की जानकारी के लिए मैंने उचित समझा कि संस्कार विधि के सारे अंशों को युक्तियुक्त ढंग से रखा जाए।
ताकि पाठक स्वयं निर्णय करलें कि हर संस्कार के बाद पूर्णाहुति का विधान है या नहीं ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित संस्कार विधि के सामान्य प्रकरणम् में "सामान्य विधि" कहाँ तक है? अर्थात किस अंश तक ? अगर यह निर्णय हो जाए तो संस्कारों के बाद पूर्णाहुति का विधान है या नहीं इसके निर्णय में दिक्कत नहीं होगी। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सामान्य प्रकरणम् के अन्तिम वाक्य में लिखा है "यह सामान्य विधि अर्थात सब संस्कारों में कर्त्तव्य है।" इस वाक्य के पिछले भाग में पूर्णाहुति व मंगल कार्य का भी विधान है। तो क्या इस वाक्य तक के सारे भाग को सामान्य विधि मान लिया जाए या कहीं और तक? गर्भाधान संस्कार से अंत्येष्टि तक सभी में सामान्य प्रकरण का जो भी भाग जहाँ जितना करना हो उसको पुनः पुनः लिखने की बजाय उक्त प्रकरण से लेने के लिए स्वामीजी ने निर्देश किया है। एक बात यहाँ मुख्य है। जहाँ भी सामान्य प्रकरण के मन्त्रों से आहुति देनी हो वहाँ उन मन्त्रों का नाम व संख्या का उन्होंने स्पष्ट उल्लेख किया है। सामान्य प्रकरण के अन्तिम वाक्य तक के भाग को "सामान्य विधि मान ली जाए तो कुछ आपत्तियाँ उठ सकती हैं । हर संस्कार के पाठ्यांशों को हम यहाँ उद्धृत करते हैं।

गर्भाधान संस्कार विधि के प्रारम्भ में ही स्वामी दयानन्द सरस्वती लिखते हैं:- "जिस रात्रि में गर्भस्थापन करने की इच्छा हो उससे पूर्व दिन में सुगन्धादि पदार्थों सहित पूर्व "सामान्य प्रकरण" के लिखित प्रमाण हवन करके निम्नलिखित मन्त्रों से आहुति देनी। जैसे हमने ऊपर कहा कि, अगर सामान्य प्रकरण को "यह "सामान्य विधि" नामक अन्तिम वाक्य तक मान लें तो पूर्णाहुति व मंगलकार्य को पूरा करने के बाद विशेष आहुतियाँ देना पड़ेगी। चूंक उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि "सामान्य प्रकरण के लिखित प्रमाण हवन करके निम्नलिखित मन्त्रों से आहुति देवें"। मैं समझता हूँ कि पूर्णाहुति व मंगलकार्य के बाद पुनः आहुति देने के विधान को शायद कोई भी स्वीकार न करेगा न ही स्वामी जी का यह आशय रहा होगा, कि इससे स्पष्ट है कि सामान्य प्रकरण की सामान्य विधि "ओं भवतन्नः समनसौ सचेतसावरेपसौ" तक ही है ।

स्वामी जी ने "सामान्य विधि" से आहुतियों के बाद विशेष 20 आहुतियों का विधान किया है पश्चात पुनः 6 विशेष आहुतियाँ देनी है इसके पश्चात पुनः सामान्य प्रकरणोक्त अष्टाज्याहुति देने को कहा है। पुनः विशेष आहुतियों का विधान है फिर सामान्य प्रकरण. क से "यदस्य कर्मणो त्यरीरिचं" की स्विष्टकृत आहुति देने को कहा है। इसके पश्चात स्तवन मन्त्रपठन व सभी को प्रणाम करने को कहा है। तत्पश्चात् वामदेव्यगान, भोजन व सत्कारपूर्वक विदा करने की बात पृष्ठ 43 में लिखी है। इसके पश्चात गर्भाधान किया {सम्भोग} करने को कहा है। यहाँ पर पूर्णाहुति का विधान कहीं भी नहीं है, पूर्व दिन की सारी क्रियाएँ समाप्त हुईं। आगे लिखा है "अगले दिन या अगले महीने के आरम्भ में पृष्ठ 45 में लिखेनुसार पुनः हवन करने के लिए कहा है उस समय पूर्णाहुति का विधान किया है। लेकिन संस्कार सम्बन्धित विधि में पूर्णाहुति का विधान नहीं है, अगले महीने हवन करोगे तो पुनः लोगों को बुलाएंगे और वह भी यह कहने के लिए कि गर्भस्थापन हो चुका है, उस समय पुनः अग्नि प्रज्वलित करनी पड़ेगी सामान्य विधि या हवन भी करोगे तथा पूर्णाहुति भी, इससे संस्कार सम्बन्धित विधि में पूर्णाहुति के विधान को जोड़ना समुचित नहीं है ।

अब पुंसवन प्रकरण को लीजिए। लिखते हैं पृष्ठ- 4 से 15 में लिखे अनुसार शान्तिप्रकरण पर्यन्त ईश्वरोपासना करें, फिर लिखा है 24-25 पृष्ठों के अनुसार "अयन्त इध्म" ओम अदिते. 4 आघारावाज्यभागाहुति व्याहृति पुनः प्रजापतये स्वाहा फिर "ओं यदस्य कर्मण्णो" आदि के बाद विशेष आहुतियों का विधान किया है पश्चात वामदेव्यगान व सत्कारपूर्वक विदाई की बात लिखी है, पूर्णाहुति का विधान नहीं किया है।

सीमन्तो न्नयन में स्वामीजी लिखते हैं "प्रथम 4-30पृष्ठ तक की विधि करके "ओंदितेअनुमन्यस्व" इत्यादि पृष्ठ 25 में लिखे प्रमाण वेदी से पूर्वादि दिशाओं मे जल सेचन करें। पुनः आहुतियाँ देने का विधान है जिसमें सामान्य प्रकरण की आहुतियाँ भी है। पुनः विशेष, फिर पुनः सामान्य प्रकरण पश्चात मन्त्र पठन सामवेदगान व सत्कार से विदा।

अगर पृष्ठ 4 से 30 तक के पूरे विधान को किया जाए तो वहीं पर पूर्णाहुति और मंगल कार्य हो जाता है। पूर्णाहुति के बाद पुनः सामान्य व विशेष आहुतियों का विधान कैसे होगा ? अतः 4-30 तक की विधि का अर्थ "ओम् भवत न्नः समनसौ" तक ही लेना पड़ेगा। इस संस्कार में भी अन्तिम आहुति के बाद पूर्णाहुति का विधान नहीं है।

जातकर्म संस्कार में भी सामान्य प्रकरण की आहुतियों के बाद विशेष आहुतियों का विधान है पश्चात् वामदेव्य गान है पश्चात् प्रार्थना करके जीभ पर ओ3म् लिखने को कहा गया है फिर मन्त्रों से मधु चखाकर पुनः विविध विधियों को करते हुए मन्त्र पाठ का विधान है पुनः विशेष आहुतियों को देना है पश्चात् आशीर्वाद है। यहाँ भी पूर्णाहुति का विधान नहीं है।

नामकरण में सामान्य प्रकरण की विविध आहुतियों को देने के बाद विशेष आहुतियां देनी है। पुनः सामान्य प्रकरण की कुछ आहुतियाँ देकर "कोऽसि कतमोऽसि" क्रिया करनी है पश्चात् वामदेव्यगान कर आशीर्वाद देकर सबको विदा करना है।

अब निष्क्रमण को लीजिए। प्रथम विशेष मन्त्र पाठ पश्चात सामान्य प्रकरणोक्त विधि करके विशेष मन्त्रों का पठन कर पश्चात् आशीर्वाद देना है। अन्नप्राशन में सामान्य विधि करके पुनः सामान्य प्रकरण की कुछ विशेष आहुति देकर भात की आहुति विशेष देना है। फिर सामान्य आहुति देकर बालक को भात खिलाने के पश्चात् वामदेव्यगान आशीर्वाद दिलाकर सबको सत्कारपूर्वक विदा करें।

चूड़ाकर्म में सामान्य विधि का हवन कर पुनः सामान्य विधि भाग के कुछ की विशेष आहुति देनी है। पश्चात् नाई से विविध मन्त्रों को कहते हुए बाल काटना है। पश्चात् स्नान कराकर आसन पर बैठाकर वामदेव्य गान व आशीर्वाद देकर सबको सत्कार पूर्वक विदा करें।

कर्णवेध संस्कार मे "4-30 तक में लिखा हुआ सब विधि करें" इतना ही वाक्य है, पूर्णाहुति करें ऐसा कहीं भी नहीं जैसे स्वामी विवेकानन्द जी ने लिखा है। मैं ने दो-तीन संस्करण देखे हैं। सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित संस्करण भी देखा उसमें भी इतना ही वाक्य है। यह संस्करण अभी-भी बिक रहा है। हमने कहा है "4-30 तक की विधि" नामक वाक्य पिछले संस्कारों मे भी आया है पश्चात् विशेष आहुतियों का भाग, अतः इस भाग को "ओम् भवत न्नः समन सौ" ही तक लिया जाए। वरना पूर्व उल्लेखित आपत्तियाँ उठेंगी कि पूर्णाहुति के बाद पुनः हवन कैसे चलेगा? इस संस्कार मे सामान्य विधि के हवन के बाद छेद करने का विधान मात्र है ।

उपनयन में भी सामान्य प्रकरणस्थ हवन की विविध आहुतियाँ देनी हैं पश्चात विशेष आहुतियाँ देनी हैं पश्चात वार्तालाप व अन्य विधि है पश्चात् वामदेव्यगान आशीर्वाद व सत्कार से सभी को विदा करना है ।

वेदारम्भ में भी सामान्य प्रकरण के विविध मन्त्रों से आहुति देनी हैं विभिन्न विधियाँ करानी हैं समावर्तन संस्कार मे भी सामान्य प्रकरणस्थ विविध मन्त्रों से आहुति देने के पश्चात

नया वर्ष हो मंगलमय

आए भू पर नवल बिहान,
जागे त्याग तथा बलिदान,
ऐश्वर्यो से पूरित हों सब-
खेत-बाग- घर व खलिहान,
जगती तल का कण-कण हो
फिर, सुखी-सौम्य सासमृदिमय।
नया वर्ष हो मंगलमय ।

दानवता का सर्वनाश हो,
स्वार्थ वृत्ति का पूर्ण नाश हो,
तिमिर धरा का दूर भगे अब-
सत्य धर्म का फिर प्रकाश हो,
क्षत विक्षत हो पूर्ण रूप से-
धरती के अन्याय-अनय ।
नया वर्ष हो मंगलमय ।।

ओज तेज साहस हो जाग्रत,
शत्रु मनुजता का हो हत,
सम्मुख मानवता के, सारा-
मानव भू का, बने बिनत,
जन गण मन में निर्भय होकर
जगे शुचिरतम भाव अभया
नया वर्ष हो मंगलमय ।।

फैले नयी ऊषा - अरुणायी,
जगे जवानों की तरुणायी,
अत्याचारों के विरोध में-
युवा शक्ति ले फिर अंगडाई,
करें सुगन्धित दिकमण्डलको
स्वच्छ सुशीतल वायु मलय ।
नया वर्ष हो मंगलमय ।।

शोक समाचार

आर्य जगत के धुरन्धर तहलका मचाने वाले महारथी, प्रचारकों में मूर्धन्य, सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रामस्वरूप जी "आजाद" {फिरोजपुरिया} का अचानक 6 दिसम्बर 1988 को निधन हो गया है ।

आप सुप्रसिद्ध संन्यासी श्री स्व0 स्वामी "भीष्म" जी महाराज {घरौंडा} के प्रथम शिष्य थे। उन्होंने आजीवन आर्य-समाज की सेवा करके उपदेशक मण्डल में उज्जवल कीर्तिमान स्थापित किया।

उनके दिवगत होने पर आर्य समाज की एक अपूरणीय क्षति हुई है। भगवान उस आत्मा को सदगति प्रदान करे।

अन्य विधियाँ करानी है और विवाह में भी ऐसा ही है, मात्र गृहस्थ आश्रम के अग्निहोत्र प्रकरण में पूर्णाहुति का विधान है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती विरचित संस्कार विधि के सम्पूर्ण अध्ययन से यह पता चलता है कि उन्होंने जहाँ जो करना है उसका स्पष्ट विधान किया है। सन्देह के लिए स्थान नहीं छोड़ा। उनके सामान्य विधि का अर्थ "ओम् भवतन्न: समनसौ" तक ही लेना पड़ेगा वरना सारी विधियाँ चरमरा जाएँगी।

ऊपर के पूरे विश्लेषण से पता चलता है कि संस्कारों में पूर्णाहुति का विधान स्वामीजी ने नहीं किया है, हमारा विद्वान पाठकों से निवेदन है कि सारे ग्रन्थ का बारीकी से अध्ययन करें किसी पक्ष को प्रतिपादित करने के लिये किसी भी व्यक्ति की अवहेलना न करें। अन्य विषयों में भी ऐसा हो हो रहा है। विज्ञान की बारीक बातों को न समझते हुए अपनी समझ को सर्वांगीण मानकर उसकी अवहेलना करना ही मूर्खता का परिचायक होगा न कि बड़प्पन का ।

आशा है भूल सुधार कर सत्यासत्य का ग्रहण करेंगे।

श्री वीरबहादुर सिंह को पत्नी शोक

केन्द्रीय संचार मन्त्री तथा उ0प्र0 के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री वीरबहादुर सिंह की पत्नी श्रीमती चम्पादेवी का 25 दिसम्बर, 1988 को अखिल भारतीय आर्युविज्ञान संस्थान दिल्ली में निधन हो गया। वे पिछले डेढ़ मास से अस्वस्थ थीं ।

सभाप्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी तथा मन्त्री श्री मनमोहन-तिवारी ने उनके निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त करते हुए, दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक-जनों के धैर्य हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की ।

सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री जैनेन्द्र दिवंगत

हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, मनीषी, अदभुत प्रतिभा के धनी, अनेको ग्रन्थों के रचयिता एवं अनेकों पुरस्कारों से विभूषित श्री जैनेन्द्रकुमार जी 83 वर्ष की अवस्था मे 24 दिसम्बर 1988 को दिल्ली मे देहमुक्त हो गये। उनके निधन से हिन्दी वाँगमय की अपूरणीय क्षति हुई है।

इस अवसर पर अपने शोक सन्देश मे सभाप्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी एव मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने शोकसन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक समवेदना प्रेषित करते हुए महान् आत्मा की शान्ति के लिए प्रभु से प्रार्थना की है।

बागपत में सभा प्रधान जी का भव्य स्वागत

आर्य समाज बागपत {मेरठ} के वार्षिकोत्सव पर मुख्य-अतिथि के रूप में श्री पं0 इन्द्रराज जी, अध्यक्ष प्रान्तीय सभा के पहुँचने पर, 10 दिसम्बर 1988 को उनका भव्य स्वागत किया गया। वेद सम्मेलन की अध्यक्षता श्री मुरारी लाल जी ने की। स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम {टिकरी} भोलाझाल मेरठ, धर्मपालजी निरीक्षक एवं वैदिक धर्म में दीक्षित श्री जयन्त कुमार पाण्डे, भी श्री सभाप्रधान के साथ ही पधारे थे। सर्व प्रथम स्वामी दर्शनानन्द जी ने वेद की मान्यताओं की व्याख्या की। तत्पश्चात प्रसिद्ध गीतकार श्री हरिहर-प्रकाश शर्मा स्नेही की स्वामी दयानन्द जी और वेद पर ओजस्वी कविता हुई। श्री पं0 इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने जनता को उद्बोधन देते हुये कहा कि संसार के पुस्तकालय में वैदिक साहित्य के कक्ष में पुस्तकों का क्रम इस प्रकार था, कि सबसे नीचे वेद उसके ऊपर क्रमशः ब्राह्मण ग्रन्थ उपनिषद, दर्शन एव स्मृति ग्रन्थ थे। सबसे ऊपर गीता थी। बड़े-2 आचार्य आये, और उन्होंने गीता का ही भाष्य किया। यदि शंकराचार्य रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य, बल्लभाचार्यमधुसूदन सरस्वती आदि विद्वान गीता तक रह गये। परन्तु जब स्वामी दयानन्द आये तो उन्हें वेद नजर नहीं आये। उन्होंनें पुस्तकों के उस भारी समूह को शक्ति लगाकर उल्टा कर दिया। परिणामतः वेद ऊपर आ गये। स्वामी दयानन्द जी ने वेदों का भाष्य कर वेदों के प्रकाश को संसार में फैला दिया। उससे पूर्व सैकड़ो मतमतान्तरों के बादलों ने वेद रूपी सूर्य के प्रकाश को रोक रखा था। विदेशी विद्वान हमें परतन्त्र बनाये रखने के लिए वेदो को गडरियों के गीत और ..../उन्माद में निकले हुये मुख से शब्द कह कर वेदो की अवमानना कर रहे थे। स्वामी दयानन्द जी ने वेदों के सच्चे स्वरूप को संसार के सामने रखा ताकि संसार सुख शान्ति और आनन्द का अनुभव कर सके। श्री जयन्त कुमार जी ने बोलते हुये "इसाई सम्प्रदाय द्वारा देश में शिक्षा और चिकित्सा के बहाने भारत को तोड़ने वाली एक बहुत बड़ी साजिश बताया, और जनता को इस षडयन्त्र को समाप्त करने का आहवान किया साथ ही यह भी बताया कि इसमें अन्दर-अन्दर होने वाले षडयन्त्र को एक मात्र आर्य समाज ही समाप्त कर सकता है। अन्त में स्वामी विवेकानन्द जी ने बताया कि वेदो के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा होनी चाहिए। विदेशी विद्वानों में मेक्समूलर आदि ने वेदो पर बहुत कार्य किया है। यह बात पृथक है, कि उन्होंने विदेशी राज्य अंग्रेजी राज्य को भारत में कायम रखने के लिए वेदो के अनर्थ भी किये हैं। परन्तु विद्वान होने के कारण उन्होंने अन्त में पश्चयाताप भी किया है, और वेदो पर बहुत कार्य एंव वेदो को बहुत आदर भी किया है।

श्री प्रधान जी, ने एवं मन्त्री जी ने वक्ताओं और श्रोताओं को धन्यवाद देते हुये वेदों को नित्यप्रति पढ़ने की प्रेरणा की ।

गीता के सम्बन्ध में कुछ भ्रान्त तथ्य

[आचार्य सत्यदेव निगमालंकार]

गीता के सम्बन्ध में पौराणिक जगत ही नहीं अन्य भी अनेकानेक विद्वान् भ्रमित होते हुए से दिखाई देते हैं, चिन्ता का विषय उस काल और उत्पन्न हो जाता है जब समाज के कुछ गिने-चुने विद्वान भी गीता के अर्थ से दूर भागते हैं तथा निज विचारधारानुसार जब वे इसमें अपने को भटकते हुए पाते हैं तो इसे भानुमती का पिटारा कहकर छोड़ देते हैं तथा कुछ से जब कुछ न बना तो "सरल-गीता" "वैदिक गीता" नाम से गीता के बहुशः श्लोकों को काट-छांट कर नयी सृष्टि कर देते हैं। इस प्रकार पूर्व ही नहीं किन्तु आज तक भी विद्वानों में गीता के प्रति भयंकर भ्रान्ति फैली हुई है। जिसका कारण गीता के मुख्य अर्थ को न जानकर अर्थ का अनर्थ प्रदर्शित करना मात्र है। सम्प्रति गीता पर इतनी टीकाएं हैं पुनरपि विद्वानों में गीता के प्रति ये भाव उभरेंगे ऐसी आशा नहीं की जा सकती। इसलिये यह गीता का दोष नहीं है जो उसके साथ ऐसी खिलवाड की जाए। नैषस्थाणोरपराधः यदेनमन्धो न पश्यति ।। अभी आचार्य श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार का लेख आर्य जगत् में 23अक्टूबर 1988 को जो प्रकाशित हुआ उससे तो ज्ञात होता है कि गीता के प्रति जो धारणाएं पूज्य दादा गुरु स्वः समर्पणानन्द जी सरस्वती द्वारा गीता पर सामर्पण-भाष्य के काल भी उससे अधिक भ्रान्तियाँ सम्प्रति भी विद्यमान हैं। नहीं तो गीता जैसी महान पुस्तक के प्रति ऐसा दिग्भ्रमित लेख न लिखा जाता । मैं गीता से भ्रमित वाक्यों का अपने प्रिय लेखक को कुछ सुन्दर सुझाव दे रहा हूं ।

मान्य लेखक मानते हैं कि गीता ऐतिहासिक घटना नहीं अपितु कवि-कल्पना है? किन्तु वे यह भूल जाते हैं कि संसार के बहुशः ग्रन्थ कवि कल्पना पर आधारित हैं, मूल-मात्र को लेकर कवि उसे विस्तृत करता है। यदि आप यह स्वीकार करना चाहते हैं कि साक्षात् देखा हुआ ही काव्य में कवि वर्णित करे तो **रामायण, महाभारत** आदि के साथ-साथ दयानन्द-दिग्विजयम् महाकाव्य भी इसी प्रकार की ऐतिहासिकता से लाखों मील दूर चला जायेगा । अतः आप द्वारा गीता को मात्र कवि-कल्पना कहना उत्तम प्रतीत नहीं होता, क्योंकि कवि तो कल्पना ही करता है ।

महर्षि दयानन्द का नाम लेकर यह कहना कि "गीता का प्रमुख उद्देश्य **भगवान कृष्ण** के अवतार रूप को सिद्ध करना है" अत्यन्त असंगत प्रतीत होता है। ऋषि दयानन्द ने गीता का किसी भी स्थल पर खण्डन नहीं किया। अपितु गीता के बहुशः श्लोक उद्धरण के रूप में अपने महाग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में दिये हैं। उनमें से एक-दो इस प्रकार हैं--

शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जव च ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ।।
शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धेचाप्यपलायनम् ।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ।।

गीता 18/42-43"

इस प्रकार से अन्य भी श्लोक महर्षि के ग्रन्थों में देखे जा सकते हैं। महर्षि गीता जैसी वेदानुकूल पुस्तक का खण्डन करें यह कदापि नहीं हो सकता न वे ऐसा अनुचित कार्य कर ही सकते। महर्षि की तत्वदर्शिनी दृष्टि बहुत विशाल है उनके समक्ष गीता का प्रत्येक श्लोक अत्यन्त सुन्दर भाव को लेकर उपस्थित होता है। जब उनसे प्रश्न किया जाता है कि -

प्रश्न - यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

श्री कृष्ण जी कहते हैं कि जब-जब धर्म का लोप होता है तब-तब मैं शरीर धारण करता हूं- इस प्रश्न को सुनकर ऋषि का उत्तर दृष्टव्य है- यह बात वेद-विरुद्ध होने से प्रमाण नहीं और ऐसा हो सकता है कि श्री कृष्ण धर्मात्मा और धर्म की रक्षा करना चाहते थे कि मैं युग-युग में जन्म लेके श्रेष्ठो की रक्षा और दुष्टों का नाश करूँ तो कुछ दोष नहीं क्योंकि परोपकाराय सतां विभूतयः" परोपकार के लिये सत्पुरुषों का तन, मन, धन होता है तथापि इससे श्री कृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते ।। सत्यार्थ प्रकाश सप्तम-समुल्लास ।।

यहाँ पर दो बातें दृष्टव्य हैं- प्रथमः- "यह बात वेद-विरुद्ध होने से प्रमाण नहीं - यह बात से ऋषि का निर्देश अवतारवाद से है, इस श्लोक से नहीं । क्योंकि यदि श्लोक से होता तो ऋषि इस श्लोक का अपनी सूक्ष्म-दर्शिनी बुद्धि से इतना सुन्दर अर्थ न करते जो उन्होंने किया और उसको मान्यता दी। द्वितीयः- ऋषि गीता को श्री कृष्ण के अवतार को ईश्वरावतार घोषित करने वाला ग्रन्थ नही मानते। वे तो सीधे- स्पष्ट वाक्यों मे घोषित करते हैं कि इससे अर्थात् इस श्लोक से और ऋषि के उपरोक्त अर्थ से श्री कृष्ण ईश्वर नहीं हो सकते। ये वाक्य ऋषि ने दुराग्रही लोगों को गीता के साथ अर्थ का अनर्थ करते हुए देखकर लिखे हैं ।

इस प्रकार "गीता का मुख्य उद्देश्य **श्री कृष्ण** के अवतार रूप को सिद्ध करना है" लेखक के ये विचार सर्वथा निर्मूल हैं ।

लेख में आगे गीता के कुछ श्लोक देकर अर्थ का अनर्थ किया गया है। अति उपयुक्त तो यह होगा कि स्वयं आचार्य श्री सत्यदेवजी विद्यालंकार गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ से वैदिक कर्म-काण्ड के मर्मज्ञ पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी सरस्वती द्वारा गीता पर लिखे **"सामर्पण-भाष्य"** को मंगवाये और अनेक स्थलों को देखकर अपना गीता के सम्बन्ध में भ्रम दूर करें। तब आप जानेंगे कि गीता पूर्णतः वैदिक ग्रन्थ है ।

'आर्य बाहर से आये' दुष्प्रचार कब तक

भारतीय दूर-दर्शन पर कभी "अमीर खुसरो" तो कभी "भारत की खोज" धारावाहिकों में- आर्य बाहर से आये- यह दुष्प्रचार किया जाता है। विदेशियों के लिखे मिथ्या इतिहास के आधार पर यदि कभी पं0 जवाहरलाल नेहरू ने ऐसा लिख दिया था, तो न्यायपूर्ण तर्क संगत खोजों के बाद अब यह सिद्ध किया जा चुका है कि आर्य ही भारत के मूल निवासी हैं- वे बाहर से नहीं आये हैं, फिर यह दुष्प्रचार क्यों किया जा रहा है। ऐसे अंशो को छोड़कर और भी बहुत कुछ प्रसारण के लिये रह जाता है। विदेशी आक्रान्ताओं की कूर चाल थी कि उन्होंने यहां के मूल निवासियों को अपने ही समान बाहर से आया प्रचारित करके समान स्तर प्राप्त करने का प्रयास किया। जब हम उनकी इस चाल को जान गये हैं, तब तो हमें ऐसे दुष्प्रचार से बचना चाहिये। "दूर दर्शन" से अपेक्षा है कि वह ऐसे आपत्तिपूर्ण अंशो का प्रसारण बन्द करे ।

-श्रीमती दर्शन देवी भारद्वाज,
आर्य समाज, आजमगढ़ ।

आर्य जनता से विनम्र अनुरोध

जैसा कि आपको विदित ही है आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 का मुख-पत्र आपका प्रिय **"आर्यमित्र"** गत लगभग 90वर्षों से आर्यजगत की पुनीत सेवा में संलग्न है। आर्य जगत का सबसे प्राचीन पत्र होने के साथही इसे यह गौरव प्राप्त है कि इसने अपने सुरुचिपूर्ण सांस्कृतिक लेखों के माध्यम से आर्यजगत में वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। इसके द्वारा प्रस्तुत विचारों और अभिव्यक्तियों को समाज के प्रत्येक वर्ग ने सर्वत्र सराहना की है। ऐसे सांस्कृतिक पत्र के विचारों को सार्वभौम तथा व्यापक रूप देने हेतु यह परम आवश्यक है कि इसे जन-जन तक पहुँचाया जाय जिसके लिए हम सर्वात्मना प्रयत्नशील हैं।

अब हम इसे नये कलेवर एवं साज-सज्जा के साथ आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं। किसी पत्र की सर्वग्राह्यता उसकी ग्राहक संख्या पर निर्भर करती है। आपने सदैव इस पत्रिका के उत्थान में सहयोग देना अपना नैतिक कर्तव्य समझा है। मुद्रण एवं कागज के मूल्यों में अप्रत्याशित वृद्धि होने के बावजूद हमने इसका वार्षिक मूल्य 30=00रु0 ही रखा है।

अतः हमारा आपसे यही विनम्र अनुरोध है कि अपने सत्प्रयत्नों से प्रतिमास कम से कम 25 ग्राहक अवश्य बनाकर पुण्य के भागी बनें ।

-प्रबन्ध सम्पादक ।

पंच

आचार्य वीरेन्द्र मुनि शास्त्री,
लखनऊ ।

आजकल निर्णायक 5 जनों की सभा को पंच कहते हैं। उनका मुख्य सरपंच होता है। 2-2 का विरुद्ध सम्मति में वह निर्णायक होता है। अंग्रेजी में पंच शब्द का अर्थ छेदकर जोड़ना प्रचलित है, इसकी मशीन पंचिग मशीन है। संस्कृत में पंच शब्द पाँच व्यक्तिकरणे ﴾भ्वादिगणी﴿ धातु से औणादिक कनिन् प्रत्यय करने पर पंचन्=पंच शब्द बनता है। यः पंचीकरोति स पंचः जो स्वरूप को व्यक्त करता है वह पंच है।

पंच संख्या अनेक बातों को व्यक्त करती हैः-

1- पाँच पृथिवी लोक और उनके मनुष्य-निकृष्ट, मध्यम, उत्तम, उत्तमतर, उत्तमतम ।
2- पाँच प्रकार के व्यक्ति-अध्यापक, उपदेशक, अध्येतृ, उपदेश्य, सामान्य ।
3- पाँच प्राकृतिक मुख्य पदार्थ- अग्नि,वायु,मेघ,विद्युत,सूर्य।
4- पाँच भूत-पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश ।
5- पाँच प्राण-प्राण, अपान, व्यान, समान, उदान ।
6- पाँच यज्ञ के ऋत्विज-होता, अध्वर्यु,उद्गाता,ब्रह्मा और सभ्य
7- राज्य के 5 अधिकारी तथा अंग-राज्य शासन,सेना, कोश, दूत और प्राड् विवाक । ﴾वकील और न्यायाधीश﴿
8- पाँच दिशाएं-पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और मध्य।
9- पाँच कर्म-उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुंचन, प्रसारण और गमन।
10- पाँच ज्ञानेन्द्रिय- आँख,नाक,कान,जिह्वा और त्वचा।
11- पाँच कर्मेन्द्रिय- वाक,पाणि,पाद,गुदा और उपस्थ।
12- पंच तन्मात्रायें- समान वायु,चित्त,बुद्धि, अहंकार और मन।
13- पाँच महायज्ञ- ब्रह्म यज्ञ, देव यज्ञ, पितृ यज्ञ, बलिवैश्वदेव-यज्ञ, अतिथि यज्ञ ।
14- पंच होता- प्राण, संवत्सर, सुवर्ग्य, अग्नि, देव ।
15- संवत्सर के 5 पाद- क्षण,मुहूर्त,प्रहर, दिवस, पक्ष।
16- हाथों-पैरों की 5-5 उंगलियाँ ।

देवीदास आर्य को विश्व महिला कल्याण रत्न

कानपुर, 16 दिसम्बर ﴾वि0﴿ः सुप्रसिद्ध महिला उद्धारक आर्य समाजी नेता श्री देवीदास आर्य को विश्व उन्नयन संसद ﴾वर्ल्ड डेवलपमेन्ट पार्लियामेन्ट﴿ ने उनको नारी सेवा के कार्यों से प्रभावित होकर "विश्व महिला कल्याण रत्न" की उपाधि से सम्मानित करने का निश्चय किया है। यह सम्मान भी श्री आर्य को आगामी 6 जनवरी को नई दिल्ली में आयोजित विश्व संसद के सम्मेलन में किया जाएगा ।

बांग्लादेश में गैर मुस्लिम लोगों का दमन

ढाका, 13 दिसम्बर बांग्लादेश, हिन्दू, बौद्ध, क्रिश्चियन, ओइक्या परिषद् के संयोजक देवेश भट्टाचार्य ने एरशाद सरकार पर आरोप लगाया है कि वह देश में धार्मिक सद्भाव समाप्त करने के लिए अल्पसंख्यकों का दमन कर रही है।

न्यायमूर्ति भट्टाचार्य ने आज यहाँ संवाददाता सम्मेलन में आरोप लगाया कि अपने राजनैतिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए सरकार ने गैर मुस्लिम नागरिकों की गिरफ्तारी शुरु कर दी है और अब तक एक सौ से अधिक लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है ।

उन्होंने कहा कि गिरफ्तार लोगों पर "राष्ट्रविरोधी" आरोप लगाया जाना बेबुनियाद और राजनीति से प्रेरित है। उन्होंने कहा कि सरकार नागरिकों में फूट और भ्रम पैदा करने की [illegible]श कर रही है।

न्यायमूर्ति भट्टाचार्य ने कहा कि पिछले चार साल से राष्ट्रपति हुसैन मोहम्मद एरशाद गैर मुस्लिमों के वजूद को ही नकारते आ रहे हैं और दावा करते रहे हैं कि "यह देश मुसलमानों के लिए है"।

जनसत्ता से साभार।

बाल जगत

बलिदानी बालक

-यतीन्द्र कुमार कक्षा 9ब,
गुरुकुल महाविद्यालय,ज्वालापुर।

गड़ गये जो नींव में उन पत्थरों को,
याद कर लो। जो नही देते दिखायी ।।

वेद का सन्देश है- वयम् तुभ्य बलिहृतः स्याम अर्थात् हे। मातृभूमि हम तेरे लिए बलिदान देने वाले हों। आइये जिन वीरों ने हमारी ही किशोर अवस्था में अपनी जवानी को ठोकर मारकर वेद की इस ध्वनि को साकार किया और जाते-जाते कह गये-

कर चले हम फिदा, जाने तन साथियों,
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों ।।

वास्तव में जीना उसी का है जो मरना भी जानता हो-जियो तो ऐसे जियो जैसे तूफां में जलते दिये"। वैसे तो हजारों पैदा होते हैं और हजारों प्रतिदिन मरते हैं परन्तु--

गुजरने को तो हजारो ही कारवाँ गुजरे ।
जमीं पर नक्शे कदम बस किसी-किसी के रहे।।

आइये जिन्होने माँ-बाप की ममता को त्यागकर धर्म की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहुति दे दी हो। जिन्होंने वेद की यह बात सिद्ध की हो कि - माता भूमिः पुत्रोह पृथिव्या। आइये उन अमर बलिदानी बालवीरों को याद करें। उन पवित्र आत्माओं को याद करें जिन्होंने हंसते-हंसते प्राणों की आहुति देकर यह साबित कर दिया था कि हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में हम बालवीर भी किसी से कम नहीं ।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में जिन अनेक आर्य किशोरों ने भाग लिया उन्हीं में छोटेलाल नामक बालवीर का नाम भी आता है। जब इन आर्य वीरों का जीवन मैनें जनज्ञान में पढ़ा तो यकायक पढ़ता ही चला गया हजारों वीरों के मार्गदर्शन हेतु मैं उनके जीवन का पदार्पण आपके सामने कर रहा हूँ ताकि हम यह जान सकें कि हैदराबाद सत्याग्रह में बालवीरों का क्या योगदान रहा। हैदराबाद के धर्मयुद्ध में जिन विशाल जत्थों ने सामूहिक सत्याग्रह पर निरंकुश सत्ता को चुनौती दी थी, उन्हीं में एक था उत्तर प्रदेश के 531 सत्याग्रहियों का एक जत्था भी। उसके नेता राजगुरु श्री धुरेन्द्र शास्त्री ﴾स्वामी-ध्रुवानन्द﴿ थे। अलालपुर नामक स्थान के निवासी श्री छोटेलाल भी। जो अपनी जननी के इकलौते लाल थे। कर्तव्य की पुकार पर अपनी माता की ममता को छोड़कर हैदराबाद पहुँचे थे। आप भी अन्य सत्याग्रहियों सहित बन्दी बनाये गये। रुग्ण हो जाने पर भी धूप में क्रूर जेल अधिकारी आपसे कठोर काम लेते रहे। अन्ततः एक दिन लू लग जाने के कारण आप अचेत हो गये। अचेत अवस्था में आपको एक छत के नीचे लिटा दिया गया। वहाँ उन्हें वमन और दस्त हो गये। अर्द्धरात्रि तक भी जब आपकी हालत न सुधरी तो आपको अस्पताल पहुँचा दिया गया। 2 मई को उनकी दशा और बिगड़ी और 3 मई को अपनी अन्तिम श्वास ली। पिंजरे का पन्छी उड़ गया और यह आर्य वीर बन्धन मुक्त हो गया।

20 सत्याग्रहियों को साथ जाने की अनुमति देकर जेल के अधिकारियों ने ही आपका दाह संस्कार कर दिया। शव का चित्र लिये जाने तक की आज्ञा न दी गई। किन्तु कुछ दिन के पश्चात् जो विज्ञप्ति सरकार द्वारा प्रकाशित की गई उसमें भी वह छोटेलाल की मृत्यु के लिए कोई बहाना गढ़कर बताने में समर्थ न हो पायी और उस विज्ञप्ति में स्वीकार किया गया कि - श्री छोटे लाल से बीमारी में और धूप में काम लिया गया था। सुप्रसिद्ध शायर इकबाल ने ठीक लिखा है-

हजारों नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती हैं,
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदा-ए-र पैदा।।

यह वीर मरा नहीं अपितु यह अमर है। यह शरीर तो नश्वर है,यह आत्मा कभी नही मरता-न अवध्ये कदाचन,आर्य-समाज ऐसे वीरों को कभी भी नही भुला सकेगा। इस वीर की पवित्र आत्मा हमारा हमेशा मार्गदर्शन करायेगी।

"युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द"

ले0 विद्यावागीश शर्मा मित्र शास्त्री,
गुरुकुल अयोध्या ।

अनन्त और परिमित काल का जब संगम होता है, कहा जाता है कि तब महापुरुषों का जन्म होता है, हमारा सौभाग्य है कि ऐसे, महापुरुषों को जन्म भारत ने दिया, जिन्होंने समय-समय पर अपनी अमिट छाप छोड़ी और जिनका संदेश अमर है। स्वामी दयानन्द सरस्वती तेजस्वी और आध्यात्मिक तो थे ही, साथ ही वे एक युग प्रवर्तक और समाज सुधारक भी थे। श्री अरविन्द घोष ने उनके बारे में कहा कि- "उनकी आत्मा में ईश्वर था, उनके नेत्रों में दूरदृष्टि और उनके हाथों में शक्ति थी। वे प्रकाश के अग्रदूत और मानव शिल्पी थे। स्वामी दयानन्द राजनीतिक तथा मानसिक गुलामी के विरुद्ध थे। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा-"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है वह सर्वोपरि और उत्तम होता है, मतमतान्तरों के आग्रह से रहित, अपने और पराये के पक्षपात से शून्य प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा न्याय और दया के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं है।" इस प्रकार स्वतन्त्रता के प्रति उनकी मनः स्थिति का ज्ञान होता है। उन्होंने कहा- "संसार अन्धविश्वास और अज्ञान की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। मैं उन्ही बेड़ियों को तोड़ने और लोगों को दासता से मुक्ति दिलाने के लिए आया हूं। लोगों को उनकी स्वाधीनता से वंचित रखना मेरे उद्देश्य के सर्वथा विपरीत है। स्वामी दयानन्द जैसा समाज सुधारक न हुआ है और न होगा। उनके समाज सुधार के कार्यों में छुआ-छूत का निवारणस्त्री शिक्षा का प्रचार,बाल विवाह के विरुद्ध आवाज उठाना और विधवाओं के पुनर्विवाह का मार्ग प्रशस्त करना आदि उनके साहसिक कदम थे। महात्मा गाँधी के विचार में- "दयानन्द का चरित्र मेरे लिए ईर्ष्या का विषय है। इसप्रकार महर्षि दयानन्द के प्रति देश विदेश के अनेकों महान पुरुषों ने अपनी प्रशंसा भरी लेखनी द्वारा उन्हें युग का सर्वोत्तम समाज-सुधारक देशभक्त, एवं सच्चे ईश्वर का परम आस्तिक माना है। यह धरती का परम सौभाग्य है कि महान् मुक्त आत्मा ने उस युग में जब हम अन्धकार में भटक रहे थे और ईश्वर के सच्चे ज्ञान को भूल रहे थे, जन्म लेकर हमारा मार्ग प्रदर्शन किया। सम्पूर्ण मानव जाति इसके लिये उनकी सदा-सदा के लिये ऋणी है। आज की इस विषम परिस्थितियों में हम आत्मनिरीक्षण करते हुए महर्षि के इस स्वप्न को "वैदिक युग की गौरव-गरिमा के अनुरूप भारत का पुनर्निर्माण करने का व्रत लें ।

xxxxxxxxx

अलीगढ़ में आर्य समाज द्वारा शुद्धि संस्कार

आर्य समाज अलीगढ़ के जिला मन्त्री डा0 विजयपाल सिंह आर्य ने एक मुस्लिम युवती को उसकी इच्छानुसार वैदिक धर्म में दीक्षित कर एक आर्य युवक के साथ विवाह संस्कार कराया। इस अवसर पर जिले की लगभग 80 आर्य समाजों के पदाधिकारियों व प्रतिनिधियों ने वर-वधू को आशीर्वाद एवं सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया ।

इसी प्रकार डा0 आर्य ने वैदिक आश्रम रामघाट रोड अलीगढ़ में श्री मोहम्मद वसीरखाँ को सपरिवार वैदिक धर्म में दीक्षा दी। उनका नाम श्री बलवीर सिंह उनकी पत्नी अनीसा-बेगम का नाम आशा रानी तथा अन्य सभी पुत्रों/पुत्रियों ने भी स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया। सभी का उपनयन संस्कार हुआ।

इस अवसर पर श्री बलवीर सिंह ने कहा- "मैं अपने पूर्वजों के वैदिक धर्म में वापस आ गया हूं। मुस्लिम शासनकाल में भय से मेरे पूर्वज मुसलमान बन गये थे। आज मैने उसका प्रायश्चित्त कर लिया है। इस अवसर पर उन्होंने सभी को प्रसाद वितरण किया और सबसे गले मिले।

निर्वाचन

दिनाक- 18-12-88 को जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा अलीगढ़ का वार्षिक निर्वाचन जिला कार्यालय वैदिक आश्रम रामघाट रोड अलीगढ़ में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जिसके निम्न पदाधिकारी चुने गये -

प्रधान- डा0 मंगाराम जी,

मन्त्री- डा0 विजयपाल सिंह आर्य,

कन्या गुरुकुल सासनी (अलीगढ़)

कुछ दानी सज्जनों ने आर्थिक दृष्टि से निर्बल कन्याओं को भोजन शुल्क में छूट देकर प्रविष्ट करने के लिए गुरुकुल को सहायता देने का आश्वासन दिया है। जो सज्जन इस सहायता से लाभ उठाना चाहें, अपनी कन्या के साथ शीघ्र गुरुकुल में आकर मिलें।

गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने कुछ दिन के लिये घी खाना छोड़कर उसके मूल्य के रु0 1100-00 बिहार के भूकम्प पीड़ितों के लिए एवं अन्यत्र के बाढ़ पीड़ितों के लिए भेजे हैं ।

विगत दिनों में गुरुकुल के लिये निम्नलिखित विशेष दानराशियां प्राप्त हुई --

		रु0 पै0
1-	हापुड़ के व्यापारियों से श्री ला0 भगवतप्रसाद जी आर्य ट्रेडिंग कम्पनी द्वारा अन्न के रूप में-	25,470=00
2-	श्री राजीव मोहन बरेली-	500=00
3-	श्री राखियों के प्रत्युत्तर में-	
1-	श्री परमानन्द, होजखास, नई दिल्ली	101=00
2-	श्री श्रीक्षितीश वेदालंकार,आ0प्रा0प्र0नि0सभा नई दिल्ली-	101=00
3-	श्री विश्नोई ट्रासपोर्ट कम्पनी पुरानी मेरठ रोड हापुड़-	101=00
4-	श्री धर्मवीर, कबूलपुर-	101=00
5-	श्री हापुड़ पब्लिक कैरियर एसोसियेशन, हापुड़-	101=00
6-	श्री हर प्रसाद आर्य, अलीगढ़-	101=00
7-	श्री वीरेन्द्र कुमार अग्रवाल, बरनाहल (मैनपुरी)	100=00
8-	श्री मे0 मैट्रोपोल इण्डिया प्रा0लि0,नई दिल्ली	100=00
9-	श्री आगरा ड्रग हाउस, आगरा-	100=00
10-	श्री एक सौ रुपये सेकम राशियों का योग-	1527=00
	कुल योग-	रु0 28,403=00

सभी दानी महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद ।

अक्षय कुमारी शास्त्री,
मुख्याधिष्ठात्री ।

xxxxxxxxx

आचार्य भगवानदेव की तीव्र भर्त्सना

आचार्य भगवानदेव अपने अनुशासनहीनता पूर्ण आचरण तथा कार्यकलाप से आर्यसमाज की छवि को धूमिल करने तथा आर्यजगत् की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पूज्य प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के प्रति निर्मूल तथा प्रचार करने के दोष में आर्यसमाज की सदस्यता से 4 वर्षो के लिए निष्कासित किये गये हैं। इसके बावजूद भी वे अनधिकृत रूप से विश्व आर्य महा सम्मेलन का आयोजन करने जा रहे हैं, जो अनुशासन हीनता तथा अवैधानिकता का द्योतक है ।

ज्ञातव्य है कि विश्व आर्य महा सम्मेलन करने का संवैधानिक अधिकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली को ही है। अतः बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा की अंतरंग-सभा सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करती है कि पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व तथा पथ-प्रदर्शन में हमारी पूर्ण आस्था है और बिहार के समस्त आर्यसमाजों से अपील करती है कि वे आचार्य भगवानदेव द्वारा आयोजित किसी भी सम्मेलन में न तो भाग लें और न किसी प्रकार का आर्थिक सहयोग ही दें। साथ ही आचार्य भगवानदेव तथा श्री गंगाराम वानप्रस्थ के प्रति तीव्र भर्त्सना की जाती है ।

भूप नारायण शास्त्री,
प्रधान-सभा,
आ0 प्र0 सभा, बिहार।

xxxxxxxx

भारतीय संस्कृति संस्कृत एवं हिंदी

नवीन शिक्षा नीति के अनुसार संस्कृत ।2वीं कक्षा तक न तो अनिवार्य विषय और न ऐच्छिक विषय रहेगा। भारत सरकार की इस नीति का आर्य समाज कड़े शब्दों में विरोध करता है एवं अनुरोध करता है कि संस्कृत को पहले के समान ही स्थान दिया जाये और इस में कोई परिवर्तन न किया जाये। संस्कृत भारत की धार्मिक सांस्कृतिक और प्राचीन भारत की राष्ट्र भाषा रही है और आधुनिक युग में तो यह विश्व भाषा बन गई है। जर्मनी, अमेरिका, इंग्लैंड, जापान आदि देशों में संस्कृत पढ़ाई जाती है ।

आर्य समाज इस बात पर भी खेद प्रकट करता है कि नये करेंसी नोटों पर अशोक चक्र के नीचे "सत्यमेव जयते" यह आदर्श वाक्य अब हटा दिया गया है। यह भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात है। भारत सरकार अपने ही आदर्श वाक्य की स्वयं अवहेलना कर रही है। अतः भारत सरकार से अनुरोध है कि वह इस नये परिवर्तन को छोड़ दे एवं यथापूर्व स्थिति को अपनाये ।

आर्य समाज को यह जानकर आश्चर्य हुआ है कि भारत-सरकार स्वयं राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिन्दी के प्रति कितना अपमान कर रही है। दस रुपये के करेंसी नोटों में से हिन्दी को निकाल दिया गया है। अभी तक इन नोटों में रिजर्व बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर हिन्दी में भी रहते थे और उस के ऊपर हिन्दी में यह वाक्य रहता था कि "मैं धारक को दस रुपये अदा करने का वचन देता हूँ" पर नये नोटों में यह बातें निकाल दी गई हैं। क्या यह उपर्युक्त संविधान की धारा-35। का स्पष्ट उल्लघंन नहीं है? भारत सरकार से प्रार्थना है कि वह इस नये कदम को वापस ले ले और भारत की जनता को अपनी भाषा में इन करेंसी नोटों का अर्थ समझने दें ।

सतीश चन्द्र,
मन्त्री,
आर्यसमाज, भिलाई ।

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, देहरादून के प्रधान श्री देवदत्त बाली का समाचारपत्रों के नाम वक्तव्य

बड़े खेद और लज्जा का विषय है कि भारत में अंग्रेजों का शासन समाप्त हो चुकने के 4। वर्ष बाद भी भारत-सन्तानों को अंग्रेजी की अनिवार्यता हटवाने के लिए देश की राजधानी में भूख-हड़ताल करनी पड़ रही है। संघ लोक सेवा आयोग की प्रवेश-परीक्षाओं तथा आई0आई0टी0 और इंजीनियरिंग की प्रवेश-परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कराने के लिए आजकल दिल्ली में हमारे युवक भूख-हड़ताल पर बैठे हैं और लगता है कि देश के कर्णधारों को इसकी कोई चिन्ता ही नहीं है हालांकि भाषणों में ये नेतागण चिल्ला-चिल्ला कर युवा-शक्ति को देश के भविष्य की संज्ञा देते रहते हैं।

अंग्रेजी की अनिवार्यता बनाए रखना वास्तव में लोकतन्त्र के प्रति द्रोह है। देश की पिचान्नवे प्रतिशत से अधिक जनता अंग्रेजी नहीं जानती है, तब ऐसी भाषा को अनिवार्यता देकर जनता पर लादे रखना जनता के प्रति द्रोह नहीं है तो क्या है।

देश के युवा तथा छात्र संगठनों को राजनीतिक दलों ने दलगत राजनीति की दलदल में फंसा रखा है अतः वे अबतक अपनी उन्नति में सबसे बड़ी बाधा--- अंग्रेजी की अनिवार्यता--- के प्रति उदासीन बने बैठे हैं। जिस दिन यह युवा-शक्ति अपने वास्तविक हित को समझकर उठ खड़ी हुई, राजनीतिक लोगों के घुटने अपने-आप टिक जाएंगे ।

देश के सभी गैर-राजनीतिक संगठनों और कार्यकर्ताओं को विशेष रूप से इस दिशा में अविलम्ब सजग हो जाना चाहिए और संघर्षरत युवकों की आवाज में अपनी आवाज मिला देनी चाहिए ।

§देवदत्त बाली§
प्रधान,
जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा, देहरादून।

अफ्रीका के अश्वेत वैदिक उपदेशक

अफ्रीका के घाना देश की राजधानी अकरा के वैदिक मिशन के मन्त्री पण्डित चार्ल्स अंकोह 3 मास की यात्रा पर भारत में आए हैं। वे प्रथम अश्वेत व्यक्ति हैं जो ।976 से वैदिक धर्म की ओर आकृष्ट हुए थे। वे अपने सहयोगियों के साथ वहाँ वैदिक मिशन का संचालन कर रहे हैं। भारत में वे महर्षि दयानन्द के जीवन से संबंधित स्थानों, आर्य संस्थाओं व आर्यसमाजों में जाएंगे और पण्डित ब्रह्मदत्त स्नातक से प्रशिक्षण भी प्राप्त करेंगे। अपने देशवासियों के बीच अजनबी न समझे जायें, अतः नाम नहीं बदला है। वे डरबन §द0अफ्रीका§ में स्वामी सत्य प्रकाश जी व पं0 ब्रह्मदत्त स्नातक के साथ-कार्य कर चुके हैं ।

अन्तर्राष्ट्रीय वेदपीठ, नई दिल्ली ने उनकी सारी यात्रा का प्रबन्ध तथा व्यय की व्यवस्था की है अकरा स्थित भारतीय उच्चायोग 2 वर्षो से उनको वीसा §प्रवेश पत्र§ नहीं दे रहा था, तब सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी द्वारा विदेश मन्त्रालय को लिखने पर आने की अनुमति मिली ।

xxxxxxxx

शुद्धि के बाद शादी सम्पन्न

बांसी आर्यसमाज के मन्त्री ने दिनांक- ।।.।2.88 को छन्नी बेगम का शुद्धिकरण कराकर नाम कमलावती देवी रखा और वैदिक रीति से श्री बेचन पुत्र रामलखन यादव के साथ शादी सम्पन्न करायी ।

छन्नी पुत्रीवलीमोहम्मद ग्राम निवासी लखनापार थाना तेतरीबाजार चौकी जोगिया उदयपुर की थी, श्री बेचन पुत्र रामलखन ग्राम बगहवाकोमर कोतवाली बांसी का निवासी है। जिनकी शादी वैदिक रीति से सम्पन्न हुई ।

-द्वारिका प्रसाद यादव, बस्ती

गौदान

"दानेन पाणिर्नतु कंकणेन" हाथ की शोभा दान से होती है, कंगन पहनने से नहीं। महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर फर्रुखाबाद की गौशाला के निमित्त श्रीमती विद्यादेवी जी आर्या धर्मपत्नी श्री पं0 शान्तिस्वरूप जी पाण्डेय भोलेपुर §फतेहगढ़§ ने ।7 नवम्बर, ।988 को एक सवत्सा दोग्धा गौ प्रदान की है। तथा इसी अवसर पर श्री अवधेशचन्द्र जी पूर्व सांसद §फतेहगढ़§ के सुपुत्र श्री चन्द्र भूषण जी ने गुरुकुलीय बरामदे के निर्माण का भी वचन दिया। समस्त आर्य जनता माता जी एवं श्री भूषण जी के इन सराहनीय कार्यो के लिए हृदय से आभारी है ।

गौओं की रक्षा

दिनाक- 3 तथा 7 दिसम्बर ।988 को ग्राम चांदापुर थाना भोगिनीपुर §कानपुर§ में गोमांस बेचने तथा गोहत्या करने के अपराध में एक व्यक्ति गिरफ्तार हुआ शेष भाग निकले। 7/।2 को कटने हेतु जा रही कई गायें आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने कसाइयों से छुड़ाई।

प्रवेश सूचना

गुरुकुल वेदाधिविद्यागार पिपरा घाट, उतरौला जनपद-गोण्डा में नवीन छात्रों का प्रवेश । जनवरी, ।988 से आरम्भ है। इस सम्बन्ध में प्राचार्य से सम्पर्क कर विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।

xxxxxxx

आर्यवीर दल शिविर

दिनांक- । नवम्बर से 6 नवम्बर तक कानपुर जिले के देहाती क्षेत्र में सेंगुर नदी के तट पर शेरपुरगढ़ा हायर सेकेण्डरी स्कूल में आर्यवीर दल का शिविर लगाया गया जिसका उद्घाटन श्री महादेव शास्त्री व समापन 6-।।-88 को डा0 गया प्रसाद शास्त्री द्वारा हुआ। इस अवसर पर 459आर्यवीरों को प्रशिक्षण दिया गया तथा डा0 गया प्रसाद शास्त्री ने यज्ञशाला के निर्माणार्थ ।000=00रु0 का सात्विक दान दिए जाने की घोषणा की ।

आर्य मित्र सप्ताहिक
नाराजण स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
पौष कृष्ण 9
1 जनवरी रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

निर्वाचन

आर्यसमाज छप्परहेड़ी (सहारनपुर)

प्रधान	-	श्री वीरेन्द्र सिंह आर्य,
मन्त्री	-	श्री नकलीराम,
कोषाध्यक्ष	-	श्री ओमसिंह जी,

आर्यसमाज अध्याना (सहारनपुर)

प्रधान	-	श्री सुखबरी सिंह,
मन्त्री	-	श्री दुष्यन्त कुमार,
कोषाध्यक्ष	-	श्री कृष्णचन्द्र,

आर्य समाज गणेशपुर (सहारनपुर)

प्रधान	-	वैद्य ध्यान सिंह,
मन्त्री	-	श्री मकरन्द सिंह,
कोषाध्यक्ष	-	श्री जगदीश प्रसाद,

xxxxxx
xxx

मुजफ्फरनगर दिनांक- 7·12·88 वैद्य हरिश्चन्द्र भास्कर अध्यक्ष महर्षि दयानन्द वैदिक आश्रम ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए कहा है कि मुजफ्फरनगर रामलीलाटीलामिमलाना रोड मु0 नगर पर महर्षि दयानन्द वैदिक आश्रम की स्थापना हो चुकी है।

यह आश्रम भविष्य में सार्वजनिक रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, य के रूप मे कार्य करेगा। तथा एक विशेष प्रकार से आकर्षण केन्द्र रहेगा। जिसके लिए निम्न पदाधिकारी घोषित किये।

संस्थापक व मन्त्री - देवेन्द्रसिंह तूफान, अध्यक्ष- वैद्यहरिश्चन्द्र भास्कर, उपाध्यक्ष - डा0 दामोदरसिंह, सयुंक्त मन्त्री- डा0 सूर्य कान्त, सजान्नची - डा0 ओम प्रकाश, आडीटर - ईश्वरदयाल शर्मा।

हरिश्चन्द्र भास्कर,
अध्यक्ष,
महर्षि दयानन्द वैदिक आश्रम
रामलीला टीलामिमलाना रोड,
मुजफ्फरनगर।

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा सहारनपुर का निर्वाचन दिनांक- 11·12·88 को आर्य समाज हल्लू मजरा में सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुये।

प्रधान	-	श्री प्रकाश चन्द्र
मन्त्री	-	श्री श्रीचन्द गौड़
कोषाध्यक्ष	-	श्री ओम प्रकाश आर्य।

xxxxxx

सन्यास आश्रम में प्रवेश

श्री गंगाचरण वानप्रस्थी प्रधान आर्यसमाज दयालनगर, फतेहपुर ने दिनांक- 9·12·88 को प्रातः 10 बजे स्वामी मेधानन्द सरस्वती जी से सन्यास आश्रम की दीक्षा ली है। अब श्री गंगाचरण जी का नाम स्वामी प्रेमानन्द हो गया है। इस अवसर पर गाँव के संभ्रान्त व्यक्ति उपस्थित रहे जिन पर इसका बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

सभा का स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी प्रकोष्ठ

हरिद्वार के निकटवर्ती नगर पालिकाओं के स्वतन्त्रता सेनानी तथा हैदराबाद के स्वतन्त्रता सेनानी को हमने स्वतन्त्रता संग्राम- सेनानी समिति, "आर्य प्रतिनिधि सभा" उ0प्र0 के आर्य विचारों के सदस्य बनाये हैं। हरिद्वार जनपद बनने के बाद कई सौ सदस्य बन सकेंगे। इस समय मात्र 36 सदस्य हैं। स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी समिति का अस्थाई चुनाव कर दिया है। जो निम्न प्रकार है:-

संयोजक मा0 दयाजीत सिंह, श्री ठा0 महेन्द्र सिंह जी-अध्यक्ष, श्री राम चन्द्रजी -मन्त्री, श्री परसराम जी आजाद - मन्त्री, श्री गंगा रामजी -कोषाध्यक्ष।

कार्यकारिणी-

श्री मती सत्य[illegible] रुड़की, श्री कैलाश नारायण- जी निर्भय रुड़की, श्री [illegible] सिंह जी बहादरपुर जट, श्री मती कृष्णादेवी [illegible], श्री [illegible] देव जी शास्त्री कन्या- गुरुकुल हरिद्वार, श्री [illegible] दत्त जी [illegible], श्री ओमप्रकाश- जी हरिद्वार।

[illegible] समाचार

- श्री निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या के पूर्व प्रधान श्री किशोरीलाल जी चोपड़ा की धर्मपत्नी एवं वर्तमान प्रधान श्री रमेशचन्द्र चोपड़ा की माता जी के आकस्मिक स्वर्गवास पर गुरुकुल की कार्यकारिणी सभा में शोक प्रकट करते हुए उनकी दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा उनके शोक-सन्तप्त परिवार शान्ति की प्रार्थना परमपिता परमात्मा से की गयी।

- स्वर्गीय माधवेन्द्र प्रसाद जिला आर्य समाज के कर्मठ युवा कार्यकर्ता थे। उनके आकस्मिक निधन के सारा समाज शोकाकुल हो गया है। दिनांक- 8·12·88 की अंतरंग समिति की बैठक में दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति के लिए दो मिनट का मौन रखकर ईश्वर से प्रार्थना किया गया।

- आर्य समाज लल्लापुरा वाराणसी का 53वां वार्षिक उत्सव दिनांक- 9 दिसम्बर से 11 दिसम्बर 1988 तक समारोह पूर्वक मनाया गया।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य ओ३म मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि0 सं0 2241/57 पौष शुक्ल । रविवार, संवत् 2045 वि0, दिनांक 8 जनवरी 1988 घोषणा पत्र सं0 7/28-2-85



तरणिर्विश्वदर्शतो ज्योतिष्कृदसि सूर्य ।
विश्वमाभासि रोचनम्।-यजु0 33/36

हे सूर्य। तू तरणि है। मुमुक्षुओं को संसार-सागर से तार देता है। तू अन्धकार को हटाकर संसार को मार्ग दिखाता है। तुझे अपनी ज्योति से प्रकाशित करने वाले प्रभुवर को नमन्।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम0ए0,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु0251/-
वार्षिक	रु0 30/-
छमाही	रु0 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	91
अंक	2

रथेन देवो याति भुवनानि पश्यन्

मकर सौर संक्रान्ति

सूर्यरश्मियों के वितान को बुने हुए वस्त्र का रूप देते हुए मन्त्र में स्पष्ट किया गया है कि रश्मिरथी भुवनभास्कर ने नैशान्धकार को दूर करके अपनी अरुणिमा से विश्व की कालिमा को लालिमा में परिवर्तित कर दिया है। रात्रि का तमतोम अनावृत्त हो गया है। ब्रह्माण्ड की प्राणधारक कोशिकाएं समग्र सौरमण्डल को अपनी किरणों से प्राणविसर्जन करती हुई दिग्दगन्त को आलोकित कर रही हैं। वैज्ञानिक मतानुसार सूर्य की किरणें 8 सेकेण्ड में पृथ्वी पर आ जाती हैं। सूर्य जब अपनी रश्मियों का विस्तार करता है तो उनका जाल समग्र सौर जगत के पिण्डों और ग्रहों को आच्छादित कर लेता है। सूर्य सौर जगत का केन्द्र है। सभी ग्रह उसकी परिक्रमा करते हैं। पृथ्वी उसका एक छोटा उपग्रह है। पृथ्वी जितने समय में सूर्य की प्रदक्षिणा करती है उसे वर्ष कहा जाता है। उसी प्रदक्षिणामार्ग को क्रमणमार्ग अथवा क्रान्तिवृत्त भी कहते हैं। इसके 12 भाग हैं जो 12 राशियों के नाम से जाने जाते हैं। इस प्रकार पृथ्वी एक वर्ष में 12 राशियों को पूर्ण कर लेती है। पृथ्वी का धरातल सूर्य के सम्मुख सदा एक समान नही रहता है। केवल वर्ष मे दो दिन ऐसे आते हैं कि जिस समय पृथ्वी का धरातल समान होता है। इसके अतिरिक्त लगातार तीन मास तक यह प्रवण होता हुआ पुनः प्रवणता का ह्रास होते हुए समान हो जाता है। इस प्रकार वर्ष में दो बार 6-6 मास तक उत्तर अथवा दक्षिण अयन होता है। जिस समय पृथ्वी समतल में होती है उस दिन को विषुव-दिवस कहते हैं। इस दिन पृथ्वी पर सर्वत्र रात्रि और दिन समान होते हैं इसके पश्चात् पृथ्वी धरातल क्रमशः प्रवण होता जाता है। तीन मास तक प्रवण होता है। जैसे-जैसे प्रवण होता जाता है, वैसे-वैसे पृथ्वी के उत्तरार्द्ध में रहने वालों का दिन बढ़ता जाता है, रात्रि घटती जाती है। उन्हीं दिनों पृथ्वी के दक्षिणी गोलार्ध में रहने वालों का दिनमान घटता जाता है और रात्रिमान बढ़ता जाता है। जिस दिन से उत्तरप्रवण आरम्भ होता है वही वर्ष का आरम्भ है और वहीं से राशियों की गणना प्रारम्भ होती है। इसी प्रवणता के कारण पृथ्वी निवासियों को सूर्य कभी उत्तर में कभी दक्षिण में जाता दिखाई देता है। उत्तरायण के प्रारम्भ के दिन को हम **"मकर सौर संक्रान्ति"** कहते हैं।

इस दिन सूर्य मकर राशि पर आ जाता है और उत्तरायण हो जाता है। वह दिनोंदिन प्रखरतर होता हुआ संसार को अपनी रश्मिप्रभा से उत्तरोत्तर आलोकित करने लगता है। इसी भाव को ग्रहण करते हुए हम आर्य, अपने उपास्य देव की अद्भुत एवं सर्वश्रेष्ठ कृति भुवन भास्कर को लक्ष्य में रखते हुए अपने जीवनवृत्त में संक्रान्ति लाकर तमस की कालिमा को ज्ञान की लालिमा से उद्दीप्त कर दें- यही इस पर्व का सन्देश है ।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
--राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- पौष शुक्ल । संवत् 2045 वि०, 8 जनवरी, 1989
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

और बंगला देश के यह अभागे अल्पसंख्यक

सिर्फ इसलिए अत्याचार के शिकार हो रहे हैं क्योंकि उन्होंने वहां का शासकीय धर्म (इस्लाम) स्वीकार नहीं किया। जिस समय भारत का बँटवारा हुआ था, पूर्वी पाकिस्तान में हिन्दुओं और बौद्धों का प्रतिशत 45% से अधिक था किन्तु आज वह घटते घटते 13·3% प्रतिशत रह गया है। नेहरू लियाकत पैक्ट में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि दोनों देश अपने-अपने यहाँ निवास करने वाले अल्पसंख्यकों के जान माल एवं संस्कृति की सुरक्षा करते हुए उन्हें पूर्ण संरक्षण देंगे। किन्तु ऐसा लगता है कि इस्लामीकरण के बाद बांग्लादेश की सरकार को अल्पसंख्यकों पर अत्याचार करने का कोई संवैधानिक अधिकार मिल गया है। समय-समय पर भीषण अत्याचारों से त्रस्त होकर लाखों की संख्या में अल्पसंख्यकों के काफिले के काफिले भारत में शरण माँगने के लिये आते रहे हैं। सामूहिक धर्म परिवर्तन की अनेकों घटनाएँ वहां घटित हुई हैं और हो रही हैं। पिछली 7 जून को बांग्लादेशी संविधान संशोधन द्वारा उसके इस्लामिक स्टेट घोषित होने के बाद अल्पसंख्यकों पर चारों ओर से आफत आ गई है। वहां की मुस्लिम संस्थाओं, शासकों, मुल्लाओं एवं समाचारपत्रों ने अल्पसंख्यकों के विरुद्ध अभियान छेड़ रखा है। जमायत-ए-इस्लामी, निजामे इस्लाम, मुस्लिम लीग आदि कट्टर पन्थी संस्थाओं और नेताओं ने अरब देशों से प्राप्त पेट्रोडालर के बल पर अल्पसंख्यक विरोधी अभियान को खूब हवा दी है। पिछले महीने अल्पसंख्यकों पर "स्वाधीन बंग भूमि" के षडयंत्र में शामिल होने के कथित आरोप में समस्त अल्पसंख्यकों को पीड़ित करने का सुनियोजित अभियान चलाया गया। इस षड यन्त्र के परिणामस्वरूप चटगाँव के बौद्ध चकमाओं को अपनी जमीन से भारत खदेड़ा जा रहा है और सन् 1967 में जहां चकमाओं की आबादी 98 प्रतिशत थी वहां वे अब उस पर्वतश्रृंखला में मात्र 55 प्रतिशत भी नहीं रहे।

सीमा पर कटीले तार लगाकर तस्करी रोकने एवं अवैध आवागमन को नियंत्रित करने की कोशिश भी बांग्लादेश के अड़ियलरुख के कारण सफल नहीं हो सकी। ताजा समाचार यह है कि वहां निवास करने वाले लगभग 2 करोड़ हिन्दुओं पर यह आरोप लगाया गया है कि वे कलकत्ते के शरणार्थियों से मिलकर बांग्लादेश की सीमान्त भूमि पर "स्वाधीन बंग भूमि" बनाने जा रहे हैं। कट्टरपन्थी मुस्लिम संस्थाएं कुछ पर्चों और चिपकाए गये पोस्टरों के आधार पर इस षडयन्त्र को सिद्ध करना चाहती हैं। उनके अनुसार हिन्दुओं की यह योजना है कि जुलूस बनाकर आयेंगे और बांग्लादेश के सीमान्त प्रदेश, खुलना, कुश्तिया, गोपालगंज, जैसोर आदि की भूमि पर कब्जा कर लेंगे। यह आरोप कितना हास्यास्पद और बचकाना है इसे सभी समझ सकते हैं। परन्तु इसी का प्रचार करके बंगाली मुस्लिमों की भावनाओं को भड़काया जा रहा है। सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि शेख हसीना वाजेद को छोड़कर और कोई नेता विरोध में नहीं बोल रहा है। अल्पसंख्यकों के विरुद्ध घृणा का वातावरण पैदा करने और उन्हें खदेड़कर उनकी जमीन तथा सम्पत्ति हथियाने में तमाम लोगों का निहित स्वार्थ भी है। और इस प्रकार जब बंगालियों से बांग्लादेश इस्लामिक राष्ट्र घोषित हुआ है, गैरमुस्लिमों के लिए वहाँ से पलायन करने अथवा इस्लाम स्वीकार करने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं रहा है।

कितने दुःख की बात है कि यह सब होते हुए भी हमारा शासन चुप बैठा हुआ है और किसी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अथवा मानवता के नाते ही अपनी जोरदार आवाज नहीं उठा रहा है। साठ करोड़ का हिन्दु समाज तो गहरी निद्रा में आकण्ठ डूबा है। मौलिक तथा वैचारिक अभियान चलाने तक का विचार उसके स्वप्न में नहीं आता। क्या इसे जिन्दा कौम की मिसाल कहा जा सकता है।

हम अपने देश के रहने वाले प्रत्येक धर्मावलम्बियों का पूर्ण सम्मान करते हैं परन्तु मानवीय दृष्टिकोण के आधार पर बांग्लादेश के शासकवर्ग से यह निवेदन करना अवश्य चाहते हैं कि वहाँ की भूमि पर उत्पन्न हुआ प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी धर्म का अनुयायी हो, वहां का नागरिक है। उसके जान-माल तथा संस्कृति की रक्षा करना वहाँ की सरकार का नैतिक कर्तव्य है। जो शासन अपने नागरिकों के जीवन और अस्मिता की रक्षा नहीं कर सकता उसे शासन में रहने का कोई अधिकार नहीं है। यह मानवता के प्रति घोर अपराध है। धर्म के नाम पर यह उत्पीड़न धर्म नहीं, घोर अधर्म है, पाप है। परमात्मा की अमरवाणी को याद रखिए --

आरंभस्व जातवेदो अस्माकार्थाय जज्ञिषे ।
इतो नो अग्ने भूत्वा यातुधानान् विलापय ।। सामवेद-1/7/6

"पीड़ादायक प्रजाघातक राजा को परमात्मा सदा रुलाता है" ।

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी,
सो नृप अवशि नरक अधिकारी ।

बेईमान नेताओं और अफसरों की छटनी करनी होगी : जाखड़

अलवर, 30 दिसम्बर (हरीश): लोकसभा अध्यक्ष बलराम जाखड़ ने कहा है कि कुछ लोग देश को खण्डित करने के लिये अपना ईमान तक बेच रहे हैं। हमें ऐसे लोगों से सावधान रहना है ताकि देश की एकता और अखण्डता को कायम रखा जा सके। श्री जाखड़ आज यहा स्थानीय आर्य कन्या स्कूल परिसर में आयोजित तीन दिवसीय आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान शताब्दी समारोह एवं आर्य महासम्मेलन का उद्घाटन कर रहे थे उन्होंने कहा कि आज हमें ऐसे देश का निर्माण करना है जिसकी स्वामी-दयानन्द सरस्वती ने परिकल्पना की थी। श्री जाखड़ ने कहा कि वैदिक धर्म में जो कुछ लिखा है वह अटूट सत्य है क्योंकि यह वेद उस समय लिखे गये जब धरती पर संस्कृति नाम की कोई चीज नहीं थी। आर्य समाज के सेवकों ने देश व समाज को सुधारने का बीड़ा उठाया लेकिन कैसी विडम्बना है कि आज भी लोग छुआछूत और ऊँचनीच के भेदभाव को प्रोत्साहन दे रहे हैं। राजनीतिक चर्चा करते हुये श्री जाखड़ ने कहा कि राजनीति मे आज बन्दर वाली उछल-कूद मची हुई है और निम्न स्तर के नेता सिर्फ स्वार्थ और कुर्सी के लिये अपना दीन ईमान बेच रहे हैं। उन्होंने आह्वान किया कि जनता को बेईमान राजनेता और अफसरों की छटनी करनी होगी।

समारोह की अध्यक्षता करते हुये स्वामी आनन्द बोध-सरस्वती ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। समारोह के स्वागताध्यक्ष छोटू सिंह एडवोकेट ने सभी का स्वागत किया। समारोह के मुख्य अतिथि इंका कमेटी के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष सीताराम केसरी ने अंधविश्वासों को खत्म करने पर जोर दिया।

-जन सत्ता से साभार।

मकर सौर संक्रान्ति- एक प्रकाश एवं उत्कर्ष का पर्व

-श्री पं० इन्द्रराज प्रधान,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ।

{ सृष्टि के आदिकाल से ही अन्धकार और प्रकाश का द्वन्द अनवरत चला आ रहा है। मूर्तरूप मे इसे हम दिवस एवं रात्रि के रूप में, विचारों के क्षेत्र में तमोगुणी एवं सत्वगुणी वृत्तियों के रूप में और सौरमण्डल में उत्तरायण एवं दक्षिणायन के रूप में, सदा प्रत्यक्ष करते आ रहे हैं। प्रार्थना हमें उत्+तर+अयन पर चलने के लिए है। यही जीवन का लक्ष्य भी है। मकरसौर संक्रान्ति पर्व को प्रकाश एवं उत्कर्ष के रूप में प्रस्तुत करने वाले हमारी सभा के माननीय प्रधान जी, के विचारों को पढ़िए और मनन कीजिए ----- सम्पादक }

यह पर्व सारे भारत वर्ष में बड़े उत्साह से मनाया जाता है। यह प्रकाश का पर्व है। भूगोल में दक्षिणायन और उत्तरायण में सूर्य के दो मार्ग माने जाते हैं। दक्षिणायन में अन्धकार अधिक और प्रकाश कम होता है और उत्तरायण में प्रकाश अधिक और अन्धकार कम होता है। इसी प्रकार जीवन का भी वृत्त चलता है। इसमें भी दक्षिणायन और उत्तरायण है। जब व्यक्ति तमोगुण में विचरण करता है वह दक्षिणायन है तथा जब वह सत्वगुण में विचरण करता है वह उत्तरायण है। अन्धकार में भटकना दक्षिणायन और प्रकाश की ओर अग्रसर होना उत्तरायण है। वह उत्तरायण मकर सौर संक्रान्ति से प्रारम्भ होता है। बाहर और अन्दर का परस्पर बहुत सम्बन्ध है। जब बाहर प्रकाश बढ़ता है तो अन्दर भी प्रकाश बढ़ता है। बाहर का वातावरण अन्दर सहयोग करता है। बाहर के क्रियाकलाप अन्दर को प्रभावित करते हैं।

अतः मकर सौर संक्रान्ति प्रकाश का पर्व है। हम सब आर्यजनों में सात्विकता प्रेम, विद्या, विज्ञान और अध्यात्म का संवर्धन हो यह ही इस पर्व की भावना और उत्प्रेरणा है। हम ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, हिंसा, विघटन आदि दोषों से बचें यह इस पर्व का उद्बोधन है।

सम्भवतः इसी उद्बोधन को सामने रखते हुए भीष्म पितामह ने कहा था कि मैं अपना शरीर भी उत्तरायण में छोड़ूँगा दक्षिणायन में नहीं। इस बात को गीता के आठवें अध्याय में भगवान् श्री कृष्ण जी बड़े सरल शब्दों में समझाते हैं। प्रसंग है कि वह कौन सा काल अर्थात् अवसर हो जिसे निरन्तर साधना द्वारा उत्पन्न किया जाय। तथा जब मृत्यु आवे तो मनुष्य का कल्याण हो :-

यत्रकाले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः ।
प्रयातायान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ ।।8/23।।

इसकी व्याख्या करते हुए स्वामी समर्पणानन्द जी महाराज ने लिखा है कि **श्री कृष्ण अर्जुन** को उपदेश देते हुए कहते हैं- "हे भरतर्षभ । अब मैं तुझे वह अवसर बताऊँगा जिस अवसर पर इस संसार से प्रयाण करने से योगी लोग अनावृत्ति अर्थात् कर्तव्यापालन से न हटने वाले मार्ग को जाते हैं। और जिस अवसर पर मृत्यु होने से वे आवृत्ति मार्ग पर जाते हैं।"

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।
यत्र प्रयाता गच्छन्ति, ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ।।24।।

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।
तत्रचान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते ।।25।।

शुक्लकृष्णेगतीह्येते जगतः शाश्वते मते ।
एकया यात्यनावृत्तिम न्ययावर्तते पुनः ।।26।।

नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यते कश्चन ।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन ।।27।।

चौबीसवें श्लोक का भावार्थ-जिस प्रकार सृष्टि तथा प्रलय को ब्रह्म दिन तथा ब्रह्म रात्रि का नाम दिया है इसी प्रकार मनुष्य जीवन को एक वर्ष मान लें तो यौवन तक उसका शुक्ल पक्ष है तथा वृद्धावस्था के आरम्भ से रात्रि है तथा मृत्यु अमावस है। इसी प्रकार जब उसके हृदय में प्रभु का प्रेम तथा ज्ञान का प्रकाश हो, वीर्य की ज्ञानाग्नि में आहुति होती हो, वह दिन है तथा जब उसकी कामेच्छा अथवा शयनेच्छा जागती हो, वह रात्रि है। जीवन भर जितना समय उसने उन्नति की ओर जागने में लगाया हो वह उसका उत+तर+अयन है तथा जब वह नानाविध भोगादि समृद्धि की ओर जाता हो वह सकाम जीवन का काल दक्षिणायन है। हो सकता है बहुत से मनुष्यों में उत्तरायण कभी आता ही न हो, परन्तु ये दो परिभाषाएं हैं। इन्हें समझने पर ही श्लोक समझ में आयेगा। अग्नि की ज्वाला सदा ऊपर को उठती है। इसी प्रकार ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व, वैश्यत्व अथवा अन्य भी कोई लोक कल्याणकारी व्रत मनुष्य ने अपने जीवन में लिया है, वह उसे परमात्मा से मिलाता है तथा उसके वीर्य की रक्षा करता है इस प्रकार वीर्य {स्थूल शरीर का सूर्य}, ज्ञान {सूक्ष्म शरीर का सूर्य} तथा परमात्मा {सारे ब्रह्माण्ड का सूर्य} इन तीनों की तेजाने वाली अग्नि जब किसी के हृदय में दहक रही हो, वह अग्नि ज्योति का काल है। उसके अन्दर जब ज्ञान का प्रकाश हो वह दिन का समय है। युवावस्था वाली स्वास्थ्य सम्पत्ति हो {चाहे आयु कुछ भी हो} वह शुक्ल पक्ष है। मन में ऊँचे से ऊँचा और अधिक ऊँचा उठने का दृढ़ संकल्प हो वह उत्तरायण काल है। इस काल में दूसरी ओर धुँआ यद्यपि आग की गर्मी तथा वायु के वेग से ऊपर उठता है तथापि शनैः शनैः नीचे आकर किसी वस्तु पर जम जाता है। इस प्रकार आलस्यमयी तमो मृत्यु को प्राप्त हुए ब्रह्मवित् जन ब्रह्म के पास जाते हैं। आराम पसन्द मनोवृत्ति जो धक्का देने से बड़ी कठिनता से ऊपर उठे, वह धूम है। ऐसी धूमिल ज्योति हो, अज्ञान की रात्रि हो, वृद्धावस्था की चेष्टा हीनता हो {चाहे आयु यौवन की ही हो} अर्थात् कृष्ण पक्ष हो तथा नानाकाम भोग रूप समृद्धि की अभिलाषा बनी हो वह दक्षिणायन है। उसके लिए पच्चीसवें श्लोक में कहा है।

पच्चीसवें श्लोक का भावार्थ-

धूमिल ज्योति हो, रात्रि की बेला हो अर्थात् तमोगुण का प्राबल्य हो, कृष्ण पक्ष अर्थात् मन्द स्वास्थ्य का बुढ़ापा हो तो सूर्य ज्योति नहीं, किन्तु चन्द्र ज्योति प्राप्त हुई। उनकी प्रभुभक्ति चन्द्रमा के समान कीर्ति धन आदि अथवा सन्तान की कामना से प्रकाशित होनी है। इसलिए इस दक्षिणायन काल में मृत्यु को प्राप्त योगी फिर कर्तव्य पालन से विमुख होकर बारम्बार फिर-फिर साधना करने के लिए विवश होता है । {पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशो अपि सः गीता 6/44} {यह आवृत्ति मार्ग है।

छब्बीसवें श्लोक का भावार्थः- यह जगत गतिशील होने के कारण जगत् कहलाता है। इसकी निरन्तर वर्तमान शुक्ल तथा कृष्ण ये दो गतियाँ हैं। एक से अर्थात् शुक्ल गति से अनावृत्ति {कर्तव्यपालन से न हटना} मार्ग को जाता है। एक से बारम्बार लौट पड़ता है।

सत्ताईसवें श्लोक का भावार्थ - हे अर्जुन । इन दो मार्गों को जानता हुआ योगी कभी मूढ़ नहीं होता। उसकी निकृष्टतम अवस्था भी धूम की है। अग्नि के धक्के से ऊपर तो उठता है, गीली लकड़ी तो जलने का नाम नहीं लेती और धूम उत्पन्न किये जाती है। इसलिए तू सब कालों में योग युक्त होकर रह। कभी तो दक्षिणायन से उत्तरायण में, रात्रि से दिन में, कृष्ण पक्ष से शुक्ल पक्ष में आ ही जायेगा। इस समय तो तेरे सामने सबसे बड़ा योग अन्याय का नाश है, वह तो पूरा कर।

गीता के इस प्रसंग से उत्तरायण और दक्षिणायन पक्ष स्पष्ट हो जाते हैं। हम सब के जीवन में मकर सौर संक्रान्ति से प्रकाश, उत्कर्ष, संयम, ऐश्वर्य, समृद्धि सत्य अहिंसा आदि सात्विक गुण आवें यही परमपिता से प्रार्थना है ।

-x-x-x-x-x-x-x-x-

संस्कारों का महत्व और नामकरण संस्कारण

(ले0 रामस्वरूप शास्त्री,
मन्त्री, आर्यसमाज बीसलपुर)

संस्कार शब्द संस्कृत भाषा के सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से बना है। इसका अर्थ है अच्छा बनाना शुद्ध करना। मनुष्य के बाह्य या आभ्यान्तर व्यापार का उसके मन पर जो प्रभाव पड़ता है उसको भी संस्कार कहते हैं। जैसे मोम के ऊपर किसी लकड़ी या कील से चिन्ह बन जाते हैं, यह चिन्ह ही संस्कार है। जिस समय से बच्चे का शरीर बनना आरम्भ होता है, उसी समय से बच्चे के मन पर संस्कार पड़ने आरम्भ हो जाते हैं। यह बच्चे के भावी निर्माण तथा विकास में सहायता देते हैं।

कुसंस्कार से बुरा मन व शरीर बनता है, अच्छे से अच्छा। इसे एक उदाहरण द्वारा समझ सकते हैं। एक मनुष्य प्रथम बार शराब की दूकान पर जाता है यह पहला कुसंस्कार है। दो-चार बार जाने पर उसके मन पर गहरे चिन्ह होते जाते हैं। पहले दूकान पर जाने पर जो झिझक थी, वह धीरे-धीरे दूर होती जाती है और इसके पश्चात् कई शराबी धीरे-धीरे मित्र बन जाते हैं। उनसे मित्रता होते ही शराब से सम्बन्ध रखने वाले दुर्गण भी आते जाते हैं। इस प्रकार वह अवगुणों की श्रखला में जकड़ता जाता है जिससे छूटना उसके लिये अधिक कठिन हो जाता है, दूसरा पुरुष प्रथम बार साधु महात्मा के दर्शन प्रवचन में जाता है, उस पर प्रवचन का नाम मात्र का प्रभाव होता है किन्तु निरन्तर जाने से संस्कार परिपक्व होते जाते हैं। जिस प्रकार दुष्ट पुरुष को कुछ दिनों पश्चात् दुष्टता छोड़ना कठिन हो जाता है, उसी प्रकार श्रेष्ठ पुरुष को अपनी श्रेष्ठता छोड़ना भी कठिन होता है। जिस पुरुष ने कभी किसी को नहीं सताया, जो दूसरों की भलाई ही करता रहा उसके लिये किसी को सताना असम्भव सी बात हो जाती है। परन्तु डाकुओं को किसी की जान ले लेने में भी कोई सकोच नहीं होता, यह सब सस्कारों की महिमा है।

संस्कार बनाना मनुष्य के हाथ में है, परन्तु संस्कारों की प्रबलता वश मनुष्य संस्कारों के हाथ का खिलौना बन जाता है। अतः हम सब को चाहिए कि हम अच्छे सस्कारों के लिए सदैव प्रयत्नशील रहें। हमारे ऋषियों ने 16 सस्कारों की व्यवस्था की। महर्षि अपने ग्रन्थ संस्कार विधि में लिखते हैं:-

गर्भाधा मृत्यु पर्य्यन्ताः संस्काराः षोडशैवहि।
वक्ष्यन्ते तें नमस्कृत्यानन्त विधं परेश्वरम्।।

यह 16 संस्कार प्रतिदिन नहीं होते किन्तु विशेष समयों पर मनुष्य को चेतावनी दिया करते हैं। मनुष्य जीवन सीधी सड़क के समान नहीं, जिस पर वह आंख बन्द करके चल सके। यह कई स्थानों पर मुड़ती चक्कर काटती जाती हैं, अतः प्रत्येक मोड़ पर जहां से अनेक पगडंडियां इधर-उधर जाती हैं जो भूले-भटके लोगों के पद चिन्ह मात्र हैं। संस्कार उन मोड़ों पर प्रकाश स्तम्भ की भांति है जिनके प्रकाश में हम अपना सही मार्ग चुन सकें।

वैसे तो सभी संस्कार आवश्यक और उपयोगी हैं, किन्तु किसी-किसी परिवार में ही उनका दर्शन होता है। दो संस्कार नामकरण तथा विवाह प्रत्येक परिवार में होते हैं। अतः प्रस्तुत लेख में हम नामकरण संस्कार की उपयोगिता पर चर्चा करेंगे, आगामी लेख में विवाह संस्कार पर ।

नामकरण संस्कार कब किया जाय? इस पर विचार करते हुए महर्षि लिखते हैं कि :- "दशम्याभत्याप्य पिता नामकरोति" जिस दिन जन्म हुआ हो उस दिन से लेकर 10 दिन छोड़ 11 ग्यारहवें, वा 101 अथवा दूसरे वर्ष के आरम्भ में जिस दिन जन्म हुआ हो नामधरें। नामकरण की यह तीन अवधियां विकल्प युक्त हैं। कारण- जो स्त्रियां दशवे दिन स्नान कर इस संस्कार में सम्मिलित हो सकती हैं, उनकी सुविधा का ध्यान करके ग्यारहवां दिन नियन करना ठीक प्रतीत होता है।

कई स्त्रियां ऐसी भी होती हैं, या हो सकती हैं जो दो-तीन माह तक रोगिणी रहती हैं उनकी सुविधा का विचार करके 101 दिन की अवधि रखना न्यायोचित है। तीसराविकल्प इसलिये किया गया ठीक प्रतीत होता है कि कभी-कभी बालक का पिता या विशेष सम्बन्धी, परदेश में होते हैं, अथवा कोई बिघ्न आ जाता है, ऐसी दशा में दूसरे वर्ष के प्रारम्भ में करने का प्रविधान उचित है।

नामकरण सस्कार में तिथि व नक्षत्र और उनके देवता के नाम से जो आहुतियां दी जाती हैं, जिसका विधान गोभिल गृध0 2/8/12 में है। इन आहुतियों का प्रयोजन यह है कि सभा मण्डप में बैठे सभी व्यक्ति तिथि नक्षत्र और उनके देवता को सुनकर जन्म की तिथि और नक्षत्र को जान सकेंगे। इस प्रकार चार बार मन्त्र के उच्चारण से तिथि स्मृति में रह जायेगी, और नाक्षत्रिक नाम रखने की यदि आवश्यकता है तो उसकी भी पूर्ति हो जायेगी जैसा कि अष्टाध्यायी अ0 4/3/34-37 में वर्णित है। इससे आगे का कृत्य नासिकाद्वार से बाहर निकलते वायु का स्पर्श निम्न मन्त्रों द्वारा किया जाता है:-

कोऽसि कतमोऽसि कस्यासि को नामासि।
यस्य ते नामा मन्महि यं त्वा सोमेनाति तृपाम्।।

इस वायु के स्पर्श से यह प्रतीत होता है, कि स्पर्श करने से बच्चा स्पर्श करन वाले की ओर देखने लगे, अथवा गुदगुदी होने से हँसने मुस्कराने लगे। हम देखते हैं नित्य प्रति मातायें बालकों को हँसाने के लिए उनके नाक और होठ पर प्रेम से उँगली लगाती हैं और बच्चा हँस पड़ता है। फिर जो शब्द मातायें कहती हैं वे सुनते और आनन्द दर्शाते हैं।

प्राचीन आर्यलोग नाम रखने में तीन बातों को ध्यान रखना आवश्यक समझते थे। (1) उच्चारण में सरलता व सार्थकता (2) नाम के आदि, मध्य और अन्त में आने वाले वर्णों का चयन (3) पुरुष स्त्री के नाम में युग्म अयुग्म संख्या का भेद" अयुग्म अक्षरों का उच्चारण लटकती सी ध्वनि श्रवण कराता है, यह ध्वनि निस्सन्देह कोमल ध्वनि है, और यह कोमलता ही स्त्रीपन का बोधक है। नामोच्चारण में सरलता व सार्थकता होने से नाम सर्वदा उन्नति के लिये प्रोत्साहन देता रहता है। खेद का विषय है कि हम इस महत्व को भूलते जाते हैं। अन्य देश वाले सद्गुणों का पाठ तब पढ़ाते हैं जब बालक पाठशाला में पढ़ने जाता है, अथवा माता पिता से बात-चीत करने लगता है। हमारे ऋषिग्यारहवें दिन से ही सार्थक नामों के द्वारा बच्चे की मानसिक शक्ति जाग्रत करते रहते थे, फलस्वरूप देश सदाचारी, व्रती, तपस्वी लोगों से भरपूर था, वह नाम की लाज के लिये जीवन तक अर्पण कर देते थे।

अन्त में जाते समय लोग इन शब्दों के द्वारा बालक को आर्शीवाद दें। हे बालक! त्वामायुष्मान् वर्चस्वी तेजस्वी श्रीमान् भूयाः" इस शब्दावली में दीर्घायु, कीर्ति, तेज तथा धन सम्पत्ति वाला होने का आर्शीवाद दिया गया है। पाश्चात्य देशों में शिक्षक बच्चों के मन को उत्तेजित करना अपना कर्तव्य समझते हैं। आशीर्वाद का प्रयोजन भी उत्तम शैली में बच्चे के मन में यह संस्कार बीजवत् जमा देने का है। यही नामकरण की वैज्ञानिकता तथा रहस्य है। आइये हम सब अपने संस्कारों को सुधार लें, ताकि हमारा समाज पूर्ववत् महिमा मण्डित हो सके।

अन्त्येष्टि संस्कार

आर्य उप प्रतिनिधि सभा पीलीभीत के प्रधान एव आर्य समाज बिलसंडा के प्रधान श्री वेदमुनि वानप्रस्थी जी (पूर्वनाम श्री मनमोहन-सहाय सक्सेना) की मृत्यु दिनाक- 16-12-88 को हो गई, जिनका अन्त्येष्टि सस्कार पूर्ण वैदिक विधि से आचार्य कृष्ण कुमार-मिश्र द्वारा सम्पन्न कराया गया। आर्य समाज बिलसंडा ने शोक प्रस्ताव पारित कर उनकी आत्मा के लिए परमात्मा से शान्ति के लिए प्रार्थना की ।

मन्त्री,
आर्य समाज, बिलसंडा (पीलीभीत)

वेद ही शिक्षा नीति का आधार हो

-श्री क० च० कुलेश, जोधपुर

क्या कहें अहबाब क्या कारेनुमायाँ कर गये,
बी०ए० हुये, नौकर हुये, पिन्शन मिली औ मर गये।

हमारी शिक्षा प्रणाली पर महान व्यंगकार अकबर इलाहाबादी का उक्त शेर सोलहों आना सही बैठता है, बल्कि इससे अच्छी टीका कहीं देखने में नहीं आई। अकबर इलाहाबादी का यह शेर आज से कोई पचास साल पहले का लिखा हुआ है। गंभीर से गंभीर तत्व की बात अकबर ने जितने सरल रूप में कही है, आश्चर्यजनक है। अकबर का इशारा साफ है, वे कहना चाहते हैं शिक्षा को पेट से बाँध दिया गया है, उसका उद्देश्य केवल खाना-कमाना और मर जाना रह गया है।

देश के स्वाधीन होने के बाद से अब तक जितने भी राष्ट्रपति और प्रधानमन्त्री हुए हैं शिक्षा-प्रणाली की आलोचना करते रहे हैं, परन्तु परिणाम वही ढाक के तीन पात। बहु-उद्देशीय शिक्षा प्रणाली दस-जमा-दो इत्यादि प्रयोग भी किए जा चुके हैं। उनकी परिणति जो होनी थी वही हुई। शिक्षा को लेकर इन दिनों जो नवीनतम विचार चल रहा है, वह रोजगार मूलक शिक्षा पर आधारित है।

हम वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए लार्ड मैकाले को कोसते हुए अघाते नहीं है परन्तु पिछले 38 वर्षों में हमने क्या किया, इसकी जवाबदारी उठाने को कोई तैयार नहीं है। मैकाले को भी सिर्फ इसलिए दोष देते हैं कि हमें कोई जवाबदारी न उठानी पड़े। वरना मैकाले को दोष देना कोई माने नहीं रखता। मैकाले ने वही शिक्षा-प्रणाली हमारे देश में लागू की जो उनके देश ब्रिटेन में उस समय थी। अन्तर केवल राष्ट्रीय परिस्थितियों का और आर्थिक उतार-चढ़ाव का ही है। अलबत्ता भाषा उसकी अंग्रेजी है। क्या भाषा के लिए भी मैकाले को दोष देना होगा? यह तो ऐसी चीज है कि बदली जा सकती है। हां, देशवासी ही अंग्रेजी न छोड़ना चाहें या शासकों में ही संकल्प न हो तो फिर मैकाले को कोसना ही एक मात्र उपाय है। खिसियानी-बिल्ली खम्भा ही नोचती है।

हम तो अभी तक भी तय नहीं कर पाये कि शिक्षा का उद्देश्य क्या है? क्या शिक्षा का प्रयोजन मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करना है? क्या शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की अभिव्यक्ति को बल देना है? क्या शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य का संस्कार करना है? क्या इसका अभिप्राय पेट भरना है? जब कभी शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन का विचार नौकरशाह करने लगते हैं और देश का दुर्भाग्य है कि यह काम नौकरशाही से ही चलता है, कभी यह तय नहीं किया जाता कि शिक्षा उद्देश्य क्या है? जब कुछ नहीं सूझता या कुछ नहीं सोचा जाता है तो देश में चारों ओर पनप रही बेकार शिक्षितों की भीड़ कचोटने लगती है और शिक्षा को रोजगार मूलक बनाने का "विचार" चल पड़ा है। विचार की परिभाषा बदल जाती है।

शिक्षा का उद्देश्य क्या है ?

प्रश्न यह है कि क्या शिक्षा का उद्देश्य रोजगार देना है? यदि ऐसा ही है तो फिर शिक्षा की आवश्यकता क्या रह जाती है? रोजगार तो शिक्षा विहीन लोग भी करते हैं और अच्छा करते हैं। दूसरा प्रश्न है कि रोजगार का मतलब नौकरी ही क्यों? यह सच है कि जीविका उपलब्ध होना आवश्यक है। जीविका का प्रबन्ध हुए बिना सभी बड़ी-बड़ी बातें फीकी लगती हैं, सुहाती नहीं। फिर प्रश्न उठता है कि जीविका का मापदण्ड क्या हो? क्या वह रोटी कपड़ा और मकान तक सीमित है? एक प्रश्न यह भी कि रोटी, कपड़ा और मकान का ही यदि प्रश्न है तो वह केवल शिक्षितों के ही सामने नहीं है। अशिक्षित लोग भी रोटी, कपड़ा और मकान के अधिकारी हैं। कुल मिलाकर देखें तो यह मुद्दा आर्थिक है, शैक्षणिक कदापि नहीं है। भला इसी में है कि शिक्षा नीति को पेट से बाहर निकाला जाए और अर्थनीति को पेट से जोड़ दिया जाए। शिक्षा नीति को लेकर अब तक जो भी भुलभुलैया बनी हुई है, उसका समाधान तब तक नहीं होगा जब तक कि उसे पेट से बाधे रखेंगे। एक पीढ़ी तक एक युवक को शिक्षा देने की व्यवस्था सरकार करे और उसके बाद उसका पेट भरने का जुगाड़ भी सरकार करे, अर्थात् नौकरी दे, तो यह कुचक्र कभी बन्द हो नहीं होगा।

अभी यही तो हो रहा है। हाईस्कूल तक यदि किसी किसान के लड़के ने पढ़ाई कर ली तो हल को हाथ लगाना छोड़ दिया, खाती का लड़का लकड़ी की भूल गया और लुहार के लड़के ने लोहे से मुँह फेर लिया। उसको नौकरी चाहिये। नौकरी मिल भी गई तो वह कैसी होगी और उसकी जिन्दगी की जो तस्वीर बनेगी वह कैसी होगी, कहने की आवश्यकता नहीं। हाईस्कूल पढ़ा लिखा नौकर क्या अपने परिवार का भरण पोषण कर सकेगा? अलबत्ता वह अपना पारिवारिक धन्धा छोड़ बैठेगा, हो सकता है घर भी छोड़ दे और शहरों में जाकर गन्दी बस्तियों की आबादी बढ़ाए। यही तो हो रहा है प्रतिदिन। कोई भी रोजगारमूलक शिक्षा देश को इस दुर्गति से छुटकारा नहीं दिला सकती।

अब फिर मैं मैकाले पर विचार करना चाहूँगा। हमारे यहाँ जो शिक्षा प्रणाली मैकाले ने प्रारम्भ की मैं उसमें छल नहीं देखता अपितु अज्ञान का पुट देखता हूँ। इस शिक्षा पद्धति में आमूलचूल रिक्तता है। अतः उसे प्राप्त करके जो स्नातक तैयार होता है वह भी अपने आप को रिक्त अनुभव करता है। उसके व्यक्तित्व में जो कुछ ठोस या रचनात्मक होता है वह घरेलू संस्कारों या भारत के समष्टि जीवन का प्रभाव होता है। हमारे शिक्षा क्रम में व्यक्तित्व निर्माण के गुणों का नितान्त अभाव है जिन तत्वों से व्यक्तित्व की नींव मजबूत होती है उनका शिक्षा पद्धति में समावेश नहीं है।

भाषा का सवाल

शिक्षा पद्धति का एक प्रश्न भाषा है। इस देश में संस्कृत जैसी देववाणी और देवनागरी जैसी वैज्ञानिक लिपि होते हुए भी हम उनका समुचित ज्ञान अपने बालक को नहीं करवाते। हम भाषा पढ़ाते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि वर्ण क्या है, कैसे उत्पन्न होते हैं, शब्द क्या है उसकी शक्ति क्या है, उसकी रचना कैसे होती है। उसका अर्थ किस प्रकार किया जाता है। देवनागरी लिपि पढ़ने-लिखने में सरलतम है और संस्कृत (भाषा) अभिव्यक्ति के लिए सरलतम माध्यम है। इस भाषा में नए-नए शब्दों की रचना का भी अजस्र स्रोत है और वह ज्ञान कोष भी विद्यमान है जो मानव सृष्टि का आदि ज्ञान है। हम बार-बार विज्ञान मूलक दृष्टिकोण की बात करते हैं परन्तु शिक्षा पद्धति से उन सब वैज्ञानिक तत्वों को बहिष्कृत कर रखा है जिनकी सहायता से हमारी शिक्षा ही वैज्ञानिक बन सकती है। भाषा के अतिरिक्त शिक्षा का दूसरा पक्ष है आचार एवं विषय वस्तु। इस माने में हमारी शिक्षा पद्धति पूर्णतः निस्सार है। बालक को हम आचार शास्त्र या नीति शास्त्र से सर्वथा विलग रखते हैं। विषय वस्तु के नाम पर हम प्रारम्भ से ही बालक को पुस्तकों के भार से लाद देते हैं। जिससे कोमल अन्तरंग वाला बालक कुंठित प्रायः हो जाता है। हम यह भूल जाते हैं कि बालक को शिक्षा देने की श्रेष्ठतम विधि लालित्यपूर्ण होती है। ललितभाव से शिक्षा का श्रेष्ठतम माध्यम हमारे देश में पुराण, पंचतंत्र, हितोपदेशादि हो सकते हैं और इसकी भी पालना श्रुति के माध्यम से हो। मानव का आदि ज्ञान ही श्रुति के रूप में प्रकट हुआ है और व्यक्ति का आदि ज्ञान श्रुति से क्यों नहीं उपार्जित हो, जिसे प्राप्त करके बालक उत्फुल्ल हो। वही श्रेष्ठतम शिक्षा तथा कहानी से बढ़कर कोई चीज नहीं है जो बालक को उत्फुल्ल कर सके। यह कार्य उतना ही रुचिकर है जितना कि खेलकूद।

श्रुति के माध्यम से दस वर्ष तक की आयु के बालक का सम्पूर्ण पुराणों का ज्ञान हो सकता है, और तीन या चार भाषाएं सिखाई जो सकती हैं। पुराणों के सहारे इतिहास, भूगोल, साहित्य, नीति इत्यादि विषयों के समझने की क्षमता भी बालक में उत्पन्न हो जाएगी। आज तो हमारे पाठ्यक्रम का हाल यह है कि शहरी स्कूलों के बच्चे "ट्विंकल-ट्विंकल लिटिल स्टार" जैसी दर्जनों अंग्रेजी कविताएं रटे हुए होते हैं। परन्तु किसी बालक या शिक्षक को देवनागरी के आठ अक्षरों वाला गायत्री मन्त्र नहीं आता। जिसके उच्चारण से एक सांस में विश्व ब्रह्माण्ड

के सातो भुवनो के नाम याद हो जाते है। इसी दौरान उसे तीन या चार भाषाएं भी पढ़ाई जा सकती है और साधारण गणित भी। भाषा शिक्षा को हम तीन भागों में बांट सकते हैं: {1} मातृ भाषा, शास्त्र भाषा और राष्ट्र भाषा। मातृभाषा हर बालक को माँ के दूध के साथ ही मिलती है। शास्त्र भाषा के रूप में संस्कृत पढ़ाई जाए और राष्ट्र भाषा हिन्दी है ही। जो लोग हिन्दी को राष्ट्रभाषा मानने को तैयार नहीं हैं उनके भाग्य पर दया करना ही उचित है। वे चाहें तो "हिब्रु" भी पढ़ सकते हैं ।

राष्ट्रभाषा का सवाल

अंग्रेजी के पक्ष में जो लोग यह तर्क देते हैं कि अंग्रेजी मे विज्ञान विषय की पुस्तकें हैं और वह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है अतः उसका देश में प्रचलित रहना अनिवार्य है। जहां तक भाषा सीखने का प्रश्न है कोई भी भाषा हो, उसे सीखना एक श्रेष्ठ कार्य है। परन्तु यह कहना कि अंग्रेजी विज्ञान का माध्यम है, संसार की अन्य भाषाओं का अपमान है। यदि अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के नाम पर ही अंग्रेजी का व्यवहार अनिवार्य माना जाता होता तो संयुक्त राष्ट्र संघ से बड़ा अन्तर्राष्ट्रीय मंच कहाँ है। यदि यह कहा जाता कि अंग्रेजी व्यवसाय की भाषा है तो भी बात समझ में आ जाती। हमारा व्यवसायी वर्ग एक सीमा तक अंग्रेजी में कारोबार करता है। व्यवसाय में शासनतन्त्र इत्यादि को भी शामिल किया जा सकता है। यह सब व्यवसाय के ही रूप में वर्णित है। व्यवसाय का स्थान भी कालान्तर में स्वदेशी भाषाएं ले सकती हैं ।

अब मैं विज्ञान की बात पर फिर आना चाहूँगा। जो लोग अंग्रेजी को विज्ञान का माध्यम मानते हैं उन्हें अपना भ्रम शीघ्राति-शीघ्र दूर करवा देना चाहिए। अंग्रेजी ही नहीं अपितु पश्चिम में जिस किसी भाषा में भी भौतिक विज्ञान का उदय हुआ है उसे विज्ञान कहना विज्ञान शब्द का दुरुपयोग कहा जाएगा। विज्ञान के नाम पर ये लोग अज्ञान का प्रसार कर रहे हैं या व्यवसाय कर रहे हैं। वे वही लोग हैं जो कल तक धरती को सपाट या चपटी मानते रहे हैं। बेचारे गैलीलियो की अटकल {अनुसंधान} लगाते लगाते यह जानकारी हाथ आई कि धरती गोल है। उस बेचारे ने इस बात को प्रकट कर दी। चूंकि बाइबल में धरती को सपाट लिखा था। गैलीलियो को जेल में रहना पड़ा। एक अरसे के बाद इन लोगों ने मानना शुरू किया कि धरती गोल है। अब वे यह मानते हैं कि धरती घूमती है परन्तु सूर्य स्थिर है यह गैलीलियो की देन है। सूर्य के आगे भी कुछ है वे अब कुछ-कुछ मानने लगे हैं। आज भी पश्चिम के वैज्ञानिक मानते हैं कि सूर्य से ताप उत्पन्न होता है। आम धारणा भी यही है परन्तु वैज्ञानिक नहीं है। अनेक भ्रान्तियों को पाले हुए वे लोग विज्ञान के नाम पर प्रयोग पर प्रयोग करते जा रहे हैं। इस दौर में एक ओर व्यवसाय पनप रहा है, दूसरी ओर अनिष्ट अमंगल और विनाशकारी शस्त्र संचय हो रहा है ।

सृष्टि का आदि ज्ञान

इसके विपरीत इस देश में वह ज्ञान विज्ञान विद्यमान है जो सृष्टि का आदि ज्ञान है। यहीं से सम्पूर्ण ज्ञान व विज्ञान का प्रसार हुआ। इसी से देश का दुर्भाग्य और अधःपतन हुआ कि जिस वेद को ज्ञान का उद्गम माना जाता है उसी को भुला दिया गया। हमारी दुर्गति भी इसलिए हुई कि हमने अपने स्वरूप को ही भुला दिया और नाना प्रकार के क्षुद्र मत मतान्तर, पंथ, सम्प्रदाय आदि में ज्ञान को विच्छल कर दिया। शिक्षा से तो उसे समूल विच्छिन्न कर दिया ।

सृष्टि के समग्र विज्ञान की पूँजी एक मात्र वेद है और वह आज भी विद्यमान है। जीव क्या है, जगत जानता है भूत और प्राण क्या है। ऋतु परिवर्तन, प्रकाश अन्धकार, दिशा और काल, जीवन और मृत्यु, वर्ण, अक्षर, क्षर आदि कोई ज्ञान ऐसा नहीं जो वेद में नहीं है। इसीलिए वेद महर्षि को "विदित वेदितव्या" कहा गया है। अर्थात् जानने योग्य जो कुछ है वह जता दिया गया। वेदों ने मानव सृष्टि के आदि में यह भी बताया कि धरती घूमती है और गोल है। और सूर्य भी परिक्रमा करता है स्थिर नहीं है। प्रकृति का कोई अंग और उपकरण स्थिर और अपरिवर्तनीय नहीं है। पश्चिमी वैज्ञानिक यह नहीं जानते थे कि सूर्य या सौर मण्डल के परे भी कुछ है परन्तु हम जानते हैं कि सूर्य भी परमेष्ठि की परिक्रमा करता है। और परमेष्ठि भी स्वयम्भू की परिक्रमा करता है अर्थात् सम्पूर्ण विश्व ब्रह्माण्ड ही गतिशील है इसमें कुछ भी स्थिर या अचल नहीं है ।

हमारा दुर्भाग्य है कि वेद जैसे आदि ज्ञान को श्रेष्ठ को और सम्पूर्ण विज्ञान के आधार को एक रहस्यमय और बुद्धि से बाहर की वस्तु बनाकर हौवा बना दिया है। जो सभी रहस्यों गुत्थियों के खोलने वाला विज्ञान है उसी को हमने अज्ञेय बना दिया। हमारी दुर्गति इसलिए हुई कि हम वेद को भूल गए, हमारा उद्धार वेद विज्ञान से ही होगा। विडम्बना से आज मशीन ही विज्ञान का प्रतीक बनी हुई है। आवश्यकता है इस भ्रांति को दूर करने की। विडम्बना है कि हम वेद को कर्मकाण्ड और रहस्य की वस्तु मानने लग गए। आवश्यकता है इस भ्रांति को तुरन्त मिटाने की ।

हमारी शिक्षा नीति का आधार ही वेद होना चाहिए और यही एक विद्या है जो मानव के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। यही एक विद्या है जिसका किसी धर्म सम्प्रदाय, मत, पंथ, जाति, वर्ण इत्यादि पर कोई आग्रह नहीं, बल्कि इसी से मनुष्य को सही दिशा और ज्ञान प्राप्त हो सकता है । वेद ही वह ज्ञान है जो भूत और प्राण आत्मा और शरीर ब्रह्म और जगत सभी को सत्य मानता है। जगन्मिथ्या वाला घोष वेद नहीं मानता और वेद यह भी नहीं मानता कि आत्मा ही सत्य है शरीर नहीं। भौतिक उन्नति से वेद का कोई विरोध नहीं। सरस्वती और लक्ष्मी के बीच वैर होने की भ्रांति भी वेद नहीं मानता। वेद जीवन का विज्ञान है। और हमारी सम्पूर्ण दिनचर्या का कोई पक्ष या अंश ऐसा नहीं जिसकी जानकारी वेद में नहीं है ।

मै पुनः जोर देकर कहना चाहूँगा कि देश में जो भी शिक्षा प्रणाली चालू की जाए उसका आधार वेद को ही बनाना होगा। इस देश की शिक्षा को मैकाले ने कोई नुकसान नही पहुँचाया बल्कि उन लोगों ने पहुँचाया जिन्होंने वेद को ज्ञान धारा से अलग कर दिया और पारलौकिक रहस्यों की वस्तु बना दिया। यदि दस वर्ष की आयु के बाद सूत्र रूप में वेद की शिक्षा {अन्यान्य विषयों के साथ} हमारे किशोर तरुणों को मिलने लगी तो देश की एक पीढ़ी में ही मनोदशा बदल जाएगी। यह शिक्षा पाकर जो युवक जीवन क्षेत्र में प्रवृत्त होगा वह शंकर और विवेकानन्द ही होगा। रोजगार के लिए तो वह दीनात्मा बनकर किसी के सामने हाथ नहीं पसारेगा ।

वेद एक विद्या है, उत्कृष्ट कोटि का विज्ञान है। ज्ञान और विज्ञान को जिसमें इस प्रकार परिभाषित किया गया है। "एक" ज्ञान ज्ञानम् विविधं ज्ञान विज्ञानम् ।

एक को जानना ज्ञान है और एक को आधार मानकर विविध को जानना ही विज्ञान है। ज्ञान को ही दूसरे शब्दों में ब्रह्म कहा गया है और विज्ञान को ही यज्ञ कहा गया है। ब्रह्म और यज्ञ के बारे में जो धारणाएं हमारे यहां बन गई हैं उन्हीं के कारण वेद के विषय में भी भ्रान्तियां बनी हुई हैं। इसी तरह की भ्रांतियां पुराणों के बारे में बनी हुई हैं परन्तु हमारे पुराण वेद को जानने की ही पूंजी हैं। कपोल कल्पना नहीं। दोनों का समन्वय ही अग जग के मर्म को जानना है। ज्ञान और विज्ञान दोनों का अजस्र स्रोत वेद ही है। इसकी शिक्षा प्राप्त कर लेने पर अन्य सभी विषयों में मनुष्य की गति सहज ही हो जाएगी । आधुनिकतम विज्ञान को भी सही दिशा के लिए वेद की ही शरण में आना होगा ।

वेद प्रचार की धूम

आर्य उप प्रतिनिधि सभा हरदोई के तत्वावधान में तहसील शाहाबाद के अन्तर्गत दिसम्बर- 1988 में सभा प्रचारक श्री ब्रह्मानन्द आर्य, श्री युगुलकिशोर आर्य, श्री सर्वेशचन्द्र जी एवं श्री अवधकिशोर ने ग्राम अमिरता, निजामपुर, अहमदनगर, पाटकुआँ, चठिया धनबार, रऊ में सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार किया। जनता बहुत प्रभावित रही। इसी अवसर पर दो नवीन आर्यसमाजों की स्थापना की तथा 25 व्यक्तियों का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया ।

xxxxxx

शास्त्रार्थ-युग समाप्त कैसे हुआ ?
उसके दुष्परिणाम

शास्त्रार्थ युग कैसे आये?

-आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास,
वेदाचार्य, बरेली

गतांक से आगे

इसके कुछ समय बाद गोहत्यानिरोध सत्याग्रह शुरू हुआ जितने नेता हिन्दी सत्याग्रह में अण्डर ग्राउन्ड थे वे सब ऊपर ग्राउन्ड हो गये, क्योंकि इस गोहत्यानिरोध सत्याग्रह में जो जेल जाते थे उन्हें जेल में एक किलो दूध एक पाव घी और चार किलो फल और बढ़िया खाना खाने को मिलता था, जो जाता था वह मोटा होकर लौटता था, उस समय देश में अकाल पड़ रहा था भुखमरी से तंग आकर चारों ओर ग्रामों के लोग सत्याग्रह के लिये निकल पड़े और माँ-बाप बाल-बच्चों को साथ लेकर दीवानहाल पर पहुँचते थे सत्याग्रह खूब चला परन्तु परिणाम कुछ नहीं निकला, इन सत्याग्रहों ने आर्यसमाज के शास्त्रार्थयुग का नाम निशान भी मेट दिया।

आर्यसमाज में एम0 पी0 युग

उपर्युक्त सत्याग्रहों से कुछ लोग नेता बन गये उन्होंने आवाज बुलन्द की, अगर हम एम0 पी0 बन जायें तो आर्यसमाज की आवाज को संसद में बुलन्द कर-सकेंगे तथा आर्यों का चक्रवर्ती साम्राज्य हो जायेगा, आर्यसमाज के सेठों ने करोड़ों रुपया इनके निर्वाचन पर व्यय कर दिया आर्यसमाज के नाम पर सात व्यक्ति एम0पी0 बने, यह लोग कई बार एम0पी0 बने, आर्यसमाज के वार्षिक उत्सवों पर इन्हें बुलाया जाता था, और देवताओं के समान इनकी पूजा होती थी इनके गले फूलों की मालाओं से भ जाते थे, और जो वहाँ उच्च कोटि के विद्वान् व्याख्यान देने आये हुए होते थे, उनकी ओर कोई आँख उठा कर भी नहीं देखता था, वे विद्वान् अपमानित से होकर बैठे रहते थे, इनके एम0पी0 बनने का कोई परिणाम नहीं निकला न आर्यों का चक्रवर्ती राज्य हुआ न आर्यसमाज की आवाज बुलन्द हुई, इन एम0पी0 लोगों कीकोठियाँ अवश्यमेव बुलन्द हो गयीं, इनकी कोठियों को जाकर देख लो, यह सब सत्याग्रह के बाद और एम0पी0 युग में कोठियाँ बनी हैं और इन सब एम0पी0 महोदयों को पेन्शन के रूप मे 500 रुपये माहवार सरकार देगी जब तक यह जिन्दा हैं, जैसा सब एम0पी0 नेताओं को मिलता है, इस एम0पी0 युग ने आर्यसमाज के शास्त्रार्थ युग को मारा, और अपनी मौत स्वयं मर गया, अब आर्यसमाज के नाम पर कोई व्यक्ति एम0पी0 नहीं बन सकता, आर्यसमाज को इन पर अश्रद्धा हो गई।

शास्त्रार्थ-युग की समाप्ति के दुष्परिणाम

शेर जिस जंगल में दहाड़ता है, वहाँ भेड़ बकरियाँ नहीं चरतीं, इसी प्रकार जब तक हर जगह हर वर्ष शास्त्रार्थ होते रहे उन जलसों पर उन व्यक्तियों के जाने का साहस नहीं होता था जो शास्त्रार्थ नहीं कर सकते थे ।

अब शास्त्रार्थ समाप्त हो जाने पर पाँच भूत (पाँच प्रकार के प्राणी) जलसों पर घूमते नजर आने लगे ।

1- इतवारी उपदेशक -शनिवार, इतवार के अवकाश पर स्कूल व कालिजों के अध्यापक आर्यसमाज के उत्सवों पर जाने लगे, स्कूल कालिज का वेतन तो उनकी आजीविका है, और यह उपजीविका है, अर्थात् ऊपर की आमदनी है। अतः हम इन्हें उपजीविकी उपदेशक कह सकते हैं।

2- नोटबुकी उपदेशक- इधर-उधर से कुछ बातें संगृहीत करके कुछ व्याख्यान रट लिये और जलसों पर कहने लगे, जो लोग कहीं सर्विस करने के योग्य नहीं थे वे लोग सालों साल जलसों पर जा-जा कर रोटी कमाते हैं, इन्हें हम कुक्कुट मिश्र उपदेशक कह सकते हैं। जैसे मुर्गा, गाय, भैंस के समान एक जगह मुँह रखकर नहीं खाता इधर-उधर से चुगता रहता है। इनके बारे में प्राचीन कवि ने इस प्रकार कहा है --

गुरोर्गिरा पंचदिनान्यधीत्य वेदान्तशास्त्राणि दिनत्रयं च।
अमी समाघ्राय च तर्कवादान् समागताः कुक्कुटमिश्र-पादाः।।

अर्थात् 5 दिन मीमांसा पढ़ लिया, तीन दिन वेदान्त पढ़ लिया और न्याय शास्त्र को सूँघ कर यह कुक्कुट मिश्र उपदेशक जी आये हैं ।

3- कुटीचक सन्यासी- सन्यासी दो प्रकार के हैं, एक वे जो उच्चकोटि के विद्वान् हैं, जैसे स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जिनके हम भी चरण छूते हैं। कुछ अपठित सन्यासी हैं, जटा दाढ़ी रखा कर रंगे कपड़े पहन कर देश-विदेश में यज्ञ कराते फिरते हैं, और धन बटोरते हैं, आर्यसमाज में कुछ विद्वान् सन्यासी हैं, जैसे स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, जगदीश्वरानन्द, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, स्वामी-सत्यपति जी आदि आदि ।

4- सद्योवध्वः स्त्री उपदेशिकायें- स्त्रियाँ दो प्रकार की होती हैं, एक ब्रह्मवादिनी जो ब्रह्मचारिणी रह कर वेद और धर्म का कार्य करती हैं, दूसरी स्त्रियाँ सद्यो वध्वः कहाती हैं अर्थात् सद् गृहस्थ महिलायें। इनका भी जन्म शास्त्रार्थयुग में नहीं हुआ था, जिनके पति धन कमाने में असमर्थ होते हैं, वे स्त्रियाँ कुछ व्याख्यान रट कर आर्यसमाज के उत्सवों पर घूम रही हैं, कोई स्त्री न शास्त्रार्थयुग में और न अब ऐसी हुई जो शास्त्रार्थ करने की शक्ति रखती हो, यदि होती तो उसका स्वागत होता, कोई भी सम्भ्रान्त व्यक्ति डॉक्टर, इन्जीनियर, प्रोफेसर, मजिस्ट्रेट, जज स्वयं हजारों रुपये कमाने में समर्थ है, वह अपनी पत्नी को उपदेशिका बना कर समाजों में नहीं घुमायेगा ।

5-नेता लोग- ये भी आर्यसमाज के उत्सवों पर आकर एक घंटा समय ले लेते हैं, परन्तु यह दक्षिणा नहीं लेते, यह उपर्युक्त व्यक्ति शास्त्रार्थयुग में नहीं थे ।

वेदप्रचार पर आर्यसमाजों का व्यय

इस समय लगभग दस हजार आर्यसमाजें देश-विदेश में हैं, इनमें वेदसप्ताह होते हैं, वार्षिक उत्सव मनायें जाते हैं। कभी-कभी कहीं-कहीं यज्ञ भी होते हैं। मैं लगभग दस वर्षों से आर्यसमाजों के उत्सवों पर नहीं पहुँचा क्योंकि अधिकतर विदेशों में रहा ।

अब आँखों के खराब हो जाने के कारण विदेशों में जाना बन्द हो गया इस वर्ष आर्यसमाज प्रतापगढ़ ने विशेष आग्रह करके बुलाया और कहा कि किसी अन्य व्यक्ति को साथ लेकर आजाइये। आर्यसमाज प्रतापगढ़ का मेरे ऊपर एक हजार रुपया व्यय हुआ, अन्य भी 5-6 उपदेशक आये हुऐ थे, मेरा अनुमान है कि उस उत्सव पर 20 हजार रुपया व्यय हुआ होगा। अभी कुछ दिन हुए तिलहर शाहजहाँपुर की शताब्दी मनाई गई उस पर पचास हजार व्यय हुआ, मैं अभी अमेरिका से आया हूँ, अमेरिका और कनाडा में 12 प्रमुख आर्यसमाजें है, मैं जहाँ व्याख्यान देने गया वहाँ प्रत्येक व्याख्यान का चालीस डालर मिलता था, साढ़े बारह रुपये का एक डालर होता है, अर्थात् 500रु0 प्रत्येक व्याख्यान का मिलता है, दिल्ली में साप्ताहिक अधिवेशन में जब कभी मैं गया 50 रुपये मुझको दिया जाता था, और आजकल यह कुटीचक सन्यासी यज्ञ कराते हैं और उसमें पाखण्ड करते हैं, यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञवेदी पर जो हजारों दर्शक होते हैं, उन सबसे यज्ञ की परिक्रमा कराते हैं और एक थाली रखते हैं जिसमें दो चार रुपये डाल रखते हैं, ऐसी स्थिति में दर्शक को भी रुपया डालने का विवश होना पड़ता है। इस सन्यासियों का पं0 भगवद्दत्त जी लाहौर वाले कुटीचक सन्यासी लिखा करते थे, न जाने यह पारिभाषिक शब्द उन्होंने कहाँ से खोजा था।

इससे हम अनुमान लगा सकते हैं कि आर्यसमाजों के इन कार्यक्रमों पर लाखों करोड़ों नहीं वरन् अरबों रुपया व्यय होता है। यह सब धन ऊपर लिखे - इतवारी उपदेशक, नोटबुकी उपदेशक हैं, सद्योवध्वः व कुटीचक सन्यासियों के पेट में जाता है, जो कि इसके लेशमात्र भी अधिकारी नहीं हैं ।

क्रमशः --------

धर्म और सम्प्रदाय

प्रो0 सत्यकाम,
रणवीर रणंजयस्ना0 म0, अमेठी ।

सम्प्रदायों का उद्भव एवं विकास

महाभारत युद्ध को हुए लगभग 5 हजार वर्ष हुए। महाभारत के पूर्व तक सम्पूर्ण विश्व में एक ही धर्म था- वैदिकधर्म या सत्यसनातन धर्म। वेद से प्रादुर्भाव होने के कारण हम उसे वैदिक धर्म कहते है और सदा रहने से इसे सनातन धर्म कहते हैं। वैसे धर्म का नाम धर्म ही है। प्रमाण यह है कि महाभारत से पूर्व विश्व में किसी अन्य सम्प्रदाय का इतिहास नहीं मिलता। केवल वैदिक धर्म का ही प्रचलन था ।

यहाँ धर्म और सम्प्रदाय का मौलिक अन्तर साफ कर लेना चाहिए। धर्म वह है जो प्राणी मात्र को क्या समस्त जड़जंगम को धारण कर रहा है। धारणात् धर्मः- सबको धारण करने से हम उसे धर्म कहते हैं। अतः धर्म मानव मात्र के लिए एक सा होगा। धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्यम्, अक्रोधः (धृतिःक्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय-निग्रहः धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम्।।) ये जो धर्म के दश लक्षण कहे गए हैं-। वे मानव मात्र के लिए समान हैं। चाहे इगलैण्ड की निवासी, चाहे अमेरिका तथा चाहे फ्रास का निवासी हो अथवा रूस और जर्मनी का- कहीं का भी हो, सबको उपर्युक्त बातों की जरूरत है। इन धर्म के लक्षणों का अनुपालन किये बिना मानव समाज मानवीय ढंग से अस्तित्व में नहीं रह सकता। उदाहरणार्थ -- इन धर्म के लक्षणों में एक लक्षण अस्तेय है-- चोरी न करना यदि इसके विपरीत मानव आचरण करे तो - सभी चोरी करें-- तो छीना- झपटी होगी परिणाम स्वरूप शोषण, अन्याय, हत्या अशान्ति आदि का वातावरण सर्वत्र फैल जाये। सकल समाज असुरक्षित हो जाये। अतः चोरी न हो यह सभी चाहेंगे। सूत्र रूप में इसी प्रकार धर्म के अन्य लक्षणों के परिप्रेक्ष्य में उदाहृतरूपेण चिन्तन करना चाहिए। संक्षेप में हम यह कहेंगे कि (क) धर्म मानव मात्र के लिए है- सम्प्रदाय मानव समाज के किसी वर्ग विशेष के लिए है। जैसे-ईसाई-इस्लाम, वैष्णव, शाक्त शैव आदि। (ख) धर्म शाश्वत है- सम्प्रदाय कारण विशेष के लिए है- बौद्ध धर्म भगवान गौतम बुद्ध के पूर्व न था और प्रायः चीन, भारत, नेपाल, जापान आदि देशों में नाम मात्र को रह गया है। इस्लाम मुहम्मद साहब के बाद आया, पहले न था किन्तु धर्म सर्वकारिणक है। वह सदा रहता है और रहेगा। अनादि काल से चल रहा है और चलता रहेगा। (ग) धर्म ईश्वर कृत है- सम्प्रदाय मनुष्य कृत है। बौद्ध धर्म गौतम बुद्ध ने, जैन धर्म को महावीर स्वामी ने, इस्लाम को मुहम्मद साहब ने, ईसामत को ईसामसीह ने।

किन्तु सभी सम्प्रदायों ने अपने मत को धर्म कहकर पुकारा ---

"यही भारी भ्रान्ति है"।

दीर्घ काल तक वेद शास्त्रों का पठन-पाठन और तदनुकूल आचरण अर्थात् आचार-विचार समस्त भूगोल में चलता रहा, धीरे-धीरे आलस्य और प्रमाद ने स्थान ले लिया। स्वाभाविक नियम है- जब कोई चीज पूरी ऊँचाई तक पहुँच जाती है तो कुछ समय तक वह उस ऊँचाई पर स्थिर रहती है- फिर उसका ह्रास होने लगता है। सूर्य प्रातः काल उगता है। शनैः-शनैः ऊपर चढ़कर मध्याह्न में पूरी ऊँचाई पर आकर स्थिर हो जाता है- फिर ढलने लगता है अन्ततोगत्वा अस्ताचल की ओर जाता है। यही बात, धर्म के साथ हुई। चिरकाल तक ऋषियों मुनियों के द्वारा धर्म का प्रचार-प्रसार रहा, बाद में आलस्य के वशीभूत हो लोग धर्म से पराङ्मुख हुए - परिणामस्वरूप स्वार्थ, अहंकार, अज्ञान फैल गया। लोग धर्म से भ्रष्ट हुए। वेद विरुद्ध अपने-अपने मत चलाये ।

ऐतरेय ब्राह्मण में कुछ कथायें हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि आर्य धर्म से और सदाचार से पतित होने वालों को देश से निकाल देते थे। वे सब दण्डकारण्य में भेज दिए जाते थे। कालान्तर में उनकी संख्या अधिक हो गयी और उन्होंने ही द्रविड़ काल पल्लव आदि संस्कृतियाँ प्रचारित एवं प्रसारित की ।

"मुसलमान मत -- 1400 वर्ष पूर्व का ईसाई मत केवल 1984 वर्ष का यहूदी और पारसी मत मात्र 2500 वर्ष का तथा जैन, बौद्धादि धर्म भी इतने समय के ही हैं ।

ईसाई मुसलमानों की साठ-गाँठ

ईसाई और मुसलमानों ने अपने मत को साम्राज्य लिप्सा का साधन बनाया। मुसलमान एक हाथ में कुरान और दूसरे में तलवार लेकर निकले तो ईसाई अपने मिशनरियों को लेकर लालच, लोभ और सेवा शुश्रुषा का आवरण डालकर संसार को छला। मुसलमानों ने पुस्तकालय जलायें। ईसाईयों ने हमारे साहित्य को भ्रष्ट किया - वेदों के उल्टे-सीधे भाष्य करके हमारी शिक्षा पद्धति को बदला। मुसलमानों ने धर्मान्तरण बलात् किया। ईसाइयों ने छल से। उद्देश्य दोनों का एक था। अपना प्रभुत्व, अपना राज्य अरब के लोगों ने तेल के कूपों से अपार धन कमाया और इस धन को इस्लाम के प्रचार के लिए मस्जिदों, मदरसों और मजहबी संस्थाओं के माध्यम से भारत भेजा । उस पैसे का प्रयोग इस्लाम के प्रचार के लिए- अनपढ़- असहाय और उपेक्षितों को धर्मान्तरण करने के लिए किया गया। इसके अनेकानेक ज्वलन्त उदाहरण देखे जा सकते हैं। छुआछूत, ऊँच-नीच की भावना आदि हिन्दुओं की मूल कमजोरी का लाभ उन्हें मिला ।

ईसाइयों ने पिछड़े हुए आदिवासी, वनवासी, गिरिजन, हरिजनों के बीच में स्कूल, अस्पताल, छात्रावास, आदि के माध्यम से घुसे- उन्हें फुसलाया, बहलाया, उनकी बेबसी का लाभ उठाया- शिक्षा सहायता और सेवा के बहाने खरीद लिया, फंस लिया- उन्हे ईसाइयत की शिक्षा देकर राष्ट्र की राष्ट्रिय धारा से अलग किया। जहाँ-जहाँ ईसाइयों की संख्या का राष्ट्र मे आधिक्य है- वहाँ-वहाँ वे भाग भारत से विलग होने की जोड़ आवाज उठाने लगे हैं। नागालेण्ड, मिजोरम, अरुणाचल प्रदेश, इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। अभी कुछ समय पूर्व लगभग 3 वर्ष हुए ईंग्लैण्ड में पादरियों और मुल्लाओं के बीच एक समझौता हुआ और उन्होंने अपनी सुविधानुसार सम्पूर्ण भारत में धर्मान्तरण के कुचक्र को चलाने के लिये क्षेत्र बाँट लिया और तदनुसार कार्य प्रारम्भ कर दिया। लन्दन में मुसलमानों में "इस्लामिक कल्चरल सेन्टर" नामक संस्था की स्थापना की है। इस संस्था को अरब राष्ट्रों से अपार पेट्रोडालर सहायता के रूप में प्राप्त हो रहा है। यही संस्था भारत में धर्मान्तरण की कुत्सित योजना का क्रियान्वयन कर रही है। इस संस्था ने 20 करोड़ निर्बल एवं निर्धन वर्ग के हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की योजना बनायी है। भारत में सरकारी, अर्द्धसरकारी इस्लामिक एवं ईसाई संस्थायें रजिस्टर्ड हैं।

प्रभाव

कश्मीर, नागालेण्ड, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और त्रिपुरा आदि प्रान्तों मे ईसाई, मुसलमान बहुमत की ओर हैं। यही लोग वहाँ राष्ट्र विरोधी शक्तियों को जन्म देकर अखण्ड भारत को खण्ड-खण्ड कर देने में कटिबद्ध हैं। जहाँ-जहाँ इनका बाहुल्य है, वहीं-वहीं दंगे होते हैं। उनकी अराष्ट्रिय गतिविधियों से अहर्निश देश और उसकी गरिमा को खतरा है।

आर्य समाज की भूमिका

उन्नीसवी शताब्दी के एक मात्र सच्चे सुधारक, राष्ट्रभक्त, नैष्ठिक ब्रह्मचारी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज जैसे आन्दोलन के माध्यम से सोये हिन्दु समाज को जगाया और इस संगठन को एक सशक्त प्रहरी के रूप में उपस्थित किया। भारत का ही नहीं अपितु विश्व का प्रत्येक जन नत मस्तक है ऐसे मनीषी पर । शुद्धि आन्दोलन, पाखण्ड खण्डन, स्वभाषा, स्वसंस्कृति एवं स्वधर्म की आदर्श शिक्षा प्रदान कर बिगड़े हुए राष्ट्र को सम्भाला । उन्होंने घोषणा की ----

"जब तक मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या- मतमतान्तर का विरुद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब - मनुष्य और विशेष विद्वज्जन, ईर्ष्या, द्वेष छोड़ सत्यासत्य निर्णय करके सत्य का ग्रहण एवं असत्य का परित्याग करना-कराना चाहें तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है।"

कार्यक्रम

(क) आर्य समाज में जिन्होंने पारिवारिक कर्तव्यों का पूर्ण

पालन कर लिया है वे ऋषि के आप्त मिशन को आगे बढ़ाने के लिये मैदान में आयें। वे लोग जो वानप्रस्थी हैं या सन्यासी बनकर अपनी क्षमतानुसार ग्रामों, विद्यालयों, छात्रावासों, आदिवासियों, गिरिजनों एवं हरिजनों में आत्मीयता के साथ घुसकर धर्म के वास्तविक मर्म को बतावें साथ ही शिक्षा, चिकित्सा एवं सेवा आदि का कार्य करें।

{ख} सम्पन्न आर्य संस्थायें तथा धनी-दानी व्यक्ति अपनी पूरी शक्ति से अर्थात् तन-मन-धन से समाज के कमजोर एवं पिछड़े वर्ग को ऊपर उठाकर गले लगाने में आत्म बलिदान करें। जिससे इन्हें धर्मान्तरण तथा विदेशी षडयन्त्रों का शिकार न बनाया जा सके।

{ग} आर्य समाज एक ऐसा विशिष्ट मंच बनाये जिससे एक मात्र छुआछूत को नष्ट कर गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था के अनुपालन की चर्चा की जाय। इस बीमारी के गये बिना राष्ट्र कदापि निरोगी नहीं हो सकता। यह कार्यक्रम सा0 सत्सगों, वार्षिकोत्सवों मात्र से सम्भव नहीं है। इस कार्यक्रम में वही अगुआ हो सकता जिसे सत्य का बोध हो अथवा परमात्मा की उस पर असीम कृपा।

{घ} इस्लाम का परित्याग कर स्वधर्म में लौटने वाले लोगों को माला पहिनाने मात्र से काम चलने वाला नहीं है। उनकी रोजी, रोटी एवं प्रधानतया बेटी की समस्या का समाधान करने के लिये राष्ट्रव्यापी सुनियोजित कार्यक्रम बनाना है। इसकी उपेक्षा गत शताब्दियों {अजमेर, मथुरा, मेरठ} की भांति नहीं करनी है। स्वधर्म में लौटे अनेकानेक ऐसे महानुभाव हैं जो सेवा {सरकारी} रत हैं"। उनके मूल नाम को बदलाने की विकट समस्या पर विचार कर सरकार से अपील करनी है।

अन्त में परन्तु अल्प नहीं, प्रभु से विनय है कि राष्ट्र फले-फूले, सुख-शान्ति चहुँदिश फैले। आर्य जाति का साम्राज्य हो।

आर्य समाज ब्रह्मपुरी में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दिनांक 25-12-1988 को आर्य समाज ब्रह्मपुरी{मेरठ} में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि, आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन के बारे में प्रकाश डाला और उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करते हुए बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जो एक नास्तिक और चारित्रिक रूप से कमजोर व्यक्ति थे जब स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आए और उनके सत्सगों में भाग लिया तो उनका जीवन पूर्ण रूपेण बदल गया। उन्होंने वर्तमान समय में सत्सग की उपयोगिता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला और अपील की कि हम सब समाज सेवा, धर्म एवं राष्ट्र सेवा में सर्वोत्सर्ग करने के लिए आगे आएं और यही स्वामी श्रद्धानन्द जी को सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।

श्री जयन्त कुमार ने इस अवसर पर कहा कि हमें पलायनवादी न बनकर हर तरह की कठिनाइयों, खतरों का सामना करते हुए वैदिक धर्म और राष्ट्र की अखण्डता की रक्षा करने को कटिबद्ध रहना चाहिये। उन्होंने कहा कि राष्ट्र की अखण्डता और वैदिक धर्म की रक्षा केवल निःस्वार्थ सेवा और बलिदान से ही सम्भव है। अन्त में ब्रह्मपुरी आर्य समाज के मन्त्री श्री सत्यबन्धु जी के आभार प्रदर्शन व शांतिपाठ के साथ सभा का अवसान किया गया।

पं0 इन्द्रराज जी ने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी ने शुद्धि आन्दोलन की शुरूआत की जिससे हजारों हिन्दु जो अब तक केवल हिन्दु धर्म से पलायन कर रहे थे, वापसी प्रारम्भ हो गई। शुद्धि आन्दोलन श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी की एक महान देन है।

-पं0 इन्द्रराज, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0।

गुरुकुल प्रभात आश्रम

टीकरी, भोलाझाल {मेरठ}

का

17वाँ वार्षिकोत्सव

शनिवार, 14 जनवरी 1989

वार्षिकोत्सव में पधारने वाले विद्वान एवं नेता

सर्वश्री स्वामी आनन्दबोध जी, आचार्य विशुद्धानन्द जी, डा0 प्रशान्त जी वेदालंकार, शोभाराम जी प्रेमी, वेदपाल जी, बड़ौत, डा0 निरूपण जी विद्यालंकार, डा0 ओम्शरण जी, हरस्वरूप जी, मनवीर जी, कर्ण सिंह जी।

-:कार्यक्रम:-

पौष शुक्ल 6 स0 2045

शुक्रवार 13 जनवरी 1989

मध्याह्न 12 बजे से -स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान के अन्तर्गत

वेद गोष्ठी

विषय- "ऋग्वेद संहिता में पारिवारिक स्वरूप"

पौष सुदी 7 स0 2045

शनिवार, 14 जनवरी 1989

मकर सौर संक्रान्ति

प्रातः 8 बजे से 10-15तक	-यजुर्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति एवं नव प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार।
10-15 बजे से 10-30	**-भक्ति संगीत**
10-30 बजे से	-बाहर से पधारे विभिन्न विद्वानो के **प्रवचन एवं भजनोपदेश**
12-10 से 2 बजे तक	**भोजन, मध्याह्नोत्तर**
2 से 2-30 तक	**-भक्ति संगीत**
2-30 से 3 बजे तक	-ब्रह्मचारियों का विशेष कार्यक्रम **भाषण** आदि।
3 से 4-30 बजे तक	-बाहर से पधारे विद्वानों के **भाषण।**
4-30 बजे से	**-स्वामी विवेकानन्द जी** का आशीर्वचन मन्त्री द्वारा धन्यवाद तथा शान्ति पाठ।

कृपया पधार कर धर्म लाभ उठावें तथा आश्रम के ब्रह्मचारियों का उत्साह वर्धन करें।

मनोहर लाल सर्राफ	**स्वामी विवेकानन्द**	**इन्द्रराज**
प्रधान	आचार्य	मन्त्री

-x-x-x-x-x-x-

"उत्सव"

आर्य समाज खाजपुरा {पटना} के वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक- 28·11·88 से दिनांक- 4·12·88 तक बड़ा ही आकर्षक कार्यक्रम आयोजित हुआ। बड़ी संख्या में आम जनता सोत्साह कार्यक्रम में भाग लेती रही। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ भी सम्पन्न हुआ।

"भुशुन्डा गया मेला में वैदिक धर्म प्रचार"

बिहार राज्य के गया जिलान्तर्गत भुशुन्डा मेला में गया जिला सभा के तत्वाधान में वैदिक धर्म प्रचार का आयोजन 23, 24, 25 एवं 26 नवम्बर 1988 को किया गया। इस अवसर पर नालन्दा के डाक्टर देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी, औरंगाबाद से श्री भीरवरसिंह एवं मिर्जापुर उत्तर प्रदेश से श्री पं0 सत्यप्रकाश जी आर्य भजनोपदेशक पधारे। इन उपदेशकों का कार्यक्रम मेला में चार दिन तक होता रहा। हजारों ग्रामीणों ने यहां वैदिक धर्म के सन्देश का श्रवण किया।

प्रकाश स्तम्भ

महर्षि स्वामी दयानन्द

पवन कुमार, एम०ए०बी०टी०
सिद्धान्त शास्त्री वेदरत्न, लखनऊ।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने अपने अमर ग्रंथ शतपथ ब्राह्मण में परमेश्वर से प्रार्थना की है- **"तमसो मा ज्योतिर्गमय"** -कि वह हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चले। अज्ञान से ज्ञान की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर ले जाने की प्रभु से प्रेरणा है। शारदीय **नवसस्येष्टि** पर्व **दीपावली** का त्योहार संसार के अज्ञान को मिटाकर ज्ञान विर्तारित और प्रसारित करने का पर्व है। "तुम दीवाली बनकर जग का तम दूर करो, मैं होली बनकर बिछुड़े हृदय मिलाऊँगा ।

संसार के महापुरूष ज्ञान ज्योति का प्रसार करने वाले प्रकाश स्तम्भ होते हैं जो अन्धकार को समाप्त कर प्रकाश का विस्तार करते हैं। ऐसे ही महापुरूषों मे परमहंस परिव्राजकाचार्य सन्तशिरोमणि जगद्गुरू महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अन्ध-परम्परा संकीर्णता, स्वार्थपरता और देष भावना के प्रसारक मतमतान्तरों के अज्ञानान्धकार को समूल नष्ट करस्वतः प्रमाण निर्भ्रान्त ईश्वरीय ज्ञान वेद के प्रकाश को प्रसारित किया।

युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म फाल्गुनवदी दशमी सम्वत् 1881 तदनुसार शनिवार 12 फरवरी सन् 1825 को औदीच्य वंशी सामवेदी ब्राह्मण कर्षण जी त्रिवेदी के गृह में हुआ। इनकी माता जी का नाम श्रीमती अमृतबेन था। स्वामी दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा ग्राम में थी जो गुजरात प्रदेश के मौरवी जनपद में स्थित है।

स्वामी जी के बचपन का नाम मूलशंकर था। उन्हें दयाल जी या दयाराम जी नाम से पुकारा जाता था। बालक मूलशकर ने 14 वर्ष की अवस्था तक व्याकरण मे शब्द रूपावली तथा पाणिनि के सूत्र तथा सम्पूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ थे। बाल्यकाल के अन्तःकरण में उन्होंने स्वदेश भक्ति क्रान्ति की ज्योति जलाई। उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सरदार अजीत सिंह, लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, मदनलाल धींगरा आदि अनेक देशभक्त मातृभूमि की सेवा में समर्पित हुए। वे ज्योति पुंज मानव दीपकों में ज्ञान ज्योति जलाते रहे। उन्होंने अनेकों आत्माओं का उद्धार किया। प्रथम मानव दीप श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा थे जिनके अन्दर उन्होंने वैदिक धर्म तथा सशस्त्र क्रान्ति के मार्ग से मातृभूमि की सेवा करने की ज्योति जलाई। महात्मा मुंशीराम दूसरे दीपक हैं जिनमें उन्होंने आस्तिकता तथा सदाचार की ज्योति जलाई। लाला लाजपतराय ने केवल महर्षि दयानन्द को ही अपना गुरू घोषित किया। धर्मवीर पंडित लेखराम के अन्तःकरण में वैदिक धर्म के प्रति प्रचारक भावना जागृत करने का श्रेय स्वामी दयानन्द जी को है। मेहता अमीचन्द का कायाकल्प करने वाले स्वामी जी ही थे। देवता स्वरूप भाई परमानन्द ने ऋषि की प्रेरणा को ग्रहण कर विदेशो में वैदिक धर्म की दुन्दुभी बजाई और मातृभूमि की सेवा में अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया। पंडित गदालाल, रामप्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह तथा भगत सिंह जी के प्रेरणास्रोत स्वामी दयानन्द जी थे। स्वामी जी को अनन्त मानव दीपकों में जीवन ज्योति जलाने का श्रेय प्राप्त है। अन्तिम मानव दीपक मुनिवर पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी हैं जिनके हृदय में नास्तिकता तथा अनीश्वरवाद का अन्धकार नष्ट हुआ। योगी ईश्वर भक्त की आनन्ददायक परमपद प्राप्ति के दृश्य ने मुनिवर पंडित गुरूदत्त विद्यार्थी को दृढ़ ईश्वर विश्वासी बना दिया। उन्होंने प्रत्यक्ष अनुभव किया कि परमात्मा का आत्मा से तथा असीमशक्ति सम्पन्न अमृतपुत्र दयानन्द मर्मान्तक पीड़ा के क्षणों में भी असीम धैर्य और सहनशील से मुस्कराता हुआ परमात्मा के आश्रम में ही अन्तर्निहित हो गया परमात्मा का स्वरूप सच्चिदानन्द है सर्वव्यापी, निराकार, सर्वान्तरयामी, और निराकार है। उसके सानिध्य में जाकर उन्होंने प्रभु की इच्छा पूर्ण हो ऐसा अपने को आभासित किया और बिना किसी कष्ट के अपनी आत्मा को भौतिक शरीर विच्छिन्न कर लिया। जब वे बालक थे तब मृत्यु भय से मुक्ति पाने के लिये ही वे सच्चे सच्चिदानन्द प्रभु की खोज में निकले थे और गृह त्याग किया था। ब्रहमचर्य तप, त्याग, तत्वज्ञान और योगाभ्यास के माध्यम से ही उन्होंने शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति में कल्पनातीत उपलब्धि प्राप्त की और मृत्यु के भय से अन्त समय में न केवल स्वतन्त्र हुए अपितु जाते-जाते एक परम नास्तिक को आस्तिक बना गये ।

ऐसे महामृत्युंजयी ऋषि दयानन्द का आविर्भाव इस युग की महान देने है वे सच्चे अर्थों में वैदिक धर्म के उद्धारक, महान समाज सुधारक, मानवीय एकता के पोषक विश्व शान्ति के समर्थक देवदूत थे। उनके कृत्यों का आकलन आने वाली पीढ़ी कर सकती है ।

प्रकाश का पुंज दयानन्द असंख्य मानव दीपों को जलाता हुआ। मानवता की सेवा में ही दीपावली के दिन स्वयं अस्त हो गया। उन्होंने राष्ट्ररक्षा में और जनहित में अपना बलिदान देकर गुरूवर्य विरजानन्द को दी गई प्रतिज्ञा को चरितार्थ करके दिखा दिया। उनकी अमर गाथा महानप्रेरणा दायक है। उनका जीवन और बलिदान दोनों ही हमें अनन्तकाल तक प्रेरणा देते रहें। यही मेरी कामना है ।

नमस्ते

जगदीश शरण शीतल,
आर्यसमाज, चाँदपुर, बिजनौर।

संसार में नमस्ते सबसे प्राचीन, सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम अभिवादन है। क्योंकि यह परस्पर प्रीति, प्रसन्नता, मान सम्मान तथा आर्शीवाद का विशेष परिचायक है। सृष्टिकाल से महाभारत काल तक राम, कृष्ण इत्यादि महापुरूष तथा समाज के अन्य व्यक्ति भी और कोई अभिवादन न करके नमस्ते ही करते थे। परन्तु महाभारत के पश्चात इस पौराणिकवाद ने वेद मर्यादा भंग करके अपने स्वार्थ के लिये अनेक कुरीतियों को जन्म देकर नमस्ते के स्थान पर राम-राम, जय गोपाल, जय कृष्ण, जयशंकर इत्यादि अनेक अभिवादन प्रचलित कर दिये। राम-राम, जय-कृष्ण इत्यादि तो सत्संग के समय के अंग और विषय हैं। न कि अभिवादन के समय के। यह उपदेश तो सत्संग में होना चाहिये कि आप सब महानुभाव **राम, कृष्ण** जैसे महापुरूषों के गुण अपने जीवन में धारण करके उन जैसा पवित्र जीवन बनानें का प्रयत्न करो। राम-राम, जय कृष्ण इत्यादि कहना अभिवादन से इसका कोई सम्बन्ध ही नहीं है। क्योंकि जब हम परस्पर एक दूसरे से मिलते हैं उस समय छोटे-बड़े का सम्मान तथा बड़ा छोटे को आशीर्वाद देता है। इस कार्य के लिये नमस्ते ही करना सर्वथा उचित है। जिस समय जिस बात की आवश्यकता हो उस समय वैसा ही कार्य करना चाहिये। न कि उसके विपरीत। कुछ व्यक्ति ऐसी शंका करते हैं कि यह कहाँ तक उचित है कि परस्पर एक दूसरे से नमस्ते करके छोटा बड़े का और बड़ा छोटे का सम्मान करे। सम्मान तो छोटे को बड़े का करना चाहिये। न कि बड़े को छोटे का। क्योंकि ऐसा करना बड़े व्यक्ति का अपमान है। बड़े को तो नमस्ते न कह कर, जीते रहो या शतायु हो ऐसा आर्शीवाद देना चाहिये। मेरा ऐसे व्यक्तियों से नम्र निवेदन है कि उनकी यह शंका निराधार है। क्योंकि नमस्ते शब्द से दोनों अभिप्राय सिद्ध होते हैं। यदि छोटा बड़े को नमस्ते करता है तो वह बड़े का सम्मान करता है और यदि बड़ा छोटे को नमस्ते करता है तो वह उसको आर्शीवाद देता है। इसके सन्दर्भ में एक निवेदन और करना है। आज तक संसार में नमस्ते को छोड़ कर जितने भी अन्य अभिवादन हैं वह सब प्रायः हाथ-मिला कर किये जाते हैं। इनमें सबसे बड़ा दोष यह है कि हाथ मिलाने वाले व्यक्तियों में से यदि किसी को कोई संक्रामक रोग है तो वह एक दूसरे को हो सकता है। परन्तु नमस्ते ही ऐसा अभिवादन है जो हाथ जोड़ कर किया जाता है। इससे कोई रोग होने का भी भय नहीं, साथ ही यह मान सम्मान और आर्शीवाद से एक दूसरे के मन को प्रेम सद्-भाव से ओत-प्रोत कर देता है। अतः परस्पर एक दूसरे से हाथ जोड़ कर नमस्ते ही करनी चाहिये ।

प्रेम सद्भाव बढ़ाने का नमस्ते साधन ।
शब्द कितना है मधुर और है कितना पावन ।।
हर्ष उल्लास से कर जोड़ नमस्ते करना ।
सबसे उत्तम वह सरल जग मे है यह अभिवादन।।

आर्यजगत के प्रकाण्ड वेद मर्मज्ञ वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध तपस्वी स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (बिजनौर) ने प्रदेशीय आर्य जनता के आग्रह को स्वीकारते हुए कृपापूर्वक आगामी जनवरी से मार्च तक का त्रयमासिक अवधि का समय इस प्रदेश की आर्यसमाजों में प्रचारार्थ प्रदान किया है ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में
अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन, विश्व आर्य महासम्मेलन अथवा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन करने का अधिकार केवल सार्वदेशिक सभा को अन्यों को नहीं

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की 18 अप्रैल 1988 की अन्तरंग सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया था कि सभा की ओर से एक अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जाय। उसमें यह भी निर्णय हुआ था कि पहले आर्य महासम्मेलन प्रदेशीय स्तर पर प्रदेशीय सभायें आयोजित करें, उसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में दिल्ली में किया जाय।

आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि इसी प्रस्ताव के आधार पर गत 26-27 और 28 नवम्बर 88 को मध्यप्रदेश के सीतापुर नामक स्थान में वनवासी आर्य महासम्मेलन हुआ था जिसमें लगभग 6 हजार ईसाइयों की शुद्धि की गई थी। गत 30,31 दिसम्बर और 1 जनवरी 1989 को अलवर में राजस्थान सभा की ओर से आर्य महासम्मेलन का आयोजन हुआ। इसी प्रकार अन्य प्रान्तीय सभायें भी कार्यक्रम की तैयारियों में लगी हुई हैं।

सार्वदेशिक सभा में अनेक लोगों को शिकायतें मिल रही हैं कि कुछ संगठन विरोधी तत्व विश्व आर्य महासम्मेलन के नाम पर विज्ञप्तियाँ प्रचारित कर रहे हैं और धन संग्रह के प्रयास में लगे हुए हैं।

अतः आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त आर्य महासम्मेलन करने का अधिकार केवल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को ही है अन्य किसी को नहीं। आर्यजन ऐसे लोगों को न तो धन दे और न किसी प्रकार का सहयोग करें। सार्वदेशिक सभा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के आयोजन की तिथियों का शीघ्र ही निर्णय लेकर घोषणा करेगी।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0,
तथा उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा, दिल्ली।

श्रद्धांजलि

दिनांक- 11·12·88 इतवार आर्य समाज मन्दिर खण्डवा (म0प्र0) में सत्संग के पश्चात् सभा का आयोजन किया गया जिसमे माननीय डा0 रघुनाथ सिंह जी वर्मा भूतपूर्व प्रधान-आर्यसमाज एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं के एवं कोआपरेटिव बैंक के वर्षों अध्यक्ष रहे का चौरानवे वर्ष की आयु में निधन हो गया उनको अश्रुपूरित श्रद्धान्जली अर्पित की गई। जिसमें उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से मन्त्रोच्चारण के द्वारा किया गया।

उत्सव

आर्यसमाज हल्दौर जिला बिजनौर का वार्षिकोत्सव दिनांक 25 से 27 नवम्बर 1988 तक विशेष समारोह के साथ सम्पन्न हुआ जिसमें महिला सम्मेलन, युवक सम्मेलन तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर वेदों के प्रकाण्ड विद्वान एवं प्रचारक पधारे थे। जनता पर आर्य समाज के कर्तव्यों का दूरगामी प्रभाव पड़ा।

आर्यसमाज शमशेरगढ़ जिला देहरादून का 25वां वार्षिकोत्सव दिनांक 22 व 23 अक्तूबर 1988 को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया गया।

नव वर्षाभिनन्दनम्

(संस्कृत- गीतिका)

-डा0 कपिल देव द्विवेदी आचार्य,
कुलपति, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, (हरिद्वार)

(1)
जयतु जयतु नव-वर्ष रम्यम्,
वितरतु भुवने ज्योतिरुदारम् ।
पाप-ताप-भय-मोह- प्रणाशम्,
किरतु भवे सुख-शान्ति-सुवासम् ।।

(2)
आर्य-जाति-गुणगौरव- गानम्,
प्रसरतु निखिले भुवने हृद्यम् ।
दीन-हीन-जन-दुःख-निवारम्,
श्रुतिचय-गरिमा विलसतु सद्यः ।।

(3)
भ्रातृभाव - समता - संचारः,
उन्नति - प्रगति -प्रबोध - विचारः।
दम्भ - द्वेष - छल - छद्म - विनाशः,
भवतु भवे भव-भूमि - निवासः ।।

(4)
धर्मवृत्ति - सन्मार्ग - प्रवृत्ति,
दुर्गुण - मद - दुर्भाव - निवृत्तिः।
देशभक्ति - ममता - संचारः,
वितरतु सौख्य सुभग-विचारः ।।

(5)
वेदध्वनिरिह प्रसरतु हृद्यः,
आर्यजनो विलसेदिह कव्यः ।
भारत - महिमा प्रसरतु लोके,
भवतु गुणाढ्यः सकलो लोकः ।।

महाकुंभ मेला

इलाहाबाद । पतित पावनी गंगा-यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम पर **जनवरी-मार्च 1989** में विश्व का सबसे बड़ा मेला कुम्भ मेला लगेगा। इस मेले की प्रमुख स्नान तिथियाँ एवं पर्व निम्न हैं:-

1- मकर संक्रांति 14जनवरी 1989 शनिवार
2- पौष पूर्णिमा 21 जनवरी, 1989 शनिवार
3- मौनी अमावस्या (मुख्य पर्व) 6 फरवरी, 1989सोमवार
4- बसंत पंचमी 10 फरवरी 1989, शुक्रवार
5- माघी पूर्णिमा 20 फरवरी 1989, सोमवार
6- महाशिवरात्रि 6 मार्च 1989, सोमवार

वेद प्रचार

किरतपुर-
जिला आर्योप सभा बिजनौर गढ़वाल के क्षेत्र किरतपुर में दिनांक- 26·11·88 से 9·12·88 तक ग्रामीण प्रचार योजना के अन्तर्गत प्रचार कार्यक्रम हुआ दिनांक- 26 को शहबाजपुर 27 मोहट्टिया, 28 बिचपड़ी, 29 माचकी, 30 रानीपुर, 1 जाफरपुर 2·12·88 को केवलपुर, 5·12·88 को बरसपुर, 6 तारीख बुडगरा, 7 तारीख पुण्डरीकला, 8 तारीख को बुडगरी प्रचार हुआ प्रतिदिन रात्रि प्रचार उपदेश प्रातः यज्ञ हुआ। प्रचार में योगेश उपदेशक व नरेशदत्त रहे ।

-पृथ्वी सिंह,
सयुक्त मन्त्री।

वार्षिकोत्सव-सम्पन्न

आर्यसमाज सिकन्दरपुर (बलिया) का 62वां वार्षिकोत्सव दिनांक- 26 नवम्बर, 1988 तक बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया। जिसमें पं0 सत्यव्रत वानप्रस्थी (समस्तीपुर), श्री दयानन्द-सत्यार्थी, ठा0 इन्द्रदेव सिंह जी भजनोपदेशक तथा पं0 सत्यमित्र शास्त्री गोरखपुर ने अपने प्रवचनों से जनता पर काफी प्रभाव डाला ।

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5मीराबाई मार्ग,लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 जी/एन0पी0 79
पौष शुक्ल ।
8 जनवरी रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मि...

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

शोक समाचार

स्वामी शिवानन्द {पूर्णनाम श्री शिवप्रसाद} नरही, लखनऊ की पूज्यनीया माता {धर्म पत्नी स्व0 श्री राम प्रसाद भू0पू0 प्रधान आर्यसमाज प्रतापगढ़} का स्वर्गवास 13-12-88 को प्रतापगढ़ में हो गया। प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक-जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना ।

सभामन्त्री।

" कालजित महर्षि दयानन्द "

सारे संसार के मानव को जगाया तुमने ।
फिर से पतझड़ को मधुमास बनाया तुमने ।।
दीप अपना तो स्वयं तुमने बुझा कर "शीतल" ।
अपने एक दीप से हर दीप जलाया तुमने ।।

-जगदीश शरण "शीतल", बिजनौर।

आर्य समाज रेलवे कालोनी समस्तीपुर का चतुर्थ वार्षिकोत्सव दिनांक- 4·12·88 को सानन्द समाप्त हो गया। इस में निम्न सफलतायें प्राप्त हुई। --

1- यज्ञशाला का निर्माण हो गया।
2- पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती योगधाम ज्वालापुर ने अपनी दक्षिणा में से 101/- रु0 यज्ञशाला निर्माण के लिये दान दे दिया।
3- अलग से महिला आर्य समाज रेलवे कालोनी समस्तीपुर का गठन हो गया ।

xxxxxx

आर्य समाज चाँदपुर का वार्षिक उत्सव दिनांक 19 व 20 नवम्बर को हर्ष व उल्लास के साथ सम्पन्न हो गया, जिसमें बहन प्रज्ञा देवी एवं श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी "वेदभिक्षु" चन्दौसी वालों ने ज्ञान वर्षा करके श्रोताओं को ज्ञान गंगा में स्नान कराया ।

xxxxxx

बिहार के वैशाली जिले महुआ प्रखण्ड में स्थानीय आर्य-समाज के 5वें वार्षिकोत्सव 8, 10, 11 एवं 12 दिसम्बर 1988 को बड़े ही धूम-धाम से मनाया गया । इस अवसर पर पं0 जयप्रकाश आर्य, हरयाणा, पं0 गंगाधर जी शास्त्री, पटना, पं0 हरिप्रसाद- जी शास्त्री, डा0 श्री महेन्द्र पाल आर्य {कलकत्ता} श्री सुखदेव जी आर्य, समस्तीपुर एवं अनेक विद्वानों के पुरोगम हुए ।

xxxxxx

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री दौलतराम चड्ढा ने भारत के राष्ट्रपति महोदय महामहिम श्री वेंकटरमन को सम्बोधित करते हुए अपने दिनांक 20-11-1988 के पत्र मे राष्ट्रपति महोदय से देश मे शासन व्यवस्था को वेदों के आधार पर चलाए जाने का अनुरोध किया है। उन्होंने देश की वर्तमान दुर्दशा का मूल कारण वेदाधारित शासन व्यवस्था का न होना बतलाया है। उन्होंने धर्म निरपेक्ष के स्थान पर सम्प्रदाय निरपेक्ष नाम रखना उचित बतलाया तथा शिक्षा प्रणाली में आमूल चूल परिवर्तन करके उसे प्राचीन गुरुकुल पद्धति पर चलाने का अनुरोध किया है।

"मेरी अन्तःकरण से यही कामना है कि भारतवर्ष के एक अन्त से दूसरे अन्त तक आर्य समाज स्थापित हो और देश में व्यापी हुई कुरीतियां उन्मूलित हो जाए।"

-महर्षि दयानन्द

यज्ञोपवीत संस्कार

स्वसौर-

आर्यसमाज के भूतपूर्व प्रधान श्री प्रीतम सिंह ने अपने भतीजे शैलेन्द्र व लड़के नीरज का यज्ञोपवीत संस्कार कराया इस अवसर पर जिला उपसभा के संयुक्त मन्त्री श्री पृथ्वी सिंह ने यज्ञ कराया व गाँव के सैकड़ों लोगों ने दोनों बच्चों को आशीर्वाद दिया ।

बिजनौर में वैदिक धर्म प्रचार

जिला आर्योपसभा बिजनौर गढ़वाल के क्षेत्र किरतपुर में ग्रामीण प्रचार योजना के नाम से गाँव-गाँव प्रचार व यज्ञ का कार्यक्रम चल रहा है। 26-11-88 से 20-1-89 तक चलने वाली प्रचार योजना में 45 गाँवों में आर्यसमाज का प्रचार होगा तथा सैकड़ों नवयुवक यज्ञोपवीत धारण करेंगे ।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

जि० सं० 2241/57 पौष शुक्ल 8 रविवार, संवत् 2045 वि०, दिनांक 15 जनवरी 1989 घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85



वैदिक शुभेषणा

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ।।

सुखवान् बनें जगजीव सभी,
सबके तन-प्राण आरोग्य मुदा
समता सहकार सुबोध मिले,
सबको इकसों सुखदा ही सदा
दुखिया दयनीय न कोई रहे,
कटुभाषी कुमार्गी या लोभलदा
सभी सज्जन भद्र भलें प्रमदाः,
अभयी शुचि धर्म भजें यशदा।।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु0251/-
वार्षिक	रु0 30/-
छमाही	रु0 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	91
अंक	3

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के

स्वामी श्रद्धानन्द अतिथि-भवन का शिलान्यास

जनवरी 8, 1989 - सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती ने उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा, 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के परिसर में निर्मित होने वाले **"स्वामी श्रद्धानन्द अतिथि भवन"** के बहुखण्डी भवन की आधारशिला पवित्र वेदमन्त्रोच्चार के साथ अपने करकमलों से स्थापित की। इस अवसर पर प्रदेश के कोने-कोने से पधारे हुए विशाल आर्यजनसमूह को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने अमर-बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द के त्यागमय जीवन का स्मरण करते हुए कहा कि जिस महान् आत्मा के नामपर आज हम जिस विशाल अतिथि भवन का निर्माण प्रारम्भ करने जा रहे हैं उनका त्याग हम आर्यों को अनन्तकाल तक प्रेरणा देने वाला है। उन्होंने अपना सर्वस्व तन,मन, धन और परिवार सभी समाजसेवा हेतु अर्पित कर दिया था। उनके दो पुत्र थे उन्हीं पुत्रों को गुरुकुल में बिठाकर उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी।

जिन महान् योगी, पवित्र आत्मा महात्मा नारायण स्वामी की स्मृति में बने हुए नारायण स्वामी भवन के परिसर में इस अतिथि भवन का निर्माण प्रारम्भ होने जा रहा है वह आर्यसमाज के प्राण थे। आर्य जगत उनके द्वारा की गई सेवाओं को कभी विस्मृत नहीं कर सकता है। वे इतने बड़े योगी थे कि अपने आत्मबल द्वारा अनेक गुप्त रहस्यों का प्रत्यक्ष कर सकते थे। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने, इस अवसर पर, आर्य समाज की चहुँमुखी प्रगति का वर्णन करते हुए आगे बताया कि आर्यसमाज मानवता एवं राष्ट्रसेवा के कार्यों में सदा अग्रणी रहा है। दूसरी संस्थाएं हमारे किए हुए सेवाकार्यों का उल्लेख अपने नाम से करके श्रेय की भागी भले ही बन जायें परन्तु सच्चाई यही है कि आर्यसमाज ने अपने जीवन के प्रारम्भिक काल से ही मानवसेवा में अपने को सर्वात्मना अर्पित कर रखा है। पेट्रोडालर के बल पर विधर्मी बने हुए हिन्दू जाति के लाखों लालों को हमने जा जाकर उन्हें वैदिक धर्म में वापस लिया है। चाहे वह मीनाक्षीपुरम की घटना हो, अथवा मध्यप्रदेश, उड़ीसा या भारत के अन्य सीमान्त प्रदेशों का बनवासी इलाका हो, हमने सभी स्थानों पर पहुँच कर अपने भाइयों को पुनः गले लगाया और उन्हें वैदिक धर्म में दीक्षित किया। अभी पिछले मास मध्य प्रदेश के सीतापुर में हमने छः हजार वनवासियों को वैदिक धर्म की दीक्षा दी और आगे भी हजारों की संख्या में वनवासियों को जो अपनी अशिक्षा एवं गरीबी के कारण ईसाई बन गये हैं पुनः वैदिक धर्म में लाने की योजना है। वहाँ के अधिकारी तथा जनता ने स्वयं स्वीकार किया है कि इतना बड़ा कार्यक्रम इससे पूर्व उस धरती पर कभी नहीं हुआ था।

उत्तर प्रदेश के विशाल भूभाग एवं विशाल जनसंख्या के अनुरूप ही आर्य समाज के कार्यों को विशालरूप में प्रस्तुत करने का आह्वान करते हुए पू0 स्वामी जी ने उत्तर-प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के वर्तमान अधिकारी श्री पं0 इन्द्रराज जी तथा युवा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी की कर्मठता एवं कार्य कुशलता की सराहना करते हुए उन्हें अपना आशीर्वाद दिया और आर्य जगत से उन्हें अपना पूर्ण सहयोग देने का आह्वान किया ।

इस अवसर पर सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य समाज के कार्यों का सिंहावलोकन करते हुए बताया कि आज सबसे बड़ी आवश्यकता है, प्रचार की ओर इसके लिए हमें प्रचारकों/उपदेशकों की बहुत बड़ी संख्या में आवश्यकता है जो मिशनरी भावना से जनता के बीच पहुँचकर कार्य कर सकें। उन्होंने बताया कि एक उपदेशक विद्यालय की स्थापना का हमने निश्चय कर लिया है। केवल उसके स्थान एवं उसकी वृहत्त रूपरेखा हमें तैयार करनी है। हमारा प्रचार कार्य जितना सुसंगठित होगा उतना ही आर्य समाज का भविष्य उज्जवल होगा ।

शेष पृष्ठ 2 पर

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारे आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
--राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- पौष शुक्ल 8 संवत् 2045 वि0, 15 जनवरी 1989, दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

अतिथि देवो भव

हमारी भारतीय परम्परा आतिथ्य के लिए विश्व प्रसिद्ध रही है। अपने सामाजिक जीवन में जिस प्रकार हम माता-पिता और आचार्य के सत्कार में सदैव समर्पित रहे हैं उसी प्रकार आतिथ्य सत्कार करना भी हमारी वैदिक परम्परा का अभिन्न अंग रहा है। इसीलिए पवित्र वेदमाता ने प्रत्येक आर्य को अतिथि यज्ञ करना धर्म का अनिवार्य अंग बताया है। हमारे इस आतिथ्य ने सीमाओं को लांघकर किस-किस को क्या-क्या न दिया यह इतिहास से पूछिए।

यह हमारा सौभाग्य है कि हमारी प्रतिनिधि सभा के परिसर में विशाल प्रांगण है किन्तु कोई सुविधाजनक अतिथि-भवन न होने के कारण अभ्यागत अतिथियों को ठहराने आदि की समुचित व्यवस्था करने में बड़ी असुविधा हुआ करती थी। सभा भवन के परिसर में इस विशाल अतिथि भवन के निर्माण से एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति होगी और निःसन्देह सभा के अधिकारी इसके लिए बधाई के पात्र हैं। सभा भवन की इस धरती का कण-कण पवित्र है। आर्य समाज के प्राण, महान योगी महात्मा नारायण स्वामी की स्मृति में इस भवन का नाम नारायण स्वामी भवन रखा गया था। और आज एक पूज्य संन्यासी के करकमलों से ही इसके परिसर में अमर हुतात्मा संन्यासी की स्मृति में **"स्वामी श्रद्धानन्द अतिथि भवन"** का निर्माण होने जा रहा है। यह एक बड़ा पुण्य कार्य है। हम आर्य जनता से मुक्त हस्त होकर भवन निर्माण के इस पुण्य कार्य में धन से सहयोग दिए जाने का विनम्र अनुरोध करते हैं।

शत हस्तं समाहर सहस्र हस्तं संकिर

{प्रथम पृष्ठ का शेष}

सभामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने निर्माणाधीन अतिथि भवन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि इस अतिथि भवन में एक विशाल सभागार एवं अनेकों कक्षों का निर्माण किया जायेगा। सभी के साथ शौचालय एवं स्नान गृह की व्यवस्था रहेगी। भवन के तृतीय खण्ड पर {डारमेटरी} का निर्माण किया जायेगा। इस प्रकार इस अतिथिभवन में एक साथ कई सौ अतिथि निवास कर सकेंगे इस अतिथि भवन को इसी वर्ष पूरा कर लिए जाने का भी हमारा संकल्प है ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने आर्यों को उद्बोधन देते हुए कहा कि निराशा का आर्यों के हृदय में कोई स्थान नहीं है। चाहे राष्ट्ररक्षा का प्रश्न हो, भूकम्प पीड़ितों की सहायता का प्रश्न हो अथवा विधर्मी बने हुए हिन्दुओं की शुद्धि का प्रश्न हो, हमने ही सदा आगे बढ़कर जनसेवा में अपने को समर्पित किया है और करते रहेंगे। हमारा अतीत जिस प्रकार महान था उसी प्रकार हमारा भविष्य भी निश्चित रूप से महान् होगा ।

इस अवसर पर प्रदेश के नगर विकास मन्त्री श्री बल्देव सिंह आर्य ने आर्य समाज के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए प्रतिनिधि सभा में बनने वाले अतिथि भवन को सहयोग दिए जाने की अपील की ।

शिलान्यास की झलकियां

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान एवं मन्त्री पू0 स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा श्री सच्चिदानन्द शास्त्री के लखनऊ आगमन पर दिनांक- 8 जनवरी को सभा के प्रधान तथा मन्त्री सहित जनपद की समस्त समाजों के प्रतिनिधियों एवं आर्यजनता ने गगन भेदी जय जयकार के साथ स्टेशन पर उनका भव्य स्वागत किया। उस समय प्रभात की स्वर्णिम रश्मियाँ रिमझिम करती बरसाती फुहार की पुष्पमालाएँ लिए अपनी स्नेहिल आद्रता से वातावरण को सराबोर बना रही थीं ।

× × × × ×

प्रातः 9 बजे सभाभवन की सुसज्जित यज्ञशाला में पवित्र वेदध्वनि के साथ शिलान्यास की कार्यवाही यज्ञ से प्रारम्भ हुई। यज्ञमण्डप में पू0 स्वामी आनन्दबोध सरस्वती श्री सच्चिदानन्द-शास्त्री के अतिरिक्त प्रदेश के कोने-कोने से पधारे हुए आर्यजन, सभा के अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यगण, विदुषी आर्य महिलाएँ तथा अनेकों प्रख्यात विद्वान उपस्थित थे। यजमान थे सभा के यशस्वी प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी तथा ब्रह्मा के आसन पर विराजमान थे आर्यमित्र के प्रबन्ध सम्पादक श्री पं0 इन्द्रदेव पाठक साहित्याचार्य। यज्ञ की पावन सुगन्ध समीरण के साथ ही ऋचाओं के मधुर स्वरों ने धरती के कण-कण को झंकृत कर दिया था।

× × × × ×

आतिथ्य की उद्दाम अभिलाषा लिए जब यह जनसमूह यज्ञोपरान्त अपने पू0 स्वामी जी के नेतृत्व में सभा भवन के उत्तरीयांचलस्थित विशाल मैदान में पहुँचा तो ऐसा मालूम पड़ता था मानों भारतीय संस्कृति के मूलमन्त्र **"अतिथि देवो भव"** ने मूर्तरूप ले लिया है। पवित्र वेदमन्त्रों की सस्वर ध्वनि के बीच पू0 स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने अपने करकमलों से **"स्वामी-श्रद्धानन्द अतिथिभवन"** की आधारशिला रखी तो सौ-सौ हाथ एक साथ उठ पड़े- सहयोग देने के लिए, तन-मन-धन अर्पित करने के लिए, सौ हाथ से कमाए हुए को हजार हाथों से दान करने के लिए।

× × × × ×

धर्मान्तरण का भ्रामक प्रचार

"दैनिक **"अमर उजाला"** के 20 दिसम्बर के अंक में मेरठ के कालन्दी ग्राम के हरिजनों द्वारा धर्मान्तरण की धमकी का बिलकुल गलत और आधार हीन समाचार प्रकाशित हुआ है।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं0 इन्द्रराज जी और जयन्त कुमार और विद्यासागर मन्त्री आर्यसमाज सरधना ने कालन्दी ग्राम का दौरा किया और हरिजनों तथा प्रतिपक्ष से सही वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त किया। हरिजनों ने दृढ़ता के साथ धर्मान्तरण के समाचार का खण्डन किया और इस प्रकार के शरारत पूर्ण समाचार के प्रति अपना रोष प्रकट किया ।

कुछ अराष्ट्रीय और असामाजिक तत्व इस प्रकार के आधारहीन और उत्तेजनापूर्ण समाचार को प्रकाशित कराके हरिजनों में असुरपुत्र की भावना पैदा करके उनका धर्मान्तरण करने का कुचक्र कर रहे हैं। इस प्रकार यह पूर्वाभाष दृढ़ होता जा रहा है कि देश की अखण्डता और एकता को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए अराष्ट्रीय और देशद्रोही ताकतें कृतसंकल्प हैं। आर्य समाज ऐसी ताकतों का पूरी शक्ति से पर्दाफास करेगा ।

पं. इन्द्रराज,
प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा
उ0प्र0, लखनऊ।

आर्य समाज हसनगंज {पार} डालीगंज, लखनऊ का

वार्षिकोत्सव

14, 15, 16 जनवरी 1989 का वार्षिकोत्सव दिनांक- 14, **से** 16 जनवरी, 1989 तक सोत्साह आयोजित होगा। धर्म प्रेमी जनता पधार कर धर्म लाभ उठावें ।

-लाल बहादुर सिंह
मन्त्री।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के

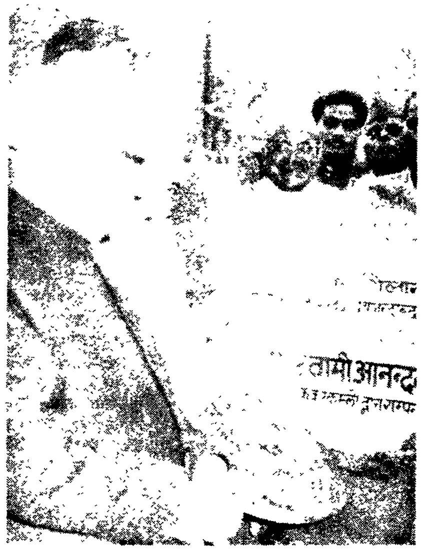
स्वामी श्रद्धानन्द अतिथि-भवन के शिलान्यास समारोह के विभिन्न रूप



सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पू0 स्वामी-आनन्दबोध सरस्वती आधार शिला रखते हुए -



सभा मन्त्री, श्री मनमोहन तिवारी अतिथि भवन की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए। मंच पर विराजमान प्रदेश के नगर विकास मन्त्री श्री बल्देव सिंह-आर्य, पू0 स्वामी आनन्दबोध सरस्वती तथा सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ।



नगर विकास मन्त्री श्री बल्देव सिंह आर्य, शिलान्यास के अवसर पर जनता से तन-मन-धन से सहयोग देने की अपील करते हुए ।

आजादी के दीवाने की यह तुच्छ भेंट स्वीकार करो

-ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति शास्त्री
सदन दिल्ली।

भारत के लोगो सन्यासी उस श्रद्धानन्द का ध्यान करो ।
गुरुकुल मर्यादा पालन का उसका सपना साकार करो ।।

मेरा वक्षस्थल खुला हुआ इस पर गोली का वार करो ।
आजादी के दीवाने की यह तुच्छ भेंट स्वीकार करो ।।

जामा मस्जिद के मिम्बर पर थे वेद मन्त्र उपदेश दिये ।
एक ईश की प्रजा सभी मनमोहक बोल उदार दिये ।।

जो थे भूले-भटके अटके उनको भी राह दिखाया था ।
शुद्धि का शंख बजा करके फिर वैदिक पथ बतलाया था ।।

गुरु के बाग सत्याग्रह में एक अद्भुत खेल रचाया था।
इस भाँति वीर सेनानी ने सिक्खों का भाग्य जगाया था।!

तेईस दिसम्बर छब्बीस में स्वामी जी रोगाक्रान्त हुए।
एक नीच नराधम पापी की गोली के उन पर वार हुए ।।

भारत माता की छाती पर एक शोक का संकट टूट पड़ा ।
उनकी अर्थी के पीछे तो भारत का जन-जन उमड़ पड़ा ।।

भारत के लोगो सन्यासी उस बलि दानी को याद करो ।
इस काल जो संकट छाये हैं उनको फिर से निर्मूल करो ।।

हे नाथ हमें अनुकम्पा से श्रद्धा का पाठ पढ़ा देना ।
फिर से इस भारत भूमि पर श्रद्धानन्द सा यतिवर देना ।।

यह आर्यधरा फिर से चमके ऐसा सन्यासी दे देना ।।

परमात्मा मिलता है

-स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,
अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद।

तं पृच्छता स जगामा स वेद स चिकित्वास ईयते
सन्वीयते ।
तस्मिन्सन्ति प्रशिषस्तस्मिन्निष्टय स वाजस्य शवसः
शुष्मिणस्पतिः ।।

ऋग्वेद 1/145/1

मन्त्र का प्रथम वाक्य है "तंपृच्छता स जगामा स-वेद" तीन उपवाक्यों में विभक्त है- तं पृच्छता, सः जगाम, सः-वेद। सम्पूर्ण वाक्य का अर्थ हुआ-उससे पूछो, वह पहुँचा हुआ है, वह जानता है। तं पृच्छता ... भाषा में उसको पूछो के स्थान पर उससे पूछो बोला जाता है।

"उससे पूछो" को सुनते ही प्रश्न उपस्थित होता है, कौन है वह? जिस की और मन्त्र में इंगित किया गया है। मन्त्र का निर्देश किस से पूछने का है? यदि हम किसी से कुछ पूछना चाहते हैं तो यह आवश्यक है कि जिस से पूछना चाहते हैं, उसे वह ज्ञात होना चाहिये जो हम पूछना चाहते हैं। यदि हम किसी बात को ऐसे व्यक्ति से पूछ बैठें, जो उस विषय में स्वयं ही न जानता हो तो वह हमें बतायगा ही क्या? बता तो वही सकता है, जो स्वयं जानता हो। यदि जानता हो, परन्तु उस की जानकारी दूसरों पर आधारित हो अर्थात् उसने केवल मात्र दूसरों से सुन रखा हो। उस का स्वयं का कोई अनुभव न हो तो वह जो कुछ बतायेगा, उस में भ्रान्ति हो सकती है। उदाहरण के लिये हम किसी व्यक्ति से किसी स्थान का मार्ग पूछते हैं तो जहाँ यह आवश्यक है कि उसे वह मार्ग ज्ञात हो, वहाँ यह भी आवश्यक है कि उसने वह मार्ग देखा भी हो और मार्ग उसने तब देखा होगा, जब वह कभी उस स्थान पर गया भी हो, बिना जाये मार्ग देखने की बात ही क्या? यदि उसने उस स्थान को जाने वाले मार्ग को देखा नहीं अर्थात् वह कभी वहाँ गया नहीं तो हो सकता है कि उस का ज्ञान भ्रान्ति हो और यदि यह मान भी लिया जाय कि उसका वह ज्ञान भ्रान्ति रहित है तो भी बिना देखे ठीक-ठीक ज्यों का त्यों वह बता सकेगा, इसमें सन्देह है इसीलिये वेद ने कहा है कि उससे पूछो {सः जगाम} वह {जो} जा चुका है, पहुँचा हुआ है और {सः वेद} वह {जो} जानता है।

प्रत्येक चित्र का एक अन्धेरा पार्श्व भी होता है अतः कई बार ऐसा होता है कि हम किसी स्थान पर पहुँच चुके, किसी मार्ग से जा चुके भी होते हैं किन्तु फिर भी मार्ग स्मरण नहीं रहता। जब स्वयं को ही स्मरण नहीं हो तो अन्यों को क्या बताया जाय? एतदर्थमेव वेद ने कहा "तंपृच्छता स जगामा स वेद" उस से पूछो, जो जा चुका है और जो जानता भी है ।

द्वितीय वाक्य में कहा है "सः चिकित्वान् सः ईयते सः नु ईयते।" इस वाक्य के भी दो उपवाक्य हैं। {सः चिकित्वान्} वह चिकित्सा कर सकता है, वह अज्ञान रोग दूर कर सकता है, वह ज्ञान प्रदान कर सकता है। है न, सः वेद= वह जानता है, वह योग्यता रखता है, वह ज्ञानवान् है ।

प्रश्न उत्पन्न होता है कि वह मिलता भी है? जो उससे पूछा जाय, जो उसमें संज्ञान उस संज्ञान प्रदान करने वाले से {चिति संज्ञाने} संज्ञान प्राप्त कर सके। संशय को मन से दूर कर दीजिये। वह मिलेगा और अवश्यमेव मिलेगा। प्रस्तुत मन्त्र स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर रहा है "सः ईयते" वह प्राप्त होता है तथा "सः नु ईयते" वह निश्चय पूर्वक प्राप्त होता है। उसके प्राप्त होने में सन्देह को कोई स्थान नहीं- उसे प्राप्त करने वाला होना चाहिये।

संसार की स्थिति पीलिया के रोगी जैसी है, जिसे सब पीला ही पीला दृष्टिगोचर होता है। दोष तो हमारी दृष्टि का है "सः जगाम" वह तो {सर्वत्र} पहुँचा हुआ है। बताओ वह कहा नहीं है? है संसार में कोई ऐसा स्थान ? जहाँ वह न हो। यदि कोई भी स्थान ऐसा सम्भव हो सके कि जहाँ वह परमात्मा न हो तो संसार के उस भाग की गाड़ी ही ठप हो जाय। संसार की गाड़ी, संसार का चक्र उसकी शक्ति से, उसके सहारे से ही चल रहा है। वह तो प्रत्येक स्थिति में, प्रत्येक स्थान पर और प्रत्येक वस्तु में है। कण-कण में, अणु-अणु परमाणु-परमाणु में ओत-प्रोत हो रहा है। "दीदार कहाँ नहीं है, कोई दीदावर तो हो।" कोई देखने वाला तो हो. वह तो सब स्थानों पर पहुँचा हुआ है। वह प्राप्त किया जा सकता है और निश्चयपूर्वक प्राप्त किया जा सकता है किन्तु कब? जब --

आँख, नाक, मुख बन्द कर नाम निरंजन लेय ।
भीतर के पट तब खुलें, जब बाहर के पट देय।।

मन्त्र का तीसरा वाक्य है "तस्मिन् सन्ति प्रशिषः तस्मिन् इष्टयः" इस वाक्य के दो भाग हैं। पहले भाग में कहा है, "तस्मिन सन्ति" उसमें उत्तम शिक्षायें हैं और दूसरे भाग में कहा है "तस्मिन् इष्टयः" उसमें इष्टिया सत्कर्म और सद्भाव है, यदि उसमें उत्तम शिक्षाए, सत्कर्म और सद्भाव न हों तो वह अज्ञान कोकिस प्रकार दूर कर सकता है? उत्तम शिक्षाओं के अभाव में ही तो दुष्कर्म होते हैं और सत्कर्मो की प्रेरणा सदा उत्तम शिक्षाओं से ही मिला करती है। परमात्मा के पास उत्तम शिक्षायें हैं और साथ ही है भद्रभाव-तभी तो वह सत्कर्म-कर्ता है, उससे कभी कोई दुष्कर्म नहीं होता। उत्तम शिक्षायें ही भद्रभाव की जननी हैं तथा भद्रभाव से ही सत्कर्मों का सम्पादन होता है। यदि मानव अपना कल्याण चाहता है तो उसका एक ही प्रकार है कि वह परमपिता परमात्मा की शरण में जाये और दुष्कर्मों से बचने के लिये उस परम पावन प्रभु से संज्ञान प्राप्त करे, वह अज्ञान और तज्जन्य दुष्कर्म रोग की चिकित्सा करने में असमर्थ है क्योंकि उस में उत्तम शिक्षायें है जब संज्ञान प्राप्त होगा और अज्ञान दूर हो जायेगा, तब उत्तम शिक्षायें प्राप्त होंगी, तब भद्रभाव जागेंगे, तब भद्रभावों का उदय होगा। जितना-जितना भद्रभावों का उदय होगा, उतनी ही उतनी सत्कर्मों की प्रवृत्ति होगी क्योंकि भद्रभाव सत्कर्मों के प्रेरक होते हैं। जिस प्रकार भद्रभावों की उत्पत्ति के लिये उत्तम शिक्षाओं की आवश्यकता है, ठीक उसी प्रकार सत्कर्मों के लिये भद्रभावों की आवश्यकना है। वेद ने यह स्वर्ण-सूत्र, स्वर्ण सिद्धान्त प्रस्तुत किया है।

मानव जीवन की सफलता के लिये परन्तु इतना होने पर भी यदि मानव गड़बड़ करे, उसकी उत्तम शिक्षाओं से लाभ न प्राप्त करे, जिससे भद्रभावो की उत्पत्ति होकर सत्कर्मों का आचरण हो तो-तो उसकी व्यवस्था भी है। सुन लीजिये मन्त्र का चौथा भाग क्या कहता है?

"सः वाजस्य शवसः शुष्मिणःपतिः" वह ज्ञान व क्रिया-शक्ति का, बल का तथा शोषण-शक्ति का पति अर्थात् स्वामी है। वह ज्ञान का स्वामी है, ज्ञान उसके अधिकार में है, वह ज्ञान सम्पन्न है, ज्ञान स्वरूप है। मानव की कोई भी गतिविधि उससे छिपी नहीं रह सकती। एक तो वह सब स्थानों पर पहुँचा हुआ है, दूसरे ज्ञान का भण्डार है और फिर ज्ञान भी किस प्रकार का? जिसके साथ क्रियाशीलता है। वाज का अर्थ जहाँ ज्ञान है, वहाँ क्रिया भी है। वह केवल ज्ञानी ही नहीं है अपितु ज्ञान को क्रिया में परिणित करने की शक्ति से भी सम्पन्न है।

परमात्मा की क्रियाशीलता भी साधारण नहीं-यह ध्यान रहे। वह तो "शवसः" बल का भी स्वामी है, उसके पास अपरिमित बल है। वह है ही बलस्वरूप तभी तो वैदिक साधक कहता है "बलमसि बलं मयि धेहि" तू स्वयं बल है, बल स्वरूप है, बल का भण्डार है, मुझे भी बल प्रदान कर ।

प्रिय पाठकगण। जहाँ ज्ञान के साथ क्रियाशीलता भी है और बल भी, वहाँ किस प्रकार पार पाया जा सकता है? सीधी तरह कोई होश में न आये तो वह अपनी क्रियाशीलता का बल पूर्वक प्रयोग करता है और तब······। तब क्या? अभी आगे भी आगे भी उसके पास बहुत कुछ है। आपको ज्ञात होना चाहिये कि वह "शुष्मिणः पतिः" शोषण शक्ति का भी स्वामी है। जो उसकी उत्तम शिक्षाओं के द्वारा अपने में भद्रभाव उत्पन्न करके सत्कर्मों में प्रवृत्त नहीं होता, वह प्रभु अपनी ज्ञानमय क्रिया शक्ति का बलपूर्वक प्रयोग करके इस प्रकार के दुष्कर्मियों का शोषण कर डालता है।

अब विचार कीजिये कि कौन सा वह उपाय है, जिसे कर के उससे बचा जा सके। उससे बच निकलने का न कोई मार्ग है और न कोई ठौर-ठिकाना। कारण कि वह सब स्थानों पर पहुँचा हुआ है। केवल एक ही-और एक मात्र उपाय यही है कि उस की शरण गहो और उसकी उत्तम शिक्षाओं को ग्रहण कर भद्रभाव मय जीवन बनाकर सत्कर्मों में प्रवृत्त हो जाओ और उसकी प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील बनो। इसी मे मानव जीवन की सफलता है । -x-x-x-x-x-x-

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, 5 मीराबाई मार्ग लखनऊ के

"श्रद्धानन्द अतिथि-भवन" के निर्माण हेतु

दान दाताओं की सूची

	नाम	रु0 पै0	प्राप्त
1-	पूं0 स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली	1000=00	"
2-	श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी, मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली	1001=00	"
3-	आर्य समाज गणेशगंज, लखनऊ	5000=00	"
4-	माननीय नगर विकास मन्त्री श्री बल्देव सिंह आर्य	1000=00	"
5-	श्री कृष्ण बल्देव महाना (निजी)	2500=00	"
6-	श्री अर्जुन देवजी महाना (निजी)	1100=00	"
7-	श्रीमती पुष्पा तिवारी धर्म पत्नी श्री मनमोहन तिवारी, सभा मन्त्री	1101=00	"

निम्न व्यक्तियों ने निम्न प्रकार दान दिये जाने का वचन दिया है

1-	आर्य समाज जनपद मेरठ द्वारा श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान	5000=00
2-	आर्य समाज हरिद्वार	1000=00
3-	आर्य समाज चौक इलाहाबाद द्वारा श्री राधे मोहन अग्रवाल	3000=00
4-	आर्यसमाज बहादुराबाद सहारनपुर	1000=00
5-	जिला सभा बिजनौर गढ़वाल	2000=00
6-	जिला सभा गोण्डा द्वारा श्री आनन्द उपमन्यू	2500-00
7-	आर्यसमाज बलरामपुर	500=00
8-	आर्य समाज सुलतानपुर जनपद द्वारा श्री राम कृष्ण जायसवाल	5000=00
9-	आर्य समाज सहारनपुर जनपद	10000=00
10-	आर्यसमाज कानपुर	5000=00
11-	आर्य समाज भोलेपुर फतेहपुर	501=00
12-	जिला सभा एटा	1001=00
13-	आर्य समाज गंज मुरादाबाद	5000=00
14-	आर्यसमाज मिर्जापुर	5000=00
15-	आर्यसमाज रामपुर	1000=00
16-	आर्य समाज इटावा द्वारा वेद प्रकाश जी	5000=00
17-	आर्य समाज फतेहपुर द्वारा श्री रूपकिशोर जी	-एककक्ष का निर्माण
18-	आर्य समाज मैनपुरी द्वारा श्री अटल जी	2500=00
19-	श्री हीरालाल जी (निजी) फतेहपुर	1000=00
20-	श्री हरिश्चन्द्र आर्य	1000=00
21-	आर्यसमाज सदर बाजार लखनऊ द्वारा श्री सच्चिदानन्द जी गुप्त	1101=00
22-	आर्य समाज, लालबाग, लखनऊ	10,000=00
23-	आर्य समाज हरदोई	2500=00
	योग-	173304=00

सभी दानदाताओं का धन्यवाद।
जनता से इस पुण्य कार्य में अधिक से अधिक धन से सहयोग दिए जाने का अनुरोध है। आर्यमित्र उनके नाम सहर्ष प्रकाशित करेगा -

कोषाध्यक्ष सभा।

उत्सव

आर्य समाज दयानन्द मार्ग, शकूर बस्ती दिल्ली के वार्षिक उत्सव में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने सैकड़ों छात्रों तथानगर के वृद्धों एवं पूज्य पुरुषों को प्रशस्तिपत्र वितरित किए। इस अवसर पर आर्यसमाज के मन्त्री द्वारा रु0 पचास-हजार के एक आर्यट्रस्ट के स्थापना की घोषणा की गई। यह वार्षिक समारोह श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस समारोह में आर्यजाति के प्रसिद्ध नेताओं उपदेशकों पूज्य सन्यासियों के अतिरिक्त सर्वश्री भरत सिंह , रामचन्द्र विकल, हरी सिंह बाल्मीकि, संसद सदस्य भी उपस्थित थे।

श्री ब्रह्मदत्त स्नातक ने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के एक मात्र जीवित मुसल्मान श्री सैयद फैयाज अली का अन्य सत्याग्रहियों के साथ विशेष रूप से सम्मान एवं स्वागत किया ।

आर्यसमाज सांवली आदि पंचपुरी गढ़वाल के कर्मठ कार्यकर्त्ता, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री शान्ति प्रकाशजी प्रेम प्रभाकर का 75वाँ जन्म दिवस 12 दिसम्बर को ससमारोह मनाया गया। इस अवसर पर अनेकों छात्रों तथा विशिष्ट व्यक्तियों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए प्रेम प्रभाकर जी के पदचिन्हों पर चलने का वृत लिया।

आर्यसमाज आर्यपुरा विरौरा बुलन्दशहर द्वारा आर्यपुरा, विरौरा, मुहीउद्दीनपुर, हुसेनपुरा आदि गाँवों में लाउडस्पीकर लगाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया गया ।

चुनाव

आर्य समाज हस्तिनापुर (मेरठ)

प्रधान	-	श्री विद्यासागर दीक्षित
मन्त्री	-	श्री तेजपाल सिंह
कोषाध्यक्ष	-	श्रीमती सत्यबाला जी

शास्त्रार्थ-युग समाप्त कैसे हुआ ?
उसके दुष्परिणाम

शास्त्रार्थ युग कैसे आये?

§-आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास, वेदाचार्य, बरेली§

§गतांक से आगे§

जिन दिनों शास्त्रार्थ होते थे, तब आर्यसमाज के शास्त्रार्थमहारथी लोग पुस्तकालयों में बड़े-बड़े प्रमाण ढूढ़ते रहते थे, स्वामी दयानन्द-जी की प्रत्येक बात का उनके पास प्रमाण था, यदि किसी ने शास्त्रार्थ में प्रश्न किया कि धाय दूध पिलावे यह बात वेद में कहां लिखी है, तब वे तत्काल वेद का मन्त्र प्रस्तुत करते थे, स्वामी जी ने लिखा है कि ब्राह्मण का लड़का वैश्य हो जाए, वैश्य का लड़का ब्राह्मण हो जाय तो लड़के बदल लिए जांय, यह बात वेद में कहां लिखी है, तब आर्यसमाज के महारथी वेदमन्त्रों को रखते थे, इस प्रकार स्वामी-जी की प्रत्येक बात की पुष्टि के लिये उन्होंने वेदमन्त्र ढूढ़ रखे थे, उस समय आर्यसमाज के विद्वानों की विद्या बहुत अधिक थी, उन्हीं दिनों §पौराणिक पोलप्रकाश, शास्त्रार्थमहारथी, निर्णय के तट पर, आदि ग्रन्थों की रचना हुई, विरोधी लोग शान्त नहीं है, देवबन्द में मुसलमान शास्त्रार्थमहारथी तैयार किये जा रहे हैं, जहां देश-विदेश से आकर कुरान की शिक्षा पर रहे हैं। पौराणिकों की ओर से भी वेदार्थपारिजात नाम का ग्रन्थ प्रकाश में आया है जो करपात्रीजी ने काशी के उच्चकोटि के विद्वानों को रखकर स्वामी दयानन्दजी के ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका के अक्षर-अक्षर के खण्डन पर यह ग्रन्थ लिखाया है यह ग्रन्थ कई वर्षों के गहन परिश्रम से लिखा गया, इसके छपने से पूर्व मुझे पता लग गया था, परन्तु किसी ने विश्वास नहीं किया, यह ग्रन्थ भी मुख्य ग्रन्थ वेदार्थ पारिजात की भूमिका है उसमें स्वामी जी के वेदभाष्य का खण्डन लिखा जा रहा है।

शास्त्रार्थ युग कैसे लाया जा सकता है

अमरस्वामी जी के साथ शास्त्रार्थ-युग समाप्त हो गया। वह जिस सन्यास-मण्डल के प्रधान थे उसके प्रधान अब स्वामी जगदीश्वरानन्द जी हैं। उन्होंने बताया कि उनके मंडल में दो लाख रुपया है परन्तु वह यह कहते थे कि अगर इससे शास्त्रार्थ-विद्यालय खोले तो उसमें कौन पढ़ने आयेगा और जो शास्त्रार्थमहारथी तैयार हो जायेंगे उनकी खपत कहां होगी? हमने जो ऊपर लिखित विवरण दिया है कि आर्यसमाज का जो लाखों-करोड़ों रुपया प्रतिवर्ष व्यय हो रहा है उन जलसों पर आर्यसमाजें शास्त्रार्थमहारथियों को ही बुलावें और इन इतवारी नोटबुकी उपदेशकों को बुलाना बन्द कर दें तो सैकड़ों शास्त्रार्थमहारथियों की खपत हो सकती है जलसों पर। इस समय कुछ व्यक्ति शेष हैं जो शास्त्रार्थ करने की योग्यता रखते हैं, जैसे पं0 शान्तिप्रकाश जी गुड़गाँव और पं0 सत्यव्रत शास्त्री गोरखपुर ओमप्रकाश शास्त्री खतोली, पं0 शिवराज-जी बम्बई वाले जो अब पंजाब सभा में आ गये हैं, इन सब को जलसों पर प्रोत्साहन दिया जाये। आर्यसमाज के उत्सवों पर जिन व्यक्तियों को बुलाया जाये उन्हें पहले से लिख दिया जाये कि आपके व्याख्यान निम्नलिखित विषयों पर होंगे §क§ अवतारवाद झूठा है §ख§ मूर्तिपूजा-पाखण्ड है §ग§ मृतकश्राद्ध पंडितों के पेट का धन्धा है §घ§ पुराण बेहूदे ग्रन्थ हैं §ङ§ कुरान बाइबिल इलहामी किताबें नहीं हैं। §च§ मुसलमानों का सिद्धान्त कि पुनर्जन्म नहीं होता यह झूठ है §छ§ सायण महीधर के वेदभाष्य अश्लील और पापों के प्रचारक हैं इत्यादि विषयों पर आपके व्याख्यान होंगे।

जो लोग इन विषयों पर शास्त्रार्थ नहीं कर सकते हैं वे भी इन विषयों पर व्याख्यान तो तैयार कर सकते हैं। जब इन विषयों पर व्याख्यान शुरू होंगे तो दूसरों की ओर से भी प्रहार शुरू होंगे। बस शास्त्रार्थ प्रारम्भ हो जायेगा।

इसी प्रकार जब किसी को यज्ञ कराने बुलाया जाये तब उसको पहले से लिख देना चाहिये कि हमारे यहां लोग आपसे नीचे लिखे प्रश्न करेंगे:-

§क§ एक मन्त्र से पाँच बार आहुति क्यों दी जाती है।
§ख§ दो मन्त्रों से एक समिधा क्यों चढ़ाई जाती है।
§ग§ कुछ मन्त्र बोलकर कुछ मौन आहुति दी जाती है ऐसा क्यों ?
§घ§ कुछ मन्त्रों में इद न मम है कुछ में नहीं ऐसा क्यों ?
§ङ§ यज्ञ से प्रदूषण दूर कैसे होता है?
§च§ यज्ञ में तीन मेखलायें क्यों बनाई जाती हैं और प्रत्येक मेखला पाँच अंगुल की क्यों?
§छ§ अंगुल का क्या अर्थ है, किसी का अंगुल पतला किसी का मोटा तो किसकी अंगुली से नापें?

यदि आर्यसमाजें इन बातों का पालन करें तो जल्दी शास्त्रार्थ-युग आ जायेगा और विद्वान् पढ़ना शुरू कर देंगे। आज यदि स्वामी तुलसीराम जी, पं0 आर्यमुनि जी, पं0 शिवशंकर काव्यतीर्थ, पं0 भगवद्दत्त-जी, पं0 बुद्धदेव विद्यालंकार आदि विद्वान् जीवित होते तो वेदार्थपारिजात का उत्तर पाण्डित्य पूर्ण ढग से तत्क्षण दे देते, जिसमें स्वामी जी को गालियां लिखी हैं। इस ग्रन्थ के कुछ पृष्ठों का उत्तर आचार्य-विशुद्धानन्द जी ने लिखा और चुप लगा गये। यह ग्रन्थ हजारों पृष्ठों का है। जिसके लेने के देने पड़े हैं। सार्वदेशिक सभा भी चुप है अभी तक पिछले ग्रन्थ पड़े हैं जिनके उत्तर नहीं दिये गये हैं।

तीन ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के खण्डन पर लिखे गये हैं §1§ भूमिका धिक्कार §2§ ऋगादिभाष्यभूमिकेन्दु §3§ वेदार्थपारिजात। इसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश के खण्डन पर भी राधा स्वामी वालों की ओर से खण्डन ग्रन्थ लिखा गया है। संस्कारविधि के खण्डन पर भी ग्रन्थ लिखे गये हैं। स्वामीजी के ऋग्वेदभाष्य के विरुद्ध कलकत्ते के विद्वानों ने एक ग्रन्थ लिखा स्वामीजी के यजुर्वेदभाष्य के विरुद्ध स्वामी जी के सहपाठी उदयप्रकाश नारायण ने खण्डन लिखा और जिसमें उसने स्वामी जी के भाष्य को दोषाकर भाष्य बताया। भगवान् आर्यसमाजों को सद्बुद्धि दे।

जय संस्कृत

§कविवर प्रणव शास्त्री एम0ए0
महोपदेशक शास्त्रीसदन, आगरा§

वेद प्रसूता विश्व विश्रुता जन-मन-गण की कल्याणी।
"अनादिनि धना वाक्" ब्रह्म जय जय हे संस्कृत वाणी।।
तुझे वर्ण विज्ञान ज्योति ने जयमाला पहिनाई है।
इसीलिए भूमण्डल में बाज रही शहनाई है।
अखिल धरा का भाषाभूपति करता तव पहुनाई है,
जैसा लिखो पढ़ो वैसा ही ब्राह्मी लिपि लासानी है।।1।।

आरण्यक उपनिषद, स्मृतियाँ, ब्राह्मण ग्रन्थ अमोले हैं।
पौराणिक ऐतिह्य, कल्प ने भेद अनोखे खोले है।
अनुपम सृष्टि सृजन के दर्शन तर्क तुला पर तोले हैं
व्याकृति, ज्योतिष, छन्द शास्त्र नवनीत नीति की मन्थानी।2।

ज्ञान और विज्ञान कोष के अद्भुत हैं भण्डार भरे।
आध्यात्मिक तरणी से कोई भवसागर को पार करे।
आयुर्वेदिक शिल्पकला मय धनुर्वेद की धार-धरे।
ग्रन्थ सहस्रों लिखित यहाँ पर महिमा जिनकी जग जानी।3।

रामायण, भारत भी तेरे आँगन में है खेल रहे।
गीता के भी गीत कान में मिश्री सी है मेल रहे।
शुक्र, विदुर चाणक्य राज्य के तन्त्र झमेले झेल रहे
मानव को प्रत्येक क्षेत्र में माता तू ही वरदानी।।4।।

गद्य पद्य साहित्य विधा के विविध विटप है नन्दन में।
चम्पू नाटक कथा कहानी उपन्यास अभिनन्दन में
पंच तन्त्र शाकुन्तल शोभित भूतल चर्चा चन्दन में।
कादम्बरी कसौटी कवि को कोविद कुल ने पहिचानी।।5।।

तेरे गौरव गागर में सागर अमृत लहराया।
पक्षपात तज भाषाओं ने तेरा चिन्तन चितलाया।
ऐक्य सूत्र के तारतम्य का ध्वज तू ने ही लहराया।
तेरे ही सौन्दर्य सदन में शोभित संस्कृति पटरानी।।6।।

किन्तु मदारी कल्पद्रुम को यों ही काट रहे।
तुष्टीकरण विधा से मन की खाई पाट रहे।
राष्ट्रीनाश की बूटी मानो हँस-हँस बाँट रहे।
"प्रणव" प्रतिज्ञा करो पार्थ कर न सके ये मनमानी।।7।।

प्रवासी भारतीयों के इतिहास से हम शिक्षा लें

डा0 शकुनचन्द आर्य
लालगंज,
रायबरेली।

भारत के भूतपूर्व शासक अंग्रेजों को जब अपने अन्य उपनिवेशों में कृषि एवं अन्य श्रम के कार्यों के लिए श्रमिकों की आवश्यकता पड़ी तथा उन्होंने अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने शासित देशों में खोज की तो उन्हें भारतीय मजदूरों से अधिक परिश्रमी एवं ईमानदार कहीं के मजदूर नहीं दिखाई पड़े। फिर क्या था भारत के गरीबों एवं निरक्षरों को विदेश ले जाकर धनवान बनाने का लालच देकर मारीशस, गायना, फिजी, सूरीनाम एवं दक्षिण अफ्रीका आदि अनेक अंग्रेजों द्वारा शासित देशों में भेजा गया। वहाँ पहुँच कर जब उन्हें अपने साथ किये गये विश्वासघात का पता चला तो उन्हें बहुत दुख हुआ। परन्तु वे कर ही क्या सकते थे। न वे भारत लौटने में समर्थ थे न उन्हें धोखा देकर वहाँ ले जाने, ठेकेदारों से बदला लेने में। विवश होकर उन्हें वहाँ की परिस्थितियों से समझौता करना पड़ा। फलस्वरूप उन्हें अंग्रेज मालिकों के गुलामों के रूप में काम करने, उनकी इच्छानुसार मजदूरी लेने तथा प्राणघातक जंगली जीवों से युक्त खेतों में काम करने तथा पशुओं की भाँति मालिकों के कोड़े सहने के लिए बाध्य होना पड़ा।

परन्तु "घूरे के भी दिन फिरते हैं" कहावत के अनुसार अन्ततोगत्वा उनके भी अच्छे दिन आये जबकि विभिन्न देशों में ठेकेदारों के माध्यम से उनके गोरे या अंग्रेज मालिकों के साथ मजदूरी सम्बन्धी एग्रीमेन्ट के काल समाप्त हो गये तथा वे उनकी गुलामी से मुक्त होकर सामान्य व्यक्ति बन गये। वे उन्हीं देशों में बसकर वहाँ के स्थायी निवासी बन गये। उनकी आर्थिक दशा में भी उत्तरोत्तर सुधार हुआ। वहाँ के गोरे या अंग्रेज शासकों का व्यवहार भी पहले की अपेक्षा नरम एवं सहानुभूति पूर्ण होगया। जिससे उनका मन वहाँ रम गया। वे वहाँ के अन्य निवासियों के साथ घुलमिल से गये तथा उन देशों को गोरों या अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने में उन्होंने उनका डटकर साथ दिया। फलस्वरूप वे देश स्वतन्त्र हुये और वहाँ योरपीय या अंग्रेजी शासन समाप्त हुआ।

स्वतन्त्रता के बाद की स्थिति

उपरोक्त देशों में से मारिशस, ब्रिटिशगायना, फिजी तथा सूरीनाम आदि देश विशेष उल्लेखनीय हैं जहाँ भारतीय मूल के लोगों विशेषतः हिन्दुओं की संख्या अन्य किसी वर्ग की अपेक्षा अधिक है। मारिशस में तो हिन्दू 52 प्रतिशत, फिजी तथा ब्रिटिश गायना आधे से कुछ कम तथा सूरीनाम में एक तिहाई है। इनमें से सूरीनाम को छोड़कर जो कि डच उपनिवेश था, शेष अंग्रेजों की दासता से युक्त हुये थे।

मारीशस में सफलता

परन्तु उपरोक्त देशों में से अधिकांश देशों की स्वतन्त्रता भारतीयों के लिए वरदान कम एवं अभिशाप अधिक सिद्ध हुई। केवल मारीशस जो अफरीका महाद्वीप में एक द्वीप पर बसा देश है, जिसकी दस लाख जनसंख्या में भारतीयों की संख्या सत्तर प्रतिशत तथा हिन्दुओं की बावन प्रतिशत है, सत्ता भारतीयों को सीधे अंग्रेजों से प्राप्त हुई जिसे वहाँ के हिन्दू अनेक कठिनाईयों एवं विषम परिस्थितियों के बावजूद अपने हाथों में बनाये रखने मे सफल रहे। यहाँ तक कि पिछले आम चुनाव में वहां के भारतीय मूल के मुसलमानों ने अपने को पाकिस्तानी मूल का घोषित कर हिन्दुओं के विरुद्ध उनके विरोधी कियोलों का साथ दिया, फिर भी हिन्दू वर्चस्व का बालबांका नहीं हुआ। उपरोक्त स्थिति वहाँ के आर्यसमाजी विचारों के हिन्दू नेता स्व0 सर शिवसागर-राम गुलाम जो पहले प्रधानमन्त्री थे तथा बाद में वहा के गवर्नरजनरल बने थे, कि विवेकपूर्ण एवं बुद्धिमत्तापूर्ण नीति तथा दूसरों के मुकाबिले हिन्दुओं की संगठित शक्ति का परिणाम है। जिस प्रकार कि सर शिवसागर पहले प्रधानमन्त्री के रूप में वहाँ के हिन्दुओं को संगठित रखने में सफल रहे तथा बाद में चुनाव हारने पर विपक्षी दल के हिन्दू नेता अनिरुद्ध जगन्नाथ के प्रधानमन्त्री बनने पर उनके पीछे उन्होंने सम्पूर्ण हिन्दू शक्तियों को खड़ा किया, उसके लिए मारिशस के हिन्दू सदैव उनके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

ब्रिटिश गायना में सफलता के बाद असफलता

यह देश भारत से बहुत दूर दक्षिणी अमरीका के उत्तरी भाग में स्थित है। जब यह देश स्वतन्त्र हुआ था तो सत्ता अंग्रेजों ने भारतीय मूल के नेता श्री छेदी जगन को सौंपी थी परन्तु जिस प्रकार कि जगन ने प्रधानमन्त्री के पद पर रहकर हिन्दुओं को संगठित करने के बजाय एक मजदूर नेता होने का अपना रूप प्रदर्शित कर रूसपरस्त एवं धर्मनिरपेक्ष नीति का अनुकरण किया, उससे उन्होंने भारतीय मूल के हिन्दुओं, ईसाई चर्च से प्रभावित अश्वेतों तथा वहाँ के गवर्नर जनरल तीनों की सहानुभूति खोदी। फलस्वरूप उन्हें तो सत्ताच्युत होना ही पड़ा, साथ ही साथ अंग्रेजों ने वहां समानुपातिक प्रणाली लागू कर ऐसी व्यवस्था कर दी जिससे वहां योरोपियनों की मदद से अश्वेत नीग्रो नेता शासनारूढ़ हो गये तथा भारतीयों को सदा के लिए सत्ता से हाथ धोना पड़ा तथा आज वहाँ उनकी स्थिति द्वितीय श्रेणी के नागरिकों के समान है। उपरोक्त स्थिति वहाँ के भारतीय नेताओं की अविवेकपूर्ण एवं अदूरदर्शितापूर्ण नीति का परिणाम है।

सूरीनाम में असफलता के बाद सफलता

यह देश भी भारत से हजारों किलोमीटर दक्षिण अमरीका में स्थित है। यहाँ भारतीय मूल के लोगों की जनसंख्या लगभग तिहाई है। पहले इसका नाम डचगायना था जो डचों के आधीन होने के कारण था। स्वतन्त्र होने पर सूरीनाम हो गया। यहाँ सत्ता प्रजातान्त्रिक ढंग से विदेशी शासकों ने यहां के लोगों को सौंपी थी। परन्तु सत्तारूढ़ नीग्रो लोगों ने भारतीयों के साथ द्वितीय श्रेणी के नागरिकों के ऐसा व्यवहार किया परन्तु भारतीय वंशज भी चुनावों के समय प्रजातान्त्रिक ढंग से सत्तारूढ़ होने के प्रयास करते रहे। दोनों के वर्गों के बीच संघर्ष का परिणाभ हुआ कि मौका पाकर सेना ने सत्ता पर अधिकार कर लिया। सैनिक शासनकाल में वहाँ के भारतीय मूल के लोगों पर अनेक अत्याचार हुये, उनकी माँ-बहिनों पर बलात्कार के प्रयास भी हुये। अनेक भारतीय वंशजों को भागकर हालेन्ड जाकर बसना पड़ा परन्तु विपत्ति की इस वेला में भारतीय मूल के लोग संगठित रहे। भूतपूर्व डचशासकों ने भी फौजी सरकार को इस आधार पर आर्थिक सहायता देना बन्दकर दिया कि वे उसे आर्थिक सहायता न देकर सूरीनाम की चुनी हुई सरकार को ही आर्थिक सहायता एवं सहयोग देंगे। परिणाम अच्छे निकले' फौजी तानाशाहों ने हार स्वीकार कर ली। वहाँ प्रजातन्त्र की स्थापना हुई। जिसके लिए चुनाव हुये। चुनावों में भारतीयवंशजों को अच्छी सफलता मिली। वे सत्ता में भागीदार बनने में सफल रहे। अब वहाँ उनकी स्थिति सन्तोषप्रद है।

फिजी में स्थिति दयनीय

परन्तु भारत से लगभग बीस हजार किलोमीटर दूर प्रशान्त महासागर में स्थित सागर से घिरे फिजी देश में भारतीय मूल के लोगों की दशा जिनकी संख्या सबसे अधिक कुल जनसंख्या की 47 प्रतिशत है, वहाँ के उनसे कम जनसंख्या वाले मूल अफ्रीकियों की तुलना में दयनीय है। ऐसे तो वहाँ के भूतपूर्व अंग्रेज शासकों ने वहाँ के लोगों को सत्ता सौंपते समय ही वहाँ के भारतवंशियों के साथ अन्याय किया था जबकि उन्होंने उन्हें वहां की संसद में उनके अनुपात से बहुत कम स्थान दिये थे। परन्तु दो वर्ष पूर्व जबकि भारतीय मूल के लोगों ने वहाँ की अफ्रीकी लेबर पार्टी के साथ गठबन्धन कर सत्तारूढ़ होने में सफलता प्राप्त की तो अन्याय की सीमा हो गयी वहाँ के फौजी सेनापति कर्नल राबुका ने भारतीयों की सफलता से चिढ़कर उस विधिवत निर्वाचित सरकार का तख्ता पलट दिया। और वहाँ फौजी सरकार की स्थापना कर दी। तब से वहाँ भारतीयों के ऊपर अनेक अत्याचार हो रहे हैं। भावी प्रस्तावित संविधान में उन्हें जनतान्त्रिक अधिकारों से वंचित करने का षड्यन्त्र चल रहा है, फिजी को ईसाई देश घोषित कर वहाँ के हिन्दुओं के धर्मान्तरण की योजना चल रही है, जोकि दुःखद एवं चिन्तनीय है। परन्तु वहाँ के भारतवंशियों की उपरोक्त दशा के लिए वहाँ के भारतीय मूल के लोग कम उत्तरदायी नहीं है जिन्होंने आर्थिक रूप से सम्पन्न होने तथा वहाँ की अर्थव्यवस्था के स्वामी होने के बावजूद अपने संगठन, सुरक्षा एवं उज्जवल राजनीतिक भविष्य के लिए ध्यान नहीं दिया। यदि फिजी की सेना में भारतीय मूल के सैनिक भी वहाँ की उनकी जनसंख्या के अनुपात में होते तो न तो वहाँ सैनिक

शासन की नौबत आती और न भारतीयों की दुर्दशा होती।

हम हिन्दू (भारतवासी) प्रवासी भारतीयों की उपरोक्त स्थिति से शिक्षा लें

ऐसी स्थिति में आवश्यकता है कि हम भारत के हिन्दू उपरोक्त हिन्दूबहुल देशों की स्थिति एवं इतिहास से शिक्षा लेकर भारतीय राजनीति में ऐसी अपनी रणनीति तैयार करें ताकि देश की राजनीति में उनका वर्चस्व बना रहे, उनका भविष्य सुरक्षित रहे तथा देश के वर्तमान धर्मनिरपेक्ष ढांचे के साथ-साथ उनके धार्मिक प्रभुत्व पर आंच न आने पावे। इस सम्बन्ध में निम्नांकित बातें एवं सुझाव ध्यान देने योग्य हैं :-

1- भारत के 85 प्रतिशत हिन्दुओं को मारीशस के 52 प्रतिशत हिन्दुओं की भांति संगठित होकर चुनावों के समय इस प्रकार मतदान करना चाहिए ताकि देश की लोकसभा में उनका वर्चस्व बना रहे तथा कोई भी वर्ग उनके राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक अधिकारों पर आक्रमण करने का साहस न कर सके जैसी चिन्तनीय स्थिति इस समय रामजन्म भूमि, सांस्कृतिक भाषा संस्कृत तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के सम्बन्ध में चल रही है। 2- हिन्दूलोग सेना एवं सुरक्षा बलों में अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित होकर उसका हिन्दूबहुल स्वरूप बनाये रखें ताकि फिजी, सूरीनाम एवं ब्रिटिश गायना की पुनरावृत्ति न होसके। 3-छुआछूत एवं ऊँचनीच की भावनाओं को त्यागकर अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक एकता को सुदृढ़ करें ताकि फिजी की तरह उनके धर्मान्तरण तथा उनकी पहिचान समाप्त करने की भावना कभी भी इस देश के शासकों अथवा शासक वर्ग न उत्पन्न हो। 4- सुख समृद्धि एवं प्रगति के लिए धनोपार्जन अति आवश्यक है परन्तु फिजी की भांति केवल पैसा पैदा करने में ही न लगे रहें अपितु पैसे का उपयोग संगठन को सुदृढ़ करने तथा अपने अधिकारों की रक्षा के लिए करके हिन्द महासागर स्थित लघुभारत के नाम से विख्यात देश मारीशस से प्रेरणा लें।

मृत्यु के भय का कभी त्रास न हो

-आचार्य वेदव्रत अवस्थी,
वेदमन्दिर हिन्दनगर,
लखनऊ)

ओ3म् अकामो धीरो अमृत स्वयम्भु रसेन तृप्तो न कुतश्च नोनः
तमेव विद्वान् न विभाय मृत्योरात्मानं धीरं मजरं युवानम्
-अथर्व वेद काम 10 सूत्र 8 मन्त्र44

भावानुवाद

निष्काम और धीर प्रभो अमृत को खान हो
स्वयम्भू परम पिता तुम दया निधान हो
अविनाशी आनन्दघन सर्वथा सम्पूर्ण हो
विश्व में व्यापक विभो शक्तिमन् परिपूर्ण हो
तुम अजर तुम अमर तुम सदा जवान हो
जन्म मरण से परे सदैव विद्यमान हो
दयादृष्टि कीजिए वासनायें दूर हो
कामनाएं धर्म की मन में भरपूर हों
धर्म की संस्थापना हित जिन्दगी कि साध हो
वेद के प्रचार हित संगठित समाज हो
मृत्यु के भय का न हम को नाथ कभी त्रास हो।
हर समय देखूं सखे हे तुम हमारे पास हो ।

कठपुतली दुवारा नैतिकता का प्रचार

साक्षारता निकेतन लखनऊ में चल रहे प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र में दिनाक- 20 तथा 21 दिसम्बर 1988 को कठपुतली के माध्यम से पर्यवेक्षक (प्रेरक) श्री भरत लाल की टीम ने दर्शकों को साक्षर अभियान की ओर उन्मुख करने वाले अनेक रोचक दृश्य प्रस्तुत किये। इन दृश्यों में आचरण को उन्नत करने वाले अनेक प्रेरक प्रसंग थे ।

-x-x-x-x-x-x-

महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रतिमा प्रतिष्ठा

(श्री सोती वीरेन्द्र चन्द्र जी,
भू0पू0 रजिस्ट्रार आर्टस् कालेज,
लखनऊ)

ऋषि दयानन्द सरस्वती जी की निर्वाण शताब्दी समारोह का उद्घाटन श्रीमती इन्द्रा गाँधी, प्रधान मन्त्री ने नवम्बर 3,1983 को अजमेर में किया। उसमें मुझे जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वहां इस बात की चर्चा हुई कि, अजमेर के दयानन्द उद्यान में, जहाँ स्वामी दयानन्द-सरस्वती का अन्त्येष्टि संस्कार अनासागर के तट पर हुआ था, उनकी प्रतिमा प्रतिष्ठापित की जाय।

इस प्रकार का प्रस्ताव यदि निष्पक्ष रूप से देखा जाय, तब स्वामी जी की भावना एवं निर्देशन के नितांत विरुध है। स्वामी जी अपनी मूर्ति के निर्माण के बिल्कुल विरुद्ध थे। क्योंकि उन्हें यह अविच्छिन्न आशंका थी, बल्कि वह यह भली-भाँति जानते थे कि इसका परिणाम यह होगा कि भावावेश में, अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के रूप में मनुष्य उनकी मूर्ति पर फूलमाला आदि चढ़ाकर उसकी अर्चना करने लगेंगे जो कि आगे चलकर मूर्ति पूजा का रूप धारण कर लेगा तथा यह परिपाटी उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के पूर्णरूपेण प्रतिकूल होगी। इसी कारण उनकी मूर्ति अब तक निर्मित कराकर स्थापित नहीं की गई थी।

यहां बौद्ध धर्म का दृष्टव्य है। गौतम बुद्ध अपनी प्रतिमा की स्थापना के अनुकूल नहीं थे। अतएव् प्रारम्भिक बौद्धकला में बुद्ध, की प्रतिमा नहीं बनाई जाती थी। बौद्ध धर्म की हीनयान शाखा का विचार था कि गौतम बुद्ध निर्वाण को प्राप्त हो गए। इसके कारण वह इस भवसागर के आवागमन के चक्र से मुक्त हो गए। अतएव इस मुक्ति के उपरान्त उनको मूर्ति की आकृति में आबद्ध करना उसके द्वारा निर्धारित नियमों की अवहेलना करना है तथा तथागत का अपमान करने के समान है। हीनयान मतावलंबियों का यह भी दृढ़ विश्वास था कि निर्वाणोपरान्त बुद्ध "अननुवेज्जो" अर्थात् "नजाने जा सकने योग्य" हो गये थे तथा "यो खो धम्मं पस्सति म पस्सति"- उनको केवल वह ही देख सकता था जो धर्म को देख सकता हो।

ऐसी परिस्थिति में गौतम बुद्ध की मूर्ति का निर्माण न कर कुछ प्रतीक बना लिए गए थे जिनके द्वारा बुद्ध एवं उनसे सम्बन्धित तथ्यों को प्रदर्शित किया जाता था जैसे चक्र को स्वयं बुद्ध का प्रतीक माना गया था। स्तूप को महापरिनिर्वाण का चिन्ह उद्घोषित किया गया था। बोधि वृक्ष को सम्बोधित सम्बोधि के सदृश मान्यता दी गई थी।

कालान्तर में जब बौद्ध धर्म की हीनयान एवं महायान दो शाखाएं हो गई तब महायान अनुयायी बुद्ध की मूर्ति बनवाने लगे और उसका फल यह हुआ कि बुद्ध की मूर्ति पूजा होने लगी ।

अतः स्वामी जी की मूर्ति स्थापित कराने के पूर्व उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिकोण में रखते हुए इस मामले पर पुनर्विचार अपेक्षित है ।

-x-x-x-x-x-x-x-

यज्ञ एवं जन जागरण कार्यक्रम

मकूर (उन्नाव) । आर्यसमाज मकूर के तत्वावधान में ग्राम मकूर में दिनाक - 13 से 15 जनवरी 1989 तक एक यज्ञ एवं जन जागरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। जिसमें देश के उच्चकोटि के विद्वान महात्मा व सन्यासी मुख्य वक्ता श्री जोरावर सिंह तथा श्रीमती प्रभावती जी पधार रही हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर लाभ उठावें।

-आर्य समाज हासीपुर (मीरजापुर) का स्वर्ण जयन्ती समारोह दिनांक- 12, 13, दिसम्बर 1988 को सोल्लास सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध वक्ता श्री उत्तमचन्द शरर, आचार्य डा0 वेद प्रकाश जी, श्री इन्द्र देव सिंह, श्री महानन्द सिंह एवं सोम मित्र शास्त्री धनुर्वेदाचार्य ने अपने प्रवचन, भजनोपदेश एवं वाण विद्या प्रदर्शन से जनता को लाभान्वित व आकर्षित किया। श्री सरोज कुमार शुक्ल ने मन्दिर निर्माणार्थ 4000=00रु0 का सात्विक दान प्रदान किया।

धर्म परिवर्तन किस तरह होता है ?

पं0 जयन्त कुमार आर्य, भूतपूर्व पादरी,
दि फ्री विल वेप्टिस्ट चर्च आफ इण्डिया,
भू0पू0 वार्डेन, सैन्ट पीटर्स कालिज, आगरा,
भू0पू0 मिशनरी आसाम, अरूणाचल प्रदेश।

शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से : ईसाई मिशनों के द्वारा देश के बड़े शहरों से लेकर छोटे शहरों तक और ग्रामीण अंचलों से लेकर अन्य अंचलों तक शिक्षण संस्थायें चलाई जाती हैं। किसी न किसी क्षेत्र में इनकी शिक्षण संस्थाओं के खुलने का क्रम जारी है। वाहय रूप से या साधारण तौर पर देश की आबादी को शिक्षित करने में यह एक बड़ा योगदान है परन्तु गहराई से अध्ययन करने पर और मेरे प्रत्यक्ष अनुभव द्वारा इतनी अधिक शिक्षण संस्थाएं खोलने का रहस्य स्पष्ट हो जाता है। किसी भी देश या जाति के संस्कृति, इतिहास और धर्म को नष्ट करने के लिए वस्तुतः केवल एक ही अचूक वाण है, वह है वहाँ के युवाओं को उनके वास्तविक धर्म, संस्कृति और इतिहास के बारे में भ्रमित कर देना और आयातित धर्म, संस्कृति और इतिहास में शिक्षित और प्रशिक्षित करना। यह काम केवल शिक्षा के माध्यम से किया जा सकता है। ईसाई शिक्षण संस्थाओं में शिक्षित लोगों के ऊपर इसका प्रभाव देखा जा सकता है। बिहार के रांची सबडिवीजन, उड़ीसा के आदिवासी और मणिपुर, त्रिपुरा आसाम, मेघालय, मिजोरम, अरूणांचल प्रदेश में जनजातियों के लोगों में इसी कार्य पद्धति को अपनाकर 60 से 90 प्रतिशत लोगों को ईसाई बनाया गया है। ईसाई शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने वाला आदिवासी और ट्राइबल युवा अपनी सभ्यता, धर्म को गौण समझने लगता है। और इसका परिणाम स्वाभाविक है धर्म परिवर्तन होगा। स्कूलों में और उच्च ईसाई शिक्षण संस्थाओं में संस्कृति और भारतीय दर्शन का घिनौना रूप प्रस्तुत किया जाता है, उसका दुष्परिणाम हमारे सामने है। विशाल जनसंख्या का धर्म परिवर्तन। शिक्षण सस्थाओं के माध्यम से ईसाई मिशनों की पकड़ प्रशासनिक अधिकारियों और सम्पन्न वर्ग पर मजबूत हो जाती है। क्योंकि ये कथित प्रशासनिक अधिकारी सम्पन्न वर्ग के लोग अपने बच्चों को मिशन स्कूलों में पढ़ाना सम्मान {हाई स्टेटस} की बात समझते हैं। भारत को अंग्रेजों से मुक्ति मिलने के बाद भी अंग्रेजी की गुलामी इन कथित प्रशासनिक अधिकारी और सम्पन्न वर्ग के लिए गौरव की बात बनी हुई है और इन मिशन शिक्षण संस्थाओं में अपने बच्चों के प्रवेश और शिक्षा के लिए यह कथित वर्ग ईसाई मिशनों को मनमानी करने की परोक्ष रूप से छूट दे देता है। यह हमारा और हमारे देश का दुर्भाग्य है कि यह कथित वर्ग अंग्रेजी की गुलामी की मानसिकता का शिकार होकर रह गया है।

छात्रावास और अनाथालयों के माध्यम से: छात्रावासों का दैनिक कार्यक्रम इस प्रकार का होता है कि प्रत्येक छात्र/छात्रों को बाईबल क्लास, चर्च सर्विस और धार्मिक प्रवचन में सक्रिय भाग लेना अनिवार्य होता है। छात्र/छात्रायें क्लास में बाइबल की सर्वोच्चता की जानकारी प्राप्त करते हैं या शिक्षा पाते हैं। इस बाइबल क्लास में बाइबल को संसार का एक मात्र प्रामाणिक धर्म ग्रन्थ बताया जाता है और इसे परमपिता परमेश्वर के अनुप्राणित कहा जाता है और मुक्ति का एक मात्र स्त्रोत कहा जाता है। अन्य सारे धर्मग्रन्थों को झूठा बताया जाता है। ये सभी धर्मग्रन्थ, {वेद, स्मृति, गीता} को कपोल कल्पित कहा जाता है और कहा जाता है कि ये धर्मग्रन्थ मानव जाति को अन्धकार की तरफ ले जाते हैं। प्रकाश केवल ईसाइयों के धर्मग्रन्थ बाइबल में ही है, इत्यादि-इत्यादि।

छात्रावासों में धार्मिक प्रवचनों के द्वारा बाइबल और ईसाई धर्म की महत्ता और सर्वोच्चता की मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से व्याख्या करके छात्र-छात्राओं को मानसिक रूप से स्वधर्म के प्रति उदासीन बनाने का सफल प्रयोग किया जाता है। इन तरूणों के मस्तिष्क में केवल एक ही पालनकर्ता, उद्धारकर्ता, मुक्तिदाता पापों की क्षमा देने वाले ईसा मसीह की मूर्ति स्थापित कर दी जाती है। ये छात्र-छात्रायें धर्म प्रचार और धर्म परिवर्तन में बड़ा ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अवैध सन्तानों {विवाह पूर्व उत्पन्न सन्तानें} का पालन पोषण और शिक्षा भी इन्हीं छात्रावासों में किया जाता है। ऐसे छात्रावासों को कान्वेंट कहते हैं।

साहित्य के माध्यम से : ईसाई मिशनों के पास पैसे की कमी नहीं होती, इन्हें विदेशों से प्रचुर मात्रा में धन मिलता है। ये धन सेवा, चिकित्सा, शिक्षा और चर्च के नाम पर मंगाया जाता है परन्तु इसका उपयोग धर्म परिवर्तन के कार्य में किया जाता है। इसी धन के प्रयोग का एक माध्यम साहित्य द्वारा ईसाई धर्म का प्रचार है। विभिन्न ईसाई मिशनें करोड़ों की संख्या में ईसाई साहित्य का प्रकाशन भारत की विभिन्न भाषाओं में करती हैं। इस साहित्य में ईसा मसीह को एक मात्र ईश्वर का पुत्र, उद्धारकर्ता, पापों को क्षमा देने वाला और बाईबल को मुक्ति, शान्ति, उद्धार का खजाना बताया जाता है। इसको संस्थापित करने के लिए हजारों कपोल कल्पित घटनाओं और कहानियों का सहारा लिया जाता है। कहा जाता है कि ईसा मसीह स्वर्ग से उतर कर फिर आने वाला है और संसार का अन्त निकट है, केवल वही उद्धार पायेंगे जो ईसा मसीह पर विश्वास रखते हैं, इत्यादि-इत्यादि। आज का परेशान, अशान्त पीड़ित, बेरोजगार व्यक्ति कभी कभी इन हास्यास्पद बातों और घोषणाओं से भ्रमितभी हो जाता है। मजे की बात तो यह है कि जो व्यक्ति या समूह इन साहित्यों को बाँटते हैं उनके पास स्वयं कोई चरित्र, नैतिकता और आत्मबल नहीं होता परन्तु ये ईसा मसीह द्वारा पाप क्षमा होगा, की मृग मरीचिका से पीड़ित होते हैं। ईश्वर इनका भला करे और सद्बुद्धि दे।

चिकित्सा के माध्यम से : गरीब, बीमार लोगों की चिकित्सा द्वारा सेवा करना एक महान कार्य है और जब यह पवित्र कार्य सेवा और समर्पण की भावना से किया जाय तो गरीब, बीमार व्यक्ति इन सेवकों में ईश्वर की दया, कृपा और महानता का दर्शन पाता है। लेकिन जब कोई भी गलत कार्य किया जाता है तो उसको छिपाने के लिए आड़ {दीवार} की आवश्यकता होती है और मैं दुखी हृदय से कहने को विवश हूँ कि इन ईसाई मिशनों ने इस पवित्र कार्य {चिकित्सा} को धर्म परिवर्तन के लिए एक दीवार बना डाली है या दूसरे शब्दों में चिकित्सा और शिक्षा के किले में बैठकर धर्म परिवर्तन का खेल खेल रहे हैं। चिकित्सा एक बहाना है, आदिवासी और हरिजन, गिरिजन और ट्राइबल लोगों से स्वच्छन्द रूप से सम्पर्क स्थापित करने का शेष कार्य पूरा करते हैं - धर्म प्रचारक और पादरी इत्यादि। धर्म परिवर्तन और धर्म शिक्षा की प्रक्रिया इनके {पादरी, प्रचारक} द्वारा पूरी होती है।

आश्रमों के माध्यम से : आजकल पूरे भारत के हिन्दुओं के प्रत्येक तीर्थ स्थान और पवित्र नगरों में ईसाई आश्रम चल रहे हैं। इन आश्रमों में भारतीय पद्धति अपनाने का नाटक किया जाता है। इन आश्रमों में पादरी, नन्स {सिस्टरें} सैन्यासी और सन्यासिनियों जैसे गेरूआ कपड़े आदि प्रयोग करने का दिखावा करके साधारण जन मानस को भ्रमित करने का प्रयत्न करते हैं। इनमें प्रशिक्षित युवक, युवतियाँ हिन्दुओं की मानसिकता को ध्यान में रखकर सन्यासी और सन्यासिनियों के रूप में भारत के विभिन्न भागों में धर्म प्रचार करके धर्म परिवर्तन में सहायता करते हैं। एक बात जो वास्तविकता है, मैं बताना असंगत नहीं समझता कि इन कथित बहनजी {नन्स या सिस्टरें} और ब्रदरों {धर्मभाई} का नैतिक स्तर कितना गिरा हुआ होता है, सोचकर घृणा होती है। कामवासना में जलते हुए ये कथित धर्म बहनें और धर्मभाईयों के बीच क्या सम्बन्ध होता है कहने की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार के सैकड़ों आश्रम हमारे देश में चलते हैं ऋषिकेश, वाराणसी, बरेली, प्रयाग तथा मध्य प्रदेश, बिहार {पटना} उड़ीसा, आसाम-केरल, तमिलनाडु अर्थात देश के कोने-कोने में इनके आश्रम खुले हुए हैं। यहां पर निराश, उपेक्षित, बेरोजगार युवकों को ईसाई धर्म में प्रशिक्षित करने का कार्य किया जाता है ।

आर्थिक सहायता के माध्यम से : हमारे देश में गरीबी और कुपोषण तथा आवास की समस्या पहले से बत्तर हो गई है। ये ईसाई मिशनें इन गरीब, बेघर, बेरोजगार लोगों को आर्थिक सहायता देती हैं। वास्तव में इनके धर्म परिवर्तन का मूल्य चुकाती हैं। ये गरीब तो पहले से ही निराश, दुःखी, भूखे और बेघर होते हैं मुफ्तकी सहायता और आसानी से संसार से मुक्ति पाने की आशा में धर्म परिवर्तन कर लेते हैं। यदि 80 प्रतिशत ईसाइयों के धर्म परिवर्तन का अध्ययन किया जाये तो सबके पूर्वजों ने आर्थिक कारणों से ही या सामाजिक उत्पीड़न के कारण ही धर्म परिवर्तन किया था। {ईसाई} बने थे। आध्यात्मिक कारणों से धर्म परिवर्तन का कोई प्रश्न ही नहीं पैदा होता क्योंकि ऐसा कुछ ईसाइ मजहब में नहीं है ।

सामाजिक असन्तोष का लाभ उठा कर : हमारे देश में साम्प्रदायवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद और धार्मिक असहिष्णुता, आर्थिक और सामाजिक असमानता का भरपूर लाभ इन ईसाई मिशनरियों

को मिला है। वे इस ऊँच-नीच की लड़ाई में छोटे तबके को सहायता देकर, उनके अन्दर पलते असन्तोषको भड़काकर अपना उल्लू सीधा करने में सफल हो जाते हैं। निचले वर्ग में उच्च वर्ग के प्रति घृणा को हवा देकर और भड़काकर ही इनकी उद्देश्यों की पूर्ति हो सकती है। क्योंकि जब देश में समानता, प्रेम शान्ति और सम्पन्नता होगी तो इनके लिए कोई जगह ही नहीं होगी। इसका प्रमाण है रांची के आदिवासियों में विद्रोह की भावना और पृथक झारखण्ड राज्य की माँग। और नागालैण्ड, मिजोरम, अरूणाचल प्रदेश, आसाम, मेघालय में भूमिगत विद्रोहियों की समस्या का दिन-प्रतिदिन गम्भीर रूप से होता।

पादरी साधु रूप में : [illegible] और कार्य विधि का वर्णन करूँगा जो इन तथाकथित स[illegible] करने का ढोंग रचने वाले बिशपों और पादरियों द्वारा [illegible] में लाया जाता है। इस बारे में केवल एक ही उदाहरण मेरे मन्तव्य को स्पष्ट कर देगा।

सुल्तानपुर के पास एक ग्रामीण बाजार है डियारा बाजार और यहाँ से एक या दो कि0मी0 दूरी पर डियरा स्टेट (भूतपूर्व जमीदार की कोठियां हैं) इन्हीं कोठियों में एक राजा बेटा की कोठी। इस कोठी के सामने मुख्य द्वार के पास इन्टर कालेज है। राजा बेटा का निवास कोठी के निचले हिस्से तथा ऊपर के कुछ हिस्से में है। इसी ऊपरी हिस्से में एक स्वामीजी रहते हैं इन्होंने (स्वामीजी) ने अपनी छवि एक हिन्दू स्वामी के रूप में बनाने में पूरी सफलता पाई है। वास्तव में इनका नाम फादर नरेन्द्र है। यह एक कैथोलिक मिशन के जेसुइट-फादर हैं इनकी कार्य विधि इस प्रकार है।

यह स्वामीजी (पादरी साहब) जनेऊ पहनते हैं और सत्संग आयोजित करके अपने विद्वतापूर्ण, धूर्ततापूर्ण प्रवचनों के द्वारा और भजनों के द्वारा लोगो को आकर्षित करते हैं। प्रवचनों के दौरान ये युवकों को इंगित करके अपनी समस्याओं को इन्हें (स्वामीजी को) बताने का निमन्त्रण देते तथा पूर्ण सहयोग का आश्वासन देते है। जो युवक इनके भ्रमजाल में फसते हैं क्रमशः उन्हें शादी, नौकरी, शिक्षा का लालच गुप्त रूप से देकर उन्हें ईसाई बन जाने के लिए कहते हैं। और उनसे धर्म परिवर्तन में सहयोग करने को भी कहा जाता है. जब मैं इनसे मिला था तो इन्होंने बताया था कि इनका उद्देश्य ऐसे 400 सवर्ण युवकों का धर्म परिवर्तन करने की योजना है तत्पश्चात् उन्हीं के द्वारा धर्म परिवर्तन का कार्य कराये जाने की भी योजना बताई। इनको कितनी सफलता मिली है यह तो जाँच से ही पता चलेगा। अपने इसी गलत, अनैतिक, धूर्तता पूर्ण कार्य के कारण इन्हें बिहार छोड़ना पड़ा था। उ0प्र0 इनके लिए स्वर्ग है क्योंकि यहां इनका कार्य निर्वाद रूप से चल रहा है।

प्रचारक दलों के माध्यम से : इस तरह समूह में युवक-युवतियों का दल नगरों और ग्रामीण अंचलों में, सुदूर पूर्व क्षेत्रों में जाकर स्थान-स्थान पर नाटक, सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रवचन, भजन और प्रार्थना सभाओं के माध्यम से ईसाई ईसा मसीह और बाइबल की महिमा का प्रसार-प्रचार करते हैं। धर्म परिवर्तन में यह माध्यम भी बड़ा उपयोगी सिद्ध होता है।

अन्त में मैं यह बात भी स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि इस खतरनाक धर्म परिवर्तन के कार्य में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से हमारे समाज (हिन्दू) के कुछ लोग विभिन्न आर्थिक, सामाजिक राजनैतिक या व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति हेतु सहयोग देते हैं। जाने-अनजाने इस धर्म परिवर्तन में सहयोग बनकर वे देश और समाज का कितना अहित करते हैं यह सर्वविदित है। हमें जागरूक होकर हर स्तर पर देशसेवा और धर्म सेवा को तत्पर हो जाना है ।

निर्वाचन

नवीन आर्य समाज मुकरपुर छाछरी मोड़, बिजनौर
प्रधान - श्री डा0 जगपाल सिंह आर्य,
मन्त्री - श्री रामचन्द्र शर्मा
कोषाध्यक्ष- श्री मामराज सिंह आर्य,
आर्य समाज द्वारा संचालित वैदिक विद्याधाम मुकरपुर छाछरी मोड़, (बिजनौर) का चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न-
प्रधान -श्री मामराज सिंह जी,
प्रबन्धक - श्री रामचन्द्र शर्मा
कोषाध्यक्ष - श्री ब्रह्म सिंह जी,

ईश्वर सर्वाधार है

स्वामी रामेश्वरानन्द
(करनाल हरियाणा)

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

हिरण्यगर्भ ऋषिः । प्रजापति देवता । आर्षी त्रिष्टुप छन्दाः धैवत स्वरः ।

(यजु0 अ0 13 म0 4 ।।)

अर्थ:- जो (हिरण्यगर्भः) स्व प्रकाश स्वरूप और जिसने प्रकाश करने हारे सूर्य चन्द्रादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किए हैं जो (भूतस्य) उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का (जातः) प्रसिद्ध (पतिः) स्वामी (एकः) एक ही चेतन स्वरूप (आसीत्) था है और होगा जो (अग्रे) सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व (समवर्त्तत) वर्तमान था (सः) सो वह (इमाम्) इस (पृथिवीम्) भूमि (उत) और (द्यां) सूर्य आदि को (दाधार) धारण कर रहा है हम लोग उस (कस्मै) सुख स्वरूप (देवाय) शुद्ध परमात्मा के लिए (हविषा) ग्रहण करने योग्य, योगाभ्यास और अति प्रेम से (विधेम) विशेष भक्ति किया करें।

भावार्थ:- हिरण्यानि तेजांसि- गर्भे यस्य स हिरण्यगर्भः- जैसे माता के विशाल शरीर में गर्भ एवं बालक लघु अत्यन्त छोटे वैसे सारे भूमि, भानु, चन्द्र नक्षत्रादि दृश्यादृश्य ईश्वर के एक अंश में उत्पन्न तुच्छ हैं। एकाश भी अनन्त महान् है उसका भी किसी को पूरा ज्ञान नहीं है। इसी लिये यजु0 अ0 31 में कहा है "पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिव" कि सारा चराचर दृश्या दृश्यं संसार परमेश्वर के एक अंश में निवास करता है। और उसके तीन अश अमृत अविनाशी मोक्ष स्वरूप हैं उन्हें कोई जीव नहीं जानता और इस मन्त्र में ईश्वर को एक कहा है ।

यदि एक से अधिक रूपों में अर्थात् अवतारों, पैगम्बरों आदि में परमात्मा के अस्तित्व को स्वीकारा जाएगा तो विभिन्नता के कारण सूर्यादि नियत समय पर उदय अस्त न होंगे क्योंकि जैसे दो स्वामियों का एक सेवक एक समय में दोनों के काम नहीं कर सकेगा जिसकी इच्छा पूरी नहीं होगी वही उस नौकर को हटा देगा एवं दो ईश्वरों की विरोधी इच्छा पूरी न होने पर सूर्य आदि को तोड़ देगा तथा दो ईश्वरों में बिल्कुल समानता भी न होगी अतः जो ईश्वर बलवान होगा वह निर्बल ईश्वर को मौत के घाट उतार देगा इसी लिये वेद एक ईश्वर को मानता है जो सृष्टि क्रम के अनुकूल है। तथा स दाधार पृथिवी द्यामुतेमा कस्मै देवाय...... अर्थात् वह इस प्रत्यक्ष पृथिवी और सूर्य चन्द्रादि को धारण कर रहा है। ये सूर्य चन्द्र पृथिवी परस्पर के आकर्षण से ठहरे हैं। यह सत्य नहीं है, क्योंकि आकर्षण कर्त्ता को पैर जमाने होते हैं आकर्षण कर्त्ता निराधार अलग नहीं रह सकते तथा यह दृष्टान्त भी सत्य नहीं है कि एक चुम्बक नीचे भूमि में रखो और दूसरा छत में रखो बीच में लोहे की वस्तु ठहर जाती है ।

सूर्य चन्द्र भूमि एक दूसरे को आकर्षण करके ठहरे हैं। यह दृष्टान्त विषम है क्योंकि दोनों चुम्बक भूमि और छत के आधार ठहरे हैं तथा ये भूमि भानु चन्द्रमा तीनों निराधार हैं वे आकर्षण तो करते हैं परन्तु निराधार कैसे ठहरे हैं उनका भी कोई आधार चाहिये तथा आकर्षण को तो वेद मानता है "आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो" (यजु0 अ0 34 मं0 31 में आकर्षण शक्ति सूर्यादि में स्वीकार की गयी है, क्योंकि आकर्षण का भी तो नियामक चाहिये जब कि रस्सा खींचने वाले उन्नीस बीस के फर्क में एक दल दूसरे को खींच ले जाता है परन्तु सूर्य भूमि चन्द्र से लाखों गुना बड़ा है वह इन भूमि चन्द्र को अपने ऊपर क्यों नहीं गिरा लेता यदि ईश्वर नहीं है तो इनको किसने बस में किया है अतः ईश्वर वह है जिसने सबको धारण किया है। वह सर्वाधार है ।

-x-x-x-x-x-x-x-x-

हमारे देश का नाम क्या है-

एक दिन एक नवयुवक ने मुझ से प्रश्न पूछा, "हमारे देश का नाम क्या है?" मैं ने कहा, "हमारे देश का नाम भारत है। हमारे देश के संविधान ने भारत नाम ही स्वीकार किया है"। नवयुवक मुस्कुराते हुए जो कुछ कहा उसका आशय था कि संविधान ने तो दो नाम स्वीकार किये है, भारत और इंडिया। अंग्रेजी में तो इंडिया ही लिखते और बोलते हैं, पर हिन्दी में भारत का प्रयोग कम और "हिन्दुस्तान" का प्रयोग अधिक होता है। और हिन्दी में अनावश्यक रूप से अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करने वाले शौकीन महानुभाव "इंडिया" और "इंडियन" शब्दों के प्रयोग बड़े तपाक से करते हैं। यही नहीं, हमारे देश के विधायक, संसद-सदस्य और मन्त्री, जो पद ग्रहण करते समय संविधान का पालन करने की शपथ लेते हैं, वे भी भाषणों, वक्तव्यों और चर्चाओं में "हिन्दुस्तान" शब्द का भी प्रयोग करते हैं। 26 जनवरी के लिए कार्यक्रमों के आयोजन के लिए "हिन्दी है हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा" की पंक्ति का कई दिनों तक अभ्यास करवाया गया, जिसका दिल्ली में टी0वी0 पर नियमित रूप से प्रदर्शन होता रहा। आन्ध्र के मुख्यमन्त्री श्री एन0टी0 रामाराव हिन्दी बोलने का उत्साह दर्शाने के लिए इस पंक्ति का बड़े जोश के साथ उच्चारण करते हैं। संविधान में जब देश का नाम **"भारत"** मान्य हो गया है, तो **"हिन्दुस्तान"** नाम का प्रयोग क्या संविधान की अवहेलना नहीं है? क्या संसार में ऐसा भी कोई देश है जिसके तीन-तीन नाम हैं और उस देश के निवासी उन तीनों नामों का प्रयोग करते हैं? यह विलक्षणता हमारे देश में ही है। सच तो यह है कि संविधान में आवश्यक परिवर्तन करके देश का नाम केवल **"भारत"** ही रखा जाए, "इंडिया" नाम से भी छुटकारा पाया जाए। जिस दिन देश का बटवारा हुआ और हमारे संविधान ने "भारत" नाम को मान्य किया, हमारा देश "भारत" ही रह गया, "हिन्दुस्तान" नाम समाप्त हो गया। जनता में इस विचार का अधिक से अधिक प्रचार होना चाहिए।

इसी संदर्भ में एक बात का उल्लेख अप्रासंगिक नहीं होगा कि **"हिन्दी है हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा।"** **"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा।"** ये पंक्तियाँ **सर मोहम्मद-इक़बाल** की हैं और जो 1919 में लिखी गयी थीं। 1930में सबसे पहले पाकिस्तान की मांग करने वाले यही सर मोहम्मद-इकबाल हैं, जिन्होंने लिखा है **"कौम मजहब से है, मजहब-जो नहीं तो हम भी नहीं।"** और **"मुस्लिम हैं हम, वतन है सारा जहां हमारा।"** देश से गद्दारी करने वाले व्यक्ति के उस गीत को, जो संविधान के विपरीत है, हम झूम-झूमकर गाते हैं। इसे हम क्या कहें?

{कृष्णदन्त}

1-8-700/6 पद्मानगर,
नल्लाकुटा, हैदराबाद-44

ऋग्वेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति

श्री गंगाशरण जी मित्तल/श्रीमती कुसुम मित्तल के निवास स्थान पर 41/1 स्कीम न0 9 शास्त्रीनगर में दिनांक 10 से 23 दिसम्बर तक ऋग्वेद पारायण यज्ञ श्री स्वामी विवेकानन्द प्राचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मत्व में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के सुमधुर वेदपाठ के साथ सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस बीच में कई विद्वानों के प्रवचन भी होते रहे। जिनमें श्री-इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा का नाम उल्लेखनीय है। पूर्णाहुति के अवसर पर उपदेश देते हुए स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा कि ज्ञान के प्रकाश में कर्म करने पर मुक्ति प्राप्त होती है। प्रभु की वाणी ऋग्वेद के उपदेशों से हमें अपने जीवन को ऊँचा उठाना चाहिए। प्रान्तीय सभा प्रधान श्री इन्द्रराजजी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करते हुए शिक्षा जगत में गुरुकुल प्रणाली एवं नारी जाति के लिए गुरुकुल प्रणाली का प्रणेता बताया। साथ ही स्वामी श्रद्धानन्द जी के द्वारा चलाए गए शुद्धि आन्दोलन का आज के युग में भी पुनः जोर-सोर से चलाने पर बल दिया।

यजमान परिवार ने समस्त आगन्तुकों के लिए ब्रह्मभोज की व्यवस्था की।

श्री इन्द्रराज,
मन्त्री,
आर्यसमाज, मेरठ शहर।

एक समर्पित जीवन

माननीय श्री राम नाथ सहगल

राम प्रकाश शर्मा"सरस"

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के प्राण {मन्त्री} श्री राम नाथ सहगल के नाम से आर्य जगत मे ऐसा कौन बाल, वृद्ध है जो सुपरिचित न हो।

श्री सहगल आर्य नवयुवकों के उत्साह, साहस एवं मार्ग दर्शन के केन्द्र है आपने हजारों नवयुवकों को अपने मृदु व्यवहार से वैदिक धर्म में प्रेरित कर आर्यसमाज में एक नई शक्ति का संचार किया है आपका जीवन अहर्निश देश, जाति, के हितार्थ ही समर्पित रहता है आप अनेकों डी0ए0वी0 स्कूलों के, महर्षिदयानन्द उपदेशक विद्यालय टंकारा {गुजरात} तथा हिसार के प्रबन्धक हैं-

सम्मानित श्री युत दरबारी लाल जी संगठन सचिव डी0ए0वी0 कालेज प्रबन्ध समिति नई दिल्ली एवं आपके सतत् सत्प्रयास से सभी डी0ए0वी0 स्कूलों में आर्य समाजों की अस्थापना, प्रबुद्ध सुशिक्षित धर्माध्यापकों की नियुक्ति जैसे प्रशंसनीय कार्य हो रहे हैं।

-x-x-x-x-x-x-x-x-

महाकुम्भ आर्य वीर दल सेवा सुरक्षा शिविर

उत्तर प्रदेश के समस्त आर्य वीरों को सूचित किया जाता है कि महा कुम्भ के शुभ अवसर पर दिनांक- 5,6,7-फरवरी सन् 1989 को वैदिक धर्म प्रचार कैम्प में **"सेवा सुरक्षा-शिविर"** का आयोजन किया गया है। कृपया पूर्ण गण वेष में बैज, लाठी, मौसमी बिस्तर, आदि के साथ पहुँचने की कृपा करें। अपने पहुँचने की सूचना निम्न पतों पर दे :-

नाम- मण्डल संचालक — हरिश्चन्द्र आर्य

श्री अशर्फी लाल शास्त्री
गुरुकुल महा विद्यालय
सिराथू- इलाहाबाद।

{उपसंचालक}
शिविर संयोजक,
ग्राम-पोस्ट - कल्यानपुर कचरौली
{धाता}, फतेहपुर {उ0प्र0}

-x-x-x-x-x-x-

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य समाज मेरठ शहर में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस को समारोह पूर्वक मनाया गया। आज के हवन में आर्य कन्या-इन्टर कालेज प्राचार्या श्री मती सुनीति सिंघल की मुख्य यजमान थीं। इस अवसर पर कालेज की छात्राओं ने सुमधुर भजन गाकर वातावरण को भक्तिमय कर दिया।

विशेष अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं0इन्द्रराज जी ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन का सजीव चित्रण करके श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। उनके जीवन की कतिपय महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करके स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा लेने का पं0 इन्द्रराज जी ने भावपूर्ण अवाहन किया।

पं0 इन्द्रराज जी ने देश में धर्म परिवर्तन की खतरनाक समस्या पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने बच्चों और युवाओं को उनके धर्म, संस्कृति के अनुसार शिक्षित और प्रशिक्षित करने की अपील की। उन्होंने कहा कि युवकों में व्याप्त नास्तिकता, अनैतिकता और उचित शिक्षा पद्धति का अभाव देश को पतन के गर्त में ढकेल रहा है। उन्होंने कहा फिर से युवाओं विशेष कर छात्रों में उन्हें अपने धर्म, संस्कृति की उचित जानकारी और उनमें देश प्रेम की भावना का संचार करना पड़ेगा।

प्रबन्धक श्री स्वराज चन्द्र जी ने सत्संग की महिमा का वर्णन करते हुए बताया कि सत्संग के कारण ही स्वामी श्रद्धानन्द एक साधारण नास्तिक व्यक्ति से महान् संत बन गए।

प्रधान श्री मानसिंह जी वर्मा के समापन भाषण में शिक्षा पद्धति में गुरुकुल प्रणाली अपनाने पर बल दिया गया।

आर्य मित्र साप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
पौष शुक्ल 8
15 जनवरी रविवार, 1989 ई0

आर्य मित्र

कृण्वन्तो ... म्
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आर्य समाज गाजीपुर की हीरक जयन्ती

आर्य समाज गाजीपुर के हीरक जयन्ती महोत्सव पर सभा प्रधान तथा सभा मन्त्री जी द्वारा पूर्वांचल आर्य महा सम्मेलन में कार्यकर्ताओं को त्याग और निष्ठा के साथ समाज के कार्यों में आगे आने का आह्वाहन।

दिनांक- 17 दिसम्बर 1988 के आर्य समाज गाजीपुर के हीरक-जयन्ती महोत्सव पर आयोजित पूर्वांचल आर्य महासम्मेलन तथा पूर्वांचलीय आर्य वीर दल के सम्मेलन में मा0 सभा प्रधान प0-इन्द्रराज जी तथा सभा मन्त्री मनमोहन तिवारी ने उ0प्र0 के पूर्वांचल के कार्यकर्ताओं का आह्वान करते हुए त्याग, निष्ठा, सेवा एवं कर्तव्य परायनता की श्रेष्ठ भावना के साथ युवा वर्ग को आर्य समाज के संगठन तथा प्रचार एवं समाज सेवा के कार्यों में अग्रसर होने का आह्वान किया। प्रदेश के आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वानों वरिष्ठ आर्यजनों तथा पूर्वी उत्तर-प्रदेश के 13 जिलों से आये 500 से अधिक कार्यकर्ताओं एवं आर्य वीरों तथा हजारों की संख्या में गाजीपुर नगर की जनता के बीच, उद्बोधन करते हुये माननीय आर्य नेता द्वय ने कहा कि आज जहाँ धार्मिक सामाजिक तथा राष्ट्रीय चेतना के इस संक्रमण काल में एक बार पुनः आर्य समाज के कन्धों पर देश की दिशा निर्देश का दायित्व आ पड़ा है वहीं ऐसी परिस्थिति में जहाँ आर्य समाज के वरिष्ठ विद्वानों का दायित्व युवा वर्ग के दिशा निर्देश हैं वहीं युवा वर्ग का दायित्व अपने अगृजों का पूर्ण सम्मान करते हुए संगठन के कार्य को सुदृढ करना है और इस कार्य में आर्य वीर दल के सक्रिय संगठन की ही महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। अतः आर्य वीर दल को सक्रिय एवं सुसंगठित करने पर विशेष बल दिया। इसी अवसर पर आर्य वीर दल के पूर्वी उत्तर-प्रदेश के संचालक श्री अवध बिहारी जी खन्ना तथा श्री बेचन सिंह के सेना पतित्व में मा0 सभा प्रधान एवं सभा मन्त्री जी में आर्य वीर दल की वाहिनियों का निरीक्षण किया वैदिक संस्कृति की सुरक्षा एवं प्रचार, आर्य जाति के सम्मान तथा संस्कृत भाषा की रक्षा और देश में हो रहे धर्म परिवर्तन के कुचक्र को रोकने का भी भार आर्य समाज के ही कन्धों पर है।

आर्य वीर दल की विभिन्न 3 मण्डलों को वाहिनियों ने निरीक्षण के अवसर पर सभा प्रधान एवं मन्त्री जी को अपने परम्परागत रूप में प्रणाम किया। कार्यक्रमों की श्रृंखला में खुले अधिवेशन में पूर्वी जिलों से आये जिला सभाओं के प्रधान तथा मन्त्री एवं अन्य अधिकारियों और गाजीपुर आर्य समाज के प्रधान एवं मन्त्रो ने प्रान्तीय सभा के प्रधान तथा मन्त्री महोदय के साथ उपस्थित सभा की उप प्रधान माननीया सन्तोष कुमारी जी-कपूर सभा के कोषाध्यक्षा श्री कृष्ण बलदेव जी महाना तथा उपमन्त्री डॉ0 विनय प्रताप जी एवं श्रीमती डॉ0 आशा रानी जी राय का फूलमालाओं से स्वागत किया। आर्यवीर दल पूर्वी उत्तर-प्रदेश की ओर से श्री बेचन सिंह जी ने सभाधिकारियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। अन्त में आर्य समाज गाजीपुर के प्रधान श्री वर्मा जी ने सभी को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम का संचालन सभा के वरिष्ठ उपमन्त्री डॉ0 विनय प्रताप जी ने किया।

उत्सव

नव स्थापित आर्यसमाज कुमारपुरा में 12 तथा 13नवम्बर को वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया बाल्मीकि मन्दिर में यज्ञ सहभोज हुआ। बाल्मीकि बन्धु यज्ञ से बहुत प्रभावित हुए।

आर्यसमाज रेलवे कालोनी समस्तीपुर {बिहार} का चतुर्थ वार्षिकोत्सव 30 नवम्बर से 4 दिसम्बर तक ससमारोह मनाया गया। स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती के प्रवचनों से जनता बहुत प्रभावित हुई। इस अवसर पर कई सम्मेलन, वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन, राष्ट्रभाषा सम्मेलन भी हुए।

आर्य समाज का निष्ठावान सेवक चला गया

श्री रामाज्ञा वैरागी के दुखद निधन पर सार्वदेशिक सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की शोकांजलि

आज 22 दिसम्बर को प्रातः तार मिला कि श्री रामाज्ञा वैरागी का पटना जाते हुए भगवानपुर में स्वर्गवास हो गया है और अन्तिम संस्कार रक्सौल में किया गया। इस समाचार से आर्य जगत की जो क्षति हुई है, उसका वर्णन करना कठिन है।

श्री वैरागी आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के मन्त्री थे। पिछले दिनों वह सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में बड़ी प्रसन्न मुद्रा में पधारे थे और उन्होंने बिहार के भूकम्प एवं बाढ़ पीड़ितों की सेवा सहायता कार्यक्रम की चर्चा की थी।

इस महान वियोग पर सभा प्रधान स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती ने गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि श्री वैरागी जी आर्य समाज के हर कार्य में अग्रिम पंक्ति में खड़े होकर कार्य करते रहे हैं। अपने सेवा कार्य में संलग्न रहने वाला यह आर्य वीर हमेशा पूरी निष्ठा से वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगा रहा। वर्षों तक वैरागी जी आर्य वीरदल के कुशल संगठक के रूप में भी कार्य करते रहे थे। भूकम्प एवं बाढ़-पीड़ितों की सहायता कार्य के लिए वह पहले हमारे साथ और बाद में श्री बाल दिवाकर हंस जी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर [illegible] र्य में लगे रहे। उन्होंने नेपाल एक हिन्दू राष्ट्र नामक [illegible] भी लिखी थी। उनके निधन से बिहार ने एक प्रमुख आर्य वीर खो दिया है। परमात्मा उनकी आत्मा [illegible] त और उनके पारिवारिक जनों को इस महान् वियोग को सहन करने की शक्ति देवे।

मनमोहन तिवारी,
सभा मन्त्री।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज खत्री पाड़ा, अतरौली {अलीगढ़} ने क्रान्तिकारी महात्मा नारायण स्वामी जी तथा श्रीमती जगरानी देवी धर्मपत्नी श्री श्री प्रकाशचन्द्र आर्य के आकस्मिक निधन पर अपनी शोकसभा में दिवंगत आत्माओं की शान्ति तथा पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु एक मिनट मौन रहकर प्रार्थना की।

आर्यसमाज इटारसी {कानपुर} के मन्त्री श्री चन्द्रभूषण शर्मा का आकस्मिक निधन 24-11-88 को हो गया। अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हुआ। दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिकजनों के धैर्य हेतु प्रार्थना की।

मन्त्री सभा

वैवाहिक विज्ञापन

धर्म परिवर्तन के पश्चात् वैदिक धर्म में दीक्षित ठेकेदार, कद-5फुट 6 इंच, आयु 25 वर्ष, बी0ए0 एल0एल0बी0, अत्यन्त आकर्षक व्यक्तित्व, स्वस्थ, मैनेजर स्वयं संचालित बालिका विद्यालय कर्मठ युवक हेतु अत्यन्त सुन्दर प्रशिक्षित स्नातक, मृदुभाषी-लड़की की आवश्यकता है। शीघ्र विवाह जाति, दहेज विहीन. वैदिक पद्धति से।

विद्या सक्सेना,
डी0आई0जी0एस0,
257- राधाकुण्ड, गोण्डा।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विशम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

प0 सं0 2241/57 माघ कृष्ण 1 , रविवार, संवत् 2045 वि0, दिनांक 22 जनवरी 1989 घोषणा पत्र सं0 7/28-2-85



वृष्ण ऊर्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै ।
वीर, स्थालेसि अस राष्ट्रदा राष्ट्र में वीर ।।

यजु0 10/2

हे प्रजा । तू राष्ट्र को शक्ति देने वाली तरंग है, तू बलिष्ठ सेनावाली है। तू मुझ राष्ट्रपति को राष्ट्र की अखण्ड शक्ति से सम्पन्न कर दे--

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी
एम0ए0,

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम0ए0,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु0251/-
वार्षिक	रु0 30/-
छमाही	रु0 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष 91

अंक 4

आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्.........

वैदिक राष्ट्र-गान एवं संविधान

वेद मानवमात्र की अमूल्य निधि हैं। इनमें मनुष्य के कल्याणार्थ धार्मिक, राजनैतिक, कार्मिक, पारिवारिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, विश्वबन्धुत्व, भौतिक समृद्धि, आत्मिक, शारीरिक, सामाजिक उन्नति एवं विश्व शान्ति के सभी सिद्धान्त एवं उपदेश सन्निहित हैं जो सृष्टि के आदि में उस परमदयालु परमात्मा ने ऋषियों के माध्यम से हमें दिए थे। यही आर्यों का संविधान था जिनमें मानव के सुखी जीवन, सुखी परिवार, सुखी समाज, नारी का उदात्त स्वरूप, आर्थिक उन्नति, दर्शन, राष्ट्रीय-अन्तर्राष्टीय संगठन, स्वराज्य, भौतिकसमृद्धि, वाणिज्य व्यापार, भक्ष्याभक्ष्य, राजा-प्रजा, समिति, संसद, लोकतन्त्र, झण्डा, चिकित्सा, विज्ञान, गणित, ज्योतिष, भवन निर्माण आदि पर सैकड़ों मन्त्र उपदेशात्मक एवं कर्त्तव्य रूप में हमें दृष्टिगोचर हो रहे हैं। आज पाश्चात्य नकल पर बनाया हुआ हमारा संविधान प्राचीन वैदिक संस्कृति एवं भारतीयता के अनुरूप अपने को आत्मसात नहीं कर पाया है। हमारा साम्राज्य, हमारा संविधान, हमारी समितियाँ, हमारी विचारशैली शिक्षा-दीक्षा, एवं जीवन पद्धति वेदानुकूल नहीं बन पायी है। न हमारे केतु में संसार को प्रकाशित करने वाले सूर्य की रश्मियाँ हैं और न हमारी विचारधाराओं में वैदिक शिक्षाओं का प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहा है। यही कारण है कि हम भले ही आर्थिक क्षेत्र में अपने को प्रगतिशील कह लें, राष्ट्र की आत्मा दुर्बल होती जा रही है ।

हमें भावी भारत के निर्माण के लिए चिरन्तन वैदिक विचारों से उद्भूत जनसंविधान देना होगा जो हमारी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय चेतना को जागृत कर सके और जो आर्यों को "विश्वं भवत्येक नीड़म्" की कल्पना को मूर्त्तरूप दे सकें। हमारा वैदिक संविधान टकराव, अवधारणाओं एवं वर्गसंघर्ष से दूर "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना से ओतप्रोत होगा। समता समानता और बन्धुता की आदर्शमयी कल्पना से समाज का प्रत्येक वर्ग सुख और शान्ति का आगार बनेगा। हमारी गायें जो हमारे राष्ट्र की आधारशिला हैं दुग्धवती होंगी हमारे वृक्ष फल-फूलों से लदे होंगे हमारे क्षत्रिय तेजवन्त वीर्यवान होंगे हमारे ब्राह्मण ब्रह्मवर्चसी बनकर संसार को ज्ञान का आलोक देने वाले होंगे। धर्म की संकीर्णताओं से उठकर मानवमात्र एक निराकार ईश्वर के प्रति निष्ठावान होगा । हमारा संविधान "धर्म,अर्थ, काम, मोक्ष" रूपी पुरुषार्थ चतुष्टय के लक्ष्य की ओर बढ़ने वाला प्रगतिशील साधन होगा। हमने देखा संसार में खूनी क्रान्तियाँ हुईं। हमने समझा हम नये शान्तियुग में प्रवेश कर रहे हैं नये संविधान में हमने समता का आदर्श प्राप्त कर लिया है परन्तु कुछ समय बाद हमें पता चला हम लौह आवरण के परदे में बन्द हो गये हैं अब खुली हवा का झोंका पाने के लिए छटपटा रहे हैं, आज भी शोषित हैं, त्रस्त हैं।

इसलिए वैचारिक क्रान्ति के अग्रदूत आर्यो !अपने पवित्र संविधान में वैदिक विचारों का प्रवेश कराओ तभी पृथ्वी पर शान्ति होगी द्यौ पर शान्ति होगी और मानव में शान्ति होगी ।

> हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
> आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
> --राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- माघ कृष्ण । संवत् 2045 22 जनवरी 1989
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

भारतीय गणतन्त्र

ये ग्रामा यदरण्यं याः सभा अधि भूम्याम्।
ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम ते।।
----पृथ्वी सूक्त 1/57

हे मातृभूमि! तुझपर बसे हुये जो ग्राम हैं, जंगल हैं, व्यवस्था करने वाली सभायें हैं, शत्रुओं को युद्ध में परास्त करने वाले संग्राम हैं, युद्धस्थल और समितियाँ हैं, उन सब में हम उत्तम से उत्तम बनकर तेरे यशोगान को बढ़ाने वाले बनें।

उक्त मन्त्र में यह दर्शाया गया है कि मानव सदा से व्यवस्थाप्रिय रहा है। किसी व्यवस्था के अनुशासन में ही उसने अपना वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विकास किया है। इसी के परिणाम स्वरूप राज्य की परिकल्पना अस्तित्व में आई और उसे व्यवस्थित करने के लिये विभिन्न प्रकार के संविधानों की रचना की गई। भारतीय स्वाधीनता के फलस्वरूप ही हमारे देश में प्रजातन्त्रात्मक गणराज्य की स्थापना हुई और हमने सार्वभौम सत्तासम्पन्न होकर अपने संविधान द्वारा जनता को अच्छी से अच्छी शासन प्रणाली देने का आज ही के दिन व्रत लिया था। भारत अतीत में भी गणतंत्रात्मक प्रणाली का पोषक रहा है। आर्यों के उदयकाल से लेकर भगवान राम के शासनकाल एवं लिच्छिवी गणराज्य और मौर्य साम्राज्य में भी भारतीय शासन व्यवस्था गणतन्त्रात्मक रही थी। राजा को जनता का सर्वोच्च प्रतिनिधि अथवा ईश्वरीय प्रतिनिधि मानकर, यद्यपि कहीं-कहीं वंशपरम्परागत व्यवस्था भी प्रचलित थी, परन्तु प्रत्येक स्थिति में, विद्वानों अथवा ऋषि, मुनियों की सम्मति से ही राजा राज्य का संचालन करता था। पवित्र वेदवाणी स्वयं उस शासन प्रणाली को सर्वोत्तम बताती है जिसमें राजा प्रजा का प्रतिनिधि बनकर सर्वोत्तम शासन की व्यवस्था पिता की भाँति करता है। इसीको अमेरिका के सोलहवें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने परिभाषित करते हुए कहा था- "सर्वोत्तम प्राजातान्त्रिक शासन वह है जो जनता द्वारा, जनता के लिए, जनता का शासन हो"। इसी मूल भावना को लेकर हमारे संविधान निर्माताओं ने भारतीय गणतन्त्र की स्थापना की थी और आज ही के दिन संविधान लागू किया था। हमारा दुर्भाग्य यह रहा कि हमारे भारतीय प्रजातन्त्र पर पश्चिम की गहरी छाप है एक हजार वर्षों की दासता ने तथा वैदिक आदर्शों से धीरे-धीरे विमुख होते रहने के कारण हमारे विचारों में मौलिक चिन्तन का अभाव हो गया है। हम परकीय अनुकरणवृत्ति वाले बनते गये और आज स्थिति यह है कि किसी भी क्षेत्र का चिन्तन क्यों न हो हमें उस पर विदेशी अथवा परकीय भाव स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। हमारा राज्यतन्त्र भी उससे अछूता नहीं है और हम उन दोषों से बच नहीं पाये जो संकीर्ण परिस्थितियों एवं स्वार्थसाधन की प्रवृत्ति से उत्पन्न हो जाया करते हैं। चुनाव प्रणाली में जनता विवेक से ही मतदान करेगी- इसकी सम्भावना प्रायः कम ही रहती है क्यों कि बहुमत अधिकांश में उन मतदाताओं का होता है जो सर्वथा राजनीति शासन के निष्णात पंडित नहीं कहे जा सकते। यही कारण है कि विद्वान अविद्वान शिक्षित अशिक्षित दोनों का मूल्य वोट की तराजू पर एक ही माना जाता है। दृढ़ राष्ट्रीय चेतना के अभाव में हम समग्रराष्ट्रको एक राष्ट्रपुरुष के रूप में पूजने के लिए अभी पूर्णतया उद्यत नहीं हुए हैं और न जनता को स्वस्थ एवं स्वच्छ प्रशासन देने में सक्षम हो सके हैं। आर्थिक विषमता बढ़ती जा रही है। जातियता भाई भतीजावाद, संकीर्ण स्वार्थवाद ने चुनावों को भ्रष्ट बना दिया है स्थान-स्थान पर आन्दोलन राष्ट्र को विघटित करके क्षेत्रीय भावनाओं को उभारने वाला हिंसा से भरा आतंकवाद आज पूरे यौवन पर है। यद्यपि आर्थिक क्षेत्र में हमने काफी प्रगति की है और उस पर हमें गर्व भी है परन्तु राष्ट्र की आत्मा दुर्बल होती जा रही है।

पवित्र वेदवाणी ऐसे प्रजातन्त्र की पोषक नहीं है जो भीड़तन्त्र का रूप लेती जा रही हो। आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द ने लिखा है कि हजार मूर्खों की अपेक्षा दस विद्वानों की सम्मति मूल्यवान होती है। प्रजा का प्रतिनिधि जागरुक होना चाहिए। "वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः" हम राष्ट्र को आगे ले जाने वाले जन जागरुक हों पुरोहित हों तभी राष्ट्र का कल्याण कर सकने में हम समर्थ हो सकेंगे। भारत की स्वाधीनता जिन वीरों के बलिदानों से हमें मिली है उनके हृदय में राष्ट्र की क्या कल्पना थी- इस पर भी हमें विचार करना चाहिए। निश्चित रूप से वे मातृभूमि के लिए सर्वात्मना अर्पित थे। आज जो सत्ता का संघर्ष राजनीति पर छाया हुआ है- उस की कल्पना भी उन वीर बलिदानियों के हृदय में न रही होगी।

आर्य समाज सदैव प्रखर राष्ट्रीयता का पक्षधर रहा है। विश्व शान्ति हमारा मूलमन्त्र है। हम पवित्र गणतन्त्र दिवस पर भारतीय जनता का अभिनन्दन करते हैं और समस्त वैदिक प्रेमी जनता से अपेक्षा करते हैं कि वे वैदिक संस्कृति के प्रचार एवं प्रसार में सर्वात्मना समर्पित होकर भारतीय राष्ट्र की गरिमा को हिमालय से भी ऊँचा बनायेंगे और समस्त भारतीय जनमानस को राष्ट्र की मुख्य धारा में जोड़कर इस महान राष्ट्र के महान भविष्य को महान अतीत के साथ जोड़कर एकाकार कर देंगे।

"प्रयाग कुम्भ मेला वेद प्रचार शिविर स्थल"

समस्त आर्य भाई-बहिनों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा आर्य उपप्रतिनिधि-सभा प्रयाग के तत्वावधान में "आर्य समाज वेद प्रचार शिविर प्रयाग कुम्भ मेले में 14 जनवरी से 20 फरवरी 1989 तक बाँध के नीचे संगम मार्ग उत्तरी रेलवे पुल के दायें स्वास्थ्य शिविर के निकट सेक्टर न0 4, प्लाट नं0 17 पर लगा है। विशेष जानकारी के लिए शिविर संयोजक से सम्पर्क करें- आर्य-समाज चौक, इलाहाबाद।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री।

लालबहादुर शास्त्री
संयोजक शिविर।

-x-x-x-x-x-x-x-x-

आर्य समाज लखनऊ (गणेशगंज) का त्रिवार्षिक निर्वाचन

आर्यसमाज लखनऊ {गणेशगंज} का त्रैयवार्षिक चुनाव आर्यसमाज में दिनाक 15-1-1989 को विधिवत् सम्पन्न हुआ। निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए -

प्रधान - श्री पं0 महेश्वर पान्डे उपप्रधान-श्री रवीन्द्र कुमार शर्मा
मन्त्री - श्री मनमोहन तिवारी कोषाध्यक्ष - श्री शिवनाथ
पुस्तकाध्यक्ष-श्री विशम्भर दयाल गुप्त
सम्मानित सदस्य - सर्वश्री चन्द्र दत्त शुक्ल, विष्णु कुमार अवस्थी।

आवश्यक सूचना

सर्वसाधारण के सूचनार्थ निवेदन है कि उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ का कार्यालय तथा आर्यमित्र के कार्यालय का समय आगामी फरवरी 1, 1989 से प्रातः 11 बजे से सायंकाल 6 बजे तक का कर दिया गया है ।

सभामन्त्री।

गोरक्षा

श्री प्रियव्रत शास्त्री, साहित्यरत्न, एम॰ए॰, सरधना।

आर्य प्रतिनिधि सभा के सद्यः निवर्तमान वृहदधिवेशन में स्वीकृत त्रियोजना के अन्तर्गत द्वितीय योजना "गोरक्षा" योजना है।

योजना बहुत सुन्दर तथा लोकोपकारी है। इससे पूर्व भी अनेक बार इस विषय पर विचार हुआ है, आन्दोलन तथा सत्याग्रह भी हुये हैं। परन्तु उनका कोई विशेष लाभकारी परिणाम नहीं हुआ।

इसके कई कारण हैं। गोशालायें पर्याप्त मात्रा में नहीं। आजकल तो चरागाह भी लगभग नहीं रहे। आधुनिक युग आर्थिक युग है इसलिये प्रायः सभी स्थानों पर जो डेरी फार्म हैं उनमें भैंस ही दृष्टिगत होती हैं। भैंस का दूध और भैंस का ही घी उपलब्ध होता है। यदि किसी कारणवश गाय के दूध या घी की आवश्यकता हो जायें तो इन्हें अन्वेशित करना पड़ता है।

इन सब का क्या कारण है। गौ को मानने वाले मनुष्यों ने ही गोपालन करना प्रायः छोड़ दिया है। यदि किसी के यहाँ गाय है भी तो गौ के वृद्ध हो जाने पर यह जानते हुये भी कि कसाई इसको मारेगा फिर भी कसाई को ही कुछ थोड़े से आर्थिक लोभ के वशीभूत होकर बेच दिया जाता है।

आर्य समाज ने गोरक्षा के लिये बहुत कुछ किया है परन्तु वह सब निष्फल क्यों रहा या निष्फल क्यों हो रहा है। इसके कई कारण हैं :

1- सामर्थ्यवान आर्यपुरुष भी अपने घरों पर प्रायः गोपालन नहीं करते।

2- कृषकों द्वारा गौवों और बैलों का कृषि में महत्व समझते हुये बनावटी खाद का प्रयोग करना तथा ट्रेक्टरों आदि से खेत में काम करना।

3- गेहूँ आदि की फसल कट जानें पर मशीनों से ही अनाज निकलवाना तथा "दॉय" जो बैलों से अनाज को लेना था, छोड़ देना।

4- पानी की व्यवस्था "रहट" आदि से न करके ट्यूबवेल आदि से करना।

और भी कारण हो सकते हैं। इनका परिणाम बड़ा भयावह हो रहा है, इन सबको करने से स्वार्थ पनपता रहा और विश्व-बन्धुत्व, सद्भावना, सुविचार, परोपकार, सत्य भावनाओं का धीरे-धीरे घटते रहना। पारस्परिक विश्वास समाप्त हो रहा है, अर्थ लिप्सा बढ़ रही है, धर्म से विश्वास उठता जा रहा है। डकैती, चोरी आदि अनुदिन बढ़ रही है।

महर्षि स्वामी दयानन्द ने गोकरुणा निधि में गोपालन से ही एक ऐसा सुन्दर आर्थिक ढाँचा समझाया है कि यदि उसके अनुसार कार्य किया जाये तो समस्त संसार में शान्ति का साम्राज्य हो जाये ।

वेदों में स्थान-स्थान पर गौ को "अघ्न्या" कहा है और वेदों पर विश्वास करने वाले मनुष्यों ने ही उसको अघ्न्या नहीं रहने दिया, औरों को क्या कहा जाये। राष्ट्र कवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने भारत-भारती में ठीक ही लिखा है:-

भूमि वन्ध्या हो रही वृषजाति दिन दिन घट रही
घी दूध दुर्लभ हो रहा बलवीर्य की जड़ कट रही ।
गोवंश के उपकार की सब ओर आज पुकार है
तो भी यहाँ उसका निरन्तर हो रहा संहार है ।।

दांतों तले तृण दाबकर हैं दीन गायें कह रहीं,
हम पशु तथा तुम हो मनुज पर योग्य क्या तुमको यही।
हमने तुम्हारे माँ की तरह है दूध पीने को दिया
देकर कसाई को हमें तुमने हमारा वध किया।।

यदि तुम कहो अब हम फलों से काम ले लेंगे सभी
तो पूछती हैं हम कि क्या व दूध भी देगी कभी।
"दैवोऽपि दुर्बल घातकः फिर याद आता है यहाँ
"छिद्रेष्वनर्था" वाक्य पर भी ध्यान जाता है यहाँ।।

इस प्रकार के पाप को मिटाने के लिये यह आवश्यक है कि प्रत्येक आर्य को गोकरुणानिधि का गहन अध्ययन करना चाहिये, तथा जहाँ सप्ताह में ऋषिबोधोत्सव एवं सप्ताह भर वेदप्रचार एक वर्ष में समाजों में सोल्लास सम्पन्न होते हैं वहीं वर्ष में गोपाष्टमी के अवसर पर गोरक्षा सप्ताह मनाया जाना चाहिये ।

आर्य प्रतिनिधि सभायें तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा गोकरुणानिधि का प्रकाशन कर जनता में निःशुल्क या अत्यल्प शुल्क से वितरित की जानी चाहिये। उससे आर्य समाज का प्रचार भी जनता में होगा और ऋषि की दीर्घ और गोपालन के आर्थिक लाभ से भी जनता अवगत होगी ।

एक स्थान पर लिखा है "गावो विश्वस्य मातरः" अर्थात् गायें किसी देश विशेष की नहीं प्रत्युत सारे संसार की माँ हैं ।

गोभक्त की यह पुकार सारे संसार के मनुष्यों के लिए श्रवणनीय एवं पालनीय है:-

"गावो में अग्रतः सन्तु गावः सन्तु मे पृष्ठतः।
गावो मे पार्श्वतः सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम् ।।

हिन्दू मात्र योगीराज श्री कृष्ण को महापुरुष मानते हैं कुछ तो उनको अवतार मानकर उनका भक्तिभाव से भजन पूजन भी करते हैं। सभी उनको गोपाल मानते हैं। उन्होंने गीता में अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा है:-

"यद् यद् आचरति श्रेष्ठः तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनु वर्तते ।।

जो आचरण श्रेष्ठ पुरुष करते हैं वही आचरण अन्य पुरुष करते हैं। जिस बात को वे प्रमाणित कर देते हैं लोक उसका ही अनुसरण करते है। उन्हें गोपाल कहते और मानते हुए भी उनके ही भक्त गोपालन नहीं करते यह दुःख और आश्चर्य की बात है ।

गाय का दूध और घी अमृत होते हैं। इनको पान करने वाले मनुष्य संयम पूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए पूर्ण आयु प्राप्त करते हैं ।

गोसेवा वरदायिनी होती है। राजा दिलीप ने गोसेवा करने से पुत्र रत्न प्राप्त किया था। उपनिषदों में भी गोसेवा माहात्म्य के अनेकों उदाहरण प्राप्त होते हैं। गोसेवा में भक्ति भाव आवश्यक है।

गौ उसके बच्चों के गोबर और मूत्र की खाद खेतों में डाली जाती है। जिससे भूमि की उर्वरा शक्ति की वृद्धि होती है और उनसे शुद्ध एवं सात्विक खाद्यान्न प्राप्त होता है। गौ के गोबर की लिपाई से केवल चौका-चूल्हा ही पवित्र नहीं होते प्रत्युत यज्ञस्थल भी शुद्ध होता है। मरने पर चर्म तथा अस्थि आदि भी लोकोपकारक होते हैं ।

इस प्रकार गौ प्रत्येक दृष्टिकोण से लोकोपकारक है। उसकी सेवा करना, पालना हमारा धर्म है। सामर्थ्यवान गृहस्थों को गोपालन अवश्य करना चाहिये तथा साथ ही समर्थ व्यक्तियों को सर्वप्रकार के भेद भुलाकर गोशालायें स्थापित करनी चाहिये तथा स्थापित गोशालाओं का सम्वर्धन करना चाहिये।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने यह बहुत सुन्दर एवं समय की आवश्यकता के अनुकूल यह योजना स्वीकार की है। इसके कार्यान्वयन का विचार भी सभा को बहुत गम्भीरता से विचार कर स्वीकार करना चाहिये ।

मौलाना आजाद का वास्तविक रूप

{डा0 मंगाराम जी अध्यक्ष, इतिहासविभाग
श्री वार्ष्णेय महाविद्यालय, अलीगढ़}

मौलाना आजाद की आत्मकथा-"इण्डिया विन्स फ्रीडम" और उसके तीस पृष्ठ जो कि उनको मृत्यु के तीस वर्ष पश्चात् इसी वर्ष प्रकाशित हुये हैं, ने यह सिद्ध कर दिया है कि वे एक "फन्डामेन्टालिस्ट मुल्लाह" थे तथा कांग्रेस में रहकर वे जीवन भर अपने और मुस्लिम हितों का संरक्षण और संवर्धन करते रहे। कांग्रेस में रहकर भी वे मुस्लिम लीग का खेल खेलते रहे तथा पाकिस्तान- निर्माण के लिये मुस्लिम लीग में रहकर जो कार्य मुहम्मद अली जिन्नाह ने किया, वही कार्य मौलाना आजाद ने कांग्रेस में रह कर किया। 1935 में मुस्लिम बहुल सिन्ध को बम्बई प्रेसीडेन्सी से पृथक कराने में उनका बहुत बड़ा हाथ था। 1937 के निर्वाचन के बाद उन्होंने सिन्ध और बंगाल में मुस्लिम लीगी सरकारें बनवाने की दृष्टि से वहाँ कांग्रेस के साथ मिलकर गैर-मुस्लिम लीगी सरकार नहीं बनने दी। यदि वे सिन्ध में अल्लाबक्श और बंगाल में फजलुल हक की कृषक प्रजा पार्टी के साथ कांग्रेस को मन्त्रिमण्डल बनाने देते, तो भारत का विभाजन निश्चित ही रोका जा सकता था।

16 मई, 1946 को जब भारत में कैबिनेट मिशन योजना आई तो कांग्रेस के अध्यक्ष के रूप में मौलाना आजाद ने अंग्रेजों के इशारे पर इसी सिद्धान्त का समर्थन किया जिसका जिन्नाह ने किया था। मौलाना आजाद जिन्नाह की भाँति एक कमजोर केन्द्र चाहते थे जिसमें पंजाब, सिन्ध, बलूचिस्तान और सीमा प्रान्त का एक समूह था तथा बंगाल और आसाम का दूसरा समूह। कोई भी प्रान्त अपने विधान मण्डल के बहुमत द्वारा प्रस्ताव पारित करके कैबिनेट योजना के प्रारम्भ होने के 10 वर्ष बाद तथा फिर भी प्रत्येक 10 वर्ष बाद संविधान की धाराओं पर दो बारा विचार करने के लिये प्रस्ताव पेश कर सकता था। इस योजना के तहत भारतीय रियासतों पर भी नई अन्तरिम सरकार की सर्वोच्चता नहीं रह सकती थी। वे भी भारतीय संघ के बाहर निकल जाते। अतः यदि कैबिनेट मिशन योजना को मौलाना आजाद के अनुरूप स्वीकार कर लिया जाता, तो सारा भारत विखण्डित हो जाता और पाकिस्तान का स्वरूप और भी अधिक विस्तृत होता। पं0 जवाहरलाल नेहरू के पी0ए0- ए0ओ0 मथाई ने भी पं0 नेहरू पर लिखी पुस्तक में उल्लेख किया है कि कैबिनेट मिशन योजना और माउन्टबेटन योजना में मौलाना आजाद की भूमिका वही थी जो जिन्नाह की थी।

मौलाना आजाद का यह कथन कि वे 1946 में कांग्रेस के स्वयं अध्यक्ष नहीं बने, एक सफेद झूँठ है जो उनके चरित्र को उजागर करता है। उनके संदिग्ध चरित्र के कारण 1946 में किसी भी प्रान्त की कांग्रेस कमेटी ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिये उनके नाम की संस्तुति नहीं की थी। 15 प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों में से 12 ने सरदार पटेल और शेष ने डा0 राजेन्द्र प्रसाद और आचार्य कृपलानी के नाम की संस्तुति की थी। बाद में गाँधी जी के आग्रह पर सरदार पटेल ने नेहरू के पक्ष में अपने नाम को वापिस ले लिया।

1947 में भारत माता के विभाजन के पश्चात् भी मौलाना आजाद की साम्प्रदायिक मनोवृत्ति बराबर बनी रही। 1947 से पूर्व जिस प्रकार केवल मुसलमानों के प्रवक्ता थे, उसी प्रकार 1947 के पश्चात खण्डित हिन्दुस्तान में भी बने रहे। उन्होंने पाकिस्तान के निर्माण में सहयोग करने वाले लाखों मुसलमानों को पाकिस्तान भागने से रोका। उन्होंने मुसलमानों के आरक्षण की वकालत की। संविधान निर्मात्री सभा में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाये जाने का विरोध किया। किन्तु जब हिन्दी को उनके विरोध के बावजूद भी राष्ट्रभाषा स्वीकार कर लिया गया तो उन्होंने हिन्दी के विकास में अनेक प्रकार की बाधायें डालीं। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के 85/ शिक्षक और छात्र 1947 में जब पाकिस्तान भाग गये तो मौलाना आजाद ने ही इसे पुनर्जीवन दिया। मौलाना ने ही अलीगढ़ मुस्लिम वि0वि0 के परिसर को डी0ए0वी0 कालेज, लाहौर के परिसर से परिवर्तित नहीं होने दिया।

मौलाना आजाद जन्म से अरब थे तथा अरबी, फारसी व उर्दू के विद्वान थे। वे न हिन्दी जानते थे और न अंग्रेजी। स्वतन्त्रता के प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा मन्त्री के रूप में मौलाना ने इस देश की शिक्षा पद्धति के साथ जो खिलवाड़ की उसके वीभत्स परिणाम आज तक भुगतने पड़ रहे हैं।

अपनी आत्मकथा में मौलाना आजाद ने पं0 नेहरू की लेडी माउन्टबेटन के प्रति आकर्षण पर प्रकाश डाला है, किन्तु शराब के प्रति अपनी कमजोरी को उजागर नहीं किया है। ए0ओ0 मथाई ने उनकी शराब के प्रति कमजोरियों को विस्तृत रूप से उजागर किया है। उनके क्रिया कलापों और विचारधारा से पता लगता है कि वे भारतीय कम और अरब अधिक थे। उन्हें कांग्रेस दल में मुस्लिम लीग का "ट्रोजन-होर्स" तथा स्वतन्त्रता के बाद खण्डित हिन्दुस्तान में पाकिस्तानी शिक्षा मन्त्री कहना अधिक उचित है। देश-विभाजन के लिये गाँधी, नेहरू व पटेल को दोषी मानने वाले मौलाना, आजाद ने विभाजन रोकने के लिये स्वयं क्या कार्य किया? वास्तव में हिन्दी और हिन्दुस्तान के लिये जिन्नाह से अधिक खतरनाक मौलाना आजाद सिद्ध हुये क्योंकि जिन्नाह से तो सभी सावधान थे, किन्तु मौलाना तो कांग्रेस में रह कर देश के लिये आस्तीन के साँप बने रहे। उनका वास्तविक उद्देश्य दारूल-ए-हस्व हिन्दुस्तान को दारूल-ए- इस्लाम में परिवर्तित करना था। किन्तु सरदार पटेल के कारण उनके नापाक मंसूबे सफल नहीं हो सके।

-x-x-x-x-x-x-x-x-

गणतन्त्र

{कविवर "प्रणव" शास्त्री
एम0ए0शास्त्री सदन, आगरा}

घायल सा सिसक रहा है माँ की आँखों का प्यारा।
अति दुःखित हुआ है मन में प्यारा गणतन्त्र हमारा ।।1।।

स्वागत में जिसके वीरों ने शतशः शीश चढ़ाये।
वैरी के प्रखर प्रहारों में सीने निडर अड़ाये।
हँस-हँस भारत माता ने तन, मन, धन सब वारा।2

क्रन्दन के क्रन्दन तारों से वन्दन वार सजे थे।
चर्चित चर्चा के चन्दन से ऊष्मा-भाव भजे थे
सुखशीतल मन्द सुगन्धों का छूट रहा फव्वारा।।3।।

पर आज निराशा निशि की अन्धेरी बढ़ती जाती।
मँहगाई प्रतिदिन ऊँची है, नभ में चढ़ती जाती।
जनता की पीड़ा नद का है मिलता नहीं किनारा।4।

मद मद्य मास का भक्षण, ध्वज रिश्वत का लहराया।
अघ ओघ, अनय मत मिथ्या का संकट है गहराया।
भौतिकता समता ममता का धुँधला हुआ सितारा।5।

पंजाबी शैशव रोता-रोती है जरा जवानी।
सहमी सी मानवता की भी बन्द हुई जनवाणी।
आशा के दीप बुझे हैं पांथकों ने साहस हारा ।।6।।

जनता के जितने दल है, दाल अपनी दाल रहे हैं।
दिल्ली की कुर्सी पाने चल अपनी चाल रहे हैं।
सर्वोपरि राष्ट्र हितों को कब किसने कहाँ विचारा।।7।।

यों देख रहे हैं सबही नन्दन तो धधक रहा है।
भूकम्प विभाजन का तो मानो फिर भभक रहा है।
नीरो बन नेता वंशी है बजा रहे नक्कारा।।8।।

यह राम जन्म की भूमि अधर में लटक रही है।
उत्तर में केसर-क्यारी सिर रो-रो पटक रही है।
इस तुष्टी करण विधाने है न्याय सत्य सहारा।।9।।

हे कर्णधार हे नेताओ कवि की सुनो चुनौती।
सुखशान्ति सृजन की चाहो सचमुच मान मनौती।
निष्पक्ष निडर हो पकड़ो तुम संविधान की धारा।।10

-x-x-x-x-x-x-x-x-

- आर्य समाज मसेना मिर्जापुर चहोड़ा रोड रामनगर {फैजाबाद} का 54वां वार्षिकोत्सव दिनांक- 20, 21 तथा 22 दिसम्बर को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्य जगत के विद्वानों एवं भजनोपदेशकों ने अपने ओजस्वी भाषण तथा भजनों के माध्यम से आर्य समाज के सिद्धान्तों, विचारों और राष्ट्रीय एकता पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। महिलाओं के लिये महिला सम्मेलन का विशेष आयोजन रहा। जिसमें इन्द्रजीत कन्या विद्यालय की छात्राओं एव अध्यापिकाओं ने विशेष रूप से भाग लिया ।

महिला मण्डल

अर्द्धांगिनी

[illegible] मनोरमा देवी अग्निहोत्री, "किशोर", लखनऊ।

"आज [illegible] जाओगे क्या? "संग्राहिकाओं में उलझे राजेश से [illegible] ने पूँछा,। "जाऊँगा क्यों नहीं? किन्तु क्या भोजन तैयार हो गया?" वह बोला। "हाँ" संक्षिप्त सा उत्तर ममता ने दिया। वह तुरन्त पाकशाला में आ बैठा। स्थाली में सबका सब भोजन स्पर्शते हुए देखकर उसने ममता से पूँछा- "क्या तुम नहीं खाओगी" "मुझे आज बुभुक्षा नहीं है" पत्नी ने उत्तर दिया।

"एक भारतीय नारी स्वयं क्षुधित रहकर भी निज पति को खिलाने में ही सुख सन्तोष एवं गौरव का अनुभव करती है।" इस आदर्श की व्यवहारिक सत्यता पाकर वह नतमस्तक हो गया, यतः सम्प्रतिकाल की वास्तविकता को वह भली-भाँति जानता था।

राजेश एक [illegible] व्यावसायिक संस्था में लिपिक के पद पर नियुक्त था। इस घोर महर्घता के युग में उसे अल्पवेतन में अपने परिवार का निर्वाह करना अन्य निम्न मध्यवर्गीय व्यक्तियों की भाँति ही अति कठिन प्रतीत होता था। आज 28 वीं तिथि है और गत अनेक दिवसों से उसका घर एकादशोपि [illegible] एकादस्यों की स्थिति में आ गया है। कभी प्रातः काल भोजन किया तो कभी रात्रि में, कभी सायं काल।

विचारों में लीन राजेश के मस्तिष्क-पटल पर विगत स्मृतियों के चलचित्र घूमने लगे- उसी प्रकार गत मास भी वह भोजन त्याग कर उठने लगा था। ममतामयी "ममता" ने पूछा था:- "खाते क्यो [illegible]" "क्षुधा नहीं है। "उसने कहा था। वह कक्ष में जाकर तुरन्त व्यवस्थित होकर चल पड़ा था। उसका कार्यालय घर से 4 मील दूर था, उसके पास साईकल तक न थी, उसके पास टैक्सी या बस में देने को पैसे भी नहीं थे। कार्यालय तक पद-यात्रा में विलम्ब हो गया था, सेठ जी के क्रोध रूपी तापमापक का पारद चढ़ गया था।

"राजेश तुम आज तक कभी समय पर कार्यालय नहीं आये" सदा सेवा कार्य से खिलवाड़ ही किया है तुमने। समय पर आया करो। अन्यथा तुम्हारा कार्य असन्तोषप्रद होने के साथ-साथ विलम्बित भी लिख दिया जायेगा-और सुनो- आज समस्त कार्य से निवृत्त होकर ही जाना अन्यथा----।" क्योंकि घर से पत्नी से लड़कर अग्नि की शपथ लेकर पूरे क्रोध में मानो आये हो। जैसे कोई तीर मार कर आये थे। सामने पड़ जाने वाले पर क्रोध तो उतारना ही था और आगे की पूर्ववत् कल्पना से सिहर उठा। उसे ध्यान आया:------"उस दिन क्षुधा पीड़ित अशक्त एवं उद्विग्न सा येन केन प्रकारेण दो घण्टे विलम्ब तक कार्य करता रहा था।" जब आसन से उठ कर खड़ा हुआ तो अर्धचेतना अवस्था में उसके चरण लड़खड़ाये और तभी नेत्रदृष्टि सम्मुख छाये अन्धकार में चकित हो आसंदकाओं के मध्य स्थल में गिर पड़ा था। आगे क्या हुआ- उसे पता नहीं। कार्यालय अनुचर ने उसे बताया था, :- "गिरते समय उसका सिर काष्ठ सामग्री से टकराकर फट गया था। अत्यधिक द्रुतवेगेन अधिक रक्तस्राव से वह मूर्छित हो गया था, अनुचर देखने पहुँचा था- कि बाबू जी ने यदि कार्य समाप्त कर लिया हो तो बन्द करके वह भी घर चले। देखकर उसने एक चीत्कार किया, अरे। यह बाबू जी को क्या हो गया है। यहाँ रक्त बह रहा है शीघ्र कुछ करना चाहिए। तत्काल निकटस्थ प्रबन्धक-आवास पर पहुँच कर बोला : "साहब। साब "हुजूर, सरकार वर्मा बाबू दफ्तर मँ कुर्सियोन बीच गिरे पड़े भये हैं, बड़ी चोट लागि ?, बड़ा खून निसरति है। धरती पर फैला पड़ा रहत उइ बेहोश पड़ेन है।"

"हम क्या करें हम क्या कोई वैद्य-डाक्टर हैं" डाक्टर चाहो . बुला लाओ।" ऊँह। नौकरी करने चल देते हैं, देह में दम बूढ़ों जैसा भी नहीं है। यह भला क्या नौकरी करेगा। फर्म पैसा देती है, उपचार कराओ । ठीक होकर आओ"।

इस प्रकार रामाधीन से सूचना पाकर प्रबन्धक ने भाषण दे डाला। मुख संकोच पूर्वक रामाधीन बोला:- "साब हमरे पास तो दवा दरमद के तईं पैसा नाहिं है"। "नहीं है, तो सेठ जी को बता दो"। यहाँ क्या सर्वकार हमें कर्मचारियों की दवा-दारू और डाक्टर के शुल्कादि के लिए कुछ दे देती है जो उसमें से कुछ हम निकाल कर दे दें।"

"साब सेठ जी तो सबेरेन देर भई हुई जान उन पै ऊँखड़पड़ा लिए रहा है। नौकरी निकासन की धमकी तो मुँहा पर धरी रहत है। हमका झापट्ट ली हैं, हमें डर लागत है साहब।"

"साहब ---"डर लगता है तो बाहर घसीट कर डाल दो, कार्यालय बन्द कर चले जाओ। अपना काम देखो'

ओह। आपतो नितान्त हृदयहीन होते जा रहे हैं मेहता जी। जब से प्रबन्धक हुए हैं। क्या यही मानवता है। मैं कहती हूँ कि मानवता भी तो कोई तत्व है, क्या हमें ऐसे स्तर एवं अवसर पर उसको भुला देना चाहिए, अन्ततोगत्वा आपको हो क्या गया है छि।। दे क्यों नहीं देते- 25/- रुपये न हो फिर उन्हीं के वेतन से काट लीजिए।" सहसा एक ओजस्वी मृदुल मधुर नारी स्वर कर्णगोचर हुआ।"

"ऐसी क्यों अधीर हुई जा [illegible] हो, जब वह स्वास्थ्य लाभ करेगा तो स्वयं ही शुल्कादि दे देगा।" :- अन्यथा घर से लाकर या---- कल उधर से आते हुए देता जायेगा, तुम मृदुला। कार्यालय कार्य में व्यर्थ हस्तक्षेप न किया करो।"

"साहब। बाबू जी समीप इन दिननमाँ पैसा कहाँ धरा होइ। आज 25 तारीख है- [illegible] पंचन का वेतन तो 15 दिन चलैया नाँय है"। रामाधीन ने सहानुभूतिपूर्ण संस्तुति की।

मेहता जी----चल। चल।। अपनी मीन-मेख मिला रहा है। तू क्या जाने। तू अनुचर-वह लिपिक। उसको तो तुझसे अधिक वेतन मिलता है।

रामाधीन-"हुजूर है। इससे जानत है। कि उनको देखत जो रहत हौं।।- नित्येइ पैदल आवत है। न बीचो में।। कछु खाये, चायौ नायँ पियत हैं। हमें तो जान परत है-कि खानौ नाँय खाइके आवत हैं। काहे ते कि मुँहा झुरान-झुरान, पियर-पियर होन जात है। सूखन [illegible] है --और साब हमारे तो भली चलाई। हमतो हियाँ पासइ कुठरिया माँ रहत हैं, ताइ के इन वाहन ते उठा लेइ हेन किरायाम [illegible] परत है। दुई मोटी रोटी उपला ऐस बनाइ लई और हरी मिर्चा नोन मे डारिके पीस के उइ रोटी माँ चुपरि के खाई लईन। दुई बीघा धरती हइ ताहू को समो निकसि के जोत-बोइ लेत हैं सो बाल-बच्चा उधर घर माँ खात पियत रहत हैं। ताहीं भाँति थोर-बहुत कछुक हमहूँ उठाई लावत हैं। एक बात अउर है कि हम पंचन को ट्रिसे पिरेस कौनौ से मतलब नाहीं है। मुला बाबू तौ बहुत दुःखी लखात हैं, साहब"।

साहब ने कहा था कि "मेरे पास तो दान लुटाने को पैसा है नहीं। मैं भी तो परिश्रम करके कमाता हूँ। कहीं नदी से भर तो लाता नहीं । किस-किस का पूरा डालूं। संसार में कोटिशः दुःखी पड़े हैं।" "आप लोगों के वाद-विवाद में बेचारे वर्मा जी पर क्या बीत रही होगी? "लो भैया रामाधीन ये 25/- रुपये ले जाओ। मैं डाक्टर को दूरभाष से सूचित किये देती हूँ:- कमी पड़े, तो मांग लें फिर मुँहसे रक्त अधिक बह जायेगा, तो प्राण पर संकट आ जायेगा"। कहते हुए मृदुला ने झट दूरभाष सम्भाला।

सहसा एक विद्युत-तरंग-ताड़ित सा उसके मन को एक झटका लगा- उस दिन तो मृदुला और रामाधीन की सहृदयता से राजेश के प्राण बच गये थे। मेहता जी भी अन्तः के बुरे नहीं है। कोमल और दयालु भी हैं, किन्तु महर्घता एवं जन्मजात कृपणता के वश कुछ कठोर हो जाते हैं। "उसने" भी अबकी बेतन मिलने पर गत 10 वीं तिथि को बहुत "न" "न" करने पर भी मृदुला के 25/- रुपये चुका दिये थे, तभी व्यय में अधिकतम संकीर्णता आ गयी थी। किन्तु अब वह क्या करे विलम्ब तो हो ही रहा था, उसे पदाति ही जाना था। ममता के विशेष अनुरोध एवं गत मास की दीनदशा में एवं आपन्न

ऐ मेरे देश के लोगो

करना विस्मरण न अपना इतिहास
करना न व्यर्थ उपहास
करना न अधिक भोगविलास
करना सर्वतोमुखी विकास।
इतिहास में अपनी त्रुटियां खोजो
ऐ मेरे देश के लोगों।
करना न मिथ्या अभिमान
पर न भूलना अपना स्वाभिमान
करना सब सज्जनों का मान
फैलाना उपयोगी विज्ञान ।
उत्तम कर्म कर उनका फल भोगो
ऐ मेरे देश के लोगों ।
बढ़ाओ विश्व में भारत का मान
प्रतिशोध लो जो कररहे तुम्हारा अपमान
श्रम कर बनाओ देश को समृद्धि की खान
अपने कार्यों द्वारा बनाओ इसको महान्।
आलस्य प्रमाद दुर्गुण त्यागो
ऐ मेरे देश के लोगों ।।

डा0 शकुनचन्द आर्य, लालगंज,
जिला- रायबरेली ।

-x-x-x-x-x-x-x-

तिरंगा झण्डा

भारतीय हम इस झण्डे को ।
ऊँचा कर दरशाते हैं।
उसको शीश झुका निज गौरव ।
उन्नत करते जाते हैं ।।
हम भारत के बच्चे हैं ।
अपने मन के सच्चे हैं ।।
भारत को स्वर्ग बनायेंगे ।
हम आगे बढ़ते जायेंगें ।।
राष्ट्र दिवस पर हम-मिल-जुलकर ।
झण्डे को लहराते हैं ।।।
हम नयी चेतना लाते हैं ।
हम सभी "सुशील" कहलाते हैं।।

सुशील कुमार त्यागी "अमित"
गु0म0वि0 ज्वालापुर हरिद्वार

व अनिष्ट की आशंका से अति त्वरया स्थाली के भोज्य का अर्द्धांश तो झपेट में खा ही डाला। उठते हुए पति को क्रमबद्ध योजनापूर्वक नीचे खींच कर ममता ने पुनः एक मार्मिक आग्रह किया, "अरे चलने को तो बल आ जाय, खाओ झट-पट।"

राजेश-----सन्तोषपूर्ण मर्मवेधीदृष्टि धर्मपत्नी पर डालकर स्नेहिल स्वर मे बोलाः- "मैं तुझे निराहार मार कर एकल स्वयं पूरा खाकर दानव बन जाऊँ।-केवलाघी भवति केवलाघी"। और तुम मुझे ही खिलाकर तृप्त रहो। भूखी मरते हुए शिशु को दुग्धपान कैसे करा पाओगी। तुम भी अभी सद्यः -प्रसूता हो। तुम्हारी मानवता का तो रदान अच्छा रहा।" ममता का सिर राजेश के वक्ष से उठ कर कन्धे पर आ गया उभय के उभय-नेत्रों से प्रवाहित अश्रु धरती पर निधीत जलपात्र में टप-टप गिर रहे थे, गद्-गद् कण्ठ से वह गुन गुनायीः-

"नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे।
शरद् विमल विधु बदन निहारे।।

राजेश के मुख से आशीर्वचन निकल पड़ेः-

"सुमंगलीरियं, सम्राज्ञी भव ममतामयी त्वम् ।"

सम्पादक के पत्र

हिन्दू धर्म संकीर्ण नहीं

माननीय सम्पादक महोदय,

कतिपय समाचार पत्रों में श्री डा0 गुहा के सम्पादक के नाम पत्र में "धर्म परिवर्तन का कारण गरीबी नहीं" पढ़ा। पढ़कर ऐसा लगा कि डा0 गुहा को हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) का यथेष्ट ज्ञान नहीं है या उन्होंने जानबूझकर सत्य को झुठलाने और पाठकों को भ्रमित करने करने का प्रयास किया है। परन्तु सुविज्ञ पाठक जिसे हिन्दू धर्म का यथेष्ठ ज्ञान है, श्री गुप्त के कथन "हिन्दू धर्म की संकीर्णता से तंग आकर लोगों ने अन्य धर्म ग्रहण किया" को अनुचित, अज्ञानपूर्ण और मिथ्यावाद से पूर्ण प्रलाप ही समझेगा।

वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) विश्व का प्राचीनतम् धर्म है और हिन्दू धर्म की व्यापकता, सहिष्णुता, समदर्शिता और महानता निर्विवाद रूप से सत्य और सर्वोच्च है। हिन्दू धर्म ने सर्वप्रथम सारे विश्व को "वसुधैव कुटुम्बकम्" और "विश्वबन्धुत्व" का सन्देश दिया। सारे विश्व को एक परिवार के रूप में मान्यता देने वाले हिन्दू धर्म को संकीर्णता से पूर्ण धर्म कहना अज्ञानता या दुर्भावना से प्रेरित ही कहा जा सकता है। अस्पृश्यता, पाखण्ड, अन्ध विश्वास सामाजिक बुराइयाँ हैं, इनका हिन्दू धर्म से कुछ लेना देना नहीं है। हिन्दू धर्म (वैदिक धर्म) में अन्ध विश्वास, पाखण्ड, अस्पृष्यता को कोई स्थान नहीं है। यदि श्री गुहा इस सत्य को स्वीकार करने से इन्कार करते हैं तो हम उन्हें शास्त्रार्थ करने की चुनौती देते हैं। हिन्दू धर्म के सर्वोच्च सिद्धान्तों का ज्ञान न रखने वाला व्यक्ति यदि हिन्दू धर्म को सिद्धान्तहीन कहे तो यह क्षोभ और दुःख का विषय है। ऐसे भ्रमपूर्ण विचार व प्रचार निन्दनीय है। भारत में कोई धार्मिक समस्या नहीं है। वास्तविक समस्यायें आर्थिक और सामाजिक समस्याये हैं। भारत में अनेक धर्मो में धर्मान्तरण आर्थिक और सामाजिक कारणों से हुआ। गरीबी, अशिक्षा, अस्पृश्यता, अन्धविश्वास को हिन्दू धर्म का रूप बता कर अशिक्षित और पिछड़े हिन्दू जाति के लोगों में हिन्दू धर्म की विकृत करके उनको भ्रमित किया गया और किया जा रहा है। उनकी गरीबी का अनुचित लाभ उठा कर पैसे के बल पर धर्मान्तरण किया गया और किया जा रहा है। डा0 श्री गुहा यदि चाहें तो मैं सार्वजनिक रूप से इसको प्रमाणित कर सकता हूँ। ईसाई समाज में अनाचार, अनैतिकता, पाखण्ड, विश्वसघात और अन्धविश्वास का प्रत्यक्ष अनुभव एक ईसाई के रूप में मैंने किया है। प्रेम, क्षमा, सेवा का सन्देश सन्त ईसामसीह ने दो हजार साल पहले दिया था लेकिन प्रेम, क्षमा, परोपकार, अतिथि सत्कार और परोपकार में सर्वोत्सर्ग करने के सिद्धान्त हिन्दू धर्म में आदि काल से ही हैं। और तो और देश, जाति और भाषा, संस्कृति को परे रखकर मानव मात्र में ईश्वर का प्रतिरूप देखने की शिक्षा हिन्दू धर्म ने दी।

पं0 जयन्त कुमार आर्य, उपदेशक,
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

xxxxx

शोक समाचार

-बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना के मन्त्री श्री रामाज्ञा वैरागी (68) का हृदय की गति बन्द हो जाने के कारण देहान्त हो गया। अन्त्येष्टि सस्कार वैदिक विधि से किया गया।

श्री वैरागी गत 35 वर्षों से आर्यसमाज तथा आर्यवीरदल के संगठन तथा प्रचार-प्रसार में जीवन समर्पित व्यक्ति थे। इन्होंने भारतेतर प्रायः 20 देशों की यात्रा करके पर्यटन सम्बन्धी अनेक पुस्तकों की रचना की है। ये आसन तथा प्राणायाम के भी विशेषज्ञ थे। आपको स्वतन्त्रता सेनानी का सम्माननीय पद भी प्राप्त था। इनके निधन से आर्यजाति की अपूर्णीय क्षति हुई है ।

मनमोहन तिवारी,
सभामन्त्री

बाल जगत

बलिदानी बालक बदन सिंह

(यतीन्द्र कुमार आर्य,
"विद्यारत्न" गुरूकुल
महाविद्यालय ज्वालापुर)

गड़ गये जो नींव में उन पत्थरों को ।
याद कर लो।।
जो नहीं देते दिखायी ।।।

वेद का सन्देश है- वयम् तुभ्यम् बलिहृतः स्याम अर्थात् हे। मातृभूमि हम तेरे लिए बलिदान देने वाले हो ।

आइये। जिन अमर वीरों ने अपनी किशोर अवस्था में जवानी कोठों कर मारकर वेद की उपर्युक्त ध्वनि को साकार किया हो और जाते-जाते यह कह गये हों-

कर चले हम फिदा जानो तन साथियों ।
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों ।।

वास्तव में जीना उसी का है जो मरना भी जानता हो-
"जियें तो ऐसे जियें। जैसे कफ़न में जलने दिये।।
वैसे तो प्रतिदिन हजारों पैदा होते हैं और मरते हैं परन्तु-

गुजरने को तो हजारों ही कारवाँ गुजरे ।
जमीं पर नक्शेकदम बस किसी-किसी के रहे।

आइये। जिन वीरों ने माँ- बाप की ममता को त्यागकर धर्म की बलिवेदी पर प्राणों की आहुति दे दी हो, जिन्होंने यह बात सिद्ध की हो कि- माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः ।

आइये। उन अमर बलिदानी बालकों को याद करें, उन पवित्र आत्माओं को याद करें जिन्होंने हँसते-हँसते हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लेकर यह साबित कर दिया था कि हम बालक भी किसी से कम नहीं।

1757 भारतीय इतिहास की एक उल्लेखनीय तिथि है तीन शताब्दियों का कालखण्ड भारत के इतिहास के साथ एक सुनहरा ऐतिहासिक पन्ना लाया। प्रत्येक सन् (57) सत्तावन में कोई न कोई उल्लेखनीय घटना भारत के इतिहास के साथ जुड़ी। सन् 1857 में पलासी की रणभूमि में एक निर्णायक युद्ध लड़ा गया था तो सन् 1857 में महर्षिदयानन्द ने गुरु विरजानन्द से प्रेरणा प्राप्त कर स्वतन्त्रता के महान यज्ञ में अपनी समिधाएँ अर्पित कर पुनः उस तथ्य को दोहराया कि आर्यजन दासता के पाश को काटने के लिए हमेशा संघर्ष शील रहे हैं। तथा आजादी की रक्षार्थ अपने प्राणों को बलिदान करने में जरा भी संकोच नहीं करते ।

1939 जब प्रारम्भ हुआ तो भारतीय जनमानस परतन्त्रता के घोर अत्याचारों से यूरोप शासन के प्रति क्षुब्ध हो उठा इस शताब्दि में अनेक आन्दोलनों ने जन्म लिया उन्हीं में हैदराबाद में हो रहा आर्य सत्याग्रह भी भारतीय इतिहास में सूर्य की भाँति हमेशा चमकता रहेगा ।

जिला सहारनपुर (उ0प्र0) में एक मुजफ्फराबाद नामक गाँव है। उसी ग्राम के निवासी श्री टीका सिंह प्रबल हिन्दुत्वाभिमानी व निष्ठावान आर्य समाजी थे जब हैदराबाद में धर्म युद्ध का बिगुल बज उठा तो उस क्षत्रियवीर के मन में भी एक प्रेरणा हुयी। और जिस भाँति प्राचीन काल में वीर-क्षत्रिय पिता मातृभूमि की रक्षार्थ रणभूमि में अपने पुत्रों को भेजा करते थे उसी प्रकार ठाकुर टीका सिंह ने अपने इकलौते पुत्र कुँवर बदन सिंह को उस धर्म युद्ध में भाग लेने के लिए सहर्ष और सोत्साह विदाई दी और साथ ही यह आशीर्वाद भी प्रदान किया कि या तो "विजयश्री" को वरण करना, अथवा मृत्यु को गले लगा लेना।

राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री ने ठाकुर साहब को समझाया कि वह गम्भीर रूप से रोगग्रस्त है अतः पुत्र को सत्याग्रह में ना भेजें। किन्तु आप का एक ही उत्तर था- "क्षत्रिय लाल यदि इस धर्म युद्ध में निर्लिप्त रहे तो भलाधर्म रक्षा के लिये और लोग आगे क्यों आयेंगे" अन्ततः पिता का पावन संकल्प ही विजयी हुआ और वीर बदन सिंह सत्याग्रह के लिये प्रस्थान कर गये ।

17 जून 1939 को 18 वर्षीय वीर बालक बदन सिंह ने बेजवाड़ा में सत्याग्रही जत्थे के साथ सत्याग्रह किया भोजन में मिले-कर और पत्थर-और पत्थर तोड़ने आदि की कठोर सजा। परिणामतः बालक आन्त्र ज्वर से पीड़ित हो गया। रोगग्रस्त बदन सिंह को जेल के अस्पताल में भर्ती तो करा दिया गया किन्तु उस समय जब रोग गम्भीर रूप धारण कर गया था। अतएव कथित उपचार के बाद भी इस वीर बालक ने 24 अगस्त को प्रसन्नमना मृत्यु का वरण कर लिया।

बाल वीर बदन सिंह धर्म की बलिवेदी पर समर्पित हो गये ऐसे ही वीरों के त्याग, तप, कष्ट-सहिष्णुता और विशुद्ध धर्म ने पाशवी सत्ता के शासन को परास्त करने का पथ प्रशस्त किया था ।

हजारों नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती हैं ।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।।

यह वीर मरा नहीं अपितु अमर है "भष्मान्तम् शरीरम्" इस शरीर का अन्त से केवल भष्म (राख) तक है परन्तु "न अवस्थे-कदाचन" यह आत्मा किसी भी अवस्था में नहीं मरता । इस वीर की पवित्र आत्मा हमारा हमेशा मार्ग दर्शन करायेगी आर्य समाज ही नहीं अपितु समस्त भारत ऐसे वीरों के बलिदान पर महान गौरव अनुभव करेगा ।

शोध - गोष्ठी सम्पन्न

स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान गुरूकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ (उ0प्र0) की ओर से गुरूकुल में ही दिनांक- 1·10·88 को पूर्वाह्न 11 से 4·30 बजे तक शोध-संस्थान के निदेशक डा0 निरूपण जी विद्यालंकार के संयोजकत्व में एवं डा0 सत्यकाम वर्मा भू0 पू0 कुलपति गु0का0वि0वि0 की अध्यक्षता में, ब्रह्मचारियों द्वारा वैदिक प्रार्थना, सरस्वती वन्दना तथा प्राचीन भारतीय परम्परानुसार निमन्त्रित विद्वानों की तिलक पुष्पमाला धोती एवं नारियल द्वारा अर्चना के साथ शोध-संगोष्ठी प्रारम्भ हुई जिसका विषय था" वैदिक संहिताओं में लोकों की परिकल्पना" गोष्ठी में निम्नलिखित विद्वानों ने अपना-अपना शोधलेख प्रस्तुत किया:-

डा0 फतेह सिंह जी निदेशक वेद संस्थान नई दिल्ली, डा0 अवनीन्द्र शर्मा दिल्ली वि0वि0, डा0 वेद प्रकाश जी गु0-का0वि0वि0, डा0 उमाकान्त शुक्ल और डा0 सुषमा अरोरा सनातम धर्म कालेज मु0 नगर ।

प्रत्येक शोधलेख की प्रस्तुति के बाद शंका समाधानार्थ समय दिया गया था जिसका सदुपयोग जिज्ञासु श्रोताओं एवं ग्रामीण जनता ने भी बड़ी रुचि के साथ ······शंकाओं द्वारा किया। शंकाओं का समाधान माननीय विद्वानों ने सहर्ष किया। इस अवसर पर इसी गुरूकुल के मन्त्री पं0 श्री इन्द्रराज जी प्रधान आ0प्र0स0 (उ0प्र0) भी उपस्थित थे जिन्होंने आगन्तुकों का हार्दिक अभिनन्दन एवं स्वागत किया।

अन्त में इसी गुरूकुल के आचार्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती के आशीर्वाद एवं संयोजक के आभार ज्ञापन के बाद शान्तिपाठ के साथ ही शोधगोष्ठी सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई।

इन्द्रराज
मन्त्री,
गुरूकुल प्रभात आश्रम

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज, बाँगरमऊ का 16वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक-26 जनवरी 1989 से 29 जनवरी तक सम्पन्न होगा जिसमें स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती पं0 जयप्रकाश-आर्य सहित अन्य सुप्रतिष्ठित उपदेशकगण पधार रहे है ।

श्री इन्द्रराज जी, सभा प्रधान के भतीजे ब्र0 राजेश कुमार पुरस्कृत

ब्र0 राजेश कुमार सुपुत्र डा0 प्रेम कुमार "राज",कवि, साहित्य कला विद्यालकार, राष्ट्रभाषा रत्न (स्नातक गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी भोला झाल, मेरठ) को 25-11-1988 को "कालिदास समारोह" के उपलक्ष्य में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता उज्जैन में सम्पन्न हुई, में चतुर्थ स्थान प्राप्त हुआ एवं प्रोत्साहन प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ। यह इनकी प्रथम प्रतियोगिता थी।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में आयोजित 31-12-88 को अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता संस्कृत वर्ग में द्वितीय स्थान एवं पारितोषिक प्राप्त हुआ।

गुरुजनों ने साधू आशीष प्रदान कर उसकी उन्नति के लिए कामना की।

इसी अखिल भारतीय त्रिभाषा भाषण प्रतियोगिता में (गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला झाल टीकरी के दूसरे स्नातक) ब्र० जयेन्द्र कुमार को तृतीय स्थान एवं पारितोषिक प्राप्त हुआ।

दोनों ब्रह्मचारी इस समय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के एम0ए0 संस्कृत के विद्यार्थी हैं।

-इन्द्रराज मन्त्री
गुरुकुल प्रभात आश्रम।

xxxxx

श्री इन्द्रराज जी, सभा प्रधान के अनुज डा0 प्रेम कुमार "राज" का अभिनन्दन

डा0 प्रेम कुमार "राज" का अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा द्वारा समिति के वार्षिकोत्सव पर विशिष्ट शीर्षस्थ साहित्यकारों के साथ अभिनन्दन हुआ और उन्हें "साहित्यकला विद्यालंकार" और "राष्ट्रभाषा रत्न" की उपाधियों से सम्मानित किया गया।

समिति की कार्यवाही मुख्य अतिथि डा0 कुमारी राजेश रस्तोगी द्वारा सरस्वती वन्दना से प्रारम्भ हुई। डा0 प्रेम कुमार "राज" की कविताओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई और उन्हें सम्मान स्मृति पदक पहनाया गया और राष्ट्र भाषा रत्न का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

अन्त में डा0 राजेश रस्तोगी ने दो कविताओं का पाठ किया और हाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा। डा0 राजेश के काव्य संग्रह "आकुला" का विमोचन भी हुआ। डा0 आर0 श्याम, चलचित्र निर्माता, निर्देशक, कवि और अभिनेता द्वारा।

विमोचन भाषण डा0 प्रेम कुमार "राज" जी ने स्वयं लिखा और पढ़ा। विशिष्ट शीर्षस्थ साहित्यकारों द्वारा एवं समिति के मुख्य निर्देशक डा0 श्याम सुन्दर "सुमन" द्वारा तालियों की गूँज के साथ प्रशंसा की गई और सरस्वती पुत्र "राज" जी की लेखनी दिन रात उन्नति करे, का शुभ आर्शीवाद एवं कामना की गई।

डा0 श्याम सुन्दर "सुमन", मुख्य निर्देशक समिति ने "राज" जी को भविष्य के साहित्य जगत का स्तम्भ एवं सूर्य कहा और उन्हें आशीष दी। उनके भाषण लेख की प्रशंसा की और उनके लेख का समिति के अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशित करने की घोषणा की।

जलपान के पश्चात् समिति की कार्यवाही समाप्त हुई।

-इन्द्रराज मन्त्री,
गुरुकुल प्रभात आश्रम।

xxxxxx

- "आर्यसमाज जौरी जि0 झांसी के माध्यम से बड़ेरा मछावली- मध्य0प्र0 एवं लेवा ग्रामों में सभा प्रचारक प0 नेमप्रकाश-आर्य जी के द्वारा वैदिक धर्म प्रचार कराया गया। जिसमें 8बच्चों के उपनयन एवं 2 बच्चों के नाम करण संस्कार एवं नवीन समाज स्थापित की गयी। जनता ने अवगुणों को त्यागने का प्रण किया।"

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी पं0 मूलचन्द शास्त्री जी का निधन

आर्य समाज के वयोवृद्ध कार्यकर्ता स्वतन्त्रता सेनानी श्री मूलचन्द शास्त्री जी का जन्म आज से 86 वर्ष पूर्व एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आप प्रारम्भिक शिक्षा मिडिल और सरकारी की दीक्षा परीक्षा देकर सन् 1925 में गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापक पद पर कार्य करने लगे। साथ ही आपका अध्यापन कार्य भी चलता रहा। राष्ट्रीय विचारों से प्रेरित होकर गुरुकुल के अध्यापन कार्य के साथ-साथ रुड़की तहसील में कांग्रेस का कार्य भी करते रहे। इसी के फलस्वरूप आपको तीन माह का कारावास हुआ और सहारनपुर जेल में बन्द रहे। वहाँ से छूटकर गुरुकुल का कार्य करते हुये सन् 1939 के हैदराबाद सत्याग्रह में भी निजाम की जेल में रहे। वहाँ से आकर आस-पास की आर्यसमाजों ने आपको विवश किया कि आप बक्सर में गुरुकुल की स्थापना करें। फलस्वरूप आप गुरुकुल कांगड़ी से त्यागपत्र देकर यहाँ चले आये और बक्सर में गुरुकुल की स्थापना का स्थान न होने के कारण बक्सर में ही गुरुकुल चलता रहा। बक्सर के महन्त श्री रामदास जी ने गुरुकुल के लिए नहर के किनारे भूमि देकर अपनी उदारता का परिचय दिया। आप सन् 1941 में व्यक्तिगत सत्याग्रह में कार्य करते हुए गिरफ्तार हुये और 11 माह तक आगरा सेन्ट्रल जेल में नजरबन्द रहे। जहाँ उत्तर प्रदेश के श्री चन्द्रभानु गुप्त, आचार्य नरेन्द्रदेव जी, श्री मंगला प्रसाद जी, राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त जी आदि इनके साथ थे। वहाँ से छूटकर सन् 1942 के आन्दोलन "करो या मरो" में भी जेल गए, इसी बीच गुरुकुल का कार्य शिथिल हुआ। जेल से छूटकर आपने पुनः गुरुकुल को सम्भाला। सन् 1947 तक गुरुकुल जंगल में ही चलता रहा। स्वतन्त्रता की घोषणा के बाद सन् 1947 में हिन्दू मुसलमान राष्ट्र होने से असुरक्षा के कारण सभी विद्यार्थी घरों को चले गये। और गुरुकुल प्रायः समाप्त हो गया। आप 10 वर्षों तक ग्राम पंचायत के मन्त्री रहे इसके बाद से आज तक आप अपने धन से आर्यसमाज के कार्य में सारा समय देते रहे। आपने आस-पास में 17 आर्य समाजों की स्थापना की। जिनके उत्सव हर साल कराते थे। नवीन समाजों की स्थापना और जीर्ण समाजों को पुनः जीवित करने के लिए आप बराबर प्रयत्न करते रहे। गुरुकुल ततारपुर के साथ आपकी बड़ी सहानुभूति रही। विवाह आदि संस्कार कराकर गुरुकुल के लिए धन की सहायता करते रहते थे। साथ ही फसल के अवसर पर अन्न एकत्र कराने में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा। क्योंकि आप गुरुकुल ततारपुर के प्रतिष्ठित सदस्य थे। आप का कार्य क्षेत्र मेरठ गाजियाबाद, बुलन्दशहर जनपदों में बड़ा ही प्रभाव शाली रहा। अभी कुछ दिनों से अस्वस्थता के कारण मेरठ मेडिकलकालेज में चिकित्सा कराते हुए, प्रभु का स्मरण करते हुए 2 दिसम्बर 1988 को मध्यान्ह 12 बजे परलोकवासी हो गये। परमपिता परमात्मा से उस दिवंगत आत्मा की सद्गति, शान्ति के लिए प्रार्थना करते हैं और उनके अधूरे कार्यों को पूर्ण करने का व्रत लेते हुए अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि उनके प्रति समर्पित करते हैं।

xxxxxx

सभा की कैशबुक

समस्त उपदेशकों, प्रचारकों, निरीक्षकों और अधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जा रहा है कि सभा की कैशबुक 31 जनवरी 1989 तक खुली रहेगी। आप अपना हिसाब रसीदें, बिल आदि शीघ्र भेजकर अनुगृहीत करें ताकि जमा खर्च हो सके।

मनमोहन तिवारी, सभामन्त्री

आर्यसमाज लल्लापुर वाराणसी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

वाराणसी आर्यसमाज लल्लापुर का 53वाँ वार्षिक सम्मेलन समारोह 8 से 11 दिसम्बर 1988 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

xxxxxx

वैदिक धर्म प्रचार

वेदप्रचार मण्डल भरथना (इटावा) के तत्वावधान मे दिसम्बर 1988 में विभिन्न परिवारों में यज्ञ एव प्रवचन का कार्यक्रम बड़ी श्रद्धा भक्ति से हुआ। जनता बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित थी। आर्यसमाज के सिद्धान्तों से जनता बहुत प्रभावित हुई।

अंग्रेजी हटाओ भारतीय भाषायें लाओ

आर्यसमाज देश व्यापी आन्दोलन करेगा

दिल्ली- 3 जनवरी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने आज लोक सेवा संघ नई दिल्ली के कार्यालय के बाहर संघ की परीक्षाओं में हिन्दी को परीक्षा माध्यम के रूप में स्वीकार किये जाने की माँग को लेकर भूख हड़ताल पर बैठे सत्याग्रहियों से भेंट की। हिन्दी के प्रति उनकी निष्ठा एवं त्याग की सराहना करते हुये स्वामी जी ने सत्याग्रहियों को आश्वासन दिया कि लोकसेवा संघ की परीक्षाओं में हिन्दी को माध्यम बनाने की माँग का आर्य समाज पूरा समर्थन करता है। आजादी के 40 वर्ष बाद भी अंग्रेजी की अनिवार्यता देश के लिये बड़े दुर्भाग्य की बात है।

स्वामी जी ने गृह मन्त्रालय के 18 जनवरी 1968 के संकल्प सं05181 65 के 4(क) की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि इसके अनुसार संघ सेवाओं तथा पदों के लिए भर्ती करने हेतु उम्मीदवारों को चयन के समय हिन्दी अथवा अंग्रेजी में से किसी एक का ज्ञान अनिवार्यतः अपेक्षित होगा, ऐसी व्यवस्था है।

स्वामी जी ने धरने पर बैठे लोगों को विश्वास दिलाया कि आर्यसमाज सार्वदेशिक सभा द्वारा अलवर में आयोजित आर्यमहा-सम्मेलन के निश्चय के अनुसार अंग्रेजी हटाओ और भारतीय भाषायें लाओ का देशव्यापी अभियान प्रारम्भ करने वाला है। उन्होंने देशवासियों से इस आन्दोलन में पूरा सहयोग करने की अपील की।

आचार्य द्विवेदी निर्वाण अर्धशती समारोह सम्पन्न

रायबरेली- विगत एक वर्ष से सम्पूर्ण देश में हिन्दी के निर्माता एवं युग प्रवर्तक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की निर्वाण अर्धशती का समापन उनके निर्वाण स्थल, बेलीगंज स्थित भारती भवन के कक्ष में श्रद्धांजलि समारोह के रूप में सम्पन्न हुआ। इसकी अध्यक्षता वयोवृद्ध स्वतन्त्रता सेनानी एवं कर्मठ नेता पं0 देवी चरण पाण्डेय "साधु" ने की तथा संचालन सुप्रसिद्ध साहित्यकार डा0 पाण्डेय रामेन्द्र ने किया।

समारोह के पूर्व प्रतिष्ठान की संस्थापिका एवं आचार्य द्विवेदी की पौत्री श्रीमती मनोरमा देवी शर्मा ने वैदिक मन्त्रों के साथ आचार्यश्री की आत्मा की शान्ति हेतु सामूहिक हवन एवं शान्ति पाठ कराया, जिसका संचालन आर्यसमाज रायबरेली के अध्यक्ष श्री महेन्द्र शास्त्री एवं उनके सहयोगियों ने किया।

श्रद्धांजलि समारोह में जिन अन्य विद्वानों एवं वक्ताओं ने भाग लिया उनमें, सर्वश्री डा0 पाण्डेय रामेन्द्र, चक्रधर नलिन, बालकृष्ण मिश्र, डा0 शम्भू नाथ द्विवेदी, सूर्य नारायण दुबे, आनन्द स्वरूप श्रीवास्तव, शिव बहादुर सिंह एवं रजनीकांत वर्मा आदि के नाम प्रमुख हैं।

xxxxxxxx

— देहरादून जनपद के पश्चिमी भाग में स्थित ग्राम शंकरपुर में जो सहसपुर से लगभग 3 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, गत रविवार 6 नवम्बर 1988 को ग्रामवासियों ने एक भव्य सभा का आयोजन किया जिसमें जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री नैनसुख वर्मा ने प्रातःकालीन यज्ञ कराया और आर्य समाज देहरादून के उपमन्त्री श्री कैलाशचन्द्र ने वेद प्रवचन किया। मध्याह्नोत्तर की सभा में मुख्य अतिथि पं0 देव दत्त बाली प्रधान जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा का प्रभाव शाली भाषण हुआ। जिला सभा के उप प्रधान मास्टर दिलीप सिंह जी ने ग्राम के कार्यकर्ताओं से आग्रह किया कि "दुर्व्यसनों से ग्रस्त व्यक्ति को आर्य समाज का कार्य सौंपना और लोगों के दुर्व्यसन छुड़ाने का प्रयास करना।"

xxxxxxx

वाचस्पति मिश्र ने नाम रोशन किया



मेरठ, 3 नवम्बर (प्र)। दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित अखिल भारतीय इन्द्र विद्या वाचस्पति संघ संस्कृत वाद प्रतियोगिता में भोला झाल मेरठ के प्राचीन पद्धति पर आधारित आर्य समाज के प्रसिद्ध शिक्षा संस्थान गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी वाचस्पति मिश्र ने सर्व द्वितीय स्थान प्राप्त कर प्रभात आश्रम एवं मेरठ का गौरव बढ़ाया है।

इस प्रतियोगिता में प्रतियोगियों को प्रतिस्पर्धा से आधा घन्टा पूर्व ही पर्ची द्वारा निर्धारित किया गया था।

ज्ञातव्य हो कि ब्रह्मचारी वाचस्पति मिश्र समय-समय पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की अनेक परीक्षाओं में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर गुरुकुल आश्रम का नाम रोशन कर चुके हैं।

गुरुकुल विराटनगर की स्थापना हेतु 5 लाख का सात्विक दान

अमर शहीद शुक्रराज शास्त्री के तपस्थली हिन्दू राज्य नेपाल में आर्य समाज के गति विधियों से अछूता था। मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से अध्ययनोपरान्त नेपाल आकर लगातार 4 वर्ष के घोर परिश्रम के द्वारा यहाँ के लोगों को साथ लेकर कार्य करने से नेपाल आर्य समाज के नाम से रजिस्ट्री मिली। नेपाल अधिराज्य में कार्य करने के लिए एक रास्ता खुला। यहाँ विराटनगर के एक दानी महानुभाव श्री राम कुमार-अग्रवाल जी ने गुरुकुल विराटनगर की स्थापना के लिये 1½ एकड़ भूमि लगभग 5 लाख का सात्विक दान देकर हमें आर्य समाज के बीजारोपण के लिए स्वर्णिम मौका दिया। आशा है कि भविष्य में प्रत्येक आर्य सज्जन इसे फलने-फूलने में तन-मन-धन से हमारा सहयोग देकर वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में सहयोग प्रदान करने की कृपा करेंगे। वैदिक पुस्तकालय, आर्य वानप्रस्थ आश्रम इत्यादि योजनाओं के साथ "स्वस्ति पंथा मनुचरेम" की भावना से रास्ता बढ़ाया जा रहा है। यहाँ पर इस समय विभिन्न मत-मतान्तर वाले अपने मौका का लाभ उठा रहे हैं। आर्य जगत के कर्मठ सन्यासी, वानप्रस्थी इस पड़ोसी राज्य में आकर अपना कार्यक्षेत्र तैयार करें। काठमाण्डू, पाल्पा, पोखरा, जनकपुर, लुम्बिनी आदि अनेक ऐतिहासिक स्थानों में आकर वैदिक आश्रम योगाश्रम यज्ञशाला की स्थापना करें। मेरे जैसे अनेकों महर्षि दयानन्द के बताये मार्ग पर चलने वाले अपनी शैली से कार्य प्रारम्भ करके इस राष्ट्र में फैले अज्ञानता को दूर कर अपना गौरव कायम करें।

इस नेपाल राज्य से भारत के विविध गुरुकुलों में अध्ययनोपरान्त बसें नेपाली साथियों से भी अनुरोध करता हूँ कि "माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः" के भगवती श्रुति की आज्ञा मानकर इसी देश में आकर आर्य समाज की मान्यताओं को यहाँ की विभिन्न गति विधियों से जोड़कर अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

अध्यक्ष	महा सचिव	आचार्य
सीताराम अग्रवाल,	(प्र0)केशवलाल सिंह	पीताम्बर शर्मा
	गुरुकुल विराटनगर	

—आर्य उप प्रतिनिधि सभा पीलीभीत के प्रधान एवं आर्य समाज बिलसण्डा के प्रधान श्री वेदमुनि वानप्रस्थी जी (पूर्वनाम श्री मनमोहन सहाय सक्सेना) की मृत्यु दिनांक 16-12-1988 को हो गई, जिनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से आचार्य कृष्ण कुमार मिश्र द्वारा समपन्न कराया गया। आर्य समाज बिलसण्डा ने शोक प्रस्ताव पारित कर उनकी आत्मा की शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की।

सात्विक दान

समस्त कुमायूँ ही नहीं अपितु समस्त उत्तराखण्ड के मुहाने पर आर्य समाज मन्दिर, हल्द्वानी स्थित है और इसके कार्य कलापों का पूरे उत्तराखण्ड पर प्रभाव पड़ता है। परिणाम स्वरूप आर्य समाज हल्द्वानी ने पर्वतीय प्रदेश में वैदिक नाद बजाने में महान योगदान दिया है।

इस समय आर्य समाज मन्दिर में एक विशाल अधिवेशन कक्ष एवं यज्ञशाला का निर्माणकार्य समाज के पदाधिकारियों की प्रेरणा से श्री धनी लाल जी तथा उनके छोटे भाई श्री प्रेम लाल जी बड़ी तत्परता एवं समर्पण भाव से इस कार्य में लगे हुए हैं। ये दोनों भाई बड़े दानी एवं मान मर्यादा से दूर है। इन्होंने हल्द्वानी में तीन अस्पतालों तथा महाविद्यालय में अपनी ओर से अनेक कक्ष बनवाए है। इस प्रकार इन्होंने गोपनीय सहयोग देकर परम सुख का अनुभव किया हैं।

ऐसे विशाल हृदय वयक्ति अब समर्पित हैं और आर्य समाज हल्द्वानी के सभा कक्ष तथा यज्ञशाला को निर्मित करन में एवं शौचालय, स्नानागार आदि इन्हीं के सहयोग से निर्मित किये गये हैं। ऐसे व्यक्ति मानव प्रेम के धनी हैं और परोपकारी प्रकृति से ओत प्रोत भी। हम सबकी शुभकामनायें और गौरवमयी आशायें आर्य समाज मन्दिर हल्द्वानी के पदाधिकारियों के समान हैं।

बाँके लाल कंसल, अन्तरंग सदस्य,
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0।

प्रशंसनीय

दिनांक 14 दिसम्बर 1988 को श्रीमान नारायण दत्त तिवारी, मुख्य मन्त्री, उत्तर प्रदेश के शुभागमन पर आर्य समाज नैनीताल की ओर से रू01500/- का ड्राफ्ट प्रधानमन्त्री, भारत आर्मीनिया भूकम्प पीड़ित सहायता कोष हेतु प्रदान किया गया। इसको स्वीकार करते हुए मुख्यमन्त्री जी ने इसको एक प्रशंसनीय कार्य बताया।

आर्यसमाज नैनीताल ने 1986 में उत्तराखण्ड के 55 वृद्धों, जिनकी आयु 80 वर्ष से अधिक थी और जो स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थे, का सम्मान किया था, जिसकी अध्यक्षता श्री आनन्द बोध सरस्वती, अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने की थी। इन सभी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों का विवरण और उनका चित्र आर्य समाज नैनीताल के सदस्य स्व0 पं0 गोबिन्द बल्लभ पन्त के शताब्दी वर्ष 1988 में प्रकाशित किया गया है। इसका विमोचन भी श्रीमान् नारायण दत्त तिवारी, मुख्यमन्त्री उत्तर प्रदेश ने दिनांक 14-12-1988 को किया। देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य समाज ने नीव के पत्थर का कार्य किया है।

-केदार सिंह आर्य,मन्त्री।

महर्षि जन्मस्थान टंकारा में 5,6,7 मार्च को ऋषिबोधोत्सव मेला

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में भव्य ऋषि मेला 5,6,7, मार्च 1989 को बड़े समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

आपसे प्रार्थना है कि आप ऋषि मेले में परिवार सहित पधारने की कृपा करें। आप वहाँ परिवार सहित पहुँचें यह हमारा सौभाग्य होगा। आप ये तिथियाँ अभी से अंकित कर लें और टंकारा जाने हेतु आप अभी से अपनी सीटें रेल एवं हवाई जहाज अथवा जैसे आप जाना चाहें, सुरक्षित करवा लें।

टंकारा से वापसी के लिये यदि आप को कठिनाई हो तो सूचित करें, ताकि आपकी उधर से वापसी की सीट सुरक्षित करवा दी जाये।

टंकारा मे आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क होगी।

रामनाथ सहगल, मन्त्री,
श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा

xxxxxxxxx

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आर्य सभासद् उन्हीं सदस्यों को घोषित करें, जो रू05/- अथवा अधिक मासिक चन्दा देते हों।

2- ग्यारह आर्य सभासदों से कम का आर्यसमाज नहीं माना जायगा।

3- आर्य सभासदों की सूची घोषित कर 28 फरवरी तक अपने समाज का निर्वाचन अवश्य सम्पन्न करें।

-मनमोहन तिवारी,
सभा मन्त्री।

xxxxx

शुभ विवाह

इन्जीनियर वेद प्रकाश गुप्त बी-10, शम्भूनगर मेरठ, सम्मानित अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा उ0 प्र0 के सुपुत्र इन्जीनियर संजय अग्रवाल का शुभ विवाह सौ0 ज्योति (मीनाक्षी) सुपुत्री श्री कृष्ण चन्द्र गुप्त, बी-68, एन0डी0 ।। बी0 नई दिल्ली के साथ श्री यशपाल शास्त्री के पौरोहित्य में वैदिक रीति से दिनाँक 18-10-1988 को सम्पन्न हुआ। चि0 वर-वधू को हार्दिक बधाई।

—सभामन्त्री

राष्ट्र भृत यज्ञ एवं विराट ऋषि मेला

आपको जानकर अति हर्ष होगा कि महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) के पावन प्रांगण में 25,26,27 फरवरी-1989 को "राष्ट्र भृत यज्ञ एवं विराट ऋषि मेला" का समायोजन किया जाएगा। जिसमें आर्य जगत के लब्ध प्रतिष्ठ मूर्धन्य विद्वान सन्यासी एवं महोपदेशक पधार रहे हैं।

निर्वाचन

\- आर्य समाज, नकुड़ (सहारनपुर)
प्रधान - श्री सुखवीर सिंह त्यागी
मन्त्री - श्री दुष्यन्त कुमार त्यागी
कोषाध्यक्ष - श्री कृष्ण चन्द।

\- आर्यसमाज नागौर (राजस्थान)
अध्यक्ष- श्री भगवती प्रसाद जी "अभय"
मन्त्री - श्री महेन्द्र कुमार सोनी
कोषाध्यक्ष - श्री आशाराम जी सोनी

\- आर्य केन्द्रीय सभा, आगरा
अध्यक्ष - श्री यशपाल आर्य
मन्त्री - श्री उमेश चन्द्र गुप्त
कोषाध्यक्ष - श्री पृथ्वीराज कपूर

\- आर्य समाज, बम्बई
परामर्शदाता - श्री दयाशंकर जी शर्मा
अध्यक्ष - श्री जगन प्रसाद गौतम
मन्त्री - श्री करसनदास राणा
कोषाध्यक्ष - श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय

\- आर्यसमाज, माटुंगा, बम्बई
प्रधान - श्री भगवती प्रसाद गुप्त
मन्त्री - श्री मिठाई लाल सिंह
कोषाध्यक्ष - श्री जगराम गुप्त

\- आर्य समाज मन्दिर, गोरखपुर, जबलपुर (म0प्र0)
प्रधान - श्री विजय सिंह गायकवाड़
मन्त्री - डा0 केशव प्रसाद पाठक
कोषाध्यक्ष - श्री रमेश कुमार खत्री

\- वेद प्रचार मण्डल, मरथना (इटावा)
अध्यक्ष - श्री रामदत्त आर्य
मन्त्री - श्री श्याम मोहन आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री रजनेश आर्य

आर्यसमाज, नया बाजार, लश्कर
87वाँ वार्षिकोत्सव

26 दिसम्बर से 29 दिसम्बर, 1988 तक आर्य-समाज मन्दिर, नया बाजार, लश्कर में सम्पन्न हुआ ।

वैदिक विवाह सम्पन्न

आर्य समाज मन्दिर दूंडला में श्री वी0पी0 विश्वन् निवासी गुरु-तेग बहादुर बस्ती की बहिन वत्सला का शुभ पाणिग्रहण संस्कार श्री सुरेश बाबू पुत्र श्री संगठन निवासी कुन्दू कटरा आगरा के साथ दहेज रहित सम्पन्न हुए, नगर के गण मान्य व्यक्तियों ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया ।

—आर्यसमाज देहरादून के कर्मठ कार्यकर्ता और आर्यवीर दल देहरादून की जिन्होंने वर्षों तक महती सेवा की, वे मास्टर छुट्टन लाल जी गत सप्ताह इहलोक से प्रयाण कर गये। शान्ति प्रार्थना की सभा में जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं0 देवी दत्त बाली ने दिवंगत आत्मा को भाव भीनी श्रद्धान्जलि भेंट करते हुये बताया कि उनकी छवि एक वीर पुरुष की रही और वे सदा युवकों के प्रेरणा स्त्रोत बने रहे।

xxxxx

आर्यसमाज जमानियाँ के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व0 ज्वाला प्रसाद की पत्नी श्रीमती फूलादेवी की मृत्यु 21-12-88 को हो चुकी है। 22 से 31-12-88 तक उनके निवास स्थान पर देवयज्ञ व शान्तिकथा का आयोजन हुआ ।

—गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन में आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान ओजस्वी, सत्य वक्ता, क्रान्तिकारी महात्मा नारायण स्वामी की आकस्मिक मृत्यु पर अपार दुःख हुआ। उनके निधन से जो क्षति हुई उसकी पूर्ति होना असम्भव है। परम पिता परमात्मा से उनकी सद्‌गति की प्रार्थना की गई।

xxxxx

—सार्वदेशिक आर्य वीरदल के प्रधान संचालक ने बिहार के आर्यवीरदल के संचालक तथा बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री रामाज्ञा वैरागी के दुखद निधन पर गहरा शोक प्रकट किया है। उन जैसा कर्मठ सेनानी आर्यसमाज के लिये मिलना कठिन है। परम पिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्‌गति तथा दुखी समस्त परिवार को शान्ति दे।

बाल दिवाकर हंस, प्रधान संचालक,
सार्वदेशिक आर्य वीरदल।

xxxxx

—आर्य समाज अमरोहा {मुरादाबाद} ने अपने साप्ताहिक अधिवेशन में स्त्री आर्य समाज की पूर्व प्रधाना श्रीमती जावित्री देवी, आर्य समाज के अनन्य भक्त महाशय रामदेव बा0 ऋषिराम तथा सामाजिक कार्यकर्त्री लेडी डा0 कनक गोयल की पू0 माता एवं आर्य समाज अमरोहा के सेवक वीर सिंह तथा वयोवृद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी वैद्य नाथू राम के आकस्मिक निधन पर दिवंगत आत्माओं की शान्ति एवं परिवारजनों के धैर्य हेतु परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की। सभी सदस्यों ने दो मिनट का मौन धारण करके श्रद्धान्जलियाँ अर्पित कीं।

xxxxx

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, आर्य समाज हरजेन्द्र नगर में मनाया गया।

-x-x-x-x-x-x-x-

निर्माणाधीन वैदिक प्रचार-धाम-
गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त- बिठूर {कानपुर}

इतिहास के पन्ने कहते हैं, कि स्वामी दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से नानासाहब के द्वारा बिठूर {कानपुर} में गुरुकुल-विद्यालय चलता था। गंगानदी से 500 मीटर दूर चुंगी-बिठूर के पास सड़क पर 6 बीघा भूभाग मैंने खरीद कर 13 नवम्बर 1984 को पंजीकृत करा दिया था। आश्रम के मुखद्वार पर आरोग्य मन्दिर और वाचनमन्दिर का निर्माण हो रहा है। 1989ई0 में 16 खम्बे वाला यज्ञमन्दिर का शिलान्यास किया जायेगा। नलकूप की बोरिंग के साथ जल हैण्डपम्प लग चुका है। दान-भोग का ध्यान रखते हुये, धन देकर धन्य होने का अवसर आपके हाथ में है:-

{1} **दानभक्त- रु0 110} से अधिक। टीनपट पर नाम।**
{2} दानवीर-रु0 1100} से अधिक। संगमरमर पर नाम।
{3} दानमहावीर-रु0 1100{} से अधिक। द्वार, श्यामपट आदि का नामकरण। {4} **दानपरमवीर-रु0** 22000} से अधिक या निर्माण-व्यय {जो भी अधिक हो}। पेटपूजा मन्दिर, यज्ञमन्दिर, आरोग्यमन्दिर, गुरुकुल विद्यामन्दिर आदि का नामकरण ।

दानवीर अपने आजीवन निवास हेतु कुटी तीन वर्ष के भीतर बनवाने हेतु रु02000} सुरक्षाधन बैंकड्राफ्ट {स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती के नाम से} निम्न पते पर भेजकर अपना स्थान सुरक्षित करा सकते हैं:-

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
कचाहारी,
आर्यसमाज पिथौरागढ़ {उत्तर-प्रदेश}

वैदिक धर्म प्रचार

बलिया के द्वाबा क्षेत्र में स्थित टोला सेवक राय में 12 दिसम्बर को उप डाकपाल श्री राम वर्मा के अथक परिश्रम से वैदिक धर्म का प्रचार हुआ तथा 13 को विराट यज्ञ हुआ।

दिनांक 12 से 14 दिसम्बर तक सुदिष्ट बाबा के मेले में आर्यसमाज लक्ष्मण छपरा समाज की ओर से प्रचार कार्य समारोह पूर्वक हुआ तथा श्री सुदर्शन सिंह व श्री रामआश्रय सिंह के व्याख्यान हुए जिससे देहाती जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा, पंडाल की व्यवस्था श्री राम सिंह मेला प्रधान ने किया।

श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

बलिया जनपद के सभी आर्यसमाजों द्वारा सम्मिलित श्रद्धानन्द बलिदान दिवस 23 दिसम्बर को मनाया गया। सभी लोगों ने स्वामी जी को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा उनके द्वारा अधूरे कार्य को पूरा करने की प्रतिज्ञा की गयी ।

-सुदर्शन सिंह

अमरोहा में श्रद्धानन्द-बलिदान दिवस

आर्य समाज अमरोहा द्वारा दिनांक- 25-12-88- रविवार को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया। जिसमें डा0 सत्यप्रिय शास्त्री जी द्वारा स्वामी-श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धान्जली अर्पित की गई।

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, बुलन्दशहर {पंजीकृत} के तत्वावधान में जिले भर के आर्य समाजों की ओर से "श्रद्धानन्द बलिदान दिवस" का शानदार आयोजन किया गया, जिसमें जिले भर से हजारों की संख्या में आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

आर्य मित्र साप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 जी/एन0पी0 79
माघ कृष्ण 1
22 जनवरी रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आर्य महासम्मेलन

चम्पारण जिला आर्य महा सम्मेलन आर्य समाज का [पू0 चम्पारण] में दिनांक 18 से 20 फरवरी 1989 तक विभिन्न सम्मेलनों द्वारा सम्पन्न होगा जिसमें आर्य समाज की वर्तमान गतिविधियों पर विचार किया जायगा तथा भावी कार्यक्रम बनेगा। सम्मेलन का उद्घाटन सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्य स्वामी आनन्द बोध सरस्वती जी करेंगे। सम्मेलन में उच्च कोटि के विद्वान सन्यासी व उपदेशक भाग लेगें।

बी0के0 शास्त्री, मन्त्री
चम्पारण जिला सभा

काशी सिंह, स्वागत मन्त्री
चम्पारण आर्य महासम्मेलन

xxxxxx

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश प्रचार गाड़ी निकाली गई

नगर आर्यसमाज नरकटियागंज [प0 चम्पारण] द्वारा अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश प्रचार गाड़ी निकाली गई जिससे पं0 चम्पारण के इलाकों में वैदिक साहित्य और सत्यार्थ प्रकाश का विक्रय किया गया।

आर्यसमाज की स्थापना

ग्राम मड़ावली डा0 चांदोक जिला बुलन्दशहर में आर्य समाज की स्थापना व प्रथम वार्षिकोत्सव माननीय स्वामी मोक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में बड़े धूम-धाम से मनाया गया। जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान सर्वश्री स्वामी धर्मानन्द जी, आचार्य रामकिशोर जी आदि सन्यासी विद्वान व आर्य नेताओं ने भाग लेकर वैदिक धर्म, आर्य समाज तथा महर्षि दयानन्द के कल्याणकारी सिद्धान्तों व मान्यताओं के सम्बन्ध में ओजस्वी विचार प्रकट किये।

आगामी वर्ष के लिये निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये:

प्रधान	: श्री राजेन्द्रपाल सिंह
उप प्रधान	: श्री पुतेन्द्र कुमार आर्य
मन्त्री	: श्री नरेश चन्द्र आर्य
उपमन्त्री	: श्री देवेन्द्र सिंह आर्य

xxxxxxx

—26 अगस्त 1988 को रजमान बाजार मेरठ में आर्य स्त्री समाज की स्थापना हुई जिसका उद्घाटन आर्य समाज थापर नगर की प्रधाना श्रीमती मेला देवी के कर कमलों द्वारा हुआ। कैलाश जी सोनी ने अपने सैद्धान्तिक सुझावों द्वारा सदस्यों का मार्गदर्शन किया। निम्नलिखित अधिकारी चुने गये:

प्रधाना	: श्रीमती यशवती जी
मन्त्रिणी	: " कन्ती देवी जी
कोषाध्यक्ष	: " कुन्ती देवी जी

xxxxx

निर्वाचन आर्य उप प्रतिनिधि सभा उन्नाव

श्री रवि शंकर शर्मा	-	प्रधान
आचार्य शिवदास शास्त्री	-	मन्त्री
श्री बाबू लाल बजाज	-	कोषाध्यक्ष

आर्य समाज शाजापुर के कर्मठ सदस्य, महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त, वैदिक सिद्धान्त एवं व्यवहार को मूर्त्त रूप देने वाले, निरन्तर ईश्वर चिन्तनरत श्री-चन्द्रदेव जी वानप्रस्थी का दिनांक- 14-12-88 को टी0 चोइथराम अस्पताल इन्दौर में निधन हो गया। आपने आर्य जगत की महती सेवा की है। 22 बार आपने चारों वेदों से यज्ञ किया। 37 वर्ष निष्ठापूर्वक अध्यापन कार्य करते हुए आपने विपुल वैदिक साहित्य का संग्रह किया जो मध्य प्रदेश के लिये कीर्तिमान है।

श्री चन्द्रदेव जी वानप्रस्थी को आर्यसमाज शाजापुर अपनी भावभीनी श्रद्धान्जली अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उनके शोक सन्तप्त परिवार को शोक वहन करने की शक्ति प्रदान करे।

-मन्त्री।

आर्य नेता विजयी

श्री तिलकराम आर्य अध्यक्ष टाउन एरिया कमेटी मीरापुर जिला मुजफ्फरनगर पर विजयी हुए। आप आर्यसमाज मीरापुर के अध्यक्ष एवं जिला सभा में कार्यकारिणी के सदस्य हैं, बधाई।

-सभामन्त्री

भागलपुर देवरिया आर्यसमाज द्वारा श्रद्धानन्द बलिदान-दिवस श्री पं0 चन्द्रशेखर मिश्र शास्त्री भू0पू0 प्रधान की अध्यक्षता में ससमारोह पूर्वक मनाया गया।

श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम देहरादून में श्री श्रद्धानन्द-बलिदान दिवस 23-12-88 को समारोह पूर्वक मनाया गया।

-मन्त्री।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि0 सं0 2241/57 घोषणा पत्र सं0 7/28-2-85

माघ कृष्ण 7 रविवार, संवत् 2045 वि0, दिनांक 29 जनवरी 1989



उपह्वरे गिरीणां संगमेच नदीनाम्
धियः विप्रो अजायत ।।

सामा0 2/5/9

पर्वतों की कन्दराओं में, नदियों के संगमों पर हमारे विद्वान ब्राह्मणों ने ध्यान तपस्या करके संसार को ज्ञान का अमृत पिलाया था।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी
एम0ए0,

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम0ए0,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु0 251/-
वार्षिक	रु0 30/-
छमाही	रु0 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	91
अंक	5

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराज.

महाकुम्भ

की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ऐ मेरी पावन मातृभूमि ! तेरे उत्तर में हिमकिरीटधारी विशाल नगाधिराज अपने उत्तुंग शैलशिखरों के मध्य कलकल करती हुई पावन जलधाराओं से मेरी प्यारी भारतभूमि के धराधाम को अनादिकाल से सिंचित करता चला आ रहा है। उसकी तीर्थयात्रा पावन तीर्थराज प्रयाग के संगमस्थल को संस्पर्श करती हुई सागर के विशाल अन्तस्तल में समागम के साथ पूर्ण होती है। इन्हीं शैल-शिखरों में, गिरि के गह्वरों में, नदियों के संगमों पर बैठकर ही हमारे पूर्वजों, ऋषियों और मुनियों ने उस विधाता का साक्षात्कार किया था। इसीलिए तुझमें भ्रमण करना तेरे पवित्र जल में स्नान करना हम अपना कर्तव्य समझते हैं। ----- और आज उसी की स्मृति में प्रयागराज कुम्भ में करोड़ों की संख्या में आबालवृद्ध नरनारी एक डुबकीमात्र के लिए लालायित हैं न सर्दी की चिन्ता है न भूख प्यास की। कितना महान है मेरा हिमालय, हिमालय से निकलने वाली यह सुरसरि- देवि सुरेसुरि भगवति गंगे . त्रिभुवन तारिणि तरल तरंगे ।

सागर मन्थन की पौराणिक कथा है- देवताओं और असुरों ने अमृतकलश की उपलब्धि के लिए न जाने कितने वर्षों तक संघर्ष किया क्योंकि अमृतपान से अमृत मिलता है और अमर कौन नहीं होना चाहता। असुरों की पराजय हुई देवताओं की विजय हुई। यही संघर्ष तो आज भी चल रहा है दुरितों पर विजय पाने के लिए, और हमने तेरे इसी पवित्र जल को हाथ में लेकर आचमन करते हुए कहा था- "ओं अमृतोपस्तरणमसि -- ओं दुरितानि परासुव-----, मेरे देव! दुरितों को असुरों को भगाओ और मुझे अमृतपान कराओ। इतिहास साक्षी है, इसी अमृत की एक बून्द पाने के लिए हमें अपना सर्वस्व दान करना पड़ा था। संघर्ष भरे वैयक्तिक सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन में अपने को आहुत करना पड़ा था। बढ़ते आ रहे दानवों को भस्मसात करना पड़ा था और तभी हमारा स्नान हुआ था, आचमन हुआ था। 2045 वर्ष पूर्व प्यारी मातृभूमि पर आक्रमण करने वाले असुरों, शकों और हूणों को परास्त करके उज्जयिनी के महाराजाधिराज शकारि विक्रमादित्य ने क्षिप्रा नदी में स्नान करके प्रजा को अपना सर्वस्व दान कर दिया था। सन् 606 ईस्वी में कन्नौज का महाराजाधिराज सम्राट हर्षवर्धन तीर्थराज प्रयाग के कुम्भ मेले में पहुँचकर अपना और अपने राज्यकोष का समस्त संचित धन गरीब प्रजा को दान करके कौपीनमात्र वस्त्र धारण करके कन्नौज लौटा था। कैसा अनुपम आदर्श है? लगाए तो कोई भ्रष्टाचार का आरोप। बिठाए तो कोई जाँच का आयोग। ऐसे थे हमारे कुम्भ स्नानी राजपुरुष, पूज्य पुरुष--

महाराज मनु ने कहा है-----

अष्टौ मासान् यथादित्यस्तोयं हरति रश्मिभिः ।

तथा हरेत् करं राष्ट्रान्नित्यमर्कव्रतं हि तत् ।।

जिस प्रकार सूर्य अपनी प्रखर किरणों से जल को सिंचित करके उन्हें सहस्त्रगुणा बढ़ाकर पृथ्वी को वापस कर देता है, उसी प्रकार राजा प्रजा से प्राप्त कर को हजारगुणा बढ़ाकर प्रजा के हित में दान कर दे ।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
--राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- माघ कृष्ण 7 संवत् 2045 वि0, 29 जनवरी 1989
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

बदनाम न कीजिए
शहीदों का नाम

महात्मा गाँधी की हत्या के बाद विश्व में सर्वाधिक चर्चित इन्दिरा गाँधी हत्याकाण्ड के दोनों अभियुक्तों, सतवन्त और केहर सिंह को तिहाड़ जेल में 6 जनवरी को प्रातः 8 बजे फाँसी दे दी गई। इन्दिरा गाँधी की हत्या उनके सफदरजंग रोड के निवास पर 31 अक्टूबर 1984 को उन्हीं की रक्षा में नियुक्त उनके अंगरक्षकों द्वारा कर दी गई थी और इस सम्बन्ध में सतवन्त, केहर सिंह के अतिरिक्त बलवीर सिंह के विरुद्ध हत्या करने तथा हत्या की साजिश में शामिल होने के तहत मुकद्दमा चला और तीनों अभियुक्तों को दोषी ठहराते हुए सेशन्स-कोर्ट ने जनवरी 1986 के तीसरे सप्ताह में फाँसी की सजा सुनाई थी। इसके बाद दोनों पक्षों की ओर से कानूनी दाँवपेच की जो लम्बी लड़ाई शुरू हुई वह विश्व के न्यायिक इतिहास में अभूतपूर्व ही कही जायेगी। 3 अगस्त 1988 को सुप्रीमकोर्ट की खण्डपीठ ने एक अभियुक्त बलवीर सिंह को सन्देह का लाभ देते हुए अभियोग से पूर्णतः मुक्त कर दिया परन्तु सतवन्त और केहार सिंह की फाँसी की सजा बहाल रखी। इन दोनों अभियुक्तों को फाँसी के फन्दे से बचाने के लिए अन्तिम समय तक कानूनी लड़ाई चलती रही और राष्ट्रपति से क्षमादान दिए जाने की बार-बार अपील एवं याचिकाएं भी प्रस्तुत की गईं किन्तु कानून की दृष्टि में सर्वथा अपराधी सिद्ध हुए इन दो अभियुक्तों को राष्ट्रपति ने क्षमा दान देने से इन्कार कर दिया और अन्ततः 6 जनवरी को कानून की विजय हुई और दोनों हत्यारों को फाँसी पर लटका दिया गया। जेल में ही उनका अन्तिम संस्कार करके पुलिस संरक्षण में उनकी अस्थियाँ हरिद्वार में बहती हुई गंगा की पावनधारा में विसर्जित कर दी गईं ।

उनके मृत्युदण्ड को शहादत का नाम देना न तो न्यायसंगत है और न नैतिक। यह एक विशुद्ध आपराधिक मामला था जिसे भारतीय दण्डप्रक्रिया संहिता के तहत न्यायानुकूल सजा दी गई। शहीदों की श्रेणी में तो वे पवित्र आत्माएं आती हैं जो परोपकार में, देश और धर्म की रक्षा में, अपने को बलिदान कर देती हैं। किसी निर्दोष की हत्या करना तो जघन्य अपराध है- शहादत से कहीं बहुत दूर------ कहीं बहुत दूर----। आज के सभ्य युग में कानून व्यक्ति से बड़ा माना जाता है। इसलिए कानून के शासन में कानून की विजय दिलाना ही सच्ची राष्ट्रभक्ति है और यही न्यायपालिका का कर्त्तव्य भी है। हमारा दृढ़ विश्वास है हमारी न्यायपालिका ने निष्पक्ष निर्णय देकर कानून की गरिमा एवं सर्वोत्कृष्टता को यथावत ऊँचा बनाए रखा है। हम यह भी विश्वास करते हैं कि यदि जरा भी कहीं इन अभियुक्तों के केस में सन्देह की गुंजाइश मिलती तो सुप्रीम कोर्ट के मा0न्याया-धीशगण इन दोनों अभियुक्तों को भी बलवीर सिंह की तरह छोड़ देते। परन्तु किया क्या जाय सत्य, सत्य ही है और ईश्वरीय न्यायव्यवस्था में वह प्रकट होकर ही रहता है।

अब इन दोनों मृत्युदण्ड पाये अभियुक्तों को शहीद घोषित किया जा रहा है और उनके नाम पर सस्ती लोकप्रियता एवं तुच्छ राजनीति को उभाड़ा जा रहा है। अभी पिछले दिनों गुरुगोविन्द सिंह की पावन जयन्ती के सिलसिले में जलूस निकालते समय जम्मू में दंगा हो गया जिसमें 11 व्यक्ति मारे गये, कई दूकानें जला दी गईं तथा सैकड़ों घायल हो गये। सेना बुलानी पड़ी। जब यह जलूस निकाला जा रहा था तो सतवन्त और केहर सिंह के फोटो दिखाने के साथ उन्हें शहीद बताते हुए आपत्तिजनक नारे लगाए गये जिनमें "खालिस्तान जिन्दाबाद" का भी नारा था। इसी प्रकार सिंगापुर में सतवन्त और केहरसिंह के चित्र प्रकाशित किए गये और उन्हें शहीद बताकर गुरुद्वारों में अखण्ड पाठ कराया गया। वहाँ के प्रशासन ने अब इस प्रकार के कार्यों पर रोक लगा दी है। अखिल भारतीय सिख छात्र संघ ने तो यहाँ तक कह दिया है कि "उनकी शहादतें सिखों के संघर्ष में मील का पत्थर है और हमने उनके पदचिन्हों पर चलने का संकल्प लिया है"। धर्म की आड़ लेकर कतिपय निहित स्वार्थी तत्व तुच्छ राजनीति को हवा दे रहे हैं। सतवन्त और केहर सिंह के परिवार वालों को स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया है। एकीकृत अकालीदल (मान) द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में दोनों के परिवार वालों को 51/51 हजार-रुपये की धनराशि तथा 11/11 सरोपा भेंट किया गया। 14जनवरी को प्रकाशित एक समाचार के अनुसार बब्बर खालसा, खालिस्तान लिबरेशन ऑर्गनाइजेशन, खालिस्तान कमाण्डो फोर्स के लगभग 4 दर्जन आत्मघाती उग्रवादी दस्ते किसी बहुत बड़े खून-खराबी की तैयारी में लगे हुए हैं। इसके अतिरिक्त पंजाब में हिंसा का ताण्डव यथापूर्व जारी है अभी पिछले दिनों गुंजियावाला गाँव में अभियुक्तों को फाँसी दिए जाने की प्रति क्रिया स्वरूप एक सरपंच और उसके तीन भाइयों को फाँसी पर लटकाकर मार दिया गया।

हम अपने गुमराह भाइयों को सतवन्त की वह वाणी सुनाना चाहते हैं जो उसने फाँसी पर चढ़ने से पूर्व कही थी - उसने कहा था- "हिन्दू सिखों के गौरव है और सिख गुरुओं ने हिन्दुओं की रक्षा के लिए ही कुर्बानियाँ दी थीं। इसलिए कोई भी सिख किसी हिन्दू का खून न करे"। अतः हम अपने इन भाइयों को कहना चाहते हैं कि विदेशियों के बहकावे में आकर अपने इस आशियाँ को मत उजाड़ो। इतिहास से कुछ शिक्षा लो। हमारा तुम्हारा खून एक है, धर्म एक है, मातृ भूमि एक है। हमारे पूर्वजों ने अगणित कुर्बानियाँ देकर इस आशियाँ को हरा-भरा बनाया है। इसे सामाजिक जीवन में बढ़ती हुई अराजकता और अपराधीकरण की प्रवृत्ति से कलुषित मत करो। कहीं ऐसा न हो कि हमारी आपस की लड़ाई में कोई तीसरा फिर हमें हमेशा-हमेशा के लिए पराधीन बना ले और हमारा तुम्हारा दोनों का अस्तित्व ही सदा सदा के लिए समाप्त हो जाय, हम समस्त सिख समुदाय एवं उनकी मान्यताओं के प्रति अपना आदर व सम्मान व्यक्त करते हुए भारतीय शासन से अनुरोध करना चाहते हैं कि सिंगापुर प्रशासन की भान्ति इस देश में भी इस प्रकार के प्रदर्शनों तथा अन्य कार्यक्रमों पर रोक लगनी चाहिए अन्यथा एक गलत परम्परा का प्रचलन प्रारम्भ हो सकता है ।

"इन्सान ही परमेश्वर है अगर उसने बुद्धि पर नियन्त्रण कर लिया।

इन्सान ही जानवर है अगर उसने बुद्धि पर नियन्त्रण खो दिया ।।

-x-x-x-x-x-x-

मान्य विद्वज्जनों की सेवा में नम्र निवेदन--

आगामी शिवरात्रि के अवसर पर आपका प्रिय आर्यमित्र अपना विशेषांक बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित करने जा रहा है। मान्य विद्वज्जनों, उदीयमान आर्य युवकों, बालकों एवं विदुषी-महिलाओं से नम्र निवेदन है कि उक्त अंक में प्रकाशनार्थ अपने सुरुचिपूर्ण लेख/कविता/कहानी आदि मुझे स्पष्ट अक्षरों में कागज के एक तरफ लिखे हुए अथवा टाइप किए हुए बिलम्बतम 20 फरवरी 1989 तक अवश्य भेज देने की कृपा करें ।

इन्द्रदेव पाठक,
प्रबन्ध सम्पादक।

भारत व विश्व के सम्पूर्ण हिन्दू परिस्थिति जन्य चुनौती को स्वीकार करें वरना ....

-डा० एम०एस० निंबालकर वशिष्ठ, एम०डी०

भारत के वर्तमान सामाजिक, धार्मिक व राजनीति के त्रुटिजन्य नीति अपनाने से उत्पन्न पंजाब समस्या, साम्प्रदायिक-समस्याएं, भ्रष्टाचार, राज्य कर्मचारियों में नैतिकता का अभाव, बलात्कार, वर्तमान छात्र-छात्राओं में नैतिकता व चरित्र का अभाव, मुद्रास्फीति के कारण बढ़ती मँहगाई, राज-राजनेताओं में पदलोलुप्ता, स्वार्थान्धता, राष्ट्र व स्वदेश के प्रति सिर्फ दिखावा व आचरण राष्ट्रद्रोहित, देशद्रोहत व बहुसंख्यक जनता हित के बिल्कुल विरुद्ध आदि अगणित समस्याओं द्वारा भयानक परिस्थिति का विचार करने पर ऐसा भास होता है कि कहीं वैसी परिस्थिति के कारण जब जगतोद्धारक के जन्मदाता श्री स्वामी विरजानन्द जी को चिन्ता थी कि इस विषम परिस्थिति को कौन उबारेगा? यदि वेदों का ज्ञान लोप हो जायेगा तो संसार का क्या होगा। इसी चिन्ता में अकेला सन्यासी मथुरा के एक कोने में एक आशा की किरण लिए एक छोटी सी संस्कृत पाठशाला चला रहा था।

तात्पर्य यह कि इस समय की समस्याएं व-परिस्थिति उपरोक्त चिन्ता के समतुल्य हिन्दू धर्म के सजग प्रहरी के नेताओं के दिमाग में यह शंका उत्पन्न कर रही है कि आज के भारत की समस्यायें परिस्थितियां आर्य (हिन्दू धर्म) को विनाश के कगार पर तो नहीं ले जायेंगी?

वैदिक धर्म का नाश तो असम्भव है, लेकिन इसका मतलब तो नहीं कि हिन्दू कटता जाए, मरता जाए, पाकिस्तान व बंगलादेश भारत का ही अंग मुस्लिमस्तान बन गया, उसी प्रकार बचा हुआ भारत भी मुस्लिमग्रस्त होकर इस्लामी शासक बनने की परिस्थितियां उत्पन्न होने पर भी सर्व विश्व के हिन्दूजन हाथ पर हाथ धरे बैठकर अन्धविश्वासी सोमनाथ के मन्दिर को मो० गजनवी द्वारा लुटते देखते रहे, उसी प्रकार चुप्पी साधे बैठे रहना जैसे सोमनाथ के मन्दिर वालों को मँहगा पड़ा, उसी प्रकार अब भी यदि भारत की हिन्दू जनता व विश्व के हिन्दू जन चुप्पी साधे बैठे रहेंगे तो भविष्य में बहुत बड़ा संकट भारत व सर्व हिन्दू जनता पर आने की सम्भावना है इसमें कोई शक नहीं इसे कभी न भूलें।

इस वर्तमान परिस्थिति को पूर्ण रूपेण समग्र हिन्दू नेतागण, सर्वसन्यासी महन्त, हिन्दू उद्योगपति व देश के सजग प्रहरी नेतागण व विश्व के सर्वहिन्दू जनता विचारकर संगठित होने की समय की चुनौती को स्वीकार करना पड़ेगा।

यदि समय की विषमताओं को न समझकर चुनौती नहीं स्वीकार करते तो सर्व हिन्दू कत्लेआम, बलात्कार, आगजनी, अत्याचार, मेहनत की गाढ़ी कमाई की लूट आदि सन् 1947 में पाकिस्तान द्वारा हिन्दुओ पर सरेआम जो बीती उसकी पुनरावृत्ति होगी, उसी पतन के लिए तैयार हो जायं।

क्योंकि इतिहास साक्षी है लम्बे 700 वर्ष के मुसलमान शासन में हर सम्भव उपायों द्वारा हिन्दू धर्म को नष्ट करने का प्रयत्न रहा। हिन्दू कटता रहा हिन्दू समाज घटता रहा, इसी कारण भारत के कई भागों में हिन्दू अल्पसंख्यक होने के कारण भारत का ही अंग पाकिस्तान व बंगलादेश बनकर आज भारत के कट्टर शत्रु बने बैठे हैं। पाकिस्तान बचे-कुचे भारत पर भी दुष्ट नजर से देख रहा है।

कशमीर भी कभी हिन्दू बाहुल्य देश था अब हिन्दुओ द्वारा त्रुटिपूर्ण नीति अपनाने के कारण अब वहां भी हिन्दू अल्पसंख्यक हो गए हैं।

सदियों से परतन्त्र रहा भारत बड़े मुश्किल से अनगिनत बलिदानों के बाद बेड़ियों से मुक्त हुआ फिर भी हिन्दुओं पर अधिक प्रहर होने लगे, भारत के नेताओं द्वारा अदूरदृष्टी के तुष्टीकरण नीति अपनाने से हिन्दू अल्पसंख्यक होते जा रहे है हिन्दुओं के लिए सन्तती निग्रह और मुसलमानों और ईसाइयों को बच्चे पैदा करने की खुली छूट पिछले जनगणना के अनुसार यदि 20 वर्ष इसी प्रकार हिन्दुओं की संख्या घटती रही और मुसलमानों व ईसाइयों की संख्या बढ़ती रही तो बिना युद्ध के ही मतगणनानुसार मताधिक्य के कारण भारत परतन्त्र हो जाएगा. कुछ वोटों की अधिकता परतन्त्रता के लिए पर्याप्त है।

कशमीर के लिए अलग विधान धारा 370 और कश्मीर से बहुसंख्या में हिन्दुओं का निकास होकर भारत मे जान बचाकर आना यह किस बात का द्योतक है, निश्चय ही भविष्य के संकट की ओर इशारा है।

मुरादाबाद तथा मेरठ के साम्प्रदायिक दंगे क्या हैं:

यह भारतवर्ष में रहे हुए लगभग 45,000 पाकिस्तानी, मुस्लिम लोग तथा जमाते इस्लामी का ही कार्य है जो इन्होंने हिन्दुओं के सामने अनेकानेक कठिनाईयाँ पैदा करने की दृष्टि से कराए हैं। हिन्दुओं को मिटाने के लिए इस्लाम बम का निर्माण भी किया जा रहा है।

यदि मिलेटरी तथा पी०ए०सी० के जवान मेरठ में न होते तो सम्पूर्ण मेरठ को मुसलमानों द्वारा इकट्ठी की गई बारूदों, आग्नेय शस्त्रों तथा बमों से मिटा दिया जाता। अब मुसलमान लोग पी०ए०सी० तथा सरकार को बदनाम कर रहे हैं। हमारे कुछ हिन्दू संसद सदस्य तथा विधायक भी अपनी दोहरी भूमिका निभाकर जयचन्द, राजा मानसिंह तथा राजा जयसिंह जैसी कार्यवाही कर रहे हैं। परन्तु शायद वे यह नहीं जानते हैं कि मुसलमानो का शक्ति में आ जाने पर उन्हें आँसू बहाने के सिवाय और कुछ नहीं मिलेगा।

मुस्लिम राष्ट्र भारतवर्ष का इस्लामीकरण करने तथा भारत में रहने वाले हिन्दुओं को अल्पसंख्यक बनाने का किसी न किसी प्रकार से निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। गत 25 से 28 जनवरी, 1981 तक मक्का में तृतीय मुस्लिम मुख्य सम्मेलन का आयोजन किया गया था। उस सम्मेलन में विश्व के 43 राष्ट्रों को मुस्लिम बाहुल्य राष्ट्र घोषित किया गया था। कुछ राष्ट्रों में मुसलमानों की संख्या 100 प्र०श० है जो इस प्रकार से है:-

देश	कुल संख्या	देश	कुल संख्या
1-साऊदी अरेबिया	100 प्रतिशत मुसलमान	8-संयुक्त अरब गणराज्य	100 प्र०श० मुस०
2-सोमालिया	" " "	9-लीबिया	" " " "
3-यमन	" " "	10-अफगानिस्तान	99 " " "
4-कतार	" " "	11-तुर्की	" "" "
5-कुवेत	" " "	12-पाकिस्तान	97 " " "
6-उमान	" " "	13-बगलादेश	85 प्रतिशत
7-मालदीप			

उपरोक्त आकड़ों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि इन राष्ट्रों मे मुसलमानों की संख्या 100 प्र०श० किस प्रकार से है। इसका उत्तर सरल है। मेरे तथा कुछ अन्य व्यक्तियों के अनुसार इसके निम्नलिखित तीन प्रमुख कारण हैं:-

1- जिन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार नहीं किया उन्हें कत्ल कर दिया गया।

2- और जिन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया उन्हें

देश में रहने की अनुमति प्रदान कर दी गई।

3- जिन्हें न तो कत्ल किया गया और न ही जिन्होंने इस्लाम धर्म स्वीकार किया, उन्हें देश छोड़ने को बाध्य किया गया अथवा ऐसे लोगों ने स्वयं ही उस देश को छोड़ दिया।

आपको ज्ञात होना चाहिए कि निम्नलिखित जातियों की उत्पत्ति इस प्रकार से है:-

क-	हिन्दू धर्म की उत्पत्ति {आर्य} संसार में सबसे पुरानी जाति}	{सर्व प्राचीन}
ख-	यहूदी	लगभग 3000 वर्ष पूर्व
ग-	ईसाई	लगभग 2000 वर्ष पूर्व
घ-	मुसलमान {इस्लाम}	लगभग 1400 वर्ष पूर्व

वर्ष 1951 की जनगणना के अनुसार भारतवर्ष में मुसलमानों की जनसंख्या केवल 354 लाख थी। वर्ष 1971 की जनगणना के अनुसार इनकी जनसंख्या में दो गुनी वृद्धि होकर कुल 614 लाख हो गई।

सन् 1951 से 1971 तक के काल में यहां हिन्दू बीस वर्ष में अपनी आबादी के पीछे 49/प्रतिशत की दर से बढ़े हैं। वहाँ मुसलमान 74/ प्रतिशत बढ़ गये हैं हिन्दू इस प्रकार लगभग 50 वर्षों में ही अल्पसंख्यक हो जायेंगे।

अब विश्व के मुस्लिम राष्ट्र भारतवर्ष को मुस्लिम राष्ट्र बनाने तथा अन्य राष्ट्रों में मुसलमानों की जनसंख्या में वृद्धि करने हेतु करोड़ों डालर की सहायता प्रदान कर रहे हैं। भारतवर्ष में इसके लिए इन्होंने निम्नलिखित तरीके अपनाए हैं। पैट्रो डालर्ज की सहायता से यह भारतवर्ष के निर्धन हिन्दुओं तथा हरिजनों का धर्म परिवर्तन करके उन्हें मुसलमान बना रहे हैं। उन्होंने इस कार्य का आरम्भ मीनाक्षीपुरम् नामक स्थान से किया है :-

क- 21-2-81 को 900 हरिजनों को इस्लाम धर्म में परिवर्तन किया। इस धर्म परिवर्तन के समय पर अरब, श्रीलंका के प्रमुख विद्वान तथा भारतवर्ष के कुछ मुसलमान संसद सदस्य वहाँ पर उपस्थित थे।

ख- उनके इस प्रकार से धर्म परिवर्तन कराने का सिलसिला सारे देश में फैल गया। मुस्लिम लीग के प्रधान इब्राहीम सुलेमान ने 40,000 व्यक्तियों के धर्म परिवर्तन कर चुकने की घोषणा की तथा इस कार्य के लिए उसने अरब राष्ट्रों से और अधिक पैट्रो डालर्स सहायता की माँग की है।

ग- लन्दन के इस्लामिक कल्चरल सेंटर ने निर्णय किया है कि आठ करोड़ हरिजनों को इस्लाम धर्म में लाने का स्वर्ण अवसर है।

घ- संयुक्त राष्ट्र संघ ने सूचित किया है कि सन् 2000 में भारतवर्ष की जनसंख्या 90 करोड़ हो जाएगी, जो इस प्रकार से होगी :-

हिन्दू	40 करोड़
मुसलमान	35 करोड़
ईसाई	15 करोड़

इस संख्या में हरिजन तथा हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करने की संख्या सम्मिलित नहीं है। अर्थ है कि सन् 2000 से पहले ही हिन्दू अल्पसंख्यक बन जायेगा।

ङ- आसाम तथा बिहार प्रदेशों में अधिक संख्या में मुसलमान अनधिकृत रूप से प्रवेश कर रहे हैं।

मुस्लिम राष्ट्रों के गोपनीय सम्मेलन में इस्लामी संगठनों के माध्यम से भारतवर्ष में साम्प्रदायिक दंगे कराने तथा मुसलमानों की संख्या में वृद्धि हेतु अधिक संख्या में सन्तान उत्पन्न करने के लिए बहुत अधिक संख्या में पेट्रो डालर्स की सहायता प्रदान करने का निश्चय किया गया था। आज भारतवर्ष का मुसलमान अपने पास अपनी चार पत्नियाँ रख सकता है और 16 से अधिक सन्तान उत्पन्न कर सकता है।

संसार में मुसलमानों की संख्या 99 करोड़ के लगभग है। परन्तु इजराइल जिसकी संख्या लगभग 5 करोड़ है उन्हें छठी का दूध पिला रहा है। साथ ही इजराइल मुसलमानों को अवैध रूप से दबा रहा है। व सामूहिक रूप से मुसलमानों को कत्ले आम कर रहा है। उसका कारण यह है कि मुसलमानों का अल्लाह आधुनिक हो गया है और यह रशियन, अमेरिकन तथा इजराइल में रहने वाले काफिरों की सहायता करता है। आधुनिक अल्लाह {ईश्वर} हिन्दुओं को प्रेरणा दे रहा है। जिनकी नस-नस में ऋषियों, मुनियों, श्रीरामचन्द्र भगवान कृष्ण, राणा-प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, बन्दा बहादुर तथा स्वामी-श्रद्धानन्द का रक्त भरा हुआ है।

जम्मू, लद्दाख, कश्मीर, पाकिस्तान, बंगलादेश से जान बचाकर हिन्दुओं का आना व मुसलमानों का आसाम व इस प्रकार भारत में लाखों की संख्या में आकर बसना, इस प्रकार मुसलमानों की संख्या में भारत में लाखों की संख्या मे वृद्धि होना तथा मेरठ कानपुर, मुरादाबाद, लखनऊ, अलीगढ़, मलियाना, हैदराबाद आदि स्थानों में हिन्दुओं पर आक्रमण, दंगेफसाद क्या सूचित कर रहे हैं, इस तरह हिन्दू कब तक मरते रहेंगे? हिन्दुओं के संतति निग्रह और मुसलमानों को कानूनन चार पत्नियों की छूट के कारण हिन्दू अपने ही देश में अल्पसंख्यक हो जायेंगे और भारत का शासन प्रजातन्त्र प्रणाली द्वारा अपने आप बिना युद्ध के ही मुस्लिम राष्ट्र होकर रह जायेगा।

इस समय परिस्थिति की माँग है कि सारे भारत का हिन्दू समाज व विश्व का प्रत्येक हिन्दू संगठित हो एकत्रित होकर विचार कर समय की **चुनौती को स्वीकार करे व सक्रियता से राजनीति में आर्य समाज भाग लेकर भारत को प्रबल शक्तिशाली देश के रूप में दुनियां के सामने खड़ा करें इस कार्य के लिए आर्य समाज को आगे आना होगा, क्योंकि आर्य समाज ही इस कार्य को कर सकता है, दूसरे किसी हिन्दू संस्था के बस का रोग नहीं।**

मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि आर्य समाज के नाम से राजनीति में भाग लें, उद्देश्य यह है कि जैसे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वारा जैसे अलग जनसंघ नामक राजनीतिक संस्था की स्थापना कर राजनीति में प्रवेश किया उसी प्रकार सार्वदेशिक सभा द्वारा आर्य समाज की एक अलग राजनीतिक पार्टी स्थापित कर उसका योग्य आकर्षक नाम रखकर उसके द्वारा इनडाइरेक्ट राजनीति में अवश्य प्रवेश करें व उसका संचालन सार्वदेशिक सभा के धर्मार्य सभा व राजार्य सभा द्वारा संचालित करना होगा, तभी तो कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का आर्यों का वेद संकल्प पूरा होगा।

इसी उद्देश्य से तो जगतोद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने क्रान्तिकारी पुस्तक सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास में पृथ्वी के उत्पन्न होने से लेकर कृष्णकाल द्वापर युग तक आर्यों के चक्रवर्ती राज्य के इतिहास के साक्षी देते हुए लिखने का क्या कारण था? क्योंकि भारत की जनता व आर्यजन अपनी प्रमाद को त्यागकर पुनरपि विश्व में आर्यों का चक्रवर्ती राज्य स्थापित कर वेदों के कृण्वन्तो विश्वमार्यम् संकल्प को पूरा करें।

समय रहते आर्य समाज के सभी मान्य सन्यासीगण व देश के सजग प्रहरी आर्य नेतागण विचार मंथन कर समय की चुनौती स्वीकार कर उपरोक्त विचार पर संगठित होकर निर्णय लेकर अमर सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास को लिखने के ऋषि के उद्देश्य को साकार रूप प्रदान करें अन्यथा भारत के पदलोलुप नेताओं द्वारा अल्पसंख्यकों की तुष्टीकरण नीति वोटों को अपनाने हेतु कुर्सी के लालच में हिन्दू बहुसंख्यकों की उपेक्षा कर रहे हैं जिसके कारण हिन्दू अल्पसंख्यक होकर ऐसे विषम परिस्थितियों में पहुँचेंगे जहाँ से वापिस लौटना असम्भव होगा।

इस कार्य में सहयोग शिवसेना, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, हिन्दू मंच, हिन्दू महासभा आदि संस्थाओं द्वारा प्राप्त कर कार्यान्वित करें तो अधिक उपयुक्त होगा, वरना हिन्दुओं का सर्वनाश का भविष्य निकट समझें।

-x-x-x-x-x-x-x-

डी0ए0वी0 हाईस्कूल, दानापुर कैण्ट की विद्यालय प्रबन्ध कारिणी समिति की बैठक दिनांक 28-12-88 एवं विद्यालय परिवार द्वारा बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान, मन्त्री एवं आर्यवीर दल के सेनानी स्वर्गीय रामाज्ञा बैरागी तथा आर्यसमाज एवं डी॰ए॰वी॰ हाईस्कूल के भूतपूर्व सदस्य एवं सक्रिय कार्यकर्ता स्वर्गीय विद्यापति जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया। दिवंगत आत्माओं की शान्ति हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई।

राजेन्द्रप्रसाद गुप्त, सचिव

अरब देशों में भारत विरोधी षड्यन्त्रों की भूमिका

(स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,
अध्यक्ष वैदिक संस्थान,
नजीबाबाद)

सन् 1981 में भारतीय मुस्लिम लीग के अध्यक्ष इब्राहीम सुलेमान सेठ ने सऊदी अरब की राजधानी में घोषणा की थी कि भारत में हम ऐसा प्रयत्न कर रहे हैं कि जिससे मुस्लिम लीग इतनी मजबूत हो जाय कि उसके सहयोग के बिना किसी भी भारतीय सरकार का बनना और काम करना असम्भव हो जाय। हम ऐसी स्थिति को लाने के लिये निरन्तर प्रयत्न कर रहे हैं। पाठकगण उनके विचारों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

उन्होंने कहा था कि "भारत के स्वतन्त्र होने के बाद से ही मुस्लिम लीग जोर-शोर से सक्रिय है और यह भारत के मुसलमानों का राष्ट्रीय संगठन है। सब मुसलमानों में भाईचारा स्थापित करने के लिये मुस्लिम लीग ने सदा प्रयत्न किया है और मुसलमानों के सभी वर्गों में एकता स्थापित करने के लिये उसने इस्लामी राष्ट्र की चेतना उत्पन्न की है।"

पाठकगण विचार करें कि जो दल भारत में किसी ऐसी सरकार को चलने देने की तो बात क्या-- बनने देने को भी तैयार नहीं, जो उसके अपने हाथों में न खेलती हो, क्या वह भी राष्ट्रीय संगठन हो सकता है? और जो हिन्दुओं के बहुमत वाले देश में रहने वाले मुसलमानों में इस्लामी राष्ट्र की चेतना भरने में लगा हो अर्थात द्विराष्ट्र सिद्धान्त के अनुसार कार्य करता हो, जिसके कारण भारत का विभाजन होकर सन् 1947 में पाकिस्तान बन चुका है, यदि वह भी राष्ट्रीय संगठन है तो अराष्ट्रीय और कौन सा संगठन हो सकता है?

सुलेमान सेठ ने भारत में हुए साम्प्रदायिक दंगों का उल्लेख करते हुए कहा कि "प्रत्येक मुसलमान का यह कर्त्तव्य है कि वह मुसलिम हितों की सहानुभूति में अपनी आवाज उठाये।"

उन्होंने यह भी कहा था कि "भारतीय मुसलमानों के हितों के लिये मुस्लिम लीग ने सदा संघर्ष किया है। हम यह चाहते हैं कि भारत में मुस्लिम लीग इतनी मजबूत हो जाय कि भारत में कोई सरकार उसके सहयोग के बिना न चल सके। प्रारम्भ से ही हम इसके लिये प्रयत्नशील हैं।"

इब्राहीम सेठ भारतीय मुस्लिम लीग के साथ-साथ मद्रास के इस्लामिक सैण्टर के भी अध्यक्ष हैं। स्मरण रहे कि कुछ समय पहले लन्दन के इस्लामिक कल्चरल सैण्टर ने भारत के हरिजनों को मुसलमान बनाने की योजना प्रस्तुत की थी। 1973ई0 में अरब देशों ने पान इस्लामिक लीग की स्थापना की थी, जिसका लक्ष्य मोरक्को से इण्डोनेशिया तक सभी देशों को इस्लाम के झण्डे के नीचे लाना है। उसी योजना के अनुसार इस्लामिक कल्चरल सैण्टर लन्दन ने अपने डायरेक्टर मोहम्मद अब्दुल खैर नदाबी को भारत में गुप्त रूप से सर्वे करने के लिये भेजा था। उसकी सूचना कुवैत से प्रकाशित होने वाले "अरब टाइम्स" समाचार-पत्र में छपी थी। उसमें स्पष्ट शब्दों में कहा गया है कि "भारत में अपनी योजनाओं की पूर्ति के निमित्त ऐसा सुनहरा अवसर फिर कभी नहीं मिलेगा। यह बात इसलिये इस रिपोर्ट में कही गयी होगी क्योंकि इस समय के सभी प्रमुख भारतीय राजनीतिक दल सत्ता प्राप्त करने के लिये मुस्लिम मतों का अधिक से अधिक और बड़े-बड़े से बड़ा मूल्य चुकाने को तैयार हैं।

इब्राहीम सुलेमान सेठ भारत का प्रतिनिधि मण्डल लेकर अरब गये थे। इस प्रतिनिधि मण्डल का सम्पूर्ण व्यय भी भारत सरकार ने दिया था। पाठकगण स्वयं देख लें कि उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व किया या मुस्लिम लीग का? और भारत सरकार तथा भारत के सभी राजनीतिक दलों के नेता भी आँखें खोलकर देखें कि सुलेमान सेठ भारत सरकार के व्यय पर भारत का प्रतिनिधित्व करके आये हैं अथवा अरब राष्ट्रों से भारत में साम्प्रदायिकता को बढ़ावा देकर विघटन कराने और एक दूसरा नया पाकिस्तान बनाने के लिये सहायक बनने की माँग करके आये हैं?

उन्होंने अपने भाषण में यहां तक कहा था कि "कई सहस्त्र अस्पृश्य हिन्दुओं ने मानवीय समानता की खोज में इस्लाम को स्वीकार कर लिया है।" आगे यहां तक कहा कि "हरिजनों को इस्लाम में ही अपनी समस्याओं का समाधान दिखायी दिया और उन्होंने बिना किसी दबाव के इस्लाम को स्वीकार किया और यह सिलसिला अभी जारी है।"

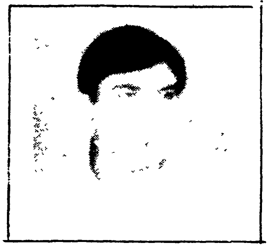
यद्यपि बात इसके सर्वथा विपरीत है। अकेले मीनाक्षीपुरम् (तामिलनाडु) में ही 6-6 सहस्र रुपया प्रति परिवार देने का हरिजनों को वचन दिया था और रात-रात में पूरे ग्राम को घेर लिया गया था तथा बाद में केवल पाँच-पाँच सौ रुपया दिया गया। इन हरिजनों में से एक के मर जाने पर उसे हरिजन बताकर कब्रिस्तान में दफनाने भी नहीं दिया। इस बात से उन लोगों को ठेस लगी तथा आर्य समाज के नेताओं द्वारा समझाने पर उन एक सौ चालीस परिवारों में से साठ परिवार तो तभी हिन्दु धर्म में लौट आये थे। शेष भी धीरे-धीरे लगभग सभी लौट आये।

उन मुसलमान बने हरिजनों को मुस्लिम नाम देकर दूसरे मुसलमानों से पृथक रक्खा गया था। उन्हें अलग नाम देकर उनके हरिजन होने का प्रमाण बनाये रखना और कब्रिस्तान में उनके मुर्दे भी न दबाने देना ही सम्भवतः इब्राहीम सुलेमान सेठ की दृष्टि में इस्लाम की मानवीय समानता तथा हरिजनों की अपनी समस्याओं का समाधान है।

उत्तर प्रदेश विद्यालय महासभा के पदाधिकारी



श्री सुनील शास्त्री



श्री मनमोहन तिवारी

उत्तर प्रदेशीय विद्यालय प्रबन्धक महासभा के त्रयवार्षिक निर्वाचन में सर्व सम्मति से श्री सुनील शास्त्री अध्यक्ष एवं श्री मनमोहन तिवारी मन्त्री निर्वाचित हुए।

महात्मा दयानन्द जी देहमुक्त

आर्य जगत को यह दुखद समाचार देते हुए हमें बड़ा दुःख है कि तपोवन देहरादून के संचालक महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी का दिनांक- 20 जनवरी को सायंकाल वैदिक भक्ति आश्रम रोहतक में हृदय गति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया।

वेद की पवित्र यज्ञमयी भावना को विश्व में प्रचारित एवं प्रसारित करने की महात्मा दयानन्द जी का अपूर्व योगदान रहा उन्होंने पावन यज्ञ के माध्यम से न जाने कितने हृदयों से दुरितों को दूर कर दिया था। ऐसे तपोनिष्ठ महात्मा के निधन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति दे और हम आर्यों के बीच में ऐसी ही तपोनिष्ठ महान आत्मा को पुनः प्रेषित करें।

—सभामन्त्री

डी०ए०वी० में क्रान्ति का सूत्रपात

राम नाथ सहगल मन्त्री

विगत 10 वर्षों से डी0ए0वी0 कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति द्वारा पब्लिक स्कूल खोले जा रहे हैं। न चाहते हुये भी हमें यह विद्यालय खोलने पड़ रहे हैं। इसका मुख्य कारण भारत में ईसाइयों द्वारा प्रतिदिन कान्वेन्ट स्कूल का जाल बढ़ता जा रहा था और भारत के हर प्रदेश में ईसाइयों ने कान्वेन्ट स्कूल खोल रखे थे। उन विद्यालयों में शिक्षित बालक अपनी मान्यताओं और अपनी सभ्यता के विषय में कुछ भी नहीं जान पाते। न केवल इतना अपितु वहाँ उन्हें भारतीयता से घृणा करना सिखाया जाता है। इस परिस्थिति से निपटने के लिये डी0ए0वी0 कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति ने पब्लिक स्कूल खोलने आरम्भ किये हैं। सारे भारत में उनकी संख्या आज 250 है।

डी0ए0वी समिति जहाँ भी अपना विद्यालय प्रारम्भ करती है वहाँ आर्य समाज की स्थापना अनिवार्य है। वहाँ के सभी अध्यापक गण तथा अन्य स्टाफ को आर्य समाज का सदस्य होना अनिवार्य है। प्रातःकाल की प्रार्थना में प्रार्थना के 8 मन्त्र तथा गायत्री मन्त्र आदि की व्याख्या की जाती है तथा ईश्वर भक्ति का गीत भी गाया जाता है। सप्ताह में एक बार यज्ञ अवश्य होता है, जिसमें डी0ए0वी विद्यालय के सभी अध्यापक, स्टाफ तथा विद्यार्थी सम्मिलित होते हैं। उसमें विद्यालय के धर्मशिक्षक का उपदेश होता है। बच्चों को सत्संग का गुटका दिया जाता है। अब तक एक लाख से अधिक गुटके आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा सब विद्यालयों के विद्यार्थियों को भिजवाये जा चुके हैं। प्रायः हर विद्यालय में एक-एक धर्म शिक्षक नियुक्त है, जो वेदालंकार, विद्यालंकार, सिद्धान्ताचार्य, सिद्धान्त शास्त्री, विद्यावाचस्पति, शास्त्री आदि होते हैं। हर वर्ष महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार तथा अन्य उपदेशक विद्यालयों से जितने स्नातक निकलते हैं उनको अपने विद्यालयों में धर्मशिक्षक के रूप में रखा जाता है और उन्हें उतना ही वेतन दिया जाता है जितना कि अन्य अध्यापकों को दिया जाता है।

धर्म शिक्षकों की कमी को देखते हुए दिल्ली में डी0ए0वी0 नैतिक शिक्षा संस्थान पिछले चार वर्षों से आरम्भ किया है। जिसमें प्राचार्य प्रो0 रत्नसिंह जी हैं और आचार्य श्री विजयपाल सिंह जी शास्त्री हेड आफ दि संस्कृत, कानपुर विश्वविद्यालय हैं, इनके अतिरिक्त स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज, पं0 शिवकुमार शास्त्री, पं0 धर्मवीर शास्त्री, आदि भी इस संस्थान को समय देते हैं। इस विद्यालय में वे विद्यार्थी लिये जाते हैं जो एम·ए· संस्कृत या एम·ए· हिन्दी होते हैं। एक वर्ष का प्रशिक्षण देने के बाद उनकी परीक्षायें होती हैं और उत्तीर्ण स्नातकों को भारत के भिन्न-भिन्न विद्यालयों में नियुक्त किया जाता है। इन अध्यापकों को टी·जी·टी· का ग्रेड दिया जाता है। इस समय लग-भग 200 धर्मशिक्षक सारे भारत में, बच्चों को धर्मशिक्षा देने का कार्य कर रहे हैं।

पिछले वर्ष मॉरिशस के शिक्षामन्त्री श्री परशुराम जी भारत पधारे थे। उन्हें दिल्ली में हंसराज माडल स्कूल, पंजाबी बाग में ले जाया गया। उन्होंने जब 50 हवनकुण्डों पर 80·80 विद्यार्थियों को पीले साफे बाँधे हुये यज्ञ करते देखा तो वे प्रभावित हुए। उन्होंने इच्छा प्रकट की कि मॉरिशस में भी ऐसे विद्यालय आरम्भ किये जायें और हमें मॉरिशस आने का निमन्त्रण दिया। हम लोग वहाँ गये और वहाँ जो तीन कालेज चल रहे थे उन तीनों का सम्बन्ध डी0ए0वी0 कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति से कर दिया गया। इण्टरनेशनल कालेज का नाम डी0ए0वी0 इण्टरनेशनल कालेज तथा ईस्टर्न कालेज का नाम डी0ए0वी0 ईस्टर्न कालेज रखा गया।

इस समय सारे भारत की डी0ए0वी संस्थाओं में 30 हजार अध्यापक हैं। हर अध्यापक को एक-एक हिन्दी का सत्यार्थ प्रकाश देने का निश्चय हुआ। हमने सत्यार्थ प्रकाश अपने अध्यापकों को बाँटने आरम्भ कर दिये हैं और अबतक लगभग 16 हजार सत्यार्थ प्रकाश बाँट चुके हैं और उन्हें आदेश दिया है कि वे इसका अध्ययन करें और एक वर्ष के बाद हमारे धर्मशिक्षक एक गोष्ठी आयोजित करेंगे और किसी को यदि शंका होगी तो उसका समाधान करेंगे। यह कार्य भी आरम्भ कर दिया गया है। जो अध्यापक सत्यार्थ प्रकाश पढ़ जायेंगे वे बच्चों में संस्कार डाल सकेंगे।

डी0ए0वी0 कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति ने आठवीं कक्षा तक के लिये अपना बोर्ड बनाया है जोकि सारे भारत में लागू होगा और उसमें अगले वर्ष धर्मशिक्षा का भी पेपर रखा जायगा। यह अनिवार्य होगा कि वही विद्यार्थी कक्षा आठ में उत्तीर्ण होगा जो धर्मशिक्षा में उत्तीर्ण होगा। इसी प्रकार डी0ए0वी0 कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा कई ऐसी योजनायें बनाई जा रही हैं कि जिससे हमारे विद्यालयों में स्वामी दयानन्द तथा आर्य समाज के मन्तव्यों का इतना प्रचार हो कि भावी पीढ़ी पूर्णतया आर्यसमाजी बन सके। यदि उपरोक्त योजना सफल हो गई तो आर्य समाज में आज जो निराशा पाई जा रही है, वह जल्दी ही दूर हो जायगी।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद तथा हरियाणा में आर्य युवक दल आदि युवकों के संगठन स्थापित किये जा चुके हैं ताकि उनकी शाखाओं द्वारा अधिक से अधिक युवकों को संगठित किया जा सके।

इस वर्ष स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस की शोभायात्रा में इसकी एक झलक दिखाई भी दी। इसमें दिल्ली तथा आस पास के लगभग सौ विद्यालयों ने भाग लिया। हर विद्यालय का अपना मोटो था, ओउम के झण्डे थे, विद्यालय का बैण्ड था, विद्यालय के बच्चे डम्बल, लैजियम आदि भिन्न-भिन्न खेलों का प्रदर्शन कर रहे थे। हाथों में भजनों की पुस्तकें थीं और वे आर्यसमाज के गीत गा रहे थे। इन विद्यालयों के सम्मिलित होने पर शोभायात्रा की छवि ही निराली बन गई थी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में आयोजित

उपदेशक प्रचारक प्रशिक्षण शिविर

गंगा के रमणीय तट- प्रकाश वीर शास्त्री भवन ब्रजघाट जिला- गाजियाबाद में दिनांक 1 जनवरी 1989 से 5 जनवरी 1989 तक आर्य जगत के सुयोग्य सन्यासी पूज्यपाद- स्वामी-जीवनानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में सपन्न आर्य प्रतिनिधि-सभा उत्तर प्रदेशान्तर्गत- सेवारत सभी उपदेशकों प्रचारकों को यज्ञ-सन्ध्या-वैदिक सिद्धान्त- मन्त्र शुद्धि के अतिरिक्त - सामाजिक विषयों पर कथन उपकथन भाषण शैली आर्य संहिता के परिपालन पर बल दिया गया शिविर की सफलता इसी बात से प्रगट है कि सभी उपदेशकों ने समवेत स्वर से इस प्रकार के आयोजन करने में हर्ष अनुभव किया तथा शिविर लगाने के लिए सादर-सस्नेह - सानुरोध आमन्त्रण दिया।

उद्घाटन--

सभा के गौरव पूर्ण प्रधान पं0 इन्द्रराज जी ने दिनांक- 2·1·89 को प्रातः 10 बजे शिविर का उद्घाटन ध्वजारोहण से किया सभा को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि पूज्यवर- स्वामी जीवनानन्द जी महाराज के मार्ग दर्शन - सान्निध्य में रहकर उपदेशक प्रचारक ज्ञानार्जन कर लाभान्वित होंगे- उनमें नवीन प्रगति ज्योति का संचार होगा साथ ही उन्होंने स्वाध्याय- और सदाचरण पर बल देते हुए उपदेशक विद्यालय की स्थापना पर बल दिया।

समापन समारोह

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के माननीय मन्त्री- श्री मनमोहन जी तिवारी ने अपने समापन भाषण में सभा द्वारा संचालित- कार्यक्रमों- योजनाओं से सदन को अवगत कराया- आर्यवीरदल- आर्य कुमार सभाओं की आवश्यकता पर बल देते हुए उपदेशकों प्रचारकों के लिए वर्ष 1989 में आर्यमित्र के 25 ग्राहक बनाने हेतु निर्देशित किया- सुनियोजित सुसंगठित- प्रचार-तन्त्र ही हमारे उज्जवल भविष्य का द्योतक है आवश्यकता इस बात की है कि हमारे उपदेशक प्रचारक वैदिकमिशनरी - के रूप में चिन्तननीय भाव से जन जन में प्रचार प्रसार के लिए संकल्प बद्ध हो- सभा के समक्ष वेतन वृद्धि- भविष्य निधि- बीमा- योजना विचाराधीन है- सभा को सम्बोधित करते हुए धर्मान्तरण- अराष्ट्रीय निरोध जैसी ज्वलन्त समस्याओं में आर्य समाज सजग कर्तव्य प्रहरी के रूप में खड़ा है सहयोग समर्थन केसमाधान के आवाहन पर सभी ने करतल ध्वनि की-----

--हरि चन्द्र आर्य।

१९ वीं सदी के महान शिक्षाविद् साहित्यकार एवं दार्शनिक

स्वामी दर्शनानन्द, सरस्वती

-यतीन्द्र कुमार वर्मा
{विद्यारत्न"गुरुकुल महा0 ज्वालापुर"

चट्टानों से जोटकराये, उसे तूफान कहते हैं।
जो तूफानों से टक्कर ले, उसे इन्सान कहते हैं।।

जी हाँ वास्तव में उपरोक्त पंक्तियाँ खरी उतरीं स्वामी-दर्शनानन्द जी के जीवन में। वे मात्र लाल कपड़े पहनने वाले "पेरे गैरे नत्थू खैरे" साधू नहीं अपितु 19वीं सदी के महान शिक्षाविद्, तार्किक शिरोमणि, साहित्यकार व प्रकाण्ड पण्डित थे।

जिस समय चारों तरफ अज्ञान व अन्धविश्वास की घनघोर घटाऐं छायी थीं, तथा विदेशी आक्रान्ताओं ने भारत माँ को जकड़ रखा था। उस समय सूर्य की भांति चमकने वाले, हिन्दी को सर्वप्रथम राष्ट्रभाषा घोषित करने वाले, तथा स्वराज्य का सर्वप्रथम उद्घोष करने वाले उस महर्षि दयानन्द से शिक्षा पाकर तार्किक शिरोमणि दर्शनानन्द ने फिर से आर्ष प्रणाली पर गुरुकुल शिक्षा को पुनर्जीवित करने का बीड़ा उठाया।

आर्य समाज की त्रिवेणी {दयानन्द, श्रद्धानन्द, दर्शनानन्द} में सरस्वती के समान पवित्र वैदिक वाङ्मय के पवित्र विद्वान् तार्किक शिरोमणि, प्रगल्भ लेखक स्वामी दर्शनानन्द जी का जन्म माघ-कृष्ण दशमी सम्वत् 1918 विक्रमी को लुधियाना जनपदान्तर्गत जगरांवा नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पं0 रामप्रताप व माता का नाम श्री हीरा देवी था। बचपन से ही आपको विरक्ति की भावना उत्पन्न हो गयी थी। महर्षि दयानन्द जी के सम्पर्क में तो आकर आपके और वैराग्य उत्पन्न हो गया। बाल प्रथा प्रचलित होने के कारण मात्र 11 वर्ष की अल्पायु में आपका विवाह कर दिया गया। इसके पश्चात् भी आपको आत्मिक शान्ति नहीं हुई। अन्ततः आपने घर त्याग दिया तथा सन् 1901 में बुलन्दशहर में स्वामी अनुभवानन्द जी से सन्यास की दीक्षा ग्रहण की।

उन्होंने अपने जीवन में 10 से भी अधिक शास्त्रार्थ किये। आपने पत्रकार के रूप में "तिमिर नाशक" {साप्ताहिक} वेद प्रचारक {मासिक} भारतोद्धार {साप्ताहिक} वैदिक धर्म {साप्ताहिक} वैदिक मैगजीन {मासिक} तालिबे इल्म {साप्ताहिक} आर्य सिद्धान्त {मासिक} वैदिक फिलासफी आदि 12 पत्रों का प्रकाशन किया। अतः इससे उनकी पत्रकारिता के क्षेत्र में रुचि एवं कार्य का अनुमान लगाया जा सकता है।

यह जानकर आश्चर्य होगा कि स्वामी दर्शनानन्द पत्रकार व उपदेशक होने के साथ-साथ कवि भी थे। उनका हृदय अत्यन्त कोमल एवं भव्य भावनाओं से भरपूर था। जंग-ए आजादी उनकी प्रथम काव्य कृति थी। इसके साथ ही स्वामी-जी कवि ही नहीं अपितु कहानीकार एवं उपन्यास कार भी थे। इस प्रकार आपने धर्मवीर, एवं विचित्र ब्रह्मचारी आदि 5 उपन्यास एवं कथा पच्चीसी कहानी संकलन लिखा। इसके अलावा आपने 250 ट्रैक्ट लिखे। उपरोक्त बातों से पता चलता है स्वामी जी एक सफल साहित्यकार थे।

शिक्षा के क्षेत्र में आपने 5 गुरुकुलों की स्थापना की। जो 1. गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, 2. गुरुकुल सूर्यकुण्ड बदायूँ 3. गुरुकुल सिकन्दराबाद, 4. गुरुकुल विरालसी, 5. गुरुकुल पोठोहार-{रावलपिण्डी} हैं। इन सभी गुरुकुलों में ज्वालापुरीय गुरुकुल ही सर्वाधिक ख्याति प्राप्त आर्य संस्था है। यह गंगनहर के तटपर 80 वर्ष पूर्ण कर चुकी है। इसने डॉ0 सूर्यकान्त, पं0 उदयवीर शास्त्री, रामावतार जैसे उद्भट् विद्वान एवं प0-प्रकाशवीर शास्त्री, जैसे कुशलराजनीतिज्ञ व प्रखर वक्ता दिये हैं। जिन्हें देश कभी नहीं भूल सकेगा।

वैदिक धर्म के प्रचार हेतु विस्तृत भ्रमण अनवरत ग्रंथ लेखन शास्त्रार्थ और कार्यों ने स्वामी जी की काया को जीर्ण-शीर्ण बना दिया। फलस्वरूप स्वामी जी बीमार हो गये। अनेक उपचार के बाद भी स्वामी जी 11 मई सन 1913 को इस पार्थिव शरीर का परित्याग कर ब्रह्मलीन हो गये।

इस महान साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षाविद् श्रीधराजदर्शना-नन्द जी के पवित्र विचार हमारा हमेशा मार्ग दर्शन करायेंगे। आइये। हम सब स्वामी दर्शनानन्द जन्मोत्सव पर एक नये उत्साह, साहस व बलिदान की भावना से दर्शनानन्द जी के सपने को साकार करें।

उपरोक्त सभी गुरुकुल उनकी महान देन हैं। यह गुरुकुल ही उनका पवित्र स्मारक है। इसके साथ ही --

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर वर्ष मेले।
वतन पर मिटने वालो का,यही बाकी निशां होगा ।।

-x-x-x-x-x-x-x-

पंजाब प्रतिनिधि सभा के मा० प्रधान जी द्वारा "आर्यमित्र" की प्रशस्ति

{आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान मा0 वीरेन्द्र जी ने सभा मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी को आर्यमित्र की प्रशस्ति में जो पत्र लिखा है उसकी अविकल प्रति हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं। इस पत्र ने हमारा उत्साह संवर्धन किया है -

प्र0 सम्पादक }

गुरुदत्त भवन- किशनपुरा चौक- जलान्धर-4

पत्रांक- 3029 दिनांक- 11.1.1989

मान्यवर तिवारी जी,

सादर नमस्ते ।

मै प्रायः आप की सभा का मुख्य पत्र आर्य-मित्र देखता रहता हूँ। पिछले कुछ समय से इस का जो नया रूप हमारे सामने आ रहा है उसे देख कर प्रसन्नता होती है। प्रायः देखा गया है कि प्रान्तीय सभाओं की पत्रिकाओं का स्तर कोई बहुत ऊँचा नहीं होता परन्तु आपने अपनी पत्रिका का जो स्तर रखा है वह दूसरी कई पत्रिकाओं से बहुत ऊँचा है और अब तो आपने उसका टाइप भी बदल दिया है। इससे भी आपके इस पत्र की रूपरेखा आकर्षक हो गई है। मैं तो चाहता हूँ कि आर्य समाज की सब पत्रिकाएं ऐसे ऊँचे स्तर की हों कि दूसरे लोग भी इसे पढ़ें। आप इस दिशा में जो प्रयास कर रहे हैं वह सराहनीय है।

श्री मनमोहन तिवारी,
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा,
उत्तर प्रदेश,
5, मीराबाई मार्ग,
लखनऊ ।

भवदीय,
{वीरेन्द्र}
सभा प्रधान

प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ० प्र०

जिन आर्य विद्यालयों की कक्षा 5,7,9,11 के सभी विद्यार्थी सभा द्वारा संचालित धर्म परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं उनके प्रधानाचार्यों को 8-1-89 ने सभी की अन्तरंग की बैठक के अवसर पर पुरस्कृत एवं सम्मानित करने का निश्चय घोषित किया गया था। उनमें से केवल बहादराबाद के प्रधानाचार्य श्री सोहन लाल शर्माजी ही उपस्थित हो सके। अन्य कदाचित मौसम की प्रतिकूलता के कारण न पधार सके। श्री शर्माजी को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी के करकमलों द्वारा माल्यार्पण के साथ एक दुशाला भेंट किया गया। आर्य महाविद्यालय, लखीमपुर की प्रधानाचार्या जी का पुरस्कार उनके अधिकृत प्रतिनिधि को भेंट किया गया जो प्रधानाचार्य नहीं पधार सके उनको तथा उनके सहयोगी अध्यापकों को उनके वार्षिकोत्सव के अथवा अन्य किसी उपयुक्त अवसर पर सम्मानित एवं पुरस्कृत किया जावेगा।

-माधव सिंह मन्त्री,
शिक्षा विभाग।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कार्यरत उपदेशकों-प्रचारकों के

मास फरवरी ८९ के कार्यक्रम

1-	श्री केशवदेव जी शास्त्री	- 1 से 4 नवाबगंज {गोण्डा}	9 से 12 बाराबंकी	19 से 21 सदरपुर {मुरा0}	24 से 26 रामपुर सफेद,	
2-	श्री विश्वम्भर दत्त जी, शास्त्री	1 से 20 इलाहाबाद	23 से 28 रामपुर जनपद,			
3-	डॉ0 विजयपाल सिंह जी,	1 से 20 - कुम्भ मेला {इलाहाबाद} आर्य समाज रानीमन्डी,				
4-	श्री स्वा0 सुकर्मानन्द जी,	1 से 23 - रामपुर जनपद				
5-	श्री महावीर जी शास्त्री,	10 से 28 - डेहिरयावा {फैजाबाद}				
6-	श्री जीत नारायण जी शास्त्री,	18 से 20 - ककन्धू जनपद - बहराइच ।				
7-	श्री योगेशदत्त जी आर्य,	1 से 17 - कुम्भ मेला इलाहाबाद, 20 से 28 - गोहाटी {असम}				
8-	श्री जयन्तकुमार जी,	8 से 15 उड़ीसा ।				

9-	श्री गजराज सिंह जी "राघव"	9 से 12 बाराबकी,	19 से 21 सदरपुर {मुरा0}	22 से 28 थानाभवन {मुजफ्फर नगर}		
10-	श्री कमलदेव जी,	3 से 5 पाण्डेपुर	8 से 10 नगला दक्षिणी	11 से 13 बेरी	15 से 20 मीतरौल	23-से-27 छाता {मथुरा}
11-	श्री ब्रह्मानन्द जी आर्य,	1 से 6 रामपुर	7 से 9 रुस्तमपुरन्यावली,	10 से 11 बर्रामसीत,	15 से 17 छीतहा,	19 से 21 सदरपुर {मुरा0}
12-	श्री राम चन्द्र जी शर्मा,	7 से 9 रुस्तमपुर न्यावली,	12 से 15 गोसपुर बस्ती,	20 से 28 गोहाटी {असम}		
13-	श्री सीताराम जी शर्मा,	18 से 20 - ककन्धू जनपद - बहराइच ।				
14-	श्री नेम प्रकाश जी आर्य,	1 से 6 रामपुर	7 से 9 रुस्तमपुरन्यावली,	10 से 12 धूंधली,	15 से 21 शिवपुरी,	24-से-26 मौलाबांकीपुर
15-	श्री युगुल किशोर जी,	10 से 28 - डेहोरयावा जनपद - फैजाबाद ।				
16-	श्री सीताराम जी आर्य,	24 से 26 - मौलाबांकीपुर जनपद - उन्नाव ।				
17-	श्री शिवनाथ सिंह जी,	1 से 6 रामपुर जनपद,	7 से 9 रुस्तमपुर न्यावली,	18 से 20 ककन्धू जनपद - बहराइच		
18-	श्री क्षेम चन्द्र जी आर्य	1 से 20 - कुम्भ मेला इलाहाबाद ।				
19-	श्री तेजपाल सिंह जी आर्य	1 से 20 - कुम्भ मेला इलाहाबाद ।				
20-	श्री ओम लाल जी, ढोलकवादक,	1 से 6 रामपुर,	7 से 9 रुस्तमपुर,	10 से 11 बर्रा मसीत,	15 से 17 छीतहा	19-से-21 सदरपुर
21-	श्री विक्रम देव जी आर्य,	1 से 17 कुम्भ मेला इलाहाबाद,			20 से 28 आर्य प्रतिनिधि सभा-गोहाटी,	

पता- प्रचार कार्यालय,
अमरोहा, मुरादाबाद। दूरभाष - 554

हरिश्चन्द्र आर्य,
अधिष्ठाता उपदेश वि0 आ0 प्र0 स0

शोक समाचार

नगर आर्यसमाज रकाबगंज के साप्ताहिक सत्संग में वयोवृद्ध कर्मठ कार्यकर्ता एवं अन्तरंग के सदस्य श्री नाथूराम जी के बड़े सुपुत्र स्व0 श्री भारतेन्दु प्रकाश राठौर के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया तथा शोक प्रस्ताव पास कर दिवंगत आत्मा की सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को शोक सहन करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की गई।

सभा मन्त्री

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का विशेष अधिवेशन सम्पन्न

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ प्रबन्ध समिति {फरीदाबाद} का साधारण सभा विशेष अधिवेशन स्वामी शक्तिवेश जी की अध्यक्षता में 1 जनवरी 1989 रविवार 11 बजे सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वसम्मति से पारित हुआ कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को अन्तर्राष्ट्रीय केन्द्र के रूप में विकसित कर सन्यासी, युवक, अधिकारी, उपदेशक, पुरोहित, कृषक, श्रमिक तथा विदेशियों को वैदिक आध्यात्मिक योग सम्बन्धी विषयों का मार्ग दर्शन कराया जायगा।

स्वामी श्रद्धानन्द और शुद्धि आन्दोलन

कु0 कमलेश आर्या, बी0एस-सी0 ।
आर्य समाज शेखूपुर {बुलन्दशहर}

स्वामी श्रद्धानन्द महर्षि दयानन्द के "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" उद्देश्य की प्राप्ति हेतु भारत में रहने वाले समस्त मुसलमानों और ईसाइयों को हिन्दू {आर्य} बना लेना आवश्यक समझते थे। आप इस बात से अत्यन्त दुःखी थे, कि भारत में रहने वाले मुसलमान और ईसाई भारत को अपनी मातृ - भूमि भारत के इतिहास को अपना इतिहास, भारत के आदर्शों को अपना आदर्श, भारत की भाषा को अपनी भाषा, भारतीय लिपि को अपनी लिपि और भारतीय धार्मिक ग्रन्थों को अपना धार्मिक ग्रन्थ नहीं मानते हैं। इसलिए इन विधर्मियों को वैदिक धर्म में पुनः दीक्षित करना शास्त्रानुकूल पूर्ण था। स्वामी जी का कहना था कि किसी भी व्यक्ति द्वारा वैदिक {हिन्दू} धर्म छोड़ने पर उसकी भारत के प्रति आस्थायें भी बदल जाती हैं, भारतीय मुसलमानों को मक्का-मदीना तथा भारतीय ईसाइयों को रोम या रूस्य पैलेस्टाइन के प्रति आस्थावान पाया। बड़े-बड़े देशभक्त मौलाओं का कहना है कि हम मुसलमान पहले हैं और हिन्दुस्तानी बाद में हैं। जब तक यहाँ का मुसलमान मुहम्मद अली है तब तक वह भारत की अपेक्षा अरब का अधिक भक्त है लेकिन जब वह शुद्ध करे वैदिक धर्म में मिला लिया जाता है तब उसका दृष्टिकोण बदल जाता है।

शुद्धि का तात्पर्य उन समस्त लोगों को वैदिक धर्म मे वापिस लेना जो भय-भ्रान्ति व प्रलोभन के कारण अभारतीय धर्मों में प्रविष्ट हो गये हैं। यह कोई अपराधिक कार्य न होकर राष्ट्रोपयोगी कार्य था क्योंकि मुस्लिम शासन काल में लाखों-करोडों हिन्दुओं को लोभ-लालच एवं तलवार के भय द्वारा मुसलमान बना लिया था। परिस्थिति बस जब वे पुनः हिन्दू धर्म में वापिस आने को तैयार हुए तो मिथ्याभिमान एवं धर्म सम्बन्धी भ्रान्तधारणाओं के कारण पौराणिक हिन्दू पुनः उन्हें हिन्दू-धर्म में वापिस लेने के लिए तैयार न हुऐ। अतः स्वामी श्रद्धानन्द ने इस्लाम की हीनता और वैदिक धर्म की श्रेष्ठता बताकर धर्म पतितों को पुनः शुद्ध कर वैदिक धर्म में विलीन करने को आह्वान किया। तथा 1923 ई0 में आगरा में "भारतीय हिन्दू-शुद्धि सभा" की स्थापना कर आगरा व आस - पास के गाँवों में लाखों मलकाना राजपूतों को शुद्धि सभा द्वारा शुद्ध करके वैदिक धर्म में मिला लिया हिन्दू जनता ने बिछुड़े भाइयों को अपने धर्म में वापिस आने पर हृदय से उनका स्वागत किया। यहाँ तक कि गंगा जल से ही शुद्धि की जाने लगी। आपने न केवल मुस्लिम पुरूषों को ही शुद्ध किया अपितु मुस्लिम महिलाओं को भी शुद्ध कर आर्य {हिन्दू} बनाया। 1926 में कराची की असगरी बेगम को उसके दो बच्चों व एक भतीजे सहित शुद्ध कर उसको संस्कृत व हिन्दी का अध्ययन कराया। इस पर उसके पति व पिता ने स्वामी जी पर मुकद्दमा चलाया तथा न्यायालय ने स्वामी जी व अन्य साथियों को निर्दोष पाकर छोड़ दिया। इस पर अनेक मुस्लिम नेता व मुल्ला बौखला उठे। और स्वामी जी के कार्य को शुद्धि न कहकर "फितना" कहने लगे अतः मुस्लिम नेताओं ने मुसलमानों को स्वामी जी के विरूद्ध इतना भड़काया कि वे स्वामी जी के प्राणों के प्यासे हो गये। धमकी भरे पत्र तो स्वामी जी पर प्रतिदिन आने लगे। और अन्त में कुपित धर्मन्धि मजहबी मुसलमानों का कोप सीमा पार गया। 23 दिसम्बर 1926 को कुरुक्षेत्र गुरुकुल दिल्ली में सायं 4 बजे अब्दुल रशीद नामक मतांध मुसलमान ने उनके निवास स्थान पर ही अपनी पिस्तौल से तीन गोली स्वामी जी पर चला दी। गोली लगते ही स्वामी जी का शरीरान्त हो गया। इस प्रकार शुद्धि द्वारा राष्ट्र की वेदी पर स्वामी जी ने अपने प्राणों की आहुति दी ।

जब कि शुद्धि आन्दोलन विशुद्ध धार्मिक आन्दोलन था। क्योंकि शुद्धि में न तो तलवार से डराने का कोई ही अंश था और न राज्य से ही किसी भी प्रकार की कोई सहायता मिलती थी। लोगों की इच्छानुसार प्रेम से वैदिक धर्म में वापिस लेना किसी भी प्रकार का दोष युक्त नहीं समझा जा सकता ।

-x-x-x-x-x-x-x-

हरम की सल्तनत

सुलतान गयासुद्दीन खिलजी की महिलाओं के प्रति दीवानगी सिर्फ शयन कक्ष तक ही सीमित नहीं थी बल्कि इससे भी कहीं आगे बढ़ चुकी थी। महिलाओं को विभिन्न रूपों तथा भाव-भंगिमाओं में देखने की अपनी इसी अदम्य ललक के वशीभूत उसने अपने विशाल "हरम" के भीतर एक अलग सल्तनत कायम की थी। शाही राजकाज के सभी विभागों से लैस इस मिनी सल्तनत का सारा कामकाज महिलाएं ही चलाया करती थीं। न सिर्फ यहाँ रहने वाली ही महिलाएं थीं, बल्कि यहां का हर काम-धन्धा महिलाओं द्वारा ही संचालित किया जाता था। यहाँ तक कि पहरेदारों तथा सिपाहियों के ओहदों पर भी महिलाएं ही तैनात थीं। महिलाओं की इस बस्ती का समूचा नियन्त्रण महिलाओं के हाथ में था और इनमें एक ही पुरूष का वर्चस्व था- सुलतान गयासुद्दीन खिलजी {1469-1500ईस्वी, मालवा, मध्य भारत}।

यहाँ उसने 15,000 रूपवान महिलाओं को बड़े लाड़-प्यार से रखा हुआ था तथा उनके रहन-सहन एवं सुख-सुविधाओं पर पानी की तरह धन बहाया जाता था। पारम्परिक कामकाजी महिलाओं के अलावा इस मिनी सल्तनत में लोहार, सोनार, मोची, बुनकर, दर्जी, सैनिक, बढ़ई, धार्मिक मार्ग-दर्शक, मदारी, पहलवान, पुलिस कर्मी आदि सब महिलाएं ही थी। इनके ऊपर महिला ही अफसर तथा सुपरवाइजर लगाई गई थी।

लेकिन उसकी इस मिनी सल्तनत की सब से बड़ी ताकत 1000 अमेजन महिलाएं थीं। शत्रु पर आक्रमण करने की कला में सुदक्ष ये महिलाएं जहाँ कहीं सुलतान गयासुद्दीन किसी सार्वजनिक समारोह में जाता था, पुरूष वेश में उसके अंग-संग रहा करती थीं। 1500 हथियारों से लैस तुर्की युवतियाँ सुलतान के दाईं तरफ तथा 500 अबीसीनियाई श्याम-वर्णी सुन्दरियाँ उसके बाईं तरफ रहती थीं ।

अपनी इस "हरम सल्तनत" की प्रबन्ध व्यवस्था में सुलतान बड़ी गहरी दिलचस्पी लिया करता था। यहीं बैठ कर वह अपना नियमित दरबार लगा कर शिकायतें सुनता तथा इन्साफ करता था। सुलतान यह स्वप्न-लोक झील के किनारे बनाए हुए महल में पूरा होता था, जो मांडू के पहाड़ी किले की चोटी पर बना एक तैरते हुए जहाज की तरह दिखाई देता था। इसी महल में उसने आन्तरिक विद्रोह या बाह्य आक्रमण से पूर्णतः निर्लिप्त रहते हुए 31 **वर्ष** तक विलासितापूर्ण जीवन बिताया ।

पंजाब केसरी से साभार।

xxxxxxxx

वार्षिकोत्सव

- **श्री मद्दयानन्दार्ष गुरूकुल नगला कटीला {एटा}** उ0प्र0 का 21वाँ वार्षिकोत्सव सामवेद परायण महायज्ञ के साथ दिनांक 28,29,30 दिसम्बर 88 ई0 को बड़ी धूम-धाम के साथ आर्य नगर, कासगंज में मनाया गया। इस उत्सव में स्वामी वेदानन्द दण्डी, डा0 आचार्य दिवाकर शर्मा, आर्ष गुरूकुल एटा, श्री उदयप्रकाश भजनोपदेशक, अभय देश शास्त्री , प्रधान जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा एटा ने भाग लिया। हजारो धर्मप्रेमियों ने धर्म लाभ उठाया। पुरूषों की अपेक्षा प्रतिदिन यज्ञ एवं प्रचार के समय में महिलायें अधिक उपस्थित रही थीं। गुरूकुल के समस्त छात्र-छात्राओं का वैदिक रीति से उपनयन संस्कार किया गया। अन्य स्त्री पुरूषों ने भी संस्कार कराया और वैदिक धर्म की दीक्षा ग्रहण की। श्री जगदीश नरायन मूना, अध्यक्ष नगर पालिका कासगंज के पधारने पर प्रधानाचार्य श्री मधुर शास्त्री ने माल्यार्पण किया। आर्य समाज कासगंज और आर्य जनता ने पुष्प मालाओं से स्वागत किया। छात्राओं ने वेद मन्त्र एवं स्वागत गीतों का पाठ किया। गुरूकुल एवं आर्य जनता ने श्री मूना से बाजार में खुले रूप से मांस तथा अण्डे न बिकने देने की जोरदार माँग की। श्री मूना ने गुरूकुल की यज्ञस्थली को पवित्रभूमि बताते हुए संस्कृत और वेद तथा वैदिक संस्कृति को राष्ट्र का प्राण बताया। गुरूकुल के प्रधानाचार्य श्री मधुर शास्त्री ने आर्थिक विपन्नता में भी आशा से अधिक सफलता मिलने पर प्रसन्न मुद्रा में विद्वानों, आर्यसमाज कासगंज, आर्य जनता तथा जनता जनार्दन के सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करते हुये धन्यवाद किया।

दूसरा कोई रास्ता नहीं

श्री जगदीश विद्यार्थी,
उपदेशक विद्यालय, टंकारा।

देश के नौनिहालों वीर माता के सपूतो आर्यावर्त के आर्य वीरो क्या तुम्हें यह पता है कि हम सब उस देश के वासी हैं जहाँ सर्वप्रथम ईश्वर पुत्र आर्यों का उद्भव हुआ था। जहाँ पहले पहल मानवता ने आँखें खोली थीं। जहाँ ईश्वर ने योग्य ऋषियों को वेदज्ञान दिया था। जब संसार के अन्य देशों के अस्तित्व का पता तक किसी को नहीं था, तब भी हम भारत में आबाद थे। हमने ही सबसे पूर्व ज्ञान का विकास किया। चक्रवर्ती राज्य स्थापित किये, हमें ही जगत गुरू बनने का सौभाग्य मिला। क्या तुम्हें यह भी पता है कि हम कितने पुराने हैं, सृष्टि कितनी पुरानी है, वेद कितना पुराना है तथा अपने को सबका आदिमूल कहने वाली जातियाँ कौन हैं, कहाँ से आई है और कितनी पुरानी हैं? नहीं, तुम्हें यह सब कुछ भी पता नहीं है क्योंकि तुम्हें पढ़ाया ही नहीं यह तुम्हें तो आजतक यह रटाया गया है कि आर्य भारत के निवासी नहीं हैं। ये बाहर से आकर बस गये हैं। वेद कोई ईश्वरीय ज्ञान नहीं, ये तो गड़ारियों के गीत हैं। तुम यही पढ़े हो कि हम पर सदा विदेशी शासन करते रहे हैं और हम शासित रहे हैं। ईश्वर ने हम भारतीयों को शासित रहने के लिये ही बनाया है। क्योंकि हम मूर्ख हैं, पिछड़े हैं, जंगली हैं, हममें शासन करने की योग्यता नहीं है। और हममें यह भावना इतनी कूट-कूट कर भर दी गई है कि अब हम यह सोच ही नहीं सकते कि हम ही सब विद्याओं के आद्यप्रवर्तक आचार्य थे। हम सियार नहीं शेर बनकर सदा ही जिये हैं। हम शासक बनने की कल्पना तक नहीं कर सकते। अब हम परतन्त्र रहने के इतने अभ्यस्त हो गये हैं कि परतन्त्रता, परतन्त्रता हीनहीं लगती है, जंजीर को ही एक मात्र सहायक मान बैठे हैं। वर्षों कारागार मे रहने वाले कैदी की तरह दुख सहने तथा परतन्त्र रहने के अभ्यस्त हैं। चिरकाल पर्यन्त विदेश मे रहने वाले को जैसे अपना घर परिवार भी नया सा प्रतीत होता है, अपने घर से पहले की भाँति लगाव नहीं होता है। जिस स्थान से पहले भाग आने की इच्छा होती थी अब वहा स्थान छोड़ना नहीं चाहता है। आज हमारा यही हाल है। विदेशी धुन ऐसी सवार है कि हम विदेशों की प्रशंसा करते नहीं थकते हैं। अब अपना कोई सिद्धान्त हमें पसन्द नहीं है। हमारे सब सिद्धान्त, खान पान, रहन सहन, वेश भूषा, भाषा तथा संस्कृति पुराने हो गये हैं इसीलिये त्याज्य समझते है। हमे तो अब वही सब कुछ पसन्द है जो विदेशी करें। हाय, कितनी शोक की बात है, जितना हम स्वाधीनता के पूर्व नहीं खोये थे उससे अधिक आज तथाकथित स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोये हैं। देश खोये, सभ्यता खोये, संस्कृति खोये, जाति खोये और धर्म भी खोते जा रहे हैं। ईसाई तथा इस्लाम के प्रचार-प्रसार तथा अत्याचार पहले से भी अधिक जोरो पर हैं। भारत माता के छोरों पर प्रत्यक्ष रूप से ईसाई अपना प्रभुत्व कायम कर चुके हैं तथा इनका पोषण अप्रत्यक्ष रूप से हृदय में स्थित राजीव और सोनिया की सरकार कर रही है। देश का 12/ भूभाग ईसाइयों से ढक चुका है तथा षडयन्त्र दिनानुदिन उत्तरोत्तर तीव्रतर होता जा रहा है। इधर शहाबुद्दीन भारत को इस्लामी मुल्क बनाने की कपट चाल चल रहा है। हमारा रहा सहा अस्तित्व भी लुप्त प्राय है। जिस गति से ये बढ़ रहे हैं, गति निर्बाध रही तो बीसवीं सदी पार कर हम अपने को अपने ही स्थान में पायेंगे कि हम मुस्लिम राष्ट्र के नमाजी मुसलमान हैं और इसे आज के पतित समन्वयवादी हिन्दू नाम को सार्थक करने वाली जाति स्वीकार भी कर लेगी। क्योंकि ये स्वाभिमान से मुक्त है, विदेशियों के सनातन दास हैं, उनके निर्जीव खिलौने हैं। परन्तु आर्यो क्या हम भी यह सब अत्याचार सहन करने को तैयार हैं? तो फिर कौन बचायेगा देश को, जाति को, धर्म को, भाषा तथा संस्कृति को? हमें तो आर्यों के सिवा किसी से रन्च मात्र भी आशा नहीं है जो वेद और ऋषि दयानन्द के मान्यताओं को साकार धरती पर उतार सकें। और इसे आर्यगण भी सब अच्छी प्रकार जानते हैं। फिर भी न जाने क्यों संसार को इस प्रकार सन्ताप की आग में जलता देखते हुए भी चुप्पी साधे हैं। सब अत्याचारों को देखकर चुप रहना आर्यों का काम नहीं, बल्कि अत्याचारियों से अधिक पापियों का काम है। यह दयानन्द की शिक्षा नहीं है। दयानन्द तो सदा जगे रहे और सबको जगाये, अन्याय के विरुद्ध लड़े और लड़ना सिखाये। सहने की भी सीमा होती है। हम बहुत सहकर देख लिये। अब अति हो रही है। अब असहय है। इनकी बहुत उन्नति हो चुकी, अब हमारी बारी आई है उन्नत होने की, शासन करने की। ये विनाश के लक्षण प्रकट कर रहे हैं। हमें केवल मैदान में आना है, निमित्त बनना है, विजय हमारे हाथ में है। **कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।**

कैसे फैले ये सम्प्रदाय ? - आर्यो जिस"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" "चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापन" जैसे महान उद्देश्यों को लेकर हम चल रहे हैं वे क्या वर्तमान रीति नीतियों पर चलकर प्राप्त कर सकेंगे? इस नीति से क्या संसार का कोई भी मत, पन्थ सम्प्रदाय या विचारधारा विश्वव्यापी हो सकी है? उत्तर है नहीं। इतिहास इसका साक्षी है।

कोई भी विचारधारा बिना शासन सूत्र को अपने हाथ में लिए संसार में अपना सिक्का नहीं जमा सकी है ।

आज संसार में सबसे अधिक ईसाई हैं तो इसका कारण सबसे अधिक स्थानो पर उनका राज करना ही है। कल के जन्मे इस्लाम ने भी इतनी तरक्की करने को कोई दूसरा कारण नहीं है। जितने भी मुगल बादशाह आये सब का उद्देश्य धर्म प्रचार करना था। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए शासन सूत्र अपने हाथ में लिये और सफलता प्राप्त की। बौद्ध धर्म को आज संसार के बहुत से देश मानते हैं, बहुत अधिक प्रचार हुआ क्यों इसलिए कि सम्राट अशोक ने इसे अपनाया और प्रचार करवाया अन्यथा कितने अन्य मतों की तरह इसका भी नाम मात्र शेष रहता। इन सब उदाहरणों से विदित होता है कि वही विचारधारा दुनियाँ में शीघ्र तथा व्यापक रूप से फैल सकी जिसके प्रचारक खुद शासक थे। हमारा भी इतिहास यही कहता है कि जब तक आर्यों का राज्य रहा संसार में कोई अन्य मत सम्प्रदाय न फैल सके। सर्वत्र वैदिक धर्म का गान और मान होता था।

आज हमारी दुर्दशा का मुख्य कारण आर्य शासक का अभाव ही है। हमने उस सूत्र को भुला दिया जिससे इन समस्याओं का पल भर में समाधान हो सकता था। यही सोच कर ऋषि दयानन्द राजाओं को आर्य बनाने का यत्न करते थे। इसलिए उन्होंने स्वतन्त्रता के साथ-साथ चक्रवर्ती साम्राज्य का मन्त्र दिया। इस ओर आर्यों का ध्यान गया भी कांग्रेस में 85/ आर्य ही थे। आर्यों के त्याग और बलिदान से ही स्वराज्य मिला किन्तु जब सुराज्य बनाने का समय आया तो ये राजनीति को गन्दी कहकर मुहँ फेर लिए और बिना शासन के ही "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का स्वप्न देखने लगे। आज सौ वर्षों में जो प्रगति आर्य समाज की हुई है, और जो ईसाई मुसलमानों का हुआ है, वह सबके सामने है। यह कच्छप गति तो तभी सफल हो सकती है जब खरगोश प्रमाद करता हो, किन्तु हम देख रहे हैं शत्रु उत्तरोत्तर अधिक सशक्त और सजग होते जा रहे हैं। उनकी अपेक्षा हमारा प्रयास "ऊँट के मुँह में जीरा" के बराबर है।

अतः सब आर्यों से विनम्र निवेदन है कि इस बात पर सब विचार करें और विकास का सही रास्ता खोज निकालें। हम तो ऐसा समझते हैं कि जब तक शासन की बागडोर आर्य नहीं सम्हालेंगे दुनियाँ में सुख, शान्ति नहीं हो सकती और न ही हमारा विश्व को आर्य बनाने का प्रयास ही सफल हो सकेगा सब अरण्यरोदनवत् निष्फल होगा।

गुरुकुल कण्वाश्रम का वसन्तोत्सव

गुरुकुल महाविद्यलय कण्वाश्रम का वार्षिकोत्सव दिनांक-10,11,12 फरवरी सन् 1989, को निश्चित किया है। इस शुभावसर पर सर्व श्री स्वामी जगदीशवरानन्द जी महाराज, श्री रामनाथ सहगल, मन्त्री, आर्य प्रादेशिक सभा, श्री राम चन्द्र विकल, सांसद, श्री प्रो0 वेद व्यास जी, श्री सत्यानन्द मुंजाल, हीरो साईकिल प्रा0लि0, श्री राम प्रसाद वेदालंकार, उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी, विश्व विद्यालय हरिद्वार, प्रसिद्ध भजनोपदेशक आदि पधार रहे हैं।

xxxxxxx

- **आर्य समाज हनुमान रोड, नईदिल्ली** का 66वाँ वार्षिकोत्सव 11 दिसम्बर से 18 दिसम्बर 1988 तक बड़े भव्य रूप व उल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर वेद सम्मेलन आदि कई सम्मेलन हुये जिसका जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा।

- **आर्य समाज बाराबंकी** का 98वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 9,10,11,12 फरवरी 1989 को होना निश्चित हुआ है। क्षेत्रीय जनता से अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने की प्रार्थना है। -मन्त्री .

मौलिक प्रजातांत्रिक इकाइयों का पुनर्गठन

"जो लोग ऊपरी चोटी पर हैं और जो लोग जमीन पर हैं उनके बीच बहुत बड़ी खाई है। अगर हम प्रजातंत्र लाना चाहते हैं, तो यह जरूरी है और अनिवार्य हो जाता है कि न केवल इस खाई को पार किया जाय बल्कि इस गहराई को भी पाटा जाय।"

-जवाहरलाल नेहरू

मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रजातंत्र की मौलिक इकाइयों को सुदृढ़ बनाने के संकल्प को पूरा किया। 74000 ग्राम सभाओं, 900 ब्लाक समितियों, 672 नगरपालिकाओं, 636 नोटीफाइड एरिया तथा टाउन एरिया के चुनाव पूरे किये। जिला परिषदों के चुनाव की प्रक्रिया जारी है।

राज्य सरकार ने कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं तथा कई कदम उठाये हैं, ताकि विकास की गति में और तेजी आये। इन सब की झांकी यह स्पष्ट करती है कि सरकार कमजोर वर्गों को विकास का लाभ शीघ्र पहुँचाने के लिए कितनी तत्पर और उत्सुक है।

× सहकारी संस्थाओं का सुदृढ़ीकरण।
× किसानों को पर्याप्त सुविधाएं देने के लिए विशेष अभियान।
× ग्रामीण क्षेत्र में गरीबों के लिए 2·50 लाख मकान बनाने की महत्वाकांक्षी योजना।
× ग्रामीण क्षेत्रों में 10 घन्टे की अबाधित विद्युत आपूर्ति।
× राज्य विद्युत द्वारा खराब ट्रांसफार्मरों को बदलने का अभियान।
× कमजोर वर्गों विशेषतः अनुसूचित जातियों/जन-जातियों के घरों में प्रकाश के लिए "कुटीर ज्योति" योजना।
× एक जगह कृषि उपकरण-उर्वरक, बीज, कीटनाशक दवाएं उपलब्ध।
सिंचाई सुविधाओं के विस्तार के लिए 2·12 लाख निःशुल्क बोरिंग।
× गन्ना उत्पादकों को पहली बार पूरे प्रदेश में गन्ने का एक समान 34 रु0 प्रति कुन्तल के हिसाब से बढ़े हुए दाम।
× सड़कों तथा संचार प्रणाली के आधुनिकीकरण की योजना।
× 100 करोड़ रुपये की लागत से 13500 प्राइमरी स्कूल के भवनों का निर्माण।
× नोएडा के पद्धति पर पूर्वांचल के लिए गोरखपुर में औद्योगिक प्राधिकरण।
× गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले परिवारों के कम से कम एक व्यक्ति को रोजगार देने के लिए पाँच लाख खादी ग्रामोद्योग इकाइयां और तीन लाख लघु स्तरीय इकाइयां।
× 46 करोड़ रुपयों की लागत से इलेक्ट्रानिक आस्थानों तथा इलेक्ट्रानिक इकाइयों की स्थापना।
× राज्य सरकार द्वारा अपने कर्मचारियों की लम्बे समय से चली आ रही समस्या के समाधान हेतु ऐतिहासिक निर्णय। केन्द्रीय कर्मचारियों के समान वेतनमान देने का निर्णय। वेतनमानों के निर्धारण के लिए एक वेतन समता समिति गठित।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश।

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं० एल०डब्ल्यू/एन पी 79
माघ कृष्ण 7
29 जनवरी रविवार, 1989 ई०

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

अमर रहे गणतन्त्र महान

{श्री राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर}

भारत माता के प्रांगण में
इसने खुशियाँ हैं बिखरायी।
जन-जन में समता की पावन-
नूतन जाग्रत ज्योति जगायी।

है प्रतिबिम्ब समृद्धि सुखों का-
भारत माँ की है यह शान ।
अमर रहे गणतन्त्र महान ।।

यह गणतन्त्र महान हमारा -
देता रहा हमें है शक्ति ।
देश चढ़ा उन्नति शिखरों पर -
जाग्रत हुई राष्ट्र प्रति भक्ति ।

गौरव है गणतन्त्र, [illegible]
अमर शहीदों का अभिमान ।
अमर रहे गणतन्त्र महान ।।

इसकी रक्षा में निशि-वासर-
सतत सभी हैं हम कटिबद्ध ।
देश महान बनाएंगे हम -
संकल्पों से हम प्रतिबद्ध ।

यह गणतन्त्र सिखाता हम को
पावन त्याग तथा बलिदान ।
अमर रहे गणतन्त्र महान ।।

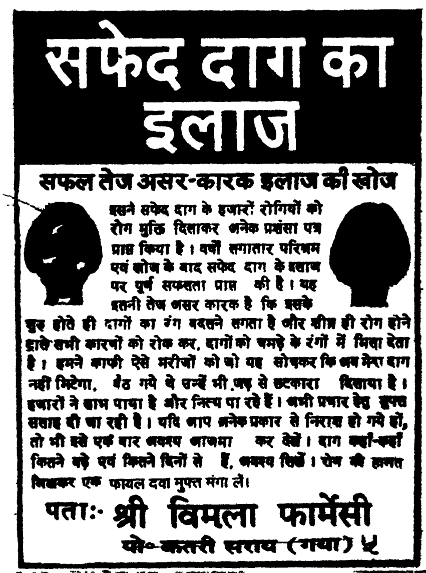
आवश्यक सूचना

सभी आर्य सज्जनों को विदित ही है कि, हमारे द्वारा प्राचीन अप्राप्य शास्त्रार्थों का संग्रह तीन भागों में- "निर्णय के तट पर" नाम से प्रकाशित हो चुका है, जिसमें लगभग एक सौ शास्त्रार्थों का समावेश किया जा चुका है। परन्तु हमारे पूर्ण प्रयास के बावजूद भी जो सामग्री इन खण्डों में नहीं आ पाई उसे अब इस ग्रन्थ के भाग- 4 में प्रकाशित किया जा रहा है। जिसको लागत मात्र मूल्य केवल अस्सी रु0 में बुक किया जा रहा है।

आप अभी केवल 30/-रु0 भेज कर अपनी प्रति बुक करा सकते हैं। शेष 50/-रु0 ग्रन्थ के तीन हिस्से छपने पर मँगा लिये जायेंगे। यह छूट केवल 31 मार्च 1989 तक ही रहेगी। इसके बाद यह ग्रन्थ 200/- रु0 में मिलेगा। ग्रन्थ की प्रतियाँ बुकिंग के आधार पर ही छपेंगी। ग्रन्थ की सामग्री व प्रारूप को देखकर आप चकित रह जायेंगे। क्योंकि यह कार्य किसी व्यापारिक दृष्टिकोण से नहीं किया जा रहा, बल्कि - "पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज" की अन्तिम इच्छा को पूर्ण करने हेतु किया जा रहा है।

आशा है आप लोग स्वामी जी की अन्तिम इच्छापूर्ति में अधिक से अधिक प्रतियों के ग्राहक बन कर यश एवं पुण्य के भागी बनेंगे।

निवेदक-
लाजपत राय अग्रवाल,
{संचालक}
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग,
1058 विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद।



स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य ओ३म् मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

जि० सं० 2241/57 माघ कृष्ण 14 , रविवार, संवत् 2045 वि०, दिनांक 5 फरवरी 1989 घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85



नव पलाश पलाश वन पुरः

नव संवत्सर की पूर्वसन्ध्या पर अपने शीतल मन्दसुगन्ध समीरण की सर्वत्र मादकमोहकता बिखेरने वाले आर्यजनवाटिका के सुरभि मनोहारी बसन्त! हम तेरा स्वागत करते हैं। हम आर्यों के जीवन में नव प्रेरणा और नव शक्ति के प्राण फूंक दे जिससे हम संसार को सुरभित कर सकें-

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम०ए०,

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०,

साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु०251/-
वार्षिक	रु० 30/-
छमाही	रु० 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	91
अंक	6

मेरा रंग दे वसन्ती चोला

सृष्टि के आदिकाल से ही आर्यों में पर्वों को मनाने की परम्परा चली आ रही है। इसी तारतम्य में हम होली, दीपावली आदि सांस्कृतिक पर्व मनाते आ रहे हैं। सृष्टि के विधान में ऋतु परिवर्तन के साथ ही हमारी सांस्कृतिक परम्परायें इस प्रकार जुड़ी हुई हैं कि हम अपने को उनसे किसी भी प्रकार पृथक नहीं कर सकते। नवसस्येष्टि यज्ञ (होली) आर्यों का मुख्य पर्व माना जाता है जो ऋतु के अनुसार प्राप्त हुए अन्न को यज्ञ रूपी परमात्मा को समर्पित करने के पश्चात हमारे भोज्य का पात्र बनता है। यद्यपि इस सांस्कृतिक त्यौहार के साथ अनेकों ऐतिहासिक कथाएं भी जोड़ दी गयी हैं। और हम पारस्परिक मिलन को भी इस पर्व का अंग समझते हैं।

इसी प्रकार बासन्ती पर्व हम आर्यो के लिए ओज तथा शौर्य के प्रति आराधना की प्रेरणा देने वाला महान पर्व माना जाता है। वेद में कई स्थानों पर यजमान के प्रति शुभकामनाएं प्रकट करते हुए उसे सौ बसन्त देखने का आशीर्वाद दिया गया है और अनेक स्थानों पर इस ऋतु को उल्लास और वीरता का प्रतीक मानते हुए जीवन को उल्लासमय बनाने का परमात्मा का आदेश बताया गया है। कहा जाता है कि सृष्टि का प्रारम्भ इसी ऋतु से हुआ था और **भगवान श्री कृष्ण** ने भी गीता में सब ऋतुओं में सर्वश्रेष्ठ ऋतु **"बसन्त"** ही बतलायी हैं आध्यात्मिक दृष्टि से इस ऋतु को आर्यावर्त में फूलते-फलते सर्षप-पादप के पीले रंग को अपनाते हुए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अनेक व्याधियों का नाश करने वाला यह पीला रंग बतलाया गया है। जिस प्रकार इस ऋतु में शीतल मंद सुगन्ध समीरण युक्त अनिल के झोंके वातावरण में मादकता भर देते हैं और हृदय उल्लास से भर जाता है उसी प्रकार ब्रह्मचर्य जीवन में गुरुकुल में पढ़ने वाले विद्यार्थी को पीला वस्त्र पहना कर हम आर्यों ने उसे तेज और मेधा का मूर्तिमन्त प्रतीक बना दिया है।

विधाता की सर्वश्रेष्ठ एवं अद्भुत कृति भुवन भास्कर की किरणें भी अपनी पीली रश्मियों से संसार को प्रकाशवान बनाती हैं। इसी प्रकार हम परमात्मा के ज्ञानालोक को धारण करने वाले पीतवस्त्र धारी ब्रह्मचारी को राष्ट्र और समाज की शाश्वत इकाई मानते हैं। इसी बासन्ती रंग को पहन कर हमने राष्ट्र और समाज के लिए अगणित कुर्बानियां दी हैं। और इसे धर्म का स्वरूप मानते हुए अपनी आत्मा को बासन्ती रंग में रंग दिये जाने की मनोकामना की है।

इसी बासन्ती चोले में रंगे हुए हमारे ऋषि मुनि-शावकों ने संसार में ज्ञान की ज्योति जलाई थी। इसी रंग में रंगे हुए परिधानधारी हमारे **राम** और **पीताम्बर-धारी कृष्ण** ने शौर्य और उल्लास से राक्षसों का विनाश करके शान्ति का सन्देश फैलाया, वीर **शिवा** और **राणा प्रताप** के परिधानों का भी यही रंग था और इसी बाने को सिर पर धारण करके हमारे वीरों ने देश और समाज की रक्षा में अपने को आहुत किया था ।

आर्य समाज इस श्रेष्ठतम ऋतु के पर्व पर अपने सब भाइयों का अभिवादन करता है और प्रभु से प्रार्थना करता है कि हमारा यह बासन्ती चोला उल्लास से भर कर संसार में नव जागरण का सन्देश सुनाये।

आज हमारे सामाजिक जीवन में जो कुंठा और निराशा व्याप्त है उसे इस पर्व सन्देश से तिरोहित करके जिस प्रकार प्रकृति नव अंकुर के साथ उल्लास और मादकता का वातावरण सृजित कर देती है उसी प्रकार हम लोग जन जन में उल्लास और उमंग का वातावरण सृजित करके अपने समाज को नवयौवनता प्रदान करने में सक्षम हों यही **आर्य मित्र** की **कामना** है ।

> हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
> आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
>
> --राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- माघ कृष्ण । संवत् 2045 5 फरवरी 1989
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

पराकाष्ठा ....

नैतिक पतन की

हमारी वैदिक परम्परा मे नारी को परम आद्यशक्ति एव सृजनशक्ति का आदिस्रोत बताते हुए उसे परमपूज्यनीय आस्पद दिया गया है। मानव की वह सृष्टा ही नहीं अपितु प्रथम आचार्या एव गुरु भी है-- "मातृमान् पितृवान् आचार्यवान् पुरूषोवेद" । पुरूष जो कुछ भी है उसकी सृजनशीलता और चरित्रशीलता मे माता का सबसे बड़ा योगदान माना जाता है। इसीलिए "मातृवत् परदारेषु" की भावना हमारे समाज में आई और महाराज मनु ने तो यहाँ तक कह दिया- "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः, यत्रेतास्तु न पूज्यन्ते भक्त्य-सफलाः क्रियाः" जिस देश में नारियो का सम्मान होता है वहाँ देवताओ का आवास होता है और जहाँ उनका अपमान होता है वहाँ सारी व्यवस्थाएं और प्रक्रियाए असफल हो जाती है। वह एक जननी {माँ} है और पुरुष संसार मे कदाचित सभी ऋणों से उऋण हो सकता है पर माँ के ऋण से कभी भी उऋण होना असम्भव है। परमात्मा की इस महनीया, कमनीया और पूज्यनीया कृति में परमात्मा ने अगणित गुण गौरव गाथाएँ छिपा रखी हैं। वस्तुत. आज यदि नारी न होती तो संसार में कहीं भी ममता, करुणा, दया, स्नेह और त्याग के दर्शन न होते। इसीलिए जयशकर प्रसाद ने कहा था --

> नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजतनग पग तल में।
> पीयूष स्रोत सी बहा करो,जीवन के सुन्दर समतल मे।।

पुरूष यदि चन्द्र है तो नारी उसकी शीतल किरण है जो उसके जीवनसंसार को अपनी शीतल किरणों से आप्लावित कर देती है। पुरूष यदि सूर्य है तो नारी उसकी प्रखरज्योति है जो अपने ममताभरे प्रकाश से उसके जीवनजग को जगमग कर देती है। पुरूष की इस महान् शक्ति को विकृत रूप मे प्रस्तुत करना, देखना और दिखाना घोर पाप है। न यह वैदिक परम्परा है और न मानवीय नैतिकता। योरोप तथा कई अन्य देशों में उन्हे मनुष्य की उद्दामवासना की पूर्ति करने वाली जीवरहित उपकरण मात्र माना जाता था। कुरआन में तो उन्हे खेतियों से उपमा देते हुए एक स्थान पर लिखा है- "ऐ मुसल्मानो! बीवियाँ तुम्हारे लिए है मानिन्द खेतियाँ इन्हे हरम मे लाओ और इनसे इस्लाम की पैदावार बढ़ाओ- मानिन्द खेतियाँ" । बाईबिल के अनुयाइयों ने तो नारी को बिल्कुल नंगा ही कर दिया है। उनकी दृष्टि मे यौनसम्बन्ध की पवित्रता कोई मायने ही नहीं रखती है। इसी प्रकार रीतिकालीन कवियों की कल्पना को साकार रूप देने वाली अनेक वीभत्स, अश्लील और कामुक प्रवृत्तियाँ हमारे सामाजिक जीवन का अग बनती जा रही हैं - इससे अधिक लज्जा की बात हमारे लिए और क्या हो सकती है। यह हमारा सामाजिक पतन है।

हम यहाँ वाल्मीकि जी की रामायण से वह प्रसग प्रस्तुत करना चाहते हैं जब सीता जी को रावण अपहरण करके ले जाता है। रास्ते मे सीताजी के आभूषण पृथ्वी पर गिर जाते है जिनमें नूपुर भी है कगन भी है। राम इन आभूषणो को देखकर लक्ष्मण से पूछते हैं- "पहिचान करके बता तो सही यह सभी आभूषण सीता के ही हैं ?" - कितना सुन्दर उत्तर प्रस्तुत किया है छोटे भाई लक्ष्मण ने -" नूपुरमेव जानामि नैव जानामि कंकणम्" मैं केवल उनके चरणों में पहिने जाने वाले नूपुरों को ही पहिचानता हूँ हाथ में पहिने जाने वाले कंगनों को नहीं क्योंकि मैंने चरणों के अलावा उनके किसी अंग को देखा ही नहीं है। ऐसा था आदर्श हमारे भारतीयो का नारी के प्रति।

ऋषि दयानन्द ने लिखा है गुरुकुलों में पढ़ने वाले बालकों बालिकाओं के शिक्षण संस्थान दूर होने चाहिए। दोनों का एक दूसरे के संस्थानों में प्रवेश निषेध हो। मानव मन की दुर्बलताओं को समझते हुए उन्होने ब्रह्मचर्यावस्था में एक दूसरे के दर्शन सम्भाषण आदि तक का निषेध कर प्राचीन गृहस्थ जीवन में भी ससयमित रहकर जीवन के "तट पर" का उपदेश दिया था। इस आदर्श में ढली हुई नारियाँ शास्त्रार्थी पुरूष शक्ति और मेधा के पुंज हुआ करते थे। मन स्फटिक मणि के समान उज्वल और पवित्र रहता था ।

गत 24 जनवरी को समाचार पत्रों में "भारत सुन्दरी-प्रतियोगिता" के आयोजन के समाचार को पढ़कर दुख हुआ, विशेषतया इसलिए कि किसी समाचार पत्र सम्भवतः "ईव्ज वीकली" ने यह आयोजन बम्बई में किया। इस प्रतियोगिता के प्रारम्भक दौर नई दिल्ली, कलकत्ता, बगलौर मे हुए और अन्तिम दौर में सम्पन्न हुई फाइनल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए बम्बई मे सम्पन्न घराने की नवयुवतियाँ सम्मिलित हुईं। यद्यपि आयोजको ने कहा कि वे सौन्दर्य के मापदण्डों के आधार पर ही भारतसुन्दरी का चयन नहीं करते बल्कि बुद्धि की कुशाग्रता को भी परख की जाती है। परन्तु वास्तविकता यह है कि इस प्रकार की सौन्दर्य प्रतियोगिताओ के पीछे मानसिक कामुकता एवं अश्लील अगप्रदर्शनो के माध्यम से उनको अधिक से अधिक नग्न रूप में देखने की कलुषित प्रवृत्ति ही दृष्टिगोचर हो रही है। इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ भारतीय परम्परा एवं संस्कृति के सर्वथा विपरीत है स्व0 राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन ने अपने जीवनकाल में इस प्रकार की सौन्दर्य प्रतियोगिताओं को हतोत्साहित करते हुए भारत सरकार से इसे प्रतिबन्धित करने की माँग की थी। हम उस महान आत्मा के उन विचारों का समर्थन करते हुए भारत सरकार से इस प्रकार की "प्रतियोगिताओं" पर तुरन्त पाबन्दी लगाये जाने की जोरदार माँग करते हैं।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

आवश्यक सूचना

सर्वसाधारण के सूचनार्थ निवेदन है कि उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ का कार्यालय तथा आर्यमित्र के कार्यालय का समय आगामी फरवरी 1, 1989 से प्रात 11 बजे से सायंकाल 6 बजे तक का कर दिया गया है ।

सभामन्त्री।

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाता है कि आर्य सभासद् उन्हीं सदस्यों को घोषित करें, जो रु05/- अथवा अधिक मासिक चन्दा देते हों।

2- ग्यारह आर्य सभासदो से कम का आर्यसमाज नहीं माना जायगा।

3- आर्य सभासदो की सूची घोषित कर 28 फरवरी तक अपने समाज का निर्वाचन अवश्य सम्पन्न करे।

-मनमोहन तिवारी,
सभा मन्त्री।

मान्य विद्ज्जनों की सेवा मे नम्र निवेदन--

आगामी शिवरात्रि के अवसर पर आपका प्रिय आर्यमित्र अपना विशेषांक बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित करने जा रहा है। मान्य विद्ज्जनों, उदीयमान आर्य युवको, बालकों एवं विदुषी-महिलाओं से नम्र निवेदन है कि उक्त अक मे प्रकाशनार्थ अपने सुरुचिपूर्ण लेख/कविता/कहानी आदि मुझे स्पष्ट अक्षरों मे कागज के एक तरफ लिखे हुए अथवा टाइप किए हुए, बिलम्बतम 20 फरवरी 1989 तक अवश्य भेज देने की कृपा करें ।

इन्द्रदेव पाठक,
प्रबन्ध सम्पादक।

विधि व्यवस्था की विडम्बना

{श्री महावीर सिंह -सीनियर एडवोकेट-भूतपूर्व जज इलाहाबाद हाईकोर्ट}

{ मा0 जस्टिस श्री महावीर सिंह, भू0पू0 जज इलाहाबाद हाईकोर्ट आर्य जगत की उन अन्यतम विभूतियों में हैं जिन पर आर्यसमाज को गौरव है। अपनी निष्पक्ष न्यायप्रियता के लिए प्रसिद्ध परम सिद्धान्तवादी आदर्श वैदिक प्रेमी श्री सिंह ने न्यायालय में पक्ष विपक्ष द्वारा सत्यनिष्ठा के साथ बयान देने के औचित्य को सिद्ध करते हुए पू0 स्वामी वेदमुनि परिव्राजक की भावनाओं से असहमति व्यक्त नहीं की है। केवल परम्परागत नैतिक भावना को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से बयान देने वाले व्यक्ति की मानसिकता को सत्योन्मुख करने के लिए ही प्राविधान का औचित्य बताया है ------

{ सम्पादक }

आर्य मित्र के दिनांक 25 दिसम्बर 1988 के अंक में श्रद्धेय स्वामी वेदमुनि परिव्राजक जी ने उपरोक्त विषय पर लेख में वर्तमान विधि-व्यवस्था की दो बातों पर अपनी मानसिक दृढ़ता बताई है। जिस प्रकार से उन्होंने उन बातों पर अपने विचार व्यक्त किये हैं, उससे अवश्य विधि के इन सिद्धान्तों में कुछ कमी नजर आती है, परन्तु यदि गहराई से विचार किया जावे तो इन सिद्धान्तों में कोई कमी नहीं है, जो कुछ है, वह उनके कार्यान्वयन करने वालों की है।

स्वामी जी ने शपथ के सिद्धान्त की पृष्ठ भूमि में स्वर्गीय श्रीमती गाँधी के शपथ न लेने वाले मामले की चर्चा की थी। लेकिन जिस कारण श्रीमती गाँधी ने शपथ लेने से इन्कार किया था, वह बिलकुल उस प्रश्न से अलग है, जो स्वामी जी ने इस सिद्धान्त के औचित्य के बारे में कहा है। उन्होंने शपथ पर बयान देने से इस कारण इन्कार किया था कि हो सकता है कि इस आयोग की रिपोर्ट के आधार पर उन पर मुकदमा चलाया जावे और इस तरह अभी बयान देने से उनके बचाव पर प्रभाव पड़ सकता है।

शपथ पर बयान देने का प्राविधान पहले शपथ अधिनियम 1873 में किया गया। अब विधि आयोग की सिफारिशों को मानते हुए उसके बदले "शपथ अधिनियम 1969" बनाया। वैसे दोनों अधिनियमों के अनुसार प्रत्येक गवाह के लिए बयान देने से पहले "शपथ" लेना आवश्यक किया गया है। यह "शपथ" ईश्वर के नाम पर या सत्य निष्ठा पर ही ली जा सकती है।

न्यायालय का कार्य विवादित मामलों में "सत्य" का पता लगाना है। चूंकि न्यायालय व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर निर्णय नहीं करते हैं और न कर सकते हैं {ऐसी जानकारी होने पर उन्हें मामला अन्य न्यायालय को भेज देना होगा}, बल्कि उसी जानकारी पर करते हैं जो गवाहों व दस्तावेजों पर दिखती है, इसलिए ऐसे माध्यम की आवश्यकता हुई कि गवाहों को सत्य कहने के लिए प्रेरित किया जावे। इसके लिए यही तरीका उपलब्ध हुआ कि उनको शपथ देकर बयान लिया जावे। शपथ यदि **"ईश्वर के नाम पर"** ली है, तो यह समझा जाता है कि वह **"ईश्वर"** के डर से सही बयान देगा।

यह ठीक है कि यह सब गवाह की अपनी "नैतिकता" पर निर्भर है कि वह सत्य ही कहे। जो "सत्य निष्ठा" पर बयान देते हैं, उनके लिए "सामाजिक आलोचना" ही उन्हें सत्य कहने को प्रेरित कर सकती है। वैसे शपथ न लेने पर भी प्रत्येक गवाह की धारा 7 शपथ अधिनियम के अनुसार सत्य कहने की जिम्मेदारी हट नहीं जाती।

यह भी ठीक है कि बिना शपथ के भी सत्य बोला जा सकता है, परन्तु दण्ड संहिता में झूठ बोलने पर वही दण्ड दिया जा सकता है, जहाँ गवाह "शपथ" पर बयान करता है। वैसे यदि यह प्रथा समाप्त कर दी जावे, तब भी यह प्राविधान किया जा सकता है कि न्यायालय में असत्य कहने पर दण्ड दिया जा सकता है।

यह भी ठीक है कि आजकल अधिकतर गवाहान पर शपथ का प्रभाव नहीं पड़ता है और वे जो सोचकर आते हैं, उसके अनुसार बयान देते हैं। परन्तु क्या इस कारण यह प्राविधान समाप्त कर देना चाहिए?

यदि कोई प्राविधान अच्छा है, परन्तु उसका प्रभाव नहीं पड़ता है, तो उसमें संशोधन करके प्रभावी बनाया जावे या यदि वह बिल्कुल निरर्थक हो गया है तो उसे समाप्त भी किया जा सकता है। वास्तव में उसे प्रभावी बनाने को नया शपथ अधिनियम बनाया। पहले शपथ न्यायालय का चपरासी दिया करता था। यह समझ कर कि इसका कोई प्रभाव गवाह पर नहीं पड़ता, अब शपथ दिलाने का कार्य "न्यायाधीश" द्वारा करने का प्राविधान बनाया है। यदि इसका भी प्रभाव कम है, तब कोई अन्य तरीका सोचा जा सकता है, जैसे उस "पुस्तक" पर हाथ रखकर जिसे वह अपनी धर्म पुस्तक मानता है या अपनी सन्तान के नाम पर शपथ दिलाई जावे। परन्तु यदि इसे समाप्त करना सोचा जावे तो बहुत बातों में यह सिद्धान्त लगाना होगा।

प्रत्येक धर्म में बहुत सी कर्मकाण्ड की क्रियाएं कराई जाती हैं, जैसे यज्ञोपवीत धारण कराना, सन्ध्या, हवन व अन्य-संस्कार, जैसे विवाह संस्कार का प्रभाव नगण्य ही है। संस्कारों में "संस्कृत" में कार्य करना व व्यक्तियों से बुलवाना, जब तक अधिकतर जनता इसे समझती नहीं है, अनावश्यक ही है। क्या इन समस्त क्रियाओं को इस कारण समाप्त कर दिया जावे कि उनका प्रभाव नहीं है? वास्तव में इतनी ही आवश्यकता है कि समय के अनुसार जनता की भावनाओं के अनुसार इनमें परिवर्तन करते रहना चाहिए, नहीं तो इनको समाप्त करने की भावना जोर पकड़ती जावेगी।

समाज में व्यवस्था स्थापित करने के लिए बहुत प्राविधान विधि द्वारा बनाये जाते हैं। उनके उल्लंघन करने पर दण्ड का प्राविधान है, जैसे हत्या के लिए आजीवन कारावास या मृत्यु दण्ड देने का प्राविधान है। परन्तु अधिकतर इन अपराधों को करने वाले छूट जाते हैं। इसलिए आवश्यकता उन प्राविधानों की कमियाँ दूर कर उन्हें प्रभावी बनाने की है, समाप्त करने की नहीं है।

यह ठीक है कि शपथ पर "असत्य" बयान देने वालों के विरुद्ध कोई कार्यवाही न्यायालयों द्वारा अधिकतर नहीं की जाती। परन्तु उसके लिए कठिनाई तो दोनों पक्षों की साक्ष्य पर विचार करके न्यायालय किसी एक पक्ष की बात पूर्णतः या आंशिक तौर पर स्वीकार करता है। इसका यह परिणाम निकाला जा सकता है कि दूसरे पक्ष की बात सही नहीं है। परन्तु "सही सिद्ध न" होना व उसको "असत्य" मानने में दाण्डिक विधि में अन्तर रहता है। अतः न्यायालयों द्वारा दूसरे पक्ष के गवाहान के खिलाफ वहाँ कार्यवाही नहीं की जाती जहाँ मामला "सम्भाव्यता" के आधार पर तय होता है परन्तु जहाँ एक पक्ष स्पष्टतया "असत्य" बयान करता है, वहाँ कार्यवाही की जाती है और यदि न्यायालय स्वयं न करे तो पक्षकार ऐसी कार्यवाही को कराने की प्रार्थना पत्र देते हैं। इसीलिये यह प्रश्न भी उचित नहीं कि शपथ-पत्र बयान देने पर न्यायालय द्वारा उसे स्वीकार करना आवश्यक क्यों नहीं किया जा सकता।
अतः इतना ही कहना ठीक है कि शपथ केवल एक प्रेरणा स्वरूप है। वह अपने आप में गारंटी नहीं है कि शपथ लेने वाला वास्तव में सत्य ही बयान करेगा।

इसलिये सब परिस्थितियों पर विचार करने पर यही उचित होगा कि यह प्रथा अभी रखी जावे परन्तु इसे प्रभावी बनाने को कुछ उपाय किये जा सकते हैं।

"डाकुओं की पहचान का तरीका"

दूसरी बात जो स्वामी जी ने लिखी है, वह यह है कि कथित डाकुओं को मजिस्ट्रेट के समक्ष गवाहों द्वारा पहचान करने की प्रक्रिया भी समाप्त कर देनी चाहिये। क्योंकि वास्तव में डाका इस तरह डाला जाता है कि उस समय डाकुओं की पहचान हो ही नहीं सकती और यह गवाही झूठी बताई जाती है।

जहाँ तक "सिद्धान्त" का प्रश्न है वहाँ तो यह कहा जा सकता है कि "डाकुओं" के खिलाफ अपराध साबित करने का यह एक महत्वपूर्ण तरीका है। "डाकू" अधिकतर ऐसे व्यक्ति होते हैं जो अनजाने होते हैं। उनकी "पहचान" कर ही यह कहा जा सकता है कि यह डाके में शरीक थे। लूट की सम्पत्ति बरामद करके भी अच्छी साक्ष्य होती है परन्तु अधिकतर मामलों में यह सम्पत्ति बहुत शीघ्र खुर्द-बुर्द कर दी जाती है। और वह बरामद नहीं हो सकती। मौके पर "उंगलियों" के निशान उठाकर उनकी तुलना भी कराई जा सकती है। परन्तु ये "निशान" मिलने भी कठिन हैं। जब तक विशेषज्ञ आकर इनको

लेंगे। तब तक यह मिट जाते हैं। या इन पर और निशान लग जाते हैं। वैसे ऐसी साक्ष्य के लेने की भी कोशिश होनी चाहिये। इसलिए यदि सिद्धान्ततः इस "पहचान" की साक्ष्य समाप्त की जाती है तो इस प्रकार के अपराधियों को दण्डित करना सम्भव नहीं होगा।

अब व्यवहार में क्या होता है, इस पर विचार किया जा सकता है। यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक मामले में "डाकू" इस प्रकार कार्य करें कि उनके चेहरे घरवाले व अन्य देख ही नहीं सकते। एक परिस्थिति तो स्वयं स्वामी जी ने लिखी है। जब डाकुओं के ढाटे खुल जावें। परन्तु इनके अतिरिक्त भी अन्य परिस्थितियाँ हो सकती हैं।

यह भी आवश्यक नहीं कि डाके में कोई भी व्यक्ति, जिसके घर डाका पड़ रहा है, ऐसी मानसिक स्थिति में नहीं होता कि वह डाकुओं के चेहरे नहीं देख सकता। जहाँ डाकू उनको नीचे मुँह करके बैठने को कहते हैं या उन पर कपड़ा डाल देते है, या किसी कोठरी मे बन्द कर देते हैं, वहाँ वे नहीं देख पावेंगे लेकिन जहाँ वे ऐसा नहीं करते, वहाँ एक अन्दरूनी इच्छा हर एक की होती है। कि देखे कि कौन लोग हैं। कहीं डाकू स्वयं उनको ले जाकर कमरा खुलवाते हैं। या बक्सा खुलवाते है, वहाँ तो उनको देख ही सकते हैं।

इसके अतिरिक्त पड़ोसी व अन्य बाहर के व्यक्ति शोर होने पर कभी-कभी सहायता को आते हैं। यह भी ट्रेनिंग उन्हें दी जाती है कि आने-जाने वाले रास्तो में लकड़ी व फूस जलाकर रोशनी की जावे। इसलिये आते-जाते उन्हें देखा भी जा सकता है।

क्या इस तरह के मामलों में भी जहाँ गवाहान डाकुओं के चेहरे पहचानना सम्भव है इस प्रकार की अर्थात् पहचान कि साक्ष्य विचारार्थ भी न लिया जावे यह तो एक प्रकार से बड़ी महत्वपूर्ण साक्ष्य को अलग करना हो जावेगा, जिससे अन्याय हो सकता है।

यह ठीक है कि इन मामलो में भी जहाँ डाकुओं के चेहरे नहीं देखे जा सके पुलिस ऐसी साक्ष्य बनाती है क्योंकि ऐसे अपराधियों के खिलाफ अपराध सिद्ध करवाने का यह बड़ा आसान तरीका है, परन्तु इसी कारण इस प्रकार के "साक्ष्य" को सिद्धान्ततः गलत नहीं माना जा सकता। पुलिस तो प्रत्यक्षदर्शी साक्ष्य भी बहुत मामलो मे झूठा बनाती है। तब क्या प्रत्यक्षदर्शी साक्ष्य भी विचारार्थ स्वीकार नहीं करनी चाहिये। वैसे यहाँ यह बताना उचित होगा कि न्यायालय "पहचान वाली साक्ष्य" को आसानी से स्वीकार नहीं करते। उसकी प्रत्येक दृष्टिकोण की पूरी छानबीन की जाती है और जहाँ उचित व वास्तविक लगती है, वही मानी जाती है।

आशा है कि यह स्पष्टीकरण पर्याप्त होगा। परन्तु यदि कुछ अन्य सन्देह बताये गये तो उनके निवारण का भी प्रयत्न किया जावेगा।

श्री केदारनाथ जायसवाल आर्य को शोक श्रद्धान्जलि

सुलतानपुर आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामकृष्ण-जायसवाल वरिष्ठ पत्रकार के पिता श्री केदारनाथ जायसवाल भूतपूर्व नगरपालिका सदस्य एवं भूत0 मन्त्री आर्यसमाज सुलतानपुर का 83 वर्ष की आयु में गत 9 जनवरी 1989 को स्वर्गवास हो गया। श्री केदारनाथ अपने पीछे 5 पुत्र एव धर्मपत्नी श्री मती विपती देवी तथा 2 लघु भ्राता तथा अनेक पौत्र-पौत्री भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

उनकी मृत्यु पर सुलतानपुर एव कोरवां, आर्यसमाज विमानपुरी {अमेठी} आर्य समाज ने अपनी शोक श्रद्धान्जलि अर्पित की है। दिनांक 20 जनवरी को एक बृहत यज्ञ उनके निवास पर आयोजित कर सभी आर्य बन्धुओं एवं नगर के अनेक विधायक-गण, प्रतिष्ठित नागरिकों- अध्यापक, पत्रकार, वकील, नगरपालिका-अध्यक्ष, व्यापारी, स्वातन्त्र्य सेनानी तथा अधिकारियों ने भी अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित की।

इस अवसर पर 101रु0 का दान जिला आर्यउपप्रतिनिधि-सभा को दिया गया जो श्रद्धानन्द अतिथि शाला, 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ को हस्तान्तरित किया गया।

-सभा मन्त्री।

-x-x-x-x-x-x-x-x-

वासन्ती उद्बोधन

ऋतु राज सम्भल कर आना,
व्यथित आज है माता मेरी
तुमने न पहचाना,।
मधुमय तेरा माघ महीना,
खौल रहा इत खून पसीना
भीष्म ग्रीष्म के अंगारों में,
तुम्हें तुरत जल जाना --------
नूतन कोमल किशलय तेरे,
कंटक मय है मारग मेरे,
उभय हस्त में लगी कुतरनी,
कट-कट कर गिर जाना -----
तुमने तो पीताम्बर धारा,
बदल गया है रंग हमारा,
कैसे पहने लाल धरा अब,
पीत वर्ण का बाना------
तुमने सुन्दर साज सजाया,
हमने रण का बिगुल बजाया,
कौन सुनेगा मधुकर तेरा,
रण-भेरी में गाना----
उजाड़ रहे उपवन को माली,
अब कहाँ कूक कोयल की डाली,
ठाँउ-ठाँउ जमघट काकों का
काँव-काँव कर जाना------
बीज विष के बो रहे हैं,
कफन बाँध कर सो रहे हैं
मदन उत्सव तभी मनाना,
जब "मोहन, का हो आना-------

-आचार्य मदनमोहन एडवोकेट
मोठ {झाँसी}

गरीब हिन्दुओं में कम्बल वितरण

दिनांक 16-1-89 को बुजघाट {गाजियाबाद} के नैनापुर ग्राम में बंगलादेश के विस्थापित परिवारों को पं0 इन्द्रराज जी {प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश द्वारा कम्बल वितरित किए गए। इस अवसर पर श्री पं0 इन्द्रराज जी ने विस्थापितों की दयनीय अवस्था का स्वयं दर्शन किया और उन्हे हर तरह की सहायता का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि निकट भविष्य मे सभी विस्थापित परिवारों के बच्चों तथा महिलाओं को वस्त्र की व्यवस्था करेंगे। श्री पं0 इन्द्रराज जी की पत्नी महोदया ने विस्थापित परिवारों की महिलाओं को चप्पलें, साड़ियाँ तथा अन्य वस्त्र वितरित किए। इन विस्थापितो की सहायता, सूचना में पं0 जयन्त कुमार जी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सभा मन्त्री।

वीर कवि श्याम नारायण पाण्डेय दिवंगत

हिन्दी साहित्य के वीररस के अमूल्य नक्षत्र आधुनिक भूषण पं0श्याम-नारायण पाण्डेय का लम्बी बीमारी के पश्चात् गत दिनों देहावसान हो गया वे हल्दीघाटी, जौहर आदि अनेकों वीररस पूर्ण ग्रन्थो के रचियता थे। उनके निधन से हिन्दी साहित्य की अपूर्णनीय क्षति हुई है। प्रभु उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं परिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

सभामन्त्री।

श्री सुनील शास्त्री

(व्यक्तित्व एवं कृतित्व)

{ स्वनामधन्य स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री जिनके प्रधान मन्त्रित्व में हमारा राष्ट्र प्रगति, समृद्धि और आत्मसम्मान के गौरव भरे पथ पर बढ़ता चला जा रहा था जिनके कुशल नेतृत्व में भारत की सेनाओं ने दुश्मन के हौसले पस्त करके विजय की दुन्दुभी बजा दी थी - हमारे बीच से अचानक ही उठ गये।

उनके पदचिन्हों के अनुयायी उनके पुत्र श्री सुनील-शास्त्री जो हमारे उत्तर प्रदेशीय विद्यालय प्रबन्धक महासभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं के जीवन और कृत्यों की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए हम आशा करते हैं उनके निर्देशन में शिक्षा एवं उससे सम्बन्धित प्रबन्ध व्यवस्थाओं की समस्याओं के समाधान में हम पूर्ण तया सफल होंगे -------

प्रधान सम्पादक}

श्री सुनील शास्त्री का जन्म 13 फरवरी 1950 को लखनऊ में हुआ जब उनके पिता स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री उत्तर प्रदेश सरकार में गृह तथा परिवहन मन्त्री थे। उन्होंने नयी दिल्ली के सेंट कोलम्बस स्कूल में 1955 से 1966 तक शिक्षा प्राप्त की। दिल्ली विश्वविद्यालय से उन्होंने सन् 1969में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की और उसके बाद बैंकिंग प्रबन्ध तथा जन-सम्पर्क में प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने सन् 1971में इंग्लैण्ड, बेल्जियम, पश्चिमी जर्मनी, आस्ट्रेलिया, इटली तथा फ्रान्स का भ्रमण किया और लघु तथा भारी उद्योगों को प्राप्त बैंकिंग सुविधाओं का अध्ययन किया। अपने पिता जी के साथ वे वर्मा भी गये। अपने स्वर्गीय पिता श्री लाल बहादुर शास्त्री को श्रद्धान्जलि अर्पित करने हेतु दो बार उन्होंने रूस यात्रा की। उन्होंने सन् 1983 में काठमान्डू मे प्राडक्टिविटी काउन्सिल द्वारा आयोजित प्रबन्धकीय पाठ्यक्रम का उद्घाटन किया। उत्तर प्रदेश के ऊर्जा मन्त्री के रूप मे उन्होंने जापान, फिलीपीन, थाईलैण्ड, मलेशिया, हांग-कांग और सिंगापुर का भ्रमण किया जहाँ उन्होंने विद्युत उत्पादन वितरण तथा पारेषण प्रणाली की आधुनिक विद्याओं का अध्ययन किया। जन सेवा के लिए राजनीति में आने के कारण उन्होंने बैंक की सेवा छोड़ दी। सन् 1969में कांग्रेस के विभाजन के समय उन्होने राजनीति मे सक्रिय भाग लिया और स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गाँधी का पूर्ण निष्ठा से समर्थन किया।

श्री सुनील शास्त्री का विवाह 28 मई 1973 को श्रीमती मीरा देवी जी से हुआ। उनके तीन पुत्रों के नामकरण विनम्र, वैभव, और विभौस स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री का जीवन आदर्श व गुणों के आधार पर किया गया है।

श्री सुनील शास्त्री सन् 1980 मे गोरखपुर से विधान सभा के सदस्य चुने गये और 4 सितम्बर सन् 1980 को श्री विश्वनाथ-प्रताप सिंह के मन्त्री मण्डल में उन्होंने उपमन्त्री पद की शपथ ली। पहली अक्टूबर 1981 को उन्हे पदोन्नत करके राज्य मन्त्री बनाया गया तथा ऊर्जा विभाग का स्वतन्त्र भार सौंपा गया। श्री श्रीपति मिश्र के मन्त्रीमण्डल में भी 19 जुलाई 1982 को उन्होंने राज्य मन्त्री पद की शपथ ली और उन्हें श्रम तथा सेवायोजन विभाग का स्वतन्त्र भार सौंपा गया। बाद मे 9फरवरी 1983 को उन्हें प्राविधिक शिक्षा विभाग का भी स्वतन्त्र भार सौंप दिया गया। श्री नारायण दत्त तिवारी के मन्त्री मण्डल में उन्हें पुनः 10 अगस्त 1984 को राज्य मन्त्री पद की शपथ दिलायी गयी और श्रम सेवायोजन तथा प्राविधिक शिक्षा विभागो का स्वतन्त्र भार सौंपा गया। सन् 1985 मे श्री सुनीलशास्त्री गोरखपुर से विधान सभा सदस्य के रूप में भारी बहुमत से विजयी हुए। और श्री नारायण दत्त तिवारी के मन्त्री मण्डल में 13 मार्च 1985 को उन्हें कैबिनेट स्तर का मन्त्री बनाया गया तथा ऊर्जा विभाग का कार्यभार सौंपा गया। श्री वीरबहादुर सिंह के मुख्यमन्त्री पद ग्रहण करने पर श्री सुनील शास्त्री को 25 सितम्बर 1985 को पुनः कैबिनेट मन्त्री बनाया गया और ऊर्जा विभाग का भार सौंपा गया।

श्री सुनील शास्त्री को हिन्दी साहित्य में विशेष रुचि है। उनके पास 20 सूत्री कार्यक्रम पर आधारित लघु कथाओं के संग्रह सुलभ हैं। क्रिकेट, बैडमिन्टन और टेबिल-टेनिस के वे अच्छे खिलाड़ी हैं। सुगम संगीत में उन्हें विशेष रुचि है। जन सामान्य से मिलना उन्हें रुचिकर लगता है।

श्री सुनील शास्त्री ने 20 जुलाई, 1987 को उत्तर-प्रदेश मन्त्रीमण्डल से सिद्धान्तों के आधार पर त्याग पत्र दे दिया। श्री सुनील शास्त्री ने मई 1988 में इलाहाबाद के लोक सभा चुनाव में श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के प्रतिद्वन्दी के रूप मे महत्वपूर्ण चुनाव लड़ा। वे एक आदर्श राजनेता एवं वैदिक-सिद्धान्तों के परमसमर्थक तथा आर्यसमाज के कार्यों में गहरी रुचि रखने वाले सर्वमान्य व्यक्ति हैं। शिक्षा जगत की समस्याओ के समाधान मे उनकी गहरी दिलचस्पी है।

स्वामी रामानन्द शास्त्री

(एक अनूठा व्यक्तित्व)

-ब्रह्मदत्त स्नातक
भारतीय सूचना सेवा {रिटा.}
सी 4बी- 332बी
जनकपुरी, नई दिल्ली-58

स्वामी रामानन्द शास्त्री का जन्म गुजरात प्रदेश मे हुआ था, जहा महर्षि दयानन्द सरस्वती और गाँधी जी ने जन्म लिया था। अपने गुरु दयानन्द सरस्वती की भाँति युवक रामानन्द ने भी घर को त्यागा और शिक्षा ग्रहण करने उत्तर भारत मे आ गए और उसके बाद विधिवत सन्यास ग्रहण करके स्वामी दयानन्द के रूप मे सार्वजनिक जीवन मे प्रवेश किया। इससे पूर्व वे सद्गृहस्थ भी रहे और पिता भी बने। वे बड़े अभिमान से कहते थे कि जब वेदमन्त्रों के सुनने पर तथा कथित शूद्रों के कानो मे शीशा पिघलाकर डालने का विवरण सुना है, उनको आर्य समाज के द्वारा महाविद्यालय ज्वालापुर में वेद एवं संस्कृत की शिक्षा ब्राह्मणो से मिली थी। ऐसे महान थे स्वामी रामानन्द। सन् 1952 में उन्नाव, 1957 मे बाराबंकी और 1962 मे रामसनेही घाट तथा 1967 मे जनपद बिजनौर से लोकसभा के लिए निर्वाचित होना, स्वार्गीय रामानन्द स्वामी की लोक-प्रियता एवं उनके लोक हितकारी कार्यशील जीवन का परिचायक है। उत्तर प्रदेश के चार कोनो से चार बार एक सन्यासी का लोक सभा सदस्य चुना जाना चमत्कार से कम नहीं माना जा सकता।

जन्म धोलका गुजरात प्रान्त में और प्रतिनिधित्व उत्तर प्रदेश प्रान्त के चार भिन्न-भिन्न क्षेत्रों मे। सम्भावन, जन सेवा तथा मानव समता अथवा अर्थात मनुष्य-मनुष्य के बीच छुआछूत की दुर्गम, विस्तारयुक्त खाई को पाटना ही उनके जीवन का प्रमुख लक्ष्य था। तो रामानन्द शास्त्री {सन्यासी} इसी काम के लिए जन्मे, जिए और अन्त मे अन्त की ओर अग्रसर हो गए।

तथाकथित अछूत समाज मे 7 फरवरी, 1907 को जन्मे, सत्य का परिधान ओढ़े, ज्ञान-अमृत के पिपासु राम जी भगत ने तथाकथित सवर्णो, सम्भ्रान्तों के बीच न झूठ बोला तथा न ही छलम-छद्म का प्रश्रय लिया। विवाहित होकर एक महिला के पति और एक पुत्र के पिता रामजी भगत अन्तत स्वामी रामानन्द शास्त्री यो ही नही बन गए थे। प्रताड़ना, सत्य एवं अटूट लगन, निष्ठा-आस्था और कर्मशीलता ने उन्हे सन्यासी रामानन्द शास्त्री बनाया।

जो स्वयं अपना उद्धार नहीं कर सकते, वे दूसरो का उद्धार और निर्माण कदापि नही कर सकते। रामानन्द शास्त्री उपर्युक्त कथन के सर्वथा विपरीत थे। वे स्वयं निर्मित थे और अपने उद्धर्ता भी, इसलिए वे समाज का उद्धार कर पाए। उसे बना पाए। उसे कुछ दे पाए। जबकि वे स्वय आकचन जन्मे थे। उन्होने इसी भारत धरा पर अर्जित किया, संचित किया और उस अर्जित संचित को बाटकर 70 वर्ष की आयु में चले गए।

सन् 1967 मे वे जनपद बिजनौर से लोकसभा सदस्य चुनकर गए थे, अत उस जनपद के लोगो के लिए जितना, जो कुछ कर या कर सके, उसे भुला पाना सम्भव नहीं। यदि बिजनौर जनपद उन्हे भुला दे तो यह अपने हित के प्रतिकूल होगी भारत की राजधानी में बिजनौर भवन का निर्माण उनकी प्रेरणा से हुआ। अब वह मूर्त रूप में आ रहा है।

-x-x-x-x-x-x-

आवश्यक सूचना

"श्री मद् दयानन्द बाल सदन मोतीनगर, लखनऊ के गुरुकुल विद्यालय हेतु कक्षा 8 तक के अंग्रेजी गणित तथा विज्ञान विषयो के वानप्रस्थी शिक्षको की वानप्रस्थी पुरोहित की, एक चौकीदार की तथा एक समर्पित सेवक की। निवास स्थान व बिजली निःशुल्क उपलब्ध होगी, स्वीकृत वेतन सहित पत्र व्यवहार करे।"

-जगतनारायन}

सार्व भौम वैदिक धर्म

डॉ0 सावित्री देवी शर्मा,
10, केलाबाग, "सावित्री सदन" बरेली।

इस समय संसार में अनेक मत मतान्तर व सम्प्रदाय प्रचलित हैं जो सामान्य भोली जनता को अपने-अपने मतों की मिथ्या विशेषतायें बताकर सत्य सनातन धर्म से विमुख कर रहे हैं। इस विघटन कारिणी साम्प्रदायिक कटुता को युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने क्रान्तिकारी दूरदर्शी नयनों से भलीभांति देखा था। समस्त वैदिक वाङमय का अवलोकन कर सर्वोत्कृष्ट वैदिक धर्म के शाश्वत सिद्धान्तों को ही उन्होंने विश्वमण्डलकारी समझा। निर्भयता पूर्वक वेदवीणा का मधुर संगीत सुना कर सच्ची मानवता का उपदेश किया। वेद प्रतिपादित सार्वभौम धर्म के समक्ष इन संकीर्ण सम्प्रदायों की स्थिति भुवन भास्कर मार्तण्ड के सामने टिमाटमाते हुये लघु दीपों के सदृश प्रतीत होती है। वस्तुतः अनन्त सागर की उपस्थिति में नगण्य जल-बुदबुदों का अस्तित्व ही क्या? बहती हुई क्षुद्र जलधाराओं का अगाध अम्भोनिधि से साम्मुल्य कभी सम्भव नहीं। क्षण भर को पृथक से दीखने वाले यह सभी मतमतान्तर उसी प्रखर दे-दीप्यमान वैदिक ज्योति पुंज में विलीन हो जायेंगे। किसी जिज्ञासु ने महर्षि दयानन्द से कहा कि 999 मत तो पहले से ही इस आर्यावर्त में विद्यमान हैं आप भी एक नया मत चलाकर क्या भारत का कल्याण करेंगे? अथवा विघटनकारी तत्वों को बढ़ावा देंगे? युगदृष्टा गुरूदेव का स्पष्ट उत्तर था999-मतों में जब एक वैदिक धर्म का योग होगा तो एक वैदिक धर्म ही शेष रहेगा शेष सभी मत शून्य हो जायेंगे §999+1 =1000§ मतों में दीखने वाली विशेषता भी वेदों से ही प्राप्त हुई है।

ईश्वरीय ज्ञान वैदिक धर्म का आधार है यह सर्वप्रथम विशेषता इसे अन्य मत मतान्तरों से विलक्षण सिद्ध करती है। विश्व के सभी सम्प्रदायों का आधार संकीर्ण अल्पज्ञ मानव मस्तिष्क ही है। अतः वे सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक नहीं हो सकते। आदि सृष्टि में प्रभु प्रेरणा से आविर्भूत हो ऋषियों के हृदयों में प्रकाश करने वाला यह वेद ज्ञान सकल संसृति के लिये पीयूष धारा प्रवाहित कर रहा है। यही इसकी सार्वभौमता का रहस्य है। वेदों के प्रसिद्ध पश्चिमीय विद्वान् मैक्समूलर ने यह सहर्ष स्वीकार किया है:-

If there is a God who has created heaven and earth it will be unjust, His moses of divine knowledge. Reason and Comparative Study of His religions declares that God gave His divine knowledge to mankind from His first appearance on earth.

वस्तुतः सृष्टि कर्ता ईश्वर ने अपनी अमृत सन्तानों को सुखी समृद्ध बनाने के लिये जगत् की प्रथम उत्पत्ति होने पर ही उन्हें अपने अलौकिक ज्ञान से आलोकित किया होगा तभी उसकी न्यायकारिता सिद्ध होती है। यही कारण है कि वैदिक सन्देश विशुद्ध मानवतावादी दृष्टि कोण का प्रचार करता है पारस्परिक राग द्वेष बढ़ाने वाला साम्प्रदायिक संघर्ष उत्पन्न नहीं करता है।

कर्मफल सिद्धान्त की मान्यता श्रुतिज्ञान की द्वितीय विशेषता का प्रकाशन करती है। वस्तुतः मनुष्यों के स्वकृत कर्मों का पात्र उनके समक्ष ही रखा हुआ है-"अनूनं पात्र निहितं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनराविशाति" मानव जो कुछ उसमें संचित कर पकायेगा वही उसे बिना किसी परिवर्तन के प्राप्त होगा। परलोक में मनुष्य की सहायता के लिये माता-पिता, पत्नी, पुत्रादि सगे सम्बन्धी भी नहीं पहुँच सकते केवल उसका सुकृत रूप धर्म ही परम रक्षक होकर साथ-साथ चलता है। मनु महाराज के शब्दों में यही शाश्वत सत्य प्रकट होता है एक एवं सुहृद धर्मो निधनेऽप्यनु याति यः" यही स्वधर्म पालन का ईश्वरीय सन्देश प्रत्येक प्राणी को पाप से बचा कर पुण्य सदाचरण की ओर प्रेरित करता है।

युक्ति संगत तर्क की कसौटी पर खरा उतरने वाला यह दिव्यज्ञान संसार के मनुष्यों को बौद्धिक ज्ञान के अनुसार सत्य निर्णय करने की स्वतन्त्रता देता है। वानी वाक्यं प्रमाणं नान्यत् किमपि" जैसी लोकोक्तियों पर अन्ध-विश्वास करने से बचाता है। हमारे ऋचा गानधियों यो नः प्रचोदयात्" "सरस्वती सह धीभिरस्तु" "तया मामद्य मेधयाऽग्ने"- मेधाविनं कुरू" हमें पवित्र ऋतम्भरा मेधाशक्ति को प्राप्त करने की सर्वदा प्रेरणा देते हैं। अतः हम सगर्व कह सकते हैं कि हमारा पूर्ण वैज्ञानिक श्रुति प्रतिपादित धर्म ज्योतिष्मती आभा बिखेरता हुआ मनुष्यों के आन्तरिक तृतीय शिव नयन को खोल कर धार्मिक पथ प्रशस्त करता है:-

"The Vedic religion recognises but one GOD. It is a thoroughly scientific religion and science meets hand in hand here. Theology is based upon science and philosophy."

W.D. Brown

वैदिक दर्शन के अनुसार मनुष्य की व्यक्तिगत तथा सामाजिक उन्नति के लिये वर्णाश्रम व्यवस्था एक सुनियोजित योजना प्रस्तुत करती है। व्यक्ति अपने स्वाभाविक कर्म एवं गुणों के आधार पर ही अपना तथा समाज का कल्याण करने में सक्षम है। विश्व के मानव समुदाय में चार ही विशेषतायें दृष्टि गोचर होती हैं। योगिराज कृष्ण ने वे स्वाभाविक गुण इस प्रकार व्यक्त किये है:-

ब्राह्मण क्षत्रिय विशाशूद्राणां च परन्तप ।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभाव प्रभवैर्गुणैः ।।
शमो दमस्तपः शौचं क्षान्ति रार्जवमेव च ।
ज्ञान विज्ञान मास्तिक्यं ब्रह्म कर्म स्वभावजम् ।।

अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रों के नैसर्गिक गुण पूर्व से ही विभक्त कर दिए गए है शम, मानसिक दम शुभकर्मों में उत्पन्न होने वाले अनेक विघ्नों को सहने की शक्ति रूप तप, शारीरिक, मानसिक, वाचिक पवित्रता, सहिष्णुता हार्दिक कोमलता ज्ञान विज्ञान की प्राप्ति ईश्वर विश्वास आदि गुणों से ब्राह्मणत्व प्राप्त होता है ।

शौर्य, तेज, धृति, दक्षता, युद्ध से अपलायन, दानशीलता, प्रशासकीय क्षमतादि गुणों से विभूषित क्षत्रिय ही प्रजापालक बन सकता है। कृषि गोरक्षा, वाणिज्यादि वैश्यकर्म राष्ट्र को धनधान्य से समृद्ध करते हैं। समाज के उपरिलिखित इन तीनों वर्णों की श्रद्धापूर्वक परिचर्या करना शूद्र का स्वधर्म है। यहाँ पर विशेष रूपेण यह ज्ञातव्य है कि मध्यकालीन मान्यताओं के आधार पर केवल जन्म से ही वर्ण व्यवस्था मानी गई थी किन्तु धन्य है वह देव दयानन्द जिन्होंने वैदिक परम्परा के द्वारा गुणकर्म स्वभाव से समाज में वर्णनिर्धारण का उपदेश किया। मनु महाराज ने जिस वर्ण व्यवस्था का उद्घोष "शूद्रों ब्राह्मणतामेति ब्राह्मण चैति शूद्रताम्" शताब्दियों पहले किया था उसी वेद विचार धारा का समर्थन हमारे महर्षि ने आधुनिक दुव्यवस्था, समूलोच्छेदन करते हुए किया। यही वैदिक वर्ण व्यवस्था हमारी वैयक्तिक प्रगति का आधार है ।

वेदानुमोदित आश्रम व्यवस्था हमारे सामाजिक सव्यूहन को सुदृढ़ करती है। पच्चीस वर्षों तक निर्बाध रूप से अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करते हुये सर्वसत्य विद्याओं का ज्ञान प्राप्त करना, आस्तिकता, ईश्वर प्रणिधानादि गुणों से ब्रह्मवर्चस की उपलब्धि ब्रह्मचर्याश्रम की आधार शिला है। ब्रह्मचर्य की कठोर साधना के पश्चात् त्रिविध ऋणों से §देव ऋण-ऋषि ऋण तथा पितृ ऋण§ से मुक्त होने के लिये पवित्र गृहस्थाश्रम में जाकर वह उत्पन्न सुसंस्कृत सन्तान तथा विविध धर्माविरुद्ध भोगों को प्राप्त करता है जिससे पुरुषार्थ चतुष्टय प्राप्ति की जीवन कला स्वतः सिद्ध होती रहती है। गार्हस्थ्य जीवन की सफल यात्रा के पश्चात् अपनी खोई हुई शक्तियों को पुनः जुटाने के लिये मनुष्य अपनी शेष अर्धशताब्दी की सुखद शुभ कामना लिये वानप्रस्था-श्रम में प्रवेश करता है। यह आश्रम मनुष्य के पुनर्निर्माण एवं नव जीवन की ओर अग्रसर करता है। इस आश्रम में सामाजिक कल्याण हेतु श्रम करते हुये लोक हित की प्रबल भावना तथा आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग स्वतः खुल जाता है। अन्त में पूर्ण वैराग्य युक्त होकर "आत्मवत् सर्वभूतेषु" की वास्तविकता को अपने जीवन के उत्तरार्ध में प्रसन्नमनसा चरितार्थ करते हुये सच्चे अर्थों में "परितः व्रजतीति" परिव्राजक बन कर विश्व हित साधन में जुट जाता है। यही है लोक कल्याण कारिणी हमारी भारतीय संस्कृति का उदात्त सन्देश जो आश्रम व्यवस्था के माध्यम से मुखरित हुआ।

हमारा वैदिक धर्म किसी व्यक्ति विशेष पर आधारित नहीं है। जैसे मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगिराज कृष्ण, तथागत महात्मा बुद्ध, हजरत मोहम्मद, ईसामसीह महावीर तीर्थंकर आदि। इन्हीं पीर-पैगम्बरों को महत्व देने से व्यक्ति पूजा का प्रचार बढ़ा। धार्मिक जगत में पारस्परिक कलहक्लेश जनित विषमता का विष फैलता गया किसी विचारक ने सत्य ही कहा है:-

Much of the bitterness which we find in religious circles these days is not to GOD

or His worship but due to the meditators, agents priests and the like who pretend to have monopolised the benefits of sprituality for themselves or for their followers.

वेदोक्त सनातन धर्म ईश्वर और धर्म के प्रावना भाव सम्बन्ध का रहस्योद्घाटन कर मनुर्भवजनया दैव्यं जनम्" का हृदयाह्लाद कारी मधुर संगीत सुनाता है। मनुष्य और प्रिय परमेश्वर की प्राप्ति के मध्य में किसी माध्यम को स्वीकार नहीं करता। प्रत्येक जीवात्मा धर्मार्थकाम मोक्ष की सद्यः सिद्धि में पूर्ण स्वतन्त्र है। इससे बढ़कर ईश्वरीय ज्ञान का पुण्य प्रसाद और क्या होगा।

धर्मके चतुर्विध लक्षणों में वेद के प्रमाण को ही प्राथमिकता दी गई है:-

वेदःस्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।

एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम् ।।

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम" वस्तुतः हमारा सनातन धर्म प्रतिपादक वेद ही सदाचारमयी धर्म संहिता है। यही जगन्नियन्ता सच्चिदानन्द परमेश्वर का अजर अमर पुरातन काव्य है। श्रुति का0 अन्तः साक्ष्य स्वयं समर्थन करता है:-

अन्ति सन्तं न जहाति
अन्ति सन्तं न पश्यति।
देवस्य पश्य काव्यम
न ममार न जीर्यति ।।

सार्वभौम वैदिक धर्म द्वारा ही विश्व की विद्वज्जनवरणीया प्रथमा संस्कृति का आविर्भाव हुआ जिसके द्वारा कलकल निनादिनी पवित्र-पावनी वेदज्ञानगंगा में अवगाहन करने का सभी ब्राह्मण क्षात्रियादि वर्णों को, राष्ट्र की आधार भूत पुरन्ध्रिदेवियों को तथा देश देशान्तर के मानव मात्र को अधिकार मिला। इस पौरस्त्य दिव्य सन्देश ने ऊँच-नीच, छुआछूत, सवर्ण-असवर्ण के बीच विषमता की खाई को पाटकर "यत्र विश्व भवत्येक नीडम्" सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः" का मंगलमय पाठ पढ़ाया। दुष्टों का बिना शंकर ऐश्वर्य शाली होते हुये सकल विश्व को आर्य बनाने का सदुपदेश दिया। विश्व को संगठित करने के लिये शब्दचतुष्टयी प्रस्तुत करने वाला वैदिक उद्घोष आज भी संसार के समक्ष चुनौती है

आर्य हमारा नाम है वेद हमारा धर्म।

"ओ3म्" प्रभु का नाम है सत्य हमारा कर्म ।।

वेदों के यह सार्वजनीन सूत्र ही विघटित मानवता को संघटन की पावनी रीति सिखा सकते हैं। अतः सार्वभौम वैदिक धर्म की तापत्रय बिनाशिनी छाया में खड़े होकर विश्वविजयिनी पताका को फहराते हुये हम मुक्त स्वरों में गायें:-

बनोआर्य सब वेद पथ पर चलो ।

रहो बेधड़क मत किसी से डरो ।।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज शोहरतगढ़ (सिद्धार्थनगर) का 34 वाँ वार्षिक उत्सव दिनांक- 16 से 19 फरवरी 1989 तक मनाया जावेगा। स्वामी ज्ञानानन्द जी सरस्वती, पं0 जयप्रकाश आर्य भू0पू0 पेशे इमाम, वेतिया, पं0 सूर्यबली जी पाण्डेय जौनपुर सोहनलाल जी पथिक रेडियो सिंगर हरियाणा तथा महिपाल सिंह आदि भजनोपदेशक बलिया पधारेंगे। स्थानीय जनता की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज भरुआ सुमेरपुर, हमीरपुर का 19वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 19 से 22 फरवरी 1989 तक धूमधाम से मनाया जायगा। इसमें कई विशिष्ट विद्वानों के पधारने की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। जनता से अधिक से अधिक संख्या में पधारने एवं धर्म लाभ उठाने की प्रार्थना है।

- नगौला (अलीगढ़ के) श्री प्रकाश वीर आर्य शास्त्री की धर्मपत्नी का अकस्मात निधन हो गया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा दुःखी परिवार को शान्ति प्रदान करे।

आदिवासी इलाकों में धर्मान्तरण के कारण तनाव की स्थिति

राची, 25 जनवरी छोटानागपुर संथाल परगना के आदिवासी इलाकों में धर्म परिवर्तन कराने के लिए विदेशी मिशनरियों मे होड़ लगी हुई है जिससे इस इलाके के आदिवासी तनाव महसूस कर रहे हैं ।

आदिवासी बहुल छोटानागपुर क्षेत्र में ईसाई मिशनरी वर्षों से प्रलोभन देकर हिन्दू युवकों को ईसाई बनाने में लगे हुए हैं। आर्थिक बदहाली का फायदा उठा कर मिशन वाले परिवार के परिवार का धर्मांतरण करा देते हैं और एक बार धर्म बदलने के बाद उनके साथ क्या होता है किसी से छिपा नहीं है। आज भी कई धर्मांतरित ईसाई कहते हैं कि उन्हें विदेश भेजने का लालच देकर धर्म तो बदल दिया और अब आजकल-आजकल करते पाँच वर्ष निकाल दिए गए।

लेकिन अब धर्मांतरण के लिए एक मिशन वालों ने दूसरे मिशन वालों से बाजी मारने के लिए होड़ लगानी शुरू कर दी है। इस बात की पुष्टि यहां का खुफिया विभाग भी करता है, धर्मांतरण के सवाल पर कैथालिक और प्रोटेसटेंट मिशन वालों ने एक दूसरे के खिलाफ मोर्चेबन्दी बना ली है। मिशनरियों के इस टकराव से यहां कभी भी कोई अप्रिय घटना घट सकती है।

चर्च आफ नार्थ इण्ड्या प्रोटेसटेंड समुदाय के इसाइयों का आरोप है कि रोमन कैथोलिक मिशन वाले नए आदिवासियों को इसाई बनाने के अलावा उनके मत के इसाइयों को अपने धर्म मे ला रहे हैं। इस पर इलाके का शायद ही कोई ऐसा क्षे होगा जहां मिशन वालों का कब्जा न हो। धर्मांतरण की आड़ में यह मिशन वाले भोले-भाले आदिवासियों को अपने चंगुल में फँसा कर उनसे उल्टे-सीधे कार्य भी कराने से नहीं हिचकते इतना ही नहीं पिछले दिनों यूरोनियम तस्करी काण्ड में भी इटली के एक पादरी के लिप्त होने की पुलिस को जानकारी मिली है।

सूत्रों का कहना है कि पिछले कुछ वर्षो से इस क्षेत्र में डी0ए0वी0का आर्यसमाज, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल आदि हिन्दू संगठनों के कार्यकलापों से धर्मांतरण पर सम्भवतः रोक लगी हुई थी उन्हें अब आजसू, झारखण्ड पार्टी तथा अन्य विदेशी परस्त संगठनों के कारण बल मिला है। इससे रोमन-कैथोलिक और प्रोटेसटेंट चर्च की गतिविधियों में तेजी आई है।

-केसरी से साभार।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

"प्रयाग कुम्भ मेला वेद प्रचार शिविर

का उद्घाटन

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 द्वारा आर्य उपप्रतिनिधि-सभा, प्रयाग के तत्वावधान में आयोजित कुम्भ मेला वेद प्रचार आर्य समाज शिविर का उद्घाटन डा0 आशा रानी राय, उपमन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ने 14 जनवरी, 1989 को मकर-संक्रान्ति के अवसर पर 12 बजे किया एवं उपस्थित जनसमूह को कुम्भ का महत्व, आर्यसमाज का राष्ट्र के जागरण में योगदान, अवश्यकता तथा कार्यपद्धति से अवगत कराया। श्री लालबहादुर-शर्मा, मन्त्री एव संयोजक शिविर ने मान्या मुख्य अतिथि का स्वागत तथा श्री सोहनलाल पाण्डेय, प्रधान, जिला सभा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

:: गुरुकुल आश्रम आमसेना का 21वाँ वार्षिक महोत्सव ::

गुरुकुल आमसेना का 21वाँ वार्षिक महोत्सव 18,19, 20 फरवरी 1981 को अत्यन्त समारोह के साथ मनाया जाएगा ।

इस शुभ अवसर पर पू0 स्वामी दिव्यानन्द जी, पू0 स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (हरिद्वार), पं0 देवशर्मा-जी वानप्रस्थ, आचार्य हरिदेव जी(गुरु0 गौतम नगर दिल्ली) पं0 सुरेन्द्रपाल जी (नागपुर) प0 देशपाल जी दीक्षित, पं0 कमल नारायण जी वेदाचार्य, पं0 विश्वनाथ जी शास्त्री (भिलाई) पं0 चन्द्रपाल जी राणा, पं0 रणवीर जी (दिल्ली), चौ0 दीवान-सिंह जी (रोहतक), रमेशचन्द्र जी श्रीवास्तव (प्रधान मध्यप्रदेश एवं विदर्भ आर्य प्रतिनिधि सभा) श्री गुलाबचन्द जी बंसल , श्री सुदर्शन जी बहल (भिलाई) आदि साधु सन्यासी, विद्वान तथा आर्य नेता पधार रहे हैं।

वस्त्रों की उपयोगिता

{श्री प्रियव्रत शास्त्री साहित्य रत्न, एम0ए0}

मनुष्य को जन्म से ही वस्त्रों की आवश्यकता होती है वस्त्र ऋतु के अनुकूल होना चाहिये। वस्त्र ही मुख्य रूप से सिपाही {पुलिस} सेना नेता व्यापारी आदि की पहिचान कराता है। ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी, सन्यासी की पहिचान भी वस्त्र ही है। वस्त्र सदा अवसरानुकूल स्वच्छ एवं शुद्ध होने चाहिये।

वस्त्रों को अवसरानुकूल धारण न करने के परिणाम को निम्न श्लोक इस प्रकार वर्णन करता हैः-

किं वाससा नेति विचारणीयं वासः प्रधानं खलु योग्यतायाः।
पीताम्बरं वीक्ष्य ददौ तनूजां दिगम्बरं वीक्ष्य विषं समुद्रः।।

समुद्र से जब चौदह रत्न समुद्र मन्थन से निकले, उनमें- लक्ष्मी और विष्णु भी निकले। समुद्र ने पीताम्बर धारण करने वाले विष्णु महाराज को अपनी कन्या दे दी और दिगम्बर शिव को देखकर उसे विष दे दिया। अतः वस्त्र योग्यता की विशेष पहिचान हैं।

महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि में स्वच्छ एवं शुद्ध वस्त्रों के देने का ही विधान लिखा है। वस्त्र दान विधि से महर्षि का वास्तविक देशभक्ति एवं स्वदेशी वस्त्रों के धारण करने का भी स्पष्ट प्रमाण है जो उन्होंने वेदों के आधार पर लिखा है।

विवाह संस्कार में जब वर कन्या को वस्त्रधारण करने के लिये देता है तो कहता हैः-

ओ३म् आ या अकृन्तन्नवयन् अर्तान्वत याश्च देवीस्तन्तून-भितो ततन्थ। तास्त्वा देवी जरसा संव्ययस्वायुमतीद परिधत्स्व वासः।।

हे कन्ये इस वस्त्र को तू पहन- जिन व्यवसायिनी स्त्रियों ने इस वस्त्र को काता है और जिन देवियों ने इस वस्त्र के सूत को बुना है, जिन्होंने इस सूत को फैलाया है, और देवियों ने इस वस्त्र के सूत को फैलाया है और जिन देवियों ने इस वस्त्र के सूत्रों को दोनों ओर से सूची आदि से तुरी आदि के व्यापार से गूंथ कर फैलाया है या बुना है। वे देवियाँ तेरे प्रति वृद्धावस्था पर्यन्त ऐसे ही वस्त्र पहनाती रहें।

इससे सुन्दर स्वदेशी का प्रमाण अन्यत्र दुर्लभ है। वर पुनः कन्या से कहता हैः-

ओ३म् जरागच्छ परिधत्स्व वासो भवाकृष्टिनामभिशस्ति पावा। शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्राननु संव्ययस्वा-युष्मतीद परिधत्स्व वासः।।

हे कन्ये। तू निर्दोष वृद्धावस्था को मेरे साथ प्राप्त हो और मेरे दिये हुए इस वस्त्र को धारण कर। कामादिकों से खैंचे हुए अभिशाप प्रमाद से अपने आपकी रक्षा करने वाली हो। और सौ वर्ष पर्यन्त प्राणधारण कर और तेजस्विनी होकर धन का और पुत्रों का संग्रह कर। हे आयुष्मति कन्ये। इन भावनाओं के साथ इस वस्त्र को धारण कर।

वस्त्र धारण के साथ कैसी सुदृढ़ और सुन्दर भावनायें दर्शायी गई हैं।

वस्त्रों के धारण करने के लाभ भी निम्नलिखित पा0गृ0-सूत्र में किन सुन्दर भावों से प्रदर्शित हैंः-

"परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरूचि रायस्पोषमभिसव्ययिष्ये। पा0गृ0सूत्र का02-क0 6 सूत्र 20

हे सज्जनो। अपने शरीर को आच्छादित करने के लिये और प्रतिष्ठा के लिये दीर्घ जीवन के लिये शरीर रूपीधन की पुष्टि करने वाले सुन्दर वस्त्रों को अच्छे प्रकार धारण किया करूँगा। क्यों कि बहुत धन पुत्रादि से संयुक्त होकर वृद्धावस्था पर्यन्त जीवन की इच्छा करूँ। ईश्वर कृपा करें कि मैं सौ वर्ष पर्यन्त जीवन लाभ कर सकूँ। यह प्रत्येक स्त्री पुरुष की भावना होनी चाहिए।

उपनयन संस्कार में भी एक प्रकरण ब्रह्मचारी के वस्त्रों के सम्बन्ध में आता हैः-

3 ओ३म् युवा सुवासाः परिवीत आगात्। स उ श्रेयान् भवति जायमानः।

दृढ़ शरीर वाला अच्छे वस्त्रों को- का0म0 3 अ0। सूक्त8 मन्त्र 4

धारण करने वाला यज्ञोपवीत मेखलादि से परिवेष्टित जो ब्रह्मचारी सम्मुख प्राप्त होता है। वैसी ही स्थिति करता हुआ वह मनुष्यों का कल्याण करने वाला होता है।

महायोगी श्री कृष्ण वस्त्रों के उदाहरण से आत्मा की नित्यता तथा अनित्यता शरीर {देह} की कितने सुरुचि पूर्ण ढंग से समझाते हैं यह भी गीता के दूसरे अध्याय के निम्न लिखित श्लोक से दृष्टव्य हैः-

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरो ऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

जिस प्रकार मनुष्य पुराने जीर्णवस्त्रों को उतार कर नये कपड़े धारण कर लेता है, उसी प्रकार देही {आत्मा} पुराने जीर्ण शरीरों को छोड़कर नया शरीर धारण कर लेता है। देह {शरीर}की नश्वरता तथा देही {आत्मा} की नित्यता कितनी सुन्दरता से वर्णित है।

ब्रह्मचारी के लिये कोपीन अगोछा तथा उपवस्त्र धारण करने का भी बहुत महत्व है। रंगीन वस्त्रों के महत्व का वर्णन भी आश्वलायन गृह्य सूत्र प्रथम अध्याय कण्डिका 13 सूक्त 9 में इस प्रकार वर्णित हैः-

"यदि वासांसि वसीरन्नुक्तानि वसीरन् काषायं ब्राह्मणो मांजिष्ठं क्षत्रियो हारिद्रं वैश्यः।

लाल गेरुवे रंग वाले वस्त्र ब्राह्मण बालक पदाधिकारी के मंजिष्ठ रंग वाले क्षत्रिय पदाधिकारी बालक के और हल्दी के रंग वाले वैश्य पदाधिकारी के हों।

लाहौर के पदार्थ विज्ञान शास्त्री महात्मा गुरुदत्त जी एम0ए0 ने इस बात को अनुभव किया था कि गेरु रंग शरीर की खाल को शान्त करता है। आयुर्वेद में रक्त शुद्धि के लिये गेरु का प्रयोग होने से यह सिद्ध होता है कि गेरु मिट्टी में भगवान् ने अद्भुत गुण रखे हैं। मंजिष्ठ न केवल प्रसिद्ध औषधी अपितु कपड़े रंगने के लिये इसका बहुत प्रयोग किया जाता है। इस रंग का वस्त्र चर्म रोग उत्पन्न नहीं होने देता। हल्दी के भी अद्भुत गुण हैं। चोट लगने पर रक्तस्राव की गति रोकने के लिये ही नहीं किन्तु इसके रंगे हुए कपड़े पर चींटी आदि भी नहीं आती और त्वचा का मैल हरण करने में भी यह समर्थ है। इस लिये उबटन में भी यव के चूर्ण के साथ हल्दी मिलाई जाती है। इसमें फिटकरी का पानी मिलाने से और भी सुन्दरता आ जाती है।

बालक के सोने की शैय्या और बिछाने के वस्त्र और ओढ़ने के वस्त्र सुन्दर, नरम, पवित्र, और सुगन्धित होने चाहिये उनमें पसीना मल-मूत्र जीव विष्ठा आदि किसी भी समय नहीं रहनी चाहिए।

वस्त्र श्वेत या रंगीन सर्वदा स्वच्छ एवं शुद्ध ही होने चाहिये। और भी अनेकों लाभ वस्त्रों से होते हैं जो विभिन्न शास्त्रों आदि में उल्लिखित हैं। इस प्रकार सर्वदा सभी अवसरों पर मनुष्य को वस्त्र परिधान का विचार एवं ध्यान करना आवश्यक है क्यों कि वस्त्र परिधान से ही मनुष्य के आचार-विचार आदि की शुद्धता का ज्ञान हो जाता है।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

शोक समाचार

- दिनांक 22, 23, 24, 25 -11-1988 को इलाहाबाद जिले में श्रृंगवेरपुर गंगातट पर, सरायगोपाल, हरिसेन गंज आदि कस्बों में श्री ब्रह्मानन्द मण्डली के द्वारा वैदिक-धर्म का प्रचार किया गया। सर्वश्री रामप्रकाश सोनी, राजाराम गुप्त रामबहादुर पटेल सीताराम गुप्त राधेश्याम साहू का सराहनीय सहयोग रहा। 7 व्यक्तियों को यज्ञोपवीत दिये गये।

-काशी प्रसाद गुप्ता

— श्री रामेश्वर प्रसाद जी आर्यसमाज अलियापुर {दयानन्द नगर} जिला- फतेहपुर के कर्मठ सदस्य तथाग्राम प्रधान का आकस्मिक निधन 7-1-89 को हुआ। उनका अंत्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से स्वामी मेधानन्द जी द्वारा सम्पन्न हुआ। -सभा मन्त्री।

"हिन्दू - मुस्लिम एकता"

{श्री यदुवंश जी वानप्रस्थी, फैजाबाद}

हमारे देश में हिन्दू-मुस्लिम एकता की बात की जाती है। इसके लिए समितियाँ बनाई जाती हैं। उपाय सुझाये जाते हैं। सरकार एक विषय में काफी प्रयत्नशील है। परन्तु मर्ज बढ़ता गया, ज्यूँ-ज्यूँ "दवा की" के अनुसार हिन्दू और मुस्लिम के बीच की खाई पटने के स्थान पर और गहरी होती जा रही है। स्वतन्त्रता के पूर्व भी कांग्रेस ने इस एकता के लिए कोई कसर उठा नहीं रखी थी, महात्मा गाँधी ने इसीलिए खिलाफत आन्दोलन में सहयोग दिया था और जिन्ना को कोरा चेक तक देने को तैयार थे। परन्तु इस सब का परिणाम हुआ देश का विभाजन।

अब प्रश्न यह है कि इतने प्रयत्न पर भी एकता क्यों नहीं हो रही है? जब कोई रोग दवा से अच्छा नहीं होता है तो कहा जाता है कि जब तक रोग के कारण का पता लगाकर उसे दूर नहीं किया जायेगा, कोई दवा लाभ नहीं करेगी, फोड़े के अन्दर के मवाद को निकालकर ही मरहम लगाने से पीड़ा शान्त होती है, क्योंकि मवाद ही पीड़ा का कारण है। परन्तु खेद है कि हमारे नेताओं ने रोग के कारण समझने का कोई प्रयास नहीं किया या फिर स्वार्थवश जानबूझ कर उस ओर से आँखें मीचे हुए हैं। यद्यपि एकता में बाधक कारण की घोषणा ईमानदार मुस्लिम-लीगी नेताओं ने स्पष्ट शब्दों में कर दी थी कि साधारण से साधारण मुसलमान भी हिन्दुओं के साथ मिलकर रहना नहीं चाहता, अतः उसे अपनी शरियत के अनुसार चलने के लिए एक स्वतन्त्र इस्लामी राज्य {पाकिस्तान} चाहिए। मुसलमानों का अहिंसा में विश्वास नहीं है, अतः वे अपनी माँग मनवाने के लिए हिंसा का मार्ग अपनायेंगे और जैसा उन्होंने कहा था, वैसा ही कर दिखाया। आज भी मुस्लिम नेता अलगाववादी मनोवृत्ति का खुला प्रदर्शन कर रहे हैं। वे सरकार को धमकी दे रहे हैं कि यदि उनकी माँगें पूर्ण नहीं की गईं तो मुसलमान सड़क पर निकल पड़ेंगे। उस समय सेना भी उन्हें दबा नहीं सकेगी।

मुसलमानों को यहाँ हिन्दुओं से अधिक सुविधायें और विशेष अधिकार प्राप्त हैं, जबकि उन्हें इस प्रकार की सुविधाएं इस्लामी देशों में भी उपलब्ध नहीं हैं। यहाँ से पाकिस्तान जाने वाले मुसलमान आज भी वहाँ मुजाहिद ही बने हुए हैं और उन्हें वहाँ के लोगों के समान अधिकार प्राप्त नहीं हैं। फिर भी कृतघ्न मुस्लिम नेताओं को शिकायत है कि भारत में मुसलमानों पर अत्याचार हो रहा है। वे इसका दूसरे देशों में प्रचार कर रहे हैं। और सार्वभौम इस्लामी संस्थाओं से मुसलमानों को हिन्दुओं और यहाँ की सरकार के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने की अपील कर रहे हैं। इस्लामाबाद में 16·2·88 को जनरल जिया के संकेत पर इस्लामी कौन्सिल, लन्दन में एक प्रस्ताव पारित करके सभी इस्लामी देशों से अपील की है कि वे भारतीय मुसलमानों को अत्याचारों से मुक्त कराने का प्रयास करें।

मुसलमानों की इस अलगाववादी मनोवृत्ति के मूल में उनकी धार्मिक शिक्षा है जो दूसरे धर्मों के प्रति अत्यन्त असहिष्णु है। अतः हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये यह आवश्यक है कि मुसलमानों के विचारों में उदारता लाई जाय। यदि सरकार सचमुच एकता चाहती है तो उसे वोट की राजनीति के कारण अल्पसंख्यकों के सन्तुष्टीकरण की नीति को त्याग कर सच्चे अर्थों में सेक्युलर {सम्प्रदाय या मजहब निरपेक्ष} बनना होगा। तब उसकी दृष्टि में भारत के सारे नागरिक केवल भारतीय होंगे, कोई हिन्दू, मुसलमान, बहुसंख्यक, अल्पसंख्यक, उच्चवर्ग, निम्नवर्ग, आदि न होगा। शिक्षा, न्याय-व्यवस्था और अन्य सारी सुविधाएं सभी वर्गों के लिए समान होंगी विशेष सहायता का आधार व्यक्ति की आर्थिक स्थिति होगी। सभी नागरिक अपने धार्मिक क्रिया-कलाप के लिए पूर्ण स्वतन्त्र होंगे, परन्तु वह अमानुषी और दूसरों के लिए असुविधाजनक न होगा।

मुसलमानों के विचारों में उदारता लाने के लिए आवश्यक है कि प्राचीन भारतीय साहित्य की नैतिक और असाम्प्रदायिक शिक्षाओं का अध्ययन शिक्षणालयों में अनिवार्य किया जाय। मजहबी संघर्ष और कलह मिटाने के लिए सभी भारतीयों को मनु महाराज के बताये हुए वास्तविक धर्म के दस लक्षणों से अवगत कराया जाय वे हैं:-

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रिय निग्रहः ।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म लक्षणम् ।।

इन लक्षणों वाले धर्म की उपेक्षा संसार का कोई व्यक्ति या सरकार नहीं कर सकती है ।

मानव मात्र के हित में बनाये गये सामाजिक नियमों का धर्मान्ध कट्टर पन्थी मुस्लिम नेता शरियत की आड़ में विरोध करेंगे, क्योंकि उनके अनुसार इस्लामी शरियत खुदाई कानून है, जिस में परिवर्तन नहीं हो सकता। परन्तु राष्ट्रीय एकता के हित में उनकी इस हठधर्मी को अमान्य कर देना होगा। कई इस्लामी देशों में शरियत के कानून में संशोधन किया गया है। चीन में काफी मुसलमान हैं। वहाँ मुसलमान एक से अधिक विवाह नहीं कर सकता, और न दो से अधिक बच्चे पैदा कर सकता है। सऊदी अरब में गोहत्या के लिए मृत्यु दण्ड है। सिंगापुर एक इस्लामी देश है। वहाँ तमाम कब्रों को तोड़ कर बिजली द्वारा मुर्दों को जलाया जाता है। शरियत के अनुसार मुसलमानों के लिए न चार विवाह करना अनिवार्य है और न गाय की कुर्बानी ही आवश्यक है ।

इस्लामी शरियत में अपराधों के लिए बहुत कठोर दण्डों का विधान है। मुसलमान के लिए सरकार या बैंक से अपने खातों पर सूद लेना हराम है। यदि शरियत में परिवर्तन नहीं हो सकता तो मुसलमानों पर उस के सारे प्रावधान लागू होना चाहिए। यह नहीं कि जिस को चाहे मानें और जिसको चाहे न मानें अर्थात् कड़वा-कड़वा थू और मीठा-मीठा गप्प। कट्टर पन्थी मुल्ला- मौलवियों के अतिरिक्त इस सर्वसाधारण मुसलमान स्त्री-पुरुष कदापि स्वीकार न करेंगे। जब तक वोटों की राजनीति त्यागकर सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार नहीं किया जायेगा तब तक हिन्दू मुस्लिम एकता अथवा राष्ट्रीय एकता स्वप्न मात्र ही है ।

-x-x-x-x-x-x-x-x-

12 फरवरी 1989 को महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया जावे

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की धर्मार्य सभा ने बड़े अनुसंधान के पश्चात् महर्षि दयानन्द की जन्म तिथि 12 फरवरी 1825 नियत की थी। विश्व की अनेक प्रतिनिधि सभाओं व आर्यसमाजों द्वारा आगामी 12 फरवरी 1989 को महर्षि का 164वाँ जन्मोत्सव समारोह धूमधाम से मनाए जाने के समाचार सभी में प्राप्त हुए हैं। वेद धर्म सभा पिटसवर्ग नेटाल {दक्षिण अफ्रीका} में इस दिन व्यापक समारोह का कार्यक्रम है।

आर्य जगत की सभी आर्य समाजों, प्रतिनिधि सभाओं, शिक्षण-संस्थाओं तथा अन्यत्र सब संस्थाओं से अपील की जाती है कि आगामी 12 फरवरी 1989 को महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस समारोह धूमधाम से आयोजित करें।

मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री।

वीर हकीकत स्मृति
वसन्त पंचमी

{श्री ब्रह्मप्रकाश शास्त्री
विद्यावाचस्पति

वह कौम मिट सकती नहीं जिसमें हकीकत वीर हो।
कोई बतादे विश्व में ऐसा कोई वर वीर हो ।।
जालिम के जुल्मों से हकीकत खौफ खाता है नहीं।
वह राम सीता के लिए दी गलियाँ सहता नहीं।।
इसको सजाये मौत का था हुक्म जालिम ने दिया।
इसको मुसलमाँ बनने पर था लोभ हाकिम ने दिया।।
धर्म हिन्दू छोड़कर गर तू मुसलमाँ बन गया।
जागीर लेकर इस जमीं पर ऐसे जन्नत कर गया ।।
मुँह तोड़ उत्तर था हकीकत ने उसे ऐसा दिया ।
धर्म से बढ़कर न कोई वस्तु है यह कह दिया ।।
समझाया काजी ने उसे पर वीर वह माना नहीं ।
धर्म से बेहतर हिफाजत जान की जाना नहीं।।
लाहौर के मैदान में आया वसन्ती पर्व था।
सिर हकीकत देगया उसको बड़ा ही गर्व था।।
उठ खड़े हो हिन्दुओं सोते रहोगे कब तलक।
घर में लुटेरे घुस रहे लुटते रहोगे कब तलक ।।
आज फिर से धर्म वैदिक की परीक्षा आगई ।
चहुँ ओर कालो ही घटा फिर से घिर कर छा गई।।
याद रक्खो आज भी ऐसे हकीकत हैं यहाँ। धर्म से आगे भला
धर्म से आगे भला कोई हकीकत है कहाँ।।
भगवान भारत वर्ष को लाखों हकीकत दीजिए ।
कर्तव्य से सुन्दर न कोई धर्म है वर दीजिए ।।

हरिजनों की सिख धर्म अपनाने की लहर नहीं थम रही

मवाना, 30 जनवरी। सामाजिक, पुलिस तथा प्रशासनिक उत्पीड़न से क्षुब्ध हरिजनों द्वारा सिख धर्म अपनाने की दो माह पूर्व नगला हरूरू गाँव से चली लहर अभी थमी नही है। उत्तर प्रदेश सिख मिशन के इचार्ज सरदार मलकियत-सिंह उल्ला के अनुसार फरवरी माह में रामराज के निकट ग्राम जलालपुर तथा काकरखेड़ा मेरठ मे अमृत प्रचार कार्यक्रम आयोजित किये जाएगे जिनमें हरिजनो को सिख धर्म में शामिल किया जाएगा।

दो माह पूर्व 27 नवम्बर को नगला हरूरू मे पचास हरिजनों को अमृत छकाने की घटना के बाद से अब तक चार सौ हरिजनों को सिख बनाया जा चुका है। इन नव सिखो में मेरठ के अलावा मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, बिजनौर व गाजियाबाद जनपदों के हरिजन शामिल हैं। मिशन द्वारा जिस तेजी से हरिजनों को अमृत छकाया जा रहा है। उससे यह स्पष्ट हो गया है कि यह कार्य किसी दूरगामी लक्ष्य को लेकर किया जा रहा है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी अमृतसर से सम्बद्ध सिख मिशन द्वारा आयोजित इन अमृत प्रचार कार्यक्रमों से प्रशासनिक व पुलिस अधिकारी अवश्य ही दुविधा मे पड़ गये है। लोकतन्त्र में स्वेच्छा से धर्म परिवर्तन की स्वतन्त्रता के कारण प्रशासन इस आयोजन पर प्रतिबन्ध भी नही लगा सका और बाद मे जाँच तथा कार्यवाही के डर से अधिकारी सहमे हुए नजर आये।

देश के इतिहास में हिन्दू धर्म के अभिन्न अग के रूप में हरिजनो का उल्लेखनीय योगदान रहा। सिखधर्म भी हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये स्थापित किया गया था। किन्तु सरकार व कुछ ही सिख नेता इन्हे हिन्दू धर्म से अलग मानते हैं। तराई क्षेत्र के सिख धर्म प्रचारक सरदार हरभजन सिह जोश के अनुसार आज देश मे वैसी ही स्थिति है जैसी कि औरगजेब के समय में थी। उस समय सिखो के दसवें अन्तिम **गुरु-गोविन्द सिंह जी** ने हिन्दू धर्म की रक्षा के लिये **खालसा पथ** की स्थापना की थी और **पच प्यारो** को अमृत छकाया और एक फौज का निर्माण किया आज वही कार्य सिख मिशन कर रहा है। अगले माह 18 फरवरी को सराय रामराज के निकट जलालपुर मे तथा 22 फरवरी को मेरठ की ककरखेड़ा उपबस्ती में आयोजित होने वाले अमृत प्रचार कार्यक्रम मे अमृत छकने के लिए सैकड़ो हरिजनो द्वारा तैयारियाँ की जा रही है। इसके अलावा इन कार्यक्रमों मे वे हरिजन भी अमृत छक सकेगे जो 26 जनवरी को नगला हरूरू मे वंचित रह गये थे। **गणतन्त्रदिवस** के अवसर पर नगला हरूरू गाँव में आयोजित दूसरे अमृत प्रचार कार्यक्रम में सिख बनने वाले अधिकाश हरिजनो ने सामाजिक व प्रशासनिक उत्पीडन से क्षुब्ध न होकर बल्कि नव सिखों से प्रेरणा लेकर अमृत छका इस समारोह में चार जनपदो के 290 हरिजनों ने सिखधर्म स्वीकार किया था जबकि दो माह पूर्व इसी गाँव से पचास हरिजनो ने अमृत छका था। सामाजिक व पुलिस उत्पीडन से क्षुब्ध हरिजनों ने इस्लाम व ईसाधर्म स्वीकार न कर सिख धर्म ही स्वीकार किया ताकि वे सम्मानजनक स्थिति में जीवन यापन करने के साथ हिन्दू धर्म की रक्षा भी कर सके, यह बात अमृत छकने वाले अनेक नव सिख ने कही। दो माह पूर्व नगला हरूरू गाँव के हरिजनों द्वारा सिख बनने की घटना के बारे में पुलिस प्रशासनिक व गुप्तचर स्तर से जाँच कराये जाने के अलावा विधान परिषद की संसदीय व, सामाजिक सद्भाव समिति ने स्वयं आकर जाँच की थी तथा उनकी समस्याओ के निराकरण व भविष्य में ऐसी परिस्थितियाँ पैदा न होने देने के लिये अधिकारियों ने उन्हें आश्वासन दिया था तथा दावा किया था कि भविष्य में ऐसी घटना नहीं होगी जबकि जिलाधिकारी ने एक भेट मे कहा था कि लोकतन्त्र मे धर्मपरिवर्तन करने के लिये हर कोई स्वतन्त्र है। उसके बावजूद परगनाधिकारी व पुलिस क्षेत्राधिकारी एक सप्ताह तक नगला-हरूरू मे डेरा डाले रहे। उन्होने नव सिखों की संख्या मे कमी लाने का प्रयास किया ।

शोक व सवेदना प्रस्ताव

----- महर्षि दयानन्द अन्तरराष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा के आश्रमिको की यह सभा महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट-टकारा के सुप्रतिष्ठित सदस्य श्री गन्धर्वसेन जी खोसला के अप्रत्याशित निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

अन्तर्यामी उनकी पावन आत्मा को चिर शान्ति एव आनन्द का प्रसाद दे और वियोग सन्तप्त स्वजनो-परिजनो को धीरज रखने का विवेक प्रदान करें ।

आर्य पर्वों की सूची

सन 1989 तदनुसार

वि० सं० २०४५-४६

स0	नाम पर्व	चन्द्रतिथि	अंग्रेजीतिथि	वार
1-	मकर संक्रान्ति	पौष सुदी 7	14-1-1989	शनिवार
2-	बसन्त पंचमी	माघ सुदी 4	10-2-1989	शुक्रवार
3-	सीताष्टमी	फा0वदी-8	28-2-1989	मंगलवार
4-	दयानन्दबोध रात्रि (शिवरात्रि)	फा0 वदी15	6-3-1989	सोमवार
5-	लेखराम तृतीया	फा0 सुदी-3	9-3-1989	बृहस्पतिवार
6-	होली(नवसस्येष्टि)	फा0सुदी-15	22-3-1989	बुद्धवार
7-	आर्यसमाज स्थापना दिवस	चैत्र प्रतिपदा	6-4-1989	बृहस्पतिवार
8-	रामनवमी	चैत्र सुदी-9	14-8-1989	शुक्रवार
9-	हरि तृतीया	श्रावणी सुदी-3	4-8-1989	शुक्रवार
10-	श्रावणी(रक्षाबन्धन)	श्रावणी सुदी-15	17-8-89	बृहस्पतिवार
11-	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	भाद्र बदी-8	24-8-89	बृहस्पतिवार
12-	विजयीदशमी	अश्विनि सुदी10	10-10-89	मंगलवार
13-	गुरु विरजानन्द दिवस	अश्विनि सुदी13	13-10-89	शुक्रवार
14-	महर्षि निर्वाण दिवस(दीपावली)	कार्तिक वदी15	29-10-89	रविवार
15-	श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पौष सुदी-11	23-12-89	शनिवार

नोटः- देशी तिथियों की घटाबढी मे पर्वों की तिथियों में परिवर्तित हो सकती हैं ।

मनमोहन तिवारी
सभामन्त्री।

कलकत्ता आर्य समाज की यज्ञशाला में आग लगा दी

साम्प्रदायिक तत्वो की शरारत

दिल्ली 10 जनवरी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती ने बताया कि पिछले दिनो आर्य समाज कलकत्ता का वार्षिक उत्सव बड़ी सज-धज से मोहम्मद अली पार्क में मनाया जा रहा था। रात्रि के 11 बजे कलकत्ता पुलिस के कुछ सिपाहियो ने पन्डाल के बाहर पुस्तक विक्रेताओ की दुकानो पर छापा मारकर उनकी बिक्री की किताबे उठाकर ले गईं। कुछ समय पश्चात् पुलिस के सिपाही स्वय ही पुस्तक विक्रेताओ की किताबें वापिस कर गये। तत्पश्चात् रात के 1 बजे कुछ शरारती साम्प्रदायिक लोगो ने उत्सव स्थल पर मोहम्मद अली पार्क में यज्ञ मण्डप को आग लगाकर उसे भस्म कर दिया।

इस घटना से नगर के हिन्दुओं में तनाव उत्पन्न होना स्वाभाविक था। नौजवानों ने 2 घण्टा तक सडक रोककर यातायात ठप्प कर दिया। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आरोप लगाया है कि सरकार ने इस काड के सम्बन्ध मे कोई कार्यवाही नहीं की।

उन्होंने पश्चिम बगाल सरकार के मुख्य मन्त्री श्री ज्योति-बसु को तार एव पत्र लिखकर इस घटना की जाँच कराने का अनुरोध किया है। स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने कहा कि गत वर्ष भी आर्य समाज के उत्सव पर लगी पुस्तक दुकानो से पुलिस सत्यार्थ प्रकाश की प्रतियां उठाकर ले गई थी। जिन्हें स्त्री समाज के विरोध करने पर पुलिस स्वयं वापिस कर गई।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने केन्द्र सरकार के गृह मन्त्री श्री बुटासिंह को विरोध पत्र लिखकर इस घटना की जाँच कराने का अनुरोध किया है। उन्होंने कहा कि यदि जल्दी सरकार ने हमारी न्याय पूर्ण माँग पर ध्यान न दिया तो केन्द्रीय गृह-मन्त्री के निवास पर प्रदर्शन किया जायेगा।

इस सम्बन्ध मे उ0प्र0 आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री एवं प्रधान ने गहरा रोष व्यक्त करते हुए शासन से तुरन्त आवश्यक कार्यवाही करने का अनुरोध किया है।

मेरठ में गणतन्त्र दिवस

दिनांक 25-1-1989 को गणतन्त्र दिवस की पूर्व सन्ध्या पर आर्य विद्या सदन, थापर नगर, मेरठ द्वारा आर्य - भवन, थापर नगर में गणतन्त्र - दिवस बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। अध्यक्षता श्री पं० इन्द्रराज- जी ने की। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष एवं आर्य विद्या सदन के अध्यक्ष श्री पं० इन्द्रराज जी ने ध्वजारोहण किया। बच्चों ने ध्वजगीत का गान किया। विद्यासदन के बच्चों ने अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। श्री इन्द्रराज जी ने अपने उद्बोधन से पूर्व महापालिका के नवनिर्वाचित सदस्य श्री मुलखराज जी खन्ना का स्वागत करते हुए गणतन्त्र के महत्व पर प्रकाश डालते हुए। सब को गणतन्त्र की रक्षा करने का संकल्प लेने को कहा। उन्होंने सब बच्चों को अनुशासन को अपने जीवन में धारण करने की प्रेरणा की। श्री कुन्दनलाल जी ने सेविकाओं को एक-एक शाल भी प्रदान किया। श्री अशोक कुमार जी मलहोत्रा मन्त्री आर्य विद्यासदन ने सब का धन्यवाद किया ।

चावली देवी आर्य कन्या इन्टर कालेज में गणतन्त्रदिवस दिनांक- 26·1·89 को प्रातः 8 बजे गणतन्त्र दिवस बड़े समारोह पूर्वक चावली देवी आर्य कन्या इण्टर कालेज ब्रह्मपुरी में मनाया गया। मुख्य अतिथि श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का स्वागत किया गया। सभा के अध्यक्ष द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात ध्वजगीत, स्वागतगान, कविता पाठ, सांकेतिक गान, सामूहिक गान एवं लेख आदि छात्राओं द्वारा सफलता पूर्वक प्रस्तुत किए गए। मुख्य अतिथि श्री पं० इन्द्रराज जी ने अपने वक्तव्य में बताया कि आजादी के पश्चात् हमारे राष्ट्र के करणधारों ने तानाशाही के रास्ते को न चुन कर जनतन्त्र का रास्ता चुना जिसमें राज्य की पूरी सत्ता एक मतदाता के हाथ में है। जनतन्त्र में कोई एक सत्ताधारी लोगों को नहीं हांकता अपितु जनता ही अपना नेता चुनती है। आज मत देने का अधिकार तो मिल गया परन्तु मत के प्रयोग की शिक्षा नहीं दी गई। श्री पं० इन्द्रराज जी ने बताया कि आज विदेशी शक्तियाँ धन के बल पर धर्मपरिवर्तन नहीं अपितु राष्ट्र परिवर्तन में संलग्न हैं जिन्हें आज के दिन रोका जाना बहुत आवश्यक है। प्रबन्धक श्री वीरेन्द्र रत्नम·जी ने मुख्य अतिथि का धन्यवाद किया एवं मुख्य अतिथि श्री पं०इन्द्रराज- जी के द्वारा प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहने वाली छात्राओं को पुरस्कार दिए गए।

हरिशंकर आर्यविद्या सदन में गणतन्त्र दिवस

दिनांक- 26-1-89 को प्रातः 10·30 बजे हरिशंकर आर्य विद्या सदन अनन्दपुरी मेरठ में गणतन्त्र दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। बच्चों ने श्री मती शकुन्तला आर्या धर्मपत्नी श्री पं० इन्द्रराज जी द्वारा ध्वजारोहण के पश्चात् झण्डागान प्रस्तुत किया। डम्बल और अन्य व्यायामों के सुन्दर प्रदर्शन के पश्चात् श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने बच्चों को अनुशासन में रहने की प्रेरणा की तथा उन्हें कभी भी ध्वज न झुकने देने का संकल्प लेने को कहा। श्री हरिभाव सिंह जी ने समस्त आगन्तुकों का धन्यवाद किया। प्रसाद का वितरण श्री मनोहरलाल जी प्रधान की ओर से किया गया।

आर्य कन्या इण्टर कालेज स्वामीपाड़ा मेरठ में
गणतन्त्र दिवस

दिनांक- 26-1-89 को आर्य कन्या इण्टर कालेज स्वामीपाड़ा मेरठ में गणतन्त्र दिवस बड़े समारोह से मनाया गया। कालेज के प्रधान श्री मनोहरलाल जी ने ध्वजारोहण किया। तत्पश्चात् बच्चों ने झण्डागान, सामूहिकगान, कविताएँ, सांकेतिकगान, लोक नृत्य आदि कई बहुत ही व्यवस्थित, आकर्षक और सफल प्रदर्शन किए। श्री मनोहरलाल जी ने अपने आर्शीवचन में बच्चों को बताया कि जब से हम आजाद हुए हैं हम ने चारों और उन्नति की है। देश में सड़कें, रेलें, पुल, नहरें और कल कारखाने लगाए गए हैं और एक आम आदमी की आर्थिक अवस्था सुधरी है। हमें बराबर आगे बढ़ते रहने का संकल्प लेना चाहिए। श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभी उत्तर प्रदेश ने बच्चों को अपने जीवन में अनुशासन लाने की प्रेरणा करते हुए एक अच्छा नागरिक बनने की कामना की। उन्होंने बताया कि देश में भौतिक उन्नति तो हुई है परन्तु चरित्र निर्माण नहीं हुआ। अतः बच्चों को सुशिक्षित, अनुशासित और योग्यता से अपने आप को पूरित करने का संकल्प लेना चाहिए एवं अराष्ट्रीय और विघटन कारी शक्तियों के विरुद्ध संघर्षरत रह कर अपने गणतन्त्र और स्वतन्त्रता की रक्षा का व्रत लेना चाहिए। श्री राधेलाल सर्राफ एण्ड सन्स चैरिटेबल- ट्रस्ट की ओर से नगर में चारों इण्टर कालेज में प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाली तथा अपने कालेज में इण्टर एवं हाईस्कूल में प्रथम द्वितीय और तृतीय आने वाली छात्राओं को पुरस्कार वितरण किया गया। पुरस्कार वितरण का कार्य एवं लगभग 1000 छात्राओं के प्रसाद वितरण के व्यय का वहन श्री मनोहरलाल- जी प्रधान की ओर से हुआ ।

गोदावरी आर्यविद्या सदन में गणतन्त्र दिवस

दिनांक 26-1-89 को दोपहर 2 बजे से गोदावरी देवी आर्य विद्या सदन मुफतीवाड़ा मेरठ में गणतन्त्र दिवस बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा ध्वजारोहण हुआ। तत्पश्चात् बच्चों ने इतने आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किए कि बच्चों को जनता से बहुत इनाम प्राप्त हुए। यह उल्लेखनीय है कि इस शिक्षण संस्था में 60 प्रतिशत बच्चे मुसलमान हैं जिन्होंने इस विद्यालय का कीर्तिमान स्थापित किया हुआ है। श्री इन्द्रराज जी ने अपने आर्शीवचन में बच्चों को बताया कि आज आप लोग देशभक्ति में गारहे हैं झूम रहे हैं और नाच रहे हैं यह सब गणतन्त्र की बदौलत ही है। यदि देश में तानाशाही होती तो यह प्रसन्नता का वातावरण हो ही नहीं सकता था। देश की स्वतन्त्रता और गणतन्त्र की रक्षा के लिए इस देश में हिन्दू-मुसलिम और इसाई आदि सब को प्रेम प्यार से मिल जुलकर रहना होगा तभी हम संसार में सिर ऊँचा करके चल सकते हैं। श्री जगदीश नारायण सिंह जी प्रबन्धक ने सब का आभार प्रकट किया। पारितोषिक वितरण श्री विनोद प्रकाश जी गुप्त से कराया गया तथा पारितोषिक के लिए 500/=रूपये देने पर उन का हार्दिक धन्यवाद किया गया।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

गौरीपुरा मुहल्ला समिति की ओर से
नगर महापालिका में निर्वाचित सदस्यों का अभिनन्दन

मेरठ-नगर महापालिका के लिए निर्वाचित सदस्यों को गौरीपुरा मुहल्ला समिति की ओर से हार्दिक अभिनन्दन करते हुए आर्य- प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी ने कहा कि इस निर्वाचन में कई बाते उभर कर आई हैं।
§1§ कार्य करने वालों को ही जनता ने वोट दिया है।
§2§ केवल मात्र पैसे के बल पर जीतने की इच्छा वाले हार गए। §3§ युवा पीढ़ी आगे बढ़ी है। जनता ने विश्वास करके ही आप युवा लोगों को एक अद्भुत सेवा का अवसर प्रदान किया है। नगर की कई समस्याएँ है 1- सफाई 2- सड़ने 3- नालियाँ 4- सड़कें 5- बिजली 6-टेलीफोन 7-कबाड़ी- बाजार के वेश्यालय को शहर से हटा कर वेश्याओ का पुनर्वसन एवं नगर महापालिका के लिए योग्य और ईमानदार मेयर·एवं उपमेयर का निर्वाचन। यदि आपने वहाँ जाकर नगर के हित में कोई भी आवाज उठाई तो समस्त जनशक्ति आप के पीछे खड़ी होगी।

हमें आशा है कि दसियों वर्षों के पश्चात जो आपने जनता का विश्वास प्राप्त किया है इस को नगर के विकास के लिए जनता का पूर्ण सहयोग भी प्राप्त करेंगे। तत्पश्चात गौरीपुरा के प्रतिष्ठित सदस्य श्री रामानन्द जी ने विजित प्रत्याशी श्री अब्दुल फहीम का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। श्री हरसरन- जी गर्ग ने विजित प्रत्याशी श्री नरेन्द्र जी अग्रवाल, श्री शिवराज- सिंह जी ने विजित प्रत्याशी श्री तालक रामजी का, श्री सुरजीत- लाल जी ने विजित प्रत्याशी श्री कृष्णकुमार जी शर्मा का एवं श्री गोपाल दासजी ने विजित प्रत्याशी श्री आशाराम जी का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया। तब मुहल्ला समिति की ओर से इन विजित प्रत्याशियों के सम्मान में भव्य सहभोज दिया गया। श्री पं०इन्द्रराज- जी ने मुहल्ला गौरीपुरा समिति के अधिकारियो का भी धन्यवाद किया। तथा इस सफल आयोजन के लिए श्री सतीश शर्मा जी को बधाई दी।

सभामन्त्री।

आर्यमित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5मीराबाई मार्ग,लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 जी/एन0पी0 79
माघ कृष्ण 14
5 फरवरी रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख प

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

वेद प्रचार

पं0 इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के निर्देशन में सभा के उपदेशक श्री महावीर शास्त्री जी ने मेरठ मे आकर निम्नलिखित संस्थाओं में वेद प्रचार किया:-

1- आर्य समाज मेरठ शहर । 2- महिला आर्यसमाज मेरठ-शहर

3- आर्य कन्या इण्टर कालेज मेरठशहर 4- डी0ए0वी0-हाईस्कूल सदर।

5- रघुनाथ गर्ल्स इण्टर कालेज मेरठ 6- मेरठ जिला कारागार

7- भारती कन्य इण्टर कालेज सदर 8- वाल्मीकि-बस्ती मोहल्ला पोदीवाड़ा

9- वाल्मीकि बस्ती सदर ।

शास्त्री जी ने वैदिक सिद्धान्तो, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा से बच्चो को परिचित करवाया ।

आर्य समाज आदर्शनगर लखनऊ

1-	संरक्षक-	श्री परमानन्द जी तलवार
2-	प्रधान-	श्री केप्टन सुखपालसैनजी मेहता
3-	मन्त्री-	श्री तिलक नारायण तलवार
4-	कोषाध्यक्ष-	श्री बसन्त प्रकाश जी चावला

- आर्य समाज फतेहपुर गयन्द का वार्षिकोत्सव दि0 16-1-88 से 18-11-88 तक बड़े उल्लास से मनाया गया जिसमें प0 ब्रह्मानन्दार्य प्रचारक , पं0 नेम प्रकाश आर्य एवं श्री ओमलाल ढोलक के भजन एव प्रवचन हुए। पं0 नेम प्रकाश की धनुर्विद्या प्रदर्शनी हुई। जनता ने इस कार्य में सोल्लास भाग लिया।

निर्वाचन

प्रधान	-	श्री जगदीश सिंह आर्य
मन्त्री	-	श्री जितेन्द्रपाल सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष	-	श्री हरीमोहन आर्य

आर्य समाज श्रृंगार नगर लखनऊ

1-	प्रधान-	आचार्य वेदव्रत अवस्थी
2-	मन्त्री-	प0 रूपचन्द्र "दीपक"
3-	कोषाध्यक्ष-	श्री ओमप्रकाश मलिक

आवश्यक सूचना

सभी आर्य सज्जनो को विदित ही है कि, हमारे द्वारा प्राचीन अप्राप्य शास्त्रार्थों का संग्रह तीन भागों में- "निर्णय के तट पर" नाम से प्रकाशित हो चुका है, जिसमें लगभग एक सौ शास्त्रार्थो का समावेश किया जा चुका है। परन्तु हमारे पूर्ण प्रयास के बावजूद भी जो सामग्री इन खण्डों मे नहीं आ पाई उसे अब इस ग्रन्थ के भाग- 4 में प्रकाशित किया जा रहा है। जिसकी लागत मात्र मूल्य केवल अस्सी रु0 मे बुक किया जा रहा है।

आप अभी केवल 30/-रु0 भेज कर अपनी प्रति बुक करा सकते हैं। शेष 50/-रु0 ग्रन्थ के तीन हिस्से छपने पर मँगा लिये जायेंगे। यह छूट केवल 31 मार्च 1989 तक ही रहेगी। इसके बाद यह ग्रन्थ 200/- रु0 में मिलेगा। ग्रन्थ की प्रतियाँ बुकिंग के आधार पर ही छपेंगी । ग्रन्थ की सामग्री व प्रारूप को देखकर आप चकित रह जायेंगे। क्योंकि यह कार्य किसी व्यापारिक दृष्टिकोण से नहीं किया जा रहा, बल्कि - "पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज" की अन्तिम इच्छा को पूर्ण करने हेतु किया जा रहा है।

आशा है आप लोग स्वामी जी की अन्तिम इच्छापूर्ति में अधिक से अधिक प्रतियों के ग्राहक बन कर यश एवं पुण्य के भागी बनेंगे।

निवेदक-

लाजपत राय अग्रवाल,
[संचालक]
अमर स्वामी प्रकाशन विभाग,
1058 विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य ओ३म् मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० 2241/57 घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85

माघ शुक्ल - 7 रविवार, संवत 2045 वि०, दिनांक 12 फरवरी 1989



अ देवानामपि पन्थामगन्म

ऋग्वेद 10/2/3

हे प्रभो! हमे ऐसी शक्ति प्रदान कीजिए कि हम निष्काम ज्ञानियों के मार्ग पर ही सदा चलते रहें।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम०ए०,

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०,

साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु०251/-
वार्षिक	रु० 30/-
छमाही	रु० 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष 91

अंक 7

महर्षि दयानन्द का जन्म दिवस

उदित हुए तुम पुण्य धरा पर-
जन का ताप मिटाने को।
दनुज बने इस मानवमन को -
शिव संकल्प सिखाने को ।
जगती को आर्य बनाने को।।

-इन्द्र पाठक

----- और वेद ने कहा- "त्वमस्माकं तव स्मसि" तू हमारा है हम तेरे हैं। यही हमारा तुम्हारा सम्बन्ध है और यही हमारे तुम्हारे सम्बन्ध की पराकाष्ठा है। यहाँ न कोई उपमान है न उपमेय। लेकिन प्रश्न यह है कि तुम बड़े हो कि हम, हमने तुम्हें बुला ही लिया। और तुम सब कुछ छोड़कर दौड़े चले आये, मोक्ष सुख भी छोड़ दिया- महीयसी महादेवी ने कहा था- "विशाल, शिव और सत्य के पक्ष का समर्थन तो सब करते हैं परन्तु विशालता, शिवता और सत्यता पर क्षुद्र, अशिव और असत्यता का दावा प्रमाणित करके उसे विशाल, शिव और सत्य में परिवर्तन कर देना किसी महान् आत्मा का ही सृजन हो सकता है। अमृत को अमृत और विष को विष के रूप में ग्रहण करके तो सभी दे सकते है परन्तु विष को अमृत बनाकर पिलाना तो किसी विदग्ध वैद्य का ही काम है"। और सचमुच तुमने गरल का घूंट पीकर अमृत की वर्षा की थी। बड़े तो तुम ही थे लेकिन अपने बड़ेपन को छोड़कर, आनन्द के लहलहाते मोक्ष सुख को छोड़कर हम जैसों को बड़ा बनाने आ गये। इससे बड़ी विशालता और शिवता क्या हो सकती है। ऐसे ही लोकोपकारी महापुरूषों की प्रशस्ति में पवित्र वेदमाता कहती है:-

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुप निषेदुरग्ने ।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उप संनमन्तु ।।

-अथर्व 40/3/29

प्रभु के परमज्ञान रूपी प्रकाश से प्रदीप्त मन्त्र दृष्टा महान् पुरुष संसार का कल्याण और सुख चाहते हुए संसार में जन्म लेते हैं और सबसे प्रथम स्वयं तपस्या और व्रतपालन की दीक्षा लेकर स्वयं तपस्वी बनते हैं और फिर उस तप और दीक्षा से जनकल्याण करते हुए राष्ट्र को बल तथा ओज प्रदान करते हैं। ऐसे महान् पुरुष सदैव अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय हैं ।

आज हमारा समाज अनेको उपजातियों, उपवर्णों, सम्प्रदायों में विभक्त है। मध्ययुग में प्रचलित अनेकों दन्त कथाओं, पौराणिक आख्यानो एवं सड़ी-गली मान्यताओं ने इसे बुरी तरह जकड़ रखा है। इसी ताप परिताप और अज्ञान को मिटाने के लिए प्रभु की असीम अनुकम्पा से उस महान् आत्मा ने इस धराधाम पर आज ही के दिन जन्म लिया था। हम आर्यों का कर्त्तव्य है कि उस युग सन्देश वाहक महर्षि के सन्देश को संसार के कोने-कोने में पहुँचा दें। उसके दिए हुए मूलमन्त्र "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को चरितार्थ कर दें तभी हम ऋषि-ऋण से मुक्त हो सकते हैं।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।

--राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- माघ शुक्ल - 7 संवत् 2045 12 फरवरी 1989
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

श्री जीवेन्द्रनाथ कौल विजयी



श्री कौल लखनऊ जनपद के उदीयमान कांग्रेस कार्यकर्ता हैं। आपका सम्बन्ध श्री मती शीला-कौल सदस्य लोकसभा के परिवार से है। आप लखनऊ विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी के गत कई वर्षों से सदस्य हैं। छात्र कल्याण एवं जनसेवा के कार्यों में सदैव अग्रणी रहते हैं।

श्री मनमोहन तिवारी, मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने श्री कौल को लखनऊ जिलापरिषद के अध्यक्ष पद पर भारी बहुमत से विजयी होने के उपलक्ष्य में अपनी तथा सभा की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनायें प्रेषित की हैं।

उदय ....

बसुन्धरा पुण्यवती बभूव

मेरे प्रभु!

- - - - और आज ही के दिन तूने 164 वर्ष पूर्व इस धरती पर किस इन्सान को भेजा था। आकार तो उसका वैसा ही था जैसा सब मानवों का होता है, शिशु तो वैसा ही था जैसे सब होते हैं - प्यारे, दुलारे माँ के लाड़ले। पर अन्दर कौन था - यह आज तक दुनियाँ नहीं समझ पायी, जैसे तुझे नहीं समझ पायी है। समझाने के लिए बहुत तप करना पड़ेगा न, क्योंकि तू तो तपस्वियों का तपस्वी है। हम जैसे तपहीन, श्रद्धाहीन, भाग्यहीनों के बीच तपोपूत आत्मा भेज ही दी। धरती के भाग जग गये - सोचा होगा अब मुझपर स्वर्ग उतर आयेगा, क्योंकि स्वर्गीय दूत आ गया है। पाखण्ड की कालिमा नष्ट हो जायेगी, ज्ञान का पुंज नील निलायम से लेकर क्षितिज के कोने कोने को आलोकित कर देगा। कैसी सुन्दर थी वह बेला - अँग्रेजी की फरवरी की 12 तारीख 1825 कैसी सुन्दर थी वह धरती की कल्पना, कैसी सुन्दर थी वह खपरैल की कुटिया जहाँ उसने पहिला बोल बोला था, किस भाषा में बोला था - - - गुजराती तो जानता नहीं था, हिन्दी भी नहीं, अँग्रेजी भी नहीं। उस भाषा को समझना मुश्किल है- बहुत मुश्किल। और वह जननी कितनी सुन्दर रही होगी जिसने अपनी कोख में तेरी अमूल्य धरोहर पाल पोसकर आज ही के दिन हमें सौंप दी थी। और उस दिन सचमुच टंकारा का कण-कण अनहद नाद से गुंजित हो उठा था। कोई स्वर्गीय टंकार टंकारा के उस उन्मुक्त आकाश में बहते हुये पवन के साथ मिलकर वैदिक मन्त्रों की ध्वनियों का, सुरों का पूर्वाभ्यास करने लगा था।

" कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती बभूव"

- - - - और सबसे बड़ी बात तो यह है - कि तूने भी तो चैन की बंशी बजाई थी उसदिन - अब दुनियाँ में मेरी बात मानी जायेगी, वह मेरे उपदेशों की अनुगामिनी बन जायेगी। पर तू, क्या यह भूल गया था, तीनों कालों का ज्ञाता होकर भी, कि तेरी यह दुनियाँ कितनी बिगड़ चुकी है, पदलोलुप, अर्थलोलुप, ईर्ष्यालोलुप हो चुकी है। तेरे इस प्यारे दुलारे को ईंटों और पत्थरों की माला पहनायेगी, गालियों और विष के भरे प्यालों से स्वागत करेगी - यह भी नहीं सोचेगी यह किसका प्यारा है और किसका भेजा हुआ है।

- - - - और हम कृतज्ञ आर्यसमाजी आज उसे फिर याद कर रहे हैं उसी मुँह से उसी हृदय से। उसके आशीर्वाद से हमने बड़े-बड़े संस्थान खोल दिये हैं, पैसे की कमी नहीं है, सोने की दीवारें लिए हुए लक्ष्मी हमारे आगे आगे चल रही है। विद्वानों की भी कमी नहीं है, वेद वीणा बजाने वालों की पूरी फौज तैयार हो गई है। पुरोहित तो बरसाती मच्छर की तरह बढ़ रहे हैं। बगल में संस्कार विधि .... ओं स्वाहा से आकाश गूँज रहा है पर हाय रे ? कितनी दूर जाना था कितनी दूर पहुचे हैं। 164 माइनस 30 = 134 वर्ष बहुत होते हैं। देखो इस्लाम इतने ही वर्षों में पूरे मध्य एशिया को निगल गया था। ईसाइयत दुनियाँ के कोने कोने में पहुँच गई थी। बुद्ध के तथागतों ने शिष्यों ने भिक्षु और भिक्षुणी बनकर सम्पूर्ण दक्षिण एशिया, चीन, जापान, मलाया, सिंगापुर, इन्डोनेशिया, बर्मा, लंका, अफगानिस्तान तक "धम्मं शरणं गच्छामि" "बुद्धं शरणं गच्छामि" का सन्देश पहुँचा दिया था पर हम कोल्हू के बैल की तरह चलते हैं, बढ़ते नहीं। सरकते हैं, दौड़ते नहीं। और तुम वह शक्ति, उत्साह और लगन हमें देते क्यों नहीं। माना कि हम कृतघ्नी हैं, लोलुप हैं, स्व में डूबे हुये हैं पर हैं तो तुम्हारे ही -

"भले जो हैं हम तो हैं तुम्हारे, बुरे हैं जो हम तो हैं तुम्हारे तुम्हारे होकर भी हम दुखारी दया करो हे - - - - "

और तुम्हीं ने तो उसे भेजा भी था। इस निष्प्राण जाति में प्राण फूँकने। पाखण्डों, अन्धविश्वासों, कुरीतियों और दम्भों में फँसी मानवता को दनुजता से उबारकर अमृत का घूँट पिलाने। वरदायिनी वेदमाता का वरद आशीर्वाद हमें पुनः प्राप्त कराने। इसलिये प्राज्ञ दयानन्द तेरा उदय महान था, शताब्दी का नहीं, सहस्त्राब्दियों का महान ··· महान सर्वोपरि महान, और उससे भी महान था तेरा अस्त।

और आज कृतज्ञता भरे क्षणों में हम उस महान आत्मा के जन्म दिवस पर तेरे ऋण को चुकाने का व्रत लें - यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि है। xxxxxx

आवश्यक सूचना

सभा से सम्बन्धित उत्तर प्रदेश की समस्त आर्यसमाजों को सूचित किया जाना है कि आर्य सभासद उन्हीं सदस्यों को घोषित करें, जो रु05/- अथवा अधिक मासिक चन्दा देते हों।

2- ग्यारह आर्य सभासदों से कम का आर्यसमाज नहीं माना जायगा।

3- आर्य सभासदों की सूची घोषित कर 28 फरवरी तक अपने समाज का निर्वाचन अवश्य सम्पन्न करें।

-मनमोहन तिवारी,
सभा मन्त्री।

चतुर्थ वेद बेदांग पुरस्कार १९८९

आर्य समाज सान्ताकुज बम्बई द्वारा प्रवर्तित वेदवेदांग पुरस्कार 1989, इस वर्ष 29 जनवरी को आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान अनेक ग्रन्थों के रचयिता गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति मा0डा0 रामनाथ वेदालंकार को पुरस्कार के रूप में 21000/=' की थैली सम्मानपत्र, ट्राफी, शाल तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री पन्नालाल पीयूष को 11000/= की थैली सम्मानपत्र ट्राफी, शाल के रूप में भेंट किया गया। यह समारोह पू0 स्वामी-विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। आर्य मित्र परिवार की ओर से शत-शत बधाई।

-सभामन्त्री।

राष्ट्रीय जीवन और उपनिषद्

(कृष्णदत्त एम०ए०, बी०एड्०, हैदराबाद)

जीवित जातियाँ सदैव स्वतन्त्र रहना चाहती हैं, प्रगति और विस्तार चाहती हैं और प्रत्येक प्रकार के आक्रमण से अपने आपको सुरक्षित रखना चाहती हैं। ये इच्छाएँ एक स्वतन्त्र राष्ट्र के लिए स्वाभाविक और नैसर्गिक हैं। इनका विकास कुछ नैसर्गिक नियमों के अन्तर्गत होता रहता है। हम भारतीय स्वतन्त्र राष्ट्र के नागरिक हैं। अतः ऊपर की इच्छाएँ हमारे हृदयों में उत्पन्न होंगी। यदि इन इच्छाओं को दबाया गया, इनके विकास की ओर विशेष लक्ष्य नहीं दिया गया अथवा इनका दुरुपयोग किया गया, तो राष्ट्र को क्षति पहुँचेगी। अतः प्रत्येक भारतीय को चाहिए कि जीवन के उन मूल-नैसर्गिक नियमों को जान ले जिनके कारण हम अपने सजीव होने का प्रमाण वर्तमान के संसार को दे सकें और भावी इतिहास में अंकित कर सकें।

बृहदारण्यक उपनिषद् में प्राणी के चार लक्षण बतलाये गये हैं:- 1- प्राणोवै उक्थं, 2- प्राणो वै यजुः, 3- प्राणो- वै साम 4- प्राणो वै क्षत्रं ।

प्राणो वै उक्थं अर्थात् जीवन उठने या बढ़ने का नाम है। जो प्राणी है उसका विकास होता है। यह विकास अन्दर से होता है। जिस क्षण से यह विकास रुकता है, उसी क्षण से जीवन की समाप्ति के लक्षण दृष्टि-गोचर होने लगते हैं। यदि शिशु की बाढ़ रुक जाए, तो उसे रुग्ण समझा जाता है, उसका इलाज होता है। मनुष्य के अंग शिथिल पड़ने लगते हैं, अवयव की शक्ति क्षीण होने लगती है, तो इस को जरावस्था कहते हैं और ऐसा प्राणी तेजी के साथ मृत्यु की ओर बढ़ता जाता है। ऐसी दशा में हमारी वृद्धि रुक जाती है और एक क्षण ऐसा आता है कि वह प्राणी मृत बन जाता है। अतः निरन्तर बढ़ना प्राण और जीवन का लक्षण है ।

प्राणो वै यजुः अर्थात जीवन संगठन का नाम है। यह संगठन दो प्रकार का होता हैः- 1- आंतरिक, 2- बाह्य । प्राणी अपने विकास के लिए भोजन का संग्रह करता है। प्राणी जो कुछ खाता-पीता है, उसको अपने शरीर का भाग बना लेता है। यह भी संगठन और संग्रह ही है। किन्तु यह आंतरिक संगठन है। प्राणियों में ही यह गुण देखा जाता है। निर्जीव पदार्थो को इसकी आवश्यकता नहीं होती । प्राणियों में बाह्य संगठन भी होता है। जीवधारी एक से अधिक मिल कर रहते हैं। गिरोह बना कर या दल के साथ रहना प्राणियों का एक मुख्य लक्षण है। नर को मादे की और मादे को नर की आवश्यकता होती है, माँ को संतान की और सन्तान को माँ की आवश्यकता होती है। मनुष्य में तो यह गुण अत्यधिक विकसित रूप में पाया जाता है। मनुष्य तो जन्म से लेकर मृत्यु तक परिवार चाहता है, सगे- सम्बन्धियों की उसको आवश्यकता है, समाज की उसको जरूरत है। प्राणियों को ही आन्तरिक और बाह्य संगठन या संग्रह की आवश्यकता होती है।

प्राणो वै साम अर्थात् जीवन अपने आप में विलीन कर लेने या अपने समान बनाने का नाम है। प्राणी ही अपने समान प्राणी को जन्म देता है मनुष्य, पशु-पक्षी सभी में यह गुण है। इसीलिए कहा गया है कि प्राणो वै साम अर्थात् अपने जैसा बना लेना ही जीवन है।

प्राणी का चौथा लक्षण है, प्राणो वै क्षत्र, अर्थात जीवन अपनी रक्षा करने का नाम है। जितने भी प्राणी हैं वे सदैव तत्पर रहते हैं। प्राणी शरीर को क्षति से बचाता है। प्रत्येक प्राणी अपने आपको नाश से सुरक्षित रखना चाहता है। अपने आपको मृत्यु से दूर रखना चाहता है। नष्ट करने वाली शक्ति से युद्ध करता है। निर्जीव पदार्थ में ऐसी कोई चेष्टा नहीं होती, जिससे इस बात का आभास होता हो कि वह अपनी रक्षा करना चाहता है।

प्राणी के इन लक्षणों की पुष्टि वर्तमान विज्ञान भी करता है। जीवन के जो लक्षण विज्ञान ने बतलाये हैं, वे हैं:-

अर्थात् बढ़ना, आत्मसात् करना, पुनरुत्थान और संरक्षण ।

उपनिषद् ने एक प्राणी या जीवधारी के चार लक्षण बतलाये हैं, वही एक समाज जाति या राष्ट्र के लिए भी सत्य हैं। यदि हम यह देखना चाहें कि कोई समाज या जाति जीवित है, तो उसके लिए भी यही कसौटी है। समाज और जाति भी तो मनुष्य से ही बनते हैं। अतः जो सिद्धान्त मनुष्य के लिए है, वही समाज के लिये भी होगें।

जीवन का प्रथम लक्षण है, प्राणो वै उक्थं । जीवन बढ़ने का नाम है। आर्य जाति निरन्तर बढ़ती गयी। उसमें सतत विकास होता गया। फलस्वरूप आर्यावर्त देश संसार का शिरमौर्य बना रहा। धन-धान्य, ज्ञान-विज्ञान, आचार-विचार सभी में आर्य जाति संसार के लिये आदर्श बनी रही। यह तो हुआ हमारा अतीत। आधुनिक काल ऐसा नहीं है। हमारा विकास रुक गया था, हम दासता की श्रृंखला में आबद्ध हो गये थे। सजीव जाति कभी दास नहीं बनती। उसका पतन नहीं होता। पतनावस्था उसके रुग्ण होने का लक्षण है, उसके विकास के रुकने का प्रमाण है। हमारी जाति रुग्ण हो गई थी, अतः इसका उपचार हुआ। सुधारकों ने नाना-रूपों में इसका सुधार किया। हम स्वतन्त्र हुए, किन्तु केवल स्वतन्त्र होना हमारे पूर्ण होने का चिह्न नहीं है। स्वराज्य के साथ सुराज्य भी चाहिए। वह अभी हम से दूर है। हमारी जाति में अभी अनेक रोग हैं, जो हमारी बाढ़ को रोक रहे हैं हमारे विकास में बाधक हैं। भौतिक विकास की योजनाएँ बन रही हैं किन्तु आत्मिक विकास की ओर पूर्ण उपेक्षा हो रही है। दोनों दिशाओं में जब हमारा विकास होगा, तभी हम पूर्ण सजीव कहलायेगें। इसका यह अर्थ नहीं है कि हम निष्प्राण हैं। हमारे अन्दर प्राण अवश्य है और उसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि हम जीवित हैं। उर्दू कवि के शब्दों में--

यूनान, मिस्त्र, रोमा,
सब मिट गये जहाँ से,
बाकी है लेकिन अब तक,
नामो-निशां हमारा ।

कुछ बात है कि हस्ती,
मिटती नहीं हमारी,
बरसों रहा है दुश्मन,
दौरे जहाँ हमारा ।।

हमारी वर्तमान दशा रुग्णावस्था की सी है। विकास की गति रुकी हुई है या मन्द पड़ गई है, जैसे एक रोगी की स्थिति होती है।

जीवन का दूसरा लक्षण है, प्राणो वै यजुः, जीवन अपने में विलीन कर लेने या अपने समान बना लेने का नाम है। भारतीयो में यह गुण बहुत अधिक मात्रा में था। अपने देश की बात ही क्या, हमारे पूर्वजों ने दूर-दूर देशों में जाकर अपने आचार-विचार, अपने धर्म, अपनी संस्कृति के रंग में वहाँ वालों को रंग दिया था। हमारे देश में जो आया, वह हमारा बन कर रह गया। हूण आये, शक आये, यूनानी आये और पता नहीं कितने लोग आये और हमारे बन कर रहे गये। हमने सबको आत्मसात् कर लिया, अपने जैसा बना लिया। उन्हें अपना अंग बना लिया। आज कोई नहीं बतला सकता कि इस देश में इसका अंश कहा है। किन्तु आत्मसात् करने की हमारी यह शक्ति जब से नष्ट हुई है, तब से दूसरे देशों का क्या कहें, स्वयं हमारे देश में हम निष्प्रभ हो गये । बाहर की विचार धारा, बाहर का धर्म, बाहर की संस्कृति ने यहाँ पर पाँव जमाये और ऐसे जमाये कि हमारे देश का अंग भंग हो गया। हम दूसरों को आत्मसात् करने की बात तो पूर्णतः भूल ही गये, उल्टे हमने अपने हाथों अपनी क्षति कर ली, मानो हमें क्षय ने दबोच लिया है। करोड़ों विदेशी धर्मावलम्बी होकर हम से पृथक हो गये। करोड़ों को शूद्र-अछूत कह कर हमने दूर कर दिया, जाति, प्रांत की इतनी बड़ी-बड़ी दीवारें हमने अपने बीच में खड़ी कर दी कि प्रत्येक दूसरे को अपने से भिन्न समझने लग गया है। कुछ सुधारकों ने इस भेद को दूर करने का यत्न किया था किन्तु राजनैतिक अधिकार और संरक्षणों ने उस कार्य पर पानी फेर दिया। सिख अपने आपको सर्वथा पृथक समझने लग गये हैं। विदेशी धर्मो का आक्रमण तीव्र होता जा रहा है। फलस्वरूप अनेक राजनैतिक उलझनें सामने खड़ी हो रही हैं। जो जाति बाहर से आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को अपना अंश बना लेती थी, वह जाति राजनीति, धर्म, संस्कृति, भाषा, प्रांत नाना प्रकार से अपनों को पृथक करती जा रही है। यह कोई स्वस्थ लक्षण नी है। यदि ऐसी ही दशा बनी रही, तो बहुत शीघ्र देश में हाहाकार मच जाएगा, आपसी संघर्ष खड़े हो जाएंगे और कहा उत्तर-दक्षिण, कहीं भाषा और कही प्रांतों की समस्याओं पर अशान्ति फैलती जायेगी।

जीवन का तीसरा लक्षण है, प्राणो वै साम, अपने जैसा बनाना। जिस जाति और देश मे विद्वानों, राजनीतिज्ञों,

वैज्ञानिकों, प्रशासकों की श्रृंखला टूटने नहीं पाती, उसका कार्य सुचारू रूप से चलता रहता है। जिस प्रकार वंश को चलाने के लिए हर व्यक्ति सन्तान उत्पन्न करता है, उसी प्रकार प्रत्येक नेता को अपना सामाजिक उत्तराधिकारी पैदा करना चाहिए। सुधारक अपना उत्तराधिकारी, नेता अपना उत्तराधिकारी, प्रशासक अपना उत्तराधिकारी तैयार करे तभी समाज और जाति का कार्य अत्यन्त सुचारू रूप से चल सकता है। यदि कार्य करने की श्रृंखला टूटने न पाये और रिक्त स्थानों की पूर्ति होने लग जाए, तो किसी भी क्षेत्र में अच्छे, और कुशल लोगों की कमी नहीं होगी। शताब्दियों से इंग्लैण्ड में राजनीतिज्ञों का कभी अभाव नहीं रहा। राजनीति निरन्तर सीना-ब-सीना चली आ रही है। हमारे देश में ऐसी स्थिति नहीं रही। क्यों नहीं रही? इसका कारण बतलाना कठिन है। हर्ष का स्थान रिक्त रहा, पृथ्वीराज चौहान का उपयुक्त उत्तराधिकारी नहीं रहा, राणा सांगा का पुत्र पिता के विपरीत निकला, राणा प्रताप का स्थान किसी ने नहीं लिया, शिवाजी को कोई अच्छा उत्तराधिकारी प्राप्त नहीं हुआ और वर्तमान भारत की राजनीति में "नेहरू के बाद कौन" ?" का प्रश्न सभी को चिन्तित कर रहा था। सामाजिक जीवन में योग्य उत्तराधिकारी का निर्माण आवश्यक है। अन्यथा रिक्त स्थान की पूर्ति नहीं हो सकेगी। इस प्रकार का अभाव जाति के सामने भयानक स्थिति उत्पन्न कर देता है। यदि दीर्घकाल तक ऐसा अभाव बना रहा तो अयोग्य व्यक्ति जाति के कर्णधार बन कर उसकी क्षति के कारण बनते हैं।

जीवन का चौथा लक्षण है, प्राणों वै क्षत्र। जीवन अपनी रक्षा करने का नाम है। समाज पर भी मृत्यु के अनेक प्रहार होते हैं। राजनैतिक आक्रमण तो सेना के बल पर ही होते हैं, आर्थिक और सांस्कृतिक आक्रमण भी होते हैं। इस समय आर्य जाति पर हर दिशा से आक्रमण हो रहे हैं। सैनिक-आक्रमण का मुकाबला करने के लिए भारत सरकार समर्थ है। चीन और पाकिस्तान की ओर से ऐसी आशकाएं समय-समय पर होती रही हैं। आर्थिक आक्रमण के लिए भारत सरकार तत्पर है। वह किसी का उत्कोच स्वीकार करके कहीं से भी आर्थिक सहायता लेना नहीं चाहती। यह स्वस्थ्य लक्षण है। किन्तु सांस्कृतिक आक्रमण से सुरक्षा का कोई प्रयत्न नहीं हो रहा है। हमारी धार्मिक तथा सांस्कृतिक विचारधारा में परिवर्तन का कार्य विदेशियों की ओर से बढ़ गया है। स्वाधीनता से पूर्व इस उद्देश्य से जितना धन, बल विदेश से आ कर यहाँ लगता था, अब कहीं उससे अधिक विदेशी धन-बल कार्य कर रहा है। भारत सरकार धर्मनिरपेक्ष के भंवर में फंस कर इस ओर से पूर्ण उदासीन है, किन्तु स्वयं आर्य जाति के उत्तराधिकारी भी इस ओर निश्चेष्ट और उदासीन हैं।

यदि यह कहा जाए कि परोक्ष रूप में स्वयं हम इन परिवर्तनों में विदेशियों को सहायता पहुँचा रहे हैं, तो अत्युक्ति नहीं होगी। हमारी जेबों से धन निकल कर विदेशियों को साधन-सम्पन्न बनाता है। सबसे बढ़ कर हमारी सामाजिक रूढ़ियाँ उनके जाल में लोगों को बरबस फाँसने का कारण बनती जा रही हैं। इसी प्रकार शिक्षित वर्ग, उच्चाधिकारियों, प्रशासकों आदि पर विदेशीपन जिस तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है, उसको देखते हुए ऐसा महसूस होता है कि इस सांस्कृतिक आक्रमण में हमारी जाति कहीं हार न जाए। हमारी सरकार जिस भारतीय संस्कृति की रक्षा करना चाहती है, वह नृत्य, चित्रकला, लोकगान आदि मात्र हैं। इसीके शिष्टमण्डल विदेश जाते हैं, जिन्हें सांस्कृतिक मिशन का नाम दिया जा रहा है। इस प्रकार हम परोक्षरूप में भारतीय संस्कृति के संरक्षण के नाम पर पाश्चिमी सभ्यता के प्रसार, प्रचार एवं व्यवहार को उत्तेजना दे रहे हैं। इनकी रोकथाम के जो यत्न भारत में हो रहे हैं, वह अत्यन्त दुर्बल और अल्प मात्रा में है। सांस्कृतिक आक्रमण का मुकाबला हम जिस उपेक्षावृत्ति से कर रहे हैं, शायद संसार के किसी भी प्रबुद्ध समाज में इसका उदाहरण नहीं मिलेगा।

आर्य दान वीर द्वारा कम्बल वितरण

आर्य समाज मैनपुरी के विशाल-काय मन्दिर भवन तथा गुरुकुल वृन्दावन की पक्की सड़क आदि के निर्माता, आर्य-दानवीर स्व0 लाल सिंह जू "देव" के प्रपौत्र कुँ0 कमलेश सिंह जी {कुँ0 ध्रुव पाल सिंह जी "अटल" के सहोदर-अनुज}, मैनेजिंग-ट्रस्टी, कुँ0 लाल सिंह-मान सिंह "ट्रस्ट बम्बई ने, गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी, आर्य नेता डॉ0 सुमन्त कुमार जी, चेयरमैन, नगर पालिका मैनपुरी के कर-कमलों से दि0 16-1-89 को अपने ही ब्रह्मचर्य-आश्रम भवन में, एक समारोह के साथ, जनपद के चुने हुए 125 निर्धन विकलांगों को पन्द्रह हजार रु0 मूल्य के 125 वितरण कराकर पुण्य कमाया।

ऋषिबोध-पर्व

नमस्ते ,

ऋषिवर दयानन्द महाराज की पावन स्मृति में ऋषि-बोधोत्सव {दयानन्द सप्ताह} फाल्गुन कृष्ण सप्तमी से फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी संवत् 2045 वि0 तदनुसार दिनांक- 28 फरवरी 89 से 6 मार्च 1989 {मंगलवार से सोमवार} तक मनाया जायेगा।

आशा है कि इस सप्ताह को अत्यधिक उत्साह तथा लगन के साथ मनाने का भरसक प्रयत्न करेंगे, जिससे वैदिक वातावरण उत्पन्न होकर आर्य संस्कृति का प्रचार हो, आर्यों के जीवन में नैतिक सुधार होकर श्रद्धा और भक्ति की वृद्धि हो। प्रत्येक आर्य सभासद् को महर्षि की पावन स्मृति में स्वाध्याय का व्रत लेना तथा आत्म निरीक्षण करना चाहिए।

कार्य-क्रम

संकीर्तन- प्रतिदिन प्रातः नगर-नगर और ग्राम-ग्राम में टोलियाँ बनाकर संकीर्तन किया जावे।

यज्ञ- कीर्तन के पश्चात् आर्यमन्दिर में सार्वजनिक यज्ञ किया जावे-यथा सम्भव इस सप्ताह में सम्पूर्ण यजुर्वेद संहिता से वृहद यज्ञ की योजना की जावे ।

प्रचार- प्रतिदिन सायंकाल ग्रामों में नगर के भिन्न-भिन्न मुहल्लों में अथवा आर्य मन्दिरों में कथा द्वारा तथा अन्य प्रकार से वैदिक सिद्धांतों के प्रचार की विशेष योजना की जाय और ऋषि जीवन पर भी विशेष प्रकाश डाला जावे। नवीन आर्य सभासद् बनाने का प्रयत्न किया जावे। सत्यार्थ प्रकाश का बिना मूल्य या लागत मात्र मूल्य पर देकर अधिक से अधिक प्रचार करना- अन्य वैदिक साहित्य का वितरण करना ।

आचार व्यवहार- जनता में से भ्रष्टाचार व चरित्रहीनता को मिटाने के लिए भ्रष्ट गाने व दृश्यों के विरुद्ध आन्दोलन किया जावे। मादक द्रव्य निषेध व गौरक्षा पर बल दिया जावे।

दलितोद्धार- इस सप्ताह में न्यून से न्यून एक दिन अछूत कही जाने वाली जातियों में विशेष प्रकार से प्रचार तथा उनके उठाने और अस्पृश्यता को निर्मूल करने का प्रयत्न करना।

शुद्धि- इस सप्ताह में शुद्धि का कार्य विशेष रूप से करना-यथा सम्भव सह-भोज की भी उसी दिन योजना करना।

दयानन्द-जन्म-दिवस {ऋषि बोध पर्व}
6 मार्च 1989 दिन मंगलवार

प्रातः- समस्त आर्य सज्जन तथा देवियाँ आर्य मन्दिर में एकत्र होकर

1- कुछ काल वेद-पाठ करें ।
2- साधारण यज्ञ तथा पर्वेष्टि विधान किया जाय।
3- आत्मोद्धार सम्बन्धी भजन-गीत किए जायें।
4- प्रत्येक व्यक्ति आत्मोन्नति, स्वाध्याय, वैदिक धर्म प्रचार करने का अनुष्ठान करें।

मध्यान्ह--
विशेष नगर कीर्तन किया जाय। कीर्तन अधिकाधिक गम्भीर तथा प्रभावोत्पादक होना चाहिए। आर्य पुरुषों, कुमारों, देवियों की टोलियाँ बनाकर स्वयं भजन गाने चाहिए। भजनों में प्रभु भक्ति, ऋषि महिमा, जातीय गौरव, तथा आत्म सुधार के विशेष भाव होना चाहिए।

सायं-- दीपमालिका के उपरान्त मन्दिरों में वेदोपदेश तथा ऋषि जीवन पर प्रकाश डालने वाले उपदेश एवं व्याख्यान होने चाहिए।

नोट- इस सप्ताह में टोलियाँ बनाकर प्रदेशीय वेद प्रचार के लिए धन संग्रह का विशेष प्रबन्ध किया जाय, संग्रहीत धन सभा के कोष में लखनऊ के पते पर भेजना चाहिए। तथा आर्य मित्र के अधिकाधिक ग्राहक बनायें।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 लखनऊ।

भ्रम भूमिका पढ़े बिना

{स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती}
गुरुकुल प्रभात आश्रम,
भोलाझाल मेरठ {उ०प्र०}

किसी भी ग्रन्थ में ग्रन्थकर्त्ता की लिखित भूमिका का अत्यधिक महत्व होता है, क्योंकि, ग्रन्थकर्त्ता की भूमिका ग्रन्थ का सार, प्राण, प्रकाशिका एवं पथ प्रदर्शिका होती है, जो पाठक का हाथ पकड़कर ग्रन्थकर्त्ता के अभिप्राय के निकट पहुँचाने के साथ-साथ ग्रन्थ में आये हुए, दुरूह स्थलों को समझने की शक्ति भी प्रदान करती है। अत एवं विश्व का कोई भी मनीषी विद्वान् ग्रन्थ अध्ययन प्रारम्भ करने से पूर्व ग्रन्थ लेखक की भूमिका को अवश्य पढ़ता है। इसलिए पूर्णाहुति के सम्बन्ध में लिखने से पूर्व सर्वप्रथम ऋषिदयानन्द ने संस्कार विधि में जो भूमिका लिखी है। उसके उस स्थल को विद्वान् पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर देता हूँ। जिसके प्रकाश में वे स्वयं देखेंगे कि श्री विट्ठल-राव जी द्वारा संस्कारों में पूर्णाहुति न करने के जो हेत्वाभास प्रदर्शित किये गये हैं, वे कुहरे के समान अन्धकार तो कर रहे हैं किन्तु हैं क्षणिक और अब उस स्थल के आलोक के सामने छटकर पानीबनकर भूमि पर गिर कर शुष्क हो जाएगें और ऋषि का अभिप्राय चमकते हुये सूर्य के समान स्पष्ट हो जाएगा, जिससे विद्वज्जन परमप्रमोद एवं परितोष को प्राप्त होंगे।

"इसमें सामान्य विषय जो कि सब संस्कारों के आदि और उचित समय तथा स्थान में अवश्य करना चाहिए वह सामान्य प्रकरण में लिख दिया है और जो मन्त्र व क्रिया सामान्य प्रकरण की संस्कारों में अपेक्षित है उसके पृष्ठ पंक्ति की प्रतीक उन कर्त्तव्य संस्कारों में लिखी कि जिसको देख के सामान्यविधि किया वहाँ सुगमता से करें।" {संस्कार विधि-भूमिका}
यह है ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित संस्कार विधि के भूमिका का वह स्थल जिसे अच्छी प्रकार से न समझने से श्री स्वामी सत्यप्रकाश-जी महाराज ही भटक गए तो उनकी वकालत करने वाले अन्य सामान्य लोगों की बात ही क्या? अब आइए। प्रस्तुत प्रकरण पर जहाँ सभी संस्कारों में सामान्य विधि लिखी है जो ऋषि दयानन्द ने सामान्य विधि को प्रत्येक संस्कार में करणीय लिखा है, उसको श्री बिट्ठल राव जी करणीय तो मानते हैं किन्तु वे साथ में यह भी कहते हैं कि "यदि सामान्य विधि में पूर्णाहुति का भी समावेश कर लेंगे तो जहाँ गर्भाधानादि संस्कारों में सामान्य विधि के पश्चात संस्कार सम्बन्धी आहुतियों का विधान है, तो क्या पूर्णाहुति और मंगलकार्य के पश्चात् भी आहुति दी जाएगी?" और उन्होंने यह भी कहा कि "शायद कोई भी स्वीकार नहीं करेगा न ही स्वामीजी का यह आशय रहा होगा। इससे स्पष्ट है कि सामान्य प्रकरण भी सामान्य विधि "ओ भवतन्नः समनसौ" तक ही है।"

यहाँ स्पष्ट है कि श्री राव जी पूर्णाहुति और मंगलकार्य के संस्कार के मध्य में आ जाने से भयभीत हैं इसीलिए वे इसे विशेषकर पूर्णाहुति को सभी संस्कारों से निकाल फेंकने पर तुले हुए हैं। हमारा कथन यह है कि पूर्णाहुति और मंगलकार्य को छोड़कर केवल भवतन्नः समनसौ"0 तक सामान्य विधि मानने से तीन अपरिहार्य दोष आयेंगे। "जो वृश्चिकाद भीतः सर्पमुखे पततः।" बिच्छु से डरकर सांप के मुख में गिर जाने के समान होगा।-यह आता है कि पूर्णाहुति सहित <u>सामान्य-होगा यह आता है कि पूर्णाहुति सहित सामान्य</u> विधि को सभी संस्कारों में अवश्य कर्त्तव्य बताकर भी पुनः स्वयं ही ग्रन्थकार द्वारा उनमें पूर्णाहुति का परित्याग {2} - जब संस्कारों में पूर्णाहुति सहित मंगलकार्य नहीं होगा तो विशेषकर संस्कारों के लिए पूर्णाहुति सहित सामान्य विधि के विधान में पूर्णाहुति छोड़ने पर पूर्णाहुति का उल्लेख ही व्यर्थ हो जाएगा।

3- ग्रन्थकार ऋषि दयानन्द पर आएगा कि जब संस्कारों में पूर्णाहुति कर्त्तव्य ही नहीं तो उसका संस्कार विधि में लिखना प्रमाद लिखित से भी भयंकर प्रमत्त लिखित समझा जाएगा। {प्रयोजनाभाव से}।

जिसे श्री विट्ठलराव जी भी स्वीकार नहीं कर सकते पुनः इस समस्या का क्या समाधान है? जब यह प्रश्न उठता है तो अब आइये? इस गुत्थी को सुलझाने का प्रयास करें और वह भी ऋषि दयानन्द की भूमिका के प्रकाश में न कि अपने मनमाने पूर्वाग्रह से। और वह प्रकाश है यह एक वाक्य "इसमें सामान्य विषय जो कि सब संस्कारों के आदि और उचित समय तथा स्थान में अवश्य करना चाहिए।" इस वाक्य में "उचित समय तथा स्थान में अवश्य करना चाहिए"

इससे यहाँ स्वयं स्पष्ट हो जाता है कि सामान्यविधि है तो पूर्णाहुति सहित किन्तु किन्हीं विशेष संस्कारों में सामान्य विधि का जहाँ निर्देश है वहाँ कुछ विधि तो आदि में कर लेनी चाहिए। किन्तु कुछ विधि जैसे पूर्णाहुति तथा मंगलकार्य उचित समय और स्थान उचित देखकर करने चाहिए। और वह उचित समय तथा उचित स्थान इनका क्या हो सकता है यह जिज्ञासा होने पर बात स्पष्ट आएगी कि चूंकि "पूर्णाहुति" है अर्थात् कर्मकाण्ड, हवन के पूर्ण होने की आहुति है, वह संस्कार विशेषों की आहुतियों के पश्चात् ही अवश्य दी जाय एवं तत्पश्चात् मंगलकार्य। क्योंकि आदि और मध्य में करने से पूर्णाहुति उसका नाम सार्थक नहीं होगा।

इस प्रकार करने से यह लाभ होगा कि पूर्णाहुति छोड़ने पर जो तीन दोष आ रहे थे

1- ग्रन्थकार द्वारा स्वयं उनका अवश्य करणीय बताकर भी न करना।
2- उनके न करने से उनकी व्यर्थता सिद्ध होना।
3- ग्रन्थकार के ऊपर प्रमत्त लिखित का आरोप-क्योंकि जब संस्कारों में पूर्णाहुति करनी ही नहीं तो संस्कार विधि में उसका उल्लेख क्यों किया।

उनका परिहार तथा स्वयं श्री विट्ठलराव जी जिस पूर्णाहुति को केवल इसलिए छोड़ रहे थे कि वे संस्कारों के मध्य में आ जाती है? जो किसी को भी उचित प्रतीत नहीं होगी। अब इस प्रकार से विधि करने से आपकी समस्या सुलझ गई और संस्कारों में एक चमत्कार आ गया और वह आया ऋषि दयानन्द की ही भूमिका के केवल एक वाक्य से। अब मैं समझता हूँ कि इस वाक्य को पढ़ने से आपका भ्रम दूर हो जाएगा जब भ्रम दूर हो जाएगा तो आपको अपनी भूल का स्वयं ज्ञान हो जाएगा, पुनः आप उसे छोड़ भी देंगे। यह है उचित समय और उचित स्थान शब्द के मर्म को समझने का प्रभाव। अब इसे यह कह सकते हैं कि "तिनके की ओर पहाड़"।

श्री विट्ठल राव जी के लेख से ज्ञात होता है कि वे संस्कारों में पूर्णाहुति से इतने भय ग्रस्त हैं और विज्ञान की बारीकी से इतने अधिक अभिभूत है कि कहीं तो पूर्णाहुति को संस्कारों से निकालते हैं तो कहीं जब ऋषि दयानन्द सामान्य विधि के स्थान पर "पूर्णाहुति" शब्द का ही साक्षात प्रयोग करते है तो वह भयभीत हो और कोई उपाय न देखकर झट उस यज्ञ को ही संस्कारों से पृथक कर देते हैं। जैसाकि उन्होंने गार्भाधान संस्कार के अंगीभूत यज्ञ के साथ किया है।

सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के धर्माचार्यों ने भी जिसमे सर्वश्री बुद्धदेव जी विद्यालंकार, श्री धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री आदि ने इस "आदि उचित समय तथा स्थान" के रहस्य को समझकर ही ऋषि दयानन्द के अभिप्राया-नुकूल इसी प्रकार से पूर्णाहुति का विधान सभी संस्कारों में माना है। पूज्य स्वामी समर्पणानन्द जी {पं० बुद्धदेव जी} को तो स्वयं मैंने ऐसा कराते हुए भी देखा था।

अब राव जी ने मेरे लेख पर एक अत्यन्त गर्हित तथा छलपूर्ण आक्षेप किया है कि कर्णविध संस्कार के प्रमाण में स्वामी विवेकानन्द जी ने पूर्णाहुति करें ऐसा लिखा है। जो संस्कार विधि में नहीं है। मैं आपके लेख के वाक्य को पढ़कर आश्चर्य चकित रह गया क्योंकि मैंने संस्कारविधि के वाक्य में एक अक्षर भी नहीं बढ़ाया है। तो "पूर्णाहुति करें" इतने शब्द को बढ़ाने की बात ही क्या। बिट्ठलराव जी के लेख को पढ़ने के पश्चात मैंने आर्य जगत तथा आर्यमित्र में देखा। आर्यमित्र में केवल उतना ही अंश मैंने लिखा है जितना कर्णविध-संस्कार में लिखा है।

1- आर्य 25 सितम्बर 1988 अन्य एक टिप्पणी में कर्णविध की चर्चा ही नहीं मैंने की है।

पृष्ठ 4 से 29 तक मे लिखी हुई सब विधि करें। इतना ही अंश मैंने अपने लेख में लिखा है, एक निवेदन यह है कि श्री विट्ठल राव जी सत्यासत्य के निर्णय के लिए नहीं अपितु बड़प्पन की प्राप्ति के लिए लिखते हैं। जब तक रावजी आर्यमित्र में जिसमें मेरा लेख प्रकाशित है "पूर्णाहुति·····" यह मैंने बढ़ाया है, यह सिद्ध नहीं कर देते तब तक मैं उनके किसी भी इस सम्बन्ध में लिखे लेख आदि का कोई उत्तर या चर्चा नहीं करूँगा, क्योंकि विज्ञान की बारीकी की दुहाई देकर इस प्रकार से छल से व्यवहार करने वाले लोगों से उत्तर-प्रत्युत्तर में समय ही नष्ट होता है, किन्तु जो लोग ऋषि दयानन्द जी महाराज के यज्ञ {हवन} से वृष्टि होती है इस लेख को भी अपनाए कर सकते हैं। उनके लिये यह सब कुछ सम्भव है।

युग प्रवर्तक देव दयानन्द

श्री धुरेन्द्र सिंह, एडवोकेट, सुल्तानपुर।

"विस्मत हूँ कि तुझे ईश का वरदान कहूँ।
जो हो देव उसे क्यूँ कर इन्सान कहूँ।।
अगर एक ईश्वर पर भरोसा न होता।
तो निश्चय ही दयानन्द तुझे भगवान कहूँ।।

महर्षि का आविर्भाव जिस युग में हुआ था वह अशिक्षा, निर्धनता, कुरीतियों और अन्धविश्वासों से पटा पड़ा था। धर्म के नाम पर थोथा कर्मकाण्ड प्रचलित था और नैतिकता के नाम पर अन्धविश्वासों का बोलबाला था। वह युग सामाजिक कुरीतियों का भण्डार था। बाल-विवाह, बहुपत्नी प्रथा, जन्म के आधार पर जाति व्यवस्था, ऊँच-नीच के आधार पर छूत-अछूत का भाव सर्वत्र व्याप्त था। विद्या के प्रकाश के नाम पर अविद्या का अन्धकार फैला हुआ था। यह देश का सौभाग्य था कि अज्ञान के निविड़ अन्धकार में भी ज्ञान की परख कर लेने वाली अन्तर्दृष्टि, नीरक्षीर विवेक वाली शक्ति महर्षि को प्राप्त हुई, जिसका पता मानव समाज को तभी चला जब कालान्तर में उन्होंने अपनी इस शक्ति और अन्तर्दृष्टिके बल पर न केवल भारतीय समाज अपितु मानव समाज की बीमारियों का निदान किया और उपचार सुझाया।

महर्षि दयानन्द भारत में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा था "कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशी स्वराज्य होता है, वह सर्वोपरि, सर्वोत्तम होता है।" विदेशी शासकों ने भारत के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन को समुन्नत बनाने के लिए जो कुछ किया था उसे स्वीकार करते हुए भी उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा "विदेशी राज्य तभी पूर्ण सुखदायी नहीं हो सकता।" कालान्तर में देश को स्वाधीन कराने के लिए जो संग्राम लड़ा गया उसके अधिकांश सैनिकों न महर्षि के इन विचारों से प्रेरणा प्राप्त की थी। महर्षि का मानना था कि प्रश्न चाहे भारत की राजनैतिक पराधीनता का हो चाहे सामाजिक कुरीतियों-अन्धविश्वासों का, हमारी समस्याओं का मूल कारण है- हमारी आचार भ्रष्टता। जब तक भारतवासी अपने आचरण को नहीं सुधारेंगे तब तक देश का विकास नहीं हो सकता। आचार सुधरने पर देश अवनत नहीं रह सकता और आचार सुधारे बिना देश स्वाधीन भी हो जाये तो उन्नत नहीं हो सकता- ऐसा महर्षि का मत था।

महर्षि दयानन्द जहाँ एक वीतराग संन्यासी थे, प्रखर दार्शनिक एवं समाज संशोधक थे, वहीं वे अप्रतिम राजनीतिज्ञ भी थे। जब लोग अंग्रेजो की चापलूसी में लगे हुए थे और श्री उमेशचन्द्र बैनर्जी सरीखे भारतीय नेता महारानी विक्टोरिया की घोषणा की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे, वह अकेला निर्भीक सन्यासी गम्भीर घोषणा कर रहा था कि पारस्परिक विरोध के कारण इस भारत में अंग्रेजों का शासन है और अखण्डता समाप्त हो चुकी है। स्वामी जी ने भारत में अंग्रेजी राज्य को समाप्त करने और भारतीयों को पुनः स्वतन्त्र कराने के लिए सदैव प्रयत्न किया। स्वामी जी ने राजा के निर्वाचन तथा चक्रवर्ती राज्य की रूपरेखा के सम्बन्ध में अपने विचार भारतीय जनता के समक्ष प्रस्तुत किए। सत्य तो यह है कि "भारत छोड़ो" के प्रथम उद्घोषक भी ऋषि दयानन्द ही थे।

ऋषि दयानन्द ने एक व्यक्ति को राजा कभी नहीं माना है। सभाध्यक्ष को ही राजा माना है। सभापति या सभाध्यक्ष जिसे वे राजा कहते हैं वंशक्रमानुसार न होकर जनता द्वारा वरण किया हुआ ऐसा व्यक्ति हो जो सभा के सहयोग एवं परामर्श से प्रशासन चलाता हो। दयानन्द चाहते थे कि देश मे पूर्णतया प्रभुत्व सम्पन्न शासन हो परन्तु साथ यह भी चाहते थे कि ऐसा विश्व संगठन होना चाहिए, जिसका सब राज्यों पर नियन्त्रण हो। ऐसे संगठन को चक्रवर्ती राज्य कहा जाता है। वर्तमान समय में राष्ट्रसंघ ऐसा ही संगठन है। दण्डनीति के बारे मे स्वामी जी कड़े दण्ड के पक्षपाती थे। उनकी धारणा थी- दण्ड का उद्देश्य अपराधी का सुधार हो जिससे सभ्य नागरिक बने। राष्ट्र के नागरिको के अधिकारो की रक्षा हो यही दण्ड का उद्देश्य होना चाहिए। उनके अनुसार "दण्ड" ही राज्य पुरुष है। वही नेता है वही शासक। दण्ड के दो सिद्धान्त हैं सुधारएवं भय। स्वामी जी ने दोनों ही सिद्धान्तों को स्वीकार किया है। सुधारवादी दण्ड में अर्थ दण्ड और वाणी का दण्ड अर्थात् अपराधी की सार्वजनिक निन्दा, सामाजिक निन्दा आदि शामिल हैं। इतने पर भी अगर अपराध करने से बाज नहीं आता है तो उसे कठोर दण्ड दिया जावे।"

वास्तविकता यह है कि ऋषि ने ही मूर्तिपूजा एवं अन्धविश्वास और पुरानी परिपाटियों के विरूद्ध धर्मयुद्ध प्रारम्भ किया। युगप्रवर्तक ऋषि भारत की अवनति देखकर बहुत दुःखी थे। जो भारत केवल ज्ञानविज्ञान में ही नहीं, जीवन के हर क्षेत्र में कभी संसार का शिरोमणि देश था, वह इतना पिछड़ा देश कैसे बन गया उन्होंने इसका विश्लेषण किया और अपनी दिव्य दृष्टि से वे उपाय बताए जिन्हें अपना कर देश फिर से संसार का सिरमौर बन सकता है। प्रत्येक सुधार के लिए आवश्यक है कि उसी के अनुरूप शिक्षा को ढाला जाये-ऐसा उनका मत था। उन्होंने भारत मे समुचित प्रकार शिक्षा पर विशेष बल दिया। उन्होंने कहा कि ईसाई मिश्नरियों द्वारा शुरू की गई अंग्रेजी शिक्षा एवं पण्डित मण्डली में प्रचलित शिक्षा दोनों से ही व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास एवं संस्कृति का संरक्षण नहीं हो सकता। महर्षि ने अनुभव किया कि भारत प्राचीन गुरूकुल प्रणाली का पुनरूद्धार करके इन दोषों को दूर किया जा सकता है। इसी व्यवस्था से व्यक्ति से अपने तुच्छ अहंकार त्याग कर समस्त समाज के साथ मिल सकता है।

अहिन्दी भाषी होते हुए भी दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दी को सम्पूर्ण देश की भाषा बनाने का क्रियात्मक कार्य किया था दयानन्द का मत था कि हिन्दी द्वारा समस्त विश्रृंखलित भारत को एकता के सूत्र में पिरोया जा सकता है। हिन्दी ही भारत की लोक भाषा है। उनके मतानुसार नागरी के अक्षर थोड़े ही दिनों मे सीखे जा सकते हैं। आर्यभाषा का सीखना कोई कठिन काम नहीं है। इस देश में उत्पन्न होकर भी अपनी भाषा के सीखने में जो कुछ परिश्रम नहीं करता, उससे और क्या आशा की जा सकती है।

इसके अतिरिक्त महर्षि ने भारत वर्ष को पुत्र रूप मे आर्यसमाज दिया और महर्षि की सुपुत्री थी "गोकृष्यादि रक्षिणी सभा"। समाज के संगठन और निर्माण में पहली आवश्यकता पेट की होती है। इसके समाधान के लिये महर्षि ने इस महान संस्था को जन्म दिया था। महर्षि दयानन्द ने इस संस्था का संविधान बनाकर इसमें सहकारिता और समाज्यवाद की मानों आधारशिला रख दी। प्रत्येक ग्राम में गाय का और कृषि का सामाजीकरण इस संस्था का मुख्य उद्देश्य था। प्रत्येक ग्राम में और बड़े शहरो हर वार्ड या ब्लाक में एक गोशाला और कृषि का सहकारी संगठन बने और संस्था के नियमों से ही स्पष्ट हो जाते हैं। इस नियमावली का निर्माण महर्षि ने स्वयं किया। रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या नारों से हल नहीं की जा सकती किन्तु गो-पालन और कृषि के कार्य में जन-जन को संयुक्त कर हम इस धरती को एक सुखद आश्रम का स्वरूप दे सकते हैं क्योंकि कृषि प्रधान देश होने के कारण भारतदेश के आर्थिक ढाँचे की रीढ़ की हड्डी गो ही है।

महर्षि दयानन्द के अनुसार समाज में नारी का स्थान हो। यदि पुरुष आचार्य हो सकता है तो नारी भी आचार्या हो सकती है। नारी शौर्य, शक्ति, विद्या और मेधा का प्रतीक है। नारी पवित्र एवं यज्ञ की संचालिका है, गृहस्थाश्रम की संरक्षिका है।

यदि हम गम्भीरता से निर्णय लें तो यह प्रकट होगा कि महर्षि दयानन्द ने अपने गहन एवं अभूत पूर्व अध्ययन के आधार पर भारतीय परम्पराओं को संजीवनी बूटी दी। ऋषि अपने समकालीन समाज से सदा सौ पग आगे रहे। एक युग प्रवर्तक के रूप में, एक क्रान्तिदर्शी के रूप में, एक समाज-सुधारक के रूप में और युगनिर्माता के रूप में महर्षि दयानन्द ने भारतीय मानस पटल को एक नई अनुभूति दी।

-x-x-x-x-x-x-x-

आवश्यक सूचना

सर्वसाधारण के सूचनार्थ निवेदन है कि उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ का कार्यालय तथा आर्यमित्र के कार्यालय का समय आगामी फरवरी 1, 1989 से प्रातः 11 बजे से सायंकाल 6 बजे तक का कर दिया गया है।

सभामन्त्री।

हिन्दू पुनर्जागरण और महर्षि दयानन्द

श्री यदुवंश सहाय वानप्रस्थ, फैजाबाद।

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के मूल में "हिन्दू पुनजागरण" था जिसमें आर्य समाज ने प्रमुख भूमिका निबाही। इस जागरण को जन्म देने का श्रेय महर्षि दयानन्द को ही है। डा0 भगवान दास ने माना है कि स्वामी दयानन्द हिन्दू पुनजागरण के मसीहा थे।

भारत में अंग्रेज और अंग्रेजी के माध्यम से पाश्चात्य सभ्यता के पदार्पण के पश्चात स्वामी दयानन्द सरस्वती को छोड़कर ऐसा एक भी मनुष्य नहीं हुआ जो बिना विदेशी भाषा सीखे या बिना विदेश यात्रा के स्वदेश में सम्मानित हुआ हो, परन्तु स्वामी जी एड़ी से चोटी तक और भीतर-बाहर विशुद्ध स्वदेशी थे। फिर भी उन्होंने देश-विदेश सर्वत्र सम्मान प्राप्त किया। गुजराती भाषी होते हुए भी उन्होने अपने समस्त ग्रन्थ भारत की सांसकृतिक भाषा संस्कृत और जन-सम्पर्क राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही लिखे। जब स्वामी विवेकानन्द आदि अन्य समाज सुधारकों ने अपनी पुस्तकें अंग्रेजी में लिखीं।

अंग्रेजी में शिक्षा-दीक्षा होने के कारण पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित तत्कालीन सुधारक भारतीय समाज का नवनिर्माण पश्चिमीकरण के द्वारा ही सम्भव समझते थे। महर्षि दयानन्द को न अंग्रेजी पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त था, और न विदेश यात्रा का ही। अंग्रेज विद्वानों से भी उनका सम्पर्क बहुत बाद में हुआ जब उनके विचार पूर्णतः परिपक्व हो चुके थे। वे जिस पारिवारिक वातावरण में पले, सामाजिक वातावरण में बढ़े और उन्होने जिस प्रकार की शुद्ध परम्परागत संस्कृत शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त की उनमें उनका पश्चिमीकरण से कोई सम्पर्क नहीं था। अतः उन पर पश्चिमी सस्कृति का कोई प्रभाव नहीं कहा जा सकता। घर से निकल कर उन्होंने बरसों देश के स्थान-स्थान पर पैदल घूमकर भारतीय जन-समाज का बहुत व्यापक अनुभव प्राप्त किया, और विषमता व अन्धविश्वास के कारण उसकी पराधीन और पतित अवस्था से भी भली-भाँति परिचित हुए। साथ ही साथ प्राचीन साहित्य के अध्ययन से आर्य (हिन्दू) जाति के गौरव मय युग से भी अवगत हुए। जाति की इस दुरवस्था पर उन्हे मानसिक पीड़ा और दुख हुआ। परन्तु उसके सुधारने का उपाय उन्हें सूझ नहीं रहा था। तभी वे गुरु विरजानन्द के पास मथुरा पहुँचे। उनके चरणो में बैठकर स्वामीजी ने आर्ष ग्रन्थों का महत्व जाना, और भारतीय संस्कृति और ज्ञान के मूल स्रोत वेदों के मन्त्रों की सुसंगत और सटीक व्याख्या करने की कुँजी प्राप्त की। जिसकी पुष्टि महर्षि अरविन्द ने इन शब्दों से की - "स्वामी दयानन्द ने वेदों के मूल अर्थ तक पहुँचने की एक सही पद्धति निर्धारित की है।" अब उनका आगे का मार्ग प्रशस्त हो गया। उन्होंने सामाजिक आचार, नैतिक आदर्श, राजनीतिक आदर्श व्यवस्था, लोक जीवन में समत्व, लोकोन्मुखी और साम्यवादी अर्थ तन्त्र आदि समस्त मूल्यों का स्रोत वेदों में खोज निकाला। यही नहीं, अपितु पश्चिम के नये ज्ञान विज्ञान के दर्शन भी उन्होने बीज रूप में वेदों में किये।

स्वामीजी जिस समय कार्यक्षेत्र में उतरे उस समय भारतीय धर्म, दर्शन, संस्कृति और इतिहास के प्रति ईसाई मिशनरियों और अंग्रेज इतिहासकारों के दृष्टिकोण को अपनाने के कारण भारतीय मानस हीन भावना से भरा था। उसे अपने देश और उससे समबन्धित सारी बातों का कुरूप और विकृत रूप ही दिखाई देता था। महर्षि ने पश्चिम से कुछ न लेकर प्राचीन भारतीय साहित्य, वेद और आर्ष ग्रन्थो के आधार पर हिन्दू जाति में प्रचलित सारी कुप्रथाओं और विषमताओं का निराकरण करके उस हीनग्रस्त मानस को उसके गौरवशाली अतीत का स्मरण दिलाकर उसमे नवीन उत्साह, आशा, स्वाभिमान और आत्मविश्वास उत्पन्न कर दिया। अब वह अपने इतिहास, धर्म और संस्कृति के प्रति एक नया गौरव अनुभव करने लगा। उसमें अपने देश और जाति के लिये त्याग करने की भावना जाग गई।

कांग्रेस के जन्म से बहुत पहले महर्षि दयानन्द ने स्वराज्य की कल्पना की थी। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा- "कोई कितना करे परन्तु जो स्वदेशीय राजा होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है" और अयाभिविनय में लिखा - अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों। स्वाधीनता और भौतिक विज्ञान की उपलब्धि के लिए तो महर्षि ने अपने ग्रन्थों में सैकडो बार प्रार्थना की है। उस समय अंग्रेजी साम्राज्य के प्रति विद्रोह सूचक समझे जाने वाले इस प्रकार के उद्गार व्यक्त करना बड़े साहस का काम था। कांग्रेस में सर्वप्रथम स्वराज्य शब्द का उच्चारण दादाभाई नौरोजी ने 1906 ई0 में किया था। नेताओं ने महर्षि को स्वतन्त्रता का अग्रदूत माना और महात्मा गाँधी को राष्ट्रपिता कहा तो महर्षि दयानन्द को राष्ट्र-पितामह कहा।

दीर्घकालीन एवं निकट जनसम्पर्क तथा भारतीय प्राचीन संस्कृति के गम्भीर अध्ययन (जो किसी भी अन्य नेता को उपलब्ध नहीं था) के कारण महर्षि जाति की पराधीनता और उसके अधःपतन के समस्त कारणों का सटीक विवेचन-विश्लेषण करके उनका ठीक निदान करने में सक्षम हो सके और तभी उनके निराकरण का उपयुक्त और अचूक युक्ति बता सके। उन्होंने मानव मात्र की धार्मिक एकता के लिये मानव मूल्यों पर प्रतिष्ठित धर्म की जो व्यापक व्याख्या की है वह साम्प्रदायिक भावना विहीन और सद्भाव से ओत प्रोत है। वह सच्चे अर्थों में धर्मनिरपेक्ष अर्थात मजहब निरपेक्ष है। ससार का कोई व्यक्ति उस धर्म की उपेक्षा नहीं कर सकता। अतः उसमें साम्प्रदायिक संघर्ष की सम्भावना नहीं है।

महर्षि भारत की स्वाधीनता और धार्मिक सुधार की भूमिका ही तैयार कर पाए थे कि उन्हें उन्सठ वर्ष की आयु में ही अपने सारे कार्य अधूरे छोड़कर संसार से विदा होना पड़ा। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यदि वे पूरी आयु जीवित रहते तो स्वतन्त्रता संग्राम का नेतृत्व अवश्य करते। महात्मा गाँधी का सौभाग्य ही कहा जायगा कि वे भारतीय रंगमंच पर उस समय अवतरित हुए जब महर्षि दयानन्द द्वारा उठाये गये भारतीय समाज की सारी समस्यायें शिक्षित समाज में पूरी तरह चर्चा का विषय बन चुकी थी। गाँधी जी को स्वाधीनता की लड़ाई लड़ने के लिये पृष्ठभूमि तैयार मिली। हिंसक और अहिंसक दोनों प्रकार के संघर्षों में आर्य समाजी और आर्य समाज से प्रभावित व्यक्ति ही सबसे आगे थे। कितनों ने फाँसी की रस्सी को चूमा और कितनों ने कारावास की यातना को झेला, इन सबका इतिहास बहुत लम्बा और करूणाजनक है।

किसी प्राचीन जाति का पुनरुत्थान उसके अतीत के आधार पर ही सम्भव है, पश्चिम के अन्धे अनुकरण से नहीं। अतः महर्षि दयानन्द पुनर्जागरण द्वारा आर्यावर्त का प्राचीन गौरवमय युग लाकर भारत में रामराज्य स्थापित करना चाहते थे, और स्वाधीन भारत मे गाँधी जी उसी रामराज्य का स्वप्न देखते थे। परन्तु इन महापुरुषो की मनोकामना पूरी न हो सकी, क्योकि देश का राज्य सत्ता पाश्चात्य सभ्यता से अभिभूत अंग्रेजी शिक्षित वर्ग के हाथों में है। स्वाधीनता से पूर्व यह वर्ग अंग्रेजों का सहायक रहा है। दुर्भाग्य से अपनी मानसिक संस्कारगत एकता के कारण पं0 नेहरु स्वाधीनता युग में इस वर्ग के नेता बन गए और इसे प्रोत्साहित किया। उन्होंने अनुकरण मूलक पश्चिमीकरण की प्रगतिशीलता उद्घोषित करते रहकर इस वर्ग से उन प्रतिद्वन्दियों के विरूद्ध शक्ति प्राप्त की, जो इनके दृष्टिकोण से पूर्णतया सहमत न थे। यह क्रमशः भारतीय जीवन के सभी क्षेत्रों में शक्ति और प्रभाव का स्थान पाता रहा है, यह अपने को सभ्य और प्रगतिशील मानकर असंख्य भारतीय जनता को उपेक्षा और अवहेलना के भाव से देखता है। अंग्रेजी और अंग्रेजियत के प्रचार-प्रसार का श्रेय इसी वर्ग को है। इसे डर है कि यदि हिन्दी और क्षेत्रीय भाषाओं ने अंग्रेजी का स्थान ले लिया तो उसका वर्चस्व और वरीयता जाती रहेगी। इसने भारतीय उत्कृष्ट मूल्यों के प्रति महर्षि दयानन्द के पूर्व विदेशियों द्वारा फैलाये गये भ्रामक दृष्टिकोण को प्रजातन्त्र, समाजवाद और धर्मनिरपेक्षता के शब्द जाल से ढक कर फिर अपना लिया है।

- हम सभी झाँसी वासियों को पूज्यनीय महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थी का निधन हो जाने से अपार दुःख हुआ है।

अभी कुछ ही समय पूर्व पूज्य महात्मा बल्देव जी वानप्रस्थी-(चांदपुर) का वियोग हुआ था और उस दुःख को हम लोग भूल भी न पाये थे कि यह बज्रपात हो गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह स्वर्गीय आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

सभामन्त्री।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती को जम्मू की सद्भावना यात्रा

राज्यपाल श्री जगमोहन और मुख्यमंत्री श्री फारुख अब्दुल्ला से भेंट के बाद श्री स्वामी आनन्द बोध सरस्वती और प्रो० बलराज मधोक का संयुक्त वक्तव्य

जम्मू और उसके आसपास के क्षेत्रो में 13 जनवरी और उसके बाद के घटनाचक्र और उससे उत्पन्न स्थिति का अध्ययन करने के लिए 25 जनवरी को हम जम्मू पहुँचे। हमने जम्मू, ऊधमपुर और उसके आसपास के दगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया। हमने वहाँ के प्रमुख नागरिको राज्यपाल - श्री जगमोहन और मुख्यमन्त्री श्री फारूक अब्दुल्ला से भी भेंट की। हमने वहाँ जो कुछ देखा और सुना है, उससे हम निम्न निष्कर्ष पर पहुँचे हैं-

1- 13 जनवरी और उसके बाद जम्मू में जो दुर्भाग्यपूर्ण काण्ड हुआ, उसके लिए जम्मू कश्मीर सरकार और मुख्यमन्त्री-श्री फारूक अब्दुल्ला जिम्मेदार हैं। क्योंकि क्षेत्रीय प्रशासनाधिकारियों द्वारा जलूस निकालने की अनुमति न दिए जाने पर मुख्यमन्त्री ने अपने अधिकारों का प्रयोग करके अनुमति दे दी। जबकि जलूस में असमाजिक तत्वो की मौजूदगी और राष्ट्र विरोधी तत्वों की जानकारी पहले से ही थी। पुलिस की अक्षमता और फायर ब्रिगेड के घण्टों देर तक न आने के कारण इन तत्वों को बिना रोक-टोक तोड़फोड़, मार-काट और आगजनी करने का खूब अवसर मिला।

2- हमें जो कुछ पता चला है, उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि इन घटनाओं के पीछे काश्मीर सरकार की राष्ट्र विरोधी तत्वों के साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप मे मिली भगत है। इस कोताही के पीछे कुछ राजनीतिक कारण भी हो सकते हैं। सरकार अपनी असफलता को छिपाने के लिए जिस प्रकार बेकसूर लोगों की अन्धाधुन्ध गिरफ्तारी कर रही है, वह अन्यायपूर्ण है।

3- जलूस में शुरू से ही जम्मू के बाहर के कुछ असामाजिक, राष्ट्रविरोधी और आतंकवादी युवक शामिल हो गए थे। वे गड़बड़ी के लिए पूरी तरह तैयारी करके आए थे। उनके पास हथियार और आगजनी करने का सामान भी था। जलूस के प्रबन्धकों और प्रशासन के अधिकारियों का ध्यान जम्मू के नागरिकों ने कई बार इन तत्वों की कार्यवाहियों और इरादों की तरफ खींचा परन्तु कोई कार्यवाही नहीं की गई थी। ऐसा भी सुना गया है कि कुछ सिख व्यापारियों ने अपनी दुकानों का बीमा भी इस घटना से एक सप्ताह पूर्व ही कराया था। इससे यह स्पष्ट होता है कि यह गड़बड़ी सुनियोजित थी।

4- जम्मू के साधारण केसधारी सिखों और अन्य हिन्दुओं में परम्परागत भाईचारा कायम है। हिन्दुओं ने जगह जगह **गुरुगोविन्द सिंह** के जन्म दिवस समारोह के लिए स्वागत द्वार बना रखे थे और दंगों के समय भी उन्होंने बहुत से सिखों, उनकी स्त्रियों और बच्चों की जिस ढंग से रक्षा की, वह प्रशंसनीय है।

5- अवकाश प्राप्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति अनसारी द्वारा घटनाक्रम की जाँच करने का निर्णय लोगों को आश्वस्त नहीं कर सका, क्योंकि मुख्यमन्त्री श्री फारूक अब्दुल्ला ने जम्मू काशमीर के बाहर से सुप्रीमकोर्ट के किसी अवकाश प्राप्त न्यायाधीश से जाँच कराने की बात की थी, परन्तु अब उन्होंने जम्मू काश्मीर के ही अवकाश प्राप्त न्यायाधीश से जाँच कराने का निर्णय लेकर लोगो के मन के इस संदेह को दृढ़ कर दिया है कि वह निष्पक्ष जाँच से घबड़ा गए हैं।

6- जम्मू नगर में इस समय शान्ति है, परन्तु इसके आसपास कुछ क्षेत्रो में जहाँ अराष्ट्रीय तत्वों का जोर है, वह छुटपुट घटनाएँ अब भी हो रही हैं। इस कारण नगर में चिन्ता व्याप्त है। इन तत्वों को दबाने के लिए प्रभावी कार्यवाही करने की आवश्यकता है।

7- मुख्यमन्त्री श्री फारूक अब्दुल्ला ने हमें भेंटवार्ता में यह तो स्वीकार किया कि कुछ शरारती और असामाजिक युवक जो जलूस में शामिल थे, ने ही शरारत की थी। परन्तु यह पूछे जाने पर कि क्या उनमें से किसी को पकड़ा गया है? तो उन्होंने उत्तर दिया नहीं। मुख्यमन्त्री जो दलगत भावना से भी प्रेरित लगते हैं, उसकी झलक हमें उस समय मिली जब उन्होंने कहा- "यहाँ भाजपा को कमजोर और हमें क्षति पहुँचाने के लिए शिवसेना को बनाया गया है। मैं इसे नेस्त-नाबूत कर दूंगा और इसके लोगों को पकड़वाकर लद्दाख के बरफानी जेल में भरने के लिए डालूँगा। इससे लगता है कि वह इस दुर्भाग्यपूर्ण काण्ड का लाभ केवल शिवसेना को दबाने के लिए उठाना चाहते हैं तथा सिखों और हिन्दुओं में भेद बढ़ाना चाहते हैं। उनके इस खतरनाक संकेत पर हमने कहा- जब तक **गुरुनानक, गुरु गोविन्द सिंह और गुरुग्रन्थ हैं**, हिन्दू-सिखों को कोई अलग नहीं कर सकता है।

हमारी राय में:-

1- इन दगों को साम्प्रदायिक दंगा कहना ठीक नहीं, क्योंकि यह कुछ असामाजिक और राष्ट्रविरोधी तत्वों द्वारा प्रशासन की अक्षमता और मिलीभगत से की गई सुनियोजित गड़बड़ी थी। राष्ट्रवादी और देशभक्त लोगों ने अपनी रक्षा में प्रतिरोधात्मक कार्यवाही न की होती तो परिणाम अधिक भयानक निकलते।

2- जम्मू काश्मीर की फारूक अब्दुल्ला सरकार की विफलता स्पष्ट है। जम्मू की जनता की माँग है कि प्रशासन राज्यपाल के हाथ में दिया जाय क्योंकि राज्यपाल श्री जगमोहन की ईमानदारी और क्षमता पर वहाँ के हिन्दू मुस्लिम और सिखों को फारूक अब्दुल्ला से अधिक विश्वास है।

3- जिन लोगों की जान और माल की क्षति हुई है, उनकी क्षति पूर्ति करने की आवश्यकता है। राहत कार्यों को दलगत भावना से रुकावट नहीं करनी चाहिए जम्मू-काश्मीर प्रशासन को चुस्त बनाने और काश्मीर घाटी की साम्प्रदायिक मनोवृत्ति से जम्मू को दूर रखने के लिए भी यह आवश्यक है कि जम्मू और लद्दाख को क्षेत्रीय स्वायत्ततता दी जाय। यह जम्मू के लोगों की पुरानी माँग है। इसे मानने में बिलम्ब नहीं करना चाहिए।

अन्त में हम केसधारी और सहजधारी सभी लोगों से प्रार्थना करते है कि वे मिलकर शान्ति का वातावरण बनावें और अपने परम्परागत भाई-चारे को कम न होने दें। हमारी मान्यता है कि जब तक **गुरुनानक, गुरुगोविन्द सिंह और गुरुग्रन्थ साहिब** में लोगों की आस्था है, हिन्दू-सिखों को कोई शक्ति अलग नहीं कर सकती।

मुकद्दमा समाप्त

मैनपुरी। इस सभा के अन्त0 सभासद पं0 रामप्रकाश-जी (पेशकार, जिला-जज मैनपुरी) के अविराम सफल एवम् प्रभावी प्रयास से, वादी-सत्यवीर द्वारा, कैलाश नाथ सिंह को प्रधान, सभा मानते हुए तथा पं0 इन्द्रराज जी प्रधान सभा के पद को चुनौती देते हुए मुन्सिफ न्यायालय मैनपुरी में संस्थित किया गया, मूलवाद सं0 754/85 उस के सहवादी- श्री सरताज बहादुर तथा प्रतिवादी-पं0 इन्द्रराज जी के पैरोकार, उक्त पं0 राम प्रकाश जी, द्वारा पं0 इन्द्रराज जी को प्रधान, सभा मानते हुए न्यायालय में दिये गये संयुक्त प्रार्थना-पत्र दि0 16-1-89 पर उसी दिन उक्त न्यायालय द्वारा उक्त वाद को सर्वथा समाप्त कर दिया गया है।

-कुं0 ध्रुव पाल सिंह "अटल",
मुख्यनिरीक्षक, सभा।

संग करूँ करुणा निधान का

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
वेदमन्दिर, हिन्दनगर
लखनऊ

ओ३म नाम नाग्ना जोहवीति पुरा सूर्यात्पुरोषसः
यदजः प्रथमे सम्बभूव सह तत्स्वराज्यमियाय
यस्मान्नान्यत् परमस्ति भूतम्।
अथर्ववेद का. 10. सू. 7 मं. 3।

भावानुवाद
§1§

प्रातः सायं ध्यान करे जो परम पिता परमेश्वर का,
नमन करे जो हर पल हर क्षण उस दाता जगदीश्वर का।

जो मानव अपने जीवन की यह डोरी उससे जोड़ सके,
पुण्य प्रतापी बनकर वह नर प्रभु के सुख को भोग सके।

स्वाधीन राष्ट्र जीवन रूपी केवल वही बनाता है,
परम पिता परमेश्वर को जो अपना सखा बनाता है।

काम क्रोध मद लोभ मोह को पास नहीं रहने देना
अहंकार छल छद्म घृणा को मन में नहीं पनपने देना।

विनम्रता आभूषण बनकर जीवन में छा जाये
प्यार और स्नेह त्याग की गंगा रोज नहाये।

यही कामना है जगदीश्वर मान करूँ तेरे विधान का,
साध यही है वेदव्रत की संग करूँ करुणा निधान का।

भावानुवाद
§2§

हम तुम्हारे नाम का ही प्रभु सदा सुमिरन करें,
नाम से नामी तुम्हारे काम का विवरण पढ़ें।

नित प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में उठकर तुम्हें ध्यायें पिता,
अन्तःकरण का कर निरीक्षण मन पुनीत बनायें पिता।

ध्येय हो मेरा प्रभो बस वेद का ज्ञानी बनूँ,
वेद की आज्ञा पकड़ कर्तव्य का मानी बनूँ।

सृष्टि के कण-कण में भगवन् आपकी आभा बिछी,
देख मैं उसको न पाऊँ हतभाग्य है हमसे छिपी।

हे नाथ करुणा सिन्धु हमपर तुम दया ऐसी करो,
ज्ञान चक्षु खोल मन में जिन्दगी का रस भरो।

परतन्त्रता से वासनाओं की मुझे मुक्ति मिले,
स्वाधीनता की सुखद छायामय परम भक्ति मिले।

आओ माँ के वीर सपूतों

राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर §उ0प्र0§

आज हमारी स्वतन्त्रता पर,
संकट के घन छाए हैं।
आज राष्ट्र की अखण्डता पर
भी बादल घिर आए हैं।

उग्रवाद के चंगुल में फस,
गुरुओं का जलता पंजाब ।
हुआ कलंकित आन्तकों से,
रावी-सतलज का मृदु-आब।

बन बैठा भाई ही भाई,
का है निर्मम हत्यारा।
भारत माँ की पुण्य अस्मिता,
को पुत्रों ने है ललकारा ।

भगत-बोस-बिस्मिल-सावरकर-
का शोणित है व्यर्थ हो रहा।
गोबिन्द सिंह के बलिदानों का--
उल्टा है अब अर्थ हो रहा।

निर्दोषों की हत्या करना,
आज बना है युग का धर्म ।
अनाचार-हिंसा-पशुता ही--
मान रहे हैं अपना कर्म।

उत्तर-दक्षिण-पूरब-पश्चिम-
जलता भारत चारो ओर
अराजकता का ही साम्राज्य--
छाया भारत में है घोर ।

नहीं सुरक्षित रहा हमारा,
जीवन तथा सुपावन देश।
अपनो से ही होता क्षत है,
ऋषियों का प्यारा स्वदेश ।

है विद्वेष बढ़ा साम्प्रदायिक,
लड़ते हैं अब भाई-भाई ।
आपस मे लड़ रहे निरन्तर,
हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई।

ऐसी स्थिति में अनाथ-सी-
बिलख रही है भारत माता।
मानवता चीत्कार कर रही,
त्राण माँगती है स्वतन्त्रता।

आओ। माँ के वीर सपूतो।
अपना भेद-भाव सब त्यागें।
पुरखों से प्रेरणा प्राप्त कर-
राष्ट्र एकता का वर माँगें।

अमर शहीदों के पदचिन्हों--
के हम बनें सतत अनुरागी।
आपस के सब दुःखों सुखों में--
बनें सदा हम सब सहभोगी ।।

ऋतु वसन्त का स्वागत

मन्द हुआ है ताप शीत का,
शीतल मलय पावन है।
दिग् दिगन्त की धूमिल झंझा,
पावन धरा गगन है ।।1।।
सतरंगी साड़ी से सजकर,
नन्दित वसुन्धरा है।
किसके शुभ स्वागत में भव का,
भुवन भव्य भरा है।।2।।

मलयाचल का सुरभि समीरण,
जन-जन को हरषाता
लता-विटप की हरियाली से,
वसुधा को सरसाता ।।3।।
कली-कली पर अली अवली ने,
अपना राग सुनाया ।
विहंग-वृन्द के "सरस" कंठ ने।
गीत बसन्ती गाया ।।4।।

पुष्पों से पुष्पित होकर शुचि,
उषा बेला आयी।
अवनी से अम्बर तक देखो,
नवल-प्रकृति-छवि-छायी ।।5।।
होना है जिसके प्रभाव से,
भू का कण-कण चन्दन।
क्षितिज मूक वाणी से करता,
ऋतुपति का अभिनन्दन ।।6।।

विद्याभास्कर, रामप्रकाश शर्मा"सरस"
साहित्याचार्य।

धर्म का विश्लेषण

श्री जितेन्द्रपाल सिंह आर्य
मन्त्री-आर्यसमाज, फतेहपुर गयन्द, हरदोई

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः
अभ्युत्थानम धर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम ।।

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम ।
धर्मसंस्थापनार्थाय स भवामि युगे युगे ।।

"धर्म" शब्द व्युत्पत्ति के नियमानुसार "धृ" धातु से बना है "य धार्यते इति स धर्मः" अर्थात जो धारण किया जाय उसे धर्म कहते है।

धृति क्षमा दमो स्तेयं शौच मिन्द्रिय निग्रह ।
धीर्विद्या सत्यम् क्रोधो दशक धर्म लक्षणम ।।

अर्थात- धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य, और अक्रोध, धर्म के इन 10 लक्षणों को धारण करना ही धर्म है।

1- **धृति**
जिसे हम धैर्य अथवा सन्तोष कहते हैं इसके अभाव में मानव लक्ष विहीन सा भ्रमित रहता है। "राथा लाभ संतोषः" ऐसा शास्त्र वर्णित है परन्तु इसका अर्थ यह नही कि हम उद्यम विहीन हो जांय। उद्यम से जो उपलब्ध हो उसी में पूर्ण संतुष्ट रहना ही धैर्य है।

2- **क्षमा**
दैहिक, दैविक, एवं भौतिक तापो से जो विचलित न हो और प्रसन्नचित्त रहे, वही क्षमा है। क्षमा के अन्तरगत अहिन्सा भी आती है योग दर्शन में कहा गया है "अहिन्सा-प्रतिष्ठाया वैरत्यागः" अर्थात किसी के प्रति कोई द्वेष का भाव मन में न रहे। समचित्त होकर उपकारी और अपकारी के प्रति एक जैसा भाव रखना ही क्षमा है।

3- **दम**
"मनसो दमनं दमः" अर्थात मन के दमन का नाम दम है, मन अत्यन्त चंचल है रागात्मक वृत्तियों को निमग्ना न होने देना अर्थात् उनका बल पूर्वक दमन करना ही दम है।

4- **अस्तेय**
जिस वस्तु का मेरे पास अभाव है और दूसरे के पास वह वस्तु है तो उस वस्तु का अपहरण करना स्तेय कहता है। उस वृत्ति को रोकना अर्थात् बिना स्वामी की आज्ञा के किसी वस्तु का न ग्रहण करना ही अस्तेय कहलाता है।

5- **शौच**
मन, वचन, और शरीर की शुद्धता ही शौच है। प्राणी को स्वस्थ्य रहने के लिए शुद्धताई का आचरण आवश्यक है।

6- **इन्द्रिय निग्रह**
ज्ञान एवं कर्म रूपी 10 इन्द्रियाँ मानव को अपना दास बना कर रखती है और उचित, अनुचित कार्य में प्रेरित करती है। इन्द्रियाँ हम पर शासक न हों अपितु हमारे अधीन और वशीभूत रहे ऐसी शक्ति संचय का ही इन्द्रिय निग्रह कहते है ।

7- **धी**
"ध्यायति [चिन्तयति] सत्या सत्ये अनया" सा, धी। जिसमे सत्य असत्य का विवेचन हो उसे धी कहा है धी को हम बुद्धि और ज्ञान की भी संज्ञा देते हैं इस परिपक्व बुद्धि को ही प्रतिष्ठित प्रज्ञा कहा गया है।

8- **विद्या**
"वेत्ति धर्मा धर्मो यमा सा विद्या" अर्थात जिसके दया धर्म-अधर्म का यथार्थ ज्ञान हो सके उसे विद्या [सत्य विद्या] कहते हैं। अज्ञानता का नाश और व्यापक अविद्या जिस ज्ञान द्वारा दूर की जाय वह विद्या है और मिथ्या जगत को ही अविद्या कहा है।

9- **सत्य**
"यद वस्तु यथा तिष्ठित तथैव तस्य ज्ञान सत्य "अर्थात किस वस्तु स्थिति का यथार्थ ज्ञान ही सत्य है। मानव को सर्वोत्कृष्ट स्थान पर ले जाने वाला सत्य है इसी का अवलम्बन कर साधक अपनी साधना को पूर्ण करता है। वेदों में "सत्य विजयते नानृतम" कहा है। पाश्चात्य दर्शन में "ट्रथ इज गाड" अर्थात् सत्य ही परमेश्वर है ऐसा स्वीकार किया है।

10- **अक्रोध**
क्रोध समस्त प्रकार के पतन का मार्ग है क्रोध के निर्मूलन, से शान्ति मिलती है **गीता में "क्रोधात भवति सम्मोहः"** द्वारा संकेत किया है। क्रोध के द्वारा ही विविध प्रकार के विकार क्रमशः उत्पन्न होते हैं। अन्त में इसी क्रोध से बुद्धि का नाश होता है और विविध प्रकार के विकार उत्पन्न होकर प्राणी का नाश हो जाता है। अक्रोधी को शान्ति और प्रेम रूपी अमूल्य उपहार मिलते हैं अतः क्रोध का विनाश ही अक्रोध है, यदि **महाराज मनु** ने **"मनुस्मृति"** में धर्म के 10 लक्षण बताए हैं इसके अतिरिक्त भी हमारे ऋषियों मुनियों ने धर्म की परिभाषाएं दी हैं किन्तु मानसिक विकारो को नियन्त्रित करने के लिए इन लक्षणों पर चलना अनिवार्य है अतः यदि आपको धर्म अपनाना है। तो इन्हीं 10 लक्षणों को अपने में भरना होगा तभी आप धर्मात्मा कहलाने के पात्र हैं और तभी आपका मानव जीवन सफल है ।

महाराष्ट्र प्रचार यात्रा

राष्ट्र संस्कृति तथा युवा शक्ति के उत्थान हेतु उद्‌गीथ साधना स्थली हिमाचल के संस्थापक ब्र0 आर्य आचार्य नरेश द्वारा उपरोक्त रजि0 चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से नवम्बर तथा दिसम्बर मास में भारत के निम्न लिखित स्थानों पर वैदिक सिद्धान्तों पर प्रवचन, पुस्तक वितरण, स्टिकर चिपकाने कैसेट देने आदि से प्रचार हुआ।

हिमाचलस्थ राजगढ़ बाल विद्यालय में उत्तर प्रदेश में आर्य समाज रुड़की, आर्य कन्या विद्यालय, आर्य इण्टर कालिज, एस0डी0 कालिज रुड़की तथा पारिवारिक सत्संग आर्यसमाज **मसूरी,** आर्यसमाज झाँसी पारिवारिक सत्संग माकेन बाग केन्द्रीय विद्यालय प्रथम व द्वितीय आर्य समाजोत्सव श्रृंगारनगर, आर्य कन्या विद्यालय आर्य अनाथालय, उ0प्र0 इजीनीयर्स आवास विकास परिषद लखनऊ, आर्यसमाज श्रद्धापुरी, किशन गंज कृष्णानगर **करनाल** आर्यसमाजोत्सव भिवानी, महाराष्ट्र में आर्य समाज भंडारा में उच्चतर विद्यालय तथा विवेकानन्द संस्थान, ग्राम लाखवटी, शाहपुरा, भंडारा रोड, मेडिकल आफिसर्स औध हास्पिटल पारिवारिक सत्संग डा0 बाघमारे सिंघगढ़ मार्ग, पुणे, पारिवारिक सत्संग विद्या कालोनी आर्यसमाज, धाराशिव उस्मानाबाद बी·एड·कालेज मल्टी पर्पज उच्चतर विद्यालय, आर्यसमाज वेद प्रकाश बालदान भवन गुजौरी आर्यसमाज लातूर में आर्यसमाज डा0 पुरी रमेश नगर में प्रचार हुआ। लोगों ने प्रभावित होकर ओम् का जप करने, संध्या करने, यज्ञ करने, व्यायाम करने तथा प्रातः सायं नमस्ते करने और घर पर ओम् ध्वज लगाने का संकल्प किया तथा जर्दा-तम्बाकू व चाय छोड़ने और झूठे व्रत तथा जड़ पूजापाठ छोड़ने का संकल्प किया।

- हरदोई जिले की समस्त आर्य समाजों व अन्य बन्धुओं से निवेदन है कि, आर्य उपप्रातांनीय सभा हरदोई के अन्तरगत पं0 ब्रह्मानन्द वानप्रस्थी, श्री नेम प्रकाश धनुधर श्री युगुलकिशोर-भजनोपदेशक व ओमलाल ढोलक विगत दो महीने से हरदोई जिले में प्रचार कर रहे हैं। लगभग 30 स्थानों में प्रचार हुआ। कई नवीन समाजें स्थापित हुई। 20 व्यक्तियों को जनेऊ पहिनाया गया।

आप सभी लोग सस्ती प्रचार योजना के अन्तरगत अपने उत्सव हेतु सम्पर्क स्थापित करें। जवाबी पत्र आना आवश्यक है।

सुरेशचन्द्र तिवारी प्रधान
तहसील आर्य उपप्रातांनीय सभा
हरदोई, स्थान कुठला
पो0 वेहटागोकुल जि0 हरदोई।

- आर्य समाज, मेस्टन रोड, कानपुर के अन्तरंग सदस्य एवं डी0ए0वी0 कालेज कानपुर के सैन्यविज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष श्री मेजर सुरेश बहादुर जी का दिसम्बर मास में 16 को अचानक हृदय की गति रुक जाने के कारण देहावसान हो गया। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत को सद्‌गति एवं परिवार वालों को शान्ति दें ।

समाचार दर्शन

कुम्भ के साथ जुड़ी अनार्य परम्परायें-

1- कुम्भ नगर इलाहाबाद में साधु सन्तों के अखाड़ों में निवास करने वाले अनेकों साधु स्वेच्छा से प्रतिदिन प्राण त्याग रहे हैं। प्रतिदिन 8-10 साधु ब्रह्मलीन होते हैं जिन्हें बाकायदा बैंड बाजों की गूंज के साथ गंगा में प्रवाहित करके विदाई दी जाती है। पिछले महाकुम्भ पर्व पर भी स्वेच्छा से शरीर त्यागने वाले ऐसे साधुओं की अनुमानित संख्या 500 से अधिक थी। इस प्रकार से शरीर त्यागने के पीछे मर कर मोक्ष प्राप्त कर लेने की पौराणिक कल्पना कार्य कर रही है जब कि वेद कहता है "असुर्या नाम ते लोकाः ----- ये के च आत्म हत्या करने वाले जन रौरब नरक में प्रवेश करते है

2- देवरहा बाबा के नाम से विख्यात एक पौराणिक सन्त कुम्भ नगर में गंगा के किनारे बने एक ऊँचे मंच पर विराजमान रहते हैं। जिनके बारे में अनेकों किम्बदन्तियाँ फैली हुई हैं। कोई उन्हें एक हजार वर्ष का बतलाता है कोई उन्हें कल्पान्तक योगी बताता है उन्होंने अनेक वर्ष बिहार की कमला नदी में केले के पत्ते पर तैर कर व्यतीत किये। लोगों ने उन्हें राची के जंगलों में हाथी और चीतों से सेवा कराते हुए देखा है। श्मशान घाट पर रहकर उन्होंने अनेको मृत शरीरों को पुनः जीवित कर दिया------आदि। दर्शनार्थियों की भीड़ जुटीरहती है। जिनमें गरीब, अमीर, पढ़े लिखे डाक्टर, इंजीनियर, वकील आदि सभी हैं।

बीसवीं शताब्दी के पाखन्ड की यह झलक वेद के अनुसार सृष्टि क्रम के विपरीत अनेक भ्रान्त कल्पित और असत्य गाथाओं से जुड़े होने के कारण अमान्य है धर्म के नाम पर इसका प्रचार पाखन्ड मात्र है।

3- ईरानमें मादक पदार्थों की तस्करी के सम्बन्ध में पकड़े गये कम से कम 72 लोगों को पिछले सप्ताह फाँसी पर लटका दिया गया। इस्लामी रिवोल्युशनरी कोर्ट ने मादक पदार्थों की तस्करी करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करने का निर्णय लिया है ।

हमारी प्राचीन वैदिक परम्परा में मादक पदार्थों का सेवन अथवा मादक पदार्थों की बिक्री वाले स्थान पर जाना पाप माना है क्योंकि इससे बुद्धि का सर्वनाश होता है और व्यक्ति-समाज और राष्ट्र अधोगति का भागी बनता है।

4- भूगर्भशास्त्रियों ने समुद्र का अनुसंधान करने के पश्चात् यह मत व्यक्त किया है कि समुद्र की सतह विश्व में ऊर्जा की अधिकता तथा हिमग्लेशियरों के पिघलने से निरन्तर ऊँची उठती जा रही है और आगामी 50 वर्षों में समुद्र के किनारों पर बसे हुए अनेक विशाल नगर समुद्र के गर्भ में समाहित हो सकते हैं।

वेद एवं उपनिषदों के अनुसार "अद्भ्यः पृथ्वी" अर्थात् पृथ्वी जल से निकलती है और जल में ही समाहित हो जाती है जहाँ आज हिमालय है वहाँ कभी लहलहाता हुआ विशाल सागर था यही परमात्मा की सृष्टि रचना में महाप्रलय का पूर्वाभ्यास है ।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज बगहा, डोमनपुर व धनैटा मीरजापुर का उत्सव 23 से 26 फरवरी तक मनाया जा रहा है ।

आर्यसमाज चौक, प्रयाग का 113वाँ वार्षिकोत्सव 24 फरवरी से 27 तक स्वरूपरानी पार्क, जीरो रोड में आयोजित किया गया है। 23 फरवरी को अपरान्ह 2 बजे शोभायात्रा निकाली जावेगी। उत्सव में अनेकों विद्वान तथा सन्यासीगण पधार रहे हैं।

महायज्ञ 1-2-3 मार्च 1989 को आर्य सत्सग भवन ररुआ में होने जा रहा है इसमें आर्य जगत के ख्याति प्राप्त विद्वान तथा भजनोपदेशक सन्यासी आदि पधार रहे हैं।

मन्त्री, आर्य समाज बिलसंडा (पीलीभीत)

पुस्तक समीक्षा

जीवन तीर्थ

प्रकाशक- वेद संस्थान, बी-64 राजाजीपुरम लखनऊ 226017
लेखक- श्री विक्रमादित्य "बसन्त" वेदवारिध
पृष्ठ संख्या- 128 (20×30×16)
मूल्य- पाँच रुपए (लागत मात्र)

उपर्युक्त पुस्तक में 62 प्रेरक प्रसंग दिए गए हैं। पुस्तक इस उद्देश्य को लेकर लिखी गईहै कि मनुष्य शान्ति और आनन्द पाने के लिए बाहर के तीर्थों का भ्रमण परित्याग करके अपने जीवन को ही तीर्थ बना कर स्वयं तरे और दूसरों को तारे, जैसा कि महान् पुरुषों ने किया है। समस्त प्रेरक प्रसंग में जिन महान आत्माओं के जीवन प्रसंगों को उद्धृत किया गया है, उन में यह बात प्रमुख रूप से दर्शाई गई है कि उन सब के जीवन की श्रेष्ठता का मूल वेद था। समस्त प्रसंग बड़े रोचक हैं और वेदमन्त्रों अथवा वेद सूक्तियों पर आधारित हैं।

पुस्तक पठनीय है, चरित्र का निर्माण करने वाली है और जीवन को उज्जवल बनाने वाली है। इसे प्रत्येक परिवार और विद्यालय के पुस्तकालय में होना चाहिए। लेखक और प्रकाशक दोनों बधाई के पात्र हैं।

इन्द्र देव पाठक एम०ए०

गुरुकुल महोत्सव (चितौड़गढ़)

महर्षि दयानन्द मनोवांछित श्री गुरुकूल चितौड़गढ़ का महोत्सव आगामी 11व 12 मार्च 1989 को, शिक्षा-सम्मेलन, वेद सम्मेलन, योग एवं अध्यात्म सम्मेलन एवं यजुर्वेद पारायण यज्ञ तथा विभिन्न विषयों की संगोष्ठियों के साथ आयोजित होने जा रहा है। आर्य जगत के विद्वान मनीषी आर्य नेता, राजनेता, वैदिक विद्वान व अनेक शिक्षा विद इस महोत्सव में अपनी सान्निध्यता से अनुगृहीत करेंगे।

वार्षिक महोत्सव

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) का वार्षिक महोत्सव **"राष्ट्रभृत यज्ञ एवं विराट ऋषि मेला"** के रूप में 25, 26 व 27 फरवरी 1989 को अतीव हर्षोल्लास के साथ समायोजित होगा जिसमें अनेकानेक सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान सन्यासी एवं महोपदेशक पधारेंगे।

अतः आप धर्मोपदेश की प्राप्त्यर्थ संकुल एवं अभीष्ट जनों सहित अधिकाधिक संख्या में उक्त गुरुकुल में यथासमय अवश्य पधारें। और यज्ञ की सुसफलता हेतु पुष्कल मात्रा में घृत सामग्री, दाल, चावल, चीनी, अन्न, धन आदि प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री, कुलपति

—आर्यसमाज शाहगंज, जौनपुर का 62वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 4 अप्रैल से 7 अप्रैल 1989 तक समारोह पूर्वक मनाया जावेगा। जिसमें आर्य जगत के उच्च कोटि के सन्यासी, विद्वान भजनोपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर आर्य साहित्य विक्रेताओं से अनुरोध है कि वैदिक साहित्य लेकर उपस्थित हों। भोजन व आवास की समुचित व्यवस्था रहेगी।

आर्यसमाज, शाहगंज, जौनपुर के निर्वाचित पदाधिकारी

1- श्री सन्त प्रसाद आर्य - प्रधान
2- श्री दयाशंकर जी आर्य - मन्त्री
3- श्री वेदप्रकाश जी आर्य - कोषाध्यक्ष

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर

श्री अनिल कुमार आर्य शिक्षक सार्वदेशिक आर्यवीर दल के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा म०प्र० व विदर्भ नागपुर ने बनवासी क्षेत्रों में प्रशिक्षण शिविर लगाये गये।

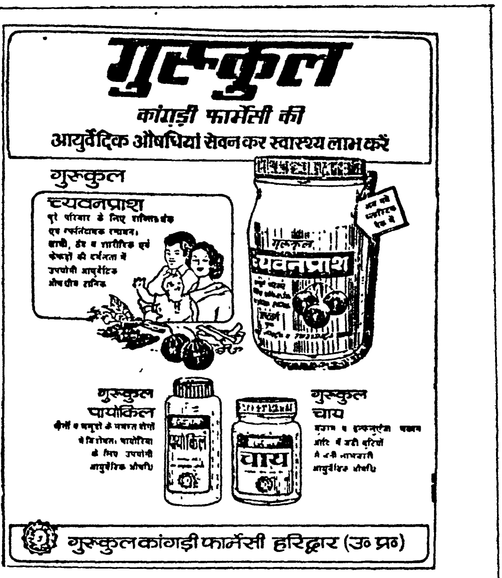
आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
माघ शुक्ल - 7
12 फरवरी रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो ... आर्य मि...
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मु...

गायत्री महामन्त्र सम्मेलन सम्पन्न

ताजपुर की पवित्र भूमि पर जनता मैदान में आर्यसमाज ताजपुर के अन्तर्गत प्रकृति के शान्त वातावरण में 10 से 13 दिसम्बर 1988 तक गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेकों युवक-युवतियों ने यज्ञोपवीत धारण किए तथा श्री सोनेलाल आर्य एवं जगनप्रसाद सिंह ने वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ली।

-सीताराम आर्य मन्त्री
दरभंगा प्रमण्डल आर्य सभा



मुजफ्फरनगर जिले के सामाजिक तथा कांग्रेसी नेता श्री अतर सिंह आर्य की सुपुत्री कुमारी कविता आर्य का 17 वर्ष की आयु में हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हुआ। इस प्रतिभा-शालिनी आर्य पुत्री के निधन से सारा शामली शहर शोक मग्न हो गया। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

आर्यसमाज कुंवरपुर कानपुर देहात का वार्षिकोत्सव दिनांक- 18 से 20 फरवरी 1989 तक मनाया जा रहा है। जिसमें श्री स्वामी वेदमुनिजी परिव्राजक नजीबाबाद, श्री ओ3म्-प्रकाश जी तिवारी, डा0 योगेन्द्र सिंह श्री ओ3म् प्रकाश आर्य मुख्य अभियन्ता कानपुर व श्री लक्ष्मी शंकर जी शास्त्री, श्री-पतराखनसिंह जी वानप्रस्थी हमीरपुर आदि उपदेशक व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। आप सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

शुद्धि-समाचार

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, बुलन्दशहर {पंजीकृत} के तत्वावधान में श्री पं0 शिवचरणलाल गौतम {आर्य मुसाफिर} के प्रयास से खुर्जा में ... अहमद- अधीन निवासी दो मुस्लिम परीवारों ने वैदिक धर्म ... किया।

नवम्बर मास में एक मुस्लिम युवती का स्वेच्छा से वैदिक धर्म में प्रवेश हुआ। साथ ही ब्राह्मण युवक के साथ आर्य समाज मन्दिर शिकारपुर में श्री प्यारेलाल गुप्ता {प्रवक्ता} द्वारा विवाह संस्कार भी करा दिया गया।

आर्य समाज रामपुर घुन्सी {खीरी} के कोषाध्यक्ष ल आर्य की माता जी का अन्त्येष्टि संस्कार दिनांक- को श्री डा0 पं0 सूर्य प्रकाश आर्य भजनोपदेशक द्वारा पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न कराया गया। आर्य समाज मन्दिर के लिए 21/-रु0 का दान दिया गया आर्य समाज रामपुर घुन्सी शोक प्रस्ताव पारित कर उनकी आत्मा हेतु परम पिता परमात्मा से शान्ति के लिए प्रार्थना की।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० 2241/57 घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85

माघ शुक्ल 14 रविवार, संवत 2045 वि०, दिनांक 19 फरवरी 1989



ये चाकमन्त चाकन्न्त नूते --

-वह परमात्मा सर्वव्यापक है, सर्वत्र विद्यमान है जिसने उसे खोजने का यत्न किया उसने उसे पा लिया।

जिन खोजा तिन पाइयाँ-
गहरे पानी पैठ।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु0251/-
वार्षिक	रु0 30/-
छमाही	रु0 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	91
अंक	8

आर्य समाज विरोधी तत्वों से सावधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा दिनांक ५-२-८९ द्वारा पारित प्रस्ताव

पिछले कुछ दिनों से देखने में आ रहा है कि कुछ लोगों ने जो आर्यसमाज विरोधी तत्वों द्वारा पैसा प्राप्त कर रहे हैं हमारे नेतृत्व को बदनाम करने और उन पर तरह-तरह के निराधार आक्षेप लगाने का एक अभियान चला रखा है इस संदर्भ में यह बताने की आवश्यकता नहीं कि जिन मान्य नेताओं के विरुद्ध यह अभियान चलाया जा रहा है वे सर्वविदित रूप से अनेकों संघर्षों के सफल योद्धा रहे हैं और उन्होंने अपने जीवन को आर्य समाज की अभिवृद्धि द्वारा और सेवा द्वारा पवित्र किया है ।

महर्षि दयानन्द के विरोध में भी उनके जीवन काल में अंग्रेजों के कुछ चाटुकारों ने इस प्रकार का अभियान चलाकर उन्हें तरह-तरह से हानि पहुचाने का प्रयत्न किया था। जिसकी बाद में आर्यसमाज को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी थी। सार्वदेशिक सभा के आदेश हैं कि आर्य समाज को सर्तक रहकर इस प्रकार के पंचमांगियों को जो आर्य समाज के चलते हुए कार्यों में बाधाडालकर अवरोध करना चाहते हैं उन्हें सब प्रकार से विफल कर दें।

सार्वदेशिक सभा को इस बात की जानकारी है कि कुछ कृतघ्न सत्ता लोलुपतत्व जिनका समाज की सेवा से कोई सम्बन्ध नहीं रहा है हमारे नेतृत्व को जनता की दृष्टि में नीचा दिखाने के लिए अनेक षड्यन्त्र कर रहे हैं। वे इस विघटन कारी योजना के लिए धन का दुरूपयोग कर रहे हैं ।

आर्यसमाज द्वारा आयोजित जन कल्याण के कार्यक्रमों से कुछ लोगों को ईर्ष्या हो रही है सभा का यह आशय नहीं है कि इस शुद्धिकरण की आड़ में किसी से बदला लिया जाये लेकिन सभा यह अवश्य चाहती है कि समाज में घुस आये इस प्रकार के आवांछित तत्वों को उनके पूर्वाचरण और सभा विरोधी गति विधियों को देखते हुए समाज से बाहर निकाल दिया जावे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अपने नेतृत्व में पूर्ण विश्वास व्यक्त करती है ।

{सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा दिनांक- 5·2·89 में सर्वसम्मति से पारित उक्त प्रस्ताव की अविकल प्रति यहाँ उद्धृत करते हुए हम प्रदेश की समस्त आर्य जनता का आहवान करते हैं कि वह एकजुट होकर इस प्रकार के असत्य एवं भ्रामक प्रचार करने वाले व्यक्तियों के विरुद्ध कार्यवाही करे तथा विभिन्न प्रचार माध्यमों से सत्य के पक्ष को उजागर करें ।}

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश ।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
--राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
लखनऊ- माघ शुक्ल - 14 संवत् 2045 19 फरवरी 1989
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

यज्ञों का वैदिक स्वरूप

वेद में एक मन्त्र आता है- "यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ते हि नाकं महिमानः" - देव (विद्वान पुरुष) यज्ञ के द्वारा उस यजनीय पुरुष (परमात्मा) की उपासना करते आये हैं और यही प्रक्रिया (धर्म) उनके पूर्वजों ने हर युग तथा हर सृष्टि में चलाया है। हम हर भौतिक यज्ञ की समाप्ति पर चाहे वह आर्यसमाज का मन्दिर हो, व्यक्ति का घर हो अथवा किसी संस्कार का अवसर हो, **"यज्ञरूप प्रभो? हमारे-भाव उज्वल कीजिए"** की प्रार्थना करते हैं और उस यजनीय को **"यज्ञरूप प्रभो?** कहकर सम्बोधित करते हैं। वेदों में यज्ञ की बड़ी महिमा गाई गई है और अनेक स्थानों तथा प्रकरणों पर यज्ञ शब्द का प्रयोग हुआ है। वास्तव में यह हम आर्यों का जीवन तथा आचार संहिता है। स्वयं निरुक्तप्रणेता ऋषि ने **"यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म"** कहकर मानव की सम्पूर्ण श्रेष्ठतम प्रक्रिया को यज्ञ का ही स्वरूप बतलाया है।

इस सृष्टि में आदिकाल से लेकर महाभारतकाल के कुछ समय पूर्व तक सम्पूर्ण विश्व पर आर्यो का आध्यात्मिक वर्चस्व रहा और उनकी जीवन पद्धति का मुख्य आधार यही था। उस समय इसके अनेक रूप समाज में प्रचलित थे यथा गोमेध, नरमेध, अश्वमेध इत्यादि। अग्नि में हव्य जलाकर जो हवन हम करते हैं वह इसका भौतिक स्वरूप है। यह वातावरण की शुद्धि में सहायक होने के साथ ही ज्ञान कर्म और उपासना के विविध अंगों पर मन्त्रपाठ द्वारा हमें विचारदर्शन देता है और वास्तव में यही समग्र मानवजीवन दर्शन है जिसमें हमारा शारीरिक आत्मिक सामाजिक कल्याण छिपा हुआ है। समय की गति प्रबल है। आर्यो के प्रमाद के कारण अथवा आपसी द्वेष के कारण वेद की सत्यविद्या लुप्त होने लगी और उसके स्थान पर असत्य मतमतान्तर और विचार समाज में फैलने लगे। पवित्र यज्ञों के साथ अनेकों अवैदिक परम्पराएँ जोड दी गई और यज्ञों में पशुओं की मनुष्यों की हिंसा प्रचलित हो गई। शुद्ध शाकल्य के स्थान पर यज्ञकुण्ड में मांस शराब आदि अभक्ष्य पदार्थो की आहुति दी जाने लगी। यज्ञ का स्वरूप ही हिंसामय हो गया। भारत में ही नही सारे विश्व में वाममार्ग फैल गया ।

इस युग के महान मन्त्रद्रष्टा ऋषिवर्य दयानन्द की सबसे बड़ी देन यही है कि उन्होंने यज्ञ के पावन वैदिक स्वरूप को जनता के सन्मुख रखा और प्रमाण सहित वैदिक यज्ञों की सत्यप्रक्रिया को प्रचलित किया। उन्होंने लिखा है-"अश्वमेध,गोमेध, नरमेध का तात्पर्य घोड़े, गौवों व मनुष्यों को मारना अथवा बलि देना नही है।" वेदों में जहाँ कहीं भी "अश्वमेध" शब्द आया है वहाँ उसका तात्पर्य राष्ट्र के प्रति सार्वभौमिक नियमों का पालन करने के लिए राष्ट्र को तथा विश्व को धनधान्य से समृद्ध, उन्नत एवं राष्ट्रीय ऐक्य को प्रोत्साहन व समर्थन देना है। शतपथ में **"राष्ट्र वै अश्वमेधः"** लिखा है अर्थात राष्ट्र के कल्याण के लिए जो भी विचारधाराएँ अथवा प्रक्रियाएँ वांछित हैं वह "अश्वमेध यज्ञ" के द्वारा जनता अथवा राजा पूर्ण करें। इस यज्ञ के माध्यम से विभिन्न गोष्ठियाँ आयोजित हों और प्रजा के सार्वभौम कल्याण के लिए योजनाओं का कार्यान्वयन किया जाये। इसी प्रकार "गोमेध" का तात्पर्य भी गो का अर्थ वाणी इन्द्रियाँ आदि है। मनुष्य को वैयक्तिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय उन्नति के लिए वाणी तथा इन्द्रियों पर संयम करना परम आवश्यक है। वैयक्तिक उन्नति की तो यह आधारशिला है। लौकिक संसार में लोकभाषा में गौ आदि पशुओं की रक्षा करके घी दूध आदि की वृद्धि करना भी **"गोमेध यज्ञ"** है और इस प्रकार यह सब हरितक्रान्ति के आयाम हैं ।

अब "नरमेध" को लीजिए। नरमेध का अर्थ है सर्वस्व त्यागकर अपने को प्रभु अर्पित कर देना, समष्टि में व्यक्तित्व को विलीन कर देना एवं देहमुक्त होने पर मृतशरीर को चिता पर भस्म कर देना है। इसमें त्याग और परोपकार की उद्दाम भावनाअन्तर्निहित है। वेदों अथवा ब्राह्मण ग्रन्थों में इन अश्वमेध, गोमेध, नरमेध यज्ञों में पशुओं को मारने अथवा नरबलि का लेशमात्र भी उल्लेख या भाव नहीं है। मध्ययुग का वाममार्ग जिसका प्रचलन महाभारत काल से कुछ पूर्व से प्रारम्भ हो गया था, वाममार्गियों ने जो ईश्वर और वेद को नहीं मानते थे। मांसाहारी मद्यपायी दुराचारी थे- उन्होंने इन यज्ञों का गलत अर्थ करके यज्ञों के नाम पर हिंसा आदि का प्रचलन करा दिया। जो यज्ञ मानव अथवा राष्ट्र का कल्याण करने के लिए उत्तम विचारों के प्रदाता थे उन्हें इस प्रकार विकृत रूप में प्रस्तुत करना हमारे इतिहास की कालिमा से भरी हुई निशा थी। ऋषिवर्य के उदय ने इस निशा को दूर कर दिया है। आर्यसमाज का सूर्य चमक रहा है -- दुनियाँ के लोगों इस प्रकाश में यज्ञ के वैदिक स्वरूप को देखो, पढ़ो, सुनो, मनन करो विचारो, प्रचारो ताकि दुनियाँ का हर प्राणी-- पशु पक्षी जीव-जन्तु, कीट-पतगं मानव सब सुखी हों -- यही आर्यसमाज चाहता है -

सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय

यह अभिलाषा हम सबकी मेरे भगवन पूरी होय।।

शक्ति पताका फहरादो

हे आर्य राष्ट्र के आर्य वीर ,
निज शक्ति - पताका फहरा दो ।
कर सिंह नाद, कर विजय नाद,
तुम शत्रु - दुर्ग को भहरा दो ।
हे शत्रु तुम्हें ललकार रहा,
इस आर्य - राष्ट्र को तोड़ रहा ।
छोड़ो मोह सुरा - सुन्दरी का,
निज अस्तित्वसंरक्षा करने को ।
धर्म बचालो, राष्ट्र बचा लो ।
भारत माँ की लाज बचा लो ।
इन शत्रु, विधर्मी लुटेरों को,
निज राष्ट्र - भूमि से दूर भगा दो ।
सुप्ता वस्था में पड़ी हुई है ,
आर्य देश की आर्य जाति ।
क्या आर्य देश खण्डित होगा ?
क्या विधना की है यही नियति ?
दिलफटता है यह सोच - सोच,
है आर्य - राष्ट्र का क्या भविष्य?
निज धर्म- मान कौरवों करके,
क्या होंगे ये गाँधी के शिष्य ।
अगं भंग की पीड़ा से,
भारत माता है कराह रही,
वीर- प्रसूता अबला बनकर ,
निज मान शान को लुटा रही ।
हे कोटि - कोटि तुम आर्य पुत्र,
ना होता पश्चाताप तुम्हें ?
क्यों बने बधिर हो अब नक तुम ,
तुम जाग उठो भारत की सौगन्ध तुम्हें ।
ऊँच - नीच का भेद मिटाकर,
एकता का फिर संचार करो ,
निज जाति - राष्ट्र की रक्षा को,
शत्रु का फिर संहार करो ।।

-पं0 जयन्त कुमार (आर्यपुत्र)
उपदेशक
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0)

क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद

(जिनकी पुण्य तिथि २८ फरवरी है)

§श्री इन्द्रराज, प्रधान आर्य प्र०स०उ०प्र०§

हम भूलते जा रहे हैं उन आजादी के परवानों को जिन्होंने भरी जवानियां भारत माता को स्वतन्त्र करवाने में बलिदान कर दीं। एक गठीला नाटा शरीर, एक तेजस्वी चेहरा उज्जवल और शुभ्र ललाट, स्वाभिमान से ऐंठी मूंछे, बड़ी आँखें, सांवला रंग, मुखमण्डल पर ब्रह्मचर्य की झलक, हृदय में स्वतन्त्रता की अग्नि संजोए हुए एक स्वच्छन्द शेर भारत माता की परतन्त्रता की बेड़ियों को काटने के लिए स्वच्छन्द घूम रहा था। अंग्रेज की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि उस को पकड़ ले।

अभी वह 14 वर्ष का बच्चा ही था। बनारस में संस्कृत पढ़ता था। महात्मा गाँधी जी द्वारा चलाए हुए असहयोग आन्दोलन में इस अल्पायु में कूद पड़ा। मुकदमा चला तो खरेघाट नामक मजिस्ट्रेट ने उस से पूछा - तुम्हारा नाम क्या है? बालक- आजाद, मजिस्ट्रेट- तुम्हारे पिता का नाम क्या है? बालक-स्वतन्त्र, मजिस्ट्रेट - तुम्हारा निवास स्थान कहाँ है? बालक- जेलखाना, उत्तर इतना गर्वीला था कि मजिस्ट्रेट चिढ़ गया और उसने 14 वर्ष के बालक को 15 कोड़ों की सजा सुना दी। कोड़े सर-सर करके उस कोमल शरीर पर पड़ रहे थे और बालक एक-एक कोड़े के साथ महात्मा गाँधी की जय तथा वन्देमातरम् के नारों से जेल को गुंजा रहा था। वह ही स्वाभिमानी बालक आगे चलकर क्रान्तिकारी शिरोमणि चन्द्रशेखर आजाद बना। उस का नाम ही आजाद नहीं था बल्कि वह आजाद शेर था।

काकोरी केस में और साईमन कमीशन के आगमन पर लाहौर में लाला लाजपतराय जी पर लाठी चार्ज के पश्चात् उनके शहीद हो जाने पर क्रान्तिकारी आजाद ने उस का बदला लेने की ठानी। वह छटपटाए हुए शेर की भांति घूमते रहे। दांव नहीं लग सका। आखिर एक दिन खून का बदला खून का संकल्प लिए लाला जी पर लाठीचार्ज करवाने वाले पुलिस सुपरिटेण्डेण्ट साण्डर्स को मौत के घाट उतार दिया। इस पर अमर बलिदानी भगतसिंह और राजगुरु को फांसी का आदेश हुआ और आजाद बच निकले।

वे चरित्र के कितने उज्जवल थे। मातृभूमि को स्वतन्त्र करवाने के इस महान कार्य में हथियार आदि खरीदने के लिये धन प्राप्त करने के प्रयास में एक व्यक्ति के कहने पर उन्होंने एक जगह डाका डाला जिस व्यक्ति ने बताया था उस का भी उस में निहित स्वार्थ था। डकैती के समय वह भी उनके साथ घर में था। जैसे ही उसने उस परिवार की एक महिला से बलात्कार की कोशिश की, चन्द्रशेखर इस को सहन नहीं कर सके। उन्होंने फौरन उस को गोली मार दी और उस महिला से क्षमा याचना करते हुए बिना ही कुछ लिए वे वापिस लौट गए। ऐसा महान् चरित्र ही ऐसा क्रान्तिकारी पैदा कर सकता है।

वे बराबर सिंह की तरह दहाड़ते हुए कहते थे कि अंग्रेज ने अभी तक कोई गोली ऐसी नहीं बनाई जो मुझे मार सके। कई स्थलों पर तो खूनी संघर्ष करते हुए अंग्रेज के चंगुल से निकल भागते थे। पुलिस उनके नाम से थर-थर कांपती थी।

यह अपने देश का दुर्भाग्य रहा कि यहां पर लोग जयचन्द की तरह द्रोही भी रहे हैं और उन्होंने अपने ही सगे भाईयों को मरवाया भी है। इलाहाबाद की घटना कि वे क्रान्तिकारी दल का रुपया एक व्यक्ति से लेने गए। सुना यह जाता है कि उस व्यक्ति ने इधर आजाद को रुपया लेने के लिए बुलाया और उधर पुलिस को आजाद के आने की सूचना दे दी। वह नरपुंगव वह धनराशि लेने के लिए अपने अंगरक्षक के साथ एलफ्रेड पार्क में गया। जब वह नरसिंह अपने अंगरक्षक के साथ 28 फरवरी 1932 को उस पार्क में धनराशि की प्रतीक्षा में बैठा ही हुआ था कि इतनी देर में एक कार वहाँ पर रुकी। कार से उतरते ही पुलिस अफसर ने आजाद पर गोली चलानी आरम्भ की। गोली आजाद की जांघ पर लगी परन्तु उस घायल सिंह ने एक पेड़ की आड़ ले ली और गोली का जवाब गोली से देना प्रारम्भ कर दिया अंगरक्षक तो दांव लगते भाग खड़ा हुआ परन्तु वह घायल सिंह आधे घण्टे तक बराबर गोली का जवाब गोली से देता रहा। दोनों तरफ से गोलियां चलती रहीं। जब अन्तिम गोली रह गई तो अपनी घोषणा के अनुसार कि मुझे मारने के लिए अंग्रेज कोई गोली नहीं बना पाया है, अपनी ही पिस्टल को कनपटी से लगा कर अन्तिम गोली चला दी। उस गोली के चलते ही नरपुंगव चन्द्रशेखर-आजाद भूमि पर गिर गया और शहीद हो गया। अंग्रेज सिपाही उस शहीद पर फिर भी गोली चलाते रहे। उनकी यह हिम्मत नहीं हुई कि उस के पास जा सकें। मृत शव पर जब बराबर गोली चलती रही और वह नहीं हिला। तब पुलिस ने उस गोलियों से छलनी शव को उठाया। वह मिट्टी जो आजाद के रक्त से रंगी गई थी लोग उस मिट्टी को भी श्रद्धा से उठाकर ले गए। वह स्वच्छन्द सिंह, जिस ने दिनांक- 23 जुलाई 1906ई. में अलीपुर राज्य §मध्य भारत§ के झाबुयातहसील के भावरा गाँव में पं० सीताराम जी तिवारी के घर जन्म लिया था, अपनी माता जगरानी देवी की कोख को सफल और सार्थक करता हुआ भारत माता की परतन्त्रता की बेड़ियों को काटते-काटते स्वतंत्रता की बलिवेदी पर बलिदान हो गया।

क्या ऐसे क्रान्तिकारीयों का बलिदान व्यर्थ जायगा? आज इस बलिदान दिवस पर युवा पीढ़ी को संकल्प लेना होगा कि चरित्र की आधारशिला पर खड़े हो कर भारत माता की स्वतंत्रता को अक्षुण बनाए रखने के लिए हम हंसते-हंसते चन्द्रशेखर आजाद के पदचिन्हों पर चल कर अपने रक्त की अन्तिम बूंद तक अपनी आजादी की रक्षा करेंगे।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

आर्य वीरदल उत्तर प्रदेश की कार्य समिति

मुख्य सन्चालक	- आचार्य धर्मपाल विद्याभास्कर प्राचार्य गुरुकुल-म०वि० ततारपुर §गाजियाबाद§
पश्चिम "	- डा० बालकृष्ण आर्य - बिन्दकी फतेहपुर §उ०प्र०§
पूर्वी "	- अवधीबिहारी खन्ना- विश्वनाथ गली-वाराणसी
पश्चिम मन्त्री	- वेदप्रकाश जी नम्बरदार - बजाजागली,बिन्दकी,
पूर्वी मन्त्री	- प्रयागदीन जायसवाल- आर्यसमाज बाघमण्डी, सुल्तानपुर
कोषाध्यक्ष	- शौदान सिंह आर्य- प्रधान आर्य समाज खानपुर §मेरठ§
कार्यालयध्यक्ष	- सुरेश चन्द्र शर्मा-ततारपुर बाबूगढ़§गाजियाबाद§
संरक्षक 1	- करण सिंह आर्य ठेकेदार- रेलवेरोड बड़ौत §मेरठ§
संरक्षक 2	- खूब सिंह डिप्टी डायरेक्टर कोट 9/241 राजनगर §गाजियाबाद§
संरक्षक 3	- अनिल कुमार जी सिंघल बी० 36 गान्धीनगर-मुरादाबाद
संरक्षक 4	- पूरन चन्द्र आर्य- आर्यसमाज हींगमण्डी,आगरा
सदस्य	- समस्त उपसंचालक जिन्हें दोनों संचालक नियुक्त करेंगे।
प्रतिनिधि - पदेन-	- पदेन- श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान आर्य-प्रतिनिधि सभा §उ०प्र०§
" " - पदेन-	- श्री मनमोहन तिवारी, मन्त्री, आर्य-प्रतिनिधि सभा §उ०प्र०§
" " - "	- अधिष्ठाता आर्य वीरदल उ०प्र०

धर्मपाल शास्त्री, मुख्य संचालक,
सार्वदेशिक आर्य वीरदल उत्तर प्रदेश

आर्य प्रतिनिधि सभा - उत्तर प्रदेश
उपदेश विभाग
सुयोग्यतम- उपदेशकों प्रचारकों की
सेवाएं प्रस्तुत करता है।
कथा संस्कारों - उत्सवों के
निमन्त्रण की प्रतीक्षा

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग

हिन्दू और विघटन के कारण

(श्री विश्व नाथ सहाय, मुजफ्फरनगर)

प्राचीन संस्कृत वाङ्मय में "हिन्दू" शब्द नहीं मिलता नहीं, आर्य प्राचीनतम नाम है और विदेशी आक्रमण के पूर्व तक यही शब्द हमारे लिए प्रयुक्त होता रहा था। प्राचीन उद्धरण अरबी कवि लाबी की कविता में मिलता है जिसमें वह "हिन्दे" और "हिन्दतुन" शब्दों का प्रयोग कर भारत भूमि के प्रति ईश्वर के सत्यज्ञान वेद के प्रकाश के कारण आदर और धन्यता अभिव्यक्त करता है। वस्तुतः "हिन्दू" शब्द "सिन्धु" का अपभ्रंश है। मध्य एशिया के लोग उच्चारण भेद रखने के कारण सिन्धु के इस पार रहने वालों को "हिन्दू" कहने लगे थे। अतः "हिन्दू" शब्द का वही अर्थ है जो अंग्रेजी के "इन्डियन" का अर्थात् भारतीय। कवि इकबाल ने इसी अर्थ में कहा था- "हिन्दी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तां हमारा।

संविधान में, लेकिन "हिन्दू" की यह परिभाषा नहीं की गई है। "हिन्दू" परिभाषा नकारात्मक की गई है अर्थात जो मुस्लिम, यहूदी या ईसाई नहीं हैं, वे हिन्दू हैं। यही नहीं, जैन, बौद्ध और सिख को भी अलग मत (धर्म) माना गया है, पर कानून पालने की दृष्टि से, उन्हें "हिन्दू" मान लिया गया है। आर्यसमाज, ब्रह्मसमाज तथा प्रार्थना समाज जैसे विशुद्ध सामाजिक आन्दोलन भी, विडम्बना देखिये, "हिन्दू धर्म के विकसित रूप मान लिये गये हैं। प्रसिद्ध विधिवेत्ता श्री जे0 एच0 नेलसन ने शायद इन्हीं क्षणों के लिये कहा था कि आधुनिक विधि निर्माता संस्कृत से भिज्ञ नहीं है।

स्पष्ट है, "हिन्दू" शब्द किसी धर्म अथवा सम्प्रदाय विशेष के लिये नहीं है, बल्कि वह भारतीय या इन्डियन का ही पर्यायवाची है। मुस्लिम शासन-काल में कुछ भारतीयों ने इस्लाम ग्रहण कर लिया और अंग्रेजों के शासन-काल में कुछ ईसाई बन गये। वे क्योंकर बन गये, यह अलग बात है, पर कालान्तर में मुसलमान और ईसाईयों से भिन्न भारतीयों को "हिन्दू" कहा जाने लगा। स्वतन्त्रता के पश्चात् संविधान में "हिन्दू" का वही पुराना अर्थ "भारतीय" किया जाना चाहिये था। ऐसा न करके भयंकर भूल हुई है जिसके परिणाम स्वरूप सारा हिन्दू अर्थात् भारतीय समाज अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक वर्गों में बाँट दिया गया है। परिणामतः कानून समान नहीं है। संविधान में "हिन्दू" की भ्रामक परिभाषा ने एक ऐसा विग्रह खड़ा कर दिया, जो टाला जा सकता था। यदि जैन, बौद्ध और सिख को हिन्दू से अलग पहचान बता कर भी इस कारण से इन प्रविधानों को उन पर लागू कर दिया गया है कि उनके पूर्वज हिन्दू थे, तो कहना होगा, भारतीय मुसलमानों और ईसाईयों के पूर्वज भी भारतीय थे। संविधान की परिभाषा हिन्दू के विघटन का बड़ा कारण बन गई है।

विघटन का दूसरा कारण है सम्प्रदाय और धर्म में भेद न समझना। धर्म ही भारतीय संस्कृति का प्राण था। धर्म का अर्थ है, जो धारण करे। "हिन्दू" का यदि धर्म से कोई सम्बन्ध है, तो इसी अर्थ में। इस धर्म के मनु ने दस लक्षण- धैर्य, क्षमा, अस्तेय, इन्द्रिय-निग्रह, शौच,दम, विवेक, विद्या, बुद्धि, सत्य और अक्रोध- किये हैं। अतः सम्प्रदाय, पंथ, मत, और मजहब धर्म नहीं है। सम्प्रदायों को धर्म मानने का परिणाम यह होता है कि उनके भीतर के हर कथन व कृत्य को पवित्र मान लिया जाता है और साम्प्रदायिक अन्ध-वृद्धा का राहू, बुद्धि, विद्या, सत्य और अक्रोध के सूर्य को निगल जाता है। संविधान में "सेकुलर" का उल्था "पंथनिरपेक्ष" किया गया है अर्थात पंथों को धर्म मान लिया गया है और कुछ विशेष पंथों को विशेषाधिकार दे दिया गया है। परिणाम स्वरूप राज्य-व्यवस्था के पक्षपात रहित न्यायपूर्ण होने के प्रति प्रश्न-चिन्ह लग जाता है, विशेषतः जबकि हिन्दू" को एक सम्प्रदाय या पंथ मान लिया गया हो। इससे अल्पसंख्यक की परिभाषा ही गड़बड़ा गई है। सम्प्रदाय, पंथ, मजहब धर्म नहीं है, मत हैं। मतों को प्रचार-प्रसार की स्वतन्त्रता हो, यह अलग बात है, पर उनकी विवेचना या आलोचना से सुरक्षा की जाये, तो यह न केवल अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का हनन है, बल्कि बुद्धि-विवेक को भी कुन्ठित करने का प्रयास है। यह भारतीयता के विघटन का अन्य कारण है।

विघटन का तीसरा कारण है शिक्षा। मैकाले ने जिस शिक्षा का बीजारोपण किया था, उसका उद्देश्य था भारतीयता तथा उसके शाश्वत मूल्यों को निशेष: करना। ऐसी पाश्चात्य शिक्षा में पके लोगों के कारण "हिन्दू" और "धर्म" की परिभाषा गड़बड़ा गई है। इन्हीं कारण हम पढ़ और अब दूरदर्शन पर देख भी रहे हैं कि आर्य विदेशी लुटेरे थे। शिक्षा पर सरकारी नियन्त्रण है, जिसके परिणाम स्वरूप न तो शिक्षा का विकास हो रहे हैं और न सही शिक्षा देने की स्वतन्त्रता है। अंग्रेजी भाषा और पाश्चात्य विचारधारा का वर्चस्व बढ़ रहा है,जिसके कारण एक ओर विशिष्ट वर्ग बन रहा है और हमारी अपनी शाश्वत धारणाओं का उन्मूलन किया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर हिन्दी को राष्ट्रभाषा नहीं बनने दिया जा रहा है। भाषावार प्रान्त तो बना दिये हैं, पर शिक्षा, नौकरी, कानून और प्रशासन में हिन्दी और प्रान्तीय भाषाओं को समुचित स्थान न देकर हिन्दी और प्रान्तीय भाषाओं को विवाद का कारण बनाया जा रहा है। संस्कृत भाषा की उपेक्षा की जा रही है। "हिन्दू" और "धर्म" की गलत परिभाषा के कारण "अल्पसंख्यक" की जो परिभाषा बनी है, उसके कारण जहाँ ईसाईयों और मुसलमानों को अपने शिक्षा-संस्थान खोलने की स्वतन्त्रता और विशेषाधिकार मिल गया है, वहीं "बहुसंख्यक"को यह अधिकार नहीं है। यह सब अलगाववाद और विघटन का कारण है।

दूसरी ओर, शिक्षा पर नियन्त्रण सरकार का है। अतः जनसामान्य में अपेक्षित शिक्षा का प्रचार-प्रसार नहीं हुआ है। शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत स्वैच्छिक शक्तियाँ भी निष्क्रिय और दिग्भ्रमित हुई है। फलतः प्रजातन्त्र में जो राजनैतिक सूझ-बूझ होनी चाहिये, जनसामान्य से उसकी अपेक्षा नहीं की जा सकती। इस अशिक्षा में प्राचीन समय में शूद्रों और स्त्रियों को शिक्षा से वंचित किया जाना तथा इस्लाम का प्रभाव भी कारण है। अतः जनसामान्य एक राजनैतिक प्रहरी की भूमिका अदा करने में पूर्णतः सक्षम नहीं है।

इसमें एक अन्य कारण भी है। वह है संसद में न्यायपालिका, विधायिका और कार्यपालिका की तीनों शक्तियों का केन्द्रीकरण। वास्तव में, यह शक्ति संसद में केन्द्रित न होकर बहुमत के उन नेताओं में केन्द्रित हो जाती है जो सांसदों को चुनाव में टिकट देते हैं और जिन्हें प्रसंगवश जनता चुन लेती हैं। यह एक राजनैतिक मृगमरीचिका है, जिसके कारण धन और शक्ति का दुरुपयोग होता है तथा भ्रष्टाचार पनपता है। अतः इन शक्तियों के केन्द्रीकरण के कारण असंतोष और विघटन पनपता है।

पाश्चात्य शिक्षा के परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था का भी पाश्चात्य विचारधारा के आधार पर हो रहा है। फलतः एक ओर बड़े उद्योगपतियों का वर्ग खड़ा हुआ है और निर्धनता और बेरोजगारी बढ़ी है, तो दूसरी ओर भावी पीढ़ी को पाश्चात्य देशों की सी दास-प्रथा की ओर धकेल दिया गया है, जिससे वह उद्योगपति अथवा सरकार की वेतनभोगी गुलाम होने पर विवश है। स्वावलम्बन, आत्म-विश्वास और आत्माभिव्यक्ति का ह्रास हुआ है और विषमता तथा पराश्रिता सर्वत्र बढ़ रही है। पूंजीपति वर्ग के साथ-साथ राजनीतिज्ञ भी कामनायें भड़काने का खेल खेल रहे हैं, जिससे अराजकता बढ़ रही है। कुशिक्षा और अशिक्षा इस अग्नि में घृत का काम कर रहा है।

अल्पसंख्यकों की बढ़ती जनसंख्या भी चिंता का कारण है, क्योंकि इसके कारण इस्लाम और ईसाईयत का प्रभाव बढ़ रहा है। इस्लाम जिहाद के सिद्धान्त में विश्वास करता है और इसका पूर्व इतिहास जिहाद का रहा है। भारत का विभाजन इस्लाम के कारण हुआ है। ईसाईयत भी प्रलोभन के आधार पर विकसित हो रही है। दोनों के भारत के बाहर अन्तर्राष्ट्रीय राजनैतिक केन्द्र हैं। इस्लाम और ईसाईयत न केवल भारत के शाश्वत जीवन-मूल्यों और पद्धति के लिये चुनौती हैं, बल्कि महती चिन्ता का कारण यह है कि किसी भी इस्लामी देश में प्रजातन्त्र नहीं है, यहाँ तक कि पाकिस्तान, जहाँ अब चुनाव हुये हैं, इस्लामी संविधान रखे हुये है। ईसाईयों के भी निज देशों को छोड़ दिया जाये तो वे प्रजातन्त्र विरोधी ही सिद्ध होते हैं। फिजी और दक्षिण-अफ्रीका इसके उदाहरण हैं। अतः इस्लाम और ईसाईमत से एक खुले संवाद की आवश्यकता है, पर संविधान में "धर्म" की गलत परिभाषा के परिणामस्वरूप यह स्वतन्त्र विचार, चिन्तन संभव नहीं, यहाँ तक कि सामान्य सी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध भी कोई कानून नहीं बन सकता।

जाति-प्रथा भी विघटन का कारण है। यह तब तक

को वेदानुद्धरिष्यति

बाबूराम शास्त्री
अध्यक्ष
दयानन्द वैदिक शोध पीठ
दयानन्द कालेज, अजमेर।

स्वामी विद्यानन्द जी का लेख "आर्यसमाज सावधान" {वेदवाणी में} पढ़कर अवगत हुआ कि प्रो0 वेदव्यास वैदिक धर्म व संस्कृति के प्रचार प्रसारार्थ लगभग 500 उत्तम कोटिके-ग्रन्थ तैयार कराने की बृहती योजना बना रहे हैं-- के0एम0मुंशी के "भारतीय विद्या भवन" के आदर्शों पर । सभी आर्यजनों को विदित है कि मुंशी जी ने सावष्टम्भ Vedic-Age नामक जिस पुस्तक का प्रणयन विद्या भवन से करवाया-- वह इतनी निकृष्ट, सिद्ध हुई कि पं0 धर्मदेव विद्यामार्तण्ड को उसके खण्डन में "वेदों का यथार्थ स्वरूप" लिखना पड़ा। स्वामी जी को उसी पुराने इतिहास की पुनरावृत्ति की आशंका है। आशंका निर्मूल भी नहीं नजर आती। किन्तु "भारतीय विद्या भवन" की स्थापना या Vedic-Age के लिखवाने में के0एम0 मुंशी की नीयत साफ नहीं थी-- ऐसा कहना भी थोड़ा अजीब लगता है। मुंशी जी कोई कालिदास तो थे नहीं कि जिस डाल पर बैठे थे उसे ही काट रहे थे। हाँ उनकी स्थिति उस राजा की सी थी जिसने एक मल्ल पहरेदार रखा और उसे एक तलवार दी और हिदायत दी कि देखो "मेरे पास एक मक्खी भी न पर मारने पावे।" बस क्या था राजा निश्चिन्त सो गया-- पहरेदार पूरा चौकन्ना था किन्तु जाने कहाँ से एक मक्खी आ टपकी और राजा के सीने पर जा बिराजी, मल्ल ने आव देखा न ताव-तलवार म्यान से खींच ली और राजा के सीने पर दे मारी, मक्खी तो न उड़ी पर राजा के प्राण पखेरू उड़ गये। मुंशी जी को दुर्भाग्य से ऐसे मल्लों से पाला पड़ गया था जो जिन्दगी भर मक्खी ही मारते रहे थे ।

स्वामी विद्यानन्द जी की पीड़ा का एहसास मुझे पूरा है-- पर प्रो0 वेदव्यास के पुरूषार्थ पर भी मुझे कम विश्वास नहीं है। बशर्ते कि वे मुंशी जी की सी भूल न कर बैठें। वैसे भी मुंशी और वकील में अन्तर तो होता ही है। वेद व्यास से तो कम से कम वेदों के ह्रास की बात नहीं सोची जा सकती किन्तु कभी-कभी होम करते हाथ जल जाते हैं - तो क्या हाथ जलने के भय से होम करना बन्द कर दिया जाता है-- हाँ थोड़ी सावधानी रखनी पड़ती है। यही सावधानी अब प्रो0 वेद व्यास को रखनी पड़ेगी। किन्तु सावधानी रखते हुए भी काम सही दिशा में ही होगा-- इसकी कोई गारण्टी नहीं है। कारण स्पष्ट है । कार्य गुरुतर है-- वेद विद्या कोई हँसी खेल तो नहीं है न ही मनोविनोद का साधन, इसका रहस्य बिना योग साधना-- बिना तपश्चर्या--बिना निदिध्यासन के नहीं खुलता, अतः इसका व्याख्यान कर्ता भी पूर्ण विद्वान व तपस्वी होना चाहिए। "अल्पश्रुत से वेद डरता है कि यह तो मुझे मार ही देगा"। और सचमुच अल्पश्रुतों ने वेद को मारा है -- न केवल पश्चिम ने - पूरब ने भी । शायद इसीलिए एक समुदाय विशेष को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं दिया गया था, किन्तु जन्म से अनधिकार की बात पहले नहीं थी, जिनके गुण-कर्म-स्वभाव शूद्र के थे वे चाहे किसी भी वर्ण में जन्मे हों-- वेद के अनधिकारी थे क्योंकि वेद पढ़ने के लिए विद्या-बुद्धि और तपश्चर्या की आवश्यकता थी-- जो उनमें पास नहीं थी। अनधिकारी को अधिकार देना बन्दर के हाथ में उस्तरा देना जैसा है। महर्षि दयानन्द ने यास्क के बाद लगभग-5000 वर्षों के बाद वेद के सही मर्म के समझने की कुंजी आर्य जनता को प्रदान की, आखिर इस लम्बी अवधि तक वेद उपेक्षित क्यों रहे? या यों कहिए कि उनका सही मर्म उद्घाटित क्यों न हो सका? इसमें वेदों की दुरुहता ही कारण है जिसके कारण सायण आदि भी वेद का रहस्यार्थ प्रकट करने में असमर्थ रहे। महर्षि दयानन्द, जिन्होंने वेदों का उद्धार किया, सभी के लिए वेदों के पठन-पाठन का दरवाजा खोल दिया किन्तु उसका परिणाम विशेष संतोषप्रद नहीं रहा, अधिकृत होते हुए भी कितने लोग आज वेदों के अध्ययन में लगे हैं-- और जो लगे भी हैं उनमें कितने ऐसे हैं जो स्वामी जी के इस पुनीत कार्य को आगे बढ़ा सके हैं। महर्षि दयानन्द ने तो "वेदों का पढ़ना पढ़ाना आर्यों का परम धर्म" बतलाया है, पर इस परम धर्म के आचरण में हमारी निष्ठा नहीं रही। यदि आर्यजन ही वेदाध्ययन से पराङ्मुख हो चले हैं तो उनके सही रूप को जनता के सामने कौन लाएगा? और फिर वैदिक संस्कृति और भारतीय इतिहास का सही मूल्यांकन कौन करेगा? कहते हैं "विद्या ने ब्राह्मण के पास आकर यह प्रार्थना की थी कि मैं तुम्हारी निधि हूँ-- मेरी रक्षा करो, अनधिकारी, द्वेषी, ईर्ष्यालु को मुझे मत प्रदान करें। तभी मैं वीर्यवती होऊँगी।" ऐसा ही निवेदन आज स्वामी विद्यानन्द जी कर रहे हैं-- इस आशंका से कि कहीं वेद- विद्या की हत्या न हो जाय। जहाँ तक प्रो0वेद-व्यास के उपक्रम का प्रश्न है-- उनका संकल्प सराहनीय है किन्तु उनकी भी कुछ मजबूरियाँ हो सकती हैं--जो अभीप्सित की प्राप्ति में बाधक हों। उदाहरणार्थ धर्मनिष्ठ वेदज्ञ विद्वानों की उपेक्षावृत्ति । मैं उनकी बेबशी का अनुमान लगा सकता हूँ। दयानन्द वैदिक शोधपीठ के निदेशक आचार्य दत्तात्रेय आर्य ने "सार्वभौम वैदिक धर्म" पर एक प्रामाणिक पुस्तक के प्रणयन का सकल्प किया है- तदर्थ वेदज्ञ विद्वानों का आह्वान किया गया है-- इस कार्य के लिए समुचित पारिश्रमिक देने का भी आज तक कोई वेदविद इस कार्य में सहयोग करने के लिए आगे नहीं आया है। इसके दो ही कारण हो सकते हैं, या तो आर्यसमाज के प्रतिष्ठित विद्वानों ने वेद का पढ़ना-पढ़ाना बन्द कर दिया है या दीर्घसूत्रतावश-- प्रमाद या आलस्यवश अपने कर्तव्य से विमुख हो गये हैं। यदि नहीं तो प्रो0 वेद व्यास या आचार्य दत्तात्रेय को सही दिशा में कार्य कराने के लिए अपेक्षित सहायता आर्यसमाज क्यों नहीं प्रदान कर रहा है?

मैं इस पत्र के माध्यम से प्रो0 वेद व्यास से निवेदन करना चाहूँगा कि वे अपने प्रस्तावित कार्य के सम्पादनार्थ धर्मनिष्ठ, तपस्वी व सदाचारी वैदिक विद्वानों को आमंत्रित करें ताकि उनके सभीहित कार्य की निष्पत्ति हो सके और वेद-विद्या व वैदिक संस्कृति की रक्षा हो सके। साथ ही विद्यानन्द जी को आश्वस्त करना चाहूँगा कि वे प्रो0 वेद व्यास के प्रस्तावित कार्य की रूपरेखा की प्रतीक्षा करें और यदि प्रो0 वेद व्यास जी का कार्य मात्र पूर्वपक्ष ही बन कर रह गया तो उसका उत्तर पक्ष अवश्य होगा। को वेदानुद्धरिष्यति= कः= प्रजापति अर्थात् प्रकृष्ट जन्मा= संस्कारोपेत, वेदज्ञ विद्वानों का अग्रणी या रक्षक, ही वेदों का उद्धार करेगा-काल की कोई सीमा नहीं है और पृथिवी बहुत बड़ी है ।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

समाप्त नहीं हो सकता, जब तक जन्म से वर्ण-निर्धारण समाप्त होकर कर्म से वर्ण का पुनः निर्धारण न हो। अतः जन्म से सभी शूद्र माने जायें और जैसी-जैसी जिसकी शिक्षा और कार्य हों, वैसा-वैसा वर्ण-निर्धारण हो। ऐसी व्यवस्था कब हो पायेगी, यह अलग प्रश्न है। अभी तो एक प्रबल सामाजिक आन्दोलन ही जाति-प्रथा को निस्तेज कर सकता है।

मत {धर्म} और वर्ण {जाति} को जन्म से मानना विघटन का सबसे महती कारण है। संविधान में "हिन्दू" और "धर्म" की जो गलत परिभाषा की गई है, उसके कारण यह दुष्चक्र फैला है। अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के दो वर्ग बन गये हैं। सम्प्रदायों को हम धर्म मानने लगे हैं और उनकी उचित-अनुचित बातों को संरक्षण देने लगे हैं। यह सब पाश्चात्य शिक्षा और अंग्रेजी-भाषा की देन है, जिसने हमारी सामाजिक जीवन-पद्धति और अर्थ-व्यवस्था को डगमगा दिया है।

"धर्म" वह है जो धारण करता है और "हिन्दू" वह है जो भारतीय है, इस सत्य का भारत-राष्ट्र को साक्षात्कार कराने का सामर्थ्य और शक्ति, अपने संगठन की तमाम कुव्यवस्था और दुर्बलताओं के बावजूद, यदि किसी में है, तो वह आर्यसमाज है। क्या आर्यसमाज अपनी इस सोई शक्ति को जगायेगा? आखिर, हम किसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं ?

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

डा0 बालकृष्ण आर्य का भव्य अभिनन्दन

आर्य वीरदल उ0प्र0 {पश्चिम} के संचालक श्री डा0 बालकृष्ण-जी आर्य गुरुकुल म0वि0 ततारपुर में पधारें उनके आगमन से गुरुकुल में सर्वत्र प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। आर्यवीरों ने उनका भव्य स्वागत किया तथा मुख्य संचालक श्री आचार्य धर्मपाल जी ने उनके पधारने का और स्वागत करने का सौभाग्य माना मण्डलीय मन्त्री श्री नेकपाल आर्य ने भी उसका स्वागत किया वे अलवर शताब्दी के लिये प्रान्त का प्रतिनिधित्व करने जा रहे थे ।

सुझाव और सम्मतियाँ

आर्यों का राष्ट्रीय संवत्

{डा० राजेन्द्र प्रसाद आर्य एवं
श्री कमलाकान्त आर्य वाराणसी}

"वेद का पढ़ना पढ़ाना एवं सुनना-सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है" और उसके अनुकूल कार्य करना भी ।

बहुत खेद एवं लज्जा की बात है कि आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के 40 वर्ष बाद तक भी हम लोग ईसाई मत के सम्वत को अपना राष्ट्रीय सम्वत के रूप में मानते चले आ रहे हैं और जरा भी नहीं झिझकते ।

विदेशी सरकार ईसाई मतावलम्बी थी। ईसामसीह एवं ईसाई मत का प्रचार एवं प्रसार करना चाहती थी। अतः हम लोगों पर यह सम्वत् मनाने के लिये थोपा गया था पर दुर्भाग्य की बात है कि आज हमारा मत-निरपेक्ष देश स्वतन्त्रता के 40 वर्ष बाद तक भी इसको अपनाये हुये हैं। ऐसा लगता है कि अपने इस महान् गौरवशाली देश का कोई अपना सम्वत् ही नहीं था, पर ऐसा क्यों ?

केवल अपने मतभेदों के कारण जो अमिट बना हुआ है। यही हम लोगों के महाभारत के समय से अब तक अपने गिरावट एवं परतन्त्रता का मुख्य कारण बना हुआ है। एक मत-निरपेक्ष राज्य में तो इस साम्प्रदायिक सम्वत का मानना केवल मस्तिष्क के दिवालियापन की निशानी एवं मानसिक परतन्त्रता का परिचायक है। भले ही हम लोग शारीरिक रूप से स्वतन्त्रता पर बिना मानसिक स्वतन्त्रता के शारीरिक स्वतन्त्रता बेकार है। महर्षि दयानन्द ने बहुत साफ-साफ एवं जोरदार शब्दों में अपने ऋगवेदादि भा० भूमिका के द्वितीय अध्याय में लिखा है कि वेद और जगत की उत्पत्ति में 1,96,08,52,976 वर्ष हुये है। यह तथ्य उन्होंने विक्रम संवत् 1933 फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष षष्ठी, शनिवार को लिखा है। आगे लिखते हैं--

"इसी प्रकार सब व्यवहार आर्य लोग बालक से वृद्ध पर्यन्त करते और जानते चले आये हैं। जैसे बही-खाते में मिती डालते हैं वैसे ही महीना और वर्ष बढ़ाते-घटाते चले आये हैं, इसी प्रकार आर्य लोग तिथि पत्र में भी वर्ष, मास और दिन लिखते चले आये हैं। यही इतिहास आज पर्यन्त सब आर्यावर्त देश में एकसा वर्तमान हो रहा है। सब पुस्तकों में भी इस विषय में एक ही प्रकार का लेख पाया जाता है। किसी प्रकार का इस विषय में विरोध नहीं है। इसलिए इसको अन्यथा करने में किसी का सामर्थ्य नहीं हो सकता क्योंकि जो सृष्टि की उत्पत्ति से लेकर बराबर मिती खाते में मितीवार लिखते न आते तो इस गिनती का हिसाब ठीक-ठीक आर्य लोगों को भी जानना कठिन होता।

दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि ऋषिवर के इतना स्पष्ट लिखने के पश्चात् भी आर्य विद्वानों में इतने मतभेद बने हुये हैं। इस लेखन के सात साल बाद तक सम्वत् 1940-वि०सं० जब महर्षि का स्वर्गवास हुआ कोई टिप्पणी नहीं की गई एवं उनके मरने के पश्चात् नाना प्रकार की गलतियाँ निकाली जा रही हैं।

सार्वदेशिक सभा या परोपकारिणी सभा अजमेर जो ऋषि-दयानन्द के विचारों एवं अन्य विषयों की धरोहर है उसकी प्रथम जिम्मेदारी होती है कि सब मुख्य-मुख्य विद्वानों की एक गोष्ठी बुलाकर इस मुख्य मसले को हल कर लें। एक गोष्ठी में हल होना तो असंभव है पर अन्य कई गोष्ठियों में समस्या का समाधान निकल आयेगा। मतभेदों के निराकरण का युग है, कठिन से कठिन समस्यायें हल हो रही हैं यह भी हल हो जायेगा। प्रत्येक गोष्ठी की कार्यवाही को किसी पत्रिका में मुद्रित किया जाय ताकि और लोग भी अपनी राय भेज सकें। एक स्वतन्त्र जज भी रक्खा जा सकता है। खर्चीला मसला तो अवश्य है परन्तु ----

ऋषि द्वारा :

विक्रम संवत् 1933 फाल्गुन-बदी 6, सृष्टि संवत्	-	1,96,08,52,976
विक्रम 2043{112वर्ष पश्चात्}	-	112
	-	1,96,08,53,088
कुल अन्य लोग इसको :	-	1,97,29,49,089
अन्तर :	-	1,20,96,001

क्यों ?

कुछ लोगों का कहना है कि महर्षि ने गणना में गलती की है, कुछ अन्य स्थानों पर भी गलतियाँ की हैं पर महर्षि के आगे के वर्णन पर जो रेखांकित हैं, लोगों को उसके बारे में क्या कहना है स्पष्ट लिखें।

जो हो एक सर्व-सम्मत हल निकलना आवश्यक है।

सृष्टि संवत् लंबा होने के कारण हम लोग इसको संक्षेप में 5388 का प्रयोग कर सकते हैं।

वैदिक मास मधु माधव इत्यादि को कर सकते हैं। तिथि सरलता के लिये सूर्योदय से सूर्योदय तक चलाना चाहिये। मास 30, 31 एवं अन्त में 28-29 दिन का करके वर्ष 365$\frac{1}{4}$ का पूरा करना चाहिये।

आशा है कि सब मूर्धन्य लोग जल्द से जल्द इसका निराकरण करेंगे। ध्यान रहे इस सृष्टि संवत् का प्रयोग विक्रम संवत् तक चलता रहा । सबसे पहले महाराज विक्रमादित्य ने इसको बदल कर अपना संवत् चालू किया एवं मासों का नाम पूर्णमासी के नक्षत्रानुसार चैत्र बैसाख आदि नाम रख दिया।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक का निधन

आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री राम स्वरूप आजाद ग्राम-फिरोजपुर बुलन्दशहर का निधन पिछले दिनों हृदय गति रुकने से हो गया वे 85 वर्ष के थे उन्होंने अपने जीवन काल में लगभग 150 शिष्य बनाकर आर्य समाज के प्रचारार्थ प्रदान किये हैं तथा सौ से ऊपर इतिहास भजनों की पुस्तकों का संकलन किया ।

नेकपाल आर्य
मन्त्री
आर्य वीरदल मेरठ मण्डल।

शोक सम्वेदना

आर्य वीरदल बिहार के प्रान्तीय संचालक, आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के महामन्त्री, सच्चे आर्य कार्यकर्ता जनसेवा में अहर्निश रत कई पुस्तकों के प्रणेता प्रसिद्ध ऋषिभक्त श्री रामाज्ञा वैरागी के निधन पर सार्वदेशिक आर्य वीरदल {गाजियाबाद} तथा अनेकों आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं से शोक सम्वेदना सन्देश प्राप्त हुए हैं ।

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर गाजियाबाद के आचार्य एवं सार्वदेशिक आर्य वीरदल उ०प्र० के मुख्य संचालक श्री धर्मपाल-शास्त्री के पूज्य पिता पहलवान धनेश्वर सिंह आर्य के निधन पर अनेक विद्वानों, पू० सन्यासियों, महोपदेशकों एवं आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं से शोक सन्देश प्राप्त हुए हैं। हम आर्य मित्र परिवार की ओर से सभी का आभार प्रकट करते हैं ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कार्यरत उपदेशकों-प्रचारकों के

मास मार्च ८९ के कार्यक्रम

1- पं० केशवदेव शास्त्री महोपदेशक, — 1 से 5 जमुनियाबाग §फैजाबाद§, 12 से 14 कुकराटाउन §लखीमपुर खीरी§ 19 से 22 मलकपुर सेमली §मुरादाबाद§, 23 से 25 धमोरा §रामपुर§

2- श्री विश्वम्भरदत्त जी शास्त्री, — 1 से 15-रामपुर।

3- डा० विजयपाल सिंह जी — अलीगढ़, बुलन्दशहर, आगरा कार्यरत

4- श्री योगेशदत्त जी — 1 से 6 गोहाटी §असम§, 8 से 10 रठौडा मेला §रामपुर§ 12-धामपुर, 13, 14, 15-औंधा §बिजनौर§, 19 से 22- मलकपुर सेमली §मुरादाबाद§, 23 से 25- धमोरा §रामपुर§

5- पं० जयन्त कुमार जी, — माननीय सभा प्रधान जी के निर्देशन में।

6- श्रीयुत् स्वामी सुकर्मानन्द जी — 4 से 6 -सकरावा §फर्रुखाबाद§, 14 से 16-फखरपुर §बहराइच§

7- श्री महावीर शास्त्री उपदेशक — 1 से 10-डेहरियावा §फैजाबाद§

8- श्री गजराज सिंह जी राघव, प्रचारक — 1 से 7 थाना भवन §मुजफ्फरनगर§

9- श्री कमलदेव जी, प्रचारक — 14 से 16 फखरपुर §बहराइच§

10- श्री ब्रह्मानन्द जी आर्य, प्रचारक — 1 से 3 मेहमदी §खीरी§, 4 से 6 सकरावा §फैजाबाद§, 12 से 14 कुकराटाउन §खीरी§, 19 से 21-मलकपुर सेमली §मुरादाबाद§ 24-25-बरूआरा §हरदोई§, 26-27-हैवतपुर, 28 से 30-शाहबाद §हरदोई§

11- श्री रामचन्द्र जी शर्मा प्रचारक — 1 से 6-गोहाटी §असम§

12- श्री सीताराम जी शर्मा प्रचारक — आर्य समाज पीलीभीत

13- श्री नेमप्रकाश जी आर्य प्रचारक — 3 से 6 मऊनाथभंजन §आजमगढ़§, 14 से 16-फखरपुर §बहराइच§, 19 से 21-मलकपुर सेमली §मुरादाबाद§, 24 से 31-बांगरमऊ §उन्नाव§,

14- श्री युगुलकिशोर जी प्रचारक, — 1 से 4-जौनपुर, 5 से 9-उतरौला §गोण्डा§, 12 से 31-उपसभा जौनपुर

15- श्री सीताराम जी आर्य, प्रचारक — आलापुर, बखोरा, नसीरपुर, जगतपुरखेड़ा-बेरा §हरदोई§, तन्दौला §बाराबंकी§ मकनपुर-§कानपुर देहात§, भौला बांकीपुर §उन्नाव§

16- श्री तेजपाल सिंह आर्य एवं आशा आर्या — 6, 7, 8- कुण्डा चांदपुर §बिजनौर§

17- श्री विक्रमदेव आर्य, प्रचारक, — 1 से 6 गोहाटी §असम§, 8 से 10-रठौडा §रामपुर§ 12-धामपुर 13 से 15-औंधा §बिजनौर§ 19 से 21-मलकपुर सेमली §मुरादाबाद§, 22 से 25 धमोरा §रामपुर§

18- श्री ओम लाल आर्य, ढोलकवादक, — 1 से 6-गोहाटी §असम§, 12 से 14-कुकरा टाउन §लखीमपुर खीरी§

19- श्री अमरलाल आर्य ढोलकवादक, — 1 से 3-मेहम्मदी §खीरी§, 4 से 6-सकरावा §फर्रुखाबाद§ 19 से 22-मलकपुर सामली §मुरादाबाद§

आवश्यक निर्देश

1- समस्त उपदेशक प्रचारक अन्तर्देशीय पत्र पर अपनी प्रगति प्रति सप्ताह भरकर प्रचार कार्यालय अमरोहा भेजें इसी के आधार पर वेतन बिल डायरी स्वीकार होगी।

2- सभी उपदेशक प्रचारक धर्म भूषण परीक्षा के लिये संबंधित पुस्तक कार्यालय से प्राप्त कर लें।

भवदीय,

मनमोहन तिवारी, मन्त्री, — हरिश्चन्द्र आर्य, अधिष्ठाता उपदेश विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी समिति आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

1-	श्री रणजीत सिंह जी,	संयोजक
2-	श्री डा० महेन्द्र सिंह	अध्यक्ष
3-	श्री रामचन्दर जी	मन्त्री
4-		
5-	श्री गंगाराम जी	कोषाध्यक्ष

निर्वाचन

आर्यसमाज हुसैनपुर सुल्तान §बिजनौर§

श्री रमेश जी	संरक्षक एवं ब्लाक प्रमुख
श्री भूदेव सिंह	प्रधान
श्री छोटे सिंह	मन्त्री

आर्यसमाज बहादुरपुर सईदुद्दीन §बिजनौर§

प्रधान-	श्री राजारामसिंह आर्य
मन्त्री-	श्री तेजपाल सिंह आचार्य
कोषाध्यक्ष-	श्री वेदप्रकाश जी §बिजनौर§

- आर्यसमाज अस्तौर §बिजनौर§ में मकर संक्रान्ति के अवसर पर यज्ञ हुआ तथा श्री महावीर सिंह जी ने यज्ञ व उपदेश किया।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, कानपुर।

प्रधान	डा० हरपाल सिंह
मंत्री	डा० आशा रानी राय
कोषाध्यक्ष	श्री प्यारे लाल आर्य

आर्यसमाज जूही

प्रधान	श्री कुन्दन सिंह
मंत्री	श्री ओम प्रकाश मेहता
कोषाध्यक्ष	श्री वरुण कुमार जी

आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर

प्रधान	श्री सीता राम आर्य
मंत्री	श्री राम जी आर्य
कोषाध्यक्ष	श्री सत्य नारायण प्रसाद

शोक समाचार

वैदिक प्रचार मण्डल, 72-बी, गोविन्दनगर, अम्बाला छावनी के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष एवं लगनशील कर्ता तथा डिप्टी पोस्ट मास्टर का अचानक हृदय गति रुक जाने से देहान्त हो गया। श्री भगवतस्वरूप 59 वर्ष के थे। वह अपने पीछे भरा-पूरा परिवार छोड़ गये हैं। उन्होंने वैदिक प्रचार मण्डल में समय-समय पर उपदेश देकर आर्य संस्कृति का परिचय कराया तथा मण्डल के कार्यों में तन, मन, धन से सहयोग दिया। उनका दाह-संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से दिनांक- 23·1·89 को किया गया। प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना है --

सभामन्त्री

इतिहास के झरोखें से

पैगम्बर मोहम्मद साहब को इत्र, औरत और इबादत का शौक था

सलमन रशदी ने "सैटेनिक वर्सेस" के नाम से हाल में एक पुस्तक प्रकाशित की जिसमें पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब के जीवन के कुछ पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। इस पुस्तक के प्रकाशन पर मुसलमानों ने आपत्ति उठाइ उनके आन्दोलन से बाध्य होकर भारत सरकार ने इस पुस्तक को अवैध घोषित कर दिया। आश्चर्य है कि जब प्रसिद्ध अरब-विद्वान डा0 गुस्तावली बान ने "अरब की सभ्यता" पर फ्रान्सीसी भाषा में एक विशाल ग्रन्थ लिखा और उसका सर सैयद अली बिलग्रामी ने उर्दू में "तमद्दुने अरब" के नाम से अनुवाद किया और मुफीदे आम प्रेस आगरा ने सन् 1898 ई0 में उसका प्रकाशन किया जब मुसलमानों ने कोई आपत्ति नहीं उठाई। इतना ही नहीं उत्तर प्रदेश उर्दू अकादमी ने 1985 में इसका दूसरा संस्करण प्रकाशित किया। इस पुस्तक का एक अंश उदाहरण के रूप में हम अक्षरशः उद्धृत कर रहे हैं -

"अगर हजरत में किसी किस्म का नुक्स §दोष§ था तो वह औरतों की मोहब्बत का था। लेकिन फिलवाकेए§वस्तुतः§ यह मोहब्बत भी आखीरी वक्त की थी क्योंकि पचास बरस की उमर तक हजरत अपनी पहली बीबी पर कानेअ §सन्तुष्ट§ रहे। हजरत इस हुब्बुलनिसा §स्त्री प्रेम§ को छिपाते न थे और आपका कौल §कथन§ है कि दो चीजें दुनियां में मुझे निहायत मरग़ूब§प्रिय§ हैं- अव्वल औरतें और दूसरे इत्रियात §सुगन्ध§लेकिन जो चीजें मेरे कल्ब§हृदय§ को सबसे ज्यादा तस्कीन देती है वह इबादत §उपासना§ है ।

हज़रत को अपनी अज़बाज §पत्नियों§ की उम्र की ज्यादा परवाह न थी। हज़रत आयशा की उम्र शादी के वक्त कुल दस साल थी, लेकिन मैमूना बिन्तहारिस की उम्र पचास साल थी। हज़रत की रुगबते निस्वाँ §स्त्रियों में अभिरुचि§ इस दरजा थी कि एक रोज अपने मतबन्ना §दत्तक§ बेटे जैद की बीबी§पत्नी§ को बिला लिबास §निर्वस्त्र§ देखकर हज़रत ने उसका इस कदर ख्वाहिश की कि जैद को जरूद पड़ा§आवश्यकता जान पड़ी§ कि अपनी जौज़ा §पत्नी§ को तलाक दे। मुसलमानों को यह अम्र बदनुमा मालूम हुआ§यह बात भद्दी मालूम हुई§ लेकिन जिब्राईल ने, जो हर रोज़ हज़रत के पास आते थे, वह्य नाज़िल की§आकाश-वाणी की§ कि यह फेल §कार्य§पैगम्बर का बेजा न था। और इसके बाद मोतरीजीन§आलोचक§ भी साकित§मौन§ हो गये।

हज़रत ने एक ही साल में चार निकाह किये लेकिन बिल्मजमूआ §कुल मिलाकर अज़वाज़ §पत्नियों§ की तादाद पन्द्रह, थी और उनमें से किसी वक्ते-वाहिद §एक काल§में ग्यारह से ज्यादा न थी। यह तादाद शायद हम अहले-यूरोप §यूरोपवासियों§के ख्याल में बहुत ज्यादा मालूम होती है लेकिन मश्रिकी ख्याल§पूर्वीविचार§ के मुआफिक हर्गिज ज्यादा नहीं है। और अगर पैगम्बरे इस्लाम ने उस आकिलतरीन-सलातीने दुनियां §संसार के राजाओं में सबसे बुद्धिमान§ यानी हज़रत सुलेमान की जिनका जिक्र अह्दे-अतीक§पुराना-अहदनामा§ में है तक्लीद §अनुकरण§ की होती तो इससे बहुत ज्यादा अज़वाज §पत्नियों§ के साथ निकाह कर सकते थे।

यह अम्र§बात§ किसी कद्र मश्कूक §सन्दिग्ध§है कि अजवाजे नबी §नबी या पैगम्बर की पत्नियों§ ने हज़रत के साथ पूरी वफादारी की या नहीं और ऐसा मालूम होता है कि आपको उनकी नाइत्तिफाकियों §मतभेदों§ की वजह से तकलीफ पहुँचती थी। हांलाकि मियाँ-बीबी की नाइत्तिफाकियों, जो यूरोप वासियों में बहुत आम है मश्रिकी अक्वाम§पूर्वी जातियों§में निहायत शाज §अत्यन्त-विरल§ है। अलल- खुसूस §विशेषतः§ हज़रत आयशा की वजह से आपको बहुत कुछ रंज पहुँचा और लोगों को सख्त बदगुमानी का मौका मिला। लेकिन हज़रत जिब्राईल ने, जो हमेशा मेहरबान थे, उनकी इफ्फ्त §सतीत्व§ की तस्दीक की और जब यह शहादत §साक्ष्य§ दाखिल कुरान §कुरान में प्रविष्ट§ हो गयी तो फिर मुसलमीन को शक की गुन्जाइश बाकी न रही ।

ईसाई धर्म की हिंसावृत्ति

§श्री पं0जयन्तकुमार पाण्डेय §आर्यपुत्र§
उपदेशक आर्य प्रतिनिधिसभा,उ0प्र0§

बाईबल के अनुसार ईश्वर ने संसार की सृष्टि की और उसने मनुष्य को अपने जैसा बनाया। उसने मनुष्य का अधिकार दिया कि वह समस्त सृष्टि का उपयोग और उपभोग करें। ईसाईयों ने इसका अर्थ यह लगाया कि मनुष्य को छोड़ कर संसार के सभी जीव जन्तु भक्ष्य हैं। इस प्रकार बाईबल ने मनुष्य को हिंसा करने की खुली छूट दी परिणाम स्वरूप ईसाईधर्म में दया को कोई स्थान नहीं है। ईसाई कुत्ते से लेकर गाय, भैंस, बकरे, सुअर अर्थात् सभी जीव-जन्तुओं का भक्षण करते हैं। इससे प्राचीन काल के राक्षसों की हिंसावृत्ति का यद्यपि दर्शन मिलता है। इस जीव हत्या में इसाई धर्म गुरु और ईसाई धर्माधिकारी सबसे आगे रहते हैं। बाईबल में कहा गया है कि अपने पड़ोसी को अपना जैसा प्यार करो। ईसामसीह का यह पड़ोसी प्रेम केवल मनुष्य तक सीमित है। क्या कुत्ते, गाय, बैल, भैस इत्यादि हमारे पड़ोसी नहीं हैं? क्या यह उपयोगी, निःस्वार्थ और असहाय जीव जन्तु हमारी दया के पात्र नहीं हैं? समस्त मानवता को दूध घी, मक्खन, पनीर तथा सुरक्षा और अन्य प्रकार की खाद्य सामग्री प्रदान करने में सहायक यह पशु ईसाईयों के निर्ममता और राक्षसी प्रवृत्ति के शिकार बनकर दिन-प्रतिदिन लाखों की संख्या में मारे जा रहे हैं। निर्ममता का यह नग्न स्वरूप ईसाई धर्माव-लम्बियों, पुरोहितों की जीवन चर्या का अंग बन गया है।

चूंकि आज का मानव नास्तिकता, हिंसा रूप अन्धकार में भटक रहा है। अतः उसे ईसामसीह द्वारा बताया गया। राक्षसी मुक्ति मार्ग अत्यन्त प्रिय और आसान सा लगता है। इस मज़हब को अपनाने में व्यक्ति को खुला रास्ता मिलता है पाप करने का। इस मज़हब को अपनाने पर व्यक्ति सुरा, सुन्दरी और मांसाहार का खेल खुलकर खेला करता है। क्योंकि इन सब पापों से मुक्ति यह पाप-क्षमा प्राप्त करने हेतु उसके पास बड़ा ही सरल और संक्षिप्त मार्ग है। वह है पाप स्वीकार का संस्कार §कन्फेशन§ । यह संस्कार व्यक्तिगत रूप से पुरोहित §फादर§ के साथ किया जाता है इसे कन्फेशन भी कहते हैं। इस पाप स्वीकार के बाद फादर §पादरी§ ईश्वर के प्रतिनिधि के रूप में पाप स्वीकार करने वाले का पाप क्षमा कर देता है तथा कन्फेशनकर्ता को दो से लेकर पाँच मिनट तक कुछ प्रार्थना करने को कहता है। इस पूरी पाप-क्षमा प्रक्रिया में केवल कुछ मिनट लगता है। तत्पश्चात् ईसाई धर्मानुसार व्यक्ति पाप मुक्त हो जाता है। वह फिर पूरे सप्ताह पापकर्म करता है क्योंकि उसे विश्वास होता है कि वह पाप स्वीकार के बात पापों से क्षमा पा जायेगा। इस तरह पापकर्म और पाप क्षमा की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। यही कारण है कि जितना अनाचार, चरित्रहीनता तथा निर्लज्जता ईसाई मज़हब के मानने वालों में है उतनी अन्यत्र नहीं मिलेगी। अपराधियों, चरित्रहीनों, व्यभिचारियों के लिए यह मज़हब स्वर्ग है, क्योंकि वह पाप स्वीकार §कन्फेशन§ संस्कार से अपने पूर्व पापों की क्षमा पाने की आशा करते हैं। हम अनुमान लगा सकते हैं कि यदि भारत एक ईसाई राष्ट्र बन जाय तो समाज में क्या स्थिति पैदा हो जायेगी? यही कारण है कि यूरोप, अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, फ्रांस, इटली आदि देशों में यौन-अपराध, हत्या तथा भ्रूण हत्या चरम सीमा पर हैं। भारत में ईसाईधर्म के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ इन भयावह सामाजिक बुराईयों का भी प्रचार-प्रसार हुआ है।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

समाचार दर्शन

- मनुष्य जाति का सबसे विराटतम उत्सव (महाकुम्भ) गंगा, यमुना, सरस्वती के पवित्र संगम पर मौनी अमावस्या के दिन 6 फरवरी 1989 को प्रयागराज इलाहाबाद में देखने को मिला जहां डेढ़ करोड़ श्रद्धालु जनता ने पवित्र संगम पर डुबकी लगाई। हिमालय और निर्जन वनों से आये साधु सन्यासियों से लेकर सर पर पूरा घरबार उठाए लाखों की संख्या में ग्रामीण तक इस महास्नान में शामिल थे। मौनी अमावस्या का यह महायोग 72 वर्ष बाद आने से इसका महत्व और बढ़ गया और हजारों की संख्या में एकत्र साधु सन्तों महात्माओं के विशालमिलन को देखकर ऐसा लगता था कि यह विशाल हिन्दू जाति "संगमे-च नदीनाम् धियः विप्रो अजायत" को मूर्तरूप देती हुई विश्व को पुनः शान्ति, पवित्रता, एकता और समता का सन्देश देने के लिए पवित्र नदियों के संगम पर पुनः उमड़ पड़ी है।

- अरबियन महासागर में चल रही पुरातात्विक खोज के दौरान पत्थर की कई ऐसी विशाल इमारतें मिली हैं जिनमें महाभारतकालीन चित्रों तथा अन्य प्रमाणों से यह सिद्ध हो जाता है कि गुजरात की द्वारिका ईसा से पूर्व-1500में समुद्र के पानी में समा गई थी। राष्ट्रीय समुद्री विज्ञान संस्थान के प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता श्री एस0आर0 राव ने युनिवार्ता को बताया कि यह द्वारिका नगरी ही थी। जो योगिराज **श्री कृष्ण** की बसाई हुई थी। इस प्रकार कृष्ण के मथुरा से द्वारिका गमन एवं उनके ऐतिहासिक अस्तित्व का प्रमाण स्वयं सिद्ध हो जाता है। जो लोग उनके अस्तित्व को केवल कवि कल्पनामात्र समझते हैं वे इस खोज का विश्लेषण करें तो उन्हें पता चलेगा कि द्वापर युग के अन्त में एक ऐसा महान् युग पुरुष,आप्त-पुरुष **श्री कृष्ण** के नाम से इस धरती पर उत्पन्न हुआ था जिसके नाम और कार्यों के स्मरण करके आर्य जाति आज भी अपने को धन्य समझती है।

- राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के आद्य सरसंघचालक डा0 केशव बलिराम हेडगेवार हिन्दू जाति के संगठन के मन्त्र दृष्टा ऋषि थे। उन्होंने संघ की स्थापना करके राष्ट्र और जाति का महान उपकार किया है। यद्यपि आर्य समाज उनके सभी सिद्धांतों से सहमत नहीं है फिर भी संगठन की अपूर्व क्षमता एवं महान दूरदृष्टि के कारण उनकी शताब्दी के पुण्य अवसर पर उन्हें अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता है। संघ के संयोजकों ने लखनऊ में बताया कि डॉ0 हेडगेवार सेवा कोष में अब तक 61 लाख रुपये जमा हो चुके हैं। इस धन का उपयोग वनवासी, दलित एवं पिछड़े वर्गों के हिन्दुओं के उत्थान तथा उन्हें समस्त हिन्दू जाति के साथ एकाकार बनाने में प्रयुक्त होगा।

पाकिस्तान में नवनिर्वाचित बेनजीर भुट्टो की सरकार के आ जाने से भारत को बहुत आशाएं बंधी हैं और हमें यह विश्वास उत्पन्न हो रहा है कि दोनों देश एक दूसरे के आन्तरिक मामलों में दखल न देते हुए मित्रता और सौहार्द के पथ पर बढ़ते रहेंगे। किन्तु 7 फरवरी की इस्लामाबाद से प्रसारित इस समाचार से बहुत निराशा हुई है जिसमें पाकिस्तान ने भारत का वह प्रस्ताव ठुकरा दिया है जिसके तहत सीमा पर संयुक्त रूप से गश्त किये जाने की योजना प्रस्तुत की गई है।

इस योजना से दोनों ही देशों को लाभ था जबकि यह सर्वविदित है कि अवैध रूप से नशीले पदार्थों एवं हथियारों की तस्करी आदि से आतंकवाद तथा राष्ट्रीय आर्थिक क्षति को बढ़ावा मिल रहा है।

शोक समाचार

आर्यसमाज देवबन्द के आय-व्यय निरीक्षक वयोवृद्ध श्री रामजी-दास जी का 83 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। ये कर्मठ, क्रान्तिकारी लेखक और राष्ट्रभक्त आर्य समाजी सदस्य रहे। स्यालकोट में युवा जीवन व्यतीत करते हुए आर्यसमाज की सेवा की। वैदिक विधि से इनका अन्त्येष्टि संस्कार किया गया आडम्बर रहित शान्ति यज्ञ सम्पन्न कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धान्जलि अर्पित की गई।

सभामन्त्री।

हर रविवार सुबह आर्य समाज मन्दिर में क्यों जाना चाहिए

पं0 गंगा प्रसाद विद्यार्थी, एम0ए0, एम0फिल0, जबलपुर

धार्मिक मुसलमान दिन में पाँच बार नमाज पढ़ता है अर्थात ईश्वर की प्रार्थना करता है, जिसे बिलकुल समय नहीं मिलता वह भी शुक्रवार को जुमे की नमाज में शामिल होना है। प्रत्येक ईसाई परिवार रविवार को गिरजाघर की प्रार्थना में सम्मिलित होता है। प्रत्येक धार्मिक व्यक्ति सुबह व शाम ईश्वर की प्रार्थना या सन्ध्या करता है, उससे वरदान माँगता है और धन्यवाद देता है। सप्ताह में एक दिन सामूहिक प्रार्थना व भजन में अवश्य सम्मिलित होने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए।

सभी आर्यसमाज मन्दिरों में प्रत्येक रविवार को प्रातःकाल लगभग 7·30 बजे से 9·30 बजे तक संध्या, हवन(यज्ञ), प्रार्थना, वेदपाठ व व्याख्यान होते हैं। वेद सभी हिन्दुओं (आर्यों) के मूल धर्मग्रन्थ हैं, वे संसार के सबसे प्राचीन ग्रन्थ हैं और सभी सत्य विद्याओं का मूल उनमें है। वेदों से ही सारी अच्छी बातें दुनियां भर में फैली हैं। बुरी बातें अन्य लेखकों की उनकी अपनी हैं। वेदों का पढ़ना व पढ़ाना तथा सुनना व सुनाना सभी का पवित्र कर्तव्य है। वेद को मूल रूप में पढ़ना अधिक हितकर है इसलिये संस्कृत भी अवश्य पढ़नी चाहिए कम से कम नागरी अक्षरों को पढ़ने का अभ्यास तो करना ही चाहिए। चार छह दिन के अभ्यास से ही नागरी अक्षर पढ़े जा सकते हैं। रामायण और गीता के विद्वान तो बहुत मिलते हैं परन्तु वेद के विद्वान सर्वत्र दुर्लभ हैं। आर्य समाज मन्दिर में जाते रहने से बहुत से वेद मन्त्र अपने आप कंठस्थ हो जाते हैं और अर्थ भी समझ में आने लगते हैं। हिन्दू मन्दिरों में वेदपाठी पुजारी ही रखने चाहिये।

अग्निहोत्र अर्थात हवन या यज्ञ करना संसार में श्रेष्ठतम कर्म है (देखिए यजुर्वेद का पहला मन्त्र और शतपथ ब्राह्मण)। यज्ञ से सभी जीवों को सुख पहुँचता है। इसमें शत्रु या मित्र का भेद भाव भी नहीं हो सकता, सभी को सुगन्ध समान ही मिलती है। प्रत्येक स्त्री व पुरुष के लिए प्रातःकाल की 16-16 आहुतियां व सायंकाल की 16-16 आहुतियां अथवा दोनों समय की मिलाकर 32-32 आहुतियों का विधान है। आहुतियों में चार प्रकार के पदार्थ होते हैं : 1- सुगन्ध वाले जैसे केशर कस्तूरी, अगर तगर, श्वेत चन्दन, इलाइची जायफल जावित्री आदि आदि, 2- पुष्टिकारक जैसे घृत, दूध, फल, कन्द, अन्न, चावल, गेहूँ, उड़द आदि, 3- मिष्ट जैसे गुड़, शक्कर, छुहारे, दाख, शहद आदि, 4- रोग नाशक जैसे गिलोय, मुलेठी आदि। जिन घरों में नित्य यज्ञ होते हैं वहाँ बीमारियाँ नहीं आतीं। दिसम्बर 1984 में भोपाल में विषैली गैस फैलने के समय जिनने तुरन्त यज्ञ प्रारम्भ कर दिया था उन्हे कुछ भी हानि नहीं हुई (देखिए दयानन्द सन्देश, दिल्ली - नवम्बर व दिसम्बर 1988)। आर्य समाज मन्दिर में हवन अवश्य होता है। आप उसमें बिना कुछ खर्च किए ही सम्मिलित हो सकते हैं। यज्ञ के प्रत्येक मन्त्र से ईश्वर की प्रार्थना भी हो जाती है, यज्ञ के लाभ विदित होते हैं, मन्त्र याद भी हो जाते हैं, विधि भी समझ में आ जाती है। वातावरण का प्रदूषण नष्ट करने को यज्ञ से बढ़कर कोई दूसरा कारगर, सस्ता, सरल व उत्तम तरीका नहीं है। सुगन्ध फैलती है, वनस्पतियाँ अधिक व अच्छे फल देती हैं, गायें अधिक व अच्छा दूध देती हैं।

आर्य समाज में ईश्वर प्रार्थना व समाज सुधार के बहुत से उत्तम-उत्तम भजन गाए जाते हैं। ऐसे उत्तम भजन कहीं भी अन्यत्र सुनने को नहीं मिलते। अन्यत्र तो कोरे भक्ति के या भक्ति के नाम पर शारीरिक रागात्मक या वासनायुक्त भजन ही सुनने को मिलते हैं। अच्छे भजनों से कानों व जिह्वा पवित्र करने के लिए आर्य समाज में जाते रहना चाहिए।

आर्य समाज में सभी को कर्तव्यों व सदाचार की शिक्षा दी जाती है, अतएव नवयुवकों व नवयुवतियों को भी इनमें अवश्य जाना चाहिये कि सदाचार के पालन से क्या-क्या लाभ हैं और दुराचार से क्या क्या हानियां हैं। उत्तम संस्कार कैसे पड़ते हैं और उनसे क्या क्या लाभ हैं। ब्रह्मचर्य, आसन व प्राणायाम से कैसे रोग दूर होते हैं और उत्तम स्वास्थ्य तथा दीर्घायु कैसे प्राप्त किए जा सकते हैं। माता, पिता, गुरु, अतिथि और पति या पत्नी मूर्तिमान देवता हैं। इनका सदा सम्मान करना चाहिए, मधुर वचन बोलने चाहिए और उत्तम भोज व वस्त्र से तृप्त रखना चाहिए, इससे पुण्य होता है व वरदान मिलते हैं। भाई बहनों, घर के अन्य लोगों, पड़ोसियों, मित्रों, सज्जनों व विद्वानों से भी प्रेम व मधुरता का ही व्यवहार करना चाहिए।

केवल प्रशस्ति नहीं, रचनात्मक कार्य आवश्यक

§श्री मनुदेव "अभय" विद्यावाचस्पति,एम०ए०§

§आर्य समाज जिन दुरितों §बुराईयों§ को दूर करने का जोर शोर से प्रचार कर रहा था, सम्प्रति उसमें ही वे दुरित अंगद के पैर के समान जम गये। अब उन्हें कैसे दूर करें", यह प्रश्न अब बड़ा अहम बन गया है। प्रस्तुत है संक्षिप्त किन्तु महत्वपूर्ण लेख में इन्हीं बिन्दुओं पर विचार किया गया है। सम्पादक--------§

विगत कुछ समय पूर्व आर्य समाज के एक प्रसिद्ध साप्ताहिक या मासिक पत्र ने वैदिक विद्वानों से विशेषांक हेतु रचनाएं आमंत्रित की। वैदिक विद्वानों को लिखे गए पत्रों में सम्पादक महोदय का आग्रह था कि केवल महर्षि दयानन्द की प्रशस्ति से पूर्ण लेख न हो अपितु सामाजिक, दार्शनिक तथा अध्यात्म प्रधान सिद्धान्तों पर ही रचनाएं भेजी जाएं। विद्वान् सम्पादक जी की यह पंक्तियां मेरे हृदय को छू गई और उन पर चिन्तन-मनन करने लगा।

वस्तुतः आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों, वार्षिक उत्सवों तथा प्रान्तीय या अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के मंचों से विद्वानों द्वारा केवल महर्षि दयानन्द की प्रशस्ति अधिक प्रस्तुत की जाती है। परन्तु सार्वजनिक रूप से आर्य समाज को असंगठित,बलशाली तथा नेतृत्व प्रधान बनाने की चर्चा नहीं की जाती। इन पंक्तियों का लेखक आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संगों से लेकर स्वदेश-विदेश के आर्य-सम्मेलन में सम्मिलित होता रहा है और होता रहेगा, परन्तु सभी स्थानों पर रचनात्मक ठोस कार्यों की योजना तथा निर्धारित अवधि में उनकी प्रति-पूर्ति के लिए कोई बात ही नहीं करता। ऐसे समय में केवल निराशा ही हाथ लगता है और खाली हाथ लौटना पड़ता है।

पूर्वाग्रह छोड़कर विचार किया जाए तो आर्य समाज की स्थापना के 113-114 वर्ष पश्चात् आर्य सामाजिक परिवारों तथा संगठनों में अनेक विसंगतियां और ज्वलंत समस्यायें उभर आई है जिनके हल न होने के कारण अनेक आर्य-परिवारों में पुनः अपने पैर पसारने लगा है । उनके यह भी वैदिक-सिद्धान्तों के विपरीत कार्य, संस्कार तथा समारोह आदि होने लगे हैं। मेरी विनम्र सम्मति में यह एक प्रकार से दयानन्द के प्रति कृतघ्नता और आर्यसमाज के साथ विश्वासघात है। इतना ही नहीं, वैयक्तिक राग-द्वेष एवं मनोमालिन्यों के कारण आर्यसमाज के संगठन से विलग होकर प्रतिक्रिया वादी बनकर उसकी छवि और धवल कीर्ति को कम करने का प्रयास किया जाता है। एक ब्राह्मण आर्य-सन्यासी §म० दयानन्द§ की इस पवित्र संस्था के साथ विश्वास घात एवं कृतघ्नता करना अधर्म का सबसे बड़ा महा पाप है।

आर्यसमाज में अभी-भी बेटी-बेटी का व्यवहार नहीं होता आर्यसमाज के अनेक पदाधिकारी आर्यसमाज के मंच पर "आर्य भूषण" तथा जातिय संगठनों के पर्दो पर आसीन होकर "जाति भूषण" जाति गौरव कहलाते है। यह दोगला-पन आर्यसमाज को ले डूबेगा। आर्यो में वैवाहिक - सम्बन्धों के अभाव में आर्य-परिवारों की रचना नहीं हो पा रही है। आगामी संतति डिस्को-कैबरे तथा सिनेमाई संस्कृति में रंगी जा रही है। हम एक ओर अपने आपको दयानन्दी कहते फिरते है और परिवारों में देखो तो सांईबाबा,गणपति तथा दुर्गा-काली के जप-पुरश्चरण हो रहे है।

आर्य परिवारों में मृत्यु हो जाने पर तीसरे दिन गृह-शुद्धि के यज्ञ पश्चात् अपने संबंधियों की तुष्टिकरण के लिए मंदिर जाया जाने लगा है । मना करने पर "मध्यम मार्ग" अपनाने का उपदेश रूपी घूंट पिलाने का प्रयास किया जाता है। परिवार के आर्य- प्रमुख की मृत्यु के पश्चात् मानों उनके घर से भी आर्य समाज को निष्कासित कर साथ वैदिक साहित्य किसी वाचनालय या आर्यसमाज को सादर भेंट दिया जाता है। परिवारों में साप्ताहिक पाक्षिक अथवा मासिक यज्ञ तक नहीं होते। कई बार पड़ौसियों तक को नहीं मालूम पड़ने पाता है कि हमारा पड़ोसी आर्यसमाजी है। वही ममी-डैडी थैंक यू, मैंशन नॉट, अंकल-आंटी,वाली संस्कृति में आर्य-अनार्य सभी स्नान कर रहे हैं।

इस लोक से हटकर एक बात और कहकर विचारों की विश्राम दिया जायेगा संगठनों पर पदासीन पदाधिकारी गण द्वेष-भावना से आक्रान्त होकर समाचारों पत्रों में एक दूसरे के प्रति प्रचार करते दिखाई दे रहे हैं। विदेश गये एक आर्य सन्यासी विद्वान् वहाँ से भारत के एक विद्वान सन्यासी के विरोध में निम्न स्तर की भाषा का प्रयोग कर आत्मसंतोष अनुभव कर रहे है। ऐसी ही, मानसिक विकृति वाले लोग समानान्तर सार्वदेशिक आर्य सभाएं समानान्तर आर्य-सम्मेलन तथा समानान्तर संगठन बनाकर आर्यसमाज के साथ छलावा करने में संलग्न है। ऐसे लोगों को नहीं मालूम कि गैर-आर्य समाजियों तथा अन्य धार्मिक-संगठनों तथा सम्प्रदाय के लोगो को हम स्वयं हमारे विरुद्ध प्रचार करने की लिखित सामग्री प्रस्तुत करते है। देश दर्शन की भावना से पर्यटन पर निकले इन पंक्तियों के लेखक ने स्वयं यहीं के साईं-बाबा के शिरणी नगर में एक सभा में आर्य समाज के सिद्धान्तों की नहीं अपितु आर्य समाज के प्रसिद्ध सन्यासियों के झगड़ों की चर्चा लाउड स्पीकर पर एक सज्जन कर रहे थे। बाद में ज्ञात हुआ कि वे पर्व में आर्य समाजी थे, परन्तु कतिपय कारणों से वे दयानन्द और आर्यसमाज के विरुद्ध बागी हो गये।

अतएव, आज इस राष्ट्र को त्यागी-तपस्वी-वीताग राष्ट्र-नायकों की आवश्यकता है। वर्तमान तुष्टिकरण-प्रधान राजनैतिक दल देश की स्वतन्त्रता के स्थान पर अपनी कुर्सी की रक्षा करने में लगे है। जाति, सम्प्रदाय, प्रादेशिकता तथा भाषायी, भिन्नता देश को अन्दर से खोखला कर रहे है। देश के युवा वर्ग को नशीली वस्तुओं द्वारा कमजोर तथा भोगी बनाया जा रहा है। कमजोर वर्ग पिछड़ावर्ग और न जाने कौन-कौन से वर्ग-सम्प्रदाय प्रारम्भ कर राजनीति रूपी वेश्या उस नागरिकों को अपनी ओर आकृष्ट कर रही है। सभी राजनैतिक दल वोटों की गिनती गिनने में लगे है। ऐसे गम्भीर एवं भयावह वातावरण में प्रबुद्ध एवं सुसंस्कारित देशवासी आर्य समाज से देशोद्धार की आशा लगाये हुए है।

फलतः अभी भी समय है, हम विश्व के न सही, भारत के ही आर्य केवल दयानन्द की प्रशस्ति के गीत गाकर ऋषि-ऋण से मुक्त होने की धोखेबाजी न करें, अपितु, अब आर्यसमाज के मंदिरों की दीवारों और चौखट से बाहर आकर इस जाति, समाज, धर्म तथा देश की के लिए वास्तविक रचनात्मक कार्य पूर्ण करें। आर्यसमाज का उद्देश्य मात्र ईंट-गारा-चूना-पत्थरों से भवन निर्माण नहीं अपितु जो भवन बन चुके हैं, उनमें बैठने योग्य नागरिकों का निर्माण करना है। क्या हम कभी आत्म-चिन्तन कर कोई रचनात्मक कार्य का सकल्प कर उसे प्रारम्भ करेंगे।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

तुलसी मीठे वचन ते सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरन इक मन्त्र है, तजि दे वचन कठोर।।
कागा काको धन हरे कोयल काको देत ।
मीठे वचन सुनाय के जग वश में करि लेत ।।

हिन्दुओं §आर्यो§ के व्यापक सगठन के लिए छुआछूत व ऊँच-नीच के भावों को मिटाना है। वर्ण व्यवस्था को जन्म से न मानकर गुण कर्म व स्वभाव के अनुसार मानना होगा। भाषा व प्रान्त के कारण विलगता की संकीर्णता को मिटाना होगा। हम सभी भारतीय हैं, आर्य हैं व हिन्दू हैं। हम सब की साझी भाषाएं हिन्दी व संस्कृत हैं। अच्छे कार्यों के लिए कष्ट सहना ही तप है और परोपकार के लिए किया गया प्रत्येक त्याग एक यज्ञ है।

आर्य परिवारों की दो बसे दिनांक-2·3·89 को सांय 3बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई देहली से ऋषि मेला टंकारा के लिये चलेगी और दिनांक 12·3·89 रात्रि देहली वापिस आयेगी यात्री टंकारा के साथ-साथ जोधपुर,माउंट आबू,जामनगर,द्वारका,ओखा, पोरबन्दर,सोमनाथ मन्दिर उदयपुर,हल्दी घाटी, नाथद्वार,पुष्कर, अजमेर,जयपुर देखेगें। निवास और भोजन की व्यवस्था स्थान-स्थान पर आर्य समाजों में होगी। यदि ऐसा नहीं हुआ तो यात्री अपने व्यय से करेगें। यह केवल 605/-रुपये प्रति यात्री मार्ग व्यय है। आप आज ही अपनी सीटें रिजर्व करा लें ।

-राम चन्द्र आर्य,
प्रबन्धक यात्रा.466, भीम नगर, गुड़गांवा।

वेदोक्त यज्ञ का यजमान

{ले० श्री रमेश मुनि वानप्रस्थ वैदिक शोध-संस्थान, भरतपुर}

हमने देखा है कि आर्य समाज के पुरोहित एक यज्ञ के अनेक यजमान बना देते हैं। जिन आर्यसमाजों में दैनिक एवं साप्ताहिक यज्ञ होते हैं वहाँ पर भी अनेक व्यक्ति यजमान बन जाते हैं। बहुत से घरों में भी जो यज्ञ किये जाते हैं, उनमें भी यज्ञकुण्ड के चारों ओर अनेक व्यक्ति बैठ जाते हैं और वे सभी आहुतियाँ देते हैं और यजमान बन जाते हैं। यह विधि अवैदिक है। एक यज्ञ का एक ही दम्पति यजमान हो सकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कारविधि में स्पष्ट लिखा है:-

"सब संस्कारों में मधुर स्वर से मंत्रोच्चारण यजमान ही करें। न शीघ्र न विलम्ब से उच्चारण करे, किन्तु मध्य भाग जैसा कि जिस वेद का उच्चारण है, करें। यदि यजमान न पढ़ा हो तो इतने मंत्र तो अवश्य पढ़ लेवें। यदि कोई कार्यकर्ता जड़, मंदमति, काला अक्षर भैंस बराबर जानता हो, तो वह शूद्र है,- अर्थात् मंत्रोच्चारण में असमर्थ हो, तो पुरोहित और ऋत्विज मंत्रोच्चारण करें और कर्म उसी मूढ़ यजमान के हाथ से करावें"।

इससे यह स्पष्ट होता है कि महर्षि ने कर्मकाण्ड का अधिकारी यजमान को ही माना है। वेदी के चारों ओर में, यजमान का आसन पश्चिम दिशा में होता है। वेदी की उत्तरदिशा में अध्वर्यु का स्थान होता है। अध्वर्यु के कार्यों में आहुति देना नहीं है। बल्कि उसका कार्य यज्ञकुण्ड में आवश्यकतानुसार समय-समय पर समिधा लगाना है और ब्रह्मा की आज्ञानुसार चन्दन, गिलोय, एवं अन्य औषधियों की लकड़ियाँ आदि लगाना है।

अध्वर्यु चिमटे इत्यादि की सहायता से समिधाओं को यज्ञकुण्ड में इधर-उधर करके अग्नि प्रदीप्त रखता है जिससे यजमान द्वारा डाली हुई आहुति शीघ्र भस्म हो सके। वेदी के पूर्व में उद्गाता बैठता है जिसका मुख पश्चिम की ओर {यजमान-की ओर} होता है। उद्गाता का कार्य मंत्रों को बोलने का है। यजमान व उद्गाता दोनों ही मन्त्र बोलते हैं लेकिन और भी उपस्थित व्यक्ति वेदमंत्र बोल सकते हैं। लेकिन इस बात का ध्यान रखा जावे कि मंत्रों को सब व्यक्ति एक स्वर में बोलें उनमें भिन्नता न हो। वेदी के दक्षिण में ब्रह्मा का आसन होता है जिससे ब्रह्मा का मुख उत्तरदिशा की ओर रहता है। ब्रह्मा का कार्य यज्ञ का विधिविधान निर्धारित करना है, और सबके कार्य पर नजर रखना है। यज्ञ की सफलता का अधिकतर श्रेय ब्रह्मा को ही जाता है। किसी भी यज्ञ में, किसी भी आर्यसमाज में ऋत्विग्वरण नहीं होता जबकि ऋत्विग्वरण बहुत आवश्यक है। जब वैदिक विधिविधान से यज्ञ ही नहीं होगा तो यजमान की कामना की पूर्ति कैसे हो सकती है?

2- पाठकों को याद होगा कि विश्वामित्र ऋषि अनार्य-व्यक्तियों से यज्ञ की रक्षा करने हेतु महाराजा दशरथ से राम-लक्ष्मण को माँगकर ले गये थे। ऋषि लोग जंगलों में भी निवास करते थे, ग्रामों में भी निवास करते थे और नगरों में भी निवास करते थे। बहुत से ऋषियों ने अपने आश्रम भी बनाये हुये थे। हमने प्राचीन इतिहास पढ़े है जिनमें कहीं पर भी यह नहीं पाया कि सब ऋषि लोग इकठ्ठे होकर यज्ञ करते हैं। बल्कि ऋषि लोग अलग-अलग अपने घरों में, पर्ण कुटियों में पेड़ों के नीचे अपनी सुविधा के अनुसार यज्ञ करते थे। कभी कभी राजा लोग या अन्य धनवान व्यक्ति बड़े यज्ञ करते थे। जिन ऋषि मुनियों को बुलाया जाता था। वे उन यज्ञों में सम्मिलित भी होते थे। इसलिये आर्यसमाज ने जो अपनी मर्जी से गलत परिपाटी चला दी है उसमें शीघ्र सुधार किया जावे।

3- आजकल आर्यसमाजों में एक वेदीय वा चतुर्वेदीय पारायण यज्ञ आठ-दस-दस दिन के लिये किये जाते हैं उनमें रोजाना यजमानों को बदल दिया जाता है और जो व्यक्ति निर्धारित राशि दे देते हैं उनको एक दिन के लिये या प्रातः सांय में से किसी एक समय के लिये यजमान बना दिया जाता है। लेकिन यह तरीका अवैदिक है। एक पारायण यज्ञ का यजमान एक ही दम्पति होना चाहिये, भिन्न-भिन्न नहीं। हम आगे इस सम्बन्ध में स्वयं वेद का प्रमाण प्रस्तुत करेंगे। आज के इस प्रकार के अवैदिक यज्ञों में जब पूर्णाहुति होती है तो आठ या दस दिन के सभी यजमान दम्पतियों को बैठा लिया जाता है और पुरोहित एवं उपस्थित जन समुदाय उनको आशीर्वाद देता है। पुरोहित लोग सबसे कहलवाते है "सत्याः सन्तु-यजमानानां कामाः" इसके बाद पुष्प वर्षा कराते हैं, कुछ पुरोहितों ने तो अपनी ओर से आशीर्वाद के शब्द अलग से भी बना लिये हैं जैसे "शिवाः सन्तु यजमानानां कामाः" एवं "सफलाः सन्तु यज-मानानां कामाः" इत्यादि लेकिन ये सब शब्द वेदानुकूल नहीं हैं।

4- वेदों में आशीर्वाद का मंत्र जो दिया हुआ है वह ईश्वरकृत मंत्र है और निम्नलिखित है:- ऋग्वेद 10/116/8-ऋषि-अग्नियुतः स्थौरो अग्नियूपो वा स्थौरः ऋषि:-देवता इन्द्र देवता-

"ओ३म् "अर्दीदिन्द्र प्रस्थितेमा हवींषि चनो दधिष्वपचतोत सोमम्।
प्रयस्कन्तः प्रति हर्यामसि त्वा "सत्याः सन्तु यजमानस्य-कामाः"।।

उपरोक्त मंत्र का विस्तृत अर्थ देने का हमारा प्रयोजन नहीं है। इससे कलेवर भी बढ़ेगा। यह मंत्र हमने प्रमाण में प्रस्तुत किया है और इसमें स्पष्ट लिखा है - "सत्याः सन्तु यजमानस्य-कामाः"। वेदों में कहीं भी "यजमानानां कामाः" नहीं है। मीमांसा दर्शन में भी यजमान दम्पति को ही आशीर्वाद देने का विधान है। मीमांसा दर्शन में यह भी स्पष्ट लिखा हुआ है कि यजुर्वेद 19/1 के "तेजो सि ते जो मयि धेहि -----" मंत्र का फल भी यजमान दम्पति का ही मिलता है। यज्ञावशिष्टघी को अगर दूसरे व्यक्ति लगाते हैं तो इसका फल उन्हें नहीं मिलता। यहाँ तक कि ऋत्विजों को भी इस मंत्र का फल नहीं मिलता। आज आर्यसमाज में भी मूर्तिपूजक पुजारियों की तरह पोप पैदा हो गये हैं जिन्होंने वैदिक परिपाटी को विकृत कर दिया है।

निर्वाचन

आर्यसमाज, गोलागोकर्णनाथ {खीरी}

प्रधान - श्री डा० गिरधारी लाल शर्मा
मन्त्री - श्री टीकम सिंह वीसल
कोषाध्यक्ष- श्री इन्द्रपाल भसीन

आर्यसमाज फतेहपुर

प्रधान - डा० हर्षवर्धन
मन्त्री - डा० विनय अरोरा
कोषाध्यक्ष - श्री राज नारायण रस्तोगी

आर्य समाज पुरवा {उन्नाव}

न० 1- सर्वश्री बाबूलाल जी आर्य {प्रधान}

न० 2- सर्वश्री श्याम प्रकाश आर्य {मंत्री}

न० 3- सर्वश्री हेमराज जी आर्य {कोषाध्यक्ष}

आजमगढ़ आर्यसमाज

प्रधाना- श्री मती दर्शन देवी भारद्वाज

मन्त्रिणी- श्री मती कीर्ति देवी - एम०ए०बी०एड०

कोषाध्यक्ष- श्री मती मालती देवी

आ०स० {खलासी लाइन} सहारनपुर

प्रधान- डॉ० पूर्णचन्द्र जी,
मन्त्री- श्री देवेन्द्र कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष- डॉ० राजवीर सिंह वर्मा

आर्यमित्र साप्ताहिक
नाराजण स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं० एल०डब्ल्यू/एन पी 79
माघ शुक्ल - 14
19 फरवरी रविवार, 1989 ई०

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख

आर्यसमाज फोर्ट बम्बई का निर्वाचन

प्रधान-	श्री रामेचपाल अग्रवाल
मन्त्री-	सुदर्शन कुमार नेहरून
कोषाध्यक्ष-	श्री निर्मल कपूर

खुशखबरी खुशखबरी
आवश्यक सूचना

हमारे यहाँ आर्य प्रेमियों हेतु सुगन्धित जड़ी बूटियों द्वारा हवन सामग्री का निर्माण किया जाता है। हमारी सामग्री इस साइज की बनी होती है जो कि सभी सुगन्धित जड़ी बूटियाँ अलग-अलग देख सकते हैं। इस सामग्री से रोगों के कीटाणु नष्ट होते हैं, वायु शुद्ध होती है तथा एक विशेष प्रकार की सुगन्ध महकती है। जिसका मूल्य 400रु० कुन्टल स्पेशल क्वालिटी 600रु० कुन्टल, स्पेशल मेवा युक्त 1000रु० कुन्टल। ऐसी सामग्री इस रेट में देना नाममात्र सेवा है। उ०प्र० में 50 कि० या अधिक मँगाने पर भाड़ा व डाक खर्च पूरा माफ। उ०प्र० से बाहर के लिए भाड़ा व खर्च आधा माफ रहेगा। सैम्पल मँगाने के लिए डाक खर्च हेतु 15रु० मनीआर्डर द्वारा भेजकर मँगा सकते हैं। बिल्टी वी०पी०पी० द्वारा भेजी जावेगी। सेवा का मौका देने का कष्ट करें।

5000रु० की वार्षिक खरीदने पर विशेष छूट। धन्यवाद

हमारी हवन सामग्री श्री केशोराय एण्ड सन्स, हॉस्पिटल रोड, आगरा से भी प्राप्त कर सकते हैं।

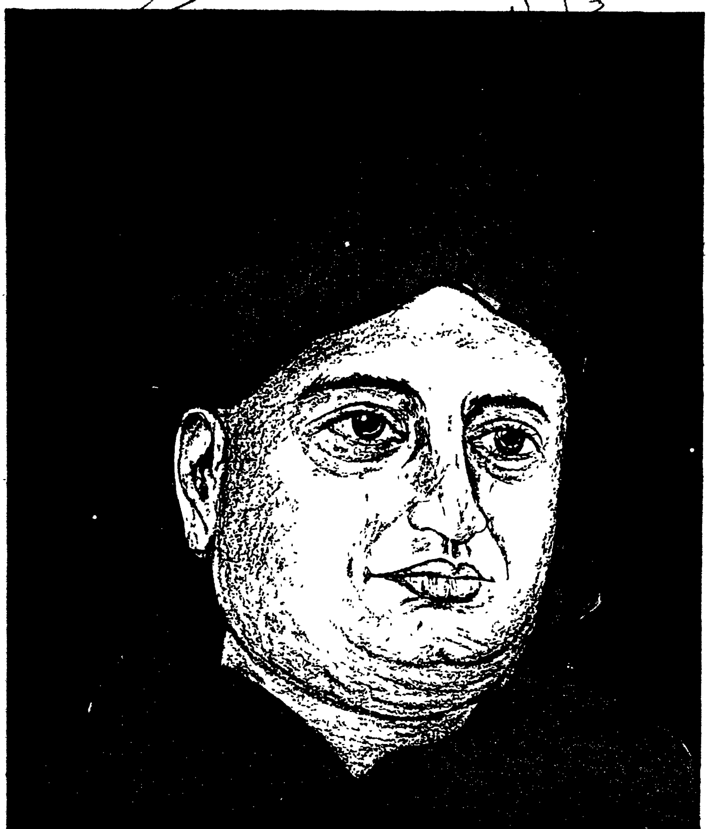
निर्माता - जैन शुद्ध धूप फार्मेसी
जैन मन्दिर गली, भोगाँव (मैनपुरी) 205262 (उ०प्र०)

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र



महर्षि दयानन्द सरस्वती

ऋषिबोध पर्व विशेषांक

ओ३म

हे ऋषिवर्य

(गीतिका)

डा0 कपिलदेव द्विवेदी, कुलपति,
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

(1)

दयानन्द! ऋषिवर्य! अमर्त्य!, तपःपूत! करुणामृत
-सिन्धो ।
ज्ञानप्रभाकर! स्नेह-सुधाकर! ,दिव्य-दयाकर!
जय हे! जय हे!

हे अमर महर्षि दयानन्द! तपस्या से पवित्र, करुणारूपी अमृत के सिन्धु, ज्ञान के सूर्य, स्नेहरूपी सुधा के आगार दिव्य दया के निधान, हे ऋषि! तुम्हारी जय हो।

(2)

आर्य पद्धतेः प्रथम-प्रयोक्ता, दम्भ-द्वेष-दुरिताऽऽर्ति-
विमोक्ता,
भारतीय-संस्कृति-संदेष्टा, जयति महर्षिः श्रुति-
चय-द्रष्टा ।।

आपने आर्य-पद्धति का सर्वप्रथम प्रयोग किया है, आपने दम्भ द्वेष दुर्गुण और कष्टों को दूर किया है, आपने भारतीय संस्कृति का सन्देश दिया है और वेदज्ञान का दर्शन किया है, ऐसे महर्षि की जय हो।

(3)

पाप-अण्ड-पाखण्ड- विरोद्धा, दीन-हीन-पतिताऽऽर्त-
विमोक्ता,
विधवाऽ नाथ- दुःख-संहर्ता, वैदेशिक-संस्कृति-
संहर्ता ।।

आपने पापों के आधार पाखंड को रोका है, दीन असहाय पतित और दुःखियों का दुःख दूर किया है, विधवा और अनाथों का कष्ट दूर किया है तथा विदेशी संस्कृति को हटाया है।

(4)

संस्कृत-भाषोद्धार- नियुक्तः, आर्यभाषया लेखन-
सक्तः।
वनितोद्धार-सुधार-प्रसक्तः, जयति महर्षिर्गुण-
गण-रक्तः ।।

आप सदा संस्कृत भाषा के उद्धार में लगे रहे हैं, आपने आर्यभाषा हिन्दी में ग्रन्थ रचनाएं की हैं, आप स्त्रीजाति के उद्धार और सुधार में लगे रहे ऐसे गुणानुरागी महर्षि की जय हो ।

(5)

लोकहिते परिहृत-सर्वस्वः, तापत्रय- सहने -
प्यतिधीरः ।
विषमपि पीत्वाऽ मृत-संदर्षी, जयति ऋषि-
ज्ञानामृत- वर्षी ।।

आपने जनहित के लिए अपना सर्वस्व त्याग दिया, त्रिविध दुःखों को आपने धैर्य से सहा, आपने विष पीकर भी अमृत की वर्षा की, ऐसे ज्ञानामृत की वर्षा करने वाले ऋषि की जय हो ।

(6)

योगशक्ति-विजितेन्द्रियवर्गः, योगशक्ति-संसाधित-
भर्गः ।
तपसा प्राप्त-दिव्य-संदृष्टिः, मनसा हत-
कलि-कल्मष-सृष्टिः ।।

आपने योगशक्ति से अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त की, आपने योगशक्ति से तेज प्राप्त किया, आपने तपस्या से दिव्य दृष्टि प्राप्त की और मन से सारी पाप-भावनाओं को नष्ट किया ।

(7)

आत्मशक्ति-परिपावित-बुद्धिः, संयम-नियम-
समागत-शुद्धिः ।
त्याग- भावना-भावित-भूतिः, करुणा-ममता-
समता-मूर्तिः ।।

आपने आत्मशक्ति से बुद्धि को पवित्र कर लिया था, संयम और नियमों के पालन से सर्वथा शुद्ध थे, आपका ऐश्वर्य त्याग भाव से प्रेरित था, आप दया ममता और समत्व की मूर्ति थे।

(8)

शिव-दर्शन-कृत-तत्व-विबोधः, शिव-रात्री-
हृत-तामस-रोधः ।
लोक हितैषी लोकोन्नेता, जयति ऋषिः स
वेदोद्धर्ता ।।

सत्य शिव के दर्शन से आपको तत्वज्ञान हो गया था, शिवरात्रि के व्रत से आपके अन्दर की तामसिक वृत्तियाँ नष्ट हो गई थीं, आप संसार के हितैषी और संसार के उद्धारक थे, ऐसे वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द की जय हो ।

0 ओ३म् 0

आर्यमित्र

§ साप्ताहिक §

ऋषिबोध पर्व विशेषांक

दयानन्दाब्द 164, वैक्रमाब्द 2045, सृष्टि संवत् 1972949089

वर्ष 92§ रविवार, 5 मार्च 1989 । फाल्गुन कृष्ण 12 §द्वादशी§ अंक 10-11

प्रधान सम्पादक -

मनमोहन तिवारी
एम0ए0

प्रबन्ध सम्पादक -

इन्द्र देव पाठक एम0ए0, साहित्याचार्य

स्वत्वाधिकारिणी -

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश
नारायणस्वामी - भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ ।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

इस अंक का
मूल्य - 5=00 रु0



सन्देश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि शिवरात्रि पर्व पर **आर्य मित्र** साप्ताहिक का ऋषिबोध विशेषांक प्रकाशित हो रहा है।

महर्षि दयानन्द को इसी दिन सत्य का प्रकाश मिला था। वह जीवन पर्यन्त मानव मात्र के कल्याण के लिए इसी सत्य के मार्ग पर चलते हुए वेद तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार में लगे रहे ताकि मानव जाति अंधकार, अविद्या, आडम्बर, अंधविश्वास और रूढ़िवादी परम्पराओं से मुक्त होकर एक ईश्वर की उपासना करते हुए स्वच्छ और पवित्र जीवन ग्रहण कर सके। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना और विश्व को आर्य बनाने का संकल्प किया था।

मैं ऋषिबोध पर्व विशेषांक के प्रकाशन की सफलता चाहता हूँ।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

महर्षि दयानन्द भवन,
रामलीला मैदान,
नई दिल्ली।

अठारहवीं शताब्दी का महान आश्चर्य



श्री इन्द्र राज जी

ऋषिवर्य दयानन्द को जब वे बालक मूलशंकर थे, आज ही की रात्रि को सत्यज्ञान का बोध हुआ था। एक छोटी सी घटना ने उनके हृदय में सच्चे ज्ञान का दीप जला दिया था जो आज विश्व को आलोकित कर रहा है और हम सब जिसकी चिन्गारियां हैं। वास्तव में यह रात्रि संसार की बोधरात्रि थी। अगर इस रात्रि को बालक मूलशंकर को बोध न हुआ होता तो संसार का आज क्या रूप बना होता- इसकी कल्पनामात्र ही रोमांचित करने वाली है। उस समय सारा विश्व अज्ञान की तमिस्रा से आच्छादित था ऐसे समय में प्रभु की अपारकृपा से ज्ञान की एक ज्योति टंकारा से उठी और समस्त संसार को सत्य का सन्देश देती हुई आज जन-जन में प्रवाहित हो रही है। आज देश को तोड़ने के लिए सत्य-असत्य का निर्णय लिए बिना राजनैतिक सत्ता के प्रलोभन ने हमें पूर्णतया दिग्भ्रमित कर दिया है। यदि इसी प्रकार चलता रहा तो भारत की स्वतंत्रता को तो खतरा है ही, सम्पूर्ण विश्व का भविष्य भी अन्धकारमय है ।

अगणित बलिदानों के पश्चात स्वतंत्र हुए अपने प्रिय भारतराष्ट्र को छिन्न-भिन्न करके उसे पराधीन बनाने के लिए विदेशी शक्तियां सभी प्रकार के हथकण्डे अपना रही हैं। बड़े पैमाने पर देश के इस्लामीकरण एवं ईसाईकरण का कुचक्र चल रहा है। पिछले दिनों मिजोरम में कांग्रेस {इन्दिरा} की निर्वाचन में विजय हुई जिस पर हमारे कांग्रेसी नेता बड़े खुश हुए। किन्तु इस विजय का कारण यह था कि कांग्रेस के घोषणा पत्र में यह स्पष्ट कहा गया था कि बाईबिल की शिक्षाएं प्रत्येक शिक्षण-संस्थान में व्यवस्थित की जायेंगी और ईसाइयों के तीर्थस्थलों की यात्रा करने की सुविधाएं प्रदान की जायेंगी। इसकी पुष्टि "इण्डिया-टुडे" से भी होती है जिसमें प्रकाशित एक समाचार के अनुसार वहां के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री ने पत्रकारों से साक्षात्कार में लालडेंगा की हार का कारण उनके द्वारा चर्च की आलोचना करना बतलाया है।

आज हमारे देश में पेट्रोडालर के बल पर अथवा सेवा शुश्रुषा के नाम पर गरीब भोली-भाली हिन्दू जनता को मुसलमान ईसाई अथवा सिख बनाकर देश को खण्डित करने का व्यापक कुचक्र चलाया जा रहा है और इस कुचक्र की आड़ में अराष्ट्रीय भावनाओं को प्रोत्साहित किया जा रहा है ।

आज की यह बोधरात्रि हम सबके लिए एक चुनौती है। मेरा समस्त आर्य जनता विशेषकर प्रदेश के उदीयमान आर्य नवयुवकों से अनुरोध है कि ऋषिबोध की इस पावनबेला में धर्मपरिवर्तन के विरुद्ध जोरदार अभियान चलाकर इस प्यारी मातृभूमि को खण्डित होने से बचायें और "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के आह्वान को मूर्तरूप देने में अग्रसर हों यही हमारा संकल्प है और यही हमारा सन्देश ।

-इन्द्रराज, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश।

सन्देश



शिवरात्रि के पावन पर्व का हमारे इतिहास में बड़ा महत्व है। परमात्मा शिव है, कल्याणकारी है । उससे शिवसंकल्पमय जीवन की प्रार्थना करते हुए आर्यजाति सृष्टि के आदिकाल से ही इस पावनपर्व पर व्रत लेती आ रही है तथा अपने आचरण को उत्तम तथा पवित्र बनाने हेतु अनेक व्रत, उपवास एवं संकल्प करती आ रही है।

आज ही की रात्रि को बालक मूलशंकर जब शिव की प्रतिमा के सन्मुख उपवासधारी व्रतधारी बने हुए बैठे थे - अचानक कुछ मूषकों को शिवप्रतिमा पर दौड़ते हुए देखकर उनके मन में यह ज्ञान उत्पन्न हुआ कि यह कैसे प्रलयंकारी संहारकारी त्रिशूलधारी शंकर हैं जो इन चूहों को नहीं हटा सकते। यह तो निर्जीव पाषाण प्रतिमा प्रतीत होती है सच्चा ईश्वर तो कोई और होगा। अल्पवयस्क बालक के मन में उठे हुए इस ज्ञान को महान गुरू का महान् आशीर्वाद मिला और फिर उस सच्चे योगी ने सच्चे ईश्वर को खोज ही डाला। वह बालक आगे चलकर ऋषि बना- महर्षि बना- योगी बना समाज सुधारक बना और जीवनभर उस सच्चे पिता का अलख जगाता हुआ घूमता रहा और एक पर्व और आने वाला है जब वह हमसे सदा-सदा के लिए विदा हो गया-----नहीं, नहीं----विदा कर दिया गया।

यही उस बालक की कहानी है महर्षि की गाथा है और योगी की साधना। यह आर्यसमाज उसी की लगाई हुई वाटिका है जिसकी सुगन्धि ने विश्व के वातावरण को सौरभमय बना दिया है। आज हम उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने हेतु कृतसंकल्प हैं और प्रगतिपथ पर बढ़ते जा रहे हैं ।

मेरा इस पावनपर्व पर सभी आर्य भाई बहिनों से अनुरोध है कि आइए हम सब आत्मनिरीक्षण करें और सत्य को ग्रहण करके असत्य का परित्याग करें। उस महान ऋषि की महान् परिकल्पना को साकार बनावें जिससे यह विश्व शान्ति, प्रेम अहिंसा और समता समानता का आगार बन जावें ।

महाशिवरात्रि
5 मार्च 1989

(मनमोहन तिवारी)
मन्त्री
आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0)

बोध रात्रि



तमसावृत्त अज्ञान की कालिमाभरी निशा में आज ही की रात्रि को बोध का सूर्य प्रकट हुआ था जिसने संसार को ज्ञान की ज्योति देकर जगमग बना दिया था। एक छोटी सी घटना जो न जाने कितने लोगों ने देखी थी, देखते रहेंगे, संसार की महानतम पुण्यतम आश्चर्यतम उपलब्धि में परिणत हो जाती है - कैसा अद्भुत आश्चर्य है कैसा पुण्यतम वरदान है उस महान् आत्मा के माध्य" े उस परमपावन प्रभु का हम पर। किन्त ्म आज भी अबोध बने हुए हैं, सच्चे **शिव** े उपासक नही बन सके हैं-- इसे क्या ं कैसे कहें और किस लेखनी से उसके ", की कहानी लिखें।

नश्चय ही उस बोध रात्रि को अल्पवयस्क बाल ं तपःपूत हृदय में घटित वह घटना कोई साधारण घटना नही थी। युगों-युगों से बहती आ रही शाश्वत पुण्यसलिला भागीरथी का ज्ञान संगम था- वह भी उस बालहृदय में जो अछूता था स्वयं सगंमस्थली से भी अधिक पवित्र और निश्छल था। उसने ज्ञानार्जन करके जो ज्ञानगंगा प्रवाहित की उसमें अवगाहन करके भी हम अपवित्र हैं, हाथों में सूर्य का दीपक लेकर अन्धेरे में भटक रहे हैं। उसने कहा था -, हम भक्ति और योगानुष्ठान करके आत्मा को पवित्र बनावें पर हम आज तक मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण भी न सीख सके योगानुष्ठान की तो बात ही दूर है। उसने कहा था - हम संगठन की सत्र डोरी प्रेमडोरी में आबद्ध होकर शक्तिशाली बलशाली बनें, हम विघटन की ओर पग बढ़ा रहे हैं। उसने कहा था - वेदोन्मुख बनकर वेदवाणी का विस्तार करें परन्तु हम न जाने कितनी मानवकृत पुस्तकों को धर्मग्रन्थ मानकर उनके अनुगामी बने चले जा रहे हैं। उसने कहा था - गीर्वाणवाणी सरस्वती संस्कृत भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना, हम विदेशी आँग्ल भाषा के मोहपाश में आज भी जकड़े हुए हैं। उसने गुरुकुल खोलकर वैदिक आर्ष-प्रणाली चलाने का आदेश दिया था - परन्तु हम अभी तक इस प्रणाली की उपयोगिता ही नही समझ पाये। उसने कहा था-- लड़कों की पाठशालाएं लड़कियों की पाठशालाओं से बहुत दूर रहना चाहिए पर हम सहशिक्षा के व्यामोह में दीवाने बनकर दौड़ते चले जा रहे हैं आगे खाई होगी या खन्दक कुछ पता नही है। उसने जावन के प्रत्येक क्षेत्र में, प्रत्येक वायुमण्डल में ब्रह्मचर्य से ओतप्रोत शक्ति तथा ज्ञानपुंजित समाज दी रचना के निर्माण का आदेश दिया था हम अर्धनग्न नीहारिकाओं आधुनिकाओं के माध्यम से अपनी अतृप्त वासना को पाप की कलुषित नीरभरी नलिका में डुबो देने में ही अपने को सभ्य समझ रहे हैं। उसने राष्ट्रीयता की प्रखर ज्योति जलाकर एक आर्य राष्ट्र की कल्पना की थी परन्तु हम स्वतंत्रता के इतने वर्ष बाद भी उसे मूर्तरूप देने में समर्थ नहीं हो सके हैं।

आज **शिवरात्रि** है। घर-घर में शिवरात्रि का व्रत होगा। शिव के कल्याणकारी स्वरूप की अर्चना उपासना होगी। हे प्रभु ? आज ऐसी कृपा करो यह **महाशिवरात्रि** हमारे घर-घर की बोधरात्रि बन जाये। हर बच्चा मूलशंकर बन जाये। हर युवा शंकर बन जाये, हर बूढ़ा ऋषि बन जाये ।

ओ३म

वैदिक संस्कृति

आचार्य डा0 सुरेन्द्र देव स्नातक,
शास्त्री, शिरोमणि, मोगांव (मैनपुरी)

समग्र विश्व में प्राप्त होने वाली संस्कृतियों में प्राचीनतम् संस्कृति वैदिक संस्कृति ही है। ऋषिवर दयानन्द ने भी इस बात को स्वीकार किया है। संसार के अन्य देश जब अज्ञानान्धकार में निमग्न थे उस समय आर्य जन (लोग) सम्पूर्ण कला-कौशल में प्रवीण थे। इस सम्बन्ध में डा0 विन्टर निट्स ने अपने गम्भीर अध्ययन के अनन्तर लिखा है :

"If we wish to learn the begining of our own culture, if wish to understand the oldest Indo-Europiean Culture we must go to India where the oldest literature of an Indo-European people is preserved."

आज भारत में संस्कृति का जो स्वरूप दृष्टिगोचर हो रहा है उसका प्रमुख आधार प्राचीन वैदिक-संस्कृति का बहुमुखी, व्यापक तथा शाश्वत प्रभाव ही है। वैदिक संस्कृति के सम्बन्ध में वेद स्वयं कहता है :

"सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा"

अर्थात विश्व के द्वारा स्वीकरणीय प्रमुख-संस्कृति **"वैदिक-संस्कृति"** ही है। संस्कृति से मिलता जुलता एक शब्द "सभ्यता" भी है किन्तु दोनों में अत्यधिक अन्तर है। "सभ्यता" से अभिप्राय है - "मनुष्य की भौतिक विचारधारा"। संस्कृति मनुष्य के आध्यात्मिक तथा मानसिक क्षेत्र के विकास की सूचक है।

भौतिक-विकास के द्वारा शारीरिक क्षुधा की शान्ति हो सकती है किन्तु उससे आत्मा की तृप्ति नहीं हुआ करती है। आत्मा का विकास तो संस्कृति द्वारा ही संभव है।

मानव के शरीर का सम्बन्ध उसके मन तथा आत्मा से भी है। वह अपनी भौतिक तथा शारीरिक उन्नति से ही संतुष्ट नहीं रहा करता है। भोजन ही उसकी जीवन-यात्रा का एकमात्र साधन नहीं हो सकता है। उसके शरीर के अभ्यन्तर विद्यमान मन तथा आत्मा की उन्नति भी होना आवश्यक है। मानसिक एवं आत्मिक-उन्नति से ही मानव की वास्तविक उन्नति होना संभव है। ऐसी स्थिति में मानव की आत्मा तथा मन की संतृप्ति के लिए मानवीय विकास तथा उन्नति को ही यदि "संस्कृति" शब्द द्वारा कथन किया जाय तो यह अनुपयुक्त न होगा।

"संस्कृति" शब्द का निर्माण तो "सम्" उपसर्ग पूर्वक "कृ" धातु से "क्तिन्" प्रत्यय करने से होता है और इसका अर्थ होता है : अपने को शुद्ध अथवा पवित्र करना अथवा बनाना। तात्पर्य यह है कि अपने दुर्गुण, दुर्व्यसन, पाप तथा पाप - सम्बन्धी भावनाओं को अपने अन्तस्तल (हृदय) से निकाल कर उत्तम गुणों तथा अच्छे कार्यों में अपने को प्रयुक्त अथवा संलग्न करने का प्रमुख साधन "संस्कृति" ही है।

प्राचीन वैदिक-काल में मानव जीवन को हर्षोल्लास पूर्ण तथा आशासंपन्न बनाने का साधन "वैदिक संस्कृति" ही थी। इसी के द्वारा मानव उन्नति की चरम सीमा तक पहुँच जाया करता था। संसार के प्रत्येक देश तथा समाज का अतिघनिष्ट सम्बन्ध संस्कृति से है। धर्म, दर्शन, ज्ञान तथा विज्ञान सम्बन्धी क्रियाकलाप और आदर्श, संस्कार एवं सभ्यता इन सभी के सामन्जस्य का नाम है "संस्कृति"। सरल

शब्दों में यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि सभी प्रकार की अच्छाइयों की ओर प्रेरणा प्रदान करने वाली वस्तु का ही नाम संस्कृति है। वैदिक कालीन मानवों को अपनी संस्कृति पर गर्व था। वे लोग अपने जीवन को तत्कालीन "वैदिक संस्कृति" के आचरणों द्वारा पुष्ट किया करते थे। तत्कालीन संस्कृति की प्रमुख धारणा यही थी :

सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः।
सर्वेभद्राणि पश्यन्तु, माकश्चिद् दुखमाग् भवेत्

अर्थात संसार के सभी प्राणी सुखी हों, नीरोग हों तथा सदैव कल्याण को ही देखें। कोई भी प्राणी दुख का भागी न हो।

वैदिक-संस्कृति का प्रथम प्रमुख सिद्धान्त है - "अध्यात्मवाद"। यह अध्यात्मवाद मानव को सांसारिक भोगवाद से दूर रखते हुए परमात्म-विषयक ज्ञान की ओर प्रेरित किया करता है। उदाहरण की दृष्टि से यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय के निम्नलिखित प्रथम मन्त्र को ही देखिये :

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यांजगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधःकस्य स्विद्धनम्।।

इस मन्त्र में सर्वव्यापक परमात्मा के अस्तित्व में विश्वास रखते हुए त्यागभाव के साथ सांसारिक पदार्थों अथवा वस्तुओं के उपभोग के लिए कथन किया गया है।

ईश्वर ने विश्व के प्रत्येक पदार्थ एवं वस्तु आदि को उत्पन्न किया और तत्पश्चात वह उन सभी में स्वयं भी व्याप्त हो गयाः

"तत् सृष्ट्वा तदेवाऽनुप्राविशत्।"

ऐसे सर्वव्यापक भगवान की स्थिति को निरन्तर अपने साथ समझते हुए, अनासक्त भाव से सांसारिक पदार्थों, वस्तुओं तथा सांसारिक विषयों का उपयोग करना चाहिये। वास्तविकता तो यह है, ये सांसारिक पदार्थ किसी के भी नहीं हुआ करते हैं। जीवात्मा जब इस शरीर का त्याग किया करता है तब दस सांसारिक पदार्थों अथवा वस्तुओं में से एक भी उसके साथ नहीं जाया करतीं है। अतएव सभी पदार्थों को उस ईश्वर का दिया हुआ ही समझना चाहिये। साथ ही किसी अन्य के धन आदि को लेने की इच्छा भी नहीं करनी चाहिये।

उपर्युक्त मन्त्र द्वारा ही वैदिक-संस्कृति के द्वितीय सिद्धान्त "त्याग की भावना" का ज्ञान भी हमें प्राप्त हो जाता है। त्याग की भावना से तात्पर्य है कि संसार के सभी पदार्थ तथा वस्तुयें उस पर ब्रह्म परमात्मा की दी हुई हैं तथा उसी की है। उनपर हमारा कोई स्वत्व नहीं है। इस भावना को हृदय में रखते हुये ही उन पदार्थों अथवा वस्तुओं का उपयोग मानव को करना उचित है।

इस भाँति उस परमात्मा में विश्वास रखने वाला व्यक्ति किसी भी प्रकार के गलत कार्य को, पाप को अथवा अनाचरण आदि को करने से डरता रहा करता है तथा अपने जीवन को पवित्र तथा सुखमय बनाने में सफलता प्राप्त किया करता है।

वैदिक संस्कृति का तृतीय सिद्धान्त है "फल की इच्छा न करते हुए कर्मों को करना" अर्थात नित्य नैमित्तिक और शुभ एवं पवित्र कर्मों को करता हुआ मानव सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा रखे। तात्पर्य यह है कि निष्काम भाव से (फल प्राप्ति की कामना न करते हुए कर्मों का किया जाना) ही कर्मों को करना चाहिये। इस भाँति कर्मों को करता हुआ होने पर भी मानव उनमें लिप्त नहीं हुआ करता है। त्याग की उपर्युक्त भावना से सम्बन्धित मन्त्र है :

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।
एवं त्वयि नान्य थेतोऽस्ति न कर्म
लिप्यते नरे।। यजु040/2।।

इसी उपर्युक्त भावना का द्योतक भगवद्गीता का निम्नलिखित श्लोक भी है:-

कर्मण्येवाऽधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल हेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।
(गीता 2/47।।

वैदिक- संस्कृति का चतुर्थ सिद्धान्त है:- "आत्मविश्वास"। आत्मविश्वास रहित जीवन व्यर्थ है। आधुनिक बौद्धिक एवं कर्मसंघर्षरत युग में अशान्ति का मूल कारण आत्मविश्वास का न होना ही है।

वैदिक- संस्कृति का पंचम सिद्धान्त है "पुनर्जन्मवाद"। परलोक सम्बन्धी यह भावना ही मानव को शुभकर्म तथा उत्तम आचरण करने का उपदेश देती तथा उनकी ओर उन्मुख भी करती है। इसी भावना से प्रेरित होकर भारतीय वीर एवं वीरांगनायें अपने धर्म एवं देश की रक्षा के लिये हँसते-हँसते अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया करती थीं। पुनर्जन्म के इस सिद्धान्त में विश्वास रखने वाला व्यक्ति अपने भावी जीवन को सुखद बनाने हेतु प्रयत्नशील रहा करता है।

भारतीय प्राचीन संस्कृति अथवा वैदिक-संस्कृति के मूल-आधार रूप में विद्यमान चार पुरूषार्थ हैं §1§ धर्म §2§ अर्थ §3§काम-ओर §4§ मोक्ष। इनमें से प्रथम तीन का सम्बन्ध इस लोक से है तथा चतुर्थ पुरूषार्थ §मोक्ष§ का सम्बन्ध "परलोक"से है। यह चतुर्थ प्ररूषार्थ अर्थात् "मोक्ष" ही मानव जीवन का प्रधानतम लक्ष्य है। मोक्ष का अर्थ है - सभी प्रकार के दुःखों से छुटकारा प्राप्त कर लेना। वैदिक-संस्कृति से सम्बन्धित सिद्धान्तों के अनुकूल आचरणकर मनुष्य मानव-जीवन के इस चरम लक्ष्य की प्राप्ति कर सकने में समर्थ था तथा आधुनिक-काव्य में भी तदनुसार सिद्धान्तों का आचरणकर मानव अपने जीवन के चरम लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है।

*

- विदेशी लोग प्रकृति के सुख आराम लेना ही जीवन का मकसद समझते हैं, भारतवासी अपने स्वरूप की पहचान करना व सच्ची शक्ति की खोज करना जरूरी समझता है। हमने बाहरी पदार्थों को समझने में अपना समय लगाया है पर जिस रोशनी से यह पदार्थ देखने में आते हैं उसे हमने भुला दिया है ।

बोध यामिनी

बोध यामिनी यम नियमों से, ओत प्रोत·कर·दे।
मान्य महा शिव रात्रि बोध से, ज्योतिर्मय·कर·दे।।

सत्य सृजन की श्रेष्ठ स्वामिनी,
भव्य भाव की भूमि भामिनी,
विमल विश्व की बोध यामिनी,

ज्ञान-ध्यान श्रुति बोध शोध का, सूर्योदय·कर·दे।
मान्य महा शिवरात्रि बोध से, ज्योतिर्मय कर·दे·।।

सत्य प्रकृति की प्रस्तर प्रतिमा,
वह किन्तु चेतना बिन मृत माँ,
बने सत्य शिव सुन्दर कृतिमाँ,

प्रभु कीर्ति मूर्ति से पूर्ति प्रीति,चिरचिन्मय·कर·दे।
मान्य महा शिवरात्रि बोध से,ज्योतिर्मय कर·दे।।

क्षण करी कृपा शिव शंकर,
धारा वृत बाल मूल शंकर,
वे हटा मूर्ति लाये शंकर,

कल्प-कल्प की काम्य कल्पना,भ्रम-निर्भय कर·दे।
मान्य महा शिवरात्रि बोध से,ज्योतिर्मय कर·दे।।

सत व्रती मूल प्रभु कुन्द बने,
कर दिए रचित आनन्द घने,
जब दयानन्द तप नन्द बने,

कर अन्त धारणा अन्ध सभी, श्रुति संचय·कर·दे।
मान्य महा शिवरात्रि बोध से, ज्योतिर्मय कर·दे।।

काम नहीं कामना वही है,
साध नहीं साधना वही है,
वेद नहीं वेदना वही है,

वेदना दूर कर बोध यामिनी, सदय हृदय·कर·दे।
मान्य महा शिवरात्रि बोध से,ज्योतिर्मय कर·दे।।

--देव नारायण भारद्वाज,
आर्यसमाज, आजमगढ़।

प्राचीन और अर्वाचीन के युग-सेतु-महर्षि दयानन्द

श्री कृष्ण वल्लभ द्विवेदी
प्रधान संपादक, "हिन्दी विश्व-भारती"

[आज से चालीस वर्ष पूर्व, भारतीय संस्कृति और राष्ट्र में योग देनेवाले प्रतिनिधि महामानवों की गौरव-प्रशस्ति के रूप में, राजर्षि मनु से लेकर डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन् तक के राष्ट्रपुरुषों का **"भारत-निर्माता"** नामक कृति में उल्लेख था। उस चरितमाला में महर्षि दयानन्द का भी एक प्रेरक शब्द-चित्र उनके चरित्र, व्यक्तित्व और कृतित्व का समवेत विवरण देते हुए प्रस्तुत किया गया था। वह भाव चित्र आर्यजगत में बहुत सराहा गया था। उसी के आधार पर प्रस्तुत है लेखक की अनूठी भावचित्रावली]

-सम्पादक

"मैं सादर प्रणाम करता हूँ उस महागुरु-दयानन्द को, जिसकी दिव्य दृष्टि ने भारत की आत्मगाथा में सत्य और एकता का बीज देखा, जिसकी प्रतिभा ने भारतीय जीवन के विविध अंगों को प्रदीप्त कर दिया, जिसका उद्देश्य इस देश को अविद्या, अकर्मण्यता और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व विषयक अज्ञान से मुक्त कर, सत्य और पवित्रता के जागृति-लोक में लाना था- उस गुरु को मेरा बारंबार प्रणाम है।"

ये ज्वलन्त शब्द विश्वकवि रवीन्द्रनाथ की अमरवाणी द्वारा अभिव्यक्त अपने उस महान् युगपुरुष के प्रति अर्पित नवीन भारत की श्रद्धांजलि के प्रतीक हैं, जो एक पाश्चात्य समीक्षक की दृष्टि में आया था हमारे कारागार की दीवारें तोड़ने, हमारी आत्मा के बन्धन छुड़ाने, हमारे समाधि-स्थानों के पाषाण हटाकर हमें पुनर्जीवन का दान देने ।

ऋषि दयानन्द का आधुनिक भारत के निर्माण में कितना गहरा हाथ है, उनके द्वारा प्रस्तुत की गई सर्वतोमुखी क्रान्ति का स्वरूप कितना उज्जवल है, और अपने इस पुनरुद्धार के लिए हम उनके कितने अधिक ऋणी हैं, इसका विस्तारपूर्वक समुचित विवेचन करने के लिए तो अलग से पूरा एक ग्रंथ चाहिए- वह इस छोटे से जीवन-चित्र में समा पाने जैसा लघु विषय नहीं है। दयानन्द हैं प्राचीन और अर्वाचीन के बीच के हमारे युग-सेतु । वह हमें अपने भव्य अतीत के महान आदर्शों के अनुरूप अपने भविष्य को रचने के लिए प्रेरित करने वाले इस युग के प्रधान आचार्य हैं। उन्होंने ही हमें, फिर से वैदिक कर्मयोग का पाठ-पढ़ाकर, सदियों से बिसराए हुए अपने पुरातन धर्म-मार्ग पर लाने का सबसे सबल प्रयास किया। उन्होंने ही उस पाश्चात्य भौतिकवादी आँधी के संकट से हमें सचेत करने में प्रबलतम योग प्रदान किया, जिसने कि हमारी मूल संस्कृति, भाषा, रहन-सहन, वेशभूषा, आचार-विचार सभी पर छापा मारना शुरू कर दिया था और जिसकी लपेट में आकर हम अपनापन खो क्या से क्या होते चले जा रहे थे। साथ ही साथ, उन्होंने स्वतः हमारी ही परंपरा में जड़ जमा लेने वाले अंधविश्वासों और वाद को मिलजुल जाने वाली, कई एक खटकने वाली बातों से निज को मुक्त करने की दिशा में भी नया प्रकाश दिया। उन्होंने पंडे-पुजारियों, महन्तों-मठाधीशों के जंजाल में उलझे हुए भारतीय समाज को वेदों की मूल शिक्षा के प्रति मोड़कर एक धर्म-क्रान्ति - सी प्रस्तुत कर दी। परन्तु अतीत की अपनी मूल भित्ति की ओर मोड़ते हुए भी, उन्होंने हमारे वर्तमान और भविष्य की देश-कालानुसार आवश्यकताओं की अनदेखी कदापि नहीं की थी। वस्तुतः वह हमें अपने नित्य शाश्वत प्राचीन आदर्शों को अंगीकार करके, भविष्य की ओर प्रगति के कदम बढ़ाने को प्रेरित करने वाले प्राचीन और अर्वाचीन की युग संधि के महापुरुष थे। इसीलिए हमने **"प्राचीन और अर्वाचीन के युग-सेतु"** कहकर उनकी वन्दना की है ।

ओ३म्

क्या हमें भी वोध होगा

-स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

वर्तमान में आर्य समाज अत्यन्त निकट परिस्थिति में से गुजर रहा है। बाहर से हृष्ट-पुष्ट दीखने पर भी जीवनी शक्ति का ह्रास होने के कारण वह भीतर से खोखला होता जा रहा है। सबसे बड़ा खतरा आज उन घुसपैठियों से है जो आर्यसमाज का बिल्ला लगाकर आर्यसमाज पर अपना अधिकार जमा बैठे हैं। बीस-बीस वर्षों से चिपके बैठे हैं। आर्य समाज के सदस्यों में 80 प्रतिशत ऐसे ही लोग हैं। किसी समाज की वास्तविक स्थिति का पता उसके साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति से लगता है। 1975 में जिन दिनों दिल्ली में बड़ी धूम-धाम से आर्य समाज शताब्दी समारोह मनाया जा रहा था तो हमें आर्य समाज बम्बई (जिसके नाम पर शताब्दी समारोह हो रहा था) के साप्ताहिक सत्संग में जाने का अवसर मिला। कुल उपस्थिति 6 थी। पता लगा, प्रायः ऐसा ही होता है। जो व्यक्ति महीने में एक बार भी समाज मन्दिर में नहीं आता और 100 पैसे कमा कर उसमें से 99 अपने लिए रखकर एक पैसा भी समाज को नहीं देता, उसका आर्यसमाज से क्या लगाव हो सकता है? आज आर्यसमाज के संगठन के सभी स्तरों पर 90 प्रतिशत ऐसे ही लोग हैं। परिणामतः संसार के उपकार का दम भरने वाला आर्य समाज सरकारी सहयोग के बिना अपने संगठन को विभिन्न स्तरों पर निर्वाचन करने में भी असमर्थ है। सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारियों की देख रेख में पुलिस के पहरे में हमारे चुनाव होते हैं और फिर निचली अदालतों से लेकर हाई कोर्ट तक बरसों मुकदमें लड़े जाते हैं। शिक्षण संस्थायें आर्य समाज के प्रचार का साधन न रहकर भ्रष्टाचार और झगड़ों का केन्द्र बन गई हैं। गुरुकुल कांगड़ी से बढ़कर इसका उदाहरण क्या हो सकता है।

आये दिन मनाये जाने वाली शताब्दियों के नाम पर होने वाले बडे बडे जलसों और जुलूसों को देखकर लगता है जैसे सारा देश आर्य समाजी बन गया है। समय-समय पर आयोजित रेल यात्राओं को देखकर लगता है कि हम दिग्विजय करने निकल पड़े हैं। विदेशों में होने वाले आर्य सम्मेलनों की बातें पढ़ पढ़ कर ऐसा लगता है कि "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" का स्वप्न पूरा होने में अब अधिक देर नही है। परन्तु वास्तविक स्थिति इससे सर्वथा विपरीत है। महर्षि दयानन्द ने इस सच्चाई को जाना था। मानों उन्हें आर्यसमाज की वर्तमान अवस्था का पूर्वाभास था। इसीलिए उन्होंने लिखा था -

> "उत्सवादि को मेले का रूप देना हमें अच्छा नहीं लगता। इससे बहिर्मुखी प्रवृत्ति होती है और धन भी अत्यन्त व्यय होता है।"

परन्तु "महर्षि को क्या अच्छा लगता है" इससे हमें क्या? हम तो वह करते हैं जो हमें अच्छा लगता है। किसी न किसी निमित्त से आये दिन बड़े बड़े समारोह होते रहते हैं - समारोह युगधर्म बन गया है। एक एक समारोह पर लाखों रुपये खर्च हो जाते हैं। नेताओं-अधिकारियों की वाह-वाह हो जाती है और बस। पहले की अपेक्षा मत मतान्तरों की संख्या कई गुनी बढ़ गई है। पहले एक समय में ईश्वर का एक अवतार होता था अब एकसाथ दर्जनों भगवान पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं और हरेक की पूजा करने वाले लाखों करोड़ों हैं। भारत में ही नहीं विदेशों में भी। पहले ईश्वर का आरोप करके मूर्तिपूजा होती थी, अब मनुष्यों की मूर्तियों और समाधियों की पूजा होने लगी है। आर्य समाज के बड़े बड़े नेता न केवल समाधियों पर सीस झुकाते और फूल चढ़ाते हैं अपितु स्वयं लाखों रुपये खर्च करके मन्दिरों का निर्माण कराते हैं। गणेश पूजन की भांति कोई भी शुभ कार्य करने से पहले गांधी समाधि पर फूल चढ़ा कर उसे नमन

करना अनिवार्य सा हो गया है। पहले जो कार्य व्यक्तिशः होते थे वे अब योजनाबद्ध रूप में सरकारी स्तर पर किये जाते हैं। नेताओं के मरने पर लाखों और कभी-कभी करोड़ों रुपये उनकी हड्डियों को सैर कराने और उनके जुलूस निकालने पर खर्च हो जाते हैं। धार्मिक अन्धविश्वासों को बढ़ावा देने के लिए सरकारी खजाने से करोड़ों रुपये खर्च किये जा रहे हैं। ज्योतिषियों और तांत्रिकों की चाँदी है। बड़े-बड़े नेता अन्धविश्वासों का खुला प्रदर्शन कर रहे हैं। जनता का मार्गदर्शन करने और प्रगतिशील होने का दम भरने वाले बड़े-बड़े अखबार करोड़ों की संख्या में छपकर चमत्कारों में विश्वास बढ़ा रहे हैं। रेडियो, सिनेमा व टेलीविजन के माध्यम से मूर्तिपूजा, अवतारवाद आदि का धुंआधार प्रचार हो रहा है। शायद ही कोई फिल्म बनती हो जिसे देखकर चरित्रहीनता को बढ़ावा न मिलता हो और मूर्तिपूजा तथा अवतारवाद में श्रद्धा न बढ़ती हो। अब तो आर्यसमाजों और उनकी संस्थाओं में अभिनेताओं और अभिनेत्रियों को आमंत्रित कर उनका अभिनन्दन होने लगा है। यह सब खुराफात अंग्रेजों के राज में नहीं होता था।

प्रेमचन्द्र ने लिखा है कि जब पुरुष में स्त्री के गुण आ जाते हैं तो वह देवता बन जाता है किन्तु यदि स्त्री में पुरुष के गुण आ जाते हैं तो वह कुलटा हो जाती है। राजनीति में धर्म जाकर उसे पवित्र कर देता है किन्तु धर्म में राजनीति आकर उसे खा जाती है। आज वही कुछ हो रहा है। राजनीतिक दाँवपेचों में निष्णात अखाड़ेबाज तिकड़म के बल पर आर्यसमाज पर छाये हुए हैं। धर्म और राजनीति में सेव्य-सेवक भाव रहे तो राजनीति बुरी चीज नहीं। किन्तु इसका विपर्यय सर्वनाश का हेतु बन जाता है। जब लोकनेताओं पर राजनेता हावी होने लगते हैं, जब सरस्वती लक्ष्मी की चेरी बन कर रहने को विवश हो जाती है, जब विद्वानों, सन्यासियों, आचार्यों को पीछे डाल दिया जाता है और धन या पद के कारण धनपतियों और राज नेताओं को सम्मानित किया जाता है तो विद्वान अपनी सन्तानों को वसीयत कर जाते हैं - "यदि समाज में सम्मानपूर्वक रहना है तो आर्य समाज से दूर रहना, आर्यसमाज के लिए खपोगे तो तुम्हें कोई नहीं पूछेगा। यदि तुम म्यूनिसिपल कमेटी के मैम्बर बन गए या येन केन प्रकारेण लाखों जमा कर एक सौ रुपये चन्दा दे दोगे तो तम वह सम्मान पा जाओगे जो बड़े से बड़े विद्वान या सन्यासी को प्राप्त न होगा। इस सन्दर्भ में याद आती हैकुछ वर्ष पूर्व अलवर में हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता करने वाले नेता श्री शिवसागर रामगुलाम की जो यह कहते थे - "धार्मिक दृष्टि से मैं शिवलिंग का उपासक हूँ, धार्मिक ग्रन्थों में मैं तुलसी रामायण का भक्त हूँ, विचारों की दृष्टि से मैं गाँधी और मार्क्स से प्रभावित हूँ।" ये सज्जन "हरे रामा हरे कृष्णा" सम्प्रदाय के सदस्य हैं। अजमेर में उन्हें आर्यरत्न की उपाधि से विभूषित किया गया। कैसे बचेगा ऐसा समाज ?

और जिन राजनेताओं के पीछे विद्वान अपमानित होते हैं वे हमारे यहाँ आकर क्या करते हैं। सेहरा पढ़कर चले जाते हैं। पंजाब में विवाह के अवसर पर सेहरा पढ़ने का रिवाज है। प्रायः सभी जानते हैं कि सेहरा पढ़ने वाले लोग नित नया सेहरा लिखने नहीं बैठते। एक सेहरा उनका तैयार रहता है। जहाँ जाते हैं वहाँ वह और कन्या पक्ष के कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों के नाम पूछकर पहले से तैयार सेहरे में यथास्थान भर देते हैं ठीक इसी प्रकार हमारे राजनेताओं के पास भी एक सदाबहार सेहरा तैयार रहता है, अवसर के अनुरूप उसमें यथा स्थान दयानन्द, बुद्ध, नानक, सांई बाबा आदि के नाम डालकर उसे पढ़ देते हैं। भावना के अभाव में उनकी वाणी से निकले शब्द सुनने वालों के कानों से टकरा कर रह जाते हैं। हृदय तक उनकी पहुँच नहीं हो पाती। कुछ कर पाने की प्रेरणा कैसे मिले। धर्म नीति पर ग्रहण लग रहा है, स्व-अर्थ नीति पनप रही है।

इन सब बुराइयों के मूल में है प्रायः सर्वत्र आर्यत्व का अभाव, बहुमत

भारत गुलाम क्यों बना ?

श्री बसंत सिंह गहलोत, विधायक
धामपुर, उ०प्र०।

विद्यालयों में बहुधा यह पढ़ाया जाता है कि भारत में फूट थी और इस कारण भारत गुलाम बन गया। गुलामी का यह एक कारण हो सकता है परन्तु सब से बड़ा कारण इससे भिन्न है, जिस पर विचार किया जाना बहुत आवश्यक है क्योंकि 41 वर्षों की स्वतंत्रता के पश्चात् भी वह, वह कारण अपने मूल रूप में विद्यमान है और उसमें कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ। वह कारण है भारतीय जनमानस की राज्यधर्म के प्रति उदासीनता।

इस दृष्टिकोण के रहते हुए ही कुछ लोग जो भारत में लूटने के लिये आये थे, राज्य स्थापित करने में सफल हो गये, चन्द लोग जो व्यापार करने के उद्देश्य से आये थे आसानी से साम्राज्य स्थापित कर सके। स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने पर जनजागरण के द्वारा जनमानस में चेतना जागृत करने की आवश्यकता थी, यह काम बिल्कुल नहीं हुआ। लोग कहते सुने जाते हैं कि भारत में बड़ी जागृति आ गई है। 1977 में जनता सरकार बना दी फिर 1980 में इन्दिरा सरकार बना दी सरकारों की अदला-बदली जागृति का प्रमाण नहीं हो सकता। यह तो शासन के प्रति घृणा के भाव का सूचक है। मेरे कहने का आशय यह है कि ऐसी चेतना जागृत हो कि प्रत्येक नागरिक राज्य के सुचारू ढंग से चलाना अपना प्रथम दायित्व समझें और उसे ठीक करने के लिए संघर्ष करें। उसमें यह उदात्तभाव उत्पन्न हो कि राज्य के अच्छा रहते हुए ही, कृषि, उद्योग, विद्यालय अस्पताल और मानव जीवन के लिए उपयोगी संस्थाएं ठीक प्रकार से कार्य कर सकती हैं। यदि राज्य भ्रष्ट है, तो सभी संस्थाओं में उसकी छाप पड़ेगी। जैसे व्यक्ति राज्य में जायेंगे, वैसा ही राज्य होगा।

भारत में जो राज्य व्यवस्था है उसके प्रमुखता तीन अंग हैं। विधायिका, कार्यपालिका, तथा न्यायपालिका। तीनों की शक्तियां अलग-अलग हैं। विधायिका पर तो जनता का नियंत्रण है। उसे चुनाव द्वारा बदला जा सकता है। कार्यपालिका और न्यायपालिका पर कोई नियंत्रण न होने के कारण आज वे भी मनमाने ढंग से कार्य कर रही हैं। कार्यपालिका में सभी शक्तियां केन्द्रिय हुई सी लगती हैं। यह बात सभी जनता के जीवन से जुड़े लोग महसूस करते हैं और आज कार्यपालिका, बादशाहत से भी अधिक शक्तिशाली बन गई है। यदि जनजागरण हुआ होता तो यह भयावह स्थिति पैदा न होती। वास्तविक लोकशक्ति के अभाव में ही कार्यपालिका सर्वशक्तिमान बन गई है। संगठित लोकशक्ति का निर्माण ही इसका एकमेव हल है। आचार्य विनोवा भावे ने इस ओर काम किया था परन्तु उसे किसी अन्य ने आगे नहीं बढ़ाया और जब तक संगठित लोकशक्ति जो सत्य, अहिंसा एवं न्याय पर आधारित हो और संघर्षशील हो खड़ी नहीं हो जाती तब तक जन सामान्य को भारत के संविधान में उल्लिखित अधिकार प्राप्त नहीं हो सकते। आज न्याय वही ले सकता है जो शक्तिमान हो जिसके पास धन की शक्ति नहीं उसे न्याय प्राप्त करने का वातावरण नहीं है।

ऐसी शक्ति खड़ा करने के लिए ऐसे लोगों को तैयार करना होगा जो दूसरों के हितों की रक्षा करने के लिए संघर्ष करें।

*

जुटाने की होड़ में आर्य समाज के सिद्धान्तों नैतिक आदर्शों, योग्यता आदि की पूरी तरह अवहेलना करके अनार्यों की भर्ती। आर्यसमाज के नियमोपनियमों का अपवादरूप में भी पालन नहीं हो पाता। येन-केन-प्रकारेण बहुमत जुटाने में कुशल व्यक्ति केवल तिकड़म के बल पर ऊँचे पद पर आसीन हो जाते हैं और योग्य तथा चरित्रवान व्यक्ति आर्य समाज से दूर जा पड़ते हैं।

जो अशक्तों और निर्बलों के हक दिलाने के लिए संघर्ष कर सकें। इसके लिए "सर्वभूत-हिते रता" की भावना वाले संघर्षशील व्यक्तियों को संगठित करना होगा। जब ऐसे पुरुष राजनीति में काम करेंगे तब जनकल्याणकारी राज्य की स्थापना हो सकेगी। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि राजनीति में काम करने के लिए ऐसे लोग नहीं आ रहे हैं, घटिया किस्म के लोग, तंग दिल- लोग और स्वार्थी लोगों का ही राजनीति में बाहुल्य है। जो स्वयं को लोग श्रेष्ठ समझते हैं वे राजनीति से घृणा करते हैं। उनका यह चिंतन बदलना होगा। यदि श्रेष्ठ लोग राजनीति को गुण्डों की अन्तिम शरण स्थलीमान कर इससे अलग बैठे रहेंगे तो इस सारे पाप के वे ही भागी होंगे। स्वयं गलत काम करना ही पाप नहीं होता, पाप होते रहें और उसे बर्दाश्त किया जाता रहे यह भी घोर पाप है। लोग ईश्वर की उपासना करते रहें, धार्मिक आडम्बरों में तल्लीन रहें और दुर्बल सताये जाते रहें, शक्तिमान निशक्तों का शोषण करते रहें, तो वह उपासना निष्फल होती है। यदि हम निराकार की भक्ति करते रहें और साकार का शोषण होता रहे, यह मतिभ्रम दूर होना चाहिये हमें इस भावना को पूर्णतः त्यागना होगा- "कोऊनृप होउ हमें का हानि" हमें समझना होगा कि हमारा राज्य से अन्योन्याश्रित संबंध है। एक दूसरे से जीवन बंधा है। अकेले जीने में ही सभी हानियां हैं। समाज के साथ दुःखी- सुखी होना ही भारतीय परम्परा है निष्काम जीवन का भी यही लक्ष्य है कि हमारी जो भी शक्ति है वह समाज की सेवा में अर्पित हो।

यदि हमारे दृष्टिकोण में अन्तर नहीं आया और इसके लिए जागरूक व्यक्तियों ने कार्य नहीं किया तो आगामी दस वर्षों में हमें भीषण अराष्ट्रीय समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। उस समय हम विवश होंगे और किसी न किसी प्रकार की पराधीनता के शिकार होंगे। अतः मैं सब बन्धुओं से विनम्र आग्रह करता हूँ कि हम जागें, खड़े हों और स्वराज्य की स्थापना करने के लिए राजा विदेह की भांति आगे आयें। यही ऋषि बोध उत्सव शिवरात्रि के महानपर्व का उद्‌बोधन है।

आर्यमित्र साप्ताहिक के स्वामित्व के सम्बन्ध में विवरण

फार्म - 4

प्रपत्र नियम - 8

1- प्रकाशन का स्थान- भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस, नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई-मार्ग, लखनऊ।

2- प्रकाशन की आवर्तता- साप्ताहिक, प्रति-वृहस्पतिवार व शुक्रवार।

3- मुद्रक का नाम- श्री विश्वम्भर दयाल गुप्त, स्वत्वाधिकारी आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के लिये।

4- राष्ट्रीयता - भारतीय।

5- प्रधान सम्पादक- श्री मनमोहन तिवारी, 9-पुरानागणेशगंज, लखनऊ

प्रबन्धसम्पादक-श्रीइन्द्रदेवपाठक, एम0ए0, साहित्याचार्य 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

6- पत्र का स्वामित्व किसके पास है— आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ।

मैं विश्वम्भर दयाल गुप्त घोषित करता हूँ कि मेरी जानकारी में और विश्वास के अनुसार दिये गये विवरण सही हैं।

विश्वम्भर दयाल गुप्त
मुद्रक प्रकाशक "आर्यमित्र" साप्ताहिक
5-मीराबाई मार्ग, उ0प्र0,
दिनांक- 1 मार्च 1989 लखनऊ।

-x-x-x-x-x-x-x-x-

दिल्ली में सर्वजातीय पंचायत

हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश की सभी खाप बिरादरियों की विराट सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत 6 मार्च 1989 को गोमठ मन्दिर, मैदानगढ़ी (महरौली) नई दिल्ली में हो रही है जिसमें हिन्दू समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों को दूर करने पर विचार होगा।

शिवरात्रि का क्रान्तिकारी शिव-संकल्प

श्री कृष्णदत्त, एम०ए०, बी०एड०, हैदराबाद

शिवरात्रि का आर्यसमाज में अपना ऐतिहासिक महत्व है। इसको "बोध रात्रि" कहा जाता है। आर्यसमाजी इस त्यौहार को "दयानन्द जन्मदिवस" भी मानते हैं, यद्यपि स्वामी दयानन्द जी का जन्म शिवरात्रि के दिन नहीं हुआ था। स्वामीजी का जन्म सन् 1824 में हुआ था और शिवरात्रि की घटना 1838 में हुई, जबकि स्वामीजी 14 वर्ष की किशोरावस्था में थे। सन् 1838 की शिवरात्रि के त्यौहार पर गुजरात के टंकारा नामक एक ग्राम के एक शिवालय में भक्त इकट्ठा हुए थे। इस त्यौहार पर भक्त लोग दिन में उपवास करते हैं और रात शिवालय में जागरण करके गुजारते हैं। स्वामी दयानन्द का बचपन का नाम मूलशंकर था। उनके पिता अंबाशंकर कट्टर शिवभक्त थे। उन्होंने मूलशंकर को शिवजी से संबोधित अनेक चमत्कारपूर्ण कथाएं सुना रखी थीं। 14 वर्ष की आयु में मूलशंकर ने माता-पिता से यह इच्छा दर्शायी थी कि वे भी शिवरात्रि पर उपवास रखेंगे और शिवालय में जागरण करेंगे। मूलशंकर को यह समझा दिया गया था कि ऐसा करने वालों को शिव जी दर्शन देते हैं। बालक मूलशंकर ने सोचा होगा शिवरात्रि को त्रिशूल धारण किये हुए साक्षात शिवजी के दर्शन होंगे। हाथ में डमरू होगा, गले में रूद्राक्ष की माला होगी और बड़ा नाग गर्दन के चारों ओर लिपटा हुआ होगा। सिर पर बड़ी जटा होगी, जिसके एक ओर चन्द्रकोर और जटा के बीच से पवित्र गंगा की धारा निकल रही होगी। ऐसी ही कल्पनाओं को मस्तिष्क में संजोए हुए मूलशंकर ने पिता के साथ शिवालय में प्रवेश किया। हर क्षण शिवजी के विचित्र रूप के दर्शन की आशा में मूलशंकर बैठा हुआ था। गाना-बजाना हुआ, पूजा-अर्चना हुई। आधी रात बीत गयी। भक्तों में से कोई ऊँघ रहा था, कोई लेट गया था, कोई सो गया था। कुछ ही देर में सभी सो गये, यहाँ तक कि मूलशंकर के पिता भी सो गये। मन्दिर में सन्नाटा छा गया। लेकिन मूलशंकर की आँखें शिवजी की मूर्ति पर टिकी हुई थीं। मंदिर के टिमटिमाते हुए दीपक के प्रकाश में मूलशंकर

टिमटिमाते हुए दीपक के प्रकाश में मूलशंकर किसी की खोज में था। वह तो जैसे अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ रहा था, अज्ञान से ज्ञान की ओर अग्रसर हो रहा था।

शिवालय में फैली हुई स्तब्धता और शान्त वातावरण से लाभ उठाकर बहुत से जीव जन्तु, कीट पतंगे अपने-अपने आश्रय स्थानों से निकल पड़े और पेट भरने की चिन्ता में घूमने-फिरने लगे। चूहे भी बिलों से बाहर आ गए। एक चूहा उछलता-कूदता मूर्ति की ओर बढ़ा। घूम-फिर कर मूर्ति पर चढ़ गया। वहाँ रखे हुए चढ़ावे के खाद्य पदार्थों को खाने लगा। मूलशंकर ने जब यह दृष्य देखा तो स्तब्ध सा हो गया। प्रश्नों की बाल-मस्तिष्क में बौछार हो गयी। "क्यों" और "कैसा" के प्रश्नों ने बालक के मन को आलोडित कर दिया। मस्तिष्क में प्रश्नों का तूफान उठा। भक्त प्रह्लाद के मस्तिष्क में ऐसे ही तूफान उठे थे। गौतम के दिमाग में ऐसे ही सन्देह उभरे थे। स्वामी रामतीर्थ के मन-मस्तिष्क में शंकाओं की ऐसी ही आँधी हलचल मचा रही थी। स्वामी विवेकानन्द भी ऐसी ही समस्याओं से उलझे थे। राजा-राममोहन राय भी ऐसे ही प्रश्नों से बेचैन हो गये थे। इसी प्रकार के प्रश्नों और समस्याओं को हल करने के लिए संसार के महापुरूषों ने संसार में वैचारिक क्रान्ति पैदा की। इसी प्रकार की वैचारिक क्रान्ति ने मानव के भविष्य को संवारने का प्रयत्न किया, देशवासियों के कल्याण की कोशिश की, समाज को सन्मार्ग पर लाने के लिए अपने-अपने ढंग से एड़ी चोटी का जोर

लगाया।

बालक मूलशंकर के मस्तिष्क में भी प्रश्नों का तूफान उठा था। घटना अत्यन्त क्षुद्र थी, किन्तु चूहे वाले उस दृश्य को देखने वाली आँखें महान् थीं। उस दृश्य को महसूस करने वाला दिल व दिमाग श्रेष्ठ था। बालक ने पिता को जगाया और अपने सन्देहों-शंकाओं को उनके सामने रखा। बालक की शंकाओं का निवारण क्या होना था? पिता ने यह कहकर मूलशंकर को खामोश करने की कोशिश की -- "बेटा। यह तो शिवजी की मूर्ति मात्र है। सच्चे और असली शिवजी तो कैलाश में रहते हैं। यह असली शिव थोड़े ही हैं।" पिता ने समझा कि बालक का समाधान हो गया, लेकिन बाल- मस्तिष्क में एक नया संकल्प उभरा, उसके विचार-सागर में नयी लहरें उभरने लगीं। मूलशंकर यह संकल्प करके वहां से निकल कर घर आ गया, "मैं तो असली शिव का ही दर्शन करूंगा।" यह एक किशोरावस्था के बालक की कोरी कल्पना नहीं थी, एक बच्चे का खिलवाड़ नहीं था, मात्र कहकर भूल जाने का कोई काल्पनिक विचार नहीं था, बल्कि एक शुद्ध,पवित्र और महान् हृदय से निकला हुआ ऐसा सुदृढ़ और कल्याणकारी संकल्प था जिसको व्यवहारिक-रूप देने में मूलशंकर ने वैवाहिक जीवन में प्रवेश करने से इन्कार कर दिया, सांसारिक सुख-सुविधाओं को सदा के लिए तिलांजलि दे दी, माँ-बाप के प्यार-दुलार और सगे-संबंधियों के प्रेम से मुख मोड़ लिया, जमीन-जायदाद और धन-दौलत से अपने- आपको स्वेच्छा पूर्वक वंचित कर लिया और एक दिन चुप चाप घर से निकल पड़ा - सदा-सदा के लिए, कभी न लौटने के दृढ़ संकल्प के साथ। घर से निकल कर नगर-नगर, डगर-डगर की खाक छानी, बनों और जंगलों के चक्कर काटे, पहाड़ों और घाटियों को लांघा, कितने ही योगियों, साधुओं, ज्ञानियों, सन्यासियों के पास पहुँचे। किस लिए? केवल शिवरात्रि के किये हुए इस संकल्प की पूर्ति के लिए कि "मैं सच्चे शिव के दर्शन करूंगा।" लेकिन कहीं भी, किसी ने भी उन्हें सच्चे शिवजी के दर्शन नहीं करवाये और न उससे संबंधित सच्चा ज्ञान ही दिया। अन्ततः यमुना के तट पर मथुरा नगरी में गुरु विरजानन्द जी महाराज की सेवा में बैठकर स्वामी दयानन्द ने सच्चे शिव का वास्तविक ज्ञान प्राप्त किया और महर्षि दयानन्द सरस्वती ने कार्य-क्षेत्र में प्रवेश किया। गुरु विरजानन्द जी ने जो आदेश दिया था उसको पूर्ण करना स्वामी जी ने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। शिष्य को विदा करते हुए स्वामी-दयानन्द जी को गुरु ने आदेश दिया था- "बेटा। जो लिखा-पढ़ा सफल कर, देश का सुधार और उपकार कर, सत्यशास्त्रों का उद्धार कर, मत-मतान्तरों की अविद्या को मिटा और वैदिक धर्म, जो लोप हो गया है उसको फिर फैला"। महर्षि दयानन्द-सरस्वती ने गुरु के इस आदेश की पूर्ति में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। आर्य समाज की स्थापना की, जनता में चेतना और जागृति पैदा की, वैदिक धर्म का प्रचार किया, वेदों का जन-भाषा हिन्दी में पहली बार भाष्य किया, हजारों व्यक्तियों के जीवन को सुधारा, नास्तिकों को आस्तिक बनाया, समाज के उपेक्षित और तिरस्कृत दलित-वर्ग के उद्धार का मार्ग प्रशस्त किया। मत-मतान्तरों की समाप्ति के लिए स्वामी जी ने लिखा है--"सब सज्जनों को श्रम उठाकर इन सम्प्रदायों को जड़-मूल से उखाड़ डालना चाहिए। जो कभी उखाड़ डालने में न आवें, तो अपने देश का कल्याण कभी होने का नहीं।" राष्ट्र की स्वाधीनता के महत्व और गुलामी की विभीषिका को असंदिग्ध और स्पष्ट शब्दों में जनता के सामने रखते हुए लिखा, "कोई कितना ही करें परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मतमतान्तर के आग्रह रहित अपने और पराये का पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" इसी प्रकार सन् 1972-73 में जब स्वामी जी प्रचार करते हुए भागलपुर से कलकत्ता पहुँचे थे और श्री केशवचन्द्र सेन और एक विदेशी पादरी के प्रयत्न से स्वामी जी उस समय के वायसराय लार्ड नार्थ ब्रुक से मिलने गये थे, तब बातचीत के प्रसंग में स्वामीजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था, "मैं प्रतिदिन

* * * *

ज्ञान की गरिमा

बोध का यह पर्व पावन,
बोध की आभा बिखेरे ।
दूर हों भू से निरन्तर,
हैं घिरे जो घन घनेरे ।
ज्ञान के ज्योतिर्पथों पर--
हम चलें, जगती चलाएं ।
ज्ञान की गरिमा बढ़ाएँ ।।
ऋषि दयानन्द ने इसी दिन,
बोध की थी ज्योति पायी।
उस ऋषि के उर विमल में,
ज्योति नूतन जगमगायी ।
ऋषि सदृश हम भी हृदय--
में, बोध की आभा जगाएं ।
ज्ञान की गरिमा बढ़ाएं ।।
यामिनी तम की धरा पर--
तीव्र गति से बढ़ रही है।
दनुजता की बृत्तियां सब--
शृंग ऊँचे चढ़ रही हैं ।
आर्य पुत्रों । अब बढ़ो तुम --
यामिनी भू से भगाएं ।
ज्ञान की गरिमा बढ़ाएं ।।

राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ0प्र0)

* * * *

प्रातः-सायं भगवान् से प्रार्थना करते हुए यह माँगता हूँ कि वह दयालु भगवान् मेरे देश को विदेशी शासन से शीघ्र ही मुक्त करें।"

तात्पर्य यह कि आज से 148वर्ष पूर्व टंकारा के शिवालय में शिवरात्रि को 14 वर्ष के किशोर मूलशंकर ने सच्चे शिव के दर्शन करने का जो संकल्प किया था वह कितना शुभ, महान्, मंगलकारी और कल्याणकारी था, उसकी हमने इस लेख में एक झांकी मात्र दिखाने की कोशिश की है। उस संकल्प ने भारत के इतिहास को बदल दिया, आर्य जाति का स्वरूप परिवर्तित कर दिया ।

पंचायती जनतन्त्र का समर्थन

ओं भूर्भुवः स्वः । ओग्निर्ऋषिः पवमानः
पांच जन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्
-ऋग्वेद

वेद ने सदैव जनतान्त्रिक प्रणाली का उपदेश दिया है। एक तन्त्रीय शासन पद्धति में भी राजा को विद्वान आर्य पुरूषों की सम्मति से राज्य करने का अधिकार दिया गया है। वेद में कई स्थानों पर राजा को ईश्वरीय प्रतिनिधि बताया गया है। जिस प्रकार परमात्मा निष्पक्ष न्यायकारी सत्यारूढ़ कर्मफल प्रदाता है उसी प्रकार राजा के कर्तव्यों का वर्णन है। शासन व्यक्ति हितकारी न होकर सर्वहितकारी बने-इसी उद्देश्य से उपर्युक्त वेदमन्त्र में प्रभु से प्रार्थना करते हुए साधक कहता है-- हे स्वप्रकाश स्वरूप परमात्मन? तु हम सभी प्रजाजनों के कल्याण के लिए (पांच जन्यः) (पुरोहित) पंचायती व्यवस्था का प्रेरक हैं। तेरी इसी पंचायती (जनतान्त्रिक) व्यवस्था से हम कल्याणपथ पर चलने वाले बनें ।

* * * *

शिव रात है अभी भी

लाखन सिंह भदौरिया
सौमित्र।

शिव-रात है अभी भी,वह दिन कहाँ हुआ है?
जिस भोर के लिये ही,ऋषि-जागरण हुआ है?
शिवता बिलख रही है,शुचिता सिसक रही है।
पशुता चढ़ी है सिर पर,सुरता सिसक रही है।
सुख-शान्तिका सबेरा, मुमकिन कहाँ हुआ है?
शिव-रात है अभी भी वह दिन कहाँ हुआ है?
अब भी मनुज का शंकर,कंकर पै सिर पटकता,
वह वेद-ज्ञान का रवि, रातों के घर भटकता।
तप, देव दयानन्द का, दिनर्माण कहाँ हुआ है?
शिव-रात है अभी भी,वह दिन कहाँ हुआ है?
हम ऊँघते पड़े हैं,दिन, रात बन रहा है।
चूहे कुतर रहे हैं, निशि,प्रात, बन रहा है।
निरभ्रान्त, आदमी का चिन्तन कहाँ हुआ है?
शिवरात है अभी भी वह दिन कहाँ हुआ है?

गो रक्षक दयानन्द

§आचार्य राजदेव शर्मा शास्त्री
व्याकरणाचार्य §इटावा§

"गावो विश्वस्य मातरः" गाय विश्व की माता है, इस वेदोक्ति को ऋषि ने अपने पवित्र अन्तःकरण में धारण करके **गोमाँ** की रक्षा हेतु महानतम प्रयत्न किया था। यहाँ तक नहीं माँ की रक्षा हेतु ऋषि ने **गोकरूणानिधि"** नामक पुस्तक भी रचकर तैयार की थी। जिस पुस्तक में ऋषि ने गाय से होने वाले लाभों का वर्णन बड़ी ही मर्म भेदी भाषा में किया है, महर्षि दयानन्द के हृदय में गोमाँ रक्षण की वेदना भरी हुई थी। वे गोरक्षण में ही राष्ट्र की सर्वोन्नति मानते थे इसी सन्दर्भ में ऋषिवर लिखते है:-

§अध्न्या यजमानस्य पशून पाहि§हे पुरूष तू इन पशुओं को मत मार और यजमान अर्थात् सब के सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर, जिनसे तेरी भी पूरी रक्षा होवे। इसी ब्रह्म से लेकर आज पर्यन्त आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे और अब भी समझते है। और इनकी रक्षा में अन्न भी मंहगा नहीं होता क्योंकि दूध आदि के अधिक होने दरिद्री को खान-पान में मिलने पर न्यून ही अन्न खाया जाता है। और अन्न के कम खाने से मल भी कम होता है मल के न्यून होने से दुर्गन्ध भी न्यून होती है दुर्गन्धि के स्वल्प होने से वायु और वृष्टि जल की शुद्धि होती है उससे रोगों की न्यूनता होने से सब को सुख होता है।

इससे यह ठीक है कि गो आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं तब दूध आदि पदार्थों और खेती आदि कार्यो की भी घटती होती है इसी से जितना दूध घी आदि पदार्थ तथा बैल आदि पशु 700वर्ष से पूर्व मिलते थे उतना दूध-घी बैल आदि पशु इस समय आज दश गुणे मूल्य में भी नहीं मिल सकता। क्योंकि 700वर्ष के पीछे इस देश में गवादि पशुओं को मारने वाले बहुत से विदेशी आ बसे हैंवे उन सर्वोपकारी पशुओं के हाड़-मांस तक नहीं छोड़ते, तो **"नष्टे मूलं नैव पत्रम न·पुष्पम"** जब कारण का नाश करदे तो कार्य पहिले ही क्यों न नष्ट हो जावे।

हे मांसा हारियों। तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु आदि न मिलेंगे तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं ?

हे परमेश्वर। तू इन पशुओं पर जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं दया क्यों नही करता क्या तेरी उन पर प्रीति नहीं है ? क्या उनके लिए तेरी न्याय सभा बन्द हो गई है। क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता और उनकी पुकार नहीं सुनता? क्यों इन मांसा हारियों के हृदय में दया का प्रकाश नहीं करता तथा क्यों इनकी निष्ठुरता कठोरता स्वार्थ पन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता ।

कितनी वेदना है ऋषि के हृदय में राष्ट्रमाता गौ के प्रति/आर्यो क्या तुमने कभी भी इन शब्दों पर ध्यान दिया। अपना राष्ट्र हमने अंग्रेजों से मुक्त करा लिया आज स्वदेशीय राज्य है परन्तु गो माता परतन्त्रता की बेड़ी में जकड़ी है महात्मा गाँधी जिन्होंने कहा था कि "आजादी-मिलते ही पहली कलम से गोहत्या बन्द कर दूँगा। वह भी जिन्दगी भर मुस्लिम परस्ती करते रहे। लेकिन आज भी गोमाँ स्वतन्त्र न हो सकी। आर्यो । ऋषि के विचारों को तुम्हेंही पूर्ण करना होगा।

वेद का भी आदेश है--

यदि नो गां हिंसि यद्यश्वं यदि·पूरूषम्।

तंत्वा सीसेन विध्यामा यथानो·सो·वीरहा।।

आर्यो । तुम्हारा धर्मग्रन्थ वेद भी गोरक्षा की बात कह रहा है अतः वेदादेश को चरितार्थ कर ऋषि ऋण से उन्हें उऋण होने का यत्न करें ।

सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनायेंगे

[आचार्य वेदव्रत अवस्थी,
वेदमन्दिर हिन्दनगर, लखनऊ]

प्रतिदिन महाशिवरात्रि के दिन हम बड़े ही हर्षोल्लास से ऋषि बोध पर्व मनाते हैं, जगह-जगह सम्मेलनों के आयोजन करके, शोभा यात्रायें निकाल कर महर्षि दयानन्द के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, और संकल्प लेते हैं भावी वर्ष में ऋषि सम्मत कार्यक्रमों के माध्यम से वेद प्रचार द्वारा सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने का।

निस्संदेह महर्षि दयानन्द की अनन्य साधना का परिणाम ही - सदियों की दासता से भारत माता की मुक्ति - है। ऋषि के स्वाधीनता आन्दोलन के बिगुल की ध्वनि जन जन में व्याप गयी, जागृति आई, प्रबल आन्दोलन उठा, जाति पांति का भेद मिटा सब संगठित हो गले मिले। अंग्रेजी सरकार थर्रा गई - देश स्वतन्त्र हुआ। नारी ने भी अपना अधिकार पहचाना, उसने भी स्वराज्य आन्दोलन में अपना भरपूर बलिदान दिया। अशिक्षा के प्रति जागरूक हुई, शिक्षा के प्रति उत्साह बढ़ा, फिर शिक्षा प्राप्त करके अनेकों उच्चतम पदों पर आसीन होकर भारत मात के गौरव को बढ़ाया।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद शायद ऋषि भक्तों ने अपने कर्तव्यों की इतिश्री मान ली। परिणाम सत्ता में ऐसे लोगों का बाहुल्य हुआ जिन्हें भारतीय संस्कृति, भारतीय सभ्यता से कुछ लेना देना नहीं रहा। जो विदेशी वैभव के प्रति उसके प्रबल आकर्षण से आकर्षित होकर भौतिकवाद में फंसकर राष्ट्र को उन्नत बनाने का स्वप्न देखने लगे। बस, वहीं से अनैतिकता बढ़ने लगी। स्वार्थान्धता, पदलोलुपता ने अपना वर्चस्व बढ़ाना आरम्भ किया, फलतः आज फिर संगठित देश विखण्डन की ओर बढ़ने लगा। आज देश में भाषायी, जातीय आधार पर विभाजन के कुत्सित आन्दोलन हो रहे हैं, कुर्सी का लोभ संजोने वाले राजनीतिक लोग - राष्ट्रउन्नति का चिन्तन छोड़ सत्ता बचाने या पाने की होड़ में लगे हैं। इस लालच के वशीभूत होकर ही अल्प संख्यक संरक्षण, सवर्ण-असवर्ण के भेद समाप्त करन का बहाना देकर सबमें भेद बढ़ा रहे हैं। सबमें एक दूसरे के लिए जाने या अनजाने में सन्देह-ईर्ष्या और घृणा बढ़ा रहे हैं। इस कार्य में सत्ता की कुर्सी पाने की दौड़ में प्रायः सभी पार्टियां या राजनीतिक नेता किसी से पीछे नहीं हैं।

आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य उसके महर्षि दयानन्द निर्मित दस नियमों से सुस्पष्ट है। "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि" "सबकी उन्नति में अपनी उन्नति" सब का काम धर्मानुसार सत्यासत्य को विचार कर करना - लक्ष्य होते हुए भी हम प्रभाववश लक्ष्य से दूर हो रहे हैं। इसी कारण देश की दशा दिनानुदिन बिगड़ती जा रही है और इस दोष के हम सभी दोषी हैं।

सभी पर्वों का आयोजन आत्म निरीक्षण के लिए ही पूर्वजों ने करने का विधान किया था। ऋषि बोध पर्व पर - जिस दिन की एक सामान्य घटना ने मूलशंकर को बदलकर दयानन्द बना दिया, और दयानन्द ने भारत की डूबती नैया को उबार लिया - दयानन्द के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने वाले हम सब आर्यों का कर्म बनता है कि हम आत्मनिरीक्षण करें - देखें कि हमने विगत वर्ष में आज के दिन जो संकल्प लिए थे उनमें कितने पूर्ण किये, कितने अधूरे रहे, कितने बिलकुल नहीं आरम्भ किये और देखें कहीं कुछ फैलते राजनीतिक प्रपंचपूर्ण अन्धकार का हम पर तो प्रभाव नहीं पड़ रहा।

इस प्रकार आत्म निरीक्षण कर संकल्प लें, सम्पूर्ण रूप में जागरूक होकर राष्ट्र को अधःपतन से बचाने का। फैलती अनैतिकता, स्वार्थपरता की अज्ञान निशा

ऋषि आए तुम

डा0 सावित्री देवी शर्मा
10, केलावाण-सावित्री सदन बरेली

भारत में जब ऋषि आये तुम।
खो बैठे थे निज सब कुछ हम।
छाया था चहुँ दिश अन्धकार
घनघटा क्लेशमय थी अपार
कोई न जान सकता था क्या
है कौन कहाँ पथ क्या विचार।
पथभ्रष्ट हुये थे सचमुच हम
भारत में जब ---- §1§

टिमटिमा रहा था ज्ञानदीप
था बिरज रहा आनन्द जहाँ
धीरे-धीरे आलोकित बस
हो उठता था वह दीप वहाँ
फैला था घोर अविद्यातम
भारत में जब ---§2§

थे भूल चुके वैदिक विचार
नास्तिकता का ही था प्रसार
मिथ्या आडम्बर दम्भ जहाँ
घेरे भारत को दुर्विचार
वन आये सत्य प्रकाशक तुम
भारत में जब ---- §3§

पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा हाथ
अज्ञान अनीति विनष्ट हुई
थी पोलखुली भ्रमजालों की
"सत्यार्थ प्रकाश" प्रतीत हुई
तम में शरदिन्दु बने ऋषि तुम
भारत में जब ----- §4§

जड़ पूजा की कर भ्रान्ति दूर
प्रिय "ओ३म्" पताका फहराई
उस घोर अमावास्या तम में
वेदों की दिव्य ज्योति पाई
शोभन चिन्ता मणि लाये तुम
भारत में जब ---- §5§

करूणावरूणालय मुनिवर ने
"गोकरूणानिधि" की रचनाकर
वरसायी अपनी सजल दृष्टि
संत्रस्त मूक से पशुधन पर
रक्षार्थ देव आये थे तुम
भारत में जब ----- §6§

नारी अशिक्षिता थी वेदा-
मृत पान नहीं कर सकती थी
शोषित थे दलित अनाथ दीन
विधवा दुखिया आहें भरती
सन्तापहरण बन आये तुम
भारत में जब ----- §7§

यह शस्य श्यामला भारत भू
थी अतुल कीर्ति जिसकी जग में
क्रन्दन करती थी पराधीनता
से जकड़ी जंजीरों में
थे मुक्ति दूत बन आये तुम
भारत में जब ---------§8§

को मिटाने का।

निश्चय ही यह हमारा संकल्प हमें शक्ति और सम्बल देगा और हम भारत माता की निस्पृह सेवा साधना से स्वयं सुखी होंगे, सम्पूर्ण राष्ट्र को सुपथ की ओर प्रेरित करके सुख सम्पन्न बनायेंगे और ऋषि दयानन्द की कल्पना के भारत का निर्माण करके सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनायेंगे।

*

हम और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से शरीर बना और जिनसे अब भी पालन होता है और आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन-मन-धन से सब मिलकर करें। इसलिये जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नही हो सकता ।

*

सच्चे शिव की खोज

--चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
कानपुर।

आज से लगभग सौ- सवा सौ साल पहले की बात है। गुजरात-प्रदेश के एक गाँव "टंकारा" में पं. कर्षन लाल जी के घर में एक बालक ने जन्म लिया था। बालक का नाम मूलशंकर रक्खा गया। घर वालों का लाड़-प्यार पाता हुआ बालक धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। 5-6 वर्ष की आयु होने पर बालक को पढ़ने के लिए बैठाया गया। तीव्र बुद्धि बालक ने धीरे-धीरे काफी शिक्षा प्राप्त कर ली। अब बालक की आयु तेरह वर्ष की हो गई थी।

उस दिन **"शिवरात्रि"** का पर्व था। घर वाले **"शिव जी"** के उपासक थे। घर में सबने दिन भर "शिवरात्रि" का व्रत रक्खा। बालक मूलशंकर ने भी शिवरात्रि का व्रत रक्खा। घर वाले-- घरके पास बने **"शिव मन्दिर"** में बैठे-बैठे-- दिन भर **"शिव जी"** का कीर्तन करते रहे। धीरे-धीरे दिन बीत गया और रात्रि आ गई।

जैसे-जैसे रात्रि बीतती गई, घर के सदस्यों को निद्रा आती गई। एक-एक कर घर के सारे लोग निद्रा में मग्न हो गये। केवल बालक मूलशंकर उत्साह में भरा मंदिर में बैठा हुआ जागता रहा।

आधी रात के समय उस मंदिर में बने एक बिल में से एक चूहा निकला। वह धीरे-धीरे चलता हुआ **"शिव जी"** की मूर्ति की ओर बढ़ने लगा। "शिवजी" की मूर्ति पर दिन में फल चढ़ाये गये थे। चूहे ने मूर्ति पर चढ़ाये गये एक बेर को कुतर-कुतर कर खा लिया और एक अन्य छोटे से बेर को लेकर वह चला गया।

अब बालक मूलशंकर के मन में सन्देह का एक बादल सा उठने लगा। यह कैसे "शिव" जी हैं? ये तो एक नन्हें चूहे से अपने फलों की रक्षा भी नहीं कर पाये। ये भला संसार की क्या रक्षा करेंगे ? नहीं, यह सच्चे "शिव" नहीं हैं। सच्चा "शिव" कोई और है। कोई और है।। कोई और है।।। मैं सच्चे, "शिव" की खोज करूँगा।

और बालक मूलशंकर सच्चे "शिव" की खोज में अपने घर से निकल पड़ा। भारत के विभिन्न नगरों में भ्रमण करता हुआ वह "मथुरा" नगर में जा पहुँचा। उसने मथुरा में गुरुवर विरजानन्द जी से ज्ञान प्राप्त करके भारत का भ्रमण किया और देश की जनता व समाज का बड़ा कल्याण किया।

आगे चल कर यही बालक **"महर्षि-दयानन्द सरस्वती"** के नाम से जीवन में प्रसिद्ध हुआ। इसने कुरीतियों, अज्ञान और अविद्या का विनाश किया और देश में सच्चे ज्ञान और विद्या का प्रचार किया। भारत में आर्यसमाज की स्थापना की। देश में कुछ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज की शताब्दी बड़ी धूमधाम से मनायी गई थी ।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

- कोई कितना ही कहे परन्तु जो स्वदेशी राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है।

- ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो? क्या तेरी यही इच्छा थी। अहा । तैने अच्छी लीला की ।

- यदि कोई मुझे अपना "दर्शन" एक शब्द में प्रकट करने की आज्ञा दे तो मैं कहूँगा **"आत्म ज्ञान"** और **"आत्म विश्वास** ।

आर्य करण की दिशा में त्रिसूत्री योजना

प्रियव्रत शास्त्री साहित्य रत्न,
एम०ए० सरधना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के पिछले बृहदधिवेशन के अवसर पर "आर्यकरण की दिशा में त्रि सूत्री योजना" स्वीकृत हुई थी। वे त्रि सूत्र निम्न हैं:-

1- संस्कृत भाषा का उत्थान, 2- गो·रक्षा, 3- उपदेशक संस्थान की स्थापना।

वैसे तो आर्यसमाज के कार्यक्रम को में योजनायें पहिले से ही विद्यमान हैं। परन्तु कभी-कभी इनमें शिथिलता अनुभव हो जाती है तब पुनः उस शैथिल्य को दूर करने के लिये पुनः इस कार्यक्रम को योजना का रूप देकर प्रारम्भ करने की दिशा में विचार किया जाता है।

संस्कृत सर्वांग रूप से पूर्ण एवं वैज्ञानिक भाषा है और इसके लिए देवनागरी भी सर्वांग पूर्ण है इसमें कोई सन्हेद नहीं है। वेद में लिखा हैं:-"ब्राहमर्णो ऽ स्य मुखमासीत्" यह सर्वार्थ एवं सर्वांश में पूर्ण सत्य है। वास्तव में ब्राहमण को ऐसा ही परिपूर्ण होना चाहिये जैसी यह संस्कृत भाषा है। किसी भी अक्षर का उच्चारण स्थान मुख ही है अतः ब्राहमण को शुद्ध-शुद्ध अर्थवेत्ता होना चाहिये। सब पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ भी परमपिता प्रभु ने मुख पर या उसके समीप ही रची हैं अतः ब्राहमण को सर्वज्ञान सम्पन्न होना चाहिये। इस लिये वैदिक सिद्धान्त में जाति से ब्राहमण आदि न मानकर वर्ण माने हैं। संस्कृत के समस्त अक्षरों, अनुस्वार तथा विसर्गों तक का स्थान और प्रयत्न मुख में ही है और इनके शुद्ध करने की ज्ञानेन्द्रिय जिव्हा का भी स्थान मुख में ही है। अतः संस्कृत भाषा का शुद्ध उच्चारण ही अभिप्रेत है। अस्तु।

यह भाषा सर्व प्राचीन है और अन्य समस्त भाषाओं की जननी है इस विषय में कुछ विद्वानों के विचारों का उल्लेख भी आवश्यक है:-

क- श्लेकल साहब अपने एक लेख में लिखते हैं कि संसार की प्रचलित भाषाओं में कोई भी भाषा इतनी पूर्ण नहीं है जितनी कि संस्कृत। इतने धातुओं का पता एवं शब्दों की व्युत्पत्ति का पता स्पष्ट रीति से किसी भाषा में नहीं मिलता जितना कि संस्कृत में।

ख- डा० वेलंटाइन लिखते हैं कि संस्कृत ही समस्त भाषाओं की जननी है।

ग- डब्ल्यू० सी टेलर महोदय की राय है कि संस्कृत की समता भारत की कोई भाषा नहीं कर सकती। यूरोप की तमाम भाषायें जिनको हम क्लासिकल कहते हैं, इस ही से निकली हैं।

घ- यूरोप में इस शताब्दि में एक बड़ी भारी बात यह जानी गई कि किसी भाषा में जो लाखों शब्द होते हैं उनकी व्युत्पत्ति का पता बहुत थोड़े से मूल शब्दों से लगाया जा सकता है। भारतवर्ष में तीन हजार वर्ष हुए पाणिनी के समय के पहले यह बात जानी जा चुकी थी और इस बड़े वैयाकरण ने अपने समय के शब्दों की व्युत्पत्ति की थी।

ङ- प्रोफेसर मैक्स मूलर साहब लिखते हैं कि केवल हिन्दुओं और यूनानियों ने व्याकरण शास्त्र की उन्नति की, परन्तु यूनानियों ने जो सफलता प्राप्त की वह पाणिनी के जो कि संसार भर में सबसे बड़ा वैयाकरण हुआ है, ग्रन्थ के आगे कुछ भी नहीं है।

च- यह संस्कृत भाषा का ही ज्ञान था

जिससे कि इस शताब्दि के योरूप के विद्वानों ने भाषा तत्व को निकाला और बोप और ग्रिम साहबों तथा अन्य बहुत से विद्वानों ने अन्य शब्दों की व्युत्पत्ति की। जैसी कि पाणिनी ने संस्कृत भाषा की व्युत्पत्ति आर्यों के इतिहास के उस पूर्वकाल में की थी जबकि एथेन्स और रोम जाने नहीं गये थे।

छ- श्री मैथिलीशरण गुप्त भारत-भारती में लिखते हैं:-

"निकला जहाँ से आधुनिक वह भिन्न भाषा तत्व है,
रखती न भाषा एक भी संस्कृत समान महत्व है ।
पाणिनी सदृश वैयाकरण संसार भर में कौन है,
इस प्रश्न का सर्वत्र उत्तर, उत्तरोत्तर मौन है।।"

इतने गुण और इतनी महान संस्कृत भाषा उत्थान की योजना आर्य प्रतिनिधि सभा ने स्वीकृत की है यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है। परन्तु इस योजना को मूर्त रूप देना बहुत कठिन कार्य है क्योंकि रेडियो, दूरदर्शन तथा उच्च नेताओं के व्याख्यान, विधान सभाओं एवं लोक सभा ने सम्पूर्ण देश का वातावरण अंग्रेजी मय बना दिया है।

यही कारण है कि सम्प्रति नगरों, उपनगरों के साथ-साथ ग्रामों में भी अंग्रेजी माध्यम के स्कूल खुल रहे हैं तथा गुरूकुलों और संस्कृत पाठशालाओं की ओर से विमुखता बढ़ती जा रही है। इसके साथ ही नये खुलने वाले स्कूलों को मान्यता भी प्राप्त हो रही है।

आज आर्थिक युग है अनेक इस प्रकार के स्कूल आर्यसमाज के अधिकारी सदस्यगण भी खोलने में लगे हैं। यह आय का सुलभ साधन है। इन स्कूलों में शुल्क वांछित रूप से लेते हैं कोई रोक टोक न शुल्क पर है न हिसाब-किताब रखने पर ।

एक दुखद यह भी विषय है कि एक ही वैदिक मन्तव्य को मानने वाले ऋषि-दयानन्द प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करने वाले आर्य मनुष्यों में भी मानसिक दूरी, विचारकृत दूरी तथा कार्य करने की शैली विविधता को लिये हुए हैं, इस विविधता का ही यह परिणाम है कि आज आर्य संस्थाओं में अनेक स्थानों पर कलह है और प्रशासक नियुक्त हैं।

न केवल आर्य समाज प्रत्युत आर्य-प्रतिनिधि सभायें भी पारस्परिक कलह के कारण न्यायालयों से वाद का निर्णय कराती हैं।

प्रायः प्रत्येक पढ़े लिखे घरों में बालकों-बालिकाओं के अध्ययन का आरम्भ ए0बी0सी0डी0 आदि अंग्रेजी वर्णमाला से तथा वन0टू0 थ्री0 आदि अंग्रेजी अंकों से होता है इस ही में गौरव अनुभव करते हैं। देवनागरी लिपि से तथा अंकों को वे आरम्भ ही करना नहीं चाहते। इसाई-स्कूलों कालेजों में अपने बच्चों को पढ़ाना श्रेयस्कर मानते हैं। इस लिये इस युग में संस्कृत विद्यालयों एवं गुरुकुलों का ह्रास होता जा रहा है।

आर्यसमाज के पदाधिकारी व सदस्य अधिकांशतः संस्कृत नहीं जानते। शुद्ध मन्त्रोच्चारण नहीं कर सकते, न इस दिशा में वे प्रयत्नशील हैं। अन्य भी अनेको प्रकार की निर्बलताएँ हैं।

आर्यसमाज के जो उपदेशक महोपदेशक हैं उनमें अधिकांशतः संस्कृत है परन्तु जो प्रचारक भजनोपदेशक हैं उनमें अधिकांश संस्कृतज्ञ नही हैं। आर्यसमाज के जो उपदेशक महोपदेशक तथा प्रचारक व भजनोपदेश हों सभी का अधिक या अल्प मात्रा में संस्कृतज्ञ होना आवश्यक है। किसी का भी उद्देश्य प्रजा मनोरंजन मात्र ही नहीं होना चाहिये। वैदिक ज्ञान भी अपेक्षित है।

सभा को एक सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा आरम्भ करनी चाहिये। नये या प्राचीन प्रचारकों में उस परीक्षा को करना अनिवार्य हो।

सभा ने संस्कृत भाषा का उत्थान योजना बहुत अच्छी बनाई है। इस योजना को क्रियान्वित करने का कार्यक्रम भी सभा को अवश्य बनाना चाहिये। यह केवल कागजी योजना ही न रह जाये।

जागो आर्यो जागो

पुरुषोत्तम सिंह योग
लखनऊ

महर्षि स्वामी दयानन्द से किसी अँग्रेज अधिकारी ने एक बार व्यंग्य से कहा " आप वैदिक धर्म को मानते हैं। किन्तु हम ईसाईयों के गुलाम हैं। क्या यह इस बात का प्रमाण नहीं कि ईसाई धर्म वैदिक धर्म से श्रेष्ठ है।" महर्षि ने उत्तर दिया "हमने वैदिक धर्म का परित्याग कर दिया था और आप ने उसके सद्गुणों को अपना लिया। इस कारण आप हमपर राज्य कर रहे हैं।" इस घटना से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

लोग कहते हैं हिन्दू धर्म का ह्रास हो गया है। आर्य समाज विघटन की ओर है। धर्म का ह्रास नहीं हुआ करता। हाँ। हिन्दू नष्ट प्रायः है। ओर आर्यसमाजी भी अधोगति को जा रहे हैं। कारण यह है कि हमने धर्म का परित्याग कर दिया है। जिन्होंने जितना वैदिक धर्म को अपना लिया है वह उतनी ही उन्नति कर रहे हैं। यदि हिन्दू समझते हैं कि मंदिरों में अर्चना पूजा अथवा रात्रि जागरण अथवा, रामायण पाठ जैसे धार्मिक समझे जाने वाले कृत्यों को कर लेने मात्र से उनका कल्याण हो जायेगा तो इससे बड़ी भूल क्या हो सकती है। उन्होंने धर्म के मर्म को समझा ही नहीं है।

इसी प्रकार आर्य समाजी यदि हवन-संध्या मात्र को धर्म समझ बैठे हैं तो क्या यह उनकी उन्नति के कारण बन सकते हैं? इस बात को थोड़ा विस्तार से लें।

बहुत से प्रतिष्ठित आर्य समाजियों के बड़े-बड़े व्योपारिक संस्थान हैं। वह घर पर हवन संध्या करते हैं। किन्तु उनकी दुकानों में गणेश लक्ष्मी की प्रतिमा रखे है। उन पर नियम पूर्वक एक लाल बल्ब जलता है। पहले दिया जला करता था। उनके व्योपारिक संस्थानों में जाने पर कोई ऐसी विशेषता ही नहीं लगती कि यह संस्थान औरों से किसी प्रकार भिन्न है। कि यहाँ- दूसरे संस्थानों से कम लाभ पर माल बेचा जाता है। कि यहाँ ग्राहक से व्यवहार अधिक शिष्ट है। कि यहाँ तोल नाप में कोई छल हो ही नहीं सकता।

जो आर्यसमाजी राजनीति में हैं क्या उन्हें इस बात का ध्यान रहता है कि वह सत्य व न्याय का पक्ष लें और उस राजनीतिक दल का खुलकर और संगठित होकर विरोध करें जो समाज का अहित करने में लगे हैं। क्या वह इस प्रकार धर्म का ह्रास करने में सहायक नहीं है कौन सा धर्म है जो शराब खोरी की अथवा नग्न नृत्यों की छूट देता है? किन्तु कितने आर्य समाजी अथवा हिन्दू मंत्रियों

ने बढ़ती शराब नोशी, धुम्रपान, अश्लील चल चित्रों के निर्माण को मुद्दा बनाकर इस्तीफे दिये हैं? किन्तु नहीं उनकी सारी राजनैतिक जोड़-तोड़ स्वयं एम0एल0ए0 अथवा एम0पी0 बनने तक सीमित है।

यदि साथ-साथ हम इसकी तुलना दूसरे धर्मों के राजनीतिज्ञों से करते चलें तो यह बात स्पष्ट हो जायगी।

मुसलमानों को लें- उनके अधिकतर राजनीतिज्ञ एम0 पी0 अथवा एम0एल0ए0 किसी भी ऐसे प्रश्न पर जिसमें उनकी जाति अथवा मजहब का हित निहित हो एक साथ एक मंच पर इकट्ठे होकर अपनी जाति के हित की बात करते हैं जिसके कारण सरकार को उनके आगे झुकना पड़ता है। क्या कभी हिन्दुओं ने भी ऐसा प्रयास किया है ?

शिक्षा किसी भी जाति के उत्थान अथवा पतन का मुख्य आधार है। हिन्दुओं के शिक्षा संस्थानों की दूसरे धर्मों के शिक्षा संस्थानों से तुलना करने के लिये दोनों को जाकर देखें तो हिन्दुओं के पतन का कारण आपको पता लग जायेगा। आप मुस्लिम मदरसों में जाकर तो देखें। आपकी गुरुकुल पद्यति की जीती-जागती तस्वीरें हैं वहां। एक समय होता था जब गुरुकुल अनुशासन, परस्पर प्रेम, आचार्य-विद्यार्थी सम्बन्धों, उत्तम आचार व्यवहार के नमूने थे। सब नष्ट कर दिया है हमारे कर्ण-धारों ने अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर। किन्तु मुस्लिम मदरसों ने उस प्रणाली को न केवल अपना लिया है अपितु वह आर्य गुरुकुलों के आदर्शों पर उनको चला भी रहे हैं।

प्राय: डाक्टरों के बेटे डाक्टर, इंजीनियर के बेटे इंजीनियर, वकील का बेटा वकील देखेंगे। क्या आपने कभी किसी गुरुकुल के स्नातक स्नातिका को अपने बच्चों को गुरुकुल भेजते देखा है ? नहीं। इससे बड़ा प्रमाण आपकी शिक्षा प्रणाली की असफलता का क्या हो सकता है।

क्रिश्चियन कालिजों मिशनरी कान्वेन्ट्स को देखिये। यह भी गुरुकुलों के आदर्श स्वरूप हैं। वहाँ पर पढ़ाने वाले अधिकतर धार्मिक साधु अथवा साध्वियाँ हैं। किन्तु वह शिक्षा के विषय में कोई समझौता नहीं करते। वहाँ के पढ़े हुये बच्चे डाक्टरी, इंजीनियरी, आई0ए0एस0 इत्यादि परीक्षाओं में पास होकर देश के प्रशासन पर छाते जा रहे हैं। हर एक गुरुकुल एवं डी0ए0वी0-कालिज को अपने यहाँ स्वर्णाक्षरों में अपने उन विद्यार्थियों के नाम की सूची बनाकर टाँगनी चाहिये जो देश के सर्वोच्च पदों पर पहुँचे हैं। हमें पता लगेगा कि यह सूची गुरुकुलों में बहुत छोटी होगी।

मनुष्य यथार्थ में जीता है। कोरी भावुकता से पेट नहीं भरता। गुरुकुलों से निकलने वाले युवक सच्चारित्रता, विद्वता, परिश्रम में अच्छे से अच्छे शिक्षालयों के बच्चों से यदि उत्तम नहीं तो घटिया भी नहीं होते। फिर क्या कारण है कि वह पुरोहित और वैद्यक के ऊपर नहीं

जा पाते? हम गिने-चुने शीर्षस्थ इतिहासविद् शिक्षाविद् अथवा संपादक स्नातकों की बात नहीं कर रहे। वह अपवाद हैं नियम नहीं।

एक गुरुकुल में 500 बच्चे थे। उन्हें मात्र 5000/- वार्षिक सरकारी अनुदान मिलता था। इस सहायता के कारण वह सरकारी अनुशासन से बन्धे थे। सरकारी अनुशासन बुरी बात नही है। किन्तु जब वह आपकी ध्येय प्राप्ति में ही बाधा बनने लगे तो ऐसी सहायता का औचित्य ही क्या रह जाता है। हमारी सरकारी पुस्तकों में से जिस प्रकार हर प्रकार के हिन्दू-गौरव चिन्हों को मिटाने का प्रयास किया जा रहा है वह चिन्ता का विषय है सरकारी अनुदान पा कर आप सरकारी पुस्तकें पढ़ने पर बाध्य हो जाते हैं। इस गुरुकुल में शिक्षा निःशुल्क थी। केवल दस रुपये प्रति विद्यार्थी प्रति वर्ष शिक्षा शुल्क लेने से इन 5000/- वार्षिक की क्षति पूर्ति हो सकती थी । किन्तु उनका कहना था कि गुरुकुल का आदर्श ही निःशुल्क शिक्षा है। यह तर्क कोरी आर्दश-वादिता नहीं तो क्या है ?

गीता में कहा गया है कि मनुष्य जिसकी पूजा करता है उसी को प्राप्त होता है। अधिकांश हिन्दुओं का धर्म पैसा बन कर रह गया है। वह उसकी पूजा करते हैं। इसलिये उनको पैसा ही प्राप्त होता है। उनके मंदिरों में भी वास्तविक पूजा लक्ष्मी की ही होती है। वहाँ भी अतुल धन इकट्ठा होता है।

आज हिन्दू धर्म की व्याख्या कौन कर सकता है ? और वह व्याख्या क्या है ? एक हिन्दू स्कूल के उत्सव पर एक अवकाश प्राप्त शिक्षा निर्देशक का व्याख्यान सुनने को मिला। वह हिन्दू धर्म की व्याख्या कर रहे थे। किन्तु क्या आप विश्वास करेंगे वह यज्ञोपवीत और शिखा से आगे नहीं बढ़ पाये। जब विद्वान लोगों का यह हाल है तो साधारण हिन्दू का ज्ञान अपने धर्म के विषय में कितना होगा।

मुसलमानों ईसाइयों को देखिये। उनके छोटे से बच्चे से पूछ कर देखिये वह आपको अपने धर्म की मोटी-मोटी बातें बता देगा। ठीक है हिन्दू धर्म इतना सीमित नही है। परन्तु वह इतना शून्य भी तो नहीं है। इस अज्ञानता का कारण है। इस्लाम धर्म में सन्यासी तथा पुरोहित नहीं होते। सख्त मनाही है। उनके यहाँ पर हर कोई ऐरा गैरा धर्मोपदेश नहीं दे सकता। धर्मोपदेशक होने के लिए उन्हें मदरसे के माध्यम से उचित शिक्षा प्राप्त होना आवश्यक है। अपने यहाँ देखिये सड़क की पटरियों पर पत्थर रखकर बैठ गये। काला-अक्षर भैंस बराबर। किन्तु भोली-भोली जनता को अपना स्पेशल ब्रान्ड हिन्दू धर्म समझाने की उनको पूरी छूट है।

हमें कुछ वर्ष एक ग्राम में रहने का अवसर मिला। यह एक महानगर से केवल दो तीन मील दूर था और मुख्य मार्ग पर था। जैसा कि हिन्दू मंदिरों में,

हाता है मुख्य मूर्ति हनुमान की थी किन्तु दूसरे सभी हिन्दू देवताओं की मूर्तियाँ भी छोटे-छोटे आलों में रखी थीं।इससे यह लाभ होता है कि किसी भी विशेष देवी-देवता पर श्रद्धा रखने वाला भक्त निराश नहीं लौटता और इस कारण मंदिर की आमदनी बढ़ जाती है। जैसे कि दुकान वही अच्छी होती है जहाँ आपकी सारी आवश्यकतायें एक ही स्थान पर पूरी हो जाँय। कुछ समय पश्चात गाँव में संतोषी माता का ज़ोर बढ़ जाने के कारण उनकी मूर्ति भी एक विशिष्ट स्थान पर रख दी गई।

मंदिर के पुजारी जितने शरीर से भारी भरकम थे उतने ही विद्या बुद्धि में हल्के थे। निपट निरक्षर। किन्तु चलता पुर्जा आदमी था। मंदिर के भक्तों की संख्या बहुत थी। कारण वहाँ एक हैंड पम्प लगा था। बात समझानी पड़ेगी।

मंदिर के सामने से महानगर की ओर सुबह शाम सैकड़ों साईकिल सवार दूध वाले निकलते थे जो महानगर को दूध ले जाते थे। हर साइकिल पर कम से कम 40 किलो दूध होता था। हर दूध वाला मंदिर पर रूकता। पाव भर दूध पुजारी जी को भगवान की पूजा के लिये देता और 5 किलो पानी दूध में मिलाता। लौटते में नगद पैसे हाथ में होते थे। इसलिये मंदिर की दुकान से (पुजारी के भतीजे चलाते थे) परशाद खरीद कर चढ़ाता। यदि उसकी भैंस इत्यादि को कोई कष्ट होता तो दक्षिणा देकर पुजारी से मंत्र पूत डोरा गले में बाँधने के लिये ले जाता।

इस प्रकार मंदिर में मनों दूध इकट्ठा होता था। गाँव की बहुत सी स्त्रियाँ पुजारी की चेली थीं। एक दो तो नियमित रूप से समय वहीं व्यतीत करती थीं। दूध पकाया जाता। मलाई की जितनी आवश्यकता पुजारी एवम् उनकी विशेष चेलियों को होती परशाद के रूप में ले ली जाती। शेष का घी निकाल लिया जाता और बेंच दिया जाता। छाछ साधारण भक्तों को। रू0 किलो के भाव बेच दिया जाता।

हमें भी शुद्ध घी की थोड़ी बहुत आवश्यकता होती थी। हमने अपनी नौकरानी से जो उसी गाँव की रहने वाली थी और पुजारी की पुरानी भक्त रह चुकी थी। मंदिर से घी खरीदकर लाने को कहा। वह समझदार औरत थी। उसने हमारी धर्म पत्नी को रहस्यमय ढंग से बताया कि हम वहाँ से घी न मँगाये बहुत पूछने पर उसने बताया कि पुजारी जी प्रतिमास दसियों टीन वनस्पति घी में मिलाकर बेंचते हैं।

यह पुजारी जी सब को एक ही उपदेश देते थे जो सुबह शाम लाउड स्पीकर पर कीर्तन के रूप में सुना जा सकता था:-

सिया राम सिया राम सिया राम कहिये।
जिस विधि राखे राम उस विधि रहिये।।

आप किसी भी दूसरे धर्म के अनुयायियों में इस प्रकार के धर्मोपदेशक नहीं पायेंगे।

कितना लाभप्रद है हिन्दू मंदिरों

में पुजारी का धंधा ? 10-2-87के इंडियन एक्सप्रेस में छपे एक समाचार में पढ़िये:

ए0 वी0 रमाना दीक्षितुलर परमाणु जीव विज्ञान के विशेषज्ञ हैं। (उनकी इस क्षेत्र में विशिष्टता के कारण) उनको अमेरिका ने छात्र वृत्ति देकर अपने यहाँ आकर शोध कार्य करने को आमंत्रित किया था। किन्तु दीक्षितुलर महोदय ने वहाँ न जा कर दक्षिण के एक मंदिर में पुजारी बनने का निश्चय किया है। इस मंदिर के देवता के पास 1000 करोड़ (एक सहस्र करोड़) रूपये के आभूषण हैं। दूसरी सम्पत्ति इसके अतिरिक्त है। वहाँ चार पुजारी 12000/- मासिक पाते हैं।

आपको कदाचित मालूम न हो अलाउद्दीन खिलजी दक्षिण के मंदिरों को लूट कर 96,000 छयानवे हजार मन सोना ठोस मूर्तियों एवम् मंदिरों पर चढ़ी सोने की चादरों के रूप में 612 हाथियों 20000 घोड़ों पर लादकर दिल्ली लाया था। किंतु हमारा मंदिर बनाने मूर्ति स्थापित करने एवं सोने के आभूषण देवता को चढ़ाने का मोह टूटा नहीं है।

एक समाचार और भी है। दंगे में पुलिस की गोली से मरे एक मुस्लिम युवक के परिवार को सरकार से 20000/- अनुदान मिला। उस अनुदान में अपनी कमाई हुई बचत मिलाकर उस गरीब परिवार ने अपने गाँव में एक इस्लामी मदरसा स्थापित किया । यह है समाज सेवा और धार्मिक भावना।

सैकड़ों कहानियाँ समाचार पत्रों में निकलती रहती हैं। इस प्रकार के आवारा साधुओं गुरूओं तांत्रिकों द्वारा बच्चों की बली चढ़वाने की तथा नव युवतियों को भगा कर ले जाने की। नग्न स्त्रियों द्वारा पूजा भी होती है। देवदासियों के नाम पर वेश्या वृत्ति भी कराई जाती है-क्या है जो नहीं होता धर्म के नाम पर हमारे समाज में। हमसे वह लोग हज़ार गुना अच्छे हैं जो इन कुकृत्यों को कम से कम धर्म के नाम पर तो नहीं करते।

फारसी में कहावत है कि नीम हकीम खतरये जाँ।

अधकचरा हकीम जान के लिये खतरा होता है। फिर अध्यात्म अथवा धर्म जैसे गूढ़ विषय में यदि समाज का भविष्य ऐसे अज्ञानी एवम् कुकर्मी लोगों के हाथों में पड़ जाय या सौंप दिया जाय तो उस समाज की यही दुर्दशा होती है जो आज हिन्दू समाज की है। इस समाज ने तो अपनी आधार शिला ही खोद डाली है।

हमें कुछ पाकिस्तानी टी0 वी0 सीरियल देखने को मिले। बारह-बारह घण्टों के सीरियल और न तो कोई फूहड़ गाना न अर्ध नग्न युवतियों का मटकना, न युवकों की बेहूदा उछल कूद, न बलात्कार अथवा बेडरूम के दृश्य और तो और कोई लड़की बिना बाँहों के ब्लाउज में भी नहीं दिखाई दी। हमारे यहाँ तो कला के नाम पर अश्लीलता को बढ़ावा दिया जा

रहा है। बिना सिगरेट का कश लगाते अथवा अँग्रेजी अंदाज् में शराब पीते कोई दृश्य पूरा ही नहीं होता। उनकी टी0वी0 सीरियलों में बारह घण्टे में एक भी सिगरेट नहीं फूँकी गई न शराब का जाम दिखाई दिया। हाँ चाय काफी के सीन थे। पान मुँह में दबाये भी कोई व्यक्ति दिखाई नहीं देता। हर संवाद मुसलमानों के मिष्ठ भाषण एवम् संस्कृति से ओत प्रोत था। दो मिनट के लिये भी टी0वी0 से हटने को मन न चाहे ऐसी अर्थ युक्त कहानी थी। इन सीरियलों को देख कर हमें अपने फिल्म निर्माताओं और सेंसर पर रोना आ रहा था। जिन्होंने आर्ट के नाम हमारी फिल्मों को विदेशी डांस, विदेशी भौंडे संगीत,नग्नता, सिगरेट और शराब का प्रचार माध्यम बना छोड़ा है।

मूर्ति पूजा के दृश्य तो पाकिस्तानी फिल्मों में होने का प्रश्न ही नहीं उठता। हमारे यहाँ लगभग हर फिल्म में किसी न किसी देवी देवता की पूजा और चमत्कार के दृश्य होते हैं। हमारी तो कुछ फिल्में ही देवी देवता के चमत्कारों पर बनाई जाती हैं। शंकराचार्य के ऊपर बनी फिल्म में भी चमत्कारों की कमी नहीं है। जनता को मूर्ख बनाकर पैसा पैदा करना ही फिल्म निर्माताओं का धर्म बन गया है। एक ऐसे देश में जहाँ शिक्षा का अभाव है अंध-विश्वास का बोलबाला है। इस प्रकार की फिल्में बनाकर तमाम हिन्दू समाज को गुमराह किया जा रहा है। न शासन इसकी चिंता करता है न समाज। और करे भी कैसे जब उसके कर्णधार ही तांत्रिकों में ज्योतिषियों में, अंध विश्वास रखते हों। न हमको लोक का डर रहा न परलोक का। क्या यही हमारी संस्कृति रह गई है?

हमारे यहाँ ऐतिहासिक फिल्में नहीं बन सकतीं। बनेंगी भी तो वह इतिहास न होकर इतिहास का हास्य चित्र{कार्टून} होंगी। क्योंकि हमारा तो 1200 वर्ष का इतिहास गुलामी का इतिहास है। उसमें यदि यदा कदा गुलामी के खिलाफ संघर्ष करने वालों की गाथायें हैं। वह साम्प्रदायिक तनाव पैदा करने के भय से चित्र पट पर उतारी जा नहीं सकती। यदि अकबर का ऐतिहासिक चित्र बनाओगे तो मुसलमान नाराज हो जायेंगे और महमूद गजनवी औरंगजेब पर धर्म निर्पेक्ष ऐतिहासिक चित्र तो बन नहीं सकता। हाँ अँग्रेजों पर गुस्सा उतारा जा सकता है। अब उनकी राजी नाराजी के डर से हम मुक्त हो चुके हैं। वैसे भी वह अपने विपरीत ऐतिहासिक तथ्यों पर नाराज कम होते हैं चाहे वह उनके विरुद्ध ही क्यों न हों।

इन कारणों से भारत के हिन्दू समाज का भविष्य हमें अंधकारमय दिखाई देता है। क्योंकि उसने धर्म को परित्याग कर दिया है। दूसरे धर्मावलम्बियों ने धर्म की वैदिक परिकल्पनाओं को अपना लिया है तो उनका उत्थान तो होना ही है। महर्षि की बात असत्य कैसे हो सकती

है ?

उठ खड़े हो आर्यो उठ खड़े हो। तुम बैठ गये तो हिन्दू समाज बैठ जायगा तुम सो जाओगे तो हिन्दू समाज मर जायगा। तुम्हारा कर्तव्य केवल अपनी उन्नति करना नहीं है। प्रहरी बनाये गये थे तुम तो । प्रहरी के नाते तुम्हारे लाजपत राय, श्रद्धानन्द, लेखराम, राजपाल, बिस्मिल जैसे न जाने कितने लाल बलिदान हो गये। किन्तु वह अपना भार तुमको सौंप गये थे। दिल पर हाथ रखकर सोचो वह उत्तरदायित्व तुमने कितना पूरा किया है? साधारण मनुष्य के सो जाने से इतनी हानि नहीं होती जितनी प्रहरी के सो जाने से। श्रद्धानन्द ने एक चेतावनी दी थी। हिन्दुओं जागो " तुम्हारे धर्म के दुर्ग पर रात्रि के अँधेरे में आक्रमण कर दिया गया है"। जागो आर्य जनों जागो। अब तो तुम दिन के उजाले में अपने ही राज्य में अपनी ही त्रुटियों से नष्ट होने जा रहे हो। कहाँ है तुम्हारा संगठन ओर गाँव गाँव में प्रचार ? कहाँ हैं तुम्हारे वह मन मोहने वाले भजनीक ? कहाँ हैं तुम्हारे धर्म पर जान देने वाले प्रचारक? आज प्रचार के साधन असीम हैं। तुम क्या कर रहे हो ? विदेशों से अरबों रुपया तुम्हारी संस्कृति को नष्ट करने के लिये आ रहा है। लाखों लोग मजार पूजा के बहाने, भूत प्रेत भगाने के बहाने, विदेशों में नौकरियाँ दिलाने के बहाने समान व्यवहार के बहाने तुम्हारे अंग-अंग काट कर तुम्हें अपाहिज बनाते जा रहे हैं। इसलिये जागो हिन्दू प्रहरी आर्यो जागो।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का आदेश

श्री सन्तराम सिंह सेंगर तथा श्री श्याम प्रकाश को क्रमशः दो वर्ष एवं छः वर्ष के लिए अधोहस्ताक्षरकर्ता द्वारा दिनांक- 8-11-88 के निर्णयानुसार आर्यसमाज की प्राथमिक सदस्यता से स्थगित कर दिया है। आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर के तत्वावधान/नाम से कोई भी बैठक/कार्यक्रम उक्त दोनों द्वारा आयोजित /सम्पन्न कराना असंवैधानिक एवं आर्य-प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के आदेश की अवमानना व अवहेलना है। उनके द्वारा आहूत बैठक कार्यक्रम में भाग लेने वाली समाजें भी दोषी समझी जाएंगी, अतएव कानुपर महानगर के आर्य समाजें/आर्य नर/नारी सभा के उक्त आदेश के विरूद्ध किसी के द्वारा कृत किसी भी कार्यक्रम में सहयोग न दें तथा भ्रमित न हों ।

-इन्द्रराज, सभा प्रधान।

-x-x-x-x-x-x-x-x-

आवश्यक सूचना

आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि श्री पं0 इन्द्रराज जी द्वारा शुद्ध हुए दो व्यक्ति राजपाल तथा राजू विभिन्न आर्यसमाजों में श्री पं0 इन्द्रराज जी का पत्र दिखाकर धन ऐंठने का कार्य कर रहे हैं।

अतः सूचनार्थ निवेदन है कि इन्हें किसी प्रकार का धन न देकर सभा प्रधान श्री-पं0 इन्द्रराज जी से मिलने को कहा जाय।

-सम्पादक ।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

आर्यसमाज स्वामी पाडा बुद्दानां गेट में 3 से 9 मार्च तक

पू0 स्वामी जीवनानन्द जी के वेद प्रवचन तथा भजन ।

बनकर घटाएं बरस जाओ

-सन्तोष "कण्व"
§बरेली§

बन्धनों से मुक्ति का
अभियान
अब फिर से चलाओ ।
रूढ़ियों की बेड़ियों में बद्ध मानव
बिलखता
उसको बचाओ।

व्यास-पीठों पर यहाँ
खूनी दरिन्दे दनदनाते,
सन्त वेषों में छिपे
दानव कटारें चमचमाते
हर तरफ विषधर विषैले
जीभ अपनी लपलपाते,
मृत्यु के भीषण शिकंजे
में फँसे नर
तड़फड़ाते,

निशिचरों के राज्य में
राम !
पत्यञ्चा चढ़ाओ ।

रक्त की होली
गली-कूचों में
खेली जा रही है,
माँ-बहन की दिन-दहाड़े
माँग पोंछी जा रही है,
कल उठी डोली थी जिसकी
आज अर्थी जा रही है,
गर्भ के बच्चे तलक
माँ --
यहाँ गिरवा रही है,

इस भयानक रात की
वीभत्सता को
चीर --
पग आगे बढ़ाओ ।

गो-वंश की हत्या यहाँ
निशि-दिन निरन्तर बढ़ रही
देश की तरुणाई
मदिरा-मांस पर ही पल रही है,
हैं, यहाँ मदहोश सब
और --

आग धू-धू जल रही है,
शस्य श्यामल भूमि
"भारत"
मरघट मही सी बन रही है,

आर्यों !
बनकर घटाएं
तुम्हीं अब तो --
बरस जाओ ।

मातृ - भू की लाज
देखो
अब तुम्हारे हाथ में है,
मार्ग दर्शक "ऋषि"
तथा
प्रभु की कृपा भी साथ में है,

हो भले ही पथ कँटीला
और --
मंजिल दूर कितनी
हाथ में "सत्यार्थ" लेकर
शीघ्र
घर से निकल जाओ।

बन्धनों से मुक्ति का
अभियान
अब फिर से चलाओ ।

*****

बोध की रात्रि

रात के उस जागरणकी अर्चनायें हैं न थोड़ी,
प्रात लाने की तुम्हारी साधनाएं हैं न थोड़ी,
भोर की तरुणाइयों पर विश्व की आँखें चकित हैं,
यामिनी में रोशनी की रश्मियाँ तुमने निचोड़ी।

× × ×

तम किया है क्षार जिससे वह किरन की ज्योति लाये,
विश्व को पीयूष बाँटा पर गरल के घूँट पाये,
है किसी में दृष्टि जो व्यक्तित्व की वह दीप्ति देखे,
किस तरह से तुम सुबह के सूर्य बनकर मुस्करायें।

-भदौरिया।

आर्य शिक्षण संस्थाओं को भी धारा ३० का लाभ दिया जाए



अजमेर के डी ए वी सी उ मा विद्यालय के स्थापना शताब्दी समारोह के अवसर पर विद्यालय के भूतपूर्व छात्रों को सम्बोधित करते हुए वरिष्ठ शिक्षाविद् दत्तात्रेय वाब्ले ।

अजमेर, 20 फरवरी : राजस्थान की समस्त आर्यसमाजी शिक्षण संस्थाओं ने एकजुट होकर मांग की है कि अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थाओं के लिए बनाई गई संविधान की धारा 30 का लाभ अन्य शिक्षण संस्थाओं की तरह आर्यसमाज शिक्षण संस्थाओं को भी दिया जाये। यह प्रस्ताव 17 फरवरी को दयानन्द कालेज में डी·ए·वी· सीनियर माध्यमिक विद्यालय अजमेर के स्थापना शताब्दी समारोह के तहत आयोजित शिक्षा संस्थाओं के सम्मेलन में पारित किया गया। आर्यसमाजी संस्थाओं के इस सम्मेलन में राज्य के श्रीगंगा नगर, आबूरोड, अलवर, जयपुर, सुमेरपुर, बांदीकुई और अजमेर आदि के लगभग 100 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सम्मेलन में प्रस्ताव रखते हुये दयानन्द कालेज के पूर्व प्राचार्य एवं स्वागताध्यक्ष श्री दत्तात्रेय आर्य ने कहा कि अल्पसंख्यक धार्मिक शिक्षण संस्थाओं में नैतिक मामलों की रक्षा के लिये बनाए गए संविधान की धारा 30 का लाभ आर्य समाज की शिक्षण संस्थाओं को भी दिया जाना जरूरी है। श्री आर्य ने कहा कि आर्यसमाजी भी अल्पसंख्यक ही हैं इसलिये उन्हें भी ईसाई व मुस्लिम समुदाय की तरह अल्पसंख्यक मानकर आर्य शिक्षण संस्थाओं को संविधान की धारा 30 के अन्तर्गत लाया जाये। राज· आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान छोटू सिंह की अध्यक्षता में अग्रिम कार्यवाही के लिये 21 सदस्यीय समिति का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष श्री दत्तात्रेय आर्य व मंत्री सत्यव्रत सामवेदी होंगे। उ०प्र० के पूर्व गृह मंत्री जगन प्रसाद रावत सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। सम्मेलन का संचालन डी·ए·वी· स्कूल के प्रधानाचार्य श्री रासा सिंह जी ने किया।

मूल की ज्ञान प्राप्ति

श्री पं0 विभुमित्र शास्त्री,
दानापुर कैन्ट, पटना।

पहला दृश्य-

{बाहर चहल-पहल है। कुछ स्त्रियां "का लेके शिव को मनाइव हो, शिवमानत नाहीं" का गीत गाती जा रही हैं। कुछ पुरुष भी पूजा अर्चना का सामान लिए जा रहे हैं। मूल उन्हें दिखाते हुए :-}

मूल - पिताजी, ये लोग कहाँ जा रहे हैं?

पिता - अरे, तुम नहीं जानते? आज शिवरात्रि है। ये लोग शिव की पूजा करने जा रहे हैं।

मूल - पिताजी, मैं भी मन्दिर जाऊँगा। मैं भी पूजा करूँगा।

पिता - नहीं, बेटा नहीं। तुम अभी बच्चे हो, शिव जी की पूजा में लोग उपवास करते हैं। व्रत रखते हैं। तुम अभी बच्चे हो; भूखा नहीं रहा जायेगा।

मूल - नहीं पिता जी, मैं जरूर जाऊँगा। देखिये न, सब लोग जा रहे हैं।

पिता - {माता को दिखाते हुए} अच्छा, देखो, माँ भी इधर ही आ रही है, जरा माँ से भी तो पूछ लो।

{माँ का प्रवेश}

मूल - माँ, आज शिवरात्रि है। लोग शिव मन्दिर में पूजा करने जा रहे हैं। मैं भी पूजा करने जाऊँगा। जाऊँगा न माँ।

माता - नहीं बेटा, नहीं। अभी तुम छोटे हो। बड़े होना तब जाना ।

मूल - ना माँ, मैं अवश्य जाऊँगा। तुम कहो न माँ।

माता - नहीं बेटा, नहीं। तुम भूखे नहीं रह पाओगे। रात में जग नहीं पाओगे।

पिता - अजी, जब बच्चे की इच्छा ही है, तो काहे को रोकती हो। अब यह कोई अबोध थोड़े ही है?

माता - आप को तो अभी से मूल जवान दिखाई पड़ता है। लगता है, इसके व्रत उपवास करने के दिन चले जा रहे हैं?

पिता - अरे, तुम तो लगी मुझसे...... {मूल पिता के मुख पर हाथ रखकर, माता की ओर देखते हुए}

मूल - माँ, मुझे भी जाने दो ना नहीं जाने दोगी तो मैं घर में भी नहीं खाऊँगा, पड़ा-पड़ा केवल रोता रहूँगा।

माता - {मुस्कुराती हुई मूल के मुख को चूम कर} अच्छा, तो जा बेटा जा {पति की ओर देखती हुई} देखो जी, भीड़-भाड़ में बच्चे को संभाल कर रखना ।

मूल - पिता जी, अब मन्दिर चलिये न?

पिता - हाँ, बेटे चलो। शिव जी का दर्शन करें।

{पर्दा गिरता है}

पर्दे के बाहर गीत होता है--

मूल चले शिव खोजने, मंदिर के इकठांव।
भला वहाँ क्यों पाइहैं, जिनके गाँव न ठाँव।।
मों को कहां तू ढूंढत बंदेमैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवालय ना मैं मस्जिद ना काबे कैलाश में।
न तो पूजा पाठ किया में ना साधु के लिवास में।
मैं तो रहौं शहर के बाहर मेरी पुरी मवास में।
कहें कबीर सुनो भाई साधो, सब सांसों की सांस में।।

दूसरा दृश्य

{मन्दिर में भक्तगण पूजा अर्चना में लगे हैं। बीच में शिवलिंग है। प्रधान पुरोहित चन्दन, माला आदि से सुसज्जित हैं। वह बीच-बीच में नमः शिवाय की रट लगाये जा रहा है। कुछ स्त्रियां एक ओर बेल पत्रादि अर्पण कर मंडली में बैठी "का लेके शिव को मनाइबु हो शिव मानतनाहीं" का गीत गाती झूम रही हैं।}

तिवारी जी अपने लड़के मूल के साथ मन्दिर में पहुँचते हैं। शिवजी के

सामने नतमस्तक होते हैं। पुनः अपने पूजा पाठ से बेल पत्र और अक्षत आदि लेकर चढ़ावा करते हैं। पुरोहित जी तिवारी और मूल को रोरी लगाते हैं। आचमनी से जल तथा प्रसादी देते हैं और बैठने का इशारा करते हैं। पुनः "का लेके शिव का मनाइब हो" की स्वर लहरी में झूमने लगते हैं। बीच-बीच में "नमः शिवाय" का उच्चारण करते हुए आलस्य और तन्द्रा की जमुआई लेते हैं। स्त्रियां सिर नवाती हुई चली जाती हैं। तिवारी जी तथा अन्य लोग माला लिए जाप करते हैं। फिर वे सभी शनैः-शनैः सो जाते हैं। रात्रि का सन्नाटा है। इसी बीच एक चूहा बिल से निकल कर चढ़ाए हुए अक्षत को इधर-उधर कर खाने लगता है। मूल सिंहासन में बैठा एक टक शिव की ओर देख रहा है। चूहा के चढ़ते ही उसकी भृकुटि चिन्ता में बदल जाती है।§

मूल- §धीरे से पिता को जगाते हुए§ पिताजी, ओ पिता जी,

पिता- क्या है रे ?

मूल- देखिए न चूहा है। §शब्द सुनकर चूहा भाग जाता है और पिताजी पुनः निद्रित हो जाते हैं। सन्नाटा में चूहा आकर अक्षत आदि को पुनः खाने लगता है§

मूल- §कुछ उच्च स्वर में§ पिताजी, पिताजी, देखिये न, चूहा फिर आकर सारा चढ़ावा खाये जा रहा है। इधर-उधर विष्टा भी कर दे रहा है। §पिता कुछ उन्निद्र होने लगते हैं§ आपने तो कहा था, शिवजी बड़े बलवान हैं, बड़े-बड़े दुष्टों को मारते हैं। भला ये कैसे शिव हैं जो एक चूहे से भी अपनी रक्षा नहीं कर पा रहे हैं?

पिता- चुप रहो, नालायक कहीं का, शिवजी पर संदेह करता है? तुम अभी से क्या जानो शिव को? अभी से कुतर्क करता है।

मूल- नहीं, पिता जी मैं कुतर्क नहीं करता। आपने ही तो कहा था कि वे त्रिशूल लिए.......§बीच में ही डाँटकर§

पिता- क्या कहा था, चुप रहता है कि नहीं, बकवास करने आया है। चुप-चाप "नमः शिवाय" का जाप करो। § कुछ काल तिवारी जी स्वयं जाप करते हैं और शनैः-शनैः सो जाते हैं। मूल कुछ उदास भाव से शिव की ओर देखता रहता है। रात्रि का सन्नाटा है।§

मूल- §अपने आप§ ओह, अजीब बात है? कल ही पिता जी पुराण सुनाते समय कह रहे थे कि वे हिमालय पर रहते हैं, वसहा बैल की सवारी करते हैं, त्रिशूल लिए बड़े-बड़े दुष्टों को मारते हैं। §कुछ रूककर§ किन्तु यहाँ तो कुछ नहीं वे सब। यहाँ तो पत्थर है। इसमें शिवजी की सजीवता, क्रियाशीलता कहाँ है? यह तो पत्थर है पत्थर। फिर पत्थर पूजने से क्या लाभ? §उठते हुए§ मैं घर चलता हूँ। §मूलशंकर उठकर घर चला जाता है।§

§पर्दा गिरता है§

पर्दे से बाहर गीत होता है -

मूल शिवालय में जगे, शिव दर्शन

मूल शिवालय में जगे, शिव दर्शन की आस।
चूहा के मिस हो गया, मन में ऊहा वास।।

× × × × × ×

रूद्र पिनाकी भूतनाथ, शंकर जिसको कहते हैं।
त्रिपुरा सुर का हन्ता जिसको यहां सभी भजते हैं

जो खाता विचरण करता है-यों पुराण कहते हैं।
क्या यह वह ही महादेव? जिसपर चूहे चढ़ते हैं?

नहीं कहता, करता कुछ भी, पत्थर क्योंकर भखेगा।
अपनी रक्षा में अक्षम है, हमको क्या रखेगा।।

महामूर्खता घोर पाप है, इसे उपास्य बनाना।
ढकोसला है वंचकता है जड़ को रूद्र बताना।।

सर्वतोमुखी प्रतिभा के महापुरुष स्वामी दयानन्द सरस्वती

{डा० शकुनचन्द आर्य
स्थान-पो०-लालगंज
जि०- रायबरेली {उ०प्र०}

आधुनिक भारत के महापुरुषों में आर्यसमाज के प्रवर्तक, आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद के जन्मदाता एवं महान् समाजसुधारक स्वामी दयानन्दसरस्वती का प्रमुख स्थान है। जिस प्रकार कि उन्होंने अपने अभूतपूर्व एवं अकाट्य विचारों द्वारा देश के सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों को प्रभावित किया तथा आजीवन ब्रह्मचारी रहकर एवं अपने गुरु की आज्ञानुसार अपना सम्पूर्ण जीवन देश के लिए समर्पित कर देश में सुधार लाने तथा देश की उन्नति के लिए विविध कार्य किये, उनके लिए उनका नाम देश के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा तथा देशवासी सदैव उनके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

जीवनदिशा बदलने वाली शिवरात्रि की वह घटनाः-

स्वामी दयानन्द का जन्म गुजरात के सौराष्ट्र क्षेत्र के टकांरा ग्राम में सन्. 1824ई0 में हुआ था। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था। उनके पिता का नाम पंडित कर्सनजी तिवारी था जो कट्टर शैवभक्त एवं कर्मकांडी थे। पिता की धार्मिक प्रकृति का प्रभाव बालक मूलशंकर पर भी पड़ा जो कि बाल्यावस्था से ही धर्म-कर्म, पूजापाठ तथा अध्ययन में रहने लगा।

जब मूलशंकर 14 वर्ष के हुये तो उनके पिता ने उन्हें शिवरात्रि के दिन शिवजी का व्रत रखवाया। उन्हें नदी के किनारे स्थित शिवमन्दिर में ले जाया गया। वहाँ शिव की मूर्ति की पूजा कर जहाँ उनके पिता समेत अन्य लोग सोगये, मूलजी सच्चे शिव के दर्शन की आशा लगाये हुए सतर्क बैठे रहे। आधी रात में मन्दिर से चूहे निकलकर शिव की मूर्ति के ऊपर चढ़ा हुआ मिष्ठान आदि खाकर पिण्डी पर उछलकूद मचाने लगे। यह देखकर बालक को आश्चर्य हुआ। मूलशंकर सोचने लगे कि "जो शिवजी चूहों से अपनी रक्षा नहीं कर सके, वह मेरी रक्षा क्या करेंगे।" उन्होंने सोते हुए अपने पिता को जगाकर अपनी शंका पिता के सामने रखी। पहले तो पिता जी बहुत रुष्ट हुए परन्तु बाद में समझाते हुए बोले "सच्चे शिव तो कैलाश पर्वत पर रहते है जिनके साक्षात दर्शन कलियुग में असंभव है। यह तो उनकी मूर्ति है जिनमें उनकी भावना रखकर पूजन करने से वे प्रसन्न हो जाते है।" परन्तु पिता के समाधान को बालक की तर्कबुद्धि ने स्वीकार नहीं किया। उसका मूर्तिपूजा के ऊपर से विश्वास उठ गया। उसने प्रतिज्ञा की कि "वह शिव को प्रत्यक्ष देखकर ही उनकी पूजा करेगा" तत्पश्चात् वह रात्रि में ही मन्दिर से घर चले आये और अपनी माता से भोजन माँगकर तथा उसे खाकर शिवरात्रिव्रत को भंग कर दिया।

मूलशंकर से दयानन्द बने

तत्पश्चात कुछ दिनों के अन्दर ही उनकी एक बहिन तथा श्रद्धा के पात्र उनके एक चाचा की मृत्यु होगयी। जिससे उनके मन में वैराग्यभाव उत्पन्न होने लगा। वे "मृत्यु क्या है?" इसके विषय में गम्भीरता-पूर्वक चिन्तन करने लगे। उनका मन गृहस्थ जीवन से ऊबने लगा। उनकी इस स्थिति को देखकर उनके पिता ने उनके विवाह का निश्चय किया, परन्तु इसके पहिले वे घर से भगे। परन्तु पिता द्वारा खोजवाकर पकड़े गये और उनके ऊपर कड़ा पहरा बिठा दिया गया। लेकिन

एक दिन वे पुनः रात्रि के अन्तिम पहर में शौच के बहाने भगे और फिर कभी पिता के हाथ नहीं आये। तत्पश्चात वे सच्चे परमात्मा की खोज में नदी तटों, पहाड़ियों तथा दुर्गम जंगलों का भ्रमण कर साधुओं, योगियों एवं महात्माओं के साथ सत्संग करते रहे। वहीं उन्होंने स्वामी पूर्णानन्द से सन्यास की दीक्षा लेकर सन्यास मार्ग अपना लिया और उनका नाम मूलशंकर से स्वामी दयानन्द हो गया।

गुरु की आज्ञा का सदैव पालन किया

परन्तु उपरोक्त साधुओं, सन्यासियों एवं योगयों के साथ सत्संग के बावजूद स्वामी जी की सच्चे शिव संबंधी शंका का समाधान नही हो सका। इस दृष्टि से वे मथुरा जाकर वेदों के प्रकांड पंडित गुरु विरजानन्द की पाठशाला में भरती हो गए तथा कुछ समय के अन्दर ही वेदों का सच्चा ज्ञान प्राप्त कर महान विद्वान बनने में सफल हुये। शिक्षा समाप्ति के बाद उन्होंने अपने गुरु की इच्छानुसार अपना सम्पूर्ण जीवन गुरु दक्षिणा के रूप में समर्पित कर दिया। और उनके आदेशानुसार आजीवन वेदों के प्रचार, मूर्तिपूजा, आडम्बर, छूआछूत एवं कुरीतियों के उन्मूलन तथा राष्ट्रीय भावनाओं के जागरण में लगे रहे।

महान कार्य

सन् 1875 ई० में बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना स्वामी दयानन्द सरस्वती का सबसे प्रमुख कार्य था। जिस प्रकार कि इस संस्था ने उनकी मृत्यु के बाद उनके विचारों के प्रसार एवं प्रचार, राष्ट्रीय भावनाओं के जागरण, कुरीतियों के उन्मूलन, हिन्दी को देश की राष्ट्रभाषा बनाने तथा देश को स्वाधीन कराने में महत्वपूर्ण योगदान किया, यह उनकी दूरदर्शिता का प्रमाण था। इसके अतिरिक्त उनके द्वारा "सत्यार्थ प्रकाश" ऐसे महान ग्रंथ की रचना तथा गुजराती भाषी होते हुये हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने का उनका प्रयास उनके अन्य महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय कार्य थे।

सर्वतोमुखी प्रतिभा के महापुरुष

निस्सन्देह स्वामी दयानन्द सरस्वती सर्वतोमुखी प्रतिभा के महापुरुष थे। जहाँ समाजसुधारक के रूप में उनकी तुलना संत कबीर, नानक, राजाराम मोहन राय, सुकरात तथा मार्टिन लूथर के साथ की जा सकती है, विद्वता में वे आदि शंकराचार्य के समान, देशभक्ति में वे समर्थ गुरु रामदास तथा चाणक्य के समान तथा अनेक मामलों में अद्वितीय थे। निश्चय ही उनके ब्रह्मचर्य, साहस, निर्भयता, स्वदेशीभावना, सहिष्णुता, शौर्य, वाकपटुता, दृढ़संकल्प एवं नैतिकता के आदर्श युगों-युगों तक देश वासियों को प्रेरणा देते रहेंगे।

x-x-x-x-x-x

बोध रात्रि

ले० पूर्ण प्रकाश मित्तल"मानव"
बिजनौर

शिवरात्री हुई बोधरात्री, मूलशंकर जागा।
झूँठे शिव से तोड़ा नाता,सच्चे शिव को भागा।।
जंगल-जंगल भटका बालक,
सच्चा शिव पाने को ।
सभी सुखों को त्यागा उसने,
ज्ञान दीप जलाने को ।।
कहाँ मिलेगा सच्चा शिव प्यारा,
इस खोज में घूमा धाम-धाम वह।
भूख प्यास की चिन्ता छोड़ी,
ज्ञान खोज में लगा रहा वह। ।
आखिर विरजानन्द के द्वारे,
जा उसने अलख जगाई।
कौन हूँ मैं, मुझे बता दो,
कह उसने टेर लगाई ।।
वेदों का अमृत पान कर,
पाखण्ड गढ़ों को तोड़ा ।
भटके दुनिया वालों को,
वैदिक धर्म से जोड़ा ।।
आज ऋणी है हम सब उनके,
उनका कार्य पूर्ण करें ।
रूढ़ी पाखण्डीपन को भाई,
हम दुनियां से दूर करें ।।

प्यारा शंकर मन्दिर आया, किन्तु न शंकर शिव को पाया

-लक्ष्मी नारायण शास्त्री, साहित्य रत्न
आर्य समाज लोकहवा - गोण्डा।

आज मूल शंकर शंकर पर चिन्तन करने मन्दिर आया,
मात - पिता सब ऊँघ रहे हैं इतने में मूषक चढ़ आया ।

उछल कूद वह खूब कर रहा प्रतिमा का नैवेद्य खा गया,
किन्तु न शंकर कंकर बोले, बालक शंकर मूक हो गया ।

जगा दिया तत्काल पिता को, औ पंडित से किया प्रश्न,
अभी आपने शिव पुरुष में, शिव की महिमा कहीं अनन्त ।

वह महान् शंकर दुष्टों का क्षण में कर देते हैं संहार,
भस्मा सुर औ वाणा सुर को क्षण में कर देते हैं सहार ।

किन्तु आज मैं देख रहा हूँ, घटी एक घटना है महान्
शिव जी की इस प्रतिमा पर इक दौड़ रहा मूषक नादान।

इधर-उधर वह दौड़-दौड़ कर शिव पर उछल-उछल कर कूदा,
किन्तु न शंकर भोले बोले, जो नैवेद्य उसे ले कूदा ।

क्या पंडित यह वही है शंकर, जिसकी कथा है शिव पुराण में,
जिसकी कथा को पढ़-पढ़ करके हमें सुनाया शिव पुराण में।

पंडित जी ने कहा कि बच्चे वह शंकर कैलाश रह रहा,
हम सब उसकी प्रतिमा पूँजे वह तो है कैलाश रह रहा ।

शंकर मूल की आँख खुल गई अब मैं सच्चा शंकर ढूँढूँ,
शंकर वह पाषाण नहीं है अब सच्चा शंकर मैं ढूँढू ।

सच्चे शिव की ज्योति जल गई प्यारे शंकर मानस में,
उसे ढूँढ़कर हम सब ने भी ज्योति जलाई मानस में ।

बोध रात्रि यह दयानन्द की प्रतिवर्ष आती रहती है,
हम सब को है बोध कराने पावन बेला आती है ।

प्रवोध की प्रेरक शिवरात्रि

§डॉ0 §श्रीमती§ महाश्वेता चतुर्वेदी,
प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज, बरेली§

साधारणजन साधारण उपलब्धियों में ही सन्तुष्ट रहते हैं। चाहे कोई महान घटना हो, या साधारण प्रसंग, उन्हें किसी में कोई अद्भुत शक्ति नहीं दिखाई पड़ती। परम्परा या रूढ़ि से जुड़कर, अपना जीवन यान चलाते संसार से विदा हो जाते हैं। "अमरता" की चर्चा जिन्हें मात्र उपहास की वस्तु होती है। किन्तु असाधारण सुधी मानवों को सृष्टि के कण-कण में एक अद्भुत प्रेरणा समाहित मिलती है। ऐसे युगपुरूषों में महर्षि दयानन्द प्रमुख हैं, जिन्हें "शिवरात्रि" ने सच्चे शिव की खोज को प्रेरित किया

शिव की प्रस्तर मूर्ति पर घूमने वाले चूहे को देखकर देवदयानन्द की आस्था मूर्ति-पूजा से तुरन्त हट गयी एवं वैचारिक क्रान्ति ने उन्हें सच्चे शिव की खोज में साधनारत कर दिया। साधारण जन तर्कबुद्धि से हीन, अन्धानुकरण करते रहते हैं। "क्यों" और "कैसे" की जिज्ञासा का उदय उनकी मलिनबुद्धि में नहीं होता। पुरामात्मा सुधीजन ही जिज्ञासाओं के प्रश्नों को सुलझा ने में अपना निखिल जीवन अर्पित कर देते हैं। संसार में कितने ऐसे महामानव होते हैं जो तर्क की कसौटी पर कस कर प्रत्येक बात को स्वीकार करें। मृत्यु के भय से त्रस्त होकर भी साधारण जन मुक्ति का कोई उपाय नहीं करते, संघर्षों में हारकर भी विजय की कामना नहीं, जीवन के चापल्य को देखकर भी अमरता की चाह नहीं, ऐसे बेसुध जन जीवन में लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाते। किन्तु महापुरूषों का जीवन परोपकार के लिए होता है, विद्याविलास में अनुरक्त, धैर्य आदि गुणों से मंडित सत्यव्रती, समत्वभाव समान्वित, सुधीजन संसार में परोपकार के लिए ही अवतरित होते हैं-

"विद्याविलास मनसो धृतशील शिक्षा सत्यव्रत रहित मान मलाप हारो।
संसार दुःख दल ने न विभूयिता ये धन्याः नराः विहित कर्म परोपकारः ।।
§दयानन्द : सत्यार्थ प्रकाश"§

देवदयानन्द महामानव थे, जो यशशरीर से अमर हैं:- "कीर्तिर्यस्य सः जीवति।" मूलशंकर के पिता कर्षण जी नैष्ठिक शिव थे, और पार्थिक पूजन करते थे, उनकी इच्छा था कि उनका पुत्र भी शिवम् के बने। मूलशंकर ने अपने पिता का आज्ञानुसार, कठोर साधना के द्वारा, वेद-पथ का अविराम पथिक बन सच्चे-शिव को अन्ततः खोज कर अमरत्व प्राप्त कर लिया।

मूलशंकर की दो अभिलाषायें थी, एक सच्चे शिव की प्राप्ति, दूसरी मृत्यु पर विजय प्राप्त करना। गुरू विरजानन्द को प्राप्त कर, मूलशंकर से बने दयानन्द ने जीवन का सर्वस्व पा लिया। दयानन्द जब प्रथम बार दण्डी जी की कुटिया पर पहुँचे और द्वार खटखटाया, तो अन्दर से प्रश्न आया "कौन है?" दयानन्द ने विनम्रभाव से उत्तर दिया "मैं कौन हूँ", यही जानने, आपकी शरण में आया हूँ।" किन्तु द्वार नही खुला और अन्य प्रश्न हुआ- "क्या कुछ पढ़े भी हो?" दयानन्द ने जो कुछ पढ़ा था, सब कह सुनाया। पुनः उत्तर आया- "आज तक तुमने जो मनुष्यकृत ग्रन्थों में पढ़ा है, वह सब अनार्ष है, उसे भुला दो। ऐसे ग्रन्थों को यमुना में फेंक दो।" दयानन्द विलक्षण पुरूष थे। आदेशानुसार, सारे अनार्षग्रन्थ यमुना में फेंक कर, दण्डी गुरू के चरणों में आकर बोले "महाराज ! पुस्तकें यमुना में फेंक आया, साथ ही पुराना जो कुछ पढ़ा था, विस्मृत कर हृदय पट को स्वच्छ कर लिया है। दण्डी जी का द्वार खुल गया और देवदयानन्द को प्रवेश की अनुमति मिल गई। विलक्षण शिष्य को पाकर गुरू विरजानन्द भी आनन्दित थे। विलक्षण शिष्य को प्राप्त कर उन्होंने अपना

सारा ज्ञान दयानन्द के निर्मल हृदय सागर में उड़ेल दिया। अज्ञान का अन्धकार दूर करने के कारण ही "गुरु" "गुरु" है-
"गु - शब्दस्त्वन्धकारः रु- शब्दस्त्वन्निरोधकः।
अन्धकार निरोधत्वात् गुरु हित्याभिधीमते।।"

गुरु भी ब्रहमा के समान जिज्ञासु - साधक की सृष्टि करता है।

वशिष्ठ के शिष्य "राम" सन्दीपन के "श्रीकृष्ण" परशुराम के कर्ण, द्रोणाचार्य के एकलव्य, चाणक्य के चन्द्रगुप्त, समर्थ-रामदास के शिवाजी, गुरु विरजानन्द के स्वामी दयानन्द, तथा स्वामी रामकृष्ण परमहंस के स्वामी विवेकानन्द आदि की यशो गाथा प्रसिद्ध है। यदि तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाये, तो देव दयानन्द इन सबसे विलक्षण हैं।

गुरु विरजानन्द इन से "काल जिहन" तथा "कुलक्कर" कह कर सम्बोधित करते थे। "काल जिहव" का अर्थ है असत्य और भ्रान्ति जाल को "उच्छेद" करने वाला, "कुलक्कर" का अर्थ हैं "खूँटे के समान दृढ़" और अविचलित रहकर विपक्षी को पराभूत करने वाला। देवदयानन्द ने भावी-जीवन में कान्तिदर्शी गुरु की इन दोनों उपाधियों को सर्वथा पूर्ण करके दिखा दिया।

ऋषि दयानन्द का तर्कसम्मत विचार था कि ज्ञान का संपूर्ण आधार सृष्टि के आदि में ईश्वर प्रदत्त वेदवाणी में वर्णित है। उन्होंने अपूर्व पाडित्य से यह सिद्ध किया कि "वेद" सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है तथा उसमें कोई भी बात सत्य, विज्ञान, युक्ति और प्रकृति के नियमों के विरुद्ध नहीं है। ऋषि दयानन्द चाहते थे कि सभी मजहबों को पृथ्वी से मिटाकर केवल सार्वभौम वैदिक धर्म के स्वरूप को सब समझें, तथा केवल "मानव-जाति" हो।

महर्षि दयानन्द ने विश्वजनीन वैदिक-धर्म के प्रसारार्थ, अनेक शास्त्रार्थों को कर सत्य का स्वरूप मानव मात्र के कल्याणार्थ प्रस्तुत किया। उन्होंने लगभग इकतालिस पुस्तकें ऋग्वेद भाष्य, यजुर्वेद भाष्य, वेदविरुद्ध मत खंडन, व्यवहारभानु, सत्यार्थ-प्रकाश आदि, लोक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर लिखीं हैं।

ऋषि की दृष्टि में "धर्म" वही है जिसका विरोधी कोई भी न हो सके, उनके अनुसार "मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूँ कि जो तीनकाल में सब को एकसा मानने योग्य है। जो सत्य है उसका मानना-मनवाना, और जो असत्य है उसका छोड़ना-छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है।" ऋषि का आदेश था "अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे।

देव दयानन्द ने नारी-जाति के उद्धार के लिए जो कुछ किया, वह अवर्णनीय है। उन्होंने स्मृति वाक्य का उद्घोष सबल "शब्दों में पुनः किया "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता ।"

मूर्तिपूजा, अवतारवाद, छुआछूत, अन्धविश्वास, भूतप्रेतादि और मतमतान्तरों के ऋषि प्रबलतम विरोधी थे, और इन्हें वे मनुष्य जाति के पतन का कारण मानते थे।

वस्तुतः देवदयानन्द वर्तमान भारत के निर्माता थे वे एक ऐसे प्रकाश स्तम्भ हैं जिन्होंने असख्य मनुष्यों को सत्य का मार्ग दर्शाया जो "वेद-पथ" ही है। जिस "शिवरात्रि" ने महर्षि दयानन्द के जीवन में इतना कान्तिकारी परिवर्तन किया, वही "शिवरात्रि" साधारण जड़बुद्धि जनों को जागृत करने में असमर्थ है। अधिकांशतः अनेक जन "महाशिवरात्रि" की मूलप्रेरणा को न समझकर, आज भी शिव की प्रस्तर प्रतिमा को पूज कर अपने उपवास की इतिश्री समझ बैठते हैं।

"तर्क" के द्वारा सत्यासत्य का निर्णय करना विवेक की पहचान है, वैदिक ऋचाएँ मन को शिवसंकल्पमय बनाने की प्रेरणा देती हैं:-

"तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु" यदि विचार और संकल्प कल्याणमय होंगे तब हानि की

आर्यों को उद्बोधन

"सजल" आनन्द ट्यूब कम्पनी, लखनऊ।

भावना के इस विकल तूफान में तुम क्यों खड़े हो?
झेलते हो तप्त शीतल, वेदना से क्यों घिरे हो?
आह । क्या है इस जगत में, किस लिए है यह उदासी?
दो पलों की जिन्दगी का मनुज कोई है न साथी ।
कर्म की हर श्रृंखला को प्रत्येक पल छूना पड़ेगा ।
है कहाँ विश्राम जीवन संघर्षमय करना पड़ेगा ।
भावना को त्यागकर पत्थर तुम्हें बनना पड़ेगा ।
इस जगत की रीति है कि प्रीति से लड़ना पड़ेगा ।
हो खड़े जीवन समर में मत कल्पना के साथ उड़ना ।
या विषादित हो न पथ में वेदना के साथ रहना ।
जब तक जियो चलते रहो पर वीरता के साथ चलना ।
दुःख, द्वन्द, दुधर्ष वासना की आँधियों के साथ लड़ना ।

सम्भावना ही निर्मूल हो जायेगी और सच्चे शिव की प्राप्ति होगी। सच्चे शिव को साधना के पथ पर चलकर ही प्राप्त किया जा सकता है।

"प्रबोध" की प्रेरक "शिवरात्रि" का स्वरूप केवल मननशील मानव ही समझ सकता है। ऋषि दयानन्द ने सच्चे शिव को जानकर सारे संसार के लिए शिव का कल्याणमय स्वरूप प्रस्तुत किया। अस्थिपंजर रूप कैलाश मानव का शरीर है जहाँ सच्चे शिव का निवास है उससे परिचय होना एवं ज्ञानानल को प्राप्त करना ही सच्चा-शिवत्व है। इस नाशवान शरीर की सार्थकता इसी में है कि इसका लक्ष्य समझ कर अमरता की ओर बढ़ें:-

"आदमी का जिस्म क्या है जिस पे शैदा है जहाँ,
ऐ मिट्टी की इमारत एक मिट्टी का मकां ।
खून का गारा लगा है, ईंट जिसमें हड्डियाँ,
चन्द श्वासों पे खड़ा है ये ख्याली आशियां ।।"

महर्षि दयानन्द के प्रति सच्ची आस्था यही है कि हम वेद-पथ पर चलें, तथा ज्ञानानल द्वारा अन्धश्रद्धा और पाखण्ड के तिमिर को दूर भागायें ।

विश्व कल्याण महायज्ञ उड़ीसा

दिनांक 9-2-1989 से 12-2-1989 तक उड़ीसा के सम्बलपुर जनपद के नोआपाली नामक स्थान पर विश्व कल्याण महायज्ञ का विशाल आयोजन किया गया। जिसमें हजारों स्थानीय तथा बाहर से आए नर नारियों ने भाग लिया। इस चार दिन का चलने वाला महायज्ञ का कार्यक्रम बड़ा ही सुव्यवस्थित तथा व्यस्त था।

दिनांक 9-2-1989

प्रातः 7·30 से 10 बजे तक यज्ञ, भजन व प्रवचन। प्रातः 10 बजे से 10·30 तक ध्वजोत्तोलन। उदघाटन भाषण पूज्य स्वामी विवेकानन्द सरस्वती। मध्यान्ह 12 बजे से 2 बजे तक भोजन और विश्राम। मध्यान्ह 2 बजे से 4 बजे तक धर्म महासम्मेलन (मानव धर्म का विवेचन) अध्यक्ष - स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, उड़ीसा। संयोजक-आचार्य वृहस्पति एम०ए०। 4·30 से 5·30 बजे तक सायंकालीन यज्ञ। रात्रि 8 बजे से रात्रि 10 बजे तक भक्ति संगीत, उपदेश व प्रवचन।

दिनांक 10-2-1989 शुक्रवार

इधर यज्ञ प्रांगण में प्रातः 7·30 बजे से 10 बजे तक यज्ञ चल रहा था। उधर स्थानीय ग्रामवासियों द्वारा आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी का परंपरा ढंग से पद प्रक्षालेन तथा माल्यार्पण और आरती के द्वारा हार्दिक स्वागत किया जा रहा था। इस स्वागत कार्य में ग्राम वासियों की सरलता, निश्छलता तथा धर्म और संस्कृति प्रेम का यथार्थ अनुभव हुआ। सारा ग्राम वातावरण भारत माता की जय, वैदिक धर्म की जय, स्वामी दयानन्द सरस्वती की जय तथा वन्देमातरम् की जयकारों से गुंजायमान हो उठा था।

10 बजे से 12 बजे तक योग सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी ने की। इस सम्मेलन में अतिथि, वक्ता, आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पं० इन्द्रराज जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मनुष्य सारी सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ है तथा मनुष्य का शरीर ईश्वर का निवास स्थान है। उन्होंने मनुष्य के आचार-विचार पर उसके खान-पान के बारे में हमेशा संयमित रहना चाहिए। परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग योग है। सत्य, धर्म, सेवा, अहिंसा तथा न्याय से पूर्ण कर्तव्य ही योग है। इसके पश्चात अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने योग की महत्ता पर विद्वतापूर्ण प्रकाश डाला। एक युवा उड़िया कवि ने योग की महत्ता पर कविता पाठ किया। पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने जीवन की पूर्णता में योग की आवश्यकता तथा भूमिका का विद्वतापूर्वक विवेचन किया। अन्त में स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में योग की आवश्यकता तथा महत्ता पर वेदोद्धारित प्रवचन किया।

वेद महासम्मेलन

3 बजे मध्यान्ह दूसरी बैठक "वेद महासम्मेलन" से प्रारम्भ हुई। इसकी अध्यक्षता श्री गंगाधर जी गुरू ने की। सर्वप्रथम ब्रह्मचारियों ने मन्त्र पाठ किया, यह सभी ब्रह्मचारी गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के थे। स्वामी विश्वामित्रानन्द जी ने अपने प्रवचन में धर्म व्याख्या करते हुए "वैदिक धर्म ही सत्य है, एक है" को विभिन्न उद्धरणों के द्वारा सत्यापित किया। तदोपरान्त अनेक विद्वानों ने अपने विचारों से जन समुदाय "श्रद्धालुजनों" का ज्ञान वर्धन किया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान पं० इन्द्रराज जी ने कहा कि जिस तरह सूर्य का प्रकाश बिना किसी भेद-भाव के सबको प्राप्त होता है, उसी प्रकार वेदों का ज्ञान बिना किसी भेदभाव के सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय है। सबको अधिकार

हैकि वह वेदामृत का पान करे। जिसप्रकार हम प्राण के बिना जी नहीं सकते उसी तरह वेदों के बिना मुक्ति नहीं हो सकती। सबको गायत्री मन्त्र का पाठ करना चाहिए जिससे सबके मन तथा हृदय पवित्र बन सकें। इन्होंने एक भजन गाया। तत्पश्चात गुरूकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारी श्री वाचस्पति मिश्र ने "पावमानी" के ऊपर प्रकाश डाला। अपने सम्बोधन में जयन्त कुमार जी ने पूर्ण श्रद्धामय हृदय से मन, कर्म, वचन से वैदिक धर्म का पालन करने का आग्रह किया।

4·30 बजे से 5 30 तक सांयकालीन यज्ञ तथा प्रवचन एवं साढ़े सात से 10बजे रात्रि तक भजन, प्रवचन का कार्यक्रम हुआ।

दिनांक- 11-2-89 शनिवार

प्रातः 7:30 बजे से 10 तक यज्ञ-हवन व प्रवचन तथा 10 बजे से 2बजे तक भाषण और तर्क प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इस प्रतियोगिता की अध्यक्षता श्री नित्यानन्द नायक, प्राचार्य घेस महाविद्यालय ने की। इस प्रतियोगिता का आयोजन नवमी तथा दशमी के छात्रों के लिए किया गया। यह विषय था **"भारत के नव निर्माण में छात्रों का कर्तव्य"**।

इस प्रतियोगिता में निम्न विद्यालयों तथा महाविद्यालयों ने भाग लिया।

विद्यालय:-

1- नेशनल हाईस्कूल, नवापाड़ा, जिला-कालाहाण्डी।
2- बापू जी हाईस्कूल गुदरेपली, सम्बलपुर।
3- देऊली उच्चविद्यालय सती भटा।
4- गंगाधर मेहेर उच्चविद्यालय, दोहता सम्बलपुर।
5- राज बोडासम्बर हाईस्कूल बदमपुर।
6- टेमरी हाईस्कूल सम्बलपुर।
7- जमला हाईस्कूल सम्बलपुर।
8- बुद्धदेव उच्च विद्यालय गानियापाली।
9- सत्यसेवा हाईस्कूल, कनीसिंहा।
10- घेंस हाईस्कूल, घेंस।

महाविद्यालय:-

1- घेंस कालेज सम्बलपुर।
2- वोकेशनल कालेज नवापाड़ा।
3- अंचल महाविद्यालय, पदमपुर।
4- सम्बलपुर विश्वविद्यालय, ज्योतिविहार।

भाषण प्रतियोगिता में पुरस्कृत छात्रों के नाम निम्नलिखित हैं।

प्रथम - श्री रहिम कुमार मेहेरे जमला हाईस्कूल
द्वितीय - श्री रविशकर प्रधान, बुद्धदेव उच्चविद्यालय गनिया पाली।
तृतीय - श्री अक्षय कुमार प्रधान, सत्यसेवा हाईस्कूल कनीसिंहा।

तर्क प्रतियोगिता में:-

प्रथम - कुमारी नेत्रवती साहू, घेंसकालिज।
द्वितीय - प्रदेशी वारिक, सम्बलपुर विश्वविद्यालय।
तृतीय - श्री वीरेन्द्र कुमार दास, अंचल-महाविद्यालय पदमपुर।

सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरण आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज-जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। सायंकाल- 5-15 बजे नोआजुली ग्राम में आर्यसमाज का शिलान्यास श्री पं0 इन्द्रराज-जी सभा प्रधान द्वारा सम्पन्न हुआ। शिलान्यास के पश्चात् हुई बैठक में ग्राम के संभ्रांत व्यक्तियों के द्वारा लगभग दस हजार रू0 के दान की घोषणा की गई।

दिनांक- 12-2-89 रविवार

प्रातः 7-30 बजे से 10बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति, भजन तथा पूज्य स्वामी-विवेकानन्द जी का प्रवचन हुआ।

10 से 12 बजे तक अतिथियों का प्रवचन हुआ। इस प्रवचन माला में आर्य प्र0सभा उ0प्र0 के उपदेशक जयन्त कुमार जी ने अपने प्रवचन में ईसाई मिशनों तथा पादरियों द्वारा किए जा रहे व्यापक धर्म परिवर्तन अभियान को देश की अखण्डता, एकता तथा सुरक्षा का गंभीर खतरा बताया। उन्होंने अपने राष्ट धर्म, संस्कृति की रक्षा

के लिए एक जुट होकर संघर्ष करने की अपील की। इसके पश्चात् अनेक मूर्धन्य विद्वानों ने अपने ओजस्वी और विद्वतापूर्ण प्रवचनों में विधर्मियों और देशद्रोहियों से लोगों को सावधान रहने को कहा।

12 बजे से गरीब, विधवाएं, अपंगों, विकलांगों अनाथों तथा बेसहारों को वस्त्र वितरण का कार्यक्रम श्री पं० इन्द्रराज जी की देख-रेख में पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी द्वारा सम्पन्न किया गया। इस समारोह में वस्त्र वितरण कार्य के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश द्वारा पांच हजार रु० का वस्त्र प्रदान किया गया और पांच हजार लघु पुस्तकाएं गायत्रीमंत्र तथा उसकी व्याख्या उड़िया भाषा में स्वामी समर्पणानन्द जी द्वारा प्रदान की गई।

इस संपूर्ण विश्व कल्याण यज्ञ के आयोजन, भोजन व्यवस्था वितरण व्यवस्था, संचालन व्यवस्था, संग्रह कार्य इत्यादि में सर्वश्री धरमपाल जी बड़ावद मेरठ, श्री-सौदान सिंह जी खानपुर मेरठ, गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारीगण डॉ० मुरारीबाबू-शोभा राम प्रेमी जी तथा स्थानीय कार्यकर्ताओं का प्रशंसनीय योगदान रहा। अंत में स्वामी-विवेकानन्द जी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पू० इन्द्रराज जी ने इस सारे आयोजन में अपनी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका के लिए बधाई तथा साधुवाद के सुपात्र हैं क्योंकि उनके सहयोग के बिना यह "विश्व-कल्याण महायज्ञ" सफल नहोता। इसमें संदेह है।

स्वामी विवेकानन्द जी, श्री धर्मपाल जी, श्री सौदान सिंह जी, तथा अनेक ब्रह्मचारियों के साथ फूलवानी क्षेत्र का निरीक्षण किया। वहाँ पर प्रत्येक 4 किलोमीटर की दूरी पर एक चर्च है। फूलवानी क्षेत्र में ईसाइयों का प्रभुत्व तथा गुण्डागर्दी अपनी परम सीमा पर है। ईसाइयों ने उस क्षेत्र में स्थित यज्ञ स्थल को खेल का मैदान बना लिया है। अतिरिक्त खेल के मैदान होते हुए भी यज्ञ स्थल को अपवित्र करना तथा जबरन कब्जा रखना अपनी कार्य सूची का अंग बना लिया है। यदि ईसाइयों के इस दुस्साहस को नहीं रोका गया तो भविष्य में किसी भी तरह का वैदिक धार्मिक अनुष्ठान करना कठिन हो जायगा। फूलवानी जाने पर

शिवरात्रि व्रत और ऋषिबोध

वेदमित्र ठपुड़वाले,
72-बी गोविन्दनगर अम्बालाकैंट

पिता दिवस शिवरात्रि,कहा मूल समझाय
त्रयोदशी की सुन कथा, व्रत को खूब निभाय
सुनीकथा जो मूल जी, कर शिव पर विश्वास
रखने का निश्चय किया, रात समय उपवास
चतुर्दशी की शाम को, बस्ती पुरुष विशेष
बेटे ले मन्दिर गये, जागन के उद्देश्य
अर्धरात की नींद में लगे झूमने लोग
मन्दिर में ही सो गये, लगा मूर्ति-भोग,
कर्षन जी भी सो गये, सोया नाहिं मूल
व्रत का फल ना नष्ट हो हो ना ऐसी भूल
जल के छींटे डालकर, निंदिया दूर भगाय
देखा तब इक मूल ने, चूहा भोग उड़ाय
यह सब लीला देखकर, मन में उठा विचार
क्या यही शिव देव है, जो पाले संसार
निज रक्षा न कर सके, मिट्टी का भगवान
सच्चा शिव तो और है, जिसका नहीं ज्ञान
भ्रम निवारणा के लिये, बालक पिता जगाय
मन को लगी न एक भी, पिता बहुत समझाय
एक सिपाही साथ ले, बालक घर में आय
ले खाने को मात से, लीनो भूख मिटाय।

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

स्वामी ब्रह्मानन्द श्री द्वारा सचालित गुरुकुल को देखा। स्वामी ब्रह्मानन्द जी द्वारा गुरुकुल का संचालन तथा धर्म प्रचार का कार्य प्रशंसनीय ढंग से किया जा रहा है।

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती 1950 से उड़ीसा में सेवा धर्म प्रचार कर रहे हैं। इनके निर्देशन में 6 गुरुकुल-आश्रम, 5 उच्चविद्यालय, 5 अनाथाश्रम (शिशु भवन) तथा 4 आश्रम चलते हैं। लगभग 20 हजार शुद्धि इनके द्वारा की गई है। इस तरह से धर्म सेवा का प्रशसनीय कार्य कर रहे हैं ।

चारों दिन ऋषिलंगर में लगभग तीस हजार नर-नारियों ने निःशुल्क भोजन किया।

इनका पता है:- प्रभु भक्ति आश्रम, पो० आफिस-गोभगा जिला-सम्बलपुर। उड़ीसा - 76811

-जयन्त कुमार पाण्डेय (आर्यपुत्र)
उपदेशक आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र०।

वेद प्रचार हेतु आवाहन

वर्तमान समय में आर्य {हिन्दू} जाति की दयनीय अवस्था का स्वरूप यत्र-तत्र-सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। हिन्दू समाज अपनी पहचान खोता जा रहा है। आर्य जाति की पहचान उसकी अपनी वैदिक संस्कृति और धर्म है तथा प्रत्येक हिन्दू समाज के परिवार की पहचान है उसकी वैदिक पद्धति पर आधारित दिनचर्या। प्राचीन काल में प्रातःकालीन सूर्य रश्मियों का प्रत्येक हिन्दू परिवार यज्ञ और सुमधुर मन्त्रों से स्वागत करता था और इस प्रकार परिवार का प्रत्येक सदस्य पूरे दिन परमेश्वर की कृपा तथा समीप्य का अनुभव करता था। प्रातः सम्पन्न यज्ञ के मन्त्रों का मनन और तदनुसार आचरण आर्य {हिन्दू} परिवारों की विशेषता थी। परन्तु आज पाश्चात्य भाषा और सभ्यता ने भारतीय समाज को पंगु और निस्तेज बना दिया है। वेदमन्त्रों के व्यापक और व्यावहारिक निर्देशों की अवहेलना करके युवावर्ग पूरी तरह दिग्भ्रमित हो गया है। जिस पाश्चात्य संस्कृति के खोखलेपन का अनुभव करके, पश्चिम शांति की आस में आर्यदेश {भारत} की ओर देख रहा है उसी खोखली सभ्यता का वरण करके भारतीय युवा गौरान्वित अनुभव करते हैं। परिणाम स्वरूप युवाओं में वीभत्स स्वछन्द यौनाचार, नास्तिकता, गर्भपात, अनैतिकता और ड्रग्स, हेरोइन, चरस और मेन्ड्रेक्स, ब्राउन सुगर जैसी घातक नशीली पद्धतियों का प्रयोग बढ़ा है और आत्मदाह की प्रवित्ति शनैः-शनैः भयावह रूप धारण कर रही है। यदि भारतीय समाज का प्रबुद्ध और आस्तिक वर्ग जागरूक होकर इस खतरे का प्रतिरोध करने के लिए पूरी शक्ति और क्षमता से तत्पर नहीं हुआ तो राष्ट्र का अस्तित्व और स्थाईत्व खतरे में पड़ जायगा। इस खतरे का सामना निस्वार्थ, समर्पित और मनोवैज्ञानिक ढंग से करना होगा। युवाओं में इस रोंगटे खड़े करने वाले खतरे के प्रति जागरूकता पैदा करने का कार्य सभी धार्मिक, सामाजिक और सरकारी संस्थाओं द्वारा किया जाना चाहिये। परन्तु दुख और क्षोभ तो इस बात का है कि हमारी अधिकांश सामाजिक, धार्मिक तथा राजनैतिक संस्थाएं आपसी कलह पदलिप्सा, भ्रष्टाचार और स्वार्थ प्रेरित उठा-पटक की शिकार होकर रह गई हैं। ऐसी अवस्था में इस राष्ट्रघाती और धर्मघाती समस्या का सामना कौन करे? और युवाओं को जाग्रत करने का दुरूह कार्य कौन करे?

इस कठिन, दुरूह लेकिन महान कार्य के लिए समर्पित निस्वार्थ और राष्ट्र तथा संस्कृति प्रेमी युवाओं को आगे आना चाहिये।

वैदिक धर्म {हिन्दू धर्म} की व्यापकता, समदर्शिता, सहिष्णुता व्यावहारिकता और आवश्यकता का प्रचार-प्रसार और राष्ट्र की एकता की रक्षा के प्रति जनमत को जागरूक करने हेतु आर्य समाज के सिद्धान्त जिसे महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रतिपादित किए हैं का व्यापक प्रचार एवं प्रसार करने के इच्छुक युवा सम्पर्क करें।

जयन्त कुमार पाण्डेय {आर्यपुत्र}
आर्यसमाज बढ़ाना गेट, मेरठ शहर

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

मेरठ में ऋषिबोधोत्सव एवं महाशिवरात्रि पर्व

आर्यसमाज था॰ पर नगर में 1 से 6 मार्च तक

डा० ओ३मदत्त जी शर्मा के वेदप्रवचन तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशकों के भजन

-x-x-x-x-x-x-x-x-x-x-

आर्यसमाज गणेशपुर {सहारनपुर} का

*** 15वाँ वार्षिकोत्सव ***

4, 5 मार्च सन् 1989 को आर्य समाज के प्रांगण में पूर्ण हर्षोल्लास के साथ मनाया जावेगा ।

-x-x-x-x-x-x-x-x-

स्वामी दयानन्द ऐतिहासिक भ्रमण

(डॉ० शिवपूजन पान्डेय,
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ)

महाशिवरात्रि की घटना, बहिन की अल्पआयु में मृत्यु एवं सर्वाधिक स्नेह करने वाले चाचा का निधन आदि घटनाओं ने उनके मन में वैराग्य की भावना को जागृत किया। इसी भावना से उत्प्रेरित होकर स्वामी दयानन्द-(पूर्व नाम मूलशंकर) ने गृह त्याग का निर्णय लिया जिसकी परिणति 1846 में जन्म स्थली को छोड़कर की।

स्वामी दयानन्द ने गुजरात के विभिन्न स्थानों का भ्रमण करने के उपरान्त 1855 में उत्तर प्रदेश में प्रवेश किया। सर्वप्रथम प्रदेश के उत्तरी पहाड़ी क्षेत्रों में ही जाना श्रेयस्कर समझा। इसी वर्ष उन्होंने ऋषिकेश, टिहरी, रुद्रप्रयाग, अगस्त्यमुनि (रुद्र प्रयाग से 10 मील दूर) एवं शिवपुरी में लगभग पांच माह व्यतीत किया। तत्पश्चात् केदारनाथ, गुप्तकाशी, त्रियुगी नरायन, गौरीकुण्ड, भीमगुफा, तुंगनाथ की चोटी जो मूर्तियों, पुजारियों एवं सनातनी विद्वानों से परिपूरित स्थान था, भ्रमण किया। अपनी यात्रा यथावत् बनाये रखते हुये वे उखीमठ से गुप्तकाशी, जोशीमठ तथा बद्रीनारायण पहुँचे जहाँ उनका वार्तालाप नम्बूदरी ब्राहमण (प्रायः दक्षिण भारत में प्राप्य) रावल जी से हुआ। तत्पश्चात् अलख नन्दा पार करते हुए उन्हें अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। लेकिन विपरीत परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने वसुधारा से बद्रीनरायन होते हुए रामपुर स्टेट में रामनगर के पीपल कोठी नामक स्थान पर विश्राम किया। तदोपरान्त चिल्कियाघाटी से नैनीताल में काशीपुर के लिए प्रस्थान किया। वे दिसम्बर 1855-फरवरी 1856 तक नैनीताल के द्रोणसागर नामक स्थान पर रहे।

प्रारम्भिक वर्षों में स्वामी दयानन्दजी का मुख्य उद्देश्य ज्ञानार्जन करना था जिसके लिए वे योग्य विद्वानों की खोज में पहाड़ीक्षेत्रों में भ्रमण करते रहे परन्तु पहाड़ी क्षेत्रों के भ्रमणोपरान्त कुछ अन्य मनीषियों के संसर्ग हेतु मैदानी क्षेत्रों की भी यात्रा प्रारम्भ की। 5 अप्रैल 1856 में श्रृंगीरामपुर (फर्रुखाबाद) से कानपुर पहुँचे, तत्पश्चात् सितम्बर 1856 में इलाहाबाद, मिर्जापुर, फतेहपुर, होते हुए वाराणसी पधारे। जहाँ भूमनन्द, कर्ताराम और राजाराम जैसे विद्वानों से संसर्ग हुआ। वाराणसी से चुनारगढ़ का भ्रमण किया।

अन्ततः उन्हें आत्मानुकूल गुरु की प्राप्ति हुई जिनसे तर्क और व्याकरण में महारथ हासिल की। उनका नाम था स्वामी-विरजानन्द जी दण्डी।

स्वामी दयानन्द ने गुरु की सेवा में 1860-1863 तक का समय व्यतीत किया और मथुरा में ही ज्ञानार्जन किया। गुरु की शिक्षा से प्रेरित होकर 1863 से वृन्दावन, आगरा, मथुरा आदि स्थानों का भ्रमण किया और अपने वक्तव्यों को मुखरित किया।

(1867-1869) का समय उनके ज्ञान की तेजस्विता की परीक्षा का था। 1867 में पटियाली, सराय, एटा, कायम गंज (फर्रुखाबाद) और अनूपशहर पधारे- जहाँ संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान अम्बादत्त जी से स्वामी दयानन्द का शास्त्रार्थ हुआ। शास्त्रार्थ में अम्बादत्त जी ने अपनी हार स्वीकार की और अपने अनेक शिष्यों सहित स्वामी जी के शिष्य बन गये। इस बीच कर्णवास के हीरा बल्लभ भी उनसे शास्त्रार्थ में पराजित हुए। 1868 में अपने वक्तव्यों एवं तर्कों से प्रभावित करते हुए रामघाट, कीछलाघाट, छटियाघाट, अम्बागढ़, सरोन का भ्रमण किया। लेकिन इसी दौरान उनके गुरु विरजानन्द की मृत्यु के समाचार ने उन्हें अत्यधिक दुखी किया। इसी वर्ष अक्टूबर माह में स्वामी दयानन्द ने सरावल, सहबाजपुर, कादरगंज नदौली आदि स्थानों का भ्रमण किया

कायमगंज के पंडित हरिशंकर जी से एक शिवालय में पौराणिक विषयों पर शास्त्रार्थ हुआ और पंडित जी पराजित हुए। इनके अतिरिक्त बल्देव प्रसाद और परमानन्द ने भी तर्कों से पराजित होकर स्वामी दयानन्द की शिष्यता ग्रहण की।

25 जुलाई 1869 में स्वामी दयानन्द बिठूर, मदारपुर से कानपुर पधारे और भैरवमन्दिर के निकट दरगाही लाल के सानिध्य में रहकर हृदय नरायण जी के आतिथ्य को स्वीकार किया। स्वामी जी की उपस्थिति

कानपुर के प्रकाण्ड विद्वानों, ज्योतिषियों के लिए बाधा थी। स्थानीय विद्वानों में हलधर ओझा और लक्ष्मण शास्त्री प्रमुख थे, जिन्होंने कलक्टर थेन की अध्यक्षता में शास्त्रार्थ हेतु स्वामी दयानन्द को चुनौती दी। उक्त तार्किक युद्ध का समाचार सम्पूर्ण कानपुर क्षेत्र में फैल गया और लोगों ने दूर दराज क्षेत्रों से आना शुरू किया। विद्वानों ने मूर्ति पूजा का समर्थन किया तथा एकलव्य को उत्कट सफल मूर्तिपूजक बताया जबकि स्वामी दयानन्द ने इसका खण्डन करते हुए एक अभ्यास मात्र बताया। वैदिक तथ्यों के आधार पर उन्होंने मूर्तिपूजा के विरोध में तर्क देते हुए कहाकि "यदि सेवक को स्वामी आदेश दे कि, उत्तर दिशा की ओर जाओ तो तीन दिशायें स्वतः निषेधात्मक मान ली जाती हैं।" जबकि विद्वानों का कहना था कि "वेद में कहीं भी मूर्तिपूजा के निषेध की बात नहीं कही गयी है।

इसके बावजूद विद्वानों ने बहुमत के आधार पर अपने विजय की घोषणा कर दी लेकिन अध्यक्ष कलक्टर "थेन" ने अपने निर्णय को सुरक्षित रखा और अगले दिन अपने निर्णय की सूचना निम्न रूप से प्रकाशित की। महाशयों मेरी सम्मति में स्वामी दयानन्द की युक्तियाँ वेदानुकूल थीं यदि आप लोग चाहेंगे तो प्रमाण भी दे दूँगा।" -पी०डब्ल्यू० थेन ।

तीसरा और अत्यन्त महत्वपूर्ण शास्त्रार्थ वाराणसी में सम्पन्न हुआ । वाराणसी विद्वानों, मनीषियों एवं कर्मकाण्डियों का गढ़ माना जाता था। उनके साथ स्थानीय राजा एवं आम लोगों की धार्मिक भावना जुड़ी हुई थी। 17 नवम्बर 1869 को काशी नरेश ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह ने स्वामी दयानन्द के बढ़ते प्रभाव एवं अपने पंडितों के मनः स्थिति को देखते हुए भव्य शास्त्रार्थ का आयोजन किया। स्वामी दयानन्द को उनके तर्कों एवं ज्ञान को चुनौती दी। सनातनी पंडितों में ताराचरण, बालशास्त्री और विशुद्धानन्द जैसे विद्वानों ने भाग लिया तथा उनके सहयोगी के रूप में शिव सहाय, माधवाचार्य, देवदत्त शर्मा, जय नरायन तर्क वाचस्पति, चन्द्र सिंह त्रिपाठी, राधामोहन तर्क वागीश, काशी प्रसाद श्री मानी, मदन मोहन कैलाशाचार्य, मेवा कृष्ण वेदान्ती और गनेश श्रोत व्यय आदि सम्मिलित हुए।

शास्त्रार्थ प्रातः से सायं तक निरन्तर चलता रहा। एक सायं शास्त्रार्थ के मध्य माधवाचार्य जी ने स्वामी दयानन्द से कुछ पढ़ने के लिए एक कागज का टुकड़ा बढ़ाया लेकिन रोशनी कम होने के कारण वे ठीक से पढ़ न सके। बस दयानन्द हार गये कह कर विशुद्धानन्द आदि खड़े हो गये और राजा साहब को भी वापस चलने को कहा स्वामी दयानन्द के ऊपर ईंट, पत्थर एव गोबर आदि उछाला गया और उन्हें धमकी दी गयी। लेकिन कोतवाल रघुनाथ की पटुता के कारण स्वामी दयानन्द को कोई हानि न पहुँची। वक्तव्यों की पूरी प्रक्रिया हुई, हिन्दी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित की गयी। तदन्तर तत्कालीन समाचार पत्रों ने अपनी टिप्पणियाँ प्रस्तुत की जिससे लोगों को वास्तविक स्थिति का पता चल सके।

"क्रिश्चियन इन्टेलीजेन्सर" ने मार्च 1870 के अंक में "ट्रम्फ आफ ट्रथ" शीर्षक में लिखा कि "एक व्यक्ति और तीन प्रकाण्डों के मध्य शास्त्रार्थ हुआ था। वेद से सम्बंधित प्रश्न किये गये लेकिन स्वामी दयानन्द ने स्पष्ट कहा कि, "सभी के लिए वेदों की पंक्तियाँ कंठस्थ करना सम्भव नहीं", इस बात पर विद्वानों ने अपनी-अपनी सहमति

व्यक्त की। विद्वानों ने वेदों में "प्रतिमा" और "मूर्ति" शब्द का उल्लेख होना बताया लेकिन दयानन्द ने तर्क दिया कि इन शब्दों का उल्लेख मूर्ति पूजा से किंचित मात्र भी नहीं। इस बीच माधवाचार्य ने कागज के टुकड़े पर कुछ लिखकर दयानन्द को दिया ही भर था कि उन्होंने अपने विजय की घोषणा कर दी तथा अविवेकी एवं धर्मान्ध व्यक्तियों ने उन पर पत्थर फेंकना प्रारम्भ किया जो कदाचित अनुचित था। विजय दयानन्द की ही थी।"

"पेट्रिआट" ने 17 जनवरी 1870के अंक में लिखाकि "हिन्दू धर्म जिसका धर्म शिवपूजा एवं मूर्ति पूजा पर आधारित है, गुजरात के एक सन्यासी ने सबको जड़ से उखाड़ फेंका, उसका नाम दयानन्द सरस्वती है।" यद्यपि "पायोनियर" ने भी दयानन्द के विजय की बात कही लेकिन पत्र का कहना थाकि राजा के समक्ष दयानन्द का अपमान नहीं किया गया बल्कि स्वयं राजा ने उन्हें संरक्षण प्रदान किया था। इसके अतिरिक्त "प्रत्नकमर-नन्दिनी", "सहेलखण्ड समाचार पत्र" "ज्ञान-प्रदायिनी" समाचार पत्रों ने भी अपने लेखों में स्पष्ट रूप से स्वामी दयानन्द जी का विजय का उल्लेख किया और हिन्दू पूजा पद्धति को ठीक करने एवं वेदों के महत्व को समझाने में स्वामी दयानन्द की भूमिका की सराहना की ।

स्वामी दयानन्द काशी से विजयी होकर मिर्जापुर में 1870 में जुगल किशोर की अध्यक्षता में आयोजित वैदिक शिक्षा के सेमिनार में हिस्सा लिया। तथा वैदिक विद्यालय की आधारशिला रखी। तत्पश्चात वे पुनः वाराणसी वापस आकर मुगल सराय में डे (Dey) नामक ईसाई से शास्त्रार्थ किया जहाँ वे 10 दिन रूककर प्रवचन को जारी रखा। 1870 में ही वहाँ से इलाहाबाद के लिए प्रस्थान किया। इलाहाबाद के कुम्भ मेले में उनकी मुलाकात देवेन्द्र नाथ टैगोर से हुई और कलकत्ता आने के आमन्त्रण को स्वीकार किया।

फरवरी 1870 -दिसम्बर 1870 तक स्वामी दयानन्द ने भ्रमण करतेहुए कायम गंज, चकेरी, हर्नाट, रामघाट, बुलन्दशहर में मूर्ति पूजा का खण्डन और गौरक्षा की आवश्यकता पर बल दिया। दिसम्बर 1871-मार्च 1872 तक सरोन में विश्राम किया। मार्च 1872 में वाराणसी पहुँचकर स्वामी दयानन्द ने "अद्वैत मत खण्डन" पुस्तिका प्रकाशित की। तत्पश्चात अप्रैल माह में कासगंज आये और कर्त्तव्यों का सिलसिला जारी रखा। मई 1872-फरवरी 1873 तक स्वामी दयानन्द ने राम घाट, कर्णवास, अनूप शहर, और फर्रुखाबाद का भ्रमण किया। नवम्बर 1873 में उन्होंने लखनऊ में पदार्पण किया।

29 नवम्बर 1873 को स्वामी-दयानन्द फर्रुखाबाद आये जहाँ वे संयुक्त प्रान्त के लाट मेयर और शिक्षा विभाग के डाइरेक्टर कमसन से मुलाकात की और अपने गो रक्षा सम्बन्धी मामले पर लाट साहब से निवेदन किया कि "आप स्वदेश यात्रा के दौरान भारत हित का अवश्य ध्यान दें और सचिव सभा में गोवध बन्द किये जाने की कोशिश करें।"

स्वामी दयानन्द के बढ़ते प्रभाव से प्रकाण्ड विद्वानों कर्मकाण्डियों में विरोध की भावना जागृत तो हुई ही थी साथ ही गोवध प्रकरण से मुसलमानों में भी विरोध की भावना जागृत हुई और कई स्थानों पर उन पर हमले भी किये गये। 1873 में इलाहाबाद भ्रमण के बीच उन पर मुसलमानों द्वारा आक्रमण किया गया लेकिन वे बचने में सफल रहे। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने उपदेशों को और अधिक मुखरित करते हुए वैदिक धर्म के एक और महत्वपूर्ण देन की घोषणा की जिसके अन्तर्गत सैकड़ों की संख्या में बन रहे क्रिश्चियनों को उद्धार किये जाने की व्यवस्था की गयी। इसी घोषणा ने कालान्तर में शुद्धि आन्दोलन का वृहत् रूप धारण किया। जिसके अन्तर्गत तमाम हिन्दुओं को जिन्होंने दूसरा धर्म स्वीकार कर लिया था, पुनः हिन्दू धर्म में सम्मिलित किया गया।

26 दिसम्बर 1873 में वे राजा

जय कृष्ण दास और कलेक्टर के अनुरोध पर अलीगढ़ पधारे। राजा जय कृष्ण पास ने स्वामी दयानन्द से उनकी शिक्षाओं को किसी एक पुस्तक में समाविष्ट किये जाने का अनुरोध किया। इससे प्रभावित होकर स्वामी दयानन्द ने "सत्यार्थ प्रकाश" लिखने की घोषणा की। अलीगढ़ में ही स्वामी दयानन्द को सर सैय्यद अहमद ख़ाँ से वार्तालाप करने का अवसर मिला था जिससे सैय्यद अहमद ख़ाँ उनसे अत्यधिक प्रभावित हुए।

26 फरवरी 1874-मई 1874 के मध्य स्वामी दयानन्द वृन्दावन, मथुरा, मुरसान अलीगढ़ आदि स्थानों का एक बार फिर भ्रमण किया और अपने वक्तव्यों से लोगों को प्रभावित करते रहे। इस बीच वृन्दावन वासी रंगा चारी से वृहद् वार्तालाप हुआ।

मई-जून 1874 में स्वामी दयानन्द ने एक बार फिर वाराणसी का भ्रमण किया। सर सैय्यद अहमद ख़ाँ के निवास स्थान पर हिन्दी की वकालत करते हुए पहली बार हिन्दी में भाषण दिया। उल्लेखनीय है कि स्वामी दयानन्द को हिन्दी भाषा का ज्ञान उत्तर प्रदेश में ही प्राप्त हुआ था जन सामान्य की सम्पर्क भाषा जानकर वे हिन्दी प्रसार के प्रबल समर्थक हो गये। और हिन्दी को ही प्रचार का माध्यम बनाया। वाराणसी में ही स्वामी दयानन्द ने "सत्यार्थ प्रकाश" की रचना प्रारम्भ की थी।

1874 में इलाहाबाद प्रवास के दौरान बम्बई निवासी जीवन राम, जयकिशन और धर्म जी के विशेष आग्रह पर दयानन्द राजकोट पहुँचे जहाँ राजकोट ट्रेनिंग कालेज के प्राचार्य हरिगोविन्द ने स्वागत किया। और आर्यसमाज स्थापना का अनुरोध किया। पाण्डुरंग की अध्यक्षता में साधारण सभा निर्मितकर आर्य समाज के नियमों उपनियमों के विचारार्थ एक उप सभा बनायी गयी। लेकिन आरम्भिक मत भेदों के कारण स्थापन कार्य स्थगित करना पड़ा। लेकिन स्वामी दयानन्द के आदेशानुसार 7 अप्रैल 1875 (गंगा प्रसाद उपाध्याय के अनुसार) में बम्बई नगर में गिरगाँव मुहल्ले के माणिक चन्द्र वाटिका में आर्य समाज की स्थापना की गयी।

स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना से पूर्व जिन कार्यक्रमों का अपने वक्तव्यों प्रवचनों में उल्लेख किया वही कालान्तर में आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। अपने सिद्धान्तों में उन समस्त चीज़ों का उल्लेख किया जो एक स्वतन्त्र राष्ट्र में होने चाहिए। राजनीतिक जागरण हिन्दी प्रचार, क्रिश्चियन विरोधी शुद्धि, गोरक्षा, स्त्री-शिक्षा, अनाथ सहायता आदि उन्हीं की देन थी। स्वामी दयानन्द ने ही सर्व प्रथम स्वतन्त्र चक्रवर्ति राष्ट्र की कल्पना की थी जिसके आधार पर भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम लड़ा गया।

— विविध प्रकार की बोलियाँ बोलने वाले, जनसमुदाय को पृथ्वीमाता एक घर की भाँति धारण कर रही है। जैसे कभी न भड़कने वाली अविचल रूप से सहस्रों धाराओं में दूध देती रहती है, वैसे ही हमारी मातृभूमि हमें धन की धाराएं देती रहती है।

— बहुत से लोग इस दुनिया में समझते हैं कि बेईमानी से काम चल जाता है। वे भ्रम में हैं क्योंकि असत्य से सत्य ब्रह्म की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती।

— आर्य वही है जो अपने गुण, कर्म, स्वभाव एवं व्यवहार में श्रेष्ठ हो, आस्तिक हो परोपकारी हो, वैदिक मर्यादाओं के अनुसार जीवनयापन करने वाला हो।

— विषदायी की हथकड़ियाँ खोल दो मैं ससार को कैद नही कैद से मुक्त कराने आया हूँ।

वचनामृत

जब तक जीवित रहो सच कहते रहो और शैतान का पर्दाफाश करते रहो । -शेक्सपीयर

दिल से निकली बात ही दिल तक पहुंच सकती है । -ड्राइन

आज पढ़ना सब जानते हैं लेकिन पढ़ना क्या चाहिये, यह कोई नहीं जानता। -बर्नाडशा

महान व्यक्तियों में दृढ़ निश्चय होता है कमजोर व्यक्ति केवल इच्छा ही करते रह जाते हैं । -चीनी कहावत

ठोकरें सिर्फ धूल उड़ाती हैं, जमीन से फसलें नहीं उगाती। -रवीन्द्रनाथ टैगोर

अगर चाहते हो कि दुःख दुबारा न आये तो फौरन सुन लो कि वह क्या सिखा रहा है । -वर्क

प्रणहीनता प्राणहीनता के समान है । -स्वामी शिवानंद

जीवन एक फूल है प्रेम उसका मधु । -विक्टरह्यूगो

विचार फूलों के समान हैं और सोचना उनको माला में गूंथना है। -मैडम स्वेटशीन

बदी करने के मौके दिन में सौ बार मिलते हैं लेकिन नेकी करने का मौका सैकड़ों दिनों में एक बार मिलता है। -वाल्टेयर

दुर्बल चरित्र वाला व्यक्ति उस सरकन्डे के समान है जो हवा के हर झोंके के समान है जो हवा के हर झोंके पर झुक जाता है। -कवि माघ

कोई व्यक्ति बहुत सी और बड़ी-बड़ी गलतियां किये बिना कभी महान् एवं भला नही बना । -ग्लेडस्टन

निश्चयहीन मनुष्य हेतु यह नहीं कहा जा सकता कि वह अपना मालिक है वह समुद्र की एक लहर की तरह है जिसे हर झोंका इधर से उधर उड़ा देता है। -जानफास्टर

मनुष्य को चाहिए वह अपना मित्र आप बने बाहरी मित्र की खोज में न भटके। -जैनसूत्र

हम प्रकृति से तो परिचित हैं परन्तु अपने अन्दर के स्वर्ग से बिल्कुल अपरिचित। -महात्मा गांधी

जो अपने मजबूत दिल और मजबूत हाथों को काम में लाता है वह अपनी जरूरतों को स्वयं पूरी कर सकता है। -लॉग फेल्को

हम सब शारीरिक पक्षाघात से डर खाते हैं और उससे बचने की तदवीर करते करते हैं, लेकिन आत्मा के लकवामार जाने पर किसी को परेशानी नहीं होती। -एपिक्टेटस

अगर आदमी सीखना चाहे तो उसकी हर भूल उसे शिक्षा दे सकती है। -अज्ञात

क्रोध मूर्खता से प्रारम्भ होता है और पश्चाताप पर खत्म होता है। -पैथागोरस

एक क्षण या पलभर की आयु करोड़ों अशर्फियों के बदले में कभी नहीं मिल सकती। यदि ऐसी आयु यों ही बर्बाद हो गई तो इससे बढ़कर हानि और क्या हो सकती है । -शंकराचार्य

उदार मना होकर दान दीजिए

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा

के परिसर में

स्वामी श्रद्धानन्द अतिथि भवन

का निर्माणकार्य जोरों से प्रारम्भ हो गया है। जो सज्जन अथवा समाजें अपना कक्ष बनवाना चाहें उनका नाम विशेषरूप से शिला पर अंकित किया जायेगा तथा जो दानी महानुभाव रू0 1001/- या अधिक धनराशि प्रदान करेंगे उनका नाम भी शिलापट्टिका पर अंकित किया जायेगा।

धन के सदुपयोग का स्वर्ण अवसर है। आज ही निश्चय कीजिए और अपनी धनराशि **"आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 लखनऊ"** के पते पर तुरन्त प्रेषित कीजिए।

1- जिन संस्थाओं तथा दानी महानुभावों ने धन देने का वचन दिया है वे कृपया उस धनराशि को शीघ्रातिशीघ्र भेजकर पुण्य के भागी बनें।

2- दानदाता द्वारा दी गई राशि पर आयकर में छूट प्राप्त होगी।

आपके सहयोग की प्रतीक्षा में

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

अवकाश सूचना

ऋषि बोध पर्व {महाशिवरात्रि} के शुभावसर पर कार्यालय में अवकाश के कारण आर्यमित्र का अगला अंक रविवार 19 मार्च, 1989 को प्रकाशित होगा। पाठकगण कृपया नोट कर लें।

विश्वम्भर दयाल गुप्त,
व्यवस्थापक।

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन०पी० ७९
Regd. No. L. W. / N. P. 79



आनन्द सुधासार दयाकर पिला गया,
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।
"शंकर" दिया बुझाय दिवाली को देह का,
कैवल्य के विशाल बदन में बिला गया॥

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई रूप में प्रिंटिंग प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० 2241/57 घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85

फाल्गुन शुक्ल 12 रविवार, संवत 2045 वि०, दिनांक 19 मार्च 1989



गृहे वसतु नोऽतिथिः

हे प्रभो! हमारा घर जहाँ धन-धान्य से परिपूर्ण हो, वहाँ आप्त, विद्वान अतिथियों के निवास से भी परिपूर्ण हो जिससे हम अतिथियज्ञ के पुण्य भागी बनें।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०,

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु०251/-
वार्षिक	रु० 30/-
छमाही	रु० 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	91
अंक	12

आई मिलन की वेला

व्यतिषजति पदार्थान् आन्तरः कोऽपि हेतुः

--------आचार्य भवभूतिः

तू उदय हुआ नहीं कि कमल खिल जाता है। तू निकला नहीं कि चकोर निहारने लगती है, कुमुदिनी खिल उठती है। तू उमड़ा नहीं कि मयूर मस्त होकर नाचने लगता है। तू आम्रवाटिका में बिखरा नहीं कि कोयल सुरीला राग अलापने लगती है -- कोई आन्तरिक हेतु ही मालूम पड़ता है। आर्यो ? होली आई नहीं कि तुम्हारा द्वेष दम्भ पाखण्ड सब समाप्त, मिलन की आतुरता संगम जैसी साकार बन उठती है-- कोई आन्तरिक हेतु ही मालूम पड़ता है। इसीलिए तो आज के दिन के लिए उसने तुमसे कहा था ----------

सहृदयं सामनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः ।

अन्योऽन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या ।।

अथर्व 3/30/1

ऐ मनुष्य? मैं तुझे समान हृदय वाला, समान मन वाला, और एक दूसरे से द्वेष न करने वाला रहने का उपदेश करता हूँ। जैसे गौ उत्पन्न हुए अपने बच्चे के पास दौड़ी आती है वैसे ही तुम भी {आर्यो} एक दूसरे के पास आकर प्रेम से हृदय से हृदय लगाकर मिलो ।

इस संसार में मानवचेतना ही ऐसी है जो इस धरा को स्वर्ग बना सकती है, प्रेम की गंगा बहा सकती है। वास्तव में यदि देखा जाय तो मानव मानव में भेद की दीवार मानव ने ही खड़ी की है। उसका यह कार्य धर्म, सम्प्रदाय, रंग, वर्ण तथा कर्म के नाम पर सर्वथा अधार्मिक तो है ही मानवता के विरुद्ध घोर अपराध है। नेतृत्वगुण-सम्पन्न जिन व्यक्तियों ने अपनी लोकैषणा के लालच में अपने को महान कहलाने के तथा-कथित प्रयास में इस प्रकार के सम्प्रदाय अथवा मतमतान्तर चलाए, पुस्तकें लिखीं उन्होंने मानवता का बहुत बड़ा अकल्याण किया। धर्म का तो उससे दूर का भी वास्ता नहीं है। यदि इन सबको ओझल करके धर्म और मानवीयता के आदर्शों को एक शाश्वत और सत्य के रूप में देखा जाय तो सर्वत्र एक ही नील गगन दिखाई पड़ेगा जहाँ प्रेम का मधुमय वासन्ती बहार, प्रगाढ़ हृदय प्रेम का उभरता हुआ वायु मण्डल, स्वच्छन्द गति से परिभ्रमण करता हुआ जन जन को सम्मोहित आनन्दित और प्रेमरस सिंचित कर रहा है। होली के पावन पर्व पर हमारा **"नवसस्येष्टि यज्ञ"** इस मधुर मिलन का पथगामी अनुगामी हमें बनावे - यही **प्रभु से प्रार्थना** है ।

-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
--राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- फाल्गुन शुक्ल 12 संवत् 2045 19 मार्च 1989
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

नारायण गोस्वामी दिवंगत

आर्यमित्र की सेवा में जीवनभर समर्पित रहकर एकात्मना सर्वात्मना लीन रहने वाले साधक पू0 श्री नारायण गोस्वामी-जी दिनांक 8-3-89 को देहमुक्त हो गये। आर्य प्रतिनिधि-सभा और आर्यमित्र के इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों के साथ सदैव के लिए जुड़ा हुआ है। परिवार की घोर विपत्तियों में भी अडिग रहने वाला यह व्यक्तित्व सचमुच आर्यसमाज का आजीवन निष्ठावान सेवक और साधक रहा। उनके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। सभा कार्यालय एवं आर्यमित्र कार्यालय उनके शोक में बन्द कर दिए गये। परमपिता उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

इन्द्रराज प्रधान | मनमोहन तिवारी मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

न वै त्वा द्विष्मः

नव सस्येष्टि (होलिका) का पावन सन्देश

विश्व में भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ षड्ऋतु परिवर्तन के साथ प्रकृति माता के बदलते परिवेश में हम आर्यों को अधिक से अधिक सान्निध्य पाने का अवसर मिलता रहा है। इसीलिए आर्यों की यह प्रिय भूमि (आर्यावर्त) हमारे ऋषि-मुनियों की तपस्यास्थली रही है और हमने हर ऋतु परिवर्तन के साथ प्रकृति के सौन्दर्य से सम्बन्ध रखने वाले पर्वों की स्थापना की और अपने ज्ञानचक्षुओं से परमात्मा के उस स्वरूप को जो अणु से भी सूक्ष्म और महान से भी महान है -- देख लिया। जिस प्रकार सम्पूर्ण वटवृक्ष सूक्ष्म रूप में बीज में निहित रहता है उसी प्रकार वह चेतन सत्ता सूक्ष्म से सूक्ष्म और महान से महानतम होने के कारण विश्व की प्रत्येक वस्तु में अन्दर और बाहर से विद्यमान है -- "अणोरणीयान् महतो महीयान" । पृथ्वी में गति और ऋतुओं का आगमन भी उसी के नियम से हो रहा है। फाल्गुन शुक्ल की पूर्णिमा लहलहाते हुए धनधान्य और समृद्धि की द्योतिका बनकर हमारे सामने प्रतिवर्ष आनकर उपस्थित हो जाती है और हम "अन्नं वै प्राणः" कहकर उस यजनीय देव पुरुष को "नवसस्येष्टि यज्ञ" के द्वारा नमन करते हैं। राष्ट्र को और विश्व को ऊँच-नीच का भेदभाव भुलाकर "विश्वं भवत्येक-नीडम्" का मधुर मिलन सन्देश देते हैं।

देवत्व और असुरत्व का संग्राम हमेशा से चलता आ रहा है। क्षुद्र ऐषणाएं कभी-कभी बड़ी प्रबल हो जाती हैं और मानव को अपना दास बना लेती हैं। उस समय जीवनपथ की श्रेष्ठता में मानव ही मानव का बाधक बन जाता है और वह भूल जाता है कि विश्व में जो शुभ है, सत्य है, सुन्दर और कल्याणकर है - वह सम्पूर्ण मानव द्वारा एक रूप में ही अपनाने से संभव है। यह श्रेय मार्ग कितना ऊँचा और महान है इसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता। जब जीवन पथ का राही इस मार्ग का पथिक बन जाता है तब उसे प्रत्येक प्राणी में "एको देवः सर्व भूतान्तरात्मा" के दर्शन होने लगते हैं और वह तुलसी के शब्दों में :-

तुलसी या संसार में सबसे मिलिए धाय
न जाने किस भेष में नारायण मिल जाय ।।

कहकर प्रत्येक मानव को अपने हृदय से लगा लेता है। यही होली का पावन सन्देश है। यही हम आर्यों का नाद है, दुनियाँ के लोगो? ध्यान देकर सुन लीजिए। आर्यसमाज सच्चे हृदय से कह रहा है हम किसी से द्वेष नहीं करते "न वै त्वा द्विष्मः"। हम जानते हैं द्वेष बहुत बुरी बात है। हम तो प्रेमस्वरूप परमात्मा के प्रगाढ़प्रेमी हैं। संसार में प्रेम की गंगा बहाने आये हैं। यह होली हमारा मिलन पर्व है टूटे हुए दिलों को जोड़ने वाला, निराशा में आशा का संचार करने वाला। इस पांचजन्य यज्ञ में पड़ने वाला हमारी प्रत्येक आहुति दुरितों को दूर करने के लिए, बिछुड़ों को गले लगाने के लिए धर्म की रक्षा के निमित्त कटिबद्ध होकर मरमिटने के लिए - है।

इसलिए अश्लीलता फैलाकर कीचड़ उछालकर किसी का अहित करके मद्यपानादि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करके हुड़-दंग मचाना इस पावन पर्व का अपमान करना है। यह हमारा सामाजिक एवं राष्ट्रीय पर्व है। हम आशा करते हैं हमारे समाज मन्दिरों में तथा प्रत्येक परिवार में मनाए जाने वाले इस पर्व पर बड़ी संख्या में हमारे सभी भाई चाहे वे किसी वर्ण या कर्म के हों नवसस्येष्टि यज्ञ करेंगे और अपनी पावन आहुति देकर धर्म की रक्षा का व्रत लेंगे। इस अवसर पर समाज मन्दिरों में मिलन-संगम आयोजित किए जायें जहाँ विशेष रूप से बिछुड़े भाइयों को आमन्त्रित करके उनके साथ सहभोज किया जाय और उन्हें गले लगाया जाय। आज के दिन हर आर्य के हृदय में सात्विक प्रवृत्ति जागरूक होनी चाहिए और उसे धर्मरक्षा हेतु कटिबद्ध होकर आर्यसमाज के कार्यों में सहयोग देने का व्रत लेना चाहिए।

-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-

आया रंगों का त्यौहार

(श्री चन्द्रपाल सिंह यादव मयंक
कानपुर)

करता खुशियों की बौछार ।
आया रंगों का त्यौहार ।
बिखराता है दिशि - दिशि प्यार।
मस्ती उड़ती पंख पसार ।

उड़ते आज अबीर - गुलाल ।
सब पर रंग रहे सब डाल ।
चलते अटपट - लटपट चाल ।
होली ने कर दिया कमाल ।

बज रहे आज झांझ - मंजीर ।
गीत का बहता सुखद समीर ।
सुन रही है लोगों की भीड़ ।
बने सब मस्ती की तस्वीर ।

बैर औ द्वेष गये हैं भाग।
प्रेम के भाव गये हैं जाग ।
सुनाई पड़ता मधुमय राग ।
साथ मिल कर सब गाते फाग ।

छिड़ रही है होली की तान ।
खुशी से झूम रहे हैं गान ।
हर तरफ हँसी - खुशी - मुस्कान ।
आज बौराया सकल जहान ।

होली पर्व

इन्द्रराज, प्रधान,
आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0,लखनऊ।

महर्षियों ने मानव जीवन को गतिशील रखने के लिये समय-समय पर पर्वों की स्थापना की। पर्व शब्द "पर्व पूरणे" धातु से बना है। इसका अर्थ व्याकरण के अनुसार "पर्वति पूरयति जनानान्देने तिपर्वः" - जो लोगों को आनन्द से पूरित करता है, नई चेतना और नई स्फूर्ति देता है उसे पर्व कहते हैं। इन पर्वों की रचना के चार उद्देश्य हैं। §1§ किसी अवसर पर बड़े यज्ञ के लिये। जैसे दर्शेष्टि, पौर्णमासेष्टि, नवसस्येष्टि तथा चातुर्मास्येष्टि आदि। §2§ किसी विशेष ऋतु के परिवर्तन पर जैसे दीपावली, होली, सवत्सरेष्टि आदि। §3§ सर्वसाधारण के मनोरंजनार्थ जैसे हरितृतीया, वसन्त पंचमी आदि। §4§ किसी महापुरुष की स्मृति में ।

होली का पर्व अधिकतर ऋतु परिवर्तन से सम्बन्धित है पुनरपि और भी कई महत्वपूर्ण कारण इस पर्व के मनाने के है। क्रमशः संक्षेप में उन कारणों को प्रस्तुत किया जाता है।

§1§ आषाढ़ी की फसल भारत की सब फसलों में श्रेष्ठ फसल है। घर पर जब अन्न आता था तो आर्य लोग सर्वप्रथम देवताओं को अर्पित करके फिर उसका प्रयोग करते थे। बड़े-बड़े सामूहिक यज्ञ मौहल्ले-मौहल्ले होते थे। आज भी होली जलाई जाती है। इसमें से काल की करालगति से घी और सामग्री अलग निकल गये हैं। पहले यज्ञ की अग्नि में अन्न की आहुति दी जाती थी। बाल भूने जाते थे और फिर अन्न का प्रयोग होता था ।

§2§ सारी प्रकृति अपना बाना बदलती है। सर्वत्र नये पत्ते, पक्षियों के नये पर। प्रकृति प्रस्फुटित होती है। भला मानव इस नवीनता से वंचित कैसे रह जाये। मानव भी प्रकृति के साथ मिलकर आमोद-प्रमोद में संलग्न हो जाता है।

§3§ तृण की अग्नि में अधपके अन्न को होलक कहते हैं। शब्द कल्पद्रुम कोष में लिखा है, "तृणाग्निभ्रष्टार्द्ध पक्वशमी धान्य होलकः । होला इति हिन्दी भाषा ।" होलक अल्पवात कारक, मेद चर्बी कफ और श्रम §थकान§ के दोषों का शमन करता है। ये अधपके अन्न यज्ञाग्नि में डाले जाते थे तथा बाद में प्रयोग में आते थे। इस लिये इस पर्व को होलकोत्सव के नाम से पुकारा जाता है।

§4§ प्रकृति का आमोद-प्रमोद लेते हुए लोग परस्पर टेसू का रंग एक दूसरे पर डालते थे। टेसू का जल कफ को दूर करता है। इस प्रकार आयुर्वेद की दृष्टि से इस आमोद-प्रमोद में भी रोगों को दूर करना ही निहित होता था।

§5§ यह पर्व प्रेम का प्रतीक है। लोग वर्ष भर की नाराजगी को दूर करके होली मिलन के अवसर पर गले मिलते थे। इस प्रकार वैर वैमनस्य दूर हो जाता था। किसी समय हम लोगों ने अपने ही भाईयों को अपने से दूर कर दिया। घृणा छुआछूत ने अपने ही भाईयों को अपना शत्रु बना दिया। आज आवश्यकता है। फिर से सब को गले लगाने की। यह पर्व की सबसे बड़ी प्रेरणा है ।

§6§ आज इस पर्व का रूप इतना विकृत हो चुका है। इस पर्व में संयम-सौहार्द्रय प्रेम-परस्पर प्यार और भ्रातृ भाव को फैलाने की आवश्यकता है। विघटन कारी विदेशी शक्तियाँ आज देश को प्रेम और प्यार से जोड़ने की आवश्यकता है। इसकी स्वतन्त्रता, अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा का व्रत हमें इस पवित्र पर्व पर लेना होगा। भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब देश पर संकट आया, धर्म की ग्लानि उत्पन्न हुई उस-उस समय रक्त की होली खेली गई। हम सब संकल्पशील बनें कि देश की रक्षा के लिये यदि बलिदान भी देनापड़े तो हम रक्त की अन्तिम बूँद बहाकर भी इसकी रक्षा करें। आज पंजाब जल रहा है। आतंकवादी और उग्रवादी लोग नित्य प्रति निर्दोषों का रक्त बहा रहे हैं। इस आग में हजारों व्यक्ति समाप्त हो चुके हैं। होली का पर्व सबसे प्रेम की बात कहता है। ईर्ष्या-द्वेष की अग्नि को बुझाकर हम सब बुराईयों को होली दहन में जला दें तब हमारा होली का पर्व मनाना सार्थक हो सकता है।

किसी समय प्रहलाद के पिता हिरण्यकशिपु ने प्रहलाद को प्रभु भक्ति से रोका था। प्रहलाद की अग्नि परिक्षा हुई। प्रहलाद जीवित बच गया। होलिका जल गई। इस कथा की सत्यता पर तो हम नहीं जाते परन्तु इतनी बात तो स्पष्ट है कि असत्य पर सत्य की विजय हुई थी।

होली का पर्व पवित्रता पूर्वक आनन्द और उल्लास का पर्व था। आज इसमें शराब पीना, भांग आदि नशों का प्रयोग कर हुड़दंग मचाना अश्लीलता का प्रदर्शन, परस्पर लड़ाई-झगड़ा, ये जबरदस्त कुरीतियां आ गई हैं। कहाँ तो इस भारत में कोई शराब नहीं पीता था। कोई जुआ नहीं खेलता था। कोई दुराचारी नहीं था। आज भी हमें इस पर्व में सुधार लाकर इस पर्व को प्रेम और प्यार का पर्व बनाना चाहिये तभी हम संसार में गौरव से अपना मस्तिष्क ऊँचा कर सकते हैं।

होली आयी

§श्री राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर§

आपस का हम प्रेम बढ़ाएं,
भेद-भाव सब दूर भगाएं,
जाति-पाँति के काले बादल
इस धरती से दूर हटाएं,

यही संदेशा है यह लायी ।
होली आयी, होली आयी ।।

सुखी समृद्ध हो जन जीवन,
ऐश्वर्यों से पूरित भू-कण,
नई सफलता, समरसता से-
आह्लादित हो मानव अभिमन,

जाग्रत, जग में, ज्योति जगायी।
होली आयी, होली आयी ।।

फैले धरती पर अपनापन,
विस्तृत हो शुचि प्यार अप्रमन,
दूर हटे इन महाशक्तियों-
का सब आपस का कडुआपन,

जगा रहे युग की तरुणायी।
होली आयी, होली आयी।।

इसके स्वागत में बसन्त नव-
हर्षित, कोकिल करती कलरव,
नव आशा - अभिलाषाओं के-
निकल रहे डालों पर पल्लव,

प्रकृति बधू नव, गई सजायी।
होली आयी, होली आयी ।।

शुभ विवाह

आर्यमित्र के प्रबन्ध सम्पादक श्री पं0 इन्द्रदेव पाठक की भानजी आयुष्मती कुमारी नीलम वशिष्ठ सुपुत्री डा0 भगवानकृष्ण वशिष्ठ का शुभ विवाह बम्बई निवासी श्री बी0एन0 शर्मा के सुपुत्र चि0 हरीओम शर्मा के साथ दिनांक 9-2-89 को धामपुर में बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में उपस्थित गण्यमान्य व्यक्तियों ने नवदम्पत्ति को अपना मंगलमय आशीर्वाद दिया। आर्यमित्र परिवार की बधाई।

अवकाश सूचना

होली के शुभावसर पर कार्यालय में अवकाश के कारण आर्यमित्र का अगला अंक रविवार 2 अप्रैल 1989 को प्रकाशित होगा। पाठक गण कृपया नोट कर लें।

विश्वम्भर दयाल गुप्त
व्यवस्थापक।

खून के हस्ताक्षर पण्डित लेखराम

{श्री सुखदेव राज शास्त्री अधिष्ठाता,
श्री गुरु विरजानन्द करतारपुर {पंजाब}

जन्मतिथि 1858ई0 {जेहलम} जिला चकवाल ग्राम-सैयदपुर दादा नारायण सिंह महता एक स्वाभिमानी ब्राह्मण किन्तु वीरता में क्षत्रिय । श्री नारायण सिंह के दो पुत्र हुये जिनके नाम श्री तारासिंह व गण्डाराम थे बड़े भ्राता तारासिंह के एक पुत्री तथा तीन पुत्र उत्पन्न हुए सबसे बड़े का नाम लेखराम, दूसरे का नाम तोताराम और तीसरे का नाम बालकराम रखा गया। पुत्री सबसे छोटी थी जिसका नाम मायावन्ती रखा गया था। यह शाण्डिल्य गोत्रज सारस्वत ब्रह्मण कुल से सम्बन्धित थे। सैयदपुर ग्राम तहसील चकवाल{जेहलम} में ही 5 वर्ष की आयु में उर्दू-फारसी पढ़ाई गयी। माता-पिता की इच्छा नौकरी की थी पढ़ने में अति कुशाग्र बुद्धि होने से इस्पेक्टर द्वारा पुरस्कृत हुए। 11 वर्ष की आयु में पेशावर प्रस्थान किया जहाँ चाचा गण्डाराम पुलीस में थे। 3 वर्ष तक घर मेंही अरबी फारसी की शिक्षा ली परन्तु अधूरी। 14वर्ष की आयु में सैयदपुर वापिस आकर पुनः उसी स्कूल में शिक्षा आरम्भ की। मुन्शी तुलसीराम जी हेडहमास्टर थे। अपने लिये प्रिय शिष्य लेखराम पर उनका अतिशय स्नेह रहा। 16वर्ष की आयु में विद्या समाप्त कर ली उर्दू फारसी में पारंगत थे। पेशावर में रह कर एक सिख सिपाही से गीता और गुरुमुखी भाषा सीखी और आसन लगाकर समाधि लगाना भी सीखा। कई धार्मिक पुस्तकें और भी लिख डाली। इसलामी ग्रन्थ भी लिख डाले कुछ समय नवीन वेदान्त से भी प्रभावित रहे। परन्तु शीघ्र ही मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी की पुस्तकों से ऋषि-दयानन्द तथा आर्यसमाज का परिचय और उससे प्रभावित होकर सन 1880 में आर्यसमाज पेशावर की स्थापना कर डाली। उसी वर्ष ऋषि दयानन्द से मिलने अजमेर चले गये तथा सारे संशय उनके सामने रख दिये पुनः ऐसा समाधान पाया कि अन्दर की सारी शंकायें निकल गई तथा वहां वचन दे आये कि 25 वर्ष पूर्व विवाह नहीं कराऊँगा। महर्षि से मिलने के पश्चात् वेदों के प्रचार का वह जादू हुआ कि आते ही संस्कृत पढ़ना आरम्भ कर दिया ताकि वेदों का अध्ययन कर सकें। उन्हीं दिनों उन्होंने पेशावर में आर्यसमाज से उर्दू में "धर्मोपदेश" नाम की एक मासिक पत्रिका निकाली, खुले स्थानों पर भाषण भी करने लग पड़े थे परन्तु वहां उन्हें किन्हीं निकटस्थ स्थान पर बदल दिया गया, लेकिन वहां भी वे समाज का प्रचार और "धमोपदेश" पत्रिका का सम्पादन करते रहे। बाद में धनाभाव से यह पत्रिका बन्द हो गई। कालान्तर में एक मुसलमान निरीक्षणार्थ आया जहाँ इनकी कुछ धार्मिक विषय पर बात हुई जिससे उसने चिढ़ कर उन्हें उस पद से हटा कर निचले पद पर करके वहां से दूर बदल दिया। वहां जाकर उन्हें यह अनुभव हुआ कि मुसलमान आफसर उन्हें धर्म प्रचार नहीं करने देंगें इस विचार से उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया पुनः उन्हें त्याग पत्र वापिस लेने के लिए बाध्य किया गया परन्तु त्यागपत्र वापस नहीं लिया। 30 सितम्बर 1884 को बन्धन मुक्त हो अब वह पं0 लेखराम बन गये पूरा समय आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगाने लगे। मुसलमानों का अहमदी समुदाय उन्हीं दिनों अंकुरित हुआ था जिसके संस्थापक थे मिर्जा गुलाम-अहमद। वह अपने को खुदा का अन्तिम पैगम्बर कहते थे और नबी भी और लोगों को चमत्कार दिखाने का दावा किया करते थे। पण्डित जी पहले ही उनकी गति विधियों से जानकार थे। इसी बीच 1881 में महर्षि दयानन्द जी का देहावसान हो गया। अब उन्होंने यह अनुभव किया कि वैदिक धर्म के प्रचार का सारा उत्तरदायित्व अब अपने ऊपर है। नगर-नगर में घूम-घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार करने लगे विशेष कर मिर्जा कादयानी सम्प्रदाय का खण्डन करते थे। लाहौर पहुँचने पर उन्हें एक विज्ञापन मिला जिसमें घोषणा की गयी थी कि मिर्जा साहब खुदा के पैगम्बर हैं और चमत्कार कर दिखा सकते हैं यदि कोई गैर मुस्लिम उनको झूठा साबित कर देवे तो उसे 24000/=. पुरस्कार के रूप में देंगें। पूज्य पण्डित-लेखराम जी ने स्वीकृति पत्र भर दिया इतना ही नहीं पण्डित जी स्वयं कादियां पहुँचकर मिर्जा साहेब को चमत्कार दिखाने को कहा परन्तु इन्कार हुआ। इस पर पण्डित जी ने वैदिक धर्म की महानता सिद्ध करने के लिए व्याख्यान दिये और स्वयं वहां आर्यसमाज की स्थापना की। मिर्जा साहिब ने बुरादीन अहमदिया नामक एक ग्रन्थ लिखा जिसके चतुर्थ भाग में आर्यसमाज पर आक्षेप किया था। परन्तु पण्डित जी ने विरोध में "बुराईन-अहम दिया" नामक पुस्तक लिखी जो हाथों हाथ बिक गई। दूसरे पुस्तक मिर्जा साहिब ने "सूरमा चशमे आर्या" लिखी [illegible] उत्तर में पण्डित जी ने "नुस्खा खब्ते अहमदिया" लिखी [illegible] उनकी जनता में धाक बैठ गई तथा पादरीखड़क सिंह के छः व्याख्या के उत्तर भी लिखे फिर सर्वत्र आर्य समाजों में उनका नाम गूँजने लगा। उसके पश्चात् 1882 में आपको फिरोजपुर प्रकाशित होने वाले आर्य गजट का सम्पादक बना दिया गया उनकी योग्यता की धाक अब बड़ी दूर-दूर तक फैल गई और कई लोग पत्रिका के ग्राहक भी बन गये। इसी बीच मुलतान आर्य समाज ने ऋषि जीवन लिखने को कहा और प्रतिनिधि सभा ने इस प्रस्ताव को सर्व सम्मति से स्वीकार किया और पण्डित जी इस सेवा के लिये तैयार हो गये क्योंकि वह अपने ऊपर ऋषि ऋण समझते थे यह उनके लिये सुअवसर था। वह इस कार्य को पूरा करने के लिये आर्य गजट का सम्पादन छोड़ कर ऋषि जीवन के संकलन के लिये निकल पड़े लाहौर को उन्होंने अपना केन्द्र बना लिया दूसरा केन्द्र उनका जालन्धर था जहाँ महात्मा मुंशीराम जी से उनको विशेष लाभ हुआ । उनसे मिलकर आपने समूचे कार्यक्रम की रूपरेखा बनाई और नगर-नगर में घूम कर प्रचार करने लगे। सर्वप्रथम पण्डित जी गुरुधाम मथुरा गये वहां ऋषि के सहपाठियों से मिलकर उनके जीवन सम्बन्धी अनेक घटनायें प्राप्त कीं। वहां से अजमेर होते हुए पुनः नसीराबाद आये वहां एक मुसलमान से उनका शास्त्रार्थ हुआ जिसे पुलिस ने झगड़े की आशंका से बन्द करा दिया उसके बाद वह मुसलमान दैव योग से चल बसा और अन्धविश्वासी लोगों ने इसे पण्डित जी का चमत्कार समझा जिसका पण्डित जी ने बड़े जोर से खण्डन किया। आर्यसमाज ऋषि के बतलाये सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार घूम-घूम कर करने लगे। रात-दिन यात्रा में रहते थे इसलिये अब इन्हें आर्य पथिक या आर्य मुसाफिर के नाम से सम्बोधन किया जाने लगा। वह वास्तव में पथिक थे। कुछ सज्जनों ने तो उन्हें आर्य अतिथि की भी उपाधि दी थी क्योंकि वह बिना तिथि और काल देखे एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले जाते थे जहाँ भी जाते अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व-अकाट्य युक्तियों और तर्कपूर्ण प्रवचनों से आर्य समाज का प्रचार करते थे। उनकी इस कार्य प्रणाली से विधर्मी क्षुब्ध हो उठे। उनके निर्भीकता पूर्ण शास्त्रार्थ और तर्क के कारण आर्यजन उनके शहीद होने के समाचार यदाकदा सुनते रहते थे यहां तक की एक उनके घनिष्ट मित्र ने उन से प्रार्थना की कि आप इस प्रकार खुल्लमखुल्ला इस्लाम मत की आलोचना न किया करें परन्तु पण्डित जी का एक ही उत्तर था कि जो होना है उसे कोई नहीं रोक सकता एक न एक दिन मरना ही है तो यदि अपने धर्म के लिये मैं बलिदान हो जाऊं तो इससे बढ़कर मेरे लिए कौन सी प्रसन्नता की बात हो सकती है। मेरे बलिदान से निश्चय ही धर्म को लाभ होगा। उसी मित्र ने पुनः प्रेरणा की कि आप सत्यार्थ प्रकाश का उर्दू और फारसी भाषा में अनुवाद करें ताकि अरब-ईरान और टर्की में जा रहा हूँ। वहाँ मैं इसे साथ ले जाऊँगा। परन्तु पण्डित जी ने विश्वास दिलाया कि महर्षि के जीवनी के पश्चात् मैं इस काम को पूरा करूंगा। इसी बीच उन्हें एक सूचना मिली कि हैदराबाद संघ में एक धनी सूरजमल की सन्तान मुसलमान होने जा रही है। आपने वहां पहुँच कर उनको बहकाने वाले मौलवियों से शास्त्रार्थ करके उनकी सन्तान को पतित होने से बचा लिया हैदराबाद से लौटने पर आपको नाहन से निमन्त्रण आया वहां जाकर उन्होंने सनातन धर्मी विद्वान केशवानन्द से शास्त्रार्थ किया और उन्हें पराजित किया। 36 वर्ष की आयु में उनका एक ग्रामीण कुमारी लक्ष्मी-देवी से विवाह हुआ। लक्ष्मी देवी कम पढ़ी लिखी थी अतः घर पर ही स्वयं उनकी शिक्षा का भार अपने ऊपर लिया और बहुत कम समय में उनको एक अच्छी प्रचारिका के रूप में तैयार कर दिया। मथुरा आदि उत्सवों पर वह पण्डित जी के साथ रह कर स्त्री समाजों में घूम घूम कर प्रवचन करती थीं। पण्डित जी का मुख्य काम विवाह के पश्चात् ऋषि जीवन की गाथा लिखने का था परन्तु बाहर की समाजें उन्हें हर समय बुलाती रहती थीं और उनकी बहुत मांग बढ़ने लगी। इसी बीच पण्डित जी के सगे भाई की मृत्यु का समाचार मिला और इसी के साथ

समाज से एक पतित को शुद्ध करने की सूचना भी मिली पण्डित जी तुरन्त अपने भाई के घर जा कर शोकातुर परिवार को सान्तवना देकर पतित को शुद्ध करने घटनास्थल पर पहुँचे। इस प्रकार पंजाब लुधियाना के पास चावापायल से किसी के मुसलमान होने की सूचना मिली तो तुरन्त वहां पहुँचे। जिस गाड़ी पर सवार थे पता चला कि वह एक्सप्रेस गाड़ी है परन्तु ज्यों ही स्टेशन आया चलती गाड़ी से कूद कर जहां विधर्मी होने जा रहा था उसे बचा लिया। इसके बाद आप पुनः अजमेर पहुँचे वहां से लौट कर आपने स्थाई रूप में महात्मा मुंशीराम जी के साथ जालन्धर रहने का निर्णय किया जिससे ऋषि जीवनी लिखने में सहायता मिल सके। पण्डित जी के यहाँ एक लड़का हुआ जिसका नाम सुखदेव रखा गया किन्तु कुछ काल के पश्चात् चल बसा, इसलाम के बारे में उनका स्वाध्याय बड़ा गहन था अतः मुसलमान प्रायः उनसे भड़क उठे थे यहां तक पण्डित जी ने अपने भाषणों में स्पष्ट कह दिया कि इस्लामी ग्रंथों ने पैगम्बरी का दावा करके कुफ्र फैलाया है जहां कुछ मनचले युवक चिल्ला उठे "काफिरों को काटने वाली मुहमदी शमशीर को मत भूल" पण्डित जी ने गरज कर उत्तर दिया मुझे बुजदिली मुहमदी तलवार की धमकी देता है मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं। फरवरी 1897 को एक काला गठंवदन का भयानक नाटेकद का युवक पण्डित जी को पूछता हुआ पण्डित लेखराम जी के निवास स्थान पर आ पहुँचा। उसने पण्डित जी से कहा कि मैं पहले से हिन्दू था कुछ वर्षो से मुसलमान हो गया हूँ अब मैं आपकी शरण में आया हूँ क्या आप मुझे शुद्ध कर लेंगे यद्यपि पण्डित जी को कई स्थानों पर आर्य सज्जनों ने सचेत भी किया था कि मुहमदी लोग आपको मरवा डालने के चक्कर में हैं लेकिन पण्डित के ऊपर इन बातों को कोई असर नहीं हुआ वह उसी प्रकार अपना प्रचार कार्य करते रहे जो व्यक्ति शुद्ध होने आया था पण्डित जी ने उसके बारे में भी कोई छान-बीन करने की आवश्यकता नहीं समझी पण्डित जी एक मार्च को सभा की आज्ञानुसार मुलतान पहुँचे वहां 4मार्च को ईद का दिन था उस नाटे कद वाले व्यक्ति ने पण्डित जी के निवास स्थान पर व सभा के कार्यालय तथा रेलवे स्टेशन पर लगभग 18-19 चक्कर लगाये 6 मार्च को प्रातः वह फिर पण्डित जी के घर पहुँचा उस दिन उसने कम्बल से अपना सारा शरीर ढका हुआ था।

पण्डित जी ने पूछा क्या ज्वर तो नहीं है। वह धीरे से बोला हां कुछ सिर में दर्द भी है। इस बात पर पण्डित जी उसे डाक्टर विष्णुदास जी के पास ले गये नाड़ी देखकर डाक्टर ने कहा कि बुखार तो मालूम नहीं होता इसका खून जोश में है। और थकान मालूम होती है इसके शरीर पर लगाने की दवाई देता हूँ इस पर घातक ने कहा कि नहीं लगाने की दवाई नहीं चाहिये। पीने की दवाई दे दीजिये। यदि उस समय कम्बल उतार कर इसके दवाई लगाई जाती तो कमर में लगी हुई छुरी पकड़ी जाती। डाक्टर की दुकान से उठकर पण्डित जी उस घातक को कपड़े की दुकान पर ले गये और उसी के हाथ एक कपड़े का थान देकर माता जी को दिखाने के लिये घर भेजा बजाज ने घातक के चले जाने पर कहा पण्डित जी ये व्यक्ति बड़ा भयानक दीखता है इसे साथ मत लिये फिरो लेकिन पण्डित जी की तो एक ही धुनसवार था

पण्डित जी ने कहा कि भाई ऐसा मत कहो यह बड़ा धर्मात्मा व्यक्ति है यह शुद्ध होने आया है। पण्डित जी वहां से घर जाकर खुले बरामदे में जहां लेखन कार्य करते थे चारपाई पर बैठकर महर्षि के जीवन सम्बन्धी लेखन कार्य करने लगे। पण्डित जी के बाईं ओर घातक कुर्सी पर बैठा था। सायं छः बजे पण्डित जी ने घातक से कहा कि तुम भी आराम करो लेकिन घातक वहां से हिला नहीं। थोड़ी देरी के बाद माता जी ने कहा कि पुत्र तेल नहीं आया। पण्डित जी उस समय महर्षि दयानन्द के जीवन के मृत्यु की अन्तिम घटना लिख रहे थे। कागज वहीं रख दिये चारपाई से पण्डित जी उस ओर उत्तरे जिधर घातक बैठा था। अपने प्रति दिन के अभ्यासानुसार दोनों आँखें बन्द करके और दोनों बाजू उपर उठाकर पण्डित जी ने जोर से अंगड़ाई लेते हुए कहा कि ओह । भूल गया। जिस समय की ताक में दुष्ट घातक बैठा प्रतीक्षा कर रहा था वह समय आ पहुँचा, तुरन्त उस घातक ने छूरी पण्डित जी के पेट के अन्दर घुसा दी और उसे घुमा दिया जिससे अन्दर घाव तो आये ही और अन्तड़ियाँ बाहर निकल पड़ीं। जब अन्तड़ियां बाहर निकल रही थीं पण्डित जी ने बायें हाथ से अपनी अन्तड़ियों को थामा और दायें हाथ से घातक को पकड़ने का प्रयत्न किया यदि कोई साधारण व्यक्ति होता तो खून देखते ही वह बेहोश हो जाता लेकिन यह आर्य वीर शेर था शेरों जैसा ही धैर्य व साहस दिखाया। उस घातक को जब माता ने पकड़ने का प्रयत्न किया लेकिन घातक ने पास बड़े बेलन को उठाकर माता जी को भी मारा जिससे माता जी को भी कुछ चोटें आईं वह बेहोश हो कर भूमि पर गिर पड़ीं । पण्डित जी के धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी ने पण्डित जी को सम्भाला वह भारत माता का शेर अन्तड़ियां एक हाथ में दबाये हुए चारपाई पर पड़ा था खून का स्रोत बह रहा था उस समय के वृद्ध श्री जीवनदास जी तथा अन्य लोगों ने इस हालत को देखकर बड़े घबराये परन्तु उस आर्य वीर के मुख पर कोई मलीनता नहीं थी। लोगों के पूछने पर पण्डित जी बड़ी वीरता से उत्तर दे रहे थे। यह समाचार चारों ओर फैल गया। पण्डित जी को हस्पताल ले गये वहां काफी प्रयत्न किया गया लेकिन पण्डित जी को कोई न बचा पाया। पण्डित जी बराबर विश्वानि देव मन्त्र तथा गायत्री मन्त्र का पाठ करते रहे तथा बीच-बीच में "परमेश्वर तुम महान् हो परम पिता" इत्यादि शब्द बोलते रहे। तथा अपना अन्तिम सन्देश देते हुए कहा कि "आर्य समाज से लेख का काम बन्द नहीं होना चाहिये" इसी के साथ 6मार्च 1897 की रात्रि 2 बजे के लगभग पण्डित जी सदा के लिये गहरी नींद में सो गये। प्रातः होते ही मृत्यु का समाचार बिजली की तरह फैल गया धर्मवीर पण्डित लेखराम की शवयात्रा में 20 हजार से अधिक लोग सम्मिलित हुए ।

वैदिक मिशनरी की हत्या की कुचेष्टा

भूतपूर्व पादरी तथा आसाम, अरूणांचल प्रदेश में मिशनरी रह चुके श्री जयन्त कुमार पाण्डेय जो वर्तमान समय में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश में उपदेशक के पद पर कार्यरत हैं की हत्या का प्रयास ईसाई मिशनों के गुण्डों तथा ईसाई नेताओं द्वारा खतरनाक तरीके से किया जा रहा है। आर्यसमाज मंदिर बुढ़ाना गेट मेरठ शहर में घुसकर श्री पाण्डेय को मारडालने तथा उनकी जबान बन्द करने की धमकी देने के बाद एक ईसाई गुण्डे ने शास्त्रीनगर में उन पर आक्रमण करने का प्रयास किया। उसने श्री पाण्डेय के साथ गाली-गलौज की तथा कहा कि वह उनके टुकड़े-टुकड़े कर देगा। वह आक्रमण करने को झपटा ही था कि श्री पाण्डेय अपनी मोपेट से भाग निकले। उस गुण्डे ने श्री पाण्डेय से कहा कि वह क्रिमिनल है तथा यदि श्री पाण्डेय मेरठ नहीं छोड़ते तो उन्हें ईश्वर भी नहीं बचा सकता। श्री पाण्डेय ने जिलाधीश, पुलिस-अधीक्षक (वरिष्ठ) तथा डी0आई0जी0, प्रधान मंत्री, राष्ट्रपति, गृहमंत्री तथा प्रदेश के मुख्यमंत्री से अपनी सुरक्षा की माँग की तथा चर्च के गुण्डों के विरूद्ध कारवाही की माँग की। परन्तु चर्चों का प्रशासन व सरकार पर कड़े शिकन्जे के कारण उनकी आवाज नक्कार खाने में तूती की आवाज बनकर रह गई।

श्री पाण्डेय ने चर्चों द्वारा उत्तर-पूर्वी राज्यों में विद्रोही गतिविधियों को संचालित करने तथा उत्तरी-पश्चिमी राज्यों तथा दक्षिण पूर्वी राज्यों में शादी, चिकित्सा, शिक्षा तथा धन का लालच देकर धर्म परिवर्तन का पर्दाफास करने का व्यापक अभियान छेड़ रखा है। श्री पाण्डेय द्वारा तथ्यों पर आधारित आरोपों का सामना करने में असमर्थ पाकर चर्चों ने श्री पाण्डेय को समाप्त कर देने की योजना बनाई है। निर्भीक, बेबाक, राष्ट्रभक्त श्री पाण्डेय ने किसी भी तरह के प्रलोभन, हिंसा तथा आतंकवाद के सामने न झुकने का दृढ़ संकल्प व्यक्त किया है। हम इस समय अपने सारे मतभेदों को ताक पर रखकर मिशनों द्वारा गुण्डागर्दी और देशद्रोहियों और विदेशी एजेन्टों द्वारा श्री पाण्डेय की हत्या के प्रयास का विफल करने हेतु एकजुट होकर इस धर्म-युद्ध में श्री पाण्डेय को नैतिक तथा अन्य समर्थन प्रदान करें। अपने राष्ट्र-धर्म-संस्कृति के रक्षा हेतु यह हमारा पुनीत कर्तव्य है ।

इन्द्रराज,
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0

xxxxxxxxx

समस्त महोपदेशकों, उपदेशकों एवं प्रचारकों की सेवा में

आवश्यक सूचना

धर्मभूषण परीक्षा- सभी के लिए देना अनिवार्य किया गया है। प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ0प्र0 द्वारा यह परीक्षा लिखित एवं मौखिक रूप से मिति आषाढ़ कृष्ण 11,सं0 2046 विक्रमी दिनांक- 29-6-89 दिन वृहस्पतिवार को मध्यान्ह 11 बजे आर्यसमाज मंदिर गंज स्टेशन रोड मुरादाबाद में होगी।

पाठ्यक्रम का प्रारूप प्रेषित हैः-
यथा समय यथा पहुँचना सुनिश्चित करें ।

होली का वैज्ञानिक स्वरूप

{कविरत्न श्री जगदीश प्रसाद परन नीमच}

यव गेहूँ चना सरसों अलसी, सब ही पक आज अनाज रहा।
यह देख मनोहर दृश्य सभी, अति हर्षित होय समाज रहा ।।
उपलक्ष इसे करके जग में, शुभ होलक उत्सव करते हैं ।
अधपक्व यवाहुति दे करके, सब व्योम सुगन्ध से भरते हैं ।।

सब सज्जन वृन्द अतः जग में, नव सस्य सुयज्ञ इसे कहते।
कुल बैर निसार सनेह सने, हुलसे सब आपस में मिलते।।
चर पान इलायचि भेंट करें, निज मित्र समादर हैं करते।
हृदयंगम गायन वादन से, मुद से सब हैं मन को भरते।।

भारतीय उत्सव केवल आमोद-प्रमोद का ही साधन नहीं है। धर्म परायण भारतीयों की प्रत्येक बात में धार्मिकता में वैज्ञानिकता की पुट लगी हुई है। वर्षा कालीन चौमासे की तरह शीतकालीन गुहासा भी एक प्रकार का चौमासा ही माना जाता है। आवासों की परिष्कृति के लिए तथा बसन्त की नई-ऋतु बदलने पर अस्वास्थ्य के प्रतिरोधार्थ है वन से वातावरण के संस्कारार्थ, नवागत ग्रीष्मोचित हलके फुलके श्वेत वस्त्रों के बदलने और नई आई हुई आषाढ़ी फसल के यवों से देव यज्ञ करने के लिए आषाढ़ी नवसस्येष्टि अभिप्रेत है।

संस्कृत में अग्नि में भूने हुए अर्द्धपक्व अन्न को होलक कहते है :-
प्रमाणतः "तृणाग्नि भृष्टार्द्धपक्व शमो धान्यं होलकः
{शब्द कल्पद्रुम कोश}

आषाढ़ी नवान्नेष्टि में नवागत अधपके यवों के होम के कारण इसको "होलिकोत्सव" कहते हैं। कुछ लोग अज्ञानतावश इस पर्व का सम्बन्ध प्रह्लाद व हिरणाकुश की कथा से जोड़ देते हैं किन्तु यह उचित नहीं है क्योंकि ये महोत्सव तो आदिकाल से मानते चले आ रहे हैं। ये तो प्रकृति तथा ऋषि मुनियों व तपस्वियों की देन है। पर्वों का इतिहास से कोई सम्बन्ध नहीं। इनका सम्बन्ध को मानव मात्र की समग्रता से है, इन्हें जाति अथवा सम्प्रदाय विशेष की परिधि में नहीं बाँधा जा सकता।

जीव विज्ञान की दृष्टि से भूना हुआ अन्न पित्तादि दोषों का नाश करता है। योरुप में सैन्ट वैलन्टान{ } का दिन तथा इंग्लैंड में ये पोल { } के उत्सव इसी प्रकार मनाये जाते हैं।

देव यज्ञ का प्रधान साधन भौतिक अग्नि है क्योंकि वह सब देवों का दूत है वेद में उसको अनेकबार देवदूत कहा गया है। यही सब देवों को होम हुआ अन्न पहुँचाता है इसीलिए नवागत अन्न सर्वप्रथम अग्नि के ही समर्पित किया जाता है।

यह एक राष्ट्रीय एवं मांगलिक पर्व है। इस अवसर पर छोटे बड़े, अमीर-गरीब का भेद भाव भुलाकर गान बाद्य द्वारा आमोद-प्रमोद के साथ उर्मोत्साह से यह पर्व मनाते हैं। जो कि मंगलमूल व सौभाग्य सूचक होकर मानव जीवन का प्रमुख अंग है। इससे पारस्परिक प्रेम व व्यवहार बढ़ता है। वर्ष भर में यदि किसी से द्वेष भाव उत्पन्न हो गया हो तो वह दूर हो जाता है।

वाममार्गी काल में हमारी अज्ञानता व अशिक्षा के कारण इस पर्व का स्वरूप ही बिगड़ गया। दूषित व मादक पदार्थों का सेवन करना अथवा गन्दे अथवा अशुभ हाव-भाव बताना सब आसुरी कार्य हैं।

कुछ लोग इस दिन अश्लील साहित्य का प्रकाशन कराने अथवा अभद्र शब्दों के प्रयोग करने में अपना गौरव समझते हैं, किन्तु इनसे कभी-कभी बड़े भयंकर दुष्परिणाम निकलते हैं।

हमें चाहिये कि हम होली का पर्व अपनी प्राचीन मर्यादानुसार बड़ी शालीनता से इसकी गरिमा बनाये रखते हुए बड़ी शालीनता से मनायें । यज्ञ करें, परस्पर प्रेम से मिलें, नवान्न का सेवन करें, मधुर व कल्याणकारी गान करें तथा अपने समस्त विकारों को ज्ञानाग्नि के समर्पित कर परस्पर भाईचारे, समाजसेवा व राष्ट्र सेवा का व्रत लें ।

दयानन्द बोधोत्सव पर विशाल शोभा यात्रा

लखनऊ, 6मार्च / महर्षि दयानन्द के 152वें बोधोत्सव के अवसर पर जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में एक विशाल और भव्य शोभा यात्रा निकाली गयी।

दयानन्द बाल सदन, मोतीनगर में शुरू हुई इस शोभायात्रा में नगर के दो दर्जन आर्य समाजों के कार्यकर्ता, मूर्धन्य आर्य विद्वान, श्रीमद् दयानन्द बाल सदन, दयानन्द विद्या मन्दिर, दयानन्द बाल विद्या मन्दिर, बालिका विद्यालय मोतीनगर, डी०ए०वी०कालेज, शांति ज्योति बालिका विद्यालय, बाल विवेक स्कूल आदि के छात्र-छात्राओं, अध्यापक अध्यापिकाओं और भारी संख्या में आम जनता ने सोल्लास भाग लिया।

शोभा यात्रा में चल रहे छात्र-छात्रा गुरुकुल के पारंपरिक बसंती रंग के वस्त्रतथा महिलाओं ने केसरिया साड़ियां धारण की हुई थीं। शोभा यात्रा में सजे हुए ट्रकों, कारें और स्कूटर मोटर साईकलों पर आर्य वीर युवकों एवं कन्याओं की टोलियां चल रही थी, जो वेदों का युग लाने को ऋषि दयानन्द आये थे, "भारत स्वाधीन कराने को - ऋषि दयानन्द आये थे, "छुआ-छूत मिटाने को ऋषि दयानन्द आये थे" "नारी सम्मान दिलाने को - ऋषि दयानन्द आये थे" आदि नारों से वातावरण गुंजा रहे थे। शोभा यात्रा के आगे हाथी और बैंड वालों की टोलियां चल रही थीं, जो आर्य धुनें बजा रही थीं।

इस अवसर पर शोभा यात्रा के पूरे मार्ग में अनेक तोरण द्वार बनाये गये थे। शोभा यात्रा के स्वागत में पूरे रास्ते सड़कों के दोनों ओर खड़ी जनता ने आर्य जन को चने व फल इत्यादि खिलाये।

शोभा यात्रा में होने वाले आर्य जनों में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री, उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री मनमोहन तिवारी, जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मंत्री चन्द्र कुमार छाबड़ा, नगर आर्य समाज के प्रधान कुंवर शान्ति प्रकाश, मंत्री रेवती रमण रस्तोगी प्रमुख थे ।

शोभा यात्रा दयानन्द बाल सदन, मोतीनगर से गणेशगंज, अमीनाबाद व महिला कालेज के सामने से होती हुई नगर आर्यसमाज रकाबगंज में जाकर एक सभा में बदल गयी जहां आर्यसमाज के जाने माने विद्वानों ने अपने प्रवचनों में महर्षि दयानन्द के जीवन व आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला व उन्हें व्यवहार में जीवन में उतारने का आह्वान किया।

xxxxxxxxx

दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस मनाया गया

कानपुर। आर्यसमाज के तत्वावधान में आज लाजपत नगर में प्रातः प्रभातफेरी निकाली गयी। इस अवसर पर प्रतिनिधि सभाकी उपमंत्री डा० आशा रानी रायने संबोधित करते हुए नवयुवकों को महर्षि के आदर्शों पर चलने को कहा। उन्होंने दहेजरहित जाति-पाँति बंधन से मुक्त होकर विवाह करने व परिवार में कुरीतियों अन्धविश्वासों व कुपरम्पराओं को दूर करने के हेतु सलाह दी। अन्य वक्ताओं में जयराम त्यागी श्यामलाल चंचल मौर्या व हंसराज सेठ थे।

इसी प्रकार हरजेन्द्रनगर में श्री होशियार सिंह सीताराम आदि ने शास्त्री नगर विजयनगर में रामबली नवाबगंज में श्रीमती-इन्द्रा सिंह अनिलकुमार तोमर व हरपाल सिंह ने स्वरूपनगर में श्रीमती सरला चौधरी पुरुषोत्तमदास व कुली बाजार बंदर बाजार मेस्टन रोड वेद मंदिर गोविन्दनगर अर्मापुर व कृषि विश्वविद्यालय किदवईनगर बाबूपुरवा सभाओं में महर्षि का जन्म दिन मनाया।

xxxxxxxxx

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज खानपुर {मेरठ} का 46वाँ वार्षिकोत्सव 25 से 27मार्च, 1989 तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर विशिष्ट अतिथि उच्चकोटि के आनन्दबोध सरस्वती आदि सन्यासी, विद्वान तथा संगीतज्ञ पधार रहे हैं।

xxxxxxxxxxxxx

२२ मार्च जिनका बलिदान दिवस है—

सरदार भगतसिंह

कि स ग।

"जननि जने तो भक्त जन कै दाता कै शूर"

शहीद राष्ट्र के आधार होते हैं। उन्हीं के बल पर राष्ट्र उठता तथा बनता है। जो जाति अपने शहीदों का सम्मान करती है, वह अजेय होती है। और शहीदों को भुला देती है---------।

राष्ट्र को स्वतंत्र कराने में जिन शहीदों ने सर पर कफन बाँधे उनमें सरदार भक्त सिंह का नाम अग्रणी है। आपका जन्म सन् 1907 में लायलपुर के एक देश भक्त परिवार में हुआ था। आपके पिता जी का नाम सरदार किशन सिंह था। जिस दिन आपका जन्म हुआ उसी दिन आपके चाचा स्वर्णसिंह देशभक्ति के आरोप में जेल से छूट कर घर आये तथा दूसरे चाचा अजीत सिंह के भी मांडले जेल से छूटने के समाचार मिले। इसीलिए आपका नाम भगत अर्थात् भाग्यशाली रखा गया।

प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर आप लाहौर के डी0ए0वी0कालेज में भर्ती हुए आपका परिवार कट्टर आर्यसमाजी थाइस कारण बचपन से ही आप क्रान्तिकारी विचार धारा के थे। इसी कालेज में आपका परिचय, सुखदेव, यशपाल भगवती चरण आदि से हुआ। उस समय इस कालेज के प्राध्यापक लाला लाजपतराय व भाई परमानन्द जैसे कट्टर राष्ट्रवादी थे, फिर भला कौन स्वाभिमानी नवयुवक क्रान्ति की दीक्षा लेने से बच सकता था? आपने डी0ए0वी0 कालेज में ही एक क्रान्तिकारी संगठन बनाया। एफ0ए0 की परीक्षा पास करने के बाद सन् 1923 में माता-पिता ने आपका विवाह करना चाहा। किन्तु भला जिस वीर को भारत माता के बन्धन पाशों व करुण क्रन्दन का स्वर सुनाई पड़ रहा हो वह रंगरेलियों तथा शहनाईयों पर कब रीझने वाले थे। आप घर से भाग खड़े हुए।

कुछ दिन आपने दिल्ली जाकर "अर्जुन" समाचार पत्र में तथा बाद में श्री गणेश शंकर विद्यार्थी के "प्रताप" पत्र में गुप्त रूप से कानपुर जाकर पत्रकार के रूप में कार्य किया। इसके बाद आपने उत्तर प्रदेश के संगठन "हिन्दुस्तान रिपब्लिकन-एसोसिएशन" में श्री योगेश चटर्जी से मिल कर कार्य किया। यहाँ से आपका क्रान्ति जीवन पूरी तरह से प्रारम्भ हुआ।

पिता जी की भीषण अस्वस्थता का तार पाकर आप लाहौर आ गये तथा उपनाम जसवन्त सिंह के नाम से कीर्ति नामक पत्र का सम्पादन किया। आपने "नौजवान" "भारतसभा" नाम से भी एक संगठन बनाया। बाद में आप सुखदेव से मिलकर क्रान्तिकारी संगठन में शामिल हो गये। काकोरी काण्ड के पश्चात् सन् 1926 में चन्द्रशेखर आजाद भी आपसे आ मिले। अक्टूबर 1926 में ही दशहरा मैदान के लोगों के बीच एक बम फटा जिसमें "नवजवान भारत सभा" के कई सदस्य बन्दी बनाये गये। निर्दोष सिद्ध होने पर सरदार भगतसिंह छूट गये। 9 सितम्बर 1928 को दिल्ली में संगठन की कार्यकारिणी समिति की गुप्त बैठक हुई। जिसमें इस संगठन का नाम "हिन्दुस्तान-रिपब्लिकन आर्मी" रखा गया। बंगाल से बम बनाने वाले कुछ उत्साही नवयुवकों को लाकर कलकत्ता, आगरा, सहारनपुर व लाहौर में बम बनाने की व्यवस्था की गई।

जनरल सांडर्स ने जब लाला लाजपतराय पर निर्मम लाठी प्रहार कराया तो आपने उसे मौत के घाट उतारने का प्रण किया, किन्तु जयगोपाल की गलत शनाख्ती के कारण मि0स्काट तथा हेड कांसटेबल चाचन सिंह इनके शिकार बने। पुलिस के तगड़े पहरे में से आप दाढ़ी मूँछ कटवा कर यूरोपियन साहब के रूप में राजगुरु इनके अर्दली के रूप में व श्री आजाद तीर्थ यात्रा में पण्डे के वेश में लाहौर से बाहर निकल गये। अंग्रेज सरकार हाथ मलती रह गई।

सरदार भगतसिंह का कथन था कि अंग्रेज सरकार के बहरे कान खोलने के लिए धड़ाके की आवश्यकता है तथा इसके लिए कुरबानी देनी होगी, आपने एक महान् योजना बनाई। 8 अप्रैल 1928 को जब असेम्बली सभा हो रही थी आपने व बटुकेश्वर दत्त ने वहाँ बम फेंके तथा "इन्कलाब जिन्दाबाद" व साम्राज्यवाद का नाश हो के नारे लगाये। आप चाहते तो भगदड़ में वहाँ से भाग जाते, किन्तु क्रान्ति की मशाल को प्रज्वलित करने हेतु अपने आप को पुलिस के सुपुर्द कर दिया। आप पर पहले असेम्बली बम काण्ड का व बाद में लाहौर बम काण्ड व हत्याकाण्ड के मुकददमे चले। इसके लिए ये क्रमशः मियावली तथा लाहौर जेल ले जाये गये तथा यातनाऐं दी गईं।

अन्त में अक्टूबर 1930 के फैसले के अनुसार सरदार भगतसिंह राजगुरु व सुखदेव को फाँसी व अन्य देशभक्तों को 3 साल से लेकर आजन्म कारावास तक की सजा दी गई। जनता के प्रबल विरोध करने पर भी 22 मार्च 1931 को आपको व आपके साथियों को सेन्ट्रल जेल लाहौर में फाँसी दे दी गई। व लाशों को गुप्तरूप से अर्द्धजली कर रानी नदी में बहा दियागया।

फिरंगी सरकार ने उस महान् शहीद के अन्तिम चिन्ह मिटाने की लाख कोशिश की किन्तु हमारे दिलों दिमाग में "शहीदेआजम" भगत सिंह आज भी जिन्दा हैं।

xxxxxxxxxxxxx

उत्सव

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई का 44वाँ वार्षिकोत्सव रविवार दिनांक-22-1-89 से 29-1-89 तक आर्यसमाज मन्दिर सान्ताक्रुज में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ श्रीमती-ऊषा देवी जी शास्त्री "गुडगाँव" के ब्रह्मत्व में नित्य प्रातः-7 से 9-30 बजे तक हुआ, प्रातः कालीन यज्ञ में नित्य सैकड़ों व्यक्तियों ने भाग लिया और यजमान के रूप में अपनी आहुति दी, आर्य भाई-बहनों में यजमान बनने के लिए बहुत उत्साह था।

सांय काल 8 से 10 बजे तक स्वामी सच्चिदानन्द जी-सरस्वती, श्रीमती ऊषा देवी जी शास्त्री के उपदेशों तथा श्री-विजय आनन्द एवं श्रीमती शिवराजवती जी आर्या के मधुर भजनों का आनन्द प्राप्त हुआ।

आर्यसमाज अमरोहा की ओर, से दिनांक 12-2-89 रविवार को आर्यसमाज मंदिर में प्रातः 8 से 10तक सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार महर्षि दयानन्द जी का 164वाँ, जन्म दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमें श्री जयपाल सिंह जी व्यस्त प्रधानाचार्य एवं श्री सुरेन्द्रनाथ मित्तल जी ने महर्षि के उपकारों पर प्रकाश डाला।

xxxxxxxxx

महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का जन्मदिन 12 फरवरी 1989 जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यसमाज चौक बाजार बुलन्दशहर में प्रातः 8 बजे से 10 बजे तक काफी उत्साह एवं सजधज के साथ आयोजित किया गया इसमें जनपद की कई आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया इसके अन्तर्गत सामूहिक यज्ञ, प्रवचन एवं प्रभातफेरी निकाली गयी।

xxxxxxxxx

- दिनांक- 10-2-89 को बसन्त पंचमी के शुभावसर पर आर्य वीर दल गुरुकुल करतारपुर में हकीकत राय बलिदान दिवस ब्र0 प्रीतपाल आर्य की अध्यक्षता में मध्याह्न 2 बजे से 5 बजे तक सोत्साह व श्रद्धापूर्वक मनाया गया।

xxxxxx

- आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर कानपुर-7 ने दिनांक- 12फरवरी-1989 को समाज मंदिर प्रांगण में महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मदिवस हर्षोल्लास से मनाया।

xxxxxxxxxxxxx

- आर्यसमाज जौनपुर का 89वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक-13 से 16 अप्रैल 1989 तक मनाया जावेगा। जिसमें भाग ले रहे हैं श्री प्रो0 उत्तम चन्द जी"शरर" श्री पं0 महेन्द्रपाल जी मौलवी फाजल श्री शान्तिबाला जी तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक, श्री कुँवर महीपाल सिंह जी।

xxxxxxxxx

ऋषि दयानन्दाय तस्मैनमः

सावित्री देवी शर्मा
एम०ए० वेदाचार्या
10-केलाबाग, बरेली।

टंकारीत सदासमृद्धि बहुलेमोर्वीप्रदेशस्थिते।
ग्रामे शास्त्र पुराणपाठकुशलैः सुब्राह्मणैः सेविते॥
श्री कृष्णाख्य द्विजगृहं स्वजनुषा यो वै समालोकयत्।
मानार्हाय मनस्वि ने मुनिदयानन्दाय तस्मै नमः॥

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती शिवपटल पर छाई हुई विविध विकृतियों के सुधारक के रूप में इस शस्य श्यामला भारत भूमि पर अवतीर्ण हुये। अलख नन्दा के तट पर खड़े होकर उस ऋषि ने अपने ज्योतिर्मय नयनों से जिधर देखा उधर अन्धकारमयी तमिस्रा ही दीखी। आध्यात्मिक, शास्त्रीय, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, पारिवारिक एवं आर्थिक सभी दुरन्त समस्यायें किसी मन्त्रार्थ दृष्टा दार्शनिक का समाधान माँग रही थीं। महर्षि ने वस्तुतः सत्यार्थ प्रकाश वेद चतुष्टय को ही अपना परम आधार मानकर कुशल वैद्य के समान सभी रोगों का निदान एवं सफल चिकित्सा प्रारम्भ की जिनका क्रमशः विवरण निम्नांकित है--

1- **आध्यात्मिक-** आध्यात्मिक क्षेत्र में विभिन्न वादों में दार्शनिक उलझे हुए थे। अद्वैतवाद, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद विशिष्टाद्वैतवाद जैसे विषयों के साम्प्रदायिक खण्डन-मण्डन में ही अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर रहे थे। ऋषिवर ने ईश्वर, जीव प्रकृति रूप में तीन अनादि सत्ताओं की तर्क संगत समीक्षा प्रस्तुत कर त्रैतवाद का उद्घोष किया। सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सच्चिदानन्दस्वरूप परमात्मा जगत्पति है। अनन्त जीवों के कल्याणार्थ उसने इस दृश्यमान जगत की रचना की। संसार की अनेक भाषाओं के कारण उस प्रभु के नाम भिन्न हो सकते हैं किन्तु सकल विश्व की नियमक शक्ति एक परमेश्वर ही है। हम सभी आत्मायें उसकी अमृत सन्तानें हैं। प्रकृति हमारी जगदम्बा माता तथा परमात्मा सबका पिता है। अतः साम्प्रदायिक संघर्षों का कोई औचित्य प्रतीत नहीं होता।

2- **शास्त्रीय-** 1-ऋषि दयानन्द के अवतरण से पूर्व भारतीय दर्शनों में अन्तर्निहित एक रूपता को न समझकर दार्शनिक इन्हें केवल अलग-अलग साम्प्रदायिक ग्रन्थ समझते थे। ऋषि ने इन षड्दर्शनों को वेदार्थज्ञान का आधार बताकर विद्वानों के समक्ष इनका समन्वित रूप प्रस्तुत किया। अवरुद्ध मार्ग खुला। पौरस्त्य एवं पाश्चात्य विचारों ने इस दृष्टि से दर्शनों के स्वाध्याय से वैदिक ज्ञान के गाम्भीर्य को समझने की चेष्टा की।

2- सूत्र ग्रन्थों के आधार पर चलने वाली पुरातन वेद भाष्य प्रणाली को नई दिशा देते हुए महर्षि ने मन्त्रार्थ बोध के लिये यास्क प्रणीत नैरुक्त प्रक्रिया का अवलम्बन किया जिससे विलक्षण प्रतीकार्थों द्वारा दिग्भ्रान्त विचारकों की अन्तर्दृष्टि खुली विदेशियों द्वारा गड़रियों के गीत कहे जाने वाले वेद आज सार्वभौम विश्व संस्कृति के प्राण स्वरूप प्रतीत हुए। ऋषि दयानन्द की उद्‌बोधन शैली का यह लोकोत्तर प्रभाव था। साथ ही ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त आर्ष परम्पराओं से परिपुष्ट भाष्य का आदर्श भी ऋग्वेद - यजुर्वेद भाष्यों में प्रकट किया।

3- **सामाजिक-** अनेक सामाजिक कुरीतियों के प्रचलन से देश की अन्तः स्थिति बिगड़ चुकी थी। वर्ग संघर्ष विकराल रूप से मानवता को जर्जर बना रहा था। वर्णाश्रम व्यवस्था के मौलिक चिन्तन से इन सभी (बाल विवाह, वृद्धविवाह, अस्पृश्यता, नारी जाति में अशिक्षा) समस्याओं का तात्विक समाधान प्रकाशित किया। आज की अशिक्षिता नारी में उन्हें गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, भारती, विद्योत्तमा, सीता, सावित्री जैसी विदुषी देवियों के दर्शन हुए। उनकी दृष्टि में सम्मानित मातृशक्ति ही विश्व में स्वर्गीय साम्राज्य की संस्थापिका है। परिणामतः आज भारत कोने-कोने में कन्या गुरुकुलों की स्थापना हुई। असंख्य देवियाँ वेद शास्त्रों में पारंगत होकर सारस्वत वैभव की अधिकारिणी बनी। यह था ऋषि कृपा का प्रसाद।

4- **राजनैतिक-** विदेशी शासकों के पारतंत्र्य से मुक्त स्वतंत्र भारत की कल्पना को साकार करने के लिये ऋषि ने सर्वप्रथम "स्वराज्य" शब्द का प्रयोग किया। प्रजा पर पुत्रवत् कृपा दृष्टि रखने वाला, निष्पक्ष, न्याय प्रिय होने पर भी विदेशी राजा स्वदेश के लिये कभी हितकारी नहीं हो सकता। अपने देश में अपना ही राजा हो। सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में वेदानुमोदित राजनैतिक व्यवस्था एवं वैदिक संविधान पर प्रकाश डाला है।

5- **आर्थिक-** अपने देश की आर्थिक विपन्नता को देखकर महर्षि का वीतराग हृदय भी द्रवित हो उठा। देश को पूर्ववत् समृद्धशाली बनाने के लिये गोकरुणानिधि नामक पुस्तक लिखकर संसार के अर्थ शास्त्रियों को चुनौती दी। गोरक्षा द्वारा कृषि उत्पादन में अभिवृद्धि होने से ही दरिद्रता का समूलनाश सम्भव है। इस प्रयोजन के लिये अनेक स्थानों पर गोकृष्यादि रक्षिणी सभाओं का भी निर्माण किया।

6- **धार्मिक-** इस धराधाम पर महर्षि के शुभागमन से पूर्व धर्म शब्द मत, सम्प्रदाय या मजहब का पर्यायवाची समझा जाता था। अतः हमारा धर्म, धर्मग्रन्थ धर्मस्थल एवं धार्मिक महापुरुष सभी बंटे हुए थे। धर्म के नाम पर क्षुद्राशय मनुष्यों में पारस्परिक कलह-क्लेशों को देखकर देव दयानन्द ने वैदिक धर्म का डंका बजाया। इस सदाचारमय धर्म चक्र के प्रवर्तनार्थ विश्व के श्रेष्ठ पुरुषों को एकता के सूत्र के आबद्ध होने के लिए सादर आवाहन किया।

7- **पारिवारिक-** पारिवारिक संघटन को विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्राथमिक विद्यालय मानकर आचार संहिता बनाई। फलस्वरूप इन्हीं सभ्य परिवारों में प्रशिक्षित कितने ही देश भक्तों (लाला लाजपतराय, महात्मा हंसराज, स्वामी श्रद्धानन्द, सरदार भगत सिंह, राम प्रसाद बिस्मिल इत्यादि) ने देशहित में अपना तन, मन, धन, समर्पित किया।

अतः हम कह सकते हैं कि सत्य सनातन वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द ने आजीवन देश की विकट परिस्थितियों में संघर्षरत रहकर सार्वजनिक कल्याण मार्ग का प्रदर्शन किया। आधुनिक स्वतंत्र भारत के कर्णधार यदि ध्यानपूर्वक उनके आदर्श सिद्धांतों का आचरण करें तो स्वदेश में व्याप्त अराजकता एवं भ्रष्टाचारों का निवारण अवश्यम्भावी है। योगी अरविन्द ने कहा था -यदि संसार के महापुरुषों को पर्वत की चोटियां माना जाये तो देव दयानन्द उन सब में सर्वोच्च शिखर माने जायेंगे।

पाषाणैरव्याहतोऽपि सुमनाः प्रादात् शुभं सौरभम्।
साक्षान्मातृवसुन्धरेव मनसः सद्भावमा वेदयत्।।
कष्टे येन परोपकार व्रतिना संजीवन यापितम्।
श्रद्धेयाय महर्षये गुरुदयानन्दाय तस्मै नमः।।

xxxxxxxxxxxxxx

गढ़वाल में वेद प्रचार

ग्राम नंगली एवं बिचपड़ी में वैदिक प्रचार श्री पं० मामचन्द्र, नरेश जी तथा दीपचन्द जी द्वारा हुआ काफी जनता ने प्रचार का लाभ उठाया ।

किरतपुर

समीपवर्ती ग्राम खसौर में बसन्तोत्सव धूम-धाम से मनाया गया।

xxxxxxxxxxx

मीरजापुर वृहद यज्ञ के पश्चात् आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि-दयानन्द सरस्वती के 164वीं जन्मदिवस पर आर्यसमाज, मीरजापुर में उपमंत्री श्री सुदर्शन राय द्वारा सायंकाल समाज के प्रवर्तक श्रद्धेय स्वामी जी की जीवनी पर वृहद प्रकाश डाला गया तथा उपस्थित लोगों में सभी ने एक ही बात कही यदि स्वामी जी का प्रादुर्भाव न हुआ होता तो समाज में नई जागृति न आती। हम उनके ऋणि हैं। सुबह प्रभात फेरी निकाली गई। ब्रह्मचर्यों, बच्चों तथा आर्यसमाज के सभी पदाधिकारी आर्य प्रेमी बन्धुओं ने भाग लिया साथ ही यह भी प्रतिज्ञा की गई की बन्द आर्य महिला बाल सदन को शीघ्र प्रारम्भ किया जायगा। ताकि स्व०-स्वामी जी की इच्छा पूरी हो।

- लालजी गुप्ता
मंत्री, आर्यसमाज, मिरजापुर।

xxxxxxxxxx

- **आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़ का महोत्सव-** 11 व 12मार्च, 1989 शनिवार-रविवार को ससमारोह मनाया गया।

खादी ग्रामोद्योग के विकास को प्राथमिकता



श्री अधीर दुबे, उपाध्यक्ष खादी ग्रमोद्योग बोर्ड माननीय मुख्य मन्त्री का स्वागत करते हुए।

लखनऊ 28 फरवरी

बिजली, सिंचाई और कृषि की तरह खादी ग्रमोद्योगों को भी विकास हेतु प्रदेश में सर्वोच्च प्राथमिकता दी जायेगी। इसके लिये प्रदेश की स्वयं सेवी तथा रचनात्मक संस्थाओं एवं संगठनों की पूरी शक्ति का लाभ उठाया जायेगा, जिससे कि प्रदेश में रोजगार देने में प्रभावशाली कार्य किया जा सके। जिला योजनाओं में खादी गामोद्योगी संस्थाओं का पूरा योगदान होना चाहिए। इसके लिये स्वैच्छिक संस्थायें अपनी कार्ययोजना 3 माह के भीतर तैयार करके प्रस्तुत कर दें।

उक्त विचार श्री नारायण दत्त तिवारी, मुख्यमंत्री, उ0प्र0 द्वारा आज उत्तर प्रदेश खादी ग्रामोद्योग बोर्ड, कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग निदेशालय तथा रेशम निदेशालय, उ0प्र0द्वारा संयुक्त तत्वाधान में आयोजित एक कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किये।

श्री तिवारी ने आगे बताया कि सातवीं योजना समाप्ति पर है और आठवीं योजना प्रारम्भ होने जा रही है। इसी प्रकार 20वीं शताब्दी भी समाप्ति पर है और 21वीं शताब्दी भी आनेवाली है। समय के सन्दर्भ में हम नाजुक मोड़ पर खड़े हुए हैं और अनेक चुनौतियाँ हमारे सामने हैं। उपलब्धियों और आधुनिकता की नयी ऊँचाइयों की दौड़ में हम पीछे न रह जायें जनसंख्या के बढ़ने के कारण आने वाले 20-25वर्ष में समस्यायें और बढ़ सकती हैं जिससे प्रजातांत्रिक ढाँचे पर और भी दबाव बढ़ जायेगा। ऐसी स्थिति में खादी ग्रामोद्योगे को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक सन्दर्भों में देखना होगा। इस परिपेक्ष्य में कार्यशालायें सभी उपयोगी हो सकती हैं, जबकि उनको व्यवहारिक रूप दिया जाय। श्री तिवारी ने खादी ग्रामोद्योगी वस्तुओं के विपणन के लिये नवीन और आधुनिक तरीकों का प्रयोग करने पर बल दिया। छोटे उद्योगों की स्थापना के लिये बैंकों की सहायता का उपयोग नही हो पा रहा है। इस पर उन्होंने खेद व्यक्त किया। कम व्याज पर ऋण का लाभ गरीब और पिछड़े वर्ग को मिलना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध श्रम शक्ति का भरपूर उपयोग किया जाय। इसमें रचनात्मक संस्थायें अपनी जिम्मेदारी निभायें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि एक ऐसा अभियान चलाया जाय कि प्रत्येक परिवार कम से कम एक जोड़ा खादी वस्त्र वर्ष में अवश्य खरीदे। इससे वर्ष में करोड़ों जोड़े खादी वस्त्र को बिक्री सुनिश्चित हो सकेगी। श्री तिवारी ने कहा कि लघु उद्योग विकास बैंक का एक मुख्यालय लखनऊ में भी होना चाहिए, जिसके लिए भूमि एवं अन्य सहयोग शासन द्वारा उपलब्ध कराये जायेंगे।

इसके पूर्व कार्यशाला के मुख्यअतिथि श्री लक्ष्मीदास-अध्यक्ष, खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग,बम्बई ने कहा कि 21वीं शताब्दी तक देश के प्रत्येक गाँव में खादी ग्रामोद्योगों की स्थापना सुनिश्चित की जायेगी। उत्तर प्रदेश में ग्रामोद्योग को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने खादी आयोग द्वारा भरपूर सहयोग का आश्वासन देते हुए बताया कि देश में स्थापित होने वाली 6 प्रयोगशालाओं में से एक हल्द्वानी (नैनीताल) में स्थापित की जायेगी। आयोग द्वारा फल प्रशोधन की 5 इकाईयाँ उत्तर-प्रदेश को आंवटित कर दी हैं। प्रदेश में खादी ग्रमोद्योग की संस्कृत के विकास के लिये मुख्यमन्त्री श्री तिवारी जी ने एक अच्छा वातावरण बना दिया है। मधुमक्खी पालन उद्योग के सन्दर्भ में आयोग के अध्यक्ष ने विस्तार से चर्चा करते हुए इसके विकास की सम्भावनाओं पर प्रभाव डाला।

कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश की लघु एवं ग्रामीण उद्योग मन्त्री श्रीमती बेनीबाई ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए गाँव-गाँव में जाकर खादी ग्रामोद्योगों का कार्य करने की आवश्यकता पर बल दिया जिससे कि 5 लाख परिवारों को ग्रामोद्योग की स्थापना में लगाया जा सके। इस क्षेत्र की अनेक समस्याओं का जिक्र करते हुए उद्योग मन्त्री जो उत्तर प्रदेश खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड की अध्यक्ष भी हैं, खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड को शासन द्वारा साधन सुविधायें उपलब्ध कराये जाने का अनुरोध मुख्यमंत्री से किया। विशेषकर कत्था एवं जड़ी-बूटी उद्योग के विकास में कच्चे माल की कठिनाइयों को वन विभाग द्वारा शीघ्र दूर किये जाने पर जोर दिया। रेशम उद्योग के सर्वांगीण विकास के लिये भी उन्होंने जोर देते हुए बताया कि खादी ग्रामोद्योगों के द्वारा गाँव की गरीबी का उन्मूलन प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है, इसके लिए अन्य विभागों के साथ प्रभावी तालमेल करना होगा।

उपरोक्त कार्यशाला में उत्तर प्रदेश खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड के उपाध्यक्ष श्री अधीर दुबे ने मुख्यमंत्री एवं मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए बोर्ड द्वारा चलाये जा रहे ग्रामोद्योग के विकास अभियान के बारे में विस्तार से अवगत कराते हुए संसाधनों की कमियों की ओर ध्यान आकृष्ट किया और आशय व्यक्त की कि खादी ग्रमोद्योग के विकास सम्बन्धी महत्वपूर्ण कार्य में सभी



श्री कमल रावरी आई0ए0एस0, आयुक्त एवं मुख्य कार्य पालक खादी ग्रामोद्योग बोर्ड समारोह में माननीय मुख्य मंत्री के साथ जाते हुए।



श्री लक्ष्मीदास अध्यक्ष, खादी आयोग एवं कुलभूषण बख्शी सभागार जाते हुए।

क्षेत्रों का सहयोग मिल सकेगा।

कार्यशाला में श्री सी0एम0 वासुदेव, सचिव लघु एवं ग्रामीण उद्योग उत्तर प्रदेश ने प्रदेश में खादी ग्रामोद्योग के विकास के लिये शासन की नीतियों को स्पष्ट करते हुए अध्यक्ष खादी आयोग से अनुरोध किया कि आयोग के लखनऊ कार्यालय को अधिक सुदृढ़ और अधिकार सम्पन्न बनाया जाय। हर जिले में उपलब्ध कच्चे माल को सर्वेक्षण, समूह में ग्रामोद्योगों की स्थापना सेवा केन्द्रों की स्थापना तथा विपणन विकास के धनराशि जुटाने पर जोर दिया। प्रचार-प्रसार, प्रशिक्षण, शीघ्र एवं नवीन टेक्नालाजी को बढ़ावा देने के साथ उद्यमियों के चयन में सावधानी बरतने के बिन्दु पर भी उन्होंने बल दिया।

योजना आयोग के सलाहकार श्री मनीशगुप्ता ने खादी के सर्वांगीण विकास पर जोर दिया तथा इस क्षेत्र के श्रमिकों को पारिश्रमिक दिये जाने पर भी विशेषबल दिया। कच्चे माल की उपलब्धता, शिल्प व डिजाइनों की उत्कृष्टता व उत्पादनों की गुणवत्ता के बढ़ाने पर भी श्री गुप्ता द्वारा विशेष बल दिया गया।

कार्यशाला के प्रारम्भ में खादीबोर्ड के आयुक्त एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री कमल टावरी ने कार्यशाला के विषय में परिवर्तन करते हुए कहा कि इस कार्यशाला में 11 विषयों पर अलग अलग समूहों में चर्चा की जानी है और उनकी अनुशंसाओं को शासन एवं खादी आयोग बम्बई के विचारार्थ एवं स्वीकारार्थ प्रस्तुत किया जायेगा। इस कार्यशाला की आवश्यकता और उपयोगिता के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि इस कार्यशाला के आयोजन की प्रेरणा माननीय मुख्यमंत्री जी द्वारा दी गयी है। प्रदेश में खादी ग्रामोद्योगों के सर्वांगीण विकास के लिये प्रचार प्रसार एवं सम्वाद की विशिष्ट आवश्यकता पर बल दिया।

कार्यशाला में श्री श्यामलालवर्मा, सदस्य खादीबोर्ड श्री अक्षय कुमार करण गाँधी निधि एवं श्री रामेश्वरनाथ मिश्र प्रतिनिधि गाँधी आश्रम ने भी खादी ग्रामोद्योगों के विकास से सम्बन्धित समस्याओं के बारे में अपने विचार व्यक्त किये।

राधेश्याम तिवारी
संयुक्त निदेशक
कुटीर एवं ग्रामीण उद्योग निदेशालय।

xxxxxxxxxxxxx

आर्यसमाज अमरपुर कोण्डल (अलीगढ़)

संरक्षक श्री धर्मपाल सिंह आर्य
प्रधान श्री जयपाल सिंह आर्य देवेश
मन्त्री श्री अशोक कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष श्री मास्टर प्रेमपाल सिंह आर्य

xxxxxxxxx

आर्यसमाज करौंदा, मिर्जापुर

डा0 गुलाब सिंह — प्रधान
डा0 अशोक कुमार सिंह — मन्त्री
आर्या अनुराधा सिंह — कोषाध्यक्ष

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ का निर्वाचन

श्री मनमोहन तिवारी, मन्त्री आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 की देखरेख में दिनांक 26-2-89 को निम्नाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए --

प्रधान - आचार्य वेदव्रत अवस्थी
मंत्री - श्री चन्द्रप्रकाश छाबड़ा
कोषाध्यक्ष - श्री शिवनाथ जी

xxxxxxxx

महिला आर्यसमाज गणेशगंज, लखनऊ

प्रधाना - श्री मती मनोरमा अग्निहोत्री
मन्त्रिणी - श्री मती विमला श्रीवास्तव
कोषाध्यक्ष - श्री मती परमेश्वरी देवी गुप्ता

xxxxxxxx

आर्यसमाज शास्त्रीनगर, मेरठ

प्रधान - श्री वेदप्रकाश मित्तल
मंत्री - श्री हरवीर सिंह (सुमन)
कोषाध्यक्ष - श्री चन्द्र प्रकाश गुप्ता

xxxxxxxxx

आर्यसमाज, कोटद्वार (गढ़वाल)

प्रधान - श्री चितरंजनदेव एडवोकेट
मंत्री - श्री आनन्दप्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री राजपाल

xxxxxxxxxxx

आर्यसमाज ठाकुरद्वारा (मुरादाबाद)

निर्वाचन - आर्यसमाज ठाकुरद्वारा सन् 1989 हेतु श्री ला0हरीराम जी अध्यक्ष, श्री झव्वालाल जी मंत्री, श्री गुलाबसिंह वर्मा- कोषाध्यक्ष

xxxxxxxx

आर्यसमाज बड़हलगंज गोरखपुर उ0प्र0

प्रधान - श्री राम नारायण जी आर्य
उपप्रधान - श्री हरिहर प्रसाद जी आर्य
मंत्री - श्री मक्खन लाल जी आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री धर्म दत्त जी आर्य

xxxxxxxxx

आर्यसमाज स्टेशन रोड मुरादाबाद

प्रधान - श्री राममोहन जी
मंत्री - श्री देवकीनन्दन गुप्त
कोषाध्यक्ष - श्री महाराज नारायण टन्डन

xxxxxxxxx

आर्यसमाज विकास नगर (लखनऊ)

प्रधान - श्री सहदेव रस्तोगी
मंत्री - श्री बंशीलाल
कोषाध्यक्ष - श्री छैलालाल

xxxxxxxxxx

- महर्षि दयानन्द संस्कृत गुरुकुल महाविद्यालय साधनामन्दिर पटेल मार्ग गाजियाबाद का 13वाँ वार्षिकोत्सव 10,11,व 12 मार्च 1989 को ससमारोह पूर्वक मनाया गया।

xxxxxxxxx

आर्यसमाज गोरखपुर (बखीपुर) का निर्वाचन

प्रधान - श्री अवधेश कुमार राव
मंत्री - श्री बैजनाथ प्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री वीरेन्द्र नाथ आर्य

xxxxxxxxxx

आर्यसमाज स्टेशनरोड, पीलीभीत

प्रधान - श्री कस्तूरी लाल जी आनन्द।
मंत्री - श्री मोहन लाल जी गंगवार।
कोषाध्यक्ष - प्रकाशवीर जी

xxxxxxx

आर्यसमाज स्वामी पाड़ा, बुढ़ाना गेट, मेरठ शहर

1- श्री मनोहर लाल जी — प्रधान
2- श्री इन्द्रराज — मन्त्री
3- श्री देवेन्द्र स्वरूप जी — कोषाध्यक्ष

xxxxxxxxx

आर्यसमाज लालगंज रायबरेली

अध्यक्ष डा0 शकुनचन्द गुप्त
मन्त्री शिवबालक जी
कोषाध्यक्ष राकेश कुमार

xxxxxxxxxxx

आर्य समाज, गया का 66वां वार्षिकोत्सव

दिनांक- 13 से 16 अप्रैल 1989 तक
स्थान- आर्यसमाज मन्दिर, गया में बड़े उल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सर्वश्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, भूप नारायण शास्त्री, प्रधान बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि-सभा, पटना, आचार्य पं० सत्यदेव शास्त्री, वाराणसी, आचार्य-पं० गंगाधर शास्त्री, महोपदेशक बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, पटना, पं० महेन्द्र पाल आर्य, कलकत्ता, आचार्य पं०-सोम मित्र शास्त्री, गया, सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक ठा० इन्द्रदेव-सिंह "इन्द्र", विशेष रूप से आमंत्रित हैं।

xxxxxxxxxx

- आर्यसमाज बाँगरमऊ का 16वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक-26 से 29 जनवरी 1989 तक मनाया गया जिसमें पं० जयप्रकाश-आर्य (पूर्वग्राम बेतिया) हरियाणा के ओजस्वी भाषणों से जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा तथा स्वामी मोक्षानन्द जी क्रान्तिकारी का भी प्रभाव शाली व्याख्यान हुआ।

xxxxxxxxx

चूड़ा कर्म संस्कार

आर्यसमाज बाँगरमऊ के सक्रिय कार्यकर्ता श्री रमाकान्त गुप्त के चि० पुरुषोत्तम गुप्त एवं श्री रामबहादुर गुप्त के सुपुत्र चि० शिकेन्द्र उर्फ (बन्दना) का चूड़ा कर्म (मुण्डन संस्कार) पं० युगुल किशोर आर्य के पौरोहित्य में तथा भयुयालाल आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

- आर्यसमाज औरैया (इटावा) ने महर्षि दयानन्द जन्मदिवस 12 फरवरी 1989 को सोत्साह मनाया।

xxxxxxxx

- आर्यसमाज गया के भू०पू० मंत्री के सौदागर राम-सीताराम के पुत्र तथा पटियाला बैंक के विकास मैनेजर श्री सोनूलाल तथा उनके पुत्र आशीष कुमार तथा निजी सेवक की 7 जनवरी को कार दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। संगम तट पर प्रयाग में एक शोक सभा समाज के पुरोहित पं० दीनेश्वरमुनि की अध्यक्षता में हुई जिसमें परमपिता परमात्मा से दिवगंत आत्माओं की शान्ति तथा दुःखी परिवार को धैर्य हेतु प्रार्थना की गई।

xxxxxxxxx

आर्य समाज निजामुद्दीन ईस्ट नई दिल्ली का भवन निर्माण शिलान्यास

- आर्यसमाज, निजामुद्दीन ईस्ट, नई दिल्ली के भवन निर्माण का शिलान्यास दिनांक 12-2-1989 को प्रो० वेद व्यास जी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा किया गया। यह भवन स्वर्गीय श्री मेहता गंगाराम उपालादेवी ने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा को दान में दिया था। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है कि भव्य भवन बनाया जाये जिसमें सत्संग हॉल, आयुर्वेदिक डिस्पेंसरी, पुस्तकालय, अनुसंधान कार्य आरम्भ किये जायें। यह समाज रेलवे स्टेशन के समीप होने के कारण आने जाने वाले यात्रियों को ठहराया जा सके। इस भवन निर्माण पर लगभग रू० 10,00,000/-(दस लाख)लागत आयेगी।

xxxxxxxxx

वेद-रहस्य और वेदाधार प्रचार प्रकाश

"महर्षि बोधोत्सव के उपलक्ष में उपरोक्त ग्रन्थ जिनकी पृष्ठ संख्या 416, 300, मूल्य क्रमशः रू० 15/- और रू०12/- है एक साथ वी०पी० डाक से मँगाने पर रू० 2/-(दो) धन रू० 3/- अर्ध डाक व्यय की छूट देना पुनिश्चित किया गया है। आर्य जन अवसर का लाभ उठावें।

रामसिंह आर्य,
17 गाँधीनगर, आगरा।

xxxxxxxx

चम्पारण जिला आर्य सम्मेलन

चम्पारण जिला आर्य महा सम्मेलन ढाका, पूर्वी-चम्पारण (बिहार) 18, 19 एवं 20 फरवरी 1989 को सम्पन्न हुआ।

xxxxxxxxx

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० द्वारा सुनिश्चित कार्यक्रम के अन्तर्गत संचालित वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट का स्थापना संकल्प समारोह

मान्यवर महोदय,

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि-सभा, उ०प्र० ने प्रकाशवीर शास्त्री भवन, आर्यसमाज मन्दिर, ब्रजघाट, जिला गाजियाबाद में मिति चै०कृ० 5, सं० 2045 विक्रमी दिनांक- 27 मार्च, 1989 **सोमवार को एक विशेष कार्यक्रम का भव्य आयोजन** किया है।

कार्यक्रम

प्रातः 10 बजे से यज्ञ, भजन, उपदेश।
मध्यान्ह 12 बजे से : विचार गोष्ठी।

इस पुण्य अवसर पर आप सादर सपरिवार आमंत्रित हैं। आपका सक्रिय सहयोग प्रार्थनीय।

भवदीय,

जीवनानन्द सरस्वती, आचार्य — **पं० इन्द्र राज**, प्रधान — **मनमोहन तिवारी**, मंत्री

विजय भूषण आर्य, प्रधान उप सभा गाजियाबाद। — **हरिश्चन्द्र आर्य**, अधिष्ठाता उपदेश विभाग। — **माधव सिंह**, प्रधान उप सभा मेरठ।

जिला आर्य महासभा सम्मेलन, मेरठ।

रामलीला मैदान सरधना, मेरठ में दिनांक- 7,8,9अप्रैल, 1989 तदनुसार शुक्रवार, शनिवार और रविवार चैत्र सुदी 2, 3, 4, सम्वत् 2046 को समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

इस अवसर पर महायज्ञ, भजन, गोप्रदर्शनी, शोभायात्रा, महिला सम्मेलन राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, आर्य कवि सम्मेलन, एवं युवा सम्मेलन होंगे।

बड़े-बड़े विद्वान - सन्यासी - उपदेशक एवं संगीतज्ञ पधार रहे हैं।

समय कम है अतः आपसे प्रार्थना है कि आर्य समाज बुढाना द्वार मेरठ एवं आर्य समाज सरधना, जिला मेरठ से रसीद बुक तथा प्रचार की सामग्री लेकर धन संग्रह का कार्य तुरन्त आरम्भ करें।

देश में धर्मान्तरण की लहर को रोकने का संकल्प लेकर सम्मेलन को सफल बनाने का प्रयास करें। अन्यथा देश बड़ी भयंकर स्थिति में है।

आशा है अपनी आर्यसमाज के समस्त सदस्यों को इस में भाग लेने हेतु प्रेरित करेंगे तथा ग्रामीण क्षेत्र से धन एकत्र कर इसका अधिक से अधिक प्रचार करेंगे।

माधव सिंह, प्रधान। — **पं० इन्द्र राज**, मन्त्री। — **ओम प्रकाश जौहरी**, कोषाध्यक्ष।

विद्यासागर,
संयोजक।

आर्य उप प्रतिनिधि सभा जिला- मेरठ।

"वार्षिकोत्सव : भव्य मेला प्रचार"

आर्यसमाज महावीरगंज लखनऊ -20 का वार्षिकोत्सव दिनांक- 21 से 23-5-89 तक आयोजित है। प्रति दिन तीन सत्र प्रातः, अपरान्ह व रात्रि को होंगे। प्रदेश व बिहार से कई उपदेशक, भजनोपदेशक पधार रहे हैं। 23-5-89 बड़े मंगल पर भव्य मेला प्रचार शिविर लगेगा व "हनुमान जयंती" का सार्वजनिक समारोह होगा। प्रचर वैदिक साहित्य का विक्रय वितरण होगा"।

--ज्ञानकृष्ण

आर्य मित्र साप्ताहिक
नाराजन स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
फाल्गुन शुक्ल 12
19 मार्च रविवार, 1989 ई0

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० 2241/57 घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85

चैत्र कृष्ण 11 रविवार, संवत 2045 वि०, दिनांक 2 अप्रैल 1989



संवत्सरस्ते यज्ञं दधातु नः प्रजां परिपातु नः

----- यजुर्वेद 26/14

नव संवत्सर हम सबका कल्याण करने वाला, हम सबको यज्ञमय (पवित्र) बनाने वाला तथा हमारी सब ओर से रक्षा करने वाला हो।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०,

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु०251/-
वार्षिक	रु० 30/-
छमाही	रु० 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	91
अंक	13

नव संवत्सर का पावन सन्देश

हम सब मिलकर करें कामना --
शान्ति की, समृद्धि की,
"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" की,
मंगलमय भविष्य की ।

ओ३म् इद्वत्सराय परिवत्सराय संवत्सराय कृणुता बृहन्नमः ।
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानाम्, ज्योग जीता अहताः स्याम ।।

काल की महिमा अनन्त है। पृथ्वी अपनी अबाधगति से सूर्यदेव का न जाने कितनी बार परिभ्रमण करते हुए कलिमलवेषधारी करयुग के नवसंवत्सररूपी 2046 वें चक्र में प्रवेश करने जा रही है। सूर्य तो वही है, चन्द्रमा भी वही है, आकाश वही है, काल भी वही है, पृथ्वी वही है पृथ्वी की गति भी वही है। **काश** ? हम भी वही हो जाते - जिसके लिए पुकार-पुकार कर उस कालनियन्ता ने हमें कहा था -- " मेरे पुत्रों ? ऐसा युग लाना ऐसा संवत्सर...... कि "सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वेसन्तु निरामयाः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत" सुखी बसे संसार सब दुखिया रहे न कोय। यह अभिलाषा हम सबकी **मेरे भगवन पूरन होय** ।।

-------और इस धरा पर ऐसा युग था। साक्षी हैं सूर्य की वे किरणें जो आज भी वैसी ही चमक रही हैं। वायु का वह उन्मुक्त उच्छवास जो आज भी वैसा ही मोहक बना हुआ है (अगर हम उसे दूषित न करें)। पृथ्वी की करूणाभरी उर्वरा जो आज भी तुम्हारे लिए उसी प्रकार नवधान्य और फलफूल उगल रही है। केवल हम बदले हैं। हम भी वही हो जायं तो यह धरा फिर स्वर्गधाम बन जाय। शान्ति का आगार बन जाय, प्रेम का मन्दिर बन जाय ।

इसलिए हमने उपर्युक्त मन्त्र में आने वाले राष्ट्रीय संवत की हृदय से वन्दना की है। बीते हुए संवत्सर के लिए भी हमने नमन किया है। निःसन्देह हमारा अतीत महान था तो हमारा भविष्य महान क्यों नहीं हो सकता। आज हम अतीत को महान बनाने वाले उन तपः पूत महानपुरूषों के पदचिन्हों पर चलने का व्रत धारण करें जिन्होंने जीवन में अमरता प्राप्त करके पापों से दूर रहते हुए काल को जीत लिया था।

इन्द्रराज **मनमोहन तिवारी**

प्रधान मन्त्री।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश।

> हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
> आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ।।
> --राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- चैत्र कृष्ण ।। संवत् 2045 वि०, 2 अप्रैल 1989
दयानन्दाब्द 164, सृष्टि संवत् 1972949089

आर्य समाज के बढ़ते हुए कदम

नव वर्ष का संकल्प पूरा करें

अनन्तकोटि ब्रह्माण्डनायक उस परात्पर परब्रह्म की बनाई हुई यह पृथ्वी सूर्य का चक्र पूर्ण करके अगले चक्र में प्रवेश कर रही है। यही हमारा नवसंवत्सर है। नई उमंग और नई आशा लिए आर्यों का नववर्ष। इस दिवस का हम आर्यों के जीवन में विशेष महत्व है क्योंकि इसी दिन कई वर्ष पूर्व ऋषिवर्य दयानन्द ने सर्वप्रथम बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। उनकी लगाई हुई इस वाटिका के मनोहारी फूल समस्त विश्व को अपनी मादक सौरभसुगन्ध से सुरभित कर रहे हैं। प्रकाश की ज्योति फैलाकर अज्ञान की तमिस्रा को दूर करते जा रहे हैं और "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के वेदनाद को साकार करने में जुटे हुए हैं। आज विश्व का कोई कोना ऐसा नहीं है जहाँ हमारे आर्यवीर न पहुँचे हों। हमने सर्वत्र ईश्वरप्रदत्त ज्ञान और सत्य का डंका बजा दिया है। अब वेदों को कोई गडरियों के गीत नहीं कह सकता। वैदिक रवि का प्रकाश ज्यों-ज्यों चमक रहा है, अन्धविश्वास, जड़पूजा, पाखण्ड और कल्पित मतमतान्तरों के गढ़ ध्वस्त होते जा रहे हैं। यह सब ईश्वर के शाश्वत सत्य ज्ञान की विजय है। आर्यसमाज जिसका सन्देशवाहक है, उसकी विजय है ।

लेकिन मंजिल अभी दूर है। आज विश्व के समस्त निवासियों के हृदय में वेद का सन्देश ओतप्रोत कर देने की आवश्यकता है। हमें अपनी इस प्यारी संस्था और उसके संस्थापक पर गर्व होना चाहिए। हमारे ऋषि ने निर्भीकता के साथ उद्घोषणा की थी कि मैं किसी नवीन पन्थ या मत की स्थापना करने नहीं आया हूँ। मेरा उद्देश्य शुद्ध सनातन वैदिकधर्म की स्थापना है। उन्होंने कहा था कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त समस्त आर्षग्रन्थों को स्वीकार करता हूँ। आर्यसमाज की मान्यता है कि मानवमात्र का उपास्यदेव एक परमात्मा है, उसी की उपासना करनी चाहिए। इस नाते मनुष्य को केवल वह धर्म स्वीकारना चाहिए जिसका आदिमूल परमेश्वर है। आज आर्यसमाज की अनेकों, शाखाएं, शैक्षणिक संस्थाएं, गुरुकुल, आश्रम तथा प्रचारकार्य के अन्य सशक्त साधन बहुत बड़ी मात्रा में विद्यमान हैं। लगभग प्रत्येक प्रान्त में प्रतिनिधि सभाएं हैं और उनके मुखपत्र हैं। आवश्यकता है योजनाबद्ध होकर कार्य करने की। हमारे विचारों से आज सभी विचारशील प्रभावित हो रहे हैं और हम बौद्धिक दृष्टि से चाहे सामाजिक क्षेत्र हो, राजनैतिक, धार्मिक या अन्तर्राष्ट्रीय मंच हो, सभी की प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं। यह उपलब्धियाँ हमारे बढ़ते हुए कदम हैं ।

हम स्वीकारते हैं हमारी मंजिल में बहुत बड़ी-बड़ी बाधाएं, नित नई-नई बाधाएं आनकर उपस्थित हो जाती हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् हमने आशा की थी कि आर्यावर्त में वैदिकधर्म का प्रचार बड़ी स्वतन्त्रता और निर्भीकता से हो सकेगा और शीघ्र ही हमारा यह प्रियराष्ट्र धनधान्य और फलफूलों से लदा हुआ वैदिकधर्म का दीवाना बन जायेगा। किन्तु विदेशी शक्तियाँ हमारी प्रगति को सहन नहीं कर पा रही हैं और बड़ी मात्रा में धनराशि भेजकर हमारे वंशज और हमारे ही खून में पले हुए हमारे भोलेभाले भाईयों को लालच देकर धर्म परिवर्तन के नाम पर राष्ट्र की मुख्यधारा से विमुख करने में जुटी हुई हैं। हम डंके की चोट कहना चाहते हैं कि आज देश में आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जिसने इस चुनौती को स्वीकार किया हुआ है। जहाँ कहीं भी ऐसी घटना हुई या होने की आशंका प्रतीत हुई, हमारे दीवाने वहाँ पहुँच जाते हैं, जान हथेली पर लेकर पँहुचते हैं और इस अराष्ट्रीय षडयन्त्र को तोड़फोड़कर तहस-नहस कर देते हैं। फिर वही वेदध्वनि सुनाई पड़ने लगती है। यज्ञोपवीत पहिने हुए तुम्हारे लाल तुमसे मिलने फिर दौड़े चले आते हैं। कैसा अपूर्व संगम है कैसा अपूर्व मिलन है। उस युग की याद दिलाता है जब सैकड़ों वर्ष पूर्व चाणक्य ने पाटलिपुत्र में सम्राट चन्दगुप्त का विवाह यूनानी हैलेन से कराकर हजारों यूनानियों को "पुनन्तु मां देव जनाः पुनन्तु मनसोधियः पुनन्तु विश्वाभूतानि ------" कहकर अपनी आर्यजाति का अंग बना लिया था ।

इसलिए निराशा का तो हमारे जीवन में कोई स्थान ही नहीं है। आइए, इस संस्था को सहयोग दीजिए। आर्यमित्र के अधिक से अधिक पाठक और ग्राहक बनाइए। सभा परिसर में बनने वाले "अतिथि भवन" में अपनी दानरूपी अज्ञात ईंट रखकर "यावच्चन्द्र दिवा करौ" पुण्य के भागी बनिए। यही हमारा निवेदन है और यही हमारा अभिनन्दन । सभी पाठकों को नववर्ष की शुभ कामनाओं सहित —

-- आपका
"मित्र"

नव वर्ष नयी आशा



नव वर्ष मंगलमय हो --

शुभ कामनाओं सहित --------

मनमोहन तिवारी,
सभामंत्री ।

आर्य समाज स्थापना दिवस

श्री राम सिंह,
17- गांधी नगर, आगरा-3

स्वामी दयानन्द के दीक्षोपरान्त गुरुदेव विरजानन्द ने कहा कि तुम्हारी चूहे की कहानी सुनकर मैंने अपना सारा ज्ञान कोष तुम्हें दे डाला है। संसार वेद के सुगम राजपथ को भुला कर मत-मतान्तरों की पग डंडियों में भटक गया है। भटके संसार को वैदिक ज्ञान द्वारा सच्चे शिव के दर्शन के प्रशस्त मार्ग का बोध कराओ और बतलाओ कि मानव कृत किसी मन्दिर मस्जिद, गिरजाघर और गुरुद्वारे में ईश्वर के दर्शन नहीं हो सकते। उस प्रतिमा की झांकी जन-जन के हृदय गुहों में सम्भव है। गुरुदेव की आज्ञा के परिपालन में मथुरा से आगरा और आगरा से उत्तर भारत के ग्राम-ग्राम, नगर-नगर, में प्रचार करते हुए बम्बई पहुंचे जहां उनके व्याख्यानों से प्रभावित भक्तजनों ने मार्गशीर्ष विक्रमी सम्वत् 1931 में उनके पास जा कर बोले कि आपके उपदेशों से लाभ उठाने के लिये किसी संस्था की स्थापना करना चाहते हैं। कृपया आप अपने मुख से उसका नामकरण कर दीजिये। प्रेमियों की उत्साह भरी वाणी को सुनकर स्वामी कुछ काल के लिए ध्यानमग्न हो गये और कहा कि इस संस्था का नाम आर्यसमाज रखना उचित है। भक्तों ने स्वामी जी के प्रस्ताव का अनुमोदन किया किन्तु किन्हीं कारणों से आर्य समाज की स्थापना न हो सकी, उसका बीजारोपण अवश्य हो गया।

स्वामी जी के पुनः बम्बई आगमन पर आर्यसमाज की स्थापना वैक्रमाब्द 1931 चैत्र शुक्ल प्रतिपदा बुधवार तदनुसार 7 अप्रैल सन् 1875 ई0 को सांयकाल साढ़े पांच बजे हुई। प्रारम्भ में आर्यसमाज के 28 नियमों का निर्माण राजमान्य राजेश्वर पानाचन्द पारिख ने किया। सदस्यों की लगभग 100 की संख्या थी। जिसके प्रथम प्रधान श्री गिरधारीलाल दयालदास कोठारी और मंत्री श्री सेवकलाल कृष्ण दास चुने गए। स्वामी जी ने सदस्योंकेआग्रह पर भी कोई पद नहीं लिया केवल साधारण सदस्य बने रहे। कुछ कालोपरान्त अविभाजित भारत के पंजाब प्रान्त के लाहौर नगर में आर्यसमाज की स्थापना के 28 नियमों का परिमार्जन कर 10 नियम निश्चित किये गये जो वर्तमान में आर्यसमाज के नियम और उद्देश्यों के रूप में मान्य हैं।

उपरोक्त शिवरात्रि की साधारण घटना को "ऋषि बोधोत्सव" और विक्रमी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को "आर्य समाज स्थापना दिवस" के नाम से आर्य पर्वों के रूप में आर्यसमाजी प्रति वर्ष मनाकर अनुप्राणित होते हैं।

प्रश्न होता है कि आर्यसमाज क्यों? क्या मानव सृष्टि के आदि में ईश्वरीय प्रेरणा से वेद ज्ञान, अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा मनुष्य देहधारी ऋषियों के हृदय गुहा में चार वेदों के रूप में प्रकट नहीं हुए यह क्या पर्याप्त नहीं? क्या आर्य समाज अन्य मतों की भांति दयानन्दी नहीं जिसके रचित सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में 51 "मन्तव्यामन्तव्य" सिद्धान्त माने जाते हैं जिससे भारतीय मत-मतान्तरों की सूची में एक नाम और जोड़ दिया गया ?

स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनकी आर्यसमाज का प्रादुर्भाव उस समय हुआ जब आर्य हिन्दू कहा जाने वाला समुदाय मुसलमानी बादशाहत की बिगड़ी ध्वस्त इमारत को ठोकरें लगा कर स्वयं प्रबल सामर्थ्यवान अंग्रेजों के पंजों में फंसता जा रहा था। ब्रह्म समाज जिसने उपनिषदों को ही वेद समझ रक्खा था आर्यधर्म के बचाने का किसी प्रकार प्रयास एवं प्रचार कर रहा था किन्तु ईसाइयत की जड़ बल पूर्वक बढ़ती जा रही थी। श्री काली मोहन बनर्जी और पं0 नीलकण्ठ शास्त्री जैसे संस्कृत के विद्वान वेद शास्त्रों से अनभिज्ञ ईसाइयत की शरण ले रहे थे और ईसाई धर्म का प्रचार कर रहे थे। पौराणिक रीति की संस्कृत शिक्षा मसीह धर्म वृद्धि को रोक न सकी। जहां संस्कृत पढ़े ईसाई प्रचारक हिन्दू धर्म के मार्मिक निर्बल अंगों पर प्रहार कर अपने प्रचार कर रहे थे वहीं प्रो0 गोल्ड स्टकर अंग्रेज विद्वान हिन्दू धर्म की दुर्दशा पर चिन्तित और दुःखी थे और अपनी पुस्तक के अन्त के मजमूनों में हिन्दू विद्वानों से अपील करते हैं कि हिन्दुओं को चाहिये कि वेद के पवित्र वाक्यों को एकत्र कर के दुनियां को यह सिद्ध कर दिखलावें कि उनका धार्मिक विश्वास और विचार किसी दूसरे धर्म के नियमों और विचारों से कम नहीं है। जिन दिनों प्रोफेसर उक्त मजमून लिख रहे थे बाल ब्रह्मचारी सन्यासी स्वामी दयानन्द मथुरा में दण्डी सन्यासी से वैदिक साहित्य का अध्ययन कर रहे थे। उनको लेख का पता भी न था।

भ्रमोच्छेदनः- स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज के नाम से किसी सम्प्रदाय या मत का परिवर्तन नहीं किया किन्तु ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्त ऋषि महर्षि जिसे धर्म मानते आए उसी का प्रतिपादन किया। कालक्रम से उस पर जो आवरण (पर्दा) पड़ गया था उसे उन्होंने अपने सबल हाथों से हटा दिया और प्रो0 गोल्डस्टकर की अभिलाषा को पूरा कर रहे थे। शाश्वत सत्य सनातन वैदिक धर्म की पुनः दुन्दुभी बजाने के लिये वैदिक धर्म के वास्तविक सिद्धान्तों के अनुरूप अपना जीवन ढालने के लिये आर्यसमाज की स्थापना की जिससे पुनः वैदिक धर्म लुप्त न हो सके क्योंकि विगत में आचार्य चाणक्य, कुमारिल भट्ट, और स्वामी शंकराचार्य द्वारा इस हेतु कोई आर्यसमाज जैसी संस्था स्थापित न होने से हुआ और उलटे उनके अनुयायी अद्वैत के चक्कर में फंस वैदिक ज्ञान से परे हो गये और स्वामी दयानन्द को अकेले सबसे लोहा लेना पड़ा। यही आर्य समाज की उपयोगिता है। रही बात सिद्धान्तों की यह तो स्वामी जी के अपने सिद्धान्त नहीं हैं बल्कि वेद विहित सिद्धान्त हैं। आर्यसमाज अथवा आर्यसमाजी वैदिक धर्मावलम्बी हैं जो उपरोक्त ऋषियों की हृदय गुहा में प्रकट हुआ था। वे दयानन्दी नहीं हैं। स्वामी दयानन्द को आर्यसमाजी किसी नवीन धर्म का संस्थापक नहीं मानते बल्कि वैदिक धर्म के मर्म को जनता तक पहुँचाने वाला एक प्रचारक एवं उद्धारक मानते हैं। स्वामी ने अपने काल में हिन्दुओं मुसलमानों और ईसाइयों आदि सम्प्रदाय वालों से उनके प्रमुखों से बातचीत की कि विश्व के समस्त सम्प्रदायों एवं मतों का एकीकरण किया जाय क्योंकि इन सबका मूल वेद है किन्तु जब सहयोग नहीं मिला तो उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ की रचना कर सब मतावलम्बियों की समीक्षा की। मत-मतान्तर वालों ने बहुत सी त्रुटियों का शुद्धीकरण तो किया किन्तु स्वार्थ वश पुरानी आस्थाओं से चिपटे हुए हैं।

वेद की दृष्टि में मानव मात्र समान है। "शृण्वन्तु सर्वो अमृत पुत्राः" कह कर मानव जाति को वेद ने अमृतपुत्र की संज्ञा दी है। वैदिक धर्म केवल भारत के लिये नहीं वह तो सभी देशों, कालों और मानवमात्र के लिये है। इसी भावना के अपनाने से विश्वशान्ति सम्भव हो सकती है अन्यथा नहीं। देशी विदेशी सभी विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से स्वामी दयानन्द और समाज की प्रशंसा की है जो सर्वविदित है।

समता दिवस समारोह में भव्य स्वागत



गाजियाबाद के एक समता दिवस समारोह में सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी अध्यक्ष समारोह एवं श्रीमती दीपा कौल जी राज्यमंत्री हरिजन समाज कल्याण मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए श्री वीरपाल जी विद्यालंकार मंत्री केन्द्रीय सभा गाजियाबाद।

श्री पं0 सच्चिदानन्द शास्त्री दुर्घटनाग्रस्त

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मंत्री श्री- पं0 सच्चिदानन्द शास्त्री दिनांक- 10-3-89 को दिल्ली में रिक्शे पर जाते हुए कार द्वारा दुर्घटनाग्रस्त हो गये। और उन्हें गम्भीर चोटें आई हैं। वे जयनारायण अस्पताल दिल्ली में भरती हैं उन्हें कई जगह टांके लगाये गये हैं। चिन्ता की कोई बात नहीं है। प्रभु से उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना है।

मनमोहन तिवारी,
सभामंत्री।

xxxxxx

विधि व्यवस्था की विडम्बना

श्री स्वामी वेदमुनि जी परिव्राजक
अध्यक्ष- वैदिक संस्थान नजीबाबाद

उपर्युक्त शीर्षक से मेरा एक लेख आर्यमित्र के 25 दिसम्बर सन् 88 के अंक में छपा था। श्री महावीर सिंह जी भूतपूर्व जज ने मेरे उक्त लेख पर आर्यमित्र 5 फरवरी में अपने विचार व्यक्त किये हैं। उनके लेख को मैंने आद्योपान्त दो बार बड़ा ध्यान पूर्वक पढ़ा। उन्होंने लिखा है "यदि गहराई से विचार किया जाय तो इन सिद्धान्तों में कोई कमी नहीं है, जो कुछ कमी है, वह उनके कार्यान्वियन करने वालों की है।" परन्तु उन्होंने कार्यान्वियन किस प्रकार किया जाय, एतद् विषयक विवेचन अपने लेख में नहीं किया।

बात इन्द्रा जी की शपथ की हो या अन्य किसी की शपथ की - इससे कुछ लेने-देने की बात नहीं है। इन्द्रा जी की शपथ के प्रश्न से तो अपनी शपथ वाली बात मेरे स्मृति-पटल पर उभर आयी। प्रश्न तो केवल इतना है कि ऐसी कौन सी विधि है कि शपथ के पश्चात् बयान देने वाला सत्य बोले? यदि कोई विधि, किसी प्रकार ऐसी नहीं है तो शपथ दिलाना निरर्थक हो जाता है। जैसा कि आपने स्वयं अपने उक्त लेख में स्वीकार भी किया है कि "यदि यह प्रथा समाप्त कर दी जाय, तब भी यह प्राविधान किया जा सकता है कि न्यायालय में असत्य कहने पर दण्ड दिया जा सकता है"।

मेरा अभिप्राय भी यही है कि शपथ का जब लाभ ही कुछ नहीं- न तो न्यायालय ही शपथ खाने के कारण बयान को विश्वास योग्य मानता है और न शपथ खाने वाला ही सत्य बोलता है तो शपथ का प्रयोग निरर्थक तथा परम्परा का निर्वहन मात्र ही रह जाता है। निरर्थक परम्परा अन्ध परम्परा से अधिक कुछ भी नहीं है। यह नितान्त सत्य है कि न्यायालय में शपथ लेने को लोग परम्परा निर्वहन से अधिक महत्व नहीं देते। इसके परिणाम स्वरूप पारस्परिक वार्तालाप में भी शपथ के विषय में यह कह देते हैं कि "अरे क्या रक्खा है शपथ में? नित्य ही लोग न्यायालयों में शपथ लेते रहते हैं।" ठीक भी है, जब न्याय मन्दिर में शपथ दिलाने वाले न्यायाधीश की दृष्टि में ही शपथ का महत्व केवल परम्परा का निर्वहन मात्र है तो सर्व साधारण की दृष्टि में उसका महत्व नष्ट होना ही ठहरा। अब तो इससे भी आगे बढ़कर यह मान्यता बन चुकी है कि "सौगन्ध (शपथ) झूठ की आड़ होती है। यह तथ्य है कि सच्चे व्यक्ति सौगन्ध नहीं खाते और झूठे बात-बात पर सौगन्ध खाते हैं। मनोविज्ञान को झूठलाया नहीं जा सकता। यह तो मनोवैज्ञानिक बात है कि लोगों का शपथ पर से विश्वास उठ जाय और लोक-व्यवहार में भी वह झूठों की आड़ कहलाने लगे।

आपका कहना है कि "यह भी ठीक है कि आजकल अधिकतर गवाहान पर शपथ का प्रभाव नहीं पड़ता और वे जो सोचकर आते हैं, उसके अनुसार बयान देते हैं। परन्तु क्या इस कारण यह प्राविधान समाप्त कर देना चाहिये?" मेरा कथन यह है कि जब शपथ का प्रभाव नहीं पड़ता और गवाह वही बयान देते हैं, जो सोचकर आते हैं तो शपथ की उपयोगिता ही नहीं रही तो परम्परा की लकीर पर फकीर बने रहने का क्या अर्थ ? यह भी आपका विचार है कि अधिकतर (?) पर प्रभाव नहीं पड़ता। स्थिति तो यह है कि सहस्त्रों में किसी एक पर भले ही प्रभाव पड़ जाय अन्यथा लेश भी प्रभाव नहीं पड़ता। सहस्त्रों में किसी एक पर पड़ जाय तो प्रतिशत तो कुछ भी नहीं रहा, फिर सहस्त्रों विरले तो बिना शपथ के ही सत्य बोलते हैं, उन्हें शपथ दिलाने का क्या अर्थ? यही न कि आप सत्य बोलें भले ही, परन्तु शपथ अवश्य लो किन्तु विश्वास हम फिर भी नहीं करेंगे। क्या इस का यह फलितार्थ नहीं है कि वह सत्य बोलने वाला भी यह सोचने को बाध्य हो जाय कि जब शपथ लेने पर भी मेरी नितान्त सत्यवात को भी न्यायालय सत्य मानने को तैयार नहीं अर्थात् मेरे बयान के अनुसार उसने निर्णय देना ही नहीं है तो मेरा बयान न्यायालय की दृष्टि में मिथ्या ही ठहरा और जब इतने पर भी मैं न्यायालय मान्यायाधीश की दृष्टि में झूठा हूँ तो फिर सत्य बोलना निरर्थक है। यही सब कुछ हो रहा है।

आपने यह भी लिखा है कि पहले चपरासी शपथ दिलाता था "अब यह समझकर कि इसका कोई प्रभाव गवाह पर नहीं पड़ता, अब शपथ दिलाने का कार्य न्यायाधीश द्वारा करने का प्राविधान बनाया गया है।" वास्तविकता यह है कि इन शब्दों को पढ़कर तो यही परिणाम निकलता है कि जिन लोगों ने यह संशोधन किया, उनका दृष्टिकोण तो निश्चित् ही उत्तम था किन्तु उन्होंने न तो सर्वसाधारण की मनोवृत्ति को समझने का प्रयत्न किया और न उसके फलितार्थ पर ध्यान दिया। यह बात तो आप की और भी विचित्र है कि "यदि इसे समाप्त करना सोचा जाय तो बहुत बातों में यह सिद्धान्त लगाना होगा।" प्रश्न न्यायालय में शपथ लेने का है, अन्य सन्दर्भों का नहीं है। विषयान्तर होना बात को स्पष्ट नहीं करता। यह ध्यान रहे, जैसा कि मैंने अपने पूर्व लेख में लिखा था कि ग्राम की चौपाल पर यदि कहीं पंचायत बैठे तो लोग अब भी शपथ लेने में हिचकिचाते हैं। कारण यह है कि वहाँ शपथ लेने का कोई प्राविधान नहीं है अतएव वहाँ शपथ की परम्परा या लकीर नहीं पायी। वहाँ तो कभी-कभार परिस्थिति आ जाने पर शपथ की बात सम्मुख आ उपस्थित होती है। यही कारण है कि वहाँ शपथ लेने वाला या तो सत्य-सत्य कहता है या शपथ लेने से इनकार कर देता है।

आपने कर्मकाण्डादि के विषय में जो इस प्रसंग में लिखा है, वह सर्वथा असंगत है। ऐसी ही संस्कृत में कार्य करने आदि को अनावश्यक बताते हुए आपने लिखा है "जब तक अधिकतर जनता इसे नहीं समझती।" प्रश्न समझने तथा न समझने का है ही नहीं। शपथ को तो सभी समझते हैं। मेरा यह कथन नहीं है कि शपथ को लोग नहीं समझते अपितु मेरा अभिप्राय तो यह है कि न्यायालयों में दोनों पक्षों को प्रारम्भ में शपथ देकर बयान लेने से शपथ पर से लोगों का विश्वास उठ गया है क्योंकि लोग यह जानते हैं कि दोनों ओर से परस्पर विरोधी पक्षों के बयान कभी सत्य नहीं हो सकते। लोग यह भी समझते हैं कि परस्पर विरोधी पक्षों के बयान परस्पर विरोधी होकर भी सत्य होंगे, यह कोई न्यायाधीश नहीं मान सकता किन्तु यह जानते हुए भी न्यायाधीश द्वारा शपथ दिलायी जाती है तो यह केवल मात्र परम्परा की पूर्ति तथा उसका निर्वहन मात्र है।

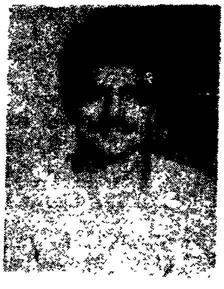
यदि प्रसंगवश न्यायाधीश किसी बात को सन्देहास्पद समझते हुए बयान देने वाले को शपथपूर्वक बताने को कहे तो प्रभाव अपेक्षाकृत अच्छा हो सकता है। आपने जो कुछ लिखा है, वह तो घुमाफिरा कर पिष्टपेषण मात्र है। मेरे लिखने का अभिप्राय तो मात्र इनता था कि इस अन्ध-परम्परा बनी लकीर को पीटने से साँप तो मरता नहीं, फिर इस निरर्थक प्रक्रिया को बनाये रखकर लोगों को मिथ्या शपथ लेकर बयान देने को बाध्य करना ठीक नहीं।

शपथ के विषय में आपने यह भी लिखा है कि "वह गारण्टी नहीं है कि शपथ लेने वाला वास्तव में सत्य ही बोलेगा" जब शपथ सत्य बुलवाने की गारण्टी नहीं है और विधि-वेत्ता ऐसा समझते हैं तो इस पद्धति को समाप्त कराने की उन्हें प्रयत्न शील होना चाहिये। आश्चर्य यह है कि आप न्यायाधीश रहे हैं, वकालत कर रहे हैं, फिर भी मेरे कथन को अपने लेख में बार-बार सत्य स्वीकार करके भी घुमाफिरा कर पिष्टपेषण कर रहे हैं। आश्चर्य महदाश्चम्। डाकुओं की पहचान----

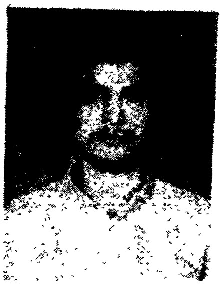
डाकुओं की पहचान--

डाकुओं की पहचान के विषय में भी आपने कोई ठोस सुझाव नहीं दिया, न कोई तर्क ही उपस्थित किया। हाँ, एक बात आपने लिखी है, जो बिल्कुल नयी है और वह यह कि "पड़ोसी व अन्य बाहर के व्यक्ति भी कभी-कभी सहायता को आ जाते हैं। यह भी ट्रेनिंग, उन्हें दी जाती है कि आने-जाने वाले रास्तों में लकड़ी व फूस जलाकर रोशनी की जावे। इसलिये आते-जाते उन्हें देखा भी जा सकता है।" इन शब्दों का अर्थ तो आप स्वयं ही समझें। यहाँ, यह प्रश्न अवश्य उपस्थित होता है कि ट्रेनिंग किन्हें? क्या जिसके घर डाका पड़े, उस के पड़ोसियों को? कब दी जाती है? क्या पहले ही यह पता होता है कि आज अमुक स्थान पर अथवा अमुक के यहाँ डाका पड़ेगा। यदि पहले ही पता होता है तो ट्रेनिंग देने वाले डाका न पड़े-- पूर्व सूचना होने पर भी --ऐसी व्यवस्था क्यों नहीं करते ? और क्या डाके इरादे से डलवाये जाते हैं कि अमुक के यहाँ डाका डलवाना है अतः उसके पड़ोसियों को रास्तों में घास-फूस जलाकर डाकुओं को पकड़वाने की ट्रेनिंग दी जाय। यह कार्य कौन से विभाग का है कि डाका डलवाये और लोगों

ब्र० राजेश कुमार तथा ब्र० जयेन्द्र कुमार विजयी



ब्र0 राजेश कुमार



ब्र0 जयेन्द्र कुमार

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ के स्नातक एवं गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के छात्र ब्र0 राजेश कुमार सुपुत्र श्री प्रेमकुमार "राष्ट्र भाषा रत्न" ने श्री दीवान कृष्ण किशोर अम्बाला छावनी में आयोजित अन्तर्महाविद्यालीय संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में भाग लेकर विजित हुए एवं चल विजयोपहार प्राप्त किया। यह भी उल्लेखनीय है कि ब्र0 राजेश सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी के भतीजे हैं। इसी प्रकार गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के स्नातक तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के छात्र ब्र0 जयेन्द्र कुमार सुपुत्र श्री बलराज सिंह ने भी चण्डीगढ़ में आयोजित भारतीय भाषण प्रतियोगिता में प्रथम, श्लोकोच्चारण में तृतीय, कुरुक्षेत्र में भाषण प्रतियोगिता में प्रथम एवं अम्बाला में श्लोकोच्चारण में द्वितीय रहकर चल विजयोपहार प्राप्त किया। यह उल्लेखनीय है कि ब्र0जयेन्द्र कुमार श्री धर्मपाल सिंह मुख्य निरीक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा के भतीजे हैं।

आवश्यक सूचना

सूचनार्थ निवेदन है कि सभा कार्यालय से प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को वार्षिक चित्र भेज दिए गये हैं। जिन समाजों में प्राप्त न हुए हों वे सभा कार्यालय को पत्र लिखकर अथवा सम्पर्क स्थापित करके उन्हें प्राप्त कर सकते हैं।

– सभामंत्री

को डाकुओं की न्यायालय तथा बन्दीगृह में पहचान के लिये घास-फूस जलाकर रोशनी करने की ट्रेनिंग भी दे।

आज तक तो कभी ऐसा कहीं हुआ नहीं कि डाका पड़ने वाले घर के पड़ोसियों को इस प्रकार डाकुओं की पहचान कार्यवाही का पूर्वाभ्यास कराया गया हो। ट्रेनिंग तो क्या? ऐसी घोषणा भी सरकार की ओर से कभी नहीं हुई।

पहचान की बात तो अकस्मात ही किसी डाकू का मुँह पर का कपड़ा उतर जाने पर वह भी अतीव निकट से देखे जाने पर ही सम्भव है। अन्त में आपने यह भी लिख दिया कि "न्यायालय पहचान वाली साक्ष्य को आसानी से स्वीकार नहीं करते। उसकी प्रत्येक दृष्टिकोण से पूरी छान-बीन की जाती है और जहाँ उचित व वास्तविक लगती है, वही मानी जाती है।" परन्तु वास्तविकता यह है कि पूरे अभियोग के दोनों पक्षों के बयानों की गहरी छानबीन ही उपर्युक्त हो सकती है, पहचान की प्रक्रिया निरर्थक है। यदि कहीं पहचान वाली बात आती है तो वह बयान से ही स्पष्ट हो सकती है। इसके अतिरिक्त यदि ऐसे अवसर पर -- जिसके यहाँ डकैती पड़ी होती है वह अपने शत्रु को फँसाना चाहे तो बड़ी सरलता से फँसा सकता है क्योंकि उसके मुख-मण्डल तथा शारीरिक आकार आदि के विषय में तो वह उसके परिवार तथा पड़ोस के सभी लोग भली-भाँति परिचित हैं।

यदि मेरे पूर्व लेख में कुछ अस्पष्टता रह भी गयी हो तो आपके लेख को पढ़कर लिखी गयी इन पंक्तियों से वह भी स्पष्ट हो जायगी और मैं चाहता हूँ कि आप मेरे पहले लेख और इस लेख -- दोनों को एक बार पुनः ध्यान पूर्वक पढ़कर गम्भीरता से विचारें और प्रत्येक पहलू पर विचार प्रकट करें जिससे अन्य विधिवेत्ता जन भी लिखने को प्रेरित हों और अन्ततोगत्वा यह चर्चा किसी ठोस परिणाम पर पहुँचे, परन्तु दृष्टिकोण सत्यासत्य का निर्णय होना चाहिये, पक्षपात तथा पिष्टपेषण नहीं।

श्री पं० मनमोहन तिवारी के प्रति

नया वर्ष मंगलमय हो

नये वर्ष की शुभम् कामना मिली, खिली उरकी फुलवारी।
जन्म-जन्म के लगें सहोदर, सुहृद श्रेष्ठ हो जगहितकारी।
तरुण तपस्वी, जन-जन मोहन, जाग्रत प्रहरी आर्य जाति के
भरे नवल उत्साह प्राणमय, बने पपीहे वेद स्वाति के।
अनय अराजक अघ विनष्टकर संहारक बनकर अराति के।
नया चेतना जगा राष्ट्र में, सूर्य उगाओ नव प्रभात के।
मार्तण्ड बनकर मुस्काओ, मेटो जनमन की अँधियारी।
"आर्यमित्र" की ज्योति जगाये, फैलाये नूतन उजियारी।

–लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र"
भोजपुरा, मैनपुरी।

मान्यता

सं0 3982 लखनऊ, दिनांक 15-3-89

महात्मा देवस्वामी गुरुकुल महाविद्यालय सिरसागंज, जिला- फिरोजाबाद की निम्नांकित प्रबन्ध समिति को, इस सभा की ओर से, मान्यता प्रदान की जाती है:-

क्र0सं0	पद	नाम	पता
1-	कुलपति/अध्यक्ष	-स्वामी दिव्यानन्द जी	-योगधाम, हरिद्वार
2-	उपकुलपति	-श्री ब्रजभूषण सिंहजी	-जगतपुर, मैनपुरी।
3-	मुख्याधिष्ठाता प्रबन्धक	-श्री सत्यवीर शास्त्री	-रचना प्रेस, इटावा।
4-	अधिष्ठाता (शिक्षा)	-श्री नरेन्द्रार्य	-औम्भण्डार, मैनपुरी।
5-	" " (कृषि)	-श्री नेत्रपाल सिंहजी	-करहल मैनपुरी।
6-	कुल सचिव	-श्री वेदप्रकाश जी	-औरैया, इटावा।
7-	पुस्तकाध्यक्ष	-श्री रामचरन सिंहजी	-खरपरी, मैनपुरी।
8-	कोषाध्यक्ष	-श्री ओ३म् शरणजी	-सिरसागंज, फिरोजाबाद।
9-	सदस्य	-श्री इन्द्रपाल सिंहजी	-करहल, मैनपुरी।
10-	सदस्य	-श्री ध्रुवपाल सिंहजी	-वैदिक आश्रम, अलीगढ़।
11-	सदस्य	-श्री रामप्रकाश जी	-अवधनगर, मैनपुरी।
12-	सदस्य	-श्री यज्ञदत्त जी	-सिरसागंज, फिरोजाबाद।
13-	सदस्य	-श्री अरुणेन्द्र सिंहजी	-खरपरी, मैनपुरी।

(मनमोहन तिवारी)
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला **शतवर्षीय बृहद इतिहास** लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

xxxxxx

गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर - गाजियाबाद का 24वाँ वार्षिक महोत्सव 2, 3, 4 अप्रैल 1989 को बड़े उत्साह से मनाया जा रहा है। जिसमें उच्चकोटि के सन्यासी विद्वान् भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

विशाल यज्ञ - आकर्षक ब्रह्मचारियों द्वारा व्यायाम प्रदर्शन मुख्य कार्यक्रम होंगे अधिक से अधिक जनता वहाँ पर पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ायें।

धर्मपाल आचार्य
प्रधानाचार्य
गु0म0वि0 ततारपुर।

xxxxxx

महर्षि दयानन्द की मान्यताएं एवं युग परिवर्तन

डा0 रवीदत्त शर्मा आचार्य सेबलपुर {मुरादाबाद}

महर्षि कालीन समाज कुरीतियों का पिटारा था। किसी भी क्षेत्र में सन्तोषजनक स्थिति नहीं थी। व्यक्ति से लेकर समूचा राष्ट्र एक रोग से ग्रस्त था। अविद्या के अन्धकार में भटके हुए भारतीय अपने पतन को ही उत्थान मान बैठे थे। जन्म के आधार पर ही ब्राह्मण-क्षत्रिय आदि का निर्णय कर लिया जाता था और कर्म को गौण माना जाता था। जन्म से ब्राह्मण होते हुए निन्दित कर्म करने पर भी ब्राह्मण पर कोई आँच नहीं आती थी। जन्म से शूद्र होने पर विद्याप्राप्ति का अधिकार नहीं था। शूद्रकुल में जन्म लेने के कारण जीवन भर हेय समझा जाता था। नारी पर अत्याचारों की भरमार थी। संस्कारों का लोप हो चुका था। आर्षग्रन्थों का पठन-पाठन समाप्त हो चला था। कर्मकाण्ड एवं यज्ञानुष्ठान पूर्ण अवैदिक थे और उनमें मन्त्रों के स्थान पर मनमाने स्वनिर्मित श्लोकों का प्रयोग किया जाता था। नामधारी ब्राह्मणों की वाणी ही वेदशास्त्र थी, कोई भी वाक्य बनाकर उसे वेद का नाम दे देते थे। जनसाधारण को इतना भ्रमित कर दिया गया था कि वेद का नाम ही भूल गये थे और ब्राह्मणों के द्वारा सम्भव-असम्भव कुछ भी कह देने पर विरोध नहीं करपाते थे। अपना काम चलाने के लिये वैसे ही ग्रन्थ बनाये गये जो आज भी पुराणों के रूप में समाज में प्रचलित हैं। वैसे ही देवी-देवता तथा भगवान भी बनालिये गये। पाखण्डियों ने समाज एवं धर्म को विकृत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। जिससे स्वार्थ सिद्ध हो वही धर्म का नियम घोषित कर दिया गया। यदि सत्य कहा जाय तो लूट-पाट ही धर्म था। धर्म के अधिकारी पण्डे और पुजारी थे जो भोली-भाली जनता पर मनमाने अत्याचार करते थे। अभी भी उस काल की छवि कहीं-कहीं देखने को मिल जाती है। वाराणसी में विश्वनाथ मन्दिर की सुरंग उस काल के भ्रष्टाचार की सूचना दे रही है, विवाह के उपरान्त आभूषणों से सुसज्जित वधू मन्दिर की परिक्रमा करती थी, तब सुरंग का पटला उठा दिया जाता था और वह सुरंग में पहुँच जाती थी। इस प्रकार लाखों के गहने पण्डे उतार लेते थे और स्त्री को मार देते थे। यदि कोई उन से स्पष्टीकरण माँगता तो उनके शस्त्रधारी, छिपे हुए गुण्डे उस की भी हत्या कर देते थे। वर्तमान में ऐसे सभी दर्शनीय स्थलों पर शासन द्वारा नियन्त्रण कर लिया गया है। ज्योतिषशास्त्र का जो घिनौनारूप आज देखने को मिलता है, उसी काल की देन है। कोई भी कार्य ब्राह्मण की स्वीकृति के बिना नहीं हो सकता था। क्रूर ग्रहों के प्रकोप के भय से आतंकित जन छोटे से छोटे कार्य को करने के लिए ब्राह्मणों का मुँह ताकते रहते थे और पण्डितजी के द्वारा शुभ मूहूर्त बताने पर ही कार्य आरम्भ करते थे। आज की सत्यनारायण व्रत कथा, मरणोपरान्त ब्रह्मभोज, पिण्डदान, मृतकश्राद्ध, मूलनक्षत्र में जन्मे बच्चे का सूतक निवारण, नक्षत्र पंचक में मरने पर पंचक दोष की निवृत्ति, मृतक के हाथ से गोदान तथा विवाह के समय वर की दक्षिणा ब्राह्मण को देना आदि कुप्रथाओं से तत्कालीन ब्राह्मणों के आधिपत्य का पता चलता है।

महर्षि दयानन्द ने कुरीतियों को समाप्त करने के लिये भरसक प्रयत्न किया। उन्होंने अनुभव किया कि सभी बुराइयों का एक मात्र कारण है - वेदविद्या का लोप। ज्ञान के अभाव में मनमाना आचरण ही होता है जैसा कि स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास की अनुभूमिका में लिखा है - "वेदों की अप्रवृत्ति होने का कारण महाभारत का युद्ध हुआ। इन की अप्रवृत्ति से अविद्यान्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिस के मन में जैसा आया वैसा मत चलाया" प्रकाश के अभाव में अन्धकार स्वाभाविक है। ऋषि ने उस प्रकाश को फैलाने में अपना जीवन लगा दिया। गुरु-विरजानन्द ने वेदों, दलितों एवं नारियों का उद्धार करने का आदेश दिया था। स्वामी जी को भी यह निश्चय हो गया था कि वेद-विद्या का प्रचार होने पर सभी बुराइयाँ स्वतः दूर हो जायेंगी। सर्वप्रथम उन्होंने अन्धकार फैलाने वाले मानवकृत ग्रन्थों का उन्मूलन किया तथा मानवता को हानि पहुँचाने वाले मतमतान्तरों एवं सम्प्रदायों का खण्डन किया। सन् 1867 में कुम्भ के मेले में स्वामी जी ने हरिद्वार में अपना शिविर लगाया और पाखण्ड खण्डिनी पताका को फहराया। फिर एक संगठन के रूप में 1875ई0 में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी संस्था के रूप में उदीयमान हुई इस संस्थान के दस नियम निर्धारित किये गये जिन में समाजसुधार की भावना निहित थी। मनुष्य को सन्मार्ग पर लाने के लिये लक्ष्य निर्देशन किया। सत्यार्थ प्रकाश उत्तरार्द्ध की अनुभूमिका में ही इस का संकेत मिलता है- "मनुष्य जन्म का होना सत्य-असत्य के निर्णय करने कराने के लिये है न कि वाद-विवाद विरोध करने कराने के लिये।" धर्म का स्वरूप बताते हुए स्वामी जी ने आर्योद्देश्य रत्नमाला में स्पष्टीकरण दिया है, "जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत् पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है"।

स्वामी जी ने "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" के आधार पर वेद को ही भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति का एक मात्र आधार स्वीकार किया, वैदिक मान्यताओं को सर्वत्र प्रतिष्ठित किया। "यथा सूर्यः प्रदीपश्च स्व प्रकाशे नैव प्रकाशितौ सन्तौ सर्व मूर्तद्रव्य प्रकाश कौ भवत. तथैव वेदाः स्व प्रकाशे नैव प्रकाशिताः सन्तः सर्वानन्य विद्याग्रन्थान् प्रकाशयन्ति" {ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका} वेद ही स्वप्रकाश एवं स्वतः प्रमाण वाले हैं ये ही सब को प्रकाशित तथा प्रमाणित करते हैं। सभी मान्यताओं को वेद पर आधारित स्वीकार करके वेद विरुद्ध मतों का खण्डन किया। पुराणोक्त मूर्तिपूजा तथा अवतार वाद जैसी भ्रान्ति के उन्मूलन हेतु वेदोक्त त्रैतवाद को मान्यता दी। "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया" के आधार पर ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि सिद्ध किया। उपासना के सम्बन्ध में स्वामी जी ने स्पष्ट लिखा है - "जैसे ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हैं वैसे अपने करना, ईश्वर को सर्वव्यापक और अपने को व्याप्य जान के ईश्वर के समीप हम और हमारे समीप ईश्वर है ऐसा निश्चय योगाभ्यास से साक्षात् करना उपासना कहाती है, इस का फल ज्ञान की उन्नति आदि है।"

इस प्रकार जड़ की उपासना तथा मूर्तिपूजा का स्वतः खण्डन हो जाता है और ईश्वर के अनादित्व के कारण अवतारवाद की मान्यता भी समाप्त हो जाती है। वैदिक वर्णव्यवस्था की स्थापना करके स्वामी जी ने समाज को व्यवस्थित रूप दिया। ब्राह्मण - क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र ये चार वर्ण हैं जो जन्म से नहीं, कर्म से बनते हैं। "जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते" के अनुसार संस्कार विधि का निर्माण कर सब को द्विज बनने का अवसर दिया, जिस के संस्कार हो जाते हैं वही द्विज बन जाता है। कोई भी व्यक्ति किसी को द्विज बनने से नहीं रोक सकता। शिक्षा के लिये गुरुकुलपद्धति पर बल दिया। इस दिशा में आश्रम व्यवस्था को उपयोगी बताया एवं 25 वर्षों में ब्रह्मचर्य का पालन कर विद्याध्ययन का आदेश दिया। सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में संकेत किया है कि बच्चे की शिक्षा माता,पिता तथा गुरु इन तीनों के द्वारा पूर्ण होती है, सदा इन का सम्मान करना चाहिये-------- "मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद"। शिक्षाग्रहण करने का अधिकार पुत्र तथा पुत्री को समान रूप से है। इन में भेदभाव करना अपनी सन्तान के साथ अन्याय करना है। राष्ट्र की उन्नति के लिये स्त्रीशिक्षा को अनिवार्य बताया तथा नारी को पुरुष के समान ही अधिकार एवं सम्मान दिलाया। उत्तम सन्तान प्राप्त करने के लिये स्त्री का सम्मान करना अनिवार्य है, यदि उसकी उपेक्षा की गयी तो सभी क्रियायें असफल हो जायेंगी ऐसा मनु जी का मत है। बाल-विवाह, बहुविवाह अनमेल विवाह तथा स्त्री को जीवित जलाने की प्रथा का विरोध कर विधवा विवाह को मान्यता दी। वैदिक तथ्यों के आधार पर जिस स्त्री का पति मर चुका हो अथवा सर्वथा अक्षम हो तो उसे अपने अनुकूल दूसरा पति वरण करने का अधिकार है। अबला को सबला बनाना स्वामी-जी का ही काम था। आज के कन्या-विद्यालय अथवा महिला प्रशिक्षणकेन्द्र उसी प्रयास का परिणाम हैं। आज सरकार ने महर्षि द्वारा संचालित सभी कार्यक्रमों को मूर्त रूप देकर स्वामीजी को मान-प्रतिष्ठा प्रदान की है। एक युगप्रवर्तक के रूप में स्वामीजी को राष्ट्रीय-सम्मान दिया गया है। संसद-भवन में उनका चित्र लगा हुआ है। पानी के एक जहाज का नाम दयानन्दपोत रख दिया गया है जो सम्मान का द्योतक है।

सम्पूर्ण उपलब्धियों पर दृष्टिपात करते हुए कहा जा सकता है कि महर्षि दयानन्द एक क्रान्तिकारी समाजसुधारक थे, जिन के प्रयासों से जनमानस का सर्वांगीण विकास हुआ और नये युग का सूत्रपात हुआ। वास्तव में इसे युगनिर्माण या युगपरिवर्तन कहा जा सकता है। ऐसे महापुरुष जिनका मुख प्रसन्नता का घर हो, हृदय दया से भरपूर हो, वाणी से अमृत वर्षा होती हो, कार्य जिन का मात्र परोपकार हो, वे किसके वन्दनीय नहीं होते अर्थात् सबके पूज्य होते हैं।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

मैनपुरी। स्थानीय आर्य समाज का 109वाँ वार्षिकोत्सव, 10 दिवसीय अथर्ववेद पारायण वृहद यज्ञ एवं ऋषिबोध सप्ताह के अन्त में दि0 4, 5 व 6 मार्च 1989 को श्री विद्या भिक्षु जी के संरक्षण तथा उप-सभा प्रधान श्री ब्रजभूषण सिंह जी के निर्देशन में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

इस धर्म मेला में स्वामी दिव्यानन्द जी (हरिद्वार), डॉ0 वागीश जी (एटा), डॉ0 विजय पाल सिंह जी (अलीगढ़), श्रीमती आशा, एडवोकेट (आगरा), संगीताचार्य पं0 राम स्वरूपजी (बम्बई), श्री वेद प्रकाश जी, मुख्याधिष्ठाता, सभा, श्री अटल जी, मुख्यनिरीक्षक, सभा, श्रीमती शकुन्तला जी निरीक्षिका, सभा आदि आर्य सन्यासी, विद्वान, महोपदेशक, नेता तथा भजनीक पधारे।

-पं0 राम प्रकाश, अन्त0 सभासद् सभा।

xxxxxxxxxx

निर्वाचन हेतु आर्य उप प्रतिनिधि सभा जनपद हरिद्वार की तदर्थ समिति का गठन

दिनांक 12-3-89 को आर्यसमाज भवन हरिद्वार में श्री वी0वी0गौतम, जिला प्रतिनिधि एवं अंतरंग सदस्य, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की देख-रेख में सभा की ओर से मनोनीत संयोजिका श्री मती सन्तोष कुमारी रंगन ने नव गठित जनपद में जिला सभा का चुनाव कराने हेतु जिले की सभी आर्यसमाजों से प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया, चुनाव हेतु सहयोगी तदर्थ समिति का गठन कराया जिसमें तीन सह-संयोजक सर्व श्री बसन्त सिंह चौहान, दिनेश चन्द शास्त्री, सत्यप्रकाश त्यागी एवं बीस सदस्य रहेंगे। समिति शीघ्र ही आ0 प्र0 स0 की देख-रेख में नियमानुसार चुनाव करायेगी।

xxxxxxxxx

आर्यसमाज बहादराबाद जनपद हरिद्वार का चुनाव सम्पन्न

चुनाव अधिकारी श्री विद्यासागर जी, मंत्री आर्यसमाज, खाला पार, सहारनपुर ने बहादराबाद आर्यसमाज का चुनाव दिनांक- 10-3-89 को सर्व सम्मति से सम्पन्न कराया जिसमें प्रधान श्री लाल सिंह आर्य, मंत्री श्री राज कुमार आर्य, उपप्रधान श्री- कुँवर सिंह जी, उपमन्त्री श्री विरेन्द्र कुमार, कोषाध्यक्ष श्री जगवीर- सिंह, पुस्तकाध्यक्ष श्री नरेश कुमार सोनी मुख्याधिष्ठाता श्री राजकुमार- जी चुने गये।

बसन्त सिंह चौहान, आर्यसमाज, बहादराबाद।

xxxxxx

आवश्यक सूचना

समस्त विद्यालयों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य/अध्यापकों को सूचित किया जाता है कि माननीय उच्च न्यायालय के आदेशानुसार अब विद्यालयों में श्रम विभाग का हस्तक्षेप न होगा। इच्छुक उक्त न्यायालय के आदेश की प्रति 5/-रु0 भेज कर प्रधान कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ से प्राप्त कर सकते हैं।

- सभा मंत्री।

xxxxxxxx

व्याकरणाचार्य - चाहिए

महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर मंझना, फर्रुखाबाद 207504 को एक सुयोग्य व्याकरणाचार्य की महती आवश्यकता है। जो कि ऋषि प्रणीत पुरातन विशुद्धार्ष पाठविधि के आधार पर गुरुकुलीय ब्रहमचारियों को अष्टाध्यायी महाभाष्य आदि का सम्यक् अध्ययन करा सके। दक्षिणा योग्यतानुसार उचित ही प्रदान की जाएगी। जिज्ञासु शीघ्र सम्पर्क करें --

आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री
कुलपति

xxxxxxxxx

- आर्यसमाज, उन्नाव का 91वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 17, 18, व 19 अप्रैल 1989ई0 को हो रहा है, जिसमें सर्वश्री मेधानन्द सरस्वती, पं0 सत्यानन्द वेद वागीश, डा0 प्रशस्य- मित्र शास्त्री, डा0 वेद प्रकाश आचार्य, जलेश्वर मुनि श्री वानप्रस्थी, बृज पाल शर्मा "कर्मठ" आदि विद्वान व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। विशेष कार्यक्रमों में दिनांक 18-4-89 को संस्कृत काव्य गोष्ठी व 19-4-89 को संस्कृत सम्मेलन का भी आयोजन किया गया हैं।

धर्मवीर हकीकत बलिदान दिवस-बसन्त मेला समारोह पूर्वक सम्पन्न

अखिल भारतीय हकीकत राय समिति और आर्यसमाज, सरोजिनी नगर की ओर से आर्यसमाज मन्दिर, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली में धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस बसन्त मेला 12 फरवरी 1989 को बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रातः8·30 बजे बृहद यज्ञ हुआ जिसके ब्रहमा पं0 हुकम चन्द वेदालंकार थे। मुख्य यज्ञमान स्व0 श्री प्रकाश चन्द जी शास्त्री का परिवार था। यज्ञ के पश्चात आर्यसमाज के मुख्य द्वार का उद्घाटन हुआ। यह द्वार आर्यसमाज के भूतपूर्व प्रधान श्री प्रकाश चन्द जी शास्त्री के परिवार द्वारा उनकी स्मृति में बनवाया गया है।

यज्ञ के पश्चात् रतन चन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजिनी नगर के बच्चों ने वीर हकीकत के जीवन पर रोमांचक ड्रामा प्रस्तुत किया और बसन्त पर बहुत सुन्दर गीत प्रस्तुत किये। दूसरे स्कूलों के बच्चों ने भाषण, कविता, प्रतियोगिता में भाग लिया। छोटे-छोटे बच्चों के मुख से रोमांचित करने वाले शब्द बलिदानी बाल हकीकत के प्रति श्रद्धा जगा रहे थे। दिल्ली आर्यप्रतिनिधि- सभा के प्रधान डा0 धर्मपाल ने बच्चों को पारितोषिक वितरण किये। जिसकी अध्यक्षता श्री हरबंस सिंह खेर ने की। श्री- सूर्य देव जी, महामंत्री, दिल्ली सभा, श्री रामनाथ सहगल, मंत्री, आर्य प्रादेशिक सभा, श्री राम भज जी सदस्य, महानगर परिषद् श्रीमती शकुन्तला आर्या अध्यक्षा, दक्षिण दिल्ली आर्य महिला- सभा, श्री शिवकुमार शास्त्री, महामंत्री, श्री रतन लाल सहदेव, श्री राम मूर्ति कैला, श्री रतन चन्द अन्य बहुत सी आर्य समाजों के अधिकारी व सदस्य उपस्थित थे। इन्होंने धर्मवीर हकीकत को श्रद्धांजलि अर्पित की। अन्त में स्व0 श्री उत्तम चन्द जी चोपड़ा परिवार की ओर से ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

xxxxxxxxxxxxxxx

वैदिक धर्म का ग्रामीण प्रचार

दिनांक- 25 फरवरी से 2 मार्च 1989 तक वैदिक धर्म का प्रचार चन्द्र भूषण सिंह के प्रयास से गोण्डा जिला के अन्तर्गत ग्राम सेमरी में 3 दिन, सिधौरी में 2 दिन, अमदही में 1 दिन तथा परास में 1 दिन का प्रचार किया गया।

जिसमें श्री खेम चन्द्र जी सभा उपदेशक तथा रायबरेली निवासी हरिशंकर जी मिश्र एवं बनारस निवासी श्री वेदपाल जी आर्य ने भजन और व्याख्यान के द्वारा आर्यसमाज का प्रचार किया बृहद् यज्ञ के बाद सत्यार्थ प्रकाश एवं दैनिक यज्ञ प्रकाश, व्यवहार भानु, आदि पुस्तकें भी बाँटी गई।

xxxxxxxxxxx

महात्मा हंसराज दिवस 16 अप्रैल 1989 को ससमारोह मनायें

नई दिल्लीः- हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, डा0ए0वी0 संस्थाओं, आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा समस्त आर्य जगत् की ओर से महात्मा हंसराज दिवस 16 अप्रैल 1989 रविवार को प्रातः 9 बजे से 1 बजे तक तालकटोरा गार्डन इनडोर स्टेडियम (नजदीक बिरला मन्दिर) नई दिल्ली- 110001 में मनाया जायेगा।

दिल्ली की आर्य समाजों तथा स्त्री आर्य समाजों से निवेदन है कि हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी उस दिन अपना साप्ताहिक सत्संग स्थगित रखें और बसों द्वारा आर्यसमाज के समस्त सदस्यों सहित महात्मा हंसराज दिवस के उपलक्ष्य में तालकटोरा गार्डन इनडोर स्टेडियम में पधारें। यह हमारा सौभाग्य होगा।

इस दिन प्रातः 9 बजे से 9-40 तक यज्ञ होगा और 9-45 से 10 बजे तक प्रसाद वितरण होगा, उसके बाद 10 बजे से 1 बजे तक सार्वजनिक सभा होगी जिसमें माहात्मा जी को श्रद्धांजलि अर्पित की जायेगी।

डी0ए0वी0 माडल स्कूल शालीमार बाग, नई दिल्ली की ओर से महात्मा हंसराज दिवस पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा। आपने देखा होगा कि सांस्कृतिक कार्यक्रम बड़ा आकर्षक होता है।

आपसे प्रार्थना है कि आप अपने परिवार के समस्त सदस्यों सहित उपरोक्त कार्यक्रम में पधारने की कृपा करें। इसके लिये हम आपके अति आभारी होंगे। विस्तृत कार्यक्रम प्रकाशित होने पर भिजवा दिया जायेगा।

दिनांक- 3 से 6 फरवरी 1989 तक आर्यवीर दल शिविर बैरी-अकबरपुर (कल्याणपुर-कानपुर नगर) में लगाया 51 आर्यवीर व 20 आर्यवीरांगनाओं ने भाग लेकर प्रशिक्षण प्राप्त किया शिविर का समापन जिला सभा के प्रधान श्री ओउम् प्रकाश आर्य मुख्य अभियन्ता नगर विकास कानपुर ने किया।

xxxxxxxxx

घर वापसी और दाम्पत्य सूत्र बन्धन

12-2-89 आर्यसमाज भोलेपुर के तत्वावधान में आयोजित एक समारोह में कु0 प्रभा बी0ए0 एल0टी0 अध्यापिका कन्या-इंटर कालेज रखा आत्मजा श्री काली चरण ने ईसाई मत का परित्याग कर वैदिक धर्म में दीक्षा ली। इसी समारोह में श्री राजेन्द्र कुमार आर्य नामक एक साहसी युवक आत्मज श्री रामकृष्ण आर्य जो स्नातक हैं और लघु सिचाई विभाग में अवरअभियन्ता (तक0) के पद पर कार्यरत हैं, ने कु0 प्रभा को सहधर्मिणी बनाने की घोषणा की तथा वैदिक रीत्यानुसार कुमारी प्रभा का पाणिग्रहण किया। वैदिक पुरोहित श्री आत्माराम जी ने विवाह सम्बन्धी प्रत्येक क्रिया का सम्पादन प्रभाव पूर्ण ढंग से कराया। कन्या के परिवार ने कन्यादान किया। उपस्थित सैकड़ों नर-नारियों की तुमुलहर्ष ध्वनि के बीच वैदिक सन्यासी श्री चेतनानन्द जी व आर्य उपप्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों, आर्यसमाज भोलेपुर-माकूतगंज-फतेहगढ़ व नगरीय जाति के सभासदों व अधिकारियों तथा अन्य समाज सेवियों ने नवदम्पत्ति को आशीर्वाद दिया। जिला सभा की ओर से दोनों को महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रंथ सत्यार्थप्रकाश व संस्कार विधि प्रदान किये गये। संस्कार की भव्यता से प्रभावित अनेक परिवारों ने वैदिक संस्कार विधि से संस्कार कराने का निश्चय किया। समारोह का समापन प्रीतिभोज के साथ हुआ।

- महर्षि दयानन्दार्ष गुरुकुल कृष्णपुर उ0प्र0 के पावन प्रांगण में गुरुकुल का बीसवां वार्षिक समारोह वृहद् यज्ञ एवं विराट ऋषि मेला के आकर्षक आयोजनों के साथ दिनांक 25, 26, 27 फरवरी 1989 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर 22, 23 व 24 फरवरी को आर्यवीर दल का लघु शिविर भी संचालित किया गया।

xxxxxxxxxx

- आर्यसमाज बगहाँ, डोमनपुर, धनैता मीरजापुर का वार्षिकोत्सव 23 से 26 फरवरी तक धूमधाम के साथ मनाया गया।

xxxxxxxxx

- आर्यसमाज भटौली जनपद बदाँयू द्वारा ऋषि दयानन्द बोध सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया 6 फरवरी को शोभा यात्रा समस्त ग्राम में होकर आर्यसमाज मन्दिर में सभा के रूप में स्वामी दयानन्द की जय तथा भजन व प्रवचन हुए।

xxxxxxxxxxx

- आर्य समाज पाल्ली (हरदोई) का वार्षिकोत्सव 21 फरवरी से 24 फरवरी 89 तक ससमारोह पूर्वक मनाया गया।

xxxxxxxxxxx

- आर्यसमाज सिरसौंद म0प्र0 में सभा प्रचारक पं0 नेमप्रकाश आर्य के पौरोहित्य में श्री कुंजलाल वानप्रस्थी के निवास पर चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिस में 10 व्यक्तियों एवं 10 महिलाओं के यज्ञोपवीत 3 बच्चों के नामकरण संस्कार हुए। भजनोपदेश एवं धनुर्विद्या का प्रभाव जनता पर पड़ा। आर्यमित्र के नवीन ग्राहक बनाये गये।"

xxxxxxxxxxxxxx

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेश के सभी आर्यवीर दल सैनिक तथा अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि पश्चिम उत्तर प्रदेशीय आर्यवीर दल के सरसंचालक माननीय डा0 बालकृष्ण आर्य "विकल" पूर्णरूप से स्वस्थ हो गए हैं। कृपया उन्हें कार्यक्रम में बुलाने हेतु हमारे कार्यालय को 20 दिन पूर्व सूचित करें। पता निम्न है:-

वेद प्रकाश गुप्त
प्रान्तीय मंत्री सार्वदेशिक आर्यवीर दल
आर्य वीर निकेतन, बिन्दकी, फतेहपुर।

- श्री मद्दयानन्दार्ष गुरुकुल नगला कटीला (एटा) ने 12 फरवरी 89 को ऋषि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस बड़े धूम-धाम से मनाया गया।

xxxxxxxx

- वेद प्रचार मण्डल भरथना (इटावा) ने 12 फरवरी 89 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस ससमारोह पूर्वक मनाया गया। तथा 20 फरवरी 89 को मण्डल के मन्त्री जी के निवास पर बच्चे का नामकरण एवं अन्नप्राशन संस्कार श्री महेश चन्द्र झा ने पुत्र का नाम राम प्रकाश रखा गया तथा जनता में आर्य साहित्य वितरित किया गया।

xxxxxxxxxxx

आवश्यकता धर्म शिक्षक की

एक धार्मिक प्रवृत्ति वाले धर्म शिक्षक की (नए सत्र से) आवश्यकता है जो आर्यसमाज नया बाँस, दिल्ली द्वारा संचालित दाऊदयाल आर्य वैदिक पाठशाला में धर्म शिक्षक के रूप में कार्य करने के इच्छुक हों। वांछित दक्षिणा/वेतन व पूर्ण विवरण सहित तुरन्त सम्पर्क करें :-

धर्म पाल आर्य, मन्त्री,
आर्यसमाज, नयाबांस, दिल्ली-6
दूरभाष : 238360, 233112

xxxxxxxxxxx

आर्यसमाज बढ़ौली (अलीगढ़)

प्रधान	-	श्री जयनारायण सिंह वर्मा
मंत्री	-	श्री सुखवीर सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष	-	श्री मौंगेराम आर्य

xxxxxxxxx

आर्यसमाज इगलास जनपद- अलीगढ़

- मेला बसंत पंचमी को महर्षि दयानन्द जन्मोत्स जिला सभा के मंत्री डा0 विजयपाल सिंह आर्य की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जिस में लगभग (10000) दस हजार क्षेत्रीय व्यक्तियों ने भाग लिया।

उत्सव में जिला सभा के प्रधान व मंत्री दोनों आर्य नेताओं ने महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए इस बात पर अधिक बल दिया कि देश की एकता व अखण्डता, संस्कृत व संस्कृति की, गाय व रामजन्म भूमि की रक्षा केवल महर्षि दयानन्द के द्वारा प्रतिपादित आर्यसमाज के सिद्धान्तानुसार ही सम्भव है। तथा सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने की अपील की।

xxxxxxxxxx

वेदप्रचार मण्डल - बिहार

1- विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित आर्य सम्मेलन लक्खी सराय (मुंगेर) 26, एवं 27 फरवरी को विश्व हिन्दू परिषद के तत्वावधान में आर्यसम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी (वालन्दा) ने सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए बताया कि इस समय सभी राष्ट्रवादियों को एक जुट होकर काम करने की आवश्यकता है। इस अवसर पर पं0 जयप्रकाश जी आर्य हिसार, एवं महावीर सिंह (पटना-सीटी) के पुरोगम हुए।

- पश्चिम चम्पारण स्थित रानी पकड़ी आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव दिनांक- 1, 2, एवं 3 मार्च को सानन्द सम्पन्न हुआ।

xxxxxx

- आर्यसमाज मठ गुलनी मुंगेर के कर्मठ सदस्य श्री मोती लाल आर्य के सुपुत्र चि0 रवीन्द्र कुमार आर्य का विवाह अलीगंज मुंगेर में 13 फरवरी को पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार डा0देवेन्द्रकुमार, सत्यार्थी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ, दोनों पक्षों ने एक-एक सौ रुपये आर्यसमाज अलीगंज के लिए दान दिया।

xxxxxxxxx

- सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ द्वारा आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर आर्यसमाज पथ्रोट अमरावती (महाराष्ट्र) में दिनांक 7-7 से 10 फरवरी 1989 तक लगाया गया। जिसमें शारीरिक, वैदिक प्रशिक्षण 50 आर्य वीरों को दिया गया।

आर्यसमाज बीसलपुर {पीलीभीत}

प्रधान - श्री डा0 पूर्णानन्द
मंत्री - श्री चन्द्रपाल
कोषाध्यक्ष - श्री रामस्वरूप शास्त्री

xxxxxxxxxx

आर्योदय, मुरलीनगर फतेहाबाद मार्ग
ताजगंज आगरा- 1

प्रधान - श्री इन्द्र मोहन मेहता
मन्त्री - श्री शान्ति प्रकाश शर्मा
कोषाध्यक्ष - श्री ओम् प्रकाश मलिक

xxxxxxxxx

आर्यसमाज धमौरा {रामपुर}

प्रधान - डा0 नरेन्द्र देव गुप्त
मंत्री - श्री सुरेश कुमार गुप्त
कोषाध्यक्ष - श्री देवेन्द्रदेगुप्त

xxxxxxxxx

आर्यसमाज बाँगर मऊ {उन्नाव}

प्रधान - श्री सुरेशचन्द्र आर्य
मंत्री - श्री कृष्ण कुमार आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री श्याम सुन्दर आर्य

xxxxxxxxxx

आर्यसमाज रुस्तनपुर महाबतपुर बावली{मेरठ}

प्रधान - देवराज सिंह {गोपी}
मंत्री - योगेन्द्र कुमार {देसू}
कोषाध्यक्ष - चेतराम जी {देसू}

xxxxxxxxx

आर्यसमाज जसवन्तनगर {इटावा}

अध्यक्ष - श्री कुँवर लाल आर्य
मंत्री - श्री तिलक सिंह यादवेन्दु
कोषाध्यक्ष - श्री हाकिम सिंह पाल

xxxxxxxxx

आर्यसमाज, शक्तिनगर मिर्जापुर

अध्यक्ष - श्री शिवकरण दुबे
मंत्री - श्री भूरी सिंह
कोषाध्यक्ष - श्री ओम प्रकाश सैनी

xxxxxxxx

आर्यसमाज प्रेमनगर{देहरादून}

प्रधान - डा0 आदर्श कुमार बंसल
मंत्री - श्री रघुनन्दनलाल
कोषाध्यक्ष एवं सहमंत्री - श्री वेदानन्द त्यागी

xxxxxxxxxxx

आर्यसमाज मठपारा, दुर्ग {म0प्र0}

प्रधान - श्री गुलाबचन्द जी बंसल
मन्त्री - श्री दुन्नीलाल जी आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री राजाराम जी नामदेव

xxxxxxxxxx

निर्वाचन

आर्य उप-सभा जिला-मैनपुरी ।

प्रधान - श्री ब्रजभूषण सिंह जी
मंत्री - श्री रणजीत शास्त्री जी
कोषाध्यक्ष - श्री सरताज बहादुर जी

आर्य समाज मैनपुरी ।

प्रधान - पं0 नरेन्द्रार्य
मंत्री - श्री मूलचन्द जी
कोषाध्यक्ष - श्री सुरेश चन्द्र जी

आर्य समाज जगतपुर {मैनपुरी} ।

प्रधान - श्री रघुवीर सिंह जी
मंत्री - श्री जगदीश शास्त्री
कोषाध्यक्ष - श्री मन भावन सिंह

xxxxxxxx

आर्यसमाज उझानी {बदायूँ}

प्रधान - श्री हरिश चन्द्र मिश्र
मंत्री - श्री अशोक कुमार माहेश्वर
कोषाध्यक्ष - महेशचन्द्र आर्य

xxxxxxxxxxx

निर्वाचन आर्यसमाज सिकन्दरपुर {बलिया}

प्रधान - डा0 देवेन्द्र नाथ आर्य
मंत्री - श्री परमेश्वर प्रसाद
कोषाध्यक्ष - प्रेम नाथ श्रीवास्तव

xxxxxxx

- आर्यसमाज बरवीघा {मुंगेर} का वार्षिकोत्सव 22,23एवं 24 फरवरी को सम्पन्न हुआ। स्थानीय जनता में बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

xxxxxxxxxx

- पटना 25 जनवरी,बिहार के आर्यसमाजी नेता श्री-बनारसी सिंह विजयी के सुपुत्र चि0 मनोज कृष्ण के विवाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। संस्कार का वी0डी0ओ0 फिल्म तैयार किया गया ।

xxxxxxxx

नुमाइश में आर्य साहित्य का प्रचार

खुर्जा - 3 मार्च

विगत दो वर्षों से सार्वदेशिक आर्यवीर दल की ओर से अलीगढ़ नुमाइश में बुक-स्टाल लगाकर आर्य साहित्य का जोरदार प्रचार किया गया। जिसमें भारी मात्रा में जनता ने आर्य साहित्य खरीदा। उत्साही एवं कर्मठ नेता श्री जयनारायण जी आर्य-उपसंचालक सार्वदेशिक आर्य वीर दल- पश्चिमी उ0प्र0 के द्वारा यह कार्य चालू किया गया।

इस बार बुलन्दशहर नुमाइश में भी इसी प्रकार का आयोजन जिला आर्य प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर पंजीकृत के सहयोग से बड़े उत्साह के साथ चलाया जा रहा है।

xxxxxxxxxx

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें--

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह जनवरी 1989 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी0पी0 भेजी जायगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी0पी0 भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नबर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30रु0 हो गया है :

जनवरी 1989

4298, 5436, 6322, 6328, 6694, 8183, 8503, 8509, 8709, 9390, 9791, 9792, 10063, 11464, 11470, 11474 11477, 11485, 11782, 12081, 12090, 12292, 12604 13370, 13386, 13398, 13411, 13416, 13680, 13682, 13687, 14157, 14167, 14169, 14171, 14582, 14583, 14584, 14585, 14587, 14588, 14589, 14590, 14592, 14593, 14597, 14598, 14599, 14602, 14603, 14604, 14607, 14608, 14609, 14610, 14611, 14612, 14613, 14614, 14615, 14616

फरवरी

943, 1920, 2223, 4263, 4312, 5486, 6259, 8201, 9106, 9398, 9804, 9808, 9813, 9822, 9834, 10102, 10110, 10113, 11547, 12820, 12826, 12831, 12832, 13833, '2838, 12840, 13425, 13426, 13701, 13702, 13713, 13717, 14176, , 14179, 14186, 14188, 14193, 14616, 14621, 14622, 14623, 14624, 14625, 14626, , 14628, 14629, 14630, 14631, 14632, 14633, 14634, 14635, 14636, 14639, 14640, 14641, 14642, 14645, 14646, 14648, 14649, 14650, 14651.

व्यवस्थापक

आर्यसमाज की स्थापना

शिरोमणि आर्य सन्यासी स्वामी आनन्द बोध सरस्वती प्रधान-सार्वदेशिक सभा नई दिल्ली ने आर्यनगर गाजियाबाद में सार्वदेशिक सभा की भूमि में से आर्यसमाज मन्दिर बनवाने के लिए भूमि देने की गत वर्ष घोषणा कर दी थी।

जहाँ दिनांक- 19-2-89 को गाजियाबाद के सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं वैदिक धर्मी यशस्वी श्री बी0एस0 मोहन की अध्यक्षता में आर्यसमाज की स्थापना की गई इस अवसर पर नगर के सम्भ्रान्त पुरुषों ने भाग लिया।

xxxxxxxxxxx

{म0 प्र0}

- दिनांक- 24, 25 फरवरी 89 को ग्राम सीतापुर जि0 सरगुजा में सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में 112 आदिवासी उरांव जो ईसाई हो गए थे हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति हरियाणा के प्रयास से वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया।

xxxxxxx

- आर्यसमाज खण्डवा के प्रधान माणजी भाई भानुसाली एवं श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव ने जानकारी दी कि दिनांक- 26.2.89 को आर्यसमाज खण्डवा में जलगाँव से पधारे स्वामी शिवानन्द जी महाराज का आगमन हुआ। इस अवसर पर श्री राम प्रताप-श्रीमाली का सम्मान किया। इसी तारतम्य में स्वामी जी की अध्यक्षता में एवं श्री रमेशचन्द जी सोहनी एडवोकेट के मुख्य आतिथ्य में श्री जोसफ पिता नरसिंग ग्राम भगवानपुरा ने ईसाई धर्म को त्याग कर स्वेच्छा से बगैर किसी दबाव के वैदिक धर्म हिन्दू धर्म ग्रहण किया। उसका नाम जय किशन रखा गया इसी के साथ साथ श्री रमेशचन्द छीतर एवं सौ0 ममता पिता गान्या एवं श्री कैलाश पिता परसराम एवं सौ0 जमना पिता कन्हैया दोनों वर-वधू का विवाह संस्कार सम्पन्न कराया।

xxxxx

- आर्यसमाज हरिद्वार ने महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज का जन्मदिवस समारोह आर्यसमाज मन्दिर हरिद्वार में बड़े हरउत्साह पूर्वक धूमधाम से मनाया गया।

xxxxxxxxx

- आर्यसमाज कोसीकलाँ के भू0पू0 प्रधान श्री रामजीलाल-जी आर्य मालव वालों का अल्प आयु में {52} वर्ष में निधन हो गया है, जिससे आर्यसमाज की अपूर्ण क्षति हुई है, उन्होंने अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ा है। हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते है कि परमात्मा उन्हें शान्ति प्रदान करें तथा शोकाकुल परिवार को इस दुख को सहन करने कि शक्ति प्रदान करें ।

xxxxxxxxx

- महर्षि स्वामी दयानन्द बोध पर्व समारोह जिला आर्य-उपप्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर द्वारा 6 मार्च 1989 को आर्यसमाज बुर्जा में काफी धूम-धाम के साथ आयोजित किया गया।

xxxxxxxxxxx

- बाराबंकी आर्यसमाज का 98वाँ उत्सव दिनांक- 9,10,11, 12 फरवरी 1989 को मनाया गया। उत्सव का प्रारम्भ शोभा से हुआ तथा नगर कीर्तन का आयोजन किया गया। दिनांक- 10 फरवरी को आर्यकुमार एवं आर्य कुमारी सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया।

xxxxxxxxxx

- स्वामी विज्ञानानन्द {पं0 विद्यानन्द} ग्राम तिगाई पो0 बस्तीपुर पत्थरपुर जनपद बहराइच में 8 फरवरी को उनके निवास स्थान ग्राम तिगाई में निधन हो जाने पर आर्यसमाज नानपारा अपने 12फरवरी के सत्संग में दिवगंत आत्मा के प्रति ईश्वर प्रार्थना के उपरान्त दो मिनट का मौन कर दिवगंत आत्मा के शान्ति के लिए प्रार्थना की।

xxxxxxxx

महर्षि का जन्मदिवस

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षिस्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवसोत्सव आर्यसमाज औरेया के समस्त पदाधिकारियों एवं सभासदों ने नगर के सम्भ्रान्त नागरिकों के साथ सोल्लास पूर्ण वातावरण में सुसम्पन्न किया।

आर्यसमाज फतेहपुर का 75वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 5,6,7,8,व 9 अप्रैल 1989 को हीरक जयन्ती समारोह के रूप में बड़े ही उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है। आर्य जनता से अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होने की प्रार्थना है।

xxxxxxxxx

आर्यसमाज बिहारीपुर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बरेली: आर्यसमाज बिहारीपुर-बरेली का 106वाँ वार्षिकोत्सव 28 फरवरी 1989 से 9 मार्च 1989 तक मनाया गया ।

xxxxxxxx

उत्सव

गुरूकुल विद्यालय कुण्डा {पौटा} जनपद बिजनौर का दसवाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 6 से 8 मार्च 1989 तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है, जिसमें आर्यजगत के महान विद्वान सन्यासी एवं प्रचारक पधार रहे हैं। जनता सादर आमन्त्रित है।

xxxxxxx

सामूहिक विवाह

डा0 एस0एन0 गुप्ता एण्ड सन सामूहिक विवाह योजना का पांचवाँ आयोजन स्टेशन रोड मुरादाबाद में स्थित आर्यसमाज में बसन्त पंचमी शुक्रवार 10 फरवरी 1989 को मनाया गया।

इस योजना में आर्य विद्वान पुरोहितों द्वारा युवक व युवतियों के विवाह संस्कार कराये गये तत्पश्चात् सामूहिक प्रीतिभोज भी हुआ।

xxxxxxxxxx

- "महर्षि देव दयानन्द जी महाराज" का जन्मदिवस अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न किया। इस शुभ अवसर पर अनेक भूर्घन्य विद्वानों ने ऋषिवर के जीवन पर प्रकाश डाला।

xxxxxxxxxx

आर्यसमाज कोसीकलाँ {मथुरा}

आर्यसमाज कोसीकलाँ के भूतपूर्व प्रधान स्व० श्री चन्द्रभान-जी आर्य के सुपुत्र श्री प्रदीप आर्य मंत्री आर्यसमाज कोसी का शुभविवाह संस्कार फरीदाबाद निवासी श्री दौलत राम जी की सुपुत्री श्री सौ0 लक्ष्मी देवी के साथ दि0 15 फरवरी 1989 को वैदिक रीत्यानुसार सोल्लास सम्पन्न हुआ जिसमें अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने संस्कार स्थल पर पधार कर वर वधु को आशीर्वाद दिया ।

xxxxxxxxxx

उत्सव

मुगलसराय का वार्षिकोत्सव दिनांक 29 मई से दिनांक 1जून1989 तक सम्पन्न होने जा रहा है। इसमें आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान सन्यासी भजनीक पधार रहे हैं।

xxxxxxxxx

कन्या गुरूकुल दाधिया का वार्षिकोत्सव

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आर्य कन्या गुरूकुल दाधिया, अलवर, राजस्थान का वार्षिकोत्सव शनिवार,रविवार दिनांक 18,19 मार्च 1989 को समारोह पूर्वक मनाया जायेगा।

xxxxxxxxxx

— आर्यसमाज अब्दुल्लापुर ने 12-2-89 को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म-दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया।

xxxxxxxxxxx

- इटावा, 12 फरवरी। नया शहर स्थित आर्यसमाज मन्दिर में महर्षि दयानन्द सरस्वती का 164वाँ जन्मदिन धूमधाम से मनाया गया ।

xxxxxx

- आर्यसमाज खलासी लाइन {सहारनपुर} में दि0 12 फरवरी 1989 को महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस सोत्साह मनाया गया जिसमें प्रधान-डा0 पूर्णचन्द्र जी ने स्वामी जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

- आर्यसमाज खालासी लाइन {सहारनपुर} ने वीर हकीकत राये बलिवान दिवस तथा वसन्तोत्सव दि0-10 फरवरी को मनाया गया ।

xxxxxxxxxx

बहुगुणा नहीं रहे

उत्तर प्रदेश के भू0पू0 मुख्यमंत्री तथा केन्द्रीय शासन में अनेक मन्त्रिपदों को सुशोभित करने वाले श्री हेमवती नन्दन-बहुगुणा का दिनांक- 17 मार्च को अमेरिका में दिल का दौरा पड़ने से देहान्त हो गया। उनकी शिक्षा दीक्षा डी0ए0वी0कालेज से प्रारम्भ हुई थी और वे एक कुशल प्रशासक तथा उद्भट वक्ता थे। राष्ट्र को उनके निधन से अपूरणीय क्षति हुई है। आर्य समाज के प्रति उनकी बड़ी श्रद्धा थी और वे सदैव आर्यसमाज के कार्यों में रुचि लिया करते थे। परमात्मा से उनकी आत्मा की शान्ति एवं परिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

-- मनमोहन तिवारी,
मंत्री ।

सत्यकेतु विद्यालंकार
का निधन

नयी दिल्ली, 17 मार्च (भा0)। आर्य, समाज के विद्वान और इतिहासविद् डा0 सत्यकेतु विद्यालंकार का कल हरिद्वार के निकट एक सड़क दुर्घटना में निधन होगया।

डा विद्यालंकार मोटर कार से दिल्ली से हरिद्वार जा रहे थे। हरिद्वार के निकट एक बस से उनकी मोटर कार की टक्कर हो गई। डा0 विद्यालंकार की आयु 86 वर्ष की थी।

सभामंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने उनकी आत्मा की शान्ति और परिवार जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की है।

शोक समाचार

आर्यसमाज कोटद्वार के कर्मठ युवा कार्यकर्ता श्री रमेश कुमार गोयल का दिनांक- 13-2-89 सोमवार को गढ़वाल के पहाड़ी में चिलूणैण के निकट उनकी गाड़ी के एक 600 फुट के लगभग गहरी खाई में दुर्घटना ग्रस्त हो जाने के कारण निधन हो गया है।

आर्यसमाज कोटद्वार, आर्ययुवक परिषद कोतद्वार महिला आर्यसमाज कोटद्वार के समस्त सदस्य स्वर्गीय श्री रमेश जी के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह रमेश जी की दिवंगत आत्मा को शांति एवम् सदगति प्रदान करें तथा शोक संतप्त परिवार का इस महान दुख को सहने की क्षमता प्रदान करें।

xxxxxxxx

नगर आर्यसमाज जौनपुर का 15वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 6 मार्च से 9 मार्च सन्1989 तक दिनांक 6 मार्च ऋषिबोध (महाशिवरात्रि) पर्व पर विशाल शोभा यात्रा निकाली गयी ।

xxxxxxxx

- आर्य महा सम्मेलन दिनांक 7,8,9 अप्रैल 1989 को रामलीला मैदान- सरधना (मेरठ) में आर्य उप-प्रतिनिधि सभा जिला मेरठ की ओर से आयोजित किया गया है। जिसमें महायज्ञ, भजन गौ प्रदर्शनी, शोभा यात्रा, राष्ट्ररक्षा सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, आर्य कवि सम्मेलन एवं युवा सम्मेलन होंगे। इस अवसर पर बाहर से बड़े-बड़े सन्यासी, विद्वान संगीतज्ञ एवं आर्य नेता पधार रहे हैं।

xxxxxxxxx

आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक हैदराबाद सत्याग्रह के सेनानी कर्मठ आर्य एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की अन्तरंग सभा के पूर्व सदस्य श्री वीरेन्द्र जी "वीर" का 11 फरवरी 1989 को संक्षिप्त बीमारी के पश्चात् निधन हो गया। उनके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है ।

सभामन्त्री ।

दिनांक- 12-1-89 को शान्ती प्रसाद पुत्र श्री शिवदर्शन नि0 ग्राम हड़हा सदस्य आर्यसमाज पाली का निधन हो गया।

xxxxxx

शोक समाचार

आर्यसमाज यमलार्जुनपुर (बहराइच) के वयोवृद्ध प्रधान श्री मक्कालाल जी का एक लम्बी बीमारी के बाद 15-2-89 को निधन हो गया। प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं दुःखी परिवार को धैर्य प्रदान करें ।

xxxxxxxxxxx

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज अमरपुर कौण्डला के संस्थापक श्री रामचन्द्र शास्त्री की माता जी श्री मती बादामी देवी उम्र 93वर्ष का आकस्मिक निधन हो गया। प्रभु शोक संतप्त परिवार को एवं माता जी की आत्मा को शान्ति प्रदान करें ।

xxxxxxx

- आर्य वीरदल के प्रधान शिक्षक पं0 काशीनाथ जी शास्त्री का दि0 28 फरवरी की रात्रि 10 बजे शाहगंज में देहान्त हो गया। सम्पूर्ण नगर शिक्षण संस्थाएं उनके शोक में बन्द रहीं शास्त्री जी के पार्थिव शरीर के दर्शनार्थ अपार जनसमूह आया। आपका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीत्यानुसार किया गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा की सद्गति व दुःखी परिवार को धैर्य प्रदान करें ।

- सभा मंत्री

- जनपद शाहजहाँपुर के ग्राम धनौरा में दि0 14 व 15 अप्रैल 89 को **मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र-** जी का जन्म दिवस मनाया जायगा। स्थानीय जनता से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

- आर्यसमाज हरिद्वार में **महर्षि दयानन्द सरस्वती** का 164वाँ जन्मदिवस धूमधाम से मनाया गया ।

आर्यमित्र साप्ताहिक
नाराजण स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
चैत्र कृष्ण 11
2 अप्रेल रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

- आर्यसमाज भोलेपुर {फर्रुखाबाद} ने 12-2-89 को महर्षि दयानन्द जी का जन्मोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया।

- आर्य समाज भोलेपुर {फर्रुखाबाद} ने दिनांक-12-2-89 को कु0 प्रभा चरन ईसाई, युवती का सुद्धी संस्कार उसकी इच्छा से आर्यसमाज मन्दिर भोलेपुर फतेहगढ़ के अधिकारियों व सभासदों के प्रयास से हिन्दू धर्म में दीक्षित कर उसका विवाह संस्कार उसकी इच्छानुसार एक हिन्दू नवयुवक श्री राजेन्द्र कुमार पुत्र श्री रामकिशन निवासी 23 शीशम बाग फतेहगढ़ कैन्ट के साथ सम्पन्न कराया। संस्कार पं0 आत्माराम पुरोहित द्वारा सम्पादित हुआ।

- आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली का 106 वाँ वार्षिकोत्सव 28 फरवरी से 9 मार्च तक सोत्साह मनाया गया।

आर्यवीर दल के शिक्षकों के लिए सूचना

आर्य वीर दल के समस्त शिक्षकों को सूचित किया जाता है कि जहाँ भी आर्य वीर दल का शिविर लगाया जाये उन शिविरों में उपस्थित सभी आर्यवीरों के पते रिजल्ट स्लिप एवं अंक तालिका निम्न पते पर कार्यालय में अवश्य भेजें।

समर सिंह आर्य
आर्य वीर दल पलड़ी, मेरठ

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

111 4285

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० 2241/57 | घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85

चैत्र शुक्ल 4 रविवार, संवत 2046 वि०, दिनांक 19 अप्रैल 1989



जनाद्विश्वजनीनात्सिन्धुतत्पर्यामृतम्।
ईर्ष्याया नाम भेषजम् ।

जब हृदय में ईर्ष्या के भाव उदय हों उनको दबाने के लिए उन लोकोपकारी महापुरुषों का ध्यान करना चाहिए जो अपनी सर्वस्व सम्पत्ति को नदी के समान परोपकार में बहा देते हैं।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु०251/-
वार्षिक	रु० 30/-
छमाही	रु० 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	92
अंक	14

दिव्यस्वप्न

सभा परिसर में अतिथि भवन का निर्माण कार्य जोरों पर

नलकूप का स्रोत फूट चुका है। अतिथि यज्ञ की वेदि पर अनन्त जलराशि पाताल फोड़कर अपनी धवलधारा में भवन की परिक्रमा करने को उत्सुक है, लालायित है। इसलिए अपनी प्रतिज्ञात राशि शीघ्र अर्पण कीजिए। ईंट बनकर दिव्यधाम का आधार बनिए। अतिथि भवन के निर्माण के लिए बादल बनकर बरस पड़िए। सभा के स्वप्न को साकार कर दीजिए। नींव के पत्थर बनकर "यावच्चन्द्र दिवांकरौ" अमर हो जाइए। इसे केवल अपना अतिथि भवन न समझिए। यह संगम है- द्यावा पृथ्वी इडा सरस्वती का। इसमें ठहरने वाले महान' साधकों, आप्त तपस्वियों, पूज्यचरण सन्यासियों के मुखारविन्द से निःसृत अमृतभरे उपदेशों से तुम्हारी सन्तानें पवित्र होंगी, आर्य बनेंगी और विश्व का वातावरण सुरभित होगा ।

क्योंकि उसने हमें ऐसे ही अवसरों पर हजार हाथों से भर भर कर दान करने के लिए ही तो धन उंड़ेला है ।

"मदे मदे हि नो ददिर्यूथा गवामृजुक्रतुः ।
शतोभया राय आभर ।।
-----अथर्व वेद

प्रत्येक हर्ष के अवसर पर अपनी अभिलाषाओं को पूर्ण करने के लिए ही तो तूने हमें धन प्रदान किया है ।

आर्यपुरुष किसी पवित्र कार्य को प्रारम्भ करके बीच में नहीं छोड़ा करते हैं- "प्रारभ्य चोत्तमजनाः न परित्यजन्ति"। जाते हुए सूर्यपथ से कोई दिव्यवाणी हमें पुकार रही है- अतिथि दे—वोभव अतिथि देवो भव। अनन्त आकाश में लहराती हुई ओ३म् की ध्वजाएं और तोरणद्वार हमें पुकार-पुकार कर कह रहे हैं अभी मुझे और ऊंचा लहराओ, और ऊंचा उठाओ- तीन मंजिल क्या चीज है। सभा ने "अतिथि भवन" निर्माण को वर्षान्त तक पूर्ण कर लेने का संकल्प लिया है। इस संकल्प को पूरा करने में सहयोग देना प्रत्येक आर्य प्रत्येक धर्म प्रेमी जनता का कर्त्तव्य है।

धन के सदुपयोग का यह स्वर्ण अवसर है

पावन अतिथि यज्ञ में आहुति देकर पुण्य और यश प्राप्त कीजिए

{धन बैंक ड्राफ्ट, चेक अथवा मनीआर्डर से आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, लखनऊ के नाम भेजिए }

इन्द्रराज
प्रधान।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री ।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, लखनऊ ।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी।।
-राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
लखनऊ- चैत्र शुक्ल 4 संवत् 2046 वि0, 9 अप्रैल 1989
दयानन्दाब्द 165, सृष्टि संवत् 1972949090

सन्देह की सुई

श्रीमती इन्दिरा गाँधी इस विशाल राष्ट्र की प्रधानमन्त्री ही नही अपितु अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की प्रभावशालिनी महिला थीं जिनकी दूरदृष्टि पूर्ण कार्यप्रणाली एवं अद्भुत प्रशासनिक क्षमता ने इस राष्ट्र को हिमालय से भी ऊँचा उठा दिया था। पाकिस्तान के क्रूर अत्याचारों से बांग्लादेश की जनता को मुक्त कराने का श्रेय उन्ही का था और राष्ट्र प्रगति मार्ग पर अपने चहुँमुखी अभियान के साथ अग्रशील था। किन्तु जिस देश में नारी को सदैव महानतम और पूज्यतम स्थान पर बिठाया गया हो, उसका अपने ही खून द्वारा खून कर दिया जाये- यह विश्व इतिहास की क्रूरतम एवं जघन्यतम घटना ही मानी जायेगी। शासन ने उनकी हत्या से सम्बन्धित तथ्यों को उजागर करने के लिए ठक्कर आयोग का गठन किया था और उसकी रिपोर्ट के जो अंश प्रकाश में आये हैं उनसे पता चलता है कि इस विश्वासघात में उनके आत्मीय स्टाफ के ही लोग प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सन्देह की सुई की परिधि में आये हुए हैं।

आर्य जाति के पतन के इतिहास को जब उठाकर हम देखते हैं तो हृदयपटल पर अनेकों ऐसी घटनाएं आनकर उपस्थित हो जाती हैं कि जब हमारे ही विश्वास ने हमें धोखा देकर बन्दी बनाया, परतन्त्र किया और इस आर्यावर्त्त की छवि को धूमिल बनाया यह देश कभी भी परतन्त्र नही होता यदि यहाँ "घर का भेदी लंका ढावे" वाली कहावत चरितार्थ न हुई होती। विदेशियों को इस देश पर आक्रमण के लिए बुलाने वाले, अपने ही भाई के विरुद्ध शत्रु का साथ देकर भाई को घास की रोटियाँ खिलाने वाले जयचन्दों और मानसिंहों की कालिमा भरी गाथाएं हमारे इतिहास के काले पन्नों के साथ जुड़ी हुई हैं। वीरभगत सिंह, चन्द्रशेखर "आजाद", को पकड़ाकर उनके जीवन का अन्त कराने वाले उनके मित्र ही थे। ऋषिवर्य दयानन्द और महान पुरुष गाँधी, स्वामी श्रद्धानन्द जैसे वीरपुरुषों के जीवन से खिलवाड़ करने वाले इसी राष्ट्र का अन्न खाने वाले हमारे राष्ट्रभ्राता ही थे। द्वेष की इस अग्नि ने राष्ट्र को सदैव रसातल पर पहुँचाने का यत्न किया है। किन्तु धन्य है वीरप्रसविनी मातृभूमि की वह रज जो इतना सब कुछ होते हुए भी सदैव अपने गर्भ से श्रेष्ठ नरपुगंवों को जन्म देती रही है -- **"गायन्ति देवाः किल गीतकानि धन्यास्तु ये भारतभूमि भागे"** ।

और आज से कई लाख वर्ष पूर्व इस देश की रज ने एक ऐसा नरपुगंव, नरश्रेष्ठ, वेद की समस्त मर्यादाओं का पालन करने वाला मर्यादापुरुषोत्तम उत्पन्न किया था जिसकी गौरव गाथाओं का वर्णन करने में इतिहास की लेखनी आज भी असमर्थ है। उसकी उपमाओं को उपमान ढूंढे से नही मिल रहे हैं। वह आर्यपुत्र **"राम"** था। वीर क्षत्रिय धनुर्धारी **राम**। उसके धनुष की टंकार ने संसार से **राक्षसत्व** को सदा सदा के लिए मिटा दिया था। यह जाति उसके किए हुए महान कार्यों, आचरणों को याद करके और उसका नाम लेकर आज भी जिन्दा है। प्रातः होते ही उसका और उसकी **धर्मशीला** पत्नी **सीता** का नाम लेकर यह जाति अपने को गौरवान्वित समझती है। इसी चैत्रमास की नवमी को रावण के अत्याचारों से त्राहि-त्राहि कर रही आर्यजाति में नवप्राण फूंकने के लिए उस दयालु प्रभु ने उसे हमारे बीच भेजा था। उसका **भ्रातृप्रेम**, मातृप्रेम, पितृप्रेम, प्रजाप्रेम और पत्नीप्रेम, क्या क्या न कहें वेदविहित सभी मर्यादाओं का प्रेम अद्भुत अनुपम और आदर्श था। जब तक दुनियाँ में सूरज और चन्द है उसका नाम अमर रहेगा। घर-घर में उसकी गाथाएं गाई जाती रहेंगी।

हम भारत के राजनैतिक क्षितिज पर धीरे-धीरे उभर रहे द्वेष दम्भ रूपी सन्देह के उन रावणों की ओर राष्ट्रप्रेमी जनता का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं जो पता नहीं किस लोभ या लाभ के कारण देश की अस्मिता के साथ खिलवाड़ करते हैं। अपने कारनामों से मातृभूमि की छवि को धूमिल बना देते हैं। उनका ख्याल है इन्दिरा जी को मार दिया तो इन्दिरा-जी समाप्त हो गई। अरे? इस देश की भूमि इन्दिरा जी को हमेशा जन्म देती रही है देती रहेगी। यही तो वह आत्मा थी जिसने त्रेता में **सीता** बनकर अग्नि परीक्षा दी थी। सतयुग में शैव्या बनकर पति को सत्यव्रत का पालन कराया था तो कभी दोनों भुजाओं में तलवार लेकर **झाँसी की रानी** बनकर रणसंग्राम में कूद पड़ी थी - उस आत्मा को कौन मार सकता है। वह तो फिर इस भूमि पर आने वाली हैं क्योंकि उसे इस मातृभूमि और इस पर रहने वाली जनता से अथाह प्रेम था।

इसलिए ठक्कर आयोग ने उनकी हत्या से सम्बन्धित जिन घटनाओं की जाँच की है और अपने विचार व्यक्त किए हैं उन्हें उजागर करने की आवश्यकता है, जनता के सन्मुख रखने की आवश्यकता है ताकि हम देश के दुश्मनों को, आत्मीयता का चोला पहिने "सम्मुखे प्रिय वक्तारं परोक्षे कार्यहन्तारम्" को हम अपनी आँखों से देख लें कि जिस महतो महीयसी दया और करुणामयी ममता ने जिन्हें प्यार से अपने आचंल में रखकर दूध पिलाया था उन्होंने ही नाग बनकर डस लिया। गोपनीय दस्तावेजों का लीकेज हो जाना हमारी प्रशासनिक क्षमता पर प्रश्नचिन्ह लगा देता है। अतः इस राष्ट्र को सबल एवं सशक्त बनाए रखने के लिए हमें **रामराज्य का आदर्श** अपनाना होगा और प्रशासन को स्वच्छ रखने के लिए सन्दिग्धों पर कड़ी नज़र रखनी होगी।

नव वर्ष

नया वर्ष तब आता है ।

प्रभु श्रृष्टि में जीव प्रकृति जब, मंगलमय हो जाता है।
वृक्ष जीर्ण पत्तियाँ गिरायें, नूतन किसलय पुनि फैलायें।
सुन्दर सुरभित सुमन खिलायें, वास-सुवास सुहाता है ।।1।।नया....
मधु मक्खी है मधु को बनाती, उत्तम जब मधु मास लखाती।
पुष्टि शरीरि सुहाती जब, जल मधुमय पीया जाता है।।2।।नया....
नवान्न से घर खेत भरे हों, मार्ग मिट्टी रेत भरे हों।
पशु-पक्षियों के पेट भरे, चहुँदिशि मंगल छा जाता है।।3।।नया.....
धनी-से निर्धन तक को हर्ष है, समझो आया नया वर्ष है।
क्या? निष्कर्ष महाविद्वानों, के भी मन को भाता है।।4।।नया....
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा ही जानो, वर्षा रम्भ नया दिन मानो।
अपनी तानो - फस्ट जनवरी-तो इसाइयत दर्शाता है।।5।।नया.....
विद्वानों से नम्र निवेदन, वैदिक वर्ष का हो आराधन।
संस्कृति-संस्कृत का प्रचलन,-बेधड़क यही बस चाहता है।।6।।नया वर्ष तब....

प0 अयोध्या प्रसाद "बेधड़क"
बहादुरगढ़ी आर्योपदेशक अलीगढ़

प्रभु प्रार्थना

हे प्रभु ओ३म् तुम हो जगदाधार।
सृष्टिकर्त्ता, पालनकर्त्ता, प्रभु तुम हो जीवनाधार।।
कर्त्ताधर्त्ता, भाग्यविधाता, प्रभु तुम हो पालनहार।
सर्वव्यापक, सर्वप्रकाशक, प्रभु तुम हो प्राणाधार।।
दयालु, सर्व शक्तिमान प्रभु, तुम हो सबका सृजनहार।
दुष्ट संहारक, भक्त उद्धारक, प्रभु तुम हो खेवनहार।।
अजर अमर न्यायकारी, प्रभु तुम हो नित्य निराकार।
अनन्त, अनुपम, सर्वाधार, प्रभु तुम हो अभय निर्विकार।।
दुख विनाशक पापनाशक, प्रभु तुम हो सुख का सार।
"ब्रह्मानन्द" ओंकार प्रभु, तुम हो पारलगावनहार।।
हे प्रभु ओम् तुम हो जगदाधार ।।

-ब्रह्मानन्द जिज्ञासु
अतरदह मुजफ्फरपुर (बिहार)

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

-श्री पवन कुमार सिद्धान्त शास्त्री,
लखनऊ।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा - रामनवमी का पावन पर्व, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम का जन्मोत्सव समारोह आर्यसमाज मन्दिरों में प्रतिवर्ष मनाया जाता है। नर-नारी एकत्रित होकर युगपुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। श्रीराम वैदिक धर्म की साकार मूर्ति। उनके महान व्यक्तित्व में वैदिक आदर्श मूर्तिमान हुए हैं।

कहा जाता है कि आर्यजन राम श्री कृष्ण को नहीं मानते। इसलिए जब आर्यसमाज मन्दिरों में राम नवमी का पर्व मनाया जाता है तो जनता को महान् आश्चर्य होता है। लोग कहते हैं आर्यसमाज का श्री राम की मान्यता से क्या सम्बन्ध है?

मर्यादा पुरुषोत्तम राम ऐतिहासिक पुरुष है। हमारे पूर्वज हैं भारत की सांस्कृतिक एकता की स्थापना करने वाले महामानव थे। वे राष्ट्रीय महापुरुष हैं जिन के नेतृत्व में प्रत्येक माण्डलिक राजाओं को स्वतत्रंता प्राप्त हुई। प्रत्येक मण्डल में स्वराज्य स्थापित हुए। राजनैतिक एकता का यह महान कार्य युवराज लोकनेता राजकुमार राम ने किया। सार्वभौम सम्राट के रूप में उन्होंने सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना की। आज भी आदर्श राज्य को रामराज्य की संज्ञा दी जाती है। आदर्शराजा के रूप में श्री राम की मान्यता है। राजाराम भारतीय जनता के रोम-रोम में रमे हुए हैं।

श्रीराम का महत्व उनका महान गौरव उनके महान चरित्र और आदर्श जीवन में है। हम बड़े स्वाभिमान के साथ कहते हैं कि हमारी वैदिक संस्कृति ने श्री राम जैसी महती विभूतियां संसार को दी हैं।

आर्योत्तम, धर्म धुरीण मर्यादा पुरुषोत्तम राम को उत्तर कौशल का राज्य मिलने के विचार से कोई प्रसन्नता हुई और न वनों के भयानक राह का रही बनने के विचार से कोई दुःख ही हुआ। वे स्थित प्रज्ञ थे। यह महापुरुष राम के जीवन का गौरवशाली चित्र है। इस चित्र में कितनी चमक है राम आर्य जाति के महानरत्न सर्वोपरि आदर्श महापुरुष के रूप में हैं। यही उनका वास्तविक रूप है। इन चित्रों में कितनी चमक है। श्री राम का मुखमण्डल आर्योचित तेज से कैसा प्रकाशित हो रहा हैं।

भरत के आग्रह पर भी अयोध्या का राज्य स्वीकार न करने वाले श्री राम के अनुभव त्याग, शबरी के आश्रम को पवित्र करने वाले, गुह निषाद को गले लगाने वाले तथा भील कोल किरातों को अपनाने वाले पतितपावन राम, मातृशक्ति के गौरव की वृद्धि करने वाले नारी उद्धारक राम, आततायिनी ताड़का तथा शूर्पणखा को दण्डित करने वाले जीवन रक्षक राम, विभीषण के आते ही उनको लंकेश कहकर पुकारने वाले शरणागत वत्सल राम और यदि रावण भी शरण में आ जाए तो उसे अयोध्या का राज्य की भावना रखने वाले महान परिग्रही राम। वन में नितान्त साधन हीन होने पर अयोध्या से भरत की कोई सहायता न लेकर वानर राष्ट्र और राक्षस राष्ट्र की सन्धि को समाप्त करके तथा वानर राष्ट्र को मिलाकर राक्षस राष्ट्र धराशायी करने वाले राजनीति विशारद राष्ट्र पुरुष राम के महान् जीवन के ये सारे गौरवमय चित्र हैं।

राम का रामत्व तो राम की वे विशेषतायें हैं जिन के कारण राम राम हैं। ये विशेषतायें तभी तक रहती हैं जब तक वे एक महापुरुष, राष्ट्र पुरुष, जन नायक लोक रक्षक और युगपुरुष हैं।

एक मात्र महर्षि दयानन्द या आर्यसमाज की दृष्टि से सोचने वाले वास्तविक रूप से राम को मानते हैं। राम को काल्पनिक पात्र मानने वाले तो राम का ऐतिहासिक अस्वीकार को ही अस्वीकार करते हैं पर राम को परमात्मा मानने वाले भी राम के ऐतिहासिक अस्तित्व को कहाँ मानते हैं। सम्पूर्णराम चरित्र यदि परमात्मा की लीला मात्र है तो इसमें जहाँ ईश्वर की ईश्वरता का अपमान है वहाँ राम के महान् कर्त्तव्य की परिसमाप्ति है, तो ऐतिहासिक महापुरुष, आर्यकुल भूषण आर्य जाति के महान रत्न के रूप में राम की मान्यता वैदिक दृष्टि से सही मानता है उनका आदर्श मानव का रूप ही राम का वास्तविक रूप है।

मर्यादा पुरुषोत्तम की सच्ची पूजा उनके चरित्र का अनुशीलन है, उनके आदर्शों से प्रेरणा ग्रहण करना है उनकी जन्मभूमि के समस्त चिन्हों स्मारकों और मान बिन्दुओं की रक्षा करना है क्षत्रिय शिरोमणी आदर्श आर्यवीर श्री राम के पवित्र आदर्शों पर चलते हुए प्रबल संगठन शक्ति का परिचय देना है। राम के रामत्व की सुरक्षा करना है। उनके द्वारा आचरित वैदिक जीवन मूल्यों की पुनः स्थापना करना है।

श्रीराम के महापुरुषत्व से प्रेरणा लेकर हमारा राष्ट्र व्यक्ति धर्म परिवार धर्म समाज धर्म राष्ट्रवाद तथा आदर्श मानव धर्म तथा क्षात्रधर्म की दीक्षा लेकर शक्तिमान हो सकता है। महर्षि स्वामी दयानन्द पतित पावन पावन थे। उन्होंने कल्पना वादियों तथा परमात्मा का अवतार मानने वालों राम के ऐतिहासिक व्यक्तित्व की रक्षा की। उन्होंने राम के महत्व की स्थापना की। उन्होंने शिलाखण्डों के नीचे दबे पतित पावन राम को हमें वापस दिया। उनके व्यक्तित्व पर लगी धूल मिट्टी और कीचड़ को हटाकर उनका निर्मल स्वरूप उपस्थित कर अपना पतित पावन पावन नाम सार्थक किया।

महर्षि दयानन्द के आदेश का पालन कर हम श्रीराम के चरित्र पूजा में विश्वास करते हैं। श्रीराम वैदिक संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ हैं। उनके महान व्यक्तित्व से चरित्र से तथा उनके महान आदर्शों से प्रेरणा और मार्ग दर्शन प्राप्त कर प्रगति की ओर आगे बढ़ना श्रीराम की सच्ची पूजा तथा पावन राम भक्ति हैं।

:: आदेश ::

स्वयं-सेवा की उदात्त भावना से भेजे गए प्रार्थना पत्रों के आधार पर, निम्नांकित आर्यजनों को, आर्य संगठन के हित में, उनके नाम के सम्मुख अंकित जनपद की आर्यसमाजों व आर्य शिक्षण संस्थाओं आदि की अवैतनिक सेवा करने हेतु, इस सभा की ओर से निरीक्षक नियुक्त किया जाता है:-

क्र0सं0	नाम व पता --	सेवार्थ नियुक्त-जनपद
1-	श्री आर्य मुनि जी, आर्यसमाज केराकत, जौनपुर ।	जौनपुर
2-	डा0 ज्ञान प्रकाश जी, भेरंग खाल, रामनगर, अल्मोड़ा।	अल्मोड़ा
3-	श्री एस0पी0 गुप्ता, 611/59, हैदरगंज- फैजाबाद।	फैजाबाद

यह नियुक्तियां सर्वथा अस्थायी हैं और किसी भी समय, बिना कोई कारण बताये, समाप्त की जा सकती हैं।

कर्तव्याधिकार के लिए इस सभा का मुख-पत्र {गजट} आर्यमित्र दि0 27-3-88 पढ़ने का कष्ट करें ।

-मनमोहन तिवारी,
सभामन्त्री ।

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला **शतवर्षीय वृहद इतिहास** लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें ।

-- सभामंत्री ।

xxxxxx

हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द का योगदान

लेखक- यशपाल आर्य बंधु, आर्य निवास,
चन्द्र नगर, मुरादाबाद- 244032

आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात में होने से उनकी मातृभाषा भी गुजराती ही थी तथापि वे संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। अपने प्रारम्भिक सामाजिक जीवन में वे व्याख्यान आदि भी प्रायः संस्कृत में ही दिया करते थे। अपने कलकत्ता प्रवास तक वे संस्कृत में ही भाषणादि दिया करते थे। कलकत्ता के प्रवास में बाबू केशवचन्द्र सेन के सत्परामर्श से उन्होंने हिन्दी में भाषण आदि देने प्रारम्भ किये। महर्षि ने जिस समय सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण, (जिसे आदिम सत्यार्थ प्रकाश के नाम से जाना जाता है) लिखवाया तो उसकी भाषा आदि शुद्ध नहीं बन पायी थी। महर्षि ने इस बात को सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संशोधित संस्करण की भूमिका में स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है।

महर्षि जिस समय हिन्दी के रंगमंच पर अवतीर्ण हुए, उस समय हिन्दी भाषा में स्थायित्व नहीं आ पाया था। हिन्दी गद्य का तो उस समय स्वरूप ही पूर्णतया निश्चित नहीं हो पाया था। हिन्दी भाषा विशेषताया गद्य का स्वरूप निर्धारण में महर्षि दयानन्द का बहुत बड़ा योगदान है। हिन्दी भाषा को स्थायित्व देने में उनकी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महर्षि के आगमन से पूर्व हिन्दी गद्य के स्वरूप को लेकर दो राजाओं में टकराव चल रहा था। राजा शिव प्रसाद सितारे-हिन्द अपनी भाषा में उर्दू के शब्दों का बाहुल्य रखते थे जबकि राजा लक्ष्मण सिंह अपनी भाषा में संस्कृत के शब्दों को प्राथमिकता देते थे। उन दिनों सरकारी कार्यालयों में उर्दू का बोलबाला था, इसलिए राजा शिव प्रसाद सितारे-हिन्द अपनी भाषा में उर्दू-फारसी के शब्दों का अधिक प्रयोग करते थे। राजा लक्ष्मण-सिंह का मत था कि हिन्दी का उद्गम संस्कृत होने से उसका शब्द भण्डार भी संस्कृत भाषा से ही भरा जाना चाहिए। तात्पर्य यह कि राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द तद्भव शब्दों के प्रयोग के पक्षधर थे जबकि राजा लक्ष्मण सिंह तत्सम शब्दों के प्रयोग के।

भारतेन्दु और दयानन्द-

हिन्दी गद्य के स्वरूप विषयक इस संघर्ष के काल में हिन्दी के रंगमंच पर दो और महापुरुष अवतीर्ण हुए और दोनों अपने-अपने ढंग से हिन्दी भाषा की सेवा करने में जुट गये। ये थे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और महर्षि दयानन्द सरस्वती साहित्यक क्षेत्र में भारतेन्दु को हिन्दी गद्य का निर्माता कहा जाता है। उनका क्षेत्र भी केवल साहित्य तक ही सीमित था। विपरीत इसके महर्षि का क्षेत्र साहित्यक न होकर सामाजिक तथा धार्मिक था। इस पर भी महर्षि ने हिन्दी की जो सेवा की वह भारतेन्दु से किसी भी प्रकार कम नहीं थी अपितु कई गुना अधिक थी। इस पर भी हिन्दी भाषा के विकास के इतिहास में उनकी सर्वथा उपेक्षा ही कर दी गई है। इस सम्बन्ध में डा० लक्ष्मी नारायण गुप्त का यथार्थ कथन है कि - "आश्चर्य का विषय यह है कि स्वामी दयानन्द ने भी तत्कालीन परिस्थिति में हिन्दी के निर्माण और प्रचार में भारतेन्दु जी की अपेक्षा कम सहयोग नहीं दिया तथापि हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों ने उनका वर्णन अन्यमनस्कता से किया और यदि उनका कार्य इतना महान् व्यापक और दीप्त न होता तो वे उन्हें बिल्कुल ही छोड़ जाते। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी दयानन्द ने जो धार्मिक सुधार का महाक्रान्तिकारी रूप प्रस्तुत किया वह अधिकांश में जनमत के विरूध पड़ा। मूर्तिपूजा, श्राद्ध और अवतारवाद जैसी व्यापक धारणाओं का सीधे प्रबल और ओजस्विनी भाषा में खण्डन बड़ा ही अप्रिय सिद्ध हुआ। सम्भव है ऐसे भयंकर व्यक्ति और उसके कार्यों का वर्णन हिन्दी इतिहास लेखकों ने उपेक्षात्मक रूप से करना ही ठीक समझा हो।" (द्रष्टव्य- डा० लक्ष्मी नारायण गुप्त का शोध प्रबन्ध-हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्यसमाज की देन, पृष्ठ 95·95)

जो भी हो, यह वास्तविकता है कि महर्षि दयानन्द के एतद्विषयक योगदान का यथार्थ मूल्यांकन अभी तक नहीं हुआ है। दूसरी ओर जब हम महर्षि के कार्य को देखते हैं तो आश्चर्य चकित रह जाते हैं। महर्षि दयानन्द को भारतेन्दु की अपेक्षा कार्य करने का समय भी बहुत कम मिला था। भारतेन्दु की अपेक्षा महर्षि के सम्मुख कठिनाइयां भी अधिक थीं। भारतेन्दु की मातृभाषा भी हिन्दी थी और वे स्वयं भी साहित्यक क्षेत्र के व्यक्ति थे। महर्षि की मातृभाषा हिन्दी न होकर, गुजराती थी और वे धार्मिक क्षेत्र के व्यक्ति थे। साहित्य-साधना उनका ध्येय या लक्ष्य नही था। उनका उद्देश्य तो भूली-बिसरी वेद-विद्या का प्रचार करना तथा अज्ञान-अंधकार और पाखण्ड का विनाश करना था। तथापि इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि उन्होंने हिन्दी गद्य को एक नया स्वरूप ही नहीं, उसे स्थायित्व भी प्रदान किया। महर्षि दयानन्द की यह विशेषता थी कि उन्होंने हिन्दी गद्य में ऐसे-ऐसे विषयों पर लेखनी उठायी जिन पर आज तक एक शब्द भी नहीं लिखा गया था। वेदों का हिन्दी में भाष्य करने वाले वे ही प्रथम महामानव थे। धर्म और दर्शन के गूढ़ तत्वों को सर्वप्रथम हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने वाले वे ही महापुरुष थे।

महर्षि दयानन्द में स्वदेश भक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्हें स्वदेश की हर वस्तु से प्रेम और लगाव था। यही कारण है कि उन्होंने इस देश की भाषा को भी हिन्दी भाषा न कहकर आर्य भाषा की संज्ञा दी। तत्सम शब्दों का हिन्दी भाषा में बाहुल्य भी इसी कारण से था। महर्षि जहां इस देश की भाषा को आर्य भाषा कहते थे, वहां इस देश को भी आर्यावर्त्त देश कहा करते थे। इतिहास साक्षी है कि हिन्दी को राज अथवा राष्ट्रभाषा के रूप में परिकल्पना करने वाले भी वही प्रथम महामानव थे। महर्षि की इसी भावना से प्रेरणा पाकर श्रीयुत के०एम०मुन्शी ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के पक्ष में अपना संसदीय भाषण देते हुए कहा था कि - "पचास वर्ष के लगभग हुए, मैंने स्वामी दयानन्द की शिक्षा के प्रभाव में अनुभव किया कि देश की एकता के लिए हिन्दी का राजभाषा होना आवश्यक है।" इन सब तथ्यों और प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि साहित्यक क्षेत्र में जिसे भारतेन्दु युग कहा जाता है, उसमें भी महर्षि दयानन्द ने भारतेन्दु की अपेक्षा महर्षि दयानन्द ने हिन्दी के भारतीयकरण की ओर अधिक ध्यान दिया था और उनका प्रभाव भी भारतेन्दु की अपेक्षा अधिक रहा था।

महर्षि दयानन्द की दूरदर्शिता का हमें तब बोध होता है जब हम देखते हैं कि तत्सम-प्रधान उनकी भाषा-नीति अधिक प्रभावशाली एवं कारगर सिद्ध हुई। हिन्दीतर प्रदेश के लोग तत्सम प्रधान भाषा की अपेक्षा तद्भवप्रधान भाषा में अधिक कठिनाई अनुभव करते हैं। यह इस लिए कि हिन्दीतर अन्य भारतीय भाषाएं प्रायः संस्कृत से ही निकली हैं और संस्कृतनिष्ठा उनमें स्पष्ट झलकती है वस्तुतः "यदि सरल हिन्दी का अर्थ वह हिन्दी है, जो हिन्दी-भाषियों और अहिन्दी-भाषियों दोनों को ही आसानी से समझ में आ जाए तो संस्कृत शब्दों का प्रयोग आवश्यक है क्योंकि जिन अहिन्दी-भाषी क्षेत्रों में संस्कृत का प्रभाव महत्वपूर्ण रहा है, वहां ऐसे शब्द आसानी से समझे जाते हैं।" (द्रष्टव्य-हिन्दी साहित्य के परिवर्तन के सौ वर्ष, पृष्ठ 156)

महर्षि दयानन्द की यह विशेषता है कि उन्होंने अपने ग्रंथों में भारतीय भाषाओं के मूल स्रोत संस्कृत का महत्व पहचान कर सरल तत्सम शब्दों के चयन की नीति अपनाई। उनके समकालीन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का झुकाव तद्भव शब्दों की ओर था। वे राज, बेर, बरस आदि तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक करते थे, जबकि महर्षि राज्य, बार, वर्ष आदि तत्सम शब्दों का। आज की हिन्दी में तत्सम शब्दों का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। आज हिन्दी भाषा का विकास महर्षि दयानन्द द्वारा प्रयुक्त संस्कृनिष्ठ भाषा के अनुसार हो रहा है। इस दृष्टि से हिन्दी भाषा के स्वरूप को साहित्यक स्तर और स्थिरता प्रदान करने में महर्षि दयानन्द का योगदान सर्वाधिक रहा है।

इस प्रकार यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा के विकास और स्थायित्व में आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द का अनन्यतम योगदान रहा है। यह और बात है कि किन्हीं पूर्वाग्रहों अथवा दुराग्रहों से प्रेरित होकर कोई उनकी गौरवपूर्ण भूमिका का समुचित उल्लेख न करे पर वास्तविकता यह है कि महर्षि दयानन्द की हिन्दी गद्य के स्वरूप निर्धारण और उसे स्थायित्व प्रदान करने में भूमिका किसी भी दशा में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से किसी प्रकार भी

तेजस्वी भव

हिंमाशु देव, आर्यसमाज
श्रृंगार नगर, लखनऊ।

{आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की पावन यज्ञशाला में आयोजित एक सत्संग में अपनी तोतली वाणी और मधुर शैली में तेजस्विता का आह्वान देने वाला यह आठ वर्षीय बालक हिमान्शु आर्यजगत के प्रसिद्ध वक्ता श्री रूपचन्द्र "दीपक" का पुत्र है। इस उदीयमान शिशु को वाणी और लेखनी का हमारा आशीर्वाद- सम्पादक}

हिमांशु देव - आर्यसमाज श्रृगांर नगर, लखनऊ

अङ्गिरसो भवेमाद्रिं रुजेम । {ऋग्वेद :

ऋग्वेद के इस मन्त्र में कहा गया है कि हम अंगारे बनें और पर्वत को फोड़ डालें। इसमें शक्ति, साहस और तेजस्विता की शिक्षा दी गई है। शक्ति मनुष्य के लिए आवश्यक है। **राम, कृष्ण और दयानन्द** में अत्यन्त शक्ति थी। राम ने अकेलेही चौदह हजार राक्षसों को मार डाला था। कृष्ण ने महाभारत के युद्ध को बदल दिया था। दयानन्द ने घोड़ों की बग्घी और भरी बैलगाड़ी को खींच डाला था। इनसे शिक्षा लेकर हम भी शक्तिमान् बनें ।

किन्तु शक्ति के साथ साहस, हिम्मत और हौसले की भी आवश्यकता है । अन्यथा शक्ति रखी रह जाती है। आज हम समस्याओं और मुसीबतों के जिस भँवर में फँस गये हैं, उससे निकलने के लिए साहस चाहिए। किसी शायिर ने कहा है- "ये हौसलों की कमी ही तो हमें ले डूबी। भँवर से वरना किनारे का फासला क्या था ।।"

तीसरी वस्तु है - तेज। यह विद्या, तप और सदाचार से प्राप्त होता है। जैसे एक चिन्गारी पूरे घर को जला देती है एक टार्च सारे अन्धकार को मिटा देती है, एक बिजली सारे शहर को कँपा देती है, उसी प्रकार एक तेजस्वी पुरूष सारे संसार को हिला देता है। अतः हम शरीर में शक्ति, मन में साहस, बुद्धि में विद्या और आत्मा में तेज को धारण करें। यही हमारी प्रार्थना है । ईश्वर इसे पूरी करें ।

महर्षि दयानन्द बाल विद्यालय
छुटमलपुर, सहारनपुर

20 दिसम्बर 1988 को महर्षि दयानन्द बाल विद्यालय मानव सेवा परिषद {कक्षा 1 से 8 तक} छुटमलपुर की स्थापना की गयी। यह विद्यालय पंजाबी कालोनी में श्री साईदास संचालक के मकान में स्थित है। विद्यार्थियों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जा रही है। संस्था में धार्मिक परीक्षाओं की व्यवस्था है। निर्धन विद्यार्थियों को सहायता प्रदान की जाती है। रोगी सेवा निःशुल्क है। पदाधिकारी निम्नवत् है।

व्यवस्थापक	-	श्री सत्यपाल सत्यार्थ प्रचारक
कोषाध्यक्ष	-	श्री मनोज कुमार
संचालक	-	श्री साईदास
प्रधानाचार्य	-	श्री तेजवीर सिंह

आर्यसमाज नामनेर आगरा

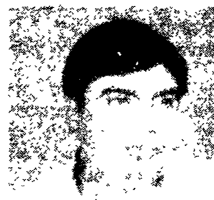
प्रधान	-	श्री ब्रजमोहनलाल खण्डेलवाल
मंत्री	-	श्री श्री भगवान अग्रवाल
कोषाध्यक्ष	-	श्री कैलाशनाथ गर्ग

कम नहीं रही, अपितु कई अंशों में उनसे अधिक ही रही है। यह भारतेन्दु के भाग्य की बात है कि वे हिन्दी के भव्य-भवन के कलशस्थानी हो गए जबकि महर्षि नींव के पत्थर बन गये। लोगों की दृष्टि प्रायः कलश पर ही पड़ा करती है, नींव पर नहीं। पर क्या कभी कोई भवन बिना सुदृढ़ नींव के कभी टिका है? महर्षि नींव के पत्थर हैं और पत्थर कहीं दिखाई देता है? अतः यही कहना चाहते हैं कि -

जड़ गये जो नींव में, उनपत्थरों को याद कर लो,

जो नहीं देते दिखाई ।

प्रदेश की समस्त शिक्षण संस्थाओं को परीक्षा अवधि में जल आपूर्ति



श्री मनमोहन तिवारी, मंत्री,
उ0प्र0 विद्यालय प्रबन्ध महासभा



माननीय श्री बलदेव सिंह आर्य
नगर विकास मंत्री, उ0प्र0 शासन,

लखनऊ-30 मार्च, प्रदेश के नगर विकास मंत्री श्री बलदेव सिंह आर्य ने उत्तर प्रदेशीय विद्यालय प्रबन्ध महासभा के मंत्री श्री मनमोहन तिवारी की एक भेंटवार्ता में बताया कि परीक्षा अवधि में उत्तर प्रदेश की समस्त शिक्षण संस्थाओं को जल आपूर्ति किये जाने के आदेश शासन द्वारा निर्गत किये जा चुके हैं।

इस अवसर पर श्री मनमोहन तिवारी ने शासन का ध्यान इस ओर भी आकृष्ट किया कि शासकीय मान्यता प्राप्त विद्यालयों को भवन कर की भाँति जल कर से भी छूट प्रदान की जाय। क्योंकि विद्यालयों को प्राप्त शुल्क का 80 प्रतिशत तो राजकीय कोष में ही जमा हो जाता है। अवशेष 20प्रतिशत शुल्क हैं बिजली, टेलीफोन बिल भवन का रख-रखाव, स्टेशनरी आदि के व्यय को वहन करना नितान्त कठिन है। इसलिये धार्मिक स्थानों की भाँति शिक्षण संस्थाओं को भी भवन कर व जल कर से मुक्त रखा जाना चाहिये।

नगर विकास मंत्री श्री आर्य ने इस विषय पर गम्भीरता से विचार करने का आश्वासन दिया और यह भी कहा कि जब तक इस संबंध में शासन कोई अंतिम निर्णय नहीं लेता तब तक समस्त शिक्षण संस्थाओं को निरन्तर जल आपूर्ति की जाती रहेगी। जो किसी दशा में बन्द नहीं होगी। श्री मनमोहन-तिवारी ने विद्यालय प्रबन्धक महासभा की ओर से माननीय मंत्री-जी का आभार व्यक्त किया है।

- दिनांक- 26-2-89 को आर्यसमाज, कालपी के तत्वावधान में आर्य कन्या इन्टर कालेज, कालपी में "संस्कृत बचाओ" सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता कविराज पं0 तुलसीराम-शुक्ल ने की सम्मेलन के अन्त में प्रस्ताव पारित किया गया-जिसका समर्थन सैकड़ों की संख्या में उपस्थित जन समूह ने हाथ उठा कर किया।

- आर्यसमाज बदायूँ द्वारा मकर संक्रान्ति पर्व, वीर हकीकत राय बलिदान दिवस, महर्षि दयानन्द जन्मदिवस, सीताष्टमी, ऋषिबोधोत्सव, तथा लेखराम तृतीया बड़े समारोह के साथ मनाये गए। स्थानीय जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

- अत्यन्त दुःख के साथ 11 फरवरी 1989 को श्री कुँवर वीरेन्द्र वीर जी भजनोपदेशक का 74 वर्ष की आयु में निधन हो गया आप आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। आपके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है, परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा दुःखी परिवार को धैर्य प्रदान करें ।
कई समाजों ने शोक प्रस्ताव पारित कर भेजे हैं।

-सभामन्त्री।

पुनर्जागरण की आवश्यकता

- श्री जगत्प्रिय वेदालंकार
"हिरण्यगर्भ" टंकारा जि0 राजकोट।

एक स्वस्थ समाज का निर्माण करने के लिए यह नितान्त अपरिहार्य है कि जैसे भी हो जीवन के आधार "मनुष्य" को दृढ़ से दृढ़तर बनाया जाय। जीवन का यही लक्ष्य हमें अपने सामने निरन्तर रखना होगा। कोई भी व्यक्ति या समाज ऐसा नहीं, जो सब समय अच्छी हालत में रह पाया हो। फिर भी मौलिक रूप में निजी कार्य कलाप और साधना में सच्चा तो रहा ही जा सकता है। साधक का यही लक्षण है। निश्चल शान्ति और एकांगी तन्मयता यह कोई बड़ा उद्देश्य नहीं स्वल्प-कालिक मानसिक सन्तोष भले ही इससे प्राप्त हो जाय। किन्तु वास्तविक उन्नति और प्रगति के लिए उसमें गतिशीलता आध्यात्मिकता का पुट तो देना ही पड़ेगा, तभी कुछ बात बनेगी। काम का भ्रम मानव जाति के सब से बड़े भ्रमों में से एक है। अर्थात यह सोचना कि मेरा या हमारा काम ही सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। हमारे अहंकारपूर्ण उद्देश्य ही सत्य है। अन्य सब द्वारा उन्हीं का अनुसरण किया जाना चाहिए। यह प्रगति का सुपथ नहीं कहा जा सकता अपने को समय के अनुसार बदलने या रूपान्तरित करने में सदा ही तीन बड़ी बाधाएँ दीवार बनकर सामने आ खड़ी होती है-----'

1- श्रद्धा का अभाव, 2- अहंकार-अर्थात् मन का अपने स्वीकृत आदर्शों से चिपटे रहना-प्राण का अपनी पसन्दगियों में डूबे रहकर - सच्चे समर्पण भाव से परे रहना तथा शरीर का अपनी आदतों से बन्धे रहना, 3- चेतना में कोई तामसिक{भौतिक} प्रति रोध ।

समझ की छोटी सी भूल भी बड़े-बड़े भ्रम पैदा कर देती है। अनर्थों की परम्परा का कारण बन जाती है। मन का छोटा सा सन्देह भी चिरकाल से चले आ रहे प्रेम व विश्वास की जड़ उखाड़ फेंकता है। एक दुर्गुण सौ गुणों को ढंक लेता है। एक दोष से भी मनुष्य का व्यक्तित्व खोटा हो जाता है। मामूली सी खाँसी तपेदिक का विकराल रूप धर लेती है। निर्दोष हँसी बड़े उपद्रव का कारण बन जाती है।

जरा से धब्बे से चित्र की शोभा नष्ट हो जाती है। अतः उस छिद्र को देखो जिससे किसी सुपात्र की उपयोगिता कम या नष्ट होने का डर हो और उसके विशाल रूप धारण करने से पूर्व ही उसे पूरने में सतत सचेष्ट बने रहो।

गम्भीरता से देखें तो मनुष्य जन्म से मरण पर्यन्त केवल अशान्ति का ही वरण किये रहता है। शान्ति के लिए वह जितना प्रयास करता है शान्ति उससे उतना ही दूर भागती जा रही है। वह नितान्त दिङ्-विमूढ़ सा हो गया है। आखिर क्यों? इसी गुत्थी को सुलझाने के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वेद की ओर लौटने का मार्ग प्रशस्त किया और मंजिल तक पहुँचने के लिए उस आर्य समाज की स्थापना की, जिसकी शक्ति वामन में विराट, बिन्दु में सिन्धु और गागर में सागर जैसी है पराई आग में जल कर दीन-दुखियों की दवा होना ही उसकी महत्ता है। आर्यसमाज की इस आन्तरिक ऊर्जा के पुनः जागरण व एकीकरण की प्रक्रिया फिर से आरम्भ करने की आज नितान्त और अपरिहार्य आवश्यकता है। समाज के आभ्यन्तरीण समीकरणों में भी नये सिरे से बदलाव लाने की अत्यन्त जरूरत है। तभी हम उसकी आन्दोलनकारी सहज छवि को फिर से निखार पाएंगें।

यह दुःखद विडम्बना ही है। कि समाज का अन्धापन उत्तरोत्तर इतना बढ़ता चला जा रहा है कि वह सत्य और सार्थक परीक्षणों से भी कतराने लगा है। अन्ध-विश्वासों और अन्ध-परम्पराओं से मुक्त होने की जगह वह अब इनके अधीन होकर रहना पसन्द करने लगा है। परिणाम सब के सामने है ------

समाजों में अब पहला नजारा नही है
वह उत्साह और प्रेम की धारा नही है
विश्वमार्य का वह नारा नही है
शास्त्रार्थों में अब मन हमारा नही है।

विश्व का आर्य-करण तो हर कोई चाहता है, किन्तु अपना आर्य-करण कोई नही चाहता। ऐसी अवस्था में समाज के अन्दर अनाचार, अत्याचार दुराचार और भ्रष्टाचार नहीं पनपेगा तो क्या पनपेगा? मानवीय मर्यादायें भंग न होंगी तो क्या होगा? सुष्ठु परम्पराओं का ध्वंस न होगा तो क्या होगा? भोग विलास की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन क्यों न मिलेगा? धर्म की हानि और अधर्म में अनुरक्ति ही बढ़ेगी। बदी की पूजा और नेकी का तिरस्कार ही देखने में आयेगा। असत्य की सार्वजनिक प्रतिष्ठा तथा सत्य की उपेक्षा निश्चित रूप से होती ही रहेगी।

सच्ची देशभक्ति और राष्ट्र भावना का अभाव ही समाज में परिव्याप्त अकर्मण्यता, बेईमानी, मेहनत व पूर्ण मनोयोग से काम न करना आदि समस्त सामाजिक बुराईयों का मूल कारण है। संसार को हिला देने वाली शक्ति केवल बुद्धि ही नही है। अपितु प्रबल इच्छा शक्ति का होना कहीं ज्यादा महत्व रखता है। संसार हाथों से ही पकड़ा जा सकता है। खाली पुलावों से नही। आँख की बजाय आज हाथ अधिक महत्व पूर्ण हैं। मन के संकल्पों को अमली जामा पहनाने वाले हाथ ही होते हैं। अन्य कुछ नही "कृतं में दक्षिणे हस्ते जयो मे सत्यआहितः"। यदि परमात्मा को भारत में प्रकट होना है, तो उसे रोटी के टुकड़े के रूप में बदलना होगा।

समस्यायें स्वयं समाधान नहीं होती। किन्तु उनके विश्लेषण के बिना समाधान नहीं बनता समाज का शोधन करने के लिए अहं प्रश्न यही है कि बेमेल समाज व अधिकारियों को कैसे बदला जाय। आपसी छिछालेदार, कीचड़ उछाली किसी भी संगठन की स्वस्थ-प्रक्रिया नहीं कही जा सकती, चोर जब चोरी करे, तब उसे चोर कह देना ही पर्याप्त नही बल्कि उचित डांट-डपट भी करनी आवश्यक होती है। सर्वज्ञता और सर्वशुद्धता का दावा कौन कर सकता है। हमें यदि युग-प्रवर्तन करना है तो वेद के आश्रम से ही युग-प्रवर्तक तैयार करने होंगे। अपनेलक्ष्यों में पूर्णतः सच्चा बननें के लिए हमें अपनी इच्छाओं और दोषों को मन के तर्को से न्याय संगत ठहराते रहने की अपेक्षा सच्चाई से प्रयत्न करते जाना ही एकमात्र उपाय है।

भारतीय चरित्र मूलतः सहनशील है। किन्तु सामाजिक न्याय में उग्र भी सदियों तक रहा है। मानवीय सहायता व सहानुभूति की दृष्टि से वह अत्यन्त समृद्ध होने के साथ परस्पर ईर्ष्यालु झगड़ापन को भी हम संजोते चले आ रहे हैं। औरों की सफलता को नाकाम करने की आतुरता क्या हम में कम है? अपनी मनोभावनाओं में बहुत तीव्र तथा वर्तमान जगत के अन्यायों से संघर्ष करने के बजाय दूसरी दुनिया परलोक की बातें करने में ही आज तक क्या हम मस्त नहीं रहे। राष्ट्रीय जीवन की इन विसंगतियों को हमें मिटाने तथा ब्रिटिश प्रशासन सहित समस्त विदेशीय दासता के प्रभावों के उन्मूलन करने के लिए सब प्रकार के पाखण्ड-खण्डन का जो महाशंखनाद ऋषि ने वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार के रूप में गुँजाया, वह अकारण ही न था आदर्श सुधारक को सब प्रकार के कुमतों का परदाफास करने उनसे लोहा लेने में अनेक कष्ट सहने ही पड़ते हैं। उनसे घबराकर या किनाराकसी करके आर्यसमाज रूपी महा वृक्ष हरा-भरा होगा भी कैसे? हम यह न भूलें कि आज के विरोधी भविष्य में आर्य समाज रूपी तरुवर की शीतल छाया में विश्राम पाकर गुणगान करने में कभी नहीं अघायेंगे। आर्य जन वेद के वायुमण्डल में रहकर ही पुनर्जीवित हो सकते हैं। कुरीतियों के प्रबल विरोध व खण्डन के कोड़े की तड़ातड़ मार से भी लोग यदि, जग जायें तो परम प्रभु का कोटिशः धन्यवाद समझना चाहिए। यह कोई महंगा सौदा नहीं होगा। इस महाव्रत का पालन करके ही हम आर्य कहलाने के अधिकारी बन सकेंगे। यही वेद का उपदेश है "आर्या व्रताः विसृ जन्तोऽधिक्षमी"। मानव-प्रगति में बाधक सभी तत्वों के साथ संघर्ष करके हमने विजय प्राप्त करना हैं। इसके लिए हमें गहरा आत्म-चिन्तन करना होगा।

शिक्षा में अन्धानुकरण करने की योग्यता पैदा करने के बजाय विवेक जाग्रत करने में प्रयत्नशील होना कहीं अधिक श्रेयस्कर हैं। स्वार्थ हानि से बचने की अपेक्षा हमें सिद्धान्त हानि के प्रति अधिक सचेत होने की आवश्यकता है। असत्य में सदा बने रहने का सामर्थ्य नहीं होता यह बात हमें सदा स्मरण रखनी चाहिए। संस्था के रूप में परिणत होकर सिद्धान्त अपना स्वरूप या गतिशीलता खो बैठते हैं। आर्यत्व की क्षमता वेद और ऋषि का जय घोष करने में नहीं है। प्रत्युत उनकी शिक्षाओं को अपनाने या साचार रूप देने में हैं। सत्य के प्रति आग्रह यही महर्षि के जीवन का सार तत्व था संसार के पदार्थों का परिचय करा देने मात्र से ही कोई आचार्य अपने आचार्यत्व

उत्तर प्रदेश सरकार

विज्ञापन

सेवा निवृत्त होने वाले सरकारी सेवकों को सेवानिवृत्ति के तत्काल बाद पेन्शनरी लाभों का भुगतान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उ0प्र0 सरकार द्वारा निर्णय लिया गया है कि उ0प्र0 सरकार के अन्तर्गत ऐसे सरकारी सेवक जो अगले दो वर्षों में अर्थात 31-3-1991 तक सेवानिवृत्त होने वाले हों वे अपनी सेवानिवृत्ति के सम्बन्ध में प्राथमिक सूचना निम्नलिखित प्रपत्र पर विलम्बतम 15-4-1989 तक निदेशक, पेन्शन निदेशालय, इन्दिरा नगर, लखनऊ को अवश्य उपलब्ध करा दें। यह सूचना भेजना अनिवार्य है। इस सूचना के प्राप्त न होने पर पेन्शन, ग्रेच्युटी आदि के भुगतान में समय से कार्यवाही सुनिश्चित नहीं हो पायेगी। जो सरकारी सेवक राजस्व परिषद, पुलिस मुख्यालय सार्वजनिक निर्माण विभाग, सिंचाई विभाग, कृषि विभाग, ग्राम्य विकास विभाग, वन विभाग, पशुपालन विभाग, खाद्य तथा रसद विभाग, बिक्रीकर विभाग, उद्योग विभाग, सचिवालय प्रशासन विभाग, विधान सभा सचिवालय तथा शिक्षा विभाग के अन्तर्गत कार्यरत हैं वे अपनी उपरोक्त सूचना अपने विभाग के मुख्य लेखाधिकारी को भेजेंगे। शेष विभागों के सरकारी सेवक अपनी सूचना निदेशक, पेन्शन निदेशालय, इन्दिरा नगर, लखनऊ को भेजेंगे।

कृपया यहां से काटिए

सेवानिवृत्ति की प्रथम सूचना

सेवा में,

1- निदेशक
पेन्शन निदेशालय,
इन्दिरा नगर, लखनऊ- 226016

या

2- मुख्य लेखाधिकारी,

महोदय,

मैं ------------------------§सरकारी सेवक का नाम§ ----------------------------§कार्यालय एवं विभाग का नाम एवं पूरा पता§ मैं ----------------§पदनाम§ के पद पर कार्यरत हूँ। मेरी जन्मतिथि ---------------- हैं। मैं दिनांक ------------------ को सेवानिवृत्त हो जाऊँगा।

मेरे पेन्शन प्रपत्रों की तैयारी की कार्यवाही प्रारम्भ करवाने की कृपा करें ।

भवदीय,

§हस्ताक्षर§ ------------------

§पूरा नाम§------------------

एवं पता§ -------------------

की प्रतिष्ठा नहीं कर सकता। वह तो सदाचार की शिक्षा देकर ही प्रतिष्ठित होगा। चरित्र वादी होने की अपेक्षा हमें चरित्रवान् बनना होगा। हमारा आचरण भी सुपुष्ट आदर्श का नमूना या दृष्टान्त बने तभी देव दयानन्द के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित हुई ऐसा कहा जा सकेगा। सुकोमल जिह्वा के समान विनम्र एवं सुशील सुधीजन अन्त तक अपना अस्तित्व बनाये रखते हैं। और दांतों के समान कठोर स्वभाव वाले व्यक्ति समय से पहले ही टूट-टूट जाते है। पाश्चात्य जीवन पद्दति व शिक्षा के व्यामोह में पड़कर हम अपनी उदात संस्कृति का नही किन्तु घृणित विकृति का विस्तार करने में ही सहयोगी बनेंगे।

वेद का सन्देश मरने के बाद स्वर्ग पा लेना ही नहीं है। किन्तु स्वर्ग को यही इसी धरती पर उतार लाना या प्रतिष्ठित करना है। जगतजननी से यही प्रार्थना है। कि विश्व-मानव §दिव्यजन§ की यह दृष्टि हम सब में सुप्रतिष्ठित हो। ताकि हमारे सह-प्रयास से नये युग का श्री-गणेश होकर नया अतिमानव-समाज उभरे। पृथ्वी पर देव रमण करें। **"विश्वे देवासः- इह मादयन्ताम्"।**

कृण्वन्तोविश्वमार्यम के पूर्व कृण्वन्तो स्वयं आर्यम

जब मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मुख पत्र आर्य मित्र के अंक मुख पृष्ठ को खोलता हूँ तो उस में ओ3म के नीचे कृण्वन्तो विश्व आर्यम पढ़ कर कितना खुश होता हूँ उसका मै वर्णन करने में असमर्थ हूँ परन्तु साथ ही साथ दुखी भी कितना होता हूँ उसका वर्णन भी नहीं कर सकता अब से लगभग 25 वर्ष पूर्व में एक ऐसे परिवार का सदस्य था जहाँ पर विश्व में समस्त अन्धविश्वासों का मेरा अपना परिवार था सम्भव हो सकता है कि कहीं भी विश्व भर में इतना बड़ा अन्धविश्वास का केन्द्र किसी दूसरे स्थान पर विधमान हो।

प्रभु कृपा से अब से 25 वर्ष पूर्व मुझे वैदिक ज्ञान का बोध मेरे परम पूज्य गुरू आचार्य वीर सिंह जी द्वारा प्राप्त हुआ और कृण्वन्तो विश्वं मार्यम जैसे वेद वाक्य का ज्ञान होने पर अपने मानव जीवन को सफल समझा यह थी प्रसन्न होने की बात, परन्तु दुखी होने की बात निम्न पंक्तियों में अपने तुच्छ स्वाध्याय एवं अनुभव के आधार पर लिख रहा हूँ। अधिकतर संख्या में आर्यसमाजी आचरणहीन पाये जाते हैं। ऐसे कितने व्यक्ति हैं जो स्वामी दयानन्द जी की उस बात पर आचरण कर रहे हैं जो उन्होंने अपने जीवनकाल में कही थी कि रामलीला देखना हजार हत्याओं के बराबर पाप है। *स्वांग* सनीमा में अश्लील नाच गाने कौन नहीं देख रहा है। ऐसे आर्यों के कितने परिवार हैं जिनके घरों में ये टेलीविजन की महाबीमारी विद्यमान नहीं है, जो छोटे छोटे बच्चों को भी पतन की खाई में ले जा रही है। और ऐसे कितने अधिकारी आर्यसमाज में हैं जो कर्तव्य समझकर आर्यसमाज का कार्य कर रहे हैं। इसके विपरीत पद की इच्छा व स्वार्थ सिद्धि के कारण ही कुरसी पर चिपके हुये हैं। यहाँ तक कि बहुत से आर्यसमाजी अन्डा खाने में भी पाप नहीं मानते। प्रचारक महानुभाव भी अधिक संख्या में व्यापार समझकर प्रचार का कार्य कर रहे हैं और नारा लगा रहे हैं कि समस्त जगत को आर्य बनाओ। मैं पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूँ कि यदि हमलोग जो आज भारत में आर्य कहलाने वाले हैं केवल वही अपने आचरण को वेद मर्यादा के अनुसार व्यवहार में ले आयें तो समस्त जगत को आर्य होने में अधिक समय नहीं लग सकता। कमी हम लोगों में स्वयं के आचरण की है। जबकि आचरणहीन व्यक्ति को वेद भी नहीं बचा सकता। हमारी कथनी करनी में अन्तर है अर्थात कहने के अनुसार हम अपना कार्य नहीं करते इसी कारण हम अपना विश्वास एवं मान खो बैठे हैं।

दूसरी बात है आर्य समाज द्वारा अन्धविश्वास का खण्डन §शास्त्रार्थ§ न करना। आज आर्य समाज में शास्त्रार्थ की बात लगभग समाप्त हो गई है। जैसे शेर के पंजे उखाड़ दिये जाते हैं तो उससे खरगोश जैसे जानवर भी मित्रता कर सकते हैं। आज के समय में मैंने स्वयं मुसलमानों के द्वारा आर्यों को माला पहनाते देखा है तो इस प्रकार के विरोधी लोग क्यों न मान लें कि अब आर्यसमाज के द्वारा खन्डन का कार्य बन्द हो गया है और वे हमारे मित्र बन गए हैं, तबतो वे क्यों न कोई भी अनुचित कार्य करने को तैयार हों। उनको रोकने वाला फिर कौन है। हम लोग पं0 लेखराम जी स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा मान्य राम चन्दर जी जैसे पूज्य वरों को भूल चुके हैं तथा उनके द्वारा किये गये कार्यों पर भी हम लोग विचार नहीं कर रहे हैं। इसलिये यदि हम सबों को कृण्वन्तो विश्वमार्यम को सार्थक करना है तो सर्वप्रथम हमें स्वयं को आर्य बनना होगा तथा अपने आचरण को वेद मर्यादा के अनुसार करना होगा तथा वेद विरोधियों के साथ शास्त्रार्थ §खण्डन§ युग को पूर्व आर्यों की भांति फिर से नियुक्त करना होगा। उपरोक्त लेख हो सकता है कहीं महानुभावों को बुरा अनुभव होगा परन्तु यदि वह अपने स्वयं के अन्तःकरण से निष्पक्ष भाव से निर्णय लेंगे तो उपरोक्त पंक्तियों को सत्य मानेंगे।

प्रभु करे हम सब कृण्वन्तो स्वयं आर्यम् के पश्चात शीघ्राति शीघ्र कृण्वन्तो विश्वमार्यम कहलाने के अधिकारी बनें अर्थात कृण्वन्तो विश्वमार्यम के पूर्व कृण्वन्तो स्वयं मार्यम का वचन सत्य हो।

टीकाराम आर्य, पूर्व मन्त्री,
आर्यसमाज, आर्यनगर §डमौली§

हिन्दू जाति के परम हितैषी महर्षि दयानन्द

श्री -यदुवंश सहाय वानप्रस्थ, फैजाबाद

सभी सन्त और सुधारक श्रद्धा और आदर के पात्र हैं, जिन्होंने हिन्दू समाज में प्रचलित कुरीतियों में से कुछ को मिटाने का प्रयास किया, परन्तु वे उनके मूलकारणों तक नही पहुँचे। किसी रोग के कारण को जाने बिना उसका ठीक उपचार नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द की विशेषता यह है कि उन्होंने हिन्दू जाति के विघटन एवं धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक अध पतन के समस्त कारणों के मूल का पता लगाकर उन्हें निर्मूल करने का प्रयत्न किया। उनकी एक अन्य विशेषता यह है कि उन्होंने भारतीय समाज का नव निर्माण प्राचीन भारतीय साहित्य, वेद और आर्ष ग्रन्थों के आधार पर सम्भव सिद्ध कर दिखाया, जबकि दूसरे सुधारक इसे पश्चिमीकरण द्वारा ही सम्भव समझते थे।

महर्षि दयानन्द के पूर्व भारतीय मानस पाश्चात्य सभ्यता से अभिभूत होकर अपने देश से सम्बन्धित सभी बातों को हेय समझने लगा था। महर्षि ने उसे अपने प्राचीन गौरवशाली स्वर्ण युग से अवगत कराके और स्वराज्य का महत्व बताकर स्वाभिमानी और आत्मविश्वासी बना दिया। अब वह अपने धर्म संस्कृति और इतिहास पर गर्व करने लगा। यहीं से हिन्दू पुर्नजागरण की नींव पड़ी जो स्वतन्त्रता प्राप्ति में प्रमुख कारण बना। इसीलिए महर्षि दयानन्द को स्वतन्त्रता का अग्रदूत और राष्ट्-पितामह कहा गया।

परन्तु विडम्बना यह है कि महर्षि जिस जाति के लिए जिए और मरे, हर प्रकार का कष्ट और अपमान सहा, अनेक बार विष पिया और विष द्वारा ही उनका प्राणान्त हुआ, वह उनके उपकारों के प्रति कृतज्ञ नहीं है। उलटे वह उनके सुधारों का विरोध करती है, यदि हिन्दू समाज पौराणिक पंडितों और पुरोहितों के बहकावे में न आकर महर्षि द्वारा बताए गए समस्त सुधारों को अपना लेता तो न 1947 में देश का विभाजन होता और न ही आज संगठन के अभाव में अपने देश में ही अपना हित साधने में असमर्थ होता।

महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के प्रति हिन्दू समाज की उपेक्षा को कारण उनका वर्तमान हिन्दू धर्म के आधारभूत पुराण, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, बहुदेवतावाद आदि मान्यताओं का खण्डन है, परन्तु खण्डन का आरोप लगाते समय यह तथ्य भुला दिया जाता है कि हर सुधारक ने अपने विश्वासों के प्रतिकूल मान्यताओं का खण्डन किया है। इस्लाम ने तो इसके लिए तलवार का प्रयोग किया है। तुलसीदास जी ने रामचरित मानस के बालकाण्ड में दशरथ के पुत्र राम को ब्रह्म न मानने वाले को शिव जी के मुख से अधम पिशाच, पाखंडी, हरिपद विमुख, अंध, अभागा, लंपट, कपटी, कुटिल आदि कहला कर भर्त्सना की। जब वे स्वयं कहते हैं कि " सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा, गावहिं मुनि पुरान बुध वेदा।" तो अगुन की उपासना करने वालों की इतनी भर्त्सना क्यों?

महर्षि दयानन्द के खण्डन-मण्डन का कारण उनका अपना देश, जाति और संस्कृति के प्रति अगाध प्रेम ही है। वे सारी मान्यताओं परम्पराओं और विश्वासों को दूर करना चाहते थे। जिनके कारण हिन्दू जाति का पतन हुआ है और वह संगठित होकर अपना प्राचीन गौरव प्राप्त करने में असमर्थ है। कई ईश्वरों और देवताओं की मान्यता के कारण जाति सैकड़ों सम्प्रदायों में बँटकर विघटित और निर्बल हो गई। महर्षि ने बताया कि ईश्वर एक है और सच्चिदानन्द और सर्वोत्तम नाम 'ओ3म्" है। अनन्त गुण, कर्म और स्वभाव के कारण ब्रह्मा विष्णु, महेश, शिव, रूद्र, महादेव, गणेश, शंकर, इन्द्र, अग्नि देवी, शक्ति, लक्ष्मी, सरस्वती आदि उसके अनन्त नाम हैं। इन गुणवाची नामों से परमेश्वर का ग्रहण प्रकरण और विशेषण के अनुसार होना है।

परन्तु जाति का दुर्भाग्य तब आरम्भ हुआ जब ईश्वर के इन गुणवाची नामों को अलग-अलग ईश्वर और देवता मानकर अनेक पुराणों की रचना हुई और उनके आधार पर बीसियों सम्प्रदायों की नींव पड़ी। हर पुराण ने अपने इष्ट देव को ईश्वर और सृष्टि का कर्ता-धर्ता बताया अन्यों को इष्ट देवों को उसका दास और अनुचर कहा। पुराणों ने महापुरुषों के चरित्र को कपोल-कल्पित कथाओं के द्वारा दूषित किया। जाति की एकता में ये सम्प्रदाय बहुत बड़े बाधक हैं।

अवतारवाद के विषय में महर्षि का कहना है कि ईश्वर शरीर धारण किए बिना ही जगत की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करता है। वह सर्वव्यापक होने से सभी प्राणियों के शरीर में भी परिपूर्ण हो रहा है। जब चाहे उसी समय उनका नाश कर सकता है। भक्त जनों के उद्धार के लिए भी उसे अवतार लेने की आवश्यकता नहीं है; क्योंकि वह तो अपनी आज्ञा के अनुकूल चलने वाले धर्मात्मा, सदाचारी व्यक्तियों का सदा उद्धार करता रहता है। अवतारवाद का दुष्परिणाम यह हुआ कि हिन्दू समाज ने अवतारों के ईश्वरत्व पर अधिक बल दिया। उनकी मूर्तियों की पूजा करके अपनी कामनाओं को पूरा करने और पापों कष्टों से छूटने की बात सोची, किन्तु उनके श्रेष्ठ चरित्र और सद्गुणों को नहीं अपनाया, भाग्यवादी और पुरूषार्थहीन होकर रह गया।

मूर्तिपूजा का खण्डन भी महर्षि ने इसीलिए किया कि इससे जाति की महान क्षति हो रही है। तुलसीदास जी ने भी कलियुग में मूर्तिपूजा को निष्फल बताया है - "चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ, कलि विशेष नहिं आन उपाऊ" मूर्तिपूजा के दोष इस प्रकार हैं :

1- मन्दिरों में करोड़ों रूपये मूर्तियों के सिंगार और आभूषण आदि पर व्यय होता है, जबकि जाति के सैकड़ों लाल अभावग्रस्त हैं। वे विधर्मी बनाये जाकर अपनी भाषा धर्म और संस्कृति खोकर देश के शत्रु बन रहे हैं। अनाथ और दरिद्रों को तन ढांकने के लिए कपड़ा नहीं मिलता और मूर्तियां रेशमी वस्त्र धारण करती हैं। भोग लगाने के बहाने मोटे पुजारी हलवा और मोहन भोग उड़ाते हैं और सैकड़ों देशवासी रूखी सूखी रोटी को भी तरसते हैं।

2- मन्दिरों में धन संग्रह के कारण ही थोड़े से विदेशियों ने आकर मन्दिरों को लूटा, तोड़ा जनता भी लूटी गई, कितने तलवार के घाट उतारे गए, कितने विधर्मी और दास बनकर विदेशों में कौड़ी के मोल बिके। देवियों की लाज लूटी गई, देवताओं की दैवी शक्ति पर विश्वास करके अपने बाहुबल का प्रयोग न करके निष्क्रिय बने रहे। यह धन ही मन्दिरों-मठों में चोरी व्यभिचार और कलह का कारण है।

3- मूर्तिपूजा के कारण ही पशुबलि, नरबलि, और देवदासी आदि घृणित प्रथायें प्रचलित हैं।

4- मूर्ति को ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का साधन मान लेने से जाति पुरूषार्थहीन हो गई है।

5- हिन्दुओं का धन और समय अधिकतर मूर्तियों के रख-रखाव और सजावट आदि दिखावे के कार्यों में लगता है अतः जन सेवा में उनकी रूचि बहुत कम होती है। जबकि ईसाई दूर देशों से आकर भारत में अपने सेवा कार्यों से हिन्दुओं को ईसाई बना रहे हैं।

6- मूर्तिपूजा की लत पड़ जाने के कारण हजारों हिन्दू स्त्री-पुरुष, हिन्दुओं को मारने वालों की मजारों और कब्रों की पूजा करते हैं, और उसपर अपना तन मन धन न्यौछावर करते हैं।

7- आजकल मूर्ति बनानेवाले बहुधा मुसलमान हैं। वे हिन्दुओं की यह कहकर हँसी उड़ाते हैं - मेरे हाथों के तराशे हुए सनम उनके बुतखानों में भगवान बने बैठे हैं।

गुण, कर्म, स्वभाव से वर्ण व्यवस्था न मानकर जन्म से मानने से यह जाति सैकड़ों उपजातियों में बँटकर भाईचारे की भावना को खो चुकी है। महर्षि ने इसप्रकार सभी हानिकारक कुप्रथाओं का खण्डन करके हिन्दू जाति को उनसे मुक्त करने का प्रयास किया है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि महर्षि दयानन्द हिन्दू (आर्य) जाति के परम हितैषी थे। जबतक महर्षि के समस्त सुधारों को पूर्णतः अपनाया नहीं जायगा, तबतक इस जाति को विनाश से बचाया नहीं जा सकता।

वेदों में मातृ भूमि महिमा

(श्री अमित प्रताप नारायण सिंह, देवरिया)

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणी ब्रह्मवर्चसी जायताम्। आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्यो तिव्याधी महारथी जायताम्। दोग्ध्री धेनुर्वोढा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धीर्योषाजिष्णूरथेष्ठाः सभेयोयुवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे-निकामे नः पर्जन्यो ऽभिवर्षतु फलवत्यो न ओषधयःपच्यन्तां योग क्षेमो नः कल्पताम्।।

(यजु0 2 । 23)

हमारे राष्ट्र में ब्रह्मतेज युक्त ज्ञान दीप्ति सम्पन्न ब्राह्मण सब ओर हों और बहादुर बाण विद्या शस्त्र संचालन में चतुर दुष्टों को अत्यन्त उद्विग्न करने वाला, महारथी क्षत्रिय वर्ग हो। दूध देने वाली गौएँ, भार उठाने वाले बैल, शीघ्र गामी घोड़े आदि हों। इस यजमान का पुत्र जवान होकर सभा कार्य में निपुण जयशील-रमणीय साधन से युक्त और वीर होवे। अपेक्षित समय पर हमारे लिए बादल बरसता रहे। हमारी औषधियाँ, वनस्पतियाँ, फलयुक्त रहें तथा हमारा योगक्षेम भली प्रकार चले।

इस राष्ट्र की उन्नीत के लिए वेदों में कहा गया है:-

इमा या पंच प्रदिशो
मानवी पंच कृष्टयः ।।
वृष्टे शायं नदी रिवेह ।
स्फति समावहान ।। 3।24।3।।

अर्थात् हमारे राष्ट्र में विद्वान बहादुर व्यापारी, कारीगर और शिक्षित जन जिस प्रकार वृष्टि से नदी बढ़ती है उस प्रकार अपने राष्ट्र को उन्नत करें।

वयं राष्ट्रे जागृयामः पुरोहिता ।
-यजुर्वेद 9/27

अर्थात् अपने राष्ट्र में नेता बनकर हम जागरणशील रहें।

इस प्रकार राष्ट्र को बहुत अधिक महत्ता दी गयी और अथर्ववेद के प्रसिद्ध पृथ्वी सूक्त में भूमि को माता कहा गया है

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः ।

"भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ।" "मातृ-देवोभव" अर्थात माता को देवता मानकर उसकी पूजाकरें अर्थात-उसका अपमान न होने दे। उसके अन्दर रहने वालों का आदर करें। उनका आदर उसी प्रकार करें जिस प्रकार दिव्यगुण विशिष्ट व्यक्ति का अर्थात् देवता का किया जाता है। भारत-माता की जय के पीछे भी तो यही भावना है। भारत माता पहाड़-नदियाँ, वृक्ष, वनस्पतियाँ नहीं यह एक जीवित जागृत वस्तु है। और वह है क्या? यह सोचने पर ज्ञात होगा कि इस राष्ट्र में रहने वाले पूरे 80 करोड़ नर, नारी, बालक व बालिकायें, वृद्ध और युवा ही वास्तव में भारत माता हैं और इन्ही को देवता माना गया है। पृथ्वी सूक्त में पृथ्वी को देवी शब्द से सम्बोधित करते हुए कहा गया है:--

देवी दधतु सुमनस्यमानः
(ऋचा 44)

यह राष्ट्रीयता की भावना भारत वर्ष में इस युग में देने का श्रेय स्वामी दयानन्द को देता हूँ। सत्यार्थ प्रकाश का छठा समुल्लास राज कल्याण तथा राजधर्म का मार्ग निर्देशक प्रतीत होता है। यह परतन्त्रता के दिनों में स्वतन्त्रता की आवाज उठाने का रणनाद लगता है युद्ध के समय शत्रुओं के प्रति रणनीति का प्रदर्शक है। सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द ने ही राज्य के लिये राष्ट्र शब्द का प्रयोग किया। राष्ट्र शब्द वैदिक साहित्य की सबसे बड़ी देन है। ऋगवेद आदि में यह शब्द अनेक बार आया है। इस शब्द में आर्यों की बड़ी मार्मिकता की प्रोज्वल अनुभूति की है। इस शब्द में देश राज्य जाति और उसकी संस्कृति विवद्ध है।

अपने राष्ट्र के अभ्युत्थान के लिए आर्य अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार रहते थे और राष्ट्र की रक्षा को अपना कर्तव्य समझकर इसके लिए अपने प्राण तक का हवन करने के लिए सर्वथा सन्नद्ध रहते थे। वेद मंत्रों में राष्ट्रों की भावना बहुत उग्ररूप में पायी जाती है:-

ध्रुवंते राजातरूयो धुवं देवो वृहस्पीत ।
ध्रुवंते इन्द्रश्चप्रजणिश्च राष्ट्रंधारयता धुवम् ।।
ऋग्वेद. 10।163।5

वरूण राष्ट्र को अविचल करें। वृहस्पति स्थिर करें इन्द्र को स्थिर और अग्निदेव निश्चितरूप से धारण करें। यजुर्वेद की एक सूक्ति है :-

"प्रमृणीहि शत्रून्" शत्रुओं को कुचल डाल ।

बंकिम चन्द्रचटर्जी ने इस भारतमाता के एक दूसरे रूप की कल्पना की और उन्होंने दस भुजाओं वाली देवी नाम दिया। जिसके 80 करोड़ हाथों में तलवार भी थी।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा, "अगले पचास वर्षों के लिए हमारे मस्तिष्कों से बेकार के देवताओं को लुप्त हो जाने दो हमारा मुख्य स्वर यही होना चाहिये कि यह हमारी महान माता है। यही देवता हैं, जो जागृत है, हर जगह उसके हाथ पैर और कान हैं और इसी में सब कुछ निहित है।"

भारत माता के सुपुत्र योगी अरविन्द ने राष्ट्रीय भावना को नया रूप दिया। उन्होंने कहा, "**भारत माता** जमीन का केवल एक टुकड़ा मात्र नहीं है, वह शक्ति है, वह ईश्वरत्व है। उसकी रज पावन पर्वतों से आती हुई नदियाँ, भारतीय संभाषण, संगीत काव्य, चिरपरिचित स्वर पहनावा और जीवन का ढंग - इस सभी से जीवन की एक सांसारिक सुख का अनुभव होता है। देश प्रेम की भावना के मूल में यही है। अतीत का गौरव, वर्तमान का दुखःदर्द, भविष्य की कामनाएँ उसका तना और डालियाँ हैं। आत्म बलिदान और त्याग की भावना, क्षमा की शक्ति और देश के लिए सहनशीलता तथा उसकी उन्नति के लिये उद्यमशील होना मानों इस राष्ट्रीय भावना के फल हैं जो इस शरीर को जीवित रखता है वह है देश के प्रति ईश्वरीय मातृत्व की अनुभूति होना- **माता** का ज्ञान और स्नेह प्राप्त करने- माता की कल्पना, नित्यचिन्तन और माता की पूजा से यह रस प्राप्त होता है।" योगी अरविन्द ने आगे लिखा है - **माता की आत्मा है,ऐसी ही आत्मा जैसी कि प्रत्येक वैयक्तिक पुरूष की आत्मा होती है।"** भारत की वही आत्मा अतिप्राचीन काल से ऋषिमुनियों के आदि काल से इस देश की सर्वविधि उन्नति का अधिष्ठातृत्व करती रही है। देश के विविध प्रकार के भाग्य विधाता उसी की प्रेरणा को समय-समय पर अनुभव करते हैं। और आज भी कर सकते हैं। उसी के प्रति हमें जागृत होना है।"

अरविन्द घोष ने आगे लिखा है :- आइये हम उस **माता** से प्रार्थना करे "**हे मातः** हमें महान कर, महत्प्रयासी कर,उदारचेत कर, सत्यसंकल्पी कर। ऐसा कर जिससे कि हम सब और अल्पभीरू निश्चेष्ट तथा भयभीत न हों। बलशाली पराक्रमी उन्नतचेता जाति, भारत के पवित्र काननों में, उर्वर खेतों में, गगन सहचर पर्वतों के तले, पूतसलिला नदियों के तीर पर एकता से, प्रेम से, सत्य शक्ति से,' शिल्प से, साहित्य से, विक्रम से, ज्ञान से, श्रेष्ठ होकर निवास करें। मातृचरणों में यही प्रार्थना है, हे **मातः** प्रकट हो ।

x-x-x-x-x-x-x-x--x-x-x-

- स्वामी विज्ञानानन्द जी सरस्वती की मृत्यु 7 फरवरी 1989 को दो बजे मध्यान्ह में हो गयी स्वामी जी सन्यासी जीवन से पहले लेखपाल रहे युवा अवस्था में उनकी धर्मपत्नी का देहावसान हो जाने के बाद वह वैदिक धर्म के प्रचारक बन गए थे। आर्यसमाज फखरपुर ने शोक प्रस्ताव पारित किया।
- आर्यसमाज ताजगंज आगरा में 12 मार्च को निम्न देवियों के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया । (1) श्रीमती-मोहनदेवी पूज्य माता श्री वी0पी0 हान्डा ताज गंज का देहान्त 23 फरवरी 89 को निधन हो गया। (2)श्रीमती-प्रकाशवती आगरा जनपद के दानवीर समाजसेवी श्री हाकिम राय जी की धर्मपत्नी हैं इनका निधन 9 मार्च।989 को हो गया। सभी सदस्यों ने परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति तथा पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें ।
- ध्यान योग शिविर योगधाम आर्यनगर ज्वालापुर (हरिद्वार) में 2 अप्रैल से 9 अप्रैल तक लगाया जा रहा है।

दयानन्द बाल सदन में होली मिलन

लखनऊ जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में दयानन्द बाल सदन मोतीनगर में 26-3-89 को "होली-मिलन" का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर एकयज्ञ का आयोजन हुआ। जिसे दयानन्द बाल सदन के ब्रह्मचारियों ने सम्पन्न कराया। यज्ञ के उपरान्त भजन प्रवचन के कार्यक्रम हुए।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने बोलते हुए कहा कि भविष्य में होली मिलन के कार्यक्रम उन बस्तियों में किये जाएं जो उपेक्षित पड़ी हैं। आज हमारे समाज को लोभ और लालच देकर विधर्मी बनाने का कुचक्र चल रहा है। पिछले दिनों ऐशबाग में इसी प्रकार कतिपय निहित स्वार्थी तत्वों ने भोली-भाली हिन्दू जनता को विधर्मी बनाने का प्रयास किया था। जिसे हमने विफल कर दिया है। हम नववर्ष के पावन अवसर पर युवकों की, वृद्धों की, सामाजिक कार्यकर्ताओं की टोलियां बना कर मोहल्ले-मोहल्ले में आर्यसमाज का सन्देश फैला दें। विधवा माताओं के बच्चों का अपहरण किया जाता है हम तुरन्त उनकी मदद के लिये पहुँचे हम तभी सही अर्थों में आर्य कहलाने के अधिकारी हो सकेंगे। इस अवसर पर स्वामी वेद बोध सरस्वती ने आर्यत्व की परिभाषा करते हुए आर्यों को संगठित होने का आह्वान दिया।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के मंत्री चन्द्र कुमार छाबड़ा ने होली के महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर श्रीमती कमलेश बजाज और श्रीमती माधुरी जी ने अपने भजन प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान आचार्य वेदव्रत अवस्थी ने किया।

जिन्होंने हास्यमोद के वातावरण में कतिपय आर्य नेताओं तथा लखनऊ के कुछ महानुभावों के लिए अधोलिखित फुलझड़ियां बाँटी-

1- श्रीपं0 इन्द्रराज जी - हम देख रहे है और देखेंगे।
2- श्री पं0 मनमोहन तिवारी -हम कुछ करके रहेगें।
3- श्री कृष्ण बलदेव महाना - हिम्मत साथ नही देती।
4- प्रिंसपल माधव सिंह - अज्ञात शत्रु
5- श्री जय नारायण अरूण - जरा मुस्करा दो
6- श्री सच्चिदानन्द शास्त्री - मुझे छोटा न समझना।
7- श्री डा0 विनय प्रताप - नया जोश
8- श्री पं0 इन्द्रदेव पाठक - सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः
9- आचार्य वेद व्रत अवस्थी - नाम बड़ेदर्शन थोड़े।
10-श्री चन्द्र कुमार छाबड़ा - कुछ करने की तमन्ना।
11-श्री अर्जुन देव महाना - मुझे साधना करने दो।
12-श्री रूप चन्द्र दीपक - मुझे एकान्त में रहने दो
13-श्री रमेश चन्द्र त्रिपाठी - क्या करना है बताइये तो। (गनेशगंज)
14-श्री रेवती रमण रस्तोगी- गर्व से कहो हम हिन्दू हैं।
15-श्री विश्वम्भर दयालु गुप्त -- मुझे चुप रहने दो।
16-श्री पंकज कुमार - उभरता नक्षत्र।

चुनाव

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा कानपुर देहात

प्रधान - श्री ओम प्रकाश आर्य
मन्त्री - श्री बालकृष्ण शर्मा
कोषाध्यक्ष - श्री प्रभूदयाल आर्य

आर्य समाज कासगंज एटा

प्रधान - श्री ब्रजरत्न गुप्ता
मंत्री - श्री दिनेश चन्द्र विड़ला
कोषाध्यक्ष - श्री मनोत्तम शर्मा

आर्य समाज अलीपुर कलाँ
मुजफ्फरनगर (उ0प्र0)

प्रधान - श्री मेघपाल सिंह आर्य
मंत्री - कुशलपाल सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री कृष्णपाल सिंह आर्य

खुरजा में प्रचार कार्य

दिनांक- 28-2-89 को खुर्जा आर्यसमाज में अपने भाषण में श्री पं0इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने कहा कि वर्तमान समय में देश धर्म तथा हमारी संस्कृति खतरे में है। उन्होंने विभिन्न उदाहरण देकर बताया कि किस तरह वर्तमान सरकार इसाइयों तथा विघटनकारी शक्तियों का पोषण कर रही हैं। उन्होंने मिजोरम तथा नागालैण्ड में सम्पन्न चुनावों का हवाला देते हुए कहा कि ये चुनाव केवल धार्मिक आधार पर जीते गए। राजीव की सरकार ने इसाई तुष्टीकरण की नीति अपनाकर चर्च को प्रसन्न करने हेतु चुनाव प्रचार के दौरान वादा किया कि नागालैण्ड की शासन व्यवस्था तथा शिक्षा व्यवस्था पूर्ण तरह 'बाइबिल (इसाईयों के धर्मग्रन्थ) के अनुसार होगी। इस तरह के कई वादे वर्तमान राजीव सरकार की पार्टी ने किए। मिजोरम के मुख्यमंत्री ने एक साक्षात्कार में स्पष्ट किया "वर्तमान जीत कांग्रेस की जीत नहीं बल्कि चर्च की जीत है" इस तरह चर्चो द्वारा हमारे देश की राजनीति में खुला हस्तक्षेप प्रारम्भ हो गया है। पश्चिमी उत्तर-प्रदेश में हरिजनों द्वारा सिख बनने की घटनाओं का भी उन्होंने जिक्र करते हुए कहा कि खालिस्तान की स्थापना का स्वप्न देखने वालों ने अपने लिए एक आधार बनाने हेतु हरिजनों को सिख बनाकर आतंक वादी कारवाईयों का विस्तार करने की योजना बनाई है। हिन्दुओं के एक वर्ग द्वारा यह कहना कि यह धर्म परिवर्तन नही बल्कि मत परिवर्तन है एक धोखा है। यदि हम तत्परता तथा एकजुट होकर हरिजनों द्वारा सिख बनने पर रोक न लगा सके तो हमारे प्रदेश में भी आतंकवादियों के छिपने के स्थान बन जायेंगे तथा हमारा जीना दूभर हो जायगा।

जयन्त कुमार के ओजस्वी तथ्यों से पूर्ण तथा प्रभाव शाली वक्तव्यों को सुनने प्रत्येक वर्ग के लोग आए। दिनांक-3-3-89 का जयन्त कुमार ने दयानन्द विद्यालय तथा आर्य कन्या पाठशाला पोस्ट ग्रेजुएट कालेज में अपने 40 मिनट के प्रवचन द्वारा छात्राओं, अध्यापिकाओं तथा अन्य अधिकारियों को प्रेरणा दी कि वे स्वशक्ति को पहचानें। उन्होंने छात्राओं को अपने सम्बोधन में राष्ट्रनिर्माण तथा धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए अग्रणी होकर योगदान करने की अपील की। छात्राओं ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनके आवाहन का स्वागत किया। अन्त में प्रांचार्या ने जयन्त कुमार तथा स्वामी रामेश्वरानन्द को धन्यवाद दिया।

मवाना में प्रचार कार्य

दिनांक 5-2-89 से 7-3-89 तक जयन्त कुमार ने मवाना आर्यसमाज के माध्यम से प्रचार-कार्य किया। प्रथम दिन उपस्थिति कुछ कम थी। परन्तु उपस्थित श्रोता जयन्त-कुमार के प्रवचन से इतने प्रभावित थे कि उन्होंने स्वयं लोगों को प्रेरित किया कि वह इनकी सभाओं में आकर प्रेरणा पाए। परिणामतः दूसरे दिन से युवा, युवतियाँ, वृद्ध और स्त्री-पुरूष इनके सभाओं में उमड़ पड़े। जयन्त कुमार ने विधर्मी तथा देश-द्रोहियों द्वारा किए जा रहे राष्ट्र घाती कुचक्रों का व्यापक रूप से भण्डाफोड़ किया। उन्होंने व्यापक हिन्दू समाज में व्याप्त जातिवाद, अस्पृश्यता तथा संप्रदायवाद का मार्मिक चित्रण अपने भाषणों में किया। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्व की पीढ़ी ने स्वतन्त्रता के लिए बलिदान किए तथा राष्ट्र की दासता से मुक्ति दिलाई। अब हमारा कर्तव्य है कि हम पुनः इस राष्ट्र की अखण्डता तथा स्वतन्त्रता और आर्य संस्कृति तथा वैदिक धर्म की रक्षा हेतु पुनः उठकर संघर्ष करें तथा अपनी संयुक्त शक्ति के प्रबल प्रहार से राष्ट्र धर्म घाती शक्तियों को परास्त कर उन्हें निर्मूल कर देना है। उन्होंने अपने भाषणों के द्वारा लोगों को नई चेतना तथा प्रेरणा का संचार किया।

दिनांक 7-3-89 को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के प्रधान पं0 इन्द्रराज जी ने अपने प्रवचन में व्यापक हिन्दु समाज को आर्यसमाज के कन्धे से कन्धा मिलाकर धर्म तथा राष्ट्र-रक्षा हेतु संघर्ष करने की अपील की उन्होंने मवाना आर्यसमाज के मंत्री, भजनोपदेशक हरस्वरूप जी तथा सुशील कुमार जी को नियुक्त किया कि वे नगला हरेरू जाकर वहाँ पर हरिजनों द्वारा सिख बनने को रोकने का कार्य करने का निर्देश दिया। उन्होंने इस कार्य में अपना हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया। माननीय प्रधान जी ने कहा कि वे स्वयं इस कार्य में सक्रिय सहयोग करेंगे। मवाना आर्यसमाज के मंत्री तथा अन्य व्यक्तियों ने प्रधान जी(पं0इन्द्रराज) को आश्वासन दिया कि उन्होंने इस कार्य हेतु एक समिति गठित करली है तथा वे पूर्ण शक्ति से इस धर्म परिवर्तन को रोकेंगे। अन्त में आर्यसमाज के अधिकारियों ने पं0 इन्द्रराज जी तथा जयन्त कुमार को धन्यवाद दिया।

पुस्तक समीक्षा

नाम - परोपेहि मनस्पाप
लेखक - स्वामी वेद बोध सरस्वती
प्रकाशक - वेद संस्थान, बी-64 राजाजी पुरम, लखनऊ।
आकार - 20×30×16 पृष्ठ संख्या - 74+14+4+1=93
मूल्य - पाँच रुपए [लागत मात्र]

उपर्युक्त पुस्तक में ऋग्वेद के प्रथममण्डल सूक्त - 41 के दस मन्त्रों की विस्तृत व्याख्या की गई है। पूषा सूक्त के दस मन्त्रों की व्याख्या के पूर्व "पापमा हतो न सोमः" शीर्षक के अन्तर्गत 6 पृष्ठों में पाप के उन्मूलन का वेदमन्त्रों के आधार पर एक विस्तृत लेख है, जिसमें पाप विमोचन के उद्देश्य, को व्यक्त किया गया है।

पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्रत्येक मन्त्र के अन्वय, शब्दार्थ और व्याख्या के पूर्व मन्त्र में व्यक्त भावों का जहाँ शीर्षक दिया गया है, वहाँ उसका सार भी बतलाया गया है। मन्त्रों का भावप्रद पद्यानुवाद भी दिया गया है और पाप विमोचन के उद्देश्य को सार्थक करने के लिए अनेक दृष्टान्त भी दिये गये हैं। इन सब के साथ प्रत्येक मन्त्र के अन्त में एक भजम भी दिया गया है।

पुस्तक सर्वथा पठनीय है, अत्यन्त रोचक है, पाप पुण्य का विश्लेषण करने वाली है और आत्मना पुष्ट करने वाली है। प्रत्येक आर्यसमाज आर्य विद्यालय और आर्य परिवार के लिए अत्यन्त उपयोगी है। लागत मात्र पर पुस्तक प्रदान करके हुतात्मा पंडित लेखराम जी की वसीयत "कि आर्य समाज से लेखनी का कार्य बन्द न हो," लेखक और प्रकाशक का नव साहित्य सृजन का प्रयास सर्वथा प्रशंसनीय है।

- आचार्य इन्द्र देव पाठक,
एम०ए० दर्शन वाचस्पतिः

- आर्य समाज खेड़ा अफगान सहारनपुर का वार्षिक उत्सव 15,16, 17 अप्रैल को धूम धाम से मनाया जा रहा है स्थानीय जनता से विनम्र निवेदन है कि वह अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

निर्वाचन

जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा
इटावा

प्रधान - स्वामी देवानन्द सरस्वती
मन्त्री - श्री वेदप्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री राम बाबू आर्य

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
चैत्र शुक्ल 4
9 अप्रैल रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

नगर आर्य समाज रामपुरा का वार्षिकोत्सव सम्पन्न
स्वामी आनन्द बोध सरस्वती का उद्बोधन

कोटा नगर आर्य समाज रामपुरा कोटा के 90वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष में यहाँ आर्यसमाज भवन से कई कार्यक्रम सम्पन्न हुए। 4 दिन तक चले इस भव्य समारोह का शुभारंभ नगर भ्रमण शोभायात्रा से हुआ।

प्रतिदिन प्रातः यज्ञ, हवन, भजनोपदेश के अलावा गुरुकुल एटा से पधारे श्री राम दत्त जी आचार्य एवं दो स्वर वेदपाठी ब्रह्मचारियों द्वारा प्रतिदिन क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद के कुछ मन्त्रों का स्वर पाठ किया।

समापन दिवस में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती पधारे। एक दिन के व्यस्त कार्यक्रमों में स्वामी जी ने दो सभाऐ एवं पत्रकार वार्ता को संबोधित किया। इस अवसर पर स्वामी जी ने संविधान की धारा 30 को समाप्त करने की सरकार से मांग की। स्वामी जी ने कहा कि अल्प संख्यकों की शैक्षणिक संस्थाओं को संरक्षण देने वाली संविधान की धारा 30 का लाभ या तो सभी जाति और वर्ग समुदायों की शैक्षणिक संस्थाओं को दिया जाये अन्यथा इसे समाप्त किया जावे। उन्होंने चेतावनी दी कि आर्यसमाज इस मुद्दे को लेकर राष्ट्र व्यापी आन्दोलन करेंगे।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० 2241/57 घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85

चैत्र शुक्ल 11 रविवार, संवत 2046 वि०, दिनांक 16 अप्रेल 1989



यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं
गच्छन्ति नामरूपं विहाय।
तथा विद्वान् नामरूपाद विमुक्तः,
परात्परंपुरुषमुपैति दिव्यम्।।

--मुण्डकोपनिषत् 3/2/8

जिस प्रकार बहती हुई नदियाँ नामरुप को छोड़कर समुद्र में विलीन हो जाती हैं, उसी प्रकार ज्ञानीपुरुष नामरुप (प्रसिद्द) की चिन्ता न करते हुए दिव्यपुरुष परमात्मा के गुणों को धारण कर लेते हैं।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०,

प्रबन्ध सम्पादक
ज्ञानदेव पाठक, एम०ए०,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु०251/-
वार्षिक	रु० 30/-
छमाही	रु० 15/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	92
अंक	15

लोकसभा में संस्कृत को हटाने के विरोध में याचिका प्रस्तुत

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में आर्य समाज का शिष्टमण्डल श्री जाखड़ को मिला

दिल्ली 16 मार्च 1989। आज आर्य समाज का शिष्टमण्डल लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ को लोकसभा में मिला। शिष्टमण्डल ने एक याचिका दी।

इस शिष्टमण्डल में स्वामी आनन्दबोध जी, श्री पृथ्वीराज शास्त्री, श्री ओ०पी० गोयल, श्री सूर्यदेव, श्री रामनाथ सहगल, डा० शिवकुमार शास्त्री, श्री सत्यानन्द आर्य, श्रीमती सरला मेहता, श्री लक्ष्मीचन्द, श्री विमल वधावन आदि महानुभाव थे।

(याचिका का विस्तृत विवरण पृष्ठ 4 पर देखिए।)

संस्कृत हटाने के खिलाफ स्थगनादेश

नई दिल्ली, 17 मार्च। उच्चतम न्यायालय ने आज केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की पहली अप्रैल 1989 से लागू होने वाली त्रिभाषा योजना के विरुद्ध स्थगन आदेश जारी कर दिया है। इस योजना के अन्तर्गत संस्कृत का स्वतन्त्र अस्तित्व खत्म कर दिया गया था।

स्थगन आदेश के अनुसार अब केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध विद्यालयों में पहले के समान ही संस्कृत तीसरी भाषा के रूप में पढ़ी जा सकेगी।

उल्लेखनीय है कि बोर्ड की नई योजना में संस्कृत का स्थान अत्यन्त नगण्य कर दिया गया है। इसे केवल अतिरिक्त भाषा या "हिन्दी अ" के साथ 20 प्रतिशत भाग के रूप में पढ़ा जा सकता है।

बोर्ड की नई भाषा नीति के विरुद्ध याचिका दायर करने वालों की ओर से प्रख्यात वकील डा० लक्ष्मीमल सिंघवी तथा डा० वाई०एस० चितले, वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में पेश हुए। याचिका संख्या 299 वर्ष 1989 की तैयारी मुकुल मुद्गल अधिवक्ता ने की। यह मामला न्यायमूर्ति वेंकटरमैया और न्यायमूर्ति ओझा की अदालत में पेश हुआ। विद्वान न्यायाधीशों ने मामले की सुनवाई शुरू होने के तुरन्त बाद स्थगन आदेश जारी कर दिया।

* * * * * * * * * * *

संस्कृत भाषा के सम्बन्ध में श्री बलराम जाखड़ को, स्वामी आनन्दबोध द्वारा ज्ञापन प्रस्तुत

प्रथम पृष्ठ का शेष

निवेदन:- केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की शासी निकाय द्वारा संस्कृत भाषा के प्रति भेदभाव की नीति अपनाने के कारण प्रार्थी को बहुत मानसिक कष्ट पहुँचा है। शिक्षा बोर्ड ने अपने परिपत्र दिनांक- 16-9-88 के द्वारा समस्त सम्बद्ध माध्यमिक स्कूलों को नई शिक्षा योजना लागू करने के आदेश जारी किये हैं। इस योजना के अनुसार विद्यार्थियों को निम्नलिखित तीन भाषाओं को पढ़ना तथा उनकी परीक्षा देना अनिवार्य होगा:
§1§ अंग्रेजी §2§ हिन्दी §3§ असामिया, बंगला, कन्नड़, मराठी, कश्मीरी, मराठी, मलयालम, तमिल, उर्दू, उड़िया, सिंधी और तेलगु में से कोई एक भाषा

§2§ संस्कृत का स्थान: इस प्रकार त्रिभाषा सूत्र के कार्यान्वयन में संस्कृत का बहिष्कार कर दिया है। जो अब केवल हिन्दी के साथ पाठ्यक्रम §क§ के अन्तर्गत पढ़ाई जायेगी। जो विद्यार्थी हिन्दी को पाठ्यक्रम §क§के द्वारा उच्च स्तर पर अध्ययन करना चाहेंगे, उन्हें हिन्दी §80प्रतिशत अंकों§ के अतिरिक्त संस्कृत §20प्रतिशत अंक§ भी पढ़ना आवश्यक होगा। इस प्रकार उन्हें तीन भाषाओं के स्थान पर चार भाषाएं पढ़नी पड़ेंगी। इससे संस्कृत में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को उसे अतिरिक्त चौथी भाषा के रूप में पढ़ना होगा। अतिरिक्त भाषाओं में फ्रेंच, जर्मन, रूसी, स्पेनिश, फारशी तथा अरबी के साथ संस्कृत को भी जोड़ दिया गया है। मालूम होता है कि केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के शासी निकाय में कोई विदेशी दिमाग काम कर रहा है, जिसने संस्कृत को एक भारतीय भाषा होते हुए भी विदेशी भाषाओं के साथ जोड़ा है। इसके विपरीत अंग्रेजी को एक विदेशी भाषा होते हुए भी पाठ्क्रम में अनिवार्य भाषा के रूप में सम्मलित किया गया है। यह सब उस स्थिति में हो रहा है, जब प्रधान मंत्री स्वयं केन्द्रीय हिन्दी समिति के अध्यक्ष है। माननीय उपराष्ट्पति श्री शंकर दयाल शर्मा ने भी संस्कृत भाषा के प्रति उपेक्षापूर्ण नीति पर गहरा असन्तोष व्यक्त किया है।

उपसंहार-§क§ सन् 1969 में तत्कालीन शिक्षा मन्त्री डा0 त्रिगुण सेन की अध्यक्षता में शिक्षाविद सांसदों की एक समिति ने सर्वसम्मति से अपनी रिपोर्ट में सिफारिश की थी कि समस्त भारतीय भाषाओं के अध्ययन के लिये प्रारम्भिक संस्कृत का अध्ययन आवश्यक होना चाहिए। यह रिपोर्ट उस समय दोनों सदनों द्वारा सर्वसम्मति से स्वीकार की गई थी। अतएव यदि संस्कृत को हिन्दी के साथ पढ़ाया जाए तो उसे सभी भारतीय भाषाओं के साथ पढ़ाना चाहिए।

§ख§ संस्कृत को त्रिभाषा सूत्र के क्षेत्र से हटाना न केवल अधिकार बाह्य है, बल्कि भारतीय संविधान की अवमानना भी है, जिसमें संस्कृत को 15 भारतीय भाषाओं में से एक भाषा माना गया है।

§ग§ त्रिभाषा सूत्र के क्षेत्र से संस्कृत का बहिष्कार सरकार की उस भाषा नीति का उल्लंघन भी है, जिसके बारे में प्रधान मन्त्री ने अपने दिनांक 16-9-88 के भाषण में कहा था कि हिन्दी सहित भारत की समस्त पन्द्रहों भाषाओं को, जिसका उल्लेख संविधान में किया गया है, समान आदर तथा उन्नति के समान अवसर प्राप्त होंगे। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि ठीक उसी दिन केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष ने परिपत्र जारी करके उस भाषा नीति का खण्डन कर दिया।

§घ§ संस्कृत के इस प्रकार निष्कासन से न केवल संस्कृत की हानि हुई है, बल्कि पठन-पाठन का समय कम होने से हिन्दी का भी नुकसान हुआ है।

§ङ§ संस्कृत के हटाये जाने से संस्कृत तथा हिन्दी के बहुत से अध्यापकों का भी अतिरेक हो जाएगा और उनमें से अधिकांश बेरोजगार हो जायेंगे जैसा कि महाराष्ट्र में प्राप्त हुआ है। निकट भविष्य में हिन्दी तथा संस्कृत के नए अध्यापकों की नियुक्ति का तो प्रश्न ही नहीं उठता।

§च§ संस्कृत के बहिष्कार से उन विद्यार्थियों की संख्या पर भी [illegible] जो संस्कृत भाषा का उच्चस्तरीय अध्ययन करना चाहते हैं। परोक्ष रूप में इससे हिन्दी के ऊपर भी विपरीत प्रभाव [illegible], क्योंकि संस्कृत समस्त भारतीय भाषाओं तथा अनेक विदेशी भाषाओं की भी पोषक जननी है। इस तथ्य को पाश्चात्य शिक्षा विद्वानों ने भी स्वीकार किया है और अपने स्कूलों के पाठ्यक्रमो में उसे उचित स्थान भी दिया है।

संस्कृत के बिना हमारी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर की क्या दशा होगी? इसके सोचने मात्र से कष्ट होता है। हमारे देश की पहचान, उसकी मान्यता तथा उसकी भारतीयता पूर्ण रूप से संस्कृत पर ही आधारित है। यही हमारी देश भक्ति, हमारे देश की एकता एवं अखण्डता का प्रेरणा स्रोत है। संस्कृत भाषा का ज्ञान हमारे देश के नागरिकों के लिये अत्यावश्यक है, क्योंकि यह भाषा जितनी प्राचीन है, उतनी ही अर्वाचीन भी है। शताब्दियों तक यह अपरिवर्तनशील रही है। इसका व्याकरण सब तरह से सम्पूर्ण है। उसमें कहीं भी त्रुटि नहीं हैं। इसका वाक्य विन्यास एवं उच्चारण सर्वथा शुद्ध, सुन्दर है और साहित्य महिमा मंडित है।

उपरोक्त सन्दर्भ में प्रार्थी एक भारतीय नागरिक होने के कारण संस्कृत भाषा के त्रिभाषा सूत्र से निष्कासन के कारण बहुत दुःख अनुभव कर रहे हैं।

संस्तुति: आपसे प्रार्थना है कि देश के वृहतर हित के लिए संस्कृत को नई शिक्षा नीति में उचित स्थान दिलाकर अनुगृहीत करें। इस कृपा के लिये प्रार्थी आपका सदा आभारी रहेगा।

--आनन्दबोध सरस्वती

परिस्थिति अनुकूल न थी। अब कई देशों में विश्वविद्यालय स्तर पर योग की शिक्षा की व्यवस्था हो चुकी है। हमारे यहाँ भी अब अच्छा वातावरण बन चुका है। आर्यसमाज यदि इस कार्य को हाथ में ले तो बहुत बड़ा उपकार होगा और जब तक यह पाठ्यक्रम सरकार द्वारा लागू न किया जाय हम अपने विद्यालयों में इसे स्वतन्त्ररूप से लागू कर दें। आर्य विद्वान इस ओर ध्यान दें तो पाठ्यक्रम बनाने में सुविधा हो। हमारे पास ज्ञान है, विचार है, आदर्श है आवश्यकता है ज्ञान को व्यवहार में लाने की आदर्श को धरातल देने की। मेरी दृष्टि इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए आर्य समाज की ओर लगी है। आओ शीघ्र, दृढ़ चित्त से, अति उत्साह पूर्वक इस कार्य को पूर्ण करें। महर्षि दयानन्द के आदर्शो को स्थापित कर भारत को गुरु पद पर प्रतिष्ठित करें और **"कृण्वन्तोविश्वमार्यम्"** के स्वप्न को साकार करें।

युवक व युवती ने हिन्दू धर्म अपनाया

कैसरगंज §बहराइच§ 23 मार्च। यहाँ से 3 किलोमीटर दूर जमालुद्दीन स्थित आर्यसमाज मन्दिर में एक युवक और एक युवती ने आर्यसमाज की विधि के अनुरूप मुस्लिम धर्म का परित्याग कर हिन्दू धर्म ग्रहण कर लिया।

धर्म परिवर्तन के पश्चात युवती का नाम जैनब के बजाय प्रेम प्रभा और युवक समारोह हुआ। जिसमें विश्व हिन्दू परिषद और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कार्यकर्ता बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

जागरण से साभार

- आर्यसमाज बिलथरा रोड बलिया के भू0पू0 मंत्री डा0- हरिश्चन्द्र लाल की धर्मपत्नी श्रीमती रत्ना का निधन हो गया जिनका अन्त्येष्टि संस्कार दिनांक-15-3-89 को पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार किया गया वह समाज सेविका थीं परम प्रभु परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा शोक संतप्त परीवार को धैर्य प्रदान करें।

महात्मा हंसराज

श्री पवन कुमार, एम0ए0बी0टी0
लखनऊ ।

त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज का जन्म पंजाब प्रान्त में स्थित जनपद- होशियारपुर के ग्राम बजवाड़ा में हुआ। महात्मा- हंसराज जी का जन्म 19 अप्रैल सन्1864 को हुआ। 15नवम्बर- सन् 1938 को उनका निधन लाहौर में हुआ। इस प्रकार उनको 74 वर्ष का ऐहिक जीवन प्राप्त हुआ। उन्होंने 22वर्ष की आयु में निःशुल्क सेवा का महान व्रत लिया और 52 वर्ष उनका यह व्रत निर्बाध गति से चलता रहा। वे 25 वर्ष दयानन्द ऐंग्लोवैदिक महाविद्यालय तथा दयानन्द ऐंग्लो वैदिक विद्यालय के अवैतनिक प्रधानाध्यापक और प्राचार्य के रूप में रहे और इतना ही समय विभिन्न सार्वजनिक कार्य के रूप में कार्य करते रहे। महर्षि दयानन्द सरस्वती को अनेक श्रद्धावान भक्त और शिष्य प्राप्त हुए उनमें महात्मा हंसराज का विशिष्ट स्थान है। वे जन्मजात महापुरूष थे। उनके व्यक्तित्व में कई ऐसे अनुपम गुण पाए जाते हैं जो उनको महानपुरूष के आसन पर सुशोभित करते हैं।

अपूर्व त्याग- जिस दिव्य गुण ने महात्मा हंसराज जी को अमरता प्रदान की वह था उनका अपूर्व त्याग का गुण। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की पुण्य स्मृति में लाहौर के आर्य बन्धुओं ने एक शिक्षण संस्था की स्थापना की जिसका नाम दयानन्द ऐंग्लो वैदिक शिक्षण संस्था रखा। दैवी प्रेरणा से प्रेरित होकर उन्होंने उस शिक्षण संस्था को अपनी निःशुल्क सेवाएं अर्पित करने का निश्चय किया। महात्मा जी के बड़े भाई लाला मुल्कराज ने स्वीकृति दे दी तथा 40=00रू0 प्रतिमास देने का वचन दिया। कितना अपूर्व त्याग था। वे 26 वर्ष तक प्रतिमास सहस्रों रू0 का धनराशि प्राध्यापकों और प्रवर्तकों में विपरित करते रहे पर स्वयं रिक्त हाथ घर लौटते थे।

सन् 1911 में जब डी0ए0वी0 महाविद्यालय को स्थापित हुए 25 वर्ष व्यतीत हो गए तो महाविद्यालय की रजत जयन्ती बड़े समारोहपूर्वक मनाई गई। इसके पश्चात् उन्होंने महाविद्यालय के प्राचार्य पद से त्याग का दृढ़ निश्चय कर लिया। महाविद्यालय की प्रबन्धकर्ता सभा के प्रथम प्रधान लाला लालचन्द जी के देहावसान के पश्चात उनके स्थान पर वे प्रबन्धकर्ता सभा के प्रधान बनाए गए। उन्होंने 6 वर्ष तक प्रधान पद का निर्वाह करने के पश्चात प्रधान पद का भी त्याग कर दिया महाविद्यालय छोड़ने के पश्चात् उन्होंने आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के माध्यम से धर्म प्रचार और समाज सेवा की गतिविधियों को तीव्र किया जब सभा का कार्य सुचारू रूप से चलने लगा। तो उन्होंने सन् 1937 में सभा के प्रधान पद का भी परित्याग कर दिया। इस प्रकार वे प्रत्येक पदों पर निर्लिप्त भाव से रहे तथा स्वामित्वभाव तथा पदलोलुपता को भी उन्होंने ठुकरा दिया। यह उनका असाधारण अलौकिक त्याग था। उन्होंने जीवन भर एक पैसा कमाकर नहीं देखा, एक गज जमीन का टुकड़ा नहीं खरीदा, जीवनभर एक भी मकान नहीं बना सके। वित्तैषणा पर पूर्ण विजय प्राप्त की।

महान तपस्वी- महात्मा हंसराज का दूसरा विशिष्ट गुण उनकी महान् तपस्या थी। उन्होंने इस तपस्या का अभ्यास अपने विद्यार्थीकाल से ही होशियारपुर से बजवाड़ा को प्रतिदिन लौटते समय दोपहर की कड़ी धूप में नंगे-पावं चलकर लिया था। उन्होंने 40=00रू0 की मासिक सहायता में अपने आपको बांध लिया। उनके परिवार में वृद्धि हुई। पति-पत्नी दो लड़के तीन लड़की और माता। परिवार के 8 सदस्य और मासिक आय 40=00रू0 मात्र। इस स्वल्प राशि में निर्वाह करना तपस्या का ज्वलन्त उदाहरण था दयानन्द महाविद्यालय के प्राचार्य का निर्धन और तपस्वी जीवन। वे सादगी और सरलता की प्रतिमूर्ति थे।

सांकल्पिक दृढ़ता- महात्मा हंसराज जी ने निःशुल्क रूप से दयानन्द शिक्षण संस्था को जीवनदान, त्याग तपमय जीवन वरण करने का महान व्रत और संकल्प उन्होंने सन् 1886 में लिया था उसकी पूर्ति सन 1911 में हो चकी थी। महात्मा हंसराज करते रहे। शिक्षा पद्धति सन् 1889 से 1902 तक लगभग 13 वर्ष उनका घोर अपमान किया जाता रहा। नाना प्रकार के मिथ्या लांछन उन पर लगाए गए पर ये घोर अपमान उन्हें संकल्प से विचलित न कर सके ।

महात्मा हंसराज जी धीर और सहनशील थे सबके प्रति विशेष कर अपने विरोधियों के प्रति सद्भाव रखते थे। उनकी धीरता, सहनशीलता और साम्यावस्था अद्वितीय थी। उन्होंने सदैव दैवी विपत्तियों का स्वागत किया। वे पक्के ईश्वर विश्वासी थे। आपत्तियों में ईश्वर विश्वास की परीक्षा होती थी। जिसमें वे सफल हुए। वे स्वाभिमानी थे। 54 वर्ष तक देश धर्म और जाति की निष्काम भाव से सेवा करते हुए त्याग, तप और बलिदान का सूर्य हंसराज 15 नवम्बर 1938 को अस्त हो गया। इसी त्याग तपमय जीवन समर्पित व्यक्तित्व के जीवन अर्पण तथा निष्काम सेवा को देखते हुए आर्य जनता ने उन्हें महात्मा की पदवी से विभूषित किया" "हंस-हंस के हंसराज ने तन, मन व धन लुटा दिया" ।

स्वयं रहे जब प्रलयंकर हो

डॉ0 (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी,
प्रोफेसर कालोनी, श्यामगंज,
बरेली 243005

स्वयं रहे जब प्रलयंकर हो,
क्यों इन ज्वालाओं से डरते
सबकुछ है स्वाधीन तुम्हारे,
क्यों पग में फिर विचलन आया?
दिशा बदलने वाला ही क्यों,
भूल स्वयं को है पछताया।
जो अभिशापित दुर्बलता है,
क्यों उसके आश्रय हो बनते?

संकल्पों से सुलभ सभी कुछ,
रवि - शशि भूतल पर आजायें ।
शैल - शिखर जो पानी होकर,
पल में भूतल को हर्षायें ।
ज्योतिपुंज होकर भी व्याकुल
अन्धकार क्यों आज न हरते?

जो जीवन भर ग्रसता आया,
मीत उसे क्यों है कह पाया ।
आडम्बर की भूल-भुलइयों
कब जिसने है पन्थ दिखाया।
मीत स्वयं के हो जब अविकल,
क्यों रूपों में हो फिर रमते?

दंश किया करते जो छिपकर,
कैसी उनकी सेवा अर्चा?
जो विवेक का दीप बुझादे,
उस निष्फल की क्या हो चर्चा?
शुद्ध सरल और मुक्त समुज्ज्वल,
क्यों बगुलों के साथ विचरते।

भेदनीति का मन्त्र फेंक कर,
लाभों की इच्छायें करता
ऐसा अधमाधम हारा है,
अपयश के पृष्ठों में जुड़ता,
तुम मणिदीप, रूद्र और सागर
चल झंझा में कर क्यों मलते?

इस जग में यश ही बस जीवन,
शेष कागजी हैं नौकायें ।
पल भर में ही जो गल जातीं,
क्या बन पायेंगी आभायें।
तुम प्रशस्त पथ के राही बन,
क्यों उर्मिल प्रवाह में रूकते?

आर्यसमाज की दृष्टि में

राम का पावन चरित्र प्रेरक एवं अनुकरणीय

लेखक- डा0 शकुनचन्द आर्य
लालगंज
जि0- रायबरेली

विश्व के महापुरुषों में अयोध्या में आज से लगभग नौलाख वर्षों पूर्व जन्मे इक्ष्वाकुवंशीय नरेश राजा दशरथ के पुत्र मर्यादा पुरुषोत्तम राम का अति प्रमुख स्थान है। भारतीय संस्कृति के तो वे प्राण ही हैं। भारतीय महापुरुषों में योगिराज कृष्ण के अतिरिक्त शायद ही कोई महापुरुष हो जो कि उनकी तुलना में ठहरता हो। यही करण है कि भारतीय साहित्य एवं इतिहास के अनेक पन्ने उनके गुणगान से रंगे हुए हैं। अनेक कवियों तथा विद्वानों ने "जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरति तिन देखी तैसी" चौपाई के अनुसार उनके प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त की हैं तथा अपने काव्य ग्रन्थों की रचनाएं की हैं। उदाहरणार्थ आदि कवि महर्षि बाल्मीकि ने उन्हें अपने महाकाव्य **"रामायण"** का चरित्रनायक मानकर उसमें उन्हें पृथ्वी के सर्वश्रेष्ठ महापुरुष के रूप में वर्णित किया है। परन्तु इसके विपरीत मध्ययुगीन हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवि **संत तुलसीदास** ने उन्हें साक्षात् परमात्मा का अवतार मानकर अपने लोकप्रिय ग्रंथ **"रामचरित मानस"** में चित्रित किया है। आधुनिक हिन्दी काव्य साहित्य के प्रमुख कवि बाबू मैथिलीशरण गुप्त ने **"राम तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है, कोई कवि** बन जाये सहज संभाव्य है" पंक्तियों में उनके प्रति अपने श्रद्धासुमन समर्पित किये हैं। एक अन्य कवि रामचरित उपाध्याय ने- **"ईश्वर का अवतार वही जो तारे जग को, जो कर सके परिष्कृत वैदिक मग को, राम आपके काम सदा ऐसे होते थे, ईशू समझकर लोग सदा सु से सोते थे"** काव्यपंक्तियों में उनके प्रति अपनी मर्मस्पर्शी भावनाएं व्यक्त की हैं।

आर्यसमाज की दृष्टि में भगवान राम

परन्तु एक निराकार परमात्मा का उपासक तथा अवतारवाद को अवैदिक मानने वाला आर्यसमाज **राम** को **ईश्वर** या **परमात्मा** का अवतार न मानकर परमश्रेष्ठ महापुरुष मानता है। इस सम्बन्ध में उसके विचार बाल्मीकि के रामायण के अधिक निकट हैं। निस्सन्देह इस परिप्रेक्ष्य में उसके विचार वेदानुकूल, विज्ञानसम्मत एवं तथ्यपूर्ण हैं। जिस प्रकार कि परमात्मा सर्वव्यापक एवं निराकार होने के कारण न जन्म लेता और न उसकी मृत्यु होती है लेकिन राम ने एक प्राणी की भांति जन्म लिया और उसी की भांति अपने शरीर का त्याग किया, उन्हें साक्षात् ईश्वर का अवतार मानना अनुचित एवं अन्धविश्वास का परिचायक है। स्वयं रामायण में ऐसे प्रमाण मिलते हैं जिनसे इस बात की पुष्टि होती है कि राम एक साधारण बालक की भांति अयोध्या के सूर्यवंशीय राजकुल में उत्पन्न हुए थे। परन्तु बाद में अपने महान् एवं आदर्शपूर्ण कार्यों के कारण साधारण पुरुष से मर्यादा पुरुषोत्तम बन गये। बाल्मीकि रामायण में इस बात का उल्लेख मिलता है कि जब देवी सीता के हरण के बाद राम-लक्ष्मण खोजते खोजते सुग्रीव के राज्य में पहुँचे तो सुग्रीव ने अपने विश्वासनीय साथी हनुमान जी को उनके सम्बन्ध में पता लगाने के लिए भेजा। महान विद्वान एवं नीतिज्ञ हनुमान जी ने उनसे प्रश्न किया कि "आप लोग कौन हैं?" तब रामचन्द्र जी ने स्पष्ट उत्तर दिया था कि "हम अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र हैं।" यह इस बात का प्रमाण है कि राम ईश्वर के अवतार न होकर एक महान व्यक्ति एवं गुणों के भंडार थे। इस सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द सरस्वती का भी विचार था कि "राम एक आप्त पुरुष थे। ऐसी जीवात्मा का जन्म हजारों वर्षों के अन्तराल के बाद होता है। वे हमारे आदर्श एवं अद्वितीय पूर्वज एवं महापुरुष थे। हमें उनका सम्मान करना चाहिए तथा उनके मार्ग पर चलना चाहिए।"

उल्टी गंगा बहाई जा रही है

दुख का विषय है कि इस समय देशवासी केवल राम के चित्र एवं मूर्ति की पूजा करते हैं परन्तु उनके चरित्र को जीवन में उतारने का प्रयास नहीं करते हैं। उपरोक्त प्रवृत्ति का ही परिणाम है कि हमारे नित्यप्रति प्रातःकाल एवं सांयकाल **राम राम रटने**, मन्दिरों में उनकी मूर्ति के पूजन करने, प्रतिवर्ष रामनवमी मनाने तथा उनके पूजक एवं भक्त बनने के बावजूद हमारे देश को हजारों वर्षों तक विदेशी दासता का बोझ ढोना पड़ा।

पावन चरित्र से प्रेरणा लें एवं गुणों का अनुकरण करें

ऐसी स्थिति में आवश्यकता है कि हम राम के चित्र एवं मूर्ति की पूजा कर अपना समय न बरबाद करें अपितु उनके जीवन चरित्र का नित्यप्रति पाठकर, उनके आदर्शपूर्ण जीवन से प्रेरणा लें तथा उनके गुणों का अनुकरण कर अपना जीवन सफल, सार्थक एवं महान बनायें। हमें राम की भांति अपनी माताओं, भाईयों, पितृजनों, पत्नियों, सेवकों, मित्रों तथा आश्रितों के साथ व्यवहार करना चाहिए। "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी" आदर्श के अनुसार मातृभूमि को स्वर्ग से भी ऊँचा स्थान प्रदान करना चाहिए। जिस प्रकार उन्होंने केवट को गले लगाकर समानता के आदर्श का पालन किया था तथा वनवासी हनुमान एवं सुग्रीव तथा सात्विक प्रकृति के राक्षसराज विभीषण और अनेक वनवासियों एवं गिरिवासियों को ऊंच-नीच की भावनाओं से मुक्त रह अपना साथी बना तथा उन्हें संगठित कर उस समय के दुष्ट सम्राट रावण को पराजित कर रामराज्य की स्थापना की थी, आवश्यकता है कि हम राम के भक्त भारतवासी उनका अनुकरण कर ऊंच नीच एवं छुआछूत की भावनाओं को त्यागकर एकता के सूत्र में आबद्ध होकर देशद्रोहियों एवं भारतीय संस्कृति के शत्रुओं को करारी पराजय देकर **राम** के आदर्श के भारत का निर्माण करें। तभी हमारा **रामनवमी पर्व** मनाना तथा **रामभक्ति** सार्थक है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस (अलीगढ़) में नवीन प्रवेश आरम्भ

इस समय प्रवेश कराने से एक वर्ष बच सकता है। योग्य एवं आर्थिक दृष्टि से निर्बल कन्याओं को विशेष सुविधा। शिशु कक्षा से बी0ए0 स्तर एवं आचार्य तक की निःशुल्क शिक्षा, गुरुकुल पद्धति पर निःशुल्क छात्रावास, सबका सीधा-सादा एकसा रहन-सहन, कड़ा अनुशासन, नगर से दूर उत्तम वातावरण, सामान्य विषयों के अतिरिक्त धर्म, नैतिकता, संगीत, गृहकार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा, देशी घी, दूध जलपान सहित भोजन शुल्क 150-00 रुपये मात्र। प्रवेश प्रारम्भ। नियमावली मँगवाये।

-मुख्याधिष्ठात्री।

- सभा प्रधान पं0 इन्द्रराज जी व प्रदेशीय विद्यार्य सभा के मंत्री माधव सिंह तथा श्री जयन्त कुमार आर्य विद्वान दिनांक- 29 मार्च, 1989 को दिल्ली गये और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री जी, पं0 शिवकुमार शास्त्री जी तथा प्रोफेसर शेर सिंह जी से मिले। प्रोफेसर साहब को स्वर्गीय सत्यकेतु विद्यालंकार जी के साथ कार दुर्घटना में चोट आई थी। शास्त्री जी दिल्ली में ही भयानक रूप से घायल हुए थे। पंडित शिव कुमार जी दीर्घ काल से रोगग्रस्त चल रहे हैं। इन तीनों महानुभावों के प्रति सहानुभूति प्रगट करते हुए उनके शीघ्र स्वास्थ्यलाभ के लिये कामना व्यक्त की।

भारत कल्याण मंच की राष्ट्रीय समिति की बैठक, सम्पन्न

त्रिचुर (केरल), यहाँ पर न्यास तपोवनम् में भारत कल्याण मंच की राष्ट्रीय समिति की द्विदिवसीय वार्षिक बैठक सम्पन्न हुई। जिसकी अध्यक्षता केरल के सुप्रसिद्ध सन्त स्वामी भूमानन्द तीर्थ ने की। बैठक में उत्तर-प्रदेश, राजस्थान, केरल, दिल्ली, उड़ीसा, महाराष्ट्र आदि राज्यों से सदस्यों ने भाग लिया।

देश की वर्तमान परिस्थितियों पर पारित एक प्रस्ताव में कहा गया कि अलगाववादी एवं साम्प्रदायिक तत्वों को सख्ती से कुचला जाना चाहिये अन्यथा देश के खण्ड विखण्ड होने का डर है। एक अन्य प्रस्ताव में उत्तर प्रदेश तथा बिहार आदि राज्यों में होने वाली जातिगत हिंसा अथवा वर्ग विद्वेष की निन्दा की गई और स्थानीय नागरिकों से सामाजिक सौहार्द बनाये रखने की अपील की गई।

वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट (गाजियाबाद) का

स्थापना संकल्प समारोह



दिनांक- 27 मार्च, 1989 को प्रातः पूज्यपाद स्वामी-जीवनानन्द जी सरस्वती प्राचार्य, वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय, के आचार्यत्व में यज्ञ समारोह का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर यजमान का आसन श्री तेजपाल सिंह जी आर्य एवं श्रीमती आशा आर्या प्रचारक सभा ने गृहण किया। इसके अतिरिक्त श्री देवकी नन्दन जी, मंत्री आर्य समाज गंज स्टेशन मार्ग, मुरादाबाद एवं श्री राकेश जी आर्य, अमरोहा सपत्नीक यजमान थे। श्रीमती-ब्रह्मवती जी प्रधाना स्त्री आर्य समाज अमरोहा एवं श्रीमती चन्द्र किरण जी, मंत्री स्त्री आर्यसमाज अमरोहा यज्ञवेदी पर विराजमान थीं। पूज्य आचार्य जी ने अपनी विशेष प्रभावी पद्यति से यज्ञ समारोह को सम्पन्न कराया। इस अवसर पर मेरठ-बिजनौर गाजियाबाद, सियाना, बुलन्दशहर, रामपुर, मुरादाबाद के आर्य नर-नारियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया ।

विचार गोष्ठी

मध्यान्ह 12 बजे से श्रीयुत पं0 इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की अध्यक्षता में कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। माननीय प्रधान जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 द्वारा संचालित नवीनतम कार्यक्रमों की जानकारी सभा को देते हुए वर्तमान परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय की स्थापना के संकल्प को जन समूह के सम्मुख व्यक्त किया उपस्थित समुदाय ने कर तल ध्वनि से माननीय प्रधान जी के इस संकल्प का हार्दिक स्वागत किया और सभी प्रकार से पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। इस अवसर पर उपरलिखित विद्यालय के लिये जिन महानुभावों ने आर्थिक सहयोग की घोषणा की उनकी नामावली . निम्न प्रकार है:- 1- 2,500-00 आर्यसमाज गंज स्टेशन-मार्ग, मुरादाबाद वार्षिक, 2- 1,200-00 श्री राम फलजी-वैद्य, सिंम्भावली वार्षिक, 1,200-00 श्री ब्रह्म मुनि जी ब्रजघाट·वार्षिक 1,200-00 आर्यसमाज गढ़मुक्तेश्वर {गाजियाबाद} वार्षिक 1,000-00श्री विक्रमसिंह जी आर्य, स भल, 1,200-00चौ0·समय·सिंह-जी रामपुर, 500-00 विद्यार्थी ब्रादर्स, मण्डीबांस, मुरादाबाद, 500-00 श्री विनोद जी गर्ग, मेरठ, 500-00 डा0 कृष्ण-चड्ढा, मेरठ, 101-00 डा0 विश्व दीपक, मेरठ, 101-00श्री·ऊधोदास-जी चांदपुर, 101-00 स्त्री आर्यसमाज स्याना, 50-00 श्री·प्रदीप-कुमार जी आर्य, बहादुरगढ़, 20-00 श्री रघुवीर शरण जी, मेरठ, 11-00 श्री गोपीचन्द्र सिंहघल मेरठ, 11-00 श्री ज्योति प्रसाद-जी मेरठ, 11-00 श्री चरण सिंह जी मेरठ, 11-00 श्री·चुन्नी-लाल जी, 11-00कर्ण सिंह जी, 101-00 रुपये आर्य समाज सिम्भावली {गाजियाबाद} ।

आर्यसमाज नया नगर {गाजियाबाद} में ऋषिबोधोत्सव धूमधाम से मनाया गया। जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा ।

राष्ट्र भाषा को सम्मान दें

राष्ट्रीय एकता हेतु भाषायी एकता परमावश्यक है। बिना राष्ट्रभाषा के उत्थान के समन्वय देशोत्थान असम्भव है। देश को प्रगति पथ पर अग्रसर करने हेतु एक राष्ट्रभाषा की परमावश्यकता होती है। अंग्रेज तो चले गए किन्तु भारतीयों के मानसपटल पर अपनी भाषा, संस्कृति, सभ्यता छोड़ गए जो दिन दूनी रात चौगुनी विकसित हो रही है। हम भारतवासियों में अंग्रेजी घर कर गई है। ऐसे हजारों शब्द हैं जिन्हें हम दैनिक प्रयोग में लाते हैं और उनका हिन्दी शब्दार्थ भी नहीं जानते, यथा-- बोतल, बिस्कुट, लालटेन, रेलवे स्टेशन, प्लेटफार्म आदि। विषयगत सम्बन्ध में, प्रस्तुत पत्र के माध्यम से मैं पाठकों का भाषा सम्बन्धी विचार संकीर्णता की ओर ध्यानाकर्षण करना चाहता हूँ कि हम अंग्रेजी से द्वेष करते हैं, अंग्रेजियत से क्यों नही, यह अंग्रेजियत का चोला ही हिन्दी भाषा की अवनति का प्रमुख कारक है।

बड़ी विडम्बना है कि अंग्रेजियत हमारे मन मस्तिष्क में इतनी व्याप्त है कि एक संस्कृत शिक्षक अपने निकेत द्वार पर नाम पट्टिका अंग्रेजी में ही अंकित कराते हैं, अपने शिशु को "सरस्वती शिशु मन्दिर" जो शिशु को भारतीयत्व की शिक्षा देते हैं, को छोड़कर विदेशी एजेन्टों के अंग्रेजी माध्यम के "मान्टेसरी स्कूलों" में प्रवेश दिलाते हैं। ऐसे स्कूलों का विद्यार्थी जब प्रातः अपने माता पिता को "मम्मी-डैडी" से सम्बोधित कर "नमस्ते" के स्थान पर "गुड मार्निंग" करता है तो हमें बिलकुल शर्म नहीं आती और अपने को सुसभ्य एवं सुसंस्कृत महसूस करते हैं। क्या हमारा ऐसा बालक भारतीय संस्कार एवं सभ्यताओं से ओत-प्रोत हो सकेगा, इसमें कुछ शंका है। जब भारतीय समाज में ऐसी संस्कृति के दर्शन होते हैं तो हृदय को अति कष्ट होता है।

हम अपने दैनिक जीवन में वार्तालाप के मध्य अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग इसलिए करते हैं कि हमारी वाक् शैली कुछ आकर्षक हो, भाषा में चार चाँद लगें और समाज हमें शिक्षित समझ सकें किन्तु वास्तविक रूप में ऐसा करने से भाषा के सम्बन्ध में हम और अधिक गरीब होते जा रहे हैं। इससे यह प्रतिपादित होता है कि हमारी स्वंय की भाषा का शब्द-कोष इतना नहीं कि हमें विदेशी भाषा के शब्द उधार लेने पड़ रहे हैं। और यदि हम अपनी वार्ता में शुद्ध हिन्दी शब्दावली का ही प्रयोग करें तो निःसन्देह रूप से हिन्दी भाषा उक्त उधारी भाषा से अधिक आकर्षक, गौरवमयी, संस्कारित भाषा होगी, और भारतीय संस्कृति से ओत-प्रोत होगी ।

"देशान्तरेषु बहुविध भाषावेशादि येन न ज्ञातम् ।""

भ्रमता धरणी पृष्ठे तस्य फलं जन्मनो व्यर्थम ।।"

जो जिस भाषा के माध्यम से अधिकतम ज्ञानार्जन कर सके करना चाहिए। "अजरामरवत् प्राज्ञो विद्यामर्थं च चिन्तयेत्" की सार्थकता इसी में निहित है। अच्छाई हर भाषा के माध्यम से ग्राह्य है, बुराई सर्वथा त्याज्य है। मनुस्मृति में उल्लेख है :-

"विषादप्यमृतं ग्राह्यं, बालादपि सुभाषितम्।

अमित्रादपि सद्वृतम् मेध्यादपि काञ्चनम् ।।"

अतः अंग्रेजी या अन्य कोई भाषा सीखने में कोई बुराई नहीं है अन्य भाषाओं की अच्छाई को समझकर अपनी भाषा में अनुवाद कर प्रचार प्रसार करना अपना धर्म है। बिना अपनी भाषा की उन्नति के कोई भी उन्नति असम्भव है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने लिखा है :-

"निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञानके, मिटें नहिय को सूल ।।"

किन्तु अन्य भाषा जानने से पूर्व अपनी मातृभाषा में प्रवीण होना परमावश्यक है। अपनी भाषा में ही अपनी सभ्यता, संस्कृति परिलक्षित होती है। फल के द्वारा ही वृक्ष का अभिज्ञान होता है।

अतः निष्कर्ष रूप में यही कहना है कि हिन्दी को राष्ट्रव्यापी बनाने के लिए उसकी उपेक्षा न करें। भले ही "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना से अंग्रेजी पढ़ लें किन्तु ऐसी "अंग्रेजियत" को मनमस्तिष्क में कदापि धारण न करें। जब हम ऐसी पाश्चात्य अंग्रेजियत के चोले को चौराहे पर जला देंगें तो उसी क्षण हिन्दी देश में राष्ट्रभाषा के रूप में जगमगा उठेगी।

दिनेश कुमार आर्य, उपमन्त्री
आस0 नदरई गेट, कासगंज।

कृण्वन्तोविश्वमार्य्यम्

धर्मपरिवर्तन के सम्बन्ध में आप क्या जानते हैं ?

1- सन् 1313 ई० तक काश्मीर राज्य की सम्पूर्ण जनता आर्य §हिन्दू§ थी। लेकिन सभी शाहनेर नामक मुसलमान काश्मीर आया और उसके प्रयासों तथा आर्य §हिन्दू§ पंडितों के स्वार्थ, अन्धविश्वास-वड़वादिता एवं अदूर दर्शिता से आज काश्मीर की प्रायः सम्पूर्ण जनता मुसलमान है। वहां बसे मात्र-75000 आर्यो §हिन्दुओं§ को भी योजनाबद्ध ढंग से समाप्त किया जा रहा है।

2- भारतवर्ष में लगभग 850 वर्षो के मुस्लिम शासनकाल में मुसलमानों की संख्या खूब बड़ी थी, लेकिन फिर भी देश की आजादी के समय सन् 1947 तक मुसलमानों की संख्या 9 करोड़ ही थी। इनमें से देश के विभाजन के समय सन 1947 में लगभग 7 करोड़ मुसलमान पूर्वी तथा पश्चिमी पाकिस्तान में रह गये थे और शेष 2 करोड़ मुसलमान भारत में बसे हुए थे। लेकिन आश्चर्य है कि भारत में आजादी के मात्र 40 वर्षो में मुसलमानों की जनसंख्या मुस्लिम शासन की जनसंख्या को लाघंकर 2 करोड़ से बढ़कर 14 करोड़ हो गई है।

3- भारतवर्ष में अंग्रेजों §ईसाइयों§ के लगभग 125वर्षो के शासनकाल में सन 1947 तक ईसाइयों की जनसंख्या मात्र 70 लाख थी, जो 39 वर्षो के अल्प समय में 2 करोड़ 70 लाख हो चुकी है। यही नहीं बल्कि निकट भविष्य में 10 करोड़ आर्यो §हिन्दुओं - वनवासी, गिरवासी हरिजन व पिछड़ी जाति के लोग§ का धर्म परिवर्तन कराकर उन्हें ईसाई बनाने का लक्ष्य ईसाई मिशनरियों का है।

4- आर्यों §हिन्दुओं§ का धर्म परिवर्तन कराने के लिए सम्पूर्ण भारत को 107 धर्म प्रान्तों में बांटा गया है। वर्ष 1980 के आंकड़ों के अनुसार 76 ईसाई राष्ट्रों के 3762 पादरी तथा 36 विदेशी मुसलमान प्रचारक आर्यो§हिन्दुओं§ के धर्म परिवर्तन के कार्य में जुटे हुए हैं।

5- भारत में ईसाई मिक्षुणियों की संख्या 56,000है जो प्रतिवर्ष 2000 बढ़ जाती है।

6- सन् 1981 में भारत में 200 ईसाई केन्द्र थे, जो प्रतिदिन 6 नई ईसाई मिशनरियां तैयार कर रहे थे। अब भारत में प्रत्येक 15 दिन बाद एक ईसाई संस्थान जन्म ले रहे हैं।

7- भारतवर्ष का लगभग 50,000 वर्गमील क्षेत्र विदेशी पादरियों के प्रभाव क्षेत्र में है तथा आदिशंकराचार्य की जन्म स्थली "कालडी" भी ईसाई बहुल क्षेत्र बन चुकी है।

8- भारत के पूर्वी राज्य अरूणाचल प्रदेश, नागालैंड, मिजोरम व मेघालय" ईसाई बहुल राज्य बन चुके हैं तथा इन राज्यों की राज्य भाषा अंग्रेजी व मुख्य धर्म- ईसाई घोषित हो चुका है। यही नहीं बल्कि इन राज्यों में भारतीय सेना को विदेशी सेना कह कर हमले भी किये जाते हैं।

9- जो ईसाई राष्ट्र भारत को विकास के लिए ऋण देने के लिए तैयार नहीं हैं, वही राष्ट्र भारत में धर्म परिवर्तन के कार्यो में जुटी ईसाई मिशनरियों को बेशुमार धन भेज रहे हैं। अकेले बागपत में स्थापित होने वाली ईसाई मिशनरी पर अनुमानतः 50 लाख रूपया व्यय होगा।

10- विदेशी मिशनरियां स्कूल, कालिजों, चिकित्सालयों व अन्य सेवा कार्यों का आवरण ढांप कर आर्यो §हिन्दुओं§ की मानसिकता प्रभावित करके या उन्हें बहका कर या धन का लालच देकर उनका धर्म परिवर्तन कराते हैं। बाघू सन्तोषपुर व ललियाना आदि गाँवों में कराया गया धर्म परिवर्तन इसका स्पष्ट प्रमाण है

11- संयुक्त राष्ट्रसंघ की एक रिपोर्ट के अनुसार सन्-2000 तक §अब से मात्र 14 वर्ष बाद§ भारत की जनसंख्या 90 करोड़ हो जायेगी। जिसमें 40 करोड़ आर्य §हिन्दू§ तथा 50 करोड़ ईसाई व मुसलमान होंगे। आर्य§हिन्दू§ बहुसंख्यक भारत में आर्यो §हिन्दुओं§ की दशा क्या है, यह सभी जानते हैं। जरा सोचिये कि जब भारतवर्ष में आर्य §हिन्दू§ अल्प संख्यक होगा तो क्या उनके साथ वही व्यवहार नहीं होगा जो बंगलादेश व पाकिस्तान में तथा स्वयं भारत के कुछ राज्यों में हो रहा है।

12- भारत सरकार कटमुल्लाओं व पादरियों की कठपुतली है जो स्वयं भी आर्यो §हिन्दुओं§ को समाप्त करने में उनका सहयोग कर रही है। वह समय दूर नहीं है, जब पुनः हकीकत राय कत्ल होंगे, गुरू गोविन्दसिंह के पुत्र दिवारों में चुने जायेंगे, आर्यों §हिन्दुओं§ के चोटी व जनेऊ काटे जायेंगें, वेदों- उपनिषदों शास्त्रों - गीता - महाभारत व रामायण आदि §हिन्दु§ धर्म[illegible] ग्रन्थों को जला दिया जायेगा।

13- क्या आपको [illegible] है कि भारत भूमि की धार्मिक आधार [illegible] कर उसको आपस में बांट लेने का कुचक्र, ई[illegible] मु[illegible]मानों तथा सिखों द्वारा किया जा रहा है।

14- आर्य §हिन्दु§ समाज में व्याप्त जातिवाद, अस्पृश्यता तथा अंधविश्वास को वास्तविक वैदिक धर्म §हिन्दु धर्म§ का रूप बताकर सवर्ण तथा छोटी जातियों के बीच घृणा के बीज बोकर और छोटी जातियों में कृत्रिम असुरक्षा की भावना उत्पन्न करके उन्हें सुरक्षा, आर्थिक सहायता, मुफ्त शिक्षा तथा चिकित्सा का लालच देकर उनका धर्मपरिवर्तन किया जा रहा है।

15- क्या आप जानते है कि अरूणांचल प्रदेश में जहाँ की आबादी केवल पांच लाख है, में प्रतिवर्ष 8 हजार व्यक्तियों का धर्म परिवर्तन किया जाता है।

16- क्या आप जानते हैं सभी उत्तर पूर्वी भारत के विद्रोही नेता तथा छापामार ईसाई मिशनों में शिक्षित हैं तथा इन सभी को आर्थिक तथा नैतिक समर्थन इन्हीं मिशनों से प्राप्त होता है।

17- क्या आप जानते हैं कि बेकार, निराश और उपेक्षित युवकों को शादी, शिक्षा आवास और नौकरी का लालच देकर ईसाई बनाया जाता है तथा उनसे हर प्रकार का राष्ट्र धर्म तथा संस्कृति विरोधी कार्य कराया जाता है।

18- क्या आप जानते हैं कि जिन पादरियों को देश छोड़ने का आदेश दिया गया था। उनको श्री राजीव गाँधी के प्रभाव से पुनः भारत में रहने की अनुमति दी गई है।

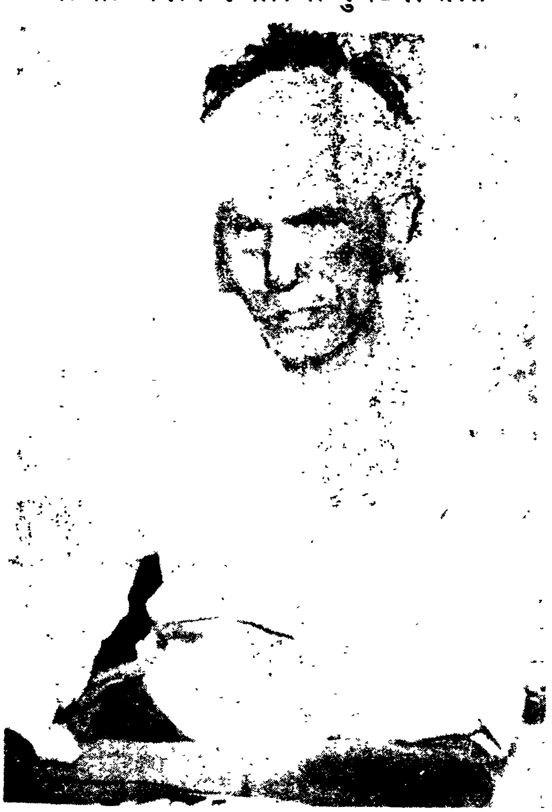
19- क्या आप जानते हैं कि पादरियों द्वारा हृदयवेश धारण कर हिन्दु सन्यासियों के रूप में हिन्दु जनता को भ्रमित कर उनको धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।

20- क्या आप जानते हैं कि विहार से निष्कासित पादरी §फादर नरेन्द्र§ नरेन्द्र स्वामी के नाम से हिन्दु सन्यासी के रूप में लोगों को धोखा देकर तथा छल कपट के द्वारा धर्मपरिवर्तन कराने का कार्य करता है तथा यह फादर §पादरी§ जनेऊ §उपनयन-संस्कार§ भी धारण करता है।

-निवेदक,
जयन्त कुमार
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश,लखनऊ।

आर्यसमाज जौनपुर का 89वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 13से 16 अप्रैल 1989 तक मनाया जायेगा जिसमें श्री उत्तमचन्द जी शरर, पं० महेन्द्र पाल जी भू०पू० इमाम मेरठ, श्री पं०-सत्यमित्र जी शास्त्री, महिपाल सिंह जी भजनोपदेशक पधार रहे हैं।

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री दुर्घटना ग्रस्त



- सार्वदेशिक सभामंत्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री दुर्घटनाग्रस्त उनके सिर हाथ और टांग में काफी चोट आयी। उल्लेखनीय है श्री शास्त्री जी को 10 मार्च को रात्रि 1-30 बजे एक कार ने टक्कर मारी। वे रिक्शे से दूर जा गिरे। उनका सारा शरीर खून से भीगा हुआ था। वे आजकल जय प्रकाश नारायण अस्पताल से उपचार करा रहे हैं। इस समय सभा भवन में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

संस्कृत का सम्मान यथावत रहेगा सर्वोच्च न्यायालय का स्थगन आदेश

भारत सरकार की नई शिक्षा नीति में संस्कृत का जो बहिष्कार किया गया था उससे भारत का जन मानस आन्दोलित हो उठा था। सर्वत्र एक प्रकार की स्तब्धता सी छा गई थी। अनेक स्थानों, पर, अनेक प्रकार से, अनेक लोगों द्वारा इस विषय में कुछ कर गुजरने के लिये आन्दोलन आरम्भ किये गए किन्तु कहीं से भी आशाजनक परिणाम निकलने की सम्भावना दृष्टिगोचर नहीं हुई।

क्योंकि संस्कृत न केवल सर्वगुण सम्पन्न भाषा है अपितु वह भारत की सांस्कृतिक धरोहर की संरक्षिका है। संस्कृत के बिना हमारी संस्कृति जीवित नहीं रह सकती, हमारे वेदादि सद्ग्रन्थों का पठन-पाठन संस्कृत के ज्ञान के बिना नितान्त असम्भव है और फिर शनैः शनैः आर्यों का अस्तित्व भी संकट में पड़ता जायेगा। ऐसी स्थिति में हम किंकर्तव्य विमूढ़ से हो रहे थे कि हमारे सुयोग्य नेता स्वा0 आनन्दबोध सरस्वती तथा विधिवेत्ता प्रो0 वेद व्यास जी एवं श्री डॉ लक्ष्मी मल सिंघवी जैसे विद्वानों के परामर्श से प्रथम अप्रैल 1989 से ही संस्कृत बहिष्कार परक नई शिक्षा नीति लागू न करने सम्बन्धी एक याचिका द्वारा सर्वोच्च न्यायालय से स्थगनादेश की प्रार्थना की गई।

यह भारतवासियों, विशेषतया आर्यों, का परम सौभाग्य है कि पीठासीन न्यायमूर्ति ने अस्थायी स्थगनादेश की घोषणा कर दी है।

संस्कृत भाषा को त्रिभाषा सूत्र में दिलाने के प्रयत्न में प्रथम पग के रूप में प्राप्त इस सफलता के लिये हमारे आर्य बन्धु बधाई के पात्र हैं। -मनमोहन तिवारी, सभामंत्री।

बाल जगत

बच्चों वैदिक वाटिका की सैर कीजिए

(श्री लक्ष्मी नारायण शास्त्री,
साहित्यरत्न आर्यसमाज
लोकहवा - गोण्डा)

ओ राष्ट्र मन्दिर के कुसुम बच्चों। तुम इधर-उधर सत्य पथ से विचलित होकर अपने कोमल जीवन को क्यों नष्ट कर रहे हो? क्यों नहीं वैदिक वाटिका में आकर ज्ञान सुरभि को हृदयंगम करते? तुम अभी सुकोमल हो अतः जिस प्रकार चाहो अपने जीवन को बना सकते हो। बच्चों। वैदिक वाटिका में नाना प्रकार के फूल खिले हुए हैं उनमें से किसी एक पुष्प का अवलोकन एवं चिन्तन कर राष्ट्र मन्दिर की पावनता बनाने में अपना योगदान दीजिये। बच्चों। राष्ट्र मन्दिर की सुरक्षा का भार भविष्य में तुम्हारे ही ऊपर निर्भर है अतः वेद की पुनीत शिक्षाओं को ग्रहण करने हेतु आर्यसमाज मन्दिर में आओ। बच्चों सत्य पथ पर सदैव बढ़ते जाना। कोई भी कार्य करना तो सोच समझ कर करना शीघ्रता में कार्य सफल नहीं हो सकेगा। अपनी बुद्धि को सदैव परिमार्जित करते रहना। वैदिक संस्कृति की पुनीत शिक्षाओं को अपने मानस में संजो कर भारत माता की रक्षा जीवन प्रर्यन्त करते रहना। मैं भारत माता की गोदी में बैठकर कुछ वैदिक लोरियाँ आपको सुनाऊँगा। एक वैदिक लोरी का रसा स्वादन कीजिऐ

"अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्य दातये।
निहोता सत्सि बर्हिषि ।।1।। सामवेद ।।

हे जगत अग्रणी अर्थात सर्वश्रेष्ठ नेता। भविष्य में राष्ट्र के अग्रणी नेता, आइये इन कोमल बच्चों के हृदय में, इन बच्चों के जीवन में प्रत्येक उन्नति देने के लिए, हमारे सब कर्मों में व्याप्त हो जाने के लिये हमें नया आध्यात्मिक जन्म देने के लिये, हममें क्रान्ति पैदा करने के लिये, दुर्गुणों को परास्त करने के लिये आप गुरुवत उपदेश करते हो। हे प्रभु। आप अनादि गुरू हो। प्रभु। आप मेरे इन सुकोमल बच्चों के हृदयासन पर बैठ कर इनके जीवन को पावन बनाइये प्रभु। ये ही राष्ट्र के भविष्य निर्माता होंगे। बच्चों। अपने जीवन को सुखद बनाने हेतु पवित्र आर्य उद्यान में निशिदिन भ्रमण कीजिये और यहां के सद्गुणों के सौरभ को ग्रहण कीजिये। इसी में बच्चों तुम्हारे जीवन की सार्थकता है।

आर्य समाज सांवली आदि पंचपुरी गढ़वाल द्वारा वैदिक विधि से जन्मदिवस सम्पन्न

श्री चन्दनलाल जी अध्यापक ग्राम- चुरगढ़ तल्ली पट्टी बिजनौर, पौड़ी गढ़वाल ने अपने पुत्र का प्रथम जन्म दिवस आ0 स0 पंचपुरी के पुरोहित तथा कार्यकर्ताओं द्वारा दिनांक-5·3·89 को अपने निवास स्थान पर वैदिक विधि के अनुसार वृहद यज्ञ हवन के द्वारा सम्पन्न हुआ। काफी जन समूह बच्चे के जन्म दिवस पर उपस्थित था। अपने पुत्र के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर श्री चन्दनलाल जी अध्यापक ने 101/- एक सौ-एक रूपये का सात्विक धन आ0स0 पंचपुरी को दिया।

आर्यसमाज बदायूँ में महर्षिदयानन्द जन्मोत्सव, सीताष्टमी, ऋषिबोधोत्सव हर्ष एवं उल्लास के साथ तथा होली मिलन समारोह रामलीला मैदान बदायूँ में आयोजित किया गया।

- आर्यसमाज फतेहपुर विश्नोई (मुरादाबाद) का वार्षिकोत्सव 16, 17, 18 मार्च 1989 को ससमारोह मनाया गया जिसमें श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य अधिष्ठाता उपदेश विभाग सभा ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन के बारे में लोगों को बताया। जिसमें स्थानीय जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

卐 ओ३म् 卐

धर्मो रक्षति रक्षितः

आर्यसमाज के नियम

(१) सब सत्यविद्या और जो पदार्थ-विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

(२) ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय नित्य पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

(३) वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना, सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(४) सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

(५) सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये।

(६) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

(७) सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य बर्तना चाहिए।

(८) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

(९) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

(१०) सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त

संसमिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इडस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर॥

ऋ० १०।१९१।१

भावार्थ :—हे प्रकाशस्वरूपस्वामिन्! हमारे हृदय में प्रकाश कीजिये कि हम सब एक दूसरे से मिलकर रहें। हमारे परस्पर के मेल मिलाप से हमारे घर धन-धान्य से भरपूर हों।

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवाभागं यथापूर्वे संजानाना उपासते॥

ऋ० १०।१९१।२

भावार्थ :—हम सबको अपना सफल जीवन बनाने के लिए समानभाव से चलते हुए, समान रूप से बोलते हुए तथा समान मन होकर जीवन यात्रा करनी चाहिए।

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि॥

ऋ० १०।१९१।३

भावार्थ—हमारी सभायें, हमारे मन, हमारे चित्त, हमारे विचार, हमारी काम करने की शैली एक जैसी अविरुद्ध हों।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति॥

ऋ० १०।१९१।४

भावार्थ-परमपिता परमेश्वर आज्ञा देते हैं कि हमारे सब शुभ सङ्कल्प एक जैसे हों हमारे हृदय और मन अविरुद्ध हों जिससे हम एक दूसरे की यथा समय सहायता कर सकें।

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिर्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

प्रकाशक— मनमोहन तिवारी
मन्त्री—आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आवश्यक सूचना

समस्त विद्यालयों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य/अध्यापकों को सूचित किया जाता है कि माननीय उच्च न्यायालय के आदेशानुसार अब विद्यालयों में श्रम विभाग का हस्तक्षेप न होगा। इच्छुक व्यक्ति न्यायालय के आदेश की प्रति 5/-रु0 भेज कर प्रधान कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ से प्राप्त कर सकते हैं।

सभा मंत्री।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार) का 82वाँ वार्षिक महोत्सव गत वर्षों की भांति इस वर्ष 11 अप्रैल से 13 अप्रैल 1989 को कुलभूमि में बड़ी धूम-धाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वेद, आयुर्वेद, आर्य, शिक्षा एवं कवि सम्मेलनों का आयोजन होगा। समारोह का मुख्य आकर्षण दीक्षान्त समारोह रहेगा।

अतः आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि आप अपने इष्ट-मित्रों एवं परिवार सहित अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्मलाभ उठावें।

डॉ0 गौरीशंकर आचार्य	डॉ0 प्यारेलाल
एम0ए0,पी-एच0डी0	मन्त्री-सभा
प्रधान-सभा।	एम0ए0,पी0-एच0डी0
डॉ0 हरिगोपाल शास्त्री	-विजेन्द्र सिंह चौहान
एम0ए0,पी-एच0 डी0 प्राचार्य	सहायक मुख्याधिष्ठाता

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ द्वारा पंचम गोष्ठी का आयोजन

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ के तत्वावधान में आगामी 8 व 9 मई 1989 को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में वेद-मानव जीवन के शाश्वत प्रेरणा स्रोत विषय पर एक उच्चस्तरीय विचार गोष्ठी (सेमीनार) का आयोजन किया जा रहा है। जो महानुभाव इस वेद गोष्ठी में अपना शोध पत्र प्रस्तुत करना चाहते हों, निम्नलिखित पतों पर सम्पर्क करने का कष्ट करें।

1 डा0 आनन्द प्रकाश
मंत्री, संयोजन समिति
एल/29 हैदराबाद कालोनी
का0हि0वि0वि0,
वाराणसी- 221005
फोन-64868,62122,54584

2- श्री के0एल0 भाटिया, एडवोकेट, संगठन-सचिव, अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द-वेदपीठ, 8 रंजीत पैलेश, काली-बाड़ी मार्ग, बिड़लामन्दिर के पास,नई-दिल्ली-110001

(डा0 आनन्द प्रकाश)
मंत्री, संयोजन समिति

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला सर्वाङ्गीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

xxxxxx

आर्य मित्र साप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
चैत्र शुक्ल 11
16 अप्रेल रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मि
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

- आर्यसमाज पीपली नायक (रामपुर) का 69वाँ वार्षिकोत्सव होली के पावन पर्व पर दिनांक- 21 से 23 मार्च 1989 तक ससमारोह मनाया गया। इस अवसर पर श्री0 कड़क देव आर्योपदेशक द्वारा 35 व्यक्तियों के यज्ञोपवीत संस्कार कराये गये।

- वैदिक वृद्ध संन्यास आश्रम यमुनानगर हरियाणा में द्वितीय विशाल वेद प्रचार समारोह अशोक नगर में दिनांक 19 से 21 मई 1989 तक 108 यज्ञ कुण्डों पर यज्ञ किया जायेगा। यजमान 30 अप्रैल तक अपना नाम भेजें ताकि यज्ञ कुण्ड का नम्बर दिया जा सके। इसमें अनेक विद्वान संन्यासी पधारेंगे।

—स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में पौमयर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि सं0 2241/57

दयानन्दाब्द 165, वैशाख कृष्ण 2 रविवार, संवत 2046 वि0, दिनांक 23 अप्रैल 1989

घोषणा पत्र सं0 7/28-2-85



यज्ञो भुवनस्य राजा
—अथर्ववेद 3/36/4

अनन्तकोटि ब्रह्माण्ड का वह एक ही नायक है, अधिपति है क्योंकि सर्वत्र सृष्टि में उसकी रचना और उसके नियम एक ही जैसे हैं ।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम0 ए0

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक, एम0ए0,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु0 251/-
वार्षिक	रु0 30/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष 92

अंक 16

अनोखे इन्सान का अनोखा स्मारक

आर्य समाज

जहाँ न कोई गद्दी है न कोई गुरु परम्परा, न कोई समाधि है, न कोई प्राणप्रतिष्ठा, जो सबका है और जिसके द्वार सबके लिए खुले हुए हैं। कोई दीवार नहीं कोई दरवाजा नहीं, उन्मुक्त आकाश की तरह अनन्त और शाश्वत -- जहाँ हर दीप जल रहा है, आने वाला हर दीप जलाया जा रहा है --

एक दीप दूसरा जलाए,
ऐसे अगणित होवें ।
एक एक कर जागे मानव,
आर्य बने जग सारा ।।

इसलिए यह कहना कि 100 वर्ष से अधिक हुए इसी अप्रैल मास में ऋषिवर्य ने आर्यसमाज की स्थापना की थी- ऐतिहासिक दृष्टि से तो सही है, परन्तु वेदमाता के शब्दों में हम देखें तो- "अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः" युग युगों से चला आ रहा यह हमारा पावन यज्ञ है, संसार की पवित्र आस्थाओं का केन्द्र। "श्रृण्वन्तु विश्वे देवाः अमृतस्य पुत्राः वयम्" दुनियाँ के लोगों सुनो हम आर्य ईश्वर के अमृतपुत्र हैं, हमें उसने एक कार्य सौंपा है--- "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" विश्व को आर्य बनाते रहना, आर्य बनाते रहना - सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर सृष्टि के अन्त तक। और हर युग में हम आर्यों का समाज रहा है। त्रेता में राम आर्य थे ----------

सर्वदाभिगतः सद्भिः समुद्र इव सिन्धुभिः ।
आर्यः सर्वसमश्चैव सदैव प्रियदर्शनः ।।

राम आर्य थे, प्रियदर्शी थे, आर्यो का समागम उनके यहाँ सदा बना रहता था, वे आर्यपुत्र कहे जाते थे। सतयुग में **राजा हरिश्चन्द्र** आर्य थे द्वापर में **कृष्ण** आर्य थे। सूर्य की पहिली किरण और पृथ्वी की प्रथम गति के साथ ही हमने अपने जीवन का प्रारम्भ किया था और हमारे संगठन का नाम था आर्यसमाज जिसकी यात्रा सृष्टि के अन्त तक चलती ही रहेगी। हर युग में हम अवरोधों से जूझते आये हैं और विजय ने हमें सदा वरण किया है, क्योंकि "अहमिन्द्रो न पराजिग्ये" पराजय आर्यो के शब्दकोष में है ही नहीं। हम इन्द्र हैं- अपराजेय, हम शक्ति के पुंज हैं- अभेद्य, हम करुणा के सागर हैं- अथाह, हम इस संगठन के घटक हैं -- अविभाज्य ।

हमारा आर्यसमाज बुद्धिजीवियों का समाज है। हमने परमपिता की उस अमरवाणी को अपने जीवन दर्शन का आधार बनाया है जिसकी हर कृति बुद्धिपूर्वक है-- "बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे"। ऋषिवर्य ने आज के दिन आर्यसमाज की स्थापना करके हमारे उस अतीत को जगा दिया है। विरासत में वह हमें बहुत कुछ दे गया जो अनमोल है इसलिए आज के दिन राष्ट्रकवि के इस उद्घोष का हम स्मरण करते हैं---

"उच्चरित होती चले वेद की वाणी -
गूंजे गिरि - कानन सिन्धुपार कल्याणी ।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगें अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी।।
-राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- वैशाख कृष्ण 2 संवत् 2046 वि0, 23 अप्रैल 1989
दयानन्दाब्द 165, सृष्टि संवत् 1972949090

भारत भयंकर खतरे की चपेट में

किसी कवि ने कहा था-

सोए मल्लाह तो नैयया को पार कौन करे ।
जब सुधारक का पतन हो तो सुधार कौन करे।

पिछले दिनों तामिलनाडु, नागालैण्ड और मिजोरम में चुनाव हुए। इन चुनावों में जो बातें सामने आई हैं वे बड़ी भयावह हैं। यदि भारतवासी जागरूक न हुए तो भारत की स्वतन्त्रता पुनः खतरे में पड़ जाएगी ।

संविधान की उद्देशिका में भारत को प्रभुता सम्पन्न, प्रजातन्त्रात्मक गणराज्य घोषित किया गया था। परन्तु 1976ई0 के संशोधन द्वारा उद्देशिका में "प्रजातन्त्रात्मक" से पूर्व दो विशेषण और प्रविष्ट कर दिए गए- 'समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष"। धर्मनिरपेक्षिता का अर्थ है सर्वधर्म समभाव!

परन्तु इन चुनावों में धर्मनिरपेक्षता की बड़ी दुर्दशा हुई वह भी शासक दल के द्वारा जो कि भयंकर खतरे का सूचक है।

तामिलनाडु विधान सभा के निर्वाचन को जीतने के लिए कांग्रेस "आई" ने जो रणनीति बनाई वह बड़ी भयावह है। यह कहते हुए बड़ा कष्ट होता है कि धर्म निरपेक्षता का उद्घोष करने वाली कांग्रेस आई ने तामिलनाडु में चुनाव जीतने के लिए कट्टर साम्प्रदायिक मुस्लिम लीग, ईसाई प्रजातन्त्र पार्टी और अम्बेदकर मूव मेण्ट से सांठ-गांठ की परन्तु इस से भी अधिक कष्ट की बात है कि ऐसा सिद्धान्त हीन कार्य करने पर भी असफलता का मुख देखना पड़ा और कांग्रेस आई तामिलनाडू में हार गई।

मिजोरम विधान सभा में तो और भी बुरी दशा है। वहां पर कांग्रेस आई की ओर से चुनाव के लिए जो घोषणा पत्र जारी किया गया वह तो बहुत ही भयानक खतरे का परिचायक है। घोषणा पत्र के कुछ अंश नीचे उद्धृत किए जा रहे हैं:-

§1§ कांग्रेस आई वचन बद्ध है कि मिजोरम में ऐसी सरकार की स्थापना करे जो ईसाई धर्म के अनुसार शासन चलाए।

§2§ ईसाई होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि बाईबिल §अंजील§ में दिखाए हुए मार्ग का प्रचार और प्रसार करें।

§3§ अंजील का ईश्वर गरीबों का ईश्वर है, जो उन्हें शोषण से बचाता है।

§4§ कांग्रेस का समाजवाद, बाईबिल की शिक्षा-दीक्षा और मिजो संस्कृति पर आधारित है जिसके द्वारा ही मानव जाति को न्याय मिल सकता है।

§5§ कांग्रेस मिजोरम से विदेशियों को निष्कासित करेगी। स्मरण रहे §समस्त भारतवासी मिजो की दृष्टि में विदेशी घोषित कर दिए गए हैं§

§6§ कांग्रेस मद्यपान का निषेध चर्च की सहायता और अनुकम्पा से करायगी ।

§7§ जो भी मिजो वासी रोम या जरूसलम की तीर्थ यात्रा करना चाहता है, उसकी कांग्रेस यथाशक्ति सहायता करेगी और आर्थिक अनुदान देगी।

§8§ ईसाई धर्म और मिजो-संस्कृति के अनुकूल पाठ्यक्रम बनाए जायेंगे ।

इन बातों को पढ़ने के पश्चात् हर राष्ट्रवादी व्यक्ति का माथा ठनकेगा कि गद्दी और कुर्सी प्राप्त करने के लिए किस प्रकार संविधान की अवहेलना करते हुए धर्म-निरपेक्षता एवं समाजवाद का गला घोटा जा रहा है वह भी केन्द्र के शासक दल द्वारा।

एक तरफ पाठ्यक्रम से संस्कृत का लोप। दूसरी तरफ इस प्रकार संविधान विरोधी घोषणाएं शासक दल में प्रविष्ट लोगों द्वारा अन्दर-अन्दर किए जा रहे भयंकर षड्यन्त्रों की ओर इंगित कर रहे हैं। हर राष्ट्र वादी का कर्तव्य है कि वह आँखें खोलकर देखे कि ये षड्यन्त्रकारी लोग कौन हैं। यह सब कुछ खुले आम किया गया है। ऐसा नहीं हो सकता कि इन सिद्धान्त हीन और षड्यन्त्रकारी बातों का केन्द्र को पता न हो । यदि यह सब जान बूझ कर किया जा रहा है तो इस भयंकरतम स्थिति से हमें कौन बचा सकता है और इस से कैसे बचा जा सकता है?

आर्यसमाज एक राष्ट्रवादी संस्था है। कोई और बोले या न बोले परन्तु आर्यसमाज बराबर जनता रूपी मल्लाह को जगाने का प्रयास करता रहेगा ताकि भारत की स्वतन्त्रता रूपी नाव इस भयंकर झंझावात में पार हो सके।

कांग्रेस आई के घोषणा पत्र की सत्यता में कोई शंका नहीं करनी चाहिए क्योंकि नवनिर्वाचित मिजोरम के मुख्य मंत्री श्री लाल थान हावला ने इण्डियन टुडे को एक साक्षात्कार में स्पष्ट बताया कि लालडेंगा जो कि केन्द्रीय सरकार की सैनिक कार्यवाही के सामने नहीं झुका, वह निर्वाचन में केवल इस लिए हार गया क्यों कि उसने चर्च की आलोचना की थी।

अब हम ऐसे नाजुक मोड़पर खड़े हैं कि विदेशी शक्तियां तो भारत की स्वतन्त्रता को ही मिटा देना चाहती हैं। इस देश में विरोधी दलों की भूमिका सन्तोष जनक नहीं है। शासक दल की यदि यह अवस्था वास्तविक रूप से है तो जनता को जागरूक होकर देश की स्वतन्त्रता की रक्षा करनी होगी चाहे इस के लिए कितना ही त्याग और बलिदान क्यों न करना पड़े।

- इन्द्रराज

अन्तरंग सभा की सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के समस्त पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्यों को सूचित किया जाता है कि सभा की अन्तरंग सभा का साधारण अधिवेशन दिनांक- 23 अप्रैल 1989 रविवार को प्रातः 11 बजे नारायण स्वामी भवन, 5-मीराबाई-मार्ग, लखनऊ में होना निश्चय हुआ है।

कृपया नियत तिथि और समय पर पधार कर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान करें ।

मनमोहन तिवारी,
मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ।

आवश्यक सूचना

सभी आर्य विद्यालयों के प्रधानाचार्यों तथा प्रधानाचार्याओं को सूचित किया जाता है कि श्री जयन्त कुमार आर्य को आर्य विद्यालयों के निरीक्षण करने एवं वहां के विद्यार्थियों तथा अध्यापक/अध्यापिकाओं को उद्बोधन करने का अधिकार प्रसन्नता पूर्वक दिया जाता है। सभी प्रधानाचार्यों एवं प्रधानाचार्याओं से अनुरोध किया जाता है कि वे श्री जयन्तकुमार जी को हर प्रकार का सहयोग प्रदान करें।

माधव सिंह
मंत्री, प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ0प्र0,

निर्भीक वक्ता पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

श्री सोहन लाल शारदा,
शाहपुरा भीलवाड़ा (राजस्थान)

"महर्षि के महत्व का लोगों को दो सौ वर्ष बाद बोध होगा जब विद्वान् पक्षपात छोड़ कर उनके ग्रन्थों पर विचार करेंगे। अभी तक लोगों की यह स्थिति नहीं है कि उस महान योगी की बातों को समझ सके।" ये शब्द कहे थे पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम०ए० ने आज से एक शताब्दी पूर्व अमृतसर की एक सभा में जो वहां के वार्षिक उत्सव पर हो रही थी, पर कहे थे। ये शब्द इस लिये कहे गये थे कि उन्होंने महर्षि के अन्तिम दृश्य को ध्यानावस्थित होकर सोचा समझा और एक वर्ष पर्यन्त अपनी परीक्षा उत्तीर्ण कर तन-मन-धन से महर्षि मिशन को पूरा करने उनकी स्मृति में उनके ही मन्तव्यानुसार डी०ए०वी०-कालेज की स्थापना एवं कार्यकर्त्ताओं उपदेशकों के निर्माण के लिए सन् 1885 से 1889 तक पूरे पांच वर्षों तक भगीरथ प्रयास किया।

इस समय में हम उन्हें प्रत्येक पंजाब प्रान्त के आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सवों में जाते भाषण करते महर्षि स्मारक के लिये प्रार्थना करते देखते हैं उनकी वाणी में ऐसा ओज था कि सभास्थल पर ही हजारों रुपये प्राप्त हो जाते। जब अच्छी राशि इकट्ठी हो गई तब सभी सदस्यों ने मिलकर स्मारक निर्मित विद्यालयों में पाठ्यक्रम निश्चय किया। तब बहुमत महर्षि के कथनानुसार न पढ़ाकर सरली करण चाहता था। लेकिन यह दिवाना नहीं चाहता था कि हम आर्य समाज के सभासद् महर्षिभक्त कहलाने का दावा करने वाले ही महर्षि के कथनानुसार नहीं पढ़ायेंगे तो फिर उन्हें कौन पढ़ायेगा।

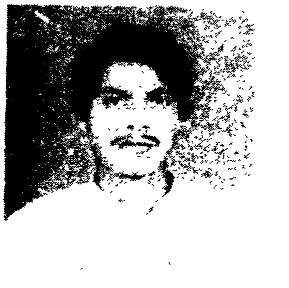
क्योंकि अन्य मतावलम्बी तो इतने रुष्ट थे कि उन्हें शास्त्रार्थ के लिए चैलेन्ज दिया जाता और वे हार जाते। उनसे उत्तर नहीं लगता तो स्वाभाविक ही है कि वे उनके महर्षि के मतानुसार कैसे शिक्षा दे सकते हैं। जब पं० गुरुदत्त जी-विद्यार्थी को महर्षि कृत ग्रन्थों के पठन-पाठन पर कुछ असन्तोष हुआ तब सभी अपने साथियों को अष्टाध्याई पढ़ने का विचार दिया। फलतः हमारा आर्यसमाज का इतिहास बतलाता है कि उस समय लाला लाजपतराय महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज) मा० आत्मा राम जी अमृतसरी, पं० लेख राम, मा० दुर्गादास देवीदास इत्यादि सभी कार्यकर्त्तागण अष्टाध्याई बगल में रखते और ज्योंही समय मिला कि सूत्रों का रटना शुरू कर दिया करते थे।

आपके भाषणों का प्रभाव इतना पड़ा कि एक बार पौराणिकों की ओर से होने वाली धर्म सभा में उपस्थित हुए। वहां पर अन्त में श्री कपूरथला निवासी दिवान रामजस सी०एम०आई० ने पूछा कि - "जब दोनों संस्थानों की धर्म पुस्तक एक वेद हैं तो फिर क्या मेल सम्भव नहीं? पं० गुरुदत्त जी ने प्रश्न के उत्तर में समझाते हुए कहा कि असम्भव तो नहीं मगर सारी समस्या को समझने के लिए पहिले मेरा भाषण सुन लीजिये। पुनः घंटा दो घंटा रात्रि को वार्त्तालाप इस विषय पर करेंगे। दिवान जी ने पधारने का वचन दे दिया।

जब धर्म सभा के कार्यकर्त्ताओं को पता चला तो वे अधीर हो उठे किसी भी अवस्था में दिवान जी को गुरुदत्त का भाषण सुनने देना नहीं चाहते थे। वे पूरी तरह से जानते थे कि यदि भाषण सुन लिया तो ये महाशय सदा के लिये आर्यसमाजी बन जायेंगे। अतः ज्योंही दिवान जी की बग्घी आर्यसमाज मन्दिर के सामने आकर खड़ी हुई तो अच्छरूमल मिश्र ने उनके पांव पकड़ लिये और प्रार्थना करने लगे कि यदि आपने गुरुदत्त का भाषण सुन लिया तो ब्रह्म हत्या का पाप लगेगा। विवश होकर दीवान जी वापिस चले गए।

यह है कि उस महान ज्योति का तन-मन-धन सर्वस्व अर्पण करने वाले आर्य वीर का एक उदाहरण जिसने इन 5 वर्षों में न पत्नि की पर्वा की और न पुत्र की, पिता की सेवा भी कर्त्तव्य परायण होने से अवश्य की। मगर अपने शरीर की कुछ भी पर्वा नहीं की। आखिर प्रकृति के नियम भी तो होते हैं। भगीरथ परिश्रम से शरीर रोग ग्रस्त हो गया और 19 मार्च 1890 को आर्यसमाज के इतिहास कार इन वर्षों को गुरुदत्त काल कहते हैं हंसता हुआ महर्षि के भांति ही अपने नश्वर शरीर को हमें रोते बिलखते छोड़कर चल बसी। आज भी हमें ऐसे ही त्यागी बलिदानी युवकों की महती आवश्यकता है।

गुरुकुल प्रभात आश्रम का छात्र पी.एच.डी. उपाधि से विभूषित



गुरुकुल प्रभात आश्रम-(टीकरी), भोला झाल, मेरठ (उ०प्र०)

2 अप्रैल। दिल्ली विश्व-विद्यालय द्वारा गुरुकुल प्रभात आश्रम के सुयोग्य स्नातक श्रीयुत श्रीवत्स निगमालंकार के "संस्कृत व्याकरण-दर्शन को हेलाराज की देन" विषय पर पी०एच०डी० की उपाधि से सम्मानित किया गया अपने शोध-प्रबन्ध में श्री निगमालंकार ने व्याकरण के मूर्धन्य दार्शनिक ग्रन्थ "वाक्यपदीयम्" पर हेलाराज द्वारा लिखी गयी "प्रकाश" टीका को आधार बनाकर पद, पदार्थ एवं सम्बन्ध के विशेष अध्ययन के साथ ही तत्सम्बन्धी अन्य भारतीय दर्शन के सिद्धान्तों पर भी अपने चिन्तन को प्रस्तुत किया हैं।

श्री निगमालंकार 1984 में दिल्ली विश्वविद्यालय से एम०ए० (संस्कृत) में सर्वप्रथम आकर स्वर्णपदक प्राप्त कर चुके हैं तथा तदुपरान्त आपने M. Phil. (दर्शन निष्णात) की उपाधि भी दिल्ली-वि०वि० से ही प्राप्त की।

अपने छात्र जीवन में श्री निगमालंकार विभिन्न अखिल भारतीय स्तर की प्रतियोगिता में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त कर अपनी अध्ययन स्थली गुरुकुल प्रभात आश्रम का गौरव बढ़ा चुके हैं।

जाग उठो हे अग्निदेव

ओ३म् प्राणप्रिय कष्ट विमोचक, हे सुखदायक रक्षक आओ।
अब जाग उठो हे अग्नि देव, इस यज्ञ पीठ पर आ जाओ।।
तुम पृथ्वी में हो अग्नि रूप
अन्तरिक्ष में विद्युत स्वरूप
हर कहीं तुम्हारा तेज व्याप्त
द्यौ लोक सूर्य का लिए रूप।

द्यौ लोक दिव्य भू लोक श्रेष्ठ, इस वेदि मनोरम पर आओ।
अब जाग उठो हे अग्नि देव, इस यज्ञ पीठ पर आ जाओ।।
तुम पीठासीन यहाँ होगे
अन्नादि हव्य मृदु खाओगे
यह हव्य द्रव्य कर सूक्ष्म भव्य
तुम दूर दूर फैलाओगे।

तुम खाओ और बढ़ाओ हवि, पोषण सुगन्धि जग बिखराओ।
अब जाग उठो हे अग्नि देव इस यज्ञ पीठ पर आ जाओ।।
हे अग्नि प्रभा संकेतक हो
ईश्वर के रूप प्रचेतक हो
अब किया यहाँ स्थापित तुमको
प्रभु तुम्हीं प्रकाश सचेतक हो।

मम आत्म हृदय के सहवासी, इस यज्ञ कुण्ड में बस जाओ।
अब जाग उठो हे अग्नि देव, इस यज्ञ पीठ पर आ जाओ।।

अग्न्याधान मन्त्रः-

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्द्यौरिव भूम्ना पृथिवीव वरिम्णा। तस्यास्ते पृथिवि देवयजनि पृष्ठेऽग्निमन्नादमन्नाद्यायादधे ।। यजु० 3/5।।

-- देव नारायण भारद्वाज (अलीगढ़)

वेदों में अन्तर्राष्ट्रीय एकता

(प्राचार्य डा0 आशा रानी राय
उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0)

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"
--अथर्ववेद

भूमि हमारी माता है, हम उसके पुत्र हैं, वस्तुत सम्पूर्ण भूमण्डल में रहने वाले प्राणी परस्पर समान हैं और भूमि बिना भेद-भाव के "वसूनि ददाति" अथवा "वसूनि धारयति" धन सम्पत्ति को धारण करने वाली है, जैसे माता पुत्र चाहे योग्य हो अथवा अयोग्य, बराबर स्नेह देती है, तथैव पृथ्वी-माँ भी धन सम्पत्तियाँ सोना, कोयला, धान्य वनस्पति, तेल व धातु विभिन्न प्रकार के रत्नों को बिना भेद-भाव के सबको देती है। सम्पूर्ण भूमण्डल के लिए सात वस्तुएँ आवश्यक हैं:-

सत्यंबृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा वो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु ।।
--अथर्ववेद 12/1/1

अर्थात् संसार में सत्य व ऋत प्राकृतिक नियमों का पालन हो जैसे संसार में जो वस्तु जहाँ उत्पन्न होती है, वहीं तक सीमित न रहे अपितु बराबर बंटवारा हो, इसका उग्रता से पालन हो, दीक्षित कठोर परिश्रमी ज्ञानवान श्रेष्ठ जन हो, ब्रह्म ज्ञान का विस्तार हो, यज्ञ अर्थात सर्वत्र परोपकार के कार्य हों यह सात वस्तुओं से पूर्ण धरती भूत की नींव पर भविष्य की इमारत बनें, पृथ्वी विस्तार विकास व उन्नति को प्रदान करे।

इस प्रकार जब व्यक्ति अपने राष्ट्र तक ही सीमित न रहकर सम्पूर्ण बसुधा को अपने निवास स्थान समझने लगता है, उससे ममता करता है, तो उसे मानव की श्रेष्ठतम वृत्तियों का क्रीड़ा स्थल बनाने के प्रयास में जुट जाता है, तब उसकी भावनाएँ व्यापक हो जाती हैं। डा0 राधाकृष्ण कहते हैं कि विश्व एक साझेदारी है, यह एक मैत्रीपूर्ण ब्रह्माण्ड है। हमने प्रेम करने के लिए जन्म लिया है न कि घृणा करने के लिए। हम एक दूसरे की सहायता करने के लिए पैदा हुए है न कि एक दूसरे को समाप्त करने के लिए"। अन्तर्राष्ट्रिय सद्भावना के कारण व्यक्ति विशाल हृदय वाला बन जाता है, मानवता के प्रति प्रेम की आवश्यकता पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष व घृणा को दूर करने की आवश्यकता है। दो विश्वयुद्धों में मानवता के नग्न नृत्य ने सुहागिन धरती को वैधव्य प्रदान कर दिया हो विश्व की रक्षा, युद्ध की भयंकरता व इसके परिणामों से यह आवश्यक हो गया कि अपनी नैतिक भावनाओं को उच्च रखें व मस्तिष्क को सुन्दर विचारों से भरें। रोमा रोला कहते हैं "भयंकर विनाशकारी दो विश्वयुद्धों ने प्रचण्ड आक्रमणकारी राष्ट्रीयता को समाप्त कर देना चाहिए और वर्गविहीन मानवता का संघ बनाना चाहिए ताकि प्रेम, दया व सहानुभूति की भूमि पर मानवीय सम्बन्ध का विकास किया जा सके। ऋग्वेद में स्पष्ट है:- "योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः" अर्थात् जो हमसे घृणा द्वेष करते हैं, जिनसे हम घृणा करते हैं, उस भावना को निर्मूल कर दीजिए।

वेद में सुन्दर समाज की कल्पना की गई है:-
आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् ।
आराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति व्याधी महारथो जायताम् ।
दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषाजिष्णू रथेष्ठाः।
सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् ।
निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥
ब्रह्मनुराष्ट्र में हों, द्विज ब्रह्म तेजधारी
क्षत्रिय महारथी हों अरिदल विनाशकारी
होवें दुधारु गौवें, पशु अश्व आशुवाही
आधार राष्ट्र की हों नारी सुभग सदा ही
बलवान् सभ्य योधा, यजमान पुत्र होवें
इच्छानुसार वर्षे पर्जन्य ताप धोवें
फलफूल से लदी हों औषध अमोघ सारी
हो योग क्षेमकारी स्वाधीनता हमारी ।।

संसार के जन-जन की हित कामना वेद में की गई है:

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत् ।।

कहीं लेशमात्र भी स्वार्थ, देशकाल अथवा व्यक्ति का भेद वेदों में नहीं है। विश्व में सबसे विलक्षण व अनूठी व्यवस्था, अन्तर्राष्ट्रीय अवरोध व एकता हेतु शिक्षकों और आचार्यों को तैयार करना वस्तुतः सन्यास आश्रम में सन्यासी के लिए आवश्यक है कि अपना मूल नाम, जन्मस्थान व स्व अर्थात अहम् को बढ़ाने वाली वस्तुओं का त्याग करें, ऐसे ही आचार्य विश्व एकता व शान्ति का नारा संसार के कोने-कोने में बुलन्द कर सकते हैं। यजुर्वेद में शान्ति मन्त्र सब ओर से शांति देने के लिए है।

द्यौः शांतिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्ति रोषधयः शांतिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥ सूर्यादि, पृथ्वी, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ विद्वान, सब ज्ञान व सब पदार्थ शान्तिदायक व उपद्रव रहित हों।

वस्तुतः वेद में मानव जाति के लिए एक-एक मन्त्र प्रेरणादायक आनन्द व शांति की मधुर रश्मियों को प्रस्फुटित करने वाला है। आज सर्वत्र अशान्ति अस्त्रों की होड़, परस्पर राष्ट्रों में ईर्ष्या पूर्ण वातावरण है, निखिल विश्व ही मानों बारूद के ढेर पर बैठा है, कब विस्फोट हो जाए, ज्ञात नहीं। अतः वेद ज्ञान ही हमें संसार में शान्तिपूर्वक निर्भय होकर आत्मविश्वास से पूर्ण आदर्शों की शिक्षा देता है:-

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।
अथर्ववेद 19/15/6

अर्थात् हमें मित्रों से भय न हो शत्रु से भय न हो, जाने हुए पदार्थ से भय न हो, न जाने हुए पदार्थ से भय न हो, हमें रात्रि में भय न हो, हमें दिन में भय न हो। सब दिशाएं हमारी मित्र होवें।

यह मन्त्र विश्व की प्रत्येक इकाई को हृदय में परम शांति, प्रेम, स्नेह, मित्रता व सुख को प्रदान करने की प्रेरणा देता है। यदि ऐसा संसार में सम्भव हो जाए तो परस्पर ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, अपने पराये की भावना समाप्त हो जाए और यह तभी सम्भव है जब माता भूमि की गोद में पलने वाला प्रत्येक व्यक्ति यजुर्वेद की निम्न ऋचा को अपनाएगा:-

मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।
यजु0 36/14

अर्थात् मैं संसार के प्रत्येक प्राणी को मित्र की दृष्टि से देखूँ और निखिल जनों द्वारा स्नेहसिक्त मित्रवत् दृष्टि से देखा जाऊँ, तभी विश्व के नसों में "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना पूरित होगी।

संस्कृत सम्मेलन सम्पन्न

कानपुर में त्रिदिवस संस्कृत सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें नई शिक्षा नीति में संस्कृत को अनिवार्य स्थान दिए जाने का प्रस्ताव पारित करके शासन को भेजा गया। विभिन्न महाविद्यालयों द्वारा संस्कृत नाटक, संगीत व मंत्रवाचन प्रतियोगिताएं भी सम्पन्न हुईं। उ0प्र0 संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष श्री करुणापति त्रिपाठी ने कहा कि भारत की कल्पना भी संस्कृत के बिना नहीं की जा सकती। कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डा0 बी0एन0 अस्थाना, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 वि० वैंकटाचलम, डा0 शौनक ब्रह्मचारी, डा0 राजदेव मिश्र आदि ने कहा कि संस्कृत के बिना संस्कृति सुरक्षित नहीं है, इस अवसर पर ख्यात विदुषी डा0 आशा रानी राय, प्राचार्या कानपुर विद्यामन्दिर डिग्री-कालेज, कानपुर, तथा उपमंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 को उनकी वैदिक संस्कृति और संस्कृत के प्रति अनुराग लगन व कार्य के कारण स्वागत किया गया व "संस्कृत कोविद" की उपाधि से विभूषित किया गया। सभा की ओर से हार्दिक शुभ-कामनाएं।

-मनमोहन तिवारी
सभा मन्त्री

'ब्रिटिश टेलीविजन' को दी गई भेंट वार्ता पर आधारित

'सैटेनिक वर्सेज' का विरोध करना मुश्किल है

- सलमान रश्दी -

मुझे उम्मीद थी कि कठमुल्ला लोग इसे पसन्द नहीं करेंगे, लेकिन मैंने यह किताब मुल्लाओं के लिए नहीं लिखी। मैंने देखा है कि मुल्लाओं ने पिछले ग्यारह सालों में पाकिस्तान में क्या किया है। इस्लामीकरण के बहाने लोगों पर जुल्म ढाए गए। मैंने यह भी देखा है कि इस दौरान पाकिस्तान के अधिकांश कवि देश छोड़कर ब्रिटेन भाग आए और अर्द्धनिर्वासित जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

संसार के बारे में मेरा जो विचार है, वो उनसे भिन्न है। मैं इस बात पर जोर देता हूँ कि मैं जो उचित समझता हूँ उसे व्यक्त करने का मुझे अधिकार है। यह इस देश (ब्रिटेन) में बहुत आसान है। यदि आप किसी किताब को पढ़ना नहीं चाहते तो आप उसे न पढ़ें। "सैटेनिक वर्सेज" का विरोध करना मुश्किल है। इसे पढ़ने के लिए लम्बा समय चाहिए।

मेरी किताब की हर बात ऐतिहासिक है। यह ऐतिहासिक या अर्द्धऐतिहासिक आधार से शुरू होती है। मोहम्मद साहब की जिन्दगी के बारे में जो सामग्री उपलब्ध है, वह आंशिक और अस्पष्ट है। लेकिन यह भी सत्य है कि संसार में वही एकमात्र पैगम्बर हैं, जिनके जीवन का आंशिक विवरण प्राप्त है। दूसरे पैगम्बरों के बारे में काल्पनिक बातें और कहानियाँ ही मिलती हैं, जिन्हें उनकी मृत्यु के सैकड़ों साल बाद लिखा गया।

मोहम्मद साहब के बारे में दिलचस्प बात यह है कि "कुरआन" के मुकाबले में उनके सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी गई है। जब मैंने इसका अध्ययन किया और एक इतिहासकार के रूप में किया तो मुझे लगा कि ये सारी घटनाएं आध्यात्मिक होने के साथ-साथ ऐतिहासिक हैं। उनका (मोहम्मद साहब) अपने काल के लोगों से सम्बन्ध, मुझे बहुत ही आकर्षक लगा।

इस्लाम दुनियां की एक महान विचार धारा है। इसके बाद में मार्क्सवाद को ऐसे विशाल आकार वाली विचार धारा मानता हूं। एक ऐतिहासिक विचार धारा की उत्पत्ति का अध्ययन करना दिलचस्प होता है। एक इतिहासकार यह जानता है कि ऐतिहासिक रिकार्ड (विवरण) कितने अस्पष्ट, बिखरे और विचित्र होते हैं। अतः मैंने सोचा कि मुझे इस सम्बन्ध में कुछ करना चाहिए। मैंने इस विषय को रुचिकर और काल्पनिक ढंग से प्रस्तुत करने को सोचा ताकि मैं इस विवाद में न पड़ूँ कि ये सब घटनाएं उसी तरह घटीं या नहीं।

मेरी पुस्तक का विषय बहुत व्यापक है। मूलतः पुस्तक में दो प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया गया है। जब कोई विचारधारा संसार में आती है, तो उसे दो परीक्षाएं देनी होती हैं। प्रथम- जब आप अशक्त होते हैं, तो क्या समझौता कर लेते हैं?, द्वितीय- जब आप शक्तिशाली होते हैं, तो क्या आप सहनशील होते है?

उपन्यास इन्हीं प्रश्नों को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करता है। इसमें, जहाँ तक हम मोहम्मद साहब की जिन्दगी के विषय में बता सकते हैं, जो सच भी है, बताया गया है। प्रथम प्रश्न का उत्तर यह है कि जब हम अशक्त होते हैं, जैसा कि मोहम्मद साहब के विषय में हुआ, तो संक्षिप्त काल के लिए प्रसन्नता से ठुकरा दिए जाते हैं। जैसे मोहम्मद साहब का "खुदा-सिर्फ एक है", विचार ठुकराया गया।

मैं नहीं समझता कि इससे उनका (मोहम्मद साहब) स्तर घटा है। सभी पैगम्बरों ने लालच का सामना किया। जब जिब्राईल, मोहम्मद साहब के पास आए और कहा कि ये शैतानी आयतें हैं, इन्हें कुरआन से निकाल देना चाहिए तो उन्होंने उन्हें (जिब्राईल) माफ कर दिया और कहा कि चिन्ता मत करो यह समझ में आने वाली बात है। इस तरह की बातें पहले भी हुई हैं। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि जिब्राईल इन लोगों से अधिक सहनशील थे, जो इस पुस्तक का विरोध कर रहे थे।

जब मोहम्मद साहब मक्का में सत्ता के साथ लौटे तो वह बहुत अधिक सहनशील थे। मेरे विचार में जहाँ तक मुझे याद आता है, मक्का में सत्ता प्राप्त करने के बाद मात्र पाँच या छः लोगों को सजा दी गई। इनमें दो लेखक और दो महिलाएं थीं ।

श्री गुरुदत्त साहित्यकार एवं उपन्यासकार दिवंगत

आर्य जगत के प्रसिद्ध साहित्यकार एवं उपन्यासकार तथा कट्टर आर्य समाजी गुरुदत्त जी का देहावसान हो गया। प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा, लखनऊ के मंत्री श्री पं0 मनमोहन-तिवारी जी ने उनके निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि वह कट्टर आर्य समाजी विचारधारा के परम समर्थक एवं साहित्य के निष्णात मर्मज्ञ थे। वे कुशल उपन्यासकार होते हुए भी अत्याधिक नम्र थे। उनमें संगठन की अपूर्ण क्षमता थी। हमारा प्रदेश और सम्पूर्ण राष्ट्र उनकी साहित्यिक सेवाओं को कभी भी नहीं भुला सकता है।

उनके निधन से जगत के अनेक साहित्यकार एवं लेखकों तथा कवियों ने अपने को शून्य पाया, एक उज्जवलयामान नक्षत्र अस्त हो गया है। उन्हें आर्यसमाज के कार्यों एवं आर्यसमाज से अत्यधिक प्रेम था और आर्यसमाज के कार्यों में वे सदैव रुचि लिया करते थे।

उनके निधन से राष्ट्र को अपूर्णीय क्षति हुई है, परमपिता-परमात्मा से प्रार्थना है कि वे उनकी आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें ।

- मनमोहन तिवारी
मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0

संस्कृतः एक दृष्टि

-भूपेन्द्र सिंह जिन्दल,
गुरुकुल महाविद्यालय,
ज्वालापुर।

संसार में प्रायः सभी श्रेष्ठ विद्वानों का सर्व सम्मत विचार है कि संस्कृत विश्व की सबसे श्रेष्ठतम प्राचीन भाषा है। इसीलिए विश्व का प्रत्येक सुसभ्य नागरिक संस्कृत के अध्ययन के लिए उत्सुक है। किन्तु भारत का दुर्भाग्य रहा कि अंग्रेजी की दासता से मुक्त होने के बाद भारत के जो भी कर्णधार हुए वे संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति से सर्वथा अनभिज्ञ एवं अपरिचित थे। जिसका परिणाम यह स्वाभाविक ही था कि संस्कृत उनके द्वारा जाने अनजाने में उपेक्षित होती रही और अंग्रेजी जो हमें गुलाम बनाये थी। उस भाषा को आश्रय मिलता रहा जिसका भयावह परिणाम आज हमारे सामने है। महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय का पढ़ा हुआ छात्र शरीर से भारतीय होते हुए भी वह दिल दिमाग से अभारतीय है। भारतीय प्रत्येक वस्तु के प्रति अनादर तथा विदेशी हर वस्तु के लिए उसके हृदय में महान् आदर है। जो राजनैतिक दृष्टि से भी किसी देश के लिए भयंकर परिणाम से परिपूर्ण है। यदि भारत के कर्णधार एवं भारतीय जनता अपने नागरिकों को राष्ट्र भक्त देखना चाहती है तो उसका सर्व सम्मत कर्तव्य यह है कि वह संस्कृत उस स्थान पर प्रतिष्ठित करें। जिस पर प्रतिष्ठित होकर यह देश कभी जगत् गुरु कहा गया था। संस्कृति की महत्ता को दर्शाते हुए काव्य प्रकाश के महाविद्वान् मम्मन ने कहा है:-

"संस्कृत नामही दैवी वाक् आख्या महर्षिभिः"

बिना संस्कृत के हम संस्कृति को जीवित नहीं रख सकते। अतः अपनी संस्कृति को जीवित रखने के लिए संस्कृत की रक्षा आवश्यक है ।

भूल जो सलमन रुशदी से हो गई

- सन्तोष "कमल" -

"सैटेनिक वर्सेज" की सर्वत्र चर्चा है। ईरान के अयातुल्ला खुमैनी की उन्मादी घोषणा से जहाँ रशदी का विरोध बढ़ा है, वहीं पुस्तक के प्रति जिज्ञासा भी बढ़ी है। हर कोई उसे पढ़ना चाह रहा है।

पुस्तक का नाम ही जब "शैतान की आयतें" हो तो और तो और हर पढ़ा-लिखा मुसलमान भी उसको पढ़ने का लोभ नहीं छोड़ सकता। ऐसे में सरकारों के प्रतिबन्ध कितने सार्थक हो सकते हैं, मैं नहीं जानता। खुमैनी फतवा भी क्या रंग लाएगा, यह भी आने वाला समय ही बताएगा, लेकिन इतना निश्चित है कि निष्पक्ष और स्वतन्त्र चिन्तन पर किए जाने वाले हर प्रहार से प्रहारकों के पक्ष की दुर्बलता ही प्रकट होगी।

"सैटेनिक वर्सेज" में क्या है, हम नहीं जानते। न विरोध करने वाले जानते हैं और न प्रतिबन्ध लगाने वाली सरकारें। जब पुस्तक ही पढ़ने को न मिले तो कोई जान भी क्या सकता है। हाँ, जो विवरण यत्र-तत्र प्रकाशित हुआ है, उसी से लोगों ने अपने-अपने अनुमान लगाए हैं।

सलमान रशदी से ब्रिटिश टेलीविजन की भेंट वार्ता प्रकाशित हुई है। उसी का हिन्दी रूपान्तर हम "आर्य-मित्र" में दे रहे हैं, ताकि पाठक उनके विचारों से अवगत हो सकें। इस प्रबल विरोध में रशदी का यह वक्तव्य निश्चित ही विचारणीय है।

निस्सन्देह, "इस्लाम" विश्व का एक ऐतिहासिक आन्दोलन है। इतने बड़े भू-भाग पर उसके अनुयाई फैले हुए हैं। अनेक देशों में उनकी सरकारें हैं। सम्पूर्ण विश्व के इस्लामीकरण के उनके घोषित इरादे हैं। अतः इतिहास और राजनीति का कोई भी विद्यार्थी "इस्लाम" का अध्ययन किए बिना नहीं रह सकता। एक कबीला परिवार में जन्म लेने वाले मोहम्मद साहब मक्का में राजसत्ता स्थापित कर लेते हैं, यह अपने आप में कोई साधारण घटना नहीं है। इसकी असाधारणता ही जिज्ञासुओं को अतीत में झांकने को प्रेरित करती है। फिर वह जिज्ञासु मुसलमान भी हो सकता है, और कोई अन्य भी।

प्रश्न यह नहीं कि आपने अतीत को क्यों देखा, प्रश्न यह है कि आपकी नजर कहीं बदनजर (कुदृष्टि) तो नहीं थी। प्रश्न यह है कि ऐसा करते समय आपका दृष्टिकोण कितना निष्पक्ष और निष्कपट था। उपलब्ध तथ्यों का सम्यक् विश्लेषण कर आपने जो निष्कर्ष निकाले हैं वे यथार्थ के कितने निकट हैं।

सलमान रशदी का कहना है - "मेरी किताब की हर बात ऐतिहासिक है"। उत्तर में मुसलमानों के स्वयंभू प्रवक्ताओं का कहना है कि इससे उनकी भावनाओं को ठेस पहुँची है। इसमें मोहम्मद साहब का अपमान किया गया है।

"इस्लाम को दुनियां की महान् विचार धारा" मानने वाले रशदी का कहना है -- "मोहम्मद साहब के बारे में दिलचस्प बात यह है कि कुरआन के मुकाबले में उनके सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी गई है। जब मैंने इसका अध्ययन एक इतिहासकार के रूप में किया तो मुझे लगा कि ये सारी घटनाएं आध्यात्मिक होने के साथ-साथ ऐतिहासिक हैं। उनका अपने काल के लोगों से सम्बन्ध, मुझे बहुत ही आकर्षक लगा"। लगता भी क्यों न। मोहम्मद साहब का व्यक्तित्व था, भी आकर्षक। मैं समझता हूँ कि सलमान रशदी से एक भूल हो गई है। इसे उन्होंने परोक्षरूप में स्वीकार भी किया है। वे कहते हैं- "एक इतिहासकार यह जानता है कि ऐतिहासिक विवरण कितने अस्पष्ट, बिखरे और विचित्र होते हैं। अतः मैंने सोचा कि इस सम्बन्ध में कुछ करना चाहिए। मैंने इस विषय को रुचिकर और काल्पनिक ढंग से प्रस्तुत करने को सोचा ताकि मैं इस विवाद में न पड़ूँ कि ये सब घटनाएं उसी तरह घटीं या नहीं।"

लेकिन विवाद में तो रशदी पड़ ही गए। यद्यपि ऐतिहासिक उपन्यास लेखन की परम्परा प्रायः सभी भाषाओं में पाई जाती है, तथापि एक इतिहासकार को अपनी बात सीधे-सादे शब्दों में सप्रमाण कहनी चाहिए। मोहम्मद साहब के समय के ऐतिहासिक अभिलेख कितने ही बिखरे क्यों न हों, उन्हें जोड़ कर इतिहास लिखा जा सकता है, और उसे इतिहास के रूप में ही लिखना चाहिए।

अब प्रश्न यह है कि रशदी की पुस्तक पर उठे विवाद का अन्त कैसे हो?

मेरे विचार से इसका एक ही मार्ग है- आमने-सामने बैठकर खुली बात-चीत अर्थात् - "शास्त्रार्थ"। मौखिक न करना चाहें तो लिखित भी हो सकता है।

सलमान रशदी ने जो निष्कर्ष निकाले हैं, उनके पक्ष में तर्क एवं प्रमाण प्रस्तुत करना अब उनका दायित्व है। जिन ऐतिहासिक अभिलेखों के आधार पर उन्होंने पुस्तक लिखी है, उन्हें सबके सामने रखना चाहिए। लेकिन इससे पूर्व जिन्हें "सैटेनिक वर्सेज" में त्रुटियां दिखाई दी हैं, वे आगे आएं और अपनी सभी आपत्तियां प्रस्तुत करें। हत्या की धमकी या जलूस निकालकर जन-धन की क्षति करना अनुचित है। फिर यह समस्या का समाधान भी नहीं है।

इस्लामी राष्ट्रों की सरकारों के सोचने का जो ढंग है उस पर मुझे कुछ नहीं कहना, लेकिन भारत की धर्मनिरपेक्ष सरकार से अवश्य पूछा जाएगा कि तुमने "सैटेनिक वर्सेज" पर प्रतिबन्ध क्यों लगाया। फिर भारत के मुसलमानों से भी पूछा जा सकता है कि यहाँ हिंसक प्रदर्शन करने की क्या आवश्यकता है। प्रतिबन्ध या प्रदर्शन से सत्य-असत्य का बोध कैसे होगा?

मैं मानता हूँ कि मुसलमानों की भावनाओं को ठेस पहुँची है। इसका इलाज होना चाहिए। लेकिन इलाज क्या है?

"शास्त्रार्थ"। "शस्त्रार्थ" नहीं।

अतः इस्लामी इतिहास के प्रामाणिक विद्वानों का कर्तव्य है कि वे "सैटेनिक वर्सेज" के तथ्यों व निष्कर्षों के विरुद्ध पुस्तक प्रकाशित करें और सलमान रशदी अपनी पुस्तक के पक्ष में ऐतिहासिक अभिलेखों के प्रमाण प्रस्तुत करें।

भारत सरकार को चाहिए कि इस पुस्तक पर से प्रतिबन्ध हटाकर दूरदर्शन पर दोनों पक्षों के बीच शास्त्रार्थ का समुचित प्रबन्ध करें। किसी ग्रन्थ पर प्रतिबन्ध लगाना कोई विवेकपूर्ण निर्णय नहीं है। असत्य बात तो असत्य ही है। उसकी आयु बहुत अल्प होती है। सत्य ही टिका रहता है। यदि रशदी की पुस्तक पर रोक न लगती तो सम्भवतः दो-तीन संस्करण ही छपते। उसमें कुछ ऐतिहासिक तथ्य होता तो लोग पढ़ते, अन्यथा एक ओर फेंक देते। परन्तु अब लगता है कि यह बिक्री के सभी कीर्तिमान को ध्वस्त कर देगी।

- बहादरपुर-(बिजनौर) का पाँचवाँ वार्षिकोत्सव 26 से 28 मार्च तक मनाया गया इस अवसर पर डा0 रमेशचन्द्र, बी0वी0 गौतम, दिनेश चन्द त्यागी शहदेव बेधड़क, ब0 मनोरमा आदि उपदेशकों ने अपने-अपने विचारों से जनता को लाभान्वित किया।

- मंडावर (बिजनौर) का वार्षिकोत्सव 2 एवं 3 अप्रैल को हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया इस अवसर पर श्री जयनारायण-अरुण, प्रधान जिला सभा, राकेश आर्य, आशाराम धनुर्धर आदि ने अपने-अपने विचार रखे।

- आर्योप सभा बिजनौर (गढ़वाल) की, अन्तरंग पूर्व कार्यक्रमानुसार मंडावर आर्यसमाज में सभा प्रधान श्री जयनारायण-"अरुण" की अध्यक्षता मंत्री श्री सुरेन्द्र राजपूत के संचालन में हुई।

- आज दिनांक- 25-3-89 को चम्पारण जिला आर्यसभा के प्रचारक पं0 ध्रुवप्रसाद आर्य पुरोहित एक भजनोपदेशक के तत्वावधान में चिरैया प्रखंड के आर्यसमाज रामपुर(चम्पारण का नया गठन सम्पन्न हुआ। जिसके निम्न लिखित अधिकारी निर्वाचित हुए-

प्रधान	-	श्री प्रयाग प्रसाद आर्य
मंत्री	-	श्री रवीन्द्र सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष	-	श्री बच्चा सिंह आर्य

युग पुरुष महर्षि दयानन्द

दीपक से दीपमाला की ओर

{कृष्णदत्त, हैदराबाद}

यह कहावत प्रसिद्ध है कि "जागा सो पाया, सोया सो खोया।"

रातें सोने के लिए होती हैं और दिन जागने के लिए। लेकिन भारत में शिवरात्रि की रात जागने के लिए होती है, सोने के लिए नहीं। इसीलिए बालक मूलशंकर टंकारा के शिवालय में शिवरात्रि की रात में जाग रहे थे। उनकी सभी ज्ञानेन्द्रियां कार्यरत थीं, चौकस थीं। मंदिर में बैठे हुए सभी एक-एक करके सो गये थे। स्वयं मूलशंकर के पिता भी सो गये थे। अल्पायु मूलशंकर अकेले जाग रहे थे, बेदार थे। यही कारण है कि उनके मन मन्दिर में प्रकाश फैला और उसी प्रकाश में उसी ज्ञान के प्रकाश में बालक मूलशंकर ने वास्तविक शिव को खोजने का दृढ संकल्प किया। इस संकल्प की पूर्ति के लिए अपने माँ-बाप का प्यार, जमीन-जायदाद धन-दौलत को त्यागा और एक दिन सच्चे शिव की खोज में चुपचाप घर से निकल पड़े। संकल्प जहां महान् था, वहां जटिल और कठोर भी था, लेकिन संकल्प अपनी जगह सुदृढ और अडिग था। संकल्प की पूर्ति में शंकर को कितने रूप बदलने पड़े, कितने संकटों में से गुजरना पड़ा, किन-किन विपत्तियों को झेलना पड़ा, इन सभी का विवरण बहुत विस्तृत है।

मूलशंकर का वह संकल्प महान् था, पवित्र था और शुभ था/उस अल्पायु बालक के मन में यही भावना उठी होगी कि उसके पिता ने शिवजी की कथाओं में जिस त्रिशूलधारी शिवजी का उल्लेख किया था, वह असली शिव कहाँ है? वह तो इतना बलवान् और सामर्थ्यवान है कि शक्ति शाली से शक्तिशाली दुष्ट व अत्याचारी उसके सामने कांपने लगता है। किन्तु यह मूर्ति कथावाला शिव नहीं हो सकती। यह मूर्ति तो अपने को अपवित्र करने वाले क्षुद्र चूहे को रोकने में भी बेबस और लाचार है। यह मूर्ति अत्याचारी, अनाचारी और दुष्ट दानवों और राक्षसों से अपने भक्तजनों की रक्षा किस प्रकार कर सकेगी। फिर असली शिव की खोज क्यों न की जाए जो कैलाश में रहता है। इस तरह बालक ने असली शिव की खोज का शिव संकल्प किया। आयु के साथ-साथ संकल्प का रूप भी बदलता गया, बढ़ता गया और महान् बनता गया। अल्पायु बालक से युवा बने, जवान से आप्त विद्वान बने। बालक मूलशंकर से महर्षि दयानन्द-सरस्वती बने। बाल-कल्पना समस्या बनी और यही समस्या एक विद्वान सन्यासी के महान् जीवन का महान् लक्ष्य बन गयी। कितना महान् संकल्प था उस शिवरात्रि का।

शिवरात्रि को टंकारा के उस शिवालय के उस टिमटिमाते दीपक ने सोई हुई आत्मा को जगा दिया था। आत्मारूपी दीपक प्रज्वलित हो गया था।

उस दिन किये हुए उस महान् संकल्प की पूर्ति में महर्षि दयानन्द ने अपने भीतर कितना दृढ निश्चय किया था, कितना पक्का इरादा किया था कि भूख-प्यास, सर्दी-गर्मी, मान-अपमान, संकट-अवहेलना किसी से भी ऋषि के संकल्प में तनिक भी दुर्बलता या शिथिलता नहीं आने पायी। महर्षि ने हर रुकावट को परे हटा दिया, हर बाधा का डटकर मुकाबला किया। उनके सामने केवल अपना संकल्प था और कुछ नहीं। अन्ततः वह दिन भी आ गया जबकि महर्षि को अपनी घोर तपस्या का मधुर फल मिलना था। टंकारा के शिवालय में सन् 1838ई0 में जिस महान् और बृहद्‌यज्ञ की ऋषि ने शुरुआत की थी, सन् 1883 ई0 में दीवाली के दिन उस यज्ञ की पूर्णाहुति हुई।

शिवरात्रि के अन्धकार में टंकारा के शिवालय में जो टिमटिमाता हुआ दीप बाल-मस्तिष्क में प्रकाशित हुआ था, जो दिव्य ज्योति प्रज्वलित हुई थी, वह निरन्तर बढ़ती गयी। उसकी चमक, उसका प्रकाश, उसका तेज क्षण-प्रतिक्षण बढ़ता गया। उसमें कमी नहीं हुई। सन् 1883 की दीपावली के दिन वह टिमटिमाता दीपक नहीं था मात्र चिन्गारी नहीं थी, बल्कि चारों ओर जगमग करती हुई दीपमाला थी, अन्धकार को परास्त करने वाला प्रकाश पुंज था। अन्धकार में लिप्त संसार को प्रकाश प्रदान करने वाली अमर ज्योति थी पवित्र तेजपुंज था। वह दीपक आज मात्र एक छोटे से शिवालय को ही प्रकाशित करने वाला नहीं था, अपितु सम्पूर्ण भारत-भू को प्रकाशित कर दिया था। उस दिन महर्षि का मन-मस्तिष्क हर प्रकार के सन्देहों-शंकाओं से पाक-साफ था वे स्वयं भूले-भटके मानवों के पथप्रदर्शक बने हुए थे। कितना विचित्र दृश्य था। सम्पूर्ण वातावरण प्रकाश पुंज बना हुआ था। सर्वत्र दीपक जल रहे थे। भक्तजन और अनुयायी दुःखी व शोकाकुल थे। शिष्यवर्ग शोकसागर में डूबे हुए थे। प्रशंसक और सेवक उदास और खिन्न व रंजिदा थे। लेकिन महर्षि के चेहरे पर संतोष व समाधान था। मुस्कुराहट थी। उस दिन महर्षि के जीवनभर की तपस्या का मधुर फल प्राप्त होने वाला था। सन 1838 में शिवरात्रि की अँधियारी में बालक मूलशंकर ने जिस असली और वास्तविक शिव की खोज में जीवन की सुख-सुविधा, आप्तजनों, घर-जायदाद को सदा-सदा के लिए त्याग कर घर से निकले थे, आज दीवाली के दिन करोड़ों दीपों के प्रकाश-पुंज में महर्षि उसी कल्याणकारी व दयासागर प्रभु से मिलने जा रहे हैं। उस प्रभु की दूरी से जैसे महर्षि जीवन भर छटपटाते रहे थे, बेचैन थे। आज मिलन की घड़ी को पास आते हुए देखकर भगवान् के वह सच्चे भक्त प्रसन्न थे, आनन्द-विभोर हो रहे थे। शिवरात्रि का वह शिव संकल्प दीपावली के दिन पूर्णता को प्राप्त हुआ।

"ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" के आनन्दोद्‌गार के साथ परमभक्त भगवान से जा मिला, आत्मा परमात्मा से जा मिली। शिवरात्रि की अंधेरी रात में जागने वाले दयानन्द को इच्छित वस्तु मिल गयी। सच ही है "जागा सो पाया"। शिवरात्रि तपस्या का फल देती है और भक्त को भगवान से मिला देती है। किसी उर्दू के कवि ने इसी भाव को इन पंक्तियों में बाँधा है:-

यह वह शब है कि रियाजत का सिला देती है।

बन्दे को अपने माबूद से मिला देती है ।।

xxxxxxxxxxxxxx

धर्म परिवर्तन की विश्वव्यापी योजना प्रति वर्ष ४५० करोड़ रुपया व्यय - इन सब समस्याओं का समाधान रचनात्मक पग

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने धर्मान्तरण एवं अराष्ट्रीय गतिविधियों के समूलोच्छेदन के लिए प्रकाशवीर शास्त्री-भवन आर्य समाज मन्दिर ब्रजघाट जिला-गाजियाबाद में वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय खोलने का प्रभावी एवं आवश्यक निर्णय लिया है। इस महाविद्यालय के द्वारा सुशिक्षित तथा प्रशिक्षित उन वैदिक धर्म प्रचारकों का निर्माण होगा जो सभी क्षेत्रों में वैदिक धर्म की दुन्दुभि बजायेंगे।

इन सभा संकल्पों को साकार एवं क्रियान्वित करने के लिए आपका तन, मन, धन का सहयोग प्रार्थनीय

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग, आ0प्र0स0

-महिला आर्यसमाज स्टेशन रोड धामपुर में-

महिला समाज ने अछूतोद्धार कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक- 29-3-89 को बाल्मीकी मन्दिर पर जाकर यज्ञ किया जिसमें सभी बहनों ने हिस्सा लिया मन्दिर पर सभी बाल्मीकी-महिलाओं ने यज्ञ में बड़ी श्रद्धाभक्ति से हिस्सा लिया हमारे साथ वेदी पर बैठ कर यज्ञ किया। अन्त में यज्ञ प्रसाद भी उन्हीं महिलाओं ने वितरण किया।

सुभाष नगर साकेत {फैजाबाद} का 18वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 20, 12, 22, 23 अप्रैल 1989 में मनाया जायगा।

आर्य समाज मिशनरी नगर {मथुरा}

अध्यक्ष	-	श्री अशोक कुमार जी गोयल
मंत्री	-	श्री विष्णु दत्त जी शर्मा
कोषाध्यक्ष	-	श्री गिरधारी लाल जी आर्य

बाल जगत

राष्ट्र विकास में हिन्दी भाषा का योगदान

श्री यतीन्द्र कुमार विद्यारत्न
गुरुकुल महाविद्यालय
ज्वालापुर हरिद्वार

ले आँख मीच अन्याय देख वह खून नहीं वह पानी है।
जिसको हिन्दी से प्यार नहीं वह कैसा हिन्दुस्तानी है।।

जी हाँ उपरोक्त पंक्तियां खरी उतरी हैं, प्रत्येक हिन्दुस्तानी के लिए। हमारा राष्ट्र 'हिन्दू' है एवं इसकी भाषा हिन्दी है। हमारा साहित्य बहुत व्यापक है। उसमें हिन्दी साहित्य एक मुख्य स्थान रखता है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। जहाँ साहित्य नहीं है उस स्थान को निम्न पंक्तियों में कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति न होगी :-

अन्धकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है।
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं है।।

हमारे विराट हिन्दी साहित्य ने हमारे राष्ट्र के विकास में जो महानतम योगदान दिया है। उसका वर्णन भला मैं कर सकता हूँ। इस परमपवित्र आर्य भाषा हिन्दी ने तो युग-उद्घोषक महर्षि दयानन्द को भी अपने प्रभाव से वंचित नहीं रखा। उन्होंने गुजराती तथा संस्कृत के महान विद्वान होते हुए भी अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना हिन्दी में ही की।

हिन्दी साहित्य को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जनता की चित्तवृत्तियों और मुख्य प्रवृत्तियों के आधार पर चार कालों में बाँटा है- 1-वीरगाथा काल, 2-भक्तिकाल, 3-रीतिकाल, 4-गद्यकाल ।

वीर गाथा काल में भारत की दशा बड़ी ही दयनीय थी। देश छोटे-छोटे टुकड़ों में बंट गया था। मुगलों के आक्रमण बराबर हो रहे थे। उस समय चारणों ने अपने आश्रय दाताओं की प्रशसा में गीत लिखकर उनके हृदय में श्रृंगार के स्थान पर वीररस का संचार किया। उन्होंने राजाओं के बलिदान में आन-बान की भावना की प्रतिष्ठा थी।

भक्तिकाल में वीरता का कारण व्यक्तिगत न होकर सामाजिक रह गया था। तुलसीदास ने राम के शौर्य का वर्णन कर निराश जनता में आशा का संचार किया।

रीतिकाल में लाल और भूषण ने ओजस्वी कविताएँ लिखकर एतिहासिकता और सत्यप्रियता का मुखरण किया। भूषण की कविताओं ने शिवाजी मरहठा के हृदय में हिन्दू धर्म और राष्ट्र रक्षा की भावना भरी। उन्होंने खण्ड-खण्ड हुए राजाओं को जोड़ने का प्रयास भी किया

जैसे :-

"आपस की फूट ही तैं सारे हिन्दू वान टूटे"

हिन्दी साहित्य के विकास के आरम्भ काल में देश प्रेम राष्ट्रीयता सामाजिक कुरीतियों के प्रति क्षोभ आदि विचार साहित्य में प्रतिबिम्बित हुए। आधुनिक काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से हिन्दी में राष्ट्र विकास की भावनाएँ तीव्र गति से उभरीं। लार्डमैकाले की शिक्षा प्रणाली से भारतीय शिक्षित समाज अंग्रेजी सभ्यता में रंग गया था । उस समय भारतेन्दु ने आवाज लगायी --

"अंग्रेज राज सुखसाज सजे सब भारी ।
पै धन विदेश चलि जात है यहै अति ख्वारी।।"

सन् 1885 में कांग्रेस की स्थापना हुई जिसका प्रभाव हिन्दी साहित्य पर भी पड़ा। उसमें तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक चेतना का संचार हुआ। इस युग के कवियों में नवीनता के प्रति मोह है। साथ अंग्रेजों के शोषण के प्रति उग्रवाणी का स्वर भी है।

आधुनिक काल का आरम्भ द्विवेदीयुग से माना जाता है। द्विवेदीयुग की कविता में भारतेन्दु कालीन कविता की अपेक्षा राष्ट्रीयता का स्वर और अधिक उभरा है। इकबाल जैसे मुस्लिम शायर ने उस समय -

"सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ता हमारा" ।

कहकर राष्ट्र विकास में अपना योगदान दिया। मैथिलीशरण गुप्त ने "भारत भारती" में राष्ट्र जीवन की समसामयिक समस्याओं का समाधान किया है। पं० गया प्रसाद शुक्ल सनेही "त्रिशूल", हितैषी और हरिऔध जैसे महाकवियों ने गाँधीवाद को स्वीकार कर राष्ट्रीय रचनाएँ लिखीं। इसके बाद छायावाद का अवतरण हुआ जिसमें प्रसाद, पन्त, महादेवी वर्मा, निराला ने जीवन के प्रति संवेदना समर्पित की। यह मूलतः व्यक्तिवाद की कविता हैं। जिसमें समष्टि वाद का भी सामंजस्य है। मानव ही इनका प्रति पाद्य है।

गद्य के क्षेत्र में मुन्शी प्रेमचन्द के उपन्यासों में साधारण मनुष्य की स्थापना कर आकाश के साहित्य को धरती पर उतारा है। प्रयोगवादी कवियों में अज्ञेय और धर्मवीर भारती आदि कवियों ने देश प्रेम के अतिरिक्त सामाजिक दुर्व्यवस्था और कुप्रथाओं का खण्डन, विधवाओं की दयनीय दशा बाल विवाह विरोध, स्त्री शिक्षा आदि विषयों का भी समावेश है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि हिन्दी ने अपने साहित्य को जनजीवन के निकट लाकर उसमें राष्ट्रीय आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, नैतिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं का समावेश कर राष्ट्रविकास में महान् योगदान दिया है।

आज हिन्दी राष्ट्रभाषा पद पर आसीन है। हमें इसकी रक्षा करनी है। हर स्तर पर। नहीं तो हम निम्नपंक्तियों में पुकारे जायेंगे ------

जिसे न निजगौरव निज भाषा और स्वदेश अभिमान है।
वह नर नहीं निरा पत्थर है और मृतक समान है।।

तपोवन-मेला 24 अप्रैल से आरम्भ होगा

देहरादून, 10 मार्च । वैदिक साधन आश्रम, तपोवन देहरादून की प्रेस-विज्ञप्ति में सूचित किया गया है कि आश्रम का वार्षिक वृहद् यज्ञ तथा योग-साधना-शिविर सोमवार दिनांक- 24 अप्रैल से आरम्भ होकर रविवार दिनांक- 30 अप्रैल को पूर्ण होगा। यज्ञ के ब्रह्मा प्रकाण्ड वैदिक विद्वान पं० पृथ्वीराजशास्त्री, सहायक मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली होंगे और उनके सहायक महात्मा चयनमुनि वानप्रस्थी रहेंगे।

योग-साधना-शिविर के निदेशक स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती महाराज रहेंगे। अन्य अनेक महात्मा भी पधारेंगे।

उल्लेखनीय है कि तपोवन के इस समागम में दूरस्थ प्रदेशों से सैंकड़ों श्रद्धालु जन आते हैं। यज्ञ की पूर्णाहुति वाले दिन तो हजारों की उपस्थिति होती है ।

- देवदत्त बाली ,मंत्री
वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी

- अत्यन्त दुःख है कि श्री केदार नाथ जी गुप्त रि० इंजीनियर का दिनांक- 29 मार्च को मध्यान्ह 11.45 बजे दरवाजा पट्टी सराय इटावा में निधन हो गया। परमप्रभु परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति व दुःखी परिवार धैर्य प्रदान करें ।

-सभामंत्री ।

- आर्यसमाज नानपारा ने अपने साप्ताहिक सत्संग में श्री स्वामी शक्ति वेश्य श्री रामाज्ञा बैरागी, डा० सत्यकेतु विद्यालंकार श्री काशीनाथ जी पाठक सदस्य आर्यसमाज, नानपारा के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया।

- आर्य समाज नानपारा का 65वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 8 से 11 जून 1989 को मनाया जायगा जिसमें उच्चकोटि के विद्वान संन्यासी पधार रहे हैं, आर्य जनता से अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें ।

गुरुकुल प्रभात आश्रम में वेद शोधसंगोष्ठी
एवं उत्सव सम्पन्न

12 जनवरी मध्याह 12 बजे से गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला {मेरठ} में स्वामी समर्पणानन्द शोध संस्थान के तत्वावधान में "ऋग्वेद संहिता में पारिवारिक स्वरूप" विषय पर शोध संगोष्ठी वैदिक राष्ट्रीय मन्त्र पुरस्सर प्रारम्भ हुई।

वैदिक राष्ट्रीय मन्त्र के बाद गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने सुमधुर संस्कृत गीतिका द्वारा सरस्वती वन्दना की तत्पश्चात् पहले संस्कृत कविता द्वारा पुनः वैदिक परम्परा के अनुसार बाहर से पधारे हुए विद्वानों की गुरुकुल के महामहोपाध्याय श्री वाचस्पति जी मिश्र व्याकरणाचार्य ने चन्दन लगाकर व धौत वस्त्र व नारिकेत प्रदान कर अभ्यर्चना की। जिसमें आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान एवं संगोष्ठी के अध्यक्ष सर्व श्री विशुद्धानन्द जी बदायूँ, श्री डा0प्रशान्त-वेदालंकार, दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री डा0 गणेशदत्त शर्मा, प्राचार्य-श्री लाजपत राय कालेज साहिबाबाद, डा0 रमेश कुमार लौ संस्कृत विभाग अध्यक्ष सनातन धर्म कॉलेज मुजफ्फरनगर, डा0 सुधाकर-आचार्य मेरठ विश्वविद्यालय, डा0 विजेन्द्र कुमार बदायूँ, डा0 कृष्ण कुमार हरिद्वार, डा0 निगम शर्मा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, डा0 महावीर गुरुकुल कां0वि0वि0, डा0 भारतभूषण-गु0कां0वि0वि0 तथा डा0 जगदीश शरण गुप्ता मेरठ थे।

संगोष्ठी का संयोजन संस्थान के निर्देशक डा0 निरूपण-विद्यालंकार ने किया। संयोजक के निर्देश पर सभी विद्वानों ने विषय पर तर्कपूर्ण सुलझे हुए विचार रखे अन्त में अध्यक्ष महोदय ने अपने आशुकवित्व का परिचय देते हुए सभी समागत विद्वानों का अभिनन्दन किया तदुपरान्त अपने स्पष्ट विचार रखे तथा अन्त में पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने अपने आशीर्वचन में आज के भौतिक युग में इस विषय की आवश्यकता का महत्व बताते हुए कहा कि आज मनुष्य जितना भौतिक उन्नति के शिखर की ओर बढ़ रहा है वहीं वह अन्दर से खोखला होता जा रहा है परमाणु संरचना के रहस्य में उलझा मानव परिवार संरचना को भूल चुका है। तथा कुछ सज्जनों की शंकाओं का निवारण भी उन्होंने अपने वक्तव्य में किया तत्पश्चात संयोजक जी ने विद्वानों एवं सभी श्रोताओं का धन्यवाद किया तथा शान्तिपाठ के साथ संगोष्ठी समाप्त हुई।

दूसरे दिन 14 जनवरी को उत्सव हुआ जिसमें "यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति" तथा नूतन ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार एवं ब्रह्मचारियों के कार्यक्रम तथा स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व प्रो0 शेरसिंह तथा अन्य बाहर से पधारे हुए विद्वानों के व्याख्यान हुए। उत्सव का संयोजन गुरुकुल के मन्त्री पं0 इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने किया। उत्सव में ग्रामीण व नागरिक जनता उपस्थिति तथा सहयोग सराहनीय रहे ।

संवाददाता।

xxxxxxxxxxxxxxx

आर्यसमाज पुरैना पूर्वी चम्पारण में दिनांक- 1 मार्च 1989 को वेदप्रचार का कार्यक्रम बड़ाही सफल रहा इस अवसर पर डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा एवं स्थानीय प्रचारक श्री अमर देव ने भाग लिया ।

आर्य समाज झाझा {मुंगेर} का वार्षिकोत्सव एवं रजत जयन्ती 11, 12, 13, 14, मार्च 1989 का बड़े धूमधाम से मनाया गया इस अवसर पर पं0 जयप्रकाश आर्य, हिसार, डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा श्रीमती विजयावती, मुंगेर श्रीमती विद्यावती आर्या गोनपुरा, पटना, पं0 ओ म प्रकाश-विद्यावाचस्पति, हावड़ा के पुरोगम हुए हजारों हजार की संख्या में जनता ने पुरोगम सुना।

- आर्यसमाज नवादा {खगड़िया} का वार्षिकोत्सव 17, 18एवं 19 मार्च को बड़े ही धूमधाम से मनाया गया इस अवसर पर 25 व्यक्तियों ने जनेऊ धारण करके वैदिक धर्म की दीक्षा ली इस अवसर पर महात्मा सत्यव्रत वानपस्थी समस्तीपुर डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, श्री दयानन्द सत्यार्थी पटना ने भाग लेकर उत्सव को सफल बनाया ।

- आर्यसमाज गोनपुरा के तत्वावधान में श्री विजय-सिंह के दोनों पौत्रों का मुण्डन एवं नामकरण संस्कार उनके निवास गोनपुरा {पटना} में 5 मार्च को डा0 देवेन्द्र-कुमार सत्यार्थी द्वारा सम्पन्न हुआ सैकड़ों व्यक्तियों ने आशीष प्रदान किया।

— "मवाना के ग्रन्थी महोदय ने जिस तरह से हिन्दुओं {हरिजनों} द्वारा सिक्ख बनने का समर्थन किया है तथा कहा है कि सिक्ख हिन्दुओं से अलग नहीं है और सिक्ख बनने से कोई राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक समस्या उत्पन्न नहीं होगी, बिलकुल भ्रामक तथा तथ्यों से परे है।

आज तक हिन्दू सिक्खों को अपना समझता रहा है तथा समझता है परन्तु कुछ देश द्रोही तत्वों ने तथा सिक्ख नेताओं ने सिक्खमत को अलग धर्म के रूप में देखना आरम्भ कर दिया। परिणाम स्वरूप पंजाब में आतंकवाद तथा अलग खालिस्तान राष्ट्र की माँग प्रारम्भ हुई। इन तत्वों ने राष्ट्र की एकता तथा अखंडता को खतरा उत्पन्न कर दिया है। मैं श्री ग्रन्थी महोदय से पूछना चाहता हूँ कि यदि सिक्ख सचमुच हिन्दू धर्म की रक्षा करना चाहते हैं तो क्या ये काम वे केवल सारी हिन्दू जाति को सिक्ख बनाकर ही कर सकते हैं? क्यों नहीं वे हरिजनों को उनके वर्तमान रूप में ही हर तरह की सहायता करके उनको सामाजिक उत्पीड़न से छुटकारा दिलाने में सहायक होते?

हरिजनों को सिक्ख बनाने से पहले सभी सिक्ख धार्मिक तथा राजनीतिक नेना खुले रूप में एक घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर करें कि सिक्ख मत हिन्दू धर्म का ही एक अंग है तथा खालिस्तान की माँग का लिखित तथा मौखिक रूप से विरोध करें। इसमें सभी शीर्षस्थ अकाली नेताओं के हस्ताक्षर हों।

सभी शीर्षस्थ धार्मिक तथा राजनैतिक सिक्ख नेता सभी पृथकतावादियों, आतंकवादियों का सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक बहिष्कार करें ।

सभी शीर्षस्थ धार्मिक तथा राजनीतिक सिक्ख नेता सिक्ख मत को एक अलग धर्म का दर्जा देने का विरोध करने वाले घोषणापत्र पर अपने हस्ताक्षर करें ।

सभी धार्मिक तथा राजनैतिक सिक्ख नेता मत परिवर्तन का कार्य त्याग कर पहले भटके हुए सिक्खों को सही रास्ते पर लायें तथा पंजाब में व्याप्त हिंसा तथा आतंकवाद समाप्त करने में सहयोग करें।"

- इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।

- आर्यसमाज परमानन्द बस्ती {रथरवाना} बीकानेर

प्रधान	-	श्री डा0 रवीन्द्र जी कुलश्रेष्ठ
मंत्री	-	श्री डा0 जयकृष्ण जी
कोषाध्यक्ष	-	श्री सेठ छगन लाल जी आर्य

- आर्यसमाज पुष्पनगर {आजमगढ़} 17वाँ वार्षिकोत्सव बड़े उल्लास के साथ दिनांक- 13 से 16 अप्रैल 1989 तक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर सर्वश्री शास्त्री पं0 गोविन्द-प्रसाद आर्य विद्यावारिधि महोपदेशक छोटानागपुर आर्य प्रतिनिधि-सभा राँची, पं0 राम प्रसाद पाण्डेय भजनोपदेशक वाराणसी तथा महेन्द्रपाल भू0पू0 इमाम कलकत्ता विशेष रूप से आमंत्रित हैं।

- आर्य समाज स्थापना दिवस 9 अप्रैल शुक्रवार में पूरे जनपद स्तर पर आर्य समाज मन्दिर जमानियाँ में मनाया गया इस अवसर पर जनपद की सभी रजिस्टर्ड एवं पंजीकृत समाजें जो गाँवों में गठित हैंनेभाग लिया। ऋषिबोध पर्व पूरे जनपद स्तर पर आर्यसमाज मन्दिर चीत नाथ घाट गाजीपुर में मनाया गया था ।

आर्य समाज रामपुर

प्रधान	-	श्री हरिश्चन्द्र
मंत्री	-	श्री सहदेवशरण आर्य
कोषाध्यक्ष	-	श्री वेद प्रकाश आर्य

खानपुर आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में अपने प्रमुख भाषण में आर्यप्रतिनिधि-सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने कहा कि आज देश एक भयानक संक्रमण काल से गुजर रहा है। देश की एकता, अखण्डता, संप्रभुता तथा वैदिक धर्म और संस्कृति को नष्ट करने हेतु विदेशी तथा देशद्रोही शक्तियों द्वारा सुनियोजित कुचक्र किया जा रहा है। एक ओर अंग्रेजी का कुचक्र बढ़ रहा है तो दूसरी ओर संस्कृत को उसके स्थान से च्युत किया जा रहा है। एक तरफ धर्म को राजनीति से अलग रखने का नारा शासक दल लगा रहा हैं तो दूसरी तरफ धर्म को आधार बनाकर ईसाई मिशनरी के इशारे पर मिजोरम तथा नागालैण्ड के चुनाव लड़े गये तथा जीते गये। शासक दल पूरी तरह ईसाई मिशनरियों के चगुंल में है। तथा ये देशद्रोही ईसाई मिशनें देश को अपने इशारे पर नचा रही है। हरिजनों द्वारा सिक्ख बनने पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह एक गम्भीर षडयन्त्र का एक भाग है। इस प्रकार हरिजनों का मत परिवर्तन करके खालिस्तान की नींव डाली जा रही है। हमें किसी भी कीमत पर इस प्रकार के देशद्रोही गतिविधियों को रोकना होगा। हम इसके लिये प्रयत्न शील हैं। आर्यसमाज अपने कर्त्तव्य का अवश्य निर्वाह करेगा। भले ही हमें अपने प्राणों की आहुति देनी पड़े। इस अवसर पर अपने ओजस्वी तथा तत्थपूर्ण भाषण में पं0 जयन्तकुमार-जी आर्य ने हिन्दू समाज की कमजोरियों का हृदयस्पर्शीय चित्रण किया तथा इसाई मिशनों द्वारा विदेशी शक्तियों के ईशारे पर भारत का ईसाईकरण करने तथा इसके टुकड़े-टुकड़े करने के षडयन्त्र का व्यापक भन्डाफोड़ किया। उन्होंने कहा कि जब तक हमारी आर्य जाति पुनः जागृत हो कर तथा छुआछूत, जातिवाद, सम्प्रदायवाद का त्याग करके एक जुट नहीं होती, धर्मपरिवर्तन रोका नही जा सकता है। उन्होंने युवाओं का आव्हान किया कि वे अपनी शक्ति को पहचाने तथा राष्ट्ररक्षा युवा आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर देशद्रोही और विधर्मी शक्तियों के षड्यन्त्र को विफल कर दें। इस अवसर पर श्रीमती शकुन्तला देवी (धर्मपत्नी-सभा प्रधान जी) ने 2 सुन्दर भजन गायें। श्रीमती कैलाश-सोनी ने 1 गीत गाया तथा महिलाओं का आव्हान किया कि वे समाज कार्यों में आगे आयें। श्री सौदान सिंह जी, प्रधान-आर्य समाज खानपुर ने सबका धन्यवाद किया ।

- दिनांक- 26-3-89 को आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान पं0 इन्द्रराज जी के करकमलों द्वारा आर्यसमाज झबरेडा (सहारनपुर-के निकट) की 10 दुकानों का उदघाटन हुआ। आ0प्र0स0उ0प्र0 के प्रधान पं0 इन्द्रराज जी तथा पं0 जयन्तकुमार जी आर्य ने आर्यसमाज झबरेडा के दुकानों के उदघाटन के अवसर पर प्रभावशाली प्रवचन किया। पं0 इन्द्रराज जी ने कहा कि हमारे देश में इस समय धर्म परिवर्तन की बाढ़ आई हुई है। इस बाढ़ को किसी भी कीमत पर रोकना होगा। विदेशी शक्तियां धर्म परिवर्तन करके भारत को तोड़ने का प्रयास कर रही हैं तथा प्रतिदिन 1 करोड़ रूपया खर्च कर रही है। हमारे समाज में व्याप्त गरीबी, अस्पर्शता, असमानता ने इन विदेशी शक्तियों को खुलकर राष्ट्रघाती कार्यक्रम तथा षडयन्त्रों को जारी रखने को प्रोत्साहन दिया है। आर्यसमाज ही एक मात्र ऐसी संस्था है जो इन षड्यन्त्रकारियों का पर्दाफाश करती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान व्यर्थ न जाने पाये इसका हमें प्रतिपल, प्रतिक्षण, प्रतिदिन ध्यान रखना होगा। यही समय है कि आपसी कलह, देश व झगड़ों को त्याग कर समर्पित भावना के साथ राष्ट्र रक्षा तथा धर्म संस्कृति की रक्षा हेतु तत्पर हो जायें। उन्होंने कहा कि मैं प्रधान रहूँ या न रहूँ मैं अपने राष्ट्र, धर्म, संस्कृति की रक्षा हेतु संघर्ष करता रहूँगा।

पं0 जयन्तकुमार जी आर्य मे बताया कि किस तरह विदेशी शक्तियां ईसाई मिशनरियों के माध्यम से राष्ट्रघाती षडयन्त्र में जुटी हुई हैं। ईसाई मिशनों का चरम उद्देश्य इस राष्ट्र का ईसाईकरण करना है। वे भारत के विखण्डन की कीमत पर भी भारत का ईसाईकरण चाहते हैं। यदि भारत को पुनःदासता के चंगुल में फसने से बचाना है तो हमें इनके द्वारा की जा रही देशद्रोही गतिविधियों का पर्दाफाश करना होगा। आज जब हमारे राष्ट्र धर्म, संस्कृति व सभ्यता का अस्तित्व खतरे में हैं हम आपसी कलह, पद व स्वार्थों की लड़ाई में अपने धन तथा शक्ति का अपव्यय कर रहे हैं। यदि हम पुनः स्वार्थ, पद तथा आपसी उठापटक की लड़ाई को समाप्त न कर पायें तो इतिहास इस पीढ़ी को कभी क्षमा नहीं करेगा ।

अन्त में सहारनपुर आर्य उपप्रतिनिधि सभा के प्रधान, मंत्री तथा अन्य अधिकारियों ने आये हुए अतिथियों का धन्यवाद करते हुए आव्हान किया कि वे आर्यसमाज के उद्देश्यों की पूर्ति को पूर्ण करने का प्रयास करेंगे।

शुद्धि समाचार

आज दिनांक- 19-3-89 दिन रविवार को ग्राम बुढ़वलिया (महीपतगंज) पो0- जहमिरवा, थाना- करनैलगंज, जिला-गोंडा, निवासी श्री बब्बू दास पुत्र गबीदास तथा श्रीमती जैनब स्त्री बब्बू दास का शुद्धि संस्कार उनकी इच्छानुसार आर्यसमाज मन्दिर यमलार्जुन पुर कैसर गंज- बहराइच उ0प्र0 में सम्पन्न हुआ।

बब्बू दास का नाम बदल कर श्री प्रेमानन्द तथा जैनब का नाम बदल कर प्रेम प्रभा रखा गया। शुद्धि समारोह में आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं के अतिरिक्त विश्व हिन्दू परिषद, रा0 स्व0 सेवक संघ, तथा बजरंग दल के भी कार्यकर्ता सम्मिलित हुए ।

शोक संवेदना

आर्यसमाज पंचपुरी में गढ़वाल के सपूत तथा राष्ट्रीय नेता श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा के निधन पर हम सब सभासद दुःख- प्रकट करते हैं और श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा भगवान से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शान्ति मिले और उनके वियोग जन्य परिवार को उनके वियोगजन्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज नजीबाबाद के समस्त सदस्यगण श्री डा0 सत्यकेतु विद्यालंकार जी के असामयिक निधन पर शोक व्यक्त करते हैं तथा ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह दिवगंत आत्मा को शान्ति एवं सदगति प्रदान करें तथा शोक सन्तप्त परिवार को इस असीम क्षति को वहन करने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करें।

- आर्यसमाज रानी पकड़ी पश्चिमी चम्पारण का वार्षिकोत्सव 1, 2, 3 मार्च 1989 को सानन्द सम्पन्न हुआ इस अवसर पर डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, पं0-ध्रुवजी जिला प्रचारक चम्पारण पं0 अमर देव भजनोपदेशक के पुरोगम हुए। ग्रामीण क्षेत्र के लोगों ने हजारों की संख्या में भाग लिया।

- आर्य समाज गोबरी (पूर्वी चम्पारण) का वार्षिकोत्सव 6, 7, 8 मार्च 1989 को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी नालन्दा, श्री वीरेन्द्र-आर्य गाजीपुर ब्र0 व्यासनन्दन शास्त्री, पुर्णिया, ध्रुवजी चम्पारण, एवं अमरदेव जी चनपटियां ने भाग लिया जनता की उपस्थिति कई हजार की होती रही।

जादू जो सर चढ़ कर बोले

{दिवंगत महात्मा अमर स्वामी जी महाराज की तपस्या सफल हुई}

पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज द्वारा संग्रहीत लगभग एक सौ वर्षों पुराने शास्त्रार्थों का संग्रह जो **"निर्णय के तट पर"** नाम से **"अमर स्वामी प्रकाशन विभाग 1058-विवेकानन्दनगर गाजियाबाद"** द्वारा तीन खण्डों में प्रकाशित हुआ था, इस संग्रह को पूज्य स्वामी जी महाराज एवं उनके सहयोगी **"श्री लाजपत-राय अग्रवाल"** जी ने घोर तपस्या से तैयार किया था। मुझे आपको यह बताते हुए महान हर्ष हो रहा है कि इस महान उपयोगी ग्रन्थ को **"केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय {शिक्षा विभाग} भारत सरकार द्वारा तथा हिन्दी अकादमी-दिल्ली द्वारा चयन कर लिया गया है"** जिस कार्य को आर्य समाज के इन गत सौ वर्षों में कोई भी सभा या सोसायटी नहीं कर पायी उसे पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज अकेले ही कर गये। यह हमारी अत्यन्त उपयोगी अप्राप्य सामग्री जो लुप्त हो गयी थी, उसे **"श्री लाजपत राय जी अग्रवाल"** के माध्यम से प्रकाश में लाने का यह प्रयास पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज का एक महान प्रयास है। जिसकी उपयोगिता आज सरकार ने भी स्वीकार की है। अब अन्य शेष सरकारी व गैर सरकारी विभागों के लिए भी श्री लाजपत राय अग्रवाल जी प्रयासरत हैं, कि इस ग्रन्थ की मान्यता सर्वजनिक रूप से हो जावे। इनका यह प्रयास भी कम सराहनीय नहीं है। क्योंकि इस प्रकाशन को यह किसी विशेष लाभ की दृष्टि से नहीं चला रहे हैं, अपितु पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज की प्रेरणा स्वरूप ही इसका संचालन यह सुचारू रूप से कर रहे हैं। इस पुण्य कार्य में हम सभी आर्य भाइयों को सहयोग देना चाहिए।

कोई विपक्षी किसी बात को मान्यता दे यह कम गौरव की बात नहीं है। इस अद्भुत ग्रन्थ का चौथा खण्ड भी छप रहा है, ये सभी खण्ड अपने आपमें एक से बढ़कर एक हैं। प्रत्येक पुस्तकालय में इस ग्रन्थ का सैट होना अनिवार्य है। मेरे विचारों में भी परिवर्तन लाने वाला यही अद्भुत ग्रन्थ है। जिसकी मैं जितनी प्रशंसा करूं उतनी ही थोड़ी होगी। जबकि इस ग्रन्थ की प्रशंसा **"दैनिक पंजाब केसरी"** के 25 जनवरी वाले अंक में भी छपी है" ।

निवेदक

राजेश कुमार गुप्ता
17-देहली गेट- गाजियाबाद।

शुभ सूचना

"काश गाँधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई नहीं कहते।"

इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुस्तक के लेखक विशनस्वरूप पर केस चलाया जिसे माननीय मजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदी जी ने 29 नवम्बर सन् 1988 को खारिज कर दिया जो सज्जन ये पुस्तक मंगवाना चाहें वे 1/- रुपये प्रति मंगवा सकते हैं। वितरण करने वालों को 50/- रुपये में सौ प्रति भेजी जायेंगी ।

वेद प्रचार मण्डल
60/13, रामजस रोड,
दिल्ली-5 ।

युगाब्द-५०९१							भारतीय तिथि-पत्रिका						सम्वत्-२०४६	
			चैत्र					वैशाख					ज्येष्ठ		
सो.	१ कृष्णा	७	३० अमा.	५	१२		३	१०	३	१०	१५ पूर्णिमा	२	९	२	९
मं.	२	८		६	१३		४	११ एकादशी १२	४ ५	११ एकादशी		३	१०	३	१०
बु.	३	९		७	१४		५	१३	६	१२		४	११ एकादशी	४	११ एकादशी
गु.	४	१०	१ शुक्ल	८	१५ पूर्णिमा		६	१४	७	१३		५	१२	५	११ एकादशी
शु.	५	११ एकादशी	२	९	१५ पूर्णिमा		७	३० अमा.	७	१४		६	१३ १४	६	१२
श.	६	१२	३	१०		१ कृष्णा	८	१ शुक्ल	८	१५ पूर्णिमा		७	३० अमा.	७	१३
रवि	७	१३ १४	४	११ एकादशी		२	९	२	९		१ कृष्णा	८	१ शुक्ल	८	१४
			आषाढ़					श्रावण					भाद्रपद		
सो.		८	३० अमा.	७	१४		६	१४	६	१२		५	१२	४	११ एकादशी
मं.	१ कृष्णा	९	१	८	१५ पूर्णिमा		५	३० अमा.	६	१३		६	१३	५	१२
बु.	२	१०	२	९		१ कृष्णा	९	१ शुक्ल	७	१४		७	१४	६	१३
गु.	३	११ एकादशी	३	१०		२	१०	२	८	१५ पूर्णिमा	१ कृष्णा	८	३० अमा.	७	१४
शु.	४	१२	४	११ एकादशी		३	११ एकादशी	३	९		२	९	१ शुक्ल	८	१५ पूर्णिमा
श.	५ ६	१३	५	१२		४	१२	४	१०		३	१०	२	९	
रवि	७	१४	६	१३		५	१३	५	११ एकादशी		४	११ एकादशी	३	१०	
			आश्विन					कार्तिक					मार्गशीर्ष		
सो.		४	११ एकादशी	२	९	१५ पूर्णिमा	२	९	१ शुक्ल	७		८	१४	६	१४
मं.		५	१२	३	१०		३	१०	२	८ ९	१,२ कृष्णा	९	३० अमा.	७	१५ पूर्णिमा
बु.		६	१३	४	११ एकादशी		४	११ एकादशी	३	१०	३	१०	१ शुक्ल	८	
गु.		७	१४	५	१२		५	१२	४	११ एकादशी	४	११ एकादशी	२	९	
शु.		८	३० अमा.	६	१३ १४		६	१३	५	१२	५	१२	३	१०	
श.	१ कृष्णा	९	१ शुक्ल	७	१५ पूर्णिमा		७	१४	५	१३	६	१२	४	११ एकादशी	
रवि	२ ३	१०	२	८		१ कृष्णा	८	३० अमा.	६	१४	७	१३	५	१२ १३	
			पौष					माघ					फाल्गुन		
सो.		६	१३	४	१२		४	११ एकादशी	३	१० ११ एकादशी		३	९	१ शुक्ल	९
मं.		७	१३	४ ५	१३		५	१२	४	१२		४	१०	२	१०
बु.	१ कृष्णा	८	१४	७	१४		६	१३	५	१३		५	११ एकादशी	३ ४	११ एकादशी
गु.	२	९	३० अमा.	८	१५ पूर्णिमा		७	१४	६	१४		६	१२	५	१२
शु.	३	१०	१ शुक्ल	९		१ कृष्णा	८	३० अमा.	७	१५ पूर्णिमा		६	१३	६	१३
श.	४	११ एकादशी	२	१०		२	९	१ शुक्ल	८		१ कृष्णा	७	१४	७	१४
रवि	५	१२	३	११ एकादशी		३	१०	२	९		२	८	३० अमा.	८	१५ पूर्णिमा

आर्यसमाज साकेत

प्रधान - प्रो० जय प्रकाश गोयल
मंत्री - प्रो० सत्य प्रकाश गोयल
कोषाध्यक्ष - श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता

आर्यसमाज साकेत ने 6-3-89 को ऋषिबोधोत्सव समारोह पूर्वक मनाया गया। आधुनिक युग में ऋषि दयानन्द की सार्थकता विषय पर डा० निरूपाण वेदालंकार तथा डा० ओम् शरण गुप्ता के भाषण हुए। श्री राजेश कुमार, प्रेम बाला शर्मा और श्रीमती-गान्धारी मेहरोत्रा ने भी ऋषि के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। सभा की अध्यक्षता प्रो० जय प्रकाश गोयल और संचालन प्रो० सत्य प्रकाश गोयल ने किया।

श्री जयन्त कुमार पाण्डे का भाषण

दिनांक- 12-3-89 को आर्यसमाज साकेत में वैदिक धर्म में प्रविष्ट श्री जयन्त कुमार पाण्डे का अभिनन्दन किया गया। उन्होंने अपने भाषण में देश में ईसाई मिशनरियों के देश के ईसाई करण के षड्यन्त्र पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय युवक दल के निर्माण पर जोर दिया।

आवश्यक सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि अपनी समाज के वार्षिक निर्वाचन को कृपया सम्बन्धित जिला-आर्य उपप्रतिनिधि सभा से प्रमाणित कराके ही आर्यमित्र कार्यालय में प्रकाशनार्थ भेजने का कष्ट करें। - प्रबन्ध सम्पादक

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एस0डब्ल्यू/एन पी 79
बैशाख कृष्ण 2
23 अप्रैल रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें--

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह मार्च 1989 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी0पी0 भेजी जायगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी0पी0 भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नंबर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30रु0 हो गया है :

357, 1845, 1944, 2154, 2372, 4355, 6941, 9410, 10120, 11148, 11562, 12124, 12130, 12135, 12143, 12608, 12630, 12844, 12846, 12859, 13065, 13066, 13434, 13729, 13737, 13740, 13739, 13741, 13744, 13747, 14207, 14213, 14215, 14653, 14654, 14655, 14657, 14658, 14659, 14661, 14663, 14665, 14666, 14670, 14672

बलरामपुर का उत्सव सम्पन्न

बलरामपुर आर्यसमाज (जनपद गोन्डा) का वार्षिकोत्सव दिनांक-29 फरवरी से 2 मार्च 1989 तक सरस्वती शिशु मन्दिर के विशाल प्रांगण में बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः सांय यज्ञ-प्रवचन के अतिरिक्त लखनऊ से पधारे आर्यमित्र के सम्पादक आचार्य इन्द्रदेव पाठक, डा0वीरेन्द्र बहादुर सिंह, उतरौला से पधारे श्री पं0 रामकृष्ण शास्त्री एवं आर्यजगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक ठा0 महीपाल सिंह के प्रभावशाली भाषण एवं भजन हुए।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

आर्य मित्र

ओ३म

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि सं० 2241/57

दयानन्दाब्द 165, वैशाख कृष्ण 9 रविवार, संवत 2046 वि०, दिनांक 30 अप्रैल 1989

घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85



दृते दृंह मा, ज्योक् ते संदृशि जीव्यासम्।

हे प्रभो। मुझे सब दोषों, रोगों और पापों से मुक्त करके दृढ़ बनाइये जिससे मैं तेरी सम्यक् देख रेख में दीर्घकाल तक जीवित रहूँ।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम० ए०

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०,

साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु० 251/-
वार्षिक	रु० 30/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष 92

अंक 17

राष्ट्रीय एकता का मूलमंत्र

समान नागरिक संहिता

हमारे भारतीय संविधान ने अपने समस्त नागरिकों को धर्म एवं सामाजिक न्याय में समान अवसर प्रदान किए जाने की बात बहुत बलपूर्वक कही है। इसके पीछे मन्तव्य यही है कि समस्त भारतीय अपने धार्मिक दृष्टिकोण में भिन्नता रखते हुए भी राष्ट्रीय दृष्टि से एक हों, सबल हों और उन्नति के समान अवसर प्राप्त करते हुए भारत को प्रत्येक दृष्टि से उन्नति के शिखर पर पहुँचाने में अपना योगदान देते रहें। कानून के शासन में सदैव महत्व कानून को ही दिया गया है। यही सृष्टि का नियम भी है। चोरी करने वाला किसी धर्म या वर्ण का हो समान दण्ड का अपराधी है क्योंकि यही सामाजिक न्याय है। हमारी सबसे बड़ी दुर्बलता यह रही कि हम आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी अपने नागरिकों को "समान नागरिक संहिता" नहीं प्रदान कर सके।

विवाह एक सामाजिक बन्धन है। शासन अन्तर्धार्मिक, अन्तर्जातीय विवाहों को तो प्रोत्साहन देता है किन्तु मुसलमानों, हिन्दुओं, ईसाइयों आदि के लिए विवाह कानून पृथक-पृथक हैं। यदि पतिपत्नी में पति मुस्लिम है तो शरीयत के अनुसार उसे यह छूट है कि वह कई पत्नियाँ रख ले। इस दशा में हिन्दू पत्नी क्या करेगी- या तो वह जीवनभर घुटती रहे- क्योंकि तलाक ले नहीं सकती बिना पति को राज़ी किए। यही सामाजिक अन्याय है। मौरीशस ने 1987 में पृथक मुस्लिम विवाह कानून को रद्द करते हुए मौरीशस के समस्त नागरिकों को "समान विवाह कानून" बनाकर वहाँ की राष्ट्रीय एकता को मज़बूत कर दिया है। 10 नवम्बर 1987 को एतत्सम्बन्धी विधेयक पर बोलते हुए मौरीशस के प्रधान मन्त्री, आर्यरत्न श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ ने कहा था-- "इससे धर्म का कोई वास्ता नहीं है, महिलाएं चाहे वह किसी वर्ग या धर्म की हों उनकी समस्याएं समान हैं और उन्हें सामाजिक न्याय दिलाना शासन का कर्त्तव्य है"। वेदों में आदर्श परिवार की कल्पना करते हुए एक पत्नीव्रत को ही मान्यता दी गई है और यही बुद्धिसंगत भी है। सम्बन्ध-विच्छेद, बहुपत्नी अथवा बहुपतिप्रथा आपद्धर्म तो हो सकते हैं, आदर्श परिवार के अंग नहीं।

मौरीशस के सर्वोच्च सदन में मुस्लिम विधायकों तथा मुस्लिम जनता ने इस विधेयक का यह कहकर विरोध किया कि किसी गैरमुस्लिम प्रधानमन्त्री को शरीयत (मुस्लिमकानून) में परिवर्तन करने का अधिकार नहीं है किन्तु वहाँ के प्रधान मन्त्री ने बड़ी दृढ़ता से इसका उत्तर देते हुए कहा कि पृथक मुस्लिम विवाह कानून से मुस्लिम महिलाओं के साथ बहुत अन्याय हुआ है और मानवीय. दृष्टिकोण से ऐसे कानून को समाप्त करना आवश्यक हो गया है। नारी आदिकाल से ही मानवजाति के अन्तस्तल में बहने वाली पीयूष की धारा है उसके मौलिक अधिकार धर्म की आड़ में छीने नहीं जा सकते और न वह किसी अवस्था में उपभोग्य सामग्री समझी जा सकती है। शरीयत में या अन्य कहीं भी जहाँ बहुपत्नीप्रथा को संबल दिया गया है- तत्कालीन परिस्थितियों में भले ही क्षम्य हो, आज की परिस्थिति में न तो वह मान्य है और न उपयोगी। मौरीशस के प्रधानमंत्री हमारी बधाई के पात्र हैं जिन्होंने वेद से प्रेरणा लेकर अपने देश में समान नागरिक विवाह कानून बनाया। वेद कहता है - "आयातु मित्र ऋतुभिः कल्पमानः राष्ट्रं संवेश्यं दधातु" - सूर्य जिस प्रकार ऋतुओं को समान रूप से किरणें देकर पोषित करता है, उसी प्रकार राष्ट्राध्यक्ष राष्ट्र के नागरिकों को सुसम्पन्न सुव्यवस्थित करने वाली समान नागरिक संहिता देकर राष्ट्र को बलशाली बनावे ।

हम अपने राष्ट्र के युवा प्रधान मंत्री से आशा करते हैं कि वे भी इसका अनुकरण करके भारत के समस्त नागरिकों के लिए समान नागरिक संहिता बनाकर राष्ट्र में बढ़ती हुई विश्रृंखलता को सदा-सदा के लिए समाप्त कर देंगे ।

हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी।।
-राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- वैशाख कृष्ण 9 संवत् 2046 वि०, 30 अप्रैल 1989
दयानन्दाब्द 165, सृष्टि संवत 1972949090

हमारी विशेषताएं

आस्तिकता

अनन्तकाल से प्रवाहित इस आर्यजाति में कुछ ऐसी विशेषताएं हैं जो असंख्य अवरोधों, प्रतिरोधों, परचक्र और सैकड़ों उलटफेरों के बीच आज भी हमें अक्षुण्ण और यथावत बनाए हुए चली आ रही है। हमारी अस्ति-बुद्धि को कोई नहीं मिटा सका इसीलिए हमारा अस्तित्व आज भी विधमान है। हमने वर्फ से आच्छादित हिमचोटियों पर उसके करिश्में को देखा है। घूमती हुई पृथ्वी और चमकते हुए सूर्य में उसकी शक्ति और तेजपुंज को निहारा है। लहलहाते हुए समुद्र के अन्तराल में भूखे प्राणियों को भोजन परोसते हुए भी हमने उसे देख लिया है। हम उसे भूल कैसे सकते हैं, वह हम आर्यों के प्राणों का प्राण है--

यस्येमो हिमवन्तो महित्वा, यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहुः, कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

वर्फ से आच्छादित पर्वत, पृथ्वी और समुद्र जिसकी महिमा का गान कर रहे हैं, चारों दिशाएं जिसकी विशाल भुजाएं हैं वह विराट्पुरुष हमारा पूज्य है, हमारी संस्कृति और हमारे अस्तित्व का आधार है। आज पौने दो अरब वर्ष ने वही तो हमें जीवित रखे हुए है, और हमें विश्वास है वह हमें मरने नहीं देगा क्योंकि वह हमारा है और हम उसके हैं। हम उससे नाता तोड़ना भी चाहें तो भी वह हमें छोड़ता ही नहीं, किसी न किसी को भेज ही देता है-- कभी टंकारा में तो कभी अयोध्या में तो कभी यहाँ तो कभी वहाँ---

कर्मफलविश्वास

-----और हमने उसके कर्मफल पर विश्वास किया है। झरोखे में डायरी लेकर बैठे हुए हमने उसे देख लिया है---

राम झरोखे बैठि के सबका मुजरा लेय
जैसी जाकी कारनी तैसी ताको देय
कदाचन् स्तरीरसि नेन्द्र सश्चसि दाशुषे।
उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्नुते दानं देवस्य प्रच्यते।।
--सामवेद

वह किसी के कर्म को निष्फल नहीं रखता और न ही किसी निरपराधी को दण्ड देता है। चाहें यह जन्म हो चाहे पुराना- उसने कर्मानुसार फल की व्यवस्था कर रखी है।

प्राणिमात्र में आत्मदर्शन

हमारी एक और विशेषता है-- हमने प्राणिमात्र में आत्मदर्शन किया है। हमारे अध्यात्म का सर्वभूतैकत्व, सर्वात्मैकत्व मूलमन्त्र है। पाश्चात्य विज्ञानवादी यहीं तो भूल कर जाते हैं। वे केवल बाह्य जगत पर दृष्टि डालकर सबको सम-समान बनाने की बात तो करते हैं पर इनके पास भीतरी समता को देखने के लिए न आँखें हैं न और कुछ। इसीलिए कोरा विज्ञान, अध्यात्म-शून्य बनकर न शान्ति प्रदान कर रहा है और न प्रेम या सहिष्णुता।

अन्तिम लक्ष्य-मोक्ष प्राप्ति

हमने विचारकर जान लिया है-- जीवों के इस संसार में आने का विशेष ही उद्देश्य है। यह दृश्य जगत बनाया ही इसलिए गया है कि जीव अपने-अपने कर्मफलानुसार इस संसार में आवें, कर्मफलों को भोगें और सुकर्म करते हुए अपवर्ग {मोक्ष} तक पहुँच जायें। यद्यपि यह बहुत कठिन साधना है लेकिन पहुँचने वाले पहुँच ही जाते हैं--

जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठि।
मैं बैरिन बौरी भई रही किनारे बैठि।।

"भोगापवर्गार्थं दृश्यम् -- योग सूत्र

-----फिर प्रश्न यह है कि इतनी विशेषताएं होते हुए भी हम डूब क्यों गये और अब भी पूरी तरह उबर क्यों नहीं पा रहे हैं। माना कि हमारे मध्ययुग के पापों का उदय हुआ है पर पुण्य भी तो हमारे सर्वथा निःशेष नहीं हुए होंगे। तभी तो वह आ गया था टंकारा की पथरीली रेतीली भूमि में मिट्टी खा खाकर बड़ा हो गया और फिर हमें हुंकार लगाई खबरदार? अपनी विशेषताओं को न भूलना - इनमें तुम्हारे जीवन का अस्तित्व छिपा हुआ है। और हम फिर चल पड़े हैं प्रगति पथ पर इन्हीं विश्वासों के आधार पर विशेषताओं का सम्बल लिए। दुनियाँ के विश्वासियों? आस्तिकों? हमारा साथ दो - हम तुम्हें जीवन का वह रहस्य दिखाएंगे जहाँ शान्ति की अमृतमय वर्षा से हमारा, तुम्हारा- हृदय, शरीर, मन, पृथ्वी, द्यौः आकाश समस्त चराचर सराबोर हो उठेगा। दुःख का लवलेश भी न होगा, सर्वत्र प्रेम और शान्ति का साम्राज्य हो जायेगा।

आज जिस युग में हम रह रहे हैं वह एक संक्रमणात्मक युग है जिसमें न तो स्थिरता है और न गम्भीरता। शिक्षा की ही बात लीजिए-- मेरा शिक्षा जगत से बहुतकाल से सम्बन्ध रहा है। मैं विश्वास पूर्वक कह सकता हूँ कि वर्तमान समय में जिस प्रकार की शिक्षा दी जा रही है, उससे राष्ट्रीय चरित्र सुधरेगा - ऐसी आशा करना दुराशामात्र है। मुझे तो ऐसा लगता है मानों अन्धकार ने प्रकाश को ललकारा है और प्रकाश प्राण बचाकर भाग रहा है और अन्धकार पीछा कर रहा है। हमारी नई पीढ़ी इस अन्धकार में दिग्भ्रमित होकर कोई किसी दिशा में कोई किसी दिशा में भटकती चली जा रही है। भारत में भारतीयता का स्वरूप ही बिगड़ता जा रहा है। हमारे शासक वर्ग के पास अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, तमिल आदि की शिक्षा, दीक्षा के लिए खजाने खुले हुए हैं। करोड़ों रुपया बिना माँगे लुटाया जा रहा है पर संस्कृत की शिक्षा दीक्षा के लिए सब मौन हैं-- जैसे काठ मार गया हो। भारतीय संस्कृति का गुणगान करते हैं पर जीवित रखने वाली श्वास प्रश्वास रूपी संस्कृतभाषा को निःश्वास करते जा रहे हैं। कैसा आश्चर्य है, यह भी नहीं सोचते-- प्राण बिना कहीं शरीर जीवित रहता है।

इसलिए इस संक्रमणबेला में कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्यसमाज की विशेषताओं और विश्वासों को सूर्य की तरह पृथ्वी पर चमका दीजिए ----।

--मनमोहन तिवारी।

-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-

योग शिविर

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम में योग शिविर का आयोजन 17 मई से 24 मई-89 तक किया गया है। साधक समय से पहले सूचित करने की कृपा करें। यह शिविर श्री स्वामी दिव्यानन्द जी की अध्यक्षता में लगेगा। इस शिविर में महात्मा जगदीश्वरानन्द जी, श्री जगदीश मुनि जी, श्री पं० इन्द्रराज जी प्रधान सभा एवं श्री मनमोहन तिवारी मंत्री सभा आदि महानुभाव पधार रहे हैं।

स्वामी भजनानन्द,
महात्मा नारायण स्वामी आश्रम
रामगढ़ तल्ला, नैनीताल।

भूल सुधार

आर्यसमाज अमरपुर कौंडला {अलीगढ़} का निर्वाचन भूल से छप गया, जिला सभा के मंत्री डा0 विजयपाल जी द्वारा ज्ञात हुआ कि उक्त आर्यसमाज का कोई निर्वाचन नहीं हुआ वर्तमान में समाज के मंत्री श्री यतीश कुमार जी है जो पूर्ववत् थे।

अंगरेजी हटाओ

गैर बराबरी को कायम रखने में अंगरेजी का भी हाथ है

—वेदप्रताप वैदिक

कुछ लोग यह कहते हुए भी पाये गये हैं कि अंगरेजी के कारण सारा भारत एक हुआ. यदि आप अंगरेजी को हटा देंगे, तो भारत के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे

ऐसी बेहूदा बात वे ही कह सकते हैं, जिन्हें या तो भारत के इतिहास का ज्ञान नहीं है या जो तथ्यों को जानते हुए भी गफलत में पड़े हुए हैं. क्या अंगरेजी के आने के पहले यह देश एक नहीं था? क्या हजारों साल पहले कश्मीर के लोग रामेश्वरम् नहीं जाते थे और केरल और मद्रास के लोग बदरीनाथ और पुरी नहीं आते थे? क्या उत्तर और दक्षिण के इन लोगों को अंगरेजी ने जोड़ रखा था? केरल में पैदा होनेवाले आद्य शंकराचार्य ने चारों दिशाओं में जो धर्म-प्रचार किया, क्या उनकी भाषा अंगरेजी थी? भारत के दिगदिगंतों में गूंजनेवाली शिव-पार्वती की प्रेमकथाएं क्या अंगरेजी में लिखी गयी थीं? अंगरेजी परस्त लोगों के पास इन सवालों का कोई जवाब नहीं है.

हां, वे यह कह सकते हैं कि अंगरेजों ने सारे भारत में रेल बिछायी, सड़कें बनायी, डाक तार व्यवस्था फैलाई और इस सारे तंत्र को जोड़ा, अंगरेजी भाषा ने. लेकिन हमें कोई यह बताये कि अंगरेजों ने

> **जिस दिन देश में 'कॉन्वेंट' नहीं होगा और शासक वर्ग का बच्चा भी टाटपट्टी स्कूल में पढ़ेगा और घर आ कर स्कूल के अंधेरे की, बदबू की, पिटाई की चर्चा करेगा, उसी दिन देश की शिक्षा का नक्शा बदल जायेगा.**

रेल की पटरी क्यों डाली? सड़क क्यों बनायी? डाक-तार क्यों चलाये, अगर इन सवालों का ठीक जवाब मिल जाये तो 'एकता की कड़ी' अंगरेजी का रहस्य अपने आप खुल जायेगा.

जब मैं 8-10 वर्ष का था तो अपने रिश्तेदारों से मिलने के लिए अपनी दादी के साथ आगर जाया करता था आगर, उज्जैन के पास एक छोटा-सा गांव है. खिलौनानुमा छोटी रेल में बैठने में मुझे बड़ा मजा आता था, लेकिन मैं हमेशा सोचता था कि आगर जैसे छोटे से स्थान के लिए अंगरेजों ने रेल क्यों बनायी? उसका राज काफी दिनों बाद खुला.

मालूम पड़ा कि आगर में अंगरेजों की छावनी रहती थी. जहां-जहां अंगरेजों ने अपनी फौजें टिका रखी थीं, चाहे वह आगर हो, मऊ हो, अजमेर हो या नीमच, सभी स्थानों पर रेलों और सड़कों का जाल बिछाया गया. उन स्थानों पर भी रेलें और सड़कें ले जायी गयीं, जहां खदानें थीं जहां से ब्रिटेन के कारखानों को कच्चा माल मिलता था. रेलें और सड़कें इसलिए नहीं बिछायी गयीं थी कि अंगरेज हिन्दुस्तानियों को एक दूसरे के नजदीक लाना चाहता था, बल्कि इसलिए बिछायी गयीं थी कि फौजों के शीघ्र आवागमन के द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध उठनेवाली आवाजों का गला तुरंत घोंटा जा सके और मैनचेस्टर, लंकाशायर और बर्मिंघम के कारखानों की मशीनें हिंदुस्तान के कच्चे सामान को पचा कर ब्रिटिश साम्राज्यवाद की श्री समृद्धि को कायम रख सकें अपने साम्राज्य की हिफाजत और खुशहाली के लिए अंगरेज ने जो तंत्र खड़ा किया था, उसे चलाने के लिए एक प्रशासन की जरूरत थी. प्रशासन के लिए एक जोड़नेवाली भाषा चाहिए थी वह काम किया अंगरेजी ने.

अंगरेजी ने हुक्मरानों को जोड़ा, शासकों को जोड़ा, साम्राज्य के नुमाइंदों को जोड़ा. अंगरेजी ने जनता को कभी नहीं जोड़ा, देश को कभी नहीं जोड़ा देश की जनता के लिए साधारण जनता के लिए तो आज भी अंगरेजी एक अजनबी भाषा है पहलगाम की गलियों में घूमनेवाला कुली और कन्याकुमारी की धर्मशाला का चपरासी एक ही भाषा बोलता है, लेकिन वह अंगरेजी नहीं है, निश्चित रूप से नहीं है. जब लॉर्ड मेकाले ने भारत में अंगरेजी की अनिवार्य शिक्षा की वकालत की तो उनका लक्ष्य हिंदुस्तान में एकता फैलाना नहीं था बल्कि नौकरों और क्लर्कों की ऐसी फौज खड़ी करना था, जिसके कंधे ब्रिटिश साम्राज्य के सुदृढ़ स्तंभ बन सकें इन नौकरों, अफसरों, क्लर्कों और फौजी हुक्मरानों की एकता को अगर देश की एकता कहा जा सके, तो निश्चय ही अंगरेजी ने देश की बड़ी सेवा की है

इसी अफसरी एकता की मेहरबानी के कारण 1857 का स्वाधीनता संग्राम विफल हुआ. इसी 50-60 हजार आदमियों की एकता ने देश के करोड़ों लोगों को पराधीनता के पाश में बांधे रखा इसी एकता ने ब्रिटिश साम्राज्य की घिनौनी हरकतों पर एक मोटा पर्दा डाले रखा यह वही एकता है जिसने एक तरफ बनारस के जन-आंदोलन को लाठियों से दबा दिया तो दूसरी तरफ जलियांवाले बाग की जनसभा को गोलियों से उड़ा दिया बनारस की लाठियों और अमृतसर की गोलियों को एकता के सूत्र में बांधनेवाली भाषा अंगरेजी ही थी.

हिंदुस्तान की आजादी के लिए लड़नेवाले लोग जब तक अंगरेजी के सहारे रहे, वे आजादी के खुले गीत गाने के बजाये साम्राज्य की बधी-बधाई बिरुदावलियां ही गाते रहे आजादी का संघर्ष कुछ कुलीन शिक्षितों का बुद्धि विलास बन कर रह गया. गांधी ने इस कुचक्र को तोड़ा. दयानन्द पहले ही हुंकार लगा चुके थे. गांधी ने कांग्रेस को गोष्ठी सभाओं से खींच कर देश की कोटि-कोटि गरीब, ग्रामीण, दलित जनता के द्वार पर ला खड़ा किया देसी भाषाओं में भाषण होने लगे, कांग्रेस के प्रस्ताव दूर से दूर की झोपड़ियों में पहुंचने लगे. जिन अधिवेशनों में पहले हवाइयां उड़ती थी, उन्हीं में हजारों लाखों की भीड़ उमड़ने लगी. भारतीय भाषाओं ने देश में स्वाधीनता की शक्तियों को एक किया, जबकि अंगरेजी ने पराधीनता की शक्तियों को बल प्रदान किया

अंगरेजी ने न केवल पराधीनता की शक्तियों को एक किया, बल्कि भारतीयों को भारतीयों से भी अलग किया दो तरह से अलग किया एक तो विभिन्न भाषाओं के बीच जो एक स्वाभाविक सेतु बनता था, उसके स्थान पर अंगरेजी एक नकली संपर्क भाषा बन गयी. अंगरेजी की उपस्थिति और उसे प्राप्त राज्याश्रय के कारण भारतीय भाषाओं और प्रादेशिक संस्कृतियों के मध्य जो मुक्त आदान-प्रदान होता था, वह रुक गया और उसके स्थान पर एक अत्यंत अस्वाभाविक प्रक्रिया प्रारंभ हो गयी. इस प्रक्रिया के अंतर्गत बनारस और बंगलूर के मध्य जितनी निकटता थी, उससे कहीं अधिक निकटता बनारस और लंदन के बीच स्थापित हो गयी. बनारस से बंगलूर जाने का रास्ता लंदन से हो कर गुजरने लगा हिंदी और कन्नड़ के बीच, बांग्ला और तमिल के बीच, मराठी और मलयालम के बीच अंगरेजी का दलाल आ खड़ा हुआ भारतीय भाषाओं और प्रादेशिक संस्कृतियों का परिचय परस्पर सीधे न हो कर अंगरेजी के जरिये होने लगा भारतीय भाषाओं की मूलभूत एकता को अब अंगरेजी ने संपर्क के स्तर पर विशृंखलित कर दिया यदि अंगरेजी हट जाये तो भारतीय भाषाओं को अलगाव की जिन क्यारियों में अंगरेज ने बांधा, वे सब अपने आप ढह जायेंगी. भारतीय ज्ञानपीठ इस दिशा में काफी उपयोगी काम कर रहा है अंगरेजी ने जो दूसरा अलगाव पैदा किया, वह और भी अधिक खतरनाक साबित हुआ वह अलगाव था—जनता और नेता के बीच, राजा और प्रजा के बीच, भद्र-लोक और साधारण जनता के बीच. अंगरेजी के द्वारा खोदी गयी यह खाई जब तक कायम है, समाजवाद और प्रजातंत्र के सुकुमार सपने इसमें दफन होते रहेंगे.

अंगरेजी ने हमारे देश में गैरबराबरी को बढ़ाया है मैं यह नहीं कहता कि हमारे देश में जो आर्थिक असमानता दिखायी पड़ती है उसका एकमात्र कारण अंगरेजी है लेकिन यह एक निर्विवाद सत्य है कि गैर बराबरी को कायम रखने और बढ़ाने में अंगरेजी का पूरा-पूरा हाथ है

अंगरेजी तालीम के जरिये आ गैरबराबरी का बीज बचपन में ही बो दिया जाता है थोड़े से बच्चे 'कॉन्वेंट' में पढ़ते हैं और बहुत से बच्चे टाटपट्टी पाठशालों में इसका कारण योग्यता नहीं है, बल्कि बच्चे के माता-पिता की खर्च की हैसियत है. यदि वे ज्यादा खर्च कर सके 100 या 200 या 300 रुपये महीना, तो उनके बच्चे उत्कृष्ट स्कूल में रहेंगे, अन्यथा देश के शेष बच्चों के लिए निकृष्ट स्कूलों की शिक्षा तो है ही 'कॉन्वेंट' की क्या विशेषता है? कौन-सी उत्कृष्टता या ऊंचापन है, इनमें? 'कॉन्वेंट' में चमक दमकवाली वेशभूषा, आरामदेह कुर्सी-मेज, खेल और मनोरंजन के प्रचुर साधन और घर से आने-जाने के लिए वाहन की व्यवस्था तो होती ही है, लेकिन उसकी आत्मा है अंगरेजी माध्यम की पढ़ाई यह अंगरेजी माध्यम की पढ़ाई बच्चे को बहुत अधिक प्रवीण बनाती हो, कुशाग्र बुद्धि बनाती हो या उसकी समझ का विस्तार करती हो, ऐसी बात नहीं है यह सर्वसम्मत तथ्य है कि विदेशी माध्यम की पढ़ाई बच्चे को रट्टू तोता नकलची और आलसी बनाती है. फिर भी माता-पिता अपने बच्चों को अंगरेजी स्कूलों में भेजने के लिए क्यों लालायित रहते हैं?

सिर्फ इसलिए कि अंगरेजी एक पुल है, जो शिक्षा को नौकरी से जोड़ता है हर माता-पिता चाहते हैं कि हमारा बच्चा इस पुल पर चढ़ जाये भारत की हर बड़ी नौकरी के लिए, पद के लिए, लाभ के लिए, एक सभ्य और सुसंस्कृत जीवन बिताने के लिए, अंगरेजी को अनिवार्य बना दिया गया है इस अनिवार्यता को सहने के लिए, इस मजबूरी से पार पाने के लिए माता-पिता बच्चों को 'कॉन्वेंट' में भेजते हैं कॉन्वेंट में अपने बच्चों को कौन भेज सकते हैं? कितने लोग भेज सकते हैं? सिर्फ मुट्ठीभर लोग! यही छोटा-सा वर्ग पहले से ही सुविधासंपन्न होता है और इसी के उत्तराधिकारी नयी सुविधाओं पर कब्जा कर लेते हैं टाटपट्टी स्कूलों में पढ़े हुए करोड़ों बच्चों के लिए कोई उम्मीद नहीं है उबरने का कोई भरोसा नहीं है, आशा की कोई किरण नहीं है सुविधाओं पर, अवसरों पर कब्जा करने की धारावाहिकता पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती है क्या यह समाजवाद का सर्वनिषेध नहीं है?

सुविधाओं और अवसरों की यह लूटपाट भी चलती रहे और जनता के सामने एक मासूम मुखड़ा भी बना रहे, इस चमत्कार को टिकाये रखने में अंगरेजी स्कूल बड़ी मदद करते हैं अंगरेजी स्कूल में जानेवाले बच्चों की नसों में प्रारंभ से ही गैरबराबरी का जहर घोला गया है ये बच्चे अपने आपको

> **अफसरों के पद, जिन पर जवानों की तुलना में सौ से ले कर हजार गुना तक ज्यादा खर्च किया जाता है, केवल उसी वर्ग के लिए आरक्षित हो जाते हैं, जो अपने पुराने मालिकों की हूबहू नकल करने में निष्णात हो.**

कुंवर, राजकुंवर समझने लगते हैं और देश के अन्य करोड़ों बच्चों को हिकारत की नजर से देखते हैं इसका कारण यह नहीं है कि वे अधिक बुद्धिमान हैं जो रटता है, घोटा लगाता है, वह बुद्धिमान कैसे हो सकता है? अंगरेजी स्कूल के लड़के अपनी बुद्धि की इसी कमी को पूरा करते हैं, खर्चीले ताम-झाम से, जैसे कि बदसूरत औरतें सुंदर दिखने के लिए सोना लाद लेती हैं और दुर्भाग्य यह है कि अपने समाजवाद में सोने की कीमत सुंदरता से अधिक है. नौकरियों में भविष्य के अवसरों में बुद्धि की परीक्षा नहीं होती योग्यता की परीक्षा नहीं होती बल्कि अंगरेजी ज्ञान की परीक्षा होती है

हमारी फौज की परीक्षा में क्या होता है? अंगरेजी भाषा की अनिवार्य परीक्षा होती है और दूसरे विषयों की भी परीक्षा अंगरेजी माध्यम से होती है अंगरेजी का फौज से क्या लेना-देना? दुनिया के बड़े-बड़े फौजी जनरल अंगरेजी नहीं जानते चंगेजखान, बाबर नेपोलियन, शैवानी खान, रोमेल मार्शल ग्रेचको और जनरल गियाप जैसे लोगों की फौजी शिक्षा क्या अंगरेजी में हुई है? फौज में तो बहादुरी की, नेतृत्व की, देश भक्ति की, निशानेबाजी की, शारीरिक क्षमता की

अंग अंग या प्रभु उमंग

संध्या एवं यज्ञ के मन्त्रों का पद्यानुवाद

§23 अप्रैल के अंक में प्रकाशित "जाग उठो हे अग्नि देव" के पूर्व आचमन एवं अंग स्पर्श के भावों को व्यक्त करने वाले इन पद्यानु वादों को पढ़िए§

------प्रबन्ध सम्पादक§

अंग स्पर्श - मन्त्रः-

ओ3म् - वाङ्म आस्येऽस्तु ।।1।।
ओ3म् - नसोर्मे प्राणोऽस्तु ।।2।।
ओ3म् - अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु ।।3।।
ओ3म् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु ।।4।।
ओ3म् बाह्वोर्मे बलमस्तु ।।5।।
ओ3म् ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु ।।6।।
ओ3म् अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु ।।7।।

तन अंग अंग या प्रभु उमंग; सब कर्मशील बन जायें।
हे शक्ति निधे दो शक्ति हमें, हम धर्मशील बन जायें।।
मुख में बल रसना वाणी हो
नासिका प्राणमय प्राणी हो
हों चक्षु दृष्टि की शान्ति लिये
बल श्रवण कर्ण कल्याणी हो।
पुरुषार्थ प्रबल हो बाहों में, जय यज्ञशील बन जायें।
हे शान्ति निधे दो शक्ति हमें, हम धर्मशील बन जायें।।
वे जंघाएं हों ओज पूर्ण
बल गमन-आगमन स्रोतपूर्ण
यह अंग-अंग की बात नहीं
यह सबल स्वस्थ हो देह पूर्ण।
या सबल देह में स्वस्थ बुद्धि, कर्तव्य शील बन जायें।
हे शक्ति निधे दो शक्ति हमें, हम धर्म शील बन जायें।।
देह आत्म सब हृदय सबल हो
अनुशासित मन का संबल हो
बाहर बल हो भीतर बल हो
बल ही बल हो किन्तु विमल हो।।
यह देह आत्म मन मन्दिर या, हम कुमशील बन जायें।
हे शक्ति निधे दो शक्ति हमें, हम धर्मशील बन जायें।।

-देवनारायण भारद्वाज आजमगढ़।

और दुश्मन के विरुद्ध उचित रणनीति बनाने की क्षमता की परीक्षा होनी चाहिए. कोई नौजवान इन सब गुणों से निष्प्राण हो लेकिन यदि अंगरेजी नहीं जाने तो फौज का अफसर नहीं बन सकता. वह एक साधारण जवान बनने के लिए अभिशप्त है.

यह कहने की जरूरत नहीं है कि एक साधारण जवान और फौज के अफसरों के बीच असमानता की पाताल जितनी गहरी खाई होती है. यह असमानता उपरोक्त अन्याय की खोज में कोढ़ का काम करती है. क्योंकि अफसरों के पद, जिन पर जवानों की तुलना में सौ से ले कर हजार गुना तक ज्यादा खर्च किया जाता है, केवल उसी वर्ग के लिए आरक्षित हो जाते हैं, जो 'कान्वेंट' में पढ़ा हो, जो अंगरेजी फर्राटे से बोलता है या अपने पुराने मालिकों की हूबहू नकल करने में निष्णात हो. जो गरीबों के लड़के हैं, वे 'डिफेंस अकादमी की परीक्षा में बैठने का साहस भी नहीं कर सकते. योग्यता एक छोटे से वर्ग की बपौती बन कर रह जाती है. यही वर्ग है जो सारे देश पर छाया हुआ है. यह समाजवाद कैसे ला सकता है?

एक समतामूलक समाज के निर्माण करनेवाले लोगों को जनता से कुछ तो सीधा रिश्ता होना चाहिए. लेकिन जो शासकगण हैं, शासकगण से मेरा मतलब उन सब लोगों से है, जो सम्पन्न हैं, उच्च वर्ग के हैं. शहरों में रहते हैं, नीति बनाते हैं, वे जनता से बिलकुल दूर जा पड़ते हैं. जब वे बच्चे होते हैं तो अलग-थलग स्कूलों में पढ़ते हैं और जब उनके बच्चे हो जाते हैं तो वे भी इन्हीं स्कूलों में पढ़ते हैं. इस वर्ग को क्या मालूम कि टाट-पट्टी स्कूलों की टपकती हुई छत के नीचे बैठने का मतलब क्या होता है? ये क्या जानें कि पाखाने की बदबू और कक्षा की पढ़ाई में क्या रिश्ता है? इस वर्ग का बच्चा घर आ कर अपने पिताजी से यह शिकायत क्यों कर करेगा कि कुछ सौ रुपट्टी पानेवाला मास्टर अपनी झुंझलाहट हम पर निकालता है.

हमारे देश के नीति निर्माता वर्ग को इन सब परिस्थितियों को भोगना ही नहीं पड़ता. इसीलिए चुनिंदा स्कूलों पर करोड़ो रुपये खर्च किये जाते हैं और करोड़ो बच्चे जिन पाठशालाओं में पढ़ते हैं वे अनवरत उपेक्षा की शिकार बनी रहती हैं. जिस दिन देश में 'कान्वेंट' नहीं होगा और शासक वर्ग का बच्चा भी टाटपट्टी स्कूल में पढ़ेगा और घर आ कर स्कूल के अंधेरे की, बदबू की, पिटाई की चर्चा करेगा, उसी दिन देश की शिक्षा का नक्शा बदल जायेगा. जिस दिन रेल की द्वितीय श्रेणी में मंत्री धक्के खायेगा, अफसर को पाखाने के पास खड़े हो कर रात काटनी पड़ेगी और नेता को दरवाजे से लटकते हुए सफर करना पड़ेगा, उसी दिन हिन्दुस्तान की रेलों को सुधारने के लिए सही चिन्तन प्रारंभ होगा. उसी दिन समाजवाद नारा नहीं रहेगा. सच्चाई बन जायेगा.

लेकिन जब तक देश में अनिवार्य अंगरेजी बनेगी शिक्षा में न्याय में नौकरी में, चिकित्सा में, फौज में समाजवाद आ नहीं सकता. अंगरेजी शिक्षा बचपन से ही बच्चों में गैर बराबरी और पाखंड की भावना को जन्म देती है. आप उत्पादन और वितरण की प्रणाली में तब तक सुधार नहीं कर सकते, जब तक कि देश के बच्चों में बचपन से ही समतामूलक मनोभूमि तैयार नहीं हो. ये अंगरेजी स्कूल समाजवाद की इस प्रथम आवश्यकता की जड़ों में निरंतर मट्ठा डालने का प्रयत्न करते रहते हैं.

आर्यसमाज संस्कृत को उचित स्थान दिलाने हेतु संघर्ष करेगा

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

युग प्रवर्त्तक ने आर्यसमाज की स्थापना युग परिवर्तन के लिए की है। आज आर्यसमाज के मिशन से बढ़कर और कोई पुण्यकार्य नहीं है। संस्कृत परमात्मा की अमरवाणी है। हमारा समस्त आर्य साहित्य इसी पुनीत भाषा में लिखा हुआ है। इस भाषा के उत्थान और प्रसार के लिए आर्यसमाज कृतसंकल्प है।

उक्त उद्गार सप्रू हाउस दिल्ली में, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित आर्यसमाज के ।।4वें स्थापना दिवस पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि चाहे संस्कृत का प्रश्न हो, अथवा देश की आज़ादी का, नारी उद्धार की बात हो अथवा अछूतों का कल्याण- आर्यसमाज ने सदैव अग्रणी रहकर निःस्वार्थ भाव से काम किया है। यदि शासन ने संस्कृत को उचित स्थान नहीं दिया तो आर्यसमाज को विवश होकर संघर्ष का बिगुल बजाना पड़ेगा।

इस अवसर पर पूर्व सांसद स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती ने अपने अध्यक्षीय भाषण में महर्षि दयानन्द के मिशन को सफल बनाने के लिए जनता का आह्वान किया। प्रख्यात पत्रकार श्री क्षितीश वेदालंकार, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, पं0चिन्तामणि आदि महान विभूतियों ने भी जनता को सम्बोधित किया। डा0 धर्मपाल आर्य ने प्रतियोगी विजेताओं को पुरस्कार एवं वैदिक साहित्य वितरित किया। अध्यक्ष ने प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सूर्य देवजी की निष्ठापूर्ण सेवाओं के लिए उन्हें शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया।

प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी तथा उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री मनमोहन तिवारी जी ने अपने सन्देश में आर्यजगत के मान्य नेता स्वामी आनन्दबोध सरस्वती को उनके संघर्ष में प्रदेशीय जनता का पूर्ण सहयोग दिए जाने का आश्वासन दिया है।

समय की पुकार

-महीपाल सिंह आर्य लालपुर §गा0बाद§

मेहनत की चोटी से, फिर से रोटी ने हमें पुकारा है ।
बढ़े चलो, बढ़े चलो कर्म का यह ही नारा है ।।
कल की बातें कल पर छोड़ो, कल इक बीता सपना है,
इक यह पल ही सच है साथी, इक यह पल ही अपना है ।
इक पल की खातिर ही हमको जीवन का वरदान मिला,
इक पल की खातिर ही जन का जन-जन में भगवान मिला।।
जीवन वारो उस इक पल पर जो पल सबको प्यारा है ।।1।।
कवि आज का हमें मिलेगा खेतों में खलियानों में
सरहदों पर वतन की लड़ता, सीमा के बलिदानों में
मिल की भठ्ठी आगे तपता जमीं दोज खदानों में
दीनों की अन्तड़ियों में या मिलेगा फिर तूफानों में
बाहर निकलकर देखना कवि अब कर्तव्य तुम्हारा है।।2।।
सुगन्ध माटी की सौंधी सौंधी कवि की आज कल्पना है
विश्व बन्धुत्व की एक ललक है सत्य अहिंसा सपना है
नहीं स्वर्ग की हमें जरूरत स्वर्ग यहीं पर अपना है
नई दिशा इतिहासों को दो बिना युद्ध के लिखना है
श्रम एवं जयते ही सब कुछ छन्द अलंकार हमारा है।।3।।
जिलाधीश हलधर और अध्यापक एक स्केल में हों
शूली हों गद्दारों को बल्कि नहीं वे जेल में हों
माप दण्ड विधि के सारे मानवता के मेल में हों
साक्षी की ना पड़े जरूरत दोषी जकड़े बेल में हों।
वरीयता मिले बराबर की जो बेबस बेचारा है।।4।।
आदर्श नहीं बनाने हमको स्वयं आदर्श बन जाना है
अपने विवेक से ही सबको देखना इक पैमाना है
सत्य अहिंसा और प्रेम का ही मानक अपनाना है
विश्व शान्ति का ही विश्व को नया संदेश सुनाना है
विश्व साहित्य के आदि में वेद ही ज्ञान हमारा है ।।5।।

सभा प्रधान जी तथा सभा मंत्री जी भरथना में

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं0 इन्द्रराज जी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री मनमोहन तिवारी जी और जयन्त कुमार ने भरथना {इटावा} में अपने प्रवचनों द्वारा वहाँ एक नवीन चेतना का संचार किया। इस अवसर पर {भरथना आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव} पर अपने प्रवचन में सभा प्रधान पं0 इन्द्रराज-जी ने कहा कि "भारत को उसकी एकता, अखण्डता तथा सम्प्रभुता और संस्कृति से वंचित करने हेतु चार प्रकार की शक्तियाँ कार्य कर रही हैं। प्रथम तो कम्यूनिस्ट विचारधारा का पूरे श्रमिक वर्ग पर गहरा प्रभाव है। यदि इस {कम्यूनिस्ट} विचार धारा का इस तरह प्रभाव बढ़ता रहा तो समाज में नास्तिकता बढ़ेगी और परिणाम स्वरूप नैतिक स्तर नीचे गिरेगा तथा अनाचार और पापाचार, समाज के प्रत्येक वर्ग में व्याप्त हो जायगा। दूसरी शक्ति मुसलमानों की है। आजकल मुसलमानों की आबादी में बेतहाशा वृद्धि हो रही है तथा पेट्रोडालर के बल पर लोगों को मुसलमान भी बनाया जा रहा है। तीसरी शक्ति ईसाई मिशनों की है ये व्यापक रूप से धर्मान्तरण का कार्य कर रहे हैं। पूरा उत्तरीपूर्वी भारत इनके चंगुल में है। चौथी शक्ति सिखों की है ये भी विदेशी पैसों के बल हरिजनों को सिख बनाने में लगे हैं तथा अलग खालिस्तान की नींव डाल रहे हैं। उन्होंने विभिन्न उदाहरणों के द्वारा राष्ट्र की स्वतन्त्रता पर खतरे को प्रस्तुत किया। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे जातिवाद, अंधविश्वास तथा स्वार्थ इत्यादि त्यागकर राष्ट्र-रक्षा के कार्य में लग जायें।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के महामंत्री श्री मनमोहन-तिवारी जी ने सभा द्वारा किए जा रहे कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा कहा कि सभा द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द अतिथिशाला के निर्माण का कार्यक्रम हाथमें लिया गया है। तथा इस वर्ष के अन्त तक निर्माण कार्य को समाप्त करने का संकल्प भी व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि सभा ने उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना का कार्य भी प्रारम्भ किया है। उन्होंने आर्यसमाज के नेतृत्व में एक व्यापक प्रचार-अभियान भी चलाने का आवाहन किया। उन्होंने सबका आवाहन किया कि सभा के द्वारा प्रारम्भ किए गये कार्यक्रमों में अपना सहयोग दें। विशेष रूप से श्रद्धानन्द अतिथि-शाला के निर्माण में सहायता हेतु हर प्रकार सहयोग देने की अपील की। इस अवसर पर जयन्त कुमार ने व्यापक रूप से ईसाई मिशनों द्वारा किए जा रहे राष्ट्र घाती तथा देश-द्रोहात्मक कार्यों का पर्दाफाश किया तथा लोगों को आगाह किया वे जागरूक होकर राष्ट्र के अस्तित्व को चुनौती देने वाले विधर्मी तथा विदेशी शक्तियों की पूरी तरह संगठित होकर परास्त कर दें। उन्होंने "राष्ट्र रक्षा युवा आंदोलन" का उद्देश्य बताते हुए युवाओं का आवाहन किया वे {युवा} "राष्ट्र रक्षा युवा आंदोलन" का सक्रिय सदस्य बनकर इस महान आंदोलन को सफल बनाकर अपने राष्ट्र धर्म तथा संस्कृति की रक्षा करें।

अन्त में माननीय सभा प्रधान पं0 इन्द्रराज जी, माननीय-सभा के महामंत्री श्री मनमोहन तिवारी द्वारा सेवा तथा प्रचार और वैदिक प्रचार कार्य तथा व्यवस्था में उत्कृष्ट कार्यों {योगदान} हेतु विभिन्न व्यक्तियों, अधिकारियों तथा सन्यासियों को सम्मानित किया गया। श्री वेद प्रकाश जी मंत्री जिला उपप्रतिनिधि सभा इटावा तथा उपमंत्री सभा ने प्रधान जी को श्रद्धानन्द अतिथिशाला के निर्माण हेतु 5000/- की थैली भेंट की। इस वार्षिकोत्सव में उपस्थिति, व्यवस्था तथा संचालन उच्चकोटि का था।

सूचना

नगर आर्यसमाज मन्दिर रकाबगंज के द्वारा हरिजन बस्ती श्री-संत श्वपंच सुदर्शनपुरी ऐशबाग लखनऊ में रामनवमी के उपलक्ष्य में श्री पं0 यज्ञदत्त शास्त्री के पौरोहित्य यज्ञानुष्ठान किया गया तथा अन्त में भजन इत्यादि भी गाये गए जिसका संचालन श्री-रेवती रमन एडवोकेट ने किया फिर शान्तिपाठ के बाद हरिजनों के द्वारा बाँटा गया प्रसाद सभी ने खाया एवं जलपान किया।

-सभामन्त्री

– आर्य बाल सभा यमलार्जुनपुर कैसरगंज {बहराइच} का तृतीय वार्षिकोत्सव दि0 5,6,7 मई 1989 को मनाया जायगा जिसमें उत्कृष्ट विद्वान व संन्यासी पधार रहे हैं। स्थानीय जनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

सरधना में आर्य महा सम्मेलन

– मेरठ- देश में धर्म परिवर्तन की प्रवृत्ति की वृद्धि एवं राष्ट्रीय भावना के ह्रास को देखते हुए आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला मेरठ की ओर से दिनांक- 21, 22, 23 मई 1989 को सरधना {मेरठ} में आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया है।

सब से प्रार्थना है कि इसमें भाग लेकर तन, मन, धन से इस सम्मेलन को सफल बनाने की कृपा करें।

इन्द्रराज, मंत्री जि0 सभा

– सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद द्वारा उड़ीसा के आदि वासी अंचलों में युवा क्रान्ति का सूत्रपात का तपोवन शान्ति आश्रम चांचेड़ी {जिला फूलवाड़ी} में 3 मई से 9 मई 1989 तक विशाल युवक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है जिसका उद्देश्य है विदेशी धन के बल पर धर्म परिवर्तन को रोकने के लिए कार्यकर्ता प्रशिक्षित करना है।

आवश्यकता

सुयोग्यतम उपदेशकों, प्रचारकों के प्रार्थना-पत्र सभा द्वारा निश्चित वेतनमान पर सभा के छपे फार्म पर आमन्त्रित हैं, वही प्रार्थी आवेदन करें जिनमें निम्नलिखित योग्यताएं एवं अनुभव हों।

1- महोपदेशक - गुरुकुल स्नातक, शास्त्री, 5 वर्ष का अनुभव एवं वैदिक संस्कार में दक्ष।
2- उपदेशक - गुरुकुल स्नातक, शास्त्री, संस्कार कराने में प्रवीण, वैदिक विचारधारा।
3- प्रचारक {भजनोपदेशक}- दसवीं पास, अनुभवी, वैदिक-विचार धारा {हारमोनियम स्वयं का हो}
4- ढोलक वादक {वादक} वादन में प्रवीण, अनुभवी {हिन्दी-ठीक से लिख पढ़ सकें}
5- आयु - 18 से 30 वर्ष के भीतर हो।

प्रार्थी आवेदन करते समय समस्त योग्यताओं के प्रमाण-पत्रों की फोटोस्टेट कापी तथा स्थानीय समाज के प्रधान एवं मंत्री का मूल रूप से आवेदन पत्र संलग्न करें तथा मुद्रित फार्म पर नवीनतम अपना फोटो भी चिपकायें, तथा एक प्रति अलग से भेजें, जिस पर आवेदक के हस्ताक्षर होने चाहिए।

साक्षात्कार के समय बुलाने पर अपने निजी व्यय पर उपस्थित होना पड़ेगा।

-हरिश्चन्द्र आर्य,
अधिष्ठाता उपदेश विभाग आर्यप्रतिनिधि सभा
उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

सम्पादक के पत्र

माननीय सम्पादक महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार पत्र तथा अन्य समाचार पत्रों में यह पढ़कर कि "कुछ तत्व मलियाना में पिछले दंगों में मृत व्यक्तियों का स्मारक बनाएंगे" बड़ा क्षोभ हुआ। इस घोषणा को यदि कार्यरूप में लाया गया तो इस संवेदन शील नगर में दोनों संप्रदायों में तनाव बढ़ेगा तथा प्रतिक्रिया स्वरूप नगर की शान्ति भंग होगी तथा कानून व्यवस्था की स्थिति खराब होगी। ऐसे तत्व इस तरह के अनावश्यक, असामाजिक तथा उत्तेजक घोषणाएं करके नगर में दो संप्रदायों के बीच तनाव का वातावरण बनाकर अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करना चाहते हैं। इस तरह से जन जीवन में असुरक्षा तथा घृणा का वातावरण पैदा कर रहे हैं। ऐसे तत्वों पर कड़ी नजर रखी जाए तथा इन पर कड़ी कार्यवाही करके इस तरह के अराजक तत्वों का मनोबल तोड़ दिया जाय। ऐसे तत्वों को बता दिया जाय कि नगर में किसी तरह का ऐसा कार्य जिससे नगर की शान्ति व्यवस्था पर खराब असर हो, सहन नहीं किया जायेगा। प्रशासन को इस बारे में कड़ी कार्यवाई करना चाहिए।

-पं0 इन्द्रराज
1245 गौरीपुरा, मेरठ।

स्वामी आनन्द बोध सरस्वती एवं श्री बाल दिवाकर हंस द्वारा राजस्थान, मध्यप्रदेश का दौरा तथा दो आर्यसमाज मन्दिरों का शिलान्यास

दयानन्द सेवाश्रम भौंदला द्वारा वनवासी क्षेत्रों में सराहनीय कार्य

उदयपुर

मधुवन कैमीकल फर्टिलाइजर्स लि0 उदयपुर में आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास करने हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती एवं श्री पं0 बालदिवाकर हंस प्रधान संचालक आर्य वीर दल को लेकर गाड़ी जैसे ही उदयपुर स्टेशन पहुँची, तो नवोदित उद्योगपति श्री रामसिंह जी राठौड़ और उनकी फैक्टरी के कर्मचारियों तथा उदयपुर आर्यसमाज के स्थानीय आर्यों ने गगनभेदी नारों और पुष्पमालाओं से अपने नेताओं का भव्य स्वागत किया। ग्यारह बजे प्रातः पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती ने यज्ञानुष्ठान और वेद मंत्रों के उच्चारण के मधुमय वातावरण में एक कलश जिसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश और अनेक भारतीय मुद्रायें रखी हुई थीं को गगनभेदी नादों के बीच नींव में रखकर फैक्टरी में नये आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। अपने हृदयग्राही उद्बोधन में स्वामी जी ने कहा कि मनुष्य वाह्य चका चौंध का शिकार हो चला है, जब तक वह आत्मोत्थान हेतु धर्मानुसार अपने आचरण को शुद्ध नहीं करेगा तब तक जन-कल्याण असम्भव ही समझिये। इस आयोजन की अध्यक्षता श्री पं0 बालदिवाकर जी हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य वीरदल ने की। मध्यान्होत्तर 2 बजे स्वामी जी के साथ तीन गाड़ियों में शिवगंज (सिरोही) के कार्यकर्ताओं सहित सभी लोग परम तपस्वी स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी सरस्वती के दयानन्द सेवाश्रम वासवाड़ा पहुँचे वहां जन प्रतिनिधियों ने पुष्प मालाओं से स्वामी जी का मनोहारी स्वागत किया। स्वामी जी ने, स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के तपस्या पूर्ण जीवन पर प्रकाश डालते हुए आश्रम के क्रिया कलापों की सराहना की और उन्हें सार्वदेशिक सभा से हर सम्भव सहायता देने का आश्वासन दिया। श्री रामसिंह राठौड़ ने तुरन्त एक सहस्र रुपये की सहायता आश्रम को प्रदान की। जिसकी सभी लोगों ने सराहना की और स्वयं भी आश्रम को आर्थिक सहयोग देने का वचन दिया। तत्पश्चात हम सभी साथियों सहित हर्षवर्द्धन कैमिकल एण्ड मिनरल लिमिटेड मेघपुर पहुँचे, रात्रि में उद्योग की ओर से पूर्व निर्धारित सरकारी विश्रामगृह में स्वामी जी के साथ सभी लोगों ने विश्राम किया।

प्रातः साढ़े नौ बजे इसी औद्योगिक संस्थान के एक पार्श्व में स्वामी जी ने वेद की एक प्रति, अनेक सिक्के और क्षेत्र से निकलने वाले एक दैनिक पत्र की एक प्रति सुन्दर कटोरदान में रखकर यहां के उद्योग की ओर से बनने वाले आर्यसमाज मन्दिर की आधार शिला में रखी। स्वामी जी ने समारोह में उपस्थित जन-समुदाय को सम्बोधित करते हुए उद्योग के स्वामी श्री रामसिंह राठौड़ साहब की मुक्त कण्ठ से सराहना की और कहा आर्य समाज मानव मात्र का त्राता है जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ब्रह्माण्ड के भूत मात्र के कल्याण हेतु की थी आज श्री रामसिंह जी राठौड़ ने अपने दोनों उद्योगों में आर्यसमाज मन्दिरों के निर्माण का आयोजन कर निःसन्देह अनुपम कार्य किया है मैं परमपिता परमात्मा से उनके परिवार सहित उद्योगों में जुटे कार्यकर्ताओं के कल्याण हेतु प्रभु से प्रार्थना करता हूँ।

वनवासी क्षेत्र में आर्यसमाजद्वारा की सेवाओं का निरीक्षण

मध्यान्होत्तर स्वामी जी अपने काफिले सहित दो गाड़ियों में प्रस्थान कर वनवासी क्षेत्र में दयानन्द सेवाश्रम थांदला द्वारा की जा रही सेवाओं का निरीक्षण किया। फुलैंडी रम्भापुर, मदरानी, मंचखेरिया, झापादरा, देवीगढ़, सूजापुरा की प्रमुख बालबाड़ियों के साथ साथ अनेक ग्रामों के वनवासी भाई बहिनों को स्वामी जी ने उद्बोधन किया। वनवासियों ने भी तोरण द्वार बनाकर ढोल की ताल पर परम्परागत नृत्य करते हुए स्वामी जी का भव्य स्वागत किया। स्वामी जी ने आत्मविभोर होकर प्रत्येक स्थान की बाल बाड़ियों के बच्चों को मिष्ठान वितरण हेतु आर्थिक सहायता दी। देवीगढ़ में तो हजारों की संख्या में वनवसी बन्धुओं का उपस्थित जमघट आर्य दयानन्द सेवा श्रम द्वारा की सेवाओं का बखान कर रहा था।

थांदला दयानन्द सेवाश्रम संघ समारोह

श्री रामकृष्ण बजाज द्वारा निर्देशित- थांदला दयानन्द-सेवाश्रम के सैकड़ों बच्चों ने समवेत स्वर में वेद मंत्रों के साथ संस्कृत में गाई गई गीतिका से स्वामी जी सहित सभी सह-यात्रियों को फूल मालाएं पहनाकर भव्य स्वागत किया। स्वामी जी ने अपने भाषण में महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनके द्वारा किए कार्यों पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात स्वामी जी ने नवनिर्मित श्रद्धानन्द कक्ष का उद्घाटन किया। इस समारोह की अध्यक्षता भी श्री पं0 बाल दिवाकर हंस प्रधान संचालक आर्य वीर दल ने ही करके आश्रम वासियों का मार्ग दर्शन किया और निकट भविष्य में आश्रम में आर्य वीरदल प्रशिक्षण शिविर लगाकर बनवासी युवाओं को प्रशिक्षित कराने का आश्वासन दिया। श्री स्वामी जी ने श्री बजाज और उनके सहयोगियों के कार्यों की भूरि-भूरि प्रसंशा की और सभा द्वारा यथा सम्भव सहयोग का आश्वासन दिया।

इन्दौर में स्वामी आनन्दबोध सरस्वती का भव्य स्वागत और जलूस

प्रसिद्ध सिंधी व्यबसायी श्री ठाकुरदास जी द्वारा 1111-00 रु0 स्वामी जी को भेंट-

तीसरे दिन मेघपुर हर्षवर्धन कैमिकल एण्ड मिनरल लि0 से चलकर इन्दौर की ओर प्रस्थान किया तो मार्ग में अनेक स्थानों पर स्वामी जी को जनता ने फूल मालायें अर्पित कीं। रात्रि को साढ़े नौ बजे स्वामी जी अपने काफिले सहित प्रसिद्ध आर्य नेता श्री जगदीश प्रसाद जी वैदिक के निवास स्थान पर पहुँचे। श्री वैदिक जी के परिवार और आर्य बन्धुओं ने वैदिक जय घोषों के साथ साथ फूल मालाओं से सब आगन्तुकों का हार्दिक स्वागत किया और उन्होंने अपने नेताओं के आगमन की अगमानी में एक भव्य भोज का आयोजन किया। श्री पं0 राजगुरु जी, गौरीशंकर कौशल, किशोरीलाल गोयल, प्रकाश आर्य एडवोकेट, श्रमती अनिला देवी, आर्या, महोपदेशिका, श्री रामसिंह राठौड़ पत्रकार श्री जवाहरलालजी श्री परमानन्द सोलंकी, महात्मा भीष्मदेव जी, श्री ठाकुरदास जी सिंधीआदि अनेक मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतागण स्वागत समारोह एवं भोज में सम्मिलित हुए। प्रसिद्ध सिंधी व्यबसायी श्री ठाकुरदास आर्य ने धन से निर्मित आर्यसमाज वी0के0 कालोनी.-इन्दौर में स्वामी जी का भव्य स्वागत एवं जलपानादि करके आर्य समाज और उनके शिरोमणि नेता के प्रति निष्ठा प्रकट की, स्वामी जी इससे प्रभावित हुए। इस तरह अनेक आर्यसमाजों के भ्रमण के पश्चात ग्यारह मोटर साइकिलों पर ओ3म् ध्वज लहराते आर्य वीरदल के सैनिकों ने स्वामी जी की शोभा यात्रा का पथ संचालन किया, आर्य समाज वी0के0 कालोनी, आर्यसमाज मल्हार गंज; खजूरी बाजार, कृष्णपुरा, महात्मागांधी मार्ग, श्रद्धानन्द आर्य अनाथालय वेयर हाउस रोड, गुजराती कालेज, स्वामी श्रद्धानन्द मार्ग होता हुआ जलूस आर्यसमाज संयोगिता गंज में बिराट सभा में परिवर्तित हो गया। स्वामी जी ने जन सम्बोधन में आर्य समाज द्वारा की सेवाओं का विशद वर्णन किया और आवाहन किया कि आर्य बन्धुओं को समस्त मतभेद भूलकर सर्वात्मना महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने में जुट जाना चाहिए।

इन्दौर में प्रेस कान्फ्रेन्स-

इन्दौर के समाचार पत्रों के प्रेस कान्फ्रेन्स भवन में प्रभात साप्ताहिक, नई दुनिया इन्दौर समाचार, दिनमान दैनिक, युग प्रभात साप्ताहिक, स्वदेश, भास्कर, नव भारत, क्रानिकल, चौथा संस्कार, चौथा प्रहरी, के संवाददाताओं ने ईसाई अराष्ट्रीय प्रचार के कुप्रभाव, मुस्लिम समुदाय द्वारा महिलाओं, बच्चों के अपहरण, शिक्षा से संस्कृत को निकालने और उससे सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास तथा सरकार की तुष्टीकरण नीति के दुष्प्रभावों का विशद वर्णन किया। स्वामी जी संवाददाताओं के द्वारा पूछे प्रश्नों का निर्भयता से दो टूक स्पष्ट उत्तर दिये जिसका पत्र प्रतिनिधियों ने स्वागत किया। प्रेस कान्फ्रेन्स में श्री पं0 बाल दिवाकर हंस, श्री राजगुरु, श्री जगदीश वैदिक, आदि अनेक मध्य भारतीय आर्य नेतागण और उद्योगपति श्री रामसिंह राठौड़ उपस्थित थे। इससे पूर्व स्वामी जी दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय और सरस्वती शिशु मन्दिर का भी निरीक्षण किया। श्रद्धानन्द आर्य अनाथालय में एक वृहद संगोष्ठी को भी स्वामी जी ने तथा श्री हंस जी ने सम्बोधित किया। तत्पश्चात हर्षवर्धन कैमिकल एण्ड मिनरल लि0 के इन्दौर स्थित कार्यालय में श्री रामसिंह राठौड़ के परिवार, सम्बन्धीगण एवं आफिस के कार्यकर्ताओं ने स्वामी जी को समारोह समापन भोज देकर भव्य स्वागत किया और स्वामी जी ने तथा श्री हंस जी ने राठौड़ परिवार की उदात्त भावनाओं की सराहना की और रात्रि को इन्दौर से वायुयान द्वारा दिल्ली लौट आये। समस्त मार्ग व्यय व्यवस्था स्वयं राठौड़ उद्योगपति ने की थी। और स्वामी जी को आर्य समाज मन्दिरों में विद्वान परोहित रखने और अपने द्वारा दान दी गई जीप द्वारा वनवासी क्षेत्रों में प्रचार कराने का विश्वास दिलाया।

कानपुर महानगर में

आर्यसमाज स्थापना दिवस ससमारोह सम्पन्न



स्थापना दिवस पर भाषण करती हुई डा0 आशारानी राय

"आर्य समाज स्थापना दिवस" के अवसर पर दिनांक- 2 अप्रैल रविवार को आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर के तत्वावधान में कानपुर महानगर के समस्त आर्य समाजों तथा अनेक विद्यालयों द्वारा विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया गया। शोभा-यात्रा का प्रारम्भ आर्यसमाज, लाजपत नगर कानपुर से यज्ञ के पश्चात हुआ, जो मुमटी नं0 5, 80 फिट रोड, अशोकनगर होते हुए मोतीझील पहुँचा, जहाँ 6 अप्रैल को "जनसभा" में भाग लेने के निवेदन के साथ समाप्ति हुई। शोभा-यात्रा में विभिन्न विद्यालयों कानपुर विद्या मन्दिर डिग्री कालेज, आर्य वैदिक विद्यालय दल, आर्य विद्यालय नरोना आर्य वैदिक जूनियर हाईस्कूल अर्मापुर, वैदिक विद्यालय दबौली के छात्र/छात्राओं महर्षि दयानन्द बाल मन्दिर शास्त्री नगर ने दिशाओं को गुंजायमान करते हुए जयघोषों से जन-जन में जागृति का नाद किया। छात्रायें हाथों में विभिन्न पोस्टर सोया देश जगाने को - महर्षि दयानन्द आये थे, "संस्कृत नई शिक्षा में स्थान दो, "जीवित नारी नहीं जलेगी; अब मुर्दों के साथ में, अपना जीवन आप जियेगी, आदर सहित समाज में, "और दहेज अभिशाप है" आदि लिये हुए थी। आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर के आर्य वीरदल के अधिष्ठाता श्री शिवपूजन जी के निर्देशन में आर्य वीरों ने लाठी, भाला पेरामीड् का प्रदर्शन के साथ सड़क पर यातायात की व्यवस्था में विशेष सहयोग दिया। शोभा यात्रा का नेतृत्व आर्य उपपतिनिधि- सभा के पदाधिकारियों डा0 हरपाल सिंह, श्रीमती सरला चौधरी, सुरेन्द्र कुमार डंग, डा0 आशा रानी राय, भोजदेव मुदित, अनिल कुमार तोमर, जय सिंह, प्यारे लाल आर्य, गोरखनाथ गुप्ता, वि0 ओमप्रकाश आर्य, प्रो0 निरंजन सिंह, पं0 लक्ष्मीधर आदि ने किया।

6 अप्रैल को कानपुर विद्यामन्दिर महिला डिग्री कालेज, कानपुर में आर्यसमाज स्थापना दिवस पर विशाल जनसभा हुई। जिसमें उद्बोधित करते हुए स्वामी दर्शनानन्द ने कहा कि आर्यसमाज संस्था नहीं आन्दोलन है, जिसने राष्ट्र की सामाजिक बुराईयाँ दूर करने, राजनैतिक चेतना जागृत करने तथा जीवन के हर क्षेत्र में मार्ग दर्शन जागरूकता व प्रेरणा दी। उन्होंने परिवार सहित आर्यसमाज में आने का आवाहन किया, जिससे कड़ी चलती रहे। कानपुर विद्या मन्दिर डिग्री कालेज के सचिव डा0 आई0सी0गुप्त ने त्रैतवाद की मंजुल व्याख्या करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने आजीवन ब्रह्मचर्य संसार के त्याग के लिये धारण किया, जबकि भीष्म ने अपने पिता की तुष्टिकरण के लिये, पं0 लक्ष्मीधर शर्मा ने वैदिक मान्यताओं पर बल देते हुए सु तथा कल्याणपूर्ण आचरण करने की प्रेरणा दी। श्रीमती सरला चौधरी, उपप्रधान ने महर्षि दयानन्द के कार्यों, अहसानों व राष्ट्र के प्रति चेतना की चर्चा की। आर्य उप प्रतिनिधि सभा की मन्त्री तथा कानपुर विद्या मन्दिर महिला डिग्री कालेज की प्राचार्या डा0 आशा रानी-राय ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए आर्यसमाज की स्थापना के महत्व पर बल देते हुए वर्तमान परिपेक्ष्य में आर्यसमाज की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। अध्यक्षता करते हुए डा0 हरपाल सिंह, प्रधान, आर्य उप प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज के योगदान पर विचार दिये। अन्य वक्ताओं में श्री पुत्तीलाल यादव, श्री-प्यारे लाल आर्य, श्रीमती आशा चावला, वि0 ओमप्रकाश आर्य, श्रीमती मालती, श्री ओम प्रकाश आर्य, मुख्य अभियन्ता, कानपुर विकास प्राधिकरण डा0 सुनीला और श्रीमती ऊषा वर्मा आदि थे।

डा0 आशा रानी राय,
मन्त्री
आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर।



भव्य शोभा यात्रा का एक दृश्य



आर्यवीर शारीरिक प्रदर्शन दिखाते हुए

-लखनऊ- नगर आर्य समाज मन्दिर रकाबगंज में दिनांक- 6·4·89 को सांय 6 बजे से आर्य समाज स्थापना दिवस के सम्बन्ध में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में यह भी विचार किया गया कि आगामी सम्वत् 2046 में आर्यसमाज ने किस तरह से समाज देश, राष्ट्र का किस तरह से एक धागे में मोती की तरह से पिरो सके, अर्थात् किस तरह से भ्रष्टाचार का उन्मूलन करना है। इसमें मुख्य वक्ता के रूप में श्री प्रशान्त जी वेदालंकार दिल्ली ने भाग लिया, एवं जनपद की समाजों के मंत्री, प्रधान वरिष्ठ सदस्यों ने भाग लिया तदुपरान्त अन्त में एक ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया।

- आर्यसमाज सरदार पटेल मार्ग (खलासीलाइन) सहारनपुर ने ऋषिबोध पर्व धूमधाम से मनाया गया प्रभात फेरी निकाली गई। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जीवन पर प्रकाश डाला गया। स्थानीय जनता बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

- आर्यसमाज मछुआखेड़ा (नैनीताल) के उपप्रधान श्री प्यारेलाल की सुपुत्री का दिनांक- 6 फरवरी 1989 को तथा श्री सोन पाल पीपलगाँव की सुपुत्री का नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन

वर्तमान समय में हमारा राष्ट्र, हमारी संस्कृति तथा हमारा धर्म विदेशी शक्तियों, विधर्मियों तथा देश द्रोहियों के षडयन्त्रों का शिकार बनकर अपना अस्तित्व खोने के कगार पर है। एक तरफ मुसलमान अरब देशों से बेइन्तहा पेट्रोडालर प्राप्त कर गरीब हरिजनों तथा बाल्मीकि भाईयों को मुसलमान बनाने की प्रक्रिया चलाकर उनको हिन्दु समाज से काट देना चाहते हैं। दूसरी तरफ ईसाइ मिशनरियाँ संपूर्ण भारत में प्रचुर मात्रा में प्राप्त विदेशी धन के बलपर, शादी, चिकित्सा, सेवा शिक्षा तथा आर्थिक सहायता का लालच देकर व्यापक पैमाने पर धर्मान्तरण का कार्य कर रही हैं। उत्तर-पूर्वी भारत आसाम, नागालेण्ड, मिजोरम, मेघालय, अरूणाचल प्रदेश में ईसाई बहुमत में हैं या निकट भविष्य में होने वाले हैं। उड़ीसा, मध्य प्रदेश, उत्तर-प्रदेश, बिहार-बंगाल के पर्वतीय अंचलों तथा आदिवासियों में ईसाई-करण का खतरनाक दुष्चक्र पूरी सफलता के साथ ईसाई मिशनरियों के द्वारा चलाया जा रहा है। उत्तर-प्रदेश, बिहार, तथा मध्य प्रदेश में व्याप्त जातिवाद, अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराई का लाभ उठाकर हरिजनों को सवर्णो के प्रति उकसाकर तथा सवर्णों और छोटी जातियों के बीच घृणा का वातावरण पैदा करके उनको सिख, इसाई तथा मुसलमान बनाया जा रहा है। अतीत का इतिहास साक्षी है कि जब -जब हिन्दु समाज विखण्डित हुआ है, राष्ट्र का विखण्डन हुआ है। पाकिस्तान्, बगंलादेश, वर्मा, तिब्बत के बाद अब पुनः खालिस्तान, ईसाइ स्तान तथा दूसरे पाकिस्तान के निर्माण की प्रक्रिया देश द्रोहियों, विधर्मियों तथा विदेशी शक्तियों के द्वारा प्रारम्भ की जा चुकी है। उत्तर-पूर्वी राज्यों नागालेण्ड, मिजोरम, मेघालय, अरुणांचल प्रदेश इत्यादि) में चर्च (ईसाईमिशनों) का राजनीतिक वर्चश्व दृढ़ हो गया है तथा चर्च (मिशनों) का खुला राजनीतिक हस्तक्षेप प्रारम्भ हो चुका है। निकट भविष्य में (कुछ ही वर्षों में) उत्तर -पूर्वी भारत में पृथक ईसाई राष्ट्र की मांग प्रारम्भ होने वाली है। उधर कश्मीर को भारत से अलग करने हेतु वहाँ पाकिस्तानी घुसपैठिए तथा जम्मू कश्मीर के मुसलमान हिन्दुओं के धार्मिक स्थानों का अपमान तथा आतंकित कर रहे हैं तथा हिन्दुओं की हत्याएं करके उनको आंतकित कर कश्मीर को भारत से अलग आजाद कश्मीर बना रहे हैं। सिखों द्वारा व्यापक पैमाने पर हिन्दुओं की हत्या की जा रही है तथा उन्होंने खालिस्तान राष्ट्र की स्थापना हेतु खूनी संघर्ष छेड़ा हुआ है। राष्ट्र के इस विपत्तिकाल में हमारे द्वारा चुनी गई सरका पूरी तरह से नाकारा असफल तथा अंधी और बहरी बनी हुई इन राष्ट्र घाती शक्तियों के प्रति तुष्टीकरण की नीति अपनाकर देश को विखण्डित करने में सहायक हो रही है।

हमारे राष्ट्र की एकता, अखण्डता, स्वतन्त्रता खतरे में है। हमारी संस्कृति लुप्तावस्था में है। हमारे धर्म वैदिकधर्म (हिन्दु धर्म) को धर्मान्तरण के द्वारा नष्ट किया जा रहा है। हमें इन राष्ट्र धर्म तथा संस्कृति के शत्रुओं का व्यापक प्रचार अभिभाव तथा जनसम्पर्क के द्वारा पर्दाफास करना होगा। तथा सभी देशभक्त तथा राष्ट्रवादी शक्तियों को एक जुट करके प्रभावशाली आन्दोलन के द्वारा सरकार को विवश करना होगा कि वह इन राष्ट्र-घाती शक्तियों के कार्य कलापों पर प्रतिबन्ध लगाएं तथा संविधान में संशोधन करके धर्मान्तरण करने वालों को हर प्रकार की सरकारी सुविधा रद्द करें और उनकी नागरिकता भी समाप्त करें। विदेशों से ईसाइ, मुसलमानों तथा सिखों को मिलने वाले प्रचुर मात्रा में विदेशी धन पर प्रतिबन्ध लगाएं।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सारे प्रदेश के राष्ट्रभक्त तथा अपनी संस्कृति और धर्म में दृढ़ आस्था रखने वाले युवाओं को एक साथ एक मंच पर लाकर एक व्यापक आंदोलन करने का निश्चय किया गया है। इस आंदोलन "राष्ट्र एवं युवा आंदोलन" को सफल बनाने हेतु सारे प्रदेश का व्यापक दौराकर युवाओं के राष्ट्र धर्म संस्कृति के प्रति जागरूक हो कर इस "राष्ट्र रक्षा युवा आंदोलन" का सदस्य बनाया जा रहा है जिससे पूर्णतया संगठित तथा अनुशासनबद्ध ढंग से प्रभावी तथा व्यापक आंदोलन किया जाय। इस आंदोलन के द्वारा जन-जन को भारत की सुरक्षा, अखण्डता तथा हमारी संस्कृति के शत्रुओं का पर्दाफास करके उनको जागरूक बनाया जाय। इस आंदोलन के उद्देश्यों के बारे में विस्तृत जानकारी हेतु कृपया सम्पर्क करें।

आर्यसमाज मन्दिर- बुढ़ाना गेट, मेरठ शहर,
मंत्री आर्यसमाज गणेशगंज, लखनऊ।

हरिशंकर आर्य विद्यालय में विदाई समारोह

दिनांक- 25-3-89 को हरिशंकर आर्य विद्यालय मेरठ के बच्चों (कक्षा 5) के विदाई समारोह के अवसर पर पं० इन्द्रराज जी ने बच्चों को धर्माचरण करने का उपदेश किया। उन्होंने कहा कि "आप सब बच्चों ने जो कुछ इस विद्यालय में अब तक सीखे हैं उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयत्न करना। ईश्वर में आस्था तथा गुरुजनों के प्रति आदर-भाव तथा सद्‌आचरण आपको एक योग्य नागरिक, योग्य संतान तथा भावी राष्ट्र नायक बनाएगें। उन्होंने सभी अध्यापिकाओं तथा स्टाफ को उनके समर्पित तथा परिश्रम की भावना से शिक्षण तथा अन्य कार्यों हेतु अथवा साधुवाद दिया।

इस अवसर पर जयन्त कुमार ने बच्चों को किसी भी कठिनाई से न घबराने की प्रेरणा दी। उन्होंने लालबहादुर शास्त्री का उदाहरण दिया। श्री शास्त्री जी ने गरीबी, अभाव तथा साधन हीनता के बावजूद अपने लगन, परिश्रम तथा संकल्पशक्ति से प्रधानमंत्री के उच्च तथा गौरवमय पद को सुशोभित किया तथा भारत जैसे विशाल राष्ट्र का नेतृत्व करने का गौरव प्राप्त किया। आप सब को लालबहादुर शास्त्री से प्रेरणा लेनी चाहिए।

इस अवसर पर स्वराज्य चन्द जी ने बच्चों को मनोयोग से शिक्षा ग्रहण करने तथा अच्छे भविष्य का निर्माण करने का उपदेश दिया। श्री ओमप्रकाश जी जौहरी ने बच्चों को अपना हार्दिक आशीर्वाद दिया तथा उनके उज्जवल भविष्य की कामना की।

प्रबन्धक श्री दरियाव सिंह जी ने बच्चों तथा शिक्षकाओं को उनके अच्छे कार्य हेतु बधाई दी। अन्त में प्रधानाचार्या श्रीमती- शोभा कोहली ने पं० इन्द्रराज जी ने बच्चों तथा अध्यापिकाओं को पुरस्कार वितरण करने का अनुरोध किया। श्री पं० इन्द्रराज- जी ने योग्य तथा मेधावी बच्चों तथा स्टाफ को पुरस्कार वितरित किया। जलपान के साथ समारोह का समापन हुआ।

- देहरादून, 3 अप्रैल। यहाँ के प्रसिद्ध झण्डा-मेला में आर्यसमाज देहरादून की ओर से चलाए जा रहे प्रचार-शिविर में स्वतंत्रता-सेनानी, अवैतनिक मद्य-निषेध प्रचारक एवं जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान मास्टर दलीप सिंह जी के संयोजकत्व में चलाए जा रहे प्रचार-शिविर में आर्य समाज देहरादून की उपप्रधान श्रीमती सुशीला शर्मा की अध्यक्षता में मद्य-निषेध सम्मेलन का आयोजन किया गया।

मद्य-निषेध विभाग के उत्तराखण्ड क्षेत्र के अधिकारी श्री इन्द्रसिंह रौतेला ने इसमें सक्रिय सहयोग किया। विभाग द्वारा मद्य-निषेध की प्रेरणा देने वाले चित्रों और पोस्टरों से पण्डाल को खूब सजाया गया था।

सम्मेलन के मुख्य वक्ता जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री देवदत्त बाली ने अपने ओजस्वी भाषण में बताया कि यूरोप और अमेरिका के लोग जिनकी नकल पर हमारे अज्ञ लोगों ने शराब को प्रतिष्ठा का चिह्न बना लिया था, अब शराब से होने वाली हानियों को भली-भांति समझ चुके हैं और वे अपने समाज से इन दुर्व्यसन को हटाने के लिए जोर-शोर से प्रचार एवं प्रेरणा कार्यक्रम चला रहे हैं। परन्तु पता नहीं कि हमारे देश के लोग कब सम्भलेंगे।

लगभग सप्ताह-भर तक चले इस प्रचार-शिविर में आर्यसमाज की ओर से साहित्य वितरण की भी व्यवस्था की गई।

- आर्यसमाज फखरपुर (बहराइच) का 59वाँ वार्षिकोत्सव श्री स्वामी सुकर्मानन्द जी महाराज बुलन्दशहर के आचार्यत्व में तथा श्री कमल देव मथुरा एवं श्री नेमप्रकाश जी के सानिध्य में दिनांक- 14, 15, 16 मार्च 1989 को सम्पन्न हो गया जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

- आर्यसमाज बदायूँ ने श्री नारायण गोस्वामी के निधन पर शोक सभा की जिसमें श्री पं० धर्मपाल जी विद्यालंकार जी ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला और समस्त सदस्यों ने 2 मिनट रखकर शोक प्रस्ताव पारित किया।

ग्राम सिरसूद एवम् बरूड़ में आर्य समाज कार्यकर्त्ताओं द्वारा जनसम्पर्क

खंडवा - ग्राम हसवाड़ा और सिरसूद के बीच किसी समय बड़ा घना जंगल था उसकी सुरक्षा दृष्टि से जंगल के बीच टेकरी पर शासकीय वन विभाग की चौकी थी वह इस समय ईसाई मिशनरियों का केन्द्र कार्य स्थल है। उसका अवलोकन करते हुए आर्य समाज का प्रचार अभियान दल सिरसूद एवम् बरूड़ पहुँचा जनसम्पर्क कर कोलाडिट आवलया में सम्मेलन में सम्मेलन की योजना पर प्रकाश डाला ग्रामीणों ने योजना को समयोचित व आवश्यक बताते हुए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। प्रचार दल में प्रधान मावजी भाई भानुशाली, मंत्री लक्ष्मी नारायण भार्गव, बाबूलाल चौधरी, गिरधारी लाल वाणी वेसुराम आर्य अनिल कुमार आर्य शिक्षक वीरदल, छगनलाल चौधरी आदि प्रमुख थे।

भावानपुरा में धर्मान्तरण विरोधी सभा

ग्राम भावानपुरा में आर्य समाज प्रचार अभियान समिति द्वारा ग्राम वासियों के सहयोग से एक प्रचार शैली निकाली गई सभी समाज के लोगों ने रैली में उपस्थित होकर प्रचार कार्य में सहयोग दिया। धर्मान्तरक विदेशी षड्यन्त्र है धर्मान्तरण पर प्रतिबन्ध लगाओ जो बोले सो अभय - सनातन वैदिक धर्म की जय के नारे लगाता हुआ जलूस श्री कड़वा जी पटेल के निवास स्थान के सामने चौराहे पर पहुँचकर सभा के रूप में परिवर्तित हो गया। सर्वप्रथम यज्ञ हुआ यज्ञ के प्रमुख यजमान थे कड़वा जी पटेल, श्री हरचन्द नहाल, श्री नत्थुभाई नहाल यज्ञ के पश्चात सभा प्रारम्भ हुई। सभा के अध्यक्ष श्री रामकिशन ठेकेदार व पुरोहित श्री श्यामलाल जी आर्य ईसाई मिशनरियों की घातक कार्य प्रणाली एवम् राष्ट्र व्यापी धर्मान्तरण की तीव्र आलोचना की श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव, श्री अनिल कुमार आर्य एवम् पंडित जगदम्बा प्रसाद मिश्र ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

ग्राम पटाजन में आर्यसमाज का गठन

ग्राम वासियों ने आर्यसमाज के प्रचार अभियान दल का उत्साह पूर्वक स्वागत कर एक प्रचार रैली निकाली सरपंच श्री सूबेदार सिंह के निवास स्थान पर रैली सभा के रूप में परिणित हो गई। यज्ञ के पश्चात् श्री श्यामलाल आर्य श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव, श्री अनिल कुमार आर्य एवं श्री छगनलाल चौधरी ने संगठन की आवश्यकता पर बल दिया तथा आर्यसमाज का गठन किया पदाधिकारी इस प्रकार है:-

प्रधान - श्री सूबेदार सिंह,
मंत्री - श्री शंकर लाल जी
कार्यकारिणी - श्री विजय सिंह,

ग्राम रोशनी में जन सम्पर्क व आर्यसमाज का गठन

आर्य प्रचार अभियान दल ने ग्राम रोशनी में जनसम्पर्क कर ईसाई मिशनरियों द्वारा क्षेत्र में चल रही ईसाई कार्य प्रणाली का ग्रामीणों के मन पर क्या प्रभाव है उसकी जानकारी ली। ईसाई कार्य प्रणाली वनवासी संस्कृति पर एक हमला है उनके सम्पर्क में आया कोई वनवासी मर जाता है तो उसका अन्तिम संस्कार विदेशी तरीके से किया जाता है। आर्यसमाज हमारी पुरानी संस्कृति को बचाने में पूरा सहयोग देगा और हर गाँव का वनवासी उन्हें हर प्रकार से पूरा सहयोग देगा।

प्रधान - श्री मोतीराम पटेल
मंत्री - श्री भागीरथ प्रसाद डोडे

ग्राम आकल्या में आर्य समाज का गठन

प्रधान - श्री बाबूलाल जी व्यास
मंत्री - श्री सदनलाल सैन

लक्ष्मी नारायण भार्गव,
मंत्री, आर्यसमाज, खण्डवा।

- गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर में एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता प्राचार्य धर्मपाल जी शास्त्री ने की। सभा में सभी छात्र एवं अध्यापक उपस्थित थे। श्री-वीरेन्द्र जी वीर उच्चकोटि के भजनोपदेशक एवं कार्यकर्त्ता कर्मठ आर्य स्वतन्त्रता सेनानी थे।

आर्यसमाज स्थापना दिवस

ससमारोह सम्पन्न

लखनऊ 9 अप्रैल आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य उप प्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा यहाँ आयोजित समारोह में वक्ताओं ने आर्य समाज भूमिका विषय पर बोलते हुए आजकल बढ़ती हिंसा, साम्प्रदायिकता, आपसी वैमनस्य और नारी जाति के अपमान के प्रति हिंसा व्यक्त करते हुए इन बुराइयों को दूर करने के लिए चर्चा की।

इस अवसर पर वेद मनीषी हरिवंश लाल मेहता ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज को विश्व में एक आडम्बर हीन, विश्वकल्याणकारी आस्तिकों की संस्था के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि आज स्थिति यह है कि जितनी भी आदि भौतिक अथवा आध्यात्मिक उपलब्धियाँ हों अथवा सामाजिक सुधार की अपेक्षाएँ अथवा धर्म की मान्यताओं का प्रश्न हो व्यवस्थाएं हमारी सब लेते हैं, भले ही वेदों का नाम न लेते हों।

अपने अध्यक्षीय भाषण में उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधिसभा के महामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने हम पर जो दायित्व छोड़ा है, उसका निर्वाह करना हमारा धर्म है। यदि हम अपने दायित्व का पालन नहीं करेंगे तो हम निन्दा के पात्र होंगे।

- आर्य वीरदल उ0प्र0 के मुख्य शिक्षक श्री काशीनाथ जी शास्त्री के निधन से आर्य जगत की महती क्षति हुई है। वे साहसी उदारमना तथा उत्तम शिक्षक थे शिविर संचालन में वे बड़े सहज ढंग से कठिन विषय को भी हस्तगत करादेते थे। सिरसागंज गुरुकुल में 1972 में आर्य वीरदल का प्रान्तीय शिविर लगा था उसमें आपने मुझे जिस आत्मीयता से सिखाया था वह आज भी याद करके उनके प्रति नतमस्तक हो जाता हूँ बड़ी बड़ी शताब्दियों पर भी आपने अनुशासित शिविर संचालन किया है आज उनके शिष्य उत्तर प्रदेश में ही नहीं पूरे भारत में कार्यरत हैं।

धर्मपाल आचार्य

- मुरादनगर, स्थानीय आर्यसमाज के तत्वावधान में 1 मार्च से 6 मार्च तक ऋषि बोधोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस सप्ताह के दौरान विभिन्न परिवारों में प्रातः कालीन यज्ञ किये गये तथा रात्रि में आर्यसमाज मन्दिर में भजनोपदेश का कार्यक्रम किया गया।

आर्यसमाज अलीपुर कलाँ का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अलीपुर कलाँ का वार्षिकोत्सव 19 से 21 फरवरी 1989 तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर पूज्य स्वामी वरुण वेश जी ने कहा कुछ व्यक्ति आर्यसमाज को बदनाम करने में लगे हैं और ऐसे व्यक्ति आर्यसमाज के द्वारा वेदों के प्रचार में गतिरोध उत्पन्न करना चाहते हैं ऐसे अनार्यों से सावधान रहो।

- दिनांक 12-2-89 दिन रविवार को आर्यसमाज गंगोह में स्वामीदयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिन बड़े धूमधाम से मनाया गया। स्वामी सौम्य मुनि जी महाराज ने स्वामी जी के जीवन के ऊपर विस्तार से प्रकाश डाला। स्वामी जी द्वारा प्राणीमात्र के लिए किये गये कार्यों को समझाया। अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ने के लिए सभी को प्रेरणा दी।

आवश्यक सूचना

स्वामी मुनीश्वरानन्द सरस्वती त्रिवेद तीर्थ इस समय अस्वस्थ हैं इस कारण उन्होंने अपने सभी कार्यक्रम स्थगित कर दिए हैं। और चिकित्सार्थ दिल्ली चले गए हैं। इसलिए सभी सम्बन्धित आर्य समाज अपने यहां का स्वामी जी का कार्यक्रम स्थगित समझें। तथा दूसरी सूचना तक कोई पत्र उन्हें न लिखें।

-प्रेमानन्द सरस्वती
आश्रमाचार्य

- आर्यसमाज अमरोहा {मुरादाबाद} ने डा० सत्यकेतु-विद्यालंकार का कार दुर्घटना में निधन हो गया। डा० साहब के निधन से आर्यजगत की अपूरणीय क्षति हुई अपने साप्ताहिक सत्संग में शोक प्रस्ताव पारित कर परमप्रभू परमात्मा से प्रार्थना की कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

- कुछ लोग मेरी पुस्तक "भूमिकाभास्कर" के विषय में भ्रमफैला रहे हैं कि उसमें महर्षि दयानन्द की मान्यताओं का खण्डन करते हुए अवैदिक मान्यताओं का प्रतिपादन किया गया है। इस विषय में पाठकों से मेरा इतना ही निवेदन है कि अपना मन बनाने से पहले विवेच्य स्थलों को भूमिकाभास्कर में अपनी आँखों से देख लें।

{स्वामी} विद्यानन्द सरस्वती
डी० 14/16 माडल टाउन दिल्ली।

आर्यसमाज स्थापना दिवस आर्यसमाज आर्य नगर बदायूँ द्वारा यज्ञ एवं सत्संग के रूप में दिनांक 10 अप्रैल सन् 1989ई० पंचमी को प्रातः काल मनाया गया।
स्वामी विनोदानन्द जी वेद भिक्षुः द्वारा आर्यसमाज की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया।
श्री रामकुमार जी आर्य प्रधान आर्य समाज ने बोलते हुए कहा कि आर्यसमाज की स्थापना महर्षि ने वेद के ज्ञान को सारे संसार में फैलाने को की है अतः आर्य समाजों का वेद प्रचार का बहुत बड़ा उत्तर दायित्व है आर्य समाजों को अपनी पूरी ताकत लगाकर वेदप्रचार कराना चाहिए।

- आर्य स्त्री समाज थापर नगर ने सोमवार 6-3-1989 को ऋषिबोधोत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया। इस में मेरी विदुषी बहनों ने प्रवचनों, भजनों व कविता द्वारा ऋषि को भाव भीनी श्रद्धांजली अर्पित की बड़ी संख्या में बहनें उपस्थित हुई व सब ने मूक श्रद्धांजली दी प्रसाद वितरण कर सभा समाप्त हुई।

- दिनांक- 21 मार्च दिन मंगलवार सायंकाल श्री अयोध्या प्रसाद आर्य की अध्यक्षता में समस्त आर्य बन्धुओं के सहयोग से हवन हुआ। तथा 22 मार्च 1989 दिन बुधवार की सायंकाल डा० वी०सी० आर्य द्वारा प्रवचन एवं भजनों का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- आर्य समाज भटौली जनपद बदायूँ द्वारा नव सस्येष्टि होली पर्व को यज्ञ द्वारा समस्त ग्राम के हिन्दुओं ने मिलकर सामूहिक हरिजन बाल्मीकि सहित यज्ञ तथा अन्य कार्यक्रमो में बड़े उत्साह से भाग लिया।

उसके पश्चात समस्त ग्राम वासियों एवं सवर्ण तथा अन्य वर्ग के लोगों ने गले लगाकर होलीपर्व को बड़े धूम-धाम के साथ मनाया।

- नगर की समस्त आर्य समाजों की ओर से आर्य उपप्रतिनिधि-सभा, कानपुर महानगर के तत्वावधान में आर्यसमाज, नवाबगंज में "महर्षि बोध दिवस" मनाया गया, जिसमें महर्षि दयानन्द के कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए वक्ताओं ने भारत की वर्तमान परिस्थितियों पर चर्चा करते हुए उन्हें भारतीय संस्कृति के पोषक, स्वराज्य, स्वदेशी व स्वभाषा का नाद राष्ट्र में गुंजाने वाला बताया और कहा राष्ट्र के कर्णधार युवाशक्ति में ऊर्जा, शक्ति व चेतना नैतिकता, भृष्टाचार व ब्रह्मचर्य के पालन से ही सम्भव है। वक्ताओं ने नई शिक्षा में भारतीय संस्कृति के तत्वों को जोड़ने व संस्कृत को अनिवार्य करने पर बल दिया, महर्षि के सन्देशों व रचनाओं को जन-जन पहुँचाने का भी संकल्प लिया गया।

डा० आशा रानी राय, मंत्री, आर्य उपप्रतिनिधिसभाकानपुर ने कार्यक्रम का संयोजन व संचालन करते हुए महर्षि दयानन्द को प्रकाश स्तम्भ बताया, जो अज्ञानान्धकार, अंधविश्वास व अशिक्षा में भ्रमित जनों को नई दिशा व मार्गदर्शन देने सर्वथा समर्थ रहेंगे।

अध्यक्षता डा० हरपाल सिंह प्रधान, आर्य उपप्रतिनिधि सभा ने की। इसके अतिरिक्त लाजपत नगर आर्यसमाज में भी महर्षि बोधोत्सव मनाया गया।

- दिनांक 30-3-89 को गाँव नर्वदापुर नया पारा में यज्ञ हवन किया गया। वनवासी मौसी ईसाइयों ने अपनी स्वेच्छा से वैदिक धर्म {हिन्दु} ग्रहण किया। यह कार्यवाही सेवानन्द-सरस्वती महा-मंत्री हिन्दू शुद्धि संरक्षणीय समिति-- हरियाणा के प्रयत्न द्वारा की गई। गऊ- मांस अन्य मांस शराब इत्यादि न पीने का संकल्प करवाया गया और वैदिक धर्म की विशेषतायें बताई गई। स्वामी शंकरानन्द और मोहर साय सरपंच गाँव नर्वदा वाले ने सहयोग दिया।

आ०आर्यसमाज-ऋषिबोध सप्ताह दिनांक- 28 फरवरी से 6 मार्च तक मनाया गया रोजाना प्रभात फेरी निकाली गई जिसमें भारी संख्या में आर्य समाज के सभासद सम्मलित हुए।
दैनिक यज्ञ एवं पं० रामचन्द्र जी पुरोहित बदायूँ द्वारा वेदकथा एवं प्रवचन हुए यज्ञोपवीत संस्कार हुए पारिवारिक यज्ञ एवं सत्यनारायण कथाएं हुई। पूरे सप्ताह बड़े उत्साह से कार्यक्रम चलते रहें। हरिजन एवं जाव भाइयों ने आर्यसमाज के नियमानुसार भाग लिया।

- दिनांक 15 फरवरी 1989 को श्री दयाशंकरार्य के सुपुत्र का नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार आचार्य बुद्धदेव जी साधू आश्रम के पौरोहित्य में सोल्लास सम्पन्न हुआ। बच्चे का नाम वेदवसु रखा गया। श्री रामावतार जी प्रचारक द्वारा वैदिक प्रचार भी धूमधाम से हुआ।

- आर्य समाज नेमदार गंज {नवादा} द्वारा ऋषि बोध उत्सव के क्रम में तीन दिनों तक प्रभात फेरी द्वारा उद्बोधन का कार्य और शिवरात्रि के दिन विशेष कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- आर्यसमाज खसौर के तत्वावधान में रावदास जयन्ती के अवसर पर श्री पतराम जी के यहाँ यज्ञ हुआ अधिक से अधिक संख्या में लोगों ने भाग लिया। ग्राम नंगली में श्री हरगोविन्द जी विचपड़ी में श्री कोमल के यहाँ प्रचार हुआ कोतवाली के समीप ग्राम करौंदा चौधर में श्री राकेश आर्य तथा श्री पृथ्वी सिंह संयुक्त मंत्री द्वारा यज्ञ कराया गया। जिसमें गाँव के अधिकांश लोगों ने भाग लिया।

ऋषि बोधोत्सव

आर्यसमाज देवबन्द की ओर से शिव-रात्रि एवं ऋषि बोधोत्सव प्रातः प्रभातफेरी से प्रारम्भ किया गया। एक बृहत् यज्ञ के साथ समाज मन्दिर के आँगन में सभा का आयोजन किया गया।

दयानन्द बाल मन्दिर के बालकों ने ऋषि सम्बन्धित गीत तथा भाषण दिये। मुख्य प्रवक्ताओं में श्री महेन्द्र पाल काम्बोज विश्वम्भर देव शास्त्री, विश्वनाथ, मोहनलाल तथा सेवाराम के भजन हुए। स्त्री समाज ने भी सम्मिलित हो कर भाग लिया।

- टीटागढ़ 5 नं० पानी की टंकी के पास वैदिक धर्म का प्रचार दि० 25 व 26 मार्च को बड़े ही धूमधाम से किया गया।

- आर्यसमाज तेलिनी पाड़ा {हुगली} का द्वितीय वार्षिकोत्सव दिनांक- 27, 28 एवं 29 मार्च को बड़े धूमधाम से मनाया गया।

- आर्यसमाज बाँस बेड़िया {हुगली} के तत्वावधान में वेद प्रचार का कार्य 30-31 मार्च 1989 को बड़े धूमधाम से हुआ।

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश

प्रधान	-	श्री रामचन्द्रराव जी कल्याणी, भूतपूर्व मंत्री, आन्ध्रप्रदेश
मंत्री	-	श्री विठ्ठल राव जी, एम०एस०सी०, एल०एल०बी०
कोषाध्यक्ष	-	श्री नारायण राव जी पवार

हिमालय के पार्वत्य क्षेत्र उत्तरान्चल में राष्ट्र और धर्म-रक्षा अभियान यात्रा

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी हिमालय के पार्वत्य क्षेत्र उत्तरान्चल में वैदिक संस्थान नजीबाबाद के अध्यक्ष श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक की राष्ट्र और धर्म-रक्षा अभियान यात्रा 1मई1989 को प्रारम्भ हो रही है। इस यात्रा का संक्षिप्त कार्यक्रम इस प्रकार है:-

स्कूल-कालिजों में भाषण, छुआछूत, जन्म जातीयता और ईसाई प्रचार के विरुद्ध गोष्ठियां विद्यालयों के तथा सार्वजनिक पुस्तकालयों में सत्यार्थ प्रकाश की दो-दो प्रतियां भेंट करना। व्यक्तिगत मिलकर तथा गोष्ठियों में भी सत्यार्थ प्रकाश भेंटत संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य का वितरण और दीवारों पर छुआछूत जन्म जातीयता तथा मद्य-मांस विरोधी बड़े-बड़े पोस्टर आदि लगवाना।

इस सब के लिये सभी राष्ट्र और धर्म प्रेमियों से तथा सामूहिक रूप से आर्यसमाजों से अभ्यर्थना की जाती है कि वह अधिक से अधिक धन भेजें और अन्य सज्जनों तथा देवियों से भिजवायें। धन चैक या बैंक ड्राफ्ट से वैदिक संस्थान नजीबाबाद के नाम तथा धनादेश द्वारा व्यवस्थापक वैदिक संस्थान नजीबाबाद {उ0प्र0} 246763 के पते पर भेजने की कृपा करें।

मेघराज आर्य
मन्त्री -वैदिक संस्थान नजीबाबाद बिजनौर {उ0प्र0}

- आर्य समाज खण्डवा के प्रधान मावजी भाई भानुशाली एवं मंत्री लक्ष्मी नारायण भार्गव ने जानकारी दी कि दिनांक- 6·4·89 को आर्यसमाज मन्दिर खण्डवा में दयानन्द बोधरात्रि के रूप में शिवरात्रि पर्व मनाया गया।

शोक समाचार

हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम सैनानी एवं आर्यसमाज गोण्डा के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रामप्रसाद आर्य का 1-4-89 को लम्बी बीमारी के पश्चात निधन हो गया। स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर में श्री ईश्वर शरण संरक्षक आर्यसमाज एवं अध्यक्ष स्वा० सें0 से0, अपर जिलाधिकारी श्री के0के0 गुप्त तथा नगर के सम्भ्रान्त नागरिकों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

-सभा मंत्री

- दिनांक 1, 2, 3 अप्रैल 1989 को आर्यसमाज कुड्नी का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। ग्राम दुकुआपुर में दिनांक- 2अप्रैल को प्रचार कार्य हुआ व वहीं पर स्वामी मेधानन्द जी के निर्देशन में पं0 शम्भू दयाल जी के पौरोहित्य में 5 हरिजन भाइयों को यज्ञोपवीत दिया गया और उनके द्वारा प्रसाद व भोजन करवाया गया।

- वैदिक सत्संग समिति के तत्वावधान में कौंकी नाड़ा {हुगली} के अन्दर दिनांक 1, 2, 3 अप्रैल 1989 को वैदिक धर्म का प्रचार किया गया।

- आर्यसमाज गारुलिया {24 परगना} के तत्वावधान में वैदिक धर्म का प्रचार दिनांक- 4-5 अप्रैल 1989 को धूमधाम से मनाया गया।

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें--

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह मार्च 1989 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी0पी0 भेजी जायगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी0पी0 भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नबर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30रु0 हो गया है :

357, 1845, 1944, 2154, 2372, 4355, 6941, 9410, 10120, 11148, 11562, 12124, 12130, 12135, 12143, 12608, 12630, 12844, 12846, 12859, 13065, 13066, 13434, 13729, 13737, 13740, 13739, 13741, 13744, 13747, 14207, 14213, 14215, 14653, 14654, 14655, 14657, 14658, 14659, 14661, 14663, 14665, 14666, 14670, 14672

-व्यवस्थापक-

- आर्यसमाज फतेहाबाद {आगरा} का 36 वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 26 से 28 मार्च 1989 को धूमधाम से मनाया गया।

- नजीबाबाद -सार्वदेशिक आर्य वीर दल के मंत्री तथा वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र के संस्थापक मानक चन्द्र आर्य के सुपुत्र श्री संजीव कुमार की प्रथम पुण्य स्मृति दिवस पर 1 अप्रैल1989 को शोक निवृत्ति यज्ञ उनके निवास स्थान पर सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम {अलीगढ़}

प्रधान	-	श्री चौ0 रामबहादुर सिंह
मंत्री	-	श्री मुकेश प्रताप शास्त्री
कोषाध्यक्ष	-	डा0 रामप्रकाश शर्मा

- आर्यसमाज गोपुरी {पू0 चम्पारण} में चतुर्वेद शतमहायज्ञ के साथ-साथ आर्यसमाज का 56वीं वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्यजगत विद्वान सन्यासी पधारे थे स्थानीय जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

- आर्य इण्टर प्राइजेज कोल्ड स्टोर गायघाट- {पू0 चम्पारण का उद्घाटन समारोह यज्ञ का कार्य पं0 वी0के0शास्त्री के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ जिसमें जिला सभा के अधिकारीगण भी उपस्थित थे स्थानीय जनता बहुत प्रभावित हुई।

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
वैशाख कृष्ण 9
30 अप्रैल रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो वि.

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

उत्तर प्रदेश के मुख्य विक्रेता

1- आयुर्वेद सेन्टर, लखनऊ।
2- एस0एस0 मेहता ...
3- अलंकार फार्मेसी, कानपुर।
4- रामदेव मिश्रा, रायबरेली।
5- शिव आयुर्वेदिक औषधालय प्रतापगढ़ ।
6- स्वदेशी औषधालय, गोण्डा
7- मिश्रा आयुर्वेदिक स्टोर, सुल्तानपुर।
8- विनयकुमार अरुणकुमार इलाहाबाद।
9- कुलदीप चन्द सामा, आगरा।
10- बैजनाथ प्रसाद एण्ड सन्स, फैजाबाद ।

शुभ सूचना

"काश गाँधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई नहीं कहते।"

इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुस्तक के लेखक विशनस्वरूप पर केस चलाया जिसे माननीय मजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदी जी ने 29 नवम्बर सन् 1988 को खारिज कर दिया जो सज्जन ये पुस्तक मंगवाना चाहें वे 1/- रुपये प्रति मंगवा सकते हैं। वितरण करने वालों को 50/- रुपये में सौ प्रति भेजी जायेंगी ।

वेद प्रचार मण्डल
60/13, रामजस रोड.
दिल्ली-5 ।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

नि सं० 2241/57

दयानन्दाब्द 165 वैशाख शुक्ल 2 रविवार, संवत 2046 वि०, दिनांक 7 मई 1989

घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85



नमः कूप्याय, नमो मेघ्याय विद्युत्याय च ।

-------यजुर्वेद

वे, जो नलकूपों का निर्माण करके, मेघों अथवा विद्युत्शक्ति द्वारा जल की पावनधारा बहाते हैं, नमन के योग्य हैं।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम० ए०

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०,

साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु० 251/-
वार्षिक	रु० 30/-
विदेश में	15 पौंड

वर्ष	92
अंक	18

राष्ट्र को विखण्डित करने वाली अराष्ट्रीय प्रवृत्तियों के विरुद्ध

आर्यसमाज अभियान चलाएगा

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का महत्वपूर्ण निश्चय

दिनांक- 23 अप्रैल, 1989 -----

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की अन्तरंग सभा की एक महत्वपूर्ण बैठक लखनऊ में दिनांक- 23 अप्रैल, 1989 को सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में प्रदेश के कोने-कोने से पधारे हुए सैकड़ों प्रतिनिधियों, आर्य-मनीषियों ने देश में बड़े पैमाने पर चल रहे हिन्दुओं के सामूहिक धर्मपरिवर्तन पर अपनी गहन चिन्ता व्यक्त की। सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी ने देश के विभिन्न भागों में जाकर स्वयं देखी घटनाओं का संक्षेप में विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि उड़ीसा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार तथा बंगाल के पर्वतीय अंचलों एवं उत्तर पूर्वी राज्यों (नागालैण्ड, मिजोरम, मेघालय, अरुणांचल) आदि में ईसाई मुसलमानों द्वारा व्यापक पैमाने पर भोली-भाली, गरीब, अशिक्षित हिन्दू जनता को अनेक प्रलोभन देकर सामूहिक रूप से ईसाई मुसलमान बनाने का कुचक्र चल रहा है। अरब तथा पश्चिमी देशों से हिन्दुओं के धर्मान्तरण के लिए असीमित मात्रा में धन भेजा जा रहा है और हिन्दूजाति को समूल नष्ट करने के उद्देश्य से कई मोर्चे खोल दिए गये हैं। पंजाब-आसाम धधक रहा है। कश्मीर में आतंकवादी गतिविधियाँ ज़ोर पकड़ती जा रही हैं। नेपाल से हमारे सम्बन्ध कटु हो गये हैं। ऐसी स्थिति में हमारा यह उदीयमान राष्ट्र आभ्यन्तर और बाह्य दोनों खतरों के कारण अत्यन्त संकटापन्न स्थिति में पहुँच गया है। यद्यपि आर्यसमाज किसी भी व्यक्ति के धर्मस्वातन्त्र्य में हस्तक्षेप करने का सदैव विरोधी रहा है किन्तु इस प्रकार धर्मपरिवर्तन की आड़ में यहाँ की जनता को मुख्य राष्ट्रीय धारा से पृथक करके राष्ट्र को विखण्डित करने की प्रवृत्ति को कभी सहन नहीं कर सकता"।

सदियों से जीवित एवं ज्वलन्त राष्ट्र के सम्मुख आज यह सबसे बड़ी चुनौती आनकर खड़ी हो गई है। दूसरे शब्दों में यह हमारे जीवन-मरण का प्रश्न है। इसीलिए उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा भारतीय राष्ट्र, धर्म और संस्कृति में विश्वास रखने वाली भारत की समस्त तरुणाई को एक मंच पर आकर "राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" में सम्मिलित होने का आह्वान करती है। आइए "राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" को सक्रिय सहयोग देकर प्रभु की इस अमरवाणी को चरितार्थ करें -- वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः"।

"राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण सभा के निश्चयानुसार अलग से परिपत्र द्वारा प्रेषित किया जा रहा है। अन्तरंग सभा प्रदेश की समस्त युवा एवं भारत की अखण्डता में विश्वास रखने वाली जनता से हार्दिक अपील करती है कि इस अभियान में अधिक से अधिक सदस्य बनाकर राष्ट्ररक्षा के पुण्य कार्य में अपना योग प्रदान करें ।

इन्द्रराज,
प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश।

मनमोहन तिवारी
मन्त्री।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उठ तू सजकर साज।
आर्यसमाज । आर्यसमाज ।।

- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ वैशाख शुक्ल 2 संवत् 2046 वि0, 7 मई 1989
दयानन्दाब्द 165, सृष्टि संवत् 1972949090

धधकता कश्मीर

भारत की स्वतन्त्रता के समय अंग्रेजों ने देश की कई सौ छोटी मोटी रियासतों को यह खूली छूट दे दी थी कि वे चाहे भारत में सम्मिलित हों चाहे पाकिस्तान में अथवा स्वतन्त्र रहें। उस समय तत्कालीन भोपाल के नवाब ने हैदराबाद के निजाम के साथ मिलकर भारत के समस्त देशी रियासतों को मिलाकर एक अलग संघ बनाने की योजना बनाई थी और इसका कार्यान्वयन प्रारम्भ भी कर दिया था। यदि वह योजना कार्यान्वित हो जाती और भारत की समस्त देशी रियासतें भारत से पृथक अपना एक महासंघ बना लेतीं तो उसकी शक्ति और उसका क्षेत्र शेष भारत से किसी भी मात्रा में कम नहीं होता। किन्तु देशके सौभाग्य से भारत के राजनैतिक क्षितिज पर उस समय एक ऐसा महान् दूरदर्शी लौह पुरुष सरदार पटेल जीवित बैठा हुआ था जिसने आने वाले खतरे को भांप लिया था और तुरन्त साम दाम दण्ड भेद की नीति अपनाते हुए समस्त देशी रियासतों को एक-एक करके इस विशाल भारत राष्ट्र में विलीन कर दिया और उन्हें अपने राष्ट्र का अभिन्न अंग बना लिया। हैदराबाद और जूनागढ़ ने कुछ उछलकूद मचाई थी किन्तु उस लौहपुरुष ने उस उछलकूद को ठण्डे दिमाग और ठण्डे लौहे से शान्त कर दिया था और यह दोनों रियासतें भी हमारे विशाल राष्ट्र का अभिन्न अंग बन गईं। लौहपुरुष के इस उपकार को हमारा राष्ट्र कभी विस्मृत नहीं कर सकता है और आने वाली पीढ़ियाँ युगयुगों तक उस महान् आत्मा के इस दूरदृष्टिपूर्ण राजनैतिक चातुर्य की सदा सराहना करती रहेंगीं ।

नेहरू जी असाधारण लोक संग्रही व्यक्तित्व के नेता थे। जनता उनके पीछे दीवानी थी पर हृदय से वह सन्त थे नवनीत के समान। जिन्ना की मुस्कराहट को वह मुस्कराहट ही समझते रहे, उसके पीछे छिपे हुए विष को वह नहीं ताड़ पाए। कश्मीर का मसला उन्होंने कश्मीरी होने के नाते अपने हाथ में रखा। मि0 जिन्ना की प्रबल इच्छा थी कि जम्मू और कश्मीर को पाकिस्तान में मिला लिया जाय। इसके लिए उन्होंने पहले तो महाराजा हरीसिंह के साथ दोस्ती का हाथ बढ़ाना चाहा परन्तु इसमें सफलता न मिलने पर महाराजा हरीसिंह के शासन के विरूद्ध अनेक षड्यन्त्र रचे और अन्त में पाकिस्तानी फौज को कबायली भेष में कश्मीर पर आक्रमण करने का हुक्म दे दिया। हिन्दू निरन्तर लूटे और मारे जा रहे थे, बहू-बेटियों की इज्जत के साथ खिलवाड़ की जा रही थी। उस समय महाराजा कश्मीर ने भारत में कश्मीर विलय पत्र पर हस्ताक्षर करके भारत से सहायता मांगी और फिर भारतीय सेनाओं ने पाकिस्तानी फौजों को कश्मीर से खदेड़ना प्रारम्भ कर दिया। करीब-करीब पूरे जम्मू कश्मीर से पाकिस्तानी फौजें खदेड़ी जाने ही वाली थीं कि पाकिस्तान के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लियाकत अली दिल्ली पहुँच गये और नेहरू से मिलकर उन पर ऐसा जादू किया कि नवनीत हृदय नेहरू ने पिघल कर तुरन्त युद्धविराम की घोषणा कर दी और मामला सुरक्षा परिषद को सौंप दिया। यह एक बहुत ही अदूरदर्शी निर्णय था। यदि नेहरू जी ने तनिक भी सूझबूझ से काम लिया होता तो श्री लियाकत अली को 4/5 दिन शाही मेहमानदारी में रखते और जब भारतीय सेनाएं पाकिस्तानी फौजों को जम्मू कश्मीर से पूर्णतया बाहर खदेड़ देतीं तब युद्धविराम की घोषणा करते । और तब से ------ आज तक जितना उनके पास है ---- उनके पास है और जितना हमारे पास है, और जिस तरह हमारे पास रूका हुआ है -- यह प्रत्येक भारतीय अच्छी तरह जानता है। भारतीय जनता ने हर सुविधा अपने कश्मीरी भाइयों के जीवनोन्नयन के लिए वहाँ पहुँचाई। जिन वस्तुओं की कीमतें यहाँ आसमान छू रही थीं उनकी उपलब्धि वहाँ फ्री अथवा अत्यल्प मूल्य पर कराई गई। कश्मीर की प्रगति और उत्थान के लिए भारत सरकार ने अत्यन्त उदारता का परिचय देते हुए असीमित मात्रा में आर्थिक सहायता दी जिसका परिणाम यह है कि आज कश्मीर का मुसल्मान वह मुसल्मान नहीं है जो महाराजा हरीसिंह के जमाने में था। आज वह सुखी है सम्पन्न है उसकी अट्टालिकाएं खड़ी हुई हैं।

पर इतना सब कुछ होने के बाद भी कश्मीर की जनता को पाकिस्तान से अधिक प्यार है। श्रीनगर में "पाकिस्तान जिन्दाबाद" "हिन्दुस्तान मुर्दाबाद" के खुलेआम नारे लगाये जाते हैं। धार्मिक उन्माद की लहर में वे भारत की राष्ट्रीय आत्मा से पृथक होते जा रहे हैं। हम प्रमाण स्वरूप अपने इस वक्तव्य को इन्दिरा कांग्रेस के सुप्रसिद्ध कश्मीरी नेता मीर कासिम के इन शब्दों के साथ समाप्त करना चाहते हैं, जो उन्होंने 24 अप्रैल 1989 को लोकदल की अध्यक्षता छोड़ते हुए दिल्ली में कहे हैं:- "मैं इन्दिरा कांग्रेस में नहीं जा रहा हूँ। क्योंकि इन्दिरा कांग्रेस की कश्मीर के बारे में कोई नीति नहीं है और दूसरे धर्मनिरपेक्षता की नीति पर भी वह दृढ़ता से नहीं चल रही है। खालिस्तान की तरह हिन्दू राष्ट्र की बात गलत है पर विश्व हिन्दू परिषद के इस नारे पर इन्दिरा कांग्रेस कुछ नहीं बोलती ------- आदि आदि।

पर कश्मीर के भाइयों! हम तुम्हें छोड़ेंगें नहीं क्योंकि हमारा तुम्हारा खून का रिश्ता है। एक ही माँ का दूध पी कर हम और तुम बड़े हुए हैं और यहीं की जमीं में हमें तुम्हें विलीन होना है। धर्म केवल उपासना की एक पद्धति है उससे युगयुगों से चला आ रहा खून का रिश्ता नहीं टूट सकता --------

रस्में उलफत जिस तरह होगी निभाएगें जरूर
तुम हमे चाहो न चाहो हम तो चाहेंगे जरूर ।।

-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-

गुरुकुल प्रभात आश्रम की

प्रवेश परीक्षा

विशुद्ध प्राचीन परम्परा का एकमात्र शिक्षण केन्द्र गुरूकुल-प्रभात आश्रम, भोलाझाल, मेरठ (उ0प्र0) की प्रवेश परीक्षा इस वर्ष 21 जून 1989 को होगी। परीक्षा दो चरणों में - प्रातः- 9 से 11 बजे तक लिखित एवं अपराह्न - 2 से 5 बजे तक मौखिक रूप में होगी। प्रत्येक अवस्था में परीक्षार्थी का 50%अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा। प्रवेशार्थी की आयु 10/11 तथा पंचम श्रेणी उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

:- अपने साथ लेखनी एवं अभ्यास पुस्तिका लेकर आवें। विशेष जानकारी हेतु 5-00रू0 धनादेश द्वारा भेजकर नियमावली मंगवा सकते हैं ।

- आचार्य
गुरूकुल प्रभात आश्रम
(टीकरी)
भोलाझाल मेरठ (उ0प्र0)

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश की ओर से आर्य समाजों, आर्य संस्थाओं में युवकों के चरित्र विकास तथा राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना जाग्रत करने हेतु दिल्ली में 14 मई से 21 मई 1989 रविवार तक महाशय चूनी लाल सरस्वती बाल मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, एल ब्लाक, हरि नगर नई दिल्ली- 110064 में शिविर का आयोजन किया जायेगा ।

आर्य समाजों के माननीय प्रधान, मन्त्री महोदयों से प्रार्थना है कि वह इस शिविर के लिए अपनी ओर, अपनी समाज की ओर, से अधिक-अधिक सहयोग धनराशि भिजवाने की कृपा करें। चैक या ड्राफ्ट द्वारा भेजना हो तो "आर्य वीरदल दिल्ली" के नाम, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1 के पते पर भेंजे। 15 मई1989 सोमवार, प्रातः 9 बजे श्री महाशय धर्म पाल जी प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य द्वारा शिविर का उद्घाटन होगा। सभी कार्यक्रमों में आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है।

महर्षि दयानन्द के नाम का दुरुपयोग करने वाले

पाखण्डियों से सावधान !

"आर्य समाज अजमेर के पाक्षिक पत्र "आर्य पुनर्गठन" के सम्पादक श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य के हठधर्मिता पूर्ण, पूर्वाग्रह तथा दुराग्रह युक्त संकीर्ण छिद्रान्वेषण तथा अनर्गल प्रलाप का उचित उत्तर"

-डॉ0 विनय प्रताप- उपमंत्री- आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ।

आर्य समाज अजमेर (राजस्थान) से प्रकाशित होने वाले पाक्षिक पत्र "आर्य पुनर्गठन" के सम्पादक श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य के लेखों तथा इनके द्वारा प्रकाशित पत्र का कलेवर, रंग रूप, आकार-प्रकार तथा प्रकाशित सामग्री का स्तर पिछले लगभग दो वर्षों से देखने का अवसर प्राप्त हो रहा है। सब कुछ देख समझ कर सम्पादक महोदय के सम्बन्ध में मुझे एक नीति-श्लोक का स्मरण हो रहा है जो इनकी मानसिकता के व्यक्ति के लिये अत्यन्त उपयुक्त प्रतीत हो रहा है।

"अज्ञ सुखं आराध्य, सुखतरं आराध्यते विशेषज्ञः ।
ज्ञान लव दुर्विदग्ध ब्रह्मापि तं नरं न रंजयति।।"

अर्थात् अज्ञानी व्यक्ति को सरलता पूर्वक समझाया जा सकता है। विद्वान् व्यक्ति को और अधिक सरलता पूर्वक समझाया जा सकता है। परन्तु थोड़ा सा ज्ञान प्राप्त कर अपने को सर्वगुण सम्पन्न महान् ज्ञानी पंडित समझने वाले व्यक्ति को ब्रह्मा भी नहीं समझा सकते। कुछ ऐसी ही प्रकृति एवं मानसिकता हमारे सम्पादक बन्धु श्री वीरेन्द्र कुमार जी आर्य की है। पहले तो मैंने यह विचार किया कि इन्हें कुछ आलोचना एवं अनर्गल प्रलाप हमारे पूज्य सभा प्रधान पं0 इन्द्रराज जी के विषय में करके शान्त हो जाने दिया जाय शायद इतने से ही इनकी आत्म-प्रवन्चना शान्त हो जाय। परन्तु यह ज्ञान लव दुर्विदग्ध व्यक्ति इतने पर ही शान्त हो जाने वाला प्रतीत नहीं होता। इन्होंने पहले पं0 इन्द्रराज जी जैसे निर्लिप्त एवं देवता तुल्य व्यक्ति पर झूठी छींटा कशी की, जिसका समुचित उत्तर सार्वदेशिक सभा के अधिकारियों को उन्होंने प्रेषित कर दिया इन्हें भेजने का कोई औचित्य भी नहीं था। पं0 इन्द्रराज जी जैसा व्यक्ति जिसका सम्पूर्ण जीवन त्याग, निष्ठा, सेवा और कर्तव्यपरायणता की श्रेष्ठ भावना से ओतप्रोत रहा हो, जिसे हम गृहस्थ सन्यासी के रूप में पाते हों जो एक आदर्श गृहस्थ के कर्तव्यों का पालन करते हुए भी समाज सेवा के कार्यों को पूर्ण समय देकर कर रहा हो ऐसे व्यक्ति की माता की मृत्यु पर उसके विदीर्ण हृदय को सान्त्वना प्रदान करना तो दूर इस व्यक्ति ने अनावश्यक झूठा विवाद खड़ा कर राजनैतिक लाभ लेने का दुराग्रह किया। सम्भवतः यह कार्य किसी पूर्वाग्रह से भी प्रेरित रहा हो।

जहाँ तक इनके सम्पादकत्व वाले समाचार पत्र "आर्य-पुनर्गठन" का प्रश्न है जिसके बूते पर ये बड़ी बड़ी डींगे मारा करते हैं, कितनी हास्यास्पद स्थिति है कि मात्र दो पन्ने का यह समाचार पत्र, जिसमें दो वर्षों की अवधि में मुझे न तो कोई मौलिक चिन्तन, न ही कोई प्रेरणास्पद लेख, अथवा वैदिक विचारधारा पर कोई शोधपूर्ण लेख ही देखने को मिला न कोई विद्वत्तापूर्ण चिन्तन सामग्री। इधर-उधर से संकलित कुछ उद्धरण, कुछ पूर्व प्रकाशित सामग्रियाँ साभार, अवश्य दृष्टिगोचर होती रहती है। कभी श्री बलराज मधोक का पत्र व्यवहार छाप कर संतोष कर लेते हैं तो कभी किसी विद्वान् या त्यागी तपस्वी व्यक्ति की झूठी आलोचना। शायद ये इसी को पत्रकारिता की इतिश्री समझ बैठे हैं। सच तो यह है कि ऐसे पत्र आर्य सामाजिक जगत में न तो अपना कोई स्थान ही रखते हैं न कोई महत्व, किन्तु पत्रकारिता जगत में, और सम्मान्य तथा बुद्धि विवेकशील पाठकों के मध्य आर्यसमाज अजमेर की एक हास्यास्पद स्थिति अवश्य बना देते हैं। इनकी बुद्धि, विवेक तथा विचार एवं कृतत्व लगना तो इस तरफ चाहिये था कि कैसे इनके पत्र का कलेवर अच्छा हो, कैसे उसमें अच्छे और महत्वपूर्ण लेख तथा सामग्रियाँ प्रकाशित हों, कैसे उसके स्तर में सुधार हो तथा आर्य जगत के माने जाने समाचार पत्रों में एक प्रतिष्ठित एवं गरिमामय स्थान प्राप्त कर सके। परन्तु इन्हें परनिन्दा, छिद्रान्वेषण तथा कटु भाषा लिखने में शोध करने से फुर्सत प्राप्त हो तब ना, क्या करें बेचारे व्यस्त सम्पादक हैं समयाभाव से ग्रस्त हैं।

होना तो यह चाहिये कि यदि अपने किसी से कोई गल्ती हो ही गई हो तो गल्तियां तो मनुष्य से ही सम्भव हैं, यहाँ कोई पूर्ण नहीं है. यदि पूर्ण ही हो जाय तो देवत्व को न प्राप्त हो जायँ। अतः विरोध करने का भी एक स्तर होता है, एक मर्यादा होती है, एक सभ्य समाज का सभ्य तरीका होता है। सर्व प्रथम तो स्पष्टीकरण मांगना चाहिये, यदि उससे भी संतुष्टि न हो तो लिखकर उत्तर प्रत्युत्तर प्राप्त कर पहले समाधान करना चाहिये। इन्होंने यह कैसे समझ लिया कि "आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश" जिसका कि शताधिक वर्षों का गौरवमय इतिहास रहा है, जिसका एक अप्रतिम एवं स्वर्णिम अतीत रहा है तथा एक जाज्वल्यमान वर्तमान है, जो भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है, जो सबसे पहली प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा है, सार्वदेशिक सभा के भी पूर्व जिसका गठन हो चुका था उसका मुखपत्र "आर्यमित्र" जो अपने प्रकाशन के शताब्दी दशक में चल रहा है, वह तीर्थों, पाखण्डों, मूर्तिपूजा तथा अवैदिक विचारधारा का प्रचार व प्रसार कैसे कर सकता है? इन्हें यह दुःस्साहस हुआ कैसे कि आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्यमित्र को महर्षि दयानन्द की उम्मीदों का खून करने वाला कह सकें। यदि इनकी अक्ल काम न करे, सोचने और समझने की क्षमता का दिवाला पिट गया हो तो उसमें किसी अन्य का क्या दोष? सम्मान्य पाठक वृन्द स्वयं देखें कि इन्होंने क्या स्वयं लिखा है कि "आर्यमित्र" में जो सामग्री प्रकाशित हुई है उसका शीर्षक है "कुम्भ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि" क्या इतिहास बदल दिया जाय या आर्य एवं वैदिक विचारधारा का कोई इतिहास श्री वीरेन्द्र कुमार जी लिख रहे हैं या नव सृजन कर रहे है? या इतिहास आर्य, वैदिक विचार धारानुसार "आर्यमित्र" लिखें आखिर ये चाहते क्या हैं? अनावश्यक यह अर्थ का अनर्थ कर यह समझाने का गौरव प्राप्त करना चाह रहे हैं कि स्वामी जी ने वेद सम्मत बता कर तीर्थों, मूर्तिपूजा आदि का विरोध किया है। यह तो जन साधारण जानता है, आर्य समाज का तो बच्चा-बच्चा जानता है ये क्या साबित करना चाहते हैं कि "आर्यमित्र" यह नहीं जानता या आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 इसे नहीं जानती कि अनेक उदाहरण दे दे कर ये बड़ाभारी शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कर रहे हैं। कुम्भ मेले में जहां लाखों व्यक्ति आते हैं, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेशान्तर्गत, आर्यसमाज प्रयाग उसमें महीनों तक अपना कैम्प लगा कर पूरे मेले भर वेद और वैदिक धर्म, तथा आर्य वैदिक विचारधारा का प्रचार और प्रसार अपने सैकड़ों उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों के माध्यम से निरन्तर करवाती है। लाखों की संख्या में हम छोटे-छोटे साहित्य, ट्रैक्ट, पुस्तकें आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द तथा वैदिक विचारधारा पर छपवाकर वितरित करते हैं। और यह दुरभिमानी व्यक्ति हमारी सभा को बिना सोचे समझे बदनाम कर रहा है तथा "आर्यमित्र" के विरुद्ध भी अप्रचार करने में लीन है। और उसे दयानन्द की उम्मीदों का खून करने वाला ठहरा रहे हैं। दो पन्ने का अखबार छापकर किसी पर भी कीचड़ उछाल देना क्या यही ये महापुरुष श्री वीरेन्द्र-कुमार आर्य महर्षि दयानन्द की उम्मीदों को फलीभूत कर रहे हैं।

वास्तव में ऐसे समय पर जब हिन्दू समाज पर अस्मिता व अस्तित्व रक्षा का संकट व्याप रहा हो समाज में इस प्रकार का विघटन एवं विग्रह उत्पन्न करना अपने समाज, अपनी संस्कृति तथा धर्म के साथ सरासर गद्दारी है। ऐसे लोग ही ऋषि दयानन्द की उम्मीदों एवं आकांक्षाओं पर तुषारपात कर रहे हैं। ये लोग ही महर्षि के स्वप्नों के हन्ता हैं। जब अग्नि प्रज्वलित हो कर घर को ही भस्म सात् किये दे रही हो उस समय उसे और अधिक प्रज्वलित करना क्यों कि वेदों में है "अग्नि मीडे पुरोहितम्" यह महानमूर्खता होगी अपितु उस समय अग्नि को बुझा देना ही विवेक-शीलता है। मुझे स्मरण आ रहा है अमर शहीद पं0 शुकराज-शास्त्री जी का जिन्हें नेपाल में आर्य वैदिक धर्म के प्रचार के कारण फांसी पर लटका दिया गया था। आज आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश तथा सार्वदेशिक सभा के [illegible] प्रयास से थोड़ा सा विवेकपूर्ण दृष्टि-कोण अपना कर यज्ञ एवं वैदिक मान्यताओं का प्रचार करने के लिये 100 से अधिक समाजों की स्थापना हो चुकी है। क्या भयंकर रूप से खण्डन कर बिना उचित अनुचित का विचार किये, बिना परिस्थितियों तथा वातावरण की चिन्ता किये इसी प्रकार और अनेकों तपस्वियों को शहीद कर देना ही बुद्धिमत्ता होगी। या

इस प्रकार धीरे-धीरे अपनी मान्यताओं एवं सत्य धर्म को स्थापित एवं प्रतिष्ठित करना बुद्धिमत्ता कही जायगी? यह विचार का बिन्दु है। क्या लाखों लाख लोगों को जल से तृप्त करने वाली नदियां, हमारा पालन पोषण कर हमारी रगों में अपने अन्न से निर्मित रक्त का प्रवाह करने वाली वसुन्धरा माँ धरित्री पूजा और अर्चना योग्य नहीं। ध्यान रहे मुनिवर दयानन्द ने कहीं भी इन्हें अपमानित करने को नहीं कहा मात्र इनके साथ जुड़े पाखण्डों का खण्डन किया। हमारे ऋषियों और महर्षियों ने नदियों के तटों पर, नदियों के संगम पर, गिरि कन्दराओं में ही बैठ कर आध्यात्म रस का आस्वादन स्वयं भी किया तथा समष्टि को भी प्रसाद स्वरूप प्रदान किया था और इसीलिए कहा गया "संगमे च नदीनां, उपह्वरे च गिरीणाम् धिया विप्रो अजायत"।

यदि "आर्यमित्र" ने कुम्भ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बताते हुए उसके साथ सन्निहित अपनी भावनाओं का प्रचार और प्रसार किया तो क्या बुरा किया? आर्य पुर्नगठन के सम्पादक वीरेन्द्र महोदय इतने विचलित क्यों हो उठे। कहीं वे "आर्यमित्र" की लोकप्रियता उसके दिनानुदिन उत्थान तथा सतत सफलता एवं विकास की ओर अग्रसर स्वरूप को देखकर ईर्ष्या द्वेष ग्रस्त होकर तो इस प्रकार के घृणित कार्य नहीं कर रहे हैं? मैं मान्यवर श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य से निवेदन करना चाहूंगा कि अब भविष्य में इस प्रकार की आधारहीन, संकीर्ण छिद्रान्वेषण की मनोवृत्ति युक्त सामग्री छापकर स्वयं अपनी तथा "आर्य समाज अजमेर" की हास्यास्पद स्थिति निर्माण न करें। यदि उन्हें कुछ अनुचित लगता है तो पहले उसका सम्यक समाधान परस्पर विचार विनिमय द्वारा कर लें, उससे भी संतुष्टि न हो तो विद्वतजनों का सत्संग लाभ लेकर विचार विमर्श करें फिर गहन चिन्तन के पश्चात आलोचनाएं छापें। वरिष्ठ सभाधिकारियों से सम्बन्धित आचार संहिता विषयक विवादों के निस्तारण का अधिकार नियमानुसार सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा को है। वीरेन्द्र कुमार द्वारा यह आलोचनाएं अनाधिकार चेष्टा है जिसपर नियमानुसार अनुशासनात्मक कार्यवाही की जा सकती है। आलोचना करने के लिए अत्यन्त स्थिर मस्तिष्क, परिपक्व प्रज्ञा, तथा प्रखर बुद्धि एवं विवेक की आवश्यकता होती है, पहले उसे प्राप्त करने की साधना करनी पड़ती है। यह इतना सरल नहीं जैसा कि वीरेन्द्र कुमार समझ बैठे हैं जिससे अपना तो समय नष्ट कर ही रहे हैं तथा समाज को भी नुकसान पहुँचा रहे हैं। मैने जो कुछ भी लिखा है यदि उसमें उन्हें कुछ अप्रिय लगे तो निश्चय ही उसे ग्रहण न करें। परन्तु जो कुछ उचित प्रतीत हो विचार कर उसे ग्रहण करने की कृपा करें। "यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि"। परन्तु इतना अवश्य याद रखें कि भविष्य में उनकी इसप्रकार की गैर जिम्मेदाराना उच्छृंखलता बर्दाश्त नहीं की जायगी। मैंने जो कुछ भी इस लेख में स्पष्ट भाषा का प्रयोग किया है मात्र इस कारण कि कुछ व्यक्तियों की प्रवृति ऐसी होती है कि उन्हें उन्हीं की भाषा में समझाना आवश्यक होता है, अन्यथा सहनशीलता तथा क्षमा को वे कायरता समझ बैठते हैं।

× × × × × ×

- आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर कानपुर का 20वाँ वार्षिकोत्सव दि0 12, 13 तथा 14 मई 1989 को सम्पन्न होगा जिसमें अनेक विद्वान सन्यासी तथा उपदेशक पधारेंगे। जनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

- गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या का वार्षिकोत्सव दिनांक-13एवं 14 अप्रैल 89 को विधिवत सम्पन्न हुआ जिसमें संस्कृत सम्मेलन कवि सम्मेलन, आर्यसम्मेलन तथा सांस्कृतिक सम्मेलन हुए। साथ ही गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भी अनेकों कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ में शिविर का आयोजन

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ नैनीताल में 17 मई से 24 मई तक शिविर स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती जी की अध्यक्षता में लग रहा है जिसमें स्वामी जगदीशवरानन्द, स्वामी-ओमानन्द पधार रहे हैं शिविरार्थियों के लिए भोजन आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर की गई है। आर्य जनता को ज्ञात है कि नारायण स्वामी आश्रम, सभा का आश्रम है उसको सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिक से अधिक धन देने की कृपा करें।

- सभामन्त्री।

संध्या एवं यज्ञ के मन्त्रों का पद्यानुवाद

देदीप्यमान कर दो

अग्नि-प्रदीपन-मन्त्र:-

ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वमिष्टा-
-पूर्ते सं सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन्
विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

आ यज्ञ कुण्ड में अग्निदेव, हमको देदीप्यमान कर दो।
हे अग्नि प्रदीप्त प्रकाशित हो, यह आत्म उदीयमान कर दो।।
ओ३म् आपकी अनुकम्पा से
यह अग्नि प्रज्वलित हो जाये।
यह हविर्यत जग सोम यज्ञ
सम्पन्न इसी से हो जाये।।
दया धर्म उपकार कर्म को, प्रिय वर प्रेरणा दान कर दो।
हे अग्नि प्रदीप्त प्रकाशित हो, यह आत्म उदीयमान कर दो।।
सभी उपस्थित आमन्त्रित जन आसीन वेदि पर हो जाओ
विद्वान देवजन सन्दर्शी
सन्मार्ग यज्ञ का दिखलाओ
इस यज्ञ मिलन के साथ-साथ, मन भी संप्रीतिवान कर दो।
हे अग्नि प्रदीप्त प्रकाशित हो, यह आत्म उदीयमान कर दो।।
जो बैठ वेदि पर यज्ञ किया
वह वेदि बाद भी ध्यान रहे
हम उठ कर कहीं चले जायें
पर जग में कर्म महान रहें।
जो किया यहाँ वह अग्नि यज्ञ, जग में शोभायमान कर दो।
हे अग्नि प्रदीप्त प्रकाशित हो, यह आत्म उदीयमान कर दो।।

-देवनारायण भारद्वाज
आजमगढ़

विधि विडम्बना

खाली होता जा रहा अब तो वैदिक मंच
जान-बूझ कर रच रहा मानो काल प्रपंच
मानो काल प्रपंच घड़ी कुछ ऐसी आई
एक-एक विद्वान ले रहे हाय विदाई।
कहें "प्रणव" कविराज छा रही तमसा काली
लूट रहा यम रत्न खजाना होता खाली।।1।।

पण्डित वेद विधान के "वीरसेन" विख्यात
विश्व बन्धु आचार्य 'श्री वैद्यनाथ' प्रख्यात
वैद्यनाथ प्रख्यात वेद के बेहद हामी
शास्त्रार्थ संगम सम्राट "श्री अमर स्वामी"।
"रामानन्द आचार्य" महा महिमा से मण्डित
वर्तमान में सत्य अल्प है प्रतिभा पण्डित।।2।।

"स्वामी दिव्यानन्द जी" चले गए अति दूर
"नाराण स्वामी गये शक्ति वेश से शूर
शक्तिवेश से शूर निडर नरसिंह अकेले
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ - प्रगति क्यों संकट झेले।
कहाँ मिलेंगे शक्ति भक्ति के नामी ग्रामी
ऐसे प्यारे आर्यसमाज के पौरुष स्वामी।।3।।

ऐसा कैसे हो गया समझ न आता आज
अभी-अभी ही तो "पण्डित श्री शिवराज"
पण्डित श्री शिवराज प्रवक्ता, आलिम फाजिल।
रामस्वरूप वीरेन्द्र वीर से गायक आकिल
सत्यकेतु इतिहास गगन का ऊँचा जैसा
नहीं मिलेगा "प्रणव" धरा में सचमुच ऐसा।।4।।

छा जावे प्यारे पिता फिर से यहाँ बसन्त
इस अन्धे पतझड़ का अब होवे बस अन्त
अब होवे बस अन्त नयी कोंपल फिर आवें
सर से सुधी रसाल साधु स्वाध्याय जगावें।
"आर्य जगत" में "आर्यमित्र" गुण गौरव गावे
दयानन्द सन्देश छटा भू पर छा जावे।।5।।

- कविवर "प्रणव" शास्त्री एम0ए0 महोपदेशक
शास्त्री - सदन रामनगर (कटरा) आगरा-6

आर्य समाज क्या है ?

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष
वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ०प्र०)

किसी संस्था को समझने के लिये उसके संस्थापक को समझना अत्यावश्यक है। यही बात आर्य समाज के विषय में भी चरितार्थ होती है। आर्यसमाज को समझना हो तो पहले आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती को समझना पड़ेगा। महर्षि दयानन्द को समझे बिना आर्य समाज को नहीं समझा जा सकता।

महर्षि दयानन्द को समझने के लिये आवश्यक है, उनके मन्तव्यों को समझना। किसी व्यक्ति को चाहे वह साधारण हो अथवा असाधारण- तब तक नहीं समझा जा सकता, जब तक उसके मन्तव्यों को न समझ लिया जाय।

जिन महापुरुषों ने अपने पीछे अपना कुछ साहित्य छोड़ा है, उन्हें समझने के लिये उनके साहित्य का अध्ययन करना अत्यावश्यक है। उनके साहित्य में उनका दृष्टिकोण होता है और वह दृष्टिकोण उनके ग्रन्थों के अध्ययन से अध्ययन करने वाले को प्राप्त होता है।

यदि किसी महापुरुष का साहित्य उपलब्ध न हो, उसने साहित्य-रचना की ही न हो तो उसका जीवन चरित्र भी उस महापुरुष के मन्तव्यों की जानकारी करा देताहै। परन्तु तब -- जब किसी निष्पक्ष लेखक के द्वारा वह लिखा गया हो। यदि किसी पक्षपाती तथा मतवादी स्वार्थी लेखक के द्वारा वह लिखा गया हो तो उसमें लेखक द्वारा स्व- मान्यताओं का मिश्रण कर दिया गया होगा तथा स्व-स्वार्थों की सिद्धि के लिये उसमें अनेक अनर्गल बातें भर दी गई होंगी। ऐसी स्थिति में कभी-कभी तो वास्तविकता का पता लगाना और तथ्य को जानना तथा समझ पाना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र के विषय में ऐसी बात नहीं है। एक तो उसका प्रारम्भिक कुछ अंश स्वयं महर्षि द्वारा वर्णित है। दूसरे जो महर्षि-चरित्र के सर्वप्रथम लेखक थे, वह न तो कभी महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आये थे और न उन के द्वारा संस्थापित आर्यसमाज से उनका कोई सम्बन्ध था। सम्बन्ध तो दूर रहा, उनकी महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के विषय में कोई जानकारी भी नहीं थी।

महर्षि दयानन्द के देह-त्याग के पश्चात ब्राह्म समाज के नेता श्री केशवचन्द्र सेन बंगाली ने उन्हें महर्षि के विषय में तथा उनके कर्त्तव्य और व्यक्तित्व के विषय में कुछ बातें बतायी थीं, जिन्हें सुनकर उन्हें ऋषि के विषय में विशद जानकारी प्राप्त करने की धुन सवार हुई थी। उस धुन में उस बंगाली युवक ने अपनी जीवन भर की अर्जित की हुई समस्त सम्पत्ति होम दी। जहाँ-जहाँ ऋषि के जाने और जिस- जिस से भेंट व वार्ता करने का उसे पता चलता गया, वह युवक वहीं-वहीं गया और उन लोगों से मिला, जिनसे महर्षि की भेंट और वार्तालाप हुआ था। इस प्रकार उसने तथ्यों की जानकारी प्राप्त कर ऋषिवर की जीवन-गाथा का संकलन किया, यद्यपि इस कार्य में उसके स्वास्थ्य का भी विनाश हो गया। जिस व्यक्ति ने अपना स्वास्थ्य और जीवन भर की कमायी इस कार्य के लिए होम दी, वह स्वार्थी तो हो नहीं सकता। ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से उसका सम्बन्ध तो क्या परिचय भी नहीं था, इसलिये पक्षपाती भी वह नहीं था। उन धुन के धनी युवक का नाम था देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय।

ऐसी स्थिति में -- जब लेखक का न तो स्वार्थ हो और न उसमें पक्षपात हो-- जीवन चरित्र में न तो वह अपनी मान्यतायें भर सकता है, और न अनर्गल बातों का प्रवेश कर सकता है। वह तो सत्य की खोज करने वाला होता है। अतः सत्य का ही वर्णन करता है। हाँ, कभी-कभी किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा किसी बात को अपने स्वभाव के अनुसार बढ़ा-चढ़ा कहने के कारण कुछ भ्रान्तियाँ हो जाना सम्भव हो सकता है, किन्तु ऐसी सम्भावनायें कम ही होती हैं और कुछ हो भी जायें तो भी उन से तथ्य पर पर्दा नहीं पड़ सकता अपितु ध्यानपूर्वक आद्योपान्त पढ़ने से तथ्य उजागर हो ही जाता है।

इतने पर भी ऋषि दयानन्द का विपुल साहित्य उपलब्ध है, जिसका अधिकांश भाग उनके जीवन काल में ही प्रकाशित हो चुका था। सहस्रशः पृष्ठों और विविध विषयों के अनेक ग्रन्थों के रूप में लिखे गये उनके साहित्य के अध्ययन से उनके मन्तव्यों का पता लग जाता है। उन मन्तव्यों के अनुसार ही आर्यसमाज का कार्यक्रम है, अभिप्राय यह है कि उन मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार के लिये ऋषिवर ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में आर्यसमाज की स्थापना की थी। इस प्रकार से आर्यसमाज अपने संस्थापक महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार का संस्थान है और उसे इसी रूप में समझा जाना चाहिये। जो लोग आर्यसमाज को इस रूप में नहीं समझते, वह भूल करते हैं-- महती भूल, ऐसी भूल जो न तो उनके स्वयं के लिये हितकारक है और न मानव समाज की हित-साधक।

यदि आर्यसमाज के सदस्य बन जाने वाले भी इस भूल में फँसे हैं तो और भी खेद जनक बात है और साथ ही भय यह है कि ऐसे लोगों की संख्या वृद्धि के साथ-साथ आर्यसमाज पथ-भ्रष्ट हो जायेगा। वर्तमान समय में ऐसा परिलक्षित भी होने लगा है और उसका कारण है उपर्युक्त प्रकार के सदस्यों की संख्या वृद्धि।

इस प्रकार के सदस्यों की संख्या वृद्धि हो जाने से समाजों की संख्या की वृद्धि भी हो जायेगी, किन्तु वह ऋषिवर दयानन्द की आर्यसमाजें न होंगी। वह या तो मतवादियों की, साम्प्रदायिक दृष्टिकोण वालों की समाजें होंगी और या फिर ऐसे लोगों की समाजें, जिन्हें कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार एकत्र होकर अपना समय बिताना था, और किसी नाम से न सही-- आर्यसमाज के नाम से सही। एक क्षेत्र मिल गया, जन सहयोग भी मिला, नेतागिरी भी मिली और इस प्रकार व्यापक रूप से मन-बहलाव होने लगा। न स्वयं के जीवन में सुधार आया और न स्व-परिवार के -- समाज की तो बात ही क्या कहनी?

आर्य समाज क्लब नहीं है।

ऐसे लोग कहीं भी जायें? किसी भी संस्था में जायें? किसी भी नाम से संगठित हों, मन-बहलाव के साधनों तक ही सीमित रहते हैं। खेल, नाटक, भोज इत्यादि उनका मिशन होता है उन के सामने न सिद्धान्त होता है न तथ्यान्वेषण। न वह तथ्य और सिद्धान्त को जानते हैं और न जानना चाहते हैं। भोज अर्थात खाने-पीने के नाम पर धन भी बढ़-चढ़ कर देते हैं और इसे कार्य के लिये परिश्रम भी करते हैं, फिर खाने-पीने में पीछे रहने का तो प्रश्न ही क्या?

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर समाज भवनों में नाटक और लड़कियों के नृत्यों के आयोजन भी बहुत बढ़-चढ़ कर करते और कराते हैं और आगे बढ़े तो किसी राजनीतिक नेता का स्वागत समारोह समाज भवन में करा दिया, उसे मान-पत्र दे दिया और बस छुट्टी। यह सब कार्य क्लबों के हैं, आर्यसमाज के नहीं। इनसे आर्य-समाज का दूर का भी सम्बन्ध नहीं। यह सब कार्य उन्हीं के द्वारा होते हैं, जिन्होंने न तो ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र पढ़ा, न उनके ग्रन्थों का अध्ययन किया अर्थात जिन्होंने ऋषिवर के मन्तव्यों को नहीं समझा। कहना यह चाहिये कि ऐसे लोग आर्यसमाज के सदस्य तो जिस किसी प्रकार भी बन गये। आर्यसमाज का केवल क्लब की भावना से ही स्वीकार किया है और इसी भावना से उसके मंच का उपयोग करते हैं।

आर्य समाज सम्प्रदाय नहीं है।

दूसरी प्रकार के लोग वह हैं, जो आर्य समाज को एक सम्प्रदाय मात्र समझते हैं। इन्होंने भी न तो ऋषिवर दयानन्द का जीवन चरित्र पढ़ा और न उनके द्वारा लिखे हुए किसी ग्रन्थ को ही पढ़ा। पढ़ना क्या? ऋषि के ग्रन्थ न देखे और न उनको यह पता कि उन्होंने कोई ग्रन्थ लिखा है। कुछ को ऋषि के लिखने की जानकारी तो है, किन्तु उनके मुख्य ग्रन्थों-- संस्कारविधि और सत्यार्थ प्रकाश-- के नाम तक ज्ञात नहीं।

ऐसे लोग आर्य समाज को केवल हवन-सम्प्रदाय समझते हैं। नयी दिल्ली में एक आर्य समाज के कोषाध्यक्ष महोदय कहने लगे "स्वामी जी हम तो यज्ञ-------। मैंने उनकी बात को मध्य में ही काटकर कहा-- "आप तो यज्ञ क्या? यज्ञ शब्द के अर्थ भी नहीं जानते। केवल घी - सामग्री जला लेने का नाम यज्ञ नहीं है।" भला जिसे यज्ञ शब्द के अर्थ नहीं आते, वह यज्ञ कैसे हो सकता है। "यज्ञमानों वै यज्ञः" यजमान को

यज्ञ होना ही चाहिये, किन्तु जो व्यक्ति यज्ञ शब्द के अर्थ नहीं जानता, वह यज्ञ {अग्निहोत्र} की प्रक्रियाओं की संगति नहीं लगा सकता, उनहें समझने और उन की संगति लगाने की योग्यता से दूर है, वह यज्ञ कैसे हो जायेगा? उसका जीवन यज्ञमय कदापि नहीं बन सकता। वह तो साम्प्रदायिक है, नितान्त साम्प्रदायिक वह समझता है कि आर्य समाज हवन करने वालों का संगठन है और किसी प्रकार उसके मस्तिष्क में यह बात बैठ गई है कि हवन करना धर्म है और इसके करने से मोक्ष या स्वर्ग अर्थात परमात्मा मिल जाता है। बस वह हवन में श्रद्धा रखने लगा-वह श्रद्धा जो वास्तव में श्रद्धा नहीं अपितु अन्धविश्वास है।

हवन करना श्रेष्ठ कर्म है, महान श्रेष्ठ कर्म है और तथ्य यह है कि हवन मानस मात्र के द्वारा किया जाना चाहिये। इससे सुगनध का प्रसारण और दुर्गन्धि का निवारण होकर न केवल मनुष्य जाति का अपितु प्राणि मात्र का लाभ और हित सिद्ध होता है। यह परोपकार का परमोत्कृष्ट साधन है, परन्तु सुगन्ध का प्रसारण तो अग्निहोत्र की क्रियाओं को बिना किये सुगन्धित द्रव्यों को जलाकर भी किया जा सकता है। जब सुगन्ध का प्रसारण होगा तो उसके पणिाम स्वरुप दुर्गन्ध का निवारण भी हो ही जायेगा। परन्तु यज्ञ का एक अंश अर्थात सुगन्धि फैलाने का यज्ञ {शुभ कर्म} हो जायगा, किन्तु यज्ञमय जीवन "यज्ञमार्नो वै यज्ञ" जो यज्ञ का वास्तविक लाभ है वह नहीं हो पायगा। साम्प्रदायिक भावना व अभिरुचि की पूर्ति तो हो जायेगी, किन्तु धार्मिक जीवन नहीं बन पायगा।

पंजाब के जालन्धर नगर की एक समाज के प्रधान ने आर्यसमाज भवन में दैनिक यज्ञ के प्रसंग में कहा कि "यदि यहाँ आकर नित्य यज्ञ न करें तो आर्यसमाज बनाना ही व्यर्थ हुआ।" मैंने उनसे निवेदन किया कि यह आर्यसमाज नहीं है। बिगड़कर बोले- "मैं बाइस वर्ष पाकिस्तान में {पाकिस्तान बनने से पहले उस क्षेत्र में जो पाकिस्तान में चला गया है} आर्यसमाज का प्रधान रहा हूँ और छः वर्ष से यहाँ प्रधान हूँ।" मैंने कहा- "मुझे यही तो आश्चर्य है कि आप अठ्ठाइस वर्ष आर्यसमाज के प्रधान रहकर भी नहीं जान सके कि आर्य समाज किसे कहते हैं?"

जो व्यक्ति इतनी लम्बी अवधि आर्यसमाज के उत्तरदायी पद पर रहकर आर्यसमाज के अर्थ नहीं समझा और जिसे आर्यसमाज और आर्यसमाज मन्दिर का अन्तर तक ज्ञात नहीं, जो भवन को ही संस्था समझता है, क्या वह आर्य समाजी कहलाने का अधिकारी है? नहीं, कदापि नहीं। वह तो साम्प्रदायिक है, नितान्त साम्प्रदायिक और आर्य समाज भवन में साम्प्रदायिक भावना से ही आकर दैनिक अग्निहोत्र में सम्मिलित हो जाता है। आर्यसमाज के मन्तव्यों को समझने की योग्यता से रिक्त है। आर्यसमाज के उद्देश्य की प्राप्ति के लिये ऐसे व्यक्ति से कोई आशा करना दुराशा मात्र है।

मेरा अभिप्राय यह नहीं कि आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञ न किया जाय, किन्तु मैं यह कहना चाहता हूँ कि आर्यसमाज मन्दिर आर्यसमाज का कार्यालय है, आर्यसमाजियों का सभा भवन है। घर में तो यज्ञ न किया जाय, जिसका स्वयं आर्यसमाज के संस्थापक ऋषिवर दयाननद ने "पंच महायज्ञ विधि, संसकार विधि सत्यार्थ प्रकाश" और "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" में वर्णन व विधान किया है-- आर्यसमाज मन्दिर में आकर यज्ञ कर लिया जाय। क्या यह ऋषिवर दयानन्द के विधान के विरुद्ध नितान्त साम्प्रदायिक भावना नहीं है? और क्या यह ऋषिवर दयानन्द के दृष्टिकोण {अन्धपरम्परा के खण्डन} के विरुद्ध उल्टा उस ऋषि के ही मिशन में काबे में कुफ्र के समान अन्ध परम्परा चलाना नहीं है? और क्या इस प्रकार की भावना, अभिरुचि और दृष्टिकोण रखने वाले लोग आर्य समाजी कहलाने के अधिकारी हैं ?

वास्तविकता यह है कि आर्य समाजी बनने वाले लोग पौराणिक घरों से ही आते हैं। उनके वही अन्ध-परम्परा वाले अन्धविश्वासी संस्कार होते हैं। यदि आर्यसमाज में प्रवेश के समय ही उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र अथवा वैचारिक क्रान्ति का स्रोत उनका सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने को मिल जाता है या फिर जो सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर ही आर्यसमाजी बनते हैं तो उनके अन्धविश्वासी संस्कार समाप्त हो जाते हैं और वह अन्ध-परम्पराओं से सर्वथा मुक्त हो जाते हैं।

इसका कारण यह है कि वह महर्षि के दृष्टिकोण और आर्यसमाज को समझ गये हैं। ऐसे लोग कहीं भी जायें, किसी भी क्षेत्र में रहें वह न तो कभी अन्धविश्वासों में फँसते हैं और न किसी के कहने से बहकते हैं। वास्तविक अर्थों में वही आर्य समाजी कहलाने के अधिकारी होते हैं।

प्राचीन संस्कृति की रक्षा के लिए

संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक

प्राचीन संस्कृति की रक्षा के लिए संस्कृत भाषा का ज्ञान आवश्यक

उत्तर प्रदेश के वन मंत्री श्री अजीत प्रताप सिंह ने यह मत व्यक्त किया है कि भारतीय संस्कृति की सुरक्षा के लिये संस्कृत भाषा के विकास की बड़ी आवश्यकता है। वन मंत्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, लखनऊ के वार्षिकोत्सव को सम्बोधित कर रहे थे। इस अवसर पर सूचना राज्य मंत्री श्री नरेशचन्द्र एवं भूतपूर्व राज्यपाल श्री त्रिभुवन प्रसाद तिवारी भी उपस्थित थे।

श्री सिंह ने कहा कि संस्कृत भाषा भावात्मक एकता बढ़ाने में सहायक होगी और इससे बंधुत्व की भावना बढ़ेगी।

आत्मचिन्तन

{क0ला0 ट्रस्ट सोसाइटी, मेरठ द्वारा संस्थापित}
के तत्वावधान में

मेरठ महानगर में विश्व विद्यालय एवं मेडिकल कालिज की स्थापना
के स्वप्न को साकार रुप देने वाले
भू0पू0 वित्त एवं शिक्षा मन्त्री {उ0प्र0} तथा सांसद

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री कैलाश प्रकाश जी {अपने ट्रस्टी}
एवं
सर्वोदय नेता

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी मास्टर सुन्दर लाल जी {अपने संरक्षक}
की पुण्य स्मृति में आयोजित

गीता वार्ता

में आप सादर आमन्त्रित हैं।

विषय- :"गीता में भक्ति योग - सम्पूर्ण समर्पण"
सभापति- : श्री विजय शर्मा आई0ए0एस0 जिलाधिकारी, मेरठ।
मुख्य अतिथि-:डा0 सी0बी0 तिवारी, कुलपति, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ।
वार्ताकार- : स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, अध्यक्ष, समर्पण शोध-संस्थान, साहिबाबाद ।
तिथि एवं समय :सोमवारदिनांक-15मई1989,मध्याहोत्तर 4 बजे।
स्थान- :त्रिशलाभवन,हरिनगर,मेरठ। फोन-20686,23099

विनीत,

सेठ मनोहर लाल	**प्रो आर0सी0 मित्तल**	**पं0 इन्द्रराज**
संस्थापकः क0ला0-ट्रस्ट सोसाइटी, मेरठ, अध्यक्ष।	भू0पू0 आचार्य, मेरठ कालिज,मेरठ। अवै0 मन्त्री	अध्यक्ष, आर्यप्रतिनिधि-सभा उ0प्र0, संयुक्तमंत्री एवं संयोजक

आवश्यक-सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि जो समाजें अपने वार्षिक चित्र जिला सभा को नहीं देना चाहती हैं अथवा जिला सभायें नहीं लेना चाहती हैं। वह अपने वार्षिक चित्र प्राप्तव्य धन सहित सीधे सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

-मनमोहन तिवारी}
मंत्री ।

ध्यान योग शिविर सम्पन्न

योगधाम आर्यनगर ज्वालापुर में पूर्ण तैयारी के साथ सम्पन्न हुआ शिविर भारत के विभिन्न प्रान्तों से साधक साधिकायें श्रद्धा एवं उत्सुकता के साथ सम्मिलित हुए साधक स्वामी सच्चिदानन्द के सानिध्य एवं स्वामी दिव्यानन्द जी की अध्यक्षता में शिविर का कार्य सम्पन्न हुआ।

यम

डॉ0 रविदत्त शर्मा आचार्य
सबलपुर, पो0 टाँडा अफजल {मुरादाबाद}

पुराणों के अनुसार यम मृत्यु का देवता है। जीव की मृत्यु के समय यम के दूत उसे लेने आते हैं, फिर यमराज के दरबार में पहुँच कर उस की सुनवाई होती है। परन्तु यह कल्पना आधारहीन है, क्यों कि पुराणों से पूर्व यम का वर्णन वेद में उपलब्ध है, जिस में ऐसी कोई बात नहीं, ऋग्वेद के अनुसार यम परमात्मा का नाम है -

"इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमहाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्।
एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।।"
ऋ0 1·164·46

सायणाचार्य ने यम का अर्थ "नियन्तारम्" किया है, यास्काचार्य ने निरूक्ति की है "यमो नियच्छतीतिसतः" यच्छति का अर्थ है नियन्त्रण करता है। दुर्गाचार्य ने निरुक्त की टीका में यच्छति का अर्थ किया है "उपरमयति जीवितात् सर्वं भूतग्राममिति यमः" जो समस्त प्राणियों को जीवन से प्रथक् कर दे। यह व्याख्या भ्रामक एवं अप्रासंगिक है ।

सत्यार्थप्रकाश - प्रथमसमुल्लास में स्वामी दयानन्द ने लिखा है "यमु उपरमे इस धातु से यम शब्द सिद्ध होता है। यः सर्वान् प्राणि जो नियच्छति स यमः", जो सब प्राणियों के कर्मफल देने की व्यवस्था करता और सब अन्यायों से प्रथक रहता है, इसलिये परमात्मा का नाम यम है।

इस से पता चलता है कि ईश्वर की नियन्त्रण शक्ति का नाम यम है। लोक में न्यायाधीश, आचार्य तथा नियामक को यम कहते हैं। पातंजल योगदर्शन के अनुसार योग के आठ अंगों में प्रथम यम है एवं अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह इस के भेद हैं।

वैदिक मान्यतानुसार यम ही सब कुछ है- "यमोह जातो यमो जनित्वं जारः कनीनां पतिर्जनीनाम्" {ऋ0 1·66·4} कन्या के पति को भी यम कहा गया है, इस की पुष्टि ऋग्वेद के यमयमी सूक्त {10-10} से हो जाती है। ऋ· 10·14·1 में राजा को यम कहा गया है तथा ऋ0 10·135·1 के अनुसार पिता भी यम है।

वास्तव में यम एक शक्ति का नाम है जो आध्यात्मिक तथा भौतिक, दो रूपों में जगत् का नियन्त्रण करती है, सृष्टि का आरम्भ इसी शक्ति के द्वारा होता है। प्रकृति तीन गुणों वाली है। इन गुणों का क्रियात्मक रूप ही सृष्टि है और निष्क्रियता प्रलय। इन तीनों गुणों में नियामकशक्ति अनुमान से सिद्ध होती है। इस प्रकार रचना, धारण तथा प्रलय में नियामकत्व प्रतीत होता है। ईश्वर की इस शक्ति से जगत शासित है। दिव्यशक्ति का नाम यम है, जो परमेश्वर का वाचक है। जीवन में ढालने के लिये पाँच यमों का उल्लेख किया गया है। इन से जीवन पवित्र होता है और मनुष्य को पारमार्थिक सत्ता का भान होने लगता है। लोक में प्रसिद्ध है कि कुपित होकर यम जीवन को समाप्त कर देता है, फलस्वरूप जीव की मृत्यु हो जाती है। व्यावहारिक दृष्टि से ये ही वे यम हैं, जिन के पालन से मृत्यु का भय भागता है और उपेक्षा से जीवन क्षीण होता है। अपनी स्थिति को सुदृढ बनाने के लिए मनुष्य को उचित है कि पाँचों यमों का पालन सावधानी से करता रहे। यमरूपी परमात्मा के शासन में रहने के लिये उसके नियमों का पालन अनिवार्य है। विधि के विधान को मानना ही उस की उपासना है। अपने जीवन में जो कुछ उत्तम कर्म कमाये उन्हें ईश्वर को अर्पित करे। यह भी प्रभु कृपा है कि उसने ऐसी बुद्धि प्रदान की जिससे मनुष्य उत्तम कर्म में प्रवृत्त होता है। यज्ञ की हवि उस यम को ही प्रदान की जाती है। भलीभाँति सम्पादित यज्ञ ही यम को प्राप्त होता है। इसलिए घृतयुक्त हवि से उसकी उपासना करनी चाहिए ऐसा करने से यम दीर्घायु तथा आनन्दमय जीवन प्रदान करेगा, यम ही सारे विश्व का राजा है, उसे मधुर-मधुर हवि प्रदान करो। साथ ही अपने पूर्वजों का मार्गदर्शन कराने वाले ऋषियों का भी सम्मान करो, क्यों कि उन्होंने ही हमें सन्मार्ग दिखाया है।

यमाय सोमं सुनुत यमाय जुहुता हविः ।
यमं ह यज्ञो गच्छत्यग्निदूतो अरंकृतः।।
यमाय घृतवद्धविर्जुहोत प्र च तिष्ठत ।
स नो देवेष्वा यमद् दीर्घमायुः प्रजीवसे ।।
यमाय मधुमत्तमं राज्ञे हव्यं जुहोतन ।
इन्दं नम ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः।।
ऋ0 मण्डल 10 सू0 14 मंत्र 13,14,15

उक्त मन्त्रों के अवलोकन से प्रतीत होता है कि वैदिक संस्कृति के प्रवर्तक, आदि ऋषियों को भी यम कहा जाय तो अनुचित न होगा, क्यों कि उन्होंने भी धर्म मार्ग का नियमन किया है। मनुष्य को श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करने का मार्ग दिखाया है ।

एक मन्त्र में विलक्षणता दृष्टिगोचर होती है, उसमें यम के दो कुत्तों का वर्णन है। दोनों ही यम की रक्षा करते हैं, वे चार आँखों वाले हैं, पथ के रक्षक हैं और बड़े प्रसिद्ध हैं --

यौ ते श्वानौ यम रक्षितारौ
चतुरक्षौ पथिरक्षी नृचक्षसौ।। ऋ0 10,14,11

उस परमात्मा को जानने के लिये ज्ञान तथा कर्म इन दो साधनों का उल्लेख श्रुति में मिलता है, ये ही परमात्मदर्शन में सहायक होते हैं। चार आँखों से चार आश्रमों का भाव प्रतीत होता है, श्वानौ से प्राण तथा अपान भी ग्रहण किये जा सकते हैं। प्राण-अपान जीवन के रक्षक हैं। चारों आश्रमों का विधिवत् पालन करने से श्रेय प्राप्त होता है। आयु का अधिकतम भाग उस यम रूपी परमात्मा को जानने में लगाना चाहिये।

आध्यात्मिक दृष्टि से नियन्तारूप में परमेश्वर की उपासना करने से मनुष्य आत्मनियन्ता बन जाता है। उस के ज्ञान का फल संशय का विनाश है --

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशयाः ।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ।।
{मुण्डकोपनिषद् 2-2-8}

यमाचार्य ने नचिकेता को यही विद्या बतायी थी, जिस को प्राप्त कर वह मृत्यु से रहित विशुद्धहृदय होकर ब्रह्म को प्राप्त हो गया । जो भी इस अध्यात्मविद्या को जानलेता है, वह मृत्यु तथा समस्त विकारों से रहित होकर ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है --

मृत्यु प्रोक्तां नचिकेतोऽथ लब्ध्वा
विद्यामेतां योगविधिं च कृत्स्नम् ।
ब्रह्म प्राप्तो विरजोड् भूद्र विमृत्यु -
रन्योऽप्येवं यो विदध्यात्ममेव।।"
{कठो0 अ0 2 वल्ली 3 मन्त्र 18}

अतः प्रतीत होता है कि वास्तविक यम को जानने अथवा प्राप्त करने के लिए योगविद्या का अनुष्ठान अनिवार्य है। इस के लिये हृदय का निष्कलंक एवं निर्विकार होना आवश्यक है। जीवन का मुख्य उद्देश्य भी यही है जो मोक्ष कहलाता है। यह सांसारिक चक्र की नाभि है। यह सिद्ध होने पर मानव जीवन सार्थक हो जाता है। बुद्धिजीवी का कर्त्तव्य है कि योगविद्या के अभ्यास से अपने को इतना पवित्र बनाये कि यम को प्राप्त कर सके आध्यात्मिक ज्ञान ही यम प्राप्ति का साधन है।

- आर्यसमाज नगरिया परीक्षित, भूतपूर्व कोषाध्यक्ष तथा एम0ई0एस0 वायु सेना इज्जत नगर में कार्यरत श्री विनोदकुमार जी की 82 वर्षीय पूज्य माता जी श्रीमती माया देवी का दिनांक- 5-4-89 को निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार दिनांक- 6-4-89 को वैदिक रीति द्वारा सम्पन्न किया गया। पूज्य माता जी ने अपने जीवन के अंतिम समय तक आर्यसमाज की तन,मन,धन से सेवा की। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति तथा अपने पीछे छोड़े परिवारिक जनों को आत्म संतोष प्रदान करें ।

-- सभामंत्री।

आर्य वीरदल शिविर

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, बुलन्दशहर {पंजीकृत} के तत्वावधान में जिला बुलन्दशहर के आर्यवीरों के प्रशिक्षण हेतु द्वितीय शिविर 9 जून से 18 जून 1989 तक "पब्लिक इन्टर कालेज-जहांगीरपुर" में आयोजित होगा। स्थान सीमित हैं। अतः प्रशिक्षणार्थी स्वयं अथवा आर्य समाजें निम्न पते पर शीघ्र सम्पर्क करें ।

धर्मेन्द्र शास्त्री नगलामही उद्दनपुर खुरजा

राष्ट्रीय एकता में बाधक अशुद्ध इतिहास

§श्री यदुवंश सहाय वानप्रस्थ,
67/- लालगंज फैजाबाद§

आर्य एक विशेष जाति है- यह विचार सर्व प्रथम उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मैक्समूलर आदि पाश्चात्य विद्वानों ने व्यक्त किया। यद्यपि उनकी इस अवधारणा की वेद या किसी अन्य देशी-विदेशी प्राचीन साहित्य से पुष्टि नहीं होती। भारतीय साहित्य में आर्य शब्द का प्रयोग सर्वत्र श्रेष्ठ के अर्थ में हुआ है। वेद के एक मंत्र में कहा गया है - "कृण्वन्तोविश्वमार्यम्" अर्थात् संसार के लोगों को आर्य बनाओ। यदि आर्य एक जाति होती तो तथाकथित हब्शी और मंगोल आदि जातियों को आर्य कैसे बनाया जा सकता। ईसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका में भी आर्य का अर्थ श्रेष्ठ ही है। पाश्चात्य विद्वानों ने अपनी इस भ्रामक मान्यता के कारण वेद में आर्य दास, दस्यु, राक्षस और असुर आदि शब्दों एवं अलंकारिक वर्णनों से यह निष्कर्ष निकाला कि भारत के मूल निवासी कोल, भील, द्रविड़, आदि हैं। आर्यों ने बाहर से आकर उन्हें परास्त करके जंगलों में भगा दिया, जो नहीं भाग सके उन्हें अपना दास §सेवक§ बनाकर शूद्र नाम से पुकारा। उनकी इस परिकल्पना की पुष्टि भी आर्यों, द्रविड़ों अथवा किसी अन्य जाति के साहित्य से नहीं होती। परन्तु दुर्भाग्य से पश्चिम के अन्ध अनुकरण में भारतीय विद्वान भी आर्यों के बाहर से आकर मूल निवासियों की बस्तियों को उजाड़ने और उन पर अत्याचार करने की बात का विश्वास करते हैं, और इसी का अपने लेखों और पुस्तकों द्वारा प्रचार करते हैं। पं0 जवाहरलाल नेहरू ने भी अपनी पुस्तक "डिस्कवरी आफ इण्डिया" में इस झूठे लांछन को आर्यों के सिर मढ़ा है। सरकार भी भारतीयों में फूट डालने वाली इन बातों का टी0वी0 आदि संचार माध्यमों से प्रसार करती है। फूट डालो और राज करो की नीति से विदेशी शासकों को तो लाभ था, परन्तु स्वाधीन भारत के लिए यह विनाश का ही कारण है।

स्वाधीनता के युग में भी इस भ्रामक मान्यता की पुष्टि करते रहने का दुष्परिणाम आज देश के सामने हैं। शूद्र आदि पिछड़ा वर्ग और द्रविड़ आर्य समझे जाने वाले वर्ग से द्वेष करने लगे हैं। वे अन्य अल्पसंख्यकों से सांठ-गांठ करके उन से बदला लेने पर तुले हैं। इसी मान्यता ने मुस्लिम नेताओं को आर्यों को मुस्लिम आक्रमणकारियों के समकक्ष कहने का अवसर प्रदान किया है।

क्रान्तिदर्शी महर्षि दयानन्द ने इस भावी आपत्ति का आभास पा लिया था। उन्होंने घोषणा की कि वेदों में, प्रयुक्त शब्दों के आधार पर अनेकेश्वरावाद बहुवदेवतावाद, इतिहास आदि कुछ भी सिद्ध नहीं होता। निरुक्त, निघण्टु और ब्राह्मण ग्रन्थों के सक्ष्य से इन शब्दों का अर्थ यौगिक करना चाहिए। इस देश में आर्यों से पूर्व कोई नहीं बसता था। संसार के सबसे ऊँचे समतल स्थान तिब्बत §जो उस समय भारत का ही एक भाग था§ मानव सृष्टि उत्पन्न हुई। प्रथम सब मनुष्य सरल और सदाचारी थे। अतः वे आर्य §श्रेष्ठ§ कहलाये। आर्य किसी जाति का नाम नहीं है। कुछ काल के पश्चात् वे सीधे इसी देश में आये। उनके नाम पर इस देश का नाम आर्यावर्त पड़ा। बहुत समय के पश्चात् सम्राट भरत के नाम पर इस देश का दूसरा नाम भारतवर्ष पड़ा। क्रमशः लोगों में गिरावट आने लगी। जो विद्या पढ़ने में असमर्थ हुए वे शूद्र §दास§ अर्थात् सेवक कहलाये परन्तु विद्या पढ़कर उच्च वर्णों के गुण प्राप्त कर लेने पर समाज में पुनः ऊँचा स्थान §वर्ण§ पाने में उनके लिए कोई बाधा न थी। दुष्ट लोग दस्यु, राक्षस, असुर कहलाये। जो लोग मूल संस्कृति से कट कर दक्षिण के वनों में चले गये उनका नाम कोल, भील, द्रविड़ आदि पड़ गया। वास्तव में संसार की जातियों में कई प्रकार के भेद दृष्टिगोचर होते हुए भी उनका मूल स्रोत एक है क्योंकि सर्वप्रथम मानव सृष्टि एक ही स्थान पर हुई।

आर्य भारत के मूल निवासी हैं और वे यहीं से अन्यत्र गये- महर्षि की इस मान्यता की पुष्टि तो अब अनेक विद्वान करने लगे हैं। एन0सी0ई0आर0टी0 के माध्यम से हाल में किये हुए अनुसंधानों से भी इसकी पुष्टि होती है। ठाणे §महाराष्ट्र§ के इन्स्टीट्यूट आफ ओरियन्टल लर्निंग के निर्देशक डा0विजय वैडेकर का कथन है कि आर्यों के भारत पर आक्रमण की कल्पना की कोई वैज्ञानिक पुरातत्व या ऐतिहासिक आधार नहीं है।

महर्षि की दूसरी अवधारणा- द्रविड़ आदि भी आर्य ही हैं- की पुष्टि श्री काशीनाथ शास्त्री की पुस्तक "वैदिक कालीन भारत" से होती है वे लिखते हैं कि यदि आर्यों से भिन्न द्रविड़, कोल आदि जातियां होती तो उनकी भाषा में इस देश का और यहां की नदी-पहाड़ों के नाम अवश्य होते। चन्दन और कपूर तमिलनाडु में उत्पन्न होते हैं। इनके लिये द्रविड़ भाषा में भी मंछीगंधम और करप्पू शब्दों का प्रयोग होता है, जो संस्कृत के मंजुगंधम् और कपूर के अपभ्रंश हैं। द्रविड़ों को आर्यों से भिन्न मानकर कुछ शिक्षित द्रविड़ों ने अपना इतिहास लिखना आरम्भ किया है। परन्तु इसका श्री गणेश अगस्त्य और कण्व आदि आर्य ऋषियों से किया है।

आर्यों और तथाकथित आदिवासियों में भाषा और रंगरूप में अन्तर का समाधान यह है कि भाषा थोड़ी-थोड़ी दूर पर बदल जाती है। दो वर्गों में सम्पर्क जितना कम होता जाता है और दूरी बढ़ती जाती है उनकी भाषा में उतना ही अधिक अन्तर होता जाता है। रंग-रूप का संबंध देशकाल की परिस्थितियों, जल-वायु और भौगोलिक अवस्थाओं से है। इन सभी का प्रभाव प्राणी मात्र पर पड़ता है। मनुष्य जहां भी जाकर बसता है वहां का वातावरण उसे धीरे-धीरे अपने अनुकूल बना लेता है। इसमें सहस्रों वर्ष भी लग सकते हैं।

राष्ट्रीय एकता के लिये आवश्यक है कि भारत का सच्चा इतिहास प्राचीन साहित्य और नवीनतम अनुसंधानों के आधार पर लिखा जाय। परन्तु दुर्भाग्य है कि सरकार इतिहास को सुधारने के स्थान पर उसे बिगाड़ रही है, मुसिलम अत्याचारियों का फरिश्ता बनवा रही है। जबकि उनके अत्याचारों की कहानियां भारत के चप्पे-चप्पे पर लिखी हैं, जिसकी पुष्टि मुस्लिम लेखक अपनी कलम से कर गये हैं। इतिहास बदलने से अत्याचार के इन चिन्हों को कैसे मिटाया जा सकता है। यदि मिटाने का प्रयास भी किया जाय तो धर्मान्ध मुस्लिम नेता ऐसा करने कब देंगे ।

किसी भी सभ्य देश में बाप-दादों के अपराध के लिए उनकी सन्तान को दोषी ठहरा कर दण्डित नहीं किया जाता। परन्तु जो मुसलमान उनका पक्षपात करके और इतिहास बदलवाकर उन्हें जघन्य अपराधों से मुक्ति दिलाकर गाजी और शहीद की पदवियां प्रदान करते हैं, वे उनके द्वारा किये गये पापों को अपने ऊपर ओढ़ लेते हैं और सिद्ध कर देते हैं कि वे उनकी दुष्कृतियों से सहमत हैं। यही नहीं, अपितु अवसर पाकर वे स्वयं इन अत्याचारों को दुहराते रहते हैं, और अपने आचरण द्वारा पूर्व किये गये अत्याचारों की पुष्टि कर देते हैं।

अतः अत्याचारों के इतिहास बदलने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है मुसलमानों की संकुचित और दूषित मनोवृत्ति को दूर करने की ।

डा0 द्विवेदी की विदेशयात्रा

ज्ञानपुर §वाराणसी§ प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान तथा गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार के कुलपति एवं विश्वभारती अनुसंधान परिषद ज्ञानपुर के निदेशक डा0 कपिलदेव द्विवेदी को लन्दन विश्वविद्यालय ने विशेष लेक्चर देने हेतु आमंत्रित किया है। आप 2 मई को होने वाले इस विशेष समारोह में "वेदों के अनुसार वायुप्रदूषण की समस्या का निराकरण" विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। डा0 द्विवेदी इंग्लैंड की अन्य विश्वविद्यालयों, आर्यसमाजों तथा अन्य संस्थाओं ने भी अपनी लेक्चर देने हेतु आमन्त्रित किया है।

डा0 द्विवेदी भारतीय संस्कृति के प्रचारार्थ प0 जर्मनी एवं हालैन्ड भी जाऐंगे जहाँ विभिन्न विषयों पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत करेंगे ।

- आर्यसमाज कुठिला §हरदोई§ का वार्षिकोत्सव दिनांक- 29 से 31 मई 1989 तक मनाया जा रहा है जिसमें उच्चकोटि के विद्वान उपदेशक पधार रहे हैं।

बाल जगत

वीर बालक शान्ति प्रकाश

श्री यतीन्द्र कुमार आर्य,
गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर

मेरी भारत भूमि धन्य है, धन्य हैं यहां के निवासी और यहाँ की संस्कृति। यहाँ जब-जब अन्याय अत्याचार हुआ है तब-तब भारत माँ के वीर सपूतों ने जान की बाजी लगाकर अधर्म तथा अन्याय का विनाश किया है। यही कारण है कि आज भी भारत में अरबों वर्ष पुरानी संस्कृति व परम्परायें कायम हैं। यहाँ की गौरवमयी परम्परा को बखान करते हुए मनु महाराज ने लिखा है -

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
सर्वं स्वंचरित्र शिक्षेरन पृथिव्याम् सर्वमानवाः।।

क्या आप भूल गए? जब सूबादेवहंस ने जान की बाजी लगाकर अंग्रेजों के छक्के छुड़ाये थे। महारानी लक्ष्मी बाई ने अपने प्राणों की बलि देदी थी, पद्मनी अपने सतीत्व की रक्षा के लिए दहकती चिता में कूद पड़ी थी। महर्षि दयानन्द ने सोलह बार विष पिया। ऐसे ही जाने कितने बलिदानी शूरमाओं ने हँसते-हँसते अपने प्राणों की आहुति दे दी, जिन्हें आजतक कोई जानता भी नहीं। उसी श्रृंखला में थे मात्र 18 वर्षीय ब्राह्मण बालक शान्ति प्रकाश। इस मासूम बालक को इतनी क्रूर यातनायें दी गई थीं कि जिन्हें सुनकर प्रत्येक देशभक्त के मुख से सहसा यह ध्वनि निकल पड़ेगी कि -

हम खून की किस्त तो बहुत दे चुके लेकिन ।
ए खाके वतन कर्ज तेरा अदा क्यों नहीं होता।।

क्रान्ति दूत शान्ति प्रकाश का जन्म जिला गुरुदासपुर के कलानौर अकबरी नामक स्थान पर हुआ था। आपके पिता का नाम श्री राम रतन शर्मा था। आपके पिता जी नई दिल्ली स्टेशन पर टिकट कलेक्टर थे। बालक शान्ति प्रकाश के मनपर बचपन से ही धर्मनिष्ठ संस्कार प्रभावी थे अन्याय के प्रतिकार की क्षमता तो आपको प्रभु की देन थी। आप अभी मात्र 18वर्षीय किशोर ही थे कि हैदराबाद के धर्म युद्ध का आह्वान आपके कानों में पड़ा। आपने सोच विचार किया तो आपको ऐसा प्रतीत हुआ कि माता पिता ममतावश इस धर्म समर में भाग लेने की आज्ञा न देंगे। अतएव आप चुपचाप घर से चल दिये और बम्बई में जाकर धर्म वीर के सत्याग्रही जत्थे में सम्मिलित हो गये। 9 मई को उस जत्थे ने गुंजोरी में सत्याग्रह किया। सत्याग्रही बन्दी बनाकर उस्मानाबाद के कारागार में भेज दिये गये।

क्रूर अधिकारी बालकों और युवकों को यातनाऐं देने में ही विशेष आनन्द की अनुभूति करते थे। अतएव इसका परिणाम श्री शान्तिप्रकाश को भी भोगना पड़ा। वे भी अन्य कई सत्याग्रहियों के साथ कारागार मे ही रोगग्रस्त हो गये बीमारी ने उग्र रूप धारण कर लिया तो उन्हें अस्पताल से जेल और पुनः सिविल अस्पताल पहुँचाया गया ।

बालक से क्षमा माँगने हेतु अधिकारियों ने बालक के पिता को तार किया जब उन्होंने तार पाया तो वे तुरन्त ममतावश उस्मानाबाद पहुँचे। वहाँ उन्होंने दृढ़ संकल्पी बालक से क्षमा माँगने को जोर डाला। बालक ने क्षमा माँगने से साफ इन्कार कर दिया।

जब अपने वीरपुत्र के साहस और धर्म निष्ठा को पिता ने देखा तो वह गौरवान्वित हो उठे। उन्होंने माफी मँगवाने के स्थान पर अपने बालक को आशीर्वाद प्रदान किया।

27 जुलाई 1939 को बालवीर ने धर्म की वेदी पर समर्पित होकर अमरत्व प्राप्त किया। ज्यों ही इस बलिदानी बालक के बलिदान का समाचार नगर में फैला तो सारे नगर में शोक व्याप्त हो गया और फिर नगर में अभूतपूर्व हड़ताल हुई सहस्त्रों लोगों ने इस बालवीर के अन्तिम दर्शनार्थ उसका शव देने की प्रबल माँग की। किन्तु क्रूर अधिकारियों का पत्थर का कलेजा न पसीजा और उन्होंने जनता की माँग ठुकरा दी।

28 जुलाई को कुछ सत्याग्रहियों के साथ इस बालक का शव श्मशान भूमि पहुँचाया गया। जहाँ पूर्ण वैदिक रीति से इस महान आत्मा का दाह संस्कार किया गया।

आर्य जगत को ऐसे बलिदानी बालकों का बलिदान सदैव ही प्रेरणा देता रहेगा और निराशा में भी आशा का दीप बनकर भावी पीढ़ियों का मार्ग प्रशस्त करेगा। इसके साथ ही-----

कुर्बान अपने देश पर जो नहीं हो सकता,
कसम ईश्वर की वह इन्सान नही हो सकता।
लहू से सींचते हैं जो बागे बाँ रोशन,
चमन वह कभी वीरान नहीं हो सकता ।।

समर्पित व्यक्तित्व वाले
स्व० नारायण गोस्वामी

सुदीर्घ काल तक आर्यमित्र के प्रबन्ध सम्पादक के पद को सुशोभित करने वाले श्री नारायण गोस्वामी का 18मार्च89 को 88वर्ष की परिपक्व आयु में निधन हो गया। उनका जन्म 1900ई0 में आगरा जिले के कोटला ग्राम में हुआ। इनके पिता पौरोहित्य तथा वैद्यक का काम करते थे। यशस्वी पत्रकार पं0 हरिशंकर शर्मा के कार्यकाल में ही वे आर्यमित्र के सम्पादकीय विभाग में आ गये और 30 सितम्बर 1985 तक रहे। मैंने उनसे 1959 में स्वामी दयानन्द की दीक्षा शताब्दी के अवसर पर मथुरा में भेंट की थी। उस अवसर पर आर्यमित्र का एक महत्वपूर्ण विशेषांक प्रकाशित हुआ था। वे समय-समय पर "आर्यमित्र" के विशेषांकों के लिये मुझसे लेख मांगते रहते थे। मैं उनके अनुरोध को कभी टाल नहीं सका। वे स्वयं एक कुशल लेखक भी थे। आर्यमित्र में उनके सामयिक लेख तो छपते ही थे, उनके द्वारा सम्पादित दिव्य दयानन्द पुस्तक श्री पूर्णचन्द्र एडवोकेट के सहयोग से सम्पादित तथा गिरीश औषधालय आगरा से 1990 वि0 में प्रकाशित} तथा ब्रह्मविज्ञान {दार्शनिक निबंधों का संग्रह} भी गोस्वामी जी की साहित्य सेवा के ज्वलन्त उदाहरण हैं। आर्य समाज के निष्ठावान पत्रकार को हमारी सश्रद्ध श्रद्धांजलि।

--भवानीलाल भारतीय।

आर्य समाज बदायूँ

होली पर्व पर यज्ञ-भजन प्रवचन-पर्व महत्व परिचर्या सम्पन्न हुई। रामलीला मैदान में आयोजित होली-मिलन समारोह में शिविर आयोजित कर "गायत्री मन्त्र" वितरित किया गया।

आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नव सम्वत् 2046 का पर्व उत्साह और हर्ष के वातावरण में मनाया गया। स्वामी ज्ञानानन्द जी ने विचार प्रकट करते हुए राष्ट्रीय एकता अखन्डता, सौहार्दमय वातावरण के लिए आर्यसमाज की भूमिका को ही श्रेयस्कर बताया। महर्षि दयानन्द मिशन पूर्ति से ही भारत राष्ट्र का कल्याण सम्भव बताया। रात्रि में भवन पर प्रकाश किया गया।

- आर्यसमाज बगहा {मीरजापुर} ने श्री काशीनाथ जी शास्त्री के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया है उनकी आत्मा की शान्ति एवं परिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करने के लिए परमप्रभू परमात्मा से प्रार्थना की गई।

- बेचनसिंह

आर्यसमाज स्थापना दिवस पर्व समारोह पूर्वक सम्पन्न

खण्डवा आर्यसमाज के प्रधान श्री मावजी भाई भानुशाली एवं मंत्री लक्ष्मीनारायण भार्गव ने जानकारी दी कि गुड़ी पड़वा पर आर्यसमाज खण्डवा में आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। प्रातः प्रभात फेरी निकाली गयी हवन के पश्चात आर्यसमाज की स्थापना की आवश्यकता क्यों अनुभव की गई विषय पर अनेक वक्ताओं ने विचार व्यक्त किये ।

मुख्य अतिथि के रूप में श्री पुण्डलीकराव निकम ने अपने भाषण में कहा कि आर्यसमाज के कारण ही मैं यहाँ भाषण देने खड़ा हो पाया अध्यक्ष के रूप में श्री कठाने साहब पोस्ट-मास्टर खण्डवा ने अपने वक्तव्य में कहा कि आर्य समाज के कारण ही हम दिख रहे हैं फिर भी हमारे काम की गति धीमी है उसे बढ़ाना चाहिये। एवं उन अछूतों और गरीबों में जाकर काम करना चाहिये जो धर्म परिवर्तन कर रहे हैं। समाज के प्रधान जी ने मुख्य अतिथि को वैदिक साहित्य भेंट किया।

समर्पित ऋषि भक्त चल बसा

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा सर्व प्रथम स्थापित आर्यसमाज {काकड़वाड़ी} बम्बई के सम्मान्य पुरोहित एवं परामर्शदाता श्री0 पं0 दयाशंकर-जी शर्मा का गत 12 अप्रैल, 1989 को हृदयगति रूक जाने से देहावसान हो गया।

पण्डित दयाशंकर जी का जन्म राजस्थान के नागौर जिले के मींडा नामक ग्राम में सन् 19ः2 में हुआ था। संस्कृत शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान श्री0 पं0 रामावतार जी शास्त्री जी के चरणों में बैठ कर उन्होंने विद्यार्जन किया। पण्डित दयाशंकर जी को पौराणिक विचारों की पारिवारिक परम्परा प्राप्त हुई थी, किन्तु उन के कपड़ों की सिलाई करने वाले एक दर्जी के द्वारा उन्हें सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका प्राप्त हुए। इन ग्रन्थों का अध्ययन करने के पश्चात पण्डित जी के विचारों में महान परिवर्तन आया और उन्होंने जीवन भर ब्रह्मचारी रह कर आर्यसमाज की विचारधारा के विस्तार का संकल्प ले लिया। अपने सभी भाईयों तथा परिवार के अन्य सदस्यों को आर्यसमाज के विचारों में दीक्षित किया ।

पण्डित जी ने 40 वर्षों तक आर्यसमाज की अप्रतिम सेवा की। उनके निधन से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें ।

- सभा मंत्री।

- आर्यसमाज कृष्णानगर मथुरा में रामनवमी महोत्सव 14 अप्रैल 89 को धूमधाम से मनाया गया। कई वक्ताओं ने मर्यादा पुरूषोतम के जीवन पर प्रकाश डाला तथा जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

गुरूकुल आश्रम {ब्रह्मावर्त- बिठूर, कानपुर} के तीन आश्रम

गंगातट पर स्थित "गुरूकुल आश्रम" में तीन आश्रमों {ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ व सन्यास} के धार्मिक लोगों के लिये निःशुल्क भोजन आवास आदि की सुविधायें उपलब्ध हैं। निर्माणाधीन गुरूकुल-आश्रम में एक धर्मशाला और दो कक्ष बरामदा सहित बन कर तैयार हैं। प्रत्येक की ला~ छब्बीस हजार रुपये से अधिक है।

2211। रूपये के दानदाता का नाम संगमरमर पर दानपरमवीर के रूप में धर्मशाला या कक्ष का नामकरण किया जायेगा। धनराशि आने पर 16 खम्बे की यज्ञशाला-निर्माण का शुभारम्भ किया जायेगा। ज्ञातव्य है कि गुरूकुल आश्रम धीरे-धीरे प्रगति को प्राप्त हो रहा है। बैंक ड्राफ्ट {स्वामी गुरुकुलानन्द-सरस्वती- नाम से} भेजने से पहले निम्न पता पर सम्पर्क कर लेवेः-

गुरूकुलानन्द सरस्वती ।
{कचहारी} आर्यसमाज पिथौरागढ़ {उ0प्र0}

- गुरूकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद उ0प्र0 के तत्वावधान में 25 मई से 4 जून 89 तक युवक निर्माण व योग साधना शिविर लगाया जायगा। शिविरार्थी रैल या बस द्वारा कोटद्वार पहुँचे वहाँ से बस द्वारा कलालघाटी आकर कण्वाश्रम आयें तथा अनुशासित रहें। दानदाताओं से विनम्र निवेदन है कि वह शिविर हेतु उदारता पूर्वक दान देने की कृपा करें ।

- आर्यसमाज औरैया के महिला सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की उपमंत्री डा0 आशारानी राय ने महिलाओं के अधिकारों, कर्त्तव्यों के साथ-साथ सामाजिक बुराईयों, सतीप्रथा, पर्दाप्रथा, गुरूडम अन्धविश्वासों का खण्डन किया। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज भरथना तथा इटावा में भी अपनी ओजस्वी वाणी में महिलाओं को सम्बोधित किया।

- आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर महानगर के तत्वावधान में नगर की समस्त समाजों की ओर से महात्मा हंसराज जी का जन्मदिवस मनाया गया तथा उनके जीवन पर प्रकाश डाला गया।

- विधूना तहसील के सहार कस्बे के ग्राम [illegible]देवीदास में 135 हरिजन भाईयों जिन्होंने सिखधर्म स्वीकार कर लिया था आर्यसमाज औरैया एवम् जनपद इटावा के मंत्री श्री वेदप्रकाश आर्य तथा उनके सहयोगियों के प्रयास से सैकड़ों हरिजन भाई फिर से अपने धर्म में वापस लौट आये हैं। इस कार्य में डा0जहान-सिंह आर्य का पूर्ण सहयोग मिला। श्री बाबूराम जी शर्मा सहार वालों ने औरैया सहार मार्ग पर आर्यसमाज मन्दिर स्थापित करने हेतु 6 डिसमिल जगह देने का वचन दिया। मंत्री जी ने सभी हरिजन भाईयों को आश्वासन दिया कि आर्य समाज पूर्ण संरक्षण देगा। उनके जो कार्य प्रशासन से नहीं हो पाये उन्हें यथाशीघ्र कराया जायगा। इस कार्य में श्री प्रभा देवी डा0 सर्वेश जी एवं वीरेन्द्र कुमार जी आर्य का सहयोग प्रशंसनीय रहा।

- आर्य वीर दल यमुना हिण्डन मध्यक्षेत्र {दिल्ली} ने नवयुवकों का चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर दि0 17 मई से 28 मई 1989 को डी0ए0वी0 पब्लिक स्कूल राजेन्द्र नगर साहिबाबाद में लगेगा समस्त आर्यसमाजों के मंत्री महोदयों से प्रार्थना है कि वह अधिक से अधिक सहयोग देने की कृपा करें। 17 मई को प्रातः 8.30 बजे चौ0 लखीराम नागर अध्यक्ष जिला परिषद-गाजियाबाद उद्घाटन करेंगे ।

--संयोजक ज्ञानप्रकाश आर्य

आर्यसमाज स्थापना-दिवस

मैनपुरी- 6अप्रैल- स्थानीय आर्यसमाज मन्दिर में नवसंवत्सर एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस बड़े समारोह के साथ मनाया गया। वृद्धजन सम्मान कार्यक्रम के अन्तर्गत माता सत्यवती, आचार्य-रामदेव जी, ठा0 महावीर सिंह जु "देव" {श्री अटल जी के पिता} पं0 नरेन्द्रार्य का अभिनन्दन किया गया। बहिन अनुसूया, बहिन सुनीता तथा भाई शिवनारायण को ऋषि स्तवन, भाषण आदि पर पुरस्कार दिए गये।

इस अवसर पर ठा0 महावीर सिंह जु "देव" ने एक सहस्त्र की धनराशि गुरूकुल वृन्दावन के लिए दान की है।
सभा की ओर से बहुत-बहुत बधाई ।

--सभामंत्री ।

पं0 सच्चिदानन्द शास्त्री स्वास्थ्य- लाभ यज्ञ

पिथौरागढ़- आर्यसमाज मन्दिर में पं0 सच्चिदानन्द शास्त्री सार्वदेशिक-मंत्री {दुर्घटनाग्रस्त : 11 मार्च 1989, नई दिल्ली} के स्वास्थ्य लाभ हेतु यज्ञ किया गया। आर्यसमाज को समर्पित पं0 शास्त्री जी के दीर्घायु हेतु स्वामी मुरुकुलानन्द सरस्वती द्वारा परमात्मा से प्रार्थना की गई ।

उपदेशकों का अभिनन्दन

आर्य उपप्रतिनिधि सभा बरेली ने अपने जनपद में प्रचार करने वाले पं0 ओ3म् प्रकाश आर्य तथा पं0 मुरलीधर जी भजनोपदेशक का आर्यसमाज स्थापना दिवस के अवसर पर एक बड़ी सभा में अभिनन्दन किया गया।

- ज्ञानपुर वाराणसी। विश्वभारतीय अनुसन्धान परिषद के सदस्यों की एक सभा निदेशक डा0 कपिलदेव द्विवेदी की अध्यक्षता में प्रख्यात इतिहास विद श्री सत्यकेतु विद्यालंकार के निधन पर शोक व्यक्त करने के लिए हुई। श्री डा0 सत्यकेतु विद्यालंकार का निधन गत दिना हरिद्वार के समीप एक कार दुर्घटना में हो गया था। डा0 कपिल देव द्विवेदी ने डा0 सत्यकेतु विद्यालंकार की सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनके योगदान को अविस्मरणीय बताया।

- श्रमती सरोजकुमारी सुपुत्री श्री डा0 राजेन्द्र सिंह पूर्व जिला सभामंत्री एवं प्रधान जनपद अलीगढ़ का निधन दिनांक- 8 मार्च 1989 को हो गया, उसका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति से हुआ परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करें।

- सभामंत्री।

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला **भारतवर्षीय वृहद इतिहास** लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें ।

-- सभामंत्री ।

चुनाव

आर्य समाज सिकन्दरपुर

संरक्षक- डा0 राजेन्द्र सिंह
प्रधान- श्री विजेन्द्र पाल सिंह
कोषाध्यक्ष- श्री पाल सिंह

महिला आर्यसमाज स्टेशन रोड मुरादाबाद

प्रधान - श्रीमती प्रभा आर्या
मंत्री- श्रीमती स्वर्णाआनन्द
कोषाध्यक्ष-श्रीमती रक्षा आर्या

आर्य समाज खलीलाबाद {बस्ती}

प्रधान- श्री हरिश्चन्द्र आर्य
मंत्री- श्री वैद्य राजाराम सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री रामधवन आर्य

आर्य समाज मवाना {मेरठ}

प्रधान- श्री दयाप्रकाश सर्राफ
मंत्री- श्री कान्तिप्रकाश
कोषाध्यक्ष- श्री प्रेम प्रकाश

आर्यसमाज आर्य नगर पो0 इस्लामनगर {बदायूँ}

प्रधान- श्री रामकुमार जी आर्य
मंत्री- श्री शिव ओ3म्
कोषाध्यक्ष- श्री हरिओम प्रकाश आर्य

आर्य समाज ओगीपुर

प्रधान- श्री माधव सिंह जी
मंत्री- श्री जयसिंह
कोषाध्यक्ष- श्री धर्मपाल सिंह

आर्यसमाज बगहा {मीरजापुर}

प्रधान- श्री जयनारायण सिंह
मंत्री- श्री बेचन सिंह
कोषाध्यक्ष- श्री ज्वालाप्रसाद सिंह

आर्यसमाज पीपलीनायक {रामपुर}

प्रधान- श्री कृष्णसिंह आर्य
मंत्री- श्री जीवन सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री जयदेव सिंह आर्य

आर्य समाज हाँसीपुर मीरजापुर

प्रधान- श्री ज्ञानसिंह बी0ए0
मंत्री- श्री रामलाल सिंह
कोषाध्यक्ष- श्री यज्ञदेव वानप्रस्थ

आर्यसमाज ओबरा सोनभद्र {मीरजापुर}

प्रधान- श्री त्रिलोक नाथ शुक्ला
मंत्री- श्री कपिलदेव आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री गुलाब सिंह

आर्यसमाज अड़ींग {मथुरा}

प्रधान- श्री त्रिभुवन नाथ शर्मा
मंत्री- श्री महावीर प्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री जगदीशप्रसाद शर्मा

चुनाव

आर्य समाज औरय्या {इटावा}

प्रधान- श्री रामबाबू आर्य
मंत्री- श्री वेदप्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री आशाराम आर्य

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
वैशाख शुक्ल 2
7 मई, रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

उत्तर प्रदेश के मुख्य विक्रेता

1- आयर्वेद सेन्टर, लखनऊ।
2- एस0एस0 मेहता, लखनऊ।
3- अलंकार फार्मेसी, कानपुर।
4- रामदेव मिश्रा, रायबरेली।
5- शिव आयुर्वेदिक औषधालय प्रतापगढ़ ।
6- स्वदेशी औषधालय, गोण्डा
7- मिश्रा आयुर्वेदिक स्टोर, सुल्तानपुर।
8- विनयकुमार अरुणकुमार इलाहाबाद।
9- कुलदीप चन्द सामा, आगरा।
10- बैजनाथ प्रसाद एण्ड सन्स, फैजाबाद ।

आर्यसमाज सदर बाजार झाँसी

प्रधान	-	श्री सुरेश चन्द्र माहेश्वरी
मंत्री	-	श्री जगदीश चन्द्र बाधवा
कोषाध्यक्ष	-	श्री प्रेम शरण गुप्ता

आर्यसमाज मीरजापुर

प्रधान	-	श्री सीताराम गुप्त
मंत्री	-	श्री प्रेम चन्द तिवारी
कोषाध्यक्ष	-	डा0 मधु चोपड़ा

आर्य समाज, लाजपत नगर, कानपुर

प्रधान	-	राजेन्द्र प्रसाद आर्य
मंत्री	-	डा0 आशा रानी राय
कोषाध्यक्ष	-	लक्ष्मण दास गर्गो

शुभ सूचना

"काश गाँधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई नही कहते।'

इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुस्तक के लेखक विशनस्वरूप पर केस चलाया जिसे माननीय मजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदी जी ने 29 नवम्बर सन 1988 को खारिज कर दिया जो सज्जन ये पुस्तक मंगवाना चाहें वे 1/- रुपये प्रति मंगवा सकते हैं। वितरण करने वालों को 50/- रुपये में सौ प्रति भेजी जायेंगी ।

वेद प्रचार मण्डल
60/13, रामजस रोड
दिल्ली-5 ।

स्वत्वाधिकारणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ मे श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य ओ३म् मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि सं० 2241/57

दयानन्दाब्द 165, वैशाख शुक्ल 9 रविवार, संवत 2046 वि०, दिनांक 14 मई 1989

घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85



सना ज्योतिः सना स्वः

विश्वा च सोम सौभगाः

अथा नो वस्यसस्कृधि ।

हे प्रभो? हमें प्रकाश दीजिए, सुख श्रेय दीजिए, बुद्धिवैभव दीजिए, हमें सिद्धिसम्पन्न कीजिए ।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम० ए०

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०,

साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु० 251/-
वार्षिक	रु० 30/-
विदेश में	15 पौंड
एक प्रति	- 1-00रु० मात्र

वर्ष	92
अंक	19

परमात्मा की अमरवाणी

सह नाऽववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै, माविद्विषावहै।।!

तुम सब! एक दूसरे की रक्षा करते हुए साथ-साथ चलना।
तुम सब! एक दूसरे को खिलाते हुए साथ-साथ खाना।
तुम सब! एक दूसरे को शक्तिसम्पन्न बनाते हुए साथ-साथ वीर्यवान बनना।
तुम सब! कभी आपस में द्वेष मत करना, द्वेष मत करना, द्वेष मत करना।

-------- और इस द्वेष ने आर्य जाति को आज विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। इस प्रसंग में आइए! परमात्मा की इस अमरवाणी का पारायण करें और विचारें वह हमसे क्या अपेक्षा करता है जिसने उसके इन आदेशों का पालन किया वे संगठित हैं, एक हैं, एक दूसरे की रक्षा करने को दौड़ पड़ते हैं। विश्वजनीन रोटी-बेटी के व्यवहार ने उन्हें विश्व की महान् संगठित बलशाली कौम के रूप में उभार दिया है। तुम्हारी क्या बिसात है पुलिस और मिलिट्री से वे लोहा लेने को तैयार हैं। तुमने तो मन्त्र का केवल जाप करना जाना है उन्होंने पालन किया है। तुम जपते रहो- वे बढ़ते रहेगें, संगठित होते रहेगे, बलशाली बनते रहेगें। आज ईरान का मुसल्मान लखनऊ के मुसल्मान के साथ एक थाली में बैठकर खाना खा लेगा। मगर हाय री! आर्य जाति -------- एक थाली की तो बात ही दूर है, पास बिठाकर खिलाने में छिः छिः करती है। मध्ययुग की देन, उस जघन्य जन्मपरक जांतपांत ने मेरी प्यारी आर्यजाति को कहाँ से कहाँ तक पहुँचा दिया और कहाँ पहुँचाने जा रही है।

इस वेदमन्त्र में साथ-साथ खाने से अद्वेष की भावना का गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। चाहे गुरुकुल के ब्रह्मचारी भोजन पर बैठे हों, या परिवार के लोग, अथवा अन्यत्र कहीं भोज हो, इसी वेदमन्त्र के साथ सहभोज बनाम प्रीतिभोज की प्रक्रिया प्रारम्भ की जाती थी। द्वेष का कहीं नाम और निशान नहीं था। इतिहास का एक उदाहरण पर्याप्त होगा - "आमेर का राजा मानसिंह अकबर का सन्धिपत्र लेकर प्रताप के पास पहुँचता है। वह नहीं चाहता था अकबर और प्रताप में मुठभेड़ हो जाय। अकबर भी नहीं चाहता था, वह केवल इतना ही चाहता था कि प्रताप उसकी अधीनता स्वीकार कर ले। प्रताप को मानसिंह ने वह सन्धिपत्र दिया और समझाया किन्तु प्रताप ने इसे अपना अपमान समझा और सन्धिपत्र फाड़कर फेंक दिया। रात्रि के समय जब सोने की थाली में भोजन परोस कर मानसिंह के पास आया तो प्रताप साथ खाने नहीं आये। मानसिंह ने कहा- भैइया? नहीं आये ----- तो प्रताप ने पहिले तो कहला दिया सिर में दर्द है। किन्तु जब फिर मानसिंह ने कहा - हम अकेले नहीं खायेगें तो प्रताप ने अन्दर से कहला दिया-- "म्लेच्छ के साथ रिश्ता करने वाले के साथ बैठकर हम खाना नही खा सकते"। बस फिर क्या था - मानसिंह ने आग बबूला होकर थाली फेंक दी और जाकर अकबर से जो नमक मिर्च भिड़ाई उसका परिणाम होता है हल्दीघाटी खून से रंग जाती है। सोवियत क्रान्ति के जन्मदाता कार्लमार्क्स ने लिखा है कि दुनिया के मजदूरों? किसानों?-"पूंजीपतियों ने तुम्हारी रोटी छीन ली है इन्हें मार डालो। और इसी के परिणाम स्वरूप सोवियत रूस में विश्व प्रसिद्ध खूनी क्रान्ति हो गई थी जिसमें लगभग 30 लाख इन्सान कीलें ठोंक ठोंक कर मार डाले गये थे।

उपर्युक्त वेदमन्त्र में साथ-साथ रोटी खाने का भाव यह नहीं है कि एक ही थाली में बैठकर खाया जाय। केवल मात्र इतना ही भाव है कि किसी के अधिकार का अपहरण मत करो। अगर एक रोटी है और चार हों तो चार भाग करके खा लेना मगर दूसरे का कौर मत छीनना। समता, समानता, एकता और बन्धुता का यही मूलमन्त्र है और यही सच्चा वैदिक साम्यवाद है। यदि इस वेदमन्त्र का आश्रय लेकर हम आर्य अपने व्यवहार और आचरण को बना लें तो कहीं भी कटुता और विद्वेष का नामोनिशान न रहे।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उषा तू सजकर साज!
आर्यसमाज । आर्यसमाज ।!

- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ वैशाख शुक्ल 9 संवत् 2046 वि0, 14 मई 1989
दयानन्दाब्द 165, सृष्टि संवत् 1972949090

अल्पसंख्यक बनाम बहुसंख्यक

भारतीय स्वाधीनता के पूर्व ब्रिटिश साम्राज्य नें इस देश में "फूट डालो और राज्य करो" की नीति बड़ी ही कुशलता से अपना रखी थी। कभी हिन्दुओं का पक्ष लेकर कभी मुसलमानों का पक्ष लेकर ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासक हमेशा यही चाहते रहे कि उनका शासन इस देश में किसी न किसी प्रकार स्थिर बना रहना चाहिए। भारत के वायसराय लार्ड वेवेल ने यह वक्तव्य देकर कि भारत भौगोलिक दृष्टि से एक है उसका विभाजन नहीं हो सकता, पाकिस्तान की माँग को अस्वीकार कर दिया था। जबकि स्टैटफोर्ड क्रिप्स ने अपने क्रिप्स मिशन में भारत को हिन्दू बहुल, मुस्लिम बहुल प्रान्तों में बाँटकर देश में तीन संवैधानिक विधान सभाओं का निर्माण करके केन्द्रीय शासन को अविभाजित रखा था। ब्रिटिश साम्राज्य की इसी देन के कारण हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे से बहुत दूर होते चले गए जिसका दुखद परिणाम देश का विभाजन और लाखों निर्दोष प्राणियों की हत्या में परिणित हुआ।

आज़ादी मिलने के बाद भारत ने अपने संविधान में समस्त नागरिकों को उन्नति के समान अवसर प्रदान करते हुए व्यक्ति की गरिमा को बहुत महत्व दिया है। पृथक निर्वाचन पद्धति ब्रिटिश साम्राज्य की देन थी जिसने इस देश में साम्प्रदायिकता को बहुत प्रेरणा दी थी जिससे हिन्दू मुस्लिम सम्बन्धों में काफी कटुता आई थी। मुस्लिम लीग के तत्कालीन नेता मि0 जिन्ना द्विराष्ट्रवादी सिद्धान्त के पोषक थे। उनका कहना था कि मुस्लिम एक अलग राष्ट्र है। उनकी भाषा, धर्म, संस्कृति, पूर्वज और मान्यतायें सब हिन्दुओं से पृथक हैं। जबकि गाँधी[illegible] और कांग्रेस के नेता यही कहते रहे कि उपासना पद्धति [illegible] होने से राष्ट्रीयता नहीं बदला करती। यह प्रश्न आज भी मूलरूप में अनसुलझा हुआ है और हम इस पर फिर कभी प्रकाश डालेंगे।

हम यहाँ ब्रिटिश साम्राज्य की उसी नीति को जो कभी हिन्दू-मुस्लिम भेद के रूप में इस देश में वर्षो तक अंगारे के समान प्रज्वलित होती रही एक दूसरे रूप में वर्तमान शासन द्वारा प्रस्तुत [illegible] जाने का वर्णन कर रहे हैं। शासन ने अल्पसंख्यक आयोग [illegible]माया है और शासन अल्पसंख्यकों के तुष्टीकरण में बहुत प्रबलता से समर्पित है। पिछले सप्ताह प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने प्रधानमंत्री के वासस्थान पर आयोजित एक भोज में उ0प्र0 के सांसदों को बताया कि अल्पसंख्यकों के विकास के लिए 15 सूत्री कार्यक्रम तैयार किया गया है। शासन अल्पसंख्यक समुदाय के उत्थान के लिए बहुत प्रयत्नशील है। सरकारी अर्धसरकारी संगठन एवं संस्थानों में अल्पसंख्यकों को अधिक से अधिक नौकरियां दिलाने तथा बैंकों से अत्यधिक उदार शर्तों पर ऋण दिए जाने आदि की व्यवस्था की गई है। उर्दू भाषा के समुचित विकास के लिए शासन का यह हाल है कि स्कूलों/कालेजों में उर्दू पढ़ने वाले छात्र नगण्यमात्र हों फिर भी उर्दू अध्यापकों की नियुक्ति की गई है। अध्यापकों को विशेष वृत्तियां देकर उर्दू की प्रशिक्षण व्यवस्था की गई है, आदि।

हम प्रत्येक भारतीय के उत्थान के प्रति सदा समर्पित रहे हैं, किन्तु किसी वर्ग को अल्पसंख्यक मानकर उनके लिए विशेष सुविधाएं दिए जाने के पक्ष में हम बिलकुल नहीं हैं। कश्मीर को विशेष दर्जा देकर हमने यह सोचा था कि इससे वहाँ का बहुसंख्यक समुदाय प्रसन्न हो जायेगा और भारत की मुख्य राष्ट्रीय धारा का परम पोषक बन जायगा। किन्तु यह धारणा कितनी निर्मूल सिद्ध हो रही है, इसे प्रत्येक भारतीय अब अच्छी प्रकार समझने लगा है। अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक नाम से यदि शासन इसी नीति पर चलता रहा तो भले ही हिन्दू मुस्लिम नाम से वर्ग विशेष की भावना तीव्रतर न हो, अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक नाम से यह भावना जोर पकड़ेगी और हमारे भारतीय नेताओं का भारतीय एकता का स्वप्न चकनाचूर हो जायगा। अतः हम समस्त भारतीय समाज को एकांगी रूप में देखते हुए समस्त भारतीयों के उत्थान के लिए एक समान नीति अपनाए जाने तथा अल्पसंख्यक आयोग के स्थान पर मानवाधिकार आयोग बनाए जाने का समर्थन करते हैं। इस मानवाधिकार आयोग के गठन का सुझाव अल्पसंख्यक आयोग के वर्तमान चेयरमैन ने स्वयं दिया है।

उत्तरप्रदेश विद्यालय प्रबन्धक महासभा की अपील

उत्तर प्रदेश में विभिन्न स्तरों के शिक्षा प्रसार में निजी प्रबन्धतन्त्रों का सबसे महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान योगदान रहा है। इस बात को सरकार भी स्वीकार करती है तथा विगत कुछ वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त अनुशासन हीनता तथा कर्तव्य-विमुखता के फलस्वरूप शिक्षास्तर में चिन्ता जनक गिरावट से चिन्तित होकर समय-समय पर सरकार निजी प्रबन्धतन्त्रों को उनके छीने गये अधिकारों को बहाल करने की इच्छा भी व्यक्त कर चुकी है। किन्तु विद्यालय प्रबन्धकों के शिथिल संगठन के कारण इसे व्यावहारिक रूप दे पाना अब तक सम्भव नहीं हो पाया है। यदि आप चाहते हैं कि निजी प्रबन्धतन्त्रों के छीने गये अधिकार उन्हें पुनः वापस मिलें ताकि वह शिक्षा के प्रसार तथा उन्नयन में अपनी और अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकें तो हमें अपने संगठन को अधिक मजबूत और व्यापक बनाना होगा। इस दिशा में प्रदेश के प्रत्येक मान्यता प्राप्त शिक्षासंस्था को हमारी उत्तर प्रदेश विद्यालय प्रबन्धक महासभा का सदस्य बनना चाहिए। हमारी अपील है कि प्रदेश की मान्यता प्राप्त शिक्षा संस्थाओं के सभी प्रबन्धकगण अपनी संस्था को महासभा का सदस्य तुरन्त बना लें और इस प्रकार उसे शक्तिशाली बनाकर अपने खोये हुए अधिकारों को पुनः प्राप्त करने में अपना अमूल्य योगदान करें। महासभा का वर्तमान सदस्यता शुल्क 120/- वार्षिक है। यदि आपके जनपद में जनपदीय समिति का गठन हो चुका है तो- सदस्यताशुल्क जनपदीय कोषाध्यक्ष के पास जमाकरें अन्यथा प्रदेशीय महा सभा के कोषाध्यक्ष श्री वीरेन्द्र कुमार मौर्य के 56, शास्त्री नगर, लखनऊ के पते पर बैंकड्राफ्ट अथवा मनीआर्डर द्वारा शीघ्रातिशीघ्र भेजें।

अपील कर्त्ता

दीन दयाल	वीरेन्द्र कुमार मौर्य	मनमोहन तिवारी
कार्यकारी अध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	मंत्री

उत्तर प्रदेश विद्यालय प्रबन्धक महा सभा
कार्यालयः- नवयुग रेडियन्स सीनियर सेकेण्डरी स्कूल,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ -4

सभा परिसर में नलकूप का उद्घाटन

दिनांक 24 अप्रैल को रात्रि में 9 बजे सभाप्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने आर्यमित्र के प्रबन्ध सम्पादक आचार्य इन्द्रदेव पाठक के साथ पवित्र मन्त्रोच्चारण करते हुए तीन अश्वशक्ति के विद्युत मोटर का बटन दबाकर उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के परिसर में निर्मित नलकूप से मधुर जल की धारा प्रवाहित की। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री पं0 सच्चिदानन्द शास्त्री, सभामंत्री श्री मनमोहन तिवारी आदि अनेक सभा के मान्य अधिकारीगण सभा कार्यालय के समस्त कर्मचारी एवं श्रद्धानन्द अतिथि भवन के निर्माण में संरत अवर अभियन्ता श्री देवकी नन्दन सिंह वर्मा आदि अनेकों संभ्रान्त नागरिक उपस्थित थे।

बधाई।

-- संवाददाता।

डा० सत्यकेतु जी के पुण्य संस्मरण

(ले० डा० भवानी लाल भारतीय, चण्डीगढ़)

इतिहासकार के नाते तो डा० सत्यकेतु का नाम वर्षों से जाना पहचाना था, किन्तु उनसे प्रत्यक्ष परिचय करने का अवसर आया जब 1979 में उन्होंने सात खण्डों में आर्य समाज का वृहत् इतिहास लिखने की योजना बनाई। उस समय मैं अजमेर में कार्यरत था। मैंने डाक्टर साहब को सुझाव दिया कि वे इस महत् अनुष्ठान की पूर्ति में आर्यसमाज के गण्यमान्य शोध विद्वानों और इतिहासविदों का सहयोग लें। फल यह हुआ कि उन्होंने पारस्परिक विचार विमर्श के पश्चात् निम्न महानुभावों को सम्पादक मण्डल में लिया, मेरे अतिरिक्त श्री पृथ्वी सिंह मेहता विद्यालंकार, श्री क्षेम चन्द्र सुमन, डा० वेदप्रताप वैदिक, प्रो०राजेन्द्र जिज्ञासु तथा डा० धनपति पाण्डेय। इस मण्डल की मीटिंग उसी वर्ष नई दिल्ली के सफदरजंग एन्क्लेव स्थित उनके निवास स्थान पर हुई। बहुत कुछ विचार विमर्श के पश्चात् इतिहास के सातों खण्डों की रूपरेखा निश्चित की गई और प्रत्येक व्यक्ति ने इस महा ग्रन्थ के लेखन में अपना अपना योगदान देने का संकल्प प्रकट किया।

आर्य जगत् की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा ने भी, इस ऐतिहासिक कार्य में पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया। सभा की सहायता का आश्वासन उस समय निश्चित मान लिया गया जब इसी -- बैठक में सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शाल वाले, मंत्री श्री ओमप्रकाश-त्यागी, कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ मरवाह तथा प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सत्यदेव भारद्वाज स्वयं उपस्थित हुए और इतिहास लेखन की इस योजना को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। 1982में इस इतिहास माला का प्रथम खण्ड प्रकाशित हो गया और सम्पादक मण्डल के सभी सदस्यों का नाम भी इस पर छपा। परन्तु स्वयं डा० सत्यकेतु जी ने ही बताया है कि इस कार्य में उन्हें अपेक्षित सहयोग तो उनके बहुत निकट के साथियों से ही मिलेगा। अतः दूसरे खण्ड और उसके बाद के खण्डों में सम्पादक मण्डल के नाम देने की आवश्यकता नहीं समझी गई।

मेरी डाक्टर साहब से पुनः भेंट गुरुकुल कांगडी के वार्षिकोत्सव पर हुई वार्तालाप के दौरान मैंने उनसे सहजभाव से पूछा कि अब तक तो उन्होंने पाठ्यपुस्तकों की दृष्टि से ही इतिहास ग्रन्थों का प्रणयन किया है मौर्य साम्राज्य के इतिहास को लिख कर उन्होंने हिन्दी के लब्धप्रतिष्ठ मंगलाप्रसाद पुरस्कार को तो बहुत पहले ही प्राप्त कर लिया था पुनः आर्यसमाज का इतिहास और वह भी इतनी महत्वाकांक्षी योजना के अन्तर्गत लिखने और प्रकाशित करने का विचार उनके मन में कैसे आया और वह भी तब जब वे अपनी प्रौढावस्था को पारकर वार्धक्य की सीमा तक पहुँचे हैं। मेरी इस जिज्ञासा के उत्तर में उन्होंने अपने स्वर को अत्यन्त भावना-प्रवण-- बनाकर कहा भारतीय जी सच पूछिये तो मैंने इस कार्य को ईश्वर का आदेश मान कर ही स्वीकार किया है। 2-3 वर्ष पूर्व जब मैं अस्वस्थ होकर अस्पताल में रोग शय्या पर पड़ा था तो अचानक मेरे मन में एक विचार बिजली की तरह कौंध गया। मेरी अन्तरात्मा ने मुझे कचोटना आरम्भ किया मेरे मन ने मुझे उपालम्भ देते हुए कहा तुमने अब तक विभिन्न विषयों की अनेक पुस्तकें लिख कर प्रचुर द्रव्योपार्जन किया किन्तु जिस आर्यसमाज का मातृवत् वात्सल्य तुझे मिला भला उसका कर्ज उतारने के लिए तू ने क्या किया अपनी इस आत्म लांछना से संतप्त होकर मैंने तत्क्षण आर्यसमाज का इतिहास लिखकर प्रकाशित करने की योजना बना ली और इस बात का सन्तोष है कि प्रति वर्ष इस इतिहास का एक एक खण्ड निकलेगा और ठीक समय पर यह वृहत् इतिहास माला समाप्त होगी।

डा० सत्यकेतु जी का संकल्प पूरा हुआ। उनके इस साहित्य यज्ञ में उनके प्रमुख सहयोगी रहे। पं० हरिदत्त-वेदालंकार यह दुर्भाग्य ही कहा जायगा कि 1986 में उनका स्वर्गवास हो गया और डा० सत्यकेतु जी के लेखन कार्य में उनके इस प्रमुख साथी का सहयोग सदा-सदा के लिये जाता रहा कई बार गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सवों में उनसे भेंट हो जाती बाद में व इस विश्व विद्यालय के कुलपति भी बने और आर्यसमाज की इस एक मात्र विश्वविद्यालय स्तर की संस्था को उसके स्तर के उपयुक्त बनाने की अनेक योजनायें उन्होंने बनाई। वे चाहते थे कि विश्वविद्यालयअनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से कांगडी विश्वविद्यालय में वैदिक संस्कृत तथा प्राच्य विद्याओं की उच्च स्तरीय शोध का केन्द्र स्थापित हो। उन्होंने इस सम्बन्ध में विस्तृत योजना भी बनाई किन्तु विश्वविद्यालय में कार्यरत लोगों के सहयोग न मिलने तथा कुछ अवांछनीय किस्म के लोगों के हाथ में इस शिक्षण संस्था की बागडोर आ जाने से उन्हें निराशा ही हाथ लगी ।

मैंने आर्य समाज के लेखकों द्वारा 100 वर्ष की अवधि में लिखे गये साहित्य का विस्तृत विवरण वर्षों के परिश्रम और अध्यवसाय से एकत्र किया था, किन्तु इस परेशानी में था कि इस महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन कैसे हो सकेगा। मैं अपने चालीस वर्षों के आर्यसामाजिक लेखन के अनुभव से यह समझ पाया हूँ कि आर्यसमाज में पठन-पाठन, अध्ययन और अन्वेषण निरन्तर ह्रास हो रहा है। ऐसी स्थिति में गम्भीर और शोधपूर्ण साहित्य के जब पाठक ही नहीं होंगे तो लेखक और प्रकाशक तो स्वयं ही समाप्त हो जायेंगे। मैंने डा० सत्यकेतु जी से चर्चा की और उनसे अनुरोध किया कि वे इस इतिहास माला का एक पूरा साहित्य खण्ड लिखने के लिये मुझे अनुबंधित करें। वे इससे सहमत थे और मैंने आर्य समाज के तत्वावधान में लिखे विशाल साहित्य का विस्तृत परिचयात्मक विवरण फुलस्केप आकार के 900 पृष्ठों में टाइप कराकर उन्हें 1985 के अक्टूबर मास में ही भेज दिया। 1986 के जून में मेरे द्वारा लिखा गया आर्यसमाज के साहित्य का यह इतिहास आर्यसमाज के इतिहास के पांचवें खण्ड में 524 पृष्ठों में छपा। मेरा वर्षों का परिश्रम सफल हुआ। यों तो मैंने इस ग्रन्थमाला के अन्य खण्डों में भी आर्यसमाज के विभिन्न सम्मेलनों के विवरण राजस्थान की आर्यसमाजों के कार्य कलाप तथा राजस्थान के आर्य समाजियों का देश के स्वाधीनता संग्राम में योगदान जैसे विषयों पर कई अध्याय लिखे थे, किन्तु मुझे इस बात का पूर्ण संतोष रहा कि पांचवें खण्ड में आर्यसमाज के समग्र सारस्वत यज्ञ को उसके होता अध्वर्यु आदि के विवरण सहित प्रस्तुत कर दिया गया था।

इतिहास के सप्तम खण्ड में मैंने आर्यसमाज के प्रमुख राजस्थानी विद्वानों, नेताओं और कार्यकर्ताओं के विवरण भी तैयार कर डा० सत्यकेतु जी को भेजे। स्थानाभाव के कारण यह सामग्री इस खण्ड में स्थान नहीं पा सकी। विधि की कैसी विडम्बना है कि गत वर्ष ही डा० सत्यकेतु जी के इस साहित्य यज्ञ की पूर्णाहुति और इस वर्ष गत 16 मार्च को वे अपनी जीवनलीला समाप्त कर पराशक्ति की गोद में जा बैठे। 21 दिसम्बर 1987 को जब मेरे द्वारा सम्पादित श्रद्धानन्द ग्रन्थावली के 11 खण्डों का विमोचन दिल्ली के मावलंकर हाल में हुआ था तो डा० साहब तथा उनकी धर्मशीला गृहिणी श्रीमती सुशीला जी से भेंट करने का अन्तिम अवसर मिला था। डा० सत्यकेतु का नश्वर शरीर हमारे बीच नहीं है, किन्तु उनकी यशकाया उनके ग्रन्थों के रूप में सदा जीवित रहेगी। उन्हें सश्रद्ध श्रद्धांजलि ।

श्री सच्चिदानन्द शास्त्री को हार्दिक धन्यवाद

लखनऊ 23 अप्रैल, अन्तरंग सभा में, सभा भवन परिसर में बनने वाले अतिथि भवन की समीक्षा करते हुए सदस्यों ने प्रगति पर संतोष प्रकट किया। इस अवसर पर सभा मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने कार्य की प्रगति की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए अद्यतन निर्माण की यथास्थिति से सदस्यों को अवगत कराया तथा इस हेतु धन दिए जाने हेतु आर्य जनता से अपील की।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने अतिथि भवन के लिए 5000/- रु० (पांच हजार रुपये) की धनराशि का चेक उसी समय सभा मंत्री को प्रस्तुत किया। स्मरण रहे श्री शास्त्री जी इससे पूर्व भी उद्घाटन के अवसर पर 1001=00रु० की धनराशि इस निमित्त दान कर चुके है। अन्तरंग सभा ने शास्त्री जी का साधुवाद करते हुए अन्य सदस्यों से भी इसी प्रकार अनुकरण करने की अपील की है ।

- संवाददाता।

क्या धर्म अफीम का नशा है?

श्री बसंत सिंह गहलौत, विधायक
धामपुर (बिजनौर)

मार्क्स ने धर्म को अफीम का नशा कहा है। मार्क्स के चिन्तन की पृष्ठभूमि का आधार कतिपय सम्प्रदायों की अपने सम्प्रदायों के प्रति अन्ध श्रद्धा और अन्य सम्प्रदायों के प्रति असहिष्णुता का भाव रहा है। ईसाई और इस्लाम सम्प्रदायों के प्रवर्तकों का उद्देश्य स्वयं में अत्यन्त पवित्र था। उन्होंने अपने अनुयाइयों को मानवता के उत्थान और दानवता के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए कहा। ईसा ने तो विनम्रता की हदकर दी जब उन्होंने कहा कि यदि तुम्हारे गाल पर कोई एक थप्पड़ मारे तो तुम उसके सामने दूसरा भी कर दो। इन विचारों में बुद्ध की करूणा का सन्देश था।

परन्तु इतिहास इस बात का साक्षी है कि विभिन्न सम्प्रदायों ने अपनी सम्प्रदायों का प्रसार लोगों को अपने विचारों के प्रति आकर्षित न कर जोर-जबर्दस्ती से किया। लोगों ने इन सम्प्रदायों को विवशता में अपनाया हृदय परिवर्तन के द्वारा नहीं। क्योंकि वे तलवार का मुकाबला नहीं कर सकते थे। आज भी भारत में ईसाई भारत के पिछड़े और निर्धन लोगों को आर्थिक साधनों का लालच देकर अपने मत में शामिल करने में लगे हैं। इससे यह निष्कर्ष निकालना कि धर्म अफीम का नशा होता है अनुचित एवं ना समझी होगा। साम्प्रदायिक अन्धश्रद्धा और अन्य सम्प्रदायों के प्रति असहिष्णुता और बलात् अपना सम्प्रदाय दूसरों पर लादना किसी भी दशा में धर्म के भाव के अन्तर्गत नहीं गिने जा सकते। ये तो पूर्णतः अधर्म के लक्षण हैं। अधर्मियों ने धर्म का लबादा ओढ़कर जो कृत्य किये हैं वे किसी भी प्रकार धर्म को बदनाम करने में प्रयोग नहीं किये जाने चाहिये। बहुधा यह देखने में आता है कि जब जन समुदाय किसी चीज की तरफ आकर्षित हो जाता है और वह वस्तु या विचार जनता से सम्मान प्राप्त करने लगता है तो विरोधी विचार रखने वाले लोग भी उसमें सम्मिलित हो जाते हैं और वे उस विचार का नारा तो लगाते हैं परन्तु यदि उनके कृत्य देखे जायं तो ठीक उस विचार के विपरीत होते हैं और उनके दुष्कृत्यों के कारण वह विचार बदनाम हो जाता है। यही बात धर्म के साथ हुई। अधार्मिक प्रवृत्ति के पुरूषों ने धर्म को दिखावे के लिए अपनाया और स्वयं आचरण में घोर अधर्म का पालन किया नतीजा यह हुआ कि धर्म ही बदनाम हो गया यदि किसी लोटे के दूध में विष मिला दिया जाय तो उस लोटे का दूध ही विषैला होगा न कि दूध नामक पदार्थ ही विषैला कहलायेगा। आज यह बात प्रत्यक्षतः देखने को मिलती है कि राजनैतिक दलों के घोषणा पत्रों में उन दलों के सदस्यों के लिए जो आचरण संहिता होती है और सदस्य बनते समय जो सदस्यता पत्र वे भरते हैं उसमें लिखित उद्देश्यों में न तो उनकी आस्था होती है और न सदस्य बनने के बाद वे उनका व्यवहार में पालन करते हैं। नतीजा यह होता है कि जनता में वे दल अपने सदस्यों के आचरण के कारण बदनाम हो जाते हैं। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है सदस्यों का व्यवहार ही उस दल का मूर्तरूप होना है। इस प्रकार अधर्मियों का व्यवहार ही धर्म का मूर्त रूप बन गया और उनके कारण ही धर्म बदनाम हो गया इसका परिणाम यह हुआ है कि धर्म के प्रति लोगों को घृणा हो गई और धर्म समाज को जो लाभ पहुँचा सकता था, समाज उससे वंचित रह गया।

धर्म समाज को व्यवस्थित रखने की प्रक्रिया है। धर्म के अन्तर्गत वे सद्गुण आते हैं जिनका विश्वास व्यक्ति में होना आवश्यक है और जिनके अभाव में कोई समाज न तो सुखी रह सकता है और न प्रगति कर सकता है। आज भी चाहे कितनी ही अधार्मिकता क्यों न बढ़ गई हो और कितनी ही विषमता, ऊँचनीच, हिंसा, असहिष्णुता, द्वेष, अहंकार अपने प्रचंड रूप में दिखाई देता हो फिर भी काफी हद तक धार्मिक उस प्रभाव के कारण जो सदियों से हमारी परम्पराओं, उपदेशों, संदेशों से हमें प्राप्त हुआ है और खून में रच बस गया है के कारण शांति और व्यवस्था दिखाई देती है। फौज और पुलिस के जरिये कोई व्यवस्था नहीं चलाई जा सकती। धार्मिक प्रभाव के कारण ही भारत में अन्य देशों की अपेक्षा शांति है। भारत ही समस्त पृथ्वी मण्डल पर एक ऐसा देश है जब भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के लोग परस्पर प्रीति पूर्वक रहते हैं। कभी-कभी जो साम्प्रदायिक तनाव देखने को मिलता है, वह वोट की राजनीति के कारण होता है। वह भी अपना विकराल रूप इसीलिए धारण नहीं कर पाता कि अन्ततोगत्वा भारत के जन मानस पर पड़ा सदियों का धार्मिक प्रभाव उभर आता है और शैतान की शैतानी कुछ समय के लिये वितण्डा खड़ा कर दब जाती है।

इस सबके जान लेने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हम धर्म को बुरा कहने के बजाय, धर्म के सही पालन पर जोर दें और शैतान जो धर्म का लबादा पहनकर काम करता है उन कार्मों की भर्त्सना करें न कि धर्म की। क्योंकि धर्म के प्रति घृणा का भाव समाज में फैलाने के बजाय फिर और कोई उपाय हमारे सामने नहीं रह जाता जिसके द्वारा समाज की व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित की जा सके। धर्म के प्रति घृणा फैलाने से अधार्मिकता बढ़ेगी और समाज उन भीषण परिस्थितियों से आक्रांत हो जायेगा जो मनुष्य के महान कष्टों का कारण बनेगी। दया, क्षमा, अहिंसा, करूणा, सहिष्णुता, प्रेम आदि सद्गुण समाप्त हो जायेंगे और हिंसा, असहिष्णुता, वैर, द्वेष, शोषण का ताण्डव नृत्य होगा। समाज कष्टों से कराहने लगेगा किसी भी प्रकार की राज्य व्यवस्था समाज का ठीक-ठीक संचालन करने में असमर्थ और अक्षम होगी।

अतः आवश्यकता इस बात की है कुछ व्यक्ति व्रत लें कि वे आज की विकट परिस्थिति में भी पूर्णतः धार्मिक जीवन व्यवहृत करें ताकि वे दूसरों के लिए उदाहरण बन सकें। आज सभी चाहते हैं कि समाज अच्छा बने परन्तु वे यह नहीं सोचते कि वे समाज का अंग हैं और जब वे अच्छे बनेंगे तो समाज अच्छा बनेगा। उनकी चाह यहीं तक सीमित होती है कि वह तो कुछ भी करते रहें परन्तु समाज अच्छा बन जाय। बुद्ध ने इसी स्थिति को देखते कहा था कि "अप्पो दीपोभव" तुम स्वयं दीपक बनो तो दूसरों को प्रकाश दे सकोगे, दूसरे दीपकों को जलाने का निमित्त बनोगे। बुझा दीपक न तो प्रकाश कर सकता है और न दूसरे दीपकों को जला सकता है। एक कहावत है कि एक राजा ने नगर वासियों से कहा कि प्रत्येक नागरिक राजकीय तालाब में एक-एक लोटा दूध डालें ताकि तालाब दूध से भर जाय। रात्रि के अंधेरे में दूध डालना था। सभी ने सोचा कि वह यदि एक लोटा पानी डाल देगा तो उसके लोटे का कुछ पता नहीं चलेगा। क्योंकि शेष सब तो दूध ही डालेंगे। सब ने यही विचार किया और सभी ने लोटा भर जल डाला, दूध किसी ने नहीं। प्रातः काल तालाब जल से लबालब भरा था। यही समाज की दशा है। हमारे दुर्गुण और सद्गुण ही समाज को दुर्गुणी और सद्गुणी बनाते हैं यदि हमें अच्छा समाज बनाना है तो स्वयं अच्छा आचरण करना होगा ताकि दूसरों के लिये अनुकरणीय बन सके। कार्य कठिन है परन्तु इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग भी नहीं है जो समाज को सम्पन्न और सुखी बना सके।

एक बात और रह जाती है- धार्मिक पाखण्ड और आडम्बर की। वर्तमान में भारत में जो पाखण्ड और आडम्बर धर्म के नाम पर खड़ा है वह एक बड़ी घृणित साजिश है इसे जितनी जल्दी खत्म किया जाय उतना ही अच्छा होगा। तीर्थों और मन्दिरों में नाना प्रकार से व्यक्ति का जो शोषण किया जा रहा है और वहां जो कृत्य कराये जाते हैं वे किसी भी प्रकार धर्म से संबंध नहीं रखते वे कुछ लोगों की रोटी-रोजी का एक निकृष्ट धन्धा है। धार्मिक व्यक्ति तो अपनी रोटी ऐसे कृत्य द्वारा अर्जित करता है जिसके द्वारा समाज का किसी प्रकार का लाभ हो न कि शोषण। इन कुरीतियों को जितना शीघ्र समाप्त किया जा सकेगा उतना ही अच्छा रहेगा। श्रद्धावान लोग जब इन तीर्थों से लुटकर वापिस होते हैं तो उन्हें धर्म के प्रति बड़ी ग्लानि होती है। लेकिन उन्हें यह समझाना आवश्यक होगा कि इनसे धर्म का कोई संबंध नहीं होता। धर्म का संबंध तो मनुष्य के सुन्दर चित्त से है जिसमें मानवता हो, दया हो, क्षमा हो, करूणा हो, अहिंसा हो, सहिष्णुता हो, परस्पर सहयोग की भावना हो, किसी भी प्रकार किसी का शोषण न हो ऐसी भावना हो-----

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
मा कश्चिद् दुःख भागभवेत्।।

की कल्याणकारी वृत्ति से ओत-प्रोत मन ही धार्मिक हो सकता है। क्या ऐसे धर्म को अफीम का नशा कहा जा सकता है। कभी नहीं, कभी नहीं, ।

हिन्दुओं सचेत हो जाओ

श्री विजेन्द्र शर्मा, साहित्य अलंकार, पश्चिमी अस्ट्रेलिया

वर्तमान समय में भारत के अनेक भागों में विघटनकारी विद्रोही लोग सक्रिय हो कर उपद्रव मचा रहे हैं और भारत को हानि पहुँचा रहे हैं। इन विघटनकारी उपद्रवों के पीछे भारत के शत्रुओं का हाथ होना स्पष्ट प्रकट है। इन विघटनकारी हलचलों के लिए भारत सरकार की तुष्टीकरण की नीति और उपेक्षा जिम्मेवार तो है ही परन्तु साथ ही भारत के हिन्दुओं की उदासीनता भी जिम्मेवार है क्योंकि भारत के हिन्दुओं का कर्तव्य है कि वे इन उपद्रवों को समाप्त करने के लिए भारत सरकार पर दबाव डालें और अगर भारत सरकार बहुमत हिन्दुओं की माँगों पर ध्यान नहीं देती तब ऐसी सरकार को आने वाले चुनाओं में हटाकर ऐसी सरकार को नियुक्त करें जो बहुमत का आदर करे और भारत को एक अत्यन्त दृढ़ और हिन्दू देश बना सके। जब पाकिस्तान और बंगलादेश इसलामी देश हो सकते हैं तब भारत हिन्दू देश क्यों नहीं बन सकता? भारत सरकार की धर्मनिरपेक्षता की नीति वह क्षय रोग है जो हिन्दुओं के लिए अति घातक है।

भारत के उत्तर-पूरब में जो भारत विद्रोही कार्यवाहियां और अलग पृथक राज्य के लिए कार्यवाहियां हो रही हैं उनका अन्त अभी तक नहीं हो सका। यह प्रकट है कि वहां की भारत विरोधी और पृथक राज्य की स्थापना करने के लिए जो कार्यवाइयां की जा रही हैं उनके पीछे विदेशी पादरी और भारत के शत्रुओं का हाथ है। इतनी हत्यायें उपद्रवों के होते हुए भी भारत सरकार विदेशी पादरियों को वहां रहने दे रही है। जो लोग भारत में रहकर भारत की विरोधी कार्यवाइयों में लगे हों उन्हें बिना अवसर दिए देश से बाहर निकाल देना देश और हिन्दू समाज के हित में होगा चाहे वे विदेशी पादरी हों या कोई दूसरे। भारत में रहकर भारत की हानि करने वालों का कड़ाई के साथ दमन करना नितान्त आवश्यक है। इसमें भी हिन्दुओं को सक्रिय होकर भारत सरकार को विवश करना आवश्यक है।

भारत की पक्षपातपूर्ण दोरंगी और सम्प्रदायवादी हानिकारक नीति भारत और हिन्दू समाज के लिए अति घातक है। हिन्दुओं के लिए संततिनिग्रह और मुसलमानों को इसकी छूट और बहुपत्नी प्रथा पर प्रतिबन्ध न लगाना भारत सरकार की सम्प्रदायवादी पक्षपात बेतुकी नीति का हिन्दुओं को डट कर भारी विरोध करना आवश्यक है। भारत की इस असंगत नीति को हिन्दू समाज कैसे सहन कर रहे हैं?

विशाल भारत कितना घट गया है। पूर्वीय बंगाल जो आज बंगलादेश है, भारत का एक अंग था जहां हिन्दू अल्पमत में हो गए थे और भारत का वह अंग भारत से अलग हो गया। भारत का एक बड़ा भूभाग भारत से अलग होकर पाकिस्तान बन गया। क्यों? उत्तर यही है कि वहां हिन्दुओं की संख्या घट गई थी। कश्मीर में भी हिन्दुओं की संख्या घट कर अल्प मत हो गई है। वहां भी भावी संकट किसी भी समय उपस्थित हो सकता है। कश्मीर में हिन्दुओं की संख्या बढ़ाने के लिए हिन्दुओं को यत्न करना चाहिए।

भारत में बहुत से ऐसे नेता बने हुए हैं जिनकी धर्म में आस्था नहीं। ऐसे स्वार्थी नेताओं को हिन्दू समाज को कभी भी मत देना नहीं चाहिए। कितने हैं जो अपने देश की शिरोमणि भाषा हिन्दी में बोलते भी नहीं हैं। जब हिन्दी को राष्ट्र भाषा का रूप दिया गया है तब हिन्दी की अवहेलना कर फिरंगियों की विदेशी भाषा में बोलना कदापि उचित नहीं कहा जा सकता। यह बात मेरी समझ में नहीं आती कि कुछ लोग दूर देश विलायत की भाषा अंग्रेजी जो कि गुलामी का चिन्ह है, अभी तक क्यों अपनाए हुए हैं और अपने देश की कर्णप्रिय राष्ट्रभाषा हिन्दी की उपेक्षा कर रहे हैं। ऐसे लोगों से भी हिन्दुओं को सावधान रहना चाहिए क्योंकि वे लोग हो सकते हैं जिन्हें भारतीय संस्कृति और हिन्दू धर्म से कोई प्रेम न हो ऐसे नेताओं से हिन्दुत्व की रक्षा और प्रगति की आशा कैसे की जा सकती है।

जिस समय चीन ने तिब्बत पर आक्रमण किया था उस समय तिब्बत में भारत की सिपाही चौकियां थीं। इसलिए तिब्बत की रक्षा का भार भारत पर था परन्तु भारत ने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया और तिब्बत को चीन के अधिकार में जाने दिया। फलस्वरूप भारत का शत्रु और पाकिस्तान का मित्र सदैव के लिए भारत के सिर पर आ धमका और भारत के एक बड़े भूभाग को भारत से छीन कर उस पर अधिकार जमा कर भयंकर नाग बन बैठ गया। भारत की जो नीति है उससे तो पता लगता है कि भारत कभी भी अपनी उस भूमि को चीन से वापस नहीं ले सकेगा। एक तरफ भारत की भूमि को भारत से छीन कर चीन उस पर अधिकार जमाए बैठा है और दूसरी ओर भारत के प्रधान मंत्री राजीव गाँधी चीन की यात्रा कर बैठे जिससे तो यही प्रकट होता है कि प्रधान मंत्री भारत के उस बड़े भूभाग पर चीनी अधिपत्य स्वीकार कर चुके। इसे मैं राजीव गाँधी को चीनियों द्वारा पछाड़ देना समझता हूँ। जब तक चीन भारत की भूमि पर से हट नहीं जाता तब तक चीन से किसी भी प्रकार की बातचीत व समझौता नहीं होना चाहिए।

सिख खालिस्तान के लिए जो निर्दोष लोगों की हत्यायें, आतंक और उपद्रव मचा रहे हैं उसके पीछे पाकिस्तान का हाथ होना निश्चय है। सिख भी हिन्दू हैं। मेरे हृदय में सिख गुरुओं के लिए बड़ी श्रद्धा है। गुरुगोविन्द सिंह एक महान योद्धा थे। उनकी वीरता, त्याग और साहस की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम ही होगी। आज उग्रवादी सिख अपने गुरुओं की हत्याओं और गुरु गोविन्द सिंह के बच्चों का दीवाल में चुने जाने की बातों को भूल कर निर्दोष लोगों के रक्त से अपने हाथों को रंग रहे हैं। गुरु गोविन्द सिंह जी ने तो हिन्दू धर्म के लिए ढाल का काम किया था। सिख पंथ तो हिन्दू धर्म का एक अंग है। वे कभी भी हमसे अलग नहीं हो सकते क्योंकि गुरु ग्रंथ साहब में ओ३म् की चर्चा और बखान कई स्थलों में पाया जाता है। सारे देश में सिख गुरुओं और गुरुगोविन्द सिंह के बच्चों के बलिदान स्मारक दिन मनाकर सिखों को अपना पराया न समझना चाहिए।

आज भारत के सभी वर्गों और मतवाले हिन्दुओं को एक हिन्दू ध्वज के नीचे लाना नितान्त आवश्यक है। सुना है कि विश्व हिन्दू परिषद नामक संगठन भारत में सक्रिय है। इस संगठन को भारत के कोने-कोने में फैला कर सुदृढ़ और शक्तियुक्त बना कर सभी वर्गों और मतों वाले हिन्दुओं को इसके झण्डे के नीचे संगठित हो जाना चाहिए। विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय स्वयम् सेवक संघ और शिव सेवा अगर संगठित हो कर कार्यरत हो जाएं तब हिन्दुओं के लिए यह सौभाग्य की बात होगी और तब भारत एक हिन्दू देश बन सकता है। कहीं ऐसा न हो कि भविष्य में हिन्दू भारत में अल्पमत में हो जाएं तब हमारे बचे हुए मन्दिर और गुरुद्वारों के वर्तमान रूप भी बदल सकते हैं। इस कार्य में आर्यसमाज को पूरी शक्ति के साथ योगदान देना चाहिए। आर्यसमाज के कुछ लोगों का मत है कि बहुत सी दूकानें चल रही हैं और क्या उन सारी दूकानों में हमारी दूकान चलेगी। जब इतनी दूकानें चलती हैं तब तुम्हारी दूकान क्यों नहीं चलेगी। जब चलाओगे तब तो चलेगी। परन्तु नई दूकान अगर चलाना नहीं चाहते तो किसी चलती हुई दूकान का ही साथ क्यों नहीं देते?

पश्चिम से लुटेरे आते थे और हिन्दुओं को लूटते थे। हिन्दू विभाजित थे विविध विचारों में, प्रांतों में, जातियों में और ईर्ष्या द्वेश से। इसलिए जब लुटेरे किसी स्थान के हिन्दुओं पर आक्रमण कर लूटते तब दूसरे दूर रहते। यह नहीं सोचते कि आज उनके ऊपर है बिहान हमारे सिर पर वही बीतेगी और हमारी बहू बेटियां भी लूटी जाएंगी। उन लुटेरों के वंश वाले शायद अब भी यही सोचते हों कि हम तो लूटते थे। भारत-सरकार की उदासीनता, इस्लामियों को अरब देशों से धन की सहायता, हिन्दुओं का एक प्रबल संगठन न होना, प्रांतवाद, मतवाद, हरिजन और उच्च वर्गों का भेद, भाषा का विवाद आदि हिन्दुओं के लिए घातक है। हिन्दुओं क्या अब भी तुम लुटोगे? अगर नहीं तो जागिए, सचेत हो जाइए।

आर्यसमाज हापुड़ का वार्षिकोत्सव

12 से 15 अप्रैल 89 तक समारोह पूर्वक मनाया गया। उच्चकोटि के मनीषी, चिन्तक, विद्वानों, महात्माओं तथा भजनोपदेशकों ने अपने प्रवचनों तथा भजनों के माध्यम से जनता को जीवन-निर्माण का सन्देश प्रदान कर अत्यन्त प्रभावित किया। इस अवसर पर आर्य कुमार सम्मेलन, आर्य संस्कृति सम्मेलन, महिला सम्मेलन, राष्ट्र भाषा सम्मेलन, वेद सम्मेलन तथा राष्ट्रीय एकता सम्मेलन आयोजित किये गये।

उत्तर प्रदेश बीज एवं तराई निगम पन्तनगर की उपलब्धियाँ

{श्री के0सी0 तिवारी- विपण्न अधिकारी}

उत्तर प्रदेश बीज एवं तराई विकास निगम द्वारा खरीफ 1988 में मुरादाबाद, मेरठ एवं गोरखपुर मण्डलों में बीज उत्पादन कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इस प्रकार वर्तमान में 43 जनपदों में बीज उत्पादन का कार्यक्रम निगम द्वारा सुनिश्चित कराया जा रहा है। 10 जनपदों में विस्तार होने के फलस्वरूप प्रदेश के अत्यधिक कृषक बीज उत्पादन से लाभान्वित हो रहे हैं एवं खाद्यान्नों के उत्पादन की ओर अधिक उत्साहित हैं।

बीज उत्पादन एवं व्यवसाय-

निगम द्वारा वर्ष 1987-88 में 4·47 लाख कुन्तल बज उत्पादन किया गया जिसे वर्ष 1988-89 में बढ़ाकर 9 लाख कुन्तल बीज उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है। वर्ष 1991-92 में 13·5 लाख कुन्तल प्रमाणित बीज उत्पादन का लक्ष्य है।

"ग्राम्य बीज योजना"- के अन्तर्गत अधिकाधिक कृषकों को बीज उत्पादन में सम्मिलित कर इस वर्ष मूंगफली तथा सोयाबीन बीज का उत्पादन कार्यक्रम प्रारम्भ में सम्मिलित कर इस वर्ष मूंगफली तथा सोयाबीन बीज का उत्पादन कार्यक्रम प्रारम्भ में सम्मिलित कर इस वर्ष मूंगफली तथा सोयाबीन बीज का उत्पादन कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। निगम द्वारा इसी अवधि में एक पंचवर्षीय बीज योजना भी बनायी गयी है जिसमें स्थानीय प्रजातियों का उत्पादन भी सम्मिलित किया गया है।

माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा चलाये जा रहे "थ्रस्ट प्रोग्राम" के अन्तर्गत तिलहन में सोयाबीन एवं मूंगफली के प्रमाणित बीजों का उत्पादन कार्यक्रम खरीफ 1988 में अधिक प्रक्षेत्र में लिया गया है। रबी 1988-89 में तोरिया/सरसों जायद 1889 में सूरजमुखी बीज का उत्पादन काफी मात्रा में किया जा रहा है।

विशेष चावल योजना के अन्तर्गत बीज उत्पादन कार्यक्रम-

पूर्वी उत्तर प्रदेश के 24 जनपदों के 102 विकास खण्डों में विशेष चावल उत्पादन योजना के अन्तर्गत खरीफ 1988 खण्ड प्रदर्शन कार्य लिया गया है। इन खण्ड प्रदर्शनों से लगभग 40,000 कुन्तल बीज भी बाजार भाव से 15 प्रतिशत अधिक के दर पर निगम द्वारा क्रय किया गया है। इस प्रकार कृषकों को दोहरा लाभ मिला है। अब तक 2012 कृषक इस कार्यक्रम से लाभांवित हुए हैं।

सब्जी बीज उत्पादन का पहाड़ी क्षेत्रों में वृद्धि-

उद्यान विभाग की सहायता से कुमाँयू मण्डल के सभी तीन जनपदों में सब्जी बीजों का उत्पादन प्रदर्शन कार्यक्रम के साथ लिया गया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत फूलगोभी, मटर, मूली, गाजर का बीज उत्पादन किया जा रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों से गेहूं, धान तथा मक्के की होनहार प्रजातियों का आयातः -

अन्तर्राष्ट्रीय अनुसंधान संस्थानों से अक्टूबर से दिसम्बर, 1988 के बीच गेहूं धान एवं मक्के की निम्नलिखित विवरणानुसार होनहार प्रजातियों का निगम द्वारा आयात किया गयाः

सिमिट, मैक्सिको से गेहूँ की अत्यधिक उत्पादन देने वाली 648 विभिन्न प्रजातियों का बीज प्राप्त हुआ जिसका मूल्यांकन प्रदेश के तीनों कृषि विश्वविद्यालयों में हो रहा है। तथा फसल ठीक चल रही है। जिन प्रजातियों का बीज देर से प्राप्त हुआ उसकी बुवाई नहीं की जा सकी तथा इस बीज को अगले सीजन में मूल्यांकन हेतु बुवाई करने के लिये वातानुकूलित गोदाम में रख दिया गया है।

सिमिट, मैक्सिको से मक्के की 50 प्रजातियों के बीज तथा 350 इनब्रड लाईंस नवम्बर 1988 एवं जनवरी 1989 में प्राप्त हुए हैं जिनको प्रारम्भिक मूल्यांकन में एवं वृद्धिकरण हेतु हैदराबाद लगाया गया है। फसल काफी अच्छी चल रही है जिसका निरीक्षण कृषि निदेशक उत्तर प्रदेश एवं प्रबन्ध निदेशक उत्तर प्रदेश बीज एवं तराई विकास निगम द्वारा जनवरी में कर दिया गया है।

राष्ट्रीय पुरस्कार से अलंकृत-

वर्ष 1987-88 के निमित्त राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद द्वारा इस निगम को सर्वोत्तम उत्पादकता पुरस्कार से अलंकृत करने के लिये चुना गया।

आर्यसमाज नैनीताल का ११५वां वार्षिकोत्सव

"सारे जहाँ से अच्छे माता-पिता हमारे" इस नारे को कार्यरूप देने के लिए और जोश के साथ होश को भी बनाये रखने के लिए नगर के नव युवकों के द्वारा अपने बुजुर्गों का सम्मान दिनांक 27 मई 1989 को समारोह के साथ किया जायेगा। इससे पूर्व भी दो बार पिछले वर्षों में यह वृद्ध सम्मान समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें मानव मात्र और हर सम्प्रदाय के बुजुर्गों को सम्मानित किया गया था। जिसकी अध्यक्षता विश्व विख्यात वैज्ञानिक डा0 के0एस0 वाल्दिया एवं श्री शीलभद्र याजी ने की।

इस वर्ष के वृद्ध सम्मान समारोह के लिये श्री मान- मोरारजी देसाई, भूतपूर्व प्रधानमंत्री, भारत एवं श्री बी0डी0पांडे, आई0सी0एस0, भूतपूर्व राज्यपाल बंगाल एवं पंजाब को विशेषरूप से अध्यक्षता करने के लिए आमंत्रित किया जा रहा है।

आर्यसमाज नैनीताल के वार्षिक उत्सव में पधारने वाले वीतराग सन्यासी स्वामी विवेकानन्द जी महाराज तथा वेद पाठ हेतु अपने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों सहित उत्सव की शोभा बढ़ायेंगे। अन्य विद्वानों में श्री इन्द्रराज जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि- सभा, उ0प्र0, युवक सम्राट श्री यशपाल जी शास्त्री, माता शकुन्तला- देवी, श्री सत्यदेव स्नातक, भजनोपदेशक एवं अन्य उच्च कोटि के महात्मा-उपदेशक धर्म प्रेमी जनता को लाभान्वित करेंगे।

-बांके लाल, अन्तरंग सदस्य,
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0।

संस्कृत के संबंध में आर्य समाज शिष्टमण्डल
मानव संसाधन विकास मंत्री श्री शिवशंकर से मिला

नई दिल्ली 29 अप्रेल। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के नेतृत्व में आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल, संस्कृत भाषा के संबंध में आज प्रातः मानव संसाधन विकास मंत्री श्री शिवशंकर से उनके संसद भवन कार्यालय में मिला। शिष्ट मण्डल में पं0 बंदेमातरम् रामचन्द्रराव तथा श्री विमल बधावन एडवोकेट सम्मिलित थे।

शिष्टमण्डल ने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के दिनांक- 16·9·88 के परिपत्र पर उच्चतम न्यायालय द्वारा दिए गए रोधनादेश तथा सार्वदेशिक सभा द्वारा लोकसभा को दी गई याचिका के संदर्भ में संस्कृत भाषा की स्थिति पर विचार विमर्श किया। मंत्री महोदय ने आश्वासन दिया कि जब तक दोनों याचिकाओं का फैसला नहीं होता, सम्पूर्ण देश में संस्कृत की वही स्थिति मान्य होगी, जो पुरानी शिक्षा नीति के अन्तर्गत सुनिश्चित थी। उन्होंने केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष को निर्देश दिया कि वे इस आशय की एक प्रेस विज्ञप्ति जारी करें।

शिष्टमण्डल ने मंत्री महोदय को स्पष्ट किया कि आर्यसमाज संस्कृत भाषा के किसी भी प्रकार की अवमानना को सहन नहीं करेगा।

सच्चिदानन्द शास्त्री

प्रचार विभाग
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली।

चुनाव केवल चुनाव के लिए क्यों ?

श्री बिशन स्वरूप गोयल
करौल बाग, नई दिल्ली- 110005

आगामी आम चुनाव की चर्चा आज पूरे देश में जोर-शोर से चल रही है। प्रत्येक राजनीतिक दल चुनाव की दृष्टि से खम ठोंक कर तैयारी में जुटा है। कुछ दल एक दूसरे से गठजोड़ के प्रयास में हैं तो कोई-कोई अकेला चलो रे के सिद्धान्त के आधार पर अपनी रणनीति बना रहा है। बहरहाल हर दल के सामने चुनाव और उसमें अपनी विजय का स्वप्न है। इन पार्टियों के नेताओं के सामने एक ही लक्ष्य है कि वह प्रधान मंत्री का पद कैसे पा सकते हैं? इन पार्टियों के पास कोई ऐसा कार्यक्रम नहीं है जिससे देश को कोई नयी दिशा मिल सके। कुछ शब्दांतरों को छोड़ दें तो इन दलों के पास जनता को देने के लिए सत्तादल कांग्रेस से पृथक या बेहतर अथवा नया कुछ नहीं है। आशय यह कि सत्तादल कांग्रेस सहित प्रत्येक दल का एक ही राग चल रहा है। यह कहीं लगता ही नहीं कि आने वाला चुनाव किसी परिवर्तन या सुधार के लिए होगा, लगता है कि चुनाव महज चुनाव के लिए, औपचारिकता के लिए, खानापूरी के लिए होगा।

सवाल है कि ऐसा क्यों है? देश, समाज और लोकतन्त्र की यह कौन सी व कैसी सेवा है? देश की वास्तविक समस्याओं की तरफ किसी भी दल का ध्यान क्यों नहीं जा रहा? समस्याओं का उचित निदान इलाज करने की बात किसी भी दल को सूझ क्यों नहीं रही? इन सब को केवल कुर्सी क्यों नजर आ रही है? फर्जी और भ्रामक घोषणाओं से मतदाताओं को मूर्ख बनाने का सिलसिला अविराम क्यों चल रहा है? दलों व नेताओं को यह क्यों नहीं दीख रहा कि देश व समाज में टूटन, अलगाव, घृणा, रोटी-कपड़ा-मकान और रोजगार की समस्या दिनोंदिन बढ़ रही है, पिछड़ापन, कर्ज, भ्रष्टाचार बढ़ रहा है?

संविधान की अस्थाई धारा-370 आज देश के सभी प्रदेशों के लिए अलगाववाद, आतंकवाद की प्रेरणा बन रही है। इसी की बदौलत कश्मीर एक नया, अघोषित पाकिस्तान बनता जा रहा है। हर समुदाय आज एक दूसरे से अधिकाधिक दूर होता जा रहा है क्योंकि देश में अखिल भारतीय नागरिक संहिता नहीं है, हर समुदाय को एक-दूसरे से पृथक अधिकार है। इससे हममें एक-राष्ट्र होने की भावना स्थान पा ही नहीं सकती। परिणामतः देश व राष्ट्र कमजोर हो रहा है। जातिय आरक्षण ने हिन्दू समाज में सामाजिक विषमता को और अधिक बढ़ा दिया है। अन्य समुदायों को अपने प्रति भेदभाव किए जाने का अहसास कराया है। इससे परस्पर ईर्ष्या बढ़ रही है। गलत भाषा नीति के कारण प्रदेशों में से इस बात की अनुभूति समाप्त हो रही है कि वे एक-देश, एक-राष्ट्र का हिस्सा हैं। उनमें वैर-विरोध बढ़-फैल रहे हैं। कोटा-परमिट-लाइसेंस-राशन प्रणाली तथा बिक्री कर, रुपये के मूल्यानुसार आयकर की सीमा तय न किया जाना, काले-धन पर आधारित चुनाव प्रणाली आदि अनेक प्रश्न हैं जिन पर राजनीतिक दलों के स्पष्ट रवैये वाले घोषणा-पत्र की आज महती आवश्यकता है। लेकिन यही वे मूल प्रश्न हैं जिन पर लगभग सभी दल मौन रहना जरूरी समझे हुए हैं। सबको अल्पमत के वोट की चिन्ता है। अल्पमत संगठित वोट बैंक बन कर इन्हें अराष्ट्रीय रवैया अपनाए रखने में सफल बना हुआ है। और देश का बहुमत हिन्दू समाज?

अत्यन्त खेद का विषय है कि देश का बहुमत हिन्दू समाज राजनीतिक दृष्टि से काहिल सिद्ध हो रहा है। यह धर्म-भीरू और राजनीति निरपेक्ष बन कर अपनी शक्ति को पहचानने से दूर रहता है। असल में इस बिखरी हुई सुप्त शक्ति-महाशक्ति को कमजोर करने के लिए घुट्टी में यह पिला दिया गया है कि राजनीति से दूर रहो, यह एक घिनौना कार्य है। उस पर तुर्रा यह कि हिन्दू समाज समग्र एकीकृत कार्यक्रम पर एकल ईकाई के तौर पर व्यवहार नहीं कर रहा, अनेक रूपों में बंटा हुआ, पृथक-पृथक प्रश्नों को लेकर निष्क्रिय चिन्ता में रत है। इसका कोई भाग सारे विश्व को आर्य बना देना चाहता है तो कोई अंग हिन्दू राष्ट्र की बात करता है, कोई भाषा आन्दोलन चला रहा है और कोई गोहत्या पर लाल-पीला हो कर रह जाता है। इसके अलावा आज इस समाज का हर व्यक्ति अलग-अलग सोच रहा है कि वोट दे तो किसे दें? इस तरह तो कोई भी लक्ष्य पाया नहीं जा सकता है। वोट और चुनाव तो वस्तुतः एक बहुत बड़े परिवर्तन का साधन व माध्यम बन सकते हैं। लेकिन इसके लिए कहीं कोई इच्छा, समझ या तैयारी दिखाई ही नहीं दे रही है।

कई और भी समस्याओं से हमारा लोकतन्त्र का पाला पड़ रहा है। जैसे कांग्रेस को छोड़ कर कोई भी दल इतने व्यापक आधार वाला नहीं है। लोकतन्त्र को वास्तविक अर्थ तभी मिल सकता था अगर देश में मतदाता शिक्षित होते। लेकिन अफसोस की बात है कि इस तरफ सबसे कम ध्यान दिया गया है। देश में शिक्षित लोगों का आंकड़ा बहुत नीचा है। जो पढ़े लिखे हैं भी उनमें राजनीतिक चेतना का सर्वथा अभाव है। लोकतन्त्र के हित में इस तरफ विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कौन ध्यान देगा इस तरफ? क्या वे जो जनता को जागृति से दूर रखकर उसके वोट के बल पर उसे मूर्ख बनाने के सपने देखते रहते हैं? दूसरी तरफ देखिए अशिक्षित व राजनीतिक दृष्टि से चेतनाहीन नागरिकों के लिए मताधिकार की आयु यह कहते हुए घटा दी गई है कि इस आयु तक वे परिपक्व हो जाते हैं परन्तु साथ ही साथ विवाह की आयु को लगातार बढ़ाया जा रहा है यह कह कर कि वे कम आयु में परिपक्व नहीं होते। इसी से शासकों के इरादों का पता चल जाना चाहिए। उनकी नीयत साफ हो जानी चाहिए।

निष्कर्ष यह कि उपर्युक्त प्रकार की मौलिक समस्याओं की तरफ ध्यान दिए बिना चुनाव बेमानी होंगे और उनसे किसी भी सुधार की कोई आशा नहीं हो सकती। चुनाव केवल चुनाव के लिए नहीं होने चाहिए, देश और समाज का वर्तमान व भविष्य सुधारने के लिए होने चाहिएं। इस दिशा में देश के बहुसंख्यक हिन्दू समाज की विशेष जिम्मेदारी बनती है। उसे यही सोच के साथ उठ खड़े होना चाहिए।

जालन्धर में श्री स्वामी आनन्दबोध जी की अध्यक्षता में कार्यकर्ता सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी-आनन्दबोध जी सरस्वती की अध्यक्षता में 23 अप्रैल को जालन्धर में हुए पंजाब प्रान्तीय आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन में पारित प्रस्तावः-

पंजाब इस समय अपने इतिहास के अत्यन्त चिन्ताजनक और विचलित युग में से गुजर रहा है। कई विदेशी शक्तियों द्वारा आयोजित व प्रोत्साहित षड्यन्त्र के अनुसार पंजाब में विघटनात्मक स्थिति पैदा करने और उत्तर भारत को और अधिक विभाजित करने का प्रयास हो रहा है। पंजाब और जम्मू-कश्मीर दोनों ही इस समय अत्यन्त व्याकुल व अशांत स्थिति में हैं।

यद्यपि प्रधानमंत्री कई बार कह चुके हैं कि वह भारत के संविधान की सीमाओं में रहकर पंजाब की समस्या का समाधान ढूंढने को तैयार है परन्तु अकालियों ने बार-बार यही कहा है कि वह केवल आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव के आधार पर ही बात कर सकते हैं।

यह सम्मेलन पंजाब की समस्या के शीघ्र समाधान की कामना करता है। परन्तु इसी के साथ यह भी स्पष्ट कर देना चाहता है कि आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव उसके वर्तमान स्वरूप में पंजाब के हिन्दुओं को किसी भी स्थिति में स्वीकार न होगा। हिन्दू अकालियों के साथ बात करने के विरुद्ध नहीं हैं वह तो यह भी चाहेंगे कि सिखों की यदि कोई न्याय संगत मांगें हैं वह भी जहां तक सम्भव हो स्वीकार कर लेनी चाहिए। परन्तु किसी भी स्थिति में पंजाब के हिन्दू आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव को अकालियों के साथ बातचीत का आधार मानने को तैयार न होंगे। अकालियों की पहली माँगों की तरह आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव भी पंजाब के एक और विभाजन का आधार बन सकता है।

यदि अकाली ईमानदारी से पंजाब का स्थायी समाधान चाहते हैं तो उन्हें पहले पंजाब के हिन्दुओं के साथ इस विषय में बात करनी चाहिए। और पंजाबियों की संयुक्त माँगें सरकार के सामने रखनी चाहिए। आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव पृथकवादिता, साम्प्रदायिकता और अकालियों की संकीर्णता का प्रतीक है। पंजाब के हिन्दुओं को यह किसी स्थिति में भी स्वीकार न होगा। हमें आशा है और विश्वास है कि प्रधानमंत्री अकालियों के इस दबाव के आगे न झुकेंगे और आनन्दपुर साहिब के प्रस्ताव के आधार पर अकालियों से कोई बात नहीं करेंगे। पिछले 40 वर्ष का इतिहास साक्षी है कि सरकार हमेशा अकालियों के दबाव के आगे झुकी है और उसने हिन्दुओं की न्यायोचित माँगें भी स्वीकार नहीं कीं। सरकार की इस आत्मनाशी नीति ने न केवल पंजाब को एक अद्वितीय संकट में डाल दिया है बल्कि सारा देश पंजाब की एक और विभाजन की सम्भावना से चिन्तित है। इसलिए यह सम्मेलन पंजाब सरकार और भारत को चेतावनी देना चाहता है कि वह अकालियों के आगे घुटने टेक नीति को त्याग दे वरना तो इसका परिणाम अत्यन्त हानिकारक होगा।

श्री रामनाथ सहगल का स्वागत

चमनलाल डी०ए०वी० सीनियर पब्लिक स्कूल, अम्बाला, हरियाणा के वार्षिकोत्सव पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री रामनाथ सहगल का सम्मान किया गया और उन्हें डी०ए०वी० संस्था की ओर से गोल्ड मैडल चण्डीगढ़ के प्रतिष्ठित एवं डी०ए०वी० विद्यालयों के स्थानीय चेयरमैन भूतपूर्व जस्टिस पी०सी० पंडित द्वारा दिया गया। इस अवसर पर विद्यालय के मैनेजर श्री बी०बी० गक्खड़ द्वारा श्री राम नाथ सहगल जी ने जो 50 वर्षों में आर्य समाज की सेवा की है, उसका विवरण दिया गया। उन्होंने बताया कि इस समय आर्यसमाज की बहुत सी संस्थाओं जैसे महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य प्रादेशिक-प्रतिनिधि सभा, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा ट्रस्ट, आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के अधिकारी हैं, इसके साथ ही बहुत से डी०ए०वी पब्लिक स्कूलों के प्रबन्धक हैं और डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के सेक्रेटरी हैं। सम्मान पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री सहगल ने आजीवन समाज सेवा में रत रहने की अपनी प्रतिज्ञा दोहराई।

बाल जगत

बाल मनोरंजन ज्ञान पहेली

सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशिका

1- जो सत्य जाने उन सबका --------- और प्रचार करें। {प्रकाश-विकास}

2- जैसे प्रथम समुल्लास में परमेश्वर का ------ किया है। {आख्यान-व्याख्यान}

3- क्या इस अविनाशी परमेश्वर की व्यवस्था का कोई भी ------- कर सकता है। {नाश-ह्रास}

4- जिससे सब सन्तान उत्तम बल, पराक्रम युक्त दीर्घायु ------------- हों। {मार्मिक-धार्मिक}

5- बालक को ------ सदा उत्तम शिक्षा करें। {माता-पिता}

6- -----------देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी {मान्य - अन्य}

7- ये भी ऐसे ही ढोंग ----------- हैं। {मचाते-रचाते}

8- मद्य मांसादि के सेवन से ----------- रहे। {विलग-अलग}

9- जो अभिमान अर्थात अहंकार है वह सब --------- और लक्ष्मी का नाश कर देता है। {शोभा-आभा}

10-जितना ------- से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं। {माता-पिता}

सत्यार्थ प्रकाश के किसी एक ही समुल्लास या भाग से दस वाक्यांश उद्धृत किए जाते हैं। इसके रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु साथ में अनेक शब्द दिए गए हैं, इनमें से आपको उस शब्द का चयन करना है जिसका इस भाग में प्रयोग किया गया है सर्वशुद्ध या निकटतम शुद्ध पूर्तिकर्ता विजेताओं के नाम सुविधानुसार प्रकाशित किए जायेंगे तथा यथावसर वैदिक साहित्य से पुरस्कृत किया जायेगा। इस प्रतियोगिता में कोई शुल्क नहीं है, किन्तु पूर्तियाँ इस अंक के प्रकाशन की तिथि से एक महीने के अन्दर यहाँ छपे रेखाचित्र को भर कर भेजने पर ही मान्य होंगी।

संयोजिका
दीदी दर्शनदेवी भारद्वाज

द्वारा श्री देवनारायण भारद्वाज भृदा रसायनज्ञ संभागीय कृषि परीक्षण केन्द्र पुराना बड़ा पुल, आजमगढ़।

1	का	श	2	ख्या	न
3	श	×	4	र्मि	क
5	ता	×	×	6	न्य
7	चा	ते	8	ल	ग
9	भा	×	×	10	ता

विद्यालयीय शिक्षा का माध्यम मातृभाषा एवं हिन्दी हो

आर्य वीरदल गुड़गाँव मण्डल {हरियाणा} ने शासन को माँग-पत्र प्रस्तुत करते हुए कहा है कि उत्तर भारत के नागरिक एवं विद्यार्थी भारत सरकार एवं प्रान्तीय सरकारों से अनुरोध करते हैं कि विद्यालयों में स्कूली शिक्षा प्रान्तीय मातृभाषा में दी जाए। महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में विज्ञान, आयुर्विज्ञान, वाणिज्य, कला आदि सम्बन्धित विषयों का माध्यम राष्ट्रभाषा हिन्दी होना चाहिए।

सभी उच्चपदों आई॰ए॰एस॰, आई आर० एस०, आई०पी०एस० तथा सेवा चयन मण्डल परीक्षाओं का माध्यम हिन्दी व अंग्रेजी दोनों में बिना भेदभाव होना चाहिए। सभी पब्लिक अंग्रेजी माध्यम स्कूलों, व्यापारिक संस्थाओं पर सरकार को रोक लगाना चाहिए क्योंकि इनकी फीसें बहुत खर्चीली हैं।

आर्यसमाज सुभाषनगर फैजाबाद का वार्षिकोत्सव



आर्य समाज सुभाषनगर साकेन (फैजाबाद) का 18वाँ वार्षिकोत्सव 20 से 23 अप्रैल तक हर्षोल्लास से मनाया गया। विदान् क्वता श्री सियाराम निर्भय (बिहार) श्री महेन्द्र पाल आर्य (कलकत्ता) श्री सत्यपाल-(पथिक) अमृतसर के भजन एवं प्रवचन हुए। इस अवसर पर चारों दिन चतुर्वेद महायज्ञ सम्पन्न हुआ पं0 सत्यदेवशास्त्री यज्ञ के ब्रह्मा थे। उत्सव में प्रसाद एवं वैदिक साहित्य का वितरण किया गया। वैदिक सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाने के लिये नगर के अधिकांश क्षेत्र में ध्वनि विस्तारक यन्त्र लगाये गये।

गुरुकुल अयोध्या में कवि सम्मेलन

गुरुकुल अयोध्या के वार्षिकोत्सव पर आयोजित कवि सम्मेलन

प्रो0 अनजान जी ने रामजन्म भूमि के पक्ष में अपनी कविता के माध्यम से राम जन्मभूमि की पुष्टि की।

मस्जिद में कहीं नहीं परिक्रमा का मार्ग
किन्तु जन्मभूमि मध्य इसका विधान है।
मस्जिद में कहीं नहीं कसौटी वाले खम्भ,
किन्तु राम जन्मभूमि में विद्यमान हैं।

प्रो0 अनजान ने बड़े विनम्र शब्दों में मुसलमान भाइयों से जन्मभूमि को हिन्दुओं को सौंपने की याचना भी की।

देश के टापुकमान बन्धुओं से विनती है।
समुचित हो तो भाई जान ध्यान दीजिए।
हिन्दू धर्म ने ढाही न थी मस्जिद कभी,
हिन्दू धर्म पर कुछ एहसान कीजिए।

अन्त में लोकतान्त्रिक व्यवस्था पर प्रहार किया--

बेच दिया देश प्रजातन्त्र के पहरुओं ने
आओ देशवासियों बचाओ इसे, लोकतन्त्र खड़ा है-
शराब की दुकान पर।"

श्री सुखबीर सिंह त्यागी का दुःखद निधन

सरस्वती विद्यालय आर्य कन्याइन्टर कालेज, नूरा., लखनऊ की वरिष्ठ प्राध्यापिका श्रीमती प्रभा त्यागी के पति श्री- सुखवीर सिंह त्यागी का दिनांक- 28-4-89 को संजयगाँधी मेडिकल इन्स्टीट्यूट लखनऊ में असामायिक निधन हो गया।

वे एक ऋषिभक्त समर्पित आर्यसमाजी थे। उनका पूरा परिवार आर्यसमाज को सेवा में सदा से समर्पित रहा है। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें ।

- आचार्य. इन्द्रदेव पाठक ।

संस्कृत की बहाली के लिए शिष्टमण्डल श्री जाखड़ से मिला

नई दिल्ली, 26 अप्रैल (वि0) नईशिक्षा नीति में संस्कृत को बहाल किये जाने और संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्ति की माँग को लेकर आर्यसमाज का एक शिष्टमण्डल आज लोकसभाध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ से मिला। शिष्टमण्डल का नेतृत्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती कर रहे थे। शिष्टमण्डल में सर्वश्री विमल बधावन एडवोकेट, श्री सुरेन्द्र मोहन गुप्त तथा भारतीय भाषा संरक्षण समिति के प्रधान श्री पुष्पेन्द्र चौहान सम्मिलित थे। संस्कृत भाषा की स्थिति पर विचार करते हुए अध्यक्ष महोदय से आग्रह किया गया कि वे केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा जारी परिपत्र को, जिसके द्वारा सरकार की नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत संस्कृत को त्रिभाषा सूत्र से बहिष्कृत कर दिया गया है, निरस्त करायें। परिवार नियोजन के मामले पर शिष्टमण्डल ने सुझाव दिया कि सरकार परिवार नियोजन कार्यक्रम सभी समुदायों के लोगों पर समान रूप से और सख्ती से लागू करे। लोकसभाध्यक्ष को इस बात की भी जानकारी दी गई। कि भारतीय भाषा संरक्षण समिति के सदस्य पिछले 8 महीनों से अपनी माँग के समर्थन में धरना दे रहे हैं। उनकी माँग है कि लोकसेवा संघ की परीक्षाओं में सभी भाषाओं के प्रयोग की अनुमति मिलनी चाहिये।

प्रवेश सूचना

ब्रह्म कुटी वेद मन्दिर वेदोपदेशक विद्यालय में प्रवेश आरम्भ हैं। सौम्य, शिष्ट, अनुशासनप्रिय, प्रतिभाशाली तथा आजीवन वैदिक धर्मप्रचार के इच्छुक कम से कम 10वीं पास या इसके समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण युवक तथा स्वाध्यायशील, सदाचारी, प्रचार करने में रुचि रखने वाले वानप्रस्थी भी प्रवेश के लिये आमन्त्रित हैं। निम्न पते पर शीघ्र पत्र व्यवहार करें।

श्री कुलाधिपति, ब्रह्म प्रकाश शास्त्री, विद्या वाचस्पति
ब्रह्म कुटी वेदमन्दिर, वेदोपदेशक विद्यालय, ब्रजघाट·245205
जिला- गाजियाबाद उ0प्र0

भूतपूर्व सैनिक विधवा सम्मेलन

मेरठ- 25-4-89 को नौचन्दी के पटेल दरबार में भूतपूर्व सैनिक विधवाओं एवं अपंग सैनिकों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसमें मेरठ के जिलाधीश श्री विजय शर्मा, सब एरिया-कमांडर ब्रिगेडियर हरदेव सिंह ने विशेष रूप से भाग लिया।

इस अवसर पर बाहर से आये अधिकारियों ने सेवानिवृत सैनिकों को रोजगार आदि की सरकार की ओर से दी जाने वाली सुविधाओं से अवगत कराया। ब्रिगेडियर हरदेव सिंह ने पूर्व सैनिकों से कहा कि सरकार की ओर से प्राप्त सुविधाओं से लाभान्वित होने के लिये आप लोग घर से नहीं निकलते जबकि वर्तमान प्रशासनिक अधिकारी आपकी पूरी सहायता करना चाहते हैं।

भू0पू0 सर्विस मैनलीग के अध्यक्ष विधायक भोपाल सिंह ने पूर्व सैनिकों की अनेक समस्याओं से अधिकारियों को अवगत कराया और इस बात पर अत्यन्त खेद व्यक्त किया कि मण्डलायुक्त श्री डी0आर0 सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में स्वीकृति देने के पश्चात यहाँ न आकर पूर्व सैनिकों के प्रति उपेक्षा का व्यवहार किया है। उन्होंने आगे कहा कि भ्रष्टाचार इतना व्यापक है कि बिना कमीशन दिये हुए भू0पू0 सैनिकों को सरकार की ओर से दिये जाने वाले अनुदान या ऋण प्राप्त नहीं हो सकते उन्होंने जिलाधिकारी जी से कहा कि वे पूर्व सैनिकों के लिये अपने स्तर से जो कर सकते हों उन्हें करना चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज-जी ने कहा कि पूर्व सैनिकों के प्रति आर्यसमाज की सेवाओं का अपना इतिहास है। जब द्वितीय भारत-पाक युद्ध के उपरान्त जनरल मानिक शॉ नौचन्दी मेले में इस समारोह में पधारे तो आर्यसमाज ने देश पर बलिदान होने वाले सैनिकों की विधवाओं एवं अपंग सैनिकों को 250 पैकिट वस्त्रों के भेंट किये गये थे। इसके पश्चात निरन्तर प्रतिवर्ष सैनिकों के अभिनन्दनार्थ कुछ न कुछ भेंट किये जा रहे हैं। आर्यसमाज का ये निश्चित मत है कि जब तक नागरिक व सैनिक परस्पर एक रूपता से नहीं चलेंगें तब तक देश की स्वतन्त्रता की रक्षा नहीं हो सकती। आर्यसमाज श्री लाल बहादुर शास्त्री के नारे जय जवान, जय किसान का पूर्ण समर्थक है। पूर्व सैनिकों की सहायता में जहाँ प्रशासन असमर्थ है वहाँ नागरिक उस में पूरी तरह आस्थावान हैं।

भू0 पू0 सैनिक संघ के सचिव कर्नल वाधवा ने श्री पं0 इन्द्रराज जी की निस्वार्थ सेवा की बहुत प्रशंसा की और धन्यवाद दिया।

इसके पश्चात श्री विजय शर्मा, जिलाधिकारी ने कहा कि हम सरकारी सहायता देने का पूर्ण आश्वासन दिया। बाद में जाफना में शहीद सैनिकों को एवं मेजर आर0के0 चतुर्वेदी एवं अन्य सैनिक विधवाओं को 15000/- का अनुदान सरकार की ओर से दिया गया। तत्पश्चात आर्यसमाज की ओर से 50 सैट स्टील के बर्तनों को अपने कर-कमलों से जिलाधिकारी जी ने पूर्व सैनिक विधवाओं तथा अपंग सैनिकों को वितरित किये।

- संवाददाता ।

आर्यसमाज {रजि0} शाहजहाँपुर का 112वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 18 मई से 21 मई तक समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है।

- आर्य वीरदल का शिक्षण शिविर दि0 15 मई से 22 मई तक आर्यसमाज पिम्परी कालोनी-पूना- 17 महाराष्ट्र में लगाई जा रहा है। आर्यवीरों को उसमें सम्मिलित हो कर लाभ उठाना चाहिये। और अपने समाज के मंत्री के स्वीकृति से सूचना दें ।

- मनोहर लाल।

- "आत्मचिन्तन" मंच के अन्तर्गत दिनांक- 15 मई 1989 सोमवार को मध्यानोत्तर 4 बजे त्रिशला-भवन, हरिनगर मेरठ में आयोजित किया गया है। जिसमें सभापति-जिलाधिकारी श्री-विजय शर्मा जी मुख्य अतिथि श्री सी0बी0 तिवारी कुलपति मेरठ विश्वविद्यालय एवं वार्ताकार- स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती होंगे। कृपया अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठायें।

- आर्यसमाज गया का 66वाँ वार्षिकोत्सव 13 से 16 अप्रैल 1989 तक धूमधाम से मनाया गया।

सर्व धर्म सम्मेलन

मेरठ- 27-4-89 को नगर महापालिका मेरठ की ओर से सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित किया गया।

सर्व प्रथम श्री मनवीर सिंह जी, श्री तेजपाल सिंह जी एवं श्री मती आशा जी ने अपने सुमधुर भक्ति संगीत प्रस्तुत किये।

तत्पश्चात श्री रशीदुद्दीन अहमद जी ने कुरान के आधार पर इस्लाम पर प्रकाश डालते हुए सबको प्रेम और भाई चारे से रहने की व्याख्या की।

श्री खैराती लाल {ब्रह्मकुमार} ने धर्म का अर्थ धारणा बताते हुए कहा कि आज धारणा न होने के कारण ही संसार की बुरी स्थिति है। महान् पुरुषों का त्यागमय जीवन की धारणा आज आवश्यक है।

लाला लाजपत राय कालिज, साहिबाबाद के प्राचार्य श्री गणेशदत्त जी शर्मा ने कहा कि "धृ धारण पोषणयोः" इस धातु से धर्म शब्द सिद्ध होता है। अर्थात जो धारण व पोषण करता है वह धर्म है। जैसे अग्नि का धर्म उसकी दाहिकाशक्ति है। धर्म एक संकुचित नहीं बल्कि विस्तृत विचार है। महर्षि-दयानन्द जी का कथन है कि जिस बात का किसी से विरोधन हो वह ही धर्म है। सभी धर्मों में सत्य अहिंसा और प्रेम आदि बातों का मतभेद नहीं। धर्म आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति दोनों करता है। प्रत्येक कार्य को करते समय चिन्तन करने वाले को मनुष्य कहते हैं। वेद हमें बताते हैं कि पृथ्वीमाता है तथा इस पर रहने वाले आपस में सब भाई हैं। भगवान-मनु का कथन है कि सत्य बोलें व प्रिय बोलें। धर्म तो एक है और वह मानव धर्म है। अतः धर्म को जीवन में धारण करें।

तदोपरान्त देवनागरी इन्टर कालिज के प्राचार्य श्री शिवानन्द जी शर्मा ने अपने संक्षिप्त प्रवचन में कहा कि तुलसीदास जी ने धर्म की बड़ी सुन्दर व्याख्या की है। परहित सरिस धर्म नही भाई---। दूसरे को सुख देना धर्म तथा दुःख देना अधर्म है। दो बार झगड़ों के कारण नौचन्दी उजड़ी ऐसा पुनः न हो सब मेल से रहे मेरे विचार से यही धर्म है। सम्मेलन के अन्त में अध्यक्ष पद से बोलते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने कहा कि राजनीति धर्म के बिना अधूरी है। राजनीति में छलकपट होने से देश का कल्याण नहीं हो सकता अपितु राजनैतिक व्यक्ति समय-समय पर अपने-स्वार्थ के लिये साम्प्रदायिक दंगे करा देते हैं। तथा इसका समस्त दोष धर्म के सिर मढ़ देते हैं। इसीलिये प्राचीन शास्त्रों में राजनीति शब्द का प्रयोग न करके "राजधर्म" शब्द का प्रयोग किया गया है। धर्म सब प्रकार पाखंडों से प्रथक मूलभूत सत्य बोलना। किसी के प्रति द्वेष न रखना, चोरी न करना सभी सम्प्रदायों में विद्यमान है। जिन बातों पर सब सम्प्रदाय एक हैं वही धर्म है। व्यक्ति, परिवार, समाज का प्राथमिक धर्म विश्व में प्रेम का विस्तार करना, राष्ट्र एवं मातृ भूमि की सेवा करना ही धर्म है।

कार्यक्रम का संचालन श्री राधेश्याम आज़ाद ने किया।

आर्य स्त्री समाज धापर नगर

प्रधाना	-	श्री मती मेलादेवी जी
मन्त्रिणी	-	श्रीमती कैलाश सोनी
कोषाध्यक्षा	-	श्रीमती चन्द्रकान्ता जी गम्भीर

आर्य स्त्री समाज साकेत, मेरठ

प्रधाना	-	श्री मती बिमला गुप्ता
मंत्राणी	-	श्री मती सरोज आर्या
कोषाध्यक्षा	-	श्री मती कमला शर्मा

आर्यसमाज ताजगंज, आगरा

1-प्रधान	-	श्री त्रिलोकी नाथ भट्ट ।
2-मंत्री	-	श्री बिरिजा शंकर आर्य ।
3-कोषाध्यक्ष	-	श्री प्रकाशचन्द्र कुलश्रेष्ठ ।

गुरुकुल प्रभात आश्रम की प्रवेश परीक्षा

विशुद्ध प्राचीन परम्परा का एकमात्र शिक्षण केन्द्र गुरुकुल-प्रभात आश्रम, भोलाझाल, मेरठ {उ0प्र0} की प्रवेश परीक्षा इस वर्ष 21 जून 1989 को होगी। परीक्षा दो चरणों में - प्रातः- 9 से 11 बजे तक लिखित एवं अपराह्न - 2 से 5 बजे तक मौखिक रूप में होगी। प्रत्येक अवस्था में परीक्षार्थी का 50% अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा। प्रवेशार्थी की आयु 10/11 तथा पंचम श्रेणी उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

:- अपने साथ लेखनी एवं अभ्यास पुस्तिका लेकर आवें। विशेष जानकारी हेतु 5-00रु0 धनादेश द्वारा भेजकर नियमावली मंगवा सकते हैं ।

- आचार्य
गुरुकुल प्रभात आश्रम
{टीकरी}
भोलाझाल मेरठ {उ0प्र0}

नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ में शिविर का आयोजन

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ नैनीताल में 17 मई से 24 मई तक शिविर स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती जी की अध्यक्षता में लग रहा है जिसमें स्वामी जगदीश्वरानन्द, स्वामी-ओमानन्द पधार रहे हैं शिविरार्थियों के लिए भोजन आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर की गई है। आर्य जनता को ज्ञात है कि नारायण स्वामी आश्रम, सभा का आश्रम है उसको सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिक से अधिक धन भेजने की कृपा करें।

- सभामन्त्री।

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शताब्दीय बृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें ।

-- सभामंत्री ।

आवश्यक सूचना

समस्त विद्यालयों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य/अध्यापकों को सूचित किया जाता है कि माननीय उच्च न्यायालय के आदेशानुसार अब विद्यालयों में श्रम विभाग का हस्तक्षेप न होगा। इच्छुक व्यक्ति न्यायालय के आदेश की प्रति 6/-रु0 भेज कर प्रधान कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ से प्राप्त कर सकते हैं ।

सभा मंत्री।

आवश्यक-सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि जो समाजें अपने वार्षिक चित्र जिला सभा को नहीं देना चाहती हैं अथवा जिला सभायें नहीं लेना चाहती हैं। वह अपने वार्षिक चित्र प्राप्तव्य धन सहित सीधे सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

-मनमोहन तिवारी}
मंत्री ।

आर्यमित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5मीराबाई मार्ग,लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
वैशाख शुक्ल 9
14 मई, रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

हमारे पूज्य कविराज पं0 रत्नाकर शास्त्री का देहान्त दिनांक- 22-4-89 को मेरठ में हो गया है। दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु कार्यक्रम- रविवार, दिनांक- 30·4·89 को उनके निवास स्थान 135, बराडी टोला, तिकोनिया, इटावा में हुआ।

-- सभामंत्री।

- आर्यसमाज झाँसी के प्रधान श्री शान्तिप्रसाद जी का निधन 19 मार्च 89 को 78 वर्ष की आयु में हो गया। आप 60 वर्षों तक आर्यसमाज की सेवा में रत रहे, परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति व शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

- सभामंत्री ।

- आर्यसमाज नंगली साधारण {मेरठ} का प्रथम वार्षिक उत्सव 3 व 4 अप्रैल 89 को बड़े धूमधाम से मनाया गया कई विद्वानों के व्याख्यान व भजन हुए। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

शुभ सूचना

"काश गाँधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो हिन्दू मुस्लिम भाई-भाई नही कहते।

इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुस्तक के लेखक विशुद्धानन्द पर केस चलाया जिसे माननीय मजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदी जी ने 29 नवम्बर सन् 1988 को खारिज कर दिया जो सज्जन ये पुस्तक मगवाना चाहें वे 1/- रुपये प्रति मंगा सकते है वितरण करने वालों को 50/ रुपये में सौ प्रति भेजी जायेगी।

वेद प्रचार मण्डल
60/13, रामजस रोड
दिल्ली-5

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि सं0 2241/57

दयानन्दाब्द 165, ज्येष्ठ कृष्ण 1 रविवार, संवत 2046 वि0, दिनांक 21 मई 1989

घोषणा पत्र सं0 7/28-2-85



मत्वा कर्माणि सीव्यति

-- आचार्य यास्क

मनुष्य इसी कारण मनुष्य कहलाता है कि वह अपने सभी कार्यों को सोच विचार कर करे।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम0 ए0

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक, एम0ए0,

साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु0 251/-
वार्षिक	रु0 30/-
विदेश में	15 पौंड
एक प्रति	- 1-00रु0 मात्र

वर्ष 92

अंक 20

उसके दो अटूट नियम

जीवन और मृत्यु

मेरे दोनों मित्र हैं, पर मृत्यु से मुझे ज्यादा प्यार है। और मैं प्रतिदिन उससे प्रार्थना करता हूँ-- "त्र्यम्बकं यजामहे --- उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्" तू जितनी जल्दी हो मेरा वरण कर ले ताकि मैं इस शरीर के आवागमन से पके हुए खरबूजे की तरह छूट जाऊँ पर उस अमृतमय बन्धन से कभी न छूटूं जहाँ दुख और शोक का लवलेश भी नही है, आनन्द इतना है कि "न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा" वाणी कहने में असमर्थ है, मूक है। इसलिए मैं तुझे वरण करने के लिए उतावला होकर उसी तरह तेरी ओर दौड़ा आ रहा हूँ:-

(1) जैसे नदियाँ सागर से मिलने के लिए भागी चली जा रही हों।

(2) जैसे वायु अनन्त अन्तरिक्ष में विलीन होने के लिए त्वरित वेग से चलायमान हो रही हो।

(3) जैसे अग्नि अपने आराध्यतम सूर्य का वरण करने के लिए ऊँची-ऊँची लपटों के साथ उठती ही जा रही हो।

----- और सचमुच, तेरा वरण वह नहीं करना चाहती जिसने पाप किया है, जो इस शरीर के सुखों को ही सर्वस्व समझता है। जिसके लिए यह बड़ी-बड़ी अट्टालिकाएं नोटों से भरी हुई थैलियाँ ही सब कुछ हैं। मैं तो स्फटिकमणि के समान निर्मल और पवित्र हूँ। मुझे क्या डर ------ मैं तो तेरा बड़ा कृतज्ञ हूँ। तू मेरे पास जितनी जल्दी हो सके आ ही जा क्योंकि तू ही तो मुझे इस शरीरबन्धन से छुड़ाकर उस अमरबन्धन से बान्ध देगी जो मेरा परम आश्रय है, परम ध्येय है, और परम आराध्य है। जिसे पाये बिना मुझे चैन कहाँ -इस लिए जल्दी कर मेरे मित्र ? इस शरीर में रहकर मैने बहुत नाटक खेले हैं-

----- इसी शरीर से रावण बनकर मैंने क्या-क्या नही किया था, जिसे याद करके दुनियाँ आज भी मुझ पर थूक रही है।

----- और इसी शरीर से जंगलों में भटकते हुए मैंने 14 वर्ष वनों में बिताए थे, पिता की आज्ञा से, जिसे याद करके दुनियाँ आज भी रो पड़ती है।

----- और यही शरीर तो था जब मैं अंगारा बनकर चिता में कूद पड़ी थी--अपनी अस्मिता बचाने, नहीं नहीं -- नारी जाति की अस्मिता बचाने जिसे याद करके दुनियाँ दान्तों के नीचे उंगली दबा लेती है और मौन स्वीकृति देकर रो पड़ती है।

----- और इसी शरीर से मैं ज़हर का प्याला पीकर सो गया था तुम्हें जगाने के लिए। इतना सब कुछ करने के बाद भी दुनियाँ उसी राह पर चल रही है और (मैं कुछ कर नहीं पा रहा हूँ इसलिए जल्दी कर मेरे मित्र?)

कैसा आश्चर्य है? मेरी प्यारी संस्था में कभी लोग बिना बुलाए चले आते थे अब आर्यसमाज बुला रहा है पर वे नहीं आ रहे हैं। क्या सचमुच ! हमारी बोली की मिठास खत्म हो गई है। हम आर्यों को अपनी आवाज का परीक्षण कराना होगा। कहीं ऐसा तो नहीं है हम आर्यों के आह्वान में वह प्यार ही नहीं है जो इन्सान तो क्या पशुपक्षियों को भी खींच लिया करता है। यदि ऐसा है तो इस शरीर का बोझ उठाये फिरने से फायदा क्या मैं तैयार हूँ तेरा वरण करने के लिए "मृत्युरीशे-द्विपदे मृत्युरीशे चतुष्पदे ।

[illegible] भूमि पर अरुणोदय सा,
[illegible] उण तू सजकर साज।
आर्यसमाज ! आर्यसमाज !!

– राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

[illegible] ज्येष्ठ कृष्ण । सम्वत् 2046 वि0, 21 मई 1989
दयानन्दाब्द 16[illegible], सृष्टि संवत् 972949090[illegible]

दो आवाजें

----- और आसमान से उतरी हुई इस आवाज़ को सुनिये, विचारिये और हृदय पर हाथ रखकर मनन कीजिये -----

"----- और तुम काफ़िरों से तब तक लड़ते रहो जब तक कि वे निःशेष न हो जायें या जब तक तुम्हारा दीन स्वीकार न कर लें -- सूरा 2 अलबकरा - पारा-1।
आयत 190/91/92

----- और उसी आकाश से किसी के हृदयमण्डल में सस्वर गूंजती हुई इस आवाज़ को भी सुनिये, विचारिये और मनन कीजिये -----

"----- ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्वी शान्तिः --- मैं आकाश शान्त हूँ, मैं पृथ्वी शान्त हूँ, मैं जल और वनस्पति शान्त हूँ ----- तुम भी शान्ति से रहना ।

----- मार्हिर्भूर्मा पृदाकुः - यजुर्वेद 3/12
साँप बिच्छू के स्वभाव वाले मत बनना ------ ।

----- मा स्रेधत सोमिनः - ऋग्वेद 7/32/9
किसी की हिंसा मत करना ।

----- और यह दोनों आवाज़ें बहुतकाल से इस विशाल धरातल पर रहने वाले लोगों की प्रेरणास्रोत बनी हुई हैं। और एक का रंग लाल हो गया है। इस्लामी साम्राज्यवाद के नशे ने धरती और अम्बर दोनों लाल कर दिए हैं। उमय्यद और अब्बासीवंश के खलीफाओं ने खून की नदियाँ बहा दी थीं और जिन जिन देशों को विजित किया वहाँ वहाँ का राजधर्म इस्लाम घोषित करके वहाँ की जनता को तलवार के बल पर इस्लाम में दीक्षित कर लिया। इस आवाज़ के दीवाने देश और धन को तुच्छ समझते हैं। उनका धन इस्लाम के प्रचार और प्रसार के लिए है। जब जनता इस्लाम स्वीकार कर लेती है तो उस देश को अपना वतन मानकर उस आसमानी आवाज़ को साकार बना लेते हैं। लेकिन यह प्यास अनबुझी है क्योंकि पृथ्वी अभी काफ़िरों से निःशेष नहीं हुई है। लेकिन जब काफ़िर नहीं रहेंगे तब यह आयत किस पर उतारी जायेगी। और जहाँ काफ़िर नहीं हैं वहाँ किस पर उतारी जा रही है। न ईरान में काफ़िर था और न ईराक़ में काफ़िर था फिर यह 50 लाख इन्सान किसलिए हलाक़ कर दिए गये। न पाकिस्तान में काफ़िर हैं न अफ़गानिस्तान में फिर यह खून की नदी क्यों बह रही है। चौंकिये नहीं, सोचिये, विचारिये और मनन कीजिए -- उस आसमान से यह भी तो पूछिए - "तू तो निर्मल, शान्त, द्वेष विहीन, भेदविहीन, अनन्त, उदार और स्वच्छ दिखाई पड़ रहा है। तेरे से उतरी हुई आवाज़ में यह भेद और घृणा के लपलपाते शोले कैसे दिखाई पड़ रहे हैं। कहीं यह मध्ययुग के किसी अविकसित मस्तिष्क की उपज तो नहीं है जिसने हमें भ्रम में डालने के लिए तुझे माध्यम बनाया हो। और क्या यह सच है कि तूने काफ़िरों को पैदा करके मारने का जिम्मा हमारे ऊपर छोड़ दिया है। यह काम ऊपर बैठे बैठे तू खुद भी तो कर सकता था - " तुम्हीं ने दर्द दिया था तुम्हीं दवा करना" ।

पर दूसरे का रंग श्वेत है। अपवाद स्वरूप कभी-कभी कुछ लालिमा भले ही आजाये पर मौलिक रूप से श्वेत ही है सृष्टि के आदिकाल से। मारने पीटने का नाम नहीं। मानवमात्र के लिए दया का उमड़ता हुआ सागर। हिंसा और कत्ल तो उसके शब्दकोश में हैं ही नहीं। सोचिए, विचारिए और मनन कीजिए- कौन सा रंग आपने पसन्द किया है और क्यों? यही तो मनुष्य का धर्म है। अगर विचार या चिन्तन में कोई कमी है तो आर्यसमाज के पास आजाइए। हम आपको प्रेमपूर्वक समझा देंगे-- "इसलिए।

आर्यसमाज का प्रादुर्भाव ही इसलिए हुआ है। हमारे पास प्यार की तलवार हैं, हम तर्कशील हैं, विवेक से काम लेने वाले मानव। मनन, चिन्तन, स्वीकरण हमारा कर्तव्य है। हम पशुओं की भान्ति इन्सानों का हाँका नहीं लगाते। हम किसी की गुरीबी, अशिक्षा और अज्ञान का फायदा नहीं उठाते। हम किसी को तलवार दिखाकर अपनी बात नहीं मनवाते। हम इसे अधर्म और कायरता समझते हैं। हमारी आवाज़ बहुत खुली हुई है उन्मुक्त आकाश में स्वच्छन्द विचरण करते हुए पक्षी की भाँति। हमने बुद्धि को जीवन में सर्वोच्च स्थान दिया है हमारी हर कृति "बुद्धिपूर्वका" है। इसलिए ठंडे मस्तिष्क से सुनिए, विचारिये, मनन कीजिए और यदि आर्यसमाज की आवाज़ में सच्चाई प्रतीत हो, तो मानवता के नाते हमारे पास अवश्य आ जाना। हम तुम्हें उसकी एक और अमरवाणी सुनाएंगे जिसे सुनकर इन्सान तो क्या विश्व का सम्पूर्ण धरातल जलचर, नभचर, थलचर उसी आकाश की तरह निर्मल और शान्त बन जायेगा और फिर सर्वत्र एक ही आवाज़ सुनाई देगी --

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

आर्य भवन का शिलान्यास

उ0प्र0 शासन के नगर विकास मन्त्री, मा0 श्री-बल्देव सिंह जी आर्य के नवीन भवन "आर्यभवन" का शिलान्यास लखनऊ के गोमतीनगर में दिनांक मई 8, 1989 को पवित्र मन्त्रोच्चारण एवं हर्षध्वनि के बीच बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के मन्त्री एवं जननेता श्री पं0 मनमोहन तिवारी, विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष श्री ए0के0 मिश्र तथा सचिव श्री दिवाकर त्रिपाठी तथा अनेकों वरिष्ठ अधिकारी एवं संभ्रान्त नागरिक उपस्थित थे। पवित्र यज्ञवेदि पर सपत्नीक विराजमान मा0 आर्य जी ने स्वयं मन्त्रोच्चारण करते हुए अनुष्ठान की सम्पूर्णविधि पूर्ण की। ब्रह्मा थे आर्यमित्र के प्रबन्ध सम्पादक आचार्य श्री इन्द्रदेव-पाठक, दर्शनवाचस्पति।

इस अवसर पर मा0 आर्य जी ने आर्यसमाज गणेशगंज, लखनऊ को 101/- दान दिया है। आर्य समाज परिवार की ओर से बहुत-बहुत बधाई ।

श्री बल्देव सिंह आर्य का जन्म दिवस

शतं जीव शरदः शतं वर्धमानः

उत्तर प्रदेश शासन के नगर विकास मन्त्री मा0-बल्देव सिंह जी आर्य का 78वाँ जन्मदिवस उनके लखनऊ निवास पर दिनांक 12 मई 1989 को बड़ी सादगी के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञवेदि पर सपत्नीक विराजमान श्री आर्य ने मन्त्रोच्चारण करते हुए पावन यज्ञ में आहुति दी और जनसेवा के अपने महान व्रत को पुनः दोहराया। उ0प्र0 आर्यप्रतिनिधि-सभा के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने उनके यशस्वी, वर्चस्वी जीवन की कामना करते हुए प्रदेश की आर्यजनता की ओर से उन्हें भावभीने श्रद्धासुमन अर्पित किए। उनके जन्मदिवस पर केन्द्रीय/प्रदेशीय शासन के मन्त्रियों सहित अनेकों वरिष्ठ अधिकारियों/राजनयिकों तथा समाज सेवी नागरिकों ने बधाई दी है।

ऋषि दयानन्दाभिमत 'वेद' शब्द की व्याख्या

आ0डॉ0 सुरेन्द्र देव स्नातक
284- सिविल लाइन, एटा।

ज्ञानार्थक विद् धातु से "घञ्" {अ} प्रत्यय करने से "वेद" शब्द निष्पन्न होता है। अतएव "वेद" शब्द का सीधा सा अर्थ हुआ। "ज्ञान"। इस ज्ञानार्थक "विद्" धातु के अतिरिक्त वेदों के प्रसिद्ध व्याख्याकार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्तार्थक "विद्" धातु से, लाभार्थक "विद्लृ" धातु तथा विचारार्थक "विद्" इन तीन धातुओं से भी "वेद" शब्द की निष्पन्नता को स्वीकार किया है। उन्होंने स्वलिखित ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के वेदोत्पत्ति विषयक भाग में लिखा हैः-

"विद् {ज्ञाने} विद् {सत्तायाम्} विद्लृ {लाभे} विद {विचारणे} एतेभ्यो "हलश्च" इति सूत्रेण करणाधिकरण कारक योघयं प्रत्यये कृते वेद शब्दः साध्यते"।

उन्होंने "वेद" शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए इसी प्रकरण में लिखा हैः-

"विदन्ति जानन्ति विद्यन्ते भवन्ति विन्दन्ति विन्दते लभन्तेविन्दते विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सर्वाः सत्य विद्या यैयेषुवा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः।

अर्थात् जिनके पढ़ने से यथार्थ विद्या {ज्ञान} का विज्ञान होता है, जिनको पढ़कर विद्वान होते हैं, जिनसे सभी प्रकार के सुखों का लाभ होता है तथा जिनके द्वारा ठीक-ठाक सत्यासत्य का विचार मनुष्यों के उपलब्ध होता है, इस प्रकार के ऋक् संहिता आदि का नाम ही "वेद" है।

कहने का तात्पर्य यह है कि जिनके द्वारा मानव सत्य विद्या को जानते हैं, अथवा प्राप्त करते हैं अथवा विचारते हैं अथवा विद्वान बनते हैं अथवा सत्य विद्या {यथार्थ ज्ञान} की प्राप्ति हेतु जिनके अध्ययन में प्रवृत्त होते हैं उन्हीं का नाम "वेद" है।

वेदों को श्रुति नाम से भी कहा जाता है। इस बारे में ऋषिवर ने लिखा है :- "श्रु श्रवणे इत्यस्याद्धातोः करणकारके "क्तिन्" प्रत्यये कृते श्रुति शब्दो व्युत्पद्यते।" अर्थात् श्रवणार्थक {सुननाअर्थ वाले "श्रु" धातु से करणकारक में "क्तिन्" प्रत्यय करने से "श्रुति" शब्द सिद्ध होता है। कहने का अभिप्राय यह है कि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक सब सत्य विद्याओं के श्रवण की दृष्टि से वेदों को "श्रुति" नाम से भी पुकारा जाता है। अथवा सृष्टि की आदि से मानव वेदों को गुरुमुख से श्रवण करते चले आ रहे हैं। अतएव श्रवण किये जाने के कारण वेदों का "श्रुति" नाम भी पड़ गया।

इन वेदों की संख्या चार है। ये है - 1-ऋग्वेद, 2- यजुर्वेद, 3- सामवेद, 4- अथर्ववेद। इन चारों वेदों में "ज्ञान", कर्म, एवं उपासना का विषय वर्णित है। "ज्ञान" का ऋग्वेद में "कर्म" का यजुर्वेद में तथा "उपासना" का सामवेद में। अथर्ववेद में तो ज्ञान, कर्म एवं उपासना इन तीनों का विषय वर्णित है।

चारों वेदों में ज्ञान, कर्म तथा उपासना- इन तीन प्रकार के ज्ञान "यथार्थ ज्ञान} का वर्णन किये जाने के ही कारण इन चारों वेदों को "वेदत्रयी" शब्द द्वारा भी कहा जाया करता है। वेदत्रयी का अर्थ है ज्ञानत्रयी अर्थात् तीन प्रकार का ज्ञान।

कुछ लोग "वेदत्रयी" का अर्थ "तीन वेद" ले लेते हैं जो कि पूर्णरूपेण गलत तथा भ्रामक है।

वेदों का यह ज्ञान मानवीय अथवा मानव से उत्पन्न नहीं है। यह तो पूर्णतया ईश्वरीय ही है। ईश्वर तो अनन्त ज्ञान संपन्न है। इस अनन्तज्ञान में से परब्रह्म परमात्मा उतने ही ज्ञान को मानव मात्र के लिये वेदों के माध्यम से प्रदान कर दिया करता है कि जितना ज्ञान मानवमात्र के लिये अपेक्षित अथवा आवश्यक हुआ करता है। सृष्टि की आदि में परमात्मा द्वारा यह ज्ञान अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा नामक चार ऋषियों को प्रदान किया गया था। परम्परा से वेदों का यह ज्ञान उत्तरकालीन ऋषियों को भी प्राप्त होता रहा।

ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण ही वेदों को अथवा इस ईश्वरीय ज्ञान को आप्त प्रमाण अथवा शब्द प्रमाण माना जाता है। इस भाँति वेदों में प्रतिपादित ज्ञान को स्वतः प्रमाण स्वीकार किया गया है। प्रत्यक्ष अथवा अनुमान प्रमाणों के आधार पर जिस ज्ञान को प्राप्त किया जाना सम्भव नहीं है इस प्रकार का ज्ञान हम मानवों को वेदों के द्वारा ही प्राप्त हुआ करता है। इस बारे में कहा भी गया है -

"प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तुपायो न बुध्यते।
एवं विदन्ति वेदेन तस्याद् वेदस्य वेदता ।।"

चारों वेदों के रूप में प्रदत्त यह ईश्वरीय ज्ञान अनश्वर तथा नित्य है। मानवों द्वारा प्रदत्त तथा पुस्तक रूप में लिखा गया ज्ञान नश्वर तथा घटाने बढ़ाने योग्य हुआ करता है किन्तु यह ईश्वरीय ज्ञान {वेद} सृष्टि के प्रारम्भ से ही एक रूप में ही चलता चला आ रहा है। इसे आज तक न तो घटाया, बढ़ाया ही जा सका है और न भविष्य में इस प्रकार की सम्भावना ही की जा सकती है।

आदि कवि बाल्मीकि द्वारा लिखी गई **रामायण** में तो अनेक सामाजिक बातों तथा सांसारिक विषयों को श्लोकों के रूप में बढ़ाया जा चुका है। इसी प्रकार "**महाभारत**" नामक ग्रन्थ में भी बहुत कुछ बढ़ाया जा चुका है। किन्तु वेदों में तो आज तक एक मंत्र अथवा एक पद भी बढ़ाया नहीं जा सका है। इसका प्रमुख कारण वेदों का ईश्वरीय होना ही है जो कि स्वतः सिद्ध है।

धर्म का मूल-आधार वेद ही है। मूलरूप में विद्यमान धर्म के वास्तविक तत्वों के जानने एवं समझने का एकमात्र साधन"वेद" ही है जैसा कि मनुस्मृति - रचयिता मनु द्वारा कहा भी गया है-

"वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" {मनु0 2/6}

मनु द्वारा मानवीय कर्तव्यमात्र के ज्ञान के निमित्त वेदों को ही प्रमुख आधार स्वीकार किया गया है-

यः कश्चिद् कस्यचिद् धर्मो मनुना परिकीर्तितः ।
स वेदोऽपि हितो वेदे, सर्वज्ञान मयो हि सः।। {मनु02/7}

वेदों को सभी प्रकार की सत्य विद्याओं का प्रमुख आधार भी स्वीकार किया गया है। दार्शनिक सिद्धान्तों का, अध्यात्म सम्बन्धी विषयों का तथा आयुर्वेद गणित, अर्थशास्त्र, नाट्यशास्त्रतथा समाजशास्त्र आदि सभी प्रकार के ज्ञान का आदि स्रोत अथवा मूलस्रोत "वेद" ही हैं। इसी कारण कहा भी गया हैः-

"सर्वज्ञानमयो हि सः" ।

सम्पूर्ण प्राचीन वैदिक साहित्य {जैसे ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ, सूत्रग्रन्थ उपनिषद् आदि} की रचना भी वेदों के आधार पर ही की गई है। इसी कारण उनसेभी ग्रन्थों की प्रामाणिकता भी स्वयं सिद्ध है।

ज्ञानपूर्वक कर्मों को करते हुए ईश्वरोपासना का किया जाना मानव - जीवन का प्रधान लक्ष्य है। अतएव "वेद" वह ज्ञान है कि जो मानवमात्र को मानव-जीवन के प्रमुख लक्ष्य की ओर उन्मुख करता है।

- आर्यसमाज व स्त्री आर्यसमाज आर्य नगर {बदायूँ} की ओर से 2 से 9 अप्रैल तक पारिवारिक यज्ञ व सत्संग स्वामी-विनोदानन्द जी वेद भिक्षु द्वारा सम्पन्न हुआ जिसमें भारी संख्या में नर नारियों ने भाग लिया तथा यज्ञोपवीत संस्कार कराये।

इन्द्राय पातवे सुतः

इन्द्र के पीने के लिए निचोड़ा हुआ सोम

{पण्डिता डॉ० प्रज्ञा देवी, वाराणसी-10}

ऋग्वेद के नवम मण्डल का प्रारम्भ **"स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोमधारया। इन्द्राय पातवे सुतः"** इस ऋचा से होता है। इस मण्डल में मुख्यरूप से सोम का ही वर्णन है ऐसा माना जाता है। इस प्रथम मन्त्र में भी "अतिशय स्वादुयुक्त अत्यन्त" प्रसन्नता को देने वाली निचोड़ी हुई सोम की धारा, से इन्द्र को प्रसन्न किया जाये" यही बात कही है। प्रश्न है यह इन्द्र है कौन क्या देहधारी पुरुष? इन्द्र शब्द का यौगिकार्थ करने पर पता चलता है कि जो कोई भी इस संसार में परमबल एवं ऐश्वर्यशाली तत्व हैं वही इन्द्र शब्द से अभिहित होंगे। द्युलोक में सूर्य अन्तरिक्षलोक में वायु तथा पृथिवीलोक में अग्नि बलिष्ठ एवं ऐश्वर्यशाली हैं अतः ये इन्द्र हैं इस प्रकार इन्द्र कोई देहधारी पुरुष नहीं है अपितु जड़ जगत् के ही ये तत्व हैं यह स्पष्ट हुआ। इनका सोमपान क्या है? इसे भी समझ लेना होगा। ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार यह सम्पूर्ण जगत् अग्नीषोमात्मक है। अग्नि अर्थात् इन्द्र का बलवत्तम रूप। जिन पदार्थों में चिकनापन आर्द्रता हो वह सोम तथा जहाँ रूक्षता तीक्ष्णता हो वह अग्नि का रूप माना जायेगा। इस प्रकार इस जगत् में इन दो प्रकार के तत्वों के समावेश का ही नाम **अग्नीषोमात्मक** जगत् होगा।

इन्द्र को सोम चाहिये? कैसा सोम चाहिये? स्वादिष्ठ और प्रफुल्लित करने वाला। यह सोम और कुछ नहीं स्निग्ध शीतल जल ही तो है जिसका पान बराबर इन्द्र=सूर्य कर रहा है। ये औषधियाँ बढ़ रही हैं सोम के बल पर यह सोम सर्वत्र व्याप्त है। वेद कहता है-

त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वास्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः।
त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वंज्योतिषा वि तमो ववर्थ{ऋ॰1/91/22}

अर्थात् हे सोम। तुम इन सभी ओषधियों को उत्पन्न करते हो, तुम सर्वत्र आकाशादि में व्यापक हो।

सूर्य की किरणों द्वारा पृथिवी से उठाया हुआ यह सोम =जल बराबर अन्तरिक्ष लोक में व्याप्त हो रहा है अतः वेद में कहा -

स उत्तरस्मादधरं समुद्रम {ऋ॰10/98/5}

इन्द्र द्वारा पान किया हुआ यह सोम न केवल अन्तरिक्ष में ही व्याप्त है अपितु सूर्य मण्डल में भी विद्यमान है जिसे यह आदित्य अग्नि के रूप में परिवर्तित कर समस्त ब्रह्माण्ड को देता है। इसीलिये वेद में कहा -

सोमेनादित्या बलिनः {ऋ॰10/85/2}

अर्थात् ये आदित्य सोम से ही बलवान् है। इस अग्नि तत्व का जीवन सोम तत्व के बिना नहीं चल सकता। सृष्टि में इन्द्र का यही सोमपान तीनों लोकों में चल रहा है।

काठक संहिता में "सोमोऽन्नम्" {का॰स॰13/12}" **"पय एव सोमः"** {का०सं० 27/4} कहा है तदनुसार सोम अन्न है तो अग्नि {इन्द्र} अन्नाद है। जठराग्नि को निरन्तर सोम-अन्न चाहिये तभी जीवन चल सकता है। समस्त भूत प्राणियों द्वारा जठराग्नि का अन्न ग्रहण ही मानों यहाँ इन्द्र का सोमपान है। सर्वप्रथम पृथिवी माता और सूर्य पिता द्वारा ही समस्त सृष्टि का विस्तार हुआ। वेद कहता है- **"द्यौर्मे पिता जनिता नाभिरत्र बन्धुर्मे माता पृथिवी महीयम्"** अर्थात "सूर्य मेरा पिता उत्पादक शक्ति वाला है, तथा बन्धु समान मेरी माता पृथिवी महान् है"।। ओषधियों वनस्पतियों का वपन पृथिवी पर होता है, पृथिवी उन बीजों को माँ के समान धारण करती है किन्तु उस बीज के उत्पन्न होने से लेकर धान्य या फल के पकने तक बराबर सूर्य-सोम का सहयोग बना रहता है। सूर्य एवं चन्द्र किरणें सोम लेकर आती हैं तो पौधों की बालियों में तरल पदार्थ सोमरस सन्चित होता है पुनः वह घनीभूत होता है और फिर सूर्य के ही ताप से पक जाता है। यह सोम रस न हो तो बालियाँ भी नहीं बन सकतीं। सोमयाग में सोम को कूटने पीसने छानने आदि की जो प्रक्रियायें दृश्य-कव्य के रूप में दिखाई जाती हैं ये सभी क्रियायें सृष्टि एवं भूत प्राणियों के शरीर में निरन्तर हो रही हैं। सृष्टिगत अग्नि तत्व {इन्द्र} तथा शरीरस्थ अग्नि तत्व {इन्द्र}बराबर जीवन तत्वों को चलाकर सोम का अधिश्रयण कूटना पीसना छानना आदि कर रहे हैं। खाये हुए सोम=अन्न का यह शरीरस्थ इन्द्र ही तो परिपाक करके तत्पश्चात् छानता है अर्थात् फोक को मलद्वारादि से बाहर निकाल रस को शरीर के समस्त भागों में भेजता है। इस प्रकार सृष्टि एवं शरीर में अग्नि {इन्द्र} तत्व और सोमतत्व की क्रियायें बराबर चल रही हैं इनमें से एक भी तत्व की न्यूनता होने पर विकृतियाँ दृष्टिगोचर होने लगती हैं। इन्द्र का यही सोमपान है जिसकी चर्चा वेदों में बार-बार आती है।

यह सोम=जल सूर्य किरणों द्वारा पृथिवी से अन्तरिक्ष लोक एवं सूर्यमण्डल तक जाता है पुनः उत्पादन प्रक्रिया को पूर्ण करने आधान एवं बढ़ाने आदि के लिये अन्तरिक्षस्थ एवं सूर्यमण्डलस्थ सोम, वृष्टि एवं किरणों द्वारा पृथिवी पर प्राप्त होता है। इस प्रकार यह आवागमन प्रक्रिया सोम एवं अग्नितत्व की चलती रहती है यही इन तीनों लोकों का सामन्जस्य है। ब्रह्माण्ड शरीरस्थ ये क्रियायें पृथिवी लोक में बैठे हुए हम लोगों को वस्तुतः भिन्न-भिन्न लगती हैं परन्तु ईश्वर की विशाल सृष्टिरूपी शरीर की ये एक ही क्रियायें हैं। **"यत्पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे"** के अनुसार सृष्टिगत नियम और क्रियायें इस शरीर में भी इसी प्रकार हो रही हैं अन्तर केवल इतना है कि हम इस अनन्त सृष्टि की छोटी सी इकाई के रूप में है।

वेद में प्रश्न किया गया -

पृच्छामि त्वा परमन्तं पृथिव्याः पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः
पृच्छामि त्वा विष्णोअश्वस्य रेतः पृच्छामि वाचः परम व्योम।।

अर्थात् {1} इस पृथिवी का अन्त कहाँ है?

{2} समस्त भुवन लोकों की नाभि=आश्रयस्थान कहाँ है?

{3} संसार को चलाने वाला वलिष्ठ रेतः=बीज कौन है?

{4} वाणी का महान् स्थान कहाँ है? उत्तर मिला --

इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः ।
अयं सोमो वृष्णो अश्वस्य रेतो ब्रह्मायं वाचः परमं व्योम ।।

बड़ी स्थिरता से पूर्व मन्त्र के चार प्रश्नों के चार उत्तर इस मन्त्र में दे दिये गये। पृथिवी गोल है अतः किसी भी एक केन्द्र स्थान से अपना भ्रमण यदि हम प्रारम्भ करें तो पृथिवी का पूरा चक्कर लगाकर पुनः वहीं लौट आयेंगे अतः कहा यह यज्ञ वेदि ही पृथिवी का अन्तस्थान है और यह यज्ञ ही समस्त भुवन का आश्रय स्थान है।

थोड़ा और दृष्टि को ऊपर उठायें तो पता चलेगा कि ये हमारी वेदि {जिसमें नैत्यिक अथवा नैमित्तिक कर्म सम्पन्न होते हैं} और इस हमारे यज्ञ से अतिरिक्त भी भगवान् का सृष्टि यज्ञ इस ब्रह्माण्ड एवं हमारे शरीर में बराबर हो रहा है इस प्रकार मन्त्र का अर्थ होगा कि सृष्टि रचना जब तक चल रही है तब तक पृथिवी का सामर्थ्य जानना चाहिये, प्रलयारम्भ में भूमि का भी अन्त हो जायेगा। इसी प्रकार इस सृष्टि का आधार स्वयं यज्ञदेव परमात्मा है। भले ही प्राणी रचना प्रारम्भ में {अमैथुनी} सूर्य और पृथिवी तदनन्तर माता-पिता के आश्रय से हुई हो, किन्तु इनको भी सामर्थ्य देने वाला वह परमप्रभु ही है। इसीलिये वह पिताओं का पिता है। मन्त्रगत तीसरे प्रश्न पर कहा गया कि यह बलिष्ठ वर्षणशील व्यापक सोम=सूर्य ही इस सृष्टि यज्ञ का रेतः बीज है तथा ब्रह्मा=परमात्मा ही वेदवाणी का स्रोत है।

यहाँ मन्त्र ने अपने उत्तर से स्पष्ट कर दिया कि सृष्टि रचना में बीज का काम सोम=सूर्य कर रहा है। इस सूर्य की शक्ति से ही माता-पिता में भी सन्तानोत्पत्ति का सामर्थ्य उत्पन्न होता है। यह सूर्य प्राणी संरचना हो या जड़ जगत् रचना हो दोनों में परम सहायक है।

इन्द्र की सोमपान सम्बन्धी चर्चा जहाँ कहीं भी वेद में आती है उससे इसी प्रकार का तात्पर्य समझकर अर्थ करने से वेद की सुरक्षा निहित है। सोमयाग में सोमलता नाम से प्रसिद्ध वल्ली का आनयन, आप्यायन, कुट्टन आदि क्रियायें की जाती हैं जो कि अन्तरिक्षस्थानीय मेघ में स्थित सोम=जल वर्षणादि प्रक्रियाओं का दिग्दर्शन कराती हैं। यह बहुत बड़ा विज्ञान है किन्तु मध्यकाल में जब वैदिक विज्ञान को लोग भूल गये तो

संध्या एवं यज्ञ के मन्त्रों का पद्यानुवाद

स्वयं दीप्ति हमको दमकाता

समिदाधान मन्त्र - 1

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेद स्तेने ध्यस्ववर्धस्व चेदवर्दय् चास्मान प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेना न्नाद्येन समेधय- स्वाहा।। इदमग्नये जातवेदसे-इदन्नमना ।।

समिधा पकार यह यज्ञ अग्नि, बढ़ कर ऊपर उठ जाता है।
यह अग्नि जगत में हो प्रयोग, जीवन सम्पन्न बनाता है।।
जो अग्नि यज्ञ में आई है
जीवन में वही समाई है
निर्माण यही जग में करती
इसने ही आय बढ़ाई है
धनधान्य प्रजा पशु तेज कीर्ति, इन सबका अग्नि प्रदाता।
यह अग्नि जगत में हो प्रयोग, जीवन सम्पन्न बनाता है ।।
यह काष्ठ अग्नि का है शरीर
पा काष्ठ बढ़े यह अग्नि धीर
मिल जाये अग्नि इस भाँति हमें
जिस भाँति बने प्रभु हम अमीर
समिधा की आहुति पाकर के, अति तीव्र अग्नि हो जाता है।
यह अग्नि जगत में हो प्रयोग, जीवन सम्पन्न बनाता है।।
स्वयं दीप्ति हमको दमकाता
जग में अग्नि प्रकाश लुटाता
जातवेद इस अग्नि वृद्धि हित
मैं आहुति हूँ आज चढ़ाता
यह मेरा क्या सब तेरा है, तेरा तुझको मिल जाता है।
यह अग्नि जगत में हो प्रयोग, जीवन सम्पन्न बनाता है ।।

-- देवनारायण भारद्वाज, आजमगढ़।

वेद मंदिर उद्घाटन समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं नव संवत्सर पर आर्यसमाज आ0वि0का0 काशीपुर अपने नव-निर्माण "वेद मन्दिर" का उद्घाटन समारोह दि0 1 अप्रैल से 7 अप्रैल 89 तक नित्य वेद कथा एवं देवयज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ जिसका उद्घाटन एवं ध्वजारोहण ब्रह्मचारी स्वामी ब्रह्मानन्द "वेद भिक्षु" (चन्दौसी) के करकमलों द्वारा किया गया जिनकी वेद कथा एवं देवयज्ञ की जनता में काफी सराहना हुई। आपने लगातार 7 दिन तक वेदों की ज्ञान गंगा बहाई। तथा उच्चकोटि के विद्वान पं0 श्री धर्मपाल जी शास्त्री (मेरठ) एवं श्री महेशचन्द्र शर्मा तथा पं0 जयप्रकाश जी भजनोपदेशक ने अपनी मधुरवाणी से जनता को मुग्ध किया।

यहीं समझने लगे कि इन्द्र नामक कोई देहधारी देव घर-घर बुलाये जाने पर सोमपान अर्थात मद्यपान करने आता है। सोम शब्द का शराब अर्थ करके जहाँ हमारी भारतीय संस्कृति कलंकित की गई वहीं इन्द्र को देहधारी पुरुष मानकर वेद के मत्थे इतिहास भी मढ़ दिया गया। इस अन्धकार के युग में हाथ मारकर भी हमें जब कुछ सूझ नहीं रहा था उस समय महर्षि दयानन्द ने बताया- कि "वेदों में किसी प्रकार की कथा कहानियों का इतिहास मानना पौराणिक गप्प है।"

यो जात एव प्रथमो मनस्वान्देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत ।
यस्य शुष्माद्रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य मह्ना स जनास इन्द्रः ।।

इत्यादि मन्त्रों में उसको इन्द्र जानों जो मनस्वी एवं विज्ञान से युक्त प्रथम ही था हुआ। जो देवों=मेघों को अपने कर्मो से पकड़ता है जिसके बल से द्यौलोक और पृथिवी लोक प्रकम्पित रहते हैं। स्पष्ट है कि ऐसा कोई देहधारी इन्द्र नहीं हो सकता जिसका मन्त्र में कहे अनुसार इतना महान् बल हो। यह इन्द्र आध्यात्मिक अर्थ में परमप्रभु है तथा आधिदैविक अर्थ में विद्युत। शोक है कि इस यथार्थ को न समझकर सायणाचार्य ने यहाँ इन्द्र विषयक खूब ही इतिहास घड़ा है जो कि इन मन्त्रों एवं प्रकरण से किसी प्रकार सिद्ध नहीं। इन्द्र का सोमपान एक सृष्टिगत घटना है किसी मनुष्य विशेष की नहीं। वैदिक विज्ञान की बातों को जैसे-जैसे हम महर्षि दयानन्द के दिये प्रकाश के माध्यम से समझने का प्रयत्न करेंगे वैसे-वैसे गुत्थियाँ सुलझती हुई प्रतीत होंगी क्योंकि कहा भी है-

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति ।
तथा वि तथा विजानाति विज्ञानं चास्य रोचते ।।

क्रान्ति पथ पर बढ़े चलो

उठो हे आर्यो उठो, तुम्हें पुकारे भारती
दिखा दो शौर्य फिर वही दिशाएं करें आरती
करके बज्राघात फिर से शत्रुओं को तोड़ दो
प्रवाह राष्ट्र-घाती को स्वशक्ति से मोड़ दो
जग-क्षितिज पर आर्यो का सूर्य फिर उदय करो
उठो-उठो अरे उठो पुनः दिग्विजय करो
राष्ट्र की अखण्डता, स्वतन्त्रता के रक्षकों
कर जयनाद "वन्दे मातरम" गुँजा दो अन्तरिक्ष को
कर प्राणोत्सर्ग अपना दो राष्ट्र को संजीवनी
कराहती, पुकारती, निहारती विकल भारत जननी
राष्ट्र की स्वतन्त्रता, अखण्डता खतरे में है।
धर्म संस्कृति का वजूद भी खतरे में है।।
अस्पृश्यता व जातिवाद की जंजीरें तोड़ दो
मत-मतान्तरों की दीवार को भी तोड़ दो
मत पड़ो विवाद में साकार-निराकार की
बस एक लक्ष्य ही रखो राष्ट्र के उद्धार की
महर्षि दयानन्द का बलिदान व्यर्थ न करो
स्वार्थ, पद के द्वन्द में स्वशक्ति का न क्षय करो
क्रान्ति के लिए युवाओं हमारे साथ आ मिलो
बँध के एक सूत्र में क्रान्ति - पथ पर बढ़ चलो।

जयन्त कुमार, महामंत्री,
राष्ट्र रक्षा आंदोलन
उत्तर प्रदेश लखनऊ।
निवास- आर्यसमाज मन्दिर, बुढ़ाना गेट-मेरठशहर।

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें--

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह अप्रैल 1989 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी0पी0 भेजी जायगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी0पी0 भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नंबर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30रु0 हो गया है :

405	8760	11893	14241	14685	14699
459	8770	11896	14242	14686	16700
1259	8784	12157	14248	14687	
2818	8907	12632	14249	14688	
3651	8928	12875	14251	14689	
4876	9153	13076	14673	14690	
5186	9437	13108	14674	14691	
5556	9440	13440	14675	14692	
6103	9640	13459	14676	14693	
6653	9861	13767	14677	14694	
7047	9876	13775	14678	14695	
8021	10139	13778	14679	14696	
8248	11193	13782	14681	14697	
8346	11590	14339	14683	14698	

- आर्य समाज मानपुर (गया) का 48वाँ वार्षिकोत्सव 17-18 एवं 19 मई 1989 को बड़े ही धूमधाम से मनाया गया।

- आर्यसमाज बिहार श्री (नालन्दा) का 70वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक 13 से 16 मई को बड़े धूमधाम से मनाया गया।

- बिहार राज्य के नालन्दा जिलान्तर्गत बिहार शरीफ के अन्दर श्री सुरेश प्रसाद आर्य के दौहित्र का नामकरण संस्कार डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। बच्ची का नाम निर्मला रक्खा गया तथा लोगों ने आशीर्वाद दिया।

- आर्यसमाज बड़गाँव गोण्डा का वार्षिकोत्सव 18 से 20 अप्रैल 1989 तक मनाया गया जिसमें कई विद्वान तथा भजनोपदेशक पधारे जनता बहुत प्रभावित हुई।

जवाहर रोज़गार योजना शुरू

संसद मे 28 अप्रैल 1989 को जवाहर रोजगार योजना पर प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी का वक्तव्य।

देश के सामने बेरोजगारी और अपूर्ण रोज़गार से बढ़कर और कोई विकट समस्या नहीं है। हमारी जनता का कोई भाग ग्रामीण गरीबों से ज्यादा सुविधाहीन नहीं है। हमारी जनता का कोई तबका ग्रामीण गरीब परिवारों की महिलाओं विशेषकर भूमिहीन महिलाओं से ज्यादा जरूरतमंद नहीं है।

जवाहरलाल नेहरू से ही हमने यह बात सीखी थी कि गरीबी दूर करने के लिए काम करना हमारा पहला राष्ट्रीय कर्तव्य है। जवाहरलाल नेहरू से ही हमने सीखा कि ग्रामीण भारत की बेरोज़गार और अपूर्ण रोज़गार प्राप्त जनता की परेशानियों को कम करना सबसे बड़ा राष्ट्रीय प्रयास है।

इसलिए, हमारे आधुनिक राष्ट्र के आदि-निर्माता के प्रति इससे बड़ी श्रद्धांजलि और नहीं हो सकती कि उनके जन्म-शताब्दी समारोहों को ग्रामीण भारत के गरीबों को बड़े पैमाने पर रोज़गार उपलब्ध कराने के कार्यक्रम के प्रति समर्पित करें।

हम आज जवाहर रोज़गार योजना शुरू करने जा रहे हैं।

इस कार्यक्रम का उद्देश्य देश भर में ग्रामीण पंचायतों के हाथों में पर्याप्त धनराशि देना है, जिससे वे भारी संख्या में ग्रामीण गरीबों के हित में, जो ग्रामीण भारत का एक बड़ा भाग है, स्वयं अपनी ग्रामीण रोज़गार योजनाएं चला सकें। यह अनुमान लगाया गया है कि पिछले सात वर्षों के दौरान ग्रामीण रोज़गार कार्यक्रम देश भर की 55 प्रतिशत ग्राम-पंचायतों तक ही पहुंचे हैं। जवाहर रोज़गार योजना का लक्ष्य प्रत्येक पंचायत तक पहुंचना है।

बड़े पैमाने पर केंद्रीय सहायता

इसका 80 प्रतिशत कार्यक्रम केन्द्र की वित्तीय सहायता से चलाया जाएगा। इसके संचालन के प्रथम वर्ष अर्थात चालू वित्तीय वर्ष में ही इस कार्यक्रम के लिए 2100 करोड़ रुपये की केन्द्रीय सहायता दी जाएगी। हम इस प्रकार का वित्तीय ढांचा बना रहे हैं, जिससे राज्यों को गरीबी की रेखा से नीचे की जनसंख्या के अनुपात में धनराशि आवंटित की जाएगी। यह धनराशि आगे ज़िलों को सौंपी जाएगी, जिसका निर्धारण पिछड़ेपन के मापदंड के अनुसार किया जाएगा, जैसे ज़िले की कुल जनसंख्या में अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या का हिस्सा, कुल मज़दूरों की तुलना में कृषि मज़दूरों का अनुपात और कृषि उत्पादकता का स्तर। भौगोलिक रूप से विशिष्ट क्षेत्रों में जैसे पहाड़ी, मरुस्थली तथा द्वीपसमूह की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए विशेष ध्यान दिया जाएगा।

प्रत्येक परिवार के एक सदस्य को रोजगार

हमें उम्मीद है कि तीन से चार हजार तक की आबादी वाली एक ग्राम पंचायत को जवाहर रोज़गार योजना के कार्यान्वयन के लिए प्रतिवर्ष 80,000/- रुपये से लेकर एक लाख रुपये प्राप्त होंगे। हम यह आशा करते हैं कि हम प्रत्येक निर्धन ग्रामीण परिवार के कम से कम एक सदस्य को उसके घर के नज़दीक कार्यस्थल पर प्रतिवर्ष पचास से लेकर सौ दिनों तक का रोज़गार दे सकेंगे। हम आशा करते हैं कि खानाबदोश जनजातियों को रोज़गार उपलब्ध कराने की एकीकृत योजनाओं को इस कार्यक्रम में शामिल किया जाएगा। इस योजना की बहुत खास बात यह है कि इससे जितना रोज़गार पैदा होगा उसका 30 प्रतिशत महिलाओं के लिए आरक्षित कर दिया जाएगा।

हमें आशा है कि यह कार्यक्रम ग्राम पंचायतों को सौंपे जाने से, लोगों को पहले की अपेक्षा इसके कहीं अधिक लाभ प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त होंगे। अब तक, ऐसे कार्यक्रमों के लिए काफी बड़ी रकम ठेकेदारों और बिचौलियों पर खर्च हुई है। अन्य भी काफी अपव्यय हुआ है। इसके अलावा, प्रशासन पर होने वाले खर्च को कम किया जा सकता है।

पंचायतों को वित्त-व्यवस्था और कार्यक्रम को चलाने की जिम्मेदारी सौंपने से, हम आशा करते हैं कि पहले से कहीं ज्यादा बड़ी रकम कार्यक्रम पर ही खर्च की जाएगी।

कार्यक्रम पर खुला अमल

हम यह आशा भी करते हैं कि इस कार्यक्रम का अमल इतना अधिक खुला और साफ-सुथरा होगा जितना पहले कभी नहीं हुआ। हर ग्रामवासी को यह मालूम होगा कि कार्यक्रम के लिए कितनी रकम उपलब्ध है और कौन-कौन सी योजनाओं पर यह रकम खर्च की जाएगी। वह यह भी जानकारी रखेगा कि इन योजनाओं पर कौन-कौन उसके गांव वाले काम कर रहे हैं। रोज़गार हासिल करने वाले हर व्यक्ति को यह मालूम होगा कि वह कितना पारिश्रमिक ले रहा है और अन्य लोग कितना ले रहे हैं। उसे यह भी मालूम होगा कि उसे और अन्य लोगों को कितने-कितने दिनों का काम दिया जा रहा है। जिन लोगों को धोखा दिया जाता है या वंचित रखा जाता है, वे न केवल उसकी तत्काल क्षतिपूर्ति के लिए सम्भवतः मांग कर सकेंगे, बल्कि उनके हाथ में मत का वह आखिरी हथियार भी होगा जिससे वे उस पंच या सरपंच को उसके पद से हटा भी सकें, जो उसे सौंपी गई शक्तियों और जिम्मेदारियों का दुरुपयोग करता है। लोकतंत्र गांव वाले के दरवाजे पर ही, जहां वह रहता है और काम खोजता है, कल्याणकारी राज्य को लाने का अवसर सुदृढ़ करेगा।

क्योंकि जवाहरलाल नेहरू ने कहा था :

> "पंचायतों एवं ग्राम समुदायों को अपने प्रस्ताव तैयार करने चाहिएं। हम अब केवल शीर्ष स्तर से ही कार्य नहीं कर सकते, क्योंकि हमको अपने लाखों लोगों को मिलकर संगठित करना है और इन महान कार्यों में उन लोगों को हिस्सेदार एवं साझीदार बनाना है।"

पंडित जी ने हमको यह बात याद रखने के लिए जोर दिया था कि :

> "हम जो भी योजना तैयार करें, उसकी सफलता की कसौटी यह होगी कि हमारे लाखों देशवासियों, जो मात्र अपनी जीविका पूरी कर पाते हैं, को उससे कितनी राहत मिलती है यानि हमारे अधिकांश देशवासियों की भलाई और प्रगति होती है। अन्य सभी लाभ इस मुख्य दृष्टिकोण के अधीन होने चाहिएं।"

उन्होंने आगे कहा था:

> "बड़े पैमाने पर बेरोज़गारी से अनेक नवयुवकों का जीवन नष्ट हो जाता है और यह हमारी एक प्रमुख समस्या है। हम इसे किसी जादू से दूर नहीं कर सकते —। परन्तु हम हरेक ऐसे व्यक्ति को रोज़गार एवं कार्य की गारंटी दे सकें जो मेहनत करने के लिए तैयार है और हाथ से काम करने को बुरा नहीं समझता।"

चार करोड़ चालीस लाख परिवारों को लाभ

वही हमारा अब भी आखिरी लक्ष्य है। फिलहाल, हम वह सब कुछ कर रहे हैं जो कुछ हम अपने संसाधनों से कर सकते हैं। सभी मौजूदा ग्रामीण मज़दूरी रोज़गार कार्यक्रम जवाहर रोज़गार योजना में शामिल कर लिए गए हैं। यह योजना गरीबी की रेखा से नीचे रहने वाले ग्रामीण भारत के 440 लाख परिवारों तक देश के कोने-कोने में पहुंचेगी। हमारा उद्देश्य है कि इनमें से प्रत्येक परिवार इसका लाभ उठाये। हमारा उद्देश्य इन परिवारों की कठिनाइयों में कुछ कमी लाने का है। खास कर हमारा लक्ष्य इन परिवारों की महिलाओं की कठिनाई में कमी लाने का है, जिन्होंने सदियों से अपने असीम साहस और सहनशीलता से उसका सामना किया है। हमारा लक्ष्य इन महान उद्देश्यों को पंचायतों की उत्तम संस्थाओं के माध्यम से प्राप्त करने का है।

जवाहरलाल नेहरू, जो एक महान स्वतंत्रता सेनानी एवं आधुनिक भारत के निर्माता थे, के नाम पर हम अपने आपको बेरोज़गारी का अभिशाप मिटाने, गरीबी का कलंक हटाने, महिलाओं के प्रति भेद-भाव समाप्त करने और अपने सभी देशवासियों को पूर्ण एवं समृद्ध जीवन निर्वाह करने में सुअवसर और सहायता सुनिश्चित करने के लिए पुनः समर्पित करते हैं।

ईसाई मिशनरियों का मुख्य उद्देश्य धर्मान्तरण कराना

मेरठ, 13 मार्च। देश में सक्रिय ईसाई मिशनरियों का मुख्य उद्देश्य सेवा भावना और गरीबों की प्रगति न होकर धर्मान्तरण करना है। जब मिशिनरी धर्मान्तरण करने में सफल हो जाते हैं तब वह राष्ट्रान्तरण के लिये प्रयास करते हैं। छल और कपट से होने वाले यह धर्मान्तरण हमारी संस्कृति और राष्ट्रीय एकता-अखण्डता के लिए गम्भीर खतरा है। यह विचार यहां "द फ्री विल बेस्टिस्ट चर्च आफ इण्डिया" के अन्तर्गत कार्य कर चुके पादरी फ्रांसिस जेवियर ने जागरण से बातचीत के दौरान व्यक्त किये।

श्री जेवियर ने बताया कि आज कल पूरे भारत में हिन्दुओं के पवित्र तीर्थ स्थलों और पवित्र नगरों में ईसाई आश्रम चल रहे हैं। इन आश्रमों में भारतीय पद्धति अपनाने का नाटक किया जाता है। इन आश्रमों में पादरी व ननस भगवे वस्त्र पहन कर साधारण जन मानस को भ्रमित करने का प्रयास करते हैं। इन आश्रमों में प्रशिक्षित युवक, युवतियां हिन्दुओं की मानसिकता को ध्यान में रखकर सन्यासी और सन्यासिनियों के वेष में भारत के विभिन्न भागों में धर्म परिवर्तन का कार्य करते हैं।

रहस्योद्घाटन करते हुए श्री जेवियर ने बताया कि पश्चिमी उत्त प्रदेश में मेरठ सहारनपुर, बरेली, शाहजहाँपुर तथा हरदोई को केन्द्र बनाकर बेस्टिस्ट चर्च धर्म परिवर्तन का कार्य कर रहा है। गृह मंत्रालय को धोखा देने के लिये विदेशी धन स्कूल, अस्पताल तथा चर्च निर्माण के लिये मंगाया जाता है किन्तु इस धन का प्रयोग मुख्य रूप . धर्मान्तरण के लिये किया जाता है उन्होंने बताया कि अभी तक यह चर्च हिन्दु समाज में हरिजन वर्ग के धर्मान्तरण का अभियान चला रहा था किन्तु अब इस चर्च ने "आपरेशन सवर्ण" नाम से सवर्ण हिन्दुओं को धर्मान्तरित करने की मुहिम चलायी जा रही है।

श्री फ्रांसिस ने ब .. कि उन्हें चर्च ने पूर्वांचल से मेरठ चर्च निर्माण कराने के लिये स्थानान्तरित करके भेजा था। किन्तु मेरठ आने पर क.. गया कि उन्हें हर हालत में चालीस सवर्ण हिन्दुओं का धर्मान्तरण कर ईसाई बनाना है। उन्होंने बताया कि यह कार्य उन्हें पहली बार सौंपा जा रहा था। पादरी बने उन्हें केवल 9 मास ही हुए थे। इस कार्य को करने के लिये जब उनका मन तैयार नहीं हुआ तो उन्होंने बगावत कर दी और पुनः अपने "मूल धर्म में वापिस आ गये"।

पादरी फ्रांसिस जेवियर ने बताया कि उनका मूल नाम जयन्त कुमार पाण्डेय है पुनः फ्रांसिस जेवियर से जयन्त कुमार पाण्डेय बन गये हैं। यह प्रश्न पूछे जाने पर कि आप किस प्रकार हिन्दू से ईसाई बने। उन्होंने बताया कि मेरी माँ मुझे छोटी अवस्था में छोड़कर इस संसार से विदा हो गयी थी। माँ की मृत्यु स्वाभाविक मौत नहीं थी। घर परिवार की उपेक्षा और उत्पीड़न मिल रहा था। 16 वर्ष की अवस्था से भटक रहा था। आगरा में अध्ययन काल में ईसाई मिशन के चक्कर में आ गया। प्यार के लिये, तरसा था मिशन में प्यार दुलार मिला तो मैंने समझा कि सेवा भावी लोग हैं इनके साथ रहना ठीक है। मैं इनके साथ रहते-रहते ईसाई बन गया। सैंट पीटर्स कालेज आगरा में वार्डेन रहा तथा बाद में असम तथा अरूणांचल प्रदेश भेज दिया गया। वहां से फिर मुझे मेरठ में चर्च की गतिविधियों को संचालित करने का कार्य भार सौंप कर मेरठ भेज दिया गया।

उन्होंने बताया कि मेरठ का कार्यभार सौंपते हुए कहा गया था कि उसे मेरठ में ईसाईयों के लिये प्रार्थना सभा आयोजित करने चर्च और स्कूल भवन का निर्माण कार्य चलाने तत्पश्चात् उसके संचालन का कार्य करना है। किन्तु मेरठ आने पर ज्ञात हुआ कि चर्च ऐसा कोई कार्य मेरठ में नहीं करता है। कोई स्कूल या अस्पताल बनवाने का इरादा नहीं है यहां तो सदस्यता फॉर्म भरवाकर उसकी सूची विदेशी संस्थाओं को भेजी जाती है और आर्थिक सहायता प्राप्त की जाती है।

पूर्वांचल के सम्बनध में यह पूछे जाने पर कि वहां धर्म परिवर्तन तेजी से क्यों हो रहा है? श्री जेवियर उर्फ जयन्त पाण्डेय ने बताया कि वहां भयंकर अभाव और गरीबी है। दवा और रोटी देने के नाम पर मिशनरी वहां धर्मान्तरण कर रहे हैं। स्कूल खोल कर उसमें बच्चों को शिक्षा देकर ईसाई बनाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि पूर्वांचल में "चर्च भवन" ऐसा स्थान है जहां पुलिस व सुरक्षा बल प्रवेश नहीं करते हैं।

यह पूछे जाने पर आपके पुनः मूल हिन्दु धर्म में वापिस लौट आने के कारण कोई कठिनाई तो नहीं हुई? उन्होंने उत्तर दिया कि उन्हें आतंकित और प्रताड़ित किया जा रहा है। जान से मारने की धमकी देने के साथ-साथ लाश को भी गायब कर देने की धमकी दी गई है।

धमकी मिलने के बाद आपने क्या किया है? यह पूछे जाने पर श्री पाण्डेय ने बताया कि उन्होंने मेरठ के जिलाधिकारी, भारत के राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, व गृह मंत्री, उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री व गृह मंत्री को पत्र भेज कर कहा है कि यदि प्रशासन ने सहायता नहीं की तो वह धमकी और उत्पीड़न से पीड़ित होकर आत्म दाह कर लेंगे।

--जागरण से साभार।

डा० सत्यकेतु विद्यालंकार आर्यसमाज के लिए समर्पित

स्वामी आनन्दबोध

नई दिल्ली, 25 अप्रैल : डा0 सत्यकेतु विद्यालंकार इतिहास के एक अद्वितीय विद्वान व मूर्धन्य साहित्यकार थे, जिन्होंने देश, समाज व धर्म की महान सेवा की थी।" यह उद्‌गार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आर्यसमाज मंदिर, मन्दिर मार्ग में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित "आर्यसमाज का इतिहास का लोकार्पण समारोह में व्यक्त किये।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आगे कहा कि एक बार डा0 सत्यकेतु के पिता गुरूकूल कांगड़ी के उत्सव पर स्वामी श्रद्धानन्द के भाषण से अत्यन्त प्रभावित हुए थे और उन्होंने अपने पुत्र सत्यकेतु को गुरूकुल में दाखिल करा दिया। डा0 सत्यकेतु गुरूकूल कांगड़ी में ही शिक्षित हुए और अधिकांश समय वहीं सेवा की तथा वहीं की मठ्टी में विलीन हो गये। वे गुरुकुल के लिए जिये और गुरूकूल व आर्यसमाज के लिए ही उन्होंने अपने जीवन की आहूति दे दी। तथा आर्यसमाज का इतिहास लिखकर उन्होंने आर्य जगत की विलक्षण सेवा की है।

स्वामी आनन्दबोध ने कहा कि गत 100 वर्षों में आर्यसमाज ने जो महान् कार्य किए हैं, वह अन्य संस्थायें कई सदियों तक नहीं कर सकी हैं। स्वामी आनन्दबोध ने आगे कहा कि हमें डा0 सत्यकेतु द्वारा लिखित आर्यसमाज के इतिहास व अन्य ग्रन्थों के पठन पाठन एवं उनका प्रचार प्रसार करना चाहिए।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो0 वेदव्यास ने डा0 सत्यकेतु विधालंकार द्वारा रचित आर्यसमाज का इतिहास कैसात खण्डों का लोकार्पण किया एवं इसे आर्यसमाज की अमूल्य देन बताया।

प्रख्यात पत्रकार पं0 क्षितिश वेदालंकार ने डा0 सत्यकेतु को एक बहुआयामी व्यक्तित्व का धनी बताया और कहा कि डा0सत्यकेतु द्वारा लिखित प्रत्येक खण्ड का एक एक अध्याय अपने आप में एक अलग विश्वकोष है और उनमें सन् 1988 तक की जानकारी समाविष्ट की गयी है। पं0 क्षितिश जी ने सभी खण्डों में वर्णित विषयों का भी विस्तृत विवरण दिया। गुरूकूल कांगड़ी के कुलाधिपति प्रो0 शेर सिंह ने कहा कि डा0 सत्यकेतु के प्रति हमारी सच्ची आदर भावना यही है कि हम उनके लिखित साहित्य का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करें। इस अवसर पर स्वामी डा0 सत्यप्रकाश व श्री सत्यदेव भारद्वाज ने भी विचार व्यक्त किये।

डा0 सत्यकेतु की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला देवी जी ने अपने स्व0 पति की स्मृति में प्रत्येक वर्ष 19 सितम्बर को 1100/- रूपए का एक पुरस्कार एक विद्वान इतिहासकार लेखक को भी देने की घोषणा की। प्रो0 वेदव्यास ने श्रीमती सुशीला देवी को 11,000/-रूपए का चैक भी भेंट किया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि के प्रधान डा0 धर्मपाल आर्य डा0 शिव कुमार शास्त्री आदि आर्य महानुभाव भी उपस्थित थे।

चौगावाँ आर्य सम्मेलन

दिनांक- 30-4-89 को निरपुड़ा {मेरठ} आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में चौगावाँ समिति की ओर से क्षेत्र के आर्य जनों का वृहद् विचार-सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर विशेष आमन्त्रित अतिथि आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी तथा जयन्त कुमार थे। इस सम्मेलन में वैदिक धर्म का प्रचार, आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर तथा विभिन्न आर्यसमाजों को गतिशीलता प्रदान करने तथा धर्मपरिवर्तन की समस्या इत्यादि पर विस्तृत विचार विमर्श हुआ।

इस अवसर पर पं0 इन्द्रराज जी ने कहा कि आज राष्ट्र के सामने अस्तित्व की चुनौती है। विघटन कारी तत्व राष्ट्र को तोड़ने पर आमादा हैं। हमारे समाज में व्याप्त संकीर्णता, जातिवाद तथा अस्पृश्यता के कारण विघटनकारी ताकतों का मनोबल बढ़ा है। सरकार की तुष्टीकरण की नीति के कारण राष्ट्र-धर्म-संस्कृति को खतरा पैदा हुआ है। हमें इसके विरुद्ध व्यापक रूप से जन जागरण का अभियान चलाना चाहिए तथा एक वृहद् आंदोलन करके सरकार की वैदिक धर्म तथा संस्कृति विरोधी कार्यों से विमुख किया जाना चाहिए। इसी परिपेक्ष्य में हमने निश्चय किया है कि युवाओं का एक व्यापक आंदोलन चलाया जाय। इस आन्दोलन का नाम राष्ट्र रक्षा युवा आंदोलन रखा गया है। इस आंदोलन में युवाओं का आवाहन करते हुए उन्होंने इसमें सक्रिय सहयोग की अपील की। उन्होने प्रत्येक आर्यवीरदल के "प्रशिक्षण शिविर" हेतु एक हजार रूपया आ0प्र0स0 उ0प्र0 के द्वारा देने की घोषणा की। आर्य वीरदल के "प्रशिक्षण शिविर" हेतु 26 जून से 2जुलाई का तक का समय निश्चित किया गया। इस अवसर पर जयन्त कुमार ने युवाओं को अपने प्रेरक वाणी से "राष्ट्ररक्षा युवा आंदोलन" का सदस्य बनने को प्रेरित किया।

"वैदिक प्रचार केन्द्र" मेरठ {मेला नौचण्दी}

पूरे अप्रैल चलने वाले उत्तर भारत के प्रसिद्ध नौचण्दी मेले {मेरठ} में आर्य समाज शहर की ओर से वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र का सफलता के साथ संचालन किया गया। इस वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र के संचालन व्यवस्था में शहर आर्यसमाज के मंत्री पं0 इन्द्रराज जी ने अथक परिश्रम किया। श्री माधवप्रसाद जी, श्री कैलाश चन्द्र जी आर्य, श्री नरेन्द्र प्रकाश जी, श्री वेद प्रकाशजी-गोयल, कान्ति चन्द जी श्री स्वराज्य चन्द्र का योगदान प्रशंसनीय रहा। मेला घूमने आए दर्शकों ने आशय के विपरीत भारी मात्रा के वैदिक साहित्य खरीदा तथा विभिन्न वैदिक प्रकाशनों में विशेष रुचि दिखाई। वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र द्वारा आ0प्र0 स0उ0प्र0 द्वारा प्रकाशित विभिन्न ट्रैक्टों तथा साहित्य का निःशुल्क वितरण किया गया। यहाँ "सत्यार्थ प्रकाश" भी आधे मूल्य पर बेचा गया। मेले में ध्वनि निस्तारक यंत्र के द्वारा आर्यसमाज की ओर से धूम्रपान, माँसाहार, मद्यपान, नशा सेवन के खतरों के प्रति लोगों को अगाह किया गया। तथा धर्म संस्कृति और राष्ट्र की रक्षा हेतु वैदिक साहित्य का अध्ययन करने को प्रेरित किया गया। इस तरह यह एक सफल आयोजन था।

छात्रों को पुरस्कार वितरण

29-4-89 शनिवार को आर्यविद्या सदन द्वापर नगर मेरठ में वार्षिक परिक्षा उपरान्त बच्चों को प्रथम व द्वितीय श्रेणी लाने पर परिक्षाफल देने के साथ पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज-जी ने बच्चों को पुरस्कार वितरित किये। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए पं0 इन्द्रराज जी ने बच्चों को सदुपदेश देते हुए कहा कि आज आपके जीवन का एक नया दिन प्रारम्भ हो रहा है। हमें अपना महान् आदर्श सदैव स्मरण रखना चाहिये। महर्षि दयानन्द, आद्य शंकराचार्य आदि महान पुरुषों के कार्य, उनका आदर्श एवं उनकी सेवा को सदैव स्मरण रखते हुए उनके पदचिन्हों पर चलने का संकल्प लेना है। ईश्वर का सदैव धन्यवाद करें। उनको धन्यवाद देने का तरीका ये है कि प्रातःकाल गायत्री-मंत्र एवं संध्योपसना करके ईश्वर को धन्यवाद दें एवं पवित्र बुद्धि प्राप्त करने की प्रार्थना करें। खेल के समय खेल एवं पढ़ाई के समय पढ़ाई करें। बड़ों का सत्कार करें।"

कार्यक्रमोपरान्त भव्य जलपान का आयोजन किया गया। बाद में विद्यालय के प्रबन्धक व प्राचार्या ने मुख्य अतिथि का धन्यवाद दिया।

-- संवाददाता।

आर्य वीर दल और बदलता विश्व

- अर्जुन सिंह चावला
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर

आज विश्व परिस्थितियों से गुजर रहा है एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र का दमन करने पर तुला है। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को सुखी नहीं देखना चाहता है।
मानवता और धर्म को छोड़कर आज का मनुष्य न जाने क्या-क्या पाप कर्म कर रहा है। अपने ही देश को ले लीजिए आज पशुता चरम सीमा तक पहुँच रही है। दिन प्रतिदिन न जाने कितने पुरूषों स्त्रियों और गाय जैसे उपयोगी पशुओं को मारा जाता है। मतान्ध लोग पूरी तैयारी के साथ देश की एकता और अखण्डता को नष्ट करने का प्रयत्न कर रहे हैं। यह सब हो रहा है और हम लोग चुप्पी साधे अत्याचार सहन कर रहे हैं, समाज इसका विरोध क्यों नहीं करता? विद्वानों ने कहा है कि अत्याचार करने वाले से सहने वाले अधिक पापी होते हैं। यह जानते हुए भी अत्याचार सहे जा रहे हैं। आखिर यह सब क्यों? यदि हम इन प्रश्नों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें और उत्तर खोजना चाहें तो एक ही उत्तर मिलेगा। आज समाज में ऐसे श्रेष्ठ पुरूषों की कमी है जो सत्य की रक्षा के लिए अत्याचार का दमन करने वाले आर्यवीरों का अभाव है संसार में प्रायः तीन प्रकार के मनुष्य पाये जाते हैं प्रथम प्रकार के वे होते हैं जो स्वार्थ वश उचित अनुचित का ध्यान नहीं रखते इससे राष्ट्रीयता धर्म निरपेक्षता की आड़ में जनता को परेशान करना ही इनका कार्य है इनके सार्वभौम संगठन हैं। दूसरे प्रकार के वे पुरूष होते हैं जिन्हें सत्यनिष्ठ कहते हैं। ये राष्ट्र द्रोही नहीं होते और न ही राष्ट्र के लिए कुछ करने और मृत्यु से डरते हैं। इनमें आत्म-बल और संगठन की कमी होती है। तीसरे प्रकार के वे पुरूष होते हैं, जो राष्ट्र धर्म और संस्कृति के लिए प्राणों की बाजी लगा देते हैं। ऐसे पुरूषों में आत्मबल की भावना कूट-कूट कर भरी होती है आज ऐसे व्यक्तियों का प्रायः अभाव है। यदि ऐसे कुछ हैं भी तो असंगठित हैं। इस कारण राष्ट्र द्रोही तत्वों का दमन नहीं हो रहा है। आइये। हम सब मिल कर एक ऐसा संगठन बनायें जिसे आर्य वीरदल कहते हैं, आर्य वीरदल के माध्यम से नव युवकों को संगठित करें तभी नव-निर्माण सम्भव है। क्योंकि आर्यवीरदल आर्यसमाज के सिद्धान्तों के आधार पर बना संगठन है जिसमें सच्चरित्रता ईमानदारी की शिक्षा देकर दल को तैयार किया जाता है। वही नैतिक पतन को रोक सकते हैं जो आज विश्व के चकाचौंध के वातावरण में अत्यावश्यक है।

श्री नारायण गोस्वामी जी के प्रति–

श्रद्धा के दो फूल

§श्री रामपलट पाण्डेय
आर्यसमाज बैंकांक, थाईलैण्ड§

आर्य मित्र-पत्र दिनांक 19 मार्च 1989 के अंक में श्रद्धेय श्री-नारायण गोस्वामी"नारायणप्रिय"जीको9 मार्च 1989 को देहमुक्त होने की सूचना पढ़कर आत्मिक कष्ट पहुँचा। एक क्षण के लिए चेतना खो गई किन्तु तत्क्षण ही धैर्य का सहारा लेना पड़ा, क्यों कि यही सत्य है, निश्चित है जिस पर मनुष्य का कोई विज्ञान अभी तक सफल नहीं हो सका; मौन है।

श्री नारायण गोस्वामी जी ने जातिवादक शब्द "गोस्वामी" को अपने नाम के आगे से हटाकर आर्य सिद्धान्तों के पालन करने में एक आदर्श रखा और स्वयं को "नारायणा प्रिय" नाम से प्रस्तुत किया।

दशकों तक आप ने आर्यमित्र के सहायक सम्पादक के रूप में अपनी सेवायें बड़ी ही सजगता के साथ अर्पित किया। आर्यमित्र-पत्र को सँवारने-सजाने में आपने अपूर्व योगदान दिया। पत्र में "चयनिका-स्तम्भ" निरन्तर जारी करके आप ने जहाँ पत्र की छवि को निखारने का उपक्रम किया, वहीं पाठकों को अमृत पान कराया।

आर्यमसाज बैंकाक के सम्पर्क में आने के पश्चात् मेरे मन में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुलों के प्रति बहुत झुकाव हुआ और निश्चय किया कि पुत्रियों की शिक्षा व्यवस्था किसी कन्या गुरुकुल में ही कराऊँगा । सम्भवतः 1972 में मेरा स्वदेश भारत आने का कार्यक्रम बना और उस यात्रा के मध्य आर्य प्रतिनिधि सभा भवन, लखनऊ को देखने की इच्छा को रोक न सका। जब मैं सभा-भवन में पहुँचा तो आप से साक्षात्कार होने पर असीम स्नेह मिला। इसका कारण आर्यसमाज बैंकाक के सचिव के रूप में आप से पूर्व पत्राचार हो सकता है।

मैं ने गुरुकुल के प्रति अपनी आस्था को दर्शाते हुए परामर्श किया कि किस गुरुकुल में पुत्रियों का प्रवेश कराना ठीक रहेगा? आप ने कई कन्या गुरुकुलों का परिचय दिया किन्तु अधिक बल कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस पर ही रहा। समयाभाव के कारण मुझे थाई देश वापस आना पड़ा, किन्तु मैंने पुत्रियों के प्रवेश का दायित्व आप के ऊपर छोड़ दिया। जब मेरे अनुज श्री ब्रह्मानन्द पाण्डेय जुलाई के सत्र में प्रवेश कराने हेतु आप के पास लखनऊ पहुँचे तो आप स्वयं अनुज व पुत्रियों को साथ लेकर हाथरस गये और प्रवेश कार्य सम्पन्न कराके वापस लौटे। अपने जीवन काल में निरन्तर मुझ पर स्नेहभाव उड़ेलते रहे। यहाँ बैंकांक §थाईलैण्ड§ से पत्र-व्यवहार के अतिरिक्त जब भी मेरा भारत जाना हुआ हर बार आपके दर्शनों की इच्छा को रोक नहीं पाते थे।

जीवन में अपरिमित दुःखों, जैसे एकमात्र पुत्र के निधन होने पर भी आपने समाज की सेवा में कोई कमी नहीं आने दिया।

मैं ने अपनी भारत की 1986 की यात्रा में आपके दर्शनलाभ अपनी चारों पुत्रियों व पत्नी के साथ किया तो आप बड़े संतोष का अनुभव किया।

सचमुच आपके निधन से बहुत अघात पहुँचा है। जगत नियन्ता प्रभु से प्रार्थना है कि आप की दिवगंत आत्मा को शान्ति दें तथा असीमित, असहनीय दुःख को हम सभी में सहन करने की शक्ति के साथ व प्रेरणा दें।

आर्यसमाज मौंठ §झाँसी§

संरक्षक	-	श्री मदन मोहन लिटौरिया
प्रधान	-	श्री ओम प्रकाश स्नातक
मंत्री	-	श्री हर प्रसाद आर्य जी
कोषाध्यक्ष	-	श्री परेश कुमार चचौधिया

आर्यसमाज मारहरा §एटा§

प्रधान	-	श्री तोताराम आर्य
मंत्री	-	श्री प्रद्युम्नेश शास्त्री
कोषाध्यक्ष	-	श्री शिवकुमार भारद्वाज

विश्व कल्याण रथ द्वारा प्रचार

विश्व कल्याण रथ मैनपुरी दि0 16-4-89 से निरन्तर आर्यसमाज का प्रचार कार्य कर रहा है। आर्यसमाज की स्थापना हेतु लोगों को प्रेरित कर रहा है तथा आर्य मित्र के नवीन ग्राहक भी बना रहा है।

जिन ग्रामों में रथ गया जनता अत्यधिक प्रभावित हुई। उपस्थिति भी अच्छी रही आर्यसमाज एवं ऋषि के विषय में जनता ने समझा व सराहा।

संवाददाता।

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला **शतवर्षीय वृहद इतिहास** लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें ।

-- सभामंत्री ।

गुरुकुल प्रभात आश्रम की प्रवेश परीक्षा

विशुद्ध प्राचीन परम्परा का एकमात्र शिक्षण केन्द्र गुरुकुल-प्रभात आश्रम, भोलाझाल, मेरठ §उ0प्र0§ की प्रवेश परीक्षा इस वर्ष 21 जून 1989 को होगी। परीक्षा दो चरणों में - प्रातः- 9 से 11 बजे तक लिखित एवं अपराह्न - 2 से 5 बजे तक मौखिक रूप में होगी। प्रत्येक अवस्था में परीक्षार्थी का 50%अंक प्राप्त करना अनिवार्य होगा। प्रवेशार्थी की आयु 10/11 तथा पंचम श्रेणी उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

:- अपने साथ लेखनी एवं अभ्यास पुस्तिका लेकर आवें। विशेष जानकारी हेतु 5-00रु0 धनादेश द्वारा भेजकर नियमावली मंगवा सकते हैं ।

- आचार्य
गुरुकुल प्रभात आश्रम
§टीकरी§
भोलाझाल मेरठ §उ0प्र0§

नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ में शिविर का आयोजन

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ नैनीताल में 17 मई से 24 मई तक शिविर स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती जी की अध्यक्षता में लग रहा है जिसमें स्वामी जगदीशवरानन्द, स्वामी-ओमानन्द पधार रहे हैं शिविरार्थियों के लिए भोजन आवास की व्यवस्था आश्रम की ओर की गई है। आर्य जनता को ज्ञात है कि नारायण स्वामी आश्रम, सभा का आश्रम है उसको सुचारु रूप से चलाने के लिए अधिक से अधिक धन भेजने की कृपा करें।

- सभामन्त्री।

आवश्यक सूचना

समस्त विद्यालयों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य/अध्यापकों को सूचित किया जाता है कि माननीय उच्च न्यायालय के आदेशानुसार अब विद्यालयों में श्रम विभाग का हस्तक्षेप न होगा। इच्छुक व्यक्ति न्यायालय के आदेश की प्रति 6/-रु0 भेज कर प्रधान कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ से प्राप्त कर सकते हैं ।

सभा मंत्री।

आवश्यक-सूचना

उत्तर प्रदेशीय समग्न आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि जो समाजें अपने वार्षिक चित्र जिला सभा को नहीं देना चाहती हैं अथवा जिला सभायें नहीं लेना चाहती हैं। वह अपने वार्षिक चित्र प्राप्तव्य धन सहित सीधे सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

-मनमोहन तिवारी§
मंत्री ।

मानवीय मूल्यों के उत्थान हेतु वेदों का ज्ञान जरूरी

बदायूँ, 22 अप्रैल। आज के भारतीय समाज को सही दिशा देने तथा मानवीय मूल्यों के गिरते स्तर को ऊँचा उठाने के लिये वेद प्रचार की परम आवश्यकता है। बिना वेद के ज्ञान तथा मानव जीवन अधूरा है। सच्चे अर्थों में जीवन दर्शन भी वेदों में मिलता है।

आर्यसमाज की एक सभा में बोलते हुए यह विचार आर्य प्रतिनिधि-सभा के सदस्य डा0 भानु प्रकाश आर्य ने व्यक्त किये।

उन्होंने पश्चिमी उ0प्र0 में वेद प्रचार योजना की जानकारी देते हुए कहा है कि आज हम सब भ्रमित हो गये हैं। सही मूल्य और सही आदर्श समाज से नष्ट होते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में वेद प्रचार के लिये एक योजना बनानी पड़ेगी तथा उसे एक व्यापक स्वरूप प्रदान करना होगा।

वेद प्रचार मण्डल पश्चिमी क्षेत्र के उपदेश विभाग के सदस्य पं0 नरेश चन्द्र आर्य ने कहा कि वेद हमें एक अच्छा जीवन जीने की प्रेरणा ही नहीं देते बल्कि हमें सतपथ का अनुगामी भी बनाते हैं। वेद प्रचार के लिये सभी लोगों का दायित्व है कि उसमें पूर्ण सेवा भाव से जुड़े रहें।

उपदेश विभाग के एक अन्य सदस्य पं0 रामचन्द्र आर्य ने कहा कि वेदों में जीवन को आनंदमयी बनाने तथा एक उचित मार्ग दर्शन के लिये सही चीजों का ज्ञान मिलता है। प्रत्येक व्यक्ति का धर्म है कि वेदों का अध्ययन करे तथा वेद दर्शन का अनुगामी बने।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के विशेष सदस्य महेन्द्रकुमार ने वेद प्रचार मण्डल की उपयोगिता पर बल देते हुए कहा कि अति शीघ्र ही प्रदेश कार्यालय से निर्देश प्राप्त होते ही योजना का कार्यरूप दिया जायेगा।

1- वैदिक आर्य मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री रामचन्द्र जन्मोत्सव आर्यसमाज बदायूँ में यज्ञ-भजन-प्रवचन-रामचरित्र परिचर्या, घोष के साथ हर्ष और उत्साह के वातावरण में मनाया गया। सर्वश्री राजेन्द्र कुमार, पं0 रामचन्द्र आर्य, डा0 नरेश चन्द्र आर्य, डा0 यज्ञपाल सिंह आर्य, देवीशंकर आर्य, श्रीमती श्यामवती देवी, श्रीमती दिनेश देवी गुप्ता, विद्यावती जिज्ञासु प्रवेश आर्या, पुष्पा, डा0 भगवत सरन, सुबोधसागर, वंशीधर जी, ने विचार गोष्ठी में भाग लिया।

2- आर्यजगत की त्यागमयी विभूति महात्मा हंसराज जी की 124वीं जयन्ती पर आर्यसमाज बदायूँ में विभिन्न कार्यक्रम हुए। महात्मा जी के प्रेरक जीवन से सीख लेने की अपील करते हुए भावभीनी श्रधांजलि अर्पित की गई।

3- आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तरंग सदस्य डा0 भानुप्रकाश जी ने आर्यसमाज बदायूँ में जनपद की आर्य समाजों के प्रतिनिधियों की आयोजित बैठक में जनपद में वेदप्रचार की सभा की योजना को व्यवहारिक रूप देनें हेतु प्रेरक विचार रखे। अतिशीघ्र ही इस दिशा में सक्रिय पग उठाए जायेंगे। बैठक में डा0 भानु प्रकाश के अन्तरंग सदस्य मनोनयन होने पर स्वागत किया गया। सभा को धन्यवाद दिया गया।

पं० गंगाप्रसाद स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती बने

कानपुर। आर्यसमाज दर्शनपुरवा के वार्षिकोत्सव पर पं0 गंगाप्रसाद शुक्ल शास्त्री- साहित्यरत्न- विद्यावाचस्पति ने ब्रह्मचर्याश्रम से 66वर्ष की अवस्था में 11 दिसम्बर 1988 को स्वामी गुरूकुलानन्द सरस्वती से सन्यास की दीक्षा लेकर "स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती" नाम ग्रहण किया। इनका वर्तमान पता है:-

स्वामी प्रज्ञानन्द सरस्वती, सेवासदन,
गुरूकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त बिठूर (कानपुर)।

ज्ञातव्य है कि स्वामी गुरूकुलानन्द ने एक सौ से अधिक विद्वजनों को सन्यासी बनाने का संकल्प लिया है तथा मकरसंक्रान्ति 1989 ई0 से अब तक सर्वस्वामी जपानन्द, गीतानन्द, शंकरानन्द, [illegible] राजयोगानन्द, मित्रानन्द और शारदायति को सन्यास की दीक्षा दे चुके हैं।

आनन्दराज, व्यवस्थापक,
गुरूकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त बिठूर (कानपुर)

भूपति भवन का झण्डा बदल गया

अमेठी (सुल्तानपुर) 9 मई। स्व. राजा रणंजय सिंह (अमेठी) की कोठी में तथा उनके महल में जब तक वह जीवित है उनके कट्टर आर्य समाजी होने के नाते सदैव ओ3म् अंकित भगवाध्वज आर्य समाज का झंडा फहराता रहता था। जब वह कांग्रेसी रहे तब भी ऐसा रहा और जब उनके पुत्र डा. संजय सिंह कांग्रेस से अलग रहे तो भी ऐसा रहा।

राजा साहब से जब यह पूछा जाता था तो वे कहते थे कि मेरे जीवनकाल में महल भूपति भवन में शराब तक सिगरेट पीने की कठोरता से मनाही है। इसीलिए टाउन एरिया अमेठी मे शराब की दूकान नहीं खुलने चाहिए।

अब परिस्थितियां बदल गईं। राजा साहब के समकालीन सभी कर्मचारी स्वामी प्रसाद शर्मा आदि की छुट्टी कर दी गई। वह सब अनाथ हो गये। यही नहीं राजा साहब के सिद्धांतों के विरुद्ध भूपति भवन में लगा जनता दल का हरे झण्डा भगवा झण्डा के स्थान पर कोई भी अब देख सकता है। भूपति भवन राजा साहब की वैदिक निष्ठा भावना का प्रतीक रहा है। भूपति भवन में भगवा झण्डा उतारे जाने एवं उसके स्थान राजनैतिक झण्डा लगाने पर आर्य समाजियों में अत्यन्त क्षोभ है। इस ओर डा. संजय सिंह जो स्वयं आर्य उप प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के शीर्षस्थ अधिकारी रहे हैं इधर तुरन्त ध्यान की आवश्यकता है।

शुभ विवाह

- आयुष्मती ममता पुत्री श्री गिरीशचन्द्र यादव ऐशबाग लखनऊ का पाणिग्रहण संस्कार चि0 कमला सिंह मुंसिफ-मजिस्ट्रेट गाजीपुर के साथ आचार्य श्री पं0 इन्द्रदेव पाठक एवं दयानन्द आर्ष गुरुकुल कृष्णपुर (फर्रुखाबाद) के पं0 राजकुमार आर्य के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा गोरखपुर के मन्त्री श्री के0एन0 सिंह आर्यसमाज गोरखपुर के प्रधान श्री रमेशचन्द्र यादव रेलवे के चीफ इन्जीनियर एवं अनेक गण्यमान्य नागरिकों ने चि0 वरवधू को मंगलमय आशीर्वाद दिया।

- आर्यसमाज कटरा बाजार (गोण्डा) के श्री स्वामी दयालआर्य के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित कर परमप्रभु परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा दुखी परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की।

श्री ब्रह्मदत जी "विद्यावाचस्पति" से सम्मानित हुए।

हरिद्वार गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का 82वाँ वार्षिक महोत्सव सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दीक्षान्त-समारोह की अध्यक्षता राजस्थान के पूर्व शिक्षा मन्त्री एवं संस्था के प्रधान डा0 गौरीशंकर-आचार्य ने की। केन्द्रीय पैट्रोलियम एवं गैस राज्य मन्त्री माननीय श्री ब्रह्मदत जी ने इस अवसर पर नवस्नातकों को दीक्षान्त भाषण देते हुए कहा कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली से ही भारतीय संस्कृति की रक्षा सम्भव है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की नवोदय विद्यालय पद्धति गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का ही आधुनिक रूप है। माननीय ब्रह्मदत जी को संस्था की सर्वोच्च उपाधि विद्यावाचस्पति से सम्मानित किया गया। भारत सरकार के सह शिक्षा सलाहकार डा0 रामकृष्ण शर्मा का अभिनन्दन डा0 हरिगोपाल शास्त्री (प्राचार्य) ने किया।

संस्था के मन्त्री डा0 प्यारे लाल चौहान ने संस्था के प्रगति विवरण को प्रस्तुत कर बताया कि गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर को दर्शनानन्द विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित करने का प्रस्ताव है।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे, जिसमें श्री योगेन्द्र सिंह एडवोकेट, डा0 यशवन्त सिंह, डा0 पूर्ण सिंह, प्रो0 वेदप्रकाश शास्त्री, डा0 गणेश दत शर्मा, राजकुमार शर्मा "तरूण" (पूर्व विधायक), श्री सच्चिदानन्द शास्त्री-(महामन्त्री-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली) आदि प्रमुख हैं। दीक्षान्त समारोह का संयोजन श्री हरीपाल सिंह एडवोकेट (कुलसचिव) ने किया।

- "आर्यसमाज राजाबाजार खड्डा का 56वाँ वार्षिकोत्सव 30 मार्च से 9 अप्रैल 89 तक बड़े धूमधाम से मनाया गया। आर्य विद्वान पं0 जयप्रकाश, पं0 गंगाधर शास्त्री, कुँवर महिपाल-सिंह ठा0 इन्द्रदेव सिंह इन्द्रकवि आदि के प्रेरणाप्रद ओजस्वी व्याख्यान व भजन का जनसामन्य में सुन्दर प्रभाव पड़ा।

- आर्यसमाज तरौंदा रनियाँ का वार्षिकोत्सव 24 से 26 मार्च 89 को सम्पन्न हुआ जिसमें कई विद्वानों के व्याख्यान हुए। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

- देद से प्राप्त 30-11-89 को ग्रामसूर {फरूर्खाबाद} में यज्ञ किया गया। जिसमें ओशयो जाति के 86 लोगों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया। यह कार्यवाही स्वामी सर्वानन्द जी सन्यासी यति मण्डल के प्रधान के तत्वावधान में किया गया जिसमें माँस-शराब आदि न खाने-पीने की प्रतिज्ञा की गई। महामंत्री श्री हिन्दू शुद्धि संरक्षण समिति हरियाणा श्री स्वामी सेवानन्द आदि की देखरेख में यह कार्य सम्पन्न हुआ।

उत्सव {बुलन्दशहर}

- आर्यसमाज अरनियाँ खुर्द {बुलन्दशहर} का 90वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 12-13-14 मई 1989 का होना निश्चित हुआ। जिसमें आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान- भजनोपदेशक तथा सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री आनन्दबोध सरस्वती जी भी पधार रहे हैं।

- आर्यसमाज मन्दिर फीरोजाबाद द्वारा आर्यसमाज स्थापना दिवस **रामनवमी महोत्सव** सफलता पूर्वक मनाए गये।

- आर्यसमाज झबरेड़ा {हरिद्वार} में निर्मित 10 दुकानों के उद्घाटन समारोह 26 मार्च 89 को मुख्य अतिथि श्री पं0- इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने किया तथा आपने सामयिक व्याख्यान दिया साथ ही उनके साथ पधारे हुए श्री जयन्त कुमार पाण्डे का व्याख्यान भी प्रभावशाली रहा सुनकर श्रोता मंत्रमुग्ध हो गए। मुख्य अतिथि का भव्य स्वागत जिलासभा के प्रधान श्री प्रकाश चन्द्र जी ने किया। सभा में कई अन्य वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

- आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार राज्य के प्रधान पं0 श्रीशचन्द्र शास्त्री जी का निधन 11 अप्रैल 89 को हो गया। दिवंगत आत्मा की सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिए परमप्रभू परमात्मा से प्रार्थना की गई।

- आर्य कुमार सभा . गिकलों द्वारा नगर में साप्ताहिक पारिवारिक सत्संग प्रत्येक रविवार को सायं 6 बजे होता है कई वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किए तथा आर्य कुमारों को उत्साहित किया स्थानीय जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

धर्म परिवर्तन की विश्वव्यापी योजना के समूलोच्छेदनार्थ

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा

गंगा के रमणीक तट ब्रजघाट पर आर्यसमाज मन्दिर में स्थित प्रकाश वीर शास्त्री भवन में---

वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट

जिला गाजियाबाद की स्थापना

प्रवेश नियम

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने वैदिक धर्म उपदेशकों, पुरोहितों तथा धर्मशिक्षकों का निर्माण करने के लिए पं0 प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति भवन, ब्रजघाट/गाजियाबाद/ में उक्त महाविद्यालय की स्थापना कर दी है जिसमें /क/ पाठ्यक्रम अवधि दो वर्ष, /ख/ निःशुल्क प्रशिक्षण /ग/ सफल 'उत्तीर्ण/ स्नातकों को उचित वेतन पर नियुक्ति तथा /घ/ संख्या सीमित रहेगी।

प्रवेशार्थी /क/ बी0ए0/संस्कृत सहित/ अथवा उत्तर मध्यमा एवं समकक्ष संस्कृत उपाधि प्राप्त /ख/ अधिकतम 25 वर्षीय एवं अविवाहित तथा /ग/ वैदिक धर्म प्रेमी हो।

महाविद्यालय /ब्रजघाट/ एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश /5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ/ के कार्यालयों से नियमावली एवं प्रवेशपत्र प्राप्त कर दिनांक 31-5-89 तक विद्यालय-कार्यालय में पहुँचावें। 15 जून मध्याह्न एक बजे विद्यालय में साक्षात्कार तथा एक जुलाई से शिक्षा आरम्भ हो जाएगी।

सम्पर्क सूत्र

स्वामी जीवनानन्द सरस्वती	डा0 विजय भूषण आर्य
आचार्य	अधिष्ठाता/महाविद्यालय/
वे0ध0प्र0 महाविद्यालय, ब्रजघाट।	द्वारा आर्य समाज, हापुड़।

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ
कोई मासिक शुल्क नहीं

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल करतारपुर जिला जालन्धर {गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थाई मान्यता प्राप्त} में नये छात्रों का प्रवेश 10 जून -89 से आरम्भ हो रहा है। अन्य विद्यालयों की भाँति पाठ्यक्रम तथा संस्कृत अनिवार्य रूपसे पढ़ाई जाती है।

निःशुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, सात्विक भोजन, दूध व आवास की बिना किसी मासिक शुल्क के समुचित व्यवस्था, शुद्ध दूध की उपलब्धि के लिए गुरुकुल की अपनी गऊशाला इस गुरुकुल की अपनी विशेषताएं हैं।

प्रवेश के लिए छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा पांच पास होना आवश्यक है। गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आस्था रखने वाले सज्जन मिलें अथवा पत्राचार करें।

आचार्य
श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल, करतारपुर
जिला -जालन्धर- 144801 {पंजाब}

-योग प्रशिक्षण एवं दर्शन अध्यापन-

वैदिक साधनाश्रम, तपोवन देहरादून में 15 मई से लगभग डेढ़ मास तक क्रियात्मक योग प्रशिक्षण तथा योगदर्शन अध्यापन का कार्य पूज्य स्वामी जी के निर्देशन में होगा। स्वामी जी स्वास्थ्य लाभ की दृष्टि से तपोवन में रहेंगे। यम· नियम का पालन करने वाले योग जिज्ञासु इस कार्यक्रम से लाभ उठावें।

दर्शन योग विद्यालय में प्रवेश लेने के इच्छुक ब्रह्मचारी भी उपर्युक्त तिथियों में सम्पर्क करें।

ज्ञानेश्वरार्यः
दर्शन - योग - विद्यालय

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
ज्येष्ठ कृष्ण ।
21 मई रविवार, 1989 ई0

आर्य मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज रुड़की को विद्वान, सुयोग्य कर्मठ, पुरोहित की आवश्यकता है। दक्षिणा योग्यता एवं अनुभव के आधार पर प्रदान की जायेगी निम्न पते पर सम्पर्क अथवा पत्र व्यवहार करें।

सत्य प्रकाश गुप्त
मंत्री,
आर्यसमाज रुड़की, {सहारनपुर}

आवश्यकता है

आर्यसमाज मन्दिर हेतु एक पुरोहित, एक भजनोपदेशक तथा एक सेवक की, रहने का स्थान, प्रकाश तथा जल नि:शुल्क उपलब्ध है। गृहस्थी के रहने हेतु स्थान नहीं है। स्वीकृत मानदेय/वेतन अपने आवेदन में अवश्य लिखें। पता- श्री रेवतीरमण रस्तोगी, एडवोकेट 65, राजाबाजार, लखनऊ।

दयानन्द बाल सदन में बालकों का प्रवेश

श्री मद्दयानन्द बाल सदन मोतीनगर लखनऊ {अनाथालय} में 6 बालकों के प्रवेश हेतु प्रार्थना पत्र आमन्त्रित हैं। निराश्रित, नीरोग, शिष्ट 7 से 10 आयुवर्ग के बालक अपनी शैक्षिक योग्यताओं तथा आर्यसमाज की संस्तुति सहित 30 जून 1989 तक प्रार्थना-पत्र प्रेषित करें। भोजन, आवास शिक्षा आदि पूर्ण नि:शुल्क।

- जगत नारायण, उपमन्त्री,
श्रीमद्दयानन्द बाल सदन, मोतीनगर, लखनऊ-4

नवीन आर्यसमाज की स्थापना

- दिनांक- 21 मार्च 1989 को होली के पावन अवसर पर 12 सभासदों की विद्यमानता में आर्यसमाज मरगार्पी {एटा} की श्री चन्द्रप्रकाश दिवेदी के प्रयास से स्थापना हुई जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए ।

प्रधान	-	श्री श्यामलाल जी पंचौरी
मंत्री	-	श्री किशोर सिंह
कोषाध्यक्ष	-	श्री चन्द्रप्रकाश दिवेदी

- आर्यसमाज मुगलसराय का 71वाँ वार्षिकोत्सव दि0 29, 30, 31 मई व 1 जून 1989 आर्यजगत के उच्चकोटि के विद्वान, मनीषी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, उत्तमचन्द "शरर" आदि पधार रहे हैं। जनता से प्रार्थना है कि वह अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

आर्य स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी संगठन

श्री रणजीत सिंह जी संयोजक
श्री महेन्द्र सिंह जी अध्यक्ष
श्री राम चन्दर जी मंत्री
श्री परस राम जी आजाद उपमंत्री
श्री गंगा राम जी कोषाध्यक्ष

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस '5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रिंटिंग लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० 2241/57 | घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85

ज्येष्ठ कृष्ण 8, रविवार, संवत 2046 वि०, दिनांक 28 मई 1989



आर्याव्रता विसृजन्तो अधिक्षमि

— ऋग्वेद 10/65/11

परमात्मा व्रतपति है उसी के समान आर्यों का जीवन भी व्रतस्वी होता है। वे स्वयं व्रत धारण करने वाले होते हैं तथा अन्यों को भी व्रती बनाते हैं।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम० ए०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु० 251/-
वार्षिक	रु० 30/-
विदेश में	15 पौंड
एक प्रति	1-00रु० मात्र

वर्ष	92
अंक	21

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का निर्वाचन सर्वसम्मति से सम्पन्न

जालन्धर दोआबा कालेज, जालन्धर के मुख्य सभागार में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के निर्वाचन के लिए बड़ी संख्या में प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती 6 मई को प्रातः जालन्धर पहुँच चुके थे, उन्होंने पंजाब में आर्य समाज के सशक्त संगठन के निर्माण के लिए बहुत बड़ा प्रयत्न किया और सबको आपस में मिलाकर सौहार्दमय वातावरण में सर्वसम्मति से पंजाब सभा का चुनाव कराकर सबको आश्चर्य में डाल दिया। यह सब स्वामी जी की सूझबूझ व दूरदर्शिता का ही परिणाम है जिसके कारण पंजाब में आर्य समाज के संगठन का नया अध्याय प्रारम्भ हुआ।

स्वामी जी की अध्यक्षता में प्रधान पद के लिए श्री सेठ योगेन्द्र पाल ने श्री-वीरेन्द्र जी का नाम प्रस्तुत किया तो हर्ष ध्वनि के साथ सर्वसम्मति से प्रधान श्री वीरेन्द्र-जी चुने गए और शेष अधिकारियों और कार्यकारिणी के गठन का उन्हें अधिकार दे दिया गया।

भोजनोपरान्त श्री वीरेन्द्र जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए पदाधिकारियों की निम्न प्रकार घोषणा की:-

पं० ब्रह्मदत्त शर्मा	उप प्रधान
श्री सेठ योगेन्द्रपाल	उप प्रधान
श्री हरबंशलाल शर्मा	उप प्रधान
श्री सरदारी लाल आर्य रत्न	उप प्रधान
श्री रणवीर भाटिया	महामंत्री
श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट	मंत्री
श्री अश्विनी कुमार एडवोकेट	उपमंत्री
श्री ओम प्रकाश पासी	उपमंत्री
डा० पसरीचा	कोषाध्यक्ष
श्री बालमुकुन्द कोचर	आर्य वीरदल अधिष्ठाता

उक्त सर्वसम्मत चुनाव से पंजाब के आर्यसमाजी क्षेत्रों में व्यापक हर्ष और प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है। हमें आशा है पंजाब के आर्य बन्धु भविष्य में पुरानी बातों को भूलकर आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ बनाने में अपना सहयोग करेंगे।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों तथा कार्यकारिणी सदस्यों को बधाई व शुभ कामनाएं भेजती है।

(इन्द्रराज)
प्रधान

(मनमोहन तिवारी)
सभामंत्री।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज!
आर्यसमाज । आर्यसमाज ।!

- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ ज्येष्ठ कृष्ण 8, संवत 2046 वि0, 28 मई 1989
दयानन्दाब्द 165, सृष्टि संवत 1972949090

उन्नति का मूल

ब्रह्मचर्य

------- और मैने एक स्वप्न देखा है-- "युवावस्था की ओर बढ़ता हुआ एक तेजस्वी बालक मातापिता द्वारा दिए हुए शादी के प्रस्ताव को ठुकरा देता है, बहुत विवश करते हैं तो भाग खड़ा होता है-- क्यों? इसलिए कि उसे मृत्यु पर विजय प्राप्त करनी है जो केवल ब्रह्मचर्य से ही सम्भव है"। ब्रह्मचर्येण देवाः तपसा मृत्युमुपाघ्नत" कहीं पढ़ लिया है।

------- और उसी स्वप्न में मैने देखा है-- "एक वीतराग परमहंस सन्यासी व्याख्यान समाप्त कर शीतलपाटी पर अत्यन्त शान्त बैठा हुआ है। एक व्यक्ति पूछता है- महाराज!, क्या आपके पास कामदेव नही आता? कैसा सहज उत्तर है-- "नहीं, आता है, पर मुझे कार्य में व्यस्त देखकर दरवाजे से ही लौट जाता है। कहावत कितनी सटीक है-"खाली मस्तिष्क शैतान का घर"।

------- और उसी स्वप्न में मैं देख रहा हूँ-- "एक गली में दो बलिष्ठ भैंसे लड़ रहे हैं। मार्ग अवरूद्ध है, किसी की हिम्मत नही कि उन्हें अलग कर सके। एक भगवावेश धारी आदित्यब्रह्मचारी उन्हें सींग पकड़कर दूर दूर कर देता है- मार्ग खुल जाता है, सब प्रसन्न हैं, आश्चर्य चकित हैं। कविवर नाथूराम शर्मा- की वाणी फूट पड़ती है --

ब्रह्मचर्य बल तेज से था शरीर भरपूर
दो लड़ते भैंसे किए सींग पकड़कर दूर।

------- और उसी स्वप्न में मैं आगे बढ़ता जा रहा हूँ। - "प्रज्ञाचक्षु के नियमों में कहीं अपवाद नही है। वह सिर्फ एक ही बार पढ़ाते हैं। उत्तर न देने पर आश्रम से बाहर--कैसा कठोर नियम है?। एक दिन एक प्रश्न पूछा - दयानन्द इसका उत्तर दे? दयानन्द चुप है,--- उत्तर स्मरण ही नही आ रहा है, बहुत स्मरण किया पर नही स्मरण आ रहा है---उफ्? आश्रम से निकाल दिया जाऊँगा।!!!
भागकर जमुना की रेती में ध्यान लगाकर बैठ गया, याद किया उसको जो निर्मलबुद्धि देने वाला है, जो बुद्धियों का प्रेरक है। शायद बच्चे की तपस्या देखकर प्रसन्न हो गया था उस दिन क्योंकि इस मरणासन्न आर्यजाति में प्राणफूंकने के लिए किसी को तैयार करना था, कान में चुपके से उत्तर बता गया-- और फिर चरण पकड़कर दयानन्द कहता है -- गुरुदेव! यही उत्तर है न? गुरुदेव की आँखों में हर्ष के आँसू आ जाते हैं। कलेजे से लगाकर कहते हैं -- वत्स दयानन्द? तू सचमुच कुशाग्र है, निर्मल है, ब्रह्मचारी है, तपस्वी है - तुझे सम्पूर्ण ज्ञान हस्तामलक होगें- मेरा आशीर्वाद है।" ब्रह्मचर्य की ऐसी ही महिमा है।"

------- और फिर मैने क्या देखा - "सिंह की तरह दहाड़ते हुए उस सन्यासी को"। राजमहल में गरज रहा है राजन्! यह क्या? तू सिंह है, कुतिया के पीछे- धिक धिक्। वैश्या की पालकी को कन्धा लगा रहा है-- धिक धिक। और फिर उस नन्ही जान के दिए जहर के प्याले को पीकर सो जाता है उस आनन्दमयी माँ की गोद में जाने के लिए जहाँ से एक दिन इस धरातल पर हमारे लिए आया था और हमें अमृत पिलाकर नही नही जिलाकर चला गया था-

आनन्द सुधासार दया कर पिला गया
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।

और अब मैं देख रहा हूँ उस स्वप्न में - "ऊषा की किरणें फूटने ही वाली है। अज्ञान और अविद्या की तमिस्रा से आच्छन्न वैदिक-रवि अब चमकने ही वाला है। कोई योगी अज्ञान की कलुषकालिमा को अपने ज्ञान की पीयूषधारा से धवल बना गया है। और हम हैं कि सोए ही पड़े हैं निस्तेज, ब्रह्मचर्यहीन,। प्रभात की रणभेरी भी नही सुन पा रहे हैं।

मेरे स्वप्न का नायक ब्रह्मचारी है! आदित्य ब्रह्मचारी!! अखण्ड ब्रह्मचारी !!!!
उसने कहा है उन्नति के लिए मनुष्य को नैष्ठिक ब्रह्मचारी बनना पड़ेगा, यह आत्मिक उन्नति की प्रथम सीढ़ी है। अपने बच्चों को गुरुकुलों में पढ़ाओ उन्हें नैष्ठिक ब्रह्मचारी बनाओ, ज्ञानाग्नि की समिधा स्वयमेव प्रज्वलित हो जायेगी। आज हम ब्रह्मचर्य एवं वीर्यरक्षा के महत्व को भूलते जा रहे हैं। उन्मुक्त यौन विचरण की स्वच्छन्दता ने समाज को कितना दूषित कर दिया है- इसकी कल्पना मात्र से ही रोगटे खड़े हो जाते हैं। मौत की नींद सुलाने वाला ला इलाज एड्स का खूनी शिकंजा इसी ब्रह्मचर्य-हीनता का दुष्परिणाम है जिसने विश्व के लगभग सभी देशों को अपनी चपेट में ले लिया है। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध वैज्ञानिक सर डेविड कोक्स ने अपनी रिर्पोट में कहा है कि यदि वेश्यागमन, समलैंगिक सम्भोग नशीली सुईयों तथा नशीले पदार्थों का सेवन एवं स्वच्छन्द यौन विचरण पर सख्ती से प्रतिबन्ध न लगाया गया तो इक्कीसवीं सदी तक पहुँचते-पहुँचते विश्व के करोड़ों लोग इस महा भयानक बीमारी से ग्रस्त होकर मृत्यु के मुख में समाजायेगें। आज विज्ञानियों के लिए सबसे अधिक चिन्ताजनक बात यह है कि तमाम प्रचार अभियान के बावजूद लोग ब्रह्मचर्य के महत्व को नही समझ रहे हैं। ऐसे समय में हम विश्व को वेदमाता की अमरवाणी पुनः सुनाना चाहते हैं कि यदि मृत्यु को जीतना चाहते हो,शरीरिक आत्मिक सामाजिक उन्नति चाहते हो तो ब्रह्मचर्य का पालन करो।

मरणं बिन्दुपातेन जीवनं बिन्दुधारणात् ।

हे अग्नि अतिथि

समिदाधान मन्त्र- 2

ओ३म् समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयता-- तिथिम् । आस्मिन्हव्या जुहोतन स्वाहा। इदमग्नये - इदन्नमम।। ओ३म् सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जातवेदसे स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे - इदन्न मम ।।

हे अग्नि अतिथि बन कर आओ, अन्नादि हव्य का पान करो।
हे अतिथि रूप प्रिय अग्नि मान्य, इस घृत समिधा का पान करो।
यह यज्ञ कुण्ड में की स्थापित
समिधा पाकर हुई प्रज्वलित
घृत खाकर जो ज्वाल बन गई
अग्नि हो उठी तीव्र प्रकाशित।
अन्नादि द्रव्य तब खाती है, यजमान हव्य का दान करो।
हे अग्नि अतिथि बन कर आओ, अन्नादि हव्य का पान करो।
प्रकट अग्नि जो हुई प्रज्वलित
प्राप्त तीव्र घृत हुई प्रकाशित
हो ओ३म् हमारा ग्रहण होम
कर दो जीवन धारा शोधित
हे अतिथि अग्नि दो बोध हमें, जीवन में जागृत ज्ञान करो।
हे अग्नि अतिथि बन कर आओ, अन्नादि हव्य का पान करो।।
द्रव्य तुम्हारा नही हमारा
तुम्हें समर्पित हव्य तुम्हारा
भाग्य हमारा ज्ञात तुम्हें है
प्रभुवर दो सम्बोध सहारा ।
सत्कार पूर्ण घृत समिधा का, हे अतिथि अग्नि परिपान करो।
हे अग्नि अतिथि बन कर आओ, अन्नादि हव्य का पान करो।।

- देवनारायण भारद्वाज,
आजमगढ़ ।

अगंरेजी हटाओ

संस्कृति से भाषा प्रभावित होती है और भाषा से संस्कृति

—वेदप्रताप वैदिक

जब किसी राष्ट्र पर एक विदेशी भाषा हावी होने लगती है, तो उस राष्ट्र की संस्कृति के लिए सबसे बडा खतरा उपस्थित हो जाता है संस्कृति क्या है? हमारे पूर्वजो ने विचार और कर्म के क्षेत्र मे जो कुछ भी श्रेष्ठ किया है, उसी धरोहर का नाम संस्कृति है. यह संस्कृति अपनी भाषा के जरिये जीवित रहती है यदि भाषा नष्ट हो जाये, तो संस्कृति का कोई नामलेवा—पानीदेवा नही रहता संस्कृति ने जिन आदर्शों और मूल्यो को हजारो सालो के अनुभवो के बाद निर्मित किया है, वे विस्मृति के गर्भ मे विलीन हो जाते हैं भाषा संस्कृति का अधिष्ठान है संस्कृति भाषा पर टिकी हुई है

मैं तो इससे भी एक कदम आगे जाना चाहता हू. मैं चाहता हू कि हमारे पूर्वजो ने जो कुछ बुरा सोचा या किया है, वह भी हमारे सामने होना चाहिए, इसे आप चाहे विकृति कह लीजिए इससे भी हम अपना भविष्य सुधार सकते हैं यह भी भाषा की मोहताज है, अपनी संस्कृति और विकृति दोनो से परिचित होने के लिए अपनी भाषा की धारा निरतर बहती रहनी चाहिए. अगर अपनी भाषा नही होगी, तो हमे न तो अपनी अच्छाइयो का पता चलेगा और न ही बुराइयो का

-आज जो बच्चे अनिवार्य अगरेजी पढ रहे हैं और यह समझ कर पढ रहे हैं कि वह उत्कृष्ट भाषा हैं, उनका ध्यान भारत की विरासत मे हट रहा है वे शेक्सपियर पढेगे, मिल्टन पढेगे, शैली पढेगे, लेकिन कालिदास, तुलसी, सूर, कबीर, बिहारी उनके लिए अजनबी बन जायगे हो सकता है कि 'कॉन्वेट' की अगरेजी पुस्तको मे शकुतला के बारे मे या भरत के बारे मे या कन्हैया की रासलीला के बारे मे थोडा बहुत पढा दिया जाये लेकिन जब य बच्चे बडे होगे, तो ये अपनी प्यास बुझाने के लिए ग्रथो को मूल रूप मे पढना चाहेंगे घटना के बारे मे विस्तार मे जानना चाहेगे मगर जानेग कैसे? ये सारे ग्रथ अगरेजी मे तो नही लिखे गये है तब क्या होगा?

ये बच्चे बडे हो कर या तो अपने ही ग्रथो के अगरेजी अनुवाद पढेगे और राम को रामा कृष्ण को कृष्णा' तथा कुती को 'कुटी' कहेगे या फिर इनका ध्यान पूरी तरह से अगरेजो की संस्कृति का प्रतिबिंबित करनेवाले अगरेजी ग्रथो की ओर चला जायेगा शेक्सपियर के 'हेमलेट' के हर वर्ष नये संस्करण निकलेगे और बाणभट्ट की 'कादम्बरी' को दीमक खाया करेगी हॉब्स का 'लेवियाथन' गर्म पकोडो की तरह बिकेगा ओर कोटिल्य का 'अर्थशास्त्र' बासी डबलरोटी की तरह सडता रहेगा

मैं हेमलेट या मेकबेथ पढने का विरोधी नही हू मै तो चाहता हूँ कि आधुनिक भारत के नौजवान—दांते, अरस्तू, शेक्सपियर, हीगल कामू, सार्त्र, तॉल्सतॉय, येवतुशेन्को सभी का रस पीने लायक बने लेकिन यह नही भूलना चाहिए कि भाषा रेल की पटरी की तरह होती है जिधर पटरी जाती है रेल भी उधर ही जाती है अगर पटरी नयी दिल्ली की तरफ जा रही है तो लाख कोशिश करने के बावजूद रेल बबई की तरफ नही मुड सकती आज हिंदुस्तान की शिक्षा की रेल को अगरेजी की पटरी पर दौडाया जा रहा है यह रेल कहा जायगी? यह रेल गगा के घाट पर या कालिंदी के कूल पर या अयोध्या की गलिया म हजार साल की यात्रा के बाद भी कभी नही आयगी यह जायेगी और सीधी जायेगी टेम्स के किनारे या ट्राफलगर स्क्वेयर या बकिंघम राजमहल के पास! क्या? क्योंकि वह अगरेजी की पटरी पर दौड रही है याद रखिए, भाषा जितनी अच्छी सेविका है, वह उतनी ही कठोर स्वामिनी भी है

शेष पृष्ठ ११ पर

आज हिंदुस्तान की शिक्षा की रेल को अंगरेजी की पटरी पर दौड़ाया जा रहा है. यह रेल कहां जायेगी? यह रेल गंगा के घाट पर या कालिंदी के कूल पर या अयोध्या की गलियों में हजार साल की यात्रा के बाद भी कभी नहीं आयेगी. यह जायेगी और सीधी जायेगी टेम्स के किनारे या ट्राफलगर स्क्वेयर या बकिंघम के राजमहल के पास! क्यों? क्योंकि वह अंगरेजी की पटरी पर दौड़ रही है. याद रखिए, भाषा जितनी अच्छी सेविका है, वह उतनी ही कठोर स्वामिनी भी है.

भारत में ज्यों ही बादल मंडराये कि मन-मयूर नाचने लगता है. मेघदूत की रचना होती है. हमारा देश सूरज का देश है, धूप का देश है, यूरोप धूप के लिए तरसता है और हम बादलों के लिए! अब बताइए अंगरेजी में कविता लिखनेवाला हिंदुस्तानी क्या करेगा? अगर वह बादलों की तारीफ करेगा, तो उसकी कविता उसके पश्चिमी स्वामियों के गले नहीं उतरेगी और अगर वह कड़ाके की धूप पर गीत लिखेगा तो घटाओं पर झूमनेवाला उसका दिल उसका साथ कहां तक देगा?

अध्यात्म सुधा

आत्म-तत्व-चिन्तन

(श्री पं0 सूर्यबली पाण्डेय, जौनपुर)

इस जगत में दो प्रकार की सत्तायें विद्यमान दीखती हैं, जिनको क्रमशः जड़ और चेतन के नाम से विख्यात किया जाता है। जड़ जगत को प्राकृतिक संसार और चेतन को आत्मा नाम से पुकारा जाता है। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो जड़ और चेतन में भेद करने में संकोच करते हैं। उनका कथन है कि जड़ से ही चेतन का परिस्थिति विशेष में प्रादुर्भाव हो जाता है। वास्तव में मूल तत्व जड़ ही है। किन्तु उनका यह कथन तर्क और युक्ति दोनों के विपरीत है। जब जड़ है तब निश्चय ही उसमें चेतना का अभाव है। चेतनत्व के अभाव के कारण ही उसकी संज्ञा जड़ है। फिर अभाव से भाव का उत्पन्न होना त्रिकाल में असम्भव है। अस्तु जब चेतनत्व में जड़त्व तथा जड़त्व में चेतनत्व का सर्वथा अभाव है तब वे परस्पर एक दूसरे के उत्पादक नहीं हो सकते। इसी कारण जड़ और चेतन की सत्ता एक दूसरे से सर्वथा पृथक और सर्वथा स्वतन्त्र है।

अब देखना है कि जो चेतन अथवा आत्मा पांच भौतिक संघात से सर्वथा पृथक और स्वतन्त्र है उसका लक्षण अथवा उसकी पहचान क्या है? प्रसिद्ध मनोविज्ञान वेत्ता प्रो0 जी0एफ0 स्टाउट का कथन है कि मनुष्य जब संसार के पदार्थों के निरीक्षण में व्यस्त रहता है तब उसके फलस्वरूप उसकी जानकारी बढ़ती है। उस जानकारी को पाकर प्राणी कभी हर्षित और कभी खिन्न होता है। पुनः उस हर्ष की वृद्धि करने अथवा खिन्नता को हटाने के लिये क्रियाशील होता है। इस प्रकार एक ही व्यक्ति में ज्ञान की उपलब्धि, होती है जिसके अनुसार वह सुखी व दुःखी होता है। अर्थात भोगता है और उसी भोगवृत्ति के उत्कर्षापकर्ष के लिये क्रियाशील होता है। इसी को स्टाउट अपने शब्दों में कहता है कि "प्रत्येक मानसिक व्यापार के विश्लेषण में ज्ञान वृत्ति, भोग वृत्ति और क्रियावृत्ति तीन स्पष्ट वृत्तियां मिलती हैं। परन्तु ये अभिन्न वस्तुएं हैं। वे एक दूसरे से अलग नहीं मिलती"। इस प्रकार मानसिक व्यापार करने वाली सत्ता जीवात्मा के अन्दर तीन बातें अवश्य होंगी। जिन्हें हम ज्ञान, भोग और क्रियाशीलता का नाम देंगे। इस प्रकार जीवात्मा ज्ञान, भोग और कर्म वाला कहलाता है। पर जीव के ज्ञान, कर्म और भोग की सीमा है। उसके अन्दर न निःसीम ज्ञान है न निस्सीम भोग और न निस्सीम कर्म। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वह भी स्वयं निस्सीम नहीं है। इसलिये हम उसको परिच्छिन्न ही कहेंगे। परिच्छिन्न की शक्ति, ज्ञान, भोग और क्रियाशीलता सभी परिच्छिन्न अर्थात् सीमित होंगी। परिच्छिन्न सदा स्थान विशेष (एकस्थानी) वाला होता है। स्थान विशेष वाला यदि एक होगा तो उससे सर्वत्र का काम नहीं चल सकता। इसलिये उसकी संख्या भी अनन्त होगी। इसी कारण शास्त्र ने जीव का लक्षण करते हुए लिखा-"ज्ञातृत्व भोक्तृत्व कर्तृत्वानणुः"। अर्थात् जीवात्मा वह अणु है जिसमें जानने, क्रिया करने और सुख-दुख भोगने की शक्ति है। शास्त्र कृत यह लक्षण केवल मनुष्य पर ही नहीं, समस्त सजीव प्राणी पर लागू होता है। कीट पतंगों से लेकर सृष्टि, कुल चूड़ामणि मानव प्राणी तक सब पर यह लक्षण घटित होता है। क्योंकि सबके अन्दर विभुत्व (व्यापकता) का अभाव और अणुत्व का भाव है और प्रत्येक में सुख-दुख, ज्ञान और प्रेरणा भी पाई जाती है। इसी कारण महर्षि व्यास ने जीव की पहचान बतलाते हुए लिखा - "ज्ञोऽत एव" वेदा·2·3·18 अर्थात जीव ज्ञाता होता है और "कर्त्ता शास्त्रार्थवत्वात" वेदा·2·3·33 अर्थात उस में कर्तृत्व शक्ति पाई जाती है। इसी आधार पर पश्नोपनिषद् के ऋषि ने कहा- "एष हि द्रष्टा, स्प्रष्टा, श्रोता, मन्ता, बोद्धा, कर्त्ता, विज्ञानात्मा पुरुषः"। अर्थात यह ज्ञानी आत्मा देखने वाला, छूने वाला, सुनने वाला, मानने वाला, समझने वाला और करने वाला है। इन्हीं के अन्दर उक्त तीनों लक्षणों का समावेश हो जाता है।

न्याय शास्त्र प्रणेता महर्षि गौतम ने भी जीवात्मा का लिंग (पहचान) बताते हुए लिखा है-"इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुख ज्ञानानि आत्मनों लिंगम्"। (न्या·1·1·10) अर्थात् जिस सत्ता के अन्दर भले को प्राप्त करने की अभिलाषा हो, बुरे से लगाव न रखने की भावना हो, उस बुरे को अपने समीप से दूर हटाने का प्रयास पाया जाता हो, जो सुख, दुख का भोगने वाला हो और जिसके अन्दर ज्ञान हो वही जीवात्मा है। उक्त छः पहचान बतलाई गई जिनमें इच्छा, द्वेष और प्रयत्न को कर्तृत्व के अन्दर, सुख-दुख को भोक्तृत्व के अन्दर तथा अन्तिम ज्ञान को ज्ञान के अन्दर मानकर कर्त्ता, भोक्ता, और ज्ञाता ही आत्मा को मानना पड़ेगा। इसी को वैशेषिक दर्शनकार महर्षि कणाद ने निम्नलिखित शब्दों में व्यक्त किया है- "प्राणापान, निमेषोन्मेष, जीवन, मनोगति, इन्द्रियान्तर विकाराः, सुख दुखेच्छाद्वेष प्रयत्नश्चात्मनों लिंगानि"। (वै·3·2·4) अर्थात् जो श्वास लेता और निकालता हो, आंखें खोलता और बन्द करता हो, जिसमें जीवनी शक्ति हो, जिसके द्वारा मानसिक व्यापार होता हो, जिसकी साधन भूत इन्द्रियों में एक का विकार दूसरे में हो सकता हो, और जिसके अन्दर सुख, दुख, इच्छा, द्वेष और प्रयत्न ये 12 बातें पाई जाती हों वह जीवात्मा है। महर्षि गौतम ने 6 लक्षण बतलाये। महर्षि कणाद ने 12 किन्तु इनका 12वां समावेश उन्हीं छः में और उन 6 का समावेश उन्हीं पूर्व कथित कर्तृत्व ज्ञातृत्व और भोक्तृत्व में हो जाता है। इस प्रकार जो जीवात्मा शरीर अथवा जड़ संसार से भिन्न है वह लक्षण और लिंग द्वारा कर्ता, भोक्ता और ज्ञाता भी सिद्ध होता है।

यह स्पष्ट हो गया कि शरीर (जड़ जगत) और जीव (भिन्न-भिन्न) पदार्थ हैं और यह भी स्पष्ट हो गया कि जीव जगत्त में कर्ता, भोक्ता और ज्ञाता के रूप में विद्यमान होकर कृत कर्मों का उपभोग करते हुए भविष्य के लिये कर्म करने में निरत है। अब यह विचारणीय है कि इस जड़ शरीर का जीव के साथ क्या संबंध है। साथ ही यह भी विचारणीय है कि जीव के साथ शरीर का यह संबंध कब से है? इस संबंध में कुछ विचार करने के पूर्व यह देख लेना आवश्यक है कि शरीर क्या है? वास्तव में कर्त्ता, भोक्ता और ज्ञाता जीव के लिये साधन रूप में यह शरीर प्राप्त होता है। यह शरीर तीन प्रकार का होता है। इन तीन शरीरों को क्रमशः स्थूल सूक्ष्म और कारण वा लिंग शरीर कहते हैं। तीनों की रचना के संबंध में भी शास्त्र ने सम्यक् विवेचन किया है। जीव इन्हीं तीनों शरीरों से युक्त होने पर क्रियारत होता है। इनमें से प्रथम स्थूल शरीर है। स्थूल शरीर के संबंध में महर्षि कपिल ने सांख्य दर्शन में कहा है- "पांच भौतिको देहः" (सा0 3·17) अर्थात् यह स्थूल शरीर पांच भूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश) के यथा क्रम संघात से बना है। कुछ आचार्यों ने आकाश को किसी कर्म का आरम्भक न मान केवल चार भूतों से ही बना हुआ माना है। कुछ आचार्यों ने केवल एक तत्व प्रधान शरीर माना है। उनका कथन है कि पृथिवीस्थ प्राणियों का शरीर पृथिवी प्रधान, सूर्यस्थ प्राणियों का तेजस प्रधान, अन्तरिक्षस्थ प्राणियों का वायु प्रधान आदि शरीर होता है। जो हो, पर शास्त्रीय मर्यादा में पांच भौतिक शरीर की मान्यता मुख्य है। यह स्थूल शरीर माता और पिता की ओर से प्राप्त होता है। यथा- "मातापितृजं स्थूलं प्रायशः इतरन्न तथा" (सा· 3-7) अर्थात् स्थूल शरीर प्रायः माता और पिता की देन है। अन्य शरीर (सूक्ष्मादि) ऐसे नहीं हैं। सूत्र में प्रायशः शब्द का प्रयोग इसलिये किया गया है कि सर्गारम्भ में जब बिना माता पिता के अमैथुनी सृष्टि होती है उस समय स्वयमेव परमात्मा की व्यवस्था से स्थूल शरीर मिला करता है। उसमें माता-पिता कारण नही होते। आज भी अनेक ऊष्मज प्राणी बिना रज-वीर्य स्थूल शरीर धारण किया करते हैं। इसलिये सूत्रकार महर्षि कपिल ने प्रायशः शब्द का प्रयोग समीचीन ही किया है। यह शरीर जीवात्मा के साथ जन्म से मरण पर्यन्त विद्यमाम रहता है। इसे ही जीव देहान्त को प्राप्त किया करता है। इसी से संयोग का नाम जन्म और वियोग का नाम मृत्यु है।

दूसरा शरीर सूक्ष्म शरीर के नाम से विख्यात है। इसी सूक्ष्म शरीर के साथ आत्मा का देहान्तर होता है। इस संबंध में सांख्य शास्त्र का कथन है- "तद्बीजात् संसृतिः"। (सा·3·3) अर्थात् संसृतिः संसरण आत्माओं के देहान्तर आदि में तद्बीजात स्थूल भूतों के बीज (जिनसे स्थूल भूत बनते हैं वे तन्मात्रायें) उपादान भूत तन्मात्र घटित सूक्ष्म शरीर से होता है। यह सूक्ष्म शरीर आत्मा का एक आवेष्टन है जो सर्गारम्भ में आत्मा को प्राप्त होता है और सर्गान्त में ही आत्मा उस से अपना पिण्ड छुड़ा पाता है। प्रलय के पूर्व यदि आत्मा को तत्व बोध हो जाता है तो प्रलय के पूर्व भी सूक्ष्म शरीर का संबंध आत्मा से छूट जाता है। ऐसी स्थिति में आत्मा मुक्त हो जाता है और सूक्ष्म शरीर अपने कारण में विलीन हो जाता है। अन्यथा जब तक सृष्टि रहती है तब तक सूक्ष्म शरीर के बन्धन से आत्मा बंधा रहता है। इस सूक्ष्म शरीर के संबंध में लोगों के अन्दर अनेक धारणायें बनी हुई हैं। कुछ लोगों का कथन है कि सूक्ष्म शरीर स्थल शरीर का बिल्कल प्रतिरूप होता है।

महाभारत कालीन 'दूरदर्शन'

- सन्तोष "कण्व" - बरेली

लोकश्रुति है कि हस्तिनापुर के राजभवन में बैठे संजय कुरुक्षेत्र में हो रहे युद्ध को देखा और नेत्रहीन धृतराष्ट्र को सुनाया करते थे। प्रश्न उठता है- इतनी दूर से कैसे देखते थे? पौराणिकों का उत्तर है- व्यास जी ने संजय को "दिव्य दृष्टि" दी थी और आर्यसमाज के मंच से यदा-कदा सुनने को मिलता है- उस युग में भी "दूरदर्शन" जैसा कोई माध्यम रहा होगा।

प्रथम पक्ष के पास प्रमाण है -

चक्षुषा संजयो राजन् दिव्येनैव समन्वितः ।
कथयिष्यति ते युद्धं सर्वज्ञश्च भविष्यति ।।

"हे राजन्। "दिव्य चक्षु" से युक्त संजय तुमको युद्धकथन करेंगे। इन्हें सब कुछ ज्ञात होगा"।

द्वितीय पक्ष के पास आधुनिक विज्ञान का आविष्कार -"टेलीविजन" है, जो लोगों को अधिक युक्तिसंगत लगता है।

लोकमान्य तिलक अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ "गीता रहस्य" में लिखते हैं- "व्यास जी ने संजय को दिव्य दृष्टि दी थी, इसलिए रणभूमि में जो कुछ घटना होती थी, वह बैठे बैठे जगह पर ही उसको प्रत्यक्ष दिखाई देती थी और उसके अनुसार वह धृतराष्ट्र को हाल सुनाता था"।

यद्यपि "चक्षुषा संजयो राजन्0" महाभारत के भीष्म पर्व का श्लोक है, तथापि इस बृहद् ग्रन्थ के अन्य अन्तः साक्ष्य इस "दिव्य दृष्टि" का विरोध करते हैं। युद्ध टालने के सभी प्रयास विफल हो जाने पर कौरवों ने भीष्म को अपना प्रथम सेनापति बनाया। उनके नेतृत्व में दस दिन तक भीषण युद्ध चला। दसवें दिन कृष्ण की कूटनीति रंग लाई और भीष्म का पतन हुआ। व्यास जी की व्यवस्थानुसार संजय ने धृतराष्ट्र को जब यह वृत्त सुनाया तो वे पूछते हैं।

तस्मिन् हते महाप्राज्ञे महेष्वासे महाबले।
महासत्त्व नरव्याघ्रे किमु आसीन् मनस्तव।।

"भीष्म जैसे महाबली नरव्याघ्र का हनन देखकर, हेसंजय तुम्हारी मनःस्थिति कैसी हुई?"

कृतिनं तं दुराधर्षं संजयास्य त्वमन्तिके।
कथं शान्तनवं युद्धे पाण्डवाः पर्यवारयन् ।।

"संजय, तुम तो भीष्म के समीप ही थे, बताओ, पांडवों ने किस प्रकार भीष्म का हनन किया।"

भीष्म पर्व के ये श्लोक संजय की उपस्थिति कुरुक्षेत्र के समरांगण में दिखा रहे हैं। भीष्म के पतनोपरान्त ही वे हस्तिनापुर गए, और धृतराष्ट्र को दस दिन तक चले युद्ध का सम्पूर्ण वृत्तान्तसुनाया। द्रोण के शिष्यों का पराक्रम वर्णन करते हुए संजय कहते हैं-

"पाण्डवों ने हमारे ऊपर धावा बोला तो हम भी भीषण गर्जना करते हुए उन पर टूट पड़े"।

महाभारत के भीष्म पर्व में उल्लेख कुछ इस प्रकार

उभयोः सेनयोहृष्टास्तन् ततस्तेऽस्मान् समाद्रवन्।
वयं तान् प्रतिनर्दन्तः तदासीत् तुमुलं महत् ।।
लाघवं द्रोणशिष्याणां अदृश्यं भरतर्षभ।
निमित्तवेधिनां चैव शरानुत्सृजतां भृशम् ।।

भीष्म के पतन के बाद आचार्य द्रोण कौरव सेना का नेतृत्व संभालते हैं। पांच दिनों तक घमासान युद्ध होता है। पांचवें दिन द्रोण वीर गति को प्राप्त हो जाते हैं। कौरवों पर मानों वज्रपात होता है। युद्ध रुकते ही संजय सीधे हस्तिनापुर जाकर प्रतीक्षारत धृतराष्ट्र को यह शोकवृत्त सुनाते हुए कहते हैं--

हन्त ते कथयिष्यामि सर्वं प्रत्यक्षदर्शिवान्।
यथा स न्यपतद्द्रोणः सादिता पाण्डुसृञ्जयैः ।।

"पाण्डु पुत्रों ने किस प्रकार द्रोण का हनन किया वो सब मैंने प्रत्यक्ष देखा है, वही वर्णन करता हूँ"।

द्रोण पर्व में संजय कहते हैं--
नापश्याम ततस्त्वेनं सैन्ये वै रजसावृते ।
गाण्डीवस्य च निर्घोषः श्रुतो दक्षिणतो मया ।।

"सेना धूलिराज से आच्छादित होने के कारण अर्जुन दिखाई ही नहीं देते थे, केवल उनके गाण्डीव की टंकार ही मुझे सुनाई देती थी।"

युद्ध भूमि में अपनी उपस्थिति को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं-

ततः पुनर्दक्षिणतः संग्रामश्चित्रयोधिनाम् ।
सुयुद्धं चार्जुनस्यासीत् अहं तु द्रोणमन्वियाम्।।

"उसके बाद मेरे दाहिनी ओर विलक्षण युद्ध करने वाले वीरों का अर्जुन से भीषण युद्ध हुआ परन्तु मैं द्रोण के साथ रहा।"

युद्ध का वर्णनकरतेहुएसंजय कह उठते हैं --

न तत्र समरे कश्चित् मया दृष्टो नराधिप ।
गजो वापि नरो वापि यो न पार्थशराहतः ।।

"अर्जुन के तीरों से बचा हुआ कोई भी मनुष्य, हाथी व घोड़ा मुझे वहाँ दृष्टिगोचर नहीं हुआ।"

भीष्म और द्रोण के पतन के बाद कौरवों की रही-सही आशायें कर्ण पर केन्द्रित थीं। कर्ण के नेतृत्व में कौरव सेना ने दो दिनों तक पाण्डव सेना का सामना किया। दूसरे दिन कर्ण, अर्जुन के तीरों का निशाना बनते हैं। कर्ण के गिरते ही युद्ध का निर्णय हो जाता है। कौरव पक्ष में शोक छा जाता है। संजय सीधे धृतराष्ट्र की ओर जाते हैं। कर्ण पर्व में वैशंपायन कहते हैः-

हते कर्णे महाराज निशि गावल्गणिस्तदा ।
दीनो ययौ नागपुरं अश्वैर्वातसमैर्जवे ।।
स हस्तिनपुरं गत्वा भृशमुद्विग्न चेतनः ।
जगाम धृतराष्ट्रस्य क्षयं प्रक्षीण बांधवम्।।

"कर्ण का पतन होने पर दीन एवं उदास संजय वायुवेग से अश्व चलाकर रात्रि में ही हस्तिनापुर पहुँचे। वहाँ पहुँचते ही उद्विग्न चित्त से सीधे धृतराष्ट्र के महल में प्रवेश कर गए जो स्वबन्धुओं से रहित हो चुका था"।

अब तो मात्र औपचारिकता ही बची थी। अठारहवें दिन शल्य ने मोर्चा सम्भाला। जहाँ भीष्म, द्रोण और कर्ण की कुछ न चली, वहाँ शल्य की क्या चलनी थी। पाण्डवों में उत्साह था। हताश एवं निराश कौरवों का यह अन्तिम सेनापति एक दिन में ही प्राण डाल गया। शल्य की मृत्यु के बाद संजय दूसरे (उन्नीसवें) दिन प्रातः काल हस्तिनापुर जाते हैं। शल्यपर्व में कीर्तिलिखता है -

ततः पूर्वाह्णसमये शिविरादेत्य संजयः।
प्रविवेश पुरीं दीनो दुःख शोक समन्वितः ।।
स प्रविश्य पुरीं सूतो भुजावुच्छ्रित्य दुःखितः ।
वेपमानस्ततो राज्ञः प्रविवेश निकेतनम् ।।

उसके अन्दर भी ज्ञान और कर्मेन्द्रियां सूक्ष्म रूप से विद्यमान होती हैं। जब प्राणी स्थूल शरीर धारण कर उदर दी से बाहर आता है तब यह सूक्ष्म शरीर उसके मुख के मार्ग से प्रविष्ट हो जाता है और मृत्यु के समय जीवात्मा के साथ उसी रूप में बाहर चला जाता है। इसी मत ने भूत प्रेत की भावना का सृजन किया है। किन्तु यह मत शास्त्र सम्मत नहीं है। शास्त्रकार का इस संबंध में कथन है कि "सप्तदर्शकं लिगम्" (सा.3.9) अर्थात् यह सूक्ष्म शरीर 18 घटकों का एक समुच्चय होता है। इनमें 5 ज्ञानेन्द्रियां, तथा 5 कर्मेन्द्रियां मन, अहंकार और महत या बुद्धि ये 13 करण आश्रित तथा रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्द ये 5 तन्मात्रायें आश्रय रूप होती हैं। इन्हीं 18 घटकों का एक अदृश्य आवेस्टन होता है जिससे आत्मा आबद्ध रहता है।

क्रमशः----

महान संगठन आर्यसमाज के महान कार्य

लेखक- डा0 शकुनचन्द आर्य
लालगंज, रायबरेली।

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में आर्यसमाज का अतिमहत्वपूर्ण योगदान रहा। इसने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ढंग से देश को स्वतन्त्र कराने में महत्वपूर्ण भूमिकायें निभाई। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती महान देशभक्त एवं राष्ट्रीय भावनाओं के पोषक थे। उनकी स्वराज के संबंध में यह धारणा है कि "अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से बुरा से बुरा स्वदेशी राज्य श्रेष्ठ होता है" उनकी अभूतपूर्व देशभक्ति का प्रमाण है। एक बार उन्होंने दुभाषिये पादरी के माध्यम से बातचीत में वायसराय नार्थ ब्रुक से कहा था कि "मैं इस देश के पिछड़ेपन एवं अवनति का प्रमुख कारण इसकी पराधीनता मानता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरा देश यथाशीघ्र स्वतंत्र हो जाये। इसके लिए मैं प्रातः काल एवं सायंकाल परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ।" इसके बाद बातचीत टूट गई। और सरकार की गोपनीय रिपोर्ट में स्वामी जी को विद्रोही फकीर करार देकर उन पर निगाह रखने की सिफारिश की गई।"

स्वामी जी- इस देश के पतन का एक अन्य प्रमुख कारण इस देश में प्रचलित विभिन्न मतमतान्तरों को मानते थे। इसलिए वे सारे देश में सबसे प्राचीन वैदिक धर्म की पुर्नस्थापना करना चाहते थे। इसके अतिरिक्त वे नारियों के पिछड़ेपन उनकी अशिक्षा, मूर्तिपूजा, बालविवाह, ढोंग, आडम्बर, मिथ्याविश्वास एवं अन्य कुरीतियों को देश के उत्थान में बाधक मानते थे। सम्पूर्ण देश के लिए एक राष्ट्रभाषा न होना उनके लिए खटकने वाली बात थी। इसके अतिरिक्त वे देश के नैतिक पतन, एकता में बाधक छुआछूत एवं ऊँचनीच की भावनाओं से भी चिन्तित थे।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर ही स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के 10 वर्ष पूर्व 7 अप्रैल 1875 ई0 (वर्ष प्रतिपदा के दिन) को आर्यसमाज नामक महान संगठन की स्थापना की। निस्सन्देह इस संगठन ने स्वामी जी की मृत्यु के बाद उनके विचारों एवं सिद्धान्तों के प्रसार एवं उनके कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण योगदान किया। जीवन का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जो कि आर्यसमाज की सेवाओं एवं कार्यों से अछूता रहा। देश के स्वाधीनता संग्राम के लिए जितने सैनिक आर्यसमाज ने तैयार किये, शायद ही किसी धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन ने किये हों, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, श्याम जी वर्मा, चौधरीचरणसिंह तथा अलगूराय शास्त्री आदि स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख सेनापति, भगतसिंह तथा रामप्रसाद बिस्मिल आदि क्रांतिकारी आर्यसमाज की ही देन हैं। स्वदेशी वस्त्रों के रूप में खादी के प्रचार, राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी तथा सांस्कृतिक एवं धार्मिक भाषा के रूप में संस्कृत के प्रसार में उसका अभूतपूर्व योगदान रहा। देश के लिए मरमिटने की भावना उसने देशवासियों में सबसे अधिक जगाई।

सामाजिक एवं धार्मिक क्षेत्र में तो उसके कार्य अभूतपूर्व रहे। जिन वेदों के लिए पौराणिकों का कथन था कि उन्हें वाणासुर उठा ले गया, उन्हें खोजकर स्वामी दयानन्द ने सर्वसुलभ बनाया तथा उनके ज्ञान को जन जन तक पहुँचाने का कार्य आर्यसमाज ने किया। उसने मूर्तिपूजा एवं छोटे छोटे अवैदिक मत मतान्तरों का खंडन कर सम्पूर्ण देश में वेदों पर आधारित वैदिक धर्म की स्थापना का प्रयास किया। यद्यपि इसमें उसे आशानुकूल सफलता नहीं प्राप्त हुई परन्तु इस समय देश के धार्मिक क्षेत्र में जो परिवर्तन दिखाई पड़ रहा है, लोग आंखें मूंद कर किसी मतमतान्तर को मानने के बजाय "पहले जानों तब मानों" की मनोवृत्ति से प्रभावित दिखाई पड़ रहे हैं, सभी हिन्दू गायत्रीमंत्र, ओ3म् शब्द, वेद एवं अग्निहोत्र के महत्व को समझने लगे हैं, छुआछूत एवं ऊँचनीच की अनुचित भावना, मिथ्याडम्बर, ढोंग एवं अन्धविश्वास में कमी आई है, आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों एवं वार्षिक अधिवेशनों के माध्यमों से हिन्दू समाज के एक वर्ग में धार्मिक चेतना समानता, एकता, अतीत के प्रति गौरव भाव एवं भारतीय संस्कृति के प्रति अनुराग बढ़ा है, उनके देखादेखी अन्य हिन्दू धार्मिक वर्गों में एकता को बढ़ाने में सहायक सत्संगों एवं मानस सम्मेलनों की प्रवृत्ति बढ़ी, यह सब आर्यसमाज के प्रचार प्रसार एवं धार्मिक आन्दोलन का प्रभाव है।

शिक्षा एवं नारी-उत्थान के क्षेत्रों में तो आर्यसमाज की सेवायें अद्वितीय रही। स्वामी दयानन्द सरस्वती आधुनिक भारत के प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने विचार व्यक्त किया था "देश की चतुर्मुखी प्रगति के लिए देशवासियों का शिक्षित होना परम आवश्यक है।" नारी शिक्षा के संबंध में उनका मत था कि "नारी नर की खान तथा माता निर्माता होती है इसलिए नारियों का सुशिक्षित होना उससे भी परम आवश्यक है।" अपने संस्थापक के उपरोक्त विचारों से प्रेरित होकर ही आर्यसमाज ने स्वामी जी की मृत्यु के बाद सारे देश में गुरुकुल, कन्यागुरुकुलों तथा डी0ए0वी0 कालेजों का जाल बिछाकर शिक्षाप्रसार एवं नारी उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

परन्तु उसकी सेवाओं का उचित मूल्यांकन नहीं किया गया

परन्तु दुख का विषय है कि देश के स्वतन्त्र होने के बाद उसके बहुमूल्य कार्यों एवं सेवाओं का उचित एवं सही मूल्यांकन नहीं किया गया, देश के नवनिर्माण में उसके विचारों, आदर्शों एवं सहयोग की उपेक्षा की गई। उल्टे उसके ऊपर साम्प्रदायिक एवं संकीर्णवादी होने के आरोप लगाये गये। दूरदर्शन के "तमस" नामक धारावाहिक में उसे साम्प्रदायिक रूप में प्रदर्शित किया जाना, शिक्षा पाठ्यक्रमों में उसके विचारों की उपेक्षा, त्रिभाषा सूत्र से उसके लिए महत्वपूर्ण संस्कृत भाषा का निकाला जाना इसका प्रमाण है। उसी का परिणाम है कि इस समय देश नैतिक पतन की ओर उन्मुख है, राष्ट्रवाद की भावना तिरोहित हो रही है, शिक्षा का गिरता हुआ स्तर चिंतनीय विषय बन गया है। उपरोक्त स्थिति के निराकरण के लिए आवश्यकता है कि देश के विविध कार्यक्रमों में आर्यसमाज का सहयोग लिया जाये। उसके सिद्धान्तों एवं विचारों को टी0वी0, आकाशवाणी आदि द्वारा फैलाया जाये। शिक्षा पाठ्यक्रमों में स्थान दिया जाये। तभी देश का कल्याण सम्भव है।

"अगले दिन प्रातः काल रणभूमि से प्रस्थान कर शोक ग्रस्त संजय ने दीन मुद्रा से कौरव पुरी में प्रवेश किया। विलाप करते दुखी संजय हाथ उठाए राजमहल में प्रविष्ट हो गए"।

इतना ही नहीं, दुर्योधन के अन्तकाल का जो वर्णन संजय ने धृतराष्ट्र से किया वह भी शल्यपर्व में देखा जा सकता है। यहाँ तो संक्षेप में केवल भीष्म, द्रोण, कर्ण और शल्य के पतनोपरान्त संजय का धृतराष्ट्र को सारा वृत्त सुनाने के अवसर की चर्चा की गई है। इन प्रमाणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि युद्ध के समय संजय रणभूमि में थे। केवल सेनापति के पतन हो जाने पर ही वे हस्तिनापुर गए और धृतराष्ट्र को सभी वृत्त सुनाकर नवीन परिस्थिति पर विचार-विमर्श कर उचित निर्देश प्राप्तकर पुनः समरांगण को प्रस्थान कर गए।

अतः "दिव्य दृष्टि" या "दूरदर्शन" जैसे किसी माध्यम के होने की बात केवल कपोल कल्पना है। महाभारत के अन्तः साक्ष्य यह बताते हैं, कि संजय युद्धक्षेत्र में थे, न कि हस्तिनापुर में।

हिन्दू विस्थापितों के साथ मिलन भोज

दोपहर (मध्यान्ह) के समय नैलपुर में बसे बंगाली हिन्दू विस्थापितों के बीच उपनयन संस्कार तथा मिलन भोज आयोजित किया गया। इस अवसर पर बंगला देश से विस्थापित हिन्दुओं व ईसाईयों द्वारा यहां से दूर बसे 2 किमी0 70 विस्थापित परिवारों को पैसा व व्यवसाय तथा अन्य लालचों के द्वारा धर्मान्तरण की कोशिश का जिक्र किया। तथा कहा कि वे ऐसा नहीं होने देंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्रधान पं0 इन्द्रराज जी ने इनकी समस्याएं सुनी तथा उनके निराकरण का आश्वासन दिया। प्रधान जी द्वारा उपनयन संस्कार कराने वाले परिवार को 101/- का दान दिया गया। सभा प्रधान जी के साथ श्री मती कैलाश जी सोनी, डा0 जयबीर सिंह (मोदीनगर) श्री धर्मपाल, विद्यार्य सभा के अधिष्ठाता श्री माधव सिंह जी, जयन्त कुमार तथा अनेक आर्य अधिकारी थे।

आत्यन्तिक दु:ख निवृत्ति और वैराग्य

—आचार्य 'प्रणव'

त्रिविध ताप से संतप्त मानव ने समस्त तापों की अत्यन्ततिक निवृत्ति के लिए जिन अनेक उपायों का आलम्बन किया है, महर्षि पतंजलि विरचित योग सूत्रों में वर्णित योग साधना उनमें से अन्यतम अथवा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। इस योग साधना का एक मात्र उद्देश्य सर्वविध तापों की आत्यन्तिक निवृत्ति रहा है। यद्यपि आज योग की साधना शारीरिकस्वास्थ्य, विविध असाध्य रोगों की निवृत्ति दीर्घ जीवन की कामना, मानसिक शान्ति और एकाग्रता के माध्यम से सर्वविध लौकिक क्रियाओं में कुशलता की प्राप्ति आदि को उद्देश्य के रूप से स्वीकार करके भी की जाती है, अथवा योग की साधना से इन सबको भी प्रप्त किया जा सकता है, कहकर भी इसका प्रचार किया जाता है, यह अलग बात है।

पतंजलि के अनुसार योग का अर्थ है चित्तवृत्तियों का विरोध। चित्तवृत्तियों के इस विरोध के लिए पतंजलि ने यद्यपि निम्नलिखित आठ उपाया का चर्चा की है - अभ्यास और वैराग्य, ईश्वर प्राणिधान, प्राणायाम, विषयवती प्रवृत्ति, विशो का ज्योतिष्पती प्रवृत्ति, वैराग्य स्वप्न निद्रा अथवा ज्ञान का आलम्बन किसी भी अभीष्ट का ध्यान। किन्तु इन आठ में अभ्यास और वैराग्य मिलकर संयुक्त रूप से चित्त वृत्तियों को निरोध में सक्षम है, अथवा इनके द्वारा ही चित्तवृत्तियों का निरोध सहज रूप से और पूर्णतया हो सकता है, यह पतंजलि का पक्ष है, पतंजलि ने अन्य उपायों का संकेत विविध परम्पराओं में उनका प्रचलन होने के कारण ही कर दिया है। समर्थ उपाय मानकर नहीं। इन उपायों में पतंजलि का पक्ष अन्यतम उपाय ही क्यों है यह एक स्वतन्त्र निबन्ध का विषय है, उसकी चर्चा करना यहां मैं अनावश्यक समझता हूँ।

पतंजलि वर्णित इस योग साधना में अभ्यास और वैराग्य में भी अभ्यास की अपेक्षा वैराग्य अधिक महत्वपूर्ण और प्रधान है ऐसी पतंजलि की मान्यता है। इसीलिए वे निरन्तर योग साधना के फलस्वरूप प्राप्त विवेक ख्याति, जिसे सत्वपुरुषान्यतारख्याति ऋतम्भरा प्रज्ञा आदि नामों से भी स्मरण किया जाता है तथा जो वेदान्त के अनुसार ब्रह्मभाव की प्राप्ति का एकमात्र उपाय है, के प्रति भी वैराग्य को आवश्यक ही नहीं कैवल्य प्राप्ति के लिए अनिवार्य मानते हैं।

पतंजलि के अनुसार वैराग्य का अर्थ है "लौकिक अथवा वैदिक (स्वर्ग आदि में प्राप्त होने वाले) विषयों के प्रति तृष्णा रहित होकर उनके प्रति चित्त का किंचित मात्र भी आकृष्ट न होना। यह दो प्रकार का है पर वैराग्य और अपरवैराग्य अपर वैराग्य को ही वशीकार वैराग्य भी कहते हैं। यह वशीकार वैराग्य समस्त लौकिक विषयों के प्रति साथ ही वैदिक कर्म काण्ड की साधना के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले अमृतत्व अथवा स्वर्गीय सुखों के प्रति तृष्णा के अभाव का नाम है। रूप रस गन्ध स्पर्श शब्द, धन सम्पत्ति, अन्न खान-पान स्त्री राज्य ऐश्वर्य आदि विषय दृष्ट अर्थात् लौकिक विषय हैं, तथा स्वर्ग विदेह प्रकृतिलय, देवलोक अथवा योग साधना के प्रसंग में प्राप्त विभूतियों के फलस्वरूप प्राप्त होने वाले दिव्य गन्ध रस दिव्य स्पर्श आदि विषय आनुश्रविक विषय है, इनमें से किसी के प्रति भी तृष्णा का उदय भी न होना **वशीकार वैराग्य** अथवा **पर वैराग्य** कहा जाता है। महर्षि व्यास ने वशीकार वैराग्य की स्थिति प्राप्त होने के पूर्व होने वाली कुछ वैराग्य भावनाओं का वर्णन किया है जिसे उन्होंने **यतमान संज्ञा वैराग्य व्यतिरेक संज्ञा वैराग्य** और **एकेन्द्रिय संज्ञा वैराग्य** नाम दिये हैं।

यतमान संज्ञा

इन्द्रियों के विषयों में प्रवर्त्तक राग आदि चित्त के विकारों के विनाश के लिए गुरु के वचनों का श्रवण एवं मनन आदि तथा शास्त्रों के अभ्यास के द्वारा उन विषयों के प्रति दोष दर्शन के लिए प्रयत्न यतमान संज्ञा वैराग्य कहा जाता है।

व्यतिरेक संज्ञा

इतने विषयों के प्रति दोष दर्शन हो चुका है तथा अमुक-अमुक विषयों के प्रति दोष दर्शन करना है इस प्रकार का अब धारण करना व्यतिरेक संज्ञा वैराग्य कहा जाता है।

एकेन्द्रिय संज्ञा

विषयों के प्रति दोष दर्शन हो जाने पर भी उनके प्रति मन में औत्सुक्य शेष रहना किन्तु स्थूलतः उनका त्याग एकेन्द्रिय संज्ञा वैराग्य कहा जाता है।

श्रीमद्भगवद् गीता के विषयाः विनिवर्त्तन्ते निराहारस्य देहिनः।

रसवर्जम्

यहां तक एकेन्द्रिय संज्ञा वैराग्य है। उसके बाद की स्थिति--"रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्त्तते" वशीकार संज्ञक वैराग्य अथवा पर वैराग्य की स्थिति है। ये तीनों वैराग्य वशीकार संज्ञा वैराग्य की पूर्व स्थितियां हैं और उससे अवर हैं। क्योंकि ये चित्तवृत्ति निरोध के प्रति सहायक तो होते हैं परन्तु साक्षात उसके हेतु नहीं होते। वशीकार वैराग्य चितवृत्ति निरोध के प्रति साक्षात् हेतु होता है। वशीकार संज्ञक वैराग्य की अपेक्ष भी पर वैराग्य अधिक उत्कृष्ट है।

विवेक के उदय से गुणों में तृष्णा रहित हो जाना पर वैराग्य कहा जाता है। सम्प्रज्ञात समाधि की चारों अवस्थाओं को वितर्कानुगत विचारानुगत आनन्दानुगत और अस्मितानुगत अवस्थाओं को पार करने पर जब योगी को त्रिगुणात्मक चित्त और कूटस्थ नित्य पुरुष का अन्तर ज्ञात हो जाता है, तो भाष्यकार व्यास के शब्दों में पर प्रत्यक्ष के फलस्वरूप परमविवेक को प्राप्त हुई वृद्धि से जो वैराग्य उदित होता है उसे ज्ञान प्रसाद अथवा पर प्रसंख्यान कहते हैं। इसके उदय होने पर योगी ऐसा मानने लगता है कि जो भी प्राप्त करने योग्य अथवा तप ब्रह्मचर्य आदि के द्वारा नाश करने योग्य पुण्य अपुण्य कर्म, अविद्या आदि पांच क्लेश, सुख दुःख जाति आयु भोग रूप विपाक और वासनाएं नष्ट हो जाती हैं जन्म मरण का क्रम समाप्त हो जाता है। जिसके फलस्वरूप मनुष्य अमर हो जाता है और शरीर त्याग के अनन्तर पुनः जन्म ग्रहण नहीं करता। यह परवैराग्य ज्ञान की पराकाष्ठा है, यही असम्प्रज्ञात समाधि की स्थिति है। इसके निरन्तर अभ्यास से योगी को कैवल्य की प्राप्ति होती है।

अभ्यास और वैराग्य की इस समष्टि को ही भगवद्गीता में भी मानो विग्रह का उपाय स्वीकार किया है। उसके अनुसार मनोनिग्रह का अधिकारी जितेन्द्रिय व्यक्ति ही हो पाता है सर्वसाधारण नहीं।

योग सूत्र के आधुनिक भाष्यकार स्वामी ओमानन्द-तीर्थ के अनुसार क्योंकि अभ्यास से तमोगुण की निवृत्ति होती हैं और वैराग्य से रजोगुण की अंतः चित्तवृत्ति निरोध के लिए दोनों का होना अनिवार्य हैं। यह ठीक भी है रजोगुण चित्त को बारम्बार ब्राह्म विषयों की ओर ढकेलता है विषयों के प्रति वितृष्णा रूप वैराग्य का उदय होने पर उसका ब्राह्य विषयों से उपरम तो होने लगता है, किन्तु तमोगुण की प्रबलता के कारण निद्रा आलस्य निरुत्साह अश्रद्धा और मूढ़ता आदि उत्पन्न होते रहते हैं फलतः साधक को विवेक ज्ञान की ओर अग्रसर नहीं होने देते। इसके विरोध के लिए अभ्यास की निरन्तर आवश्यकता रहती है। इसीलिए पतंजलि ने अभ्यास और वैराग्य दोनों को संयुक्त रूप से साधना का उपाय स्वीकार किया है।

दुख निवृति के उपाय के रूप में अभ्यास और वैराग्य की ओर मुख्यतः वैराग्य की ओर सर्वप्रथम संकेत कब ओर किसने किया है यह सिद्ध करना अभी मेरे लिए सम्भव नहीं है, तथापि मेरा विश्वास है कि वैराग्य की यह साधना पतंजलि को बौद्ध परम्परा से प्राप्त हुई है। अन्यथा वैदिक परम्परा में वैराग्य के बिना ही सहज प्रेम के माध्यम से स्व के विस्तार को, आत्मभावना के विस्तार को सर्वविध दुःखों की निवृत्ति का उपाय स्वीकार किया गया था। स्व के विस्तार की इस प्रक्रिया का उदय यौवन के आरम्भ में स्त्री और पुरुष के प्रति परस्पर प्रेम के सहज रूप से प्रारम्भ होता है जिसका आदर्श रूप शिव और पार्वती का समष्टिभाव है जिसके कारण शिव को अर्धनारीश्वर कहते हैं। उसकी पुष्टि गृहस्थ आश्रम में पुत्र-पौत्र आदि के प्राप्ति के द्वारा होती है। "आत्मा वै जायते पुत्रः" अगं दगंसंभवसि हृदयादभि जायसे, आत्मा वै पुत्र नामासि" इत्यादि वैदिक मन्त्रों में इसे स्वीकार किया है।

स्व के विस्तार की इस प्रक्रिया की चरम परिणति तब होती है जब साधक के हृदय में स्व पर भेद का विलय हो जाता है। वह समस्त प्राणियों में स्वयं को और स्वयं में समस्त प्राणियों को समझने लगता है। इस स्थिति में पहुँचने का प्रथम लाभ तो यह होता है कि साधक को कर्म विचिन्त्सा

अनशन कारी युवकों की जान बचाने के लिए स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान मंत्री से मिले।

दिल्ली 12 मई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी-आनन्दबोध सरस्वती ने आज प्रातः प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी से भेंट की और संघ लोक सेवा आयोग के बाहर अनशन पर बैठे हुए श्री पुष्पेन्द्र और उनके 3 अन्य साथियों के जीवन को बचाने के लिए प्रधानमंत्री जी से तुरन्त हस्तक्षेप करने की मांग की।

श्री स्वामी जी ने प्रधानमंत्री को बताया कि आयोग के कार्यालय के बाहर गत 15 दिनों से आमरण अनशन पर बैठे युवकों की हालत दिन प्रतिदिन गम्भीर होती जा रही है। यदि किसी अनशन कारी को जीवन से हाथ धोना पड़ा तो सरकार के सामने एक गम्भीर समस्या उपस्थित हो जायेगी।

स्वामी जी ने कहा अनशनकारियों की मांग केवल इतनी है कि संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करके भारतीय भाषाओं को भी परीक्षा का माध्यम स्वीकार किया जाय, जैसा कि 1967 में संसद के दोनों सदनों ने इस संकल्प को स्वीकार किया हुआ है।

प्रधानमंत्री ने श्री स्वामी जी को इस मामले में आज ही अन्तिम निर्णय लेकर अनशनकारियों की जान बचाने का आश्वासन दिया।

डा० कपिलदेव की विदेश यात्रा

लन्दन। भारतीय प्रसिद्ध वैदिक एवं गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर (हरिद्वार) के कुलपति डा0 कपिलदेव द्विवेदी ने लन्दन विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित विशेष समारोह में "वेदों के द्वारा वायुप्रदूषण की समस्या का निराकरण" विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि प्रदूषण से मानव जीवन बुरी तरह प्रभावित हुआ है, मंत्रध्वनि के प्रभाव, हवन, समिधा की वैज्ञानिकता और आज की ज्वलन्त समस्या प्रदूषण में यज्ञ की सार्थक उपादेयता पर प्रकाश डाला। आपने कहा कि वेदों के आध्यात्मिक और वैज्ञानिक पक्ष को नकारा नहीं जा सकता।

डा0 द्विवेदी ने वायुप्रदूषण दूर करने के लिए नौ उपायों को अपनाने का सुझाव दिया, इनमें मुख्यतः अग्निहोत्र (यज्ञ) द्वारा वायु का शुद्धिकरण, ग्रीन हाउस, अग्नि व सोमा तत्वों का सन्तुलन, रुद्रा व शिवा सिद्धान्त, पेड़ लगाना, जंगलों की सुरक्षा, आदि को वायु प्रदूषण की समस्या के निराकरण के लिए रखा।

आपने कहा कि संसार के प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ के वैज्ञानिक महत्व को समझते हुए इसे घर-घर में करना चाहिए तथा आवश्यकता इस बात की है कि वैज्ञानिक यज्ञ के महत्व को समझें।

डा0 द्विवेदी ने चारों वेदों से प्रदूषण सम्बन्धित मंत्रों की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए कहा कि अग्निहोत्र (यज्ञ) मानव के लिए सबसे बड़ा अस्त्र है, इस अस्त्र का अधिकाधिक उपयोग वायुप्रदूषण की समस्या दूर करने के लिए किया जाना चाहिए। आपने कहा कि वेद विलक्षण साहित्य है तथा सभी आर्ष ग्रंथ वेदों को अपोरुषेय मानते हैं तथा वेदों में लौकिक सभी विषयों के बीज विद्यमान है।

अन्त में डा0 द्विवेदी ने कहा कि आवश्यकता इस बात कि है कि अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों को आयोजित किया जाए जिसमें विभिन्न विषयों के वैज्ञानिक तथा वैदिक विद्वान मिलकर वैज्ञानिक तत्वों का सार निकालकर एकमत होकर मानव कल्याण के लिए प्रस्तुत करें। आपने कहा कि अकेले वैज्ञानिक इस समस्या का समाधान नहीं कर सकते जब तक वेदों के वैज्ञानिक स्वरूप को उपयोग में नहीं लाते।

इस अवसर पर लन्दन विश्वविद्यालय के प्रमुख विद्वान, अध्यापक, अधिकारी एवं शोध छात्र उपस्थित थे। प्रारम्भ में विश्वविद्यालय द्वारा डा0 डब्लू0एफ0 मैन्स्की ने डा0 द्विवेदी का स्वागत किया तथा कार्यक्रम का संचालन किया।

डा0 कपिलदेव द्विवेदी ने आर्यसमाज लन्दन में वर्तमान युग में वेदों के महत्व पर प्रकाश डाला तथा कहा कि सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में जो स्थान वेद दे सकता वह अन्य ग्रंथ नहीं। आर्यसमाज लन्दन की तरफ से श्री यज्ञमित्र अयंगर ने डा0 द्विवेदी का स्वागत किया, तथा आपके द्वारा प्रकाशित वेदामृतम् ग्रंथमाला के 12 भाग (सुखीजीवन, सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार, सुखी समाज, आचारशिक्षा, नीति शिक्षा, वेदों में नारी, वैदिक मनोविज्ञान तथा चारों वेदों के सुभाषितावली) प्रकाशित करने हेतु धन्यवाद दिया। डा0 द्विवेदी 4 जून तक ब्रिटेन में रहेंगे तथा उसके पश्चात् जर्मनी एवं हालैंड जाएगें जहां अनेक विश्वविद्यालयों तथा विभिन्न संस्थाओं ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया है। डा0 द्विवेदी तीन मास के विदेश कार्यक्रम के बाद 23 जुलाई को भारत वापस पहुँचेंगे।

-- संवाददाता ।

मंगल मिलन

मैनपुरी। आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के मुख्य-निरीक्षक कुँ0 ध्रुव पाल सिंह जी अटल की आयुष्मती अनुजा-सुनीता का शुभ-विवाह, दि0 8-5-89 को, उन के निवास (बरपरी) पर, चि0 सुनील के साथ समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। महावैयाकरण आचार्य पं0 रामदेव जी एवं महान दार्शनिक डॉ0 वागीश जी (एटा) ने बड़े ही प्रभाव पूर्ण ढंग से संस्कार कराया। उक्त सभा की माननीया उपमन्त्री डॉ0 आशारानी, मान0 मुख्याधिष्ठाता (भू-सम्पत्ति) डॉ0 वेद प्रकाश तथा मान0 निरीक्षिका श्रीमती-शकुन्तला देवी आदि अनेक आर्य नेताओं और विद्वानों ने वर-कन्या को आशीर्वाद दिया। बरात का स्वागत आर्य उप-सभा, मैनपुरी के प्रधान श्री ब्रज भूषण सिंह जी ने किया। आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराजजी तथा मंत्री-श्री मनमोहन तिवारी जी ने चि0 वरवधू को अपनी मंगलमय आशीर्वाद प्रेषित किया।

शुद्धि-समाचार

6 ईसाइयों की शुद्धि

जबलपुर- गत दिनों आर्यसमाज राइट टाउन जबलपुर (म0प्र0) ने 6 ईसाइयों की शुद्धि की तथा आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की तथा वहीं पर विवाह भी सम्पन्न कराया गया। नव दम्पतियों का समाज की ओर से अभिनन्दन किया गया।

51 ईसाइयों की शुद्धि

हिन्दू शुद्धि समिति हरियाणा के प्रयत्नों से 51 ईसाइयों की दि0 25-4-89 को ग्राम आरा में आदिवासी ईसाई उरावों ने अपनी स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया। यह शुद्धि कार्य वैदिक मन्त्रों के उच्चारण के बीच सम्पन्न हुआ।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा बरेली का वार्षिक अधिवेशन 28 मई को रविवार के दिन प्रातः 9 बजे से आर्यसमाज मन्दिर फरीदपुर बरेली में किया जा रहा है।"

कष्ट नहीं देती। काण्व परम्परा के अनुसार साधक में जुगुप्सा विलीन हो जाती है। किन्तु इसका सबसे महत्वपूर्ण परिणाम है मोह और शोक की निवृत्ति। क्योंकि मोह और शोक ही मुख्यतः सभी दुःखों के कारण हैं, अतः दुःख निवृत्ति इस स्व के विस्तार की प्रक्रिया से भी अत्यन्त सहज रूप से ही जाती है।

इस प्रकार स्व अर्थात आत्म भावना के विस्तार के द्वारा अथवा अभ्यास और वैराग्य समान रूप से त्रिविध तापों की आत्यन्तिक निवृत्ति के उपाय है। इसमें अभ्यास और वैराग्य का मार्ग कुछ कठिन किन्तु अत्यन्त सीधा है इसमें यह कष्ट नहीं है जबकि दूसरे मार्ग में भटकने की संभावना अधिक है। बहुत संभव है इस भटकाव की संभावना को देखकर ही इस द्वितीय मार्ग के अभ्यास और वैराग्य रूपी मार्ग का अनुसन्धान किया गया होगा।

--- ---------

बाल जगत

ब्रह्मचर्य

{-श्री अजुर्न सिंह चावला
गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर}

वेदों में ब्रह्मचर्यादि नियमों का पालन करना आवश्यक कर्त्तव्य बतलाया है क्यों कि यही ब्रह्चर्यामृत जनता के लिए मुक्ति पथ का पवित्र सन्देश है। अतः मैं बताना चाहूँगा कि ब्रह्मचर्य क्या है। क्योंकि जब तक इसे ठीक तरह न समझ लिया जाए तब तक इससे पूर्ण लाभ उठाना और ब्रह्मचर्य की रक्षा करना असम्भव है ब्रह्मचर्य दो शब्दों के मेल से बना है ब्रह्म शब्द का अर्थ है वेद ज्ञान और वीर्यादि की रक्षा करना। चर्य शब्द का अर्थ है ईश्वर चिन्तन अध्ययन उपार्जन और रक्षादि इस प्रकार ब्रह्मचर्य के अर्थ हैं {1}- ईश्वर चिन्तन {2}-वेदाध्ययन {3}- ज्ञान {4}-उपार्जन शुक्र रक्षादि हुए इन सब का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है वैसे ब्रह्मचर्य का नाम लेते ही लोगों के हृदय में शुक्र रक्षा के भाव उठते हैं। और इसी को लोग ब्रह्मचर्य समझते हैं किन्तु एक ही साथ ईश्वर चिन्तन करना वेद पढ़ना ज्ञान और विद्या की प्राप्ति करना तथा शुक्र रक्षा करने के नाम ब्रह्मचर्य है। जो मनुष्य ब्रह्मचर्य की रक्षा नहीं करता विषय भोगों में फंसारहता है वह वेद का अध्ययन विद्योपार्जन और ईश्वर का चिन्तन कभी नहीं कर सकता शरीर मन और आत्मा को पूर्ण शक्तिशाली बनाना और किसी प्रकार इन शक्तियों का ह्रास न होने देना ही पूर्ण ब्रह्मचर्य है इन तीनों से किसी एक शक्ति का नाश हुआ तो ब्रह्मचर्य पूर्ण नहीं अधूरा है। अतः शारीरिक मानसिक और आत्मिक शक्तियों को पूर्ण विकसित करें यह कैसे होगा। ब्रह्मचर्य पालन से ब्रह्मचर्य के प्रताप से ही 176 वर्ष का ब्रह्मचारी कुरुक्षेत्र के मैदान में युद्ध मचाता है और प्रतिदिन दस दस हजार सैनिकों को वीर गति प्राप्त कराता है। जब वह शरशैया पर लेटे थे, तो उन्होंने ब्रह्मचर्य से ही मृत्यु को पास फटकने नहीं दिया मृत्यु बारबार आती है परन्तु ब्रह्मचारी के डर से उल्टे पैरों भाग जाती है ब्रह्मचारी आज्ञा देता है कि जब सूर्य उत्तरायण होगा तभी ब्रह्मचारी इस शरीर को छोड़कर स्वर्ग धाम जावेगा हुआ भी यही, तीन मास पीछे ग्रीष्म ऋतु आयी और उन्होंने स्वेच्छा से शरीर को छोड़ा आदर्शजीवन भी हमारे सन्मुख है वह आजीवन ब्रह्मचारी रहे संसार के कल्याणर्थ भयंकर कष्टों को हँसते हँसते सहा। सृष्टि के आदि से ही ऋषि मुनियों ने मोक्ष प्राप्ति हेतु ब्रह्मचर्यामृत का पान किया। महर्षि दयानन्द भी उसी परम्परा में से एक थे। ब्रह्मचर्य पालन सभी दृष्टियों से परम आवश्यक है ब्रह्मचर्य से ही बल, बुद्धि, तेज एवं आयु की वृद्धि आरोग्य सिद्धिलोक परलोक में शान्ति यहाँ तक की परमात्मा की प्राप्ती हो जाती है। ब्रह्मचर्य के पालन में अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता पड़ती है। जब शुक्रादि सभी धातुएं बढ़ती हैं यह समय मनुष्य के लिये भयानक होता है। कुसंग के कारण काम देवता भी इसी समय मुहँ दिखाता है। व्यक्ति मन के वश में होकर विषय भोगों में फसं जाता है और सर्वनाश कर पछताता है उसकी हालत कुल्हाड़े से कटे वृक्ष एवं डन्डे से फूटे घड़े की तरह हो जाती है उसे फिर स्वर्ग के समान युवा अवस्था के दर्शन नहीं होते जवानी से पूर्व ही बूढ़ा हो जाता है बसन्त आने से पूर्व ही पतझड़ हो जाता है हाय कितने दुःख की बात है सारे जीवन में सच्चा ब्रह्मचारी बनने का केवल एक अवसर मिलता है परन्तु यह भाग्यहीन बालक उसे भी खो देता है 25 वर्ष ब्रह्मचर्याश्रम के बाद ही गृहस्थ आश्रम का विधान है केवल सन्तानोत्पत्ति के लिए परन्तु सच्चा ब्रह्मचारी तो "महात्मा शुक्राचार्य के अनुसार विद्यार्थी ब्रह्मचारी स्यात" सच्चा ब्रह्मचारी होता है जैसे दीपक में तेल बत्ती के सहारे ऊपर चढ़कर प्रकाश के रूप में बदल जाता है उसी प्रकार मनुष्य का वीर्य मस्तिष्क में पहुँचकर विचार अग्नि का ईधन बनता है और ज्ञान रूपी प्रकाश का संचार करता है मनुष्य के अविद्या रूपी अन्धकार को मिटाकर मन और आत्मा को [illegible] अभीष्ट मनोवांछित फल की प्राप्ति करता है।

अतः शक्ति लगाकर शरीर के सार ब्रह्चमर्य की रक्षा करें तथा ब्रह्मचर्य द्वारा मोक्ष धाम को प्राप्त करें।

काश रुशदी ने गीता पढ़ी होती !

श्री यतीन्द्र कुमार "विद्यारत्न"
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर {हरिद्वार}

जी हाँ यदि सुलेमान रुश्दी ने वेद गीता इत्यादि आर्ष ग्रन्थ पढ़े होते तो वह कभी भी खुमैनी द्वारा दिये गये फाँसी के फतवे से न डरता। यदि उसने कुरान के इस आदेश को कि -जन्म केवल एक बार होता है। दोबारा नही"। नहीं माना होता और गीता का यह श्लोक पढ़ लिया होता --

> न जायते म्रियतेवा कदाचि - न्नायं भूत्वाभविता वान भूयः ।
> अजो नित्यः शाश्वतो य पुराणों न हन्यतेहन्यमाने शरीरे।।

अर्थात् यह आत्मान कभी उत्पन्न होता है और न कभी मरता है अथवा न यह हो करके फिर होने वाला है। क्यों कि यह अजन्मा नित्य शाश्वत और पुरातन है। शरीर के नाश होने पर भी इसका नाश नही होता है।

यदि रुश्दी इन विचारों को पढ़ता तथा मनन करता तो वह मौत के डर से कभी भी मारा-मारा न फिरता। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द ने "सत्यार्थ प्रकाश" लिखकर आर्य जाति का नव जागरण किया था। ठीक उसी तरह रुश्दी ने इस्लाम पर "सैटेनिक वर्सेज" का प्रहार किया है। यदि उसे पता होता कि "भमान्त शरीरम" इस शरीर का अन्त केवल भण्य तक है। तो वह खुमैनी द्वारा दिये गये फांसी के फतवे से न डरता तथा जगत गुरु महर्षि दयानन्द की तरह स्वतन्त्र साहित्य लेखन कर इस्लाम का मार्ग दर्शन करता। तथा सोलह बार विष पीकर ईटं पत्थर खाकर भी तथा फांसी का फन्दा चूमकर भी फांसी के फतवे से न डरता अपितु शहीद अब्दुर्रहमान की तरह शरीर को आवरण मात्र समझता। गीता के अनुसार वा सांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृहाति नरो पराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्याति संयाति नवानिदेही ।।

अर्थात् जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे वस्त्रों को ग्रहण करता है। वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को त्यागकर नये शरीर को प्राप्त होता है।

यह भी तो आत्मा का ही हनन है कि पहले सत्य का प्रचार कर देना फिर उसे असत्य मानकर जहां-तहां छिपते फिरना। ऐसे लोगों के लिए वेद भगवान का आदेश है।

अन्धन्तमः प्रविशन्तिये के चात्महनो जनाः।

अर्थात् जो लोग आत्मा का हनन करते हैं वे घोर अन्धकार को प्राप्त होते हैं। हमारे साहित्यकार चाहे वह महर्षि दयानन्द हों या श्रद्धानन्द, गुरुदत्त हों या लेखराम महात्मागांधी हो या अन्य कोई सभी ने "न अवस्थे कदाचन" को मानकर मौत को ललकारा। मृत्यु हमारा क्या कर सकती है। केवल शरीर को समाप्त कर सकती आत्मा को तो नहीं। यह कहा हमारे साहित्यकारों ने।

मान्यवर पाठक वृन्द। इस बात का सार यह है कि यदि रुश्दी ने गीता पढ़ी होती तो वह कभी भी मृत्यु के भय से न डरता। अपितु जनता जनार्दन के सामने अपना साहित्य अमर कर देता। सुलेमान रुश्दी का इसी में ही लाभ है कि वह मृत्यु से डरकर अपनी कृति को मिथ्या उपन्यास न माने। मृत्यु तो अवश्य आयेगी आज नहीं तो कल। यदि वह अपना ग्रन्थ अमर कर गया तो वह एक महान साहित्यकार कहलायेगा।

डी0ए0वी0 स्कूल राजनगर विजयी

आर्यसमाज राजनगर गाजियाबाद ने 14-4-89 को अपने 5वें वार्षिकोत्सव पर "मन्त्र प्रतियोगिता" का आयोजन किया जिसमें कुमारी मक्कड़ प्रथम, कु0 सारिका गुप्ता तृतीय, तुषार जैन प्रथम, रजनीश कोहली द्वितीय, अभिषेक मिश्रा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

वेद सुधा

(प्रोफेसर सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज आर्यसमाज लन्दन)

मन्त्र- प्रियं मा कृणु देवेषु, प्रियं राजसु मा कृणु ।
प्रियं सर्वस्य पश्यतः उत शूद्र उत आर्ये ।।
अथर्व वेद 19•62•1

अर्थ- मुझे ब्राह्मणों में प्यारा कर। मुझे क्षत्रियों में प्यारा कर। सब देखने वालों का प्यारा कर, और शूद्र में और वैश्य में (भी) प्रिय बना।

व्याख्या- जो भी ईश्वर का प्यारा बनना चाहता है उसे पहले संसार के सभी लोगों का प्रिय बनना चाहिए। सब का प्यार प्राप्त करने के लिए अपने अन्दर ऊँचे गुण होने जरूरी हैं। गुणों के साथ ऊँचे कर्म भी होने आवश्यक हैं। मानव समाज में विद्वान, वीर अन्न पैदा करने वाले और व्यापार से धन कमाने तथा सेवाकार्य करने वाले वर्ग हैं, जिन्हें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र कहा जाता है। शिक्षा, व्यवस्था, धन तथा खाने पीने की वस्तुएं और शरीर द्वारा किए जाने वाले सेवाकार्य इन चार वर्णों या वर्गों के कारण ही सम्भव हो सकते हैं। संसार में सब जगह गुण कर्म स्वभाव के अनुसार ये चार श्रेणियां अवश्य मिलेंगी, नाम चाहे कुछ भी हों। ईश्वर का प्रिय बनने के लिए मानव समाज में इनका प्रिय बनना जरूरी हो जाता है। सभी वर्ग मानव समाज के अंग हैं। शरीर के सभी अंग, सिर, बाजू, पेट और पाँव स्वस्थ हों तो सारा शरीर स्वस्थ माना जाता है। ठीक इसी तरह समाज के सभी वर्गरूपी अंग ठीक कार्य करते रहें। किसी एक वर्ग का ही चाहे वह कितना ऊँचा समझा जाता हो प्यार प्राप्त करना ही काफी नहीं। सभी बड़ों और छोटों, मालिकों और नौकरों, पढ़ों और अनपढ़ों तथा बलवानों और बलहीनों का प्यार मिलना भी उतना ही आवश्यक है। इन सब का आदर करके इन का हम प्रेम प्राप्त करें जिससे ईश्वर के प्यारे बन सकें।

आर्यसमाज की स्थापना

विगत दिनों बुरहानपुर में आर्यसमाज मण्डी बाजार की स्थापना श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव मंत्री आर्यसमाज खण्डवा (म0प्र0) के प्रयास से सम्पन्न हुई।

अध्यक्ष	-	भगवान देव आर्य,
मंत्री	-	श्री राजेश कुमार कोरावाला
कोषाध्यक्ष	-	श्री ओम प्रकाश आर्य

नवीन समाज

आर्यसमाज भरगांमा (पटा)

प्रधान	-	श्री श्याम लाल पचौरी
मंत्री	-	श्री किशोर सिंह जी
कोषाध्यक्ष	-	श्री चन्द्र प्रकाश द्विवेदी

आर्यसमाज कैसर बाग लखनऊ

प्रधान	श्री मुदरी लाल साहित्यरत्न
मंत्री	श्री अवधनारायण सिद्धान्तरत्न
कोषाध्यक्ष	श्री सुधीर कुमार गुप्ता

शुभ विवाह

श्री सियाराम वर्मा, व्यवस्थापक आर्य मित्र, लखनऊ के कनिष्ठ भ्राता चि0 रामचन्द्र वर्मा का शुभ विवाह श्री सुरेशचन्द्र वर्मा की सुपुत्री सौभाग्य कांक्षिणी सुशीला वर्मा के साथ दिनांक- 12 मई, 1989 को ससमारोह पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर अनेकों गण्यमान्य एवं प्रतिष्ठित नागरिकों ने चि0 वरवधू को अपना मंगलमय आशीर्वाद प्रदान किया। आर्यमित्र परिवार की शतशः बधाई एवं शुभ कामनाएं।

- प्रबन्ध सम्पादक।

स्वामी गुरुकुलानन्द जी को

हार्दिक धन्यवाद

आर्यसमाज की सेवा में सतत समर्पित, महान ऋषिभक्त, कर्मठ जनसेवी पू0 स्वामी गुरुकुलानन्द जी "कच्चा हाजी" ने अपने कार्यक्षेत्र जनपद पिथौरागढ़ में इस वर्ष अब तक 129 तथा अन्य जिलों में 16 इस प्रकार कुल 145 आर्यमित्र के नवीन ग्राहक बनाए हैं। आर्यमित्र उनके इस सत्प्रयास के लिए उन्हें कोटिशः धन्यवाद देता है और आर्यजनों से उनका अनुसरण करने की अपील करता है।

आचार्य इन्द्रदेव पाठक,
प्रबन्ध सम्पादक।

भूल सुधार

आर्यसमाज रामपुर के मंत्री श्री ओ3म् प्रकाश आर्य हैं विगत अंक में भूल से इनके नाम के स्थान पर श्री सहदेव शरण आर्य छप गया है।

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शताब्दीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें ।

-- सभामंत्री ।

प्रवेश सूचना

{सत्र 1989-90}

डी० ए० वी० नैतिक शिक्षा संस्थान

{अन्तर्गत- आर्य विद्या सभा, डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली}

पद - धर्म शिक्षक
प्रवेश योग्यता - एम०ए०/आचार्य। हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी भाषा तथा वैदिक सिद्धान्तों तथा कर्म काण्ड का ज्ञान आवश्यक।
प्रशिक्षण अवधि- एक वर्ष
सुविधाएं - निःशुल्क शिक्षा, विशाल पुस्तकालय उपलब्ध, छात्रावासियों को आवास, पानी, बिजली सर्वथा निःशुल्क, भोजन व्यय स्वयं वहन करना होगा। छात्राएं भी प्रवेश प्राप्त कर सकती हैं।

प्रशिक्षण समाप्त करने के बाद उत्तीर्ण अभ्यार्थियों को डी०ए०वी०-शिक्षण संस्थाओं में "धर्म शिक्षक" पद पर टी०जी०टी० वेतन क्रम में नियुक्ति की गारन्टी।

गत तीन वर्षों में उत्तीर्ण सभी छात्रों को सर्विस मिल चुकी है। केवल निष्ठावान आर्य समाजी पूर्ण विवरण {नाम-आयु-शैक्षणिक-योग्यता, अनुभव आदि} सहित आवेदन पत्र 15 जून, 1989 तक निम्न पते पर भेजें:-

"प्रो० रत्न सिंह,
प्राचार्य- डी०ए०वी० नैतिक शिक्षा संस्थान
आर्यसमाज मन्दिर मार्ग
नईदिल्ली- 110001"

आवश्यक-सूचना

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि जो समाजें अपने वार्षिक चित्र जिला सभा को नहीं देना चाहती हैं अथवा जिला सभायें नहीं लेना चाहती हैं। वह अपने वार्षिक चित्र प्राप्तव्य धन सहित सीधे सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें। -- सभामंत्री।

धर्म परिवर्तन की विश्वव्यापी योजना के समूलोच्छेदनार्थ

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा

गंगा के रमणीक तट बृजघाट पर आर्यसमाज मन्दिर में स्थित प्रकाश वीर शास्त्री भवन में---

वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय बृजघाट

जिला गाजियाबाद की स्थापना

प्रवेश नियम

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने वैदिक धर्मी उपदेशकों, पुरोहितों तथा धर्मशिक्षकों का निर्माण करने के लिए पं० प्रकाशवीर शास्त्री स्मृति भवन, बृजघाट/गाजियाबाद/ में उक्त महाविद्यालय की स्थापना कर दी है जिसमें /क/ पाठ्यक्रम अवधि दो वर्ष, /ख/ निःशुल्क प्रशिक्षण /ग/ सफल 'उत्तीर्ण/ स्नातकों को उचित वेतन पर नियुक्ति तथा /घ/ संख्या सीमित रहेगी।

प्रवेशार्थी /क/ बी०ए०/संस्कृत सहित/ अथवा उत्तर मध्यमा एवं समकक्ष संस्कृत उपाधि प्राप्त /ख/ अधिकतम 25 वर्षीय एवं अविवाहित तथा /ग/ वैदिक धर्म प्रेमी हो।

महाविद्यालय /बृजघाट/ एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश /5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ/ के कार्यालयों से नियमावली एवं प्रवेशपत्र प्राप्त कर दिनांक 31-5-89 तक विद्यालय-कार्यालय में पहुँचावें। 15 जून मध्याह्न एक बजे विद्यालय में साक्षात्कार तथा एक जुलाई से शिक्षा आरम्भ होजाएगी।

सम्पर्क सूत्र

स्वामी जीवनानन्द सरस्वती
आचार्य
वे०ध०प्र० महाविद्यालय, बृजघाट।

डा० विजय भूषण आर्य
अधिष्ठाता/महाविद्यालय/
द्वारा आर्य समाज, हापुड़।

पृष्ठ तीन का शेष

जब आप विदेशी भाषा के साथ इश्क फरमाते हैं, तो वह उसकी पूरी कीमत वसूलती है. वह अपने आदर्श, अपने मूल्य आप पर थोपने लगती है. यह काम धीरे-धीरे होता है. सौंदर्य के उपमान बदलने लगते हैं, दुनियां को देखने की दृष्टि बदल जाती है. आदर्श और मूल्य बदल जाते हैं. आदर्श और मूल्य बदलें और तार्किक ढंग से बदलें, तो मुझे कुछ आपत्ति नहीं है. विदेशी भाषा कुछ बेहतर मूल्य भी हमें दे सकती है, लेकिन आपत्ति तो तब होती है, जबकि एक खंडित चिंतन का, एक-दो मुंहे व्यक्तित्व का निर्माण होने लगता है. आप रहते तो हैं भारतीय परिवेश में और बौद्धिक रूप से समर्पित होते हैं, अंगरेजी परिवेश के प्रति! ऐसा व्यक्तित्व सृजनशील नहीं बन पाता उदाहरण के लिए यूरोप का आदमी बादलों को देख कर प्रायः प्रसन्न नहीं होता. पहले से ही वे ठंडे देश हैं. फिर बादल आ जायें, आसमान कुछ-कुछ गहराने लगे तो मातम-सा छा जाता है.

इसके विपरीत भारत में ज्यों ही बादल मंडराये कि मन-मयूर नाचने लगता है. मेघदूत की रचना होती है. हमारा देश सूरत का देश है, धूप का देश है, यूरोप धूप के लिए तरसता है और हम बादलों के लिए! अब बताइए अंगरेजी में कविता लिखनेवाला हिंदुस्तानी क्या करेगा? अगर वह बादलों की तारीफ करेगा, तो उसकी कविता उसके पश्चिमी स्वामियों के गले नहीं उतरेगी और अगर वह कड़ाके की धूप पर गीत लिखेगा तो घटाओं पर झूमनेवाला उसका दिल उसका साथ कहां तक देगा?

भाषा के बदलने से मूल्य भी बदल जाते हैं. हिंदी में बड़ों को आप, बराबरीवालों को तुम और छोटों को तू कहने की सुविधा है, लेकिन अंगरेजी में सपाट संबोधन है—'यू'. पिता जी के लिए, पत्नी के लिए, बच्चे के लिए—सबके लिए एक ही चाबुक है. उसी से हांकिए! हमारे यहां देवर, भाभी, जेठ, देवरानी, जेठानी, मौसा, मौसी, चाचा, फूफा, भानजा, भतीजा, साला, जीजा—सब संबोधनों के लिए निश्चित शब्द हैं, शब्दों से संबंध निश्चित होते हैं. जब मुझे कहा जाए कि ये आपके साले हैं, तो मैं तत्काल समझ जाऊंगा कि ये मेरी पत्नी के भाई हैं और जब यह कहा जाये कि ये आपके जीजा हैं, तो मैं तत्काल समझ जाऊंगा कि ये मेरी बहिन के पति हैं, लेकिन अंगरेजी में तो सब घोटाला है. साला और जीजा दोनों के लिए एक ही शब्द है—ब्रदर इन लॉ.

इसका कारण स्पष्ट है. मानवीय संबंधों की जिन बारीकियों का महत्व हमारी संस्कृति में है, वह पश्चिम में नहीं है. एस्किमो लोगों की भाषा में बर्फ के लिए लगभग 100 शब्द हैं, जबकि हमारी भाषा में पांच-सात बर्फ से हमारा उतना साबका नहीं पड़ता, जितना एस्किमो का! ब्रह्म के लिए, जीव के लिए, जगत के लिए, मोक्ष के लिए एक-एक शब्द के लिए हमारे यहां जितने भिन्न-भिन्न शब्द हैं, उतने शब्द सारी यूरोपीय भाषाओं में कुल मिला कर नहीं हैं! और सिर्फ शब्द ही नहीं है, शब्दों के पीछे गहरी अनुभूतियां हैं. इस प्रकार संस्कृति से भाषा प्रभावित होती है और जैसा कि ऊपर कह आये हैं, भाषा से संस्कृति प्रभावित होती है. अपनी भाषा को छोड़ कर विदेशी भाषा के पिछलग्गू बनने के पहले विद्वानों को इन तथ्यों पर विचार करना चाहिए!

आर्य मित्र साप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
ज्येष्ठ कृष्ण 8,
28 मई रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य ओ३म् मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० 2241/57 घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85

ज्येष्ठ शुक्ल । रविवार, संवत 2046 वि०, दिनांक 4 जून 1989



मा श्रुतेन विराधिषि --

वेद हम आर्यों का जीवन प्राण हैं। हम कभी भी वेद की आज्ञाओं के विपरीत आचरण न करें। वेदविहित कर्म ही हमारा धर्म है।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम० ए०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक, एम०ए०,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु० 251/-
वार्षिक	रु० 30/-
विदेश में	15 पौंड
एक प्रति	- 1-00रु० मात्र

वर्ष	92
अंक	22

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उठ तू सजकर साज।
आर्यसमाज । आर्यसमाज ।।

– राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ ज्येष्ठ शुक्ल 1, संवत 2046 वि० 4 जून 1989
दयानन्दाब्द 165 सृष्टि संवत 1972949090

रहम कीजिए

कलेजे के टुकड़ों पर

श्रद्धा, ममता, दया और प्रेम की साक्षात मूर्तिमन्त प्रतिमा नारी आज किस प्रकार पुरुष उत्पीड़न का शिकार हो रही है- इसका एक ताज़ा समाचार सुनिए- "आबूधाबी के "खलीज-टाइम्स" ने खबर दी है कि अपने सत्तर वर्षीय तेल-शेख पति के अत्याचारों से तंग आकर एक पन्द्रह वर्षीया भारतीय महिला ने आत्महत्या कर ली"। दोनों की उम्र से ही अन्दाज़ लगाया जा सकता है कि इस कथित विवाह के पीछे महिला की रज़ामन्दी का तो कोई प्रश्न ही नही है। केवल तेलशेखो की कामपिपासा शान्त करने के लिए निर्धन परिवारों की ऐसी हजारों भारतीय महिलाओं को यावज्जीवन नर्क की आग में डालने के लिए पवित्र विवाह बन्धन के नाम पर बेचा गया है, और बेचा जा रहा है। केरल, बम्बई, हैदराबाद से इस प्रकार के समाचार यदा-कदा प्रकाश में आते रहते हैं। कुछ वर्ष हुए एक भारतीय महिला ने किसी प्रकार लुकछिप कर भारतीय दूतावास को एक पत्र भिजवाया था जिसमें उसने अपनी रोंगटे खड़ी कर देने वाली करुणगाथा लिखी थी और यह लिखा था कि किस प्रकार अनेक रतिजन्य रोगों से ग्रस्त हो जाने के बाद उसे अब वेश्यालय की धधकती अग्नि में ढकेल दिया गया है। अधिकांश मामलों में इन कथित पतियों की उम्र इन लड़कियों के पिता, बाबा और नाना के बराबर होती है और अधिकतर कन्याएँ गरीब भारतीय मुस्लिम परिवारों से उनके माता पिता द्वारा शेखों के साथ निकाह करके अरब भेज दी जाती हैं। अरब जाने से पहिले उन्हें बड़े बड़े सब्जबाग दिखाए जाते हैं किन्तु जब वे अरब की भूमि में अपनी बहिश्त की कल्पना मन में संजोए बूढ़े पति के साथ पैर रखती हैं तो मालूम होता है कि पति शादीशुदा हैं और उनकी एक नहीं दो-दो बीबियाँ हैं। और फिर शुरू होता है उत्पीड़न का झंझावात जिसमें हाय री। नारी !!! तेरी अस्मिता मिट्टी के मोल बिकने लगती है। मिलती है दर्दभरी रतिज रोगों की लाइलाज गठरी। तिलतिलकर जला देने वाली वेश्यालय की भट्टी- - ।

एक और ताज़ा समाचार सुनिए - "खाड़ी देशों में समृद्ध जीवन जीने की लालसा में कुवैत आई हुई फिलीपीन की तेईस वर्षीया एक महिला पलिस अब अरब परिवार में नौकरानी के रूप में भयकर यातनाएं झेल रही है। उसका जबड़ा टूटा हुआ है, कुहनी की हड्डी भी टूटी हुई है। एक भेंट में उसने बताया - 'जब मैं यहाँ आई थी तो वे कहते थे मेरी मुस्कान मोहक है, दान्त बहुत सुन्दर हैं। अब वे सभी तोड़ दिए गये हैं, ---- मैं अपना सब कुछ गवां चुकी हूँ ---- उन्होंने मारपीटकर एक कमरे में कैद कर रखा है। इसी प्रकार एशियाई राजनयिकों ने श्री लंका की एक नव युवती का मामला बताया जिसमें उसे गर्म लोहे की सलाखों से 46 जगह दागा गया है।

इस प्रकार की भोली भाली सैकड़ों बालिकाएं मक्कार औरतों अथवा पुरुष एजेन्टों द्वारा ऊँची तनख्वाह का लालच देकर बहला फुसलाकर खाड़ी देशों में पहुँचाई जाती हैं। लेकिन



हमारे जनप्रिय नेता पं० नेहरू

जननायक, भारत उन्नायक, श्री पं० जवाहर लाल नेहरू, जिनकी पुण्यतिथि पर सम्पूर्ण राष्ट्र ने मई 27, 1989 को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

उनके शताब्दी वर्ष में प्रदेश की आर्य जनता की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने उनके "महान भारत" बनाने के स्वप्न को साकार बनाने हेतु प्रदेश की जनता का आह्वान किया है। राष्ट्र इस महान आत्मा के प्रति सदैव कृतज्ञ रहेगा।

वहाँ पहुँचने पर उनके सपने टूट जाते हैं। उन्हें हर महीने 100 से 200 डालर की तनख्वाह दी जाती है। भय, अभाव, यौन शोषण, तथा मारपीट आम बात है और फिर शुरू होती है मध्ययुग की वह बर्बर कहानी जब औरत को भोग्य सामग्री मात्र समझा जाने लगा था। यह किसी धर्म का सवाल नहीं है पूरी नारी जाति की अस्मिता का प्रश्न है, मानवीय प्रश्न है। हिन्दू समाज में ही हजारों बेगुनाह सिर्फ पैसों के लोभ में मिट्टी का तेल डालकर फूँक दी जाती है। और हम उन्हें धर्म का मसीहा कहते हैं जिन्होंने कहा - "बीवियाँ तुम्हारे लिये हैं मानिन्द-खेतियाँ ---- इन्हें हरम में लाओ और इनसे इस्लाम की पैदावार बढ़ाओ --- -कुरआन

"नरकस्य द्वारंकिम्? -- "नारी, -- शंकराचार्य

अवगुण आठ सदा उर रहहीं --- -- तुलसी

धिक्कार है ऐसी मानवीय बुद्धि पर। हम और आपको जिस नारी ने अपनी कोख से जन्म दिया उसका करुण चीत्कार, आज इन्ही की देन के कारण आकाश और वायुमण्डल में गूंज रहा है। याद कीजिए उस मन्वन्तर युग को जब विश्व में मनु का संविधान लागू था - पितृभिर्भ्रातृभिश्चैता पतिभिर्देवरैस्तथा।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः।।

कल्याण की कामना करने वाले पिता, भाई, माता, पति, देवर आदि को नारी की पूजा और सत्कार करना चाहिए। राजा अश्वपति ने कहा था- "न स्वैरी स्वैरिणी कुतः" मेरे राष्ट्र में व्यभिचारी पुरुष ही नहीं है व्यभिचारिणी स्त्रियाँ कहाँ होंगी।

अरब देशों में जाकर बरबाद होने वाली भारतीय कन्या, चाहे वह किसी मत या सम्प्रदाय की हो, हम सबकी बेटी है। उसके सम्मान का प्रश्न हमारे देश के सम्मान के साथ जुड़ा हुआ है। उनकी रक्षा करना हम सबका धर्म है। बांग्लादेश ने पिछले वर्ष ही अपने यहाँ की महिलाओं को अरब में नौकरानी बनकर जाने पर रोक लगा दी है। हमारा भारत सरकार से अनुरोध है इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करें और तुरन्त कोई प्रभावी कद उठाए।

आर्यसमाज की यही पुकार है - प्यारे माता पिताओं तुम कुछ भी हो, कहीं भी हो, किसी मत या सम्प्रदाय के हो, अपने इन कलेजे के टुकड़ों पर रहम करो। ईश्वर ने पुत्री के रूप में तुम्हें अनमोल रत्न दिया है इन्हें दुख पहुँचाया तो ईश्वर तुम्हें कभी क्षमा नहीं करेगा। वेद कहता है-

"इमां नारीं सुकृते दधात ।"

नारी की सुख और समृद्धि को सदा बढ़ाते रहना।

आर्यसमाज सभी का हितैषी है

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक,
अध्यक्ष, वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उ0प्र0।

जो लोग आर्य समाजी नहीं बने हैं, वह आर्यसमाज को अपना विरोधी समझते हैं। चाहे वह हिन्दु हों अथवा मुसलमान, ईसाई हों, जैनी हों अथवा सिक्ख हों, पारसी आदि कोई भी हों, किन्तु इसमें नाम मात्र की भी सचाई नहीं है। सत्य तो यह है कि आर्यसमाज सभी लोगों का, समस्त संसार का ही नहीं अपितु विश्व ब्रह्माण्ड और न केवल मनुष्य मात्र का अपितु प्राणिमात्र का हितैषी है।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के शब्दों में "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

विज्ञ पाठक विचार करें कि संसार का उपकार करना जिस संस्था का मुख्य उद्देश्य हो, वह संसार की हितैषी है अथवा नहीं और उससे बढ़कर सब का हितैषी और कौन हो सकता है? और फिर संसार के उपकार की बात कहना एक अलग बात है किन्तु उपकार कैसे हो सकता है, यह दूसरी बात। आर्यसमाज के स्वनाम धन्य संस्थापक ने तो संसार के उपकार का प्रकार अर्थात उसके सूत्र भी आर्य समाज के उपर्युक्त नियम ही में बता दिये हैं।

पहला सूत्र है शारीरिक उन्नति करना। शारीरिक से अभिप्राय है स्वास्थ्य सम्बन्धी। आर्यसमाज गुरुकुल शिक्षा पद्धति द्वारा बालकों से ब्रह्मचर्य का पालन कराके और जीवन में संयमपूर्वक रहने के संस्कार डालकर शारीरिक उन्नति का सूत्र लागू करना चाहता है। इससे शारीरिक दृष्टि से हृष्ट-पुष्ट मानवों का निर्माण होगा। स्वस्थ मानव सन्तानोत्पत्ति करने और वह भी स्वस्थ सन्तान की उत्पत्ति करने में समर्थ होता है।

इस नियम का दूसरा सूत्र है आत्मिक उन्नति करना। गुरुकुलीय शिक्षा के द्वारा बालक-बालिकाओं में आध्यात्मिक भूख जागृत की जाती है। उन्हें ईश्वर का ध्यान अर्थात सन्ध्या करना सिखायी जाती है और ईश्वर के वास्तविक स्वरूप की जानकारी करायी जाती है।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में परमात्मा के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी करा दी है। वह नियम निम्नलिखित है--------

ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

विश्व मानवता परमात्मा के नाम पर भटक तथा बहक रही है। ऋषि दयानन्द ने उक्त नियम में बताया है कि वह सत्-चित-आनन्दस्वरूप है। सत् वह सदा रहता है और उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता तथा वह चित् चेतन है, ज्ञानी है और उसका स्वरूप आनन्द है। आनन्द देखने की नहीं, अनुभूति की वस्तु है अतएव उसके दर्शन का नहीं अपितु उसके स्वरूप {आनन्द} के अनुभव का प्रयत्न करना चाहिए वह नेत्रों द्वारा नहीं अपितु मन से होगा। क्योंकि आनन्द की अनुभूति मन का विषय है, इन्द्रियों का नहीं।

दूसरी बात बतायी है परमात्मा के निराकार होने की। निराकार अर्थात् जिसका कोई आकार, कोई डील-डौल न हो और डील-डौल न होगा तब - जब शरीर न होगा। इसका अर्थ है कि वह शरीर धारी नहीं है, और जो शरीरधारी नहीं है उसकी मूर्ति नहीं बनायी जा सकती। इससे यह सिद्ध हुआ कि मूर्ति-पूजा निरर्थक है। आगे कहा गया है, वह सर्वशक्तिमान है अर्थात् अपने कर्तव्य-कर्मों में किसी के सहयोग की उसे आवश्यकता नहीं और न किसी उपकरण की आवश्यकता है। वह न्यायकारी है अर्थात् जैसा जो करता है, वैसा ही भोगता है। वह न तो किसी को छूट देता है और न अकारण दुःख रूप दण्ड तथा सुख रूप पुरस्कार।

वह दयालु है, उसके स्वभाव में निर्दयता नहीं है। वह अजन्मा है अर्थात् उसका न कभी जन्म हुआ और न होगा। कुछ लोग परमात्मा को अवतार लेने वाला अर्थात् समय-समय पर जन्म धारण करने वाला कहते हैं। यह उनकी भ्रान्ति है। वह परमात्मा बिना जन्म लिये अशरीरी रहते हुए जड़-चेतनमय विश्व ब्रह्माण्ड का उत्पन्न कर इसकी व्यवस्था बनाये रखता है और जीवात्माओं द्वारा मानव शरीर धारण कर किये गये समस्त अच्छे-बुरे कर्मों की व्यवस्था रखकर उन्हें उसमें से प्रत्येक को स्व-स्व कर्मानुसार विविध योनियों और जन्म-जन्मान्तरों में भेजकर यथा योग्य कर्मफल रूपी भोग प्रदान करता है, वह अपने ही उत्पन्न किये किसी व्यक्ति को मारने के लिये जन्म लें अर्थात् बिना शरीर धारण किये उसे मार भी न सके, यह नितान्त ना समझी की बात है। वह अजन्मा है। न उसने कभी जन्म धारण किया है, न भविष्य में कभी जन्म लेगा।

वह अनन्त है अर्थात् उसका कभी अन्त नहीं होगा। वह पहले भी था, सृष्टि की उत्पत्ति से पहले भी था, अब भी है भविष्य में भी रहेगा। अनन्त अर्थात् असीम भी है, कहीं उसका अन्त नहीं होता अर्थात् सीमा समाप्त नहीं होती। निर्विकार उसमें विकार, विकृति अर्थात् बिगाड़ नहीं होता। वह सदैव एक रस बना रहता है। प्रलय काल में भी ऐसा ही था, अब भी ऐसा ही है और भविष्य में भी ऐसा ही-- जैसा अब है-- ज्यों का त्यों बना रहेगा।

वह अनादि है। उसका आदि अर्थात् प्रारम्भ कभी नहीं था। इसी कारण से उसे अनादि तत्व कहा जाता है। उसकी उपमा का अर्थात् उस जैसे गुण-कर्म-स्वभाव युक्त अन्य कोई तत्व नहीं है, इसलिये वह अनुपम है वह सर्वाधार-सब का आधार, सब का आश्रय, सबका सहारा है और सबका धारण करने वाला है, विश्व ब्रह्माण्ड को उसी ने धारण किया है। सर्वेश्वर-सबका ईश्वर सबका सबसे श्रेष्ठ शासक अर्थात् न केवल मनुष्यों अपितु मनुष्यों में जो शासकगण हैं, उनका भी शासक है। मनुष्यों का ही शासक नहीं अपितु समस्त जड़-चेतनादिकों पर उस सबसे श्रेष्ठ शासक का शासन है।

वह सर्वव्यापक-सबके, न केवल प्राणि मात्र के अपितु अप्राणि अर्थात् जड़ पदार्थों के भीतर भी व्याप रहा है और समस्त जड़-चेतनादिकों से बाहर जो आकाश और जो अन्तरिक्ष है, उसमें भी व्याप रहा है। इसी कारण समस्त जड़ चेतन के भीतर की स्थिति को भी जानता है और इस समस्त जड़-चेतन के भीतर की स्थिति को जानने के कारण उसे सर्वान्तर्यामी कहते हैं।

वह अजर है, उसे कभी जरा, वृद्धावस्था नहीं सताती। वृद्धावस्था शरीर में व्यापती है। परमात्मा क्योंकि अशरीरी है, इसलिये उसे वृद्धावस्था प्राप्त होने का प्रश्न ही नहीं उपस्थित होता। जरा का अर्थ जीर्णता भी है। परमात्मा के अशरीरी होने से उसमें जीर्णता को अवसर ही नहीं है। जीर्णता अर्थात् निर्बलता भी शरीर के जीर्ण होने पर प्रकट होती है। वह अमर है अर्थात् मरता कभी नहीं। क्योंकि शरीर नहीं है। अतः जीर्णता नहीं आती और जब जीर्णता ही नहीं आती तो मृत्यु भी नहीं आ सकती। मृत्यु नाम भी जीव और शरीर के सम्बन्ध विच्छेद होने का है। परमात्मा का शरीर ही नहीं तो विच्छेद किसका होगा? अतः वह अमर है। वह अभी भी है। भय होता है अपने से शक्तिशाली अथवा अपने समान से। परमात्मा से न कोई शक्तिशाली है और न कोई उसके समान एकदर्थ उसे भय नहीं होता।

वह नित्य अर्थात् सदा और प्रत्येक समय रहने वाला है। ऐसा कोई समय नहीं बीता, जब परमात्मा नहीं था। अब भी वह है और भविष्य में भी वह सर्वदा रहेगा, अतएव वह नित्य है। वह पवित्र है-- इतना पवित्र कि कोई भी, किसी भी प्रकार की अपवित्रता उसे नहीं लगती। अपवित्रतायें लगती हैं शरीर में वह है शरीर रहित। अतः उस पर अपवित्रताओं का लगाव नहीं होता, इसीलिये उसे निर्लेप कहते हैं, वही सृष्टिकर्ता अर्थात् सृष्टि का उत्पन्न करने वाला है अतएव उसी की उपासना करनी योग्य है- अन्य की नहीं। इस प्रकार परमात्मा के स्वरूप को समझ कर उपासना करने से ही आत्मिक उन्नति होती है, अन्य प्रकार से नहीं। इस प्रकार से आत्मोन्नति किये हुए व्यक्तियों के द्वारा जो समाज बनेगा, वह आचार-विचार से पवित्र होगा।

दूसरे इस प्रकार से शरीरिक और आत्मिक उन्नति किये हुए व्यक्ति ही समाज को उन्नति की ओर अग्रसर कर सकते हैं।

आर्य समाज का आठवाँ नियम है "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।" अविद्या का नाश होगा ही विद्या की वृद्धि से। विद्या की वृद्धि के प्रकार है--- विद्यालय, पुस्तकालय, उपदेश आदि। आर्यसमाज अपनी स्थापना के समय से ही प्रत्येक प्रकार से विद्या की वृद्धि में लगा है। उसने भारत और भारत से बाहर विदेशों में भी सहस्रों की संख्या में प्राथमिक विद्यालयों से लेकर महाविद्यालय तक खोले हुए हैं। लड़कों और लड़कियों दोनों के लिए पृथक-पृथक लगभग 100 गुरुकुल खोले हुए है। सहस्रों पुस्तकालय और वाचनालय आर्यसमाज मन्दिरों में स्थापित किये हुए हैं। दर्जनों पत्र-पत्रिकायें आर्यसमाज की शिरोमणि सभाओं द्वारा तथा अनेक अन्य आर्यसमाजी विचार की संस्थाओं द्वारा प्रकाशित हो रहे हैं। जहाँ-जहाँ आर्य समाजें हैं, वहाँ-वहाँ वर्ष में एक बार अथवा एक से अधिक बार सत्संगों का आयोजन कर और विद्वानों को उस आयोजन में आमन्त्रित कर प्रवचनों द्वारा सर्वसाधारण को विद्या (ज्ञान) दान किया जाता है। यह सभी आर्यसमाज के सर्वहितैषी होने के प्रमाण हैं।

आर्यसमाज के नौवें नियम में महर्षि ने यह विधान कर कि "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये" आर्यसमाज के सभी के हितैषी स्वरूप को नितान्त उज्जवल कर दिया है। आर्य समाज के दसवें नियम में प्रत्येक हितकारी नियम में सबकी स्वतन्त्रता की चर्चा करके भी सर्व हिताकरी नियम पालने में परतन्त्र रहने का विधान किया है।

पाठकगण। यह सम्पूर्ण विवेचन यह सिद्ध करने को पर्याप्त है कि आर्यसमाज सर्व हितैषी संस्था है, यह कोई सम्प्रदाय, मत या पन्थ नहीं है।

आर्यसमाज ----- आर्य समाज ही है

प्रिय पाठकगण। अपने पूर्व लेख में हमने यह चर्चा की है कि आर्यसमाज न तो क्लब है और न सम्प्रदाय है। ऊपर आर्यसमाज के सर्व-हितैषी रूप का भी संक्षिप्त वर्णन कर दिया है अब हम यह कहना चाहते हैं कि आर्यसमाज-आर्य समाज ही है।

आपने इससे पहले स्तम्भ में आर्यसमाज के सर्व हितैषी स्वरूप की थोड़ी सी चर्चा पढ़ी है। सबका हित चिन्तन और सर्वहित कारक कार्यों को वही लोग करते हैं, जो आर्य होते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि आर्यत्व परहित-चिन्तन और परहित-साधन में ही निहित है। स्व-हित पशु-पक्षी तथा अनार्य मनुष्य सभी करते हैं। आर्यशब्द का अर्थ है श्रेष्ठ। जो परहित चिन्तन और परहित साधन न करें, वह आर्य कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता।

परहित-चिन्तकों और परहित साधकों से मिलकर बना हुआ समाज- आर्यसमाज कहलाता है। आर्यसमाज का छठा नियम इसकी स्पष्ट घोषणा कर रहा है- "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है" न केवल उद्देश्य अपितु मुख्य उद्देश्य है। इसका अर्थ यह है कि आर्यसमाज की स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संसार के उपकार के लिये ही की थी।

आर्य शब्द संस्कृत की "ऋ" गतौ धातु से बना है। जिसमें गति हो, जो आगे बढ़ने के लिये उत्तरोत्तर प्रयत्नशील हो, वह आर्य है अर्थात् आर्य का अर्थ है प्रगतिशील। इस प्रकार आर्यसमाज का अर्थ हुआ प्रगतिशील, उन्नतिशील लोगों का समाज। उन्नति दोनों प्रकार की होती है, भौतिक और आध्यात्मिक भी। अतएव आर्यसमाज का अर्थ हुआ उत्तरोत्तर, आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार की उन्नति करने वालों का समाज। इसी प्रकार का समाज श्रेष्ठ व्यक्तियों का समाज कहलाता है।

आर्यसमाज के 9वें नियम में यह कहकर कि "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए" परहित साधन तथा परोपकार को प्राथमिकता तथा स्व-हित पर परहित को वरीयता प्रदान कर दी है। इस प्रकार आर्यसमाज ऐसे लोगों का समाज है कि जो स्वयं तो आध्यात्मिक और भौतिक उन्नति करें ही, इस लोक और परलोक साधन में, इस लोक के साथ-साथ परलोक साधन में भी परम पुरुषार्थ करें ही, किन्तु अन्यों के हित के लिये भी पूर्ण सामर्थ्य के साथ जुटे रहें।

फिर ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के तीसरे नियम में "वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म" बताया है, क्योंकि वह वेद को "सब सत्य विद्याओं का पुस्तक" मानते हैं। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि ऋषिवर मानव-मात्र की उन्नति का साधन वेद को मानते हैं। ऐसी स्थिति में समस्त आर्य जनों और सामूहिक रूप से आर्य समाजों का परम कर्तव्य हो जाता है कि वह यथा सम्भव स्व-शक्ति के अनुसार वेद के अध्ययन और उसके प्रचार-प्रसार में जुट जायें। यही आर्यसमाज का वास्तविक कार्य है, इसी से विश्व मानवता का भला होगा।

यही आर्यसमाज है और यही आर्यसमाज का वास्तविक स्वरूप है। इसी लिये हम यह कहते हैं कि आर्य समाज-आर्य -समाज ही है, न क्लब है और न सम्प्रदाय, मत-पन्थ आदि है।

आर्य समाज के द्वारा किये जाने वाले अन्य समस्त सेवा कार्य तो सम-सामयिक, अल्पकालिक और वेद को जनमानस तक पहुँचाने के लिये साधन तथा जनसम्पर्क के सेतु मात्र हैं।

हम अबोध प्राणी

-आचार्य वेदव्रत अवस्थी वेद मन्दिर
हिन्दनगर, लखनऊ।

ओ३म् विशं विशं मघवा पर्यशायत, जनाना धेना अव चाकषद् वृषा
यस्याह शक्रः सवनेषु रण्यति, सतीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः
ऋ0 वेद 10-43-6

भावानुवाद

कण कण में विभु समाया पर हम अबोध प्राणी
सत्ता कृपालु प्रभु की अब तक नहीं है जानी।
मायां के छल छल में छलते ही आ रहे हैं
बस ज्ञान नेत्र ढक्कर उसको ही ध्या रहे हैं
जीवन हमें दिया है किस हेतु मेरी माँ ने
अज्ञान पंक में फंस उसको भुलाया हमने
वह प्रेरणायें देता सुख का विधानकर्ता
मेधा को सुमेधा है करता हमारा भर्ता
उपदेश वेद का सुन तीनों सवन संवारें
तज छद्म छल व ईर्ष्या अभिमान को निसारें
पी सोम सुधा प्रभु की बन जायें शुद्ध ज्ञानी
आनन्द गीत गायें मेरी पवित्र वाणी।

जागरण गीत

डॉ0 (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी,
श्यामगंज बरेली- 243005

जागरण के गीत क्यों तुम गा न पाते ?
यह समय शृंगार का कब ?
पथ बना अंगार का जब ।
फैलता जाता तिमिर बहु,
नीलनभ किस ओर है अब ?
चेतना मूर्छित हुई है,
क्यों न स्पन्दित बनाकर हर्ष पाते ?
यह मिला किस अर्थ जीवन ?
क्यों दृगों का है निमीलन ?
का पुरुष आधीन, मन के,
नित्य कुंठित और उन्मन।
स्वप्न स्वर्णिम क्यों नहीं आकार पाते?
है नहीं कुछ भी असम्भव,
विघ्न में ही राह अभिनव,
मीत कह कर के विषमता,
तुम मनाओ नूतनोत्सव,
क्या नहीं मणिदीप बन, पथ को सजाते ?

अध्यात्म सुधा

आत्म-तत्व-चिन्तन

§श्री पं0 सूर्यबली पाण्डेय, जौनपुर§

गतांक से आगे:-

सा0शास्त्र ने केवल स्थूल और सूक्ष्म दो ही शरीर माना है पर अन्यों ने कारण और लिंग शरीर भी स्वीकार किया है। उनमें प्रथम के 13 करणों को लिंग शरीर तथा पश्चात के पंच तन्मात्राओं को कारण शरीर बतलाया है। सांख्य ने लिंग और करण दोनों को मिला कर मात्र सूक्ष्म शरीर नाम दिया है। इन्हीं स्थूल और सूक्ष्म शरीरों के साथ जीवात्मा जीवन के भोगों को भोगता है। सूक्ष्म शरीर तो जीवन के साथ सदा ही बना रहता है पर स्थूल शरीर के अभाव में जीवात्मा किसी भी प्रकार का कार्य नहीं कर सकता। ज्ञान कर्म और भोग तीनों का उपयोग स्थूल शरीर की उपस्थिति में ही सम्भव है।

अब प्रश्न यह रह जाता है कि स्थूल शरीर जीवात्मा को कब प्राप्त होता है? सामान्य रूप से यह धारणा व्याप्त है कि प्राणी जन्म के साथ स्थूल शरीर को धारण कर लेता है। जन्म का अर्थ माता के गर्भ से बाहर आना। परन्तु बात ऐसी नहीं है। यह जीव शरीर धारण नहीं करता अपितु स्वयमेव उसका निर्माण करता है। जन्म के बहुत पूर्व से ही वह शरीर का निर्माण प्रारम्भ कर देता है। आप कहेंगे क्या गर्भाधान के समय से ही उसका प्रारम्भ हो जाता है? नहीं-नहीं। उससे बहुत पूर्व ही जीव अपने शरीर के निर्माण में लग जाता है। जैसे एक चना जब खेत में पड़ जाता है तब वह अपनी परिस्थितियों के अनुसार स्वयमेव क्षत्रिय शक्ति खींच कर अपने स्वरूप का निर्माण करने लग जाता है। उसी प्रकार जीवात्मा अन्न और जल के साहचर्य से सर्व प्रथम पिता के शरीर में प्रविष्ट होता है और प्रविष्ट होते ही अंग-अंग से अपने अनुकूल तेजस खींच कर रेतस §वीर्य§ के कण के रूप में अपने शरीर का निर्माण करने लगता है। पिता जब इसी रेतस का माता के गर्भ में आधान §स्थापन§ करता है तब वह जीवात्मा का प्रथम जन्म कहलाता है। इसी को ऐतरेय उपनिषद का ऋषि इस प्रकार व्यक्त करता है" पुरुषे ह वै-अयमादितो गर्भो भवति यदेतत् रेतः। तदेतत् सर्वेभ्यः अंगेभ्यः तेजः सम्भूतं आत्मवत् मेतआनं विमति। तदा स्त्रियां सिंचति अथैनत् लनयति तदस्य प्रथमं जन्म"।

इस प्रकार हमने देखा कि जीवात्मा पुरुष के रेतस का पार्थिव शरीर धारण कर उसके माध्यम से माता के गर्भ में आता है और माता के शरीर से अनुकूल पदार्थो को ग्रहण करके उत्तरोत्तर उक्त शरीर का विकास करता हुआ 9 मास के अन्दर कई पौण्ड का स्वरूप बना लेता है। वही पिण्ड जब बाहर आता है तो वातावरण की अनुकूलता को ग्रहण करता हुआ शनैः शनैः पूर्णता को प्राप्त हो जाता है। इसके विपरीत कुछ विचारकों का मत है कि जीव अर्भक के अन्दर उदर दरी से बाहर आने के पश्चात आता है। उनका यह कथन न युक्तिपूर्ण है और न तर्क संगत। यदि पुरुष के उक्त रेतस में जीव न हो तो उसका नाम ही बीज नहीं हो सकता। साथ ही यदि उस बीज में जीव न हो तो स्वयं वह बीज या रेतस सड़ जाय और यदि माता के गर्भ के अन्दर आरम्भ ही से जीव न हो तो उसका न क्रमिक विकास हो सकता है और न वह स्थिर रह सकता है। निश्चय ही गर्भस्थ अर्भक सड़ जाय और माता का जीवन दूभर बन जाय। इसलिये यही सत्य है कि जीवात्मा पिता के रेतस के अन्दर आने से पूर्व विद्यमान था, उसी के साथ माता के गर्भ में आ कर अपने शरीर का विकास करता रहा और उसी शरीर को लेकर संसार में अवतरित हुआ जिसके द्वारा जीवन पर्यन्त नाना भोगों का उपभोग करता हुआ जगत-पिता की व्यवस्था के अनुसार एक दिन उसका परित्याग कर पुनः उसी क्रम का नवीन देह धारण कर लेगा।

अब प्रश्न उठता है कि शरीर त्याग के पश्चात क्या स्वयं जीवात्मा भी समाप्त हो जायगा? सामान्य जनों में तो ऐसे प्रश्नों का उठना स्वाभाविक है पर कभी-कभी विशिष्ट जन भी इस प्रश्न को प्रस्तुत कर देते हैं। किन्तु जब यह सत्य है कि जीव पिता के शरीर में आता है और जन्म से पूर्व विद्यमान रहता है तब उसका मृत्यु के पश्चात भी विद्यमान रहना स्वयमेव सिद्ध है। इसी कारण गीता ने कहा है- "नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः"। §गीता 2-23§ अर्थात् इस आत्मा को न शस्त्र काट सकते हैं, न अग्नि जला सकता है यानी इसे गला नहीं सकता और वायु उसे सोखने में असमर्थ है। आत्माकी अमरता का इससे बड़ा और कौन सा प्रमाण हो सकता है? जो लोग यह कहते हैं कि आत्मा पार्थिव शरीर के साथ ही समाप्त हो जाया करता है, भगवान् कृष्ण गीता में उनके लिये मृत्यु का स्वरूप बतलाते हुए कहते हैं- "वासांसि जीर्णानि यथा विहाय, नवानि गृहणाति नरोपराणि। तथा शरीराणि विहाय जीर्णानि अन्यानि संयाति नवानि देही। §गीता 2-22§ अर्थात् जैसे मनुष्य पुराने वस्त्र को छोड़ दूसरा नवीन वस्त्र धारण कर लेता है उसी प्रकार यह आत्मा अपने पुराने शरीर को छोड़ नया शरीर धारण कर लेता है। गीता ने इतना ही नहीं अपितु आत्मा की अमरता का प्रतिपादन करते हुए आगे कहा है- "न जायते म्रियते वा कदाचित्, नायं भूत्वा भविता वा न भूयः। अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो, न हन्यते हन्य माने शरीरे"। §गीता2-20§ अर्थात यह आत्मा न जन्म लेता है और न मरता है। न यही है कि एक बार होकर पुनः नहीं होगा। यह अजन्मा, नित्य और सदा एक रस रहने वाला है। इस मरण धर्मा शरीर में वह मारा नहीं जा सकता। इसी विषय का प्रतिपादन कठोपनिषद इस प्रकार करती है-

"न जायते मृतये वा विपश्चित्, नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्। अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो, न हन्यते हन्यमाने शरीरे। ।कठो02·1·18 अर्थात् न यह आत्मा जन्म लेता है और न मरता है। न यह किसी पदार्थ का परिवर्तित रूप है और न इससे कोई अन्य पदार्थ बन सकता है। यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत और पुराना है। वह आत्मा इस मरणधर्मा शरीर में मारा नहीं जा सकता छान्दोग्योपनिषद भी इस विषय में अपना समर्थन इस प्रकार देती है- "जीवापेतं वाव किलेद म्रियते न जीवो म्रियते"। §छ06·11§ अर्थात् यह जीव नहीं मरता। जब जीव शरीर से निकल जाता है तब यह शरीर मर जाता है। इसी प्रकार बृहदारण्यक उपनिषद् में महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी विदुषी पत्नी मैत्रेयी से कहते हैं- "न वा अरेऽहं मोहं ब्रवीमि। अविनाशी वा अरेः अयमात्मा अनुच्छित्ति धर्मा" §बृहदा0 4·5·14§ अर्थात् अरे मैत्रेयी। मैं व्यर्थ नहीं कहता यह आत्मा अविनाशी है। उसका खण्डन नहीं हो सकता। उपर्युक्त सारे प्रमाणों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है कि आत्मा नित्य, विनाश रहित और एक रस रहने वाला है। वह जीवन और मरण से परे है। जीवन और मरण शब्द का व्यवहार केवल शरीर - संबंध से होता है। अन्यथा आत्मा से उसका कोई भी संबंध नहीं है।

जब यह आत्मा अनादि और नित्य है तब इस प्रश्न का उठना स्वाभाविक है कि इस अमर आत्मा का नाशवान् शरीर से संबंध आकस्मिक है या स्वाभाविक? उत्तर स्पष्ट है यदि आत्मा को एक ही शरीर मिले और वह भी नाशवान्, तब तो यही कहना समीचीन होगा कि दैवात् इस शरीर का संबंध आत्मा से हो गया है। पर बात ऐसी नहीं है। इस आत्मा को सृष्टि पर्यन्त शरीर मिलता रहता है। सृष्टि से प्रलय तक बिना शरीर के आत्मा का कार्य चल ही नहीं सकता। किन्तु इतनी लम्बी अवधि तक एक ही शरीर का बना रहना सम्भव नहीं है। आत्मा के सारे क्रिया-कलाप का साधन शरीर है। शरीर बनता है इसलिये उसका बिगड़ना भी अवश्य सम्भाव्य है। इसी कारण साधन रूप शरीर उसे बार-बार इसलिये मिलता रहता है कि आत्मा के ज्ञान, भोग और क्रिया की निरन्तरता बनी रहे। इसी सिद्धान्त को वैदिक सिद्धान्तों में आवागमन का सिद्धान्त कहते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार जन्म और मृत्यु दो जीवनों के मध्य द्वार मात्र है। एक शरीर छोड़ा दूसरा शरीर मिल गया। "जिस प्रकार जीवात्मा का निज आत्मिक जीवन अनादि और अनन्त है। उसी प्रकार शरीरिक जीवन का प्रवाह अनादि और अनन्त है। जीवात्मा स्वयं स्वरूप से अजर और अमर है और उसका शरीर प्रवाह से अजर और अमर है। प्रत्येक शरीर का आदि और अन्त है परन्तु उसके क्रमिक प्रवाह का आदि और अन्त नहीं है।" इसी कारण यह कहना सत्य है कि आत्मा और शरीर का संबंध आकस्मिक नहीं अपितु स्वाभाविक है। वैदिक धर्म में इसी सिद्धान्त के अनुसार पुनर्जन्म का सिद्धान्त स्वीकृत है। प्राचीन काल में यह सिद्धान्त समस्त विश्व में व्याप्त था। पुराने मिश्र निवासी इसे मानते थे। अमेरिका के प्राचीन निवासी जिन्हें रेड इण्डियन कहते हैं, इसे मान्य समझते थे। आस्ट्रेलिया वालों में भी यह सिद्धान्त पूर्णतया मान्य था। कालान्तर में यहूदियों ने अपनी मूर्खता से इसे अमान्य ठहराया और पश्चात

मुरादाबाद जनपद में धर्म परिवर्तन

३०० हरिजन परिवारों का ईसाईकरण

मुरादाबाद- ठाकुर द्वारा बस मार्ग पर 10 किलोमीटर पर पक्की सड़क से मात्र आधा फर्लांग की दूरी पर स्थित- भैसिया-हई चक बेगमपुर ग्रामों में 300 हरिजन परिवारों को विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर इसाई मत में दीक्षित किया गया है। हई गांव में घुसते ही पश्चिमी किनारे से ही हरिजनों की बस्ती शुरु हो जाती है इस बस्ती का सबसे पहला घर रघुनाथ चौधरी का है रघुनाथ चौधरी के अलावा जिन परिवारों ने धर्म परिवर्तन किया है उनमें रघुवीर, छवरा, कल्लू, राम चरन, मल्लू प्रभु, ब्रजु, रामलाल सीमपाल लक्ष्मी भोरा प्यारे पूरन आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं - हरिजनों ने स्वीकार किया है कि - वे सुविधाए मिलने के लालच में ही इसाई बने हैं। उन्होंने पूजा पाठ करना बन्द कर दिया है दोनों समय आकर पादरी उन्हें नवनिर्मित चर्च में प्रार्थना कराते हैं तथा प्रभुईसा के उपदेश देते हैं उन्होंने गांव का नाम बदलकर भी पादरी पुरम कर दिया है।

हरि आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0।

आवश्यक सूचना

§1§

सभा के अन्तर्गत समस्त महोपदेशकों, उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों से निवेदन है कि आर्यमित्र के नवीन ग्राहक कम से कम 10 प्रत्येक मास में बनायें। यह विशेष रूप से अनिवार्य है।

§2§

दयानन्द संघ में, समस्त अवैतानिक महोपदेशकों, उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों से नम्र निवेदन है कि सभा की वार्षिक रिपोर्ट बनने का कार्य प्रारम्भ हो गया है अतः अपनी संक्षिप्त वार्षिक रिपोर्ट, 1 जनवरी 88 से 31 दिसम्बर, 88 तक तुरन्त सभा कार्यालय उपदेश विभाग को, 30 जून, 89 तक भेजें। इसके पश्चात आने पर सभा का कोई दायित्व नहीं होगा।

हरिचन्द्र आर्य
अधिष्ठाता
उपदेश विभाग, आर्यप्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

- सभा के भजनोपदेशक श्री सीताराम आर्य द्वारा ग्राम- रसुलवापुर पो0 जोगीकोट§उन्नाव§ के श्री बेचेलाल आर्य के पुत्र चि0 गंगा राम आर्य का विवाह संस्कार दि0 18 मई 89 को वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

उसी से निकला हुआ ईसाईयत और इस्लाम में भी यह सिद्धान्त अमान्य ठहराया गया। परन्तु ओवरी नामक पादरी ने तो स्पष्ट कहा है कि "यह पुराना विश्वास जगत व्यापी है। और प्राचीन से प्राचीन समय तक पाया जाता है"। यहां तक कि इग्लैण्ड के एक पादरी को कहना पड़ा कि "इस विश्वास के माता-पिता और पूर्वजों का पता नहीं चलता। अर्थात् यह सिद्धान्त सृष्टि के आदिकाल से ही प्रचलित है"। पुनर्जन्म के संबंध में हमें अधिक कुछ नहीं कहना है पर यदि नवजात शिशु का सम्यक् निरिक्षण किया जाय तो उसका प्रत्येक क्रिया-कलाप पुनर्जन्म का साक्षी देगा। उन्हीं क्रिया-कलापों में से एक का उदाहरण देते हुए महर्षि गौतम अपने न्याय दर्शन में कहते हैं- "प्रेत्याहाराभ्यास कृतात् स्तन्याभिलाषात्"। न्या0 3·1·12 अर्थात् मरने के पूर्व प्राणी ने जो आहार का अभ्यास किया हुआ है। उसी से जन्म लेते ही उसे स्तन्यपान की इच्छा होती है और स्तन मुहं में लेते ही वह पूर्व कृत अभ्यासानुसार स्तन्यपान करने लगता है। पूर्व कृत अभ्यास का ही फल है कि मास्टर मदन जैसा 4-5 वर्ष का बालक अल्पावस्था में ही महान् संगीतज्ञ सिद्ध हुआ।

क्रमशः----

आचार्य विशुद्धानन्द दुर्घटनाग्रस्त

आर्य जगत के वेद एवं दर्शन के मूर्धन्य विद्वान आचार्य विशुद्धानन्द जी ऊपर से छज्जा गिरजाने के कारण गम्भीर रूप से घायल हो गये हैं। उनके सिर में कई टांके लगे हैं और वे बदायूं अस्पताल में भरती हैं।

हमें आचार्य जी के दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के समाचार से अत्यन्त दुख हुआ परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उन्हें शीघ्र स्वास्थ्य लाभ प्रदान करें।

इन्द्रराज, प्रधान। — मनमोहन तिवारी मंत्री।

लखनऊ जिला सभा द्वारा वेद प्रचार शिविर

लखनऊ-23 मई आर्य उप प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में बड़े मंगल के अवसर पर आज अलीगंज में हनुमान जी के मन्दिर के समीप एक प्रचार शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का शुभारम्भ प्रातः श्री मद्दयानन्द बाल सदन के ब्रह्मचारियों द्वारा यज्ञ से हुआ, तत्पश्चात शिविर का औपचारिक उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रान्तीय मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने किया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री तिवारी ने कहा आज धर्मन्तरण की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं इसलिए आर्यसमाज की जिम्मेदारी और भी बढ़ जाती है, हमें ऊँच-नीच का भेदभाव मिटाकर अछूतों को गले लगाना चाहिए जो हमसे बिछुड़ गये हैं उन्हें फिर अपने साथ मिलाना चाहिए ताकि पेट्रो डालर की सहायता प्राप्त विधर्मियों के कुचक्र विफल हो सकें।

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के मंत्री चन्द्र कुमार छावड़ा ने शिविर के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे पूर्वजों को लांछित कर भारतीय संस्कृति को प्रस्तुत कर उसे नष्ट करने के लिए उनका गन्दा स्वरूप प्रस्तुत करने की विदेशियों की एक साजिश चल रही है, आर्यसमाज इस तरह के शिविर जगह-जगह लगा कर समाज को इस कुचक्र से आगाह करता है उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति की रक्षा करने के लिए आर्यसमाज एक प्रहरी की भांति संघर्षरत है।

उप सभा के प्रधान आचार्य वेदव्रत अवस्थी ने कहा कि हनुमान जी बहुत पराक्रमी योद्धा थे राम की लंका पर विजय का सेहरा हनुमान जी पर ही बंधा उनके युद्ध कौशल के परिणाम स्वरूप ही लंका पर राम ने विजय प्राप्त की।

उन्होंने हनुमान जी की जन्म जयन्ती के अवसर पर जनमानस से उनके वास्तविक स्वरूप को जानने समझने और उसे अपने में उतारने का आहवान किया।

इस अवसर पर आर्यसमाज के विद्वान सुधीन्द्र शास्त्री, इन्द्र देव पाठक, मेधावी शास्त्री, रूप चन्द्र दीपक, वीरेन्द्र बहादुर-सिंह, अखिलेश कुमार, सत्य प्रकाश आर्य, जय प्रकाश आनन्द कुमार भण्डारी सत्यदेव सैनी तथा सत्यनारायण आर्य ने अपने विचार रखे।

-- संवाददाता।

उपनयन संस्कार

कानपुर। डा0 प्रकाशमित्र शास्त्री सम्पादक पारिजातम् संस्कृत मासिक के पौत्र चि0 अंशुमान का उपनयन एवं वेदारम्भ-संस्कार दिनांक 15-5-89 को उनके कानपुर स्थित निवास पर डा0 मुंशीराम शर्मा "सोम" ने सम्पन्न कराया।

आचार्य वेदव्रत अवस्थी भू0पू0 सम्पादक आर्यमित्र लखनऊ ने उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार का वैज्ञानिक विवेचन करते हुए वर्तमान परिवेश में उक्त संस्कारों की उपयोगिता पर विस्तृत प्रकाश डाला। ब्रह्मचारी को आशीर्वाद देने के लिए डा0 आशारानी राय उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश §सपरिवार§ सहित नगर व बाहर के अनेकों शिक्षाविद् साहित्य मनीषी विद्वान् समारोह में उपस्थित हुये। सायंकाल प्रीतिभोज का भी आयोजन हुआ।

श्रद्धांजलि महात्मा नारायण स्वामी क्रान्तिकारी

स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती
§वैदिक आश्रम§ मथुरा।

संसार में कुछ विभूतियाँ ऐसी आती हैं कि जो अपने कृतित्वों से साक्षात संस्था व समाज के रूप में चिरंजीवी रहती हैं। क्योंकि ऐसी विभूतियाँ कुछ ऐसी सामाजिक एवं विषम जटिल समस्याओं के क्रान्ति दर्शी व निर्णायक समाधान देने में महत्व पूर्ण अग्रणी भूमिका निर्वाह करते हैं, कि वे युग पुरुषों की पंक्ति में आजाते हैं। ऐसी ही एक महान् विभूति ने बीसवीं शताब्दी के पतनोन्मुख मानव चरित्र सामाजिक जीवन में व्यभिचार स्वतन्त्रता प्रेरक सदाचार ब्रम्हचर्य संयम विरोधी, अनात्मवादी भोग- विलास की स्वार्थान्ध परक नसबन्दी व परिवार नियोजन नामक अन्तर्राष्ट्रीय षडयन्त्र, हिन्दुत्व घाती सरकारी योजना को वेद ईश्वर, धर्म विरुद्ध सिद्ध करके अपने सिंहनाद से शासन-प्रशासन की जड़ें हिला दी, साथ ही घोषणा की नसबन्दी-उचित सिद्ध करने वाले को पचास हजार रुपये का इनाम। विगत 20 वर्षों से यह सिंहनाद पूज्य पाद स्वर्गीय महात्मा नारायण स्वामी जी "क्रान्तिकारी" का ही था।

साक्षात् में क्रान्ति योद्धा, क्रान्तिकारी, सन्यासी के नाम से ही आर्य जगत में सुविख्यात थे। विश्व हिन्दू परिषद हिन्दू महासभा- बजरंग दल, हिन्दू रक्षा दल आदि मंचों से भी क्रान्तिकारी जी का वेद धर्म विषय पर उपदेश हुआ करते थे। इन हिन्दू समस्याओं का झुकाव क्रान्तिकारी जी के कारण प्रायः आर्यसमाज की ओर होने लगा है। आर्य एवं हिन्दू किट्ठा करने एवं आर्यसमाज का क्रान्तिकारी स्वरूप प्रस्तुत कर भक्ति-वैदिक संस्कृति की प्रेरणा देने का श्रेय आर्य सन्यासी क्रान्तिकारी जी को ही है। उनका नारा था-

"आर्य हिन्दू नहीं लड़ेंगे, आर्य हिन्दू मिलकर रहेंगे।"

विश्व हिन्दू परिषद आदि संगठनों ने क्रान्तिकारी जी के उपदेशों से ही प्रेरित होकर अस्पृश्यता निवारण, बन्धुत्व-स्थापना, शुद्धि आन्दोलन, अन्तर्जातीय विवाह, आदि कार्यक्रमों को अपनी योजनाओं में समर्पित स्थान दिया। शराब, मॉस, अण्डा, धुम्रपान, दहेज आदि अनैतिक विश्वासों पर प्रहार करके इन्हें मानव समाज का भयंकर, कलंकित, शत्रु बताया स्वामी जी के युक्ति संगत आत्मग्राह्य उपदेशों से हिन्दू नामी समाजों में प्रभावशाली आन्दोलनवत् अमिट छाप आज भी देखी जा सकती है। क्रान्तिकारी जी के प्रमुख दो उपदेश आध्यात्मिक महत्वपूर्ण हैं-

1- शराबी, मॉसाहारी, नसबन्दी, कराने वाले पापी हैं इनका वाणी मात्र से भी सम्मान नहीं करना चाहिए।
2- जो शक्ति शाली धनवान पापी से डरता है, मानवता का वास्तविक शत्रु तो वही है।

भक्त चाहे आर्य समाज का हो अथवा हिन्दुओं के संगठन का, क्रान्तिकारी जी तो दोनों पर समान स्नेह करते थे। सम्भवतः वे इसी कारण विवाद के विषय भी बने। जबकि वे आर्यसमाज दयानन्द के ही आदर्श पक्ष में व धर्म एवं ईश्वरीय सिद्धान्त एकमेव वेद की हिन्दू संगठन मंचों पर व्याख्यान करते थे। अवैदिक मान्यताओं को मानव जीवन का कोढ़ मानकर सदैव सर्वत्र महर्षि दयानन्द गुणगान सहित वैदिक उपदेश करते थे, वे मानते थे कि दयानन्द एवं आर्यसमाज का ही सिंहनाद अन्य सभी मंचों पर भी होवे। मात्र आर्यसमाज के मंच ही इसे व्यापक बनाने में पर्याप्त नहीं हैं। क्यों कि आर्यसमाज के प्रति अन्यों की विचार धारा का मेल नहीं हो पाया- भ्रम फैला हुआ है। आर्यसमाज को ईश्वर, धर्म, देवी, देवताओं का सर्वथा विरोधी होने का भ्रम, नास्तिकों का दल होने के रूप में समझा जा रहा है। इसीलिए अधिकांश व्यक्ति आर्य समारोहों में आने से कतराते हैं। पूज्य क्रान्तिकारी जी ने हिन्दू संगठनों की इस भ्रामक दुर्बलता को पहिचान कर ही आर्येतर मंचों पर उपदेश प्रारम्भ किये थे। परिणाम स्वरूप उन्हें ईर्ष्या का पात्र बनना पड़ता था। जबकि उनकी सफलता के मूल्यांकन की उपेक्षा पक्षपात पूर्ण थी, वे अपनी आलोचनाओं के प्रति सदैव ही अविचलित रहे, अपने उद्देश्यों के प्रति सदैव समर्पित एवं सम्बद्ध होकर सक्रिय रहे। यही क्रान्ति दूत होने का लक्षण है।

निर्भीक ओजस्विता के कारण ही क्रान्तिकारी जी राजनेताओं एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों के मध्य अत्यधिक लोकप्रिय एवं सम्मानित रहे। उन्होंने इस सम्मान का श्रेय आर्यजगत को ही दिलाया न कि अपने विरोधियों को प्रताड़ित व पराजित करने में, यह उनकी महानता अविस्मरणीय रहेगी। वे इस सम्मान को व्यक्तिगत न मानकर आर्य जगत की धरोहर ही मानते थे। अन्य जन सम्मान पाने हेतु लालायित रहते हैं। मालाओं की प्रतीक्षा करते हैं जबकि क्रान्तिकारी जी सम्मान को तुच्छ समझते रहे। क्रान्तिकारी जी के विषय में लोकप्रिय है कि क्रान्तिकारी जी मंच पर कटु से कटुतर §गालियाँ§ शब्दों का प्रयोग उपदेशों में करते हैं और हम सभी §विद्वान§ मृदु साहित्यिक शब्दों की वर्षा करते हैं फिर भी हमें उनकी उपेक्षा सम्मान नहीं----- ----- चरण स्पर्श तो क्रान्तिकारी जी के ही होते हैं। श्रोताओं की भीड़ ------ उन्हीं के नाम पर एकत्र होती है, ऐसी क्या विशेषता है उनकी गालियों में।"

पूज्य क्रान्तिकारी जी का जन्म दिनांक, 5-11-1913 ई0 को जनपद फतेहपुर, ग्राम- जुनिहाँ में हुआ था। सन्-1934 ई0 में बी0ए0 तक शिक्षा गृहण करके सेना में भर्ती हुए। क्रमशः कमीशन प्राप्त करके 1938 में विशेष प्रतिभा से क्वार्टर मा0 तक पहुँच गये। ब्रिटिश शासन के अंग्रेज अधिकारी, वरिष्ठ भारतीय मूल सैन्य अधिकारियों का अपमान करना अपना अधिकार समझते थे। इसी कारण अपमानित किए जाने पर श्री रामनारायण जी "क्वार्टर मास्टर" ने कनिष्ट अंग्रेज अधिकारी को गोली से 1941 ई0 में उड़ा दिया। सैन्य न्यायालय ने श्री रामनारायण जी §क्रान्तिकारी स्वामी जी§ को मात्र सामान्य दोषी ही पाया 7 दिनों की सामान्य दण्ड मात्र देकर सैन्य सेवा से पदमुक्त स्वतः ही होने के लिए बाध्य किया गया। विशेषतयः श्री रामनारायण जी को सैन्य सेवा से अवकाश ग्रहण करना पड़ा। सन् 1948 के मास जौलाई में सभी परिजनों से पृथक परिजनों से पृथक एकान्त प्रवासीय तपस्वी जीवन प्रारम्भ किया। साधु §नौष्ठिक ब्रम्हचर्य आश्रम परम्परा§ वेश धारण करके क्रान्तिकारी महाराज आर्य समाज की ओर सन् 1935 ई0 में सैन्य सेवा काल से ही आकृष्ट हुए थे। लाहौर, करांची की सैन्य छावनियों में पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के भाषणों की छाप ने ही अंग्रेजी शासन के विरुद्ध स्वाभिमान का अलख जगाई।

ईश्वरीय व्यवस्था से यह क्रान्ति दीप क्रान्ति दूत बनकर यशस्वी नक्षत्रों के अमर पंक्ति में 6 नवम्बर 1988 नश्वर चोला छोड़कर, विराजमान होने दीपावली से दो दिन पूर्व प्रस्थान कर गया ताकि दीपावलि दीपों की मालाओं में क्रान्ति ज्वाला सन्देश देने की प्रेरणा दे सके। आगामी दीपावलियाँ क्रान्तिकारी जी को क्रान्ति नाद, सिंहनाद अमर रखने की शपथ दिलाने ही आयेगी।

व्याप्त अंगिरा

समिधादान-3

ओ३म् तन्त्वा समिद्भिरंगिरो घृतेन बर्द्धयामसि।
वृहच्छोचायविष्ठय स्वाहा। इदमग्नयेऽगिंरसे-इदन्न मम।।

हर वस्तु वस्तुएँ व्याप्त अंगिरा, घृत से मैं तुम्हें बढ़ाता हूँ।
घृत समिधा की आहुति देकर, मैं गीत तुम्हारे गाता हूँ।।

अंगिरा अग्नि घृत
प्रत्येक वस्तु में व्यापक हो
घृत समिधा की इस आहुति से
तुम बढ़ते बृहत प्रकाशक हो।
अंगिरा ग्रहण यह आहुति हो, श्रद्धा से तुम्हें चढ़ाता हूँ।
घृत समिधा की आहुति देकर, मैं गीत तुम्हारे गाता हूँ।।
बस रहे सकल साकेत तुम्हीं
कर रहे सत्य संकेत तुम्हीं
पहिचान वस्तुओं की होती
देते विश्लेषण तुम्हीं।
देता घृत समिधा ज्यों ज्यों मैं, त्यों त्यों प्रकाश मैं पाता हूँ।
घृत समिधा की आहुति देकर, मैं गीत तुम्हारे गाता हूँ।।
क्या अपनी थी सम्पदा कभी
वस्तु अंगिरा की सभी सभी
यह उसकी समिधा उसको दी
मिल गई कृपा प्रभु अभी अभी।
यह ज्योति अंगिरा की पाकर, मैं नत मस्तक हो जाता हूँ।
घृत समिधा की आहुति देकर, मैं गीत तुम्हारे गाता हूँ।।

- देवनारायण भारद्वाज, आजमगढ़।

बाल जगत

लघुकथा

अतिथि सत्कार का चमत्कार

डा0 शकुन चन्द्र आर्य,
लालगंज, रायबरेली।

महाभारत युद्ध सुनिश्चित हो गया था। कौरवों एवं पांडवों ने अपने-अपने समर्थक राजाओं को युद्ध में भाग लेने के लिए निमन्त्रण पत्र भेज दिये थे।

पत्र प्राप्त कर महराज शल्य अपने भानजे पांडवों की सहायता के लिए सैन्य बल के साथ हस्तिनापुर की ओर चल पड़े। जब वे हस्तिनापुर से कुछ दूर रह गये तो उन्होंने अपना डेरा एक बाग में डाल दिया।

शल्य के आगमन तथा उनके बाग में ठहरने का समाचार जब गुप्तचरों द्वारा कौरवनरेश दुर्योधन को मिला तो यह जानते हुए कि वह पांडवों की सहायता के लिए आ रहे हैं। उसने अपनी ओर मिलाने की दृष्टि से अपने सेवकों को उनका जोरदार स्वागत एवं सत्कार करने का आदेश दिया।

दुर्योधन के सेवकों ने अपने राजा के आदेशानुसार राजा शल्य की हर प्रकार की सेवा की तथा उन्हें भाँति-भाँति की सुख सुविधायें उपलब्ध कराई, जिससे वे बहुत प्रसन्न एवं प्रभावित हुए। ऐसा करते समय सेवकों ने अपने राजा के निर्देश के अनुसार बार-बार पूछने के बावजूद राजा शल्य को इस बात से अनभिज्ञ रखा कि उसकी सेवा किसकी ओर से की जा रही है।

कई दिनों के बाद एक दिन राजाशल्य ने प्रधान सेवक को बुलाकर कहा कि, "हे सेवक मैं तुम्हारे राजा द्वारा किये गये आदर-सत्कार से बहुत प्रसन्न हूँ। उन्हें मैं वर देना चाहता हूँ। इसलिए तुम उन्हें यथा शीघ्र मेरे पास लिवा लाओ।

राजाशल्य की बात सुन कर प्रधान सेवक तत्काल राजा दुर्योधन के पास पहुँचा और उन्हें सादर अभिवादन कर बोला, "महाराजा अतिथि राजा शल्य आपकी सेवा एवं सत्कार से बहुत प्रसन्न हैं। उन्होंने आपको वर देने की इच्छा व्यक्त की है। इसलिए आपको बुला भेजा है।"

प्रधान सेवक की बात सुनकर दुर्योधन बहुत प्रसन्न हुआ, उसे अपनी योजना की सफलता पर विश्वास हो गया। वह तत्काल महाराज शल्य के सामने उपस्थित हुआ और उन्हें सम्बोधित करते बोला, "महाराज आपका सेवक तथा भानजा दुर्योधन आपके सामने उपस्थित है। कृपया उसे आदेश दें।

दुर्योधन से मिलकर राजा शल्य बहुत प्रसन्न हुआ और उससे वर मांगने को कहा।

दुर्योधन ने नम्रतापूर्वक कहा कि "मामाजी यदि आप मुझसे प्रसन्न हैं तथा मुझे वर देना चाहते है तो निकट भविष्य में होने वाले महाभारत युद्ध में आप अपनी सम्पूर्ण सेना सहित मेरे पक्ष में शामिल होकर मेरी सहायता कीजिए।

राजा दुर्योधन की इच्छा को सुनकर राजा शल्य की प्रसन्नता विषाद में बदल गयी, क्यों कि वे यहाँ महाभारत के युद्ध में अपने सगे भानजे पाण्डवों को दुर्योधन के विरुद्ध मदद के लिए आये थे। पर दुर्योधन को उपरोक्त वर देने के कारण पाँसा पलट गया।

अन्ततोगत्वा वर देने के लिए विवश महाराज शल्य को वर के अनुसारससैन्य महाभारत युद्ध में राजा दुर्योधन की ओर से अपने सगे भानजे पाण्डवों के विरुद्ध युद्ध में भाग लेना पड़ा तथा उन्हें युद्ध में पराजित कौरव पक्ष के अन्तिम सेना पति के रूप में युद्ध करना पड़ा।

निस्संदेह अतिथि सेवा जो कि अतिथि यज्ञ का एक रूप है ऐसा श्रेष्ठ कर्म है। जिसके बल पर मित्र क्या शत्रुओं को भी वश में किया जा सकता है।

आ0स0 नगला हर्जी (अलीगढ़)

प्रधान	-	श्री गोपीचन्द जी आर्य
मंत्री	-	श्री शेरसिंह आर्य
कोषाध्यक्ष	-	श्री खानचन्द्र जी महाशय

आर्यसमाज, लाजपत नगर, कानपुर

प्रधान	-	श्री राजेन्द्र प्रसाद आर्य
मंत्री	-	डा0 आशा रानी राय
कोषाध्यक्ष	-	श्री लक्ष्मण दास मागौ

महिला आर्यसमाज समिति सीपरी बाजार झाँसी

संरक्षिका	-	श्रीमती लीला आनन्द
प्रधाना	-	श्रीमती लाजवन्ती गुरवारा
मंत्राणी	-	श्रीमती सरला घई
कोषाध्यक्षा	-	श्रीमती त्रिवेणी देवी

वैदिक व्याख्यान माला

आर्य समाज खण्डवा (म0प्र0) के प्रधान श्री मावजी-भाई भानुशाली एवं मंत्री श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव तथा संयोजक श्री बाबूलाल जी चौधरी ने जानकारी दी की गाँधी भवन प्रांगण खण्डवा में दिनांक- 12-5-89 से 20-5-89 तक आर्यसमाज खण्डवा के तत्वावधान में एक व्याख्यान माला का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देश के प्रसिद्ध विचारक पधार रहे हैं। जिनमें प्रसिद्ध पत्रकार श्री मुजफ्फर हुसैन वरिष्ठ विचारक श्री बलराज जी मधोक, महात्मा आनन्द बोधजी महाराज, कांग्रेस सेवादल के अखिल भारतीय उपाध्यक्ष श्री रामेश्वर जी निखरा एवं नेता जी सुभाष मंच के प्रान्ताध्यक्ष श्री आनन्द कुमार इतिहासवेत्ता, डॉ0 भवानीलाल जी भारतीय, दयानन्द शोध संस्थान पंजाब विश्वविद्यालय पधारे।

- संवाददाता।

आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

केसरिया, दिनांक 6-4-89 ई0 को आर्यसमाज केसरिया (पू0चम्पारण) के तत्वावधान में "आर्यसामज स्थापना दिवस समारोह बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। प्रातः यज्ञ हवन हुआ। इस अवसर पर विशाल शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें आर्य बालविकास विद्यालय एवं आर्य कन्या उच्च विद्यालय के छात्र छात्राओं ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया।

कन्या विद्यालय निरपुडा का उत्सव

आर्य कन्या विद्यालय निरपुड़ा मेरठ का वार्षिकोत्सव 18 मार्च से 20 मार्च 1989 तक हर्षोल्लास से मनाया गया।

बाँगरमऊ में ग्राम वेद प्रचार योजना

आर्यसमाज बाँगरमऊ (उन्नाव) में दि0 24 मार्च से 30 अप्रैल तक सभा के उपदेशक श्री स्वामी महावीर जी तथा श्री पं0 नेमप्रकाश (धनुर्धर) द्वारा 5 सप्ताह ग्राम वेद प्रचार योजना के अन्तर्गत 20 ग्रामों में प्रचार किया। मार्ग में कष्ट के बावजूद इन लोगों का सहयोग सराहनीय रहा। गाँवों की जनता पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा और उनमें धर्म के प्रति लगन दिखाई दी।

- आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली शताब्दी वर्ष पर दिनांक- 16 अप्रैल से 21 अप्रैल 89 तक "यजुर्वेद पारायण महायज्ञ" सुश्री डॉ0 प्रज्ञा देवी जी आचार्या- वाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। सस्वर वेदपाठी कन्याओं एवं आर्ष गुरुकुल पटा के स्नातकों द्वारा वेदपाठ किया गया। दिनांक- 16 अप्रैल को मर्यादा पुरुषोतम श्री रामचन्द्र जी एवं शास्त्रार्थ महारथी श्री रामचन्द्र जी देहलवी का जन्मदिन भी मनाया गया।

दिनांक- 21-4-89 पूर्णाहुति के समय सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने पधार कर दिल्ली के सदर बाजार की गतिविधियों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए संगठित होकर भविष्य में आर्यसमाज के कार्य को गतिशील बनाने के लिए प्रेरित किया। साथ ही शास्त्रार्थ महारथी पं0 रामचन्द्र जी देहलवी, वैद्य मूलचन्द्र आर्य, पूज्य श्री प्रहलाद दत्त वैद्य का कार्यक्षेत्र बताते हुए, उनके संस्मरण किये।

आर्य जगत के वयोवृद्ध पूज्य स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती ने इस शुभअवसर पर पधारे सभी धर्म प्रेमियों को साधुवाद किया। मन्त्री आर्यसमाज सदर बाजार ने उपस्थित जन समूह को पूज्य स्वामी जी के जीवन के 102वर्ष पूरे कर 103वें में प्रवेश करनेकीजानकारी दी, जन समुदाय ने करतल ध्वनि से स्वागत किया तथा इससे अधिक जीने की कामना की। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ0 धर्मपाल जी एवं सत्यदेव जी स्नातक आदि ने उद्बोधन किया। शान्ति पाठ के पश्चात् डिप्टी गंज स्टैनलैस स्टील ट्रेडर्स एसोसियेशन के प्रधान श्री देशराज कक्कड़ एवं उनके सहयोगियों ने इस आयोजन में भिन्न-भिन्न स्थान से पधारे हुए धर्म प्रेमियों का आतिथ्य यज्ञ किया। मन्त्री आर्यसमाज सदर बाजार ने इस आयोजन को सफल बनाने के लिए सभी का हार्दिक धन्यवाद किया।

- दिनांक 14-4-89 शुक्रवार सायं 5 बजे से आर्य समाज कृष्णानगर मथुरा में रामनवमी महोत्सव बड़ी धूमधाम से हर्षोल्लास वातावरण में मनाया गया।

आर्यसमाज मन्दिर, पुरानी मण्डी, फीरोजाबाद। ऋषि बोध सप्ताह दि0 28-2-89 से 6-3-89 तक धूमधाम से मनाया गया - प्रत्येक दिवस आर्य समाज मन्दिर में यजुर्वेद यज्ञ हुआ। ऋषि के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

- दि0 23-3-89 को मुहल्लागंज के जाटव समुदाय मे यज्ञ किया गया और होली मिलन हुआ।

- दुख के साथ सूचित है कि श्रीदेवदत्त जी गुप्त का निधन- 24-3-89 को हो गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

- आर्यसमाज बाँसगाँव (गोरखपुर) का 65वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 14 से 17 अप्रैल 1989 तक बड़े धूमधाम से मनाया गया। उत्सव में श्री सूर्यवती पाण्डेय का मूर्तिपूजा तथा वैदिक धर्म सम्बन्धी व्याख्यान हुआ। जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

- आर्यसमाज रामगढ़वा पूर्वी चम्पारण का 49वाँ वार्षिक उत्सव मनाया गया जिसमें कई विद्वानों के सारगर्भित व्याख्यान हुए तथा कई लोगों ने यज्ञोपवीत धारण किए। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

- आर्यसमाज बिहारी रोड सहारनपुर का उत्सव 28से 30 अप्रैल 1989 तक मनाया गया जिसमें श्री शोभाराम प्रेमी मेरठ, श्री वी0वी0 गौतम सहारनपुर तथा श्री देवदत्त बाली देहरादून, स्वामी धर्मानन्द जी पानीपत पधारे थे उत्सव में सारगर्भित व्याख्यान हुए, जनता लाभान्वित हुई।

- आर्यसमाज खेड़ा अफगान (सहारनपुर) का वार्षिक उत्सव 15 से 17 अप्रैल 89 तक धूमधाम से मनाया गया। जिसमें रामनवमी को शोभा यात्रा निकाली गई जिसमें शिवमन्दिर समिति ने सक्रिय सहयोग दिया भजनोपदेशकों ने गीतों के माध्यम से जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। 16 अप्रैल को जिला सभा देहरादून के प्रधान तथा "पवमान" के सम्पादक श्री देवदत बाली का प्रभावोत्पादक प्रवचन हुआ। दि0 17 अप्रैल को राष्ट्र रक्षा सम्मेलन हुआ।

- आर्यसमाज गोला गोकर्णनाथ का वार्षिकोत्सव दि0 13 से 15 मई तक धूमधाम से मनाया गया।

शोक प्रस्ताव

दिनांक 24 अप्रैल 1989 को आर्यसमाज कण्डेडा के उपप्रधान- श्री राजपाल जी के अनुज भ्राता श्री नरेन्द्र सिंह जी के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें एवं शोक संतप्त परिवार को कष्ट वहन करने की शक्ति दें।

- दिनांक 18-4-89 को प्रकाशवीर शास्त्री भवन बृजघाट में वैदिक प्रचार प्रशिक्षण महाविद्यालय के पाठ्यक्रम, आचार संहिता तथा व्यवस्था को सुनिश्चित करने हेतु एक बैठक आहूत की गई। इस बैठक में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पं0- इन्द्रराज जी, स्वामी जीवनानन्द जी, प्रचार विभाग के अधिष्ठाता श्री हरिश्चन्द्र जी आर्य तथा मेरठ, गाजियाबाद, मुरादाबाद, बिजनौर और रामपुर के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस बैठक में पाठ्यक्रम पाठ्य पुस्तकें आचार, संहिता, फीस, मासिक व्यय इत्यादि मसलों को व्यवस्था की दृष्टि से अन्तिम रूप दिया। तथा जुलाई से सत्र आरम्भ करने का निर्णय लिया गया।

शुद्धि-समाचार

रामदुलार नामक हरिजन युवक अपनी पत्नी एवं दो बच्चों के साथ लगभग 1 वर्ष पूर्व इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था, और अपना नाम अब्दुल्ला रख लिया था। आर्यसमाज खैरपुर के प्रयास से वह पुनः अपने पुराने धर्म में वापस आ गया है। विगत रामनवमी के पावन पर्व पर वैदिक यज्ञ एवं हवन द्वारा शुद्धि के उपरान्त उसे पुनः अब्दुल्ला से रामदुलार आर्य बना लिया गया है।

राष्ट्र विरोधी गतिविधियां सहन नहीं

आर्य समाज देश में अलगाववाद पनपाने वाले तत्वों का विरोध करने में सबसे आगे रहेगा। विदेशी धन के बल पर राष्ट्रविरोधी गतिविधियों को सहन नहीं किया जाएगा।

यह चेतावनी उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पंडित इन्द्रराज जी ने आर्यसमाज पिलखुवा के वार्षिक उत्सव में दी। उन्होंने कहा कि गढ़मुक्तेश्वर क्षेत्र के कुछ गांवों में ईसाई मिशनरी गरीब लोगों को लालच देकर धर्म परिवर्तन का कुचक्र चला रहे हैं। आर्यसमाज ने संकल्प लिया है कि इन कुचक्रों को सफल नहीं होने दिया जायगा।

उन्होंने कहा कि आज देश में अलगाववादी तत्व पहले से ज्यादा सक्रिय होते जा रहे हैं। यह सब हमारी सरकार की तुष्टिकरण की घातक नीति का परिणाम है।

आर्य सन्यासी स्वामी निरंजनदेव तीर्थ ने कहा कि आर्यसमाज का उद्देश्य कुरीतियां मिटाना तथा समाज को गतिशील बनाना है। आर्यसमाज अन्धविश्वासों का हमेशा विरोध करता रहेगा।

समारोह में स्वामी हितेश्वरानन्द, स्वामी धर्मानन्द सरस्वती श्रीमती तेजपाल तथा ऊषा देवी ने महिलाओं को शिक्षा दिये जाने तथा उन्हें अंधविश्वासों का विरोध करने के लिये प्रेरित करने पर बल दिया।

इस अवसर पर पूर्व पादरी जयन्त कुमार ने विघटनकारी ताकतों तथा धर्मान्धघाती शक्तियों का सामना करने हेतु युवाओं को "राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" का सक्रिय सदस्य बनने का निमन्त्रण दिया।

अमेठी में रणंजयसिंह स्मारक व्याख्यानमाला

29 अप्रैल को रणवीर रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमेठी में राजर्षि रणंजय सिंह के जन्म दिन पर कवि सम्मेलन के आयोजन के साथ उन्हीं की स्मृति में एक व्याख्यानमाला का भी आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 राम विलास मिश्र ने की।

मुख्य अतिथि वैदिक विद्वान स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने अपने व्याख्यान में राजर्षि अमेठी से अपने संबंधों को पांच दशक पुराना बताते हुए उनकी धार्मिक शैक्षणिक, साहित्यिक तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों की चर्चा की। कार्यक्रम के प्रारम्भ में महाविद्यालय के अध्यक्ष एवं राजनेता डा0 संजय सिंह विधायक ने अत्यन्त भावुक स्वर में अपने पिता स्व0 राजा रणंजय सिंह द्वारा इस क्षेत्र में किये गये धर्म प्रचार, शिक्षा प्रसार, तथा समाज सुधार की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया।

अमेठी आर्य समाज के 62वें वार्षिकोत्सव में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती जी ने उपनिषदों में वर्णित पराविद्या पर तीन व्याख्यान दिये। स्वामी जी ने अपने त्रिदिवसीय व्याख्यान में मुण्डक उपनिषद के "द्वे विद्ये वेदितव्ये अपरा परा च, परा-यया तदक्षरमधिगम्यते" की व्याख्या की। पराविद्या के पांच अध्यायों इन्द्रियां, प्राण, मानस तंत्र, जीवात्मा और ब्रह्म की विशद व्याख्या स्वामी जी ने आधुनिक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में औपनिषदिक एवं दार्शनिक विचारों को प्रस्तुत किया।

भजन पं0 ब्रजपाल शर्मा कर्मठ एवं श्री समरजीत सिंह के हुए, मंत्री आर्य समाज अमेठी डा0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री ने विगत 2 वर्षों की प्रगति एवं कार्यकलापों की आख्या प्रस्तुत की तथा धन्यवाद ज्ञापन आर्यसमाज के प्रधान डा0 भीमसेन गुप्त ने किया।

- आर्य समाज मन्दिर सुलतानपुर में आयोजित 2 दिवसीय व्याख्यान माला के अवसर पर अन्तिम दिन स्वामी सत्य प्रकाशजी ने मनुष्य एवं मनुष्येत्तर प्राणियों की अन्तर विशेषताओं का निरूपण करतेहुए बताया कि मनुष्य को विलक्षण वाकतंत्र तथा श्रोत तंत्र इसीलिए दिया है कि वह वेद/विज्ञान को श्रुत तथा वाचा के रूप में प्रयोग कर सके। वेद को श्रुत तथा वाचा दोनों कहा गया है। मनुष्य के जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह वेद मंत्रों का उच्चारण तथा उसका श्रवण करते हुए इस भारतीय वांगमय की दैवी धरोहर को सम्पूर्ण विश्व में फैलाये वेद केवल हिन्दुओं का न होकर सम्पूर्ण मानवमात्र के लिये है।

सारे देश में २१ मई ८९ को पंजाब दिवस मनाया गया

समस्त आर्य समाजों को निर्देश

समस्त आर्य समाजों को निर्देश दिया जाता है कि 21 मई 1989 को अखिल भारतीय स्तर पर पंजाब दिवस के आयोजन का समाज की ओर से प्रस्ताव पारित करके प्रधान मंत्री, गृह मंत्री (भारतसरकार) पंजाब के राज्यपाल और प्रतिलिपि में सार्वदेशिक सभा दिल्ली को भेजें प्रस्ताव में निम्न शर्तें होनी चाहिए:-

1- अकाली दल आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव को छोड़े, क्योंकि यह देश के विघटन और पृथकतावाद को प्रोत्साहित करता है।
2- पंजाब समस्या के समाधान के लिए पंजाब के सिखों और हिन्दुओं का संयुक्त सम्मेलन बुलाया जावें, क्योंकि पंजाब में हिन्दू 45 प्रतिशत है। पंजाब समस्या के संबंध में उन्हें उपेक्षित नहीं किया जा सकता है।
3- राजनीतिक पार्टियां पंजाब समस्या के समाधान में अब तक असफल रही हैं, अतः पंजाब के सभी धार्मिक पक्षों के नेताओं की साझा जिम्मेदारी से पंजाब समस्या का हल खोजा जावे।

(उपरोक्त प्रस्ताव पारित करके उ0प्र0 आर्य-प्रतिनिधि सभा व सार्वदेशिक सभा दिल्ली को भेजें।)

-- मन्त्री सभा।

श्री विमल कुमार जी अस्वस्थ

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य एवं कर्मठ जनसेवी श्री विमल कुमार एडवोकेट के दाहिने पैर में ट्रेन से फिसल जाने के कारण गम्भीर चोट आई है। वे आजकल अपने गाँव ने वादा गढ़ी पो0 गोण्डवा (हरदोई) में स्वास्थलाभ कर रहे है।

प्रभु उन्हें शीघ्र स्वास्थ्य प्रदान करें। - सभामंत्री।

"दयानन्द महाविद्यालय अजमेर के लिये यू0जी0सी0 द्वारा एक करोड़ की योजना स्वीकृत"

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने नवीन शिक्षा नीति के अन्तर्गत अन्य त्रिवर्षीय पाठ्यक्रमों के समान खेलकूद, स्वास्थ्य तथा शारीरिक प्रशिक्षण के लिये भी एक त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम की योजना तैयार की है। इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक राज्य में कम से कम एक महाविद्यालय को इस कार्य के लिये लगभग एक करोड़ रुपये की अनावर्तक तथा पांच वर्ष तक के लिए आवर्तक आर्थिक सहायता का प्रावधान है। राजस्थान में अजमेर के स्नातकोत्तर दयानन्द महाविद्यालय को इस योजना के अन्तर्गत आगामी सत्र 1989-90 से ये पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने के लिये चुना गया है। यह जानकारी देते हुए महाविद्यालय के निदेशक श्री दत्तात्रेय वाले ने सूचित किया है कि इस योजना की क्रियान्विती के लिये आवश्यक भिन्न-भिन्न खेलों के मैदान, तरण-ताल, व्यायाम-शाला (जिमनेजियम) आदि सारी सुविधाएं दयानन्द कालेज के विशाल परिसर में उपलब्ध कर दी गई हैं।

आर्यसमाज पलियाकलां खीरी

प्रधान	-	श्री पं0 भवानी शंकर जी अवस्थी
मंत्री	-	श्री ओम प्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष	-	श्री राम बहादुर

आर्य उपप्रतिनिधि सभा रामपुर

प्रधान	-	श्री रामस्वरूप आर्य
मंत्री	-	श्री अभय स्वरूप आर्य एडवोकेट
कोषाध्यक्ष	-	श्री ओ3म् प्रकाश आर्य

निर्वाचन

आर्यसमाज जामनगर (गुजरात)

प्रधान - श्री धर्मवीर खन्ना
मंत्री - श्री महेशभाई भाणजीभाई पटेल
कोषाध्यक्ष - श्री हरेशभाई जे0 कुमाराजा

आर्यविद्या सभा
प्रधान - श्री धर्मवीर खन्ना
मंत्री - श्री निर्भयभाई मगनलाल भट्ट

अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ

प्रसिद्ध आर्यनेता मॉरिशस के श्री मोहनलाल जी मोहित व स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती के सान्निध्य में अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ के वार्षिक अधिवेशन में त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए, जिसकी सूची निम्न प्रकार है:-

प्रधान - प्रो0 शेर सिंह
महामंत्री - श्री सत्यानन्द आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री रामशरण दास आहूजा

स्त्री आर्यसमाज ताजगंज, आगरा

1-प्रधान - श्रीमती विमला चड्ढा
2-मंत्री - श्रीमती कलावती चौरसिया
3-कोषाध्यक्ष - श्रीमती इन्द्रावती भट्ट।

	प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष
आर्यसमाज औरैया-	श्री रामबाबू आर्य	श्री वेदप्रकाश आर्य	श्री आशाराम आर्य
आर्यसमाज दिबियापुर-	श्री रघुवंश राय	डा0 अजबसिंह	श्री कृपाशंकर
आर्यसमाज भर्थना-	श्री आनन्द-स्वरूप	श्री वीरेन्द्र-नारायण	श्री प्रभूदयाल शाह
आर्यसमाज जसवन्तनगर-	श्री कुँअरलाल-आर्य	श्री तिलक-सिंह यादवेन्द्र	श्री हाकिम सिंह पाल
आर्यसमाज बिधूना-	श्री ओमचन्द्र-गुप्ता	श्री भजनलाल	श्री रामचन्द्र पोरवाल
आर्यसमाज बकेवर-	श्री रघुनाथ-प्रसाद आर्य	श्री कृष्णदत्त-शुक्ला	श्री प्रेम सिंह आर्य
आर्य उपप्रतिनिधि सभा जनपद-इटावा-	श्री देवानन्द जी गुरुकुल एक्सा-कटरा।	श्री वेदप्रकाश-आर्य आर्यसमाज औरैया।	श्री रामबाबू आर्यसमाज औरैया।

- आर्यसमाज औरैया (इटावा) का वार्षिकोत्सव दिनांक-25 से 28 मार्च धूमधाम से मनाया गया।

आर्य समाज डाकपत्थर (देहरादून)

प्रधान - श्री प्रेम प्रकाश शर्मा
मंत्री - श्री बाल कृष्ण त्यागी
कोषाध्यक्ष - श्री सुरेन्द्र पाल आर्य

- आर्यसमाज, नई कालोनी, कालागढ़ (गढ़वाल) की कार्यकारिणी का 8 मार्च 1989 को गठन किया है। जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारियों का चयन सर्व सम्मति से हुआ है:-

संरक्षक - श्री ब्रह्म सिंह
प्रधान - डा0 हरनाम चरण सिंह यादव
मंत्री - श्री जी0के0 दुमीर
कोषाध्यक्ष - श्री ओम प्रकाश अरोड़ा

आर्य समाज मऊरानीपुर (झाँसी)

प्रधान - श्री वंशीधर भट्ट
मंत्री - श्री श्रीपाल सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री सत्य प्रकाश आर्य

जिला उप सभा- गाजियाबाद-

प्रधान - श्री शान्ति प्रकाश (पिलखुआ)
मंत्री - श्री डा0 जयवीर सिंह (मोदीनगर)
कोषाध्यक्ष - श्री माया प्रकाश (मुरादनगर)

आर्यसमाज धूरी (पंजाब)

प्रधान - श्री लक्ष्मन दास जी
मंत्री - श्री राधेश्याम मोहिल
कोषाध्यक्ष - श्री सतीशपाल जी आर्य

आर्यसमाज सिरसी (मुरादाबाद)

प्रधान - डा0 शिव स्वरूप
मंत्री - आदित्यवीर
कोषाध्यक्ष - राजेन्द्र पाल

नवीन आर्यसमाज स्थापित

आर्यसमाज सधिनावाँ पो0 उच्चवल (हरदोई)

प्रधान - श्री सुशील कुमार मिश्र
मंत्री - श्री शिवनारायण आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री सीताराम आर्य

आर्य समाज करनैलगंज (गोण्डा)

सर्व श्री राम जी लाल आर्य - अध्यक्ष
सर्व श्री भगौती प्रसाद पटवा - मंत्री
सर्व श्री बृजनन्दन कुमार वैश्य - कोषाध्यक्ष

दयानन्द बाल मन्दिर प्रबन्ध समिति

सर्वश्री रामजी लाल आर्य - अध्यक्ष
सर्वश्री शिवनन्दन वैश्य आर्य - मुख्य प्रबन्धक
सर्वश्री जगदीश प्रसाद स्वर्णकार आर्य - सहायक प्रबन्धक

आर्यसमाज सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर)

प्रधान - श्री रामस्वरूप आर्य
मंत्री - श्री जगदीश प्रसाद कौशल
कोषाध्यक्ष - श्री दुर्गा प्रसाद जी

आर्यसमाज बड़ौत (मेरठ)

प्रधान - श्री राम लाल
मंत्री - डा0 ओमवीर सिंह
कोषाध्यक्ष - श्री सुन्दर लाल

आर्य समाज, स्टेशन रोड बिन्दकी (फतेहपुर)

प्रधान - श्री चन्द्र आर्य
मंत्री - श्री चन्द्रराज किशोर
कोषाध्यक्ष - श्री रंजन लाल

आर्य समाज, हसनपुर (मुरादाबाद)

प्रधान - श्री राजकुमार जी
मंत्री - श्री रामवीर सिंह "आर्यवीर"
कोषाध्यक्ष - श्री इन्द्रपाल जी

आर्य समाज, रानी की सराय, आजमगढ़।

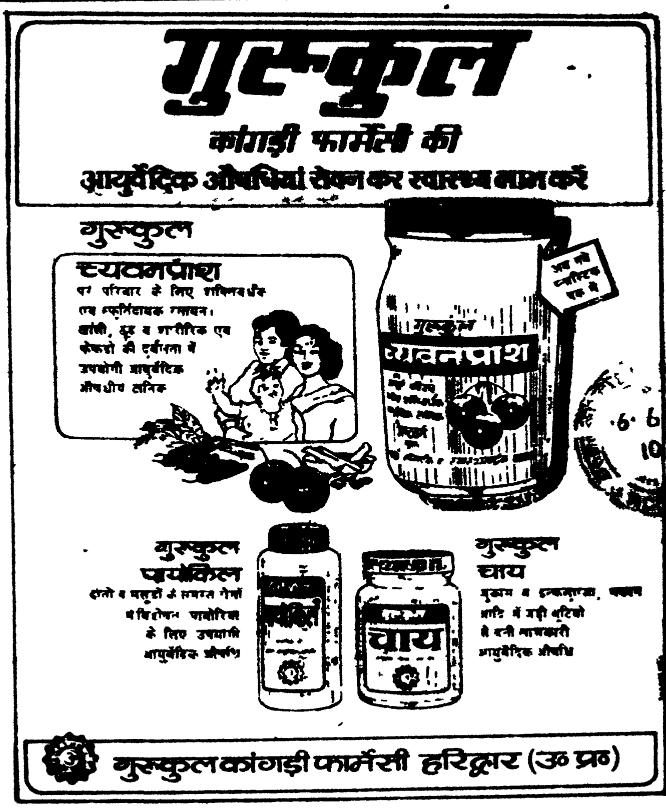
प्रधान - श्री रामचरण सेठ
मंत्री - श्री रामकृष्ण आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री वीरेन्द्र आर्य

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

आर्य मित्र साप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं० एल०डब्ल्यू/एन पी 79
ज्येष्ठ शुक्ल ।
4 जून रविवार, 1989 ई०

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र



स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि0 सं0 2241/57 ज्येष्ठ शुक्ल 8 , रविवार, संवत् 2046 वि0, दिनांक 11 जून 1989 घोषणा पत्र सं0 7/28-2-85



सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् -

वह, बिना किसी भौतिक मस्तिष्क, चक्षु तथा पैरों के अनन्त मेधावी, अनन्त दृष्टिशक्ति सम्पन्न एवं प्रत्येक स्थान पर पहुँचा हुआ विराट् पुरुष है।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम0 ए0

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक, एम0ए0,
साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु0 251/-
वार्षिक	रु0 30/-
एक प्रति	**- 1-00रु0 मात्र**

वर्ष 92

अंक 23

धर्मान्तरण राष्ट्रान्तरण है

राष्ट्र इस चुनौती को स्वीकार करे

एकमात्र उपाय आर्यसमाज का शुद्धि आन्दोलन

विदेशों से आ रही अपार धनराशि से भोली-भाली अशिक्षित गरीब हिन्दू जनता का बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण प्रारम्भ हो गया है और उन्हे राष्ट्र की मुख्यधारा से हटाकर राष्ट्र की एकता, अखण्डता और अस्मिता को चुनौती दी जा रही है। इसमें अनेकों विदेशी शक्तियाँ प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन दे रही हैं। वे नहीं चाहतीं कि नवस्वातन्त्रय प्राप्त हमारा यह प्रिय देश एक सबलतम राष्ट्र बने।

आर्यो! हिन्दुसमाज कुम्भकर्णी निद्रा में सोया हुआ है- अपने ही हाथों अपने घर को आग लगाकर बड़ी गहरी नींद सो गया है, शासन ने आँखें मूंद ली हैं, नेतागण चुप हैं, पर तुम मत सोना!!! किसी ने तुम्हें पौने दो अरब वर्ष पूर्व कहा था--

उत देवा अवहितं देवा उन्नयथा पुनः ।
उतागश्चकुषं देवा देवा जीवयथा पुनः ।। ऋग्वेद 10/139/1

आर्यो! जो सत्य धर्म से गिर गये हैं उन्हे उठाओ, पुनः उठाओ, शुद्ध करो और उन्हे पवित्र जीवनधारा दो।

दैव्याय कर्मणे शुन्धध्वं देव यज्यायै ।
-- यजुर्वेद 1/13

तुम धर्मान्तरितों को देवकर्मों में प्रवृत्त करने के लिए शुद्ध करो।

आज उसी सन्देश को इस पत्र के ाध्यम से हम तुम्हें पहुँचा रहे हैं। शुद्धि का यह सतत आन्दोलन रुकना नही चाहि ! नही तो बढ़ती हुई भयंकर विनाशरूपी सुरसा मुहँ बाए खड़ी है। पूरब पच्छिम निगल ही लिया है, उत्तर दक्खिन की ओर कुदृष्टिभरी निगाहें घूम चुकी हैं। मध्यान्तरण में बचे हम, कहीं ऐसा न हो- हमारा धर्मान्तरण राष्ट्रान्तरण में बदल जाय और फिर उस आर्यभूमि का क्या होगा जो बड़ी आशाओं के साथ उसने हमें एक दिन सौंपी थी- "**अहं भूमिमददाम आर्याय**" ऐ आर्यो! यह भूमि मैंने तुम्हारे लिए दी है।

उसके इस सन्देश को दशरथ नही भूला था- काकेशस (रूस) की परमसुन्दरी कैकेयी को शुद्ध करके ब्याह लाया। धृतराष्ट्र नही भूला था- कन्दहार (अफगानिस्तान) की राजकुमारी गान्धारी को शुद्ध करके पटरानी बना लाया। चाणक्य नही भूला था- यूनान के सेनापति सेल्यूकस को हराकर उसकी पुत्री हेलेन को शुद्ध करके सम्राट चन्द्रगुप्त की महारानी बना दिया। शाकारि विक्रमादित्य नही भूला था- हजारों शकों, हूणों किरातों को पराजित करके उन्हे शुद्ध किया और आर्यजाति का अंग बना दिया। दयानन्द, लेखराम, श्रद्धानन्द नही भूला था। यह शुद्धि सनातन है। उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री इन्द्रराज, इस वृद्धावस्था में, सर पर कफन बान्धे शुद्धि का अलख जगाते घूम रहे हैं। धमकियाँ आ रही हैं, चिन्ता नही प्राण ही तो जायेंगे। कार्य सतत चलना चाहिए। हमने चुनौती को स्वीकार कर लिया है। आप हमारे हाथ मजबूत कीजिए फिर देखिए -------- ।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्यसमाज । आर्यसमाज ।।

- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ ज्येष्ठ शुक्ल 8 संवत् 2046 वि0, 11 जून 1989

दयानन्दाब्द 165, सृष्टि संवत् 1972949090

तुष्टीकरण की आत्मघाती नीति

भारत विभाजन के साथ ही देश के दोनों छोरों पर पश्चिमी पाकिस्तान और पूर्वी पाकिस्तान का निर्माण हुआ और इसके साथ ही प्रारम्भ हुई हिन्दुओं पर भीषण अत्याचारों की अन्तहीन श्रृंखला। जो भागकर बचकर आ गये वे सुरक्षित बच गये और आज भारत में शान्ति का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। भारतीय जनमानस ने उन्हें आत्मसात कर लिया है और वे आज भारतीय चिन्तन की मुख्यधारा से जुड़े हुए हैं। किन्तु जो पाकिस्तान में रह गये उन्हें किन-किन भीषण परिस्थितियों के बीच जीना पड़ रहा है यह कोई छिपी हुई बात नहीं है। अधिकांश को डरा धमकाकर अथवा बलात् मुस्लिम बना लिया गया। पूर्वी पाकिस्तान में सामूहिक धर्मपरिवर्तन की अनेकों घटनाएं हुई हैं। गाँव के गाँव कलमा पढ़ाकर मुस्लिम बना लिए गये। हिन्दू औरतों को ज़बरन निकाह करने के लिए विवश किया गया और आज वहाँ हाल यह है कि हिन्दू वहाँ की कुल जनसंख्या का 13प्रतिशत भी नहीं हैं जबकि पाकिस्तान के निर्माण के समय यह अनुपात लगभग 48 प्रतिशत था। जो हिन्दू बचे हैं वह धीरे-धीरे इस्लामीकरण की विश्वव्यापी योजना के तहत मुसल्मान बनाए जा रहे हैं। अगर यही दशा रही तो वहाँ एक दिन हिन्दू का दिग्दर्शन कराने के लिए भारत या किसी अन्य देश से जीती जागती हिन्दू तस्वीर दिखानी पड़ेगी।

यह है उस कौम की कहानी जिसके तुष्टीकरण में भारत के पदलोलुप राजनैतिक नेता आज बड़े उतावले दिखाई दे रहे हैं। उनके हित के लिए दोनों हाथों से राजकोष लुटाया जा रहा है। वे शायद इस भ्रम में हैं कि सम्भवतः सुरसा की भाँति बढ़ती जा रही उनकी मांगों को पूरा करके उनके हृदय में भारत और भारतीयता के प्रति समग्र निष्ठा उड़ेल देंगे। दुनियां का मुसल्मान राजनैतिक और संगठन की दृष्टि से बहुत सशक्त और दूरदर्शी है। उसकी इस्लामीकरण की योजना विश्वव्यापी योजना है जिसमें अरब के पेट्रोडालर के धनी देशों की प्रमुख भूमिका है। परमात्मा की कृपा से अरब की विशाल सूखी हुई मरुभूमि में उन्हें तेल का अक्षय भण्डार मिल जाने और आज के युग में तेल, प्रौद्योगिकी तथा आर्थिक समृद्धि का प्रमुख आधार बनने के कारण उनके पास अपार धन है और वह इसे इस्लामीकरण की दिशा में व्यय करना अपना धर्म समझते हैं। हम जनता के आर्थिक उत्थान के सदैव समर्थक रहे हैं। गरीबी, अन्याय और शोषण से मुक्ति दिलाना हमारा सामाजिक एवं राजनैतिक दायित्व है। किन्तु एक वर्ग विशेष को अल्पसंख्यक के नाम पर दी जाने वाली सुविधाओं का क्या अर्थ है? क्या उसी वर्ग के समकक्ष दूसरे वर्ग का व्यक्ति जो उससे भी गई गुजरी हालत में जीवनयापन कर रहा है- सुविधा पाने का अधिकारी नहीं है। हिन्दुओं का 60 प्रतिशत से अधिक गरीबी की रेखा से नीचे जीवनयापन कर रहा है। रोटी,कपड़ा और आवास के लिए मजदूरी की तलाश में मारा-मारा घूम रहा है। अल्पसंख्यकों को दी जाने वाली सुविधाओं को पाने का वह अधिकारी क्यों नहीं?। क्या शासन यह चाहता है कि अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक नाम से भारतीय जनता के बीच भेदभित्ति खड़ी कर दी जाये। अगर यह भेदभित्ति बढ़ती गई तो फिर इसे कौन तोड़ सकेगा।

दिल्ली से अभी कुछ समय पूर्व ही अल्पसंख्यकों के आर्थिक उत्थान के लिए 15सूत्री कार्यक्रम की घोषणा हुई है। प्रधानमंत्री बार-बार दुहरा रहे हैं कि हम अल्पसंख्यकों (मुसल्मानों) की हर कीमत पर रक्षा करेंगे। विदेशों में इसका अर्थ यह लिया जा रहा है कि भारत में मुसल्मान बहुत असुरक्षित हैं जिनकी रक्षा के लिए प्रधान मन्त्री को बार-बार प्रतिज्ञाबद्ध होना पड़ रहा है जबकि वास्तविकता इसके विपरीत है। तुष्टीकरण की दौड़ में मानवीय मूल्यों को भी उपेक्षित कर दिया गया और धर्म के नाम पर उस अमानवीय पशुतुल्य प्रथा को प्रोत्साहन दिया जा रहा है जो-- आज बीसवीं शताब्दी में विकृत मस्तिष्क की उपज के नाम से याद की जायेगी। शाहबानो के मामले को ही देखिए- सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को निरस्त करने के लिए कानून ही बदल दिया। इसी प्रकार कुरआन की कतिपय आयतों को, जिनके कारण मानव मानव के बीच घृणा और द्वेष की दीवार खड़ी हो गई है, पुस्तक से निकाले जाने के लिए कलकत्ता हाईकोर्ट में याचिका दायर की गई तो भारत सरकार ने हस्तक्षेप करके उस याचिका को ही निरस्त करा दिया। प्रधानमंत्री कहते हैं हम मुस्लिम पर्सनल ला में कोई दखलन्दाजी नहीं होने देंगे, (चाहे मुसल्मान ही मांग क्यों न करें) हम अल्पसंख्यक आयोग को और अधिकार देना चाहते हैं जबकि अल्पसंख्यक आयोग के चेयरमैन कहते हैं इसकी कोई जरूरत ही नहीं है इसके स्थान पर मानवाधिकार आयोग होना चाहिए।

गत 16 अप्रैल को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री ने तुष्टीकरण की दिशा में कुछ नयी घोषणाएं की हैं जो निम्नवत् हैं:-

(1) मुस्लिम मदरसों को दस-दस लाख रुपये अनुदान में दिए जायेंगे जिनमें इस्लामी शिक्षा और अरबी की शिक्षा के लिए सम्भवतः बाहर से मौलवियों को मंगाना पड़ेगा।

(2) उर्दूभाषा को लोकप्रिय बनाने के लिए एक अलग उर्दू निदेशालय बनाया जायेगा।

(3) अरबी भाषा की व्यवस्था के लिए अलग से मदरसे खोले जायेंगे और इसके लिए अलग से एक बोर्ड का गठन होगा।

(4) अल्पसंख्यकों की आर्थिक सहायता के लिए एक अल्पसंख्यक फाइनेन्स कारपोरेशन बनाया जायेगा। सरकार एक करोड़ रुपये अल्पसंख्यकों को व्यावसायिक सहायता के लिए अनुदान के रूप में अलग से देगी।

(5) लखनऊ की ऐशबाग स्थित ईदगाह में सरकार फिलहाल 10 लाख रुपयों से एक प्रार्थनाहाल (सभागार) बनवायेगी जिसमें सिर्फ मुसल्मान नमाज पढ़ेंगे। (हम और आपको अगर सन्ध्यावन्दन करनी हो तो पेड़ की छाया काफी है) ।

(6) साम्प्रदायिक दंगों को दबाने के लिए एक विशेष **"शान्ति सुरक्षा बल"** बनाया जायेगा जिसमें अल्पसंख्यकों को ही विशेषरूप से भर्ती किया जायेगा (योग्यता आदि में खरे उतरें न उतरें यह दूसरी बात है भरती उन्हीं की होगी)

(7) मुरादाबाद में पीतल का काम करने वाले, फीरोजाबाद में कांच का काम करने वाले अल्पसंख्यकों को आर्थिक सहायता दी जायेगी। (अगर उसी स्थिति का बहुसंख्यक उसी के साथ कार्यरत है तो उसे नही)

(8) जिन विद्यालयों में उर्दू के 5 छात्र होंगे वहाँ उर्दू शिक्षक की नियुक्ति की जायेगी (भले ही उनका नाम रजिस्टर में दर्जमात्र हो) आदि आदि।

अब हम समता और समानता का ढोल पीटने वाली शासन की इस दोहरीनीति को क्या कहें। निश्चय ही शासन की इस पंगुनीति ने धर्म के नाम पर तो नही, बहुसंख्यक, अल्पसंख्यक के नाम पर जनता को अनेक वर्गों में विभाजित कर दिया है। बहुत से समुदाय और संस्थाएं अपने को अल्पसंख्यक करार देने के लिए प्रयत्नशील हैं ताकि वे भी सुविधा की पात्र बन सकें। जिस अदूरदर्शी नीति ने भारत का विभाजन कराया था वही अदूरदर्शी नीति आज दूसरे रूप में दूसरा कलेवर धारण किए हुए हमारे सामने प्रस्तुत की जा रही है। उर्दू पढ़ना मुसल्मान छोड़ चुका था हिन्दी में उसकी प्रतिभा प्रखर होने लगी थी। राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीयता में आत्मसात होने के लिए उसने भारतीय चिन्तन की गहराइयों में डुबकी लगाना प्रारम्भ कर दिया था किन्तु शासन ने उसकी अलग पहिचान बनाए रखने के लिए जोड़-तोड़ शुरू कर दी है ऐसे समय में आर्य समाज चाहे तो बहुत कुछ कर सकता है अन्यथा भविष्य----

अंगरेजी हटाओ

अंगरेजी अब दिल्ली से चिपक कर बैठ गयी है

—वेदप्रताप वैदिक—

हिंदी अखबारों की जबरदस्त कामयाबी अंगरेजी के मुंह पर करारा तमाचा है. अब कोई यह नहीं कहता कि हिंदी अखबार निकालने के पहले हिंद्री को सशक्त बनाओ. हिंदी की सामर्थ्य का इसमे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि अंगरेजी की संवाद समितियों ने मजबूर हो कर हिंदी की संवाद समितियां स्थापित की हैं और अंगरेजी अखबारों के मालिक एक के बाद एक हिंदी के अखबार निकाले जा रहे हैं. सारे देश में छपनेवाले अंगरेजी के अखबार सारी भारतीय भाषाओं के अखबारों के मुकाबले तो बहुत कम हैं ही, अकेले हिंदी अखबारों ने ही अंगरेजी अखबारों को शिकस्त दे दी है. इस समय हिंदी अखबारों की प्रसार संख्या अंगरेजी अखबारों से कहीं ज्यादा है.

लगभग हर प्रदेश में अब प्रादेशिक भाषा के अखबारों का दबदबा है. हिंदी इलाके ने अपने प्रदेशों से अंगरेजी अखबारों को खदेड़ दिया है. हिंदी पत्रकारिता ने मलयालम, तमिल, बांग्ला, गुजराती और मराठी पत्रकारिता की तरह यह सिद्ध कर दिया है कि अपनी भाषा में अपने लोगों के लिए की जा रही पत्रकारिता निश्चय ही अधिक सशक्त है, अधिक सहज है और अधिक सार्थक है.

दिल्ली गुलामी का गढ़ है. लगता है, सारे देश से खदेड़ी जा रही अंगरेजी अब दिल्ली से चिपक कर बैठ गयी है. किसी भी आजाद देश के लिए इससे ज्यादा शर्म की बात क्या होगी कि उसकी राजधानी मे विदेशी भाषा के लगभग एक दर्जन अखबार निकलते हैं. मानो दिल्ली भारतीयों का नहीं विदेशियों का शहर हो? अंगरेजी के ये अखबार ज्यादा कागज खाते हैं, ज्यादा पैसा खाते हैं, ज्यादा विज्ञापन निगलते हैं. फिर भी उतने लोगों तक नहीं पहुंच पाते, जितने लोगों तक हिंदी के अखबार पहुंचते हैं. अंगरेजी अखबारों और अंगरेजी संवाद समितियों पर बर्बाद किया जा रहा पैसा और श्रम अगर भारतीय भाषाओं के अखबारों पर लगाया जाये तो भारत का भाषाई नक्शा एकदम बदल सकता है.

कुछ पत्रकार बंधु पूछते हैं कि आपके आंदोलन के चलते अगर अंगरेजी अखबार बंद हो गये, तो सैकड़ों पत्रकारों का क्या होगा? मेरा जवाब है कि उनकी किस्मत चमक उठेगी और भारतीय पत्रकारिता की भी! अगर वे हिंदी में, बांग्ला, में मलयालम में, तमिल में लिखेंगे तो करोड़ों पाठकों के कंठहार बनेंगे. आज उनका मुंह सरकार की तरफ और पीठ जनता की तरफ है. तब मामला जरा उलटा होगा.

अंगरेजी के कुछ प्राध्यापकों ने जो इस आदोलन के साथ हैं, दबे छिपे मुझसे यह सवाल किया है कि अगर अंगरेजी हट गयी तो हमारा क्या होगा? मैंने उनसे कहा कि आपकी कीमत बढ़ जायेगी. इसके दो कारण हैं. पहला तो यह कि आज अनिवार्य अंगरेजी पढ़ते समय बच्चे अपने अध्यापकों को मन ही मन कोसते रहते हैं और अंगरेजी पढ़ने को गधाहम्माली का काम समझते हैं. जब अंगरेजी हटेगी तो देश में विदेशी भाषाओं की ससम्मान पढ़ाई आरंभ होगी और अगरेजी को जो भी पढ़ेंगे, वे उसी सम्मान और स्नेह के साथ पढ़ेंगे, जिसके साथ कि वे आज जर्मन या फ्रांसीसी पढ़ते हैं.

दूसरा अंगरेजी के हटने के बाद देश में हजारों कुशल अनुवादकों की जरूरत होगी. जो अध्यापक घानी के बैल की तरह 30-30 साल तक एक ही तरह की पुस्तकों को रटाते रहते हैं, उन्हें नित नयी पुस्तकों और साहित्य के अनुवाद का अवसर मिलेगा. बौद्धिक क्षितिज का विस्तार होगा और आमदनी बढ़ेगी. अगरेजी तो वे जानते ही हैं? यदि दूसरी विदेशी भाषाए भी सीख लेगे तो वे अधिक उपयोगी आदमी बन सकेंगे. इन्हीं लोगों को अंगरेजी हटाओ आदोलन में सबसे अधिक सक्रिय होना चाहिए.

> **मैंने करीब आधा दर्जन हवाई कंपनियों से विभिन्न देशों की यात्रा की लेकिन उन सब में केवल अपने देश की हवाई कंपनी, 'एयर इंडिया' की विमान परिचारिकाएं ही एकमात्र ऐसी विमान परिचारिकाएं थीं जो अपने देशवासियों के साथ परदेसी भाषा में बात करती थीं. यदि इस प्रकार की घटनाओं से किसी देश के नागरिकों का सिर ऊंचा होता हो तो सचमुच भारतीय लोग अपना सिर आसमान तक ऊंचा उठा सकते हैं.**

मेरे अंतर्राष्ट्रीय पारपत्र पर लगभग एक दर्जन देशों के छापे लगे हैं, लेकिन उन सब में केवल मेरा अपना देश भारत ही एकमात्र ऐसा देश है, जिसका छापा उसकी अपनी जुबान में नहीं है. मैंने करीब आधा दर्जन हवाई कंपनियों से विभिन्न देशों की यात्रा की लेकिन उन सब मे केवल अपने देश की हवाई कंपनी, 'एयर इंडिया' की विमान परिचारिकाएं ही एकमात्र ऐसी विमान परिचारिकाएं थी जो अपने देशवासियो के साथ परदेशी भाषा में बात करती थी. यदि इस प्रकार की घटनाओं से किसी देश के नागरिकों का सिर ऊंचा होना हो तो सचमुच भारतीय लोग अपना सिर आसमान तक ऊंचा उठा सकते हैं

हमारे देश में यह आम धारणा है कि विदेशों में अंगरेजी ही चलती है, अगरेजी के बिना हम विदेशों मे संपर्क नही रख सकते, अगरेजी के जरिये ही विदेशी मुल्कों ने विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में उन्नति की है. इस तरह की दकियानूसी और पिछडेपन की बातो पर लंबी बहस चलायी जा सकती है लेकिन यहा मैं केवल उन छोटे मोटे अनुभवो का वर्णन करूंगा जो पूरब और पश्चिम के देशो मे भाषा को ले कर मुझे हुए.

मैं एशियाई देशो में अफगानिस्तान, ईरान और तुर्की गया, यूरोपीय देशों मे रूस, चेकोस्लोवाकिया, इटली, स्विट्जरलैंड, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, जर्मनी और ब्रिटेन गया और यात्रा का अधिकांश भाग अमेरिका और कनाडा मे बिताया, इन देशों में से एक भी ऐसा देश नहीं था जिसकी सरकार का काम-काज उस देश की जनता की जुबान मे नहीं होता हो

अफगानिस्तान जैसा देश, जहा राजशाही थी और जहां राज परिवार के अधिकांश सदस्यों की शिक्षा पेरिस या लंदन मे हुई है, वहा भी शासन का काम या तो फारसी (दरी) या पश्तो मे होता है मैंने अफगानिस्तान के लगभग सभी प्रांतों की यात्रा की और सभी दूर शासकीय दफ्तरों में जाने का अवसर मिला, कही भी किसी भी दफ्तर में अगरेजी का इस्तेमाल होते हुए नही देखा. आप चाहे विदेश मंत्रालय में चले जायें या गृह मंत्रालय या पुलिस चौकी या किसी राज्यपाल के दफ्तर में, आप पायेंगे कि बड़े से बड़ा अधिकारी अपनी देश भाषा का प्रयोग करता है. अफगानिस्तान मे मैं विदेशी था लेकिन अफगान विदेश मंत्रालय ने राज्यपालों के नाम मेरे लिये जो पत्र दिये वे 'दरी' मे थे, अगरेजी मे नही

इसी प्रकार सोवियत रूस में 'इनस्तीतूते नरोदोफ आजी' के निदेशक ने मस्क्वा (मास्को) के विभिन्न पुस्तकालयो के नाम मुझे जो पत्र दिये, वे रूसी भाषा मे थे इस संस्था के निदेशक प्राचार्य गफूरोव जो रूस के श्रेष्ठतम विद्वानों मे से एक थे, अगरेजी नही जानते जो अगरेजी जानते हैं वे भी अपनी रचनाए रूसी भाषा मे ही

शेष पृष्ठ 11 पर

अध्यात्म सुधा

आत्म-तत्व-चिन्तन

{श्री पं0 सूर्यबली पाण्डेय, जौनपुर}

गतांक से आगे:-

श्री रामानुजम् जैसा बालक बिना सीखे ही ऐसा गणितज्ञ हुआ कि उसके समक्ष गणित शास्त्र प्रवीण बड़े-बड़े लोगों को दाँतों तले अंगुली दबानी पड़ी। यही क्या? अभी आप भूले न होंगे पं0 उर्षबुध को जिसने 13 वर्ष की अवस्था में ही गुरुकुल कांगड़ी में आचार्यों के समक्ष वेद मंत्रों की सुन्दर व्याख्या कर आश्चर्य चकित कर दिया था। यह सब पुनर्जन्म का ही परिणाम है। इसलिये आत्मा के संबंध में जहां अन्य बातें ज्ञातव्य हैं वहीं उसकी एक विशेषता पुर्नजन्म का धारण करना भी है।

जिस आत्मा के संबंध में अभी तक यत् किंचित विवेचन हुआ है, देखना है कि उसका स्वरूप क्या है। उसके स्वरूप के संबंध में विचार करते हुए सांख्य दर्शन कहता है- "असंगोयम् पुरुषः इति"। {1-15} अर्थात् पुरुष या जीवात्मा किसी पदार्थ का संघात नहीं है। किसी पदार्थ से मिल कर नहीं बना है। जो पदार्थ संघात होता है या किन्हीं पदार्थों के मिश्रण से बना होता है वह परिणामी होता है। उसका स्वरूप परिवर्तित होता रहता है। किन्तु यतः आत्मा निस्संग है अतः वह परिणाम या परिवर्तन रहित है। वह सदा एक रस बना रहता है। वह एक रस, चेतन और नित्य है। चेतनत्व के संबंध में कुछ लोग प्रश्न उठाते हैं कि आत्मा का चेतनत्व गुण है या द्रव्य? पर आत्मा के संबंध में गुण-गुणी का प्रश्न ही व्यर्थ है। क्योंकि गुण-गुणी का प्रश्न तो स्थूल और भौतिक पदार्थों में उपयुक्त हो सकता है। आत्मा के संबंध में तो यही कहा जा सकता है कि चेतनत्व ही आत्मा और आत्मा ही चेतनत्व है। अर्थात् वह स्वरूप से चेतन है इसीलिये कहा जाता है कि वह चेतनस्वरूप है। गुण और द्रव्य का प्रश्न भौतिक पदार्थों को स्पर्श करता है। आत्मा आध्यात्मिक पदार्थ है इसलिये यही कहा जाना उचित है कि वह स्वरूप से चेतन या चेतनस्वरूप है। सांख्य शास्त्र ने दूसरे स्थल पर उसके स्वरूप का विश्लेषण करते हुए लिखा है-"नित्य मुक्त्वम्" । {1-127} अर्थात् नित्य मुक्त होना आत्मा का स्वरूप है जब आत्मा मुक्ति के लिये ही सदा सचेष्ट रहता है तब उसे नित्य मुक्त कहना कहां तक युक्ति संगत होगा? पर इस स्थान पर नित्य मुक्त का अर्थ है प्रकृति से आत्मा का भिन्नत्व। प्रकृति अचेतन तथा आत्मा चेतन स्वरूप है। प्रकृति त्रिगुणात्मक तथा आत्मा त्रिगुणातीत है। इसी कारण प्रकृति से उसका कोई लगाव नहीं कहा जा सकता। अस्तु इसी अर्थ में वह प्रकृति के प्रभाव से सदा मुक्त है। वह कभी प्राकृतिक नहीं बन सकता।

आत्मा के संबंध में जहां अन्य बहुत सी बातें कही जाती हैं वहीं यह भी कहा जाता है कि आत्मा ईश्वर का अंश है। इस वाद के प्रवर्तक शुद्धाद्वैतवाद के उद्घोषक श्री वल्लभाचार्य जी हैं। आचार्य वल्लभ ने कहा आत्मा और कुछ नहीं, जैसे अंगार से एक चिनगारी उससे पृथक होकर अन्यत्र अपनी सत्ता बना लेती है पर है वह उक्त अंगार का अंश ही, उसी प्रकार आत्मा भी ब्रह्म से पृथक होकर अपनी अलग सत्ता बनाये हुए है पर है वह ब्रह्म का अंश ही। इसी की ज्योति से ज्योतित होकर गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने मानस में "ईश्वर-अंश जीव अविनाशी" लिखमारा जो समाज में सम्प्रति एक स्वयं सिद्धि के समान व्यवहृत हो रही है और सदा प्रमाण रूप में प्रस्तुत की जाती रहती है। शिक्षित और अशिक्षित सभी जन समान रूप से इस अर्द्धाली को प्रमाण रूप में स्वीकार करते और फलतः भ्रमजाल में फँसते रहते हैं। अतः इस दृष्टि से भी किंचित् विचार कर लेना अयुक्त न होगा। जहां तक अंश अंशी का भाव है, इसका प्रयोग भौतिक पदार्थ में ही सम्भव है। अभौतिक पदार्थ में अंश और अंशी हो ही नहीं सकते। एक कागज के टुकड़ा को अनेक भागों में विभक्त किया जा सकता है एक पत्थर की शिला चूर्ण बनकर बालू के कण के रूप में अरबों रूप धारण कर शिला के अरबों अंश के रूप में उपस्थित हो सकती है, पर क्या दया, सत्य, प्रेम आदि निराकार पदार्थों का भी खण्ड हो सकता है? नहीं। इसलिये कि वह अरूप है। परमात्मा भी निराकार और अरूप तथा अभौतिक पदार्थ है इस कारण उसका भी अंश न किया जा सकता है और न हो सकता है। जब ईश्वर का अंश हो ही नहीं सकता तब आत्मा परमात्मा का अंश कैसे हो सकता है? यदि दुर्जन तोष न्याय से यह मान भी लिया जाय कि जीव ईश्वर का अंश ही है तो प्रश्न उठेगा कि आत्मायें तो संख्यातीत हैं और हैं सब ईश्वर के अंश। अतः जिस ईश्वर से अनन्त कि आत्मायें तो संख्यातीत हैं और हैं सब ईश्वर के अंश। अतः जिस ईश्वर से अनन्त अंश निकलकर उससे पृथक हो चले वह ईश्वर अब पूर्ण है कि अपूर्ण? यदि कहें तो उत्तर मिथ्या होगा। क्योंकि जब अंश पृथक हो गये तो उतने अंशों में अंशी अपूर्ण हो गया। किन्तु ईश्वर त्रिकाल में पूर्ण और एक रस है। अतः आत्मा उसका अंश नहीं है। यह भी सत्य है कि अंशी में जो गुण होते हैं वही उसके अंश में भी पाये जाते हैं। यदि मिश्री की एक डली में मिठास है तो वही मिठास उसके टुकड़े में भी पायी जायेगी। पर परमात्मा के एक भी गुण उसके तथाकथित अंश आत्मा में नहीं पाये जाते परमात्मा सारे ब्रह्माण्ड की रचना कर सकता है पर आत्मा चींटी की एक टांग भी नहीं बना सकता। परमात्मा सर्वव्यापक है पर आत्मा मात्र हृदय देश में निवास करता है। परमात्मा सर्वज्ञ है पर आत्मा अल्पज्ञ है। इस प्रकार परमात्मा के एक भी गुण आत्मा के अन्दर नहीं पाये जाते। इसलिये वह उसका अंश नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी अंश स्वीकार तो किया पर अगली अर्द्धाली में "चेतन अमल सहज सुख राशि" लिखकर समस्या प्रस्तुत कर दिया। परमात्मा तो चेतन अमल और सहज सुखराशि है पर क्या आत्मा पर भी यह विशेषता घटित होगी? चेतन तो दोनों हैं, पर परमात्मा के अमल होते हुए भी आत्मा अमल नहीं है। उसके ऊपर जन्मान्तर की वासनायें मल रूप में छाई हुई हैं जिससे वह मलाच्छादित है। साथ ही परमात्मा के सहज सुख राशी होते हुए भी आत्मा में सुख का अभाव है और इसी कारण वह उस अभाव की पूर्ति के लिये सतत प्रयत्नशील रहता है। अन्यथा आत्मा भी परमात्मा की भांति सच्चिदानन्द कहा जाता । अतः इस कारण भी आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है। सच तो यह है कि तीव को ईश्वर अंश मानकर भी तुलसी आत्मा और परमात्मा की पृथक सत्ता स्वीकार करने से नहीं चूके। उन्होंने दोनों में अन्तर बतलाते हुए स्पष्ट लिखा-"परवश जीव स्ववश भगवन्ता। जीव अनेक एक श्री कन्ता"।। यह चौपाई स्पष्ट बतलाती है कि तुलसी की दृष्टि में ईश्वर शासक और जीव शासित तो है पर अंश नहीं। इसी प्रकार जितना विचार किया जायगा आत्मा और परमात्मा की उतनी ही पृथकता निखरती जायेगी पर आत्मा परमात्मा का अंश न सिद्ध हो सकेगा।

आत्मा के स्वरूप का निर्धारण करने के साथ ही उसके परिणाम पर भी विचार कर लेना असंगत न होगा। यद्यपि इससे पूर्व ज्ञातृत्व, कर्तृत्व के साथ भोक्तृत्वा न अणुः कह कर यह बतलाया जा चुका है कि आत्मा अणु मात्र है तथापि इस पर कुछ और विचार कर लेना अधिक हितकर होगा। इस संबंध में तीन प्रकार के विचार पाये जाते हैं। कुछ विचारक ऐसे हैं जो आत्मा को विभु स्वीकार करते हैं। कुछ का विचार है कि आत्मा अणु मात्र है। परन्तु कुछ विचारक ऐसे भी हैं जो विभु और अणु दोनों से भिन्न मध्यम कोटि का मानते हैं विभु बतलाने वाले मनीषी आत्मा को अनन्त {संख्यातीत} कहते हुए भी यह बतलाते हैं कि सभी आत्मायें सब में व्याप्त हैं इस कारण वे विभु हैं। मध्यम कोटि मानने वालों का यह कथन है कि जीवात्मा एक स्थान पर नहीं अपितु पूरी शरीर में व्याप्त है। जैसे परमात्मा अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त है उसी प्रकार आत्मा इस पिण्ड के सम्पूर्ण अवयव में व्याप्त है। किन्तु अणुवादियों का कथन है कि आत्मा अणु मात्र है और यह शरीर के एक देश विशेष में ही स्थित है।

सर्वप्रथम विभुवादियों के वाद पर विचार करता है। यदि आत्मा व्यापक है और सभी आत्मायें सभी में समाई हुई हैं तो उसका परिणाम यह होना चाहिये कि जो विचार एक आत्मा में उठे वही विचार प्रत्येक आत्मा के अन्दर रहे। क्योंकि सभी आत्मायें एक दूसरे के अन्दर व्याप्त हैं। पर एक प्रत्यक्ष के सर्वथा प्रतिकूल है। सभी आत्मायें सभी आत्माओं में समाई हुई हैं तब एक का रहस्य दूसरे से गुप्त कैसे रह सकता? हम जौनपुर में जो बात सोच रहे होंगे लन्दन में स्थित आत्मा भी वही विचार सोचने के लिए बाध्य होगी। फलतः कोई भी विचार किसी से भी गोप्य न रह सकेगा। किन्तु ऐसा होता नहीं।

क्रमशः----

विकास के अर्थों में कुछ जोड़ना शेष

(श्री बसन्त सिंह गहलौत,
विधायक धामपुर, बिजनौर)

इस सच्चाई से इंकार नहीं किया जा सकता कि भारत के स्वतन्त्र होने के बाद के वर्षों में भौतिक साधनों में उत्साहवर्धक विकास हुआ है। सन् 1947 में जब भारत स्वतन्त्र हुआ था उस समय भारत की आबादी लगभग 33 करोड़ थी, आज 1989 में यह बढ़कर लगभग 80 करोड़ की हो गई है। और इसमें प्रति वर्ष 3 करोड़ की वृद्धि हो रही है। 1947 में भारत खाने के लिए अन्न बाहर से मंगाता था और अब इतनी आबादी होते हुए भी वह आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि कभी-कभी विदेशों को भी अन्न का निर्यात कर देता है। अन्न वस्त्र के अतिरिक्त विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भी भारत ने आश्चर्य जनक उन्नति की है। खनिज पदार्थों के उत्खनन और ऊर्जा निर्माण में भी आशातीत सफलता प्राप्त की है। सड़कों और भवनों, बाँधों और नहरों में काफी प्रगति हुई है।

राज्य के भौतिक संसाधनों के विकास को देखकर संतोष किया जा सकता है परन्तु एक दूसरा पक्ष भी है जो आज तक घोर उपेक्षित है और जिसके अभाव में भौतिक विकास अपनी अर्थवत्ता, सार्थकता और गुणवत्ता खो देता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिन राष्ट्रों ने केवल भौतिक संसाधनों का विकास किया, मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति का ही लक्ष्य बनाया और मानव चित्त का विकास नहीं किया, वे राष्ट्र नष्ट हो गये उनका भौतिक विकास ही उनके विनाश का कारण बन गया। अतः यह आवश्यक है कि भारत के विकास को पूर्ण बनाने के लिए उसके अर्थों में मानव की चितिशक्ति के विकास को भी जोड़ा जाय। बिना इसके विकास अधूरा कहलायेगा और उस से वह उद्देश्य प्राप्त नहीं हो सकेगा, जिसके लिए वह नियोजित किया गया है। केवल मनुष्य एक भौतिक आवश्यकताओं के साथ साथ उसकी भावात्मक एवं विचारात्मक आवश्यकतायें होती हैं। इन तीनों तत्वों पर मनुष्य का जीवन चलता है वही विकास पूर्ण कहलायेगा। जो तीनों तत्वों की जरूरतों को पूरा करे। केवल भौतिक जरूरतें तो पूरी हो जाये और शेष अपूर्ण रहे तो मानव मन उद्वेलित रहेगा। अशांतचित्त सभी पापों को जन्म देगा और भौतिक संसाधन उस समाज की विभीषिका बन जायेंगे।

आज जो विकास का लक्ष्य हमारे सामने है उसने मनुष्य को केवल एक भौतिक प्राणी के रूप में लिया है इसका परिणाम यह हुआ कि जितनी तेजी से भौतिक संसाधनों का विकास हुआ उतनी ही तेजी से वह जीवन का उद्देश्य केवल धन पैदा करना ही सीख गया, यहाँ तक की धन कमाने के लिए किसी भी सामाजिक नियम की वह परवाह नहीं करता। चोरी, डकैती, लूट-पाट, अनैतिकता, शोषण, वेश्यावृत्ति, ठगी, बेईमानी, धोखेधड़ी उसके लिए आम बात हो गई। वह यह कहने लगा कि बिना बेईमानी के पेट नहीं भरता। "आनेस्टी इज द वैस्ट" के स्थान पर "डिस आनेस्टी इज द वैस्ट पालिसी" उसका धर्म बन गया। धन ही उसका सब कुछ बन गया, धर्म उससे छूट गया। धन का अभाव और धन का प्रभाव किसी भी समाज के लिए दोनों स्थितियाँ ही भयंकर होती हैं। धन ही जीवन में सब कुछ है इस विचार के विकास ने मानव मूल्यों का समाज से बहिष्कार करा दिया। सज्जनों को मूर्ख, दकियानूस पिछड़े और समय के साथ न चलने वाले और भ्रष्ट और बेईमान, ठग और धोखेबाजों को प्रगतिशील कहा जाने लगा।

धन पैदा करने के लिए फिल्में सेक्स और हिंसा का दिन दहाड़े, प्रचार कर रही हैं। नये-नये तरीके खोज कर पर्दे पर दिखाये जा रहे हैं। पाशविक प्रवृत्तियों को उभारा जा रहा है मदिरालय खोले जा रहे हैं। क्लबों के रूप में वेश्यालय चलाते जा रहे हैं, लाटरी के रूप में जुंए अड्डे बनाये जा रहे हैं। हमने अभी तक यह विचार नहीं किया है कि इन सबका समाज पर कितना खराब असर पड़ा रहा है। क्योंकि हमारी धारणा है कि भौतिक साधनों का विकास कर लिया जाय तो सब कुछ ठीक रहेगा। हम यह समझाने में बेबस हैं कि समाज में यदि मानव मूल्यों के प्रति आस्था नष्ट होगई तो भौतिक विकास उस समाज की जरूरत पूरी करने में पूर्णतया पंगु हो जायेगा। साधनों को हड़पने की छीना-झपटी में कमजोर मारा जायेगा और डाकू कामयाब हो जायेंगे। ऐसा समाज क्या अराजक समाज से कुछ भिन्न होगा। क्या उसे कल्याण कारी राज्य की संज्ञा दी जा सकेगी। कदापि नहीं।

फ्रांस का उदाहरण हमारे सामने है। फ्रांस अपने वैभव और भौतिक साधनों के बूते बिल्कुल निश्चिन्त था कि उसे कोई नहीं जीत सकता परन्तु चरित्र में वह खोखला हो चुका था। अय्यासी, बदमासी, उस समाज का धर्म बन गया था। फल यह हुआ कि सारी सामग्री रखी रह गई और वह जर्मनों का दास बन गया। जब धन के लिए ही जिया जाता है तो गोपनीय रहस्य भी दूसरे शत्रु देशों को दे दिये जाते हैं। ऐसे मामले अक्सर समाचार पत्रों की सुर्खियों में आये दिन आते रहते हैं। जीवन में धन का एक प्रमुख स्थान है परन्तु धन के लिए ही जीना अत्यन्त नीचता है। आज यही नीच विचार तथा कथित सभ्य एवं उच्च वर्ग का धर्म बनता जा रहा है। यह वर्ग पशुओं से भी नीचे पहुँच चुका है। पशुओं की भी मर्यादायें होती हैं। परन्तु इस वर्ग ने सभी मर्यादाओं को तिलांजलि दे दी है, ऐसा समाज कितनी भी भौतिक संसाधनों में विकसित हो जाये सुखी समाज नहीं बन सकता। ऐसे समाज में शोषण असमानता घृणा, विद्वेष, अहंकार का साम्राज्य होगा। कमजोर और अशक्त सताये जायेंगे। अन्याय और अत्याचार की पराकाष्ठा होगी।

अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम विकास के इस पहलू को भी नजर अन्दाज न करें और मानव चित्त के विकास की ओर भी ध्यान दें। यदि मानवीय गुणों की मर्यादा स्थापित करना हम अपने समाज का ध्येय बना लें तो जितना धन बजट में हम प्रति वर्ष खर्च करते हैं उससे चौगुना कार्य किया जा सकता है। यह एक प्रमाणित तथ्य है। कि योजनाओं के लिए निर्धारित धन का 40 प्रतिशत ही उन पर व्यय किया जाता है शेष 60 प्रतिशत बिचौलियों की जेबों में चला जाता है। जो सड़कें बनती हैं, जो भवन बनते हैं। जल्दी ही खराब हो जाते हैं। कुछ काम वास्तव में किये नहीं जाते परन्तु फर्जी बाउचर बनाकर धन निकाल लिया जाता है। अच्छे चित्त वाला व्यक्ति कर्तव्य निष्ठ होगा। वह अपना काम जिम्मेदारी से निभायेगा। वह इस बात की प्रतीक्षा में काम को करने से नहीं टालेगा कि वह यदि काम को समय पर कर देगा तो सुविधा शुल्क से वंचित रह जायेगा। सेवा ही उसका धर्म होगा, वह देश के लिए मर मिटेगा परन्तु देश को धोखा नहीं देगा, उसमें आत्मबल होगा, साहस और शौर्य होगा, वह धोखाधड़ी से दूर रहेगा। ऐसे मनुष्यों के जिम्में जो भी काम लगाया जायेगा, वे उसे सुन्दर और श्रेष्ठ ढंग से करेंगे। फिर योजनाओं की चौगुनी वृद्धि होगी राष्ट्र में किसी वस्तु की कमी नहीं रहेगी, सबको उनका अधिकार बिना हड़ताल किये प्राप्त हो जायेगा। फिर करोड़ों श्रम घंटों को बेकार करने की जरूरत नहीं रहेगी।

कर्तव्य प्रधान और अधिकार प्रधान का यही अन्तर है कि कर्तव्य प्रधान समाज व्यक्ति अपने कर्तव्य को पालन स्वभाव वश करता है और दूसरे को अधिकार स्वतः प्राप्त हो जाता है। उसे इसके लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता। शिक्षक यदि अच्छा पढ़ाता है तो विद्यार्थी का अधिकार स्वतः मिल जाता है। डाक्टर यदि ठीक इलाज करता है तो मरीज को उसका अधिकार स्वतः मिल जाता है। अधिकारी प्रधान समाज की यह बिडम्बना है कि संघर्ष करने के बाद भी अधिकार मिलेगा या नहीं, इसकी कोई गारंटी नहीं। अध्यापक को सरकार से संघर्ष, विद्यार्थी का अध्यापक से संघर्ष, मरीज का डाक्टर से संघर्ष, उपभोक्ता का दूकानदार से संघर्ष, यहाँ तक बढ़ जाता है कि व्यक्ति-व्यक्ति से संघर्ष करता है। उसकी सारी शक्ति संघर्ष में लग जाती है जिसे वह उत्पादन में लगा सकता था।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पूर्ण विकास की प्रक्रिया में भौतिक साधनों के साथ-साथ व्यक्ति के भावों और विचारों का विकास होना नितान्त आवश्यक है। जिसे शिक्षा के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। अतः प्रथम आवश्यकता इस बात की है हम अपनी शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के चित्त में उत्तम मानवीय गुणों को जागरण करें, तभी हमारा विकास सार्थक सिद्ध हो सकेगा।

अनन्त ऐश्वर्य की ओर

डॉ0 रविदत्त शर्मा आचार्य
सबलपुर, पो0 टाँडा आफजल
जि0 (मुरादाबाद)

संसार में बड़े-बड़े दानी हैं परन्तु उनके दान की सीमा है। जिस के पास जो वस्तु है, उस को वह दान कर सकता है फिर भी सर्वस्वदान नहीं कर सकता क्यों कि दानी को भी अपने जीवन यापन हेतु कुछ बचाना पड़ता है। यदि किसी के पास सब कुछ हो तो भी वह एक दिन अवश्य अघा जायेगा। एक विशेषता यह है कि दानी व्यक्ति भी स्वयं परमात्मा से माँगता है। यदि दानी भी किसी से माँगता है तो उसी परमेश्वर से सबको माँगना श्रेयस्कर है। परमात्मा का दान असीम और अनन्त है, ऐसा दान जिस की नाप-तौल सम्भव नहीं। ईश्वर हम को क्या देता है गणना नहीं की जा सकती। पृथ्वी से लेकर द्युलोकपर्यन्त सभी पदार्थों से हमारा उपकार होता है। हम जो कुछ माँगते हैं, वह तो मिलता ही है उसके अतिरिक्त बहुत कुछ बिना माँगे भी मिलता रहता है। उस दानी से सब कुछ माँगा जा सकता है क्योंकि किसी भी पदार्थ को उसे अपने उपयोग के लिये नहीं बचाना, सब कुछ दान के लिये ही है। अत्यधिक दान के कारण प्रभु का नाम भूरिदा ही पड़ गया --

भूरिदा ह्यसि श्रुतः पुरुत्रा शूर वृत्रहन्।
आ नो भजस्व राधसि ।।

ऋ0 4·32·21

हे प्रभो आप भूरिदा के नाम से प्रसिद्ध हैं। आप सब की रक्षा करते हैं तथा वृत्र का संहार करते हैं, हमें अपना भक्त बनाओ और हमारी आत्मा को तृप्त करो। हमारे लक्ष्य की सिद्धि करो जिस से हम सदैव सन्तुष्ट रह सकें। केवल भौतिक ऐश्वर्यों की याचना ही जीवन को पूर्ण नहीं कर देती अपितु आत्मतृप्ति ही वास्तविक तृप्ति है। शरीर की आवश्यकताएँ तो संसार के साधनों से पूर्ण होती हैं परन्तु आत्मा की भूख परमात्मा के अतिरिक्त और कोई नहीं मिटा सकता क्यों कि आत्मा की आवश्यकता केवल परमात्मा है। केवल संग्रह में ही सुख नहीं है, जब तक हमारे बाह्य तथा आन्तरिक शत्रुओं का नाश नहीं हो जाता। ये शत्रु ही वृत्र हैं जिनको मारने के लिये परमात्मा की आवश्यकता है। बाहर के शत्रुओं के लिये तो शारीरिक शक्ति पर्याप्त है, परन्तु अन्दर के शत्रुओं के लिये आत्मिक शक्ति अपेक्षित है। आत्मशक्ति का दाता परमात्मा ही है इसीलिये वह भूरिदा है।

धन का प्रतिनिधि सोना माना जाता है। सोना जिसके पास है वह धनी कहा जाता है। बाजार भाव सोने के भाव पर निर्भर होते हैं। थोड़ा सोना नहीं अपितु सोने से परिपूर्ण कलश यदि मिल जाये तो व्यक्ति सबसे बड़ा धनी बन जायेगा। परमात्मा जैसा देने वाला है वैसा ही लेने वाला भी होना चाहिए। यदि माँगने वाले ने संकोच किया तो फिर दाता को कैसे पता चलेगा? एक मन्त्र में प्रार्थना की गयी है कि भगवन् हमें सोने के दश कलश प्राप्त कराओ क्योंकि आप दुःख विनाशक एवं भूरिदा हैं ----

दश ते कलशानां हिरण्यानामधी महि।
भूरिदा असि वृत्रहन् ।।

ऋ0 4·32·19

केवल शत्रु ही नहीं अपितु दुःख-दारिद्रय भी वृत्र हैं। इन को नष्ट करके सुख मिलता है। दीनता रूपी वृत्र का नाश हिरण्य से होता है। उत्तम धन मिलने पर आर्थिक अभाव रूपी वृत्र अदृश्य हो जाता है। शरीर यात्रा चलाने के लिये अभाव सबसे बड़ा शत्रु है। संसार का सुख प्राप्त करने के लिये मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अनुकूल एवं उपयुक्त साधन प्राप्त करें। वेद में निर्धनता का पक्षपात नहीं किया गया है। धन भी होतो प्रशंसनीय हो। यदि धन की निन्दा होगी तो उपभोग आनन्ददायक नहीं होगा। हमारे धन से कोई आशंकित न हो। हिरण्य का भाव केवल सोना ही नहीं, दूसरा अर्थ यह भी है कि हितकर हो जिससे किसी भी प्रकार की आपत्ति का भय न हो। धन ऐसा हो जिसमें किसी प्रकार की न्यूनता न हो।----

भूरिदा भूरि देहि नो मा दभ्रं भूर्या भर।
भूरिघेदिन्द्र दित्ससि ।।

ऋ0 4·32·20

मन्त्र में भूरिभाव स्पष्ट किया गया है। भूरि का अर्थ है अत्यन्त परिपूर्णता, अनल्प अथवा पर्याप्त, परमात्मा सब को मालामाल करना चाहता है। उसने अपना ऐश्वर्य किसी को कम नहीं दिया। विस्तृत पृथ्वी सब का आधार है उससे भी अधिक जलराशि विद्यमान है। महान ज्योतिपुंज सूर्य संसार को प्रकाशित करता है। वायु का कितना ही कोई प्रयोग करे कमी नहीं आती। अन्तरिक्ष इतना विशाल जिसको नापा नहीं जा सकता। ज्ञान का भंडार वेद, जिसका पार नहीं पा सकते। वनस्पति, फल-फूल, कन्दमूल, पर्वत, विभिन्न उपकारक प्राणियों का समूह, रत्न, धातुएँ आदि अगणित पदार्थ प्रभु ने दिये हैं, जिन में कभी भी कमी नहीं आती। पृथ्वी की खानों से निरन्तर लोहा, ताम्बा, सोना निकाला जाता है, फिर भी समाप्त नहीं होता। इस को ही ईश्वर की महिमा कहते हैं। जिस को इस महिमा का आभास मात्र भी हो जाता है फिर उसे असन्तोष छू नहीं पाता। ईश्वर की सत्ता में विश्वास करने वाले को असीम धैर्य की प्राप्ति होती है। देने वाला तो देता है परन्तु लेने वाला उस का पात्र होना चाहिये। जिस पदार्थ को प्राप्त करना है तदनुकूल उद्यम और अध्यवसाय भी होना चाहिए। यदि हम स्वस्थ रहना चाहते हैं तो स्वास्थ्य के नियमों का पालन भी करें। धन चाहते हैं तो व्यापार करें। साधक बनना चाहते हैं तो यम नियम आदि का पालन करें। विद्वान् बनना चाहते हैं तो गुरु चरणों में बैठ कर ब्रह्मचर्य पालन कर विद्याध्ययन करें। अपनी कामनाओं को पूर्ण करने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहने वालों के ईश्वर कभी नहीं रोकता। निराशावादी जन भ्रान्ति में पड़े हुए हैं कि जो भाग्य में होगा वही मिलेगा। खेत में एक दाना डालने पर कितने दाने बनते है? ईश्वर उत्पन्न तो कर सकता है, परन्तु दाने का भूमि में स्वयं डालना पड़ता है।

जो व्यक्ति जीवन में केवल कुतर्क करके उद्यम से बचना चाहते हैं और बिना किये ही सब कुछ प्राप्त करने की आशा करते हैं, वे उस सम्पदा से सर्वथा वंचित रह जाते हैं। उस ऐश्वर्य को प्राप्त करने वाला कोई विरला ही होता है। परमात्मा ने तो चार पदार्थ सबके लिये सुरक्षित रखे हुए हैं, यदि कोई लेना न चाहे तो किसका दोष है? विलासी जीवन बिताते हुए तो कुछ भी उपलब्ध नहीं होगा। अनुपलब्धि की अवस्था में ईश्वर पर आरोप लगाने के अतिरिक्त कुछ याद नहीं रहता। प्रत्येक मनुष्य को धर्म - अर्थ - काम - मोक्ष प्राप्त करने के लिये मानव शरीर दिया है। सम्पूर्ण आयु का विभाजन कर के चारों पदार्थों की प्राप्ति सम्भव है। उस परमैश्वर्यवान् की कृपा प्राप्ति हेतु सतत उद्योग करना अपेक्षित है। अपने जीवन को वेदानुकूल ढाल कर अनन्त ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। यह शरीर भी किसी ऐश्वर्य से कम नहीं, अतः उसकी प्राप्ति कर मानव जीवन के लक्ष्य की पूर्ति करना तथा वेदानुकूल आचरण करना हमारा परम कर्तव्य है उसकी असीम कृपा ही अनन्त ऐश्वर्य है।

आवश्यक सूचना

(1)

सभा के अन्तर्गत समस्त महोपदेशकों, उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों से निवेदन है कि आर्यमित्र के नवीन ग्राहक कम से कम 10 प्रत्येक मास में बनायें। यह विशेष रूप से अनिवार्य है।

(2)

दयानन्द संघ में, समस्त अवैतनिक महोपदेशकों, उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों से नम्र निवेदन है कि सभा की वार्षिक रिपोर्ट बनाने का कार्य प्रारम्भ हो गया है अतः अपनी संक्षिप्त वार्षिक रिपोर्ट, 1 जनवरी 88 से 31 दिसम्बर, 88 तक तुरन्त सभा कार्यालय उपदेश विभाग को, 30 जून, 89 तक भेजें। इसके पश्चात आने पर सभा का कोई दायित्व नहीं होगा।

हरिचन्द्र आर्य
अधिष्ठाता
उपदेश विभाग, आर्यप्रतिनिधि सभा
उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

- आर्यसमाज उर्वरकनगर, बेगूसराय का वार्षिकोत्सव 24 एवं 25 अप्रैल को स्थानीय विनोद केन्द्र में आयोजित हुआ। इस अवसर पर स्वामी दयानन्द विदेह, अजमेर तथा देवेन्द्र-कुमार जी सत्यार्थी के प्रवचन होते रहे।

- आर्यसमाज जमुई का 4वां वार्षिकोत्सव 25, 26-27, 28 अप्रैल को बड़े धूमधाम से मनाया गया।

अभय प्राण

सत्यपथ का अनुगामी होने के लिए मानव को तपस्वी एवं कष्टसहिष्णु बनना पड़ता है। इसीलिए धर्म का मार्ग क्षुरे की धार पर चलने के समान माना गया है। इस व्रत को धारण करने वाले तपस्वी का जीवन निर्भय होता है। निर्भयता से शक्ति प्राप्त होती है और मानव उत्तरोत्तर प्रगतिपथ पर अग्रशील रहता है। अथर्ववेद के निम्न मन्त्र में इसी भाव को दर्शाया गया है--

यथा द्यौश्च पृथिवी च न बिभीतो न रिष्यतः ।
एवा मे प्राण मा बिभेः एवा में प्राण मा रिषः ।।

जिस प्रकार द्यौ और पृथ्वी न डरते हैं और न क्षीण होते हैं, उसी प्रकार सत्यपथ के अनुगामी मेरे प्राण। तुम भी मत डरना और न क्षीण होना।

As Heaven and Earth fear not and decay not, Even so my Spirit,fear not, decay.not.

धर्मान्तरित आमन्त्रण

-राष्ट्रीय कवि निर्भय हाथरसी

अपना घर अपना घर है, अपने घर को सुख पहुँचाओ।
अपने घर की दीवारों को चोरों से मत तुड़वाओ।
अपने अटके भटके मन को और अधिक मत भटकाओ।
झटपट अपने जीवन की उलझन सुलझाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयो। अपने घर को वापिस आ जाओ।

xxxxx

तुम हिन्दू हो, आर्य पुत्र हो, आर्यावर्त तुम्हारा है।
आर्य धर्म ने खुले हृदय से फिर से तुम्हें पुकारा है।
जीवन के झगड़े-झंझट में सौ भटकन आ सकती हैं-
हर भूला भटका भाई हमको प्राणों से प्यारा है।

आर्य धर्म से विधर्मियों का जबरन जुआ हटा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयो। अपने घर को वापिस आ जाओ।

xxxxx

स्वयं करे अपघात कोई इससे ओछा आघात नहीं।
माँ का आशीर्वाद मिले इससे अच्छी सौगात नहीं।
सुबह का भूला हुआ शाम को यदि घर वापिस आ जाये-
इससे बढ़कर इस दुनियाँ में कोई अच्छी बात नहीं।

स्वयं जागकर हर सोये भाई को स्वयं जगा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य-धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयो। अपने घर को वापिस आ जाओ।

xxxxx

सिंह सपूतो। माना तुम गीदड़-गोदी में जा बैठे।
माना किन्हीं कारणों से तुम अपना रूप भुला बैठे।
किन्हीं विवशताओं से, भय से, याकि किसी लाचारी से-
माना अपना धर्म छोड़ और का धर्म अपना बैठे।

नकली रूप छोड़ अब अपना असली रूप दिखा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य-धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयो! अपने घर को वापिस आ जाओ।

xxxxx

आर्यजन गुणकर्मानुसार विवाह करें

आर्यसमाज के संगठन को सशक्त बनाने की दृष्टि से यह निश्चय किया गया है कि आर्यसमाज के सदस्य अपने बच्चों का जन्मपरक जाति पाँति बन्धन तोड़कर केवल आर्यसमाजी परिवार में ही गुण कर्मस्वभावानुसार विवाह करें।

आर्यमित्र इस प्रकार के वर तथा कन्याओं की सूची योग्यता तथा पते सहित निःशुल्क रूप से सहर्ष प्रकाशित करेगा। केवल विज्ञापन देने वाले को आर्यमित्र का ग्राहक बनना अनिवार्य होगा।

--------------- - सम्पादक

आत्म अग्नि का सुन्दर घृत

पञ्चघृताहुति मन्त्रः-

ओ३म् अयन्त इध्म आत्मा जातवेदस्तेनेध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्धय। चास्मान् प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा। इदमग्नये जातवेदसे इदन्न मम ।।

घृत की आहुतियों से जैसे, या ओज अग्नि यह बढ़ती है।
वह ओजनाथ मिल जाय हमें, अब यही हमारी बिनती है।।

जो अग्नि यज्ञ में आई है
जीवन में वही समाई है
निर्माण यही जग में करती
इसने ही आय बढ़ाई है।

धन धान्य प्रजा पशु तेज कीर्ति, ये सभी अग्नि ही वरती है।
वह ओज नाथ मिल जाय हमें, अब यही हमारी बिनती है।

आत्म अग्नि का सुन्दर घृत है
जग ज्योति इसी से जागृत है
इससे ही ज्वाला बढ़ती है
जो देती ऐश्वर्य अमृत है।

जातवेद के ओज तेज से, सब सुदृढ़ ज्ञान गो बनती है।
वह ओजनाथ मिल जाय हमें, अब यही हमारी बिनती है।।

स्वयं दीप्ति हमको दमकाता
ज्ञानेन्द्रियों को ओज दिलाता
करलो स्वीकार घृताहुतियाँ
हे अग्नि ज्ञान के विख्याता।

इस अग्नि ओज आयोजन से, इन्द्रियाँ प्रखर हो सकती हैं।
वह ओजनाथ मिल जाय हमें, अब यही हमारी बिनती है।।

- देव नारायण भारद्वाज, आज

सभा के उपदेशकों प्रचारकों की सेवा में आवश्यक परिपत्र

1- आप अपनी प्रगति से कार्यालय को अवगत करने के लिये अन्तर्देशीय पत्र प्रति सप्ताह प्रचार कार्यालय अमरोहा को आवश्यक रूप से भेजते रहें। इसी के आधार पर आपके वेतन बिलों का भुगतान किया जायेगा।

2- वैदि धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट जिला गाजियाबाद के लिये सुयोग्य छात्रों का साक्षात्कार दिनांक- 15जून, 1989 ब्रहस्पतिवार को प्रातः 10 बजे होगा। आप अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ से बी0ए0 संस्कृत एवं उत्तर मध्यमा उत्तीर्ण छात्रों को जिनकी आयु 25वर्ष से अधिक न हो, आवेदन पत्र प्राचार्य वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय, ब्रजघाट जिला गाजियाबाद के पते पर भिजवाने की कृपा करें। द्विवर्षीय पाठ्यक्रम के उपरान्त निश्चित वेतनमान पर नियुक्ति का आश्वासन। शिक्षा भोजन आवास, व्यवस्था निःशुल्क।

3- आप सभी की धर्म भूषण परीक्षा विद्यार्य सभा उ0प्र0 के तत्वाधान में दिनांक- 29 जून, 1989 बृहस्पतिवार को प्रातः 10 बजे से वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट जिला गाजियाबाद में सम्पन्न होगी। आप सभी 28 जून, 1989 की रात्रि तक विद्यालय परिसर में पहुँचना सुनिश्चित करें।

4- उपदेशक विभाग की बैठकों में आप सभी के सहयोग एवं परामर्श के आधार पर आपकी प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए पंच सूत्रीय कार्यक्रम निश्चित किया गया है। जिसके आधार पर आर्य मित्र आर्यसमाजों को पुर्नजीवन नवीन स्थापना संगठन एवं वेद प्रचार कार्य सम्मिलित हैं। आप अपनी प्रगति से इस कार्यालय को जुलाई 1988 से मई 1989 तक के पूर्ण विवरण सहित भेजने की व्यवस्था करें। जिससे आपकी प्रगति का मूल्यांकन कर उपदेश विभाग की बैठक में आपके सम्बन्ध में विचार किया जा सके।

- हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश।

श्री वीर बहादुरसिंह दिवंगत



केन्द्रीय संचार मंत्री एवं प्रदेश के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री वीर बहादुरसिंह का पेरिस में दिल का दौरा पड़ने के कारण निधन हो गया। उनके निधन पर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री एवं जननेता श्री मनमोहन तिवारी ने हार्दिक शोक प्रकट करते हुए कहा कि श्री सिंह एक निर्भीक प्रशासक एवं आर्यसमाज के बड़े हितैषी थे। उनके निधन से समाज का एक सच्चा सपूत हमारे बीच से चला गया। उन्होंने अपने मुख्य मन्त्रित्व काल में प्रदेश की चहुंमुखी उन्नति के लिए अथक प्रयास करके प्रदेश का गौरव बढ़ाया था उनके निधन से राष्ट्र की अपूरणीय क्षति हुई। परमात्मा उनके आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

भारतीय वैज्ञानिकों को शत शत बधाई

पूर्णतया भारतीय टेक्नालॉजी पर निर्मित "अग्नि" [illegible] के सफल परीक्षण पर उ0प्र0 आर्य प्रतिनिधि सभा । श्री मनमोहन तिवारी ने भारतीय वैज्ञानिकों एवं केन्द्रीय ों श्री कृष्ण चन्द्र पन्त को हार्दिक बधाई देते हुए आशा की है कि हमारे भारतीय वैज्ञानिक अपने सफल आविष्कारों ारत का मस्तक सदैव ऊँचा बनाए रखेंगे।

बिहारीलाल शास्त्री की प्रथम पुण्यतिथि

बरेली- आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वान एवं शास्त्रार्थ महारथी स्व0-पं0 बिहारी लाल शास्त्री की प्रथम पुण्य तिथि यहां गायत्री शक्ति पीठ में संस्कृत परिषद द्वारा मनाई गई। इस अवसर पर संस्कृत के 10 विद्वानों को प्रशस्ति पत्र एवं अंग वस्त्रों से सम्मानित किया गया तथा पं0 बिहारीलाल के जीवन एवं उनके कार्य-कलापों पर प्रकाश डाला गया। सम्मानित किये जाने वालों में आर्य-समाज की विदुषी डा0 सावित्री शर्मा, पं0 विशुद्धानन्द शास्त्री भी थे। आयोजन में पं0 बिहारी लाल शास्त्री के पुत्र श्री अरविन्दलाल-शर्मा ने मुख्य भूमिका निभाई। इस अवसर पर डा0 मृदुला शर्मा के संयोजन में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया।

दान की अपील

- **भारतीय** हिन्दू शुद्धि सभा, जिसकी स्थापना स्वामी-श्रद्धानन्द एवं महात्मा हंसराज जी ने की थी, पिछले 90 वर्षों से सारे भारत में शुद्धि कार्य सुचारू रूप से कर रही है। इसके लिये शुद्धि सभा के पास कई ऐसे कार्यकर्ता हैं जोकि समस्त भारत में गांव-गांव तथा नगर-नगर जाकर शुद्धि कार्य करते हैं। ये कार्यकर्ता, जो मुसलमान तथा ईसाई वैदिक धर्म में प्रविष्ट होते हैं, उनसे बाद में भी सम्पर्क रखते हैं। अब भी हर वर्ष सैकड़ों मुसलमान तथा हजारों ईसाईयों की शुद्धि की जाती है।

हमारा हर मास लगभग पन्द्रह हजार रु0 व्यय हो जाता है। पर इसकी पूर्ति नहीं हो पाती है। जिस कारण कार्य करने में हमें काफी कठिनाई होती है। अतः दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपनी ओर से, अपनी संस्था की ओर से, तथा अपनी आर्यसमाज की ओर से अधिक से अधिक राशिचैक, मनीआर्डर, नकद अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा "भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा" के नाम केवल खाते में आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

- आर्यसमाज नवडीहा के तत्वावधान में 29 अप्रैल को वेदप्रचार महोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

• रेल दुर्घटना में बाल-बाल बचे

दिनांक 17 मई को स्वामी आनन्दबोध सरस्वती हैदराबाद से लौटकर दिल्ली वापस आये। और 18-5-89 को झेलम एक्सप्रेस से खण्डवा के लिए प्रस्थान किया।

यह गाड़ी आगरा से निकल कर झाँसी की तरफ बढ़ती जा रही थी। साढ़े तीन बजे दिन में आगरा से 26मील की दूरी पर जंगल में जिस डिब्बे में स्वामी जी बैठे थे उसके पीछे के चार डिब्बे पटरी से उतरकर गिर पड़े जिसमें बहुत से लोग घायल हो गये। गाड़ी का गार्ड भी बुरी तरह घायल हो गया। इस दुर्घटना में स्वामी जी के अंग रक्षक भी जो उनके साथ जा रहे थे घायल हो जाते यदि गार्ड ने उन्हें अपने डिब्बे में बैठने के लिए मना न किया होता। दुर्घटना के स्थान से स्वामी जी पैदल दो किलोमीटर चलकर सड़क पर आये जो आगरा क लिए बस में बैठकर गये। आगरा से डी0टी0सी0 की बस से रात के 11 बजे दिल्ली पहुँचे।

स्वामी जी का इस दुर्घटना से सुरक्षित बचकर निकल आना एक दैवीय चमत्कार ही समझना चाहिए

उक्त दुर्घटना के कारण कई रेल गाड़ियां अपने गन्तव्य स्थान पर कई घंटे देर से पहुँची।

अनुकरणीय दान

आर्यप्रतिनिधि सभा द्वारा निर्माणाधीन स्वामी श्रद्धानन्द अतिथि भवन हेतु श्री जी0 प्रसाद, सी-212 निरालानगर, लखनऊ द्वारा 2001/- का अनुकरणीय दान दिया है, सभा इसके लिये धन्यवाद देती है।

- मनमोहन तिवारी,
सभा मंत्री।

रमेश जी भारतीय एकता के प्रतीक सच्चे आर्य थे

21 मई- आर्यसमाज खालापार (सहारनपुर) में हिन्द समाचार-पत्र समूह के सम्पादक लाला जगतनारायण और उनके यशस्वी पुत्र श्री रमेशचन्द्र के बलिदान की पुण्यतिथि पर आर्य नेताओं ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा- इन दोनों महान् पुरुषों का बलिदान हमें अनन्तकाल तक प्रेरणा देता रहेगा। रमेश जी सच्चे आर्य, प्रमुख समाज सेवी, आदर्श पत्रकार चिन्तक एवं कर्मयोगी थे। उनके पिता और उन्होंने हिन्दू सिख एकता के लिए अपने को कुर्बान कर दिया। हिन्द समाचार परिवार ने राष्ट्रीय एकता और हिन्दू सिख एकता के लिए जो कार्य किया है वह इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा।

- संवाददाता।

आर्य समाज मऊनाथ भंजन में योग प्रशिक्षण शिविर

8 मई से 7 जून 1989 तक लगेगा।

श्री स्वामी व्रतानन्द सरस्वती "परिव्राट्,

श्रीमद् दयानन्दमठ दीनानगर पंजाब प्रांत से संबंधित ब्रह्मचर्याश्रम से सीधे सन्यास आश्रम में दीक्षित होने के पश्चात पिछले 18 वर्षों में सम्पूर्ण भारत का 10(दस) चक्र पूर्ण कर लेने के पश्चात अब नर्मदा नदी के पावन तट पर अवस्थित आर्य गुरुकुल होशंगाबाद में स्थायी रूप से रहते हैं। आप आध्यात्मिक, शारीरिक और वेदोक्त बौद्धिक तीनों प्रकार का प्रशिक्षण देते हैं।

- "आर्यसमाज आर्यनगर (बदायूं) के तत्वावधान में श्री रामकुमार जी आर्य प्रधान आर्यसमाज के पौत्र चि0 नितिनकुमार-आर्य की नवीं वर्षगाँठ मनाई गई श्री वीर सिंह जी आर्य पुरोहित द्वारा वृहद यज्ञ आदि का कार्य सम्पन्न हुआ"।

- श्री धर्मेन्द्र कुमार आर्य के पुत्र का नामकरण संस्कार श्री वीर सिंह जी आर्य पुरोहित द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ इनके ससुर श्री महेशपाल आर्य द्वारा प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

महिला मण्डल

नारी जागरण के घरेलू नुस्खे

श्री जगदीश चन्द्र पन्त
आई०ए०एस०, लखनऊ।

1- अपनी दान वृत्ति को भिखमंगों को भिक्षा देकर संतुष्ट न किया जाये बल्कि आपके द्वारा दिये गये दान के सदुपयोग को सुनिश्चित करने के लिये निम्न कार्य हाथ में लिये जा सकते हैं:-

(क) अपने आस-पास की किसी निराश्रित महिला को अपने पाँवों पर खड़ा करने के लिये उसे सहायता देना।
(ख) अपने आस-पास के किसी गरीब लड़के अथवा लड़की को उसके आत्म निर्भर होने तक उसके पढ़ने का खर्च देना।
(ग) समीप के अनाथालय के किसी बच्चे के अभिभावक की भूमिका निभाना।
(घ) किसी ऐसी संस्था को दान देना जो ईमानदारी से मानव कल्याण के कार्य में लगी हुई हो आदि।

2- बच्चों में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी के संस्कार जमाने के लिये उनसे नित्य-प्रति कुछ न कुछ घर का सेवा कार्य कराना और उनसे स्वयं ही अपना मूल्यांकन आपको बताने के लिये कहना।

3- घर के रोजमर्रा के कार्य में पैदा होने वाले कूड़ा-करकट के सदुपयोग पर विचार करना जैसे-

(क) सब्जी के छिलकों को इकट्ठा कर आस-पास के मवेशियों को खिलाने की व्यवस्था करना।
(ख) कागज के रूप में इकट्ठा होने वाले कूड़े को किसी आस-पास की हाथ कागज की इकाई तक भिजवाने की व्यवस्था करना।
(ग) कलेण्डरों के मासिक पृष्ठ और कलेण्डरों के कागज का समय निकल जाने के बाद उस कागज का उपयोग उस घर कलाकृतियों का निर्माण करने के लिये किया जाना।
(घ) प्राप्त होने वाली चिट्ठियों के खाली हिस्सों को विजिटिंग कार्ड्स के रूप में इस्तेमाल करने की व्यवस्था करना।
(च) कूड़े में इकट्ठा होने वाली धूल को अपनी फूलों की क्यारी में डालना आदि।

(क) घर में पोदीना, धनिया और तुलसी के गमले तैयार कर उनका उपयोग चटनी, हरा नमक, चाय आदि में इस्तेमाल करने की व्यवस्था करना ताकि घर में सभी को ताजी क्लोरोफिल दी जा सके जो आहार का आवश्यक अंग है।
(ख) कुछ गमले फूलों और कुछ गमले सब्जियों के भी बनाये जायें।
(ग) इन गमलों की देखभाल की जिम्मेदारी घर के बच्चों को दी जाये।

5- मुहल्ले की किसी काम काजी महिला के द्वारा दिन में एक वक्त सामूहिक तन्दूर संचालन की व्यवस्था करना ताकि मुहल्ले के सभी घरों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप प्राप्त होने वाले आटे से सिकी सिकाई चपातियाँ उपलब्ध करायी जा सकें। इस तन्दूर पर कुछ सब्जी और चटनी भी उपलब्ध करायी जा सकती है। लेकिन सब्जी पकाने का काम घरों में अलग भी हो सकता है।

6- अपने पसीने की कमाई से जेवर खरीदने के स्थान पर उसके द्वारा बच्चों के नाम फिक्स डिपाजिट कराने पर विचार करना।

7- जिन पढ़ी-लिखी महिलाओं के पास दिन में थोड़ा समय है उनके द्वारा आस-पास के स्कूल पढ़ने वाले बच्चों के लिये एक घंटे का समय उन्हें अच्छे संस्कार देने के लिये निर्धारित करना एवं आस-पास के पेड़ों और वनस्पति की सुरक्षा एवं सामान्य सफाई के लिये उनमें चेतना जागृति करना।

8- मुहल्ले की सफाई व्यवस्था में प्रत्येक घर का क्या योगदान हो सकता है इस पर आपसी विचार-विमर्श कर योजना तैयार करना।

9- मुहल्ले में यदि किसी घर के पुरुष किसी प्रकार का नशा करते हैं तो उन पर सामाजिक दबाव डालकर उनके नशे की आदत को छुड़ाना।

10- यदि आप उपरोक्त 9 सभी कार्य कर रहे हों तो कृपा कर उस अपने इष्ट-मित्रों से भी करवाने का अनुरोध करें।

शुद्धि-समाचार

मुस्लिम नवयुवती की शुद्धि

दिनांक 18-5-89 को कुमारी आशा नामक एक मुस्लिम युवती ने अपनी स्वेच्छा से हिन्दू धर्म स्वीकार किया और श्री बरदानी सिंह के साथ आर्यसमाज मन्दिर बाँदा के प्रांगण में उनका विवाह संस्कार हुआ।

श्रीमती सावित्री देवी एडवोकेट, मंत्री आर्यसमाज बाँदा ने विवाह संस्कार सम्पन्न कराया। इस अवसर पर नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

- आर्य समाज बिन्दकी रोड (फतेहपुर) के मंत्री श्री चन्द्रकिशोर के बड़े भ्राता श्री बृजराज किशोर जी का निधन । ... दिन शनिवार को 60 वर्ष की आयु में हो गया। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा दुःखी परिवार को धैर्य प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

\- सभामंत्री

- आर्यसमाज सुभाषनगर साकेत (फैजाबाद) के मन्दिर निर्माण हेतु उदारतापूर्वक मुक्त हस्त से दान देने की कृपा करें। पता मंत्री आर्यसमाज सुभाषनगर के पते से भेजें।

शोक समाचार

राजाजीपुरम निवासी श्री रामऔतार मिश्र की धर्मपत्नी श्रीमती-चन्द्रानी मिश्रा का दिनांक 15 अप्रैल 1989 को लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया वह अपने पीछे भरापुरा परिवार छोड़ गयीं। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति व दुःखी परिवार को धैर्य प्रदान करें।

तपोवन देहरादून में वार्षिक सत्संग

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन देहरादून का वार्षिक सत्संग, साधना-शिविर तथा वृहद् यज्ञ सोमवार दिनांक- 24अप्रैल से दिनांक- 30अप्रैल 89 तक आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर योगधाम (ज्वालापुर) के संचालक पूज्य स्वामी-दिव्यानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती, आचार्य-राम प्रसाद जी वेदालंकार (उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय), कई भजनोपदेशक तथा अन्य विद्वान पधार रहे हैं ।

- चम्पारण जिला सभा के भूतपूर्व प्रधान श्री योगेन्द्र-प्रसाद अधिवक्ता के लड़के हर्षवर्धन का पाणिग्रहण संस्कार [जलपाईगुड़ी] निवासी श्री हृदय नारायण जी की सुपुत्री आयु0 रागिनी के साथ पं0 वी0के0 शास्त्री के आचार्यत्व में वैदिक रीत्यानुसार बहुत ही शालीनता के साथ सम्पन्न हुआ।

- आर्यसमाज नवाबगंज [गोण्डा] श्री राम सागर जी गुप्त का दिनांक 19-4-89 रात्रि 10 बजे देहावसान हो गया जिनका अन्तिम संस्कार दिनांक- 12-4-89 को उनके एकमात्र पुत्र श्री ओउम् प्रकाश जी गुप्त द्वारा सम्पन्न हुआ।

प्रभु उनकी आत्मा को सुख शान्ति तथा परिवार को सहनशक्ति प्रदान करें।

-सभामंत्री ।

निर्वाचन

महिला आर्यसमाज कासगंज [एटा]

प्रधाना - श्रीमती विदुषी देवी आर्या
मंत्राणी - श्रीमती गायत्री देवी आर्या
कोषाध्यक्षा - श्रीमती पुष्पादेवी आर्या

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा फतेहपुर का वार्षिक चुनाव

दिनांक 30 अप्रैल दिन रविवार को अपरान्ह 2 बजे आर्यसमाज फतेहपुर के हीरक जयन्ती के अवसर पर जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के सम्मेलन में प्रधान डा0 हर्ष वर्धन की अध्यक्षता एवं स्वामी मेधानन्द जी की उपस्थिति में चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें सर्व सम्मति से निम्नांकित पदाधिकारी चुने गये--

संरक्षक - डा0 विनय अरोड़ा
प्रधान - श्री डा0 हर्ष वर्धन
मंत्री - श्री सुरेन्द्र प्रताप सिंह कस्बा सोहन
कोषाध्यक्ष - श्री छोटे लाल जी ईट गांव

आर्य समाज जहानाबाद का गठन

दि0 27·4·89 दिन गुरुवार को फतेहपुर आर्यसमाज मन्दिर में डा0 हर्षवर्धन [प्रधान] की अध्यक्षता में किया गया, जो इस प्रकार हैं। आर्य समाज जहानाबाद के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों की सूची निम्नवत् है।

अध्यक्ष - श्री रघुनाथ दास कोत्यौर
मंत्री - श्री बाबूलाल जी
कोषाध्यक्ष - श्री समऔतार

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा फतेहपुर

प्रधान - श्री चन्द्रपाल सिंह जी
मंत्री - श्री मेवालाल जी
कोषाध्यक्ष - श्री सुरेशचन्द्र जी केसरवानी

आर्यसमाज शाह [फतेहपुर]

प्रधान - श्री ज्ञानेन्द्र पाल
मंत्री - श्री रामस्वरूप गुप्त नेता
कोषाध्यक्ष - श्री राजेन्द्र नारायण गुप्त

आर्य समाज कृष्णानगर [मथुरा]

प्रधान - श्री राजेन्द्र प्रसाद जी भटनागर
मंत्री - श्री जनक राज सैनी
कोषाध्यक्ष - श्रीमती लज्जा वती

आर्यसमाज रुड़की

प्रधान - श्री कृष्ण लाल मवान
मंत्री - श्री सत्य प्रकाश गुप्त
कोषाध्यक्ष - श्री वेदराज आर्य

केन्द्रीय आर्य समिति, मेरठ

प्रधान - सर्वश्री मान सिंह वर्मा [भू0पू0 परि0मंत्री]
मंत्री - श्री हरवीर सिंह सुमन
कोषाध्यक्ष - श्री राजेन्द्र प्रकाश

- आर्यसमाज भीकमपुर जैनी [बदायूं] का नवाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 16, 17, 18 जून 1989 दिन शुक्रवार, शनिवार, रविवार को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है जिसमें उच्चकोटि के विद्वान, सन्यासी तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

आर्य समाज कलकत्ता का वार्षिक निर्वाचन

प्रधान - श्री रुलियाराम गुप्त
मंत्री - श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल
कोषाध्यक्ष - श्री श्रीनाथ दास गुप्त

आर्य समाज इटावा जनपद-मु0 नगर

प्रधान - सर्वश्री नत्थू सिंह आर्य
मंत्री - सर्वश्री मदनलाल राठी
कोषाध्यक्ष - सर्वश्री डा0 वीरेन्द्र राठी

आर्य उप प्रतिनिधि सभा, मुरादाबाद,

प्रधान - श्री विक्रम सिंह जी आर्य, मोहल्ला ठेर सम्भल [मुरादाबाद]
मंत्री - श्री हर स्वरूप सिंह जी आर्य, मलकपुर सेमली, जिला मुरादाबाद।
कोषाध्यक्ष - श्री लाला छज्जू मल जी, ठाकुर द्वारा जिला मुरादाबाद।

आर्य समाज अमरोहा का वार्षिक निर्वाचन

दिनांक 9-5-89 को आर्य समाज अमरोहा का निर्वाचन सर्व सम्मति से निम्न प्रकार हुआ -

प्रधान - श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य
मंत्री - श्री प्रेम बिहारी आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री धर्मेन्द्र कुमार जी

"महान-शोक"

आर्य वीर दल बगहा मीरजापुर का कर्मठ सदस्य होनहार नवयुवक, आदर्श विद्यार्थी जो आई0टी0आई0 कर रहा था, श्री विद्या शंकर सिंह का दि0 8 मई को एक जीप से टक्कर लग जाने से मृत्यु हो गयी।

आर्यसमाज व आर्य वीर दल बगहा-मीरजापुर की एक विशेष शोक-सभा में उसे श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमात्मा से उस अमर आत्मा की सद्गति व उसके शोक संतप्त परिवार के धैर्य व शान्ति के लिये प्रार्थना की गई।

बेचन सिंह, मंत्री।

योग साधना शिविर

नई दिल्ली- केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली के तत्वावधान में रविवार 11 जून 1989 से 18 जून 1989 तक डी0ए0वी0-माडल स्कूल, पीतमपुरा, दिल्ली-34 में "विशाल आर्य युवक निर्माण" व "योग साधना शिविर" का आयोजन किया गया है।

पृष्ठ 3 का शेष

लिखते हैं और फिर उनका अनुवाद होता है. अंगरेजी या फ्रांसीसी उनके लिए आकलन की भाषा है, सूचना देनेवाला एक माध्यम है, उनकी अभिव्यक्ति को कुंठित करनेवाला गलाघोंटू उपकरण नहीं है. मस्क्वा में सैकड़ों भारतीय विद्यार्थी विज्ञान और इंजीनियरी का उच्च अध्ययन कर रहे हैं. उन्हें सारी शिक्षा रूसी भाषा के माध्यम से ही दी जाती है. मस्क्वा में एक बार हम लोग विज्ञान और तकनीक की प्रदर्शनी देखने गये. वहां मालूम पड़ा कि जिस वैज्ञानिक ने अंतरिक्षयान आदि के आविष्कार किये हैं, उसने अपनी रचनाएं रूसी भाषा में लिखी हैं. इसी प्रकार जर्मनी और फ्रांस के विश्वविद्यालयों में ऊंची से ऊंची पढ़ाई उनकी अपनी भाषाओं में होती है. विश्वविद्यालयो के कई महत्वपूर्ण प्राचार्य अंगरेजी नहीं बोल सकते थे. आस्ट्रिया में मैं वियना के एक विश्वविद्यालय में दर्शन के कुछ अध्यापकों से मिलना चाहता था. मेरे साथ कोई दुभाषिया नहीं था. कोई आधा घंटा परेशान होने के बाद एक आदमी ऐसा मिला जो मेरी बात का जर्मन भाषा में तर्जुमा कर सकता था.

लदन में लदन स्कूल ऑफ इकनॉमिक्स की ओर से एक अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद हुआ. उसमें यूरोप के विभिन्न देशों से अनेक विद्वान आये थे. या तो हिंदुस्तानी विद्वान अंगरेजी बोलते थे या हमारे पुरान स्वामी अंगरेजी बोलते थे. यूरोप के विद्वान या तो [illegible] चुप बैठे रहते थे या टूटी-फूटी अंगरेजी में बोलते थे. जब 'इटली के गांधी' दानियेल दोल्ची ने अपना भाषण इतालवी जुबान में किया तो मेरी भी हिम्मत बढ़ी. मैंने अपनी बात हिंदी में कही जिसका तर्जुमा निर्मल वर्मा ने किया. तत्पश्चात जो अन्य यूरोपीय लोग वहां चुप बैठे थे, वे भी अपनी-अपनी भाषाओं में बोलने लगे. और किसी न किसी ने उनके भाषणों का भी तर्जुमा कर दिया. वहां लगभग आधा दर्जन भारतीय थे और एकाध सज्जन को छोड़ कर सभी लोग त्रुटिपूर्ण और भद्दी अंगरेजी बोल रहे थे लेकिन अपनी जुबान का ठीक इस्तेमाल करने की हिम्मत किसी की भी नहीं हो रही थी

चेकोस्लोवाकिया में वहां के प्रसिद्ध जन नेता और संसद के अध्यक्ष डॉ. स्मरकोवस्की से जब मैं मिलने गया तो उनके विदेश मंत्रालय ने एक ऐसा दुभाषिया भेजा, जो अंगरेजी से चेक मे अनुवाद करता था. मैंने कहा मैं भारतीय हूं, मेरे लिए अंगरेजीवाला दुभाषिया क्यों भेजा? उन्होंने कहा आपके देश से आनेवाले विद्वान नेता और कूटनीतिज्ञ अंगरेजी का ही प्रयोग करते हैं. यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि डॉ स्मरकोवस्की जैसे राष्ट्र नेता यूरोपीय होने के बावजूद भी अंगरेजी का प्रयोग नहीं करते. इसी प्रकार अफगानिस्तान के भूतपूर्व प्रधानमंत्री सरदार दाउद जो कि अपने देश के इतिहास में सबसे बड़े शासकों मे [illegible] माने जाते हैं, अंगरेजी में बात नहीं कर सकते थे. उनके साथ मेरी बातचीत 'दरी' मे ही हुई.

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला **शतवर्षीय वृहद इतिहास** लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

आवश्यक सूचना

समस्त विद्यालयों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य/अध्यापकों को सूचित किया जाता है कि माननीय उच्च न्यायालय के आदेशानुसार अब विद्यालयों में श्रम विभाग का हस्तक्षेप न होगा। इच्छुक व्यक्ति न्यायालय के आदेश की प्रति 6/-रु0 भेज कर प्रधान कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ से प्राप्त कर सकते हैं।

सभा मंत्री।

- आर्यसमाज कोवा कोल (नवादा-बिहार) का 55वाँ वार्षिकोत्सव बड़े ही धूमधाम से 30 अप्रैल एवं 1, 2 मई को सानन्द सम्पन्न हुआ।

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 79
ज्येष्ठ शुक्ल 8,
11 जून रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

- आर्यसमाज महुआ खेड़ा (नैनीताल) दि0 10 मई 1989 को चौधरी वेलाह सिंह निवासी महुआखेड़ा के यहाँ गृह प्रवेश वैदिक रीति से कराया गया।

- दि0 15 मई 1989 को श्री चोखेलाल अध्यापक प्राइमरी पाठशाला पीपलगाँव (मुरादाबाद) की सुपुत्री का पाणिगृह संसकार श्री महीपाल सिंह फैजुल्लागंज मुरादाबाद के साथ वैदिक रीति से कराया गया।

बरेली- जनपद के 90 वर्षीय आर्य प्रवर श्री डा0 डाल सिंह-आर्य (मुन्शी जी) का दिनांक- 24-5-89 को देहावसान हो गया, उनका अन्त्येष्ठि संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार उनके धेवते कुँ0 अमरेन्द्र चौहान "संजय आर्य" दारा श्रद्धेय महात्मा अनन्त स्वामी जी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। अग्रिम दि0-2-6-89 शुक्रवार को श्रद्धांजलि एवं शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ।

- आर्यसमाज नगरिया (रामपुर) का वार्षिकोत्सव दिनांक- 9, 10, 11 जून को सम्पन्न होगा जिसमें कई विदान उपदेशक भजनीक पधार रहे हैं। जनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

- आर्य समाज रेलवे कालोनी गढ़हरा बरौनी (बिहार) का सत्तरवाँ वार्षिकोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया, 20, 21, 22 एवं 23 अप्रैल को यह उत्सव सम्पन्न हुआ।

- "स्वामी ब्रहमानन्द जी सरस्वती "वेद-भिक्षु" महोपदेशक ने आर्य समाज रजपुरा में 2, 3 मई को प्रातः यज्ञ एवं उसका महत्व, अपराहन महिला सम्मेलन एवं रात्रि को आम जनता को वेद ज्ञान से सराबोर कर अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं कुरीतियों से अवगत कराया"।

आवश्यक सूचना

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि अपनी समाज के वार्षिक निर्वाचन को कृपया सम्बन्धित जिला-आर्य उपप्रतिनिधि सभा से प्रमाणित कराके ही आर्यमित्र कार्यालय में प्रकाशनार्थ भेजने का कष्ट करें।

- प्रबन्ध सम्पादक

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि जो समाजें अपने वार्षिक चित्र जिला सभा को नहीं देना चाहती हैं अथवा जिला सभायें नहीं लेना चाहती हैं। वह अपने वार्षिक चित्र प्राप्तव्य धन सहित सीधे सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

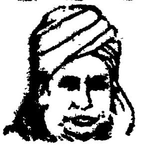
स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रामेस लखनऊ से श्री विशम्भरदयाल गुप्त दारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

आर्य मित्र

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० 2241/57 ज्येष्ठ शुक्ल 14 रविवार, संवत् 2046 वि०, दिनांक 18 जून 1989 घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85



इमं यज्ञं [illegible] वितनु
देवाः [illegible] अयन्तु ।

यह मेरा जीवनयज्ञ विश्वकर्मा प्रभु ने विस्तृत किया है इसमें सब [illegible] ओत प्रोत हों ।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम० ए०

प्रबन्ध सम्पादक
[illegible] पाठक
एम० ए० साहित्याचार्य

वार्षिक शुल्क
आजीवन सदस्य रु० 25/-
वार्षिक रु० 30/-
एक प्रति 1-00 रु० मात्र

वर्ष 92
अंक 24

राष्ट्र के भामाशाहों से निवेदन

------ अरावली की पहाड़ियों में चिन्तामग्न कोई चला जा रहा था। आज मुख कुछ म्लान था, आँखें डबडबाई थीं, गति में शिथिलता थी---- कैसे होगी मेरी पुण्यभूमि मातृभूमि की रक्षा-- अकबर की विशाल वाहिनी सेना के सम्मुख मेरे ये मुठ्ठी भर राजपूत कब तक लड़ सकेंगें। संसाधन सब समाप्त हो गये हैं। घास की रोटियाँ खाने की नौबत आचुकी है। क्या वास्तव में सिसौदिया वंश पर पराजय का काला धब्बा लग ही जायेगा-- आह------ कि किसी ने पीछे से पुकारा - "ओ? मेरे वीरवर, क्षत्रिय कुलावतंस, स्वतन्त्रता के अमर पुजारी सिसौदियारत्न प्रताप!! जरा ठहरो, देखो अभी मैं जीवित हूँ -- यह मेरी जीवनभर की अर्जित सम्पत्ति तुम्हारे चरणों में --- । प्रताप ने देखा भामाशाह सोने और अशर्फियों से भरी हुई गठरी चरणों में समर्पित करते हुए नतमस्तक खड़े हैं। मानो कह रहे हैं:-

"सा नो भूमिः प्रणुदतां सपत्नानसपत्नं
मा पृथिवी कृणोतु -- अथर्ववेद

ऐ मेरी प्यारी मातृभूमि! यह धन तुझी से तो उपार्जित किया है, तेरा ही तो दिया हुआ है "त्वदीयं वस्तु हे माता, तुभ्यमेव समर्पये" तेरी रक्षा के लिए सर्वस्व समर्पित है, चाहे तन हो, धन हो या मन हो। मेरी मातृभूमि तू शत्रुओं से बहुत दूर सुख और शान्ति का नीड़ बन जा। तुझसे कोई द्वेष करने वाला न रहे।

May my motherland keep our enemies away from us and leave us without a hostile.

राणा ने हर्षपुलकित होकर भामाशाह को हृदय से लगा लिया। सैन्य तैयारियाँ हुईं और मेवाड़ की स्वाधीनता का केसरिया झण्डा गर्व से फिर लहरा उठा। दोनों अमर हो गये, लेने वाला भी देने वाला भी।

आज इस कौम के भामाशाह क्यों सोए पड़े हैं। क्या जाति और राष्ट्र पर इससे भी बुरे दिन आने का इन्तजार है। तिजोरियों से धन क्यों नहीं निकल रहा है। संकट की काली घटाएं चारों ओर से उमड़ती आ रही हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् हमने आशा की थी हमारा राष्ट्र वैदिक संविधान की शीतल पावनी छाया में इस देश को गौरवगिरि के उच्च शिखर पर पहुँचा देगा। परन्तु हन्त! आज तो हमारे अस्तित्व के ही विलुप्त हो जाने का खतरा उत्पन्न हो गया है। वे धन भेज रहे हैं हजारों मील दूर से, तुम्हें नष्ट करने तुम्हें संसार के नक्शे से मिटाने के लिए और तुम इसी देश के अपने भाइयों को बचाने के लिए पैसा देते हुए कांपते हो। कैसा आश्चर्य है सम्प्रति वन में निर्माणाधीन दयानन्द अतिथि भवन के लिए बार-बार अपील करने पर भी न अपेक्षित धनप्राप्ति हो रही है और न अपेक्षित निर्माण की प्रगति। कैसे होगा पूर्ण, वर्षान्त तक हमारा यह संकल्प। आर्यसमाज के सम्मुख आज महान कार्य है- जाति की रक्षा का, यदि हमीं न रहे तो यह धन वैभव ऊंची-ऊंची अट्टालिकाएं, योग्यता, वेद और शास्त्र कहाँ जायेंगें। आर्यसमाज ने सामूहिक शुद्धि का बिगुल बजा दिया है। अतः आइए इस पावन यज्ञ में आहुति देकर अपने धार्मिक सामाजिक कर्तव्य को पूरा कीजिए और जाति को जीवन प्रदान कीजिए।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उण तु सजकर साज।
आर्यसमाज । आर्यसमाज ।।
- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र

लखनऊ ज्येष्ठ शुक्ल 14 संवत् 2046 वि०, 18 जून 1989
दयानन्दाब्द 165, सृष्टि संवत् 1972949090

क्रान्ति बनाम शान्ति

युगों युगों तक शान्ति और क्रान्ति दोनों बहिनें अन्तहीन संघर्षरत रहकर भी आपस में न मिल पायीं और न एक दूसरे की पूरक बन पाईं। कैसा आश्चर्य है शान्ति और क्रान्ति दोनों के क्षेत्र एक ही हैं- धर्म, अर्थ, समाज और मानवीय मूल्य। केवल दृष्टिकोण के अन्तर ने इतना अन्तर कर दिया कि इस द्वन्दयुद्ध का अन्त ही अदृष्टिगोचर होने लगा है। मानव के धरती पर पड़े पहिले चरण के साथ ही यह संघर्ष किसी न किसी रूप में आज तक चला ही आ रहा है। एक युग था जब दुनियां में धार्मिक क्रान्ति के नाम पर कुरीतियों का दौर शुरू हो गया था। हजारों, लाखों बेगुनाह सिर्फ इसलिए कि वे अमुकधर्म के मानने वाले थे मौत के घाट उतार दिए गये। एक ही धर्म के अनुयायी अपने विभिन्न स्वार्थी गुट बनाकर आपस में ही भिड़ गये, मर गये और छोड़ गये इतिहास के लिए रक्तरंजित धार्मिक असहिष्णुता की क्रूरता भरी कहानी। फिर एक दौर और आया आर्थिक क्रान्ति का! गरीबी-अमीरी का विश्लेषण किए बिना ही वर्ग-विद्वेष की आग यहाँ तक भड़की कि किसान जिमीन्दार के, मजदूर मिलमालिक के, नौकर अपने स्वामी के, राह चलता भिखारी कार में बैठे सेठ के खून का प्यासा बन गया। इस क्रान्ति के दौर में लाखों लोग ईर्ष्या के कारण मौत के घाट उतार दिए गये। सोवियत रूस की बोल्शेविक क्रान्ति तथा चीन का गृहयुद्ध विश्व-प्रसिद्ध खूनी क्रान्तियाँ हैं जिनमें लाखों लोग कीलें ठोंक-ठोंक कर अथवा अन्य क्रूर यातनाएं देकर मार दिए गये। फिर आता है सामाजिक क्रान्ति के नाम पर कुरीतियों का नया दौर -- मृतपति के साथ जलायी जा रही विधवा का समाज ने शंख और घड़ियाल बजाकर स्वागत किया। जब राममोहन राय ने कानून बनवाकर सतीप्रथा को बन्द करा दिया तो समाज में यह दानव दूसरा रूप लेकर दहेज के नाम से उपस्थित हो गया है। जलती वह पहिले भी थी जलती वह आज भी है। फर्क सिर्फ इतना है कि पहिले जलती थी तो लोग शंख और घन्टे बजाते थे। अब जलती है तो चुपचाप गायब कर दी जाती है कहीं किसी को पता न चल जाये। और अब शुरू हो रहा है नया दौर सांस्कृतिक क्रान्ति का, विचारों की स्वतन्त्र-अभिव्यक्ति का।

उन क्रान्तियों ने जिन्हें हम तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व्यवस्थाओं के विरोध में खूनी संघर्ष का इतिहास भी कह सकते हैं, मानव को एक नयी जीवन दिशा और नयी विचारधारा प्रदान की जिसे हम साम्यवादी तथा प्रजातान्त्रिक विचारशैली कह सकते हैं। इन सबका उद्देश्य शान्ति ही प्राप्त करना है किन्तु साध्य की प्राप्ति के लिए साधन कितने शान्तिमय हैं इस पर उन क्रान्ति के जनकों ने या तो विचार ही नहीं किया अथवा त्वरित उद्देश्य प्राप्ति की झूठी आशा में हिंसा को सर्वोपरि सशक्त माध्यम मानकर मारकाट का आश्रय लिया। परिणामतः यह हो रहा है कि इतनी मारकाट तथा समय की बरबादी के बाद भी शान्ति अभी कोसों दूर है। व्यवस्था चाहे साम्यवादी हो अथवा अधिनायकवादी, प्रजातन्त्रीय हो अथवा राजतन्त्रीय, चरमरा रही है। वेद कहता है------

"मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे"

षड्यन्त्रकारियों से सावधान !

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 से निष्कासित कतिपय व्यक्तियों द्वारा पुनः प्रदेश की आर्य जनता को भ्रमित किया जा रहा है कि उक्त सभा का वार्षिक निर्वाचन शीघ्र ही रजिस्ट्रार द्वारा कराया जायेगा। साथ ही साथ सभा के अधिकारियों के विरुद्ध अनर्गल एवं भ्रामक प्रचार भी किया जा रहा है।

अतः उत्तर प्रदेश की समस्त आर्य समाजों/जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं तथा आर्य जनता को सचेत किया जाता है कि वह इन सभी गतिविधियों पर नजर रखें तथा सभा के विरुद्ध चलाए जा रहे अनर्गल प्रचार का पर्दाफाश करें।

सभा का निर्वाचन अपने नियत समय पर विधिवत सम्पन्न होगा।

पं0 इन्द्रराज, प्रधान। मनमोहन तिवारी, मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ।

डा0 विनय प्रताप दुर्घटना ग्रस्त

आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपमन्त्री डा0 विनय-प्रताप आर्यसमाज के कार्य से रसड़ा जाते समय टैक्सी तथा ट्रक की भिड़न्त में गम्भीर रूप से घायल हो गये हैं। उनके पैर तथा कमर के नीचे की हड्डियाँ बुरी तरह टूट गई हैं। वे मारवाड़ी अस्पताल गदौलिया वाराणसी में भरती थे। स्वस्थ होने में लगभग 4 मास लगेंगे। परमात्मा की कृपा से उन्हें नवजीवन प्राप्त हुआ है। वे 12 जून को गोरखपुर पहुँच गये हैं। अब उनका वहीं इलाज होगा। सभा मन्त्री एवं प्रधान जी ने उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रभु से कामना की है।

आर्यजन गुणकर्मानुसार विवाह करें

आर्यसमाज के संगठन को सशक्त बनाने की दृष्टि से यह निश्चय किया गया है कि आर्यसमाज के सदस्य अपने बच्चों का जन्मपरक जाति पाँति बन्धन तोड़कर केवल आर्यसमाजी परिवार में ही गुण कर्मस्वभावानुसार विवाह करें।

आर्यमित्र इस प्रकार के वर तथा कन्याओं की सूची योग्यता तथा पते सहित निःशुल्क रूप से सहर्ष प्रकाशित करेगा। केवल विज्ञापन देने वाले को आर्यमित्र का ग्राहक बनना अनिवार्य होगा।

- सम्पादक ।

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें ।

-- सभामंत्री ।

हम संसार के समस्त प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखें। हमारा विरोध व्यक्तियों से नहीं व्यवस्थाओं से है। इसलिये व्यक्ति की हिंसा करना हम पाप समझते हैं। आर्यसमाज का उद्देश्य व्यवस्था में सुधार करना है। हम न मुसल्मान के विरोधी हैं न ईसाई अथवा हिन्दुओं, सिखों के विरोधी हैं। हम तो मानवमात्र को मित्र समझते हैं। उसे कुरीति के मार्ग पर ले जाने वाली उन व्यवस्थाओं का विरोध करते हैं जो सत्य की कसौटी पर खरी नहीं उतर रही हैं। मनुष्य मननशील प्राणी है। चिन्तन उसका स्वाभाविक गुण है। हम उसकी चिन्तना को जागृत करके उसे सत्य की कसौटी पर लाना चाहते हैं। यही हमारा उद्देश्य है। आज नहीं तो कल उसे हमारी बात माननी ही होगी। मानना उसने प्रारम्भ कर दिया है "सेटेनिक वर्सेज" इसका ताजा उदाहरण है और शान्ति का यही मार्ग है-

नाऽन्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

अंगरेजी हटाओ

देश में अंगरेजी उपनिवेशवाद का एक अवशेष है

—वेदप्रताप वैदिक

ब्रिटेन को छोड़ कर, यूरोप के बाजारों में आपको एक भी नामपट अंगरेजी में नहीं मिल सकता. हर देश के लोग अपनी-अपनी भाषा में ही अपनी-अपनी दुकानों के नाम लिखते हैं. दुकानों में बिकनेवाली चीजों पर लगी मोहरें भी अपनी ही भाषा में होती हैं. कई दुकानों में से तो मुझे वापस लौट आना पड़ा था, क्योंकि सामान बेचनेवाली लड़कियां सिर्फ फ्रांसीसी भाषा में ही बोलती थीं. यदि आप उनसे अंगरेजी में बोलें, तो वे इसका बहुत बुरा मानती हैं.

यदि आप अंगरेजी के सहारे बैठे रहें, तो यूरोप में तो भूखों मर जायें. चेकोस्लोवाकिया में मैंने एक होटल में वहां की भोजन परोसनेवाली महिलाओं को बहुत समझाया कि मैं मांस नहीं खाता हूं, लेकिन वे बार-बार मांस की तश्तरी ले आती थीं. तब एक वृद्ध महिला ने आकर पूछा कि "क्या आप भारतीय हैं" तो मैंने कहा 'हां.' तब उन्होंने चेक भाषा में ही पूछा कि 'क्या आप योगी हैं.' मैंने उन्हें रूसी भाषा में बताया कि 'मैं योगी तो नहीं, लेकिन शाकाहारी हूं' तब जा कर कहीं भोजन मिला.

वैसे यूरोप की राजधानियों में और बड़े शहरों में फिर भी कुछ लोग अंगरेजी जाननेवाले मिल जाते हैं, लेकिन यदि आप किसी देश के आंतरिक भागों में चले जायें तो या तो आपके साथ दुभाषिया हो या आप इशारों और सामान्य बुद्धि का प्रयोग करें तभी काम चल सकता है. अधिकांश देशों में मेरे मित्र ही दुभाषिये का काम कर देते थे और जहां मुझे अकेले जाना पड़ता था, भारी कठिनाई का सामना करना पड़ता था. हर देश के दैनिक अखबार अपनी स्थानीय भाषा में निकलते हैं. वहां अंगरेजी अखबार प्राप्त करना काफी कठिन होता है. स्विटजरलैंड में मैं लीस्ताल नामक एक गांव में रहता था. वहां एक से एक बढ़िया स्विस अखबार मिल सकते थे लेकिन यदि आपको अंगरेजी भाषा में ब्रिटिश और अमेरिकी अखबार खरीदना हो तो ज्यूरिक या बर्न जाना होगा.

विदेशों में भारतीय दूतावासों में अंगरेजी का बोलबाला है, चाहे वह काबुल हो या पेरिस. हमारे दूतावासों के सारे कर्मचारियों में से मुश्किल से एक-दो कर्मचारी ऐसे होते हैं, जो देश की भाषा जानते हैं, जिस देश में उन्हें कूटनीति चलानी है. उन्हें कूटनीति करनी है फ्रांसीसियों के साथ और भाषा बोलते हैं अंगरेजों की! हमारे शिक्षक पढ़ाते हैं अफगान बच्चों को और उस भाषा का इस्तेमाल करते हैं जो अंगरेज बच्चों को पढ़ाने के लिए की जानी चाहिए. शायद हम लोगों ने भाषा के महत्व को बिलकुल भी नहीं समझा है.

हम नहीं जानते कि जब हम सामनेवाले की भाषा का सम्मान करते हैं और उसी में बोलते हैं, तो उसे कितनी प्रसन्नता होती है. इसका प्रत्यक्ष अनुभव मुझे रूस और अफगानिस्तान में हुआ. किसी मेवा बेचनेवाले पठान से मैं चार बातें काबुली भाषा में कर लेता हूं, तो उसका दिल भर आता है. रूस में मैं रूसी विद्वानों को यह देख कर बहुत ही प्रसन्नता हुई कि मेरे हिंदी में लिखे शोधग्रंथ की कुछ पाद टिप्पणियां रूसी भाषा में थीं. हमारा दुर्भाग्य यह है कि हम दुनिया में कहीं जायें, अंगरेजी का इस्तेमाल करते हैं. इस प्रवास में मुझे अनेक कूटनीतिक रात्रिभोजों में शामिल होने का अवसर मिला. इन भोजों में

हिंदुस्तानी कूटनीतिज्ञ अपने साथियों और देशवासियों से अंगरेजी में बात करते हैं जबकि दूसरे देशों के कूटनीतिज्ञ अपने साथियों से उनकी अपनी जुबान में बात करते हैं.

कितना अच्छा हो कि हमारे दूतावास के कर्मचारी, जिस देश में दूतावास हैं, उस देश की भाषा सीखें और अपने देशवासियों से स्वदेशी भाषाओं में बात करें.

मैं जिस देश में भी जाता, अन्य सामाजिक और राजनीतिक प्रश्नों के अलावा भाषा के सवाल पर बहस जरुर होती क्योंकि मेरा शोधग्रंथ हिंदी में था, इसलिए भाषा का सवाल घूम फिर कर आ ही जाता. अफगानिस्तान और सोवियत संघ के जिन जिम्मेदार लोगों को 'इंडियन स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज' के साथ हुए मेरे भाषायी विवाद का पता था, उनमें से कई ने इस कदम को उचित बताया और सोवियत विद्वानों ने तो यह भी कहा कि मैं चाहूं तो मेरा शोधग्रंथ वे हिंदी और रूसी भाषा में भी छपवा सकते हैं. इसके विपरीत ब्रिटेन और अमेरिका में वहां के विद्वानों को इस बात का भारी दुख था कि मैंने उनकी महान भाषा को चुनौती दे दी थी. जैसे कि मैंने अंगरेजी के एकाधिकार को चुनौती दे कर भारी पाप किया है.

कनाडा में 'इंडो—कनाडियन इंस्टीटयूट' के कार्य कारी निदेशक से भारत में बौद्धिक उपनिवेशवाद के विषय पर चर्चा हुई. उनको मैंने यह सुझाव दिया कि इस संस्था की स्थापना श्री लाल बहादुर शास्त्री की स्मृति में हुई हैं. अत: आप कम से कम इतना करें कि

> अगर आप हिंदुस्तान की जनता से दोस्ती करना चाहते हैं, तो फ़िर चंद दकियानूसी बुद्धिजीवियों की जुबान को क्यों बढ़ावा देते हैं. क्यों भारतीय लोक भाषाओं का तिरस्कार करते हैं? यदि आपको अपनी भाषा प्यारी है, तो आप दूसरों को उनकी भाषा में काम क्यों नहीं करने देते? क्या आप यह पसंद करेंगे कि यदि आज से 50 साल बाद भारत अमेरिका जितना ताकतवर देश हो जाये, तो वह अमेरिका पर भी कोई भारतीय भाषा थोपने की साजिश करे?

अनुकूल बहे जल

जलाञ्जलि मन्त्र - ।

ओ३म् अदिते_नुमन्यस्व स्वाहा। ओ३म् अनुमते
नुमन्यस्व स्वाहा। ओ३म् सरस्वत्यनुमन्यस्व स्वाहा।।

यह अग्नि अनुकूल बहे जल, हो जाये कहीं प्रतिकूलन नहीं।
अनुकूल हमारे हो जायें, हो जाये यज्ञ प्रतिकूल नहीं।।
पहले ही आदित्य जनों से
हमने विधि आज्ञा अनुमति ली।
पीछे यह यज्ञ किया वैसे
परिपालन उनकी अनुमति की।
हो जब सरस्वती की संगति, तब होती कोई भूल नहीं।
अनुकूल हमारे हो जाये, हो जाये यज्ञ प्रतिकूल नहीं।।
अनुकरण पूर्व का पश्चिम में
तब उत्तर में कल आता है।
आगे प्रकाश पीछे पालन
उपरान्त यज्ञ खिल जाता है।
विधि क्रम में यदि भ्रम हो जाये, तो मिले यज्ञ का मूल नहीं।
अनुकूल हमारे हो जाये, हो जाये यज्ञ प्रतिकूल नहीं
प्रति अदिति देव की दृढ़ अनुमति
गति मय सरस्वती करती है।
इस जल से यज्ञ सुरक्षा है।
जल से ही जीवित जगती है।
विष नाशक है यश साधक है, जल सिंचन से हो शूल नहीं।
अनुकूल हमारे हो जाये, हो जाये यज्ञ प्रतिकूल नहीं।

-देवनारायण भारद्वाज, आजमगढ़।

नव सिखों का शुद्धिकरण यज्ञ पूर्णतः राष्ट्रयज्ञ है

-जयन्त पाण्डेय

आर्यसमाज द्वारा जनपद मेरठ के नगला हरेरू गाँव में आयोजित सामवेद पारायण महायज्ञ में नव सिखों के शुद्धिकरण की घोषणा पर सिख नेताओं द्वारा की गई आपत्ति पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए राष्ट्ररक्षा युवा आन्दोलन के महामन्त्री जयन्त पाण्डेय ने एक वक्तव्य में कहा कि यह पूर्णतया राष्ट्रीय यज्ञ है। कुछ सिख नेताओं ने शुद्धि सम्मेलन के बारे में आर्य प्रतिनिधि-सभा, उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी को धमकी दी है और उन्हें गाँव में न घुसने की चेतावनी दी है पर इन चेतावनियों से आर्य कभी भयभीत नहीं हुआ करते हैं। श्री-पाण्डेय ने कहा श्री पं0 इन्द्रराज जी का जीवन आर्यसमाज के लिए समर्पित है यदि पं0 जी को किसी प्रकार की शारीरिक क्षति पहुँचाई गई तो इसके गम्भीर परिणाम होंगे। आर्यसमाज का शुद्धिकरण यज्ञ सतत चलता रहा है, चलता रहेगा।

प्रदेश के भूतपूर्व परिवहन मन्त्री श्री मानसिंह वर्मा द्वारा इस शुद्धिकरण की निन्दा में दिए गये वक्तव्य की घोर आलोचना करते हुए श्री पाण्डेय ने कहा कि सिखमत की स्थापना गुरुओं ने आर्य (हिन्दू) धर्म की रक्षा के लिए की थी। यह एक विशुद्ध सैनिक संगठन था जो मुसल्मानों के आक्रमण के विरुद्ध हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए बनाया गया था। धर्म के शाश्वत सिद्धान्तों से इसका कोई तालमेल नहीं है। हम विश्व के सभी व्यक्तियों को आर्य इसलिए बनाना चाहते हैं ताकि विश्व के प्राचीनतम वैदिक धर्म के आधार पर उनका जीवन सर्वांगीणरूप में पूर्ण एवं पवित्र हो। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी को दी जाने वाली धमकियों से हम डरने वाले नहीं हैं। आर्यसमाज का संगठन विशाल है हमारे पास आत्मबल है हम धमकियों का मुकाबला करेंगें।

इस संस्था के अंतर्गत किये गये शोधकार्यों का भारतीय भाषाओं में तर्जुमा करवायें और भारतीय भाषाओं में कार्य करने वाले विद्वानों को विशेष रूप से छात्रवृत्तियां दें. उन्होंने कहा कि उन्हें तो ये सुझाव मंजूर हैं, लेकिन पता नहीं भारतीय शिक्षा मंत्रालय की क्या प्रतिक्रिया होगी. तब मैंने कहा 'उसका तो मुझे भी पता नहीं है.'

कई अमेरिकी विश्वविद्यालयों में भाषा के सवाल को ले कर अमेरिकी प्रोफेसरों से सुतीक्ष्ण विवाद चले. मैंने उन विद्वानों को नम्रतापूर्वक यह बताने की कोशिश की कि कुछ भारतीयों द्वारा अंगरेजी को एकांगी महत्व देने का परिणाम यह हुआ है कि भारत के **अधिकांश बुद्धिजीवियों की मौलिक प्रतिभा कुंठित हो गयी है, वे आपके बौद्धिक पिछलग्गू हो गये हैं और वे** लफ्फाजी को बौद्धिकता समझने लगे हैं, फलस्वरूप पिछले दो ढाई सौ साल में भारत में स्वतंत्र चिंतन की परंपरा को ठेस लगी. जो कुछ अंगरेज और अमेरिकी लोग लिखते-पढ़ते हैं, हिंदुस्तान के अंगरेजीपरस्त बुद्धिजीवी उसीकी जुगाली करते रहते हैं. वे आपके और हिंदुस्तान की जनता के बीच बौद्धिक दलाली करते हैं. अंगरेजी के कारण आपके और उनके रिश्ते बढ़ गये हैं और उनके और हिंदुस्तान की आम जनता के बीच खाई बढ़ती जा रही है.

जब अमेरिकी राजनीतिज्ञ और विद्वान मुझसे कहते कि वे हिंदुस्तान की जनता से दोस्ती करना चाहते हैं तो मैं उनसे उपर्युक्त बात कह कर पूछता कि अगर आप हिंदुस्तान की जनता से दोस्ती करना चाहते हैं, तो फिर चंद दकियानूसी बुद्धिजीवियों की जुबान को क्यों बढ़ावा देते हैं. क्यों भारतीय लोक भाषाओं का तिरस्कार करते हैं? यदि आपको अपनी भाषा प्यारी है, तो आप दूसरों को उनकी भाषा में काम क्यों नहीं करने देते? क्या आप यह पसंद करेंगे कि यदि आज से 50 साल बाद भारत अमेरिका जितना ताकतवर देश हो जाये, तो वह अमेरिका पर भी कोई भारतीय भाषा थोपने की साजिश करे?

मैंने उन्हें बताया कि भारत में अब वह दिन दूर नहीं जब अंगरेजी बोलनेवाले लोगों और आम जनता का रिश्ता वैसा ही हो जायेगा जैसा च्यांग काई शेक और चीन की जनता के बीच था. मैंने उनको यह भी बताया कि मैं और मेरे जैसे लाखों नौजवान, जो देश को उसकी जुबान लौटाने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, अंगरेजी भाषा से नफरत नहीं करते. हम अंगरेजों या अमेरिकियों से घृणा नहीं करते हैं बल्कि हमारी मान्यता यह है कि हमारे देश में अंगरेजी उपनिवेशवाद का एक अवशेष है. एक ऐसा हथियार है, जिसका इस्तेमाल पढ़ा-लिखा शहरी वर्ग आम जनता के हितों के विरुद्ध अपने स्वार्थों के लिए कर रहा है. अभिजात वर्ग की इस स्वार्थलिप्सा से हमारे देश की संस्कृति, हमारे बालकों की शिक्षा, आर्थिक समानता के प्रयत्न, बौद्धिक मौलिकता आदि सभी बातों पर बुरा असर पड़ रहा है.

मैंने अमेरिकी मित्रों से पूछा कि क्या अपने दोस्तों का नुकसान कर के ही आप उनसे दोस्ती बढ़ाना चाहते हैं? अधिकांश अमेरिकियों को ये बातें बहुत अजीब लगती थीं, कुछ उबल भी पड़ते थे लेकिन जब मैं उनके संसदीय दस्तावेज दिखला कर उनको बतलाता कि देखिए भारत में अंगरेजी को प्रोत्साहित करने के पीछे अमेरिकी सरकार के क्या स्वार्थ हैं, तो वे चुप हो जाते. केवल एक अमेरिकी प्रोफेसर ने जो दक्षिण एशियाई राजनीति के बड़े विद्वान माने जाते हैं. मुझे अपने पत्र में लिखा कि जब तक आप अंगरेजी में पत्र व्यवहार करेंगे, हमारा संपर्क बना रह सकता है. आपसे मिलने के बाद मुझमें फिर से हिंदी का गंभीर अध्ययन करने की प्रेरणा जगी है, जो पिछले कुछ सालों से छूट गयी थी. मुझे विश्वास है कि आप अपने हिंदी जगत में लौटने के बाद भी बाहरी संसार को नहीं भूलेंगे लेकिन यह निश्चित रूप से अच्छा है कि अपने (राष्ट्रीय) चरित्र को जाना जाये और उस पर जोर दिया जाये और बौद्धिक और राजनीतिक रूप से दूसरों के दबाव में नहीं रहा जाये. इन्हीं प्रोफेसर महोदय ने कुछ दिनों बाद जो दूसरा पत्र लिखा उसमें कहा—"मैं आपसे कहना भूल गया कि हमारे घर के दरवाजे पर एक नामपट टंगा हुआ है, जिस पर लिखा हुआ है 'श्री और श्रीमती थामर, हिंदी और अंगरेजी दोनों में.'

अध्यात्म सुधा

आत्म-तत्व-चिन्तन

{श्री पं0 सूर्यबली पाण्डेय, जौनपुर}

गतांक से आगेः-

अतः स्पष्ट है कि आत्मायें एक दूसरे में व्याप नहीं अपितु पृथक हैं। यदि सभी आत्मायें सभी आत्माओं में व्याप्त हैं और भिन्न-भिन्न आत्मायें भिन्न-भिन्न विचार एक ही समय में प्रारम्भ करें तो कोई भी कोई विचार न कर सकेगा। विचारों के टकराव के कारण एकान्तता जाती रहेगी और परस्पर की बाधा से सभी बाधित हो जायेंगे।

स्मरण रहे कि एक ही आत्मा शब्द से जीवात्मा और परमात्मा दोनों का अभिधान होता है। अतः जहां आत्मा का वर्णन विभु रूप में होता हो वहां परमात्मा का ही वर्णन समझना चाहिये। परन्तु अन्यत्र सर्वत्र आत्मा से अभिप्राय जीवात्मा का ही रहेगा। महर्षि व्यास ने अपने ब्रह्म सूत्र में लिखा है- "उत्क्रान्ति गत्यागतीनाम्" {वे02·3·19} अर्थात् जीव अणुमात्र है। क्योंकि उसकी उत्क्रान्ति, {शरीर से बाहर निकलना} गति {अन्य योनियों में जाना} और आगति {दूसरे शरीर से वर्तमान शरीर में आना} ये तीन क्रियायें सुनी जाती हैं। निकलना, आना और जाना पदों का प्रयोग एक देशी पदार्थ के लिए ही किया जा सकता है। जो सर्वगत और सर्वत्र है उसका कहां से निकलना होगा? जब सर्वत्र और सब में समाया हुआ है तब कहां से निकलेगा और कहां नहीं है जहां जायेगा? वृहदारण्यकोपनिषद् भी अपना अभिमत इसी रूप में प्रकट करती है। यथा "तस्यं हैतस्यहृदयस्याग्रं प्रद्योतते। तेन प्रद्योतने नैष आत्मा निष्क्रामति चक्षुसो वा मूर्ध्नो वा अन्येभ्यो वा शरीर देशेभ्यः"। वृ0 4-4-2} अर्थात उस आत्मा के हृदय का अग्र भाग उसके प्रकाश से चमकता है। उस प्रकाश के साथ ही यह आत्मा आंखों से, मूर्धा से अथवा शरीर के किसी और भाग से निकल जाता है। स्पष्ट है कि जो निकल जाता है वह अवश्य ही एक देशी होगा। इसलिये आत्मा विभु नहीं अणु ही है। वृहदारण्यक पुनः कहती है- "तस्मात् लोकात् पुनरेत्यस्मै लोकाय कर्मण"। ··4·4·6} अर्थात जीवात्मा उस लोक {योनि} से पुनः अपना कर्म करने के लिये इस योनि में आता है। उपर्युक्त दोनों श्रुतियों ने स्पष्ट ही जीव की गति और आगति का प्रतिपादन किया है। अतः जीव एक देशी ही सिद्ध होता है। उसे विभु नहीं कहा जा सकता। अन्यत्र भी श्रुतियां इसी पक्ष का प्रतिपादन करती हैं। श्वेताश्वतर उपनिषद् इस सम्बन्ध में अपना मत इन शब्दों में व्यक्त करती है- "बालाग्र शत् भागस्य शतधा कल्पितस्य·च। जीवो भागः स विज्ञेयो, स चा नन्त्याय कल्प्यते"। श्वे0 5·9} अर्थात् बाल के अग्र भाग के सौ टुकड़े किये जाय और फिर प्रत्येक के भी सौ-सौ भाग किये जायें तो उनका एक भाग अर्थात् बाल की नाक का दस हजारवां भाग जीव का परिमाण समझना चाहिये। ऐसा जीव अनन्त अर्थात अविनाशी है। श्वेताश्वतन का ऋषि पुनः कहता है- "बुद्धेर्गुणेना त्मगुणेन चैव-ह्यारासमात्रो ह्यवरो पि दृष्टा।" । 5·8} अर्थात् बुद्धि के गुण से और आत्मा के गुण से आर के अग्र भाग के बराबर ए और भी देखा गया है। यहां आर के अग्र भाग की उपमा भी आत्मा के अणुमात्र होने का प्रबल प्रमाण है।

मुण्डकोपनिषद् अपनी श्रुति 3·1·9 में कहती है- "एषो अणुरात्मा चेतसा वेदितव्यः यस्मिन् प्राणाः पंचधा संविवेश"। अर्थात् इस अणु आत्मा का ज्ञान चित्त से होता है जिस संसर्ग में 5 प्राणों का सन्निवेश है। इसी प्रकार प्रश्नोपनिषद् कहती है- "हृदिह्येष आत्मा" अर्थात् इस आत्मा का निवास स्थल हृदय देश है। छान्दोग्योपनिषद् का भी उद्घोष है कि "स वा एष आत्मा हृदि" अर्थात् वह आत्मा हृदय देश में निवास करता है।

ऊपर की पंक्तियों में यह प्रायः निर्णीत सा हो गया कि आत्मा विभु नहीं है। अब मध्यम रूप में मानने वालों के तर्क पर किंचित् विचार कर लेना अनुचित न होगा। इस वर्ग के मनीषी यह बतलाते हैं कि आत्मा अखिल विश्व में नहीं किन्तु पूरे शरीर में व्याप्त अवश्य है। यद्यपि ऊपर दिये हुए प्रमाण इसे भी पूर्ण रूपेण बाधित करते हैं तथापि इसके लिये भी कुछ विमर्श आवश्यक है। यदि आत्मा पूरे शरीर में व्याप्त है तो प्रश्न उठेगा कि किसके शरीर में? शरीर का विस्तार भी तो भिन्न-भिन्न है। अभी जो आत्मा हाथी के शरीर में व्याप्त रहा है वह चींटी के शरीर में कैसे अटेगा? इसी प्रकार चींटी के शरीर के अन्दर रहने वाला आत्मा जब हाथी के अन्दर जायगा तब वह उसमें कैसे व्याप्त हो सकेगा? क्या जीव भी रबड़ की भांति बढ़ या घट सकेगा? यदि हां, तो आत्मा को भी विभिन्न परमाणुओं के योग से बना हुआ स्वीकार करना पड़ेगा। क्योंकि रबड़ ऐसे परमाणुओं से बने होने पर ही खींचने पर बढ़ता या घटता है। पर इस दशा में आत्मा एक भौतिक पदार्थ बन जायगा जो त्रिकाल में असम्भव है। अस्तु आत्मा घटने बढ़ने वाला पदार्थ नहीं है। जब ऐसी बात है तब एक ही आत्मा कभी छोटा और कभी बड़ा नहीं बन सकता। इसी कारण वह शरीर मात्र में व्याप्त भी नहीं कहा जा सकता। इस पर मध्यम वादी यह कहते हैं कि शरीर के प्रतिबन्ध के कारण आत्मा ऐसा बन जाता है। जैसे एक विशाल कक्ष {हाल} में जलता हुआ दीपक विशाल कक्ष को प्रकाशित करता रहता है पर जब वही छोटी कोठरी में रख दिया जाता है तब उस से वह छोटी कोठरी ही प्रकाशित होती रहती है। कहने में बात ऐसी लग रही है मानो ठीक ही कहा जा रहा है। पर बात मान्य नहीं हो सकती, क्योंकि उदाहरण उचित नहीं जंचता। दीपक का प्रकाश भौतिक है। उसे मकान की भौतिक दीवारें अवरुद्ध कर सकती हैं पर आत्मा अभौतिक है। उसे भौतिक शरीर की दीवारें अवरुद्ध नहीं कर सकतीं। यही नहीं, उदाहरण इसलिये भी ठीक नहीं है। कि भौतिक दीवारें भौतिक प्रकाश को ही घटा या बढ़ा सकती हैं, किन्तु वहां भी दीपक अपने एक ही स्थान पर ज्यों का त्यों है। उसमें विकास या ह्रास नहीं हुआ। पर यहां जीव के प्रकाश का नहीं अपितु जीव के ही विकास या संकोच की बात कही जा रही है। इसलिये इस उदाहरण में भी जैसे दीपक एक स्थान पर पूर्ववत है उसी प्रकार आत्मा भी एक देशी है। आत्मा को किसी भी प्रकार अणु से भिन्न नहीं कहा जा सकता।

ऊपर आत्मा को मात्र अणु बतलाने के लिये उपनिषदादि के अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये गये हैं। परन्तु जब तक इस सिद्धान्त को वेद सम्मत न सिद्ध किया जा सके। तब तक सिद्धान्त अधूरा ही रहेगा। अतः आगे वेद के भी कतिपय प्रमाण प्रस्तुत किये जाते हैं। यजुर्वेद इस संबंध में अपना मत इस प्रकार व्यक्त करता है- असुर्यानां ते लोका अन्धेन तमसा वृताः । तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ।।यजु·40/3 अर्थात् {असूर्याः} असुरों को प्राप्त होने वाली {नाम} प्रसिद्ध {तेलोकाः} वे योनियां हैं जो {अन्धेन} अन्धकारमय {तमसा} अविद्या से {आवृताः} आच्छादित हैं {ते} वे {प्रेत्य} वर्तमान शरीर को छोड़कर {तान्} उन योनियों में {अभिन् गच्छन्ति} जाते हैं {ये के च} कि जो {आत्म हनः} आत्म घाती, आत्मा के विरुद्ध चलने वाले {जनाः} लोग हैं। इस मंत्र में आत्मा का एक शरीर से निकलना और दूसरे शरीर में जाना कहा गया है। आने और जाने का कार्य एक देशी ही से सम्भव है। अतः उक्त मंत्र से सिद्ध है कि आत्मा अणु परिमाण का ही होता है। पुनः उसी वेद का एक अन्य मंत्र देखें- "अप्स्वग्ने सधिष्ठव सोषधीरनु-रुध्यसे गर्भे सन् जायसे पुनः" । यजु0 12·36} अर्थात् {अग्ने} हे ज्ञान वान जीव शरीर से निकलने के पश्चात् {तव·सधिः} तेरा सह स्थान {अप्सु} जल से भरे हुए आकाश के वायु मण्डल में हुआ। फिर {स ओषधीः} वह तू ओषधियों का {अनुरुध्यसे} अनुरोध करता है। अर्थात् उनके साथ रहता है। {पुनः-गर्भे सन् जायसे} फिर गर्भ में रहता हुआ उत्पन्न होता है। इस मंत्र में शरीर छोड़ने के पश्चात् आत्मा का जल, वायु के सहकार से अन्तरिक्ष में भ्रमण करना, ओषधियों का सहकार प्राप्त कर गर्भ में आना और पुनः शरीर धारण करना व्यक्त किया गया है। यह सारी क्रिया विभु से सम्भव नहीं है। अतः आत्मा अणु ही सिद्ध होता है। इसी प्रकार ऋग्वेद में आत्मा का स्वरूप क्या है? इसे उसी के शब्दों में सुनें- "अजो नक्षां दाधार पृथिवी तस्तम्भ द्यां मन्त्रेभिः सत्यैः। प्रिया पदानि पश्वो निपाहि, विश्वायुरग्ने गुहागुहंगाः"। 1·67·3} अर्थात् {अजः} अजन्मा भगवान {क्षामन्} पृथिवी की भांति {पृथिवीं} विस्तृत आकाश को {दाधार} धारण किये हुए हैं {सत्यैः} सत्य प्रधान {मंत्रेभिः} मनन के आधार विश्व मानस की शक्तियों से {द्यां} द्यु लोक {तस्तम्भ} संभाले हुए हैं। {अग्ने} हे अग्र नेता भगवन् {पश्वः} दर्शक जीवात्मा की {प्रिया पदानि} प्यारे स्थान {गुहा},

धर्म परिवर्तन के खिलाफ जेहाद छेड़ने की अपील

सरधना (मेरठ), 23 मई। मेला बूढ़ा बाबा में आयोजित जिला आर्य महासम्मेलन में विभिन्न वक्ताओं ने लोगों से धर्मान्तरण के खिलाफ जेहाद छेड़ने की अपील की।

सम्मेलन को संबोधित करते हुए पं० जयन्त कुमार आर्य ने कहा कि मौजूदा समय में जातीय भेदभाव व गरीबी से त्रस्त लोगों का एक सुनियोजित योजना के तहत धर्मान्तरण कराया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इस काम में लगे लोग पिछड़े तथा दूर-दराज के इलाकों में रहने वाले लोगों को धन तथा अच्छी शिक्षा आदि का प्रलोभन देकर उनका धर्म परिवर्तन करवा देते हैं।

उन्होंने कहा कि हमें धर्मान्तरण कराने वाले लोगों को कोसने के बजाए समाज में व्याप्त छुआछूत, शोषण तथा असमानता को दूर करने के प्रयास करने चाहिए। सम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रांतीय अध्यक्ष श्री पं० इन्द्रराज, श्री फूलसिंह, श्री माधव सिंह व उत्तम चन्द ने भी अपने विचार प्रकट किये।

श्री बलराम गोविन्द जी सभा की सेवा में निशुल्क समर्पित

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 लखनऊ के भूसम्पत्ति विभाग के अधीक्षक श्री बलराम गोविन्द जी ने दिनांक- 1·6·89 से अपनी सेवाएं सभा को निःशुल्क रूप में प्रदान की हैं। सभा प्रधान जी को लिखे अपने एक पत्र में उन्होंने कहा है कि उनकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होने के कारण वे अब सभा की सेवा बिना कोई मानदेय लिए निःशुल्क रूप में आजीवन करते रहेंगे।

श्री प्रधान जी तथा मन्त्री जी सभा ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए उनके इस अपूर्व त्याग की प्रशंसा करते हुए धन्यवाद दिया है।

शुभ विवाह

आर्यसमाज मिर्जापुर के उपमंत्री पं0 सुदर्शन राय ने वाराणसी नगर महापालिका के आवास विकास अभियन्ता श्री प्रेमचन्द गुप्त की सुपुत्री मनीषा का शुभ पाणिग्रहण संस्कार दि0 22 मई 1989 को गढ़वा जिला- पलामू (बिहार) के चि0 विनोदानन्द के साथ सम्पन्न कराया ।

हृदय गुहा की (गुहम्) गुहा अर्थात् अन्तर हृदय में पहुँचे हुए हों। अतः (विश्वायुः) सबके जीवन होते हुए इस जीव को अन्तर गुहा में प्रविष्ट होकर रक्षा करने वाला कहा गया है। अस्तु हृदय में ही निवास करने के कारण इस मंत्र के द्वारा भी आत्मा एक देशी और अणु ही सिद्ध होता है।

इस विस्तृत विवेचन के पश्चात् हम इस निश्चय पर पहुँचते हैं कि यह शरीर ही आत्मा नहीं अपितु दोनों की सत्ता पृथक-2 है। शरीर जड़ तथा आत्मा चेतन है। आत्मा नित्य, एक रस और अविनाशी है। वह कर्ता, भोक्ता और ज्ञाता के रूप में विद्यमान है। वह एक देशी और अणु है। वह किन्हीं तत्वों से मिलकर नहीं बना है और न उससे किसी पदार्थ का निर्माण होता है। आत्मा और शरीर के संयोग का नाम जीवन और वियोग का नाम मृत्यु है। आत्मा वर्तमान शरीर को छोड़ ईश्वरीय व्यवस्थानुसार कर्मफल का भोग करने के लिये नवीन शरीर धारण करता है। स्थूल और सूक्ष्म शरीरों के साथ आत्मा अपने कार्यों का सम्पादन करता है। स्थूल शरीर कर्म करने में आत्मा का स्तधन है। इस साधन के बिना आत्मा कोई भी कार्य नहीं कर सकता। स्थूल शरीर ही को आत्मा समय-समय पर धारण करता और त्यागता रहता है किन्तु सूक्ष्म शरीर का उसका संबंध सर्गारम्भ से प्रलय पर्यन्त बना रहता है। प्रलय के पश्चात् सूक्ष्म शरीर अपने कारण में विलीन हो जाता है तथा आत्मा स्वतंत्र बन जाता है। यदि प्रलय के पूर्व आत्मा को तत्व बोध हो जाता है तो आत्मा सूक्ष्म शरीर को त्याग मुक्त हो परमात्मा का सानिध्य प्राप्त कर लेता है।

धन मकान का लालच देकर

मुरादाबाद जनपद में धर्म परिवर्तन

भैंसिया, चकबेगमपुर, हट्ट, गोदी, वीरपुर, ग्रामों की सर्वेक्षण रिपोर्ट

मुरादाबाद काशीपुर बस मार्ग पर 11 कि0मी0 पर पक्की सड़क से लगभग एक किलो मीटर पूर्व की ओर जल रहित नहर के किनारे पर हट्ट ग्राम स्थित है। तेजोवाली भिलक, गोदी, हट्ट इन तीन ग्रामों की एक ग्राम सभा है, जिसके प्रधान तेजोवाली भिलक निवासी श्री मुबारक अली हैं। यह ग्राम तहसील मुरादाबाद के थाना भोजपुर के अर्न्तगत आता है। गांव में घुसते ही हरिजनों की आबादी शुरु हो जाती है, सामने चर्च के दर्शन होते हैं। जिसमें ईसाई मत में दीक्षित महिलाएं नियमित रूप से रहकर धर्मान्तरण की गतिविधियों की निगरानी रखती हैं। हमारे यहां पहुँचने के कुछ देर के पश्चात ही वह महिलायें आ गईं। देखते ही हरिजनों को कहने लगीं कि यह आर्यसमाज के लोग आये हैं, इनसे सावधान रहना। गांव में परिभ्रमण के उपरान्त सभी वर्गों के निवासियों से कई बार मिलने के पश्चात जो तथ्य प्रकाश में आये हैं, संक्षेप में निम्न प्रकार हैं।

1- एक घर से एक आदमी के ही ईसाई हो जाने पर 20 कड़ियों के एक मकान और दस हजार रुपये नकद का आश्वासन।

2- ईसाई मत में परिवर्तित परिवारों की शिक्षा निःशुल्क। अन्यों से शुल्क प्राप्ति की घोषणा।

3- राम की मूर्ति लोहे की और प्रभु ईसा की काष्ठ की मूर्ति पानी में डिबोकर दिखाते हैं कि देखो राम पानी में डूब गया और प्रभु ईसा पानी में तैर रहे हैं, वही तुम्हारी रक्षा कर सकते हैं।

4- हर 8वें दिन ग्राम में डाक्टर आता है जो ईसाई मत स्वीकार करने वाले व्यक्तियों को निःशुल्क औषधि देता है, अन्यों को प्रेरणा करता है कि प्रभु ईसा की कृपा और दया ही आपको ठीक कर सकती है। मरीजों के देखने में स्पष्ट रूप से पक्षपात किया जाता है।

5- नौकरी और ऊँचे पदों पर नियुक्ति का प्रलोभन समस्त हरिजन परिवारों को दिया गया है।

6- कुछ हरिजन व्यक्तियों को जिन्होंने ईसाई मत स्वीकार कर लिया है, उनकी योग्यता अनुसार मासिक आर्थिक सहायता भी प्रदान की जाती है।

7- बेरोजगार युवकों को आकर्षक नौकरी तथा अविवाहित युवकों को सुन्दर ईसाई कन्याओं से विवाह का प्रलोभन।

जिन हरिजन परिवारों को ईसाई बना लिया गया है, वह अपने नाम के आगे मसीह शब्द का प्रयोग करते हैं. प्रभु, बाबू, चिराग, पूरन, सोहन, रामलाल, भोरा, इत्यादि हरिजनों से बातचीत का अवसर मिलने पर तथा महिलाओं से सम्पर्क करने पर ज्ञात हुआ कि उनको कड़ाई के साथ कहा गया है कि यदि तुमने बाहर से आने वाले किसी भी व्यक्ति के सामने लालच वगैरा की बात को स्पष्ट रूप से बताया तो हमारे जरिये मिलने वाली तुम्हारी सारी सहायता बन्द कर दी जायेगी। और तुम सभी को प्रभु ईसा कभी क्षमा नहीं करेंगे, तुम्हें उनकी अदालत में पेश होना पड़ेगा।

जन सम्पर्क के पश्चात हरिजनों ने स्वयं स्वीकार किया है कि वह लालच और सुविधायें मिलने के कारण ही ईसाई बने हैं, उन्होंने जब से ईसाई मत स्वीकार किया है, अपनी पुरानी पूजा, पाठ और पद्धति बन्द कर दी है। उन्हें आदेश दिया गया है कि चर्च में आकर प्रार्थना करो, इसी से तुम्हारा कल्याण होगा। हट्ट, गांव का नाम बदलकर भी पद्मापूरम कर दिया गया है।

गांव में घुसते ही कुछ पहले ही बांयी ओर को अस्पताल, विद्यालय इत्यादि विस्तृत भूमि में निर्माणाधीन हैं। जिसकी पक्की चार दीवारी बना दी गई है, और जिसमें लोहे का द्वार लगा हुआ है।

-हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता, उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0

धमन्तिरित आमन्त्रण

-राष्ट्रीय कवि निर्भय हाथरसी

गतांक से आगे-

विधर्मियों ने धर्म भेद का घातक खेल रचाया है।
तुमने धर्म बदल करके भी मन में धर्म बचाया है।
भय से हो कि प्रलोभन से हो या कि किसी बहकावे से-
जैसा जिसने चाहा वैसा तुमको नाँच नचाया है।

जैसा तुम्हें नचाया जिसने वैसा उसे नचा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य-धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयो। अपने घर को वापिस आ जाओ।

हिन्दू कहो कि आर्य कहो प्रभु ने तो एक बनाया है।
ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र तो जन्म-कर्म की माया है।
तरह तरह के षड्यन्त्रों के द्वारा जिन-जिन लोगों ने-
तुम्हें तुम्हारे स्थानों से जबरन यहाँ बिठाया है।

उनकी खाट खड़ी करके तुम अपना तख्त बिछा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयो। अपने घर को वापिस आ जाओ।

xxx

भारत माता का मन्दिर है, इस मन्दिर की दीवारें।
अम्बर से भी ऊपर उठकर हर दुश्मन को ललकारें।
ऐसे साहस शक्ति-भक्ति-अनुरक्ति जगें, जिनके डर से-
थर थर थर थर काँप उठें ऊँची से ऊँची मीनारें।

इतने ऊँचे स्वर से अपना घण्टा-शंख बजा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयो। अपने घर का वापिस आ जाओ।

xxx

राष्ट्र-धर्म रक्षा करने से बढ़कर कोई कर्म नहीं।
माँ का हितचिन्तन करने से बढ़कर कोई मर्म नहीं।
हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान सभी का मान बढ़ाना है-
शुद्ध-सनातन-आर्य-धर्म से बढ़कर कोई धर्म नहीं।

गुरु गोविन्द की तरह पुनः चिड़ियों से बाज लड़ा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य-धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयो। अपने घर को वापिस आ जाओ।

घर में फूट पड़ी तो स्वयं परिस्थिति ने समझाया है।
भाई भाई गले मिलें ऐसा शुभ अवसर आया है।
उठे उठाने को झुकते हैं, गिरे हुए भी उठ जायें-
उठकर और उठाकर सबने अपना शीश उठाया है।

ऊँचे से ऊँचा, ऊँचे से ऊँचा और उठा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयो। अपने घर को वापिस आ जाओ।

xxx

कोई विरोधी अगर तुम्हारी निष्ठा पर अधिकार करे।
कोई व्यापारी धन सम्पत्ति से धार्मिक व्यापार करे।
मुस्लिम हो या ईसाई हो इसकी कोई बात नहीं-
कोई विधर्मी अब आगे से तुम पर अत्याचार करे।

बिना कफन गहरे से गहरा तुम उसको दफना जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म का अपनाओ।
बिछुड़े हुए साथियो। अपने घर को वापिस आ जाओ।

xxxxxxxx

आवश्यक सूचना

जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर जिसके प्रधान श्री वीरेन्द्र पाल शर्मा तथा मंत्री श्री कुशाल पाल सिंह हैं। समस्त आर्य समाजों को आदेशित किया जाता है कि आप श्री वीरेन्द्रपाल-शर्मा वाली जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा को ही मानें। इससे अतिरिक्त कोई भी जिला सभा बुलन्दशहर में नहीं है। यदि कोई धर्मेन्द्र शास्त्री का इस प्रकार का संगठन है। तो वह अवैध है। श्री धर्मेन्द्र शास्त्री जी को आर्यसमाजों से कोई मदद नहीं मिलनी चाहिये।

7 मई में जो धर्मेन्द्र शास्त्री द्वारा आर्य वीर दल शिविर जहांगीरपुर की सूचना मिकली है वह सूचना निरस्त्र समझें। - सभामंत्री।

ग्रामीण युवको को चरित्र निर्माण की प्रेरणा दीजिए

सरधना, (मेरठ) 2। मई, राष्ट्र, धर्म एवं संस्कृति की रक्षा के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में युवकों को स्वयं अपना चरित्र निर्माण कर आगे आना चाहिये जिसके लिये ग्राम-ग्राम में आर्यवीर दलों की व्यायामशालायें एवं प्रशिक्षण शिविर लगाये जायें। यह आह्वान सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी ने विशाल जन समूह के समक्ष किया। वे यहाँ ब्लाक कालोनी मैदान में बुद्ध बाबा के अवसर पर आयोजित जिला आर्य महासम्मेलन में बोल रहे थे।

आनन्दबोध जी ने कहा कि आर्यसमाज के मुख्यतः तीन प्रमुख कार्य हैं जिनमें नशाबन्दी गोहत्या पर रोक तथा धर्म परिवर्तन रोकना शामिल है।

धर्मपरिवर्तन के मामले पर उन्होंने जन समूह से आह्वान किया कि वे अपने सक्रिय सद्प्रयासों से विदेशी मिशनिरियों द्वारा चलाये जा रहे धर्म परिवर्तन को रोकें। मिशनरियों द्वारा धर्म परिवर्तन स्वास्थ्य एवं शिक्षा जैसे सेवाकार्यों की आड़ में चलाया जा रहा है। स्वामी जी ने कहा कि युवक स्वयं को नशे से मुक्त कर अपना चरित्र निर्माण करें तथा देश में व्याप्त जाति पाँति व भेदभाव को समाप्त करें।

स्वामी जी ने देश की जनता का आह्वान किया कि वे सब जाति व धर्म का झंझट छोड़कर वैदिक धर्म के झंडे के नीचे आकर संगठित हो जायें तभी देश के आंतरिक व बाह्य खतरों को टाला जा सकता है।

विदेशी ताकतों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि पाकिस्तान हमेशा से भारत को अपना प्रमुख शत्रु मानता रहा है। पाकिस्तान में एक बेनजीर तो क्या सैकड़ों बेनजीर आ जायें तो भी वे भारत के साथ दोस्ती नहीं कर सकतीं। उन्होंने मंच से यह भी चेतावनी दी कि यदि पाकिस्तान ने इस बार भारत पर आक्रमण करने का प्रयास किया तो भारत के आर्य पाकिस्तान का नाम भूमण्डल पर नहीं रहने देंगे।

मीनाक्षी पुरम आदि स्थानों पर धर्म चरित्र की घटनाओं को शर्मनाक बताते हुए स्वामी आनन्दबोध ने कहा कि आर्यसमाज ने इसे रोकने के लिए काफी कार्य किया है। दक्षिण भारत में आर्यसमाज की विभिन्न स्थानों पर शाखायें स्थापित कर सैकड़ों स्थानों पर यज्ञ शालाओं का निर्माण करके बिछड़े हिन्दू भाइयों को शुद्ध करके पुनर्मिलन कराने में कीर्तिमान स्थापित किया है। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में धर्म परिवर्तन के विरोध में अभी कई ठोस कार्य किये जाने हैं।

ध्वजारोहण से पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि के महामंत्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने अपने संबोधन में कहा कि इस समय हमारे देश को भीतर एवं बाहर दोनों ओर से खतरा बना हुआ है। हमारे पाकिस्तान व नेपाल से अच्छे सम्बन्ध नहीं हैं।

उन्होंने कहा कि विदेशी मिशनिरियां केवल भारत में ही धर्मांतरण करने का कार्य कर रही हैं। किसी भी अन्य देश में धर्म परिवर्तन का कार्य नहीं हो रहा है।

श्री शास्त्री ने कहा कि अभी समय है और हमको जागरूक होकर संगठित हो जाना चाहिये। यदि हम जागरूक न बनें तो इसका प्रतिफल बुरा होगा।

आर्य समाज के जिला मंत्री श्री पं0 इन्द्रराज जी ने कहा कि नगला हरेरु के जिला में आर्यसमाज ने वृहत सम्मेलन व यज्ञशाला आयोजित कर धर्म परिवर्तन के कार्य को रोकते हुए बिछड़े हुए हिन्दुओं को पुनः उनकी संस्कृति में वापस लाने का महान कार्य किया है।

समारोह का प्रारम्भ राष्ट्रभृत यज्ञ से हुआ। यज्ञ गुरुकुल प्रभात के वेदपाठी ब्रह्मचारी आदि ने कराया। दोपहर में नगर के विभिन्न भागों से विशाल शोभा यात्रा निकाली गयी। समारोह को सफल बनाने में विद्यासागर त्यागी, आनन्द प्रकाश-मित्तल राधेश्याम शारदा आदि ने सक्रिय सहयोग दिया। शोभायात्रा का स्वागत पालिका अध्यक्ष केशोराम, दिव्यासागर, सेवकराम बाल्मीकि महीपाल, नवीन त्यागी, मदन बंसल, सुधांशु गोयल आदि ने किया।

विद्या प्राप्ति के उपाय

{श्री प्रियव्रत शास्त्री, साहित्य रत्न, एम0 ए0 सरधना}

महाभाष्य कार महर्षि पतंजली ने विद्या प्राप्ति एवं उसे सफल करने के लिये महाभाष्य प्रथम आन्हिक में लिखा है:-

"विद्या चतुर्भि प्रकारे उपयुक्ता भवति - आगम कालेन् स्वाध्याय कालेन प्रवचन कालेन, व्यवहार कालेनेति"

विद्या चार प्रकार से उपयुक्त होती है। 1- आगम कालसे, 2-स्वाध्याय कालसे, 3- प्रवचनकाल से, 4-व्यवहारकाल से। इन्हीं को श्रवण, मनन, निदिध्यासन और साक्षात्कार का नाम दिया जाता है।

1- आगम काल- वह समय होता है जब विद्यार्थी गुरु जी से बैठकर पढ़ता है और गुरु जी पढ़ाते हैं। 2-स्वाध्याय काल- वह होता है जब विद्यार्थी गुरु जी द्वारा पढ़ाये पदार्थ का स्वयं चिन्तन व स्मरण करता है। 3- प्रवचन काल- वह होता है जब विद्यार्थी पढ़े हुए एवं चिन्तन किये हुए पदार्थ अपने अन्य सहपाठियों को भली प्रकार समझाता है। 4- व्यवहारकाल- वह होता है जब विद्यार्थी पढ़े हुए, चिन्तन किये हुए और अपने सहपाठियों को समझाते हुए पदार्थ को अपने व्यवहार में लाता है।

इस विषयक महाभारत का एक उदाहरण प्रसिद्ध है। गुरु द्रोणाचार्य के सम्मुख जब शिक्षा ग्रहण करते थे पाण्डव तब गुरु ने उपदेश दिया "सत्यंवद" सदा सच बोलो। जब अगले दिन गुरु जी ने पाण्डवों से पूछा- कल का पढ़ाया हुआ पाठ स्मरण हो गया तो युधिष्ठिर को छोड़कर सबने कहा- हाँ जी, स्मरण हो गया। गुरुजी ने अगला पाठ पढ़ाया "क्रोधं मा कुरु" क्रोध न किया करो। गुरु जी ने अगले दिन पूछा- कल का पाठ याद हो गया, तब भी युधिष्ठिर को छोड़कर सबने कहा, हाँ जी, परन्तु युधिष्ठिर ने तीन चार दिन तक यही कहा- गुरुजी- अभी पाठ स्मरण ठीक प्रकार नहीं हुआ। गुरु जी ने युधिष्ठिर को कड़ा दण्ड दिया, दण्ड देने के पश्चात् गुरु जी ने फिर पूछा- पाठ याद हुआ कि नहीं। युधिष्ठिर ने कहा- हाँ गुरु जी। कुछ स्मरण तो हो गया। गुरुजी ने पूछा अब कैसे स्मरण हो गया। यह सुनकर युधिष्ठिर ने कहा गुरु जी। आपने "सत्यंवद" क्रोधं माकुरु" यह पाठ पढ़ाये थे। परन्तु जब तक इनको जीवन के व्यवहार में नहीं लाये जाते तब तक "पाठ स्मरण हो गया" यह असत्य भाषण ही है। दण्ड प्राप्त होने पर यदि क्रोध आता है तो "क्रोध न करो" यह चरितार्थ नहीं होता। आज मैंने उन दोनों शिक्षाओं को अपने जीवन में सह्य होने से मैंने समझ लिया और आपसे कहा कि पाठ स्मरण हो गया। द्रोणाचार्य युधिष्ठिर की इस बात से बहुत प्रसन्न हुए और उसे आशीर्वाद दिया। तभी तो युधिष्ठिर को आज तक भी अजात शत्रु कहते हैं।

अतः महाभाष्य कार ने विद्या उपार्जन भी चार उपाय बताये। जिनका जीवन अव्यवहारिक होता है उनकी किसी भी बात का प्रभाव औरों पर नहीं होता।

अच्छा वक्ता होने के लिये ध्यान पूर्वक श्रवण, उसका मनन, उसका प्रवचन और जीवन में उस बात को जो सुनी है सक्रियता का रूप देने से ही औरों पर प्रभाव हो सकता है।

आधुनिक समय में उपदेशक व प्रचारक प्रायः सभी स्थानों पर पंच महायज्ञ या सन्ध्या अग्निहोत्र का करना प्रमुखरूप से कहते हैं, परन्तु उनका प्रभाव नहीं होता। आज का अधिकांश युवा वर्ग शिखा सूत्र {चोटी और यज्ञोपवीत} का रखना तथा पहरना व्यर्थ समझते हैं। जिस शिखा सूत्र के लिये शिवाजी कवि भूषण के इस कवित के अनुसार प्रसिद्ध है:-

"हिन्दुन की चोटी रोटी राखि है सिपाहिन की,
कान्धे में जनेऊ राख्यो माला राखी गर में।।

उपदेशकों का तथा प्रचारकों का यह उपदेशात्मक कथन इसलिये प्रभावोत्पादक नहीं होता क्योंकि अधिकांशतः वे स्वयं सन्ध्या तथा यज्ञ स्वयं तो करते ही नहीं, प्रत्युत जिस समाज में वे उत्सव आदि में जाते हैं उस समाज में भी वे स्वयं सन्ध्या यज्ञ में सम्मिलित नहीं होते, उनके प्रवचन व भजनादि का कार्यक्रम होता है, उससे दस-पांच मिनट पहले ही वहाँ पहुँचते हैं।

गुरुकुल आश्रम का छात्र कक्षा में प्रथम

कानपुर। गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त- बिठूर के {छात्र} गोपालदत्त ने कक्षा -9 में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कक्षा- 10 पास करने के बाद उक्त छात्र को स्वामी गुरुकुलानन्द ब्रह्मचारी द्वारा वेदालंकार के चार वर्षीय पाठ्यक्रम हेतु "गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार" में प्रविष्ट कराया जायेगा।

ज्ञातव्य है कि "वेदालंकार" की डिग्री पी0सी0एस0 आई0ए0एस0 आदि हेतु भी मान्य है।

आनन्दराज, व्यवस्थापक
गुरुकुल आश्रम, ब्रह्मावर्त बिठूर {कानपुर}

वृद्ध सम्मान समारोह

आर्यसमाज नैनीताल ने अपने 115वें वार्षिक उत्सव के अन्तर्गत 27 मई 1989 को 80 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धों का सम्मान किया। यह अपने ढंग का एक अनूठा कार्यक्रम था। इसमें जिला अल्मोड़ा एवं जिला नैनीताल के विभिन्न सम्प्रदायों के 50 वृद्धों को सम्मानित किया गया। इनमें सबसे अधिक आयु के श्री बचीसिंह जी नैनीताल शहर के थे। प्रत्येक वृद्ध को उपहार के रूप में एक कम्बल, एक धोती, एक छड़ी एवं गोला भेंट किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता श्री इन्द्रराज, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 ने की। स्वागत भाषण श्री बाँके लाल कंसल ने दिया और उपहार वितरण का कार्य श्री पी0डी0 सुधाकर, जिलाधिकारी नैनीताल ने किया। स्वामी विवेकानन्द सरस्वती। गुरुकुल प्रभात आश्रम। मेरठ ने वृद्धों को आशीर्वाद दिया। उन्होंने कहा कि वृद्ध हमारे समाज की शान हैं और यह हमारा परम कर्तव्य है कि उन्हें हम पूरा आदर दें। कौमी एकता समिति नैनीताल की ओर से मालाओं द्वारा वृद्धों को सम्मानित किया गया।

श्री प्रो0 वेद व्यास निर्वाचित

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नईदिल्ली का वार्षिक अधिवेशन रविवार 28 मई 1989 को प्रातः 10·30 से आरम्भ हुआ। अधिवेशन में पंजाब, हरियाणा, हिमांचल प्रदेश, चण्डीगढ़, बिहार, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, दिल्ली तथा अन्य प्रदेशों से लगभग 400 प्रतिनिधि शामिल हुए। सर्वप्रथम सभामंत्री ने गतवर्ष देहावसान हुए व्यक्तियों के नाम पढ़कर सुनाये और एक मिनट का मौन धारण करके उन्हें श्रद्धांजलि दी।

वर्ष 1989-90 के लिये प्रो0 वेद व्यास जी को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया और उन्हें अधिकार दिया कि वे सभा के अन्य अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को स्वयं मनोनीत करें।

सुविचार - गोष्ठी

मैनपुरी। सुविख्यात आर्य दार्शनिक डॉ0 वागीश- आचार्य, एम0ए0, डी0फिल0 {एटा} के निर्देशन तथा आर्य- प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के मुख्य निरीक्षक कुं0 धुम्पाल सिंह जी "अटल" के संयोजन में दि0 17,18 व 19 जून, 1989 के ग्राम- सरपरी में गायत्री- महायज्ञ के साथ-साथ एक सुविचार-गोष्ठी का आयोजन है। जिसमें ईश्वर, धर्म, दर्शन और जीवन से सम्बन्धित विविध पहलुओं पर वैदिक दृष्टिकोण से विचार-विमर्श होगा। आयोजन में संगीत, व्याख्यान, स्लाइड व वीडीओ आदि के द्वारा भी सुविचार प्रवाहित किये जावेंगे। कार्यक्रम मनोहारी, प्रभावकारी तथा आकर्षक होगा।

-नरेन्द्रार्य, प्रधान
आर्यसमाज मैनपुरी।

अतः आगम काल, स्वाध्यायकाल, प्रवचन काल या श्रवण मनन, निदिध्यासन के पश्चात् व्यवहार काल या साक्षात्कार अति आवश्यक है। तभी कोई भी उपदेश प्रभावोत्पादक हो सकता है।

इसी कारण महाभाष्य कार ने विद्या प्राप्ति के चार उपाय बतायें हैं। हमें इन पर आचरण करके समाजोत्थान के कार्य में संलग्न होना चाहिए।

बाल जगत

शहीद बालक ताराचन्द

{श्री यतीन्द्र कुमार आर्य
गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर}

चिलचिलाती धूप, पीने को पानी भी मुश्किल अपनी ही मातृभूमि पर अपना ही अधिकार मांगे तो मार पड़ती, रूखा-सूखा भोजन, दिन भर कठिन परिश्रम करना इनसे भी कहीं अधिक कष्ट सहे आजादी के दिवानों ने। इन स्वतन्त्रता सेनानीयों का स्वार्थ केवल इतना मात्र था कि विदेशी सत्ता की पराधीनता से मुक्त हमारी यह भारत भूमि मुक्त हो जाय। असंख्य बाल, युवा, वृद्ध माताओं, बहनों ने जाने कितनी जनता जनार्दन अपने समस्त सुख वैभव को ठोकर मारकर जेलों को ही अपना "आजाद महल" मान लिया था।

आखिर क्यों? क्या कभी हमने सोचा कि वे कौन थे? आखिर उन्होंने क्यों सहे इतने कष्ट। क्यों सहे जघन्य अपराध? क्यों दिये असंख्य बलिदान? यदि हमने नहीं सोचा तथा इसी तरह पथभ्रष्ट होते रहे तो राम तथा कृष्ण, शंकर और दयानन्द, मीराबाई एवं पन्नाधाय आपके देखते-देखते वीरान हो जायगी। जिस पवित्र भूमि पर वेद के सस्वर पाठ से समस्त दिशायें गूंजती थी। वहां की दिशाऐं सिनेमा भ्रष्ट तथा अश्लील गानों से पूरित हो जायेगी।

जब हम अपने इन मूल प्रश्नों की ओर आते हैं तो चित में एक भाव झकझोर होता है कि विश्व में सबसे प्राचीनतम तथा विश्व की समस्त प्राचीन तथा आधुनिक सभ्यताओं में सर्वोच्च हमारी परम्परा में, हमारी सार्वभौम एकता, हमारी संस्कृति अनेक राजनैतिक उथल-पुथल के उपरान्त भी आखिर कैसे कायम रही तो सारा इतिहास ढूंढ लीजिए केवल एक ही उत्तर मिलेगा कि यहाँ जब-जब अन्याय अत्याचार हुआ है तब-तब भारत माँ के वीर सपूतों ने अपने तन, मन, धन की परवाह न कर अन्याय तथा पाप को जलाकर धर्म की रक्षा की है।

इसी परम्परा को अक्षुण्ण रखते हुए हैदराबाद के निजाम की निरंकुशता के विरुद्ध चलाऐ गये धर्मयुद्ध में एक महान बलिदान दिया था 19 वर्षीय बालक ताराचन्द ने। जिसे आज शायद कोई-कोई ही जानता होगा, किसी ने ठीक कहा है:-

गड़ गये जो नींव में उन पत्थरों को।
याद कर लो जो नहीं देते दिखायी।।

इस बालक का जन्म मेरठ जनपद के लुम्ब नामक गाँव में सन् 1920 के लगभग हुआ। सन् 1931 में लुम्ब गाँव में एक अद्भुत दृश्य देखा गया जब ताराचन्द के क्षत्रिय पिता श्री चौ0 केहर सिंह ने अपने पुत्र ताराचन्द को उसके मस्तक पर विजय तिलक सुशोभित कर हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने के लिए आशीर्वाद प्रदान किया। तथा आस-पास के सैकड़ों लोगों के साथ सहर्ष विदाई दी।

20 अप्रैल सन् 1939 को यह वीर बालक एक सत्याग्रही जत्थे के साथ तुलजापुर पहुँचा। वहां सत्याग्रही जत्थे पर लाठीचार्ज कर निरंकुश अधिकारियों ने अपनी निर्ममता का परिचय दिया। वीरों पर लाठीयाँ पड़ती रहीं परन्तु वीरों के मुख से भारत माँ की जय। भारत के अमर शहीदों की-जय। वैदिक धर्म की जय के उद्घोष गूंजते रहे।
बंदी सत्याग्रही जत्थे को 21 अप्रैल को नल दुर्ग में रखने के उपरान्त सत्याग्रही राज्य की विभिन्न जेलों में भेज दिये गये। अन्ततः 8 अगस्त को विजय श्री का वरण करते हुऐ जब सत्याग्रही मुक्त हो गये तो वीर किशोर श्री ताराचन्द बन्धन मुक्त होकर चार्दी शिविर पहुँचे। परन्तु जेल में जो कठोर यातनायें इस बालवीर ने झेली थी उनके कारण शरीर जर्जर हो रहा था। अतएव आप रोगग्रस्त हो गये अनेकोपचार के बाद भी आप रोग मुक्त न हो सके। अन्ततः विधि का विधान ही सिद्ध हुआ और 2 सितम्बर सन् 1939 को प्रातः 5 बजे जब दिनकर प्राची दिशा में उदय हो रहे थे, ताराचन्द का दीप बुझ गया था।

भारत माँ को ऐसे ही वीरों पर गर्व है। ऐसे ही वीरो के कारण हमारी संस्कृति कायम है। हमें ऐसे बलिदानी शूरमाओं के जीवन के प्रेरणा पाकर इसे कायम रखना होगा। नहीं तो आने वाला जमाना कहेगा कि :-

यूनान मिश्र रोमा सब मिट गये जहाँ से।
क्या बात हुई कि हस्ती मिट गई हमारी।।

परन्तु हमें ऐसा कभी भी नहीं होने देना है। "कर्म लिप्यते नरे" हमें आदर्श वैदिक कर्म में लिप्त रहना है। "वयं-तुभ्यं बलिहृतः स्याम" को साकार करना है। ऐसे वीरों का महान बलिदान भारतवर्ष की भावी संतति के लिए सदैव प्रेरणा स्रोत बना रहेगा। ऐसे वीरों के आदर्शों पर चलकर प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र कल्याण के लिए तन, मन, धन से कटिबद्ध रहेगा। इसके साथ ही ---

समझ जो कि मृत्यु है, मृत्यु से न डरो कभी।
जियो तो तुम ऐसे जियो, कि लोग याद करें सभी।।

शुभ विवाह संसकार सम्पन्न

आर्यसमाज बनगाँव पूरे कालिका गोण्डा के मंत्री श्री सत्यनारायण द्विवेदी "विजय" विद्या वाचस्पति की आयुष्मती सुपुत्री कु0 प्रज्ञा देवी का शुभ पाणि ग्रहण संस्कार ग्राम पूरे बदल गोण्डा के मूल निवासी श्री गुरु प्रसाद मिश्र के चिरंजीव पुत्र श्री सत्यभानु मिश्र के साथ पूर्ण वैदिकरीत्यानुसार दिनांक- 20 मई 89 को स्थान ग्राम नये पुरवा भरथा गोण्डा में सम्पन्न हुआ। अनेक व्यक्तियों ने वर-वधू को आशीष दिया। वर पक्ष ने 51/- संस्कार में प्रदान किया। समस्त वैवाहिक कार्यक्रम सादे समारोह में हुआ।

सूचना

माननीय चौधरी सुभाष चन्द्र जी आर्य, आप इस समय जहाँ कहीं भी हों, इस सूचना को प्राप्त करते ही तुरन्त घर चले आवें। अथवा उस स्थान से, जहाँ पर आप हो तुरन्त पत्र या तार प्रेषित करने की कृपा करें, हम सभी बहुत चिन्तित हैं।

पता- रमेश चन्द्र आर्य सिद्धान्त शास्त्री,
कोटवा, बहराइच ।

जिला उपसभा इलाहाबाद

प्रधान	-	श्री मन्नालाल जी
मंत्री	-	श्री सोहनजी पांडेय
कोषाध्यक्ष	-	श्री देवराज जी अवन

वैदिक धर्म प्रचार

आजमगढ़ के श्री महावीर शास्त्री ने 20 मई 1989 को श्री-बैजनाथराम मास्टर तारीघाट गाजीपुर के पुत्र का विवाह संस्कार तथा वृहदयज्ञ और 5 हरिजन युवकों को यज्ञोपवीत धारण तथा श्री प्रहलाद आर्य{फैजाबाद} के पुत्र का विवाह संस्कार श्री मुन्नीलाल मौर्य दुल्हनपुर {फैजाबाद}के पुत्र का विवाह संस्कार साथ ही श्री अक्षयमुनि भूतपूर्व उपप्रधान सभा की अध्यक्षता में गौरीशंकर घाट में वृहद यज्ञ हुआ, श्री मोहनराम हरिजन {आजमगढ़} के यहाँ नामकरण संस्कार कराया।

वेद पढ़ो और आगे बढ़ो

राष्ट्र संस्कृति तथा युवा शक्ति के उत्थान हेतु उद्गीथ साधना स्थली पंजीकृत न्यास हिमांचल आश्रम के संस्थापक, ब्रह्मचारी आचार्य आर्य नरेश वैदिक प्रवक्ता द्वारा 19 अप्रैल से 21 मई तक विश्व शान्ति संगठन तथा उन्नति के लिए भारत के विभिन्न प्रान्तों में स्थान-स्थान पर वैदिक स्टीकरों को चिपकाते, पुस्तकों को बाँटते व प्रवचन देते हुए प्रचार किया ।

सामवेद परायण महायज्ञ

आर्यसमाज पुष्पनगर {आजमगढ़} का सत्रहवाँ वार्षिकोत्सव दि0 13, 14, 15 तथा 16 अप्रैल 1989 को समारोह पूर्वक मनाया गया । इस अवसर पर सामवेद परायण महायज्ञ शास्त्री पं0 गोविन्द प्रसाद आर्य विद्यावारिधि चतरा {हजारीबाग} के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ।

महिलाओं के अश्लील पोस्टरों के खिलाफ जेहाद छेड़ने की अपील

सरधना [मेरठ], 22मई। ब्लाक कालोनी में आयोजित जिला आर्य सम्मेलन में महिलाओं से शहर की दीवारों पर लगे अश्लील पोस्टरों के खिलाफ अभियान छेड़ने की अपील की गई।

सम्मेलन को संबोधित करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रांतीय अध्यक्ष श्री पं0 इन्द्रराज ने कहा कि समाज में व्याप्त बुराईयां दूर करने के लिए महिला संगठनों को आगे आना चाहिए और दहेज उत्पीड़न से लेकर औरत के शरीर के भौंडे प्रदर्शन तक के खिलाफ जेहाद छेड़नी चाहिए।

सभा के जिला प्रधान माधव सिंह ने दूषित होती राजनीति की निन्दा की और नेताओं से अपील की कि उन्हें कुर्सी का मोह छोड़कर राष्ट्र की उन्नति के प्रयास करने चाहिए।

वक्ताओं ने कहा कि राजनेताओं समेत आम जनता को भी देश की संस्कृति बचाने के लिए जाति और सम्प्रदायवाद से ऊपर उठकर मानवतावाद को कायम करने का प्रयास करना चाहिए।

सम्मेलन में जयंत कुमार पाण्डे, शकुन्तला गोयल, राजबाला, सुषमा व शकुन्तला आदि ने विचार व्यक्त किये। आज सुबह सम्मेलन में यज्ञ, भक्ति संगीत व प्रवचन का आयोजन किया गया।

हिन्दू समाज से नैराश्यभाव मिटाना होगा

श्री पं0 इन्द्रराज, प्रधान
आ0प्र0नि0 सभा उ0प्र0।

आर्य समाज भीष्म नगर [भैसा] के वार्षिकोत्सव पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पं0 इन्द्रराजजी ने अपने सम्बोधन में आर्य जनो का आवाहन किया कि वे जातिवाद अस्पृश्यता, दहेज इत्यादि सामाजिक बुराईयों को दूर करने हेतु आगे आयें। उन्होंने नगला हरेरू में सम्पन्न हुए यज्ञ की आलोचना करने वाले को लताड़ते हुए कहा मानव मात्र को प्रदूषण से बचाता है तथा यज्ञ में भाग लेने वालों को शारीरिक स्वास्थ्य तथा पवित्र चिन्तन प्रदान करता है। यज्ञ से बच्चे बूढ़े, छोटे और बड़े सभी लाभान्वित होते हैं। ऐसे सर्व कल्याणकारी यज्ञ की आलोचना करना विवेक हीनता ही कहा जायेगा उन्होंने कहा कि जिस धर्म की रक्षा हेतु हमारे पूर्वजों ने अपने बलिदान दिए उसी धर्म को धर्मान्तरण के द्वारा नष्ट करने के प्रयास हो रहे हैं। आर्यसमाज अपनी पूरी शक्ति से ऐसे कुत्सित प्रयास का विरोध करेगा इस अवसर पर अपने सम्बोधन में राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन के महामन्त्री जयन्त पाण्डेय ने कहा कि युवाओं को तथा व्यापक हिन्दू समाज को अपने नैराश्य भाव तथा बुराईयो को त्याग कर एक नए भारत का निर्माण करने हेतु तत्पर हो जाना है। युवा राष्ट्र की शक्ति, लक्ष्य, भविष्य हैं। युवाओं के चरित्र निर्माण से राष्ट्र का चरित्र निर्माण होगा। उन्होंने युवाओं का आवाहन किया। वे मधपान, ड्रग्स, स्मैक, हीरोइन, चरस-भांग, गांजे जैसे घातक नशीले पदार्थों का पूर्णरूप से त्याग कर राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन का संरक्षक बन कर राष्ट्र रक्षा हेतु सन्नद्ध हो जायें।

अन्तर्प्रांतीय शुभ विवाह

आर्य समाज श्रृंगारनगर लखनऊ की भव्य यज्ञशाला में दिनांक- 23-5-89 को सायं 6-30 बजे- समाज के वरिष्ठ-सदस्य श्री विश्वनाथ गौतम की पुत्री आयुष्मती लक्ष्मी का शुभपाणि-ग्रहण आन्ध्र प्रदेशीय श्री जी0 सतैय्या इंजीनियर उत्तर प्रदेश फ्लाईंग क्लब के साथ पूर्ण वैदिकरीति से दोनों पक्षों की एवं नगर के अनेक संभ्रान्त नागरिकों की उपस्थिति में सादगी पूर्वक सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल महाविधालय अयोध्या फैजाबाद

प्रधान - श्री रमेश चन्द्र चौपड़ा
मंत्री - ओ3म मित्र शास्त्री
कोषाध्यक्ष - श्री दुर्गा प्रसाद
कुलपति - श्री वसुमित्र शास्त्री
मुख्याधिष्ठाता - श्री राम जी शुक्ल
मुख्य संरक्षक - श्री रामचन्द्र वैद्य ।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा

[मीराबाई मार्ग सं0-5 लखनऊ]

द्वारा संचालित

वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय, ब्रजघाट जिला गाजियाबाद

का

सत्र उद्घाटन समारोह

तिथि - आषाढ़ कृ0 12 सं0 2046 विक्रमी
दिनांक- 30 जून-शुक्रवार को प्रातः 9 बजे
आर्यसमाज मोरी ब्रजघाट में भव्यसमारोह के साथ सम्पन्न होगा।

सादर सस्नेह सानुरोध आमन्त्रण
आपके आगमन की प्रतीक्षा

भवदीय

जीवनानन्द सरस्वती, प्राचार्य — विजय भूषण आर्य, अधिष्ठाता

प्रवेश सूचना

गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय सिराथू (सैनी जी० टी० रोड) इलाहाबाद

में सर्वोत्तम शिक्षा के लिए अपने बच्चों को भेजिए। 1 जुलाई 15 अगस्त 1989 तक कक्षा-5 से प्रवेश होता है। पठन पाठन 16वीं कक्षा तक- आर्ष प्रणाली के साथ-साथ प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री तथा आचार्य तक। सैनिक, व्यायाम शिक्षा, भाषण कला, संगीत-कला आदि की शिक्षा का विशेष अभ्यास कराया जाता है।

विज्ञान, गणित, इतिहास, भूगोल, हिन्दी, अंग्रेजी एवं अन्य सभी विषयों का पठन-पाठन होता है। प्रवेश शुल्क- 301/- भोजन शुल्क 125/- दूध घी और सभी वस्त्र भोजन-पत्र, बिछौना [बिस्तर] आदि अभिभावक को देने होंगे। नियमावली मंगाइये।

डॉ0 रमाकिन्त्र शास्त्री
प्राचार्य।

आवश्यक सूचना

[1]

सभा के अन्तर्गत समस्त महोपदेशकों, उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों से निवेदन है कि आर्यमित्र के नवीन ग्राहक कम से कम 10 प्रत्येक मास में बनायें। यह विशेष रूप से अनिवार्य है।

[2]

दयानन्द संघ में, समस्त अवैतनिक महोपदेशकों, उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों से नम्र निवेदन है कि सभा की वार्षिक रिपोर्ट बनने का कार्य प्रारम्भ हो गया है अतः अपनी संक्षिप्त वार्षिक रिपोर्ट, 1 जनवरी 88 से 31 दिसम्बर, 88 तक तुरन्त सभा कार्यालय उपदेश विभाग को, 30 जून, 89 तक भेजें। इसके पश्चात आने पर सभा का कोई दायित्व नहीं होगा।

हरिचन्द्र आर्य
अधिष्ठाता
उपदेश विभाग, आर्यप्रतिनिधि सभा
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

सभा के कार्यरत उपदेशकों-प्रचारकों के

मास जून ८९ के कार्यक्रम

श्री पं0 केशवदेव जी शास्त्री	19,20,21 मऊ, मुरादाबाद 22,23 गोहावर बिजनौर, 24,25 ताजपुर {बिजनौर} 26,27 खासपुर{बिजनौर}, 28,29, 30 ब्रजघाट, गाजियाबाद।
श्री विशम्भर दत्त जी शास्त्री	28,29,30 ब्रजघाट गाजियाबाद
श्री सुकर्मानन्द जी महाराज	1 से 26 जम्मू, 28,29,30, ब्रजघाट।
डा0 विजयपाल सिंह जी	अलीगढ़, आगरा, बुलन्दशहर जनपदों में कार्यक्रम। 28,29,30 ब्रजघाट गाजियाबाद।
श्री योगेश दत्त जी आर्य	19,20,21 मऊ मुरादाबाद, 22,23 गोहावर बिजनौर, 24,25 ताजापुर बिजनौर, 26,27 खासपुरा बिजनौर, 28,29,30 ब्रजघाट जि0-गाजियाबाद।
श्री जयन्त कुमार जी आर्य	माननीय सभा प्रधान जी के निर्देशन में 28,29,30 ब्रजघाट।
श्री महावीर जी शास्त्री	1 से 26 जून जमुनिया बाग गाजीपुर 28,29,30 ब्रजघाट गाजियाबाद।

श्री गजराज सिंह जी राघव	28,29,30 ब्रजघाट जि0-गाजियाबाद।
श्री कमल देव जी आर्य	15 से 26 मथुरा जनपद, 28,29,30 ब्रजघाट।
श्री ब्रह्मानन्द जी आर्य	28,29,30 ब्रजघाट जिला-गाजियाबाद।
श्री रामचन्द्र जी शर्मा	18-19 कौशल्या बिजनौर, 20,21 नूरपुर बिजनौर 22,23 गोहावर बिजनौर, 24,25 ताजपुर बिजनौर 26,27 खासपुरा बिजनौर, 28,29,30 ब्रजघाट गाजि0

नोटः- 24,25,26 उलेंढा जिला बिजनौर कार्यक्रम की पूर्व स्वीकृति दी जा चुकी है।

श्री सीताराम जी आर्य	1 से 26 गाजीपुर, 28,29,30 ब्रजघाट गाजियाबाद।
श्री सीताराम जी शर्मा	16 से 26 पीलीभीत, 28,29,30 ब्रजघाट जिला गाजियाबाद।
श्री नेम प्रकाश जी आर्य	15 से 27 बिजनौर जनपद के उत्सवों के कार्यक्रम, 28,29,30 ब्रजघाट गाजियाबाद।
श्री युगुल किशोर जी	28,29,30 ब्रजघाट ।
श्री तेजपाल सिंह जी आर्य	12,13,14 प्रभात, 28,29,30
श्रीमती आशा आर्या	ब्रजघाट ।
श्रीयुत विक्रम देव जी आर्य	18-19 कौशल्या बिजनौर

नोटः- 18 जून का कार्यक्रम यदि शेरकोट का निश्चित है तो चले जायें।

	20,21 नूरपुरा, बिजनौर, 22,23 गोहावर बिजनौर 24,25 ताजपुर बिजनौर, 26,27 खासपुरा बिजनौर 28,29,30 ब्रजघाट जि0 गाजि0
श्री ब्रजपाल जी शर्मा	18,19 कौशल्या बिजनौर, 20,21 नूरपुर बिजनौर, 22,23 गोहावर बिजनौर, 24,25 ताजपुर बिजनौर, 26,27 खासपुरा बिजनौर, 28,29,30 ब्रजघाट
श्री खेम चन्द्र जी आर्य	1 से 20 आजमगढ़ जनपद, 28,29,30 ब्रजघाट ।
श्री मनवीर सिंह जी आर्य	18,19 कौशल्या बिजनौर 20,21 नूरपुर बिजनौर, 22,23 गोहावर, 28,29,30 ब्रजघाट

नगला हरेरु जनपद मेरठ में यज्ञ सम्पन्न

आर्यसमाज मेरठ के तत्वावधान में जनपद मेरठ के नगला हरेरु गाँव में दिनांक 27 से 29 मई तक सामवेद पारायण यज्ञ एवं धर्मशुद्धियज्ञ बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बूढ़ा बाबा मेला में आर्य महासम्मेलन का भी आयोजन हुआ जिसमें मुख्य वक्ता आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री चौधरी माधव सिंह जी तथा अन्य अनेक आर्य नेताओं ने यज्ञ का महत्व दर्शाते हुए घोषणा की कि इस प्रकार के सम्मेलनों से आर्य {हिन्दू} जनता में जागृति आई है और उन्हें अपने मूलधर्म वैदिक धर्म का ज्ञान हुआ है।

सम्मेलन एवं यज्ञ के संयोजक श्री पं0 इन्द्रराज जी ने घोषणा की कि स्थान-स्थान पर इस प्रकार के आयोजन किए जायेंगे और आर्यसमाज का यह शुद्धि यज्ञ कार्य सतत चलता रहेगा। स्वामी आनन्दबोध जी ने ध्वजारोहण कर आर्य सम्मेलन का उद्घाटन किया। समारोह का प्रारम्भ राष्ट्रभृत यज्ञ से हुआ। यज्ञ गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी के वेदपाठी ब्रह्मचारियों द्वारा सम्पन्न हुआ। दोपहर को भव्य शोभायात्रा निकाली गई। ग्रामीण एवं शहरी जनता हजारों की संख्या में उपस्थित थी वैदिक धर्म की जय के नारों से आकाश गुंजायमान था।

वैदिक धर्म प्रचारक शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के अन्तर्गत वैदिक प्रचारक शिविर तारीख 1-5-89 से 31-5-89 तक एक माह का आर्यसमाज मठपारा दुर्ग में सम्पन्न हुआ, सभा प्रधान श्री रमेश चन्द जी श्रीवास्तव द्वारा ओउम ध्वज फहराकर शिविर का शुभारम्भ किया। तारीख 31-5-89 को सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री गुलाब चन्द बंसल ने प्रशिक्षणार्थियों को वैदिक साहित्य एवं श्री विश्वनाथ जी शास्त्री ने प्रमाण-पत्र देकर शिविर का समापन किया, इन दोनों उद्घाटन एवं समापन समारोह में दुर्ग, भिलाई के अनेक आर्य नर-नारियों ने भाग लेकर कार्यक्रम सफल किये।

श्री ओमलाल जी ढोलक वादक	28,29,30 ब्रजघाट गाजियाबाद।
श्री अमरलाल जी ढोलक वादक	18,19 कौशल्या बिजनौर, 20,21 नूरपुर बिजनौर 22,23 गोहावर बिजनौर, 24,25 ताजपुर बिजनौर 26,27 खासपुरा बिजनौर, 28,29,30 ब्रजघाट गाजियाबाद।

नोटः- 29 जून, 1989 को सभी उपदेशकों प्रचारकों की धर्म भूषण परीक्षा आर्यसमाज मंदिर ब्रजघाट जिला गाजियाबाद में प्रातः 10 बजे से प्रारम्भ होगी। सभी को 28 जून 1989 की रात्रि तक ब्रजघाट पहुँचना आवश्यक है। इस कार्यकाल में यदि कोई कार्यक्रम सभा कार्यालय या इस कार्यालय से भेजा गया है तो उसे आप निरस्त समझें।

2- 30 जून को वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट गाजियाबाद का उद्घाटन समारोह प्रातः 10 बजे से प्रारम्भ होगा।

3- पंच सूत्रीय कार्यक्रम जो आप सभी की सहमति से निश्चित किया गया है, 28 जून की रात्रि को उसकी समीक्षा होगी।

4- वैदिक धर्म पचारक महाविद्यालय ब्रजघाट के लिये यदि कोई छात्र आपकी दृष्टि में हो तो आप यत्नपूर्वक उनके प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करायें और 15 जून 1989 को प्रातः 10 बजे से आर्यसमाज मन्दिर ब्रजघाट में होने वाले साक्षात्कार में सम्मिलित होने के लिये उन्हें सूचित कर दें।

5- कार्यक्रम में यदि कहीं कोई भूल प्रतीत हो तो तुरन्त प्रचार कार्यालय अमरोहा को पत्र लिखकर संशोधित करा लें।

प्रचार कार्य की प्रगति आपके उपर निर्भर है।

{मनमोहन जी तिवारी}
मंत्री सभा

{हरिश्चन्द्र आर्य}
अधिष्ठाता उपदेश विभाग सभा

आर्य मित्र सप्ताहिक
नारायण स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 45993
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी 7?
ज्येष्ठ शुक्ल 14
18 जून रविवार, 1989 ई0

आर्यमित्र

सृष्टि संवत् 1972949090
दयानन्दाब्द 165



शोक समाचार

आर्यसमाज-पाली (मेरठ) के निरीक्षक श्री [illegible] जो बिजनौर जनपद में भूमि संरक्षण विभाग में कार्यरत थे, का निधन 27-5-89 दिन शनिवार को मीरापुर के पास दुर्घटना होने के कारण 28-5-89 को प्यारे लाल शर्मा अस्पताल में हो गया। ईश्वर से प्रार्थना है। कि ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे। वे उनके परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

सुरेन्द्र कुमार, मंत्री
आर्य समाज पाली

आवश्यकता

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या की आन्तरिक व्यवस्था संचालन हेतु- एक सहायक अधिष्ठाता की आवश्यकता है। जिसके आवास, प्रकाश, भोजन की व्यवस्था गुरुकुल करेगा साथ ही मासिक रु0-500/- पांच सौ रुपये का अतिरिक्त धन निजी व्यय के लिए प्रदान किया जायेगा। आर्यसमाज विचारधारा वाले तथा गुरुकुल स्नातकों को वरीयता दी जायेगी। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल अयोध्या के पते पर पत्र व्यवहार करें।

[illegible] मित्र शास्त्री
मंत्री।
गुरुकुल अयोध्या, फैजाबाद।

[illegible] आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए [illegible] रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

(1710)

आर्य ओ३म् मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० 2241/57 आषाढ़ कृष्ण 7 रविवार, संवत् 2046 वि०, दिनांक 25 जून 1989 घोषणा पत्र सं० 7/28-2-85



तत्सवितुर्वृणीमहे वयं देवस्य-भोजनम्

श्रेष्ठं सर्वधातमं तुरं भगस्य-धीमहि।

जो मनुष्य सबसे उत्तम जगदीश्वर की उपासना करके अन्य की उपासना का त्याग करता है वह सम्पूर्ण ऐश्वर्य से युक्त होता है।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम० ए०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम० ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु0 25/-
वार्षिक	रु0 30/-
एक प्रति	1-00 रु0 मात्र

वर्ष 92

अंक 25

आधुनिक कम्प्यूटरों में आर्य भट्ट के सूत्र

मानव सभ्यता के उत्कर्ष में आज कम्प्यूटर युगान्तरकारी परिवर्तन ला रहा है। रोबोट तथा कम्प्यूटर ने मानवीय शक्ति को सहस्रगुणा विकसित करके हमें वास्तव में मशीनीयुग के चरम पर पहुँचा दिया है। यदि यह दोनों प्रणालियाँ सफल हो गईं तो निःसन्देह विश्व में एक नई औद्योगिक क्रान्ति हो जायेगी जहाँ मानव से अधिक मशीन का मूल्य होगा। यह सब बुद्धि का चमत्कार है जो मानव के लिए परमात्मा की अनमोल देन है। संसार के समस्त आश्चर्यजनक चमत्कार मानव ने इसी बुद्धि से किए हैं इसीलिए मानवयोनि को श्रेष्ठ माना गया है। इस बुद्धि में नैमित्तिक ज्ञान को विकसित करने की अन्तहीन क्षमता है। इस मेधावी बुद्धि के साथ यदि अध्यात्म और सत्य का सम्पुट लगा रहे तो मानव का कल्याण ही कल्याण है। वेद में ऐसी ही बुद्धि की याचना करते हुए साधक कहता है -----

"यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते तया मामद्य

मेधयाऽग्ने मेधाविनं कुरु" ------

हे बुद्धिदाता परमेश्वर। जिस बुद्धि के लिए हमारे पूर्वज और देवतागण उपासना करते आये हैं वही बुद्धि हमें प्रदान कीजिए।

आज बुद्धि विकास मार्ग पर अनवरत गतिशील है। वह सृष्टि के नित नये-नये रहस्यों का उद्घाटन भी करती जा रही है। कौन सा ऐसा क्षेत्र है जहाँ उसकी गति और प्रगति नहीं किन्तु अध्यात्म का सम्पुट न होने के कारण उसका रुख विध्वंसात्मक होता जा रहा है। हमारे तत्ववेत्ता ऋषियों और मनीषियों को आधुनिक युग की समस्त वैज्ञानिक प्रणालियाँ और आविष्कार हस्तामलक थे। प्राचीन साहित्य एवं ऐतिह्य ग्रन्थों को देखने से पता चलता है कि आज ऐसा कुछ भी नहीं हो रहा है, जिसका अतीत में ज्ञान न रहा हो।

भारत के प्राचीन गणितज्ञ आर्यभट्ट ने आधुनिक कम्प्यूटरों में अब शुरू की जा रही समस्त जटिल गणितज्ञ समस्याओं का हल संस्कृतभाषा के संकेत, ध्वनि तथा अक्षरसंयोजन द्वारा कर लिया था। अमेरिका के लुईसियाना विश्वविद्यालय में कार्यरत प्रोफेसर काक का कहना है कि पश्चिमी देशों में जो वैज्ञानिक इन दिनों नये कम्प्यूटरों तथा सुपर कम्प्यूटरों के प्रारूप तैयार कर रहे हैं वे बहुत गम्भीरता से भारत के प्राचीन गणितज्ञों की कृतियाँ पढ़ रहे हैं। प्रो० काक ने आर्यभट्ट के कुछ सूत्रों का उदाहरण देकर बताया है कि वे किस तरह कम्प्यूटर प्रणाली को विकसित करने में सहायक हुए हैं। उन्होंने भास्कर, जयदेव, ब्रह्मगुप्त के गणितसूत्रों का हवाला देकर बताया कि किस प्रकार उनकी सहायता से गणितज्ञ क्रियाओं में वांछित निष्कर्ष प्राप्त किए जा सकते हैं। अमेरिका के प्रसिद्ध कम्प्यूटर इन्जीनियर डा० रिक ब्रिग्स ने एक शोधपत्र में स्वीकार किया है कि संस्कृत व्याकरण के सूत्र, रूप और सिद्धान्त में कम्प्यूटर प्रणाली के समान हैं। डा० रिक ने यह भी कहा है कि आज के कम्प्यूटर विज्ञान की सबसे बड़ी समस्या है प्राकृतिक भाषाओं का मशीनी भाषा में अनुवाद और पुनः उसका भाषान्तर। डा० रिक का मानना है कि संस्कृत के वैयाकरणों ने इसे हजारों वर्ष पूर्व ही सुलझा लिया था। ईसापूर्व छठी शताब्दी में लिखी गई पाणिनि की अष्टाध्यायी वास्तव में एक "कम्प्यूटर प्रोग्राम" थी। इसमें एक दिशात्मक नियम है जिसमें एक धारा अथवा सूत्र में अन्तर्निहित नियम अन्य सभी नियमों का गुणात्मक संकलन करते हुए सभी व्यवस्थाओं को एक सूत्र में आबद्ध करके नये नियम की व्यवस्था करता है और यन्त्रवत् सारे सूत्रों को "कम्प्यूटर प्रोग्राम" की भाँति संचालित करता है। इसे वस्तुतः "पाणिनि-यन्त्र" कहा जा सकता है। इस प्रकार हमारा वैदिक गणित और संस्कृत भाषा कम्प्यूटर प्रणाली के लिए सर्वाधिक सशक्त एवं उपयुक्त माध्यम है।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उठा तू सजकर साज।
आर्यसमाज । आर्यसमाज ।।
- राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

साप्ताहिक आर्य मित्र

लखनऊ आषाढ़ कृष्ण 7 संवत् 2046 वि०, 25 जून 1989
दयानन्दाब्द 165, सृष्टि संवत् 1972949090

शुद्धि का बिगुल

वेदों में परमात्मा ने संसार के समस्त मानवों को पुनीत वैदिक विचारधारा की ओर लाकर पवित्र बनाने का उपदेश दिया है। आर्यों ने इस आज्ञा का अनुपालन करते हुए "कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्" का नारा दिया और संसार के समस्त प्राणियों को वैदिक विचारोन्मुखी बनाकर विश्व को शान्ति का नीड़ बनाया तथा विश्व का महान उपकार किया। हमारे इस मन्तव्य का साक्षी महाभारतकाल से पूर्व का समस्त विश्वजनीन इतिहास है जहाँ मानव के प्रत्येक क्षेत्र में वेदों की शिक्षाओं का प्रभाव किसी न किसी रूप में स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है। कोई युग ऐसा नहीं था जहाँ हमारे वैयक्तिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय आचरणों को वेदों की शिक्षाओं ने प्रभावित न किया हो। हमारा विश्वास है वेद परमात्मा की अमरवाणी है और जिस प्रकार उसकी सत्ता शाश्वत एवं पवित्र है उसी प्रकार उसकी वाणी से निकला हुआ एक एक बोल शाश्वत एवं पवित्र है। मानव क्या, प्राणिमात्र का कल्याण उसी के अनुसार आचरण करने में ही अन्तर्निहित है। हमारे नियमों में इसीलिए "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक और उसका पढ़ना पढ़ाना परमधर्म" माना गया है। महाभारत काल के पश्चात पौराणिक युग आता है। इस काल में निहित स्वार्थियों ने अनेकों पुराणों, मतों, पन्थों की स्थापना करके वेदों के महत्व को घटाने का प्रयत्न किया और उसी का परिणाम है कि संसार में अनेक मत और विचारधाराएं आज हमें दिखाई दे रही हैं। यद्यपि इनमें कहीं कहीं वेदों की शिक्षाएं भी दृष्टिगोचर हो रही हैं किन्तु महत्व अधिकांश उस मत के प्रतिष्ठापकों ने अपने विचारों को ही दिया है। यह सब विचार मानवकृत थे, परिवर्तनशील थे और आज के सन्दर्भ में उन विचारों में परिवर्तन किए जाने की मांग स्वयं उस मत के बुद्धिजीवी वर्ग के लोग उठा रहे हैं। दूसरी ओर वेद हैं, जो अपौरुषेय और अपरिवर्तनीय हैं। अतः उनकी शिक्षाएं पूर्णकालिक एवं पवित्र हैं। उनमें कभी किसी परिवर्तन का कोई प्रश्न ही नहीं है। कितना महान अन्तर है।। यदि मानव इस दृष्टिकोण को समझ ले तो सभी समस्याओं का समाधान स्वयमेव हो जाये।

मानव अल्पज्ञ प्राणी है। उसकी एक दुर्बलता है। वह अपने समूह (समाज) को प्रश्रय देने का सदा से इच्छुक रहा है। शक्ति का अहम् और दुर्बल को दबाना उसकी तमोगुणी रजोगुणी वृत्ति के अंग रहे हैं। आज यह वृत्तियाँ उसमें वैयक्तिक और सामूहिक दोनों रूपों में देखने को मिलती हैं। सामूहिक शक्ति के उदय और प्रदर्शन के माध्यम अनेक हैं जिनमें राज्यसत्ता प्रमुख है क्योंकि उसमें अधिकार और शक्ति की सर्वोच्चता विद्यमान रहती है। इसे पाने के लिए अनेक प्रकार से दलों आदि की स्थापना करके येन केन प्रकारेण सत्ता हथिया कर अपनी सामूहिक शक्ति का प्रदर्शन करना इसी रजोगुणी वृत्ति का अंग है। आज की राजनीति में प्रजातान्त्रिक ढंग से चुनाव होते हैं। बहुमत के आधार पर निर्णय लिए जाते हैं। प्रजातन्त्र में संख्या का बहुत महत्व है। बहुमत जिसका होगा सरकार उसी की बनेगी और कानून भी उसी का लागू होगा। इस देश में हिन्दू बहुसंख्या में हैं। मुसलमान ईसाई सोचता है हम अल्पसंख्या में होने के कारण सत्ता के अधिकार से वंचित हैं। यदि संख्या के आधार पर ही राज्यसत्ता प्राप्त की जा सकती है तो जिस तरह से भी हो हम अपनी संख्या क्यों न बढ़ावें। इस विचार को विदेशों से प्रश्रय मिला और उन्होंने अपार जनधन एवं साधन उपलब्ध करा दिए क्योंकि उसी मत के वह भी अंग हैं। परिणाम यह हो रहा है कि हिन्दुओं को मुसलमान, ईसाई, सिख बनाने की एक लहर चल पड़ी है। जो हरिजन हिन्दुत्व के स्तम्भ कहे जाते थे, सबसे पहिले उनका ध्यान उन्हीं की तरफ गया है और उनकी गरीबी अशिक्षा का लाभ उठाकर उनके मतपरिवर्तन की आँधी चल पड़ी है।

आर्यसमाज ने अपनी दूरदृष्टि से राष्ट्र पर आने वाली इस भीषण विपत्ति को बहुत पूर्व ही भाँप लिया था और वह अपने सीमित साधनों के साथ हर हिन्दू को बार-बार जाकर सचेत करता आ रहा है। यह आर्यसमाज का ही प्रभाव है कि अब पौराणिक भाई भी शुद्धि के महत्व को समझने लगे हैं। स्वयं शंकराचार्य ने व्यवस्था दी है कि विधर्मी बने हुए समस्त हिन्दुओं को शुद्ध करना और उनमें फैले हुए छुआछूत को मिटाकर उनका एकीकरण करना धर्म और वेदविहित है। आर्यसमाज ने पुनः शुद्धि आन्दोलन का बिगुल बजा दिया है। यदि यही कार्य प्रारम्भ से प्रखररूप लिए रहता तो पाकिस्तान नहीं बन सकता था। जिस प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम जी ने अपना बलिदान देकर इस आन्दोलन को जीवित रखा था उसी प्रकार हमें शुद्धि कार्य को बड़े पैमाने पर पुनर्जीवित करके आन्दोलन के रूप में चलाना होगा। उन्हीं के प्रयास से लाखों मलकाने राजपूत आज हमारे अंग हैं, भारतीयता और राष्ट्रीयता के पुजारी हैं। आज समस्त आर्य (हिन्दूजन) अपने इस पवित्र दायित्व को समझें और आर्यसमाज के झण्डे तले एकत्र होकर शुद्धि-आन्दोलन को सक्रिय सहयोग दें तभी भारतीयता और राष्ट्रीयता की रक्षा सम्भव है ।

-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-0-

ओ आंधियो तुम न सनसनाओ

ओ आँधियो तुम न, सनसनाओ,
निशंक हमने, दिया जलाया,
प्रभंजनों की चुनौतियों पर।

पवन झकोरों के पालने में, झुलाई नव ज्योति की कलायें।
प्रकाश, पल-पल प्रखर हुआ, घिरी हैं जब जब प्रलय घटायें,

ओ बिजलियो तुम न तमतमाओ
खुली डाल पर नीड़ बनाया -
अनल-घनों की चुनौतियों पर।

अपार विष हम पचा चुके हैं, धरा को उससे बचा चुके हैं,
हमारे कुरुक्षेत्र को पता है, प्रलय-स्वयम्वर रचा चुके हैं।

कुवृत्तियों तुम न कुनमुनाओ,
अनय का जलता दिया बुझाया,
अधम जनों की चुनौतियों पर ।

कुशासनों के पते नहीं हैं। मिटा असुरता का दर्प सारा,
मिला धूल क्रूरता कंस की, मनुष्यता को सदा उबारा।

ओ विषधरो तुम न फन फनाओ,
कन्हैया को नाचना सिखाया -
उठे फणों की चुनौतियों पर ।

हमारा पथ तो प्रकाश का है, ध्येय तिमिर के विनाश का है
सभी का मंगल लिये हृदय में, हमारा हर पग विकास का है

हमें न रण दुन्दुभी सुनाओ
नये सृजन का बिगुल बजाया -
प्रलय-क्षणों की चुनौतियों पर

ओ आँधियो तुम न सनसनाओ,
निशंक हमने दिया जलाया।
प्रभंजनों की चुनौतियों पर ।

—[illegible] सिंह भदौरिया, सौमित्र,
भोजपुरा, मैनपुरी।

एक स्मृति- अथर्ववेद व गोपथ ब्राह्मण भाष्यकार

पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी

-लेखक- डॉ0 कमला प्रधान,
बादशाहनगर, लखनऊ।

हमारे पूज्य पितामह पं0 क्षेमकरण दास त्रिवेदी का जीवन एक संघर्ष पूर्ण धृतिशील बलवती आत्मा का जीवन रहा है। उनका जन्म वि0 सं0 1905 तदनुसार 3 नवम्बर 1848 ई0 में शाहपुरा, मंडराक, जिला- अलीगढ़ में हुआ। सन् 1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम जो उस समय गदर के नाम से जाना जाता था के समय उनकी आयु केवल 9 वर्ष की थी। लोग आपस में झगड़ों का बदला भी गदर में लेने लगे थे। इनके पिता को भी पकड़ कर चामुण्डा देवी के मंदिर में कुछ लोगों ने पकड़ रखा था। किन्तु इनकी दादी गड़ासा लेकर मन्दिर पर पहुँच गई और बोली , "पहले मुझसे लड़ो तब इसे {मेरे बेटे को} हाथ लगाओ" इसी बीच गाँव के मुखिया बहुत से साथियों को लेकर पहुँचे, और दोनों को छुड़ाकर घर पहुँचा दिया। अंग्रेजों की जीत होने पर अंग्रेजी फौजे सड़कों पर गश्त लगाती रहती थीं बालक क्षेमकरण भी अपने घर में से फौजों की गश्त देखते थे। मौलवी साहब से फारसी पढ़ा करते थे। 15 वर्ष की आयु में इन्हें अंग्रेजी पढ़ने की इच्छा हुई, पिता से अनुरोध करके अलीगढ़ स्कूल से मैट्रिक परीक्षा पास की उस समय अंग्रेजी पढ़ना बहुत कठिन माना जाता था और लोग इसका विरोध भी करते थे। फिर मुरादाबाद स्कूल में अध्यापक हो गये।

यहाँ ही इनका महर्षि दयानन्द से सम्पर्क बहुत बढ़ा, इससे पूर्व भी इन्होंने अपने खेत में काम करने वाले चमार मजदूरों के बीच बात करते सुना था "याको वेद न्यारो है" तब से इन्हें "वेद क्या है" जानने की उत्कंठा बनी हुई थी। तुलसी कृत रामायण का पाठ व शिवमूर्ति पर जल चढ़ाना ही धर्म माना जाता था। एक बार एक मासिक पत्र पर छपे हुए मन्त्र का अर्थ अपने हेड पंडित से उसका अर्थ पूछा, तो वे क्रुद्ध हो कर बोले - "तुम कायस्थ शूद्र हो। शूद्रों को वेदार्थ बताना निषेध है।" पादरियों, वेद-मुदारकें की निंदा पढ़कर वेद पढ़ने की ओर उत्कण्ठा हुई।

महर्षि दयानन्द से मुरादाबाद में बहुत सी शंकायें निवारण कीं, उन्हें सच्चा गुरू मिल गया और कई साथियों के साथ महर्षि से यज्ञोपवीत संस्कार कराया। फिर वे मुरादाबाद आर्यसमाज के मंत्री पद पर रहे। वहाँ से फिर रेलवे विभाग जोधपुर में कार्यरत रहे। वहाँ वे आर्यसमाज में जाते थे। भाग्य वश वहाँ तीन महीने में इनकी माता पत्नी व गई बच्चों का निधन हो गया। शोक संतप्त इन्हें संसार से विरक्ति हो गई, वैरागी होकर घर छोड़ने को तैयार हो गये। पं0 ठाकुरप्रसाद-शर्मा आचार्य इलाहाबाद वाले जोधपुर में मुख्योपदेशक थे। उनके समझाने पर घर में रहकर ही योगाभ्यास व विद्या बुद्धि की प्रेरणा मिली, अतः पंजाब की प्राज्ञ परीक्षा पास की । फिर पंजाब की शास्त्री परीक्षा, व्याकरण विषय सहित वेदशास्त्र पढ़ने लगे।

कुछ समय बाद जोधपुर से इलाहाबाद में अपने पुत्र श्री विष्णु दयाल {एकाउन्ट आफिसर} के पास आ गये। यहाँ से बड़ौदा राजधानी जाकर सामवेद भाष्य परीक्षा उत्तीर्ण की। वहाँ से उन्हें दक्षिणा सहित प्रमाण पत्र प्राप्त किया तदन्नतर प्रयाग में महात्मा मुंशीराम से भेंट होने पर वेद पढ़ने के लिए गुरुकुल काँगड़ी में रहने का निश्चय किया। गुरुकुल में रहकर ऋग्वेद, यजुर्वेद व अथर्ववेद परीक्षा का फार्म बड़ौदा राज्य को भेजा। वहाँ से उनको उत्तर यह मिला कि दो वेद से अधिक एक बार में परीक्षा नहीं दे सकते। अतः ऋग्वेद, अथर्ववेद की परीक्षा पास की और {त्रिवेदी} उपाधि से विभूषित हुए। सामवेद परीक्षा पहले ही उत्तीर्ण की थी।

पं0 जी को शब्दों की व्युत्पत्ति के साथ पदार्थ करने की बड़ी रुचि थी। पहली पुस्तक "रुद्राध्याय" यजुर्वेद अध्याय 16 का शब्दों की व्युत्पत्ति के साथ अर्थ सहित प्रकाशित हुई। दूसरी पुस्तक "हवन मन्त्राः शब्दार्थ" व व्याकरण सिद्धि के साथ प्रकाशित हुई, जिसमें सामवेद गायन के मन्त्र स्वरांकित शब्दार्थ सहित सम्मिलित हैं। फिर मित्रों के आग्रह व स्वयं प्रेरणा से अथर्ववेद का भाष्य प्रारम्भ किया। इससे पूर्व इस वेद का सायणाचार्य का संस्कृत भाष्य प्रायः अप्रमाणित और अधूरा है। पं॰ जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती, सायणाचार्य ग्रिफिथ आदि विद्वानों की पुस्तकों का अध्ययन करके अथर्ववेद का भाष्य प्रारम्भ किया। एक-एक काण्ड करके बीसों काण्ड शब्दार्थ, उनकी व्युत्पत्ति निरुक्त व निघण्टु के प्रमाणों सहित पूराकर प्रकाशित किये। परिवार के हम बच्चे भी उनके काण्डों के पृष्ठों को ठीक-ठीक बन्धन करने में पृष्ठों की गिनती किया करते थे। अथर्ववेद भाष्य के बाद पं॰ जी ने अथर्ववेद के गोपथ ब्राह्मण का हिन्दी भाष्य किया।

इलाहाबाद के डी0ए0बी0 कालेज की नींव भी पं0 क्षेम करण दास त्रिवेदी के हाथ से रखी गई। जिसके हेडमास्टर पं0 गंगाप्रसाद उपाध्याय हुए। गुरुकुल काँगड़ी का दीक्षांत समारोह का भाषण भी दिया। वे सदा स्वदेशी वस्त्र पहनते और देशी अंगरखा पहनते थे। उनकी अंग्रेज़ी एलोपैथी चिकित्सा पर आस्था नहीं थी। उनका आदेश था कि उनका उपचार वैद्य द्वारा ही किया जाय। उनकी आज्ञा का पालन सदा किया गया।

अन्त समय तक वे योगशास्त्र शब्दार्थ व्याकरण सहित करते रहे। जयपुर में उनके अस्वस्थ्य होने पर उनके पुत्र ने वैद्य जी को बुलाया। वैद्य जी ने उनसे कहा- आप भगवान का ध्यान करें। वे बोले मैं बिल्कुल तैयार हूँ। 13 फरवरी 1993 ई0 को उन्होंने अपने पुत्र की गोद में प्राण विसर्जन किये। उनकी आयु 90 वर्ष कुछ महीने की हुई।

वेद-ज्ञान की पिपासा को शान्त करने वाली एक महान आत्मा की यही स्मृति शेष रह गई है।

मेधाविनी आर्य पुत्री शुभ्रा को बधाई



शुभ्रा रस्तोगी

मेरठनिवासी, अमरस्वातन्त्र्य-सेनानी, आर्यकुलकमल दिवाकर स्व॰ विद्यासागर एवं आर्यजगत की सुप्रसिद्ध धर्मोपदेशिका श्रीमती सावित्री रस्तोगी की सुपौत्री कु0 शुभ्रा रस्तोगी ने अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा {आई0ए0एस0} की मुख्य परीक्षा में 18वाँ स्थान प्राप्त करके मेरठ का ही नहीं पूरे देश एवं आर्य जगत का गौरव बढ़ाया है। आत्रेयी, गार्गी, मैत्रेयी जैसी आर्यविदुषियों की परम्परा में मेधाविनी पुत्री शुभ्रा ने ज्ञानाग्नि की समिधा देकर विश्व को पुनः अपने बुद्धि कौशल से सुरभित एवं चमत्कृत कर दिया है। सम्पूर्ण आर्यजगत अपनी इस मेधाविनी बेटी को हृदय से बधाई देता है एवं सूर्य चन्द्र के समान सतत यशोन्मुखी बनने का वरद, आशीर्वाद प्रदान करता है।

मेरठ के सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी परिवार से सम्बन्धित श्री महेन्द्र रस्तोगी की उदीयमान पुत्री कु0 शुभ्रा प्रारम्भ से ही कुशाग्रबुद्धि की रही है। उन्होंने बी0ए0 तथा बी0एस0सी0 में भी सर्वोच्च अंक प्राप्त करके स्वर्णपदक प्राप्त किया। कु0 शुभ्रा ने आर्य मित्र के संवाददाता को एक भेंट में बताया कि दो वर्ष पूर्व उसके छोटे भाई मुकुल की सड़क दुर्घटना में अकालमृत्यु हो गई थी। उसी समय उसने निश्चय कर लिया था कि वह आई0ए0एस0 बनकर मानवीय दृष्टिकोण से जनसेवा में अपने को अर्पित करेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0-इन्द्रराज एवं मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने कु0 शुभ्रा के यशस्वी जीवन की कामना करते हुए हार्दिक बधाई प्रेषित की है।

दो शिक्षित मुस्लिम युवतियां हिन्दु धर्म में दीक्षित

कानपुरः- आर्यसमाज मन्दिर गोविन्द नगर में दो शिक्षित मुस्लिम युवतियों को उनकी इच्छानुसार आर्य समाजी नेता एवं केन्द्रीय आर्य समाज के प्रधान श्री देवीदास आर्य ने एक शुद्धि समारोह में हिन्दु धर्म में प्रवेश कराया। श्री आर्य ने 20 एवं 21 वर्षीय इन युवतियों जो स्नातक तक शिक्षित हैं, के नाम फातमा अख्तर से रश्मि तथा अनवरी बेगम से कु0 अन्जलि रखे।

शुद्धि के पश्चात रश्मि का विवाह वैदिक रीति से श्री दिलशेर सिंह से कराया गया। दोनों युवतियों ने समारोह में श्री देवीदास आर्य के प्रति आभार प्रदर्शित [illegible] और कहा कि हिन्दू धर्म में हमको पुरुष के समान दर्जा हासिल होगा यह बात हमें पसन्द है।

संयम और जीवन

श्री वेदपथिक पं० धर्मवीर आर्य झंडाधारी,
व्याख्यान भूषण
अध्यक्ष धर्मवीर ग्रन्थमाला प्रकाशन विभाग
सराय रुहेला, दिल्ली।

संयम मानव जीवन की उन्नति का मूल मन्त्र है।
संयम, सदाचार, सन्तोष, सदविचार, शुभकर्म, साहस, सज्जनता सौम्यता, शुचिता, स्वाध्याय और सत्संग मानव जीवन का सबल सहारा है।
संयम से ही मनुष्य स्वस्थ और शतायु होते हैं।
संयमी पुरुष ही इस विशाल विश्व में कीर्तिरूपी सुयशरूपी विपुल रत्न कोष को प्राप्त करते हैं।
संयम से ही ब्रह्मचर्य व्रत की रक्षा मनुष्य करके मानव धर्म अर्थ, काम और मोक्ष सुखों का स्वामी बन पाता है।
संयम हीन मनुष्य [illegible] पृथ्वी पर भार समान है।
संयमहीन मनुष्य नाना दुःख द्वन्दों से इस संसार में शीघ्र ही भस्मसात् होते देखे जाते हैं।
संयम रूपी पारस मणि को प्राप्त करके मानव कुन्दन के समान चमक उठता है।
संयम रूपी अमृतरस को प्राप्त करके मानव सूर्य और चन्द्रमा के समान चमक उठता है।
संयम मानव जीवन का भव्यभूषण है।
संयम से ही मानव में अपरिमित-आत्म बल सकंल्प बल, और मनोबल प्राप्त होता है।
पुरुषार्थ रूपी पारसमणि को प्राप्त करना चाहते हो तो संयमी बनो।
संयम मानव जीवन का सच्चा धन है।
विवेक और वैराग्य के पावन-पराग को प्राप्त करना चाहते हो तो जीवन को संयमी बनाओ।
संयम वह रत्न है जिसे प्राप्त कर लेने पर मानव तृप्त हो जाता है।
संयम से ही मानव अपना खान-पान पवित्र बना पाता है।
संयम के बिना मानव चाहे करोड़पति हो परन्तु वह महा कंगाल है।
संयम युक्त जीवन प्राचीन काल में महर्षियों महात्माओं और युग-पुरुषों का होता था [illegible] सुयश आज दशों दिशाओं में गूंज रहा है। उन्हीं का [illegible] प्रेरक नाम इस संसार में [illegible] दिया सर्वत्र जिसने विश्व के उपकार में।
त्रिविध तापों के अभिशापों से और पापों से बचना चाहते हो तो अपना जीवन संयमित बनाकर परमात्मा के चिन्तन में लगाकर चिताओं की चिन्ता से बचो—
संयम से ही मानव जीवन को कर्तव्य पथ का बोध प्राप्त होता है;
संयम से ही मानव मानवीय गुणों से अलंकृत होकर अपने आप को बना पाता है।
संयम से ही मानव के उर-अन्तर में सदबुद्धि का उदय होता है। संयम से ही मानव जीवन में विश्व निर्माण, विश्व कल्याण की भव्य भावना का उदय होता है।
संयम के बिना मानव और दानव में कोई अन्तर नहीं है।
संयम मानव जीवन का मकरन्द-कमल है।
संयम मानव जीवन की सर्वांग उन्नति का मूलमन्त्र है।
संयम-मानव का सच्चा मित्र है।
संयम आर्य जीवन की सुवासित सुगन्ध है।
संयम से साहस पराक्रम और विपुल धन प्राप्त होता है।
संयम के बिना मन पर विजय लाख यत्न पर भी नहीं प्राप्त कर पाता है।
मनस्वी बनो, चरित्र बल के धनी बनो, संयम को अपनाओ अन्यथा जीवन में कुछ नहीं कर सकोगे।
संयम में मानव जीवन का सौन्दर्य निखरता है।
संयम के बिना मनो निग्रह नहीं होता है, और न वैदिक कर्म कांडों में मन लग पाता है। अतः संयमी बन कर शतायु बनो।
संयम और सदविचारों के रत्न कोष के बिना इस संसार में मनुष्य कोड़ी की तीन-तीन है।
संयम की सुगन्ध से मानव युगों तक के इतिहास के आकाश में चमकता है और दमकता रहता है।
संयम और साहस ही तो मानव जीवन का उज्जवल अध्याय अलौकिक अलभ्य रत्न-धन है।
संयम के विपुल धन से समृद्ध परम आनन्द और सुख शान्ति का प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बना लो, अन्यथा हाथ मल-मल कर पछताने से क्या लगेगा।
संयम से वैदिक विचार धारा की अमृत धारा को प्राप्त कर अमर पद पाओगे।
संयम से ही सुप्रति, सौरभ-सौन्दर्य की रवि-छवि की घटा से अपने जीवन को प्रकाशमान बना सकोगे।
संयम के सूत्र में ही यह विश्व का प्रबल प्रवाह प्रवाहित हो रहा है। अतः अपने जीवन को सादा संयमित बनाकर वेद पथ के पथिक बनो।
संयम वह रत्न है जिसे प्राप्त किए बिना हृदय के शूल मिटते ही नहीं हैं।
संयम से ही मानव संसार युक्त, सदाचारी, ब्रह्मचारी, धर्मचारी, वीर और विनम्र विवेक शील बन पाता है।
संयम के बिना विद्वान भी मूर्ख समान सद्गुणों से शून्य और निन्दनीय है।
उत्तम कार्यों को कमाने के लिए धर्म युक्त और वेदोक्त जीवन बनाने के लिए अपना जीवन संयमशील बनाओ।
जीवन के अन्तिम स्वांश तक आशावादी बनकर संयम का सहारा लेकर विश्व बन्धुत्व की भव्य-भावनाओं का प्रबल प्रचार प्रतिपल करते रहो।
संयम से मानव कलुषित विचारों को भस्मसात् कर देने में शीघ्र समर्थ होते देखे जाते हैं।
संयम और सदविचारों से ही मानव को परमतत्व का बोध होता है।
संयम से मानव शान्ति, सन्तोष और धैर्य एवं धर्म के साथ-साथ ही आत्मदर्शन को प्राप्त करता है।
सुख आनन्द, ऐश्वर्य एवं अमृत को प्राप्त करना चाहते हो तो अपने जीवन को संयमित बनाकर मोक्ष अवस्था का विचरण करना सीखो। यह संयम श्रुति-सुधा का सार है।
संयम और साधना एवं आराधना से मानव को इष्ट सिद्धियाँ प्राप्त होती है।
संयम से उदारता, सज्जनता, सहृदयता, विनम्रता, विवेक और वैराग्य के पावनपराग का अनुपम अनुराग प्राप्त होता है।
संयम से विश्व प्रेम का अमृत कलश प्राप्त किया जाता है।
संयम युक्त जीवन से मानव के हृदय आकाश में अनन्त प्रकाश की [illegible] ज्योतियों के [illegible] का दिव्य दर्शन होने लगता है।
सं[illegible] सुखों का [illegible] निहित है।

धर्मान्तरित आमन्त्रण

[illegible]

शतान्द से आगे—
बहुत बलन्द हौसले हैं घर बाहर के हर दुश्मन के।
पता नहीं छिनने कितने दिन बाकी हैं किसके जीवन के?
यत्र - तत्र - सर्वत्र उग्रवादी अंगड़ाई लेते हैं -
भारत मना सिसक सिसक कर कहती है घर-आँगन के।

> हर कमरे में आग लगी है, कसकर कमर बुझा जाओ,
> फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
> बिछुड़े हुए भाइयों! अपने घर को वापिस आ जाओ।

धर्म बदल कर भी तुम केवल "नौमुसलिम" कहलाते हो।
मुसलिम होकर भी अपमानित मुसलिम समझे जाते हो।
हिन्दू भी तुम रहे नहीं और मुसलिम भी तुम बने नहीं—
ना समझी से अपनी ना समझी को समझ न पाते हो।

> जिसने तुम्हें कुरान पढ़ाई, उसको वेद पढ़ा जाओ।
> फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य-धर्म को अपनाओ।
> बिछुड़े हुए भाइयों। अपने घर को वापिस आ जाओ।

xxxxx

औरों के बाप को कहाँ तक अपना बाप कहोगे तुम?
कब तक गंगा तज, गन्दे नालों में और बहोगे तुम?
चाहे जितना भटको भटको, फिर भी यह सच्चाई है-
चाहे जितना धर्म बदल लो फिर भी आर्य रहोगे तुम।

> भारत विश्व गुरु है, सारे जग को पुनः बता जाओ।
> फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
> बिछुड़े हुए भाइयों। अपने घर को वापिस आ जाओ।

xxxxxx

हमने जिसको दूध पिलाया, उसने जहर पिलाया है।
जितना भी विश्वास जमाया, उतना धोखा खाया है।
यदि संकेत समझ सकते हो तो इतना ही काफी है—
असली माँ को नकली बेटों ने खुलकर धमकाया है।

> संकट की बेला में घर की बिगड़ी बात बना जाओ।
> फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
> बिछुड़े हुए भाइयों। अपने घर को वापिस आ जाओ।

युवक: उत्तिष्ठ जाग्रत

श्री ज्ञानेश्वरार्यः एम०ए०, दर्शनाचार्य
गुजरात

मानव समाज की स्थिति देखकर आप स्वयं भी अनुभव करते होंगे कि आज का मनुष्य अज्ञान से ग्रस्त होकर अपने नित्य चैतन्य स्वरूप को भूलकर स्वयं को मात्र मांस-पिण्ड तथा इन्द्रियों का समुदाय मानकर दिन-रात क्षणिक ऐन्द्रियक विषय भोगों को भोगने के लिए, भोगसाधनों को एकत्रित करने हेतु ही चिन्तन कर रहा है, उसी के लिए योजना बना रहा है, उसी के लिए दौड़ धूप कर रहा है। इस भोग लिप्सा की दौड़ में इस अविवेकी मनुष्य ने जीवन और व्यवहार की समस्त नैतिकताओं को ताक पर रख दिया है और स्वयं पशुत्व-श्रेणी की निम्न-रेखा को भी लाँघ रहा है।

मानव जीवन में परस्पर प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, धैर्य, संयम नष्टप्राय होता जा रहा है और इनके स्थान पर हिंसा, द्वेष, असत्य, छल, कपट, अन्यायादि से संबंधित कुप्रवृत्तियाँ बढ़ती ही जा रही हैं। परिणाम स्वरूप सभी मनुष्य एक दूसरे से भयभीत हैं, शंकित हैं, दुःखी हैं। समाज में आज न धन सुरक्षित है, न तन, और न ही चरित्र।

इस पर विडम्बना यह है कि देश की प्राचीन गरिमामयी-संस्कृति, सभ्यता, रीतिनीति, इतिहास तथा आदर्श परम्पराओं से अनभिज्ञ देश के कर्णधार व्यक्तिगत तुच्छ स्वार्थों की पूर्ति के लिए राष्ट्रीय व सामाजिक हितों को योजनाबद्ध रूप से नष्ट करते चले जा रहे हैं। भविष्य में इन कार्यों के कितने ही दुष्परिणाम क्यों न निकलें, इस बात की इनको ज़रा भी चिन्ता नहीं है।

अगली बात- जिस ओर मैं आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूँगा वह है- विदेशियों के कुचक्र की। हज़ारों मील दूर से अपनी स्वर्ग समान सुख सुविधाओं को छोड़कर हमारे भारत देश में आकर, यहाँ की क्षेत्रीय भाषाओं को सीखकर, प्राणों की भी परवाह न करते हुए, बीहड़ जंगली प्रदेशों में रहने वाले निर्धन, निर्बल अशिक्षित, भोले-भाले हमारे भाईयों के बीच जाकर, सेवा-परोपकार-मानवता के नाम पर विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ प्रदान करके बदले में उनकी आत्मा को मारकर उनको विधर्मी बनाते जा रहे हैं। हज़ारों की संख्या में, दिन रात कार्य करने वाले ये विदेशी हमारी तरह ही युवक हैं ।

इसके बाद मैं आपका ध्यान- देश में पलने वाले और नित नये उत्पन्न होने वाले मत, पंथ, गुरु और सम्प्रदायों की ओर ले जा रहा हूँ, जो हज़ारों की संख्या में हैं। ये मत पंथादि, यथार्थ ईश्वर, धर्म, पूजा, भक्ति से दूर अपना ऐसा विकृत, भद्दा, अवैज्ञानिक स्वरूप अपनाये हुए हैं कि - ज्यों-ज्यों ये अपना प्रचार-कार्य बढ़ाते जा रहे हैं त्यों-त्यों बुद्धिजीवी समाज, विशेषकर देश की भावी पीढ़ी=युवाओं में, ईश्वर तथा धर्म से सम्बन्धित मान्यताओं के प्रति श्रद्धा, रुचि, घटती ही चली जा रही है। बल्कि अधिकांश पठित वर्ग इनके कार्यों से घृणा करता है और कभी-कभी तो खुलकर विरोध भी ।

ऐसी विकट परिस्थितियों में,- जबकि मानव-समाज में पतन की चरम सीमा आचुकी हो, पाश्चात्य भोगवादी सभ्यता एवं नास्तिकता का ताण्डव नृत्य दिन दूनी रात चौगुनी गति से विस्तार कर रहा हो, हम वैदिक धर्म से परिचित युवकों के लिए, क्या यह उचित है कि अपनी आँखें बन्द कर लेवें, कानों पर हाथ रखलें और अपने घरों में मूक बन कर बैठे रहें?

हज़ारों वर्षों के पश्चात्, एक महान् ऋषि ने सत्य सनातन ईश्वरीय वैदिक धर्म के आधार पर, मानव-समाज के सर्वांगीण विकास के लिए एक योजनाबद्ध कार्यक्रम की रूपरेखा अपने ग्रन्थों में प्रस्तुत की और अपने अनुयायियों से यह आशा की, कि- "वे मेरे कार्यों को पूरा करेंगे"। हम यह भी जानते हैं और विश्वास भी रखते हैं कि वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार से ही परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व में स्थायी सुख और शान्ति की स्थापना हो सकती है। अन्य किसी मत, पन्थ या सम्प्रदाय से नहीं। क्योंकि वैदिक धर्म ही ऐसा धर्म है जो सार्वभौमिक है और इसके सिद्धान्त तर्क-युक्ति-प्रमाण से सिद्ध हैं- विज्ञान की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

परन्तु एक बात ध्यान में रखने की है कि सत्य की जीत अपने आप नहीं होती, बल्कि सत्य को पुरुषार्थ करके ही जिताना पड़ता है। विदेशों से आये, अन्य मतावलम्बी युवक, जो हज़ारों की संख्या में हैं, हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यालय, शिविर, सेमीनार, प्रदर्शनी, उत्सवों, वाहनों, व्याख्यानों, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से दिन रात एक करके अपना प्रचार कार्य कर रहे हैं। दूसरी तरफ हम ईश्वरीय वाणी वेद तथा ऋषिकृत आदर्श ग्रन्थों को अपने घर की या समाज की अल्मारी में बन्द रखे हुए, उनका प्रचार-प्रसार करने हेतु सप्ताह, मास, वर्ष में एक दिन भी न लगाते हुए, तन, मन, धन का त्याग किये बिना कैसे यह विश्वास कर बैठे हैं कि विश्व भर में वैदिक धर्म का प्रचार हो जावेगा, घर-घर में यज्ञ की ज्योति जल उठेगी, वेद की ऋचाएँ गूँज जायेंगी, पाखण्ड, अन्धविश्वास, नास्तिकता का विनाश हो जावेगा, अश्लीलता, मांस, शराब, जुए का प्रचलन समाज से मिट जायेगा, संस्कृत भाषा, गुरुकुल प्रणाली, वर्णाश्रम व्यवस्था की स्थापना हो जावेगी और विश्व में वैदिक चक्रवर्ती साम्राज्य का प्रादुर्भाव हो जावेगा।

यह भी स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि पूर्व निर्दिष्ट सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल समस्याओं का समाधान अधिकाधिक डॉक्टरों, इन्जीनियरों आदि के निर्माण से नहीं होगा। इन समस्याओं का समाधान तो वेद-प्रतिपादित तथा ऋषि-निर्दिष्ट आध्यात्मिक शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार से ही होगा। ऋषियों ने स्पष्ट घोषणा की है कि जिस देश के लोग सच्चे ईश्वर व धर्म को भुला देते हैं वह मनुष्य समुदाय व राष्ट्र, पतन को प्राप्त हो जाता है।

इस वस्तु-स्थिति को समझते हुए भी, आज हम सामाजिक व राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के अपने कर्तव्य से विमुख होकर पलायन करेंगे या उपेक्षा वृत्ति अपनाये रहेंगे, तो यह निश्चित है कि मानव-कल्याण के सामाजिक कार्यों को न करने के अपराध में, ईश्वर की दृष्टि में अवश्य ही दोषी बनेंगे और दण्ड के भागी बनेंगे। आने वाली पीढ़ी हमारी अकर्मण्यता को सुन जान कर हमें कोसेगी।

केवल मात्र अपने माता-पिता या सन्तति को 2 रोटी खिला देने से ही हमारे कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती, जबकि देश के लाखों करोड़ों मानव, जो हमारे ही भाई-बहिन हैं, अज्ञान, अभाव, अन्याय से पिसते हुए, भूखी नंगी अवस्था में पशुओं से भी निकृष्ट जीवन व्यतीत कर रहे हों। यदि इनकी उन्नति के लिए हमारे हृदय में आत्म-बलिदान की कोई भावना नहीं उठती, तो कैसे हम अपने आपको मानव कह सकते हैं? "आर्य" (श्रेष्ठ) कहलाने की तो बात बहुत दूर की है ।

सैकड़ों-हज़ारों वर्षों से वेद तथा ऋषि-प्रणीत-ग्रन्थ अपने अध्येताओं की प्रतीक्षा करते-करते जीर्ण-शीर्ण हो रहे हैं, क्या हम उनको नष्ट होने देंगे? समय-समय पर आत्मा में स्फुरित होने वाले उच्चकोटि के आध्यात्मिक एवं देशोद्धार के उत्कृष्ट विचारों को कब तक दबाते रहेंगे और आत्महनन करते रहेंगे?

आओ, पारिवारिक तुच्छ स्वार्थ की भावनाओं से ऊपर उठकर, प्रतिकूलताओं का सामना करके, विभिन्न कष्टों को तपस्या मानकर सहन करते हुए, मान-अपमान को जीतकर, ऋषियों के महान आदर्शों को, सम्पूर्ण सामर्थ्य के साथ जीवन में उतारकर, ईश्वर-प्रदत्त तन-मन-धन, बल, विद्या आदि समस्त साधनों को, ईश्वर की ही आज्ञाओं की पूर्ति के लिए समर्पित करें। एक स्वर्णिम अवसर हमारे समक्ष है देश, धर्म, संस्कृति की रक्षा करने के लिए अब भी यदि नहीं जागेंगे, नहीं कुछ करेंगे, तो वृद्धावस्था में तो पश्चाताप के सिवा और कुछ भी शेष नहीं रहेगा।

शुभ विवाह

आर्यमित्र कार्यालय के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री पं० गंगाप्रसाद-त्रिवेदी और श्री पं० गंगाकृष्ण त्रिवेदी ग्राम धमनी खेड़ा (उन्नाव) की भतीजी आयुष्मती कु० अनीता (आत्मजा श्री गंगानारायण त्रिवेदी) का शुभ पाणिग्रहण संस्कार चि० उमेशचन्द्र बाजपेयी (सुपुत्र श्री-पं० भीमशंकर जी बाजपेयी) ग्राम मौझिगवाँ (उन्नाव) के साथ दि० 18 मई 1989 को धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। उपस्थित लोगों ने वर-वधू को आशीर्वाद दिया। आर्यमित्र परिवार की ओर बधाई।

- प्रबन्ध सम्पादक।

आर्यसमाज अर्जुपुर गढ़ा (फतेहपुर)

अध्यक्ष - श्री चन्द्रभूषण त्रिपाठी
मंत्री - श्री आनन्द मोहन त्रिपाठी
कोषाध्यक्ष - श्री जगदीश नारायण मिश्र

समोली सलेमपुर के हरिजनों द्वारा विराट यज्ञ तथा ब्रह्मभोज का आयोजन

समोली सलेमपुर (मेरठ) के हरिजनों द्वारा दि० 14 मई-89 से दिनांक 3 जून 89 तक चलने वाले विराट यज्ञ तथा ब्रह्म भोज का आयोजन किया गया। इसमें हरिजनों (जाटव) बन्धुओं के अलावा अन्य सवर्ण जाति के लोगों ने बड़े उत्साह तथा सौहार्दपूर्ण ढंग से भाग लिया। समारोह में 27 दिन से चलने वाले यज्ञ के ब्रह्मा ब्रह्मचारी सत्यानन्द थे। इस यज्ञ में 27 दिन तक प्रति दिन जाटव परिवारों से ही यजमान बने। इस अवसर पर स्वामी चेतानन्द जी ने भक्ति रस तथा सामाजिक उत्थान के विषय में प्रवचन किया। इस अवसर पर ब्रह्मचारी भक्तजनों तथा सात महिलाओं ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया। यहां पर सन्त रविदास मन्दिर की आधार शिला रखी गयी। इस अवसर पर रविदास संघ के महामन्त्री श्री महावीर केशरी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

दिनांक- 3 जून 89 को आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज का जाटव बन्धुओं के द्वारा भव्य स्वागत किया गया सारा जन समूह एक नवीन उल्लास तथा उमंग से भर गया था। सारा वातावरण भारत माता की जय, वैदिक धर्म की जय, आर्यसमाज अमर रहे के नारों से गुंज रहा था। प्रधान जी के पहुँचने के बाद सभाध्यक्ष के रूप में श्री सुमेर सिंह आर्य को चुना गया। तथा संचालन और संयोजन का भार श्री राजवल वर्मा को सौंपा गया। श्री सुमेर सिंह आर्य ग्राम मंसूर पुर-मुजफरनगर तथा श्री राजवल वर्मा दादरा(मेरठ) के निवासी हैं।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने हकीकतराय, स्वामी श्रद्धानन्द-महर्षि दयानन्द इत्यादि का उदाहरण दिया कि किस उपरोक्त महान् अत्माओं ने धर्म रक्षक हेतु अपने प्राणों का बलिदान किया। परन्तु किसी भी तरह के लालच यातना तथा प्राणदण्ड भय से अपना धर्मत्याग करने की अपेक्षा अपने जीवन का बलिदान करना उचित समझा, आज उसी धर्म को जर जोरु जमीन का लालच देकर खरीदा जा रहा है। यदि इस तरह हमारे हिन्दु समाज का टूटना जारी रहा तो हमारे राष्ट्र का धार्मिक आधार पर पुनः विखण्डन हो गया। हमें इस समय जातिवाद अस्पृश्यता को किसी भी कीमत पर रोकना होगा। जिससे विधर्मी राष्ट्र द्रोही हमारे राष्ट्र को तोड़ने में सफल न हो सकें। उन्होंने आग्रह किया कि बच्चे बूढ़े जवान सबको गायत्री मन्त्र का पाठ करना चाहिए।

इस अवसर पर राष्ट्र रक्षा युवा अभिनन्दन के संयोजक-जयन्त कुमार ने कहा कि जाति वाद तथा छुआछूत को आज का युवक स्वीकार नहीं करेगा। उन्होंने कहा कि जातिवाद अस्पृश्यता सामाजिक बुराई है। इन सामाजिक बुराईयों को हिन्दु धर्म (वैदिक) का रूप बताकर विधर्मी तथा देश द्रोही हिन्दु समाज में फूट तथा बैमनष्य फैला करके उनका धर्मन्तरण करने का प्रयत्न कर रहे हैं। उन्होंने कहा यदि जाटव (हरिजनों) को कहीं सताया जायगा व अन्याय किया जायेगा। तो राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उनकी पूर्ण रूप से सुरक्षा तथा सहायता करेगी ।

इस अवसर पर ओमप्रकाश जी शास्त्री पलवल (हरियाणा) ने टास के द्वारा होने वाले लाभों का विस्तृत प्रभावपूर्व चर्चा की इस अवसर पर गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल-मेरठ ब्रह्मचारियों ने वैदिक मन्त्र का सस्वर पाठ किया जाटव बन्धुओं में कुछ परिवार तो दैनिक यज्ञ करते है।
इनमें सर्व श्री फला सिंह, जगन सिंह, रामकिशन शिवचरण, विनोद कुमार केसरी, रमेशचन्द्र आर्य प्रमोद कुमार केशरी आर्य समाज सलेमपुर केही निवासी हैं। यहां पर ब्रह्म भोज के साथ इस सुन्दर भव्य प्रेरक दायक समारोह का समापन हुआ जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पं0 इन्द्रराज भी राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन के संयोजक जयन्त कुमार व अन्य अक्लमन्द व्यक्तियों ने हरिजनों के साथ ही ब्रहम भोज में भाग लिया।

नामकरण संस्कार

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के युवा कार्यकर्ता श्री-विमल कुमार एडवोकेट के कनिष्ठ भ्राता श्री आर्येन्द्र कुमार कलक्ट्रेट शाहजहांपुर के नवजात पुत्र का नामकरण संस्कार वैदिकरीति से शाहजहाँपुर आर्यसमाज के मंत्री श्री ओ3म प्रकाश बाजपेई के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने शिशु को आशीर्वाद दिया तथा चि0 अनुपम नाम रक्खा गया ।

बाल जगत

हम अपना कर्तव्य करेंगे

हम अपना कर्तव्य करेंगे।
खरे कसौटी पर उतरेंगे।
आँधी आवे, पानी बरसे --
उन्नति का एवरेस्ट चढ़ेंगे।

मेहनत से हम नहीं डरेंगे।
वीर भावना हृदय भरेंगे।
मातृभूमि के लिए जियेंगे।
मातृभूमि के लिए मरेंगे।

काम नहीं कल पर टालेंगे।
जो करना है, कर डालेंगे।
त्याग-तपस्या अपना लेंगे।
किन्तु सफलता हम पालेंगे।

जंगल नहीं बटेगा

चिड़िया - चूहा - बिल्ली - बन्दर
रहते थे जंगल के अन्दर ।
हेल - मेल से रहते आते,
साथ - साथ थे समय बिताते।
बन्दर कहता -- "अलग रहूँगा ।
मैं हिस्सा बँटवा कर लूँगा ।
और सभी यह कहते -- भाई।
मत आपस में करो लड़ाई।
एक रहे हैं, एक रहेंगे।
सुख - दुख मिल कर संग सहेंगे ।
हमें एकता अपनी प्यारी ।
एक रहेगी टीम हमारी ।
जंगल नहीं बँटेगा अपना।
जंगल एक रहेगा अपना ।

-चन्द्र पाल सिंह यादव "पयंक"
261, फेथफुलगंज, कैण्ट,
कानपुर- 208004

श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रवेश आरम्भ

आर्ष गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में शिक्षा सर्वथा निःशुल्क है। सभी प्रान्तों के बालक बिना किसी भेदभाव के यहां शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आश्रम प्रणाली यहां की उल्लेखनीय, है। वेद, वेदांग, संस्कृत, साहित्य, व्याकरण, दर्शन, उपनिषद आदि की पढ़ाई को प्रमुखता दी जाती है।

पहली से आठवीं तक यहां संस्कृत विशेष के साथ अर्वाचीन सभी विषय- इंगलिश, गणित, विज्ञान, सामाजिक ज्ञान, हिन्दी, आदि विषय पाठ्यक्रम में समाहित हैं। संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी से आर्ष पद्वति पर आधारित प्राचीन व्याकरण व वेद निरुक्त प्रक्रिया से मध्यमा, शास्त्री व आचार्य कक्षा तक की पढ़ाई व परीक्षा का समावेश है। विगत वर्षों से यहां का परीक्षा परिणाम अति उत्तम रह रहा है। सदाचारी, सुयोग्य, व मेधावी छात्रों के लिए मध्यमा, शास्त्री व आचार्य कक्षा में छात्रवृत्ति का भी प्रावधान है।
पढ़ाई एक जुलाई से प्रारम्भ होती है। नवीन बालकों का प्रवेश 27 जून से आरम्भ होता है। प्रवेश सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए मुख्याधिष्ठाता - श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़ राजस्थान, 312001
इस पते से पत्र व्यवहार या सम्पर्क करें।

आर्य समाज वृन्दावन का वार्षिक चुनाव

प्रधान	-	श्री पं0 बिहारी लाल जी
मंत्री	-	श्री वेदप्रकाश आर्य
कोषाध्यक्ष	-	श्री पं0 द्वारिका प्रसाद जी

गीता वार्ता

मेरठ 15 मई, समर्पण शोध संस्थान साहिबाबाद के अध्यक्ष स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती ने "गीता" को भक्ति द्वारा सम्पूर्ण समर्पण का संदेश वाहक बताया।

स्वामी जी मनोहर लाल ट्रस्ट सोसाइटी द्वारा संस्थापित आध्यात्मिक संस्था "आत्मचिन्तन" द्वारा आयोजित गीता वार्ता कार्यक्रम में प्रवचन कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि भक्ति का अर्थ सेवा करना है। उन्होंने कहा कि व्यक्ति की पूर्ण समर्पण की भावना से सेवा करना ही भक्ति की सही व्याख्या है।" स्वामी जी ने अपने प्रवचन में कहा कि सेवा से ही परमात्मा के दर्शन होना सम्भव हैं। इससे संसार में सर्वत्र सुख और शांति की कल्पना को साकार किया जा सकता है। स्वामी दीक्षानन्द जी ने गीता के 12वें अध्याय की मार्मिक व्याख्या कर श्रद्धालुजनों को पुलकित कर दिया। उन्होंने अपने प्रवचन में कहा कि "गीता में भक्तियोग है" तथा उन्होंने ओम् तत्सत् की वैदिक व्याख्या की। उन्होंने कहा "गीता-सेवा ग्रन्थ है, गीता समन्वय ग्रन्थ है, गीता सरस ग्रन्थ है, गीता सार ग्रन्थ है"। स्वामी दीक्षानन्द जी ने गीता की समन्वय शीलता, सरसता तथा उपादेयताओं का विस्तृत विवेचन किया। उन्होंने कहा "प्रकृति द्वारा सृष्टि प्रत्येक प्रत्येक वस्तु, जीव वनस्पति इत्यादि के मूल में एक अदृश्य सत्ता छिपी हुई है और उसी अदृश्य सत्ता की उपासना निर्गुण उपासना कहलाती है। गीता सगुण रूप निर्गुण का समन्वय कराने वाला ग्रन्थ है। परमेश्वर की कृपा सबसे मूल्यवान वस्तु है और सम्पूर्ण समर्पण के द्वारा ही प्राप्त होती है। इस क्रिया को प्राप्त कर मनुष्य सब सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाता है।"

इस कार्यक्रम में वार्ता के संयोजक श्री पं0 इन्द्रराज जी ने कहा कि "समर्पण के बिना कोई भी सांसारिक कार्य सफलता को प्राप्त नहीं होता। उन्होंने कहा "गीता मानव जन को सांसारिक तथा परमार्थिक सिद्धि प्राप्त करने की प्रेरणा देती है।"

इस कार्यक्रम का आयोजन स्वतन्त्रता सेनानी स्वर्गीय मास्टर सुन्दर लाल एवं स्वर्गीय कैलाश प्रकाश जी की पुण्य स्मृति में किया गया था। गीता वार्ता के अन्तर्गत गीता में भक्तियोग, सम्पूर्ण समर्पणथा। कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वतन्त्रता सेनानी श्री-मुसद्दी लाल ने दिवंगत आत्माओं के जीवन के संस्मरणों को उद्धृत किया। सेठ मनोहर लाल की धर्मपत्नी श्रीमती देवी ने दोनों के चित्रों पर माल्यार्पण कर श्रद्धान्जली अर्पित की। गीता मर्मज्ञ प्रोफेसर शिवानन्द ने स्वामी दीक्षानन्द का आभार प्रकट करते हुए उनके द्वारा की गई व्याख्या की प्रशंसा की। बाद में सेठ-मनोहर लाल ने "गीता वार्ता" कार्यक्रम में आए महानुभावों का आभार प्रकट किया। इसके पूर्व पं0 इन्द्रराज जी हीरालाल जी तथा श्री मती विनोद बाला का भक्ति संगीत हुआ तथा प्रिय विवेक का काव्य पाठ हुआ।

- जयन्त कुमार

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

सत्यकाम विद्यालंकार का सार्वजनिक अभिनन्दन

बम्बई, 7 जून प्रख्यात वैदिक विद्वान साहित्यकार और पत्रकार पं0 सत्यकाम विद्यालंकार का आज यहां आर्यसमाज सहित कई सामाजिक और साहित्यिक संस्थाओं की ओर से सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया। भारतीय विद्या भवन में आयोजित इस अभिनन्दन समारोह में पं0 विद्यालंकार को 51,000 की सम्मान निधि के अलावा एक सम्मान पत्र, नारियल और शाल भेंट किया गया। इस अवसर पर श्री विद्यालंकार द्वारा रचित दो पुस्तकों "द होली वेदाज" और "विजडम आफ वेदाज" का विमोचन भी किया गया। सुप्रसिद्ध उद्योगपति प्रताप सिंह शूरजी वल्लभदास, प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ओंकारनाथ आर्य और सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री सविता बेन समेत अनेक वक्ताओं ने इस अवसर पर श्री विद्यालंकार के व्यक्तित्व और कृतित्व की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

महिला मण्डल

"दहेज की अग्नि में लता जल रही है"

लता जल रही है सुमन जल रही है,
किरन भी वह देखो जली जा रही है।
वह माता बेचारी विलख भी रही है,
ये तीनों बहिन संग जली जा रही हैं।
अग्नि की वह प्रखर ज्वाल संग में इन्हें ले,
चली जा रही है गगन में सुलाने।
अभी तक ये तीनों बहिनें जो रहीं थीं,
कि देखो अचानक जली जा रहीं हैं।
पिता दौड़ कर जब वह आया है घर पे,
तो देखा कि तीनों जली जा रही हैं।
दौड़ कर कूदने को हुआ अग्नि में वह
कि लोगों ने उसको पकड़ कर कहा।
कमल तू अरे अब न नादान बन तू,
ये तीनों बहिन एक संग में जली क्यों
क्या तू इसको पता है नहीं मेरे बाबू,
कि तीनों बहिन एक संग में जली क्यों?
लता पढ़ रही थी सुमन पढ़ रही थी,
किरन भी बी0ए0 में रही पढ़ रही थी।
लताओं सुमन के लिये वर के हित में,
कमल वह बेचारा बहुत ढूंढता था।
जहाँ जा रहा था बेचारा वहाँ पर,
कि मोटर की माँगें वहाँ हो रही थीं।
लताओं सुमन देख पाई नहीं यह,
पिता की दशा जो कि पागल बनाये।
अचानक लिखा पत्र तीनों बहिन ने,
कि माता-पिता छोड़ तुम्हें जा रहीं हैं।।
लता जल रही है सुमन जल रही है।।

-रचयिता लक्ष्मीनारायण शास्त्री, साहित्यरत्न
आर्य समाज लौकहवा-गोण्डा।

आवश्यक सूचना

गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी उपदेशक विद्यालय के लिए ब्रहमचारियों एवं वानप्रस्थ बनने वालों को प्रवेश दिया जायेगा। पाठकों से निवेदन है 2 जुलाई 1989 को साक्षात्कार के लिए यहाँ आवश्य आने की कृपा करें।

-इन्द्रवेश
श्री केवलानन्द निगमाश्रम
गंज दारानगर (बिजनौर)

पर अनाम रह जाऊँ

चाह नहीं है धन वैभव में ।
डूबूं और उतराऊँ। ।
चाह नहीं है खुशियों में पलकर ।
दुखियों को ठुकराऊँ ।।
चाह नहीं है मद्यपान कर मतवाला बन
माँ का दूध लजाऊँ ।।
चाह नहीं बँध सुरा-पाश में ।
निज सुध को बिसराऊँ ।।
चाह नहीं बध आलिंगन में सुन्दरि के ।
काम - खेल रचाऊँ ।।
चाह नहीं यश, कीर्ति, सुनाम की।
बड़ा महान् कहाऊँ ।।
चाह यही है मातृभूमि की बलिवेदी पर ।
अपना शीश कटाऊँ ।।
धर्म, राष्ट्, संस्कृति की रक्षा में ।
अपना सर्वस्व गँवाऊँ ।।
चाह यही सौ बार जनम लूँ भारत में ।
ऐसा भाग्य मैं पाऊँ ।।
हर बार कटाऊँ शिर धर्म, राष्ट्र की रक्षा में।
पर अनाम रह जाऊँ ।।

- जयन्त कुमार, महामन्त्री,
राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन उ0प्र0
लखनऊ

दिव्य गुणों का उत्तम जल

जलान्जलि मन्त्र - 2

ओ३म् देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ।।

प्रभु करो यज्ञ उत्प्रेरित राह, उत्साहवान यजमान करो।
प्रभु यज्ञ सुरक्षा के द्वारा, इस याज्ञिक का उत्थान करो।।

यह दिव्य गुणों का उत्तम जल
सबका प्रेरक उत्पादक है।
यही यज्ञ को प्रेरित करता
इससे ही प्रेरित साधक है।

जल सृजन करे ऐश्वर्य वरे, वैसे याज्ञिक निर्माण करो।
प्रभु यज्ञ सुरक्षा के द्वारा, इस याज्ञिक का उत्थान करो।।

यही धरा को धारण करता
हर ओर भूमि के बहता है।
यही देह को धारण करता
पावन शरीर जल करता है।

अब सभी ओर आ जाओ जल; यजमान शुद्ध पवमान करो।
प्रभु यज्ञ की सुरक्षा के द्वारा, इस याज्ञिक का उत्थान करो।।

यह जल प्रतीक परमेश्वर का
इस वाणी का यह स्वामी है।
माधुर्य समाये वाणी में
हो इसका जो अनुगामी है।

चारों ओर जलान्जलि पाकर, प्रभु सफल यज्ञ-यजमान करो।
प्रभु यज्ञ सुरक्षा के द्वारा, इस याज्ञिक का उत्थान करो ।।

-देवनारायण भारद्वाज, आजमगढ़।

आर्य समाज प्रतापगढ़

गत 30 मई 89 मंगलवार को ग्राम- धरौली प्रतापगढ़ में ग्राम प्रधान की अध्यक्षता में वैदिक यज्ञ भगवानदीन आर्यसमाज चौक प्रतापगढ़ के द्वारा सम्पन्न हुआ। सैकड़ों पुरूषों लगभग डेढ़ सौ महिलाओं ने आहुतियाँ डालीं। पूर्णाहुति के पश्चात भगवानदीन ने बतलाया कि सृष्टि के आदि में ईश्वर ने अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरादि ऋषियों को वेदों का ज्ञान दिया। जनता पर आर्यसमाज का अच्छा प्रभाव पड़ा।

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें--

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह मई 1989 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी0पी0 भेजी जायगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी0पी0 भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नंबर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30रु0. हो गया है :

620	11923	14710	14724	14739
1232	11925	14711	14725	14740
2490	12659	14712	14726	14741
2528	12893	14713	14727	14742
2754	12895	14714	14728	14743
4412	12900	14715	14729	14744
4516	12905		14730	14745
6139	13114	14716	14731	14746
8189	13811	14717	14732	14747
9139	14272	14718	14733	14748
9652	14273	14719	14734	14749
9890	14702	14720	14735	
11598	14703	14721	14736	
11633	14706	14722	14737	
	14707	14723	14738	

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय संस्था है। प्रारम्भिक कक्षा से लेकर विद्यालंकार (बी0ए0) तक शिक्षा देने का प्रबन्ध है। विद्यालंकार में प्रवेश के लिये रजिस्ट्रार गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय से सम्पर्क स्थापित करें तथा शेष 12वीं तक आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून से ।

उच्चप्रशिक्षणप्राप्त शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिक-शिक्षा, चित्रकला, साइंस, संगीत, गृह विज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधि संस्था की आधार भूत विशेषतायें हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ। निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिये छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एवं इण्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम तथा तृतीय वर्ष में दाखिल हो सकती हैं शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। 8 जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव 10/-रु0 भेजकर नियमावली मंगा सकते हैं।

दमयन्ती कपूर
आचार्य ।

आर्यसमाज मोतिहारी (पू0 चम्पारण) का 53वाँ वार्षिकोत्सव 1 से 4 जून 89 तक धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें श्री पं0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री, श्री ब्रजपाल शर्मा कर्मठ रेडियो सिंगर आदि के प्रभावशाली व्याख्यान तथा भजन सुनकर स्थानीय जनता पर आर्यसमाज का बड़ा प्रभाव पड़ा।

- जिला आर्य सभा चम्पारण के तत्वावधान में आर्यसमाज सिसना मलदहिया में दि0 25, 26, 27 मई 89 को गायत्री महायज्ञ धूम धाम के साथ आचार्य पं0 गंगाधर शास्त्री के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ। जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

- सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर दि0 25 जून से 2 जुलाई 1989 तक डी0ए0वी0 इण्टर कालेज-बुढाना (मु0नगर) में लगाया जा रहा है, इच्छुक शिविरार्थी 21/- देकर भाग लें तथा निर्धन लोगों को निःशुल्क, आयु 12 वर्ष से 30 वर्ष तक हो। शिविर को आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी एवं पं0 देवव्रत जी सम्बोधित करेंगे।

- ऋषिपाल शास्त्री संचालक।

चुनाव

"आर्यसमाज पंखा रोड "सी" ब्लाक जनकपुरी, नई दिल्ली

प्रधान	-	श्री विद्यासागर मदान
मंत्री	-	श्री रामकृष्ण सतीजा
कोषाध्यक्ष	-	श्री हरकिशनलाल गुलाटी

वैदिक धर्मप्रचार की आवश्यकता है

उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र में वैदिक धर्म का प्रचार सन् 1932 से 1959 तक शिल्पकार बस्ती के स्व0-श्री नारायणदत्त मिश्र अल्मोड़ा कुमाँऊ, चमोली व गढ़वाल मण्डल में प्रचार करते थे। अब उनके पुत्र पं0 कपिलदेव मिश्र कर रहे हैं। उनकी नवीन योजना में स्वामी दयानन्द सरस्वती सेवा आश्रम गोमती नदी तट पर अमरकोट, रतिसेरा, जनपद-अल्मोड़ा में एक विद्यालय खोलने का विचार है, जिसमें कक्षा 1 से 5 तक के बालकों को शिक्षा दी जायेगी। प्रति रविवार को सत्संग होगा। एक पुरोहित की आवश्यकता है जो संस्कार करा सके। एक अध्यापक जो हिन्दी अंग्रेजी, संस्कृत और साइन्स पढ़ा सके। 2 योग्य प्रचारक जो दक्षतापूर्वक वैदिक धर्म का प्रचार कर सकें, 2 सेवक भी चाहिए। इन सबके निवास, भोजन का निःशुल्क प्रबन्ध होगा। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। पत्र व्यवहार करे अथवा मिलें दि0 30 जून 1989 तक।

पताः- कपिल देव मिश्र गुरुकुल आश्रम ब्रह्मावर्त (बिठूर)

(कानपुर), उ0प्र0 ।

प्रतापगढ़ आ0 स0 का चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के मंत्री ने डा0 विनय-प्रताप उपमंत्री उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ को आर्यसमाज प्रतापगढ़ के चुनाव हेतु पर्यवेक्षक नियुक्त किया है।

अतः डा0 विनय प्रताप द्वारा चुनाव की तिथि निश्चित किए जाने के पश्चात् ही चुनाव होगा, जिसकी नियमानुसार सूचना प्रकाशित की जायेगी।

आर्यसमाज [illegible] नगर मेरठ

प्रधान	-	श्री [illegible]
मंत्री	-	श्री [illegible] आनन्द
कोषाध्यक्ष	-	[illegible]

[illegible]
प्रधान

शोक समाचार

आर्यसमाज शाहजहाँपुर के [illegible] सभासद श्री [illegible] प्रसाद मिश्र एवं बलरामपुर चिकित्सालय के नेत्र सर्जन डा0 वीरेन्द्र कुमार मिश्र की मा[illegible] जी का निधन गत सप्ताह [illegible] चिकित्सालय लखनऊ के चिकित्सक कालोनी में हो गया वे कैंसर [illegible] से पीड़ित थीं [illegible] वैदिक रीति से किया गया इस अवसर पर आर्यसमाज शाहजहाँपुर में शोक संवेदना व्यक्त करके ईश्वर से दिवगंत आत्मा और शोकातुर परिवार को शान्ति प्रदान करने हेतु प्रार्थना की गई ।

शोक समाचार

अति दुख की बात है कि श्री यदुवीर सिंह आर्य कोषाध्यक्ष आर्यसमाज रौराकंला स0 मिलक जि0 रामपुर की मृत्यु अकस्मात सड़क दुर्घटना में 24-5-89 को हो गई थी यदुवीर सिंह की आयु 33 वर्ष थी आप आर्यसमाज रौराकंला के एक लगन शील नव युवक कार्यकर्ता थे। आपकी असमय मृत्यु से क्षेत्र तथा आर्य जनों में शोक छाया हुआ है।

प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत्मा को सदगति व शान्ति प्रदान करें। तथा दुखित व सन्तप्त परिवार व इष्ट मित्रों को धैर्य प्रदान करें।

आवश्यकता है

श्री आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़ की माध्यमिक कक्षाओं के लिए प्रशिक्षण प्राप्त व्याकरणाचार्य प्राचीन तथा अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, भूगोल, संस्कृत एवं हिन्दी के लिए प्रशिक्षित स्नातक स्नातकोत्तर अध्यापकों के आवेदन पत्र उनकी योग्यता विवरण सहित आमन्त्रित हैं। एक संरक्षक (रिटा0) मिलिट्रीमैन हो तो अति उत्तम जो बालकों की देखभाल कर सकें। आयु सीमा 30 से 45 वर्ष वेतन-योग्यतानुसार इच्छुक महानुभाव आवेदन करें। मुख्याधिष्ठाता-श्री आर्य गुरुकुल चित्तौड़गढ़ राजस्थान, 312001

150 ईसाई आर्य बने 125 आदिवासी युवकों को वैदिक धर्म की दीक्षा

"आदिवासी क्षेत्रों में नई क्रान्ति"

दिल्ली। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद द्वारा उड़ीसा के फूलवाणी जिले में, राइकिया ब्लाक अन्तर्गत तपोवन शांति आश्रम चौंचेड़ी में आयोजित, 1 मई से 9 मई तक के आर्य युवक निर्माण शिविर में वनवासी 35 ग्रामों के 125 युवकों ने भाग लेकर वैदिक धर्म की दीक्षा ली। शिविर के अन्तिम दिन शुद्धि यज्ञ में उस क्षेत्र के 150 ईसाइयों को शुद्ध कर आर्य बनाया गया। इस क्षेत्र के युवकों में नई क्रान्ति का सूत्रपात हुआ है।

यह शिविर उड़ीसा के सन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज के अत्यन्त पुरुषार्थ से ही सफल हुआ। फूलवाणी जिला ईसाइयों का गढ़ है परन्तु स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने उनके मुकाबले वहाँ मोर्चा लगा दिया है। प्रान्त में 18 संस्थाएं चला कर कार्य कर रहे हैं।

शिविर का उद्घाटन डा0 मुकुन्द मिश्र प्रधान उत्कल प्रादेशिक आर्य उप प्रतिनिधि सभा में किया व ध्वजारोहण स्वामी-ओमानन्द जी (हरिद्वार) ने किया। शिविर सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के प्रधान श्री जगवीरसिंह एडवोकेट के निर्देशों में संचालित किया गया। शिविर में वैदिक दर्शन व सिद्धान्तों पर बौद्धिक स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी ओमानन्द, स्वामी प्रणवानन्द, प्रो0 उमेश मंत्री व नारायण प्रधान ने दिया।

अन्तिम दिन सभी युवकों को दीक्षा दी गई, शराब, मांस, धूम्रपान छोड़ने की प्रतिज्ञायें की गई, यज्ञोपवीत धारण कराया गया 36 युवकों में अपने-अपने गांव में आर्य युवक परिषद की शाखायें चलाने और शुद्ध यज्ञ रखवाने का संकल्प लिया व चर्च को समाप्त कर आर्यसमाज मन्दिर बनवाने के व्रत धारण किये।

[illegible] कराया [illegible] 150 [illegible] यज्ञोपवीत [illegible] भविष्य [illegible] से [illegible] आजीवन [illegible] रहेंगे [illegible] के भी अपने [illegible] चलाने का प्रयत्न करेंगे। शुद्ध हुये [illegible] प्रधान स्वामी ओमानन्द [illegible] जगवीर सिंह द्वारा [illegible] किये गये।

आर्यसमाज में सम्पन्न [illegible] को पुनः प्रचलित किया जाये

[illegible] 9 मई से 1 जून 89 तक आर्यसमाज [illegible] का [illegible] वाँ वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक [illegible] गया। इस अवसर पर महात्मा [illegible] जी महा[illegible], पं0-[illegible] चन्द जी [illegible] अपने ओजस्वी वचनों से जनता [illegible] व वैदिक मान्यताओं [illegible] छाप छोड़ी।

तृतीय दिवस आर्य युवा सम्मेलन का आयोजन किया गया।

निर्वाचन सम्पन्न

आर्यसमाज, अल्मोड़ा

प्रधान	-	श्री सोम प्रकाश मल्होत्रा
मंत्री	-	डॉ0 जयदत्त शास्त्री
कोषाध्यक्ष	-	श्री पूरन सिंह

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज, अल्मोड़ा का 85वाँ वार्षिकोत्सव 28-30मई, 1989 को सम्पन्न हुआ, जिसमें आचार्या पुष्पावती, विद्यावारिधि, वाराणसी, पं0 अभयराम शर्मा, सहारनपुर आदि के प्रवचन तथा उपदेशों से जनता लाभान्वित हुई। इस अवसर पर संस्कृत रक्षा सम्मेलन तथा राष्ट्र रक्षा सम्मेलन भी आयोजित किये गये।

आर्य समाज चौक बाजार बुलन्दशहर का निर्वाचन सम्पन्न,

आर्यसमाज चौक बाजार आर्य कन्या इन्टर कालिज बुलन्दशहर का दिनांक 21-5-89 को निर्वाचन सम्पन्न हुआ जिससे दिनांक 29-5-89 को सभा द्वारा तथा दिनांक- 2-6-89 को मण्डलीय बालिका विद्यालय निरीक्षिका प्रथम मण्डल मेरठ ने मान्यता प्रदान कर दी है।

मंगल मिलन

आर्य समाज पुष्पनगर (आजमगढ़) के कर्मठ मंत्री विधाधर आर्य के द्वितीय सुपुत्र चि0 प्रदीप कुमार का शुभ विवाह दि0 14 मई 1989 को मोगलसराय (वाराणसी) में महात्मा-आर्य भिक्षु जी की भागिनेयी आयुष्मती रेनु आर्या सुपुत्री श्री-श्रीनिवास जी के साथ समारोह पूर्व पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज मोहीद्दीपुर द्वारा वेद प्रचार

आर्यसमाज मोहद्दीपुर धनौरा (मुरादाबाद) क्षेत्र की सबसे प्राचीन आर्यसमाज है। इस क्षेत्र में वेद प्रचार तथा गांव-गांव में आर्य समाज का संस्थापन कार्य इस ग्राम के प्रधान महाशय फतेहचन्द आर्य तथा क्षेत्र सरपंच महाशय भारत सिंह को श्रेय प्राप्त है। पिछले दशक में आर्य समाज मोहद्दीपुर द्वारा आठ आर्यसमाजों की स्थापना की गई।

चाचा नेहरू प्रादेशिक बाल प्रतियोगिता

मनीषा मन्दिर समाज सेवी संस्थान लखनऊ द्वारा बेसहारा बालिकाओं की प्रतिभा को उजागर करने 26, 27मई 1989 को रवीन्द्रालय लखनऊ में चाचा नेहरू प्रादेशिक बाल प्रतियोगिता के अन्तर्गत नृत्य, चित्रकला और निबन्ध की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। समारोह का शुभारंभ मनीषा मन्दिर की संस्थापक अध्यक्षा डा0 सरोजिनी अग्रवाल ने किया।

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा
जनपद- बरेली

प्रधान	-	श्री रामपाल सिंह (सिमरा बोरीपुर)
मंत्री	-	श्री पूरन लाल आर्य (जनकपुरी)
कोषाध्यक्ष	-	श्री राम कुमार वीरेश (आर्य नगर भूड़)

आर्य कन्या इं०कालेज इस्लामनगर "आर्यनगर" बदायूँ

अध्यक्ष	-	श्री दयाशंकर जी आर्य
प्रबन्धक	-	श्री रामकुमार जी आर्य
कोषाध्यक्ष	-	श्री रमेश चन्द्र जी ठेकेदार

आर्यसमाज जौरी बुजुर्ग (झाँसी)

प्रधान	-	श्री गजराज सिंह
मंत्री	-	श्री उमाशंकर
कोषाध्यक्ष	-	श्री ओ3म् प्रकाश

आर्यसमाज चिरगाँव (झाँसी)

प्रधान	-	श्री कालका प्रसाद आर्य
मंत्री	-	श्री श्रीप्रकाश नारायण सैनी
कोषाध्यक्ष	-	श्री ओमप्रकाश गुप्त

आवश्यक सूचना

समस्त विद्यालयों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य/अध्यापकों को सूचित किया जाता है कि माननीय उच्च न्यायालय के आदेशानुसार अब विद्यालयों में श्रम विभाग का हस्तक्षेप न होगा। इच्छुक व्यक्ति न्यायालय के आदेश की प्रति 6/-रु0 भेज कर प्रधान कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ से प्राप्त कर सकते हैं।

सभा मंत्री।

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि अपनी समाज के वार्षिक निर्वाचन को कृपया सम्बन्धित जिला-आर्य उपप्रतिनिधि सभा से प्रमाणित कराके ही आर्यमित्र कार्यालय में प्रकाशनार्थ भेजने का कष्ट करें।

- प्रबन्ध सम्पादक

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि जो समाजें अपने वार्षिक चित्र जिला सभा को नहीं देना चाहती हैं अथवा जिला सभायें नहीं देना चाहती हैं। वह अपने वार्षिक चित्र प्राप्तव्य धन सहित सीधे सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात नगीना (फि0पु0 झिरका) (जि0 गुड़गाँवा)

यह संस्था 25 वर्ष से गुड़गावाँ, फरीदाबाद, एवं अलवर और भरतपुर के बीच बसे मेवात क्षेत्र में लगातार वेद विचार, जलसे, सम्मेलन तथा कार्यकर्ता एवं युवकों के शिवरों पद यात्राओं व साहित्य प्रचार उपदेशकों एवं भजन मण्डलियों द्वारा ग्राम-ग्राम जा कर करती रही है।

आर्यसमाज गोठना बदायूँ का वार्षिकोत्सव दिनांक-2-6-89 से 4-6-89 तक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें वेद प्रचार मण्डल पश्चिमान्चल भाग 2 से आये हुए ब्र०-रामलाल जी, श्री प्रभात आर्य भजनोपदेशक का जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा ब्रह्मचारिणी कु0 विजय देवी को उसके भजनों से प्रभावित होकर डा0 कुँवर पाल जी ने पुरस्कार वितरित किया तथा अनेक युवक, युवतियों ने यज्ञोपवीत धारण किये।

आर्यसमाज, लक्ष्मण चौक, देहरादून का चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज लक्ष्मण चौक, देहरादून का 27वाँ वार्षिक निर्वाचन श्री देवदत्त जी बाली, प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला देहरादून की अध्यक्षता में दिनांक- 2-4-89 को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए-

प्रधान	-	श्री सत्यपाल अग्रवाल
मंत्री	-	श्री ऋषि कुमार
कोषाध्यक्ष	-	श्री महाराज सिंह

SHYAMLAL MEMORIAL EDUCATION SOCIETY'S

SHYAMLAL COLLEGE OF ENGINEERING

[Affiliated to Marathwada University]

SHYAMLAL POLYTECHNIC

[Affiliated to D.T.E. Bombay]

(Recognized by Govt. of Maharashtra)

UDGIR 413 517

THE ONLY ENGINEERING INSTITUTION RUN BY ARYA SAMAJ IN SOUTHERN INDIA

ADMISSION NOTIFICATION

Shyamlal Memorial Education Society was formed in the year 1950 in the memory of late martyr, Bhai Shyamlalji Arya. It is run by Arya Samaj, and is running several Educational Institutions, such as a High School, a Junior College, a Girls Junior College and Engineering and a Polytechnic etc., Providing a very high standard of education. **Our Engineering College has been adjudged as 'B' Grade by the High Power Technical Committee** of the State Government. Similarly, our Polytechnic is also adjudged to carry the best laboratory and workshop facilities in the State.

The Engineering College and Polytechnic will both start granting admissions to 4 Years B.E. Degree Courses and 3 Years Diploma Courses respectively in the following branches from June 1989 for the ensuing academic year 1989-90.

ENGINEERING COLLEGE

* 1. Civil Engineering
**2. Electronics Engg.
3. Production Engg.
4. Computer Engineering

POLYTECHNIC

* 1. Civil Engineering
2. Production Technology
3. Mechanical Engineering
4. Food Technology

N.B.: **ENGINEERING COLLEGE**

* Marathwada University has already recommended to the State Government the introduction of this branch in place of Construction Technology and Management.

** It is a new branch recommended by Marathwada University to the State Government for sanction to this College.

POLYTECHNIC

* This branch is likely to be changed to Electronics Branch.

ELIGIBILITY

A Candidate should have passed H.S.C. (XIIth Std./10 + 2) of Maharashtra State or equivalent examination with a minimum of 50% marks (45% for SC/ST/OBC/ of Maharashtra) in subject group of Physics, Chemistry and Mathematics for admission to B.E. Degree course and minimum 50% (45% for SC/ST/OBC of Maharashtra) marks in aggregate of S.S.C. (Xth Std./10th Std.) of Maharashtra State or equivalent for Diploma Courses.

Application forms and prospectus for Engineering and Polytechnic can be had either by post from the Office of the Principal by sending D.D./I.O.Os of Rs.60/- or from the College counter by paying Rs.50/- in Cash. Completed application forms in all reaspects should reach the Principal within 20th days of the declaration of H.S.C. and S.S.C. results respectively in Maharashtra State.

Direct Admission to second year B.E. also available for Ist Class Diploma Holders in the respective branches.

Direct admission to Second Year Diploma is also available for XII Science Technical Vocational(Appropriate Branch) stream with minimum 50% marks in aggregate.

The College is well staffed and carries full facilities for Lab. Workshop, Library, Computer Centre, Hostel, Polytechnic etc. A new hostel and new college building are fast coming up to add to the existing facilities.

Udgir town is a taluqa place in Distt. Latur of Maharashtra. It is on Hydrabad Parli Railway line and is well connected road to Hyderabad, Bidar, Gulbarga, Solapur, Latur, Aurangabad from where direct bus services are available to this town.

PRINCIPAL
SHYAMLAL COLLEGE OF ENGINEERING
UDGIR - 413 517

PRINCIPAL
SHYAMLAL POLYTECHNIC
UDGIR - 413 517

N.B.: For convenience, candidate can also contact our Director directly at the following address:

Prof. B.S. Raghuwanshi
116, Rajputana (West)
ROORKEE 247 667

आर्य मित्र सप्ताहिक
कार्यालय स्वामी-भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष 19993
पंजीकरण सं0 एल03डब्ल्यू/एन पी 79
आषाढ़ कृष्ण 7
25 जून रविवार, 1989 ई0

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आर्यजन गुणकर्मानुसार विवाह करें

आर्यसमाज के संगठन को सशक्त बनाने की दृष्टि से यह निश्चय किया गया है कि आर्यसमाज के सदस्य अपने बच्चों का जन्मपरक जाति पाँति बन्धन तोड़कर केवल आर्यसमाजी परिवार में ही गुण कर्मस्वभावानुसार विवाह करें।

आर्यमित्र इस प्रकार के वर तथा कन्याओं की सूची योग्यता तथा पते सहित निःशुल्क रूप से सहर्ष प्रकाशित करेगा। केवल विज्ञापन देने वाले को आर्यमित्र का ग्राहक बनना अनिवार्य होगा।

- सम्पादक।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा

(मीराबाई मार्ग सं0-5 लखनऊ)

द्वारा संचालित

वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय, ब्रजघाट जिला गाजियाबाद

का

सत्र उद्घाटन समारोह

तिथि - आषाढ़ कृ0 12 सं0 2046 विक्रमी
दिनांक- 30 जून-शुक्रवार को प्रातः 9 बजे
आर्यसमाज मोरी ब्रजघाट में भव्यसमारोह के साथ सम्पन्न होगा।

सादर सस्नेह सानुरोध आमन्त्रण
आपके आगमन की प्रतीक्षा

भवदीय

जीवनानन्द सरस्वती
प्राचार्य

विजय भूषण आर्य
अधिष्ठाता

स्वामी ... आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवद्दत्त ... प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रेस लखनऊ से श्री ... गुप्ता द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि॰ सं॰ २२४१/५७) आषाढ़ कृष्ण-१४, रविवार- संवत् २०४६ वि॰, दिनांक २ जुलाई १९८९ (घोषणा पत्र सं॰ ७/१२-२-७५)



इदमहमनृतात्सत्यमुपैमि --

सत्य से बढ़कर संसार में कोई उत्तम कर्म नहीं है। ऋषि ने कहा- "सत्य के ग्रहण करने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए"। साधक की साधना पूर्ण होती ही तभी है जब वह असत्य को छोड़कर सत्य को प्राप्त होता है।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०

●

प्रबन्धक सम्पादक
[illegible] पाठक
एम०ए० साहित्याचार्य

●

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य रू॰ २५१/-
वार्षिक रू॰ ३०/-
एक प्रति १.०० रू॰ मात्र

चीन में लोकतन्त्र का संघर्ष

चीन में लगभग 40 वर्ष पूर्व हुई साम्यवादी खूनी क्रान्ति ने चीनी जनता को सन्तोष प्रदान नहीं किया है। चीन के तत्कालीन तानाशाह च्यांगकाई शेक के शासनकाल में चीनी जनता भयंकर आर्थिक संकटग्रस्त हो गई थी। मँहगाई का यह हाल था कि एक जोड़ी जूता 400 रूबल में मिलता था। साबुन की एक बट्टी के लिए लाइन में खड़े होकर घंटों प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था ने जन-असन्तोष को बुलन्दी पर पहुँचा दिया था और चीन की जनसेना ने जिसे (लाल सेना) कहा जाता है, अपने जननेता माओ-त्से तुगं के नेतृत्व में खूनी क्रान्ति करके ज़िमीन्दारों, सरमायेदारों और पूंजीपतियों का सफाया कर दिया। निः सन्देह इस क्रान्ति के पीछे सोवियत रूस की कम्युनिस्ट विचारधारा काम कर रही थी और शस्त्रास्त्र भी रूस से ही प्राप्त हो रहे थे। इस क्रान्ति ने लाखों की संख्या में लोगों को मौत के घाट उतार दिया। और फिर शुरू हुआ माओ सांस्कृतिक क्रान्ति के नाम पर एक जबर्दस्त सामाजिक सुधार का अभियान जिसमें माओ चीन के अधिदेवता बन गये। जगह-जगह उनके चित्रों और विचारों की पूजा होने लगी। लेकिन चीन की नई पीढ़ी ने अब नकारात्मक रूख अपना लिया है। वह लौह-आवरण को तोड़कर खुली वायु के झोंको का रसास्वादन लेना चाहती है। उसकी प्रेरणा के स्रोत हैं स्वर्गीय हू याओ गाँग जो स्वतन्त्र विचार एवं स्वतन्त्र अर्थव्यवस्था के कट्टर समर्थक कहे जाते थे। चीन की पुर्नरचना का उनका अपना आधार था जिसके अन्तर्गत वे चीन में विदेशी पूँजी का निवेश, विश्व के समस्त देशों से सांस्कृतिक आदान-प्रदान, प्रेस की स्वतन्त्रता एवं मिश्रित अर्थव्यवस्था के पोषक थे।

उन्हीं की स्मृति में चीन के लाखों छात्रों ने शोकव्यक्त करने के लिए बीजिंग शहर के प्रमुख पार्क तिबेन मेन चौक पर हू याओ यांग के चित्र को फूलमालाओं से लाद दिया और समस्त शहर को उत्तेजक नारों से रंग दिया। चीन में इससे पूर्व किसी मृतनेता की स्मृति में इतना बड़ा विशाल प्रदर्शन कभी नहीं हुआ था। उनकी प्रमुख मांगें थीं-- चीन में मानवाधिकार स्थापित किया जाय, वैचारिक अभिव्यक्ति को पूर्ण स्वतन्त्रता दी जाय, छात्र यूनियनों को मान्यता दी जाय, शासन से भ्रष्टाचार समाप्त किया जाय और भ्रष्ट अधिकारियों का पर्दाफाश करके उनके पास अर्जित विशाल धनराशि का ब्योरा मांगा जाय। साथ ही देश में लोकतन्त्र को तुरन्त बहाल किया जाय।

चीनी प्रधानमन्त्री ने इस छात्र आन्दोलन के पीछे विदेशी हाथ होने की सम्भावना व्यक्त करते हुए गत 4 जून को मार्शल ला लागू कर दिया और सेना को आदेश देकर पार्क में एकत्रित हजारों छात्रों को मौत के घाट उतार दिया। शासन के इस घोर अदूरदर्शितापूर्ण निर्णय से देश में हिंसा का दौर फिर शुरू हो गया है। तोड़-फोड़ के साथ ही लोगों को फाँसी पर लटकाया जा रहा है और इस प्रकार एक नया लौह-आवरण वहाँ की जनता को अपने खूनी पंजे में फिर दबोचता जा रहा है।

विश्व के समस्त बुद्धिजीवियों ने छात्रों की इन मांगों का समर्थन किया है। यह मांगें किसी एक देश अथवासमुदाय की नहीं हैं। यह विश्व के मानवीय अन्तश्चेतना की स्वातन्त्रय-प्रवृत्ति की द्योतक मांगें हैं। मनुष्य स्वभाव से ही विचार-स्वातन्त्रय-प्रेमी रहा है, यह उसका जन्मजात अधिकार है। वह विचारशील प्राणी है और यही उसका अस्तित्व है। हम चीनी छात्रों के विचारों का समर्थन करते हुए वहाँ के नेताओं से निवेदन करते हैं कि विचारों को आने दीजिए उन्हें गोली से दबाइए मत। जो सर्वोत्तम विचार अथवा व्यवस्था प्रतीत हो उसे स्वीकार कर लीजिए।

यही मानवीय धर्म है। हमें विश्वास है चीन के इस लोकतन्त्र अभियान को विश्व के समस्त स्वातन्त्र्य प्रेमी जनों का समर्थन मिलता रहेगा।

प्रकाशन का ९१वाँ वर्ष

अंक - २६

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज ।
आर्यसमाज । आर्यसमाज ॥

— राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ-आषाढ़ कृष्ण-१४ संवत् २०४६ वि०, २.जुलाई-१९८९
दयानन्दाब्द १६५, सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

धूमिल न कीजिए-
नेहरू-पटेल परम्परा

सत्ता का आकर्षण सदैव से मनुष्य के हृदय में विराजमान रहा है क्योंकि इससे उसकी लोकैषणा की तीव्रतम प्यास बुझती है और उसका यश दिग्दिगन्त में उच्चरित होता है। वेदों में राजा को परमात्मा का प्रतिनिधि बताते हुए जो जो गुण परमात्मा में विराजमान हैं उन सबका समावेश राजा में होना अपेक्षित माना गया है। जिस प्रकार परमात्मा निष्पक्ष, दयालु, कर्मानुसार दण्ड देने वाला जगत का प्रशासक है उसी प्रकार राजा को भी प्रजा के साथ व्यवहारकर्त्ता होना अनिवार्य शर्त है। विश्व की प्राचीनतम राज्यव्यवस्था वंशानुगत होते हुए भी धर्मानुकूल थी। धर्मधुरीण, राजनीतिनिष्णात, ऋषि महर्षि और विद्वान पुरुषों की राज्यसभा राज्य का संचालन करती थी। राजा को उसके संचालन का उत्तरदायित्व मात्र प्राप्त था। राज्यतन्त्र और प्रजातन्त्र दोनों अविरोधी बनकर जनकल्याण में रत रहते थे और एक दूसरे के पूरक थे। मतों का योग्यतानुसार मूल्यांकन होता था। "सब धान बाईस पसेरी नहीं थे"। आज के प्रजातन्त्र में सबसे बड़ा अभिशाप प्रत्येक के मत का सम-मूल्यांकन है जिसका परिणाम हमें प्रतिनिधिसत्ता-सम्पन्न शासनों में देखने को मिल रहा है। वेद उत्तम शासन की आज्ञा देते हुए कहता है--

येन सोमादितिः पथा मित्रा वा यन्त्यद्रुहः ।
तेना नोऽवसा गहि।। -अथर्ववेद 6/7/1

हे (सोम) राजन्! (येन यथा) जिस मार्ग अथवा उपाय से (अदितिः) अखण्डित शासक राजा और (मित्राः वा) उसके प्रजाधिकारी जो प्रजा की रक्षा करने वाले हैं वे (अद्रुहः) बिना परस्पर द्रोह किए (यन्ति) गमन करते हैं (तेन) उस (अवसा) प्रजारक्षणकारी बल से (नः) हमें (आगहि) प्राप्त हो अर्थात् हम पर शासन कर ।

आज सत्ता प्रजा के हाथों में केन्द्रित है। प्रजा के प्रतिनिधि ही सत्ता के भारवाहक हैं। यदि प्रजा में नैतिकता का अभाव है तो उसके प्रतिनिधियों में उस अभाव का परिलक्षित होना अवश्यम्भावी है। हमारे देश में प्रजातान्त्रिक पद्धति से शासन चलते हुए कई दशक बीत गये हैं। जो आज़ादी हमने लम्बे संघर्ष और बलिदानों से प्राप्त की थी और जिसका लक्ष्य भारतीय नागरिकों के समग्र कल्याण से सम्बन्धित था, उसका सही ढंग से प्रयोग न होने के कारण आर्थिक कल्याण भले ही कुछ हो गया हो, पूरा भारतीय समाज भ्रष्टाचार, नैतिक-पतन और आपसी विद्वेष में आकण्ठ डूबा हुआ है। जैसे-जैसे चुनाव नजदीक आते जा रहे हैं एक दूसरे पर कीचड़ उछालने की गति तीव्रतर होती जा रही है। जनता यह समझने में असमर्थ है कि सच्चा और ईमानदार कौन है। चरित्र-हनन पराकाष्ठा की सीमा लाँघ चुका है। कल के होने वाले शासकों की इस छवि के सम्मुख हम नेहरू और पटेल की एक आदर्श परम्परा का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते हैं।

स्वतन्त्रता के पश्चात् प्रशासनिक और राजनैतिक मामलों से सम्बन्धित गम्भीर जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल में मतभेद पैदा हो गये थे। स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि दोनों ठीक से साथ साथ नहीं चल पा रहे थे। दोनों त्यागपत्र देने पर उद्यत हो गये किन्तु कभी किसी मामले पर गाली गलौज, चरित्रहनन या अपने पक्ष में अखबारों में खबर छपवाने जैसी बातें नहीं होती थीं। गम्भीर मतभेदों के बावजूद निजी सम्बन्ध मधुर और सभ्य थे। किसी प्रकार के विरोध का बाह्य जगत को आभास भी नहीं होता था। नेहरू जी ने इस्तीफ़ा देने के अपने निर्णय की जानकारी सरदार पटेल को दी और उन्हें कहा कि वे प्रधानमन्त्री पद का भार संभालें। महात्मा गाँधी को एक पत्र में नेहरू जी ने लिखा -----" व्यावहारिक कठिनाइयाँ निरन्तर पैदा हो रही हैं---- इसका अर्थ है या तो मैं छोड़ जाऊँ या सरदार पटेल इस्तीफ़ा दे दें। मैं अपनी ओर से पदभार से मुक्त होने को प्राथमिकता दे रहा हूँ। मैं चाहे सरकार में रहूँ या बाहर, एक निष्ठावान जनसेवक एवं कांग्रेसी बना रहूँगा----। जब महात्मा गाँधी ने नेहरू का यह पत्र सरदार पटेल के पास भेजा तो उन्होंने महात्मा जी को निम्नलिखित उत्तर दिया --

"प्रधान मन्त्री ने, यदि आपसी सहयोग नहीं हो सकता, तो पद छोड़ने की बात कही है। तथापि मेरी धारणा है कि यदि किसी को इस्तीफ़ा देना ही है तो वह मुझे देना चाहिए। मैं सक्रिय सेवा की आयु को बहुत पहिले पार कर चुका हूँ। प्रधानमन्त्री देश के सर्वमान्य नेता हैं और अपेक्षाकृत युवा भी। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपने लिए प्रमुख स्थान बना रखा है। मुझे कोई सन्देह नहीं कि मेरे और उनके बीच पसन्द का फ़ैसला उनके पक्ष में जाना चाहिए। अतः उनके पद छोड़ने का कोई प्रश्न ही नहीं है।

इसी बीच गाँधी जी की हत्या कर दी गई। नेहरू पटेल मतभेद कायम रहे परन्तु पारस्परिक सौहार्द अथवा व्यवहार में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं आई। यदि उनमें से किसी एक ने इस्तीफ़ा दे दिया होता तो हमारा यह नवस्वातन्त्र्य प्राप्त राष्ट्र अभूतपूर्व संकट में फँस जाता किन्तु दोनों को मुख्य चिन्ता देश का कल्याण एवं पार्टी की एकता की थी। कितनी महान परम्परा यह दोनों नेता हमें विरासत में छोड़ गये हैं। क्या राष्ट्र सेवा में समर्पित हमारे जननेता इस तथ्य को हृदयंगम करेंगे। जैसे-जैसे आम चुनाव का समय सन्निकट आता जा रहा है आक्षेप प्रत्याक्षेप का बाज़ार गर्म होता जा रहा है। चरित्रहनन का अभियान बुलन्दी पर है। जनता की आस्था प्रजातन्त्र में कम होती जा रही है। ऐसे समय में वेदमाता के उक्त पावन सन्देश का हम पालन करें और (अद्रुहः), (यन्ति) अद्रोही बनकर सत्ता को प्राप्त करें, तभी हमारे राष्ट्र का कल्याण सम्भव है।

मेरी माँ-बुद्धि विमल दो....

माँ मेरी मुझ को बुद्धि विमल दो
अन्तरतम को निर्मल कर दो
        अज्ञान तिमिर से घिरे हुए हम
        द्वेषदम्भ से सने हुए हम
कपट, ईर्ष्या, हमें जलाती
दुष्ट भावना हमें सताती
        ईर्ष्या, कपट विनाशिनि अम्बे
        जगधात्री वरदायिनि अम्बे
हरो हमारी सभी व्यथायें
कर दो शुद्ध पुनीत कथायें
        द्वेष, दम्भ को तुम्हीं विनाशो
        पापसरित से हमें बचा लो
दुष्ट भावना पनप न पाये
राग कपट कुछ पास न आये
        मन, वच, कर्म शुद्ध हों मेरे
        निर्मल पुत्र बने हम तेरे
सुनो पुकार हमारी माता
सभी दुखों से तुम ही त्राता
        वेद ज्ञान की ज्योति विमल दो
        दोष रहित यह जीवन कर दो ।

- आचार्य वेदव्रत अवस्थी,
वेदमन्दिर हिन्दनगर लखनऊ-५

अंग्रेजी हटाओ

गुलामी में हम आधे गुलाम थे, आज़ादी में हम पूरे गुलाम हो गये !

वास्तव में, भारत के संविधान में राजभाषा का अध्यायं भारतीय भाषाओं का राजतिलक करने का अध्याय नहीं है. बल्कि भारत की कोटि-कोटि जनता पर अनंतकाल तक अंगरेजी को थोपने का अध्याय है. संविधान के लागू होने के बाद देश में अंगरेजी का दबदबा बढ़ा है. अंगरेज के जमाने में केंद्रीय अफसरों के लिए क्षेत्रीय भारतीय भाषाएं सीखना आवश्यक था. जब आजादी आयी तो सिर्फ अंगरेजी जानना जरूरी रह गया. गुलामी में हम आधे गुलाम थे, आजादी में हम पूरे गुलाम हो गये.

अंगरेज के जमाने में प्रशासन में ऊपर- ऊपर अंगरेजी थी, नीचे-नीचे स्थानीय भाषाएं आजादी आयी तो ऊपर नीचे सभी तरफ अंगरेजी हो गयी. पहले वह केंद्र और प्रांत की राजधानी में थी, अब वह कस्बों और गांवों में भी पहुंच गयी. सरकारी दफ्तरों का लगभग सारा कामकाज अंगरेजी में होता है. क्या आप विश्वास करेंगे कि सरकार ने हिंदी के प्रचार- प्रसार के लिए जो संस्थाएं बनायी हैं, उनका कामकाज भी अंगरेजी में चलता है?

जब देश गुलाम था, तो करीब छह सौ राजाओं के राज क्षेत्र में ऊंचे से ऊंचे स्तर तक भारतीय भाषाएं चलती थीं. जहां तक भाषा का सवाल है, राजा और प्रजा के बीच, हुक्म और फरियाद के बीच को दीवाल नहीं थी. आजादी आयी. राज खतम हो गये. उनकी जगह जो नये राजा आये, उन्होंने अपने चारों तरफ अंगरेजी की दीवाल खड़ी कर ली. सारी जनता पर संविधान ने अंगरेजी थोप दी. जो क्षेत्र अंगरेजों के अधिकार में थे, वहां तो अंगरेजी चल ही रही थी. अब राज्यों के विलयन का नतीजा यह हुआ कि राज्यवाले इलाकों में भी अंगरेजी चल पड़ी.

भारत का प्रशासन पिछले चालीस सालों में जादू टोना बन कर रह गया. स्वाधीन भारत के राष्ट्रपति गणतंत्र दिवस पर अपना संदेश अंगरेजी में देते हैं स्वाधीन भारत के प्रधानमंत्री संसद में अंगरेजी में बोलते हैं. स्वाधीन भारत की पंचवर्षीय योजनाएं अंगरेजी में बनती हैं. स्वाधीन भारत का प्रामाणिक संविधान केवल अंगरेजी में है. स्वाधीन भारत के मंत्रिमंडल और संसद की अधिकांश कार्रवाई अंगरेजी में ही चलती है. जिन कामों का जनता से सीधा संबंध है, वे सब काम उस भाषा में होते हैं, जिसे जनता नहीं समझती.

इसीलिए आजादी के चालीस साल बाद भी गांव का एक किसान जब संसद की दर्शक दीर्घा में आ कर बैठता है, तो उसके लिए संसद का मतलब लाल पत्थरों और कुछ बड़बड़ाते हुए संसद सदस्यों के अलावा कुछ भी नहीं होता उसने कभी 'हैबियस कॉरपस रिट' का नाम नहीं सुना. पुलिस की हिरासत में अपनी मुक्ति के लिए आज भी वह उसी तरह गिड़गिड़ाता है, जिस तरह वह आज से चालीस साल पहले गुलाम भारत में गिड़गिड़ाता था. आजादी ने उसे क्या दिया? जुबान भी नहीं दी. सरकार, संसद, पंचवर्षीय योजना, न्याय, शिक्षा सब उसके लिए जादू टोना है. गुलामी के दिनों में कम से कम राजाओं की अदालतों में होनेवाली उसकी किस्मत के फैसलों को वह समझ तो सकता था. उसकी अपनी जुबान में बहस और फैसले होते थे. आजादी ने उसकी समझ पर भी अंगरेजी का परदा डाल दिया. उसके जीवन-मरण के सवाल पर अदालत में आज अंगरेजी में बहस होती है और वह बहरे की तरह खड़े-खड़े बस देखते रहता है. वह गूंगा भी है, क्योंकि अंगरेजी नहीं बोल सकता. वह उस जुबान में नहीं बोल सकता, जिसे 'बड़े लोग' समझते हैं. हिंदुस्तान के आम आदमी को इस व्यवस्था ने, इस संविधान ने गूंगा और बहरा बना दिया है. जिस देश में व्यवस्था आम आदमी को गूंगा और बहरा बनाती है, वहां लोकतंत्र कैसे आ सकता है?

मेरी राय में तो भारत की जनता और उसके प्रतिनिधियों को चाहिए कि संविधान के भाषा संबंधी भाग को फिर से पूरा लिखने की मांग करें और नये भाषा प्रावधान में अंगरेजी का कहीं नाम तक भी नहीं आये. बल्कि हो सके तो उसमें यह प्रावधान किया जाये कि एंग्लो इंडियन और विदेशियों के अलावा हिंदुस्तान में जो भी अंगरेजी का सार्वजनिक प्रयोग करेगा उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई की जायेगी सारे देश के प्रशासन को हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के द्वारा जोड़ा जाये. आवश्यक हो तो केंद्र बहुभाषी बने. संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षाएं हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से हों.

देश की व्यवस्था कुछ तथाकथित 'बड़े लोगों' के हाथों में सिकुड़ती गयी है व्यवस्था का दूध 'बड़े लोगों' का यह छोटा सा वर्ग पी रहा है. व्यवस्था के लिए, आजादी के लिए खून देनेवाले छोटे-छोटे लोगों का बड़ा वर्ग बाहर खड़ा है और इन दोनों वर्गों के बीच हमारे संविधान ने, शासन ने एक दीवाल खींच रखी है उस दीवाल का नाम है—अंगरेजी. जब तक आप इस दीवाल को नहीं फांदते, आप भी बाहर खड़े-खड़े हाथ मलते रहिए. यह सिर्फ संयोग की ही बात नहीं है कि दूध पीनेवाला वर्ग अंगरेजी के साथ जुड़ा हुआ है और खून देनेवाला भारतीय भाषाओं के साथ.दूध पीनेवाले अंगरेजी की हिफाजत करते हैं और अंगरेजी दूध पीनेवालों को सलामत रखती है.

क्या आपने कभी सोचा कि इस देश में जिन्हें मोटी-मोटी तनख्वाहें मिलती हैं,

वे कौन हैं? क्या आपने कभी ध्यान दिया कि रेल की प्रथम श्रेणी में यात्राएं करनेवाले लोग कौन हैं? क्या आपने हवाई जहाज में यात्रा करनेवाले लोगों के बारे में जानकारी निकाली? क्या आप जानते हैं कि देश की शानदार कॉलोनियों में कौन लोग रहते हैं? ये वे सब लोग हैं, जिन्हें आप अंगरेजीदां कह सकते हैं. अंगरेजी के साथ रुतबा, विशेषाधिकार, आनंद के साधन आदि जुड़े हुए हैं और भारतीय भाषाओं के साथ?

भारतीय भाषाओं के साथ, आम आदमी की जुबान के साथ गरीबी, उत्पीड़न और एक अभिशप्त जीवन जुड़ा हुआ है. इस अभिशप्त जीवन के भागीदार भारत में करोड़ों की संख्या में हैं. वे अपने अभिशापों से उबरना चाहते हैं. उनमें उबरने की क्षमता भी है, लेकिन वे यदि सचमुच उबरने लगे तो क्या होगा? कोहराम मच जायेगा. उनमें विशेषाधिकार बंटेगा, धन और धरती बंटेगी, सुविधाएं बंटेंगी रुतबा बंटेगा. ऐसा होने पर दूध पीनेवाले वर्ग के पास क्या बच रहेगा? उसमें और आम जनता में क्या फर्क रह जायेगा?

दूध पीनेवाला वर्ग अपनी चीजों को बचाना चाहता है. अपनी चीजों को बचाने का एक तरीका यह भी है कि उन्हें पाने का रास्ता जरा कठिन बना दो. पुराने जमाने में राजा अपने किले की रक्षा कैसे करता था? फौज तो रखता ही था साथ में किले को या तो ऊंची पहाड़ी पर बनवाता था या उसके चारों तरफ खाई खुदवा देता था, ताकि दुश्मन से जब सामना होगा तब होगा ही, लेकिन पहले तो ऐसी व्यवस्था की जाये कि वह किले के नजदीक ही न फटक सके.

ये जो दूध पीनेवाला वर्ग है, यह सुविधाओं के किले में पिछले दो सौ सालों से जमा हुआ है. इस किले के चारों तरफ उसने अंगरेजी की खाई खोद दी है. देश के करोड़ों नौजवान जब इस किले को देखते हैं, तो उनका पौरुष हुंकारता है लेकिन जब वे चारों तरफ अंगरेजी की भयंकर खाई को देखते हैं तो उनका दिल टूट जाता है. अंगरेजी के जरिये करोड़ों लोगों को आगे बढ़ने से रोका जाता है. बीच में ही दिल तोड़ दिये जाते हैं. हर बड़ी नौकरी के लिए, हर बड़ी तनख्वाह के लिए, हर रुतबे के लिए, हर योग्यता के लिए अंगरेजी पहली शर्त है. इसका नतीजा क्या होता है? इसका नतीजा सीधा-सादा है. जो सुविधासंपन्न वर्ग है, वह बेहद खर्चीले अंगरेजी स्कूलों में अपने बच्चों को भेज कर अंगरेजी का तोतारटंत, नकलची और सुविधाखोर वर्ग तैयार करता है. यह नया वर्ग हर बीस-तीस साल में पुराने वर्ग के स्थान पर आ धमकता है. वर्ग हितों की इस धारावाहिकता की रक्षा का बहुत बड़ा श्रेय अंगरेजी को है.

आजादी के पिछले चालीस वर्षों में इस निहित स्वार्थोंवाले वर्ग ने संविधान के उन प्रावधानों की भी जान-बूझ कर अवहेलना की है, जिनके पालन से शायद भारतीय भाषाओं का अधिक प्रचलन होता. वैसे स्वयं संविधान में अंगरेजी के लिए काफी सम्मानीय स्थान प्रदान किया गया है. मेरी राय में तो भारत की जनता और उसके प्रतिनिधियों कोचाहिए कि संविधान के भाषा संबंधी भागको फिर से पूरा लिखने की मांग करें औरनये भाषा प्रावधान में अंगरेजी का कहींनाम तक भी नहीं आये, बल्कि हो सकेतो उसमें यह प्रावधान किया जाये कि एंग्लो इंडियन और विदेशियों के अलावा हिंदुस्तान में जो भी अंगरेजी का सार्वजनिक प्रयोग करेगा उसके विरुद्ध कानूनीकार्रवाई की जायेगी. सारे देश के प्रशासन को हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं केद्वारा जोड़ा जाये. आवश्यक हो तो केंद्रबहुभाषी बने संघ लोकसेवा आयोग की परीक्षाएं हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के माध्यम से हों.

एक बार अंगरेजी की दीवाल पूरी तरह से ढही कि उत्तर और दक्षिण की भाषाएं एकमेक हुई. हिंदी का अकड़ू और तमिल का सिकड़ू अपने आप पास-पास आयेंगे. उन्हें आपस में बात तो करनी ही पड़ेगी. पहले तो अपनी अकड़ छोड़नी पड़ेगी और दूसरी को अपनी सिकुड़न आज उत्तर और दक्षिण अंगरेजी की नकली जमीन पर खड़े हो कर बात करते हैं. कल वे अपनी-अपनी जमीन पर खड़े हो कर बातें करेंगे. अधिक आत्मविश्वास होगा. एक दूसरे के असली रूप को देख सकेंगे. बात, बात से भी आगे बढ़ेगी. गल मिलव्वल होगी. दिल से दिल मिलेंगे. एक नया भारत बनेगा.

संविधान से अंगरेजी के खात्में का सबसे बड़ा परिणाम यह होगा कि एक छोटे से छोटे आदमी का सीना भी-चौड़ा होगा. अपनी जुबान के जरिये वह किसी भी बड़े से बड़े पद पर पहुंचने की बात कम से कम सोच तो सकेगा. यह जरूरी नहीं है कि अंगरेजी के हट जाने से दूध पीनेवाले और खून देनेवाले लोगों के बीच जो खाई है, वह पूरी तरह से पट जायेगी. वर्गभेद की इस खाई के निर्माण के लिए अंगरेजी के साथ-साथ कुछ दूसरे तत्व भी जिम्मेदार हैं. अंगरेजी के हटने से इतना तो जरूर ही होगा कि इस खाई को पाटने का रास्ता खुल जायेगा. और जब एक बार रास्ता खुल जाये, तो मंजिल पर पहुंचना कठिन नहीं रह जाता.

अग्नि बनाती आहुति ऊर्जा

देवनारायण भारद्वाज, आजमगढ़।

आघारावाज्याहुति मन्त्रः:-
ओ३म् अग्नये स्वाहा। इदमग्नये इदन्नमम
ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदम् सोमाय इदन्नमम ।

आज्यभागाहुति मन्त्रः:- ओं प्रजापतये स्वाहा।। इदं प्रजापतये - इदन्नमम ।।
ओं इन्द्राय स्वाहा।। इदं इन्द्राय-इदन्नमम।।

हम अग्नि सोम प्रजापति इन्द्र, सबको घृत आहुति देते हैं।
यह तेरी देन, नहीं मेरी, तेरी ही तुझको देते हैं।।
हे भौतिक अग्नि उठो ऊपर
निज तेज बिखेरो अब भू पर
बन जाय सोम यह घृत आहुति
प्रिय चन्द्र किरण को क्षण छूकर ।
प्रत्यक्ष अग्नि को यह आहुति, यह सोम चन्द्र को देते हैं।
यह तेरी देन, नहीं मेरी, तेरी ही तुझको देते हैं।।
अग्नि बनाती आहुति ऊर्जा
हो चन्द्र किरण छू सोम सृजा
निर्माण शक्ति बन कर लौटे
पाये भू पर तो पोष प्रजा।
परमेश प्रजापति को आहुति, जग प्रणानन्द हित देते हैं।
यह तेरी देन, नहीं मेरी, तेरी ही तुझको देते हैं।।
मिल जाय इन्द्र से शक्ति हमें
जग जीवन में अभिव्यक्ति हमें
सब सूर्य रूप विद्युत स्वरूप
मिल जाये अग्नि की युक्ति हमें।
ऐश्वर्य कामना से आहुति, यह इन्द्र तुम्हें हम देते हैं।
यह तेरी देन, नहीं मेरी, तेरी ही तुझको देते हैं।।

समाज में चिकित्सक की भूमिका

□ डा० स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी
आयुर्वेदाचार्य, बी.एस.सी., एम.बी.बी.एस.

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। स्वस्थ- व्यक्ति, स्वस्थ समाज की इकाई बनकर भाव प्रकट करते हुए कहता है--

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।

अर्थात्--

हे ईश सब सुखी हों, कोई न हो दुःखारी।
सब हों निरोग भगवन, धनधान्य के भण्डारी।।
सब भद्र-भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी ।।

कठोपनिषद् में मानव-शरीर की उपमा रथ से दी गई है। मानव-शरीर एक "रथ" है, जिसमें "जीवात्मा" स्वामी है, बुद्धि सारथी है और मन लगाम है। बुद्धिरूपी सारथी, मन की लगाम पकड़ कर रथ को चला रहा है और इन्द्रियाँ के घोड़े विषय रूपी गोचर-भूमि में चर चर कर अपना जीवन धारण करते हैं। मनीषीगण मन-इन्द्रियों से युक्त जीवात्मा को "भोक्ता" कहते हैं।

समाज का प्रत्येक प्राणी स्वास्थ्य का अभिलाषी है अर्थात् सुख-शान्ति चाहता है। स्वस्थ समाज में चिकित्सकों की भूमिका के अन्तर्गत दो विभाग हैं- स्वास्थ्य संरक्षण और रोगचिकित्सा। स्वास्थ्य-संरक्षण के सम्बन्ध में प्रत्येक चिकित्सक शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक स्वास्थ्य के प्रति सजग होकर रोगी को निरोगी बनाने में अपनी भूमिका निभा सकता है। मानव जीवन का अस्तित्व पंचस्थूलभूत निर्मित शरीर, दस इन्द्रियों, मन और जीवात्मा के संयोग की स्थिति बने रहने तक ही रहता है। व्यावहारिक तथा शरीर संरचना की दृष्टि से मन-मस्तिष्क ही मानसिक स्वास्थ्य तथा शारीरिक स्वास्थ्य का आधार है।

जिस प्रकार शरीर से मल निकल जाने पर शरीर में निर्मलता आती है, उसी प्रकार मन से भी काम-क्रोध-लोभ-मोह-ईर्ष्या-अहंकार आदि दोष निकल जाने से मन में निर्मलता आती है। मन आत्मा के सम्पर्क में चेतनावान् होकर क्रियाशील होता है और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ (श्रोत्र, नेत्र, जिह्वा, नासिका और त्वचा) के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करता है और फिर पाँच कर्मेन्द्रियाँ (वाक्, पाद, पाणि, पायु और उपस्थ) के सहयोग से कर्म कराता है।

जब मनुष्य बुद्धि से निर्णय नहीं लेता है, तो मन अपनी मनमानी करने लगता है। तभी इन्द्रियों के दुरूपयोग से संयम-नियम के जीवन में बाधायें आती हैं। दिनचर्या, ऋतुचर्या, खानपान आदि की गड़बड़ी से मानसिक स्वास्थ्य व शारीरिक स्वास्थ्य में बाधायें आती हैं। निर्बल शरीर में रोग के कारण बनने लगते हैं। जब शरीर में वातपित्त-कफ समान स्थिति में न हों, सप्त धातुओं (रस-रक्त-मांस-मेद-अस्थि-मज्जा और शुक्र) की उचित मात्रा न हो, जठराग्नि आदि ठीक न हों, तो शरीर से मल-मूत्र-स्वेद आदि का विसर्जन भी ठीक प्रकार से नहीं हो पता है। ऐसी स्थिति में आत्मा-मन-इन्द्रियाँ प्रसन्न कैसे रह सकते हैं? इसीलिये -- सुश्रुत के श्लोक

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः ।
प्रसन्नात्मेन्द्रिय मनः स्वस्थ इत्यभिधीयते।। के अनुसार स्वास्थ्य के लिये मनोव्यापार को नियन्त्रित करना होगा।

स्वस्थ समाज में चिकित्सक की भूमिका -- मानवजीवन के प्रारम्भ से आरम्भ होती है। और मनुष्य के स्वास्थ्य की कहानी माता के गर्भ से लिखी जाती है। जब तक सन्तान माता के गर्भ में रहती है, तब तक उसके शरीर और मन-को समुचित प्रकार ढाला जा सकता है। शारीरिक विकास हेतु गर्भ के दूसरे मास में "पुंसवन संस्कार" का विधान है- जिसके अन्तर्गत माता का आहार कैसा हो तथा औषधोपचार कैसा हो। गर्भरक्षा कैसे होगी? गर्भस्थ शिशु के मानसिक विकास हेतु चौथे मास के बाद "सीमन्तोन्नयन संस्कार" का विधान है। मन के तीन पक्ष हैं-- ज्ञान (Knowledge), संवेदन (Emotion) तथा क्रिया (Will)। स्वस्थ मन वाला मनुष्य ही समाज का स्वस्थ अंग बना करता है। गर्भावस्था में टी०टी० के टीके जच्चा-बच्चा को टिटनस से बचाते हैं।

जन्म के साथ ही शिशु, समाज का प्राणी बन जाता है। स्वस्थ-समाज, देश और विदेश के लिये वरदान है। 20वीं शताब्दी में जनसंख्या-वृद्धि के साथ स्वास्थ्य की समस्याएं बढ़ी हैं। दुर्घटनायें बढ़ी हैं। कुपोषण की समस्यायें हैं। चिकित्सकों ने महामारी तथा रोगों पर नियन्त्रण करके मृत्यु-दर को घटाने में भूमिका निभाई है। प्लेग, चेचक आदि रोगों का उन्मूलन हो गया। शिशु-मृत्यु-दर भी घटी है। जन्मदर घटाने हेतु परिवार नियोजन के कार्यक्रम में चिकित्सक लगे हुये हैं।

जनसंख्या स्थिर कैसे हो?-- हमदो, हमारे दो।" के आधार पर चिकित्सक बच्चों को निरोगी और दीर्घजीवी बनाने हेतु सेवा करते हैं। क्षयरोग से बचाव हेतु बच्चे के जन्म के तीन मास के अन्दर बी०सी०जी० का टीका लगाया जाता है। डी०पी०टी० का टीका डिफ्थीरिया-कालीखाँसी-टिटनस से बचाव हेतु 4 से 9 मास की आयु में 4 से 6 सप्ताह के अन्तराल पर लगाते हैं। पोलियो का टीका अपंगता से बचाव हेतु 4 से 9 मास की आयु के बीच 4 से 6 सप्ताह के अन्तराल से बच्चे को पिलाते हैं। मिजिल्स का टीका 9 से 12 मास की आयु के अन्दर लगाने से बच्चा खसरा रोग से बच जाता है।

रोग के तुरन्त निदान से बीमारी पर नियन्त्रण महत्वपूर्ण है। कुष्ठरोग की शीघ्र पहचान और नियमित उपचार से विकलांगता रोकी जा सकती है। 2000ई० तक कुष्ठ-उन्मूलन हेतु चिकित्सकों की भूमिका सराहनीय होगी। "सुन्न-झनक-धब्बों का भान- कुष्ठरोग की है पहचान।" कुष्ठरोग अब असाध्य नहीं है। मलेरिया की रोक-थाम का अभियान तेजी पर है। कैन्सर का उपचार प्रारम्भिक अवस्था में करना चाहिये, तभी फलप्रद होगा।

रक्तदान, नेत्रदान, गुर्दादान आदि का अभियान समाज को सुखी बना रहा है। रक्तदान से लोगों को प्राणदान मिल रहा है। चिकित्सक की परामर्श से 18 से 50 वर्ष के व्यक्ति हर तीन सप्ताह बाद 300 सी०सी० रक्तदान कर सकते हैं। रक्तदान से समाज में राष्ट्रीय एकता-अखण्डता की भावना जागृत होती है।

सन्तुलित-पौष्टिक आहार तथा मादक पदार्थों से दूर रहने की जानकारी देना भी चिकित्सकों का धर्म है। सब से अधिक 44% प्रोटीन सोयाबीन में होने का प्रचार किया गया है। मूँगफली में 31% तथा प्रत्येक दाल में 25 से 30% प्रोटीन होती है।

जब व्यक्ति मन और तन से दुरूस्त होता है, तो वह स्वस्थ कहलाता है। स्वस्थ मानव- सज्जन-मानवतावादी-शान्तिवादी के रूप में स्वस्थ समाज का अंग बनकर उमंग के साथ राष्ट्रभक्त बनता है।

जो चिकित्सक अपनी भूमि-का भला चाहता है, वह स्वस्थ समाज के निर्माण में स्वास्थ्य-संरक्षण और रोगचिकित्सा के द्वारा अपनी भूमिका निभाता है।

मेरी उत्तरान्चल प्रचार यात्रा

● स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष- वैदिक संस्थान नजीबाबाद ‹उ0प्र0›

राष्ट्र और धर्म-रक्षा अभियानान्तर्गत मेरी यात्रा 4मई को प्रारम्भ हुई। उसी दिन सायंकाल 6 बजे मैं डाडा मण्डी ‹जनपद पौड़ी› पहुंचा। डाडा मण्डी में श्री मास्टर सत्यपाल जी आर्य रहते हैं, जिनका मुझे आतिथ्य ग्रहण करना था। मास्टरजी घर पर नहीं थे, उनकी धर्मपरायण पत्नी ने अभिवादन कर ठहराया। तब तक मास्टर जी आ गये। मास्टर जी ने कहा कि हम तो गुरु जी आशा और निराशा के मध्य में झूल रहे थे, परन्तु आप आ गये, यह हमारे लिये सौभाग्य का विषय है। उन्होंने बताया कि क्योंकि परीक्षायें आज ही समाप्त हुई हैं। अतः विद्यार्थियों के आने की तो आशा नहीं की जा सकती थी अतएव कल ही 5 मई को विद्यार्थियों को उपस्थित होने के लिये आदेश प्रसारित कर दिया गया था।

1 1/2 किलोमीटर दूरी पर मटियाली ग्राम में राजकीय इण्टर कालिज है। अगले दिन 5 मई को प्रातः स्वल्पाहार के पश्चात् हम लोग मटियाली कालिज में पहुंचे। कार्यालय में उपस्थित अध्यापकों तथा प्रधानाचार्य महोदय ने हमारा स्वागत किया। प्रधानाचार्य श्री रमेशचन्द्र जी मिश्र बहुत अच्छे स्वाभव के व्यक्ति हैं। मैंने उन्हें कुछ अपनी पुस्तकें तथा सत्यार्थ प्रकाश की दो प्रतियां कालिज के लिये भेंट कीं। जन्म- जातीयता और छुआछूत विरोधी पोस्टर जो प्रधानचार्य जी को भेंट किये तो उन्होंने उन्हें प्रत्येक "श्रेणी-कक्ष" में लगा देने का आदेश किया और कहने लगे, यह तो आप का राष्ट्रीय कार्यक्रम है। सरकार को जो कार्य करना चाहिये, वह आप कर रहे हैं। हम इसमें पूरा सहयोग करेंगे।

"विद्यार्थी" विषय पर बोलते हुए विद्यार्थियों के लिये भी उपयोगी होने से मैंने रामायण- महाभारत के टी0वी0 पर आने वाले सीरियलों में आर्य शब्द के प्रयोग की चर्चा करते हुए कहा कि उत्तरान्चल में आर्य का अर्थ डोम ‹शूद्र› लगाया जाता है। यदि आर्य डोम को कहते हैं तो सभी ऋषि-मुनि और राम-कृष्ण आदि महापुरुष डोम हुए और अब हमारे यह पूर्व पुरुष डोम हुए तो फिर हम कहाँ के बच जायेंगे? मैंने कहा इसलिये मैं उत्तराखण्ड के अपने ठाकुर - ब्राह्मण बन्धुओं को कहना चाहता हूँ कि इस भ्रान्ति से बचो। आप सब आर्य हैं, आप आर्यों की सन्तान हैं और आर्यावर्त्त देश आपका आदि देश है। चाहे तो इस प्रकार कहो कि आर्य ही यहां के मूल निवासी हैं। देखो इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि यहां आर्यों से पहले कोई जाति नहीं रहती थी। यदि आर्यों से पहले कोई रहता होता तो आर्यावर्त्त से पहले भी इस देश का कोई अन्य नाम अवश्य होता।

मेरे भाषण के पश्चात् जो अध्यापक ‹संभवतः वह विद्यालय के उपाचार्य भी थे› धन्यवाद के लिये खड़े हुए, उन्होंने कहा, यह ध्रुव सत्य है कि इतिहास में इस देश का आर्यावर्त्त से पहले कोई अन्य नाम नहीं था। वह बोले कि क्योंकि मैंने इतिहास से भी एम0ए0 किया है। अतः मैं यह पूरे दायित्व के साथ कह रहा हूँ।

भाषण की समाप्ति पर चाय की व्यवस्था थी। इस अवसर पर "वर्ण जन्म से नहीं, गुण कर्म से" तथा "हिन्दु नहीं आर्य" आदि पुस्तकें अध्यापकों को भी भेंट की गयीं। प्रधानाचार्य जी ने एक सैट हमारी पुस्तकों का अपने लिये मांगा और बार-बार हमारे वापस जाने के आग्रह के पश्चात् भी डाडा मण्डी तक हमारे साथ-साथ आये। अनेक अध्यापक भी उनके साथ थे।

अपरान्ह मेरा श्री मास्टर सत्यपाल जी के श्री गृह पर ही अनेक राजकीय अधिकारियों के साथ वैदिक सिद्धान्तों पर प्रश्नोत्तर रूप से शंका-समाधान होता रहा ।

6 मई को मास्टर जी से विदा होकर मैं सतपुली नगर के लिये चल पड़ा । मार्ग में दुगड्डा नगर में बस बदलनी थी, लगभग दो घण्टे वहां लगे। उस समय का सदुपयोग साहित्य तथा पोस्टर वितरण में किया गया। कुछ व्यक्तियों से संक्षिप्त परिचय भी हुआ, जिनमें "नरेश होटल" वाले नरेशचन्द्र अग्रवाल प्रमुख हैं। होटल वालों ने पोस्टर अपने होटलों के बाहर लगवाने को लिये।

सतपुली निवासी श्री वैद्य राजाराम जी से पहले पत्र-व्यवहार था किन्तु किसी आवश्यक कार्यवश उन्हें बाहर जाना पड़ा। जब सतपुली बस से उतर कर उनके श्री गृह पर पहुंचा तो उनके पुत्र ने यथोचित सत्कार किया। भोजनोपरान्त विश्रामकर के अपरान्ह पुस्तकें वितरण तथा पोस्टर लगवाने का कार्य प्रारम्भ किया। कई दुकानदारों ने दुकानों के बाहर लगवाने को पोस्टर लिये। सतपुली पहुंचने तक विद्यालय बन्द हो चुका था अतएव सायंकाल प्रधानाचार्य महोदय के श्री गृह पर पहुंच कर विद्यालय के लिये सत्यार्थ प्रकाश की दो प्रतियां, अपनी लिखी पुस्तकें तथा कुछ पोस्टर भेंट किये।

7 मई को प्रातः राजाराम जी वैद्य भी वापस आ गये, तब उनसे सतपुली में आर्यसमाज के प्रचार विषय पर विचार विनिमय करके पौड़ी नगर के लिये यात्रा प्रारम्भ की। मध्यान्ह पौड़ी पहुंच कर स्नान-भोजन से निवृत्त होकर विश्राम किया तथा अपरान्ह श्री मदनलाल जी भूतपूर्व महाप्रबन्धक टेलीफोन के साथ नगर भ्रमण को निकला। उन्हीं के श्री गृह पर मैं ठहरा था। बड़ी श्रद्धा से उन्होंने आतिथ्य किया। श्री मदनलाल जी अत्यन्त सौम्य स्वभाव के व्यक्ति हैं और डी0ए0वी0 स्कूल पौड़ी के विद्यार्थी रहे हैं तथा पौड़ी के ही निवासी हैं। आपके चार पुत्रों में से एक वेनु राकेश कुमार एडवोकेट हैं और वही आर्यसमाज के मन्त्री हैं। किन्तु दो-एक सदस्यों के बाहर चले जाने और एक वृद्ध के स्वर्गारोहण से आर्यसमाज का कार्य शिथिल हो गया है। मन्त्री जी की माताजी के मन में आर्यसमाज के कार्य के शिथिल होने की बड़ी टीस है किन्तु नेत्र ज्योति की हीनता के कारण कुछ करने में असमर्थ हैं।

मेरा कार्यक्रम डी0ए0वी0 कालिज के प्रधानाचार्य जी को भी भेजा जा चुका था किन्तु 7 मई को रविवार था तथा 8 मई को ईद हो जाने के कारण विद्यालय की छुट्टी हो गयी अतएव भाषण नहीं हो सका। हाँ, 8 मई को पुस्तकें वितरण और जनसम्पर्क का कार्य पूरे दिन किया गया। पोस्टर लगाने का कार्य स्वयं वेनु राकेश कुमार एडवोकेट ने अपने आप करने का वचन देकर पोस्टर ले लिये। पौड़ी नगर में पुराना आर्यसमाज का भवन है और उसमें स्वामी श्रद्धानन्द सार्वजनिक पुसतकालय चलता है।

9 मई को प्रातः साढ़े आठ बजे पौड़ी से रुद्रप्रयाग के लिये प्रस्थान किया। श्री मदनलाल जी मुझे बस में बैठाकर विदा करने आये। फिर आने का आग्रह करते हुए इतने द्रवित हो गये कि उनका कण्ठ अवरुद्ध हो गया। रुद्रप्रयाग बहुत छोटी सी बस्ती है। मध्याह्न दो घण्टे का समय वहां लगाया। स्वास्थ्य तो यात्रा प्रारम्भ करनेसे के पहले ही विकृत था किन्तु सब स्थानों को सूचना दी जा चुकी थी। अतः यात्रा की। पौड़ी जाकर अधिक विकृत स्वास्थ्य में आयी। कारण यह कि पौड़ी का पानी बहुत भारी है। पूर्णतया अपच हो गया। अतिसार की स्थिति बन गयी। रुद्रप्रयाग से अपराह्न ही श्रीनगर आकर राजकीय पर्यटक आवास केन्द्र में कमरा लेकर कुछ देर विश्राम किया तथा तत्पश्चात् पुस्तकें वितरण तथा जनसम्पर्क के लिये चल दिया। उस दिन केवल गोला बाजार में ही जनसम्पर्क हो सका। अगले दिन पूर्वाह्न तो स्वास्थ्य की संभाल में ही लगा रहा। औषधोपचार निरन्तर चल ही रहा था। मध्याह्नोत्तर सर्राफा तथा बजाजा बाजार में जनसम्पर्क किया।

अलखनन्दा के तट पर श्रीनगर सुन्दर नगरी है। गढ़वाल विश्वविद्यालय इस नगर में होने से इसका महत्व बढ़ गया है। यहां पर्यटक आवास केन्द्र में रहकर ही उत्तरान्चल के विस्तृत क्षेत्र में प्रचार किया जा सकता है। एक तो विश्वविद्यालय होने से समस्त उत्तरान्चल के विद्यार्थी यहां मिलते हैं। दूसरे यातायात की दृष्टि से यह नगर उत्तर के जोशीमठ, बद्रीनाथ-केदारनाथ, टिहरी, उत्तरकाशी, गंगोत्री से जुड़ा है तो इधर पौड़ी होकर कोटद्वार और देवप्रयाग होकर ऋषिकेश तथा हरिद्वार से जुड़ा है।

- शेष पृष्ठ ८ पर

भ्रान्त निराधार प्रचार

श्री पवन कुमार
एम॰ए॰, बी॰टी॰,
सिद्धान्त शास्त्री,
लखनऊ

लखनऊ में स्वामी सनातन श्री के आश्रम विश्वभारती संस्था की ओर से एक मासिक पत्रिका प्रकाशित होती है जिसमें आर्य समाज और महर्षि स्वामी दयानन्द के सम्बन्ध में भ्रम पूर्ण प्रचार किया जाता है। श्री स्वामी सनातन श्री महर्षि स्वामी दयानन्द जी तथा आर्य समाज से आन्तरिक द्वेष भाव रखते हैं। तथा अपने कलुषित भावनाओं का प्रकाशन व्यक्तिगत साक्षात्कार में सभाओं में तथा अपनी पत्रिका में करते रहते हैं। पत्रिका में प्रकाशित कतिपय उद्धरण आर्य समाज के विद्वान 'तथा आर्य जनता की सेवा में प्रस्तुत है। **सती प्रथा कितना सच कितना झूठ** -

"माननीय प्रधान मंत्री के मंत्रिमण्डल और उनके सहयोगियों में लाबियों का बड़ा जोर है जिसकी चर्चा हर एक और सुनने में आती है। एक क्रिश्चियन लाबी तो दूसरी मुस्लिम लाबी, तीसरी आर्य समाज लाबी। चौथी लाबी फारसी। कितने प्रकार के हैं मुझे पता नहीं। (पृ0 11)

आर्य समाज लाबी के नेता तथा एक और मंत्राणीजी, जो सारे हिन्दू समाज को दोषी बताने में अत्यधिक प्रखर रही हैं। मैं उनसे एक प्रश्न पूछना चाहूँगा। मंत्राणी होने से पूर्व वे एक आर्यसमाज के महाविद्यालय की प्रिंसिपल भी रही हैं। प्रश्न पूछने से पहले मैं ऋषि दयानन्द द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में पारित नियम बताना चाहूँगा। सत्यार्थ प्रकाश- चतुर्थ समुल्लास प्रश्न संख्या 14।

प्रश्न- नियोग अपने वर्ण में होना चाहिए या अन्य वर्णों के साथ भी।

उत्तर- अपने वर्ण या अपने से उत्तम वर्णस्थ पुरूष के साथ अर्थात वैश्य, स्त्री वैश्य और क्षत्रिय और ब्राह्मण के साथ ब्राह्मणी ब्राह्मण के साथ नियोग कर सकती है। इसका तात्पर्य यह है कि वीर्य सम व उत्तम वर्ण का चाहिए। स्त्री और पुरूष की सृष्टि का यही प्रयोजन है कि धर्म से अर्थात वेदोक्तरीति से विवाह व नियोग से सन्तानोत्पत्ति करना।

मेरा पहला विनम्र प्रश्न है कि क्या आप भी इस परम्परा में, जिसे आपके पूज्य गुरु ने प्रतिपादित किया है। क्या आप इसे मानवीय मानती हैं? क्या ये राष्ट्र की नैतिकता तथा भारत के संविधान के अनुरूप हैं। यदि अनुचित न लगे तो आप अपने व्यक्तिगत विचार तथा अनुभव भी स्पष्ट करने की कृपा करें।

स्त्री और पुरूष की सृष्टि का यही प्रयोजन है कि धर्म से अर्थात वेदोक्त रीति से विवाह व सन्तान उत्पत्ति करना। सृष्टि का नियम है। यहाँ तो यह सर्वमान्य सिद्धान्त हो जायेगा असली आर्य समाजी वही होगा जिसकी माँ वेदोक्त रीति से विवाह करे पर सन्तानोत्पत्ति नियोग से ही करें। महर्षि दयानन्द द्वारा दी गई इस महान शास्त्र परम्परा के प्रति भारत का संविधान और आपकी सरकार विचार करना चाहेगी।

महर्षि दयानन्द ने प्रत्येक नारी को पति के अतिरिक्त (ग्यारह) पुरूषों से नियोग करने का उपदेश भी सत्यार्थ प्रकाश में दिया है वे भारत के संशोधन करने के लिए इस पर विचार कर लें।"

छुआछूत के विषय में भी महर्षि दयानन्द के शब्दों का उल्लेख करना चाहूँगा। जिससे भारत के संविधान को उचित रीति से संशोधित किया जा सके। (पृ0 11-12)

सत्यार्थ प्रकाश दशम समुल्लास प्रश्न संख्या-35, प्रश्न कहो जी। मनुष्य मात्र के हाथ से की हुई रसोई उस अन्न के खाने में क्या दोष है? क्योंकि ब्राह्मण से चाण्डाल पर्यन्त के शरीर हाड़, मांस चमड़े के हैं और जैसा रुधिर ब्राह्मण के शरीर में है वैसा ही चाण्डाल आदि के। पुनः मनुष्य मात्र के हाथ की पकी हुई रसोई के खाने में क्या दोष है।

उत्तर- दोष है क्योंकि जिन उत्तम पदार्थों के खाने-पीने से ब्राह्मण और ब्राह्मणी के शरीर में दुर्गन्धादि दोष रहित रज-वीर्य उत्पन्न होता है वैसा चाण्डाल और चाण्डाली के नहीं। क्योंकि चाण्डाल का शरीर दुर्गन्ध के परमाणुओं से भरा हुआ होता है वैसा ब्राह्मणादि उत्तम वर्णों का नहीं होता। इस लिए ब्राह्मणादि उत्तम वर्णों के हाथ का खाना और चाण्डालादि नीच भंगी, चमार आदि का न खाना भला जब तुमसे कोई पूछेगा कि जैसे चमड़े का शरीर माता, सास, बहन, कन्या, पुत्र बधू का है वैसा ही अपनी स्त्री का भी है। तो क्या माता आदि स्त्रियों के साथ भी स्वस्त्री के समान बर्तोगे। तब तुमको संकुचित होकर चुप हो जाना पड़ेगा। जैसे उत्तम अन्न हाथ और मुहँ से खाया जा सकता है तो क्या मलादि भी खाओगे, क्या ऐसा भी कोई हो सकता है?

आर्य समाज इस मान्यता के अनुरूप भारत के संविधान को संशोधित होना चाहिए पृ0, 12-13

अन्त में मैं माननीय जगदगुरू शंकराचार्य से तथा स्वामी अग्निवेश जी से एक प्रश्न करना चाहूँगा, कि सती प्रथा को लेकर जो जवाबी कीर्तन आज देश के अखबारों में प्रकाशित हो रहा है। उससे क्या आप यह सिद्ध करना चाहते हैं कि इस देश के बहुसंख्यक अपनी विधवाओं को जला दिया करते हैं। ऐसे पतित लोग हैं। इस प्रकार सती प्रथा को लेकर आप दोनों को एक दूसरे पर दोषा-रोपण करना, कीचड़ उछालना कितना न्याय संगत है, धर्म सम्मत है इसका औचित्य आप कैसे सिद्ध करना चाहेंगे। आप दोनों की ये चर्चा, आप दोनों के इस प्रकार शास्त्रार्थ करना एक राजनैतिक षड्यन्त्र के हथकण्डे बनना क्या भारत और भारती को कलंकित और अपमानित नहीं कर रही है। उसके सत्य स्वरूप को हटाकर एक गंदा और घिनौना स्वरूप आप विश्व में प्रकाशित क्यों कर रहे हैं आपका ऐसा करना क्या धर्म संगत, व न्याय संगत है। पृ0 15

एक दूसरे प्रश्न में स्वामी सनातन श्री जी ने लिखा है:- पृ0 9-10

आर्य समाज भी अपने को अल्पसंख्यक समुदाय मानने लगा है बहुत ऐसे कम संत हैं जिन्होंने पन्थ चलाये हो, महर्षि दयानन्द, बुद्ध और महावीर। पृ0 11 (सन्त पन्थ और नेता-)

- पृष्ठ ६ का शेष

9 और 10 मई को श्रीनगर में विकृत स्वास्थ्य में भी जितना सम्भव था, जनसम्पर्क और पुस्तकें वितरण का कार्य किया। छुट्टियाँ हो जाने से विद्यालयों में भाषण नहीं हो सके। पर्यटक आवास केन्द्र में भी विविध क्षेत्रों से आये पर्यटकों को साहित्य भेंट किया।

पर्यटक आवास केन्द्र के मुख्य प्रबन्धक महोदय को भी पुस्तकें भेंट कीं। वह युवक तो इतना प्रभावित हुआ कि एकदम घुल-मिलकर विविध विषयों पर वार्तालाप किया। सत्यार्थ प्रकाश को प्राप्त कर कहने लगा कि इस बहुचर्चित महत्वपूर्ण ग्रन्थ को मुझे प्रदान कर आपने बड़ा उपकार किया है। पहले आपकी लघु पुस्तकों को पढ़ कर तब इसे प्रारम्भ करूंगा। कुछ पोस्टर भी उन्होंने लगवाने को लिये।

स्वास्थ्य की बिगड़ती दशा के कारण टिहरी, उत्तरकाशी, भटवाड़ी और गंगोत्री के कार्यक्रम स्थगित कर 11 मई को मुझे लौट आना पड़ा। स्वास्थ्य लाभ तथा संस्थान के आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर शीघ्र ही यात्रा प्रारम्भ होगी। महर्षि दयानन्द द्वारा निर्देशित वैदिक विचारधारा से उस आर्थिक तथा शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्र में जितना-जितना जन जागरण होगा, उतना ही उतना ईसाईयत की अराष्ट्रीय गतिविधियों से भारत का यह सीमान्त क्षेत्र सुरक्षित होता जायगा।

धर्मान्तरित आमन्त्रण

-राष्ट्रीय कवि निर्भय हाथरसी

गतांक से आगे--

रूखा-सूखा जो कुछ है भाई बनकर खा सकते हो।
हरदम द्वार खुला है चाहे जब घर में आ सकते हो।
चोला थोड़ा बदल गया है आत्मा तो ज्यों की त्यों हो-
यदि कुछ खोया भी है तो उसको वापिस पा सकते हो।
अपनी खोई आन बान सम्मान सहित फिर पा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयों। अपने घर को वापिस आ-जाओ।

xxxxx

माना घर आने में कुछ कठिनाई भी हो सकती है।
माना दुर्बल मन को कुछ दुखदाई भी हो सकती है।
पुनरपि प्राप्त प्रतिष्ठा करने को श्रद्धा-निष्ठा हो तो-
लाख गन्दगी हो पर साफ सफाई भी हो सकती है।
फिर से सबको पा जाओ, ऐसे कर्तव्य निभा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयों। अपने घर को वापिस आ-जाओ।

xxxxx

विष्णु चरण से निकली गंगा, हिमगिरि पर चढ़ जाती है।
फिर धरती पर अटक-भटक कर सागर में ही आती है।
मैली से मैली होकर फिर विष्णु चरण में पहुँच गई-
हमको तो तुम में भी वह पावन गंगा दिखलाती है।
जिस सागर से निकले उस सागर में पुनः समा-जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयों। अपने घर को वापिस आ-जाओ।

अपना धर्म छोड़ने वाले पा सकते शुभ नाम नहीं।
सच्चा मान कभी दे सकते खीस्त या कि इस्लाम नहीं।
अपना धर्म-कर्म ही सब धर्मों से प्यारा होता है-
किसी मूल्य पर भी विधर्मियों से दबने का काम नहीं।
कोई तुम्हें दबाये उससे पहिले तुम्हीं दबा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य-धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयों। अपने घर को वापिस आ जाओ।

प्रवेश प्रारम्भ

निःशुल्क गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या (फैजाबाद) में नवीन ब्रह्मचारियों का जुलाई मास से प्रवेश प्रारम्भ है, जिसमें सम्पूर्णानन्द संस्कृत-विश्वविद्यालय वाराणसी की प्रथमा से आचार्य पर्यन्त तक पढ़ाने की व्यवस्था है, विषय विज्ञान, गणित, बायलोजी, आयुर्वेद, संगीत, उपदेशक विभाग होंगे। प्रवेश सम्बन्धी नियमों की जानकारी हेतु पत्राचार करें।

- वसुमित्र चतुर्वेदी कुलपति
श्री निःशुल्क गुरुकुल, महाविद्यालय-
अयोध्या (फैजाबाद)

शोक प्रस्ताव

श्री वीर बहादुर सिंह की आकस्मिक मृत्यु से हिन्दुस्तान के आकाश से हिन्दुत्व वादी सुपुत्र, रामभक्त, व्यवस्थापक, निष्ठावान, आयोजक, रूपी तारा विलुप्त हो गया है। जो समय-समय पर मुख्यमंत्री, सिंचाई मंत्री एवं संचार मंत्री के स्थान पर उ0प्र0 एवं केन्द्र में निष्ठा पूर्वक कार्यरत रहे थे। परमपिता सर्वशक्तिमान परमात्मा दिवंगत आत्मा को चिर:शांति प्रदान करें। सभा मंत्री



बाल मनोरंजन ज्ञान पहेली-२

--सत्यार्थ प्रकाशिका

सत्यार्थ प्रकाश के किसी एक ही समुल्लास या भाग से दस वाक्य उद्धृत किए जाते हैं। इनके रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु साथ में अनेक शब्द दिए गए हैं, इनमें से आपको उस शब्द का चयन करना है जिसका इस भाग में प्रयोग किया गया है। सर्वशुद्ध या निकटतम शुद्ध पूर्तिकर्ता विजेताओं के नाम सुविधानुसार प्रकाशित किए जायेंगे तथा यथावसर वैदिक साहित्य से पुरस्कृत किया जायेगा। इस प्रतियोगिता में कोई शुल्क नहीं है, किन्तु पूर्तियाँ इस अंक के प्रकाशन की तिथि से एक महीने के अन्दर यहाँ छपे रेखाचित्र को भरकर सम्पादक को भेजने पर ही मान्य होंगी।

1- जितनी क्षुधा हो ----------- कुछ न्यून भोजन करें (इससे-उससे)
2- किसी को ---------- करना योग्य नहीं (अपमान-अभिमान)
3- शिष्यों को अपने -------- से अमृत पिला रहे हैं (हाथ-साथ)
4- सत्य और मधुर वचन ही बोलें और बहुत ---- न करें (परिवाद-बकवाद)
5- वह जन्म पत्र नहीं किन्तु ------- नाम शोकपत्र रखना चाहिए (उसका-इसका)
6- तुम्हारे लड़के को ---------- दिया (बचा - बना)
7- मैं हनुमान हूँ, -------- पक्की मिठाई (लाओ-खाओ)
8- जिनसे सन्तान किसी धूर्त के ------ में न आवे (बहकाने - बहकावे)
9- -------- उनकी बन पड़ती है (अब-तब)
10- जिसके माता और पिता --------- विद्वान हों (मार्मिक-धार्मिक)

1---	स	से	X	6---	नां
2 अ	---	मा	न	7---	ओ
3---	थ	8 ब	हे	का	---
4---	---	वा	द	9---	ब
5---	स	का	10---	र्मि	क

-संयोजिका, प्रतिभा
द्वारा- प्रधाना महिला आर्यसमाज
आजमगढ़, उ0प्र0।

युवा वर्ग व महिलाओं को जागरूक बनाना आवश्यक

सरधना (मेरठ), 23 मई। यहाँ चल रहे जिलाआर्य महा सम्मेलन में आर्य युवा सम्मेलन एवं आर्य महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें युवा वर्ग व महिलाओं के जागरूक होने पर बल दिया गया।

महिलायें अपने पतन के लिए स्वयं दोषी हैं। उन्हें अपना पतन रोकने के लिए संगठित व जागरूक होना पड़ेगा। यह निष्कर्ष आर्य महिला सम्मेलन में विभिन्न वक्ताओं द्वारा प्रस्तुत विचारों से सामने आया।

मेरठ की चन्द्रकान्ता ने कहा कि महिलाओं को जागृत होना चाहिए उन्हें किंकर्तव्यविमूढ़ नहीं रहना चाहिए। वे जब तक जागृत नहीं होंगी, उन पर होने वाले अत्याचारों को नहीं रोका जा सकेगा।

उन्होंने महिलाओं का आह्वान किया कि वे अपनी सोच व कार्य करने के नजरियें में संस्कृति के अनुसार बदलाव लायें तथा देश व राष्ट्र में व्याप्त समस्याओं को हल करने में सक्रिय सहयोग दें।

राजबाला पलबल ने महिलाओं में बढ़ती रूढ़िवादिता अन्धविश्वास पर चिन्ता व्यक्त करते हुए इसे समाप्त करने तथा मूर्ति पूजा पर कड़ा प्रहार करते हुए उसका विरोध करने को कहा।

सुषमा रस्तोगी ने वर्तमान शिक्षानीति की आलोचना करते हुए कहा कि शिक्षा में व्याप्त नारी की उपेक्षा को दूर करने के लिए महिलाओं का विशेष सहयोग अनिवार्य है। किन्तु वे सहयोग देती नहीं हैं।

आशा आर्या ने कहा कि महिलाएं ही विदेशी पहनावें की ओर भाग रही हैं। जिससे अंग प्रदर्शन का रोग बढ़ रहा है।

उन्होंने महिलाओं का आह्वान किया कि वे विज्ञापनों में अश्लील माडलिंग तथा नग्न प्रचार का जमकर विरोध करें तभी समाज में उनका स्थान बन सकता है।

मैना देवी ने परिवार के प्रति महिला के दायित्वों का बोध कराते हुए उन्हें पूर्ण रूप से पालन का शान्ति एवं सुख से परिवार के भरण पोषण का आह्वान किया।

सम्मेलन में शैलबाला, शकुन्तला आर्या, शकुन्तला-गोयल, सावित्री रस्तोगी, ने भी विचार व्यक्त किये।

आर्य युवा सम्मेलन का विचारणीय विषय "विघटनकारी शक्तियाँ एवं युवा वर्ग" था।

मेरठ जनपद आर्यवीर दल के अध्यक्ष सौदान सिंह आर्य ने युवा शक्ति को राष्ट्र हित के कार्यों में सम्पूर्ण रूप से समर्पित होने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि युवाओं को उचित मार्ग दर्शन हेतु आर्य वीर दल का प्रचार व प्रसार बढ़ाया जाये।

पलबल से आई राजबाला शर्मा ने कहा कि जब भी हिन्दुस्तान पर खतरों के बादल मंडराये उनको युवाओं ने ही दूर किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि निराश होने की कोई बात नहीं है। भारत की शान में कभी भी यहाँ के युवा धब्बा नहीं आने देंगे।

बिजनौर से पधारे जयनारायण "अरूण" ने उपनिषद् के एक वाक्य "उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्नि बोधत" का उल्लेख करते हुए कहा कि अच्छे युवकों को खोजकर समाज में आगे लाया जाये।

उन्होंने कहा कि जब-जब समाज अथवा देश में क्रान्ति आयी उसमें युवकों का मुख्य सहयोग रहा। अतः हमें क्रान्तिकारी युवकों को खोजकर उन्हें संगठित करना चाहिए।

भजनोपदेशक शोभाराम प्रेमी ने युवा का मूल अर्थ समर्थ बताया जिसका सम्बन्ध उम्र से नहीं होता।

माया प्रकाश त्यागी ने कहा कि जो व्यक्ति गतिशील है वही युवा है। साथ ही जो परिश्रम से थकता नहीं व उम्र से कोई सम्बन्ध नहीं रखता वही युवा है। उन्होंने कहा कि आज की विघटनकारी शक्तियाँ विभिन्न रूपों में राजनैतिक आदि के सहारे युवा को पथ भ्रष्ट कर रही हैं। इनमें बाह्य शक्तियाँ भी शामिल हैं।

उन्होंने कहा कि आज आन्तरिक शक्तियाँ भी तरह-तरह के युवा दल बनाकर अपने स्वार्थ में प्रयोग कर रहे हैं। हमें सावधान रहना चाहिए, वे युवाओं का भला नहीं कर सकते उन्होंने आर्यसमाज के वर्तमान कार्य को कम बताये हुए आह्वान किया कि समाज भी मिशनरी ढंग से कार्य करें जिससे धर्मान्तरण रुक सके।

उन्होंने जीवन में ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों को क्रियान्वित करने पर बल दिया। सम्मेलन में संयोजक व संचालक जयन्त कुमार पाण्डेय पूर्व पादरी थे। इस अवसर पर डा०-रमेश आर्य, धर्मपाल आचार्य गुरुकुल ततारपुर, बाबू ओमदत्त, पं० इन्द्रराज आदि ने विचार व्यक्त किये।

पिछड़े वर्ग के उत्थान हेतु सिख मिल जुल कर काम करें।

मवांना 29 मई। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रदेशीय अध्यक्ष पं० इन्द्रराज ने सिखों से आह्वान किया है कि पिछड़े वर्ग की समस्याओं के समाधान हेतु वे आर्यसमाज के साथ मिलकर काम करें।

इसके पूर्व आर्य समाज के नेता पं० इन्द्रराज ने सरधना में घोषणा की थी कि नगला हरेरू के सिखों का शुद्धिकरण किया जायगा। इस पर सिख नेताओं व कुछ आर्य समाजी नेताओं ने उसका विरोध व्यक्त किया था।

पं० इन्द्रराज ने कहा कि नगला हरेरू में हो रहे सामवेद परायण महायज्ञ का ध्येय देश में हो रहे धर्म परिवर्तन के जबरन प्रयासों को रोकना है। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज इस बात में विश्वास नहीं रखता कि किसी की मजबूरी से अनुचित लाभ उठाया जाये।

नगला हरेरू के ग्रंथी सरदार पृथ्वी सिंह गुरुद्वारा प्रबन्ध समिति के प्रधान सरदार धर्म सिंह, सिख प्रतिनिधि बोर्ड के सरदार कमलजीत सिंह के बयानों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि उक्त तीनों सिख नेताओं ने आर्यसमाज के इतिहास को नहीं पढ़ा, जबकि आर्यसमाज ने पिछड़े वर्ग के लिए बहुत कार्य किया है।

उन्होंने कहा कि जन्मगत जातिवाद, छुआछूत, ऊँच-नीच के भेदभाव को समाप्त करने में आर्यसमाज की बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यदि कोई समस्या किसी की है तो हर धार्मिक संगठन का कर्तव्य है कि उसको निःस्वार्थ होकर दूर करें, परन्तु उसका धर्म परिवर्तन करके समस्याओं का समाधान करना पहले दर्जे का स्वार्थ है। कोई व्यक्ति किसी धार्मिक ग्रन्थ को पढ़कर उससे प्रभावित होकर यदि मत परिवर्तन करता है तो उसे पूरा अधिकार है। परन्तु किसी को मजबूरियों से अनुचित लाभ उठाकर उसका धर्म परिवर्तन करना या करवाना धार्मिक अपराध है।

आर्य नेता ने कहा कि प्राचीन काल से ही यह प्राणी मात्र के कल्याण का माध्यम रहा है। उस यज्ञ में किसी के प्रति विद्वेष की बात नहीं है परन्तु यदि उसमें किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न की गई तो उसे सहन नहीं किया जायेगा।

पं० इन्द्रराज ने कहा कि यह बड़े दुख का विषय है कि पंजाब में खालिस्तान के निर्माण के लिए उग्रवादियों द्वारा नित्य प्रति निर्दोष हिन्दुओं एवं राष्ट्रवादी सिखों के खून से होली खेली जा रही है। परन्तु कभी भी इन तीनों महानुभावों ने इसके विरोध में एक शब्द भी नहीं कहा। इस समय हिन्दू सिख एकता की आवश्यकता है परन्तु पिछड़े वर्ग को अनुचित ढंग से धर्म परिवर्तन करके इसमें पलीता लगाया जा रहा है। मेरठ शहर में खालिस्तान कमाण्डो फोर्स की ओर से नागरिकों को मारने की धमकियों के पत्र मिल रहे हैं। जिससे समस्या सुलझाने के स्थान पर उलझती जा रही है। आज समय की पुकार है कि हम सब मिलकर राष्ट्रीय हित में कार्य करें।



महिला मण्डल

अग्नि परीक्षा

मेरा तो बस एक धर्म है, पूजूँ प्रिय की इच्छा।
पर प्रियवर। बोलो तुम कब तक लोगे अग्नि परीक्षा।।
तेरी सहभागिन है अभागिन,
कितनी घृणित नियति है।
तुझको जीवन देने वाली,
कितनी विवश पतित है।।
दे दे प्रेम, तूँ ले ले चाहे जितनी कठिन परीक्षा।
पर प्रियवर। बोलो तुम कब तक लोगे अग्नि परीक्षा।।
तपे हुए कुन्दन को भी -
तुम ठुकरा दोगे वन में।
नहीं स्वप्न में भी सोचा था,
ऐसा अपने मन में ।।
वह मण्डप, वह यज्ञ कुण्ड, वह सप्त पदी की शिक्षा।
पर प्रियवर। बोलो तुम कब तक लोगे अग्नि परीक्षा।।
धर्मराज जूए में हारे,
चीर दुशासन खींचे।
औ पारथ चुप चाप सहेगा,
निज ओठों को भींचे।।
अब दहेज की बलि वेदी की बलि, हूँ मैं,- प्रभु इच्छा।
पर प्रियवर। बोलो तुम कब तक लोगे अग्नि परीक्षा।।
कौन । कृष्ण बन इस -
दहेज दानव का अन्त करेगा।
निश्चय ही अमरत्व प्राप्त कर
वह अमरत्व वरेगा।।
वह भगवान बनेगा देकर मुझको जीवन भिक्षा।
पर प्रियवर। बोलो तुम कब तक लोगे अग्नि परीक्षा।।
यह शरीर जल जाय प्रभो,
ना मुझको कोई दुख है।
ममता रहे बची मेरी तो,
मुझको सब कुछ सुख है।।
परिणीति यही प्रेम, ममता की। धन्य है तेरी इच्छा।
पर प्रियवर। बोलो तुम कब तक लोगे अग्नि परीक्षा।।

-पारस नाथ मिश्र
धनीपुर-जंगीगंज, वाराणसी

आर्यसमाज इटावा (मुजफ्फरनगर) में सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी का भव्य स्वागत

दि0- 18 मई 1989 को श्री पं0 इन्द्रराज जी सभा प्रधान, श्री जयन्त कुमार जी पाण्डेय, श्री कैलाशचन्द्र जी बाल्मीकि आर्य एवं तीन ब्रह्मचारियों सहित जब आर्यसमाज इटावा (मु0 नगर) के वार्षिकोत्सव पर पहुँचे, तो उनका भव्य स्वागत किया गया। श्री जयन्त कुमार जी पाण्डेय ने युवकों का आह्वान करते हुए युवकों को राष्ट्ररक्षा युवा आन्दोलन में सक्रिय सहयोग देने की प्रेरणा की ताकि देश को खण्डित होने से बचाया जा सके।

सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने अपने भाषण में कहा कि यदि स्वामी दयानन्द जी महाराज का हमने कहना न माना और जन्मगत जाति-पाति को मानते रहे तो देश टूट जायगा। और विदेशी षड्यन्त्र सफल हो जाऐंगे। इस समय धर्म परिवर्तन का कारण जातिवाद और विदेशी धन का प्रलोभन है। आर्य वीर दल के शिविरों द्वारा युवा शक्ति जब संगठित होगी तो सच्चे अर्थों में तभी देश की रक्षा हो सकेगी।

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, विद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य भेजने की कृपा करें--

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह मई 1989 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें अन्यथा उनके नाम वी0पी0 भेजी जायगी। अगर समय के अन्दर रुपया न आया तो वी0पी0 भेजने के लिए हमें बाध्य होना पड़ेगा। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नंबर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30रु0 हो गया है :

620	11923	14710	14724	14739
1232	11925	14711	14725	14740
2490	12659	14712	14726	14741
2528	12893	14713	14727	14742
2754	12895	14714	14728	14743
4412	12900	14715	14729	14744
4516	12905		14730	14745
6139	13114	14716	14731	14746
8189	13811	14717	14732	14747
9139	14272	14718	14733	14748
9652	14273	14719	14734	14749
9890	14702	14720	14735	
11598	14703	14721	14736	
11633	14706	14722	14737	
	14707	14723	14738	

शोक समाचार

श्री ब्रह्मानन्द आर्य प्रचारक सभा के चाचा ग्राम कुठिला (हरदोई) के पं0 रामस्वरूप जी के निधन का समाचार पढ़कर बहुत दुःख हुआ। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

- सभा मंत्री।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र

नारायण स्वामी भवन, ५- मीराबाई मार्ग, लखनऊ

दूरभाष : ४५६६३

पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी-७८

आषाढ़ ६ । -१४

२ जुलाई रविवार, १९८९ ई०

नगर आर्यसमाज, आगरा

प्रधान - श्री मान सिंह परमार
मंत्री - श्री ओमप्रकाश गुप्त
कोषाध्यक्ष - श्री पुरुषोत्तम देव शर्मा

आर्यसमाज फरीदपुर बरेली

प्रधान - श्री सुजान सिंह चौहान
मंत्री - श्री बलवीर देव आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री रामजीवन अग्रवाल

- आर्यसमाज शाहजहाँपुर तथा स्त्री आर्यसमाज [रजिस्टर्ड] का 94वाँ वार्षिकोत्सव 12,13,14,15 अक्टूबर 1989 को समारोह पूर्वक मनाया जायगा।

आर्यसमाज बिहारीगढ़

प्रधान - अनन्तराम आर्य
मन्त्री - डा0 दर्शनलाल आर्य
कोषाध्यक्ष - मा0 समय सिंह आर्य

आर्यसमाज धानाभवन [मुजफ्फरनगर]

प्रधान - श्री महावीर प्रसाद जी
मंत्री - श्री महेन्द्र कुमार जी
कोषाध्यक्ष - श्री राजकुमार जी

स्त्री आर्य समाज धामावाला, देहरादून

प्रधाना - श्रीमती राज खरबन्दा
मंत्राणी - श्रीमती लीलावती तलवार
कोषाध्यक्ष - श्रीमती शान्ती कटियार

आर्य समाज विकास नगर [देहरादून]

प्रधान - श्री काशीराम जी
मंत्री - श्री धनंजय गुप्त जी
कोषाध्यक्ष - श्री योगेन्द्र कुमार जी

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) आषाढ़ शुक्ल-६ रविवार- संवत् २०४६ वि०, दिनांक ९ जुलाई १९८९ (घोषणा पत्र सं.७/२८-२-८५)



यो जागार तमृचः कामयन्ते
यो जागार तमु सामानि यन्ति

-- सामवेद

जो जागरूक हैं उनको वेद फलीभूत होते हैं, वेद की ऋचाएं उनका वरण करती हैं साम-वचन उन्हें प्रेरणा देते हैं। और जो आलसी पुरुषार्थ रहित हैं उनको कुछ भी ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१.०० रू. मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - २७

मित्रात् अभयम् अमित्रात् अभयम्

शत्रु और मित्र दोनों ही जीवन के साथी हैं। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, परिवार नहीं, समाज नहीं, राष्ट्र नहीं जो इन दोनों से घिरा हुआ न हो। दोनों मनुष्य को प्रेरणा देने वाले हैं। एक की प्रेरणा में सहानुभूति और प्यार छिपा रहता है। दूसरे की प्रेरणा में विद्वेष और विष की आग। जीवन में परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं और स्वार्थ जब टकराते हैं तो शत्रु मित्र बन जाते हैं और मित्र शत्रु बन जाते हैं। स्थायित्व किसी ओर नहीं है। अतीत का इतिहास इसका साक्षी है। वेद में कहा गया है- "हम मित्र की दृष्टि से समस्त प्राणियों को समीक्षा करें" - **"मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षामहे"**। यहाँ समीक्षा शब्द पर ध्यान देना चाहिए। समीक्षा का अर्थ यह नहीं है कि हम सबको मित्र समझ बैठें। जो शत्रु है उससे यथावत् व्यवहार करना ही होगा पर दृष्टि मित्रवत् रहेगी। आर्यसमाज के सातवें नियम पर दृष्टिपात कीजिए "सबसे **प्रीतिपूर्वक यथायोग्य** व्यवहार करना चाहिए। यथायोग्य व्यवहार में प्रीति का सम्पुट लगा हुआ है। दण्ड और दया इसीलिए एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं। परमेश्वर दयालु भी है और न्यायकारी भी। दोनों में विरोधाभास किंचित् भी नहीं है। दोनों विशेषणों पर जरा विचार कीजिए। दयालु शब्द लुत् प्रत्यय से बना है जिसका अर्थ होता है दया के स्वभाव वाला, और न्यायकारी शब्द बनता है-- न्यायं करोति असौ सः- अर्थात् जिसको न्याय करना पड़े, डुकृञ् करणे धातु लगी हुई है।" He has to do according to our karm" अर्थात न्यायकारी होने के कारण हमारे दुष्कर्मों का उसे दण्ड देना पड़ता है, चाहता वह नहीं है प्रमाण उसके उपदेश हैं।

ऊपर शीर्षक में दिए हुए मन्त्रांश पर भी विचार कीजिए। यहाँ मित्र और अमित्र दोनों से अभय रहने की प्रार्थना की गई है। इसका भाव भी यही है कि पता नहीं कब मित्र अमित्र बन जाय और अमित्र मित्र बन जाय। इसलिए **हे प्रभो! हमें दोनों से अभय रखना, सतर्क भी रखना।** अभय और सतर्क अन्योन्याश्रित हैं। जो सतर्क नहीं है वह अभय रह ही नहीं सकता। आगे और स्पष्ट किया है **"ज्ञातात् अभयम् परोक्षात् अभयम्"** जो ज्ञात हैं उनसे भी और जो परोक्ष हैं उनसे भी। कभी-कभी पता नहीं चलता शत्रु कौन है, मित्र कौन है- **"विषरस भरा कनकघट जैसे"**। प्रत्यक्ष में कुछ परोक्ष में कुछ। इसलिए अभय की प्रार्थना में सतर्कता अन्तर्निहित है।

लंका हमारा पड़ोसी है, मित्र है, आज से नहीं लाखों साल से। इक्ष्वाकुवंश के **दिग्विजयी राम** की परम्परा से जुड़ा हुआ है। **रावण** ने जो कुछ किया था उसका दण्ड देना अनिवार्य था पर प्यार में कमी नहीं आई। हमने उस राज्य को अपना उपनिवेश नहीं बनाया। लंकाविजय के पश्चात् राम लंका का राज्य **विभीषण** को सौंप देते हैं। अनुपम उदाहरण है प्रीतपूर्वक व्यवहार करने का। आज वही लंका हमें आँखें दिखा रही है। कुछ समय पूर्व शान्ति के लिए हमें याद किया गया था, आवाज़ लगाई गई थी और हम वहाँ पहुँच गये। शान्ति की द्विपक्षीय शर्तों के अनुसार शान्ति के लिए प्रयत्नशील भी हैं, प्राण दे रहे हैं, धन दे रहे हैं, सब प्रकार से शान्ति स्थापित करने में लगे हुए हैं तो वहाँ के राष्ट्रपति रणसिंघे-प्रेमदास यकायक अल्टीमेटम दे देते हैं-

भारतीय शान्ति सेना वापस चली जाय नहीं तो --------- ।

अब हमें देखना है यह मित्रता अमित्रता में क्यों परिणित होती जा रही है।

- आचार्य इन्द्र ।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
— राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ - आषाढ़ शुक्ल-६ संवत् २०४६ वि. ९, जुलाई १९८९, दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

चीन की टूटती हुई दीवार...

तोड़ दो यह क्षितिज, मैं भी देख लूं
उस पार क्या है -- -महीयसी महादेवी

और सचमुच----- 4 जून को चीन की वह दीवार टूट ही गई। बहुत सुना करते थे साम्यवाद शान्ति का मसीहा बनकर आया है। भूखों नंगों को रोटी देने आया है, बिलखतों के आँसू पोंछने आया है। जिस दिन सारी दुनियाँ लाल हो जायेगी शान्ति और अमन का साम्राज्य हो जायेगा। समता, समानता और बन्धुता के नगाड़े बजने लगेगें। पर टूटी हुई दीवार के उस पार क्षितिज से उठते हुए शोलों के बीच हमने कुछ और ही देखा है। राष्ट्र के नौनिहाल सोए पड़े हैं, आवाजें बन्द हो गई हैं, स्पन्दन समाप्त है। सर्वहारा क्रान्ति का बिगुल मरघट की भयावनी आवाज में कुछ और ही दास्तान सुना रहा है--

"बहुत शोर सुनते थे पहलू-में-दिल-का,
जो चीरा तो कतरये खून निकला।

हमने तो साम्यवाद की बड़ी-बड़ी प्रेरक, शान्तिदायक मनोमुग्धकारी कहानियाँ सुनी थीं। ऐसा लगने लगा था मानो संसार से शोषण, अत्याचार, विषमता और भ्रष्टाचार का समाधान एक ही व्यवस्था में निहित है और वह है "साम्यवाद" "कम्यूनिज्म्" जहाँ सम्पत्ति पर व्यक्ति का नहीं राज्य का अधिकार है। जहाँ शरीर पर आत्मा का नही शरीर के मालिक का अधिकार है। वाणी पर स्व का नही टेप का अधिकार है। जहाँ लोहे की दीवारें हैं कोई चूं नही कर सकता। लोहे के कोड़ों से सोते हुए अजगरों को मार मार कर पुरूषार्थी बनाया जाता है। कोई किसी की सम्पत्ति पर ऐश आरामं नही कर सकता। मेहनतकश बनकर रोटी हासिल होगी। कुआँ खोदकर पानी पीना पड़ेगा। और आज सारा संसार अर्धशताब्दी से ऊपर हुए लाल रंग के नीचे हँसिया हथौड़ों से छिली, हथेलियों पर शान्ति के महकते हुए फूल उगने की बाट जोह रहा था कि 4 जून को दीवार टूट गई---- नही नही उन्होंने तोड़ दी जिन्होंने दीवार बनाई थी। और फिर दीवार के उस पार उठते हुए शोलों के बीच उन्हीं को जलते हुए हमने देखा है-

दिल के फफोले जल उठे सीने के दाग से।
उस घर को आग लग गई घर के चिराग से॥

कैसा आश्चर्य है। चीन की दीवार जैसा अनोखा आश्चर्य ।

अब साम्यवाद नकारा साबित हो गया है, खोखला साबित हो गया है। उसने मानव की आत्मा को कैद करके रख दिया था। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के अधिकार को कुचलकर रख दिया था। क्यों? - इसलिए कि वह वैदिक साम्यवाद नही था, उसमें अध्यात्म का पुट नही था। उसमें "समानो मन्त्रः समितिः" की गूजंती हुई ऋचाएं नही थीं। क्योंकि उसमें यौनसम्बन्धों की पवित्रता नही थी। क्योंकि उसमें वैदिक समता समानता के सूत्र नही थे। क्योंकि उसमें आत्मा और परमात्मा के मधुरमिलन का स्वर्गीय संगीत नही था। वहाँ तो भौतिकवाद है केवल भौतिकवाद। अथ भौतिकवाद इति भौतिकवाद। इसलिए हमें सोचना होगा बार बार सोचना होगा इस व्यवस्था पर जो विश्व की लगभग आधी आबादी को अपने रंग में रंग चुकी है।

हम पूंजीवाद के समर्थक नही हैं। हम किसी वाद के न समर्थक हैं न विरोधी। हम तो वैदिकवाद के समर्थक हैं, घोर समर्थक क्योंकि उसमें मानव कल्याण के लिए वह सब कुछ है जो इन सबमें नही है। हम अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के समर्थक हैं क्योंकि वाणी और बुद्धि हमें दी ही इसीलिए गई है।

वेद कहता है- मानव चेतना बन्दीगृह के कारागार में घुटघुट कर जीने के लिए नही है। यही तो उसकी अन्तश्चेतना है, मानवत्व का प्रथम और अन्तिम लक्षण है। जब मैं सन्ध्या करता हूँ तो उससे ---- "ओं वाक्-वाक्" कहकर प्रार्थना करता हूँ - ओ मेरे वाणी के देवता! मुझे वाणी देना- स्वतन्त्र, निष्पक्ष, शहद की तरह मीठी, बाँसुरी से अधिक सुरीली और हृदय के अन्तरतम को छूने वाली मर्मस्पर्शवाहिनी। वह वाणी नहीं जो पशुओं को दी है जिसमें न कोई स्वर है, न राग है, न सन्देश है जो वाणी पाकर भी विचारों में, अभिव्यक्ति में कैद हैं अनन्तकाल से अनन्तकाल तक कैद में ही रहेंगे। पर शाबास इन्सान! तुझे तो उसने वह वाणी दी है जिसने आज तक हजारों-हजार विचार संसार को दे दिये। विचारों की अनन्त राशि बिखेर कर तू अनन्त विचारों का अनन्तधनी हो गया है। यही तो करिश्मा है तेरे अस्तित्व का। यही तेरी वाणी का सौन्दर्य है जिसने विचारों की नसेनी लगाकर क्षितिज के उस पार को छू लिया है जहाँ और कोई प्राणी पहुँच ही नहीं सकता। कभी तूने इसी वाणी से हजार आवाजें उठाकर कहा था- दुनियाँ के ज़िमीन्दारों, सरमायेदारो, पूंजीपतियों तुमने हमारा खून चूस-चूसकर कोठियाँ खड़ी की हैं। तुमने भूख से बिलखते हुए बच्चों की रोटियाँ छीनकर अपने अन्न भण्डार भर लिए हैं। हमारी बात मानों-हमारा जीने का, बोलने का, रहने का, खाने का, अधिकार हमें दो, नहीं तो होली खून की खेली जायेगी------

और सचमुच समता, समानता और समाजवाद का नारा लगाने वाला साम्यवाद लालरंग का हँसिया-हथौड़ा लिए इस धरती पर उदित हो गया। खून की होलियाँ खेली गई-रूस में, चीन में, पोलैण्ड में, फ्रान्स में—— दुनियाँ ने राहत की सांस ली, अब सब समान हो गया है। सबको रोटी, कपड़ा और मकान मिलेगा, सब अपने-अपने परिश्रम और योग्यता का खायेंगे। विचारों की स्वतन्त्रता उन्मुक्त गगन में उन्मुक्त होकर गूँजेगी। पर यह क्या- फिर लौह-आवरण। जैसे कुछ कठमुल्लाओं ने अपने धर्म-ग्रन्थों में अपने विचारों को कैद कर दिया था। फरमान जारी कर दिया था खबरदार कोई इन विचारों को न छुए, कुफ्र हो जायेगा, जो कह दिया वह अन्तिम है जो कर दिया वह अपरिवर्तनीय है जिधर हाँक दिया, चलते रहो- चलते रहो, इधर-उधर देखा तो नर्क में सड़ा दिये जाओगे।

और हमने देखा लौह-आवरण से छनछनकर एक करुण चीत्कार सुनाई दे रही है उन शिशुओं की, उस तरुणाई की जो प्रतिक्रान्ति की आवाज उठा रही थी। कितना बड़ा हादसा हो गया चीन में। हजारों नवोदित आशाएँ केवल अभिव्यक्ति की, लोकतन्त्र की, प्रतिक्रान्ति की आवाज लगाने पर संगीनो से (तियेनमेन चौक) पार्क में खामोश कर दी गई। सैकड़ों फाँसी पर झुलाये जा रहे हैं। माँ अपने बच्चों को पालने में झुलाती है बड़े प्यार से बोली सुनती है समझने की कोशिश करती है क्या चाहता है। पर राष्ट्र के इन चीनी पिताओं, प्रपिताओं ने प्रतिक्रान्ति की तोतली आवाज को बिना सुने समझे सदा-सदा के लिए शान्त कर दिया। यह भी न पूछा तुम चाहते क्या हो। -----

-मनमोहन तिवारी,
सभा मंत्री ।

गायत्री

● स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष
वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ.प्र.)

गायत्री मन्त्र में आर्य जाति की विशेष श्रद्धा है, वर्तमानकाल में ही नहीं अपितु प्राचीन काल से ही। मानव धर्म व्याख्याता और प्रवक्ता महर्षि मनु ने भी मनुस्मृति में इस मन्त्र के माध्यम से ब्रह्म मुहूर्त में एकान्त में बस्ती से जाकर किसी जलाशय के तट पर सावित्री (गायत्री) के जाप का विधान किया है।

कुछ काल से आर्य जाति इतनी अविद्याग्रस्त हुई कि इस सनातन वैदिक ईश्वरोपासना के मार्ग से भटक कर पौराणिक अन्ध विश्वास में फंस गयी और उसके परिणाम स्वरूप धर्मध्वजी किन्तु वास्तव में धर्मतत्व से सर्वथा अपरिचित अथवा प्रपंच कर धार्मिक प्रवृत्ति वाले अध्यात्म पिपासु जनों का धन अपहरण करने वाले लोभी प्रवृत्ति के व्यक्तियों ने स्व-स्व कल्पित मन्त्रों की दीक्षा और उपदेश देने प्रारम्भ कर दिये।

उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा वैदिक धर्म के प्रचार तथा उनके द्वारा आर्यसमाज की स्थापना से लोग अन्ध विश्वासों से निकलने प्रारम्भ हुए। वैदिक पद्धति से सन्ध्या वन्दन तथा गायत्री व प्रणव जाप पुनः प्रारम्भ हुए किन्तु इसे काल की गति कहिये अथवा आर्य जाति का दुर्भाग्य कि स्वयं आर्यसमाज के मंच पर भी कतिपय ऐसे लोगों का प्रादुर्भाव हुआ कि जिन्होंने गायत्री-जाप और गायत्री-यज्ञ के नाम पर घोर अन्धविश्वास को जन्म देकर अन्धपरम्परायें चला दीं।

जब काबे से ही कुफ्र चले,
तो कैसे रहे मुसलमानी?

जब सुधारवादी मंच से ही अन्ध-विश्वास फैलाया जाए, तब इसके अतिरिक्त और क्या होगा, जो आर्यसमाज में हो रहा है। तथाकथित गायत्री भक्त और वैदिक धर्मी आर्य समाजी धर्मध्वजी जनों ने एक ओर तो मंच से उक्त अन्धविश्वासों का प्रचार किया तथा दूसरी ओर इस प्रकार की पुस्तकें लिखीं, जिनमें गायत्री के नाम पर घोर अन्ध-विश्वास प्रचारक बुद्धि विरुद्ध अनर्गल बातें भरी पड़ी हैं।

इस भावना से कि जिज्ञासु साधक जनों को आध्यात्मिक लाभ भी पहुँचे और वह अन्ध-विश्वास से भी बचे रहें, गायत्री सम्बन्धी भ्रान्त मान्यताओं का संक्षिप्त निराकरण करते हुए यह लेख लिखा गया है। यदि जिज्ञासु जनों की जिज्ञासा पूर्ति तथा साधकों को साधना में इससे कुछ भी सहायता प्राप्त हो जाये तो अच्छा है।

गायत्री

वेद में गायत्री नाम का कोई मन्त्र नहीं है। गायत्री ही क्यों? किसी भी मन्त्र का कोई नाम नहीं है। हाँ, गायत्री एक छन्द का नाम है और उस छन्द में अनेक मन्त्र आते हैं। गायत्री छन्द के भी निचृद् आदि भेद हैं। यह मन्त्र जो गायत्री के नाम से प्रसिद्ध है, निचृद् गायत्री है।

गायत्री के तीन पाद होते हैं और उनमें से प्रत्येक में 8-8 अक्षर होते हैं किन्तु निचृद गायत्री में 23 अक्षर होते हैं और इसके प्रथम पाद में सात अक्षर होते हैं तथा दूसरे और तीसरे पाद में आठ-आठ अक्षर। इस गायत्री के नाम से प्रसिद्ध मन्त्र में 23 अक्षर ही हैं। प्रसंगवश हमने यहाँ यह चर्चा की है, वास्तविक उद्देश्य तो हमारा यह बताना था कि गायत्री नाम का कोई मन्त्र नहीं है, गायत्री छन्द में होने से ही यह मन्त्र गायत्री छन्द कहलाता है।

वेद माता--

इस मन्त्र को कुछ लोग वेद-माता कहते हैं, यह एक भ्रान्त धारणा है। कोई एक मन्त्र वेद की पुत्री या पुत्र तो हो सकता है। वेद की माता नहीं हो सकता। वेद के 20 सहस्त्र मन्त्रों में से कोई एक मन्त्र-जो वेद का एक अंश मात्र है--वेद की माता अथवा पिता किस प्रकार हो सकता है? माता का अर्थ निर्माण करने वाली होती है "माता निर्माता भवति"। कोई भी मन्त्र वेद निर्माता अर्थात् वेद निर्माण करने वाला नहीं अपितु वेद का एक अंश मात्र है। जो लोग गायत्री मन्त्र को वेद माता कहते हैं, वह इसके लिये प्रमाण स्वरूप जो मन्त्र प्रस्तुत करते हैं, वह यह है-----

स्तुता मया वरदा वेदमाता
प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम्।
आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं
द्रविणं ब्रह्मवर्चसम्। मह्यं
दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकम्।
अथर्व0 19/71/1

इस मन्त्र का देवता वेदमाता है और छन्द है अति जगती। न तो इसका देवता ही गायत्री है और न छन्द ही। परन्तु फिर भी कुछ लोगों का यह कहना है कि इस मन्त्र में गायत्री मन्त्र को वेद माता कहा गया है। बलात् इस मन्त्र पर यह भ्रान्त मान्यता वाला निरर्थक दायित्व सौंपना सर्वथा अनुचित है और सर्व साधारण को -- जिनकी वेद में गति नहीं-- भ्रान्ति में डालना है।

वेद में मन्त्र का देवता मन्त्र के विषय को कहा गया है। उपर्युक्त मन्त्र का विषय वेदमाता है। इस मन्त्र के विषय को वेदमाता कह कर यह बताया गया है कि वेद-वाणी मानव-जीवन की माता अर्थात् निर्माण करने वाली है। मानव-जीवन-निर्माण के लिये वेद में जिन साधनों, तत्वों और विद्या-विज्ञानों की चर्चा है, इस मन्त्र में संक्षिप्त रूप से उन्हें गिनाया गया है। परमपिता परमात्मा का कथन है--

(मया) मेरे द्वारा (स्तुता) प्रस्तुता, स्तुत, प्रस्तुत की गई अथवा प्रशंसा की गयी (वरदा) वर देने वाली (वेदमाता) मानव-जीवन-निर्माण का सांगनेपांग ज्ञान देने वाली वेद-वाणी (प्रचोदयन्तां [illegible]) प्रेरणादायिनी, प्रेरणा प्राप्त करने वाले, [illegible] करने वाले, ज्ञान-[illegible] रखने वाले द्विजों अर्थात् [illegible] को ज्ञान देकर पवित्र [illegible] है। इससे (आयुः) आयु [illegible] (प्रजां) [illegible] (पशुं) पशु (कीर्तिं) कीर्ति (द्रविणं) धन (ब्रह्मवर्चसम्) ब्रह्म ज्ञान प्राप्त होता है अर्थात् इन समस्त विषयों का ज्ञान वेद में वर्णित है। परन्तु इतना ध्यान रहे कि आप इन का उपयोग तो करो किन्तु इन सांसारिक विषयों में ही मत फंसे रहना अपितु ~ ब्रह्मवर्चसम्== ब्रह्म ज्ञान का लाभ प्राप्त करना और यह सब (मह्यं) मुझको (दत्वा) देकर (ब्रह्मलोकम्) ब्रह्मलोक अर्थात मोक्ष को (व्रजत) प्राप्त करना।

पाठकगण। इस विवेचन से यह समझ लेंगे कि गायत्री मन्त्र को वेदमाता कहना भ्रान्त धारणा है। इस मन्त्र में कहीं भी गायत्री मन्त्र की चर्चा नहीं है। सावित्री --

इस मन्त्र का एक नाम "सावित्री" भी है। मानव-धर्म-शास्त्र के निर्माता महर्षि मनु ने सावित्री जाप का विधान किया है। उनका कहना है:-

अपां समीपेनियतो नैत्यकं विधिमास्थितः।
सावित्री मप्यधीयीत गत्वारण्यं समाहितः।।
(मनु 2/104)

अर्थात एकान्त स्थान (जंगल) में किसी नदी अथवा अन्य जलाशय के तट पर नित्य कर्म को सावधान होकर विधि पूर्वक करता हुआ सावित्री का जाप करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सावित्री का अर्थ गायत्री किया है। महर्षि मनु के उपर्युक्त श्लोक को मनुस्मृति से उद्धृत करते हुए वह लिखते हैं- "सावित्री अर्थात् गायत्री मन्त्र का उच्चारण, अर्थ-ज्ञान और उसके अनुसार अपने चाल-चलन को करे।"

(सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास)
(गुरु मन्त्र की व्याख्या प्रकरण0)

सावित्री शब्द के ब्राह्मण ग्रन्थों में अनेक अर्थ लिये गये हैं। परन्तु प्रस्तुत विषय से उन अर्थों का कोई सम्बन्ध नहीं है अतः उनका उल्लेख भी इस प्रसंग में उपयुक्त नहीं। हाँ, एक पद "सवितः" तै0 3/10/11/7 में आता है, जिसका अर्थ "अग्निः" है। परमात्मा का भी एक नाम "अग्निः" है। "अग्निः" का अर्थ है तेज स्वरूप, प्रकाश स्वरूप, ज्ञान स्वरूप। प्रसिद्ध गायत्री मन्त्र में परमात्मा के "भर्गः" स्वरूप को धारण करने की बात कही गयी है और उसे वरण करने के योग्य बताया गया है। "भर्गः" का अर्थ भी तेज स्वरूप, प्रकाश स्वरूप, ज्ञान स्वरूप होता

पेज ३ का शेष

है। तेज, प्रकाश और ज्ञान को धारण करने की इच्छा मानव में स्वाभाविक रूप से होती है। "सावित्रः" का स्त्रीलिंग का रूप "सावित्री" होता है और क्योंकि गायत्री मन्त्र में जिसकी उपासना, जिसके वरण करने की बात कही गयी है, वह "भर्गः" पद "सावित्री" का समानार्थक है इसलिए यह कहना अनुचित न होगा कि इन दोनों के एकार्थवाची होने से ही महर्षि मनु ने गायत्री मन्त्र के लिये सावित्री पद का प्रयोग किया है।

गुरु मन्त्र--

गुरुकुल शिक्षा-पद्धति के अनुसार जब गुरुकुल में बालक का वेदारम्भ संस्कार होता है, तब आचार्य इस मन्त्र का बालक को उपदेश करता है। क्योंकि आचार्य (गुरु) द्वारा यह मंन्त्र ब्रह्मचारी (शिष्य) को प्रथम उपदेश के रूप में दिया जाता है अतः इसका नाम गुरु मन्त्र प्रचलित हो गया है।

गायत्री-उपासना विधि-

उपासना गायत्री द्वारा हो अथवा प्रणव (ओ३म्) के द्वारा-- यह आवश्यक है कि स्थान एकान्त हो। नदी अथवा किसी अन्य शुद्ध जलयुक्त जलाशय का तट हो तो अधिक अच्छा है। नहीं तो स्व-गृह में ही कोई एकान्त स्थान इस कार्य के लिये निश्चित कर लिया जाय, नित्य ही स्थान-परिवर्तन नहीं करते रहना चाहिये। ऋतु-अनुसार ही स्थान-परिवर्तन करना उचित है। उपासना के लिये जो आसन प्रयुक्त हो, वह केवल ध्यान-उपासना में ही काम में लाया जाने वाला हो, भोजन खाने आदि कार्यों में उसका प्रयोग न हो। ध्यान के उपरान्त उसे सम्भाल कर रख देना चाहिये। वह शुद्ध-पवित्र रहे और साथ ही इतना सुविधा जनक भी हो कि उस पर सुखपूर्वक बिना हिले-डुले यथोचित समय तक बैठा जा सके। उपासना के समय सुखासन, पद्मासन अथवा सिद्धासन में जो भी अधिक अनुकूल पड़े और जिसका अधिक अच्छा अभ्यास हो, उसी आसन से बैठे। उपासना के लिये कोई निश्चित आसन नहीं है अपितु "स्थिर- सुखमासनम्" जिस विधि से बिना हिले स्थिरता से और सुखपूर्वक बैठा जा सके, उसी का नाम आसन है।

(क्रमशः)

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज हरफरी के विशिष्ट सहयोगी अत्यन्त सेवाभावी तथा वहीं के मूल निवासी स्वा० जीवनानन्द जी का निधन दिनांक 29 मई को हृदयगति रुक जाने के कारण हो गया। स्वामीजी ने अब से दो वर्ष पूर्व ही पू० स्वामी ब्रह्मानन्द जी वेदभिक्षु से सन्यास ग्रहण किया था तब से वह समाज के लिए समर्पित थे। परमात्मा उन्हें आत्मशान्ति व शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

— सभा मंत्री



बिल्लियों का शहज़ादा : तेंदुआ

• उषा नाथ

बच्चों आज हम आपको तेंदुआ नामक जानवर का परिचय कराते हैं। छोटे किन्तु चौड़े पंजों वाली शक्तिशाली टांगों पर सन्तुलित बदन, पूंछ लम्बी और अन्तिम सिरे पर नुकीली, चुस्ती और फुर्ती का अद्वितीय संगम ये सारी विशेषताएं जब एक पशु में पाई जाए तो आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। किन्तु यह सत्य है। ये सारी विशेषतायें एक ही पशु में पाई जाती हैं जिसे

लोग तेंदुआ कहते हैं। यही इस क्रूर जंगली बिल्ली माने तेंदुआ या गुलबाघ की एक शानदार प्राणी के रूप में पहचान स्थापित करती है।

तेंदुए की खाल का रंग मक्खनी-पीला होता है और उसपर काले रंग के धब्बे पाए जाते हैं जो उसे अपने आस-पास के वातावरण में छुपाने में सहायक होते हैं। इसके शरीर को ये धब्बे ठीक उसी तरह छुपा लेते हैं जैसे आजकल सेना के वाहन स्वयं को अपने आसपास के परिवेश में अदृश्य कर लेते हैं। तेंदुए और चीते को गल्ती से अक्सर एक ही समझ लिया जाता है किन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। तेंदुए की खाल पर काले गोलाकार धब्बे अनियमित होते हैं जबकि चीते के शरीर पर ये धब्बे व्यवस्थित और एक समान पाए जाते हैं। इसके अलावा इसकी आंखों के कोनों से नीचे की ओर जाकर मुंह पर समाप्त होने वाली काली रेखायें पाई जाती हैं जिन्हें अश्रुरेखा कहा जाता है। काला तेंदुआ भी पाया जाता है जो मेलानिस्टीक तेंदुआ कहलाता है। रंग के अलावा इसमें और सामान्य तेंदुए में कोई अन्तर नहीं होता। एक नर तेंदुए की लम्बाई का कीर्तिमान नाक से पूंछ तक 2·5 मी० और वजन 70 कि०ग्रा० पाया गया है। मादा कुछ छोटी होती है। हमेशा शर्मीला और चौकन्ना रहने वाला यह प्राणी अत्यधिक कुशाग्र होता है और कर्कश, गुर्राती तथा खरखराती आवाज तेंदुए को रोबदार प्राणी निरूपित करती है। किसी व्यक्ति ने इसकी आवाज को सुनकर सच ही कहा है "ऐसा लगता है मानो कोई सुतार आरी से लकड़ी काट रहा हो"।

तेंदुए का शिकार करने का तरीका भी निराला है। यह छुपकर, अनायास और तेजी से शिकार करता है। कभी-कभी यह पेड़ पर शिकार का इंतजार करता है और उसके आते ही एक क्षण की भी देरी किए बगैर उसपर आक्रमण कर देता है। यह अपने शिकार को दो तरह से मारता है, एक यह अपने दांत उसकी गर्दन में घुसा देता है और गले को फाड़कर शिकार को निरीह कर देता है। दूसरी प्रकार से यह शिकार के सिर को फाड़ देता है। इस तरह अन्य परिभक्षियों की अपेक्षा इसका शिकार करने का तरीका भिन्न होता है।

कहते हैं कि यदि सारी दुनिया के समस्त प्राणी समाप्त हो जाएं फिर भी तेंदुआ जीवित रहेगा। क्योंकि किसी भी परिस्थिति में यह अपना गुजारा कर लेता है। जहाँतक खाने की बात है तो उसके लिए भी इसने स्वयं को परिस्थितियों के अनुसार ढाल रखा है। यह हिरण या किसी शृंगधारी के मल के निकले कीट से लेकर जो कुछ भी मिल जाए खा लेता है। किन्तु जब पसन्दगी की बात होती है तो मछली, मेंढ़क, कुत्ते और सूअर इसका स्वादिष्ट भोजन है। अपनी पहली खुराक पूरी कर लेने के बाद जो कुछ शेष बचता है उसे यह किसी पेड़ की शाखा पर रख देता है। जो भविष्य के लिए उसका सुरक्षित भंडार होता है। साथ ही बचे हुए खाद्य पदार्थ की अन्य परभक्षियों पर शव अवशेष खाने वालों से रक्षा भी हो जाती है। जिसका उपयोग वह बाद में करता है।

एकाकी पशु

केवल प्रजनन काल को छोड़कर तेंदुआ अकेला रहना ही पसन्द करता है। मादा वर्ष में किसी भी समय बच्चे को जन्म दे सकती है। वैसे सामान्यतः तीन बच्चों का जन्म होता है किन्तु यह संख्या छः तक भी हो सकती है। बच्चे जन्म के बाद अधिकतम नौ दिनों तक देखने में सक्षम नहीं होते। ऐसे में नर बच्चों को भोजन देने की जिम्मेदारी निभाने में सहायता करता है। बच्चे तीन-चार वर्ष में परिपक्व हो जाते हैं। यदि शिकार नहीं किया जाय तो इनका जीवन काल बारह वर्ष तक का होता है।

यह खूबसूरत पशु अब धीरे-धीरे लुप्त होता जा रहा है। इसके लुप्त होने का खास कारण यह है कि इसकी चित्ताकर्षक खाल की विश्व के फैशन बाजार में मांग काफी अधिक होना है। इस स्थिति का सर्वाधिक विपरीत प्रभाव अफ्रीका के तेंदुओं पर पड़ा है। यहाँ प्रतिवर्ष पचास हजार से अधिक तेंदुए मौत के घाट उतारे जाते हैं। स्थिति यहाँ तक खराब हो गई है कि दक्षिणी एशिया के अधिकांश हिस्सों से यह समाप्त सा हो गया है। भारत में भी तेंदुए को अत्यधिक संकटग्रस्त पशु घोषित किया गया है।

भारतीय एकता

• चन्द्रपाल सिंह यादव "मयंक"

यहाँ ने कोई हिन्दू - मुस्लिम,
यहाँ न कोई ईसाई ।
सभी निवासी "भारतवासी" ,
आपस में भाई - भाई ।

" भारत-माता " सबकी माता।
माता सबको प्यारी है।
भारत - माँ का बच्चा-बच्चा
माता पर बलिहारी है।

यहाँ हमारी गंगा - यमुना,
यहाँ हमारा राजस्थान ।
यहाँ हिमालय उच्च खड़ा है
साहस - बल - पौरुष की खान।

जिस पर स्वर्ग स्वयं ललचावे,
यहाँ हमारा वह कश्मीर,
जिसके दृश्य स्वर्ग से सुन्दर,
जिसका अमृत-सना समीर।

यहाँ हमारे मन्दिर - मस्जिद,
यहाँ हमारा गुरुद्वारा ।
यहाँ हमारा गिरजाघर है,
हमको प्राणों से प्यारा ।

यहाँ हमारे तुलसी बाबा,
यहाँ हमारे सन्त कबीर।
हेल - मेल की, प्रेम - प्यार की
खींच गये हैं जो तस्वीर।

एक डाल के फूल सदृश हम
यहाँ बितावेंगे जीवन।
अपने खून और पानी से
सींचेंगे भारत - उपवन ।

नंगा - भूखा रहे न कोई,
इसके लिए करेंगे काम।
हर घर सुखी बनावेंगे हम,
है हमको आराम हराम ।

अपने भारत के कण-कण से,
हम भारतवालों को प्यार ।
इसको स्वर्ग बना देंगे हम,
देखेगा सारा संसार ।

इंच - इंच भर धरती पर हम
देंगे हँस कर जीवन वार ।
पर मजाल है कोई दुश्मन
इस पर कर तो ले अधिकार ।

दीपक जी दुर्घटनाग्रस्त

आर्यसमाज श्रृंगारनगर लखनऊ के मन्त्री कर्मठ आर्य एवं प्रसिद्ध दार्शनिकवक्ता श्री रूपचन्द्र "दीपक" गत 25 जून को अलीगंज से घर आते हुए स्कूटर दुर्घटना में सख्त घायल हो गये। उनके शरीर में कई स्थानों की हड्डियाँ टूट गई हैं। प्रभु की कृपा से उनका जीवन सुरक्षित बच गया। परमात्मा उन्हें शीघ्र स्वास्थ्य प्रदान करें। — सभामंत्री।

ईश्वर की सर्वज्ञता

• खज्ञान सिंह आर्य
ग्रा0पो0-मवीसा,
जन0 मुजफ्फरनगर, उ0प्र0

मुझे खेद है कि आर्यसमाज में भी ऐसे व्यक्ति हैं जो ऋषि दयानन्द का शब्द प्रमाण मानने मे इन्कार करते हैं, और उनके द्वारा स्पष्ट किये हुए सिद्धान्तों में भी भ्रम पैदा करते हैं। ऐसा ही एक सिद्धान्त है परमेश्वर को भविष्यत का सब प्रकार का ज्ञान होना। कुछ लोग कहते हैं कि जीव के भविष्यत में होने वाले भोग व कर्म परमेश्वर नहीं जानता। इस विषय में मैं स्वामी जी द्वारा लिखे हुए प्रमाण उद्धृत करता हूँ।

प्रथम :- सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास
प्रश्न- परमेश्वर-त्रिकालदर्शी है इससे भविष्यत की बातें जानता है वह जैसा निश्चय करेगा जीव वैसा ही करेगा इससे जीव स्वतन्त्र नहीं और जीव को ईश्वर दण्ड भी नही दे सकता क्यों कि जैसा ईश्वर ने अपने ज्ञान से निश्चित किया है वैसा ही जीव करता है।

उत्तर- ईश्वर को त्रिकालदर्शी कहना मूर्खता का काम है, क्यों कि जो होकर न रहे वह भूतकाल और न होके होवें वह भविष्यत काल कहाता है, क्या ईश्वर को कोई ज्ञान होके नहीं रहता तथा न होके होता है?

इसलिये परमेश्वर का ज्ञान सदा एक रस, अखण्डित, वर्तमान रहता है। भूत भविष्यत, जीवों के लिये है। हाँ जीवों के कर्म की अपेक्षा से त्रिकालज्ञता ईश्वर में है स्वतः नहीं। जैसा स्वतन्त्रता से जीव करता है वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है और जैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है। अर्थात भूत, भविष्यत, वर्तमान के ज्ञान और फल देने में ईश्वर स्वतन्त्र है और जीव किंचित वर्तमान और कर्म करने में स्वतन्त्र है। ईश्वर का अनादि ज्ञान होने से जैसा कर्म का ज्ञान है वैसा ही दण्ड देने का भी ज्ञान अनादि है। दोनों ज्ञान उसके सत्य हैं क्या कर्मज्ञान सच्चा और दण्ड ज्ञान मिथ्या कभी हो सकता है। इस लिये इसमें कोई भी दोष नहीं आता।

इस प्रश्न और उत्तर का एक-एक शब्द ध्यान देने योग्य है। इसमें ऋषि जी ने यह स्पष्ट किया है कि ईश्वर को सब ज्ञान अर्थात् भूत भविष्यत और वर्तमान का वर्तमान रहता है। ऐसा नहीं है कि भविष्यत का ज्ञान भविष्यत में होगा उसे सब ज्ञान भविष्यत का भी पहले से भी है। यदि उसे भविष्यत का ज्ञान न हो तो संसार की न्याय व्यवस्था ही नहीं हो सकती जीव के पुरुषार्थ तथा प्रारब्ध का पूर्ण ज्ञान परमेश्वर को अनाधिकाल से और आगे अनन्त काल तक को वर्तमान रहता है। परमेश्वर को ज्ञान होना जीव को परतन्त्र नहीं करता, हाँ यदि परमेश्वर अपनी ओर से कर्म करने को बाध्य करे तो परतन्त्र हो सकता है। परन्तु परमेश्वर बाध्य नहीं करता केवल जानता है। केवल ज्ञान होना दूसरे को परतन्त्र नहीं करता। एक व्यक्ति दौड़ा जा रहा है हम उसे देख रहे हैं और जान रहे हैं कि इससे वह परतन्त्र नहीं होगा। परतन्त्र तब होगा यदि हम कुछ हस्तक्षेप करेंगे। हम जानते हैं कि कल सूर्य इतने समय पर उदय होगा तो क्या हमारे जानने के कारण सूर्य के उदय होने पर कोई प्रभाव पड़ेगा? नहीं। क्योंकि बिना हस्तक्षेप के केवल ज्ञान किसी दूसरे को परतन्त्र नहीं कर सकता। सत्यार्थ प्रकाश त्रयोदश समुल्लास ।

§5§ समीक्षक:- जब ईश्वर ने अदन में बाड़ी बनाकर उसमें आदम को रखा तब ईश्वर नहीं जानता था कि इसको पुनः वहाँ से निकालना पड़ेगा?

§7§ समीक्षक:- जो ईसाइयों का ईश्वर सर्वज्ञ होता तो इस धूर्त सर्प अर्थात शैतान को क्यों बनाता।

§8§ समीक्षक:- ----- और प्रथम जब उसको बाड़ी में रखा तब उसको भविष्यत का ज्ञान नहीं था कि इसको पुनःनिकालना पड़ेगा। इस लिये ईसाइयों का ईश्वर सर्वज्ञ नहीं था।

§12§ समीक्षक:- ----- वह ईश्वर ही नही जो सर्वज्ञ न हो, न भविष्यत की बात जाने, वह जीव है। क्या जब सृष्टि की थी तब आगे मनुष्य दुष्ट होंगे ऐसा नहीं जानता था?

§26§ समीक्षक:- -- और जो बाईबल का ईश्वर सर्वज्ञ होता तो उसकी भविष्यत श्रद्धा को भी सर्वज्ञता से जान लेता, इससे निश्चित होता है कि ईसाइयों का ईश्वर सर्वज्ञ नहीं।

सत्यार्थ प्रकाश चर्तुदश समुल्लास

§11§ समीक्षक:-इससे खुदा सर्वज्ञ नहीं अर्थात् भूत भविष्यत और वर्तमान की पूर्ण बातें नहीं जनता जो जानता हो तो शैतान को पैदा ही क्यों किया।

§12§ समीक्षक:- जो भविष्यत बातों को जानता होता तो वर ही क्यों देता?

§33§ समीक्षक:- और जो सब को बुराई कराने वाला मनुष्य मात्र शत्रु शैतान है उसको खुदा ने पैदा ही क्यों किया। क्या वह भविष्यत की बात नहीं जानता था? जो कहो जानता था परन्तु परीक्षा के लिये बनाया तो भी नहीं बन सकता, क्यों कि परीक्षा करना अल्पज्ञ का काम है सर्वज्ञ तो सब जीवों के अच्छे बुरे कर्मो को सदा से ठीक-ठीक जानता है।

सत्यार्थ प्रकाश सप्तम समुल्लास

येनेदं भूतं भुवंन भविष्यत् ----

इस मन्त्र का अर्थ करते हुए स्वामीजी लिखते हैं:- जिससे सब योगी लोग इन सब भूत भविष्यत वर्तमान व्यवहारों को जानते, जो नाशरहित जीवात्मा को

—शेष पृष्ठ ७ पर

"पर उपकार के कारणें-सन्तन धरे शरीर"

वैद्य कुन्दनलाल आर्य
५४६/१६२ - अर्जुन नगर, लखनऊ-५

बन्धुओं। संसार में जो समाज-देश और जाति अपने पूर्वजों-पूर्व महापुराणों, का गर्व एवं श्रद्धा से स्मरण कर उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करता है। वह जीवित रहने का अधिकारी है। उनका ही वर्तमान और भविष्य का जीवन सुखी हो सकता है। अर्थात अपने पूर्वजों के त्याग तपस्या पूर्वक निःस्वार्थ भाव से किये गये लोकोपकारक कार्यो को सदा स्मरण करना और जीवन का मार्ग सदा प्रशस्त करना चाहिए।

मेरे दिव्य दयानन्द का सारा जीवन ही दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित था। बार-बार ढूंढने पर भी दयानन्द का अपना स्वार्थ कहीं दिखाई नहीं देता। वह ऐसा निराला तपस्वी दीपक था, जिसके प्रकाश ने संसार को चकाचौंध कर दिया। समुद्र पार बैठा हुआ डेविट जैकसिन लिखता है- "मैं देख रहा हूँ भारत में स्वामी दयानन्द ने ऐसी आग जलाई है जिसकी लपटें शीघ्र ही सारे विश्व को अपनी लपेट में ले लेंगी"। उसी एक आदर्श दीपक ने ही हजारों दीपक जला कर भारत माता की गोद में रख दिये। वस्तुतः उनका जीवन महान था, वह हमें जीवन शक्ति प्रदान करता है। उनके जीवन की प्रत्येक घटना आदर्श बनकर हमारा मार्गप्रशस्त करती है। पट्टाभि सीता रमैया भारतीय स्वतन्त्रता का इतिहास लिखते हुए आरम्भ में ही लिखते हैं।" भारत के स्वतन्त्रता युद्ध के आरम्भ में कांग्रेस में भाग लेने वाले 80 प्रतिशत लोग आर्य समाजी थे।

यह बात नितांत सत्य है कि इस युग पुरूष ने अन्धपरम्पराओं का विरोध करके एक अद्भुत साहस का परिचय दिया। वह भारत के अन्दर ही नहीं वरन् सारे विश्व में भी एक वैदिक स्वराज्य देखना चाहते थे। हरिद्वार के कुम्भ के मेले में आर्य जाति की दुर्दशा देख मेरे ऋषि की आत्मा तड़प उठी, बेचैन हो उठी, उसने वहीं दृढ़ संकल्प किया "मैं जीवन के मोक्ष सुख को भी बलिदान कर इनको वेद का सच्चा मार्ग दिखाऊँगा।

महर्षि ने देखा कि हिन्दुओं के अन्दर पूजा की अनेक पद्धतियाँ ही इनको अंधकार की ओर ले जा रही हैं। स्वार्थी लोग निजी स्वार्थ वश इस श्रृंखला को और आगे बढ़ा रहे हैं। तो उन्होंने पूजा की पद्धति-संध्या-हवन- एवं संस्कारों की एक वैदिक पद्धति तैयार की और उसका विस्तृत विवरण संस्कार विधि पुस्तक के रूप में संसार को प्रदान किया। वस्तुतः यदि हम महर्षि दयानन्द की आत्मिक अभिलाषा को एक वाक्य में कहना चाहें तो कहना होगा, "दयानन्द भारत ही नहीं सारे संसार में एक धर्म, एक पूजा पद्धति, एक भाषा, एक राष्ट्र एक ही विचार देखना चाहते थे।" वह वेद पर अटूट श्रद्धा रखते थे। अतः वह मनुष्य ही नहीं प्राणि मात्र के दुःख को अपना दुःख समझते थे।

दयानन्द रात को सोते नहीं, बेचैन हैं इधर से उधर टहल रहे हैं।

भक्त पूँछते हैं- महाराज क्या शरीर को कोई कष्ट है आदेश दें उपचार के लिए कुछ उपाय किया जावे। महर्षि लम्बी सांस छोड़कर कहते हैं, आर्य जाति की वर्तमान दुर्दशा ही मुझे बेचैन किये हुए है। वाह। रे दयानन्द, कितनी विशालता है तेरे जीवन में, पग-पग पर तू सबका कल्याण करते हुए निराले आदर्श प्रस्तुत करता है। जहर देकर जीवन लीला समाप्त करने वाले घातक को भी तू उसके प्राण बचाने के लिए नेपाल चले जाने का परामर्श देता है। परामर्श ही नहीं, नेपाल जाने के लिए खर्च हेतु रुपयों की थैली भी अपने घातक को थमा देता है। अपने घातक को पकड़वा कर दण्ड दिलाने वाले तो सब जगह सब कालों में मिल जावेंगे, परन्तु अपने घातक की जीवनरक्षा करने और धन देने वाला अकेला दयानन्द ही मिलेगा।

महर्षि के हृदय में द्वेष या कटुता का नामोनिशान भी न था, अपने विरोधियों की विद्वता की भी उन्होंने प्रशंसा की। स्वामी विशुद्धानन्द को बड़ा विद्वान ही कहा। अतः उनकी इस महानता का विरोध भी हृदय से मान करते थे। महर्षि के जीवन की उच्चता का उल्लेख करने के लिए एक वृत्तान्तबड़ा उपयुक्त रहेगा। महर्षि के जीवन काल में चारों ओर एक विचित्र प्रकार की खलबली मची थी। महर्षि का जीवन शानदार था और उनकी मृत्यु उससे भी अधिक शानदार। महर्षि के परलोक गमन पर हर क्षेत्र से दी जाने वाली श्रद्धांजलियाँ इसकी पुष्टि करती हैं। कहते हैं महर्षि के निर्वाण पर उनका एक कट्टर विरोधी रो रहा था। लोगों ने उसे कहा- तुम क्यों रो रहे हो, तुम्हें प्रसन्न होना चाहिए। तुम्हारा विरोधी आज संसार में नहीं रहा। उस रोने वाले व्यक्ति ने जो उत्तर दिया वह ऋषि के जीवन को संसार के उच्चतम शिखर पर ला कर खड़ा कर देता है। उस व्यक्ति ने कहा, "मैं इस लिये नहीं रो रहा कि दयानन्द मर गया है मैं तो इस लिये रो रहा हूँ कि इतना विरोध होने पर भी दयानन्द निश्कलंक, बेदाग, शानदार तरीके से विजय दुन्दुभी बजाता हुआ चला गया।

महर्षि शास्त्रार्थ को केवल वाद-विवाद का ही विषय नहीं मानते थे वह तो शास्त्रार्थ के द्वारा सत्य और असत्य का निर्णय चाहते थे। सत्य एक ही है और एक ही रहेगा। एकता ही चारों ओर मेरा ऋषि देखना चाहता है। संस्कार विधि पुस्तक की भूमिका में लिखा "जिस प्रकार से शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष को प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं। इस लिए संस्कारों को करना सब मनुष्यों को अति उचित है।" यहाँ यह स्पष्ट है जो व्यक्ति सुसंस्कृत होगा, वही तो सत्य असत्य का निर्णय करने में समर्थ होगा। अतः ऋषि की हार्दिक इच्छा है प्रत्येक व्यक्ति संस्कार करायें और एक रूप में कराये, परन्तु आज वर्तमान में हवन, संध्या, संस्कारों में जितनी भिन्नता आर्यसमाज में दिखाई देती है सम्भवतः महर्षि के जीवन काल में भी इतनी भिन्नता नहीं थी। हर जगह हर विद्वान अपनी अलग विधि करता है कोई कहता है मंत्र के आदि में ओ3म् बोलो-दूसरा कहता है आदि और अन्त दोनों जगह ओ3म् बोलो, तीसरा कहता है ओ3म् हर मंत्र में नहीं बोलना चाहिए। कुछ विद्वान कहते हैं कि हवन में अयन्त इध्म आत्मा, मंत्र नहीं होना चाहिए। दूसरे कहते हैं महर्षि ने लिखा है अतः इसको अवश्य पढ़कर आहुति देनी चाहिए। स्विष्ट कृत मंत्र की कब और कहाँ आहुति दी जावे। इस पर भी काफी वाद-विवाद होता है। एक तरफ से स्वर सुनाई देता है यज्ञ से वर्षा होती है, दूसरी तरफ गर्जन होता है यज्ञ से वर्षा नहीं हो सकती। सब से विचित्र और चुभने वाली बात यह है कि आर्यसमाजी ही पुस्तकें लिखकर प्रचार करते हैं। कि यज्ञ हवन करना ही व्यर्थ है। इससे कोई लाभ नहीं। संस्कारों को भी संक्षिप्त रूप से थोड़े समय में ही निपटा दिया जावे। एतदर्थ काट-छाँट कर अपनी मरजी मुताबिक पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। गायत्री मंत्र, संध्या और हवन में कहाँ और कितनी बार बोला जावे यह भी पुराना विवाद चल रहा है। जब आर्यसमाज में ही विद्वानों, पुरोहितों का यह हाल है तो हम जैसे साधारण जन क्या करें। यह समझ में नहीं आता। मेरा ऋषि तो यज्ञ हवन को पंच महायज्ञों में एक महायज्ञ मानता है अर्थात् सर्वश्रेष्ठ कर्म और आवश्यक कर्म मानता है।

हाँ आर्य बन्धुओं जरा याद करो, आज से 105 वर्ष पूर्व महर्षि ने दीपावली पर अपनी जीवन लीला समाप्त करने से पूर्व हम सब को एक दिव्य संदेश दिया था। "आर्यों सब दरवाजे खोल दो और मेरे पीछे खड़े हो जाओ"।। महर्षि की इच्छानुसार हमारे विद्वान पुरोहित एक स्थान में बैठकर महर्षि की बनाई हुई एक ही विधि के पालन करने कराने का संकल्प लेकर हम साधारण आर्यो का मार्ग प्रशस्त करें। यह कार्य हमारा सम्मानित मण्डल और शिरोमणि सार्वदेशिक सभा सरलता से सम्पन्न कर और करा सकते हैं। इस प्रकार हम वह दिन देख सकेंगे जब संसार अपने सब बन्द दरवाजे खोलकर और महर्षि के पीछे खड़े होकर एक ही विधि का पालन करेगा। संसार के किसी भी कोने में जावेंगे तो एक ही विधि एक ही स्वर सुनाई देगा।

— शेष पृष्ठ ७ पर

धर्मान्तरित आमन्त्रण

-राष्ट्रीय कवि निर्भय हाथरसी

गतांक से आगे-

पतन बने उत्थान, पतित मन को ऊँचा स्थान मिले।
जिसने हानि सही उसको सामाजिक रूप महान मिले।
जिसके पंख थके हों उसको उच्चातिउच्च स्थान मिले।
आने वाली सन्ततियों को पूरा सुख-सम्मान मिले।

अपनी भावी पीढ़ी का ऐसा सुप्रबन्ध करा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयों। अपने घर को वापिस आ जाओ।

xxxxx

सब धर्मों का मोह त्याग केवल स्वधर्म में अनुरागो।
तुम केवल हिन्दू ही हो इस सच्चाई से मत भागो।
औरों की शैतानी से या अपनी ही नादानी से-
बहुत सो लिये बहुत सो लिये अब तो बस जागो। जागो।।

अगर जागने दे न कोई तो जगकर उसे सुला जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयों। अपने घर को वापिस आ जाओ।

ऐसा सियो जतन से कोई फिर से आँचल फाड़ न दे।
ऐसे पाँव गढ़ाओ जिनको कोई पुनः उखाड़ न दे।
समय पनपने में लगता मिटने में देर नहीं लगती--
इतने चेतन रहो कि कोई जड़ से तुम्हें उखाड़ न दे।

बरबादों को फिर से इतनी अच्छी तरह बसा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयो। अपने घर को वापिस आ जाओ।

xxxxxx

सम्मानित होकर जीने को जन्म हमारा होता है।
वरना अटका भटका जीवन तो बनजारा होता है।
माँ की मान प्रतिष्ठा से बढ़कर कोई भी मान नहीं-
राष्ट्र धर्म ही सब धर्मों से बढ़कर प्यारा होता है।

राष्ट्र धर्म की खातिर खून पसीना सभी बहा जाओ।
फिर से अपने शुद्ध-सनातन-आर्य धर्म को अपनाओ।
बिछुड़े हुए भाइयो। अपने घर का वापिस आ जाओ।

प्रभु से सूर्य, सूर्य से जग में...

• देव नारायण भारद्वाज

प्रातःकाल की आहुतियाँ-मन्त्र

ओ३म् सूर्यो ज्योतिःज्योतिः सूर्यःस्वाहा।।1।।
ओ३म् सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।2।।
ओ३म्ज्योतिःसूर्यःसूर्योज्योतिः स्वाहा।।3।।
ओ३म् सजूर्देवेन सवित्रा सजूरुषसेन्द्रवत्या
जुषाणः सूर्यावेतु स्वाहा ।।4।।

प्रभु से सूर्य, सूर्य से जग में
पा आम ज्योति विस्तार करो ।
हे ईश्वर - सूर्य कृपा करके,
यह आहुति अंगीकार करो ।।

ज्यों ज्योति सूर्य को दीपक में
त्यों ज्योति सूर्य में ईश्वर की।
दीपक में सूर्य, सूर्य में हो
छवि रम्य प्रकट जगदीश्वर की।

यह ज्योति सूर्य, वह सूर्य ज्योति,
हे सूर्य प्रभा उपकार करो।
हे ईश्वर - सूर्य कृपा करके,
यह आहुति अंगीकार करो।।

वर्चस्व सूर्य में प्रभु का है
दीप ज्योति में वही वर्च है
अन्तर्यामी के प्रकाश में
जगत व्याप्त उत्कर्ष अर्च है।

सूर्य लोक से जीव जगत तक,
तुम ससन साम्य श्रृंगार करो ।
हे ईश्वर - सूर्य कृपा करके,
यह आहुति अंगीकार करो ।।

वही सूर्य है प्रेरक सबका
करे नष्ट निद्रा अँधियारी
ले साथ उषा प्रिय इन्द्रवती
दे आत्म बोध की उजियारी ।

विद्यादि सद्गुणों को बरकर,
अपनी आहुति स्वीकार करो।
हे ईश्वर - सूर्य कृपा करके,
यह आहुति अंगीकार करो ।।

पृष्ठ ५ का शेष....

परमात्मा के साथ मिला के सब प्रकार त्रिकालज्ञ करता है। देखिये कैसी बात है कि परमेश्वर जीव को तो त्रिकालज्ञ करें और स्वयं त्रिकालज्ञ न हों।

सत्यार्थ प्रकाश षष्टम् समुल्लास

दूत के गुणः- जो प्रशंसित कुल में उत्पन्न चतुर, पवित्र हाव भाव, और चेष्टा से भीतर हृदय और भविष्यत में होने वाली बातों को जानने वाला, सब शास्त्रों में विशारद चतुर है। उस

दूत को भी रखें। दूत तो भविष्यत की बात जान सकता है, और परमेश्वर नहीं? कैसी बात है। अब देखियें ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के प्रारम्भ के पृष्ठों में मन्त्र है:- यो भूतं च भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति इसका भाषा अर्थ (यो भूतं च) जो परमेश्वर एक भूतकाल जो व्यतीत हो गया है (च) अनेक चकारों से दूसरा जो वर्तमान (भव्यंच) और तीसरा भविष्यत जो होने वाला है इन तीनों कालों के बीच में जो कुछ होता है उस सब व्यवहारों को वह यथावत जानता है।

भ्रान्ति निवारणम् पुस्तक की भूमिका में स्वामी जी (महर्षि दयानन्द जी) लिखते हैं जो मैं निरानिरी संसार का ही भय करता और सर्वज्ञ परमात्मा का कुछ भी नहीं की, जिसके अधीन मनुष्य के जीवन मृत्यु और सुख दुख है तो मैं भी ऐसे ही अनर्गल वाद विवादों में मन देता जब मनुष्य के जन्म मृत्यु और सुख दुख परमेश्वर के आधीन है तो क्या बिना भविष्यत के ज्ञान के इनकी व्यवस्था ठीक-ठीक हो सकती है? कदापि नहीं। जैसा कि स्वामी जी ने लिखा है कि परमेश्वर को अवधि सहित कोई नहीं जान सकता इसी लिये मनुष्य की बुद्धि उसकी अनंतता को समझने में चकरा जाती है। इत्यादि और भी प्रमाण व युक्ति तर्क आदि दिये जा सकते हैं, जो महानुभाव इस विषय में वार्तालाप करना चाहें मैं उनका बहुत आभारी होऊंगा। पत्र व्यवहार के द्वारा समय तथा स्थान नियत किया जा सकता है। ●

वार्षिकोत्सव

- आर्यसमाज बुडगरा बिजनौर का वार्षिकोत्सव 1, 2, 3 जून को अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया इस अवसर पर डा0 रमेशचन्द यादव, रूपचन्द दीपक, राजबाला आर्या, राकेश-योगेश आदि ने भाग लिया।

- आर्यसमाज हुसैनपुर सुल्तान (बिजनौर) का प्रथम वार्षिकोत्सव 4, 5, 6, जून को मनाया गया, डा0 रमेशचन्द यादव, डा0 ओमदत्त, राजबाला आर्या, योगेशदत्त आदि ने भाग लिया।

- आर्यसमाज समसपुरसद्दों (बिजनौर) का वार्षिकोत्सव 4,5,6 जून को मनाया गया इस अवसर पर श्री राकेश आर्य, ध्यान सिंह, तथा राम कला आदि ने भाग लिया।

-संयुक्त मंत्री,
जिला सभा

पृष्ठ ६ का शेष......

महर्षि ने प्रत्येक कार्य अपने स्वार्थ के लिए नहीं परन्तु सबके हित को दृष्टि में रखकर किया। हमें भी अपने अहं को एक तरफ रखकर आर्यसमाज के हित में सत्संगों, संध्या, हवन आदि कृत्यों में एक रूपता लानी चाहिए। पर उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है और पर उपकार करने का मार्ग इस लेख के आरम्भ में लिखे दोहे में दिखाया गया है। महर्षि के जीवन कार्य तपस्या आदि को देखकर संसार मानेगा।

वृक्ष फले न आपको, नदी न संचय नीर।
पर उपकार के कारणे, संतन धरे शरीर।।

फिर एक स्वर भी सुनाई देगा। परिव्राजक आचार्य स्वामी दयानन्द, पधारा वह परलोक डंके बजाता।। उस महान सन्त जगत गुरु दयानन्द को हमारी यही श्रद्धांजलि होगी । ●

आर्य समाज के अमर लेखक

डा. सत्यकेतु विद्यालंकार

(श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार, आर्यसमाज गोरखपुर)

मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का स्नातक हूँ। मैंने जिन व्यक्तियों से शिक्षा प्राप्त की है, उनमें श्री पं0 विश्वनाथ-जी विद्यालंकार {96-97 वर्ष}, श्री पं0 सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार {92 वर्ष} और श्री पं0 सत्यकेतु जी विद्यालंकार {90 वर्ष तक जीवित रहने के बाद अभी कुछ दिन पहले दिवंगत हुए अन्य किसी प्रोफेसर के विषय में मुझे पता नहीं। श्री प्रो0-सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार तथा श्री पं0 सत्यकेतु जी विद्यालंकार के पत्र मुझे दो वर्ष के अन्दर मिले।

"आर्यजगत" और "आयमित्र" में प्रकाशित मेरे लेखों की उनमें प्रशंसा की और आर्यसमाज के कार्यों के लिए मुझे धन्यवाद दिया था। किसी भी शिष्य के लिए यह एक बड़े गर्व की वस्तु है कि उसके दो प्रतिष्ठित गुरु उसके लिए बधाई दे रहे हों। अब जब मुझे श्री प्रो0 सत्यकेतु जी की मृत्यु की सूचना मिली तो बहुत दुःख हुआ।

डाक्टर सत्यकेतु मर गए। भयंकर सूचना थी। सो चने लगा रोऊँ। अभी इस व्यक्ति ने सात भागों में महर्षि दयानन्द की अमर कीर्ति आर्यसमाज का सौ वर्षों का इतिहास लिखकर आर्यसमाज को अर्पित किया था। और अभी इनके शिष्य पं0 हरिदत्त वेदालंकार जिसने आर्यसमाज के इतिहास के लिखने में इनको अपूर्व सहयोग दिया था, वे भी चले गए थे और अब उनका गुरु, मार्ग दर्शक जीवन की दिशा देने वाला भी चला गया। चला गया तो क्या हुआ। वेद कहता है-

अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता ।
गोभाज इत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।।

यजु0 35/4

यह वेद मंत्र संसार की नश्वरता एवं क्षण भंगुरता का वर्णन करता है और कहता है मनुष्य! तू प्रभु से अपना सम्बन्ध स्थापित कर/कहा गया है "हे आत्मन्! मेरी अ+श्व +त्थ अर्थात् कल न रहने वाले इस संसार रूपी पीपल के पेड़ पर बैठक है। पता नहीं कल भी यह शरीर रहेगा या नहीं? पीपल के पत्तों पर तेरा निवास है। पता नहीं, वायु के एक ही झोंके में कब अलग हो जाय? अतः प्रभु की प्राप्ति का प्रयत्न कर। कवि कहता है--

क्षण भंगुर है जीवन की कलिका
कल प्रात को जाने खिली न खिली
मलयाचल सेवित शीतल
मंद सुगंध समीर चली न चली।
कलि काल कुठार लिए फिरता
तन नम्र है चोट झिली न झिली।
जप "ओ३म्" का नाम हरी रस ने।
कल प्रात को जाने हिली न हिली ।।

पूज्य सत्यकेतु जी चले गए। उनका एक चित्र मेरी आँख के सामने आ गया। मुझे लगा सरस्वती का यह वरद पुत्र स्वामी-श्रद्धानन्द का जीवित स्मारक आज भी मुझे मेज पर लेटे हुए इटली का स्वाधीनता संग्राम का पाठ-पढ़ा रहा है। मेजिनी और गेरीबाल्डी का चित्र मेरे सामने शब्दों के माध्यम से अंकित कर रहा है। मेजिनी और गेरी बाल्डी का प्रकरण उपस्थित करते हुए महाराणा प्रताप और शिवाजी की भी तुलना उपस्थित कर दी और प्रताप का जो रूप, शिवाजी की जो वीरता उन्होंने प्रस्तुत की वह शब्द तो मुझे याद नहीं- मुझे नहीं पता था कि उनके जीवन के अन्त के बाद मुझे उनके लिए श्रद्धांजली अर्पित करनी पड़ेगी परन्तु स्वाधीनता संग्राम में विश्व में अद्वितीय योद्धा महाराणा-प्रताप का अविस्मरणीय रूप आज भी मुझे याद है।

डा0 साहब नहीं रहे । पर उनका काव्य आर्यसमाज का वृहद् इतिहास अजर और अमर है। मानव की दृष्टि से मोह वश दुःख अनिवार्य है परन्तु यदि हम अपने दिलों को टटोल कर देखें तो मौत बहुत बुरी वस्तु नहीं। अगर इस दुनिया में मौत न होती तो हमारा जीवन क्या सुखी होता? मौत न होती तो इन्सान अपनी मुहब्बत और हमदर्दी की भावनाओं को धीरे-धीरे खो बैठता। माँ-बेटा, भाई-बहन, पति-पत्नी, शिष्य गुरू और मित्र एक दूसरे से प्रेम करते करते आखिर नीरस बनने लगते और भगवान से मौत की प्रार्थना करते।"

इस संसार में मनुष्य आता है और कर्म करने के लिए आता है। यह संसार क्षण भंगुर है। आज तो है, पर वह कल नष्ट हो सकता है। एक क्षण का जीता जागता, हंसता खेलता व्यक्ति दूसरे पल नहीं भी रह सकता है। यह समझ कर हमें इस संसार में रहना चाहिए। मृत्यु हो जाने के बाद मनुष्य शरीर को त्याग कर आत्मा चला जाता है, तब उसे चाहे जलाओ, दफनाओ या कुल्हाड़े से काट कर फेंक दो उससे उसका कुछ बनता बिगड़ता नहीं, आत्मा अमर है। इसलिए वेद कहता है "मा गतःनाभादीधिथ:" मरों की चिन्ता मत कर। चिन्ता करनी हो तो उसके गुणों का ध्यान करो। उस मरने वाले के साथ नहीं जाता केवल उसके कर्म ही उसके साथ जाते हैं।

एक मनुष्य था। उसके तीन मित्र थे। एक मित्र ऐसा था जिसके लिए वह जान देता था। दूसरा मित्र दूसरे नम्बर पर था। समझता था मौके पर काम आ ही जाएगा। तीसरे मित्र की ओर वह ध्यान नहीं देता था। एक दिन अचानक उस पर मुसीबत आ पड़ी। उस पर संगीन मुकदमा दायर हो गया। वह भागा-भागा अन्तरंग तम मित्र के यहां गया और सारी राम कहानी सुनाई। उसने कहा, भाई! हमारी तुम्हारे परन्तु वह घर तक ही सीमित है। घर के बाहर के झगड़ों में साथ नहीं दे सकता। उधर से निराश होकर वह दूसरे मित्र के पास गया। "मै तुम्हारा साथ तो दूंगा परन्तु कचहरी के बाहर तक। भीतर जाकर वह मुकदमा अपने आप लड़ना होगा।" उन दोनों से निराश होकर उसने तीसरे मित्र का दरवाजा खटखटाया वह झट उसके साथ हो लिया। वह घर के बाहर कचहरी तक ही नहीं गया, कचहरी में जाकर उसने उसका मुकदमा लड़ा। प्रत्येक मनुष्य के तीन मित्र होते हैं। पहला मित्र धन, दौलत, सम्पत्ति है, दूसरे मित्र सगे सम्बन्धी हैं, और तीसरे मित्र सत्कर्म, निष्काम कर्म है। मनुष्य संपत्ति को सबसे बड़ा मित्र समझता है, उसके लिए जान तक दे डालता है। परन्तु समय आने पर यह साथ नहीं देता। सगे सम्बन्धी हैं वे कचहरी के दरवाजे तक साथ जाते हैं, श्मशान में चार कंधों पर लादकर वहीं छोड़ देते हैं। तीसरे मित्र सत्कर्म, निष्काम कर्म, निस्संग कर्म, निःस्वार्थ कर्म हैं जो न केवल इस जन्म में, इस जीवन में कचहरी में हमारा मुकदमा लड़ने जाते हैं बल्कि इसके बाद की कचहरी में भी हमारे साथ जाते हैं, उन्हीं को हम भूले रहते हैं। यही निष्कम कर्म है जो अपने भले ही के लिए नहीं सारे संसार मात्र के भले के लिए होते हैं। वेद कहता है- " नेन्द्र परा, तेन्न" चिन्ता तुम्हें दूर ले जाएगी। "आरोह तमसो ज्योतिः अन्धकार को छोड़कर प्रकाश पर आरूढ़ हो। एवं "आ-ते हस्तौरभामहे" आ आ हम तेरे हाथों को वे युक्त करते हैं।

इसलिए प्रो0 सत्यकेत जी विद्यालंकार जो महर्षि के अनुयायी और आर्य समाज के इतिहास के अमर लेखक हैं, उनकी मृत्यु पर हम श्रद्धांजलि समर्पित करते हैं। आइए आर्यसमाज के इस अमर लेखक के प्रति हम श्रद्धावनत होकर इसके कदमों पर चलें और बढ़ें। आर्यसमाज में अब ऐसे लेखक दुर्लभ हैं। अब इस सरस्वती के वरदपुत्र के तो दर्शन न होंगे पर उसकी रचनायें हमारा मार्ग प्रदर्शन करेंगी।

— —

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें ।

-- सभामंत्री ।

कैसे गहराती हैं ये विषम दिशायें

□ डॉ० प्रज्ञा देवी
वाराणसी-१०

मानवता के समक्ष सदेव से यह प्रश्न गूँजता रहा है कि परिवार जो समाज की एक छोटी सी इकाई है उसमें परस्पर पति-पत्नी का स्थान क्या है? क्या वय में बड़ा होने से पति शासक एवं पत्नी शासित है? ऋषि मुनियों ने बड़ी सरलता से इसका उत्तर दिया है कि पत्नी पति की अर्धांगिनी अर्धो ह वा एष आत्मनो यज्जाया §शं0ब्रा0 5/1/2/10§ है अतः एक दूसरे के पूरक हैं। वेद ने यह भी कहा कि- "स्त्री जो पुरुष को गृह पर बसाती है और उसके कष्टों का हरण करती है वह पुरुष के लिये भी आदर करने योग्य है§।§।" के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमाः य एक एक आयय। परमस्याः परावतः §ऋ0 5/61/। मन्त्र में श्रेष्ठ नर कौन है यह प्रश्न हुआ जिसका उत्तर आगे के मन्त्रों में प्रस्तुत है कि वही श्रेष्ठ हो सकता है जो अन्यायाचरण से दूर रहकर सबकी रक्षा करने में समर्थ हो। समाज में नारी स्वाभाविक रूप से इन गुणों से युक्त होती है अतः वह मानाही है यही वेद का कथन है किन्तु मानव प्रकृति बड़ी विचित्र है। स्वार्थ एवं अहंकार के घेरे में आकर प्रायः पुरुष परिवार में यह भूल जाता है कि यह गृहस्थ जीवन साझे की गाड़ी है। अहंकार को दबा लेने में ही इसकी सफलता है।

स्वयं चुनाव करके समर्पण का भाव लेकर भी जो पति पत्नी गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते हैं उनमें भी धीरे-धीरे विषमतायें आती हैं दरारें पड़ने लगती हैं इसका मूलकारण स्वार्थ और अहंकार के सिवाय कुछ नहीं है। थोड़े से दोष पर कुछ कठोर कटूक्तियाँ पुरुष ने स्त्री को सुना दीं। स्त्री मन का गुबार न निकाल सकी मन में आँसू का घूँट पीकर रह गई। पुरुष ने इसे अपनी शान समझी शासक का भाव उदय हुआ और उसने एकान्त में उससे यह भी न कहा कि- "मेरी कटूक्तियों से तुम्हें चोट लगी थी न।" जब पुनः कोई स्वार्थ का अवसर आया तो पुरुष ने अपनी मृदु वाक्यावलियों का प्रयोग किया किन्तु स्त्री जो अपना गुबार पहिले नहीं निकाल सकी थी जिसके मस्तिष्क रूपी संग्रहालय में पुरुष द्वारा प्रथम बार प्रयोग की गई कटूक्तियाँ स्थित थीं वह उसे अपना भोला सहज स्वाभाविक व्यवहार अब न दे पायी क्योंकि कहा भी है-

> रोहते सायकैर्विद्धं वनं परशुना हतम् ।
> वाचा दुरुक्तं बीभत्सं न संरोहति वाक्क्षतम्।।
>
> -विदुर नीति 2/78/

अर्थात् बाणों से छेदा गया घाव भर जाता है, कुल्हाड़े से काटा गया जंगल हरा हो जाता है किन्तु दुर्वचन युक्त वाणी से किया गया हृदय का घाव कभी नहीं भरता।।

किन्तु पुरुष को यह खटका और उसने विपरीत इसके कि नरम पड़कर अपनी भूल को पत्नी के समक्ष एकान्त में स्वीकारे और मस्तिष्क को पूर्ववत् निर्मल कर दे उसने कुछ और कठोर दमन चक्र ठीक ऐसे ही प्रारम्भ किया जैसे एक थानाध्यक्ष अपराधियों के साथ किया करता है। इस क्रिया की अनेकों अवसरों पर बार-बार आवृत्ति हुई अहंकार और स्वार्थ के ताण्डव के कारण दोनों की दिशायें चौड़ी होती गईं, विषमतायें गहराती गईं।

बार-बार किये गये दमन चक्र के घाव स्त्री को पीड़ा देते रहे उसका हृदय टूक-टूक हो गया किन्तु पुरुष यही सोचता रहा कि -"अवश्य मैं अपने शासन से अपनी पत्नी में आये रूक्ष व्यवहार को दूर कर लूँगा" पर यह उसकी बड़ी भारी भूल थी। अवसर आने पर पुरुष भले ही अपनी स्त्री के समक्ष कभी नरम पड़ा हो किन्तु यह नरमी उसकी स्वार्थ हेतु थी, यह पत्नी भी अन्ततः समझ जाती है। स्त्री द्वारा ऐसे अवसरों पर उपेक्षा दिखाने पर पुरुष "एक करेला दूसरे नीम चढ़ा" की उक्ति के अनुसार अपनी गर्वोक्तियों का प्रभाव उस पर डालना प्रारम्भ करता है जो व्यर्थ होता है। शीतल मिट्टी में व्यंग बाणरूपी अग्नि के छींटें भला कैसे नहीं झुलसा डालेंगे इस हृदय कमल को। आज अधिकांश नर-नारियों की यही दशा हो रही है।

पुरुष स्त्री के समानाधिकार को स्वीकार करने वाले जनों को यह सोचना होगा कि अपनी भूल हृदय से स्वीकार कर लेना लघुता का चिन्ह नहीं है। बराबर का प्रतिदान दोनों पक्षों के लिये आवश्यक है। ज्यादती किसी भी पक्ष से किसी स्तर से की गई हो वह दोनों पक्षों को शुष्क और नीरस बना देती है। परिणाम स्वरूप दोनों के जीवन में अकेलापन आता है। आनन्द की उपलब्धि तो "गूलर का फूल" बन जाती है। आग से खेले हैं आग में बैठे हैं तो भला शीतल छाँव का अनुभव यह हृदय कैसे कर सकेगा? चाहे कितने ही एयर कण्डीशन चला लीजिये।

धर्मपत्नी गांग जल है तो परायी स्त्री एक मद्य की बोतल। गांग जल की उपेक्षा करके झुलसाने वाले पदार्थ रखकर यह नीड़ ध्वस्त हुए बिना नहीं रह सकता। भौतिक आनन्द की खोज में यह मानव आज बहुत आगे निकल गया है, गलत खान-पान और पैसे के अन्धाधुन्ध मोह ने इसे बहुत ही पतित बना दिया है। "इतो भ्रष्टः ततो नष्टः" वाली स्थिति आ चुकी है। घर में बेचारी देवियाँ दुःखी तड़प रही हैं और यह पुरुष पैसा कमाने में ही दीवाना है। दुर्व्यसनों से दूर रहते हुए एक दूसरे का मान करने से सच्चा सुख होगा यह किसी को ज्ञात नहीं। हृदय एक मन्दिर है जिसमें पति-पत्नी एक दूसरे की प्रतिमा स्थापित करते हैं। वह मन्दिर टूट जाये तो प्रतिमा भी बिखर जाती है। विवाह के प्रथम दिन से ही यह भाव स्थित कर लेने से परस्पर की गर्वोक्तियों कटूक्तियों में अवश्य अन्तर आयेगा अन्यथा ये विषम दिशायें गहराती ही जायेंगी।

आर्यसमाज रठोड़ा (मेरठ) में सभाप्रधान श्री इन्द्रराज जी का भव्य स्वागत

दि0- 12-6-89 को सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी, श्री चौधरी माधव सिंह जी जिला प्रधान तथा प्रदेशीय विधार्य सभा के महामन्त्री, श्री जयन्त कुमार जी पाण्डेय महामंत्री राष्ट्र-रक्षा युवा आन्दोलन, श्री कैलाश चन्द्र जी आर्य §वाल्मीकि§ के साथ साथ जब आर्यसमाज रठोड़ा के प्रथम वार्षिकोत्सव पर पहुँचे तो युवकों में उत्साह भर गया और बड़े उत्साह से समाज के प्रधान और आर्य वीर दल के संयोजक ने माल्यार्पण द्वारा उनका स्वागत किया। श्री सभा प्रधान जी ने ग्राम के आरम्भ में ही बहुत बड़ी मस्जिद का उल्लेख करते हुए कहा कि एक छोटे से ग्राम में जहाँ मुस्लिम आबादी बहुत कम है इतनी बड़ी मस्जिद के अतिरिक्त चार मस्जिदें और हैं जबकि आर्यसमाज अपने दो कमरे भी खड़े नहीं कर पाया है। स्पष्ट है कि विदेशी धन के बलबूते पर ही यह सब सम्भव है। आर्यसमाज और वैदिक धर्म के सिद्धान्त और युक्तियाँ अकाट्य हैं जिनके सामने कोई विधर्मी नहीं टिक सकता आज भी हम शास्त्रार्थ के लिए तैयार हैं। परन्तु देश में निरन्तर बढ़ रहे ईसाईयों मुसलमानों और सिख भाईयों को पता है कि शास्त्रार्थ में वे जीत नहीं सकते। इसलिए विदेशी शक्तियों के इशारे से धर्म परिवर्तन के लिए रुपया बहाया जा रहा है। भारत सरकार को इस धन की बाढ़ को रोकना चाहिए। अन्यथा हिन्दू के अल्प संख्यक हो जाने पर भारतवर्ष ही समाप्त हो जाएगा। इस प्रथम सफल आयोजन के लिए सभा प्रधान जी ने युवकों और अधिकारियों को हार्दिक बधाई और आशीर्वाद दिया।

श्री जयन्त कुमार जी पाण्डेय ने पूर्वाचंल प्रदेश में ईसाईयों के बढ़ते हुए प्रवाह की चर्चा की तथा श्रोताओं को सचेत किया कि यदि हम लोग परस्पर लड़ते रहे तो विदेशी पुनः देश को परतन्त्र बना देंगे।

प्रातः काल भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। इस अवसर पर ग्राम वासियों को स्वामी आनन्दबोध जी का आशीर्वाद मिला।

- संवाददाता।

शिक्षा का लक्ष्य इन्सानियत हो

मंत्री सभा आं.प्र.

हैदराबाद- आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में "वैदिक विचार मंच" द्वारा 4-6-1989 के दिन आयोजित की गई गोष्ठी में "शिक्षा का स्वरूप और पद्धति "विषय पर आन्ध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विठ्ठलराव आर्य से बोलते हुए कहा कि शिक्षा का लक्ष्य इन्सानियत होना चाहिए। जिस शिक्षा से इन्सानियत नहीं पनपनी वैसी शिक्षा अपार धन [illegible] करने पर भी व्यर्थ है। शिक्षा का मतलब चरित्र निर्माण है। चरित्र मन और इन्द्रियों की पवित्रता व संयम से बनता है। अतः पवित्र अंतःकरण के निर्माण की जरूरत है। उन्होंने कहा कि बाह्य जगत की अनुभूति इन्द्रियों के माध्यम से मन को और मन से आत्मा को होती है। आध्यात्म और भौतिक विषयों की जानकारी के लिए बहती नदी के तरह शिक्षा सहज और स्वाभाविक होनी चाहिए। निर्बन्धित शिक्षा दिमागी बोझ है। शिक्षा पद्धति पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि भौतिक और मानसिक पर्यावरण शुद्ध और निर्मल होना चाहिए। प्राचीन गुरुकुल पद्धति में इसका विशेष स्थान था। शिक्षा पद्धति बालक को केन्द्र बिन्दु बनाकर दी जाती थी। आचारवान व्यक्ति को ही आचार्य कहा जाता था। अतः वह भी एक बिन्दु था। इन दो बिन्दुओं को जोड़ने वाली रेखा ही सदाचार है। उन्होंने कहा कि संस्कार शिक्षा का एक हिस्सा था। शिक्षा पद्धति अगर सदाचार व समता मूलक हो तो [illegible] की समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है।

इसी गोष्ठी में उस्मानिया विश्व विद्यालय के कालेज ऑफ एज्यूकेशन के हेड प्रो0 राममूर्ति जी ने कहा शिक्षा सम्बन्धी संसार के सभी विश्व विद्यालयों के प्रयोग धीरे-धीरे भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति को ही उचित मानने के लिए मजबूर हो रहे हैं। अनेकों प्रयोगों के बाद अब विद्यालयों में मॉरल एज्यूकेशन लाया गया है। साथ ही साथ आदमी-आदमी के बीच प्रेम और मानवता कैसे बढ़ाई जा सकती है पर प्रयोग हो रहे हैं। उन्होंने कहा यह भारतीय संस्कृति व शिक्षा पद्धति ही है। शिक्षा नौकरी पेशे के लिए ही न होकर आदमी-आदमी के बीच ममता व मानवता बढ़ाने वाली होनी चाहिए।

डा. कपिलदेव द्विवेदी की विदेश यात्रा

लंदन। भारत के प्रसिद्ध वैदिक एवं संस्कृत विद्वान् तथा गुरुकुल महाविद्यालय हरिद्वार के कुलपति डा0 कपिलदेव-द्विवेदी ने लंदन आर्यसमाज में वेदों में मनोविज्ञान विषय पर बोलते हुए कहा कि हमें वेदों में मनोविज्ञान सम्बन्धित विशद विवरण प्राप्त होता है। मन की पवित्रता, विचारों की शुद्धि और तपस्या को मुक्ति का साधन माना गया है, मन संजीवनी शक्ति है। मन वर्तमान, भूत और भविष्य तीनों कालों में व्याप्त है, मन में संसार का सारा ज्ञान और बुद्धि निहित है तथा मन योग्य सारथी है तथा द्यावा पृथ्वी, लोक, परलोक, वर्तमान, भूत और भविष्य सभी को अपनी परिधि में रखता है।

आपने कहा कि मन आत्मा का प्रतिनिधि है तथा मन ही प्रेरणा का स्रोत है, इनकी प्रेरणा से सारे धर्म, अर्थ काम और मोक्ष कार्य होते हैं।

डा0 द्विवेदी ने आर्यसमाज बर्मिंघम में वेदों के महत्व एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला। यहां आपका स्वागत श्री अंगिरादेव प्रिंजा तथा श्री कृष्ण चोपडा ने किया तथा डा0 द्विवेदी को वेदामृतम् ग्रंथमाला के 12 भाग (सुखी जीवन, सुखीगृहस्थ, सुखी परिवार, सुखी समाज, आचार शिक्षा, नीति शिक्षा वैदिक मनोविज्ञान, वेदों में नारी तथा चारों वेदों के सुभाषितावली) प्रकाशित करने के लिए धन्यवाद दिया।

डा0 द्विवेदी ने आर्यसमाज नाटिंघम, आर्यसमाज मिडिलसेक्स, आर्यसमाज नार्थ लंदन, हिन्दू सेन्टर, हिन्दू कल्चरल सोसाइटी, गीता भवन लंदन में विभिन्न विषयों पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

डा0 कपिल देव द्विवेदी का बी0बी0सी0 से साक्षात्कार श्री शिवाकांत ने लिया। जो बी0बी0सी0 के हिन्दी कार्यक्रम आपसे मिलिए में प्रसारित किया गया। आपने वेदों से संबन्धित, संस्कृत भाषा, स्मृतियों एवं भारतीय संस्कृति से संबन्धित विभिन्न विषयों के उत्तर दिए।

डा0 द्विवेदी 6 जून को ब्रिटेन से प0 जर्मनी पहुँच गए हैं, जहां 30 जून तक फैंकफर्ट, हैडिलबर्ग, डोसिलबर्ग, बर्लिन, म्यूनिस में अनेक विश्वविद्यालयों तथा संस्थाओं में अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। आप इसके पश्चात् हालैण्ड जाएंगे जहां विभिन्न संस्थाओं ने आमंत्रित किया है। डा0 द्विवेदी 23 जुलाई को भारत तीन मास के कार्यक्रम के पश्चात् लौटेंगे।

-सम्वाद दाता

आवश्यक सूचना

समस्त विद्यालयों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य/अध्यापकों को सूचित किया जाता है कि माननीय उच्च न्यायालय के आदेशानुसार अब विद्यालयों में श्रम विभाग का हस्तक्षेप न होगा। इच्छुक व्यक्ति न्यायालय के आदेश की प्रति 6/-रु0 भेज कर प्रधान कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ से प्राप्त कर सकते हैं !

सभा मंत्री।

प्रदेश की समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि अपनी समाज के वार्षिक निर्वाचन को कृपया सम्बन्धित जिला-आर्य उपप्रतिनिधि सभा से प्रमाणित कराके ही आर्यमित्र कार्यालय में प्रकाशनार्थ भेजने का कष्ट करें।

- प्रबन्ध सम्पादक

उत्तर प्रदेशीय समस्त आर्य समाजों को सूचित किया जाता है कि जो समाजें अपने वार्षिक चित्र जिला सभा को नहीं देना चाहती हैं अथवा जिला समायें नहीं लेना चाहती हैं। वह अपने वार्षिक चित्र प्राप्तव्य धन सहित सीधे सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

आर्य समाज बुढ़ाना
(मुजफ्फरनगर)

प्रधान	-	श्री धर्म प्रकाश जी
मंत्री	-	श्री अरविन्द कुमार
कोषाध्यक्ष	-	श्री रामेश्वर दयाल

शोक समाचार

महिला आर्यसमाज गोंडा की पूर्व प्रधाना माता गायत्री देवी जौहरी का लंबी बीमारी के पश्चात् 15-5-89 को मेडिकल कालेज लखनऊ में निधन हो गया। उसी दिन अपरान्ह स्थानीय भैंसा कुंड श्मशान पर उनका दाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार करा दिया। परमात्मा से दिवगंत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

आर्यसमाज बम्बई के परामर्शदाता श्री पं0 दयाशंकर जी शर्मा का दि0- 12 अप्रैल 89 को बम्बई में निधन हो गया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा दुःखी परिवारिकजनों को धैर्य प्रदान करें।

हैदराबाद आ.स.सत्याग्रह की स्वर्ण जयन्ती

— ब्रह्मदत्त स्नातक

कैसा अद्भुत संयोग है कि भारत की स्वाधीनता जिस 15 अगस्त को 1947 में मिली थी, उससे भी 9 साल पहले भूतपूर्व निज़ाम रियासत में देशद्रोही, अंग्रेजों के पिट्ठू, घोर अत्याचारी व साम्प्रदायिकता के अलम्बरदार 8जहाँ पाकिस्तान की रूपरेखा बनी8 शासन को आर्य समाज के राष्ट्रीय सत्याग्रह ने शिकस्त दी थी और 17 अगस्त को सारे सत्याग्रही जेलों से रिहा किये गये थे। स्टेट कॉंग्रेस तथा कॉंग्रेस के उच्च नेताओं और मुस्लिम लीगियों ने शुरू में उसका विरोध किया था परन्तु विजय होने पर उन्हीं नेताओं ने सत्याग्रहियों को बधाई दी और सफलता पर प्रसन्नता जाहिर की। सेवाग्राम 8वर्धा8 में महात्मा गाँधी ने जेल से हमारी वापसी पर फीजी, थाईलैंड और सीमा प्रान्त के गुरुकुल वृन्दावन के अन्तर्राष्ट्रीय जत्थे को न केवल भरपूर शाबाशी दी थी, अपितु इन पंक्तियों के लेखक को द्वितीय विश्व महायुद्ध के आसन्न घटाटोप पर पूरे मन से राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़ने की प्रेरणा दी थी। मैं तब 20 वर्ष का युवा था और गुरुकुल से पढ़कर निकला था।

कुल मिलाकर 12000 हजार से ज्यादा रियासत तथा बाहर के प्रान्तों एवं विदेश के नौनिहालों ने इसमें भाग लिया था। सार्वदेशिक सभा, पंजाब, उत्तर-प्रदेश, बिहार, हैदराबाद, गुजरात की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधानों ने सर्वप्रथम इस आन्दोलन का नेतृत्व किया था।
इस प्रकार बलिदान एवं तपस्या की उस अग्नि परीक्षा में आर्यसमाज उत्तीर्ण हुआ। निज़ाम रियासत ने क्षतिपूर्ति के रूप में समाज को तब 26 लाख रुपये दिए थे। कॉंग्रेस एवं उसकी सरकारें बाद में इस आन्दोलन को राष्ट्रीय न कहकर साम्प्रदायिक कहने लगीं।

आर्यसमाज के अथक प्रयास के परिणाम स्वरूप 1985 में विधिवत् हैदराबाद के आ0स0 सत्याग्रह को राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन का अंग घोषित कर दिया और एक गैर सरकारी जाँच समिति गृहमन्त्रालय ने गठित कर दी। सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती इसके अध्यक्ष तथा उनकी संस्तुति पर 7 अन्य सदस्य रखे गये।

समिति की सिफारिश पर 200 से अधिक सत्याग्रहियों को केन्द्र/राज्य सरकारों ने सम्मान पेंशनें जारी कर दी हैं, परन्तु कश्मीर, पंजाब, आजाद हिन्द फौज तथा अन्य आन्दोलनों के लिये गृह मंत्रालय द्वारा गठित इसी प्रकार की सलाहकार समितियों की भाँति आ0स0 की उपसमिति में सुधार की अत्यन्त आवश्यकता है।

अब से एक वर्ष पूर्व हैदराबाद आ0स0 सत्याग्रह स्वाधीनता सेनानी समिति की ओर से हमने इस ऐतिहासिक आन्दोलन की स्वर्ण-जयन्ती अगस्त 89- जुलाई 90 तक क्रमबद्ध रूप में अन्य स्वतन्त्रता संगठनों के सहयोग से राष्ट्रीय स्तर पर मनाने के लिये सार्वदेशिक व प्रतिनिधि सभाओं व प्रमुख आर्य नेताओं को पत्र लिखे हैं।

मवाना 8मेरठ, उ0प्र08 के श्री नरेन्द्र कुमार शास्त्री ने एक पत्र लिख कर हमें इस स्वर्ण जयन्ती की तैयारी करने के लिये झकझोरा है और सर्वात्मना सहयोग के लिए प्रस्ताव भी भेजा है। 43000/- रुपये दान सार्वदेशिक सभा को देने वाले अहमदाबाद के आ0स0 सत्याग्रही जयन्ती भाई 873 वर्ष8 उक्त समस्त प्राप्त होने वाली स्वाधीनता सेनानी पेंशन को भी साथियों के हित में दान देने का उद्यत हैं।

इन समस्याओं को सुलझाने, समाज में उन बचे हुए या मृत सत्याग्रहियों को सम्मान देकर त्याग, बलिदान व समर्पण करने की परम्परा पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है।

हम आपकी प्रतिक्रिया और सहयोग के लिये आभारी होंगे। स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रम की सिलसिलेवार योजना आगे देंगे।

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्यमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र

नारायण स्वामी भवन, ५- मीराबाई मार्ग, लखनऊ

दूरभाष ७५६६३

पंजीकरण स0 एल0डब्ल्यू/एन पी ७८

आषाढ़ शुक्ल- ६

९, जुलाई रविवार, १९८९ ई.

"नगर आर्यसमाज" अजमेर का वार्षिक निर्वाचन

प्रधान - श्री कविराज धर्मसिंह कोठारी
मंत्री - डा0 दिनेशचन्द्र शर्मा
कोषाध्यक्ष- श्री चन्द्रप्रकाश जी भटनागर

गाजीपुर जनपद में वेद प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा के योग्य उपदेशक पं0 महावीर शास्त्री जिला उप प्रतिनिधिसभा गाजीपुर के तत्वावधान में प्रतिदिन प्रातः यज्ञ, भजनोपदेश के पश्चात शतायु रहने के लिए योग, प्राणायाम का प्रशिक्षण भी देते हैं, सैदपुर, सादात, डहन, जमानियाँ क्षेत्र के हजारों लोग लाभ उठा रहे हैं।

- दि0-18-6-89 से आर्यसमाज राजेन्द्रपुरी के सहयोग से आदर्श ग्राम-कन्कऊ, लंका मैदान, सिकन्दरपुर, कहुआमोड़ आदि स्थानों पर यज्ञ, भजन, प्राकृतिक चिकित्सा पर व्याख्यान, तथा बन्दूक से शब्द भेदी निशाना, और मोटर साइकिल से दौड़ते हुए, जलती मोमबत्ती पर अचूक वार आदि का प्रदर्शन हुआ।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्यमित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

सच्चिदानन्द शास्त्री

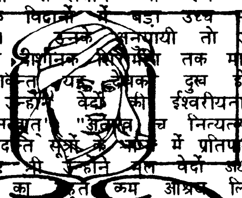
(रजि. सं. २२४१/५७) आषाढ़ शुक्ल-१३, रविवार- संवत् २०४६ वि०, दिनांक १६ जुलाई १९८९

वेदाध्ययन का अधिकार

शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं

अर्थात् इसलिये शूद्र को अधिकार नहीं ... स्मृति के द्वारा ... के सुनने और पढ़ने ... शूद्र वेद के शब्द सुन ले तो उसके कान को सीसे और लाख से भर देना ... शूद्र चलता फिरता श्मशान ... करना चाहिए, इसी से अध्ययन का ... हुए कैसे अध्ययन कर सकता है। वेद के उच्चारण ... पर जिह्वाच्छेद ... शरीर ... कर डालने का विधान है। इसलिए वेद के अर्थ ज्ञान और उसके अनुसार आचरण ... धर्मव्याध ... ज्ञान की उत्पत्ति हुई उनके फल की प्राप्ति ...

श्री शंकराचार्य जी इस युग के दार्शनिक विद्वानों में बड़ा उच्च स्थान रखते हैं। उनके अनुयायी तो उन्हें जगत का ... मानते हैं। किन्तु यह देखकर दुःख होता है कि उन्होंने वेदों की ईश्वरीयता "शास्त्रयोनित्वात्" ... च नित्यत्वम् ... में प्रतिपादन करते हुए भी ... वेदों ... और श्रुति के नाम से ही ...



प्रधान सम्पादक

सदस्यता शुल्क

अंक-२८

... और फिर उसे ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया गया है। शूद्र योनि में उत्पन्न श्री विदुर आदि विशेष ज्ञान से सम्पन्न माने जाते हैं इसलिए शूद्र का भी ... श्री शंकराचार्य जी उसको ... निराकरण करने का प्रयत्न करते हैं।

न शूद्रस्याधिकारो वेदाध्ययनाभावात् अधीतवेदो हि विदितवेदार्थो वेदार्थेष्वधिक्रियते न च शूद्रस्य वेदाध्ययनमस्ति उपनयनपूर्वकत्वात् वेदाध्ययनस्य उपनयनस्य च वर्णत्रयविषयत्वात् ...

... चयेषां पुनः पूर्वकृतसंस्कारवशाद् विदुरधर्मव्याधप्रभृतीनां ज्ञानोत्पत्तिस्तेषां न शक्यते फल प्राप्तिः प्रतिषेद्धुं ज्ञानस्यैकान्तिकफलत्वात्।

देश और जाति के लिये बलिदान भावना जागृत करो

वैदिक धर्म प्रचार महाविद्यालय, ब्रजघाट गाजियाबाद का सत्र उद्घाटन समारोह

मध्यकालीन सभी भारतीय आचार्यों ने यथा श्री शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य, माध्वाचार्य तथा सायणाचार्य आदि ने ... व्यक्तियों को वेद पढ़ने के अधिकार से वंचित करके उनके प्रति अनुदारता का ही परिचय नहीं दिया, अपितु आर्य जाति की भी बहुत बड़ी हानि की। इस युग के महान तत्वदर्शी ऋषि दयानन्द ने वेदों का ही प्रमाण देकर उन्हें वेद पढ़ने का अधिकार दिया। आर्य जाति महर्षि के इस उपकार को कभी विस्मृत नहीं कर सकेगी। ... लेख के ... सम्पादक

... वैदिक धर्म प्रचार महाविद्यालय, ब्रजघाट ... सत्र उद्घाटन समारोह ... गाजियाबाद, मेरठ, मुरादाबाद, रामपुर, और ... आये हुये प्रतिनिधियों की उपस्थिति में ... करने का तो कहना ही क्या है।

श्री शंकराचार्य के स्त्रियों के विषय ... कौन है जो नरक का एक द्वार है, उसका श्री शंकराचार्य जी उत्तर देते हैं कि नारी स्त्री है जो नरक का एक द्वार है। ...

शेष पृष्ठ पर

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ - आषाढ़ शुक्ल १३ - संवत् २०४६ वि.
१५, जुलाई १९८९, दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

भारत की वैदेशिक नीति

भारतीय स्वतन्त्रता के पूर्व ही विश्व के क्षितिज पर दो महान शक्तियाँ उदय हो चुकीं थीं और विश्व लगभग दो खेमों में बँट चुका था। एक शक्ति थी साम्राज्यवादी जिसका प्रमुख था अमेरिका और दूसरी शक्ति थी साम्यवादी जिसका प्रमुख था सोवियत रूस। विश्व के लगभग एक तिहाई से अधिक देश किसी न किसी महाशक्ति से अपने को आबद्ध कर चुके थे। रूस के साथ पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, रूमानिया, हंगरी, बल्गेरिया आदि कम्युनिस्ट देश थे तो दूसरी महाशक्ति अमेरिका के साथ ब्रिटेन, फ्रान्स, कनाडा, जापान आदि पूंजीवादी व्यवस्था के पोषक देश थे। कुछ देश ऐसे भी थे जिन्होंने किसी गुट से अपना सम्बन्ध या सैनिक सन्धियाँ नहीं की थीं और अपना अलग अस्तित्व बनाए रखा था। ऐसे देश गुटनिरपेक्ष नीति का अनुसरण करना चाहते थे और भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात् पं0 जवाहर लाल नेहरू के नेतृत्व में इसकी अगुआई के समर्थक थे। चीन यद्यपि लाल हो चुका था और साम्यवादी देश होने के नाते उसका झुकाव रूस की ही ओर था किन्तु पं0 नेहरू के पंचशील सिद्धान्तों का वह पोषक था। अमेरिका से प्रारम्भ के कई दशक पर्यन्त उसके सम्बन्ध बहुत ही तनावपूर्ण रहे जिसका प्रमाण उसके द्वारा समय समय पर अमेरिका को दी जाने वाली शताधिक चेतावनियाँ थीं।

आज इन दोनों महाशक्तियों के पास अणुशक्ति की वह संहारक क्षमता है कि वे इस धरती को इक्कीस इक्कीस बार समूल नष्ट कर सकते हैं। आज विज्ञान की गति लोकोपकारक कम संहारकारिणी अधिक है। इस समय अस्त्र शस्त्रों के निर्माण पर खरबों डालर यह दोनों महाशक्तियाँ प्रतिवर्ष खर्च कर रही हैं। ये किसी भी देश की वैदेशिक नीति को प्रभावित करने में सक्षम बनती जा रही हैं और गुटनिरपेक्षता के कई सदस्य देश अब यह सोचने को विवश होते जा रहे हैं कि वर्तमान परिस्थिति में हमें किसी न किसी शक्ति से अपने को सम्बद्ध करना ही होगा। पंचशील के सिद्धान्तों की उपज भारत के उदार सह-अस्तित्व पर निर्मित है। "जिओ और जीने दो" का सिद्धान्त सर्वप्रथम भारत से ही "सर्वेभवन्तु सुखिनः" के रूप में प्रस्फुटित हुआ था। प्रत्येक राष्ट्र को अपनी व्यवस्था, अपनी इच्छानुसार बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप के चलाने का पूर्ण अधिकार है। समस्त देश विशेषतया पड़ोसियों से मैत्रीभाव हम आर्यों की जन्मजात परम्परा से जुड़ा हुआ है। हमने इस बात का सदैव प्रयास किया है कि पड़ोसी देशों से हमारे सम्बन्ध मधुर से मधुरतर बने रहें और किसी भी स्थिति में किसी भी देश से टकराव की नौबत न आने पावे।

दुर्भाग्य से हमारे यहाँ पिछले कुछ समय से विदेशनीति में काफी परिवर्तन आया है। इस नीति के चलाने तथा बनाने वाले शासकीय नेता इस प्रयत्न में रहते हैं कि विदेशीनीति को पार्टी के परिप्रेक्ष्य में देखा जाय न कि देश के परिप्रेक्ष्य में। यही कारण है कि इस नीति निर्धारण में न विपक्ष से परामर्श किया जाता है और न बुद्धिजीवियों की सम्मति को प्रश्रय दिया जाता है। चीन, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, श्री लंका, आदि हमारे पड़ोसी देश हैं। इन देशों की सहायता करने में हम सदा अग्रणी रहे हैं फिर भी नीति कुछ ऐसी बनी है कि हमारे सम्बन्ध इन देशों से बिगड़ते ही जा रहे हैं। वर्तमान में लंका से हमारे सम्बन्ध बहुत कटु होते जा रहे हैं परिणाम क्या होगा यह भविष्य के गर्भ में है। जिस समय लंका में सेना भेजने का निर्णय लिया गया था उस समय देश के कतिपय बुद्धिजीवियों ने कहा था कि यह निर्णय देशहित में नहीं होगा। अब तमिल मुक्ति चीतों ने लंका सरकार से समझौता करके भारतीय सेनाओं को लंका से चले जाने को कहा है। लंका में रहने वाले तमिलभाषी अल्पसंख्यक बहुत लम्बे समय से अन्याय और भेदभाव के शिकार हो रहे थे! वहाँ का शासन उन्हें सहानुभूति से नहीं देखता था और उसका यही प्रयास था कि वे लोग तंग आकर भारत चले जायँ। काफी खूनखराबा हुआ और अन्त में निराशा ने एक बड़े विद्रोह का रूप ले लिया। तमिलमुक्तिचीते के नौजवान जान हथेली पर रखकर खड़े हो गये और स्थिति इतनी भयानक हो गई कि लंका सरकार के आग्रह पर ही तमिलों की रक्षा तथा शान्ति स्थापना के लिए भारत को सेना भेजनी पड़ी। अब तमिल मुक्तिचीतों ने ही लंका सरकार से समझौता करके भारतीय सेनाओं को लंका से चले जाने को कहा है जिससे स्थिति और विस्फोटक होती जा रही है। शान्ति समझौता द्विपक्षीय था और जब तक पूर्ण रूप से उसका पालन अथवा क्रियान्वयन नहीं हो जाता सेना को वापस बुला लेने का कोई औचित्य नहीं है। लंका के राष्ट्रपति प्रेमदास लंका भारत समझौते के शुरू से ही विरोधी रहे हैं। पिछले चुनाव में शासकीय पार्टी और विरोधीपार्टी एक बात पर सहमत थे कि भारतीय सेनाओं को वापस भेज दिया जायेगा। अब हमारी हालत यह है कि वहाँ न रहते बनता है और न आते। जिनकी रक्षा के लिए हम वहाँ गये थे वे ही कहने लगे हैं कि हम वापस लौट जायँ। उधर लिट्टे वाले तथा अन्य कई छोटे मोटे गुट हथियारों से लैस खड़े हैं ऐसी स्थिति में हमारे कुशल नेतृत्व की कठिन परीक्षा का अवसर उपस्थित हो गया है।

हम आशा करते हैं जिस उददेश्य के लिए हम वहाँ पहुँचे थे वह पूर्ण होगा और दोनों देश सौहार्दपूर्ण वातावरण में पुनः आबद्ध होंगे।

निशि अग्निज्योति

सायंकाल की आहुतियाँ मन्त्रः-

ओ३म् अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा।।1।।
ओ३म्- अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा।।2।।
ओ३म्- अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहा।।3।।
ओ३म्- सजूर्देवेन सवित्रा सजूरात्र्येन्द्रवत्या।
जुषाणो अग्निर्वेतु स्वाहा।।4।।

सूर्य दिवस में करता जैसे, निशि
अग्नि ज्योति विस्तार करो।
हे ईश्वर-अग्नि कृपा करके, यह आहुति
अंगीकार करो।।
दीपक में ज्योति अग्नि की है
ज्योति अग्नि में परमेश्वर की
यह दीप रात्रि में जलकर के
दिखलाता छवि सर्वेश्वर की।

यह अग्नि ज्योति, वह ज्योति अग्नि
दे अग्नि प्रभा उपकार करो।
हे ईश्वर-अग्नि कृपा करके, यह आहुति
अंगीकार करो।।
वर्चस्व अग्नि में ईश्वर का
दीप ज्योति में वही वर्च है।
अन्तर्यामी के प्रकाश में
रात्रि व्याप्त उत्कर्ष अर्च है।

प्रभा लोक से जड़ चेतन तक तुम
निशा साम्य श्रृंगार करो।
हे ईश्वर-अग्नि कृपा करके, यह आहुति
अंगीकार करो।।
प्रेरक सबका यही अग्नि है
हो क्षय निशा की अँधियारी
इस इन्द्रवती प्रिय निशा मध्य
हो आत्म ज्ञान की उजियारी।

विद्युत प्रकाश जगमग देकर, यह
आहुति प्रभु स्वीकार करो।
हे ईश्वर-अग्नि कृपा करके, यह आहुति
अंगीकार करो।।

—देव नारायण भारद्वाज
आजमगढ़

वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है....

• श्री सत्यकाम जी विद्यालंकार

वेद विषयक आर्यसमाज के तीसरे नियम को समझने का हमें यत्न करना है। आर्यसमाज का तीसरा नियम है कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।" इस नियम को समझने के लिए वेद का "अदिति"- शब्द बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। यह एक अद्भुत शब्द है। "अदिति" के लिए ऋग्वेद (1-89-10) में निम्न मन्त्र है:

> अदिति द्यौः अदिति अन्तरिक्षं अदितिः
> माता सः पिता सः पुत्रः।
> विश्वेदेवाः अदिति पंचजनाः
> अदिति जातं अदितिः जनित्वम्।।

इस मन्त्र का अर्थ यह है कि संसार में जो कुछ है, वह "अदिति" है। "अदिति" शब्द "दिति" से बना है। जो दिति न हो वह अदिति होगा। "दिति" शब्द "दोः अवखण्डने" धातु से बना है। "दिति" का अर्थ है- "खंडित"। "अदिति" का अर्थ हुआ- "अखंडित"। खंडित का अर्थ है- एक से दो, दो से तीन, तीन से चार- इस प्रकार बंटते जाना। अखंडित का अर्थ है- सदा-सर्वदा एक बने रहना, टुकड़ों में न बंटना। जितना भौतिक ज्ञान है, जिसे हम "विज्ञान" कहते हैं, वह सब दिति के भीतर समा जाता है क्योंकि वह कभी "सत्य" माना जाता है, कभी गवेषणा करते-करते "असत्य" हो जाता है और छोड़ दिया जाता है। अगर सब-कुछ "अदिति" है, जो जात या जनित्व है, वह सब "अदिति" है, तो वेद भी अदिति है, सत्य भी अदिति है, वेद-ज्ञान भी "अदिति" है। वेद-ज्ञान को अदिति कहने का अर्थ हुआ "अखंडित"-ज्ञान, ऐसा ज्ञान जो सदा-सर्वदा एक बना रहता है, कभी बदलता नहीं- सदा सत्य-सनातन। इसी "अदिति"- शब्द के लिए ऋग्वेद (8·18·6) में दो अन्य शब्दों का प्रयोग हुआ है जिससे हमारा विषय अधिक स्पष्ट हो जाता है। वह मन्त्र है:

> अदितिर्नो दिवा पशुं अदितिर्नक्तं अद्वया।
> अदितिः पात्वंहसः सदावृधा।।

इस मन्त्र में "अदिति" के लिये "अद्वय" तथा "सदावृध शब्दों का प्रयोग हुआ है। "अद्वय" का अर्थ है- जो दो न हो, "सदावृध" का पदच्छेद कर के इसके दो अर्थ हो जाते हैं- "सदावृध" अर्थात्- जो सदा बढ़ता रहे, विकसित होता रहे, एक से दो-दो से तीन, तीन से चार होता रहे, बंटता रहे, इसका दूसरा अर्थ है- सदा-अवृध जो सदा एक रहे, एक से दो, दो से तीन न हो, नित्य-सनातन, एक रूप में बना रहे। इस प्रकार वेद ने ज्ञान को तीन भागों में विभक्त किया है- "अदिति" "सदावृध" तथा सदा-अवृध। "अदिति" वह ज्ञान है जो सदा रहता है, उसमें दो पक्ष नहीं हो सकते, "सदावृध" वह ज्ञान है जो सदा बढ़ता रहता है, बदलता रहता है, आज यह और कल वह बढ़ेगा तो बदल कर ही बढ़ेगा- यह वह ज्ञान है जिसे हम आज की भाषा में "विज्ञान" कहते हैं, "सदा-अवृध" वह ज्ञान है जिसे हम पहले "अदिति" कह आये हैं- सत्य-ज्ञान, अखंडित - ज्ञान, एक-ज्ञान, न बदलने वाला ज्ञान या जिसे हम ईश्वरीय-ज्ञान कह सकते हैं। भौतिक-ज्ञान सदा बढ़ता रहता है, "सदावृध" रहता है, बदलता रहता है, यह "भौतिक-विज्ञान" है, इसका गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा आदान-प्रदान हो सकता है या मनुष्य द्वारा आविष्कार हो सकता है, आध्यात्मिक - ज्ञान सदा एक रहता है, "अदिति" या "अद्वय" है, दो नहीं एक है, सदा-सनातन है, इसका आविष्कार नहीं हो सकता, यह सदा दिया जाता है। संसार में सदा एक रहने वाली अगर कोई वस्तु है तो वह "सत्य" है, "सत्य-ज्ञान" है। "सत्य सदा एक रहता है, अखंडित रहता है, वेद के शब्दों में कहें तो सत्य सदा "अद्वय" है, "अदिति" है। यह नहीं हो सकता कि किसी बात के लिए हम कहें कि यह भी ठीक है और उसको विरोधी बात भी ठीक है। सत्य सदा "अद्वय" होता है। उदाहरणार्थ, हिन्दू हो, ईसाई हो, मुसलमान हो, यहूदी हो, पारसी हो- सभी कहेंगे कि सत्य बोलना चाहिये, कोई नहीं कहेगा कि सच भी बोल सकते हैं और झूठ भी बोल सकते हैं, सब कहेंगे कि प्रेम करना चाहिये, कोई नहीं कहेगा कि प्रेम भी करो और द्वेष भी करो, सब कहेंगे परोपकार करना उचित है, कोई नहीं कहेगा कि परोपकार भी करो, पर-अपकार भी करो। कई ऐसे आधारभूत तत्व हैं जिन्हें "अद्वय" - अर्थात उनमें दो पक्ष हो नहीं सकते- ऐसा सब कोई कहते हैं। अगर अदिति का अभिप्राय "अद्वय" है, तो वेद ने इसी को उक्त मन्त्र में "सदावृध" या सदा बढ़ने वाला, "वर्धमान" क्यों कहा? वर्धमान तो वह तत्व है जो सदा बढ़ता रहता है। छोटे से बड़ा और बड़े से बहुत बड़ा हो जाता या हो सकता है। आज जैसा है, कल वैसा नहीं है, अर्थात् पहले जैसा नहीं है। वेद के साथ "अद्वय" तथा "वर्धमान" को जोड़ देने के रहस्य पर हम कुछ पहले और कुछ अब प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

यजुर्वेद के 40वें अध्याय में "विद्या" तथा "अविद्या" का वर्णन आता है। वहां कहा गया है:

> अन्यदाहुः विद्यया अन्यदाहुः अविद्यया।
> इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद् व्याचचक्षिरे ।।
> विद्यां च अविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
> अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।।

इन मंत्रों का अभिप्राय यह है कि "अविद्या" से मृत्यु को तर जाते हैं, और "विद्या" से अमृत की प्राप्ति होती है। कितनी बेतुकी बात लगती है यह। यदि अविद्या से मृत्यु को तर जाते हैं तब तो सबका लक्ष्य अविद्या होना चाहिये। परन्तु नहीं, वेद में तथा उपनिषद् में विद्या तथा अविद्या का अर्थ क्रमशः अज्ञान तथा प्रगाढ़ अज्ञान नहीं है। वैदिक टर्मिनोलोजी तथा लौकिक टर्मिनोलोजी में जमीन-आसमान का भेद है। वेदों तथा उपनिषदों में भौतिकवाद को "अविद्या" कहा गया है, अध्यात्मवाद को विद्या कहा गया है। वेदों तथा उपनिषदों की शब्दावली तथा हमारी दिन-रात की शब्दावली में महान् भेद है। यह स्पष्ट है कि भौतिक औषधियों के सेवन से रोग से मुक्ति होती है, दीर्घ-जीवन हो सकता है, मृत्यु से लड़ा जा सकता है। इसी कारण से तो कहा- अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा"- अविद्या से, भौतिकवाद से, मृत्यु को तो तरा जा सकता है, परन्तु- (विद्ययामृतम् श्नुते)- अमृत की प्राप्ति "विद्या" से ही होती है- यहां "विद्या" का अर्थ पढ़ने-पढ़ाने की विद्या से नहीं, "आत्म-ज्ञान" की विद्या, अध्यात्मवाद की विद्या से है। वेदों की शब्दावली में भौतिकवाद "अविद्या" है, अध्यात्मवाद "विद्या" है।

यह ठीक है कि हमारा ज्ञान, ज्ञान तभी कहला सकता है जब वह वर्तमान हो, आगे-आगे बढ़े, उन्नति करे। आज का वैज्ञानिक-जगत इसलिए श्रेयस्कर माना जाता है क्योंकि आज जो बात ठीक मानी जाती है, कल रिसर्च या परीक्षण या खोज करते-करते गलत मालूम पड़ने पर छोड़ दी जाती है। अगर विज्ञान किसी जगह आकर खड़ा हो जाये, रुक जाय तो वह फेंक देने लायक होगा। परन्तु यह बात भौतिक-विज्ञान पर ही लागू होती है, आध्यात्मिक-विज्ञान पर नहीं। अध्यात्म सदा "अद्वय" तथा "वर्धमान" होता हुआ भी "अवर्धमान" (सदा-अवृध) होता है। हिंसा से शुरू कर मनुष्य "अहिंसा" पर जाकर रुकता है, असत्य से शुरू कर "सत्य" की खोज में भटकता है, चोरी-डाके-स्तेय से चलता-चलता "अस्तेय" को लक्ष्य बनाता है, अब्रह्मचर्य तथा पर- दारा- गमन करता-करता "सदाचार" तथा "ब्रह्मचर्य" को ही जीवन का लक्ष्य बनाता है, छीना-झपटी से जीवन शुरू कर "अपरिग्रह" को ही सामाजिक-जीवन का टरमिनस बनाता है।

शेष पृष्ठ ८ पर

गायत्री

• स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष
वैदिक संस्थान नजीबाबाद (उ.प्र.)

{गतांक से आगे}

इतना ध्यान अवश्य रहे कि जाप अर्थ विचार पूर्वक होना चाहिये। योग दर्शन के शब्दों में "तज्जपस्तदर्थ भावनम्" अर्थात जो जाप उसके अर्थ के अनुसार भावनायें बनायें। यदि अर्थ का पता नहीं होगा, तो उसके अनुसार भावनायें बनेंगी ही नहीं। अर्थ का पता होगा,उस पर विचार होगा,तभी भावनायें बनेंगी। अर्थ को जाने बिना विचार सम्भव नहीं और ऐसा किये बिना किया जाने वाला जाप तोता-रटन्त ही बनकर रह जाता है। मन भी तब तक नहीं लगेगा,जब तक अर्थ ज्ञात नहीं होगा और उस अर्थ का मन्त्र जाप के साथ स्मरण व विचार नहीं होगा ।मन्त्र के साथ-साथ अर्थ का चलना अनिवार्य है। यह प्रकार कुछ काल तक ही अपनाना पड़ता है। कुछ दिनों के बाद ऐसी स्थिति बन जाती है कि उपासना के लिये बैठकर ज्यों ही मन्त्र का जाप प्रारम्भ किया,त्यों ही अर्थ भी ध्यान में आने लगा । कुछ और समय बीतने पर इतना अभ्यास हो जाता है कि मन्त्रार्थ पूर्णतया हृदयंगम हो जाता है तथा मन्त्र के शब्दों में से ही अर्थ प्रगट होता प्रतीत होने लगता है अथवा यह कहना चाहिये कि मन्त्र के शब्द ही अर्थ रूप दिखायी देने लगते हैं। इससे आगे की स्थिति तन्मयता की होती है,जिसे ध्याता,ध्यान और ध्येय का एक हो जाना कहते हैं,यही समाधिक की अवस्था है। प्रारम्भ में अवश्य अड़चन आती है। अड़चन है ध्यान के समय मन का इधर-उधर भागना, मन में विविध विचारों का आते रहना-सामान्यतया ऐसा होता ही है। मन में जो विचार घर किये हुए हैं,साधक जिनका अभ्यस्त होता है, वह तो एक के बाद एक आने ही ठहरे। रिक्त आसन पर प्रत्येक आकर बैठना चाहता है किन्तु जब आसन रिक्त न हो,जब स्थान पहले से ही भरा हुआ हो तो वहाँ किसी के आने का प्रश्न ही नहीं। जब तक हृदयासन रिक्त रहेगा,यही दशा रहेगी। परन्तु ज्यों-ज्यों जगत् पिता और जगत्पति की ओर प्रवृत्ति होती जायेगी, त्यों-त्यों उन विचारों का आना कम होता जायगा।

मन को स्थिर करने के लिये प्राणायाम अमोघ अस्त्र है। जब मन भागे तभी प्राणायाम का प्रयोग किया जाना चाहिये। ध्यान के लिये प्रारम्भ में ही प्राणायाम का किया जाना आवश्यक है किन्तु मध्य में भी जब मन इधर-उधर भगने लगे,तभी प्राणायाम किया जाना चाहिये। प्राणायाम का अच्छा अभ्यास हो तो प्राणायाम करते ही मन स्थिर हो जायगा। ध्यान-उपासना बिना प्राणायाम के भी की जा सकती है किन्तु उससे समाधि तक पहुँचने की आशा नहीं करनी चाहिए।

ध्यान की प्रवृत्त को दृढ़ बनाने, पुराने सांसारिक विषयों के विचारों के निराकरण और परमात्मा की प्राप्ति की उत्कट अभिलाषा जगाने के लिये उपनिषदादि अध्यात्म ग्रन्थों का अध्ययन और चिन्तन भी अत्यन्त आवश्यक और परम सहायक है। जितना चिन्तन होगा,उतनी ही ध्यान में एकाग्रता बढ़ेगी और उतनी ही शीघ्र समाधि में सफलता होगी। किसी-किसी साधक को जीवन भर सफलता नहीं मिलती। परन्तु इससे उकता कर और निराश होकर ध्यान का अभ्यास ही छोड़ बैठना भूल है। मन न लगे,न सही-- रूचि तो है,प्रवृत्ति तो बन रही है। यही प्रवृत्ति कारण होती है, जब किसी को अल्पायु में ही ध्यान की रूचि,वैराग्य और समाधि की प्राप्ति होती है। इस कारण से अभ्यास और प्रयत्न छोड़ देना ठीक नहीं।यही तो जीवन नहीं है,कलेवर ही तो बदलना होता है। यही अभ्यास और यही प्रवृत्ति अगले जन्म में आध्यात्मिक सफलता के आधार और भूमिका बनेंगे। एतदर्थ नैराश्य को निकट नहीं आने देना चाहिए। अपितु निरन्तर लगे रहना चाहिये।

ध्यान के लिये व्याहृति युक्त गायत्री का ही जाप होना चाहिये। तीन वेदों में गायत्री मन्त्र चार स्थलों पर आया है। केवल यजुर्वेद के 36 वें अध्याय में ही इसके साथ तीन व्याहृतियाँ लगी हुयी हैं। जाप में इसका विशेष महत्व है और गायत्री के अर्थों में भी इन व्याहृतियों से विशेषता आ जाती है। गायत्री छन्द तो "तत्सवितुर्वरेण्यम्" से प्रारम्भ होता है किन्तु व्याहृति सहित पूरा मन्त्र इस प्रकार है--

ओउम् भूर्भुवःस्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम्। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो योनः प्रचोदयात्। यजुर्वेद 36/3 ।

अर्थ --{ओउम्} सृष्टि का उत्पन्न,संचालन और प्रलय करने वाला परमात्मा समस्त प्राणी-अप्राणी जगत का {भूः} जीवन आधार है।{भुवः} दुःख विनाशक और{स्वः} आनन्द स्वरूप है। हम{तत्} उस {सवितुःदेवस्य}सर्वोत्पादक देव का {वरेण्यम्} वरण करने योग्य{भर्गः} तेजस्वरूप {धीमहि}धारण करें। {यः} जो{नः}हमारी {धियः} बुद्धियों को {प्रचोदयात्} प्रेरणा करे, प्रेरणा करने वाला है।

गायत्री उपासना का लाभ--

गायत्री-उपासना का वास्तविक लाभ है परमपिता परमात्मा में श्रद्धा की उत्पत्ति और उसकी प्राप्ति के लिये उत्कटता का उत्पन्न हो जाना है। इससे साधक सांसारिक विषय-भोगों के बन्धनों से मुक्त होकर इन्हें केवल शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये भोगता है---स्वाद और सजावट के लिये नहीं। मानव जीवन का चरम् लक्ष्य और जीवन की परम् गति मोक्ष प्राप्ति ही है और साधक गायत्री उपासना से नित्य निरन्तर उसी ओर प्रगति करता है ।

एक समय वह भी आता है, जब वह साक्षात् करता है अर्थात उस परम देव की निकटता तन्मतया में प्राप्त करता है। बस, यही समाधि है, जहाँ साधक "स्व"को भूल कर तथा यह विस्मृत हो जाने से कि वह ध्यान कर रहा है, अपने लक्ष्य अर्थात उस परमपिता के तेजोमय {भर्गः} स्वरूप में अवस्थित हो जाता है।

गायत्री जाप से पाप विमोचन-

गायत्री जाप से पाप विमोचन तो होता है किन्तु पाप के फलों का विमोचन नहीं होता। अभिप्राय यह है कि जीवन की आवश्यकता भर के लिये आवश्यक सांसारिक साधनों का उपयोग करने वाले को पाप-कर्म की प्रवृत्ति रहती नहीं ।उसकी प्रवृत्ति तो उस सर्वोत्पादक देव के तेजस्वरूप में ही होती है और जिसकी प्रवृत्ति परमात्मा के तेजस्वरूप में,उसकी प्राप्ति में हो जाती है, उससे फिर पाप-कर्म नहीं होता तथा जब पाप कर्म नहीं होता तो फिर आगे पापों के फल भोगने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता । इस प्रकार पाप विमोचन हो जाने से पापों के फलों से भी छुटकारा हो जाता है। परन्तु उस परमदेव का साक्षात् करने तथा उससे पहले मनसा-वाचा-कर्मणा जब से वह गायत्री साधना में लग चुका है, उससे पहले जो पाप-कर्म वह कर चुका है।अथवा जो कोई पूर्व जन्म का भोग शेष है, वह तो अवश्य ही भोगना पड़ेगा, उससे कदापि छुटकारा नहीं हो सकता ।

गायत्री जाप ही क्यों:-

गायत्री - जाप की अनिवार्यता नहीं है। हाँ, आवश्यकता है। जाप केवल प्रणव अर्थात् "ओउम्"का भी किया जा सकता है किन्तु प्रारम्भ में केवल "ओउम्" के जाप में मन लगना गायत्री जाप की अपेक्षा कठिन है। इसका कारण है "ओउम्" की अपेक्षा गायत्री की भाषा की अधिकता फिर ओउम् का विनियोग गायत्री -जाप में है ही।

एक ओर केवल ओउम् और दूसरी ओर ओउम् के साथ गायत्री भी। वैसे भी स्थूल और सूक्ष्म का भेद--गायत्री स्थूल और सूक्ष्म। जैसे प्रारम्भ में बालक को स्थूल अक्षर पढ़ाये जाते हैं,बाद में वह समाचार पत्रों के सूक्ष्माकार अक्षरा भी पढ़ने लगता है। इसी प्रकार प्रारम्भ में गायत्री मन्त्र का जाप साधक के लिये सरल होने से अधिक उपयोगी है गायत्री के जाप का कहो, गायत्री उपासना का कहो अथवा गायत्री मन्त्र के द्वारा परमात्मा के ध्यान करने का कहो--यही महत्व है। वास्तविकता तो यह है कि गायत्री जाप की भी अन्तिम परिणति "ओउम्" में ही है।

ओउम् के 19 अर्थों में एक अर्थ "ज्योतिः" भी है। गायत्री का "भर्गः" ओउम् का "द्युतिः" ही है। यही कारण है कि योग दर्शन में "प्रणव" का वर्णन है। प्रणव अर्थात ओउम्। परन्तु ऐसे साधक अपवाद ही होते हैं, जो सीधे ओउम् के जाप में सफलता प्राप्त कर लें अतएव कम से कम प्रारम्भ में तो गायत्री का जाप ही उपयुक्त है।

वेदाध्ययन का अधिकार

(श्री शंकराचार्य के मत में स्त्री और शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं)

— सच्चिदानन्द शास्त्री

मध्यकालीन सभी भारतीय आचार्यों ने यथा श्री शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, निम्बार्काचार्य, माध्वाचार्य तथा सायणाचार्य आदि ने एक मत से स्त्रियों और जन्मजात शूद्र कुलोत्पन्न व्यक्तियों को वेद पढ़ने के अधिकार से वंचित करके उनके प्रति अनुदारता का ही परिचय नहीं दिया, अपितु आर्य जाति की भी बहुत बड़ी हानि की। इस युग के महान तत्वदर्शी ऋषि दयानन्द ने वेदों का ही प्रमाण देकर उन्हें वेद पढ़ने का अधिकार दिया। आर्य जाति महर्षि के इस उपकार को कभी विस्मृत नहीं कर सकेगी। प्रस्तुत लेख में मनस्वी लेखक के एतत सम्बन्धी विचारों को शास्त्र मतानुसार ही पढ़िये। सम्पादक

श्री शंकराचार्य जी इस युग के दार्शनिक विद्वानों में बड़ा उच्च स्थान रखते हैं। उनके अनुयायी तो उन्हें जगत का दार्शनिक शिरोमणि तक मानते हैं। किन्तु यह देखकर दुख होता है कि उन्होंने वेदों की ईश्वरीयता "शास्त्रयोनित्वात्" "अतएव च नित्यत्वम्" इत्यादि वेदान्त सूत्रों के भाष्य में प्रतिपादित करते हुए भी उन्होंने मूल वेदों अथवा संहिताओं का बहुत कम आश्रय लिया है और श्रुति के नाम से ही उपनिषदों को ही सर्वत्र प्रधानता दी है। उनके ब्रह्मसूत्र भाष्य तथा अन्य ग्रन्थों में मूल वेदों के कठिनाई से 8-10 उद्धरण पाए जाते हैं यद्यपि उपनिषद्वचनों की उनमें भरमार है। शूद्रों और स्त्रियों की स्थिति पर उनके विचार अत्यन्त अनुदारतापूर्ण थे जैसे निम्न उद्धरणों से जो अधिकतर उनके ब्रह्मसूत्र भाष्य से लिए गए हैं, स्पष्ट प्रतीत होता है।

वेदान्त दर्शन के प्रथम अध्याय तृतीयपाद के भाष्य में श्री शंकराचार्य निम्न पूर्वपक्ष उठाकर (जो वस्तुतः बड़ा प्रबल और युक्ति-युक्त है). उसका उत्तर देने का विचित्र प्रयास करते हैं: -

तत्र शूद्रस्याप्यधिकारः स्यादिति तत्र प्राप्तम् अर्थित्वसामर्थ्ययोः संभवत्। "तस्माच्छूद्रो यज्ञेऽनवक्लृप्त इतिवत शूद्रो विद्यायामनवक्लृप्त इति निषेधाश्रवणात्। भवति च श्रौतं लिंग शूद्राधिकारस्योपोद्बलकम्। संवर्गविद्यायां हि ज्ञानश्रुतिं शुश्रूषुं शूद्रशब्देन परामृशति - "अथहारे त्वा शूद्र सह गोभिरस्तु" इति। विदुर प्रभृतयश्च शूद्रयोनिप्रभवा अपि विशिष्टविज्ञानसम्पन्नाः स्मर्यन्ते तस्मादधिक्रियते शूद्रो विद्यास्वित्येवं प्राप्ते ब्रूमः।।

शूद्र का भी वेदाध्ययन, ब्रह्मज्ञानादि में अधिकार हो सकता है क्योंकि इच्छा और सामर्थ्य उसमें सम्भव है। इसमें श्रुति (छान्दोग्य उपनिषत्) के वचन का भी प्रमाण है जहाँ ज्ञानश्रुति को शूद्र के नाम से पुकारा गया है और फिर उसे ब्रह्मविद्या का उपदेश दिया गया है। शूद्र योनि में उत्पन्न भी विदुर आदि विशेष ज्ञान से सम्पन्न सुने जाते हैं इसलिए शूद्र का भी विद्याओं में अधिकार है। इस पूर्वपक्ष को उठाकर श्री शंकराचार्य जी उसका यों निराकरण करने का प्रयत्न करते हैं।

न शूद्रस्याधिकारो वेदाध्ययनाभावात्। अधीतवेदो हि विदितवेदार्थो वेदार्थेष्वधिक्रियते। न च शूद्रस्य वेदाध्ययनमस्ति उपनयनपूर्वकत्वाद् वेदाध्ययनस्य उपनयनस्य च वर्णत्रयविषयत्वात्। यत्वर्थित्वं न तत् असति सामर्थ्ये अधिकारकारणं भवति। शास्त्रीयेऽर्थे शास्त्रीयस्य सामर्थ्यस्यापेक्षितत्वात्। शास्त्रीयस्य च सामर्थ्यस्याध्ययननिराकरणेन निराकृतत्वात्। (ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्यम् निर्णय सागर प्रेस)

अर्थात शूद्र का अधिकार नहीं है वेदाध्ययन के अभाव के कारण। जिसने वेदों का अध्ययन किया और वेदार्थ को जान लिया उसका ही वेदार्थ में अधिकार होता है किन्तु शूद्र का वेदाध्ययन का अधिकार नहीं क्योंकि वेदाध्ययन उपनयनपूर्वक होता है और उपनयन ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य इन तीन वर्णों का ही होता है। इच्छा, सामर्थ्य के अभाव में अधिकार का कारण नहीं हो सकती। शास्त्रीय विषय में शास्त्रीय सामर्थ्य की ही आवश्यकता होती है और जब शूद्र के लिए अध्ययन का ही निषेध है तो शास्त्रीय सामर्थ्य का तो निषेध स्वयं हो जाता है।

श्री शंकराचार्य जी यहीं तक नहीं ठहरते वे अपने इस अनुदार पक्ष की पुष्टि में कुछ भयंकर अत्याचारपूर्ण, अमानुषिकता सूचक तथाकथित स्मृतिवचनों को उद्धृत करते हुए लिखते है: "इतश्च न शूद्रस्याधिकारः। यदस्य स्मृतेः श्रवणाध्ययनार्थप्रतिषेधो भवति। वेदप्रतिषेधो वेदाध्ययनप्रतिषेधस्तदर्थज्ञानानुष्ठानयोश्च प्रतिषेधः शूद्रस्य स्मर्यते। श्रवणप्रतिषेधस्तावत्" "अथास्य वेदमुपश्रृणवतस्त्रपुजतुभ्यां श्रोत्रपरिपूरणामिति, "पद्युह वा एतत् श्मशानं यत् शूद्रः तस्मात् शूद्रसमीपे नाध्येतव्यम्" इति च। अतएवाध्ययनप्रतिषेधः। यस्य हि समीपेऽपि नाध्येतव्यं भवति स कथमश्रुतमधीयीत। भवति च वेदोच्चारणे जिह्वाच्छेदो धारणे शरीरभेदः इति। अतएव चार्थादर्थज्ञानानुष्ठानयोः प्रतिषेधो भवति "न शूद्राय मतिं दद्यात्" इति। द्विजातीनामध्ययनमिज्या दानम् इति च येषां पुनः पूर्वकृतसंस्कारवशाद् विदुरधर्मव्याधप्रभृतीनां ज्ञानोत्पत्तिस्तेषां न शक्यते फल प्राप्तिः प्रतिषेद्धुं ज्ञानस्यैकान्तिकफलत्वात्। श्रावयेच्चतुरो वर्णान् इति चेतिहासपुराणाधिगमे चातुर्वर्ण्यस्याधिकारस्मरणात्। वेदपूर्वकस्तु नास्त्यधिकारः शूद्राणामिति स्थितम्।

अर्थात इसलिये भी शूद्र को अधिकार नहीं क्योंकि स्मृति के द्वारा इनके लिए वेद के सुनने और पढ़ने के निषेध है। सुनने का निषेध करते हुए स्मृति (गौतमधर्म सूत्र के नाम से कल्पित स्मृति) में कहा है कि यदि शूद्र वेद के शब्द सुन ले तो उसके कान को सीसे और लाख से भर देना चाहिए। शूद्र चलता फिरता श्मशान है इसलिए उसके समीप अध्ययन नहीं करना चाहिए, इसी से अध्ययन का निषेध स्पष्ट है। जिसके समीप अध्ययन भी न करना चाहिए वह बिना सुने हुए कैसे अध्ययन कर सकता है। वेद के उच्चारण करने पर जिह्वाच्छेद (जीभ काट डालने) और शरीर छेद (शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर डालने) का विधान है। इसलिए वेद के अर्थ ज्ञान और उनके अनुसार आचरण का निषेध है। जिन विदुर धर्मव्याध आदि को पूर्वकृत संस्कार वश ज्ञान की उत्पत्ति हुई उनके फल की प्राप्ति को तो रोका नहीं जा सकता। श्रावयेच्चतुरो वर्णान्" इत्यादि महाभारत के वचन द्वारा इतिहास पुराण के अध्ययन में चारों वर्णों का अधिकार है। शूद्रों का वेद पूर्वक अध्ययन तो नहीं है।

यदि श्री शंकराचार्य द्वारा अनुमोदित इन तथाकल्पित स्मृति वचनों पर आज कोई आचरण करने लगे तो निःसन्देह वह मृत्युदण्ड व फाँसी पाएगा क्योंकि वेद मन्त्रों को याद करने वाले अब हजारों और लाखों, व्यक्ति महर्षि दयानन्द जैसे उदारतम आचार्य की कृपा से विद्यमान हैं जिनको वेदाध्ययन से रोकने का अब कोई साहस नहीं कर सकता उन की जीभ काटने व शरीर के टुकड़े-टुकड़े करने का तो कहना ही क्या है।

श्री शंकराचार्य के स्त्रियों के विषय में अनुदार विचार

स्त्रियों के विषय में भी श्री शंकराचार्य के बड़े अनुदार विचार थे ऐसा उन के नाम से प्रचलित ग्रन्थों के अध्ययन से प्रतीत होता है प्रश्नोत्तरी नामक ग्रन्थ के निम्न प्रश्न तथा उत्तर इस विषय में उल्लेखनीय हैं। वहां प्रश्न उठाया गया है विश्वासपत्रं न किमस्ति, अर्थात् कौन है जिस पर कभी विश्वास न करना चाहिए। इसका श्री शंकराचार्य जी उत्तर देते हैं नारी अर्थात स्त्री है जिस पर विश्वास न करना चाहिए। आगे प्रश्न किया है द्वारं किमेकं नरकस्य, अर्थात् कौन है जो नरक का एक द्वार है, उसका श्री शंकराचार्य जी उत्तर देते हैं कि नारी स्त्री है जो नरक का एक द्वार है। आगे

शेष पृष्ठ पर

मानव जीवन का लक्ष्य और शिक्षा

—श्री सत्येन्द्र वर्णी
गुरुकुल होशंगाबाद (म०प्र०)

आजकल हमारे जीवन से अध्यात्मिकता निकल रही है और हम आँखें बन्द किये भौतिक चकाचौंध की ओर बड़ी तेजी से दौड़े जा रहे हैं। यही कारण है कि हमारा आज मानसिक सन्तोष समाप्त हो चुका है। क्योंकि हम संसार में देखते हैं कि भौतिकवादी जीवन न कभी आनन्दप्रद रहा है और न रहेगा। जब तक हम मानव जीवन में सुख शान्ति तथा आनन्द को प्राप्त नहीं कर सकते और न ही अपना उत्थान कर सकते हैं तब तक सुख नहीं।

अतः मानव जीवन को पवित्र बनाने हेतु और मानसिक सुख-शान्ति व आनन्द की प्राप्ति व मानव जीवन का उत्थान कर पाने के लिये अध्यात्मवाद को जीवन में धारण करना परमावश्यक है।

इस भौतिकवाद के युग में हर मानव मात्र का जीवन अशान्त है। आज के मानव तन को न सुख है न मन को शान्ति न ही आत्मा को आनन्द की प्राप्ति है। जबकि मनुष्य की आवश्यकता के सारे साधन उपलब्ध हैं।

आज इस आधुनिक युग में पाश्चात्य अन्ध भौतिकवादी आँखें बन्द किये हुए इतनी तेजी के साथ दौड़ा हुआ जा रहा है कि उसे पता नहीं कि क्या मैं अपने अमूल्य जीवन को उत्थान की ओर ले जा रहा हूँ अथवा पतन की ओर किसी व्यक्ति ने उस दौड़ते हुए मनुष्य से पूछा कि हे मानव। तू इतनी मस्ती और तेजी के साथ कहाँ जा रहा है वह कहता है कि बस कहीं नहीं फिर पूछा कहाँ से आये हो वह व्यक्ति कहता है कि कहीं से नहीं।

यही आज हमारी दशा है हमें पता नहीं कि हमारा क्या लक्ष्य है बस जीवन की गाड़ी चल रही है। आइये हम सोचें कि नाना प्रकार के दुःख व अशान्ति का मूल कारण क्या है। यदि हम सत्यता पर पहुँचना चाहते हैं और अपना उत्थान करना चाहते हैं। तो हमें यह निश्चित रूप से स्वीकार करना पड़ेगा कि अशान्ति का मूल कारण केवल आध्यात्मिकता का अभाव और अधर्माचरण है। अतः जीवन के लक्ष्य को हमें समझना होगा।

जब मानव संसार में आता है तो उसके सामने तीन प्रश्न उपस्थित होते हैं। (1) मैं कहां से आया (2) मुझे क्या करना है (3) मुझे कहां जाना है। जो मानव इन प्रश्नों का समाधान समझ जाता है वह बन्धनरूपी दुःख से मुक्त हो जाता है। दयानन्द जी महाराज के सामने भी यही प्रश्न आते हैं। उन्होंने इनका समाधान प्राप्त कर अपने जीवन को महान बनाया।

महर्षि दयानन्द ने हजारों ग्रन्थों का स्वाध्याय मनन विचार किया तभी घोषणा की थी कि हम इहलोक परलोक में सुख शान्ति व आनन्द को प्राप्त करना है तो हमें वेदों के मार्ग पर चलना होगा क्योंकि किसी ने कहा गो टु द वेदाज" वेदों की ओर लौटो।

"नान्यपन्था विद्यन्ते ऽयनाय" दूसरा कोई मार्ग नहीं है। वास्तव में सच्ची शान्ति वेदों के द्वारा ही मिल सकती है। वह भी आचरण के माध्यम से "आचार हीनं न पुनन्ति वेदा।"

मानव जीवन में जब से वेद वाद छूटा तब से ही अनेक वाद, मतमतान्तर चल पड़े और मानव नित्य प्रति पतन की ओर गिरे जा रहे हैं। दूसरा कारण कुशिक्षा का प्रभाव जब हम स्वतन्त्र भारत की ओर दृष्टि डालते हैं तो यह देखकर हृदय को बड़ा धक्का लगता है कि राष्ट्र के निर्माता और भावी कर्णधार भारत के निर्माण और उसके मार्ग-दर्शन का भार उठाने में सर्वथा असमर्थ हैं। जब हम शिक्षार्थियों की ओर देखते हैं तो अनुशासन-हीनता का बोल-बाला है। अध्ययन की ओर किसी की रुचि ही नहीं रही। देश निर्माण तो समाज सुधार की भावना से कोसों दूर है। दूसरी शिक्षकों की ओर देखें तो क्या कहना? शिक्षकों और शिक्षार्थियों की इस भयानक स्थिति का कारण हमारी आधुनिक शिक्षा प्रणाली है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात हमारे भारत की शिक्षा मूलतः इन्हीं सिद्धान्तों पर आधारित है कि जो लार्ड मैकाले ने इस देश के मानसिक दासता में बांधने के लिए बनाई थी वर्तमान शिक्षा-शिक्षक और शिक्षार्थि को पूर्ण योग्य बनाने की अपेक्षा पंगु और निष्क्रिय बना रही है इसी बात को स्पष्ट करते हुए मैथिलीशरण गुप्त को भी कहना पड़ा-

यह आधुनिक शिक्षा किसी विधि प्राप्त भी कुछ कर सको,
तो लाभ क्या बस क्लर्क बनकर पेट अपना भर सको।
लिखते रहो यदि सिर झुका सुन अफसरों की गालियाँ,
तो दे सकेंगी रात को दो रोटियां घर वालियाँ।।

अस्तु ऐसी शिक्षा को देने और पाने वाले शिक्षक तथा शिक्षार्थि किसी प्रकार भी नवभारत का निर्माण नहीं कर सकते और न अपने जीवन को महान बना सकते। अस्तु हम भारत वासियों का कर्तव्य हो जाता है कि हम अपने राष्ट्र एवं जीवन को शिक्षित बनाना, ज्ञान, विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति करना हमारा कर्तव्य होता है। क्योंकि कहा है कि-

"सबसे प्रथम कर्तव्य है शिक्षा बढ़ाना देश में।
शिक्षा बिना ही पड़ रहे हैं आज हम सब क्लेश में।।"

वास्तव में शिक्षा ही मानव को मानव बनाती है। सारे शास्त्र इसी का गुणगान करते हैं-

शिक्षा जीवन को उन्नति, उत्थान की ओर ले जाने का सोपान है। शिक्षा हीन व्यक्ति मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं। किसी ने कहा है-

"विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्न गुप्तंधनम्
विद्या भोग करी यशः सुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनों विदेश गमने विद्यापरा देवताः
विद्याराजसु पूज्यतेन हि धनम् विद्याविहीनः पशुः।।

अतः हम निस्संकोच कह सकते हैं कि शिक्षा ही मानव जीवन को वास्तविक मूल्य प्रदान कराती है वही मानव को सांसारिक दुःख रूपी बन्धन से मुक्त कराती है। अतः मेरे प्यारे साथियों यदि हमें अपना जीवन महान बनाना है तो हमें ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और शिक्षा का सही रूप जानना होगा। ●

सूचना

— आर्य उप-प्रतिनिधि सभा मथुरा के प्रधान श्री बल्लभ सिंह आर्य के प्रतिनिधित्व में 11 सदस्यीय एक प्रतिनिधि मण्डल जिलाधिकारी मथुरा से दिनांक-16-6-89 को मिला। प्रतिनिधिमण्डल द्वारा श्री कृष्ण जन्म के आसपास शराब की दुकानें व मुर्गे मछली आदि मांस की दूकानों को हटाने की मांग की गयी है। यदि 3 माह के अन्दर जिला-प्रशासन द्वारा ठोस कार्यवाही न की गयी तो आन्दोलन छेड़ा जायेगा।

— आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के अवैतनिक उपदेशक स्वामी शिवानन्द उर्फ शिवप्रसाद 78 दहिलामऊ, शीतल-कुटीर, प्रतापगढ़ लगभग 3 माह से चर्मरोग से ग्रसित हैं। स्वामी जी लखनऊ स्थित अपने आवास पर सुप्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सक डा० गिरीश-गुप्ता से चिकित्सा करा रहे हैं।

- आर्यसमाज मन्दिर नेमदारगंज (नवादा) के तत्वावधान में पंडित श्री जय प्रकाश-आर्य भूतपूर्व इमाम बेतिया (बिहार) एवं श्री शिवधर आर्य भजनोपदेशक द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। जहाँ इस्लाम की कमी एवं आलोचना से मजहबी तिलमिला उठे वहीं हिन्दुओं में जागरण एवं संगठन हेतु मार्ग प्रशस्त हुआ।

- आर्यसमाज भोजपुर- खेड़ी जिला बिजनौर उ०प्र० का 74वाँ वार्षिकोत्सव 16 से 18 जून 89 को सम्पन्न हुआ।

वेद प्रचार सप्ताह

श्रावण शुक्ल 15 गुरुवार से भाद्रपद-कृष्ण 8 गुरुवार 17 अगस्त से 24 अगस्त 1989 तक

श्रावणी पर्व, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, बलिदान-स्मृति एवं स्वाधीनता दिवस समारोह पूर्वक मनाकर वैदिक धर्म का सन्देश जन-जन तक पहुँचाइये

इस वर्ष "वेद-प्रचार सप्ताह" दिनांक 17 अगस्त से 24 अगस्त 1989 तक गुरुवार से गुरुवार तक मनाया जावेगा। सप्ताह का कार्यक्रम निम्न प्रकार है-

आर्यसमाजों को चाहिये कि वे अभी से इस सप्ताह को सफल बनाने के भरसक प्रयत्न करें। इस कार्य में स्थानीय महिला आर्यसमाज, आर्य कुमार सभा, आर्य वीरदल, तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं आदि का पूर्ण सहयोग [illegible]त करना चाहिये। जहां आर्यकुमार सभायें तथा आर्य वीरदल न हों, वहां वह स्थापित किये जाने चाहिए। वेदप्रचार सप्ताह पूरे श्रावण मास चलाये जायें, जिससे विद्वानों का अधिक लाभ उठाया जा सके।

श्रावणी का महत्व

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक, वैदिक विज्ञान के अद्वितीय विद्वान् वैदिक धर्म के महान प्रचारक, मानवता को मतान्धता, एवं अन्ध-विश्वासों के अन्ध-कूप से निकालकर बुद्धिवाद एवं मानववाद के शुद्ध वातावरण में श्वास लेने की पुनीत प्रेरणा के प्रज्ञाता, आध्यात्मिक एव आधिभौतिक स्वतन्त्रता के महान व्यक्तित्व को समझने और श्रद्धा समन्वित हो ऋषि के चरण चिन्हों पर चलने की चेतना देना, इस पर्व का महान् उद्देश्य है।

वेद प्रचार निधि

इतने बड़े उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने के लिए सवा लाख रुपया प्रति वर्ष चाहिये। प्रान्त में लगभग दो हजार आर्यसमाजें हैं। यदि इनका प्रत्येक सदस्य एक एक रुपया वेदप्रचार के लिए इस श्रावणी पर्व पर सभा को दान करना अपना कर्तव्य समझें, तो वेदप्रचार की समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। वेदप्रचार के लिए जो धन संग्रहीत किया जाय, उसे सभा [illegible]लिय में भेजने की कृपा करें।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

24 अगस्त 1989 भाद्रपद कृष्णाष्टमी, आर्य राजनीति के धुरन्धर विद्वान् योग विद्या के प्रबल ज्ञाता पतनोन्मुख भारत के महान् त्राता तथा भारत के निर्माता आचार्य अंगिरस घोर के शिष्य महात्मा कृष्ण का शुभ जन्म दिवस है। इस महापुरुष के नाम पर आज भी जो पाखण्ड लीला हो रही है, उसके समूल नाश का दायित्व आर्यसमाज पर ही विशेष रुप से है। श्रीकृष्ण की महत्ता के लिए उनकी वैदिक शिक्षाओं का प्रसार किया जाना चाहिये।

प्रातः 7 बजे से आर्यमन्दिरों में "आर्य पर्व पद्धति" के अनुसार विशेष यज्ञ किया जाय। रात्रि को आर्यसमाज मन्दिरों में अथवा सार्वजनिक स्थानों में योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन पर व्याख्यान तथा उनके गीता ज्ञान और कर्मयोग का विवेचन किया जाय।

कार्यक्रम 17 अगस्त से 24 अगस्त 1989 तक

प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय वेला में दैनिक सत्संग का आयोजन किया जाय, और इस सत्संग को यथासम्भव प्रतिदिन निरन्तर चालू रखने की प्रतिज्ञा [illegible] करनी चाहिये।

मध्यान्ह- वैदिक साहित्य विक्रय तथा आर्यसमाज के नवीन सभासद बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाय।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेदकथा का विशेष आयोजन हो वेदों के आधार पर विश्व बन्धुत्व, मानववाद, साम्यवाद, समाजवाद एवं राष्ट्रवाद आदि विषयों पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया जाय।

शारीरिक व्यायाम, प्रदर्शन एवं वाक् संघर्ष- इस सप्ताह में आर्य वीरदल एवं आर्य कुमार सभाओं को शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन तथा वक्तृत्वकला विकसित करने की दृष्टि से भी विशेष आयोजन करने चाहिए।

श्रावणी कार्यक्रम

पारिवारिक यज्ञ- श्रावणी §रक्षाबन्धन§ के दिन प्रत्येक आर्य परिवार में प्रातः पारिवारिक यज्ञ करें। प्रातः 7।। बजे से समस्त आर्य नर-नारी, युवक तथा बालक-बालिकायें आर्य मन्दिर में उपस्थित होकर पुनीत पर्व मनायें-वेद की पावन ऋचाओं का पाठ किया जावे।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेदकथा का भी विशेष आयोजन होना चाहिये।

हैदराबाद सत्याग्रह धर्मयुद्ध एवं वैदिक धर्म के समस्त बलिदानियों की पुण्य स्मृति मनाकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की जावे।

स्वतन्त्रता दिवस

महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा अन्य आर्यजनों के प्रयत्न से भारत स्वतन्त्र हुआ। 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस मनाकर भारत की स्वाधीनता की रक्षा की प्रतिज्ञा लीजिये-आर्यसमाज ने देश की स्वाधीनता के संग्रामों में सर्वाधिक बलिदान किया है। देश में प्रजातन्त्र के समुचित विकास, भ्रष्टाचार-निवारण, पंचमांगी तत्व निरोधादि कार्यों में आर्यसमाज को पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

टिप्पणी- §1§ इस सप्ताह के आरम्भ में आर्य मन्दिरों पर नया आर्यध्वज लगाना चाहिए।

§2§ इस सप्ताह को अधिक महत्वपूर्ण व सार्थक बनाने के लिस हमारा आग्रह है कि प्रत्येक आर्यसमाज एक सूची उन महानुभावों की तैयार करें, जिनका आर्यसमाज से अथवा उसके अधीनस्थ संस्थाओं से शिक्षणालय आदि से सम्बन्ध रहा हो, और इस समय आर्यसमाज के सभासद नहीं है, ऐसी सूची की एक प्रतिलिपि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कार्यालय को भेजी जावे।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश,
5-मीराबाई मार्ग लखनऊ।



विकास का प्रथम सूत्र

—आचार्य सोमव्रत विद्याभास्कर

पीपल के पेड़ के नीचे सत्संग चल रहा था। सभी लोग ध्यान से प्रवचन सुन रहे थे, किन्तु विवेकसेन का मन नहीं लग रहा था। स्वामी करुणानन्द ने प्रवचन के बाद कहा-

"विवेकसेन।, तुम चिन्तित लग रहे हो, क्या बात है?

"महात्मा जी।, आपका अनुमान सही है। आज का मानव बड़ी तेजी के साथ पतन की ओर भागता चला जा रहा है। नेता सदाचार पर लम्बा-चौड़ा भाषण देता है, किन्तु उसके जीवन के अन्दर अनाचार का तूफान बह रहा है। धार्मिक व्यक्ति रोज प्रार्थना करता है-"यज्ञरूप प्रभो। हमारे भाव उज्ज्वल कीजिये। छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए।।" परन्तु इन लोगों का मन छल-फरेब से इतना भरा हुआ है कि एक बार इन्हें शैतान भी देखकर घबड़ा जाता है। आज का आदमी पतन की सीमा को पार कर गया है। हर समझदार चिन्तित है कि नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिये क्या सामाजिक-व्यवस्था में परिवर्तन करना पड़ेगा?"

"विवेकसेन।, व्यवस्था-परिवर्तन से कुछ भी लाभ नहीं होगा। चाहे समाज में कोई भी व्यवस्था लागू की जाये, यदि आदमी का आन्तरिक जीवन पवित्र नहीं है, तो ऐसा व्यक्ति जहाँ भी होगा, वहाँ उपद्रव का माहौल रहेगा। विकास का प्रथमसूत्र है अन्दर से बदलो, बाहर बदल जायेगा, भाव शुद्ध होगा, तो उसी के अनुसार स्वभाव बनेगा और स्वभाव के अनुसार प्रभाव होगा।

खुद सुधर लो जगत तो सुधर जायेगा।
सारा जीवन सुपथ से गुजर जायेगा।।

§डी0 29, रत्नानिवास, दयानन्दनगर,
गाजियाबाद, उ0प्र0§

हमारे पाठक क्या कहते हैं....

आदरणीय सम्पादक जी,

यूँ तो आर्यमित्र में निकलने वाले लेखों, अग्रलेखों को पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता होती है। सभी लेख अच्छे उच्चस्तरीय निकल रहे हैं। लेकिन 28 मई के आर्यमित्र में "संस्कृति से भाषा प्रभावित होती है और भाषा से संस्कृति" श्री वेद प्रताप वैदिक जीकायह लेख पढ़कर बड़ा ही अच्छा लगा। मैं इसे अपने आर्यसमाज सुभाषनगर सत्संग में सबको पढ़कर सुनाऊँगा। आपको, वैदिक जी को बहुत-बहुत धन्यवाद।

- राजनारायण आर्य, मंत्री
गुरुकुल महाविद्यालय
अयोध्या।

प्रिय सम्पादक जी,

उच्चस्तरीय लेखों, अभिव्यक्तियों, मन्त्रभावों ने आर्यमित्र को सर्वत्र प्रशंसित कर दिया है। आपकी निष्ठा, प्रवीणता आर्यमित्र में प्रतिबिम्बित है।

आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र
बदायूँ।

आर्यमित्र का कलेवर उसमें छपने वाली कविताएं, लेख एवं सामयिक विचार जनता में क्रान्ति करने वाले हैं। सभा के अधिकारी, प्रधान जी मन्त्रीजी सर पर कफन बाँधे हिन्दूजाति में अलख जगा रहे हैं। आर्यमित्र के विचारों को पढ़कर अब तो आर्यजाति को सचेत होना चाहिए।

-धर्मपाल आर्य
ग्रा0 बड़ावत, मेरठ।

11 जून के आर्यमित्र में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा मुसलमानों के पक्ष में की गई घोषणा पर सम्पादकीय पढ़कर हृदय गदगद हो गया आपने मुख्यमंत्री की मुसलमानों की तुष्टीकरण नीति पर बहुत ही व्यंग्यात्मक प्रहार करते हुए इसे आत्मघाती बताया है। ऐसे लेखों से हिन्दूजनता जागृत होगी-

बधाई।

देवनारायण प्रसाद वर्मा
पितीज हजारीबाग बिहार

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ0प्र0 अध्यापक धर्म प्रशिक्षण शिविर

प्रदेशीय विद्यार्य सभा प्रति वर्ष अध्यापक धर्म प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करती है। सभा चाहती है कि गोरखपुर, फैजाबाद, वाराणसी, लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद मण्डलों में एक एक शिविर की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए।

जो विद्यालय इस योजना में सभा को सहयोग दे सकें, वे सभी कार्यालय को उपयुक्त तिथियों, भाग लेने वाले अध्यापकों की अनुमानित संख्या आदि से अवगत करने की कृपा करें।

माधव सिंह
मंत्री, प्रदेशीय विद्यार्य सभा

आर्यसमाज हापुड़ का प्रस्ताव

आर्यसमाज हापुड़ में आयोजित विभिन्न संस्थाओं के जनप्रतिनिधियों की यह बैठक, हापुड़ में हुए कथित धर्मान्तरण की कार्यवाही को अत्यधिक गम्भीरता से लेती है एवं महसूस करती है कि हापुड़ के शान्त एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण को भंग करने के लिए यह पंजाब के आतंकवाद की एक कड़ी है, जो दीवारों पर लिखे गए एवं जलूस में लगाये गए "खालिस्तान जिन्दाबाद" जैसे देश द्रोही नारों से सिद्ध है।

इसी प्रकार एक सार्वजनिकस्थल पर जो नगरपालिका हापुड़ के स्वामित्व में आता है, एक धर्मस्थल बनाने का भी प्रयास है। यह कार्य न केवल अनैतिक, अनुचित, साम्प्रदायिक है वरन गैरकानूनी भी है। यदि इस सम्बन्ध में प्रशासन ने समुचित कार्यवाही करके इसकी रोकथाम नहीं की तो इसके गम्भीर परिणाम होंगे। जिनका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व प्रशासन का होगा।

पृष्ठ 3 का शेष....

भौतिक-तत्व जब तक "वर्धमान" तक सीमित रहते हैं, तब तक जीवन अपने लक्ष्य को नहीं पकड़ता, जब जीवन के "वर्धमान" तत्व "अवर्धमान" हो जाते हैं, वे अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, तक पहुँच जाते हैं, तब मनुष्य "अदय", "अदिति", "अवर्धमान" को, जीवन के सनातन सत्य को पा लेता है। उसी अदय, अदिति, अखंडित सत्य का वर्णन वेद में किया गया है। हमारे कथन का सार यह है कि वेदों में मुख्यतौर पर वर्धमान-तत्वों का, भौतिकवाद का वर्णन नहीं है, क्योंकि ये तत्व भौतिकवाद का अंग होने के कारण परिवर्तनशील हैं, वेदों में "अवर्धमान"-तत्वों का, आध्यात्मिक तथ्यों का वर्णन है क्योंकि वे नित्य हैं, अपरिवर्तनशील हैं। ज्ञान जब बढ़ेगा, तो बढ़ते-बढ़ते उसकी भी सीमा कभी न कभी आयेगी। वृक्ष ऊँचा जाता है, परन्तु कहीं तो रुक जाता है। "वर्धमान" जब "अवर्धमान" हो जाता है, तब वहीं "अदय" हो जाता है, अदिति हो जाता है। भौतिकवाद जहां रुक जाता है वहां अध्यात्मवाद शुरू हो जाता है। इसी को ऋग्वेद में "अक्य", वर्धमान से सदावृध (सदा-अवृध) या "अदिति" कहा है।

जैसा हम पहले लिख आये हैं, "ज्ञान" या तो "वर्धमान" होगा या "अवर्धमान होगा। "वर्धमान" ज्ञान भौतिक है, समय-समय पर मनुष्य की खोज के आधार पर बदलता रहता है।

क्रमशः----

गुरुकुल वृन्दावन में प्रवेश....

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन अखिल भारतीय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्था है, जिसकी उपाधि "अधिकारी" हाई स्कूल एवं शिरोमणि बी0ए0 के समकक्ष स्वीकृत है।

प्रवेश 1 जुलाई 1989 से प्रारम्भ। प्रवेशेच्छुक महानुभाव गुरुकुल के कार्यालय से प्रवेश की जानकारी प्राप्त कर अपने बालकों को प्रवेश दिलायें।

-मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन।

प्रधान जी द्वारा रामगढ़ आश्रम का निरीक्षण

15 जून को सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी के आश्रम में पधारने पर साधकों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई, 16जून को श्री पं0 इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में आश्रम के पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से निर्वाचन हुआ। संरक्षक, आ0प्र0सभा, उ0प्र0। प्रधान श्री विक्रमसिंह जी रामगढ़ तल्ला, मंत्री- श्री स्वामी भजनानन्दजी, कोषाध्यक्ष श्री यज्ञमुनि वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर निर्वाचित हुए श्री प्रधान जी ने इस अवसर पर घोषित किया कि 1000रु0 मासिक सेवकों और बिजली आदि पर व्यय हेतु और 10,000रु0 आश्रम के जीर्णोद्वार के लिए एकमुश्त आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रदान किया जायगा। प्रधान जी की यह भी इच्छा है कि महात्मा नारायण स्वामी जी की स्मृति में विशाल मेला लगाया जाय। गतवर्ष। 7,000रु0(सत्तरह हजार रुपया) दयानन्द सन्यास आश्रम के द्वारा आश्रम के जीर्णोद्वार के लिए प्राप्त हुआ था जिससे आश्रम का बहुत कुछ जीर्णोद्वार हुआ।

शोक समाचार

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक श्री पं0 हरिप्रसाद शास्त्री(60) का आकस्मिक निधन दिनांक- 4-6-89 को ब्रेनहेमरेज के कारण पटना मेडिकल अस्पताल में हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार दिनांक- 5.6.89 को पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार सभामंत्री की देखरेख में पूर्ण सम्मान के साथ पटना के बांसघाट में सम्पन्न हुआ। परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान हेतु प्रार्थना की गयी।

- आर्य परिवार की एक सुन्दर, स्वस्थ, गृहकार्य में दक्ष, स्नातक, कर्ण राजपूत, गरुड़ गोत्रीय 26वर्षीय कन्या हेतु आर्य परिवार का स्वावलम्बी वर चाहिए। सजातीय को वरीयता। सम्पर्क/पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें।

श्री राजेन्द्रपाल आर्य
आर्य वाच कम्पनी,
मुख्य बाजार-काशीपुर (नैनीताल)

- दि0 25 जून 89 की यह शोक सभा आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार राज्य के महोपदेशक श्री हरिप्रसाद-शास्त्री एवं आर्यसमाज गया के कर्मठ सदस्य श्री रामधनी प्रसाद आर्य जी के निधन पर गहराशोक प्रकट किया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

बाल्मीकि बस्ती में विराट यज्ञ

मेरठ दिनांक- 3·6·89 को पुरवा शेखलाल {बाल्मीकि बस्ती} में विराट यज्ञ का आयोजन शहर समाज मेरठ द्वारा किया गया। बड़ी संख्या में बाल्मीकि नर-नारियों के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी, भूतपूर्व परिवहन मंत्री श्री मानसिंह जी वर्मा, {प्रधान केन्द्रीय आर्य समिति} श्री-राधेलाल सर्राफ, जयन्त कुमार, मुसद्दीलाल {बाल्मीकि सभासद}, श्री हरवीर सिंह मंत्री केन्द्रीय आर्य समिति वयोवृद्ध प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्ता श्रीमती शकुन्तला-गोयल तथा सैकड़ों अन्य गणमान्य व्यक्ति इस छुआछूत विरोधी यज्ञ में उपस्थित थे। पहली बार नगर के सवर्ण तथा गणमान्य व्यक्तियों ने खुलकर इस अस्पृश्यता-विरोधी यज्ञ में भाग लिया इसकी अध्यक्षता मुसद्दीलाल जी {वाल्मीकि} ने की। तथा बाल्मीकि भाइयों के साथ सामूहिक खान पान किया। यज्ञ के उपरान्त श्री करण सिंह का भजनोपदेश तथा पं0 इन्द्रराज जी {शहर आर्यसमाज मेरठ के मंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान, जयन्त कुमार, श्री मान सिंह जी वर्मा तथा श्री मुसद्दीलाल जी और श्रीमती शकुन्तला गोयल ने प्रवचन किया।

अपने उद्‌बोधन में आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान पं0-इन्द्रराज ने कहा कि अब समय आ गया है कि छुआछूत तथा ऊँच-नीच की भावना से उठकर सभी वर्गों को एक साथ लेकर राष्ट्र, धर्म तथा संस्कृति की रक्षा हेतु संयुक्त आन्दोलन चलाया जाय। उन्होंने बाल्मीकि भाइयों का आह्वाहन किया, वे निःशंक होकर खुले हृदय से आर्यसमाज के राष्ट्र, धर्म, संस्कृति रक्षा अभियान में सक्रिय सहयोग दें तथा छुआछूत और ऊँच-नीच की बुराई को समूल नष्ट करने हेतु महर्षि दयानन्द का अनुसरण करते हुए संघर्ष करें। हमारा पूर्ण समर्थन तथा सहयोग आपके साथ है। उन्होंने हापुड़ तथा मेरठ के कुछ क्षेत्रों में हरिजन तथा वाल्मीकि भाइयों का धर्मान्तरण कर सिख बनाने पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त की। इसे राष्ट्र की एकता तथा अखण्डता के लिए बड़ा खतरा बताया। इसी क्रम में जयन्त कुमार ने धर्मान्तरण को राष्ट्र के अस्तित्व को खतरा बताया तथा कहा- कि "राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" के द्वारा युवक जाति-पाँति तथा अस्पृस्यता को मिटा देने हेतु कृत संकल्प हैं। उन्होंने कहा कि छुआछूत मानने वाले राष्ट्र तथा धर्म के शत्रु हैं। इसी प्रकार पलायन वादी बनकर धर्मान्तरण करने वालों की भी उन्होंने कटु आलोचना की। इस अवसर पर भूतपूर्व परिवहन मंत्री श्री मान सिंह वर्मा ने भी धर्मान्तरण का पुरजोर विरोध करने का आह्वान किया। सभी वक्ताओं ने हरिजनों द्वारा सिख बनने पर गम्भीर चिन्ता व्यक्त की तथा सरकार से उचित कारवाही की मांग की।

श्रीमती शकुन्तला गोयल ने युवाओं को धर्म रक्षा हेतु आगे आने की अपील की। श्री मुसद्दीलाल जी ने अध्यक्षीय भाषण किया। श्री लाल-चन्द्र जी {यजमान} द्वारा सबको धन्यवाद दिया गया। इस यज्ञ में श्री कैलाशचन्द्र जी आर्य तथा श्री बुद्ध प्रकाश जी ने सराहनीय योगदान किया।

- संवाददाता।

गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

चम्पारण जिला आर्यसभा के तत्वावधान में आर्यसमाज गिभोड़या द्वारा गायत्री-महायज्ञ दि0 9 से 14 जून 1989 तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ में युवा पीढ़ी के प्रसिद्ध विद्वान प्रो0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री, नेपाल के प्रसिद्ध आर्यसमाज के प्रचारक श्री-रामचन्द्र सिंह क्रान्तिकारी, चम्पारण जिला सभा के प्रचारक पं0 ध्रुव प्रसादजी एवं श्री अमरदेव जी पधारे थे। प्रतिदिन हजारों की संख्या में महिलायें व पुरुष सुनकर धर्म लाभ उठाते थे। अनेक युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किया तथा अभक्ष्य पदार्थों का सेवन तथा मद्यपान आदि सेवन न करने की प्रतिज्ञा की।

सभा प्रधान के गृह पर पारिवारिक यज्ञ में नवदम्पति का स्वागत।

दिनांक 14-6-89 को आर्य प्रतिनिधि-सभा के प्रधान तथा शहर आर्यसमाज के मन्त्री श्री पं0 इन्द्रराज जी के निवास पर पारिवारिक यज्ञ का आयोजन किया गया।

इस यज्ञ में शहर आर्यसमाज के पुरोहित आचार्य पं0 नरेन्द्र कुमार जी तथा उनकी नवविवाहिता धर्मपत्नी श्रीमती ज्योत्सना जी का अभिनन्दन किया गया। तथा नवदम्पति को हार्दिक शुभकामना तथा आर्शीवाद प्रदान किया गया। इसमें शहर के अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। इस यज्ञ के यजमान भी आचार्य नरेन्द्र कुमार जी थे।

अपने आर्शीवचन में श्री पं0 इन्द्रराजजी ने नवदम्पति को अपने-अपने कर्त्तव्यों का निष्ठा, प्रेम तथा एक दूसरे के प्रति आदर भावना के साथ पालन करने का उपदेश दिया। उन्होंने कहा "पति-पत्नी का एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना से जीवन पथ पर बढ़ना या चलना परिवार में सुख शान्ति लाता है। उन्होंने पारिवारिक सत्संग कराने के लिए आर्यजनों का आह्वान किया।

अन्त में भव्य जलपान भी दिया गया। तथा आगन्तुक महानुभाव नवदम्पति के प्रति आर्शीवाद व्यक्त करते हुए विदा हुए।

-संवाददाता।

मोदीनगर में आर्य वीरदल स्थापना समारोह में सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी का स्वागत

दिनांक- 21-6-89 को आर्य वीरदल की स्थापना के उपलक्ष्य में आयोजित गायत्री महायज्ञ की सभा भगवान गंज मन्डी मोदी नगर {गाजियाबाद} में सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी का माल्यार्पण द्वारा आर्यवीर दल एवं जिला सभा {गाजियाबाद} द्वारा भव्य स्वागत किया गया। श्री प्रशान्त जी वेदालंकार दिल्ली विश्व विद्यालय} एवं श्री आचार्य धर्मपाल जी प्रबन्धक तातारपुर के प्रेरणादायक व्याख्यानों के पश्चात श्री सभा प्रधान जी ने सभा को सम्बोधित करते हुए। देश की विषम परिस्थितियों पर प्रकाश डाला तथा युवाओं का आह्वान किया। वे आगे आवें। अपने जीवन का निर्माण करें।

आर्यसमाज से निरन्तर सम्पर्क रखते हुए जातिवाद एवं छुआछूत के विरुद्ध संघर्ष करें।

देश में हो रहे धर्म परिवर्तन को रोका जा सकें। आज देश में कुरीतियाँ बढ़ती जा रही हैं। जिनके विरुद्ध संघर्ष करना अनिवार्य हो गया है। आर्य वीर दल की संघटित शक्ति ही धर्म संस्कृति सभ्यता एवं देश की स्वतन्त्रता को बचा सकती है। सभा के अध्यक्ष श्री ब्र0 आर्य नरेश जी ने देश की बिगड़ती हुई। स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की तथा ओजस्वी शब्दों में आर्य वीरों को आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में आने की प्रेरणा की तथा वर्तमान परिस्थितियों को बदल डालने का आह्वान किया।

श्री राजवीर जी शास्त्री ने अपने आर्शीवाद में आर्यवीरों को सक्रिय होकर कार्य करने की प्रेरणा की।

अन्त में आर्यसमाज मोदीनगर के अध्यक्ष डा0 जयवीर सिंह जी ने सब आगन्तुक विद्वानों का धन्यवाद किया।

-संवाददाता।

ऋतु की उपस्थिति

ज्योतित नभ में तुम प्रकाश हो।
अधर-अधर में, मधुर हास हो।
फूल-फूल में, मधु सुवास हो।
प्राण-प्राण में, सुखद श्वास हो।
अन्तरिक्ष में मरुत-वा हो।
यज्ञकुण्ड में, अग्निज्वाल हो।
जिधर दृष्टि जाती, कमाल हो।
ग्वाल-बाल हो, तुम गोपाल हो।
सृ जन-शक्र हो, य म-कराल हो
अमृत-सिन्धु हो, ज्योति हंस हो।
ज्योतिपुरुष, के तुम जमाल हो।

-लाखन सिंह भदौरिया,
भोजपुरा, मैनपुरी।

पंजाब में नरसंहार की घटना से सारा देश शोकाकुल सरकार के सुरक्षा संबंधी आश्वासन बेनकाब

पंजाब को तुरन्त सेना के हवाले किया जाए

दिल्ली 26 जून मोगा में आतंकवादियों द्वारा किए गए नरसंहार पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध-सरस्वती ने कहा राष्ट्र भक्त लोगों की इस निर्मम हत्या से सारा राष्ट्र शोकाकुल है। इस घटना ने सरकार के इन आश्वासनों और विश्वास की धज्जियां उड़ा दी हैं कि पंजाब में उग्रवाद कम हो रहा है और स्थिति सुधर रही है। जबकि वास्तविकता यह है कि पंजाब से बाहर भी उत्तर भारत के अनेक नगर उग्रवादियों की चपेट में आ चुके हैं।

स्वामी जी ने कहा आर्यसमाज विगत कई वर्षों से पंजाब को सेना के हवाले करने की मांग करते रहा है किन्तु बड़े आश्चर्य और खेद की बात है कि सरकार इसका विकल्प ही ढूंढने रही किन्तु पंजाब को सेना के हवाले करने से वह डरती रही है। यद्यपि पंजाब में राष्ट्रपति शासन है, किन्तु वहां का जनजीवन सुरक्षित नहीं है, अर्द्ध सैनिक बलों को इतना अधिकार नहीं है कि वह तुरन्त कोई कार्यवाही कर सकें। इसी कारण पंजाब में राष्ट्र विरोधी और पृथकतावादी तत्वों द्वारा राष्ट्रवादी लोगों की बराबर निर्मम हत्यायें हो रही हैं।

स्वामी जी ने सरकार से मांग करते हुए कहा कि पंजाब को तुरन्त सेना के हवाले किया जावे और सेना के द्वारा आतंकवादियों और उग्रवादियों की धर-पकड़ करके सैनिक अदालत में ही उनके विरुद्ध दण्ड का निर्णय लिया जावे। यदि सरकार कड़ाई से कदम नहीं उठा सकती है तो जनता का सरकार से विश्वास टूट जायगा और देश को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।

-सच्चिदानन्द शास्त्री
सभामंत्री,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली-2

शोक समाचार

18-6-89 प्रातः 4 बजे श्री विश्वम्भर-दयाल जी गोयल, सेवा निवृत्त इंजीनियर का 75 वर्ष की आयु में 139 नादान महलरोड लखनऊ में शरीरांत हो गया। 19-6-89 प्रातः भैंसाकुण्ड पर पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार दाह संस्कार कराया। 21-6-89 सायंकाल उनके निवास पर गृहशुद्धि यज्ञ सम्पन्न हुआ। ईश्वर उनकी आत्मा को शान्ति तथा शोकसंतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

17-6-89 रात्रि 8 बजे श्री जीतसिंह-आर्य का 70 वर्ष की आयु में अल्पबीमारी से सी-117 निरालानगर लखनऊ में देहांत हो गया। 18-6-89 प्रातः डा0 मेहरोत्रा जी ने परिवार के वरिष्ठ सदस्य की भाँति भैंसाकुण्ड श्मशान पर श्री ज्ञानकृष्ण जी द्वारा पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार दाह संस्कार कराया।

19-6-89 को गृहशुद्धि यज्ञ में दिवगंत आत्मा की सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार के धैर्य हेतु परमात्मा से प्रार्थना की गयी।

पं0 काशीप्रसाद मिश्र की प्रथम पुण्य तिथि

धमनीखेड़ा (उन्नाव) के पं0-काशीप्रसाद मिश्र एम0ए0 साहित्यरत्न की प्रथम पुण्यतिथि 30 जून 1989 के अवसर पर गण्यमान्य साहित्यकारों ने उनके साहित्यिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

पृष्ठ 5 का शेष

प्रश्न उठाते हैं कि तदिवं भाति सुधोपमम् यत्, अर्थात् वह कौन सा विष है जो अमृत के समान प्रतीत होता है उत्तर दिया है "नारी" स्त्री ही ऐसा विष है इसके पश्चात् प्रश्न आया "विज्ञानमहा-विज्ञतमोऽस्ति को वा, अर्थात् कौन सब से बड़ा ज्ञानी है इसका उत्तर श्री शंकराचार्य जी देते हैं-

"नार्या पिशाच्या न च वन्चितो यः।"

अर्थात जिसको स्त्री रूप पिशाची वा राक्षसी ने ठग नहीं लिया।

इन उत्तरों से श्री शंकराचार्य जी के स्त्रियों के सम्बन्ध में अनुदार और वस्तुतः "शूद्राःपूता योषितो यज्ञिया इमाः" इत्यादि वेद वचनों के विरुद्ध विचार ज्ञात होते हैं। स्त्रियों के वेदाधिकार के सम्बन्ध में उन के ऐसे ही अनुदार विचार थे यह बृहदाण्यक उपनिषद के भाष्य से ज्ञात होता है जहां अर्थ य इच्छेद दुहिता में पण्डिता जायेत, (बृहदा0 6।4।1) इस के भाष्य में पण्डिता का अर्थ करते हुए वे लिखते हैं कि "दुहितुः पाण्डित्यं गृहतन्त्रविषयमेव वेदेअनधिकारात्" अर्थात् इस उपनिषद में कन्याओं के पाण्डित्य का जो प्रतिपादन है वह गृह कार्य विषयक ही समझना चाहिए क्योंकि वेद में इन का अधिकार नहीं। इसी उपनिषद में ब्रह्मवादिनी गार्गी वाचकनवी और मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी(4/5/1) का वर्णन आ चुका है जहां शंकराचार्य जी ने भी (ब्रह्मवादिनी का अर्थ ब्रह्मवदनशीला अर्थत वेद और ब्रह्मविषयक उपदेश करने वाली किया है तथा पाण्डित्य का अर्थ भी "बाल्यं पाण्डित्यं च निर्विद्य" (बृहदा0 3/5/1) के भाष्य में आत्मज्ञान किया है जिस पर आनन्दगिरि ने टीका में लिखा है कि आचार्य परिचर्या पूर्वक वेदान्ततत्त्वानां तात्पर्यावधारणं पाण्डित्यम् (बृहदारण्यकशांकरभाष्यम आनन्दाश्रम पूना) अर्थात आचार्य की सेवा पूर्वक वेदान्तों के तात्पर्य को निश्चय करना पाण्डित्य कहाता है। किन्तु अनुदारतावश स्त्रियों का वेदाध्ययन में अनधिकार बता दिया है जो ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्। (अथर्व 11/6/18) इत्यादि वैदिक आदेश के विरुद्ध है। ब्रह्मचर्य का अर्थ "यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्य चरन्ति" इस कठोपनिषत् के

वचन की व्याख्या में श्री शंकराचार्य जी ने गुरुकुलवासलक्षणम् अन्यद वा ब्रह्मप्राप्त्यर्थम् यह किया है अर्थात गुरुकुल में वास तथा ब्रह्म की प्राप्ति के लिए किया हुआ अन्य कार्य। ऐसी अवस्था में उनका स्त्रीणां वेदेअनधिकारात न केवल अनुदारतापूर्ण अपितु वेदविरुद्ध है।

अब मैं अन्य सुप्रसिद्ध आचार्यों का इस विषय में मत संक्षेप से दिखाना चाहता हूं।

दिव्य दीप

प्रिय प्रकाश पुत्र दीप जब अँधियारे से हारे हैं।
इनकी विजय कहानी कहते नभ के चाँद सितारे हैं।।
धर्म धरा पर अंधकार ने जब-जब चादर काली तानी।
पथ भ्रष्ट कर मानवता को दानवता ने की मन-मानी।
संघर्षों की लिए चुनौती धड़ से सीस उतारे हैं।।1।।

रवि मंजुल को घृणित घमण्डी घनघोरों ने जब भी घेरा।
उनकी स्वर्णिम धूप प्रिया को लगे छीनने डाले डेरा।
तभी किरण की कठिन अनी ने तार-तार कर जारे हैं।।2।।

राष्ट्रीय सुख-शांति सुधा का जबकि किसी ने घट है फोड़ा।
मधुर मराली स्वतन्त्रता का निष्ठुरता ने मुख मरोड़ा।
तो चन्दन के नन्दन वन से फूट पड़े अंगारे हैं।।3।।

दिव्य दीप तो सदा युगों से झंझाओं से लड़ते आये।
बलिदानों की लिए भावना फाँसी पर भी चढ़ते आये।
रण क्षेत्र में जयी रहे हैं कभी न हिम्मत हारे हैं।।4।।

परोपकार में प्राण-विसर्जन जीवन की परिभाषा है।
नहीं निराशा की नगरी में होता इनका वासा है।
इनकी तरुणाई तरणी ने लाखों जीवन तारे हैं।।5।।

इनकी अनुपम ऊँचाई में हिमगिरि छोटा लगता है।
इनकी आभा की समता में हीरा खोटा लगता है।
"प्रणव" न इनकी उपमा मिलती ढूँढ-ढूँढ कवि हारे हैं।।6।।

-"प्रणव" शास्त्री एम·ए·
महापदेशक, शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा-6

सूचना

वेद प्रचार सप्ताह दि0 18 से 24 अगस्त 1989 तक मनाया जायगा। इस अवसर पर जो समाजें स्वामी जी को बुलाना चाहें वह निम्न पते पर सम्पर्क करें।

श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष-दयानन्द संस्थान
नजीबाबाद, (बिजनौर) उ0प्र0

-नजीबाबाद: वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र नजीबाबाद का वेद प्रचार महोत्सव डा0-बालकृष्ण वर्मा की अध्यक्षता में आदर्श नगर, आर्य भवन के प्रांगण में धूमधाम से सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में पूज्यपाद स्वामी वेदमुनि-जी परिव्राजक, श्री नन्दलाल आर्य, श्री-मामचन्द्र जी पथिक, श्री महाशय- आशाराम-जी भजनोपदेशक श्री मानक चन्द्र आर्य वैदिक प्रवक्ताओं व भजनोपदेशकों ने उपस्थित जन समुदाय को आकृष्ट किया। डा0बालकृष्ण-वर्मा जी ने केन्द्र को तन-मन-धन से सहयोग किया।

डी0ए0वी0 शताब्दी पर विशेष डाक टिकट

नई दिल्ली, डाक विभाग डी0ए0वी0 शताब्दी पर 27 जून को एक रुपए मूल्य का बहुरंगा डाक टिकट जारी करेगा। समूचे देश में डी0ए0वी0 के संस्थानों ने छात्रों में निष्ठा, देशभक्ति और अनुशासन की भावना भरने के लिए उनकी योग्यता का पूर्ण रूप से निखार किया है। शिक्षा और सामाजिक सुधारों में डी0ए0वी0 आन्दोलन का योगदान काफी सराहनीय है।

आर्यसमाज के सुधारवादी आन्दोलन के संस्थापक महर्षि दयानन्द विश्वास रखते थे कि केवल शिक्षा ही समाज को जागरूक रख सकती है। उनकी स्मृति में डी0ए0वी0 आन्दोलन 1885 में शुरू किया गया था। पहला डी0ए0वी0 स्कूल।

पहली जून- 1886 में लाहौर में स्थापित किया गया था। बाद में इसे प्रोन्नत कर 1889 में कालेज बना दिया गया था। इसके बाद यह आन्दोलन और मजबूत होता गया। डी0ए0वी0 आन्दोलन ने भारतीय मानस में आधुनिक दृष्टिकोण लाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रथम दिवस आवरण और सूचना पत्र सभी डाक टिकट संग्रहालयों और अन्य चुने हुए डाकघरों पर एक-एक रुपए के मूल्य पर उपलब्ध रहेंगे।

विचार-गोष्ठी

ग्राम पंचायत खरपरी, स्थानीय आर्यसमाज व आर्य उप-सभा के प्रधानों के संयुक्त सौजन्य से दिनांक- 18 से 20 जून 1989 तक एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। उक्त गोष्ठी में स्वामी देवानन्द जी, डा0 वागीशजी आचार्य एवं आ0प्र0 सभा के मुख्य निरीक्षक श्री अटल जी उपस्थित थे। आयोजन का समापन क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी श्री शर्मा द्वारा किया गया।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज महराजगंज तराई जिला गोण्डा का उत्सव दि0 13,14,15 जून 89 को बड़े उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान, सन्यासी, स्वामी ज्ञानानन्दजी बदनी, लक्ष्मीनारायण जी शास्त्री गोण्डा, श्री शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, धनुप्रदर्शक आधुनिक भीम श्री सोममित्र शास्त्री पधारे। स्थानीय जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

आर्य समाज
(रामगढ़)
नैनीताल

विक्रम सिंह जी
-प्रधान

स्वामी भजनानन्द जी
-मंत्री

यज्ञमुनि जी
-कोषाध्यक्ष

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

--सभामंत्री।

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

हमारे आर्य मित्र कहते हैं....

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का मुखपत्र

आर्यमित्र में निकलने वाले लेख, अग्रलेख को पढ़कर अत्यन्त प्रसन्नता होती है। सभी लेख अच्छे और ज्ञानवर्धक रहते हैं। लेकिन ... आर्यमित्र में "संस्कृति से भाषा प्रभावित होती है और भाषा से संस्कृति" श्री वेद प्रताप वैदिक जी का यह लेख पढ़कर बहुत ही अच्छा लगा। मैं इसे अपने आर्यसमाज सुभाषनगर सत्संग में सबको पढ़कर सुनाऊंगा। आपको वैदिक भी बहुत-बहुत धन्यवाद।

राजनारायण आर्य, मंत्री
गुरुकुल महाविद्यालय
अयोध्या।

सफेद बाल

... इलाज से असमय में बालों का पकना एवं झड़ना रुकता है। सफेद बाल ... आयुर्वेदिक औषधि ... इलाज शुरू होते ही ... और शीघ्र ही चमक ... में मिला देगा।

प्रिय सम्पादक जी,

... आर्यमित्र का सर्वत्र ... आपकी निष्ठा, प्रवीणता आर्यमित्र में प्रतिबिम्बित है।

हिन्दी चिकित्सालय बी०एच०२७
पो०- आचार्य विद्यानन्द ... बदायूं।

आर्यमित्र का कलेवर ... छपने वाली कविताएं, लेख एवं सामयिक विचार जनता में ... करने वाले हैं। ... सभा के ... मंत्रीजी सर पर ... अलख जगा ... आर्य ... विचारों को पढ़कर तो आर्य ... को सचेत होना चाहिए।

ग्रा० बड़ावत, मेरठ।

११ जून के आर्यमित्र में उत्तर प्रदेश के ... द्वारा मुसलमानों के पक्ष में की गई घोषणा पर सम्पादकीय पढ़कर ... हो गया ... सत्यमेव ... तुष्टीकरण नीति पर ... व्यंग्यात्मक प्रहार करते हुए ... लिखने के लिए बधाई।

शिवनारायण प्रसाद वर्मा

आर्यसमाज हापुड़ का प्रस्ताव

आर्यसमाज हापुड़ में आयोजित विभिन्न संस्थाओं के जनप्रतिनिधियों की यह बैठक, हापुड़ में हुए कथित धर्मान्तरण की कार्यवाही को अत्यधिक गम्भीरता से लेती है एवं महसूस करती है कि हापुड़ के शान्त एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण को भंग करने के लिए यह पंजाब के आतंकवाद की एक कड़ी है, जो दीवारों पर लिखे गए एवं जलूस में लगाये गए "खालिस्तान जिन्दाबाद" जैसे देश द्रोही नारों से सिद्ध है।

आर्यसमाज नगरा झांसी
प्रधान - श्री हरिसिंह यादव
मंत्री - ...

... सार्वजनिक स्थल ... नगरपालिका ... के स्वामित्व में आता है, एक धर्मस्थल बनाने का भी प्रयास ... न केवल ... साम्प्रदायिक है ... यदि इस सम्बन्ध में प्रशासन ने समुचित कार्यवाही ... नहीं की तो इसके ... परिणाम होंगे। जिनका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व प्रशासन का होगा।

पृष्ठ ३ का शेष

आर्यसमाज ...
प्रधान - श्री रामदेव अग्निहोत्री
मंत्री - ...
कोषा० - श्री रामलाल गुप्त

... "वर्धमान" तक सीमित रहते हैं तब तक जीवन अपने लक्ष्य को नहीं पकड़ता, जब जीवन के "वर्धमान" तत्व "अवर्धमान" हो जाते हैं, वे अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तक पहुंच जाते हैं, तब मनुष्य "अदय", "अदिति", ... जीवन ... सनातन ... लेता है। ... अदय, ... सत्य का वर्णन वेद में किया गया है। हमारे कथन का सार यह है कि वेदों में मुख्यतौर पर ... तत्वों का, भौतिकवाद का वर्णन नहीं है क्योंकि ये तत्व भौतिकवाद ... कारण परिवर्तनशील ... "अवर्धमान" तत्वों का ... वर्णन है क्योंकि ... नित्य हैं, ... शील हैं। ज्ञान जब बढ़ेगा, तो ... बढ़ते उसकी भी सीमा कभी न कभी आयेगी। वृक्ष ... कहीं तो रुक ... जब "अवर्धमान" ... वहीं "अदय" हो ... जाता है। भौतिकवाद ... वहां अध्यात्मवाद ... इसी को ऋग्वेद ... से सदावृधा (सदा- ...) कहा है। ... पहले लिख आये हैं, ... तो "वर्धमान" होगा या "अवर्धमान होगा। "वर्धमान" ज्ञान ... समय-समय पर मनुष्य ... आधार पर बदलता रहता है।

गुरुकुल वृन्दावन में प्रवेश....

गुरुकुल ... विश्वविद्यालय वृन्दावन ... भारतीय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्था है, जिसकी उपाधि "अधिकारी" हाई स्कूल एवं शिरोमणि बी०ए० के समकक्ष स्वीकृत है। ... जुलाई १९८९ से प्रारम्भ। प्रवेशार्थ ... गुरुकुल के कार्यालय से प्रवेश की जानकारी प्राप्त कर अपने बालकों को प्रवेश दिलायें।

मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ०प्र०
अध्यापक धर्म प्रशिक्षण शिविर

प्रदेशीय विद्यार्य सभा ... धर्म प्रशिक्षण ... आयोजन करती है। ... फैजाबाद, वाराणसी ... मुरादाबाद मण्डलों में ... एक शिविर की व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए।

जो विद्यालय इस योजना में सभा को सहयोग दे सकें, वे सभी ... उपयुक्त तिथियों ... आदि से अवगत करने की कृपा करें।

माधव सिंह
मंत्री, प्रदेशीय विद्यार्य सभा

१५ जून को सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी के आश्रम में पधारने पर साधकों में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई, १६ जून को श्री पं० इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में आश्रम के पदाधिकारियों का सर्वसम्मति से निर्वाचन हुआ। संरक्षक, ... उ०प्र०। प्रधान श्री विक्रमसिंह जी रामगढ़ तल्ला, मंत्री श्री स्वामी भजनानन्दजी, ... ज्वालापुर निर्वाचित हुए श्री प्रधान जी ... इस ... किया कि ... आश्रम के जीर्णोद्धार के लिए एकमुश्त आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रदान किया जायगा। ... भी इच्छा है कि महात्मा नारायण स्वामी जी की स्मृति में विशाल मेला लगाया जाय। गतवर्ष ... हजार रुपया ... द्वारा आश्रम के जीर्णोद्धार के लिए प्राप्त हुआ ... जिससे आश्रम का बहुत कुछ जीर्णोद्धार हुआ।

आर्यसमाज बरदहा बाजार
प्रधान - श्री ...
मन्त्री - श्री ... आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री ... आर्य

शोक समाचार

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक श्री पं० हरिप्रसाद शास्त्री (60) का ... दिनांक- 4-6-89 को ब्रेनहेमरेज के कारण पटना मेडिकल अस्पताल में हो गया। उनका अन्त्येष्टि दिनांक- 5·6·89 को पूर्ण वैदिक रीति के अनुसार सभामंत्री की देखरेख में पूर्ण सम्मान के साथ पटना के बांसघाट में सम्पन्न हुआ। परमात्मा से दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान हेतु प्रार्थना की गयी।

एस०एस० मेहता, लखनऊ

वर चाहिए

अलंकार ... की एक सुन्दर, स्वस्थ, गृहकार्य में दक्ष, स्नातक, ... गोत्रीय 26वर्षीय कन्या हेतु आर्य परिवार का स्वावलम्बी वर चाहिए। वैदिक ... को वरीयता। सम्पर्क/पत्र व्यवहार निम्न पते पर करें।

स्वदेशी औषधालय, गोण्डा श्री राजेन्द्रपाल आर्य
आर्य वाच कम्पनी, ...

विनय कुमार अरुणकुमार इलाहाबाद।

- दि० 25 जून 89 की यह ... सभा बिहार राज्य के महोपदेशक श्री हरिप्रसाद- ... एवं आर्यसमाज गया के कर्मठ सदस्य श्री रामधनी प्रसाद आर्य जी के निधन पर गहराशोक प्रकट किया। ईश्वर दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य ...

कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ... मार्ग, लखनऊ द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि० सं० २२५१/५७) श्रावण कृष्ण-५, रविवार- संवत् २०४६ वि०, दिनांक २३ जुलाई १९८९ (घोषणापत्र सं.७/२८-२-८५)



सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते

संसार में जितने दान हैं अर्थात् जल, अन्न, गौ, पृथिवी, वस्त्र, तिल, सुवर्ण और घृत आदि इन सब दानों से वेदविद्या का दान अतिश्रेष्ठ है--

-महर्षि दयानन्द

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू० २५१/-
वार्षिक	रू० ३०/-
एक प्रति	१.०० रू० मात्र

प्रकाशन का ९१वाँ वर्ष

अंक - २९

धर्म निरपेक्षता की आड़ में भारत में मुस्लिम साम्राज्य की स्थापना का षड्यन्त्र

मुसलमानों के नये मसीहा सैयद शहाबुद्दीन से जनता सचेत रहे...

— इन्द्रराज, सभाप्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष, माननीय श्री पं० इन्द्रराज जी ने दिल्ली में 8 तथा 9 जुलाई को बुलाए गये मुस्लिम सम्मेलन पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा-- कि मुसल्मानों का यह तीसरा मोर्चा धर्मनिरपेक्षता की आड़ में मुस्लिम सम्प्रदाय के लिए विशेष सुविधाएं प्राप्त कराने के राजनीतिक उद्देश्य से किया गया है। इस समय हमारा राष्ट्र अभारतीयता एवं अराजकता की कुचक्ररूपी कीचड़ में बुरी तरह फंस गया है। जो भी नये दल अथवा नये नये मसीहा भारत के राजनैतिक क्षितिज पर आजकल उदय होते दिखाई दे रहे हैं उन सबका एक ही उद्देश्य है-- सुविधा, तुष्टीकरण और वोट। सुविधा और तुष्टीकरण के नाम पर अपार धनराशि व्यर्थ के कार्यों में लुटाई जा रही है। जिस उर्दू भाषा को मुसल्मानों ने स्वयं छोड़ दिया था उसे सोने की तश्तरी में रखकर जिन्दा ही नहीं, चमकाया जा रहा है। पढ़ने वालों का नाम नहीं, उर्दू शिक्षक शिक्षिकाओं की भरमार है। पेंशन बट रही है, ऋण बट रहा है, बिना मांगे इबादतगाहें बनाई जा रही हैं। शान्तिसेना में शतप्रतिशत उन्हीं की भर्ती हो रही है----- और इतना सब कुछ होने के बाद भी शहाबुद्दीन साहब कह रहे हैं---- "इस सम्मेलन का उद्देश्य मुसल्मानों का दुखदर्द सत्ता के गलियारों तक पहुंचाना है, शोषितों और अल्पसंख्यकों के साथ हो रहे अन्याय के विरुद्ध एकजुट होकर यथास्थितिवादी ताकतों से मुकाबला करना है"।

श्री पं० इन्द्रराज जी ने आगे बताया कि यह सम्मेलन वास्तविक दृष्टिकोण से मुस्लिम वोटों का समीकरण करने की ही एक चाल है। साम्प्रदायिक भावनाओं को उभाड़कर शोषित मुस्लिम गठबन्धन के नाम पर यदि यह तीसरा मोर्चा शक्तिशाली हो जाता है तो सत्तापक्ष से सौदेबाजी करने में लाभ ही लाभ है। जिस प्रकार मि० जिन्ना ने मुस्लिम धर्मान्धता को उभाड़कर "मुस्लिम लीग" नाम से अपना नया संगठन बना लिया था और तत्कालीन ब्रिटिश शासकों एवं देश की सबसे बड़ी राजनैतिक संस्था कांग्रेस को देश विभाजन के लिए मजबूर कर दिया था। उसी प्रकार सैयद साहब भी भारत के मुसल्मानों के नये मसीहा बनना चाहते हैं। कुछ दिन पहिले बाबरी मस्जिद के प्रकरण को लेकर इन्होंने एक लाख मुसल्मानों को अयोध्या पहुँचकर मस्जिद में नमाज पढ़ने का फतवा दे दिया था। अब शोषितों और दलितों की सहानुभूति का नया राग अलापकर यथास्थितिवाद से मुकाबला करना चाहते हैं और इस देश के मुसल्मानों की अलग पहिचान बनाए रखना चाहते हैं। यह अलगाववादी प्रवृत्ति नहीं तो और क्या है?

श्री पं० जी ने भारतीय जन मानस को सचेत करते हुए आर्यजनता को विशेष रूप से इनकी गतिविधियों पर नजर रखने का निर्देश दिया है। उन्होंने बताया कि भारत का मुसल्मान भारतीयता में आत्मसात हो रहा था, हिन्दी को उसने अपना लिया था, भारत को अपनी मातृभूमि, पितृभूमि और पुण्यभूमि मानने का उसका संकल्प दृढ़ बनता जा रहा था। ऐसे समय में इस प्रकार के सम्मेलनों से उसकी पहिचान फिर अलग से बनाई जाने की दुष्प्रवृत्ति शुरु हो गई है। यह प्रवृत्ति राष्ट्र के लिए तो खतरनाक है ही, स्वयं उसके लिए भी घातक है। राजनीति के सर्वोच्च पदों पर आसीन नेताओं को गम्भीरता से इस पर विचार करना चाहिए अन्यथा यह प्रवृत्ति सुरसा की तरह बढ़ती ही चली जायेगी और एक दिन इस प्यारे राष्ट्र की अखण्डता और एकता पर फिर प्रश्नचिन्ह लग जायेगा -------- ?

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सज़कर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
— राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- श्रावण कृष्ण-५ संवत् २०४६ वि.
२३, जुलाई १९८९, दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

शिक्षा मन्दिरों का नया सत्र

हमारे शिक्षणालयों में नया सत्र प्रारम्भ हो गया है। उगती हुई किरणों के साथ राष्ट्र के अगणित उदीयमान छात्रों ने सरस्वती के इन पावन मन्दिरों में खड़े होकर प्रभु वन्दना और राष्ट्रवन्दना के साथ एक शपथ ली है:- "स्वाध्यायान्मा प्रमदः" हम स्वाध्याय से कभी प्रमाद नहीं करेंगे। "यानि यानि सुचरितानि तानि त्वया सेवितव्यानि नो ऽतिराणि" हम अपने गुरुजनों के जो जो सुचरित हैं उनका अनुसरण करेंगे । कितना सौभाग्यशाली है यह सत्र ... सूर्य अपनी हज़ार हज़ार किरणों से राष्ट्र के इन नौनिहालों को अपना आशीर्वाद देने के लिए उगता ही चला आ रहा है। विद्यामन्दिरों के प्रांगण में फैली हुई हरी भरी यह पावन दूर्वा अपने स्नेहिल अश्रुबिन्दुओं से चरणों को पखारते हुए मानों कह रही है- "मेरे प्यारे बच्चो! मेरे ही समान पवित्र बनना, शीतल बनना और संसार को आत्मसात करने के लिए मेरा ही जैसा आंचल बनकर फैल जाना। सम्मुख खड़े हुए हैं गुरूजन जो तुम्हें नया जीवन और नया प्राण देने के लिए आतुर भरी दृष्टि से तुम्हें निहार रहे हैं, अपने ज्ञान का सब कुछ तुम्हारे निर्मल हृदय में उड़ेल देने को तत्पर हैं। कभी झांककर देखा है तुमने इनके हृदयों मे क्या है ... केवल तुम और तुम्हारे भविष्य की कामना। माँ बाप ने तो शरीर दिया था अब निर्माण यह करेंगे, तुम्हें राम और कृष्ण बना देंगे, दयानन्द और गांधी बना देंगे। इनमें बड़ी क्षमता है, अपार क्षमता। तुम्हें मालूम है, एक अन्धे ने टंकारा के ऐसे ही एक बालक को ज्ञान की आँखें दे दी थीं और उसे ऋषि और महर्षि बना दिया था। उसे अमर बनाने वाला और कोई नहीं उसका गुरु था जिसने एक बार उसे पीट भी दिया था, निष्कासित भी कर दिया था पर उस बालक ने उफ़ नहीं की थी। तभी तो संयम रूपी हथौड़े की चोट खा खाकर - सोना बन गया था वह, सबका हार, आर्यजाति के गले का हार...।

...और आज विद्या के इन पावन मन्दिरों में उठते हुए अद्‌भुत विरोधाभास के बीच हम एक बात कहना चाहते हैं। कहीं शरीर और आत्मा के बीच कभी विरोध हुआ है। शरीर कैसा भी हो, प्रिय है प्रिय से प्रिय है। गुरु शिष्य का सम्बन्ध भी ऐसा ही है, वहाँ द्वित्व तो है ही नहीं। तभी तो उसे अन्तेवासी कहा जाता है। दोष सम्बन्ध में नहीं, पद्धति में है। क्या कारण है प्राचीन आश्रमपद्धति में ऐसे विरोधाभास के कहीं दर्शन नहीं होते। शिक्षणालयों से मेरा परम्परागत सम्बन्ध रहा है। प्रातःकालीन प्रार्थनासभा में कभी कभी मैं खड़ा होकर अपने अन्तस्तल की आँखों से इनमें खोजा करता हूँ- मेरा राम इन्ही में कहीं खड़ा है।
मेरा दयानन्द, मेरा गाँधी इन्हीं पंक्तियों में कहीं छुपा हुआ है।

काश ! दुनियाँ इनके अन्तरतम को झाँककर देखे- इन नन्हें मुन्ने हृदयों में प्यार का कितना विशाल सागर लहलहा रहा है। मन की निर्मलता के सम्मुख स्फटिक मणि की धवलता लज्जित हो रही है । ग्राह्य शक्ति की अपूर्वक्षमता लिए इनकी पावनमेधा संसार का सब कुछ जान लेने के लिए कितनी लालायित है। ऐ समाज के लोगो ! परिवार के लोगो, पढ़ाने वाले गुरुओ माता पिताओ, जैसा तुम चाहोगे, इन्हें बना दोगे। इनका अपना कुछ भी नही है । सब कुछ तुम्हारे में विलीन है, तुम्हारे रंग में रंगने के लिए आकुल, व्याकुल, महाकुल ।

पर खबरदार, यह अमृतबेलि है । किसी कोने से भूलकर भी इसमें विष का प्रवेश न होने पावे। उत्तरदायित्व तुम्हारा और हमारा है। यह अमानत तुम्हें इसलिए सौंपी गई है कि तुम इन्हें इन्सान नहीं, मानव नहीं, महामानव और देवता बना दोगे। उसकी अमृतमयी गोद से मिला दोगे जिसकी यह अनमोल धरोहर है। एक दिन वह तुमसे पूछेगा- "तुमने इन्हें क्या सिखाया, क्या पढ़ाया और क्या बनाया ?

आज के वातावरण में, हर श्वाँस में प्रदूषण है - अनाचार का, पापाचार का, भ्रष्टाचार का, अनीति का, झूठ का। हम चाहते हैं राष्ट्र का भविष्य सुखमय हो, शान्तिमय हो, समृद्धिमय हो। पर जिनके कन्धों पर भविष्य की बागडोर है, उनकी हर श्वांस में हमीं हैं जो अनीति पाप और भ्रष्टाचार का प्रदूषण उड़ेल रहे हैं। संयमी स्वंय नहीं हैं उन्हें संयम की शिक्षा देना चाहते हैं। सत्य से कोसों दूर हैं, उन्हें सत्यवादी हरिश्चन्द्र की उपमा से मण्डित कर देना चाहते हैं । रात के अंधेरे में अश्लीलता से भरी फिल्मों का आनन्द हम लेते हैं उन्हें चरित्र का जाज्वल्यमान नक्षत्र बना देना चाहते हैं। लेकिन यह हो कैसे सकता है- कहीं विषवृक्ष से मीठे आम की उत्पत्ति हुई है। इसलिए आज हमें विचारना है कि हमारे बच्चे शिष्ट और विज्ञ कैसे बनें। उन्हें शिष्ट और विज्ञ बनाने के लिए हमें शिष्टतम और विज्ञतम बनना होगा। पुस्तकीय शिक्षा के अतिरिक्त उन्हें चारित्र्यिक शिक्षा देनी होगी। उन्हें यह हृदयंगम कराना होगा- कि नकल करने से फेल हो जाना अच्छा है। चोरी से पेट भरने की अपेक्षा, भूख से तड़प तड़प कर मर जाना ज्यादा श्रेयस्कर है। तुम्हारी परीक्षा अच्छी श्रेणी प्राप्त करके उंचे पद को प्राप्त कर लेने में नहीं है। तुम्हारी असली परीक्षा संसार के कर्मक्षेत्र में होगी जहाँ कठिनाइयों से जूझते हुए तुम्हें संसार को सुखी बनाना है, समृद्ध बनाना है।

आज हमारा विद्यार्थी समाज कुछ दिग्भ्रमित सा हो रहा है। समाज में व्याप्त कुण्ठा एवं निराशा से जूझने की उसकी प्रवृत्ति क्षीण होती जा रही है। शिक्षा का उद्देश्य येनकेन प्रकारेण डिग्री प्राप्त करके अच्छी नौकरी पा लेना मात्र रह गया है । ऐसी स्थिति में आशा की किरण हमारे इन विद्यामन्दिरों में पल्लवित पुष्पित हमारा छात्रवर्ग और सिंचित करने की अपूर्व क्षमता वाले हमारे उदीयमान शिक्षकबन्धु ही हैं।

इस नये सत्र में विद्यामन्दिर के वरद् पुत्रों और शिक्षक बन्धुओं से हम यही निवेदन करना चाहते हैं कि भले ही आज प्राचीन आश्रम पद्धति विलुप्त हो गई हो, भावना बनी रहनी चाहिए। आप दोनों का अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे के प्रतिबिम्ब हैं। क्या संसार भूल गया ऋषि दयानन्द को अमर बनाकर गुरु विरजानन्द अमर नहीं हो गये । बिगड़ते हुए समाज से नई नई पौधों को लाकर उन्हें स्वर्णवत् बनाना निःसन्देह दुष्कर कार्य है पर हमारे सामने और कोई उपाय भी तो नहीं है । आर्य समाज अपने जीवन के प्रारम्भिक काल से ही शिक्षाप्रणाली मे आमूलचूल परिवर्तन करने का पक्षधर रहा है । शिक्षकों को समाज में सर्वोच्च सम्माननीय पद देना हमने अपना कर्तव्य समझा है । "सः पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्" गुरु ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाता है। उसकी समस्याएँ राष्ट्रीय समस्याएँ हैं। राष्ट्र को अपना सर्वस्व न्योछावर करके भी उसको समस्यारहित बनाना होगा तभी हमारे राष्ट्र का कल्याण है और विश्व का कल्याण है। आर्यसमाज अपनी सभी शिक्षण संस्थाओं के उदीयमान छात्रों, छात्राओं तथा शिक्षक बन्धुओं को नये सत्र के आगमन पर उनके उज्जवल भविष्य की मंगलकामना करता है ।

मनमोहन तिवारी

शुभ विवाह सम्पन्न

आचार्य वेदव्रत अवस्थी प्रधान आर्य-उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ के दौहित्र चि0 आलोक मिश्र का शुभ विवाह दिनांक-10-7-89 को श्री राम प्रसाद दीक्षित बरवलिया लखनऊ की पुत्री आयु0 मीरा के साथ पूर्ण वैदिकरीति से सम्पन्न हुआ। 12-7-89 को आचार्य अवस्थी के निवास वेदमन्दिर हिन्दनगर लखनऊ में प्रीतिभोज में नगर के लब्ध प्रतिष्ठ सैकड़ों आर्य नर-नारियों ने भाग लेकर नवदम्पत्ति को शुभाशीष प्रदान किया।

-मनमोहन तिवारी,
सभा मंत्री।

आर्य समाज, सान्ताक्रुज

प्रधान - श्री ओंकारनाथ
महामन्त्री - श्री विमल स्वरूप सूद
मन्त्री - श्री विश्व भूषण आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री कस्तूरीलाल मदान

वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है

□ श्री सत्यकाम जी विद्यालंकार

गतांक से आगे-

इसलिए बदला भी रहता है, "अवर्धमान"- ज्ञान आध्यात्मिक है, नित्य है, सनातन, एक है, अदय है, अदिति है, बदलता नहीं है।। क्योंकि वेद का ज्ञान मनुष्य की खोज नहीं है, ईश्वरीय देन है इसलिये उसे वेद "अदय" तथा "अदिति" कहा है। परन्तु ज्ञान का स्रोत मनुष्य तथा ईश्वर दोनों हैं- इसलिए ज्ञान को वेद ने "सदावृध" भी कहा है। सदावृध के हमने दो अर्थ किये हैं। जब मनुष्य द्वारा खोज किये ज्ञान के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है तब इसका अर्थ सदा सर्वदा उत्तरोतर बढ़ने वाला, बदलने वाला अर्थ होता है, जब इस शब्द का प्रयोग ईश्वरीय - ज्ञान के लिए होता है तब इसका अर्थ "सदा-अवृध:" - सदा एक रहने वाला, कभी न बदलने वाला, अदय, या अदिति अर्थ होता है। सदावृध संस्कृत भाषा का विलक्षण शब्द है जिसमें ज्ञान के मानुषीय तथा ईश्वरीय दोनों पक्ष आ जाते हैं। "सदा+वृध:" मानुषीय-ज्ञान है, "सदा-अवृध:" ईश्वरीय या वेद ज्ञान है।

जब हम कहते हैं कि वेद सब सत्य विद्याओं के पुस्तक हैं, तब हमारा अभिप्राय क्या होगा? इससे क्या हमारा यह अभिप्राय होता है कि वेद में फिजिक्स, केमेस्ट्री आदि सब-कुछ है, क्या रेल, हवाई जहाज, तार, टैलिफोन आदि बनाना सब सत्य विद्यायें वेद में हैं। इस प्रश्न पर विचार करते हुए हमें दो-तीन बातों पर विचार करना होगा। हमें इस बात का उत्तर देना होगा कि अगर वेद में फिजिक्स, केमेस्ट्री, रेल, तार, हवाई जहाज, आदि सब-कुछ है, तो भगवान ने मनुष्य को अपने मस्तिष्क से सोचने-समझने, खोजने के लिए क्या कुछ भी नहीं छोड़ा, हमें इस बात का भी उत्तर देना होगा कि सब भौतिक आविष्कार उन लोगों ने कैसे किये जो वेद का एक अक्षर भी नहीं जानते थे। इन सब आपत्तियों का हमारे पास क्या उत्तर है? वास्तविक स्थिति यह है कि वेदों में भौतिक- विद्याओं का बीज तो है परन्तु उसे पुष्पित तथा फलित या क्रियात्मक रूप देने के लिए उपवेदों की रचना की गई। उपवेदों का निर्माण इसलिए हुआ ताकि वेदों में जिन भौतिक-विद्याओं का बीज था, परन्तु उसकी प्रधानता न थी, उपवेदों द्वारा उनका विशदीकरण किया जाये।

हमारा कथन यह नहीं है कि वेद में वैज्ञानिक बातें नहीं हैं। हमारा कथन सिर्फ इतना है कि वेद में जो भी वैज्ञानिक बात कही गई वह उदाहरण या उपमा के रूप में कही गई है। मुख्य रूप में नहीं कही गई है। उदाहरणार्थ, यजुर्वेद के 23वें अध्याय में यज्ञ का वर्णन करते हुए कहा है- "पृच्छामि त्वा परमन्तः पृथिव्याः- मैं पूछता हूं पृथ्वी का परम छोर क्या है? इसका उत्तर देते हुए कहा गया है - "इयं-वेदिः परो अन्तः पृथिव्याः- यह वेदी जहां हम यज्ञ कर रहे हैं पृथ्वी का पहला सिरा है। इसका अर्थ हुआ कि पृथ्वी गोल है जिसे सिद्ध करने के लिए गैलिलियो को जेल जाना पड़ा था। प्रत्येक गोल वस्तु का आदि तथा अन्त एक ही स्थल होता है, परन्तु यह कथन जियोलोजी के रूप में नहीं कहा गया यज्ञ के विषय में उदाहरण के रूप में कहा गया है। हमारा कथन है कि वैज्ञानिक या भौतिक तथ्यों को परमात्मा की तरफ से बतलाने की जरूरत नहीं, उनका आविष्कार करने के लिए भगवान् ने मनुष्य को बुद्धि दी है। ईश्वरीय-ज्ञान आध्यात्मिक तथ्यों को वेद द्वारा दिखाया गया है। अध्यात्म-विद्या ही सत्य विद्या है, वही अदय है, वही अदिति है, वही अवर्धमान है, वही विद्या है, भौतिक-विद्या को वेद ने "सदावृध" सदा बढ़ने वाली विद्या कहते हुए भी "अविद्या" कहा है। भौतिक विद्या को अविद्या कहते हुए भी जीवन के लिए उपयोगी होने के कारण उसे भी वेद ने सम्मान का स्थान देते हुए कहा है- "अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा- अविद्या से मृत्यु को तो तरा ही जा सकता है, परन्तु अमरत्व तो अध्यात्म से ही प्राप्त होता है।

हमने इस लेख माला में कई बातों को जगह-जगह दोहराया है। इसे दोहराने का कारण विषय को अधिकाधिक स्पष्ट करना है। इस लेख-माला से किसी को भ्रांति न हो इसलिए इस लेख-माला के मुख्य-मुद्दों को लिखकर मैं इसे समाप्त कर रहा हूं।

(क) इस लेख-माला में जो दिशा हमने अपनाई है उससे स्पष्ट है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

(ख) इस लेख-माला से स्पष्ट है कि वेद ने ज्ञान के दो भेद किये हैं- "विद्या" तथा "अविद्या"।

(ग) इस लेख-माला से स्पष्ट है कि वेद ज्ञान को "अदय" (नित्य, सनातन) तथा वर्धमान (अनित्य, परिवर्तनशील) इन दो मार्गों में भी बांटा है। "वर्धमान" की परिणति "अवर्धमान" में होती है। जब वर्धमान अवर्धमान हो जाता है तब भौतिक अभौतिक या अध्यात्म में प्रविष्ट हो जाता है।

(घ) इस लेख-माला में हमने "भौतिक-विज्ञान" को मानुषीय एवं वर्धमान माना है जो परिवर्तित होता रहता है और अनित्य कहा जा सकता है, "दैवीय-ज्ञान" को "ईश्वर प्रदत्त" एवं "अदयं" माना है जो सदा एक है, नित्य है, सनातन है, जिसमें परिवर्तन न होता है, न हो सकता है। वेद के सब सत्य विद्याओं की पुस्तक होने के लिए हमने वेद की इसी स्थिति को माना है और इसी को इन लेखों में स्पष्ट किया है।

(ङ) वेद का कहना है कि यद्यपि "विद्या" तथा "अविद्या" दोनों जीवन के लिए उपयोगी हैं तो भी "अविद्या" से सिर्फ मृत्यु को तरा जा सकता है, "विद्या" से अमरत्व की प्राप्ति होती है। "विद्यांचाविद्यां च यस्तद् वेद उभयं सह- विद्या तथा अविद्या दोनों का ज्ञान होना चाहिये। लौकिक तथा पारलौकिक- जीवन के लिये दोनों उपयोगी हैं।

(च) "अविद्या" से मृत्यु को तरा जा सकता है- इसका अभिप्राय हमने यह लिया है कि भौतिक-विज्ञान या भौतिकवाद से मनुष्य को भौतिक लाभ तो हो सकता है, आध्यात्मिक लाभ नहीं। [illegible]

(छ) विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है- इसका अर्थ हमने आध्यात्मिक-ज्ञान लिया है। आध्यात्मिक-ज्ञान अर्थात्-अध्यात्मवाद से अमरत्व प्राप्त होता है।

(ज) वेदों में फिजिक्स, केमेस्ट्री, जियोलोजी आदि निकालने के कई विद्वानों ने यत्न किया है निकाले भी हैं, मैं उनकी सराहना करता हूं। परन्तु उपनिषद् में लिखा है कि नारदमुनि ऋषि सनत्ककुमार के पास गये और विषादमय स्वर में बोले कि मैंने संसार की सब विद्याओं का अध्ययन किया, परन्तु आत्म-विद्या नहीं सीखी- इसलिए- "सोऽहं भागवो सोदामि"- मैं खिन्न रहता हूं, उदास रहता हूं। मैं मन्त्रविद् हो गया हूं, आत्मविद् नहीं हुआ। इस स्थल से स्पष्ट है कि नारद वेद की "विद्यां च अविद्यां च"- इस मन्त्र की भाषा में बोल रहा है। इसलिए मैं कहता हूं कि वेद मुख्य रूप में आध्यात्मिक-ग्रंथ हैं, भौतिक बातों का जहां-तहां वर्णन उनमें जरूर पाया जाता है, परन्तु वह कभी-कभी आध्यात्मिक को समझाने के लिए या उदाहरण अथवा रूपक के लिए किया गया है। इसीलिए ऋषि दयानन्द ने वेद मन्त्रों की मुख्य रूप में आत्मा-परमात्मा परक व्याख्या की है। अध्यात्म-शास्त्र ही नित्य है, सनातन है, भौतिक-विज्ञान खोजने की वस्तु है, वह मनुष्य स्वयं खोज सकता है, आध्यात्मिक-ज्ञान देने तथा पाने की वस्तु है, वह भगवान् मानव को देता है। इसीलिए कहा गया है कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।

तो क्या वेद में विज्ञान नहीं है? हमारा उत्तर है- वेद में विज्ञान है, और अवश्य है, परन्तु ऐसा विज्ञान जो नित्य है, अखण्ड है, अदय है, जो सदा- अवृध है, जो नितनित बदलता नहीं है। जो विज्ञान बदलता रहता है, वह वेद की परिभाषा में "अविद्या" है, "सदावृध"-"सदा- "वर्धमान" है। "सदावृध"- सदा वर्धमान-ज्ञान मनुष्य के हाथ में है, "सदा-अवृध"- सदा एक रहने वाला ज्ञानभगवान "वेद" द्वारा मानव को देता है।

□

मुझे अंगरेजी नहीं आती क्योंकि मेरे देश पर अंगरेजों ने शासन नहीं किया

डा. वेदप्रताप वैदिक की पुस्तिका 'अंगरेजी हटाओ : क्यों और कैसे' पढ़ने के बाद आलफस वानवेल ने एक पत्र उन्हें लिखा था. वानवेल जी नीदरलैंड के रहनेवाले हैं और भारत में रह कर हिंदी सीख रहे हैं. वैदिक जी को वानवेल द्वारा लिखे गये पत्र को हम यहां छाप रहे हैं.

सेवा में
डा. वेदप्रताप वैदिक

आपकी लिखी हुई 'अंगरेजी हटाओ, क्यों और कैसे' नाम की पुस्तक से मैं प्रभावित हुआ मैं आपके विचार से पूरी तरह सहमत हूं.

भारत सरकार ने मुझे यहां दिल्ली में हिंदी पढ़ने के लिए छात्र वृत्ति प्रदान की है. मुझसे कहा गया था कि भारत में हिंदी पढ़ने के लिए उपयुक्त वातावरण मिलेगा. जबकि यहां मैंने देखा कि हिंदी भाषी मुझसे हिंदी में बात करने मे इनकार करते है. मैं उनसे कहता हूं कि मुझे अंगरेजी नही आती, क्योंकि मेरे देश पर अंगरेजो ने शासन नहीं किया है. वे आश्चर्य चकित हो कर अंगरेजी में जवाब देते है. 'लेकिन मैं अंगरेजी जानता हू, मैं पढ़ा लिखा हूं.' एक बार किसी दुकानदार का बच्चा मेरे हर प्रश्न पर केवल 'येस' बोल रहा था मैने पूछा था कि क्या तुम 'येस' के अलावा और कुछ बोल सकते हो? बच्चे ने उत्तर दिया— 'नो इंगलिश.' मैं तुमसे हिंदी बोल रहा हू तो तुम मुझसे हिंदी मे क्यों नही बोलते?

पिछले सप्ताह में केंद्रीय हिंदी संस्थान के रजत जयंती के उद्घाटन भाषण मे प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने कहा कि हिंदी, अहिंदीभाषियों पर थोपना उचित नही है. क्या समस्त भारत की जनता पर एक विदेशी भाषा (अंगरेजी) थोपना उचित है?

पूरे भारत मे हिंदी संस्थान की स्थापना करने और विदेशों से छात्र बुलाने से हिंदी की उन्नति नहीं होगी. हिंदी को प्रादेशिक भाषाओं से नहीं, बल्कि अंगरेजी से संघर्ष करना चाहिए. हिंदी प्रतिष्ठा की भाषा बनी तो हिंदी स्वतः पूरे भारत में फैलेगी. आश्चर्य की बात है कि बंगलूर में रहते हुए हिंदी भाषियों को कन्नड नही आती.

लज्जा की बात है कि भारत के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री को हिंदी नहीं आती. मैं हालैंड का निवासी हू, मेरी मातृभाषा डच है. मेरे देश मे सारी शिक्षा, प्राथमिक से विश्वविद्यालय तक मातृभाषा के माध्यम से होती है. हालांकि डच भाषा कम देशो मे बोली जाती है. और उसके बोलनेवालों की संख्या अधिक नहीं है हमारा विचार है कि एक बच्चे को पहले अपनी मातृभाषा को अच्छी तरह से सीखना चाहिए. स्कूल में बारह वर्ष से छोटे बच्चों पर कोई विदेशी भाषा थोपना मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अनुचित है. अपनी मातृभाषा के ठोस आधार पर हम विभिन्न विदेशी भाषाएं सीख सकते हैं. हालैंड में अनेक भाषाओं में से चुन सकते है फ्रासीसी, अंगरेजी, जर्मन, हिस्पानी, रूसी. भारत में बच्चे न अच्छी हिंदी या अन्य (भारतीय भाषा) जानते हैं और न अच्छी अंगरेजी.

केंद्रीय हिंदी संस्थान द्वारा आयोजित हिंदी कंप्यूटरों की प्रदर्शनी में एक विदेशी हिंदी छात्र ने एक हिंदी भाषी कंप्यूटर विक्रेता से हिंदी में एक सवाल पूछा. इस बेचारे हिंदी छात्र को अंगरेजी भाषा में प्रश्न का उत्तर मिला.

एक बार हालैंड के सिनेमागृहों में अमेरिकी फिल्म दिखायी गयी, जो भारत के लिए अत्यंत अपमानजनक है. यह फिल्म देख कर मेरे मन को ठेस पंहुचाई. वह फिल्म डच भाषा में अनुवाद की गयी थी. कुछ दिनों बाद रूस के राजदूत ने एक समाचार पत्र में एक लेख प्रस्तुत किया था. उसमें लिखा कि हमने उस फिल्म की भर्त्सना की है, क्योंकि यह फिल्म हमारे मित्र देश भारत के लिए अपमान है. भारत का दूतावास मौन था. क्यो? दूतावास केवल अंगरेजी जानते हैं.. विदेशों में स्थित भारतीय दूतावासों के कर्मचारी स्थानीय भाषा नही सीखते. उनका विचार है कि संसार में सब लोग अंगरेजी समझते हैं. वे जनता से संपर्क कैसे करेंगे? हालैंड में कोई अंगरेजी भाषी समाचार पत्र प्रकाशित नहीं होता.

विडंबना की बात है कि भारतीय संस्कृति से उन्मुख भारतीयों में योगदान सीखना लोकप्रिय बन गया है. योगासन का प्रशिक्षण पाश्चात्य वस्तु बन गया है. भारत के उच्च वर्ग के लोग केवल पश्चिमी चीजें सीखना चाहते हैं.

साकेत के विदेशी हिंदी छात्र एक दूसरे से हिंदी में बात करते हैं. साकेत के सुसपन्न भारतीय अंगरेजी में बात करते हैं. भारत सरकार ने विदेशों मे छात्रों को आमंत्रित करने में बहुत खर्च उठाया है कि यहा उन्हें हिंदी सीखने का सही माहौल मिलेगा.

अंगरेजी हटाओं आंदोलन में मुझे शामिल होने की इच्छा है. न केवल हिंदी, भारत की अन्य भारतीय भाषाओं में भी मेरी रूचि है. हिंदी के अतिरिक्त मैंने बांग्ला भी सीखी है. मैं भारत की अन्य मुख्य भाषाएं भी सीखना चाहता हूं.

मुझे और अंगरेजी हटाओ साहित्य पढ़ने की इच्छा है. कहां उपलब्ध है? कृप्या पता दीजिएगा.

भवदीय

आलफस वानवेल

केंद्रीय हिंदी संस्थान
पुरुष छात्रावास
डी-111, साकेत
दिल्ली-110 017
दिनांक—23.2.1989

वेदाध्ययन का अधिकार

(श्री शंकराचार्य के मत में स्त्री और शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं)

— सच्चिदानन्द शास्त्री

गतांक से आगे

श्री रामानुजाचार्य उदार विचारों के आचार्य माने जाते हैं किन्तु उनके विचार भी शूद्रों और स्त्रियों के वेदाध्ययनादि विषयों में उदारतापूर्ण नहीं प्रतीत होते। वेदान्त 1/3/38 के भाष्य में श्री रामानुजाचार्य ने लिखा है (शूद्रस्य वेदश्रवणतदध्ययनतदा-र्थानुष्ठानानि प्रतिषिध्यन्ते। यद्युह वा एतत् श्मशानं यच्छूद्रः तस्मात् शूद्रसमीपे नाध्येतव्यम् । (वसिष्ठ स्मृ0 18/8) तस्मात् शूद्रो बहुपशुरयज्ञिय इति बहुपशुः पशुसदृश इत्यर्थः। अनुपश्रृण्वतोअध्यनतदर्थज्ञान-तदर्थानुष्ठानानि न संभवन्ति। अतस्तान्यपि प्रति-षिद्धान्येव । स्मर्यते च श्रवणादिनिषेधः। अथ हास्य वेदमुपश्रृण्वतस्त्रपुजतुभ्यां श्रोत्रप्रपूरण-मुदाहरणे जिह्वाच्छेदो धारणे शरीरभेद इति। न चास्योपदिशेद धर्मं न चास्य ब्रतमादिशेद्। (मनु0 4/80) इति च/अतः शूद्रस्यानधिकारः इतिसिद्धम्। (श्री भाष्ये पृ0 328)

अर्थात् शूद्र के लिए वेद का श्रवण, अध्ययन और उनका अनुष्ठान व आचरण प्रतिषिद्ध है शूद्र चलता फिरता श्मशान है अतः उसके समीप अध्ययन न करना चाहिए वह पशु समान है। जब वेद का श्रवण ही उसके लिए निषिद्ध है तो अध्ययन, उनके अर्थज्ञान और वैदिक आचरण तो सम्भव ही नहीं। शूद्र वेद सुन ले तो उनके कानों को सीसे और लाख से भर देना चाहिये। वेद मन्त्र का वह उच्चारण करे तो उसकी जीभ काट देनी चाहिये और वेद मन्त्र को याद करले तो उसके शरीर के टुकड़े-2 कर डालने चाहिए। इस लिए शूद्र का वेदाध्ययन और ब्रह्मविद्या में सर्वथा अनअधिकार है।

माध्वाचार्य श्री आनन्द तीर्थ का मत-

द्वैतमत प्रचारक श्री माध्वाचार्य (स्वामी आनन्दतीर्थ) ने स्त्रियों के वेदाधिकार के विषय में अन्य आचार्यों की अपेक्षा कुछ उदारता दिखाई है किन्तु शूद्रों के वेदाध्ययन तथा ब्रह्मविद्या में अधिकार का उन्होंने ब्रह्मसूत्राभाष्यादि में स्पष्ट प्रतिषेध किया है । उन्होंने भी कुछ कल्पित वेदविरुद्ध स्मृतिवचनों को उद्धृत करते हुए जिनका पहले उल्लेख किया जा चुका है लिखा है:-

यहाँ स्मृति वचनों का पाठ श्री शंकराचार्य तथा श्री रामानुजाचार्य द्वारा उद्धृत पाठ से कुछ भिन्न है लिन्तु अर्थ वही है कि यदि शूद्र वेद के शब्द को सुनले तो उसके कान को सीसे और लाख से भर देना चाहिए। वेद का अध्ययन करने पर उसकी जीभ काट डालनी चाहिए और अर्थ का ज्ञान व निश्चय करने पर उसके हृदय के टुकड़े कर देने चाहिए। शूद्र को अग्निहोत्र, यज्ञ, अध्ययनादि का अधिकार नहीं उसका कार्य केवल तीन वर्णों की सेवा है ऐसा स्मृति में कहा है। विदुर आदि को जन्म से ही ज्ञान उत्पन्न हो गया था अतः उसमें कुछ विशेषता नहीं।

श्री माध्वाचार्य ने अपने ब्रहमसूत्र अणुभाष्य पृ0 8। में "व्योम संहिता" नामक ग्रन्थ के निम्न वचन को उद्धत करते हुए शूद्रकुलोत्पन्नों का वेद के अतिरिक्त अन्य शास्त्रों में अधिकार माना है । वे लिखते हैं:- "अन्त्यजा अपि ये भक्ताः, नामज्ञानाधिकारिणः। स्त्रीशूद्रब्रहमबन्धूनां, तन्त्रज्ञानेअधिकारिता। आहुरप्युत्त-मस्त्रीणामधिकारं तु वैदिके। यथोर्वशी यमी चैव शच्याद्याश्च तथापराः।। (ब्रह्मसूत्र अणुभाष्य पृ0 87)

अर्थात जो अन्त्यज होते हुए भी भक्त हैं उन्हें नाम के ज्ञान का अधिकार है स्त्री शूद्र और पतित ब्राह्मण इनको शास्त्रों के ज्ञान का अधिकार है उत्तम स्त्रियों का तो वेदाध्ययन में भी अधिकार है जैसे उर्वशी, यमी, शची तथा अन्य स्त्रियाँ प्राचीन काल में वेदों का अध्ययन करने वाली हुई हैं ।

"वेदा अप्युत्तमस्त्रीभिः कृष्णाद्याभिरिहाखिलाः।
"उत्तमस्त्रीणां तुन-शूद्रवत्।

इत्यादि शब्दों द्वारा भी ब्रह्मसूत्रभाष्यादि में भी मध्वाचार्य ने उत्तम स्त्रियों का द्रौपदी आदि की तरह सब वेद पढ़ने का अधिकार माना है।

वैष्णव आचार्य-श्री वल्लभ जी और शूद्र-

श्री वल्लभाचार्य की गणना भी मध्यकाल के प्रसिद्ध वैष्णव आचार्यों में की जाती है। उन्होंने भी अपने ब्रह्मसूत्र भाष्य में शूद्रों के वेदाधिकार का निम्न लिखित स्पष्ट शब्दों में निषेध किया है। "दूरे ह्यधिकारचिन्ता वेदस्य श्रवणमध्ययनमर्थज्ञानं त्रयमपि तस्य (शूद्रस्य) प्रतिषिद्धम। तत्सन्निधावन्यस्य च। अथास्य वेदमुपश्रृण्वत-स्त्रपुजतुभ्यांश्रोत्रपरिपूरणमिति यद्युह वा एतत् श्मशानं यच्छूद्रस्तस्माच्छूद्रसमीपे नाध्येतव्यमिति। उदाहरणे जिह्वाच्छेदो धारणे शरीरभेदः (गौतम स्मृ0 12/4) स्मृतियुक्त्याअपि वेदार्थं न शूद्राधिकार इत्याह। स्मृतेश्च वेदाक्षरविचारेण शूद्रः पतति तत्क्षणात्। (पाराशर स्मृ0 1/73) इति। स्मार्तपौराणिकज्ञानादौ तु कारणविशेषेण शूद्रयोनौ गतानां महतामधिकारः। तत्रापि न कर्मजातशूद्राणाम्। तस्मान्नास्ति वैदिके क्वचिदपि शूद्राधिकार इति स्थितम् । (अणुभाष्ये पृ0 95)

"श्रवणे त्रपुजतुभ्यां श्रोत्रपरिपूरणम् अध्ययने जिह्वाच्छेदः । अर्थावधारणे हृदयविदारणम् इतिप्रतिषेधात्। नाग्निर्न यज्ञः शूद्रस्य, तथैवाध्ययनं कुतः। केवलैव तु शुश्रूषा त्रिवर्णानां विधीयते। "इति स्मृतेश्च। विदुरादीनां तूत्पन्नज्ञानत्वान्न कश्चिद् विशेषः ।। (ब्रहमसूत्राणुभाष्ये पृ0 97)

अर्थात शूद्र के लिए वेद के सुनने, पढ़ने और उसके अर्थ ज्ञान तीनों का निषेध है अतः उसके वेदाधिकार की चिन्ता तो बहुत दूर का विषय है। शूद्र यदि वेद के मन्त्रों को सुन ले तो उसके कानों को सीसे और लाख से भर देना चाहिए। उच्चारण करे तो उसकी जीभ काट लेनी चाहिए, मन्त्र याद कर ले तो उसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर देने चाहिए। वेद के एक अक्षर के विचार से भी शूद्र उसी क्षण में पतित हो जाता है ऐसा पराशर स्मृति आदि में कहा है स्मृति और पुराणों के ज्ञान में भी अधिकार किसी विशेष कारण से

शूद्र कुल में उत्पन्न महापुरुषों का ही है कर्म या जन्म से शूद्रों का नहीं इसलिए वैदिक ज्ञान में तो कहीं भी शूद्रों का अधिकार नहीं यह सिद्ध होता है ।

आश्चर्य है कि इन मध्यकालीन बड़े बड़े आचार्यों ने शूद्रकुलोत्पन्नों पर अत्याचार समर्थक वाक्यों को सचमुच प्रामाणिक आर्ष वचन मान कर इतनी अनुदारता का परिचय दिया। इस प्रकार के स्मृतिवचन यथेमां वाचं कल्याणी-मावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय चारणाय च स्वाय। (यजु0 26/2) समानो मन्त्रः समितिः समानी, (ऋ0 10/190/3) इत्यादि वैदिक आदेशों के विरुद्ध होने के कारण भी ये वचन सर्वथा अमान्य हैं।

क्रमशः-

-दि0 22 जून 89 को आर्यसमाज औरेया में एक ही परिवार के 5 सदस्यों को उनकी इच्छानुसार वैदिक धर्म में दीक्षित किया गया उनके नाम बदल कर हिन्दू नाम रखे गए। उसके पश्चात उन्हीं में से सुशीला देवी का विवाह संस्कार श्री राजेन्द्र कुमार वाथम के साथ सम्पन्न हुआ। शुद्धिसंस्कार में विभिन्न व्यक्तियों का सहयोग रहा।

-वेद प्रकाश आर्य मंत्री जिला सभा इटावा।

- आर्यसमाज मानकपुर, पो0 उटरावली (बुलन्दशहर) का पंचम वार्षिकोत्सव दि0 13, 14 जून 89 को बड़े हर्ष व उल्लास के साथ मनाया गया श्री धर्मवीर-सिंह महोपदेशक श्रीमती उर्मिला जी महोपदेशिका करनाल निवासी तथा चौ0 सहदेव सिंह बेधड़क भजनोपदेशक द्वारा धूमधाम से प्रचार हुआ, जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

वैदिक-साहित्य

(आचार्य डा० सुरेन्द्र देव स्नातक, एटा)

चारों वेदों में (1) ज्ञान (2) कर्म और (3) उपासना सम्बन्धी विषयों का वर्णन है। ऋग्वेद में "ज्ञान" का, यजुर्वेद में "कर्म काण्ड" का तथा सामवेद में "उपासना" का वर्णन है। अथर्ववेद में इन तीनों प्रकार के ज्ञान का वर्णन है। इस प्रकार चारों वेद उपर्युक्त तीनों प्रकार के ज्ञान के समन्वित भण्डार हैं।

वेदों का यह ज्ञान ईश्वर प्रदत्त है। सृष्टि के प्रारम्भ में परब्रह्म परमात्मा ने मानवमात्र के लिये आवश्यक यह ज्ञान चार ऋषियों के माध्यम से प्रदान किया। ये ऋषि थे:- (1) अग्नि (2) वायु (3) आदित्य तथा (4) अंगिरा। ऋग्वेद का ज्ञान "अग्नि" नामक ऋषि को, यजुर्वेद का ज्ञान "वायु" नामक ऋषि को, सामवेद का ज्ञान "आदित्य" नामक ऋषि को, और अथर्ववेद का ज्ञान "अंगिरा" नामक ऋषि को प्रदान किया गया। जैसा कि निम्नलिखित वेदमन्त्र स्वयं ही बतलाते हैं:-

"तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।"
"यस्मादृचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वांगिरसो मुखम्।।
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।

वैदिक- साहित्य के आदि ग्रन्थ हैं यही चारों वेद। यही चारों वेद तथा इन ही के आधार पर लिखा गया सम्पूर्ण साहित्य "वैदिक-साहित्य" नाम से पुकारा जाता है। अतएव वैदिक-साहित्य के अन्तर्गत चारोंवेद, उनकी सम्पूर्ण शाखायें, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक-ग्रन्थ, उपनिषद, वेदांग तथा सूत्रसाहित्य-इन सभी का अन्तर्भाव हो जाता है, अथवा यों कहिये कि आज जिस साहित्य को हम "वैदिक साहित्य" नाम से पुकारते हैं उसके अन्तर्गत, संहिता साहित्य, ब्राह्मण-साहित्य, आरण्यक-साहित्य, उपनिषद् साहित्य तथा वेदांग-साहित्य आदि का समावेश हो जाता है।

प्रमुख रूप से इस सम्पूर्ण वैदिक-साहित्य को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है (1) मन्त्रभाग कि जिसको "संहिता" नाम से भी कहा जाता है (2) ब्राह्मणभाग। मन्त्रभाग अथवा संहिताभाग के अन्तर्गत चारोंवेद अथवा चारों संहितायें आ जाती हैं। ब्राह्मण-भाग के अन्तर्गत ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यकग्रन्थ उपनिषद् आदि सम्पूर्ण अवशिष्ट वैदिक-ग्रन्थ आ जाते हैं। किन्तु वेदभाष्य कार आचार्यसायण आदि कुछ आचार्यों तथा विद्वानों का कथन है कि:-

"मन्त्रब्राह्मणयोर्वेद नाम धेयम्"

अर्थात् मन्त्र भाग और ब्राह्मणभाग दोनों के ही लिये "वेद" शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिये। किन्तु वास्तविकता तो यही है कि "वेद" शब्द का मौलिक अभिप्राय मात्र संहिताभाग से ही है क्योंकि ब्राह्मण आदि ग्रन्थ तो वस्तुतः उन वेदों की विधिपरक व्याख्या अथवा उसी के भाष्य कहे जा सकते हैं।

हाँ, इतना अवश्य स्वीकार किया जा सकता है कि वेद के परवर्ती अथवा वेद के पश्चात् वेदों के आधार पर लिखे गये साहित्य को भी सम्पूर्ण वैदिक-साहित्य के अन्तर्गत रख लिया जाय। किन्तु उस परवर्ती साहित्य को भी "वेद" नाम से कहा जाना पूर्णतया अनुपयुक्त ही है।

अतएव मन्त्रभाग अथवा संहिताभाग को ही "वेद" नाम से कहा जाना उचित तथा उपयुक्त और न्यायसंगत है।

उपर्युक्त चार ऋषियों के द्वारा यह ज्ञान अन्य ऋषियों को भी मौखिकरूप से क्रमशः प्राप्त होता रहा। धीरे-धीरे एक समय ऐसा आ गया कि उन उत्तरकालीन ऋषियों को भी वेदों के मन्त्र विस्मृतप्राय होने लगे। तब यह सोचा गया कि जिन ऋषियों के पास जिन जिन मन्त्रों का ज्ञान अवशिष्ट रह गया है उन सभी से उन सभी मन्त्रों को लिख लिया जाय। अतएव तदनुसार ही किया गया और तदनन्तर एक ही देवता विशेष से अथवा एक ही प्रकार के विषय से सम्बन्धित मन्त्रों को एक ही स्थान पर एकत्रित कर लिख लिया गया। इस भाँति एक ही देवता से सम्बन्धित मन्त्रों के समुदाय को सूक्त नाम दे दिया गया। इस प्रकार अनेक सूक्त बन गये। जिस सूक्त में जिस देवता विशेष से सम्बन्धित मन्त्र थे उस सूक्त का "देवता" भी उसी को मानलिया गया। यदि किसी सूक्त के सभी मन्त्र किसी एक ही ऋषि से प्राप्त हुए अथवा कई ऋषियों द्वारा प्राप्त किये गये थे तो उस सूक्त अथवा उन मन्त्रों का ऋषि भी उन्हीं को मानलिया गया। इस भाँति एक ही ऋषि से सम्बन्धित एक सूक्त रहा अथवा कई ऋषियों से सम्बन्धित भी एक सूक्त रहा।

यहीं यह स्पष्ट कर देना भी आवश्यक है कि "ऋषि" शब्द से वास्तविक अभिप्राय क्या है? जिस मन्त्र में जिस विषय का वर्णन है मन्त्र के उस विषय का साक्षात्कार जिसने कर लिया है वह उस मन्त्र का ऋषि कहलाता था-

"ऋषयो मन्त्रदृष्टारः"

अर्थात् जो मन्त्रदृष्टा थे अथवा मन्त्र में वर्णित विषय के जो दृष्टा थे अथवा मन्त्र में वर्णित विषय के जो साक्षात्कार करने वाले थे उनको "ऋषि" कहा जाता था। इसीलिये कहा गया है:-

"साक्षात्कृतधर्माणः ऋषयो बभूवुः"।

अतएव उपर्युक्त परिभाषा के अनुसार जो ऋषि थे तथा उनके द्वारा वेद के जिन मन्त्रों के विषय का साक्षात्कार जिनके द्वारा किया जा चुका था, ऐसे ही ऋषियों के द्वारा साक्षात्कार किये गये मन्त्रों को उनसे ग्रहण किया गया तथा उनमन्त्रों का ऋषि भी उनको ही स्वीकार किया गया। साथ ही सूक्त के प्रारम्भ में उस ऋषि का अथवा उन ऋषियों का नाम दे दिया गया। यदि एक ही देवता से सम्बन्धित मन्त्रों का कोई सूक्त है तथा उन मन्त्रों को एक अथवा एक से अधिक ऋषियों से प्राप्त किया गया था तो एक ही सूक्त के एक अथवा कई ऋषि भी हो गये।

किसी देवता-विशेष की स्तुति में प्रयुक्त होने वाले अर्थ का स्मरण कराने की क्षमता रखने वाले वाक्य को "मन्त्र" कहा जाता है। इस प्रकार के मन्त्रों के समुदाय को "संहिता" कहा गया। अतएव उपर्युक्त चारों वेदों को संहिता नाम से कहा जाने लगा। ये संहितायें भी चार हुईं। जिनका इन चारों नामों द्वारा कथन किया गया-
(1) ऋग्वेद-संहिता अथवा ऋक् संहिता (2) यजुर्वेद-संहिता, अथवा यजुः संहिता, (3) सामवेद-संहिता अथवा सामसंहिता (4) अथर्ववेद-संहिता अथवा अथर्व संहिता।

ऋग्वेद-संहिता के मन्त्रों को ऋक् अथवा ऋच् अथवा ऋचा नाम से कहा जाता है। ऋच् (ऋक्) का अर्थ है स्तुतिपरकमन्त्र-

"ऋच्यते स्तूयतेऽनया इति ऋक्"

अर्थात् जिनके द्वारा स्तुति की जाया करती है ऐसे ऋग्वेदीय मन्त्रों का नाम है ऋक् अथवा ऋच् अथवा ऋचा। इसी के नाम पर वेद का नाम भी "ऋग्वेद" पड़ा।

यजुर्वेद-संहिता के मन्त्रों को "यजुस्" कहा जाता है। इस यजुस् शब्द की कोई व्याख्यायें उपलब्ध होती हैं जिनके दृष्टिकोण भी पृथक पृथक हैं। (1) "यजुर्यजतेः" यज्ञ सम्बन्धी अथवा यज्ञादि कर्मकाण्ड से सम्बन्धित मन्त्रों को "यजुस्" कहा जाता है।

(2) "इज्यते ऽनेनेति यजुः" जिनमन्त्रों द्वारा यज्ञ, याग आदि कर्म किये जाते हैं उन मन्त्रों को "यजुस्" कहा जाता है।

(3) "अनियताक्षरावसानो यजुः" जिन मन्त्रों में पद्यों के सदृश अक्षर संख्या निर्धारित न हो वे "यजुस्" कहलाते हैं।

(4) "शेषे यजुः शब्दः" (पूर्वमीमांसा 2/1/37) अर्थात् पद्य के बन्धन तथा गीति से रहित रचना को "यजुस्" कहा जाता है।

शेष पृष्ठ 10 पर

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

□ श्रीमती सावित्री देवी शर्मा, बरेली

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व पटल पर छायी हुई विविध विकृतियों के सुधारक के रूप में इस शस्य श्यामला भारतभूमि पर अवतीर्ण हुए थे। अलखनन्दा के तट पर खड़े होकर उस ऋषि के ज्योतिर्मय नयनों ने जिधर भी देखा, उधर ही घोर अन्धकारमयी तमिस्त्रा ही दीखी। आध्यात्मिक, शास्त्रीय, सामसजिक, राजनैतिक, धार्मिक, पारिवारिक, एवं आर्थिक सभी दुरन्त समस्यायें किसी मन्त्रार्थद्रष्टा दार्शनिक का समाधान मांग रही थीं। महर्षि ने वस्तुतः सत्यार्थ-प्रकाशक वेद-चतुष्टयी को ही अपना परम आधार मानकर कुशल वैद्य के समान रोगों के निदानार्थ सफल चिकित्सा प्रारम्भ की, जिसका क्रमशः विवरण निम्नांकित है :

1- **आध्यात्मिक** -आध्यात्मिक क्षेत्र में विभिन्न अवैदिक वादों के चक्र में दार्शनिक उलझे हुए थे। अद्वैतवाद, द्वैतवाद, द्वैताद्वैतवाद, विशिष्टाद्वैतवाद जैसे साम्प्रदायिक विषयों के खण्डन-मण्डन में ही विद्वज्जन अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर रहे थे। ऋषिवर ने ईश्वर, जीव और प्रकृति के रूप में तीन अनादि सत्ताओं की तर्कसंगत समीक्षा प्रस्तुत कर त्रैतवाद का उद्घोष किया। सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, सच्चिदानन्द स्वरूप परमात्मा जगत्पति है। अनन्त जीवों के कल्याणार्थ उसने इस दृष्यमान जगत् की रचना की। संसार की अनेक भाषाओं के कारण उस प्रभु के नाम भिन्न-भिन्न हो सकते हैं किन्तु सकल विश्व की नियामक शक्ति "एक" ही है। हम सभी आत्मायें उस परमेश्वर की अमृत सन्तानें हैं। मत-मतान्तर या मजहब के नाम पर पारस्परिक हठ-दुराग्रह-पूर्ण विद्वेष रखना अज्ञानता का प्रतीक है। प्रकृति हमारी जगदम्बा माता तथा परमात्मा हम सबका पिता है अतः साम्प्रदायिक संघर्षों का कोई औचित्य नहीं प्रतीत होता।

2- **शास्त्रीय** - ऋषि दयानन्द के प्रादुर्भाव से पूर्व भारतीय दर्शनों में अन्तर्निहित एकरूपता को न जानकर दार्शनिक उन्हें पृथक-पृथक साम्प्रदायिक ग्रन्थ मानते थे। ऋषि ने उन षड्दर्शनों को वेदार्थ बोध का अपेक्षित आधार मानकर वेद-वेदांगों अंगांगिभाव प्रदर्शित किया। इससे अवरुद्ध मार्ग खुला। विद्वानों ने दर्शनों के स्वाध्याय से वैदिक ज्ञान के गाम्भीर्य को समझने की चेष्टा की।

सूत्र-ग्रन्थों के आधार पर चलने वाली पुरातन वेदभाष्य-प्रणाली को भी नई दिशा देते हुए गुरुवर ने मन्त्रार्थ ज्ञान के लिए यास्क-प्रणीत नैरुक्त प्रक्रिया का अवलम्बन किया, जिससे मन्त्रों के विभिन्न विलक्षण प्रतीकार्थों द्वारा पौरस्त्य एवं पाश्चात्य विचारकों की अन्तर्दृष्टि खुली। विदेशियों के द्वारा गरेड़ियों के गीत कहे जाने वाले वेद आज सार्वभौम विश्व-संस्कृति के प्राण स्वरूप सिद्ध हुए हैं। यह तत्त्वान्वेषक देव दयानन्द की उद्बोधन शैली का ही लोकोत्तर प्रभाव था। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी-पर्यन्त आर्ष परम्परा से परिपुष्ट भाष्य का अभिनव आदर्श भी ऋग्वेद यजुर्वेद भाष्य में ऋषि ने प्रस्तुत किया।

3- **सामाजिक** - अनेक कुरीतियों प्रचलन से देश की आन्तरिक स्थिति बिगड़ चुकी थी। वर्ग संघर्ष विकराल रूप धारण कर मानवता को जर्जर बना रहा था। वर्णाश्रम-व्यवस्था के मौलिक चिन्तन से इन सभी {बालविवाह, वृद्धविवाह, अस्पृश्यता, जात-पाँत, नारी-अशिक्षा आदि} समस्याओं का तात्विक समाधान मनीशी विचारकों के समक्ष प्रस्तुत किया। आज की अशिक्षिता नारी में उन्हें गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा, भारती, सीता सावित्री जैसी साध्वी विदुषी देवियों के दर्शन हुए। इन्हीं को राष्ट्र का मेरुदण्ड समझ कर पुरुषों के समान ही उन्होंने वेदाध्ययन की प्रेरणा दी। उनकी दृष्टि में सम्मानित मातृशक्ति विश्व में स्वर्गीय साम्राज्य की संस्थापिका है। परिणामतः आज भारत देश के कोने-कोने में कन्या गुरुकुलों की स्थापना हो गई है। असंख्य देवियां वेद विद्याओं में पारंगत होकर सारस्वतवैभव की अधिकारिणी बनीं। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में पुरुषों के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने वाली तथा अनेक सामाजिक कार्यों में पूर्ण सहयोग करने वाली ये विदुषी देवियाँ हमारे महर्षि की मानस पुत्रियाँ थीं।

4- **राजनैतिक प्रभाव** - विदेशी शासकों के पारतन्त्रय से मुक्त स्वतन्त्र देश की कल्पना को साकार करने के लिए ऋषि ने सर्वप्रथम "स्वराज्य" शब्द का प्रयोग किया। अपने देश में अपना ही हितैषी शासक हो, प्रजा पर पुत्रवत् कृपादृष्टि रखने वाला निष्पक्ष, न्यायप्रिय होने पर भी विदेशी शासक हमारे देश के लिए कभी हितकर नहीं हो सकता। "सत्यार्थ - प्रकाश" के छठे समुल्लास में राजधर्म की विषद व्याख्या करते हुए वेदानुमोदित उन्होंने राजनैतिक व्यवस्था पर प्रकाश डाला है। यही वैदिक संविधान समस्त विश्व के लिए अनुकरणीय है :

> त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि
> परि विश्वानि भूषथः सदांसि।
> अपश्यमत्र मनसा जगन्वान्
> व्रते गन्धर्वा अपि वायुकेशान्।।

{ऋक0 3/38/6} अर्थात "उत्तम राज्य-व्यवस्था के लिए तीन प्रकार की सभायें ही राजा को माननी चाहिये। प्रथम राज्य-प्रबन्ध के लिए एक आर्यसभा, जिससे विशेष रूप से राज्यकार्य सिद्ध होते हैं। द्वितीय विद्यार्य सभा, जिसके द्वारा विविध विद्याओं का प्रचार होता है। तृतीय धर्मार्य-सभा, जिससे निरन्तर धर्मप्रचार और अधर्म और अन्याय अधर्म की हानि होती रहे। इन्हीं तीन सभाओं के सहयोग से सभापति सम्राट युद्ध में सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर विश्व को सर्वगुण सम्पन्न करे।" अन्यत्र भी वेदमन्त्रार्थ के अनुसार स्वामी जी राजनीति-विषयक भाव स्पष्ट करते हैं

> ओ३म् सभ्य सभां मे पाहि
> ये च सभ्याः सभासदः।
> त्वयेद् गाः पुरुहूत
> विश्वमायु व्यश्नवम्।।
> {अथर्व0 19/7/55/6}

अर्थात "मुख्य सभापति राजा अपने सुयोग्य सभासदों के साथ सभा की धर्मयुक्त व्यवस्था का पालन करे। इसका अर्थ है कि किसी को स्वतन्त्र राज्य का अधिकार नहीं देना चाहिये किन्तु राजा सभाधीन राजा और राज्यप्रजा के अधीन और प्रजा राजसभा के अधीन रहे। यदि ऐसा नहीं होगा तो राष्ट्रमेव विश्याहन्ति" {शतपथ 13/2/3} स्वतन्त्र स्वाधीन राजवर्ग राज्य में प्रवेश करके प्रजा का ही नाश करेगा। अतः प्रभुकृपा से सभी सभ्य सभासद सत्य-न्याय की रक्षा करते हुए प्रजाजनों के सहित संपूर्ण आयु को सुख से भोगेंगे। यही राजधर्म विश्व के कुशल राजनीतिज्ञों के समक्ष सच्चा आदर्श प्रस्तुत करता है। संसार की राजनैतिक उथल-पुथल को दूर करने का सही एकमात्र साधन है।

आर्थिक समाधान - अपने देश की आर्थिक विपन्नता को देखकर वीतराग यतिवर का हृदय अनेकशः द्रवित हो उठा। देश को पूर्ववत् धन्य धनधान्यपूर्ण एवं समृद्धिशाली बनाने के लिए "गोकरुणानिधि" नामक पुस्तक लिखकर विश्व के अर्थशास्त्रियों को चुनौती दी। गोरक्षा द्वार अभिवृद्धि होने से ही दरिद्रता का समूल नाश संभव है। संस्कृत भाषा में "गो" शब्द का अर्थ धेनु, मातृभूमि पृथ्वी, सूर्यकिरण, वाणी, इन्द्रियां आदि हैं। वस्तुतः "गो" {धेनु} रक्षा के द्वारा हमारा शारीरिक इन्द्रिय बल बाग्बल, गोघृताहुति से अन्तरिक्ष और द्युलोक की पवित्रता तथा गोमाता का पंचामृत {दुग्ध, दधि, घृत, नवनीततक} पान कर हमारे राष्ट्रवीर सुपुष्ट होकर स्वमातृभूमि का संरक्षण करने में समर्थ हो समर्थ हो सकते हैं। अतः दूरद्रष्टा मुनिवर दयानन्द ने कृषिप्रधान भारतदेश की सकल समृद्धियों का आधार गोवंश की सुरक्षा ही बताया। भारतीय समाजवाद में मानववंश के अन्दर ही गोवंश का समापवेश कर अघ्न्या गोमाता का प्रतिष्ठित पद प्रदान किया। सर्वथा रक्षणीय अवध्या हमारी सर्वदेवमयी गोमाता के प्रति करूणावरूणालय महर्षि ने अपनी हार्दिक करूणानिधि समर्पित करते हुए गोरक्षा को ही अर्थशास्त्र का आधारस्तम्भ बताया। प्रसिद्ध वैयाकरण आचार्य पाणिनि कहते हैं - "सुसम्पन्नोऽयं गोमान भारतदेशो विभाति" अर्थात "भारत देश सर्वत संपन्न दीखता है क्योंकि यहाँ दूध देनेवाली दोग्ध्री गायें सर्वत्र विचरण करती दीखती हैं।" गोमान् मानव-समाज एवं देश ही धनवान तथा श्रीमान् होसकता है। गोरक्षा में छिपा महान अर्थशास्त्र भारतीय समृद्ध संस्कृति का ही संकेत नहीं अपितु यह सार्वभौम विश्व-व्यापक मानवीय सन्देश है।

शेष पृष्ठ ९ पर

इतनी परेशानी क्यों ?

० डा० सुरेश चन्द्र वेदालंकार
(एम० ए० एल० टी० आर्यसमाज, गोरखपुर)

परोऽपेहि मनस्पाप किमशस्तानि शंससि,
परेहि नत्वा कामये, वृक्षां वनानि संचर,
गृहेषु गोषुमे मनः। अथर्व0 6/45/1

ओ मन के पाप। चल दूर हट, मेरे पास से क्यों निन्दित सलाहें (चिन्तायें) दे रहा है। चल लम्बा बन यहा से, वृक्षों से जाकर टकरा, जंगलों में भटकता फिर। मुझे फुरसत कहाँ है तेरा स्वागत करूँ। मेरा मन तो गृह कार्यों में और गौर सेवा आदि शुभ कार्यों में लगा है।

कैसी आत्मविश्वास भरी और वीरता पूर्ण सजीव उक्ति है। क्या ऐसे सतर्क और साहसी व्यक्ति के मार्ग में बाधायें और परेशानियाँ रूकावट डाल सकती हैं। क्या चिन्तायें और बाधायें अवरोध पैदाकर सकती हैं। चिन्तायें बाधायें, परेशानियाँ और कठिनाइयाँ कब अवरोध नहीं डालेंगी। इसके लिए संकल्प बल को जागृत करना होगा। संकल्प बल को जागृत करता हुआ वीर कहता है।

जहि त्वं काम मय ये सपत्ना
अन्धा तमांस्येव पादपैनान्।
निरिन्द्रिया अरसाः सन्तु सर्वे,
माते जीविषुः कतमच्चनाह।। अथर्व0 9-2

जाग, जाग ओ मेरे संकल्प बल तूं जाग। राक्षसों को मार गिरा। उन्हें घोर अन्धकार में धकेल दो, वे आततायी निरिन्द्रिय, निर्वीर्य और शक्तिहीन हो जायें। एक दिन भी जीवित न रहें।

कितना प्रेरणाप्रद है यह मंत्र। एक बार पूज्य नारायण स्वामी जी-महाराज अयोध्या में आर्यसमाज फैजाबाद या अयोध्या से गुजर रह थे। उस समय बहुत वृद्ध न थे। पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज स्वामी श्रद्धानन्द के बाद आर्यसमाज के उत्कृष्ट कोटि के नेता, संचालक और विद्वान थे।

अयोध्या में बहुत बन्दर होते हैं। वे निडर और कष्टदायक भी होते हैं। स्वामी जी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा रहे थे। बन्दरों को न जाने क्या सूझा, कि उनका रास्ता रोक कर खड़े हो गए और भयंकर अन्दाज से चीखने लगे। वे स्वामी जी के नजदीक आए, उनके पैरों को जकड़ने का प्रयत्न भी करने लगे। अपने बचाव के लिए वे भागे। जितनी तेजी से वे दौड़ते उतनी तेजी से उनका पीछा करते। नारायण स्वामी को पीछा छुड़वाना असंभव लगा।

अकस्मात एक अपरिचित व्यक्ति ने स्वामी जी को आवाज दी "बन्दरों का सामना करो, पीठ दिखाकर दौड़ो नहीं, डटकर सामना करो।" यह सुनकर स्वामीजी खड़े हो गए। बन्दर ठिठक कर पीछे हट गए और अन्त में भाग गए। उनको जीवन का एक सुनहरा उपदेश मिला, वह यह कि संसार भर में जो कुछ भयानक और खतरनाक है उसके सामने डटकर खड़े हो जाओ, वीरता से उसका मुकाबला करो, केवल यही उपाय है, कठिनाईयों से छुटकारा पाने का। इसी का परिणाम हुआ कि नारायण स्वामी जी ने हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह का न केवल संचालन किया, अपितु उसमें शानदार विजय भी प्राप्त की।

मेरे एक सह कर्मी हैं, कालेज में पढ़ाते थे। वैदिक धर्म की शिक्षाओं का मेरे पूज्य पिताजी का माताजी का या अपने आचार्य स्व0 श्री सोमदत्त जी विद्यालंकार, किसका प्रभाव कहूँ कि अभी तक जीवन में कठिनाईयों से घबराया नहीं। आप मेरे लेख पढ़कर सोचते होगें कि मैं कोई बड़ा गम्भीर और साधु व्यक्ति हूँ। एक बार मुंगेर (बिहार) से एक बारात गोरखपुर आई बारात के मालिक, वर के पिता एक अग्रवाल परिवार के व्यक्ति थे, पक्के आर्य समाजी। पक्का आर्यसमाजी उसको मानता हूँ जो महर्षि दयानन्द में अटूट श्रद्धा रखे, उनके सिद्धान्तों का पालन करे दोनों समय संध्या हवन करें और कभी झूठ न बोलें शायद आजकल यह परिभाषा बदल गई है पर वे इन पुराने अर्थों में आर्यसमाजी थे। मुझ से मिल कर मेरी बातचीत, विनोदप्रियता और सरल स्वभाव से वे इतने प्रभावित हुए कि बाद में भी मुझे पत्र लिखते रहे।

मैं गुरूकुल कुरुक्षेत्र और गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ का विद्यार्थी रहा हूँ। वहाँ मेरी शरारतों से श्री भगीरथ शास्त्री परेशान रहते थे और पं0 ईश्वर दत्त जी सिद्धान्तालंकार के हाथ भी पिटाई करते-करते थक जाते थे। गुरूकुल में कहीं कोई शरारत हो तो आचार्य जी के घूँसे मेरी पीठ पर पड़े बिना नहीं रहते और मैं भी अपराध न होने पर न तो एक बूँद आँसू गिराता और न क्षमा याचना करता। पर इससे मुझे लाभ हुआ कि मैं अब भी कठिनाई का सामना करने से कतराता नहीं हूँ। और प्रसन्न रहता हूँ। अब तो मेरा 13 वर्ष से भी अधिक समय हो चुका। अपने काम से अवकाश ले चुका हूँ और प्रसन्न रहता हूँ।

मैंने एक आदमी को होटल में नाश्ता करते समय अपने साथी से कहते हुए सुना कि "मैं नहीं जानता हूँ कि मुझे क्या हो गया है, मैं सदा थका सा रहता हूँ मैं जब सोकर उठता हूँ तब भी मुझे थकावट मालूम होती है, दिनभर शिथिलता घेरे रहती है, जान पड़ता है बुढ़ापा आ रहा है।

पर, ध्यान रखने की बात यह है कि शरीर से अधिक काम लेने से उसे आराम न देने के कारण मनुष्य में थकावट आती है। पर, वास्तविक बात यह है कि थकावट शरीर में नहीं आती, शरीर तो केवल एक माध्यम है जिसके द्वारा थकावट प्रकट होती है। थकावट उस दिमागी जद्दोजहद की शरीर में पड़ने वाली छाया है। जिसका संतोष जनक निपटारा नहीं हुआ है। जब आपको कोई व्यक्ति चिन्तित और दुःखी दिखाई दे, उसका मुख उतरा हुआ हो तो हमें उसकी मानसिक तरद्दुद ही उसका कारण दिखाई देगी।

क्रमशः----

वैदिक धर्म प्रचार

ग्राम खखलिया तहसील सिधौली जनपद सीतापुर के उत्साही आर्य श्री-कमलेश आर्य तथा श्री विजयपाल वानप्रस्थी गाँव-गाँव घूमकर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार कर रहे हैं। [illegible] बधाई।

-इन्द्रदेव पाठक
प्रबन्ध सम्पादक

श्री चरणसिंह शास्त्री अस्वस्थ

आर्यसमाज शामली (मु0नगर) के कर्मठ कार्यकर्ता श्री चरणसिंह जी शास्त्री पक्षाघात से बीमार हैं वह अपने निवास पर ही इलाज करा रहे हैं, कुछ आराम भी है, सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराजजी ने प्रभु से उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की है।

xxxxx

शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा

बरेली के 90 वर्षीय श्री डालसिंह मुंशी के निधन के पश्चात् 2 जून 1989 को शान्ति यज्ञ व श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, महात्मा अनन्त स्वामी, श्री रामपाल सिंह प्रधान उप सभा बरेली पं0 रामप्रसाद उपाध्याय पूर्व प्रधान आर्यसमाज फरीदपुर, तथा श्री वीरेन्द्र "वीर" निरीक्षक आ0प्र0सभा आदि ने दिवंगत आत्मा की सदगति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की।

xxxxx

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज सीतापुर के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है, जो संस्कार आदि पाण्डित्यपूर्ण ढंग से करा सके वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। पत्रव्यवहार करें या मिलें-

ओमप्रकाश अग्रवाल
प्रधान
आर्यसमाज सीतापुर।

स्वास्थ्य सुधा

घरेलू नुस्खे आज़माइये

1- यदि किसी को सर्दी के मौसम में जुकाम लगजाए तो अदरक का रस तथा शुद्ध शहद 6-6 माशा को आपस में मिलाकर दिन में 3-4 बार चाटें तो जुकाम दूर हो जायेगा।

2- यदि आप सूखी खांसी से पीड़ित हैं तो एक तोला गुड़ को दो तोले गऊ घृत में मिलाकर दिन में दो तीन बार चाटें।

3- यदि किसी व्यक्ति को भूख न लगती हो तो पीपल और सौंठ दोनों को बराबर मात्रा लेकर इन्हें गुड़ में मिलाकर खाने से अजीर्ण रोग नष्ट हो जाएगा।

4- यदि गर्मी में किसी को सिर दर्द हो जाये तो तरबूज के बीजों को पानी में खूब महीन पीसकर सिर पर लेप करें तो गर्मी का सिर दर्द ठीक हो जायगा।

5- बड़ी इलायची के तीन मासे चूर्ण में शहद मिलाकर चाटने से प्रमेहरोग दूर हो जाता है।

6- यदि किसी को पुरानी बवासीर हो तो नीम की पकी हुई निबोलियों को पुराने गुड़ में मिलाकर खाने से बवासीर अच्छी हो जाती है।

7- यदि किसी के हाथ पैर में घाव हो जाये तो मुर्गी के पंख की राख बनाकर उसे कपड़े से छानकर घाव पर भुरकने से घाव शीघ्र सूख कर भर जाता है।

8- यदि किसी स्त्री के प्रदररोग हो योनि से रक्त बहता हो तो उसे सबेरे और शाम दोनों समय एक-एक पका हुआ केला 6-6 माशा शुद्ध गाय के घी के साथ 8-10 दिन बराबर खाते रहना चाहिए।

9- यदि किसी को अचानक ही बिच्छू ने काट खाया हो तो नीबू का रस निकाल कर काटे हुए स्थान पर मलने से बिच्छू का जहर नष्ट हो जाता है।

10- यदि किसी को कुत्ते ने काट खाया हो तो उस स्थान पर आकोड़े का दूध गाढ़ा लेप कर देने से लाभ होगा।

11- यदि किसी को शहद की मक्खी या ततैये ने काटा हो तो उस स्थान पर डंक सुई से निकाल कर उस खाली जगह पर पोटाश परमैंगनेट भर दें।

12- यदि किसी को वमन या के होने लग गई हो तो उसे संतरे का रस चूसने को दें इससे जी मिचलाने में भी आराम होगा।

-लेखराज नन्दा ई-43,
मन्सगंज, दिल्ली-7

पृष्ठ ७ का शेष

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती...

अतः पूज्य स्वामीजी के कार्यक्रमानुसार इस प्रयोजन की सिद्धि के लिए अनेक गोकृष्यादि रक्षिणी सभाओं का विभिन्न स्थानों पर आयोजन किया गया। ऋषि के शब्दों में गोरक्षा, गोवर्द्धन युगप्रवर्तक कृषि-उत्पादन में परस्पर अविनाभाव सम्बन्ध है।

धार्मिक उद्बोधन - इस धरा-धाम पर गुरुवर के शुभावतरण से "पूर्व धर्म" शब्द मत, सम्प्रदाय' या मजहब का पर्यायवाची समझा जाता था। अतः हमारा धर्म, धर्मग्रन्थ, धर्मस्थल, धार्मिक उपदेशक महापुरुष आदि सभी बंटे हुए थे। धर्म के नाम पर क्षुद्राशय मनुष्यों में पारस्परिक कलह एवं क्लेश बढ़ रहे थे। ऐसे समय में सार्वदेशिक विश्वजनीन वैदिक धर्मचक्र के प्रवर्तनार्थ उन्होंने संसार के सभी विचारक सत्यान्वेषकों का आह्वान किया। भारत के दार्शनिक चिन्तन का मूल स्रोत वेद है। वेद-विहित धर्म ही विश्ववरीया प्रथम संस्कृति का जनक है। यह मानवीय मस्तिष्क का कण्डूकर्षण छात्र नहीं अपितु आध्यात्मिक जिज्ञासा को शान्त कर श्रेय-पथ का प्रदर्शक है। "विन्दन्ति जानन्ति, विद्यन्ते भवन्ति, विन्दन्ति अथवा विन्दन्ते, विन्दन्ति विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सर्वाः सत्यविद्याः यैर्येषु वा तदा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः", अर्थात् "जिन वेदों के द्वारा सब मनुष्यों को सभी सत्यविद्याओं का, सामयिक स्वधर्मों (कर्तव्यों) का बोध होता है वही अविच्छिन्न धर्म का मूल हमारे सनातन वेद हैं। परमार्थ-सिद्धि के अलौकिक उपाय को बतानेवाले, परोक्ष-ज्ञान के प्रकाशक चार वेद (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) हमारी संस्कृतिनिष्ठ धर्म के मूलाधार हैं। हमारा परम सौभाग्य है कि नवयुग के विधाता योगेश्वर दयानन्द ने अपौरुषेय वेदों का प्रचार कर हमें एकमात्र वैदिक धर्म का पावन सन्देश दिया। "धार्यते यः स धर्मः" "यतो ऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः।" लौकिक पारलौकिक सफलताओं का मूल, धारण करने योग्य वैदिक धर्म ही हमारा पथ-प्रदर्शक है। सृष्टि के प्रारम्भ से यह प्रभु-प्रेरित दिव्य वेदवाणी ही विश्व-मानव के हृदय को झंकृत करती रही है। मुनिवर के समस्त उपदेशों एवं प्रवचनों का आधार यही वेद-सम्पदा है।

आर्षपाठ-पद्धति- शिक्षा के क्षेत्र में महामना महर्षि के प्रेरणाप्रद एक नवजागृतिका शंखनाद किया। बालशिक्षण में आर्ष ग्रन्थों की अध्यापन परम्परा को अनिवार्य किया। अनार्ष पाठ-विधि से "खोदा पहाड़ निकली निर्जीव चुहिया" लोकोक्ति के अनुसार विद्यार्थी का सम्पूर्ण समय और श्रम निरर्थक हो जाता है। ऋषि-प्रणीत ग्रन्थों के सतत अध्ययन से "गागर में सागर" भरने जैसा अध्यक्ष लाभ प्रबुद्ध छात्र को प्राप्त होता है। अतः विद्यार्थी-जीवन के ब्रह्मचर्य-काल में वेदों का अंगोपांग सहित ज्ञानार्जन ही पुरुषार्थ-चतुष्टय की सफल साधना का आधार है। "सत्यार्थ प्रकाश" के तृतीय समुल्लास में इस आर्ष पाठ-पद्धति का विस्तार-सहित वर्णन किया गया है। आधुनिक शिक्षाविदों द्वारा इसी शिक्षा-प्रणाली का समर्थन कर विद्यामन्दिरों का अलंकरण किया जाना चाहिये।

पारिवारिक कल्याण- पारिवारिक संघटन विश्व का सर्वश्रेष्ठ प्रथम विद्यालय है। यहीं बालकों को पारस्परिक हित, सौहार्द, त्याग एवं सद्भावनाओं की शिक्षा अनायास मिल जाती है ऐसे आदर्श शिष्ट वातावरण में पोषित व्यक्ति ही व्यक्ति और समष्टि का कल्याणकारी बन सकता है। ऐसा मानकर ऋषि ने आश्रमों में श्रेष्ठ गृहस्थाश्रम के संरक्षक सुशील दम्पतियों के लिए सुनियोजित आचार-संहिता बनाई। इन्हीं सभ्य परिवारों में प्रशिक्षित कितने ही हुतात्मा देशभक्तों ने समाज-हित में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया।

अतः हम कह सकते हैं कि सत्य सनातन वेदोद्धारक गुरुवर स्वामीजी आजीवन देश की विषम समस्याओं का समाधान करने के लिए निरन्तर संघर्षरत रहे। आधुनिक स्वतन्त्र भारत के कर्णधार यदि ध्यानपूर्वक उनके ग्रन्थों का अध्ययन करें तो देश में सर्वत्र व्याप्त अराजकता एवं भ्रष्टाचार का सद्यःनिवारण सम्भव है। योगी अरविन्द ने ठीक ही कहा था- संसार के महापुरुषों को यदि पर्वत की चोटियाँ माना जाये तो महर्षि दयानन्द उनमें सर्वोच्च शिखर माने जायेंगे:-

पाषाणैरत्याहतोऽपि सुमना
प्रादाच्छुभं सौरभम्।
साक्षान्मातृवसुन्धरेव मनसा।
सद्भावमावेदयत् ।।
इत्थं येनतपस्विनाऽतिकष्टेः
सज्जीवनं यापितम् ।
श्रद्धेयाय महर्षये गुरु
दयानन्दाय तस्मै नमः।।

xxxxx

शोक समाचार

- आर्य समाज मिनगा (बहराइच) के उपाध्यक्ष श्री भगौती प्रसाद पाठक आयुर्वेद विशारद का 77वर्ष की आयु में दि0-20 जून 89 को निधन हो गया। आप आर्य आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। आपका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिकरीति से हुआ। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति व पारिवारिकजनों को धैर्य प्रदान करें।

शोक समाचार

आर्यसमाज चन्दौसी (मुरादाबाद) के आर्यसभासद कर्मठ और उत्साही कार्यकर्ता श्री नानकचन्द आर्य का लम्बी बीमारी के पश्चात् निधन हो गया। वह अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गए। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

प्रधानमंत्री द्वारा डी०ए०वी० शताब्दी डाक टिकट का विमोचन

नई दिल्ली- माननीय प्रधानमंत्री- श्री राजीव गांधी द्वारा दयानन्द एंग्लो-वैदिक कालेज शताब्दी डाकटिकट का विमोचन किया गया। समारोह में डी०ए०वी० कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के अधिकारी एवं सदस्य, आर्य केन्द्रीय सभा, आर्य प्रान्तीय महिला सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, डीएवी विद्यालयों के प्रिंसिपल एवं 400 नर नारी उपस्थित थे। प्रधानमंत्री निवास की ओर से विशेष कुर्सी, स्टेज, लाउडस्पीकर का प्रबन्ध किया गया था।

प्रधानमंत्री के आने पर सभी आर्य जनों ने प्रार्थना मंत्र बोले जिसमें प्रधानमंत्री भी सम्मिलित हुए। प्रो०वेदव्यास जी ने सर्वप्रथम पुष्पमाला से प्रधानमंत्री का स्वागत किया। तत्पश्चात् प्रि० किशन सिंह आर्य, श्री एम०एल० सेखड़ी, जस्टिस आर०एन० मित्तल, श्री हरबंस-सिंह सेर, श्री शान्ति प्रकाश बहल, कु० विद्यावती आनन्द, श्रीमती मोहिनी-सूरजभान, श्री अनिल आर्य, डा० शिवकुमार-शास्त्री, श्री मामचन्द रिवारिया, श्री अजय-सहगल ने पुष्प मालाओं से प्रधानमंत्री का स्वागत किया।

उसके पश्चात् श्री वेदव्यास जी ने प्रधानमंत्री के स्वागत में अभिनन्दन पत्र पढ़कर सुनाया और उन्हें भेंट किया। इस कार्य के संयोजक प्रि० किशन सिंह-आर्य जी ने डीएवी के 100 वर्षों के कार्य का विवरण देते हुए कहा कि सन् 1883 में स्वामी दयानन्द के निर्वाण के बाद लाहौर में उनके भक्तों की एक मीटिंग हुई जिसमें निश्चय हुआ कि स्वामी जी की स्मृति में डीएवी विद्यालय स्थापित किया जाये। जून 1886 में डीएवी कालेज लाहौर की स्थापना की गई और आज सारे भारतवर्ष में एवं विदेश में डीएवी की 1500 शिक्षण संस्थायें चल रही हैं।

उन्होंने कहा कि हमारे विद्यालयों में जहां अन्य विषय पढ़ाये जाते हैं वहां देशभक्ति की प्रेरणा भी बच्चों में भरी जाती है। जब भी देश पर कोई आपत्ति आई है; सब डी०ए०वी० संस्थायें देश सेवा में जुट गई हैं।

प्रधानमंत्री ने स्वामी दयानन्द द्वारा भारत की आजादी के आन्दोलन में दी गई प्रेरणा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने डीएवी जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश इस समय बड़े संकट से गुजर रहा है और विदेशी ताकतें देश में साम्प्रदायिकता की भावनायें फैलाने में लगी हुई हैं। इसको रोकने में आप लोगों को सक्रिय होना है। आपको अपनी शिक्षा संस्थाओं द्वारा सच्चे भारत के नागरिक बनाने हैं और डीएवी को फिर से गुरु शिष्य की परम्परा वाला युग लाना है। हमने भी नई शिक्षा नीति बनाई है, पर हमें सफलता नहीं मिली। हम कोशिश कर रहे हैं। आशा है कि डीएवी की संस्था हमें सहयोग देगी।

सभा के अध्यक्ष श्री गिरधर गोमानगो, मंत्री संचार विभाग ने कहा कि महात्मा हंसराज जी द्वारा स्थापित डीएवी संस्थायें प्रशंसा की पात्र हैं। आर्य समाज और स्वामी दयानन्द ने देश के लिए जो कार्य किया है उसे देश कभी भुला नहीं सकता।

इसके बाद प्रधानमंत्री ने डीएवी शताब्दी डाकटिकट का विमोचन किया। अन्त में इस कार्यक्रम के संयोजक प्रि० किशन सिंह आर्य ने प्रधानमंत्री और संचारमंत्री तथा डाक तार विभाग के अधिकारियों के प्रति आभार प्रकट किया।

समारोह का समस्त प्रबन्ध आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डीएवी कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति के मंत्री श्री-रामनाथ सहगल ने किया। उनकी कार्य कुशलता से सरकारी अधिकारी भी प्रभावित हुए।

पृष्ठ ६ का शेष

वैदिक साहित्य.....

यजुस्+वेद=[स के स्थान पर रुत्व [र] होकर]=यजुर्वेद।

[3] सामवेद संहिता- के मन्त्रों को सामन् [साम] कहा जाता है। "सामन्" का वास्तविक अर्थ है "गान"। ऋग्वेद की ऋचाओं [मन्त्रों] को जब विशिष्ट गान पद्धति से गाया जाता है तो उसको सामन् [साम] कहा जाया करता है। इसी दृष्टि से पूर्वमीमांसा में गीति अथवा गान को "साम" नाम से कहा गया है:-

"गीतिषु सामाख्या" [पूर्वमी० 2·1·36]

सा+अम्=साम अर्थात् सा=ऋक् अथवा ऋचा+अम्=गीति=सामन्। छान्दोग्य उपनिषद् में आता है:-

"या ऋक् तत् साम" ।1·1/3/4।।

"स" अथवा "सा" का अर्थ है-ऋक् अथवा ऋच अथवा ऋचा। "अम्" का अर्थ है "गान"। अतः साम का अर्थ हुआ दोनों का समन्वय।

जैसा कि वृहदारण्यक-उपनिषद् में भी आया है:-

"सा च अमश्चेति तत् साम्नः समत्वम्" ।1।/3/22।।

इस वेद में ऋग्वेद के 1771 मन्त्र हैं। शेष अपने हैं।

[4] अथर्व संहिता- "अथर्वन्" शब्द दो अर्थों में आता है। निरुक्त के अनुसार "थर्व" धातु गत्यर्थक है। अतः अथर्वन् का अर्थ हुआ गतिहीन अथवा स्थिरता से युक्त

"अथर्वाणो ऽथर्वन्तः। थर्वतिश्चरतिकर्मा, तत्प्रतिषेधः। निरुक्त ।1।।8।।

इसका अभिप्राय हुआ कि जिसमें चित्तवृत्तियों के निरोध रूपी योग का उपदेश है। गोपथ-ब्राह्मण में "अथर्वा" शब्द "अथर्वाक्" का संक्षिप्त रूप माना गया है। इस ब्राह्मणग्रन्थ में इसका अभिप्राय इस प्रकार दिया है "समीपस्थ-आत्मा को स्वयं के अभ्यन्तर देखना अथवा जिस वेद में स्वयं के अभ्यन्तर आत्मा को देखने की शिक्षा अथवा उपदेश विद्यमान हो, उसी का नाम हैं "अथर्ववेद" अथवा "अथर्व संहिता"।

स्वामी श्रद्धानन्द अतिथि भवन के लिए दान

गोंडा जनपद की ओर से श्री आनन्द उपमन्यु जी द्वारा निम्न धन उक्त अतिथि भवन हेतु प्राप्त हुआ है।

1- महिला आर्यसमाज गोंडा- 105·00
2- आर्यसमाज बलरामपुर - 51·00
3- आर्यसमाज तुलसीपुर - 51·00

-सभामंत्री।

दिल्ली से स्मृति भवन जोधपुर तक स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की यात्रा ।

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती 2 जुलाई की प्रातः जब दिल्ली से जोधपुर रेलवे स्टेशन पर पहुँचे तो वहाँ के आर्य समाजों के अधिकारी तथा आर्यवीर दल के नवजवानों ने बड़े उत्साह के साथ स्वामी जी का भव्य स्वागत किया ।

महर्षि दयानन्द स्मृति भवन जोधपुर नगर में पुरानी शैली का एक विशाल भवन है। इसी भवन में महर्षि दयानन्द सरस्वती को जहर दिया गया था। महर्षि दयानन्द की स्मृति में उक्त भवन को अलवर आर्य महासम्मेलन पर राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री बरकतउल्ला खाँ ने सार्वदेशिक सभा को देने की घोषणा की थी और उन्होंने अपने बचनानुसार यह भवन सार्वदेशिक सभा को दे दिया। जोधपुर के आर्य बन्धुओं ने इसके लिए ट्रस्ट का गठन किया। जिसका प्रधान तथा ट्रस्टी सार्वदेशिक सभा का प्रधान (पदेन) होता है। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान व मंत्री सार्वदेशिक सभा के मंत्री व समस्त आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान इसके ट्रस्टी होते हैं। बहुत वर्षों से न्यास अच्छी प्रकार कार्य कर रहा है।

2 जुलाई को ठीक 2 बजे न्यास की त्रैवार्षिक बैठक हुई जिसमें न्यास के हिसाब किताब की जाँच पड़ताल तथा अन्य विवरणों पर विस्तृत चर्चा तथा जानकारी दी गई। उसके बाद न्यास का त्रैवार्षिक चुनाव संपन्न किया गया । उसके बाद स्वामी जी महर्षि दयानन्द गोशाला देखने गए। इस शानदार गोशाला में 250 गायें रखी हुई। जोधपुर के आर्य समाजी इसका संचालन करते हैं। गोशाला का भवन बहुत मजबूत और सुन्दर है। इस गोशाला में बूढ़े और अपंग पशुओं को भी आश्रय दिया गया है। इसी के साथ महर्षि दयानन्द पशु चिकित्सालय भी स्थापित है, जिसको आर्य जनों तथा धर्म प्रेमी हिन्दुओं ने मिलकर बनाया हुआ है। यहाँ पर दूर-दूर से पशु इलाज के लिए लाये जाते हैं।

सांयकाल 5 बजे आर्यवीर दल का समापन समारोह प्रारम्भ हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज, न्यायमूर्ति कानसिंह जी थे।

समारोह के अध्यक्ष पद से स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती ने राजस्थान विशेषकर जोधपुर के आर्य जनों को संबोधित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द सरसवती को जोधपुर में जहर दिया गया था, इस दुर्घटना के साथ जोधपुर का नाम जुड़ा हुआ है, इसलिए जोधपुर के सब आर्य जन एकजुट होकर कार्य करें और महर्षि दयानन्द स्मृति भवन न्यास को सद्भावना व सहयोग का ऐसा वातावरण दें कि आर्य जगत में जोधपुर की संगठन शक्ति का भी इतिहास में नाम रहे ।

समापन समारोह के अवसर पर आर्यवीर दल के संचालक श्री सत्यवीर जी ने अनुभवपूर्ण कई शारीरिक कर्तव्य दिखाकर सबको आश्चर्य चकित कर दिया था।

शुद्ध लोक लोकान्तर कर

प्रातसीय आहुतियाँ मन्त्रः-

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इदमग्नये प्राणाय इदन्नमम।।
ओं भुवर्वायवे पानाय स्वाहा। इदं वायवे ऽपानाय इदन्नमम।
ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा। इदमादित्याय व्यानाय इदन्न मम।
ओं भूर्भुवः स्वरग्निवायंवादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्य स्वाहा। इदमग्निवायंवादित्येभ्य। प्राणापान व्यानेभ्यः इदन्नमम।।

ब्रह्माण्ड भूमि यह अन्तरिक्ष,
द्यौ लोक हव्य विस्तार करो।
सब शुद्ध लोक लोकन्तर कर, यह आहुति अंगीकार करो।।

भू-अग्नि वायु अन्तरिक्ष में
द्यौ में आदित्य शुद्ध कर दो ।
शारीरिक प्राण अपान व्यान
ले आहुति ईश, शुद्ध कर दो ।

ब्राहाण्ड पिण्ड इन दोनों में, प्रिय शुद्ध शक्ति संचार करो। सब शुद्ध लोक लोकान्तर कर, यह आहुति अंगीकार करो ।।

प्रभु अग्नि प्राण को करे सबल
प्रिय प्राणों से तन रक्षा है ।
वायु शक्ति देती अपान को
जो कष्ट निवारण दक्षा है ।

आदित्य व्यान बल सुखदायक, है सर्व शक्ति उपकार करो। सब शुद्ध लोक लोकान्तर कर, यह आहुति अंगीकार करो।।

अग्नि प्राण वत वायु कष्ट हर
आदित्य सींचे रस सुख देते।
ये नहीं संग्रहण रखते हैं ।
सब धरती पर बर्षा देते ।

दे अग्नि वायु आदित्य शक्ति, अपनी आहुति स्वीकार करो। सब शुद्ध लोक लोकान्तर कर, यह आहुति अंगीकार करो।।

— देव नारायण भारद्वाज
आजमगढ़

आर्य समाज आयुध निर्माणी
मुरादनगर- गाजियाबाद

प्रधान	-	श्री माया प्रकाश
मंत्री	-	श्री ब्रजेश कुमार
कोषाध्यक्ष	-	श्री हरिनन्दन जी

वैदिक सत्संग मण्डल नजीबाबाद

प्रधान	-	श्री विद्यारत्न जी आर्य रेडियोसिंगर
मंत्री	-	श्री सुरेन्द्रकुमार आर्य
कोषाध्यक्ष	-	श्री बालस्वरूप जी आर्य

गुरूकुल वृन्दावन में प्रवेश....

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन अखिल भारतीय राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा संस्था है, जिसकी उपाधि "अधिकारी" हाई स्कूल एवं शिरोमणि बी०ए० के समकक्ष स्वीकृत है।

प्रवेश 1 जुलाई 1989 से प्रारम्भ। प्रवेशेच्छुक महानुभाव गुरुकुल के कार्यालय से प्रवेश की जानकारी प्राप्त कर अपने बालकों को प्रवेश दिलायें।

-मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन।

आर्यमित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५- मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष ४५६६३
पजीकरण स0 एल0 डब्ल्यू एन पी ७६
श्रावण कृष्ण - ५
२३, जुलाई रविवार १९८९ ई०

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला भारतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अत: जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजो, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।





उत्तर प्रदेश के

मुख्य विक्रेता

1- न्यू सेन्टर, लखनऊ।
एम0एस0 मेहता, लखनऊ।
3- अनकार फार्मेसी, कानपुर।
4- रामदेव मिश्रा, रायबरेली।
5- शिव आयुर्वेदिक औषधालय प्रतापगढ़।
6- स्वदेशी औषधालय, गोण्डा
7- मिश्रा आयुर्वेदिक स्टोर, सुल्तानपुर।
8- विनयकुमार अरुणकुमार इलाहाबाद।
9- कुलदीप चन्द साम्ब, आगरा।
10- बैजनाथ प्रसाद एण्ड . सन्स, फैजाबाद।

शाखा कार्यालय . ६३, गली राजा केदारनाथ चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन नारायणस्कर प्रेस 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) श्रावण कृष्ण -१३, रविवार- संवत् २०४६ वि०, दिनांक ३०, जुलाई १९८९ (घोषणा पत्र सं. ७/२८-२-८५)



तस्मात् यज्ञात् सर्वहुत:जज्ञिरे छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात्-यजु: तस्मादजायत।

As eye cannot function without light. In the same way wisdom's function-isimpossible without knowledge, so knowledge. is the gift of God. Godly knowledge. is called Vedas. They are four

ऋक्, यजु:, साम, अथर्व।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१.०० रू. मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ३०

"देवस्य पश्य काव्यम्‌ - न ममार"
वेद प्रचार की आगमन वेला में आर्यों से एक निवेदन...

वेद प्रचार का पावनपर्व आ रहा है। आर्यों का प्राण--- वेद, आज पौने दो अरब वर्ष से इस धरती पर मानव को प्रेम, त्याग, शान्ति, सुख-समृद्धि, ऐहिलौकिक पारलौकिक उन्नति का पावन सन्देश देता चला आ रहा है। कितनों ने नकल की बिना अक्ल के, कुछ तेरा लिया कुछ अपना मिला दिया। जो तेरा है वही सत्य है जो मिलावट है वह उच्छिष्ट है त्याज्य है। क्योंकि यह उस देव का काव्य है जो कभी मरता नहीं, शाश्वत है, नित्य है, सत्य है। हर नई धरती पर सूर्य की पहिली किरण के साथ ही मानव के कल्याण के लिए प्रकट हो जाता है। उसका पढ़ना-पढ़ाना, प्रचार करना-कराना, सुनना-सुनाना धर्म नहीं परम धर्म है। आर्यो! हमारी पावन वेला आ रही है। अब तो हमारा एक ही नारा एक ही गायन होना चाहिए - "सन्देश देश-देश में वेदों का दें सुना, वैदिक पवित्र धर्म का जग में प्रसार हो"···· "वह शक्ति हमें दो दयानिधे! कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।"

आज चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है। मानव ने अपने ही विनाश के नये-नये साधन खोज लिए हैं। दुनिया को प्रेम और रहम का सन्देश देने का दम्भ भरने वाले बिरादराने भाइयों ने, अभी कल ही की तो बात है, हजारों नहीं लाखों बेजुबान तेरे नाम पर ज़िबह कर दिए। खा खुद गये, खुशी तेरी जताई। जीभ का स्वाद उन्हें मिला नाम तेरा बदनाम हुआ। क्या अन्धेरगर्दी है धर्म के नाम पर। इस अन्धेरगर्दी को कौन मिटाएगा ··· वेद-वेद-वेद ···। उसने कहा है "यजमानस्य पशून् पाहि" - यजमान के पशुओं की रक्षा करो, यह अवध्य हैं। महाराज मनु ने कहा है -

नाकृत्वा प्राणिनां हिंसां मांसमुत्पद्यते क्वचित्।
न च प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसं विवर्जयेत् ।।

प्राणियों की हिंसा किए बिना मांस की प्राप्ति नहीं हो सकती और न प्राणिवध स्वर्ग पहुँचाने वाला है इसलिए मांस भक्षण कभी न करना। यह सब शिक्षायें वेद की हैं। वेद स्वत: प्रकाशित हैं, अनुपमेय हैं। उस अनन्त कोटि ब्रह्माण्डनायक परब्रह्म के परम ज्ञान की परमज्योति हैं। अनन्त द्यौ, अनन्त भूमि, अनन्त लोक लोकान्तर, असंख्य सूर्य मिलकर भी उसकी थाह नहीं पा सकते। ये सब बरसाती तथाकथित इलहामी पुस्तकें किस गिनती में हैं। हम आर्य, इस तथ्य को हृदयंगम करें। वेद प्रचार के लिए अपने को अभी से सन्नद्ध करें। वेद प्रचार सप्ताह हमारा महापर्व है। घर-घर में वेद की पुस्तक हो, वेद का गायन हो, वेद की चर्चा हो, वेद का नाद हो। वेद स्वयं कहता है -

"एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायांश्च पुरुषः"

यह ज्ञान उसकी महिमा से मण्डित है। वह पूर्ण प्रभु तो इससे भी बड़ा और न्यारा है। उसने हमें सूर्य, चन्द्र, द्यौ, अन्तरिक्ष ही नहीं दिया अपना वेद रूपी ज्ञान भी दिया है। यह हमारे मालिक की अनमोल धरोहर है, दुनिया छूट जाय इस धरोहर को हम कभी नहीं छोड़ सकते। हमें उसके यहाँ जवाब देना होगा। यह उसका काव्य है, अनूठा काव्य, अमर काव्य जिसे पढ़कर आर्य का हृदय झूम उठता है। हृदय वल्लरी नाचने लगती है वह अपने को भूल जाता है। कैसा दयालु है, यह न देता तो हम पशुवत् ही रहते, और इसे न पढ़ेंगे तो पशुवत् ही रहेंगे।

वेद प्रचार सप्ताह को सादगी भरे समारोह में प्रत्येक आर्य मन्दिर में श्रद्धा सहित मनाया जाय। वेद कथाओं का आयोजन किया जाय और घर-घर में वेदों का प्रचार किया जाये, यही हमारी अन्त: कामना है।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा अग्र तू सजकर साज।
आर्य समाज! आर्य समाज!!
— राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ - श्रावण कृष्णा-१३, संवत् २०४६ वि.
30, जुलाई १९८९, दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

पाकिस्तान में आतंकवादियों का प्रशिक्षण

बांग्लादेश के निर्माण के कुछ समय बाद पाकिस्तान के लगभग अस्सी हजार बन्दी सैनिकों को तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने बिना शर्त रिहा कर दिया था। यह सैनिक मुक्त होकर जब पश्चिमी पाकिस्तान की धरती पर पहुँचे तो पाकिस्तानी जनता ने उनका जगह जगह स्वागत करते हुए भारत से बांग्लादेश का बदला लेने की शपथ खाई थी। पाकिस्तान के शासकों ने भारत को हमेशा शत्रुदृष्टि से देखा है। वहाँ की जनता को भारतविरोधी बनाने में वहाँ का शासकवर्ग एवं प्रचारमाध्यम दोनों एक दूसरे से बढ़कर रहे हैं। कई बार युद्ध भी हो चुके हैं और भारत की सेनाओं ने अपनी गौरवशाली परम्पराओं के अनुरूप सदैव पाकिस्तानी सेनाओं को ज़बर्दस्त पराजय दी है। पराजय के बाद पाकिस्तानी नेताओं का रूख लचीला हो जाता है और वे समझौते के नाम पर खोई हुई प्रतिष्ठा तथा भूमि को प्राप्त करने के लिए भारतीय नेताओं को सहमत कर लेते हैं। ताशकन्द समझौते में यही नीति अपनाई गई और भारत के उदारनेता श्री लालबहादुर-शास्त्री ने कश्मीर का वह भाग जो भारत का अभिन्न अंग है, पाकिस्तान को फिर वापस कर दिया। शिमला समझौता भी पाकिस्तान की बांग्लादेश में पराजय के पश्चात् बन्दी सैनिकों को छुड़ा लेने की कूटनीतिक विजय है। इस समझौते में यह बात स्पष्ट कर दी गई थी कि चाहे कश्मीर का मामला हो या कोई अन्य दोनों देश एक दूसरे के विरुद्ध सैन्य प्रयोग नहीं करेंगें और आपसी बातचीत के माध्यम से समस्या का हल ढूँढा जायगा। कश्मीर के मसले को कभी अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर नहीं उछाला जायेगा। किन्तु इस समझौते के पश्चात् भी अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर जब कभी पाकिस्तान को अवसर मिलता है, कश्मीर का रोना रोने लगते हैं।

समझौता हो जाने के पश्चात् उसकी उपलब्धियाँ प्राप्त होते ही पाकिस्तान का रूख फिर बदल जाता है और उसकी आवाज आक्रामक हो जाती है। जितने भी समझौते भारत पाकिस्तान के अब तक हुए हैं उनमें कूटनीतिक विजय पाकिस्तान की ही हुई है और वह जो चाहता है मनवा लेता है। सैनिक पराजय को कूटनीतिक विजय में हासिल करने का उसमें अद्भुत चातुर्य है। सियाचिन ग्लेशियर को लीजिए- भारत की स्थिति सैनिक दृष्टि से वहाँ मजबूत है। पाकिस्तान ने कई बार हमले किए और सदा उसे पराजय का मुंह देखना पड़ा और पीछे हटना पड़ा। अब समझौते द्वारा उस क्षेत्र के विसैन्यीकृत बना देने पर दोनों पक्ष लगभग सहमत हो गये हैं। लेकिन इस बात की क्या गारण्टी है कि समझौते के कुछ समय बाद असैन्यीकृत क्षेत्र में पाकिस्तानी सेना पहुँचकर पुनः अपनी स्थिति मजबूत नहीं कर लेगी? और फिर भारत को उस स्थान पर प्रवेश करने में कितनी कठिनाई होगी- यह वह लोग अच्छी तरह समझ सकते हैं जो राजनैतिक दृष्टि से बहुत प्रबुद्ध एवं दूरदर्शी हैं। भारतीय परम्परा सदा सहिष्णु और उदार रही है। हृदय में अपार उदारता लेकर भारत के राजनैतिक मंच पर उदित हुए हमारे लगभग सभी नेता पाकिस्तान के मंसूबों को हृदयंगम करने में असमर्थ रहे हैं। सैन्यबल पर प्राप्त हुई उपलब्धियों को कूटनीति के माध्यम से खो देना न तो बुद्धिमत्ता है और न दूरदर्शिता। हर युद्ध के पश्चात् हुए समझौतों से हमारी सेना का मनोबल हताशा की ओर अग्रसर हुआ है और अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर हमारी खिल्ली उड़ाई गई है।

आज पंजाब में जो कुछ हो रहा है वह उसी बांग्लादेश की पराजय का बदला है। पाकिस्तान में अनेकों स्थानों पर, जेलों के अन्दर आतंकवादियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। उन्हें चीनी हथियार सप्लाई किए जा रहे हैं और पंजाब में निहत्थी हिन्दू जनता मच्छर मक्खियों की तरह मारी जा रही है। यह सब किसी गुप्त समझौते के अन्तर्गत किया जा रहा है। तथाकथित खालिस्तान के स्वयम्भू जनरल बार बार यह बात कह रहे हैं कि पंजाब की धरती पर खालिस्तान का राज्य होगा और कश्मीर पाकिस्तान को तोहफे में भेंट कर दिया जायेगा। बेनज़ीर चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पा रही हैं। पाकिस्तानी पंजाब में मुख्यमंत्री नेवाज शरीफ का शासन है। वे बेनज़ीर के सबसे बड़े विरोधी हैं। उनकी पार्टी "इत्तहादे जम्हूरे इस्लाम" ने खुले तौर पर घोषणा की है कि वह जनरल जिया की नीतियों पर चलते रहेगें। अब पाकिस्तान की कूटनीतिक चाल यह है कि बेनज़ीर को भारत से बात करने दो। साईचिन ग्लेशियर का वह हिस्सा जिस पर भारत की सेना जमी हुई है किसी तरह विसैन्यीकृत करा लिया जाय, इधर पंजाब में आतंकवादी प्रशिक्षण चलता रहे- कह दिया जायेगा कि बेनज़ीर की कोई सुनता ही नहीं। इस तरह से दोनों हाथों में लड्डू रहेंगे।

भारतीय नेतृत्व अपने सैन्यबल पर आश्वस्त है। निःसन्देह हमारी सेनाएं किसी भी स्थिति का मुकाबला करने में पूर्ण सक्षम हैं। इसीलिए तो एक बार पाकिस्तान के प्रधानमंत्री स्व0 लियाकत-अली खाँ ने कहा था- "They (Indians) are proud of their Military might— परन्तु याद रखना सैन्य शक्ति को बलें हमारी कूटनीतिक विजय से ही मिलेगा। हमारा समझौता, खोने के लिए नहीं, पाने के लिए होना चाहिए यही राजनैतिक दूरदर्शिता है। चाहे काश्मीर हो या बांग्लादेश, सियाचिन ग्लेशियर हो या कच्छ की खाड़ी, हमारे जवानों ने अपना खून बहाया है इसलिए उपलब्धियों को केवल बातों के बहकावे में आकर झूठी प्रतिष्ठा के लिए खो देना आत्मघाती है। इतिहास बताता है समझौते फाड़ दिए जाते हैं, कमजोर को दबोच लिया जाता है। राजनीति में उदारता, सहिष्णुता, भाई-भाई, नहीं चलता वहाँ तो साम दाम दण्ड भेद चलता है, और यही आर्यनीति है। हमारे प्रधानमंत्री, बेनज़ीर भुट्टो से मिलकर क्षेत्रीय शान्ति के लिए बहुत उत्सुक हैं और हृदय से चाहते हैं कि दोनों देश शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के साथ रहें किन्तु बेनज़ीर जी अभी पिछले दिनों जब ब्रिटेन यात्रा के समय वहाँ जिस होटल में ठहरी थीं, एक गुप्त दस्तावेज मिला है। इस दस्तावेज़ में पाकिस्तान के लिए आधुनिक हथियार खरीदने की योजना है। इस दस्तावेज के साथ ही पाकिस्तानी प्रधान मंत्री का पास भी मिला है जिसके द्वारा वे ब्रिटिश प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर से मिलने जाने वाली थीं। लन्दन के कई अखबारों ने लिखा है कि ऐसे समय जबकि बेनज़ीर भारत से शान्ति और परमाणु निरस्त्रीकरण समझौते की वार्ता चला रही हैं उनके सेनाध्यक्ष परमाणु हथियारों की योजना लेकर बेनज़ीर के साथ ब्रिटिश अधिकारियों से भेंट कर रहे हैं। यह तो "मन-में राम बगल में छुरी" वाली कहावत हुई।

हम आशा करते हैं हमारा नेतृत्व वर्ग पाकिस्तान से समझौता करते समय वहाँ के नेताओं की इस मनोवृत्ति को भी अवश्य ध्यान में रखेंगे।

"गुरूकुल प्रभात आश्रम टीकरी का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न"

मेरठ जनपद में एक मात्र संस्था गुरुकुल प्रभात आश्रम "टीकरी भोलाझाल-मेरठ एक निःशुल्क संस्था है। इसमें सरकार से किसी प्रकार का अनुदान नहीं लिया जाता। गुरुकुल में संस्कृत भाषा ही माध्यम है। कठोर अनुशासन गुरुभक्ति राष्ट्रीयता से ओतप्रोत यह संस्था मेरठ जनपद में अनूठी है। युगयोगी स्वामी विवेकानन्द जी इसके प्राचार्य हैं। दि0 8-7-89 शनिवार को तीन वर्ष के लिए गुरुकुल का निर्वाचन सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ

1- श्रीयुत मनोहरलाल जी - प्रधान
2- श्रीयुत शान्ति प्रकाशजी मित्थल- उपप्रधान
3- श्रीयुत चन्द्रराजजी - मंत्री
4- श्रीयुत कृष्णचन्द्रजी रस्तौगी- उपमंत्री।
5- श्रीयुत माधव प्रसादजी - कोषाध्यक्ष

सर्वसम्मान से निर्वाचित हुए। मन्त्री-श्री चन्द्रराज जी ने सबका धन्यवाद किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ॰प्र॰ के दो महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य

— डा॰ प्रशस्य मित्र शास्त्री
(महोपदेशक) रायबरेली

आर्यसमाज की शनैः शनैः क्षीण होती हुई संघटन शक्ति तथा आर्य परिवारों के पारस्परिक सम्पर्क के अभाव को दूर करने की दृष्टि से इस बात की अत्यन्त प्रबल आवश्यकता थी कि किस प्रकार संघटन को मजबूत एवं गतिशील बनाया जाय। इस पर विगत कई वर्षों से विचार चल रहा था तथा कोई सशक्त उपाय खोजने का प्रयास पहले भी किया जाता था तथा अब भी किया जा रहा है। इस संदर्भ में मैंने भी आर्य समाज की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में कुछ सुझाव दिए थे। मुझे प्रसन्नता है कि मेरे दो सुझावों को न केवल भारतवर्ष के अनेक विद्वानों ने सराहा अपितु इसे कुछ क्रियात्मक रूप प्रदान करने एवं इसे प्रसारित करने का आन्दोलनात्मक अभियान उ0प्र0 आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र "आर्यमित्र" ने उठाया है। इसके लिए हम सभा के अधिकारियों का धन्यवाद करते हैं।

आर्य परिवारों में पारस्परिक विवाह

आर्यसमाज रूपी आन्दोलन के ह्रास का एक प्रमुख एवं निश्चित कारण यह भी है कि इसने प्रारम्भ से ही हिन्दुत्व की जघन्यतम बुराई जन्मगत जाति व्यवस्था पर खुलकर प्रहार किया तथा शास्त्रीय दृष्टि से गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार वर्ण निर्धारण की बात तो अवश्य की, किन्तु कार्य रूप में इसे स्वीकार न कर सका। फलतः आर्यसमाज के सदस्य भी आर्यसमाज मन्दिरों में तो भले ही गुण कर्म स्वभाव से ब्राह्मण माने जाते रहे, किन्तु आर्यसमाज से बाहर वे अपनी तथाकथित जाति समुदाय में ही सम्बद्ध रहे एवं उनके वैवाहिक सम्बन्ध भी आर्य परिवार मात्र में न होकर अपनी पूर्व जाति समुदाय में ही होते रहे।

मैं ऐसे अनेक आर्य परिवारों को जानता हूँ जिनकी कन्यायें समाज मन्दिरों में आती थीं तब जिनके परिवारों में शराब और अण्डा, मांस की चर्चा भी असम्भव थी, किन्तु वे कन्यायें विवाह के समय किसी आर्य परिवार में न जाकर अपने ऐसे जातीय समाज में गईं जहाँ जाकर वे अण्डा और मांस पकाने को बाध्य हुईं तथा मूर्ति पूजा उनकी दैनिक जीवनचर्या में शामिल हो गयी।

इसी प्रकार अनेक ऐसे आर्य परिवार भी हैं जिनके लड़कों का विवाह ऐसी कन्याओं के साथ हुआ जो कि मूर्तिपूजा, जड़ पूजा और नाना प्रकार के व्रत पाखण्डों के संस्कारों के साथ पली बढ़ी थीं। फलतः उनका प्रभाव भी आर्य परिवारों के बच्चों में होता गया और आर्य संस्कार लुप्त होते गए। इन सबका ही परिणाम था कि आर्यपरिवारों की संघटन शक्ति समाप्त होती गई। तथा किसी-किसी आर्यसमाजी परिवार में तो केवल मात्र एकाध ही व्यक्ति आर्य सिद्धान्तों का मानने वाला रह गया और सब धीरे-धीरे उसी अनार्य एवं अवैदिक सिद्धान्तों के मानने वाले बन गए। यदि यही स्थिति रही तो निश्चित ही 2-3 पीढ़ियों के बाद आर्यसमाज का कोई नाम लेवा भी न रह जाएगा।

"आर्यमित्र" में वैवाहिक सूचनओं का महत्व

इस सब पूर्वोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर उ0प्र0 आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं मंत्री जी ने जो यह निर्णय लिया है कि आर्यसमाज के उन समस्त परिवारों के विवाह योग्य वर एवं कन्याओं की सूचना प्रति सप्ताह आर्यमित्र में निःशुल्क प्रकाशित की जाएगी। जो कि जन्मगत जाति प्रथा को तिरस्कृत करके गुण, कर्म, स्वभावानुसार आर्य परिवार मात्र में विवाह करने को इच्छुक हों, तो यह अत्यन्त सामयिक एवं महत्वपूर्ण बात है। लेकिन इसमें केवल नामों के प्रकाशन मात्र से कोई क्रान्ति नहीं आती है। हम सब समस्त आर्यजनों को हृदय पर हाथ रखकर यह सोचना है कि अब आर्य परिवारों को किस प्रकार संघटित करना चाहिए। यह कितने आश्चर्य की बात है कि हम अपने जन्मगत जाति के आधार पर संस्कार हीन अनार्य और वैचारिकता विहीन कन्याओं को अपने परिवार में ले आते हैं। तथा अपनी सुसंस्कृत आर्य कन्या को अनार्य परिवारों में फेंक देते हैं। किन्तु गुण, कर्मानुसार आर्य परिवारों की सुसंस्कृत कन्याओं को न हम अपने परिवार में ला पाते हैं और न ही दे पाते हैं। यह सब हमारी रूढ़ियों का ही दुष्परिणाम है कि अब हम विघटित होते चले जा रहे हैं।

अतः इन सूचनाओं के प्रकाशन को हम महत्व दें तथा इन पर अमल करने का प्रयास करें तो अत्यन्त लाभ होगा। "आर्यमित्र" ने इस निमित्त एक मंच प्रदान कर दिया है। आवश्यक है कि हम उसे उपयोगी बना सकें, तथा आर्य परिवारों की संघटनात्मक दृष्टि से मजबूती प्रदान कर सकें। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने अन्तस में देखना होगा।

अखिल भारतीय आर्य परिचय पत्र

उ0प्र0 आर्य प्रतिनिधि सभा ने अखिल भारतीय आर्य परिचय पत्र भी जारी करने का निश्चय किया है जो कि अत्यन्त स्तुत्य है। संघटन में प्राण फूँकने एवं इसे गतिशील बनाने के लिए इसमें कुछ समयानुसार नवीनता लानी आवश्यक है।

इस सम्बन्ध में मेरा यह सुझाव अवश्य है कि यह आर्य परिचय पत्र थोक भाव में सबको न दिया जाय। पहले परीक्षण के तौर पर केवल कुछ ही महत्वपूर्ण व्यक्तियों को इसे देना चाहिए। जैसे पूरे प्रदेश में अधिक से अधिक पाँच सौ। इस प्रकार एक जिला में औसत दस व्यक्तियों के पास ही ऐसे परिचय पत्र हों।

जिन लोगों के पास यह परिचय पत्र हों वे निश्चित ही आर्यसमाज के प्रामाणिक एवं उत्तरदायी व्यक्ति माने जावें। यह तभी सम्भव है जब कि केवल कुछ थोड़े गिने चुने प्रसिद्ध एवं उचित कर्मठ व्यक्तियों को ही परिचय पत्र दिया जाए। उ0 प्र0 प्रतिनिधि सभा यह निर्देश भी जारी करे कि जिनके पास यह परिचय पत्र हों, वे किसी भी आर्यसमाज में ठहरने के अधिकारी हैं तथा इसके लिए उन्हें किसी आर्यसमाज के मंत्री - प्रधान को पत्र आवश्यक नहीं। प्रतिनिधि-सभा का यह परिचय पत्र ही उनके आर्यसमाजी होने की प्रामाणिकता व्यक्त करता है।

यह परिचय-पत्र तीन प्रकार का हो, 1-विशिष्ट सभा पदाधिकारियों को, 2-महोपदेशक, उपदेशक, भजनोपदेशकों, को 3-संघटन में महत्वपूर्ण कार्यकर्ताओं को।

हम यह तो नहीं कह सकते कि आर्य परिचय पत्र जारी करने मात्र से कोई क्रान्ति आ जाएगी, किन्तु निश्चित ही इससे एक उत्साह और परिचय पत्र प्राप्त करने की भावना लोगों में आएगी। इसीलिए मैं पुनः कहना चाहूँगा कि यह परिचय पत्र प्रारम्भ में बहुत कम लोगों को ही जारी किया जाय। जिला सभा के पदाधिकारियों में अनुरोध और सिफारिस पर ही धीरे-धीरे इसकी संख्या में वृद्धि की जाय।

आशा है उ0प्र0 की आर्य जनता सभा के पूर्वोक्त दोनों महत्वपूर्ण निर्णयों को संघटन की दृष्टि से स्वागत करेगी। तथा इसके लिए अपना योगदान करेगी।

वेदाध्ययन का अधिकार (श्री शंकराचार्य के मत में स्त्री और शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार नहीं)

सच्चिदानन्द शास्त्री
आ. सभा मंत्री

गतांक से आगे

वैष्णव सम्प्रदाय के एक श्री-निम्बार्काचार्य मध्यकाल में आचार्य हुए थे। जिनका वेदान्त सूत्रों पर भाष्य उपलब्ध होता है उसमें वेदान्तपारिजात सौरभ, नाम से 1-3-38 के भाष्य में लिखा है।

शूद्रो नाधिक्रियते। शूद्र समीपे नाध्ये तव्यमित्यादिना तस्य वेदश्रवणादि प्रतिषेधात्। न चास्योपदिशेद् धर्म मित्यादि स्मृतेश्च।
§वेदान्त परिजात कोतुमे पृ0 110§

अर्थात् शूद्र का वेदाध्ययनादि में अधिकार नहीं है। शूद्र के समीप में अध्ययन नहीं करना चाहिये। इस विधान से वेद श्रवणादि का निषेध है। स्मृति में भी कहा है कि शूद्र को धर्म का उपदेश नहीं देना चाहिये।

श्री निम्बार्काचार्य ने वेदान्त कोस्तुम पृ0 110 में इस पर अपनी टिप्पणी करते हुए- पूर्व उद्धृत--

यद्यु हवा एतत श्मशान यत्-शूद्रस्तस्यात् शूद्र समीपे नाध्येतव्यम्। आगे फिर कहा कि यस्य समीपे ध्ययनमपि न कर्तव्यम्। तस्य वेद श्रवण तदध्ययनं तदर्थज्ञानं तदुक्तधर्मानुष्ठानं च सुतरां निषिद्धमित्यर्थः ।।

अर्थात् समीप में बैठकर अध्ययन भी नहीं करना चाहिये। ऐसे शूद्र का वेद श्रवण, अध्ययन, उसका अर्थज्ञान, और उसके धर्म का अनुष्ठान तो सर्वथा ही निषिद्ध है।

पूर्व आचार्यों की भाँति वैष्णव सम्प्रदाय के श्री निम्बार्क आचार्य भी उसी लकीर के फकीर हैं जहां परमात्मा के ज्ञान में भी साझेदारी है। मध्यकाल बड़े 2 आचार्यो ने सबर्णो के अतिरिक्त शूद्र कुलोत्पन्नों पर अनुदारतापूर्ण आर्ष वचन मानकर लघुता की परिचय दिया है।

श्री यति-भगवत्-पादाचार्य और शूद्र

दक्षिण में शेवमत का अत्यधिक प्रचार है इसी सम्प्रदाय के इस मत के श्री यति पण्डित भगवात्पादाचार्य ने भी वेदान्त सूत्रों का श्रीकर भाष्य किया है। जो मेसूर में छपा है इसमें लिखा है-

इतश्च न शूद्रस्याधिकारः कस्मात स्मृतेश्च। स्मृतितो वेदश्रवणस्य तदध्ययनस्य तत्प्रयोजनयोरर्थ ज्ञानानुनुष्टान रुपयोरर्थज्ञाना-नुष्ठनिरुपयोरर्थयोः प्रतिषेधानिमेधादित्पर्थः अथवास्य वेदमुपश्रृण्वनः त्रपु जतुभ्यां श्रोतृपरिपूणम् उदाहरणे जिहाच्छेदो धारणे शरीरभेदः इतिश्रुतो। शूद्रस्य वेदाध्ययनाको शिक्षा ' श्रूयते। शूद्रस्य वेदश्रवण तच्छ्रोत्रे परमादरात्।त्रपुप्रपूरयेदर ाजा,तदुच्चारणमात्रतः तज्जिह्वां छेदयेद तूर्णतत धारणवशाततदा। शरीर भेदन कुर्याति विधिरेषो यमूच्यते। इति स्मृतिरयि श्रूयते।
वे0सू0 श्रीकरभाष्ये पृ0 156

अर्थात् शूद्र का अधिकार नहीं, स्मृतियों में उसके वेद के श्रवण अध्ययन और अर्थज्ञान का भी निषेध है यह कह कर पूर्वादृत-

अथवा अस्य शूद्रस्य वेदमुपश्रृण्वतः धारणे शरीर-भेदः। इस स्मृति वचन को श्रुति के नाम से धृष्टता और धूर्तता की है। इसके पश्चात मनगढ़न्त श्लोक बनाकर कहा है यदि शूद्र वेद का श्रवण कर ले तो राजा को चाहिए, "परमादरात्" बड़े आदर से उसके कानों में रांगा §सीसा§ भरे दे। यदि शूद्र वेद-मन्त्रों का उच्चारण करे तब उसकी जिह्वा-काट दें। वेद-मन्त्र को कोई स्मरण करे या याद करें तो उसका शरीर काट डाले। यह विधि है और स्मृतिकारों ने भी ऐसा ही कहा है।

श्री सायणाचार्य और शूद्र तथा स्त्रियां

14वीं शताब्दी में प्रसिद्ध वेद भाष्यकार श्री सायणाचार्य का प्रादुर्भाव हुआ है उन्होंने अपने ऋग्वेद भाष्य की भूमिका में लिखा है कि--

धर्मब्रह्मज्ञानार्थी वेदे ऽधिकारी। स च त्रैवर्णिके पुरुषः स्त्री शूद्रयो स्तु सत्यमपि ज्ञानापेक्षायाम्-उपनयनाभावेन अध्ययन राहित्वाद् वेदे अधिकार प्रतिषिद्धः धर्म ब्रह्मज्ञानंः तु पुराणादिमुखेन उत्पद्यते। तस्मात् त्रैषर्णिक पुरुषाणां वेदमुखेन अर्थज्ञाने अधिकारः। §सायणाचार्य कृतः ऋग्वेदभाष्योपक्रमणिका वेद-भाष्य भूमिका संग्रहे, पृ0 49

इसका भाव भी वही है जो उपरोक्त आचार्यों ने कहे। इस प्रकार विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्यो ने प्रभु की वाणी वेद को पढ़ने समझने में साम्प्रदायिकवाद की विशेष दुर्गन्ध उत्पन्न की। साथ ही स्त्रियों के साथ शूद्रों की तुलना कर दी। दोनों बुद्धि जीवियों के साथ घोर अन्याय किया है। समय की देन है इस बात का व्यापक प्रभाव हुआ और स्त्रियों व शूद्रों को ज्ञान प्राप्त करने का नाम मात्र का भी अधिकार नहीं है।

इस सब आचार्यों की अपेक्षा इस युग के समाज सुधारक स्वामी-दयानन्द ही थे जिन्होंने मानवता का सभी को अधिकार दिया।

शोक-प्रस्ताव

श्री कामेश्वर दयाल श्री रस्तोगी संरक्षक- आर्यसमाज- मोहमदी का 29.6.89 को आकस्मिक निधन हो जाने पर आर्यसमाज मोहमदीनेहार्दिक शोक व्यक्त किया।

गुणकर्मानुसार वैवाहिक विज्ञापन

1- गेहुँआ रंग, कक्षा 8 पास खेती के व्यवसाय में संलग्न 25 वर्षीय आर्य युवक के लिए वधू चाहिए विवाह बिना दहेज बिना आडम्बर। गुणकर्मानुसार किसी भी वर्ण में।

वीरेन्द्र कुमार आर्य§राजपूत§
ग्रा0 नगला कलार
सेन्ट्रल जेल फतेहगढ़§फर्रुखाबाद§

2- आर्य चिकित्सक की सुशील, अतिसुन्दर कन्या, कद 5"×1" वय 23 वर्ष, शिक्षा एम0ए0§अंग्रेजी§ बी0एड0 हेतु आर्य संस्कार युक्त सुस्थापित वर की आवश्यकता।

डा0 धर्मपाल राणा
कीरतपुर §बिजनौर§

3- 33 वर्षीय 5"×3" आकर्षक व्यक्तित्व, स्वस्थ, इन्टर, निजी प्रैक्टिस एवं मेडिकल स्टोर प्रोपराइटर, गौड़ ब्राह्मण श्यामवर्ण वशिष्ठ गोत्र एवं 29 वर्षीय 10 कक्षा उत्तीर्ण गौरवर्ण कौशिक गोत्रीय कृषिकार्य में संलग्न युवक हेतु क्रमशः 28, 23वर्षीया गृहकार्यो में दक्ष शिक्षित कन्याओं की आवश्यकता है। कन्या के केवल गुण विचारणीय हैं।

श्रीमती के0बी0 गौड़,
द्वारा ममता मेडिकल स्टोर
ग्रा0/पो0 अमीरनगर-§खीरी लखीमपुर§

4- आयु 26 वर्ष, कद 5"×3" गेहुआं रंग, एम0ए0, बी0एड0 §हिन्दी संस्कृत§ अंग्रेजी माध्यम से स्कूल में अध्यापनरत गृह कार्य में दक्ष कोहली परिवार की मधुरभाषी कन्या हेतु आर्यवर की आवश्यकता।

आयु 24 वर्ष कद 5"×3" गोरारंग। हाईस्कूल से एम0ए0 तक सदैव प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण, गोरखपुर विश्वविद्यालय की शोध छात्रा, गृहकार्य में दक्ष मधुरभाषी द्वितीय कन्या के लिए आर्यवर की आवश्यकता।

सत्यपाल कोहली
कन्नौजिया वार्ड पश्चिमी
मन्त्री आर्यसमाज, पडरौना
§देवरिया§

पवन कुमार शास्त्री दुर्घटनाग्रस्त

लखनऊ के प्रसिद्ध आर्यवक्ता श्री पं0पवनकुमार-शास्त्री 5 जुलाई को डालीगंज स्टेशन पर ट्रेन पर चढ़ने के प्रयास में दुर्घटनाग्रस्त हो गये हैं। उन्हें गम्भीर चोटें आई हैं। वे विवेकानन्द अस्पताल लखनऊ के स्पेशल वार्ड नं0 2 में भरती हैं। प्रभु से उनके शीघ्र स्वास्थ्यलाभ की कामना है।

- सभामंत्री।

"यज्ञ पर्व विज्ञान की दृष्टि में"

— विवेकानन्द सरस्वती

लार्ड मैकाले ने शताब्दि पूर्व भारत में जिस उद्देश्य से यहाँ की शिक्षा पद्धति को हटाकर अपनी नयी शिक्षा पद्धति का बीजवपन किया था। वह शिक्षा पद्धति उसके समय में चाहे पूर्ण विकसित एवं फलित नहीं हुई थी किन्तु अब तो वह यहाँ पूर्ण फलवती हो रही है। इसका प्रमाण है कि आज के प्रारम्भिक विद्यालय में अध्ययन करने वाले शिशु से लेकर विश्वविद्यालय के सर्वोच्च श्रेणी के छात्र के मानस पटल पर पश्चिम के प्रत्येक वस्तु व्यवहार के प्रति अनावश्यक व्यामोह है। जहाँ इन्हें पूर्व की वस्तु सारहीन, मूर्खतापूर्ण, एवं अज्ञानमूलक प्रतीत होती है, वहीं पश्चिम की प्रत्येक वस्तु चाहे वह सामान्य व्यवहार से लेकर धर्म दर्शन, कला-कौशल, आचार-विचार वेशभूषा कुछ भी क्यों न हो, सारयुक्त बुद्धिमत्तापूर्ण तथा ज्ञानविज्ञान मूलक प्रतीत होती है।

ऋषि महर्षियों की लिखी बातों का उपहास करने में ये अपना गौरव समझते तथा पाश्चात्य विद्वानों की बातों को स्वीकार कर उनका अन्धानुकरण करने में अपने को कृतकृत्य समझते हैं। इस भयावह परिस्थिति में हम सभी का धर्म है कि हम अपनी चिरपरीक्षित संस्कृतियों एवं मान्यताओं को उनकी भौतिक विज्ञान की सबसे प्रामाणिक कसौटी पर कसकर उनका उज्जवल स्वरूप उनके सम्मुख प्रस्तुत करें।

पिछले दिनों गुजरात के एक प्रसिद्ध समाचार पत्र तथा आर्यसमाज की कुछ पत्रिकाओं में कई लेखकों द्वारा यज्ञ के महत्व को हीन करके प्रदर्शित किया गया था, गुजरात के समाचार पत्र के लेखक ने तो अपनी पूर्ण अज्ञानता का ही परिचय दे दिया। अतः आज का विज्ञान यज्ञ के महत्व को कितना स्वीकार करता है। इसका उदाहरण हम अपने पाठकों के लाभार्थ रख रहे हैं। जिससे इन तथाकथित विज्ञान के छात्रों को अपने विषय में ही कुछ न जानने के अज्ञान का बोध एवं इनके साथ ही जनता को भी हो जाये जिससे जनता सावधान होकर ऋषि मुनि अनुमोदित आचार व्यवहार एवं कर्म काण्ड का निष्ठापूर्वक पालन करें।

यज्ञ (होम) के विषय में अनेक शंकायें ये बेचारे करते हैं अतः पहले अग्निहोत्र विश्वविद्यालय वाशिंगटन (अमरीका) के वैज्ञानिकों ने जो परीक्षण करके उसके लाभ (यज्ञ के) लाभ दिखायें हैं। उसका समाचार नवनीत ज0 8। में प्रकाशित हुआ था वह पूरा समाचार ही मैं यहाँ उद्धृत कर रहा हूँ- जिसको पढ़कर यज्ञ के विषय में आधुनिक वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण का ज्ञान होकर, पुरातन भारतीय ऋषियों के विज्ञानता का भी बोध हो सके।

"महाराष्ट्र के स्वामी बसन्त पराजंपे ने अमरीका की राजधानी वाशिंगटन में अग्निहोत्र विश्वविद्यालय नामक एक नये विश्वविद्यालय की स्थापना की है। यह असाधारण विश्वविद्यालय अमरीकी किसानों को बताता है कि रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाओं के प्रयोग के स्थान पर यज्ञ से फसलों के सब रोग दूर किये जा सकते हैं। विश्वविद्यालय ने जो प्रयोग किये हैं, उनसे मंत्रोच्चारण और घी की आहुति से फसलों को चौगुना करने में सहायता मिली है। यज्ञ का नया वैज्ञानिक नाम है- होमथेरेपी फार्मिंग।

इन प्रयोगों से यह भी पता चलता है कि खेतों पर नियमित रूप से यज्ञ करने से वातावरण शुद्ध होता है, और पौधे तेजी से बढ़ते हैं। एक यज्ञ 200 एकड़, के खेतों के पौधों का स्वरूप बदलने में सक्षम है, विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने अपने खेतों पर जो प्रयोग किये हैं उनसे यह भी सिद्ध हो गया है कि यज्ञ का प्रभाव पौधों की जड़ों तक होता है, और उससे जमीन में ज्यादा नमी बनी रहती है।

पौधों में लग जाने वाले कीटाणुओं के नाश के लिए विश्वविद्यालय द्वारा राख और गोबर की खाद के प्रयोग की सिफारिश भी की जाती है। पानी में राख मिलाकर उसकी सिंचाई से पौधों के कीटों को नष्ट करने की शक्ति मिलती है। मंत्रोच्चारण के साथ की गयी सिंचाई पौधों की इस शक्ति को और बढ़ा देती है।

यज्ञ के धुएं से, विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने द0 अमरीका की फसलों को हानि पहुँचाने वाले अल्वीनी नामक कीटाणु को समूल नष्ट करने में सफलता प्राप्त की है। इन वैज्ञानिकों के दावे के अनुसार, यह धुआं आठ किलोमीटर तक चक्कर लगाता है, और वहाँ की वायु के दूषण को समाप्त कर, उस क्षेत्र की फसलों के स्वस्थ विकास में सहायक होता है।

अमरीका में सफलता प्राप्त करने के बाद, स्वामी जी महाराष्ट्र के कुछ चुने हुए गांवों में अपनी यज्ञ-योजना को लागू करने के प्रश्न पर विचार कर रहे हैं।

आयुर्यज्ञेन कल्पताम्, अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः, नौह्वा स्वर्ग सद्य अग्निहोत्रम्, यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म इत्यादि वेद ब्राह्मण वाक्यों की सत्यता को ही ये वैज्ञानिक सिद्ध कर रहे हैं। यज्ञ इसी महत्ता के कारण भारतीय जीवन एवं अशेष क्रिया-कलाप की अस्मिता बने हुये हैं। किसी भी शुभ कार्य का आरम्भ यज्ञ के बिना संकल्पित नहीं किया जा सकता था, यह थी प्राचीन ऋषियों की यज्ञ के सम्बन्ध में गवेषणा। इस विज्ञान के युग में नतमस्तक होकर अब हम मिलकर सश्रद्ध हो कहें- नमः परम ऋषिभ्यो नमः परमऋषिभ्यः" ●

सामाजिक बुराइयाँ दूर करना आर्य समाज का मुख्य ध्येय

—हुकुम सिंह, खाद्य मंत्री

डी॰ए॰वी॰ कालेज बुढ़ाना (जनपद मुजफ्फर नगर) में आयोजित सार्वदेशिक आर्यवीरदल प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन करते हुए प्रदेश के खाद्य एवं रसदमन्त्री श्री हुकुम सिंह ने कहा कि आर्यसमाज एक ऐसी संस्था है जो किसी वर्गविशेष का प्रतिनिधित्व नहीं करती। सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण ही इसका लक्ष्य है। इसी संस्था ने सर्वप्रथम समाज में फैली हुई कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई थी और आज भी यह संस्था सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ रही है। आर्यवीरों को आर्यसमाज की इस परम्परा का अनुसरण करते हुए आने वाली पीढ़ी को देश का सुयोग्य नागरिक बनने में प्राणपण से जुट जाना चाहिए।

सभा की अध्यक्षता श्री सलेकचन्द्र प्रधान जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा ने की। उन्होंने मन्त्री जी का माल्यार्पण करके स्वागत किया। सभा को कई शासकीय अधिकारियों तथा आर्यसमाज के गण्यमान्य नेताओं ने सम्बोधित किया।

शुभ-विवाह

- चि0 विनोद कुमार पुत्र श्री- पन्नूलाल ग्राम गढ़वा जिला पलामू (बिहार) का शुभ विवाह वाराणसी नगर महापालिका के अभियन्ता श्री प्रेमचन्द्र गुप्त की सुपुत्री आयु0 मनीषा के साथ वाराणसी में दि0 25 मई 89 को सम्पन्न हुआ।

- चि0 अनिल कुमार पुत्र श्री- लालचन्द प0 डी0 ओ0 कृषि ग्रा0 मेवली (मिर्जापुर) का आयु0 कु0 प्रज्ञादेवी सुपुत्री श्री जिन्तूराम आर्य स0 अध्यापक ग्रा0 सारीपुर (मिर्जापुर) शुभ विवाह संसकार श्री सुदर्शन राय उपमंत्री आर्यसमाज मिर्जापुर ने सम्पन्न कराया।

- चि0 राजेन्द्र सिंह पुत्र श्री उदय शंकर सिंह ग्रा0 रेपुरी (मिर्जापुर) का आयु0 कु0 पुष्पासिंह पुत्री श्री कमलनयन-सिंह एडवोकेट ग्रा0 मगरहा (मिर्जापुर) का शुभ विवाह संस्कार आर्यसमाज मिर्जापुर के उपमंत्री श्री सुदर्शन राय ने सम्पन्न कराया।

शुद्धि

दि0 25·6·89 को आर्यसमाज दयानन्द भवन, नेपियर टाउन, जबलपुर में कु0 जेसमीन मधुबाला सिंह ने स्वेच्छा से ईसाई मत छोड़ वैदिक धर्म स्वीकार किया। शुद्धि संस्कार के बाद उसका नाम कु0 मधुबाला रखा गया तत्पश्चात् विवाह भी वैदिक पद्धति से उसी समय श्री आशुतोष श्रीवास्तव के साथ सम्पन्न हुआ।

इतनी परेशानी क्यों?

— सुरेश चन्द्र वेदालंकार
एम०ए०, एल०टी०
आर्यसमाज गोरखपुर।

(गतांक से आगे)

मानसिक तरद्दुद क्यों है। या तो लोगों से उसके निजी संबंध अच्छे नहीं हैं, या उसे अपने पड़ोसी से ईर्ष्या है, अथवा अपने अफसर से उसका मन खिन्न है, सम्भवतः उसे उसका घर सुखद प्रतीत नहीं होता, वस्तुतः वह जीवन से ऊब गया है। यही कारण है कि हमेशा थकान मालूम होती है। शरीर और मन एक दूसरे से इतने अधिक मिले हुए हैं कि किसी शब्द या विचार का असर मन पर पड़ने पर उसका प्रभाव मनुष्य के व्यक्तित्व और स्वास्थ्य पर अवश्य पड़ता है। यदि आप दिन-रात लगातार दिमागी जद्दोजहद में पड़े रहते हैं। तो आपको चैन नसीब न होगी।

एक दिन अपने पुराने मित्र को देखकर पूँछ बैठा, "अरे यार बहुत व्यस्त दीख रहे हो आज क्या बताऊँ भाई, बहुत खुश किस्मत हो तुम, उत्तर मिलता है। मेरी उत्सुकता बढ़ती है। कुछ कहो भी तो,। "क्या बताऊँ यह गृहस्थी जंजाल हो गई है मुझे। "तुम तो सबसे मुक्त हो गए हो। अधिक सन्तानें पैदा नहीं की। एक डाक्टर हो गई और एक इंजीनियर बन गई, बस मेरा तो यह हाल है दिन भर नून, तेल, लकड़ी की याद रह जाती है। अकेला आदमी कहाँ-कहाँ देखूँ। ढेर सारे बच्चे और कमाने वाला अकेला मैं। मै मुस्करा उठता हूँ, वे मेरी मुस्कराहट देखकर खीझ उठते हैं हँसों, खूब हँसों तुम, क्या समझों मेरी परेशानियाँ। वे और भी परेशान हो जाते हैं। मुझे हँसी आती है कि उनकी परेशानियों के लिए क्या करूँ।

मेरी धर्मपत्नी एक दिन पड़ोस में गईं। वहाँ दो या तीन परिवार एक छोटे से घर में रह रहे थे। उनके जाने पर सभी वहाँ आ गईं और अपनी गाथा गाते हुए अपने बच्चे की बीमारी का वर्णन किया तो उन्होंने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा "क्या कहा। आपका बच्चा आपको सोने नहीं देता और एक माह बीत गया। महिला बोली, रात को झूले में सोने की उसकी आदत है और झूला टूट गया है।" मेरी श्रीमती जी ने सहज भाव से कहा-"झूला ठीक करवा लीजिए। वे चिढ़ गईं और कहने लगीं, मैं क्या करूँ। मुन्ने के बाबू जी का फुर्सत मिले तब न। जब देखो उन्हें काम-काम बस काम। मेरी श्रीमती जी चुप हो गईं, कहती भी क्या?

अभी उनकी बात समाप्त भी नहीं हुई थी, कि दूसरी महिला ने अपनी कठिनाइयों का उल्लेख प्रारम्भ किया और बोली, "मेरी कठिनाइयों का अन्त नहीं। चार दिन से नौकरानी नहीं आ रही है। मैं मशीन थोड़ी ही हूँ। मायके में कभी गिलास भर कर पानी नहीं दिया और यहाँ मेरी जिन्दगी में बर्तन माँजना बदा है। फिर यही नहीं, पन्द्रह दिन से धोबिन नहीं आ रही है। मुझसे तो अब कुछ संभलता नहीं। मेरी जिन्दगी में भी थकान भर गई है। सच, बहन जी बहुत परेशान हूँ। मेरी श्रीमती जी इन सबका कुछ भी इलाज न समझकर चली गईं। परन्तु मैं ऐसे लोगों को बताना चाहता हूँ कि देखिये परेशान होने से काम नहीं चलेगा। जीवन में जैसी भी परेशानियाँ आएं, उन्हें हँस कर झेलिए। तभी तो जीवन में सरसता आ सकेगी। जीवन का आनन्द मिल सकेगा।

एक बार की बात है मैं दोपहर भर बड़ा परेशान रहा। मैंने अपने पुत्र के लिए एक डिबेट लिखी थी। दोपहर को स्कूल से आने के बाद जब डिबेट बच्चे को देने के लिए गया तो वह नहीं मिली। सब जगह देख लिया। अपनी पत्नी को बुरा भला कहा- बच्चों को थप्पड़ लगा दिए। चीजें उठा-उठा कर पटकना शुरू किया। अचानक नागरिक शास्त्र की पुस्तक पलटी तो वह लेख निकल गए। मैं सोचने लगा कि अजीब इस परेशानी का कारण तो मैं ही था। मुझे ध्यान आया कार्लाइल का। कार्लाइल अंग्रेजी, साहित्य का प्रसिद्ध लेखक है। फ्रांस की राज्य क्रान्ति पर उसने एक पुस्तक लिखी। खोज पूर्ण इस पुस्तक को देखने के लिए अपने मित्र को दी। मित्र उत्तरदायी था।

कई दिन बाद कार्लाइल मित्र के यहाँ गए। उस पुस्तक के विषय में पूछा-मित्र ने अभी तक उसे न पढ़ने के लिए क्षमा माँगी और अपने नौकर से उसे लाने को कहा, उसे वह पुस्तक न मिली, मेम साहब से भी पूछा गया। पर उन्हें भी कुछ पता न था। परन्तु हाल में यह पता चला कि नौकरानी ने उस पांडुलिपि को जमीन पर गिरा देखा और उसे रद्दी कागज समझकर चूल्हे की भेंट चढ़ा दिया। इस मित्र को शर्म और कार्लाइल को दुःख हुआ। पर, कार्लाइल मुस्कराते रहे और उन्होंने पिछले ज्ञान के आधार पर उसे दुबारा लिखा। तब मुझे क्या डिबेट के लिए परेशान होना चाहिए था।

वास्तव में परेशान न होना मन का खेल है। हमारा आनन्द बाहर की घटनाओं पर इतना निर्भर नहीं रहता, जितना खुद अपने ऊपर। हमारा मन एक सम्पूर्ण साम्राज्य है। उसमें चाहें तो हम खुश रह सकते हैं, नहीं तो सदा आँसू बहा सकते हैं। अगर हम पर कोई मुसीबत आ ही गई है तो, रोने, धोने या क्रोध करने या बरतन या सामान इधर-उधर फेंकने या बच्चों को पीटने या स्त्री को डाँटने से तो दूर नहीं हो सकती, बढ़ तो और बढ़ गी। अतः मन की इन परेशानियों को आप निकाल बाहर करें।

वास्तव में मनुष्य के मन में सोचने का ढंग विचित्र होता है। देखिए:-

एक व्यक्ति ने सुन्दर खिले गुलाब के महकते फूल की ओर ध्यान आकृष्ट किया। मेरे एक मित्र ने कहा "ऐ खुदा इन खुशनुमा गुलों में ये तीखे काँटे।" मेरे मित्र श्री रामधनी-सिंह जो एक कालेज में प्रवक्ता हैं उनके पुत्र श्री अमित प्रताप नारायण सिंह जो एक स्वस्थ्य और सशक्त हैं उनकी बात को बिना काटे बोल उठा। "प्रभु की सृष्टि निराली है। इन भद्दे और तीखे काँटों पर भी इतने सुगन्धित और सुन्दर फूल। प्रभु तुम धन्य हो।"

एक बार शहद की आधी भरी शीशी देखकर मेरे एक पड़ोसी ने नाक भौं सिकोड़ कर कहा- "अरे, आधी शीशी तो खाली है, मेरा पौत्र वैभव है तो छोटा, बोलता खूब है। चट से बोल उठा- "बाबा आधी शीशी तो शहद से भरी हुई है।" सोचिए, दोनों बातें एक हैं पर दोनों में एक निराशावादी है और दूसरी आशावादी। इस प्रकार हमारा दृष्टिकोण संसार को स्वर्ग या नर्क बना सकता है। यदि हम परेशानियों के चक्कर में रहेंगे तो समझ लीजिए कि दुनियाँ के बड़े से बड़े आनन्द में भी हमारी आँखों से आँसू ही टपकायेंगे।

स्वामी दयानन्द ने लिखा है। "इस संसार की सृष्टि परमेश्वर ने जीवात्मा के आनन्द के लिए की है। अतः परेशान मत होइए। समस्याओं को समझिए और उन्हें दूर करने का उपाय निकालिए। यदि किसी डाली में फूल है तो काँटे भी। जीवन के सुरभीले अंचल में दुःख के सभी अनुभवों को हँस-हँस कर बटोरते चलो।

आर्यसमाज श्रद्धानन्दनगर हरदोई का 14वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

हरदोई, 8,9,10 जून को आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया। जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा एवं श्रद्धानन्दनगर आर्यसमाज के मन्त्री सत्यवीर प्रकाश आर्य एडवोकेट द्वारा निर्मित एवं संस्थापित वेदमन्दिर। यज्ञ शाला में बृहद्यज्ञ द्वारा समारोह का प्रारम्भ हुआ जिसके ब्रह्मा थे श्री-शिवकुमार शास्त्री पूर्व महोपदेशक सभा। और एक विशाल शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से निकाली गई।

विश्वबन्धुत्व

श्री प्रियव्रत शास्त्री
साहित्य रत्न, एम० ए०,
सरधना (मेरठ)

संसार के पारम्परिक कष्टों, संघर्षों तथा विवादों की समाप्ति हो जाये, इसलिए पूर्वज मुनियों, ऋषियों, महर्षियों ने हम सबको "वसुधैव कुटुम्बकम्" का आदर्श सुझाया एवं समझाया था। दूसरा आदर्श हमारे सामने था "कृण्वन्तो-विश्वमार्य्यम्" इन दोनों आदर्शों को ऋग्वेद का संगठन सूक्त जिसका पाठ हम रविवारीय सत्संग के पश्चात् करते हैं।

इस संगठन सूक्त के अतिरिक्त भी वेद ने हमें "वसुधैव कुटुम्बकम्" के अन्य मार्गों के अपनाने का भी उपदेशात्मक आदेश दिया। जैसे संसार में सब को मित्र की दृष्टि से देखो। वेद का संदेश है:-

> ओउम् दृते हि द्र मा मित्रस्य मा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
> मित्रस्या ऽहं सर्वाणि भूतानि समीक्ष्ये मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।।

हे सर्व दुःख निवारक परमात्मन्। मुझे सन्मार्ग में बढ़ा, तू सर्वमित्र आदर पुरुष को सर्व सुहृद दृष्टि से मुझे सबका मित्र बना जिससे सब मुझे मित्र की दृष्टि से देखें और मैं भी सबको मित्र की दृष्टि से देखूं। आपकी कृपा से हम सभी परस्पर एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।

हममें परस्पर किसी प्रकार की कटुता न रहे, प्रेम और माधुर्य ही बढ़े, इसके लिए वेद का सन्देश है:-

> ओउम् मधुमन्मे निष्क्रमणं मधुमन्मे परायणम्।
> वाचा वदामि मधुमत् भूयासं मधुसन्दृशः ।।

मेरा आना जाना माधुर्य युक्त हो, मैं सदा मधुर वाणी ही बोलूं,

मेरा सारा कार्य मिठास से भरा हो। ऐसी भावना यदि सबकी हो जाये तो संसार से कटुता, विद्वेष सब ही मिट जायें।

"कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्" संसार को आर्य बनाओ। श्रेष्ठ सदाचारी पुरुष आर्य होते हैं। यदि वास्तव में सभी आर्य हो जायें तो संसार से राग, द्वेष, अविद्या, अस्मिता, तथा अभिनिवेश इन कष्टों का निवारण हो जाये। इन कष्टों के निवारण से सारा संसार स्वर्गमय हो जाये। पारस्परिक मनुष्यों, जातियों, राष्ट्रों का सब मतभेद मिट जावे। संसार में किसी को भय न रहे। सभी सुकार्यों में संलग्न हों, दुष्कर्म का कहीं नाम तक न हो। आद्य स्वामी शंकराचार्य ने एक स्थान पर लिखा है कि मनुष्य के बड़े शत्रु और मित्र कौन हैं। स्वामी जी लिखते है कि:-

> के शत्रवः सन्ति। विजेन्द्रियाणि,
> मित्राणि तान्येव जितेन्द्रियाणि

मित्र कौन है अपनी इन्द्रियाँ ही मित्र हैं, यदि उनको वश में कर लिया, जाये तो ये ही सबसे बड़ी मित्र हैं। ज्ञानेन्द्रियों के वश में करने से कर्मेन्द्रियाँ स्वयं वश में हो जाती है। इन दश इन्द्रियों को तब वश में किया जा सकता है तब मन वश में हो जाये। क्योंकि लिखा है।

> "मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः"

बन्धन और मुक्ति कारण मन ही है यदि मन वश में हो जाये तो सर्वत्र एकता का साम्राज्य हो, आतंकवाद, वैर विरोध सब समाप्त हो जायें और सारी मानव जाती रंगभेद प्रान्त भेद जाति भेद को भूलकर परस्पर बन्धु हो जायें, ईश्वर से सभी नित्य प्रार्थना करें कि-

> सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
> सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्।।

धर्म के चार मुख्य साधन बताये गये हैं:-

> वेद:स्मृति:सदाचार:स्वस्यच प्रियमात्मनः।
> एतच्चतुर्विधप्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम् ।।

इन चारों में स्वस्य च प्रियात्मनः अर्थात जो अपने आत्मा को सुन्दर सुरुचिपूर्ण कार्य में लगाता हो वही अन्य के प्रति भी करना चाहिए। अपने आत्मा के अनुकूल मानव जो अपने लिए चाहता है उसके विपरीत कार्य दूसरों के लिए न करें। यदि मानव भावना इस प्रकार की हो जाये तो संसार में सुख ही सुख है। और मानव दूसरे मानव के लिए "सर्वे भवन्तु" आदि प्रतिक्षण चाहने लगे, यही विश्वबन्धुता है। विश्वबन्धुत्व के होने पर संसार में दुःख नहीं रहेगा। प्रत्येक एक दूसरे का हितैषी, शुभचिन्तक तथा सुहृद हो।

भगवान कृपा करें कि परिवार, समाज, देश तथा समस्त संसार के मनुष्यों के मन में विश्वबन्धुत्व की भावना जागृत हो। संसार का दुःख दूर हो, सबका सब विधि कल्याण हो। ●

जब तक होंगे हम एक नहीं

जब तक हम होंगे एक नहीं,
क्या देष तिमिर मिटपायेगा?
प्राचीरों के उठ जाने पर,
घर एक नहीं है रहपाता।
समरसता का सुन्दर स्वप्ना,
बस-बिखर-बिखर कर रह जाता।
जब तक होंगे समभाव नहीं,
वैषम्य कभी मिट पायेगा?

उपवन की प्रिय यह तरुणाई,
बलिदान रंक से है पोषित।
अविवेकी बन सब भूल गये,
कर रहे निरन्तर अब शोषित।
विस्मृतियों की इस तन्द्रा में,
जागृति विहान क्या आयेगा?

जो अपने स्वजनों का घातक,
कायरतम और जीवन्मृत वह।
सरदार नहीं, वह दानव है,
विषपान किया है अमृत कह,
खालसा भाव की विस्मृति से
क्या निर्मम जग मुस्कायेगा?

खोदिया नियन्त्रण जब से है,
कठपुतली बनकर हैं नर्तित,
मारीचि भ्रमित करता जाता,
हम निज के वैभव से वंचित,
रिपु को पहचान न पायेंगे,
आतंकवाद चहुँ छायेगा?

वैविध्य भाव है सुन्दरता,
पर सूत्र एक बांधा करता।
हैं एक मालिका के मोती,
रंगों से वसन रुचिर लगता।
क्या शिथिल तार की वीणा से
प्रिय राग निकल कर आयेगा?

यह विषम धार कैसे बदले,
चर्चायें इसकी हैं चलतीं।
हम बदलेंगे, युग बदलेगा,
अर्चायें कभी न यों मिलतीं।
जल मन्थन को करने वाला,
नवनीत कभी क्या पायेगा?---

● डा0 {श्रीमती} महाश्वेता चतुर्वेदी
बरेली- 243005

वेद प्रचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा प्रयाग के तत्वावधान में जनपद इलाहाबाद की आर्यसमाज गौजा, बबनकुइयाँ {सहसोंबाजार} मकनपुर आदि में यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों का आयोजन किया गया। जनता प्रभावित हुई।

– श्री महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ नैनीताल का योग शिविर महात्मा दिव्यानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

आर्य युवको आगे बढ़ो

- लक्ष्मी नारायण शास्त्री,
साहित्य रत्न, आर्यसमाज
लोकहवा, गोण्डा।

युवको! तुम आर्य हो, तुम्हारी नसों में राणाप्रताप, छत्रपति शिवाजी, बन्दावैरागी, बुद्ध, शंकर, दयानन्द का रक्त उफन रहा है। तुम्हारे छोटे बच्चों ने सिंहनी के बच्चों के साथ खेले ही नहीं अपितु जब सिंहनी गुर्राई तब उसके भी दाँत तोड़ने को आगे बढ़ा जिसका नाम भरत था। युवको! तुम्हीं में से राम-कृष्ण जैसे यहाँ पुरुष उत्पन्न हुए थे जिनका नाम लेकर आज प्रत्येक हिन्दुओं की धमनियों में वीरत्व का संचार उत्पन्न होता है। ब्रह्मचारी हनुमान जैसा कुशल सेनापति तुम्हीं में से हुआ था जिसने विश्व के समस्त नारी को मातृ की दृष्टि से देखा था। विश्व के समस्त प्राणी चरित्र की शिक्षा ग्रहण करने इसी पावन भूमि में आते थे क्रूर, आततायी जनों ने जब इस पावन भूमि को रौंदने का प्रयास किया तो चन्द्रगुप्त जैसा नवयुवक चाणक्य के चरणों में बैठकर उनसे आशीर्वाद लेकर सिकन्दर को घायल कर तथा सिल्यूकस को परास्त कर उसकी पुत्री (हेलन) अलका को पत्नी बनाकर अन्तर्राष्ट्रीय आदर्श विवाह का पाठ पढ़ाया। यहाँ के युवक ही नहीं अपितु युवतियाँ भी दुर्गा, किरन, झाँसी की रानी, लक्ष्मीबाई तथा पद्मा ने अपने सुकोमल सौन्दर्य शरीर को इस पावन भूमि एवं वैदिक धर्म हेतु बलिदान कर दिया। राम प्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर, भगत सिंह, लाहिड़ी अशफाक आदि युवकों को तुम भूल गये। आज विलासी बनकर युवक तू चौराहों तथा कालिजों के प्रांगण में पुत्रियों तथा युवतियों के पीछे सीटी बजाता है। आज प्रत्येक होटलों, चौराहों, पनवाड़ियों तथा लड़कों, लड़कियों के कमरे चलचित्र तथा कलाकारों से सजे हुए हैं। माँ-बहिनों के नग्नचित्र आज सब जगह लगे हुए हैं। आज टी०वी०, वी०डी०ओ० में वासनात्मक प्रेम की कथा तथा नग्नचित्र दिखाये जा रहे हैं। हमारे भाई-बहन, पिता-माता, सब बैठकर बड़े प्रेम से देखते हैं।

मैं एक संभ्रान्त घर में वेद कथा करने गया वह दिन इतवार का था और प्रातः यज्ञ होने वाला था उस घर के स्वामी ने कहा कि शास्त्री जी दोपहर हो जावे और चलिये प्रातः टी०वी० पर महाभारत देख लीजिये। मैंने कहा कि मैं तथा टी०वी०, और मैं अपना बिसतर बाँध कर नौ दो ग्यारह हुआ। युवको! आज भारत भूमि के चारों ओर शत्रु युद्ध की तैयारी कर रहे हैं और अन्दर आज भारत में पंजाब के अन्दर 5-6 साल से सिक्ख दरिन्दे खून की होली हिन्दुओं को मार कर खेल रहे हैं। हिन्दुओं के न जाने कितने बच्चे, स्त्रियाँ भून दी गई। रोज हिन्दुओं का वहाँ पर संहार हो रहा है। इधर उत्तर प्रदेश में राम जन्म भूमि तथा बाबरी-मस्जिद अपना उग्र रूप धारण कर रही है। दैनिक पत्रों द्वारा ज्ञात हुआ है कि पंडित कमलापति त्रिपाठी काशी के कुछ पंडितों को बाबरी मस्जिद मुसलमानों को देने हेतु अयोध्या में सत्याग्रह करेंगे। अब्दुल्ला बुखारी भी मुसलमानों को लेकर अयोध्या आवेंगे। इधर हिन्दू विश्व परिषद, बजरंगदल, मुसलमानों के नेता नकवी राममन्दिर की नींव रखेंगे।

इसी मध्य लोक सभा का चुनाव भी होगा। अब युवको तुम्हें सोचना है और आगे बढ़कर इन राजनीतिज्ञों के मुख को बन्द करना है। इन नेताओं से कुछ नहीं होगा, धर्मान्तरण इस समय प्रचुर मात्रा में हो रहा है। आर्ययुवकों उठो, जागो और क्रान्ति की जो अग्नि क्रान्ति देवता ऋषि दयानन्द ने जलाई थी को जलाओ। आर्य युवकों आज पावन मातृभूमि एवं ऋषि, मुनियों तथा राम-कृष्ण की आत्मा तुमसे बहुत सी आशायें लगाये हुए निहार रही है। युवकों आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, भारत माँ के हितार्थ आगे बढ़ो।

आप ज्योति रस अमृत ब्रह्म

उभय कालीन आहुतियाँ-मन्त्र

ओउम् आपो ज्योति रसो ऽमृतं
ब्रह्म भूर्भुवः स्वरो स्वाहा।

हे नाथ आपने रचना की, अब इसे आप स्वीकार करो।
इस यज्ञ-यज्ञमय जीवन की, यह आहुति अंगीकार करो।।

जल आप शान्ति दायक व्यापक
प्रभु ज्योति जगत के हो प्रकाश
आनन्द रसी सुख रस देते
हो अविनाशी प्रिय अमृत आश।

हो सबसे ब्रह्म महान् आप, हम सबका अब उत्थान करो।
इस यज्ञ-यज्ञमय जीवन की, यह आहुति अंगीकार करो।।

प्राणों से प्यारे रक्षक हो
दुःख हर्ता प्रभु संरक्षक हो।
आनन्द रूप सुख देते हो।
हे ओउम्-आप ही रक्षक हो।

जो सुख से कह कर स्वाहा दो, यह आहुति निज अधिकार करो।
इस यज्ञ-यज्ञमय जीवन की, यह आहुति अंगीकार करो।।

आदेश ओउम् का अपनाया
तब हमने यह यज्ञ रचाया।
प्रभु अपने साथ जगत स्वामी
इसमें आ उपकार समाया।

हे आप ज्योति रस अमृत ब्रह्म, आशीष उदय उद्धार करो।
इस यज्ञ-यज्ञमय जीवन की, यह आहुति अंगीकार करो।।

—देव नारायण भारद्वाज
आज़मगढ़

"गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न"

दि० 9-7-89 को स्व० मास्टर सुन्दरलाल-जी की जन्मभूमि फजलपुर सुन्दर नगर में मास्टर सुन्दर लालजी को श्रद्धांजलि देने तथा मंत्री श्री पं० इन्द्रराजजी के कार्य के वार्षिक विवरण के पश्चात आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला मेरठ का त्रैवार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रकार से सम्पन्न हुआ-

1- श्री माधव सिंह जी-प्रधान
2- श्रीमती शकुन्तला गोयल जी-उपप्रधान
3- श्री रामनिवास जी विद्यार्थी--- "
4- श्री कान्ति प्रसादजी मवाना-- "
5- श्री धर्मपाल सिंह जी बड़ावद --"
6- श्री फूल सिंह आर्य -उपप्रधान
7- श्री इन्द्रराज जी- मंत्री
8- श्री ब्रह्म सिंह आर्य- उपमंत्री
9- श्री अशोक कुमार जी फजलपुर--"
10- श्री सौदान सिंह जी खानपुर --"
11- श्रीमती सरोज जी आर्या--"
12- श्री कान्ति प्रसाद जी किठोर --"
13- श्री ओमप्रकाश जौहरी-- कोषाध्यक्ष
14- श्री नरेन्द्र प्रकाशजी- सहकोषाध्यक्ष
15- श्री जगदीश नारायण सिंहजी ----- आडीटर।

नवीन आर्यसमाज की स्थापना

दिनांक- 25.6.89 को ग्राम कोरगंला में आर्य समाज लण्डवा की ओर से प्रचार किया गया, वहीं आर्यसमाज की स्थापना भी की गई, जिसमें प्रधान श्री भगवान मांगीलाल गूजर कोषाध्यक्ष नत्थूलाल हीरा जी गूजर, मंत्री ओंकार-पटेल।

जोली ग्राण्ट में आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण

देहरादून, इस जनपद के ग्राम जोली ग्राण्ट में आर्यसमाज का संगठन गत तीन दशाब्दियों से नामशेष हो गया था। अब जिला आर्य उपप्रतिनिधि-सभा के प्रयास तथा ग्राम के उत्साही आर्यजनों के उद्योग से पुनः संगठन में स्फूर्ति आने लगी है।

आर्य नेता मालदार गुलाबसिंह जी ने वहाँ पर आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण करा दिया है।

भवन निर्माण हेतु दानदाताओं से अपील

आर्यसमाज के भामाशाहों व आर्य संस्थाओं से विनम्र निवेदन है कि आर्यसमाज सुभाषनगर का अपना कोई भवन नहीं है जिससे वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में कठिनाई होती है यह स्थान विधर्मियों का गढ़ है, यह कार्य बिना आप लोगों के सहयोग से सम्भव नहीं है। आशा है वेदप्रचार सप्ताह के अवसर पर प्रचुर धनराशि मंत्री आर्यसमाज सुभाषनगर फैजाबाद के पते से बैंक, बैंक ड्राफ्ट व मनिआर्डर द्वारा भेजकर पुण्य के भागी बनेंगे।

मनमोहन तिवारी,
मंत्री।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०
5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ-1



पानी का जानवर घड़ियाल

—श्री उषा नाथ

मगर के समान पतली लम्बी थुथन वाला घड़ियाल सरीसृप वर्ग का सदस्य है। यह सिन्धु गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों में पाया जाता है। यह भारत का निवासी है। दुनियाँ में और कहीं नहीं पाया जाता। परिचय कराते हैं।

यद्यपि मगर, घड़ियाल से बहुत मिलता जुलता है तथा मलाया, बोर्नियो व सुमात्रा की नदियों और दलदली भूमि में पाया जाता है। इसकी थुथन घड़ियाल की थुथन की अपेक्षा छोटी होती है। इसे गलती से घड़ियाल कह दिया जाता है और "मगर-गण" परिवार का सदस्य बता दिया जाता है। वास्तविकता तो यह है कि घड़ियाल का स्वयं का परिवार होता है।

युवा घड़ियाल की थुथन पर घड़े (बर्तन) के समान उपास्थियुक्त पिंड होता है। इसी के कारण इसका नाम घड़ियाल पड़ा। घड़ियाल की औसतन लम्बाई 2·5 मीटर के करीब होती है किन्तु 6·75 मीटर लम्बाई वाले घड़ियाल भी पाए गए हैं। युवा घड़ियाल का रंग काला जैतूनी होता है और बच्चा धूसर-भूरा रंग लिए होता है।

घड़ियाल की आँखें उसके सिर पर होती हैं और नासिका रंध्र थुथन पर होते हैं। जबड़े छोटे, तीखे और करीब-करीब एक जैसे दाँतों से सुसज्जित होते हैं। गर्दन का ऊपरी सतह और पिछला भाग प्लेटनुमा हड्डियों का कवच का लिए होता है। मगर की टाँगों की अपेक्षा इसकी टाँगें लम्बी होती है। और पंजे, विशेषकर अगले पैरों के जाली वाले होते हैं। नर के स्थाई नासिका रन्ध्रों को छोड़कर नर और मादा में बाहर की ओर हल्का सा अन्तर पाया जाता है।

मगर के विपरीत घड़ियाल पानी में अधिकतर रहता है। यह पानी की सतह के नीचे रहने की इसकी आदत होती हैं किन्तु आँखें और नासिका रंध्र पानी के बाहर रखता है। किसी प्रकार के खतरे का आभास होते ही आँखों को पानी के अन्दर कर लेता है और केवल नासिका रंध्र ही पानी के बाहर होते हैं। और यदि खतरा फिर भी बना रहता है तो थुथन को भी पानी के अन्दर कर लेता है। और फिर जहाँ तक तैरने की बात है इसके मुकाबले का तैराक मिलना मुश्किल है।

घड़ियाल मनुष्यों पर उस समय तक हमला नहीं करता जब तक उसे मनुष्य से किसी प्रकार का खतरा न हो। घड़ियाल के पेट में कभी-कभी आभूषण जैसे कि कंगन आदि भी मिल जाते हैं। यह सामान्य तौर गंगा नदी में फेंके गए उन मानव शवों से होते हैं जिन पर से गहने नहीं उतारे जाते।

मगर के समान घड़ियाल के पेट में कुछ मात्रा में पत्थर भी पाये जाते हैं जो खाने के साथ इनके पेट में पहुँच जाते हैं। पाँच मीटर लम्बे एक घड़ियाल के पेट में 4·5 किलो पत्थर मिलने का भी उल्लेख है। इनमें सबसे बडा पत्थर 230 ग्राम का था। घड़ियाल को गहरे पानी में तैरते वक्त और पाचन क्रिया के समय ये पत्थर सहयोग करते हैं।

घड़ियाल के भोजन में सभी प्रकार की छोटी मछलियाँ हैं जिन्हें वह झपट्टा मारकर जबड़े में कर लेता है। मछली को खाते वक्त यह सबसे पहले उसका सिर निगलता है। इस काम में थुथन के पतलेपन का बड़ा योगदान होताहै जो कम से कम जल प्रतिरोधकता के साथ इस काम को शीघ्रता के साथ पूरा करती है। विलक्षण थुथन के जरिए घड़ियाल बड़े जानवारों से बचाव का प्रयास भी करता है। और कभी इत्तफाक से बड़ी मछली पकड़ने में आ जाती है तो घड़ियाल इसका सन्तुलन बनाए रखने के लिए पहले उसे उथले पानी में घुमाता है। फिर उसका सिर ऊपर उठाता है और एक शक्ति-शाली झटका देता है जिससे मछली छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट जाती है।

ठंड का पूरा मौसम घड़ियाल का प्रजनन काल का होता है और प्रजनन प्रक्रिया पानी में ही होती है। इनके घरोंदे आमतौर पर बलुआ क्षेत्र में लगभग 30 से 40 सें0मी0 गहरे और 20 सें0मी0 चौड़े होते हैं। मादा एक मर्तबा में 30 से 40 अण्डे देती है। जो गुच्छे में होते हैं। अण्डों का रंग सफेद होता है और ये 55 से 60 मि0मी0 की गोलाई लिए होते हैं। ये दो सतहों में नीचे रखे होते हैं और प्रत्येक सतह बालू से ढकी होती है। जब बच्चे सेने की प्रक्रिया पूरी हो जाती है तो गुरगुराहट भरी आवाज होने लगती है। इसके बच्चों को चूहे, सुअर, भेड़िये और गोह के द्वारा खा लिया जाता है। बच्चों को शिकारी पक्षियों जैसे कि उकाब, चील आदि तथा पानी में कछुओं और मछलियों आदि से हमेशा खतरा बना रहता है। घड़ियाल 13 से 14 वर्ष की आयु में परिपक्व हो जाते हैं। वैसे इसकी आयु 20 से 25 वर्ष तक होती है।

नदियों के दुरुपयोग और बढ़ते प्रदूषण के कारण इसके आवास क्षेत्र नष्ट हो रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप आज घड़ियाल दुर्लभ और संकटग्रस्त प्रजाति की गिनती में आ गया है। कुछ भी हो अपने वंश के इस विनाश पर घड़ियाल तो आँसू नहीं बहा सकता किन्तु यह प्रजाति बची रहे इस हेतु प्रयास किया जाना आवश्यक है।

— सी.ई.ई.-एन.एफ.एस

स्व.चन्द्रभानु गुप्त की पुण्य जयन्ती

प्रदेश के लौहपुरुष भू0पू0 मुख्यमन्त्री-श्री चन्द्रभानु गुप्त की 88वीं पुण्यजयन्ती दिनांक- 14 जुलाई को लखनऊ में बड़ी सादगी से भरे वातावरण में सम्पन्न हुई। प्रातः 7 बजे मोती महल प्रांगण में आर्यमित्र के सम्पादक आचार्य पं0-इन्द्रदेव पाठक के पौरोहित्य में यज्ञ प्रवचन आदि के कार्यक्रम सम्पन्न हुए। बाल विद्यामन्दिर की कन्याओं ने श्रद्धेय गुप्त जी की स्मृति में भावभीनी गीतांजलियाँ प्रस्तुत कीं। सायंकाल रवीन्द्रालय में आयोजित श्रद्धांजलि समारोह में देश। प्रदेश के अनेकों गण्यमान्य नेताओं ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें श्रद्धासहित स्मरण किया। गुप्त जी के भतीजे डा0 विनयकुमार ने आगन्तुकों का स्वागत करते हुए उनके बताए हुए पथ पर चलते रहने की प्रतिज्ञा को दोहराया। आर्यमित्र परिवार के शतशत श्रद्धासुमन।

- संवाददाता।

आयुष्मती कमला सिंह का विवाह

प्रदेश के भू0पू0 मुख्यमंत्री एवं संचारमन्त्री (केन्द्रीय सरकार) स्व0श्री वीरबहादुर-सिंह की आयुष्मती पुत्री कमला सिंह का शुभविवाह चि0 सत्येन्द्र सिंह राना के साथ लखनऊ में दिनांक 12 जुलाई 1989 को बड़ी सादगी से भरे वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रदेश के लगभग सभी छोटे बड़े नेता नवदम्पति को आशीर्वाद देने हेतु उपस्थित थे। पिता की भूमिका प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने पूर्ण की। स्व0 वीरबहादुर सिंह की अनुपस्थिति से जहाँ सबकी आँखें नम थीं वहीं इस शुभ अवसर पर उनकी आँखों से हर्षातिरेक के आँसू भी छलक रहे थे। वर कन्या को आशीर्वाद देने हेतु जनमानस उमड़ा हुआ था। प्रधानमंत्री के प्रतिनिधि के रूप में श्रीमती शीला दीक्षित प्रदेशीय-मन्त्रिपरिषद के लगभग सभी सदस्य एवं अनेकों गण्यमान्य नर नारी उपस्थित थे।

प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री मनमोहन तिवारी ने चि0 दम्पति को अपना मंगलमय आशीर्वाद देते हुए उनके सुखी गृहस्थ जीवन की प्रभु से कामना की है।

- संवाददाता

वेद प्रचार

गाजीपुर में वेद प्रचार, योग शिविर लगाया गया जिसमें प्रतिदिन 8 से 10 बजे रात वेदोपदेश होते रहे, कार्यक्रम प्रभावशाली रहा श्री महावीरप्रसाद धनुर्धर द्वारा धनुर्विद्या का प्रदर्शन होता रहा।

साहसिक धर्मरक्षा अभियान

"राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन उ0प्र0 के महामंत्री श्री जयन्त कुमार पाण्डेय ने आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अध्यक्ष पंडित इन्द्रराज जी के निर्देशानुसार दिनांक- 12-7-89 को मुरादाबाद के धर्मान्तरण से प्रभावित क्षेत्रों में ईसाई मिशनों के षडयन्त्रों के विरुद्ध खुला प्रतिरोध अभियान का श्री गणेश किया। इसका प्रारम्भ उन्होंने धर्मान्तरण से सर्वाधिक प्रभावित ग्राम हटहट से किया। श्री जयन्त कुमार ने ग्रामवासियों से जनसम्पर्क किया तथा पूरे गांव के अधिकांश परिवारों से सम्पर्क किया तथा वार्तालाप की। श्री जयन्त कुमार जी की सुरक्षा हेतु पुलिस तथा पी0ए0सी0 का व्यापक प्रबन्ध प्रशासन की तरफ से किया गया था। इस ग्राम में केवल 3 हिन्दू परिवार बचे हैं जिनको ईसाई बनाने हेतु ईसाई मिशनों के द्वारा अनेक प्रकार के प्रलोभन दिये जा रहे हैं। श्री जयन्त कुमार जी ने स्वयं उन परिवारों से मिलकर उन्हें साहस तथा सम्बल प्रदान किया और उन्हें उनकी धर्म रक्षा हेतु हर प्रकार की सहायता का आश्वासन दिया।

दिनांक- 17-7-89 को श्री- जयन्त कुमार जी सभा के महोपदेशक डा0 विजय पाल जी {अलीगढ़} भजनोपदेशक श्री मनवीर जी, श्री तेजपाल जी तथा श्री कैलाश चन्द्र आर्य {सभी मेरठ} के साथ प्रातः हटहट ग्राम पहुँचे तथा हिन्दु परिवारों के बीच हवन तथा भजनोपदेश और प्रवचन का कार्यक्रम किया। इस हवन तथा प्रवचन में बड़ी संख्या में मुसलमान तथा ईसाई परिवार भी उपस्थित थे।

श्री जयन्त कुमार जी ने अपने प्रवचन में खुले रूप में धर्मान्तरण तथा ईसाई मिशनों की कटुआलोचना की। उन्होंने कहा "जर, जोरू और जमीन का लालच देकर हमारे ही भाईयों को ईसाई बनाया जा रहा है। जिससे हमारे राष्ट्र की एकता, अखण्डता तथा सामाजिक शान्ति को खतरा पैदा हो गया है। उन्होंने ईसाई मिशनों के राष्ट्र तथा संस्कृति विरोधी कुचक्रों का पर्दाफाश किया तथा घोषणा की कि ईसाई मिशनों के नापाक इरादों को किसी भी कीमत पर कामयाब नहीं होने दिया जायेगा। उन्होंने कहा जब हरिजन पूर्णतयाः उपेक्षित और अस्पृश्य थे तो भी उन्होंने धर्म परिवर्तन नहीं किया। बल्कि विदेशियों, विधर्मीयों का डट कर मुकाबला किया। अब जबकि सवर्ण जातियां भी अपनी भूलों को पहचान कर उदारता का दृष्टिकोण अपना रही हैं तथा अस्पृश्यता क्रमशः समाप्ति की तरफ अग्रसर है, हमारे बाल्मीकि तथा हरिजन भाईयों द्वारा धर्म परिवर्तन कर विधर्मीयों तथा देशद्रोहियों का साथ देना दुःखद तथा खेदजनक है। उन्होंने सभी भाईयों {ईसाई बने लोगों} का आवाहन किया कि वे वापिस आकर {शुद्ध होकर} अपने राष्ट्र, संस्कृति तथा मूल धर्म की रक्षा करें। श्री जयन्त कुमार के बेबाक, ओजस्वी तथा मार्मिक प्रवचन का व्यापक प्रभाव देखा गया। इसके दौरान वहाँ भारी संख्या में पुलिस तथा पी0ए0सी0 तैनात थी।

श्री जयन्त कुमार जी के इस अभियान से ईसाई मिशनों में खलबली मची हुई है। जयन्त कुमार जी ने सभी आर्य समाजों, धार्मिक संगठनों तथा संस्थाओं से अपील की है कि वे इस धर्म रक्षा अभियान में एकजुट होकर सक्रिय सहयोग करें।

- संवाददाता।

छुआछूत विरोधी यज्ञ

आर्यसमाज मेरठ शहर की ओर से 31 जुलाई 89 को सायं 5 बजे छुआछूत विरोधी यज्ञ श्री राघो प्रसाद एवं श्री-महेश प्रताप जी बाल्मीकि के निवास स्थान पर बनी सराय रलिसाढी गेट मेरठ शहर में होगा।

कृपया अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर धर्म रक्षा हेतु अपना अमूल्य समय देने की कृपा करें।

इन्द्रराज
मंत्री।

आर्यसमाज ग्राम चन्दपुरवा बुर्जुग पास भीवा सुमेरपुर जि0 हमीरपुर का उत्सव ता0 11,12,13 मई को सम्पन्न हुआ प्रातः प्रतिदिन हवन व सायंकाल भजन व उपदेश होते रहे रविवार को साप्ताहिक सत् संग तथा हवन हुआ।

शोक समाचार

बहादुरगढ़ी{अलीगढ़} के श्री पं0 अयोध्या-प्रसाद बेधड़क आर्योपदेशक के सुपुत्र 21 वर्षीय श्री देवेन्द्र कुमार आर्य की मोटर साइकिल ट्रक दुर्घटना में 8 अप्रैल 89 को आकस्मिक मृत्यु हो गई। यह बड़ा होनहार व कर्मठ नवयुवक था। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति व शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

- सभामंत्री।

- मीरजापुर में 28 जून 89 को स्व0श्री छैलबिहारी श्रीवास्तव के निधन का शान्ति यज्ञ श्री सूर्यदेव शर्मा ने उनके निवास पर सम्पन्न कराया।

- श्री बाबू अम्बिका सिंह ग्रा0जयमलपुर {फैजाबाद} के रहने वाले कर्मठ आर्य थे का निधन 2 मास पूर्व हुआ था, परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोकसंतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

- आर्यसमाज सदर मेरठ के पूर्व अधिकारी एवं आर्य कन्या पाठशाला सदर के भूतपूर्व कोषाध्यक्ष पं0 हरद्वारीलाल-जी जागीरदार की मृत्यु 90 वर्ष की आयु में 9 मई को देहली में हो गई परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें। -शकुन्तला शर्मा, देहरादून।

श्री हंस जी के स्वास्थ्य में सुधार

सार्वदेशिक आर्यवीरदल के प्रधान संचालक श्री बालदिवाकर जी हंस गत 6 जून को दिल्ली में बसों की चपेट में दुर्घटनाग्रस्त हो गए थे। जिसमें उनकी पसलियों की कुछ हड्डियां भी टूट गई थीं। वह अपने निवास 200, आर्यनगर, गाजियाबाद पहुँचा दिए गए हैं। जहां उनका इलाज पूरी सावधानी से हो रहा है। सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराजजी व सभामंत्री श्री पं0 मनमोहन तिवारी जी ने उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की है।

कु॰ शुभ्रा आई॰ए॰एस॰ का अभिनन्दन

दि0 27-7-89 को आर्य धर्मशाला लालकुर्ती मेरठ कैण्ट में प्रसिद्ध आर्य नेत्री श्रीमती सावित्री जी रस्तौगी की पौत्री कु0 शुभ्रा सुपुत्री श्री महेन्द्र प्रकाशजी रस्तौगी के भारतीय प्रशासनिक सेवा में उत्तीर्ण होने पर आर्यसमाज लालकुर्ती मेरठ कैण्ट की ओर से हार्दिक स्वागत किया गया। इस अवसर पर यज्ञोपरान्त श्री पं0 इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने कु0 शुभ्रा को आशीर्वाद देते हुए उनके बाबा श्री स्व0-विद्यासागर जी की व्यवस्था सम्बन्धी कुशलता का विस्तार से वर्णन करते हुए सन् 1973 की शताब्दी में उनकी हजारों व्यक्तियों को भोजन करवाने की बड़ी प्रशंसा की। सभा प्रधान जी ने कहा कि परिवार के वैदिक संस्कारों के ही परिणाम स्वरूप बेटी शुभ्रा ने भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में उत्तीर्ण होकर मेरठ का मस्तक ऊँचा किया है। एवं आर्यसमाज के गौरव को बढ़ाया है। श्री सभा प्रधान जी ने कु0 शुभ्रा के उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए प्रान्तीय सभा की ओर से हार्दिक स्वागत किया। केन्द्रीय आर्य समिति के प्रधान श्री मानसिंह जी वर्मा ने कु0 शुभ्रा को आशीर्वाद देते हुए उन्हें यज्ञीय भावना इदन्नमम" की भावना से कार्य करने की प्रेरणा की। श्री केशवचन्द्र जी प्रधान आर्यसमाज लालकुर्ती मेरठ कैण्ट ने भी कु0 शुभ्रा का अभिनन्दन पुष्प एवं पुस्तक भेंट कर के किया तथा उनकी भावी सेवाओं के प्रति अपना हार्दिक आशीर्वाद व्यक्त किया। श्री देव प्रकाश जी मन्त्री ने सबका धन्यवाद किया। कार्यक्रम के पश्चात् आर्यसमाज लालकुर्ती की ओर से एक भव्य जलपान भी दिया गया।

- संवाददाता।

आर्यसमाज रानीमण्डी अतरसुइया, इलाहाबाद

प्रधान - श्री प्रेमनाथ किलम
मंत्री - श्री कुँवर शेखर कुमार एडवोकेट
कोषा0 - श्री आर0डी0 सिंह

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जौनपुर

प्रधान - मास्टर रजईराम आर्य
मंत्री - मास्टर रमाशंकर आर्य
कोषा0 - श्री सन्त प्रसाद आर्य

वेदप्रचार सप्ताह

श्रावण शुक्ल 15 गुरुवार से भाद्रपद-कृष्ण 8 गुरुवार 17 अगस्त से 24 अगस्त 1989 तक

श्रावणी पर्व, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, बलिदान-स्मृति एवं स्वाधीनता- दिवस समारोह पूर्वक मनाकर वैदिक धर्म का सन्देश जन-जन तक पहुँचाइये

इस वर्ष "वेद-प्रचार सप्ताह" दिनांक 17 अगस्त से 24 अगस्त 1989 तक गुरुवार से गुरुवार तक मनाया जावेगा। सप्ताह का कार्यक्रम निम्न प्रकार है-

- आर्यसमाजों को चाहिये कि वे अभी से इस सप्ताह को सफल बनाने के भरसक प्रयत्न करें। इस

कार्य में स्थानीय महिला आर्यसमाज, आर्य कुमार सभा, आर्य वीरदल, तथा आर्य शिक्षा संस्थाओं आदि का पूर्ण सहयोग प्राप्त करना चाहिये। जहां आर्यकुमार सभायें तथा आर्य वीरदल न हों, वहां वह स्थापित किये जाने चाहिए। वेदप्रचार सप्ताह पूरे श्रावण मास चलाये जायें, जिससे विद्वानों का अधिक लाभ उठाया जा सके।

श्रावणी का महत्व

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक, वैदिक विज्ञान के अद्वितीय विद्वान् वैदिक धर्म के महान् प्रचारक, मानवता को मतान्धता, एवं अन्ध-विश्वासों के अन्ध-कूप से निकालकर बुद्धिवाद एवं मानववाद के शुद्ध वातावरण में श्वास लेने की पुनीत प्रेरणा के प्रज्ञाता, आध्यात्मिक एव आधिभौतिक स्वतन्त्रता के महान व्यक्तित्व को समझने और श्रद्धा समन्वित हो ऋषि के चरण चिन्हों पर चलने की चेतना देना, इस पर्व का महान् उद्देश्य है।

वेद प्रचार निधि

इतने बड़े उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने के लिए सवा लाख रुपया प्रति वर्ष चाहिये। प्रान्त में लगभग दो हजार आर्यसमाजें हैं। यदि इनका प्रत्येक सदस्य एक एक रुपया वेदप्रचार के लिए इस श्रावणी पर्व पर सभा को दान करना अपना कर्तव्य समझें, तो वेदप्रचार की समस्या बहुत कुछ हल हो सकती है। वेदप्रचार के लिए जो धन संग्रहीत किया जाय, उसे सभा कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

24 अगस्त 1989 भाद्रपद कृष्णाष्टमी, आर्य राजनीति के धुरन्धर विद्वान् योग विद्या के प्रबल ज्ञाता पतनोन्मुख भारत के महान् त्राता तथा भारत के निर्माता आचार्य अंगिरस घोर के शिष्य महात्मा कृष्ण का शुभ जन्म दिवस है। इस महापुरुष के नाम पर आज भी जो पाखण्ड लीला हो रही है, उसके समूल नाश का दायित्व आर्यसमाज पर ही विशेष रूप से है। श्रीकृष्ण की महत्ता के लिए उनकी वैदिक शिक्षाओं का प्रसार किया जाना चाहिये।

प्रातः 7 बजे से आर्यमन्दिरों में "आर्य पर्व पद्धति" के अनुसार विशेष यज्ञ किया जाय। रात्रि को आर्यसमाज मन्दिरों में अथवा सार्वजनिक स्थानों में योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन पर व्याख्यान तथा उनके गीता ज्ञान और कर्मयोग का विवेचन किया जाय।

कार्यक्रम 17 अगस्त से 24 अगस्त 1989 तक

प्रतिदिन प्रातः सूर्योदय वेला में दैनिक सत्संग का आयोजन किया जाय, और इस सत्संग को यथासम्भव प्रतिदिन निरन्तर चालू रखने की प्रतिज्ञा भी करनी चाहिये।

मध्यान्ह- वैदिक साहित्य विक्रय तथा आर्यसमाज के नवीन सभासद बनाने का विशेष रूप से प्रयत्न किया जाय।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेदकथा का विशेष आयोजन हो वेदों के आधार पर विश्व बन्धुत्व, मानववाद, साम्यवाद, समाजवाद एवं राष्ट्रवाद आदि विषयों पर विशेष व्याख्यानों का आयोजन किया जाय।

शारीरिक व्यायाम, प्रदर्शन एवं वाक् संघर्ष- इस सप्ताह में आर्य वीरदल एवं आर्य कुमार सभाओं को शारीरिक व्यायाम के प्रदर्शन तथा वक्तृत्वकला विकसित करने की दृष्टि से भी विशेष आयोजन करने चाहिए।

श्रावणी कार्यक्रम

पारिवारिक यज्ञ- श्रावणी (रक्षाबन्धन) के दिन प्रत्येक आर्य परिवार में प्रातः पारिवारिक यज्ञ करें। प्रातः 7।। बजे से समस्त आर्य नर-नारी, युवक तथा बालक-बालिकायें आर्य मन्दिर में उपस्थित होकर पुनीत पर्व मनायें-वेद की पावन ऋचाओं का पाठ किया जावे।

रात्रि को आर्य मन्दिरों में वेदकथा का भी विशेष आयोजन होना चाहिये।

हैदराबाद सत्याग्रह धर्मयुद्ध एवं वैदिक धर्म के समस्त बलिदानियों की पुण्य स्मृति मनाकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की जावे।

स्वतन्त्रता दिवस

महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा अन्य आर्यजनों के प्रयत्न से भारत स्वतन्त्र हुआ। 15 अगस्त को स्वाधीनता दिवस मनाकर भारत की स्वाधीनता की रक्षा की प्रतिज्ञा लीजिये-आर्यसमाज ने देश की स्वाधीनता के संग्रामों में सर्वाधिक बलिदान किया है। देश में प्रजातन्त्र के समुचित विकास, भ्रष्टाचार-निवारण, पंचमांगी तत्व निरोधादि कार्यों में आर्यसमाज को पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

टिप्पणी- (1) इस सप्ताह के आरम्भ में आर्य मन्दिरों पर नया आर्यध्वज लगाना चाहिए।

(2) इस सप्ताह को अधिक महत्वपूर्ण व सार्थक बनाने के लिस हमारा आग्रह है कि प्रत्येक आर्यसमाज एक सूची उन महानुभावों की तैयार करें, जिनका आर्यसमाज से अथवा उसके अधीनस्थ संस्थाओं से शिक्षणालय आदि से सम्बन्ध रहा हो, और इस समय आर्यसमाज के सभासद नहीं है, ऐसी सूची की एक प्रतिलिपि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के कार्यालय को भेजी जावे।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मन्त्री

आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश,
५-मीराबाई मार्ग लखनऊ।

चकराता में आर्यसमाज का पुनर्गठन आरम्भ

देहरादून जनपद के पर्वतीय जनजाति-क्षेत्र में चकराता में ही एकमात्र आर्यसमाज रहा है जो गत कुछ वर्षों से उत्साही कार्यकर्ताओं के अभाव में सुप्त-सा पड़ा रहा। परिणामस्वरूप वहां के आर्यसमाज भवन का भी उद्देश्य के अनुरूप उपयोग बन्द हो गया था। गत 5 मई को तो भवन भी भीषण अग्निकाण्ड की भेंट चढ़ गया।

परिस्थितिका साक्षात् अध्ययन करने के लिए जिला आर्य उपप्रतिनिधि-सभा के प्रधान श्री देवदत्त बाली पत्रकार ने गत रविवार को चकराता का दौरा किया। आप के साथ डाकपत्थर के आर्य इंजीनियर श्री महिपाल सिंह और श्री रिछपालसिंह के अतिरिक्त हिन्दू परिषद के डॉ० वीरेन्द्र सिंह विष्ट भी गये।

आर्य जगत के दानी महानुभावों से अपील की है कि चकराता के जनजाति-क्षेत्र में जहां आर्यसमाज के कार्य की अत्यन्त आवश्यकता है, आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण के लिए मुक्त हस्त से दान "आर्य उपप्रतिनिधि सभा, जिला देहरादून" के नाम शीघ्र भेजें।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र

नारायण स्वामी भवन, ५- मीराबाई मार्ग, लखनऊ

दूरभाष : ४५६६३

पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी·७८

श्रावण कृष्ण १३

३० जुलाई, १९८९ ई०

कन्नड़ भाषा में संस्कार विधि

आर्यसमाज विश्वेश्वरपुरम्, बंगलौर ने महर्षि दयानन्दकृत "संस्कार विधि" का कन्नड़ भाषा में अनुवाद कराकर उक्त ग्रन्थ का विमोचन बड़े समारोह पूर्वक किया। यह अनुवाद भोपाल के आर्य विद्वान् श्री पं0 बी0 उपेन्द्रराव ने किया है। इस अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री पं0 वरददेशिकाचार्य "रंगप्रिय" ने युगपुरुष स्वामी-दयानन्द की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हुए कन्नड़ भाषा में संस्कार विधि के अनुवाद की महत्ता पर प्रकाश डाला।

कन्नड़ भाषा भाषियों के लिए यह ग्रन्थ अत्यन्त उपयोगी है। इसमें स्वामी दयानन्द द्वारा दिए गये सभी संस्कारों को यथावत् कन्नड़ भाषा में दे दिया गया है। मूल्य का ग्रन्थ चालीस रूपये मात्र है। प्राप्तिस्थान आर्यसमाज, स्वामी श्रद्धानन्द भवन, विश्वेश्वरपुरम। बेंगलूर- 560004-

आचार्य इन्द्रदेव पाठक,
प्रबन्ध सम्पादक।

- भवाली में दिनांक- 25·6·89 को आर्यसमाज की कार्यकारिणी की बैठक के उपरान्त योजना आयोग की बैठक सम्पन्न हुई। श्री प्रताप भैयया की पत्नी श्रीमती [illegible] देवी जी की ओर से 110 एक सौ दस [illegible] आर्यसमाज भवाली को भेंट स्वरूप दिया। मंत्री- शंकरदेव जी ने आर्यसमाज की ओर से श्री प्रताप भैयया सदस्य योजना आयोग को एक मान पत्र भेंट किया।

इस अवसर पर ठा0 श्यामसिंह का विवाह तुलसी देवी अनु0जा0 का पाणिग्रहण संस्कार हुआ। विवाह समारोह में उपस्थित व्यक्तियों ने इस अन्तरजातीय विवाह और दहेज रहित विवाह की वर-वधू को बधाई देते हुए बड़ी सराहना की।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रतिमयर प्रा[illegible] लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) श्रावण शुक्ल ५, रविवार- संवत् २०४६ वि०, दिनांक ६. अगस्त १९८९ (घोषणा पत्र सं. ७/२८-२-८५)



स्तुता मया वरदा वेदमाता

मैंने उस वेदमाता की स्तुति की है जो अनन्तानन्त वर देने वाली है। कितने वर हैं----- बिना मांगे सूर्य की रोशनी----- बिना माँगे शीतलमन्दसुगन्ध समीरण-- बिना माँगे अनेकों सुस्वादु रस ---- कोई सीमा ही नहीं, कोई संख्या ही नहीं, यदि कोई सीमा है तो वह है असीम आनन्द की प्राप्ति----- और मैं उसी के लिए उसकी स्तुति करता आ रहा हूँ----- अनन्तकाल से अनन्तकाल तक।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१.०० रू. मात्र

प्रकाशन का ९१वाँ वर्ष

अंक - ३१

वेद प्रचार सप्ताह पूर्ण आस्तिकता से मनाया जाय

आदान प्रदान का अद्‌भुत अवसर

मानव जीवन का सम्बन्ध ऋषियों के साथ, पितरों के साथ, देवशक्तियों के साथ रहता है। उन्हीं की शक्ति और प्रेरणा से मानव विद्वान, सम्पन्न, सन्तानवान होकर सृष्टि का विस्तार करता है। हम जिसे चतुर्विध पुरुषार्थ कहते हैं और जिससे हमें धर्म अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है वह इन्हीं की अपार कृपा का फल है। श्रावणी का पर्व आ रहा है। यह हमारा महान याज्ञिक-पर्व है। उस यज्ञमय प्रभु के वरदानों को प्राप्त करके जन-जन तक पहुँचाने का अनमोल अवसर। इस पर्व का मुख्य ध्येय मानव को पशुत्व में बदलने वाले काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, मात्सर्य, असूया आदि पर विजय प्राप्त करके उसे असीम आनन्द से परिपूर्ण मोक्षपथ का राही बनाना है।

इस वेद प्रचार सप्ताह रूपी यज्ञ में पावन आहुतियों द्वारा, प्रवचनों द्वारा जो कुछ हम समर्पित करते हैं वह हमें हजारगुणा बढ़कर वापस मिल जाता है। वेद कहता है------

देहि मे ददामिते निमे धेहि नित दधे।
निहारंच हरासि मे निहारं नि हराणि ते स्वाहा"।

हे यज्ञरूप परमात्मन्! मैं तेरे लिए होतव्य द्रव्य देता हूँ, तू मेरे लिए अन्न, रस, ऊर्जा आदि पदार्थ प्रदान कर। यह आदान प्रदान बना रहे और मेरे लिए कल्याणकारी हो। यजमान अपने यज्ञमय जीवन की पूर्ण पवित्रता प्राप्त करने हेतु स्वाहा कहकर अपने व्यवहार में आई हुई हिंसात्मकता, भोजन में आई हुई अशुद्धता और इन्द्रियों में समाई हुई लोलुपता को नष्ट करने की भावना से आगे पुनः कहता है--

पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत -

आहुति से भरी हुई हे दर्वि! तू ऊपर जा और वहाँ से भली भान्ति पूर्ण होकर फिर मेरे पास आ जा। ऋषिवर्य अपने भाष्य में लिखते हैं-- "हे दर्वि! होतव्यद्रव्येण पूर्णा भूत्वा परापतति द्रव्यम ऊर्ध्वं गमयति, आकाशं गत्वा वृष्ट्या (सु) पूर्णा भूत्वा पुनरापयति। समन्तात् पृथिवीं शोभनं जल रसं गमयति" अर्थात् जैसे मूल्य देकर वस्तु खरीदते हैं वैसे ही परमात्मा के बनाए हुए सूर्य के माध्यम से इस यज्ञ-क्रिया द्वारा अन्न एवं रस को विनमय रूप में लेते देते हैं।

वेद में इन्हीं दार्शनिक तत्वों के आधार पर मानव के अभ्युदय एवं निःश्रेयस सिद्धि हेतु ऋषियों ने अनेक प्रकार के यज्ञ और इष्टियों की परिकल्पना का विधान किया है। सभी यज्ञ मानव जीवन के व्यापक क्षेत्र एवं सम्पूर्ण चर अचर जगत को शुभ एवं समृद्धि सम्पन्न बनाने वाले हैं। इस पावनपर्व को हम असीम आस्तिकता एवं श्रद्धा सहित मनाएं। यज्ञ हवन से घर-घर का वातावरण सुगन्धित हो, प्रवचनों से हर आर्य का हृदय मन्दिर पवित्र हो जहाँ-जहाँ सुगन्ध पहुँचे आर्यत्व का वास हो।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य भूमि पर अरुणोदय था,
उठा अग्रणी तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
— राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ श्रावण शुक्ल-५, संवत २०४६ वि.
६, अगस्त १९८९, दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत १९७२९४९०९०

सम्पादकीय :

संसद की शव परीक्षा

भारतीय राजनीति में प्रारम्भ से ही जनप्रतिनिधित्व के नाम पर संसद में जो दृश्य हमें देखने को मिलते रहे हैं उनकी छवि अच्छी नहीं रही है। विश्व की राज्यतन्त्रीय व्यवस्थाओं में दोष था, एकाधिकार की बू थी और यह प्रणाली अंकुशरहित होने के साथ-साथ जनसेवा के सार्वजनिक रूप को खो चुकी थी। ऐसे समय में जनता का शासन - जनता के लिए - जनता के द्वारा - प्रणाली ही सर्वोच्च मानी गई और विश्व के लगभग सभी नव स्वातन्त्र्य प्राप्त देशों ने इसे स्वीकार भी कर लिया। किन्तु इसमें भी सबसे बड़ा दोष यह है कि विज्ञ और अविज्ञ दोनों का मत तराजू के पलड़े पर बराबर माना जाता है तथा सत्यासत्य का निर्णय बहुमत, अल्पमत के आधार पर किया जाता है। प्रशासन को जितना ही स्वच्छ एवं भ्रष्टाचार-रहित बनाने के वायदे हर स्तर पर किये जाते हैं उतनी ही उसकी छवि धूमिल होती चली जाती है। वेद में राजा को परमात्मा का प्रतिनिधि बताया गया है। त्याग उसका आदर्श है। हमारे देश में अनेक ऐसे सम्राट हुए हैं जिन्होंने प्रजा के हित के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया था। राज्यकोष का पैसा अपनी विलासिता में व्यय करना उन्होंने महान पाप समझा।

भारतीय संसद में, प्रशासनिक स्तर पर आयातित करोड़ों रुपयों के रक्षा-उपकरणों की खरीद में कमीशन खा जाने की चर्चा काफी पुरानी है। श्री कृष्णामेनन, तत्कालीन रक्षा मंत्री, के समय में भी सेना के लिए जीपों की खरीद का घोटाला भी कुछ इसी तरह का था। उस समय श्री नेहरू जीवित थे और उन्होंने संसद में अपने व्यक्तित्व का इस्तेमाल करके इस घोटाले को सड़क पर नहीं उछलने दिया था और संसद की गरिमा यथापूर्व बनी रही। किन्तु इधर बोफोर्स काण्ड नये-नये मोड़ लेता जा रहा है। नियन्त्रक महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट संसद में पेश हो गई है और उसमें इंगित त्रुटियों को हवा देते हुए विपक्ष के १५ सांसदों ने लोकसभा से अपना इस्तीफा दे दिया है जो लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ द्वारा स्वीकृत भी किया जा चुका है। उधर सत्तारूढ़ पक्ष का कहना है कि महालेखा परीक्षक ने अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर जाकर सौदों के ऐसे पहलुओं पर टिप्पणी की है जो उसके कार्यक्षेत्र और उसकी योग्यता से परे है। विपक्ष इस बात पर अड़ा हुआ है कि महालेखा परीक्षक की रिपोर्ट में बोफोर्स सौदे के लिए सरकार को साफ-साफ दोषी पाया गया है इस लिए श्री राजीव गाँधी को अपने पद पर बने रहने का कोई नैतिक अथवा संवैधानिक अधिकार नहीं है। संसदीय इतिहास की यह एक अभूतपूर्व घटना है। चुनाव सन्निकट हैं और यह निश्चित है कि इस घटना का प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रभाव आम चुनावों पर अवश्य पड़ेगा। दोनों पक्ष एक दूसरे को झूठा कह रहे हैं। जनता यह निर्णय करने में असमर्थ है कि सत्य क्या है?

सत्तारूढ़ पक्ष लोकसभा को भंग करने के पक्ष में नहीं है। विपक्ष की अनुपस्थिति में भी लोकसभा का कार्य चलता रहेगा क्योंकि सत्तापक्ष अब भी बहुमत में है और सदन में अपेक्षित कोरम उसके पास है। किन्तु इससे वास्तविकता पर पर्दा डालना एक बड़ी भूल होगी। महत्वपूर्ण प्रश्न तो यह है कि सत्य असत्य का निर्णय कैसे हो। महालेखा परीक्षक को संविधान में वही स्थान प्राप्त है जो सर्वोच्च न्यायालय को प्राप्त है। संविधान निर्माण के समय महालेखाकार के सन्दर्भ में हुई चर्चा के दौरान संविधान निर्मात्री सभा के अध्यक्ष डा० राजेन्द्र प्रसाद एवं प्रसिद्ध विधि-वेत्ता डा० भीमराव अम्बेडकर ने कहा था कि महालेखाकार संस्था को राजनीतिक दबाव से मुक्त रखा जायेगा और उसे वही सम्मान दिया जायेगा जो सर्वोच्च न्यायालय को प्राप्त है। राज्यकोष के धन का दुरुपयोग होने, आयातित वस्तुओं का उचित तकनीकी परीक्षण किए बिना उन्हें खरीदने के लिए विदेशी फर्मों को आदेश देने आदि के गम्भीर मामले महालेखाकार ने पहिले भी अपनी रिपोर्ट में संसद में पेश किए हैं और जिन पर बहस भी हुई है। किन्तु इस बार बोफोर्स प्रकरण ने अत्यधिक तूल पकड़ लिया है और निःसन्देह विपक्ष आसन्न चुनावों को देखते हुए इससे पूरा-पूरा राजनैतिक फायदा उठा लेना चाहता है। विपक्ष के सभी सदस्यों द्वारा सामूहिक इस्तीफा दे देने से सदन की गरिमा और लोकतन्त्र के बुनियादी सिद्धान्त कमजोर होंगे। सत्तापक्ष को मनमानी करने का अवसर भी मिल सकता है। सदन में इस समय महत्वपूर्ण विधेयकों पर विचार हो रहा है। विपक्ष की भागीदारी न रहने पर उनको पारित करने के लिए सत्तापक्ष को दोषी नहीं माना जा सकता। सत्य को उजागर करने का यह रास्ता कदापि लोकतान्त्रिक नहीं माना जा सकता। सदन की मर्यादा को निष्प्राण कर देने तथा इस मसले को सड़क पर उछालने से भारतीय लोकतन्त्र विश्व में उपहासास्पद ही बनेगा। अतः हम चाहते हैं सत्य को किसी और तरीके से उजागर करके जनता के सम्मुख रखा जाये और दोषियों को अवश्य दण्डित किया जाये।

हम आर्य समाज बनायेंगे।

जन जन का आर्यकरण करके
हम आर्यसमाज बनायेंगे।
वेद ज्ञान से आप्लावित
विज्ञान रश्मि फैलायेंगे।
फैल रहा जो अन्धकार
अज्ञान अविद्या दुर्विचार।
हर मन में संशय भेद धार
इन सबको दूर भगायेंगे।
कटुता ईर्ष्या का प्रबल वार
मानवता घातक बन प्रहार।
संकल्प हमारा बार बार
हम इनसे देश बचायेंगे।
दयानन्द का शंखनाद
नभ मण्डल में गुंजायमान।
शस्य श्यामला भारत माँ का
गौरव मान बढ़ायेंगे।।

-आचार्य वेदव्रत अवस्थी
वेदमन्दिर, हिन्दनगर लखनऊ-5

कानपुर में वेदप्रचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, कानपुर महानगर के तत्वावधान में दिनांक-17 अगस्त से 24 अगस्त तक वेदप्रचार सप्ताह मनाया जा रहा है।

-आशारानी राय, मंत्री,
जिला सभा।

आर्यवीर दल के बढ़ते कदम

पश्चिम उ0प्र0 आर्य वीरदल केन्द्र बिन्दकी ने इस वर्ष छः शिविरों का आयोजन किया है इनमें {1} मुरादाबाद {2} गाजियाबाद {3} अलीगढ़ {4} बुलन्दशहर {5} सहारनपुर {6} मुजफ्फरनगर के शिविर में श्री-अरविन्द कुमार जी मंत्री जिला सभा फतेहपुर व ऋषि पाल सिंह वर्मा एडवोकेट के सहयोग से सफल रहे। डॉ0 बालकृष्ण-आर्य बिकल ने कई स्थानों पर पहुँच कर आर्य वीरों का उत्साह वर्धन किया।

स्वामी वेदबोध सरस्वती दिवंगत

लखनऊ, 24 जुलाई। आर्यप्रतिनिधि-सभा उ0प्र0 के भूतपूर्व उपमंत्री एवं आर्यमित्र साप्ताहिक के भूतपूर्व संपादक स्वामी वेदबोध सरस्वती पूर्वनाम- श्री-विक्रमादित्य "बसन्त" कुछ कालिक अस्वस्थता के बाद आज 24 जुलाई को प्रातः सवा दस बजे लखनऊ बलरामपुर अस्पताल में इस नश्वर शरीर को छोड़ गये।

आर्यमित्र एवं आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय उनके शोक में शोक सभा करके बन्द कर दिये गये।

-मनमोहन तिवारी,
मंत्री,
आ0प्र0स0उ0प्र0।

उसके पास वेदार्थ की कुंजी थी

● डा॰ सत्य व्रत सिद्धान्तालंकार
(भू0पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय)

मनुष्य के वास्तविक तथा सम्पूर्ण रूप को समझने के लिये उपनिषदों में कहा है कि वह पंचकोशात्मक है। पंचकोश हैं- अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय। अन्नमय से आनन्दमय तक उसका उत्तरोत्तर विकास होता है। पहले तीन का तो हम सबको ज्ञान तथा अनुभव है। हम खाते-पीते हैं जिससे शरीर बनता है- यह अन्नमय कोश है, हम श्वास-प्रश्वास लेते हैं जिससे प्राणमय कोश बनता है, हम सोचते-विचारते हैं, इसे मनोमय कोश कहते हैं।
इसके आगे मनुष्य का जो विकास होता या हो सकता है-- शुद्ध-ज्ञान का अनुभव, उसे विज्ञानमय कोश कहते हैं, परन्तु, विकास की इस स्थिति से प्राणी उस स्थिति में जाना चाहता है जिसमें आनन्द-ही आनन्द हो, दुख की सम्भावना तक न हो। प्राणी की यह सम्भावित-स्थिति आनन्दमय कोश की स्थिति है। इस स्थिति में पहुँचकर उसका पूर्ण-विकास हो जाता है। यह "देवत्व" की स्थिति है। प्रायः देख जाता है कि भारत में, खासकर हिन्दुओं में, और वैदिक-धर्मी पुरुषों तथा स्त्रियों में, पुरुषों का नाम "देव" से और स्त्रियों का "देवी" से अन्त होता है। उदाहरणार्थ, हमारे नाम सत्यदेव, निरंजनदेव, पुरुषोत्तमदेव आदि होते हैं, या स्त्रियों के नाम सावित्री देवी, ईश्वरीदेवी आदि होते हैं। इसका अभिप्राय यही है कि हम सबका पूर्ण-लक्ष्य देवत्व प्राप्त करना है, अन्यथा प्रत्येक व्यक्ति-पुरुष हो, स्त्री हो-अपने नाम के साथ देव या देवी क्यों लगाता है। हम अन्नमयकोश से प्रारम्भ कर आनन्दमयकोश तक पहुँचना चाहते हैं जो देवत्व या देवता की स्थिति है। अगर देवता बनना मानव का लक्ष्य है, तो प्रश्न यह रह जाता है कि "देवत्व" कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

भाषा-शास्त्र के नियमों के अनुसार कई शब्दों का पारस्परिक निकट का संबंध होता है। उदाहरणार्थ, कई भाषाओं में "स0" का "ह" हो जाता है। सप्ताह तथा हफ्ता इसके उदाहरण हैं जिनमें अर्थ वही है, किन्तु संस्कृत तथा फ़ारसी में वर्ण-परिवर्तन भी हो गया है। इसी तरह एक ही भाषा में वर्ण-व्यत्यय भी पाया जाता है जिसका "देव" शब्द उदाहरण है। ऐसा प्रतीत होता है कि "वेद"-शब्द से "देव"- शब्द परिवर्तित हो गया है, यद्यपि संस्कृत में ही "वेद" तथा "देव"- ये दोनों शब्द मौजूद हैं, परन्तु दोनों का अर्थ बदला हुआ है यद्यपि अर्थ के बदल जाने पर भी उनका पारस्परिक-लगाव बना हुआ है। मानवता के विकास में मनुष्य विकसित होता- होता आनन्दमय कोश तक पहुँच जाता है, जो "देवत्व" की स्थिति है, परन्तु यह स्थिति "वेद" की संस्कृति को आत्मसात् करने से प्राप्त होती है। इस प्रकार "देव"-शब्द का प्राणी में आनन्दमयकोश को विकसित करने के लिये "वेद" से संबंध जुड़ जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि मनुष्य "देव" तब बनता है जब वह "वेद" प्रतिपादित जीवन से अनुप्राणित हो जाता है। इस प्रकार "आनन्दमय कोश", "देवत्व" तथा "वेद"- ये तीनों एक दूसरे से बंधे हुए हैं। हमारे इस कथन का अभिप्राय यह हुआ कि "देव" और "वेद" इन दोनों शब्दों की पारस्परिक इतनी निकटता है कि उसके आधार पर इन दोनों को पिरोने वाले सूत्र को ढूंढना होगा। वैदिक-संस्कृति ही वह सूत्र है जो इन दोनों पर परस्पर बांधती है।

कोई समय था जब वेद-ज्ञान सर्वथा लुप्त हो गया था, सिर्फ मन्त्र-पाठ रह गया था। ब्राह्मण लोग वेदार्थ तो नहीं जानते थे, इतना भर जानते थे कि वेद बड़े महत्व के, गहरे ज्ञान के ग्रन्थ हैं, इनमें आदि-सृष्टि का कोई रहस्य भरा हुआ है। जब-जब सृष्टि का पुनर्निर्माण हुआ, तब-तब वेद-ज्ञान लुप्त हुआ और उसका पुनरुद्धार हुआ। सृष्टि-क्रम के अनुसार वेद-ज्ञान का "लोप" तथा वेद-ज्ञान का "पुररुद्धार"- यह चक्र भी चला। इसी का वर्णन अथर्ववेद(19-72) के निम्न मंत्र में उल्लिखित है:

> यस्मात् कोशात् उद्भराम वेदं तस्मिन् अन्तः अवदधम एनम्।
> कृतम् इष्टम् ब्रह्मणः वीर्येण तेन मा देवाः तमसा अवत इह।।

वेद के साथ यह चक्र लगा है। सृष्टि होती है, प्रलय होती है-सृष्टि के साथ वेद-ज्ञान का "प्रादुर्भाव" होता है, समयान्तर में उसका "लोप" भी हो जाता है। एक ही युग में "ज्ञानोदय" तथा "ज्ञान-लोप" बार-बार हो सकता है या नहीं भी हो सकता। भारत में जो चक्र चला उसका कुछ दिग्दर्शन हम यहां कर रहे हैं:

वेद में कुछ "रहस्य" हैं-- इस आधार पर वेदों की रक्षा की गई। सृष्टि के प्रारम्भ में तो उन रहस्यों का ज्ञान था, परन्तु कालान्तर में वह ज्ञान जाता रहा, बिना अर्थ जाने उनकी रक्षा की जाने लगी। इन्हें रटा जाने लगा ताकि ये कायम रहें। धार्मिक जगत् में और उसके द्वारा सामाजिक जगत् में सदा, सब जगह, यह बात फैली रही कि परमात्मा की सृष्टि में कुछ ऐसे गुप्त रहस्य हैं जो सृष्टि में अज्ञात रूप से सम्भाल कर रखे हुए हैं, जिन्हें सृष्टि के कुछ इने-गिने व्यक्ति ही पा सकते हैं, परन्तु उन्हें सम्भाल कर एक पेटी में पड़े रहना जरूरी है। मुझे स्मरण है कि जब मैं अपने विद्यार्थियों को बायबल पढ़ाया करता था, क्योंकि यह भी धर्मशिक्षा का अंग था, तब ओल्ड टेस्टेमेंट में मेरे सामने एक प्रसंग ऐसा आया जिसमें पेटी में सुरक्षित सत्य-ज्ञान का उल्लेख था। जब मैं यह लेख लिख रहा हूं उस समय यह स्थल मेरी समृति में नहीं आ रहा। ऐसी ही एक बात गीता में पायी जाती है जहां लिखा है:
"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्"- जब-जब सृष्टि में धर्म के प्रति ग्लानि होती है, और अधर्म उठने लगता है, तब-तब धर्म या सत्य की स्थापना के लिये सृष्टि में हलचल मच जाती है, और कोने में छिपा बैठा सत्य उठ खड़ा होता है।

ठीक इसी तरह का तो नहीं, किन्तु कुछ-कुछ इससे मिलता-जुलता विचार इंग्लैण्ड के प्रो0 तोयनबी का है। उनका कहना है कि समाज का विकास क्रिया-प्रतिक्रिया या चैलेंज-रिस्पोन्स के सिद्धान्त के अनुसार होता है। समाज के सम्मुख कुछ समस्यायें होती हैं, समाज के नेता उन समस्याओं का समाधान खोजते हैं और उनकी वह खोज उनकी समस्याओं का हल उपस्थित कर देती है। समस्या का हल कहीं-न-कहीं, किसी-न-किसी के द्वारा "खोज" लिया जाता है।

वेद का यह विचार कि सत्य का कोई हल मौजूद है, वह हल वेद में रहस्य रूप में छिपा पड़ा है, सत्य की पेटी में से उसे निकाला जा सकता है, गीता का यह विचार कि तिरोहित सत्य का उद्घाटन करने के लिये युग-युग में किसी महापुरुष का जन्म होता है, और तोयनबी का यह विचार कि संसार की समस्यायें जब उग्र-रूप धारण कर लेती हैं, चैलेन्ज बनकर सामने आ खड़ी होती हैं, तब समाज में से ही उन समस्याओं का हल निकलता है- ये सब विचार भिन्न-भिन्न मालूम होंगे, परन्तु इनकी अन्तर्निहित विचारधारा एक ही है। कहने का तरीका अलग-अलग है, शब्द भिन्न-भिन्न हैं, परन्तु बात सबकी एक ही है। यही ध्वनि ईशोपनिषद् के निम्न शब्दों में सन्निहित है: "हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितम् मुखम्, तत्वं पूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये"-- सत्य कहीं छिपा पड़ा है, भगवन्, उस पर्दे को हटाओ, उस पेटी को खोलो जिसमें सत्य-रूप "अमूल्य-धन" छिपा कर सुरक्षित रखा हुआ है।

भारत में सुरक्षित-रूप में सम्भाल कर रखे हुए रहस्य की पेटी को कैसे और किसने खोला-- इसकी चर्चा हम अगले लेख में करेंगे।

क्रमशः -----

शोक समाचार

श्री बालकिशन गुप्ता, ओरियन्टल इन्श्योरेन्स-पटियाली, एटा के पू0 पिता श्री मुन्शीलाल-गुप्ता का स्वर्गवास हो गया। आप आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। परमात्मा से दिवगंत आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना है।

ब्रह्मचर्य

डा. अखिलेश आर्य
,गुरुकुल गौतम, नगर- नई दिल्ली

वैदिक धर्म में मनुष्य जीवन को अत्यन्त मूल्यवान माना गया है। कितने ही सुकर्मों के अनन्त" यह मनुष्य जन्म प्राप्त होता है। अतः यह जीवन कुछ विशेष उद्देश्य के लिए मिला है, अब उद्देश्य क्या हो सकता है इस पर थोड़ा विचार करेगें। जो वस्तुएँ उसके पास विद्यमान नहीं हैं उन्हीं के लिए वह प्रयत्न करता है, और उसी को बुद्धिमान भी समझा जाता है। वेद हमें बताते हैं कि जीवात्मा के पास सत् और चित् तो हैं परन्तु कमी है तो आनन्द की तो वह आनन्द प्राप्त करना ही उसका ध्येय होना चाहिए। इसको कैसे प्राप्त करें वह कहाँ मिलेगा इसके लिए वेद बताते हैं कि यह ईश्वर से मिलेगा क्योंकि वह सच्चिदानन्द स्वरूप है। व्यवहारिक जीवन में जैसे विद्या की आवश्यकता हो तो हम विद्वान के पास जाकर उसकी सेवा करते हैं तब हमें वह विद्या देता है ठीक इसी प्रकार आनन्द पाने के लिए हमें आनन्द के भण्डारी ईश्वर की शरण में जाना पड़ेगा। पर उस तक पहुँचा कैसे जाये। इसी हेतु मनुष्य जीवन को कुछ हिस्सों में बाँट दिया गया है।जिनके द्वारा मनुष्य सरलता से अपने लक्ष्य को प्राप्त होने में समर्थ हो सकता है जीवन के ये विभाग आश्रम के नाम से जाने जाते हैं जो चार हैं §1§ब्रह्मचर्य §2§गृहस्थ §3§वानप्रस्थ§4§सन्यास इसमें है सर्व प्रथम "ब्रह्मचर्य" इस पर थोड़ा प्रकाश डालेगें।

इस आश्रम का महत्व अपनी विशेषता रखता है अब हम इस शब्द का विश्लेषण करके थोड़ा देखेंगें कि इसका तात्पर्य क्या है? यह दो शब्दों का मेल है §1§ब्रह्म §2§ चर । ब्रह्म का अर्थ है विद्या अथवा परमात्मा। चर का अर्थ है विचरना व खाना§चर गति भक्षणयोः। अतः ब्रह्मचर्य का अर्थ हुआ परमात्मा अथवा विद्या में विचरना।

वैदिक साहित्य में इसके अन्य तीन प्रधान अर्थ भी उपर्युक्त होते हैं। ब्रह्म शब्द वीर्य,वेद,एवं ईश्वर वाचक हैं। चर्य-रक्षण अध्ययन तथा चिन्तन का द्योतक है इसी प्रकार ब्रह्मचर्य के तीन प्रधान अर्थ समझे जाने चाहिए §1§ वीर्यरक्षण§2§वेदाध्ययन। §3§ईश्वर चिंतन। पृथक पृथक तीन अर्थ होने पर भी वे तीनों ही एक मूलभूत ब्रह्मचर्य में सन्निहित हैं। ब्रह्मचर्य काल में ही इन तीनों बातों की सिद्धि होती है। परन्तु वर्तमान में हम ब्रह्मचर्य से वीर्य रक्षण अर्थ ही लेते हैं,क्योंकि प्रसिद्ध भी यही है। इसकी महत्ता भी उतनी ही है,क्योंकि ब्रह्मचर्य ही जो आगे की सीढ़िया हैं उसका आधार ही यही है। जब तक आधार ठीक नहीं होगा तब तक उस पर टिकी हुई वस्तु कब तक स्थाई रह सकती है इसमें महर्षि पतंजलि का प्रमाण-"ब्रह्मचर्य गुप्तेन्द्रियो पस्थस्य संयमः" और आगे कहते हैं "ब्रह्मचर्य प्रतिष्ठायाँ वीर्य लाभः" ब्रह्मचर्य का मुख्य उद्देश्य तो ब्रह्म मे विचरना ही है परन्तु उससे पहले ये दो सोपान परमावश्यक हैं§1§ वीर्य रक्षण§2§वेदाध्ययन। वेदाध्ययन के बिना ईश्वर प्राप्ति और वेदाध्ययन बिना वीर्य रक्षण के संभव ही नहीं क्योंकि मनु जी कहते हैं।

"अर्थ कामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधियते। धर्म जिज्ञास मानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः।।"

अब प्रश्न उठता है कि इतना सब झंझट क्यों करें? क्योंकि ब्रह्म को प्राप्त करना है और वह आनन्द स्वरूप है। ब्रह्म बड़ा ही स्वादु पदार्थ है और उस स्वाद को चखने के लिए अन्य स्वादों का मोह छोड़ना पड़ेगा यदि मीठा खाना चाहते हो तो प्रथम मुंह से तीखे पदार्थों को निकालना होगा और ये तीखे पदार्थ क्या हैं यह है"विषय" जब तक विषय से इन्द्रियों को नहीं रोकेंगे तब तक आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते इसमें प्रमाण भी है-

"सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यग ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्। अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हिशुभ्रो यं पश्यन्ति यतयः क्षीण दोषाः।

अर्थात सत्य,तप पूर्ण ज्ञान और अविचल ब्रह्मचर्य से आत्मा की प्राप्ति होती है। वह अन्तः करण में ज्योतिर्मय निर्मल रूप में विद्यमान है। जो निष्पाप है वे ही प्रभु का भजन कर सकते हैं इस विषय में जब आयुर्वेद विद्या के महर्षि धन्वन्तरि अपने शिष्यों को उपदेश कर रहे थे। पाठ समाप्त होने पर शिष्यों ने उनसे प्रश्न किया कि है भगवान। कोई ऐसा एक ही उपचार बताइये जिसके सेवन से सर्व प्रकार के रोगों का नाश हो सके शिष्यों का प्रश्न सुनकर आचार्य ने उत्तर दिया-

"मृत्युव्यापी जरानाशी- पीयूषं परमौषधम्। ब्रह्मचर्यं मद्द् रत्नं,सत्यमेव वदाम्यहम।।"

मैं सत्य कहता हूँ कि मृत्यु,रोग, वृद्धपन का नाश करने वाला अमृत रूप सबसे बड़ा औषध ब्रह्मचर्य ही है। हर दृष्टिकोण से ब्रह्मचर्य कितना लाभप्रद है इस पर आप ही निर्णय कर सकते हैं इसलिए योगिराज कृष्ण भी गीता में कहते हैं"रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते" परब्रह्म को देखकर भक्त का चित्त विषयों के रस से हट जाता है।

अब हम ब्रह्मचर्य की महत्ता से भलीभाँति परिचित हो गये फिर भी और अनेक प्रमाण इसके महत्व के लिए दिये जा सकते हैं यथा-"शुक्रायन्नं बलं पुंसः"। अर्थात वीर्य के अधीन मनुष्य का बल रहता है पुनः चरक में लिखा है-

"आहारस्य परं धाम,शुकं तदक्ष्य मात्मनः। क्षये यस्य बहून रोगान,मरणं वा नियच्छति।

मनुष्य के भोजन का सबसे उत्कृष्ट अंश वीर्य है, अतः यत्न से उसकी रक्षा करनी चाहिए। क्योंकि वीर्य के क्षय होने से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं, और उसका अन्तिम परिणाम मरण ही है।

"ओजस्तु तेजो धातूनां,शुक्रान्तानां परं स्मृतम। यन्नाशे नियतं नाशो,यस्मिंस्तिष्ठति जीवनम्।।"

रस से लेकर वीर्य पर्यन्त सब धातुओं का सार ओज है जिसके नष्ट होने पर कोई जीवन धारण नहीं कर सकता।

"यथा पयसि सर्पिस्तु गूढश्चेक्षोरसो यथा। एवंहि सकले काये,शुक्रं तिष्ठति देहिनाम्।।"

जैसे दूध में घी और ईख में रस गुप्त रूप से रहता है,उसी प्रकार शरीर में वीर्य रहता है। वैज्ञानिकों ने निश्चय किया है कि ब्रह्मचर्य का नाश करने वाले ही लोग अधिकांशतः पागल होते हैं।

इस प्रकार ब्रह्मचर्य की महत्ता पर काफी कुछ लिखा जा सकता है वास्तव में ब्रह्मचर्य महान है।

यदि संसार के लोगों तुम्हें देश बचाना है,तो ब्रह्मचर्य को पालो। ब्रह्मचर्य महान है,ब्रह्मचर्य महान है, ब्रह्मचर्य महान है। ■

"अजमेर की दयानन्द शोधपीठ को विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता"

अजमेर। आचार्य दत्तात्रेय आर्य§बाब्ले§ के निर्देशन में गत कई वर्षों से संचालित दयानन्द महाविद्यालय में अजमेर में स्थापित "दयानन्द शोधपीठ" को "अजमेर-विश्वविद्यालय ने मान्यता प्रदान कर दी है।

इस शोधपीठ के अन्तर्गत अभी तक कई शोधपूर्ण प्रकाशन किए जा चुके हैं और आचार्य दत्तात्रेय जी के निर्देशन में वैदिक धर्म की सार्वभौमिकता नामक एक शोधपूर्ण ग्रन्थ के प्रकाशन की योजना बनाई गई है। इस ग्रन्थ में विभिन्न विद्वानों के विशेष शोधपूर्ण लेख सम्मिलित होंगे।

अजमेर विश्वविद्यालय द्वारा मान्यता प्राप्ति के बाद दयानन्द शोधपीठ द्वारा पी0एच0डी0, एम0फिल0 व विद्या वारिधि की शोध उपाधियों के लिए शोधकार्य किया जा सकेगा। अजमेर विश्वविद्यालय द्वारा शोधपीठ के शोधछात्रों को ये शोध उपाधियां प्रदान की जाएंगी।

दयानन्द शोधपीठ के निदेशक दत्तात्रेय बाब्ले के अनुसार अन्य विषयों के मुकाबले वेद,वैदिक धर्म,संस्कृत, आर्यसमाज आदि विषयों में शोधकार्य करने वाले छात्रों को वरीयता दी जाएगी। इन विषयों के शोध छात्रों को उचित छात्रवृत्ति एवं अन्य सहायता भी प्रदान की जाएगी।

बोया पेड़ बबूल का

•डा० रविदत्त शर्मा आचार्य
सबलपुर, पो० टाँडा अफजल,
{मुरादाबाद}

आयुर्वेदशास्त्र एवं धर्मशास्त्र मानवजीवन को श्रेय तक पहुँचाते हैं। एक शरीर को स्वस्थ बनाता है तो दूसरा आत्मा को ऊर्ध्वगति प्रदान करता है। आध्यात्मिक एवं भौतिक सन्तुलन ही पूर्णता का प्रतीक है। शरीर को पुष्ट तथा नीरोग बनाना प्रत्येक का कर्तव्य है। शारीरिक विकास के लिये कृत्रिम और प्राकृतिक, दो प्रकार के साधन हैं। आत्मिक उत्थान के लिये भी कुछ साधन अपेक्षित हैं जो प्रकृति के सामंजस्य पर निर्भर हैं। प्रकृति की गोद में बैठ कर सब कुछ अनायास ही उपलब्ध हो जाता है।

आज प्रायः यही देखने में आता है कि भौतिक ऐश्वर्य तो अधिकाधिक जुटालिये, परन्तु आध्यात्मिक साधनों का अकाल पड़ गया है। यह ऐसा अकाल है, जिससे छुटकारा पाना कठिन है क्यों कि भौतिक उपलब्धियों के लिये आध्यात्मिक उपचार को तिलांजलि दी जा रही है। किसी ने शरीर को पुष्ट बनाने में सारी आयु लगादी तो कोई सुन्दर बनने का प्रयास करता रहा। पहले फिल्मी तारिकाएँ ही धनार्जन हेतु शरीर को सजाती थीं, परन्तु अब मध्यम वर्ग तक यह बीमारी आ गयी है। साधारण भोजन प्राप्त करने वाला भी सौन्दर्य के साधनों की खोज में व्यस्त है। ऐसे सौन्दर्य का चरित्र से कोई सम्बन्ध नहीं। मैं तो इसे पतन की चरम सीमा समझता हूँ। नैतिकता और चरित्र का मूल्य शारीरिक सौन्दर्य से कम हो गया है। इस थोथे सौन्दर्य के कारण अहंकार आ जाता है और एक पत्नी अपने पति को, माँ अपने बच्चे को तथा बहू अपने सास-ससुर को अपनी प्रगति में बाधा समझने लगती है।

ऐश्वर्यों में रमण करने वाला मनुष्य आत्मा का भोजन चाहता है, परन्तु प्रकृति से विच्छिन्न है। जंगल में शुद्धवायु सेवन का आनन्द पंखे व कूलर से प्राप्त करना चाहता है। सूर्य की किरणों से मिलने वाला तेज अन्यत्र सुलभ नहीं, काम इतना बढ़ गया है कि आधी रात को सोना और दिन चढ़े उठना एक फैशन बन गया है। जीवन परिसर संकुचित होता जा रहा है, सोना, खाना, काम करना। इस से अधिक जीवन कुछ भी नहीं। थकावट हुई तो नशे की गोलियाँ लेली। मानसिक तनाव हुआ तो दूरदर्शन के सामने बैठ गये। कुछ समय बचा तो जासूसी उपन्यास पढ़ने लगे, अधिक प्रसन्नता हुई तो ताश खेलने में जुट गये। इन कार्यों से जीवन कितना प्रभावित होता है किसी को पता नहीं। परिणाम यह होता है कि कोई न कोई रोग लग जाता है। साधन-सम्पन्न होने पर भी स्वस्थ नहीं, इसका कारण हाथ नहीं आता। शास्त्रों के अवलोकन से यही अनुभव मिला कि हमारे शरीर का सीधा सम्बन्ध आत्मा से है, इन्द्रियों का संचालन मन करता है और बुद्धि मन को नियन्त्रित करती है। बुद्धि को आत्मा से प्रेरणा मिलती है। हम भोगों में जितने व्यस्त हैं, उतना चिन्तन-मनन आदि नहीं करते, स्वाध्याय के लिए समय नहीं, सत्संग में मन नहीं लगता, धार्मिक कृत्यों में श्रद्धा नहीं तथा उपदेश ग्रहण करने की आदत नहीं। यही कारण है कि इन्द्रियों पर संयम न रहने से दिनचर्या ठीक नहीं बनती और सब कुछ अव्यवस्थित रहता है। प्राकृतिक शक्ति का अभाव हो जाता है तो कमजोरी बढ़ती जाती है।

मनुष्य को प्रकृति से सब कुछ निःशुल्क मिलता है फिर भी लेने को तैयार नहीं। रात्रि के अन्तिम प्रहर में प्रकृति अमृतवर्षा करती है, परन्तु अभागे सोये रहते हैं। उस समय बिस्तर से उठकर बहुत आनन्द मिलता है, यदि परमात्मा का ध्यान कर कुछ चिन्तन करें तो लगता है मानों हम ऊपर उठ रहे हैं। आत्मिक शक्ति का भान होता है और विवेक जागता है कि अब तक की आयु व्यर्थगँवादी अब नहीं गँवाऊँगा। उषा के पश्चात् सूर्य का उदय होता है, उस की शर्त यह है कि जागनेवाले को सूर्य देवता तेज प्रदान करते हैं और सोते हुए का तेज खींच लेते हैं- "उद्यन्त्सूर्य इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आददे"। उदय कालीन सूर्य की किरणों के सेवन से हृदयरोग एवं रक्ताल्पता को लाभ पहुँचता है। इसी प्रकार चन्द्रमा और हरियाली के नियमित दर्शन से मन प्रसन्न होता है तथा नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। प्राकृतिक उपलब्धियों का समय और स्थान निश्चित होता है। प्रातः जागरण से एक अपूर्व शक्ति का संचय होता है, आध्यात्मिक पक्ष प्रबल होता है तथा ईश्वर का अनुभव होता है फलस्वरूप अनेकों समस्याओं का स्वतः ही समाधान हो जाता है। बुद्धि निर्मल होने से पाप की प्रवृत्ति घटती जाती है, सभी दुःख-दुर्गुण दूर हो जाते हैं। दुर्व्यसनों से बचने की प्रेरणा मिलती है। मनुष्य अपने आप को ईश्वर के निकट समझता है। उषाकाल को ब्रह्मबेला ऋषियों ने व्यर्थ ही नहीं कह दिया है। उस में कुछ सार अवश्य है--

ब्रह्मे मुहूर्ते बुध्येत धर्मार्थौ चानुचिन्तयेत्।
कायक्लेशांश्च तन्मूलान् वेदतत्वार्थमेव च।।

मनुष्य के जीवन में जो पतझड़ की स्थिति बनी हुई है, उसका कारण है ऋषियों की वाणी का उल्लंघन करना, वेद-शास्त्रों का चिन्तन न करना। किसी भी वस्तु का रखरखाव ठीक न होने से वह नष्ट-भ्रष्ट हो जाती है। वैसी ही स्थिति मानवजीवन की है। इस के उचित संचालन के अभाव में जीवन नष्ट हो जाता है। प्राचीन ऋषि-मुनि- जंगलों में कुटिया बना कर रहते थे तो भी उनका जीवन पूर्ण सुखी था। इस का कारण उनका प्रबल चिन्तन था। वे लोग शरीर, आत्मा, मन तथा इन्द्रियों का अध्ययन करते थे। आज तो सभी सांसारिक जाल में फँसे हुए हैं। सिविलसर्जन, इन्जीनियर, न्यायाधीश आदि का पद कम महत्व का नहीं है और उस से भी अधिक महत्व उनके जीवन का है।। फिर भी बहुत से भाई-बहिन, जो देश का उत्तरदायित्व वहन कर रहे हैं, धूम्रपान-जरदा आदि नशीले पदार्थों के सेवन से इस हीरे जीवन को घुन लगादेते हैं और देखते ही देखते अल्पआयु में ही संसार से विदा हो जाते हैं। यही स्थिति चाय तथा काफी पीने वालों की है। मनुष्य पहले भी कार्य करता था परन्तु आज का मनुष्य चाय पीकर थकान उतारता है। ऋषियों ने साधारण खान-पान के सहारे बड़े उपयोगी ग्रन्थ लिखदिये जिन के द्वारा विश्व का कल्याण हो रहा है।

केवल चिन्तन की आवश्यकता है, अल्पशिक्षित व्यक्ति भी यदि चिन्तन करने लगता है तो वह भी ठीक निर्णय पर पहुँच जाता है फिर उच्चशिक्षित की तो बात ही अलग है। नशे का सेवन करके कदापिआत्मकल्याण सम्भव नहीं, परमात्मा की सृष्टि अपने में पूर्ण है। मनुष्य के लिए सभी सुविधाएँ सुलभ हैं। फिर भी बुद्धिजीवी प्राणी फूलों को छोड़ कर काँटों" पर चलने लगे तो इस में किसका दोष

सप्तम श्री घूड़मल आर्य पुरस्कार प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु को

हिण्डोन सिटी। नगर आर्यसमाज हिण्डोन सिटी द्वारा प्रतिवर्ष दिया जानेवाला श्री घूड़मल आर्य पुरस्कार इस बार सातवीं बार प्रख्यात आर्य विद्वान व शोधकर्ता प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु को उनके द्वारा लिखित व सम्पादित "महात्मा हंसराज ग्रन्थावलि" पर दिया जावेगा। 24 अगस्त 1989 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर पुरस्कार राशि के अतिरिक्त आपको अभिनन्दन पत्र व शाल द्वारा सम्मानित कर नागरिक अभिनन्दन किया जावेगा।

इस अवसर से पूर्व 17 अगस्त से 24 अगस्त तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन रखा गया है।

"आर्य समाज शिक्षा सभा, अजमेर
आवश्यकता

1- द्वितीय ग्रेड अध्यापक {हिन्दी} योग्यता-स्नातक {हिन्दी विषय सहित} तथा बी0एड0 अंग्रेजी अतिरिक्त विषय धारक को प्राथमिकता।
2- द्वितीय ग्रेड अध्यापक {संस्कृत} योग्यता- स्नातक {संस्कृत विषय-सहित} तथा बी0एड0

वेतन श्रृंखला-1140-2250 तथा राज्य सरकार निर्धारित देय मंहगाई भत्ता। आवेदन मंत्री के नाम 10/- के निर्धारित प्रपत्र पर शीघ्र प्रस्तुत करें।

आर्यसमाज मैनपुरी का--
110वाँ स्थापना- दिवस सम्पन्न

मैनपुरी। स्थानीय आर्यसमाज की 109वीं वर्ष-गाँठ, उस के 110वें स्थापना-दिवस {दि0-11-7-89} पर, उसके मान0 प्रधान पं0 नरेन्द्रार्य की अध्यक्षता, उसके द्वारा संचालित दयानन्द कॉलेज के अध्यक्ष पं0 रामप्रकाश की व्यवस्था तथा प्रिन्सीपल श्री महावीर सिंह के संयोजकत्व में, मन्दिर प्रांगण में, उल्लास पूर्वक मनाया गया मुख्य यजमान श्री-सरताज बहादुर रहे।

आर्य समाज और प्रचार

□ पं. गंगा प्रसाद विद्यार्थी
एम.ए., एम.फिल. (अकलपुर)

बहुत से लोग आर्य समाज का नाम तक नहीं जानते। कुछ लोग यह तो जानते हैं कि आर्य समाज एक सामाजिक सुधारवादी संस्था है पर यह नहीं जानते कि इसकी स्थापना कब, कहाँ किसने और क्यों की थी। जो लोग यह जानते हैं कि आर्य समाज की स्थापना कांग्रेस के जन्म से भी 10 वर्ष पूर्व अप्रैल सन् 1875 ई0 में, बम्बई की काकड़बाजी (गिरगाम मुहल्ले) में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने की थी जिससे कि लोगों में वेद ज्ञान का प्रचार होता रहे, वे सत्य व असत्य को पहिचानें और सत्य धर्म मार्ग का अवलम्बन कर कुरीतियों व अन्धविश्वासों को त्यागें और सुखी रहें।

बहुत से लोग यह भी नहीं जानते कि आर्य समाज का अन्तर्राष्ट्रीय संगठन क्या है, और यह कि आर्य समाज उन सभी देशों में सक्रिय हैं जहाँ लाखों की संख्या में हिन्दू सैकड़ों वर्षों से रह रहे हैं। आर्य समाजें भारत में प्रायः सभी प्रान्तों व उनके प्रमुख जिला व तहसील स्थानों में हैं। परन्तु यदि किसी नगर में हम आर्य समाज का पता ठिकाना पूछकर ढूंढना चाहें तो कठिनाई होती है, क्योंकि आर्य समाजों ने अपने पतों ठिकानों व उद्देश्यों का आम जनता में व्यापक प्रचार नहीं किया है। वे समझते हैं कि जो हमारे सदस्य हैं वे तो ठीक पता जानते ही हैं बाकी लोगों से क्या। परन्तु वे यह नहीं जानते कि नगर में नवागन्तुक को प्रायः कठिनाई होती ही है। जब हमारा प्रचार व्यापक होगा तब न केवल आर्य समाजी बल्कि अन्यों को भी हमारी व हमारी बातों का ठीक पता होगा।

हम यह तो चाहते हैं कि सभी धर्मों के लोग आर्य समाज मन्दिरों में आकर हमारे साप्ताहिक सत्संग के कार्यों सन्ध्या, यज्ञ (हवन), प्रार्थना, भजन, वेदपाठ व उपदेश में भाग लेकर लाभ उठावें। दूर से लोगों को बुलाते भी हैं पैम्फलेट छपाकर बाँटते भी हैं, परन्तु लोग हैं कि आते ही नहीं गैर आर्य समाजियों की कौन कहे अधिकांश आर्य समाजी भी नहीं आते। क्योंकि न तो व्यक्तिशः हमारा उनसे सम्पर्क है, और न व्यक्तिशः हम बुलाते ही हैं। जब कोई नया व्यक्ति आता है तो या तो वह हमारा अतिथि होता है या अभ्यागत और हमें उसका वैसा ही स्वागत व सम्मान करना चाहिए। हम अपनी तो कहते हैं, पर उसकी नहीं सुनते। तब फिर प्रेम कैसे बढ़े, और बिना प्रेम के आनन्द कहाँ।

आर्य समाज को अपने नगर के सभी प्रमुख व्यक्तियों से व्यक्तिशः सम्पर्क करना चाहिए, उन्हें अपना परिचय देना चाहिए और आर्य समाज में आने के लिए आमंत्रित करना चाहिए और जब वे आवें तो हमें कुछ आकर्षक व मधुर सम्भाषण भी करना चाहिए, अपनी कहनी चाहिए व उनकी सुननी चाहिए।

नवीनता में सदैव ही कुछ न कुछ आकर्षण होता है। यदि हम नई बातें न कहें, तो उन्हें नवीन ढंग से तो कहें। वही घिसी पिटी बातें घिसे पिटे ढंग से कहने में कोई आकर्षण नहीं होता फिर जो बातें हम उन्हें सुनावें वे मात्र सूचनायें ही न हों उनके जीवन के लिए अनुकरणीय व उपयोगी भी हों। बाल्मीकीय रामायण और तुलसीदास के रामचरित मानस में कथा तो एक ही है पर शैली में भिन्नता है, कहीं कहीं घट बढ़ भी है, यही मौलिकता कहलाती है। उपयोगी आकर्षक और मधुर होने के कारण वह प्रत्येक व्यक्ति का मनोरंजन करती है और लोग बड़े चाव व प्रेम से उसे बार बार पढ़ते हैं।

आर्य समाज के व्यापक प्रचार के उसे घर घर में जाना पड़ेगा। अपने मन्दिर की चहारदीवारी में ही सिमित कर नहीं रह जाना होगा, उससे बाहर भी निकलना होगा। आर्य समाज में जो उत्कृष्टता है, जो प्रखरता है और जो विलक्षणता है वह हमें लोगों को बतलाना पड़ेगी।

यहाँ यह बात भी ध्यान में रखनी होगी कि "सत्यं ब्रूयात"। प्रियं श्रुयात्, मा ब्रूयात संत्यं अप्रियं प्रियं च नानृतम् ब्रूयात्। अर्थात सत्य बोलो, प्रिय बोलो, अप्रिय सत्य न बोलो और प्रिय हो परन्तु अनृत अर्थात असत्य हो वह भी न बोलो।

कभी कभी अप्रिय सत्य भी बोलना पड़ता है परन्तु उसकी कुछ मर्यादायें हैं। व्यक्तिगत लाभ के लिए, क्षुद्र स्वार्थ के लिए, केवल अपने मन की प्रसन्नता के लिए या अपने मन की भंड़ास निकालने के लिए हमें अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए, और सदा याद रखना चाहिए कि "वृथा वैर विवादं च न कुर्यात् केनचित् सह"। अर्थात व्यर्थ का बखेड़ा किसी के भी साथ कभी नहीं करना चाहिए। परन्तु यदि अप्रिय सत्य के न बोलने से सामाजिक हानि होती है, तो वह अप्रिय सत्य अवश्य बोलना चाहिए।

आर्य समाज के नाम व परिचय के व्यापक प्रचार के लिए एक सरल उपाय है कि हम कुछ नारे नगर के हर मुहल्ले व चौराहों पर दीवालों इत्यादि पर पेंट करा दें जिन्हें लाखों लोग नित्य पढ़ेगें। तब उन्हें आर्यसमाज का कुछ परिचय मिलेगा और अधिक जानने की उत्सुकता भी बहुतों में होगी ये नारे परिचयात्मक छोटे व आकर्षक होने चाहिए, अति प्रशंसात्मक भी न हों क्योंकि अपरिचित या विरोधी व्यक्ति के लिए दूसरे की प्रशंसा भी असहनीय व उद्वेगजनक हो सकती है।

- आर्यसमाज जंगीगंज के मंत्री श्री रामप्रेम शास्त्री की माता मुलरा देवी 14 जुलाई को प्रातः 4 बजे दिवंगत हो गईं। उनका दाह संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

साप्ताहिक अधिवेशन के पश्चात शोक सभा हुयी जिसमें दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान हेतु प्रभु से प्रार्थना की गई।

वेद प्रचार सप्ताह

१८ से २४ अगस्त तक

श्रावणी से कृष्णा जन्माष्टमी तक
उपदेशकों प्रचारकों के स्वीकृत कार्यक्रम

1- पं0 केशव देव जी शास्त्री - लखीमपुर
2- तेजपाल सिंह जी आर्य - "
3- विक्रम देवजी आर्य - फैजाबाद
4- योगेश दत्त जी आर्य - पिलखुआ
5- रामचन्द्र जी शर्मा - आजमगढ़
6- नेम प्रकाश जी आर्य - मऊनाथभंजन
7- ब्रजपाल जी शर्मा - ठाकुरद्वारा
8- डा0 विजय पाल सिंह जी - बरेली
9- ब्रह्मानन्द जी आर्य - बरेली

- हरि आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0

खेद प्रकाश

आर्यमित्र दिनांक- 16-7-89 के पृष्ठ-3 पर प्रकाशित लेख - "वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है" के लेखक- स्वनामधन्य डॉ0 सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार भू0 पूर्व एम0पी0, एवं भू0 पूर्व कुलपति-गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार हैं। किसी अज्ञात भूल से उसके स्थान पर श्री सत्यकाम विद्यालंकार का नाम लेखक के रूप में मुद्रित हो गया है। जिससे मुझे बहुत खेद है।

-प्रबन्ध सम्पादक।

अत्यावश्यक सूचना

वेद प्रचार सप्ताह दि0 17 से 28 अगस्त तक मनाया जायगा, इस अवसर पर श्री स्वामी वेद मुनि जी परिव्राजक का वेद प्रवचन 18 से 24 अगस्त तक आर्यसमाज फैजाबाद में है, उसके बाद लखनऊ व लखनऊ के आस पास की कोई आर्यसमाज कार्यक्रम रखें तो मुझे सूचित करें।

-स्वामी वेद मुनि जी परिव्राजक,
अध्यक्ष दयानन्द संस्थान
नजीबाबाद, बिजनौर (उ0प्र0)

आर्यसमाज, नया बाजार, लश्कर

प्रधान - श्री भारत भूषण त्यागी
मंत्री - श्री मदन मुरारी
कोषा0 - श्री अभिमन्यु खुल्लर

श्री हंसराज नन्दा दिवंगत

आर्य समाज श्रृंगार नगर लखनऊ के भूतपूर्व प्रधान एवं समर्पित कार्यकर्ता श्री हंसराज नन्दा का निधन दिनांक- 19-7-89 को हो गया। वे आर्यसमाज के समर्पित [illegible] कर्मठ कार्यकर्ता में थे। वे मृदुभाषी सरल प्रकृति के थे। उनके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

दिनांक 22-7-89 को उनकी स्मृति में शोक सभा आर्यसमाज में आयोजित की गयी जिसमें उनके प्रति श्रद्धांजलियां भेंट की गयीं।

-आचार्य [illegible] अवस्थी
प्रधान

अब आर्य समाज और क्या करे? ११ सूत्री कार्यक्रम।

• देवनारायण भारद्वाज
आर्य समाज, आज़मगढ़

आर्य समाज की गतिविधियों में उत्साह, तीव्रता एवं सामयिक उपादेयता हेतु कुछ सुझाव प्रेषित हैं, जिनमें कोई अतिरिक्त विशेष नहीं, प्रत्युत समायोजन एवं सक्रियता ही वांछनीय है। इसका यह आशय नहीं कि पुराने कार्यबन्द कर दिये जाएं अपितु नये भी आरम्भ हों।

1- नगर ग्राम के बालकों एवं किशोरों को, 14 वर्ष से न्यून और 14 वर्ष से अधिक आयु के अनुसार दो वर्गों में रख कर धर्म कक्षाएँ प्रतिदिन या सुविधानुसार साप्ताहिक चलाई जायें, जिनमें आधे समय तक नैतिक ज्ञान कराया जाये और आधे समय तक खेल, शारीरिक व्यायाम, आसन आदि। प्रथम ईश प्रार्थना के साथ नैतिक ज्ञान हो, क्रीड़ा और शान्ति पाठ के साथ कार्य समाप्त हो। इसके लिए किसी अध्यापक की नहीं, कोई योग्य आर्य विद्वान अवैतनिक रूप से अपना सहयोग दे सकता है। इस वर्ष इस कार्य को आरम्भ कर देने से 2000ई० में हमें योग्य, सक्षम आर्य युवक प्राप्त हो सकते हैं, जो हमारे आर्यसमाज के कार्य को सम्भाल सकेंगे। वैदिक बालोपयोगी साहित्य बाल विधालयों में बालकों को वितारित किया जाये। योग्य निर्धन छात्रों को आर्थिक सहायता पुस्तक व्यवस्था हेतु, छात्रवृत्ति हर समाज द्वारा दी जाये।

2- आर्यसमाजें, भले ही वार्षिकोत्सव यदि धनाभाव है तो रोक दें, पर उससे बचे धन को एकत्र कर ग्रीष्मावकाश में कम से कम 11 दिन का आर्यवीर प्रशिक्षण शिविर प्रत्येक जनपद में लगाया जाना चाहिए। प्रमुख समाजें मिल कर इस कार्य को करें। इससे हमें प्रशिक्षित भावी पीढ़ी मिलेगी। छात्रावासों में प्रबन्धकों को सहमत करके समय-समय पर साधारण यज्ञ किए जाएं और नशा विरोधी साहित्य वितरित किया जाये। सफेद धोती, पीले कुर्ते एवं अंगवस्त्र के गणवेश में 11 व्यक्तियों का पंडित वाद्य (बैण्ड) विकसित किया जाये, जो आर्यजनों के विवाह आदि शुभ अवसरों पर प्रयोग हों, जिससे ऐसे अवसरों पर भोंडा नृत्य, नशा व अन्य अनार्य कार्य बन्द हो सकें। इन वादकों को सुन्दर राष्ट्रीय, धार्मिक, सामाजिक गीत सिखाये जायें।

3- साप्ताहिक महिला मिलन के कार्यक्रम आर्यसमाज मन्दिर या किसी परिवार में मध्याह्न के समय किये जायें। जिनमें वैदिक ग्रन्थों का स्वाध्याय एवं अन्ध विश्वास निवारण सम्बन्धी चर्चायें हों, तथा गीत गायन और भजन आदि भी होते रहें। आदिवासी क्षेत्रों में जो आर्यसंगठन शिक्षा-चिकित्सा अन्य आर्थिक सहायता का कार्य कर रहे हैं, इसके साथ ही साथ उनमें एक समान सरल पूजा पद्धति भी विकसित की जाये। "ओउम्-अग्नये स्वाहा" से आहुति देना, आरती एवं कुछ भजन सिखाये जायें और राम, कृष्ण प्रताप, शिवा, एकलव्य, झाला भील, हनुमान आदि की तर्कसंगत कथाएँ सुनाई जायें और सुनवाई जायें। नगर के प्रमुख, विभिन्न भागों में आर्य मिलन किये जायें जिनमें ईश प्रार्थना भजन, सामायिक उपदेश के बाद सूक्ष्म जलपान हो और परस्पर सौहार्द एवं सद्भावना बढ़ाई जाये।

4- आर्य साप्ताहिक-पाक्षिक-मासिक पत्र-पत्रिकाओं के पठन-पाठन हेतु बालकों या सेवकों के द्वारा नगर ग्राम के प्रमुख-प्रमुख व्यक्तियों अध्यापकों को समय-समय पर पढ़ने को दी जायें और वापस लाने की व्यवस्था की जाये। रेलवे, बस हवाई अड्डों पर आर्य समाज के नियम, अर्थ सहित संगठन सूक्त के आकर्षक पोस्टर लगाये जाते रहें। "आज का मन्त्र" के अन्तर्गत चयनित मंत्र एक-एक करके अर्थ सहित ऐसे स्थानों पर प्रतिदिन प्रस्तुत किये जायें, नीचे आर्य संस्था का नाम हो। यह कार्य सभाएँ और बड़ी समाजें कर सकती हैं। महानगरों के रेलवे स्टेशन आदि पर यह कार्य अवश्य होना चाहिए।

5- हरिजन बस्तियों में यज्ञायोजन उनके सहयोग से हो और उन्हें समाज में लाकर सहायक सदस्य बनाया जाये। समय-समय पर पर्वोत्सव पर आर्य समाज मन्दिर में मुख्य रूप से केवल हरिजनों का सम्मेलन किया जाये और उनको समानता-एकता के सम्बन्ध में जागरुक किया जाये। इसके लिए उनको स्नान आदि करके पूजा के लिए आने की भावना से बुलाया जाए।

6- "सण्डे हो या मण्डे रोज खाओ अण्डे" का प्रचार, अण्डा व्यवसाइयों के संगठन कर रहे हैं। आगे मांस विक्रेताओं के संघ भी कर सकते हैं, पक्ष या मास रोज खाओ मांस"। जब ऐसा प्रचार होगा- फिर कहाँ रहेगा वेद और गौ रक्षा। इसलिए पौराणिक जैनी आदि सभी को मिला कर, "सात्विक जीवी परिवार" नामक संगठन बनाए जाएँ जो अन्य बातों को अलग रख कर केवल सामिष अण्डा आदि म्लेच्छ आहार के प्रचार को रोकें, इसलिए दूरदर्शन, आकाशवाणी से प्रसारित विज्ञापनों का विरोध ही नहीं, मन्दिर आदि के पास लगने वाले अण्डों के ठेलों को वहाँ से हटाने का प्रयास किया जाये। अण्डा व्यवसाइयों को वैकल्पिक रोजगार देने के प्रयत्न किये जायें। इस कार्य में आर्यसमाज की प्रेरणा हो- नेतृत्व अन्य व्यक्तियों को दिया जाये। विदेशों में निर्मित शाकाहारी संगठनों की जानकारी एवं मांसाहार की हानियों से स्थानीय डाक्टरों को अवगत कराने के लिए उन्हें ऐसा साहित्य भेंट किया जाये, ताकि वे अपने मरीजों को मांस भक्षण का परामर्श न देकर वैकल्पिक शाकाहारी शक्तिवर्द्धक भोज्य रोगियों को बताएँ।

7- आर्यसमाज में बड़े उद्योग पति-धनीमानी व्यक्ति भी कम नहीं हैं। नगरों में ये महानुभाव कालोनी आदि बनाते हैं। कुछ ऐसी कालोनी बनाई जायें चाहे उसमें थोड़े आवास ही क्यों न हों- पर सब आर्यों के हों- जिनके परिवारों में प्रातः जागरण से सायंकाल सोने जाने तक ऋषि निर्धारित मंत्रोच्चार सुनाई दें। एक छोटा उद्यान हो जिसमें एक छोटी यज्ञशाला हो। सभी परिवार अपने लिए भूमि क्रय-भवन निर्माण में धन व्यय करते हैं- वैसे ही यहाँ भी करें। पारस्परिक समता-प्रेम-संगठन का आदर्श आर्य जीवन एक उदाहरण बनें, जिसे देखने के लिए दूर-दूर से व्यक्ति आयें और स्वयं भी अपने नगरों में ऐसी कालोनी (बस्ती) "वेद पुरम" नाम से बनाएँ। ग्राम उपनगर, महानगर उपलब्ध भूखण्ड तथा अल्प, मध्य, उच्च आयवर्ग की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भविष्य में बनने वाले अथवा पुनरुद्धार पाने वाले आर्यसमाज मन्दिरों में सर्वत्र, एक रूपता लाने के लिए प्रथम, द्वितीय, तृतीय तीन प्रकार के मानचित्र सभा द्वारा बनाए जाएं। एक भाग यज्ञशाला आदि सर्वत्र समान हों। भवन कम से कम भाग में बनें- शेष भूमि में उद्यान आदि रखा जाये। किराए की दृष्टि से दूकानें या तो न बनाई जायें या पूर्ण सन्तुष्टि एवं सुरक्षा को ध्यान में रखकर किरायदार आर्यसमाजी ही रखे जायें।

8- स्वसुविधानुसार आर्यसमाज द्वारा अपने नगर-ग्राम के वृद्धजनों को समारोह पूर्वक सम्मानित करने की परम्परा डाली जाये। असहाय वृद्ध उपदेशकों समाज-सेवियों, सत्याग्रहियों एवं ईसाई-मुस्लिम मतों से परावर्तित होकर विद्वानों के उचित सम्मान एवं आर्थिक सहायता की व्यवस्था की जाये। सभाओं के पास बड़ी-बड़ी निधियाँ पूर्वज छोड़ गये हैं।- उनमें से यह व्यवस्था सरलता से की जा सकती है। जहाँ सम्भव हो "वृद्ध जन आश्रम" बना कर उनकी सेवा का यत्न किया जाये।

9- धनीमानी व्यवसायी दूरदर्शन पर विज्ञापन देते हैं- उनके नाम से कुछ नाटिकाएँ भी प्रसारित होती हैं। इनके माध्यम से ऐसी श्रृंखलाएँ प्रसारित की जायें जिसमें आर्यवीर बलिदानियों की कहानियां शास्त्रार्थों के चुटकुले और पाखण्ड निवारण के दृश्य हों। जाति-पांति अन्धविश्वास एवं कुरीति निवारण सम्बन्धी कहानियाँ भी दूरदर्शन पर प्रसारित करने की चेष्टा हो। बड़ी सभाएँ ऐसे लेख लेखकों से लिखने का आग्रह करें तथा उन्हें प्रोत्साहित करें तथा दूरदर्शन के अतिरिक्त इनके वीडियो कैसेट बनाये जायें और ग्राम-नगर सर्वत्र इनका दिग्दर्शन कराके वेद प्रचार किया जाये।

10- ग्राम व नगरों में जहाँ भी आर्यसमाज मन्दिर हैं, यदि वे बन्द रहते हैं या कोई व्यक्तिगत कार्य में उनका प्रयोग करता है, और आर्य सामाजिक गतिविधियों में उनका प्रयोग नहीं होता है। ऐसे सभी भवनों पर प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएँ एक-एक वानप्रस्थी या सन्यासी को नियुक्त करके वहाँ रखें। प्रश्न यह उठेगा कि वानप्रस्थी या सन्यासी इतने कहाँ हैं, और जो हैं वे इन झंझटों में फंसना नहीं चाहते। वास्तव में क्या हम इनका पूर्ण सम्मान करते

— शेष पृष्ठ ८ पर



बाल मनोरंजन ज्ञान पहेली-3

सत्यार्थ प्रकाशिका

1- इससे भिन्न कोई भी जीव इस ----- का कभी नहीं हो सकता। {विकार-प्रकार}

2- इसका विशेष ----- मुक्ति और उपासना विषय में किया जायेगा। {विचार-प्रचार}

3- -----उसको कहते हैं जो गुण कर्म्य स्वभाव और सत्य-सत्य व्यवहारों में सबसे अधिक हो। {श्रेष्ठ-ज्येष्ठ}

4- इस धातु से----- शब्द सिद्ध होता है। {आयु-वायु}

5- -----आत्मा अर्थात् स्वरूप महान है। {जिसका-उसका}

6- निरन्तर---- होने से परमेश्वर का नाम ब्रह्म है। {व्यापक-स्थापक}

7- तो ऐसा ही हम और आप सब लोगों को---- और करना भी चाहिए। {जानना-मानना}

8- उसका ऐसा ही वेदादि सत्शास्त्रों में स्पष्ट----- किया है। {व्याख्यान-आख्यान}

9- क्या परमेश्वर---- और उससे कोई उत्तम भी है। {सुप्रसिद्ध-अप्रसिद्ध}

10- और जो कभी----- नहीं होता उसी की उपासना करनी योग्य है अन्य की नहीं। {नष्ट-भ्रष्ट}

निर्देश:-

सत्यार्थ प्रकाश के किसी एक ही समुल्लास या भाग से दस वाक्यांश उद्धृत हैं। इनके रिक्त स्थान की पूर्ति हेतु साथ में दो शब्द दिए गए हैं इनमें से आपको उस शब्द का चयन कर रेखाचित्र को पूरा करना है, जिसका ग्रन्थ में प्रयोग किया गया है। सर्वशुद्ध या निकटतम शुद्ध पूर्तिकर्ताओं के नाम आर्यमित्र में प्रकाशित किए जायेंगे तथा "यथावसर सुविधानुसार वैदिक साहित्य से पुरस्कृत किया जायेगा। इस प्रतियोगिता में कोई शुल्क नहीं है। पूर्तियां इस अंक के प्रकाशन की तिथि से एक महीने के भीतर यहाँ छपे रेखाचित्र को भरकर संयोजिका को भेजने पर ही मान्य होंगी।

तृतीय पहेली रेखाचित्र

1	का	र	6	प	क
2	चा	र	7	न	ना
3	ष्ठ	×	8	ख्या	न
4	यु	9	प्र	सि	द्ध
5	स	का	×	10	ष्ट

प्रथम पहेली सर्वशुद्ध पूर्ति

1 प्र	का	श	2 व्या	ख्या	न
3 ना	श	×	4 धा	र्मि	क
5 मा	ता	×	6 ×	अ	न्य
7 म	चा	ते	8 अ	ल	ग
9 शो	भा	×	×	10 मा	ता

सत्यार्थ प्रकाश द्वितीय समु0

बाल मनोरंजन ज्ञान पहेली-1
सत्यार्थ प्रकाशिका के परिणाम

प्रथम- जिनकी पूर्ति सर्वशुद्ध सर्वश्री पाई गई:-

1- मुकेश आर्य वैदिक, अलीपुर कलां मुजफ्फरनगर।
2- कु0 राजेश्वरी महुआखेड़ा नैनीताल,
3- कु0 किरन महुआखेड़ा नैनीताल
4- रामेश्वर आर्य रनभुवाँ, झांसी
5- कु0 एकता गुप्ता मो0 सिंहान काशीपुर-{नैनीताल}
6- कु0 सुधारानी, बरदहा बाजार, बहराइच
7- रमेश चन्द्र आर्य बरदहा बाजार बहराइच।

द्वितीय-जिनकी पूर्ति में एक त्रुटि रही:-

संदीप कुमार, जवाहरपुरी बदायूँ

तृतीय- जिनकी पूर्ति में दो त्रुटियां रहीं:-

1- योगेन्द्र आर्य दोघट {मेरठ}
2- महेन्द्र प्रताप यादव, पहाड़पुर {वाराणसी}
3- अजय कुमार ग्राम पचरौंव {मिर्जापुर}

विजेताओं को बधाई

कृपया उत्तर संयोजिका के पते पर ही भेजें।

संयोजिका- कु0 प्रतिभा
द्वारा- प्रधाना महिला आर्यसमाज
आजमगढ़- 276001

भवाली आर्य समाज का उत्सव सम्पन्न

- भवाली आर्यसमाज का 69वाँ वार्षिक त्रिदिवसीय उत्सव पूज्य स्वामी-भजनानन्द व्यवस्थापक नारायण स्वामी-आश्रम रामगढ़ तथा भजनोपदेशक ब्रह्मानन्द, एवं शान्तिपाल जी के भजनोपदेशों और स्वामी आत्मानन्द व देवीदयाल और सन्यासी विज्ञानन्द जी के प्रवचनों से जनता बड़ी प्रभावित हुई, उत्सव में अल्मोड़ा, रुद्रपुर, हल्द्वानी आदि आर्यसमाजों के पदाधिकारियों ने तन मन और धन देकर योगदान दिया।

पृष्ठ 7 का शेष

अब आर्य समाज.....

? हमारी उपेक्षा के कारण ही ये इन सब कार्यों से दूर रहना चाहते हैं। इन्हें पूर्ण सम्मान व सुविधाएं प्रदान की जाएं और जिला स्तर या प्रान्त स्तर पर इनका संगठन बनाया जाये। जिनकोजहाँ नियुक्त किया जाये, उनसे पूर्ण सम्पर्क रक्खा जाये और यथोचित भोजन वस्त्र और मार्ग व्यय की व्यवस्था सभा के द्वारा होनी चाहिए। भले ही सभा सम्बन्धित समाज से भुगतान प्राप्त कर ले। प्रतिदिन समाज मन्दिर खुला रहे या निश्चित समय पर नित्य खुले, इसकी पूर्ण व्यवस्था होनी चाहिए। इन सभी आर्यवानप्रस्थी- संन्यासी को वर्ष में एक बार प्रशिक्षण भी दिया जाये ताकि एक समान कार्य-प्रणाली सर्वत्र अपनाई जाये। सभा द्वारा ऐसी स्थिति बनाई जाये कि उक्त नियुक्त संरक्षक स्वयं ही वहाँ रहना चाहें। इन्हें आवश्यकतानुसार स्थानान्तरित भी किया जा सकता है।

11- छोटे बड़े साधारण या महान सभी आर्य कवि या लेखक और साहित्यकारों को समय-समय पर समाज या सभाओं द्वारा सम्मानित किया जाये जिससे अन्य साहित्यकार भी इधर आकर्षित होकर आर्य लेखन आरम्भ कर सकें। आर्य लेखक, कवियों को सभाओं द्वारा विषय सूचित करके लेखन कराया जाये और प्रकाशन की व्यवस्था की जाये। लेखकों की पाण्डुलिपियों को संकलित रक्खा जाये और धीरे-धीरे छपाया जाता रहे। इन साहित्यकारों को लेखन का पारिश्रमिक नहीं मिलता है, फिर लिखते रहना, किसी तपस्या से कम नहीं है, जिसे मान्यता मिलनी ही चाहिए। पर्याप्त मात्रा में वैदिक साहित्य ट्रेक्ट आदि के रूप में वितरित करने की व्यवस्था हो।

स्व0 स्वामी वेदबोध सरस्वती को श्रद्धांजलि

आर्यसमाज श्रृंगार नगर, लखनऊ के तत्वावधान में लखनऊ जनपद की समस्त आर्य समाजों एवं जिला आर्य उप प्रतिनिधि-सभा की ओर से स्व0 स्वामी वेदबोध-सरस्वती {पूर्वनाम श्री विक्रमादित्य बसन्त} को भाव भीनी श्रद्धांजलियाँ दी गईं। इस अवसर पर अनेकों वक्ताओं ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को महान बताते हुए उनके निधन को आर्यजगत की अपूरणीय क्षति बताया। शोक सभा की अध्यक्षता जिला सभा के प्रधान आचार्य वेदव्रत अवस्थी ने की।

स्व0 शिवानन्द को श्रद्धांजलि

आर्यसमाज नरही, लखनऊ के तत्वावधान में 28-7-89 को स्व0-स्व0 शिवानन्द {पूर्व नाम बा0 शिवप्रसाद जी} को भावभीनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गईं। अनेकों वक्ताओं ने उनके कर्मठ व्यक्तित्व की प्रशंसा करते हुए उन्हें आर्यसमाज का समर्पित, निष्ठावान कार्यकर्ता बताया। सरस्वती विद्यालय कन्या इन्टर कालेज नरही तथा आर्यसमाज-नरही के प्रति की गई उनकी सेवाएं सदा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगी।

महिला मण्डल

आर्य संस्कृति में नारी का महत्व

गुणवती ग्रोवर, एम०ए०
प्राचार्या,
आर्य महिला महाविद्यालय,
टाण्डा (फैजाबाद)

[नारी तुलसी के विरवे के समान पवित्र, आंखों में मातृत्व की अटल ज्योति, सरल स्नेह प्रवाह लिए सर्व समर्पण कर देना चाहती है। वह त्याग और क्षमा की मूर्ति होने क साथ साथ उत्तम समाज के सृजन की प्रक्रिया का मेरुदण्ड है तथा उसका स्थान पुरुष से भी उँचा है।]

संस्कृति से हमारा तात्पर्य है? सच्चिदानन्द की द्रष्टि में मानव को ही सत् और चित प्राप्त हैं। बुद्धि के बल पर ही मानव आनन्द की खोज करता है, आनन्द ही सौन्दर्य है। मानव युग युगान्तर से सौन्दर्य की खोज में है। वह अपनी किसी रचना को पूर्ण मानकर संतुष्ट नहीं हो पाता उसको और भी सुन्दर बनाने का प्रयत्न करता है। यही विकास है यही संस्कृति है।

किसी देश की सभ्यता संस्कृति एवम उन्नति का मूल्यांकन वहाँ की नारी वर्ग की स्थिति से माना जा सकता है। जो राष्ट्र केवल भोजन पकाने एवम बच्चे पैदा करने का साधन मात्र मानते हैं वे दुर्भाग्य से अभी सभ्यता, संस्कृति तथा शिष्टता की दौड़ में बहुत पीछे हैं। हमारा प्राचीन वैदिक धर्म इसका साक्षी है कि उस समय स्त्रियाँ केवल संतान की जन्मदात्री एवम पाकशाला की देवी के रूप में प्रतिष्ठित न थीं वरन् पुरुष के साथ उसके प्रत्येक सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में समान भाग लेने की अधिकारिणी थीं। याज्ञवल्क्य की सहधर्मिणी मैत्रेयी और कात्यायनी इस प्रकार की सीमा तक पहुँच चुकी थी उन्होंने अध्यात्मिक धन के आगे लौकिक धन की सर्वथा उपेक्षा की। मनु महाराज कहते हैं यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमंते तत्र देवता, जहाँ इनकी पूजा नहीं होती वहाँ सब क्रियायें निष्फल हो जाती है ये पूज्यनीय हैं, गृह ज्योति हैं, प्रजापति ने प्रजा की उत्पत्ति एवम विस्तार के लिए इनकी सृष्टि की है। यें गृह लक्ष्मी हैं। प्रजा को जन्म देना या मातृत्व ही नारी जीवन की सार्थकता है। स्त्री की प्रसन्नता ही सम्पूर्ण परिवार की प्रसन्नता, शान्ति एवं समृद्धि है।

कोई भी धार्मिक अनुष्ठान बिना पत्नी के सहयोग से पूर्ण नहीं होता था। श्री राम ने सीता की अनुपस्थिति में राज्याभिषेक के अवसर पर उनकी स्वर्णमयी प्रतिमा की स्थापना करके काम चलाया था। प्राचीन काल में अध्ययन, स्वाध्याय तथा धार्मिक कार्यों में भाग लेने के साथ साथ रण योग में भी पति को सहयोग देती थीं। देवासुर संग्राम में कैकेयी ने अपने अनुपम पराक्रम एवं युद्ध कौशल से दशरथ को चकित कर उनसे दो वरदान प्राप्त किए थे। प्राचीन काल में उनकी पृथक सत्ता थी भले ही उन्होंने उसपर पतिव्रत धर्म का कवच पहन लिया रहा हो किन्तु उनका व्यक्तित्व पूर्ण रूप से सुरक्षित था। उनको विवाह में अपने पति चयन करने का पूर्ण अधिकार था और इस योग्य थीं कि अपनी भलाई बुराई भली प्रकार सोच सकें। वे अपनी विद्वता के बल पर द्रौपदी की तरह पतियों को भी अच्छी सीख देने को सर्वथा प्रस्तुत रहती थीं। स्वभाव से भावुक, संवदेनशील होने के नाते प्रेम तथा आत्म बलिदान को भावना से वे पुरुषों का दासत्व स्वीकार कर लेती थीं किन्तु कालान्तर में वही सेवा भाव उनके लिए घातक बन गया उन्होने अपने पैरों में खुद कुल्हाड़ी मारी स्त्रियों ने गृहलक्ष्मी होने का जो भार सेवाभाव से अपनाया था उसकी उनकी लाचरता एवम शीलहीनता समझ कर पुरुष ने उन्हें निराश्रित एवम अबला की संज्ञा दी।

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

सह धर्मिणी के स्थान पर वह केवल दासी एवम वासना की पूर्ति ही साधनमात्र बन गई। उसकी स्वतन्त्रता का हनन कर दिया गया।

पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने
पुत्रस्य स्थविरे मारे, न स्त्री स्वांतत्र्यमर्हति

परम्परागत रूढ़ियों ने भी स्त्रियों की उन्नति को क्षतिग्रस्त बना रखा है, इसके अतिरिक्त पर्दा प्रथा, अनमेल विवाह, उच्चशिक्षा का अभाव, कन्यापक्ष को नीचा समझा जाना, विधवाओं की हीनदशा, बहुविवाह, दहेजप्रथा आदि सब उनके पतन के कारण बने। उनपर पाश्चात्य सभ्यता का भी प्रभाव कम नहीं वह मात्र तितली बन कर अपने अंगों का प्रदर्शन करती फिरती है। ये दुर्बलताएँ उसके पतन का कारण हैं। नारी तो तुलसी के विरवे की तरह पवित्र, आँखों में मातृत्व की सरल ज्योति, सरल स्नेह प्रवाह सर्व समर्पण कर देना चाहती है, त्योग क्षमा की मूर्ति है।

परम्परा से प्राप्त, उत्तम ज्ञान से युक्त विदुषी, महान, उदार भावों से पूर्ण, विविध विद्याओं में प्रवीण ये तेरे नाम हैं तिरस्कार करने के अयोग्य है जिसकी हिंसा करना कभी भी योग्य नहीं है। इस उदात्त उपदेश की नितांत अवहेलना कर आजकल मनमानी दहेज न मिलने के अभाव में जो नव वधुओं को जलाकर हिंसा की जाती है वह एक अक्षम्य अपराध है और इन कुत्सित कार्यों की जितनी भर्त्सना की जाय कम है। ऐसे पुरुष मनुष्यता को कलंकित कर रहे हैं।

इस प्रकार आज जो नारी के लिए पुरुषों को समान अधिकार भी प्राप्ति के नारे लगाएँ जाते हैं- वह सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्धं त्यजीत पण्डित:" के रूप में समझना चाहिए। वस्तुन: नारी का स्थान जो पुरुष से भी उँचा एवम

शेष पृष्ठ १२ पर

हमारे पाठक क्या कहते हैं...

स्नेहशील तिवारी जी,

पिछले कुछ महीनों से आर्यमित्र के कलेवर में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।

9 जुलाई 1989 के अंक में सभी लेखों के शीर्षक आपने किसी कलाकार से लिखवाकर तो इसकी सज्जा को और भी सुन्दर बना दिया है। निश्चय ही आप सेट प्रिंटिंग से कार्य निखरता है। मैं मानता हूँ कि आपकी संस्था सक्षम है। अत: आप इसकी कम्पोजिंग भी कम्प्यूटर-फोटो सैटिंग से करवाएं तो इसपें और अधिक सौंदर्य आ जाएगा।

ससम्मान,

-डा० धर्मपाल
प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं०)

सभादरणीय सम्पादकजी,

आर्यमित्र का मनोहर मुद्रण, कलित कलेवर, सैद्धान्तिक सारगर्भित सामग्री- संकलन तथा आवश्यक समाचारों के समावेश से आर्यजगत के अन्तर्गत इसकी प्रतिष्ठा तथा ख्याति बढ़ी है। आशा है यह प्रकाशन परम्परा उत्तरोत्तर प्रगति की ओर अग्रसर होगी।

- सर्वेन्द्र शास्त्री,
सहमंत्री, सभा
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
मुनीश्वरानन्द भवन, पटना।

स्नेहशील तिवारी जी,

9 जुलाई 1989 के आर्यमित्र के सम्पादकीय स्तम्भ में अंकित "चीन की टूटती हुई दीवार" शीर्षक वाले प्रेरणाप्रद लेख में अन्त: गर्भित विचारावलि के लिए बधाई स्वीकार करें।

जिन-जिन युवकों ने इसे पढ़ा है प्रशंसात्मक मुख मुद्रा में मेरे सामने उसे सराहा है।

इस विचारावलि को कृपया कई अंकों का कण्ठहार बनने दीजिये। चीन की युवा शक्ति किन परिस्थितियों में जागी-उसका अजेय संगठन जिसमें बापू के सत्याग्रह जैसी जुझारू वृत्ति अन्तर्निहित थी। चहार दीवारी में घुटने वाली युवाशक्ति की छटपटाती हुई मनोव्यथा-, अत्याचार, उत्पीड़न का अन्तहीन दुश्चक्र। और तब उन सूत्रों का विस्तृत विवेचन जिनमें आपने वैदिक संस्कृति, सभ्यता के आधार भूत बिन्दुओं में इंगित किया है वैदिक साम्यवाद भी स्पष्ट अवधारणा बन गई है। ऐसा क्रमबद्ध विवेचन यदि मिले तो पश्चिमी साम्यवाद और वैदिक साम्यवाद का चित्रण अनेकों के लिए सुस्पष्ट होगा।

-विद्यासागर आर्य
आर्यसमाज मेरापुर, (फर्रुखाबाद)

देश के कर्णधारो आँखें खोलो

• द्वारिका प्रसाद त्रिचूर

आज भारत में चारों ओर विभाजक एवं कष्टदायी प्रवृत्तियाँ पनप रही हैं जिनसे हमारी बहुमूल्य स्वंतत्रता तथा हमारा राष्ट्रीय तानाबाना संकटापन्न हो गया है। हमारे राष्ट्रीय प्रतीकों यथा गणतंत्र दिवस, राष्ट्रीय गान राष्ट्रीय ध्वज के प्रति अवमानना का भाव दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है जिससे हमारे सामाजिक जीवन में दरारें पड़ रही हैं। जबकि राजनैतिक दल अपने राजनैतिक लाभ के लिए इस प्रकार की राष्ट्र विरोधी प्रवृत्तियों को न केवल प्रोत्साहित करते हैं, अपितु उनको अपना मूक समर्थन प्रदान करते हैं, हमारी सरकार ऐसे दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध उनके प्रभाव से प्राप्त होने वाले वोटों की लिप्सा के कारण उनके विरुद्ध कार्यवाही करने से कतराती है, इस सम्बन्ध में एक उदाहरण पर्याप्त है। दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम श्री अब्दुल्ला बुखारी को अपने समक्ष उपस्थित होने के लिए कई बार वारंट निकाले लेकिन शासन ने उच्च न्यायालय के आदेशों की पालना नहीं की। इससे स्पष्ट है कि हमारे देश के कुछ व्यक्तियों को उच्च राजनैतिक संरक्षण, प्राप्त है और वे हमारे उच्च न्यायालय तक को कोई सम्मान प्रदान नहीं करते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि ऐसे नागरिक अपने को कानून से ऊपर मानते हैं और ऐसे मामलों में वे स्पष्टतया बच निकलते हैं।

इसी प्रकार बंगला देश की सीमा से हमारे देश में घुसपैठ करने वाले लाखों बंगला देशी मुस्लिमों का प्रश्न है। ये विदेशी उत्तर भारत में पंजाब तक फैल गये हैं और दिल्ली में यमुना नदी के किनारों पर हजारों की संख्या में बस गये हैं तथा वे मतदाता भी बन गये हैं। उनके वोटों के पीछे दौड़ने वाले राजनैतिक दलों द्वारा की जा रही हमारे राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा का क्या यह स्पष्ट उदाहरण नहीं है। आसाम राज्य सरकार द्वारा भारत सरकार से इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय प्रश्न पर किये गये सभी अनुरोध व्यर्थ सिद्ध हुये। इससे यह सब सिद्ध होता है कि हमारी सरकार में इन सब राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने के लिये आवश्यक इच्छा शक्ति का अभाव है। अतः आवश्यक है कि नागरिक गण स्वंय जागरूक रहकर राजनैतिक दलों को बाध्य करें कि वे तो राष्ट्रीय हितों की उपेक्षा न करें। अपने राजनैतिक स्वार्थ से ये राजनैतिक दल वोटों के लिए अल्पसंख्यकों के प्रति तुष्टिकरण की नीति अपनाते हैं और साम्प्रदायिक स्थिति को विकट तर बनाते है।

हमारे देश में विभाजन के रूप में इसी साम्प्रदायिकता की अपूरणीय कीमत चुकाई है, जिसे हम लोगों को इतना शीघ्र ही नहीं भूल जाना चाहिये। हमारी सरकार एवं राजनैतिक दलों को देश के व्यापक हितों में ऐसे अलगाववादी एवं साम्प्रदायिक तत्त्वों को क्रूरता से कुचल देना चाहिये यही समय की मॉग है।

भूपति भवन में "ओ३म्" ध्वज लगा है

डॉ0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री
मंत्री, आर्यसमाज अमेठी,
सुलतानपुर।

[दिनांक- 10 मई के दैनिक-जागरण में उक्त भ्रामक समाचार प्रकाशित हुआ था जो आर्यमित्र में भूल से प्रकाशित हो गया है जिसका हमें खेद है।

- सम्पादक]

आर्यमित्र 21 मई के अंक में "भूपति भवन का झण्डा बदल गया" शीर्षक से एक टिप्पणी छपी है। यह सत्य नहीं है। भूपति भवन में जहाँ पर पहले "ओ३म्" ध्वज लहराता था, वहाँ अब भी "ओ३म" ध्वज लहर रहा है। यह गलत समाचार किसी ऐसे व्यक्ति ने भेजा है जो अमेठी के वर्तमान राजा डॉ0 संजय सिंह का राजनैतिक दृष्टि से विरोधी है। चूंकि डॉ0 संजय सिंह जनता दल (उ0प्र0) के महासचिव भी हैं। अतः उनके भूपति भवन में ओ३म् ध्वज के साथ जनता दल का झण्डा भी लगाया गया है।

डॉ0 संजय सिंह ने स्व0 राजर्षि रणंजय सिंह की स्मृति में 2 लाख रुपये देकर "राजर्षि रणंजय संस्थान" स्थापित करने की घोषणा की है। इस संस्थान का उद्देश्य स्व0 राजा-साहब के आदर्श उद्देश्यों- "वैदिक धर्म प्रचार, शिक्षा प्रसार तथा समाज सुधार का कार्य अमेठी क्षेत्र में करना है।

अभी कुछ महीने पहले डॉ0 संजय सिंह की प्रेरणा से इस क्षेत्र के प्राइमरी-स्कूल के छात्रों की वैदिक मन्त्रपाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। पुरस्कृत छात्रों को स्वयं राजा डॉ0 संजय सिंह ने नकद राशि भेंट की तथा सभी प्रतियोगियों को सन्ध्या और हवन की पुस्तकें भेंट में दी। निकट भविष्य में महाविद्यालय स्तर पर एक प्रतियोगिता डॉ0 संजय सिंह आयोजित करने जा रहे हैं जिसका शीर्षक होगा- "महर्षिदयानन्द के अनुयायी राजर्षि रणजंय सिंह और अमेठी। प्रथम पुरस्कार 1000=00, द्वितीय पुरस्कार 500=00, तथा तृतीय पुरस्कार 250=00 होगें। इस वर्ष राजर्षि रणजंय सिंह के जन्म दिवस पर 29 अप्रैल को अमेठी में एक भव्य कार्यक्रम "राजर्षि स्मारक व्याख्यान" का आयोजन किया गया। इस व्याख्यान में मुख्य अतिथि वैतानिक परिव्राजक आर्य सन्यासी स्वामी-सत्य प्रकाश सरस्वती थे तथा अध्यक्षता कुलपति अवध विश्व विद्यालय ने की।

अन्नप्राशन संस्कार

दिनांक 16 जुलाई 89 को चि0 वेदवसु सुपुत्र श्री दयाशंकर आर्य निवासी भीकमपुर जैनी (बदायूँ) का अन्नप्राशन संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से आचार्य बुद्धदेव जी साधु आश्रम अलीगढ़ के पौरोहित्य में सौल्लास सम्पन्न हुआ। आचार्य जी ने संस्कारों पर प्रकाश डाला।

शुभ विवाह संस्कार

सार्वदेशिक आर्य वीरदल पश्चिम उत्तर प्रदेश बिन्द की फतेहपुर के संचालक डा0 बालकृष्ण आर्य विकल के द्वितीय पुत्र चि0 महेन्द्र कुमार आर्य एम0ए0 का शुभ विवाह आयु0 कु0 इन्द्राणी सुपुत्री शाह जी महावीरप्रसादजी गुप्त अनूपपुर म0प्र0 के साथ 24 मई 89 को पं. शिवशर्मा तथा आचार्य असर्फीलाल शास्त्री गुरुकुल सिराथू इलाहाबाद के पुरोहिताई में जहानाबाद फतेहपुर में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। संस्कार में जिले के प्रतिष्ठित आर्यजन उपस्थित थे।

- सभा के भजनोपदेशक श्री सीताराम आर्य द्वारा निवासी ग्रा0 खेरवा-पुरबावाँ (हरदोई) के प्रताप आर्य की पुत्री का नामकरण संस्कार 17 जुलाई को वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

- खगड़िया (बिहार) 10 जुलाई 1989 को आर्यसमाज के कार्यकर्ता श्री हरिबोलजी की पौत्री राजरानी का विवाह संस्कार नवादा (बिहार) निवासी श्री सुरेशप्रसाद के सुपुत्र श्री मनोज कुमार के साथ डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। उपस्थित जन समुदाय के ऊपर इस संस्कार का बड़ा सुन्दर प्रभाव पड़ा।

पटना- ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष चतुर्थी, बुधवार को बिहार- के आर्यसमाज के विद्वान डा0 देवेन्द्र कुमार जी सत्यार्थी की द्वितीय सुपुत्री सुश्री ललिता कुमारी का पाणिग्रहण संस्कार फुलवारी शरीफ निवासी श्री बैजनाथ राय के सुपुत्र श्री उमेश राय के साथ सम्पन्न हुआ। आचार्य कापद स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती मथुरा, ने सम्भाला इस प्रभावशाली संस्कार का फिल्म भी तैयार किया गया।

आवश्यकता है

श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम की कु0 सीता आयु 25 वर्ष ऊँचाई 148से0मी0 हाई स्कूल उत्तीर्ण कन्या हेतु योग्य सरकारी सेवारत वर की आवश्यकता है। पता-

श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम
6-तिलक मार्ग, देहरादून-248001

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का आर्यसमाज मंदिर हरिद्वार में आगमन

हरिद्वार दिनांक- 13-7-89को सांय 5 बजे मेरठ से हरिद्वार के लिए प्रस्थान, रात्रि 8 बजे आर्यसमाज-मन्दिर हरिद्वार, हरिद्वार पहुँचने पर सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का सैकड़ों नवयुवक कार्यकर्ताओं ने श्रीमती संतोष रंगन एवं श्री विद्यासागर के नेतृत्व में माल्यार्पण किया। "आर्यसमाज अमर रहे", के जय घोषों से वातावरण गूँज उठा। स्वागत करने वालों में मुख्य रूप से श्रीमती सन्तोष जी रंगन, श्री विद्यासागर जी, श्री जयनारायणजी- "अरूण", श्री गौतम जी, श्री श्री चन्द्र जी गौड़ आदि महानुभाव थे। आर्यसपाज के सत्संग हाल में श्री जयनारायण-जी "अरूण", के स्वागत भाषण, श्री-विद्यासागर जी, श्री श्री चन्द्र जी गौड़, श्री गौतम जी एवं श्रीमती संतोष रंगन जी, के संक्षिप्त स्वागत भाषण के पश्चात् सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी, ने आज की सभा में अधिक संख्या में युवकों के उपस्थित होने पर हर्ष व्यक्त किया। भिन्न-भिन्न आर्यसमाजों से आए हुए कार्यकर्ताओं के परिचय देने के पश्चात् सभा प्रधान जी ने देश में विदेशों के इशारे पर हो रहे धर्मपरिवर्तन की चर्चा करते हुए युवकों का आह्वान किया कि वे आगे आवें और इस अराष्ट्रीय कुकृत्य को रोकने का पूरा प्रयत्न करें। उन्होंने आगे कहा कि देश में युवाशक्ति को पंगु बनाने के लिए अश्लील साहित्य, हिंसा और अश्लीलता फैलाने वाले चलचित्र, ब्ल्यू फिल्मस्, तथा तस्करी से देश में करोड़ों रूपये की हीरोइन, स्मैक्स और ब्राउन शुगर रोज आ रही है जिसे हमारे देश के युवक और युवतियाँ प्रयोग कर मृत्यु का आलिंगन कर रहे हैं। शराब ने युवकों के मस्तिष्क को बिगाड़ रखा है। पंजाब में उग्रवाद, काश्मीर में विदेशी घुसपैठियों द्वारा अव्यवस्था, बोडो आन्दोलन आदि देश को तोड़ने के भयंकर षड्यन्त्र हैं। पूरा पूर्वांचल प्रदेश इसाईयों के चंगुल में है। इस देश में अल्पसंख्यक आयोग साम्प्रदायिकता का विष देश में घोलता है। प्रलोभन और उत्पीड़न के शिकार हरिजन भाई सिख बन रहे हैं।

-संवाददाता।

सभा प्रधान श्री इन्द्रराजजी द्वारा नई आर्यसमाज गल्हैता का शिलान्यास

दिनांक5 11-7-89 को सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी द्वारा नये आर्यसमाज-गल्हैता (मेरठ) का शिलान्यास किया गया। श्री सभा प्रधान जी का गल्हैता पहुँचने पर हार्दिक स्वागत किया गया। कार्यक्रम यजुर्वेद के खण्ड पाठ यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। ब्रहमा श्री फूलसिंहजी, प्राचार्य आदर्श वैदिक इण्टर कालेज चौगामा (दाहा) मेरठ थे।

यज्ञ के उपरान्त अपने शिलान्यास भाषण में सभा प्रधान जी ने बताया कि जब महर्षि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने आर्यसमाज की स्थापना की थी तब हम लोग परतन्त्र थे। आज स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में कुछ ऐसी परिस्थितियाँ बन गई हैं कि विदेशी शक्तियाँ अपने देश में धर्मान्तरण के द्वारा देश को तोड़ने का प्रयन्न कर रही हैं। सामान्य धारणा थी कि जब विज्ञान फैलेगा तो अन्धविश्वास दूर होगा, परन्तु दूरदर्शन पर रामायण और महाभारत के प्रदर्शन एवं अन्य कार्यक्रमों के प्रदर्शन से अन्धविश्वास बढ़ा है घटा नहीं है। यह सब आर्यसमाज के लिए चुनौती है। आज संसार आणुविक हथियारों के कारण विनाश के कागार पर है। इधर उद्योगीकरण से वायु प्रदूषण जल प्रदूषण, स्थल प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण बढ़ा है। आर्यसमाज द्वारा प्रचारित प्राचीन यज्ञ पद्धति ही इन प्रदूषणों को हटाने का एक उपाय है। यज्ञ के माध्यम से हृदय परिवर्तन और सात्विक भावना एवं विचारों से आणविक हथियार नष्ट किये जा सकते हैं।

अतः यह एक सौभाग्य की बात है कि राष्ट्रवादी विचार धारा के प्रचार और प्रसार के लिए, वेदों के विमल प्रकाश को फैलाने के लिए एवं संसार में सुख, शान्ति और आनन्द की कामना से इस आर्यसमाज का शिलान्यास मेरे द्वारा किया जा रहा है।

- संवाददाता।

सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी द्वारा आर्यजनों का उद्बोधन

(हरिद्वार) दिनांक- 14-7-89को आर्यसमाज मन्दिर हरिद्वार में आर्यजनों को उद्बोधित करते हुए कहा कि हमारा व्यापक समाज बच्चों, युवाओं, प्रौढ़ों, बुद्धिजीवियों, श्रमिकों एवं महिलाओं से मिलकर बनता है। आर्यसमाज के पास सब प्रकार के साधन हैं और वह समाज के प्रत्येक भाग को स्वस्थ्य बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं। बच्चों पर और बच्चियों पर अच्छे संस्कार डालने के लिए आर्य कुमार सभाएँ और आर्य कुमारी सभाएँ हैं। युवकों के लिए आर्यवीर दल और आर्य रक्षा युवा आन्दोलन, ये दोनों संस्थाएँ कार्यरत हैं। प्रौढ़ों और गृहस्थियों के लिए आर्यसमाजों के साप्ताहिक सत्संग हैं। बुद्धि जीवियों के लिए वैदिक एवं दार्शनिक विषयों पर मनन है। श्रमिकों के लिए यज्ञ पद्धति द्वारा उन में परिश्रम, ईमानदारी, तथा श्रम के प्रतिनिष्ठा के प्रबल विचार हैं। एवं महिलाओं के लिए नारी शिक्षा, नारीस्वतन्त्रता, एवं महिलावर्ग को देश की मुख्यधारा में जोड़ने के वैदिक विचार और संस्कार हैं। आर्यसमाज अपने कार्यक्रमों पर चलता हुआ देश का चहुमुखी विकास करने में प्रयत्नशील है।

आप आर्य पुरूषों का कर्तव्य है कि इन कार्यक्रमों में तीव्रता लाने के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। ताकि संसार में भारत का मस्तक ऊँचा हो सके, और संसार चरित्र की शिक्षा लेने के लिए भारतीय मनीषियों के पास आकर सुख, शान्ति और आनन्द का मार्ग प्राप्त कर सकें। आर्यसमाज हरिद्वार की ओर से सभा प्रधान श्री इन्द्रराजजी को श्रद्धानन्द अतिथि भवन लखनऊ के लिए 1001/- रूपये श्रीमती सन्तोष-रंगन प्रधान आर्य समाज हरिद्वार ने भेंट किए।

देश की शिक्षा पर शराब का पैसा शिक्षा को भ्रष्ट किए हुए है। इस वर्ष सामूहिक नकल हुई है जो देश की क्षमता के लिए एक चुनौती है। भ्रष्टाचार का बोलबाला है देश में नगर और देहात में, हत्याकाण्डों के द्वारा असुरक्षा की भावना फैल रही है। देहात शहर की ओर भाग रहा है। इन सब समस्याओं का समाधान एक मात्र आर्य युवक हैं। श्री सभा प्रधान जी ने युवकों को उद्बोधन करते हुए देश की स्वतन्त्रता, अखण्डता और प्रभुसत्ता की रक्षा के लिए आगे आने का आह्वान किया तथा देश की रक्षा के लिए हर प्रकार का बलि दान देने के लिए तैयार रहने की प्रेरणा की।

- आर्यसमाज भूमा का 26वाँ वार्षिक उत्सव ग्राम भूमा जनपद मु0नगर में बड़े हर्ष उल्लास के साथ दिनांक- 17,18,19 जून सन 1989ई0 को सम्पन्न हुआ। जिसमें आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान, सन्यासी, भजनोपदेशक पधारे।

पूज्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी वेदवक्ता गम्भीर रूप से अस्वस्थ

आगरा- पूज्य स्वामी स्वरूपानन्द जी सरस्वती वेद वक्ता इधर कुछ दिनों से गम्भीर रूप से बीमार चल रहे होगा। स्वामी जी इलाज करा रहे हैं, कोई राहत नहीं मिल पायी है और इस समय स्वामी जी आर्थिक परेशानियों से भी परेशान हैं इनके पास इतना पैसा नहीं है कि अपना समुचित इलाज करा सकें।

नगर आर्यसमाज जौनपुर को जब स्वामी जीनेअपने बीमारी का समाचार दिया नगर आर्यसमाज जौनपुर ने तत्काल ही सौ रूपया चिकित्सा के लिये स्वामी जी के निवासस्थान आदर्शनगर बलकेश्वर कालोनी आगरा के पते में भेजा। आर्यजगत से दानीमहानुभावों से निवेदन है कि पूज्य स्वामी जी के जीवन रक्षा के स्तर पर उपरोक्त पते पर आर्थिक सहायता प्रदान करें।

-राधेमोहन गुप्त, जौनपुर।

शोक समाचार

- स्वामी शिवानन्द (पूर्वनाम बा0-शिवप्रसाद नरही) का आकस्मिक निधन 24-7-89 को हो गया। वे आर्यसमाज में कर्मठ ऋषिभक्त एवं आर्य सन्यासी थे। उनके निधन से आ0स0 को गहरी क्षति पहुँची है। प्रभु उनकी आत्मा को शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

-सभामन्त्री।

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५- मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : ४५६६३
पंजीकरण सं0 एल0 डब्ल्यू/एन पी ७६
श्रावण शुक्ल- ५
६ ,अगस्त, रविवार, १९८९ ई.

पृष्ठ -६ का शेष....

महत्वपूर्ण रहा है। उसे प्रण्यगन्धा, शिवा, मही, सुदुधा, सुजामिका आदि शब्दों से सम्बोधित किया गया है। यह सिद्ध है कि नारी अति मंगलमयी एवम महिमा सम्पन्न है। नारी उत्तम समाज के सृजन की प्रक्रिया का मेरुदण्ड है। योग्य सुसंस्कृत संतान उसके आँचल में पलकर बनते हैं। माता सन्तान की प्रथम गुरु है। गर्भावस्था से लेकर 5 वर्ष तक जो प्रभाव एवम संस्कार सन्तान पर माता डालती है वह कोई विश्वविदयालय नहीं कर सकता। इसी मूल थाती को लेकर वह जीवन पर्यन्त विकसित होता है। स्पष्ट है कि नारी का सुशिक्षित होना कितना आवश्यक है, समाज में इसलिए उसका ऊँचा स्थान है वह निर्माण करती है।

आर्य समाज बॉफनेर
(अलीगढ़)

प्रधान : श्री डिप्टी सिंह

मंत्री : श्री देवेन्द्र कुमार चौहान

कोषाध्यक्ष : श्री विजय कुमार गोविल

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) श्रावण शुक्ल ११, रविवार- संवत् २०४६ वि०, दिनांक १३, अगस्त १९८९ (घोषणा पत्र सं. ७/२८-२-२५)



आदानं हि विसर्गाय सतां वारिमुचामिव-

सज्जनों की सम्पत्ति बादलों की तरह बरसने के लिए होती है। वे देने के लिए ही अर्जित करते हैं।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१.०० रू. मात्र

प्रकाशन का ६२वाँ वर्ष

अंक - ३२

श्रावणी पर्व पर वेद प्रचार के लिए दक्षिणा दीजिए

वेद प्रचार सप्ताह उत्साहपूर्वक मनाइए

——प्रचार यात्रा धनाभाव में रुकने न पावे——

मानवता के प्रतीक परमपावन वैदिक धर्म का विश्व में प्रचार करने में शताधिक वर्षों से सततरत, आत्माहुत आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के वेदप्रचारकोश में श्रावणीपर्व पर मुक्तहस्त होकर दान दीजिए। गंगा यमुना की पावन संगमस्थली पर बसा हुआ हमारा यह प्रदेश भगवान राम और कृष्ण की जन्मभूमि है। आर्यो की कर्मभूमि है। ऋषिवर्य की दीक्षाभूमि है। इस धरती को और इसके माध्यम से विश्व की धरती को वेद की ऋचाओं से गुंजित करना है प्यार और दीक्षा के बल पर। आर्यों को इस पावन पर्व पर तनमन के साथ ही धन की वर्षा करनी है। अमर वेदवाणी में हमारी साधना का स्वर कहता है:-

उपहूता भूरिधना सरवाया स्वादु संयुदः।
अक्षुध्यास्त अतृष्यास्त मा अस्मद् बिभीतना।।

बहुत सा धन कमाने वाले हम सब मिलकर बैठकर जीवन का आनन्द लेगें। हमारे बीच कोई भूखा न रहेगा कोई प्यासा न रहेगा। कोई हमसे भयभीत न होगा, हम सबको अभयदान देने वाले हैं। हम अपने धन को पुण्य के हित हजार हाथों से लुटा देने वाले हैं।

कितना सुन्दर वैदिक साम्यवाद है। पुरुषार्थ से कमाना, किसी का बलपूर्वक अथवा बेईमानी से न हड़पकर ईमानदारी से कमाना और स्वेच्छा से अभावग्रस्तों में प्रीतिपूर्वक वितरित कर देना--- वेद की शिक्षा है क्योंकि पुरुषार्थ से कमाया हुआ धन ही सुधन है पापार्जित तो कुधन है। वेद मानवता का आदिस्रोत है, प्रभु की दिव्यवाणी है उसके प्रचार-प्रसार में लगी संस्था को दान देना महान् पुण्य कार्य है दिव्य कार्य। चुनाव आदि में प्रचार के लिए करोड़ों रुपया अल्पसमय में एकत्र कर लिया जाता है। पर कैसा आश्चर्य है धर्मप्रचार के लिए धनार्पण करने समय हम आँख मून्द लेते हैं जबकि धर्मप्रचार में लगाया हुआ धन हमें पुण्यशीला नौका पर बिठाकर भवसागर से पार लगाने वाला है। सभा भवन परिसर में बनने वाला हमारे दान का यह मूर्तिमन्तरूप अतिथिभवन ओ३म्ध्वजमण्डित होकर दिग्दिगन्त को वैदिक ऋचाओं से गुजांयमान करने को लालायित है।

आइए सभा की झोली भर दीजिए। अपनी आवश्यकताओं का परीक्षण कीजिए और आवश्यकता से अधिक संचित इस पुण्यझोली में डाल दीजिए। वेदप्रचार सप्ताह के पावनपर्व पर प्रत्येक आर्य का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह कम से कम एक सौ एक रुपया एकत्रित कर वेद प्रचारार्थ सभा कार्यालय में मनी आर्डर, बैंक ड्राफ्ट अथवा पोस्टल आर्डर द्वारा भेजें। आपका धन धर्म की रक्षा में लगेगा, धर्म की रक्षा होगी चाणक्य का वचन है **"धर्मस्यमूलमर्थः"** धर्म की रक्षा अर्थ से होती है।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उच्छल तू गजकर गाज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- श्रावण शुक्ल-११, संवत् २०४६ वि:
१३ अगस्त १९८९, दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

सम्पादकीय

वेदोऽखिलोधर्ममूलम्

— — अनन्त शक्ति सम्पन्न अनन्तज्ञानराशि के भण्डार विधाता के इस अद्भुत संसार में विचित्रताओं का पारावार नही है। ऋषि दयानन्द ने कहा- "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है"। तो सृष्टि के आदि विधि-निर्माता भगवान मनु ने वेदसदन के तोरण-द्वार पर यह अमरवाक्य अंकित कर दिया- "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्"। वेद नहीं नहीं, वेद की एक एक ऋचा, चरण, पद, वर्ण, स्वर, मात्रा और ध्वनि सब धर्म के लिए समर्पित हैं। धारणात्मक शक्तियों, जीवन को परम आनन्दमयी माँ की गोद में ले जाने वाली व्यवस्थाओं और कृतियों को ही धर्म कहा जाता है। **"यतोऽभ्युदय निः श्रेयस सिद्धिः स धर्मः"** - जिससे ऐहिलौकिक पारलौकिक दोनों कल्याण हों वही तो धर्म है। और ऐसे शाश्वत धर्म की शिक्षा केवल मात्र वेदों में ही उपलब्ध है। हम आर्यों का सर्वत्र यह समान विश्वास है कि मानव कल्याण के लिए ही सृष्टि के आदि में परम पिता परमात्मा ने हमें यह ज्ञान दिया था। आज संसार में जितने भी धर्म प्रचलित हैं - इस्लाम, ईसाइयत, यहूदी, बौद्ध, पारसी आदि उन सबमें दी गई सत-शिक्षाएं वेदों से ही ली गई हैं, क्योंकि यह सर्वमान्य सत्य है कि वेद ही संसार में प्राचीनतम पुस्तक है। जेकोलियट ने लिखा है "Rigveda is the oldest book in the Library of the World." सृष्टि के आरम्भ में मानव को इस ज्ञान की आवश्यकता थी अन्यथा वह पशुवत् होता। वाणी होते हुए भी वह रंभाता या मिमियाता, सुन्दर छन्द रचना, ज्ञान विज्ञान के आदान प्रदान को सशक्त माध्यम बनाने वाली सुन्दर शब्द रचना नहीं कर सकता था। वेद स्वयं कहता है - **यज्ञेन वाचः पदवीयमायन् तामन्वविन्दन् ऋषिषु प्रविष्टाम्** - सृष्टि के प्रारम्भ में यज्ञ रूपी परमात्मा से वेदविद्या की प्राप्ति के योग्य हुए ऋषियों में प्रविष्ट हुई वेदवाणी को परस्पर एक दूसरे में प्राप्त कराया। गुरु शिष्य परम्परा का प्रारम्भ भी यहीं से हुआ। परमात्मा हमारा आदि गुरु है- "सः पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्"।

हम आर्यों की जीवन -पद्धति में इसके सर्वत्र दर्शन होते हैं। महाभारत-कालपर्यन्त हमारी धार्मिक, राजनैतिक, कार्मिक, पारिवारिक, आर्थिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, विश्वबन्धुत्व, भौतिक-समृद्धि, आध्यात्मिक उन्नति, मानव कर्तव्य, उच्चशिक्षा आदि सभी का आधार वेदविहित शिक्षाएं थीं। वेद की शिक्षाओं को जैसे जैसे हमने भुलाया हमारी जीवन पद्धति में विकृतियाँ आने लगीं और निःसन्देह आज मानव समूह में जहाँ-जहाँ विकृतियों के दर्शन हो रहे हैं उसका मूल कारण वेद की शिक्षाओं का अभाव है। वेद मानव जाति को प्यारे प्रभु का दिया हुआ अनमोल उपहार है। आर्यो! आज वह तुमसे गुरु-दक्षिणा माँग रहा है। तुम्हारा ऋषि अन्जुलि भर लौंग लेकर खड़ा हो गया था- कहने लगा मेरे पास और कुछ नही है गुरुवर्य! यह चरणों में समर्पित करने लाया हूँ।

आपको लौंग पसन्द भी हैं। अन्धा बड़ा होशियार था उसने अन्दर की आँखों से देख लिया था। अरे, इस ब्रह्मचारी के पास तो बहुत कुछ है मैं जिसे ढूँढ रहा था- वह तो यही है। कहा- नहीं वत्स। मुझे लौंग नहीं चाहिए. मुझे तो तेरा जीवन चाहिए----- वेद प्रचार के लिए, वेद प्रचार के लिए----- वेद प्रचार के लिए-----। और वह तथास्तु कहकर निकल पड़ा। जगंलों में भटकता रहा घर-घर अलख जंगाता रहा और फिर एक दिन सो भी गया तुम्हारे ही हाथ से प्याला पीकर।

आज वह हमसे गुरुदक्षिणा माँग रहा है. विरासत में उसने हमारे पास प्यारे प्रभु की बड़ी अनमोल धरोहर छोड़ी है। हमारे पास कमी किस चीज़ की है। केवल जागरूक होने की आवश्यकता है। वह गुरुदक्षिणा में केवल वेद प्रचार चाहता है। इस वेद प्रचार सप्ताह में क्या हम इस गुरुदक्षिणा को दे पायेंगे ?

हार्दिक बधाई

लखनऊ नगर महापालिका के कई वर्षों के अन्तराल के बाद सम्पन्न हुए चुनाव में आ0स0 गणेशगंज से सम्बन्धित सर्वश्री राजाराम राठौर, नृपेन्द्र पाण्डेय, सुरेशचन्द्र तिवारी एवं आ0स0 नगर के मंत्री श्री रेवती रमण- रस्तोगी के चुने जाने पर सभा मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए उन्हें बधाई दी है।

- संवाददाता।

दान हेतु अपील

प्रमाणित किया जाता है कि पाली दयानन्द-जूनियर हाईस्कूल पाली {मेरठ} का भवन निर्माण हो रहा है। दान दाताओं से प्रार्थना है कि इस भवन निर्माण में अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग दे कर कृतार्थ करें।

-इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश, लखनऊ।

कविता

वेदविभव

"प्रणव" शास्त्री
एम0ए0 महोपदेशक

विश्व रचना में रमणीय पिता
का यह उज्जवल उपहार, जगत् का
करने को कल्याण कला का प्रकटित
सुरभित सार" प्रकृति ने प्रियतम का
पा प्यार रचायें निर्माणों के गीत,
गूँजने लगे धरागंण में सहज स्वर समता
शुचिसंगीत " विविध रचनाएं कर
श्रृंगार नाचने लगी स्वयं सप्रीति
सजग हो उठा विश्व का प्राण जिसे
सब कहते हैं संसार।।1।।
ऋग्यजु, साम, अथर्व - संकल्प कल्प
में यथापूर्ण महिमान ऋषिवर अग्नि,
वायु, आदित्य अंगिरा- मस्तिष्कों में
आन। प्रकाशित श्रवण - प्रतिष्ठा में
प्रतिष्ठित हो गये श्रुति सज्ज्ञान।।"
बहने लगी लोक में कलित अलौकिकरस
की गंगाधार।।2।।
उषा ने खोले अपने नयन सूर्य की
किरणों से कर मेल
पानकर वैज्ञानिक अनुपान ऋचाएं लगीं
खेलने खेल।
कर्म के विकसे कन्चन कञ्ज कुन्ज में
पहिने सुरभि-हमेल
धरा में होने लगे प्रबुद्ध संकलन चेतन
में व्यापार ।।3।।
भरा है ज्ञान और विज्ञान उच्चतम
जगतो में साहित्य
मिटाने अन्ध, अनय, अज्ञान वेद ही
मानो हैं आदित्य
समुन्नति भौतिक दैविक द्वार खुला है,
आध्यात्मिक पाण्डित्य मनुज द्विज कहलाते
हैं आर्य कार्य, गुणाधार, स्वभाव सुधार।।4।।
जन्मना नहीं ऊँच या नीच नहीं है,
देशकाल - प्रतिबन्ध
स्ववसुधा सारी एक कुटुम्ब सभी का
सबसे है सम्बन्ध।
न पावे कोई किससे कष्ट नष्ट हो
भेदभाव छल-छन्द
स्नेह की तरुण तरंगिणि बहे मिलन
का सजता हो त्यौहार ।।5।।
विचारों का यह मौसम मन्द न होवे
किन्चित भी प्रतिकूल
मनुज ही नहीं यहाँ पशु-पक्षि सभी
हो सबके ही अनुकूल।
सभी हों सबके उन्नति मूल राष्ट्र में
खिले कला के फूल नवोन्नति शिखर
चूमले कर्म मर्म की आवे वरद बहार।।6।।
इसके लिए यही है ध्येय ध्यान में
रखें धरा के देश
यही है श्रेय यही है गेय गुणों का
गायन हो सविशेष।
यही है समुचित एक विवेक "प्रणव"
का पौरुषमय सन्देश
जगत् में होवे केवल मात्र वेद का पावन
प्रबल प्रचार।।7।।

शास्त्री सदन, रामनगर {कटरा}
आगरा-6 {उ0प्र0}

गतांक से आगे----

उसके पास वेदार्थ की कुंजी थी...

□ डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
भू0पू0 कुलपति गुरुकुल कांगड़ी।

हम पिछले लेख में लिख आये हैं कि संसार के प्रचलित धर्मों में भिन्न-भिन्न रूप में यह चर्चा मौजूद है कि सत्य-ज्ञान आदि सृष्टि में मौजूद था, परन्तु वह गुहा में निहित है, ताले में बन्द है, ताला खोलकर उसे निकाल भर लाना है। अथर्ववेद में तो यह बात स्पष्ट रूप में कही गई है। वहां तो यह भी कहा गया है कि ताले में बन्द वह सत्य-ज्ञान "वेद" है। अथर्ववेद के जिस स्थल का हम उल्लेख कर रहे हैं वहां उल्लिखित है- "यस्मात् कोशात् उदभराम वेदम्"- जिस कोश से हमने "वेद" को उठाया था वहीं सुरक्षित रख रहे हैं- "तस्मिन् अन्तः अवदध्म एनम्"। यहां तो स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि "वेद" ही वह सत्य-ग्रन्थ हैं जो अब तक तिरोहित रहे थे। जो चाहे, इस पेटी की चाबी ढूंढ कर उसे निकाल ले और उसे छिपे रहस्य को जान ले। यह तो स्पष्ट है कि जिन शब्दों का हम प्रयोग कर रहे हैं वे हमारे अपने शब्द हैं, ठीक इन्हीं शब्दों में तो यह सब-कुछ नहीं कहा गया, किन्तु भावार्थ इस मंत्र का यही है। हमें भावार्थ से अभिप्राय है, शब्दार्थ से नहीं।

कोई समय अवश्य रहा होगा जब आदि-सृष्टि में सारा संसार वेद-ज्ञान से अवगत था, परन्तु ऐसा समय भी आया जब मंत्र मात्र रह गये, उनका अर्थ किसी की समझ में नहीं आया। वह समय ऐसा था जब वेद-ज्ञान लुप्त हो गया था, सिर्फ मंत्र-पाठ रह गया था। उस समय का ब्राह्मण-समुदाय केवल इतना जानता था कि ये बड़े महत्व के, गहन-ज्ञान के ग्रन्थ हैं, इनमें आदि-सृष्टि का रहस्य भरा हुआ है, इसलिये इनका अर्थ न जानते हुए भी वे इन्हें रटने लगे ताकि ये कायम रहें, शायद कोई समय आ जाय जब इनमें निहित रहस्य प्रकट हो जाय और वह देश के काम आये। चिर-काल तक, अर्थ-ज्ञान के बिना ब्राह्मणों के स्मृति-बल पर वेद कायम रहे मानों पेटी में बन्द रहे। जब देर तक ऐसा समय रहा कि वेद सिर्फ रटे जाते थे, तब इस देश में कौत्स नाम के एक विद्वान् हुए जिन्होंने कहा- "निरर्थकाः-हि मंत्राः"- यह मंत्रों की रटन्त बेकार है क्योंकि इन्हें सिर्फ रटा जाता है, वैसे इनका जीवन में कोई प्रयोजन नहीं। जब यह स्थिति बढ़ती ही गई तब ब्राह्मणों को भी सोच पड़ी होगी कि ऐसी स्थिति में तो वेद का पठन-पाठन सर्वथा लुप्त हो जायगा, इसलिये उन्होंने अर्थ जानना शुरू किया जिनमें उव्वट, महीधर, स्कन्दस्वामी, वेंकट स्वामी आदि का नाम मुख्य तौर पर लिया जा सकता है।

इन्होंने वेदों के जो अर्थ किये वे भी ऊल-जलूल, भद्दे तथा ऊट-पटांग थे। इनके हाथ में वेदार्थ की चाबी नहीं आयी। महीधर ने "गणानां त्वा गणपतिं हवामहे" आदि मंत्रों का जो अश्लील अर्थ किया उससे स्पष्ट हो जाता है कि ये लोग अगर वेद पर कलम न उठाते तो ठीक रहता। इनके किये अर्थ पाश्चात्य विद्वानों के विकासवाद के सिद्धान्त की पुष्टि करते थे। उन अर्थों से सिद्ध होता था कि वेदों के रचयिता निरे असभ्य तथा जंगली थे, जगत् के रचयिता एक ईश्वर को न मानकर बहुदेवतावादी थे, ईश्वर के विषय में उनकी मान्यता थी कि वह एक भारी-भरकम आदमी है। उव्वट, महीधर का काल भी काफी देर तक रहा होगा।

ऐसे समय के बाद ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ। यह ब्रिटिश-काल था। इस काल में यूरोप में भौतिकवाद बढ़ता चला जा रहा था और ज्ञान के हर क्षेत्र में विकासवाद का बोलबाला था। ऋषि दयानन्द के सामने प्रश्न था कि देश को भौतिकवाद तथा डार्विन के विकासवाद से कैसे बचाया जाय। इस देश की सभ्यता तथा यहां का सामाजिक-जीवन वेदों के आधार पर टिका हुआ था। ऋषि दयानन्द भी अपनी विचार-धारा का आधार वेद को ही मानते थे। अगर वे वेद को अपनी विचारधारा का आधार बनाकर कार्य-क्षेत्र में उतरते, और वेदों का वही अर्थ मानकर चलते जो महीधर, उव्वट आदि ने तथा उनको आधार बनाकर देश के शासन-काल के समय के मैक्समूलर आदि ने किया है, तब तो इस देश का भट्टा ही बैठ जाता, परन्तु ऋषि दयानन्द ने सोचा होगा कि जिस ज्ञान को सदियों तक यहां के ब्राह्मणों ने एक अमूल्य "निधि" के तौर पर स्मृति के बल पर संभाल कर सुरक्षित रखा वह इतना निरर्थक नहीं हो सकता जितना कौत्स आदि कहते रहे। उसकी बड़ी ही कीमत होगी जिस कारण इस देश के ब्राह्मणों ने सब तरह के दांव लगाकर, और समय आने पर जान पर खेलकर उसे सम्भाले रखा। ऋषि दयानन्द के सामने जहां एक तरफ महीधर, सायण आदि थे, वहां निरुक्तकार यास्क तथा वेदभक्त, पाणिनी, पतंजली आदि भी थे। प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द के शिष्यत्व में पाणिनी, पतंजली, यास्क आदि के अध्ययन के बाद उनकी आंखें खुल गईं और उन्हें ज्ञात हुआ कि अब तक वेदों के साथ अन्याय हुआ है, उन्हें समझा ही नहीं गया। जहां कौत्स ने वेदों को निरर्थक मानकर छोड़ दिया था वहां ऋषि दयानन्द ने निरुक्त, पाणिनी, पतंजली के आधार पर वेदों को सार्थक मानकर एक नवीन युग का निर्माण किया जिसे "दयानन्द-युग" कहा जा सकता है। इस युग में वेद पढ़े ही न जाने लगे, वेदों का अर्थ भी किया जाने लगा। वेदों के अध्ययन के बाद ऋषि दयानन्द ने जाना कि वेद इतने विशाल थे कि जिस स्त्री-जाति को सदियों से अक्षर-ज्ञान से भी वंचित रखा गया था, उसे भी वेद-ज्ञान का अधिकारी ही नहीं, वेद-ज्ञान का उपदेष्टा बनने के योग्य भी माना जाने लगा।

भारत में चिरकाल से वेदों के प्रति, उन्हें बिना जाने, अन्ध-श्रद्धा चली आ रही थी। भारत में भिन्न-भिन्न देशों से आक्रान्ता आये और यहां की वैदिक विचारधारा में विलीन हो गये। फिर भी दो विचारधाराएं ऐसी थीं जो यहां की विचारधारा पर हावी हो गईं, परन्तु हावी होने पर भी यहां के वासियों के हृदय से "वेद" और "वैदिक" शब्द को मिटा नहीं सकीं। औरंगजेब के बड़े भाई दाराशिकोह ने काशी के पंडितों से उपनिषदों का ज्ञान सुना। मुसलमान सदियों तक इस देश में शासन करते रहे, परन्तु अपने को वेदज्ञ पंडितों से आध्यात्मिक-दृष्टि से हीन ही समझते रहे। मुसलमानों के बाद अंग्रेज इस देश के शासक बने। पाश्चात्य-जगत् के दिग्गज विद्वानों ने जब वेदों का अध्ययन किया, तो वे आश्चर्य में पड़ गये कि ज्ञान की इतनी ऊँचाई पर चढ़कर यह देश पतन के गर्त में कैसे जा गिरा। ऋषि दयानन्द ने भी अनुभव किया कि इतने ऊँचे विचारों के होते हुए इतने नीचे गिरने का कारण यही हो सकता है कि ब्राह्मण लोग वेदों को रटते तो रहे, परन्तु जो-कुछ रट रहे थे उसके अर्थ से शून्य थे। हम पहले लिख आये हैं कि कुत्स ने कहा था कि वेद निरर्थक हैं। रटते हुए भी जब अर्थ-ज्ञान न हो तो वे निरर्थक ही रहे, परन्तु धन्य हैं वे ब्राह्मण जो वेदों का अर्थ न जानते हुए भी उन्हें एक अमूल्य "निधि" समझकर इन्हें जीवित बनाये रहे और इनके साथ चिपटे रहे। निरर्थक समझते हुए भी इनके साथ चिपटे रहने का यही कारण था कि वे आशा करते थे कि कालान्तर में शायद वह समय आयेगा जब इनके भीतर छिपे रत्न को कोई उघाड़ कर रख देगा। ऋषि-दयानन्द के आने पर वेदों को इनका अर्थ न जानकर उन्हें रटकर सम्भाले रखने वालों की आशा पूर्ण हो गई। भारत में ऐसे व्यक्ति ने जन्म ले लिया जिसने सदियों से बन्द पड़ी पेटी के ताले को खोल दिया और उसमें पड़े रत्नों को दुनिया भर में बखेर दिया।

ऋषि दयानन्द ने देख लिया था कि अगर भारत का ही नहीं, संसार भर का उद्धार हो सकता है, जो वेदों के द्वारा ही हो सकता है, परन्तु वेदों पर तो ताला लगा हुआ था। उसका क्या इलाज है? इस समस्या को हल करने में महर्षि दयानन्द ने अपनी सारी शक्ति लगा दी, सारा जीवन लगा दिया, और भारत के उठ खड़े होने में जो काम अभी तक किसी ने नहीं किया था वह काम कर दिखाया। "वेद भारत के प्राण रहे हैं, भारत की आँखें सदा वेदों को निहारती रही हैं, परन्तु इस देखने और निहारने से हुआ कुछ नहीं। हम देखते हुए भी अन्धे रहे, वेद-वेद चिल्लाते रहे परन्तु करते-धरते कुछ न रहे। वेद एक तालेबन्द खज़ाना है- यह वेद का ही अपना कथन है- इसमें भरे रत्न इसे खोलकर ही मिल सकते हैं। इस ताले की कुँजी की खोज करते-

पेज ३ का शेष

उसके पास वेदार्थ की कुंजी...

करते ऋषि दयानन्द को ही वह चाबी मिल गई जिसके द्वारा वेदों का खजाना खुल गया। हमारी यह हालत रही है कि अगर कहा जाय कि यह वेद में है, तो हमारी बोलती बन्द हो जाती है। कोई कहे सतीप्रथा वेद में है तो हम चुप हो जायेंगे, कोई कहे कि पत्थर भगवान है-- यह वेद में है, तो हमारी बोलती बन्द, कोई कहे कि वेद में लिखा है कि मांस खाना चाहिये तो हम आगे कुछ नहीं बोलते। इति- वेदे- इति वेदे- बस, हमारे लिए इतना भर किसी का किसी बात के लिये कह देना- "इति प्रमाणम्"- हो जाता है। यह स्थिति देखकर ऋषि दयानन्द ने सीधा वेदों पर प्रहार किया और जो हम कहा करते थे कि यह "वेद में है", दयानन्द ने वेद खोलकर दिखला दिया कि यह "वेद में नहीं है"। इसी बात को श्री अरविन्द ने निम्न शब्दों में व्यक्त किया है:

"भावी पीढ़ी के सामने भारतीय पुनर्जागरण की अग्रभूमि में स्थित अनेक उल्लेखनीय महापुरुषों के समूह में एक पुरुष, अपनी आश्चर्यजनक एवं विलक्षण विशेषता के कारण, सबसे अलग दिखाई देगा क्योंकि उसका कार्य अद्वितीय रहा है। मेरे मानस-पटल पर दयानन्द का ऐसा ही चित्र बना हुआ है। दयानन्द ने उस द्वार की कुंजी ढूंढ ली थी जिसे समय ने बन्द कर दिया था, और उसके भीतर जो उत्स बन्दी थे उनकी सीलबन्दी को तोड़ दिया था।"

------------ क्रमशः

मन का दीप जलाओ

जीवन को तुम पूज न पाये,
पत्थर से क्या पावोगे।
सुनो सुनो ऐ बुत के पुजारी
सर अपना टकरावोगे ।।
सुखा दिया है घर के कुंऐ को
अब क्या गंगा जावोगे
न बाती न तेल है, घर में
कैसे दिया जलावोगे।।
न कुछ जोता न कुछ बोया
फसल कहाँ से खावोगे।।
हाथ में लेखा लेकर आया
कर्म का फल ले जावोगे।।
मन चंगा तो गोद में गंगा
चन्दन लेप लगावोगे।
मन मन्दिर को पूज लो वरना
जीवन भर पछतावोगे।।
मन का दीप जला लो शंकर
तभी उजाला पावोगे।

- आर्य दयाशंकर जैसवाल
बक्शीपुर आर्यसमाज मन्दिर
गोरखपुर।

निर्वाचन

आर्यसमाज कोंकेरा (मथुरा)

प्रधान - श्री बल्लभ सिंह आर्य
मंत्री - श्री भुल्ला सिंह रावत
कोषा० - श्री सुरेशचन्द्र आर्य

मन का दीप जलाओ

कुलपा

डा. मुंशीराम शर्मा "सोम"
(कानपुर)

वेद सविता, नवम्बर 88 के अंक में श्री मनोहर विद्यालंकार द्वारा प्रस्तुत "कुलपा" ग्रन्थ डा0- फतह सिंह चौहान के अग्रिम लेख से स्पष्ट हो गई है। भृगु और अंगिरा क्या है? बधू शब्द का क्या अर्थ है? यम कौन है? उसकी कन्या कौन है, बन्धन क्या है मुक्ति कैसे होती है? इन सब प्रश्नों के उत्तर डा0 फतह सिंह के ज्ञानगर्भित लेख से प्राप्त हो जाते हैं। पर, हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि वेद शब्द विस्तृत अर्थ-गर्भित है। महर्षि यास्क ने लिखा है: यत्काम ऋषिक: यस्यां देवतायाम् आर्थ पत्यमिच्छन् स्तुति प्रमुक्त तद्दैवतः स मंत्रो भवति। महर्षि ने यह सोच समझकर ही लिखा था। हम बोध की ओर प्रवृत्त हों, पर यह बोध तभी सार्थक होगा जब हम दिशा में तत्पर होकर अपना आर्थपत्य मंत्र के आगे रख दें। आर्थपत्य देव-सम्बन्धी है। मंत्र में देवता का उल्लेख रहता है। निरुक्त 7·3 में परोक्षकृताः प्रत्यक्ष कृताश्च मंत्राः भूयिष्ठाः। अल्पशः आध्यात्मिकाः- आध्यात्मिक अर्थात आत्म सम्बन्धी मंत्र अल्प है। अधिकता परोक्षकृत और प्रत्यक्षकृत मंत्रों की है। स्कन्द स्वामी ने ऋग्वेद भाष्य में पाँच प्रकार के मंत्रों का उल्लेख किया है। वर रुचि ने निरुक्त समुच्चय के चतुर्थ कल्प में 36 प्रकार के मंत्रों की व्याख्या की है। शौनक ने बृहद्देवता 1-34 में नाना प्रकार के मंत्रों को मंत्रदर्शी ऋषियों द्वारा दृष्ट लिखा है और स्तुति प्रशंसा, निन्दा, संशय, परिदेवता आदि 35 प्रकारों के नाम देकर आगे उदाहरण भी उद्धृत किये हैं।

अथर्व प्रथम काण्ड, सूक्त-14 में कुलपाकन्या के सम्बन्ध में जो आध्यात्मिक व्याख्या डा0 फतहसिंह ने प्रस्तुत की है, वह बहुमूल्य तथा उच्चकोटि की है। परन्तु उसकी व्याख्या परिवार तथा समाज को रखकर भी की जा सकती है जिसे यास्क के अनुसार प्रत्यक्षकृत दृष्टि कहा जाता है। परोक्षकृत में वह सब आता है जो सामने नहीं है। मंत्रों का यह पारिवारिक अर्थ नीचे दिया जाता है:- अस्याः भगंवर्च 'आदिशि- मैं इसके तेज और ऐश्वर्य को लेता हूँ। अधिवृक्षाद् इवे स्रजम्- जैसे वृक्ष से फूलमाला ली जाती है। महा बुध्न इव पर्वतः- जैसे दृढ़ आधार वाला पर्वत स्थिर रहता है वैसे ज्योक् पितृषु आस्ताम- यह कन्या चिरकालतक पालकों- माता-पिता आदि के घर में बनी रहे। यह बधू रूप में किसी पर घर में विवाहिता होकर न जावे। राजन् हे राजा। स्वाते कन्या, यह तेरी पुत्री है। यम बधू निधूयताम- हे नियन्ता, कुल को संयत रखने वाले। इसके बधूपन को बाँध दे। इसको बधू मत बना घर में ही बद रख। सा मातुः अथो भ्रातुः अथोपितुः गृहे बध्यताम्- वह माता-पिता तथा भ्राता के घर में नियंत्रित होकर जीवन व्यतीत करे। राजन एवा ते कुलपा- यह तेरे कुल का पालन करने वाली है। ताम् उसे परिदद्मसि उसे मैं तुझे देता हूँ। ज्योक पितृष आसाता- यह चिरकाल तक पालन करने वालों में बैठे। आशीर्ष्णः सम् ओप्यात- यह सिर तक अच्छी तरह ढकी रहे। असितस्य ते कश्यपस्य गयस्य. च ब्रह्मणा- तुझ बन्धन रहित मुक्त, दृष्टा, गतिशील या प्राणवान के ज्ञान से यह संयुक्त रहे। जामयः अन्तः कोशम् इव ते भग पि नह्यामिः स्त्रियाँ जैसे अपने अन्तः कोश को (शल्यक्रिया-द्वारा) बिद्धकर देती हैं, जिससे संतान फिर न उत्पन्न हो, वैसे ही तेरे अन्तः कोश को मैं बाँध देता हूँ, तू वंध्या अर्थात् संतान पैदा करने के योग्य हो जावेगी। मंत्रों का अर्थ सरल है, स्पष्ट है। उनमें ऐसे कुल की कन्या को वंध्या करके कुल या पितृ परिवार में ही रखा जाता है, जहाँ कुल की रक्षा का प्रश्न उत्पन्न होता है। कुल में लड़की हो, लड़का न हो, तो कुल की रक्षा कोन करेगा? अतः परिवार का पूरा भार लड़की पर ही आ जाता है। विवाहिता कन्या पराये घर जाकर उस घर का संवर्धन करती है। जहाँ भ्राता जैसा रक्षक न हो वहाँ कन्या ही कुलपा बनेगी। सारांश में यह अभिप्राय मंत्रों में वर्णित किया गया है। मंत्र का यह प्रत्यक्षकृत अर्थ है। आध्यात्मिक अर्थ के लिये डा0 फतहसिंह का लेख पढ़ लीजिये।

यास्क द्वारा प्रोक्त परोक्षकृत मंत्र अधिकतर ऋग्वेद में हैं। प्रत्यक्षकृत मंत्र यजुर्वेद में हैं और आध्यात्मिक अर्थ सामवेद में हैं। अल्पशः शब्द का प्रयोग इसी लिये किया गया है कि सामवेद सबसे छोटा वेद है। मंत्रों की संख्या वहाँ सब वेदों से कम है। चतुर्वेद मीमांसा में मैंने इन तथ्यों का विशेष रूप से उद्घाटन किया है। मेरी वैदिकी तथा वैदिक संस्कृति और सभ्यता भी इस संदर्भ में पठनीय हैं।

जनपदीय आर्य महासम्मेलन
आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद द्वारा अमरोहा में सम्पन्न होगा।

मिति कार्तिक कृ0 1-2-3 सं0 2046 दिनांक 15-16-17 अक्टूबर 89 रवि सोम-मंगलवार को समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा।

विक्रम सिंह आर्य
प्रधान

हरस्वरूप सिंह आर्य
मंत्री।

वेदों का तेजस्वी जीवनवाद

— डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, एम.ए., अमेठी

वैदिक साहित्य सागर में अन्तः प्रवेश करते ही एक महत्वपूर्ण तथ्य भलीभाँति स्पष्ट हो जाता है कि इसमें आशावादी तेजस्वी जीवन का उल्लास हिलोरें ले रहा है। हिन्दु धर्म§वैदिक धर्म का विकृत रूप§ की अनेकानेक विकृतियों में प्रमुख"नैराश्यवाद" का लव लेश भी वैदिक साहित्य में कहीं नहीं है। "सर्वदुखम्" "सर्व क्षणिकम्", नानक दुखिया सब संसार "यह संसार स्वप्न है, माया है भ्रम है" जैसी निराशाजनक और पलायनवादी दृष्टिकोण वेदों में कहीं नहीं है। "सर्व दुःखम" के विचार पर आश्रित बौद्ध जीवन दशर्न और उससे प्रभावित विचारधारा ने कायरता, पलायनता, अकर्मण्यता, नैराश्य और हीन भावना को जन्म दिया। शोपेनहावर जैसे जर्मन तत्वज्ञ पर इस विचार का बहुत ही बुरा प्रभाव पड़ा था। उनके "वर्ल्ड ऐज विल एण्ड रिप्रेजेण्टेशन " (World as will and Representation) नामक ग्रन्थ में संसार में दुःखवाद का सिद्धान्त या विचार ही वर्णित है। उनके अनुसार मनुष्य के पूर्ण रूप से सुखी होने की आशा रखना ही व्यर्थ है। लोकमान्य तिलक ने शोपेनहावर के दुःखवादी गणित को उद्धृत करते हुए स्पेन देश का एक मजेदार उदाहरण प्रस्तुत किया है- §गीता रहस्य§। स्पेन में मुसलमानी राज्यकाल का तीसरा बादशाह अब्दुल रहमान बड़ा ही न्यायी तथा पराक्रमी था। अपने जीवन में सुख दुःख का अनुपात जानने के लिए उसने एक रोजनामचा §दैनन्दिनी§ बनाया था। इस लेखे-जोखे से उसने यह परिणाम निकाला कि 50वर्षों के राज्यकाल में मात्र 14 दिन ही उसने सुखपूर्वक व्यतीत किये थे। अतः शोपेनहावर का निष्कर्ष यह है- "मनुष्य यदि जन्म ही न ग्रहण करे तो सर्वोत्तम है अथवा जन्म लेने पर तरुणाई में मर जाना श्रेयस्कर है।"

यह विलक्षण तथा कष्टकर निराशावाद पूर्णतया वेदविरुद्ध है। वेदों में अत्यन्त ही सुखवादी, आशापूर्ण, उल्लसित जीवन संगीत का स्वर सुनाई पड़ता है---- "तचचक्षुर्देवहित शुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतम्।। §ऋग्वेद 7, 66,16§ अर्थात् वह §तत्§ ब्रह्म् सर्व द्रष्टा §चक्षुः§ विद्वानों तथा मन आदि इन्द्रियों के लिए हितकारी, §देवहितम्§ शुद्धस्वरुप §शुक्रम्§ सृष्टि के पूर्व, पश्चात् तथा मध्य में भी रहने वाला §उच्चरत्§ है। उसकी कृपा से हम लोग सौ वर्ष देखें और सौ वर्ष जीएँ। सौ वर्ष तक जीवन की पूर्ण कामना उपरि उद्धृत ऋग्वेद में ही नहीं अपितु चारों वेद, ब्राह्मण तथा आरण्यक ग्रन्थों में भी मिलती है। ऋक् मन्त्र का परिवर्द्धित रूप यजुर्वेद में इस प्रकार है- "तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक मुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च-शरदः शतात्।। §यजुर्वेद 36,24§। इस मन्त्र में पूर्व मन्त्र के अतिरिक्त सौ वर्ष सुनने, सौ वर्ष बोलने और सौ वर्ष अदीन होकर अर्थात् स्वावलम्बी और दीनभाव से मुक्त होकर जीवन की कामना और सौ वर्ष से अधिक जीने की इच्छा प्रकट की गई है। तैत्तिरीय आरण्यक का तच्चक्षुर्देव हितं पुरस्ताच्छुक्र-मुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतं नन्दाम शरदः शतं मोदाम शरदः शतं भवाम शरदः शतं श्रृणवाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमजीताः स्याम शरदः शतं ज्योक् च सूर्यं दृशे।। §4,42§ यह मन्त्र ऋक् और याजुष् मन्त्रों का ही परिवर्द्धित रूप है, जो वैदिक मन्त्रों की शतवर्षीय जिजीविषा को महत्व और बल प्रदान करता है। इस मन्त्र का सायणभाष्यानुवाद यह है-- पूर्व दिशा में उदित होता हुआ ज्योतिःस्वरूप सूर्य मण्डल सभी देवों के लिए हितकारक और दृष्टि का अनुग्राहक है। उसे हम सौ संवत्सर तक सदा देखें। उसकी कृपा से जीवन आदि व्यापारों को सौ वर्ष तक प्राप्त करें। द्रव्यों=धनों से सौ वर्षों तक समृद्ध रहें= होवें, धनादि से भोगों को प्राप्त कर सौ वर्षों तक प्रसन्न होवें। अपने स्थान में सौ वर्षों तक निवास करें। वेदशास्त्र के रहस्य को सौ वर्षों तक सुनें=प्राप्त करें। सौ वर्षों तक शिष्यों को प्रकर्ष रूप में कहें प्रवचन दें। सौ वर्षों तक किसी भी शत्रु से हम जीते न जा सकें। और क्या। दीर्घ काल तक सूर्य को देखने में हम समर्थ होवे=रहें।

वाङ्म आसन्नसोः प्राणश्चक्षुरक्ष्णोः श्रोत्रं कर्णयोः।
अपलिताः केशा अशोणा दन्ता बहु बाह्वोर्बलम्।।1।।
उर्वोरोजो जंघयोर्जवः पादयोः प्रतिष्ठा।
अरिष्टानि मे सर्वात्मा निभृष्टः।।2।।
§अथर्ववेद - 19, 60, 1-2§

हमारे मुख में वाक् शक्ति, नासिका में प्राण शक्ति, आँखों में चक्षुशक्ति तथा कानों में श्रवणशक्ति आजीवन कार्यशील रहे। बाल कभी भी न पकें=गिरे, दाँत कभी भी न हिलें या चुस्त हों, भुजाओं में अपार बल नित्य संचरित होता रहे। उरु प्रदेश में उत्साहवर्धक ओज हो, जांघों में अप्रतिम वेग और पैरों में प्रतिष्ठा=स्थिरता हो। मेरे सभी अंग प्रत्यंग सुडौल और सुदृढ हों, कभी भी भङ्ग्य और हिंस्य न हों। असामर्थ्य की आपत्ति न आये। वेदों का यह सन्देश जीवन का अधिकाधिक लाभ, दैन्य रहित सामर्थ्य एवं ऐश्वर्य सम्पन्नता की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। ऋग्वेद के इन वाक्य खण्डों को देखिए- अस्मभ्यं-शर्म यच्छतम् §ऋग्वेद 1.7.8 § "हमें" सब प्रकार का सुख दो" अस्मे विश्वानि द्रविणानि धेहि §ऋ0 5,4,7§ "हमें सब प्रकार की सम्पत्ति दो"। आ-नो अग्ने सुचेतुना रयिं विश्वायुपोषसम्। मार्डीकं धेहि जीवसे §ऋ0 1,79,9§ "हे अग्ने। हमारे जीवन के लिए शोभन ज्ञान से युक्त धन प्रदान करो, जिससे समस्त आयु पर्यन्त शरीर आदि का पोषण और सुख प्राप्त हो। जब तक हमारा जीवन हो तब तक वह धन हमारे उपभोग के लिए पर्याप्त हो। इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि 27,21,6 हे इन्द्र। हमें उत्तम धन दो।" उरुक्षयाय नस्कृधि §ऋ0 8,68,12§ "हमारे निवास के लिए §क्षय=निवास§ प्रभूत §उरु§ धन, सुख की व्यवस्था करो अर्थात् हमारे घर द्वार भरे पूरे हों। §सामर्थ्याद् धनं सुखं वेति गम्यते- §इस मन्त्र पर सायण का कथन§। अस्मे धेहि श्रवो बृहत् §ऋ0 8,65,9§ हमें विशाल कीर्ति या बृहत् अन्न §श्रवः अन्नं यशो वा§ दो।" प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम् §ऋ0 5,4, 10 § "हे अग्ने। तुम्हारी कृपा से प्राप्त प्रजाओं के द्वारा मैं अमृतत्व अर्थात् सन्तति का अविच्छेद §सातत्य§ प्राप्त करूँ।" तन्नो देवा यच्छत सुप्रवाचनं छर्दिरादित्याः सुभरं नृपाय्यम् §ऋ0 10,35,12§ "हे देवों। अत्यन्त प्रशस्त §सुप्रवाचन§ मनुष्यों का रक्षक, स्व अभीष्ट गृह §छर्दिः§ हमें दो।" नित्यस्य रायः पतयः स्याम §ऋ0 7,4,7,§ "हम नित्य §जोः ऋण रूप में प्राप्त न हो ऐसे अपुनर्देय§ धन के स्वामी बनें।" अथवा नित्य=औरस पुत्ररूपी धन के स्वामी बनें।" प्रजावान्नः पशुमाँ अस्तु गातुः §ऋ0 3,54, 18§ "हमारे घर §गातुः§ पुत्र पौत्रादि सन्तति तथा गौ, अश्व आदि पशुओं से युक्त हों।" रयिं देहि सहस्रिणम्। अग्ने वीरवतीमिषम् §ऋ0 8,43,15§ हे अग्ने। अपरिमित §सह सिगम§ धन, पुत्रपौत्रादि §वीरवतीम्§ और अन्न §इषम्§ हमें दो। विश्वायुर्धेह्यक्षितम् §ऋ0 1,9,7§ "अखण्ड दीर्घ आयुष्य हमें दो।" शं नः करत्यर्वते सुगं-मेषाय मेष्ये। नृभ्यो नारिभ्यो गवे §ऋ0 1,43,6,§ "हमारे घोड़ों मेष, मेषी §पुरुष तथा स्त्री जातीय भेड़ों§ पुरुषों, स्त्रियों तथा गौवों को अर्थात् सबको सुगम्य §सुगं§ सुन्दर सुख दो।"

जीवन विरोधी शक्तियों से रक्षा-

जिस प्रकार वेदों में प्रत्यक्ष रूप से सम्पन्न जीवन की आशा प्रकट की गई है उसी प्रकार आक्रामक शत्रुओं तथा जीवन विरोधी शक्तियों से संरक्षण की माँग भी की गई है और हमें क्या नहीं चाहिए यह भी स्पष्ट रूप से कहा गया है।

तद्रोगं मम सूर्य हरिमाणं च नाशय §ऋ0 1,50,11§ "हे सूर्य। मेरे हृदरोग और शरीर गतकान्ति के हरण करने वाले बाह्य रोग या हरिद वर्ण-रोग वैवर्ण्य को §हरिमाणम्§ नष्ट करो। पाहि धूर्तेरराव्णः। पाहि रीषत उत वा जिघांसतः §ऋ01,6,15§ "हिंसकों §धूर्तेः§ तथा धन आदि का दान न करने वालों मक्खी चूसों/कृपणों §अराव्णः§ से हमारी रक्षा करो। हिंसक व्याघ्रादि से §रिषतः§ तथा घात करने की इच्छा वाले शत्रुओं से §जिघांसातः§ हमारा रक्षण करो"। अपत्यं परिपन्थिनं मुषीवाणं हुरश्चितम्। दूरमधि स्रुतेरज।। ऋ0 1,42,3§ "लुटेरे, चोर व कपटी लोगों को हमसे दूर अतिदूर रखो। मा नो अग्नेऽव सृजो अविष्यवे §ऋ0 1,189,5§ "हे अग्ने। हमें भूखे कंगाल लोगों के अधीन मत करो।" §अविष्यवे= अविष्यातिरक्तिकर्मा। अग्ने त्वं मा अव सृजः = मात्याक्षीः तदधीनं मा कुरु इत्यर्थः- सायणः§। मा दत्वते दशते मादते नो परादाः

— शेष पृष्ठ ६ पर

पृष्ठ ५ का शेष....

§ ऋ0 1, 189, 5§ "दातों से दंश करने वाले सर्पादिकों §दत्वत दशते§ तथा सींग मारने वाले पशुओं §अदते- अदन्तकाय श्रृंगादिभिघातिने - सायणः§ की चपेट में हमें §नः§ न §मा§ लाओ। व्यमीवाश्चातयस्वा विषूचीः §ऋ0 2,33, 2§ "सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त §विषूचीः विषु नाना अ चती : कृत्स्न शरीर व्यायकान्§ रोगों को §प्रमीवाः§ हमसे पृथक् करके नाशकरो।" §विचातयस्व अस्मत्तः पृथक्कृत्य विनाशय§।

मा नो अग्ने ऽवीरते परा दा,---

मानः क्षुधे ----- §ऋ0 7,1,19§।

हे अग्ने। हम पुत्र हीन न हों? §अवीरते= अपुत्रताय§।----- हमें भूख की चपेट में न लाओ। मा शूने अग्ने नि षदाम §ऋ0 7,1,11§। "निपूतों के घर रहने का अनिष्ट प्रसंग हम पर न आये" §शूने शून्ये पुत्रादिरहिते गृहे§। मा ते गोहत्र निरराम राधसः §ऋ0 8,21,16§ "हे उदार इन्द्र। स्तोताओं को गवादि धन दाता। हम तेरे भक्तगण §ते§ सम्पत्ति से च्युत होकर धनरहित न हों §राधसः धनान मा निरराम न निर्गमाम§।" अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे। शिरिम्बिठस्य सत्व भिस्तेभिष्ट्वा चातयामसि।। §ऋ0 10,155, 1§ "हे धनहीन, कुरूप तथा सदा आक्रोश करने वाली दरिद्रते। निर्जन पर्वत पर जा। नहीं तो अपने पराक्रम से हम तेरा नाश कर देंगे।

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक ,गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

- सभामंत्री।

आर्यसमाज अमरोहा, मुरादाबाद

आदर्श एवं अनुकरणीय विवाह

सामाजिक कार्यकर्ता एवं दयानन्द बाल मंदिर अमरोहा की प्रबन्धक श्रीमती- डा0 उर्मिला अग्रवाल ने अपने पुत्र डा0 विवेक अग्रवाल का विवाह डा0- शैफाली सक्सेना के साथ बिना दहेज एवं बिना आडम्बर के साथ विवाह करके अन्तरजातीय विवाह का आदर्श स्थापित किया है। 19-7-89 को विवाह संस्कार श्री मान पं0 इन्द्रराज जी सभा प्रधान ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर सभा प्रधान एवं आर्यसमाज अमरोहा के प्रधान श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य ने नवदम्पति को आशीर्वाद प्रदान किया।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा, मथुरा

प्रधान - श्री वल्लभ सिंह आर्य
मंत्री - श्री भुल्ला सिंह रावत
कोषा0 - श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल

वैदिक साहित्य

§आचार्य डा0 सुरेन्द्र देव स्नातक, शास्त्री, शिरोमणि, एम0ए0, पी-एच0डी0§

(२३, जुलाई ८९ से आगे)

इससे पूर्व प्रकाशित लेख में यह स्पष्ट किया जा चुका है कि "मन्त्र" समुदाय को "सूक्त" नाम से कहा गया। सूक्तों के समुच्चय को "संहिता" नाम से पुकारा गया। जैसे- ऋक्- संहिता अथवा ऋग्वेद संहिता। अथवा किसी देवता-विशेष की स्तुति में प्रयुक्त होने वाले अर्थ का स्मरण कराने की क्षमता §योग्यता§ रखनेवाले वाक्य को "मन्त्र"नाम से कहा गया तथा मन्त्र-समुदाय को "संहिता" नाम द्वारा पुकारा जाने लगा। विभिन्न मन्त्रद्रष्टा ऋषियों से मन्त्रों का संग्रह किये जाने के कारण ही मन्त्र-समुदाय का नाम "संहिता" पड़ गया।

ऋग्वेद में ज्ञान का वर्णन उपलब्ध होता है। यजुर्वेद में नाना प्रकार के यज्ञ इत्यादि सम्बन्धी कर्मों का वर्णन उपलब्ध होता है। सामवेद अथवा सामसंहिता में उपासना सम्बन्धी मन्त्र उपलब्ध होते हैं। अथर्ववेद में ज्ञान, कर्म और उपासना- इन तीनों से सम्बन्धित मन्त्रों की उपलब्धि होती है। ज्ञान, कर्म एवं उपासना सम्बन्धी तीन प्रकार के ज्ञान के वर्णनों के प्रतिपादक होने के कारण ही चारों वेदों को "वेदत्रयी" नाम से भी कहा जाने लगा। वेदत्रयी शब्द में "वेद" का अर्थ है "ज्ञान" तथा "त्रयी" का अर्थ हैं तीन प्रकार का। अर्थात् ज्ञान, कर्म और उपासना सम्बन्धी तीन प्रकार का ज्ञान। यह तीन प्रकार का ज्ञान चारों वेदों में उपलब्ध किये जाने के कारण ही चारों वेदों के लिये "वेदत्रयी" शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। महाभारत में लिखा है:-

"त्रयीविद्यामवेक्षेत वेदे सूक्तमथांगतः।
ऋक्सामवर्णाक्षरतायजुषोऽथर्वणस्तथा।।"
महाभा0 शान्ति0-135

अर्थात् ऋक, यजु, साम और अथर्व में "त्रयीविद्या" है। प्रस्तुत उद्धरण में त्रयीविद्या के साथ चारों वेदों के नाम भी दिये गये हैं जिससे यह बात और भी स्पष्ट हो जाती है कि "त्रयीविद्या" चारों वेदों में ही है।

इसके अतिरिक्त चारों वेदों में तीन ही प्रकार के §ज्ञान, कर्म, और उपासना सम्बन्धी§ मन्त्र हैं। अतः चारों वेदों के मन्त्रों का समावेश इन्हीं तीनों में हो जाता है। "सर्वानुक्रमणी" में लिखा है कि विनियोग किये जाने वाले मन्त्र चारों वेदों में तीन ही प्रकार के हैं:-

"विनियोक्तव्यरूपश्च त्रिविधः सम्प्रदर्श्यते।
ऋग्यजुसामरूपेणमन्त्रो वेदचतुष्टये।।"

मीमांसा-दर्शन में उपर्युक्त तीनों प्रकार के मन्त्रों का वर्णन करते हुए प्रतिपादित किया गया है कि जिन मन्त्रों के अर्थ के साथ पादव्यवस्था है वे ऋक्, जो गाने योग्य हैं वे साम तथा जो इन दोनों के अतिरिक्त मंत्र हैं वे सब यजु है:-

"तेषां ऋग्यत्रार्थवशेन पादव्यवस्था।
गीतिषु सामाख्या। शेषे यजुःशब्दः।।"

इससे पूर्वोक्त कथन की ही पुष्टि होती है कि चारों वेदों के मन्त्रों को तीन ही विभागों में विभक्त किये जाने के कारण मन्त्रों के तीन प्रकार और उन मन्त्रों में प्रतिपादित तीन §ज्ञान, कर्म और उपासना§ विषय ही हैं।

"वेदत्रयी" शब्द के कारण कुछ लोगों का यह कथन है कि प्राचीनग्रन्थों में तीन ही वेदों का कथन हुआ है। अतः तीन ही वेद प्राचीन हैं। "अथर्व" नामक वेद तो बाद में बना है किन्तु यह कथन तो पूर्णतः गलत तथा सारहीन है क्योंकि सम्पूर्ण वैदिक-साहित्य में तीन वेदों के नामों के साथ ही "अथर्ववेद" का भी वर्णन उपलब्ध होता है। वृहदारण्यक उपनिषद् में आता है:-

"अरे अस्य महतोभूतस्यविश्वसितमेतद्- ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ऽथर्वांगिरसः"। इस उद्धरण में स्पष्टरूप में अथर्व का नाम आया है।

"वेदत्रयी" का अर्थ तीन ही वेद लेने वालों की दूसरी युक्ति यह है कि "अथर्ववेद" का नाम अथर्ववेद के अतिरिक्त अन्य तीनों वेदों में नहीं आता है।

उपर्युक्त दोनों सम्बन्धी अथर्ववेद के बाद में बनने तथा अथर्ववेद का नाम ऋक, यजु साम के साथ में न आने युक्तियों के सम्बन्ध में हमारे द्वारा विवेचित अथर्ववेद सम्बन्धी निम्नलिखित विवरण में वास्तविकता स्वयं ही स्पष्ट हो जायगी।

वैदिक-साहित्य में अथर्ववेद के चार नाम §1§ निगद §2§ अथर्व §3§ ब्रह्म और §4§ छन्द मिलते हैं। अथर्ववेद के चार गुणों के कारण ही ये चार नाम हैं। इस वेद का "निगद" नाम इसकी सरलार्थ बोधकता के कारण पड़ा है।

कुछ विद्वानों का यह कहना है कि मन्त्रों का संकलन यज्ञ अथवा याग सम्बन्धी आवश्यकताओं की दृष्टि से किया गया था। यज्ञ अथवा याग, आदि कर्मकाण्डों के निमित्त चार प्रकार के ऋत्विजों की आवश्यकता हुआ करती है §1§ होता §2§ अध्वर्यु §3§ उद्गाता और §4§ ब्रह्मा।

यज्ञ के अवसर पर देवता विशेष की स्तुति में मन्त्रों का उच्चारण करता हुआ होता नामक ऋत्विक् सम्बन्धित

शेष पृष्ठ १० पर

अथ श्री रिश्वत नारायण व्रत कथा माहात्म्यम्

□ आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र (बदायूँ)

नेतारं चेयरोसीनम्, चकमादान दक्षिणम्।
एकदाऽपृच्छन्न चमचाः चापलूसीविचक्षणाः।।
किन्तत् व्रतं महा प्रज्ञ, सर्वकार्यप्रसाधकम्।
यस्या चरणमात्रेण लोको वशमुपैति हि।।
अति श्रद्धा समेतानां चमसानां निजात्मनाम्।
भक्ति भाव द्रवीभूतो रहस्यं प्रत्युवाच सः।।
धुन्धकारी पुराकाले इममेव प्रश्नं जगौ।
मोहकं सर्व लोकानां, क्षीर सागर शायिनम्।।
तदोचे स महाप्रीतः, गुण्डाकल्याणकृत प्रभु।
मदीयेषा प्रजा सर्वा पापाय प्रचारिणी।।
श्रोतृणां सर्वत्राणाय, कथां कलि प्रतारिणीम्।
परमां शोभना मेताम्, निर्वाचनजितावनीम्।।
तिकड्म, जीविनीमेतां, काले परमिट दायनीम्।
सर्व शोभा समा पन्नां सर्व जेब निवासिनीम्।।
सर्वलोक मनोहारि सिद्धाऽशुफल प्रदाम्।
आर्दली मन्त्रि मायावत् पगदण्डी विधायिनीम्।।
धर्मार्थ काम मोक्षाणां मूलाधारां च शाश्वतीम्।
सर्वमंगलमागंल्याम् ओनिसदगर्ति सतीम्।।
मैदाने खेलिनीयेतां सरस्वती - धकेलिनीम्।
कुटीराद हर्म्य पर्यनतम् अव्याहत प्रवेशिनीम्।।
सुवर्णरूपांरूप्यरूपां, एवं वेश धराम्बराम्।
अनेक रूप रूपातां सर्व लोक नमस्कृताम्।।
अमोघशस्त्र रूपां वै सर्वबाधा विरोधिनीम्।।
ऋषिवत् पूजाचरणां वन्द्यां परम पावनीम्।
अष्टोत्तर सहस्र श्री भूषितां कमलासनाम्।।
श्री श्री रिश्वत् नारायण-व्रतरूपां कथामिमाम्।
लोकोद्धाराय महात्मर्य श्रणुध्वं श्रावयामि वः।
एतत् कथा श्रवणेन वर्षेभ्यो निलम्बिता।
अभियोगा झटित्यावे, ममाधीयन्त एव्व।।
परमिटानि च भ्रान्तानि, लभ्यन्ते नैव संशय
कानि तानि च कार्याणि, सिद्येरन् [illegible]तेनमे

एक समय आश्वासन के चकमा देने में प्रवीण, चापलूसी में निष्णात भक्त चमचों ने झुक कर श्रद्धाभाव से प्रणाम कर चेयरासीन नेता जी से विनत भाव से पूछा- हे महाराज महामते। इस कलियुगी मर्त्यलोक में सब कार्यों में सिद्धि देने वाला कौन सा व्रत है? जिसके करने से सारे संसार के चपरासी से लेकर मंत्री तक के महाप्राणी वश में हो जाते हैं।

आत्मा स्वरूप, श्रद्धाभाव सम्पन्न अपने चमचों की अखण्ड भक्ति से द्रवीभूत हृदय होकर नेता जी इस रहस्यमय व्रत के विषय में कहने लगे, कि हे मेरे परम प्यारे चमचों। प्राचीन काल में एक धुन्धकारी नाम के यातुधान (राक्षस) शिरोमणि ने भी क्षीर सागर में सोने वाले भगवान लक्ष्मी पति विष्णु से भी सब लोकों के वशीकारक इसी प्रश्न को किया था। तब गुण्डा और मुसटण्डों के कल्याणकारी भगवान ने जिस व्रत का परमोपदेश उसे दिया था वही मैं आज तुम लोगों को सुनाऊँगा। भगवान कमलापति बोले कि हे धुन्धकारी। जैसे मैंने सृष्टि के आदि में अपनी दैवी माया से देवताओं, साधुओं और ऋषिमुनियों की रचना की थी, उसी भाँति मैंने अपनी आसुरी माया से गुण्डा, मुसटण्डा, तिकड्मी, धोखेबाज, साधुरक्तचूसक कलियुगी महापुरुषों की भी रचना की थी। ये भी सब पाप और अप्राप प्रचारिणी मेरी ही तो औरस सन्तान हैं। नो तुम्हारे और साथ आये श्रोताओं को सर्व लाभ प्रदायिनी, कलियुग प्रचारिणी, परम सुहावनी, शत्रु दल हरावनी, विरोधी उठावनी, इलेक्शन जितावनी, परमिट दिलावनी, तिकड्म जीवनी, ईर्ष्यालु-रक्त-पीविनी, सर्व शोभा विलासिनी, सदा जेब निवासिनी, सकजन मनोहारिणी, निर्भय बिहारिणी, आशुफल प्रदायिनी, विधाता के अलिखे भाग्य की विधायिनी, अर्दली से मंत्री तक पगदण्डी विधायिनी, धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-मूलाधार

"सर्व मंगल मागंल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
त्रिलोकीतिकड्मे देवी नारायणि नमोऽस्तुते।"

(यह स्तुति करते हुए नेताजी समेत सभी प्रणाम करते हैं)

फिर उसी पावनी प्रसगं को आगे बढ़ाते हुए नेताजी सतत प्रवाह से कहते गये कि हे प्यारे भक्तों। मैदान में खेलिनी और सरस्वती धकेलिनी, कुटिया से महलों तक बेरोक टोक प्रवेशिनी, स्वर्णरूप, रजतरूप, सर्ववस्तु वेश धारिणी, हर एक हृदय हारिणी, अनेक रूप रूपा, अमोघ शस्त्ररूपा, सर्वलोक नमस्कृता, निखिल बाधा बाधिनी, ऋषिवत् पवित्राचर-वाली, वन्दनीय एक हजार आठ श्री-श्री विभूषित कमलासना, श्री श्री रिश्वत्-नारायण व्रत कथा को सब लोगों के उद्धार के लिए मैं कह रहा हूँ। आप सब समाधिस्थ होकर सुनिये।

इस कथा के श्रवण करने से वर्षों के लटके हुए मुकदमे, चिर काल से भटके हुए परमिट और अटके हुए काम एक ही झटके में हल हो जाते हैं।

—क्रमशः----

आर्यसमाज वजीरगंज गोण्डा

प्रधान	-	श्री लाल बहादुर मौर्यजी
मंत्री	-	श्री कृष्ण कुमार आर्यजी
कोषा0	-	श्री सहजराम आर्यजी

दिव्य दयानन्द

●-स्व0 श्री पं0 हरिशंकर शर्मा

तुम थे स्वराज्य के सूत्रधार
सत्याग्रह में प्रिय प्राण दिए
तुम मरे धर्म की वेदी पर
निज देश जाति के लिए जिए

तुम भारतीय सभ्यता स्रोत
संरक्षक पुण्य पुजारी थे।
तुम आर्य सभ्यता सु-प्रतीक
आदर्श उच्च अधिकारी थे।

तुम भीष्मरूप, तुम भीमनाद
तुम ब्रह्मज्ञान गुण आगर थे।
तुम परिव्राट वैभव विराट
वर वैदिक धर्म दिवाकर थे।

ओ? टंकारा की ज्वलित ज्योति
तू कभी नहीं बुझने वाली
तुम से जगमग यह जगती तल
तुझ से भारत गौरवशाली

मवाना में यज्ञ

25 से 28 जून तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ, भजन तथा वेदकथा हुई। यह आयोजन श्री जय प्रकाश गुप्त सेवा निवृत्त अध्यापक की ओर से समस्त व्यय करके किया गया है।

वेद क्या क्यों कैसे ?

श्री यशपाल आर्यबंधु
आर्य निवास, चन्द्रनगर,
मुरादाबाद- 244032

ईश्वरीय ज्ञान वेद के सम्बन्ध में क्या, क्यों, कैसे? आदि विभिन्न शंकायें उठाकर उनका समाधान सर्वसाधारण के लाभार्थ प्रस्तुत है।

प्र0 -वेद से क्या तात्पर्य है?

उ0- वेद से तात्पर्य उस ईश्वरीय ज्ञान से है, जो सृष्टि के प्रारम्भ में मानवमात्र के कल्याण के लिए ईश्वर की कृपा से दिया जाता है।

प्र0 वेद कितने हैं?

उ0- ऋक्., यजु., साम और अथर्व ये चार संहिताएं ही वेद कहलाती है।

प्र0- ईश्वर ने वेद का ज्ञान क्यों दिया?

उ0- ईश्वर ने वेद का ज्ञान जीवों के कल्याण के लिए दिया है। मनुष्य एक कर्मशील प्राणी है। कर्म के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। बिना ज्ञान के धर्म-अधर्म अथवा कर्तव्य-अकर्तव्य का बोध मनुष्य को नहीं हो सकता। वेद के द्वारा ही मनुष्य विधि और निषेध का ज्ञान प्राप्त कर सकता है। जीव कर्म करने में स्वतंत्र है पर फल भोगने में परतन्त्र है। जब तक उसे विधि और निषेध का विधिवत् ज्ञान न करा दिया जावे, तब तक फल के लिए उसे उत्तरदायी भी नहीं ठहराया जा सकता। इस लिए वेद ज्ञान का दिया जाना आवश्यक है। वेद ही मनुष्य को दुनिया में रहने का ढंग सिखाता है और वेद ही ईश्वर की प्राप्ति का उपाय भी बताता है।

प्र0- यदि ईश्वर वेद का ज्ञान न देता तो क्या होता?

उ0- यदि ईश्वर वेद-ज्ञान न देता तो सम्पूर्ण मानव समुदाय अज्ञानी और असभ्य रह जाता। यहां तक कि वह बोलना भी नहीं सीख पाता। ईश्वर ने केवल ज्ञान ही नहीं दिया, ज्ञान के साथ भाषा भी दी। उसी भाषा को पा कर मानव ने बोलना सीखा। महर्षि दयानन्द का कथन है कि- "अनन्त ज्ञान-सम्पन्न परमेश्वर मनुष्य की योग्यता बढ़ाने के लिए और उसे ऊंचे दरजे को पहुँचाने के लिए सदा प्रवृत्त है और इसी हेतु को सफल करने के लिए विद्या का प्रकाश करता है, सो वही प्रकाश वेद है।" {पूना का पांचवा प्रवचन}

प्र0- यह कैसे जानें कि वेद ईश्वर का ही ज्ञान है, ऋषियों का नहीं?

उ0- वेद ऋषियों का ज्ञान नहीं हो सकता क्योंकि वेद के प्रकाश से पूर्व वे ऋषि भी सर्वथा अज्ञानी ही थे। वेद का ज्ञान दिये जाने से वे ज्ञानी बने। अतः ऋषियों में यह सामर्थ्य नहीं कि वे वेद जैसे ज्ञान की रचना कर सकें।

प्र0- परमेश्वर ने वेद का ज्ञान कैसे दिया?

उ0- परमेश्वर ने वेद ज्ञान अपनी सर्वशक्तिमत्ता से अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक चार ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किये।

प्र0- जब ईश्वर का मुख नहीं तो उसने यह ज्ञान कैसे दिया?

उ0- ईश्वर को ऋषियों के अन्तरात्मा में ज्ञान का प्रकाश करने के लिए मुख आदि की आवश्यकता नहीं पड़ती। क्योंकि मुख की आवश्यकता अपने से बाहर वाले को सुनाने के लिए होती है। अपने मन में बात करते हुए हमें भी मुखादि की आवश्यकता जैसे नहीं पड़ती, ऐसे ही ईश्वर को भी मुखादि की आवश्यकता नहीं पड़ती।

प्र0- ईश्वर ने उन्हीं चार ऋषियों को वेद का ज्ञान क्यों दिया, अन्यों को क्यों नहीं? क्या इससे ईश्वर में पक्षपात की गंध नहीं आती?

उ0- वही चार ऋषि सबसे अधिक पवित्रात्मा थे इसी लिए उन्हीं को पात्र समझ कर उन्हें वेद का ज्ञान दिया अतः इसमें पक्षपात की कोई बात नहीं।

प्र0- जब वे ऋषिगण भाषा जानते ही नहीं थे, तो उन्हें वेदों के अर्थ कैसे ज्ञात हुए?

उ0- ईश्वर ने ही उन्हें अर्थ भी जनाये।

प्र0- क्या ब्राह्मण ग्रंथ तथा उपनिषदें आदि ईश्वरीय ज्ञान नहीं?

उ0- नहीं। ये ऋषियों की रचनायें हैं ईश्वरीय रचना नहीं। वेद तो अपोरुषेय ज्ञान को कहते हैं।

प्र0- अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान की पहचान क्या है?

उ0- अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान की सबसे पहली पहचान यह है कि वह सृष्टि के प्रारम्भ में दिया जाता है। वह ज्ञान सर्वथा निर्भ्रान्त और सृष्टिक्रम के अनुकूल होता है। उसमें लौकिक इतिहास लेशमात्र भी नहीं होता। वह ज्ञान सर्वथा पक्षपात-शून्य होता है। अर्थात् वह किसी जाती विशेष, अथवा काल विशेष के लिए नहीं होता, अपितु सर्वजनीन, सार्वभौम तथा सर्वकालिक होता है। उसमें कोई भी बात युक्ति और तर्क एवं विज्ञान के विपरीत नहीं होती। उसमें मानव के अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सम्पूर्ण योजना निहित हो। उसमें ईश्वर का वर्णन उसके गुण, कर्म और स्वभाव के विपरीत न हो। वह ज्ञान अपने आप में पूर्ण हो ताकि किसी पूरक ज्ञान की आवश्यकता न रहे।

प्र0- क्या परमेश्वर का ज्ञान इतना ही है?

उ0- नहीं। परमेश्वर का ज्ञान अनन्त है।

प्र.- फिर इतना ही ज्ञान क्यों दिया?

उ0- मनुष्यों के लिए जितना आवश्यक था, उतना ही दिया। दूसरे मनुष्यों को ज्ञान के ग्रहण करने का सामर्थ्य ही इतना ही था।

प्र0- ईश्वर ने सब विद्याओं का मूल ही क्यों दिया?

उ0- इस लिए कि मानव की बुद्धि का विकास हो सके और वह परिश्रम करके उसका विस्तार कर सकें।

प्र0- वेदमंत्रों के साथ ऋषियों के नाम क्यों जोड़े गये हैं?

उ0- जिन ऋषियों ने जिस-जिस मंत्र का साक्षात्कार किया उन-उन का नाम सम्मानार्थ उन मंत्रों के साथ जोड़ा गया है।

प्र0- क्या ऋषि मंत्रकर्त्ता नहीं?

उ0- नहीं, ऋषि मंत्रद्रष्टा हैं।

प्र0- मंत्र के देवता से क्या तात्पर्य है?

उ0- मंत्र का मुख्य प्रतिपाद्य विषय ही मंत्र का देवता कहा गया है।

प्र0- क्या वेद पढ़ने का अधिकार सब को नहीं?

उ0- वेद पढ़ने का अधिकार सबको है पर मूढ़ व्यक्ति अधिकार होने पर भी उसका उपयोग नहीं कर सकता। महर्षि का कथन है कि-"जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्र आदि को पढ़ाने-सुनाने का न होता, तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत इन्द्रिय क्यों रचता? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, चन्द्र, सूर्य और अन्न आदि पदार्थ सबके लिए बनाये हैं, वैसे वेद भी सबके लिये प्रकाशित किये हैं। {द्रष्टव्य-- सत्यार्थ प्रकाश, तृतीय समुल्लास} प्राचीनकाल में गार्गी, मैत्रेयी आदि स्त्रियां और जानश्रुति आदि तथाकथित शूद्र ने भी वेदाध्ययन किया था।

प्र0- वेद-विद्या का आदिमूल कौन है?

उ0- सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

प्र0- क्या वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है?

उ0- आर्यसमाज का तृतीय नियम कहता है कि- वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, इस लिए वेद के पढ़ने-पढ़ाने और सुनने-सुनाने को परम धर्म कहा गया है।

प्र0- महर्षि दयानन्द को वेदों वाला ऋषि क्यों कहते हैं?

उ0- इस लिए कि वही लुप्तप्रायः वेद-विद्या को संसार के समक्ष लाये थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने जन-भाषा हिन्दी में वेदों का भाष्य कर सर्वसाधारण के लिए उसे सुलभ कर गये। उन्होंने अपना कोई नवीन मतमतान्तर नहीं चलाया अपितु वैदिक धर्म की ही उन्होंने पुनः स्थापना

शेष पृष्ठ ६ पर

आर्य जाति के चार मुख्य पर्व

□ श्री जगदीश शरण "शीतल"
चाँदपुर (बिजनौर)

पर्व किसी जाति और देश के प्राण हैं। क्योंकि इनके द्वारा ही वहाँ की प्राचीन संस्कृति का दिग्दर्शन होता है। वैसे तो भारत पर्वो का देश है परन्तु इनमें चार मुख्य तथा महान पर्व हैं। §1§ श्रावणी§2§विजयादशमी §3§दीपमाला §4§ होली।

श्रावणी:- यह वैदिक ज्ञान विज्ञान का पर्व है जो हमें परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के आदि में ही चारों वेदों के द्वारा प्रदान किया। नहीं तो हम भी पशुवत ही रहते। इसी कारण वेद ने ज्ञान द्वारा बुद्धि पूर्वक कर्म करने की शिक्षा दी। हमें आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों प्रकार के ज्ञान की अत्यन्त आवश्यकता है। आध्यात्मिक ज्ञान से हमें ईश्वर, जीव तथा प्रकृति क्या है और इनका एक दूसरे से क्या संबंध है जानकारी प्राप्त होकर धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष की प्राप्ति होती है। जो मानव जीवन का मुख्य लक्ष्य है।

अब भौतिक ज्ञान को लीजिए इसके द्वारा हमें सृष्टि के पदार्थों की सही सही जानकारी प्राप्त होती है। परन्तु सृष्टि के पदार्थों का सही सही उपयोग ज्ञान द्वारा बुद्धिपूर्वक करके स्वयं भी सुख से जियें और दूसरों को भी सुख से जीने दो। आज रूस, अमरीका, तथा यौरप के अन्य देश इस भौतिक ज्ञान के द्वारा ही, आश्चर्यजनक उन्नति करके सारे संसार पर छाये हुए हैं। परन्तु यह भौतिक ज्ञान आज सारे संसार के विनाश का कारण बन रहा है। क्योंकि इसके साथ अध्यात्मिक ज्ञान नहीं।

अतः भौतिक ज्ञान अध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा ही संचालित होना चाहिये तभी संसार में सुख और शान्ति स्थापित हो सकती है। हमारा वैदिक ज्ञान ही जो सर्वोपरि तथा सर्वोत्तम है संसार को विनाश से बचा सकता है। इसके बिना संसार का कोई भी कार्य सुचारू रूप से चल नहीं सकता। इसी से सत्यासत्य का न्यायोचित निर्णय होकर शारीरिक आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति होती है।

विजयादशमी- यह शक्ति का पर्व है। इसके बिना भी मनुष्य संसार के किसी क्षेत्र में कोई क्षेत्र में कोई उन्नति तथा प्रगति नहीं कर सकता। दुर्बल व्यक्ति ना तो ज्ञान तथा वैभव प्राप्त कर सकता है और ना ही सब मनुष्यों को संगठित करके एकता के सूत्र में बाँध सकता है। शक्ति से अन्याय तथा अत्याचार को दूर करके समाज और देश की सेवा की जा सकती है। परन्तु शक्ति सज्जनों की रक्षा और दुष्टों के दमन करने में लगनी चाहिए। ना कि निर्बल तथा दलित व्यक्तियों को सता कर आतंक और अत्याचार फैलाने में। जैसाकि रावण, कंस तथा तैमूर इत्यादि ने किया। हमारे देश के प्राचीन राजा शत्रु से अधिक शक्तिशाली होते हुए भी विदेशी आक्रमणकारियों से युद्ध में परास्त हुए इसका मुख्य कारण उनका अज्ञानता थी। ज्ञान और बुद्धि के द्वारा ही शक्ति का संचालन करके विजय प्राप्त होती है। आज एक व्यक्ति ही, असंख्य शक्तिशाली व्यक्तियों का संहार कर सकता है। यह ज्ञान और बुद्धि का ही चमत्कार है, परन्तु हमारे देश के राजाओं में ज्ञान और बुद्धि न होने के कारण युद्ध की नई प्रणाली का अभाव था। उदाहरणार्थ विदेशी आक्रमणकारियों के पास युद्ध में आगे बढ़ने वाले चंचल और चपल घोड़े और इनके पास हाथियों की सेना जो शत्रु की मार न सहकर पीछे को भागती और अपनी ही सेना का विनाश करती। उनके पास आग्नेय अस्त्र शस्त्र तोप, बंदूक इत्यादि और इनके पास वही पुरानी तलवारें, ढाल तथा बरछी। विदेशी आक्रमणकारी शत्रुओं को कभी क्षमा न करके उसका वध अथवा अंग भंग करके कारागार में डाल देते। परन्तु यह शरण में आये हुए दुष्ट शत्रु को क्षमादान देकर इसको दया और महान धर्म समझते। क्योंकि उस समय राजपुरोहित ही उनका दिशा निर्देशन और मार्ग दर्शन करते थे। जो पाखंड तथा लालच में फंसकर वैदिक मार्ग को छोड़कर कुमार्ग पर चल रहे थे। भगवान कृष्ण तथा आचार्य चाणक्य की शिक्षा को भूल गये। जिनका कथन था यदि अधर्म और अन्याय को दूर करना है तो साम, दाम, दंड और भेद जिस प्रकार भी हो दुष्ट शत्रु पर दया न करके उसको समूल नष्ट करो। यही कारण था विदेशी आक्रमण कारियों ने इनकी झूँठी दया, उदारता तथा मूर्खता का अनुचित लाभ उठाया। मौहम्मद गौरी तथा महमूद गजनवी इत्यादि इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। पृथ्वीराज ने जिस गौरी को अनकों बार क्षमा किया उसी ने उसको गजनी ले जाकर अंधा करके बंदीगृह में डाल दिया जो वध करने से भी अधिक कठोर तथा दुखदायी दंड था। यहाँ के राजा युद्ध के नियमों का पूर्णतः पालन करते थे। परन्तु वे विदेशी आक्रमणकारी युद्ध के नियमों का उल्लंघन करके रात को भी नगरों के घरों में आग लगाते तथा सोये हुए निर्दोष स्त्री, पुरुषों तथा बच्चों का वध करते ।

यदि हमारा पुरोहित वर्ग तथा राजा लोग ज्ञान और बुद्धि से काम लेकर महाराज कृष्ण और आचार्य चाणक्य की शठे शाठ्यम् की नीति पर चलते तो हमारा देश एक हजार वर्ष तक पराधीन न होता और हमारी यह दुर्दशा न होती। जब तक हम वैदिक मार्ग पर चलते रहे तब तक सारे संसार में हमारी सार्वभौम सत्ता रही।

दीपावली:- यह धन तथा वैभव का पर्व है। इसके बिना भी संसार का कोई कार्य चल नहीं सकता। परन्तु यह भी ज्ञान तथा शक्ति के द्वारा ही प्राप्त होता है। अज्ञानी व्यक्ति तो कमे कमाये हुए धन को भी कुसंगत तथा दुर्व्यसनों में पड़कर शीघ्र ही नष्ट कर देता है। जिस व्यक्ति के पास धनवैभव नहीं उसका हर क्षेत्र में अपमान तथा अपयश ही होता है। परन्तु ज्ञान द्वारा धर्म पूर्वक कमाया हुआ धन ही व्यक्तिगत जीवन, समाज तथा राष्ट्र को सुखी और सम्पन्न कर सकता है। अधर्म से कमाया हुआ धन , समाज तथा राष्ट्र सभी को दूषित करता है। अतः बिलासिता में न फंसकर अपनी आवश्यकताओं को कम करके जब भी देश तथा समाज को इसकी आवश्यकता हो दिल खोल कर योगदान दो। जैसा कि भामाशाह ने संकट के समय अपना सारा धन देश के लिये अर्पण कर दिया। यही है धन की शोभा और उसका महत्व। धन्य है उनकी देश भक्ति तथा त्याग की भावना। जब तक आकाश में सूर्य और चन्द्र हैं तब तक इतिहास में उनका नाम अमर रहेगा।

होली:- यह एकता तथा भाईचारे और प्यार का पर्व है। यह छूआछूत, ऊँच-नीच तथा छोटे-बड़े का भेद न होकर एक सूत्र में बंधने की शिक्षा देता है। एकता भी ज्ञान द्वारा ही स्थापित की जा सकती है। क्योंकि अज्ञानी मनुष्य तो सबको संगठित करने की अपेक्षा अपनी कुबुद्धि तथा अज्ञानता के कारण अपने दुर्व्यवहार से फूट ही पैदा करेगा। जैसा जयचन्द ने आपसी वैमनस्य तथा अपने अपमान का बदला लेने के लिये विदेशी शासक मौहम्मद गौरी को यहाँ बुलाकर पृथ्वीराज के साथ किया। जिस जाति, समाज तथा राष्ट्र में एकता और प्यार होता है उसका कभी पतन हो नहीं सकता। अतः ज्ञान, शक्ति, धन और एकता हर क्षेत्र में उन्नति करने के लिये अनिवार्य हैं। परन्तु शक्ति, धन तथा एकता पर ज्ञान का अंकुश होना चाहिये। नहीं तो इनका दुरूपयोग होकर यही राष्ट्र के पतन का कारण बनते हैं। हमारा परम कर्तव्य है कि हम इन चारों पर्वों के महत्व को भली प्रकार समझकर ज्ञान द्वारा बुद्धि पूर्वक शक्ति, धन तथा एकता को सुदृढ़ करें जिससे देश और जाति उत्तरोत्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर हो।

श्रावणी ज्ञान का है पर्व दशहरा
बल का।
दीपमाला में जले दीप सदा
वैभव का।।
हर्ष उल्लास का है पर्व बसंती
होली।
एकता सब में रहे प्यार बढ़े
जन-जन का।।

पृष्ठ ८ का शेष...

की थी। उन्होंने ही वेदों के युक्तियुत एवं तर्कसंगत अर्थ किये। वेदों का संसार में पुनः प्रतिष्ठा करने के कारण ही वे वेदों वाले ऋषि कहलाये। उनका सम्पूर्ण जीवन वेद के प्रति समर्पित था। उनकी चाहना थी कि चाहे दूसरा जन्म भी लेना पड़े, वेद का प्रचार अवश्य करूँगा। महर्षि की सभी मान्यतायें वेद का प्रचार अवश्य करूँगा। महर्षि की सभी मान्यतायें वेद पर ही आधारित थीं। अतः वे सही अर्थो में वेदों वाले ऋषि थे। सारा संसार उनका इस विषय में ऋणी है।

पृष्ठ ६ का शेष....

देवता का आह्वान किया करता है। एतत्सम्बन्धी मन्त्रों का संग्रह हमें ऋग्वेद संहिता में उपलब्ध होता है।

§2§ अध्वर्यु नामक ऋत्विक विधि-विधान पूर्वक यज्ञों अथवा कर्मकाण्डों का सम्पादन किया करता है। इसप्रकार के मन्त्रों का संग्रह यजुर्वेद अथवा यजुःसंहिता में उपलब्ध होता है। §3§ उद्गाता का शाब्दिक अर्थ है:- सम्बन्धित मन्त्रों का सस्वर उच्चगति से उच्चारण करने वाला ऋत्विक। अतएव उद्गाता उच्चस्वर के साथ सम्बन्धित यज्ञरूप-कर्म सम्बन्धी मन्त्रों का उच्चारण अथवा गान किया करता है। इस उद्गाता से सम्बन्धित मन्त्रों का चयन सामसंहिता अथवा सामवेद में किया गया है। चौथे ऋत्विक अथवा ऋत्विज् हैं "ब्रह्मा"। इनका कार्य है- यज्ञादि कर्मों का भलीभाँति सम्यक् निरीक्षण करना। यज्ञादि कर्मों के अनुष्ठान में कोई त्रुटि अथवा कमी §प्रमाद§ न आने पाये। इसका उत्तरदायित्व ब्रह्मा नामक ऋत्विक पर हुआ करता है। इससे सम्बन्धित मन्त्रों का संकलन अथर्ववेद अथवा अथर्वसंहिता में किया गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों में इसकी विवरण उपलब्ध होता है:-

"ऋग्वेदेनहोताकरोति, यजुर्वेदेनाध्वर्युः, सामवेदेनोद्गाता अथर्वणा ब्रह्मा।"

अर्थात् ऋग्वेद का ज्ञाता "होता", यजुर्वेद का ज्ञाता अध्वर्यु, सामवेदज्ञ को "उद्गाता" तथा अथर्ववेदज्ञ को "ब्रह्मा" नामक ऋत्विक बनायें। इस बारे में गोपथ ब्राह्मण में भी कहा गया है----

"अथर्वांगिरोभिर्ब्रह्मत्वम्।अथर्वांगिरोविद्-ब्रह्माणम्"।

"अथर्वाङिंगरोभि ब्रह्मत्वम् अथर्वांगिरोविद्,

अर्थात् अथर्व से ब्रह्मा होता है अथवा अथर्व का ज्ञाता ब्रह्मा नामक ऋत्विक हुआ करता है। अथर्ववेद के अतिरिक्त ब्रह्मा, अन्य तीनों वेदों का ज्ञाता भी हुआ करता है। कहने का अभिप्राय यह है कि ब्रह्मा चारों वेदों का ज्ञाता हुआ करता है। इसीकारण ब्रह्मा को चतुर्मुख भी कहा जाया करता है तथा इसी दृष्टि से ब्रह्मा को सर्वश्रेष्ठ ऋत्विक् §पुरोहित§ स्वीकार किया जाता है। वही यज्ञ सम्बन्धी क्रिया-कलापों का नियामक भी होता है। यज्ञ सम्बन्धी कार्यों में ब्रह्मा की नियुक्ति अथर्व से ही हुआ करती है। इसी कारण अथर्ववेद को "ब्रह्मवेद" नाम से भी कहा गया।

इस भाँति चारों ऋत्विजों द्वारा यज्ञादि कर्मों अथवा अनुष्ठानों के प्रयोग में आने वाले मन्त्रों का संग्रह चारों संहिताओं में किया गया है।

अथर्ववेद में "विराट" पुरुष का वर्णन करते हुए कहा गया है कि:-

"यस्मादृचोअपातक्षन्यजुर्यस्मादपाकषन्। सामानि यस्य लोमानि अथर्वांगिरसो-मुखम् ।। अथर्व 10/7/20"।।

इस मन्त्र में तीनों वेदों के माध्यम से विराट के भिन्न भिन्न, अंग कहे गये हैं किन्तु अथर्ववेद को विराट का "मुख" कहा गया है। विराट के मुख से ही अग्नि की उत्पत्ति हुई है- "मुखादग्निरजायत" अर्थात् विराट के मुख से अग्नि उत्पन्न हुई। अथर्व भी अग्नि ही है। उपर्युक्त मन्त्र में अथर्व के साथ "अंगिरस" शब्द आया है। अंगिरस कहते हैं, "अंगारों" को। अतः स्पष्ट हो गया कि अथर्व अग्नि" ही है। जिस प्रकार यज्ञ में ब्रह्मा चारों ऋत्विजों में सर्वश्रेष्ठ तथा विशिष्ट स्थान रखता है उसी प्रकार यज्ञ में ये "अग्नि" ही प्रधान वस्तु है। अग्नि की प्रधानता होने से ही अथर्ववेद का यज्ञ में विशेष स्थान है। बाल्मीकि रामायण के निम्नलिखित श्लोक में आता है कि राजा दशरथ ने अथर्ववेद के ही अनुसार पुत्रेष्टि यज्ञ किया था:-

"इष्टिते ऽहं करिष्यामि पुत्रा यां पुत्रकारणात्।
अथर्वशिरसिप्रोक्तमन्त्रैःसिद्धविधानतः।।"
बाल्मीकि बाल0 8/6।।

ऋग्वेद में भी अथर्व को यज्ञप्रधान कहा गया है:-

"यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते"

अर्थात् अथर्वा ने प्रथम यज्ञ के द्वारा धर्ममार्ग की स्थापना की।

अथर्व से ही "अग्नि" उत्पन्न हुई-

"अग्निर्जातो अथर्वणः" और
"त्वामग्ने पुष्करादध्यथर्वा निरमन्थत्"

अर्थात् हे अग्नि तुझको पुष्कर §आकाश§ में अथर्वा ने मथकर निकाला। उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि "अथर्व" यज्ञ का भी वाचक है। अग्नि तथा यज्ञ का वाचक होने के कारण ही §2§ अथर्व नाम अथर्ववेद के लिये पूर्णतया उपयुक्त है।

अथर्ववेद का तीसरा नाम है §3§ "ब्रह्मा"। अथर्ववेद 15/7/8 में लिखा है कि-

"तमृचश्च सामानिच यजूंषि च ब्रह्मच"

इस स्थल पर ऋग्, यजु और साम के साथ ब्रह्म का भी नाम है। यही बात गोपथ ब्राह्मण में भी है:-

"चत्वारो वा इमे वेदा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो, ब्रह्मवेदः"।

गोपथ ब्राह्मण के इस उद्धरण में तीनों वेदों के साथ "ब्रह्मवेद" का भी नाम दिया गया है। इसका "ब्रह्मवेद" नाम इस दृष्टि से पड़ा है कि यज्ञ का अधिष्ठाता ब्रह्मा इसी वेद के साथ नियुक्त होता है।

अथर्ववेद का चतुर्थ §4§ नाम "छन्द" भी है। अथर्ववेद में आता है:-

"ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषासह"
अथर्व 18/4/24 ।।

इस प्रस्तुत मन्त्र में ऋक्, यजु, साम के साथ अथर्व को "छन्दांसि" कहा गया है। इसके अतिरिक्त यजुर्वेद के निम्नलिखित मन्त्र में भी अथर्व के लिये "छन्दांसि" शब्द का प्रयोग हुआ है।

"तस्याद्यज्ञात्सर्वहुत ऽऋचः सामानि-जज्ञिरे।
छन्दांसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।
यजु0 31/7 ।।

अन्य नामों की अपेक्षा अथर्ववेद का "छन्दांसि" यह नाम अधिक युक्तियुक्त प्रतीत होता है। इसी कारण इस वेद को "छन्दवेद" भी कहा गया है।

"तस्याद्यज्ञात्" इत्यादि उपर्युक्त मन्त्र पुरुषसूक्त का है तथा यह पुरुषसूक्त संभवतः चारों वेदों में आता है। अतएव उपर्युक्त मन्त्र को चारों वेदों में आया हुआ समझना तथा मानना चाहिये। इस आधार पर यह स्पष्ट हो जाता है कि चारों वेदों में अथर्ववेद को "छन्द" नाम से ही कहा गया है।

कुछ लोगों ने "छन्दांसि" शब्द से वेदों में आये हुये अनेक छन्दों का ग्रहण किया है जो कि नितान्त त्रुटिपूर्ण तथा भ्रामक है। क्योंकि जब चारों वेद ही छन्दों में हैं तब उस छन्दांसि शब्द से छन्दों का ग्रहण किया जाना एक प्रकार की भूल ही कही जायगी। ऐसी स्थिति में छन्दों में लिखे गये चारों वेदों के साथ "छन्दांसि" नाम आने से यही सिद्ध होता है कि यहाँ यह "छन्दांसि" शब्द "अथर्व" का ही वाचक है। अथर्ववेद का ब्राह्मण है "गोपथ"।

यह गोपथब्राह्मण स्वयं अथर्ववेद को "छन्दवेद" कहे जाने का कारण बतलाता है। इसमें लिखा है:-

"अथर्वणां चन्द्रमा दैवतं तदेव ज्योतिः सर्वाणि छन्दांसि आपस्थानम्"।

अर्थात् अथर्ववेद का देवता है चन्द्रमा, वही ज्योति है, सभी प्रकार के छन्द हैं तथा जल स्थान है।

इस स्थल पर सभी प्रकार के छन्द कह कर स्पष्ट कर दिया गया है कि अथर्ववेद में सभी प्रकार के सरलार्थ बोधक छन्द हैं। इसी कारण "वृहदारण्यक-उपनिषद्" में आता है:-

"यदिदं किंचर्चो यजूंषि सामानि छन्दांसि"

इस उद्धरण में भी बतलाया गया है कि ऋक्, यजु, साम के साथ "छन्दवेद" का भी उल्लेख हुआ है। ऋग्वेद में भी स्पष्ट कर दिया गया है कि:-

"यज्ञ ब्रह्मा पवमान छन्दस्यां वाचं वदन्" 9/113/6 ।।

अर्थात् यज्ञ में ब्रह्मा छन्दवाणी बोलता है। उपर्युक्त ऋचा द्वारा यह कहा गया है कि यज्ञ में ब्रह्मा अथर्ववेद द्वारा ही नियुक्त होता है। साथ ही वह छन्दवाणी को बोलता है। इसका अभिप्राय यही है कि ब्रह्मा अथर्ववेद को पढ़ता है।

उपर्युक्त विवरण से यह तो स्पष्ट हो ही गया है कि "छन्द" "अथर्ववेद" ही है।

इस उद्धरण में ऋग्, यजु, साम के साथ "छन्दांसि, अथर्वाणि" कहा गया है। इससे तो यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि अथर्ववेद का ही नाम "छन्दवेद" है तथा इस छन्दवेद का उल्लेख चारों वेदों, ब्राह्मणग्रन्थों, उपनिषदों तथा पुराणों तक में भी एक स्वर से "अथर्ववेद" के ही लिये किया गया है।

परिणाम स्वरूप "अथर्ववेद" भी उतना ही प्राचीन है कि जितने प्राचीन ऋग्यजुसाम हैं।

क्रमशः

श्री पं० युधिष्ठिर मीमांसक- महामहोपाध्याय" उपाधि से सम्मानित

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी का लघु दीक्षान्त समारोह रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ के प्रांगण में 3 जुलाई 1989 को सोल्लास सम्पन्न हुआ। सुसज्जित पण्डाल में लगभग 150 भद्रपुरुषों महिलाओं, छात्रों एवं छात्राओं की करतल ध्वनि के बीच सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के उपकुलपति डा० वैंकटचलम् ने वेदवाणी के सम्पादक वैदिक विद्वान् श्री पं०-युधिष्ठिर मीमांसक को मानद "महामहोपाध्याय" की उपाधि से सम्मानित किया। इस अवसर पर तीन विश्वविद्यालयों के उपकुलपति दो विश्वविद्यालयों के संस्कृत विभागाध्यक्ष एक विश्वविद्यालय के पाली विभागाध्यक्ष विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक तीन विद्वान् सन्यासी आर्यसमाज के उपदेशक कन्या गुरुकुल लोवां कला की अध्यापिकाएँ एवं छात्राएँ पाणिनि महाविद्यालय के पूर्व एवं वर्तमान छात्र ट्रस्ट परिवार के सदस्य, सदस्याएं मीमांसक परिवार के सदस्य सदस्याएँ प्रतिष्ठित महिलाएँ एवं नागरिक विविध परिधानों में पण्डाल की शोभा बढ़ा रहे थे। दिल्ली से स्वामी विद्यानन्द स्वा० जगदीश्वरानन्द पं० भीमसेन शास्त्री, पं० अभिविनय भारधी डा० रघुवीर आदि विद्वज्जन, गाजियाबाद स्वा० मुनीश्वरानन्द बरेली से पं० विश्वश्रवा व्यास ज्वालापुर से ब्र० नन्दकिशोर भिवानी से पं० सत्यदेव-वशिष्ठ तथा राधेश्याम शास्त्री, दादरी से पं० यशपाल वैद्य, और लखनऊ से पं० जगदीशाचार्य पधारे थे। कपूर परिवार के अत्यन्त उत्साही सदस्य बाबू देवेन्द्र कपूर इसी हेतु बम्बई से आये थे। इन सब विद्वान् लोगों ने श्री मीमांसक जी की विद्वत्ता की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उनके दीर्घ जीवन की परमात्मा से प्रार्थना की। इस अवसर पर उन्हें- महामहोपाध्याय की उपाधि से विभूषित किया गया।

सूचना

हरदोई जिले के कर्मठ कार्यकर्ता श्री स्वामी अनन्तभिक्षु वानप्रस्थ [अनन्तराम-शर्मा] निवासी रामाश्रम कीर्तियापुर पो०-टिकार [हरदोई] अकस्मात बीमार हो जाने के कारण मेडिकल कालेज लखनऊ सर्जिकल वार्ड नं०-3 रोगशैया नं०-7 में इलाज हो रहा है। उनके कार्यक्रम सभी स्थगित किये जाते हैं, उनकी दीर्घायु के लिए आर्यसमाज कीर्तियापुर ने ईश्वर से प्रार्थना की है।

शोक समाचार

श्री प्रयाग नारायण मेहरोत्रा, अतिरिक्त केन कमिश्नर [सेवा निवृत्त] 69 का 19-6-89 को बी-19 राजाजी-पुरम लखनऊ में दुखद निधन हो गया। 21-6-89 सायंकाल वृहत गृह शुद्धि यज्ञ हुआ और दिवंगत आत्मा की सद्गति व परिवारजनों के धैर्य हेतु परमात्मा से प्रार्थना की गई।

-ज्ञानकृष्ण।

संकल्प

-रामनरेश सिंह "सुमन"
एम०ए०, बी०एड०]

इस देश की धरती के टुकड़े अब और नहीं होने देंगे।
हम रोते अनाथों के बच्चे अब और नहीं रोने देंगे।।
वह फौलादी जंजीर हैं हम, दुश्मन को जकड़कर रखते हैं।
अब तक मदहोश में सोए सभी, अब और नहीं सोने देंगे।।
समसीर भुजायें हैं अपनी हरश्वास दहकते अंगारे।
वे भस्म सभी हो जावेंगे जो हमको नहीं जीने देंगे।।
यह देश है सोने की चिड़िया हर देवी-लक्ष्मीबाई है।
यवनों ने वसीयत में ढोया अब और नहीं ढोने देंगे।।
हम ज्वालामुखी भयंकर हैं, अंगारों पर चलने वाले।
बैरी जो हमें ललकारे कहीं, हम खैर नहीं होने देंगे।।
बंगाल तमिल, गुजरात सिन्ध कश्मीर मिजोरम की धरती
पंजाब हमारा प्यारा है, हम इसको नहीं खोने देंगे।।
दुश्मन के लिए विषधर हैं हम, जहरीले जहरपीने वाले
भारत की धरती में विष के, हम बीज नहीं बोने देंगे।।
जो अपना खून पसीना इस मिट्टी में बहाते रहते हैं।
हम उनके बच्चों को भूंखे अब और नही सोने देंगे।।
यहगंगा यमुना सरस्वती, नर्मदा सिन्धु कावेरी में।
पापों को तूने धोया बहुत, अब और नहीं धोने देंगे।।

वेद प्रचार सप्ताह
१८ से २४ अगस्त तक

श्रावणी से कृष्णा जन्माष्टमी तक उपदेशकों प्रचारकों के स्वीकृत कार्यक्रम

1- पं० केशव देव जी शास्त्री - लखीमपुर
2- तेजपाल सिंह जी आर्य - "
3- विक्रम देवजी आर्य - फैजाबाद
4- योगेश दत्त जी आर्य - पिलखुआ
5- रामचन्द्र जी शर्मा - आजमगढ़
6- नेम प्रकाश जी आर्य - मऊनाथभंजन
7- ब्रजपाल जी शर्मा - ठाकुरद्वारा
8- डा० विजय पाल सिंह जी- बरेली
9- ब्रह्मानन्द जी आर्य - बरेली

- हरि आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्यमित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५- मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : ४५६६२
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी-७६
श्रावण शुक्ल- ११
१३, अगस्त, रविवार, १९८९ ई०

शुद्धि समाचार

बदायूँ- हरफरी से 16 कि0मी0 दूर ग्राम अजीजपुर में आर्यसमाज रैसूलपुर कलाँ, आर्यसमाज गुन्नौर बबराला के विश्वहिन्दू परिषद के कार्यकर्ता व अन्य क्षेत्रीय प्रतिष्ठित आर्यजनों के सहयोग से एक मुस्लिम परिवार मुहम्मद यासीन जिनके एक पुत्र जिसका नाम शाह मुहम्मद तथा पत्नी खातून था। यज्ञमय वातावरण में शुद्धिकरण किया गया, यज्ञ के ब्रह्मा स्वा0 नित्यानन्द जी थे। नाम परिवर्तन करके मुहम्मद यासीन का नाम रणवीर सिंह तथा तथा शाह-मुहम्मद का नाम तेजवीर सिंह व खातून का नाम धर्मवीर रखा गया। रणवीर सिंह के साहस की समस्त लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। उपस्थित जनों के सब प्रकार का सहयोग देने का वचन दिया।

सूचना

सहर्ष सूचित किया जाता है कि डॉ0 अनन्तराम मिश्र, प्राध्यापक-स्नातकोत्तर हिन्दी, विभाग, केन ग्रोअर्स नेहरू पोस्टग्रेजुएट कॉलेज, गोला गोकर्णनाथ खीरी लखीमपुर (उ0प्र0) आर्य प्रतिनिधि सभा" उत्तर प्रदेश - द्वारा "अवैतनिक-उपदेशक" नियुक्त किये गये हैं। उनका आवासीय पता इस प्रकार है-

डॉ0 अनन्तराम मिश्र "अनन्त"
निकट- जंगलात कोठी
गोला गोकर्णनाथ
खीरी (उ0प्र0)

आर्योपप्रतिनिधि सभा वाराणसी

प्रधान - श्री शंकर लाल पोद्दार
मंत्री - श्री दीप नारायण लाल
कोषाध्यक्ष- श्री रवि प्रकाश

वर की आवश्यकता

गुप्ता परिवार की उम्र 20 वर्ष, रंग-गोरा, गृह कार्य में दक्ष, सुशील, साधारण शिक्षा वैदिक विचारधारा वाली कन्या के लिए दहेज रहित शाकाहारी आर्य परिवार सुचरित्र जीविकोपार्जन करने वाला योग्यवर चाहिए। पत्र व्यवहार का पता-

हरिशंकर मंत्री,
आर्यसमाज, मु0पो0 भटौली,
बदायूँ (उ0प्र0)

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) भाद्रपद कृष्ण-४ रविवार- संवत् २०४६ वि०, दिनांक २०, अगस्त १९८९ (घोषणा पत्र सं. ७/२८-२-८५)



त्रीणि राजाना विदथे पुरूणि परिविश्वानि भूषथः सदांसि-

राष्ट्र का संचालन करने के लिए तीन सभाएं, विद्यार्यसभा, धर्मार्यसभा और राजार्यसभा नियत करके राजा जो सभापति, तदाधीन सभा, सभाधीन राजा और राजा तथा सभा प्रजा के आधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे। राजा पक्षपात रहित, न्यायधर्म का सेवी, प्रजा में पुत्रवत् होके उनकी उन्नति और सुख बढ़ाने में सदायत्न करे।

-महर्षि दयानन्द

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१.०० रू. मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ३३

बाढ़पीड़ितों की सहायता कीजिए

देश प्रदेश के कई भागों में आई हुई भीषण बाढ़ से ग्रस्त जनता की सेवा करना महान् मानवीय कर्तव्य है।

दैवीय आपदा की इस घड़ी में मुक्तहस्त होकर अन्न, वस्त्र तथा धन से सहायता कीजिए

उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल स्थित बाराबंकी, गोरखपुर, गोण्डा, आजमगढ़, बहराइच, फैजाबाद आदि जिलों के अधिकांश भाग पिछले लगभग एक मास से घाघरा राप्ती आदि नदियों में आई हुई भीषण बाढ़ में डूबे हुए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में हाहाकार मचा हुआ है। कई स्थानों पर सिंचाई बान्ध टूट जाने के कारण सैकड़ों एकड़ उपजाऊ भूमि जलमग्न हो गई है और धनजन की अपार क्षति हुई है।

इसी प्रकार पश्चिमी बंगाल आसाम के कई जिले पानी में डूबे हुए हैं। दामोदरघाटी कारपोरेशन बैराज द्वारा पानी छोड़े जाने से अनेक नदियाँ खतरे के निशान से काफी ऊपर बह रही हैं। यही स्थिति उड़ीसा की भी है। धान की फसल बरबाद हो गई है। घरों में बाढ़ का पानी घुसा हुआ है यदि यही स्थिति रही तो भीषण संक्रामक रोगों के फैल जाने की आशंका हैं।

आर्यसमाज अपने जीवन के प्रारम्भिक काल से ही पीड़ित मानवता की सेवा में समर्पित रहा है। प्रत्येक दैवीय संकट में अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण सजग रहते हुए उसने बिना किसी भेदभाव के संकटग्रस्त व्यक्तियों की सहायता की है। इस समय बाढ़पीड़ित इलाकों में संकटग्रस्त लोगों को तुरन्त अन्न वस्त्र आदि से सहायता पहुँचाना प्राथमिक कर्तव्य है। आर्यसमाज का इतिहास साक्षी है दैवीय आपदा की स्थिति में चाहे भूकम्प हो, दुर्भिक्ष हो अथवा बाढ़ हो अथवा कोई अन्य संकट हो, हमने तुरन्त वहाँ पहुँचकर जनता को बिना किसी भेदभाव के सहायता पहुँचाई है। संकटग्रस्त क्षेत्र के लोग आर्यसमाज की सराहनीय सेवाओं को कभी भूल नहीं सकते हैं।

अतः समस्त मानवता प्रेमी जनता एवं आर्य संस्थाओं/शिक्षण संस्थाओं से अनुरोध है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के "बाढ़ पीड़ित सहायता कोष" में अन्न वस्त्र तथा धन भेजकर पुण्य के भागी बनें।

सहायता बैंक ड्राफ्ट, चेक, अथवा मनीआर्डर द्वारा आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० 5- मीराबाई मार्ग, लखनऊ के पते पर भेजें।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू गाजकर गाज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त

सम्पादकीय

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- भाद्रपद कृष्ण- ४ संवत् २०४६ वि:
२०, अगस्त १९८९, दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

गरीबी की आड़ में धर्म परिवर्तन अराष्ट्रीय है

— गाँधी उवाच

जो राष्ट्र अपने इतिहास और अपने पूर्वजों से मुँह मोड़ लेता है उस राष्ट्र का विनाश अवश्यम्भावी है। पाकिस्तान की धरती पर रहने वाले हमारे सभी बन्धु कई शताब्दियों पूर्व इस विशाल आर्यावर्तीय संस्कृति और पूर्वजों के अभिन्न अंग ही थे। वेद उनका सर्वस्व था, विशाल भारत माँ उनकी जननी थी, स्वर्ग से भी गरीयसी माँ। एक ही पूर्वजों का खून जो हममें है वही उनमें भी था और आज भी है। मुस्लिम आक्रान्ताओं ने भय और लोभ से, तलवार की नोक दिखाकर उन्हें बलात् विधर्मी बनाया, हाँ हाँ वैदेशिक धर्मी बनाया और आज वह एक अलग राष्ट्र हो गया है। गोरक्षक से गोभक्षक हो गया है, अपनी ही माँ का खण्ड खण्ड करने में बड़ा खुश है। जैसे ही धर्मपरिवर्तन होता है तलवार लेकर माँ के सीने में भोंकने को तैयार हो जाता है। यहाँ की धरती से उसे दुर्गन्ध आने लगती है। यहाँ का पानी खारी लगने लगता है। यहाँ के रसगुल्ले खट्टे और अरब के खजूर मीठे लगने लगते हैं। वाह! क्या करिश्मा है धर्म परिवर्तन में। हम अपने राष्ट्रनेताओं, राष्ट्रशुभचिन्तकों और गाँधी के अनुयाइयों को उन्हीं की वाणी सुनाना चाहते है क्योंकि तुमने इस विशाल भारत पर निवास करने वाली विशाल आर्य जाति को मूर्ख बना रखा है- "सब रास्ते वहीं पहुँचते हैं, सब नाम उसी के हैं, गोश्त जैसे बकरे का वैसे गाय का फर्क क्या है। तुम फर्क मिटाना चाहते हो वहीं फर्क बढ़ता जा रहा है। ऐसा न हो, फर्क मिटाते-मिटाते खुद ही हम मिट जायें। यह धर्म परिवर्तन नहीं विषधर नाग है इसे कुचलना होगा नहीं तो ऐसा डसेगा कि फिर इस धरती पर यावच्चन्द्र दिवाकरौ हमारा नाम लेवा पानी देवा कोई न बचेगा।

आर्यसमाज ने इस रहस्य को समझा है। उसे कार्बेल द्वारा लिखित उस घटना का स्मरण है जो उसने "Danger in Kashmir" में लिखी है- "1846 में बहुत से मुसल्मान आये और काश्मीर के तत्कालीन महाराजा-गुलाब सिंह से निवेदन किया कि कई वर्ष तक हम पठान और परकीय मुसल्मानी राज में पिसते रहे, हमें छल से मुसल्मान बनाया गया है। हम हिन्दूधर्म में आना चाहते हैं- आप जो आज्ञा दें- हम प्रायश्चित्त करने को तैयार हैं- यह लिखित याचिका महाराजा को दी गई। महाराजा ने काशी के पण्डितों से व्यवस्था मांगी परन्तु वहाँ से अनुकूल उत्तर न मिलने पर भी राजा ने कहा कि मैं शुद्धियज्ञ करूँगा। राजा के नाते मेरा अधिकार है मैं सबको शुद्ध करूँगा। अब राजपुरोहित ने रोड़ा अटकाया उसने कहा अगर आपने ऐसा किया तो हम प्राण त्याग देंगे। और सचमुच उसने झेलम नदी में कूद कर प्राण त्याग दिए। शुद्धियज्ञ स्थगित हो गया और ऐसा स्थगित हुआ कि सन् 1846 से लेकर अब तक काश्मीर हमें चैन की नींद नहीं सोने दे रहा है। वहाँ के हिन्दू की दुर्दशा का वर्णन तुलसी के शब्दों में सुनिए --

"सुनहु पवनसुत रहनि हमारी,
जिमि दशननमहि जीभ विचारी।।

मुसल्मानों पर कहीं कोई बात हो जाये पीटा काश्मीर का हिन्दू जाता है। अक्सा मस्जिद (अरब भूमि) पर वहाँ के मुसल्मानों ने [illegible] किया तो पीटा काश्मीर का हिन्दू गया क्योंकि वह अल्पसंख्या में है, नगण्य है गाय की बछिया है, सबका भोजन है। उसके पिटने और मिटने की चर्चा सुर्खियों में आकर फिर विलीन हो जाती है पानी में बुलबुले की तरह----- अगला बुलबुला आने के इन्तजार में --। इसीलिए हम गाँधी के भक्तों को गाँधी जी की ही बात सुनाना चाहते हैं--

> "-- मैं धर्मपरिवर्तन के विरुद्ध नहीं हूँ परन्तु मैं उसके आधुनिक उपायों के विरुद्ध हूँ----। आज सबसे बड़ी आवश्यकता है आत्मशुद्धि की परन्तु धर्मपरिवर्तन करने वालों का यह हेतु कभी नहीं होता----- धर्म परिवर्तन का अर्थ राष्ट्रीयता का त्याग कभी नहीं होता-- धर्म परिवर्तन का यह नतीजा होना चाहिए कि वह अपने देश के प्रति अधिक भक्ति का अधिक समर्पण का जीवन व्यतीत करे--
>
> -यंगइंडिया 20/8/25

हमारा देश बहुत से सम्प्रदायों, भाषाभाषियों विविधताओं से आप्लावित है किन्तु धर्मनिरपेक्ष प्रशासन किसी वर्ग विशेष को यदि कोई विशेष सुविधा देता है तो इसे तुष्टीकरण की संज्ञा प्रदान की जायेगी। प्रत्येक धर्मनिरपेक्ष प्रशासन को राष्ट्र की एकता अखण्डता के स्वरूप को दृष्टिगत रखते हुए ही अपनी नीति बनानी चाहिए।

आज हिन्दू सामाजिक एवं राजनैतिक दोनों दृष्टियों से उत्पीड़ित हो रहा है। जाति के तथा कथित सवर्णों ने शताब्दियों से अपनी ही जाति के एक अंग के साथ, अस्पृश्यता का व्यवहार करके उन्हें घोर उपेक्षित बना रखा है। मन्दिरों के कपाट बन्द कर दिए गये हैं, कुओं से पानी लेने की सुविधा से वे वंचित हैं, खानपान में अकथनीय भेदभाव है। छुआ हुआ खाना पाप समझा जाता है। उनके दुख दर्द में कोई भागीदार नहीं होता। उनके संस्कारों में कोई पुरोहित नहीं पहुँचता। जाने अनजाने त्रासदी के वे प्रायः शिकार होते रहते हैं। राजनैतिक उत्पीड़न अलग से हो रहा है। आर्थिक पिछड़ापन तो है ही साथ में शिक्षा की भी कमी है। ऐसे समय में राष्ट्रद्रोही साम्प्रदायिक शक्तियों ने विदेशों से प्राप्त धन के बल पर गरीब भोलीभाली अशिक्षित हिन्दू जनता में जाकर प्रलोभन तथा छलबल से धर्म परिवर्तन का कार्य बड़े ज़ोर शोर से प्रारम्भ कर दिया है। और वे अपने मकसद में शत प्रतिशत सफल भी होते जा रहे हैं।

आर्यसमाज ने अपनी दूरदर्शी आँखों से इस अराष्ट्रीय कुचक्र को भाँप लिया है और वह इस स्थिति से निबटने के लिए पूरी तरह कटिबद्ध है। हमारी प्रतिनिधि सभा अपने सीमित साधनों के बावजूद योजनाबद्ध तरीके से इस धर्म परिवर्तन की आँधी को रोकने में तत्पर है। हमारे हाथ मजबूत कीजिए अपनी सेवाएं देकर, अपना धन देकर, हमारी योजना का अंग बनकर, हमें सहयोग दीजिए। धर्मरक्षा के कार्य में जीवन की आहुति देकर इस पुनीत यज्ञ को सफल बनाइए।

-इन्द्रराज, सभा प्रधान



शत शत बधाई

शतं जीव शरदः शतं वर्धमानः

तरुणाई एवं नवचेतना के प्रतीक, कोटि-कोटि हृदयों की आशा भारत के उदीयमान प्रधानमंत्री श्री राजीव गाँधी के पावन जन्मदिवस पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने प्रदेश की आर्य जनता की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए उनके यशस्वी [illegible] जीवन की कामना की है और इस आत्मविश्वास को पुनः दोहराया है कि श्री राजीवजी के हाथों भारत एवं भारतीय संस्कृति पूर्ण सुरक्षित है।

(गतांक से आगे)

उसके पास वेदार्थ की कुंजी थी.

डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
भू०पू० कुलपति गुरुकुल विश्व० कांगड़ी

हम अपने पिछले दो लेखों में लिख आये हैं कि संसार भर के धर्मों में यह कथानक प्रसिद्ध है कि आदि-काल में परमेश्वर की तरफ से ज्ञान दिया गया था, वह लुप्त हो गया, और उसका पुनरुद्धार करने के लिये अनेक यत्न होते रहे। इसी प्रकार का विचार "शंकर-दिग्विजय" में पाया जाता है। कहते हैं आठवीं शताब्दी में भारत में बौद्ध तथा जैन धर्म का प्रचार बढ़ता जा रहा था। उस समय के बौद्ध तथा जैन नास्तिकता का प्रचार कर रहे थे। ईश्वर तथा वेद को नहीं मानते थे। इनका मुकाबिला करने के लिए शंकराचार्य ने आन्दोलन उठाया। शंकराचार्य ने जिस वेदान्तवाद का प्रचार किया उसके खंडन-मंडन में हमें यहां कुछ नहीं कहना। शंकराचार्य विशुद्ध वैदिक-धर्म को मानते थे, और वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते थे। उसी काल में काशी में एक विद्वान हुए जिनका नाम कुमारिल भट्टाचार्य था। वे वैदिक धर्मी थे, परन्तु विद्वत्ता के लिये तो बौद्ध-पंडित ही विख्यात थे। उन्होंने बौद्ध-पंडितों के सामने अपने को बौद्ध घोषित किया और बौद्ध-पंडितों से शिक्षा प्राप्त की। शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्हें अपने को ज्ञान प्राप्त करने के लिये झूठ बोलने के कारण आत्म-ग्लानि हुई और वे काशी में बैठकर प्रायश्चित करने लगे। शंकराचार्य को जब पता लगा कि जब एक वैदिक-विद्वान् वेद का उद्धार करने के लिये निकला और उसने बौद्ध गुरुओं से शिक्षा प्राप्त करने के कारण जो आत्म-वंचना की उसके लिये प्रायश्चित करने को बैठ गया है, तो वे कुमारिल के पास जाकर कहने लगे कि आपने शरीर को इस प्रकार नष्ट न करो। मेरे साथ शास्त्रार्थ करो, तब देखा जायगा कि कुछ तुमने किया ठीक किया या गलत किया। इस पर कुमारिल ने शंकराचार्य को उत्तर दिया कि शास्त्रार्थ करना है तो माहिष्मती नगरी में मेरा शिष्य मण्डन मिश्र रहता है उसके पास जाकर वेदों के विषय में शास्त्रार्थ करो।

जिस समय की यह बात है उस समय काशी में एक राजा राज्य करते थे जिनकी पुत्री वैदिक धर्म में दीक्षित थी और उसकी वैदिक धर्म में बड़ी आस्था थी। उस समय देश में नास्तिकता बढ़ रही थी, बौद्ध तथा जैन धर्म का जगह-जगह बोलबाला था। इस स्थिति में काशी-नरेश की पुत्री ने देश की नास्तिकता तथा वेद के प्रति निरादर को लक्ष्य में रखकर कुछ उद्गार प्रकट किये। उसने कहा :-

किं करोमि क्व गच्छामि को वेदानुद्धरिष्यति!

क्या करूं, कहां जाऊं, वेदों को संसार भूलता जा रहा है, इनका उद्धार कौन करेगा? ये शब्द कुमारिल के कान में भी जा पहुंचे, और उसने व्याकुल होकर कहा- "मा विषीद वरारोहे भट्टाचार्यो अस्ति भूतले"- ऐ राजकुमारी, विषाद मत कर, वेदों का उद्धार करने के लिये कुमारिल भट्टाचार्य संसार में मौजूद है। इस घटना का उल्लेख एक काव्य-ग्रन्थ में है, इसलिये इसका यह अभिप्राय नहीं है कि इसमें कोई सच्चाई नहीं है। संसार में जो विचार अब तक चला आ रहा था, उसी का इस श्लोक में उल्लेख है। काव्य-ग्रन्थ भी किसी प्रचलित विचार को लेकर लिखे जाते हैं, आस्मानी घड़न्त नहीं होते। राजकुमारी का यह कहना कि कौन वेदों का उद्धार करेगा अथर्ववेद के उस पद से मेल खाता है जिसमें कहा गया है- "यस्मात् कोशात् उद्भराम वेदम्।

सृष्टि में ज्ञान है"- यह तो सर्वसम्मत बात है। प्रश्न यही उठता है कि "ज्ञान" कहां से आया, कैसे आया। इसके दो ही उत्तर हो सकते हैं:- या तो मनुष्य ने स्वयं आविष्कार किया, या किसी ने दिया। आजकल के वैज्ञानिक कहते हैं कि ज्ञान मनुष्य का आविष्कार है, धर्मी लोग कहते हैं कि ज्ञान परमेश्वर ने दिया। यह मानना बड़ा सरल मालूम देता है कि ज्ञान का आविष्कार मनुष्य ने स्वयं किया। हम रोज देखते हैं कि वैज्ञानिक नित नये-नये आविष्कार करते हैं। जैसे अब करते हैं, वैसे पहले भी किये- इसमें अड़चन क्या है? इसमें अड़चन दो हैं, पहली अड़चन तो यह है कि बिना सिखाये मनुष्य कुछ सीखता ही नहीं, जो- कुछ करता है किसी के सिखाये ही करता है। दूसरी अड़चन यह है कि परमात्मा ने मनुष्य को दिमाग ही क्यों दिया अगर उसने अपने दिमाग से कोई नई बात नहीं निकालनी थी। हम देखते हैं कि दिन-दिन मनुष्य नये-नये आविष्कार करता है, परमात्मा को क्या पड़ी जो बीच में टांग अड़ा देता है? जिस चीज को मनुष्य स्वयं कर सके, उसे परमात्मा "वेद" द्वारा सिखाये- इसकी जरूरत ही क्या है। दूसरी कोटि के तो लोग हैं जो परमात्मा का पीछा छोड़ने को तैयार नहीं। उनका कहना है कि बिना सिखाये कोई सीख ही नहीं सकता, उन्होंने परीक्षण किये। पैदा होते ही बच्चों को समाज से अलग रखा, वे पशु - के - पशु ही रहे, न किसी भाषा का आविष्कार कर सके, न बिना सिखाये कुछ कर सके। इसका उत्तर यह दिया जाता है कि जो परीक्षण हुए हैं, वे चार-पांच साल के हुए हैं, करोड़ों साल में तो मानव उसे दिये दिमाग से कुछ-का-कुछ कर सकता है।

युक्तियां दोनों पक्षों की ठीक लगती हैं। इन दोनों पक्षों की युक्तियों को मिलाकर वेद ने स्वयं एक तीसरा उत्तर दिया है। ऋग्वेद §8·18·64§ में "ज्ञान" को दो नाम दिये गये हैं- "अदय" तथा सदावृद्ध"। "अदय" का अर्थ है वह ज्ञान जो सदा एक है, दो नहीं, "सदावृध" का अर्थ है है वह ज्ञान जो सदा बढ़ता रहे। भौतिक-ज्ञान सदा बढ़ता रहता है, आज जो सत्य जान पड़ता है, कल वह बदल जाता है, ज्ञान उससे आगे चला जाता है। मानवीय-ज्ञान की यही हालत है, मनुष्य जो आज आविष्कार करता है, ज्ञान क्योंकि सदा बढ़ता रहता है, इसलिये कल वह छोड दिया जाता है, आविष्कार उससे आगे चला जाता है। कुछ ऐसे भी सत्य हैं जिनमें कोई परिवर्तन नहीं होता या नहीं हो सकता। वे आध्यात्मिक सत्य हैं, जो आज हैं, कल वही होंगे और सदियां या युग बीत जायेंगे, उनमें कोई परिवर्तन नहीं होगा। वे ऐसे सत्य हैं जो मनुष्य आविष्कार नहीं कर सकता, उन्हें परमेश्वर ही दे सकता है। वेद का कथन है कि मानवीय आविष्कार "सदावृध" है, ईश्वरीय देन "अदय" है, नित्य है, सनातन है, अपरिवर्तनशील है। आज भी, जब मनुष्य सब तरह के ज्ञान से सुसज्जित है, उस "अदय"- "नित्य"-सत्य को जानने के लिये व्याकुल रहता है। कहने का अभिप्राय यह है कि मानवीय-ज्ञान का आविष्कार हो सकता है, वह दिनोंदिन बढ़ता रहता है, "वर्धमान" है, ईश्वरीय-ज्ञान स्थिर है, अपरिवर्तनशील है, उसमें घटती-बढ़ती नहीं हो सकती, उसका कोई आविष्कार नहीं हो सकता, वह दिया ही जा सकता है। अगर वह दिया ही जा सकता है, उसका आविष्कार नहीं किया जा सकता, तो उसी को अध्यात्म-ज्ञान कहते हैं, और वही "वेद" में है।

प्रश्न यह रह जाता है कि वेद का ज्ञान ईश्वर ने कैसे दिया। इस संबंध में मैं एक लेख "आर्य-जगत्" में लिख चुका हूँ। मैं जब गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ता था तब एक बार मैं लुधियाना गया था जहाँ एक मौलवी जमघट लगाये आर्यसमाजियों से यही सवाल कर रहे थे। वे पूछ रहे थे कि जब आर्यसमाज परमेश्वर को अशरीरी मानते हैं। तब बिना बोले ईश्वर ने वेदों का ज्ञान कैसे दिया। मैं दूर खड़ा था, शीघ्र उनके नजदीक आ खड़ा हुआ। मैंने कहा, जब मैं दूर खड़ा था तब आप बड़े ज़ोर से चिल्ला-चिल्ला कर बोल रहे थे। अब नजदीक आने पर उतना जोर से क्यों नहीं चिल्लाते। वे बोले, इतनी नजदीकी पर चिल्लाने की जरूरत नहीं रहती। मैंने कहा- अगर मैं आपके भीतर चला जाऊँ तब क्या आवाज़ की जरूरत होगी। बोले- तब आवाज़ की जरूरत ही क्या है? मैंने कहा- भगवान् तो घट-घट में व्याप्त रहा है, उसे बोलने की क्या जरूरत है? यह उत्तर सुनकर वे नौ-दो-ग्यारह हो गये।

इस प्रश्न का उत्तर मुझे तब भी मिल गया जब मेरा साक्षात्कार कम्प्यूटर नाम से प्रसिद्ध शकुन्तलादेवी से हुआ। बम्बई के एक सेमीनार में वे गई हुई थीं, मैं भी गया हुआ था। वे मुझे मिलीं और मिलते ही

शेष पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ 3 का शेष

बोल उठी- आप शनिवार को पैदा हुए थे। मैं अचम्भे में रह गया क्योंकि मुझे पता ही नहीं था कि मेरे जन्म-दिन कौन-सा वार था। अब मैं 92-93 वर्ष का हूँ, इस समय से पहले 1898 में मेरे जन्म का क्या वार था इसे मैं क्या जानता। फिर दिल्ली में टेलीविजन में उन्हें देखा, करोड़ों की राशि का योग सैकिंडों में कर दिया जो कम्प्यूटर भी नहीं कर सकता। मैंने पूछा- यह कैसे किया? बोली बस, सामने आ गया, पता नहीं कैसे? अभी हाल में 12 अप्रैल, 1989 के हिन्दुस्तान टाइम्स में दीपक ठक्कर नाम के 5 वर्ष के एक बालक का उल्लेख हुआ है जो एक सेकेंड में किसी वर्ष के किसी मास के दिन को बतला देता है। उससे पूछा गया कि 2 दिसम्बर 1990 को क्या वार होगा? उसने झट उत्तर दिया-- रविवार। फिर पूछा गया- 25 दिसम्बर 1988 को क्या दिन था। उसने झट उत्तर दिया- रविवार। जब उससे पूछा गया कि क्या तुम गिनती करके बतलाते हो? उसने उत्तर दिया- नहीं, उत्तर सामने आ जाता है। यही बात वेदों के ईश्वरीय ज्ञान के विषय में कही जा सकती है। सृष्टि के आदि-काल में चार ऋषियों के सामने चार वेद प्रकट हुए। अगर अब ऐसी बातें हो सकती हैं, तो पहले भी हुई होंगी- इसमें अचम्भे की क्या बात है?

आर्यसमाज की वेद के विषय में जो धारणा है वह सही हो या गलत, यूरोपीय विकासवादी विचारकों का यह कहना ठीक भी क्यों न हो कि भारत के ऋषि जो वेद-वेद का नारा लगाते रहे जंगली थे, कूएं से पानी भरते और जंगल से काटकर लकड़ी लाते थे, प्रश्न यह है कि वेदों में जो ज्ञान उन्होंने भी देखा वह ज्ञान उनके पास कैसे आया और कहां से आया। तुम भी जंगली थे, वे भी जंगली थे। तुम जंगली के जंगली रहे, वे जंगली होते हुए भी उच्च-कोटि के विचारक हुए इसका क्या समाधान है, इसका समाधान अब तक कोई नहीं दे पाया। भारत की सभ्यता का इस देश की संस्कृति का आधार वेद था। वेद का नारा दिग्दिगन्त तक पहुँचा हुआ था। देश में, विदेश में सब जगह वेदों की भाषा-संस्कृत- के अवशेष बिखरे पड़े हैं जिससे स्पष्ट है कि वेद सिर्फ भारत के नहीं, ये किसी समय सार्वभौम थे। सार्वभौम न होते तो तिब्बत में, चीन में, इन्डोनेशिया में, पूर्वी-भारत तथा पश्चिमी भारत में वेदों की भाषा-संस्कृत-के चिन्ह सदियों के बाद भी क्यों पाये जाते हैं? कठिनाई यही थी जो संस्कृति मूक रूप में सब जगह पायी जाती थी, उस बन्द संस्कृति को खोलकर रख देने की चाबी किसी के पास न थी। अरविन्द के शब्दों में अज्ञात में बन्द उस संस्कृति को खोलकर रख देने की चाबी ऋषि दयानन्द के हाथ लगी और उन्होंने ताले में बन्द उस संस्कृति के मूल आधार वेद की अपने हाथ लगी चाबी से खोलकर विश्व के सामने रख दिया।

ऋषि दयानन्द ने घोषणा कर दी कि वेद अब ताले में बन्द न रहेंगे, ये सिर्फ ब्राह्मणों की सम्पत्ति न रहेंगे, ये सिर्फ रटन्त के विषय न रहेंगे, ये जन-जन के हाथ में, अर्थ-सहित रहेंगे, और इनके पढ़ने-पढ़ाने का अधिकार मनुष्य मात्र को होगा। ऋषि-दयानन्द की इस घोषणा का आधार यही था कि वेदार्थ की जो कुंजी खो गई थी वह उनके हाथ आ लगी थी। ऋषि दयानन्द के पहले का युग वेदों की रटन्त का युग था, बाद का युग वेदों के अध्ययन का युग हुआ।

— क्रमशः

अन्तरंग सभा की सूचना

आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक मिति भाद्रपद कृष्ण 11 सं0 2046 विक्रमी तदनुसार दिनांक- 27 अगस्त 89 रविवार को प्रात: 10 बजे नारायण स्वामी भवन 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ सभा भवन में होगी। अधिकारियों एवं सदस्यों से अनुरोध है यथा समय यथास्थान पधारने की कृपा करें।

-मनमोहन तिवारी,
सभा मंत्री।

श्री गुप्ताजी का जन्म दिवस

प्रदेश के भू0 पूर्व मुख्य मंत्री लौहपुरुष स्व0 चन्द्रभानुगुप्त की 88 वीं जन्मतिथि दिनांक- 14 जुलाई 1989 को लखनऊ में बड़े सादगीभरे समारोह में मनाई गई। इस अवसर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी एवं देश की प्रख्यात समाज सेवी डा0 सुशीला नायर ने श्री गुप्त के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें युग पुरुष बतलाया। डा0 विनय कुमार गुप्ता ने मोतीलाल मेमोरियल सोसाइटी द्वारा जनहित के कार्यों का विवरण देते हुए उनके अधूरे कार्य को पूर्ण करने का अपना संकल्प दोहराया। प्रदेशीय आर्य जनता की ओर से सभा मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि प्रदेश की जनता ऐसे युग पुरुष को उनके महान कार्यों के लिए सदैव स्मरण रखेगी।

वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन

आर्यसमाज सासनीद्वार हाथरस (अलीगढ़) द्वारा वेद प्रचार सप्ताह दि0 17 से 24 अगस्त तक समारोह पूर्वक मनाया जायगा। पधार कर धर्म लाभ उठावें।

भूल सुधार

आर्यमित्र के 30 जुलाई 1989 के अंक में पृष्ठ- 8 पर "गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी का त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न" के स्थान पर जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा मेरठ का निर्वाचन सम्पन्न" पढ़ने की कृपा करें--

- प्रबन्ध सम्पादक।

गोहत्या बन्द करो शराब के ठेके बंद करो अंग्रेजी हटाओ

आर्य समाज द्वारा तीन सूत्री अभियान

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की महत्वपूर्ण घोषणा

दिल्ली, अगस्त 1989। आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने देश में शाश्वत नैतिक जीवन मूल्यों के भारी ह्रास तथा भारतीय सभ्यता और संस्कृति के मान्य मानदण्डों की हो रही उपेक्षा पर गम्भीर चिन्ता और खेद प्रकट करते हुए कुछ विशेष मुद्दों को लेकर राष्ट्र व्यापी अभियान चलाने का निश्चय किया है। मद्य निषेध, गोरक्षा तथा अंग्रेजी हटाओ अभियान में मुख्य मुद्दे होंगे।

सार्वदेशिक सभा की गत 23 जुलाई 1989 को हुई बैठक में हुए इस महत्वपूर्ण विचार विनिमय की चर्चा करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने पत्रकारों को बताया कि आर्य समाज अपने इस अभियान के लिए हिन्दू समाज के सभी वर्गों, संगठनों और संस्थाओं का सहयोग प्राप्त करेगा। क्योंकि यह विषय देश की अस्मिता, गौरव और महत्ता के प्रतीक हैं। यदि इन विषयों को पुनः प्रतिष्ठित न किया गया तो हमारे देश की सभी विशेषताएं नष्ट हो जायेंगी।

स्वामी जी ने बताया कि भारत में 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता के समय जितनी शराब की खपत थी, अब वह कई गुना अधिक हो गई है। सरकार स्वयं संविधान के निर्देशक सिद्धान्तों की उपेक्षा कर शराब की दुकानों को खोल रही है। उसका मुख्य उद्देश्य जन स्वास्थ्य और नैतिक मूल्यों की उपेक्षा कर राजस्व कमाना हो गया है।

धर्म निरपेक्षता के बावजूद मुस्लिम भावना के लिए सरकार ने संविधान में परिवर्तन किया है, परन्तु हिन्दू भावना का आदर करने के लिए गौ बध पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए कोई न कोई बहाना कर रही है। जिस कारण गोबध बढ़ता जा रहा है और देश में पशुधन का ह्रास हो रहा है। उन्होंने कहा संस्कृत और भारतीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए अंग्रेजी को हटाना बहुत जरूरी है। यह हमारी गुलामी का अंतिम चिन्ह है। इसे हटाये बिना हमारी स्वतन्त्रता पूरी नहीं होगी।

स्वामी जी ने बताया कि इस अभियान को प्रारम्भ करने से पूर्व वह देश के अनेक नगरों, कस्बों और ग्रामों का दौरा करके उपयुक्त वातावरण बनायेंगे। इस अभियान को सफल बनाने के लिए समस्त आर्य समाजों सनातन धर्म सभा, राष्ट्रवादी संगठनों, धर्माचार्यों और साधु सन्यासियों का सहयोग प्राप्त किया जायेगा।

सच्चिदानन्द शास्त्री
मंत्री,
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
नयी दिल्ली

"स्वाध्यायोऽध्येतव्यः"

लेखिका-डा० सावित्री देवी शर्मा
एम०ए०
वेदाचार्य, बरेली

श्रावणी उपाकर्म के महत्वपूर्ण पर्व पर सभी आर्यजन वेदों के स्वाध्याय का मंगल मय शिव सकंल्प लेते हैं। आइये आज हम सब वेदज्ञ विद्वानों के इस मधुर उद्‌घोष को "स्वाध्यायो--ध्येतव्यः" अपने जीवन में साकार करें। यजुर्वेद के 32 अध्याय के दशम मन्त्र की संक्षिप्त व्याख्या प्रस्तुत की जाती है। महर्षि दयानन्द के भाष्यानुसार मन्त्र का संक्षिप्त परिचय निम्नांकित है:--

स न इत्यस्य स्वयम्भुः ब्रह्म ऋषिः।

परमात्मा देवता। निचृत त्रिष्टुब छन्दः।

धैवतः स्वरः। मन्त्र का अन्वित अर्थ

इस प्रकार है- हे मनुष्यों। जिस (तृतीये)

जीव और प्रकृति से विलक्षण आधाररूप जगदीश्वर में (अमृतम) मोक्ष सुख को (आनशानाः) प्राप्त होते हुये (देवाः) विद्वान लोग (अध्यैरयन्त) सर्वत्र अपनी इच्छा पूर्वक विचरते हैं। जो (विश्वा) सब (भुवनानि) लोक लोकान्तरों और (धामानि) जन्म स्थान नामों को (वेद) जानता है। (सः) वह परमात्मा (नः) हमारा (बन्धुः) भाई के तुल्य मान्य सहायक (जनिता) उत्पन्न करने हारा (सः) वही (विधाता) सब पदार्थों और कर्मफलों का विधान करने वाला है यह निश्चय करो।

उपरिलिखित वेद मन्त्र में परमपिता परमेश्वर के दिव्यगुण-कर्म स्वभाव तथा आस्तिक प्रभु भक्तों के परम पद मोक्ष सुख का वर्णन किया गया है। सर्वप्रथम "सः" संस्कृत भाषा के एकवचनान्त पुल्लिंग सर्वनाम पद के विषय में विचार करते हैं। ईश्वर एक है। अद्वितीय है। "नः" बहुवचनान्त पद अनन्त जीवात्माओं के लिये प्रयुक्त है अर्थात् उस एक सर्वाधार सर्वशक्तिमान पिता की हम अनेक अमृत सन्तानें हैं। "हम सब एक पिता के पूत" यह विश्वप्रेममयी भावना प्रथम पदत्रयी में कितने कौशल से अभिव्यक्त की गई है। पारस्परिक रागद्वेष की अग्नि में जलता हुआ यह मानव समुदाय यदि इस सार्वभौम धर्म के मर्म को समझ पाता तो क्या गृहकलह, पर राष्टकौटिल्य एवं विश्व संघर्ष की दुःखदायिनी विभीषिका हमें संत्रस्त कर पाती। सम्भवतः कदापि नहीं। कौरव पाण्डवों की महाभारतीय भीषण समर रात्रि में जब एक दिन एकान्त में माता-कुन्ती ने अपने अतुल पराक्रमी अरिसूदन कर्ण नामक पुत्र को यह गुप्त रहस्य सुनाया कि महाबली पाण्डव तथा अंगराज कर्ण एक ही माता के पुत्र हैं तो उस पाण्डव द्रोही कौरव पक्षधर वीर कर्ण का हृदय सहसा परिवर्तित हो गया। पूर्व प्रतिज्ञा के कारण दुर्योधन के पक्ष में युद्ध करता हुआ भी पाण्डवों का वास्तविक अहित न कर सका। आत्मीयता का अभाव ही उसे पाण्डव विद्वेषी बना रहा था। एक मातृत्व का ज्ञान होते ही हृदय में स्नेह की धारा प्रवाहित हो उठी। "स नो बन्धुः" वाक्य संसार के समस्त प्राणियों के प्रति समभ्रातृत्व का सद्भाव जगाकर अलौकिक विश्वप्रेम का व्यापक सन्देश देता है।

"बन्धु" शब्द में अत्यन्त मर्मस्पर्शी भाव निहित है। वह जगत्पिता सबसे पहले हमारे समक्ष अपना कल्याणमय बन्धु स्वरूप ही प्रकट करता है। जिससे

हम गम्भीर प्रेमसागर में सानन्द अवगाहन कर सकें। उस मन्जुल मूर्ति के भाव विभोर हो कर दर्शन कर सकें। कोई भी दुर्बल जन अपने प्रेमास्पद से कभी भयभीत नहीं होता। अतः भक्त में निर्भयता उत्पन्न करने के लिये भगवान् की प्रीतिमायी बन्धुता कितनी आवश्यक है। संसृति के कण-कण में उसकी स्निग्ध वात्सल्य मयी छाया प्रतिबिम्बित हो रही है। भक्त नहीं अपितु भगवान स्वयं अपना स्नेह सौरभ लुटाने के लिये व्याकुल से दीख रहे हैं। जनगणमन की चिरन्तन प्रेम पिपासा के शान्त्यर्थ वह स्वाति नक्षत्र का घनश्याम बन अमृतवर्षिणी अविरल धारायें बहा रहा है। चेतन ही नहीं जड़ प्रकृति भी उसी के अनन्त प्यार से विविध आकर्षक रूपों में अलंकृत होती हुई सजीव सी प्रतीत हो रही है।

उसका प्रथम मोहक गुण है निश्छल बन्धुता अहेतु की कृपा। प्रभु के उपासकों में भी भक्ति के फलस्वरूप विश्वरूप के रूप में यही गुण प्रकट होता है। साधुजनों का मातृहृदय चेतन जगत की सीमाओं का अतिक्रमण कर भावातिरेक में कह उठता है- "मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे"। समस्त संसार के जीवों के प्रति ऐसी लोकोत्तर उदार भावना का उदय होना ही प्रभु आश्रित भक्तों का प्रथम लक्षण है।

जनिताः- वह प्यारा प्रभु अकारणबन्धु-अतिशय करुणा प्रेम से प्रेरित होकर ही इस सृष्टि का जनिता अर्थात् उत्पादक है। स्पष्ट है किसी भी रचनात्मक कार्य या व्यवहार के लिये प्रीति पुरस्सरता प्रथम अपेक्षित है। यदि बन्धुता हुये बिना ही कोई "जनिता" होने का निष्फल प्रयास करेगा तो ध्वंसात्मक कार्यकौशल ही दिखा सकेगा सुन्दर निर्माण में उसका कोई सहयोग सम्भव नहीं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के सातवें नियम में लौकिक व्यवहार के मूल में प्रीतिपूर्वक-धर्मानुसार-यथायोग्य व्यवहार का समर्थन किया है। कोई भी निर्माता सहृदयता के बिना जीवनक्षेत्र में सफल न हो सकेगा। संसार में "जनिता" रूप का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण ममतामयी पुत्रवत्सला मातृशक्ति है जो निष्काम भाव से आजीवन सस्नेह सन्तति का निर्माण ही अपना मुख्य लक्ष्य मानती है। शिष्य वत्सल आचार्य गुरुजन ही वसिष्ठ एवं सान्दीपनि की भाँति राम, कृष्ण जैसे युगनायक, धार्मिक महामानवों के "जनिता" निर्माता बन सकते हैं। एक व्याधि व्यथित रोगी की सफल चिकित्सा करुणानिधान लोकबन्धु वैद्य ही कर सकता है। अर्थ पर प्रथम दृष्टि रखने वाला लोभी अकरुणहृदय चिकित्सक नहीं।

ऐसी निष्काम प्रीति ही राष्ट्र को चरित्रबल सम्पन्न उत्तम सन्तान, जितेन्द्रिय तेजस्वी छात्र तथा सभ्य नागरिकों को जन्म दे सकती है। अर्थोन्मुखी राजव्यवस्था के भयंकर परिणाम सभी को आज विदित हो ही चुके हैं। अतः वैदिक मर्यादा यही है कि प्रभु के आदर्श प्रिय पथ पर चलते हुये हम "वसुधैव-कुटुम्बकम्" का उदात्त भाव प्रथम धारण करें पश्चात् "जनिता" बनकर यथाशक्ति लोक निर्माण करें।

विधाताः- सर्वहितकारी जगदीश्वर जगतबन्धु होकर अपनी जनितृशक्ति प्रकट करता है फिर स्वरचित पदार्थों का यथोचित विधान करके विश्वविधाता कहलाता है। "विधाता" शब्द का अर्थ है विशेष रूप से धारण करने वाला। समुचित विधान ही प्रत्येक वस्तु को मर्यादित करता है। अन्यथा अव्यवस्था एवं अनौचित्य पदार्थ का विनाश कर देता है। कितना वैज्ञानिक वर्णन है जो जनिता है वही योग्य विधाता हो सकता है। जनिता को संविधान निर्माण हेतु पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिये। क्योंकि यदि बालकों के जनिता माता पिता हों तथा नियम प्रतिवासी (पड़ोसी) हों परिस्थिति संभाले नहीं संभलेगी। छात्रों के ज्ञान जन्मदाता आचार्य हों और उनके अध्ययन दिनचर्या, आचार संहिता, पाठ्य पुस्तकादि का विधान करने वाले कोई दूरस्थ शिक्षाविभागीय अधिकारी हों तो वह वर्तमान दुर्गतिपूर्ण अव्यवस्था आज किसी से छिपी नहीं है। विशेष विस्तार की आवश्यकता नहीं सभी विभागों में "जनिता"-"विधाता" की भेदपूर्ण नीति के दुष्परिणाम दर्शनीय हैं। देखने में "जनिता से विधाता" कितनी छोटी बात प्रतीत होती है कितने इसके प्रतिकूल व्यवहार ने हमारी गतिविधियों को आमूल परिवर्तित कर विश्व में घोर अशान्ति उत्पन्न कर दी है। जनिता और विधाता का ऐक्य ही सामाजिक संव्यूहन को मंगलमय बना सकता है।

धामानि वेद भुवनानि विश्वाः-

वह कृपालु परमेश सकल पदार्थों का जनिता तथा विधाता होने से ही समस्त तेजोमय जन्म-स्थान नामों को जानता है। इस मन्त्र भाग से तीन भावार्थ विशेष रूप से ध्वनित हो रहे हैं। 1- वह ईश्वर सर्वज्ञ है। 2-उसकी सृष्टि ज्ञान विज्ञान से परिपूर्ण है। तेजस्वी विधाता के असंख्य प्रकाशमान लोक लोकान्तर हैं। 3-अगणित ब्रह्माण्डभुवनों का सर्वज्ञाता होने से वही हमारा ऐहिक-परलौकिक मार्गों का सच्चा निर्देशक हो सकता है। अतः उसी की उपासना करनी चाहियें।

यत्र देवा अमृत मानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त-अर्थात जहाँ दिव्य गुण सम्पन्न संयतेन्द्रिय योगी जन लौकिक आवागमन से मुक्त हुए अमृत पद मोक्ष को प्राप्त कर के प्रकृति और पुरुष से विलक्षण आधार रूप जगदीश्वर में सानन्दबिहार करते हैं। स्पष्ट है कि दुर्लभ मानव जीवन को जो मनुष्य दिव्य गुण-कर्म-स्वभावों से अलंकृत करते हैं, मनसा वाचा कर्मणा सत्यव्रतपालन ब्रह्मचर्यादि के सेवन से परमेश्वरोपासना की योग्यता धारण करते हैं वही जन्म मरण के दुःखदपाशों से छूट कर अमरत्व के अधिकारी होते हैं। इसी लिये तत्वदर्शी महनीय ऋषियों ने इसे "दुर्गमयथस्तत्कवयो वदन्ति" दुर्गम पथ कहा है। छुरे की तीक्ष्ण धारा

शेष पृष्ठ ६ पर

भगवान "श्री कृष्ण" का लोकोपकारी स्वरूप

● डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी
प्रोफेसर्स कालोनी,
श्यामगंज-बरेली 243005

द्वापर युगीन योगिराज कृष्ण का जन्म, भादों की कृष्णपक्ष की अष्टमी के दिन, मथुरा में हुआ था। रात्रि के बारह बजे, निरंकुश कंस की कारा में, व्याकुला माँ देवकी से उत्पन्न भगवान् श्री कृष्ण, पिता वासुदेव के लिए आशा और विश्वास का सम्बल बने।

योगिराज श्री कृष्ण को रंगीली दृष्टि से देखना बुद्धि संगत नहीं। श्री कृष्ण की आलोचित चेष्टाओं की कल्पना ने कोमलकान्त पदावली को जन्म दिया, तथा उनके चमत्कारिक कार्यों ने, मानव मात्र में लोकोपकार की भावना को उत्पन्न किया।

कहा जाता है कि बृज में बाढ़ आने पर बृजवासी चिन्तामग्न हो गये। ऐसे विषम समय में भगवान् कृष्ण ने बृजवासियों सहित, गोवर्धन पर्वत पर आवास बनाया तथा तत्परता से बृजवासियों की सेवा की। सभी बृजवासी एक स्वर से बोल उठे- "कृष्ण ने तो गोवर्धन उठा लिया है।" किन्तु यह कथन की मुहावरेदार शैली है। वस्तुतः तो गोवर्धन को उखाड़ना प्रकृति के नियम के विरुद्ध है, तथा उसे उखाड़ कर, हाथ पर रख लेने से जनता बाढ़ से कैसे बच सकती थी? मनन पूर्वक इन कथाओं का गूढ़ार्थ समझना चाहिये।

श्री कृष्ण से सम्बद्ध एक "कालिय-दह" की कथा भी सुप्रचलित है। आम लोग समझते हैं कि श्री कृष्ण ने यमुना वासी सर्प का संहार किया था। किन्तु सत्य इस भ्रान्त धारणा के विपरीत है। वस्तुतः वह सर्प नहीं अपितु "नागजाति" का मानव था, जो अपनी स्त्रियों सहित यमुना के एक टापू में रहता था, तथा आने जाने वाले राहियों को लूटता था। नागाजाति के लोग आज भी हैं, जो हजारों की संख्या में आसाम में रहते हैं। भगवान कृष्ण ने उस स्थान पर टोली बनाकर खेलना आरम्भ कर दिया। जब गेंद उस नाग के स्थान पर गिरी तब ग्वालवाल निराश होकर कहने लगे कि गेंद कैसे मिलेगी। श्री कृष्ण तुरन्त उस नाग के स्थान पर निर्भीकता से गये, तथा नाग को मारने लगे। जब उसकी स्त्रियों ने अनुनय-विनय की तब श्री कृष्ण ने उसे इस शर्त पर छोड़ा कि वह यह स्थान छोड़कर परिवार सहित नागादेश चला जाये। उसकी नाक में छेद कर, डोरा डालकर, जब यमुना के किनारे लाये तब ग्वालवाल प्रसन्न हुए, और कहने लगे श्री कृष्ण ने "नाग को नाथ लिया।" वह नाग सपरिवार नागादेश चला गया।

इसी प्रकार श्री कृष्ण ने चोरबाजारी दूर करने के लिए बृज की सेवार्थ एक मण्डल बनाया था, जो बृज का दूध, दही, मक्खनादि मथुरा जाने से रोकना था। इस प्रबन्ध को तोड़कर, जो स्त्रियाँ दूध, दही एवं मक्खनादि मथुरा ले जाती थीं उनसे कर माँगा जाता था। ऐसा न करने पर उनके पदार्थ लूट लिये जाते थे। वस्तुतः यह राजनीतिक क्रान्ति का सूत्रपात था।

श्री कृष्ण की जब ये चर्चायें कंस तक पहुँचीं तब कंस ने श्री कृष्ण को ग्वालवालों सहित अपने यहाँ खेल अखाड़ा करने के लिए निमन्त्रित किया। मार्ग में कुवलया पीड़ हाथी, तथा चाणूर और मुष्ठिक नामक दो पहलवान खड़े किये। कृष्ण के साथियों ने उन्हें घूँसे मार कर समाप्त कर दिया। जब कंस ने कृष्ण को कारागार में डालने की बात उठाई तब श्री कृष्ण ने तत्काल कंस के सिंहासन पर पहुँच कर उसका शिर तलवार से काट दिया।

इसी प्रकार "रासलीलाओं" को लेकर लोकभ्रान्ति है कि कृष्ण रात्रि में गोपिकाओं के साथ नाचते गाते थे और विविध लीलायें करते थे। भला योगिराज श्री कृष्ण ऐसा क्यों करते? रासलीला व्याज से श्री कृष्ण ग्वालबालों को निमन्त्रित कर, उन्हें योग की क्रियायें, व्यायाम, तथा युद्ध कौशल सिखाते थे, किन्तु कंस के गुप्तचर इसे ग्वालबालों का नाचना-गाना समझते थे। कंस के सिंहासन पर उग्रसेन को बिठाकर स्वयं श्री कृष्ण उज्जैन के गुरुकुल में अध्ययनार्थ चले गये थे, जहाँ से वैदिक शिक्षा प्राप्त कर वे मथुरा आ गये थे, जरासन्ध की पुत्रियां ही कंस की स्त्रियाँ थीं। जरासन्ध ने पुत्रियों के कहने पर बृज पर चढ़ाई की थी, अन्ततः उसकी करारी हार हुई। जरासन्ध सत्रह बार हारा तथा उद्विग्न होकर उसने अबीसीनिया केकालियवन को निमन्त्रित किया तथा प्रतिज्ञा की कि विजयी होने पर बृज का आधा राज्य उसे दे दिया जायेगा। श्री कृष्ण को जब यह सब विश्वस्तसूत्रों से ज्ञात हुआ, तो उन्होंने उस समय जरासन्ध से लड़ना उचित न समझा। बृज का पूरा राज्य जरासन्ध को सौंप कर, श्री कृष्ण उस समय अपने साथियों सहित द्वारिका आ गये। जरासन्ध की यह कथा समझाती है कि अपने देशवासियों से लड़ना देशहित में नहीं है। पुरुषार्थ से श्री कृष्ण ने द्वारिका को स्वर्णमयी बना दिया। योगिराज श्री कृष्ण ने श्री मद् भगवत् गीता" में अर्जुन से कहा है-

"तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ।
ज्ञात्वाशास्त्र विधानोक्तं कर्मकर्तु मिहार्हसि।।
{गीता/16}

हे अर्जुन। तू प्रत्येक कार्य व्यवस्था में शास्त्रों को प्रमाण मान, क्योंकि शास्त्र योगियों के सहस्त्रों वर्षों के अनुभूत प्रयोग हैं।

योगिराज कृष्ण के समय जरासन्ध शिशुपाल, कंस, रुक्मी, शकुनि तथा स्वयं दुर्योधनादि शास्त्र तन्त्र के विरुद्ध राजतन्त्र को प्रमुखता दे रहे थे। इन आतंकवादी राजाओं का नेतृत्व जरासन्ध के हाथ में था। कृष्ण ने जरासन्ध के वध हेतु भीम की कुश्ती जरासन्ध से करवाई जिसमें वह समाप्त हो गया। जरासन्ध के बाद, उसका पुत्र राजा-रुक्मी, बलराम के साथ युद्ध में मारा गया। आतंकवाद की इन लहरों को रोकने के लिए ही श्री कृष्ण ने शास्त्र तन्त्र व्यवस्था के अनुपालन का शुभारम्भ किया जो अनुकरणीय है।

श्री कृष्णाच्चरित्र की स्मारिका जन्माष्टमी प्रतिवर्ष श्री कृष्ण के सत्कार्यों की झाँकी दिखाकर चली जाती है। किन्तु क्या यही योगिराज कृष्ण के प्रति पर्याप्त है? अपेक्षा है सदाचरण की।

यम ने मार्मिक शब्दों में नचिकेता को समझाया था-

"नाविरतोदुश्चरितान्ना शान्तो ना समाहितः।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञाने नैनमाप्नुयात्।।
{कठोपनिषद् 2/22}

अर्थात् जो दुराचार से नहीं हटा जो चंचल और प्रमादी है, सावधान नहीं है, जिसके मन में क्षोभ है वह बुद्धि एवं ज्ञान से इस आत्मा को प्राप्त नहीं कर सकता। अतः आत्मज्ञान, दुराचार, प्रमाद एवं दुर्बुद्धि से प्राप्त नहीं हो सकता, केवल विवेकी व्यक्ति ही आत्मज्ञान का अधिकारी है, झाँकियों के दर्शन से कृष्ण उत्पन्न नहीं हो सकते। अपेक्षा कृष्ण जैसे आचरण की है जिसका सर्वत्र सर्वथा अभाव है, गीता के अनुसार जहां योगेश्वर कृष्ण तथा धनुर्धर अर्जुन जैसे वीतराग योद्धा हैं, विजय श्री वहाँ ही निवास करती है:-

"यत्रयोगेश्वरः कृष्णः यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्री विजयो भूर्ति ध्रुवं नीति मतिर्मनो।।
{गीता-18}

आज भी जरासन्ध के प्रतीक आतंकवादी निर्दोषों को पीड़ित कर रहे हैं, किन्तु "कृष्ण" के नाम पर कोई नहीं दीखता, कृष्ण भक्त भी निरुपाय न "नामरतन" में शुकवत् लगे दीख रहे हैं, कब तक दुराचार के विषैले नाग, मानवता को दंशित करते रहेंगे? आत्मबोध के द्वारा ही मानव "कृष्ण" बन सकेगा-

"मत पुजारी बन, स्वयं भगवान बनकर जी,
अमर युगगान बन कर जी।"

पृष्ठ ५ का शेष....

के समान प्रभुभक्ति का मार्ग अत्यन्त कठिन है। असुर, मानव तथा देव कोटियों में से यह पद तपोधनी देवों द्वारा ही प्राप्य है। ऐसे देवगण जीवन्मुक्त होकर शरीर त्याग के अनन्तर उस दिव्य लोक में विचरण करते हैं जिसे वेद की भाषा में अपवर्ग कहा गया है। यद्यपि विविध मत मतान्तरों में मृत्यु के पश्चात् प्राप्य लोकों का अनेक प्रकार से वर्णन किया गया है किन्तु उनके वर्णित लोक लौकिक भोगों से ही परिपूर्ण दीखते हैं। वे भौतिक भोग्य विषयों से विशेष प्रतीत नहीं होते। धर्मार्थ काम की यावज्जीवन सुचारुतः सिद्धि करने के पश्चात् चरम मोक्ष पद की प्राप्ति वेदों द्वारा प्रतिपादित की गई है।

पुरुषार्थ चतुष्टय की जीवन साधना इसी हृदय ग्राह्य वैज्ञानिक पद्धति से सफल हो सकती है।

आइए, देव बनें

श्री सुरेश चन्द्र वेदालंकार, (एम.ए.)
आर्यसमाज गोरखपुर।

मुग्धा देवा उत शुना यजन्तो-
न गोरंगैः पुरुधा यजन्त।
य इमं यज्ञं मनसा चिकेत
प्रणोवेचस्तमिहेह ब्रुवः। ।ऋ07/5/5

इस मंत्र का अर्थ है "मुग्धाः देवाः, अपनी ओर मुग्ध करने वाले ज्ञानी, (उत) या तो (शुना अयजन्त) परमात्मा का यजन करते हैं (उत) या तो (गोअंगेः) ज्ञान के विविध अंगों द्वारा (पुरुधा अयजन्त) अनेक प्रकार से यजन करते हैं (यः इमं यज्ञम्) जो इस यज्ञ को (मनसा चिकेत) मन से जानता है नः (प्रवोच), तू हमें उसके सम्बन्ध में अच्छी तरह बता (तम इह+इह ब्रवः) तू उसके विषय में अभी-अभी बता।

ऋषि-मंत्र दृष्टा को कहते हैं और इनकी तीन श्रेणियां होती हैं। पहली श्रेणी है ऋषि। ऋषि उस व्यक्ति को कहते हैं जो किसी वस्तु का साक्षात्कार कर ले। साक्षात्कार का मतलब है अवस्तु के मूलतत्व को जान ले। उसके ज्ञेय और ज्ञातव्य को समझ ले। ऋषयो मन्त्र दृष्टमः, जो मंत्र को समझ ले वह ऋषि है। ऋषि की दूसरी श्रेणी है सिद्ध। सिद्ध उसको कहते हैं जब मंत्र दृष्टा ऋषि ज्ञेय तथा ज्ञातव्य को समझ कर उसका जन कल्याण या आत्मकल्याण के लिए प्रयोग करता है तब उसका नाम सिद्ध हो जाता है। महर्षि दयानन्द ने वेद के महत्व को समझा, उसकी ऋचाओं के मूल तत्व को समझकर मानव मात्र को समझाया, तब वह सिद्ध पुरुष हुए। और जब वह महात्मा आत्म चिन्तन या स्वार्थ को छोड़कर लोकोपकार में लग जाता है तब वह देव कहलाने लगता है। उस समय वह अपने कष्टों की परवाह नहीं करता है बस लोकोपकार की प्रचण्ड भावना से भरा रहता है। जन-जन उसकी निष्काम भावना को देखकर उसकी ओर आकर्षित होते रहते हैं।

स्वामी श्रद्धानन्द देव थे। लेखराम देव थे। गुरुदत्त विद्यार्थी देव थे। महात्मा नारायण स्वामी देव थे। दिव्य भावना से भरा मनुष्य स्वार्थ हीन हो जाता है। उसे अपने जीवन की परवाह नहीं रहती। गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम बिहार का एक प्रसिद्ध गुरुकुल है। गुरुकुल कांगड़ी से मान्यता भी प्राप्त है। श्री पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज वहाँ के उत्सव पर पधारे। एक दिन एक दर्शक को चोट लगी। वह सड़क पर पड़ा था। कराह रहा था। एक वृद्ध सन्यासी अचानक उस ओर से गुजर रहे थे। उन्होंने देखा और बिना किसी हिचक के अपने कपड़े फाड़कर उसकी मरहम पट्टी की और अस्पताल तक पहुँचाया। उन्हें न किसी की प्रशंसा और न किसी के साधुवादों की चिन्ता थी। इसे ही कहते हैं निष्काम कर्म। निष्काम कर्म वह कहलाता है जब मनुष्य दूसरों का कल्याण अधिक सोचता है और अपना सुख-दुख नहीं समझता निष्काम कर्म कहलाता है। इसे कहते हैं देवत्व निष्काम कर्म का तात्पर्य कर्म त्याग नहीं निष्काम कर्म की स्थिति में मनुष्य कर्म नहीं त्यागता। याद रखिये मनुष्य चाहे किसी भी अवस्था में पहुँच जाए वह बिना कर्म के नहीं रह सकता। वेद कहता है "मुग्धा देवाः-----पुरुधाजयन्त। कर्म का त्याग नहीं किया जा सकता। गीता ने भी कहा हैः-

"न हि क्षणमपि जातु कश्चितिष्ठत्य कर्म कृत। कोई मनुष्य एक क्षण के लिए भी कर्म किये बिना नहीं रह सकता। खाना, पीना, मल मूत्र विसर्जन, देखना, नेत्र झपकाना आदि कर्म तो छूट ही नहीं सकते। स्वामी दयानन्द के जीवन की एक घटना है। महर्षि ने सिद्धि प्राप्त कर ली। एक दिन वे पहाड़ की चोटी पर खड़े होकर विश्व को देख रहे थे। उन्हें चारों ओर भयंकर कष्टों में पड़े हुए मनुष्य, पशु, पक्षी, दिखाई दिए। उनका हृदय द्रवित हो गया और उन्होंने अपना शरीर छोड़ने का विचार किया। परन्तु अन्तर की आवाज ने कहा "ऋषिवर! संसार के दुःखों को तुम दूर करने के लिए आए हो। निराश मत होओ और पीड़ित संसार को सुख दो, आनन्द का मार्ग बताओ।" उन्होंने सारा जीवन लगा दिया।

वेद का मंत्र कहता है "य इमं यज्ञं मनसाचिकेत" जो इस ब्रह्मयज्ञ को मन से=विचार पूर्वक जानता है।

इस प्रकार यह वेद मंत्र में पहली बात यह कही गई है ज्ञानी मनुष्य संसार को मोह लेते हैं और ज्ञान की प्राप्ति के लिए ब्रह्मयज्ञ करना चाहिए। ब्रह्म यज्ञ क्या है। इस विषय में महर्षि दयानन्द लिखते हैं।

1- तत्रादौ ब्रह्म यज्ञान्तर्गत संध्या विधानं-प्रोच्यते। (सं0पं0 महा0)

2- तत्र ब्रह्म यज्ञस्यायं प्रकारः सांगानां वेदादि शास्त्राणां सम्यगध्ययनमध्यापनं संध्योपासनं च" (ऋ भा0 भू0)

3- ब्रह्म यज्ञ जो पढ़ना-पढ़ाना संध्योपासन ईश्वर से स्तुति प्रार्थना उपासना करना। (स0प्र0 समु0-3)

वाचस्पत्य आदि कोषकारों ने ब्रह्म यज्ञ के विषय में बड़ा भारी भ्रम फैलाया है। वे ब्रह्म यज्ञ का अर्थ केवल अध्ययन-अध्यापन मानते हैं। महर्षि दयानन्द ने ब्रह्म यज्ञ के अन्तर्गत संध्या का भी गृहण किया है। आश्वलायन गृह सूक्त में ब्रह्म यज्ञ प्रकरण देखना चाहिए।

ब्रह्म यज्ञ के विषय में मनुस्मृति ब्रह्मयज्ञ के पर्यायवाची तीन पद दिये गये हैं।

1- अध्यापनं ब्रह्म यज्ञः, (3/70) अहुतं च (3-73) जयोऽहुतः (3/74), स्वाध्यायेनार्चये तर्पणं (3/81)। ब्रह्मयज्ञ को अध्यापन, अहुत, अदुत को लक्षण है जप, ब्रह्मयज्ञ को स्वाध्याय भी कहते हैं।

इस प्रकार यह मंत्र में देवता बनने के लिए निम्न लिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।-

1- 1- योगाभ्यास, 2-वेदशास्त्राभ्यास, इन दोनों उपायों को संध्या और स्वाध्याय भी कहते हैं। दोनों का एक नाम ब्रह्मयज्ञ हैं। जो व्यक्ति परमात्मा से अपना सम्बन्ध बनाए रखना चाहते हैं उन्हें ब्रह्मयज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिए। इस लिए देवत्व की प्राप्ति के लिए ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ और नृ यज्ञ करना चाहिए।

इस प्रकार मुग्धा देवा उत नृ. शुना यजन्तो। मंत्र में ज्ञानी संसार को मुग्ध कर लेते है। जो ज्ञानी परमात्मा को भजन करते हैं, ज्ञान के विविध मंत्रों को प्राप्त करते हैं, इन यज्ञों का मन से ध्यान करते हैं और जीवन में उतारते हैं उनको देवत्व की प्राप्ति होती है।

कृतज्ञता ज्ञापन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपमंत्री श्री डा0 विनय प्रताप जी के आर्य समाजों के दौरे के समय बलिया-वाराणसी मार्ग पर रसड़ा से एक किलोमीटर पूर्व टैक्सी तथा ट्रक भिड़न्त में गम्भीर रूप से दुर्घटना ग्रस्त हो जाने पर प्रदेश के अनेक शुभचिन्तकों, स्नेहीजनों तथा आर्य समाजों के अधिकारियों के संवेदना पत्र प्राप्त हो रहे हैं। सभी स्नेही जन उनके वर्तमान स्वास्थ्य की स्थिति जानने को उत्सुक हैं। श्री विनय प्रताप जी लिखने-पढ़ने में असमर्थ हैं।

अतः आर्यमित्र के माध्यम से उन्होंने कृतज्ञता ज्ञापन किया है। सुयोग्य चिकित्सकों की देखरेख में उनके स्वास्थ्य में निरन्तर लाभ हो रहा है। प्रभु से यही प्रार्थना है कि वे शीघ्रातिशीघ्र स्वस्थ होकर हमारे बीच पुनः दर्शन दें और जनसेवा के कार्य में उसी भांति से पुनः समर्पित हो जावें।

इन्द्रराज — मनमोहन तिवारी
प्रधान — मंत्री
आर्य प्रतिनिधिसभा, उत्तर प्रदेश

"वेद में प्रतिपादित ईश्वर का स्वरूप"

कु॰ नीता चौहान, एम॰ए॰ (संस्कृत व अर्थशास्त्र)
खरपरी, मैनपुरी

मानव सभ्यता के उषाकाल में, प्रागैतिहासिक युगों की धुंधली वेला में, वैदिक ज्ञान का प्रकाश सत्यदृष्टा ऋषियों के प्रकृति विशुद्ध मानस में पड़ा। विश्व की समस्त प्राचीन सभ्यताओं के आविर्भाव से सहस्रों वर्ष पूर्व "सप्त-सिन्धवः" के इस पावन प्रदेश में जहाँ गंगा और यमुना का पुनीतजल अनन्तकाल से, इस ऋषियों की भूमि को और भी अधिक पावन बना रहा है, "त्रिविष्टप" के उच्चतम शिखरों पर उद्भूत होने वाली आर्य संस्कृति का पालन-पोषण और अनेक रूपों में विकास हुआ। उसी महनीय संस्कृति की अक्षय देन विश्व मानव को वेद विद्या के रूप में प्राप्त हुई। वेद न केवल भारत के गौरवशाली अतीत के प्रथम साक्षी हैं, अपितु वे समस्त सद्विद्याओं के बीजरूप हैं।

वेद ज्ञानस्वरूप हैं और ज्ञान का प्रयोजन सत्य की प्राप्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता और संसार में ईश्वर ही एकमात्र सत्य है, अतः वेदों का मुख्य तात्पर्य ईश्वर है। "यस्तन्न-वेद किमृचा करिष्यति" का आशय भी यही है; अतः मेधावी जन सर्वदा उसी का दर्शन करते हैं।

परमात्मा का एकत्व और अनेकत्व

परमात्मा एक है अथवा अनेक- इन दोनों पक्षों के समर्थन में मन्त्र प्रमाण मिल जाने से दोनों पक्ष सिद्ध हो जाते हैं।
ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में स्पष्ट रूप से देवताओं के तेंतीस होने का उल्लेख मिलता है।

शतपथ- ब्राह्मण के कथन से भी इस तथ्य की पुष्टि हो जाती है। इसके अतिरिक्त मन्त्रों में असंख्यों रुद्रों का भी उल्लेख मिलता है। देवताओं के पृथक्-पृथक् नाम तथा कयाशुभ, इन्द्रमरुत् आदि संवाद सूक्त बहुदेववाद सिद्धान्त को पुष्ट करते हैं।

लेकिन वेद के मर्मज्ञ विद्वान् "पुरुष एवेदं सर्वम्" एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति" अदितिर्द्यौः अहं रुद्रेभिः, इत्यादि उद्धरणों से ईश्वर की एकता का प्रतिपादन करते हैं।

बहुदेववाद के समर्थन में प्रस्तुत किए गये मन्त्रों एवं ब्राह्मण-वचन के अध्ययन से जहाँ यह प्रमाणित होता है कि देवता अनेक हैं, वहाँ इन अनेक देवताओं का एकत्व में समाहार भी सिद्ध होता है। इन मन्त्रों में स्पष्ट रूप से एकमात्र परमेष्ठी प्रजापति को अधिपति बताया गया है। अथर्ववेद में स्पष्ट रूप से उन तेंतीस देवताओं को ब्रह्म के शरीर से प्रकट होने वाला कहा गया है। शतपथ-ब्राह्मण इन तेंतीस देवताओं के स्वरूप को स्पष्ट करता हुआ कहता है कि एकमात्र देव ब्रह्म ही है।

यजुर्वेद में उसी एक परमतत्व को अग्नि, आदित्य, वायु, चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्म, आप और प्रजापति बताया गया है। नासदीय सूक्त का ऋषि प्रलय अवस्था में, बिना वायु के, स्थित रहने वाले जिस परम तत्व का उल्लेख करता है, वह भी एक है। अथर्ववेद का ऋषि कहता है कि जिसमें सभी देवता आकर एकवृत होते हैं और जिससे यह सारा संसार निर्गत होता है, वह एक ही है।

भारतीय संस्कृति के मूल में निहित ईश्वर विषयक इस अवधारणा के कारण, उपनिषदों का यह कथन कि ईश्वर एक है, सभी प्राणियों के अन्तर में वही स्थित है और वही अनेक रूपों में प्रकट होता है, सर्वथा वैदिक दर्शन की सहज स्वाभाविक परिणति है।

बहुदेववाद के कारण उत्पन्न होने वाली भ्रान्ति का निराकरण करते हुए, आचार्य यास्क कहते हैं:-
"महाभाग्याद् देवताया एक आत्मा बहुधा स्तूयसे।"

एकस्यात्मनो ऽन्ये देवाः प्रत्यगांनि भवन्ति" कि महाभागयुक्त देवता के ऐश्वर्य योग से, एक आत्मा अनेक रूपों में स्तुत होती है। एक आत्मतत्व के अन्य देवता अगं-प्रत्यगं के समान हैं। वस्तुतः देवता एक है, परन्तु ऐश्वर्य के योग से वह अनुक मान लिया जाता है। यास्क अपने कथन को और स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि कर्म की सिद्धि के लिए देवता आत्मत्व से प्रकट होते हैं"। आत्मा ही इन देवताओं का रथ है, आत्मा ही अश्व है, आत्मा ही आयुध है और आत्मा ही बान है, इस प्रकार सब कुछ आत्ममय है।

तैतिरीय आरण्यक से भी यास्क के उपर्युक्त कथन की पुष्टि हो जाती है। इस प्रकार एकता में अनेकता की प्रतीति का आधार अस्तित्व भिन्नता नहीं है और न यह अनेकता का सिद्धान्त ईश्वर के यथार्थ स्वरूप पर आधारित है। वस्तुतः, कर्मभिन्नता के आधार पर उस एक परमतत्व को अनेक मान लिया जाता है। कर्म की इस अभिव्यक्ति ने देवता की अनेक रूपों में स्तुति कराई है, यह नाना रूपा स्तुति क्रमशः बहुदेववाद के रूप में प्रतिफलित हुई है। इसके अतिरिक्त वेद में बहुदेववाद की प्रतीति कराने वाले स्थलों का वर्णन आलंकारिक है। स्वयं वेद का ऋषि ऐसे वर्णनों को "माया" नाम से अभिहित करता है।

ईश्वर साकार अथवा निराकार-

जैसा कि अनेक भारतीय विचारक ईश्वर को साकार मानने के पक्ष में भी हैं, परन्तु वेद के अनुसार ईश्वर सर्वव्यापक होने से निराकार है, उसकी प्रतिमा न होने का स्पष्ट खण्डन किया गया है। "न तस्य प्रतिमा" कि जिसकी समता का दूसरा न हो अर्थात् अद्वितीय। यह अर्थ लेने पर उसकी प्रतिमात्व का निषेध नहीं होता। उसको स्नायु एवं काया से रहित बताया गया है, तथा उसके स्वरूप को बताने के लिए आकाश की उपमा दी गई है। वह इतना महान् और व्यापक है कि सम्पूर्ण भूत उसके एक चौथाई अंश के बराबर है, शेष तीन चौथाई अंश द्युलोक को व्याप्त किए हुए है। वह सम्पूर्ण देवताओं का उसी प्रकार का आधार है; जिस प्रकार वृक्ष का तना अपनी शाखाओं का। इसके अतिरिक्त देवताओं को ऋचाओं के अक्षर में स्थित बताया गया है। अतः अक्षर के अनश्वर और निराकार होने के कारण सिद्धान्तरूप से ईश्वर का साकार होना सिद्ध नहीं होता । ईश्वर को अन्धकार से परे महान् आदित्यवर्ण वाला बताया गया है, इससे भी ईश्वर की निराकारता अथवा ज्योति रूपता प्रमाणित होती है।

उपर्युक्त ईश्वर के एकत्व और अनेकत्व के विवेचन के प्रसंग में ईश्वर की एकता का प्रतिपादन किया गया है, यह एकता भी ईश्वर के साकार होने में बाधक है, क्योंकि कोई भी भूत वस्तु अद्वितीय नहीं हो सकती।

जहाँ उपर्युक्त विवेचन से ईश्वर की निराकारता प्रमाणित होती है, वहाँ यह मानना कि वह शून्य अथवा अभाव के समान निराकार है, असंगत है। शून्य, वस्तुतः, अभावात्मक होता है, जबकि ईश्वर को अभावात्मक नहीं मान सकते क्योंकि प्रलय की अवस्था में भी वह भावात्मक स्वरूप वाला है।

इसके अतिरिक्त जब शून्य अभाव रूप होने पर भी सर्वथा अर्थशून्य नहीं होता, सापेक्ष दृष्टि से उसका एक अपना विशिष्ट महत्व और आकार होता है, तब भावात्मक स्वरूप वाले ईश्वर को सर्वथा निराकार कैसे माना जा सकता है। सम्भवतः इसी कारण वेद का ऋषि अदिति को माता, पिता, अन्तरिक्ष इत्यादि के रूप में चित्रित करता है, कहीं उसको ज्योतिः रूप बतलाता है और कहीं उसके सहस्रों शिर और आँखों का उल्लेख करता है। वर्णन की शैली उस निराकार परमतत्व को भी साकार बना देती है।

यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि प्रत्येक भावात्मक वस्तु का एक बिम्ब होता है और व्यक्ति के मानस पटल पर बनने वाले सूक्ष्म से सूक्ष्म भावों को भाषा साकार बना देती है। इस दृष्टि से निराकार होते हुए भी वाक् शक्ति की सहायता से, वेद मन्त्रों में ईश्वर साकार हो उठा है, यह मानना है। ऐसा प्रतीत होता है कि अमूर्त को मूर्त रूप देने की यह प्रक्रिया मानव को मूर्ति तक ले गई है। इसके अतिरिक्त यदि हमें ईश्वर को साकार अथवा निराकार की किसी एक परिधि में बाँधना चाहें, तो इससे ईश्वर के ऐश्वर्य का व्याघात हो जाएगा। ■

कृष्ण नीति

• कविवर "प्रणव" शास्त्री

एम०ए० महोपदेशक
शास्त्री सदन रामनगर {कटरा}
आगरा-6

कृष्ण की विचारधारा धरा में बहेगी तभी
जनता को सुखशान्ति, चैन, अलपायगा
उसकी निराली नीति रीति की प्रतीति से ही
सत्य जीत ज्ञान को सम्मान मिल पायगा।
उस जैसी दृढ़ता चतुरता सुविशालता से
सिद्धियों का स्वर्णिम कमल खिल पायगा
कृष्ण की कठोरता के कौशल कला के बिना
खूंख्वार आतंक का न दुर्ग हिल पायगा।।1।।
कृष्ण ने कभी न समझौते का बजाया ढोल
पोल में घुसा नहीं घुसने किसी को दिया।
जनता के दुःखों की कहानी से दुःखी रहा
दुष्ट-दुष्टता को भी टिकने नहीं था दिया।
कंस, शिशुपाल, जरासंध जैसे घातकों का
निश्चय निडरता से निर्दय हो वध किया
अन्ध अघ अन्याय को कभी न झुकाया शीश
जब तक जिया कृष्णशान से सदा जिया।।2।।

जनता जनार्दन की सेवा का जो व्रत लिया
कृष्ण ने उसे तो श्रद्धाभक्ति से निभाया था
राष्ट्र द्रोह हीनता की बेल बढ़ने न दी थी
एक महाभारत का स्वप्न ही सजाया था।
बड़े-बड़े क्रूर शूरवीरों के थे कान काटे
जगती में पौरुष का सिक्का ही जमाया था
जानती धरा है, पूर्ण दुःख से दिलाने मुक्ति
धराके धराका पुत्र निरालाही आया था।।3।।
शत्रु को कभी न उपहार मित्रता का दीजे
पापी उसके लिए तो प्यार अपकार है
धोखा जो हो देता उसे सदा धोखा देते रहो
राष्ट्र द्रोहियों के लिए नंगी तलवार है
टुकड़ों में देश को जो बाँटना हैं चाह रहे
टुकड़ों में बाँटना उन्हीं को धर्माचार है
आपको न चाहे उसके बाप को न चाहो जी
कृष्णनीतिरीतिकायहीतोएक सार है।।4।।

योगीराज कृष्ण

• सावित्री रस्तोगी

जवाहर नगर, मेरठ कैन्ट।

हे कृष्ण तुम्हारा जन्म दिवस,
हम मिल कर आज मनाते हैं
श्रद्धा के सुन्दर पुष्प सजा,
चरणों के तेरे लाते हैं।।
दीनों दुखियों का रक्षक था,
तू था गौओं का रखवाला था।
वेदों की मधुर ऋचाओं का,
तू था सस्वर गाने वाला।।
था राजनीति में निपुण महा,
हम तुझ पर बलि-बलि जाते हैं।
है कौन व्यक्ति ऐसा जग में,
जो गाता तेरा गान नहीं।
है कौन भला ऐसा जिसको,
शक्ति का तेरा ज्ञान नहीं।।
तू आत्म संयमी, व्रत धारी,
हम तेरी महिमा गाते हैं।
गीता का ज्ञान दिया तुमने,
सब को रहस्य यह समझाया।
अर्जुन को माध्यम बना दिया,
है कर्मयोग क्या? बतलाया।।
तेरी महानता की प्रियवर,
हम चर्चा नित्य सुनाते हैं।
तू द्रुपद सुता का हामी था
दीनों, दुखियों का हितकारी
प्रद्युम्न पुत्र का श्रेष्ठ पिता,
था महा तेजस्वी व्रत धारी।।
मित्रता सुदामा से तेरी,
यह घर घर कथा सुनाते हैं।
मानव मानव से प्यार करे,
यह बार बार दुहराते हैं।।
तूने दुष्टों का नाश किया,
था जरासंध का मद तोड़ा।
शिशुपाल, कंस का मर्दन कर,
था न्याय पक्ष से मन जोड़ा।।
हम सत्य मेव जयते की धुन पर,
वैदिक नाद बजाते हैं।।

आर्य प्रतिनिधि सभा-उत्तर प्रदेश (उपदेश विभाग) प्रस्तुत करता है प्रचार योजना

सस्ती उत्सव योजना- 500 रु० दक्षिणा वेद प्रचार निधि में,
इस योजना के अन्तर्गत द्वि दिवसीय उत्सव हेतु सभा की ओर से एक उपदेशक एवं दो सुयोग्य भजन मण्डली प्रदान की जायेगी। पण्डाल ध्वनि विस्तारक यन्त्र मार्ग व्यय इत्यादि की समस्त व्यवस्था सम्बन्धित आर्यसमाज को करनी होगी।

प्रभावशाली प्रचार योजना- 200रु० दक्षिणा वेद प्रचार निधि में। इस योजना के अन्तर्गत द्विदिवसीय प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत सभा की ओर से एक उपदेशक एवं एक भजनोपदेशक प्रदान किये जायेंगे। शेष व्यय भार सम्बन्धित आर्य समाज को वहन करना होगा।

मिशनरी प्रचार योजना- {आप बुलायें हम आयें}
इस योजना के अन्तर्गत एक भजन मण्डली सभा की ओर से प्रदान की जायेगी। आपको केवल मार्ग व्यय भार वहन करना होगा, यह योजना धर्मान्तरण एवं अराष्ट्रीय गतिविधियों से प्रभावित क्षेत्रों में लागू की जायेगी।

आप के निमन्त्रण की प्रतीक्षा में
आज ही लिखें या मिलें।

हरिश्चन्द्रार्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग,
प्रचार कार्यालय अमरोहा
जनपद-मुरादाबाद।

लखनऊ दूरभाष सभा-45993
अमरोहा दूरभाष-554

आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के निश्चयानुसार
आर्यसमाज गंज स्टेशन मार्ग- मुरादाबाद के सौजन्य से राजर्षि पुरुषोत्तमदास टन्डन जन्मदिवस समारोह सम्पन्न

अन्याय और असत्य से संघर्ष करो

मुरादाबाद । अगस्त 1989, आर्यसमाज, स्टेशनरोड, मुरादाबाद की ओर से राजर्षि पुरुषोत्तम दास जी टन्डन, जन्म दिवस समारोह के अवसर पर अध्यक्ष पद से बोलते हुए जनपद मुरादाबाद के पर जिलाधीश {नगर} श्रीयुत बाबा हरदेव सिंह जी ने राजर्षि को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि हिन्दी स्वयं सशक्त भाषा है, सशक्त को किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं होती, हिन्दी के विकास की बात करते हुए उन्होंने हिन्दी-साहित्य की पुस्तकों को बाजार से क्रय करने की प्रबल प्रेरणा दी, इससे जहां हिन्दी साहित्य के सेवकों का सम्मान होगा वहां आपकी ज्ञान-वृद्धि भी होगी- आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने आचरण व्यवहार से हिन्दी के क्रियान्वयन की दीक्षा लें।

राजर्षि के जीवन पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि हम सभी को कहने की अपेक्षा अन्याय और असत्य से संघर्ष करना चाहिये, अन्याय, अत्याचार सहन करना कायरता है, हमारा व्यवहार जहां कथनी और करनी के माध्यम से एक हो वहां गरिमापूर्ण भी हो, इस अवसर पर हिन्दी के सम्बन्ध में प्रस्ताव पारित किया गया।

आर्य कन्या विद्यालय-- मुरादाबाद की कन्याओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया, राजर्षि टंडन को नमन किया- "साधना का एक युग हो, प्रगति के बढ़ते चरण हों" आर्यसमाज, स्टेशनरोड, मुरादाबाद के प्रांगण में निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार इस अवसर पर मंच पर कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया।

श्रावणी उपाकर्म एवं वेदप्रचार सप्ताह-शुक्रवार ११ अगस्त ८९ से बृहस्पतिवार २४ अगस्त ८९ तक आर्य समाज मंदिर बुढ़ाना द्वार मेरठ शहर

में बड़े समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस अवसर पर आर्य जगत के वेदों के विद्वान

ब्र० अखिलेश्वर जी एवं श्री डा० निरुपणजी-विद्यालंकार पधार रहे हैं। उनके वेदोपदेश प्रातः 7-30 बजे परिवारों में एवं रात्रि को 8 बजे से 9-30 बजे तक आर्यसमाज मन्दिर के हाल में होंगे। श्रीयुत् मनवीर जी के भजन भी होंगे।

अधिक से अधिक संख्या में प्रातः एवं सायं के कार्यक्रमों में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

----- — मंत्री

शोध गोष्ठी सम्पन्न

गुरुकुल प्रभात आश्रम के संस्थापक स्व0 स्वामी समर्पणानन्द जी के जन्म दिवस दि0- 1-8-89 को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान की ओर से गुरुकुल परिसर में एक विशालगोष्ठी का आयोजन किया गया। विषय था "ब्राह्मणग्रन्थों में प्रतीक"।

शोध संस्थान के निदेशक डा0- निरुपण जी ने संयोजन तथा जयदेवजी-विद्यालंकार ने गोष्ठी की अध्यक्षता की। श्री विद्यालंकार जी महर्षि दयानन्द विद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष हैं। इस गोष्ठी में सर्वप्रथम ब्रह्मचारियों द्वारा राष्ट्रीय वैदिक मन्त्रोच्चारण, सरस्वती-वन्दना एवं स्वागत गीत के पश्चात् विद्वानों का सत्कार चन्दनलेप, नारियल एवं धौती भेंट कर के किया गया। संयोजक डा0 निरुपण जी ने संस्था का संक्षिप्त परिचय देते हुए बाहर से गोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वानों का परिचय दिया। गुरुकुल के मन्त्री-श्री इन्द्रराज जी ने भी गुरुकुल भूमि में विद्वानों का स्वागत किया। स्व0स्वामी-समर्पणानन्द जी के प्रति गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा स्व रचित श्लोकों के पाठ द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गई। तत्पश्चात श्री कपिल मुनि जी एम0एस0सी0, स्वामी सुरेश्वरानन्द जी, डा0 सत्यव्रत जी राजेश गुरुकुल कांगड़ी डा0 अवनीन्द्र-कुमार जी एवं डा0 कृष्ण लाल जी-दिल्ली विश्वविद्यालय ने अपने-अपने शोध लेख पढ़े तथा विभिन्न प्रकार से विषय पर प्रकाश डाला। अन्त में श्री जयदेव जी विद्यालंकार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में विषय को खोलते हुए ब्रह्मचारियों को संस्कृत निष्ठ होने की प्रेरणा दी। साथ ही ब्रह्मचारियों को पुरस्कार भी प्रदान किए। तत्पश्चात् गुरुकुल के आचार्य स्वामी विवेकानन्दजी-महाराज ने विषय को बहुत थोड़े समय में स्पष्ट करते हुए आशीर्वाद दिया। तदोपरान्त संस्था के मंत्री श्री इन्द्रराज जी ने अभ्यागतों का धन्यवाद करते हुए ब्रह्मचारियों को गुरुकुल के प्रति समर्पित होने की प्रेरणा की। उन्होंने कहा कि इस समय संस्कृत पर संकट है और समर्पण से ही उसे बचाया जा सकता है। श्री डा0 निरुपणजी-विद्यालंकार ने अन्त में सब का धन्यवाद देते हुए आगामी शोध गोष्ठी दि0-13-1-90 को गुरुकुल भूमि में आने का निमन्त्रण सब को दिया।

शान्तिपाठ के पश्चात् गोष्ठी की कार्यवाही समाप्त हुई।

-सवांददाता।

"पारिवारिक सत्संग का आयोजन

दिनांक- 1-8-89 को श्रीमती शकुन्तलाजी-आर्या (धर्मपत्नी श्री इन्द्रराज जी) के निवास स्थान पर आर्य स्त्री समाज-ब्रह्मपुरी की ओर से पारिवारिक सत्संग का आयोजन किया गया। इस यज्ञ में शहर की विभिन्न स्त्री आर्य समाजों की सदस्याओं ने भाग लिया।

सर्वप्रथम यज्ञ सम्पन्न हुआ तत्पश्चात श्रीमती शकुन्तलाजी आर्या ने भजन गाया तथा श्रीमती विष्णुदेवीजी का प्रवचन तथा भजन हुआ। श्रीमती-विष्णुदेवी ने यजमान परिवार के सुख, समृद्धि तथा शान्ति के लिए प्रार्थना की तथा महिलाओं को पारिवारिक सत्संग के लिए प्रेरित किया। तत्पश्चात पुनः श्रीमती शकुन्तला जी तथा अन्य महिलाओं द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। श्रीमती शकुन्तला जी ने जयन्त कुमारजी को प्रवचन हेतु आमन्त्रित किया।

श्री जयन्त कुमार ने अपने प्रवचन में प्रार्थना का अर्थ उसकी महत्ता तथा आवश्यकता का विवेचन किया। उन्होंने कहा प्रार्थना मनुष्य तथा ईश्वर के बीच सम्बन्ध स्थापित करने वाला सर्वोत्तम सेतु है। प्रार्थना के द्वारा ही हम मानसिक तनाव, क्रोध तथा काम, लोभ, मोह को नियन्त्रण में रखकर सांसारिक जीवन को सुख शान्ति से पूर्ण बना सकते हैं। संसार के प्रति अत्यधिक आसक्ति हमारे दुख का एक कारण है। प्रार्थना के समय अपने मन मस्तिष्क को संसार से हटाकर अपने बाह्य चक्षुओं को बन्दकर अपने ध्यान को पूरी तरह से ईश्वरोपासना में केन्द्रित कर ध्यान में पूर्वतः लीन हो जाने पर ही मनुष्य अपने अन्तर्चक्षुओं के द्वारा ईश्वर की उपस्थिति तथा ईश्वरीय कृपा का अनुभव कर सकता है। उन्होंने अन्य कई उदाहरण देकर प्रार्थना करने के तरीके की विस्तार से चर्चा की तथा सबको तनाव, दुःख तथा क्रोध के समय प्रार्थना के द्वारा शान्ति लाभ करने को कहा। अन्त में शान्तिपाठ तथा प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

- संवाददाता।

हरिजन बस्ती में यज्ञ सम्पन्न

दि0- 31 जुलाई 1989 को महलावनी सराय बाल्मीकि बस्ती लिसाड़ी गेट मेरठ में सायं 5.30 बजे छुआछूत को मिटाने के लिए आर्यसमाज बुढ़ाना द्वार मेरठ शहर की ओर से एक विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। इस यज्ञ के यजमान श्री राघव प्रसाद जी बाल्मीकि थे। आर्यसमाज मेरठ शहर के पुरोहित श्री पं0 नरेन्द्र कुमार जी ने यह यज्ञ सम्पन्न करवाया। श्री तेजपाल जी एवं श्रीमती आशा जी के मधुर भजन हुए। शिशु मनजीत बाल्मीकि ने एक बाल्मीकि को भी तराना गाया। श्री जयन्त कुमार जी पाण्डेय ने अपने भाषण में राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन में बाल्मीकि युवकों का आह्वान किया कि वे आगे आकर छुआछूत को समाप्त करने के प्रयत्न में अपना योगदान देकर राष्ट्र की रक्षा का व्रत लें। अन्त में श्री पं0 इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश ने अपने प्रभावशाली भाषण में महर्षि दयानन्द के नारी जाति और पिछड़े वर्ग पर उपकार का बड़ा रोमान्चक वर्णन किया। उन्होंने बताया कि स्वामी दयानन्द जी महाराज के समाज सुधार के कारण अधिकांश स्वार्थी लोग उनके शत्रु हो गए। 17 बार ऋषि दयानन्दजी को विष दिया गया था। विष देने वालों में कोई हरिजन या पिछड़े वर्ग का व्यक्ति नहीं था। विष देने वाले सवर्ण थे। महर्षि दयानन्द पिछड़े वर्ग को ऊपर उठाने के सन्दर्भ में ही बलिदान हो गए। आज राष्ट्र की रक्षा के लिए तथा अपने समाज से छुआछूत का भेद भाव मिटाने के लिए श्री पं0 इन्द्रराजजी ने बाल्मीकि समाज का आह्वान किया कि वे भेद भावों को समाप्त कर आर्यसमाज मन्दिर में आवें और राष्ट्र रक्षा के साधनों को सुदृढ़ बनाने का कन्धे से कन्धा मिलाकर संकल्प लें। इस कार्यक्रम का संचालन श्री कैलाशचन्द्र जी ने तथा अध्यक्षता श्री बुध प्रकाश जी पहलवान बाल्मीकि ने की। प्रसाद वितरण के पश्चात् यज्ञ एवं सत्संग समाप्त हुए।

- संवाददाता।

योगेश्वर! फिर आओ तुम

-चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
कानपुर।

कृष्ण-कन्हैया। मुरलीवाले ।
भारत में फिर आओ तुम।
यहाँ बड़ा अन्धेर मचा है,
इसको शीघ्र मिटाओ तुम ।
निर्दोषों की हत्या होती,
जूँ न रेंगती कानों पर।
अधिकारी अपनी मस्ती में
मौज उड़ाते तानों पर।
कभी न ऐसा हुआ देश में।
आकर यह रुकवाओ तुम।
यहाँ बड़ा अन्धेर मचा है,
इसको शीघ्र मिटाओ तुम ।
जिसके घर में हत्या होती,
पटक-पटक सिर रोता है।
बाकी सारा देश चैन से
आँख मूँद कर सोता है।
चिन्ता नहीं किसी को होती।
इस पर रोक लगाओ तुम ।
कृष्ण-कन्हैया। मुरली वाले।
भारत में फिर आओ तुम।
ऐसा नीच कर्म करते जो,
करो उन्हें सद्बुद्धि प्रदान।
क्रूर खेल हिंसा का छोड़ें,
देव। उन्हें दो ऐसा ज्ञान।
हत्या की दुर्नीति मिटे यह।
निर्मल बुद्धि बनाओ तुम।
यहाँ बड़ा अन्धेर मचा है,
इसको शीघ्र मिटाओ तुम ।

तुमने न्याय किया स्थापित।
सदा मिटाया था अन्याय।
शासन तो असमर्थ हो रहा,
शेष नहीं अब अन्य उपाय।
अपने पांचजन्य को फूँको।
कौरव-दल दहलाओ तुम।
यहाँ बड़ा अन्धेर मचा है,
इसको शीघ्र मिटाओ तुम।
कंस - पूतना - कालिय मारे,
अत्याचार मिटाया था।
मोह पार्थ का दूर किया था,
गीता - ज्ञान सुनाया था ।
पुनः वही अवसर आया है।
योगेश्वर ! फिर आओ तुम।
व्याकुल भारत देश रो रहा।
इसको धैर्य बँधाओ तुम।।

हरिजनों के यहाँ यज्ञ

आर्यसमाज बसेड़ा पो0 पहाड़पुर (सहारनपुर) 18 जुलाई को हरिजनों के यहाँ यज्ञ हुआ इस यज्ञ में 50, 60 स्त्री-पुरुष एकत्रित हुए रु0-43-50 पैसे तथा 2 मीटर कपड़ा झण्डों के लिए दान में प्राप्त हुआ आर्यसमाज की ओर से आशीर्वाद दिया गया।

राष्ट्र के प्रहरी

• धीरज ठाकुर .
पानीपत (हरियाणा)

हम रहें न रहें
पर राष्ट्र का अस्तित्व रहना चाहिए
यही है ध्येय हमारा
और हम इसे प्राण-प्रण से पूरा करेंगे।
इसी के लिए
हम जिएँगे-मरेंगे
प्रत्येक कष्ट सहन करेंगे
हर मूल्य पर
इसकी आन-बान की
रक्षा करेंगे, सतर्क रहेंगे।
ताकि --
आने वाली पीढ़ियाँ
अपने प्राण-प्रिय राष्ट्र के
गौरव और मर्यादा को
सभ्यता और संस्कृति के
कर्म के मर्म को
मानव के धर्म को
विस्मृत न कर दें
आवश्यकता पड़े तो
समय आने पर
अपने प्राणों की आहुति से
इन तत्वों की पूर्ति कर दें।

राष्ट्र एक चेतन यज्ञ है
और हम इसकी समिधाएँ
त्याग-भावना सामग्री
आत्म-समर्पण घृत
और स्वतन्त्रता सुगन्ध
जब इस पावन-पुण्य-पुनीत
चेतन - यज्ञ में
समिधाओं को अग्नि
त्याग की सामग्री
और आत्म - समर्पण के घृत से
स्वतन्त्रता की सुगन्ध प्रसारित होगी
तभी राष्ट्र यज्ञ सफल होगा।

राष्ट्र एक देवता है
और हम सब इस के पत्र-पुष्प
हमें राष्ट्र देवता की
अर्चना करनी है
पूजा करनी है
वन्दना करनी है

इसके निमित्त
हमें राष्ट्र-देवता के चरणों में
अर्घ्य बन कर
सर्वस्व समर्पित कर
उसकी शाश्वत शक्ति को
प्रोद्भासित होते देखना है।

राष्ट्र एक इतिहास पुरुष है
जो सर्वदा ही
महासिन्धु की उत्ताल तरंगों से
अभिसिंचित

शीतल मंद सुगन्ध पवन की
थपकियों से अभिमर्दित
भावाभावों के झंझावतों से
अविचलित
ऊर्ध्व गति का परिचालक
भूमा और व्योम का पालक
आर्तजन का पोषक
और मंगलाचरण का उद्घोषक है।

हिमगिरि के उत्तुंग शिखरों से
आच्छादित
हिन्द महासागर की जल-उर्मियों से
संस्पर्शित
राष्ट्र एक इतिहास पुरुष है

क्योंकि राष्ट्र एक चेतन यज्ञ है
क्योंकि राष्ट्र एक देवता है
क्योंकि राष्ट्र एक इतिहास पुरुष है
इसीलिए --
यज्ञ में आत्माहुति देनी है
देवता की पूजा करनी है
इतिहास पुरुष को
अखण्ड रखना है।
तभी राष्ट्र-यज्ञ सफल होगा

राष्ट्र - देवता प्रसन्न होगा
राष्ट्र - पुरुष अविभाजित
रहेगा।

इस राष्ट्र - यज्ञ के
पावन - पवित्र धूम से
उत्थित रश्मियाँ
विकीर्ण होकर
विश्व के पीड़ित परिवेशों को
स्वातन्त्र्य सुख से आप्यायित कर
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु
माकश्चित् दुखभाग्भवेत का
अजर-अमर संदेश प्रदान कर
समन्जन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः
का पाठ पढ़ाएगी।
रंग भेद नीति का
अनुसरण करने वालों को
संगच्छध्वं संवदध्वम----
का शिवकारी मार्ग दिखाएगी।

और इन सुगन्धित
धूम - रश्मियों का
यह प्रसरण ग्रसित करेगा
उन कृत्रिम मुखौटों को
जो तामसिकता का आवरण लपेट
सात्विकता का हरण करते हैं
जन - मानस की
कोमल भावनाओं की
अवहेलना कर
(तथाकथित) लोकप्रियता का वरण
करते हैं।
जैसे को तैसा
हम भी कर सकते हैं
ईंट का जवाब
पत्थर से दे सकते हैं
किन्तु, प्रश्न
गर्व-हरण का नहीं
जीवन-मरण का है
एकता-अखण्डता का है
स्वतन्त्रता की समग्रता का है।

निश्चय ही
हमारे मन में भी
उद्दाम जिजीविषा है
किन्तु, हमारे लिए
राष्ट्र के सम्मान के प्रश्न पर
मृत्यु का वरण भी
उतना ही प्रिय है।
कदाचित आप जानना चाहेंगे
हम कौन हैं?
उत्तर केवल इतना है
हम अपने राष्ट्र के सजग प्रहरी हैं।
(वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः)

आर्यवर की आवश्यकता

12वीं कक्षा में कला विषय से अध्ययन-रत छात्रा हेतु आर्यवर की आवश्यकता है। गेहुआ रंग है। गृह कार्य में दक्ष के साथ-साथ महिला-संगठन करने में पूर्णतया सफल। एवं उनमें भाषण देने की वाक्पटुता।

आर्यवर यदि कुशवाहा परिवार का हो तो सर्वोत्तम। परन्तु ध्यान रहे कि वह परिवार पूर्ण वैदिकीय हो।

आचार्य रामज्ञानी आर्य (कुशवाहा)
"मंत्री" आर्यसमाज लार
मु॰ पो॰ लार, जिला-देवरिया (उ0प्र0)

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्
आर्यमित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ॰प्र॰ का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : ४५६६३
पंजीकरण सं॰ एल॰डब्ल्यू/एन पी-७६
भाद्रपद कृष्ण-४
२०, अगस्त रविवार, १९८९ ई॰

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शताब्दीय वृहद इतिहास [illegible] रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर [illegible] ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भर[illegible] गुप्त [illegible] मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि॰ सं॰ [illegible]) भाद्रपद कृष्ण-११, रविवार- संवत् २०४६ वि॰, दिनांक २७, अगस्त १९८९ (घोषणा पत्र सं॰ [illegible])



[illegible] जातः परो ऽन्यो [illegible] य ई [illegible] भुवनानि विश्वा।

कल्याण की कामना करने वाले मनुष्य को चाहिए कि वे सर्वव्यापक, सच्चिदानन्द, नित्य शुद्ध-बुद्ध- मुक्तस्वभाव जिससे कोई भी उत्तम अथवा उसके तुल्य नहीं है, उस परमात्मा की ही उपासना करें।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम॰ए॰

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम॰ए॰ साहित्याचार्य

[illegible] शुल्क

[illegible] रू॰ २५१/-

[illegible] रू॰ ३०/-

एक प्रति [illegible] रू॰ मात्र

प्रकाशन का ९१वाँ वर्ष

अंक - ३६

राष्ट्र कल्याण हेतु
वेदाधारित संविधान अनिवार्य

आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम्,

आराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽति व्याधी महारथो जायताम्----,।

पावन स्वातन्त्र्य दिवस की बेला में वैदिक युग के आर्यनरेश महाराजा अश्वपति की संसद में की गई राष्ट्रीय उद्घोषणा—

"न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः ।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।।

"अर्थात् मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है, कोई कंजूस नहीं है, कोई शराबी नहीं है, कोई मूर्ख नहीं है, कोई ऐसा नहीं है जो यज्ञ न करता हो, कोई व्यभिचारी नहीं है, जब कोई व्यभिचारी पुरुष ही नहीं है तो व्यभिचारिणी स्त्री कहाँ से हो सकती है।"

क्या हमारे राष्ट्रनेता विश्वमंच पर, संसद में अथवा जनता के मध्य उक्त घोषणा कर सकते हैं। यदि नहीं- तो कहाँ है महात्मा गाँधी का रामराज्य? कहाँ है वेदों की वह भावना जहाँ हर आहुति और हर उपलब्धि पर हर श्वास पर- "इदं न-मम"- यह मेरा नहीं है- का त्यागभाव दर्शाते हुए परहित की भावना लक्षित हुआ करती थी।

यह सब क्यों है

इसलिए कि हमारे राष्ट्र का संविधान वैदिक संविधान नहीं है, भानुमती का पिटारा है। कुछ इधर से ले लिया कुछ उधर से ले लिया। वेद में दी हुई शिक्षाओं को संविधान के ढाँचे का आधार ही नहीं बनाया। मदिरा के ठेके खुले आम सरे आम बोली बोल बोलकर दिए जा रहे हैं। दिखाने के लिए मद्यनिषेध विभाग भी खोल रखा है। यह मालूम ही नहीं है बुराई आग की तरह फैलती है जबकि अच्छाई का प्रचार टेढ़ी खीर है। एयर कन्डीशन्ड बंगलों में बैठकर हवाई जहाजों से इधर उधर उड़कर मानवता पर भाषण दे देना आसान है, जनता के दुख दर्द पर घड़ियाली आँसू बहा देना भी आसान है पर सत्यवादी हरिश्चन्द्र बनकर सत्य के लिए आहुत हो जाना मुश्किल है- श्मशान भूमि में अपने मृतपुत्र को दफ़न करने आई अपनी पत्नी तारामती से कहता है- "आधा कफ़न तो देना ही पड़ेगा श्मशान भूमि का नियम है-

चन्द्र टरै सूरज टरै टरै जगत व्यवहार।
पै राजा हरिश्चन्द्र को टरै न सत्य विचार।।

आज बोफोर्स प्रकरण ने विश्व में भारत की छवि धूमिल कर दी है, संसद में अनदेखा इतिहास लिख दिया है। कोई सच उगलने को तैयार ही नहीं है। अरे। कोई फाँसी पर थोड़े ही चढ़ाने जा रहा है। ज्यादा से ज्यादा यही तो होगा जनता मुँह फेर लेगी पर नाम तो सत्य हरिश्चन्द्र की कोटि में आ जायेगा।

यह सब क्यों है

इसलिए कि वेदों में निहित उच्च मानवीय व्यवस्थाओं का संविधान में अभाव है। स्वराज्य को अभी तक हमने सु-राज्य में परिणित ही नहीं किया है। सर्वमंगलकारी राष्ट्र का निर्माण ही अभी तक हम नहीं कर पाये हैं।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
——— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ - भाद्रपद कृष्ण -११ संवत् २०४६ वि
२७ अगस्त १९८९, दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

सम्पादकीय

द्वापर का आर्यरत्न

श्रीकृष्ण मोक्षावस्था से लौटे कोई महान आप्त पुरुष थे

— ऋषि दयानन्द

----- और आज घर घर में झूलना पडे हुए हैं। भादों की काली अंधेरी में, कारागार की काली कोठरी में, एक काला, इन पंक्तियों के लिखे जाने तक भारत के हर घर में, हर माँ की कोख से जनम ले चुका होगा क्योंकि हर माँ यशोदा बनने के लिए तड़प जो रही थी, हर सुदामा गुरुभाई से मिलने तन्दुल की पोटली कमर में लपेटे कहीं बहुत दूर सोने की नगरी की ओर जाने के लिए तैयार जो खड़ा था, शायद उसकी दरिद्रता दूर हो जाय। हर द्रौपदी लाज बचाने के लिए आँचल पसारे हुए "त्राहिमाम् त्राहि माम्" कहकर पुकार जो रही थी। क्रूर छुरे के नीचे तड़पती हुई हर गाय ने पुकारा जो है- "हे मेरे रक्षक। तू कहाँ सो गया है, तेरी धरती पर मेरा ऐसा हलाल? "गो ब्राह्मण हिताय च, बिनाशाय च दुष्कृताम्" क्या तेरा केवल नारा था? मुझे छलने के लिए।

-- नहीं नहीं, जरासन्ध के वंशजो। दुनियाँ के कंसो।। दु शासनों।।। सावधान हो जाओ। हर घर में झूलने पड़े हुए हैं, हर घर में बधाइयाँ, शहनाइयाँ बज उठी हैं। कहीं न कहीं तो आ ही जायेगा। जिसने तब भेजा था वह अब भी भेज देगा। वह भेजता है "परित्राणाय साधूनाम्" बिल्कुल सही है। हर युग में कोई न कोई आया है-- आता रहेगा। वेद कहता है-

पुमांसंपुत्र जनय ते पुमाननु • जायताम्-

हे माँ। ऐसा पुत्र जनना जो

पुमान् हो वीर्यवान् हो तेजवान् हो नीतिवान् हो। और सचमुच काली अन्धेरी में पैदा होकर भी वह सूर्य के समान प्रकाशवान् और स्फटिकमणि के समान उज्जवल चरित्रवान था। इन्सान होकर भी निराला इन्सान था। महर्षि व्यास ने कहा था- जहाँ कृष्ण है वहाँ धर्म है और जहाँ धर्म है वहीं जय है। "न दैन्यं न पलायनम्" उसकी उदघोषणा थी।

-- और कैसा विरोधाभास है काला था पर इतना सुन्दर कि रसखान मियाँ भूल गये मुसल्मानी, हिन्दुओं का पुनर्जन्म याद करने लगे -

"मानुष हौं तो वही रसखानि,
बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारनि।
जो पशु होऊं तो कहा बस मेरो,
चरौं नितनन्द की धेनु मँझारन।।

पाहन होऊँ तो वही गिरि को,
जो धरयो कर छत्र पुरन्दर कारन।
जो खग होऊँ तो बसेरा करौं,
मिलि कालिन्दी कूल कदम्ब की डारनि।।

एक ही झलक में भूल गई तुरुकानी, कहती है- "हौं तो मुसल्मानी हिन्दुआनी हुई रहौंगी मैं।

-- और हम उस महान् पुरुष का मूल्यांकन किस लेखनी से करें- - असम्भव है। वह आर्यजाति का रत्न था। उसका चरित्र आप्तमय था, तेजोमय था नीतिमय था। वह नही चाहता था महाभारत। अन्त तक समझाता रहा। वह गाय की पूजा करता था, रक्षा के नारे नही लगाता था, जंगलों में उसके पीछे-पीछे घूमा करता था। नारी की लाज बचाने भरी सभा में हुकांर लगाने पहुँच गया था- खबरदार। किसी ने द्रौपदी को हाथ लगाया टाँगें तोड़ के रख दूँगा, यह सीता सावित्री का देश है जहाँ नारी पूजा के स्थान पर बिठाई जाती है। जहाँ पैदा हुआ, जहाँ जहाँ गया, जहाँ जहाँ खेला सब तीर्थ स्थली बन गये। जो जो कहा अमरवाक्य बन गये। वह योगियों का योगी, नैष्ठिक ब्रहमचारी, दुश्मनों का दुश्मन, चक्रसुदर्शन धारी, आर्यसभ्यता और संस्कृति का मूर्तिमन्त रक्षक था। उसकी झलक देखकर मीरा पागल हो गई थी। आज घर घर में कही जाने वाली उसकी कथाएं- कहानियाँ, नही नही लीलाएं बोली जाती हैं। उन्हें सुनकर न जाने कितने सन्त बन गये पाप से विरत हो गये। ऐसा प्यार और स्नेह इस आर्यजाति ने राम के बाद और किस महापुरुष को दिया है- इतिहास में खोजना पड़ेगा- शायद मिलेगा नहीं।

महाभारत के परवर्तीकालिक कुछ व्यक्तियों ने अपनी क्षुद्र मनोवृत्तियों को उसके निर्मलचरित्र के माध्यम से आँकने का यद्यपि कुत्सित प्रयास किया है पर यह कब तक चलेगा। वह तो सूर्य के समान देदीप्यमान ही रहेगा आज उस महान पुरुष से आर्यसमाज भी प्रेरणा लेता है। गीता में दी हुई उसकी शिक्षाओं को वेद के दर्पण से देखता है, तोलता है और प्रभु के उस अमर नियम को स्मरण करता है जब समय-समय पर मोक्षावधि समाप्त होने पर वह किसी न किसी महान् आत्मा को हमारे बीच भेज ही देता है। हम उसके चरित्र को महर्षि के इन शब्दों के परिप्रेक्ष्य में देखें--

"कृष्ण ने जीवन-पर्यन्त कोई अधर्म का कार्य नहीं किया।

-ऋषि दयानन्द

बिजनौर-गढ़वाल का जनपदीय आर्य महासम्मेलन

आर्योप प्रतिनिधि सभा बिजनौर-गढ़वाल का जनपदीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 1,2 व 3 अक्टूबर 1989 को आर्य समाज बिजनौर के प्रांगण में आयोजित किया जाएगा जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, मंत्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री, प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पंडित इन्द्रराज जी, तथा मंत्री पं० मनमोहन तिवारी के अतिरिक्त आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान साधु सन्यासी उपदेशक और भजनोपदेशक पधार रहे हैं। सम्मेलन से एक दिन पूर्व दिनांक 30 सितम्बर को 1 बजे एक भव्य शोभायात्रा का भी आयोजन किया गया है। शोभायात्रा में बिजनौर और गढवाल जनपदों के आर्य प्रतिनिधियों के अतिरिक्त आर्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की रैली और झाँकियाँ गणवेश और बैण्ड बाजों के साथ प्रस्तुत की जाएंगी। इस अवसर पर एक विशाल आर्यवीर दल शिविर का भी आयोजन किया जाएगा।

सुरेन्द्र सिंह राजपूत	जयनारायण "अरुण"
मंत्री	प्रधान

आर्योप प्रतिनिधि सभा बिजनौर-गढ़वाल

अमान नगर (बिजनौर) में आर्यसमाज की स्थापना दयानन्द विद्यालय को लाखों की सम्पत्ति प्राप्त

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के उप प्रधान श्री जयनारायण "अरुण" के प्रयत्नों से अमाननगर (बिजनौर) के पिछड़े क्षेत्र में आर्य समाज की स्थापना की गयी और ग्राम समाज की कई लाखो रुपयों की भूमि, बाग और विशाल भवन आर्य समाज का विद्यालय खोलने हेतु सर्वसम्मति से प्रदान किया गया, विद्यालय का नाम महर्षि दयानन्द जूनियर हाई स्कूल रखा गया है। जि. सभा की ओर से पं. रामचन्द्र शर्मा, तेजपाल आर्य आदि के द्वारा धर्म प्रचार किया गया और आगामी माह आयोजित मेले में एक विशाल आर्य महासम्मेलन करने का भी निश्चिय किया गया सर्वसम्मति से सर्वश्री रामचन्द्र सिंह, तेजपाल सिंह, बाबूराम शर्मा, फतराम सिंह, राम स्वरूप सिंह, ख्याली सिंह और मंगू सिंह की तदर्थ समिति बना दी गयी जो निर्वाचन होने तक कार्य करेगी।

आर्य समाज ससौर (बिजनौर) का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज ससौर का वार्षिकोत्सव दिनांक 11, 12 व 13 अक्टूबर को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। सम्मेलन में प्रतिनिधि सभा के प्रधान और मंत्री जी को भी आमंत्रित किया गया है। संयोजक श्री पृथ्वी सिंह आर्य ने सभी आर्यजनों से उपस्थित होने की प्रार्थना की है।

आज के युग में वेदाध्ययन की उपयोगिता

गतांक से आगे....

– डा० रामनाथ वेदालंकार
वेद मन्दिर ज्वालापुर (हरिद्वार)

प्राचीन परम्परा में वेदाध्ययन द्विजमात्र का पवित्र कर्तव्य माना जाता था। मनु ने कहा है कि जो वेद नहीं पढ़ता वह इसी जन्म में शूद्रत्व को प्राप्त कर लेता है। पतंजलि कहते हैं कि ब्राह्मण को चाहिए कि वह निष्कारण ही अर्थात् बिना किसी लाभ की आशा से छहों अंगों से युक्त वेद का अध्ययन करे और उसका ज्ञान प्राप्त करे। तो आइये, "वेद क्यों?" इसका उत्तर खोजने का यत्न करें।

साहित्यिक दृष्टि

वेदों की गणना उच्चकोटि के साहित्यों में की जाती है। वेद के ही शब्दों में वेद एक ऐसा काव्य है जो न कभी मरता है, न कभी पुराना होता है- **देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति** (अथर्व0-10·8·32)। जो काव्य में उत्कर्षाधायक तत्व अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, शब्दालंकार, अर्थालंकार आदि माने जाते हैं वे सब वेदकाव्य में उत्कृष्ट रूप में विद्यमान हैं। वेद के शब्दों में विविध अर्थों को देने की जैसी शक्ति उपस्थित है, वैसी संसार की अन्य किसी भी भाषा में नहीं है। वेद के अनेक मन्त्र जिस प्रकार अध्यात्म, अधिदैवत, अधियज्ञ, अधिराष्ट्र आदि विविध अर्थों को देने की क्षमता रखते हैं, वैसी क्षमता किसी अन्य भाषा के साहित्य में नहीं है। वेदों के मन्त्र कवीन्द्र रवीन्द्र की गीतांजलि के गीतों से अधिक भावपूर्ण हैं। यदि हम कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, श्री हर्ष, बाणभट्ट आदि संस्कृत कवियों के साहित्य को पढ़ने में गौरव अनुभव कर सकते हैं, तो वेद का साहित्य तो उससे भी अधिक प्रांजल है। यदि हम ग्रीक, लैटिन, अंग्रेजी, फारसी, फ्रेंच, रशियन, जर्मन, तमिल, मराठी, बंगाली, गुजराती, हिन्दी आदि साहित्य को पढ़ते समय यह प्रश्न नहीं उठाते कि इस साहित्य को क्यों पढ़ें तो वैदिक साहित्य के लिए ही प्रश्नचिन्ह क्यों? साहित्य का अध्ययन स्वान्तःसुखाय होता है, वह स्वान्तःसुख वैदिक साहित्य के मर्म में प्रवेश करने वाले साहित्याराधक को कहीं अधिक प्राप्त हो सकता है।

सांस्कृतिक दृष्टि

वैदिक संस्कृति संसार भर की संस्कृतियों में एक विशिष्ट संस्कृति है। वर्णाश्रम व्यवस्था, यज्ञ, दान, अतिथि-सत्कार, तपस्या, ब्रह्मचर्य, अनिवार्य शिक्षा, आतुरों की सेवा, ईश्वरपूजा, सौहार्द-भावना, स्वराज्य, समृद्धि, अग्रगामिता, पाशविक शक्तियों पर विजय आदि इस संस्कृति के प्रमुख अंग हैं। वैदिक संस्कृति का उपासक जिस स्तर पर खड़ा है उससे और ऊंचा उठना चाहता है। उसकी यह अभीप्सा होती है कि पृथिवी से उठकर मैं अन्तरिक्ष में पहुंच जाऊं, अन्तरिक्ष से उठकर द्युलोक में पहुंच जाऊं, द्युलोक से उठकर स्वर्लोक में पहुंच जाऊं। इस संस्कृति पर हम ही नहीं, सारा विश्व मुग्ध है। वैदिक संस्कृति का अध्ययन करने के लिए ही जर्मनी, इंगलैंड आदि देशों के विद्वानों ने भी वेदों का अध्ययन किया है और इतना परिश्रम किया है कि हमारा परिश्रम उसके आगे हार मानता है, यद्यपि यह दूसरी बात है कि वे कई ऐसे परिणामों पर पहुँचे हैं जिनसे वेदाध्ययन की भारतीय विचारधारा सहमत नहीं हो सकती। जो संस्कृति इतनी महत्वपूर्ण है उसका प्रामाणिक ज्ञान हम वेदों को पढ़कर ही कर सकते हैं। गम्भीर और सही पद्धति से वेदों का अध्ययन न होने के कारण पाश्चात्यों ने वैदिक संस्कृति के सम्बन्ध में जो कई एक अनर्थमूलक कल्पनाएं कर डाली हैं, उनकी परीक्षा भी हम वेदों का गहन अध्ययन करके ही कर सकते हैं।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि

भाषाविज्ञान पाश्चात्य देशों में नवीन विज्ञान के नाम से उदित हुआ है, जिसे आरम्भ हुए लगभग सवा सौ वर्ष ही हो पाये हैं, यद्यपि भारतीय अलंकारशास्त्री और वैयाकरण पहले ही इसके अनेक अंगों पर पर्याप्त अनुसंधान कर चुके थे। यह भाषाविज्ञान- ग्रीक, लेटिन, अंग्रेजी, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत, पाली, प्राकृत, भारत की प्रान्तीय भाषाओं आदि के तुलनात्मक अध्ययन से विकसित हुआ है और आज भी यह विकासोन्मुख ही है, क्योंकि इसके सिद्धान्त अभी अन्तिम रूप से मान्य नहीं कहे जा सकते। इस भाषाविज्ञान के विकास में वैदिक भाषा के अध्ययन ने विशेष योगदान दिया है और आगे भी दे सकता है। आज भाषाविज्ञान में भारोपीय भाषा-परिवार सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण परिवार माना जाता है, जिसका उद्गम किन्हीं अंशों में वैदिक भाषा ही मानी जा सकती है। आज का भाषाविज्ञानी इस भारोपीय भाषा-परिवार से भिन्न परिवारों को सर्वथा स्वतन्त्र मानता है, और उनका वैदिक भाषा से कोई सम्बन्ध नहीं स्वीकार करता। किन्तु वैदिक भाषा के अधिकाधिक तुलनात्मक अध्ययन से भविष्य में सम्भव है हम इस परिणाम पर भी पहुँच सकें कि सभी भाषा-परिवार किसी सीमा तक वैदिक भाषा से सम्बद्ध हैं। तब भाषाविज्ञान के क्षेत्र में वेद और भी अधिक महत्व की वस्तु बन जायेंगे। एवं भाषावैज्ञानिक दृष्टि से भी वेदों का एवं वैदिक भाषा का अध्ययन स्वागतयोग्य है।

धार्मिक दृष्टि

भारतीय धर्मशास्त्र में वेदों का सबसे अधिक महत्व माना गया है। यदि वेद और स्मृति आदि में कहीं परस्पर विरोध हो तो उस दशा में वेद की बात ही प्रामाणिक मानी जाएगी, यह सर्वमान्य सिद्धान्त रहा है। उदाहरणार्थ, यदि किसी स्मृति में स्त्रियों को वेदाध्ययन के अधिकार से वंचित किया गया है, तो उस स्मृति की यह बात वेदविरुद्ध होने से मान्य नहीं है। इसी प्रकार यदि किसी धर्मग्रन्थ में यज्ञों में पशुबलि देने का विधान है, तो यह भी वेदविरुद्ध होने से त्याज्य ठहरेगा। मध्यकाल में वेदों के नाम पर अनेक वेदविरुद्ध बातें बालविवाह, छुआछूत, मूर्तिपूजा, अनेकेश्वरवाद, जन्ममूलक वर्णव्यवस्था, मृतक-श्राद्ध आदि प्रचलित हो गयी थीं, स्वामी दयानन्द के समय भी चल रही थीं, और कुछ आज भी चल रही हैं।
स्वामी दयानन्द इन वेदविरुद्ध कुप्रथाओं का खण्डन अपने अगाध वेद-पाण्डित्य के बल पर ही कर सके। आज भी विपक्षियों की ओर से कहा जाता है और पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे जाते हैं कि गोहत्या और गोमांस भक्षण वेदानुमोदित हैं, वेदों में नारी की घृणित स्थिति है, सतीप्रथा वेद से ही आयी है, धार्मिक असहिष्णुता वेदों की ही देन है आदि। वेदों पर थोपी जाने वाली इस प्रकार की वेद विरुद्ध बातों का खण्डन हम तभी कर सकेंगे, जब हमारा वेदों का गंभीर अध्ययन होगा।

धार्मिक दृष्टि से कर्तव्याकर्तव्य का बोध करने के लिए भी वेदाध्ययन की आवश्यकता है। क्या धर्म है और क्या अधर्म है, यह वेद ही बतलाता है। पर वेद उसे ही बतला सकता है, जो वेदज्ञ हैं। अल्पश्रुत व्यक्ति वेद से धर्माधर्म का बोध प्राप्त नहीं कर सकते। इसीलिए उक्ति प्रसिद्ध है कि अल्पश्रुत व्यक्ति से वेद भय खाता है कि यह तो उल्टा मुझ पर ही प्रहार कर देगा- **बिभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति।** यही सब ध्यान में रखकर आर्यसमाज के नियमों में यह सम्मिलित किया गया है कि "वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"

आनुसन्धानिक दृष्टि

वैदिक भाषा और वैदिक साहित्य बहुत महत्वपूर्ण है, यह हम अभी ऊपर कह चुके हैं। भारत के प्राचीन मनीषियों ने वेदों पर बहुत कुछ अनुसन्धान किया था। प्रातिशाख्यकारों ने एवं आचार्य पाणिनि आदि वैयाकरणों ने वैदिक भाषा का सूक्ष्म अध्ययन करके तत्सम्बन्धी नियमों का आविष्कार किया था। याज्ञवल्क्य आदि ब्राह्मणग्रन्थकारों एवं श्रौतसूत्रकारों ने वेदों के आधार पर याज्ञिक कर्मकाण्ड तैयार किया था। गृह्यसूत्रकारों ने वेदों के आधार पर जातकर्म, नामकरण आदि संस्कारों की सृष्टि की थी। अनुक्रमणीकारों ने वेदमन्त्रों के ऋषि, देवता, छन्दों का पर्यवेक्षण किया था। वेदों के ही आधार पर आरण्यकग्रन्थों एवं उपनिषदों की रचना हुई थी। ब्राह्मणग्रन्थकारों एवं नैरुक्तों ने वेदार्थ का अनुसन्धान किया था। कतिपय वेदभाष्यकार भी इसमें सहायक हुए थे। महर्षि दयानन्द ने इस वेदानुसन्धान को और आगे बढ़ाया। वेदविरुद्ध प्रचलित मिथ्या धारणाओं को बलपूर्वक झकझोरा और सत्य वेदार्थ को प्रकाशित किया। वेदार्थ के सम्बन्ध में अनेक नवीन दिशाओं को प्रशस्त किया। आज भी वेद प्रतीक्षा

– शेष पृष्ठ ४ पर

पृष्ठ ३ का शेष....

कर रहे हैं कि वैदिक भाषा पर, वेदार्थ पर और वैदिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तों पर सही दिशा में अनुसन्धान हो। वेदों के अनेक सूक्त रहस्यों से भरे हुए हैं, उन रहस्यों का उद्घाटन आज भी अपेक्षित है। वैदिक भाषा पर प्रातिशाख्यों, पाणिनि के वैदिक व्याकरण और मैकडानल की "वैदिक ग्रामर" के होते हुए भी आज भी अनुसन्धान की आवश्यकता है। हम वेदानुसन्धान की दिशा को पाश्चात्य विचारधारा के चाकचक्य से मुक्त करके उनकी अच्छाइयों को ग्रहण करते हुए एक नया मोड़ दे सकते हैं, और वह नया मोड़ होगा दयानन्द-प्रदर्शित वैदिक मान्यताओं के प्रकाश में।

आर्थिक दृष्टि

छात्रों की दृष्टि से वेदाध्ययन के आर्थिक पक्ष पर भी विचार कर लेना उचित होगा, क्योंकि आज का युग अर्थ का युग है और इसमें वही विद्या प्रशस्त मानी जाती है जो अर्थकरी हो। प्रश्न यह है कि वेद के छात्र क्या आर्थिक दृष्टि से सफल हुए हैं या हो सकते है? हमारा कहना है कि वे वैसे ही सफल हुए हैं और हो सकते है, जैसे संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि विषयों को पढ़ने वाले छात्र होते हैं। वर्तमान में भारत में वेदाध्ययन के तीन प्रकार के केन्द्र हैं। प्रथम आर्यसमाज द्वारा चलाये जाने वाले गुरुकुल हैं, जिनमें स्नातक स्तर तक हिन्दी अंग्रेजी, संस्कृत दर्शनशास्त्र आदि विषयों के साथ अनिवार्यतः वेद भी पढ़ाया जाता है और स्नातकोत्तर कक्षाओं में छात्र स्वतन्त्र रूप से वैदिक साहित्य की ही स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के लिए अथवा संस्कृत विषय के अन्तर्गत वेद पढ़ते हैं और पी-एच०डी० में वैदिक विषयों पर शोध करते हैं। दूसरे वेदाध्ययन के केन्द्र हैं विविध विश्वविद्यालयों के संस्कृत-विभाग, जहां एम०ए० में एक पत्र तो अनिवार्य रूप से वेद का पढ़ाया ही जाता है, उसके अतिरिक्त छात्र अपनी रुचि के अनुसार कई वैकल्पिक समूहों में से वेद का समूह भी चुन सकते हैं, जिसमें वैदिक साहित्य के दो या तीन पत्र होते हैं। तीसरे वेदाध्ययन के केन्द्र हैं संस्कृत-विश्वविद्यालय तथा उनके अन्तर्गत संस्कृत पाठशालाएं या संस्कृत महाविद्यालय। इनमें शास्त्री परीक्षा तक अन्य विषयों के साथ वेद भी पढ़ाया जाता है और साहित्य-शास्त्री, व्याकरण-शास्त्री आदि के समान वेद-शास्त्री एक स्वतन्त्र परीक्षा भी होती है, जिसमें प्रमुखतः वेद का ही पाठ्यक्रम रहता है। आगे आचार्य परीक्षा में भी साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य आदि के समान वेदाचार्य की पृथक् स्वतन्त्र परीक्षा होती है जिसमें सब पत्र वेद के ही होते हैं। वेदाचार्य परीक्षा के पश्चात् वैदिक शोध का भी प्रावधान रहता है। अनुभव में आया है कि इन तीनों ही केन्द्रों से पढ़े हुए वेद के स्नातक अर्थोपार्जन की दृष्टि से अन्य विषय पढ़े हुए स्नातकों से पीछे नहीं हैं। वे उक्त तीनों प्रकार के केन्द्रों में ही वेद के अध्यापक, प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष आदि पदों पर नियुक्ति पा लेते हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न वेदानुसन्धानपीठों में या सरकारी सेवाओं में भी वे स्थान पा सकते हैं। जिनकी रुचि होती है वे वेदोपदेशक बन जाते हैं।

यह तो हुई छात्रों की बात। पर केवल छात्रों को ही नहीं, अपितु बालक, युवक, वृद्ध, नर-नारी सभी को चाहिए कि प्रतिदिन वैदिक स्वाध्याय करें, और वेद में जो कर्तव्य-प्रेरणाएं की गयी हैं, जो उद्बोधन दिया गया है, जिस ओजस्विता, आशावाद, आत्म-विश्वास एवं अग्रगामिता का संदेश दिया गया है उससे अनुप्राणित होकर जीवन में सदा अग्रगामी बने रहें। प्राचीनकाल में श्रावण पूर्णिमा को वेदाध्ययन का सत्र प्रारम्भ होता था और सम्मिलित वेदपाठ की ध्वनि से दिशाएं मुखरित हो जाती थीं। साथ ही वेदार्थ का अनुसन्धान भी होता था। ऋग्वेद के मण्डूक सूक्त में वर्षा ऋतु में मेंढकों के संगीत की उपमा व्रतचारी ब्राह्मण बटुओं के सस्वर वेदपाठ से दी गयी है। इसी का अनुकरण करते हुए कवि तुलसी ने भी कहा है- दादुर-धुनि चहुं ओर सुहाई, वेद पढ़त जनु बटु समुदाई। आइये, श्रावणी के पवित्र पर्व पर हम सब मिलकर वेदाध्ययन का व्रत धारण करें। □

"पूर्वान्चल आर्यवीरदल शिक्षण शिविर"

दि0 18 से 25 जून तक डी०ए०वी० कालेज आजमगढ़ के प्रांगण में हुआ जिसका उद्घाटन श्री अवधबिहारी खन्ना ने किया। शिविराध्यक्ष का कार्य श्री आर्यमुनि जी तथा व्यवस्थापक का कार्य श्री अक्षयमुनिजी आजमगढ़ ने किया। 25ता0को दीक्षान्तभाषण श्री रामचन्द्र सिंह प्रधान जिला सभा आजमगढ़ ने किया। शिविर में कुल 45 आर्य वीर व 10 अधिकारियों ने भाग लिया। शिक्षक का कार्य श्री हरिश्चन्द्र-जी आर्य कानपुर ने किया। शिविर में आजमगढ़ जनपद के सभी आर्य समाजों व अध्यापकों का पूर्ण सहयोग प्राप्त रहा।

- बेचन सिंह

छात्रवृत्तियाँ

(नव सत्र जुलाई 1989 से अप्रैल 1990)

श्री वजीरचन्द ट्रस्ट की ओर से नये सत्र के लिये गुरुकुलों, स्कूलों, महाविद्यालयों, व्यवसायिक प्रशिक्षणालयों के सुयोग्य और सुपात्र विद्यार्थियों/विद्यार्थिनियों को और स्नातकोत्तर व स्पर्धात्मक परीक्षाओं के परीक्षार्थियों/परीक्षार्थिनियों को छात्रवृत्तियां देने का कार्यक्रम शुरु हो गया है। इन छात्रवृत्तियों से लाभ उठाने के इच्छुकों को चाहिए कि ट्रस्ट से नियत आवेदन फार्म को मंगवाकर शीघ्र ही भरकर निम्नलिखित को भेज दें।

नोट :- गत सत्र में छात्रवृत्ति पाने वाले भी इस सत्र के लिए आवेदन पत्र दे सकते हैं।

सत्यदेव, अवैतनिक सचिव
श्री वजीर चन्द धर्मार्थ ट्रस्ट,
सी-32 अमर कालोनी, नई दिल्ली-
110024

स्त्री आर्य समाज, मेरठ शहर
का

हीरक जयन्ती समारोह

आर्य स्त्री समाज, बुढ़ाना द्वार मेरठ शहर जनसेवा की अपनी पावन यात्रा के 75 वर्ष पूर्ण करके आगामी 13 से 15 अक्टूबर 1989 तदनुसार शुक्र, शनि तथा रविवार को जीमखाना मैदान मेरठ शहर में अपनी हीरक जयन्ती बड़े धूमधाम से मनाने जा रही है।

इस अवसर पर आर्यजगत् की विदुषी महिलाएं, सन्यासी विद्वान् एवं आर्यकवि पधार रहे हैं। जयन्ती समारोह को भव्य बनाने हेतु इस अवसर पर अनेक सम्मेलनों का आयोजन किया जायेगा तथा राष्ट्र एवं समाजसेवा में समर्पित अनेकों गणमान्य व्यक्तियों एवं विद्वानों को सम्मानित भी किया जायेगा। समारोह को सफल बनाने के लिए उपसमितियों का गठन हो चुका है।

धर्मप्राण जनता एवं सभी आर्यसमाजों विशेषतया मेरठ जनपद की आर्यसमाजों से अनुरोध है कि तनमन धन से अपना अमूल्य सहयोग देकर समारोह को सफल बनावें।

इन्द्रराज
सहसंयोजक, प्रचार समिति
हीरक जयन्ती समारोह, मेरठ

आर्य महासम्मेलन

विशाल वैदिक धर्म (आर्य) महासम्मेलन
श्रीकृष्ण स्मारक हॉल, पटना,
9 एवं 10 सितम्बर, 1989

भारत के शीर्षस्थ सैकड़ों संन्यासियों, महोपदेशकों एवं राष्ट्रीय नेताओं के व्याख्यान होंगे, 500 विद्यार्थियों को संस्कार शास्त्री की उपाधि दी जायेगी, विशाल शोभा यात्रा राजधानी की परिक्रमा करेगी, आकर्षक स्मारिका का प्रकाशन होगा, दर्जनों सन्यास/वानप्रस्थ की दीक्षा लेंगे तथा पचासों तपस्वियों का सम्मान किया जायगा।

तन-मन-धन से सहयोग करें, लाखों की संख्या में पधारें तथा सम्मेलन को सफल बनाकर ऋषि के ऋण से उऋण होवें।

पटना जिला आर्यसभा — बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

सरदार पटेल मार्ग (सलामी लाईन) सहारनपुर

दिनांक 1 अगस्त 1989 को प्रातः 9 बजे आर्य समाज, सरदार पटेल मार्ग (सलामी लाईन) सहारनपुर के मन्दिर प्रांगण में एक शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें दिनांक 31-7-89 को श्री गंगाराम आर्य भूमि दान दाता, आर्य समाज तथा भूतपूर्व प्रधान आर्य समाज के निधन हो जाने पर श्रीमती शान्ति देवी भूतपूर्व प्रधाना स्त्री आर्य समाज सलामी लाईन ने अपने शब्दों में श्रद्धांजलि अर्पित की तथा आर्य समाज के प्रधान डा0 [illegible] जी ने उनके जीवन की घटनाओं की ओर ध्यानाकर्षित किया और उपस्थित सदस्यों ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा उनके शोक संतप्त परिवार को तथा हम आर्य बन्धुओं को शक्ति दें कि हम सब इस दुःख को सहन कर सकें और उनके आदर्शों पर चल सकें।

१३ अगस्त से आगे....

वैदिक साहित्य (शाखाएँ)

आचार्य डॉ॰ सुरेन्द्र देव स्नातक,
शास्त्री, शिरोमणि, एम०ए०
284, सिविल लाइन, एटा

चारों (ऋग्संहिता, यजुःसंहिता, सामसंहिता और अथर्व संहिता) संहिताओं की अपनी-अपनी शाखाएँ हैं, अपने-अपने ब्रह्मण-ग्रन्थ हैं, अपने अपने आरण्यक ग्रन्थ हैं और अपने अपने उपनिषद् ग्रन्थ आदि हैं। जिनका विवेचन क्रमशः प्रत्येक संहिता के विवरण के साथ ही प्रस्तुत किया जायगा।

यहाँ सर्वप्रथम शाखाओं का विवेचन करना है। प्रत्येक संहिता की कौन-कौन सी शाखाएँ उपलब्ध हैं? इस विवेचन से पूर्व यह जान लेना आवश्यक है कि शाखा का क्या स्वरूप है? उनका निर्माण किन आधारों पर हुआ है?

वैदिक काल में मात्र वेदों का ही पठन-पाठन हुआ करता था। इन चारों वेदों का स्वरूप ऋक्, यजुः, साम और अथर्व ही था। कहने का अभिप्राय यह है कि अर्थवश पादव्यवस्था वाले मन्त्र ऋग्वेद में, गाये जाने मन्त्र सामवेद में, सरलार्थ बोधक छन्दों वाले मन्त्र अथर्ववेद में, अवशिष्ट छन्दों वाले मन्त्र यजुः में उपलब्ध थे। किन्तु एक समय ऐसा आया कि जब वेदों की योग्यता वाले ऋषियों की संख्या कम हो गई तथा ब्रह्मवेत्ता अथवा ब्रह्मज्ञानी विद्वानों की संख्या, अधिक हो गई तब वेदों के मन्त्रों के सम्बन्ध में एक प्रकार का सन्देह उत्पन्न होने लगा। ऐसे समय में भी मूल-संहिताओं का स्वरूप संहितारूप में ही विद्यमान रहा।

संहिता नाम है ज्यों के त्यों मन्त्रों का। "संहिता" का अर्थ करते हुए पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी में लिखा "परः सन्निकर्षः संहिता" अर्थात् "पदान्तात्पदादिभिः सन्दधाति यत्सा संहिता"- पदों के अन्त को अन्य पदों के आदि के साथ सन्धिनियम के आधार पर बाँधने का नाम "संहिता" है। प्रारम्भिक कालीन संहिताएँ वास्तविक संहिता ही थीं। उनमें मन्त्रों के पद पृथक् पृथक् न थे। सभी मन्त्र संधियुक्त ही थे। किन्तु कुछ समय के अनन्तर वेद-मन्त्रों का अर्थ करने में विवाद होने लगा। किसी ने "न तस्य" को नतस्य कहा और किसी ने उसे पूर्ववत् "न तस्य" ही कहा। ऐसी अवस्था में यह आवश्यक हो गया कि पदों का विच्छेद-पाठ भी प्रचलित किया जाय। अतएव वैदिक आचार्यों ने पृथक्-पृथक् करके प्रत्येक संहिता को दो-दो संहिताओं के रूप में कर लिया। इस प्रकार शाखाओं का प्रारम्भ प्रचलित हुआ।

उपर्युक्त पदसंहिता अथवा प्रकृति संहिता ("पद प्रकृतिः संहिता" ऋक् प्रातिशाख्य।) का लक्षण करते हुए "ऐतरेय आरण्यक"- 3/13 में लिखा है- "यदि सन्धि विवर्तयति तन्निर्भुजस्य रूपं अथ यच्छुद्धे अक्षरे, अभिव्याहरति तत्प्रतृण्णस्य"।

अर्थात् जिसमें सन्धि का स्वरूप ज्यों का त्यों बना रहा उसे "निर्भुज-संहिता" कहा गया और जिसमें सन्धि के बिना केवल पदों का उच्चारण किया गया उसे "प्रतृण्णसंहिता" नाम से कहा गया। इन दोनों का एक उदाहरण देखिये:-

"अग्निमीडे पुरोहितम्"- इस प्रकार के पाठ को "निर्भुजसंहिता" तथा "अग्निम् ईडे पुरःहितम्"- इस प्रकार के पदपाठ को "प्रतृण्ण संहिता" कहा गया। वस्तुतः इन दोनों प्रकार के संहिता पाठों में न तो पाठभेद ही है और न पाठ न्यूनाधिक ही हुआ है। इन दोनों प्रकार की स्थितियों में मन्त्रों के पाठों में कोई अन्तर नहीं है। प्राचीन काल में इसी प्रकार की शाखायें थीं। किन्तु कुछ काल पश्चात् इससे भी सन्तोष न हुआ। अतएव मन्त्रों को ज्यों का त्यों रखने के लिये अनेक विधियों का प्रारम्भ हुआ तथा प्रत्येक विधि पृथक् पृथक रूप में एक एक शाखा बन गई। "ऐतरेय आरण्यक" 3/13 में लिखा है:- "अग्न उ एवोभयमन्तरेणोभयव्याप्तं भवति" अर्थात् आगे आने वाले समय में उपर्युक्त प्रतृण्ण संहिता- दोनों के योग तथा घन-जटा माला आदि भेदों की दृष्टि से विकृत रूप हो गई तथा "क्रम संहिता" कहलाने लगी। कहने का तात्पर्य यह है कि जिसमें मूलमन्त्र हों, उनके पद भी पृथक् पृथक् हों तथा इन पदों की विकृति भी हो उसे "क्रम संहिता" कहा जाने लगा। क्रम संहिता के इस प्रकरण को लेकर व्यास-मुनि ने "विकृतवल्ली" नामक एक ग्रन्थ की रचना कर की इस ग्रन्थ में आता है:-

> जटा माला शिखा लेखा ध्वजो दण्डो रथो घनः।
> अष्टौ विकृतयः प्रोक्ताः क्रमपूर्वा मनीषिभिः ।।वि०ब०।/5।।

अर्थात् उपर्युक्त भेदों के जटा, माला, शिखा, लेखा, ध्वज, दण्ड, रथ और घन-ये आठ भेद हो गये तथा इनकी संख्या 10-12 हो गई। किन्तु इतने पर भी सन्तोष न हुआ। फलस्वरूप गोत्रप्रवर्त्तन तथा शाखा संप्रदाय से प्रेरित होकर वैदिक आचार्यों ने शाखाओं के भेदों में और अधिक वृद्धि कर डाली। बृहद्देवता नामक ग्रन्थ में लिखा है:-

"देवतार्षार्थछन्दोभ्यो वैविध्यं तस्य जायते। बृ०दे०।/14।।

अर्थात् देवता, ऋषि, अर्थ तथा छन्दभेद के आधार पर सूक्तों के अनेक भेद हो गये। प्रत्येक मन्त्र का देवता, ऋषि, छन्द तथा अर्थ होता है। अतः इस आधार पर भी संहिताएँ बन गईं। किन्हीं देवता वाले सूक्तों के साथ किन्हीं अन्य देवता वाले सूक्तों को रखकर भी संहिताएँ बनाई गईं, इनको दैवतशाखा कहा गया। इसी प्रकार किन्हीं ऋषिवाले सूक्तों के पश्चात किन्हीं अन्य ऋषि वाले सूक्तों को रखकर संहिताओं का निर्माण किया गया तथा इन्हें आर्षशाखा कहा गया। इसी भाँति अर्थ-शाखा और छन्द शाखा भी बन गईं। इससे मन्त्रों का बहुत अधिक उलट फेर हुआ। परिणामस्वरूप शाखाओं में बहुत अधिक वृद्धि हो गई।

गोत्रप्रवर्त्तक वैदिक-ऋषियों का शाखाभेद तो यहीं तक सीमित रहा। उनका मानना यही था कि पठन-पाठन शैली में चाहे भेद हो जाय किन्तु मन्त्रों में किसी प्रकार का भेद न होने पाये। मीमांसा दर्शन में शाखातत्व का निर्वचन करते हुए जैमिनि मुनि ने लिखा है कि "आख्याप्रवचनात्" ।।।/।/30।। अर्थात् प्रवचन के कारण ही "शाखा" नाम पड़ा है। जिस ऋषि द्वारा मूलमन्त्रों का अध्यापन जिस क्रम से कराया जाता था, केवल वही क्रम सम्बन्धित शाखा के नाम से प्रसिद्ध हो जाया करता था। वेद के किसी अंश अथवा भाग को शाखा के नाम से नहीं कहा जाया करता था। शाखा से अभिप्राय पठन-पाठन का क्रम अथवा शैली ही था। "शाखा" के सम्बन्ध में वैदिक-साहित्य के महान् विद्वान् पण्डित सत्यव्रत सामश्रमी ने अपने ग्रन्थ "ऐतरेयालोचन" में लिखा है कि:-

"तत्वतो नहि वेदशाखा वृक्ष शाखेव नापि न दीशाखेव प्रत्युताध्ये-तृभेदात् सम्प्रदायभेदजन्याध्ययन विशेषरूपेव।"

अर्थात वेदों की शाखाएँ न तो वृक्षों की शाखाओं की भाँति हैं और न नदी की शाखाओं की भाँति हैं अपितु वे पठन-पाठन भेद से सम्प्रदाय जन्य अध्ययन का ही विशेष रूप हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वस्तुतः वेद की शाखाएँ वेद का अंश अथवा भाग नहीं है, वे तो पठन-पाठन के भिन्न भिन्न प्रकार अथवा शैली ही हैं। इस बात का ज्ञान तो हमें शाखाओं के लिये प्रयुक्त शब्दों के द्वारा भी प्राप्त हो सकता है। निम्नलिखित ग्रन्थों में लिखा है:-

> एक शतमध्वर्यु शाखा सहस्रवर्त्या सामवेदः ।
> एक विंशतिधा वाहृच्यं नवधा थर्वणो वेदः ।। महाभाष्य।।
> एकविंशतिभेदेन ऋग्वेद कृतवान् पुरा।
> शाखानां तु शतं नाथ यजुर्वेद मथाकरोत्।।
> सामवेदं सहस्रेण शाखानां च विभेदतः।
> आथर्वणमथो वेदं विभेद नवकेन तु।।
> कूर्मपुराण।।
> पंचैने शाकला शिष्या शाखाभेद प्रवर्त्तकाः। विकृतवल्ली।।
> यजुर्वेदस्य षडशीतिर्भेदा भवन्ति
> अथर्ववेदस्य नवभेदा भवन्ति।
> (चरणव्यूह)

उपर्युक्त उद्धरणों में शाखाओं के लिये भेद, विधि, वर्त्मा, धा इत्यादि शब्दों का प्रयोग हुआ है। ये सभी शब्द प्रकार, ढंग एवं शैली आदि के ही वाचक हैं, खण्ड, भाग, अंश, प्रकरण और देश आदि के नहीं।

- शेष पृष्ठ ११ पर

उसके पास वेदार्थ की कुंजी थी

• डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
भू. पू. कुलपति गुरुकुल वि. वि. कांगड़ी

आर्यसमाज का तीसरा नियम "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है"-यह है। आर्यसमाज के इस नियम के संबंध में नियमों के निर्माण के समय काफी पारस्परिक विवाद हुआ था। कई लोगों का कहना था कि "वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है"-"सब सत्य विद्याओं का" कहने की जरूरत नहीं, परन्तु वर्तमान में जो नियम पाया जाता है उसमें "सब सत्य विद्याओं" का उल्लेख है। शायद इस विवाद को शान्त करने के लिये तीसरे नियम के बाद चौथा नियम बनाया गया जिसमें कहा गया कि "सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। तीसरे और चौथे नियम एक दूसरे के पूरक हैं।

"सत्य विद्याओं" तथा "सब सत्य विद्याओं" के आपसी विवाद में प्रश्न उठाता है कि क्या वेदों में आजकल के विज्ञान का भी उल्लेख है। उदाहरणार्थ, आज विज्ञान ने अनेक आविष्कार किये हैं जिनके आधार पर रेलगाड़ी हवाई जहाज आदि का निर्माण किया है क्या वेदों में रेलगाड़ी या हवाई जहाज आदि के फार्मूले मौजूद हैं। अगर सब सत्य विद्याओं से यह तात्पर्य है कि वेदों में यह सब कुछ मौजूद है, तो किसी वेदज्ञ ने अब तक कोई ऐसी चमत्कारिक वस्तु का वेद के मंत्रों के आधार पर निर्माण क्यों नहीं किया? सायंसदां व्यक्ति दिन-प्रतिदिन नये-नये नियमों का पता लगा रहे हैं, उनके आधार पर नयी-नयी वस्तुओं का निर्माण कर रहे हैं, वेदों के पंडित जो वेद में सब सत्य विद्याओं की घोषणा करते हैं, वे करोड़ों वर्ष बीत गये हाथ-पर-हाथ धरे क्यों बैठे रहे, आज विज्ञान जो चमत्कार दिखा रहा है वैसा कोई अद्भुत चमत्कार क्यों नहीं दिखा सके।

इस प्रश्न का उत्तर ईशावास्योपनिषद में दिया गया है। वहाँ लिखा है- "अन्यत् आहुः विद्यया अन्यदाहुरविद्यया इति शुश्रुम धीराणाम् येनस्तद् व्याचचक्षिरे।" - ऋषियों का कहना है कि "विद्या" का कुछ और ही अर्थ है, "अविद्या" का कुछ और ही अर्थ है-प्रचीन काल के विद्वानों का कहना था कि सर्वसाधारण लोग इन दोनों शब्दों का अर्थ नहीं समझते। तो इन दोनों शब्दों का क्या अर्थ है? इन शब्दों का वैदिक अर्थ बतलाते हुए आगे कहा है-"विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया मृतमश्नुते" - जो व्यक्ति "विद्या" तथा "अविद्या" दोनों का अर्थ जानते हैं, वे अविद्या से मृत्यु को तर जाते हैं, और विद्या से अमृत को पाते हैं,यह हमारे लिए एक अद्भुत घोषणा है। अविद्या से मृत्यु को कैसे लांघा जाता है? अगर अविद्या का अर्थ "भौतिकवाद" माना जाय तो यह बात झट समझ में आ जाती है। अगर भौतिकवाद के आविष्कारों को दवाई, खाना-पीना, नये-नये आविष्कार जिनसे दीर्घ जीवन मिलता है, अगर वैदिक टर्मिनोलोजी में यह सब "अविद्या" है, तो क्षणभर भी सन्देह नहीं होगा कि इस प्रकार की "अविद्या" से मृत्यु को तर जा सकते हैं, अगर अध्यात्मवाद को-अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह आदि को-विद्या मान लिया जाय, तो इसमें क्षणभर भी सन्देह नहीं रहता कि इस प्रकार की "विद्या" से मनुष्य अमरत्व प्राप्त कर सकता है।

प्रश्न यह था कि वेदों में अगर सब सत्य विद्यायें हैं तो क्या वर्तमान विज्ञान जिसे हम सत्य विद्या समझते हैं, क्या यह विज्ञान वेदों में है? कुछ लोगों का कहना है कि ये विद्यायें भी वेदों में हैं। पं० गुरुदत्त जी ने अपने समय में इसी सिद्धान्त के आधार पर वेदों में आक्सीजन तथा हाईड्रोजन आदि का होना कुछ मंत्रों की व्याख्या करते हुए सिद्ध किया था।

1982 में जब मैं हालैंड निवासियों के निमन्त्रण पर वहां गया तब एक दिन वहाँ की सभा में व्याख्यान दे रहा था। व्याख्यान में एक डच अंग्रेज भी उपस्थित था। व्याख्यान के अन्त में उस डच अंग्रेज ने कुछ घण्टे मुझसे बातचीत करना चाहा। मैं श्री बलदेव तिवारी के पुत्र श्री केशव के यहाँ ठहरा हुआ था। मैंने उन्हें अगले दिन वहाँ आने को कहा। अगले दिन वे सज्जन पुस्तकों का भारी बंडल लेकर मुझसे मिलने आये। उनके बैग में "सत्यार्थ प्रकाश", बृहत् विमान-शास्त्र" तथा बंगलौर के श्री सुब्बाशास्त्री द्वारा अनूदित "यंत्र सर्वस्व" नामक ग्रन्थ भी थे। उनके पास कुछ डिजाइन थे जो उन्होंने इन ग्रन्थों के आधार पर विमान की आकृति के रूप में बनाये थे। वे वैदिक विमान विद्या की तह तक पहुँचना चाहते थे। उनका नाम J N. VAN WEERG था और पता MARKT-WEC. 2525, J.H. DENHAG, NEDERLAND था।

वे चारों वेदों की एक-एक प्रति चाहते थे। मैंने हालैंड से आर्यसमाजी पत्रों में उनकी इच्छा व्यक्त की किन्तु मुझे इस बात का दुःख है कि किसी आर्यसमाजी संस्था ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया। उनकी वेद के प्रति लगन को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। वे मुझसे कह रहे थे कि वेदों में विज्ञान है, परन्तु मेरे पास उन्हें संतुष्ट करने के लिए कोई उत्तर नहीं था। मैं सिर्फ इतना जानता था कि आर्यसमाज का तीसरा नियम है कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है।

इस विषय पर मैंने बहुत सोचा। मेरे सामने निम्न प्रश्न आ-आकर घूमने लगे। पहला प्रश्न तो यह था कि अगर वेद में सभी विद्यायें हैं तो मनुष्य को मस्तिष्क या विचार-शक्ति क्यों दी गई। सब कुछ बता देना विचार-शक्ति पर प्रतिबन्ध लगा देना है। दूसरा प्रश्न यह था कि अगर वेद में भौतिक विज्ञान आदि सभी कुछ हैं तो अरबों वर्ष बीत गये वेदों के आधार पर कभी किसी ने कुछ बनाकर क्यों नहीं दिखाया। तीसरा प्रश्न यह था कि अगर वेदों में सभी सत्य विद्यायें नहीं हैं तो पं० गुरुदत्त आदि ने वेदों में आक्सीजन, हाइड्रोजन आदि को वेद मंत्रों के आधार पर कैसे सिद्ध किया। वेदों के ईश्वरीय-ज्ञान होने में ये तीन बाधायें मेरे सम्मुख सदा बनी रहीं परन्तु इनका मुझे उत्तर भी मिल गया वहीं उत्तर लिखने मैं इस समय बैठा हूँ :-

(क) मनुष्य के स्वतंत्र ज्ञान पर बाधा :-

वेद में सब सत्य विद्याओं के ईश्वरीय ज्ञान होने में पहली बाधा यह है कि अगर वेद में सब कुछ दे दिया गया है, तो क्या मनुष्य के स्वतंत्र चिन्तन के लिए कुछ नहीं छोड़ा गया? हम देखते हैं कि मनुष्य अपने मस्तिष्क से बहुत कुछ निकाल लेता है। न्यूटन ने अपने स्वतंत्र मस्तिष्क से बहुत कुछ निकाला, आईनस्टाइन ने विज्ञान को अपने स्वतंत्र विचार से बहुत कुछ दिया। इन लोगों ने वेद से तो यह सब कुछ नहीं ग्रहण किया। वेद-ज्ञान के बिना नवीन-ज्ञान आ रहा है और आ सकता है, तो वेद की क्या जरूरत रह जाती है।

इसका उत्तर यह हो सकता है कि ईश्वर वेद द्वारा वही ज्ञान देगा जिसे मनुष्य स्वतंत्र रूप से अपने मस्तिष्क से नहीं प्राप्त कर सकता, जो ज्ञान किसी के दिये जाने से ही प्राप्त हो सकता है, न दिये जाने से प्राप्त नहीं हो सकता।

(ख) अगर वेद में सभी ज्ञान है, जिसमें भौतिक ज्ञान भी शामिल है, तो अबतक वेद द्वारा किसी ने कोई नया आविष्कार क्यों नहीं किया ?

इस शंका का उत्तर यह है कि सैकड़ों, हजारों वर्षों तक तो वेद रूपी "निधि" पर ताला लगा रहा, जब तक उसे खोलने की कुंजी हाथ आई तब तक मनुष्य ने अपने स्वतंत्र मस्तिष्क से हजारों आविष्कार कर लिए, परन्तु वे सब आविष्कार "भौतिक जगत्" के आविष्कार थे। वेद अगर ईश्वरीय ज्ञान है, और भगवान् ने अगर मनुष्य को स्वतंत्र विचार करने की शक्ति दी है, तो वेद वही ज्ञान देगा, जो मनुष्य अपने मस्तिष्क में स्वतंत्र रूप में पता नहीं लगा सकता। ऐसा ज्ञान भौतिक न होकर आध्यात्मिक है। आध्यात्मिक ज्ञान वह ज्ञान है जो अपने प्रयत्न से नहीं पाया जा सकता, जो दिया ही जा सकता है। भौतिक ज्ञान तो अपने आप पाया जाता है। न्यूटन को, आइनस्टीन को या अन्य वैज्ञानिकों को सिखाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, उनका ज्ञान अपने आप भीतर से उपजता है जैसा शकुंतला आदि के विषय में हम पहले लिख आये हैं। भौतिक आविष्कार बिना ईश्वरीय ज्ञान के मानव द्वारा आविष्कृत होते हैं, उन्हें ईश्वर द्वारा देने की जरूरत नहीं होती। वेद द्वारा वही ज्ञान दिया गया है जो अपने-आप प्राप्त नहीं हो सकता। यह समझ लेना चाहिये कि वेद द्वारा वही ज्ञान दिया गया है जो स्वतः प्राप्त नहीं है। रेल, गाड़ी, मोटर, टेलीविजन ये सब भौतिक ज्ञान मनुष्य अपने आप प्राप्त कर सकता है, इस प्रकार के ज्ञान को परमात्मा द्वारा देने की जरूरत नहीं।

(ग) पं० गुरुदत्त आदि ने वेदों में सायन्स बतलाया है-हमारे विचार के साथ इसकी संगति कैसे बैठती है-

वेद आध्यात्मिक ग्रन्थ हैं। उनमें वही कुछ है जो मनुष्य अपने आप नहीं पा सकता, जो दिये बगैर नहीं पाया जा सकता। फिर भी अगर वेद में कहीं-कहीं विज्ञान की बातें मिल जाती हैं तो वे आध्यात्मिक सत्य को स्पष्ट करने के लिए उदाहरण रूप में पायी जाती हैं। उदाहरणार्थ, अगर वेद में कहा गया है कि हमारा जीवन का मार्ग ऐसा निश्चित हो, जैसा सूर्य और चन्द्र का है, तो इसका यह अभिप्राय नहीं है कि वेद ने सूर्य और चन्द्र को अपनी परिधि में अटल बने रहने की बात कही है, वेद ने सूर्य के अटल मार्ग का दृष्टांत जीवन पर लागू किया है। इसी प्रकार "द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया"

शेष पृष्ठ ११ पर

अथ श्री रिश्वत नारायण व्रत कथा माहात्म्यम्

(तिकड़मेव जयते न साधुता। इति नामक: प्रथमाध्याय:)

• आचार्य विशुद्धानन्द मिश्र (बदायूँ)

अद्यास्माकमयं देश:, एक विंश शताब्दिकाम।
गन्तुं समुत्सुकस्तस्मात्, महिमा स्य विवर्धते ।।16
उद्धाराय जनतायाः विष्णुनाधिगतं व्रतम ।
भवतां च प्रतिष्ठाया वर्धनाय निगद्यते ।।17
प्रागस्या: कथाया वै, प्रसादस्य कृते पुन:।
चूर्ण वाक् चाटुता चारु, दलाली कदली फलम्।।18
तुलसी दलोपहारोऽस्या-धिकारि- चरणामृतम्।
पाद पंकडजयोस्तस्य धूलिश्चर्चित चन्दनम्।।19
अवधानं विशेष: स्यात् व्रतस्य परिरक्षणे।
नैषाऽऽचारवते श्राव्या, कथा साधुषु निष्फला।।20
विनियोगं सदा साध्ये कार्ये कुर्यादतन्द्रित:।
वाक्कील: कीलकोऽस्या: स्यात् कवचं च मृषा वच:।।21
धनानां बहु भेदा: स्यु:, चौर्यापहृति श्रमै:।
धोखा धड़ी मृषा वाचा, हत्याकृत्यै: प्रवञ्चनै:।।22
धनेषु सर्वेषु हि सञ्चितेषु, अधर्म हत्यादि समाहृतेषु।
श्रमेण रहितं सहितं न जातु, प्रशस्यते रैशवतं धनंहि।।23
निष्काम भाव सम्प्राप्तं, न कर्मफल हेतुकम्।
नैव पापं न पुण्यं तत् धनादान प्रदानयो:।।24
आदाता न स्वहस्तेन कदापि स्पृशति स्वयम्।
मुच्यते सो ददानस्तु फलभाग् भवति ध्रुवम्।।25

हिन्द्यामपि रहिमनेनोक्तम् --

रहिमन रिश्वत दीजिये बिन रिश्वत सब गोल।
रिश्वत बिन अफसर - लिपिक, करते टाल मटोल।

गिरिधर--

रिश्वत में गुन बहुत हैं, बिन रिश्वत सब सून।
बिन आरक्षण सीट के, पहुँचौ देहरादून।।
पहुँचौ देहरादून, लोन को चक्कर काटौ।
चाहे ढेर जनों की सिफारिशों से दफ्तर पाटौ।।
कहैं गिरधर कविराय, बिना रिश्वत के भैया।
सात-जनम तक काम बनै नहिं, देहु रुपैया।।

न केवलं रिश्वत दायिनो हि स्वकार्य सिद्धिर्भवति प्रकृष्टा।
दयोर्भवेद् दापयितुर्ग्रहीतु: एक क्रिया त्र्ययर्थकरी प्रसिद्धा।।27
इयं प्रणाली खलु लोकतन्त्रे, समादृता सर्व समाज वादिभि:।
लोकद्वयं वै जयते प्रदपयन् "परोपकाराय सतां विभूतय:।।28
धर्म निरपेक्ष राज्ये, धर्म नैव विचारयेत्।
वेदस्मृति सदाचारै:, सम्प्रदायी जनो भवेत् ।।29
रिशवतस्य ग्रहीतारं, प्रशंसेदेवमुच्चरन् ।
"त्वदीयं वस्तु गोविन्द, तुभ्यमेव समर्प्यते।।30
कृतार्थोऽतितरां भूतोऽनुगृहीतोऽस्मि ते प्रभो।
ममानुग्रह -- प्रदानेन, साधयाशु मनोरथम्।।31
उत्कोच - रिश्वत - प्रदान - कला विहीन:,
साक्षात् पशु: पुच्छ विषाण हीन:।
स्वयं न खादत्यपि भोजयन् वा,
स भार भूतस्तु बसुन्धरायाम्।।32
न जाल सज्जाम् कुरुते न रिवतं,
ददाति गृह्णाति न यो धरित्र्याम्।
मृषा वदेद् यो न प्रवञ्चने रत:,
स बुद्धुरेवात्र जनो मया मत: ।।33

महाकवि: तुलसीदासो प्याह --

रिश्वत धन, अरु दबदबा, तुलसी दुर्लभ दोय।
टी0 वी0, फ्रिज, अरु मारुती, पापी हू के होय।।
रिश्वतं गृह्यते तावत् केवलं नर जन्मनि।
गृह्णीयाद् दद्याद् यो वै, नरयोनिं पुनर्भजेत्।।34
अतस्तनु मेनोभ्यां च, आत्मोद्धृत्यै धनेन वा।
कीर्तनं कुर्यान्नित्यं रिश्वताख्यं प्रभोर्मुदा ।।35
रिश्वतं लीयतां, रिश्वतं दीयतां,
तद् बिना रिश्वतेनैव नो जीयताम् ।
रिश्वतं गृह्यतां, रिश्वतं स्पृह्यताम्
श्वास प्रश्वासयो:, रिश्वतं धीयताम् ।।36

इति श्री रिश्वत नारायण व्रत कथायां प्रथमोध्याय: समाप्त:।

"बाला श्री रिश्वत नारायण भगवान की जय -
जो बोले सो अभय। जो न बोले उसका क्षय।।

हिन्दी रूपान्तर-

नेताजी उवाच - आज हमारा यह देश इक्कीसवीं सदी में जाने के लिए उत्सुक बैठा है इसलिए इस व्रत की महिमा और भी बढ़ जाती है। जनता के उद्धार के लिए इस महाव्रत की महिमा विष्णु भगवान के द्वारा प्राप्त हुई जो आज तक परम्परा से गाई जाती रही है। आप लोगों की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए मेरे द्वारा उसी का वर्णन इस कलियुग में पुन: किया जा रहा है। सो सुनिये "भगवान को साधुओं की रक्षा और दुष्कर्मों का विनाश करने के लिए अवतार लेना पड़ता है। चारों युगों में कलियुग की महिमा अपरम्पार है, क्योंकि सबसे अधिक अवतार भगवान को "सतयुग" में लेना पड़े, उससे कम "त्रेता में" उससे कम "द्वापर" में और कलियुग में तो केवल एक ही कलंकी अवतार लेना पुराण शास्त्रों में लिखा है। सो हे भक्तों! आप स्वयं विचार कर लें कि सबसे कम पाप तो कलियुग में ही होंगे इस बात से सिद्ध हो गया।

अब व्रत रखने से पूर्व सभी उसके भक्तों को जो सामग्री जुटानी है उसका वर्णन मैं तुमसे कर रहा हूँ, इस प्रसाद के पाने पर सबका मोक्ष निश्चित है। सुनिये, बाल भोग के लिए चाटुता का चूर्ण, ताजी दलाली के कदली फल, उपहार भूत वस्तु रूपी तुलसी दल समेत इस अधिकारी का चरणामृत पान करने के लिए और उसी अधिकारी के पादपंकज की पराग धूलि रूपी केशर का चन्दन माथे पर लगाने के लिए जुटाकर रख लें।

सावधानता-- इस महाव्रत के पालन करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि इस कथा को वेद स्मृति के अनुसार जीवन बिताने वाले तथाकथित दकियानूसी पुराण पन्थी साधु पुरुषों से गुप्त रखना चाहिए- क्योंकि उनके साथ इस व्रत की चर्चा करना ऐसे ही निष्फल होगी जैसे की वन्ध्या से सन्तान की आशा करना।

विनियोग-- इस कथा का विनियोग आलस्य रहित होकर अर्थात् कान पूँछ फटकार कर अपने और दूसरों की कार्य सिद्धि में करे और करावे।

मन्त्र= इसका गुप्त मन्त्र है "रिश्वत धनं सर्वधन प्रधानम्"

कीलक-- वकील नाम का प्राणी इस मन्त्र का कीलक है, जो इसका सर्वोत्तम उपजाऊ माध्यम है।

कवच = सदा मिथ्या भाषण करना ही इस व्रत का कवच है हां, तो मेरे प्यारे चमचों। संसार में धनों के बहुत से भेद हैं जैसे राहजनी, चोरी, डकैती, मेहनत-मजदूरी, धोखाधड़ी, बेईमानी, झूठ बोलना, हत्या, कृत्य तथा ठगई आदि। इनसे कमाये हुए धन से रिश्वत का धन कहीं श्रेष्ठ है, इस धन को न श्रम जन्य कहा जा सकता है और न श्रम रहित ही, क्योंकि यह धन तो निष्काम भाव से प्राप्त किया जाता है। न यह कर्म जन्य है और न अकर्म जन्य, गीता के (मा कर्मफल हेतु भु: मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि) का सही उदाहरण है तब इसका कोई कर्मफल भी नहीं मिल सकता इसके लेने में न कोई पुण्य है, न पाप है, जैसे इसके न लेने में न पुण्य है न पाप है, क्योंकि इस व्रत का अनुष्ठान करने वाला इस धन को कभी अपने हाथ से नहीं छूता, उसका धन से अस्पर्शव्रत खण्डित नहीं होता तो इसका ग्रहीता (ग्रहण करने वाला) तो सर्वथा मुक्त हो जाता है। इस धन को न छूने का प्रमाण इस धन पर लगाया गया कैमीकल ही सिद्ध कर देता है और देने वाले को इसका वांछित फल अवश्य मिल जाता है। इस धन का ग्रहण करने वाला कभी बन्धन में नहीं पड़ता। कदाचित् पड़ भी जाये तो इसी व्रत के पालन से छूट भी जाता है।

आज हिन्दी के प्रसिद्ध कवि रहीम यदि इस व्रत की महिमा का बखान करते तो इस प्रकार करते==

रहिमन रिश्वत दीजिए, बिन रिश्वत सब गोल।
रिश्वत बिन अफसर, लिपिक, करते टाल मिटोल।।

और महामना गिरधर कविराय इस रूप में कहते--

— शेष पृष्ठ ८ पर

अथ श्री रिश्वत......

रिश्वत में गुन बहुत हैं, बिन रिश्वत सब सून,
बिन आरक्षित सीट के, पहुँचो देहरादून।
पहुँचो देहरादून, लोन को चक्कर काटो,
ढेरू सिफारिश चाहे, कर दफ्तर को पाटो।
कहैं गिरधर कविराय बिना रिश्वत के भैया,
सात जनम तक काम बनै नाहिं, देहु रुपैया।

रिश्वत में यह विशेषता है कि केवल रिश्वत देने वाले का ही काम नहीं बनता, प्रत्युत रिश्वत दिलवाने वाले और ग्रहीता का भी कल्याण हो जाता है इसीलिए यह कहावत प्रसिद्ध है "एकक्रिया त्र्यर्थ (तीन अर्थ) करी प्रसिद्धा एक क्रिया तीन फल।

यह रिश्वत देने वाले की प्रणाली लोकतन्त्र के सर्वथा अनुरूप है सर्व समाज वादियों के द्वारा समादृत और प्रशंसित है। रिश्वत देने और लेने वाला तो इसी लोक को जीतता है पर रिश्वत दिलाने वाला दलाल या बिचौलिया लोक और परलोक दोनों को जीत लेता है। सच कहा है, "सज्जनों की सारी विभूतियाँ परोपकार के लिए ही होती हैं।"

प्यारे चमचों। यह अपना राज्य भी धर्म निरपेक्ष है। इसमें धर्म अधर्म का विवेचन या विचार करना साम्प्रदायिकता है। आज भी वेदस्मृति आदि के आचारों से कतिपय लोग साम्प्रदायिक भावना से वातावरण प्रदूषित रहे हैं।

रिश्वत ग्रहण करने वाले कृपालु की हमें इस तरह स्तुति करनी चाहिए कि (त्वदीयं वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये) यह तो वस्तु तुम्हारी ही है। हे रिश्वत गृहीता प्रभो। आपकी इस उदारता से मैं अनुगृहीत हो चुका हूँ, अब आप मेरे मनोरथ को पूर्ण कीजिए शास्त्रों में भी कहा है कि उत्कोच, रिश्वत के आदान की कला से विहीन पुरुष पुच्छ और सींग से रहित साक्षात् द्विपाद पशु है, क्योंकि यह न स्वयं ही खाता है और न दूसरों को खिलाता है। वह पामर प्राणी इस वसुन्धरा पर भार भूत है जो व्यक्ति न जालसाजी करता है, न रिश्वत लेता है न देता है और जिसको ठगई करना भी नहीं आता, मेरी सम्मति में वही बुद्दू है।

इसलिए प्यारे चमचों। तुम बुद्दू न बनो, बड़ी चिरकालीन खोज के बाद सहस्रों पर्तों के बीच दबा हुआ महात्मा तुलसीदास का यह दोहा मेरे हाथ लगा है, जैसे कि जनता पार्टी की गवर्नमेंट को सतत गहरी खुदाई के बाद एक काल पात्र हाथ लगा था।
या कि जैसे विपक्षियों को अमिताभ बच्चन के स्विटजरलैण्ड के धन का सुराग मिला।

रिश्वत धन, अरु दबदबा, तुलसी दुर्लभ दोय।
टी0वी0, फ्रिज, अरु मारुती, पापी हु के होय।।

क्योंकि रिश्वत मनुष्य योनि में ही ली जा सकती है, इसलिए जो मनुष्य रिश्वत लेता, देता या दिलवाता है उसका अगला जन्म निश्चित ही मनुष्य योनि में सुरक्षित है।

अतः मनुष्य तन मन धन से आत्मोद्धार के लिए सदा श्री रिश्वत नारायण का कीर्तन किया करे कि--

रिश्वतं लीयतां, रिश्वतं दीयताम्।
तद् बिना रिश्वते नैव नो जीयताम्।।
रिश्वतं गृह्यतां, रिश्वतं स्पृह्यताम्।
श्वास प्रश्वासयोः रिश्वतं पीयताम्।।

इति श्री रिश्वत नारायण व्रतकथायां प्रथमोऽध्यायः समाप्तः।
बोलो श्री रिश्वत नारायण भगवान् की जय।
जो बोले सो अभय

स्व० महात्मा दयानन्द धर्मार्थ औषधालय का उद्घाटन

स्व0 महात्मा दयानन्द जी के अनन्य श्रद्धालु भक्त एवं यज्ञ के प्रेमी श्री मलिक देशराज जी एवं उनके सुपुत्र श्री राजेश कुमार जी निवासी चन्द्र नगर, लखनऊ ने स्व0 पुण्य महात्मा दयानन्दजी की पुण्य स्मृति में शिवाजी मार्किट एल0डी0ए0-कालोनी कानपुर रोड, लखनऊ में जनता की सेवा हेतु एक निःशुल्क होम्योपैथिक औषधालय का निर्माण कराया है। इस औषधालय का उद्घाटन समारोह दिनांक 6-7-89 को सायं 5 बजे सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम यज्ञ के साथ आरम्भ हुआ। यज्ञ के यजमान का आसन श्री मलिक देश राजजी एवं उनकी धर्मपत्नी ने ग्रहण किया। यज्ञ का संचालन महात्मा जी के भक्त बयोवृद्ध विद्वान श्री वैद्यकुन्दन लाल जी आर्य ने किया। बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञ सम्पन्न कराकर वैद्यजी ने ही इस औषधालय का उद्घाटन किया। इस अवसर पर स्व0 महात्माजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए वैद्यजी ने यजमान के इस शुभ सेवाकार्य की सराहना की एवं धन्यवाद किया। श्रीमती-विमला महारानी के मधुर भजन से सभी को विशेष आनन्द प्राप्त हुआ। औषधालय में निःशुल्क सेवा करने वाले डा0 लाजपत राय जी अरोड़ा एवं कुमारी दीपका जी को भी आशीर्वाद दिया गया। मलिक देशराज जी के परिवार ने समस्त महानुभावों का स्वागत किया। एवं यज्ञ शेष वितरण कर सबको धन्यवाद दिया। इस समारोह में काफी संख्या में आर्य नर-नारियों ने पधार कर इस समारोह की शोभा बढ़ाई एवं मलिक साहिब के इस सेवा कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

मुस्लिम महिला की शुद्धि

दिनांक 21 जून 89 को ग्राम चितिहा में कु० परवीन आत्मज खुर्शीद अली जि0 लखीमपुर वर्तमान बिलरायाँ आर्य समाज लखीमपुर जिला सभा लखीमपुर केतत्वावधान में आर्य समाज सिंगाही कलां के प्रयासों से हजारों की संख्या में उपस्थित जनसमूह के समक्ष स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण कर रेखारानी बनीं। इस अवसर पर स्वामी इन्द्रदेव जी गुरुकुल शाही ने वैदिक धर्म की दीक्षा दी। उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों ने भोजनोपरान्त आशीर्वाद दिया।

आर्यसमाज सेक्टर 22-ए, चण्डीगढ़ की सूचना

आर्यसमाज सेक्टर 22-ए, चण्डीगढ़ का 1989-90 के वार्षिक निर्वाचन में श्री डा0 इन्द्रराज शर्मा को सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया उन्हें ही समस्त अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों के गठन का अधिकार दिया गया।

-- आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के सौजन्य से वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र नजीबाबाद द्वारा लालूवाला में श्री विक्रमदेव जी, श्री योगेशदत्त जी आर्य वैदिक विद्वान श्री वेद प्रकाश शास्त्री द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार एवं महर्षि दयानन्द का सन्देश हरिजन बस्ती में महाशय श्री आशाराम आर्य धनुर्धर डा0 विष्णु मिश्र आर्य डा0 बालकृष्ण शर्मा, श्री मानकचन्द आर्य (भजनीक) ने विशेष सहयोग देकर इस उत्सव को सफल बनाया। प्रचार साहित्य केन्द्र को तन, मन, धन सेसहयोग देने की अपील की।

आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन केवल सम्मेलन ही नहीं एक आन्दोलन है

• डॉ० प्रशान्त वेदालंकार
7/2 रूपनगर दिल्ली।

30 सितम्बर, 1/2 अक्टूबर, 1989 को दिल्ली में आयोजित आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन केवल सम्मेलन नहीं वरन् एक आन्दोलन है। यह उन निष्ठावान् दृढ़व्रती व विवेकशील आर्यसमाजियों का समागम है जो आर्यसमाज को नयी गति और दिशा देने के लिए कृत संकल्प हैं।

यह खेद है कि आज आर्यसमाजी शिक्षा संस्थाएं आर्य विचारधारा के प्रचार व प्रसार में अपने को असहाय अनुभव कर रही हैं। यह भी सच है कि आज समाज व राष्ट्र की आवश्यकता के अनुसार आर्यसमाज अपने कार्यक्रमों की संरचना नहीं कर पा रहा है। उसका संगठन शिथिल है। मैंने जब एक विद्वान से आर्यसमाज की भावी रूपरेखा निर्धारित करने की बात की तो वह निराशा के स्वर में बोला-आर्यसमाज में तीन प्रकार के लोग बचे हैं-- §1§ जो अपना नेतृत्व चाहते हैं, §2§ जिनकी पुरोहिताई अथवा §3§अध्यापकाई से रोजी रोटी चलती है। इनसे आर्यसमाज की उन्नति की आशा करना व्यर्थ है।

देश के सभी विचारक और शिक्षाशास्त्री तथा राजनीतिक नेता आर्यसमाज से प्रेरणा प्राप्त करते रहे हैं और आज भी उनको आर्यसमाज से ही कभी ज्योति की किरण के आने की आशा दिखायी देती है। जो लोग निराश हैं, उनसे मेरा निवेदन है कि "प्रयत्न" अपने आप में एक उपलब्धि है।

इस सम्मेलन का मुख्य स्वर मान्य सिद्धान्तों के आधार पर किसी क्रियात्मक व रचनात्मक कार्यप्रणाली को निश्चित करना है। इस सम्मेलन में देश के प्रबुद्ध आर्य विद्वान् अपनी लिखित रचनात्मक योजना को प्रस्तुत करेंगे और पूरे देश के प्रतिनिधि इस योजना को अपने अपने प्रदेशों में क्रियात्मक रूप देने का संकल्प प्रस्तुत करेंगे। इस सम्मेलन में प्रत्येक प्रदेश की स्थिति व वहां की समस्याओं के समाधान की योजना का भी निर्माण होगा।

इस सम्मेलन का उद्देश्य किसी का विरोध नहीं है। सार्वदेशिक सभा, आर्य प्रतिनिधि सभाएं, प्रादेशिक सभा व अन्य आर्य संस्थाएं इस सम्मेलन के निष्कर्षों व निर्णयों को लागू करने के लिए वैधानिक रूप से भले ही विवश न हों पर इस सम्मेलन का नैतिक दबाव उनको इन्हें क्रियात्मक रूप देने की अवश्य प्रेरणा देगा। परोक्षरूप से यह सम्मेलन आर्यसमाज के संगठन को बल प्रदान करेगा। इसी कारण सभी समाजों व संस्थाओं से इस सम्मेलन के लिए सहयोग की अपील की गयी है। इस सम्मेलन में संगठन को बल देने की क्रान्तिकारी योजनाओं पर विचार किया जाना है। इस सम्मेलन को सफल बनाने हेतु आर्य विद्वानों से सुझाव आमन्त्रित हैं।

आर्य समाज बागपत §मेरठ§ का निर्वाचन

प्रधान	-	श्री कुंवर पाल सिंह जी
मंत्री	-	श्री मा० सत्यप्रकाशजी गौड़
कोषा0	-	श्री प्रकाशचन्द जी

आर्यसमाज चांदपुर बिजनौर का निर्वाचन

निर्वाचन अधिकारी श्री सुरेन्द्र सिंह राजपूत मंत्री जिला सभा एवं प्रशासक श्री सुन्दरदास भाटिया द्वारा सम्पन्न कराया गया।

संरक्षक	-	डॉ0 रामेश्वर प्रसाद
प्रधान	-	श्री ब्रह्मपाल सिंह
उपप्रधान	-	बा0 अमीचन्द गुप्ता
मंत्री	-	श्री देवेन्द्रकुमार त्यागी
उपमंत्री	-	श्री राममोहन जिन्दल
कोषाध्यक्ष	-	श्री सत्यप्रकाश आर्य

सभा ने श्री प्रतापसिंह की सदस्यता बहाल करदी है और अन्तरंग के निर्णयानुसार श्री चन्दपाल आर्य एवं श्री राजेन्द्र आर्य की सदस्यता अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दी है।

आर्यसमाज बाष्टा §बिजनौर§

प्रधान	-	डा0 शंकरदास भाटिया
मंत्री	-	श्री दिलाराम वर्मा
कोषाध्यक्ष	-	श्री प्रेमकुमार

आर्यसमाज मन्दिर नेमदार गंज §नवादा§ द्वारा कुंवर वेदपाल जी आर्य भजनोपदेशक द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया गया।

- "आर्य "मरुत"

वैवाहिक विज्ञापन

पूर्व जमींदार/पूर्वी उ0प्र0 में शहरी क्षेत्र के निवासी सम्भ्रान्त आर्य परिवार के एम0टैक/वैज्ञानिक रक्षामन्त्रालय भारत सरकार 26/5"10"/3500/वर हेतु सुशिक्षित सौम्य, सुन्दर गृह कार्य में दक्ष कन्या की एवं उपरोक्त परिवार की एम0ए0बी0एड0/23/5"4"/राजकीय सेवा हेतु प्रयत्नशील कन्या हेतु इंजीनियर वैज्ञानिक या प्रोफेसर शाकाहारी वर की। जाति बन्धन नहीं।

- द्वारा, विश्वप्रकाश वेदालंकार
विश्वभवन, ईशापुर
जौनपुर उ0प्र0

श्री लक्ष्मणदेव वैदिक समिति द्वारा विभिन्न संस्थाओं को दान

गत वर्ष शिक्षा हेतु अनुदान के लिए कोई भी प्रार्थना पत्र प्राप्त नहीं हुआ और न ही निःशुल्क कोचिंग का प्रबन्ध हुआ अतः विधान की धारा 8 के आधार पर उद्देश्य "उस" को ध्यान में रखते हुए भेजी गई दान राशि, जो 30-5-89 को स्वीकार हुई थी, का विवरण इस प्रकार है-

1- जिज्ञासू सरलतम संस्कृत प्रचार समिति, लखनऊ —	रु0 500-00
2- जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ —	300-00
3- आर्यसमाज चौक, लखनऊ §इसमें 200/- गुललाला हेतु§ —	600-00
4- श्रीमद्दयानन्द बाल सदन, मोती नगर, लखनऊ —	200-00
5- आर्य समाज इन्दिरानगर एवं एच0ए0एल0, लखनऊ-	500-00
6- आर्यसमाज महावीरगंज §अलीगंज§ लखनऊ को मेला में वेद प्रचार हेतु-	300-00
7- आर्यसमाज आदर्शनगर, लखनऊ को श्री देव शर्मा पुत्र श्री जानकी प्रसाद की सहायता अर्थ -	रु0 500-00
8- श्री महर्षि दयानन्द-स्मारक ट्रस्ट टंकारा §दिल्ली कार्यालय§	500-00
9- गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड जिला-काला हाण्डु §उड़ीसा§	400-00
10-मातृमन्दिर§कन्या गुरुकुल§ नई बस्ती रामापुरा, वाराणसी	500-00
11-आदर्श गुरुकुल शाही जिला पीलीभीत	500-00
12-गुरुकुल प्रभात आश्रम, भोला झाल टीकरी जिला मेरठ	400-00
13-आर्ष गुरुकुल खानपुर, नारनौल पोस्ट मढ़ाणा-हरयाणा	300-00
हरिवंश - प्रबन्धक	रु0 5500-00

आर्यसमाज अफजलगढ़ §बिजनौर§

प्रधान	-	श्री विजयपाल सिंह
मंत्री	-	श्री यतीश कुमार आर्य
कोषा0	-	श्री चौ0 चरण सिंह

राष्ट्र-अर्चना

रचयिता- हरिनन्दन मिश्र शास्त्री
आयुर्वेदाचार्य ऋषभदेव उदयपुर"-राज.

सभी से प्रथम यहीं मानवीय सृष्टि जगी।
यहीं से प्रकाश मिला विश्व को ललाम है"
यहीं कर्मयोग के बजे हैं पाँच-
जन्य-धन्य।
चक्रवर्तियों की कीर्ति छाई चारों-
धाम है।।
यहीं सच्चे साधु सन्त ज्ञानीध्यानी योगियों का।
नारा गूँजा भूमि भोग वीरों का ही काम है।।
यहीं चरैवेति चरैवेति धारा ध्रुव ध्येय।
प्यारे आर्यभारत का सादर प्रणाम है।।
प्राणी सभ्यता का आदि क्षेत्र यही महाद्वीप।
विविध विधाओं का विधाता सरेआम है।।
यहीं जन्मलेने को तरसते हैं देवगण।
धारणामें धारणा इसीका दिव्यनाम है।।
यहीं से पढ़ाये गये नीति न्याय के सुपाठ,
घोषित यही तो एकमात्र शिक्षाधाम है।।
ज्ञान और विज्ञान के पथ का प्रणेता-रहा,
विश्वगुरु भारत को सादर प्रणाम है।।
यहीं राजसूय अश्व मेधों की मची है धूम।
सूर्यचन्द्र वंशियों का विश्व ही विहार है।।
यहीं क्षात्र और ब्रह्मधर्म के बजे हैं ढोल।
गीता गण्डकी भारती-धर्म का आधार है।।
खड़े हिमराज की विशालता उदारता में।
प्रकृति नदी से पाया सुन्दर शृंगार है।।
चरण पखारता है गंगा का अनूप नीर,
उसी आर्य राष्ट्र को प्रणाम बारबार है।।
सभी से प्राचीन इतिहास पुण्य भूमिका है।
सिन्दूरी उषा का यहीं प्रथम-प्रसार है।।
न्हाते रहे लाखों युगस्वर्णिम सरोवरों में।
गूँजी राष्ट्रवाद की अनूठी जै जैकार है।।
यहीं रचे गये विश्वशान्ति हेतु महामंत्र।
सारी भूमि सप्त मनुओं की चमत्कार है।।
कालकी शिला भी लिखेजिसके प्रयाण गीत"।
ऐसे आये राष्ट्र को प्रणाम-बार बार है।।
धर्म, अर्थ काम मोक्ष का है यही पुण्य क्षेत्र।
यही आर्य पीढ़ियों का निश्चित आगार है।।
यहीं गूंजा है आर्य क्रान्ति का तुमुल घोष।
पंचशील का हुआ यहीं तो आविष्कार है।।
पूरी वसुधा ही मानी एक ही कुटुंब जैसी,
किया न कभी भी जनध्वंस का व्यापार है।।
फौलाद सरीखे दृढ़ आदर्श निभाने वाले।
आर्यावर्त्त देश को प्रणाम बार बार है।।

जिला सभा सहारनपुर का वार्षिक निर्वाचन

प्रतिनिधि सभा के प्रधान पं॰ इन्द्रराज जी ने हरिद्वार में आयोजित सभा एवं उपसभा के अधिकारियों के बीच हुए सर्वसम्मत निर्णय के अनुसार पुनर्गठित जिलासभा सहारनपुर का नवीन निर्वाचन सम्पन्न कराने की घोषणा कर दी है और अधिकारियों को इसकी कार्यवाही आरम्भ करने के आदेश प्रसारित कर दिये हैं। प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान श्री जयनारायण अरुण निर्वाचन अधिकारी के रूप में यथाशीघ्र वहाँ का निर्वाचन सम्पन्न करायेंगे।

— आर्य समाज किरतपुर बिजनौर का वार्षिकोत्सव 14 से 17 अगस्त 89 तक समारोह पूर्वक मनाया गया।

देव स्वामी बलिदान-दिवस

सिरसागंज, 27-7-89, स्थानीय गुरुकुल प्रांगण में, गुरुकुल को अपने रक्त-प्रस्वेद से सींचकर उसे उसके चरमोत्कर्ष तक पहुँचाने वाले महात्मा देव स्वामी जी महाराज का 12वाँ बलिदान-दिवस मनाया गया जिसमें गुरुकुल के प्रभारी कुलपति श्री ब्रजभूषण सिंहजी, कुल सचिव श्री वेद प्रकाश जी तथा मुख्याधिष्ठाता श्री सत्यवीर जी शास्त्री आदि ने बलिदानी महात्मा के प्रति अपनी-अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजलियाँ-समर्पित करते हुए उनके नाम और काम को जीवित बनाये रखने, का दृढ़ संकल्प लिया

- कुँ ध्रुवपाल सिंह "अटल"
मु0 निरी0 आ0प्र0सभा, उ0प्र0

गिनौरा नगली (बुलन्दशहर)

गिनौरा नगली बुलन्दशहर का चौदहवां वार्षिक उत्सव 17, 18, 19 जून को बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। 25 नौजवानों ने यज्ञोपवीत धारण किया व अण्डे व शराब खाना पीना छोड़ा व ब्रह्मानन्द जी के प्रवचनों का भारी प्रभाव पड़ा।

जिलासभा झाँसी

प्रधान - श्री मदनमोहन लिटोरिया
मंत्री - श्री वेदारीलाल आर्य
कोषा0 - श्री निहालचन्द बजाज

आर्यसमाज कंकर खेड़ा, मेरठ

संरक्षक - श्री धर्मपाल कपूर
प्रधान - श्री टी0सी0 सेठिया
मंत्री - श्री आर0एस0 विमल
कोषा0 - श्री धर्मपाल जी

आर्य उपसभा मिर्जापुर का निर्वाचन

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा मिर्जापुर का नवनिर्वाचन दिनांक 27-8-89 को प्रातः 10 बजे से स्थान श्री नागेन्द्र सिंह का आवास चुनार बस स्टैन्ड के पास होगा। अतः जिले के समस्त इकाई समाजों को सूचित किया जाता है कि उचित स्थान एवं ठीक समय से पधार कर चुनाव को सम्पन्न कराने के सहयोग प्रदान करें।

कपिल देव आर्य
मंत्री

आर्य युवकों के कृष्ण आओ

● लक्ष्मीनारायण शास्त्री, साहित्यरत्न
महोपदेशक आर्यसमाज लौकहवा, गोण्डा।

कृष्ण के उज्ज्वल सुपावन चरित्र पे,
भक्ति कालिमा का प्रसार आज छा रहा।
चारों ओर देखो दुकूल माखन चोर कृष्ण,
कृष्ण की रटन आज हिन्दु जन कर रहा।
आज घर-घर में देखो राधेश्याम चित्र,
चित्र चलचित्र अभिनेत्री सा लग रहा।
झांझ औ मृदंग पीट आज रातभर देखो,
राधेश्याम-राधेश्याम गीत हिन्दू गा रहा।
कृष्ण का उज्ज्वल स्वरूप महाभारत भूल,
युवक आज घर में रसिक कृष्ण गा रहा।
आर्य युवक कृष्ण ने गोपाल संगठन कर,
गोवध कंस मार गोवध बन्द किया।
क्रूर दुष्ट शकुनि दुःशासन जयद्रथ आदि,
दुष्ट दुर्योधन औ अर्जुन लड़ा दिया।
गुरु द्रोणाचार्य और पितामह भीष्म ब्रह्मचारी,
कौरवों के संग में उन्हें भी मिटा दिया।
ब्रह्मचर्य पालन कर कृष्ण योगिराज बन,
गीता का उपदेश दे वैदिक पथ दिखा दिया।

आर्यसमाज ठिंगरी (शाहजहाँपुर)

प्रधान - श्री हरिपाल सिंह
मंत्री - श्री सुनील कुमार आर्य
कोषा0 - श्री धर्मपालसिंह आर्य

आर्यसमाज शाहजहाँपुर

प्रधान - डा0 शान्तिदेव
मंत्री - श्री कृष्णमोहन वर्मा
कोषा0 - श्री वीरेन्द्र वर्मा

आवश्यक सूचना

समस्त विद्यालयों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य/अध्यापकों को सूचित किया जाता है कि माननीय उच्च न्यायालय के आदेशानुसार अब विद्यालयों में श्रम विभाग का हस्तक्षेप न होगा। इच्छुक व्यक्ति न्यायालय के आदेश की प्रति 6/- रु0 भेजकर प्रधान कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उ॰प्र॰ 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ से प्राप्त कर सकते हैं।

- सभा मंत्री

पृष्ठ ५ का शेष...

इस उपर्युक्त विवरण से तो शाखाओं के सम्बन्ध में यह पूर्णरूपेण निश्चय हो जाता है कि शाखाएँ वेदों के भाग अथवा अंश न होकर भेद ही हैं।

महाभाष्य में वेदों की शाखाओं की सं0 1131 लिखी है, सर्वानुक्रमणी में 1137 लिखी है, चरणव्यूह में मात्र 116 ही लिखी हैं। इसी प्रकार अन्य अनेक ग्रन्थों में मनमानी संख्यायें लिखी हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि मूलरूप में आर्यशाखाओं का ही पता लगा लिया जाय।

जिस काल में गोत्र एवं शाखाप्रचार का कार्य तीव्रगति के साथ चल रहा था, उस समय प्रत्येक वेद की अनेक शाखाएँ हो गई थीं। मूल-मन्त्रों की वास्तविकरूप में रक्षा करते हुये मात्र मन्त्रों के उलटफेर की दृष्टि से जितनी भी शाखाओं की सम्भावना हो सकती थी, उतनी हो गईं। इन्हीं शाखाओं को आर्य-शाखा कहा जा सकता है।

ऋग्वेद की शाखाएं

महाभाष्य के उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार "एकविंशतिधा वाह्वृच्यम्" ऋग्वेद की इक्कीस शाखाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। इन 21 में से केवल पाँच शाखाओं का नाम अथवा कुछ साहित्य भी उपलब्ध होता है। शेष के तो नाम भी सँदिग्ध प्रतीत होते हैं। शौनक द्वारा कथित "चरणव्यूह" नामक परिशिष्ट ग्रन्थ में इन पाँच शाखाओं के निम्नलिखित नाम उपलब्ध होते हैं:-
§1§ शाकल §2§ बाष्कल §3§ आश्वलायन §4§ सांख्यायन और §5§ माण्डूकायन।

इन पाँचों में भी शाकल और बाष्कल दो ही शाखाएँ उपलब्ध होती हैं। इस सम्बन्ध में "ऋक्-प्रातिशाख्य" में लिखा है:-

"ऋचांसमूहऋग्वेदस्तमभ्यस्य प्रयत्नतः।
पठितः शाकलेनादौ चतुर्भिस्तदनन्तरम्।।"

अर्थात् ऋग्वेद की सम्पूर्ण ऋचाओं का यत्नपूर्वक भलीभांति अध्ययन करके, प्रारम्भ में सर्वप्रथम "शाकल" नामक ऋषि ने शाकल शाखा का रूप प्रदान किया। तत्पश्चात् अन्य चार शाखाकारों ने शेष चार शाखाओं का प्रवचन किया। उपर्युक्त उदाहरण से प्रतीत होता है कि शाकल-ऋषि अत्यन्त प्राचीन हैं तथा उनकी प्रामणिकता सर्वमान्य है क्योंकि शाकल संहिता के सम्बन्ध में "एतरेय-ब्राह्मण" में भी लिखा है:-

यदस्य पूर्वमपरं यदस्य यदस्य परं तदस्य पूर्वम्।
अहेरिव सर्पणं शाकलस्य न विजानाति यतरत् परस्तात्।।
§§ऐतरेय ब्रा0 14/5§§

अर्थात् शाकल संहिता का जैसा आदि है वैसा ही अन्त भी है तथा जैसा अन्त है वैसा ही आदि है। जिस प्रकार सर्प की चाल आदि से अन्त तक एक समान रहा करती है उसी भाँति शाकल-संहिता का भी क्रम एक ही समान है। इस उदाहरण से शाकल-ऋषि की प्राचीनता तथा उनकी शाखा की एकरसता स्पष्टरूप से परिलक्षित होती है। ■

पृष्ठ ६ का शेष...

मंत्र में परमात्मा और आत्मा का दृष्टांत देकर वेद ने किसी वैज्ञानिक सिद्धांत की चर्चा नहीं की। आध्यात्मिक सत्यों के साथ अगर कहीं भौतिक सत्य जुड़े हुए हों, तो उसका यह अर्थ नहीं है कि वेद भौतिक नियमों का प्रतिपादन कर रहा है। फिर भी, सम्भव है वेद में कहीं-कहीं भौतिक सिद्धान्तों का भी उल्लेख कर दिया गया है। जैसा पं0 गुरुदत्त जी के लेखों से अभिप्रेत होता है, तो भी यह तो मानी हुई बात है कि वेद भौतिक का उदाहरणात्मक, किन्तु आध्यात्मिक का विशेष तौर पर उल्लेख करते हैं, क्योंकि भौतिक तो मनुष्य स्वतंत्र रूप में, बिना वेद के बताये, खोज सकता है, आध्यात्मिक को खोजे भी तो नहीं खोज सकता, उसे तो बताया ही जा सकता है। इसमें सन्देह नहीं कि कहीं-कहीं वेद में कई भौतिक सिद्धांतों की तरफ इशारा है। उदाहरणार्थ, हिरण्य गर्भ में संसार के आदि काल में नेबुला था-इसका उल्लेख कई वैज्ञानिकों ने किया है, "आ कृष्णेन रजसा" मंत्र में आकर्षण-शक्ति की तरफ इशारा है--परन्तु इतने से वेद में सब भौतिक विज्ञान हैं- यह नहीं कहा जा सकता। अगर वेद ने सब भौतिक यंत्रों का प्रतिपादन करना था तो वेदों के उपवेद क्यों बने, उपवेदों के भी आगे-आगे ज्ञान का विकास होता गया। यह सब देखकर यही कहा जा सकता है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, परन्तु वे सत्य विद्यायें जो मानव मस्तिष्क से नहीं जानी जा सकतीं, जो परमात्मा द्वारा ही दी जा सकती हैं, ऐसी सत्य विद्यायें वही हैं जो आध्यात्मिक हैं भौतिक नहीं।

(घ) उक्त सब विचारों का समन्वय :-

वेद-ज्ञान के संबंध में हमने तीन विचार दिये हैं। चौथा विचार यह है कि वेद मुख्य तौर पर आध्यात्मिक ग्रन्थ हैं, उनमें वही कुछ है जो अपनी बुद्धि से नहीं पाया जा सकता, किन्तु वेद में ऐसे तथ्य भी उपलब्ध हैं जो भौतिक या बुद्धि से उपलब्ध हो सकते हैं, परन्तु वे मुख्य न होकर उदाहरण रूप हैं। इस विचार में सब विचारों का समन्वय हो जाता है। बुद्धिगम्य हैं, परन्तु आधिभौतिक हैं, अबुद्धिगम्य हैं, परन्तु आध्यात्मिक हैं। इस दृष्टि से वेदों पर विचार किया जायगा तो सभी शंकाओं का समाधान हो जायगा।

-क्रमशः

आर्य समाज गंगोह का निर्वाचन विवाद शान्त

आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री जयनारायण अरुण द्वारा आर्य समाज गंगोह जिला सहारनपुर का निर्वाचन सम्बंधी विवाद शान्त कर दिया गया है और श्री संग्राम सिंह की अध्यक्षता में वहां के पदाधिकारियों की सूची घोषित कर दी गयी है। सभा के प्रधान पं. इन्द्रराज और मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने समाज के सदस्यों से नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को अपना पूरा सहयोग देने और समाज एवं कालेज को उत्थान की ओर अग्रसारित करने की अपील की है।

आर्य समाज किरावली (आगरा)

प्रधान - श्री रामवीर सिंह एडवोकेट
मंत्री - श्री महेन्द्र सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री प्रेमचन्द बंसल

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्यमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र

नारायण स्वामी भवन, ५- मीराबाई मार्ग, लखनऊ

दूरभाष : ४५६६३

पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी ७६

भाद्रपद कृष्णा- ११

२७ अगस्त रविवार, १९८९ ई

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें :-

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह जून, जुलाई 1989 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी0पी0 भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु0 हो गया है।

जून

548, 2251, 2478, 2568, 4462, 6151, 8786, 9161, 9182, 10178, 10180, 11210, 12206, 12214, 12679, 12680, 12913, 13129, 13479, 13483, 13486, 13885, 13896, 13904, 13906, 13909, 13910, 13915, 13917, 13918, 14280, 14281, 14285, 14288, 14290, 14291, 14298, 14750, 14751, 14752, 14753, 14754, 14755, 14756, 14757, 14758, 14759, 14760, 14761, 14762, 14763, 14764, 14765, 14766, 14767, 14768, 14770, 14771·

जुलाई

11945, 12265, 12269, 12308, 12692, 12941, 13133, 13136, 13173, 13507, 13511, 13922, 13923, 13925, 13926, 13928, 13946, 14300, 14304, 14305, 14307, 14308, 14311, 14313, 14315, 14321, 14772, 14773, 14774, 14775, 14776, 14777, 14778, 14780· 14781, 14782, 14783, 14784, 14785, 14786· 511, 629, 631, 748, 749, 1348, 2190, 2944, 2966, 4982, 5632, 6476, 6888, 8887, 8975, 9201, 10183, 10185 ।

व्यवस्थापक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि० सं० २२४१/५७) भाद्रपद शुक्ल-३, रविवार-संवत २०४६ वि०, दिनांक ३ सितम्बर १९८९ (घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-७५)



प्रियं मा कृणु देवेषु -
प्रियं राजसु मा कृणु -
प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रे उतार्ये-
-अथर्ववेद

परमेश! हमको,- ब्राहमणोंका,
शक्तिशाली क्षत्रियों का,
दर्शकों के चक्षुओं का,
प्रिय शूद्र का, प्रिय वैश्य का-

प्राणप्यारा दे बना -----

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु. २५१/-
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१.०० रु. मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ३५

कः वेदानुद्धरिष्यति

----- आज मैं देख रहा हूं इस प्यारी धरती पर जहां कभी वेदों की ऋचाएं गूजां करती थीं, शाम होते ही देश के नौनिहाल शराब की दुकानों में लाइन लगाकर खड़े हो जाते हैं। लक्ष्मण के देश में जिसने सीता के गले के हार को सिर्फ इसलिए पहिचानने से मना कर दिया था क्योंकि उसने सीता के केवल चरणों के ही दर्शन किए थे मुख के या गले के नही, मैं देख रहा हूं नारीजाति पर भीषण अत्याचार हो रहा है। मैं देख रहा हूं सड़क पर चलती हुई बालिकाओं पर फूहड़ता से भरी हुई फब्तियाँ, बोलियाँ और सीटियाँ। मैं देख रहा हूं शिष्य को ज्ञान की धारा में बहा ले जाने वाले गुरुओं की जमकर पिटाई करते हुए उनके शिष्यों को। मैं देख रहा हूं भ्रष्टाचार, अनाचार, पापाचार को जड़मूल से नष्ट करके सुन्दर-समाज की रचना करने का दम्भ भरने वाले नेताओं को भ्रष्टाचार के पंक में सने हुए। मैं देख रहा हूं जिस देश में नारी पूजा के स्थान पर बिठाई जाती थीं, एक स्कूटर के लिए नही नहीं एक साईकिल के लिए ज्वालाओं के बीच धधकती, चीखती चिल्लाती हुई उसकी कोमलकाया को। मैं देख रहा हूं वित्तैषणा, लोकैषणा, पुत्रैषणा का त्याग करके वृद्धावस्था में संसार के उपकारार्थ भ्रमण करने वाले त्यागियों, तपस्वियों, सन्यासियों को, वित्त की अपार सम्पदा रूपी नदी के अथाह तल में अवगाहन कर रहे हैं नहीं नहीं गोते लगा रहे हैं। मैं देख रहा हूं स्वातन्त्र्योत्तर प्रभात की किरणें अभी उदित भी नहीं हो पायी हैं कि काले-काले बादलों ने मेरे देश को चारों ओर से घेर लिया है। दिग्विजयी राम के वंशजों को छोटे से मुल्क ने ललकारा है।

मैं देख रहा हूं सत्यवादी हरिश्चन्द्र के देश में सच बोलना पाप समझा जाता है। सृष्टि की इस लम्बी अवधि में पहिले भी कभी ऐसा समय आया था या नही- मैं नही कह सकता। परन्तु इतना विश्वास है कि आर्यजाति की रक्षा करने के लिए कोई न कोई महान् आत्मा वैदिक-नाद के साथ ऐसे समय में उठ खड़ी हुई है क्योंकि वेद की ऋचाएं आज भी अनन्त आकाश में गुजांयमान हो रही हैं। मेरे मन्दिरों में प्रातः होते ही वेद ध्वनियों के साथ यज्ञ प्रारम्भ हो जाता है। मेरे गुरुकुलों में पीताम्बरधारी बालब्रह्मचारी सस्वर वाणी में प्रभु की अमृतवाणी का उच्चारण करते दिखाई देते हैं। अभाव और कष्ट में त्राहिमाम् त्राहिमाम् पुकारती हुई जनता के बीच मेरे अधिकारी मेरे नेता सर पर कफन बान्धकर सहायता के लिए दौड़ पड़ते हैं। विधर्मियों, अत्याचारियों के क्रूर जबड़ों में कुचली हुई अबलाओं को मेरे युवा आर्य वीर जान पर खेलकर बचा लाते हैं। उसे समाज में सम्मान देकर उसकी रक्षा करते हैं। याचना करने पर मेरे मन्दिरों में धन की अपार वर्षा होने लगती है।

इसलिए संसार की मानवता! तुझे निराश होने की आवश्यकता नहीं है मैं जीवित हूं, सशक्त हूं, सचेत हूं। मैं वेदों का उद्धार करूंगा--अहं **वेदानुद्धरिष्यामि...** मुझे प्यार और सहयोग तो दीजिए ----- मैं हूं आपका **आर्यसमाज**।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
———राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ-भाद्रपद शुक्ल-३ संवत २०४६ वि० ३ सितम्बर १९८९, दयानन्दाब्द १६५ सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

सम्पादकीय

देशद्रोह कहाँ पनप रहा है?

15 अगस्त के पावन स्वातन्त्र्यदिवस पर जब सम्पूर्ण राष्ट्र भारत माँ की वन्दना कर रहा था, राष्ट्रीय ध्वज को नमन करते हुए उन अमर बलिदानी सपूतों की पुण्यस्मृति में श्रद्धासुमन अर्पित कर रहा था जिनके उत्सर्ग और जिनकी प्रेरणा से हमारे देश में नवस्वातन्त्र्य का सूर्य उदित हुआ है- उस समय काश्मीर में सार्वजनिक स्थानों पर राष्ट्रीय ध्वज की होली जलाई जा रही थी। पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे गूंज रहे थे। बिजली के खम्भों पर पाकिस्तानी राष्ट्रपति स्वर्गीय जनरल जिया के चित्र टांगे जा रहे थे। पुराने सचिवालय पर पाकिस्तानी झण्डा फहराया जा रहा था और लगभग पूरी काश्मीर घाटी तीन दिनों से बन्द रखी जा रही थी ऐसा मालूम हो रहा था पूरे काश्मीर में भारत की स्वतन्त्रता और भारतीयता के लिए कोई आदरभाव ही नहीं है। स्थानीय शासन मूक होकर देख रहा था, असहाय था, या तो कुछ करना ही नहीं चाहता था और चाहता भी था तो विवश था। देशद्रोही तत्व खुलकर पाकिस्तानपरस्तों का साथ दे रहे थे और ऐसा मालूम हो रहा था जैसे काश्मीर भारत का नहीं पाकिस्तान का कोई भूभाग है। किसी विदेश में यदि यह स्थिति हुई होती तो वहाँ का प्रशासन कितना कड़ा रुख अख्तियार करता- इसकी कल्पना ही की जा सकती है।

काश्मीर की विशेष परिस्थिति को देखते हुए तथा पं० नेहरू की इच्छाओं का सम्मान रखने के लिए हमने संविधान की धारा 370 के तहत उसे विशेष दर्जा दिया था। वहाँ के निवासियों का जीवन स्तर उठाने, तथा आजादी के खुले वातायन में सुख का जीवन व्यतीत करने के लिए हमने वहाँ की वशंपरम्परीय राज्यतन्त्र व्यवस्था को समाप्त कर जनतन्त्रीय व्यवस्था लागू की थी और यह आशा की थी कि काश्मीर का रहने वाला प्रत्येक काश्मीरी चाहे वह किसी धर्म या उपासना पद्धति में विश्वास रखता हो, पहिले भारतीय होगा। इस देश की जीवनधारा और इस देश की स्वतन्त्रता से उसका तादात्म्य होगा। इस देश को अपनी पुण्यभूमि और पितृभूमि समझेगा। पर यह सब दिवास्वप्नवत् सिद्ध होता जा रहा है।

काश्मीर भारत का मुकुट है, वह मस्तिष्क है जहाँ से कभी हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों ने संसार में ज्ञान की अजस्र धारा प्रवाहित की थी। जो लोग काश्मीर को अरबी या फारसी की उपज मानते हैं, वे भूल में हैं। काश्मीर या कश्मीर शब्द ठेठ संस्कृत का है। यह प्रदेश "कश्यप" मुनि की स्मृति में "कश्यपमीर" के नाम से बसाया गया था। "कश्यप" मुनि का नाम और "मीर" शब्द संस्कृत के हैं। मीर का मुख्य अर्थ है समुद्र तथा मुख्य पर्वतीय अंश। अतः काश्मीर या कश्मीर का भाव हुआ- वह पहाड़ी प्रदेश {मीर} जो कश्यप मुनि के नाम पर है। इसी प्रकार "जम्बू" शब्द भी बहुत पुराना है। प्रत्येक संकल्प में हम "जम्बूद्वीपे भरतखण्डे" कहकर सृष्टि के आदिकाल से चली आ रही पुरातन परम्परा और अपनी पावन संस्कृति को याद करते हैं। दोनों शब्दों का प्रयोग "महाभारत" (रचनाकाल ईसा से लगभग 3000 वर्ष पूर्व) और "राजतरंगिणी" जैसे प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। अन्य अनेक संस्कृत ग्रन्थों में भी इसका वर्णन आता है।

महाभारत का श्लोक- "जम्बूमार्ग समाविश्य
देवर्षिपितृ सेवितम्।
काश्मीरेष्वेव नागस्य
भवनं तक्षकस्य च।।

अर्थात्- देवता, ऋषि और पितृ निषेवित जम्बू मार्ग पर अवस्थित काश्मीर में तक्षक नाग का भवन है। यह श्लोक "महाभारत" के वनपर्व से लिया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य संस्कृत ग्रन्थों में भी इस पर्वतीय प्रदेश को आर्यावर्त्त का नैसर्गिक सुषमा सम्पन्न शीर्षस्थ प्रदेश माना गया है। ऐसे सुन्दरतम प्रदेश को हमारे राष्ट्र से अलग करने का भीषण कुचक्र चल रहा है। हम अपने राष्ट्र के उदीयमान कर्णधारों को महा कवि माघ की निम्न पंक्तियाँ स्मरण कराना चाहते हैं-

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।

जो मायावियों के साथ मायावी {यथायोग्य} व्यवहार नहीं करते हैं वे पराभव को प्राप्त होते हैं। इसलिए अब समय आ गया है हमारे कूटनीतिज्ञ राजनीतिज्ञ कर्णधारों को काश्मीर के सम्बन्ध में एक नई राष्ट्रीय नीति की सर्जना करनी होगी- । अन्यथा ——

आचार्य दत्तात्रेय अमेरिका के विश्वविद्यालय द्वारा आमंत्रित

अमेरिका के "मार्शल विश्वविद्यालय" नामक प्रख्यात विश्वविद्यालय ने आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान नेता आचार्य-दत्तात्रेय आर्य को अगस्त, 89 में भारतीय अध्ययन से संबंधित अपने विभाग में विशेष व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया है। आचार्यजी के व्याख्यानों का विषय "उन्नीसवीं-शताब्दी में भारत के धार्मिक एवं सुधार आन्दोलन" होगा।

हमारे पाठक क्या कहते हैं

श्रीमान् सम्पादक जी,

"आर्यमित्र" की वर्तमान् साज-सज्जा से हृदय अति प्रसन्न है। अपनी शताब्दी की ओर अग्रसर यह पत्र अपनी गौरव गाथा स्वतः कह रहा है, एतदर्थ मेरी भी शुभकामनाएँ आप सहृदय स्वीकार करें। "अंग्रेजी-हटाओ" क्रमशः लेख अत्यन्त सामयिक उपयोगी एवं तथ्यों से भरा हुआ है, उसके लेखक श्री वेदप्रताप जी हिन्दी के श्रेष्ठ-पुरोधा हैं।

- रामज्ञा मिश्र "आर्यपुत्र"
मंत्री आर्यसमाज भागलपुर, देवरिया।

डा० दाऊजी गुप्त लखनऊ के मेयर

डा० दाऊजी गुप्त उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के तीसरी बार मेयर चुने गए हैं। इस अवसर पर उन्होंने नगर में निवास करने वाली 14 लाख जनता को आश्वासन देते हुए कहा है कि उन्होंने विभिन्न देशों में जाकर स्थानीय निकायों के बारे में गहराई से अध्ययन किया है। उनका प्राथमिक लक्ष्य नगर का सौन्दर्यीकरण, सफाई तथा आम जनता को अधिक से अधिक नागरिक सुविधाएं उपलब्ध कराना है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० के मन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने उ०प्र० की आर्यजनता की ओर से उन्हें बधाई दी है।

बाढ़पीड़ितों की सेवा

- आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधिसभा, नई दिल्ली के कार्यकर्ता प्रधान श्री दरबारीलाल तथा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री राम नाथ सहगल आन्ध्रप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र आदि राज्यों में सभा द्वारा संचालित बाढ़ राहत केन्द्रों का निरीक्षण करने जा रहे हैं। जो भी राशि, खाद्य सामग्री तथा कपड़े आदि प्राप्त हो रहे हैं, वे बाढ़ राहत केन्द्रों पर भिजवायें जा रहे हैं।

आन्ध्र प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, असम और उड़ीसा आदि में आई भयंकर बाढ़ से धन-जन की बड़ी हानि हुई। सैकड़ों व्यक्ति मारे गये हैं और हजारों बेघर हो गये हैं। आर्यजनों से प्रार्थना है कि वे अधिक से अधिक राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट एवं मनीआर्डर तथा नकद राशि आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के नाम "केवल खाते में" आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली के पते पर भिजवाने की कृपा करें और पुण्य के भागी बनें।

नये विनियोग - नयी परम्परायें

— स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

1- लगभग 75 वर्ष की आर्यसमाज सम्बन्धी परम्पराओं से मेरा परिचय रहा है। कुछ याद है, कुछ भूल गयीं। कुछ ने आर्यसमाज के गौरव को बढ़ाया और कुछ निश्चय पूर्वक आर्यसमाज के पतन का कारण बनीं। आज अपनी 84 वर्ष की आयु में जब इस इतिहास पर विचार करता हूँ तो लगता है, कि इतना शीघ्र ऋषि दयानन्द के नाम को गुंजायमान करते हुए, हम दयानन्द से कितना अलग हो गए, और होते जा रहे हैं।

2- शान्तिपाठ- {क} आर्यसमाज में कतिपय मन्त्र अत्यन्त लोकप्रिय हुए हैं। उनमें से एक मंत्र {शान्तिपाठ" के नाम से प्रचलित है- मंत्र है- द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः0" {यजु0 अध्याय 36, मंत्र 17}। स्वामी दयानन्द ने इस मंत्र का प्रयोग {शान्ति करणम्} मंत्रों की सूची में 18 वाँ मंत्र करके किया है, और पूना प्रवचन में एक प्रवचन इस मंत्र को आदि में बोलकर आरम्भ किया था।

अधिवेशनादि प्रत्येक कृत्य के अन्त में इस मंत्र को पढ़ने का भीषण प्रयोग, मालूम नहीं, कब से और किसने किया।

{ख} उपनिषदों के परम्परागत परिपाटी में 10 मंत्र {साम्प्रदायिक} प्रारम्भ में पढ़े जाने का प्रचलन रहा है। "शंन्नोमित्रः0" सहनाववतु0, पूर्णाद, पूर्णमिदं0, आदि, जिनके अन्त में ओं, शान्ति शान्तिः शान्ति " इस प्रकार का ही शान्ति पाठ है। ऋषि-दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश का प्रारम्भ शन्नो मित्रः से और ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका का सहनाववतु0 से किया है एवं संस्कार विधि का भी प्रारम्भ सहनाववतु0 से किया है।

इन तीनों ग्रन्थों में ओं शान्तिःशान्तिः शान्तिः इन शब्दों में ही शान्ति पाठ है।

मुझे स्मरण है कि कई वर्ष हुए बम्बई सान्ताकुज आर्यसमाज में एक छोटी गोष्ठी उपनिषद सम्बन्धी थी। गोष्ठी के समापन पर विद्वान आचार्य ने शान्तिपाठ करने को कहा- द्यौः शान्ति वाले मंत्र से, मैंने रूकवा दिया क्योंकि उपनिषद की परम्परा में केवल "ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः" इतने ही पाठ की पुरानी परम्परा है। स्मरण रखना चाहिए कि समस्त उपनिषदों के प्रारम्भ और अन्त में जो शान्ति वचन हैं, वे ओं शान्तिःशान्तिः-शान्तिः इस वाक्य सूत्र से ही समाप्त होते हैं।
द्यौः शान्ति का मंत्र पाठ न तो पुरानी परम्परा का द्योतक है और न ऋषि दयानन्द द्वारा अनुमोदित।

3- शान्ति रण के मंत्र- मैं एक बार पूर्वी-अफ्रीका के देश तंजानियों की राजधानी दारएस- सलाम में था। वहाँ एक मित्र ने गम्भीरतापूर्वक पूछा स्वामी जी हम लोगों को कब स्वस्तिवाचन के मंत्र पढ़ने चाहिए और कब शान्तिकरण के। ऋषि दयानन्द ने दोनों के पाठों में कोई अन्तर निर्दिष्ट नहीं किया है।

पंजाबियों ने जहाँ आर्यसमाज की प्रगति में जोश पूर्वक भाग लिया है वहाँ अनेक कुप्रथाओं के उत्तरदायी भी वे हैं। अन्त्येष्टि संस्कार के समाप्त होने पर ऋषि के ये शब्द हैं- {तत्पश्चात जब "तत्पश्चात् जब तीसरा दिन हो, तो मृतक का कोई सम्बन्धी शमशान में जाकर चिता से अस्थि उठा के उस शमशान भूमि में कहीं पृथक रख देवें। बस इसके आगेमृतक के लिए कुछ भी कर्म- कर्तव्य नहीं है" पंजाबियों के परिवारों में मृत्यु पर रोने के लिए {सयापा की परिपाटी} रोने वालियाँ किराये पर बुलाई जाती हैं और फिर एक दिन पगड़ी की रसम होती है, कुछ पुरानी रस्मों को तोड़कर आजकल पंजाबियों ने कई दिनों तक यज्ञ कराने की रस्म भी चला रखी है। इस यज्ञ श्रृंखला का नाम "शान्ति यज्ञ" रखा है। शान्तियज्ञ में शान्ति करण मंत्रों की आहुतियों की परिपाटी हमारे याज्ञिक पुरोहितों ने डाल दी। यह प्रसंग मुझे पहलीबार दार-एस- सलाम में पता चला अगर कहीं शान्तिकरण के मंत्र पढ़े जा रहे हों तो अनुमान लगा सकते हैं, कि किसी मृतक के प्रसंग में यह यज्ञ कराया जा रहा है।

शान्तिकरण के मंत्रों से आहुतियाँ देने का यह नया विनियोग पंजाबियों से आरम्भ दिल्ली में तो हमारे पुरोहितों का अच्छा खासा धन्धा इन शान्तियज्ञों से चलता है।

4- पूर्णाहुति के मंत्र- स्वामी दयानन्द ने एक दो स्थलों पर पूर्णाहुति शब्द का प्रयोग संस्कारविधि में किया है।

1- सामान्य प्रकरण में- पुनः निम्नलिखित मंत्र से पूर्णाहुति करें। स्रुवा को "घृत से भरके" ओं सर्वं वै पूर्णं स्वाहा। इस मंत्र से एक आहुति देवें। ऐसी दूसरी, तीसरी, आहुति देके {दक्षिणा देना खिलाना पिलाना सब करें}।

याद रखिये- "स्रुवा को घृत से भरके" जो आहुति दी जाती है, उसे पूर्णाहुति कहते हैं।

पूर्णाहुति का मजाक तो वेद-परायण यज्ञों के सम्पर्क में देखने में आया। यज्ञ आज आरम्भ हुआ है- अगले रविवार को पूर्णाहुति होगी ऐसी घोषणा होती है। यह परायण यज्ञ हमारी दूकानदारी बन गया है। प्रत्येक यज्ञ में कई-कई धनीमानी व्यक्ति यजमान के रूप में बिठाये जाते हैं। यजमान रोज नये होते हैं। पूर्णाहुति के दिन सभी यजमान उपस्थित होंगे और दान दक्षिणा से यज्ञ के नेता की वित्तैषणा की पूर्ति होगी। यह आर्यसमाज का नया भयंकर रूप हमारे सामने उपस्थित हो गया है। स्मरण रखिये कि "पूर्णाहुति" स्रुवा को घी से पूरा भरकर" आहुतियाँ देने का नाम है।

पूर्णाहुति का कोई सम्बन्ध पूर्णमदः पूर्णमिदं0, मंत्र से नहीं है। घी से स्रुवा पूरा भर देने की एक झलक यजुर्वेद के निम्न मंत्र में भी है।

पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णापुनरापत {यजु 3/49}

पर यह मंत्र भी यज्ञ की अन्तिम आहुति है, ऐसा मान कर आहुति देने का पोषक नहीं है।

विवाह संस्कार की उत्तर विधि में निम्न 6 मंत्रों से पूर्णाहुतियाँ {स्रुवा घी से पूरा भर के} देने का विधान है। इन 6 मंत्रों में से मैं नीचे पहला मंत्र उद्धृत कर रहा हूँ।

"लेखा सन्धिषु पक्ष्मस्वा वर्त्तेषु-
च यानि ते तानि पूर्णाहुत्या।
सर्वाणि शमयाम्यहं स्वाहा इदं
कन्यार्यै इदं न मम ।।

इसी प्रकार की पाँच और पूर्णाहुतियाँ हैं। स्वामी जी ने संस्कार विधि में एक पूर्णाहुति ओं भूः स्वाहा- इस मंत्र के द्वारा भी दिलायी है। इस पूर्णाहुति के पूर्व ।। सामान्य आहुतियाँ अग्नेय स्वाहा, भूः प्रजापतये स्वाहा, इन्द्राय स्वाहा आदि मंत्रों से भी हैं।

"ओं भूः स्वहा" वाली पूर्णाहुति के बाद ही शतपथ के निम्न महत्वपूर्ण संकल्प है -

पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्चोत्थायाथ भिक्षाचर्यं चरन्ति।"

पूर्णाहुति का जो पाखण्ड हमारे बिना-व्यापारी पुरोहितों और आचार्यों ने आज 25-30 वर्षों से चला रखा है वह आर्यसमाज के लिए दयनीय और चिन्तनीय प्रसंग है। इस विषूचिका रोग को अब रोकना कठिन प्रतीत हो रहा है।

डा. सत्यकेतु विद्यालंकार विशेषांक

सुप्रसिद्ध इतिहासकार, मूर्धन्य वैदिक विद्वान डा0 सत्यकेतु विद्यालंकार की स्मृति में आर्य सन्देश का विशेषांक 17 व 24 सितम्बर 1989 प्रकाशित किया जा रहा है। आर्यसमाजों, शिक्षण-संस्थाओं, सभाओं और डा0 साहब के सान्निध्य में रहे, उनके परिजनों से निवेदन है कि इस अंक में प्रकाशनार्थ अपने श्रद्धासुमन, संस्मरण तथा उनके साहित्य से संबंधित समीक्षात्मक लेख यथा शीघ्र भेजकर कृतार्थ करें। व्यापारिक संस्थानों के अधिकारियों से निवेदन है कि 20×30-8 के आकार में प्रकाश्य इस विशेषांक में अपने विज्ञापन देकर सहयोग देने की कृपा करें।

- सूर्य देव, प्रधान सम्पादक,
आर्य सन्देश, दिल्ली आर्य प्रतिनिधिसभा
15- हनुमान रोड, नईदिल्ली-110001

उसके पास वेदार्थ की कुंजी थी

• डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
भू. पू. कुलपति गुरुकुल वि. वि. कांगड़ी

गतांक से आगे---

आज के युग में अगर कोई वेद-मंत्रों के बल पर सिद्ध कर दे कि वेद में रेलगाड़ी या हवाई जहाज़ के निर्माण की विधि का उल्लेख है तो वैदिकधर्मी बल्लियों उछल पड़ेंगे और चिल्लाते फिरेंगे कि देखो-वेद कितने उच्च-कोटि के ग्रन्थ हैं, उनमें रेल, तथा हवाई जहाज के निर्माण वर्णन मिलता है। प्राचीन-काल का वैदिक-युग का ऋषि इस दृश्य को देखकर हंस देगा और कहेगा कि कितने मूर्ख हैं ये लोग जो रेल और तार का नाम सुनकर अपनी बपौती को भूल जाते हैं। क्या रखा है इन रेल, तार, हवाई जहाज़ में जिनके रोज़ एक्सीडेंट होते हैं और जिनमें असहाय बाल-बच्चे मौत के घाट उतरते हैं। वेद का ज्ञान इन भौतिक बातों के लिये नहीं दिया गया ये मनुष्य के खिलौने हैं जो नित बनते-बिगड़ते हैं। वेदों का ज्ञान उस आध्यात्मिक सत्य का उदघाटन करने के लिये दिया गया है जिसके लिये स्वयं वेद ने कहा है: "पश्य देवस्य काव्यम् न ममार न जीर्यति"- भगवान के उस काव्य को देखो जो न कभी बुढ़ाता है, न क्षीण होता है। वह अध्यात्म-ज्ञान मानव के प्रयत्न से प्राप्त नहीं होता, वह भगवान् के देने से ही प्रसाद रूप में मिलता है। हम पिछले लेखों में इस बात पर बल देते आ रहे हैं कि ईश्वरीय-ज्ञान की कुंजी छिपी पड़ी है- उसे खोज करने की ज़रूरत है। जो खोजेंगे वे पायेंगे। वह खोज भौतिक न होकर आध्यात्मिक है। उपनिषदों की परिभाषा में जो-कुछ हम दुनिया में टक्करें मार-मार कर पाते हैं और जिसे पाकर हम अपना जीवन धन्य मानते हैं, वह "अविद्या" है, और जिसे हम भूले हुए हैं, जिसकी तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता, वही वास्तव में "विद्या" है। "अविद्या" बेकार नहीं है, उससे मनुष्य मृत्यु को लांघ जाता है, दुनियां के अन्दर रहने लायक बना रहता है, परन्तु "विद्या" को पाकर वह मृत्यु को ही नहीं लांघता, वह अमर हो जाता है, अमृत को प्राप्त करता है। वेद-ज्ञान से उन्हें सनातन-सत्य हाथ लगता है जो सदा टिकने वाला तथा स्थिर है। यह सत्य क्या है?

हम तीसरे लेख में लिख आये हैं कि ऋग्वेद में सत्य-ज्ञान के दो पक्षों का उल्लेख किया है- "अदय" तथा "वर्धमान"। "अदय" वह ज्ञान है जिसमें दो पक्ष नहीं होते, "वर्धमान" वह ज्ञान है जिसमें दो पक्ष होते हैं, वह बढ़ता ही रहता है, उसमें परिवर्तन होता रहता है, बढ़ेगा तो परिवर्तन ही तो होगा। जितना ज्ञान है वह अगर सत्य है तो उसमें परिवर्तन नहीं हो सकता, परिवर्तन नहीं होगा तो वह वर्धमान भी नहीं होगा, बढ़ेगा नहीं, एक जगह टिके रहने से तालाब के जल की तरह सड़ने लगेगा। जो ज्ञान वर्धमान होगा, परिवर्तित होकर बढ़ता रहेगा वह बढ़ते-बढ़ते ऐसी स्थिति में पहुंच जायगा जहां बढ़ना बन्द हो जायगा और वहां स्थिर हो जायगा, वहीं टिक जायगा। इस दृष्टि से प्रत्येक वर्धमान ज्ञान "अदय" की तरफ़ जा रहा है। दूसरे शब्दों में हमें कहना होगा कि "सत्य-ज्ञान" सदा "अदय" है। इसका अर्थ यह है कि "सत्य" सदा एक होता है, दो नहीं होता- इसी लिये इसे "अदय" कहते हैं-अर्थात् दो नहीं।

हम तीसरे लेख में लिख आये हैं कि ऋग्वेद में सत्य-ज्ञान के दो पक्षों का उल्लेख किया है- "अदय" तथा "वर्धमान"। "अदय" वह ज्ञान है जिसमें दो पक्ष नहीं होते, "वर्धमान" वह ज्ञान है जिसमें दो पक्ष होते हैं, वह बढ़ता ही रहता है, उसमें परिवर्तन होता रहता है, बढ़ेगा तो परिवर्तन ही तो होगा। जितना ज्ञान है वह अगर सत्य है तो उसमें परिवर्तन नहीं हो सकता, परिवर्तन नहीं होगा तो वह वर्धमान भी नहीं होगा, बढ़ेगा- नहीं, एक जगह टिके रहने से तालाब के जल की तरह सड़ने लगेगा। जो ज्ञान वर्धमान होगा, परिवर्तित होकर बढ़ता रहेगा वह बढ़ते-बढ़ते ऐसी स्थिति में पहुंच जायगा जहां बढ़ना बन्द हो जायगा और वहां स्थिर हो जायगा, वहीं टिक जायगा। इसदृष्टि से प्रत्येक वर्धमान ज्ञान "अदय" की तरफ़ जा रहा है। दूसरे शब्दों में हमें कहना होगा कि सत्य-ज्ञान सदा "अदय" है। इसका अर्थ यह है कि "सत्य" सदा एक होता है, दो नहीं होता इसीलिये इसे "अदय" कहते हैं- अर्थात् दो नहीं।

यहां यह स्पष्ट कर देना असंगत न होगा कि आधिभौतिक ज्ञान "वर्धमान" होता है, और आध्यात्मिक ज्ञान "अदय" होता है। उदाहरणार्थ, चिकित्साशास्त्र में, जो आधिभौतिक है, कब्ज़ के लिये एक औषधि तजबीज़ की जाती है। संगत रोग को तो वह ठीककर देता है, परन्तु उसके आफ्टर इफैक्ट होने लगते हैं जिस कारण चिकित्सा-शास्त्र उस औषधि को छोड़ किसी अन्य औषधि को तजबीज़ करता है। कुछ दिन बाद उसके भी दुष्परिणाम सामने आने लगते हैं। तब तीसरी दवा सुझाई जाती है। यह सिलसिला आगे-आगे बढ़ता जाता है- इसे "वर्धमान" कहते हैं। भौतिक-सत्य सदा वर्धमान है। आज यह, कल वह, परसों कुछ और भौतिकवाद में आगे-आगे का यह सिलसिला जारी रहता है। "अदय" में दो नहीं एक का सिद्धान्त काम करता है। यह आध्यात्मवाद की भौतिकवाद से भिन्नता तथा विशेषता है। अगर हम सत्य की खोज करना चाहते हैं, तो "वर्धमान" के मार्ग को जो भौतिक-जगत् का है छोड़कर "अदय" के मार्ग को, जो अध्यात्मिक-जगत् का है, पकड़ना होगा।

हमें "वेद" की ईश्वरीय-ज्ञानता को जानने और सिद्ध करने के लिये यह नहीं जानना कि इसमें रेल, तार, मोटर आदि का जिक्र है या नहीं-ये सब भौतिक वादी वस्तुए हैं और "वर्धमान" हैं, आज हैं कल नहीं, वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने के लिये हमें यह देखना होगा कि इसमें अपरिवर्तनीय, सत्य, अदय के तत्व हैं या नहीं। जो लोग "वेद" को भौतिकवाद की दृष्टि से देखते हैं वे इसमें भौतिक विज्ञानों को ढूंढने लगते हैं, जबकि ऋषि दयानन्द के हाथ में जिस कुंजी को श्री अरविन्द ने देखा था उसने वेदों के विषय में सारा दृष्टिकोण ही बदल दिया। वेदों में से भौतिकवादी रंग से रंगी हुई बातें ढूंढने के स्थान में ऋषि दयानन्द ने उन तत्वों को ढूंढना शुरू किया तो सत्य हैं, सनातन हैं, जिन्हें मनुष्य अपने ज्ञान से नहीं पा सकता, जिन्हें ईश्वर की तरफ़ से ही दिया जा सकता है। वे तत्व क्या हैं?

ईश्वर की सत्ता- सबसे बड़ा तत्व जिसे मनुष्य नहीं खोज सकता, जो भगवान् की ही देन हो सकता है, वह स्वयं भगवान् का अस्तित्व है। वेदों ने स्पष्ट घोषणा की कि भगवान् एक है, उस एक को अनेक नामों से कहा गया है- यह खुद वेद का कथन है- "एकं-सत् विप्राः बहुधा वदन्ति"। पाश्चात्य विद्वान् यही समझते थे कि संसार की भिन्न-भिन्न शक्तियों को देखकर आदि-मानव समझता होगा कि भिन्न-भिन्न शक्तियां स्वतन्त्र शक्तियां हैं- इसलिये विकासवादी दृष्टिकोण से बहुदेवतावाद एक स्वाभाविक कल्पना थी। किसने आदिमानव को बतलाया कि असीम-शक्ति-वाली सत्ताएं अनेक नहीं, स्वतन्त्र नहीं, एक ही सत्ता हैं, उसी को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारा जाता है। या तो आदिमानव ने यह परिणाम स्वयं निकाला, या यह सत्य उसे दिया गया। ऋषि दयानन्द के हाथों में जो वेदार्थ की कुंजी आ गई थी उसने बुद्धि के सब दरवाज़े खोल दिये और वेदों के आधार पर ऋषि ने दो घोषणायें कीं, पहली घोषणा यह थी कि सृष्टि का रचयिता परमेश्वर है, और दूसरी घोषणा यह थी कि सृष्टि के रचयिता अनेक नहीं, एक ही है। यह सत्य मनुष्य द्वारा परीक्षणों से पाया नहीं जा सकता, भगवान् द्वारा ही दिया जा सकता है।

आचार के नियम- आध्यात्मिक-जीवन का अधारभूत सत्य एकेश्वर की सत्ता को स्वीकार करना है जो वेदों में प्रतिपादित है। इसके अतिरिक्त जीवन के ऐसे नियम हैं जिन्हें अपने अनुभव के आधार पर निर्मित नहीं किया जा सकता, परन्तु जो विश्वभर में एक-से व्यवहृत होते हैं। उदाहरणार्थ, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह- में ऐसे चारित्रिक नियम हैं जो मनुष्य व्यवहार में तभी ला सकता है जब उसे इस प्रकार का जीवन बिताने की कहीं से प्रेरणा मिले। "अहिंसा" को ही लीजिये। मार-धाड़ कौन नहीं

— शेष पृष्ठ ५ पर

पृष्ठ ४ का शेष......

करता। यह मार-धाड़ सृष्टि के शुरू से चली आ रही है जो मनुष्य के स्वभाव में ओत-प्रोत है। परन्तु सृष्टि के आदि-काल से ही वेद ने मानव को "अहिंसा" का उपदेश दिया है ﴾माहिंसीः यजु॰20॰1﴿। इसी तरह "सत्य" को लीजिये। वेद का कथन है कि सृष्टि की उत्पत्ति ही "सत्य" से हुई है- सत्येनोनभिता भूमिः"। सृष्टि की स्थिति भी सत्य के आधार पर है। ﴾ऋग्वेद, 10॰85॰1﴿। वेद में जीवन के मूल में जो नियम काम कर रहे हैं उनका विशद वर्णन किया है। ये सत्य संसार के सब धर्मों तथा सब देशों में मूलभूत तत्वों के रूप में एक-समान विद्यमान हैं। सब जगह ये आध्यात्मिक-सूत्र कैसे गये और कहाँ से फैले ? अगर ये भिन्न-भिन्न देशवासियों ने स्वयं, अपने आप इनका निर्माण किया हो तो ये बिल्कुल एक समान क्यों हैं? उनकी एक समानता से ज्ञात होता है कि इन तत्वों का उदभव-स्थल भी एक ही है। इतना ही नहीं कि इनका रूप एक सा है, परन्तु सब धर्मों तथा देशों में इन सत्यों को नित्य अपरिवर्तनीय तथा "अद्वय" - इसका विकल्प और कुछ नहीं - यह भी माना जाता है। ये आध्यात्मिक तत्व ऐसे हैं जिनका कोई विकल्प नहीं है, सृष्टि के आदि में ही ऐसे नित्य तथा सत्य नियमों को अगर हम कहीं पाते हैं तो वेद में।

हमने जो कुछ लिखा उसका थोड़े शब्दों में भाव क्या है। हमारे कथन का अभिप्राय यह है कि भारत वह देश है जिसे वेद जैसे आध्यात्मिक ग्रन्थ के प्राप्त होने का गौरव मिला है। वेद के विषय में भारत की आस्था रही है कि इसमें जीवन के रहस्य निहित हैं। चिरकाल से वेदों के ज्ञान का लोप रहा था फिर भी इनका अर्थ न जानते हुए इनकी रक्षा की गई। देश में अनेक राज्य आये, चले गये, परन्तु वेदार्थ न जानते हुए भी ब्राह्मणों ने इनकी रक्षा की। जब-जब इस खजाने को खोलने की कोशिश की गयी, जनता वेदार्थ न जानने के कारण पथ-भ्रष्ट हो गई। अन्त में ऐसा भी समय आया जब वेदों के बन्द ताले की कुंजी ऋषि दयानन्द के हाथ लगी। "दयानन्द-युग" आते ही यह सर्व-विदित हो गया कि इस बन्द संदूक में वह अमृत भरा है जिससे हमारा देश संसार भर का मार्गदर्शन कर सकता है। आज यह समय आ गया है, और देखना है कि कौन वेद के आधार पर विश्व का पथ-प्रदर्शन करता है। वेद का स्वयं कहना है कि अब छिपाकर रखी हुई निधि की चाबी मिल गई है, ताले में बन्द खजाना सामने आ पड़ा है, अब इसे लेकर देश-विदेश में बखेर दो-- "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"

आर्य कन्या इण्टर कालेज आर्यनगर बदायूँ का त्रैवार्षिक निर्वाचन

अध्यक्ष - श्री दयाशंकर जी आर्य
प्रबन्धक - श्री रामकुमार जी आर्य
कोषा॰ - श्री रमेशचन्द्र जी ठेकेदार

भगवान मनु की मूर्ति हटाना अनुचित है।

उन पर स्त्री, शूद्र विरोधी आरोप असत्य हैं

□ भगवती प्रसाद सिद्धान्तभास्कर, प्रधान नगर आर्य समाज, जयपुर

जयपुर, 4 अगस्त। राजस्थान उच्च न्यायालय परिसर से भगवान मनु की मूर्ति हटाने का आन्दोलन अनुचित है तथा मनु पर स्त्री व शूद्र विरोधी आरोप असत्य हैं। यह सत्य है कि मानवता के निर्माण के लिये सर्वप्रथम जाति, सम्प्रदाय, देश, काल के भेदभाव एवं बन्धन रहित सर्वमान्य शाश्वत धर्म अनुस्मृति के इस श्लोक में है:- "धृतिः क्षमा दमो ऽस्तेयं शौचमिन्दियनिग्रहः। धीर्विधा सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।। इसे संसार के सभी धर्माचार्य, सम्प्रदाय ﴾मजहब﴿ मानते हैं।

मनुस्मृति में ईश्वर उपासना, शिक्षा, सदाचार, योग, समाज व गृहस्थ के कर्तव्य, राजनीति, शासन व न्याय व्यवस्था का विशद वर्णन है, जिसका आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने अपने महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सविस्तार उल्लेख किया है। मनु का राजधर्म, शासन व न्याय व्यवस्था संसार के अनेक राष्ट्रों तथा भारत के संविधान में डॉ॰ अम्बेदकर द्वारा समाविष्ट है, जिसके कारण ही उन्हें इस युग के मनु की उपाधि दी गई है। क्या उनके अनुयायी आन्दोलनकारी उनकी इस उपाधि को तथा इस कारण उनकी मूर्ति को भी हटा सकेंगे?

मनु की न्याय व्यवस्था से प्रभावित होकर ही उनके सम्मानार्थ एवं स्मृति अर्थ राजस्थान उच्च न्यायालय परिसर में न्यायाधीशों की विवेकपूर्ण अनुमति से मनु की प्रतिमा स्थापित की गई थी। अतः उसे हटाना न्याय के प्रति सम्मानजनक, उचित व विवेकसंगत प्रतीत नहीं होता।

मनु पर लगाये गये यह आरोप भ्रामक व असत्य हैं कि उन्होंने स्त्री व शूद्रों के विषय में क्रूरता व अपमानजनक व्यवस्था दी है। सत्य यह है कि मनुस्मृति में स्त्रियों के अत्यन्त सम्मानार्थ- "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता--" आदि अनेक श्लोक हैं। भगवान मनु वेद के परम अनुयायी थे, उन्होंने मनुस्मृति में "नास्तिको वेद निन्दकः" लिखा है, वेद के इस मंत्र को मानते थे- "यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।" ﴾वेद पढ़ने का अधिकार- ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा स्त्रियों को भी है﴿ अतः मनु ने वेद के इस मंत्र के विपरीत स्त्री व शूद्रों के विषय में कुछ नहीं लिखा।

"न स्त्री शूद्रो वेदमधीयाताम्" ﴾स्त्री व शूद्र वेद न पढ़ें﴿ मीमांसा न्याय प्रकाश पूर्वार्द्ध ﴾का है। "अथास्य वेदमुपशृण्वतस्त्र-पुजतुभ्यां श्रोत्तपरिपूरणमुदाहरणे जिह्वाच्छेदो" ﴾शूद्र वेद वाक्य सुने तो उसके कान में शीशा पिघलाकर डाल दिया जावे, वेद वाक्य बोले तो उसकी जीभ काट दी जावे﴿ यह श्लोक भी ﴾गौतम धर्म सूत्र﴿ का है, जो धर्मांध पोंगापन्थी, स्वार्थियों ने मनुस्मृति में भी उसी प्रकार मिला दिया है, जिस प्रकार रामायण, गीता, महाभारत आदि ग्रन्थों में प्रक्षिप्त व मिलावट की है,

तुलसी दास जी ने रामायण में लिखा है- "ढोल गंवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी।।" अनेक सन्त, महापुरुषों, धार्मिक ग्रन्थों, सम्प्रदायों, उनके सिद्धान्तों व मान्यताओं में गम्भीर मतभेद, विवाद व आपत्तियां हैं। देवी-देवताओं में विपरीत आस्थाएं हैं। भैरव व दुर्गा की मूर्तियां तथा बकरीद हिंसा की प्रतीक हैं। श्रीराम ने निर्दोष सीता को वनवास का कष्ट दिया। श्रीकृष्ण ने धर्मराज युधिष्ठर से असत्य बुलवाकर, छल कपट के द्वारा भीष्म पितामह, गुरू द्रोणाचार्य, कृपाचार्य आदि का वध कराया। महर्षि-दयानन्द व स्वामी श्रद्धानन्द ने अन्धविश्वासों, अनुचित मतमतान्तरों व सम्प्रदायों का खण्डन किया। क्या उपरोक्त सब की मूर्तियां, चित्र व ग्रन्थों को हटाया जा सकेगा? उचित एवं विवेक संगत तो यह है कि अनुचित बातें न मानी जावें, उनका विरोध किया जावे।

जबकि शास्त्रों के इस वचन के अनुसार- जन्मना जायते शूद्रो संस्काराद्दिज-उच्यते" तथा "चातुर्वर्ण्य मया सृष्टं गुणकर्म विभागशः।" जन्म से सभी शूद्र व उत्तम संस्कार तथा गुण कर्मानुसार ही उच्च ब्राह्मण, क्षत्रियादि वर्ण के होते हैं तब आन्दोलनकारी स्वयं को शूद्र क्यों मानते हैं, वे तो स्वयं को अनुसूचित जनजाति व हरिजन मानते हैं, इसी कारण उन्हें शिक्षा व राजकीय सेवाओं में आरक्षण आदि की अनेक सुविधाएं प्राप्त हैं, जो हिन्दू होने के नाते ही हैं। अतः हिन्दुओं की मान्यताओं व महापुरुषों का सम्मान करना उनका परम कर्तव्य है उनके विरुद्ध उनका इस प्रकार का आन्दोलन उचित तथा विवेकसंगत नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस आन्दोलन में भी कुछ नेताओं की वोटों की राजनीति उसी प्रकार से है जिस प्रकार सतीकाण्ड तथा हरिजन मन्दिर प्रवेश में थी। यह भी बड़े खेद की बात है कि न्याय व्यवस्था भी अब इससे प्रभावित होने लगी है। □

आवश्यक सूचना

समस्त विद्यालयों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य/अध्यापकों को सूचित किया जाता है कि माननीय उच्च न्यायालय के आदेशानुसार अब विद्यालयों में श्रम विभाग का हस्तक्षेप न होगा। इच्छुक व्यक्ति न्यायालय के आदेश की प्रति 6/- रु॰ भेजकर प्रधान कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उ॰प्र॰ 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ से प्राप्त कर सकते हैं।

- सभा मंत्री

कर्मयोग

● श्रीमती सावित्री रस्तोगी
जवाहर नगर
मेरठ

कर्मयोग जिसके जीवन में,
मूर्तिमान बनकर छाया ।
संघ शक्ति का सूत्र संभाले,
वही मनुज है मुस्काया ।।

यदि मनुष्य अपनी अमर सत्ता को जान ले और अपने शरीर में प्राण, मन, बुद्धि आदि से भिन्न आप को पहचान ले तो वह निर्भय और निरोग बन सकता है। जब समस्त इन्द्रियाँ अपने अनुकूल हों तो जीवन शक्तिशाली होता है। हम आत्म प्रेरणा को जान लें और चेतन व सावधान रहें तो सब काम निर्विघ्न होते हैं। तभी हम देश, जाति व धर्म के लिए विशेष कार्य कर सकते हैं। हानि तभी होती है, जब मनुष्य सावधान न रहे।

सन्देहात्मक स्वभाव मन पर बुरा प्रभाव डालता है। संशय मनुष्य की मन शक्ति को हर लेता है और व्यक्ति सत्वहीन सा हो जाता है। अपने सामथ्य पर भरोसा रखते हुए पुरुषार्थ करते रहने से ही सफलता प्राप्त होती है।

कर्म प्रारम्भ करने से पहले भली प्रकार से सोच विचार करना अति आवश्यक है। पर निश्चय करने के बाद आलस्य या प्रमाद वश कार्य को बीच में ही छोड़ देने से मनोबल का ह्रास होता है। भविष्य में किसी काम के संकल्प करने की शक्ति समाप्त हो जाती है और निराशा घेर लेती है। यह मनुष्य के अधःपतन की रेखा खींचती है। एक बार मैंने यह पंक्तियाँ लिखी थीं :-

नाम किसका है निराशा मैं न किंचित जानती हूँ।
चल रहा है, विश्व आशा के सहारे मानती हूँ ।।

पर साथ ही मनुष्य केवल आशा के बल पर ही बैठा रहे तो भी काम नहीं होगा। तत्परता के साथ कार्य की सिद्धि के लिए पूरी शारीरिक और मानसिक दोनों शक्तियों को मिलाकर बुद्धि पूर्वक काम करते रहना ही "कर्मयोग" है फल को भगवान के ऊपर छोड़ना है।

योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज ने अर्जुन को समझाते हुए यह तथ्य समझाया था कि निरन्तर कार्य करते रहना व निष्काम कर्म करना ही जीवन का उच्च उद्देश्य है गीता के दूसरे अध्याय का 51वाँ श्लोक हमें प्रेरणा देता है :-

कर्मजं बुद्धि युक्ताहि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्म बन्ध विनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम्।।

जिन मनुष्यों को यह योग बुद्धि प्राप्त हो गई है वह फल रहित भाव से कार्य में संलग्न रहते हैं।

जिस चाव से, कार्यारम्भ किया जाय उसी उत्साह और उल्लास से पूर्णता तक लगे रहने से मनुष्य की कार्य क्षमता बढ़ती है। उसमें आत्म विश्वास दृढ़ रहता है। जितने महापुरुष हुए हैं उन सब में सुनियमित रूप में करने का स्वभाव देखा गया है। अकर्मण्य रहकर किसी ने भी महानता प्राप्त नहीं की। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अकेले ही पथ पर चलने की घोषणा की थी धीरे-धीरे कितने अनुयायी बन गये वह अलग बात है पर उन्होंने तो अकेले ही चलने का संकल्प किया था यही "कर्मयोग" का मूल सिद्धांत है। अपने कार्य में तन्मय होना योग ही तो है। "योगः कर्मसु कौशलम्" की सुन्दर शिक्षा जीवन को आगे बढ़ाती है। यजुर्वेद में लिखा है :-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः ।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।।
- यजुर्वेद 40/2

कर्तव्यों को करता हुआ ही मनुष्य सौ वर्ष जीने की कामना करे अर्थात् शरीर की सब इन्द्रियाँ सशक्त होकर काम कर सकें। आज की बदलती परिस्थितियों में यह सोचना कि हम सौ वर्ष तक सशक्त रूप से जी सकेंगें यह तो कठिन लगता है किन्तु यह तो हम कर ही सकते हैं कि जब तक जियें कुछ न कुछ काम करना हमारा ध्येय हो।

कर्तव्य बोध जब आ जाता है तो आसक्ति स्वयं कम हो जाती है। कर्तव्य रूप से और जन मंगल भावना सहित काम रहते रहना ही "कर्मयज्ञ" है। यही दृष्टि सर्वोपरि हो। यही विधि अनासक्ति योग सीखने की है। जब मनुष्य कर्तव्य निभाने के लिए कार्य करता है तो उसमें राग दोष उत्पन्न नहीं होता। सुख-दुख से ऊपर उठकर काम करना जीवन को विकसित करने का परम साधन है। आत्म विश्वासी बनें, स्वावलम्बी बनें, और साथियों की सहायता मिले तो अवश्य लें, उससे सहयोग का वातावरण बनता है। सहकारिता और सहयोग का मर्म प्रत्येक मनुष्य को समझना चाहिए। उसका अपना चरित्र प्रभावशाली हो, अभिमान न करें। ऐसा जन सेवक समाज में आदर पाने का अधिकारी होता है।

उन्नति शील व्यक्ति में दूसरे के प्रति अवहेलना की दृष्टि का आना उसके पतन का कारण हो जाता है। इस संसार में उन्नति की सीढ़ी पर चढ़ते हुए कोई ऊँचा चढ़ गया है वह भी तो कभी नीचे था। दूसरों के हाथ पकड़ उठाने वाले लोग, कर्मयोग के सिद्धान्त को पहचानते हैं वह स्वयं ही उन्नति के पथपर चढ़कर संतोष नहीं करते दूसरों को भी ऊँचा उठाने के लिए प्रयास करते रहते हैं। यही सहकारिता की भावना जीवन को ऊँचाई तक ले जाती है। "चरैवेति चरैवेति" का मूल उद्देश्य यही है। हमारे पैर चलते-चलते थक न जायें, हम स्वयं बढ़ें और दूसरों को बढ़ायें। जीवन पर्यन्त चलना ही है। मैंने एक बार यह पंक्तियां लिखी थीं :-

चलना है तेरी राह पर, काँटे भी फूल हैं।
मंजिल को दूर समझें, यह राही की भूल है।।

ऋषि दयानन्द ने यही घोष किया था, उन्होंने अपना सारा जीवन दूसरों के लिए अर्पित कर दिया, वह चाहते तो किसी गुफा में बैठकर योग साधना में लीन हो जाते और मोक्ष प्राप्त करने की दिशा में और आगे बढ़ जाते पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। जो भटक गये थे उनको सच्चा सीधा रास्ता दिखाया। उन्होंने ही नाद गुंजाया कि "भारतवासी अपना अस्तित्व भूल गये हैं अपने को पहचानो, भगवान के सत्य स्वरूप को जानो, अपने मानव जीवन को सार्थक करो।"

कर्मयोगी श्री कृष्ण महाराज ने भी रणक्षेत्र में अर्जुन को यही आत्मबोध कराया था, अर्जुन के मन में सन्देहात्मक भाव जाग गया था, उसकी निवृत्ति करने हेतु गीता का उपदेश दिया, उन्होंने बड़ी विद्वता पूर्ण सांकेतिक भाषा में मूल प्रश्नों का निवारण किया और विवेचनात्मक युक्तियों से अर्जुन को कर्मक्षेत्र में प्रेरित किया।

आज हम सब संकल्प करें, क्रियाशील बनें, अपने देश के युवकों में, युवतियों में, जागृति लायें। प्रभु हमें शक्ति दें कि ऋषि के सच्चे अनुयायी बनें देश को जगायें।

शोक समाचार

श्री केदारनाथ जी इंजीनियर दिवंगत

जनपद इटावा के वयोवृद्ध आर्य विचारधारा से ओत-प्रोत जीवन पर्यन्त सेवा करने वाले श्री केदारनाथ जी इंजीनियर जिन्होंने प्रदेश में कई आर्यसमाजों के भवन बनाने में तन, मन, धन से सहयोग किया सभा भवन में भी सभाभवन के हेतु परामर्श देते रहे देहावसान हो गया है। आपका समस्त परिवार कट्टर आर्यसमाजी है, आपके पुत्र श्री कृष्णदत्त वैद्य आर्यसमाज पुराना शहर इटावा के वर्षों से प्रधान हैं तथा प्रकम्य हिन्दी मासिक के सम्पादक हैं इंजीनियर साहब के निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। परमात्मा दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

● आर्यसमाज चौक प्रयाग के कर्मठ कार्यकर्ता श्री प्रभात कुमार एडवोकेट, उच्च न्यायालय इलाहाबाद का अल्पकालिक बीमारी के पश्चात् 4 अगस्त 89 को निधन हो गया। वे आर्य प्रतिनिधिसभा, उ०प्र० लखनऊ के न्यायालय सम्बन्धी विवादों की बड़ी लगन से पैरवी करते रहे थे। उनके सम्मान में उच्च न्यायालय 7 अगस्त 89 को बन्द रहा।

सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज तथा मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

आर्यसमाज रोहालकी किशनपुर के आ०स० के प्रधान श्री श्याम सिंह जी आर्य का दिनांक- 19-7-89 को आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार वैदिक रीति के अनुसार स्वामी दिव्यानन्द जी द्वारा सम्पन्न हुआ शान्ति यज्ञ सम्पन्न कर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

स्वतन्त्रता सेनानी श्री बलवीर सिंह ग्राम-इस्माईलपुर (बिजनौर) का दि0- 22 जुलाई-89 को प्रातः निधन हो गया। उनका शान्ति यज्ञ दि0 31 जुलाई 89 को हुआ। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

हिन्दी के अनन्य उपासक

राजर्षि पुरुषोत्तम दास जी टण्डन

• श्री हरिश्चन्द्र आर्य, मोहल्ला- काली पगड़ी, अमरोहा

राजर्षि टंडन जी एक महान व्यक्तित्व के धनी थे। जहां उन्होंने देश को स्वतन्त्र वाणी देकर उसके राष्ट्रीय स्वरूप को निखारने का प्रयास किया वहां राजनीति में भी उन्होंने सदाचरण, और नैतिकता को सदैव आगे रखा। उन्होनें उत्तर-प्रदेश की विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में जैसी गरिमा का निर्वाह किया अथवा देश की संविधान निर्मात्री सभा के सदस्य के रूप में जिस प्रकार से हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार कराने के अनथक प्रयास में लगे रहे वह सब कुछ अनुकरणनीय है। वे अनेक समर्पित हिन्दी कार्यकर्ताओं के प्रेरणा श्रोत थे। राष्ट्र के लिये हिन्दी को वे अनिवार्य मानते थे। दृढ़ता के साथ उन्होंने हिन्दी की रक्षा तो की है, अनेक व्यक्तियों को हिन्दी को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप समृद्ध और सशक्त का कार्य सौंपा। वे एक ज्योति स्तम्भ थे, जिसके प्रकाश में आने वाले मार्ग दर्शन पाते थे, जब देश स्वतन्त्र भी नहीं हुआ था उसी समय से ये निष्काम वृत्ति हिन्दी को राष्ट्रीय स्तर पर उपयोग में होता हुआ देखना चाहते थे, अपने सहायकों को थपथपाने के स्वभाव के अनुसार प्रश्न किया करते थे, तुम हिन्दी को आगे बढ़ाने में क्या कुछ कर सकते हो। उत्तर प्रदेश में उनकी अभिलाषा थी, सभी स्थानीय निकाय और कचेहरी में काम करने वाले हिन्दी प्रेमी वकील हिन्दी में काम करना अविलम्ब आरम्भ कर दें। दूसरे प्रदेशों में- उन्होंने हिन्दी के विस्तार के लिये राष्ट्र भाषा प्रचार समितियों आदि को सहयोगी के रूप में अपनाया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थापना उनकी हिन्दी निष्ठा का प्रमुख कार्य है।

राजनैतिक जीवन में वह जिस शुद्धता के आंकाक्षी थे, उन जीवन मूल्यों और आदर्शों पर आजीवन अडिग सेनानी की भाँति खड़े रहे। उनका मूल्यांकन आज की स्थितियों में कौन करता, वे भयानक अंधकार और प्रबल झंझावात में भी एकाकी दीपक की भाँति अविराम जलते रहे, जूझते रहे- यह एक अनुपम उत्सवर्ग की प्रेरणापद कहानी है।

प्रेरणा पद-संस्मरण

टंडन जी राज्य सभा के सदस्य थे, संसदीय हिन्दी समिति का प्रतिवेदन उसमें प्रस्तुत होना था इधर वे स्वयं प्रतिदिन होने वाले ज्वर के साथ-साथ श्वांस एवं हृदय के कष्ट से अत्यधिक पीड़ित होने के कारण प्रयाग में शैया ग्रस्त थे, चिकित्सकों द्वारा आने जाने वाले व्यक्तियों से मिलना जुलना एवं अधिक बोलना भी बन्द करा दिया गया था। ताकि उन्हें अधिक थकान न हो पाये। चारपाई से स्वयं उठकर चलने की शक्ति भी उनके शरीर में नहीं रह गई थी। ऐसी विषम अवस्था में भी हिन्दी के प्रति उनके अन्तःकरण में आवेगमय समर्पण था। पं0 गोविन्दबल्लभ-पन्त को तार दिलवाकर उन्होंने राज्य सभा में प्रतिवेदन प्रस्तुत किये जाने की तिथि ज्ञात कराई जो आगामी मास की ही कोई निकटवर्ती तिथि थी। चिकित्सकों के निषेध करने पर उन्होंने दृढ़तापूर्वक प्रतिवेदन प्रस्तुत होने के समय राज्यसभा में उपस्थित रहकर अपना वक्तव्य देने की इच्छा व्यक्त की। आत्मीयों द्वारा भी बार-बार न जाने के लिये आग्रह किये जाने पर टंडन जी के नेत्रों में अश्रु छल छला उठे और उन्होंने अपने कंपित करों से एक कागज पर यह लिखा -

"मैं तो इसी दिन के लिए वहाँ बैठा रहा हूँ - तब फिर कैसे रुक सकता हूँ। आप ऐसा न करें।"

पुत्री का विवाह था, बाबूजी (श्री पुरुषोत्तम दास टंडन) ने पुत्र को भेजा, वाराणसी से दहेज के बर्तन लाने के लिये, उन दिनों रिटर्न टिकट बनते थे, पुत्र बर्तन लेकर आ गये किन्तु टिकट कोरा का कोरा अर्थात् बिना चैक किया हुआ वापिस आ गया, पुत्र ने बहुआ (माँ) को बताया। मितव्ययता की प्रवृत्ति नारी में जन्मजात होती है, बहुआ ने नौकर से कहा, जा टिकट वापिस करके पैसे ले आ। इसी बीच एक सज्जन वाराणसी से बाबूजी के पास किसी काम से आये थे और उसी दिन उन्हें वापिस भी जाना था, टिकट पहले से लेकर रिजर्वेशन कराने के लिये वह स्टेशन चल दिये कि बीच में ही टंडन जी का नौकर मिल गया।

"बाबूजी" यह टिकट तो आपके काम आ जायेगा आप मुझसे ले लीजिये, मैं तो स्टेशन ही जा रहा था, बस सौदा हो गया, नौकर टिकट बेच कर बाजार मे कुछ सोदा लेने आगे चला गया। गाड़ी में भी अभी बहुत देर थी अस्तु वह सज्जन टंडन जी के घर वापिस लौट आये।

टंडन जी ने उन्हें वापिस आते देखा तो पूछा क्या हुआ टिकट नहीं मिला? सज्जन महोदय ने कहा मुझे रास्ते में ही आपका नौकर मिल गया जो टिकट वापिस करने जा रहा था, मैनें उससे ले लिया।

"भौहें चढ़ गई" चेहरा गम्भीर हो गया। बिना कुछ बोले अन्दर चले गये। सीधे चौके के सामने खड़े हो गये- "कौन सा टिकट स्टेशन वापिस करने भेजा था, बहुआ दंग रह गयीं। चेहरा सफेद। समझ गयीं आज खैर नहीं है। झूठ के अतिरिक्त कोई सहारा नहीं दिखाई पड़ा।

मुझे नहीं मालूम कौन सा, कैसा टिकट। मैंने किसी को भी कहीं नहीं भेजा। टिकट वापिस करने के सम्बन्ध में शायद भवानी प्रसाद जानते हों, इस बारे में उनसे ही पूछ लें।

भवानी प्रसाद गुप्त टंडन जी के परिवार के से व्यक्ति थे, उनके पी0ए0 के रूप में भी काम करते थे। बहुआ (पत्नी) ने सोचा था कि वह गुप्त जी को अलग से समझा देंगी और वह इस मामले को सुलझा देंगे। किन्तु संयोग से उसी समय गुप्त जी का आगमन हो गया और टंडन जी ने उनसे भीतर जाने के पूर्व ही टिकट के बारे में पूछ लिया और उन्होनें आश्चर्य प्रकट करते हुये अपनी अनभिज्ञता प्रकट की और तभी आफत का मारा नौकर भी वापिस आ गया। उसने स्पष्ट कह दिया कि टिकट बहुआ (पत्नी) ने ही उसे वापिस करने को दिया था। भइया (टंडनजी के पुत्र) का टिकट टी0टी0 ने चैक नहीं किया था इसलिये उसके पैसे कमीशन काट कर वापिस मिल सकते थे।

टंडन जी की समझ में अब स्थिति स्पष्ट थी। घर में कोहराम मच गया सब डर के मारे थर थर कांप रहे थे। टंडन जी जैसे चरित्रवान व्यक्ति के घर में यह घोर अपराध की घटना थी जिस टिकट का उपयोग यात्रा में कर लिया गया उसका पैसा वसूलना क्या सरकार को धोखा देना नहीं है। बेईमानी होती है यह? मतलब यह हुआ कि यात्रा बिना टिकट के की गई। टंडन जी ऐसे कार्य की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। टंडन जी ने अंशन की घोषणा कर दी। प्रायश्चित के रूप में और साथ ही यह घोषणा भी कर दी कि वह पुत्री की शादी में कन्यादान नहीं देंगे। यह घोषणा सुनकर तो जैसे सबको सांप सूंध गया बहुआ (पत्नी) रो रही थीं, शादी वाली कन्या रो रही थी, टंडन जी ने बारी-बारी से अपने पुत्रों से कहा कि कन्या दान दे दें लेकिन यह सबने यह कहकर इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया कि पिता के रहते भाई कैसे कन्यादान दे सकते हैं। टंडन जी ने सुना कि प्यारी बिटिया बहुत रो रही है, वह उसे समझाने गये उसने रोते हुए कहा "क्या मैं इतनी अभागी हूँ कि पिता मेरा कन्या दान भी नहीं करना चाहते? इस वाक्य ने उन्हें द्रवित कर दिया उन्होंने कहा "अच्छा मैं कन्यादान करूंगा किन्तु अकेला मंडप में बैठूंगा अर्थात बहुआ का बाईकाट और सचमुच मंडप में बिना पत्नी के ही वह कन्यादान करने जा बैठे।

एक बार सदन में कुछ विपक्षी सदस्यों की तरफ से बाबू जी की निष्पक्षता पर नुक्ता-चीनी की गई। श्री टंडनजी ने उत्तर प्रदेश विधानसभा में घोषणा की कि कांग्रेस पार्टी का प्रबल बहुमत उनके साथ है, परन्तु वह इस बड़े बहुमत के ही सहारे अध्यक्ष पद पर बने रहना पसंद न करेंगे। यदि पूरे सदन में एक भी सदस्य यह कहेगा कि उसे मेरे ऊपर विश्वास नहीं है तब वह अध्यक्ष पद से तुरन्त इस्तीफा दे देंगे। बाबूजी की इस घोषणा से पूरा विपक्ष निरुत्तर हो गया और उनके हृदयों में बाबूजी के लिये पहले से अधिक विश्वास और श्रद्धा हो गई।

– शेष पृष्ठ १० पर

ईश्वर का सत्य स्वरूप

स्वा० ब्रह्मानन्द "वेदभिक्षु"
आर्यसमाज - चन्दौसी (मुरादाबाद)

-ईश्वर के विषय में मत मतान्तरों में विभिन्न कल्पनाएं की गई हैं । इन मतों के आधार मात्र कोरी कल्पनाएं ही हैं।

आइए वेदानुसार ईश्वर का किंचित चिंतन करें।

मन्त्र- स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः।। यजुर्वेद - 40,8 ।।

§1§ ईश्वर एक है। §2§ वह निराकार है।§3§ वह ईश्वर शरीर धारण नहीं करता है। मतों के तथाकथित ईश्वरावतार - राम - कृष्णादि ईश्वर नहीं थे, वह महापुरुष और परम ईश्वर भक्त जन थे। जो नस नाड़ी के बन्धनों में बंधे संसारी जीव हैं वे ईश्वर कदापि नहीं हो सकते हैं। §4§ ईवर सर्वथा शुद्ध= निर्मल=पावनतम परम शक्ति पुंज है। §5§ वह अजर अमर है। जीवों के कर्मानुसार वह ठीक ठीक विधान बनाता है। जीवात्माएं भी शाश्वत = सदा रहने वाली हैं+ तभी तो मन्त्र में उन्हें," शाश्वतीभ्यः समाभ्यः कहा गया है। जीव नित्य व आकार रहित है,किन्तु "अस्नाविरम","अव्रणम" "अपापविद्धम" अर्थात नस नाड़ी के बन्धन में न आने वाले नहीं हैं। जीव पाप में बिंध सकते हैं, जन्म धारण करके शरीरों के साथ अनेक दुःख झेलते हैं। अज्ञानता वश पाप करते हैं। अतः इन्हें पाप से बचने के लिए "विधान अर्थात ज्ञान पूर्वक नियम की भी आवश्यकता है। ईश्वर ही इस विधान का निर्माता है। तभी तो मन्त्र में"व्यदधात" शब्द आया है। वह ईवर "धाता" विधाता =विशेष विधायक है।

विधान दो प्रकार का है। वेद रूप ज्ञान जो ईश्वर प्रत्येक सृष्टि की आदि में महर्षियों के हृदयों में प्रकाश कराता है। और पुनः सृष्टि क्रम को भली भांति समझ कर मानव मस्तिष्क जब सृष्टि नियमों को खोजता है तब विद्वान पुरुष वेदों को पढ़ कर सृष्टि नियमों को जानते हैं। इसी खोज नियमों का संग्रह शास्त्र कहलाता है।

जो सृष्टि के नियमों का निरीक्षण करते हैं और इन नियमों को समझने में समर्थ हैं- ऐसे ही लोगों को वैज्ञानिक कहा जाता है। इस प्रकार वेद ज्ञान व विज्ञान एक दूसरे के विरुद्ध नहीं हैं, बल्कि पूरक हैं। विज्ञान का यह सिद्धान्त है कि- सृष्टि के नियम अटूट हैं, जिनका कोई उल्लंघन करने में समर्थ नहीं है। इन्हीं नियमों का ज्ञान विज्ञान है। सृष्टि में एक महान सत्ता है जो इन सब वैज्ञानिक नियमों को समन्वित करती रहती है। तृण से लेकर सूर्य तक और क्षुद्र कीट से लेकर हाथी जैसे बड़े जीवों तक सब में यह नियम एक से हैं। अब विचार कीजिए कि,जब सृष्टि में एक से नियम हैं तो, इनका कोई एक नियामक वा नियन्ता अवश्य होगा। जिसने इस नियमावली को एक सूत्र में पिरोया है।

अथर्ववेद - 10,8,37 में इस नियन्ता का ऐसा वर्णन है- "यो विद्यात सूत्रं विततम्"-- केवल वही मनुष्य ही उस महान ब्रह्म को जानता है जो उसके नियमों को जानता है। वह ईश्वर सारी सृष्टि में ओत प्रोत है और जो इस नियम के मूल नियम को जानता है।

अर्थात जो सृष्टि के नियमों का निरीक्षण नहीं करते और विज्ञान की अवहेलना करते हैं, वह ब्रह्म को नहीं जानते। वह मन-मानी व सुनी सुनाई कल्पना करके ईश्वर के कल्पित रूप को मान बैठते हैं। ऐसे ही लोगों ने ईश्वर के स्थान पर जड़ पदार्थों की पूजा तथा अवतारवाद को जन्म दिया है। मन्त्र में कहा गया कि सच्चा विज्ञान वेत्ता वही है,जो ब्रह्म को सही रूप में समझता है। "विष्णोः कर्माणि पश्यत "§ऋग्वेद,1-22-19§ हे मानवों सृष्टि में फैले हुए परमात्मा के कर्मों = नियमों को देखो। उन्हें देखकर तुम अपने कर्तव्य को ठीक प्रकार से समझ सकते हो। मात्र तोते की रट की तरह वेद मन्त्रों को रटने से क्या लाभ ? जो प्रभु के नियमों को नहीं जान पाता है, वह ईश्वर को समझने में सर्वथा अक्षम ही होता है। ईश्वर की सच्ची उपासना करने वाले बहुत ही कम लोग हैं। अधिकतर तो मनुष्य,पत्थर नदी, पहाड़ को ही ईश्वर के स्थान पर पूजते हैं। तभी वो दुखः भोग रहे हैं।

ऋग्वेद,8-1-1, में वेदाज्ञा स्पष्ट शब्दों में है कि--"मा चिदन्यद् विशंसत0":- प्रिय सखाओं किसी अन्य काल्पनिक की पूजा का चिन्तन न करो, ऐसे पाप से सर्वदा बचो। ईश्वर की प्राप्ति का सर्वोत्तम स्थान स्वयं मनुष्य का ही हृदय मन्दिर है। ईश्वर की सच्ची उपासना वेदानुकूल उसके प्राकृतिक नियमों का यथा विधि पालन करना चाहिए। उस अनन्त प्रभु की अनन्त महिमा है। उस महिमा के समक्ष अन्त में सबका सिर झुकता है। महान महिमा का वर्णन देखो- ऋग्वेद, 2/12/2 में- "यः पृथिवीं व्यथमानामदृन्हछ0"। हे मनुष्यों। उस महान ईश्वर को मानो जिसने हिलती हुई §पिघली हुई§ पृथिवी को ठोस किया। जिसने डग-मगाते पहाड़ों को थामा। जिसने इस वृहद् अन्तरिक्ष को बनाया और जिसने द्यौ लोक को सुःस्थित किया।

ईश्वर "कर्ता" है- "सखा पितृतमः पितृणां कर्तेमु लोक मुशते वयाधीः0"। वह जगदीश्वर हितैषी सखा, पालक, सांसारिक रक्षकों में सर्वोत्तम रक्षक, वह कर्ता भी है, निश्चय पूर्वक अपने भक्त के लिए दीर्घ जीवन व सम्पत्ति का दाता है। ऐसे परम ईश्वर को छोड़कर, भला और यत्र-तत्र भटकना क्या ठीक है। आइए वेदानुसार जीवन जिएं।

आर्यसमाज लखीमपुर का वार्षिकोत्सव

दि0- 11,12,13 नवम्बर 1989 को मनाया जा रहा है जिसमें अनेक गण्यमान्य विद्वान् व भजनोपदेशक पधार रहे हैं आर्य जनता से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।



बाल जगत

महर्षि दयानन्द जन्म व शिक्षा प्राप्ति

• श्री चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
कानपुर

गुजरात-काठियावाड़ प्रान्त में
एक नगर है "टंकारा" ।
वहाँ ज्योति प्रकटी-फैला था
जिसका दिशि-दिशि उजियारा।

सज्जन एक वहाँ रहते थे
कर्शन लाल त्रिवेदी ।
छोटे-छोटे राज्य वहाँ थे,
जिनमें एक मौरवी ।

जमेदार मौरबी राज्य के,
कर्शन जी नियुक्त उस ठौर,
थे शिव-भक्त, नहीं था उनसा,
व्यक्ति धार्मिक और ।

एक पुत्र ने जन्म लिया था,
तब कर्शन जी के घर,
था प्यारा-प्यारा बच्चा ,
कहते सब उसे "मूलशंकर"।

सन् अट्ठारह सौ चौबिस का,
-बच्चों- मैं बतलाता हाल,
इस बच्चे ने अपने जीवन
में था अनुपम किया कमाल ।

बड़ा हुआ तो यही पुत्र,
ऋषि दयानन्द कहलाया था,
ज्ञान प्राप्त कर, महर्षि बनकर,
सोता देश जगाया था।

बड़े विद्वता पूर्ण कई ,
अनुपम ग्रन्थों की रचना कर,
ज्ञान-प्रकाश बिखेरा दिशि-दिशि,
नाम सदा को किया अमर ।

अट्ठारह सौ पचहत्तर में,
"आर्य समाज" बनाया था,
वेदों का डंका आलम में,
ऋषिवर ने बजवाया था।

महर्षि की मैं अमर कहानी,
बच्चों ! तुम्हें सुनाता हूँ,
कैसे सोता देश जगाया ?
यह तुमको बतलाता हूँ।

ब्राह्मण सुत था, बाल्य-काल में,
शिक्षा गई दिलायी थी,
तीव्र बुद्धि बालक ने शिक्षा ,
में भी रुचि दिखलायी थी ।

तेरह वर्ष आयु होने तक,
यह सब शिक्षा पाकर,

तेरह वर्ष आयु - संस्कृत,
व्याकरण व रुद्राध्यायी,
यजुर्वेद - संहिता आदि की,
सारी शिक्षा पायी ।

ब्राह्मण - पुत्र कर सके पालन
जीवन में कुल - धर्म ,
यही उचित कर्त्तव्य - प्राप्त,
करना शिक्षा था कर्म।

तेरह वर्ष आयु होने तक,
यह सब शिक्षा पाकर,
तीव्र बुद्धि बालक ने सबको,
दिया चकित घर में कर ।

और "मूलशंकर" के जीवन,
में वह घटना आई ,
भारी हलचल और क्रान्ति ,
जो जीवन में थी लाई ।।

प्रार्थना

(डा० मुंशीराम शर्मा "सोम")
कानपुर

वाचस्पतिकी उपाधि, कीर्तिदमहर्षि की, ब्रह्मर्षि भी
बनाते हो हृदय की ले भावना।
इस लघुकाम में मनन देख चेतना का
खोजते हो इस कवि की है कैसी साधना।
नत होता यह तव निर्णय समक्ष, टेक घुटने
है करता विनीत प्रभु - प्रार्थना।
देव, तेरा स्वर्ण ज्योति रथ घूमे चारों ओर,
उसी रथयोग्य धी से मुझको भी दे बना।।१
विनय सुनो हे देव, व्यथित बुलाता तुम्हें,
नाथित हूँ नाथ, तुम्हें कब से पुकारता।
मुझको बचाओ अघशंसियों से, पापियों से,
हार गया मैं तो उन सब को निवारता।
गूढ़ हैं गुहा में छिपे-छिपे खाये जा रहे हैं,
मेरा बल पौरुष न चलता, निहारता।
देवः मेरे भीतर जगा दो ज्योति, भागे तम
जिसने दबाया चढ़ा छाती पर मारता।।२
तेरे बिना कौन जो निकाले गर्त गह्वर से,
क्षीण पर क्षीण हो रहा हूँ क्षण-क्षणमें।
काटते हैं कीट घाव करते शरीर मध्य,
पींव भर जाता है घिनौना व्रण व्रण में।
कैसे उपचार करूँ, वैद्य भी न मेरे पास,
कैसे चलूँ खोजूँ भेषजों को तृण-तृण में।
व्यक्त हो जा मेरे वैद्य। त्राण दे मुझे हे त्रात।
कवि कहते हैं, तू कहाँ न कण-कण में।।३
तम-रज-सत, वात-पित्त-कफ की विकृति
देह-पेट-छाती-शीश में है क्लेश कारिणी।
खानपान, चालढाल, व्रत नियमों का भंग
पैदा कर देते हैं विषमता भिखारिणी।
माँगती जो भेषज, उचित उपचार, प्राप्ति
जिसकी सदा से रही रोग की निवारिणी।
यम नियमों से, प्रत्याहार प्राणायाम से
बनाते रहे योगी निज देह सुधाधारिणी।।४
योग साधा सोम ने, दिखाई दिया
ओ३म् व्योम,
ज्ञान ज्योति फूटी, जागे भाव-साथ सुविचार।
निकले हृदय से सहस्रों श्लोक और छन्द,
जागृत मस्तिष्क से अनेक गद्य ग्रन्थागार।
पाकर दीर्घायु वेदभाष्य में लगाया मन
तभी अतिश्रम से उत्पन्न वक्ष में विकार।
पर शान्त करता रहा है देवों का भी देव,
अनुभूत उसकी कृपा का है न वार पार।।५
वही लाया, उसी ने बढ़ाया, शक्ति ज्योति दी,
उसी का ले प्रसाद, हुआ योग-साधना में रत।
पाता रहा कितनी उपाधियाँ उसी के बल,
अर्पित रहा हूँ देव-चरणों में ही विनत।
मेरा क्या उसी का सब, कुमति से दूर रहूँ,
देती रहे सुमति उसी की, शुभ्र भद्रसत।
वेला आ गई है, ले चलेगा वही साथ मुझे,
कहाँ पहुँचावेगा, है जानता वही सुगत।।६
जाते हुए क्षमा माँगता हूँ प्रिय पाठकों, हो आर्यमित्र
आर्यजन सेवी वेदमाता भक्त।
देश में विदेश में विमल कीर्ति फैले,
वसुधा हो आर्यभावमयी, कर दस्युता को त्यक्त।
उपक्षयकारी क्षय पावें, प्रेमभाव रहे जागृत,
हो मानवता सत्य में सदानुरक्त।
मानव अमृतपुत्र, भूले दिव्यता न कभी,
सन्तति हो दिव्य, करे कर्म भी हो
अनासक्त।।७
बी०ए० तक आर्यभाव योग्यता में भी सुनाम।
दादा हरिशंकर पधारे पहले ही, आगरा में
जाता, वहीं था ठहरता मैं हो सकाम।
पाठक है शान्ति का प्रकाश वही मेरा छात्र
कुछ बन्धु उसके लखनऊ में लें विराम।।८
आते याद पूर्वज, क्यों पूर्वजों का पूर्वज
न याद आता तुम्हें जड़-जंगम-जनक जो।
अग्रजन्मा सन्तति उसीकी जिनसे कनिष्ठ
पैदा हुए नामों में सनन्दन, सनक जो।
देव-ऋषि-पितर सुजात, वर्ण का विभाग
उन्हीं से हुआ था कीर्तिदायक कनक जो।
उसी देव आदि की तू गोद में विराज,
छोड़ माया ले पकड़ भजनीय की भनक जो।।९
सोम, देख, विश्व के संचालन में शासन भी,
उसी देव-देव ब्रह्म की कृपा से हो रहा।
जन्म-स्थिति संहृति के मूल में वही है देव,
मुझे, तुझे, उसे वही देखता सर्वसहा।
तेरा कुछ भी न, सब उसी ब्रह्म देव का है।
वही तेरे जीवन के भार को भी ढो रहा।
उसी देव-देव के पदों में हो प्रणत,
जो सनातन से यहाँ जन्म-मृत्यु बीज बो रहा।।१०

हिन्दी से प्यार करो

आचार्य रामकिशोर शर्मा
प्रधानाचार्य रकुर्जा

विश्व की भाँति परभाषाओं का मत अनुचित सत्कार करो।
अपनी ही रम्य राष्ट्रभाषा में अपना सब व्यवहार करो??
जिसको निज पूज्य पूर्वजों ने सब भाँति योग्य भाषा गाया,
सम्पूर्ण प्रदेशों ने मिलकर जिसकी गुण गरिमा को गाया।
देश की एकता हेतु जिसे माना सबसे सशक्त साधन,
अत एव राष्ट्रभाषा पद पर इस हिन्दी को था बैठाना।
उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि हित सब हिन्दी से प्यार करो।। अपनी०
क्या किसी देश में राज कार्य परभाषा में चलते देखा?
घर विद्यालय दुकान पथ पर परभाषा को फलते देखा।
बाहर जन्मे मत वाले क्या मिल करके नहीं रहा करते?
फिर यहां क्यों कुछ नेताओं में विपरीत भाव चलते देखा।
ऐसे समस्त दुर्भावों का सब मिलकर उपसंहार करो।। अपनी०
इग्लैण्ड मध्य इंगलिश भाषा रहे सदा फलती अरु फलती,
पाक की राष्ट्रभाषा उर्दू भी रहे वहाँ सन्तत चलती।
उर्दू ने भारत बंटवाया उर्दू ने किया पाक खण्डित,
फिर क्या करवाने हेतु यहां अब भी है यह भाषा पलती।
यह लन्दन पाकिस्तान नहीं भारत है बन्धु विचार करो।। अपनी०
कोई भी परभाषा अपनी भाषा सूची में रह न सके,
षड्यन्त्र किया कुछ लोगों ने उस हित कोई कुछ कहन सके।
जो हिन्दी नहीं जानता हो अथवा इसका अपमान करे,
वह यदि यहां नेता बन जाये तो भारत उसको सह न सके।
इस राष्ट्रवाद की सुखद सुधा का जन-जन में संचार करो।। अपनी०

नेपाल में आर्यसमाज के प्रचार के लिए विराटनगर में केन्द्र की स्थापना
(इसमें सहयोग देना प्रत्येक आर्य का प्रथम कर्तव्य)

आर्यसमाज के मूर्धन्य सन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती द्वारा संचालित वैदिक यति-मण्डल ने 24 से 28 मई-1989 को नेपाल में एक विशाल आयोजन किया। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए अन्य सैंकड़ों लोगों के अतिरिक्त एक सौ से अधिक सन्यासियों, वानप्रस्थियों तथा नैष्टिक ब्रह्मचारियों का दल नेपाल पहुँचा। यह आयोजन श्री राम जानकी-मन्दिर और अतिथि सदन विराटनगर में सम्पन्न हुआ। परिणामतः 25 मई 1989 को आर्यसमाज तथा गुरुकुल विराटनगर की आधारशिला श्री स्वामी-सर्वानन्द सरस्वती के कर कमलों से अलग-अलग रखी गयी।

इस में विराटनगर, काठमाण्डू, पूर्णिया, झापा, सिलीगुड़ी आदि स्थानों से आये सैकड़ों गण्य-मान्य व्यक्तियों के अतिरिक्त नेपाल के भू०पू० प्रधानमंत्री-श्री नगेन्द्र प्रसाद रिजाल भी पूरे आयोजन में सम्मिलित होते रहे और गुरुकुल के शिलान्यास के समय 11000 रु० दान दिया। नेपाल की जनता और भारत से पहुँचे हुए लोगों ने उदारता पूर्वक इस पुण्य कार्य के निमित्त आर्थिक सहायता प्रदान की। किन्तु समूचे नेपाल में आर्य समाज के प्रचारार्थ स्थापित इस आर्यसमाज एवं गुरुकुल का कार्यक्षेत्र इतना विस्तृत है कि इसे पूरा करने के लिए लाखों रुपये की आवश्यकता होगी। दानी सज्जनों से उदारता पूर्वक सहायता करने का अनुरोध है। कृपा करके धनराशि प्रधान नेपाल आर्यसमाज विराटनगर के नाम अथवा स्वामी सर्वानन्द सरस्वती दयानन्द मठ, दीना नगर, जिला गुरदासपुर (पंजाब) के पास भेजें।

- स्वामी सर्वानन्द सरस्वती
प्रधान वैदिक यति मण्डल

- भागलपुर-देवरिया- आर्यसमाज भागलपुर के अंतरंग सदस्य एवं पशु चिकित्सक डॉ० सत्यनारायण जी गुप्त का नागरिक अभिनन्दन समारोह आर्य समाज के सौजन्य से पं० चन्द्रशेखर मिश्र शास्त्री पूर्व प्रधान की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

पृष्ठ ८ का शेष....

श्रीयुत टंडन जी जिस समय इलाहाबाद नगर पालिका के अध्यक्ष थे, उस समय नगरपालिका की ओर से चार कर्मचारी घर पर पालिका की ओर से नियुक्त थे। परन्तु आश्चर्य की बात है कि टंडन जी और उनके परिवार के लोग उनसे घर का कोई काम नहीं ले सकते थे। वह बैठे रहते थे और परिवार के लोग घर के समस्त कार्यों को सम्पादित किया करते थे। यहां तक कि उनसे कोई झाड़ू लगवाना या बाजार से कोई चीज मंगवाना भी निषेध था।

राजर्षि पुरुषोत्तम दासजी टंडन ने वकालत को अनैतिकता का कार्य मानकर वकालत छोड़ दी उधर स्वतन्त्रता संग्राम में प्रवृत्त हो जाने के कारण घर की आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई। यहां तक कि परिवार को एक समय का भोजन भी भरपेट मिलना कठिन हो गया। उनकी इस स्थिति का ज्ञान जब कुछ हितैषियों, आत्मियों को हुआ तब उन्होंने अपने सहयोग को टंडनजी के सामने रखने का निश्चय किया। श्री बाबू जी उस समय जेल में थे, वह महानुभाव साहस कर टंडन जी के पास अपनी आर्थिक सहायता के प्रस्ताव को विनम्रता पूर्वक रखने के उद्देश्य से गये और उन्होंने साहस बटोर कर उनके सामने आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव किया। टंडन जी उनके इस प्रस्ताव को सुनकर क्रोधित हो उठे। और उन्हें फटकार लगाते हुए कहा कि मैं आपकी आर्थिक सहायता स्वीकार करने की अपेक्षा अपने परिवार को स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर चढ़ाना स्वीकार करूँगा परन्तु मैं अपने वृत को कलंकित नहीं कर सकता।

आर्यसमाज गजरौला (बिजनौर) का पुनर्गठन

श्री आनन्द प्रकाश आर्य के संयोजन और मा0 रघुवीर सिंह की अध्यक्षता में समाज के पुनर्गठन हेतु तदर्थ समिति बनाई गई।

संरक्षक - श्री पीयूष कुमार त्रिपाठी
अध्यक्ष - श्री केशवशरण आर्य
उपाध्यक्ष- मा0 सुरेन्द्र सिंह
मंत्री - श्री हरिकृष्ण
उपमंत्री - श्री चरत सिंह
कोषाध्यक्ष- श्री कृष्ण कुमार
आय-व्यय निरी॰ :- श्री कृपाल सिंह

म० नारायण स्वामी की जयन्ती

आर्यजगत के मूर्धन्य सन्यासी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान महात्मा नारायण स्वामी की पुण्य जयन्ती 15 से 17 अक्टूबर 1989 तक बरेली नगर में मनाई जा रही है। उनके बहुत से संस्मरण जो अप्रकाशित हैं किन्तु उनके सम्पर्क में आने वालों के हृदय में अब भी जीवित हैं- प्रकाशित किए जाने की योजना है।

कृपया स्वामीजी के सम्बन्ध में ऐसे संस्मरण आर्यमित्र में प्रकाशनार्थ भेजें तथा प्रति मुझे भी भेजें।

- आचार्य विश्व श्रवा: व्यास
वेदमन्दिर 103,
बाज़ार मोतीलाल, बरेली।

श्री शास्त्री पर आक्रमण

शास्त्रार्थ महारथी आचार्य सत्यमित्र शास्त्री वेदतीर्थ बड़हलगंज, गोरखपुर निवासी, बहराइच जिले में नेपाल सीमा पर शुद्धि वेद प्रचारार्थ गए थे। वहाँ 500 शुद्धियाँ हुईं। किन्तु शास्त्री जी पर लौटते समय मार्ग में कुछ अराजक तत्वों ने छुरे का प्रहार किया। शास्त्रीजी बाल-बाल बच गए किन्तु जाँघ में भयंकर चोट है।

आर्यसमाजों को चाहिए कि उनकी आर्थिक मदद करें जिससे वह शीघ्र से शीघ्र स्वस्थ होकर समाज का कार्य कर सकें। श्री शास्त्री जी जैसे विद्वान् बहुत कम हैं।

- सभा मंत्री।

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें :-

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह जून, जुलाई 1989 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी0पी0 भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु0 हो गया है।

जून

548, 2251, 2478, 2568, 4462, 6151, 8786, 9161, 9182, 10178, 10180, 11210, 12206, 12214, 12679, 12680, 12913, 13129, 13479, 13483, 13486, 13885, 13896, 13904, 13906, 13909, 13910, 13915, 13917, 13918, 14280, 14281, 14285, 14288, 14290, 14291, 14298, 14750, 14751, 14752, 14753, 14754, 14755, 14756, 14757, 14758, 14759, 14760, 14761, 14762, 14763, 14764, 14765, 14766, 14767, 14768, 14770, 14771·

जुलाई

11945, 12265, 12269, 12308, 12692, 12941, 13133, 13136, 13173, 13507, 13511, 13922, 13923, 13925, 13926, 13928, 13946, 14300, 14304, 14305, 14307, 14308, 14311, 14313, 14315, 14321, 14772, 14773, 14774, 14775, 14776, 14777, 14778, 14780· 14781, 14782, 14783, 14784, 14785, 14786·

511, 629, 631, 748, 749, 1348, 2190, 2944, 2966, 4982, 5632, 6476, 6888, 8887, 8975, 9201, 10183, 10185।

—व्यवस्थापक—

जन-जन के द्वार पर लोकतन्त्र

पंचायती राज .... ऐसी क्रांति है जो लोकतन्त्र को करोड़ों भारतीयों के द्वार तक ले जाएगी। यह एक ऐसी क्रांति है जो विकास की ज्योति को हमारे लाखों गांवों तक पहुँचाएगी। यह ऐसी क्रांति है जो अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों के लाखों लोगों और हमारे देश की आधी जनसंख्या अर्थात् भारतीय महिलाओं के लिए नए अवसरों के द्वार खोल देगी। यह वह क्रांति है जो लोगों को उनके अपने विकास में शामिल करेगी।

– राजीव गाँधी

स्वतन्त्रता दिवस उत्तर प्रदेश के लिए आशा और विश्वास का नया वातावरण लाया। लोकतान्त्रिक संस्थाओं की पुनर्स्थापना से समाज में नयी चेतना जागी। प्रधान मन्त्री, श्री राजीव गाँधी के प्रेरणादायक मार्ग दर्शन तथा मुख्यमन्त्री, श्री नारायण-दत्त तिवारी के गतिशील नेतृत्व में विकास के नये आयाम स्थापित किये गये। पंचायती राज और जवाहर रोजगार-योजना के जरिये गाँवों में क्रांति लाने का निर्णय लिया गया है --

- जवाहर रोजगार योजना के अन्तर्गत ग्रामसभाओं को अनुदान की कुल 204·14 करोड़ रुपये राशि आवंटित।
- पहली बार महिलाओं को जन प्रतिनिधित्व के लिए 30 प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था।
- राज्याधीन सेवाओं में पिछड़े वर्गों को 15 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित करने के निर्देश।
- ग्राम पंचायतों, ब्लाकों, जिला परिषदों, नगर पालिकाओं का चुनाव करा के लोकतन्त्र की पुनस्थापना।
- आजादी के बाद पहली बार 18 वर्षीय युवकों द्वारा स्थानीय निकायों के चुनाव में मताधिकार के प्रयोग का अवसर ।
- बीस-सूत्री कार्यक्रम के कार्यान्वयन में चौथी बार प्रथम स्थान।
  उपलब्धि 89·4 से 820·4 प्रतिशत तक।
- ग्राम सभाओं को मालगुजारी वसूलने का अधिकार।
- वित्तीय संस्थाओं से 2500 करोड़ रुपये जुटाने तथा 944 करोड़ रुपये बिक्रीकर से वसूलने में सफलता।
- 363 लाख मीट्रिक टन खाद्यान्न उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित।
- भूमि संरक्षण कार्यों के लिए अब लघु एवं सीमान्त किसानों को कोई शुल्क देय नहीं। छः हजार किसान लाभान्वित।
- पूरे राज्य में गन्ने का एक समान मूल्य।
- छः लाख हेक्टर क्षेत्र के लिए अतिरिक्त सिंचन क्षमता सृजित।
- चौथी पंचवर्षीय योजना के चौथे वर्ष में औद्योगिक क्षेत्र की वृद्धि दर में 12·5 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि ।
- पर्वतीय क्षेत्र में विकास कार्यों को तेजी से लागू करने के लिए अल्मोड़ा (कुमायूँ) तथा श्रीनगर (गढ़वाल) में क्षेत्रीय कार्यालयों की स्थापना ।
- ग्रामीण आवास योजना के अन्तर्गत दो दिन में एक मकान बनाने का कीर्तिमान स्थापित।
- अनुसूचित जाति के लोगों तथा खेतिहर मजदूरों को गाँव सभा की आवंटित भूमि पर वास्तविक कब्जा दिलाने के लिए 90 दिन का राज्यव्यापी सफल अभियान।
- राजकीय सेवाओं और सार्वजनिक उपक्रमों में अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए चयन समितियों में इन वर्गों का एक प्रतिनिधि शामिल करने की व्यवस्था।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : ४५६६३
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी ७६
भाद्रपद शुक्ल - ३
३, सितम्बर, रविवार, १९८९

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नही भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लि॰ अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि॰ सं॰ २२४१/५७) भाद्रपद शुक्ल-१० , रविवार - संवत् २०४६ वि॰, दिनांक १०, सितम्बर १९८९ (घोषणा पत्र सं॰ ७/२८-२-७५)



उपमितां प्रतिमियामथो परिमितामुत।
शालाया विश्ववाराया नद्धानि विचृतामसि।

अथर्व --

आर्यो! तुम्हारी शालाएं {अतिथिशाला, यज्ञशाला, गृहशाला आदि} योग्य परिमाणयुक्त तथा वायु को स्वीकार करने वाली हों। उनकी निर्मिति दृढ़ हो। भिन्न भिन्न कक्ष हों। सब प्रकार से आरोग्य, सुख तथा शान्ति की वृद्धि करने वाले हों।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम०ए०

•

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू॰ २५१/-
वार्षिक	रू॰ ३०/-
एक प्रति	१.०० रू॰ मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ३६

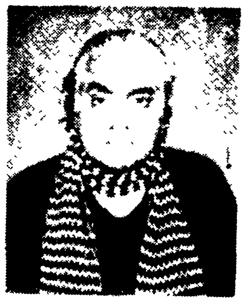
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का शंखनाद

आर्यसमाज का क्रान्तिकारी त्रिसूत्रीय अभियान

- **गोहत्या बन्द करो** (गावो विश्वस्य मातरः) — वेद
- **अंग्रेजी हटाओ** (यह गुलामी का घिनौना धब्बा है) — महात्मा गाँधी
- **शराब के ठेके बन्द करो** (मद्यपान समस्त बुराइयों की जड़ है) — संसार के समस्त महान स्वर

प्रदेश की आर्यजनता इस अभियान को प्राणपण से सफ़ल बनाए

—श्री पं० इन्द्रराज, सभा प्रधान



दिनांक- 27·8·89 को लखनऊ में आयोजित आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 की अन्तरंग सभा में प्रदेश के कोने कोने से पधारे हुए आर्य प्रतिनिधियों के विशाल समूह को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान - श्री पं0 इन्द्रराज जी ने कहा- "कि देश में बढ़ रहे शाश्वत नैतिक जीवन मूल्यों के ह्रास तथा समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, अनाचार, पापाचार से भरी हुई दुष्प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा ने उक्त त्रिसूत्रीय क्रान्तिकारी अभियान का बिगुल बजा दिया है। आज हमारा राष्ट्रीय, सामाजिक, एवं वैयक्तिक चरित्र पतन की सीमा को लाँघता हुआ दिखाई दे रहा है जिसका प्रमाण समाज में सर्वत्र फैली हुई कुव्यवस्था एवं अनाचार का वातावरण है। शासन इस ओर विशेषतया उपर्युक्त तीनों बिन्दुओं पर मौन है। गोहत्या पर विचार करना उसे साम्प्रदायिक लगता है, अंग्रेजी के मोह से वे बुरी तरह चिपके हुए हैं, शराब को खुले आम सरे आम, पैसों के लोभ में गली गली तक पहुँचा दिया है। ऐसे समय में राष्ट्र का सजग प्रहरी आर्यसमाज यदि चुप्पी साध लेता है तो उसके इतिहास पर कालिमा का धब्बा हमेशा हमेशा के लिए अंकित हो जायेगा।

अतः आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की यह तुफानी अन्तरंग सभा अपने सर्वसम्मत निश्चय द्वारा इस त्रिसूत्रीय अभियान को सफल बनाने हेतु अपना पूर्ण सक्रिय सहयोग प्रदान करती है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए अन्तरंग सभा ने प्रदेश के सभी वर्गों से क्रियात्मक सहयोग देने की अपील करते हुए प्रदेश की समस्त जिला सभाओं/आर्यसमाजों/आर्यकुमार सभाओं/आर्यवीर दल तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि वे अपने-अपने यहाँ सत्याग्रहियों के जत्थे तैयार रखें ताकि सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर उन्हें सत्याग्रह में भेजा जा सके।

अन्तरंग में विशेष रूप से उपस्थित सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपप्रधान श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने इस अभियान के कारणों पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए इसकी रूपरेखा बताई और इसे सफल बनाने का आह्वान किया ।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
————राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ-भाद्रपद शुक्ल-१० संवत,२०४६ वि.
१०,सितम्बर १९८९, दयानन्दाब्द,१६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

सम्पादकीय

काश्मीर में प्रेस स्वातन्त्र्य का हनन

जम्मू काश्मीर विधान सभा में, अपने बहुमत के बल पर, डा0-फारूख अब्दुल्ला ने "जम्मू काश्मीर विशेष अधिकार (प्रेस) 1989" विधेयक पास करा लिया। अब काश्मीर में घटित घटनाओं एवं काश्मीर से सम्बन्धित कोई समाचार सरकार द्वारा नियुक्त अधिकारी से पूर्वस्वीकृति लेकर ही प्रकाशित किया जा सकेगा। यदि किसी समाचारपत्र ने इन निर्देशों का उल्लंघन किया तो सरकार सम्बद्ध प्रकाशन की प्रतियाँ, प्रिन्टिंग प्रेस तथा प्रकाशन में प्रयुक्त उपकरण आदि जब्त कर सकती है। इसके साथ ही उल्लंघनकर्ता अथवा समाचार के प्रकाशन से सम्बन्धित उत्तरदायी व्यक्ति | व्यक्तियों को एक साल का कारावास तथा 10 हजार रुपये तक जुर्माने का दण्ड दिया जा सकता है। यद्यपि काश्मीर के मुख्यमंत्री डा0 फारूख-अब्दुल्ला अब घोषणा करते घूम रहे हैं कि इस विधेयक का उद्देश्य प्रेस स्वातन्त्र्य का हनन नहीं है और न वैचारिक अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता पर रोक लगाना ही है। एक सभा में तो भाषण करते हुए उन्होंने यहाँ तक कह दिया कि देश की एकता और अखण्डता के लिए वह अपने प्राणों की बाजी भी लगा देंगे। उनका यह वक्तव्य सराहनीय है और इसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है। किन्तु परदे के पीछे काश्मीर में जो कुछ दिखाई दे रहा है- उससे इन्कार कैसे किया जा सकता है।

आज काश्मीर की जो हालत है वह अब किसी से छिपी हुई नहीं है। खुले आम भारतविद्रोह का प्रचार वहाँ उग्ररूप लेता जा रहा है। राष्ट्रीय झण्डे का अपमान, पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे, स्वातन्त्र्य दिवस के अवसर पर पाकिस्तान के स्वर्गीय जनरल जिया के चित्रों को बिजली के खम्भों पर पाकिस्तानी झण्डों के साथ लहराना, जगह जगह बम विस्फोट एवं आगजनी की घटनाओं से अब यह प्रत्यक्ष हो गया है कि काश्मीर में पाकिस्तानपरक तत्व निरन्तर उग्र होते जा रहे हैं और स्थिति अत्यन्त विस्फोटक कगार पर पहुँच चुकी है। काश्मीर की इस स्थिति का ज्ञान विश्व को और हमें समाचारपत्रों के माध्यम से ही मिलता है। लोकतन्त्र का मूलभूत सिद्धान्त ही प्रेस की स्वतन्त्रता है। पंजाब कितने वर्षों से जल रहा है परन्तु वहाँ भी प्रेस पर कोई पाबन्दी नहीं लगाई गई। ऐसा मालूम होता है कि काश्मीर के मुख्यमंत्री डा0 फारूख-अब्दुल्ला अपने शासन की असफलताओं पर परदा डालने और उसके निकम्मेपन को दुनियाँ में उजागर होने से बचाने का प्रयास इस काले विधेयक के माध्यम से करना चाहते हैं। काश्मीर में मुस्लिम धर्मान्धता इस स्तर तक बढ़ गई है कि वह कोई भारतीय प्रदेश न लगकर पाकिस्तानी प्रदेश का अंग मालूम पड़ता है। वहाँ के मुसलमानों को धर्म के नाम पर उन्मादित किया जा रहा है और विस्फोटक स्थिति ऐसी पैदा की जा रही है कि काश्मीर पर पाकिस्तान का हमला होने की दशा में वहाँ की मुस्लिम जनता आन्तरिक विद्रोह कर बैठे।

काश्मीर के एक प्रमुख शीर्षस्थ क्षेत्र लद्दाख में बौद्ध मतावलम्बियों की बहुलता है। वहाँ के बौद्ध लोग राजनीति से दूर रहते हुए अपना सीधा सादा धर्म परायण जीवन व्यतीत कर रहे थे। वहाँ निरन्तर बर्फ जमा रहने के कारण उनकी आबादी भी कम है और वे निश्छल हृदय से अपने को धार्मिकता की परिधि में आबद्ध करके अपना जीवन व्यतीत करने के इच्छुक हैं। परन्तु अब वहाँ से भी संघर्ष और हड़ताल की खबरें आ रही हैं। वहाँ के लोग उस क्षेत्र को केन्द्रप्रशासित क्षेत्र घोषित कराने के लिए संघर्षशील हैं। निश्चित ही इनके पीछे प्रदेशीय प्रशासन की असमता और भेदभाव भरी नीति ही स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है जो समाचारों के माध्यम से ही हमें प्राप्त होती है।

इसी प्रकार काश्मीर का जम्मू क्षेत्र है जहाँ आजादी के समय हिन्दुओं का अनुपात ७५% प्रतिशत था परन्तु अब वहाँ काश्मीर घाटी से मुस्लिम आबादी घुसने लगी है और हिन्दुओं की संख्या घटकर 70 प्रतिशत रह गई है। एक तरह से विचार किया जाय तो काश्मीर की स्थिति पंजाब से भी बदतर है क्योंकि पंचमांगियों के पाकिस्तान से सीधे सम्पर्क जुड़े हुए हैं और निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि यदि सेना इस सीमान्त प्रदेश की सुरक्षा में सतर्क न रहे तो वहाँ के पंचमांगी, जिनके हौसले दिन ब दिन बढ़ते हो जा रहे हैं, बड़े आदरभाव से पलक पाँवड़े बिछाकर पाकिस्तानियों को काश्मीर की धरती पर स्वागत करते हुए ले आवें।

प्रस्तुत विधेयक ने काश्मीर और भारत के बीच एक लौह दीवार खड़ी कर दी है। इसीलिए भारत के समस्त मनीषियों, विचारकों, दूरदर्शी राजनैतिक पुरुषों एवं सभी समाचार पत्रों ने एक स्वर में इस विधेयक के विरुद्ध आवाज उठाई है। आर्यसमाज उनकी आवाज में आवाज मिलाकर भारतीय जनता को इस काले विधेयक का विरोध करने का आह्वान देता है। यदि यह विधेयक लागू कर दिया गया तो परदे के पीछे काश्मीर में क्या क्या षड्यन्त्र भर फूल-खिलते रहेंगे और हम बेखबर बैठे रहेंगे तो इस प्यारे प्रदेश का, महर्षियों की जन्मस्थली का क्या भविष्य होगा_____ कल्पना कौंध उठती है।

इसलिए हम, लोकतन्त्र की गरिमा को सुरक्षित रखने वाली प्रेस की आवाज को किसी भी कोने में, किसी भी कारण से दबाए जाने का घोर विरोध करते हैं, क्योंकि--

"अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता लोकतन्त्र का जन्मसिद्ध अधिकार है।" ■

स्वतंत्रता दिवस समारोह

दिनांक- 15-8-89 को आर्य-कन्या इन्टर कालेज बुढ़ाना गेट में स्वतन्त्रता दिवस सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस पावन पर्व पर कालेज की छात्राओं ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक गान तथा व्याख्यान का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया।

इस अवसर पर प्रबन्धक समिति तथा शहर आर्यसमाज के प्रधान श्री मनोहर-लाल सर्राफ ने अपने व्याख्यान में छात्राओं के चरित्र निर्माण पर बल दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा प्राप्त करने वाली छात्राओं में इच्छा शक्ति का बलवती होना आवश्यक है। दृढ़ संकल्प तथा मजबूत इरादे से अनुशासन बद्ध होकर शिक्षा प्राप्त करने से छात्राएं अपना तथा राष्ट्र का भविष्य सवार सकती हैं। उन्होंने छात्राओं के द्वारा प्रदर्शित कार्यक्रम तथा व्याख्यान के उत्कृष्ट प्रदर्शन की सराहना की।

इस अवसर पर अपने उदबोधन में पं0 इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश तथा मंत्री आर्य समाज मेरठ शहर ने कहा कि राष्ट्र बुरी तरह से देशद्रोहियों द्वारा विदेशी शक्तियों के षड्यन्त्रों से घिर गया है। जिस आजादी को प्राप्त करने हेतु हजारों युवा, बाल, वृद्धों ने अपने बलिदान किए, आज उसी आजादी को समाप्त करने का कुचक्र किया जा रहा है। हमारी युवापीढ़ी को सुनियोजित ढंग से नशे का गुलाम बनाया जा रहा है। युवाओं में नैतिकता, आस्तिकता तथा राष्ट्र प्रेम का अभाव होता जा रहा है। इसके परिणाम स्वरूप आतंकवाद, डकैती हत्या तथा बलात्कार की बाढ़ सी आ गई है। सामाजिक तथा सार्वजनिक जीवन असुरक्षित होगया है। इस स्थिति को और बिगड़ने से बचाने में आस्तिक, चरित्रवान तथा राष्ट्र भक्त छात्राएँ महत्वपूर्ण योगदान कर सकती हैं। इस अवसर पर श्री राधेलाल सर्राफ द्वारा विद्यालय के हाल में एक्जास्ट फैन लगाने की घोषणा की गई। प्रबन्ध विद्यालय के प्रबन्धक श्री स्वराज्य चन्द ने विद्यालय के विकास में हर सम्भव प्रयत्न तथा सहयोग का आश्वासन दिया। प्रधानाचार्या श्रीमती सुशील सिंघल द्वारा अतिथियों को उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए धन्यवाद किया। अन्त में प्रसाद वितरण के साथ सभा का समापन हुआ।

- संवाददाता द्वारा।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है

— डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
भू.पू. कुलपति गुरुकुल वि.वि. कांगड़ी

वेद विषयक हमने जो लेख लिखे हैं उसका मुख्य लक्ष्य आर्यसमाज के तीसरे नियम को समझने का हमें यत्न करना है। आर्यसमाज का तीसरा नियम है कि "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।" इस नियम को समझने के लिए ऋग्वेद का "अदिति"- शब्द बहुत सहायक सिद्ध हो सकता है। यह एक अद्भुत शब्द है। "अदिति" के लिए ऋग्वेद {1-89-10} में निम्न मन्त्र है:

> अदितिः द्यौः अदितिः अन्तरिक्षं
> अदितिःमाता सः पिता सःपुत्रः।
> विश्वेदेवाः अदितिः पंचजनाः
> अदितिः जातं अदितिः जनित्वम्।

इस मन्त्र का अर्थ यह है कि संसार में जो कुछ है, वह "अदिति" है। "अदिति" शब्द "दिति" से बना है। जो दिति न हो वह अदिति होगा। "दिति" शब्द "दोः अवखन्डने" धातु से बना है। "दिति" का अर्थ है- "खण्डित"। "अदिति का अर्थ हुआ "अखण्डित"। खंडित का अर्थ है- एक से दो, दो से तीन, तीन से चार- इस प्रकार बंटते जाना। अखंडित का अर्थ है- सदा सर्वदा एक बने रहना, टुकड़ों में न बंटना। जितना भौतिक ज्ञान है, जिसे हम "विज्ञान" कहते हैं, वह सब "दिति" के भीतर समा जाता है क्योंकि वह कभी "सत्य" माना जाता है, कभी गवेषणा करते-करते "असत्य" हो जाता है और छोड़ दिया जाता है। अगर सब कुछ "अदिति" है जो जात या जनित्व है, वह सब "अदिति" है, तो वेद भी अदिति है, सत्य भी अदिति है, वेद ज्ञान भी "अदिति" है। वेद-ज्ञान को अदिति कहने का अर्थ हुआ "अखण्डित" ज्ञान, ऐसा ज्ञान जो सदा-सर्वदा एक बना रहता है, कभी बदलता नहीं, सदा सत्य सनातन। इसी "अदिति"-शब्द के लिए ऋग्वेद {8-18-6} में दो अन्य शब्दों का प्रयोग हुआ है जिससे हमारा विषय अधिक स्पष्ट हो जाता है। वह मन्त्र है:-

> अदितिर्नो दिवा पशुं
> अदितिर्नक्तं अद्वया।
> अदितिः पात्वंहसः सदावृधा ।।

इस मंत्र में "अदिति" के लिये "अद्वय" तथा "सदावृध" शब्दों का प्रयोग हुआ है। अद्वय का अर्थ है-जो दो न हो, सदावृध का पदच्छेद करके इसके दो अर्थ हो जाते हैं-"सदावृध अर्थात् जो सदा बढ़ता रहे, विकसित होता रहे, एक से दो, दो से तीन, तीन से चार होता रहे। बढ़ता रहे, इसका दूसरा अर्थ है- सदा+ अवृध जो सदा एक रहे, एक से दो-तीन न हो, नित्य सनातन, एक रूप में बना रहे। इस प्रकार वेद के ज्ञान को तीन भागों में विभक्त किया है- "अदिति", "सदावृध" तथा सदा अवृध। "अदिति" वह ज्ञान है जो सदा एक रहता है, उसमें दो पक्ष नहीं हो सकते, "सदावृध" वह ज्ञान है जो सदा बढ़ता रहता है, बदलता रहता है, आज यह और कल वह, बढ़ेगा तो बदल कर ही बढ़ेगा

यह वह ज्ञान है जिसे हम आज की भाषा में "विज्ञान" कहते हैं, "सदा+अवृध" वह ज्ञान है जिसे हम पहले "अदिति" कह आये हैं- सत्य-ज्ञान, अखण्डित ज्ञान, एक ज्ञान, न बदलने वाला ज्ञान या जिसे हम ईश्वरीय-ज्ञान कह सकते हैं। भौतिक-ज्ञान सदा बढ़ता रहता है, "सदावृध" रहता है, बदलता रहता है, यह भौतिक विज्ञान है, इसका गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा आदान-प्रदान हो सकता है या मनुष्य द्वारा आविष्कार हो सकता है, आध्यात्मिक ज्ञान सदा एक रहता है, "अदिति" या "अद्वय" सदा एक है, सदा-सनातन है, इसका आविष्कार नहीं हो सकता, यह सदा दिया जाता है। संसार में सदा एक रहने वाली अगर कोई वस्तु है वह "सत्य" है, "सत्य" ज्ञान है। "सत्य सदा एक रहता है, अखण्डित रहता है, वेद के शब्दों में कहें तो सत्य सदा "अद्वय" है, "अदिति" है। यह नहीं हो सकता कि किसी बात के लिए हम कहें कि यह भी ठीक है, और उसकी विरोधी बात भी ठीक है। सत्य सदा "अद्वय" होता है। उदाहरणार्थ, हिन्दू हो, ईसाई हो, मुसलमान हो, यहूदी हो, पारसी हो- सभी कहेंगे कि सत्य बोलना चाहिये, कोई नहीं कहेगा कि सब भी बोल सकते हैं और झूठ भी बोल सकते हैं, सब कहेंगे कि प्रेम करना चाहिये, कोई नहीं कहेगा कि प्रेम भी करो और द्वेष भी करो, सब कहेंगे परोपकार करना उचित है, कोई नहीं कहेगा कि परोपकार भी करो, पर अपकार भी करो। ये तथा इस प्रकार के अनेक कई ऐसे आधारभूत तत्व हैं जिन्हें "अद्वय"- अर्थात् उनमें दो पक्ष हो नहीं सकते ऐसा सब कोई कहते हैं। अगर अदिति का अभिप्राय "अद्वय" है, तो वेद ने इस शब्द को उक्त मन्त्र में "सदावृध" शब्द के साथ जिसका अर्थ है- सदा वर्धमान, सदा बदलने वाला "वर्धमान" क्यों कहा ? वर्धमान तो वह तत्व है जो सदा बढ़ता रहता है। छोटे से बड़ा और बड़े से बहुत बड़ा हो जाता या हो सकता है। आज जैसा है कल वैसा नहीं है, अर्थात् पहले जैसा नहीं है। जो चीज या जो विचार बदलता रहेगा वही तो बढ़ेगा। वेद के एक साथ "अद्वय" तथा वर्धमान को जोड़ देना एक रहस्य की बात है। इस रहस्य को खोलने का कुछ प्रयत्न हम पहले कर चुके हैं, कुछ अब करेंगे।

यजुर्वेद के 40 वें अध्याय में "विद्या" तथा "अविद्या" इन दो शब्द का उल्लेख करते हुए लिखा है:

> अन्यदाहुः विद्यया
> अन्यदाहुः अविद्यया,
> इति शुश्रुम धीराणां,
> येनस्तद् व्याचचक्षिरे ।।
>
> विद्यां च अविद्यां च
> यस्तद् वेद उभयं सह।
> अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा
> विद्यया अमृतमश्नुते ।।

वेद के ये दोनों मन्त्र विलक्षण हैं। इनमें से पहले का अर्थ तो स्पष्ट है प्रायः अक्षर-ज्ञान तथा पढ़ने लिखने को हम "विद्या" कहते हैं, वेद का कहना है कि "विद्या" तथा "अविद्या" के ये अर्थ नहीं हैं। इतना ही नहीं इन शब्दों के यथार्थ- अर्थ बतलाये हुए वेद का कहना है कि "अविद्या-

रूपी-विद्या से मनुष्य मृत्युंजय बन जाता है, मृत्यु को जीत लेता है, परन्तु "विद्या रूपी विद्या से तो वह अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। वेद की यह विलक्षण घोषणा है। ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक तथा लौकिक शब्दावली में जमीन-आसमान का अन्तर है। उस घोषणा से स्पष्ट है कि वेद यहाँ भौतिकवाद तथा भौतिक विज्ञान को "अविद्या" कह रहा है क्योंकि औषधि आदि भौतिक औषधियों से तथा उसी प्रकार भौतिक साधनों से जीवन को दीर्घ किया जा सकता है, मृत्यु से लड़ा जा सकता है, मृत्यु-समुद्र को तरा जा सकता है, किन्तु अमरत्व तो सिर्फ अध्यात्मवाद तथा अध्यात्म विज्ञान से ही प्राप्त होता या हो सकता है। तभी कहा-"अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा- और आगे कहा-विद्यया अमृतम् अश्नुते।

यह ठीक है कि हमारा ज्ञान, ज्ञान तभी कहला सकता है जब वह वर्धमान हो, आगे-आगे बढ़े, उन्नति करे। आज का वैज्ञानिक-जगत इसलिए श्रेयस्कर माना जाता है क्योंकि आज जो बात ठीक मानी जाती है, कल रिसर्च या परीक्षण या खोज करते-करते गलत मालूम पड़ने पर छोड़ दी जाती है। अगर विज्ञान किसी जगह आकर खड़ा हो जाये, रुक जाय तो वह फेंक देने लायक होगा। परन्तु हमारी यह बात भौतिक-विज्ञान पर ही लागू होती है, अध्यात्मिक विज्ञान पर नहीं। अध्यात्मिक तत्व सदा "अद्वय" तथा "वर्धमान" होता हुआ भी "अवर्धमान" {सदा + अवृध} होता है। हिंसा से शुरु कर मनुष्य "अहिंसा" पर जाकर रुकता है, असत्य से शुरू कर "सत्य" की खोज में भटकता है, चोरी-डाके-स्तेय से चलता-चलता शान्ति-संतोष "अस्तेय" को जीवन का लक्ष्य बनाता है, पर-दारा गमन या अब्रह्मचर्य और दुराचार में भटकता-भटकता "ब्रह्मचर्य" तथा सदाचार को परम लक्ष्य समझने लगता है। भौतिक-तत्वजब-तक "वर्धमान" क सीमित रहते हैं, तब तक जीवन अपने लक्ष्य को नहीं पकड़ता जब जीवन के "वर्धमान" तत्व "अवर्धमान" हो जाते हैं, तब वे हिंसा से अहिंसा, असत्य से सत्य, स्तेय से अस्तेय, अब्रह्मचर्य से ब्रह्मचर्य, परिग्रह से अपरिग्रह, तक पहुँच जाते हैं, तब मनुष्य "अद्वय", "अदिति", अवर्धमान" को, जीवन के सनातन सत्य को पा लेता है। उसी अद्वय, अदिति, अखण्डित सत्य का वर्णन वेद में किया गया है। हमारे कथन का यह अभिप्राय नहीं है कि वेद में सिर्फ अध्यात्मवाद का वर्णन है, भौतिकवाद या विज्ञान का वर्णन नहीं है। भौतिक ज्ञान जब बढ़ेगा, तो बढ़ते-बढ़ते उसकी सीमा भी कभी- कभी आयेगी।

— क्रमशः

पं० रवीन्द्र जी आत्रेय का असामयिक निधन

डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री, एम.ए. पी० एच० डी०, रणवीर रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी (उ.प्र.)

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली-6 के विद्वान् पुरोहित पं० रवीन्द्रजी-आत्रेय का असामयिक देहावसान 16 अगस्त को मध्याह्न 12-30 बजे हो गया। वे मात्र 33 वर्ष के थे। मृत्यु के दिन तक वे ठीक थे। उस दिन प्रातः उन्होंने आर्यसमाज मन्दिर में आर्यबन्धुओं के साथ सन्ध्या और अग्निहोत्र किया था। बाद में उनके पैरों से चलने में कठिनाई हुई। शरीर में पसीना, घबड़ाहट तथा दस्त हुए। उन्हें तुरन्त सदर बाजार के स्टीफेन हॉस्पीटल में प्रवेश कराया गया। परन्तु वे बचाये न जा सके।

पं० रवीन्द्रजी अपने साधु स्वभाव, निश्छल हृदय, स्वदेशी वेशभूषा, उत्तम चरित्र और प्रशंसनीय पाण्डित्य से अपने आर्यसमाज मित्रों, अध्यापकों तथा पुरोहितों में सभी जगह समादृत थे. उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल रुद्रपुर, तिलहर {शाहजहाँपुर} में हुई थी। वहाँ हम दोनों सहाध्यायी थे। बाद में गुरुकुल सिरसागंज से व्याकरणाचार्य, राष्ट्रीय संस्कृत विद्या पीठ से बी0एड, दिल्ली विश्वविद्यालय से एम0ए0 तथा एम0फिल्, की उपाधियाँ प्राप्त की थीं। सम्प्रति वे इसी विश्वविद्यालय से पी0एच0डी0 कर रहे थे। अभी एक माह भी नहीं बीता था उन्हें शालीमार के डी0ए0वी0 पब्लिक स्कूल में अध्यापक हुए। गुरुकुल ततारपुर तथा एक संस्कृत संस्था में भी उन्होंने कुछ वर्ष पढ़ाये थे।

वेद प्रचार सप्ताह में वेद कथा के लिए उन्होंने मुझे बुलाया था और मेरा प्रवचन श्रावणी पूर्णिमा से सदरबाजार में होना था। किन्तु विधि का विधान विचित्र है। श्रावणी के दिन ही मुझे उनकी अन्त्येष्टि करानी पड़ी।। इससे बड़ी मर्मन्तुद्व्यथा मेरे लिए और क्या हो सकती थी।।। वे मुझसे 2 वर्ष छोटे थे। बहुत जल्दी ही इस असार संसार को छोड़कर वे चले गये।

उनके निधन से आर्य जगत एक युवा, कर्मशील, सौम्यस्वभाव विद्वान से वंचित हो गया। उनकी सती साध्वी मितभाषिणी पत्नी और उनके छोटे छोटे 3 बच्चे अनाथ हो गये। बड़ा पुत्र 6 वर्ष का है और सबसे छोटा मात्र 8 मास का।

उनकी इच्छा अपने पुत्रों को वेद का विद्वान तथा आर्यसमाज का प्रचारक बनाने की थी। इसी भावना से उन्होंने अपने पुत्रों का नाम "आर्यवर्द्धन" तथा "वेद वर्द्धन" रखा था और नामकरण संस्कार पं0 अभिविनय भारथी से कराया था।

क्या अब उनकी यह इच्छा पूरी हो सकेगी? पं0 अभिविनय भारथी ने तो उनके पुत्रों की शिक्षा के लिए 50/- रुपये मासिक देने की घोषणा की है।

आर्यसमाज सदर बाजार के अधिकारी तथा सदस्य गण भी कुछ प्रबन्ध कर रहे हैं।

मैं अपने मित्रों, गुरुकुलों के स्नातकों, आर्यसमाज के पुरोहितों, अध्यापक बन्धुओं तथा समस्त आर्यसमाजों से प्रार्थना करता हूँ कि सभी आर्यबन्धु उनके असहाय पुत्रों के पठन-पाठन तथा उनकी पत्नी के संरक्षण एवं भरण में यथाशक्ति सहयोग देकर एक स्वर्गीय आर्य विद्वान के अशक्त परिवार के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करें।

इस निमित्त आर्यसमाज सदरबाजार और लेखक में से किसी भी एक से सुविधानुसार पत्र व्यवहार या सम्पर्क करें।

सभा प्रधान जी का आ.स. बागपत में स्वागत

- दि0 22-8-89 को आर्यसमाज बागपत {मेरठ} में रात्रि को श्री वेदप्रकाश-जी ई0 के साथ पहुँचने पर आर्यसमाज के सदस्यों द्वारा उनका स्वागत किया गया। आर्य कवि गोष्ठी के विशेष अतिथि के कारण सभा प्रधान जी ने भगवान के अमर काव्य यजुर्वेद के चालिसवें अध्याय का भावार्थ जनता के समक्ष रखते हुए उन्हें बताया कि यह 40वाँ अध्याय एक ऐतिहासिक तथ्य की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करता है। महर्षि स्वामी दयानन्द जी के जीवन चरित्र में यह आता है कि पहले तो महर्षि भी अद्वैतवादी थे परन्तु यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का अध्ययन करके ही वे {ईश्वर, जीव, प्रकृति} त्रैतवादी हुए थे, ईश्वर सर्वव्यापक है, इस संसार के कण-कण में विराजमान है। वह ही ऐश्वर्य का स्वामी है इसलिए हम जीवों को त्यागपूर्वक ही ऐश्वर्य का उपभोग करना चाहिए। ज्ञान और कर्म पृथक-पृथक नहीं हैं अपितु एक दूसरे के पूरक हैं। कर्म के बिना ज्ञान अन्धा है और ज्ञान के बिना कर्म लंगड़ा है। ज्ञान और कर्म के समुच्चय से ही व्यक्ति का कल्याण होता है। व्यक्ति की मुक्ति के लिए यह बहुत आवश्यक है कि व्यक्ति अन्तिम समय में ओ३म् का स्मरण करे। तत्पश्चात् आर्य हुए कवियों को श्री प्रधान जी द्वारा भेंट भी करवाई गई।

सभा प्रधान जी का आ.स. खुर्जा में स्वागत

- दि. 21-8-89 को सायं श्री इन्द्रराज जी सभा प्रधान के आर्यसमाज खुर्जा {बुलन्दशहर} पहुँचने पर उन का हार्दिक स्वागत किया गया। श्री-सभा प्रधान जी ने श्री वीरेन्द्र शर्माजी-प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा बुलन्दशहर की उपस्थिति में जिले में प्रचार सम्बन्धी गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की एवं कुछ सुझाव दिए।

रात्रि को वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत आयोजित सभा में बोलते हुए सभा प्रधान जी ने वेद के पठन-पाठन पर बल देते हुए कहा कि जहाँ यह आशा की जाती थी कि विज्ञान के विकास होने पर रूढ़िवादिता और अन्धविश्वास दूर होगा वहाँ आज इस के विपरीत दूरदर्शन पर दिखाई जाने वाली रामायण और महाभारत से अन्धविश्वास बढ़ा है। साथ ही इस प्रकार की विचारधाराओं से लाभ उठाते हुए विदेश के इशारों पर भारत के मूल निवासी आर्यों {हिन्दुओं} की संख्या घटाने के लिए धर्मपरिवर्तन द्वारा निरन्तर राष्ट्र परिवर्तन का प्रयास किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में आर्यसमाज को सचेत होने की आवश्यकता है।

स्वर्णजयन्ती समारोह तथा निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

आर्यसमाज अग्रवाल मण्डी टटीरी {जनपद-मेरठ} अपना स्वर्ण जयन्ती समारोह दि0 10 अक्टूबर से 16 अक्टूबर 1989 तक बड़े समारोह के साथ मनाने जा रहा है। इस अवसर पर {1} योग-साधना शिविर {3} ऋग्वेद पारायण महायज्ञ तथा अन्य कई सुरुचि पूर्ण सांस्कृतिक एवं धार्मिक सम्मेलन होंगे। इस समारोह में आर्यजगत के उच्चकोटि के सन्यासी विद्वान, विदुषी महिलाएं एवं प्रचारक उपदेशक पधार रहे हैं। इस अवसर पर 4 अक्टूबर से 12 अक्टूबर तक सदैव की भाँति निः शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर {सौजन्य से - माता चन्नन देवी धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय जनकपुरी देहली, द्वारा प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सकों की देखरेख में डी0ए0वी0-इन्टर कालेज टटीरी में लगाया जायेगा। जनता से निवेदन है कि इष्ट मित्रों एवं परिवार सहित पधार कर लाभ उठावें।

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ.प्र.

आर्य विद्यालयों के शिक्षकों के धार्मिक प्रशिक्षण के सम्बन्ध में सूचना "आर्यमित्र" के माध्यम से प्रसारित की गई थी। अभी तक किसी भी विद्यालय ने इस निमित्त अपनी इच्छा प्रकट नहीं की है। दशहरे का अवकाश इस कार्य के लिए उपयुक्त होगा। उस अवसर पर जो विद्यालय अपने यहाँ धर्म प्रशिक्षण चाहते हों वे तत्काल मुझे सूचित करने की कृपा करें जिससे कि प्रशिक्षकों की व्यवस्था की जा सके।

-माधव सिंह
मंत्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ0प्र0

स्थायीपता-

अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य
पट्टी चौधरान
बड़ौत {मेरठ}

राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिन्दी

• श्री पवन कुमार, एम० ए०
बी० टी०, सिद्धान्त शास्त्री-लखनऊ

किसी भी देश का जन समूह अपने भावों और विचारों की भाषा के माध्यम से प्रकट करता है। भाषा मानव को प्राप्त हुआ, ईश्वर का महान वरदान है भाषा के द्वारा मनुष्य जाति की समस्त उपलब्धियों विज्ञान, कला, साहित्य, धर्म, संस्कृति सुरक्षित रही है। हर सम्बद्ध राष्ट्र की अपनी भाषा होती है। जिसमें वह अपनी भावनाओं और सभ्यता संस्कृति, धर्म और चेतन को प्रकट करता है। यही उसकी राष्ट्र भाषा कहलाती है। जो वास्तव में राष्ट्र की आत्मा है।

15 अगस्त सन् 1947 को भारतवर्ष विदेशी परतन्त्रता से स्वतन्त्र हुआ। 15 सितम्बर सन् 1949 को भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को भारतीय राजभाषा घोषित किया। हिन्दी इस घोषणा के पूर्व से भी भारत की जनता की सम्पर्क में बनी हुई थी। विशाल जनमत हिन्दी भाषा में अपने विचारों और भावों को प्रकट करता था। देश के अधिकांश भागों की विचार अभिव्यक्ति की भाषा हिन्दी थी। हिन्दी को राष्ट्रभाषा और राजभाषा बनाने में अहिन्दी भाषी महापुरुषों का महत्वपूर्ण योगदान था। हिन्दी की सर्वप्रथम पत्रिका हिन्दी में बंगदूत नाम की पत्रिका सन् 1829 में प्रकाशित की। श्री केशवचन्द्र सेन जी ने स्वामी दयानन्द सरस्वती को हिन्दी में अपने विचार प्रकट करने का परामर्श दिया था। श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर, श्री अरविन्द, श्री नवीन चन्द्रराय, विपिन चन्द्रपाल तथा नेता जी सुभाषचन्द्र बोस आदि बंगवासी हिन्दी भाषा के प्रयोग के पक्षपाती थे। महाराष्ट्र के लोकमान्य बालगंगाधर-तिलक तथा वीर विनायक दामोदर सावरकर ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने पर बल दिया।

गुजरात में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सर्वप्रथम हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार किया। राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी का महत्व स्वीकार करते हुए उन्होंने एक भाषा और एक लिपि की आवाज उठायी, उन्होंने अपने ग्रन्थ हिन्दी में लिखे और अपन अनुयायियों के लिए हिन्दी पढ़ना अनिवार्य घोषित कर दिया। स्वामी जी के पश्चात श्री-श्याम जी कृष्ण वर्मा, महात्मा मोहन दास करम चन्द गांधी तथा सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भी राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी के महत्व को स्वीकार किया। श्री राजगोपालाचारी ने दक्षिण भारत में हिन्दी का प्रचार किया। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डाक्टर सुनीति-कुमार चटर्जी हिन्दी को राष्ट्र भाषा के रूप में स्वीकार करते थे। यह सभी विभूतियाँ अहिन्दी भाषा-भाषी थे। जिन्होंने राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का महत्व स्वीकार किया।

हिन्दी ने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्वामी दयानन्द तथा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने हिन्दी भाषा में राष्ट्रीय जागरण का महत्व स्वीकार किया था। स्वामी दयानन्द ने कहा था कि आर्य भाषा हिन्दी राष्ट्रीय जनता की भाषायी एकता का माध्यम है। स्वामी जी के आर्य भाषा हिन्दी में लिखे गए ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में स्वदेशी राज्य तथा स्वतन्त्रता की भावना को स्वीकार किया, इतना ही नहीं उन्होंने अपने सुयोग्य शिष्य श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा, में स्वतन्त्रता संग्राम के लिये क्रान्तिकारी भावना पैदा की। उन्होंने श्री वर्मा जी को देव भाषा, संस्कृत, आर्यभाषा, हिन्दी तथा वैदिक धर्म के प्रचार की प्रेरणा दी।

पंजाब राज्य के निवासी श्री स्वामी दयानन्द के शिष्य महात्मा हंसराज लाल, देवराजलाल, लाला लाजपतराय तथा स्वामी श्रद्धानन्द ने हिन्दी भाषा के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण योगदान किया।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी ने अपने समस्त कार्य हिन्दी में करने की प्रेरणा दी। उनकी प्रेरणा थी। निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को शूल।।

उन्होंने पद्य और गद्य को जनता के विचारों का माध्यम बनाने के लिए भागीरथी प्रयत्न किया। उनकी पद्यार्थ भाषा, सरल थी उसमें आधुनिक विचारों, भावनाओं का चित्रण किया। गद्य की भाषा खड़ी बोली थी जिसमें संस्कृत अरबी तथा फारसी के कठिन शब्दों को महत्व न देकर जनता में व्यवहृत तथा प्रचलित शब्दों का प्रयोग कर हिन्दी को जनभाषा का रूप दिया। पद्य के क्षेत्र में जन भाषा के विकास में 84 सिद्धों, जैनों, नाथ पंथी साधुओं, सन्त कवियों और हिन्दी की प्रेमाख्यान शाखा के कवियों ने जनभाषा के संवारने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

द्विवेदी युग तथा छायावादी युग में हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का संघर्ष चित्रित हुआ। श्री मैथिलीशरण गुप्त, श्री माखनलाल चतुर्वेदी, श्री सोहनलाल द्विवेदी, श्री रामधारी सिंह "दिनकर", श्री बालकृष्ण शर्मा "नवीन" आदि अन्य कवियों ने भारत की स्वतन्त्रता के संघर्ष का सिंहनाद किया। श्री जयशंकर प्रसाद, श्री सुमित्रानन्दन पन्त ने भी जागरण का शंखनाद किया। हिन्दी स्वतन्त्रता संघर्ष के दिनों में जागरण की भाषा रही। इसने भारतीय राष्ट्रीय चेतना का तथा सांस्कृतिक जागरण का प्रतिनिधित्व किया। जनजीवन के विविध चित्र हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किये गये।

भारत की स्वतन्त्रता प्राप्त के बाद हिन्दी राष्ट्र भाषा के रूप में, एकता के माध्यम के रूप में विद्यमान है। यद्यपि संविधान ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा का गौरव प्रदान कर दिया है, पर आज हिन्दी को राष्ट्रभाषा और राज्यभाषा के रूप में अपनाने में बहुत सी व्यवहारिक कठिनाईयाँ उपस्थित हैं। क्षेत्रीय संकीर्णता इसमें बाधक है। अंग्रेजीपन की मानसिक दासता इसमें सबसे बड़ी रुकावट है।
हिन्दी का राजनैतिक हितों की दृष्टि से विरोध किया जा रहा है। इस तुष्टीकरण की नीति के कारण अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व बढ़ रहा है। जब तक अहिन्दी भाषी चाहेंगे, अंग्रेजी प्रचलित रहेगी। इस नीति ने राष्ट्र भाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी की प्रगति को रोक दिया है।

हमें इस बात पर विचार करना होगा कि अंग्रेजी विदेशी भाषा है जो अंग्रेजी शासनकाल में भारतीय जनता पर पूर्वक थोपी गई थी। वह कभी भी किसी भी अवस्था में भारत की जनता की भाषा नहीं बनाई जा सकती। भारतीय जनता अपनी भाषाओं को अंग्रेजी भाषा की मानसिक दासता से मुक्त करना होगा। एकभाषा के रूप में अंग्रेजी का सम्मान किया जायगा। जो उसको पढ़ना चाहे उन्हें उसे पढ़ने का अवसर दिया जाय पर उसे भारतीय जनता की राजकीय भाषा तथा शिक्षा का माध्यम नहीं बनाया जा सकता।

हिन्दी को भारत की राष्ट्र भाषा "राजभाषा" के रूप में स्वीकार करना होगा। हिन्दी के राष्ट्रभाषा के स्वरूप में विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं के शब्दों का प्रतिनिधित्व किया जायेगा। तथा भारतीय और क्षेत्रीय भाषाओं का समानता के आधार पर सम्मान किया जाना है और उनके स्वतन्त्र सहयोग से हिन्दी का विकास होगा।

यद्यपि हिन्दी भाषा मूलतः संस्कृत के तत्सम शब्दों को स्वीकार करेगी उसमें जनता के व्यवहार में उपयोगी शब्दों को स्वीकार किया जायेगा। विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी भाषा के क्षेत्रीय प्रभाव "शब्दावली" को स्वीकार करेगी। शासन की भाषा सरल और बोधगम्य होगी, न्यायालय की भाषा भी तत्सम शब्दों में स्वतन्त्र होगी, उसमें ऐसे शब्द अपनाये जायेंगे जिनको जनता समझती है। शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा का महत्व रहेगा पर राष्ट्रभाषा हर देशवासी के लिए अनिवार्य होनी चाहिए। यद्यपि हिन्दी किसी भाषा-भाषी पर बल पूर्वक नहीं थोपी जायेगी, पर स्वेच्छा से विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी का व्यवहारिक उपयोग किया जायेगा बिना प्रयोग में लाए राष्ट्रभाषा और राजभाषा के रूप में हिन्दी की प्रगति नहीं हो सकती। ◘

श्री आत्रेय जी का निधन

आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली के सुयोग्य युवा विद्वान पुरोहित आचार्य-रवीन्द्र कुमार जी आत्रेय का अन्तिम संस्कार निगम बोध घाट पर 17 अगस्त-1989 को किया गया। श्री आत्रेयजी का निधन आर्यसमाज सदर बाजार के लिए तो अपूरणीय क्षति है ही, साथ में सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए भी। वे युवा विद्वान थे और उनसे आर्य जगत को बड़ी आशाएं थीं।

मेरठ में कृष्णजन्माष्टमी पर्व समारोह

- दिनांक- 24-8-89 को आर्यसमाज मन्दिर बुढ़ाना गेट ﴾मेरठ﴿ के सत्संग हाल में जन्माष्टमी का पर्व हवन, भजन तथा विभिन्न मूर्धन्य विद्वानों के प्रवचन के साथ समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर "योगेश्वर श्री कृष्ण आज के परिपेक्ष्य में" विषय पर प्रोफेसर गणेश दत्त जी प्राचार्य साहिबाबाद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्री प्रोफेसर शिवानन्द जी पूर्व प्राचार्य देवनागरी इन्टर कालेज, डा0 निरूपण विद्यालंकार, डा0 सत्यपाल-शास्त्री , श्री पं0 इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा जयंत कुमार जी पाण्डेय ने योगेश्वर श्री कृष्ण के प्रेरणास्प्रद जीवन तथा उनकी नीतियों की व्याख्या की।

श्री डा0 सत्यपाल जी ने योगेश्वर श्री कृष्ण को भारत की एक ऐसी महान आत्मा बताया जिसने आततायियों तथा धर्म विरूद्ध आचरण करने वालों के विरूद्ध संघर्ष किया और उनको पराजित किया।

श्री जयन्त कुमार पाण्डेय ने कहा कि राष्ट्र की स्वतन्त्रता, अखण्डता तथा धर्म और संस्कृति की रक्षा करने के लिए हमें योगेश्वर श्री कृष्ण की नीतियों का अनुसरण करना चाहिए। आततायियों, अत्याचारियों तथा राष्ट्र-धर्म और संस्कृति के शत्रुओं का नाश करने हेतु साम., दाम, दण्ड, भेद का यथा स्थिति प्रयोग करना चाहिए। आदर्श वाद ﴾मर्यादा﴿ का अन्धानुकरण हमारे राष्ट्र-धर्म तथा संस्कृति के लिए घातक है। आज जब राष्ट्र विखण्डन के कगार पर है तथा हमारी संस्कृति और धर्म को नष्ट किया जा रहा है, हम मूक दर्शक बने असहाय रूप में भारत माता की लाज लुटते देख रहे हैं। हमारी स्थिति वही है जो स्थिति द्रौपदी के चीर-हरण के समय धृतराष्ट्र, भीष्मपितामह, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य तथा विदुर की थी। हमें ऐसी मर्यादाओं को तोड़ देना चाहिए जिनके कारण हमारे राष्ट्र की अखण्डता तथा स्वतन्त्रता खतरे में पड़ गई है। उन्होंने युवाओं को नई दिशा देने हेतु व्यापक तथा उदार दृष्टिकोण अपनाने की अपील की।

श्री शिवानन्द जी भूतपूर्व प्राचार्य देवनागरी इन्टर कालेज मेरठ ने कहा कि योगेश्वर श्री कृष्ण ने गीता में कर्म करने का उपदेश दिया है और यह कर्म निष्काम कर्म होना चाहिए। राष्ट्र रक्षा के लिए हर तरह के स्वार्थों का त्याग कर, परिस्थिति, वातावरण तथा शत्रु पक्ष की शक्ति को ध्यान में रखकर, विजय भावना से प्रेरित हो कर नीति पूर्वक उठाया गया कदम ही विजय दिलाता है। इस अवसर पर डा0 गणेशदत्तजी-प्राचार्य साहिबाबाद स्नातकोत्तर महाविद्यालय ने अपने विद्वतापूर्ण व्याख्यान में कहा कि केवल श्री कृष्ण ही थे। जिन्हें सम्पूर्ण सोलह कलाओं से पूर्ण कहा जा सकता है। उन्होने गीता से विभिन्न उद्धरण देकर योगेश्वर श्री कृष्ण के महाभारत तथा तत्कालीन समय में सर्व प्रमुख भूमिका की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने राष्ट्र के इस खतरे के समय में गीता, महाभारत, तथा श्री कृष्ण से कर्तव्य करने की प्रेरणा लेने की अपील की।

डा0 निरूपण विद्यालंकार ने कहा कि भगवान श्री कृष्ण के जीवन से निष्काम कर्म करने की प्रेरणा मिलती है। उन्होंने कहा कि "वावमानी" पत्रिका का स्तर और ऊँचा किया जायेगा तथा इसे उच्चतम स्तर पर शोध ग्रन्थ बनाया जायेगा,।

इस अवसर पर पं0 इन्द्रराजजी-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने कहा कि महाभारत काल जब राजपरिवारों का नैतिक स्तर पतन की पराकाष्ठा तक पहुँच चुका था केवल एक ही व्यक्तित्व सूर्य की तरह सारे भारत राष्ट्रकोपतन के इस अन्धकार से मुक्त करने वाला दृष्टिगोचर होता है वह है भगवान श्री कृष्ण का व्यक्तित्व। भगवान श्री कृष्ण ने जहाँ कंस, शिशुपाल जैसे अत्याचारियों का स्वयं वध किया वहीं कौरव-पॉण्डव युद्ध में पाण्डव पक्ष के समर्थन में स्वयं अर्जुन के रथ का सारथी बनकर पाण्डवों की विजय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब जब पाण्डवों को दिशा निर्देश देने का समय आया, योगेश्वर श्री कृष्ण ने पाण्डवों की सहायता की। योगेश्वर श्रीकृष्ण के बिना पाण्डवों का विजय श्री का वरण करना असम्भव होता। जरासन्ध, कर्ण तथा द्रोणाचार्य का अन्त करने के लिए तथा दुर्योधन को परास्त करने के लिए श्री कृष्ण द्वारा अपनायी गई नीति, आज के परिपेक्ष्य में राष्ट्र की रक्षा के सर्वोत्तम कर्म सिद्ध हो सकती है। कार्यक्रम के संयोजक श्री ओमप्रकाशजी जौहरी ने द्रौपदी के चीर-हरण पर एक प्रश्न विद्वानों के समक्ष प्रस्तुत किया कि जब द्रौपदी चीर हरण के समय योगेश्वर कृष्ण बराबर चीर बढ़ाते हुए वहां उपस्थित थे तो उन्होंने वहां प्रकट होकर दु:शासन की हत्या क्यों नहीं कर दी जबकि समस्त राजाओं की उपस्थिति में 100 गाली देने पर शिशुपाल का वध कर दिया था।

इस पर श्री इन्द्रराज जी ने उत्तर दिया कि इन घटनाओं के पश्चात् जब श्री कृष्ण पाण्डवों से मिले तो द्रौपदी ने अपना दु:ख सुनाया कि कैसे उसका अपमान भरी सभा में किया गया। उस समय श्री योगेश्वर-श्री कृष्ण जी ने कहा था कि मैं उस समय युद्ध में व्यस्त था इस लिए मुझे इस जुए आदि घटनाओं का पता ही नहीं था। यदि मुझे पता लगता तो मैं अवश्य आता और जुए को अवश्य रोक देता। तत्पश्चात् डा0 निरूपणजी ने इस बात की पुष्टि करते हुए कहा कि जब श्री योगेश्वर श्री कृष्ण दूत बन कर जाने लगे तो सबने अपनी-अपनी बात कही परन्तु द्रौपदी ने केवल अपने बालों को खींचने की बात कही, चीरहरण की बात नहीं कही। इससे स्पष्ट है कि चीर-हरण का साहस ही दु:शासन आदि नहीं कर सके।

- संवाददाता।

कनोहर लाल कालेज में स्वतन्त्रता दिवस

अगस्त 15, सेठ कनोहर लाल जी द्वारा चार कक्षों के निर्माणार्थ शिलान्यास के लिए विशेष यज्ञ हेतु मनोहर लाल कन्या इण्टर कालेज में श्री इन्द्रराजजी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने स्वतन्त्रता दिवस पर छात्राओं के मध्य बोलते हुए स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए हुए बलिदानी वीरों के रोमांचक संस्मरण सुनाते हुए छात्राओं को बताया कि किस प्रकार कष्ट, अत्याचार एवं बलिदान देकर हमें स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है। उसकी रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। आज देश को बाहर से एवं अन्दर से बहुत खतरा है। पाकिस्तान अपना विशाल युद्धाभ्यास हमारी कश्मीर की सीमाओं के पास ही कर रहा है। उधर हमारी सेनाएं लंका में फंसी हुई हैं। बड़े देश हमारी उन्नति को देखकर ईर्ष्यालु हो रहे हैं। वे हमारी उन्नति को समाप्त कर देना चाहते हैं। एक बार चीन का आक्रमण और दो बार पाकिस्तान का आक्रमण इस के ज्वलन्त उदाहरण हैं। हिन्दी चीनी भाई-भाई के धोखे में चीन ने जो हमें थप्पड़ मारा। आज उसका यह परिणाम है कि हम इतने बलिष्ठ हैं कि हमारी और कोई आँख उठा कर नहीं देख सकता। अब इस बात की आवश्यकता है कि हम जातिपाँति, छुआछूत, घृणा और हिंसा से दूर हट कर परस्पर एक जुट होकर अपनी मातृभूमि के सच्चे भारतीय सपूत बनकर इसकी रक्षा करें।

सेठ कनोहर लाल जी ने बच्चों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि इस समय आप सब को अच्छे विद्यार्थी बनने की आवश्यकता है। आप सब इस विद्यालय परिसर में जब अनुशासन और परिश्रम से पढ़ेंगें तो आप की यह ही देश सेवा हो जाएगी। श्री सेठ जी ने 95 प्रतिशत परिणाम के लिए अध्यापिका वर्ग को धन्यवाद दिया और कालेज में पवित्र वातावरण के लिए बच्चों को आशीर्वाद दिया।

इस से पूर्व बच्चों के सांकेतिक एवं सामूहिक गान के आकर्षक कार्यक्रम हुए।

- संवाददाता।

वेद प्रचार सप्ताह

"आर्यसमाज निरालानगर के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह 17अगस्त 1989 से 24 अगस्त 1989 तक हसनगंज, इन्दिरा नगर, ﴾इन्दिरानगर समाज के साथ सम्मिलित﴿ अलीगंज डालीगंज, बड़ा चान्दगंज, निरालानगर आदि मुहल्लों में अच्छी सफलता के साथ मनाया गया।

नवीन आर्यसमाज की स्थापना

सभा के उपदेशक पं0 महावीर शास्त्री गाजीपुर निवासी श्री ब्रह्मदेव राय प्रधान जिला उपसभा आजमगढ़, श्री रामचन्द्र जी प्रधान आर्यसमाज मऊ के सहयोग से गोकुलपुरा में आर्यसमाज एवं स्त्री आर्यसमाज स्थापित हुआ।

बाल जगत

महर्षि दयानन्द

ये सच्चे "शिव" नहीं !

• श्री चन्द्रपाल सिंह "मयंक", कानपुर

और तभी शिवरात्रि पर्व था
धूम-धाम से आया।
सारे घर ने व्रत रक्खा
पूजन में ध्यान लगाया।
ये शिव-भक्त। सभी ने दिनभर
शिव जी का पूजन कर।
व्रत रख कर उत्साह पूर्वक
किया कीर्तन दिन भर।
घर में ही शिव का मन्दिर था,
वहीं सभी घर वाले
पूजन-आराधन-कीर्तन में
हुए सभी मतवाले।
धीरे-धीरे बीत गया दिन।
रजनी - रानी आई।
अधिक थकावट से तब निद्रा।
घर वालों को लाई।
किन्तु "मूलशंकर" जगता।
उसने न पलक झपकाई।
था उत्साह भरा नस-नस में,
निद्रा दूर भगाई।
वहीं मूर्ति शिव जी की रक्खी,
उस पर चढ़े हुए फल।
तभी किसी कोने से आया
नन्हा चूहा - चंचल।
चारों ओर देखता, चूहा,
धीरे - धीरे आया।
बड़े सशंकित मन से उसने
अपना पैर बढ़ाया।
शिव जी पर जो बेर चढ़ा था,
उसको तुरत कुतर कर।
चला वहाँ से रुका न पलभर-
एक बेर को लेकर।
बड़े ध्यान से देख रहा था
चूहे को यह लीला।
उसके मुख का रंग पड़ गया
अति चिन्ता से पीला।
सोच रहा था वहीं
मूलशंकर मन में घबराते-
"जो अपने भोजन की रक्षा
हाय। नहीं कर पाते।
ये कैसे शिव ? जिनका भोजन
चूहे भी ले जाते।
नन्हें चूहे से भी अपना
भोजन बचा न पाते।
यह सच्चे शिव नहीं।
वास्तविक "शिव" है कोई और।
अब मैं उसको ही ढूँढूँगा,
देखूँ उसका ठौर।
"शिव" तो सबका रक्षक है ।
करता सबका कल्याण ।
इसीलिए तो शिवा जी पूजा
करते है इंसान।
यह तो "शिव" है नहीं।
करेंगे यह कैसे कल्याण।
नन्हा सा चूहा भी इनको
करता जब हैरान।
यह है केवल मूर्ति। नहीं है
इसमें शक्ति जरा भी।
मेरे मन में इसके प्रति है
शेष न भक्ति जरा भी।
अब सच्चे शिव को खोजूंगा,
ढूँढूँगा जीवन में।
है भर गई अजब बेचैनी
सी मेरे तन-मन में।"
ऐसे ही विचार उठ-उठ कर
व्याकुल उसे बनाते।
और मूलशंकर रजनी को
देख रहा था जाते।

गोहत्या बन्द करो, अंग्रेजी हटाओ, शराब के ठेके बन्द करो

नई दिल्ली : दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग में निर्णय लिया गया कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अनुदेशित त्रिसूत्री कार्यक्रम की अनुपालना दिल्ली प्रान्त में पूरी शक्ति से की जाए। ये तीन सूत्र हैं- गोहत्या बन्द करो, अंग्रेजी हटाओ और शराब के ठेके उठाओ। यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि भारत की अर्थव्यवस्था के मूलाधार गौ की हम रक्षा नहीं कर पा रहे हैं, आज भी हमारा कामकाज विदेशी भाषा में चलता है। हम भारतीय भाषाओं को समुचित स्थान नहीं दे पा रहे हैं। भारतीय संस्कृति की परिचायक संस्कृत भाषा को जो सभी भाषाओं की जननी है, उसको पाठ्यक्रम से हटाया जा रहा है। शराब और अन्य नशों के कारण देश के युवकों का चरित्र गिरता जा रहा है। आर्यसमाज ने राष्ट्रहित में इन कल्याणकारी कार्यक्रमों को हाथ में लिया है। सभा के महामंत्री श्री सूर्यदेव ने बताया कि आगामी 7 नवम्बर 1989 को गो रक्षा हेतु एक विशाल रैली दिल्ली में निकाली जाएगी। सभा की अध्यक्षता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा0 धर्मपाल ने की। दिल्ली की 200 आर्यसमाजों एवं शिक्षण संस्थाओं से आए प्रतिनिधियों को सार्वदेशिक सभा के प्रधान पूज्यपाद स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती महाराज ने भी सम्बोधित किया।

बाढ़ ग्रस्त क्षेत्र चाम्बुल वाडा रायगढ़ (महाराष्ट्र) में सहायता कार्य

बम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसमाज शान्ताक्रुज के द्वारा बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में अनाज, वस्त्र तथा अन्य खाद्य सामग्री का वितरण कार्य किया गया। 24 जुलाई को भीषण वर्षा एवं तूफान से रायगढ़ तथा महाराष्ट्र प्रदेश के अन्य क्षेत्रों में अतिवृष्टि से भीषण बाढ़ आ गई जिसमें मकान, स्त्री बच्चे, पुरुष बह गए। सभा ने निश्चय किया कि प्रति सप्ताह निरीक्षण कर आवश्यक सामग्री का वितरण किया जायेगा। यह आर्यसमाज का नैतिक कर्तव्य है।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

दिनांक- 17 अगस्त। आर्यसमाज लश्कर ग्वालियर-9 प्रातःकाल एम0एल0बी0-कालेज के डा0 डी0पी0 श्रीवास्तव ने महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के सर्वतोन्मुखी योगदान का ओजपूर्ण शैली में सारगर्भित विवेचन किया। श्री भारतभूषण त्यागी ने समारोह की अध्यक्षता की।

पुरस्कार वितरण समारोह

15 अगस्त १९ स्वतन्त्रता दिवस के शुभावसर पर जनपद शाहजहाँ पुर धन्योरा आर्यावर्त समाज सेवी मंच अध्यक्ष कुंवर-विजय कुमार सिंह आर्य ने दयानन्द-बाल सेना पुरस्कार योजना के अन्तर्गत जू0हा0 स्कूलों व प्रा0पा0 धन्योरा के छात्रों को बाल कविता व राष्ट्रीय गीत प्रतियोगिता पर पुरस्कार वितरण किया।

आर्यसमाज बाँकनेर (अलीगढ़)

प्रधान - श्री डिप्टी सिंह
मंत्री - श्री देवेन्द्र कुमार
कोषा0 - श्री विजय कुमार गोयिल

शुभ विवाह सम्पन्न

श्री अशोक कुमार आर्य पुत्र श्री रामरक्षपाल आर्य निवासी रजपुरा (बदायूँ) का शुभ विवाह श्री फकीरचन्द जी आर्य निवासी सैदन (मुरादाबाद) की पुत्री आयुष्मती उर्मिला देवी के साथ पं0 शिवकुमार शास्त्री के पौरोहित में पूर्ण वैदिक रीति से 1-7-89 को सम्पन्न हुआ। नगर के अनेक आर्य नर-नारियों ने भाग लेकर नवदम्पति को शुभाशीष प्रदान किया।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व सम्पन्न

श्री कृष्ण जन्माष्टमी का कार्यक्रम आर्यसमाज गोनी (हरदोई) में व्यापक रूप से मनाया गया जिसमें हरिजनों एवं कमजोर वर्गों के लोग सम्मिलित हुए। समारोह में स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री मथुरा सिंह व सभा अन्तरंग सदस्य श्री विमल कुमार-एडवोकेट का विशेष योगदान रहा।

- बृजनाथ शर्मा प्रधान

आर्यसमाज घोड़ासहन (पू0 चम्पारण)

प्रधान - श्री मंशा प्रसाद आर्य
मंत्री - श्री सूर्य सिंह
कोषा0 - श्री रामाकान्त गुप्ता

सूचना

आर्यसमाज चौक बाजार बुलन्दशहर व गायत्री परिवार द्वारा आयोजित वेद प्रचार श्रावणी पर्व हिन्दी साहित्य परिषद भवन के प्रांगण में श्री महेशचन्द गुप्त प्रधान व वीरेन्द्र पाल शर्मा श्री अनिल कुमार-गुप्ता, यतीश कुमार गोयल, श्रीमती-कौशल्यादेवी, श्रीमती रामगुनी जी, माता-दयावती जी श्रीमती कमला रस्तौगी के सतत प्रयासों से श्रावणी पर्व वेद प्रचार उत्सव दि0 25,26,27 अगस्त को बड़े सफलता पूर्वक मनाया गया जिसमें पूज्य आर्यवेद भिक्षु जी श्री उर्मिला जी भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क एंडपार्टी ने आकर धर्म प्रेमियों को धर्म लाभ कराया।

आर्यसमाज में आर्यमित्र का योगदान

— श्री लक्ष्मीनारायण शास्त्री
साहित्यरत्न, आर्यसमाज लौकहवा, गोण्डा

पाठकों। आर्यमित्र का अंक अपने सामने रख कर आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में आर्यमित्र ने कितना योगदान दिया है। आज इस पर अपने कुछ विचार प्रस्तुत कर रहा हूँ। किसी संस्था तथा धर्म के प्रचार में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी जगत में जहाँ पत्रकारिता का अधिक महत्व है, वहाँ आर्य जगत में भी कई पत्रिका साप्ताहिक तथा मासिक निकलती हैं। आर्य जगत में सबसे प्राचीन हमारा यह आर्यमित्र ही है भारत में तथा विश्व में जितनी आर्य प्रतिनिधिसभायें हैं वे प्रायः अपनी पत्रिका निकालती हैं। आर्यमित्र सर्वप्रथम ईश्वर विश्वासी पत्रिका है। सर्वप्रथम इसके प्रथम पृष्ठ पर ओ३म् जो परमात्मा का मुख्य नाम है अंकित रहता है। फिर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अर्थात् सारे विश्व को आर्य बनाओ, हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई बनाने का प्रचार नहीं करता अपितु मानव अर्थात् श्रेष्ठ बनाने का प्रचार करता है। यह पत्रिका साम्प्रदायिकता से कोसों दूर है। यह प्रभु की विमलवाणी वेद का विश्व के प्रांगण में प्रचार करती है। जब हिन्दी जगत् में तथा आर्य जगत में दो चार ही पत्र-पत्रिकायें निकल रहीं थीं, उस समय आर्यमित्र का जन्म हुआ था। इस पत्रिका में हिन्दी जगत के मूर्धन्य कवि, साहित्यकार डा0 हरिशंकर-शर्मा, पं0 बनारसी दास चतुर्वेदी, डा0बाबूराम सक्सेना, सुप्रसिद्ध क्रान्ति कारी पं0 रामप्रसाद-बिस्मिल, भगत सिंह तथा वीरसुभाष-चन्द जी का लगाव रहा है। एक बार आर्यमित्र पर कुछ आपदा आ गई और डाक्टर हरिशंकर जी शर्मा सुप्रसिद्ध धनाढ्य शिवप्रसाद गुप्त जी के साथ विश्व की यात्रा पर जा रहे थे कि उनके पिता सुकवि क्रान्तिकारी नाथूराम शंकर शर्मा का पत्र आया कि पुत्र आर्यमित्र के सम्पादन में अपना योगदान दो और विश्व की यात्रा स्थगित कर दो। पिता का पत्र पाते ही डा0 हरिशंकर शर्मा ने विश्व की यात्रा रद्द कर दी। पहिले यह पत्रिका आगरा से निकल रही थी। मैं इस पत्रिका का ग्राहक सबसे पुराना हूँ। मेरी अवस्था इस समय 58 वर्ष की है इसमें से 13 वर्ष निकाल दीजिये अर्थात् 1947 से इसका ग्राहक हूँ। मुझे स्मरण है कि इसका कोई अंक ऐसा नहीं हुआ जिसको मैंने पढ़ा नहीं है। जब मैं कक्षा 6,7 में पढ़ रहा था तब मुझे 1936 से 1946 तक का आर्यमित्र का अंक अपने चचेरे बड़े भाई जो अध्यापक थे वे प्रायः ठाकुर बब्बन सिंह से मँगवाते थे उसको प्रायः पढ़ा करता था। जब कुछ ज्ञान परिपक्व हुआ तब से आर्य मित्र का ग्राहक बन गया हूँ। यह पत्रिका 92 वर्ष पूर्ण कर रही है। इस पत्रिका के दूसरे पृष्ठ पर सृष्टि सम्वत्- 197, 29, 49, 090 वर्ष अंकित रहता है। इसके पश्चात् सम्पादकीय लेख तथा लेखक एवं कवियों के लेख तथा कविताएं अपनी छटा दिखलाती हैं। लेख एवं कविताएँ उदबोधनात्मक तथा ज्ञान से युक्त रहती हैं। वर्तमान समय में इस पत्रिका का संचालन माननीय इन्द्रराजजी, वे मन्त्री मन मोहन जी तिवारी तथा पूज्य इन्द्रदेव जी पाठक के द्वारा हो रहा है। प्रभु की कृपा से हमारा आर्यमित्र उत्तरोत्तर उन्नति पथ की ओर बढ़ रहा है। 8 वर्ष के पश्चात् हम लोग आर्यमित्र का शताब्दी समारोह करेंगे और आर्यमित्र जीवेमशरदः शतम् को साकार बनायेगा। आर्यमित्र का घर-घर प्रचार करना हम आर्यों का पुनीत कर्तव्य है। भारत वर्ष में क्रान्ति का शंख नाद इस पत्रिका द्वारा ही हुआ है और स्वतंत्रता में प्रमुख योगदान रहा है। ●

आर्यसमाज गोला गोकर्णनाथ (खीरी)

गोला गोकर्णनाथ आर्यसमाज को एक पंखा विजय कुमार राठी आर्य सभासद पुत्र श्री स्व0 निर्मल चन्द-राठी ने प्रदत्त किया है।

आर्यसमाज गोला ऐसे दानवीर आर्य पुरुष का हार्दिक आभार व्यक्त करता है। ●

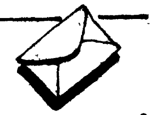
बरेली जनपद में वेदप्रचार

दिनांक- 15.7.89 से 30.7.89 तक श्री सीताराम शर्मा तथा श्री गजराज सिंह राघव ने बरेली के विभिन्न गाँवों व आर्यसमाजों में प्रचार कार्य किया।

ग्राम सैंजनी, दमौरा, बहेड़ी नवायल, अलीगंज, राजपुर कलां आंवला, रम्पुरिया आदि में प्रचार हुआ। काफी संख्या में हर जगह लोगों ने वेदप्रचार कार्यक्रम में भाग लिया।

मुरादाबाद में प्रचार

आर्य उप प्रतिनिधि सभा (मुरादाबाद) के वेद प्रचार मण्डल द्वारा पद यात्रा एवं वेद प्रचार श्री कड़कदेव ब्रह्मचारी श्री रामलाल, श्री प्रभात कुमार श्री-कन्दन प्रकाश की मण्डली द्वारा तहसील ठाकुर द्वारा में ग्रा0 लालापुर, टाण्डा अफजल, अन्सालतपुर, कासमपुर, पण्डितपुर, जलालपुर आदि में हुआ। कई स्थानों पर आर्यसमाजों की स्थापना हुई। जनता में वैदिक धर्म के प्रति निष्ठा जागृत हुई।



हमारे पाठक क्या कहते हैं

श्रीमान् सम्पादक जी,

आपका "आर्यमित्र" बहुत अच्छा और सुन्दर ढंग से निकलता है। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद है। श्रीमान् जी पत्र सही समय से हमारे पास प्रत्येक सोमवार को पहुँच जाता है, आपके आर्यसमाज के बहुत अच्छे नियम हैं। "आर्यमित्र" हमारे तथा प्रबुद्ध लोगों के बहुत उपयोगी है। इससे जीवन का मार्ग दर्शन मिलता है, साथ ही वैदिक धर्म के लिए जिज्ञासा बढ़ती है।

-लल्लन प्रसाद गुप्त,
गौगपुर, चुनार, मिर्जापुर।

बिजनौर-गढ़वाल का जनपदीय आर्य महासम्मेलन

आर्योप प्रतिनिधि सभा बिजनौर-गढ़वाल का जनपदीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 1,2 व 3 अक्टूबर 1989 को आर्य समाज बिजनौर के सभागार में आयोजित किया जाएगा जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, मंत्री पं0 सच्चिदानन्द शास्त्री, प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पंडित इन्द्रराज जी तथा मंत्री पं0 मनमोहन तिवारी के अतिरिक्त आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान साधु सन्यासी उपदेशक और भजनोपदेशक पधार रहे हैं। सम्मेलन से एक दिन पूर्व दिनांक 30 सितम्बर को 1 बजे एक भव्य शोभायात्रा का भी आयोजन किया गया है। शोभायात्रा में बिजनौर और गढ़वाल जनपदों के आर्य प्रतिनिधियों के अतिरिक्त आर्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की रैली और झांकियाँ गणवेश और बैण्ड बाजों के साथ प्रस्तुत की जाएँगी। इस अवसर पर एक विशाल आर्यवीर दल शिविर का भी आयोजन किया जाएगा।

सुरेन्द्र सिंह राजपूत — मंत्री
जयनारायण "अरुण" — प्रधान
आर्योप प्रतिनिधि सभा बिजनौर-गढ़वाल

मेरठ में संस्कृत दिवस सम्पन्न

- दि0 17-8-89 को आर्यसमाज बुढ़ाना द्वार मेरठ शहर में "संस्कृत दिवस" समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर नगर के विभिन्न विद्वानों ने भाग लिया जिन में डा0 निरूपण विद्यालंकार श्री सत्यपाल जी शास्त्री, प्रो0 शिवानन्द जी, श्री जगन्नाथ जी व्यास, श्री डा0 गणेश दत्त जी एवं श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश के नाम उल्लेखनीय हैं।

श्री सत्यपाल जी शास्त्री ने संस्कृत भाषा को संसार की समस्त भाषाओं की जननी बताया। उन्होंने विभिन्न उद्धरणों द्वारा अपने मन्तव्य की पुष्टि की'

प्रो0 शिवानन्द जी ने सरकार द्वारा संस्कृत को पाठ्य क्रम से हटा देने पर रोष प्रकट किया। उन्होंने कहा कि संस्कृत सारे भारत को जोड़ने वाली भाषा है। उसको हटाने से हमारी संस्कृति ही नष्ट हो जाएगी। बड़े खेद का विषय है कि संविधान का उल्लंघन करते हुए बिहार में उर्दू को दूसरी भाषा का दर्जा दे दिया है। जबकि संस्कृत भाषा के द्वारा ही भारत की संस्कृति और स्वतन्त्रता आदि की सुरक्षा अनिवार्य है। उन्होंने भारत सरकार से अनुरोध किया कि वह संस्कृत को समुचित संरक्षण देकर भारतीय संस्कृति की रक्षा करें।

श्री पं0 जगन्नाथ जी व्यास ने कहा कि संस्कृत की उपेक्षा के लिए संस्कृतज्ञ ही उत्तरदायी हैं। यदि संस्कृतज्ञों ने अपने जीवन में संस्कृत को अपनाया होता तो संस्कृत की यह दुरवस्था न होती। उन्होंने संस्कृत की रक्षा के लिए हर प्रकार का बलिदान देने की घोषणा की।

श्री डा0 गणेश दत्त जी ने कहा कि संस्कृति को जानने का एक मात्र उपाय संस्कृत है। संस्कृत एक समृद्ध भाषा है। उसे कम्प्यूटर के लिए भी उपयुक्त माना गया है। परन्तु इस को नीचे से हटाने पर ऊपर की कक्षाओं में इसे कौन और कैसे पढ़ेगा। हमें संस्कृत का समुचित स्थान दिलवाने के लिए आन्दोलन का रूख अपनाना होगा।

श्री इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने अपने वक्तव्य में कहा कि मनुष्य को मनुष्य बनाने का केवल मात्र विज्ञान संस्कृत भाषा में ही मिलता है। जो संस्कृत भाषा समस्त भारत को एक सूत्र में पिरोने में सक्षम है। जो भाषा सारे संसार को विश्व शान्ति का सन्देश दे सकती है। ज्ञान विज्ञान के विकास के लिए अन्य देश जिस संस्कृत भाषा को महत्व दिए हुए हैं। वह संस्कृत भाषा अपने देश में ही समाप्त की जा रही है। संस्कृत को बचाने के लिए संघर्ष करना होगा जिसके लिए श्री प्रधान जी ने हर प्रकार का बलिदान देने का आह्वान किया।

अन्त में अपने अध्यक्षीय भाषण में डा0 निरूपण जी विद्यालंकार ने सबका धन्यवाद करते हुए श्री पं0 इन्द्रराज जी सभा प्रधान से अनुरोध किया कि वे अपने सुयोग्य नेतृत्व में संस्कृत की रक्षा हेतु एक व्यापक आन्दोलन की रूपरेखा बनाएं तथा उसे नेतृत्व प्रदान करें।

— संवाददाता।

अस्पृश्यता निवारण यज्ञ, मेरठ में

- दिनांक- 11-8-89 को भगवतपुरा के बाल्मीकी बस्ती में आर्य समाज मेरठ शहर की ओर से राजकुमार बाल्मीकि के घर पर अस्पृश्यता निवारण यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के यजमान श्री राजकुमार तथा उनकी धर्मपत्नी थीं। इस यज्ञ के पुरोहित श्री आचार्य नरेन्द्र कुमार तथा शिवकुमार जी थे। यज्ञ के पश्चात श्री मनवीर जी तथा श्री तेजपाल जी और श्रीमती- आशा का भजनोपदेश हुआ।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष श्री पं0 इन्द्रराज जी ने कहा कि हिन्दु समाज में छूआछुत एक महामारी की तरह घर कर गया है। यदि समय रहते इस महामारी को समाप्त नहीं किया गया तो राष्ट्र का विखण्डन रोका नहीं जा सकेगा। उन्होंने सवर्णों का आवाहन किया कि वे अपने दलित भाइयों को गले से लगाकर विधर्मी तथा देशद्रोहियों की चालों को नाकाम करने में आर्यसमाज के साथ सहयोग करें। उन्होंने वाल्मीकि युवकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि उन्हें अपने अन्दर से हीन भावना को निकाल कर और अपने अन्दर प्रबल इच्छा शक्ति पैदा करके समाज में अपने उचित स्थान को प्राप्त करना चाहिए।

इस अवसर पर वाल्मीकि युवा नेता श्री राजकुमार ने बाल्मीकि युवकों को अपने अधिकारों को प्राप्त करने हेतु संगठित होने की अपील की।

श्री जयन्त कुमार पाण्डेय ने वाल्मीकि युवकों को "राष्ट्र रक्षा युवा-आन्दोलन" का सदस्य बनने की सलाह दी तथा कहा कि इस आन्दोलन में शामिल होकर वे छुआछूत को समाप्त करने में सहायक हों।

अन्त में सभा अध्यक्ष श्री बाबूलालजी वाल्मीकि ने सबका धन्यवाद दिया तथा प्रसाद वितरण के पश्चात् सभा समाप्त हुई।

— संवाददाता।

आर्यसमाज सम्भल में वेदप्रचार

आर्य समाज सम्भल के प्रशासक श्री विक्रमसिंह आर्य के प्रयत्न से वेद प्रचार सप्ताह दि0 17 से 24 अगस्त 89 तक बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। प्रतिदिन प्रातः ऋग्वेद महायज्ञ पारिवारिक यज्ञ प्रवचन, रात्रि में व्याख्यान, भजन होते रहे। साथ ही 23 अगस्त को दयानन्द बाल मन्दिर में नवीन छात्रों का वेदारम्भ संस्कार यज्ञ सहित सम्पन्न हुआ। जिसमें गण्यमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

शोलापुर में हैदराबाद सत्याग्रह अर्धशताब्दी मनाने का निश्चय

डी0ए0वी0 कालेज प्रबन्धकर्त्री समिति एवं आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ने हैदराबाद सत्याग्रह अर्ध शताब्दी 4, 5, 6 नवम्बर 1989 को शोलापुर में समारोहपूर्वक मनाने का निश्चय किया है। सन् 1939 में हैदराबाद में आर्यसमाज द्वारा सत्याग्रह किया गया था जिसमें हजारों सत्याग्रहियों ने भाग लिया और अनेक सत्याग्रही मारे गये थे। अन्त में निजाम सरकार को झुकना पड़ा था। समिति ने तभी यह निश्चय किया था कि शोलापुर में एक यादगार बनाई जाये। वही यादगार डी0ए0वी0 कालेज शोलापुर में है जबकि महाराष्ट्र में सबसे अच्छा कालेज माना जाता है। उसमें हजारों विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। उसी स्थान पर 4,5,6 नवम्बर 1989 को यह अर्ध शताब्दी मनाई जा रही है। मेरी भारत भर के समस्त हैदराबाद सत्याग्रहियों से प्रार्थना है कि वे उपरोक्त तिथियों को अंकित कर लें और वहां अवश्य पहुँचें। यह कार्यक्रम अखिल-भारतीय स्तर पर मनाया जा रहा है। तीन दिनों का विस्तृत कार्यक्रम रखा जा रहा है। जिन सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह में भाग लिया था उनका उसमें सम्मान भी किया जायेगा।

— रामनाथ सहगल, मंत्री।

आर्यसमाज सण्डीला का उत्सव

दि0 12,13,14,15 अक्टूबर 89 को ससमारोह मनाया जायगा। जिसमें संस्कृत सम्मेलन, महिला सम्मेलन, कवि सम्मेलन तथा शोभायात्रा निकाली जायगी, धर्म प्रेमी जनता से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर उत्सव को सफल बनावे।

वेद-सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज, अल्मोड़ा में श्रावणी पूर्णिमा से श्री कृष्णजन्माष्टी पर्यन्त (दिनांक- 17·8·89 से 24·8·89 पर्यन्त) वेद-प्रचार-सप्ताह सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अल्मोड़ा नगर में स्थान स्थान पर पारिवारिक यज्ञ आयोजित किये गये और उनमें तथा प्रतिदिन आर्यसमाज मन्दिर, अल्मोड़ा में ब्रह्मचारी- श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी (जोशी) द्वारा कठोपनिषद् पर आधारित वैदिक अध्यात्म कथा का आयोजन किया गया।

शोक समाचार

- आर्यसमाज आर्यनगर बाँगरमऊ के वरिष्ठ कार्यकर्ता व आजीवन सदस्य प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव में ऋषि लंगर के व्यवस्थापक श्री नवाब गुप्त की माता जी का लम्बी बीमारी के बाद दिनांक- 31-7-89 को निधन हो गया उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार पं0 भैय्यालाल आर्य पुरोहित आर्यसमाज बाँगरमऊ के द्वारा सम्पन्न हुआ। दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु पं0 कृष्णकुमार आर्य के पौरोहित्य में तीन दिनों तक शान्ति यज्ञ सम्पन्न हुआ। व आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर बाँगरमऊ के प्रधान श्री दिलेराम आर्य ने दिवंगत आत्माकी शान्ति हेतु परमेश्वर से प्रार्थना की ।

हिन्दी होगी अन्तर्राष्ट्रीय भाषा

—जवाहर लाल नेहरू

जवाहरलाल नेहरू ने आज से कई वर्ष पूर्व आशा व्यक्त की थी कि हिन्दी को समय पर, अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में शामिल कर लिया जायेगा। उन्होंने लिखा था कि हिन्दी काफी तेजी से फैल रही है और फैलेगी। यह ज्यादा अच्छा है कि वह अपनी शक्ति और हमारी मदद से फैले और उसके ऊपर आपसी झगड़े न हों। मद्रास में एक बड़ी संस्था हिन्दी की विरोधी है, बावजूद इसके मद्रास में वह तेजी से फैल रही है, क्योंकि लोग जानते हैं कि इसके बगैर भविष्य में काम ठीक नहीं चलेगा।

नेहरू जी ने यह मत 3 जुलाई 1962 को तत्कालीन संसद सदस्य तथा हिन्दू महासभा के महामंत्री श्री विशनचन्द्र सेठ को लिखे अपने पत्र में व्यक्त किए थे। श्री सेठ ने उन्हें पत्र लिखकर हिन्दी को उचित स्थान दिए जाने की मांग की थी। नेहरू जी ने पत्र में लिखा था कि हमारे देश में सभी भाषाएं हमारे राष्ट्र की भाषाएं हैं। केवल फर्क यह है कि हिन्दी अधिकतर बोली जाती है। सब भाषाओं को हमने अपनाया है। अंग्रेजी को भी किसी कदर हमने अपनाया है, इसलिए कि वह एक दरवाजा है आजकल के विज्ञान के लिए। और अगर हम उस दरवाजे को बन्द करदें तो हमारी हानि होगी क्योंकि आजकल की दुनिया विज्ञान की है। हर वैज्ञानिक आदमी को आजकल दो या तीन भाषाएं सीखनी पड़ती हैं।

श्री विशनचन्द्र सेठ ने नेहरू जी को 17 जून 1962 को लिखे अपने पत्र में कहा था कि राष्ट्रसंघ ने अंग्रेजी और रूसी भाषा के साथ-साथ चीनी, स्पैनिश तथा फ्रेंच भाषा को भी मान्यता दी है। जबकि मुख्य चाईना तो राष्ट्रसंघ का सदस्य भी नहीं है। फिर हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में शामिल कराये जाने का प्रयास क्यों नहीं किया जा रहा? नेहरू जी अपने उत्तर में स्वीकार किया था कि चीनी भाषा को राष्ट्रसंघ में मान्यता दिया जाना अजीब बात है समय आयेगा जब हिन्दी भी अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में शामिल कर ली जायेगी।

स्वाधीनता दिवस सम्पन्न

दि0 15 अगस्त स्वाधीनता दिवस के उपलक्ष्य में आर्यसमाज सम्भल में जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के प्रधान श्री विक्रम जी को यज्ञ का यजमान बनाकर सभा उपदेशक पं0-महावीर शास्त्री ने यज्ञ कराया। स्त्री आर्यसमाज की प्रधाना श्रीमती राधा-रानी देवी की अध्यक्षता में श्री जगदीश-शरण रस्तोगी जी की देखरेख में, कई वक्ताओं के व्याख्यान हुए।

सभा भवन में वेदप्रचार सप्ताह

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा भवन की महिला आर्यसमाज ने श्रावणी पर्व एवं वेद प्रचार सप्ताह सभा भवन की यज्ञशाला में बड़े धूमधाम से मनाया। प्रतिदिन पं0 मेधावी शास्त्री द्वारा यज्ञ कराया गया एवं पं0 अखिलेश श्री पं0-रामचरित्र पान्डे तथा आचार्य पं0 इन्द्रदेव-शास्त्री प्रबन्ध सम्पादक "आर्यमित्र" के सारगर्भित वेद प्रवचन हुए। समाज की प्रधाना श्रीमती प्रेमवती बख्शी तथा मन्त्राणी श्रीमती कैलाश मदार के अथक प्रयास से समारोह पूर्ण सफल रहा।

सरस्वती विद्यालय नरही में वेदप्रचार तथा कृष्ण जन्माष्टमी समारोह

सरस्वती विद्यालय कन्या इन्टर कालेज, नरही, लखनऊ के प्रांगण में दिनांक- 23·8·89 को श्रावणी पर्व एवं श्री कृष्ण जन्माष्टमी समारोह बड़ी सादगी भरे वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ एवं वेद पाठ के अतिरिक्त विद्यालय की कन्याओं ने श्री कृष्ण तथा आर्यसमाज विषय पर अपने सुन्दर विचार प्रकट किए। आर्यमित्र के सम्पादक आचार्य श्री इन्द्रदेव जी ने कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डालते हुए आर्यसमाज के दृष्टिकोण से कृष्ण के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। विद्यालय के प्रबन्धक एवं प्रधानाचार्या ने समारोह की सफलता की कामना की।

वेदप्रचार सप्ताह सम्पन्न

"आर्य समाज जमुनियाबाग फैजाबाद में "वेद प्रचार सप्ताह" 17अगस्त से 24 अगस्त 1989 तक सोल्लास सम्पन्न हुआ। श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, बिजनौर, पं0 सत्य मित्र-शास्त्री, गोरखपुर तथा श्री विक्रमदेव आर्य भजनोपदेशक, धामपुर बिजनौर द्वारा सप्ताह भर वेद कथा तथा भजन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

जन्माष्टमी पर्व सम्पन्न

दि0 24 अगस्त को सायंकाल आर्यसमाज विकासनगर कुर्सीरोड में डा0 वीरेन्द्र बहादुर सिंह जी के नेतृत्व में बड़े हर्षोल्लास के साथ जन्माष्टमी पर्व स्वामी दयानन्द पार्क में सम्पन्न हुआ।

आर्यसमाज गाजियाबाद

प्रधान	-	श्री धर्मपाल जी
मंत्री	-	श्री जय भगवान जी
कोषा0	-	श्री राजेश्वर प्रसादजी

आर्यसमाज भवाली (नैनीताल)

प्रधान	-	श्री लक्ष्मीदत्त पाण्डे-एडवोकेट
मंत्री	-	श्री शंकर देव आर्य
कोषाध्यक्ष		श्री घनश्याम सिंह बिष्ट

अमरोहा में जनपदीय आर्य सम्मेलन

कार्तिक कृष्ण १,२,३ सं० २०४६ वि०, दि० १५,१६,१७ अक्तूबर १९८९

मुरादाबाद के आर्यसमाज अमरोहा में जनपदीय आर्य सम्मेलन ससमारोह पूर्वक सम्पन्न होगा। जिसमें श्री स्वामी आनन्दबोध जी सरस्वती, स्वामी ब्रह्मानन्द जी वेद भिक्षु, यती संजीवनी आनन्द, श्री पं0-इन्द्रराज जी प्रधान आ0प्र0सभा, उ0प्र0, डा0 धर्मपाल जी प्रधान दिल्ली प्रदेश सभा, श्री पं0 उत्तमचन्द जी "शरर", श्री विश्वमित्र जी मेधावी, श्री पं0 नरेशदत्त-जी आर्य भजनोपदेशक, श्री योगेशदत्त जी आर्य भजनोपदेशक आदि पधार रहे हैं। प्रदेश की समस्त आर्य जनता अधिक से अधिक संख्या में उपस्थित होकर सम्मेलन को सफल बनावे आप सबका सहयोग ही सम्मेलन की सफलता होगी।

विक्रम सिंह आर्य	हरस्वरूप सिंह आर्य
प्रधान	मंत्री

उप आर्य प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद।

बलरामपुर में प्रचार

"आर्यसमाज गोविन्द बाग, बलरामपुर ने श्रावणी पर्व दिनांक-17·8·89 से 24·8·89 तक यज्ञ, भजन, कीर्तन का आयोजन नगर के विभिन्न स्थानों पर किया गया।

संत रविदास मन्दिर, बाल्मीकि बस्तियों, बिशुनीपुर हरिजन बस्तियों के कार्यक्रम बड़े ही प्रभावशाली रहे।

हरिजनों ने आर्यसमाज के सिद्धान्तों को बड़ा ही शुभ माना और जीवन में उतारने का संत रविदास के समक्ष वचन लिया।"

योग साधना शिविर

महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला (नैनीताल) में स्वामी योगानन्द की अध्यक्षता में ता0 17 सितम्बर से 23 सितम्बर तक लगेगा भोजन तथा आवास का प्रबन्ध है।

श्री मनप्यारे लाल जी हड्डा का निधन

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त आर्यसमाज महाराजपुर के पूर्व प्रधान एवं समाज के कर्मठ कार्यकर्ता, वयोवृद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री मनप्यारे लाल जी हड्डा का 98 वर्ष की आयु में दिनांक 20·8·89 का प्रातः 9·00बजे देहान्त हो गया।

आर्यसमाज महाराजपुर की ओर से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिये एवं शोक संतृप्त परिवार को इस गहन दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई।

श्री निरंजन लाल जी को आर्यसमाज आदर्श नगर में भावभीनी विदाई

मुजफ्फर नगर निवासी इंजीनियर-श्री निरंजन लाल जी गुप्त गत वर्षों से आर्यसमाज आदर्शनगर के सदस्य रहे। गत 31 जुलाई को वे अधिशासी अभियन्ता पद से सेवा निवृत्त हुए।

लखनऊ छोड़ने से पूर्व गत 5 अगस्त को आर्यसमाज आदर्शनगर में श्री गुप्त जी के सम्मान में एक समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें उन्हें भावभीनी विदाई दी गयी।

उक्त अवसर पर आयोजित सभा में श्री निरंजनलाल जी गुप्त की निष्काम भाव से की गयी सेवाओं के लिये सराहना की और उन्हें अनुकरणीय बताया।

इस अवसर पर आचार्य वैद्यकुन्दनलाल-आर्य के कर-कमलों द्वारा श्री गुप्तजी को स्मृति स्वरूप सामवेद की एक प्रति भेंट की गयी।

- विजय, सहायक मंत्री।



श्री निरंजन लाल गुप्ता जी (बाऐं से दूसरे) तथा इनके दायें केप्टन सुरपाल सैन मन्त्री दायें वैद्य कुन्दनलाल आर्य तथा सभा व भूतपूर्व प्रधान श्री परमानन्द तलवार।

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज सदर, लखनऊ ने अपने 6 अगस्त के रविवारीय सत्संग में श्री स्वामी वेदबोध जी सरस्वती (पूर्वनाम-श्री विक्रमादित्य "बसन्त") के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना की।

- स्वामी वेद-बोध जी पूर्वनाम श्री विक्रमादित्य जी बसन्त ने इस नश्वर शरीर का त्याग कर दिया, पढ़कर हार्दिक दुःख हुआ कि हमारे मध्य से एक और वेदों का प्रचारक व्यक्ति चला गया जिसकी पूर्ति असम्भव है।

जनपद आर्य प्रतिनिधि सभा बहराइच, दिवंगतात्मा की शान्ति सद्गति और शोक सन्तप्त परिवार व स्वजनों को धैर्य प्रदान करने को परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

शोक सभा

चन्द्रनगर आर्यसमाज की आम सभा श्रद्धेय स्व० विक्रमादित्य बसंत जी के आकस्मिक निधन पर अत्यन्त शोक प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें और परिवार एवं सगे-सम्बन्धियों को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

शोक समाचार

आर्यसमाज सण्डीला (हरदोई) के दानवीर एवं पूर्व कोषाध्यक्ष श्री बाबूराम जी तथा वर्तमान कोषाध्यक्ष श्री त्रिभुवन-दयाल जी के पिता श्री गंगादीन जी का निधन हो गया। परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

शोक प्रस्ताव

"आर्यसमाज सराय तरीन् हयातनगर की साधारण सभा आर्यसमाज के उपप्रधान एवं उत्साही कार्यकर्ता श्री जगदीश आर्यजी एडवोकेट के निधन पर शोक प्रकट करती हुई दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है तथा उनके परिवारजनों को धैर्य प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना करती है।

आर्यसमाज गोना गाण्डवा (हरदोई) के आर्य सभासद श्री मोहनसिंह आर्य तथा संस्थापक सदस्य श्री बाबू राम-गुप्त सण्डीला के निधन पर शोक व्यक्त किया है इन लोगों के निधन से अपूरणीय क्षति हुई है, परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवारो को धैर्य प्रदान करें।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

दूरभाष : ४५६६३

पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू एन पी-७६

भाद्रपद शुक्ल-१०

१०, सितम्बर, रविवार, १९८९

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं! वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें ।

-- सभामंत्री ।

वैदिक धर्म में दीक्षित

श्री परवेज आलम खाँ आत्मज श्री रफत उल्ला-खाँ निवासी जे0के0 पुरी जाजमऊ स्वेच्छा से वैदिक धर्म में दि0- 6-8-89 को आर्यसमाज हरजेन्दनगर (लाल बंगला) कानपुर-7 में सर्वश्री चौधरी होशियार-सिंह, आचार्य धर्मानन्द शास्त्री व्याकरणाचार्य, पं0 प्यारेलाल, श्री रणवीर सिंह, श्री बलवन्त-चह्वाण, श्री सीताराम प्रधान, श्री रामजी-आर्य मंत्री, श्री सत्यनारायण प्रसाद-कोषाध्यक्ष आर्यसमाज हरजेन्द्रनगर आदि की उपस्थिति में दीक्षित हुए। इनका नाम श्री प्रवेश-सिंह रखा गया। श्री प्रवेश सिंह ने वेदानुसार चलने की प्रतिज्ञा की। सबने आर्शीवाद दिया।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि० सं० २२४१/५७) आश्विन कृष्णा-२ रविवार - संवत् २०४६ वि०, दिनांक १७, सितम्बर १९८९ (घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८५)



मृत्युरीशे दिपदां मृत्युरीशे चतुष्पदाम्
तस्मात्वां मृत्यों गोपतेरुद्भरामि मा बिभे ।

- अथर्व 8/2/23

मृत्यु ने समस्त चेतन प्राणियों (द्विपद और चतुष्पद) पर समान रूप से शासन कर रखा है। हे पुण्यात्मन्! मैं तुझे उस मृत्यु के शासन से ऊपर उठाता हूँ, डर मत। मौत से वह डरा करता है जिसने पाप किया है। तुझे डरने की आवश्यकता ही नहीं है तेरा चरित्र तो स्फटिक मणि के समान निर्मल है।

- आचार्य "इन्द्र"

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१.०० रू. मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ३७

जियरा तुम जैहो हम जानी.......

हा! पं० शिव कुमार शास्त्री



आर्यजगत का एक निश्छल, निर्मल, निर्भ्रान्त, द्वेषहीन, आडम्बरहीन, आलोचनाहीन, स्फटिक मणि के समान चमकते दमकते हृदय में प्यार की उमड़ती गंगा बहाने वाला एक अद्भुत व्यक्तित्व गत 3 सितम्बर को दिल्ली की धरती पर पंचतत्व में विलीन हो गया।

क्या कहें उससे--- जिसने दिया भी था और ले भी लिया --

ऐ अजल! तुझसे सख्त नादानी हुई
फूल वो तोड़ा कि गुलशन में वीरानी हुई।

वह एक ऐसा अनोखा, अनूठा और प्यारभरा व्यक्तित्व था जो शून्य से संज्ञा तक आते आते अपनी अलौकिक प्रतिभा एवं दार्शनिक विचारधारा के कारण आर्यजगत के श्रेष्ठ विद्वानों की कोटि में आ गया था। हर हृदय का स्नेह उसने जीता था। वह कहीं भी रहा अथ से इति तक आर्य रहा, आर्यसमाजी रहा, ऋषि के गुणगान गाता रहा।

और आज आर्यजगत में यह समाचार बड़े ही दुःख के साथ सुना गया कि पूर्व सांसद श्री पं० शिवकुमार शास्त्री का 74 वर्ष की आयु में अल्पकालिक बीमारी के पश्चात् हृदयगति रुक जाने से आकस्मिक देहावसान हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार निगमबोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ जिसमें पू० स्वामी आनन्दबोध सरस्वती श्री सच्चिदानन्द शास्त्री सहित अनेकों आर्यनेता एवं समाजों के प्रतिनिधि बड़ी संख्या में उपस्थित थे। उनके परिवार में पत्नी, पुत्र तथा चार पुत्रियाँ हैं।

शास्त्री जी अनन्य ऋषिभक्त, उच्चकोटि के वक्ता, एवं समाजसेवी सन्त पुरुष थे। 1967 में वे अलीगढ़ से संसद के लिए निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुने गये थे और संसद में उन्होंने सदैव आर्यसमाज के दृष्टिकोण का ही प्रतिनिधित्व किया। वे इतने सिद्धान्तनिष्ठ थे कि आर्यसमाजी विचारधारा से मेल न खाने वाली किसी विचारधारा से कभी समझौता नहीं किया। हमारी प्रिय आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र० के 1969-70 में प्रधान भी रहे। उनके कार्यकाल में आर्यसमाज को जो दिशानिर्देश मिले थे वे आज भी हमारा मार्ग दर्शन कर रहे हैं। उनके निधन से आर्यजगत की अपूरणीय क्षति हुई है।

प्रभु से उनकी आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है ।

इन्द्रराज	**मनमोहन तिवारी**
प्रधान	सभा मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
——राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ - आश्विन कृष्ण - २ संवत, २०४६ वि.
१७ सितम्बर १९८९, दयानन्दाब्द, १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

सम्पादकीय

जय हिन्दी जय नागरी

भाषा का प्रश्न हमारी भारतीयता से जुड़ा हुआ है और भारतीयता का प्रश्न हमारे अस्तित्व से जुड़ा हुआ है। जिस हिन्दी को हम आसेतु हिमाचल राष्ट्रभाषा के रूप में अपने संविधान में प्रतिष्ठित कर चुके हैं उसके लिए हम शासन से जो अपेक्षा करते हैं वह तो उचित है परन्तु आज के दिन हमें इस बात के लिए भी आत्मनिरीक्षण करना चाहिए कि हमने हिन्दी के हित में, हिन्दी प्रेमी होते हुए, क्या क्या किया है। स्वतन्त्रता के इतने वर्षों और हिन्दी के लिए इतना संघर्षशील रहने के बाद भी हम भारतीय, अपने निमन्त्रण-पत्रों, नामों, सड़कों, भवनों, बोलचाल में, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों, पत्रव्यवहार आदि में अंग्रेजी के मोह से बुरी तरह चिपके हुए हैं।

दुर्भाग्य से अंग्रेजों की लगभग 200 वर्ष की पराधीनता और उसके पूर्वकाल की मुगलों की लम्बी अवधि की दासता ने हमारी मानसिकता के दृष्टिकोण को अत्यन्त संकुचित एवं क्षेत्रीयतावादी बना दिया है। अपने शासनकाल में अंग्रेजों ने भारत में अंग्रेजी भाषा का प्रसार एक निश्चित उद्देश्य को लेकर किया था। लार्ड मैकाले की नीति के अनुसार अंग्रेजी भाषा के प्रसार का उद्देश्य भारत में एक ऐसे अभिजात्य वर्ग का सृजन करना था जो वर्ण से भारतीय होते हुए भी अंग्रेजी राज्य को सुदृढ़ बनाने में कवच का काम करे। इसी प्रकार मुगलिया शासन में उर्दू का जन्म हुआ। यह तुर्की भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है छावनी या छावनी बाज़ार या लश्कर। तत्कालीन भारत की प्रचलित बोलियों में अरबी, फ़ारसी और तुर्की भाषा के शब्द मिलाए गये और उसी का नाम उर्दू रखा गया। उर्दू का कोई पृथक व्याकरण अथवा छन्दशास्त्र नहीं था। फ़ारसी लिपि में इस भाषा को भारत की अन्य बोलियों के साथ प्रयुक्त किया जाने लगा। इसकी लिपि और शब्दभण्डार विदेशी हैं। दूसरे शब्दों में हम इन दोनों भाषाओं को विदेशी देन भी कह सकते हैं।

आज भारत स्वतन्त्र है उसके पास एक ऐसी वैज्ञानिक लिपि सम्पन्न समृद्ध भाषा है जो अपनी शब्दशक्ति अथवा अर्थशक्ति द्वारा विश्व के बहुआयामी, बहुव्यापक, बहुउद्देश्यीय विचारों तथा भावों को प्रकट कर सकती है। कहा जाता है हिन्दी में आधुनिक विज्ञान तथा टेक्नालॉजी विषयक भावों को प्रकट करने के लिए शब्दावली का अभाव है। किन्तु ऐसा कहने वाले यह भूल जाते हैं कि हिन्दी के विशाल शब्दभण्डार की आपूर्ति के लिए विश्व की समृद्धतम भाषा, इसकी जननी संस्कृत है जिसमें अपार शब्दशक्ति है और अपार शब्दनिर्माण की क्षमता भी।

भाषा पर क्षेत्रीयता और जातीयता का अधिकार भी हमारी परतन्त्रता की देन है जिसने हमें गुलामी से भी अधिक नुकसान पहुँचाया है। हिन्दी को समग्र राष्ट्र की भाषा न समझकर उसे किसी क्षेत्र अथवा जातिविशेष की भाषा समझना अभारतीय प्रवृत्ति है। भारतीयता के कलेवर में पल्लवित, पुष्पित भारत की अनेकों उपभाषाएं (बंगला, तमिल, तेलगू, राजस्थानी, गुजराती आदि) हमारे लिए प्रिय हैं क्यों कि उनका स्रोत संस्कृत है। उनके उत्थान के लिए हमें प्रयत्न भी करना चाहिए। परन्तु उर्दू और अंग्रेजी वैदेशिक देन हैं जिनमें हमारी गुलामी के चिन्ह छिपे हुए हैं। इन्हें प्रोत्साहन देने का अर्थ होता है उन विदेशी विजातीय परिधानों का स्मरण जो हमें गुलामी के काल में बरबस पहिनाए गये थे। जब हम कहते हैं कि "तुम्हारे एक्ज़ामिनेशन्स का क्या रिज़ल्ट रहा" तो हम यह भी कह सकते हैं कि "तुम्हारी परीक्षा का क्या परिणाम रहा"। यहाँ न तो कोई टेक्नालॉजी है और न कोई भाषावैज्ञानिकता। दोनों का एक ही अर्थ अथवा भाव है। किन्तु हिन्दी के प्रति हेय मानसिकता ही दूसरे वाक्य की उपेक्षा का कारण है। आज सर्वाधिक आवश्यकता है इस हेय मानसिकता को बदलने की।

इसी प्रकार लिपि का प्रश्न है। वर्तमान देवनागरी लिपि का विकास प्राचीन ब्राह्मी लिपि से हुआ है। ब्राह्मी लिपि के आविष्कर्ता विद्वान ब्राह्मण थे उनका विश्वास था यह लिपि स्वयं ब्रह्म की देन है जो ज्ञान के साथ भाषा और अक्षर के रूप में प्रकट हुई है। इस लिपि में हमारे संस्कृत साहित्य का अपार भण्डार भरा हुआ है। सृष्टि के आदिकाल से लेकर महाभारत काल पर्यन्त विश्व की एक मात्र भाषा संस्कृत और लिपि ब्राह्मी थी। अशोक के शिलालेखों में इसका प्रचलन मिलता है और यह भी प्रमाण मिलता है कि उसके राज्यकाल में यह सार्वदेशिक शासकीय लिपि थी जिसमें संस्कृत, पाली, प्राकृत आदि का साहित्य निर्मित है। सातवीं शताब्दी से वर्तमान देवनागरी लिपि ने रूप ग्रहण करना प्रारम्भ कर दिया। महमूद गजनवी के सिक्कों पर अरबी में कलमे का संस्कृत अनुवाद देवनागरी लिपि में लिखा हुआ है। रहीम, रसखानि, आदि अनेकों मुस्लिम कवियों और सूफियों ने हिन्दी भाषा और देवनागरी को अपनाया और प्यार किया, क्योंकि मूलतः और अन्ततः इस देश के रहने वाले सभी भारतीय थे और भारतीयता से प्रेम करते थे।

आज देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी हमारे देश की राष्ट्रभाषा है। इसमें सम्पूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधित्व निहित है। यद्यपि शासन ने अन्तर्राज्यीय व्यवहार के लिए अंग्रेजी का प्रयोग करने की कुछ काल तक के लिए छूट अवश्य दी थी परन्तु मूलतः और अन्ततः हिन्दी को ही इस देश में राष्ट्रभाषा, राज्य भाषा और जनभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होना है। फिर हमारी राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न भी तो इससे जुड़ा हुआ है। इसीलिए सार्वदेशिक सभा ने अपने त्रिसूत्रीय अभियान में "अंग्रेजी हटाओ" का नारा दिया है। यद्यपि आर्यसमाज का अन्तिम लक्ष्य तो संस्कृत को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन कराने के साथ ही पूर्ण होगा क्योंकि हमारा विश्वास है कि हमारी संस्कृति इसी भाषा में सुरक्षित है।

अतः हम "हिन्दी दिवस" के पावन अवसर पर आर्यसमाज के उक्त त्रिसूत्रीय अभियान को सफल बनाने हेतु प्राणपण से प्रयत्नशील होते हुए अपने प्रत्येक व्यवहार में हिन्दी का, केवल हिन्दी का ही प्रयोग करने का व्रत लें। ●

● भगवानपुर (बिजनौर) आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव 15 से 17 सितम्बर तक मनाया गया। इसमें स्वामी दिव्यानन्द जी, तथा अनेक उपदेशकों ने भाग लिया।

● आर्यसमाज नंगला महेश्वरी (बिजनौर) का वार्षिकोत्सव भी 15 से 17 अक्टूबर तक मनाया जायेगा जिसमें स्वामी दिव्यानन्द जी के अलावा ओमप्रकाश-वर्मा, योगेश नरेश आदि उपदेशक भाग ले रहे हैं।

वेद प्रचार सप्ताह समारोह सम्पन्न

निम्न लिखित आर्यसमाजों में वेद प्रचार सप्ताह दि0 17 से 24 अगस्त 89 तक बड़े समारोह के साथ उत्साह जनक वातावरण में मनाया गया जिससे जनता में आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा उत्पन्न हुई।

- आर्यसमाज रहमतगंज (रामपुर) आर्यसमाज खुर्जा, आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर, आर्यसमाज विकास नगर, आर्यसमाज ताजगंज आगरा, आर्यसमाज भवाली (नैनीताल) आर्यसमाज हरफरी (बदायूँ), आर्यसमाज नाई की मण्डी मु0नगर।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० का नैमित्तिक एवं आगामी वार्षिक साधारण अधिवेशन दिनांकः २५ तथा २६ नवम्बर ८९ को लखनऊ में सम्पन्न होगा।
विस्तृत विवरण आगामी अंक में प्रकाशित किया जायेगा।
— मनमोहन तिवारी, सभा मंत्री

जयपुर में मनु की प्रतिमा और आर्यसमाज

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
प्रधान - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
दिल्ली

जयपुर हाईकोर्ट के प्रांगण में मनु की प्रतिमा लगाए जाने पर कुछ बंधुओं ने इसका विरोध किया है। अदालत में भी इस प्रतिमा को हटाने के लिए याचिका दायर की गई है।

भगवान मनु के विषय में अनेक प्रकार की भ्रान्तियां-विद्वानों, बुद्धिजीवियों एवं आम जनता में व्याप्त हैं। कुछ लोगों का कहना है कि जातिवाद, भेदभाव व ऊँच-नीच का प्रतिपाद मनुस्मृति में किया गया है। इसी पक्ष को लेकर ही अनेक प्रकार के विवाद खड़े किए जा रहे हैं।

जयपुर की घटना के संबंध में कुछ उच्चकोटि के महानुभावों द्वारा आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती की मनुस्मृति के विषय में सम्मति जानने का अनुरोध किया गया है। हम बहुत दिनों से विचार कर रहे थे कि इस विवाद ग्रस्त मामले पर स्वामी दयानन्द की क्या प्रतिक्रिया थी, उस पर विस्तार से विवेचन किया जावे। महर्षि दयानन्द के पदार्पण से पूर्व हिन्दू धर्मशास्त्रों में विशेषकर वाम मार्गियों विदेशी, विधर्मी तथा बौद्ध धर्मियों द्वारा अनेक प्रकार की मिलावटें प्राचीन साहित्य में की गई थीं। पुराणों में भी इसी परम्परानुसार परस्पर विरोधी और वेद विरूद्ध तथा असंगत कहानियां एवं काल्पनिक प्रकरण समय-समय पर सम्मिलित कर दिए गए। उन सबका एक ही उद्देश्य था कि ऐसी बातों के प्रचार से भविष्य में जन सामान्य-सत्य सनातन वैदिक धर्म से विमुख होकर विधर्मियों की आलोचना व कुचक्र का शिकार होकर परस्परिक वैमनस्य में पड़कर हिन्दू समाज को तोड़ने में सहायक हो। साहित्य में प्रक्षेप की यह परम्परा वाम मार्गियों से चलकर 750 वर्ष पर्यन्त इस्लामी राज्य तथा 200 वर्ष के ब्रिटिश शासनकाल तक चलती रही। लार्ड मैकाले ने भी इसी परम्परा को प्रोत्साहन दिया।

महर्षि दयानन्द का मत

इस संदर्भ में हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि महर्षि दयानन्द ने मनुस्मृति, महाभारत, बाल्मीकि रामायण व पुराणों में की गई इस प्रकार की मिलावट का स्पष्ट रूप से खण्डन किया है। दयानन्द जैसे बुद्धि जीवी व प्रखर समालोचक ने अपने व बेगाने सभी की वेद विरूद्ध आस्थाओं को उखाड़ने का प्रयत्न किया था और मनु के नाम पर की गई मिलावट को उन्होंने कभी स्वीकार नहीं किया। आर्यसमाज यह घोषणा करना अपना कर्तव्य समझता है कि- मनुस्मृति के जिन श्लोकों पर आपत्ति की जा रही है वे मनु के नाम पर प्रक्षेप हैं। इसके बाद में की गई इस मिलावट को निकालने के लिए आर्य समाज अपने जन्म काल से ही प्रचार कर रहा है। मनुस्मृति में यह स्पष्ट है-

(1) जन्मना जायते शूद्राः अर्थात् (जन्म से कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य नहीं है)

(2) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः (स्त्रियों के सम्मान की महिमा)

मनु महाराज ने इस प्रकार के सार्वभौम सत्य का प्रतिपादन किया है। इसलिए मनु के विषय में कुछ समय से जो आन्दोलन खड़ा किया जा रहा है, वह मनु के विरूद्ध नहीं बल्कि उसके साहित्य में की गई मिलावट है, जिसका आर्यसमाज अपने जन्मकाल से विरोध कर रहा है।

(मानव धर्मशास्त्र के आदि प्रणेता महाराज मनु और उनकी मनुस्मृति के विषय में कुछ निहित स्वार्थियों ने अनेकों भ्रान्त धारणाएं फैला रखी हैं जिनके कारण हमारे समाज में वर्ग विद्वेष की भावना जन्म लेती जा रही है। यहाँ प्रश्न जयपुर में किसी की प्रतिमा लगाए जाने से नहीं है अपितु युगों युगों से गुणकर्मानुसार चली आ रही हमारी सामाजिक व्यवस्था को इस प्रकार के अनर्गल प्रचार द्वारा छिन्नभिन्न कर देने से है। इस विषय में पू0- स्वामी जी की श्री लेखनी से निःसृत विचारों को पढ़िए और अपना कर्तव्य निर्धारण कीजिए।

— सम्पादक)

मनु की प्रतिमा का विरोध करने वाले बंधुओं से हमारा निवेदन है कि वे वस्तुस्थिति का गहराई से अध्ययन करें। विदेशियों द्वारा फैलाई गई गलत फहमियों का शिकार न हों। मनुस्मृति संसार के उन ग्रन्थों में है, जिसको आधार मानकर संविधान बनाए गए हैं। विदेशों में भी अनेक स्थानों पर मनु के सत्य सिद्धान्तों का सम्मान और प्रतिष्ठा है और कहीं-कहीं मूर्ति भी स्थापित है। मनु के विरोध करने वालों से भी हमारा निवेदन है कि वे मनुस्मृति को स्वयं आद्योपान्त पढ़ें और बिना पढ़े व जाने विरोध करना उचित नहीं है। हम सनातन धर्मी विद्वानों से भी निवेदन करते हैं कि कोटि-कोटि हिन्दुओं को एक झण्डे के नीचे लाने के लिए वे इस प्रकार की मिलावटों को दूर कर धर्म का वास्तविक स्वरूप स्पष्ट करें।

महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में मनु के लगभग 750 श्लोकों को उद्धृत किया है। मनुस्मृति के प्रसंग में महर्षि दयानन्द से काशी में किसी ने प्रश्न किया था- कि आप मनु का इतना समर्थन क्यों करते हैं? तो महर्षि का उत्तर था कि मनु के वचन औषधि नहीं अपितु महौषधि हैं।

सम्मान

डॉ. मुंशीराम शर्मा, कानपुर

मिला बहुत सम्मान,
चलूँ अब छोड़ सभी कुछ यहीं, यहाँ का।
अपना सत्य सदन द्यावा में,
यहाँ न कोई रहा वहाँ का।
जन्ममृत्यु का चक्र यहाँ पर,
वहाँ अमृत की ज्योति अखण्डित।
भारत - आभा से भी ऊपर,
स्वर्गाभा हो रही विभासित ।।1
लगा हुआ अम्बार यहाँ पर,
श्लोक राशि, छन्द भी अपरिमित।
पर मेरा क्या, सब अम्बा का,
मैं भी उसका पुत्र समर्पित। संजनित
पूर्व मृत्यु में भारत की स्मृति,
अब जागरण स्वर्ग-प्रांगण में।
माँ की गोद जहाँ वत्सल रस से,
आप्लावित करती क्षण में ।।2
बस, माँ, निज गोद में उठाले,
स्नेह स्निग्ध हो रमूँ वहीं पर।
भव का यह भटकावन खटके,
रहूँ गटकता तब पय मधुतर।
तेरा स्तन शं0भरित, मयस्कर,
सब वर्णो.य जहाँ हैं पोषित।
वसु-मणि-रत्न-कोष,
कंचन की काया से हैं संतत शोभित।।3
तू धात्री है धेनु,
वत्स यह पाता रहा तुझी से मेवा।
अब चरणों में प्रणत करे
कुछ श्रम तप द्वारा तेरी सेवा।
मोद मयी, पीयूषमयी तू,
तुझे किसी से कुछ न अपेक्षित।
पुत्र कामना, तब सेवा की,
कर दे पूर्ण अम्ब, निज सुतहित ।।4
ममान्तः मे माता भरणयुत निर्माण करणी।
निजांकेनीत्वामांस्नपयतुमुखं स्तन्यपयसा।
मनोमे नैर्मल्यं भजतु जननी वाक्य विमलैः।
भवेत् पुत्रः पूतः मुदितमनसा प्राप्य पविताम् ।।5
अम्बे, त्वं विश्वभेषजः शिवानः शन्तमाभव,
तव दृष्टिः दयाप्लुता सौख्यं शान्तिं ददातु मे ।।6

विद्वानों से नम्र निवेदन

आगामी दीपावली के अवसर पर "आर्यमित्र" अपना ऋष्यंक बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित कर रहा है। इसमें प्रकाशनार्थ किसी भी सामयिक विषय पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने वाले लेख/कविता/कथानक/व्यंग्य आदि सादर आमन्त्रित हैं। कृपया पृष्ठ के एक ही ओर सुन्दर अक्षरों में लिखकर मुझे बिलम्बतम 30 सितम्बर तक अवश्य भेज देने का कष्ट करें।

विदुषामनुचरः

आचार्य इन्द्रदेव पाठक
प्रबन्ध सम्पादक

गाजियाबाद जिले में प्रचार

गाजियाबाद जनपद के 10 विकास खण्डों तथा 4 तहसीलों में श्री डा0 जयवीर सिंह तथा श्री विजयपाल शास्त्री के प्रयास से आर्यसमाज के प्रचार में धूम मची हुई है। यह इलाका अन्ध विश्वासों/रूढ़ियों तथा शराब खोरी में लिप्त है। आर्यसमाज के प्रचार से जनता में जागरुकता आयी है।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है

— डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
भ.पू. कुलपति गुरुकुल वि.वि. काँगड़ी

गतांक से आगे...

वृक्ष ऊंचा जाता है, परन्तु कहीं तो बढ़ना रुक जाता है। वर्धमान जब "अवर्धमान" हो जाता है, तब वही "अदय" हो जाता है, "अदिति" हो जाता है। भौतिक वाद जब रुक जाता है और जहाँ रुक जाता है, तब और वहाँ अध्यात्मवाद शुरु हो जाता है इसी को ऋग्वेद में "अदय" या "सदावृध से सदा+ "अवृध" कहा जाता है।

जैसा हम पहले लिख आये हैं, "ज्ञान" या तो "वर्धमान" होगा या अवर्धमान होगा। "वर्धमान" ज्ञान भौतिक है, समय-समय पर मनुष्य की खोज के आधार पर बदलता रहता है। इसलिए बढ़ता भी रहता है, "अवर्ध"मान-ज्ञान आध्यात्मिक है, नित्य है, सनातन, एक है, अदय है, अदिति है, बदलता नही है। क्योंकि वेद का ज्ञान मनुष्य की खोज नहीं है, ईश्वरीय देन है, इसलिये उसे वेद ने "अदय" तथा "अदिति" कहा है। परन्तु ज्ञान का स्रोत मनुष्य तथा ईश्वर दोनों हैं- इसलिए ज्ञान को वेद ने सदावृध" भी कहा है। सदावृध के हमने दो अर्थ किये हैं। जब मनुष्य द्वारा खोज किये ज्ञान के लिए इस शब्द का प्रयोग होता है तब इसका सदा सर्वदा उत्तरोत्तर बढ़ने वाला, बदलने वाला अर्थ होता है, जब इस शब्द का प्रयोग ईश्वरीय-ज्ञान के लिए होता है तब इसका अर्थ "सदा+अवृधः"- सदा एक रहने वाला, कभी न बदलने वाला, अदय या अदिति अर्थ होता है। जैसे "विद्या" तथा "अविद्या" वेद के विलक्षण शब्द हैं वैसे "सदावृध" भी वेद का विलक्षण शब्द है। तो "सदावृध" के रूप में भौतिक विज्ञान के लिए प्रयुक्त हुआ है, और "सदा + अवृधः" के रूप में ईश्वरीय ज्ञान वेद के लिए प्रयुक्त हुआ है।

मुंडकोपनिषद् में इसी बात की चर्चा करते हुए कहा है: द्वे विद्ये वेदितव्ये परा च अपरा च"। परा क्या है? यया तदक्षरं अधिगम्यते सा परा- अर्थात जिस विद्या से अक्षर ब्रह्म का ज्ञाण होता है वह "पराविद्या है, अर्थात् "आध्यात्मिक-विद्या"। इस कथन से स्पष्ट है कि जिस विद्या से क्षर-प्रकृति के विषयों का ज्ञान होता है वह "अपरा-विद्याः" है, अर्थात् "भौतिक विद्या"। यजुर्वेद के 19वें अध्याय 77वें मन्त्र में इसी भाव को "सत्य" तथा अमृत- इन शब्दों से व्यक्त किया गया। वहाँ कहा है।

**दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः। अश्रद्धां अनृते।
अदधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः ।।**

संसार की सब वस्तुओं को देखकर प्रजापति ने उन्हें दो भागों में विभक्त कर दिया- "सत्य" तथा अनृत"। "सत्य" में सबको स्वाभाविक रूप में श्रद्धा होती है "अनृत" में सबको स्वाभाविक रूप में अश्रद्धा होती है। उक्त विवरण से स्पष्ट है कि वेद ने "विद्या", "सत्य" तथा परा का एक ग्रुप बनाया है तथा "अविद्या", "अनृत" एवं अपरा का दूसरा ग्रुप बनाया है। यजुर्वेद में "विद्या तथा "अविद्या"- इन दोनों की महिमा का बखान है- "अविद्यया मृत्यु तीर्त्वा-"अविद्या से मृत्यु को तरा जाता है। इससे स्पष्ट है कि वैदिक टर्मिनोलोजी में "अविद्या का अर्थ निरक्षरता या अज्ञान नहीं है। तो फिर वेद में "अविद्या का क्या अर्थ है? हमारी दृष्टि में वेद में "अविद्या का अर्थ भौतिकवाद या भौतिक-विज्ञान है। भौतिक आविष्कारों से मनुष्य संसार की सब सुख-सुविधाओं को भोगता हुआ, यन्त्रों तथा औषधियों के अविष्कारों से दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की प्राप्ति कर सकता है जिस वेद ने "अविद्यया मृत्यु" तीर्त्वा कहा हो, हमारा कथन है कि वेद में भौतिकवाद या वर्तमान विज्ञान को वह उच्च स्थान नहीं दिया गया जो अध्यात्मवाद को दिया गया है। भौतिक ज्ञान दिनोंदिन बदलता रहता है, "वर्धमान" है, इसलिए वेद ने उसे "अविद्या" "असत्य" तथा "अपरा" विद्या कहा है, अध्यात्मिकज्ञान सदा एक रहता है, "अवर्धमान" है, इसिलए वेद ने उसे "विद्या", "सत्य तथा "परा" विद्या कहा है। इसका यह अर्थ नहीं है कि वेदों में भौतिक-विज्ञान का सर्वदा अभाव है। वेदों में भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों विद्यायें हैं, परन्तु मुख्यता आध्यात्मिक विद्या की है क्योंकि वही सत्य है, सनातन है, सब देश-काल में एक ही बनी रहती है।

हमारा मुख्य कथन यह है कि वेदों का मुख्य विषय अध्यात्मवाद है, भौतिकवाद या भौतिक विषयों का वेदों में गोण रूप से वर्णन किया जाता है, इसलिए वेदों में दो विद्याओं का उल्लेख पाया जाता है- "द्वे विद्ये वेदितव्ये- दो विद्याओं को जानना चाहिये- "विद्या" तथा "अविद्या", "सत्य" तथा अनृत परा" तथा अपरा"। जो कुछ हम लिख रहे हैं यह बात ऋग्वेद {1,164,139} तथा अथर्ववेद {9·10·18} के निम्न मन्त्र से और अधिक स्पष्ट हो जाती है।

**ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन्
देवाः अधिविश्वे निषेदुः।
यः तत न वेद किं ऋचा करिष्यति
यं इत् तत् विदुः त इमे समासते।।**

ऋचाओं का स्थान परम अक्षर परमात्म-देव में है, अर्थात् ऋचाओं में वर्णन परम-ब्रह्म परमात्म देव का है और उसी अध्यात्म का वर्णन अन्य देवताओं के रूप में किया गया है। जो इस रहस्य को नहीं जानता वह वेद की ऋचाओं से क्या पा सकेगा? जो यह जानता है कि वेद में अध्यात्म-विद्या है यह समझ जाता है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

उक्त विवरण में हम लिख आये हैं कि वेद में उदाहरण रूप से भौतिक विज्ञान का उत्पन्न होना सिद्ध होता है। सिद्ध होता है कि पृथिवी गोल है- इयं वेदिः परो अन्तः पृथिव्या। इसी प्रकार आयं गौः पृश्निर-क्रमीत {यजु0 3,7} से सिद्ध होता है कि पृथिवी सूर्य के गिर्द चक्कर काटती है तथा आकृष्णेन रजसा वर्तमान {यजु0 33,62} से ज्ञात होता है कि वे लोकान्तर आकर्षण शक्ति से बराबर बन्धे हैं परन्तु ग्रन्थों का आध्यात्मिक अर्थ करना ही उचित है। इन मन्त्रों का अर्थ यह है कि भक्त अपने जीवन में भगवान् की तरफ खिंचा जितना उससे अलग होकर उसी के गिर्द ऐसे चक्कर काटता है जैसे पृथिवी सूर्य के गिर्द चक्कर काटती है। इसी भावना को मूल में रखते हुए हम वेद को ईश्वर प्रदत्त मानते हैं।

हमने इस लेख-माला में कई बातों को जगह-जगह दोहराया है। इस दोहराने का कारण विषय को अधिकाधिक स्पष्ट करना है। इस लेख-माला से किसी को भ्रांति न हो इसलिये इस लेखमाला के मुख्य मुददों को लिखकर मैं इसे समाप्त कर रहा हूँ। इस लेख-माला में मैंने जो कुछ लिखा है उसमें कुछ नवीनता है इसलिये इतने विस्तार से लिखना पड़ा और किसी को कोई भ्रांति न हो इसलिये निम्न पोर्शन दोहरा रहा हूँ। -

{क} इस लेख-माला में हमने जो दिशा अपनायी है उससे स्पष्ट है कि वेद सब सत्य-विद्याओं का पुस्तक है जिसके निम्न कारण हैं:-

{ख} वेद ने विद्या के दो भाग किये हैं- "पराविद्या" तथा "अपराविद्या"। **"द्वे विद्येवेदितव्यो परा च अपरा च।** "परा-विद्या" वह है जो सांसारिक विद्या हो, भौतिक विज्ञान से परे है, "अपराविद्या" वह है जो इधर की, संसार की विद्या है- पदार्थ-विद्या या भौतिक-विज्ञान।- इस प्रकार वेद ने "अपरा" या सांसारिक विद्या को भी विद्या का नाम दिया है।

{ग} "परा" तथा "अपरा" की तरह वेद में दो अन्य शब्द भी ध्यान देने योग्य हैं जिनका प्रकृत-विषय के साथ सम्बन्ध है। वे शब्द हैं- "अविद्या" तथा "विद्या"। वेद की शब्दावली में "अविद्या" का अर्थ अज्ञानता या अरक्षरता नहीं है। यजुर्वेद में लिखा है-

अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया अमृतम् अश्नुते"- अविद्या से मृत्यु को तर कर विद्या से अमृत प्राप्त होता है। इस कथन से स्पष्ट है कि वेद की शब्दावली में "अविद्या" का अर्थ भौतिकवाद या वर्तमान-विज्ञान है, और "विद्या" का अर्थ अध्यात्मवाद है, क्योंकि वर्तमान विज्ञान के भौतिक-साधनों से दीर्घ-जीवन प्राप्त होता है, ओषधि आदि के द्वारा रोगों पर विजय प्राप्त किया जा सकता है, मृत्यु रूप सागर को तरा जा सकता है, परन्तु अमरता तो अध्यात्मवाद से ही प्राप्त हो सकती है। इस कथन से स्पष्ट है कि वेद में पराविद्या से अध्यात्मवाद तथा "अपरा"-विद्या से भौतिकवाद अभिप्रेत है।

{घ} जैसे वेद ने ज्ञान के "परा"-विद्या तथा "अपरा" विद्या- ये दो भाग किये हैं, वैसे ही यजुर्वेद ने इन्हीं भावों को प्रकट करने के लिये दो अन्य शब्दों का प्रयोग किया है वे हैं, "सत्य" तथा "अनृत" - "अनृत" शब्द का अर्थ है जो "ऋतु" न हो वह "अनृत"।

—शेष पृष्ठ ६ पर

ऋग्वेद का स्वाध्याय

पूर्व तथा नए ऋषियों का भेद

- आचार्य वेद भूषण अधिष्ठाता-अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद-27

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल सूक्त के प्रथम मंत्र में प्यारे प्रभू ने अपने पुत्रों को अग्नि को सर्वप्रथम जानने की प्रेरणा दी। उसी मन्त्र में अग्नि की परिभाषा भी दी। उसके स्वरूप का बोध भी कराया।

भौतिक जगत में जो अग्नि है समक्ष में वही ज्ञान है ज्ञान का आरम्भ अग्नि से ही होता है। किंडर गार्डन और माण्टेसरी पद्धतियों में भी नन्हें मुन्हें का निर्माण अग्नि से ही होता है।

ब्रह्माण्ड में परमात्मा ने अपने शुद्ध ज्ञान से प्रकृति द्वारा जिन तत्वों का निर्माण किया उनमें सर्वाधिक महत्व का तत्व अग्नि ही है मुख्य रूप से प्रथम अग्नि का ज्ञान ही परम आवश्यक है। अग्नि की उपादेयता दर्शाने की आवश्यकता नहीं है। हमारा जीवन व जीवन के समस्त क्रिया-कलापों में अग्नि ही परम मुख्य आवश्यक तत्व है।

यही अग्नि हमें समस्त सुखों की प्राप्ति का साधन रूप है। इसीलिए प्रभू का गुरुओं के गुरु परम गुरु का प्रथम आदेश अपने पुत्रों और शिष्यों के लिए यही है कि सर्व प्रथम तुम अग्नि को जानो।

परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में जब धरती माता के गर्भ से युवा 'र नारियों को जन्म दिया तब उत्पन्न ोने या देह धारण करने वाली आत्माओं में जो सर्वाधिक पवित्र आत्माएं थीं उनमें से सर्वश्रेष्ठ चार आत्माओं के हृदय में चारों वेदों का क्रम से एक ऋषि को एक एक वेद का ज्ञान दिया।

ज्ञान ही नहीं दिया अर्थात केवल मन्त्र ही प्रकाशित नहीं किए अपितु उनके हृदयों में याथातथ्यतोर्थान् व्यदधात्" उन मंत्रों के अर्थ का भी प्रकाश साथ ही साथ कर दिया पर यह सारा ज्ञान मंत्र और अर्थरूप में प्रकाशित किया।

मोटे रूप में आदि मनुष्यों को जन्म दिया तो उसका स्वरूप हास्टल कम स्कूल अथवा गुरुकुल जैसा या महाविद्यालय जैसा रहा। या यूं कहें कि यह महाविद्यालय शुद्ध रूप में एक शोध विद्यालय था।

जैसे आज भी बालक जन्म लेने के बाद जब कुछ योग्य हो जाते हैं तो वे सर्वप्रथम ज्ञान प्राप्ति के लिए ज्ञान केन्द्रों में भेज दिए जाते हैं ठीक वैसे ही आदि सृष्टि भी पवित्र आत्माएं जिनके शरीर पर बड़े बड़े सघन लोमों का आवरण था ये केश राशि ही उनके वस्त्र थे आहार के लिए दुधारी गायें और फलों से लदे वृक्ष और खेतों में लहलहाते अपक्व अन्न उन्हें सुलभ थे।

पृथ्वी के गर्भ में ही उनके घर थे जिन विवरों में से वे जन्में थे उन्हीं खोलों में वे आनन्द पूर्वक विश्राम कर लेते थे तिब्बत के पर्वतीय क्षेत्रों में गिरि गहवरों में वे वास करते थे,

इस शोध विद्यालय में चार आचार्य या गाइड थे। जिनके निरीक्षण में संसार के आदि सन्धान का कार्य आरम्भ हुआ।

धरती माँ ने उन्हें अपने गर्भ में पाला पोसा और पूर्ण विकसित युवा देह में वे जन्में। उसी प्रकार उनकी बुद्धि भी तीव्र व प्रखर थी।

पप्रोफेसर अग्नि, प्रोफेसर वायु, प्रोफेसर आदित्य और प्रोफेसर अंगिरा के निर्देशन से गुजरता है वे सब ज्ञान युग के शोध छात्र थे।

यह कोरी कल्पना नहीं है यह एक ऐतिहासिक तथ्य है। इन शोध करने वाले छात्रों को ऋषि कहा जाता है। इन ऋषियों के नाम आज भी चारों वेद संहिताओं में छपे हुए मिलते हैं।

ऋग्वेद के प्रथम मण्डल सूक्त के दूसरे ही मन्त्र में इसी तथ्य की ओर संकेत मिलता है।

परमात्मा ने आदेश दिया उन पवित्र आत्माओं को कि- "अग्निमीले" हे शिष्यों पुत्रों तुम अग्नि को सर्वप्रथम जानो। आदेश के अनुसार शोध विद्यालय में शोध आरम्भ हुई वेदों के एक मंत्र पर या कई मंत्रों पर विषय के अनुसार खोज की गयी। जिस जिस ने खोज की उन उन के नाम उस उस मन्त्र पर आज भी अंकित किया उपलब्ध होता।

प्रमाण पूर्वक प्रस्तुत इस आदि इतिहास को झुठलाने का सामर्थ्य कोई बुद्धिमान व्यक्ति प्रकट नहीं कर सकता।

ऋग्वेद के दूसरे मंत्र में यह स्पष्ट घोषणा है। मंत्र इस प्रकार है- "अग्नि पूर्वेभि ऋषिभिरीऽयोनूतनैरुत। स देवोएह वक्षति" ।
इस घोषणा में "ईडमः" शब्द का प्रयोग हैईडमः अर्थात् जानना चाहिए- स्तुति करना चाहिए या जो जानी गई या स्तुति की गई।

सृष्टि के आरम्भ में जिन पवित्र आत्माओं ने वेद के ज्ञान या मंत्रों का प्रत्यक्ष दर्शन किया वे पूर्वेभिः ऋषिभिः अर्थात पूर्ववर्ती आदि ऋषि या सन्धाता ऋषि कहाते हैं। और नूतनैः अर्थात जो सन्धा नया खर्च के बाद अनुसन्धान या रिसर्च करने वाले कहाते हैं। यह इतिहास नित्य इतिहास है।
हर सृष्टि के आरम्भ में प्रभु चार ऋषियों को वेदों का ज्ञान देते हैं और जो पवित्र आत्माएं पृथ्वी के गर्भ से अमैथुनी सृष्टि में जन्मती हैं वे पूर्ण विकसित देह वाली व दिव्य मेधायुक्त होती हैं इनकी आयु भी असाधारण दीर्घकाल की होती है।

ये आत्माएं चार ऋषियों के निर्देशन में ज्ञान का सन्धान करती हैं। इन्हें ही पूर्व ऋषि प्रस्तुत मन्त्र में कहा गया है सृष्टि का आदि युग ज्ञान युग होता है। सतयुग का अभिप्राय ज्ञान युग ही कहलाता है। वैज्ञानिकों की पाषाण युग की कल्पना सृष्टि की मध्य कालीन मनवन्तरीय स्थिति की कल्पना है। कभी ज्ञान बढ़ता है तो कभी घटता है यह चक्र दिनरात की तरह संसार में चलता है।

जिन पूर्व ऋषियों के द्वारा ज्ञान सन्धानित होता है उनके नाम वेद मंत्रों के साथ संयुक्त कर दिए जाते हैं जो ऐतिहासिक प्रमाण रूप में वेद के ईश्वरीय ज्ञान के साक्षी भूत होते हैं।

ये पूर्व के ऋषि अमैथुनी सृष्टि के होते हैं। आदि के होते हैं। पूर्व के होते हैं। मैथुनी सृष्टि वाले नूतन कहाते हैं ज्ञान की स्तुति संसार में सदा होती रहती है।

यजुर्वेद के 40वें अध्याय के मंत्र में शाश्वतीभ्य समाभ्यः कहा है उसका अभिप्राय यही है कि सृष्टि में उत्पन्न होने वाली शाश्वत प्रजा के लिए परमात्मा सृष्टि के आदि में अमैथुनी सृष्टि में ज्ञान का सन्धान करने वालों के हृदयों में मंत्रों के अभिप्राय को अर्थों को प्रकाशित करते हैं। अर्थात उन्हें ईश्वरीय प्रेरणा यथातथ्य रूप से उपलब्ध रहती है।

प्रस्तुत दूसरे मंत्र में "सदेवान् आ इह वक्षति" जो कहा गया है उसका अभिप्राय यही है कि "स" : वह परमात्मा देवान् उन पूर्व ऋषियों को देवों को सब प्रकार से चारों ओर से ज्ञान के दर्शन में प्राप्ति में सहायक होते हैं। यह सहायता जो नए अनुसंधाता होते हैं उन्हें भी प्रेरणा द्वारा योग्यता के अनुरूप प्राप्त होती ही है।

यह दूसरा मंत्र अपने आप में अत्यन्त स्पष्ट है। इसके चिन्तन से ज्ञान ग्रहण करने से संबन्धित अनेक रहस्य खुलते हैं। फिर ज्ञान में पूर्व और नूतन की यह परम्परा अनवरत रूप से वैसे ही गुरु शिष्य के रूप में चलती है जैसे कि माता पिता से सन्तान का क्रम। आदि सृष्टि अमैथुनी होती है उनके अमैथुनी सृष्टि में प्राणियों को सूर्य और पृथ्वी के समागम से जन्म देने वाले माता पिता प्रभु ही होते हैं। वैसे ही अमैथुनी सृष्टि के आदि ऋषियों को ज्ञान के दर्शन कराने में भी ईश्वरीय विशिष्ट योग दान उपलब्ध होता है। स्वाध्यायशील वेद प्रेमी जन इस मन्त्र पर इस दृष्टिकोण से भी विचार करेंगे ऐसा हमारा विश्वास है।

संदर्भ और वातावरण के परिप्रेक्ष्य में मंत्रों पर विचार करने से वे अधिक सुगम व सरल से प्रतीत होते हैं। इसीलिए महर्षि दयानन्द ने उपदेश मंजरी का पूना प्रवचनों में वेद विषय पर जो भाषण दिये गये हैं उनमें वेद को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करने में जो तर्क दिए हैं उसमें महर्षि कहते हैं कि वेद सबसे सरल है इसलिए भी ईश्वरीय ज्ञान है।

वास्तव में वेद सरल है। संदर्भ और विषय का ही सम्यक् बोध नहीं होता तब वे दुरुह और जटिल प्रतीत होने लगते हैं।

आशा है मनीषी जन ऋग्वेद के इस द्वितीय मन्त्र पर प्रस्तुत चिन्तन से लाभान्वित होंगे।

मेरी रूस की यात्रा

• डॉ० मंगाराम वार्ष्णेय
प्रीमियर नगर कालोनी, अलीगढ़

उत्तरी कोरयाई सरकार द्वारा 25 फरवरी 1989 को भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों से 5 शिक्षकों के एक प्रतिनिधिमण्डल को आमन्त्रित किया गया। प्रतिनिधिमण्डल में मेरे अलावा मिराण्डा हाऊस की प्राचार्या डा0 (श्रीमती) रुक्मिणी, दिल्ली वि0वि0 के डा0 पी0के0 बनर्जी, कानपुर-वि0वि0 की प्रो0 (श्रीमती) सुधा अवस्थी और आर0बी0एस0 कॉलेज, आगरा के डा0 आत्माराम शर्मा थे।

उत्तरी कोरिया के प्रवास में हमें लगभग 8 दिन रूस में बिताने पड़े। इन आठ दिनों में हमने रूस के ताशकंद, मास्को, नोवोसिबिर्स्क और इर्कुत्स्क नगर देखे। फरवरी-मार्च के महीने थे। अतः तापक्रम भी काफी नीचा था। ताशकन्द और मास्को में तापक्रम 10 सेल्सियस था तो साइबेरिया के नोवोसिबिर्स्क नगर का तापक्रम 24° सेल्सियस नीचे था। इन दिनों में मास्को से लेकर सम्पूर्ण साइबेरियाई क्षेत्र में बर्फ-बर्फ ही दिखाई दी।

मास्को रूस की राजधानी है। इसकी जनसंख्या अभी एक करोड़ से कुछ कम ही है। कार से हमने सम्पूर्ण मास्को नगर का भ्रमण किया। हमने इसके विभिन्न महत्वपूर्ण स्थानों को देखा। इनमें मास्को विश्वविद्यालय, मास्को नदी, क्रेमलिन, रेड स्क्वायर, इन्दिरागाँधी की प्रतिमा, लेनिन का स्मारक आदि आकर्षक युक्त प्रतीत हुए।

रूस में हमें गरीबी-अमीरी का वैषम्य बहुत कम दिखाई दिया। समाजवादी देश होने के कारण सरकार द्वारा सभी की रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या को हल करना पड़ता है। मास्को में प्रत्येक परिवार को मकान सरकार द्वारा आवंटित किया जाता है। साथ ही सरकार प्रत्येक युवक व युवती को नौकरी भी प्रदान करती है। जवान लड़कियों और महिलाओं को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नौकरी करते देखा जा सकता है।

मास्को में हमने रूस के अन्य स्थानों से आने वाले नागरिकों को भी देखा। ये सभी शारीरिक दृष्टि से बलिष्ठ और रंग-रूप में सुन्दर दिखाई दिये। रूसी लोग गौर वर्ण के हैं। उनके नाक-नक्शे तीखे हैं। दूकानों, होटलों और कार्यालयों में काम करने वाली अधिकांश युवतियाँ तो इतनी सुन्दर थीं कि उनकी सुन्दरता का वर्णन नहीं किया जा सकता। महिलायें भारतीय नारियों की तरह सोने-चाँदी के आभूषण पहनती दिखाई नहीं दीं। वे कानों में बाले अवश्य पहने हुई थीं, किन्तु वे भी सोने के न होकर सस्ती ही धातु के प्रतीत हुए।

रूसी लोग पौष्टिक भोजन पर विशेष ध्यान देते हैं। वायुयान, होटलों आदि में हमने रूसियों को पौष्टिक भोजन करते देखा। वे प्रायः माँसाहारी हैं। वोदका शराब उनका प्रिय पेय है। कुछ रूसी वोदका के कई कई पैग लेते हैं। रूसी पुरुष और स्त्री सिगरेट भी पीते दिखाई दिये। 28 फरवरी, 89 को मैं और डा0 आत्माराम शर्मा मास्को में रह रहे अपने एक भारतीय मित्र के साथ होटल यूक्रेना में दोपहर का भोजन करने गये। जब महिला बैरा ने रूसी भाषा में हमारे खाने के बारे में पूछा तो वह यह सुनकर बड़ी आश्चर्यचकित हुई कि हम न शराब लेते हैं और न ही माँस व अण्डा। उस युवती ने मजाक में ज्ञानू से कहा कि क्या हम हवा खाते हैं और पानी पीते हैं। ज्ञानू के माध्यम से मैंने उस रूसी महिला को बताया कि परमात्मा ने हमारे खाने के लिये अन्य हजारों वस्तुयें बनाई हैं। तब हमने डबल रोटी और मक्खन खाकर तथा पानी पीकर जैसे तैसे अपना पेट भरा।

मास्को में हमने बहु मन्जिले मकान देखे। ये मकान नियोजित समाजवादी योजना के आधार पर बने हुए हैं। ये सभी सरकारी हैं। एक-एक भवन में कई-कई परिवार रहते हैं। इनमें भारतीय मकानों की तरह न लॉन हैं, न बरामदे और न ही आँगन। अधिक ठंड के कारण बाहरी बरामदे भी शीशों के दरवाजों से बन्द रहते हैं।

मास्को में प्रायः प्रत्येक मकान वातानुकूलित हैं। जाड़ों में अत्यधिक ठंड के कारण उन्हें गर्म रखा जाता है। प्रत्येक मकान का तापक्रम लगभग-22^0 से0 रहता है। इस प्रकार बिजली की वहाँ काफी खपत है। मास्को में हमने 1 सैकिण्ड के लिये भी बिजली जाती नहीं देखी। यह हम भारतीयों के लिये आश्चर्य की बात थी क्योंकि हमारे नगरों में बिजली की व्यवस्था विशेष अच्छी नहीं है और वह आये दिन आँख-मिचौनी करती रहती है।

मास्को में प्रशासन-व्यवस्था चुस्त है। नगर में एक दो बार पुलिस वालों ने हमारे पासपोर्ट और वीसा को भी देखा।

हालांकि रूसियों के बारे में पता था कि वे अपनी राष्ट्रभाषा रसियन के प्रति अटूट श्रद्धा रखते हैं, किन्तु मास्को में रह कर हमारे इस विश्वास की पुष्टि हुई कि अनेक प्रान्तीय भाषाओं के होते हुए भी रूस के सभी नागरिक रसियन के प्रति समर्पित हैं। वे हमारे द्वारा बोली हुई अंग्रेजी को नहीं समझ पाते। चाहे हवाई अड्डा हो या टैक्सी स्टैण्ड, चाहे पंचसितारा होटल हो या सरकारी कार्यालय, चाहे दूकान हो या काफी गृह- कहीं भी हमें अंग्रेजी जानने वाला नहीं मिला। फिर रूसियों द्वारा ज्ञान, विज्ञान, तकनीक और वाणिज्य के क्षेत्र में की गई प्रगति को देखकर मुझे लगा कि हमारे देश के कतिपय राजनेताओं का यह कहना कितना गलत है कि अंग्रेजी एक ऐसी खिड़की है जिसके माध्यम से हम अन्तर्राष्ट्रीय जगत में झाँक कर देख सकते हैं। काश, यदि 1947 में हम भी हिन्दी को उसी प्रकार अपना लेते जैसे कि रूसियों ने रसियन भाषा को अपनाया है तो हममें न केवल राष्ट्रीय स्वाभिमान ही उत्पन्न होता अपितु निश्चय ही अन्तर्राष्ट्रीय जगत में हम अब तक काफी प्रगति कर सकते थे।

हमारे देश के लाखों विद्यार्थी अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता के कारण विभिन्न विषयों का मौलिक ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते। उनका सम्पूर्ण समय और शक्ति अंग्रेजी भाषा व व्याकरण के ज्ञान तथा शब्दों के सही उच्चारण में लग जाता है। रूसियों से हमें सीखना होगा कि अंग्रेजी के मोह का हम परित्याग करें तभी भारत की विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं और राष्ट्रीय भाषा हिन्दी का विकास हो सकता है। साथ ही हमारे राजनेता और शिक्षाविदों को विदेशियों से बातें करने में दुभाषियों की उसी प्रकार सहायता लेनी होगी जिस प्रकार रूस के राष्ट्रपति गोर्वाचोव आदि लेते हैं।

रूस में मुझे व्यवहारिक रूप से ज्ञान हुआ कि अंग्रेजी बोलना गौरव की बात नहीं, अपितु हीनता की बात है। मातृभाषा में बोलना ही गौरव की बात है।

रूस की कुल जनसंख्या में लगभग 14 प्र0श0 आबादी मुसलमानों की है, किन्तु उनको देश की मुख्य धारा में समाहित कर दिया गया है। उनके नामों तक का रूसीकरण कर दिया गया है। उदाहरण के लिये सलीम का नाम सलीमोव और रसीद का रशीदोव कर दिया गया है। रूस में मुस्लिम व्यक्तिगत कानून समाप्त कर दिया गया है। तथा ईसाई और मुसलमानों के लिये एक सा सिविल कानून है। मुसलमानों को अनिवार्य रूप से रसियन भाषा पढ़नी पढ़ती है। भारतीय मुसलमानों की तरह वहाँ अरबी, फारसी या उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाये जाने की वकालत नहीं की जा सकती। रूसी सरकार समाज को बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक के रूप में नहीं बाँटती।

1917 में हुई बोल्शेविक क्रान्ति के पश्चात रूस में अनेक सामाजिक व आर्थिक परिवर्तन हुए हैं। फिर मार्क्सवाद की मूल भावना वहाँ देखी जा सकती है। मिखाइल गोर्वाच्योव द्वारा लागू ग्लासनोस्त और पेरेस्त्रोइका के तहत रूस में खुलापन और व्यवस्था का पुनर्गठन हुआ है। 25 मार्च, 1989 को मास्को वि0वि0 में भारतीय छात्रों द्वारा आयोजित होलिकोत्सव को हमने देखा। इस अवसर पर होली-मिलन कार्यक्रम भी हुआ। 26 मार्च 89 को सुप्रीम सोवियत के चुनाव भी हमने देखे।

जिस प्रकार मनुष्य के जीवन में परिवर्तन आते हैं, उसी प्रकार सामाजिक जीवन में भी परिवर्तन आवश्यक है। रूस ने खुलेपन की नीति लागू कर इस प्राकृतिक तथ्य को समझा है। इसी कारण वह उन झंझावातों से बच गया है जो चीन को भुगतने पड़ रहे हैं।

सारथि-शरीर रथी का कौन है?

० श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० एल० टी०, आर्यसमाज, गोरखपुर

सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्नेनीयते भीशुभिर्वाजिनइव ।
हृत्प्रतिष्ठंयदजिरं जविष्ठन्तन्मे म नः शिव संकल्प मस्तु ।।

. हे सर्व नियन्ता ईश्वर। (यत्) जो मेरा मन (अभि शुभिः) रस्सियों से (वाजिनः इव) घोड़ों के समान अथवा (अबुवान् इव सुषारथिः) घोड़ों के नियन्ता सारथि के तुल्य (मनुष्यान्) मनुष्यों को (नेनीयते) अत्यन्त इधर उधर ले जाता है (यत्) जो (हृत्प्रतिष्ठम्) हृदय में प्रतिष्ठित (अजिरम्) जरा अवस्था से रहित (जविष्ठम्) और अत्यन्त वेगवाला है। (तन्मे मनः) वह मेरा मन (शिवसंकल्प मस्तु) शिव संकल्पों वाला है।

मनुष्य का संचालक मन है। उत्तम सारथि जैसे घोड़ों को इधर उधर ले जाता है उसी प्रकार यह मन भी मनुष्यों को इधर उधर ले जाता है। कठोपनिषद में यमाचार्य नचिकेता को उपदेश देते हुए कहते हैं-

आत्मानं रथिनं विद्धिशरीरं रथमेव तु।
बुद्धि तु सारथि विद्धि मनः प्रग्रह मेव च।

इन्द्रियाणि हयाना हुर्विषयांस्तेषु भोचरान्
आत्मेन्द्रिय मनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।

आत्मा को रथवाला रथ स्वामी समक्ष, शरीर को रथ के समान यान। बुद्धि को तो सारथि और मन को उनका घास कहते हैं इन्द्रिय और मन से युक्त आत्मा को भोक्ता कहते हैं। जो व्यक्ति बुद्धि हीन असंयत मनवाला होता है को चवान के दुष्ट घोड़ों की भांति इन्द्रिय उसके वश में नहीं रहती है कठोपनिषद् में 2/2/7 मन्त्र है:-

यस्त्वविज्ञानवान् भवत्यमनस्कः सदाशुचिः
न सतत्पदमाप्नोति संसारंचाधिगच्छति।।

जो व्यक्ति बुद्धिरहित है और जिसने मन को वश में नहीं किया है वह सदा अपवित्र रहता है वह औके उस पद को नहीं प्राप्त कर सकता है और इसलिए वह संसार के जन्म मरण के चक्र को प्राप्त करता रहता है।

यस्तु विज्ञानवान भवति समनस्कः सदा शुचिः।
सतुतत्पदमाप्नोति यस्माद्भूयो न जायते।।
विज्ञान सारथिर्यस्तु मनः प्रग्रह वान्नरः।
सोऽध्वनः पारमाप्नोति तद्विष्णोःपरमं पदम्।।

कठो---- 2/2/89

जो व्यक्ति बुद्धिमान और सावधान मनवाला है तथा जो सदा अपने जीवन को शुद्ध और पवित्र रखता है वह जन्म मरण से रहित उस पद को प्राप्त कर लेता है कि उसका जन्म नहीं होता है बुद्धि जिसका सारथि और मन जिसका लगाम है वह मार्ग को पार कर लेता है यही विष्णु का परम पद है। जब मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर लेता है तब वह सब प्रकार के बन्धनों से छूट जाता है जीवन की सफलता के लिए ज्ञानी, सावधान, समाहित मनवाला पवित्र होना आवश्यक है।

जैसे कि सारथि लगाम के द्वारा घोड़ों को जहां चाहे वहां ले जाता है उसी प्रकार मन शब्द रूप रस, गन्ध, स्पर्श आदि भोगों में जहाँ चाहे वहाँ ले जाकर नाना नाच नचाता है। इस मंत्र में कहा है अभी शुभिर्वाजिनः इव" मन रस्सी से घोड़ों के समान इधर उधर ले जाता है। :

ऋग्वेद 6/75/6 मंत्र है:-

रथेतिष्ठन्नयति वाजिनः पुरोयत्र यत्र कामयते सुषारथिः
अभीशूनां महिमान पनायत मनाः पश्चादनु-यच्छन्ति रमयः

अर्थात रथ में बैठा हुआ उत्तम सारथि जहाँ जहाँ जाना चाहता है, वहाँ वहाँ घोड़ों के द्वारा रथ को आगेले जाता है। हे मनुष्यो लगाम की रस्सियों के अद्भुत सामर्थ्य की प्रसंसाकरो; मन के पीछे रश्मियां अनुसारण करती हैं।

इस प्रकार इस मंत्र की पहली पंक्ति का भाव यह हुआ कि जो मेरा मन रस्सी से घोड़ों की तरह मनुष्यों को इधर उधर ले जाता है। यहाँ हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि शरीर और इन्द्रियों की गति देखकर इनको ही सब कुछ समझ लेना भूल है हमें घोड़े तथा रथ को गति देने वाले मूल कारण को समझना चाहिए।

रथ को गति देने वाला अन्दर बैठा हुआ विचित्र कार्य कर रहा है। वह संचालक "कर्तुमकर्तुमन्यथा कर्तुसमर्थः" करने, न करने और अन्यथा करने में सर्वथा स्वतन्त्र है। इस शरीर को इच्छा पूर्वक गति देने वाला इस शरीर रूपीरथ में विराज मान एक चेतन सत्ता है उसे आत्मा कहते हैं। आत्मा शरीर का स्वामी है शरीर रथ है और इन्द्रियाँ इस रथ को खींचने वाले घोड़े हैं जैसे लगाम की रस्सियों में सन्देश पहुँचाने का विचित्र सामर्थ्य है वैसे ही मन की वृत्तियों में भी महान सामर्थ्य है । इस प्रकार बुद्धि जिस मनुष्य का सारथी है और मन लगाम है वह अपने मार्ग को पार कर लेता है।

मन की विशेषताएं देखिए:-

मन हृत्प्रतिष्ठ अर्थात् हृदय में स्थित है शत पथ ब्राह्मण में आया है:--- कस्मिन्नु मनः प्रतिष्ठितं भवतीति हृदय इति। शतपथ 16/4/9/25

मन किसमें प्रतिष्ठित है? उत्तर दिया गया है, मन हृदय में प्रतिष्ठित है। बुद्धि तर्क देती है और हृदय का कार्य है श्रद्धा। यदि श्रद्धा है तो मन टिक जाएगा। देश के प्रति जब श्रद्धा की भावना होती है तो हम भगतसिंह, राम प्रसाद विस्मिल की तरह अपने मन को स्थिर कर अपने प्राण न्योछावर कर देते हैं श्रद्धा पूर्वक मन को जिस क्षेत्र में आप लगाने का प्रयत्न करेंगे वहीं यह केन्द्रित हो जायेगा।

इस मन की दूसरी विशेषता है "अजिरम्" यह मन कभी जीर्ण नहीं होता यह सदा शक्ति शाली और युवा रहता है जब वृद्धावस्था में शरीर बूढ़ा हो जाता है आँख, कान, पैर हाथ सब शिथिल हो जाते हैं तब भी मन शिथिल नहीं होता। इस मंत्र में मन की तीसरी विशेषता बताई है। जविष्ठम् "अर्थात् यह मन अत्यन्त वेग वाला है।

किसी कवि ने इसके विषय में कहा है:-

कबहूँ मन गगना चढ़े, कबहूँ गिरे पाताल।
कबहूँ चुपके बैठता, कबहूँ जावे चाल।।

इसलिए यह मन्त्र कहता है मन को हृदय में प्रतिष्ठित करने के लिए इसे शिव संकल्प युक्ति कीजिए। "तन्मे मनः शिव संकल्प मस्तु, वह मेरा मन शिव संकल्पों वाला बने।

कु० रूबी को बधाई



कु० रूबी गुप्ता

कु० रूबी गुप्ता पौत्री श्री वंशलाल जी एवं सुपुत्री श्री वेद प्रकाश आर्य, मुख्याधिष्ठाता भू सम्पत्ति विभाग सभा ने इस वर्ष हाईस्कूल परीक्षा में औरैया नगर में प्रथम स्थान तथा जनपद इटावा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है बेटी रूबी कट्टर आर्य परिवार से सम्बद्ध एवं वैदिक विचारधारा से ओत प्रोत है। आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० एवं आर्यमित्र परिवार कु०रूबी के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

— सभा मंत्री

● आर्यसमाज श्रीपुर पूर्वीचम्पारण जिला अन्तर्गत शास्त्री प्रशिक्षण का कार्यक्रम 17 अगस्त से लेकर 25 अगस्त तक सम्पन्न हुआ जिसमें 25 प्रशिक्षणार्थियों ने भाग लिया। प्रशिक्षण शिविर पं० बी०के० शास्त्री, रामचन्द्र सिंह "क्रान्तिकारी" नेपाल एवं पं० ध्रुव जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

● आर्यसमाज ससेर (बिजनौर) का 36वाँ वार्षिकोत्सव 12 अक्टूबर से 14 अक्टूबर तक मनाया जायेगा। इस अवसर पर श्री मनमोहन तिवारी जी मंत्री सभा, जयनारायण अरुण, दिनेश त्यागी, डा०-रमेशचन्द यादव, राकेश आर्य, लक्ष्मण सिंह बेमेल, मामचन्द पथिक आदि उपदेशक एवं भजनोपदेशक भाग लेंगे 14 अक्टूबर को ब्र० विश्वपाल जयन्त का प्रदर्शन होगा।

राष्ट्रोन्नति का आधार केवल वैदिक सिद्धान्त

-श्री सुनील कुमार आर्य
मंत्री आ.स. हिंगरी (शाहजहाँपुर)

हमारे आर्यावर्त राष्ट्र (जिसे-भारत कहते हैं।) की सबसे प्राचीन व सर्वमान्य वैदिक सभ्यता है। यह आर्यावर्त राष्ट्र उन्हीं ऋषि, मुनि, योगी, पवित्रात्माओं का देश है, जिन्होंने विश्व के सभी देशों को सभ्यता, आत्मगौरव, शिक्षा व संस्कृति प्रदान की एवं हमारा आर्यावर्त आर्थिक दृष्टिकोण से इतना सम्पन्न व आत्मनिर्भर था, जिसका जीता जागता उदाहरण कि इसे सोने की चिड़िया कहा जाता था। विद्वान लोग वैदिक धर्म को ही श्रेष्ठ व ईश्वर प्रदत्त मानते हैं। समस्त विश्व स्वीकार करता है कि ईश्वर एक है जो समस्त ब्रह्माण्ड का संचालन कर रहा है। यह एक ऐसा अटूट क्रम है, जो अनादिकाल से प्रवाह के रूप में चला आता है। क्योंकि परमात्मा का धर्म मात्र वही हो सकता है जो सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही परमात्मा ने दिया हो और इसका प्रादुर्भाव सभी के लिए ही किया हो जैसे प्रभु के बनाए सूर्य-चाँद सितारों आदि का बिना किसी भेदभाव संसार के समस्त प्राणियों के साथ एक सा व्यवहार है। इसी प्रकार परमेश्वर के धर्म को भी बिना किसी भेदभाव के समस्त प्राणियों के लिए एक सा हितकारी होना चाहिए और इस धर्म का प्रत्येक सिद्धान्त सृष्टि नियम के अनुकूल व समस्त जीवों के लिए लाभकारी व पूर्ण न्यायकारी हो। ऐसे सभी सदगुण मात्र वैदिक धर्म में ही पाये जाते हैं, यही कारण है कि सब विद्वान लोग वैदिक धर्म को ही श्रेष्ठ व ईश्वर प्रदत्त मानते हैं। मैक्समूलर- पश्चिमी विद्वान ने अपनी पुस्तक "धर्म की विद्या" में भारत हमें क्या सिखाता है मैं स्पष्ट स्वीकार करते हुए लिखते हैं:- "ऋग्वेद" विश्व के पुस्तकालय में सबसे प्राचीन पुस्तक है। "जैकोलेट" जैसे विद्वान ने भी "वेद" को ज्ञान का अनादि स्वरूप माना है। संसार में मात्र वेद का ही धर्म है जो सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का यथार्थ स्वरूप बतलाता है। एवं सृष्टि के नियम के अनुकूल सर्व सिद्धान्तों को दर्शाता है, यही कारण है कि हर बुद्धिमान व्यक्ति इस सत्य तथ्य पर आता है कि वैदिक धर्म का परमात्मा ही निर्माता है।

राष्ट्र के सर्वतोन्मुखी विकास हेतु दोष पूर्ण शिक्षा पद्धति में संशोधन किया जावे एवं सरकार निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था समस्त राष्ट्र में एक समान निष्पक्ष रूप से लागू की जावे। जिसके अन्तर्गत सेन्टपाल, दून मान्टेसरी आदि स्पेशल शिक्षण संस्थाओं को समाप्त कर प्राचीन गुरुकुल विद्यालय एवं महाविद्यालयों की पुनर्स्थापना की जावे एवं सुपात्र श्रेष्ठ योग्य, आचरणवान शिक्षकों को ही नियुक्त किया जावे। राज्य सरकार की तरफ से शिक्षा नीति ऐसी लागू हो जिससे गाँवों, शहरों, नगरों, महानगरों में समान शिक्षा प्राप्त की जा सके। गाँवों में 76·99 प्रतिशत एवं शहरों में 23·31 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है। केरल, अरुणाचल, तमिलनाडु, जम्मू काश्मीर, पंजाब, गुजरात, दिल्ली, आसाम आदि सभी प्रान्तों में समान शिक्षा न होने से विशेष प्रकार की शिक्षण संस्थाओं में मात्र आफिसर्स, नेताओं सैनिकों, धनवानों के ही बच्चे प्रवेश पा पाते हैं, एवं आम साधारण जनता को ऐसी विशेष प्रकार की सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है।

राष्ट्र के सर्वतोन्मुखी विकास में आर्थिक असमानता, तस्करी मुनाफाखोरी, जमाखोरी, एवं भ्रष्टाचार व नैतिकता का द्रुति गति से ह्रास आर्थिक असमानता के लिए एक और कारण उत्तरदायी है, कि यहाँ न केवल प्रतिव्यक्ति वार्षिक आय कम है वरन उसका वितरण दोष पूर्ण है। यद्यपि देश की राष्ट्रीय व प्रति व्यक्ति आय 1948 में 8,650 करोड़ रुपये और 249 रुपये से बढ़कर 1980-81 में 1,04,201 करोड़ और 1,536रुपये हो गयी किन्तु अन्य देशों की तुलना में इब भी कम है, यह संयुक्त राज्य अमेरिका में 8,784 रुपये, ब्रिटेन में 4000 से ऊपर, कनाडा में 6,050रुपये है। दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हमारे राष्ट्र की 60 प्रतिशत जनसंख्या के पास कुल आय का मात्र 35 प्रतिशत है, जबकि 30 प्रतिशत जनसंख्या के पास कुल आय का 65 प्रतिशत है। आज वैसे ही इतनी असमनता है कि सामान्य वर्ग के व्यक्तियों को जीना मुश्किल है। आर्यावर्त जैसे विशाल देश में प्रजातन्त्रात्मक शासन पद्धति होते हुए भी धनी व्यक्ति ही आसानी से चुनाव लड़ सकता है। सरकारी नौकरियों में भी रिश्वत का इतना बोल बाला सुनाई देता है और अगर सज्जनता, नैतिकता पूर्ण जीवन व्यतीत करना है तो सदैव पीछे रह जावोगे ।

राष्ट्रोन्नति के सर्वांगीण विकास में धर्म निरपेक्ष शब्द के अर्थ को सामान्यतः भलीभाँति न समझा जाना धर्म निरपेक्ष का अर्थ अधर्मी नास्तिक अथवा भ्रमित व अनैतिक होने से नहीं लिया जाना चाहिए। डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णनन मेनन ने 27 फरवरी 1949 को लखनऊ-विश्वविद्यालय के दीक्षान्त भाषण में कहा था कि "भारत को यदि धर्म निरपेक्ष लोकतन्त्रात्मक राज्य घोषित किया गया है तो इस प्रसंग में धर्म निरपेक्ष होने का तात्पर्य न ही धर्म के विरुद्ध होना है न धार्मिक दृष्टि से संकुचित होना है। वरन आध्यात्मिक होना है। इस सबका तात्पर्य केवल यही है कि भारत सभी व्यक्तियों की धार्मिक निष्ठा का आदर करता है तथा उस मार्ग की रचना करता है जिसके द्वारा मनुष्य अपने सर्वोच्च या अन्तिम ध्येय तक पहुँच सकता है।

राष्ट्र की सर्वतोन्मुखी समृद्धि एवं विकास के मार्ग में महत्वपूर्ण व्यक्तित्व एवं कृतित्व एवं प्रतिष्ठा व आत्म-गौरव व चरित्र का उचित मूल्यांकन न करके इसका पैसे से आंकलन करना जो कि पूर्णतया दोषपूर्ण असंगत व समाज को पतनोन्मुख अवस्था में ले जाने वाला है। जिसका निर्मूलन हम सभी आर्यावर्त वासियों को एक जुट होकर युक्ति पूर्वक करना है। भ्रष्टाचार और चरित्र हनन ऐसे मुद्दे हैं जिनसे जनजीवन पर बुरा असर पड़ रहा है। ऐसे मामले समाचार पत्रों के माध्यम से नित्य प्रति सुनने व पढ़ने में आते हैं। सिनेमा व दूरदर्शन पर अश्लील, गन्दे व भोड़े कार्यक्रम व पिक्चरें बहुतायत मात्रा में दिखाई जाती हैं। क्या हमारी सरकार इन ज्वलन्त समस्याओं पर विचार करेगी?

उपरोक्त के साथ ही आर्थिक अपराधों को रोकने व समानता स्थापित करने के लिए नितान्त आवश्यक है कि नेताओं की फिजूलखर्ची को रोका जाना व मूल्य निर्धारण अर्थात प्रत्येक दुकान पर प्रत्येक वस्तु का निश्चित शासन द्वारा निर्धारित मूल्य पर ही बेचा जाना। ऐसी श्रेष्ठ व्यवस्था समस्त राष्ट्र में एक समान हो। जिससे जमाखोरी व मुनाफाखोरी एवं (एक्सपायर डेट) स्वास्थ्य विरुद्ध वस्तुओं पर नियन्त्रण किया जा सकता है। फिजूलखर्ची चाहे खेलों के नाम से चाहे नेताजी के स्वागत के नाम से सजावट हेतु चाहे देश विदेश घूमने के नाम से चाहे राजकीय अवकाश व्यतीत करने के नाम से होती है उसका भुगतान भोले भाले किसानों व सामान्य वर्ग को ही करना होता है। इससे राष्ट्र की भारी क्षति होती है। इस राष्ट्रीय क्षति को हम तभी बचा सकते हैं जब हम सभी आर्यावर्त वासी जन ऐसी राजनैतिक पद्धति तैयार करें जो लोक प्रिय होने के दबावों के सम्मुख झुकें नहीं एवं राष्ट्र के दीर्घकालीन हितों का ध्यान रखें। इसके रहते हुए श्रेष्ठ सरकार की सम्भावना ही समाप्त हो जाती है। लोक सभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ ने 1988 के अक्टूबर माह में शिमला में कानून बनाने का आग्रह किया था जिसके अनुसार सभी सांसद व विधायक अपनी स्वयं की सम्पत्ति, अपने पुत्रों व पुत्रियों की सम्पत्ति की घोषणा पद ग्रहण करते समय करें। यह कदम उन्होंने संसदीय लोक तन्त्र को बचाने, मजबूत करने के लिए बेहद जरूरी बताते हुए ऐसा आग्रह किया था। मेरा भी उनसे निवेदन है कि वह अपनी बात को पुनः संसद सत्ता पक्ष व विपक्ष के समक्ष प्रस्ताव रूप में रखें। राज्य की तरफ से योग्यता के अनुसार व व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अनुसार अवसर प्रदान करने व जातीय आधार पर आरक्षण व्यवस्था को समाप्त कर मात्र आर्थिक आधार पर ही (अर्थ,-गरीबी, के आधार न कि जाति-पाँति के आधार पर (समानता पूर्वक आरक्षण व्यवस्था अपनाने में सफल व समर्थ होगी।

मांसाहार एवं मद्यपान व तामसी आहारों पर भी निषेध होना चाहिए क्योंकि सभी बुद्धिजीवी एवं वैज्ञानिक स्वीकारते हैं कि भोजन से ही बुद्धि बनती है, तो फिर धूम्रपान, मांसाहार, व मदिरा पर पूर्णतया निषेध होना चाहिए।

देश में कोई भी सरकार हो भ्रष्टाचार रिश्वत जातीय आधार पर आरक्षण आदि घातक शत्रुओं को नष्ट करना चाहिए। ऐसा करने के लिए किसी भी सरकार को वोटों के लालच का परित्याग कर देना चाहिए। जब तक कोई भी सरकार किसी भी समस्या का समाधान करने के लिए वोटों के लालच का परित्याग नहीं करेगी तब तक कोई भी समस्या हल नहीं हो सकती। अस्तु मेरा सरकार से तथा समस्त आर्यावर्त वासियों से आग्रह है कि राष्ट्रीय सरकार जिसके सिद्धान्त व नीतियाँ खुलासा हों की स्थापना

शेष पृष्ठ ११ पर

"बाल जगत"

महर्षि दयानन्द

गृह-त्याग -3

श्री चन्द्रपाल सिंह "मयंक", कानपुर

और मूलशंकर ने शंका
सुबह पिता से बतलाई।
तो शंका के लिए पिता से
काफी डांट-डपट खाई।
फिर भी "सच्चे शिव" की शंका
मन में बेचैनी लाती।
चैन न लेने देती उसको;
तबियत रह-रह घबराती।
प्रस्तर- मूर्ति कभी सच्चा शिव
हाय। नहीं बन पाएगी।
मेरे मन की यह जिज्ञासा
कभी नहीं मिट पाएगी?
प्रस्तर-मूर्ति भला कैसे
कर सकती मानव का कल्याण?
सच्चे शिव की खोज बनेगी
मेरे जीवन का वरदान।
इसी भाँति दिन बीत रहे थे
किन्तु मूलशंकर का मन
चिन्तित उसे बनाये रखता,
किये हुए मन को उन्मन।
× × ×
तभी मूलशंकर की भगिनी
थी बन गई काल का ग्रास।
अब नवयुवक मूलशंकर को
यह घटना कर गई उदास।
मानव-जीवन की असारता
बना गई मन को व्याकुल।
होता जाता दुखी दिनोंदिन
शोकमग्न उर चिन्ताकुल।
जन्म-मरण के इस बन्धन से
मुक्त बने मानव-जीवन।
इसका क्या उपाय हो सकता-
दूर हो सके यह बन्धन।
अब उन्नीस वर्ष का था;
बच्चों। नवयुवक मूलशंकर।
तभी एक घटना ने उसको
था झकझोर दिया कस कर।
थे परिवार-बीच "चाचा जी"
बड़े धर्म प्रियऔ विद्वान।
उनको भी ले जाने का -
यमराज कर उठा पुनः विधान।
× × ×
वैद्य और सब चिकित्सकों के
हुए प्रयत्न सभी निष्फल।
हालत गिरती ही जाती थी;
आँखों से गिरता था जल।
और मूलशंकर भी रोता
देख रहा "चाचा" की ओर।
जीर्ण-शीर्ण-दुखिया चाचा की
टूट गई जीवन की डोर।
सभी शोक से व्याकुल, रोते;
आँसू धार बहाते थे।
प्रिय - वियोग से - मृत्यु दुखी
कर गई, सभी दुख पाते थे।
अब नवयुवक मूलशंकर का
घर से लगा उचटने मन।
था वैराग्य खींचता उसको।
दुख - दायक है "घर-आंगन"।
यह बन्धन
भनक पिता जी के कानों में
जब इन बातों की आई।
करें पुत्र का शुभ-विवाह अब-
उन ने मन में ठहराई।
"अब विवाह होने वाला है",
जब उसने यह सुन पाया।
युवक मूलशंकर बेचारा
तब मन ही मन घबराया।
क्यों कि मूलशंकर गृहस्थ-
जीवन से तो उकताया था।
बीमारी औ मृत्यु देखकर
उसका मन भी आया था।
घर रहने में दुख ही दुख है;
यहाँ दुखी होगा जीवन।
शोक और चिन्ता से हरक्षण
व्याकुल बना रहेगा मन।

घर तज कर वह बाहर निकले -
यही समझ में आया था।
"अब गृह-त्याग करे वह तत्क्षण"-
यह मन में ठहराया था।
बाईस वर्ष आयु थी उसकी;
था उत्साह भरा मन में।
"सच्चे शिव की खोज करूँ मैं"-
उठी भावना जीवन में।
मातु-पिता का प्रेम, सुरक्षा-
रोक न सके उसे घर में।
उसने जीवन-नाव छोड़ दी
जग के अथाह सागर में।
जरा - मरण का भय मिट जाए।
मोक्ष-मार्ग यदि दिख जाए।
तभी मूलशंकर के मन में
थोड़ी स्थिरता आए।

पृष्ठ ४ का शेष

ऋत का अर्थ है- "सत्य"। ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत- इस मन्त्र में "ऋत" और "सत्य" का एक साथ प्रयोग किया गया है। यजुर्वेद के जिस मन्त्र का हमनें निर्देश किया है वह है दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृते प्रजापतिः। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि "परा" "विद्या "सत्य- इन तीन एकार्थक शब्दों का एक ग्रुप है। "अपरा" "अविद्या" "अनृत" इन तीन एकार्थक शब्दों का दूसरा ग्रुप है। इसी प्रकार इस लेख-माला से स्पष्ट है कि "परा" "विद्या" "सत्य"- ये एकार्थक शब्द अध्यात्मवाद का प्रतिनिधित्व करते हैं "अपरा"-"अविद्या"-"अनृत"- ये तीनों एकार्थक शब्द भौतिवाद या भौतिक विज्ञानों का प्रतिनिधित्व करते हैं अध्यात्मवाद नित्य है, सनातन है, सत्य है, अपरिवर्तनशील है, स्थिर है, भौतिकवाद जिसकी उपज भौतिक विद्यायें हैं, अनित्य है, बदलता रहता है वेद की परिभाषा में अनृत है, परिवर्तनशील है अस्थिर है।

इसी विचारधारा के आधार पर हम कहते हैं, "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। भौतिक विज्ञान बदल सकता है, अध्यात्म विज्ञान बदल नहीं सकता क्योंकि वह "सत्य" है।

मवाना में सभा प्रधान जी का स्वागत

दि0 23·8·89 की रात्रि को सभाप्रधान-जी के आर्यसमाज मवाना (मेरठ) पहुँचने पर आर्य बन्धुओं द्वारा सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का स्वागत किया गया। रात्रि की सभा में बोलते हुए श्री सभाप्रधान जी ने योगेश्वर कृष्ण जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि५ हजार वर्ष पूर्व भारत छोटे-छोटे भागों में बंटा हुआ था। योगेश्वर श्री कृष्णजी ने उस टूटे हुए भारत को महान भारत बनाया। उस समय के देश द्रोहियों को निर्भीकता पूर्वक समाप्त किया और करवाया। परन्तु स्वयं सत्ता से दूर रहे। आज भी देश की वही परिस्थितियां हैं। विदेशी शक्तियों ने टुकड़े-टुकड़ेकर भारत हमें सौंपा। सरदार पटेल जी ने उस भारत की रियासतों को मिला-मिला कर एक कर दिया। अब पुनः धर्म परिवर्तन, उग्रवाद, आतंकवाद, वोडो आन्दोलन आदि के द्वारा इसे पुनः तोड़ने का षड्यन्त्र किया जा रहा है। आज फिर उस महामानव योगेश्वर कृष्ण जी की नीतियों की आवश्यकता है और देश में बुराईयों और विघटनकारी तत्वों को मिटाने के संकल्प का दिन है। यही योगेश्वर-श्री कृष्ण जी को सच्ची श्रद्धांजलि है।

- संवाददाता।

● आर्यसमाज तिघरा (पीपीगंज) गोरखपुर में दि0 17 से 24 अगस्त89 तक वेद प्रचार सप्ताह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रतिदिन यज्ञ, भजन व उपदेश द्वारा वैदिक विचारों से हजारों लोगों ने धर्म लाभ उठाया। योग, प्राणायाम का प्रशिक्षण भी दिया गया।

● बरेली - यहाँ की सभी 8 समाजों में वेद प्रचार सप्ताह 18 से 24 अगस्त तक मनाया गया। प्रातः यज्ञ और सायं भजन एवं प्रवचन हुए इन कार्यक्रमों में सुप्रसिद्ध आर्य विद्वानों सर्वश्री विश्वदेव आचार्य सुश्री मनोरमा आर्य, डा0 सावित्री देवी आर्य, आचार्य विश्वाश्रवा आदि के प्रवचन हुए।

● आर्यसमाज मन्दिर जलालाबाद जनपद (शाहजहाँपुर) में श्रावणी पर्व 17 अगस्त से 24 अगस्त तक धूमधाम से मनाया गया। प्रत्येक दिवस पारिवारिक यज्ञ एवं वहीं पर पूज्य पाद स्वामी ब्रह्मानन्दजी-सरस्वती वेदाभिक्षु जी का बड़ा ही सुन्दर उपदेश हुआ।

● आर्यसमाज किरतपुर (बिजनौर) का 45वाँ वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया इस अवसर पर डा0 वेदपाल, येगेश आर्य नरेश दत्त आदि विद्वानों ने भाग लिया।

● आर्यसमाज गवाँ के सदस्य श्री आनन्दस्वरूप जीके यहाँ 6 अगस्त।989 को आचार्य बुद्धदेव शास्त्री द्वारा गृह प्रवेश संस्कार कराया गया।

सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें ?

चन्द्र प्रकाश आर्य प्रधान आ.स. उदयपुरा, इटावा

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें क्यों भइया इसका तथ्य विचारें
आर्य समाजी बनें सभी क्यों, इसका मंत्र उचारें
सर्वप्रथम इस महाग्रन्थ का, अब तुम पशिचम सुन लों
दत्तचित्त होकर ध्यान पूर्वक, अपने मन में तुम गुन लो
सत्यअर्थ का प्रकाश इसमें, ऋषि की अमर गिरा है
ओत प्रोत है मानव हित में, विज्ञान समुद्र भरा है
सतपथ का है दिग्दर्शक, भ्रान्ति तिमिर विनाशक है
जीवन के उत्थान पतन में, जनजन का यह साधक है
जीवन यापन की सुमधुर विधि है, इसके अपने रग रग में
निःश्रेयस सिद्धि उसकी होती, अमर ग्रन्थ है जिस घर में
यदि अब चाहो सुख से रहना, इसका चिन्तन तुम कर लो
ईश्वर विषयक प्रथम समुल्लास को, अपने उर में तुम भर लो
प्रथम समुल्लास में ईश्वर के, शत नामों की सुन्दर व्याख्या है
रुचिकर, मनरंजक, भ्रमभंजक, सुमधुर इसमें आख्या है
मानव जीवन के हर पहलू पर, इसमें एक प्रथक चिन्तन है
जीवन है जनजन का यह, सुखद समाधान और मनन है
स्वाध्याय नित जो करता इसका, भ्रम समूल भग जाते हैं।
जीवन के चौराहे पर पुनि, कभी नहीं वे भरमाते हैं
दूध, पूत, धन, धाम से वे, समृद्धि शाली बन जाते हैं
श्रद्धा समेत बड़े चाव से, जो निकट ग्रन्थ के आते हैं
और समझ ले ओ जिज्ञासु, इसकी विशद कहानी
सघन गहनता अमरग्रन्थ की, नर देवों ने ना जानी
मानव के कल्याण हेतु प्रिय, चौदह रत्न भरे हैं
सतयुग में हरि जीं मिथ्या ही, समुंदर मथत फिरे हैं
जन्म मृत्यु के मणिकों को फिर, विधिवत दिया पिरोया
छल प्रपंचरत पाखण्डी जन, सिर धुनि धुनि पुनि रोया
नष्ट हो रही महाग्रन्थ से, असतमतों की दुकानें
डारि पिछौरा हुये पलायन, मन अपने में पछिताने
अर्क जवास पात बिनु होते, वर्षा ऋतु के आने पर
जिमि खल उद्यम गये सभी के, महाग्रन्थ बन जाने पर
वेदादि शास्त्र के वाद जगत में, एक अनूठा ग्रन्थ है ये
जग प्रपंच से विरत पथिक का, सुगम अंकटक पन्थ है ये
सघन वन की चभर कते राही का, एक मधुर आधार है ये
भक्त वत्सल परमानन्द का, निःछल रुचिकर प्यारे है ये
जीवन की प्रीत ग्रन्थी को, प्रथक प्रथक इसमें खोला है
सौहार्द परस्पर बढ़े मनुज में, अनुराग प्रेम रस घोला है
सफल होइ केहि विधि मानव, इसका तत्व बिखेरा है
विश्व मनोहर प्राचीदिशि में, नूतन हुआ सवेरा है
प्रतिदिन विधिवत् करे पाठ जो, उसका पूर्ण विकास हुआ
ईर्ष्या द्वेष दम्भ कर जोई, उसका निश्चय ह्रास हुआ
आचार विचार नियम संयम, सब ओत प्रोत हैं इसमें
शिक्षा-दीक्षा, विनय शीलता, अन्यत्र नहीं है जग में
अनुभव गम्य बात और है, उसको सुनले जिज्ञासु
महाग्रन्थ बिनु ज्ञान अधूरा, रोता दो दो आँसू
तृषित भटकते मानव उर की, एक मधुर अभिलाषा है
जग प्रपंच भ्रम भ्रान्ति निवारक, एक विशद ये भाषा है।

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ.प्र.

आर्य विद्यालयों के शिक्षकों के धार्मिक प्रशिक्षण के सम्बन्ध में सूचना "आर्यमित्र" के माध्यम से प्रसारित की गई थी। अभी तक किसी भी विद्यालय ने इस निमित्त अपनी इच्छा प्रकट नहीं की है। दशहरें का अवकाश इस कार्य के लिए उपयुक्त होगा। उस अवसर पर जो विद्यालय अपने यहाँ धर्म प्रशिक्षण चाहते हों वे तत्काल मुझे सूचित करने की कृपा करें जिससे कि प्रशिक्षकों की व्यवस्था की जा सके।

-माधव सिंह
मंत्री
प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ0प्र0

स्थायीपता-

अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य
पट्टी चौधरान
बड़ौत (मेरठ)

● आर्य समाज बगहाँ मीरजापुर द्वारा वेदप्रचार सप्ताह "श्रावणी से-श्रीकृष्ण जन्माष्टमी" तक धूमधाम के साथ मनाया गया।

गोरखपुर में स्वतन्त्रता दिवस पर यज्ञ

● 15 अगस्त को भारतीय स्वतन्त्रता की 42वीं वर्षगांठ के अवसर पर स्वामी विरजानन्द विद्यालय हजारीपुर गोरखपुर में प्रातः यज्ञ के पश्चात् राष्ट्रीय ध्वजा रोहण श्री मुनिराज राजसिंह-(अधिशासी अभियन्ता गोरखपुर विकास प्राधिकरण) द्वारा हुआ। विद्यालय में इस अवसर पर हुए शारीरिक प्रदर्शन, बैण्ड प्रदर्शन तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा वैदिक शिक्षा समन्वित इन कार्यक्रमों से प्रभावित होकर कार्यक्रम के अध्यक्ष-श्री मुनिराज सिंह जी ने विद्यालय को बैण्ड का सेट क्रय करने हेतु 1001रु0 का सात्विक दान भी दिया। मंत्री-श्री बैजनाथ प्रसाद ने अपने सम्बोधन में कहा कि हम इस आर्य वैदिक विद्यालय के माध्यम से ज्ञानशील, संस्कार एवं चरित्र निर्माण का कार्य कर रहे हैं। जिससे बच्चों में सद्गुण व सदप्रवृत्तियों का विकास हो। अन्त में अध्यक्ष महोदय को अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

● आर्यसमाज लालगंज जिला रायबरेली का वेद प्रचार सप्ताह आर्य समाज मन्दिर लालगंज में 17 अगस्त से 24 अगस्त तक धूमधाम से मनाया गया। यज्ञ, भजन एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ।

● आर्यसमाज गवां (बदायूँ) में वेद प्रचार सप्ताह 17 से 24 अगस्त 1989 तक समारोह पूर्वक मनाया गया।

दान दाताओं से अपील

- आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर बाँगर मऊ {उन्नाव} का अपना समाज मन्दिर नहीं है, उसके निर्माण हेतु देश, प्रदेश के आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं, तथा दानवीर सज्जनों से अपील है कि वह इस पुण्यकार्य के लिए धन भेज कर पुण्य के भागी बनें। धन भेजने का पता:- मंत्री आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर मदापुर रोड बाँगर मऊ {उन्नाव} उ0प्र0।

सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

- सभामंत्री।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व सम्पन्न

आर्यसमाज खालापार तथा स्त्री आर्यसमाज खालापार सहारनपुर में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया जिसमें कई वक्ताओं ने योगिराज के जीवन पर प्रकाश डाला। उपस्थित जनता सुनकर मन्त्रमुग्ध हो गई।

आबिदा सावित्री बनी

बांसी आर्यसमाज के प्रांगण में श्रीमती आबिदा अपनी शुद्धी करा कर श्रीमती- सावित्री देवी बनी, शुद्धि उपरान्त श्री रामचन्द्र के साथ वैदिक रीति से अपनी शादी सम्पन्न करा लिया जिस समय वेद मंत्रों का उच्चारण हो रहा था आर्यसमाज खचा खच भरा था, सारी कार्यवाही आर्यसमाज के पदाधिकारियों की देखरेख में सम्पन्न हुई।

नवीन आर्य समाज की स्थापना

समस्त आर्यजगत को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि महर्षि स्वा0- दयानन्द जी के बरेली आगमन पर जिस बेगमलखा में स्वामी जी ठहरने में उसी बाग में दूर संचार कालोनी शास्त्रीनगर बरेली के नाम से एक नवीन आर्य समाज की स्थापना 29·6·89 को हो चुकी है। मन्दिर निर्माण हेतु भूमि भी आवंटित कर दी गई है। जिसके निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान - श्री बाबूराम गंगवार
मंत्री - श्री डा0 दिनेश सक्सेना
कोषा0 - श्री गजेन्द्र सिंह आर्य

आर्यसमाज गया का निर्वाचन

प्रधान - श्री बुलाक चन्द राय आर्य
मंत्री - श्री सोममित्र शास्त्री, एम0ए0
कोषा0 - श्री मुंशी प्रसाद

आर्यसमाज सारीपुर {बरेली}

प्रधान - श्री सुखनलाल आर्य
मंत्री - श्री दयाराम आर्य
कोषा0 - श्री जसवन्त सिंह आर्य

वेद प्रचार सप्ताह

● मैनपुरी 30·8·89, आर्यसमाज- मन्दिर में विगत दि0 17 से 24·8·89 तक वेद प्रचार सप्ताह, बड़े ही हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। पं0 ब्रह्मदत्त जी शास्त्री {अलीगढ़}

● आर्य समाज रायपुरधुन्धी ने वेद प्रचार सप्ताह मुहल्ले-मुहल्ले यज्ञ एवं वेदप्रचार द्वारा किया यह 17·8·89 से 24·8·89 तक कार्यक्रम चलता रहा। जनता पर अधिक प्रभाव पड़ा।

● आर्यसमाज पीपली नायक जनपद- रामपुर के तत्वावधान में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर लगने वाले नौमी व गुदड़ी मेले में आयोजित वेद प्रचार उत्सव दि0 25 से 28·8·89 तक उत्साह पूर्वक मनाया गया।

● आर्यसमाज, उन्नाव में श्रावणी पर्व 17·8·89 से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी 24·8·89 तक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया था। प्रतिदिन यज्ञ, संध्या वन्दन, भजनोपदेश व वेद कथा का कार्यक्रम चलता रहा।

● वेद कथायें नित्य प्रातः मन्दिर में, मध्यान्ह स्थानीय कालेजों में तथा रात्रि में आर्य-परिवारों में हुई। अन्तिम दिन मन्दिर में सामूहिक स्वल्पाहार बड़े प्रेम से हुआ।

ध्रुवपाल सिंह "अटल"
मु0 निरीक्षक, सभा

● आर्यसमाज भरथना {इटावा} में वेद प्रचार सप्ताह दि0 17 से 24 अगस्त तक धूमधाम के साथ मनाया गया। श्री स्वामी शुकर्मानन्दजी के प्रवचन नित्य होते रहे।

● आर्यसमाज, गया के तत्वावधान में वेद-प्रचार समारोह का विशेष आयोजन 17 अगस्त 89 से 24 अगसत 89 तक आर्यसमाज मन्दिर- {चौक टावर}, गया में मनाया गया।

● आर्यसमाज चौक प्रयाग में वेदप्रचार महोत्सव दि0 4 से 11 सितम्बर 89 तक यजुर्वेद परायण यज्ञ, वेद कथा का आयोजन किया गया। जिसमें स्वामी परमहंस जी का प्रवचन हुआ।

● स्त्री आर्यसमाज {बदायूँ} ने वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन किया जिसमें पुराणे ऐतिहासिक साहित्यानामी श्रीमती निर्मला मिश्रा प्रिंसिपल ने वेदोपदेश दिया। विदुषी प्राचार्या जी की विद्वतापूर्ण मनमोहक शैली का श्रोताओं पर प्रशंसनीय प्रभाव पड़ा। परिणामतः नारी समाज में विशेष जागृति आई है।

● आर्य समाज आगरा का वेद प्रचार सप्ताह दिनांक से 24·8·89 तक और दिनांक-24 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व {अ की अधीनस्थ संस्थाओं स धूम-धाम से समारोह प गया।

वेद प्रचार

आ० स० माटुंगा (बम्बई) में

श्री {डा0} सोमदेव जी शास्त्री का श्रावणपूर्णिमा से जन्माष्टमी तक सप्ताह भर, ओजस्वी ज्ञानवर्धक प्रवचन हुआ। श्रोतागण प्रभावित हुए तथा आचार्य रुद्रमित्र शास्त्री ने श्रावणी उपाकर्म विधि सम्पन्न करने के साथ-साथ हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान तथा संस्कृत रक्षा दिवस की महत्ता पर प्रकाश डाला।

पृष्ठ ८ का शेष....

की जावे। जब तक हम वैदिक धर्म {सिद्धान्तों} के अनुरूप शासन पद्धति नहीं अपनायेंगे तब तक कल्याण, शान्ति सद्भाव, सदाचरण सुविचार व चहुमुखी विकास की कल्पना तक नहीं कर सकते। उपरोक्त सभी महत्व पूर्ण समस्याओं के समाधान हो जाने के उपरान्त ही आर्यावर्त {भारत} की एकता, अखण्डता की सुरक्षा एवं पूर्णतया सर्वांगीण विकास किया जा सकता है।

शोक समाचार

- गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर {हरिद्वार} के सुयोग्य स्नातक एवं पूर्व प्राध्यापक डा0 सत्यव्रत जी शास्त्री {धामपुर} का दि0 28 अगस्त 89 को निधन हो गया यह समाचार मिलते ही गुरुकुल ज्वालापुर में शोक छा गया उन्होंने सारा जीवन गुरुकुल की सेवा की तथा कई पुस्तकें भी लिखीं। गुरुकुल के प्राचार्य डा0 हरि गोपाल शास्त्री आदि कई वक्ताओं ने परमात्मा से प्रार्थना की कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

- आर्यसमाज ताजगंज, आगरा में 27 अगस्त 89 को एक शोकसभा श्री वेद प्रकाशजी "सुमन" सुपुत्र आचार्य प्रेम भिक्षु जी तपोभूमि मथुरा के आकस्मिक निधन पर की गई और परमात्मा से प्रार्थना की गई कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा दुःखी परिवार को धैर्य प्रदान करें।

आर्यसमाज
सदस्य तथा स्था
श्री लक्ष्मणग
दुर्घटना
स

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मुख पत्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग लखनऊ

दूरभाष ४५६९३

पंजीकरण स0 एन0डब्ल्यू एन पी ७६

आश्विन कृष्ण-२

१७, सितम्बर, रविवार, १९८९

आवश्यक सूचना

समस्त विद्यालयों के प्रबन्धक/प्रधानाचार्य/अध्यापकों को सूचित किया जाता है कि माननीय उच्च न्यायालय के आदेशानुसार अब विद्यालयों में श्रम विभाग का हस्तक्षेप न होगा। इच्छुक व्यक्ति न्यायालय के आदेश की प्रति 6/-रु0 भेज कर प्रधान कार्यालय आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ से प्राप्त कर सकते हैं।

-- सभामंत्री।

ए भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अध्यक्ष श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि॰ सं॰ २२४१/५७) आश्विन कृष्ण-१० रविवार - संवत् २०५६ वि॰, दिनांक २४, सितम्बर १९९९ (घोषणा पत्र सं॰ ७/२८-२-८५)



महर्षि वचनामृतम्

------ कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है। पिता-माता के समान न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं। परन्तु स्वदेशीय राज्य के स्थिर और सुदृढ रहने के लिए भिन्न भिन्न भाषा, पृथक पृथक शिक्षा, अलग-अलग व्यवहार का विरोध टूटना परम आवश्यक है।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम0ए0

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम0ए0 साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू॰ २५१/-
वार्षिक	रू॰ ३०/-
एक प्रति	१.०० रू॰ मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ३८

एक पौराणिक भ्रान्त धारणा-

मृतक श्राद्ध एवं तर्पण

"श्रद्धया सत्यमाप्नोति श्रद्धया हूयते हविः"

हम श्रद्धापूर्वक सत्य का वरण करें और श्रद्धापूर्वक यज्ञ करें।

मानव को मानव बनाने वाले उसके तीन निर्माता हैं। "मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरूषोवेद "माता पिता और आचार्य। इनका प्रतिनिधित्व करने वाले संसार के समस्त आप्त पुरूष, विद्वान, सन्यासी मातृपितृवत् पूज्य एवं वन्दनीय हैं। जीवित रहते हुए इनकी सेवा शुश्रूषा करना ही सच्चा श्राद्ध एवं पितृतर्पण है।

अमर वेद वाणी सुनिए....

ये च जीवा ये च मृता ये जाता ये च यज्ञियाः ।

तेभ्यो घृतस्य कुल्यैतु मधुधारा व्युन्दती ।।

— अथर्व १८/४/५७

{ये जीवाः} जो जीवित आप्तपुरूष हैं {ये च मृताः} जो गुणों से हीन होने के कारण जीवित होते हुए भी मृतक के समान हैं{ये जाताः} जो अभी पैदा हुए अर्थात बालक हैं {भविष्य की स्वर्णिम आशाएं हैं} {ये च यज्ञियाः} जो याज्ञिक हैं, जिनका जीवन यज्ञमय है, परोपकारी है {तेभ्यः} उनके लिए {व्युन्दती मधुधारा} उमड़ती हुई मधुर धाराएं {घृतस्य धारा} घृत अथवा जल की धाराएं {एतु} प्राप्त हों। इस वेद मन्त्र का भाव यही है कि हम जीवित आप्त पुरूषों की अथवा गुणहीन होने के कारण मृतवत् पुरूषों की भी तथा उत्पन्न हुए बालकों की, घृत अथवा अन्यान्य पुष्टिकारक पदार्थों की उपलब्धि कराकर उनके हृदय रूपी आनन्द की धारा को सदैव आप्लावित करते रहें।

स्वामी दयानन्द ने मृतकश्राद्ध और पितृतर्पण के विषय में लिखा है- "अर्थात् जिससे देव विद्वान, ऋषि जो पढ़ने पढ़ाने हारे, पितर माता-पिता आदि वृद्धजन-ज्ञानी और परमयोगियों की सेवा करनी है----"। पितृयज्ञ के दो भेद हैं एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। श्राद्ध अर्थात "श्रत्" सत्य का नाम है। "श्रत्सत्यं दधाति यया क्रियया सा श्रद्धा, श्रद्धया यत्क्रियते तच्छ्राद्धम्" जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाय उसे श्रद्धा और जो श्रद्धा से कर्म किया जाय उसका नाम श्राद्ध है। इसी प्रकार "तृप्यन्ति-तर्पयन्ति येन पितृन् तत्तर्पणम्" जिस जिस कार्य से तृप्त अर्थात् विद्यमान् माता पिता आचार्य गुणीजन प्रसन्न हों उसका नाम तर्पण है परन्तु यह जीवितों के लिए है मृतकों के लिए नहीं"।

मृतक श्राद्ध और तर्पण की वर्तमान प्रथा भूत प्रेत अन्धविश्वास की भांति उस समय चल गई जब लोग वेदों के वैज्ञानिक स्वरूप से वंचित हो रहे थे। ऋषि की कृपा और आर्यसमाज के प्रचार से अब वह युग समाप्त है और प्रबुद्ध मानव हमारे उक्त विचारों का पोषक बनता जा रहा है। पौराणिकों की यह मान्यता ध्वस्त हो रही है कि मरे हुए पितरों को स्थान विशेष पर जल चढ़ाने अथवा ब्रह्मभोज कराने से उनके पितरों को स्वर्ग मिल जायेगा ।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
———— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम

आर्य मित्र

लखनऊ - अश्विन कृष्ण - १० संवत, २०४६ वि.
२४ सितम्बर १९८९, दयानन्दाब्द, १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

सम्पादकीय

उन्नति का सर्वाङ्गीण पथ

आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती दूरदृष्टा ऋषि थे। उन्होंने विनाशोन्मुख आर्यजाति को बचाने के लिए कई फ्रन्ट खोल रखे थे। ईसाइयों से अलग, मुसलमानों से अलग, जैनियों पुराणपन्थियों से अलग और अद्वैतवादियों से अलग-अलग। कम्युनिस्टों का बोलबाला उस समय कम था नहीं तो हमारे विचार से एक फ्रन्ट वे इसके लिए भी अवश्य खोलते। समाज में उस समयअधिक विपन्नता और विषमता होते हुए भी लोगों का झुकाव धर्म की ओर अधिक था, क्योंकि प्रवृत्ति भौतिकवादी इतनी नहीं थी जितनी कि आज है। लोग दुखी रहकर भी धर्म से चिपके रहना अधिक पसन्द करते थे। भारतीय सन्त समाज ने जीवन के श्रेय मार्ग को अधिक प्रोत्साहित कर रखा था जिसका नतीजा यह था कि लोगों को "रूखासूखा खाय के ठण्डा पानी पी" पर सन्तोष तो था पर धर्म की मान्यताओं को छोड़ना उनके लिए दुष्कर ही नहीं कष्टकर भी था। मध्य युग के लेटर पीरियड से लेकर अमर शहीद स्वा0 श्रद्धानन्दजी के बलिदान तक की अधिकांश ऐतिहासिक बलिदानी घटनाओं का आधार धार्मिक था और इन कई सौ वर्षों की अवधि में आर्यजाति के जितने भी बलिदान हुए उनमें धार्मिक पुट ही अधिक था, चाहे चिता में जिंदा जलने वाली 14हजार रानियों हों चाहे सीने पर गोली खाने वाले अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द हों। संघर्ष का मूल धार्मिक था आर्थिक नहीं। स्वामी जी ने इस समकालीन स्थिति को खूब समझा था और इसीलिए उन्होंने धार्मिक क्षेत्र में आर्य जाति की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए प्रभु की अमरवाणी "वेद" का आश्रय लिया जो वास्तव में सच्चे धर्म की मान्यताओं का एकमेव स्रोत है।

वास्तव में हमारी मान्यताओं का आधार है भी यही। चूंकि वेद का ज्ञान शाश्वत है इसलिए हमारी मान्यताएं भी शाश्वत हैं और हमारा प्रयास भी यही रहना चाहिए कि हम कभी भी इस शाश्वत परम्परा से विलग न होने पावें। स्वामीजी का कहना यही था कि धर्म के मूल तत्व एक हैं और मानव मात्र का मौलिकता की दृष्टि से धर्म भी एक ही है जिसमें समन्वय या समझौता वादी प्रवृत्तियों की गुंजाइश ही नहीं है। समन्वय या समझौता होता वहीं है जहाँ एकत्व का नहीं अनेकत्व का विधान हो। आर्यसमाज इसी प्रवृत्ति को लेकर पैदा हुआ, पनपा और खूब बढ़ा। उसने धर्म की दिशा में एक सर्वतन्त्र, सार्वभौम, देशकाल की सीमाओं से रहित शाश्वत ईश्वरीय नियमों के आधार पर मानव कल्याणकारी परम्पराओं को जन्म दिया और ऐसा लगने लगा था मानो समूचा विश्व इस शाश्वत सत्य को जल्दी ही ग्रहण कर लेगा और सम्पूर्ण मानवसमाज अपने एकदेशीय, एक क्षत्रीय, एक भाषीय मतमतान्तरों को भुलाकर एक ही धर्म (वैदिक धर्म) के झन्डे के नीचे आ जायेगा। उन्होंने नियमों में हमें बताया कि "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है"।

अब आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति को देखते हुए हमारे सामने दो प्रश्न आते हैं - यदि संसार का उपचार करना हमारा मुख्य उद्देश्य है तो इसमें हम काफी सफल हुए हैं। आर्यसमाज ने सुधार के क्षेत्र में बड़े क्रान्तिकारी कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं। सुधार भी उपकार है और इस दृष्टि से आर्यजाति के उत्थान के लिए इस संस्था द्वारा किए हुए कार्य मानवीय इतिहास की अनमोल धरोहर माने जायेंगे। सबसे बड़ी चीज यह हुई कि उत्थान के लिए सुधार की आवश्यकता महसूस हुई, और सुधार उन्हीं लाइनों पर हुआ अथवा हो रहा है जिन्हें स्वामीजी ने प्रतिपादित किया है। आज हमारे प्रचार का कार्य शासन व्यवस्था ने ले लिया है और अन्य संस्थाओं ने भी ले लिया है। उनके पास साधन है शक्ति है। यदि आर्यसमाज के पास यही साधन और शक्ति हो तो वह और अच्छे ढंग से कार्य कर सकता है। दूसरा प्रश्न सामने यह आता है कि इतना प्रचार और सुधार करने के बाद भी क्या वास्तव में हम स्वामी जी की परिभाषा में "संसार का उपकार अर्थात शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति" के लक्ष्य में सफल हुए हैं। इस प्रश्न पर गंभीरता से विचार करने पर स्पष्ट होगा कि शारीरिक और सामाजिक उन्नति का सम्बन्ध मुख्यतया भौतिकवाद से है परन्तु आत्मिक उन्नति का सम्बन्ध पूर्णतया आध्यात्म से है। यदि स्वामीजी केवल शारीरिक और सामाजिक उन्नति को ही उपकार का आधार मान लेते तो वह उन्नति अधूरी रहती खासतौर से उन लोगों के लिए, जो जड़वाद के साथ साथ चेतनतत्व पर भी विश्वास करते हैं। स्वामीजी ऋषि थे - उन्होंने भौतिक उन्नति के साथ आत्मिक उन्नति को समानान्तर प्रश्रय दिया क्योंकि उनकी दृष्टि में जीवन केवल शरीर का ही नाम नहीं है, उसके अन्तरतम में स्थित एक चेतनसत्ता है जिसकी उन्नति शारीरिक, सामाजिक उन्नति से भी नितान्त अधिक आवश्यक है। जीव शरीर के माध्यम से ही भौतिक सुखों का उपभोग करता है, किन्तु प्रभु का आनन्द प्राप्त करने के लिए उसे इस माध्यम की आवश्यकता नहीं रहती है। उसकी आत्मा सत्कर्मों द्वारा स्वयं इतनी उन्नति कर सकती है कि इस भौतिक शरीर के बिना भी उसे प्रभु का सान्निध्य और आनन्द प्राप्त हो सके। लेकिन इस स्थिति को प्राप्त करने हेतु भी शरीर की आवश्यकता और शारीरिक कार्य के लिए कर्मक्षेत्र की आवश्यकता है।

दोनों सापेक्ष्य हैं और अनिवार्य और अन्योऽन्याश्रयी हैं। स्वामीजी ने इसी मध्यम मार्ग को **"संसार का उपकार करना"** बतलाया। हमने इस लेख के पूर्व भाग में जो स्थिति बताई है उसमें धार्मिक झुकाव अधिक था। आज भौतिक झुकाव अधिक है। स्थितियां दोनों एकांगी हैं, अपूर्ण हैं। परिणाम यह है कि न तब शान्ति थी और न अब शान्ति है। आर्यसमाज इन दोनों स्थितियों का समन्वय चाहता है और इसी में मानवजाति की उन्नति का सर्वांगीण शान्ति का पथ अन्तर्निहित है। □

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के शहीदों को श्रद्धांजलि

दिल्ली की आर्यसमाज दीवान हाल में 17 अगस्त को हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के अर्द्धशताब्दी समारोह का आयोजन हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि आज से पचास वर्ष पूर्व आर्यसमाज ने हैदराबाद निजाम रियासत में अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए सत्याग्रह आन्दोलन का सहारा लिया था जिसमें देश के कोने-कोने से सभी धर्मों के लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया था। इस आन्दोलन में 28 आर्यवीर शहीद हुए थे। आज आर्यसमाज उन शहीदों की शहादत के प्रति नतमस्तक होकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता है। धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए उन्होंने हमें अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा दी है।

उन्होंने भारत सरकार का भी धन्यवाद किया कि उसने 48 वर्ष बाद इस सत्याग्रह आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन स्वीकार करके सत्याग्रहियों को सम्मान पेंशन देना प्रारम्भ किया। समारोह में दिल्ली के प्रमुख आर्य समाजों के अतिरिक्त लगभग 100 सत्याग्रही भी उपस्थित थे। आर्यसमाज दीवान हाल के प्रधान श्री सूर्यदेव जी ने पुष्पमाला से सबका स्वागत किया और स्वामी आनन्दबोध जी ने उन्हें शाल भेंट कर सम्मानित किया।

करतारपुर में 25 सितम्बर से 1 अक्टूबर तक

धार्मिक मेला

गुरु विरजानन्द जी की जन्मभूमि करतारपुर जिला जालन्धर में 25 सितम्बर से 1 अक्टूबर 1989 तक धार्मिक मेला बड़े समारोह के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर महिला सम्मेलन, सामवेद पारायण-यज्ञ, गुरु विरजानन्द सम्मेलन आदि आयोजित होंगे। आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान सन्यासी, उपदेशक पधार रहे हैं। जनता सादर आमन्त्रित है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वृहदधिवेशन

दिनांक - २६ नवम्बर सन् १९८९ को डी॰ए॰वी॰ कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है :-

1-	सभा में चित्र प्राप्ति की अन्तिम तिथि	14-10-89
2-	चित्रों की जाँच	16-10-89 से 19-10-89 तक
3-	मतदाता सूची का प्रकाशन	22-10-89
4-	आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	25-10-89
5-	आपत्ति का निवारण	26-10-89 से 27-10-89 तक
6-	शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	5-11-89
7-	वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन्	26-11-89
8-	चुनाव परिणाम की घोषणा	निर्वाचन समाप्ति के बाद

दिनांक- 15-9-89

मनमोहन तिवारी
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0,
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।



बाल जगत

महर्षि दयानन्द

गुरु की खोज

चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
कानपुर

दिखा सके जो मार्ग मोक्ष का,
ऐसे गुरुवर की थी खोज।
रहा भटकता युवक मूलशंकर
पन्द्रह वर्षों तक रोज।
रोज सुबह प्राची-अंचल से
सूरज निज मुख दिखलाता।
धीरे-धीरे सूरज का रथ
पूरब से पश्चिम जाता।
सूरज संध्या को छिप जाता,
मुस्काती रजनी आती।
जंगली तल पर तब मयंक की
रजत चन्द्रिका बिछ जाती।
रात बीतती, फिर दिन आता,
दिन समाप्त हो जाता था।
एक - एक कर जीवन का यों
दिवस निकलता जाता था।
रहा भटकता गुफा-जंगलों-
मठों - तीर्थ - स्थानों में।
बियाबान जंगल में भटका;
ऊँचे बर्फिस्तानों में।
सर्दी- गर्मी-भूख-प्यास कुछ
बुझा न पाती मन की आग।
पर बेचैन मूलशंकर तब
इत-उत नित्य रहा था भाग।
मिले ज्ञान-यात्रा में उनको
पहुँचे हुए ब्रह्चारी।
इनसे दीक्षित हुए-बने थे
"शुद्ध चेतन ब्रह्मचारी"।
मिले नर्मदा-तट पर उनको,
गुरु पूर्णानन्द सरस्वती।
इनसे शिक्षा ले सन्यासी बने,
हुए "दयानन्द सरस्वती"।
दयानन्द "अब" सन्यासी थे,
रहा न शेष मूलशंकर।
लेकर भी सन्यास कर रहे
सच्चे गुरु की खोज निरन्तर।
मिले महन्त एक तब उनको,
अपना चेला इन्हें बना कर
लालच दिया - कि गद्दी इनको
दे देंगे हम आगे चल कर।
दयानन्द ने मना कर दिया,
गद्दी का लालच ठुकराया।
महन्त बन गद्दी लेने का-
नहीं विचार उन्हें था भाया।
इधर-उधर ये रहे भटकते,
बीत गये यों पन्द्रह वर्ष।
"गुरुवर विरजानन्द" मिले, तब
जीवन में आया उत्कर्ष।
मथुरा में निवास करते थे
"दण्डी स्वामी विरजानन्द"।
मिला योग्य गुरु उन्हें अन्त में,
दयानन्द के मन आनन्द।



महिला जगत

"भारतीय नारी"

डॉ॰ सावित्री देवी शर्मा
१०-केलाबाग,
सावित्री सदन,
बरेली

भारत की संस्कृति नष्ट हुई,
अवशेष कहानी हो रही।
नारी गण! जाग उठो अब,
क्यों आलस्य में जीवन खो रही।।
शुभ मार्ग दिखा प्रिय सन्तति को
सिखलाया दुर्गुण से बचना
जगदम्ब ! तेरी उस शिक्षा बिना
वात्सल्य मयी रक्षा न रही।
अब लाल तुम्हारे बिगड़ रहे,
कैसी दुरवस्था हो रही -1
अवशेष कहानी-----------
चलना सीखा था हाथ पकड़,
जिस मौंका ऋषि मुनि मानव ने,
जिसके संरक्षण में पोषित,
पाया दुलार वीरत्व मिला,.
वीरों की जननी निर्मात्री,
फिर क्यों अबला सी हो रही - 2
अवशेष कहानी ----------
विद्या बल निज पतिव्रत से
सह धर्म चारिणी बनी रही
विशवास रजत नग पग तल में,
श्रद्धा देवी बन कर उभरी,
मिथ्या आडम्बर में बहिनों,
अस्तित्व आज क्यों खो रही, -3
अवशेष कहानी -------------
नेत्रों में लज्जा का अंजन,
मुख पर थी लाली शील भरी
पति पद निष्ठा कर्तव्य भक्ति
बिन्दी सौभाग्य सिन्दूर भरी
पहने सदगुण मय आभूषण,
अब विलासिता क्यों छा रही -4
अवशेष कहानी ---------
अब तो जानो परिवार धर्म
क्या राष्ट्रधर्म, पावन स्वकर्म
उत्थान पतन इस भारत को
है देवि। तुम्हीं पर आधारित
नव युग आया जागृति का,
क्यों गहरी निद्रा में सो रही -5
अवशेष कहानी --------
आधार राष्ट्र की दिव्यशक्ति
सम्राज्ञी बन कर कुल सेवा
तुम ही करती हो संचालन
प्रेरणा मयी कवि की कविता
दिग्भ्रान्त हो रहा है मानव,
तुम तपः पूत गंगा लहरी -6
अवशेष कहानी ---------
तुम अरुन्धती ऋषिका बनकर
करती ऋषियों का उदबोधन
सन्मार्ग दिखाती रही उन्हें
साक्षी नभ के सप्तर्षिप्रवर
दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी बन,
हो तुम्हीं आर्य महिला प्रहरी -7

आर्य समाज का प्रचार कैसे हो ?

• श्री स्वामी वेद मुनि परिव्राजक
अध्यक्ष वैदिक संस्थान, नजीबाबाद।

जब मैं आर्य समाज में आया था, उस समय आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में यदि कोई अपरिचित व्यक्ति आता था तो समाज के अधिकारी उसका परिचय पूछते थे, उससे अपनापन स्थापित करते थे, उसके साथ अतिथि जैसा व्यवहार करते थे। यदि वह उसी नगर का रहने वाला होता तो उसे यथासम्भव सत्यार्थ प्रकाश आदि आर्य साहित्य भेंट करते तथा भविष्य में भी आर्यसमाज के कार्यक्रमों में भाग लेने का आग्रह करते और यथासम्भव शीघ्र ही उसे आर्यसमाज का सदस्य बना लेते थे।

कोई दूसरे नगर से सरकारी सेवा के कारण स्थानान्तरित होकर आता तो उससे पूछते "आपको कोई कष्ट तो नहीं है, निस्संकोच कह दीजिये, आप तो हमारे आर्य परिवार के सदस्य हैं। बाद में उसे भी आर्यसमाज का सदस्य बना लेते। यदि वह जहाँ से आया है वहाँ भी आर्यसमाज का सदस्य था तो वहाँ की आर्यसमाज से उसकी सदस्यता स्थानान्तरित करा लेते थे।

यदि कोई आर्य बन्धु कुछ दिन के लिये किसी कार्यवश आया होता तो स्थानीय आर्यसमाज के मन्त्री-प्रधान आदि को मिलता था, अकस्मात् अपरिचित अवस्था में आया होता तो आर्य समाज मन्दिर में ही ठहरता था। रविवार उसके प्रवास की अवधि में आता तो साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित होना। ऐसे आगन्तुकों का प्रायः सत्संग में सम्मिलित आर्यजनों से परिचय कराया जाता था।

आर्यसमाज के साप्ताहिक में कोई सदस्य अनुपस्थित होता तो उसके घर जाकर न आने का पता लगाते। यदि वह रुग्ण पाया जाता तो उसके स्वास्थ्य की कामना करते, चिकित्सा व्यवस्था का पता लगाते तथा आवश्यकतानुसार सम्मति देते और सहायता करते थे।

पतन का प्रारम्भ-

पतन का प्रारम्भ होने लगा तब, जब सत्संग में सम्मिलित न हो पाने के कारण अपनी ही समाज के सदस्य के विषय में हमने उसकी अनुपस्थिति का कारण जानने का प्रयत्न करना छोड़ दिया। जब अनुपस्थिति का कारण ही जानना छोड़ दिया तो घर जाकर सद्भावना और सम्वेदना प्रकट करने का तो प्रश्न ही क्या?

जब स्थानीय सदस्य के विषय में उपेक्षा की यह प्रवृत्ति उत्पन्न हो गयी तो किसी नवागन्तुक से परिचय प्राप्त करने की बात ही क्या कहनी? जो लोग कहीं किसी समाज के साप्ताहिक में नवागन्तुक के रूप में सम्मिलित होते हैं, वह प्रायः यह कहते हैं कि हम अमुक समाज के साप्ताहिक में गये, किसी व्यक्ति ने हमसे इतना भी नहीं पूछा कि कहाँ से आना हुआ? यह तो कोई क्या पूछता कि हमारे योग्य कोई सेवा हो तो बताइये।

इस स्थिति को देखकर अनेक बार यह प्रश्न मस्तिष्क में घूम जाता है कि आर्यसमाज जैसी मिशनरी संस्था ----- जिसका मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है, वेद का प्रचार-प्रसार करना है------ उसके मंत्री और प्रधान बनकर जिन लोगों को अपने उत्तरदायित्व के कारण अधिक सभ्य, नम्र तथा उदार होना चाहिये, वह ऐसा अनुत्तरदायी व्यवहार क्यों करते हैं? बहुत सोचने पर उत्तर यही सूझता है कि ऐसे लोग येन-केन-प्रकारेण चाहे गुटबन्दी या अपनी आर्थिक सम्पन्नता के कारण आर्यसमाज के पदाधिकारी तो बन जाते हैं किन्तु वास्तविक अर्थों में वह न तो आर्य हैं और न आर्यसमाजी। एक यह कि आर्यसमाज ----- जिसका कार्य वैदिक विचारधारा और वैदिक जीवन पद्धति का प्रचार करना है, तथा जहाँ कोई राजकीय सत्ता, प्रशासनिक राजसत्ता नहीं है---- के मंत्री-प्रधान बनकर जो लोग किसी आगन्तुक का परिचय प्राप्त करना भी अपनी शान हानि समझते हैं, यदि आर्यसमाज के पदों का स्थान भी राजकीय प्रशासनिक सत्ता जैसा होता, मेरा अभिप्राय है कि राजकीय प्रशासनिक सत्ता यदि ऐसे लोगों के हाथ में होती, तब तो सम्भवतः यह लोग पृथिवी पर पैर भी न रखते।

पतन की पराकाष्ठा-

एक बार जब किसी समाज या वर्ग में गिरावट आनी प्रारम्भ हो जाती है तो देखा यह गया है और इतिहास इस का साक्षी है कि वह पतनावस्था की पराकाष्ठा को ही प्राप्त हो जाता है, भले ही तत्पश्चात् उसका पुनरुत्थान हो जाये। न्यूनाधिक यही स्थिति आर्य समाज की भी हो चली है। यदि आर्यजन इस स्थिति से उबरना चाहें तो अभी समय है, आर्यसमाज को बचाया जा सकता है। यदि सुधार के लिये लोग तैयार नहीं तो इसका यही अर्थ हो सकता है कि कुछ आर्यसमाजी ऐसे हैं, जो भावनाओं में बहकर आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए हैं, आर्य समाज को समझा लेशमात्र भी नहीं और इसीलिये पदाधिकारी बनकर अनार्योचित "अनार्यजुष्टं अकीर्तिकरम्" कर्म और व्यवहार करते हैं या फिर वह आर्यसमाजी हैं ही नहीं। येन-केन-प्रकारेण आर्यसमाज में घुसकर महर्षि-दयानन्द सरस्वती के वैदिक मिशन की हत्या किसी सुनियोजित षड्यन्त्र का अंग बनकर कर रहे हैं।

पतन का ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ। केवल उदाहरण ही दे रहा हूँ, न किसी व्यक्ति का नाम और न समाज का। मुझे किसी व्यक्ति से विरोध नहीं, मेरा पक्ष और विरोध सिद्धान्त रक्षा और समाज के हित में ही होता है। जो निष्पक्ष होकर विचार करेंगे तो निश्चितरूपेण वह मेरा समर्थन करेंगे।

गत 26 जून को मैं ज्वालापुर श्री मास्टर सत्यपाल सिंह जी आर्य के श्रीगृह पर गया था। उन्होंने दिल्ली की आप-बीती सुनायी। वह अत्यन्त वेदपूर्ण उत्तेजना में अश्रुपूरित होकर सुना रहे थे। मास्टर जी बड़े ही विनम्र और अतिथि विशेषकर सन्यासी सेवी उच्च शिक्षा प्राप्त आर्य हैं। वह अपनी पुत्री को लेकर किसी साक्षात्कार के लिये दिल्ली गये थे। दिल्ली के आर्यों से नितान्त अपरिचित होने के कारण गुरुकुल-कांगड़ी से श्री डा0 हरिप्रकाश जी आयुर्वेदालंकार का पत्र ले गये थे। नयी दिल्ली की एक आर्यसमाज के पुरोहित ने -- जो स्वयं भी गुरुकुल कांगड़ी के ही स्नातक हैं-- यह कहकर उन्हें नहीं ठहरने दिया कि यहाँ मन्त्री-प्रधान कोई नहीं हैं, वह अपने-अपने घर हैं और उनकी कोठियाँ बहुत दूर हैं। मास्टर जी ने बार-बार कहा मुझे केवल एक रात ठहरना है, शाम हो रही है, अब मैं कहाँ जाऊँगा? मेरे साथ मेरी लड़की है, नहीं तो कहीं भी रात बिता देता किन्तु पुरोहित जी का पाण्डित्य नहीं पिघला। अन्ततोगत्वा दुःखी होकर मास्टर जी पुरोहित जी के दिशा निर्देश पर ही दूसरी समाज में पहुँचे। वहाँ गये तो वहाँ भी वही ढाक के तीन पात। उत्तर मिला यहाँ कोई कमरा नहीं है। मास्टर जी ने कहा मुझे कमरे की आवश्यकता ही नहीं, सत्संग भवन में ही रात्रि काट लूँगा, दिन छिपने लगा है, लड़की मेरे साथ है, मैं इस समय कहाँ जाऊँ? किन्तु हमारे पतन की पराकाष्ठा हो चुकी है, वहाँ से भी मास्टर जी सन्ध्या समय पुत्री को लिये हुए अत्यन्त खिन्न मन से चल दिये और मन ही मन आर्यसमाजियों के इस घृणित तथा कुत्सित व्यवहार पर दुःखी होते रहे। उस रात्रि को फिर बहुत रात होने पर दिल्ली की हरियाणा से मिलने वाली सीमा पर स्थित आर्यसमाज जनकपुरी सी, में जाकर ठहरे। वहाँ के पुरोहित को आर्यसमाज के अधिकारियों ने समाज से नहीं निकाला। प्रातःकाल के सत्संग में जब कार्यकर्ता आये और मास्टर जी से उक्त दोनों समाजों में हुए व्यवहार की आप-बीती सुनी तो घोर घृणा प्रदर्शित करने लगे।

कुछ दिन पश्चात् मास्टर जी ने पुत्री के साथ ही जयपुर यात्रा की। ट्रेन में उनके सहयात्री एक ईसाई सज्जन थे। पारस्परिक परिचय हुआ। जयपुर जाने का कारण जानकर और यह ज्ञात होने से कि वहाँ मास्टर जी का कोई परिचित नहीं है, वह उन्हें आग्रह पूर्वक अपने साथ ले गये। उनका यह होटल है, उसी में ठहराया और कहा कि कोई आवश्यकता, कोई कष्ट हो तो मुझे बता दीजियेगा। अपने मैनेजर को निर्देश कर दिया कि इन्हें कोई किसी प्रकार का बिल न देना न इनसे पेमेण्ट लेना। प्रातराश के समय इनकी रुचि पूछी, उसकी व्यवस्था की। दिन में भी इनका ध्यान रखते रहे और सायंकाल तक 3-4 बार मिलकर आवश्यकताओं को पूछते रहे। वहाँ से विदा होने

शेष पृष्ठ ७ पर

ऋग्वेद का दार्शनिक तत्वज्ञान

• डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री
एम०ए०, पी-एच०डी०
रणवीर रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। उसमें लौकिक और आध्यात्मिक विद्याएँ मूल रूप में पाई जाती हैं। प्राचीन भारतीय तत्वज्ञों ने सर्वशास्त्रों को वेदमूलक घोषित किया है। चाहे वे व्याकरण, भाषा, गणित, काव्य, आयुर्वेद, ज्योतिष, संगीत, नाट्यशास्त्र, योगशास्त्र और सृष्टि विद्यादि से सम्बन्धित विविध ज्ञान-विज्ञान की शाखाएँ ही क्यों न हों? अतः दर्शन शास्त्रों में जिन विषयों पर विचार किया गया है उन विषयों की सर्वप्रथम चर्चा विश्व के आदिम ग्रन्थ वेदों में भी पाई जाती है। यह बात पृथक है कि वह चर्चा मूलरूप में या सूत्र रूप में है। क्योंकि वेदों में सभी विद्याओं का बीज है, शाखाओं का बहुविध विस्तार नहीं। इसके विपरीत कुछ आधुनिक भारतीय विद्वानों तथा विदेशी विद्वानों को वेदों में मात्र कर्मकाण्ड, यज्ञिय विधियाँ और देवताओं से प्रार्थनाएँ ही दृष्टिगोचर हुई हैं।

वैदिक विद्वानों में सर्वप्रथम सायण ने स्वयं वेदों में कर्मकाण्ड और उपनिषदों में ज्ञानकाण्ड माना है। यद्यपि उसके वेद भाष्य से थोड़ा ही सही, अध्यात्म, दर्शन और भौतिक विद्याओं की पुष्टि वेदों में सिद्ध हो जाती है। सायण के कथन में इस प्रकार स्पष्टतः अन्तर्विरोध परिलक्षित होता है।

आचार्य सायण के वेदभाष्य में कर्मकाण्ड की विधियों को प्रमुखरूप (केन्द्रबिन्दु के रूप) में देखकर पाश्चात्य वेद विद्वानों और उनके चरणचिह्नों पर चलने वाले भारतीय वैदिक विद्वानों ने भी वेदों में दार्शनिक आध्यात्मिक तथा नैतिक सिद्धान्तों की चर्चा के अनुल्लेख का अनुमोदन किया है।

किसी के अनुसार वेदों में नीति तत्व नहीं है तो दूसरे के अनुसार ऋग्वेद के काल तक आर्यों की धर्मभावना अभी परिणत या विकसित नहीं हुई थी। कुछ ऐसे भी हैं जिनका मत है कि ऋग्वेदीय समाज में दार्शनिक प्रश्नों पर विचार करने का प्रश्न ही नहीं उठता। क्योंकि उस प्रारम्भिककाल में विकासवादी सिद्धान्त के अनुसार उस प्रकार का बौद्धिक विकास सम्भव ही नहीं था जिससे दार्शनिक तत्वज्ञान की उत्पत्ति हो सके। इस प्रकार की मान्यता वाले विपश्चित जन दर्शनों की आधारभूमि उपनिषदों को मानते हैं। उनका यह भी कहना है कि प्रारम्भ में ऋग्वेद ही था। यजुर्वेद की रचना बाद में हुई। गेय ऋचाएँ ही सामवेद कहलाईं मूलतः उनका अस्तित्व ऋग्वेद से पृथक् नहीं है। अथर्ववेद तो बहुत बाद में लिखा गया। अर्थात् जब आर्यों का समाज सभ्यता की दृष्टि से विकसित हो गया तब अथर्ववेद की रचना हुई।

हम यहाँ इसी विषय पर विचार विमर्श कर रहे हैं कि इन पश्चिमी और पूर्वी विद्वानों द्वारा बहुप्रचारित इस मत की सत्यता कितनी है। वादितोषन्याय से हम ऋग्वेद के ही सूक्तों और मन्त्रों से यह दिखलायेंगे कि दार्शनिक तत्वज्ञान का प्रारम्भ ऋग्वेद में दृष्टिगोचर होता है। अतः इस लेख में ऋग्वेद के अतिरिक्त अन्य वेदों का प्रमाण उद्धृत नहीं करेंगे।

प्रथमतः पूर्वपक्ष में स्थापित विचारों को थोड़ा स्पष्ट करना आवश्यक है। बाद में उनकी समीक्षा की जाएगी।

प्रो० आर०डी० रानडे का मत है- "पहली बात यह है कि ऋग्वेद में धर्म का विचार केवल बाह्य दृष्टि से किया गया है। क्योंकि उस काल तक धर्मभावना विकसित नहीं हुई थी"।

इसी को स्पष्ट और विशद करते हुए भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के जन्मदाता कामरेड श्रीपाद अमृत डाँगे लिखते हैं- "वैदिक आर्यों का "ब्रह्म" उपनिषद के तत्वज्ञों के ब्रह्म से सर्वथा भिन्न है। वेदों का जंगली मनुष्य अपनी प्राथमिक अवस्था में समाज के क्रिया-प्रतिक्रियात्मक द्वन्द, वर्ग संघर्ष एवं शोषणादि से अभी परिचित ही नहीं हुआ था और इस कारण बाद के उपनिषद् काल के कल्पनावादी तत्वज्ञान को उत्पन्न कर सकने का सामर्थ्य उसमें नहीं था।" (India from primitive communism to slavery) श्रीमान् डाँगे जी का यह कथन कि कल्पनावादी तत्वज्ञान उत्पन्न करने योग्य ऋग्वेदीय समाज की प्रगति नहीं हुई थी, इसलिए "ब्रह्म" शब्द का भिन्न अर्थ करना चाहिए पूर्णतः कपोल कल्पित है। क्योंकि उनके अनुसार ब्रह्म का अर्थ प्रत्यक्ष भौतिक सत्य होने से "सामुदामिक संघ" है। तब ऋग्वेदीय मन्त्रों में "ब्रह्म" शब्द को "सामुदायिक संघ" परक होना चाहिए। श्री डाँगे किसी भी वेदमन्त्र में पठित "ब्रह्म" शब्द का सामुदामिक संघ अर्थ करके उस मन्त्र का अर्थ और संगति लगाएँ? निश्चय ही वे ऐसा नहीं कर सकेंगे। जैसे-"त्वं ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणस्पते" (ऋग्वेद०-2/1/3) में "ब्रह्मा" और ब्रह्मणस्पतिः" परमेश्वर का वाचक है। "प्रनूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम्। यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा देवा ओकांसि चक्रिरे।। (ऋ०1/40/5)। वेद या ज्ञान का स्वामी परमात्मा वेदमन्त्रों का उपदेश करता है जिनमें इन्द्र, वरुण, मित्र और अर्यमा आदि देवताओं ने घर किया हुआ है। इससे ज्ञात होता है कि देवता वे हैं जो मन्त्रों के अर्थ अथवा प्रतिपाद्य विषय (सबजेक्ट मेटर) हैं। आधिभौतिक और आधिदैविक प्रक्रिया में इन्द्र, मित्र, वरुण और अर्यमा आदि पृथिवीस्थ और अन्तरिक्षस्थ भिन्न-भिन्न दिव्य पदार्थ या शक्तियाँ हैं। इस वेदमन्त्र में "ब्रह्मणस्पति" का अर्थ ज्ञान का स्वामी परमात्मा है। "यावद् ब्रह्म विष्ठितं तावती वाक्" (ऋ०-10/115(8) अर्थात्- जितना ब्रह्म और आकाश स्थित है उतनी ही वाणी है। ऋग्वेद 9/97/34 में मन्त्र है- "तिस्रो वाच ईरयति प्रवह्निर् ऋतस्य धीतिर्ब्रह्मणो मनीषाम्।। अर्थात् सबका धर्ता ऋग्, यजुः और साम रूपी तीन वाणियों की प्रेरणा देता है। "ऊह ब्रह्माणो वि चरन्त्युत्वे" (ऋ० 10/71/8) में "ऊहब्रह्म" अर्थात् ऊहज्ञान का दिया है जो महान् आत्मा (परमात्मा) के भूतवाची भौतिक पदार्थवाची, नामों का संग्रह है। अर्थात परमात्मा के भी वे नाम हैं जो भौतिक पदार्थों के नाम हैं। इस संग्रह में "ब्रह्म" भी है। ऋग्वेद से लेकर यास्कीय निरुक्त तक के ग्रन्थों की परम्परा के कारण ही परमात्मा अर्थ वाला "ब्रह्म" शब्द वेदान्त आदि शास्त्रों में गृहीत हुआ है। सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, धारण और प्रलय का निमित्त कारण (जन्माद्यस्य यतः) तथा शास्त्रों का (आदिज्ञान) कारण भूत ब्रह्म की जिज्ञासा ही वेदान्त के प्रथमसूत्र "अथातो ब्रह्मजिज्ञासा" के रूप में की गई है। जिसके सम्बन्ध में आदि शंकराचार्य लिखते हैं- "महत ऋग्वेदादेः शास्त्रस्यानेक विद्यास्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थद्योतिनः-सर्वज्ञकल्पस्य योनिः कारणं ब्रह्म।"
अर्थात्- अनेक विद्याओं के आकर, प्रदीप के समान सब अर्थों के प्रकाशक, सर्वज्ञतायुक्त, ऋग्वेद आदि शास्त्रों का कारण "ब्रह्म" है। ब्रह्म के इस पारमार्थिक अर्थ से भिन्न सर्वथा नूतन और कल्पित "सामुदायिक-संघ" और "उसका घटक" अर्थ करना सर्वथा हास्यास्पद है।

जहाँ तक- प्रारम्भिककाल के ऋग्वेदीय लोगों में तत्वज्ञान उत्पन्न न होने की बात है वह प्रत्यक्ष रूप में उपलब्ध वेदमन्त्रों के प्रमाणों के विरुद्ध होने से अविचारितरमणीय है। ऋग्वेद के "अस्य वामस्य" एवं "नासदीय" (क्रमशः ऋ01/164 तथा 10/129) सूक्तों का ही यदि विचार किया जाए तो श्रीमान् डाँगे की कल्पना ढह जाती है। मुर्दे को चिता पर रखने के पश्चात "गच्छ धर्मणा" (ऋ० 10,16,1) कहने वाला ऋग्वेदीय ऋषि भारतीय वैदिक संस्कृति के मौलिक सिद्धान्त-कर्मफलानुरूप जीव का पुनर्जन्म, परलोक गति और जीवात्मा के इन्द्रियातीत अभौतिक स्वरूप और अस्तित्व की सत्यता का ही प्रतिपादन कर रहा है। यही मौलिक सिद्धान्त परवर्ती वेदोत्तर ग्रन्थों में भी अनूदित हुआ है। "नासदासीन्नो-सदासीत्तदानीं" इन शब्दों में ऋग्वेद ने जिस परमतत्व का वर्णन किया है उसी का अनुवाद "सदेव सौम्येदमग्र आसीत। असदेव सौम्येदमग्र आसीत।" में छान्दोग्योपनिषद ने तथा "असतन्नासदुच्यते" में भगवदगीताकार ने किया है। इस परम तत्व की गूढ़ता एवं अज्ञेयता व्यक्त करते समय ऋग्वेद का ऋषि जो कुछ कहता है वही उपनिषद् भी कहते हैं। ऋग्वेद का कथन है- "को अद्धा वेद क इह प्रवोचत कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः। अर्वाग्देवा अस्य विसर्जनेनाऽथा को वेद यत आबभूव। ।।6।। इयं विसृष्टिर्यत आबभूव यदि वा दधे यदि वा न। यो अस्याध्यक्षः परमे व्योमन्त्सो अंग वेद, यदि वा न वेद"।।7।। (ऋ० 10/129)
अर्थात्- यह विविध सृष्टि कहाँ से उत्पन्न हुई तथा किस प्रकार हुई, यह परमार्थतः कौन जानता है? कौन यहाँ इन बातों

—शेष पृष्ठ ७ पर

"आस्तिकता व नास्तिकता का संगम व समाधान" "आर्य समाज"

चौ० ऋषि पाल सिंह एडवोकेट,
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब

1- आर्यसमाज जिस तार्किक, सृष्टिक्रम के अनुकूल, वैज्ञानिक व सार्वभौम ढंग से आदि ग्रन्थ "वेद" की व्याख्या करता है, और एक सही व निश्चित रूप से आस्तिकवाद का प्रचार व प्रसार करता है, उसको देखकर जितने भी अपने आप को आस्तिक कहने वाले मजहब, पंथ, सम्प्रदाय, गुट व धड़े हैं, वह आर्यसमाज पर, उल्टा नास्तिक होने का आरोप लगा कर, अपनी कथित ईश्वरवादिता का दम भरते हैं। जबकि नास्तिकवादी (कम्युनिस्ट इत्यादि) अपने भ्रमपूर्ण पूर्व सोचित ज्ञान के आधार पर, बिना कुछ सोचे समझे, यह जान कर कि आर्यसमाज ईश्वरवादी है, और अन्य, मजहबों की भान्ति आस्तिक है, अतः उन की भाँति, आर्यसमाज भी उन्हें अमान्य है।

2- निष्कर्ष यह कि आर्यसमाज को, आस्तिकवादी तो नास्तिक कहते हैं, और नास्तिक वादी, आस्तिक कहते हैं। इस धार्मिक संस्था रूपी आन्दोलन को, ईश्वरवादी तो अनीश्वरवादी कहते हैं और अनीश्वर वादी, ईश्वरवादी।

3- वैसे बात कुछ सही-सी लगती है, परन्तु आर्यसमाज केवल अध्यात्मवाद का या केवल भौतिकवाद का मानने वाला नहीं है, बल्कि दोनों को एक साथ, गाड़ी के दो पहियों के समान मानकर, मानवमात्र की व संसार की, शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना अपना मुख्य उद्देश्य रखता है। यह "अर्थ" को उन्नति का एक साधन मानता है, साध्य नहीं। श्रद्धा, भावना, और विश्वास को सत्य पर आधारित कर, अन्धविश्वास (जिससे कि सभी मजहब किसी न किसी रूप से ग्रस्त हैं) का नाश करता है।

4- प्रायः देखने में आता है कि जब कभी भिन्न भिन्न विचारों वाले व्यक्ति आपस में बैठकर वार्तालाप करते हैं, अथवा लेख प्रकाशित करते हैं, तो अपने अपने पूर्वाग्रह विचारों के आधार पर, एक दूसरे पर तर्क-कुतर्क करके, प्रभावी होने का प्रयास करते हैं। नास्तिक लोगों का प्रहार मजहबों (कथित आस्तिक-वादियों) पर जब तर्क संगत रूप में उन के अन्ध विश्वासों व अवैज्ञानिक मान्यताओं पर होता है, तो उनका उत्तर, यह मजहबों वाले संतोष जनक ढंग से नहीं दे पाते। वास्तव में दे भी नहीं सकते। वाक् जाल फैलाने का प्रयास भी करते हैं, जिससे साधारण व्यक्तियों पर यह धारणा सी छा जाती है कि नास्तिक लोग सही कहते हैं और आस्तिक पक्ष दुर्बल है। जबकि आर्यसमाज का तार्किक व वैज्ञानिक उत्तर भी यही कहता है कि "विश्वास" और अन्ध विश्वास में जमीन-आसमान का अन्तर है। वैदिक धर्म में अन्ध श्रद्धा और अन्ध विश्वास को कोई स्थान नहीं। यहाँ तक कि इस संदर्भ में आर्यसमाज, जितनी शक्ति से इन पर प्रहार करता है, नास्तिक भी नहीं कर पाते। परन्तु यह अनास्तिक वर्ग यह समझता है कि आर्यसमाज भी वैसा कुछ ही मानता होगा, जैसे अन्य धर्म, मत-मतांतर व पंथ-पंथान्तर वाले। उनकी गलत धारणायें दूर करने हेतु, बहुत कुछ समझाने बुझाने पर जब आर्यसमाज उन्हें अपने "वेद-धर्म" के सिद्धान्त, तर्क द्वारा बताता है, तो इतना तो वह नास्तिक वर्ग समझ जाता है कि आर्यसमाज अन्धविश्वासी नहीं है। बेजानदार वस्तुओं के आगे मथ्थे नहीं टेकता फिरता, परन्तु क्योंकि यह "ईश्वर" को मानता है, अतः आर्यसमाज उन्हें अमान्य है। जबकि मजहबी वर्ग (हिन्दु, मुस्लिम, इसाई, सिख आदि) यह कह कर कि आर्यसमाज यदि चमत्कारों, फलित ज्योतिष (एस्ट्रोलोजी), ईश्वर का अवतार, इत्यादि बातों में विश्वास नहीं करता तो फिर यह धर्म को मानने वाले कैसे कहे जा सकते हैं? ईश्वर वादी (आस्तिक) कैसे कहे जा सकते हैं?

5- इस प्रकार आर्यसमाज के समक्ष दोतरफा अधिकार को दूर करने का दायित्व आ जाता है। एक तो कथित धार्मिक लोगों द्वारा धर्म के अविद्याग्रस्त गलत स्वरूप को, बुद्धि पूर्वक नाश करने का, और दूसरा धर्म के सत्य स्वरूप को उजागर कर, "सत्य धर्म" के प्रतिपादन करने का। इस कार्य में इन मजहबी लोगों का कुतर्क व अविवेकशीलता, कठनाईयां उत्पन्न भी करती रहती हैं, परन्तु वाद-विवाद और शास्त्रार्थ हेतु आर्यसमाज सदैव तत्पर रहता है। सारे विश्व में आर्यसमाज का विश्वव्यापी संगठन "सार्वदेशिक '- आर्य प्रतिनिधि सभा" अनुशासित ढंग से सत्यधर्म (वैदिक धर्म) प्रचार कर "गलत आस्तिकता" व "नास्तिकता" का नाश कर, ईश्वर और धर्म के सही स्वरूप को फैला रहा है। अस्तु।

6- वैसे कई बार तो यह आभास होने लगता है कि नास्तिक लोग तो आस्तिक हैं और आस्तिक लोग नास्तिक। कहावत भी है "NEARER THE CHURCH. THE FARTHER FROM GOD" अर्थात् कोई व्यक्ति जितना धर्मस्थान के समीप है, उतना ही ईश्वर से दूर है। "चिराग़ तले अंधेरा"। वास्तव में यह चिराग़ तो चिराग़ है ही नहीं, वरन् ऐसा लगता है, जैसे स्वार्थ सिद्धि हेतु यह बुराई व कई बार तो यह बदकारी के अड्डे बने लगते हैं। दुराचारी अपना शरणस्थल समझते हैं। समझें भी क्यों नहीं। विचार इनका सर्वशक्तिमान भगवान, किसी न किसी रूप में इस धर्मस्थल में बन्द करके रखा हुआ है? एक चीनी कहावत है "IT IS NOT THE MOUCE WHICH IS THE THIEF. IT IS THE "HOLE", THAT IS THE THIEF". अर्थात् चूहा चोर नहीं है, चोर तो चूहे का "बिल" है।

नास्तिकों द्वारा यह कह देने से केवल कि वह धर्म या ईश्वर को नहीं मानते, कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता क्योंकि वह कम से कम वैज्ञानिक ढंग से सोचते और करते तो हैं, जबकि आस्तिक कहलाने वालों का मानना कुछ सही भी हो, तो भी उन की "कथनी और करनी" नास्तिकों से भी अधिक निम्न स्तर की कईबार होती है। यह जानते हुए भी कि ईश्वर सर्वव्यापक है, सबको हर समय देखता है, और सबके अच्छे-बुरे कर्मों का फल देता है, फिर भी उन में से बहुतों का जीवन अतिभ्रष्ट होता है। जो ईश्वर को नहीं मानते, उनको तो चोरी-चारी-मक्कारी करने का डर ही कैसा?

फिर भी "भला कर भला होगा, बुरा कर बुरा होगा"।
परन्तु यह "बुरा और भला" बताने की कसौटी क्या है? अन्यथा कोई भी आस्तिक हो या नास्तिक, अपनी अपनी स्वार्थ इच्छा से भले को बुरा व बुरे को भला साबित करेगा।

7- यदि कोई ईश्वर को माने या न माने ईश्वर को कोई अन्तर नही पड़ता। ईश्वर को जो नहीं मानता, उस की कोई टाँग नहीं टूट जाती, ना ही उसके घर, हवा, पानी, सूर्य व चन्द्रमा के प्रकाश आने बन्द हो जाते हैं और जो कहे कि वह ईश्वर को मानता है उसके घर कोई विशेष कार्य ईश्वर नहीं कर देता। ईश्वर का सृष्टिक्रम निरन्तर चलता रहा है, चल रहा है, और चलता रहेगा। कोई भी व्यक्ति, वैज्ञानिक, संत, महन्त, गुरु, आचार्य, पीर, पैगम्बर (जीवित या मृत), कबर, मजार, समाधि, पुस्तक, स्थान (जल-थल-नभ), बौली, सरोवर अथवा नदी नाले इत्यादि, या किसी प्रकार के चिन्ह, ईश्वर के कार्यों में न बाधा डाल सके हैं और ना ही डाल सकते हैं, न कभी डाल सकेंगे। यदि कोई ऐसी वैसी बातें मानते अथवा प्रचारित करते हैं कि कोई करनी वाला है, चमत्कारी है, जानी जान है, पहुँचा हुआ है, या किसी को पवन आती है इत्यादि, तो प्रत्येक समझदार स्त्री-पुरुष व व्यक्ति को सावधान हो जाना चाहिये कि अब उन की जेब पर वहम और भ्रम डाल कर डाका डाला जाने वाला है। क्योंकि यह सब बातें झूठी होती हैं। और वास्तव में यही घोर नास्तिकता है। ऐसे कथित धार्मिक लोग, दुःख और दुःख के सिवा कुछ और नहीं देते।

-----क्रमशः

उत्सव

आर्यसमाज दिउलहा जिला फतेहपुर का चतुर्थ वार्षिकोत्सव दि0 9 से 11 अक्टूबर 89 तक मनाया जा रहा है। जिसमें सन्यासियों, विद्वानों को आमन्त्रित किया गया है, जनता को चाहिए अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावे।

यज्ञ का प्रसाद

ले० वैद्य कुन्दल लाल आर्य
५४७/१८२ अर्जुन नगर, आलमबाग, लखनऊ

यज्ञ का सार है सुगन्धि- और प्रसाद का अर्थ है प्रसन्नता। सुगन्धि से प्रसन्नता प्राप्त होती है और दुर्गन्धि से वह दूर भागती है। हमारे शरीर में भी मल, मूत्र, पसीना, थूक आदि अनेक पदार्थ दुर्गन्धि उत्पन्न करते रहते हैं। इन पदार्थों को शरीर से दूर करना आवश्यक है। अन्यथा शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता- प्रसन्न रहने के लिये शरीर का स्वस्थ होना आवश्यक है। स्वस्थ वही कहा जाता है जिस का शरीर मलों से मुक्त हो, दोष-धातु अग्नि सम हो, आत्मा, मन, इन्द्रियाँ स्वस्थ हों। महर्षि चरक के अनुसार- "समदोषाः समग्निश्च समाधातु मल क्रियः। प्रसन्नात्मेन्द्रिय मनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते।।" शरीर की तरह मन में भी काम क्रोध लोभ मोहादि मल है यह आत्मा को प्रभावित करके अशान्ति-दुःख §दुर्गन्धि§ उत्पन्न करते हैं। फलतः जीवन से प्रसन्नता दूर भाग जाती है। चरक के शब्दों में "धर्म अर्थ काम मोक्षाणाम् आरोग्यं मूल मुत्तमम्" धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष की प्राप्ति के लिये आरोग्य प्राप्त करना आवश्यक है। अर्थात् श्रेयप्राप्ति के लिये स्वस्थ §मलों से रहित§ होना आवश्यक है- तभी दुर्गन्धि §दुःख§ दूर हो कर सुगन्धि§सुख§ प्राप्त हो सकेगा।।

शरीर आत्मा और मन में सुगन्धि §सुख§ लाने हेतु तथा दुर्गन्धि §दुःख§ दूर करने हेतु जो यत्न किया जाता है, उसे कर्म कहते हैं। कर्म की स्वतन्त्रता मानव जीवन की विशेषता है। श्रेष्ठतम कर्म ही यज्ञ है। शतपथ के अनुसार "यज्ञो वै श्रेष्ठतम कर्म"। मनुष्य यज्ञ-श्रेष्ठतम कर्म करके अपने बन्धन काट कर देवता बन सके- एतदर्थ प्यारे प्रभु ने मनुष्य को पवित्र वेद का अमृत ज्ञान दिया।" आयुर्यज्ञेन कल्पतां-प्राणो यज्ञेन कल्पतां-- यज्ञो यज्ञेन कल्पताम्।। यजुर्वेद ९,।7।। यह ही अन्तिम भाग वैदिक संस्कृति का उच्चतम आदर्श है इसी आदर्श को प्राप्त कराने हेतु दयालु परमात्मा ने ऋग्वेद में उपदेश किया है "प्रा चं यज्ञं प्रणयता सरवायः"। अर्थात् हे मनुष्य तू प्रत्येक शुभ कर्म यज्ञ के साथ आरम्भ करना।

यज्ञ का प्राण या अभिन्न भाग है "इदन्न मम"। वस्तुतः यही भाव यज्ञ का सार है। इसका सीधा सा अर्थ है- "यह मेरा नहीं है" अर्थात् अहंकार और स्वार्थ का त्याग। जहाँ यज्ञ किया जाता है परन्तु स्वार्थ त्याग नहीं किया जाता वहां यज्ञ अपूर्ण रहता है और ऐसे यज्ञ का कर्ता असफल हो जाता है। यज्ञ-हवन §अग्नि होत्र§ में भौतिक रूप से पोषक एवं मधुर द्रव्यों की आहुति दी जाती है फलतः उससे भौतिक सुगन्धि निकलती है। यदि मानसिक रूप से भी यज्ञकर्ता स्वार्थत्याग और अहंकार त्याग कर दें- तो उसे सच्चे सुख सन्तोष एवं शान्ति के रूप में यज्ञ का प्रसाद प्राप्त होता है। यह प्रसाद ही मनुष्य के आचार-विचार-व्यवहार को ऊँचा उठाता है। किन्तु वह अकेले-अकेले ही नहीं भोगा जाता। "केवलाघो भवति केवलादि" के अनुसार अकेले खाना या अकेले सुख भोगना पाप है। सबके लिये जीना यज्ञ है। भगवान-**राम, कृष्ण दयानन्द** आदि महापुरुषों के प्रति आकर्षण का कारण यही है कि इनका जीवन यज्ञ के प्रसाद से भरा पड़ा है।

यज्ञ का प्रसाद अर्थात् चरित्र की सुगन्धि केवल पुस्तकीय ज्ञान अथवा लम्बे व्याख्यानों से प्राप्त नहीं होती है। यह तो आचरण कर के अनुभव होती है। सदाचरण, सरलता, सेवा एवं उपासना से युक्त जीवन ही यज्ञ के प्रसाद का अधिकारी है। इस में पूजा और उपासना दोनों ही होती है। पूजा से सुख मिलता है और उपासना से शान्ति। पूजा जड़ और चेतन दोनों की होती है। जड़ की पूजा से तात्पर्य है भौतिक पदार्थों का सदुपयोग और अग्नि में होम करना।

चेतन की पूजा से तात्पर्य है- माता-पिता-आचार्य-अतिथि एवं अन्य श्रेष्ठ पुरुषों की ससम्मान सेवा करना तथा आश्रित प्राणियों का भी पालन पोषण करना। ऐसा करोगे तो सुख मिलेगा- नहीं करोगे तो नहीं मिलेगा। उपासना केवल परमपिता प्रभु की ही की जाती है। "स नो बन्धुर्जनिता स विधाता--" §यजुर्वेद32-10§ वह परमात्मा जो सबका माता-पिता एवं सृष्टि विधान का कर्ता है, वही उपासना के योग्य है। उस प्यारे प्रभु की उपासना भाव से ही होती है और भाव कर्म से प्रकट होते हैं। ऐसे ही कर्म यज्ञ कहलाते हैं। ऐसे ही कर्मों का परिणाम शान्ति है।

पूजा एवं उपासना कर के ही सुख समृद्धि शान्ति और आनन्द की प्राप्ति सम्भव है। ये कर्म होंगे तो फल मिलेगा- नहीं होगें तो नहीं मिलेगा।

उपर्युक्त उच्चस्थिति को प्राप्त करने के लिये महर्षि मनु ने सुन्दर व्यवस्था दी है-सतानि पंच महा यज्ञानि यथा शक्तितः न हाययेत-" अर्थात्-हे कल्याण के इच्छुक मनुष्य तू सामर्थ्य रहने तक इन पाँच महायज्ञों को मत छोड़ना। यज्ञ की मौलिकता का बोध कराने वाले यह पांच महायज्ञ हैं- §1§ ब्रह्मयज्ञ अर्थात् ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना एवं वेद स्वाध्याय करना §2§ देव यज्ञ अर्थात् अग्नि में प्रतिदिन होम करना और विद्वानों का सत्कार करना §3§ पितृयज्ञ अर्थात् माता-पिता तथा अन्य बड़े बूढ़ों की ससम्मान सेवा करना। §4§ अतिथि यज्ञ अर्थात् अतिथि सत्कार §5§ बलि वैश्व देव यज्ञ अर्थात् पशु पक्षियों, आश्रित प्राणियों एवं असहाय-अक्षम मनुष्यों का पालन पोषण करना। इह लोक एवं परलोक को सुखमय बनाने के लिये अर्थात् जीवन को सुख-समृद्धि-शान्ति-आनन्द पूर्वक भोगने के लिये ये महा यज्ञ परमावश्यक हैं। इनको करने पर मन-वचन-कर्म में मिठास मधुरता आ जावेगी। अपने पराये का भेद मिट जावेगा। जीवन यज्ञ मय हो कर, प्रति क्षण आनन्द मय हो जायेगा। यही यज्ञ का वास्तविक प्रसाद होगा।

पृष्ठ ४ का शेष....

के समय पर भी वह उपस्थित थे और इनके कृतज्ञता प्रकाशन तथा धन्यवाद देने पर बोले "इसमें धन्यवाद की तो कोई बात ही नहीं, आप हमारे मेहमान हैं, आपकी सेवा हमारा कर्तव्य है।

मास्टर जी ने अतीव टीस भरे स्वर में मुझसे कहा कि मेरे लिये तो वह ईसाई देवता हैं और यह नीच आर्यसमाजी राक्षस हैं। मैं ऐसे ईसाईबन्धु पर लाखों आर्य समाजी वार दूँ। यह आर्यत्व और आर्यसमाजी होने का दम्भ करते हैं, ऋषि दयानन्द की जय के नाद लगाते हैं और दूसरी ओर वह ईसाई हैं, जो देवता बनकर हमें मिला। इसका परिणाम यह है कि मास्टर जी ने आर्यसमाज को चन्दा देना बन्द कर दिया। मास्टर जी यदि विचारों से ठेठ आर्यसमाजी न होते तो उपर्युक्त परिस्थितियों में निश्चित रूप से ईसाई हो जाते।

इधर तो यह दशा है और उधर गिरजाघरों, गुरुद्वारों, मस्जिदों में ठहरने की सुविधा के साथ-साथ भोजन भी मिलता है। सोचने का विषय है कि क्या केवल भाषणों, और जयघोषों के द्वारा "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नाद सफल होगा? उच्च सिद्धान्त केवल वार्तालाप और डींग मारने के लिये नहीं व्यवहार के लिये होते हैं। उच्च सिद्धान्तों वाला वह है, जिसके व्यवहार में श्रेष्ठता है। जो व्यवहारिक दृष्टि से हीन तथा असभ्य है वह अत्यन्त निकृष्ट कोटि का व्यक्ति है, उसे सिद्धान्तवाद की बात करने का लेश भी अधिकार नहीं। -क्रमशः

पृष्ठ ५ का शेष

पर प्रवचन कर सकता है? देव इस विसृष्टि से अर्वाचीन है इस कारण यह मूल विसृष्टि ही कहाँ से निर्मित हुई यह कौन जान सकता है। §विसृष्टि अर्थात् विविध सृष्टि§ यह विसृष्टि कहाँ से निर्मित हुई व इसे कोई धारण करता है या नहीं, यह बात इसके स्वप्रकाश व परमव्योम का जो अध्यक्ष है वही अकेला जानता होगा। यदि वह नहीं जानता तो फिर कोई भी नहीं जान सकता।

----क्रमशः

गाजीपुर में प्रचार योजना

गाजीपुर जनपद में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर मेले में प्रचार का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रचार कार्य के लिए एक समिति का गठन किया गया है। जिसका नाम "वेद प्रचार समिति मेला चोचकपुर गाजीपुर" है। जनता से सहयोग की प्रार्थना है।

आखिरी स्तम्भ भी गिर गया

• डा. विक्रम सिंह
एम.ए.
ज -1/1 खिड़की एक्सटेन्शन
मालवीय नगर नईदिल्ली

मैं जब कालिज में पढ़ता था तो विद्यार्थी जीवन के साथ-साथ आर्यसमाज के उत्सवों में भी बढ़-चढ़ कर भाग लेता था। आर्यसमाज की वेदी पर बड़े-बड़े सन्यासी, जिन्हें देखकर ही चित प्रसन्न हो जाता था। महामहोपदेशक अनेक शास्त्रार्थ महारथियों से वेदी भरी रहती थी।

मुझे इन सब में चार शास्त्री बहुत अच्छे लगते थे- चतुर-चौकड़ी में सर्वप्रथम वाचस्पति शास्त्री, शिवकुमार शास्त्री, प्रकाशवीर शास्त्री, रघुवीर सिंह शास्त्री थे। इनमें से सबसे पहले वाचस्पति शास्त्री स्वर्गवासी हुए, उनकी कमी बहुत दिनों तक खलती रही, तो तभी प्रकाशवीर-शास्त्री रेल दुर्घटना में मारे गये जिससे सारा देश ही उस ओजस्वी वाणी से वंचित रह गया- अभी हम उस गम को भुला भी न पाये थे कि रघुवीर-सिंह शास्त्री विद्वद् शिरोमणि चल बसे।

ये चारों शास्त्री करीब 6 फुट ऊँचे सुन्दर-स्वस्थ विद्वान ओजस्वीवक्ता थे जिस वेदी पर बैठते थे मानो यज्ञवेदी के चार स्तम्भ हों इन शास्त्रियों को भुलाया न जा सकेगा- जब तीनों शास्त्री चले गए तो आ.स. की आंखें केवल एक ही शास्त्री पर जा टिकीं और वह थे शिवकुमार-शास्त्री- अब किसी सभा अथवा बड़ी आर्यसमाज का सारे देश में कहीं कोई समारोह हो तो बस शिवकुमार शास्त्री ही दिखाई देते थे। 3 सितम्बर रविवार प्रातः नित्यप्रति की तरह शास्त्री जी उठे नित्य कर्म से निवृत होकर हजामत बनाये और स्नान के साथ वस्त्र प्रक्षालन करने लगे तभी अचानक छाती में दर्द उठा अन्दर कमरे में आ बैठे और बैठे क्या लेट गये और लेटे क्या सदा के लिये सो गये परिवार वालों को किसी को भी कुछ न कहा न पता लगा न किसी को दुःख दिया आर्यसमाज का यह वीर सेनानी 74 वर्ष की अवस्था में हम से विदा ले गया।

शास्त्री जी ने अनेकों ग्रन्थ लिखे जिनमें **श्रुति सौरभः** वेद कथा का उत्तम ग्रन्थ है। 10 वर्षो तक आप लोकसभा के सदस्य रहे और अपनी वेदवाणी से संसद को पवित्र करते रहे, संसद से बाहर रहकर भी अपना तन,मन, धन आर्यसमाज के लिये ही समर्पित कर दिया। शास्त्री जी अपने पीछे पत्नी तीन बेटे और चार बेटियों सहित भरा-पूरा परिवार छोड़कर सब जिम्मेदारियों को पूर्ण कर हमसे विदा ले गये।

परमात्मा आर्यसमाज की वेदी पर ऐसे और तपोपून भेजे यही प्रार्थना है।

हिन्दी के विकास के लिए याद किए जाएंगे पंत

नई दिल्ली, 10 सितम्बर उपराष्ट्रपति शंकर दयाल शर्मा ने कहा कि हिमालय पुत्र पंडित गोविन्द-बल्लभ पंत को देश में राज्यों के पुनर्गठन और राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास के लिए उनके योगदान के कारण विशेषरूप से याद किया जायेगा।

डा0 शर्मा ने यहां स्व0 पन्त की 102वीं जयन्ती के अवसर पर आयोजित समारोह में कहा कि देश में राज्यों के पुनर्गठन का काम केन्द्र में उनके गृहमंत्री काल में हुआ और इसमें उन्होंने अपने फौलादी इरादे का परिचय देकर देश की एकता पर आंच नहीं आने दी। उन्होंने कहा कि स्व0 पंत के जीवन का मुख्य उद्देश्य देश की एकता के लिए विभिन्न शक्तियों को एक जगह एकत्र करना था और इसमें उनकी दृढ़ता और आत्मबल के कारण उन्हें सफलता भी मिली।

डा0 शर्मा ने कहा कि स्व0पंत की प्रशासनिक क्षमता अद्भुत थी और लोग इस क्षेत्र में उनकी योग्यता के कायल भी थे। राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्रीय हित के प्रश्न पर उन्होंने कभी किसी प्रकार का समझौता नहीं किया।

उन्होंने कहा कि स्व0 पंत को एक कुशल और योग्य सांसद के रूप में भी याद किया जायेगा क्योंकि संसद में दिये गये उनके भाषण उनकी योग्यता तथा उस भाषण के पीछे की गयी मेहनत को दिखाते हैं।

उन्होंने कहा कि स्व0 पंत लोकतांत्रिक व्यवस्था के कट्टर हिमायती थे और उन्होंने संसद की गरिमा को बराबर ध्यान रखा। उन्होंने कहा कि स्व0पन्त पंडित नेहरु की समाजवादी व्यवस्था के प्रति प्रतिबद्ध थे और इसी प्रतिबद्धता के फलस्वरुप उन्होने जमींदारी व्यवस्था के विरुद्ध अभियान छेड़ा।

काजीपुरा में क्षेत्रीय बैठक सम्पन्न

आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के तत्वावधान में दि0 10 सितम्बर 89 को मध्यान्ह एक बजे सरस्वती बाल विद्या मन्दिर काजीपुरा (मुरादाबाद) में क्षेत्रीय बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें श्री विक्रमसिंह प्रधान-जिलासभा द्वारा समस्त सदस्यों से वैदिक धर्म प्रचार संगठन एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के निश्चय मद्यनिषेध, गोरक्षा, अंग्रेजी हटाओ, संस्कृत बचाओ के क्रियात्मक स्वरुप पर विचार किया गया।

पं. शिवकुमार शास्त्री को श्रद्धांजलि

दि0 5 सितम्बर 1989 को प्रातः 10 बजे पाणिनि कन्या महाविद्यालय वाराणसी में एक शोक सभा आयोजित हुई जिसमें आर्यसमाज के धुरन्धर वैदिक विद्वान् भू0पू0 सांसद स्व0 पं0 शिवकुमार-जी शास्त्री दिल्ली के अचानक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया गया।

सभी कुलवासिनी बहिनों के मध्य उपाचार्या पण्डिता मेधा देवी जी ने श्रद्धेय शास्त्री जी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए मार्मिक शब्दों में कहा- "कि शास्त्रीजी का जीवन देदीप्यमान नक्षत्र के समान था। वे एक चलते फिरते ज्ञानकोश थे। उनके जाने से गुरुकुलीय प्राचीन परम्परा की एक कड़ी टूट गई है। हमने शास्त्री जी के रूप में ऐसे संस्कृत के महाविद्वान् सरलचित्र समाजसुधारक व्यक्तित्व को खो दिया है कि जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में तो सम्भव ही नहीं"।

विद्यालय की आचार्या पू0 डॉ0-प्रज्ञा देवी जी ने अवरुद्ध कण्ठ से शास्त्रीजी के उदात्त गुणों की चर्चा करते हुए कहा-"कि उनमें अद्भुत वक्तृत्वकला थी जिसमें अनुभूति के साथ बड़ी सम्मोहकता होती थी। वे एक प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने संसद भवन में भी एक शास्त्रीय पाण्डित्य वाली भूमिका निभायी थी। वस्तुतः वे एक छलछद्म से रहित वास्तविक वेदवेत्ता थे। शास्त्री जी की लेखनी को अनुभूति प्रवणता, संवेदना एवं वैदुष्य की त्रिवेणी कहा जा सकता है ऐसी विलक्षणमूर्ति अब हमें खोजने को भी न मिलेगी। उनके निधन से जो अभाव आर्य जगत में आया है उसका वर्णन यह वाणी नहीं कर पायेगी।

इस अवसर पर विद्यालय की स्नातिका सुश्री नन्दिता जी एवं सुश्री-प्रियम्वदा जी आदि ने भी अपनी भावपूरित श्रद्धांजलि स्व0 शास्त्री जी को अर्पित की।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के अन्तर्गत कार्यरत उपदेशकों, प्रचारकों, ढोलक वादकों के माह-सितम्बर १६८६ के प्रचार कार्यक्रम

1- श्रीयुत पं0 केशव देव शास्त्री
8 से 30 लालगंज (रायबरेली)
2- श्री पं0 शिव कुमार शास्त्री
अवैतनिक अवकाश
3- श्री विशम्भर दत्त जी विद्या वाचस्पति
18 से 30 नैनीताल जनपद।
4- डा0 विजयपाल सिंह जी
आगरा, बुलन्दशहर, अलीगढ़ जनपदों में कार्यरत।
5- श्री सुकर्मानन्द जी महाराज
10 से 20 तक जनपद शाहजहाँपुर।
6- श्री जयन्त कुमार जी आर्य
श्री प्रधान जी के निर्देशन में।
7- श्री योगेश दत्त जी आर्य
15-16-17 भगवानपुर बिजनौर दि0 23 से 26 आ0स0 मंसूरी देहरादून 30 बिजनौर।
8- श्रीगजराज सिंह जी राघव
23 से 26 मंसूरी (देहरादून)
9- श्री कमल देव जी आर्य
मथुरा, एटा, जनपद।
10- श्री ब्रह्मानन्द जी आर्य
24,25,26 मंसूरी जनपद देहरादून।
11- श्री राम चन्द्र जी शर्मा,
15 से 30 तक किरतपुर सुआहेड़ी, नगीना, नजीबाबाद, धामपुर, नहटौर जनपद बिजनौर।
12- श्री सीताराम जी आर्य
4 से 20 तक जनपद शाजहांपुर।
13- श्रीयुत सीताराम जी शर्मा
4 से 20 तक जनपद शाहजहाँपुर।
14- श्रीयुत नेम प्रकाश जी आर्य
27 से 29 दतिया म0प्र0
15- श्रीयुत युगल किशोर जी आर्य
8 से 30 तक लालगंज (रायबरेली)
16- श्रीयुत तेजपाल सिंह जी आर्य
श्री प्रधान जी के निर्देशन में। (श्रीमती आशा आर्या) सहित।
17- श्री विक्रम देव जी आर्य
13, 14, 15 रामनगर जनपद नैनीताल, 18 से 28 तक जनपद नैनीताल की आर्यसमाजों में
18- श्रीयुत ब्रजपाल जी शर्मा
6 से 30 बिजनौर जनपद।
19- श्रीयुत मनवीर सिंह जी आर्य
श्रीयुत प्रधान जी के निर्देशन में (बिजनौर)
20- श्रीयुत धर्म प्रकाश जी प्रेमी
24,25,26 मंसूरी देहरादून।
21- श्री ओम लाल जी ढोलकवादक
8 से 30 लालगंज रायबरेली
22- श्री अमर लाल जी आर्य
18 से 22 नैनीताल जनपद (23 से 26 मंसूरी) देहरादून।
23- श्रीयुत सुभाषचन्द्र जी आर्य
24,25,26 मंसूरी, जनपद-देहरादून।

आवश्यक निर्देश

1- आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 की अन्तरंग सभा दिनांक- 27.8.89 के निश्चय अनुसार मद्य निषेध आन्दोलन, गौरक्षा आन्दोलन, अंग्रेजी हटाओ-संस्कृत बचाओ, कार्यक्रम सर्वसम्मति से स्वीकार किये गये हैं। आप इन कार्यक्रमों का प्रचार प्रसार करना अपने कार्यक्रमों के अन्तर्गत सुनिश्चित करें।

2- साप्ताहिक प्रगति के पत्र प्रचार कार्यालय द्वारा सभी उपदेशकों प्रचारकों को इस आशा के साथ भेजे गये हैं कि प्रति सप्ताह अपनी प्रगति कार्यक्रम को उसमें अंकित कर प्रचार कार्यालय अमरोहा के पते पर अवश्य भेज दिया करें।

3- अपने मासिक बिल डायरी प्रतिमास के अन्त में विधिवत आपूर्ति के उपरान्त सभा कार्यालय लखनऊ के पते पर अवश्य भेज दिया करें। निश्चित भुगतान के लिये यह प्रक्रिया अनिवार्य है।

4- उपदेशक विभाग की बैठकों के अनुसार जो पंच सूत्री कार्यक्रम संगठन, नवीन स्थापना आर्यमित्र के ग्राहक इत्यादि माननीय सभा मंत्री महोदय की उपस्थिति में निश्चित किये गये हैं। आप प्रगति पत्र में इन सन्दर्भों में प्रगति को उद्धृत करते हुए प्रचार कार्यालय अमरोहा को सूचना दिया करें।

5- आपके पास जो भी कार्यक्रम स्वतन्त्ररूप से उपलब्ध हुआ करें आप तुरन्त स्वीकृति के लिये कार्यालय को अवश्य भेज दिया करें। और उसको अपने प्रगतिपत्र में आगामी कार्यक्रम शीर्षक में अंकित कर दिया करें। उसी के साथ सभा कार्यालय से जो कार्यक्रम आपको उपलब्ध हों, आप उनकी प्राप्ति भी अपने प्रगति पत्र में अवश्य अंकित कर दिया करें।

मनमोहन तिवारी
मंत्री

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता, उपदेश विभाग
अमरोहा
(मुरादाबाद)

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ

आर्य नेता पं० शिव कुमार शास्त्री दिवंगत

आर्यजगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान, "पूर्व सांसद" श्री पं0 शिवकुमार शास्त्री व्याकरणाचार्य का 3 सितम्बर को प्रातः स्नान ध्यान से निवृत्त होकर नया बांस आर्यसमाज में प्रवचन देने जाने के लिए तैयार थे तभी अकस्मात तबियत खराब हुई और वे बैठ गये। किसी से कुछ कह भी न सके और हृदय गति रुक जाने से देहावसान हो गया। उनकी आयु 74 वर्ष की थी। उनके परिवार में धर्मपत्नी व पुत्र-पुत्रियों से भरापूरा परिवार है।

पं0 शिवकुमार शास्त्री संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। स्वर्गीय पं0-शिवकुमार शास्त्री ने पं0 प्रकाशवीर जी-शास्त्री तथा श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ पिछले तीन दशक से आर्यसमाज के विभिन्न आन्दोलनों का नेतृत्व किया है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय श्री शास्त्री जी ने गुप्त रूप से सक्रिय भाग लिया था। उन्होंने अविभाजित पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन गौरक्षा आन्दोलनों का भी संचालन किया था।

लोक सभा के सदस्य के रूप में-

श्री शास्त्री जी दो बार अलीगढ़ क्षेत्र से लोक सभा के सदस्य निर्दलीय रूप में रहे। साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान पद को भी सुशोभित किया था।

अविभाजित पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक रहते हुए आप पंजाब सभा में प्रचार विभाग के अधिष्ठाता भी रहे। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के कई वर्ष तक आप मुख्याधिष्ठाता रहकर गुरुकुल का संचालन भी किया।

"उनकी पुस्तक श्रुति सौरभ"

आपकी आर्य जनता को अमूल्य भेंट है। आप स्वभाव से सरल होने से विवादों से सदा दूर ही रहा करते थे।

सार्वदेशिक सभा ने हैदराबाद सत्याग्रह की सरकारी समिति का सदस्य भी मनोनीत किया था। आपके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है।

अन्तिम संस्कार में

पं0 शिवकुमार का शव साकेत निवास से अन्तिम दर्शनार्थ आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली में लाकर रखा गया। वहां से शव यात्रा निगमबोध घाट के लिए ओउम् के झण्डों से सैकड़ों व्यक्तियों के साथ चली निगमबोध घाट पर श्री शास्त्री जी के सैकड़ों स्नेही भक्त पहुँच गये। तत्पश्चात वैदिक विद्वानों ने चिता में रखकर अग्नि को समर्पित किया।

देखते-देखते अग्नि ने श्री शास्त्री जी को अपने में आत्मसात कर पंच तत्वों में विभाजित कर दिया।

अन्त में प्रार्थना सभा में प्रार्थना कर दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्राप्ति हेतु प्रार्थना की गई।

शोक सभा

आर्य समाज दीवानहाल में 10सितम्बर प्रातःकाल दिल्ली की समस्त आर्य समाजों की ओर से एक शोक सभा का आयोजन भी किया गया। जिसमें सभी आर्य जनों ने भाग लेकर दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की।

बिजनौर-गढ़वाल का जनपदीय आर्य महासम्मेलन

आर्योप प्रतिनिधि सभा बिजनौर-गढ़वाल का जनपदीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 1.2 व 3 अक्टूबर 1989 को आर्य समाज बिजनौर के सभागार में आयोजित किया जाएगा जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध सरस्वती, मंत्री पं0 सच्चिदानन्द शास्त्री, प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान पंडित इन्द्रराज मंत्री तथा मंत्री पं0 मनमोहन तिवारी के अतिरिक्त आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान साधु सन्यासी उपदेशक और भजनोपदेशक पधार रहे हैं। सम्मेलन से एक दिन पूर्व दिनांक 30 सितम्बर को 1 बजे एक भव्य शोभायात्रा का भी आयोजन किया गया है। शोभायात्रा में बिजनौर और गढ़वाल जनपदों के आर्य प्रतिनिधियों के अतिरिक्त आर्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की रैली और झांकियाँ गणवेश और बैण्ड बाजों के साथ प्रस्तुत की जाएंगी। इस अवसर पर एक विशाल आर्यवीर दल शिविर का भी आयोजन किया जाएगा।

सुरेन्द्र सिंह राजपूत, मंत्री — जयनारायण "अरुण", प्रधान

आर्योप प्रतिनिधि सभा बिजनौर-गढ़वाल

योग साधना शिविर

परोपकारिणी सभा की ओर से आनसागर के सुरम्य तट पर ऋषि उद्यान में एक साधना शिविर दिनांक- 19 अक्टूबर से 29 अक्टूबर तक आयोजित किया जा रहा है।

शिविर का मार्गदर्शन प्रख्यात साधक स्वामी सत्यपति जी महाराज आचार्य-दर्शन योग विद्यालय गुजरात, करेंगे। इनके सहयोगी के रूप में श्री ज्ञानेश्वर आर्य तथा विवेक भूषण आर्य साधकों की सहायता करेंगे। शिविर में साधकों को पूरे समय शिविर स्थान पर रहना अनिवार्य होगा। प्रवेशार्थी शिविर के नियम शुल्कादि के लिए निम्नलिखित पत्र व्यवहार करें।

व्यवस्थापक-
योग साधना शिविर
परोपकारिणी सभा, केसरगंज,
अजमेर।

प्रदेशीय विद्यार्य सभा उ.प्र.

आर्य विद्यालयों के शिक्षकों के धार्मिक प्रशिक्षण के सम्बन्ध में सूचना "आर्यमित्र" के माध्यम से प्रसारित की गई थी। अभी तक किसी भी विद्यालय ने इस निमित्त अपनी इच्छा प्रकट नहीं की है। दशहरे का अवकाश इस कार्य के लिए उपयुक्त होगा। उस अवसर पर जो विद्यालय अपने यहाँ धर्म प्रशिक्षण चाहते हों वे तत्काल मुझे सूचित करने की कृपा करें जिससे कि प्रशिक्षकों की व्यवस्था की जा सके।

-माधव सिंह
मंत्री

स्थायीपता- प्रदेशीय विद्यार्य सभा, उ0प्र0

अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्य
पट्टी चौधरान
बड़ौत (मेरठ)

आर्य युवक परिषद कोटद्वार
अध्यक्ष - श्री विनय कुमार मिनोचा
मंत्री - श्री अनिल कुमार
कोषा0 - श्री सुरेश कुमार गुप्ता

आर्यसमाज अलीगंज (बरेली)
प्रधान - श्री जगदीश शरण आर्य
मंत्री - श्री रामेश्वर दयाल आर्य
कोषा0 - श्री रामचन्द्र आर्य

आर्यसमाज राजपुर कलाँ (बरेली)
प्रधान - श्री दिनेशपाल सिंह आर्य
मंत्री - श्री सत्यपाल आर्य
कोषा0 - श्री हरिप्रसाद आर्य

आर्यसमाज रम्पुरिया (बरेली)
प्रधान - श्री रामदास आर्य (ऋषी)
मंत्री - श्री वासुदेव आर्य
कोषा0 - श्री सहदेव आर्य

आर्यसमाज पड़ेरा (बरेली)
प्रधान - श्री रामशरण आर्य
मंत्री - श्री राजवीर सिंह आर्य
कोषा0 - श्री महीपाल आर्य

आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी
प्रधान - श्री कमलाकान्त
मंत्री - श्री रामगोपाल आर्य
कोषा0 श्री बुद्धदेव आर्य

क्षेत्रीय आर्य समिति-काजीपुरा (मुरादाबाद)
प्रधान - श्री बाबू सिंह आर्य
मंत्री - श्री भगवानदास आर्य
संयोजक - श्री रामरक्षपाल त्रिवेदी

आर्यसमाज राजबाजार सड्डा (देवरिया)
प्रधान - श्री समुन्दर सिंह
मंत्री - श्री नैमीराम
कोषा0 - श्री नथमल डालमियाँ
आ0वी0दल अधि0 - श्री काशीनाथ डालमियाँ

गो रक्षा सत्याग्रह सप्ताह

श्री अच्युत देश पाण्डे संचालक अखिल भारतीय गोरक्षा सत्याग्रह बम्बई के निर्देशानुसार, श्री सूरेन घोष संचालक गो रक्षा सत्याग्रह अभियान उत्तर प्रदेश के मार्ग निर्देशन पर, डा० गया प्रसादशास्त्री अध्यक्ष गोरक्षा सत्याग्रह समिति कानपुर देहात के तत्वाधान में दि० 17 से 23-8-89 तक सिकन्दरा सलावर हाउस के सामने 55 सत्याग्रहियों द्वारा 24घण्टों का अखण्ड सत्याग्रह पूरे सप्ताह चलाया गया। सत्याग्रहियों की मांग थी कि गाय बैल नहीं कटने देंगे न ही मांस ले जाने देंगे।

समारोह के मुख्य अतिथि अच्युत देश पाण्डे ने सत्याग्रह की आवश्यकता पर पूर्ण रूप से प्रकाश डालते हुए कहा कि भारत कृषि प्रधान देश है, उसमें हिन्दू मुसलमान सभी मिल कर जब तक गाय बैल की रक्षा नहीं करेंगे देश सम्पन्न नहीं हो सकेगा वैदिक काल से आज तक हिन्दू मुसलमान सभी के राज्यों में गाय हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहा कृष्ण भगवान ने भी गौ-पालन को बढ़ावा दिया। डा० गया प्रसाद शास्त्री अध्यक्ष ने गो रक्षा सत्याग्रह समिति जिला कानपुर देहात द्वारा रिपोर्ट सुनाई गई तथा उन्होंने बताया कि सरकार ने जो कानून बनाया है उसे भी पालन नहीं किया जा रहा है यथा बिना चहारदीवारी के मैदानों, सड़कों पर कालेज व मन्दिर के आगे ही कसाइयों द्वारा गाय बैल काट दिए जाते हैं डाक्टर से अनुज्ञापत्र नहीं लिया जाता है 6 की जगह 600काट दिए जाते हैं।

अध्यक्षीय भाषण में श्री त्रिपाठी ने कहा कि पुलिस कानून पालन में सरकार का सहयोग नहीं करती तो वह रक्षक नहीं भक्षक है। अन्त में प्रस्ताव किया गया कि किसी उम्र के गाय बैल न काटे जावें और मांस निर्यात न हो ऐसे सम्पूर्ण कानून केन्द्र सरकार बनावे।

पंडित बद्रीप्रसाद सिंगल, स्मृति संगीत समारोह सम्पन्न

स्थानीय रवीन्द्रालय लखनऊ में, पंडित बद्रीप्रसाद सिंगल स्मृति संगीत समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

उक्त समारोह का उद्घाटन उ०प्र० शासन, लखनऊ की शिक्षा मंत्री श्रीमती स्वरूप कुमारी बख्शी ने किया।

यह प्रातःकालीन संगीत सभा पूर्णतया सफल रही।

कार्यक्रम का शुभारम्भ सुश्री डा० ऊषा मालवीय के गायन से हुआ।

उत्तर प्रदेश की ही नहीं, देश की प्रसिद्ध गायिका सुश्री सुनीता झिंगरन के गायन ने श्रोताओं का मन मोह लिया।
संयोजक श्री मोतीलाल वैद्य बधाई के पात्र हैं।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्यसमाज पीलीभीत, आर्यसमाज सासनीद्वार, हाथरस, आर्यसमाज टाण्डा अफजल {मुरादाबाद} आर्यसमाज जमानियाँ {गाजीपुर}, आ०स० बदायूँ आ०स० फतेहाबाद {आगरा}, आ०स० बगही, आ०स० बदायूँ, आ०स० बरदहा बाजार {बहराइच}, आ०स० सांवली आदि पंचपुरी {गढ़वाल}, आ०स० सरदार पटेल मार्ग {खलासी लाइन} सहारनपुर, आर्यसमाज कोटद्वार, {गढ़वाल}, आ०स० मठपारा दुर्ग {म०प्र०} ।

आर्यसमाज बुद्धिजावी सम्मेलन

30 सितम्बर, 1-2 अक्टूबर। 1989 को दिल्ली में बुलाये जा रहे आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन को स्वामी आनन्दबोध जी ने अपना आशीर्वाद प्रदान किया है और उन्होंने सम्मेलन के संयोजक डा०प्रशान्त-वेदालंकार को तीनों दिन इस सम्मेलन में उपस्थित रहने की स्वीकृति दे दी है।

इस सम्मेलन में उन सभी बुद्धिजीवियों को संगठित करने का विचार है जो आर्यसमाजी होते हुए भी आर्यसमाज संगठन से कुछ कट से गये हैं। इस सम्मेलन में शिक्षा, राष्ट्रीय समस्याओं एवं संगठन विषयों पर गम्भीरता से विचार-विमर्श होगा।

इस सम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के महामंत्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री तथा प्रादेशिक सभा के अध्यक्ष और मंत्री तथा सारे देश से सैकड़ों आर्य विद्वान् भाग ले रहे हैं।

स्वास्थ्य लाभ कामना

- आर्यसमाज सदर लखनऊ ने अपने साप्ताहिक अधिवेशन में आर्यसमाज के ओजस्वी वक्ता श्री रूपचन्द "दीपक" एवं पं० पवनकुमार जी के दुर्घटनाग्रस्त समाचार पर दुःख प्रकट करते हुए उनके शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रभु से कामना की हैं।

वेद प्रचार साइकिल यात्रा

पाखण्ड खण्डन व वेद प्रचार साईकिल यात्रा स्वामी जगदीश्वरानन्द जी व ब्र०-आर्य नरेश जी के संरक्षण में होगी। यह यात्रा सोमवार "2" अक्टूबर 89 को प्रातः 10 बजे पाखण्ड खण्डन यज्ञ करके लालकिला दिल्ली से प्रारम्भ होकर "6" अक्टूबर 89 को हरिद्वार पहुँचेगी। यह यात्रा गाँवों, कस्बों व स्थान-स्थान पर वेद प्रचार, पाखण्ड खण्डन व लगभग एक लाख पुस्तकें वितरित करती हुई आगे बढ़ेगी और रास्ते में स्थान स्थान पर सभाएं होंगी। लगभग पांच सौ सत्यार्थ प्रकाश व भारी मात्रा में आर्ष साहित्य के विक्रय का भी निश्चय किया गया है। यात्रा में दो प्रचार वाहन भी साथ रहेंगे।

निर्वाचन

सभा उपप्रधान श्री "अरुण" जी द्वारा आर्यसमाज गंगोह का सर्वसम्मति से निर्वाचन करा दिया गया। निम्नपदाधिकारी निर्वाचित हुए

प्रधान - श्री संग्राम सिंह
मंत्री - श्री रामशरण
कोषा० - श्री नाथीराम

वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र नजीबाबाद

संरक्षक - श्री महावीर जी
अध्यक्ष - श्री आशाराम जी आर्य
प्रचार मंत्री- श्री विष्णुमित्र आर्य
कोषा० - श्रीमती राधारानी आर्या

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्यमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र

नारायण स्वामी भवन, ५- मीराबाई मार्ग, लखनऊ

दूरभाष : ४५६६३

पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी.७६

आश्विन कृष्ण-१०

२४, सितम्बर, रविवार, १९८९

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय बृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

विद्वानों से नम्र निवेदन

आगामी दीपावली के अवसर पर "आर्यमित्र" अपना ऋष्यंक बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित कर रहा है। इसमें प्रकाशनार्थ किसी भी सामयिक विषय पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने वाले लेख/कविता/कथानक/व्यंग्य आदि सादर आमन्त्रित हैं। कृपया पृष्ठ के एक ही ओर सुन्दर अक्षरों में लिखकर मुझे बिलम्बतम 30 सितम्बर तक अवश्य भेज देने का कष्ट करें।

विदुषामनुचर :

आचार्य इन्द्रदेव पाठक

प्रबन्ध सम्पादक



स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रारेस लखनऊ मे श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) आश्विन शुक्ल: २ रविवार - संवत् २०४६ वि०, दिनांक, १ अक्तूबर, १९८९ (घोषणा पत्र सं. ७/२८-२-७५)



हिन्दी-अंक

जवाहर लाल नेहरू ने लखनऊ में कहा था...

"उर्दू की हम तरक्की चाहते हैं मगर वह राज्य की दूसरी भाषा नहीं बनाई जा सकती, क्योंकि राज्य का खर्च उर्दू को दूसरी भाषा बनाने पर दुगना हो जायेगा....।"

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य रू. २५१/-

वार्षिक रू. ३०/-

एक प्रति १.०० रू. मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ३९

हिन्दी राष्ट्र की भावात्मक एकता की प्रतीक है।

उर्दू को प्रदेश की द्वितीय राज्यभाषा बनाना भारतीय एकता और अखण्डता के लिए घातक

—इन्द्रराज, सभा प्रधान

आज विश्व के रंगमंच पर जहाँ परमाणु युद्ध की बिभीषिका से सम्पूर्ण मानवजाति भयाक्रान्त है, इस देश में राष्ट्रीय एकता की कितनी आवश्यकता है— यह किसी को बतलाने की आवश्यकता नहीं है। आसेतु हिमाचल भारत में निवास करने वाली लगभग 80 (अस्सी) करोड़ जनता बिना किसी धार्मिक अथवा वर्ग विदेष के हिन्दी भाषा के माध्यम से सम्पर्क सूत्र में जुड़ी हुई है और उसने हिन्दी को राष्ट्रभाषा एवं जनभाषा के रूप में स्वीकार कर लिया है। ऐसे समय में उर्दू को पृथक संरक्षण देकर उत्तर प्रदेश में द्वितीय राज्यभाषा का स्थान देना भारतीय एकता के लिए घातक है। यह उद्‌गार आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान श्री पं० इन्द्रराज जी ने अत्यन्त गम्भीर मुद्रा में एक प्रेस वक्तव्य देते हुए प्रकट किए।

आगे उन्होंने कहा- "कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी की संवैधानिक स्थिति और उसकी भावना का तिरस्कार करते हुए उर्दू को प्रदेश में पृथक राज्यभाषा के रूप में विकसित करना वास्तव में उर्दू की ओट में अंग्रेजी को बनाए रखने की एक चाल है। इससे देश विभाजन की भूमिका पुनः तैयार हो जाने की आशंका है। हिन्दी आज प्रदेश, वर्ग और धर्म की सीमाओं को लाँघती हुई सम्पूर्ण भारतीय जनमानस की सम्पर्क भाषा बन चुकी है। उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा का स्थान देने का निर्णय लेकर प्रदेशीय शासन ने बहुत ही अदूरदर्शितापूर्ण निर्णय लिया है। यह एक प्रत्यक्ष चुनाव स्टन्ट है। कतिपय राजनीतिज्ञ इसके सहारे भले ही आगामी चुनावों में विजय प्राप्त कर लें परन्तु यह सामयिक राजनैतिक सफलता राष्ट्र के पुनः विखण्डन को रोकने में निश्चित रूप से असफल सिद्ध होगी।

पहिले भी मन्त्रिपरिषद् में इसी प्रकार के विधेयक का प्रारूप स्वीकृत्यर्थ प्रस्तुत हुआ था। किन्तु उस समय स्व० प्रो० वासुदेव सिंह तत्कालीन खाद्यमंत्री ने इसका दृढ़तापूर्वक विरोध किया था और इसे भारतीय एकता के लिए घातक बताया था। उनके विचारों से सहमत होकर परिषद् ने इस निर्णय को स्थगित कर दिया। अब आसन्न चुनावों को देखते हुए प्रदेशीय शासन का इस प्रकार का निर्णय किसी भी दृष्टि से समीचीन नहीं कहा जा सकता।"

आर्य समाज इस भयावह स्थिति से निपटने में पूर्णतया सक्षम है। हमारा विश्वास जन-जागरण में है और हम बिना किसी भेद-भाव के समस्त देशवासियों से सहयोग की अपेक्षा करते हैं।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर आज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
————राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- आश्विन शुक्ल-२ संवत २०४६ वि०
१ अक्टूबर १९८९, दयानन्दाब्द, १६५
सृष्टि संवत १९७२९४९०९०

सम्पादकीय

......और यह शव की प्राणप्रतिष्ठा

उत्तर प्रदेश मन्त्रिमण्डल ने प्रधानमंत्री के इशारे पर उर्दू को प्रदेश की दूसरी राज्यभाषा बनाने का जो निर्णय लिया है वह पूर्णतया वोट की राजनीति से प्रेरित है और इसके दूरगामी अनिष्टकारी परिणाम अवश्यंभावी हैं। इससे प्रदेश के साम्प्रदायिक सौहार्द को तो ठेस पहुँचेगी ही देश की एकता और अखण्डता के लिए पुनः प्रश्नचिन्ह लग जायेगा। ब्रिटिश शासनकाल में "फूट डालो और राज्य करो" की नीति का अनुसरण करते हुए अंग्रेजों ने भारतीयों के बीच कटुता स्थापित करने के जो कई आयाम रचे थे उनमें उर्दू भाषा का प्रश्रय भी एक था। भारत के विभाजन में उ0प्र0 के मुसलमानों और विशेषकर अलीगढ़ विश्वविद्यालय के मुस्लिम छात्रों ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। एक प्रकार से कहा जा सकता है कि देश के विभाजन का मुख्य संचालन इसी प्रदेश के मुस्लिम लीगी नेताओं ने किया था। महात्मा गाँधी द्वारा द्विराष्ट्रवाद का घोर विरोध करने पर भी तत्कालीन ब्रिटिश शासन ने उनकी बात न मानते हुए इस प्यारी भारतमाता के टुकड़े-टुकड़े कर दिए और जो घाव इस भारतवसुन्धरा पर रहने वाले सभी भाइयों के, चाहे वह किसी वर्ण अथवा धर्म के हों, लगे हैं वे आज तक नहीं भर पाए हैं। और अब आसन्न चुनावों को देखते हुए हमारे नेताओं ने मुस्लिम मतदाताओं को अपनी और आकर्षित करने के लिए उर्दू को प्रदेश की दूसरी राज्यभाषा घोषित करने का निर्णय लिया है। लेकिन उन्हें यह नहीं मालूम है कि भारत का विशेषकर इस प्रदेश का मुसलमान हिन्दी को अपनी मातृभाषा मानते हुए इसमें पूरी तरह आत्मसात् हो चुका है। उर्दू को उसने छोड़ दिया है। हिन्दी उसकी अपनी राष्ट्रभाषा, मातृभाषा और जनभाषा हो चुकी है। वह बिना किसी क्षेत्र अथवा वर्णविद्वेष के भारतीयता की मुख्य धारा में अपने को विलीन करता जा रहा है। ऐसे समय में ऐसा विवादास्पद निर्णय लेकर हमारे जननेताओं ने किस बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है- यह हमारी समझ से बाहर है। एक बार पहिले भी मन्त्रिपरिषद् में इस प्रकार के विधेयक को स्वीकृति हेतु प्रस्तुत किया गया था किन्तु उस समय स्व0 प्रो0 वासुदेव सिंह, तत्कालीन खाद्यमंत्री के घोर विरोध एवं जनरोष को देखकर वह स्थगित कर दिया गया। इस समय हमारा प्रदेश रामजन्मभूमि बाबरी मस्जिद प्रकरण को लेकर अन्दर ही अन्दर सुलग रहा है और अवसरवादियों को अपना लाभ उठाने का खूब अवसर दे रहा है। साम्प्रदायिक विद्वेष की भावनाएं कसकर भड़काई जा रही हैं और प्रदेश सरकार तमाशा देख रही है। ऐसे समय में उर्दू को अकस्मात् द्वितीय राज्यभाषा घोषित करने से लाभ तो किसी का होना नहीं है उल्टे शासकीय कोष का केवल अपव्यय ही अपव्यय है।

संविधान की धारा 345 के अनुसार हिन्दी के अतिरिक्त किसी अन्य भाषा को राज्यभाषा का दर्जा दिए जाने के बारे में विशेष व्यवस्था है। यदि इस निमित्त माँग किए जाने पर राष्ट्रपति का समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग कम से कम (30प्रतिशत) यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाय तो वह निर्देश दे सकता है कि ऐसी भाषा को उस राज्य में या उसके किसी भाग में प्रयोजन के लिए शासकीय मान्यता दी जाय। इस प्रदेश में न तो ऐसी मांग उठाई गई है और न 30 प्रतिशत इस भाषा के बोलने वाले हैं। सम्पूर्ण शासकीय कार्य देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी में धड़ाके के साथ चल रहा है फिर भी इस प्रकार का निर्णय लेना एक वर्ग विशेष का तुष्टीकरण, अयाचित तुष्टीकरण, नहीं तो और क्या है? पिछली बार जब ऐसा ही विधेयक विधानमण्डल में प्रस्तुत हुआ था तो जन आक्रोश तथा मन्त्रिपरिषद के सदस्यों, जिनमें स्व0 प्रो0 वासुदेव सिंह का नाम आदर के साथ लिया जायेगा, का विरोधी स्वर इतना उग्र था कि तत्कालीन मुख्यमंत्री को यह विधेयक वापस लेना पड़ा था। इसके पश्चात् शासन ने कई अध्यादेश भी जारी किए किन्तु न्यायालय के प्रतिकूल फैसले के कारण वे क्रियान्वित नहीं हो सके। उच्च न्यायालय के 6 अप्रेल 1984 के फैसले की पुष्टि उच्चतम न्यायालय ने भी 13 अक्टूबर 1987 को मामूली संशोधन के साथ कर दी थी। अब न्यायालय के इस नकारात्मक रुख को ध्यान में रखकर ही प्रदेशीय मन्त्रिमण्डल ने इस नवीन विधेयक का प्रारूप मन्त्रिपरिषद की 13 सितम्बर-1989 की बैठक में स्वीकृत किया है।

आर्यसमाज डंके की चोट घोषणा करना चाहता है कि उर्दू अंग्रेजी की भाँति विदेशी भाषा है। यह विधेयक उर्दू की आड़ में अंग्रेजी को बनाए रखने की एक चाल है। केवल हिन्दी के क्रियापदों को सम्मिलित कर देने से उर्दू को भारतीयता का आवरण नहीं दिया जा सकता। इसकी लिपि विदेशी है, शब्दावली विदेशी है। विदेशी मुस्लिमों के आक्रमणकाल के पूर्व इस देश में इसका नामोनिशान नहीं था। जिस प्रकार अंग्रेजों की पराधीनता के काल में लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी को ब्रिटिश शासन के कवच के रूप में प्रचारित किया था उसी प्रकार मुस्लिम शासकों ने इस देश में अपने शासन और इस्लामिक संस्कृति को स्थायी रूप देने के लिए इसे अपनी पर्शियन लिपि में यहाँ बलात् लाद दिया था। जो लोग इसे हिन्दी की एक शैली बताते हैं उनसे हम पूछना चाहते हैं शैली के मुख्यतत्व क्या हैं? क्या केवल हिन्दी के क्रियापदों को शामिल करने से कोई भाषा हिन्दी की शैली का रूप ले सकती है। यदि ऐसा है तो "मेरे एक्ज़ामिनेशन्स का रिज़ल्ट सैन्ट परसेन्ट है" यह भी हिन्दी की शैली हुई इसे लागू करने में क्यों नाक-भौं सिकोड़ी जाती है। यह प्रच्छन्न तुष्टीकरण है। हिन्दी दिवस पर उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा घोषित करना हिन्दी का नहीं अपितु भारतीय अस्मिता का अपमान है। इस भाषा में बिलगाव के बीज भरे हुए हैं जिसका फल हमारी आगे आने वाली पीढ़ियों को भोगना पड़ेगा। इसलिए देश प्रेमियों! हिन्दी प्रेमियों!! भारतीयता प्रेमियों!!! इस बीज को जड़मूल से नष्ट करना है नहीं तो अगले दो तीन दशक में एक विभाजन और हो जायेगा। यह हमारा प्रदेश "प्रदेश" नहीं "परदेस" हो जायेगा।

उत्तर प्रदेश शासन ने मृत द्विराष्ट्रवाद के सिद्धान्त को जीवनदान देने वाला यह आत्मघाती निर्णय लिया है। गड़े हुए मुर्दे को उखाड़कर उसमें प्राण फूंकने की चेष्टा की जा रही है। यह हर भारतीय का अपमान है। आर्यसमाज इस स्थिति से निपटने में सक्षम है। वह देख रहा है कि परिस्थितियाँ ऐसी उत्पन्न की जा रही हैं कि "करो या-मरो" का निर्णय लेना ही पड़ेगा।

— इन्द्रराज, प्रधान

हिन्दी ही भारत की आत्मा है

पूर्णप्रकाश मित्तल
-बिजनौर

हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान,
हिन्दी से है मेरा देश महान।
हिन्दी है जीवन हम सबकी,
हिन्दी बिन सब है शमशान।।
भारतवासी क्यों भारत में,
हिन्दी की जड़ खोद रहे।
झूठी इज्जत के लालच में,
देश की इज्जत मिटा रहे।।
हिन्दी है भाषाओं की रानी,
हिन्दी है संस्कृत भारत की।।
हिन्दी है भारत जीवन दर्शन,
और है आत्मा भारत की।।
चारों ओर से प्रहार हो रहा,
आँखें खोलो भारतवासी।
हिन्दी है जन जन की भाषा,
इसे बचाओ भारतवासी।।
स्वार्थी लोगों ने देखो,
इसे राजनीति खेल बनाया।
मातृ भूमि पर मातृ भाषा को,
ना अपने गले लगाया।।
आज हम प्रतिज्ञा कर लें,
हिन्दी भाषा को अपनाना है।
भारत में क्या सारी दुनिया में,
सर्वोच्च स्थान दिलाना है।।

साहित्य-सौरभ आदर्श लिपि - देवनागरी लिपि

स्व० डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, लखनऊ

देवनागरी भारत की प्रमुख लिपि है। हिन्दी और उसकी अनेक बोलियों को देवनागरी लिपि में ही लिखा जाता है। मराठी भी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, इसे वहां बालबोध कहते हैं। गुजरात और सौराष्ट्र में भी देवनागरी लिपि का काफी प्रयोग होता है। संस्कृत की भी लिपि देवनागरी ही है।

सभी मानते हैं कि देवनागरी पुरानी ब्राह्मी लिपि से निकली है। ब्राह्मी प्राचीन भारत की राष्ट्रीय वर्णमाला थी। ब्राह्मी लिपि के आविष्कर्ता विद्वान् ब्राह्मण थे। उनका कहना था कि यह लिपि स्वयं ब्रह्मा की देन है। ब्राह्मी लिपि संस्कृत भाषा लिखने के लिए बनायी गयी थी, बाद में प्राकृत ने भी इसी लिपि को अपनाया।

पूर्ण और शुद्ध लिपि

ब्राह्मी लिपि प्राचीन भारत का एक अद्भुत आविष्कार है, जिसमें ध्वनियों को बिलकुल शुद्ध लिखा जाता है। यास्क और पाणिनि से भी पहले, ब्राह्मी लिपि जितनी विकसित हो चुकी थी, उतनी उन दिनों और कोई भी लिपि नहीं हुई थी। ब्राह्मी लिपि में, वर्णमाला के सभी स्वर और व्यंजन बड़े वैज्ञानिक ढंग से उच्चारण स्थान के अनुसार रखे गये हैं। सबसे पहले इसके मूल स्वर और संयुक्त स्वर हैं। इसके बाद क्रमशः कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य और ओष्ठ्य वर्णों को पांच-पांच के समूहों में रखा गया है। उन्हें कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग और तवर्ग और पवर्ग कहते हैं। इन 25 व्यन्जनों के बाद क्रम से चार अर्ध स्वर, य, र, ल, व, उष्म वर्ण स, ष, श, और फिर महाप्राण हकार है। इन व्यंजनों तथा दीर्घ और ह्स्व पूर्ण स्वरों की कुल संख्या 47 या 48 हो जाती है। देवनागरी तथा प्रायः अन्य सभी भारतीय लिपियों की वर्ण संख्या भी यही है।

ब्राह्मी भारत की सबसे पुरानी लिपि है। अशोक के राज्यकाल में यह सरकारी सार्वदेशिक लिपि थी। हिमालय में कालसी से लेकर मैसूर के सिद्दपुर तक और सौराष्ट्र के गिरनार से लेकर उड़ीसा के धौली और जौगढ़ तक के अशोक के शिलालेख ब्राह्मी लिपि में ही अंकित हैं।

यह महत्व की बात है कि देवनागरी ही नहीं भारत की अन्य सभी उत्तरी या पश्चिमी लिपियों का विकास ब्राह्मी से हुआ है।

भारतीय भाषाओं की मूलभूत एकता का यह प्रमाण है कि हिन्दी, कश्मीरी, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, उड़िया, बंगला, मैथिली और असमिया की लिपियों में घनिष्ट संबंध है। दक्षिणभारत की चारों भाषाओं की लिपियां भी ब्राह्मी से निकली हैं।

ब्राह्मी में परिवर्तन-

अशोक काल की ब्राह्मी में क्रमशः रूप-परिवर्तन होता गया। अशोक काल की ब्राह्मी शुंगकाल की (2री सदी ई०पू०) ब्राह्मी में परिवर्तित हुई। पहली शताब्दी में फिर कुशाण काल की ब्राह्मी विकसित हुई। चौथी और पांचवीं शताब्दी में गुप्त-काल में इस लिपि में और भी परिवर्तन हुआ। गुप्त साम्राज्य बंगाल से लेकर दक्षिण तक फैला हुआ था, अतः गुप्त लिपि का जो कि ब्राह्मी का ही विकसित रूप था, चलन भी दूर तक रहा। दक्षिण में ब्राह्मी लिपि का एक अन्य रूप पल्लव लिपि चलता था जिसमें अक्षरों की दुम लम्बी होती थी। छठी और सातवीं शताब्दी ई० में गुप्त लिपि का रूप और बदला। ताड़पत्र और कागज पर लिखाई लगातार चलती था, इसी हिसाब से अक्षरों का रूप बदला। इस परिवर्तित लिपि को सिद्धमात्रिका कहा जाता था। और मध्य एशिया और जापान में इसका चलन था जहां धार्मिक पुस्तकों को इसी लिपि में लिखा जाता था। सिद्धम् लिपि का सबसे पुराना ताड़पत्र जापान के होरीओजी मंदिर में मिला है। इस लिपि को कुटिल लिपि भी कहा जाता था। सिद्धम् नाम पड़ने का कारण यह है कि इसमें "ओम् नमो सिद्धम्" से ही किसी लेख का आरम्भ होता था। इसका भाषा में "ओना मासी-धम" हो गया। बोधगया के महानाम के लेख (588ई०) और लाखामण्डल की करीब-करीब इसी समय की प्रशस्ति इसी सिद्ध नागरी लिपि में है। इसमें शिरोरेखा और अक्षरों के ऊपर त्रिकोणाकार सिरनामे हैं, जो इस लिपि की विशेषता है।

देवनागरी के प्राचीन लेख

सातवीं शताब्दी ई० में वर्तमान देवनागरी लिपि ने रूप ग्रहण करना शुरू किया। 8वीं शताब्दी के बाद देवनागरी लिपि का वर्तमान रूप और स्पष्ट होता गया। गुजरात के महाराज जयभट्ट और अन्य राजा इसी लिपि में हस्ताक्षर करते थे। "स्वहस्तो मम जय भट्टस्य।" स्वहस्त का अर्थ हस्ताक्षर है।

देवनागरी के आरम्भिक लेखों में राष्ट्रकूट के महाराजा दंति दुर्ग का समनगढ़ का शिलालेख (754 ई०) गोविन्दराज द्वितीय का धुलिया शिलालेख (780 ई०) और ध्रुवराज का बड़ौदा के शिलालेख (835 ई०) आदि हैं। कोकण के शिलाहार राजाओं ने भी अपने कन्हेरी के गुप्त लेखों में (843 ई० और 851 ई०) इसी लिपि का प्रयोग किया है।

8वीं शताब्दी ई० से लेकर 10वीं शताब्दी के बीच नागरी का स्वरूप बन चुका था और 11वीं शताब्दी ई० के आरम्भ में गुजरात राजस्थान तथा दक्षिण प्रदेश के उत्तरी भाग से ताड़पत्र और शिलालेख इसी लिपि में लिखे मिले हैं। परमार, चंदेल, चाहमान (चौहान) कच्छपघात आदि वंशों के राजाओं ने भी इसी लिपि में अपने लेख अंकित कराए। एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि दक्षिण में नगरी लिपि का विकास 8वीं शताब्दी में हुआ, जबकि उत्तर में 10वीं शताब्दी ई० में। पश्चिमी चालुक्य, यादव और विजयनगर वंश की तीन पीढ़ियों के शिलालेख देवनागरी में मिलते हैं। दक्षिण में अब तक संस्कृत, देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। उत्तर में इस लिपि को देवनागरी कहते हैं और दक्षिण में नंदिनागरी।

देवनागरी नाम कैसे पड़ा

इस लिपि का नाम देवनागरी कैसे पड़ा। पहले इसका अर्थ देवताओं की, ब्रह्मा की या राजघरानों की नागरी बताया गया। हाल में कुछ ऐसे तथ्य मिले हैं, जिससे देवनागरी या दक्षिण में नंदिनागरी नाम पड़ने का ठीक कारण समझ में आता है। हाल में "पादताड़ितकम्" नामक नाटक मिला है। इसमें लिखा है कि पाटलीपुत्र को नगर अर्थात् राजधानी कहा जाता था। गुप्तकाल के शिलालेखों से पता चलता है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य का निजी नाम देव था। अतः पाटलीपुत्र से संबद्ध किसी भी शैली, या पद्धति को नागरी कहा जाता था, जैसे मंदिर निर्माण की नागरी शैली का शिल्प मंदिर शिखरों की नागरी रेखा और इसी प्रकार नागरी लिपि।

उत्तर में पाटलीपुत्र की तरह दक्षिण का प्रसिद्ध नगर, नंदिन् नगर आज का नांदेड़ था जो पहले वाकाटक और बाद में राष्ट्रकुट राज्य में था। इस प्रकार उन दिनों की नागरी लिपि के दोनों रूपों का नाम उत्तर और दक्षिण के मुख्य नगरों के ऊपर पड़ा था।

गुप्त लिपि के विविध रूप

गुप्त काल का नागरी लिपि का विकास पूर्व में बंगला लिपि के रूप में और पश्चिम में पंजाब और काश्मीर में शारदा लिपि के रूप में हुआ। दक्षिण में तेलगू, तमिल, मलयालम और ग्रंथ लिपियों का विकास भी उसी क्रम से हुआ। कोंकण के शिलाहार मान्य खेत के राष्ट्रकूद और यादव राजा तथा विजय नगर के राजाओं ने नन्दिनागरी लिपि का प्रयोग किया। विंध्याचल के उत्तर में, मेवाड़ के गुहिल, अजमेर और सांभर के चौहान, कन्नौज के गहड़वाल, काठियावाड़ और गुजरात के सोलंकी, आबू के परमार, जेजक भुक्ति के चंदेल और त्रिपुरी के कलुचरि, राजाओं ने देवनागरी लिपि का प्रयोग किया।

मुस्लिम शासन में देवनागरी

संस्कृत के पुराने प्रसिद्ध विद्वान् अलबरूनी ने लिखा है कि सिद्धमात्रिका वर्णमाला कश्मीर और वाराणसी में चलती थी और मालवा में इसे नागरी कहते थे। इससे पता चलता है कि सिद्ध या देवनागरी के दो रूप थे। शारदा और नागरी। महमूद गजनवी के सिक्कों पर अरबी में कलमे का संस्कृत अनुवाद "मुहम्मद अवतार" देवनागरीलिपि में लिखा है अलाउद्दीन और शेरशाह के अपने सिक्कों पर भी देवनागरी चलती थी। अकबर ने भी अपने प्रसिद्ध रामसिया सिक्कों पर "रामसिया" देवनागरी में लिखवाया था यह लिपि गोस्वामी तुलसीदास जी के समय की देवनागरी है, जो प्रायः आज जैसी है।

मेरी हिन्दी महान

अगणित रत्नों से भरा खजाना हिन्दी का।
स्वर में आकर बस गया तराना हिन्दी का।।
रे पंछी। तू भी मोड़ पंख की गति अपनी।
हो गया हिन्द आजाद, जमाना हिन्दी का।।

यह मिटी नहीं मुगलों के तेग कटारों से।
यह डरी नहीं गोरों के अत्याचारों से।।
जब तक रवि, शशि, नक्षत्र गगन में घूम रहे।
तब तक जीवित सम्मान पुराना हिन्दी का।।

- "विमल"

राष्ट्र की एकता हिन्दी पर निर्भर

—स्व. श्री अनन्तशयनम आयंगर
भू.पू. राज्यपाल (बिहार)

{आज से लगभग 25 वर्ष पूर्व भू0पू0 राज्यपाल, बिहार, श्री अनन्तशयनम आयंगर के हिन्दी विषयक विचार राष्ट्रीय एकता के सन्दर्भ में आज भी हमारे प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं-

- सम्पादक}

भारत एक अविभाज्य राष्ट्र है। संविधान बनाने वालों ने सारे भारत के लिए एक समान नागरिकता तथा समान भाषा नियत की। अंग्रेजी इस समान भाषा का स्थान नहीं ले सकती, क्योंकि भारत में दो सौ वर्ष चालू रहने के बावजूद यह केवल एक प्रतिशत लोगों को आती है, यह हमारी धरती की भाषा नहीं है। यहां तक कि अंग्रेजों के शासनकाल में भी, गांधी जी ने अंग्रेजी को न अपना कर हिन्दी को ही अखिल भारतीय भाषा का स्थान दिया था। यह सर्वविदित है कि ऐसा कोई भी राज्य नहीं है जहां सार्वजनिक वक्ता अंग्रेजी में भाषण करने पर सहन किया जा सके, मद्रास नहीं। जन साधारण को स्थानीय तथा बोलचाल की भाषा ही चाहिये। कांग्रेस अधिवेशन तथा अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की कार्यवाही में सदा से हिन्दी का प्रयोग होता रहा है। गांधी जी ने हिन्दी को ही कांग्रेस की अधिकृत भाषा माना क्योंकि हिन्दी भारत की 68 करोड़ जनता द्वारा बोली जाती है। हिन्दी के तेलगु, तमिल तथा किसी भी अन्य भाषा से अधिक सम्पन्न अथवा श्रेष्ठ होने का कोई भी दावा नहीं करता। परन्तु हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जो इस देश की जनता के सबसे बड़े वर्ग द्वारा बोली जाती है और वही राष्ट्रीय एकता का आधार बन सकती है।

गांधी जी के जीवनकाल में ही संविधान में हिन्दी को राजकीय अथवा सरकारी भाषा का स्थान देने की बात तय हो गई। हिन्दी का प्रचार करने के लिए उन्होंने हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की थी। दक्षिण भारत के चार प्रदेशों में लगभग एक लाख विद्यार्थी इस सभा की परीक्षाओं में बैठते हैं। इससे पहले 1910 में महामना पं0 मदनमोहन-मालवीय तथा पुरुषोत्तमदास टन्डन ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नींव इलाहाबाद में रखी। जिस प्रकार दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा ने दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार का कार्य किया है, उसी प्रकार वर्धा की हिन्दी प्रचारिणी सभा ने उत्तरी भारत में अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी का प्रचार करने का कार्य किया है।

दक्षिण में आन्दोलन

दक्षिण में हिन्दी-विरोधी आन्दोलन का कारण आंशिक रूप से राजनीतिज्ञों द्वारा उसका संचालन होना है। इसका आंशिक कारण वहां की आर्थिक व्यवस्था भी है। उन्हें भय है कि हिन्दी के माध्यम से हुई परीक्षाओं की प्रतियोगिता में वे घाटे में रहेंगे। लेकिन किसी ने भी उन्हें पिछले चालीस वर्षों में हिन्दी पढ़ने से रोका नहीं। यदि उन्होंने सच्ची लगन के साथ प्रयत्न किया होता तो वे आज हिन्दी में पारंगत होते। संस्कृत दक्षिण भारतीय भाषा नहीं है, लेकिन समय-समय पर उन्होंने संस्कृत पर अधिकार पाया है तथा संस्कृत में उन्होंने ग्रन्थ लिखे। फिर हिन्दी इतनी कठिन भी नहीं है। हिन्दी का विरोध केवल राष्ट्र के अहित पर ही हो सकता है। और अभी तक इस बात का भी कोई विश्वास नहीं कि कब तक दक्षिण भारत के विद्यार्थी प्रतियोगी परीक्षाओं में हिन्दी के माध्यम से परीक्षा देने के लिए तैयार हो जायेंगे। ऐसा सोचना भ्रामक है कि जिन लोगों की मातृभाषा हिन्दी है, उन्हें हिन्दी सीखने वाले अहिन्दी भाषियों से हिन्दी का अधिक ज्ञान होता है। प्रायः ऐसा देखा गया है कि जो लोग हिन्दी सीखते हैं वे हिन्दी व्याकरण तथा अन्य दृष्टियों से हिन्दी भाषी लोगों के मुकाबले अधिक अच्छी हिन्दी लिखते हैं। यदि हम अंग्रेजी में जो कि एक विदेशी भाषा है, अधिकार पूर्वक बोल सकते हैं, तो निश्चय ही हिन्दी पर भी अधिकार कर सकते हैं लेकिन यदि हममें इच्छा का ही अभाव है तो शायद हम कभी हिन्दी नहीं सीख सकेंगे। हिन्दी के विरुद्ध यह आन्दोलन सर्वथा निरर्थक है। मैंने सारे संसार का भ्रमण किया है। किसी भी देश में किसी भी विदेशी भाषा को सरकारी भाषा का स्थान प्राप्त नहीं है। अतः भारत में अंग्रेजी को सामान्य तथा सरकारी भाषा बनाने का स्वप्न निरर्थक है। मेरी इसीलिए दक्षिण भारतीयों से अपील है कि वे हिन्दी विरोधी आन्दोलन को प्रोत्साहन देने के बजाय, हिन्दी के विश्वविद्यालयों में अनिवार्य अध्ययन में प्रोत्साहन दें तथा विद्यार्थियों को भारतीय प्रतियोगी परीक्षाओं में शीघ्र हिन्दी माध्यम से परीक्षायें देने के योग्य बनायें।

अंग्रेजी का स्थान

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में अंग्रेजी के लिए चाह बढ़ गई है। सर्वमान्य है कि अंग्रेजी एक अन्तर्राष्ट्रिय भाषा है तथा शब्दावली और वैज्ञानिक साहित्य से सम्पन्न है। अंग्रेजी विज्ञान, अर्थ शास्त्र तथा शिल्प-शास्त्र के विद्यार्थियों के लिये अनिवार्य की जा सकती है, परन्तु अन्य विद्यार्थियों के लिए ऐच्छिक भाषा ही रहनी चाहिए। हिन्दी को वास्तविक रूप से भारत को सरकारी भाषा बनाने के लिए प्रत्येक सम्भव कदम उठाने चाहिए तथा यथाशीघ्र ही इसे अंग्रेजी का स्थान प्राप्त करना चाहिए। हमारा राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा राष्ट्रीय प्रतिष्ठा इस पर निर्भर करती है।

संस्कृत का स्थान

मैं यह दावे के साथ कहता हूँ कि दूसरी ऐसी भाषा जो कि राष्ट्रीय एकता का साधन बन सकती है, वह संस्कृत है। भारत की प्रत्येक भाषा का महत्वपूर्ण साहित्य इसी भाषा के साहित्य से लिया गया है। उत्तर भारतीय भाषाएं जबकि संस्कृत से ही ली गई हैं, दक्षिण भारतीय भाषाओं ने भी संस्कृत के शब्द अपनाये हैं। संस्कृत भारत की सांस्कृतिक भाषा रही रामायण तथा महाभारत अब भी जन साधारण का हृदय छू लेते हैं। मैं चाहूँगा कि संस्कृत प्रत्येक उच्च विद्यालय में आवश्यक रूप से पढ़ायी जाय, विशेष रूप से उत्तर भारत में, जहाँ कि हिन्दी मातृ-भाषा है। संस्कृत भाषा का ज्ञान हिन्दी जानने वालों के लिये भी अपनी भाषा में पारंगत होने की दृष्टि से आवश्यक है।

भाषायी फर्मूले के अन्तर्गत संस्कृत को एक भाषा के रूप में पढ़ने में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए कम से कम हिन्दी भाषियों के लिये।

पिछड़ने का भय

ऐसा समझा जाता है कि हिन्दी के विरोध का कारण स्थानीय भाषाओं के पिछड़ जाने का भय है। लेकिन ऐसे भय के लिये कोई भी कारण नहीं है। हिन्दी विद्यालयों में पढ़ाई जायेगी तथा अन्तर्राष्ट्रीय एवं अखिल भारतीय कार्यों में उसका प्रयोग होगा और जब तक कोई प्रदेश ऐसा न चाहे, हिन्दी का प्रयोग राज्य के आन्तरिक मामलों में न होगा। इस प्रकार स्थानीय भाषाओं का विकास विद्यालयों की पढ़ाई के माध्यम, पत्र-व्यवहार तथा अन्य कार्यों में बखूबी हो सकता है।

हिन्दी के विरुद्ध एक और आपत्ति की जा रही है कि वह एक सम्पन्न भाषा नहीं है तथा साहित्य, विज्ञान, शिल्प, शिक्षा एवं प्राविधिक शब्दों में पिछड़ी हुई है। केन्द्रीय सरकार तथा साहित्य सम्मेलन पहले ही इस दिशा में कार्य कर रहे हैं, तथा उन्हें इस ओर भी अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।

कुछ सुझाव

हिन्दी को कुछ और सरल बनाने पर विचार किया जा सकता है। एक अन्य कठिनाई हिन्दी में कई वस्तुओं के लिंग निर्धारित करने के बारे में है। लिंग प्रकृति की वास्तविकता को दृष्टि में रख कर निर्धारित किये जा सकते हैं तथा इस प्रकार अहिन्दी भाषी लोगों की कठिनाई को दूर किया जा सकता है। हिन्दी को लोकप्रिय बनाने के लिए देवनागरी को भारत की सभी भाषाओं की लिपि रूप में मान लेना चाहिए। देवनागरी लिपि में लघु "अ" तथा लघु "ओ" को छोड़कर प्रायः सभी उच्चारणों के लिये लिपि है, इस समस्या को भी शायद "अ" तथा "ओ" के नीचे एक बिन्दु लगाने से हल किया जा सकता है।

उत्तर प्रदेश सरकार ने स्वर्गीय श्री गोविन्द वल्लभ पन्त की अध्यक्षता में देवनागरी लिपि को सब भाषाओं की लिपि के रूप में अपनाने तथा टंकण यन्त्र-पटल बनाने के लिये एक सम्मेलन का आयोजन किया था। मैंने भी उस सम्मेलन में भाग लिया था तथा इन त्रुटियों को दूर करके देवनागरीलिपि को अधिक लोकप्रिय बनाने का प्रस्ताव किया था।

गैर सरकारी संस्थाओं के प्रयत्नों के अतिरिक्त भी हिन्दी भाषी तथा अहिन्दी भाषी प्रदेशों में बहुत कुछ करना आवश्यक है। आदर्श पुस्तकालय तथा उनके लिए पुस्तक प्रणयन आवश्यक है। ऐसे पुस्तकालय अहिन्दी भाषी प्रदेशों में उच्च माध्यमिक विद्यालयों को भेंट करने चाहिये। जो अहिन्दी भाषी विद्यार्थी हिन्दी को एक भाषा के रूप में पढ़ें उन्हें वजीफा

— शेष पृष्ठ ६ पर

हिन्दी-हितैषियों से निवेदन

— स्व० डॉ० हरिशंकर शर्मा

भारत वर्ष में सबसे अधिक प्रचार-प्रसार हिन्दी भाषा का है इसी से उसे राष्ट्र-भाषाकीसंज्ञा दी गई। हाल ही में समाचार-पत्रों में एक सूचना प्रकाशित हुई है कि विश्व की सर्वाधिक प्रयुक्त की जाने वाली बारह साहित्यिक भाषाओं में हिन्दी का चौथा और बंगला का आठवां स्थान है। अर्थात् भारतीय भाषाओं में सबसे अधिक प्रचार हिन्दी का है। इसलिए ऋषि दयानन्द और महात्मा-गाँधी आदि नेताओं ने अपनी मातृभाषा गुजराती होते हुए भी, हिन्दी एवं देवनागरी लिपि को ही अपनाया।

सो हिन्दी के महाकवि सूर, तुलसी, केशव, बिहारी, पद्माकर, कबीर आदि ने हिन्दी में आश्चर्य-चकित करने वाली सुरुचिमयी भावनाएं बड़ी सुन्दरता और सफलता से अभिव्यक्त की हैं।

पारिभाषिक शब्दावली

बेशक हिन्दी में आधुनिक विज्ञान सम्बन्धी शब्दों का अभाव है। इस अभाव को विशेषज्ञ विद्वानों ने संस्कृत भाषा के आधार पर "पारिभाषिक शब्दावली" का निर्माण कर पूरा कर दिया है। यह पारिभाषिक शब्दावली केन्द्रीय सरकार

{हिन्दी को राजभाषा के रूप में सम्मानित कराने के लिए हम हिन्दी प्रेमी सदैव प्रयत्नशील रहे हैं। दूसरों से हम हिन्दी के हित में जो अपेक्षा करते हैं वह ठीक ही है परन्तु हमें आत्मनिरीक्षण करना चाहिए कि हिन्दी प्रेमी होते हुए भी हम अपने व्यवहार से हिन्दी की कितनी उपेक्षा करते हैं। विद्वान् लेखक ने लेख में इस ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए निवेदन किया है कि हम अपने निमन्त्रण पत्रों, नामों, सड़कों, भवनों और बोल-चाल की भाषा आदि में शुद्ध हिन्दी प्रयोग का प्रयत्न करें। आशा है हिन्दी प्रेमी इस निवेदन की ओर ध्यान देकर अपना कर्तव्य पालन करेंगे - सम्पादक}

की ओर से प्रकाशित भी हो चुकी है। हिन्दी में, अंग्रेजी की विविध विषयों की अनेक पुस्तकों के अनुवाद हो चुके हैं और हो रहे हैं। ऐसी दशा में कैसे कहा जाये कि हिन्दी में शब्दों की कमी है। अंग्रेजी में साहित्यिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, धार्मिक, काव्य कलात्मक तथा यज्ञ सम्बन्धी शब्दों की, संस्कृत भाषा की अपेक्षा, बहुत कमी है। इस दृष्टि से उसे असमर्थ या अक्षम क्यों न कहा जाए?

उर्दू भाषा तो हिन्दी का ही एक रूप है। "उर्दू" तुरकी भाषा का शब्द है। इसका अर्थ है छावनी या छावनी का बाजार, लश्कर या लश्करगाह। जब इस देश में मुगल शासन हुआ तब यहां की भाषा में अरबी, फारसी तथा तुर्की भाषा के शब्द मिलाए गये और उसी का नाम "उर्दू" रखा गया। उर्दू का पृथक् व्याकरण और छन्दशास्त्र भी नहीं है। सब छन्द पिंगलमुनि के पिंगलशास्त्र के आधार पर हैं। भली प्रकार खोज के पश्चात् विद्वान् लोग इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं। अरबी, फारसी और उर्दू के महान् विद्वान् शम्स-उल-उलेमा मौलाना मुहम्मद हुसैन आजाद ने "आबेहयात" नामक अपने उर्दू इतिहास में, लिखा है--

"हमारी उर्दू जबान ब्रजभाषा से निकली है और ब्रजभाषा खास हिन्दुस्तानी जबान है। ब्रज का सब्जबाजार इसका वतन है।" स्वयं "हिन्दी" भी फारसी का शब्द है जो यहां की भाषा के लिये मुसलमान शासन में व्यवहृत हुआ।

अंग्रेजी भाषा का प्राधान्य यहां अंग्रेजों के जाने के बाद हुआ। तब राजकाज की मुख्य भाषा अंग्रेजी ही बनी। विद्यालयों-महाविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम भी अंग्रेजी ही बनी। अंग्रेज चले गये परन्तु कुछ लोग अब भी अंग्रेजी को "राज-भाषा" बनाये रखना चाहते हैं। यह अवश्य ही आश्चर्य और खेद की बात है। हिन्दी, संस्कृत की बड़ी बेटी है। उसने अपनी माता से बहु-संख्यक शब्द लिये हैं तथा वह अब भी ले रही है। अरबी,फारसी, तुर्की, पुर्तगाली, अंग्रेजी आदि भाषाओं के भी कितने ही शब्दों को हिन्दी ने अपनाया है। यह पृथक् विषय है, अतः यहां इस पर विचार करने की आवश्यकता नहीं। यहां तो "हिन्दी राजभाषा न बने" ऐसा विचार रखने वालों को यह बताना है कि संस्कृत की बड़ी बेटी होने के कारण हिन्दी में शब्दों की कमी नहीं है। सबसे अधिक गम्भीर भावनाएं कवियों की होती हैं।

जो लोग हिन्दी को राज-भाषा बनाने के पक्ष में नहीं, उनका युक्ति प्रमाण पूर्वक शिष्टता से तीव्र प्रतिवाद किया जाए। साथ ही विद्यालयों और महाविद्यालयों में शिक्षा का माध्यम भी हिन्दी हो, इसके लिये भी पूर्ण प्रयत्न किया जाये।

इस सम्बन्ध में कुछ बातें हिन्दी हितैषियों से भी निवेदन करनी हैं।

{1} वे अपने यहां होने वाले विवाह, यज्ञोपवीत, भोज आदि उत्सवों के निमंत्रण-पत्र अंग्रेजी में न छपवाया करें, जैसा कि आजकल प्रथा-सी पड़ गई है।

{2} अपने नामों को "बी0एन0शर्मा", "डी0एन0दत्त", "एस0के0 वर्मा", "एन0एल0 गुप्ता" आदि अंग्रेजी ढंग से लिखना बन्द कर दें। पुरुष अपने नामों के साथ "गुप्ता" और "मिश्रा" न लिखकर "गुप्त" एवं "मिश्र" लिखें।

{3} सड़कों, मुहल्लों, घरों, व्यापारिक संस्थादि के नाम अंग्रेजी में न रखे जाएं। पहले से रखे हुए ऐसे नामों को, सम्भव हो तो, हिन्दी रूप दे दिया जाये।

{4} आजकल प्रायः अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग साधारण बातचीत में हिन्दी के साथ अंग्रेजी के शब्द मिला देते हैं, इस प्रवृत्ति को रोका जाना चाहिये। यथा-"मैं मदर को रिसीव करने स्टेशन गया था"। "इसकी मारकेट वैल्यू क्या है?" "मिनिस्टर को रिसेप्शन पार्टी में जाना है"। "कहिये एक्जामीनेशन का रिजल्ट कितने परसेण्ट रहा"- इत्यादि। इस प्रकार की प्रवृत्ति मानसिक दासता और आत्म-अवमानना प्रकट करने वाली है।

मुगल शासन में हिन्दी हितैषियों में ऐसी कमी आ गई थी कि उन्होंने अपने नामों में भी अरबी-फारसी शब्दों का समावेश कर लिया और अब तक वैसा ही किया जा रहा है। यथा-इकबाल नारायण, बख्तावरसिंह, फकीरचन्द, मशाल सिंह, नवाबसिंह, उल्फतराय, जंगबहादुर, जोरावरसिंह, मुसद्दीलाल जाहिरमल, मुल्कीराम इत्यादि। उर्दू वालों ने ऐसी प्रवृत्ति नहीं अपनाई उन्होंने "आशाअली", प्रेममुहम्मद, प्रतापहुसैन, ईश्वरबख्श, प्रकाशखां, कृष्णदित्ता आदि बनकर अपनी "दिमागी-गुलामी" नहीं दिखाई। अस्तु। हिन्दी राष्ट्रभाषा है।

अनमोल वचन

हिन्दी उन सब गुणों से अलंकृत है जिसको बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है -- **राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त**

हिन्दी ही सारे भारत को एकता के सूत्र में बान्ध सकती है।

- ऋषि दयानन्द

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार को मैं राष्ट्रीयता का भाग मानता हूँ। कोई भी देश अपनी राष्ट्रीय भावनाओं की विदेशी भाषा द्वारा न तो उन्नति कर सकता है और न ठीक-ठाक अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकता।

- डा0 राजेन्द्र प्रसाद
भू0पू0 राष्ट्रपति,भारत

हे मातृभूमि के वीर सपूतो! जो हमारे साथ वञ्छल करता है, जिसने हमारे ऊपर सेना से आक्रमण किया है, जो हमें दास बनाना चाहता है तथा हमारे बन्धुओं का बध कर रहा है, उस आक्रामक शत्रु को नष्ट कर डालो --

- अथर्ववेद

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल ---

- भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

गीर्वाग्वाणी सरस्वती

हमारी भाषा पवित्र विचारों को फैलाने वाली है-

हिन्दी एक शक्तिशाली भाषा है--

राष्ट्रभाषा बिना राष्ट्र गूंगा है-- **आप्त वचन**

कानपुर में वेद प्रचार

डा0 आशारानी राय प्रधानाचार्या स्नातकोत्तर महिला विद्यालय कानपुर तथा उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के निर्देशन तथा जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर के तत्वावधान में जनपद की समस्त समाजों ने सामूहिक रूप से वेद प्रचार एवं श्रावणी सप्ताह बड़े समारोह पूर्वक मनाया। इस अवसर पर श्री पं0 हरिवंशलाल-मेहता डा0 ज्वलन्त कुमार शास्त्री एवं अन्य महोपदेशकों तथा प्रचारकों के सारगर्भित प्रवचन आदि हुए। विशाल संख्या में उपस्थित रहने वाली आर्य जनता ने तन्मय होकर वेद प्रवचनों का श्रवण किया। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

राष्ट्रभाषा हिन्दी...
हिन्दी प्रचार में आर्यसमाज का योगदान

• स्व० हरिहर प्रसाद वर्मा
एम.ए. बलरामपुर (गोंडा)

हिन्दी संस्कृत की बेटी है इसलिये पुरानी भाषा है। इसके बोलने और जानने वाले इस देश में सबसे अधिक लोग हैं। लगभग 60 करोड़ आबालवृद्ध नर-नारी हिन्दी बोलते और लिखते और पढ़ते हैं। हिन्दी में संस्कृत भाषा के तत्सम और तद्भव शब्दों की बहुलता के साथ-साथ स्वाभाविक रूप से आये हुए अरबी, फारसी, तुर्की, पुर्तगाली तथा अंग्रेजी आदि विदेशी भाषा के शब्दों का रूप भी देखने को मिलता है। इस दिशा में हिन्दी का अपना उदार और व्यापक दृष्टिकोण रहा है। हिन्दी की देवनागरीलिपि भी वैज्ञानिक, सरस और समीचीन है। हिन्दी इसी कारण आज भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में आसीन है।

आर्यसमाज और उसके प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द जी का आरम्भ से ही हिन्दी के साथ घनिष्टतम सम्बन्ध रहा है। स्वामी जी की मातृभाषा गुजराती थी तो भी उन्होंने अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी में ही लिखे। उनके भाषण एवं प्रवचन भी प्रायः हिन्दी में ही होते थे। हिन्दी की सेवा का व्रत उन्होंने उस समय लिया जबकि भारत में उर्दू और फारसी का बोलबाला था तथा अंग्रेजी के भी दाँत जमने लगे थे। सच पूछिये तो हिन्दी का प्रयोग उस समय राष्ट्रीय अपराध समझा जाता था। पर इस विषम परिस्थिति में राष्ट्रीय एकता का स्वप्न देखने वाला वह पारखी भारत के कोने-कोने में हिन्दी प्रसार का अलख जगा रहा था। राष्ट्रभाषा का प्रश्न उसके जीवन-मरण का प्रश्न बन गया था। स्वामी दयानन्द जी महाराज ने तो हिन्दी को आर्यभाषा के रूप में अपनाया। हिन्दी सेवा का व्रत उन्होंने स्वयं ही न लेकर अपने अनुयायियों को भी स्पष्ट कहा था कि सभी आर्यजन आर्यभाषा का ज्ञान प्राप्त करें और फिर अपने सारे कार्य इसी भाषा के माध्यम से करें। उनके आदेश का पालन आज तक आर्यसमाज करता आ रहा है और करता रहेगा। हिन्दी की इससे बड़ी सेवा और क्या हो सकती है?

स्वामी जी के जीवन काल में ही आर्यसमाज पंजाब ने हिन्दी प्रचार व प्रसार के कार्य को सक्रियता प्रदान की। पंजाब में प्रथम हिन्दी भाषा को अंग्रेजी तथा जर्मन भाषा की भाँति विदेशी समझा जाता था। उस प्रदेश में भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय तथा महात्मा हंसराज आदि विद्वानों ने अपने सद्प्रयत्नों से हिन्दी को ग्राम-ग्राम और घर-घर की भाषा बना दिया। एक व्यक्ति के साधारण व्यंग मात्र से प्रपीड़ित हो "सद्धर्म प्रचारक" उर्दू साप्ताहिक को हिन्दी साप्ताहिक में बदल दिया यह था महात्मा मुन्शीराम का हिन्दी के प्रति प्रेम। इस प्रकार पंजाब ऐसे मुस्लिम संस्कृति से प्रभावित क्षेत्र जहां वैदिक मन्त्रों का उच्चारण उर्दू में लिख और याद कर किया जाता था वहां आज समाज द्वारा संचालित शिक्षण संस्थाओं के हिन्दी प्रधान वातावरण में पलकर नई पीढ़ी ने उर्दू का पत्ता एकदम गोल कर दिया। हिन्दी के "समाचार पत्र" इन्हीं शिक्षण संस्थाओं के कारण आज घर-घर पहुँच रहे हैं। कल के शिक्षा शास्त्री जो हिन्दी को किसी समय अव्यावहारिक भाषा कहकर हँसी उड़ाते थे आज स्वतः उससे प्रभावित दीख रहे हैं। अब तो सब ओर से हिन्दी के प्रति स्थापन की बात जोर देकर कही जा रही है। भारतीय गुरुकुलों का कार्य अति सराहनीय है जिसने पंजाब ही नहीं तो उत्तर प्रदेश में हिन्दी की गूंज भर दी। गुरुकुलों तथा आर्यसमाज द्वारा चलाये कालेजों में यदि शिक्षा का माध्यम हिन्दी न होता तो आज यह दिन देखने को न मिलता।

आर्यसमाज के अथक परिश्रम से दक्षिण भारत के आन्ध्र कर्नाटक महाराष्ट्र, गुजरात, केरल आदि प्रदेशों में भी शिक्षण संस्थाओं के द्वारा हिन्दी का प्रचार व प्रसार किया जाता रहा है स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी सर्वदानन्द तथा नारायण स्वामी प्रभृति संन्यासियों ने अपनी वाणी तथा लेखनी से सदैव हिन्दी का शृंगार किया है। वैदिक प्रणाली से परिचित शिक्षण संस्थाओं से निकले अहिन्दी भाषी प्रान्तों के सहस्त्रों युवक लगातार अपने प्रदेशों में हिन्दी को सबल बना रहे हैं। अनेक विद्वानों ने हिन्दी में उच्चकोटि के ग्रन्थ लिखे हैं और स्वयं इन क्षेत्रों में घूमे भी हैं। श्री पं० गंगाप्रसाद-उपाध्याय, श्री जयचन्द्र विद्यालंकार, श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार तथा बुद्धदेव आदि को कौन नहीं जानता? इतना ही नहीं आज हिन्दी का प्रचार अफ्रीका, मारिशस, श्याम, कम्बोडिया, ब्रह्मा, मलाया तथा यूरोपीय देशों में भी समाज के सेवकों द्वारा बराबर चलता चला जा रहा है।

प्रचार के क्षेत्र में आर्यसमाज के विद्वान् प्रचारकों ने अपने आन्दोलनों और सिद्धान्तों के प्रचार में जो-जो भाषण दिये, लेख लिखे, गीत गाये, उन सबकी भाषा हिन्दी ही रही जिसने हिन्दी को व्यापक रूप देने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। समाज के मंच से सभी भाषण प्रायः हिन्दी में ही हुए। अमृतसर कांग्रेस के मंच से प्रथमबार हिन्दी में भाषण करने का श्रेय स्वामी श्रद्धानन्द जी को ही रहा जो आर्यसमाज के प्रसिद्ध संन्यासी रहे। ठा0 नत्थासिंह, नाथूराम शंकर, तेजसिंह, कुंवर सुखलाल, वासुदेव तथा चन्द्रकवि आदि मधुर स्वर से समाज का प्रचार हिन्दी माध्यम से ही करने में सफल रहे। पं0 कालीचरन, प्रकाशवीर शास्त्री, आचार्य विश्वश्रवा, इन्द्रदेव वाचस्पति, नरदेव शास्त्री, रुद्र देव शास्त्री आदि कतिपय विद्वान् तो सदैव हिन्दी के पुजारी रहे और आज भी हैं। स्वामी रामेश्वरानन्द ने तो हिन्दी आन्दोलन चलाकर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ़ा दी थी।

आर्यसमाज अपने प्रकाशनों द्वारा भी हिन्दी की सेवा निरन्तर करता जा रहा है। भारतोदय, आर्यमित्र, आर्यजगत् सार्वदेशिक आदि अनेक साप्ताहिक व मासिक पत्रिकाएं हिन्दी के विकास में अपना महान् योग दे रही हैं। अभिप्राय यह है कि आर्यभाषा और आर्यसमाज का सम्बन्ध अभिन्न है। आर्यसमाज में अपने जन्मकाल से ही हिन्दी के लिए महान् उद्योग किया है। ऐसी कोई दिशा नहीं जिसमें आर्यसमाज ने हिन्दी की उपेक्षा की हो। उसने सदैव हिन्दी के प्रति अपने कर्तव्य का पालन किया है।

हिन्दी को संविधान द्वारा राष्ट्रभाषा का स्थान मिल जाने के उपरान्त भी अभी उसके मार्ग में अनेक बाधायें हैं। इन बाधाओं को दूर करने के लिये आज भी आर्यसमाज पर्याप्त सावधानी से कार्य कर रहा है। अपने स्वर्गीय राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्रप्रसाद जी द्वारा दिये गये लिपि सुधार सम्बन्धी सुझावों का स्वागत प्रथमबार आर्यसमाज ने ही किया था। इसमें तनिक भी अतिशयोक्ति नहीं।" ◻

"बापू को है नमन हमारा"

राधेश्याम "आर्य"

भारत माँ के सच्चे बेटे,
मात्र लंगोटी गात लपेटे,
सदा कर्मरत रहते आए -
नहीं कभी क्षण भर को लेटे।
आजादी का बिगुल बजाया,
सत्य अहिंसा पाठ पढ़ाया,
भारत के कोने-कोने में -
एक अनोखी ज्योति जगाया।
हम बच्चों को भाए बापू,
दुश्मन मार भगाए बापू,
सारी दुनियां के जन-जन को -
सच्चा मार्ग दिखाए बापू।
बापू को है नमन् हमारा,
ऋणी रहेगा यह जग सारा,
बापू के बतलाए पथ पर -
सदा चलेगा देश हमारा।।

पृष्ठ ४ का शेष.....

दिया जा सकता है तथा हिन्दी भाषा के अच्छे ज्ञान के लिए समुचित पुरस्कार की व्यवस्था भी की जा सकती है। देश के हर हाईस्कूल में एक हिन्दी अध्यापक की व्यवस्था रहनी चाहिये। यदि राज्य सरकारें इसका प्रबन्ध न कर सकें तो केन्द्र इसकी जिम्मेदारी अपने ऊपर लें। जहां भी सम्भव हो अहिन्दी राज्यों में हिन्दी स्कूलों के संगठन के लिए निरीक्षक नियुक्त किये जाने चाहिये राज्यों में हिन्दी माध्यम वाले स्कूल खोले जाने चाहिये, जो कम से कम केन्द्रीय सरकार के एक राज्य से दूसरे राज्य में हस्तांतरित होने वाले सरकारी कर्मचारियों के बच्चों की मदद कर सकें। अहिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी के प्रचार कार्य की देखरेख का कार्य केन्द्रीय भाषा आयोग को सौंपा जा सकता है। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों के हिन्दी विद्वानों कवियों और लेखकों की परिषदें समय-समय पर आयोजित की जाया करें और देवनागरी की लोकप्रियता के लिए उनकी पुस्तकों का प्रकाशन किया जाय और उन्हें पुरस्कृत किया जाय। यह तो रही अहिन्दी क्षेत्रों की बात। हिन्दी क्षेत्रों में हमें काफी कार्य करना है। इसके लिए हिन्दी विद्वानों और प्राध्यापकों को जुट जाना चाहिये।

दक्षिण में जहां तक प्रस्तुत भाषा विवाद का सम्बन्ध है मुझे प्रसन्नता है कि हमारे नेता संकट के हल का यथासाध्य प्रयत्न कर रहे हैं। ◻

देश की अखण्डता को खतरे में डालने का प्रयास

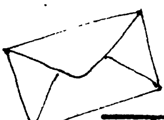
• श्रीमती धर्मेश कुमारी गर्ग
राष्ट्रीय अध्यक्षा
"मानव समाज व्यवस्था केन्द्र" लखनऊ

स्वतन्त्रता प्राप्ति के इतने वर्ष बाद भी भारत में एक तरफ जहाँ अंग्रेजी आज भी राज्यों की अघोषित प्रथम राजभाषा बनी हुई है वहीं दूसरी तरफ उर्दू को द्वितीय **राज भाषा** के रूप में स्थापित कर देश की अखण्डता को खतरे में डालने के प्रयास किये जा रहे हैं। उत्तर प्रदेश में भी बिहार की भाँति वोटों की राजनीति खेलने के लिए उर्दू को दूसरी राजभाषा का दर्जा दिया गया है। उर्दू को जबरन लादने की नीति एक वर्ग विशेष के सन्तुष्टीकरण हेतु बनायी गयी है जबकि हमारा विश्वास एक **राजभाषा** के सिद्धान्त में है। प्रदेश सरकार द्वारा उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा देकर प्रदेश के विखण्डन तथा प्रदेश की सांस्कृतिक एकता को छिन्न-भिन्न करने का बीजारोपण किया जा रहा है। प्रदेश में केवल 7-8 प्रतिशत लोग ही उर्दू बोलते हैं और उनमें भी सभी हिन्दी जानते हैं। इसी आधार पर इसे द्वितीय राजभाषा का स्तर प्रदान करना एक महान भूल होगी, क्योंकि इस तरह तो प्रदेश में ब्रजभाषा, गढ़वाली, कुमाऊँनी, भोजपुरी, बुन्देली तथा पंजाबी आदि बोलियाँ बोलने वाले भी प्रदेश की जनसंख्या में उर्दू बोलने वालों की जनसंख्या के अनुपात से कहीं अधिक निकल आयेंगे।

राज्य सरकार द्वारा उर्दू के द्वितीय **राजभाषा** के प्रतिस्थापन से राज्य सरकार का करोड़ों का बजट व्यर्थ में पानी की तरह बहाया जायगा क्योंकि प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षा पर अनावश्यक प्रबन्ध व्यय होगा। उर्दू के द्वितीय राजभाषा होने से प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक जन-जीवन पर दूषित प्रभाव पड़ेंगे तथा कार्यालयों, रेलवे स्टेशनों, गाड़ियों के नम्बर, विधानसभा की कार्यवाही, मतदाता सूची, राशनकार्ड, न्यायालयों के काम तक उर्दू में करने होंगे। इस प्रकार धार्मिक आधार पर बाँटने का यह सरकारी कुचक्र मानसिक पृथकतावाद को प्रोत्साहन देगा और समाज में साम्प्रदायिकवाद, वोटवाद तथा फिरकापरस्ती का बोलबाला हो जायगा।

वस्तुतः पाकिस्तान का निर्माण भाषा के आधार पर हुआ था और इस प्रकार उर्दू को द्वितीय राजभाषा का स्थान देना देश एवं प्रदेश को विभाजित करने का अप्रत्यक्ष आमंत्रण देना ही है। भारतीय संविधान द्वारा हिन्दी को राष्ट्रभाषा माना गया है तथा 1948 में उत्तर प्रदेश सरकार ने भी हिन्दी को ही राजभाषा माना है। ज्ञातव्य है कि हिन्दी प्रदेश की राजभाषा होने के बावजूद भी इसका अभी तक समुचित विकास नहीं हो पाया है। हिन्दी प्रदेश के जनमानस का प्रतिबिम्ब है। इसे बोलने समझने व लिखने में समाज के किसी वर्ग को कठिनाई नहीं है।

वैसे भी आज तमाम चुनौतियाँ हमारे समक्ष मुँह बाये खड़ी हैं, जैसे- क्षेत्रीय भाषा विवाद, धार्मिक संकीर्णता, जाति संघर्ष दहेज की मार्मिक क्रूर प्रथा, जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी, शिक्षा में समुचित-विकास, महँगाई, भ्रष्टाचार आदि। ऐसी विषम तथा जटिल परिस्थितियों में सरकार के ऐसे अदूरदर्शितापूर्ण निर्णय से लगता है कि हमारे नेता एक बार पुनः जयचन्द की कहानी दोहरा कर इतिहास में अपना नाम सुरक्षित करने की लालसा में गद्दारी पर उतर आये हैं। यह गद्दारी केवल देश के लिये ही नहीं स्वयं उनके लिये भी कितनी महँगी पड़ेगी, आज इस क्षणिक सत्ता की लोलुपता में शायद उन्हें अन्दाजा नहीं है। जब देश धरातल में जाता है तो क्या उसके नागरिक बचे रह सकते हैं? क्या जयचन्द की गद्दारी स्वयं जयचन्द को बचा सकी? आज आवश्यकता थी एकता की, समानता की, भारतीय संस्कृति को बचाने की, हिन्दी का दमन रोकने की न कि उर्दू लादने की। अतः प्रदेश की जनता के हित में यह अपेक्षित हो गया है कि सरकार हिन्दी को फलने-फूलने का अवसर दे तथा उर्दू को अनावश्यक रूप से न लादे। □



हमारे पाठक क्या कहते हैं?

आपका ओजस्वी, तेजस्वी "आर्यमित्र" पढ़कर अत्यन्त खुशी हुई। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि आपका यह समाचार पत्र दिनोदिन प्रगति करे।

लालन शर्मा
अध्यक्ष
आल इंडिया स्माल न्यूज पेपर्स एसोसियेशन, लखनऊ।

सम्पादकीय स्तम्भ में लिखे गये हृदयोद्गारों को बहुत ही भावुकतापूर्ण शैली में आर्यमित्र प्रस्तुत कर रहा है। पूर्ण विश्वास है आपकी लौह लेखनी परिमार्जित और परिष्कृत शैली में विवेचना के अनेकानेक कलेवरों का स्पर्श करते हुए इसी प्रकार आर्यमित्र को समृद्ध करती रहेगी। शिक्षा सत्र के प्रारम्भ होने पर आपने जो कुछ लिखा वह अत्यन्त स्पृहणीय है। युवापीढ़ी ने बहुत सराहा है।

- विद्यानन्द मंत्री आ०स०मेरापुर

सम्यक् दृष्टिकोण, उच्चकोटि के लेख आकर्षक साजसज्जा के लिए आर्यमित्र दिनानुदिन पठनीय और संग्रहनीय होता जा रहा है।

- रामसुमिरन अवस्थी
एम०ए० {भाषाविज्ञान}
पत्रकार, अलीगंज, लखनऊ।

- जब से श्री इन्द्रदेव जी पाठक, एम०ए०, साहित्याचार्य प्रबन्ध सम्पादक ने आर्यमित्र में प्रवेश किया है मैं अनुभव करता हूँ कि प्रारम्भ में उनको विषम परिस्थितियों और कठिनाईयों का अवश्य सामना करना पड़ा, जिसका उन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता से मुकाबला करते हुए पत्र के कलेवर को सुघड़, रोचक और उच्चस्तरीय बनाते हुए चँहुमुखी प्रगति की ओर मोड़ दिया है। अच्छे लेखों और कविताओं आदि की क्रमबद्ध भरमार है। पाठकों की रुचि भी उत्तरोत्तर बढ़ रही है जो सम्पादक जी की प्रवीणता और लगन का द्योतक है।

-राम सिंह आर्य
गांधीनगर -आगरा।

मुख पृष्ठ का लेख "कः वेदानुद्धरिष्यति" पढ़कर हृदय तृप्त होते होते भी अतृप्त रहा। पिछले लेखों की परम्परा में "बसुन्धरा पुण्यवती बभूव" "पराकाष्ठा-नैतिक पतन की" "मैं हूँ आपका आर्यसमाज" न जाने कितनी अनुश्रुतियों एवं ऊँचाईयों को अपने में समेटे हुए है। पद-पदकर फिर पढ़ता हूँ रख लेता हूँ फिर पढ़ता हूँ।

- रामाज्ञा मिश्र, मंत्री।

उर्दू को राजभाषा बनाना संविधान का घोर अपमान

• आचार्य वेदव्रत अवस्थी, वेद मन्दिर, हिन्द नगर, लखनऊ

आज देश के राजनीतिक नेता अपनी वोट की राजनीति के चक्कर में इतने ग्रस्त हो रहे हैं कि उन्हें न अपने पूर्वजों की भावना व मर्यादाओं का ध्यान रहता है न वे भारत के संविधान के प्रति ही निष्ठावान् रहते हैं। केवल कुर्सी लिप्सा या कुर्सी बचाना उददेश्य लेकर मात्र अल्पसंख्यकों के वोट अपनी झोली में पाने के लिए सब कुछ करने को प्रस्तुत रहते हैं। इस सब करने में संविधान की निरंतर अवमानना ही करते रहते हैं। भारतीय संविधान का पहला सूत्र- यह भारत गण तंत्र है। इसके सभी निवासी भारतीय हैं और सबकी अपने राष्ट्र के प्रति पूर्ण निष्ठा रहेगी। अब समाप्त सा हो रहा है। शासन व विपक्ष दोनों की वोट बैंक संवारने की राजनीति ने गणतन्त्र को तोड़ना आरम्भ कर दिया। साम्प्रदायिक विद्वेष चरमसीमा पर पहुँच गया है। आज देश के हर कोने में भाषायी, जातीय, साम्प्रदायिक उपद्रव पनप रहे हैं और उन उपद्रवों के मूल में ये कुत्सित राजनीति चलाने वाले नेता ही रहते हैं।

हमारे भारतीय संविधान में भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी उसकी लिपि देवनागरी सर्वसम्मति से स्वीकार की गयी है। हिन्दी राष्ट्र भाषा इसलिए स्वीकार की गयी थी कि यह देश के बहुसंख्यों की भाषा होने से सर्वांगीण सम्पर्क भाषा बनकर गणतन्त्र को सुदृढ करने में सक्षम रहेगी। परन्तु अंग्रेजियत के रंग में रंगे कतिपय नेताओं और नौकरशाही ने हिन्दी का मूल अधिकार उसे अभी तक नहीं दिया। अंग्रेजी के मोह में फंसे वे महानुभाव नारे तो हिन्दी के लगाते रहे परन्तु अंग्रेजी का वर्चस्व बढ़ाते रहे। निश्चय ही विदेशी भाषा और संस्कृति से प्रभावित मन व मस्तिष्क राष्ट्र निष्ठ नहीं बन सकते वे अपने वर्चस्व को बनाये रखने के लिये वह सभी कुछ करने में लगे रहेंगे जिससे उनकी कुर्सी का हित सुरक्षित रहे। देश रसातल में जाये उन्हें इससे कुछ लेना देना नहीं।

ऐसी ही कुभावना से ग्रस्त होकर हमारे उत्तर प्रदेश की सरकार ने उर्दू को प्रदेश की दूसरी राजभाषा बनाने का निश्चय कर डाला है। यह निश्चय न तो संविधान के अनुरूप है न नैतिक रूप में ही उचित है। हमारे प्रदेश की अधिसंख्या लोगों की बोलचाल की भाषा हिन्दी - लिपि देवनागरी है। मात्र 5,7 प्रतिशत लोगों की बोलचाल की भाषा उर्दू व लिपि फारसी है। इनमें भी 2 प्रतिशत से भी कम केवल साम्प्रदायिक विघटनवादी तत्व- उर्दू को प्रदेश की दूसरी राजभाषा बनाने के लिए शासन पर दबाव डालने का कुचक्र रच रहे हैं। उर्दू का विकास हो हमें इसमें प्रसन्नता होगी परन्तु उसे हम राजभाषा स्वीकार नहीं कर सकते।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जब हमारे प्रदेश के मुख्यमंत्री थे, उस समय भी उन्होंने ऐसे तत्वों के सामने घुटने टेकने के प्रयास में उर्दू को प्रदेश की दूसरी राजभाषा बनाये जाने की बात कही थी, परन्तु तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व0 इन्दिरा- गाँधी के ओजपूर्ण शब्दों में यह कहने पर कि-- "किसी भी निर्णय को लेने से पहले देश की बहुसंख्य जनता की भावना व निष्ठा को भुलाया नहीं जा सकता।" उन्होंने अपना निश्चय बदल दिया था।

भारत की संस्कृति ने सबको पाला, पोसा है, सबको अपनाया है सबको प्यार व सम्मान दिया है परन्तु आज विघटनवादी तत्व उसे हमारी कमजोरी समझ बैठे हैं। और हमारे राजनेता उनकी घुड़कियों के आगे घुटने टेकते जा रहे हैं।

जब संविधान के अनुसार उत्तर-प्रदेश की राजभाषा हिन्दी, लिपि देवनागरी है और संविधान में दूसरी राजभाषा का कोई प्राविधान नहीं है तब उर्दू को प्रदेश की दूसरी राजभाषा बनाने का निश्चय और कई विपक्षी दलों का उसका समर्थन भारत के संविधान का घोर अपमान है। उत्तर प्रदेश शासन का यह निश्चय न तो संवैधानिक न चारित्रिक किसी भी रूप में स्वीकरणीय नहीं है। विपरीत इसके यह निश्चय साम्प्रदायिकता को बढ़ाने, विघटनवादी तत्वों को पनपा कर प्रदेश को अराजकता का केन्द्र बनाने में सहायक बनेगा।

आर्यसमाज ने भारत की स्वाधीनता प्राप्ति में अपना सर्वस्व अर्पण किया है। स्वाधीनता आन्दोलन में 90/प्रतिशत आर्यसमाज के नेता और कार्यकर्ता भागीदार रहे। अपने हुतात्मा बलिदानी वीरों द्वारा प्राप्त स्वाधीनता की रक्षा करना आर्यसमाज का धर्म है। आर्यसमाज देश में अब और अधिक साम्प्रदायिकता और विघटनवादी वृत्तियों को सहन न कर सकेगा।

उत्तर प्रदेश सरकार का दायित्व है कि वह गम्भीरता पूर्वक अपने निश्चय पर पुनर्विचार करके प्रदेश के सुसंघटन और समृद्धि के लिए हिन्दी राजभाषा को सर्वात्मना स्वीकार करके- उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का दुर्विचार तुरन्त त्याग दे। यदि शासन ने ऐसा नहीं किया तो आर्यसमाज इसके विरुद्ध प्रबल आन्दोलन चलाकर- भारतीय संविधान की संरक्षा देश की, राष्ट्रभाषा और प्रदेश की राजभाषा हिन्दी की रक्षा करेगा। आर्यसमाज का बच्चा बच्चा भारत राष्ट्र भारतीय संस्कृति और अपनी राष्ट्रभाषा के लिए अपना सर्वस्वार्पण करने में गौरव का अनुभव करेगा।

हमारा संकल्प है:- "भारत हमारा देश है। इस देश के हम सब निवासी भारतीय हैं। हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी है हम अपने अन्तिम श्वास तक देश (जाति) मानवता धर्म संस्कृति और राष्ट्रभाषा की रक्षा करेंगे।" ◘

आवश्यकता

दयानन्द बाल विद्या मंदिर हेतु एक अध्यापक की आवश्यकता है। जो गुरुकुल का स्नातक हो अथवा आर्यसमाज के सिद्धान्त का पूर्णतया ज्ञान रखता हो।

मिले या लिखें।

श्री विजय नारायण आर्य
प्रधानाचार्य
दयानन्द बालविद्या मंदिर
शाहगंज, जोनपुर,

ऐसे नहीं बचेगी संस्कृत

• स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

नई शिक्षा, नीति में प्रत्येक विद्यार्थी को तीन भाषाएं पढ़नी होंगी-

(1) मातृ या क्षेत्रीय भाषा
(2) सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी
(3) इंगलिश

संस्कृत के लिए कोई जगह नहीं है। कोई कुरसी खाली हो तो वहां संस्कृत बैठे।

मातृभाषा पर हर एक का जन्मसिद्ध अधिकार है और राष्ट्र की व्यापक भाषा के रूप में हिन्दी को जानना सबके लिए आवश्यक है। इसलिए इन दोनों में से किसी को नहीं हटाया जा सकता। अंग्रेजी जानना सबके लिए आवश्यक नहीं है। इसलिए उसकी अनिवार्यता को हटा कर उसके स्थान पर संस्कृत को बिठाया जायेगा। अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त किये बिना संस्कृत के लिए कोई स्थान नहीं मिलेगा। इसके लिए कौन यत्न करे? आर्यसमाज?

वर्तमान में आर्यसमाज अंग्रेजी के लिए सर्वात्मना समर्पित है। पहले डी0ए0वी0 संगठन ने देश के कोने कोने में इंगलिश माध्यम के स्कूल खोल कर धीरे-धीरे अंग्रेजी को भारतीयों की मातृभाषा बनाने और हिन्दी को देश निकाला देने की योजना बनाई। इसकी देखा देखी आर्यसमाज के अन्तर्गत इंगलिश माध्यम के स्कूलों की बाढ़ आ गई। इस बाढ़ में बह कर आर्यसमाज के सर्वोच्च नेता भी इंगलिश माध्यम के स्कूलों का उद्घाटन करने में गर्व करने लगे। ये सब सरकार के लोग नहीं है, नामधारी आर्यसामजी हैं जो आर्थिक लाभ के लिए अपने धर्म, संस्कृति सभ्यता आदि को तिलांजलि देकर अंग्रेजी के प्रचार प्रसार को अपना परम धर्म मानते हैं। स्वयं संस्कृत का गला घोट कर सुप्रीम कोर्ट, प्रधानमंत्री आदि से संस्कृत को बचाने का अनुरोध कर रहे हैं। इनके बचाये संस्कृत नहीं बचेगी। संस्कृत के बिना हिन्दी नहीं रह सकती। इसलिए संस्कृत को जाता देख अपनी लाज बचाने के लिए हिन्दी चुपचाप खिसक जायेगी। आर्यसमाज यदि ईमानदारी से संस्कृत को बचाना चाहता है तो उसे अपनी संस्थाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करनी होगी। अंग्रेजी कैंसर है, आपरेशन करके जब तक इसे नहीं निकाला जायेगा, तब तक इस दिशा में किए गए सभी प्रयत्न निष्फल होंगे।

भारतीय राष्ट्र भाषा की जीवन गाथा

श्री अशोक कुमार शास्त्री
आर्यसमाज मंदिर सुभाषनगर, नई दिल्ली

बात उस समय की है जब मैं गुरुकुल पटा का विद्यार्थी था गुरुकुल के संस्थापक स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डीहताश होकर कहने लगे अंग्रेजी आकाश में उड़ रही है जमीन और पाताल में घुस गयी है दवाइयों से पेट में और विचारों से लोगों के मस्तिष्क में प्रवेश कर गयी है मैं संस्कृत और हिन्दी का प्रचार कैसे करूँ।

पराधीन भारत में यदि भारतीय भाषाओं में परीक्षायें कराने हेतु आमरण अनशन करना पड़ता तो हमारे लिए गौरव की बात होती। श्री स्वामी-आनन्दबोध जी को "अंग्रेजी हटाओ" आन्दोलन स्वतन्त्र भारतीय गणतन्त्र में चलाना पड़े यह भारतीय जनमानस की शर्म और दुःख की बात है। दिल्ली हिन्दी अकादमी के अध्यक्ष श्री नारायण-दत्त पालीवाल "जियो और जीने दो" सरीखे वाक्यों द्वारा पहियों पर घूमती हिन्दी से अपने मन को सन्तोष दे लेते हैं और हिन्दी प्रेमी जनमानस को देना चाहते हैं। हिन्दी के विशेष पक्षधर श्री अटल बिहारी बाजपेयी इस लिए अप्रसन्न हैं कि सरकार ने राजभाषा समिति का विदेशी दौरा गलत ढंग से निरस्त कर दिया वे कहते हैं कि यदि हिन्दी देश में कुदशा को प्राप्त है तो इसका अभिप्राय यह तो नहीं कि हिन्दी को विदेशों में भी अपमानित रहने दिया जाय उन्हें विदेशी हिन्दी की अधिक चिन्ता है।

स्वदेश में अपमानित भाषा विदेश में सम्मान पा सकेगी संशय है। सद्भावना भाईचारे और स्वदेशभिमान द्वारा जनजन में बैठी एकता को मैं भारतमाता समझता हूँ उसे और अधिक ताकत देने में हिन्दी सर्व समर्थ भाषा है क्योंकि इसे भारत की 40/ प्रतिशत आबादी बोलती और समझती है इसीलिए इसे राष्ट्र भाषा पद पर आरूढ होने का श्रेय मिला है परन्तु गहन दुःख तब होता है जब संविधान की सुरक्षा और भारत की अस्मिता को अक्षुण्ण रखने की शपथ खाने वाले बयान देते हैं हिन्दी किसी पर थोपी नहीं जायेगी। परन्तु उनके श्री-मुख यह कभी नहीं बोले कि 2 प्रतिशत भारतीयों की भाषा शेष पर थोपी नहीं जायेगी ऐसा पक्षपात क्यों?

दूरदर्शन, और आकाशवाणी जब अशिक्षित महिलाओं को पाचनकला और सामान्य ज्ञान अंग्रेजी में बाँटता है तब मुझे इसके अंग्रेजी प्रेम पर हँसी आती है। संविधान निर्माताओं ने लिखा कि हिन्दी को समृद्ध बनाने हेतु संस्कृत का सहारा लिया जायेगा अंग्रेजी दा सरकार ने नई शिक्षा नीति में संस्कृत को निकाल विदेशी भाषाओं की काली सूची में डाल दिया। शाहबानों प्रकरण में संविधान की धारायें बदलने वाली सरकार विरोध और प्रार्थना के बावजूद भी अपने निर्णय पर संस्कृत के लिए पुनर्विचार न कर सकी वह संस्कृति और सभ्यता कैसे सुरक्षित रखेगी विचारणीय है।

भारत में आकर फ्रांस के मित्तरा रूस के गोर्वाचोव अपनी मातृभाषा में बोलते हैं परन्तु हमारे शासक देश या विदेश में हिन्दी बोलने लिखने और व्यवहार करने में शर्म महसूस करते हैं। तथा अपने वोट के स्वार्थ साधित करने हेतु भाषाई विवाद खड़े करते हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने गुजराती होते हुए तथा संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान होने पर भी अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी में लिखे और हिन्दी को राष्ट्रीय गौरव दिलाना चाहा उनके ही अनुयायियों का एक वर्ग दयानन्द एंग्लोवैदिक स्कूलों के द्वारा वैदिक को गौण कर एग्लों के जाल में फँसता जा रहा है उन्होंने अंग्रेजी दासता से समझौता कर लिया है फिर दूसरे जनों की क्या कथा?

आइए। भारती की अस्मिता संविधान भावना की रक्षा हेतु अपने जीवन और देश के जीवन से अंग्रेजी हटाने और हिन्दी को जनमानस में उतारने की शपथ लें। □

श्री गंगा नगर में आर्य महासम्मेलन

दि0 8,9,10 अक्टूबर 89 से श्री गंगानगर (राजस्थान) में आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया है, जिसमें उच्चकोटि के सन्यासी, विद्वान्, भजनोपदेशक पधार रहे हैं क्षेत्रीय जनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठाये।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज किसंडा (पीलीभीत), आ0स0बदौली (अलीगढ़), आ0स0 देवबन्द-(सहारनपुर), आर्यसमाज चेम्बूर (बम्बई), आर्यसमाज गोण्डा, आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी आ0स0 सुल्तानपुर, आ0स0अमरोहा, आ0स0 सीसामऊ, कानपुर।

- आर्यसमाज बदायूँ का वार्षिकोत्सव 14,15,16 अक्टूबर 1989 में सम्पन्न होगा। पुस्तक विक्रेता पधारें साथ ही क्षेत्रीय जनता से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्मलाभ उठावें।

आर्यसमाज रसोली जनपद बाराबंकी के विभिन्न स्थानों पर दिनांक 4,5 तथा 9 से 11 अक्टूबर तक आर्य समाज का वार्षिकोत्सव मनाया जायेगा।

हिन्दी के साथ सौतेला व्यवहार क्यों?

जून 1988 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने घोषणा की कि 1·लाख का भारत-भारती पुरस्कार 1986 के लिए श्री अमृतलाल नागर को प्रदान किया जायेगा। 1986 का पण्डित श्री नारायण जी चतुर्वेदी को और 1988 का नागार्जुन को 12,000 के और एक दर्जन पुरस्कार अन्य साहित्यकारों को दिए जायेंगे। फिर यह भी सूचना दी गई कि 17 सितम्बर, 1988 को पुरस्कार वितरण समारोह होगा जिसकी अध्यक्षता उपराष्ट्रपति-श्री शंकर दयाल शर्मा करेंगे। परन्तु निश्चित तिथि के एक दिन पूर्व दैनिक पत्रों में सहसा एक विज्ञप्ति निकाल दी गई कि अपरिहार्य कारणवश पुरस्कार वितरण समारोह अनिश्चित काल के लिए स्थगित किया जा रहा है। पूछताछ करने पर पता चलाकि समारोह को स्थगित करने का अपरिहार्य कारण यह है कि सरकार संस्थान को पुरुस्कार वितरण के लिये 6 लाख रुपया नहीं दे सकती।

आश्चर्य है, जिस दिन अपरिहार्य कारणों की घोषणा की गई, उसी दिन उत्तर प्रदेश सरकार ने उर्दू अकादमी को तुरन्त 18 लाख रुपये निकाल कर दे दिये। और फिर 22 जनवरी, 1989 को मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि "अन्जुमनतरक्की उर्दू को प्रदेश में उर्दू के प्रचार और प्रसार के लिये 5 लाख का वार्षिक अनुदान दिया जायेगा। 7000 उर्दू पढ़ाने के लिये स्कूलों में अध्यापक नियुक्त किये जायेंगे, चाहे एक भी छात्र उर्दू पढ़ने का इच्छुक न हो। 814 मकतबों का वार्षिक अनुदान बढ़ाकर 1000रु0 प्रति मकतब कर दिया गया है"

मुसलमानों की आबादी उत्तर प्रदेश में केवल 10 प्रतिशत है और केवल 1·6 प्रतिशत विद्यार्थी उर्दू की प्रथम भाषा के रूप में परीक्षा देते हैं। फिर भी उर्दू के प्रचार और प्रसार के लिए सरकार पानी की तरह पैसा बहा रही है। उर्दू अकादमी को इतना अधिक अनुदान मिलता है कि पैसे को खर्च करना उसके लिए समस्या हो जाती है। एक ही पुस्तक के लिए बार-बार एक ही लेखक को पुरस्कार किया जाता है। 1985 की उर्दू अकादमी की उपलब्धि है "तमद्दुन-ए-अरब" का दूसरा संस्करण जिसमें पैगम्बर मोहम्मद साहब के स्त्री-प्रेम की विशेष चर्चा है।

उर्दू अकादमी और हिन्दी संस्थान दोनों की शिक्षा विभाग के संस्थान हैं। दोनों के अध्यक्ष मुख्यमंत्री हैं। फिर समझ में नहीं आता कि अकादमी को इस कदर लड़ाया क्यों जा रहा है, और संस्थान के प्रति इतना सोतेला व्यवहार क्यों किया जा रहा है। घोषित पुरस्कारों के वितरण की बात तो दूर रही, संस्थान के पास कर्मचारियों को मासिक वेतन देने के लिए भी पैसा नहीं। संस्थान के उपाध्यक्ष भक्तदर्शन जी के आत्मसम्मान को इस सोतेले व्यवहार से इतनी ठेस लगी कि उन्होंने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

परन्तु मुख्यमंत्री जी के सिर पर जूँ भी नहीं रेंगी। उनको याद रखना चाहिए कि वह न केवल मूर्धन्य साहित्यकारों का अपमान कर रहे हैं, अपितु राष्ट्रभाषा और राजभाषा का भी अपमान कर रहे हैं। उन्हीं के लिए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कहा थाः-

"निज भाषा उन्नति अहै
सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा ज्ञान के
मिटत न हियको सूल।।

"आस्तिकता व नास्तिकता का संगम व समाधान" "आर्य समाज"

चौ० ऋषि पाल सिंह एडवोकेट,
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब

गतांक से आगे....

8- मजहबों के जीवित अथवा मृत-बिचौलियों की भी कोई आवश्यकता नहीं। देखा गया है कि "ईश्वर" जिस के, भिन्न भिन्न मजहब वालों ने अपनी इच्छानुसार, भिन्न भिन्न नाम रख लिये हैं, उसके मानने या ना मानने का कम ही विवाद है, परन्तु सारा खून-खराबा इन बीच के विचौलियों को मानने, न मानने का है, और इसी कारण आस्तिकवाद बदनाम होकर रह गया है। ठीक ही है "WHAT EVER YOU SOW, SO SHALL YOU REAP." "जो बोओगे, वही काटोगे" तो फिर यह विचौलिये विचारे किस काम के? ईश्वर स्वमेव में पूर्ण है।

ना ही नास्तिकों के कथित केवल वैज्ञानिक भौतिकवाद का कोई औचित्य है। नास्तिक भी यही कहते हैं कि "नेचर इज् परफैक्ट" अर्थात् "कुदरत मुकम्मल है।" तो फिर क्या नास्तिक इस रूप में "ईश्वर" को नहीं मानते? "माँ" को माँ न कहकर, "जन्म देने वाली" कह देने से कोई अन्तर नहीं पड़ता। ईश्वर न कहा, कुदरत/नेचर/प्रकृति कह लिया, एक ही बात है।

की रा सर्वसम्मा राष्ट्र भा कि यह से सर्व को स अंग्रे

आर्यसमाज सृष्टि के आदि ज्ञान "वेद" द्वारा प्रदत्त त्रैतवाद {ट्रिनिटि} अर्थात ईश्वर जीव प्रकृति का प्रचारक है। एकेशवरवादी है। वास्तव में केवल आर्यसमाज ही ईश्वर को सही रूप में मानता है, बिना किसी मिलावट के। जबकि कोई भी मजहब आस्तिकवादी नहीं, सिवाये आर्यसमाज के।

{।} ईश्वर {गाड}=सत्{इटरनल}+ चित्{कोनसस}+ आनन्द{ब्लीसफूल} है। सच्चिदानन्द स्वरूप है।

{।।} जीव {सोल}=सत्+चित, आत्मा के गुण है।।

{।।।} प्रकृति {नेचर}= केवल मात्र सत्{इटरनल} है जो सौलिड, गैस व लीकुंअड में अणुओं में बदलती रहती है।

उदाहरणार्थः- जैसे कुम्हार {ईश्वर, मिट्टी-{प्रकृति} से बरतन {जीव} बनाता है, इसी प्रकार उपरोक्त गुणों के आधार पर अनादि काल से लेकर अनन्तकाल तक यह परिपूर्ण कार्य चल रहा है। जिस प्रकार रात के पश्चात दिन और दिन के पश्चात रात्रि आती जाती है इसी प्रकार सृष्टि की रचना के पश्चात् प्रलय और प्रलय के पश्चात रचना, निरन्तर बुद्धिपूर्वक कम से चलती है।

अतः जीव{सोल} जो ईश्वर और प्रकृति के बीच में है, आनन्द प्राप्ति के लिये, ईश्वर की ओर बढ़ेगा, और वेदानुकूल चल कर अच्छे काम करेगा, जिस का कर्मफल प्रदाता ईश्वर है। प्रकृति तो आनन्द विहीन है, उस से आनन्द कैसा? प्रकृति का सहारा लेकर "जीव" शारीरिक सुख, मानसिक शान्ति व आत्मिक आनन्द प्राप्त कर सकता है और यही मानवता का चरम लक्ष्य है कि मुक्ति प्राप्त करें। अन्यथा यदि, मकान, कपड़ा व रोटी आदि खा-पी कर मर जाना ही है तो अच्छे और बुरे कर्मों को करने या ना करने का क्या प्रयोजन व तात्पर्य? और फिर अच्छे बुरे कर्मों की कसौटी ईश्वरी नियम हैं जिसें कुदरत कह कर पुकारते हैं। सृष्टिक्रम के अनुकूल जीवन बनाना "अच्छा" और विपरीत "बुरा" कहलाता है।

10- आर्यसमाज के वेद पर आधारित मन्तव्य आस्तिकों और नास्तिकों को एक ही "सत्य के मंच" पर लाकर खड़ा कर देते हैं, अर्थात् कथित नास्तिक, अध्यात्मिकता से विहीन होने के कारण, और कथित आस्तिक भौतिकता से अनभिज्ञ होने के कारण, एक दूसरे की ओर यदि अपनी अपनी कमी पूरी करने हेतु झुकें और खिचें तो दोनों का प्रिय मिलन स्थल "आर्यसमाज" ही होगा, जो आस्तिक व नास्तिक दोनों के बीच खड़ा होकर, "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि" कर रहा है। ज्ञान कर्म और उपासना द्वारा मानवता को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के चरम लक्ष्य की ओर अग्रसर कर रहा है।

अतः यदि ईश्वर पूर्ण है, कुदरत भी पूर्ण है तो फिर आस्तिक और नास्तिक वाद में "माँ" और "जन्म देने वाली" संज्ञा का समाधान व संगम आर्यसमाज ही तो है, जिसका पहला नियम है:-

"सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।"

उर्दू द्वितीय राज्यभाषा नहीं

आर्यसमाज नगर, लखनऊ ने अपने साप्ताहिक अधिवेशन में सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित करके प्रदेशीय शासन के द्वारा उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा घोषित करने के निर्णय का घोर विरोध किया है।

तपोवन में योग शिविर

आश्रम का आगामी वृहद्यज्ञ तथा योग-साधना-शिविर 11 से 15 अक्टूबर तक चलेगा। यज्ञ के ब्रह्मा मथुरा के आचार्य प्रेमभिक्षु जी महाराज होंगे और महात्मा चयनमुनि वानप्रस्थी उनके सहायक रहेंगे।

श्री प्रेमचन्द्र शर्मा द्वारा शोक सम्वेदना

आर्यजगत् के मूर्धन्य विद्वान तथा प्रसिद्ध वक्ता पूर्व सांसद श्री पं० शिवकुमार-शास्त्री तथा विद्वान सन्यासी स्वामी वेद-बोध जी {पूर्व नाम विक्रमादित्य "बसन्त"} के निधन पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के पूर्वमंत्री श्री प्रेमचन्द्र शर्मा ने शोक व्यक्त करते हुए इन दोनों विद्वान आर्यपुरुषों को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वृहदधिवेशन

दिनांक - २६ नवम्बर सन् १९८९ को डी.ए.वी. कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है:-

1-	सभा में चित्र प्राप्ति की अन्तिम तिथि	14-10-89
2-	चित्रों की जाँच	16-10-89 से 19-10-89 तक
3-	मतदाता सूची का प्रकाशन	22-10-89
4-	आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	25-10-89
5-	आपत्ति का निवारण	26-10-89 से 27-10-89 तक
6-	शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	5-11-89
7-	वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन्	26-11-89
8-	चुनाव परिणाम की घोषणा	निर्वाचन समाप्ति के बाद

दिनांक- 15-9-89

मनमोहन तिवारी
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०,
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

ऋग्वेद का दार्शनिक तत्वज्ञान

• डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री
एम०ए०, पी-एच०डी०
रणवीर रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी।

गतांक से आगे-

उपनिषदों ने "यतो वा इमानि भूतानि" आदि वाक्यों में और ब्रह्मसूत्रकार ने "जन्माद्यस्य यतः" सदृश सूत्रों में इसी बात का अनुवाद किया है। ऋग्वेद के 10वें मण्डल के 16वें सूक्त में वर्णन है कि इन्द्रियाँ अपने अपने देवताओं की ओर जाती हैं तथा आत्म तत्व "अज" है और वह भाग अग्नि के द्वारा जलाया नहीं जा सकता। गीता में "न जायते म्रियते" "नैनं दहति पावकः" आदि शब्दों द्वारा ऋग्वेद के उसी आत्मतत्व की अमरता की पुष्टि की गई है। "कामस्य यत्राप्ताः कामाः" {ऋ0 9,113,11} यह उस आत्यन्तिक स्थिति का वर्णन है जहाँ समस्त इच्छाएँ नष्ट हो जाती हैं। इस विचार को, उपनिषदों ने भी लिया है- "अयं पुरुषः प्राज्ञेनऽऽत्मना सम्परिष्वक्तो न बाह्यं किञ्चन वेद नाऽऽन्तरं तद्वा अस्यैतदाप्तकाममात्मकाममकामं रूपं शोकान्तरम्" {बृहदारण्यक उपनिषद्, अध्याय 4 ब्राह्मण 3 कण्डिका21} यह आत्मा स्व विज्ञानमय स्वरूप से युक्त होकर बाह्य और आन्तरिक कुछ नहीं जानता। निश्चय ही यह इसका आप्तकाम, आत्मकाम, अकाम और शोकरहित रूप है। बृहदारण्यक के ही 4/3/32 में "एषाऽस्य परमा गतिरेषाऽस्य परमा संपदेषोऽस्य परमो लोक एषोऽस्य परम आनन्दः।" वचन है। अर्थात- इस जीवात्मा का यह ब्रह्म प्राप्ति ही परम गति है, यही सर्वोत्कृष्ट सम्पत्ति है, इनका यह परमलोक है, इसका यही परम आनन्द है। "न वि जानामि यदिवेदमस्मि निण्यः संनद्धो मनसा चरामि।" {ऋ0 1/164/37}। अर्थात मैं स्वतः के आत्मस्वरूप को जानता नहीं इसीलिए मन के द्वारा बाँधा जाकर इस संसार में भ्रमण करता हूँ। यह कथन संसार में जीव के जन्म-मरण के चक्र में आने तथा मुक्त न होने की स्थिति में विभिन्न योनियों में भ्रमण, कर्मफल तथा पुनर्जन्म का सूचक है। "स सध्रीचीः स विषूचीर्वसान आ वरीवर्ति भुवनेष्वन्तः" {ऋ0-1/164/32}। इस मन्त्र में यह भाव प्रकट किया गया है कि इन्द्रियों का स्वामी जीव अपने कर्मानुसार भली बुरी योनियों में जन्म धारण करता है। {आ वरीवर्ति भुवनेषु अन्तः=पुनःपुनः भुवनों में उत्पन्न होता है। जीव का अन्तिम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति है। दुःखों से छूटकर अमृत, आनन्द को प्राप्त करना ही मुक्ति है। हम दुःखों से छूटकर अमृत, आनन्द को प्राप्त हों। दुःख ही मृत्यु है तथा मुक्ति ही अमृत या आनन्द।

"उर्वारुकमिव बन्धान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात" {ऋ0 7/59/12} । अर्थात्- हे भगवान्। मुझे मृत्यु आदि दुःखों से छुड़ा अमृत अर्थात मोक्षानन्द से नहीं। मृत्यु से हमें उसी प्रकार छुड़ाना जिस प्रकार खरबुजा अपने वृन्त से पकने पर छूट जाता है।

"यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते।
कामस्य यत्राप्ताः कामा तत्र माममृतं कृधि-----।"
{ऋ0 9/113/11}

जहाँ आनन्द, मोह, मुद और प्रमुद हैं और जहाँ सब कामनायें पूर्ण हो जाती हैं उस मोक्षधाम में मुझे अमर कीजिए।

प्रत्यक्ष रूप से ऋग्वेद की इन समस्त बातों का विचार करने से यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि अध्यात्म के बारे में ऋग्वेदकालीन आर्यों की अवधारणा के कारण ही परवर्ती उपनिषत्काल के सिद्धान्तों का स्फुरण हो सका।

आधुनिक काल में वेदाध्ययन एवं वेदानुसन्धान में नूतन क्रान्ति उत्पन्न करने वाले, युगप्रवर्तक, वेदमनीषी महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेद तथा अन्य वेदों में प्रतिपादित ब्रह्म सम्बन्धी मान्यताओं, देवतावाद तथा वैदिक जीवन दर्शन पर भलीभाँति विचार किया है। स्वामी जी का वैदिक विचार/सिद्धान्त निकष उनके मुख्य ग्रन्थ "ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका" में उत्कृष्ट रीति से वर्णित है। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने भी ऋग्वेदीय ब्रह्म शब्द पर सम्यक्रूपेण विचार किया है। उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ "गीता रहस्य" के अध्यात्म प्रकरण से यह निष्कर्ष निकलना है कि ऋग्वेद काल में ही आर्यों की आध्यात्मिक परिणति पूर्णावस्था प्राप्त कर चुकी थी।

तात्पर्य यह है कि कामरेड डाँगे जिसे *Idealist philosophy* कहते हैं वहाँ तक वैदिकों की प्रगति ऋग्वेद काल में ही हो गई थी। यह उपर्युक्त तर्क प्रमाण पुरस्सर विश्लेषण पूरी तरह स्पष्ट है। अतः वैदिक आर्यों को हठात जंगली मानकर वेद के शब्दों का अर्थ बदलने की आवश्यकता नहीं है। इन सारी बातों पर ध्यान देने पर श्री डाँगे महाशय की यह डींग कि जो तिलक आदि न समझ सके वह केवल मैं ही समझ सका हूँ, व्यर्थ हो जाती है।

बाल जगत

महर्षि दयानन्द

प्रज्ञाचक्षु गुरुवर विरजानन्द सरस्वती

श्री चन्द्रपाल सिंह "मयंक", कानपुर

गुरुवर विरजानन्द शिष्य से
थे अतिशय प्रसन्न मन में।
योग्य शिष्य अब मिला उन्हें था
अपने लम्बे जीवन में।
गुरु थे प्रज्ञाचक्षु - न उनको
पड़ता कुछ भी दिखलाई।
किन्तु ज्ञान - विद्वता असीमित।
कीर्ति चतुर्दिक थी छाई।
पाणिनि - व्याकरण, आर्ष ग्रन्थों के
थे प्रकाण्ड - पण्डित गुरुवर।
अब अध्यापन - क्रम चल निकला,
मिला गुरु को शिष्य प्रवर।
ढाई वर्ष तक दयानन्द ने
गुरु से विद्याध्ययन किया।
गुरु-सेवा-संग कड़ा परिश्रम,
पढ़ कर उस पर मनन किया।
कड़े परिश्रम - ब्रह्मचर्य से
मुख पर तेज झलकता था।
और विद्वता के प्रकाश से
आनन दिव्य चमकता था।
शिक्षा की समाप्ति पर कर में
थोड़ी सी लौंगें लेकर -
गुरु - दक्षिणा - रूप देने को
हुआ विनम्र शिष्य तत्पर।
गुरुवर बोले : "यह क्या देते?"
बोला विनत वदन : "गुरुवर।
कुछ लवंग सेवा में लाया,
ले लें आप, अनुग्रह कर।"
वाणी में अति कोमलता भर,
गुरुवर ने यह बात कही:-
{ऐसा लगा- कि बोल रही है
स्वयं धीर - गम्भीर मही।}
"बेटा। जा, पढ़-लिख कर करना
मातृभूमि का तू कल्याण।
कुरीतियों की सैन्य कर रही
अपने भारत को म्रियमाण।
कुरीतियों का दुर्ग ढहाना,
सुरीतियों का दिव्य प्रचार।
है पाखण्ड हर तरफ फैला,
इसका करना है संहार।
जनता है हर ओर अशिक्षित,
शिक्षित इसे बनाना है।
अन्धकार में सोये हैं सब,
सोता देश जगाना है।
तुझको मुझसे ज्ञान मिला है,
इसको तू हर ओर बिखेर।
ज्ञान-प्रकाश तुझे छिटकाना,
इसमें करना तनिक न देर।
वैदिक धर्म समाप्त हो रहा,
बुझती ज्योति जलाना तुम
वेदों का पावन सन्देशा
अब हर ओर सुनाना तुम।"
गुरुवर ने यों दयानन्द को
शिक्षाप्रद उपदेश दिया।
जिससे हो कल्याण देश का
वह पावन आदेश दिया।

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ

दूरभाष : ४५६६३

पंजीकरण सं० एल०डब्ल्यू/एन पी·७६

आश्विन शुक्ल-२

१ अक्तूबर, रविवार, १६८६

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय बृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं! वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें ।

-- सभामंत्री ।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि॰ सं॰ २२४१/५७) आश्विन शुक्ल-८, रविवार- संवत् २०४६ वि॰, दिनांक, ८ अक्तूबर, १९८९ (घोषणा पत्र सं॰ ७/२२-२-७५)



हे ऋषिवर्य!

इस आर्यावर्त निवासिनी मरणोन्मुख आर्य जाति को एक प्रकार से धूलि से उठाकर तुमने जिन ऊँचाइयों पर पहुँचा दिया उस ऋण से यह आर्य जाति कैसे उऋण हो सकेगी।

हे अनन्त प्रेरणा के स्रोत!!

हमारी प्रभु से यही प्रार्थना है कि वह हमें शक्ति दे जिससे हम कठिन साधना और तप से तेरी बताई उन ऊँचाइयों को छूने में समर्थ हो सकें....

- आर्य मित्र परिवार

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम॰ ए॰

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम॰ ए॰ साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य......रु॰ २५१/-

वार्षिक..........रु॰ ३०/-

एक प्रति..........१.०० रु॰ मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ४०

रामो नाम जनैः श्रुतः

आर्य कभी पराजित नहीं होता

------ और आर्य जाति के जीवन में न जाने कितनी बार निशा की काली-काली घटाएं आई थीं। उमड़ घुमड़कर कहने लगी थीं- "मैं तुझे नष्ट कर दूंगी, बरबाद कर दूंगी, भीषण बाढ़ में बहा ले जाऊंगी और तेरा पता भी नहीं चलेगा --- तेरा अस्तित्व कभी इस सृष्टि में था भी या नहीं। मेरा नाम तमस है। मैं अन्धकार की, अज्ञान की, रावणत्व की घोर निशा हूँ। मेरे अन्धकार में सब विलीन हो गये, रोम मिट गया, मेसोपोटामियाँ मिट गया, मिश्र के केवल प्राचीन अवशेष खड़े हैं।"

------ और पाँच लाख वर्ष से ऊपर हो गये, त्रेतायुग में, ऐसा ही एक झंझावात आया था आर्य जाति के जीवन में, समुद्र के उस पार से किसी ने ललकारा था- "तेरी बहूबेटियाँ हमारे कब्जे में हैं, चारों दिशाओं में मेरी तूती बोलती है, मेरी आज्ञा के बिना तू कहीं यज्ञ हवन नहीं कर सकता मेरे दैत्य उसे विध्वन्स कर डालेंगे। समुद्र मेरे चरण पखारता है, देवता मेरे यहाँ पानी भरते हैं, मैंने अमृत का वरदान पालिया है--- मैं सबको मार सकता हूँ मुझे कोई नहीं मार सकता, मैं अमर हूँ अमर, अशोकवाटिका में बैठी हुई तेरी पत्नी का अपहरण मैंने किया था--- मेरा नाम रावण है। यह पृथ्वी क्या तीनों लोक मेरे नाम से थरथराते हैं। छोकरे! इधर आया तो बन्दी बनाकर डाल दिया जायेगा, तड़पा-तड़पा कर भाई सहित मार दिया जायेगा।" और सचमुच वह नहीं माना--- आर्यजाति का रत्न जो था। उसकी अर्धांगिनी जीवनसंगिनी, चन्दा की चान्दनी उससे दूर कहीं बिछुड़ी हुई, कारागार में बन्द, अशोक वाटिका के नीचे रह-रह कर उसे पुकार रही थीं। मरना चाहती थी पर मर भी तो नहीं सकती थी ----

नाम पाहरु दिवस निसि ध्यान तुम्हार कपाट
लोचन निज पद यन्त्रिका प्राण जाहि केहि बाट।

------ और वह निराश, हताश और भयभीत होकर लौट जाय यह तो आर्यों ने सीखा ही नहीं "अहमिन्द्रो न पराजिग्ये" आर्य कभी हार नहीं मानता है। एक आर्यललना पुकारे और वीर क्षत्रिय चुपचाप बैठा रहे- यह तो हो ही नहीं सकता। और फिर भिड़ गये तीर से तीर, गदा से गदा। वाणवर्षा से नभथल तिमिराच्छन्न हो गया। और फिर अधिक समय नहीं लगा आर्यजाति का सूर्य फिर उदय हुआ अपनी किरण के साथ। इस धरती पर **राम** आ गया अपनी **सीता** के साथ। बधाइयाँ बजने लगीं मिठाइयों के अम्बार लग गये थे- इसी अयोध्या में उसका राज्याभिषेक हुआ था। जय जय कार हुआ था------**भगवान राम की जय--- सीता मैया की जय--- सत्य की जय।**

आज **रावण** कहाँ है। कोई उसका नाम लेवा पानी देवा भी नहीं है। दुनियाँ में कोई माँ अपने बच्चे का नाम रावण नहीं रखना चाहती है। राम को सुबह उठते ही सब याद करते हैं। कैसा आर्यचरित्र है और कितना प्यार है उसके लिए क्योंकि वह आर्यजाति का रक्षक था। उसके धनुष-वाण में महारथी का बल था, उसके मस्तिष्क में ब्रह्म का तेज था, उसके हृदय में असीम करुणा का निवास था- निषाद को गले लगाते हुए उसने कहा था- "तू मेरा मित्र है, तू अछूत नहीं है, इस जाति का उद्धार करने वाला है, गंगा के उस पार उतारने वाला। उसके उदर में त्याग भरा था उसने सोने की लंका उसी को सौंप दी थी जो वहाँ का था- "मुझे कुछ नहीं चाहिए "इदं न मम" यह मेरी नहीं है। उसका भ्रातृप्रेम, पितृप्रेम, पत्नीप्रेम, गुरुप्रेम अनुपम है अनमोल है। जिस जाति ने ऐसा महान रत्न उत्पन्न किया वह कभी मिट सकती है?। आज हमें चारों ओर से आमूल नष्ट करने के लिए रावण खड़े हो गये हैं उन्हें मालूम नहीं है पहिले तो एक ही राम आया था अब हर घर में हरपरिवार में हर गली में राम आ गया है। जरा सम्भल के बोलना और देखना -----।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सम,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
————राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- आश्विन शुक्ल ८ संवत,२०४६ वि.
८ अक्तूबर १९८९, दयानन्दाब्द,१६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

सम्पादकीय

"रामाय स्वस्ति रावणाय स्वस्ति"

भारत स्वातन्त्र्योदय के साथ ही हमारे राजनैतिक क्षितिज पर एक नवीन समन्वयवादी विचारधारा पनपने लगी जिसमें सर्वधर्मभाव अथवा सर्वजनभाव का मानवीयता से भरा हुआ बहुत ही उदार दृष्टिकोण अपनाया गया। मानव मानव है भले ही वह सन्तशिरोमणि हो अथवा चोर या डकैत। धर्म धर्म है चाहे उसकी मान्यताएं वेद के अनुकूल हों अथवा प्रतिकूल। ईश्वर की उपासना उपासना है भले ही वह मूर्तिपूजा का आधार लेकर की गई हो अथवा निराकारोपासना हो। सब रास्ते वहीं पहुँचते हैं। रास्ते भिन्न-भिन्न हो सकते हैं पर मंजिल एक ही है। यह दृष्टिकोण व्यक्ति के धार्मिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में रहा। इसी के साथ राजनीति में, राज्यतन्त्र में आई हुई बुराइयों के और राजाओं के अधिक निरंकुश एवं अधिनायकवादी रवैय्ये के विरोध में एक ऐसे जनतन्त्र का उदय हुआ जिसमें बहुमत का सम्मान और अधिकार किस सिद्धान्त के आधार पर तय किया गया यह अभी तक अज्ञात है। जब हम रावण को बुरा कहते हैं और उसे दण्ड देना धर्म समझते हैं तो इसका अर्थ यह नही है कि रावण एक व्यक्ति बुरा था और उसे हमने मार दिया क्योंकि और कोई उपाय नहीं था। बल्कि इसका सीधा सादा भाव यही है कि हम रावणत्व के खिलाफ हैं और वह जहाँ कहीं हमें मिलेगा हम उसे मार देंगे या पराजित कर देंगे। वेद में इसी दृष्टिकोण को "दुरितानि परासुव" कहकर स्पष्ट किया गया है-" हम बुराइयों को दूर अथवा पराजित करते रहें तभी हम- "यद् भद्रं तन्न आसुव" कल्याण करने वाले पीठ पर बैठने के अधिकारी बन सकेंगे। रावण जब तक हट नहीं गया तब तक राम का प्रतिनिधि विभीषण लंका के सिहांसन पर नहीं बैठ सका।

आज के जनतन्त्र में राम रावण की तुलना में दोनों का मूल्यांकन सम हो गया है। परिणाम उसका यह है कि जिस उद्देश्य को लेकर जनतन्त्र विकसित हो रहा है न उसे हम प्राप्त कर पा रहे हैं और न मानव कल्याण ही कर पा रहे हैं। बुराई बहुमत की चादर ओढ़े हुए बहुत विशाल रूप में समाज में घुसती चली आ रही है। तब तो एक रावण था मारना आसान था आज तो चारों ओर रावणत्व के दर्शन हो रहे हैं। भ्रष्टाचार, अनाचार, पापाचार से लेकर जीवन या समाज के किसी क्षेत्र में चले जाइए किसी दुकान के आगे खड़े हो जाइए, किसी सरकारी कार्यालय पर नज़र डालिए, किसी न्यायालय में पहुँच जाइए, किसी धार्मिक सभा या संस्था के सदस्य बनकर देख लीजिए, किसी चुनाव में खड़े हो जाइए हर क्षेत्र में आपको रावण उर्फ माफ़िया उर्फ भ्रष्टाचारी उर्फ असत्यवादी उर्फ आठ सौ चालीस बड़े आराम से टहलते हुए, घूमते हुए, निर्भय होकर मूंछों पर ताव देते हुए मिल जायेंगें क्योंकि अब उन्हें राम का भय ही नहीं है। अब तो उनका मूल्यांकन सम हो गया है जैसे राम वैसे रावण।

हमारा सब पर लाँछन नहीं है। हम बहुमत की बात कर रहे हैं क्योंकि जनतन्त्र में बहुमत को सम्मान मिला हुआ है किस सिद्धान्त के आधार पर- यह अज्ञात है। पहले एक राजा बुरा हो सकता था और हुआ है अब राज्य के प्रतिनिधि बनकर अधिकांश बुरे ही खड़े होते जा रहे हैं। अच्छाई दबती जा रही है बुराई उभड़ती जा रही है। भारत की राजनीति में आज यही खेल चल रहा है। गंगा किनारे पहुँचे तो गंगादास बन गये गंगा की पूजा भी की और गंगा की प्रशंसा भी। जमुना के किनारे पहुँचे तो जमुनादास बन गये और उसकी प्रशंसा भी करने लगे। अच्छाई बुराई के मापदण्ड को हमने छोड़ दिया है इसलिए मर्ज़ बढ़ रहा है ज्यों ज्यों दवा करते जा रहे हैं।

अभी तक यही विचार और प्रयास चल रहा था कि किस प्रकार शीघ्र से शीघ्र पूरे भारत में अंग्रेजी को हटाकर राष्ट्रभाषा हिन्दी को पूर्णरूप से प्रचलित और प्रतिष्ठापित किया जाये। हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान पाने के लिए कई कई वर्ष का समय दिया गया बढ़ाया गया और अब एक नया "स्वस्तिवाचन" हमारे नेताओं ने पढ़ना प्रारम्भ कर दिया है- "हिन्दी भाषाये स्वस्ति" "उर्दूभाषाये-स्वस्ति"। प्रचार कितना सुन्दर है जैसे हिन्दी वैसे उर्दू- भाषा तो दोनों ही हैं। जैसे राम वैसे रावण इन्सान तो दोनों ही थे।

सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि आज हमारे देश में राजनैतिक क्षितिज पर ऐसा कोई दूरदर्शी नेता उदित नहीं हो रहा है जो आने वाले कल को देख सके और समझ सके। आज उन्हें वर्तमान की कुर्सी प्यारी है आने वाली निशा की कोई चिन्ता ही नहीं है।

ईश्वरेच्छा बलीयसी

आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान, शान्ति की प्रतिमूर्ति गम्भीरता के प्रतीक श्री पं0 शिवकुमार शास्त्री भूतपूर्व प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 एवं भू0पू0 सांसद के दिवगंत होने का समाचार सुनकर हार्दिक क्लेश हुआ। यद्यपि प्रभु की व्यवस्था में हमारा कोई अधिकार और वश नहीं परन्तु ऐसी दिव्य विभूतियों का बिछोह निश्चय ही समस्त आर्य जगत् के लिए अतिशय शोककारी है। यह आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। प्रभु उनकी दिवंगत आत्मा को सद्गति और समस्त शोकाकुल परिजनों व आर्यजनों को धैर्य प्रदान करें यही प्रार्थना है।

-आचार्य वेदव्रत अवस्थी,
प्रधान आ0 उप प्रति0सभा
जनपद-लखनऊ।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वृहदधिवेशन

दिनांक- २६ नवम्बर सन् १९८९ को डी.ए.वी. कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है:-

1-	सभा में चित्र प्राप्ति की अन्तिम तिथि	14-10-89
2-	चित्रों की जाँच	16-10-89 से 19-10-89 तक
3-	मतदाता सूची का प्रकाशन	22-10-89
4-	आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	25-10-89
5-	आपत्ति का निवारण	26-10-89 से 27-10-89 तक
6-	शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	5-11-89
7-	वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन्	26-11-89
8-	चुनाव परिणाम की घोषणा	निर्वाचन समाप्ति के बाद

दिनांक- 15-9-89

मनमोहन तिवारी
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा,उ0प्र0,
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

स्वास्थ्य-सुधा

मादक पदार्थों से हानियाँ

-(डॉ.) स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (ब्रह्मचारी)
शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य, योगाचार्य, बी.एस.सी., एम.बी.बी.एस.

84 लाख योनियों की बात प्रसिद्ध है। मनुष्य, सर्वश्रेष्ठ मानवयोनि का प्राणी है। कठोपनिषद् में मानवशरीर की उपमा "रथ" से दी गई है। मानव शरीर एक "रथ" है, जिसमें जीवात्मा स्वामी है, बुद्धि "सारथी" है, मन "लगाम" है, इन्द्रियाँ "घोड़े" हैं और इन्द्रियों के विषय वे मार्ग हैं, जिन पर इन्द्रियों के घोड़े दौड़ते हैं। मनीषीगण, जीवात्मा को- इन्द्रियों और मन से युक्त होने पर- "भोक्ता" कहते हैं।

जो मनुष्य अपने शरीररूपी रथ को सही मार्ग पर चलाने हेतु इसके बुद्धिरूपी सारथी को अपनी इच्छानुसार रथ चलाने में प्रयुक्त करता है, मन की लगाम को कसकर पकड़े रखता है और इन्द्रियों के घोड़ों को गलत-मार्ग पर नहीं जाने देता-- वही सुखी और स्वस्थ रहता है। मन आत्मा के सम्पर्क में चेतनावान होकर क्रियाशील होता है और पाँच ज्ञानेन्द्रियों (कान, आँख, जिह्वा, नाक और त्वचा) से ज्ञान प्राप्त करता है और फिर पाँच कर्मेन्द्रियों (वाक्, पाद, पाणि, पायु और उपस्थ) के सहयोग से कर्म कराता है।

व्यावहारिक तथा शरीर-संरचना की दृष्टि से मन-बुद्धि ही मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य का मूलाधार है।

"बुद्धिंलुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तद् उच्यते।।" शाङ्गधर के अनुसार बुद्धि का लोप करने वाले पदार्थ-मादक, नशीले होते हैं। खान-पान का प्रभाव मन-बुद्धि पर पड़ता ही है। जब हम कहते हैं- यह खाता-पीता मनुष्य है- तो इसका अर्थ होता है, कि यह मनुष्य पौष्टिक शाकाहार व दुग्धपान करने वाला "सम्पन्न-मनुष्य" है। इसके विपरीत यह कहा जाय- यह मनुष्य, खाता-पीता है- तो अर्थ होगा, कि यह मनुष्य मांसादि खाता है तथा मदिरा आदि पीने वाला, विनाश की ओर जाने वाला मनुष्य है।

मादक पदार्थों (नशीली वस्तुओं) के अन्तर्गत- शराब, गाँजा, भाँग, चरस, तम्बाकू और अफीम का प्रचलन बहुत पहले से चला आ रहा है। परन्तु 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में नये-नये मादक पदार्थ सामने आये हैं, जिनमें हेरोइन, हशीश, ब्राउनशुगर, स्मैक, मेन्ड्रेक्स, मुरिजुआना, एल0एस0डी0 आदि उल्लेखनीय हैं।

यदि बुद्धिपूर्वक निर्णय लिया जाय, तो मादक-पदार्थों का औषधीय प्रयोग लाभकारक है, परन्तु व्यसन के रूप में अनौषधीय प्रयोग (नन-मेडिकल यू0एस0सी) हानिकारक है, विनाशकारक है। व्यसन के दलदल में धंसकर- दलदल से निकलना बड़ा कठिन होता है। नशीली वस्तुओं से होनेवाली हानियाँ ध्यान में रखें तो "मादक विनाशकारी दलदल" में धसने से हम बच सकते हैं।

सभी मादक पदार्थों में मदिरा का प्रचलन सबसे अधिक बदनाम है। मदिरा, हृदय व जिगर के लिये हानिकारक, त्रिदोषजनक, दाह उत्पन्न करने वाली, दुर्गन्ध तथा विषदृगुण वाली होती है। आरम्भ में जब कोई मदिरापान का प्रारम्भ करता है, तो उसे क्षणिक स्फूर्ति-आह्लाद-उत्साह का अनुभव होता है। वह इस भ्रामक, अनुभूति को पाने के लिये बार-बार मदिरापान करता है। शरीर पर मदिरापान का प्रभाव कुछ- इस प्रकार का है, कि धीरे धीरे मदिरा की मात्रा बढ़ती जाती है और स्फूर्ति-आह्लाद-उत्साह का प्रभाव व काल कम होता जाता है। शराबी इस विषम दुष्चक्र का शिकार हो जाता है। शराब के दुष्प्रभाव का शिकार मनुष्य बेकार हो जाता है।

"शराब की लत" की बदौलत- तन और दौलत की हालत खराब हो जाती है। शराबी, जिगर की खराबी (लीवर-सिरोसिस), पेट-कैंसर आदि का बीमार बनता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रसारित सूचनानुसार किसी देश में - लीवर सिरोसिस व पेट-कैंसर से मरने वालों की संख्या से- उस देश के मदिरापान करने वालों की जनसंख्या का अनुमान लगाया जा सकता है। शराबी की जीवन-रेखा- आयु घट जाती है।

सुरापान का, है इतिहास।
तन-मन-धन का, होता नाश।।

सुरापान को वैयक्तिक, पारिवारिक सामाजिक और राष्ट्रिय- किसी भी प्रकार से हितकर नहीं कहा जा सकता। महात्मागांधी के अनुसार- "मद्यपान-शारीरिक, नैतिक और आर्थिक सभी दृष्टियों से व्यक्ति को नष्ट करता है।" मदिरा के सम्बन्ध में महर्षिदयानन्द कहते हैं- "मदिरा मनुष्य को राक्षस बनाती है।"

ताड़ी भी मदिरा जैसी हानिकारक है। नीरा के उत्तापित (फरमेन्टेड) रूप को ताड़ी कहते हैं जिसमें लगभग 7 प्रतिशत अल्कोहल होता है।

तम्बाकू के "निकोटीन" का स्वास्थ्य पर उतना बुरा प्रभाव पड़ता है, जितना "हेरोइन" का निकोटीन, कैंसर का प्रमुख कारण है। स्वयं धूमपान न करने पर भी उसका धुआँ अन्दर जाते रहने से गले व फेफड़े का कैंसर हो सकता है। "इण्डियन कौन्सिल ऑफ रिसर्च" के अनुसार-भारत में कैंसर के जितने केस होते हैं, उनमें से पुरुषों में आधे केस और महिलाओं में चौथाई केस तम्बाकू के खानपान या धूमपान से होते हैं।

गाँजा, भांग और चरस एक ही पौधे से प्राप्त होते हैं। जब इनका सदुपयोग औषधि के रूप में न करके, नशा के लिये- व्यसन के रूप में दुरुपयोग किया जाता है, तो शरीर का नाश आरम्भ हो जाता है। इनके निरन्तर प्रयोग से आँखें लाल होना, चेहरा सूजना, बुद्धि व स्मरणशक्ति का नष्ट होना, अग्निमान्द्य व अपच होना, अनिद्रा होना, प्रलाप, लड़खड़ाहट, शिरशूल, कब्ज आदि दुष्परिणाम होते हैं।

नशीली वस्तुओं का सेवन पीकर, खाकर, धूमपान और इन्जेक्शन द्वारा किया जाता है। नशा शरीर को विनाश की ओर ले जाता है। शरीर में "वात-पित्त-कफ" समान स्थिति में नहीं रह पाते। सप्त धातुओं (रस-रक्त-मांस-मेद-अस्थि-मज्जा-शुक्र या रज) का सार- तन-मन का ओज लुप्त होने लगता है। जब मन में ओज नहीं रहता, तो किसी कार्य में मन भी नहीं लगता है।

जो नशा का, हुआ शिकार।
उसने नाश किया, तन-सार।।

नशा- * स्थूल, सूक्ष्म व कारण शरीर के विनाश का कारण बनता है। नशा से प्राणवायु शरीर के भागों में नहीं पहुँच पाती है और फलस्वरूप रोग से बचने की निरोध क्षमता कम हो जाती है। पाचनक्रिया बिगड़ जाती है। गले व फेफड़े के रोग लग जाते हैं। नशा- खून ले जाने वाली धमनियों को ढीला कर देते हैं, जिसके कारण आवश्यकता से अधिक खून जाने लगता है। नशा, हृदय की माँसपेशियों में चर्बी एकत्र कर उनकी गति के रोकने के कारण पैदा करता है। जिगर कठोर हो जाता है, कैंसर का रोग लगना सामान्य बात है। प्लीहा के खराब होने से खून कम बनता है। नशा के कारण शरीर में विटामिन, शरीर रक्षण का प्रकार्य नहीं कर पाते।

सूक्ष्म शरीर से सम्बद्ध अन्तःकरण के चार-विभाग- मन (योजनविभाग), बुद्धि (निर्णय विभाग), चित्त (अभिलेख विभाग) और अहंकार (गृह विभाग)- नशा के कारण विनाश को प्राप्त होते हैं। नशीली वस्तुओं की हानियों के कारण-कारण-शरीर से प्राप्त होने वाला आनन्द-सुख- शान्ति का मिलना समाप्त हो जाता है।

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यांहिरण्यय:कोश:स्वर्गो ज्योतिषावृत:।।

हमारा शरीर "अयोध्या" नामक "देवपुरी है जिसमें आठ चक्र और नौ-द्वार हैं, एक सुनहरा कोश है जिसमें अनेक ज्योतिर्मय मण्डल हैं। उन मण्डलों के बीच में जीवात्मा रहता है। यह हमारे देखते-समझने की बात है कि अपने देवपुरी- सुन्दर शरीर को नशीली वस्तुओं से हानि न पहुँचायें।

निर्वाचन
आर्य उपप्रतिनिधि सभा मुजफ्फर नगर

प्रधान -	श्री अरविन्द कुमार आर्य
मंत्री -	श्री देवपाल सिंह आर्य
कोषा0 -	पं0 हरिदत्त आर्य

हिन्दी भाषा के स्थायित्व में महर्षि दयानन्द का योगदान

•यशपाल आर्यबंधु
आर्य निवास, चन्द्र नगर,
मुरादाबाद, २४४०३२

आर्य समाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म गुजरात में होने से उनकी मातृभाषा भी गुजराती ही थी तथापि वे संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। अपने प्रारम्भिक सामाजिक जीवन में वे व्याख्यान आदि भी प्रायः संस्कृत में ही दिया करते थे। अपने कलकत्ता प्रवास तक वे संस्कृत में ही भाषणादि दिया करते थे। कलकत्ता के प्रवास में बाबू केशवचन्द्र सेन के सत्परामर्श से उन्होंने हिन्दी में भाषण आदि देने प्रारम्भ किये । महर्षि ने जिस समय सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण ,(जिसे आदिम सत्यार्थ प्रकाश के नाम से जाना जाता है) लिखवाया तो उसकी भाषा आदि शुद्ध नहीं बन पायी थी। महर्षि ने इस बात को सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संशोधित संस्करण की भूमिका में स्पष्ट शब्दों में स्वीकार किया है ।

महर्षि जिस समय हिन्दी के रंगमंच पर अवतीर्ण हुए,उस समय हिन्दी भाषा में स्थायित्व नहीं आ पाया था। हिन्दी गद्य का तो उस समय स्वरूप ही पूर्णतया निश्चित नहीं हो पाया था । हिन्दी भाषा विशेषतया गद्य का स्वरूप निर्धारण में महर्षि दयानन्द का बहुत बड़ा योगदान है। हिन्दी भाषा को स्थायित्व देने में उनकी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। महर्षि के आगमन से पूर्व हिन्दी गद्य के स्वरूप को लेकर दो राजाओं में टकराव चल रहा था। राजा शिव प्रसाद सितारे -हिन्द अपनी भाषा में उर्दू के शब्दों का बाहुल्य रखते थे जबकि राजा लक्ष्मण सिंह अपनी भाषा में संस्कृत के शब्दों को प्राथमिकता देते थे। उन दिनों सरकारी कार्यालयों में उर्दू का बोलबाला था, इसलिए राजा शिव प्रसाद सितारे-हिन्द अपनी भाषा में उर्दू-फारसी के शब्दों का अधिक प्रयोग करते थे। राजा लक्ष्मण सिंह का मत था कि हिन्दी का उद्गम संस्कृत होने से उसका शब्द भण्डार भी संस्कृत भाषा से ही भरा जाना चाहिए तात्पर्य यह कि राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द तद्भव शब्दों के प्रयोग के पक्षधर थे जबकि राजा लक्ष्मण सिंह तत्सम शब्दों के प्रयोग के ।

भारतेन्दु और दयानन्द -

हिन्दी गद्य के स्वरूप विषयक इस संघर्ष के काल में हिन्दी के रंगमंच पर दो और महापुरूष अवतीर्ण हुए और दोनों अपने-अपने ढंग से हिन्दी भाषा की सेवा करने में जुट गये। ये थे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और महर्षि दयानन्द सरस्वती। साहित्यिक क्षेत्र में भारतेन्दु को हिन्दी गद्य का निर्माता कहा जाता है। उनका क्षेत्र भी केवल साहित्य तक ही सीमित था। विपरीत इसके महर्षि का क्षेत्र साहित्यिक न होकर सामाजिक तथा धार्मिक था। इस पर भी महर्षि ने हिन्दी की जो सेवा की वह भारतेन्दु से किसी भी प्रकार कम नहीं थी अपितु कई गुणा अधिक थी। इस पर भी हिन्दी भाषा के विकास के इतिहास में उनकी सर्वथा उपेक्षा ही कर दी गई है। इस सम्बन्ध में डा॰ लक्ष्मी नारायण गुप्त का यथार्थ कथन है कि- "आश्चर्य का विषय यह है कि स्वामी दयानन्द ने भी तत्कालीन परिस्थिति में हिन्दी के निर्माण और प्रचार में भारतेन्दु जी की अपेक्षा कम सहयोग नहीं दिया तथापि हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों ने उनका वर्णन अन्यमनस्कता से किया और यदि उनका कार्य इतना महान व्यापक और दीप्त न होता तो वे उन्हें बिल्कुल ही छोड़ जाते । ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी दयानन्द ने जो धार्मिक सुधार का महाक्रान्तिकारी रूप प्रस्तुत किया वह अधिकांश में जनमत के विरुद्ध पड़ा। मूर्तिपूजा,श्राद्ध और अवतारवाद जैसी व्यापक धारणाओं का सीधे प्रबल और ओजस्विनी भाषा में खण्डन बड़ा ही अप्रिय सिद्ध हुआ। सम्भव है ऐसे भयंकर व्यक्ति और उसके कार्यों का वर्णन हिन्दी इतिहास लेखकों ने उपेक्षात्मक रूप से करना ही ठीक समझा हो। "(द्रष्टव्य-डा॰लक्ष्मी नारायण गुप्त का शोध प्रबंध- हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्य समाज की देन, पृष्ठ 95-95)

जो भी हो, यह वास्तविकता है कि महर्षि दयानन्द के एतद्विषयक योगदान का यथार्थ मूल्यांकन अभी तक नहीं हुआ है। दूसरी ओर जब हम महर्षि के कार्य को देखते हैं तो आश्चर्य चकित रह जाते हैं। महर्षि दयानन्द को भारतेन्दु की अपेक्षा कार्य करने का समय भी बहुत कम मिला था। भारतेन्दु की अपेक्षा महर्षि के सम्मुख कठिनाइयाँ भी अधिक थीं। भारतेन्दु की मातृभाषा भी हिन्दी थी और वे स्वयं भी साहित्यिक क्षेत्र के व्यक्ति थे। महर्षि की मातृभाषा हिन्दी न होकर,गुजराती थी और वे धार्मिक क्षेत्र के व्यक्ति थे। साहित्य-साधना उनका ध्येय या लक्ष्य नहीं था। उनका उद्देश्य तो भूली-बिसरी वेद-विद्या का प्रचार करना तथा अज्ञान-अंधकार और पाखण्ड का विनाश करना था। तथापि इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि उन्होंने हिन्दी गद्य को एक नया स्वरूप ही नहीं,उसे स्थायित्व भी प्रदान किया। महर्षि दयानन्द की यह विशेषता थी कि उन्होंने हिन्दी गद्य में ऐसे-ऐसे विषयों पर लेखनी उठायी जिन पर आज तक एक शब्द भी नहीं लिखा गया था। वेदों का हिन्दी में भाष्य करने वाले वे ही प्रथम महामानव थे। धर्म और दर्शन के गूढ़ तत्वों को सर्वप्रथम हिन्दी भाषा में प्रस्तुत करने वाले वे ही महापुरूष थे।

महर्षि दयानन्द में स्वदेश भक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। उन्हें स्वदेश की हर वस्तु से प्रेम और लगाव था। यही कारण है कि उन्होंने इस देश की भाषा को भी हिन्दी भाषा न कहकर आर्य भाषा की संज्ञा दी। तत्सम शब्दों का हिन्दी भाषा में बाहुल्य भी इसी कारण से था। महर्षि जहाँ इस देश की भाषा को आर्य भाषा कहते थे, वहाँ इस देश को भी आर्यावर्त्त देश कहा करते थे। इतिहास साक्षी है कि हिन्दी को राज अथवा राष्ट्रभाषा के रूप में परिकल्पना करने वाले भी वही प्रथम महामानव थे। महर्षि की इसी भावना से प्रेरणा पाकर श्रीयुत के०एम०मुन्शी ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के पक्ष में अपना संसदीय भाषण देते हुए कहा था कि- "पचास वर्ष के लगभग हुए,मैंने स्वामी दयानन्द की शिक्षा के प्रभाव में अनुभव किया कि देश की एकता के लिए हिन्दी का राजभाषा होना आवश्यक है।" इन सब तथ्यों और प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि साहित्यिक क्षेत्र में जिसे भारतेन्दु युग कहा जाता है, उसमें भी महर्षि दयानन्द ने भारतेन्दु की अपेक्षा महर्षि दयानन्द ने हिन्दी के भारतीयकरण की ओर अधिक ध्यान दिया था और उनका प्रभाव भी भारतेन्दु की अपेक्षा अधिक रहा था।

महर्षि दयानन्द की दूरदर्शिता का हमें तब बोध होता है जब हम देखते हैं कि तत्सम-प्रधान उनकी भाषा-नीति अधिक प्रभावशाली एवं कारगर सिद्ध हुई । हिन्दीतर प्रदेश के लोग तत्सम प्रधान भाषा की अपेक्षा तद्भवप्रधान भाषा में अधिक कठिनाई अनुभव करते हैं। यह इसलिए कि हिन्दीतर अन्य भारतीय भाषाएँ प्रायः संस्कृत से ही निकली हैं और संस्कृतनिष्ठा उनमें स्पष्ट झलकती है। वस्तुतः "यदि सरल हिन्दी का अर्थ वह हिन्दी है, जो हिन्दी भाषियों और अहिन्दी भाषियों दोनों को ही आसानी से समझ में आ जाए तो संस्कृत शब्दों का प्रयोग आवश्यक है क्योंकि जिन अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में संस्कृत का प्रभाव महत्वपूर्ण रहा है, वहां ऐसे शब्द आसानी से समझे जाते हैं । "(द्रष्टव्य-हिन्दी साहित्य के परिवर्तन के सौ वर्ष,पृष्ठ 156)

महर्षि दयानन्द की यह विशेषता है कि उन्होंने अपने ग्रंथों में भारतीय भाषाओं के मूल स्त्रोत संस्कृत का महत्व पहचान कर सरल तत्सम शब्दों के चयन की नीति अपनाई। उनके समकालीन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का झुकाव तद्भव शब्दों की ओर था। वे राज,बेर,बरस आदि तद्भव शब्दों का प्रयोग अधिक करते थे, जबकि महर्षि राज्य,बार,वर्ष आदि तत्सम शब्दों का । आज की हिन्दी में तत्सम शब्दों का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। आज हिन्दी भाषा का विकास महर्षि दयानन्द द्वारा प्रयुक्त संस्कृतनिष्ठ भाषा के अनुसार हो रहा है। इस दृष्टि से हिन्दी भाषा के स्वरूप को साहित्यिक स्तर और स्थिरता प्रदान करने में महर्षि दयानन्द का योगदान सर्वाधिक रहा है।

इस प्रकार यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा के विकास और स्थायित्व में आर्यसमाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द का अनन्यतम योगदान रहा है। यह और बात है कि किन्हीं पूर्वाग्रहों अथवा दुराग्रहों से प्रेरित होकर कोई उनकी

— शेष पृष्ठ ६ पर

पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा

— श्री पवन कुमार
एम.ए. बी.टी., लखनऊ

(जन्म-४ अक्तूबर १८५७ : निधन-३० मार्च १९३०)

पण्डित श्याम जी कृष्ण वर्मा भारतीय स्वतन्त्रता के प्रथम मार्ग दर्शकों में से एक थे। उनसे इस देश को असहयोग का अस्त्र मिला। महात्मा मोहनदास कर्मचन्द्र गाँधी के असहयोग सम्बन्धी विचार श्याम जी द्वारा स्थापित इन्डिया हाउस में रहकर बने। श्याम जी की विस्तृत और उत्कृष्ट जानकारी और सबल लेखनी से राष्ट्रीय संघर्ष का स्पष्टतम चित्र उभरा। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, श्री विपिनचन्द्र पाल तथा लाजपत राय आदि राष्ट्रीय नेताओं का उत्साह वर्धन किया, वहीं तत्कालीन कांग्रेस की राज भक्ति पर तीखे प्रहार किये।

राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य संघर्ष में श्याम जी कृष्ण वर्मा का दृष्टिकोण वैज्ञानिक तथा युक्ति संगत था विश्व जनमत की उपयोगिता स्वीकार करने वाले वे प्रथम भारतीय थे। भारत की स्वतन्त्रता के पक्ष में लन्दन, पेरिस और जिनेवा में अनवरत प्रचार किया।

मैडम कामा, वीर सावरकर, लाला हरदयाल, श्री सरदार सिंह राणा-भाई परमानन्द सेनापति बापट चम्पक रमन पिल्लै, वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, मदनलाल धींगरा आदि बहुत से देश भक्त श्याम जी कृष्ण वर्मा के व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रभावित हुए। अधिकांश ने श्याम जी के द्वारा प्रारम्भ की गयी छात्रवृत्तियों और इण्डिया हाउस का लाभ उठाया।

श्याम जी कृष्ण वर्मा चारित्रिक उज्ज्वलता के धनी, विचारों की परिपक्वता और प्रतिभाशाली व्यक्तित्व उनके प्रति अनायास सम्मान प्रकट करा देता था। उन्हें सम्मानित करने वाले विविध विचारों के व्यक्ति थे। आक्सफोर्ड के प्रोफेसर लिबरल पार्टी के ग्लेडस्टन जैसे राजनीतिज्ञ भारत के राष्ट्रवादी और क्रान्तिकारी आयरलैंड के देशभक्त फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड के रैडिकल रूस के कम्युनिस्ट तथा अन्यान्य देशों के अन्दोलन कारी।

स्वातन्त्र्य शिल्पी पण्डित श्याम जी कृष्ण वर्मा का जन्म 4 अक्टूबर 1857 को अपने ननिहाल भुज नामक नगर में हुआ था। भुज कच्छ रियासत की राजधानी थी, उसके समीप माण्डवी उपनगर है। माण्डवी में अधिकांश रूप से झिलवाणा जाति के लोग आबाद थे झिलवाणा लोग अपना सम्बन्ध क्षत्रियों से मानते हैं और अपने नाम में वर्मा जोड़ते हैं। श्याम जी के पिता श्री कृष्ण वर्मा भानुशाली परिवार के थे। वे धन्धे के लिए बम्बई चले गये थे किन्तु पूरे परिवार का भरण-पोषण न कर सकने के कारण उन्होंने अपनी पत्नी को माण्डवी भेज दिया।

श्यामजी का शैशव माता की छाया में बीता। माता लोरियों में अपनी संस्कृति की शिक्षा देती थी, स्कूल के पाठ को घर पर याद कराती थी, बालक श्याम प्राथमिक पाठशाला में सर्वप्रथम आया। माता ने अपने लाल को भुज के एक अंग्रेजी स्कूल में प्रवेश करा दिया। श्री कृष्ण वर्मा की आय बहुत सीमित थी ऐसी अवस्था के बच्चे को अंग्रेजी स्कूल में प्रवेश दिलाना बहुत कठिन कार्य था पुत्र वात्सल्य माता पुत्र का मार्ग प्रशस्त करते करते स्वयं आहुति बन गई। श्याम जी को 11 वर्ष का छोड़ कर स्वर्ग सिधार गई।

श्याम जी की आशा की किरण उनकी मातामही (नानी जी बनीं) उन्हीं की सार सँभाल में श्याम जी की शिक्षा चालू रही। सन् 1870 में उन्होंने मिडिल परीक्षा में फिर सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। जब श्याम जी 12 वर्ष के थे श्याम जी की जन्म भूमि में माता हीरकुँअर पधारीं उनकी सेवा कर,

उनके सम्पर्क में रहकर श्याम जी के अन्तःकरण में संस्कृत भाषा के अध्ययन की रुचि जागृति हुई गुण और प्रतिभा के पारखी सेठ मथुरादास ने श्री कृष्ण वर्मा के परिवार को बम्बई बुला लिया श्याम जी की नानी व बालक श्याम जी के रहने का प्रबन्ध एक धर्मशाला में करा दिया। सेठ मथुरादास जी एक दिन श्याम जी को अपने कुल पुरोहित पंडित विश्वनाथ शास्त्री के पास ले गये तथा बालक को उनका शिष्य बना दिया। श्याम जी ने नियमित पाठशाला में जाना आरम्भ कर दिया। श्लोक और व्याकरण कंठस्थ कराए जाने लगे। कुछ ही वर्षों में श्याम जी ने अष्टाध्यायी कण्ठस्थ कर ली। हाईस्कूल परीक्षा में श्याम जी ने रिकार्ड तोड़ अंक प्राप्त किए फलस्वरूप उन्हें कन्हदास गोकुलदास छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। बहुत उल्लास से श्यामजी को एलफिस्टन स्कूल में प्रवेश मिल गया। एलफिन्स्टन हाईस्कूल में श्याम जी की एक विद्यार्थी रामदास से गहरी मित्रता हो गई।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अक्टूबर 1874 में बम्बई में आगमन हुआ वहीं स्वामी जी का भाटिया धर्मशाला में व्याख्यान हुआ। इसी भाटिया धर्मशाला में श्याम जी का महर्षि दयानन्द से प्रथम दर्शन हुआ। रामानुज सम्प्रदाय के आचार्य पंडित कमलनयन के साथ महर्षि दयानन्द से शास्त्रार्थ देखने और सुनने वालों में श्याम जी कृष्ण वर्मा भी थे। महर्षि दयानन्द के बम्बई प्रवास की अवधि में उनको सर्वाधिक प्रभावित करने वाले युवक श्याम जी कृष्ण वर्मा थे अपने संस्कृत ज्ञान और सुधारवादी दृष्टिकोण के कारण श्याम जी शीघ्र ही महर्षि के प्रियपात्र बन गए। सन् 1875 में स्वामी दयानन्द ने बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की। श्याम जी आर्यसमाज के कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेने लगे।

श्याम जी कृष्ण वर्मा को अष्टाध्यायी कण्ठस्थ थी। वे इस ग्रन्थ के किसी भी सूत्र को उद्धृत कर सकते थे अष्टाध्यायी का यह विशेष अध्ययन उन्होंने बम्बई में स्वामी दयानन्द से किया था। महाभाष्य का भी अध्ययन उन्होंने किया था। पंडित भीमसेन शर्मा (आगरा वाले) ने वैदिक मंत्रालय अजमेर में श्याम जी की अष्टाध्यायी के सूत्रों के उच्चारण की परीक्षा ली थी। स्वामी दयानन्द से उन्होंने निघण्टु निरुक्त का भी अध्ययन किया था।

श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा के जीवनी लेखक श्री इन्दुलाल याज्ञिक ने स्वामी दयानन्द के लिए क्रान्ति गुरु का विशेषण प्रयुक्त किया था। उन्हें मानव हिमालय भी कहते थे श्री याज्ञिक श्याम जी के लिए क्रान्ति सेनापति शब्द का प्रयोग करते थे। श्री श्याम जी कृष्ण वर्मा का समग्र जीवन महर्षि दयानन्द के विचारों का प्रसाद था। हम भारतीयों के लिए गौरवपूर्ण आदर्श है। श्याम जी क्रान्ति कारियों के अग्रदूत थे। श्याम जी कृष्ण वर्मा के प्रेरणा स्रोत महर्षि दयानन्द थे। सन् 1877-78 में उन्होंने स्वदेश धर्म प्रेम प्रथम भारतीय के रूप में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में एम0ए0 और बैरिस्टरी की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1881 में बर्लिन और इंग्लैंड में प्राच्य विद्या के सम्मेलनों में भारत का प्रतिनिधित्व किया। रायल एशियाटिक सोसाइटी और इंग्लैंड एम्पायर क्लब के एक भारतीय सदस्य के रूप में मनोनीत हुए। उन्होंने प्रोफेसर मैक्सूलर तथा मोनियर विलियम्स के मन में वैदिक साहित्य के प्रति अभिरुचि जाग्रत की। श्याम जी ने इंग्लैंड में रहते हुए महर्षि दयानन्द तथा वैदिक धर्म का सिक्का जमाया। वे इंग्लैंड के प्राच्य विद्या विशारद की उपाधि से सम्मानित हुए। जर्मन, विद्वानों ने श्याम जी को पंडित की उपाधि से विभूषित किया भारत में आकर वे रियासतों में प्रयास करते हुए स्वतन्त्रता के लिए कार्य किया। पर सन् 1897 में पूना के चापेकर बन्धुओं द्वारा हुए पुलिस कमिश्नर उमरेन्दर रैण्ड की हत्या कर दी इस अपराध के सिलसिले में चापेकर बन्धुओं के अलावा केसरी के सम्पादक श्री बालगंगाधर तिलक पर मुकदमा चला तथा दो जागीरदार नाटुक बन्धुओं को भी नजरबन्द कर दिया तथा उनकी जागीर जब्त कर ली। श्याम जी इंग्लैंड चले गये। इंग्लैंड में श्यामजी ने इण्डियन-सोस्यालोजिस्ट का सम्पादन करके नैतिक सामाजिक आध्यात्मिक सुधार कर उन में जागृति प्रदान की। लन्दन प्रवासी भारतीयों का संगठन बनाने की दृष्टि से जुलाई 1905 में उन्होंने इण्डिया हाउस की स्थापना की कोश संकलन कर महर्षि दयानन्द छत्रपति शिवाजी राणाप्रताप आदि के नाम पर छात्रों को छात्रवृत्तियों की घोषणा की तथा मदनलाल धींगरा की स्मृति में चार छात्रवृत्तियों की घोषणा की तथा एक छात्रवृत्ति हरबर्टस्पेन्सर के सम्पादक को दी गई।

— शेष पृष्ठ ६ पर

राष्ट्रीय एकीकरण एवं राष्ट्र भाषा

• प्रचार्या डॉ० आशा रानी राय
उपमंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

किसी भी राष्ट्र की उन्नति राष्ट्रीय एकता पर आधारित होती है, यदि जन-साधारण एक ही सूत्र में बंधे हुए हैं तो उस राष्ट्र को उँचाई की चरम-सीमा पर पहुँचने से कोई नहीं रोक सकता है। कहा गया है "संघे शक्ति भेदे नाशः" वस्तुतः आज हमारे देश में जो साम्प्रदायिक रोष, अव्यवस्था, संघर्ष, चतुर्दिक हाहाकार है, इसका स्पष्ट कारण है, राष्ट्रीय एकता का अभाव।

हम उसी माता महि की सन्तति हैं, जिस भूमि पर राणा प्रताप, वीर शिवा जी, वीर सावरकर, शहीद भगतसिंह आदि ने अपने प्राणों की आहुति दे दी किन्तु आज हमारे अन्तःकरण में वह प्रेरणा, वह दर्द व भावना नहीं है। हम तो उस देश की सन्तान हैं जहाँ से विदेशियों ने ज्ञान सीखा। मनुस्मृति में आचार्य मनु कहते हैं:-

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः
स्वंस्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्याम् सर्वमानवाः।।

भारत के श्रेष्ठ ब्राह्मणों के चरणों में बैठकर सदाचार, सहिष्णुता, राष्ट्रप्रेम आदि की शिक्षा लिया करते थे जिससे इसी आर्यावर्त पर दिव्य शिक्षाविद्, देशभक्त, मनीषी तथा क्रांतिकारी हुए, जिन्होंने इस देश की माटी में मिल जाना ही अपना गौरव जाना, आन की शान थी, मर्यादा थी, वर्तमान के ठेकेदार यह भूल बैठे कि राष्ट्रभाषा ही किसी देश की उन्नति व विकास की आधार है। परस्पर अनुभूतियों व भावनाओं को व्यक्त करने का सार्वाधिक सशक्त साधन भाषा है। विभिन्न भाषा-भाषी, धर्मसम्प्रदाय आचार-विचार, व्यवहारों, वेशभूषा में विभिन्नता से युक्त होते हुए भी एक वस्तु इसे एक्य सूत्र में बांधे है, जो एक माला के अलग-अलग मोतियों के रूप में गुम्फित विभिन्न इकाईयों की समष्टिमें एक्य की भावना को फलीभूत कर रही है। वेदान्त दर्शन में इसी एक्य को प्रदर्शित किया गया है। कठोपनिषद में मौलिक एक्य का समर्थन किया गया है- एको

एको वशी सर्वभूतान्तरत्मा
एकं रूपं बहुधा यः करोति।
तमात्मसंस्यं येऽनुपश्यन्ति धीरा
स्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्।।

प्राचीन काल में संस्कृत जनसम्पर्क व राष्ट्र की भाषा थी, जो मानव में न केवल सामाजिक चेतना, अपितु भावात्मक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करने में समर्थ है। यजुर्वेद के 19 अध्याय में स्पष्ट किया है कि कभी सत्य में अश्रद्धा व असत्य में श्रद्धा नहीं करनी चाहिए क्योंकि ईश्वर ने दोनों रूपों को सुविवेचित कर पृथक-पृथक कर दिया अतः सत्य में श्रद्धा व असत्य में अश्रद्धा रखनी चाहिए-

दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत् सत्यानृतते प्रजापतिः
अश्रद्धानृते दधाश्रद्धा सत्ये प्रजापतिः।।

किन्तु ऐसी विडम्बना है कि भारत को दासता की बेड़ियों में अधिक दिन टिकने हेतु लार्ड मैकाले ने भारतीय साहित्य को यूरोपियन पुस्तकालय की एक आलमारी के बराबर बताया और भारत में रूप रंग से भारतीय किन्तु व्यवहार से अंग्रेज बाबू वर्ग लाने का गौरव प्राप्त किया आज के 37 वर्षों बाद भी हम मानसिक गुलामी से मुक्ति नहीं प्राप्त कर सकें हैं, अपितु इसकी जड़ों को सिंचितकर हरा-भरा करने में योगदान कर रहे हैं। जानते हुए भी कि इस भाषा रूपी पौधे हेतु भारतीय वातावरण उपयुक्त नहीं है।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व भी हमारे देश के ऋषियों ने राष्ट्रभाषा का स्वप्न देखा था, ऋषि दयानन्द संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पंडित होते हुए भी सर्वजनभ्रान्त व सुलभ हिन्दी भाषा में ग्रन्थों के लिखने का अभिप्रायः ही राष्ट्रभाषा पद पर आसीन कराने का संकेत था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद पुरुषोत्तमदास टण्डन, महात्मा गाँधी आदि ने इस विषय में विचार व्यक्त किया कि इस देश की एक अपनी राष्ट्र भाषा होनी चाहिए और वह हिन्दी ही हो, क्योंकि यह भाषा संस्कृत के अत्यंत समीप है तथा सर्वव्यापक है। यदि हम सूक्ष्मता से अन्य विकसित देशों की ओर देखें तो ज्ञान होगा कि जिस देश में अपनी एक राष्ट्र भाषा है, उस देश में राष्ट्रीय एकता अधिक दृढ़ है जैसे जापान, जर्मनी, रूस आदि देश। हमारे संविधान की 343 धारा के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखित संविधान निर्माण के 15 वर्षों बाद अर्थात 26 जनवरी, 1965 को राष्ट्रभाषा पूर्णरूप से देश में होनी चाहिए थी। परन्तु दुर्भाग्य से यह व्यवहारिक रूप से नहीं हो पाया। हमारे देश को दो टुकड़े भाषा के आधार पर ही किए जाएं, भारत व पाकिस्तान। तत्पश्चात पुनः प्रदेशों का विभाजन भी भाषा के आधार पर किया, तमिल भाषी लोगों हेतु तमिलनाडु, बंगाली भाषियों हेतु बंगाल, पंजाबी भाषियों हेतु पंजाब आदि। परन्तु क्षेत्रीय भाषाओं के विभाजन के साथ-साथ एक राष्ट्र भाषा निश्चित रूप से हो, जो सम्पूर्ण देश को माला के साथ एवं सूत्र में बांधे रहे, इसका गौरव हम केवल हिन्दी भाषा को दे सकते हैं चूंकि हिन्दी भाषा के शब्द-भण्डार में कभी भी कोई कमी होगी तो तत्काल पूर्ण वैज्ञानिक भाषा संस्कृत से उसकी पूर्ति कर सकता है। हिन्दी भाषा के राष्ट्र को ऐसे कवि दिये जिन्होंने अपनी रचनाओं से न केवल जन-जन में रोमांच व देश के प्रति शौर्य की भावना भरी अपितु राष्ट्रीय एकता को भी मजबूत किया। शहीदे आजम भगतसिंह आजाद आदि जिस धुनको गाते हुए अपना बलिदान दिया। आज भी रामधारीसिंहदिनकर और मैथिलीशरण गुप्त की रचनाओं को सुनकर हृदय असीम गौरव व रोमांच से परिपूर्ण हो जाता है। इनके अतिरिक्त तमिल भाषा के श्री सुब्रह्मण्यम् भारतीय उर्दू के सुप्रसिद्ध कवि इकबाल एवं बंगाल के कवि रवीन्द्र नाथ टैगोर आदि ने भी अपनी रचनाओं से राष्ट्र प्रेम, मातृभाव व देश भक्ति को सम्बल दिया।

किसी विद्वान ने सत्य ही कहा है कलम तलवार से अधिक शक्तिशाली है। मनुष्यको अपने क्षुद्र स्वार्थों आदि का राष्ट्र के सम्मुख तिलांजलि देकर केवल राष्ट्र हित व एकता हेतु कार्य करने चाहिए। आयुर्वेद के तृतीय सूत्र प्रथम मंत्र में सहृदय सामनस्य नविद्वेश कृणोमि वः।

अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।

अर्थात् हे जीवो मैंने तुम्हें हृदय व बुद्धि को द्वेश न चाहने वाला बनाया है, प्रत्येक के साथ ऐसा व्यवहार करे जैसे गाय नवजात बछड़े के साथ करती है। गाय बछड़े के नये मल को दूर करके अपना मीठा दूध पिलाती है, उसी प्रकार हमें दूसरों की बुराइयों को दूर करके सहायता करनी चाहिए।

यदि हमारे मस्तिष्क में उपर्युक्त भावना रहेगी तो हम राष्ट्र भाषा का सम्मान करते हुए सदैव एक होने का प्रयास करेंगे क्योंकि हमारे प्राचीन ऋषियों की यही शिक्षा थी।

उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम् केवल राष्ट्रीय नहीं, अपितु अन्तर्राष्ट्रीय एकता के कार्य न प्रयास थे अतः हमें भी-

सं गच्छध्वं संवदध्वं सं वो मंनासि जानताम्
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते। ■

दानियों से अपील

देहरादून जनपद में सुरम्य पर्वतीय पर्यावरण में चकरौता छोटा-सा नगर है। इस नगरी में सत्तर-अस्सी साल पहले कर्मठ आर्यजनों ने आर्यसमाज की स्थापना करके मन्दिर का निर्माण करा दिया था। विगत मई में भीषण अग्निकाण्ड में वहां का आर्यसमाज मन्दिर नष्ट हो गया है।

यह जनजाति-क्षेत्र, सांस्कृतिक दृष्टि से अलग-थलग रहा है और वेद-प्रचार की दृष्टि से अत्यन्त पिछड़ गया हुआ है और यहां वेद-प्रचार की अत्यन्त आवश्यकता है इसलिए मन्दिर का पुनर्निर्माण अनिवार्य आवश्यकता है ताकि वहां जो प्रचारक भेजा जाए, उसके ठहरने की सुविधा भी हो जाए और यज्ञशाला, सत्संग-भवन, पुस्तकालय, धर्मार्थ औषधालय आदि के लिए स्थान बन जाए।

अतः ऐसे 75 दानियों की आवश्यकता है जो मन्दिर-निर्माण के इस कार्य के लिए कम से कम एक-एक हजार रूपये दे दें। इससे कम राशि भेजने वालों का भी धन्यवाद होगा। धन-दान के लिए "आर्य उप-प्रतिनिधि सभा, देहरादून" के नाम का रेखांकित चैक/बैंक ड्राफ्ट इस सभा के प्रधान श्री देवदत्त बाली के पास (बाली-वाच कम्पनी, 163-2, पल्टन बाजार, देहरादून में) दिया/भेजा जा सकता है:

श्री मनमोहन तिवारी
सभा मंत्री

उर्दू के विरोध में बुद्धजीवी सम्मेलन

उत्तर प्रदेश मन्त्रिमण्डल द्वारा उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा घोषित करने के निर्णय पर रोष प्रकट करने के लिए लखनऊ नगर के प्रमुख बुद्धिजीवियों/साहित्यकों तथा अनेक सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की एक बैठक आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी की अध्यक्षता में दिनांक- 24-9-89 को आर्यसमाज गणेशगंज में सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर अनेकों वक्ताओं ने इसे कांग्रेसी शासन द्वारा एक वर्ग विशेष के प्रति तुष्टीकरण का अंग बताते हुए शासन के इस निर्णय को असामयिक तथा अदूरदर्शी बताया तथा प्रस्तुत होने वाले विधेयक को वापस लिए जाने का आह्वान किया। प्रमुख वक्ता श्री- ब्रह्मदत्त दीक्षित ने कहा कि चुनाव के ऐन मौके पर वर्ग विशेष को प्रसन्न करने के लिए यह एक रिश्वत दी जा रही है। नैतिकता का तकाज़ा है कि रिश्वत देने वाला और लेने वाला दोनों दण्डनीय हैं। एक बार पहिले भी इस प्रकार का प्रयास किया गया था किन्तु उस समय तत्कालीन खाद्यमन्त्री स्व0- श्री वासुदेव सिंह के घोर विरोध के कारण शासन को अपना निर्णय वापस लेना पड़ा।

अन्त में अध्यक्ष श्री पं0 इन्द्रराजजी ने समस्त देश प्रेमी तथा हिन्दी प्रेमी जनता का आह्वान करते हुए बताया कि आज इस देश में भ्रष्टाचार महँगाई चरमसीमा पर है। गन्दा साहित्य गलीगली में बिक रहा है। नशा इतने व्यापक रूप में फैल रहा है कि देश की युवाशक्ति पगुं बनती जा रही है ऐसे समय जबकि एक ओर संस्कृत को काटकर ही रख दिया गया है और अब बिहार के बाद उ0प्र0 में उर्दू को द्वितीय भाषा बनाया जा रहा है। देश की संस्कृति और भारतीयता का क्या होगा इसका तनिक भी बिचार हमारे शासकीय नेताओं को नहीं है। इस समय हमारा प्रमुख कर्तव्य जनजागरण द्वारा तथा कानून की शरण लेकर उर्दू को प्रदेश की द्वितीय राजभाषा बनाने वाले विधेयक को समाप्त कराना है।

इस अवसर पर लखनऊ के बुद्धिजीवियों की एक संघर्षसमिति श्री- पं0 श्रीनारायण चतुर्वेदी की अध्यक्षता में गठित की गई--

दिनांक- 25-9-89 को श्री पं0 श्रीनारायण- चतुर्वेदी के नेतृत्व में एक विशाल रोष यात्रा लखनऊ में निकाली गई और मुख्यमंत्री को एक ज्ञापन भी प्रस्तुत किया गया।

- संवाददाता।

सोनभद्र (मिर्ज़ापुर का उत्सव)

- आर्यसमाज अपना वार्षिकउत्सव दि0- 7,8,9 नवम्बर 89 को धूम-धाम से मना रही है। जिसमें डा0 देवेन्द्र- कुमार सत्याशी {पटना} पं0 श्याम देव- शास्त्री {अलीगढ़} विश्राम सिंह आर्य {चुनार} एवं स्वामी जगदीश्वरा नन्द {दिल्ली} एवं रामचन्द्र जी क्रान्तिकारी {बिहार} इत्यादि विद्वान पधार रहे है।

शोक समाचार

पं० शिवकुमार शास्त्री दिवंगत

मेस्टन रोड, कानपुर

आर्यसमाज, मेस्टन रोड, कानपुर की यह शोक सभा माननीय पं0 शिव कुमारजी- शास्त्री के देहावसान पर शोक व्यक्त करते हुए उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करती है श्री शास्त्री आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वानों में से एक थे। आपके न रहने से जो आर्यसमाज को क्षति हुई है वह उसकी पूर्ति सम्भव नहीं है परमात्मा श्री शास्त्री जी को सद्‌गति प्रदान करें।

सीसामऊ, कानपुर

आर्य जगत के सुप्रसिद्ध विद्वान पूर्व संसद सदस्य व आर्य प्रतिनिधिसभा, उत्तर प्रदेश के पूर्व प्रधान श्री पं0 शिवकुमार जी शास्त्री {नई दिल्ली} के आकस्मिक देहावसान पर 5-9-89 को सायंकाल- आर्यसमाज, सीसामऊ, कानपुर में दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए शान्ति यज्ञ किया गया तथा आर्यसमाज के प्रधान श्री पं0 लक्ष्मणकुमार- जी शास्त्री की अध्यक्षता में शोक-सभा हुई, जिसमें वक्ताओं ने श्री शिवकुमार जी शास्त्री के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं तथा उनके विद्वतापूर्ण भाषणों एवं सौम्य- स्वभाव का वर्णन करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

जलाली, अलीगढ़

वैदिक विद्वान पं0 शिवकुमारजी शास्त्री के निधन का समाचार सुनकर आर्यसमाज जलाली जनपद अलीगढ़ के साप्ताहिक सत्संग में शोक सभा हुई जिसमें दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी तथा शोकाकुल परिवार के लिये अपनी सद्‌भावनाओं का समर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा स प्रार्थना की कि अपार दुख को सहन करने की शक्ति दें।

गवाँ, बदायूँ

- दि0- 10-9-89 के सार्वदेशिक में श्री शिवकुमार शास्त्री के निधन के समाचार पढ़ा, पढ़ कर हृदय को आघात पहुँचा, श्री शास्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान तथा गुरुकुल ज्वालापुर के अधिष्ठाता रहे, ईश्वर दिवंगत आत्मा को सदगति दे तथा शोकाकुल परिवार को धैर्य प्रदान करे।

प्रभात आश्रम में शोक सभा

गुरुकुल प्रभात आश्रम के सभागार साधना कक्ष में पं0 शिवकुमार शास्त्री के निधन पर शोक सभा का आयोजन किया गया। श्री वाचस्पति व्याकराकचार्य ने शास्त्री जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि "ऐसी विषम परिस्थितियों में जब समाज में विभिन्न कुरीतियाँ अपना पैर जमा रही हैं, बाह्य व आन्तरिक विघटनकारी तत्व पनप रहे हैं, उस समय शास्त्री जी का निधन आर्य जगत् की अपूरणीय क्षति है। हमने अपना एक हितैषी, गुरुकुल का एक शुभचिन्तक खो दिया है।

सभी सभा जनों ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिये मौन रहकर प्रभु से प्रार्थना की। तत्पश्चात् शान्ति पाठ से सभा समाप्त हुई।

आर्य कन्या कालेज में सभा प्रधान

आर्य कन्या इण्टर कालेज मुरादाबाद के वार्षिकोत्सव एवं राष्ट्रपति शिक्षक पुरस्कार प्राप्त कु0 सावित्री खन्ना प्राचार्या के अभिनन्दन समारोह में मुख्य अतिथि- श्री पं0 इन्द्रराज जी प्रधान आर्य प्रतिनिधिसभा उ0प्र0 ने अपने ओजस्वी भाषण में जनता को सचेत किया कि वर्तमान पीढ़ी को भ्रष्ट करने तथा उनका चारित्रिक पतन करने हेतु विदेशी षड्‌यन्त्र निरन्तर जारी है। यदि आने वाली पीढ़ी को इससे सचेत न किया गया तो इसके दुष्कर परिणाम होंगे। महर्षि दयानन्द ने शिक्षा का महत्व समझा था। आर्यसमाज का इस क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य रहा है। महिलाओं में शिक्षा का प्रसार ही देश में आने वाली पीढ़ी को सजग करने में बहुत बड़ा योगदान दे सकता है। आज संविधान को तोड़ा जा रहा है, यह बड़े ही दुर्भाग्य की बात है। यदि यही क्रम निरन्तर चलता रहा तो देश के टुकड़े-टुकड़े हो जावेंगे और एक बार फिर हजारों वर्षों के लिए अन्धकार छा जावेगा। आर्यसमाज देश का प्रहरी है हम सरकार को सचेत करते हैं कि अब भी समय है आर्यसमाज को आन्दोलात्मक रूप लेने हेतु बाध्य न करें।

इस अवसर पर जो कार्यक्रम बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत किए गए अत्यधिक प्रभावशाली थे। विशेष कर भारत-भारती- नाट्‌यम्। इस नाट्‌यम् द्वारा बालिकाओं ने प्राचीन संस्कृति का दृश्य बड़े ही मार्मिक ढ़गं से प्रस्तुत किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के अन्तर्गत कार्यरत उपदेशकों, प्रचारकों, ढोलक वादकों के माह-अक्तूबर, ८९ के प्रचार कार्यक्रम

1- श्री पं0 केशव देवजी शास्त्री
वैदिक धर्मप्रचारक महाविद्यालय ब्रजघाट
2- श्री पं0 शिवकुमार जी शास्त्री
अवैतनिक अवकाश
3- श्री विश्वम्भरदत्त जी विद्या-वाचस्पति
1 से 12 यज्ञ गदीसलेमपुर 13,14, 15 रामनगर 18,19,20 सुल्तानपुर पट्टी नैनीताल।
4- श्री डा0 विजय पाल सिंह जी
9 से 12 शमसाबाद §आगरा§ 16,17, 18, सुदागंज शाहजहाँपुर।
5- श्री सुकर्मानन्द जी
1 से 4 यज्ञ सिरसी 6 से 10 मिलक कैलवकरी 14,15,16 गवां §बदायूं§
6- श्री जयन्त कुमार जी आर्य
श्री प्रधान जी के निर्देशन में।
7- श्री योगेश दत्त जी आर्य
1 से 3 बिजनोर 4,5,6 असगरपुर-§बिजनौर§
12,13,14 मुड़ियापवार §शाहजहांपुर§
15,16,17 नगला माहेश्वरी §बिजनौर§
18 से 21 नजीबाबाद 29,30,31 मथुरा।
8- श्री ठा0 गजराज सिंह जी
1 से 3 अवकाश 7,8,9-कुसैला §सीतापुर§
13,14,15 रामनगर 16 से 30 बदायूं।
9- श्री कमलदेव जी आर्य
10 से 14 कोसी कलां §मथुरा§
18,19,20 सुल्तानपुर पट्टी §नैनीताल§
10- श्री ब्रह्मानन्द जी आर्य
1 से 7 विश्राम इमेका पुरवा §सुल्तानपुर§ 8,9,10 हरदोई 11 से 15 सांडी §हरदोई§
18 से 24 केऊटी §हरदोई§
11- श्री रामचन्द्र जी शर्मा
1 से 3 बिजनौर 12,13,14 संडीला §हरदोई§
16,17,18 थाना भवन §मुज्जफरनगर§
20,21,22 बहादुर गढ़ §गाजियाबाद§
29,30,31 मथुरा।
12- श्री सीताराम जी आर्य
9,10,11 बांगरमऊ, उन्नाव।
13- श्री सीताराम जी शर्मा
14- श्री नेम प्रकाश जी आर्य
1 से 10 विश्राम इमेका पुरवा §सुल्तानपुर§
12 से 15 सांडी §हरदोई§
18 से 24 केऊटी §हरदोई§
29,30,31 मंडीबांस §मुरादाबाद§
15- श्री युगल किशोर जी आर्य
1 से 10 लालगंज §रायबरेली§
11 से 14 ओहदपुर §हरदोई§
16- श्री तेजपाल सिंह जी आर्य
3 से 5 बिसवां §सीतापुर§
18 से 20 सुल्तानपुर पट्टी §नैनीताल§
17- श्री विक्रमदेव जी आर्य
1 से 3 सरायतरीन §मुरादाबाद§
4 से 6 असगरपुर §बिजनौर§
14 से 16 गवां- §बदायूं§
19 से 22 वाराणसी
18- श्री व्रजपाल जी शर्मा
1 से 3 बिजनौर
9 से 12 शमसाबाद §आगरा§
16 से 18 सुदागंज §शाहजहांपुर§
19- श्री खेम चन्द्र जी आर्य
आर्यसमाज पीलीभीत के अन्तर्गत
20- श्री मनवीर सिंह जी आर्य
श्री प्रधान जी के निर्देशन में
21- श्री धर्म प्रकाश प्रेमी
1 से 3 बिजनौर
22- श्री ओमलाल जी आर्य
1 से 10 लालगंज §रायबरेली§
23- श्री अमरलाल जी आर्य
1 से 20 विश्राम इमेका पुरवा
15 से 30 बदायूं §सुल्तानपुर§
24- श्री कशमीरी लाल आर्य
1 से 3 बिजनौर 4,5,6 असगरपुर
12,13,14 मुड़ियापवार §शाहजहांपुर§
15,16,17 नगला माहेश्वरी बिजनौर
18 से 21 नजीबाबाद
29 से 31 मथुरा
25- श्री सुभाष चन्द्र आर्य
श्री धर्म प्रकाश प्रेमी के साथ
26- श्री आशा आर्या
तेजपाल सिंह जी आर्य के साथ।

मनमोहन तिवारी
मंत्री

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता, उपदेशक विभाग
अमरोहा (मुरादाबाद)

आर्य प्रतिनिधि सभा-उ०प्र०, लखनऊ

- दि0 10 अक्तूबर 1989 को सुबह 8 बजे पन्योरा§शाहजहांपुर§ में आर्यावर्त समाज सेवी मंच द्वारा एक बैठक होगी जिसकी अध्यक्षता ग्राम प्रधान ठा0 राकेशपाल करेंगे। जिसमें प्रदेश में उर्दू को राज्यभाषा बनाने, आरक्षण, शराब, जुआ, चोरियाँ, स्वच्छ न्याय आदि समस्याओं पर विचार-विमर्श होगा। जनता से अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने की प्रार्थना है।

- आर्यसमाज खण्डवा §म0प्र0§ में दि0 4 सितम्बर से 17 सितम्बर89 तक विभिन्न महानुभावों के यहाँ यज्ञ तथा सत्संग धूमधाम से हुआ। जिसमें गृहस्थियों में वैदिक धर्म का अच्छा प्रभाव पड़ा।

कृतज्ञता ज्ञापन

मैं 6 जून 1989 को पहाड़गंज पुल पर दिल्ली में बस एक्सीडेन्ट में घातक रूप में घायल हो गया था। दस बारह स्थान की हड्डियां टूट गई और बचने की आशा ही धूमिल हो चुकी थी क्योंकि उन दिनों दिल्ली के समस्त हस्पिटलों में डाक्टरों की हड़ताल चल रही थी। अब मैं स्वास्थ्य लाभ कर रहा हूँ, आर्य वीर दल के समग्र अधिकारियों, आर्य वीरों आर्य जगत के गणमान्य नेताओं तथा आर्यगणों ने स्थान-स्थान पर मेरे लिए यज्ञानुष्ठान शुभकामनादि की है और अनेक बन्धुओं ने आर्थिक सहायता भेजकर अपनी अन्तःकामना से मुझे स्नेहिल आदेश दिया, उनके प्रति मेरे पास शब्द ही नहीं हैं बल्कि मैं कृतज्ञ भाव में उन्हें नमन करता हूँ।

- बालदिवाकर हंस
§स्वतन्त्रता सेनानी§

आर्यसमाज कुठिला§हरदोई§ द्वारा प्रचार

श्री ब्रह्मानन्द आर्य पं0 नेमप्रकाश धनुर्धर, पं0 युगुलकिशोर भजनोपदेशक, श्री सीताराम-प्रचारक आदि ने कुठिला, कासीपुर, बेहटागोकुल, टोडरपुर, सलेमपुर, निजामपुर, यासीनपुर, विजगवाँ सधिनावाँकोट, रद्येपुरवा, हसनापुर, पाली, टोलवा, ओड़ेरी, रामापुर, वर्रा, छतिहा, हैवतपुर, उमरौली, जैतपुर, मत्तीपुर, जलियापुर, भीमयावाँ, अमरिंता में वैदिक धर्म का प्रचार किया। एक अनाथ कन्या का विवाह कराया, बस स्टैण्ड बेही कुठिला में पं0 लालाराम ने एक नल लगवाया जिसमें श्री सुरेशचन्द्र प्रधान आर्यसमाज का सहयोग रहा।

स्व० पं० शिवकुमार शास्त्री

"प्रणव" शास्त्री
एम०ए०
महोपदेशक शास्त्री-सदन रामनगर
(कटरा) आगरा

कण-कण बोल उठा धरती का,
उन्मनमन से प्यारा है
देव। करो स्वीकार सजल
नयनों से नमन हमारा है।
आर्य नगर की धरा धन्य है,
जिसने तुमको जन्माया।
गायत्री माता ने पाला पोषा,
तुमको दुलराया।
पिता राम तो चले स्वर्ग को
तोड़ ममत्व पिटारा है।।1।।
साधु-आश्रम के प्रांगण में,
वेदारम्भ रचाया था।
सन्ध्या, हवन, उच्च जीवन का,
दृढ़ स्तम्भ बनाया था।
पूज्य सर्वदानन्द सन्त का,
आशिष पाया प्यारा है।।2।।
गुरुकुलीय गंगा में,
तुमने गोते खूब लगाये थे।
दर्शन का आनन्द प्राप्त कर,
संसय सभी भगाये थे।
काशी, वेदामऊ में पाया,
विद्या का भण्डारा है।।3।।
तुम संस्कृत साहित्य सुधा के,
सागर से लहराये थे।
वैदिक वाङमय रत्न यत्न से,
चुन-चुन कर प्रिय लाये थे।
वरद वाग्मिता ने भी,
यश उज्जवल विस्तारा है।।4।।
गुरुकुल झेलम, ज्वालापुर को,
आर्य धरा में चमकाया।
आर्य प्रतिनिधि सभा सुरथ को,
प्रगति पन्थ पर दौड़ाया।
यह प्रदेश पंजाब जानता,
कौशल कार्य तुम्हारा है।।5।।
या प्रकाश सा मित्र प्रेरणा,
राजनीति की ले बाँकी।
बहे न संसद की धारा में,
करते थे तुम तैराकी।
शिवकुमार सारस्य गगन का,
मात्रा उच्च सितारा है।।6।।
स्वाध्याय नन्दन के चन्दन,
चेता, नेता, वरदानी।
"श्रुति-सौरभ से ग्रन्थ रत्न के,
तुम लेखक थे लासानी।
जिसका गौरव गण्य, मान्य,
विद्वान् जनों ने धारा है।।7।।
क्या विधि का संयोग योग भी,
चिर वियोग में ढल जाता।
यादों का हिमराज शोक के,
तीव्र ताप से गल जाता।
सोमलता भी मुरझाती,
शिव करता जबकि किनारा।।8।।
गये पूज्य सुरलोक लोक को,
आशिष दे उपकार करो।
"प्रणव" काव्य की किंशुक कोड़ियाँ,
चरणार्पित स्वीकार करो।
अश्रु प्रपूरित आर्य जगत् की,
यह श्रद्धांजलि धारा है।।9।।

हो गई यह दुर्दशा

—धर्मेन्द्रनाथ "अलिन्द"
हल्दौर (बिजनौर)

भ्रष्ट पतित समाज विकृत,
हो गया वातावरण
हो विश्व का चिन्तन,
पराभव गिर गये हैं आचरण
अर्घ पाते हैं असुर,
सुर त्रस्त आदर हीन हैं
नाम नूतन सभ्यता का,
सभ्यता पर दीन हैं
प्रखर भौतिक वाद नित-नित,
सुप्त हैं सत साधना
तुच्छातितुच्छ प्रयास से,
बस अर्थ की आराधना
राज्य की तो बात क्या नहीं,
त्याज्य अंगुल भर धरा
सौमित्र सा संयम कहाँ,
तुम सीन आज ऋतुम्भरा
कौन भाभी के न अब,
कुण्डल तलक पहचानता
और नूपुर वन्दना ही,
लक्ष्य अपना मानता
हो भले ही कैद सिय रिपु,
नारि को सम्मान दे।
धर्म छूटेगा न चाहे,
लक्ष्मण निज प्राण दे
रो रही शबरी दुखित हो,
जन्म गत निज वर्ण पर
हैं कहाँ नृप भरत चौदह वर्ष,
सोये पर्ण पर
त्याग कर अपना अहं माने,
सुमित्र निषाद को
दे केकयी को मान वन के,
भूल कष्ट विषाद को।
धृति धैर्य फूंका अग्नि ने,
प्रतिशोध और अमर्ष की
हो गई यह दुर्दशा,
है राम भारत वर्ष की
फूंक दो तूणीर कस कर,
थाम सायक चाप को
इस अनीतिकता पिशाचिन के,
कुटिल अभिशाप को
इस विजय के पर्व का,
चाहे नहीं सम्बन्ध है
किन्तु तब आदर्श की,
सर्वत्र व्याप्त सुगन्ध है।।

पृष्ठ ४ का शेष

गौरवपूर्ण भूमिका का समुचित उल्लेख न करें, पर वास्तविकता यह है कि महर्षि दयानन्द की हिन्दी गद्य के स्वरूप निर्धारण और उसे स्थायित्व प्रदान करने में भूमिका किसी भी दशा में भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से किसी प्रकार भी कम नहीं रही, अपितु कई अंशों में उनसे अधिक ही रही है। यह भारतेन्दु के भाग्य की बात है कि वे हिन्दी के भव्य-भवन के कलशस्थानी हो गए जबकि महर्षि नींव के पत्थर बन गये। लोगों की दृष्टि प्रायः कलश पर ही रहा करती है, नींव पर नहीं। पर क्या कभी कोई भवन बिना सुदृढ़ नींव के कभी टिका है? महर्षि नींव के पत्थर हैं और पत्थर कहीं दिखाई देता है? अतः यही कहना चाहते हैं कि -

गड़ गये जो नींव में, उन पत्थरों को याद कर लो,
जो नहीं देते दिखाई।

पृष्ठ ५ का शेष....

वीर नायक स्वातन्त्र वीर सावरकर तथा मदनलाल धींगरा आदि क्रान्तिकारी युवकों ने यहीं उनके विचारों से प्रभावित होकर उनसे देश भक्ति की दीक्षा ली। लाला हरदयाल ने भी उनसे प्रेरणा ली। सेनापति बापट और देवतास्वरूप भाई परमानन्द के वे प्रेरणा स्रोत थे।

अपनी बढ़ती विद्रोही नीतियों के कारण उन्हें इंग्लैंड से जाना आवश्यक हो गया उन्होंने पेरिस को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। वहाँ भी इण्डिया हाउस की स्थापना की। जब आन्दोलन को गति देते हुए साम्राज्यशाही के विरुद्ध लन्दन, स्विजरलैंड इटली, जर्मनी, जावा, इजिप्ट, चीन, रूस, मलाया, आदि देशों की पत्र-पत्रिकाओं में क्रान्तिकारी लेख प्रकाशित कराये। क्रान्तिकारी जीवन बनाने की विधियाँ प्रकाशित कीं। भारत आने वाले स्टीमरों द्वारा क्रान्तिकारियों कोशस्त्रास्त्र भिजवाने के अपराध में वहाँ की सरकार द्वारा उनको राजद्रोही घोषित कर दिया गया शस्त्रास्त्र चेष्टाओं के द्वारा स्वाधीनता प्राप्त की वकालत करने पर भी श्याम जी का विश्वास था कि अभी सभा करने की स्थिति नहीं आयी थी। उनकी धारणा थी कि अंग्रेज सरकार से पूर्ण असहयोग करके ही स्वाधीनता अर्जित की जा सकती है, उन्होंने निःसकोच भाव से क्रान्तिकारी चेष्टाओं का समर्थन किया साथ ही वे इस बात पर जोर देते रहे कि शान्ति पूर्ण बहिष्कार तथा विदेशी शासन के प्रति पूर्ण असहयोग के द्वारा ही उसे समाप्त किया जा सकता है। उन्होंने देश के लिए प्राण देने वालों के त्याग व बलिदान की प्रसंशा की साथ ही विदेशी तानाशाही को समाप्त करने के लिए शान्ति पूर्ण युद्ध का जयघोष भी किया।

फ्रांस और इंग्लैंड के राष्ट्रीय अभिलेखागारों की छानबीन की जाय तो नवीन तथ्य प्रकाश में आ सकते हैं। महान लेखक मैक्सिम गोर्की तथा अन्य सभी क्रान्तिकारियों के साथ श्याम जी का जीवन्त सम्पर्क था गोर्की ने अपने लेख में श्याम जी कृष्ण वर्मा को भारत का गैरीबाल्डी और मैजिनी जो संसार भर की जनता को साम्राज्यवादियों की दासता से मुक्त कराने वालों में मैजिनी थे, श्याम जी का जीवन्त सम्पर्क था।

यदि श्याम जी कृष्ण वर्मा स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में न आये होते तथा उनके क्रान्तिकारी विचारों का संस्पर्श उन्हें न मिला होता तो वे क्रान्ति सेनापति का स्वरूप न प्राप्त कर पाते। जब वे दयानन्द के सम्पर्क में आये ऋषि के क्रान्तिकारी विचारों का स्पर्श उन्हें प्राप्त हुआ। श्याम जी का समग्र क्रान्तिकारी अस्तित्व दयानन्द के विचारों पर निर्भर था, उन्हें उनके क्रान्तिकारी विचारों व कार्यों की जड़ में उनके गुरु दयानन्द थे। 30 मार्च 1930 को सांयकाल भारतीय राष्ट्रवाद का यह सूर्य सदा-सदा के लिए अस्त हो गया। भारत सरकार ने 4 अक्टूबर 89 को प्रसिद्ध क्रान्तिकारी वीर श्याम जी कृष्ण वर्मा की पुण्य स्मृति में डाक टिकट जारी किया जिसके लिए आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान-श्री पं० इन्द्रराज तथा सभामंत्री श्री मनमोहन-तिवारी जी ने भारत सरकार को बधाई दी। □

लन्दन में वैदिक धर्मप्रचार

लन्दन- विश्वहिन्दू सम्मेलन की कार्यकारिणी समिति का उद्घाटन गायत्री मन्त्र के साथ वेदपथिक पं0 धर्मवीर जी आर्य झण्डाधारी ने किया। उन्होंने अपने भाषण में यह प्रस्ताव किया कि विश्वभर के सभी हिन्दू संगठित होकर भारत माता की रक्षा, भारतीय संस्कृति की रक्षा, हिन्दी और संस्कृति की रक्षा करें तथा अंग्रेजी का बहिष्कार करें। इन प्रस्तावों का समर्थन सबने करतल ध्वनि से किया।

श्री दत्तात्रेय जी अमेरिका में

संयुक्त राज्य अमेरिका के हैटिंगटन नगर में स्थित अन्तर्राष्ट्रीय अध्ययन के केन्द्र मार्शल विश्वविद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में तथा विश्वविद्यालय के ही छोटे-छोटे अनोपचारिक समूहों में दयानन्द कालेज, अजमेर के पूर्व प्राचार्य एवं अजमेर के प्रसिद्ध आर्य-विद्वान एवं प्रमुख शिक्षाविद् दत्तात्रेय जी आर्य के भारतीय संस्कृति और राजनीति के संदर्भ में एक अतिथि विद्वान् ‌‌(विजिटिंग-स्कालर) के रूप में एक सितम्बर से ही नियमित भाषण हो रहे हैं।

स्त्री आ० स० शहर मेरठ का हीरक जयन्ती समारोह

14,15 अक्टूबर 1989, स्त्री आर्यसमाज शहर मेरठ अपने 75 वर्ष पूरे करने जा रही है। इस उपलक्ष्य में यह 14,15,16 अक्टूबर 1989 को अपनी हीरक जयन्ती का उत्सव मना रही है। उत्सव में आर्य जगत के उच्चकोटि के सन्त एवं विदुषी पधार रही हैं, जिनके समय-समय पर ज्ञानवर्धक उपदेश व प्रवचन सुनने का सुअवसर प्राप्त होगा। आपसे अनुरोध है कि समारोह में पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ायें साथ ही सन्तों द्वारा बहाई गई ज्ञान-गंगा में स्नान कर धर्मलाभ उठायें।

स्थानः- शर्मा स्मारक मैदान, मेरठ

::कार्यक्रम::

प्रातः 7॥ से 8॥ बजे तक --- राष्ट्ररक्षा-महायज्ञ
8॥ से 9॥ बजे तक --- भजन-प्रवचन
मध्याह्न 2॥ से 5॥ बजे तक-- भजन-सम्मेलन
रात्रि 7॥ से 9॥ बजे तक-- भजन-प्रवचन

::निवेदकः::

शकुन्तला गोयल — प्रधाना
विनोद बाला — मंत्राणी
आर्य स्त्री समाज, मेरठ शहर

इन्द्रराज
सह संयोजक

कन्या-उद्धार

उठरौला आर्यसमाज (जनपदगोण्डा) के पुस्तकालयाध्यक्ष श्री जोगीराम के विषय में मालूम हुआ है कि उन्होंने लगभग सवा दर्जन कन्याओं को दुष्टों के हाथ बिकने से रोका है। इसी माह में बगांल से भगाई गई कन्या "नोमिता सरकार" को भी बिकने से रोका है। मैंने इनको बधाई पत्र भेजा है कि वास्तव में श्री-जोगीराम ने कन्याओं का उद्धार किया है।

-पुरुषोत्तम नारायण मिश्र,
असिस्टेन्ट कमिश्नर (जुडिशियल) रिटायर्ड
202 राजेन्द्रनगर, लखनऊ।

कोटा के दंगों पर भर्त्सना

आर्यसमाज अजमेर के तत्वावधान में पारित प्रस्ताव द्वारा कोटा में हुए भयंकर दंगों पर घोर चिन्ता व्यक्त की है तथा हिन्दुओं के अनन्त चतुर्थी के जूलुस पर अन्य वर्ग द्वारा हमला और पथराव किये जाने की कड़ी भर्त्सना की है। दंगों में मरने वाले व्यक्तियों के निधन पर हार्दिक शोक व्यक्त करते हुए राज्य सरकार से दंगा पीड़ितों को समुचित सहायता देने तथा अपराधी असामाजिक तत्वों के विरुद्ध अविलम्ब कड़ी कार्यवाही करने की माँग की है।

श्री रासासिंह का आ.स. अजमेर द्वारा अभिनन्दन

अजमेर। शिक्षक दिवस के उपलक्ष में राज्य सरकार द्वारा श्रेष्ठ शिक्षक के रूप में सम्मानित आर्यसमाज अजमेर के मंत्री एवं डी0ए0वी0 सीनियर उच्च-माध्यमिक विद्यालय अजमेर के प्रधानाचार्य श्री रासा सिंह का आर्यसमाज अजमेर द्वारा सुप्रसिद्ध शिक्षाविद् एवं आर्यसमाज शिक्षा सभा अजमेर के मंत्री श्री कृष्णराव=-जी बाल्ले की अध्यक्षता एवं राजस्थान विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री किशन मोटवानी के मुख्यातिथ्य में सम्मान समारोह आर्यसमाज केसरगंज स्थित भवन में आयोजन हुआ।

वैदिक धर्म-प्रचार

\- आर्यसमाज बड़ा कछार सुरोली (हमीरपुर) के कार्यकर्ताओं ने चित्रकूट धाम में वैदिक धर्म का प्रचार किया स्थानीय जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

\- आर्यसमाज देवलाली कैम्प (महाराष्ट्र) ने नासिक, भंगुर, नासिक रोड में महाराष्ट्र के आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री-दौलतराम चढ्ढा के नेतृत्व में 35-गृहस्थियों में जाकर यज्ञ, प्रवचन किया तथा यज्ञोपवीत दिया। यह कार्यक्रम जून, जुलाई, अगस्त 89 तक चलता रहा।

आर्यसमाज अमरोहा का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज अमरोहा का वार्षिकोत्सव दिनांक- 15,16,17 अक्टूबर 1989 को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर अनेक विद्वान-सन्यासी भजनोपदेशक पधार रहे हैं। 15 अक्टूबर 89 रविवार को जुलूस निकलेगा। कार्यक्रम प्रातः मध्यान्ह रात्रि रहेगा।

आर्य वीर दल प्रान्तीय सम्मेलन

आर्य वीर दल प्रान्तीय सम्मेलन

प्रान्तीय आर्यवीर दल समिति ने दिनांक-15-10-89 दिन रविवार को अग्रवाल मन्डी टटीरी जि0 मेरठ में प्रान्तीय सम्मेलन करने का निश्चय किया है। इसमें प्रान्त के सभी आर्य वीरदल, सैनिक तथा अधिकारी पूर्ण गण वेश में 14-10-89 दिन शनिवार की रात्रि में अग्रवाल मण्डी टटीरी पहुँचने का कष्ट करें।

श्री राधेश्याम आर्यमंत्री आर्यसमाज अग्रवाल मण्डी टटीरी-मेरठ।

आर्यसमाज सीसामऊ कानपुर का उत्सव

आर्यसमाज सीसामऊ, तथा आर्य-स्त्री समाज, सीसामऊ, कानपुर का वार्षिकोत्सव 3,4,5 नवम्बर 89 को सम्पन्न हो रहा है। जिसमें अनेक ओजस्वी वक्ता भाग ले रहे हैं।

शुभ सूचना

"काश गाँधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई नहीं कहते।

इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुसतक के लेखक विष्णुस्वरूप पर केस चलाया जिसे माननीय मजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदी जी ने 29 नवम्बर सन्88 को खारिज कर दिया जो सज्जन ये पुस्तक मंगवाना चाहें वे 1/-रुपए प्रति मंगवा सकते हैं। वितरण करने वालों को 50/- रु0 में सौ प्रति भेजी जायेंगी।

शोक समाचार

छाबड़ाबन्धु दिवंगत

आर्यसमाज लालबाग, लखनऊ के कर्मठ सदस्य श्री सुरेन्द्र नाथ छाबड़ा एवं श्री-जगदीशचन्द्र छाबड़ा का आकस्मिक निधन दिनांक- 12-9-89 को लखनऊ में हो गया। दोनों सगे भ्राता थे और आर्यसमाज की सेवा में आजीवन समर्पित रहे। दोनों का अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से हुआ।

प्रभु से दिवगंत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना है।

-सभामंत्री

टिक्कन राम जी दिवंगत

आर्यसमाज नयाशहर इटावा। के सर्वाधिक वयोवृद्ध, निष्ठावान तथा निष्पक्ष सभासद महाशय टिक्कन रामजी दि0-2·9·89 को अचानक चल बसे। महाशय जी का इटावा जनपद की आर्यसमाजों में, उनके नैष्ठिक आर्यत्व के कारण, सर्वाधिक सम्मान रहा है तथा अनेक बार वह समारोह पूर्वक सम्मानित भी किये गए। उनके शोक में इटावा की सभी आर्य शिक्षण संस्थायें बन्द रहीं तथा आर्यसमाजों में शोक सभायें हुई।

ईश्वर महाशय जी की दिवगंत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करे। (अटल)

आर्यसमाज विकानगर (लखनऊ) के मंत्री श्री वंशीलाल जी के पूज्य पिता श्री हंसईराम का 85 वर्ष की आयु में 6 सितम्बर89 को आजमगढ़ में निधन हो गया। परमात्मा विवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परीवार को धैर्य प्रदान करे।

नम्र निवेदन

लखनऊ

आदरणीय बन्धुवर्य/ आदरणीय बहिन जी,

सप्रेम नमस्ते,

आज हमारे सार्वजनिक एवं राजनैतिक जीवन में गिरते हुए नैतिक स्तर एवं पनपते हुए भ्रष्टाचार का जो दृश्य दिखाई दे रहा है उसका उन्मूलन केवल मात्र वैदिक आदर्शों के आधार पर ही किया जा सकता है। आर्यसमाज अपने जन्मकाल से ही इन आदर्शों को समाज के प्रत्येक क्षेत्र में प्रचारित एवं प्रसारित करने के लिए संघर्षशील रहा है। राजनीति हमारे सामाजिक जीवन को स्वच्छ एवं व्यवस्थित बनाने का एक साधनमात्र है। इस ओर उपेक्षा करने का अर्थ होता है हमारा अपने कर्तव्य से विमुख होना। इस देश के राजनीतिकरण में आर्यसमाज ने यदि भरपूर मात्रा में अपना प्रतिनिधित्व पहुँचाया होता तो निःसन्देह हमारे समाने आज की अनेकों समस्याएं इस विकराल रूप में उपस्थित न हुई होतीं और एक सुन्दर सर्वांगीण सुव्यवस्थित समाज की रचना एवं स्वच्छ प्रशासन की दिशा में हम काफी आगे बढ़ गये होते।

इन्हीं सब बातों को दृष्टिगत रखते हुए आर्यजगत् के वरेण्य नेताओं, अपने शुभचिन्तकों, इष्टमित्रों की प्रेरणा तथा अपनी अन्तरात्मा की आवाज पर मैंने आगामी अप्रैल/मई 1990 में उत्तर प्रदेश विधान परिषद के लिए सम्पन्न होने वाले लखनऊ स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से जिनमें रायबरेली, प्रतापगढ़, बाराबंकी, लखनऊ, हरदोई, लखीमपुर खीरी, सीतापुर आते हैं, चुनाव लड़ने का निश्चय किया है। यह चुनाव समाज के प्रगतिशील एवं बौद्धिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाला है और निःसन्देह मुझे दिया हुआ आपका सहयोग समाज की वैचारिक शक्ति को बल प्रदान करेगा। इस निर्वाचन में वयस्क मताधिकार प्राप्त वे सभी व्यक्ति मत देने के अधिकारी होंगे जिन्होंने 1986 या उससे पूर्व किसी मान्यताप्राप्त विश्वविद्यालय से बी0ए0 अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण की हो। इसके लिए उन्हें निर्धारित प्रपत्र भरकर निर्वाचक नामावली में अपना नाम अंकित कराना होगा। निर्धारित प्रपत्र के साथ उत्तीर्ण परीक्षा की प्रमाणित प्रतिलिपि भी संलग्न करनी होगी। इस प्रकार के निर्धारित प्रपत्र अपेक्षित संख्या में मेरे पास उपलब्ध हैं। आप कृपया लौटती डाक से मुझे सूचित करें कि आपको ऐसे कितने निर्धारित प्रपत्रों {फार्मों} की आवश्यकता पड़ेगी ताकि मैं उन्हें आपके पास भिजवा सकूँ।

मैं आपका हूँ। आर्यसमाज मेरी मातृसंस्था है। इसकी गरिमा को विश्वव्यापी बनाने में मेरे मनोबल को बढ़ाइए, मुझे सहयोग दीजिए, अपना पावन आशीर्वाद दीजिए। इसी आत्मीयता के साथ --

आपका,

मनमोहन तिवारी

9 पुराना गणेशगंज लखनऊ।
फोन नं0- 247032
245973

रक्षक ही भक्षक बने

- स्त्री आर्यसमाज रुद्रपुर ने एक प्रस्ताव पास करके हल्दानी में एक देहाती कृषक की महिला के साथ पुलिस द्वारा बर्बरतापूर्वक नृशंस कृत्य तथा कुछ दिन पहले ग्राम गदरपुर के पास महतोष मोड़ में भी ऐसा काण्ड हुआ था। जिससे क्षेत्रीय जनता आतंकित है। सरकार से अनुरोध है कि वह अपराधियों को कठोर से कठोर दण्ड दे।

- आर्यसमाज कासगंज के प्रधान- श्री ब्रजरतन जी गुप्ता ने 19 जून89 को पूज्य स्वामी ओमानन्दजी सरस्वती, झज्झर {रोहतक} से सन्यास आश्रम की दीक्षा विधिपूर्वक ली है। नया नाम श्री ब्रजानन्द सरस्वती रखा गया है। सन्यास आश्रम की दीक्षा लेने के पश्चात आर्यसमाज कासगंज में नगर के आर्यों ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया।

श्री रामस्वरूप शाक्य ने भी स्वामी ओमानन्दजी से वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा लेकर श्री राममुनि नाम से प्रसिद्ध होकर जनकल्याण में लगे हुए हैं।

वैदिक धर्म प्रचार

आर्यसमाज टाण्डा अफजल {मुरादाबाद} में दि0 9,10,11 सितम्बर 89 को नौमी प्रचार मेले में तथा पास के गाँव सैरुल्लापुर में भी वैदिक धर्म का धूमधाम से प्रचार हुआ जिससे प्रभावित होकर ग्राम प्रधान श्री जयप्रकाश सिंह तथा स्थानीय जनता में बड़ा उत्साह था।

आवश्यक सूचना

आर्यजनता के सूचनार्थ प्रकाशित किया जाता है कि स्वामी कर्मानन्द जन सेवा-ट्रस्ट, हरिद्वार का आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 तथा सभा से सम्बद्ध किसी आर्यसमाज से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह किसी की व्यक्तिगत संस्था हो सकती है।

मनमोहन तिवारी
सभा मंत्री

नामकरण संस्कार सम्पन्न

- "माननीय श्री शैलेन्द्र कुमार जी उपमंत्री, हरिजन कल्याण एवं वन, उ0प्र0शासन के पुत्र का नामकरण संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार पं0 लाल बहादुर शास्त्री ने सम्पन्न कराया- इस अवसर पर नगर के अनेक सम्भ्रान्त लोगों के अतिरिक्त कई प्रादेशिक एवं केन्द्रीय मंत्री उपस्थित थे।"

डी0ए0वी0 कालेज स्थापना दिवस सम्पन्न

डी0ए0वी0 कालेज, इलाहाबाद का स्थापना दिवस समारोह दिनांक- 17जुलाई 1989 को माननीय श्री शैलेन्द्र कुमार जी उपमंत्री हरिजन कल्याण एवं वन उ0प्र0 शासन के यजमानत्व एवं मुख्य अतिथि के रूप में स्थान ग्रहण करने पर सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर माननीय मंत्री जी ने 501.00 का सहर्ष संस्था निमित्त दान प्रदान किया। साथ ही साथ श्री अनूप श्रीवास्तव ने 3 पंखे, श्री श्रीकान्त अग्रवाल ने 1 पंखा, श्री राधेमोहन अग्रवाल ने भी 1 पंखा और सेठ मंगलचन्द जी ने भी 1 पंखा और 1 दरी बड़ी, तथा श्री रवीकान्त अहूजा ने 1 दरी सहर्ष प्रदान किया।

वैदिक धर्म प्रचार

आर्यसमाज काशीपुर {नैनीताल} के अधिकारियों के विशेष सहयोग से सभा के उपदेशक श्री पं0 महावीर शास्त्री गाजीपुर ने 10 स्थानों में वैदिक धर्म का प्रचार किया तथा स्त्री आर्यसमाज में वेद कथा कही। श्री मिट्ठनलाल स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी का अन्त्येष्टि संस्कार कराया।

आर्यसमाज रामनगर में समाज के अधिकारियों के सहयोग से प्रचार किया।

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्
आर्यमित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग लखनऊ
दूरभाष ४५६६३
पंजीकरण सं० एल०डब्ल्यू/एन पी ७६
आश्विन शुक्ल ८
८ अक्तूबर, रविवार १९८९

मेरठ
चमारे

12946-श्री पुस्तकालयाध्यक्ष जी
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय बृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इन्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।



लापता कन्या को खोजिए

कुमारी अंशु मिश्रा (उर्फ मोनी) आयु 7 वर्ष पुत्री श्री राकेश कुमार-मिश्र ए-14, करबला, राजाजीपुरम, आवास विकास कालोनी लखनऊ से 27 जुलाई 1989 से लापता है।

जो सज्जन इस कन्या का पता लगाकर देंगे या ऐसी सूचना देंगे जिससे खोज करने में सहायता मिले उन्हें रुपया दस हजार का इनाम प्रदान किया जायेगा। इस फोन पर भी सूचना दी जा सकी है।

लखनऊ फोन- 53836, 53300, 54688

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि॰ सं॰ २२४१/५७) कार्तिक कृष्ण-१, रविवार-संवत् २०४६ वि॰, दिनांक १५ अक्तूबर, १९८९ (घोषणा पत्र सं॰ ७/२८-२-७५)



ऋषि का हिन्दी प्रेम -

आज से 107 वर्ष पूर्व 14 अगस्त 1882 को उदयपुर से लिखा गया ऋषि का पत्र -

"लाला कालीचरण जी
आनन्दित रहो,

हम उदयपुर आके नौलखा बाग में ठहरे हैं। इस समय आर्यभाषा हिन्दी के राज्यकार्य में प्रवृत्त होने अर्थ जो मेमोरियल छपे हैं सो शीघ्र भेजना और आप लोग आर्यभाषा के राज्यकार्य में प्रवृत्त होने के अर्थ शीघ्र प्रयत्न कीजिए--

-दयानन्द सरस्वती

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम॰ए॰

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम॰ए॰ साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य..रू॰ २५१/-
वार्षिक..........रू॰ ३०/-
एक प्रति.......१॰०० रू॰ मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक ४१

हिन्दी के लिए अनुपम त्याग



श्री पं॰ श्रीनारायण चतुर्वेदी ने एक लाख रू॰ का पुरस्कार ठुकराया

उत्तर प्रदेश में उर्दू को दूसरी राज्य भाषा का दर्जा दिये जाने के विरोध में पद्मभूषण श्री पं॰ श्री नारायण चतुर्वेदी ने उ॰प्र॰-सरकार द्वारा उन्हें दिया गया एक लाख रुपये का "भारत भारती" पुरस्कार लेने से इनकार कर दिया है।

"लखनऊ में विश्व हिन्दी संस्था द्वारा आयोजित एक सम्मान समारोह में 97-वर्षीय हिन्दी के महान साहित्यिक सरस्वती के अमर पुत्र श्री चतुर्वेदी ने उ॰प्र॰ सरकार को एक लाख रुपये का पुरस्कार लौटाते हुए कहा कि उर्दूपरस्त यह शासन सदैव हिन्दी विरोधी रहा है। उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा घोषित करने के बाद यह उर्दूपरस्त सरकार इसे नौकरी के लिए अनिवार्य कर सकती है। इस प्रकार परोक्ष रूप में यह पाठ्यक्रम में अनिवार्य विषय कर दिया जावेगा।"

मुख्यमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी को लिखे गये उनके पत्र की अविकल ...लि हम यहाँ पाठकों के अवलोकनार्थ उद्धृत कर रहे हैं।

माननीय श्री नारायण दत्त तिवारी,
मुख्यमंत्री,
उत्तर प्रदेश शासन।

माननीय मुख्यमंत्री जी,

यद्यपि मैं निम्न मध्यवर्ग का हूँ और मैंने जीवन में एक लाख रुपये कभी देखे भी नहीं तथापि आपकी सरकार ने उर्दू को दूसरी राज्यभाषा 9·/74 प्रतिशत लोगों के तथा-कथित हित में बनाकर इस राज्य की राज्यभाषा हिन्दी का जो अहित और अपमान किया है उसको देखते हुए तथा आपकी सरकार के हिन्दी के प्रति सामान्य रूप को भी देखते हुए मेरे लिए एक लाख रुपये का "भारत भारती" पुरस्कार लेना अनुचित है। अतएव मैं इस पत्र द्वारा उसका लेना अस्वीकार करता हूँ।

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान को भी यह सूचना भेज रहा हूँ।

भवदीय
श्रीनारायण चतुर्वेदी

आर्यसमाज श्री चतुर्वेदी के इस साहसिक पग की प्रशंसा करता है और समस्त हिन्दी प्रेमी एवं देशभक्त जनता का आह्वान करता है कि वह अपने इस वयोवृद्ध मनीषी नेता के नेतृत्व में हिन्दी रक्षा के हित में अपना सर्वस्व अर्पित करने हेतु सन्नद्ध रहे।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
——— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

आर्य मित्र

लखनऊ- कार्तिक कृष्ण-१ संवत २०४६ वि०
१५ अक्तूबर १९८९, दयानन्दाब्द १६५
सृष्टि सम्वत् १९७२९४९०९०

सम्पादकीय

नाऽन्यः पन्था विद्यतेऽयनाय

----- और इस देश में भयानक झंझावात आने वाला है। तुम्हारे निर्माण तुम्हारी योजनाएं तुम्हारी अट्टालिकाएं सब डूब जायेंगी। तुम्हारा नाम इतिहास के अतीत के पन्नों की विरासत बनकर रह जायेगा। घबड़ाइए नहीं, उस पर शोध होगा, विश्वविद्यालयों में रिसर्च- कोई था--- कभी था--- बड़ा उदार, सहनशील, अहिंसक, एकता का पुजारी, बड़े सुन्दर-सुन्दर भाषण देने वाला मगर महान् अदूरदर्शी, महान् कायर जो उठते हुए धुएं को देखकर धधकती हुई अग्नि का अनुमान न लगा सका। जो घर-घर में छिपे हुए बमों, बरछों, भालों, छुरों के लगे हुए अम्बार को देखकर कत्ले आम का पूर्वाभास न कर पाया। जो मुस्कराहट के नीचे छिपी हुई विष की पुड़िया को न पहिचान सका। सुनिए वीर सावरकर ने विभाजन से पूर्व क्या कहा था- "किसी भी कीमत पर देश का बटवारा मत होने देना चाहे आजादी मिलने में भले ही कुछ देर लग जाये। नहीं तो यह दोनों पाकिस्तान दुतरफा हमला करेंगे। दोनों ओर से घिर जाओगे -"। और आज उस वीरवर की भविष्यवाणी सच हो रही है। इस देश में नारे लगाये जा रहे हैं- "लड़ के लिया है पाकिस्तान, हंस के लेंगे हिन्दुस्तान"। और तुमने भारत के सीमान्त शहर बीकानेर में "भारत माता की जय" बोलने पर आज 2 अक्टूबर (गांधी जी- के जन्म दिन पर) पाबन्दी इसलिए लगाई है कि इससे लोग भड़केंगे। तुमने उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा (हिन्दी दिवस पर) इसलिए बनाया है कि वे प्रसन्न हो जायेंगे। मगर जरा सुनिए वे क्या कहते हैं। कांग्रेस अल्पसंख्यक सैल के अध्यक्ष श्री हबीबुर्रहमान नोमानी- फरमाते हैं- "प्रदेश में उर्दू को राज्यभाषा बनाने पर तो सन्तोष है परन्तु इससे क्या। इसे विद्यालयों में अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाय, त्रिभाषा फार्मूला में सम्मिलित किया जाय, जितने भी प्रशासनिक आदेश, गजट, विज्ञप्तियाँ आदि हैं सब उर्दू में निकाली जायँ। प्रत्येक सरकारी कर्मचारी को उर्दू सीखना अनिवार्य किया जाय। पी०ए०सी० में मुसलमानों की भरती बढ़ाई जाय, उन्हें दिया कर्जा माफ किया जाय। उद्योग लगाने हेतु उन्हें अनुदान और ऋण उपलब्ध कराए जायँ, सरकारी नौकरियों में भर्ती के लिए प्रशिक्षण देने हेतु निःशुल्क शिविर खोले जायँ------। और एक भविष्यवाणी हम भी उनकी ओर से करना चाहते हैं जो सम्भवतः चुनावों के बाद अखबारों की सुर्खियों में आयेगी--- "उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री मुसलमान बनाया जाय हिन्दू बहुत दिनों से प्रशासन कर रहा है, यह धर्म निरपेक्ष देश है"।

"काश्मीर में खुले आम पाकिस्तान जिन्दाबाद के नारे लगाए जाते हैं। वहाँ के प्रशासन ने कभी नहीं रोका- यह पाकिस्तान नहीं हिन्दुस्तान है लोग भड़क सकते हैं। मगर वाह रे! बीकानेर का प्रशासन। उसने भारतमाता की जय बोलने पर पाबन्दी लगाई है जबकि भारत, यहाँ रहने वाले हर मुसलमान हर हिन्दू, सिख पारसी का देश है। बीकानेर बार एसोसिएशन के 33 वकीलों ने "भारत माता की जय" पर पाबन्दी के प्रशासनिक फैसले को देश के लोगों का अपमान बताया है। आर्यसमाज उनकी भावनाओं का पूर्ण समर्थन करते हुए कहना चाहता है कि हर भारतीय को भारत माँ की जय बोलने में गर्व होना चाहिए चाहे वह किसी जाति, वर्ग या मजहब का हो। प्रशासन व्यर्थ में सम्प्रदाय विशेष की राष्ट्रीय भावना पर प्रश्नचिन्ह लगाने की कोशिश कर रहा है। इस देश में मुसलमान भारतीयता के रंग में रंगता जा रहा था, उर्दू को उसने छोड़ दिया था मगर प्रशासन की अदूरदर्शी नीतियों ने उसे फिर उसी विभाजन वाली सोच पर लाकर खड़ा कर दिया है।

आज इस देश में दंगे फिर भड़कने लगे हैं। जब दंगे हो जाते हैं तब तलाशी की बारी आती है और प्रेस रिपोर्ट बताती है कि इतने बम और घातक हथियारों का जखीरा हर शहर में मिला है कि जिससे एक पूरी की पूरी अर्धसेना तैयार की जा सकती है। क्या यह इस बात का संकेत नहीं है कि उधर पाकिस्तान का हमला हो और इधर देश गृहयुद्ध की आग में धू धू कर जलने लगे------।

आप हमारी बात से असहमत हो सकते हैं आज। मगर आर्यसमाज धुंए के नीचे धधकती आग को स्पष्ट देख रहा है। उसका अनुमानकारण कभी असत्य नहीं हुआ है और न होगा। इसलिए समय रहते चेत जाना युग की पुकार है। आर्यो! अपना सब कुछ समर्पित करके शुद्धि अभियान में जुट जाओ। बिछुड़े हुओं को तुरन्त गले लगाना प्रारम्भ करो। संध्या और हवन उनके बीच में जाकर होना चाहिए। ईटों के समाज मन्दिर सुनसान होते जा रहे हैं। अब हरिजन भाइयों, बिछुड़े हुओं के हृदय मन्दिरों में जाकर हमारे सत्संग लगने चाहिए। आर्य वीर दल की शाखाएं पुनरुज्जीवित करके तरुणाई को आर्यसमाज के प्रति आकृष्ट करो और अपने धन को तन का मन को धर्म की रक्षा में अर्पण कर दो- तभी हम बच पायेंगे। नाऽन्यः पन्था- विद्यतेऽयनाय।

प्रज्ञामित्र शास्त्री दिवंगत

श्री प्रज्ञामित्र शास्त्री भू०पू० उपमन्त्री आर्यसमाज गणेशगंज, लखनऊ तथा प्रवक्ता डी०ए०वी० इन्टर कालेज, लखनऊ का दिनांक 4-10-89 को लम्बी बीमारी के पश्चात् देहावसान हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिकरीति से सम्पन्न हुआ।

सभामन्त्री श्री मनमोहन तिवारी ने उनके निधन पर शोक व्यक्त करते हुए परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना की है।

आवश्यक सूचना

जन साधारण एवं समस्त पाठकों की सेवा में सूचित किया जाता है कि लखनऊ आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ तथा सभामंत्री श्री मनमोहन तिवारी के निवास एवं कार्यालय का टेलीफोन नं0 अब निम्नवत् हो गया है।

सभा कार्यालय- 245993
मंत्री जी का निवास- 247032

आर्यसमाज मंदिर अहमदाबाद

प्रधान - श्री पूनमचन्द जी नागर
मंत्री - श्री बलदेव राज जी सेठ
कोषा0 - श्री राजेन्द्र जी अग्रवाल

अयोध्या में त्यागानन्द शताब्दी

दिनांक- 9 से 13 नवम्बर 1989 तक गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के आद्यसंस्थापक स्वर्गीय स्वामी त्यागानन्द-सरस्वती शताब्दी समारोह बड़े धूमधाम से मनाया जा रहा है। इसमें आर्यजगत के प्रसिद्ध साधुसन्त एवं उपदेशक पधार रहे हैं।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज लंढोरा (त्यागीनगर) सहारनपुर का वार्षिकोत्सव दि0- 25 व 26 नवम्बर 89 को धूमधाम से मनाया जायेगा। जिसमें अनेक विद्वान् सन्यासी पधार रहे हैं।

- आ0स0 नगर आर्यसमाज (जोनपुर) में पूज्य स्वामी मोक्षानन्द सरस्वती मथुरा द्वारा दिनांक- 23 से 29 अक्टूबर 89 तक वेद कथा होगी।

- आर्यसमाज सिविल लाइन्स वैदिक-आश्रम, रामघाट, अलीगढ़ में विजयदशमी पर्व के अवसर पर वैदिक जागरण दि0- 7 से 10 अक्टूबर 89 तक धूमधाम से मनाया गया।

------

१०३ ईसाइयों की शुद्धि

- भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा दिल्ली द्वारा सिकन्दराराऊ (एटा) के पास ग्राम- हसायन में 5 पीढ़ी के बने ईसाई लोगों ने शुद्धि सभा के उपदेशक श्री दूतवारीलाल के प्रयत्न से 103 ईसाइयों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया। सबको यज्ञोपवीत दिए गए।

क्या उर्दू द्वितीय राज्यभाषा हो सकती है ?

— श्री पं० इन्द्रराज
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ० प्र०

उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री श्री-नारायण दत्त जी तिवारी द्वारा उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राज्य भाषा घोषित करने का समाचार राष्ट्र-प्रेमियों के लिए बहुत ही दु:खद है। हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है और उत्तर प्रदेश की राज्यभाषा भी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के 42 वर्ष पश्चात् भी हिन्दी अपने राष्ट्रीय स्वरूप में प्रतिष्ठित नहीं हो सकी। हिन्दी के राष्ट्रभाषा घोषित होने पर तुरन्त इसको राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हो जाना चाहिए था परन्तु देश का दुर्भाग्य कि वह अपने आसन पर प्रतिष्ठित न हो सकी।

अंग्रेजी समर्थकों ने इसे प्रतिष्ठित न होने दिया। इसमें सरकार और जनता दोनों ही दोषी हैं। सरकार ने राजनैतिक दबाव के सामने घुटने टेक दिए और हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी कई राज्यों में चलती रही। एक दम हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रयोग में न लाने के समर्थन में कई तर्क दिए जाते रहे। एक तर्क यह था कि विज्ञान और आयुर्विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी सम्प्रति अक्षम भाषा है। इन क्षेत्रों में अंग्रेजी का साम्राज्य है। जब तक पारिभाषिक शब्दों का अभाव है तब तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहना चाहिए। यह तर्क इतना थोथा निकला कि चीन और रूस एवं अन्य स्वाभिमानी देशों में जहाँ अंग्रेजी न बोली जाती है और न ही लिखी जाती है वहाँ पर विज्ञान, आयुर्विज्ञान, उद्योग, कला कौशल अपनी पूर्ण समृद्धि पर है।

कुछ दक्षिणी राज्यों में हिन्दी को नहीं अपनाया गया क्यों कि प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में अहिन्दी भाषीप्रान्तों ने हिन्दी की कम जानकारी के कारण हिन्दी का विरोध किया इस प्रकार राजनैतिक दबाव के कारण हिन्दी के राष्ट्रभाषा के रूप में प्रयोग की बात निरन्तर आगे सरकती गई। राजनीति के प्रदूषित हो जाने के कारण हिन्दी का प्रयोग प्रयत्नकरने पर राष्ट्रीय स्तर पर न हो सका।

ज्ञान विज्ञान एवं प्रशासनिक सेवाओं में हिन्दी का प्रयोग या उसका समृद्ध शब्दकोष सब भाषाओं की जननी संस्कृत भाषा से हो सकता था और पर्याप्त हुआ भी है। परन्तु अंग्रेजी के उन्हीं समर्थकों ने संस्कृत को ही उड़ा दिया। न होगा बांस न बजेगी बांसुरी। न कोई संस्कृत पढ़ेगा और न ही हिन्दी भाषा इतनी समृद्ध हो पाएगी। संस्कृत से दूर हिन्दी हिन्दुस्तानी हो जाएगी और उसमें व्याकरण आदि के नियम ठीक प्रकार से चल नहीं पाएँगे इस प्रकार प्रशासनिक सेवाओं में अहिन्दी भाषी उसको अपना नहीं पाएँगे। परिणामत: उन अहिन्दी भाषी प्रान्तों में विवशता अंग्रेजी ही चलती रहेगी। यह अन्दर ही अन्दर बहुत गहरा षड्यन्त्र था जो इस समय तक सफल है। सारे देश को एक सूत्र में पिरोने वाली "हिन्दी" संस्कृत के अभाव में दुर्बल रहेगी। संस्कृत स्वमेव सारे देश को बान्धे हुए है। हमारा वैदिक साहित्य भारत के पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण में एक जैसा है। कर्मकाण्ड एक जैसा है। संस्कृत हटने से संस्कृति गई, राष्ट्रभाषा दुर्बल हुई और एक प्रकार से देश दुर्बल हुआ। पर विस्फोटक षड्यन्त्र अन्दर-अन्दर हुआ।

इधर जनता की मानसिकता परतन्त्रता की मानसिकता की गुलाम बनी रही। अंग्रेजी माध्यम स्कूल ईसाईयों ने खोले। धीरे-धीरे उनके मुकाबले में औरों ने भी खोले। हम माता पिता यह सोचने लगे। कि यदि बच्चा अंग्रेजी माध्यम स्कूल में नहीं पढ़ेगा तो वह पिछड़ जाएगा। यह विचार पढ़ने वाले छात्रों में भी आए। छात्र भी अंग्रेजी माध्यम से अपने विचारों की अभिव्यक्ति न कर सकने पर अपने आप को हीन मानने लगे। पढ़ने और पढ़ाने वालों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ने और पढ़ाने की होड़ चलने लगी और अब अंग्रेजी पढ़ना उस में बात करना एक गौरव की बात समझी जाने लगी- धड़ाधड़ अंग्रेजी माध्यम के विधालय खुलने लगे। इधर पारिवारिक व्यापारिक एवं औद्योगिक क्षेत्रों में अंग्रेजी का बोल बाला हो गया। प्रत्येक व्यक्ति ने अपने कार्ड, अपने पैड और अपने बोर्ड अंग्रेजी में छपवाए और बनवाए। इस प्रकार से वैयक्तिक, पारिवारिक औद्योगिक, व्यापारिक और सामाजिक क्षेत्र में अंग्रेजी का प्रयोग खुल कर होने लगा। इस प्रकार सरकारी एवं सामाजिक रूप से राष्ट्रभाषा हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित न हो सकी।

अब हिन्दी पर और प्रहार करने के लिए पहले बिहार में और फिर अब उत्तर प्रदेश में द्वितीय राज्यभाषा के रूप में उर्दू के प्रयोग ने रही सही कसर भी निकाल दी। थोड़े से वोटों के स्वार्थ ने राजनैतिक कर्णधार नेताओं के मन मस्तिष्क को भ्रमित कर दिया। हिन्दी दिवस (14 सितम्बर89) की पूर्व सन्ध्या में समस्त औपचारिकताओं को एक तरफ रखकर संविधान की खुली अवहेलना करके इन नेताओं ने पूरी तरह से अपने मन्त्रियों की सम्मति भी न ले कर उर्दू को बिहार और उत्तरप्रदेश में द्वितीय राज्यभाषा का दर्जा दे दिया। इससे आर्थिक हानि कितनी है कि पढ़ने वाला हो या न हो उर्दू का एक अध्यापक प्रत्येक विद्यालय में अनिवार्यरूपसे रखा जाएगा। प्रशासनिक कार्यालयों में काम आने वाला प्रत्येक फार्म उर्दू में भी छपेगा। सर्वत्र अनिवार्यरूप से उर्दू का प्रयोग आर्थिक व्यय को बहुत बढ़ाएगा। परन्तु इसके साथ-साथ संविधान को इतना बड़े उल्लंघन का उदाहरण भी नहीं हो सकता कि संविधान के अनुसार 30प्रतिशत अल्प संख्यक समुदाय की भाषा ही द्वितीय राज्यभाषा हो सकती है परन्तु 7 प्रतिशत अल्प संख्यक समुदाय की भाषा को द्वितीय राज्य भाषा घोषित कर दिया गया।

एक बार पहले श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह जी के मुख्य मंत्री काल में उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा बनाने का प्रयास किया गया था। परन्तु उस समय हिन्दी के प्रबल समर्थक और संविधान के पक्ष पोशक स्व0 प्रो0 वासुदेव सिंह जी जीवित थे। जब वह सिंह दहाड़ा तो ये संविधान की तोड़फोड़ करने वाले सब दुम दबाकर छिप गए। स्व0 वीरबहादुर-सिंह जी ने अपने मुख्यमंत्री काल में इस प्रश्न को ही नहीं छुआ।

आज पता नहीं क्यों श्री नारायण-दत्त जी तिवारी ने अपने ऊपर कलंक का टीका लगा लिया है। आज देश में एक विघटन की प्रक्रिया चल रही है। पूरा पूर्वांचल प्रदेश, बोडो आन्दोलन, पंजाब में उग्रवाद काश्मीर में आतंकवाद एवं हिंसक प्रदर्शन देश को विघटन की तरफ धकेल रहे हैं।

संविधान को तोड़ने वाले को देश द्रोही कहा जाता है। परन्तु उन देश भक्तों को क्या संज्ञा दी जाए जो हैं तो संविधान के रक्षक और कुर्सियों पर संविधान की रक्षा के लिए ही बैठे हुए हैं। परन्तु इस प्रकार से संविधान की खुली अवहेलना कर रहे हैं। उन्हें किस नाम से पुकारा जाए। इधर विरोधी राजनैतिक दल भी मौन साधे बैठे हैं। देश का चाहे कितना अहित हो इनकी वाणी मौन ही रहेगी। यह कैसा जनतन्त्र है? और कैसी स्वतन्त्रता है।

सरकार के इस कदम का विरोध हरदेशभक्त नागरिक को करना है क्योंकि यह संविधान के उल्लंघन का प्रश्न है और यह देश के विघटन की प्रक्रिया है।

आईए दृढ़ संकल्प से खड़े हो कर संविधान और देश की रक्षा करें एवं हिन्दी को सही रूप में राष्ट्रभाषा के आसन पर सुशोभित करें। संस्कृत के पठन-पाठन में अनिवार्य करें एवं अनुचित तरीके से लादे गए उर्दू के बोझ को उतार फेंकें, ताकि संस्कृत, संस्कृति सभ्यता एवं देश की सुरक्षा हो और संसार भी सुख, शान्ति और आनन्द का अनुभव कर सकें। ◘

उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का तीव्र विरोध

आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी का साप्ताहिक अधिवेशन दिनांक 17·9·89 को श्री मेवालाल आर्य की अध्यक्षता में समाजमन्दिर में हुआ जिसमें उत्तर-प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने की कांग्रेस सरकार की राष्ट्र घातक नीति का तीव्र विरोध करते हुए घोर भर्त्सना की गयी। वक्ताओं ने कहा कि उत्तर प्रदेश में उर्दू भाषा की समस्या का समाधान हमारे सूझ-बूझ वाले नेताओं ने राष्ट्रहित को देखते हुए बहुत पहले ही कर दिया है अब इसे साम्प्रदायिक आधार पर वोट की राजनीति का शिकार बनाना उचित नहीं है। राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने के लिए हर प्रकार के विघटनवादी तत्वों का कड़ा मुकाबला करने की आवश्यकता है। उर्दू के सम्बन्ध में सरकार अपनी अव्यावहारिक अवांछनीय तथा तुष्टिकरण की नीति का सर्वथा परित्याग करे अन्यथा उसे व्यापक जनान्दोलन के सामने झुकना पड़ेगा। राष्ट्रहित और हिन्दी की रक्षा को लेकर आर्यसमाज के लोग भी आन्दोलन में सक्रिय हो जायेंगे।

उर्दू विधेयक संवैधानिक अड़चनें

• कैलाश भूषण जिन्दल, अजिताश्रम, गणेशगंज, लखनऊ

उत्तर प्रदेश को यह गौरव प्राप्त है कि हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा घोषित होने के पहले ही, इस प्रदेश ने उसे राज भाषा घोषित कर दिया था। देश के स्वतन्त्र होते ही मुख्यमंत्री पं0 गोविन्द बल्लभ पन्त ने हिन्दी को समस्त दिवानी और फौजदारी की कचेहरि यों की भाषा घोषित कर दिया था। तद्पश्चात् 3 नवम्बर 1947 को राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन ने जो उस समय विधान सभा के अध्यक्ष थे, हिन्दी को विधान मण्डल की भाषा घोषित कर दिया। कक्षा 12 तक हिन्दी का एक अनिवार्य विषय बना दिया गया है। लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित परिक्षाओं में हिन्दी का 100 नम्बर का विषय अनिवार्य है। हाफि़न मो0 इब्राहिम ने, जो उस समय अर्थ मंत्री थे, उत्तर प्रदेश राजभाषा विधेयक, 1951 विधान सभा के समक्ष रखा, जो सर्वसम्मति से तुरन्त पारित किया गया। परिणाम यह हुआ कि सन् 1947 के बाद की नयी पीढ़ी देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा से भली प्रकार परिचित है। शासन का सब काम सुचारु रुप से हिन्दी में चल रहा है।

1982 में श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह, ने जो अब जनता दल के अध्यक्ष हैं, उत्तर प्रदेश के 35 वर्ष के इतिहास को पलटना चाहा। उन्होंने एक अध्यादेश द्वारा उर्दू को इस राज्य की दूसरी भाषा घोषित किया। बाद में इसी आशय के पाँच और अध्यादेश तीन वर्षों में पारित किये गये। इन छहओं अध्यादेशों को उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने समादेश याचिका द्वारा उच्च न्यायालय की लखनऊ खण्ड पीठ में चुनौती दी। न्यायमूर्ति कैलाश नाथ गोयल और कैलाशनाथ-मिश्रा ने अपने 6·4·84 के ऐतिहासिक निर्णय द्वारा इन अध्यादेशों को असंवैधानिक ठहराया। सर्वोच्च न्यायालय ने इस निर्णय का समर्थन किया और सरकार की 1985 की अपील नंबर 2447 को खारिज कर दिया। इसके बाद प्रदेश में 5 वर्ष तक शान्ति रही।

आगामी नये चुनाव के पूर्व सन्ध्या पर मुख्यमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी ने पुराने मुर्दे को उखाड़ने की चेष्टा की है और यह घोषणा की है कि विधानसभा के पावस सत्र में वह एक विधेयक पेश करेंगे जिसके द्वारा उर्दू को इस प्रदेश की द्वितीय राजभाषा का पद दिया जायेगा। अपने इस निर्णय के समर्थन में मुख्यमंत्री कांग्रेस के 1985 के चुनाव घोषणा पत्र के अनुच्छेद 27 का सहारा ले रहे हैं।

प्रसिद्ध विधिज्ञ मास्टर आफ रोल्स लार्ड डेनिंग ने हाल के निर्णय ब्रामली लन्दन बरो काउंसिल बनाम ग्रेटर लन्दन काउंसिल- (1982) । आ·इंग·रि·129 में निर्वाचन के समय दिये गये वचनों के मूल्य एवं भाव के संबंध अपनी अप्रतिम शैली में कुछ रोचक बातें कही हैं, जिन्हें सदैव स्मरण राना राजनीतिज्ञों के लिए अच्छा होगा:-

किसी राजनीतिक पार्टी द्वारा वोट लेने के लिए जारी किये गये घोषणा को धर्म-वाक्य के रूप में नहीं लेना चाहिए। उसे हस्ताक्षर करके और मोहर लगा कर यथाविधि दिया गया बन्ध पत्र भी नहीं मानना चाहिए। उसमें ऐसे वचन या प्रस्ताव हो सकते हैं और बहुधा होते हैं, जिन्हें कार्यान्वित या पूरा नहीं किया जा सकता। निर्वाचकों में से बिरले ही पूरा घोषणापत्र पढ़ते हैं। बहुत से लोग तो उसके बारे में समाचार-पत्रों में पढ़ कर या दूरदर्शन पर सुनकर ही जानते हैं। बहुत से तो यह भी नहीं जानते कि उसमें है क्या? जब वे मतदान- कक्ष पर आते हैं तो कोई भी घोषणापत्र के आधार पर मतदान नही करता, उसमें दिये गये प्रत्येक वचन या प्रस्ताव के आधार पर तो निश्चय ही कोई नहीं करता। बहुतों पर उसका कोई प्रभाव नही पड़ता। कुछ मतदाता एक प्रस्ताव से प्रभावित हो सकते हैं और कुछ दूसरे से। पार्टी के लिए वोट देते हैं, न कि घोषणापत्र के लिए। हमें इस विषय में संदेह नहीं है कि प्रस्तुत मामले में बहुत से कर दाताओं ने लेबर पार्टी के पक्ष में मतदान किया यद्यपि यह एक बात उनके हित के विरुद्ध थी, तथा इसके विपरीत भी सही है। हमें लगता है कि किसी पार्टी को लम्बे घोषणापत्र की किसी एक मद के संबंध में यह नहीं समझना चाहिए कि उससे उसे वह कार्य करने के लिए आधिदेश मिल गया या कि वह उस बात के लिए वचनबद्ध है। जब पार्टी सत्ता में आ जाय तो उसे ऐसे किसी भी प्रस्ताव या वचन पर नये सिरे से गुणागुण के आधार पर विचार करना चाहिए और यह नहीं सोचना चाहिए कि वह उसे पूरा करने के लिए बाध्य है या कि उसके लिए वचनबद्ध है। उस समय उसे यह विचार करना चाहिऐ कि वह उसे इन परिस्थितियों में क्या करना सर्वोत्तम होगा, और यदि वह साध्य और उचित हो तो उसे वही करना चाहिए।"

देश का दुर्भाग्य है कि सत्तारुढ़-पार्टी लार्ड डेनिंग की सलाह की उपेक्षा कर रहा है। यदि उर्दू - विधेयक इस सत्र में पारित हो गया तो उसके बहुत व्यापक दुष्परिणाम होंगे।

संविधान की उद्देशिका में "राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता" का संकेत है। दिन-रात दूरदर्शन और आकाशवाणी पर प्रचार किया जाता है कि "मेरा देश महान, "हिन्दू मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई। आपस- में हैं भाई-भाई।" यह सब प्रचार खोखला है जबकि कांग्रेस स्वयं विघटन-वादी तत्वों को प्रोत्साहन दे रही है और भाषा के नाम पर हिन्दू-मुसलमानों में वैमनस्य पैदा करने जा रही है। कांग्रेस भूल गई कि उर्दू के नाम पर ही बटवारा हुआ और मोहम्मद अली जिन्होंने पूर्व पाकिस्तान (अब बंगलादेश) में वक्तव्य दिया था।

"बिना एक भाषा के कोई भी राष्ट्र सुगठित नहीं रह सकता और न उसका सुचारु रूप से संचालन हो सकता है"।

संविधान का अनुच्छेद 345 कहता है:- "किसी राज्य का विधान-मण्डल विधि द्वारा, उस राज्य में प्रयोग होने वाली भाषाओं को या हिन्दी को उस राज्य राज्य ------ के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा के रूप में अंगीकार कर सके..

हर राज्य को केवल दो विकल्प दिए गये हैं। या तो आठवीं अनुसूची में दी गई 14 भाषाओं में एक को राज्य भाषा के रूप में अपनाए या हिन्दी। यदि हिन्दी राज्य भाषा घोषित कर दी गयी है तो सब द्वार बन्द हो जाते हैं और अमुक राज्य के सामने भाषा-विषयी कोई दूसरा विकल्प रह नहीं जाता। अनुच्छेद इस प्रकार है:-

यदि इस निमित्त मांग किए जाने पर राष्ट्रपति का यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निर्देश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए जो वह विनिर्दिष्ट करें, शासकीय मान्यता दी जाए।

अनुच्छेद 347 में आने वाले पद "पर्याप्त अनुपात" को गृह राज्यमंत्री ने संसद् में अतारांकित प्रश्न का उत्तर देते हुए 24·2·1982 को स्पष्ट किया और कहा:-

कोई राज्य एक भाषा-भाषी तब समझा जाता है जब उसकी सत्तर प्रतिशत या अधिक आबादी एक भाषा बोले और यदि राज्य की आबादी के 30 प्रतिशत या अधिक को कोई अल्पसंख्यक समुदाय हो तो वह राज्य द्विभाषी समझा जाता है। जिला स्तर पर जहाँ आबादी का 60 प्रतिशत राजभाषा से भिन्न कोई भाषा बोले या प्रयोग करे तो अल्पसंख्यक समुदाय की उस भाषा के अतिरिक्त उस जिले में राजभाषा की मान्यता दी जानी चाहिए। "जलन

भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के लिए नियुक्त आयुक्त ने अपनी 72-73 की 15वीं रिपोर्ट और 76 और 78 की 19वीं रिपोर्ट में स्पष्ट कहा था कि उत्तर प्रदेश या विहार या कोई भारत वर्ष की राज में उर्दू को द्वितीय राजभाषा होने की माँग की कोई औचित्य नहीं है क्योंकि किसी राज्य में यह भाषा 30प्रतिशत से अधिक जनता नहीं बोलती है।

अनुच्छेद 345 के अन्तर्गत राष्ट्रपति से उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने की कभी भी माँग नहीं की गयी है क्योंकि उर्दू भाषी जनता उत्तर प्रदेश में 30प्रतिशत नहीं है और किसी जिले में 7 प्रतिशत से अधिक नहीं है।

पावस सत्र में जो उर्दू विधेयक पेश किया गया है वह संविधान की उद्देश्यिका ऊपर अनुच्छेद 345 और 347 का उल्लंघन करता है। उच्च-न्यायालय में जब इस विधेयक के विरुद्ध समावेश याचिका प्रस्तुत की जायेगी तो आशा है कि विधेयक निरस्त कर दिया जायेगा। □

वैदिक-साहित्य (शाखाएं)

— आचार्य डा० सुरेन्द्रदेव, स्नातक शास्त्री, शिरोमणि एम.ए. (एटा)

निस्सन्देह शाकल- संहिता ही सर्वप्रथम रची गई संहिता है अनुवाकऽ-नुकमणी" में लिखा है-

"ऋग्वेदेशौशिरीयायाँसंहितायां · यथाक्रमम्।
प्रमाणमनुवाकानांसूक्तैः श्रृणुत · शाकलाः।"

अर्थात् शाकल ने अपनी शाकल संहिता नामक शाखा का मण्डल, अनुवाद तथा सूक्तों के रूपों में प्रवचन किया। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जिस शाखा में मण्डल, अनुवाक और सूक्त हो वही "शाकल संहिता" है। वर्तमान में उपलब्ध शाकल संहिता में उपर्युक्त लक्षण उपलब्ध होते हैं। अतएव शाकल संहिता ही शाखारूप में रची गई संहिता है। उपरि- उद्धृतऋक- प्रातिशाख्य के श्लोक में स्पष्ट रूप से कहा गया है:- पठितः शाकलेनादौ" अर्थात् उस (शाकल संहिता) का प्रवचन सर्वप्रथम शाकल ऋषि द्वारा ही किया गया। इससे यह भी सुनिश्चित हो जाता है कि इससे पूर्व कोई अन्य शाखा विद्यमान न थी।

शाकल ऋषि द्वारा ही सर्वप्रथम प्रकृति तथा पद-पाठ युक्त प्राचीन ऋक-संहिता को दशमण्डलों तथा एक हजार अट्ठाइस सूक्तों में विभक्त किया गया है। इसी कारण ऋक- संहिता को दाशतयी अर्थात् दशवाली कहा गया है। इस शाकल संहिता रूप शाखा के अनन्तर कुछ ही काल के पश्चात् शाकल-ऋषि के प्रधान शिष्य वाष्कल ने उसी शाखा को अष्टक अध्याय और वर्गों में विभक्त कर दिया, किन्तु इस विभाजन से केवल मन्त्रों की संख्या में ही परिवर्तन हुआ अन्य किसी प्रकार का परिवर्तन न हो सका। इसी दृष्टि से वैदिकों ने दोनों को एक ही माना तथा दोनों को एक में मिला दिया। अब भी यह दोनों शाखाएं एक ही में मिली हुई उपलब्ध होती हैं। उपर्युक्त दोनों क्रम प्राचीनकाल से ही चले आ रहे हैं। इस भांति आदि प्रवचन कर्ता शाकल ऋषि द्वारा स्थिर की हुई ऋग्वेद की शाखा प्राप्त है। इस में इस समय तक आरम्भिक संहिता के प्रकृत मन्त्र तथा पदपाठ दोनों एक ही में मुद्रित होकर प्रकाशित होते हैं वर्तमान में उपलब्ध ऋग्वेद-संहिता के आचार्य सायण तथा ऋषिवर दयानन्द द्वारा किये गये भाष्यों में मन्त्र और पदपाठ तथा मण्डल अनुवाक और सूक्त तथा अष्टक अध्याय और वर्ग आदि प्राथमिक चिह्न आज तक पूर्ववत् लिखे हुए ही उपलब्ध होते हैं। अतएव ऋग्वेद संहिता पूर्णरूप से पूर्ववत् उपलब्ध है।

शाकल तथा वाष्कल शाखाओं के संयुक्त रूप के अतिरिक्त ऋग्वेद की कोई अन्य शाखा उपलब्ध नहीं होती है।

पं० जयचन्द्र जी विद्यालंकार ने स्वरचित "भारतीय-साहित्य की रूपरेखा" में शाकल ऋषि से सम्बन्धित एक कथानक का उल्लेख निम्नलिखित रूप में किया है------

"एक बृहद् यज्ञ के अवसर पर राजर्षि जनक की विद्वत्परिषद में याज्ञवल्क्य के साथ कुरु पाञ्चाल ब्राह्मणों का शास्त्रार्थ हुआ। इसमें जब सभी ब्राह्मण पराजित हो गये तब याज्ञवल्क्यके समक्ष विदग्ध शाकल ने नाना प्रकार के तर्कों को प्रस्तुत किया। शाकल का अपना वास्तविक नाम देवचित्र था। विदग्ध उनकी छेड़ थी क्योंकि उनको अपने ज्ञान का महान गर्व था। उन्होंने ऋग्वेद का संकलन भी किया था उनके अथवा उनके शिष्यों द्वारा संपादित शाखाओं कोशाकल संहिताओं के नाम से कहा गया।

इस भांति जिस समय तक अदला-बदली वाली शाखाओं का निर्माण चलता रहा उस समय तक वेदों के स्वरूप में कोई किसी प्रकार का अन्तर नहीं पड़ सका, उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन अथवा वृद्धि आदि का होना भी सम्भव न हो सका। किन्तु "कृष्ण-यजुर्वेद" के जनता के मध्य आते ही वैदिक शाखाओं में उथल पुथल का प्रारम्भ हुआ। रावण आदि द्वारा लिखित साहित्य के सम्मिश्रण से शाखाओं में नाना प्रकार के परिवर्तनों का प्रारम्भ हो गया। संहिताओं में ब्राह्मण भाग अथवा ब्राह्मणेतर भागों का सम्मिश्रण कर अथवा मूलमन्त्रों को भी घटाघटा कर पाठ भेद करके अनेक शाखाओं का प्रचलन प्रारम्भ हो गया। प्राचीन ग्रन्थों में शाखाओं की जो संख्या लिखी हुई थी वह हजारों तक पहुँच गई तथा जिनमें पर्याप्त रूप का मतभेद भी विद्यमान था। इनकी संख्या का विवरण मैं अपने इससे पूर्व के लेख में दे चुका हूँ। उन संख्याओं में आर्य तथा अनार्य-दोनों ही प्रकार की शाखाओं की गणना कर ली गई है।

जिस काल में गोत्र एवं शाखाओं के प्रचार की धूम मची हुई थी, उस समय एक एक वेद की अनेक शाखाएं हो चुकी थीं। मूलरूप में विद्यमान मन्त्रों की मूलरूप में ही रक्षा करते हुए, मात्र मन्त्रों के उलटफेर से जितनी-भी शाखाओं का बन सकना सम्भव था, बन चुकी थीं। इन शाखाओं को "आर्यशाखा" नाम से कहा गया, किन्तु रावण सम्प्रदाय के कारण जितनी शाखाओं की उत्पत्ति हुई उनमें आर्य शाखाओं की अपेक्षा दो बातें अधिक हुईं। एक बात तो यह हुई कि मन्त्रों में पाठभेद किया गया तथा उनके साथ आसुरी- साहित्य, ब्राह्मणभाग तथा मन द्वारा कल्पित, बाह्य-संस्कृत, अथवा लौकिक संस्कृत का मिश्रणकर शाखाओं का निर्माण किया गया। दूसरी बात यह हुई मन्त्रों का अधिकांश भाग निकाल डाला गया तथा मन्त्रों को विकृत कर छोटे छोटे वेदांशों को भी शाखा नाम से कहा जाने लगा। इस प्रकार की शाखाओं को "अनार्य शाखा" नाम द्वारा कहा गया आर्य शाखाओं- में उलट फेर के अतिरिक्त न्यूनाधिक्यता नहीं है। किन्तु अनार्य शाखाओं में दोनों ही उपर्युक्त बातें विद्यमान हैं।

मूलरूप में विद्यमान ऋग्वेदीय सभी उपलब्ध शाखाएं आर्य शाखा- के अन्तर्गत आती हैं।

ऋग्वेद से सम्बन्धित शाखाओं का विवरण यही है। शाकल एवं वाष्कल दोनों ऋषियों के द्वारा ऋग्वेद सम्बन्धी किये गये दोनों प्रकार के विभाजनों में मण्डल वाला क्रम अधिक समीचीन है। तथा अधिक रूप में प्रचलित भी है। इस विभाजन में देवता के आधार पर सूक्तों का विभाजन किया गया है। ऋषि तथा देवता के आधार पर ऋग्वेद को मण्डलों में विभक्त किया गया है। इस विभाजन के अनुसार ऋग्वेद में दश मण्डल, 85 अनुवाक तथा 1028 सूक्त और 10552 मन्त्र हैं। दूसरा अष्टक वाला विभाजन संख्या तथा गणना के आधार पर आधृत है। इसके अनुसार सम्पूर्णऋग्वेद को आठ (8) समान भागों में विभक्त किया गया है। प्रत्येक अष्टक में आठ अध्याय हैं। अतएव 8×8=64 अध्याय हुए। प्रत्येक अध्याय में वर्गों की संख्या भिन्न भिन्न है। यह संख्या 25 से लेकर 49 तक है। प्रत्येक वर्ग में मन्त्रों की संख्या लगभग पाँच है। इस विभाजन के अनुसार ऋग्वेद में आठ अष्टक, 64 अध्याय तथा 2024वर्ग और 10552 मन्त्र हैं। □

शोक समाचार

आर्यसमाज कासिमपुर (अलीगढ़) के मन्त्री श्री धर्मपाल जी की बुआ का इनके घर पर निधन हो गया उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिकरीति से किया गया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति व शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

बाल जगत

महर्षि दयानन्द

• चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
कानपुर

'नूतन ज्ञान ज्योति'

सन् उन्नीस सौ बीस वर्ष था,
जब आश्रम छोड़ा प्रमुदित ।
देशोद्वार कार्य में स्वामी
दयानन्द ने देकर चित -
किया धर्म - उपदेश देश में
कुरीतियों का खण्डन कर ।
वेद - धर्म का प्रतिपादन कर,
सत्य - धर्म का मण्डन कर।
मत -मतान्तरों और मजहबों
के फैले जो कुसंस्कार।
जन - जीवन में घुसे हुए थे,
भ्रम - मूलक जो भ्रमित विचार।
उनका स्वामी दयानन्द जी
करते थे खण्डन डट कर।
जीवन श्रेष्ठ बनाने वाली
वेदों की शिक्षा देकर।
जीवन उन्नत करने वाला
सत्य -प्रकाश दिखाते थे।
वेद - धर्म - प्रतिपादित सबको
सत्शिक्षा बतलाते थे।
गौर वर्ण, अति हृष्ट-पुष्ट तन,
तेजस्वी चेहरा सुन्दर।
था गम्भीर और रोबीला,
सिंह - सदृश महर्षि का स्वर।
जब व्याख्यान शुरु करते थे
करके वेद-मंत्र का पाठ।
मंत्र-मुग्ध हो जाते श्रोता,
जुट जाता था अनुपम ठाठ।
जनता खिंची चली आती थी,
सुनने को उनका प्रवचन।
क्रान्ति देश में फैल रही थी,
खुलते जाते बन्द नयन।
पहले - पहले स्वामी जी ने
"स्वराज्य" की बतलाई बात।
कहा- "गुलामी में दुख ही दुख।
"स्वतन्त्रता" का दिव्य प्रभात
अपने भारत में ले आओ।
स्वतन्त्रता में हैसम्मान।
पीछे पैर न रखना हरगिज,
हँस कर करो त्याग-बलिदान।
त्याग और बलिदान - क्षेत्र में
गिरता है जब जीवन-जल।
तभी, तभी तो खिल पाता है
स्वतन्त्रता का दिव्य कमल।

× × ×

"मथुरा" से बढ़ गये "आगरा",
फिर "धौलपुर" व "ग्वालियर"।
वैदिक धर्म, नूतन विचारों का
रहे सब जगह प्रचार कर
"ग्वालियर" से "जयपुर पहुँचे,
किया मूर्ति-पूजा-खण्डन।
फिर तो वाद-विवाद लगे
करने स्वामी से पण्डित गण।
"दयानन्द स्वामी" सचमुच ही
थे अत्यन्त श्रेष्ठ विद्वान्।
पातंजलि के महाभाष्य से
स्वामी जी ने दिया प्रमाण।

शेष पृष्ठ ७ पर

ओ३म्

संस्थापित - 1886 — फोन-245993
श्रीमद्दयानन्दाब्द- 165

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, नारायण स्वामी भवन,
५, मीरा बाई मार्ग, लखनऊ-२२६००१

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र., लखनऊ
का
नैमित्तिक (असाधारण) अधिवेशन

उत्तर प्रदेशीय सभान्तर्गत् आर्यसमाजों, आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं एवं समस्त प्रतिनिधियों की सेवा में-

श्रीमन्महोदय नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का नैमित्तिक {असाधारण} अधिवेशन तिथि मार्ग शीर्ष वदी 13, सम्वत् 2046 वि0 तदनुसार दिनांक 25 नवम्बर-सन् 1989 दिन शनिवार को प्रातः 11 बजे से दयानन्द महाविद्यालय {डी0ए0वी0कालेज} लखनऊ के प्रांगण में सम्पन्न होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि नियत समय, स्थान एवं तिथि पर पधार कर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान कर अनुगृहीत कीजिये।

विचारणीय - विषय

1- उपस्थिति गणना।

2- ईश प्रार्थना।

3- स्वागताध्यक्ष भाषण।

4- सभा की अन्तरंग सभा दिनांक 12·11·88 की द्वितीय बैठक के निश्चय सं07 के अनुसार सभा के पदाधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों का निर्वाचन तीन वर्ष के लिये हुआ करे विचारार्थ एवं विभिन्न नियमों में संशोधन विचारार्थ।

5- शान्ति पाठ।

टिप्पणीः- {1} मध्यान्होत्तर 3 बजे से अन्तरंग सभा की बैठक होगी।

{2} आर्य प्रतिनिधि सभासदों के निवास एवं भोजन व्यवस्था का प्रबन्ध दयानन्द महा विद्यालय लखनऊ में किया गया है। चारबाग स्टेशन से नाकाहिंडोला होकर आर्यनगर-मोतीनगर के मध्य डी0ए0वी0कालेज स्थित है।

निवेदक
मनमोहन तिवारी
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश।

नारायण स्वामी भवन
लखनऊ
१०-१०-१९८९

::ओ३म्::

संस्थापित- 1886 — फोन-245993 — श्रीमद्दयानन्दाब्द-165

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, नारायण स्वामी भवन ५, मीराबाई मार्ग, लखनऊ-२२६००१

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र., लखनऊ का १०४ वां, वार्षिक वृहद् अधिवेशन

उत्तर प्रदेशीय सभान्तर्गत् आर्य समाजों, आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं एवं समस्त प्रतिनिधियों की सेवा में-

श्रीमन्महोदय नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का 104वाँ वार्षिक साधारण अधिवेशन मार्ग शीर्ष वदी 13, सम्वत् 2046 तदनुसार दिनांक 26 नवम्बर सन् 1989 दिन रविवार को प्रातः 11 बजे से दयानन्द महाविद्यालय (डी०ए०वी० कालेज) लखनऊ के प्रांगण में सम्पन्न होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि नियततिथि, समय एवं स्थान पर पधार कर कार्य सम्पादन में सहयोग प्रदान कर अनुगृहीत कीजिये।

विषय - सूची

1- उपस्थिति ।
2- ईश प्रार्थना।
3- दिवंगत आर्य बन्धुओं के प्रति शोक श्रद्धांजलि प्रस्ताव।
4- प्रधान एवं मंत्री द्वारा प्रतिनिधियों को सम्बोधन।
5- वार्षिक वृतान्त 1 जनवरी 88 से 31 मार्च 1989 तक आय-व्ययलेखा सहित स्वीकारार्थ।
6- अनुमानिक आय-व्यय (बजट) वर्ष 89-90 हेतु स्वीकारार्थ।
7- सभा के अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों का निर्वाचन।
8- गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन विद्यासभा के लिये नियम सं0 44(ई) के अनुसार छः प्रतिनिधियों का निर्वाचन।
9- आय-व्यय लेखा निरीक्षक की नियुक्ति।
10- धन्यवाद एवं शान्ति पाठ।

टिप्पणीः- नव निर्वाचित अधिकारियों की बैठक अधिवेशन के तुरन्त पश्चात् होगी तथा नवीन अधिकारियों के कार्यभार ग्रहण की कार्यवाही सम्पन्न होगी।

निवेदक
मनमोहन तिवारी
मंत्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश।

नारायणस्वामी भवन
लखनऊ। २५-८-१९८९

पृष्ठ ६ का शेष

हुए निरुत्तर सारे पण्डित,
सुन कर दयानन्द की बात।
स्वामी जी का ज्ञान सराहा,
मान गये वे अपनी मात।
ऋषिवर की विद्वत्ता सुशोभित
हुई वहाँ पर ज्यों जलजात।
अन्धकार में ज्यों मयंक से
खिल उठती है काली रात।
शारीरिक व मानसिक बल के
साथ-साथ प्रतिभा अनुपम।
ब्रह्मचर्य का तेज, चमकता चेहरा,
प्रतिभा का संगम।
महर्षि स्वामी दयानन्द- यश
लगा फैलने चारों ओर।
उनका प्रवचन सुनकर श्रोता
हो जाते आनन्द - विभोर।
निराकार ईश्वर की सत्ता,
वेद-ज्ञान पर दृढ़ विश्वास।
दिन पर दिन हर ओर फैलता
स्वामी जी का ज्ञान-प्रकाश।

× × ×

संवत् उन्नीस सौ तेईस में
महाकुम्भ का आयोजन।
हरिद्वार में हुआ, वहाँ पर
भारत के सब धार्मिक जन-
हुए इकट्ठा, इतनी भारी
भीड़ हो गई जनता की।
सभी ओर तो जन-समूह था,
जगह न रही कहीं बाकी।
सभी अन्ध-विश्वास पूर्ण थे,
समझे- यही स्वर्ग- सोपान।
पाखण्डों से प्रेरित करते
दिखावटी सब धर्म-विधान।
महाकुम्भ के अवसर पर जब,
स्वामी जी पहुँचे "हरिद्वार",
भीड़-भाड़ औ "प्रदर्शिनी से
उनके मन में उठा विचार :-
हा! कैसा पाखण्ड देश में
फैल रहा है। ऐ ईश्वर।
यहाँ धर्म के नाम हो रहा
अधर्म का कैसा चक्कर?
इसका खण्डन है आवश्यक।
होगा तभी देश-कल्याण।
झट "पाखण्ड- खण्डिनी पताका"
का महर्षि ने किया विधान।
थी "पाखण्ड खण्डिनी पताका"
हरिद्वार में फहराई।
आर्ष ज्ञान की बातें ऋषि ने
जनता को तब बतलाई।
नई चेतना, नई ज्ञान की
दृष्टि वहाँ सब में आई।
नई ज्योति देखी जन-जन ने,
नई बात थी सुन पाई।
सत्य - ज्ञान - का शुभ प्रकाश अब
फैल रहा था चारों ओर।
दयानन्द स्वामी बिखेरते
नूतन ज्ञान- ज्योति उस ठौर। □

आर्य कुमार सभा की स्थापना

अमरोहा (मुरा0) यहां से 8 किमी0 दूर स्थित गांव अब्वलपुर में सर्वप्रथम यतीन्द्र कुमार द्वारा वेद प्रचार हुआ। श्री राजेश कुमार एवं श्यामलाल आर्य द्वारा एक सभा का आयोजन हुआ। उसके बाद वृहद्यज्ञ सम्पन्न हुआ। कुमारसभा का प्रधान श्री हेम सिंह की एवं मंत्री-श्यामलाल की तथा कोषाध्यक्ष एवं प्रचार-मंत्री राजेश कुमार आर्य को बनाया गया। साहित्य वितरण भी हुआ।

- सवांददाता।

गाय आदि पशुओं का करुण क्रन्दन

—श्री ज्ञानेश्वरार्यः एम.ए. दर्शनाचार्य

बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली आदि नगरों में करोड़ों रुपये की लागत से अति आधुनिक बड़े-बड़े बूचड़ खाने बने हुए हैं, जहाँ प्रतिदिन, सैकड़ों हजारों की संख्या में पशु मारे जाते हैं। इन बूचड़ खानों की ओर जाती हुई सड़कों पर, थके-माँदे, भूखे-प्यासे, लाठियों की मार से घायल, हड्डी-हड्डी बने, गाय-बैल आदि पशुओं के झुण्ड सहज ही दृष्टिगोचर हो जाते हैं। ये बेजुबान, दीनहीन, अनाथ जीव, हमारी भाषा में बोल तो नहीं सकते किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि ये अपनी आँसू-भरी गीली आँखों से अपना असह्य कष्ट प्रकट कर रहे हों- "हे मनुष्यो! दया करके हमें बचालो, हमारा बहुत बुरा हाल है। हमारी ऐसी दुर्दशा को आप अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देखते हुए भी हाय!! हमारी रक्षा क्यों नहीं करते। हमको इन क्रूर कसाईयों के शिकंजे से छुड़ाते क्यों नहीं। हमने तो सर्वस्व ही तुम्हारे कल्याण के लिए समर्पित कर दिया था। क्या हम तुम्हारे भाई बहिन नहीं है? हमने तो दस-दस, पन्द्रह-पन्द्रह वर्ष तक घास खाकर तुम्हें अमृत स्वरूप घी, दूध, दही, मक्खन आदि खिलाया-पिलाया। जिसके खाने-पीने से तुम्हारा शरीर, बल, बुद्धि, आयु तथा पराक्रम आदि बढ़े हैं। अब भी जो कुछ हाड़, मांस, चाम बचा है, वह भी तुम्हारे लिए समर्पित है, उनसे काम लेना, किन्तु इस अकाल मौत से तो हमें बचालो। हम अपने दारुण दुःख को शब्दों में बता नहीं सकते। ये निष्ठुर कसाई हमें बड़ी ही निर्दयता से बुरा हाल करके, तड़पा-तड़पा कर मारते हैं। आप लोग इस बीभत्स दृश्य को अपने घरों व कोठियों में बैठे नहीं देख सकते। यदि आप लोग इन कसाईयों के कुत्सित हृदय-विदारक कृत्यों को अपनी आँखों से देख लो, तो निश्चय ही आपका दिल दहल जावे।

सैकड़ों मील दूर से ये राक्षस, जंगली मार्गों से लुकते-छिपते, रात-रात में चलाकर, हमें इन बूचड़खानों तक लाते हैं। इन बीहड़ जंगलों में न पर्याप्त चारा मिलता है न पानी। भूखा-प्यासा हमारा शरीर इन कसाईखानों तक पहुँचते-पहुँचते सूखकर हड्डियों का पिंजर मात्र रह जाता है। भूखे-प्यासे हम से चला भी नही जाता, ऐसी स्थिति में ये बर्बर पिशाच निर्दयता से हमारी पीठ पर लोहे की लाठियों से प्रहार करते हैं, तब हमारे इस जर्जर शरीर से खून बहने लग जाता है और अनेकों घाव हो जाते हैं, किन्तु हम सूखे कण्ठ और शक्तिहीनों से तो उस समय चिल्लाया भी नहीं जाता है। बस लाचार होकर, बेहोशी की अवस्था में, आँखें बन्द किये, गिरते-पड़ते दिन-रात इस शरीर को सड़कों पर धकेलते ही रहते हैं। ऐसी दुरावस्था में अनेकों बूढ़े, रोगी, निर्बल तथा बछड़े तो रास्ते में ही, ऊपर से डण्डों की मार और अन्दर की भूख-प्यास के कारण दम तोड़ देते हैं।

बूचड़खाने तक पहुँचते पहुँचते तो बस हमारी श्वास ही बाकी रह जाती है। यमा के दरवाजे पर पहुँचते ही हम निढाल होकर गिर जाते हैं तब कुछ शान्ति मिलती है, किन्तु कतलखाने का कसाई हमारे पतले सूखे चमड़े को देखकर नाक सिकोड़ता है। इस चमड़े को नरम तथा मोटा बनाने के लिए अपने वैज्ञानिक उपायों को अपनाता है। ऐसा करते हुए तो वह क्रूरता की सीमा ही लाँघ जाता है।

मानव शरीर में ये कसाई ऐसे जघन्य कर्म कैसे कर लेते हैं, हमें तो बहुत आश्चर्य होता है। हम शक्तिहीन, बेहोश होकर गिरे हुए पशुओं के चारों पैरों में रस्सी बाँधकर उल्टा लटका देते हैं और खौलते पानी का छिड़काव हम पर किया जाता है। घावों पर गर्म पानी पड़ते ही हम असह्य पीड़ा की अनुभूति करते हैं। एक भयानक चीत्कार निकलने को होती हैं, किन्तु हमारे मुँह तो पहले ही रस्सी से बाँध दिये जाते हैं। गर्म पानी के प्रभाव से सूखे मांस में बचा-खुचा खून दौरा करने लगता है और सफेद-पीला चमड़ा लाली पकड़ लेता है। अब चमड़े को मोटा तथा नरम करने के लिए मोटे-मोटे डण्डों से, हम उल्टे लटके हुओं की जोर-जोर से पिटाई की जाती है। यहाँ पर तो पाशविकता की हद हो जाती है। हम भूखे-प्यासे, उल्टे लटके हुए, गर्म पानी के छिड़काव से घावों की पीड़ा सहन करते हुए और ऊपर से लाठियों से बेरहमी से पीटे जाते हुओं की क्या दशा होती होगी, फिर हमें बिजली के झटके {इलेक्ट्रिक सोक} लगाकर बुराहाल करके मारा जाता है अथवा कहीं-कहीं पर तो जिन्दे ही तेज छुरियों से खाल काटकर खींच ली जाती है और हमारे दुःखों का अन्त हो जाता है। हमारी आँतें, कलेजा, मगज, जीभ तथा मांस आदि अलग-अलग डिब्बों में बन्द करके विदेशों में भेज दिया जाता है।

बन्धुओं! हमारी करुणामय पुकार को सुनो- हमने तो आपके लिए सर्वस्व की आहुति दे दी। आपको बचपन से ही माँ-बाप की तरह पाला, आपके लिए खेतों में अन्न, शाक, फल, फूल, वनस्पति उत्पन्न की। इस उपकार का बदला आप इस तरह चुका रहे हो? यह हमारे कर्मों का फल नहीं है, न भगवान् की ऐसी इच्छा है और न होनी है, यह तो सरासर अन्याय ही है, जो इन नास्तिक, अधार्मिक, स्वार्थी, अज्ञानी मनुष्यों द्वारा किया जा रहा है। आप हमारे इस महाशोक को समझ सकते हैं, और प्रयास करके हमें बचा भी सकते हैं। फिर भी आप हमारे इस दारुण दुःख को देखकर बचाने के लिए उद्यत क्यों नहीं होते? आपके बूढ़े माता-पिता का, हमारी तरह कोई बुरा हाल करता तो क्या आप सहन कर लेते? क्या हमने तुम्हारे प्रति माता-पिता की तरह उपकार नहीं किया। फिर हमारे प्रति ऐसी उपेक्षा वृत्ति क्यों बरत रहे हो? हमारी ऐसी हालत को जानकर भी आपको नींद कैसे आती है। आपको रोटी कैसे भाती है। आप चैन की श्वास कैसे ले रहे हैं। आप अपने को आस्तिक धार्मिक, परोपकारी और **भगवान राम** और **कृष्ण** का भक्त कैसे कह रहे हैं। आज भगवान् रामचन्द्रजी या योगेश्वर भगवान् कृष्णचन्द्र जी होते तो इन कातिलों के और इन बूचड़खानों के धुर्रे नहीं उड़ा देते? फिर तुम्हारा, तन, मन, धन हम गाय आदि की रक्षा के लिए न लगे तो किस काम का है?

क्या आप हमारे लिए पिंजरापोल नहीं बना सकते? क्या गोशाला में घास, चारा, भूसा, खली आदि का प्रबन्ध नहीं कर सकते। शहरों में चाहे न हो, गाँवों में तो जहाँ गायें पाली जाती हैं वहाँ हम बूढ़ी, निर्बल गायों की समस्त सुविधा हो जाये तो क्यों हमें बूचड़खानों की ओर धकेला जायेगा? इसलिए हे धन, बल, बुद्धि, श्री से समर्थ मनुष्यों। हम अनाथ पशुओं के प्राणों को शीघ्र ही बचाने का प्रयास करो। हे परम पिता परमेश्वर आप भी इन सज्जनों के मन में प्रेरणा करो कि ये सब मनुष्य अपने तन, मन, धन को परोपकार में अर्पण करके महापुण्य के भागी बनें।

स्वास्थ्य-सुधा

उपचार दर्पण....

दर्शन-योग-विद्यालय, सागपुर, गुजरात

रोगी अपना विवरण और दो डाक लिफाफे निम्न पते पर भेजें-
{डॉ0} स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्यसमाज-पिथौरागढ़ {उ0प्र0}

प्रश्न- आनन्दमोहन रावत, 236सी-4-ई जनकपुरी, नईदिल्ली।
-मेरी पुत्री 8 वर्ष की है। इसकी आँखें कमजोर हैं। याददाश्त भी कम है। स्वास्थ्य भी कमजोर है। दवा बतायें।

उत्तर- पुत्री को सात दिवसीय गेहूँ के 25 जड़रहित पौधे और एक बादाम पीसकर दूध-पानी चीनी में घोल कर प्रातः खाली पेट एक गिलास पिलायें। गेहूँ पौधों के लिये सात गमलों या क्यारियों की व्यवस्था कर लेवें, तभी दैनिक-क्रम बनेगा। प्रातः इस {नेत्रज्योति पेय} से पहले "भुजंगासन" के समय आँखों को चक्करदार घुमाने के बाद कुछ क्षण माथा की ओर दृष्टि टिकाना चाहिये।

प्रत्येक भोजन के बाद सारस्वतारिष्ट 2 ढक्कन और कुमार्यासव 2 ढक्कन के साथ समान जल मिला कर पिलायें। पूरा उपचार 3 मास से अधिक चलेगा।

प्रश्न- फूलदेव यादव, मुख्य डाकघर-पिथौरागढ़।
- मेरे सिर के बाल झड़ रहे हैं। बाल भी सफेद हो रहे हैं। आयु तो अभी 34 वर्ष है। कृपया उपचार लिखियेगा।

उत्तर- 30 ग्राम कलमीशोरा, दस कागजी-नीबू के रस में खरल कर किसी शीशी में रखें। इस मिश्रण को गंज-स्थान पर लेप करें। दो घण्टे बाद स्नान कर भृंगराज केश तेल लगाया करें। सिर में साबुन का प्रयोग न करें। एक लीटर पानी में चार आँवले उबालकर आधा करें। इस पानी में दही मिलाकर सप्ताह में एक बार तो अवश्य सिर के बाल धोया करें।

प्रातः खालीपेट "सर्वांगासन" किया करें। भोजन के साथ फल और सलाद लेना मत भूलें। एक मास बाद गंजापन नष्ट होने लगेगा।

पूज्य पं॰ शिवकुमार शास्त्री की तब स्मृति आती थी, अब स्मृति शाती है।

—देवनारायण भारद्वाज

जगन्नाथ निवास रैदोपुर नई बस्ती आजमगढ़ (उ०प्र०)

पूज्य पंडित शिवकुमार शास्त्री अलीगढ़ निर्वाचन क्षेत्र से मार्च 1967 से जनवरी सन् 1974 तक चौथी तथा पाँचवीं लोक सभा के सम्मान्य सदस्य रहे। मैं इस अवधि से एक वर्ष पूर्व एवं एक वर्ष पश्चात् तक अलीगढ़ में अवस्थित रहा। मेरठ से मैं अलीगढ़ पहुँचा था। केन्द्रीय आर्यसमाज अलीगढ़ तथा जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा अलीगढ़ की गतिविधियों में सक्रियरूप से भाग लेने का इस कालावधि में स्वर्णिम अवसर मुझे मिला। अनेक वर्ष केन्द्रीय आर्यसमाज की मंत्री पद पर सेवा की। उस समय की मेरी महत्वपूर्ण उपलब्धि पूज्य शास्त्रीजी के सम्पर्क के रूप में मुझे मिली वे यथा नाम तथा गुण ही नहीं यथा नाम तथा रूप भी थे। विशाल सुदृढ़ तेजस्वी व्यक्तित्व देवाधिदेव महादेव शंकर के समान पाया था, किन्तु सरलता नम्रता और आर्द्रता से परिपूर्ण स्वभाव जो प्रौढ़ हो जाने पर भी कुमार शाही प्रतीत होता था।

शास्त्री जी दिल्ली से जब भी अपने निर्वाचन क्षेत्र अलीगढ़ आते थे, तो किसी डाक बंगले में नहीं आर्यसमाज-मन्दिर में ही ठहरते थे। उनके शिष्य-सहयोगी सभी उनको घेर कर बैठ जाते थे। जाने-पहचाने-अनजाने सभी का हाल वे पूछते थे। किसी को निराश नहीं करते थे और मिथ्या आश्वासन भी नहीं देते थे। मैंने उनकी निर्वाचन सभाओं के व्याख्यान भी सुने थे- वहाँ भी वे धर्मोपदेशक के रूप में बोलते थे। वे चुनाव के दंगल में भी अपने लिये नहीं दूसरों की इच्छापूर्ती के लिये उतरे थे और दोनों बार विजयी हुए। समय-समय पर आर्यसमाज मन्दिर में दिए गए उनके व्याख्यान मुझे इतने प्रेरक लगे कि आज तक उनके अंश मुझे स्मरण हैं। महत्वपूर्ण विषयों पर सरल सुबोध भाषा में लिखा साहित्य भी मेरा मार्गदर्शन करता रहा है। मैंने भरपूर सामाजिक लाभ उनसे उठाया, व्यक्तिगत लाभ कभी नहीं लिया।

कतिपय ईर्ष्यालु सहयोगी मुझे अलीगढ़ में देखना नहीं चाहते थे। वे अपने प्रतिनिधि मण्डल को लेकर शास्त्रीजी से मिले और उनसे आग्रह किया कि अपने प्रभाव से मुझ को अन्यत्र स्थानान्तरित करा दें, किन्तु एक ही प्रश्न से उन्होंने सबको निरुत्तर कर दिया कि वह आर्यसमाज के कार्य को कर्मठता से आगे बढ़ा रहा है और आप लोग उसका सहयोग करने के स्थान पर विरोध कर रहे हैं। सफलता पूर्वक कार्य सम्पादन करके मैं एटा-मथुरा रहकर उन्नाव स्थानान्तरित होकर आ गया। एक बार आर्यसमाज मेस्टन रोड कानपुर के वार्षिकोत्सव पर उनके दर्शन करने का अवसर मिला। फिर अन्तराल हो गया। मैं पुनः अलीगढ़ आया। इस बार सिविल लाइन्स क्षेत्र में स्थित ऐतिहासिक पवित्र भूमि वैदिक आश्रम में आर्यसमाज का कार्य उच्चस्तर पर आरम्भ किया गया। यहाँ वार्षिकोत्सव पर उनके आने पर निकट दर्शन और मार्गदर्शन मिला। उनकी सरलता व सौम्यता की छाप बड़े-बड़े कार्यों में ही नहीं, छोटे-छोटे कार्यों में भी परिलक्षित होती थी। अपनी पुत्री के पाणिग्रहण के शुभावसर पर छापकर वितरित किया गया निमन्त्रण पत्र मैंने आज भी सम्भालकर रक्खा हुआ है, जो उनकी मनोहर मानसिकता का स्वस्थ स्वरूप दर्शाता है। भाव प्रवण सौष्ठव पूर्ण हिन्दी में सीधे साधे वाक्यों में कथ्य प्रस्तुत कर दिया गया था। अलीगढ़ से सासनी, हाथरस, आगरा, बहुधा कार्यवश जाना होता था। सड़क से सटा हुआ ऊँचाई पर बसा उनका जन्म ग्राम शाहपुर मड़राक दूर से ही दिखायी दे जाता था, और हम उनकी स्मृति में खो जाते थे।

प्रादेशिक सेवा के अन्तर्गत कहीं-कहीं घूमकर मैं आज आजमगढ़ में हूँ- पूज्य शास्त्री जी का नाम, लेख, आर्यपत्रों में पढ़कर ही नहीं उनके साथ व्यतीत हुए क्षणों की स्मृति कभी भी हृदय को झंकृत कर जाती थी। सोच लिया करता था कि कभी यह स्मृति साकृति रूप धारण कर लेगी जब हम दिल्ली में या अन्यत्र उनके दर्शन कर लेंगे। क्या पता था कि निरन्तर वेद प्रचार में निशिवासर निमग्न रहने वाला यह महारथी प्रातः 6 बजे आर्यसमाज नयाबांस दिल्ली के साप्ताहिक सत्संग में व्याख्यान देने जा रहा होगा, आर्यसमाज के सदस्यों-सत्संगियों-माता-बहनों से किसी और को स्पर्धा ईर्ष्या हो जायेगी और परमेश प्रभु ही उस महान आत्मा को अपनी गोद में बुला लेंगे, उसके याद किये वेद मंत्रों को सुनने के लिए मैं कहीं शान्वे दिल्ली में थे- उनकी स्मृति आती थी अब वे दिवंगत होकर चले गए। उनकी स्मृतियाँ ही हमारी सम्पत्ति या धाती बनकर रह गई हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के उस मानस दीप, पूत को मेरी शतशत श्रद्धांजलि।

जो बढ़ते रहेंगे कदम धीरे-धीरे।

संतोष "कण्व"
(बरेली)

असुर-राज्य भू पर कहीं हो न जाए।
करो आर्य-जन सगंठन धीरे-धीरे।।
यह धरती प्रभु ने तुम्हीं को तो दी है।
करो इसकी रक्षा यतन धीरे-धीरे।।
राग-भय-ईर्ष्या दोष सारे मिटाकर।
करो सद्गुणों का वरण धीरे-धीरे।।
प्रभु एक है, वेद है उसकी वाणी।
करो इसका पाठन-पठन धीरे-धीरे।।
दयालु पिता की कृपा पाना चाहो।
करो शुद्ध अपना चलन धीरे-धीरे।।
निराशा निशा में पड़े सो रहे क्यों।
करो ईश का नित मनन धीरे-धीरे।।
कलुषता स्वयं मन की मिट जाएगी सब।
करो प्रातःसायं भजन धीरे-धीरे।।
अविद्या-अँधेरे से भयभीत हो क्यों।
करो ज्ञान-दीप प्रज्वलन धीरे-धीरे।।
उपद्रव चतुर्दिक अगर रोकना है।
करो दुष्ट-जन का दमन धीरे-धीरे।।
अगर काल-गति को तुम्हें मोड़ना है।
करो शक्ति का अब सृजन धीरे-धीरे।।
पाखण्डियों के ये ध्वज गिर पड़ेंगें।
करो मिल के पूरा यतन धीरे-धीरे।।
मंजिल स्वयं पास आने लगेगी।
जो बढ़ते रहेंगे कदम धीरे-धीरे।।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वृहदधिवेशन

दिनांक - २६ नवम्बर सन् १९८९ को डी॰ए॰वी॰ कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है :-

१ -	चित्रों की जाँच	16-10-89 से 19-10-89 तक
२ -	मतदाता सूची का प्रकाशन	22-10-89
३ -	आपत्ति करने की अन्तिम तिथि	25-10-89
४ -	आपत्ति का निवारण	26-10-89 से 27-10-89 तक
५ -	शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन	5-11-89
६ -	वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन	26-11-89
७ -	चुनाव परिणाम की घोषणा	निर्वाचन समाप्ति के बाद

दिनांक- 15-9-89

मनमोहन तिवारी
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०,
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

मेरठ में वेद प्रचार

§1§ 30 अगस्त 89- आर्य स्त्री समाज दयानन्द पथ · सदर मेरठ कैण्ट की ओर से वेदप्रचार सप्ताह के समापन पर बोलते हुए सभा प्रधान-श्री इन्द्रराज जी ने नारि शिक्षा में महर्षि दयानन्द जी महाराज की सक्रिय भूमिका का वर्णन करते हुए कहा कि आज जो आप सब यहां विराजमान हैं और स्वामी संजीवनी आनन्द जी का उपदेश सुन रही है वह सब महर्षि दयानन्दजी की दया का ही परिणाम है। आज जब बहनों को पढ़ने लिखने तथा सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ है तब कुछ नारियां सभ्यता और लज्जा की सीमा पार कर चलचित्र जगत् में तथा व्यापारिक प्रचारात्मक विज्ञापनों में नग्नता और अश्लीलता की ओर अग्रसर हो रही हैं तथा सरकारी मशीनरी और व्यापारी वर्ग इन्हें अपने स्वार्थ के लिए प्रोत्साहन दे रहा है। सीता, सावित्री, सुलभा, गार्गी, लक्ष्मीबाई और मीरा के देश में लज्जा की सीमाएँ पार करना अत्यन्त खेद जनक है। आप जैसी धार्मिक देवियाँ ही इस पर संयम ला सकती हैं। सभा प्रधान जी ने स्वामी संजीवनी आनन्द का भी धन्यवाद किया कि उन्होंने शिक्षा प्राप्त कर इस भौतिकवादी जगत् से मुखमोड़ कर संन्यास आश्रम ग्रहण किया। इस प्रकार के योग्य संन्यासी ही संसार को मुक्ति की ओर प्रेरित कर सकते हैं।

§2§ 2 सितम्बर 89-को सायं 4बजे शर्मा स्मारकहाल में स्व0 मास्टर-सुन्दरलाल जी एवं स्व0 सुन्दरलाल जी जैन को श्रद्धांजलि देते हुए सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने उन दोनों स्वतन्त्रता सेनानियों के गुणों का गान करते हुए महर्षि दयानन्द जी एवं महात्मागाँधी जी द्वारा नैतिक मूल्यों की रक्षा करने वाला उन्हें बताया। सभा प्रधान जी ने बताया कि स्वतन्त्रता प्राप्ति से पहले त्यागवाद का युग था और स्वतन्त्रता के पश्चात् भोगवाद का युग प्रारम्भ हो चुका है। वे दोनों महामानव इस भोगवादी युग में त्याग के प्रतीक थे क्यों कि दोनों को महात्मागाँधी जी का स्पर्श प्राप्त था। आज उनके स्थान की पूर्ति न होने के कारण उनका हम से वियुक्त होना देश की बहुत बड़ी क्षति है।

§3§ 3 सितम्बर 89-को आरोग्याश्रम पांचलीमेरठ · पहुँचने पर सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी का भव्य स्वागत किया गया। स्वामी-जगदीश्वरानन्द जी महाराज §संस्थापक§ आश्रम ने फूलों की माला की अपेक्षा फलों और सूखे मेवों की मालाओं से सभा प्रधान जी एवं अन्य विशिष्ट व्यक्तियों का स्वागत किया। वृक्षारोपण के इस कार्यक्रम को विशेष यज्ञ से प्रारम्भ किया गया। सर्वप्रथम सभा प्रधान जी से ही वृक्षारोपण करवाया गया। स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने सभा प्रधान-जी को फलादि देकर आशीर्वाद दिया।

§4§ 7 सितम्बर 89- को स्व0 सुन्दरलाल-जी जैन स्वतन्त्रता सेनानी के निवास पर विशाल शोकसभा में सभा प्रधान श्री इन्द्रराजजी ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि जैन साहब आर्यसमाज के रचनात्मक कार्यों में सदैव सहायक रहते थे। निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविरों में हमें उन्होंने शर्मा स्मारक भी निःशुल्क दिया तथा अच्छी मात्रा में दान भी दिया। वे एक न्यायप्रिय, निष्पक्ष, एवं सुलझे हुए विचारक थे। उनके निधन से जहाँ हमारे नगर जनपद और देश की हानि हुई है वहां आर्यसमाज की भी बहुत क्षति हुई है।

§5§ 10 सितम्बर 89- श्री देवेन्द्र · स्वरूप जी कोषाध्यक्ष आर्यसमाज मेरठशहर के निवास स्थान पर अथर्ववेद पारायण यज्ञ स्वामी विवेकानन्दजी-आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ के ब्रह्मत्व में तथा सभा प्रधान श्री-इन्द्रराज जी के निर्देशन में दि0 6 · से 10 सितम्बर 89 तक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस यज्ञ में नागरिक बड़ी संख्या में पांचों दिन उपस्थित रहे। इस यज्ञ में समय-समय पर आचार्य-सत्य प्रिय जी श्री जयन्त कुमार पाण्डेय स्वामी दयानन्द जी विदेह एवं स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, श्री तेजपाल सिंह एवं श्रीमती आशा के भी उपदेश होते रहे। दि0 9 सितम्बर 89 की सायं काल सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी ने गृहस्थ को सुखी बनाने के उपाय अथर्ववेदीय मन्त्रों के आधार पर बताते हुए कहा कि इस वेद में हर वस्तु का विज्ञान §विशेष ज्ञान§ भरा हुआ है। जीवन भी एक कला है। इस वेद प्रतिपादित कला से ही गृहस्थ जीवन सुखी होता है। वह कला है परस्पर प्रेम और प्यार की। बड़ों की प्रति श्रद्धा और छोटों के प्रति स्नेह की। हमें इस कला से परिवार और समाज को सुखी बनाना चाहिए। अन्तिमदिन स्वामी विवेकानन्द जी के यजमानों को आशीर्वाद के उपरान्त ब्रह्म भोज हुआ जिसमें सैकड़ों सम्भ्रान्त नागरिकों ने भोजन किया। साथ ही गुरुकुल के लिए पर्याप्त दान प्राप्त हुआ।

§6§ 11 सितम्बर 89- को मेरठ · की समस्त आर्यसमाजों की प्रतिनिधि संस्था केन्द्रीय आर्य समिति की ओर से सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी के निवास स्थान पर एक पारिवारिक यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभा के उपदेशक श्री मनवीरजी, श्रीमती आशा एवं श्री तेजपाल सिंह जी के मधुर भजन हुए। श्री पं0 नरेन्द्र-कुमार जी पुरोहित, श्री ब्रं0 शिवकुमार जी, श्री देवशर्मा जी आदि विद्वानों ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। श्री जयन्तकुमार-पाण्डेय का भाषण हुआ, जिसमें उन्होंने गृहस्थों को प्रेम और प्यार से भरने की प्रेरणा की। साथ ही गृहस्थाश्रम को टूटने से बचाने का उद्बोधन दिया। श्री आचार्य सत्यप्रिय जी ने वेदों के आधार पर स्वाध्याय एवं जीवन को पवित्र बनाने की प्रेरणा की। श्री मान सिंह जी वर्मा प्रधान केन्द्रीय आर्य समिति ने आज के बदलते हुए मूल्यों की ओर ध्यान दिलाते हुए यज्ञों के निरन्तर करने पर बल दिया। श्री हरवीर सिंह जी-सुमन मंत्री ने सबको धन्यवाद दिया। अन्त में सभा प्रधान जी ने समय की गम्भीरता और देश पर छाए हुए संकटों के बादलों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए वेद प्रचार पर बल दिया तथा छोटे-छोटे भेदभावों को भूल कर राष्ट्र रक्षा के कार्य में परस्पर सहयोग से चलने की प्रेरणा दी।

§7§ 12 सितम्बर 89- को सभाप्रधान श्री इन्द्रराजजी ने वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय बृजघाट का निरीक्षण किया तथा उसके कार्य को और सुचारु रूप से चलाने के लिए आवश्यक निर्देश दिए।

§8§ 14 सितम्बर 89- को सभा प्रधानश्री · इन्द्रराज-जी का दोपहर 1 बजे आर्य समाज गंज-स्टेशन रोड मुरादाबाद पहुँचने पर भव्य स्वागत किया गया। श्री सभा प्रधान जी आर्य कन्या इण्टर कालेज स्टेशन रोड-मुरादाबाद के वार्षिकोत्सव एवं राष्ट्रपति शिक्षक पुरस्कार प्राप्त कर सावित्री खन्ना प्राचार्या के अभिनन्दन समारोह में मुख्य अतिथि थे। सायं 5 बजे बच्चों के उच्चस्तरीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों से समारोह का कार्य प्रारम्भ हुआ। बच्चों का प्रदर्शन इतना अच्छा था कि उन्हें जनता द्वारा बहुत पुरस्कार मिला। अन्य शिक्षण संस्थाओं और सामाजिक संस्थाओं के प्रमुखों ने प्राचार्या जी को भेंट भी की और स्वागत किया। श्री राममोहन जी प्रधान ने संस्कृत में अभिनन्दन पत्र पढ़ा और भेंट किया तथा श्री श्याम सुन्दर अग्रवाल प्रबन्धक महोदय ने वार्षिक संक्षिप्त विद्यालय की रिपोर्ट पढ़ी। अन्त में श्री सभा प्रधान जी ने प्राचार्या महोदया को सम्बोधित करते हुए कहा कि उन्होंने राष्ट्रपति पुरस्कार लेकर के नगर या जनपद को ही नहीं अपितु उत्तर प्रदेश को और विशेष कर प्रतिनिधि सभा को गौरवान्वित किया है इसलिए प्रान्त की ओर से मैं उन्हें शतशत बधाई देता हूँ। इसके पश्चात् सभा प्रधान जी ने उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राज्य भाषा का सरकार द्वारा दर्जा दिए जाने पर दुःख प्रकट करते हुए कहा कि वे किसी भी भाषा के विरोधी नहीं हैं परन्तु जिस प्रकार से संविधान को तोड़ कर उर्दू को प्रदेश पर छोटे-छोटे स्वार्थों और तुष्टीकरण की नीति पर लादा जा रहा है। वह बड़ा दुर्भाग्य पूर्ण है। संविधान के साथ खिलवाड़ का कार्य बन्द होना चाहिए अन्यथा देश टूट जाएगा। सभा प्रधान जी ने घोषणा की- "कि आर्य समाज इस अनुचित निर्णय को सहन नहीं करेगा। □

शुभ सूचना

"काश गाँधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई नहीं कहते।

इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुस्तक के लेखक विष्णुस्वरूप पर केस चलाया जिसे माननीय मजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदी जी ने 29 नवम्बर सन् 88 को खारिज कर दिया जो सज्जन ये पुस्तक मंगवाना चाहें वे 1/-रुपए प्रति मंगवा सकते हैं। वितरण करने वालों को 50/- रु0 में सौ प्रति भेजी जायेंगी।

गाँधी जी का सपना हुआ साकार

गाँवों तक सत्ता

प्रधान मंत्री श्री राजीव गाँधी के प्रखर नेतृत्व तथा मुख्यमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी के निर्देशन में राष्ट्रपिता की पंचायतीराज की परिकल्पना को साकार रूप देने के लिए उत्तर प्रदेश ने कई महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं।

- नये पंचायतीराज विधेयक के अनुरूप ग्राम पंचायतों को नये अधिकार और नयी जिम्मेदारी दी जायेगी।
- पंचायतीराज संस्थाओं के नियमित चुनाव कराने की व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है, ताकि जड़मूल पर लोकतन्त्र मजबूत और स्थानीय नेतृत्व विकसित हो सके।
- राज्य सरकार तथा सार्वजनिक उपक्रमों में अनुसूचित जाति/जनजाति का निर्धारित कोटा पूरा करने के लिए विशेष अभियान चलाया गया है।
- पिछले एक वर्ष में 73, 914 ग्राम पंचायतों का चुनाव सम्पन्न किया गया। अब 30 प्रतिशत महिला प्रतिनिधियों का चुनाव शीघ्र सम्पन्न हो जायेगा।
- गाँवों के विकास कार्यों को ग्राम सभाओं द्वारा सम्पन्न कराने के लिए मालगुजारी वसूलने का अधिकार उन्हें ही दे दिया गया।
- विकास कार्यों में ग्राम सभाओं का अंशदान 50 प्रतिशत के स्थान पर अब 10 प्रतिशत तथा 90 प्रतिशत सरकार का अंशदान रहेगा।
- ग्राम सभाओं को पहली बार कर लगाने का अधिकार।
- ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के संचालन का दायित्व ग्राम सभाओं को सौंपने का निर्णय।
- नयी जवाहर रोजगार महत्वपूर्ण योजना को लागू करने की जिम्मेदारी भी ग्राम पंचायतों को सौंपी गयी। इसके अन्तर्गत 517 करोड़ रुपये व्यय किये जायेंगे तथा 11·56 करोड़ मानव दिवस सृजित होंगे।
- 79980 गाँवों को पेयजल की सुविधा दी गयी। हरिजन पेयजल योजना के अन्तर्गत 54151-कुएँ 21,345 हैण्डपम्प और 5071 डिग्गियां निर्मित की गयीं।

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्यमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र

नारायण स्वामी भवन, ५- मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष: २४५६६३,
पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन पी- ७६
वार्षिक शुल्क
११, अक्तूबर, रविवार, १९८९

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला अतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अत: जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रोसेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि॰ सं॰ २२४१/५७) कार्तिक कृष्ण-८, रविवार-संवत् २०४६ वि॰, दिनांक २२, अक्तूबर, १६८६ (घोषणा पत्र सं॰ ७/२८-२-२५)



ऋषि के प्रतिः-

"तुम वाणी द्वारा प्रचार करने वाले केवल तत्ववेत्ता ही न थे परन्तु जिन सच्चाइयों का तुम संसार में प्रचार करना चाहते थे उनको क्रिया में लाकर सिद्ध कर देना भी तुम्हारा ही काम था। तुम्हारे लिए तीनों लोकों में कोई कर्त्तव्य-शेष नही रह गया था, तुमने मानव-संसार को सीधामार्ग दिखलाने के लिए कर्म की कभी उपेक्षा नही की----

-- अमरशहीद स्वामी श्रंद्धानन्द

[redacted]

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य..रू॰ २५१/-

वार्षिक..........रू॰ ३०/-

एक प्रति..........१.०० रू॰ मात्र

[redacted]

एक आर्य की अभिलाषा

ऋचं वाचं प्रपद्ये, मनो यजुः प्रपद्ये,
साम प्राणं प्रपद्ये, चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये,
वागोजः सहोजो मयि प्राणापानौ। —यजुर्वेद ३६/१

ऋचं वाचं प्रपद्ये-

मैने ऋग्वेद की ऋचाओं का पारायण करके अपनी वाणी को सिद्ध कर लिया है। अब मेरी वाणी मधु से भरी हुई है। "मधुं मे वाचा अस्तु"। उसमें क्रूरता, कठोरता, अपशब्दता, अश्लीलता, और कटुता किन्चिन्मात्र भी नहीं है। इस मधुमयी वाणी के व्यापार ने मुझे जन जन का प्रिय बना दिया है। जब मैं बोलता हूँ तो मेरी वाणी से फूल बरसने लगते हैं। लोग मुझे सुनने के लिए, मेरे प्रवचनों का रसास्वादन लेने के लिए आतुर रहते हैं।

कोयल काको देत है, कागा कासों लेय।
मीठे वचन सुनाय के, जग बस में करि लेय।।

मैं दुष्टों को दण्ड भी देता हूँ और उनके दोषों का बखान भी करता हूँ। निवारण के लिए कभी-कभी कठोर भी बोलता हूँ पर वाणी की शालीनता को नहीं त्यागता। हृदय में कोई मैल नहीं जमने देता---- नफ़रत दुष्टता से करता हूँ दुष्ट से नहीं। यह मेरी वाणी का ही प्रभाव था कि मैंने सम्पूर्ण विश्व को अपने उपदेशों से, मधुरवाचा से वैदिक धर्म के झण्डे के नीचे लाकर खड़ा कर दिया था।

मनो यजुः प्रपद्ये-

मैंने यजुर्वेद को पढ़कर अभ्यासकर अपने मन को सिद्ध कर लिया है। अब मैं इन्द्रियों का दास नही हूँ। इन्द्रियाँ मेरी दास हो गई हैं, मेरा मन उनका राजा है। उसकी आज्ञा के बिना वे कोई कार्य सम्पादित ही नहीं कर सकतीं। और यह मेरा मन "शिवसंकल्पमय" बन गया है। उसमें अब पवित्र विचार ही आते हैं, बुरे विचारों को प्रवेश करने का मैं अवसर ही नहीं देता हूँ। अब मेरा मन निष्पाप है निष्कलंक है। पराया धन मेरे लिए मिट्टी के समान है, पराई स्त्रियाँ मेरे लिए माता बहिन के समान हैं। "मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्"- यजुः से मैंने यही आभूषण तो पहिना है।

साम प्राणं प्रपद्ये-

मैने सामवेद का गायन करके प्राणों को सिद्ध कर लिया है। अब मेरी आत्मा पवित्र है। मैंने अपने प्राणों को सिद्ध करके उस प्राणप्रियतम को जान भी लिया है पा भी लिया है। अब मेरा एकमेव आराध्य वही है। उसके सिवाय मेरा कोई निस्तारण करने वाला नहीं है।

चक्षुः श्रोत्रं प्रपद्ये-

मैने इन तीनों की ऋचाओं का पारायण करके चक्षु और श्रोत्रों को भी सिद्ध कर लिया है। अब मैं भद्र ही सुनता हूँ भद्र ही देखता हूँ "भद्रं कर्णेभिः श्रणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षिभिः" मेरी यह दोनों इन्द्रियाँ सिद्ध हैं "दृष्टिपूतं न्यसेत्पादम्" मेरा आदर्श है। सड़क पर चलते चलते छविग्रहों पर लटके हुए अर्धनग्न चित्रों को देखकर मैं आँखें नीची कर लेता हूँ क्योंकि यह मेरे वश में हैं। मैं इन्द्रियजित कहलाता हूँ।

वागोजः सहोजो मयि प्राणापानौ-

मेरी वाणी में ओज है, मेरे प्राण, अपान, समान, व्यान, उदान, (पांचों प्राण) ओजयुक्त हैं। मैं जानता हूँ मुझे यह वाक् इन्द्रिय तेरी ऋचाओं का सस्वर पाठ करने के लिए मिली है। मैं जानता हूँ मुझे यह दृष्टि चलचित्रों को नहीं "चित्रं देवानामुद्गादनीकम्" तेरी चित्रविचित्र मयी सृष्टिरचना को देखने के लिए मिली है। हे मेरे वाक्पति। प्राणपति।। मन के देवता!।। मेरे नयनों की ज्योति। मेरी इन इन्द्रियों के जो भी दोष या त्रुटियाँ हैं उनसे मुझे सर्वांश में रहित कर दे।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर आज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
——राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ, कार्तिक कृष्ण, ८ - संवत, २०४६ वि.
२२, अक्तूबर १९८९, दयानन्दाब्द, १६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

सम्पादकीय

हिन्दी विजयतेतराम्

हमारे प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री-नारायण दत्त तिवारी पार्टी तथा देश के लिए बड़े समर्पित व्यक्ति हैं और निःसन्देह उनमें प्रशासन की अपूर्व क्षमता है। प्रदेश के आर्थिक विकास में उनका योगदान सदैव आदर के साथ स्मरण किया जाता रहेगा। किन्तु पार्टी के प्रति उनकी भक्ति तथा अन्धसोच कभी कभी उन्हें बड़ी हास्यास्पद स्थिति में डाल देती है। उर्दू को प्रदेश की द्वितीय राज्यभाषा बनाने की अन्धसोच के पीछे न तो किसी वर्गविशेष का हित है और न उससे यह प्रदेश उन्नति के किसी शिखर या आयाम को छू सकता है। यह केवल वर्गविशेष का तुष्टीकरण है अथ से अन्त तक और इसके पीछे वर्ग विशेष को प्रसन्न करके आगामी चुनावों में वोट प्राप्त करने की राजनीति प्रच्छन्न रूप से झलक रही है। हमारे देश के उदीयमान प्रधानमन्त्री ने अपरिपक्व अनुभव के कारण यह दाँव खेलकर एक बहुत ही अदूरदर्शिता पूर्ण निर्णय ले डाला है। उनका यह अनुमान कि प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा बना दिए जाने से मुस्लिम मत उनके पक्ष में हो जायेंगे- केवल मृगतृष्णा सिद्ध होगा। मुस्लिम मानसिकता के इतिहास का गहराई से अध्ययन करने पर स्पष्ट हो जाता है कि जब तक उनके इस्लामिक साम्राज्य की कल्पना पूर्ण रूप से चरितार्थ नहीं होती वे असन्तुष्ट ही बने रहेंगे। हो सकता है प्रधानमंत्री के इर्दगिर्द घूमने वाले उनके सलाहकारों ने उन्हें ऐसा निर्णय लिए जाने के लिए प्रेरित किया हो परन्तु श्री तिवारी एक कुशल सूझबूझ एवं परिपक्व बुद्धि के नेता माने जाते हैं उन्हें तो संविधान में इंगित भाषा सम्बन्धी तथ्यों के आधार पर प्रधानमंत्री को इसकी अनावश्यकता से भलीभाँति परिचित कराकर. दृढ़ता का परिचय देना चाहिए था।

उत्तर प्रदेश विधान मण्डल ने जिस जल्दबाजी में बिना पूर्ण विचार विनिमय का अवसर दिए इस विधेयक को पास कर दिया वह भी लोकतन्त्र की किसी स्वस्थ परम्परा की ओर इंगित नहीं कर रहा है। पहिला तो मुख्य प्रश्न यही है कि प्रदेश में केवल 9·97 प्रतिशत जनता ही उर्दूभाषी है। 30 प्रतिशत की बात ही मिथ्या है। फिर इस प्रकार की परम्परा से हर प्रदेश अपने यहाँ की प्रदेशीय भाषाओं को वहाँ की द्वितीय राज्यभाषा बनाने का आन्दोलन चलाएगा और फिर सारा देश भाषायी आन्दोलन में ग्रस्त हो जायेगा। हमारा प्रयास किसी भी स्थिति में तुष्टीकरण की प्रवृत्ति को बढ़ावा न देकर समस्त भारतीयों को एकता के सूत्र में आबद्ध करने का होना चाहिए किन्तु हम इसमें अभी तक सफलता प्राप्त नहीं कर सके हैं।

हिन्दी अपनी उत्कृष्ट वैज्ञानिकलिपि एवं उच्चता और ग्राह्यता के कारण सम्पूर्ण भारत में ही नहीं अपितु विश्व में लोकप्रिय होती जा रही है और हमारा विश्वास है यह भाषा सदा विजयपथ पर अग्रसर होती रहेगी हमारा हिन्दी प्रेमी जनता से यही अनुरोध है कि वे हिन्दी के व्यापक प्रचार एवं प्रसार हेतु उसके रचनात्मक दृष्टिकोण पर अपने को केन्द्रित करें। ज्ञान की समग्रता आत्मसात करने की स्थिति में इसकी प्रतिस्पर्धा में उर्दू ठहर ही नहीं सकेगी।

स्व० पं० शिवकुमार शास्त्री के पुण्य संस्मरण

• डा० भवानीलाल भारतीय, चण्डीगढ़

पं० शिवकुमार शास्त्री के आकस्मिक निधन से आर्यसमाज के विद्वत् जगत की एक अपूरणीय क्षति हुई है। गत 20 अगस्त को ही आर्यसमाज हनुमान-रोड, नई दिल्ली में आयोजित हैदराबाद सत्याग्रह स्मारक समारोह में उनसे भेंट हुई थी। उन्होंने अपने संक्षिप्त भाषण में सत्याग्रह में बलिदान देने वाले आर्यों की गौरव गाथा बड़े प्रभावशाली शब्दों में प्रस्तुत की थी। तब किसे पता था कि मात्र दो सप्ताह पश्चात् 3 सितम्बर के रविवार को वे इस असार संसार से प्रस्थान कर जायेंगे।
शास्त्री जी का स्वास्थ्य गत कई मास से शिथिल चल रहा था। गत वर्ष आर्यसमाज हनुमान् रोड, के वार्षिकोत्सव पर आयोजित वेद सम्मेलन में जब उनसे भेंट हुई थी तो उन्होंने अपने दुर्बल स्वास्थ्य की चर्चा की थी, किन्तु गत मास में उन्होंने अपने स्वस्थ होने की ही चर्चा की। बिना अधिक कष्ट भोगे आर्यसमाज का यह अद्वितीय प्रवक्ता परलोक वासी हो गया।

देहरादून, अम्बाला, जालंधर आदि नगरों के आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सवों पर प्रायः उनसे भेंट हो जाती थी। उन्होंने अपने जीवन का बहुलांश आर्यसमाज को समर्पित किया था। जब गत वर्ष परोपकारिणी सभा ने मेरे षष्टि पूर्तिसमारोह के अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन किया तो शास्त्री जी ने अपना आशीर्वाद युक्त शुभकामना सन्देश भेजते हुए लिखा था कि अभी तो आप साठ वर्ष के ही हुए हैं। साठा सो-पाठा। अभी तो कार्य करने के लिये बहुत समय है। आर्यसमाज के व्याख्यान मंच के उच्चकोटि के वक्ता धीरे-धीरे हम से बिछुड़ रहे हैं।

शास्त्रीजी ने लेखन की अपेक्षा वक्तृत्व क्षेत्र में अधिक काम किया। तथापि उनकी लिखी श्रुति-सौरभ नामक वेदमंत्रों के व्याख्यान की पुस्तक अपनी रोचकशैली के कारण अत्यधिक लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी है। उन्होंने मंत्रों के अभिप्राय को जिन मनोरंजक दृष्टान्तों, संस्कृत, हिन्दी एवं उर्दू के पद्यों के उद्धरणों तथा सरल किन्तु प्राञ्जलशैली में व्याख्यात किया है, उससे सिद्ध होता है कि यदि वे लेखन के लिये भी समय निकालते तो उनकी लेखनी से पाठक समुदाय को अपूर्व साहित्य उपलब्ध होता। दिवंगत को मेरी सश्रद्ध श्रद्धांजलि।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वृहदधिवेशन

दिनांक - २६ नवम्बर सन् १९८९ को डी० ए० वी० कालेज, लखनऊ में सम्पन्न होगा।

निर्वाचन का कार्यक्रम निम्न प्रकार है :-

- मतदाता सूची का प्रकाशन — 22-10-89
- आपत्ति करने की अन्तिम तिथि — 25-10-89
- आपत्ति का निवारण — 26-10-89 से 27-10-89 तक
- शुद्ध मतदाता सूची का प्रकाशन — 5-11-89
- वृहदधिवेशन एवं निर्वाचन — 26-11-89
- चुनाव परिणाम की घोषणा — निर्वाचन समाप्ति के बाद

दिनांक- 15-9-89

मनमोहन तिवारी
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०,
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

अध्यात्म सुधा

अध्यात्म में वाक्

श्री पं० इन्द्रराज प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ॰प्र॰

मानव जीवन का चरम लक्ष्य पर ब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति है। इस भौतिक वादी जगत् में मानव संसार में दौड़ रहा है। क्यों न दौड़े? स्वयम्भू भगवान ने इन्द्रियों को वहिर्मुखी बनाया है। आँख रूप के पीछे भाग रही है। कान शब्द के पीछे भाग रहे हैं। नासिका सुगन्ध के पीछे भाग रही है। रसना रस के पीछे भाग रही है, तथा त्वचा स्पर्श के पीछे भाग रही है, और यह मन इन इन्द्रियों के माध्यम से रूप, रस, गन्ध, शब्द और स्पर्श का पीछा करता हुआ बाहर ही नहीं बल्कि अन्दर भी इन्हीं पाँचों विषयों को बसा लेता है। अन्दर आत्मतत्व पर इन विषयों के चित्रों की परत पर परत जम जाती है। और वे संस्कार भी मन की वृत्ति को बाहर की ओर ही प्रेरित करते हैं। इस प्रकार मानव को आत्मा की प्राप्ति न होकर संसार की ही प्राप्ति होती है।

कठोपनिषद् का ऋषि लिखता है:-
पराञ्चि खानि व्यतृणत्स्वयंभू स्तस्मात् पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्। कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मान-मैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्।। (कठो० 3/1/1)

स्वयम्भू भगवान ने इन्द्रियों की रचना बहिर्मुखी की है इस लिए मानव बाहर ही देखता है, अन्तरात्मा को नहीं। कोई धीर पुरुष ही अमरत्व की कामना करता हुआ अपनी इन्द्रियों को रोक कर प्रत्यागात्मा को देख पाता है।

कठ ऋषि ने एक सत्य को संसार के सामने रखा है। वह ऋषि लिखता है कि कोई विरला व्यक्ति ही अमरत्व की कामना करता है, और उस कामना को प्राप्त करने के लिए अपनी इन्द्रियों के बहिर्मुखी प्रवाह को रोक कर उस आत्मा के दर्शन करता है।

एक एक इन्द्रिय बड़ी बलवान् है। जब सब इन्द्रियाँ मिलकर अपने-अपने विषयों की ओर दौड़ती हैं तो मनु जी महाराज के शब्दों में "बलवान-इन्द्रियग्रामः विद्वांसमपि कर्षति" इन्द्रियों का समूह बहुत बलवान है और विद्वान पुरुष को भी विषयों की ओर घसीटकर ले जाता है।

अध्यात्म जगत में सर्वप्रथम इन्द्रियों को ही वश में करने की बात आती है। पूर्व कहा जा चुका है कि एक-एक इन्द्रिय बड़ी बलवान है। सर्वप्रथम आप वाणी को ही लीजिए योग के क्षेत्र में सर्वप्रथम इसी पर वश करने की प्रेरणा की गई है। हमारी दस इन्द्रियाँ हैं। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ। जरा इन की रचना तो देखें। आँखें दो हैं परन्तु कार्य उनका केवल एक ही है देखना। कान दो हैं परन्तु इनका कार्य भी मात्र सुनना ही है। नासिकाएँ दो हैं, परन्तु कार्य केवल एक है सूंघना। हाथ दो हैं कार्य केवल करना। पैर दो हैं कार्य केवल एक चलना। त्वचा तो पूरी तरह से शरीर को ढंके हुए है। कार्य उसका मात्र स्पर्श है। परन्तु वाणी एक है और इसके दो कार्य है (1) स्वाद लेना (2) बोलना। इस लिए अध्यात्म जगत में वाणी का बहुत महत्व है। सम्भवतः सन्ध्या में इसीलिए सर्वप्रथम इन्द्रिय स्पर्श मन्त्र का प्रारम्भ करते हुए वाणी से ही प्रारम्भ किया है- "ओं वाक् वाक्"।

बस वाणी ही प्रथम द्वारपाल है आध्यात्म भवन का। सम्भवतः इसी लिए उपनिषद में इसके विषय में लिखा गया कि अग्नि तत्व ही वाणी बन कर मुख में प्रवेश कर गया। "अग्नि वग्भूत्वा मुखे प्राविशत" (ऐतरेयो० अ०-1 खण्ड-2 श्लोक-4) अग्नि का कार्य प्रकाशित करना है और वाणी भी हृदय के भावों को प्रकाशित करने वाली है।

छान्दोग्य उपनिषद में अन्यत्र कहा गया है कि मन संज्ञक ब्रह्म की उपासना करनी चाहिए। आगे चल कर उस मन संज्ञक ब्रह्म को चार पाद वाला कहा गया है। वे पाद हैं वाक्, प्राण, चक्षु और श्रोत्र यह अध्यात्म है और आधिदैवत में वे ही क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य, और दिशाएं कही गई हैं। आगे कहा गया है "वागेव-ब्रह्मणश्चतुर्थो पादः। सोऽग्निना ज्योतिषा भातिचतपति च। भाति च तपति च कीर्त्या यशसा ब्रह्मवर्चसेन य एव वेद" (3/18/3 छान्दो०) वाणी ही मन रूपी ब्रह्म का चौथापाद है। वह मन अग्निरूप ज्योति से दीप्त होता है तपता है। निश्चित रूपेण वाणी के वक्तव्य पर ही मन ठहरता है इसलिए वाणी मन का चौथा पाद है। जो उपासक वाणी के इस रहस्य को जानता है निश्चय ही वह संसार में कीर्ति, यश और ब्रह्मतेज से देदीप्यमान होता है और तपता है। ओजस्वी वाणी ही मनुष्य को प्रकाशित कर उसे कीर्ति और यश का भागी बनाती है।

छान्दोग्योपनिषद के प्रथम अध्याय खण्ड 3 श्लोक 4 में वाणी को ही ऋक् कहा गया है। वहाँ इसी श्लोक में ऋक् को साम कहा गया है साथ ही साम को उद्गीथ कहा गया है। आगे लिखा है कि प्राण और अपान की क्रिया को न करते हुए हमें ऋक् अर्थात् सामगान अर्थात् उद्गीथ का उद्गान करना चाहिए। अर्थात् व्यान से उद्गीथ (ओंकार) का गान करना चाहिए।

"या वाक्सर्क्स्मात प्राण न्नपानन्मृचम-भिव्याहरति य र्क्त्साम तस्माद प्राणन्न नपानन्साम गायति यत्साम स उद्गीथ स्तस्माद प्राण मनपानन्नुंद्गायति" (छा० 1/3/4) इस श्लोक का बहुत ही गहन अर्थ है। वाणी किस प्रकार से अत्यन्त सूक्ष्म होकर हमें आध्यात्मिक जगत् में पहुँचा सकती है। इसका स्पष्ट दिग्दर्शन इस श्लोक में है, प्राण और अपान से ही वाणी का उच्चारण होता है। वाणी ही ऋक्-साम और उद्गीथ है। जब प्राण और अपान से हम हटते हैं तो वह व्यान का क्षेत्र आ जाता है, जिसके विषय में छान्दोग्योपनिषद में लिखा है "अथन्यः प्राणापानयोः सन्धिः सा व्यानो यो व्यानसावाक्" (छा० 1/3/3) अर्थात् प्राण और अपान की जहाँ सन्धि होती है अर्थात इन दोनों के बीच जो वृत्ति विशेष है वह ही व्यान है अर्थात बाहर के उच्चारण को जो प्राण और अपान के आधार पर होता है, साधक बन्द करके भीतर व्यान के क्षेत्र में पहुँच उद्गीथ का अन्दर ही अन्दर उद्गान करता है वही उद्गान की उत्कृष्ट अवस्था है और एक प्रकार से जो व्यान है जहाँ उद्गान हो रहा है वह वाक् ही है जो अन्दर आध्यात्मिक जगत में उद्गीथ का उद्गान कर रही है। इस वाणी के द्वारा साधक अन्तर्मुखी होकर ओंकार का उद्गान कैसे करता है उसकी एक सुन्दरतम व्याख्या है।

वाणी द्वारा उपदेश के महत्व का वर्णन करते हुए छान्दोग्योपनिषद् अध्याय 6 खण्ड 14 तथा श्लोक प्रथम और द्वितीय के द्वारा अज्ञानान्धकार में भटकते हुए मनुष्य का रोमांचक वर्णन है। वहाँ लिखा है कि यदि किसी मनुष्य को जिसकी आँखे बंधी हैं। गान्धार देश से लाकर जनशून्य स्थान में छोड़ दिया जाय और वह चारों दिशाओं की ओर मुख करके चिल्लाये कि मुझे आँखें बाँध कर यहाँ लाया गया है और आँखें बाँधे हुए छोड़ दिया गया है। और फिर कोई मनुष्य उसकी आँखों को खोलकर उसको कहे कि गान्धार किस दिशा में है और वह ग्राम से ग्राम को पूछता हुआ पुनः गान्धार देश में पहुँच जाये ठीक इसी प्रकार से लोक में अच्छे आचार्य वाला होकर और उसका उपदेश सुनकर ही व्यक्ति ब्रह्म को प्राप्त कर सकता है। संसार में उस आँख बंधे हुए साधक की कितनी करुणास्पद स्थिति होती है इसका वर्णन शंकराचार्य जी अपने ओजस्वी शब्दों में इस प्रकार करते हैं- ठीक इसी प्रकार संसार के आत्मस्वरूप सत् से तेज जल और अनादि मय देह रूप वन में, जोकि बात, पित्त, कफ, रुधिर, मेद, माँस, अस्थि मज्जा, शुक्र, कृमि और मूलमूत्र से पूर्ण तथा शीतोष्णादि अनेकों द्वंद और सुख दुःख से युक्त है यह जीव मोहरूप वस्त्र में बन्द हुए नेत्रवाला होकर तथा स्त्री, पुत्र, मित्र, पशु और बन्धु आदि दृष्ट तथा अदृष्ट अनेकों विषयतृष्णाओं से जकड़ा जा कर पुण्य- पाप रूप चोरों द्वारा प्रवेशित कर दिए जानेपर "मैं इसका पुत्र हूँ, ये मेरे बान्धव हैं, मैं सुखी, दुखी, मूढ, पण्डित, धार्मिक अथवा बन्धुमान् हूँ, मैं उत्पन्न हुआ हूँ, मरता हूँ, जराग्रस्त हूँ, पापी हूँ, मेरा पुत्र मर गया, धन नष्ट हो गया, हाँ मैं मारा गया अब कैसे जीवित रहूँगा? मेरी क्या गति होगी ? अब मेरा रक्षक कौन है? इसी प्रकार के अनेकों सैकड़ों अनर्थ जालों से युक्त होकर रोता हुआ जब पुण्य की अधिकता होने से किसी प्रकार किसी परम कृपालु सद्ब्रह्मात्मयज्ञ बन्धन मुक्त ब्रह्मनिष्ठ महापुरुष को प्राप्त होता है और उस ब्रह्मवेत्ता द्वारा दयावश सांसारिक विषयों के दोष दर्शन का मार्ग दिखाए जाने पर सांसारिक विषयों से विरक्त हो जाता है तथा तू संसारी नहीं है और न इस के पुत्रत्वादि धर्मवाला ही है तो कौन है? जो सत् तत्व है वह ही तू है" इस प्रकार के उपदेश से अविद्यामय मोहरूप वस्त्र के बन्धन से छुड़ाया जा कर गान्धार देशीय पुरुष के समान अपने सदात्मा को प्राप्त हो कर सुखी और शान्त हो जाता है इसी बात को (आरुणि ने) आचार्यवान् पुरुषो वेद इस वाक्य से कहा। एवमेव सतोजगदात्म स्वरूपात्ते जो वनन्नादिमयं देहारण्यं बात पित्त कफ रुधिर मेद मॉसास्थिमज्जा शुक्र

शेष पृष्ठ ८ पर

पृष्ठ ३ का शेष....

मिमूत्र पुरीषकछी तोष्णाद्यनेक द्वन्द सुख दुःख कंचेदं मोहपराभिनदयो भार्यापुत्र-मित्र पशुबन्धवादि दष्टानेक विषय तृष्णापाशितः पुण्या पुण्यादितस्करैः प्रवेशित------ (शांकर भाष्य छान्दो0 6/14/2)

पाठक गण इस रोमांचक भाष्य को पढ़कर अवश्य समझ गए होंगे कि यह सब वाणी का ही प्रभाव है जिसके द्वारा एक आचार्य एक साधक को पर ब्रह्म परमात्मा तक पहुँचा देता है।

वाणी के महत्व का प्रतिपादन छान्दोग्योपनिषद के सप्तम अध्याय के खण्ड एक तथा दो में भी मिलता है। प्रकरण इस प्रकार है। एक बार नारद बहुत अशान्त हो गए और वे महर्षि सनत्कुमार के पास पहुँचकर प्रार्थना करने लगे "हे भगवन् मुझे उपदेश दीजिये कि मैं आपकी चरणशरण में हूँ।" इस पर सनत्कुमार जी कहने लगे "कि पहले तुम मुझे बताओ कि तुम क्या पढ़े हो? तब मैं तुम्हें इससे आगे बताऊँगा" इस पर नारद ने कहा "महाराज। मुझे वेद, यजुर्वेद, सामवेद और चौथा अथर्ववेद याद है" (इसके अतिरिक्त) इतिहास पुराण रूप पाँचवा वेद, वेदों का वेद) व्याकरण पितृलोक, गणित-उत्पत्ति ज्ञान, निधि शास्त्र, तर्क शास्त्र, नीति, देवविद्या, ब्रह्म विद्या, भूतविद्या, क्षत्रविद्या, नक्षत्रविद्या, सर्वविद्या, देवजनविद्या, (नृत्य-संगीत) आदि ये सब मैं जानता हूँ। सो मैं भगवन मन्त्रवेत्ताहो हूँ आत्मवेत्ता नहीं। मैं ने आप जैसे मुमुक्षुजनों से ही सुना है कि आत्मवेत्ता शोक को पार कर लेता है। मैं शोक करता हूँ ऐसे मुझको हे भगवन शोक से पार कर दीजिए। तब सनत्कुमार ने कहा कि तुम जो कुछ जानते हो वह नाम ही है। इसलिए तुम नाम की ही उपासना करो। नारद ने नामोपासना को सुनकर सोचा कि नामोपासना से तो वहाँ तक ही साधक की गति होती है जहाँ तक नाम की गति होती है। ऐसा सोचने के पश्चात् नारद पुनः पूछने लगा कि महाराज। क्या नाम से भी अधिक कुछ है? सनत्कुमार बोले "नाम से भी अधिक है। नारद बोला तो भगवन वह ही मुझे बताइए। तब सनत्कुमार ऋषि ने कहा "वाग्वाव नाम्नो भूयसी, वाग्वाऋग्वेदं विज्ञापयति (छान्दो आ07 खण्ड 2 श्लोक।) अर्थात् हे नारद वाक् ही नाम से बढ़कर है। वाक् ही ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, पंचम वेद इतिहास पुराण, व्याकरण श्राद्ध कल्प, गणित, उत्पात शास्त्र, विधिज्ञान, तर्कशास्त्र, नीति, निरुक्त, वेदविद्या भूतविद्या, धनुर्वेद, ज्योतिष, गारुड, संगीत शास्त्र, द्युलोक, पृथिवी, वायु, आकाश, जल, तेज, देव, मनुष्य, पशु, पक्षी, तृण-वनस्पति, श्वापद (हिंस्र जन्तु) कीट, पतंग, पिपीलिका पर्यन्त प्राणी, धर्म और अधर्म, सत्य और असत्य, साधु और असाधु, मनोज्ञ और अमनोज्ञ, जो कुछ भी है उसे वाक् ही विज्ञापित करती है। यदि वाणी न होती तो न धर्म का और न अधर्म का ही ज्ञान होता, तथा न सत्य न असत्य, न साधु न असाधु, न मनोज्ञ और न अमनोज्ञ का ही ज्ञान हो सकता। वाणी ही इन सबका ज्ञान कराती है। अतः हे नारद तुम वाक् की उपासना करो।

इस प्रसंग से वाणी का महत्व स्पष्ट है। यदि वाक् पवित्र है, सत्यनिष्ठ है तो वह ब्रह्म परमात्मा तक पहुँचा देती है। नारद के इस प्रश्न का उत्तर भी सनत्कुमार देते हैं कि वाणी किस प्रकार आत्मा तक पहुँचाती है? नारद प्रश्न करता है कि महाराज वाणी से आगे क्या है? महर्षि सनत्कुमार क्रमशः उत्तर देते हैं "मन वाणी से उत्कृष्ट है। संकल्प मन से उत्कृष्ट है। चित्त संकल्प से उत्कृष्ट है। ध्यान चित्त से उत्कृष्ट है। विज्ञान ध्यान से उत्कृष्ट है। बल विज्ञान से उत्कृष्ट है। अन्न बल से उत्कृष्ट है। जल अन्न से उत्कृष्ट है। तेज जल से उत्कृष्ट है। आकाश तेज से उत्कृष्ट है। स्मरण आकाश से भी उत्कृष्ट है। आशा स्मरण से उत्कृष्ट है। प्राण आशा से उत्कृष्ट है। सत्य प्राण से भी उत्कृष्ट है। इसलिए सत्य ही जानने योग्य है। सत्य के लिए विज्ञान विज्ञान के लिए मनन, मनन के लिए श्रद्धा, श्रद्धा के लिए निष्ठा, निष्ठा के लिए कृति (कर्मकरना), कृति (कर्म) के लिए सुख और सुख के लिए भूमा जानने योग्य है। अतः "यो वैभूमा तत्सुखं नाल्पे सुखमस्ति" (छा0आ07 खण्ड 13, श्लोक।) निश्चय ही जो भूमा (विशाल) है, वही सुखी है, अल्प में सुख नहीं। इसलिए भूमा ही विशेष प्राप्णीय है। परन्तु यह लम्बी दौड़ वाक् से ही आरम्भ होती है।

अतः वाणी ही मुक्ति का द्वार है। वाणी का जब सत्य, मधुर और हितकर प्रयोग होता है तब वाणी हमें आध्यात्मिक जगत में पहुँचा देती है और उस आत्मतत्व के दर्शन करवा देती है।

ऊपर यह भी कहा गया है कि वाणी रसना भी है। रस ही रस में भक्ष्य-अभक्ष्य सभी प्रकार के पदार्थों का हम सेवन करते हैं। हमारी रसना जब हमारे वश में नहीं रहती तो हम राजसिक और तामसिक खाद्यपदार्थों का सेवन करते हैं। उससे हमारा मन भी राजसिक और तामसिक हो जाता है। कहा भी है जैसा आहार-वैसा विचार। जैसा अन्न-वैसा मन।

यह ही बात बहुत पहले छान्दोग्य उपनिषद् में कही गई। आहार शुद्धौ सत्वशुद्धिः सत्वशुद्धौ ध्रुवास्मृतिः। स्मृतिलम्भे-सर्व ग्रन्थीनां विप्रमोक्षः।

आहार के शुद्ध होने पर मन शुद्ध हो जाता है, मन के शुद्ध होने पर स्मृति शुद्ध होती है। स्मृति के ठीक होने पर हृदय की सब ग्रन्थियाँ खुल जाती हैं और व्यक्ति मुक्त हो जाता है। इस प्रकार आहार की शुद्धि मुक्ति के लिए अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु आहार की शुद्धि के साथ-साथ आहार एकत्र करने के साधन भी शुद्ध होने चाहिए। गलत ढंग से कमाया धन और अन्न मन, बुद्धि आदि को भ्रष्ट कर देता है। आज संसार धन और अन्न बटोरने में लगा हुआ है। यह स्मरण रखना चाहिए कि यदि धन और अन्न एकत्र करने के साधन अशुद्ध हैं तो हमारा मन कभी भी शुद्ध नहीं हो सकता। अशुद्ध मन कभी योग के क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर सकता।

आज का संसार मांस, मदिरा, भांग, गांजा, ब्राउन शूगर आदि का प्रयोग करने लगा है। भौतिक वादी जगत ने संसार के प्राणियों को निगलना आरम्भ कर दिया है। यह रसना किसी भी तामसिक पदार्थ को प्रयोग किए बिना नहीं छोड़ती। कुछ आधुनिक धर्म गुरुओं ने भी खानपान पर ध्यान देना छोड़ दिया है। संसार तामसिक पदार्थों के पीछे भाग रहा है। सर्वत्र कलह और अशान्ति का साम्राज्य है। लेकिन इस समस्त दुरावस्था का मूलभूत कारण रसना ही है।

जब इस पर वश हो जाता है तो सीमित खाद्यान्न के उपयोग के कारण अन्न अवशिष्ट बच जाता है। सात्विक उपभोगता उस अन्न को भी भूखों, दरिद्रों और अभाव ग्रस्त लोगों को बाँट देता है, और पुण्य का भागी बनता है। संस्कृत का एक कवि कहता है "एकस्य क्षणिका प्रीति। अन्यः प्राणैवियुज्यते" एक की तो क्षण भर की प्रीति होती है कि ओहो कितना स्वाद आया परन्तु उस स्वाद के कारण दूसरा प्राणी प्राणों से वियुक्त कर दिया जाता है।

अतः आध्यात्मिक जगत् में वाणी का संयम ही साधक को मुक्ति के द्वार तक पहुँचा देता है।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बरदहा बाजार (बहराइच) का वार्षिकोत्सव दि0 1 से 4 नवम्बर 1989 तक धूमधाम से मनाया जायगा। जिसमें स्थानीय जनता से प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

सूचना

श्री सुभाषचन्द्र जी चौधरी निवासी कोटवा-17 मई 89 से कहीं चले गए हैं" वे जहाँ कहीं भी हों समाज के उत्सव दि0 1-से 4 नवम्बर 89 के समय अवश्य पधारने की कृपा करें। वरदहा बा0 आर्यसमाज उनके बिना पंगु है, सभी परिचित व्यक्ति दुःखी हैं।

वार्षिकोत्सव

- आर्यसमाज नकुड़ (सहारनपुर) का वार्षिकोत्सव दि0 13,14,15 नवम्बर 89 तक बड़े धूमधाम से मनाया जायगा। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान् उपदेशक पधार रहे हैं।

- आर्यसमाज आजमगढ़ का वार्षिकोत्सव दि0 16 से 19 नवम्बर 89 तक ससमारोह पूर्वक मनाया जायगा। स्थानीय जनता से निवेदन है कि वह अधिक से अधिक संख्या में पधार कर उत्सव को सफल बनावें।

दि0 1-9-89 को थाने जनपद (महाराष्ट्र) का उपनगर भिवंडी के आर्यसमाज द्वारा आयोजित बाल मन्दर का शुभारम्भ यज्ञ के द्वारा पं0 ब्रह्मानन्द जी "आजाद" के पौरोहित्य में सम्पन्न हुआ। इस शुभ कार्य हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई ने आर्यसमाज भिवंडी को जो कि समान्तर्गत है 1500 रुपये की सहायता धनराशि प्रदान की।

राष्ट्रीय एकता

डॉ॰ मुंशीराम शर्मा "सोम", कानपुर

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवीयथौकसाम।।

एक घर में भाई, बहिनें, दादी, अम्मा, चाचा, चाची सब एक साथ रहते हैं और घर को लीप-पोत कर स्वच्छ ही नहीं- सुरक्षित भी रखते हैं। हम सब का वैसा ही घर राष्ट्र है। इस राष्ट्र में अनेक भाषायें बोली जाती हैं, अनेक धर्म प्रचलित हैं, कोई कृषि करता है तो कोई सैनिक है, कोई व्यापार करता है तो कोई समाचार-पत्र निकाल कर दूत का कार्य करता है, कोई शिक्षा-संस्थाओं का संचालन करता है तो कोई मार्ग व्यवस्था में लगा है। ऐसे विभिन्न व्यापारों में संलग्न सभी व्यक्ति राष्ट्र को घटक हैं, अंग हैं- एक दम वैसे ही जैसे एक शरीर के विभिन्न अंग होते हैं, शरीर के अंग अनेक हैं, पर सब मिलकर देह की रक्षा करते हैं। कार्य पृथक-पृथक हैं, पर उनके द्वारा सम्पूर्ण शरीर का संचालन हो रहा है। उसी प्रकार राष्ट्र के निवासी पृथक-पृथक कार्य करते हैं, भाषा भी सबकी अपनी-अपनी है, पर पृथक होते हुए भी वे राष्ट्र के अंग हैं। उनका कर्तव्य है कि वे अपनी मातृभूमि की रक्षा में एक जुट होकर प्रयत्नशील हों।

भारत राष्ट्र का जन्म कहते है जब भरत के नाम से हुआ। इसके पूर्व इसका नाम आर्यावर्त था जो हिम-विन्ध्य पर्वतों के बीच पश्चिम से पूर्व के समुद्र तक फैला हुआ था। विन्ध्य के दक्षिण का देश जुड़ा और यह भारतवर्ष के नाम से प्रख्यात हुआ। आर्यावर्त से भी पूर्व ब्रह्मावर्त और ब्रह्मर्षि नाम के प्रदेश थे। सीमा भी संकुचित थी। जन संख्या बढ़ी प्रदेश बढ़ा और आज हम पुण्य भूमि भारत वर्ष के निवासी हैं। भारत हमारी मातृभूमि है। माँ के पुत्र कई होते हैं, पर माँ का स्नेह सबको प्राप्त है। पुत्रों का परम पुनीत कर्तव्य है कि वे माँ की सेवा कर मातृ ऋण से उऋण हों और "घर" में एक होकर रहें। सह-परिवार और सह-समाज की भावना उन्हें निरन्तर प्रेरित करती रहे।

जैसे परिवार हैं, वैसे ही ग्राम हैं, प्रदेश हैं, मातृभूमि है और सबसे ऊपर है वसुधैव कुटुम्बकम्। हमारे पूर्वजों का हृदय विशाल था। मानव मात्र उनका बन्धु था। इस देश के अग्रजन्मा इसी भाव से प्रेरणा लेकर समग्र भू मण्डल में आवागमन बनाये हुए थे- उनके पद चिन्ह आज भी इस धराधाम पर जहाँ जाओ- वहीं दिखाई देते हैं।

वसुधा कुटुम्ब है, पर देश भी तो एक देह है। यह अखण्ड रहे, दस्यु आक्रान्ता बनकर उसे क्षीण न कर सकें, इसके लिए सब बन्धुओं को निरन्तर प्रयास करना चाहिए। देश का स्वत्व बना रहे, परत्व उस पर शासन न कर सके। स्वातंत्र्य जीवित जागृत रहे, पारतंत्र्य की बेड़ियाँ उसे आबद्ध न कर पावें। इसके लिए प्राण पण से सचेष्ट रहना चाहिए।

देश में जब-जब विघटन हुआ है तब-तब इस देश के मनीषियों ने उसे निरस्त करने के लिए अपना बुद्धि कौशल आगे किया है। विघटन संगठन में परिवर्तित हो, यह उनका ध्येय रहा है। हम बिखरें, विचरें पर धर्म में खरे बने रहें। धर्मो रक्षति रक्षितः। हम धर्म को बचावें तो धर्म निश्चित ही हम को बचावेगा।

देह में रोग रूपी राक्षस घुस आते हैं, तो कितना कष्ट होता है, रोग दूर हों, यह आकांक्षा निरन्तर बनी रहती है। औषधि लेनी पड़ती है। और जब हम नीरोग हो जाते हैं, तभी सुख एवम् शांति का अनुभव करते हैं बाहर के दस्यु पद-धन आदि की आकांक्षा लेकर यहाँ आते ही रहे हैं। पर हमने सदैव उन्हें पराभूत किया है। 12वीं शताब्दी से लेकर 20वीं शताब्दी तक के पारतंत्र्य युग में इस देश के सपूतों ने स्वातंत्र्य प्राप्ति के लिए अपनी अपूर्व आहुतियाँ दीं। हमने अपना केसरिया भगवा ध्वज फहराकर ही चैन की सांस ली। आज देश पूरा स्वाधीन है। यह उन्हीं वीर बलिदानों की देन है। एक ओर मोहन का सत्य-अहिंसा परक आन्दोलन था, उसके भी पूर्व लाल-बाल-पाल का क्रान्तिकारी घोष था, तो दूसरी ओर हिंसा परक क्रान्तिकारियों का भी सिंहनाद था। देश की स्वाधीनता के लिए मर मिटेंगे। भारत को भारत बनावेंगे, देश अखण्ड और एक होकर ही रहेगा। यही उनका एक मात्र उद्देश्य था।

पुराकाल में राष्ट्रिय एकता बनाये रखने के लिए अनेक प्रयत्न हुये हैं। **भगवान शंकर** और **पार्वती** के ना इस दिशा में चिरस्मरणीय हैं। शक्ति पूजकों के 108 और प्रमुख द्वादश ज्योतिर्लिंग आज भी प्रख्यात हैं। कामाख्या असम में है, तो हिंगलाज ऊँचे पर्वत की देवी बलोचिस्थान में है। **महाकाल रूप भगवान** उज्जैन में हैं तो हिमालय पर **केदार नाथ** हैं। सौराष्ट्र में **सोमनाथ**, विन्ध्य पर **महालक्ष्मी विन्ध्यवासिनी देवी**, आंध्र में **श्री शैल पर्वत** पर **मल्लिकार्जुन**, **कावेरी** और **नर्मदा** के संगम, में **ओंकारेश्वर**, दक्षिण में **नाग नाथ**, **गोदावरी** या **गोमती**-तट पर **सह्याद्रि गिरिशिखर** पर **त्र्यम्बकेश्वर**, सागर तट पर **रामेश्वर**, काशी के **विश्वनाथ**, ये तीर्थ स्वरूप धाम सभी भारत वासियों के लिए वन्दनीय बने हुए हैं और राष्ट्र की एकता के चिन्ह हैं आचार्य शंकर ने भारत की चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना भी इसी ऐक्य भाव को दृष्टि में रखकर की थी।

वर्ण व्यवस्था में चार वर्ण हैं, एक पांचवें निषाद का भी नाम आता है जो जल विभाग का रक्षक है। चार-वर्णों में भी अनेक खाँपे खेड़ा, पटा, बिस्वा, गोत्र आदि के भेद हैं, पर भारती ता तो एक ही है। आर्य अस्मिता तो सब में समाज है। इस रूप में हम विभिन्न होते हुए भी अभिन्न हैं, अनेक होते हुए भी एक हैं। भारत माता हम सबकी माता है। हम सब बन्धु हैं। बाली दीप में इस बन्धुता के अद्भुत दर्शन होते हैं। वहाँ वर्ण हैं पर सब एकता की श्रृंखला में आबद्ध हैं। इस युग में महर्षि दयानन्द ने आर्यत्व की इस एकता को सुदृढ करने का घनीय प्रयत्न किया। उन्होंने प्राचीनतम वेद माता का स्मरण दिलाया जो विश्वपावनी है और कहती है--

यथेमां वाचं कल्याणी मा वदानि-जनेभ्यः बृहम राजन्याभ्याम् शूद्राय चयीय च स्वाय अरणायच। यह कल्याणी वाणी सबके लिए है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, अपना-पराया, देशी-विदेश सब इसके पुत्र हैं। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, शूरवीर छत्रशाल बुन्देला, **गुरु-गोविन्द सिंह**, महारानी लक्ष्मी बाई सबके नाम भारतीय ऐक्य, अखण्डता, स्वतन्त्रता के क्षेत्र में अविस्मरणीय हैं।

भारतीय एकता सुरक्षित होकर वर्धमान होती है, तो भारत एक दिन समग्र विश्व का वैसा ही गुरु एवं शासक बनेगा जैसा पूर्वकाल में रहा है। आपको कश्यप सागर, रसा के दक्षिण की **ज्वालामाई** आर्य देश श्रार्मण्य देश पेरू प्रदेश, सुदानु, श्री माली, अटलान्टक फिर अपने ही जान पड़ेंगे। पर इस एकता, अखण्डता के निर्माण एवम् रक्षण में मस्तिष्क एवं हृदय को जागृत करना होगा, रक्त की धारा प्रवाहित करनी होगी, हाथ-पैर चलाने पड़ेंगे। बैठने से यह कार्य सिद्ध नहीं होगा- "चरैवेति चरैवेति।"

खण्डनीया न मे भूमिः मातृभूः मातृसंदृशा।
भिन्द्यादा मातरं निन्द्यात् स मे शात्रुःपरात्परः।।1
माता भूमिः वयं पुत्राः रक्षणे सर्वदोद्यताः,
प्रहरेत् तं प्रहरामः दुष्टं दस्युं दुरात्मकम्।।2
मात्रे न वचसावक्मि अंश में [illegible] उत्थितः।
प्राणोऽपिवर्तते हस्ते मातृसेवा परायणः।।3
वयं जीवाश्च जीवेम प्राक्मातृस्थली भुवि।
वंशानुक्रम रूपेण मातृ सेवारताः सदा।।4
जीवाः जीवन्ति संग्रामे शत्रुं हत्वा जयन्ति च।
भारत वर्ष भूमिर्मे पूर्वजानां यशस्कृताम्।।5
सा कीर्तिरनवच्छिन्ना स्थास्यति भूतले धृता।
न दुष्टाः मातृभूमिं मे दुष्यन्तु पापकर्मभिः।।6
उत्पन्नो जननी गर्भात मृतोऽहंवर्धितस्तया।
मातुः मानस्य रक्षार्थं जीवनं मे समर्पितम्।।7

अधिवक्ता

● पण्डिता डॉ० प्रज्ञा देवी आचार्या
वाराणसी

गु ण, कर्म, स्वभाव के अनुसार परमात्मा के अनन्त नामों में एक नाम "अधिवक्ता" यजुर्वेद के 16वें अ0 मन्त्र 5 में आया है। इस मन्त्र में कहा है--

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वांजम्भयन्त्सर्वाश्च यातधान्योऽ
धराचीः परा सुव।।

अर्थात्- देवों में श्रेष्ठ वह प्रथम अधिवक्ता रोगनाशक परमप्रभु है, जिसने वेदवाणी का "अध्यवोचत्" उपदेश किया। वह रुद्र परमेश्र सब दुष्ट स्वभाव वाले प्राणियों एवं रोगोत्पादक पदार्थ तथा अधोगामिनी प्रवृत्तियों से हमें दूर रखे। प्रकृत मन्त्र में परमेश्वर को अधिवक्ता इसी लिए कहा है कि वह सृष्टि के प्रारम्भ में विशेषरूप से सत्य ज्ञान का उपदेश वेदवाणी के रूप में करता है। वह सत्यशील है अतः उपनिषदों में "सत्यं-ज्ञानमनन्तं ब्रह्म" §तै0उ02/1§ कहा एवं वेद में सत्येनोत्तभिता भूमिः §ऋ0-10/85/1§ कहकर पृथिवी सत्यशील प्रभु के आधार पर ही थमी है यह बताते हुए "शेषाधारा पृथिवीत्युक्तम्" इस वचन की मानो सम्पुष्टि की।

कठोपनिषद में जीवात्मा और परमात्मा के स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा गया है--

ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके
गुहां प्रविष्टौ परमे परार्धे
छायातपौ, ब्रह्मविदो वदन्ति
पञ्चाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः।।1/3।।

अर्थात् जीवात्मा और परमात्मा "ऋत" सत्य का पान करने वाले है। इसमें परमात्मा ऋत का पान कराने वाला एवं जीवात्मा ऋत का पान करने वाला है। यथावत् कर्म के फल का प्रदाता होने के कारण परमात्मा मानों ऋत को पिलाने वाला है तथा जीवात्मा उसका भोक्ता होने के कारण ऋत का पान करने वाला है। ये दोनों जीवात्मा और परमात्मा धूप और छाया के समान हैं जो मानव शरीर की बुद्धिरूपी गुहा में तथा हृदयाकाश में एक साथ प्रविष्ट हैं। इस कथन से जीवात्मा और परमात्मा की सायुज्य स्थिति तथा परमात्मा के सत्यस्वरूपता पर प्रकाश पड़ता है। जीवात्मा छाया के समान अर्थात् स्वल्प प्रकाश वाला अल्पज्ञ है किन्तु परमात्मा पूर्ण प्रकाश वाला सर्वज्ञ है। इसीलिये वह "अधिवक्ता" है।

प्रचलित हिन्दी भाषा में अधिवक्ता शब्द से न्यायालयों के वकीलों का बोध किया जाता है। जिस अधिवक्ता शब्द से परमात्मा शब्द का बोध हो रहा हो वही संज्ञा आज भी गोरांग प्रभुओं द्वारा प्रदत्त वेशभूषा को धारण करने वाले आधुनिक वकीलों की भी है यह वास्तव में महत्वपूर्ण बात है। प्रायः शब्द अपने आप में जिस अर्थ गरिमा को छिपाये हुये कालयात्रा करता रहता है उस पर ध्यान देने से अनेकों विडम्बनायें सामने आती हैं। आज का जन-समाज न्याय-व्यवस्था पाने के लिए संत्रस्त है, दुःखी है किन्तु क्या करे सर्वत्र घूसखोरी बेइमानी का ही बाजार गरम है। आज न्यायालयों में जाकर देखें तो चारों ओर कृष्णकोटधारी कुछ विचित्र चलते-फिरते जीवों की बाढ़ सी आयी प्रतीत होती है। सत्य के कथन करने वाले कुछ आदर्श वाक्य भी पढ़ने को मिलते हैं किन्तु इन सबके भीतर झाँककर देखें तो सत्य की गर्दन प्रायः मरोड़ी हुई ही दीखेगी। इनमें रेवेन्यु बोर्ड §राजस्व न्यायालय§ की तो बुरी हालत है फेसला तो शायद ही यहाँ कभी होते हों। बस केवल अभियोग लटकाये रखे जाते हैं। अभियोग सुनने वाले नायब तहसीलदारादि तो प्रायः यहाँ "यथा काष्ठमयो हस्ती" सदृश होते हैं।

अपने देश में स्वतन्त्रता प्राप्ति के अनन्तर जिन महत्वपूर्ण विषयों पर तत्काल ध्यान देना चाहिये था उनमें से एक प्रमुख विषय न्याय-व्यवस्था का परिवर्तन था। पर वह न हुआ। आज हर क्षेत्र में उसी दासता युग का अनुकरण करते हुए हमारा देश महान कष्टों को भुगत रहा है। चोर और घोर अपराधी भी आज सीना तानकर इसीलिए चल रहे हैं कि उन्हें तत्काल दण्ड नहीं मिलता बल्कि जमानत से सब छूट जाते हैं। सदाचार एक ओर मुँह छुपाये हुए है पर कदाचारी स्वच्छन्द घूम रहे हैं। वाह रे। शासन वाह री। स्वतन्त्रता।। जिस देश का इतिहास अपनी न्याय व्यवस्था के लिये बहुत बड़ा उदाहरण हो तथा जहाँ न्याय-सम्राट् विक्रमादित्य जैसे वीरवरों ने जन्म लिया हो उसी देश की स्वतन्त्र युग में भी ऐसी दुर्दशा।

हमारे देश में न्याय-व्यवस्था के लिए "ग्राम पंचायतें" होती थीं। बड़े-बड़े अभियोगों के निर्णय न्याय-पंचायतों में सत्यता के साथ होते थे, देश सुखी था। महात्मा गाँधी के राम-राज्य की कल्पना का आधार ये ग्राम-पंचायतें ही थीं किन्तु खेद है कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के 42 वर्षों के पश्चात् भी हम प्राचीन भारत की न्याय-प्रणाली को लागू नहीं कर पाये हैं। वस्तुतः जब तक हमारे देश के नेतागणों का मस्तिष्क दासत्व से मुक्त न होगा तब तक न न्याय-व्यवस्था में सुधार होगा और न ही शिक्षा प्रणाली में। आज देश के नेतागण अपने गौरवमय इतिहास को देखकर अपने देश को समृद्ध नहीं करना चाहते। आदर्श मानव बनाने की ओर उनका यत्किंचित् भी ध्यान नहीं है किन्तु सब ओर से असत्य का जाल बिछाकर देश को ऊँचा उठाने की डींग हाँक रहे हैं। फलतः अधिवक्ताओं के स्थान पर झूठे मक्कार पैदा हो रहे हैं लूट मची है। जनता कराह रही है। अब तो **भगवान्** ही मालिक है, देश किस कगार पर खड़ा होगा।

उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने पर विरोध

मण्डी धनौरा§मुरादाबाद§ हिन्दी दिवस, यहां हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में डा0दिनेश-नागर की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन हुआ जिसमें उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाये जाने पर गहरा दुःख प्रकट किया गया।

योगाभ्यास

श्री रूपचन्द्र "दीपक"
आर्य समाज, श्रृंगारनगर, लखनऊ

प्राचीन काल में योगाभ्यास करना आर्यों के दैनिक जीवन का अंग था। इससे वे सर्वांगीण उन्नति को प्राप्त करते आ रहे थे। धीरे-धीरे उनका मन योग से वियोग की ओर हटता गया। कुछ हजार वर्षों में भारत के अधिकांश लोग योग के वास्तविक मर्म को भूल गये। किन्तु उसका अस्तित्व बना रहा। जब यूरोप से भारत का सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ, तब योग यूरोप पहुँचा। वर्तमान समय में भारत में यूरोप के अनुकरण की परम्परा चल पड़ी है, तो भारत का "योग" यूरोप का "योगा" बनकर पुनः भारत में आ रहा है और रुचि उत्पन्न कर रहा है। ऐसे में हम वैदिक संस्कृति के मशालियों का कर्तव्य है कि हम महर्षि पतंजलि द्वारा विरचित योगदर्शन के आधार पर योग के वास्तविक रूप को समझें और जीवन में लायें।

अथ योगानुशासनम्।। योगश्चित्त-वृत्तिनिरोधः।। तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्।। वृत्तिसारूप्यमितरत्र।। §योगदर्शन प्रथम पाद, सूत्र 1-4§। योग का उद्देश्य समाधि की अवस्था में पहुँचकर ईश्वर का साक्षात्कार करना है। इसलिए योग और समाधि में अभेद भी कह दिया गया है। यह समाधि चित्त का धर्म अर्थात गुण है। प्रकृति की दृष्टि से चित्त में तीन गुण हैं- सत्व, रजस, तमस्। इन्हें क्रमशः प्रकाश, प्रवृत्ति, स्थिति भी कहा जाता है। जब चित्त में तमोगुण की प्रधानता होती है, तब विषय-वासना, आलस्य-प्रमाद एवं मोह-जड़ता का व्यवहार होता है। जब रजोगुण की प्रधानता होती है, तब चंचलता, क्रियाशीलता, गतिमानता एवं परिश्रम का व्यवहार होता है। रजोगुण एवं सतोगुण की सम्मिलित अवस्था में धर्म, ज्ञान, ऐश्वर्य एवं वैराग्य की उन्नति होती है। जब सतोगुण की प्रधानता होती है, तब विवेक-प्राप्ति, उच्चकोटि की शान्ति एवं आत्मिक आनन्द मिलता है।

चित्त की पाँच अवस्थायें हैं:-§1§-क्षिप्तावस्था, जिसमें रजोगुण की अधिकता होती है, अर्थात अतिशय चंचलता। §2§ मूढ़ावस्था, जिसमें तमोगुण की अधिकता होती है, अर्थात अतिशय जड़ता। §3§-विक्षिप्तावस्था, जिसमें सतोगुण के साथ विक्षेप अर्थात रजोगुण भी पर्याप्त होता है। इन तीन अवस्थाओं में समाधि सम्भव नहीं है। §4§ एकाग्रावस्था, जिसमें सतोगुण विशेष होता है, यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है, कर्म-बन्धन ढीला होता है और समाधि का क्षेत्र प्रारम्भ होता है। इसे सम्प्रज्ञात समाधि कहते हैं, अर्थात समाधि की दो अवस्थाओं में से प्रथम अवस्था। §5§निरुद्धावस्था- इसमें सतोगुण का भी विरोध §रोक§ हो जाता है, चित्त की समस्त वृत्तियाँ अर्थात व्यापार रुक जाते हैं, केवल ईश्वर के ही ध्यान में जीवात्मा पूर्ण मग्न हो जाता है। इसे असम्प्रज्ञात समाधि कहते हैं, अर्थात योग की चरम अवस्था और समाधि की द्वितीय एवं अन्तिम अवस्था। यह निर्बीज समाधि भी कहलाती है। इसमें कर्मरूपी बीज आगे अंकुरित होने में असमर्थ हो जाता है।

शेष पृष्ठ ८ पर

उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाना संविधान का अपमान

सतीशचन्द्र गुप्त एडवोकेट
अध्यक्ष जिला हिन्दी प्रतिष्ठान। उपप्रधान आर्यसमाज, मंडीबांस, मुरादाबाद।

हिन्दी दिवस की पूर्व संध्या में उत्तर प्रदेश राज्य मंत्री मण्डल के उर्दू को उत्तर प्रदेश को दूसरी राजभाषा बनाने की घोषणा संविधान की भावनाओं एवम संविधान के प्राविधानों के एकदम विपरीत है और हिन्दी को अपमानित करना है। स्थिति विघटन की ओर जा रही है आशंका है कि कहीं मामला भावना में बहकर कोई ऐसा रूप न लेवे जिसका आवेग हमारी भावनात्मक एकता को टुकड़े-टुकड़े कर दे।

ऐसी परिस्थिति में इस गम्भीर विषय के चिन्तन में कुछ ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी भी आवश्यक प्रतीत होती है जिनका जन समुदाय के समक्ष रखना आवश्यक है।

राजभाषा का अर्थ राजकाज, कोर्ट कचहरी की भाषा से हुआ करता है, केन्द्र सरकार राज्यों से अथवा विदेशों से किस भाषा में पत्र व्यवहार करती है, वही राजभाषा होती है। मुस्लिम शासनकाल में फारसी भारतवर्ष की राजभाषा थी और हिन्दी राष्ट्रभाषा थी, अंग्रेजी शासनकाल में अंग्रेजी भारतवर्ष की राजभाषा थी और हिन्दी राष्ट्रभाषा रही।

शब्दों के प्रयोग तथा आदान प्रदान से कोई भाषा दूसरी नहीं बन जाती। हिन्दी में यदि अरबी फारसी के शब्द प्रयोग होते हैं तो इसका अर्थ यह नहीं है कि यह उर्दू बन गयी। न अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से हिन्दी अंग्रेजीबन जाती है। जब दो या दो से अधिक भाषायें एक दूसरे के सम्पर्क में आती हैं तो उसमें शब्दों का आदान-प्रदान होना भाषायी प्राकृतिक अनिवार्यता है। भाषा का निर्धारण व्याकरण से होता है शब्दों के प्रयोग से नहीं। सीमेन्ट, कलेक्टर, मिक्सचर, इंजीनियर, सप्रेटा, कालेज, स्कूल, रोड तथा रूट आदि हजारों अंग्रेजी के शब्द हिन्दी में प्रयुक्त होते हैं इसलिये इसका अर्थ यह नहीं है कि हिन्दी अंग्रेजी बन गयी। हिन्दी-अंग्रेजी शब्दों में अपने व्याकरणिक तत्व प्रयुक्त करके उसे अपना बना लेती है। कालेजों, कलेक्टरों तथा इंजीनियरों में भी वह वचन प्रकाशक विभक्ति प्रत्यय जुड़कर ये पद हिन्दी के हो गये। अंग्रेजी में धोती हिन्दी शब्द में "स" विभक्ति प्रत्यय प्रयुक्त होकर धोतीज पद अंग्रेजी बंन गया इसी प्रकार अरबी फारसी के शब्दों में हिन्दी व्याकरणीक प्रत्यय प्रयुक्त होत हैं अखबार, मकानात, बेगमात तथा जवाहर पदों में "अ" तथा आत अरबी तथा फारसी के विभवित प्रत्यय हैं परन्तु इनमें हिन्दी का ओ बहुवचन द्योतक विभवित प्रत्यय जोड़कर अखबारों, मकानातों, बेगमातों तथा जवाहरातों का प्रयोग हिन्दी बन गया है। हिन्दी संस्कृत फारसी तथा अंग्रेजी की आधारभूत शब्दावली अर्थ की दृष्टि से समान है। फारसी पिदर अंग्रेजी फादर संस्कृत पितृ तथा हिन्दी पिता एक ही है फारसी मादर, अंग्रेजी मदर, संस्कृत मातृ तथा हिन्दी में माता एकार्थी ही हैं अर्थात आधारभूत शब्दावली तथा व्याकरण की दृष्टि से यह स्पष्टतयाः कहा जा सकता है कि उर्दू कोई स्वतन्त्र भाषा नहीं है हिन्दी का ही एक विशिष्ट प्रयोग है।

ऐतिहासिक दृष्टि से भी उर्दू भाषा नहीं मानी जा सकती, चीन में हावागहो नदी के किनारे और्दू नाम का एक लड़ाकू तथा यायावर वबीला था यही कबीला अरब, फारस तथा मंगोलिया होता हुआ भारत आया, दिल्ली तथा आगरे में ये तम्बुओं में रहने लगे, उन्होंने दिल्ली आगरे की तत्कालीन भाषा संरचना का प्रयोग किया। इनकी भाषा को उर्दू माना गया। उर्दू दक्खिनी रेख्ता तथा हिन्दुस्तानी संरचना तथा व्याकरण की दृष्टि से हिन्दी ही है। शब्दावली का भेद अवश्य है परन्तु इन सभी का व्याकरण एक ही है।

उर्दू को दितीय राजभाषा बनाने की बात करना हिन्दी के साथ अन्याय ही नहीं है राजद्रोह भी है। हिन्दी ने अरबी, अंग्रेजी तथा अनेक लोक बोलियों के शब्दों को आत्मसात करके भारतीय संस्कृति को गांगय रूप प्रदान किया है। हिन्दी अत्याधिक उदार भाषा है यह राष्ट्रीय एकता तथा अखण्डता का मेरूदंड है। उर्दू को हिन्दी से अलग करके भारतीय जनता की राष्ट्रीय जीवनधारा से तोड़ना है। भाषायी आधार पर हिन्दु तथा मुसलमान एक ही हैं। पूरब, पश्चिम, उत्तर तथा दक्षिण समस्त भारत एक है। मुसलमान भारतवर्ष की राष्ट्रीय जीवनधारा के अभिन्न अंग हैं हिन्दी उनकी धड़कन है।"

संविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया है क्योंकि हिन्दी सैकड़ों वर्षो से पनपती हुई देश के बहुसंख्यक लोगों की विशेषकर उत्तर प्रदेश की जनभाषा किसी प्रकार की राजनीतिक दल या उसके नेता की कृपा से नहीं बनी और न ही इसके कारण उसे राष्ट्रभाषा का स्तर मिला। अनुच्छेद 345 का अनुसरण करते हुए 1960 में राष्ट्रपति ने हिन्दी के पक्ष में राजभाषा के निर्णय सम्बन्धी आदेश परिपत्र ज्ञापन जारी कर दिया था और सम्पूर्ण देश ने राष्ट्रपति को 1960 के निर्णय को विधि मान्य कहा था तथा अनुच्छेद 345 की उपेक्षा की पूर्ति कर चुका है अब इस पर न कोई पुनरीक्षण सम्भव है और न पुनर्विचार। ऐसी परिस्थिति में हिन्दी को उत्तर प्रदेश से अपदस्थ करना अन्य भाषा को उसकी बराबरी का स्तर देना या उसे हिन्दी के सामने रखना सम्भव नहीं है। अब किसी भी स्थिति में किसी भाषा को हिंन्दी के समक्ष रखने का प्रश्न ही नहीं है। हिन्दी भाषा को सरकारी भाषा के रूप में इसलिये स्वीकार किया गया क्योंकि यह न भाषा जन गयी है न जन भाषा बनाने के लिये सरकारी भाषा बनाया गया है। यही कारण है कि ऋषि दयानन्द ने विदेशी राज्य से स्वतन्त्रता हेतु लड़ाई लड़ने के लिये हिन्दी को राष्ट्रीय एकता की भाषा बताया और स्वतन्त्र आन्दोलन व उन दिनों में महात्मा-गाँधी तथा पंडित जवाहर लाल नेहरू ने हिन्दी को ही देश की सर्वोपरी भाषा कहा था और यही कारण था कि उत्तर प्रदेश विधान मण्डल ने 1948 में एक मत से संविधान से भी पूर्व यह निर्णय लिया था कि हिन्दी उत्तर प्रदेश की राजभाषा होगी और सरकारी काम-काज इसी भाषा में होगा तथा देवनागरी लिपि स्वीकार की थी। फिर क्या कारण है कि राज्य का मंत्री मण्डल इस ऐतिहासिक निर्णय में परिवर्तन करे, क्या किसी राजनीतिक चाल का घोषणा पत्र या चुनाव वायदे देश के संविधान या राष्ट्र के मूल हितों की उपेक्षा कर सकते हैं।

हिन्दी प्रेमियों को यह भी मालूम होना चाहिये कि राज्य पुनर्गठन आयोग-1955 की आख्या के अनुसार यदि अल्प भाषायी संख्यकों की संख्या किसी राज्य में 30 प्रतिशत है तो उस भाषा के लिये किसी क्षेत्र विशेष से उसकी शिक्षा और सरकारी काम काज में प्रयोग की छूट दी जा सकती है। हमारे उत्तर प्रदेश में उर्दू भाषी लोगों की संख्या 8 प्रतिशत से अधिक नहीं है। यह भी एक आश्चर्यजनक सत्य है कि उत्तर प्रदेश के ग्रामीण आंचलों में बसने वाले मुसलमान इस क्षेत्र की हिन्दी में ही अपना कामकाज करते हैं और बोलते हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात् मुसलमान छात्रों ने हिन्दी में ओजस्वी पूर्ण प्रवीणता प्राप्त की है जो सराहनीय है।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने कहा था "उर्दू की हम तरक्की चाहते है मगर वह राज्य की दूसरी भाषा नहीं बनायी जा सकती क्योंकि राज्य का खर्च उर्दू को दूसरी भाषा बनाने पर दुगुना हो जायेगा।" उर्दू के रख-रखाव और अध्ययन और तरक्की के लिये राज्य सरकार सतत् प्रयत्नशील है और सीमित साधनों के बावजूद राज्य सरकार ने उर्दू अकादमी की स्थापना की है परन्तु यह एक अकाट्य सत्य है कि सब कुछ होते हुए भी भारतीय संविधान ने उर्दू को राजभाषा की मान्यता दिये जाने की कोई कल्पना नहीं की है।

उर्दू देश के विभाजन की भाषा रही है उसने देश को तोड़ा है, जोड़ा नहीं है। यदि आज का उत्तर प्रदेश का शासन बल पूर्वक उर्दू को लादता है और उससे कोई अशान्ति उत्पन्न होती है तो उसका उत्तरदायित्व सरकार का होगा जिसको जनता कभी नहीं क्षमा करेगी।

एक खुला पत्र
माननीय श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह
जनता दल अध्यक्ष

महोदय,

आप सर्वोदयी, कार्यकर्त्ता तथा उस कांग्रेस जो 1947ई0 के पूर्व त्याग, तपस्या और देशभक्ति की प्रतीक थी- के एक लब्ध प्रतिष्ठ नेता के रूप में चमके। पर्याप्त समय तक आपने अपनी निष्ठा के कारण कांग्रेस में रह कर जनता की सेवा भी की। किन्तु जब आपने देखा कि कांग्रेस भोगवाद की शिकार हो गई, पद, पैसा, प्रतिष्ठा के लालच ने कितने ही देशभक्त तपस्वियों का तप भंग कर दिया और देश के आन्तरिक भाग में अधिकाधिक जन-सेवियों के चरित्र भ्रष्ट हो गए। बुद्धिवर्ग बिकने लगा, किसान मजदूर धोखे के नारों में बहने लगा। जनता द्वारा चुना गया प्रतिनिधि वंचक बन गया, संगठन समाप्त हो गया और मुगलिया पद्धति पर परिवार-वाद गद्दी ले बैठा, प्रदेश में तथाकथित मुख्यमंत्री मुगल सम्राट के सूबेदार होने लगे, देश, समाज खंडित होने के कगार पर आ खड़ा हुआ, राष्ट्रीय एकता काल्पनिक बन गई। आदि आदि कहाँ तक कहा जाय?

और जब आपने देखा कि देश का सौदा दूसरे देशों में बिकने लगा, देश का धन विदेशी बैंकों में जमा होने लगा, हमारी सैनिक पंक्ति भी दुर्बल होने की दिशा में जा रही है तो करोड़ों की दलाली की भयंकर रिश्वत आपने पकड़ी और अनुपम देशभक्ति, शौर्य, त्याग और तेजस्वी चरित्र का परिचय दिया। मैं ही क्या देश के करोड़ों लोगों ने आपको भूरि-भूरि सराहा और देश का एकमात्र तपस्वी देश-रक्षक घोषित किया है। आज आप देश के प्रकाशमान नक्षत्र हैं।

किन्तु कृपया इस बात को भी सोचें।

आपने रुपए पैसे अर्थात जड़ वस्तु की रिश्वत पकड़ी और उसे जनता में उजागर किया। किन्तु एक रिश्वत ऐसी भी दी जा चुकी है जिसमें :-

मनुष्यों का एक समुदाय खरीदा गया है। थोक-वोट के लालच में - ठीक चुनाव के कुछ महीने पूर्व। आप जानते हैं- उत्तर प्रदेश सभी प्रकार से एक राज-भाषी प्रदेश है। शासन द्वारा 40 वर्ष पूर्व राजभाषा न केवल घोषित हो चुकी है वरन राज्य के सभी काम उसी भाषा में व्यवहृत भी हैं। अब ठीक चुनाव के पूर्व थोक वोट के लालच में यह अमानवीय रिश्वत एक कथित वर्ग -सम्प्रदाय को देकर 5 वर्ष के लिए उन्हें खरीदा जा रहा है।

1- प्रदेश की राज्य भाषा हिन्दी को "राज्यभाषा द्वितीय उर्दू" कहकर अवमूल्यित किया गया है और द्वितीय भाषा के असीमित अधिकार प्रदेश के मुख्यमंत्री के हाथ में चले गए हैं जो जब चाहें तैसा करें।

2- न्यायलय द्वारा पूर्वगत आर्डिनेंसों को रद्द करने के निर्णय का उल्लंघन किया गया है।

3- केन्द्रीय संविधान की धाराओं का सीधा उल्लंघन है।

4- केन्द्रीय शासन द्वारा प्रतिपादित निर्देशों का उल्लंघन किया गया है। 30प्रतिशत, राष्ट्रपति का निर्देश भी अपमानित हुआ है।

5- जनता में एक सम्प्रदाय को भड़का कर सामाजिक कट्टरता पैदा कर दी जिससे वे संकुचित दायरे में आकर वोट दे दें।

6- सामाजिक विषमताओं की आधारभूत भूमिका जो चुनाव का मुद्दा बनने जा रही थी उसे अस्त-व्यस्त कर दिया।

7- सामाजिक विद्वेष पैदा करके जनता को भ्रम के जंजाल में फंसा दिया।

8- जनतन्त्र के सभी सिद्धान्तों को ताक पर रख दिया गया है।

आप सिद्धान्तवादी हैं - देशहित दूरदर्शी ही निभा सकता है। आपको यह भी समझ लेना चाहिए कि मुसलमानों {मजहब से पीड़ित} के थोक वोट आपको नहीं मिलेंगे क्योंकि आप सिद्धान्ततः उनको इतनी बड़ी रिश्वत न दे सकेंगे जितनी बड़ी रिश्वत देने के लिए कांग्रेस सशक्त तथा संकल्पी बन बैठी है। अतएव आप अपने सिद्धान्त को भी दूषित न कीजिए। इधर आपके दल के भी लोग इस रिश्वती रिश्ते में कांग्रेस का साथ दे रहे हैं जिससे उन लोगों के दिलों को ठेस लगी है जिन्होंने मन बना लिया था कि वे आपके दल के साथ प्रतिबद्ध होंगे। अतएव गणित के समीकरण से भी आप अपनी छवि न बिगाड़ें। भ्रमित भी न हों। कहीं ऐसा न हो कि आप किसी अप्रत्याशित लाभ में पड़कर निश्चित और ध्रुव लाभ छोड़ दें।

अतएव जो भी रिश्वती काम मनुष्यों की खरीद का कांग्रेस ने एक सम्प्रदाय विशेष के साथ किया है उसका गुणात्मक विरोध करना ही चाहिए। रिश्वत देने वाला, रिश्वत लेने वाला दोनों अपराधी हैं। अतएव जनता दोनों अपराधियों को दण्ड देने में सक्षम सिद्ध होगी।

—ब्रह्मदत्त दीक्षित
लखनऊ

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी

डी0ए0वी0 संस्थाओं के रीजनल-डायरेक्टर श्री देवराज गुप्ता, प्रिन्सिपल, दयानन्द इन्स्टीट्यूट, शोलापुर ने सूचना दी है कि शोलापुर में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी समारोह का कार्यक्रम बहुत तेजी से चल रहा है। यह शताब्दी समारोह 4,5,6 नवम्बर 1989 को धूमधाम से मनाया जायेगा।

सन्यास आश्रम में दीक्षा

आर्यसमाज कासगंज के प्रधान श्री ब्रजरतन जी गुप्ता ने 19 जून89 को पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, झज्जर {रोहतक} से संन्यास आश्रम की दीक्षा विधिपूर्वक ली है। नया नाम श्री ब्रजानन्द सरस्वती रखा गया है। संन्यास आश्रम की दीक्षा लेने के पश्चात आर्यसमाज कासगंज में नगर के आर्यों ने उनका हार्दिक अभिनन्दन किया।

शोक श्रद्धांजलि

- सार्वदेशिक आर्य वीरदल, अलीगढ़ ने श्री पं0 शिवकुमार शास्त्री के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए उन्हें आर्यजाति का रत्न बताया। उनके निधन को आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति बताते हुए उनके पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

शोक श्रद्धांजलि

आर्य विद्वान भू0पू0 सांसद, ओजस्वी-वक्ता श्री पं0 शिवकुमार शास्त्री के दुःखद निधन पर निम्न आर्यसमाजों तथा गण्य मान्य व्यक्तियों ने शोक सन्देश प्रेषित किए हैं।

आर्यसमाजलालगंज{रायबरेली}, आ0स0माटुंगा {बम्बई}
आ0स0 जौनपुर, आ0स0 नानपारा{बहराइच}
आ0स0 अमरपुर कौण्डला{अलीगढ़},
आ0स0 शमशेरगढ़{देहरादून}, आ0स0-पुरानी मण्डी फीरोजाबाद, विश्वभारती-अनुसंधान परिषद, {वाराणसी}।

पृष्ठ ६ का शेष....

समाधि की ये आभ्यन्तर अवस्था अटूट नहीं है। यह कुछ मिनटों या घण्टों में टूट जाती है। समाधि की इस अल्प अवधि में जीवात्मा इस तरह रहता है जैसे मोक्ष की अतिशय लम्बी अवधि में रहता है। इसके टूट जाने पर वह व्युत्थान दशा में आ जाता है अर्थात इन्द्रियों के साथ साथ चित्त भी बाह्य विषयों में प्रवृत्त हो जाता है। यह चित्त एक चुम्बक पत्थर के समान है। यदि इसका निरोध करके ईश्वर में नहीं लगाया जाता है, तो यह लोहे की भाँति बाह्य विषयों को अपनी ओर खींचता रहता है, और इन्द्रियों के देखने, सुनने आदि विषयों से बँध जाता है। इस प्रकार व्युत्थान दशा में इन्द्रियों एवं चित्त की जैसी वृत्ति होती है, वैसी ही वृत्ति मनुष्य की भी हो जाती है।

किन्तु एक भेद है। समाधि न लगाने वाले साधारण व्यक्ति की वृत्ति राग-द्वेष, धर्म-अधर्म, ज्ञान-अज्ञान, सुख-दुःख में डूबी रहती है। इसके विपरीत समाधि का अभ्यास करने वाले योगी की वृत्ति हर्ष-शोक से रहित होकर उत्साह, शान्ति एवं आनन्द से युक्त बनी रहती है। जैसे अंगारे को अंगीठी से निकाल लेने के बाद भी उसमें काफी देर तक गर्मी बनी रहती है, भोजन को खाकर उठ जाने के बाद भी उसका सुख बना रहता है, चन्द्रमा का दर्शन करके हट जाने के बाद भी उसका रस अनुभूति में बना रहता है, इसी प्रकार समाधि में प्राप्त श्रेष्ठता भी पर्याप्त समय तक बनी रहती है। यह श्रेष्ठता मानव-जीवन में परमार्थ एवं लोकव्यवहार दोनों की उन्नति करती है। इस प्रकार समाधि का अन्तिम फल तो मोक्ष ही है। संसार में रहकर भी समाधि के अभ्यास से उत्कृष्ट जीवन की सम्प्राप्ति होती है। अतः समाधि का अभ्यास प्रत्येक मनुष्य के लिए लाभकारी है।

उर्दू के गड़े मुर्दे को कब्र से क्यों उखाड़ा जा रहा है ?

• शिव कुमार गोयल, पिलखुआ

ज्यों-ज्यों लोकसभा के चुनाव नजदीक आते जा रहे हैं त्यों-त्यों अल्पसंख्यकों के वोट प्राप्त करने के लिए तरह-तरह के आश्वासन देने तथा संविधान को भी ताक पर रखकर उन्हें सुविधाएं देने की होड़ सी लग गई है। बिहार सरकार ने मुसलमानों के वोट प्राप्त करने के उद्देश्य से उर्दू को दूसरी राजभाषा घोषित किया ही था अब उत्तर प्रदेश सरकार ने भी उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने की घोषणा कर डाली है। इससे पहले 7 अप्रैल 1982 तथा 24 मार्च 1984 के बीच उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाये जाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार ने सात अध्यादेश जारी किए थे। तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने 1984 में विधानसभा में उर्दू के बारे में एक विधेयक पेश किया था, किन्तु भारी विरोध के कारण उस पर विचार ही नहीं किया जा सका। प्रो0 वासुदेव-सिंह ने मंत्रिमण्डल में होते हुए भी उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाए जाने का खुला विरोध कर न केवल निर्भीकता का परिचय दिया था अपितु इस असंवैधानिक पग के विरोध में अपना मंत्री पद भी त्याग दिया था।

न्यायालय में चुनौती:-

उर्दू सम्बन्धी अध्यादेश को प्रख्यात साहित्यकार पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी ने उच्च न्यायालय में चुनौती दी थी। महादेवी वर्मा जैसी मनीषी का उन्हें आशीर्वाद प्राप्त था। इलाहाबाद उच्च-न्यायालय ने 6 अप्रैल 1984 को अपने निर्णय में इसे गैर संवैधानिक बताकर निरस्त कर दिया था। निर्णय में स्पष्ट कहा गया था "संविधान के अनुच्छेद 345 तथा 347 के उपबंधों को देखते हुए उर्दू को प्रदेश की राजभाषा या दूसरी राजभाषा घोषित नहीं किया जा सकता"।

उत्तर प्रदेश सरकार ने अल्पसंख्यकों को संतुष्ट करने के लिए आश्वासन दिया कि वह उच्च न्यायालय के निर्णय को उच्चतम न्यायालय में चुनौती देगी। उसे उच्चतम न्यायालय में ले जाया गया। 23 अक्टूबर 1987 को उच्चतम न्यायालय ने भी निर्णय दिया कि संविधान को ताक पर रखकर अध्यादेश नहीं लाया जा सकता।

संविधान का उल्लंघन:-

संविधान में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि किसी भी भाषा को दूसरी राजभाषा तभी बनाया जा सकता है। जब उसके प्रयोग करने वालों की संख्या तीस प्रतिशत हो। 1981 की जनगणना के अनुसार उत्तर प्रदेश में एक भी तहसील ऐसी नहीं है। जिसमें तीस प्रतिशत उर्दू भाषी हों। राज्य में उर्दू भाषियों की संख्या दस प्रतिशत से भी कम है। संविधान, उच्च न्यायालय तथा सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों को ताक पर रखकर सरकार ने वोटों के लालच में यह आत्मघाती पग उठाया है। परिणामस्वरूप हिन्दी के प्रायः सभी शीर्षस्थ साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों ने इसकी एकमत होकर कड़ी भर्त्सना की है। उत्तर प्रदेश के शीर्षस्थ साहित्यकार अमृतलाल नागर, गौराफन्त शिवाजी, कन्हैयालाल नन्दन, शिव सिंह सरोज, आदि ने कहा है कि यह सब चुनावी हथकन्डा है तथा इससे भाषायी तथा साम्प्रदायिक तनाव को बल मिलेगा।

वयोवृद्ध साहित्यकार पंडित श्री-नारायण चतुर्वेदी ने घोषणा की है कि वे इस अलगाववादी तथा घातक पग के खिलाफ पुनः अदालत में जाएंगे। उर्दू के नाम पर अलगाववाद को प्रोत्साहित करना कोई नई बात नहीं है। भारत विभाजन के समय उर्दू को बंटवारे का माध्यम बनाया गया था। भाषा को किसी मजहब या जाति से जोड़ा जाना अनुचित है किन्तु उर्दू को मुसलमानों के साथ जोड़कर उसे मजहबी पुट देने की कोशिशें की जाती रही हैं।

आज सही स्थिति यह है कि अधिकांश मुसलमान भी अपने बच्चों को उर्दू की जगह हिन्दी पढ़ाने में हित समझते हैं। उर्दू केवल "कुरान शरीफ" सिखाने का माध्यम मात्र है। सरकार की तुष्टीकरण की नीति के कारण उत्तर प्रदेश में हजारों उर्दू शिक्षक मुफ्त का वेतन ले रहे हैं। इनमें से अधिकांश तो ऐसे स्कूलों में नियुक्त हैं जहां उर्दू का एक भी छात्र नहीं है।

नागरी लिपि का सुझाव:-

आचार्य बिनोबा भावे ने सुझाव दिया था कि यदि उर्दू के लिए नागरीलिपि अपना ली जाए तो उर्दू के समृद्ध साहित्य से बहुत लाभ उठाया जा सकता है। उनके इस सुझाव पर कट्टरपंथी तत्वों ने खूब बबेला मचाया था। वे तो विदेशी लिपि को छोड़ने को तैयार ही नहीं है।

सन् 1978 में जब केन्द्र में जनता सरकार थी उस समय तत्कालीन गृहमंत्री चौधरी चरण सिंह ने कहा था कि उर्दू की लिपि फारसी है जो मुगल शासकों द्वारा थोपी गई थी। उन्होंने यह भी कहा था "भारत के विभाजन का मुख्य कारण उर्दू जुबान है। मियाँ जिन्ना ने उर्दू को राजभाषा बनाने पर जोर दिया था उसी कारण भारत का विभाजन हुआ।" यह दुख की बात है कि चौधरी साहब के अनुयायी जनता दल के नेता भी वोटों के लालच में उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने का समर्थन कर रहे हैं। वोटों के लालच में जो हो जाए सो थोड़ा है।

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आ0स0 प्रतापगढ़, आ0स0 रम्मनपूरा, आ0स0 चकिया, आ0स0 चौक इलाहाबाद, आ0स0 खरसरा (बलिया), आ0स0 महुआखेड़ा गंज (नैनीताल), आ0स0 चांदपुर (बिजनौर), आ0स0 पुरानी मण्डी फिरोजाबाद, आ0स0 मरगावाँ (एटा)।

उर्दू का राज्यभाषा बनाये जाने पर विरोध

उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री मण्डल ने उर्दू को पुनः प्रदेश की द्वितीय राजभाषा का स्थान देने का निर्णय किया है अतः आर्यसमाज जौनपुर की साधारण सभा इस निर्णय का प्रबल विरोध करते हुए, सरकार से निवेदन करती है कि वह अपने निर्णय पर पुनः विचार करे और उर्दू को द्वितीय राजभाषा बना कर बहुमत को अपना विरोधी न बनावें।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

महर्षि दयानन्द आर्य विद्यालय मठपारा-दुर्ग (म0प्र0) का वार्षिकोत्सव श्री गुलाबचन्द बंसल अध्यक्ष आर्य शिक्षा समिति की अध्यक्षता में दि0 16-8-89 को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत उपदेशक/प्रचारक पद पर कार्य करने हेतु आये हुए प्रार्थनापत्रों के आधार पर सूचित किया जाता है कि इच्छुक अभ्यर्थी अपनी योग्यताओं के मूल प्रमाणपत्रों सहित दिनांक-24·10·89 को प्रातः 10 बजे सभाकार्यालय 5-मीराबाई मार्ग लखनऊ में साक्षात्कार हेतु उपस्थित हों।

-हरिश्चन्द्र आर्य,
अधिष्ठाता उपदेशक।

विज्ञापन

उत्तर प्रदेशीय विधान परिषद के लखनऊ स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से जन जन के सेवक

श्री मनमोहन तिवारी

को विजयी बनाकर प्रदेश के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक उत्थान में सहयोग देने की

अपील

प्रिय बन्धुओ,

उत्तर प्रदेशीय विधान परिषद के लिए आगामी अप्रैल/मई 1990 में लखनऊ स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव होने जा रहा है। इसमें रायबरेली, प्रतापगढ़, बाराबंकी, लखनऊ, हरदोई, सीतापुर, लखीमपुर खीरी जनपद के वे सभी **वयस्क मताधिकार प्राप्त** व्यक्ति मत देने के अधिकारी होंगे जो 1986 या उससे पूर्व किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण हैं और जिन्होंने निर्धारित प्रपत्र पर आवेदन करके अपना नाम निर्वाचक नामावली में अंकित करा लिया है।

जनतन्त्र के इस युग में अपने मत का प्रयोग करके समाज एवं प्रशासन को स्वच्छ दिशा प्रदान करना आज के बौद्धिकवर्ग का नैतिक दायित्व है। **श्री मनमोहन तिवारी** प्रदेश की उस महान पारिवारिक परम्परा से जुड़े हुए हैं जिसका नाम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम एवं समाज सेवा के इतिहास में सदैव के लिए स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है। आपके पूज्य दादा, अदम्य साहस की प्रतिमूर्ति स्व0 श्री रासबिहारी तिवारी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों में अग्रगण्य माने जाते थे। उन्होंने श्री पं0 जवाहर लाल नेहरू, श्री गोविन्द बल्लभ पन्त के साथ 30 नवम्बर 1928 को लखनऊ के चारबाग रेलवे स्टेशन के ऐतिहासिक स्थान पर ब्रिटिश साइमन कमीशन का बहिष्कार करने वाले जलूस का नेतृत्व किया था। जिस समय देशभक्तों की अपारभीड़ "साइमन गो बेक" का नारा लगाते हुए चारबाग स्टेशन की ओर बढ़ रही थी तभी ब्रिटिश पुलिस और घुड़सवारों ने इन निहत्थे नेताओं एवं नवयुवकों पर अचानक लाठियों से बर्बर हमला कर दिया था। उस समय श्री जवाहर लाल नेहरू को बचाने के प्रयास में श्री गोविन्द बल्लभ पन्त एवं श्री पं0 रासबिहारी-तिवारी अपनी शारीरिक लम्बाई और बलिष्ठता के कारण सफल तो हो गये किन्तु गम्भीर रूप से घायल हो गये थे। श्री पं0 रसबिहारी तिवारी उस समय गवर्नर की लेजिस्लेटिव कौंसिल के मेम्बर थे लेकिन उन्होंने उसी समय साइमन कमीशन के विरोध में मेम्बरशिप से त्याग पत्र दे दिया था।

श्री मनमोहन तिवारी को उनसे विरासत में अदम्य साहस, त्याग और संकल्प की प्रेरणा मिली है और उन्होंने जनसेवा में अपने सम्पूर्ण जीवन को समर्पित कर दिया है। वे आज लखनऊ तथा प्रदेश की अनेक शैक्षणिक, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से सर्वात्मना जुड़े हुए हैं। उनके सामाजिक जीवन का संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार प्रस्तुत है:-

जन्मतिथि ----- जून 27, 1946

आवास ----- ९, पुराना गणेशगंज, लखनऊ

फोन कार्यालय- 246296/247302/247475

निवास - 247032

योग्यता ----- एम0ए0

सामाजिक गतिविधियाँ- आप गत लगभग पाँच वर्षों से आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के मंत्री हैं। इस संस्था के अन्तर्गत हजारों शिक्षण संस्थाएं एवं सहयोगी सांस्कृतिक संस्थान हैं जिनका संचालन आप ही कर रहे हैं। विश्व की एकमात्र शिरोमणि आर्य संस्था "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा- International Aryan league" के आप उपमंत्री है। इस संस्था के अन्तर्गत विश्व की समस्त आर्यसमाजें एवं आर्य सामाजिक गतिविधियाँ आती हैं। आपने सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष पू0 स्वामी आनन्दबोध सरस्वती के साथ 1986 में आतंकवाद से पीड़ित पंजाब का दौरा किया और आर्यसमाज द्वारा किए जाने वाले राहतकार्यों में प्रमुख सहयोग दिया। आप लखनऊस्थित डी0ए0वी0 डिग्री कालेज, डी0ए0वी0-इन्टर कालेज, बालिका विद्यालय इन्टर कालेज, दयानन्द विद्यामन्दिर, दयानन्द शिशुमन्दिर, आर्यसमाज टेलरिंग स्कूल के प्रबन्धक हैं। आपके कुशल संचालन में यह सभी संस्थाएं निरन्तर प्रगतिशील हैं और शिक्षा तथा समाजसेवा के कार्य में सराहनीय कार्य कर रही है। आप लखनऊ से प्रकाशित सबसे पुराने हिन्दी साप्ताहिक "आर्यमित्र" के प्रधान सम्पादक हैं आपके कुशल सम्पादन में यह पत्र अपने निर्भीक एवं सुरुचिपूर्ण सांस्कृतिक विचारों के लिए इस देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी सराहा जाता है। आप लखनऊ विश्वविद्यालय कोर्ट के 1984 से 1987 तक सदस्य रहे। इसके अतिरिक्त बीस सूत्रीय कार्यक्रम लखनऊ के आप सदस्य हैं और उ0प्र0 नागरिक परिषद के लखनऊ क्षेत्र के सहसंयोजक भी हैं। आप अनेकों वर्षों से भारत सेवक समाज तथा अन्य अनेकों समाजसुधारक संस्थाओं के अधिकारी एवं संरक्षक हैं।

इस संक्षिप्त परिचय से आपको स्पष्ट होगा कि इनकी समाजसेवा का दायरा कितना विस्तृत है और उसमें समाज के प्रत्येक वर्ग की आशाएं केन्द्रित हैं। आज हमारे राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन के नैतिक स्तर में जो गिरावट दिखाई दे रही है उसका परिमार्जन, निराकरण ऐसे ही अदम्य साहस के धनी, विरोध और प्रतिरोधों के बीच निखर-निखर कर चमकने वाले व्यक्तित्व से ही सम्भव है। बौद्धिक वर्गसमाज का प्रेरक माना जाता है। समाज में आई हुई विसंगतियों एवं प्रशासन में छाई हुई अकुशलताओं को दूर करके उन्हें गतिशील बनाने की अपूर्व क्षमता उसमें विद्यमान है।

शेष पृष्ठ ११ पर

पृष्ठ - १० का शेष

इन्हीं सब दृष्टियों से, हम लखनऊ के इस उदीयमान, समाजसेवा में अहर्निश अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले, अद्भुत कार्यशैली एवं प्रतिभा के धनी युवाहृदय श्री पं0 मनमोहन तिवारी को विधान परिषद के लिए आगामी अप्रैल/मई 1990 में सम्पन्न होने वाले लखनऊ स्नातक निर्वाचन क्षेत्र से विजयी बनाने की हार्दिक अपील करते हैं और विश्वास करते हैं हमारी इस अपील को आप आत्मीयता से स्वीकार करेंगे।

::निवेदक::

1- स्वामी आनन्द बोध सरस्वती
प्रधान सार्वदेशिक आर्य
प्रतिनिधि सभा, दिल्ली।

2- पं0 इन्द्रराज, प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, मेरठ।

3- डा0 धर्मपाल प्रधान,
प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली
तथा प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

4- डा0 आशारानी राय, आचार्या
स्नातकोत्तर महिला विधालय कानपुर।

5- वेदभूषण जिन्दल,
कार्यवाहक प्रधानमंत्री
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, लखनऊ।

6- श्री जयन्त कुमार, महामन्त्री
राष्ट्ररक्षा युवा आन्दोलन उ0प्र0।

बाल जगत



महर्षि दयानन्द

श्री चन्द्रपाल सिंह "मयंक", कानपुर

महर्षि की समाज सेवा

"अट्ठारह सौ पचहत्तर" में
स्थापित कर "आर्यसमाज"।
सूत्रपात कर दिया देश में
सेवा-संस्था का शुभ साज।
हुआ "बम्बई" नगर-बीच
स्वामी जी का यह कार्य महान्।
महर्षि के आदेशों पर जो
समाज का करता उत्थान।
कुरीतियाँ खोखला बनातीं
जो समाज अन्दर-अन्दर।
उन पर किया प्रहार वेग से
दयानन्द जी ने डट कर।
बाल-विवाह बन्द करवाया,
विधवाओं का किया विवाह।
घुन जो लगता था समाज में,
रोका उसका दुष्ट प्रवाह।
शिक्षा का प्रचार करवाया।
थे विधालय खुलवाये।
जिनमें लड़के और लड़कियाँ
घर-घर से पढ़ने आये।
बालक औ बालिका- सभी के
हैं अपने-अपने स्कूल।
जिनमें शिक्षा प्राप्त कर रहे,
भारत की कलियाँ औ फूल।
शिक्षित व्यक्ति सदा समाज को
उन्नति-पथ पर ले जाते।
हैं यश की सुगन्धि बिखराते,
जब भी जहाँ-जहाँ जाते।

× × ×

श्रोताओं में तो स्वामी जी
करते जगह-जगह प्रवचन।
साथ-साथ करवाते चलते
थे सद्ग्रन्थों का लेखन।
तभी लिखाया था महर्षि ने
सुप्रसिद्ध "सत्यार्थ प्रकाश"।
जो पढ़ने पर अन्धकार का,
पाखण्डों का करता नाश।
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका-
बोल-बोल कर लिखवाते।
महर्षि ऐसे सद्ग्रन्थों का
थे प्रणयन करते जाते।

"वेद भाष्य" व अन्य "व्याकरण"
यात्रा में ही लिखवाये।
ज्ञान-प्रकाश देश की जनता
के जीवन में जो लाये।
एक बात है अति महत्व की-
हिन्दी भाषा से था प्यार।
स्वामी दयानन्द हिन्दी में
ही लिखवाते सदा विचार।

थे गुजरात प्रान्त में जन्मे,
भाषा थी "गुजराती"।
अध्ययन किया "संस्कृत" में था,
वह भी अच्छी आती।
स्वामी जी परन्तु हिन्दी में
ही करते थे प्रवचन।
हिन्दी भाषा में ही था
करवाया पुस्तक लेखन।

× × ×

"स्वतन्त्रता" का था महत्व
स्वामी जी ने बतलाया।
"स्वतन्त्रता" की ओर देश का
पहले ध्यान दिलाया।
"कोई कितना करे, "स्वदेशी
राज्य सदा सर्वोत्तम।
राज्य "विदेशी" इसकी तुलना।
में सदैव रहता कम।
पक्षपात से शून्य, प्रजा-प्रिय,
न्यायी राज्य विदेशी
श्रेष्ठ न होता। अच्छा होता
हरदम राज्य स्वदेशी।
"स्वतन्त्रता" में देश-जाति का
बढ़ता है सम्मान।
"स्वतन्त्रता" का है महत्व
यह होती बड़ी महान्।

दयानन्द जी ने बतलाई
स्वतन्त्रता की बात।
हम सब शीघ्र देश में लावें
पुण्य स्वतन्त्र प्रभात।

× × ×

दयानन्द स्वामी सचमुच ही
थे भारी विद्वान्।
कितने ही "शास्त्रार्थ" किये
थे जिनमें अतुलित ज्ञान।
"काशी का शास्त्रार्थ" हुआ
जीवन में बड़ा प्रसिद्ध।
एक बार फिर हुई विद्वत्ता
स्वामी जी की सिद्ध।
इस प्रकार से बीस वर्ष तक
करते रहे प्रचार।
किया विविध विधि भारत की
जनता का था उपकार।
दयानन्द जी का यश फैला
भारत में सब ओर।
दिया देश को महर्षि ने था
एक बार झकझोर।
यही नहीं, भारत के बाहर
फैला उनका नाम।
देखा बच्चो- महर्षि ने थे
किये अलौकिक काम।

आवश्यक सूचना

जन साधारण एवं समस्त पाठकों की सेवा में सूचित किया जाता है कि लखनऊ आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ तथा सभामंत्री श्री मनमोहन तिवारी के निवास एवं कार्यालय का टेलीफोन नं0 अब निम्नवत् हो गया है।

सभा कार्यालय- 245993
मंत्री जी का निवास- 247032

अयोध्या में त्यागानन्द शताब्दी

दिनांक- 9 से 13 नवम्बर 1989 तक गुरुकुल महाविधालय अयोध्या के आधसंस्थापक स्वर्गीय स्वामी त्यागानन्द-सरस्वती शताब्दी समारोह बड़े धूमधाम से मनाया जा रहा है। इसमें आर्यजगत के प्रसिद्ध साधुसन्त एवं उपदेशक पधार रहे हैं।

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्यमित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५- मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष: २४५६६३
पंजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी ७६
कार्तिक कृष्ण - ८
२९, अक्तूबर, रविवार, १९८९

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय बृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें ।

-- सभामंत्री ।

आर्य भजनोपदेशक की आवश्यकता

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला कानपुर (देहात) के तत्वावधान में जिले के गावों में वेद प्रचार हेतु भजनोपदेशक, आर्यसमाज के सिद्धान्तों से पूर्ण परिचित की स्थायी पद हेतु आवश्यकता है। अस्थायी नियुक्ति एक वर्ष के परीक्षणकाल पर की जायगी। अभ्यर्थी निम्न पते पर आवेदन पत्र भेजें। आयु 40 वर्ष से कम होनी चाहिए। वेतन योग्यतानुसार देय।

पता- ओउम् प्रकाश आर्य,
चीफ इंजीनियर विका0 आ0
प्रधान
म0नं0- 572 "के" ब्लाक
किदवयी नगर, कानपुर।
फोन नं0- 71853

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि० सं० २२४१/५७) कार्तिक शुक्ल-१४, रविवार - संवत् २०४६ वि०, दिनांक १२, नवम्बर १९८९ (घोषणा पत्र सं० ७/२८.२-७५)



भूमे! मात निधेहि
मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।
संविदाना दिवा कवे श्रियां
मा धेहि भूत्याम् ।।

- अथर्ववेद

हे मातृभूमि! तू हम सब अपने पुत्रों को मंगलकारक रीति से प्रतिष्ठित बना और ज्ञान के प्रकाश से युक्त कर दे। तू मुझे शोभा और समग्र ऐश्वर्य से सम्पन्न कर दे।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१.०० रू. मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ४५

सबल राष्ट्र का सक्षम जन प्रतिनिधित्व

जातो जायते सुदिनत्वे अह्नां,
समर्य आ विदथे वर्धमानः।
पुनन्ति धीरा अवसो मनीषा,
देवया विप्र उदयति वाचम्।

--ऋग्वेद 3/8/5

सबल एवं समर्थ राष्ट्र में ही सक्षम प्रतिनिधित्व उजागर होना है। राष्ट्र के अभ्युदय में जनप्रतिनिधियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इसी प्रकार राष्ट्र के अभ्युदय में विचारशील राष्ट्रप्रेमी जनप्रतिनिधियों का उदय होता है। जो जन प्रतिनिधि नैतिक सिद्धान्तों की धारणा से विमुख हुआ जनता उसे तिरस्कृत कर देती है। **रावण** विद्वान था, शास्त्रज्ञ था किन्तु जब उसका नैतिक और राष्ट्रीय चरित्र पतित हुआ तो उसका और उसके देश का ध्वन्स हो गया। वेद कहता है- **"आदर्श राष्ट्र का संचालन विद्वान उच्च गरिमावान् - चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा होना चाहिए।**

भारत की लोकसभा एवं अधिकांश विधान सभाओं के चुनाव होने जा रहे हैं। पार्टियों ने अपने-अपने प्रत्याशी खड़े किए हैं, कुछ निर्दलीय उम्मीदवार भी मैदान में हैं। मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए नये-नये वायदे एवं सभी तरह के हथकण्डे अपनाए जा रहे हैं। भारतीय लोकतन्त्र के जन्मदाताओं ने आज की राजनीति में उभरते हुए जातिवाद, वर्ग-संघर्ष, तुष्टीकरण की कल्पना भी नही की थी। आज तो राजनीति के क्षेत्र में अपराधीकरण की भी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। समता समानता बन्धुता के स्थान पर आपसी वैमनस्य बढ़ता जा रहा है। साम्प्रदायिकता चरम सीमा पर है। राजनैतिक दल चाहे वह सत्ता में हो अथवा विपक्ष में, आदर्शों से च्युत होकर सीमित और अन्धदृष्टि वाले बन रहे हैं। इन्साफ पार्टी के श्री शहाबुद्दीन भारत में नवीन पाकिस्तान की भूमिका के पक्षधर बन रहे हैं। जो धन जनता की खुशहाली के लिए व्यय होना चाहिए वह इन चुनावों में पानी की तरह बहाया जा रहा है। जन सम्पर्क के नाम पर वाहनों द्वारा किया हुआ पेट्रोल का व्यय ही करोड़ों रूपयों का हो जायेगा, अन्य खर्चे तो अलग की बात है।

इंग्लैण्ड में पार्लियामेन्ट के चुनावों के अवसर पर पार्टियाँ घोषणापत्र जारी करती हैं। दो चार स्थानों पर नीति विषयक भाषण भी दिए जाते हैं। बस, जनता निश्चित तिथि पर अपना मतदान कर आती है। कितना अन्तर है वहाँ और यहाँ के चुनाव प्रचार में। इस सबका कारण है, हम अभी तक लोकतन्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों से अपने को आत्मसात नहीं कर सके हैं।

प्रभु से यही प्रार्थना है हमारा यह लोकतन्त्रात्मक गणराज्य भारत अपने इन चुनावों में सकुशल शान्तिपूर्ण ढंग से सफल हो और चुने हुए हमारे जनप्रतिनिधि वेद के उक्त आदर्शों के अनुसार राष्ट्र का संचालन करने में समर्थ हो।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा अनन्त तू सजकर साज।
आर्य समाज ! आर्य समाज !!
——— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- कार्तिक शुक्ल-१४, संवत, २०४६ वि. १२, नवम्बर, १९८९, दयानन्दाब्द, १६५ सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

सम्पादकीय

घोषणा पत्र आर्यसमाज का

प्रजातान्त्रिक भारत की लोकसभा और अधिकांश विधानसभाओं के आम चुनाव होने जा रहे हैं। चुनाव की पूर्वसंध्या पर लगभग सभी पार्टियों ने अपने-अपने घोषणा पत्र जारी कर दिये हैं। सभी के घोषणा पत्रों में धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक-समानता, न्याय, समता-बन्धुता, आर्थिक समृद्धि, शिक्षा और उन्नति के समान अवसर की प्रदानता तथा जनकल्याण की अनेकों योजनाएं प्रस्तुत करते हुए भारत की गरिमा को उच्च से उच्चतर बनाये रखने का संकल्प व्यक्त किया गया है। निःसन्देह यह सब भारतमाँ के शरीर के अलंकरण हैं और इनसे उसकी छवि उज्वल बनती है। किन्तु भारतीय आत्मा का समग्र दिग्दर्शन हमें किसी भी घोषणा पत्र में देखने को नहीं मिल रहा है। स्वतन्त्रता के पश्चात् इस देश में जितने भी चुनाव हुए हैं उनमें किये गये सभी घोषणा पत्रों में कमोवेश इसी प्रकार के संकल्प हैं जिनसे एक बात तो बहुत स्पष्ट है कि सौदे बाजी को अधिक प्रश्रय दिया जाता रहा है। मतदाताओं को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए ऐसे-ऐसे प्रलोभन दिये गये और वायदे किये जाते रहे हैं जिनसे वर्ग विशेष के तुष्टीकरण को हवा मिलती रही है और वह सुरसा की तरह अंतहीन मुँह फैलाती रही है। आज स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी है कि तुष्टीकरण तो हुआ नहीं असन्तुष्टीकरण बढ़ता ही जा रहा है। एक मांग पूरी होती है तो दूसरी पेश कर दी जाती है। भारतीयता की आत्मा जीवित रहे या मरे उससे कोई सरोकार नहीं है उन्हें वोट चाहिये और सांसद की कुर्सी।

जनता भी ऐसे अवसरों पर उम्मीदवारों से यथावांछित वायदे कराती है। उनके विगत वादाखिलाफी के खिलाफ उन्हें उलाहना भी देती है। जनता समझती है कि अभी वोट का समय है नेता जी पकड़ में आये हैं, मौका अच्छा है, कुछ काम करा लिया जाय- कुछ वायदे करा लिए जायं।

कुछ समय पूर्व ही भारत के पूर्वोत्तर प्रदेश मिजोरम में विधान सभा के चुनाव कराये गये थे। वहाँ ईसाइयों की संख्या अधिक है। कांग्रेस ने वहाँ की जनता को शासन के व्यय पर ईसाइयों के तीर्थ स्थानों बेथलेहम (यूरोशलम) आदि की मुफ्त यात्रा कराने का वायदा किया। इसी प्रकार पिछले चुनाव घोषणा-पत्र में कांग्रेस ने बिना तीस प्रतिशत आबादी द्वारा माँग किए ही, संविधान में निहित निर्देशक तत्वों के विपरीत, स्वयं मुसलमानों द्वारा अग्राह्य एवं लुप्त होती हुई उर्दू भाषा को प्रदेश में द्वितीय राज्यभाषा घोषित कर दिया। इसके अतिरिक्त इन घोषणा पत्रों में अनेकों ऐसी विसंमतियाँ हैं जो भारत को भारत बनाने में नहीं अपितु उसकी आत्मा को खण्ड-खण्ड कर देने वाली हैं। इसका जीता जागता उदाहरण आज देश के हर कोने में बढ़ता हुआ वर्ग-संघर्ष, जातिवाद, धार्मिक-उन्माद, देश को खण्ड-खण्ड करने वाले उत्तेजक नारे, बढ़ती हुई हिंसा और असंतोष की, आर्थिक कठिनाइयों की, जन जीवन के असुरक्षित होकर घुट-घुट कर जीने की, अघोषित कर्फ्यू में सांस लेने की घट रही नित नयी-नयी घटनाएँ हैं जो बड़े सुसंगठित तरीके से भारत माँ के शरीर पर-विभाजन के समय बने हुए जख्मों को हरा भरा करती हुई बढ़ती जा रही हैं। मर्ज बढ़ रहा है ज्यों ज्यों दवा की जा रही है। प्रत्याशियों की सूची पर दृष्टिपात करने से प्रकट होता है कि टिकट यह सोचकर दिया गया है कि उस क्षेत्र के रहने वाले प्रत्याशी के उसके सजातीय कितने हैं। मानो अब भारतीय, भारतीय रहा हो नहीं, वह यादव है, ठाकुर है, मुस्लिम है, पंडित है, हरिजन है और इसी भावना से प्रचार की धूम मची हुई है और इस प्रचार की आंधी में क्या-क्या न कहा जा रहा है- इसका उल्लेख हम नहीं करना चाहते, न करें वह ही अच्छा है।

हम यहाँ एक आदर्श प्रत्याशी की आदर्श घटना का उल्लेख करना चाहते हैं। सन् 1957 में लोकसभा के चुनाव हो रहे थे। स्व0श्री लालबहादुर शास्त्री अपने इलाहाबाद क्षेत्र से खड़े हुए थे। शास्त्री जी उस समय रेलमंत्री थे। जब वे चुनाव दौरे पर जीप में बैठकर अपने क्षेत्र "जसरा" पहुँचे तो जसरा बाजार में भीड़ ने उन्हें घेर लिया और एक मांग रखी कि यहाँ मेल ट्रेन (डाकगाड़ी) रुकनी चाहिए। शास्त्री जी उस समय रेलमन्त्री थे और उस क्षेत्र से लोकसभा के लिए उम्मीदवार भी। अतः जनता की यह मांग नाजायज नहीं मानी जा सकती थी और शास्त्री जी के एक इंगितमात्र से रेलविभाग जनता की इस मांग को तुरन्त पूरा भी कर सकता था। परन्तु शास्त्री जी झूठा वादा करना नहीं जानते थे। सत्यनिष्ठ राजनीतिज्ञ और कुशल प्रशासक थे। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा --

"अगर इसी तरह हर स्टेशन के लोग मांग करने लगें कि यहाँ डाकगाड़ी रुकनी चाहिए और सरकार सबकी पूर्ति करे तो फिर डाकगाड़ी और पेसेन्जरगाड़ी में फर्क क्या रह जायेगा" शास्त्री जी का आशय स्पष्ट था- नहीं, आप वोट दें या न दें- यह मांग गलत है।"

यह था उस वीर पुंगव लौह प्रत्याशी का जवाब। घुटने टेककर जनता की हर मांग को उसके गुण-अवगुण का तौल किए बिना ही स्वीकार करने का वादा करके कुर्सी की आशा में नतमस्तक हमारे नेताओं को यह आदर्श अपने सामने रखना चाहिए। आज का नारा और विश्वास यह होना चाहिए कि हम जीतें या हारें, राष्ट्र की अस्मिता और संस्कृति को कभी दाँव पर नहीं लगाएगें। जनता का दुखदर्द कोई भी लोकसभा या विधानसभा में जाये, एक जैसा महसूस करेगें और उसे दूर करने का उपाय भी, परन्तु राष्ट्र का स्वाभिमान और अगणित पीढ़ियों से मानवता जिस शान्ति की कामना के लिए लालायित है उसे दावँ पर लगाकर, लोकसभा तथा विधानसभाओं की सीटों को प्राप्त नहीं करेंगे।

आज हमे उच्चतम व्यक्तित्व, राष्ट्र के सजग प्रहरी, राष्ट्र की अस्मिता के लिए सर्वात्मना समर्पित, कठोर श्रमशील, आपादमस्तक भारतीयता के पुजारी प्रत्याशी चुनने की आवश्यकता है। आज हमें ऐसे राष्ट्र प्रतिनिधियों की आवश्यकता है जो देश की एक एक इंच भूमि पर मरमिटने वाले हों, जो हमारी मातृभूमि के प्रति जो हजारों वर्षों से हमारा सन्तानवत् पालन-पोषण कर रही है- पूज्य और श्रद्धाभाव रखने वाले हों। आज हमारे राष्ट्र के इतिहास में ऐसा अवसर उपस्थित हो गया है कि हमें अपने राष्ट्रप्रेम के लक्ष्य के सम्मुख अन्य सभी वस्तुएं, मान्यताएं यहाँ तक कि पवित्र विश्वास भी त्यागने होगें। मातृभूमि की सेवा से बढ़कर न कोई सेवा है और न कोई धर्म है- इस भाव से जाने वाले प्रत्याशी ही भारतीयता का मस्तक ऊँचा कर सकते हैं।

क्रमशः ■

२७वाँ कच्चाहार-दिवस

डॉ0 स्वामी गुरुकुलानन्द-सरस्वती (कच्चाहारी) ने करवाचौथ (17 अक्टूबर) 1989 को 27वें कच्चाहार-दिवस पर 54 वर्ष पूर्ण कर 55वें वर्ष में प्रवेश करते हुए- शरीरान्त होने पर नेत्रबैंक को नेत्रदान तथा मेडिकल कॉलेज को शवदान की इच्छा दुहराते हुए निम्नांकित संकल्प लिये- 1-दो से अधिक गुरुकुलों की स्थापना, 2-एक सौ से अधिक जनों को नैष्ठिक-ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ व सन्यास की दीक्षा, 3-पाँच यज्ञ व सोलह संस्कार प्रचार, 4-संस्कृत भाषा प्रसार, 5-पशु बलि बन्दी के साथ शाकाहार प्रचार, 6-मद्यनिषेध अभियान, 7-आरोग्य सेवा और 8- भारत की एकता अखण्डता-सम्पन्नता।

ज्ञातव्य है कि "गुरुकुल आश्रम-ब्रह्मावर्त- बिठूर (कानपुर)" का निर्माणकार्य कार्तिक पूर्णिमा" 1984ई0 से चल रहा है तथा "गुरुकुल कुमाऊँ" की, स्थापना की जानी है।

लक्ष्मीचन्द्र मित्तल
मंत्री
आर्यसमाज पिथौरागढ़।

साम्प्रदायिकता का फैलता विषवृक्ष

□ डा॰ ज्वलन्त कुमार शास्त्री
एम॰ए॰ पी॰एच॰डी॰, अमेठी

यह एक कड़वी सच्चाई है कि स्वतन्त्र भारत में साम्प्रदायिकता और जातिवाद को जितना बढ़ावा राजनीतिक दलों ने दिया है उतना किसी अन्य संगठन ने नहीं। उदाहरणार्थ शाहबानो-केस पर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को मुस्लिम महिला विधेयक लाकर उलट दिया गया। श्री जवाहरलाल नेहरु की जन्म शताब्दी में यह तो सोचा ही जा सकता है कि क्या नेहरु जी आज जीवित होते तो इस प्रतिगामी विधेयक को संसद में लाते? जब इस प्रकार कट्टर मुसिलम साम्प्रदायिक ताकतों के हाथ सरकार खेल रही हो तो मुस्लिम समुदाय में प्रगतिवादी तत्व कैसे उभरेंगे और फिर कोई क्यों आरिफ मोहम्मद बनना चाहेगा? शहाबुद्दीन जैसे साम्प्रदायिक तत्वों के आगे सरकार ने घुटने टेक कर यह संकेत तो दे ही दिया है कि साम्प्रदायिकता का गुबार और बढ़ेगा तथा शोले भड़केंगे। इसी श्रृंखला में जम्मू-कश्मीर में संविधान की 370वीं धारा को बनाये रखना, अलीगढ़ यूनिवर्सिटी का साम्प्रदायिक रूप और अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना को भी देखना चाहिए। भारत के 40 मुस्लिम बहुल जिलों में नूतन शिक्षा नीति के विचार के लिए भारत सरकार ने तीन सदस्यों की एक कमेटी बनाई है जिसके सदस्य अलीगढ़, कश्मीर और उस्मानियाँ यूनिवर्सीटियों के वाइसचांसलर हैं। इन 40 जिलों के मुसलमान उर्दू, अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं-तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम आदि में से कोई एक भाषा पढ़ेंगे। इन्हें हिन्दी भी नहीं पढ़नी पड़ेगी। लार्ड-मैकाले द्वारा प्रवर्तित शिक्षा नीति (1835ई0) के ठीक डेढ़ शताब्दी बाद 1985 में राजीव गाँधी ने जो नई शिक्षा नीति घोषित की है उसके तहत माध्यमिक शिक्षा में अंग्रेजी को अनिवार्य तथा संस्कृत का बहिष्कार कर दिया गया है। क्योंकि संस्कृत के पास वोट बैंक नहीं है और संस्कृत समर्थक का पुरुष है वे संस्कृत के प्रश्न पर सरकार को नहीं झुका सकते। दबाव के आगे सरकार अपना प्रस्तावित प्रेस बिल वापस ले सकती है। श्रीमती इन्दिरागाँधी की हत्या को जाँच कर रहे ठक्कर आयोग की रपट को संसद के समक्ष रख सकती है तो संस्कृत को यथा पूर्व स्थिति में क्यों नहीं रख सकती? जाहिर है हम सरकार को इस मुद्दे पर दबा नहीं सकते या दबाना नहीं चाहते। तिस पर भी कोढ़ में खाज यह कि अब उर्दू को बिहार और उसके बाद उत्तर प्रदेश में द्वितीय राजभाषा बनाने का ऐलान कर दिया गया है। सरकार की इस साम्प्रदायिक भाषाई नीति पर मैं अपनी ओर से कोई टिप्पणी न कर मोहम्मद जमील का नवभारत टाइम्स 26 सितम्बर 1989ई0 में प्रकाशित लेख का आवश्यक अंश उद्धृत कर रहा हूँ-- "जो लोग उर्दू को मुसलमानों की एक महत्वपूर्ण माँग के रूप में देखने और इसके सहारे उनमें अपनी पैठ बनाने की कोशिश कर रहे हैं वे न तो उर्दू के हितैषी हैं न मुसलमानों के।-----

हिन्दी पट्टी के मुसलमानों के अलावा देश के अन्य भागों के मुसलमानों में बहुत कम लोग ऐसे मिलते हैं जिन्हें उर्दू से दूर का भी कोई वास्ता हो। हिन्दी पट्टी के मुसलमानों की कम से कम तीन पीढ़ियाँ ऐसी हैं जो या तो उर्दू से अनभिज्ञ हैं या उर्दू के मुकाबले में हिन्दी ज्यादा बेहतर ढंग से लिख और बोल सकती हैं। इसका एक जीता जागता सबूत यह भी है हिन्दी राज्यों से प्रकाशित होने वाले दैनिक एवं साप्ताहिक अखबारों में चन्द एक को छोड़कर किसी का भी प्रसार 10-15 हजार से अधिक नहीं है। जो लोग उर्दू पढ़-लिख सकते थे उनकी तायदाद बराबर घटती जा रही है।

पिछले 40 वर्षों से (मुसलमानों की) जो दो-तीन पीढ़ियाँ उभरी हैं उन्होंने हिन्दी को अपनी भाषा के रूप में न केवल स्वीकार कर लिया है अपितु वह इसके माध्यम से जीवन के विभिन्न मैदानों में आगे भी बढ़ रहे हैं और उन पर अपनी छाप भी छोड़ रहे हैं। समय के पहिये को उल्टा घुमाकर एक बार फिर मुसलमानों की नई नस्ल को वहाँ ले जाकर खड़ा कर देना जहाँ से पहले के लोगों ने अपना सफर शुरू किया था, बुद्धिमत्ता की बात नहीं होगी। -----मुस्लिम वोट बैंक हथियाने के लिए दूसरी या तीसरी राज्य भाषा का जो नाटक खेला जा रहा है उसे बन्द होना चाहिए। उर्दू के साथ न्याय की सबसे बेहतर सूरत यही है कि इसे हिन्दी राज्यों में त्रिभाषा स्कीम में तीसरीभाषा के रूप में पठन-पाठन की सुविधा दी जाए और ईमानदारी के साथ इस पर अमल भी किया जाय।"

भारत की प्रमुख राजनीतिक पार्टी कांग्रेस द्वारा धर्म निरपेक्षता की धज्जी उड़ाने वाली ताजी घटना यह है-- मिजोरम में चुनावों के लिए जनवरी 1989ई0 में जारी किये गये कांग्रेस के चुनावी घोषणापत्र में कहा गया है-- "ईसाई होने के नाते हमारा कर्तव्य है कि हम ईसाई धर्म का प्रचार करें"। उस घोषणापत्र में समाजवाद की विचित्र परिभाषा दी गई-- "समाजवाद बाइबिल के उपदेशों तथा मिजो संस्कृति पर आधारित है।" शिक्षा के प्रश्न पर कांग्रेस घोषणापत्र ने आश्वासन दिया है---- "स्कूलों का पाठ्यक्रम मिजो संस्कृति तथा ईसाई सिद्धान्तों के आधार पर संशोधित किया जाएगा। घोषणापत्र में आगे कहा गया है कि "युक्तियुक्त यही है कि सभी ईसाई कांग्रेस को समर्थन दें"।

अतः कांग्रेस का घोषणापत्र स्पष्टतः दिखाता है कि कांग्रेस पार्टी ने ईसाइयत के नाम पर वोट माँगे। यह लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 123 का खुला उल्लंघन है। कांग्रेस की यह ईसाई तुष्टिकरण नीति वर्ष दिसम्बर में संसद द्वारा पास कि॰ गया उस विधेयक के सामने सवालिया निशान लगाता है जिसमें यह कहा गया है कि राजनीतिक पार्टियों को 14 अगस्त 1989 तक अपने संविधान में परिवर्तन कर स्वयं को "धर्मनिरपेक्ष" घोषित करना होगा। □

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का नैमित्तिक तथा वार्षिक बृहदधिवेशन

दिनांक॰ २४ तथा २५ दिसम्बर १९८९ को डी.ए.वी. कालेज लखनऊ में सम्पन्न होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश का दिनांक- 25 तथा 26 नवम्बर-1989 को लखनऊ में सम्पन्न होने वाला नैमित्तिक तथा वार्षिक बृहदधिवेशन, चुनाव आयोग द्वारा लोकसभा तथा उ0प्र0-विधानसभा के चुनाव के लिए आगामी तिथियाँ 22 से 26 नवम्बर 1989 घोषित हो जाने के कारण सभा के अधिवेशन की तिथियाँ परिवर्तित की जाती हैं।

अब सभा के उक्त अधिवेशनों की स्थगित तिथियाँ सभा के नियम सं0-8 (ए) के अनुसार निम्न प्रकार घोषित की जाती हैं:-

(1) नैमित्तिक अधिवेशन दिनांक- 24 दिसम्बर 1989 (रविवार)

(2) वार्षिक बृहदधिवेशन 25 दिसम्बर 1989 (सोमवार)

समय तथा स्थान डी0ए0वी0 कालेज ही रहेगा।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा उ॰प्र॰

पं॰ शिवकुमार शास्त्री-शान्तियज्ञ

पिथौरागढ़। आर्यसमाज मन्दिर में पं0 शिवकुमार शास्त्री (जन्म-15 अक्टूबर-1915- निधन- 3 सितम्बर 1989) की दिवंगत आत्मा हेतु शान्तियज्ञ 1 अक्टूबर-1989 को सम्पन्न किया गया। ऐसे वेद के विद्वान के संसार से चले जाने पर विचित्र वेदना की अनुभूति होती है। पं0 शिवकुमार शास्त्री जैसे विद्वान् पुनः गुरुकुल से निकलें- यही परमात्मा से प्रार्थना है।

-गुरुकुलानन्द सरस्वती

तुष्टीकरण की नीति घातक

• डा॰ कन्हैयालाल झा एम॰ए॰, बलिया

भारत वर्ष का यह दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि स्व0 इन्दिरा गाँधी के बाद केन्द्र और प्रान्तों में जो सरकारें बनी हैं उनकी तुष्टिकरण की नीति अपनी चरमसीमा को स्पर्श करती रही है। इस समय तुष्टिकर्ता का श्रेष्ठतम निदर्शन बनने की होड़ में वर्तमान उ0प्र0-सरकार ने बाजी मारी है। स्वनाम धन्य नारायण दत्त तिवारी मुख्यमंत्री-उ0प्र0 की उर्दू को प्रदेश की द्वितीय राजभाषा बनाये जाने की घोषणा और उसे विधान मण्डल में प्रखर विरोध के बावजूद पारित करा देना इसी तथ्य का एक ज्वलन्त प्रमाण है। यह बिहार सरकार की पूर्व चरित तुष्टीकरण की नीति की नकल में किया गया है। एक ही तीर से दो निशान उन्होंने मारे हैं विपक्ष को तोड़ने की एक राष्ट्रघाती चाल भी चली है।

दूसरी तरफ केन्द्र सरकार ने जो पूर्व माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम से संस्कृत को हटा दिया है वह भी बेहद निन्दनीय है और राष्ट्रघाती कदम है। चुनाव समीप आने पर ऐसी घोषणायें करना संकीर्ण स्वार्थ के लिये एक घृणित प्रयास है, जो सफल नहीं होगा। मेरी यह समझ में नहीं आता कि जिस वर्ग विशेष को वोट बैंक समझकर मुख्यमन्त्री महोदय ने खुश करने की कोशिश की है क्या उस मुसलिम समुदाय का हित साधन उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाये जाने से ही हो सकता है? क्या वे हिन्दी को आत्मसात् नहीं किये हुए हैं? क्या वे रहीम, रसखान, इंशाअल्ला खाँ और दारा शिकोह आदि के वंशज नहीं हैं? इस तरह राष्ट्रीय मुख्य धारा से मुसलमानों को काटना राष्ट्र के लिये कहाँ तक उचित है? तुष्टीकरण की होड़ में जो नेता कश्मीर का विशेष दर्जा समाप्त किये जाने की मांग का विरोध करते हैं, वे राष्ट्र के हित चिन्तक कैसे माने जा सकते हैं। कश्मीर में इस सुविधा के दुरुपयोग को कौन नहीं जानता?

वस्तुतः आम मुसलमान को हिन्दी से कोई परहेज नहीं। सामान्यतः हिन्दुओं में भी उर्दू काफी लोकप्रिय रही है और अधिक होती भी जा रही है। मुन्शी प्रेमचन्द आदि अनेकानेक हिन्दुओं ने भी उर्दू को अपने साहित्य में आत्म सात्‌ किया है रोज शेरो-शायरी में हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सभी स्वाभाविक रूप से सहभागी होते हैं। ऐसा कोई मुसलमान नहीं, भारत वर्ष में, जो हिन्दी अथवा उसकी सहयोगी भाषा अथवा उसकी बोली को न समझता हो, न पढ़ सकता हो। कोई आन्दोलन नहीं, किसी को कोई शिकवा शिकायत भी नहीं थी, सभी एक स्वर से हिन्दी को समृद्ध-राष्ट्रभाषा के रूप में देखने को लालायित हैं, लेकिन सरकार की "फूट डालो, राज करो" की नीति वर्गवाद को बढ़ावा दे रही है। साम्प्रदायिकता की चिन्गारी उत्पन्न कर रही है। थोपी हुई उर्दू घृणास्पद हो जायेगी। हिन्दी को समृद्ध होने में भी बाधा उत्पन्न होगी। मैं पूछता हूँ राजभाषा अथवा राष्ट्रभाषा के दो बनाये जाने का औचित्य क्या है, राष्ट्रभाषा या राजभाषा तो अधिकांश जनसंख्या की सम्पर्क भाषा के रूप में प्रचलित एक ही भाषा होनी चाहिये। यदि दूसरी का प्रश्न खड़ा होता है, तो प्रत्येक राज्य में बोली जाने वाली सभी भाषाओं को अथवा व्यापक क्षेत्र वाली भिन्न शैली वाली बोलियों को भी तृतीय, चतुर्थ इत्यादि राजभाषायें बनाया जाना ही तर्क संगत और न्यायसंगत होगा। आखिर सभी भाषाई अल्पसंख्यकों का हित साधन होना चाहिये। राष्ट्रीय मुख्य धारा से जोड़ने की क्या आवश्यकता। राष्ट्र है भी किस महत्व की वस्तु। बिहार में मैथिली भाषा को भी तृतीय राजभाषा बनाया जाना चाहिये था, जब उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाया गया। मैथिली किस बात में कम हैसियत रखती है, उर्दू से बिहार में। उसकी तो लिपि भी हिन्दी से अलग है उसके बोलने वाले मिथिलावासी अधिसंख्य बिहारी हैं। यदि मैथिली को बोली का स्तर दिया गया है, तो उर्दू भी तो हिन्दी की एक शैली ही है। अगर यह दृष्टि सही व राष्ट्रहित में है, तो केन्द्र में संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषायें तृतीय चतुर्थ, पंचम, षष्ठ इत्यादि क्रम वाली राजभाषायें बनायी जानी चाहिये। मात्र अंग्रेजी को द्वितीय राजभाषा (राष्ट्रभाषा) बनाने का क्या औचित्य रहा?

क्या अलग-अलग प्रान्तों में रहने वाले भारतीय मुसलमान या भारतीय-ईसाई को यहाँ प्रचलित भाषा से कोई हानि है। कोई परहेज है? क्या वे सामान्य रूप से सहजभाव से उसे नहीं अपनाते?

ईमानदारी की बात तो यह है, कि भाषा और संस्कृति का विकास समाज की एक सहज भाव से स्वतः प्रवाहित होने वाली प्रक्रिया है। उसको क्षुब्ध करने का परिणाम राष्ट्रघाती और सामाजिक अशान्ति को उत्पन्न करने वाला होता है। सरकार की अवसरवादिता और ब्लैकमेल होने की कमजोरी से हम में से प्रत्येक भारतीय को भली-भाँति अवगत हो जाना चाहिये और राष्ट्रघाती नीतियों से सतर्क हो जाना चाहिये, अन्यथा मानवता के कल्याण की अग्रवाहिनी भारतीय संस्कृति जो मूलतः संस्कृत में सन्निहित है, और हिन्दी, तमिल, तेलगू, मैथिली, कन्नड़ बंगला, मलयालम, पंजाबी, उड़िया, गुजराती, मराठी आदि में भूयसी व्याख्यापित है, संवर्द्धित है, वह शीघ्र नष्ट हो जायेगी। इन सबके पोषण के जो सामान्यतः प्रयास चल रहे हैं वे ठीक हैं। लेकिन इसका क्या औचित्य है, कि इन सबकी रीढ़ स्वरूपा संस्कृत को राष्ट्रीय स्तर पर ही सरकार ने पूर्व माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में ऐच्छिक विषय के न्यूनतम अधिकार से हटा दिया। क्या इससे ये सारी भाषायें, भविष्य में तेजहीन नहीं हो जायेंगी? जो आयुर्वेद अंग्रेजी की अत्यधिक घुस-पैठ से (सरकारी पर्याप्त प्रोत्साहन के अभाव में) निस्तेज होने लगा है, संस्कृत का पर्याप्त आधार छूटने से उसकी, प्राचीन गरिमामय क्षमता अब नष्ट प्राय है। भाष्कराचार्य और आर्यभट्ट जैसे विद्वानों के गणितीय योगदान को संस्कृत शिक्षा के प्रोत्साहन के अभाव में हम कैसे आत्मसात कर सकेंगे।

समस्त भारतीय भाषायें भी शीघ्र ही पंगु हो जावेंगी। विभिन्न क्षेत्रों में हिन्दी अधिकारी और हिन्दी अनुवादक के जो पदसृजित किये जाते हैं उन पर कार्य करने वाले व्यक्ति किस तरह से हिन्दी को अपने-अपने क्षेत्रों में लोकप्रिय बनायें/ यह समझ में नहीं आता। वैदिक गणित का योगदान तिरोहित हुआ जा रहा है। प्राचीन खगोल शास्त्र, ज्योतिष, दर्शन आदि क्या निष्प्राण नहीं हो जायेंगे। यदि सरकार की उपर्युक्त स्तर से संस्कृत को हटाने की घोषित नीति का क्रियान्वयन हो गया तो। क्या हिन्दी को फारसी, (उर्दू की ओट में पनप रही) और अंग्रेजी निकट भविष्य में हिन्दी को पूर्णतः निगल नहीं जायेगी, यदि संस्कृत सामान्य शिक्षा से हट गई तो। उर्दू से आम आदमी को कोई परहेज नहीं, व्यवहार होता ही है, किन्तु कठमुल्लों से ब्लैकमेल होकर वोट की लालची भारत सरकार और बहुत सी प्रान्तीय सरकारें फारसी लिपि को मत्थे मढ़ रही हैं। अभी चन्द आदमियों के अलावा फारसी लिपि को लोग नहीं पढ़ सकते। पहले से थोपी गयी अंग्रेजी को ही ग्रामीण अंचल का अधिकांश जनमानस आत्मसात नहीं कर पाया है, अंग्रेजी के लिखे सरकारी पत्र परिपत्र आदि उसके लिये दुरूह ही होते हैं। यही स्थिति छोटे नगरों के आम आदमियों की भी है। लेकिन भारत सरकार ने नये पाठ्यक्रम से अंग्रेजी और फारसी लिपि (उर्दू) को प्रोत्साहन प्रदान किया है। भाषण दिया जाता है (अंग्रेजी-थोपी नहीं जायेगी) छात्रों की प्रायः शून्य संख्या के होते हुए भी सामान्य शिक्षा के विद्यालयों में उर्दू अध्यापकों की फालतू नियुक्तियाँ समाज की अपेक्षा और सार्वजनिक राजकोष की स्थिति को देखते हुए उचित हैं, यदि नहीं तो सरकार को यह स्वीकार करना होगा कि वह पादरियों और कठमुल्लों से ब्लैकमेल हो रही है। क्या उर्दू अध्यापकों की फालतू नियुक्तियाँ भी पर्याप्त न हो सकीं, जो उ0प्र0 सरकार और बिहार सरकार को उर्दू को द्वितीय राजभाषा का दर्जा देना पड़ा। क्या दम तोड़ती हुई देश और राज्यों की आर्थिक स्थिति ऐसी नीतियों के क्रियान्वयन से निष्प्राण होने की ओर अग्रसर नहीं होगी? फारसी लिपि सीखने के लिये विपुल धन व्यय किया जायेगा, तब जाकर उर्दू (फारसी लिपि) में लिखित सरकारी आदेश/परिपत्र जनता समझ सकती है उर्दू से किसी को कोई शिकायत होने का प्रश्न ही नहीं उठेगा, बशर्ते उसका माध्यम फारसी लिपि न रखा जाय। किसी भी देशभक्त, हिन्दू मुसलमान आदि को फारसी संस्कृति का भारतीय संस्कृति पर आक्रमण बर्दास्त नहीं होगा। भाषाओं के साहित्यिक कलेवर में ओत-प्रोत जन प्रवृत्तियाँ अपना प्रभाव डालती ही हैं। समाज में उसे रोका नहीं जा सकता। यह सब होता ही रहेगा क्योंकि हमारी संकीर्णताओं को सरकार अच्छी तरह समझती है हमारी फूट और हमारे बिखराव को भी अच्छी तरह

शेष पृष्ठ १० पर...

श्रद्धांजलि: हा। स्वर्गतः शिवकुमार सुधीवरेण्यः

— आर्यरत्न आचार्य विशुद्धानन्द शास्त्री, बदायूँ

हा, हा क्व वान्तरदधात् श्रुति बोध सूर्यः
स्नेहाम्बुधि र्ह्यनुपमः सहसा व्यशुष्यत्।
दुर्भाग्य दुःख दिवसानवलोकितुं यत्,
संरक्षणाविरहिताः विधिना कृताःस्मः।॥१॥
दुःश्राव्य-दारुण-मनोव्यथनो ह्युदन्तः,
कर्तुं विदीर्णमपि हा हृदयं समेषाम्।
प्राप्नोत् सुरालयमसौ श्रुति मार्गगन्ता,
हा हा। विहाय रुदतः सकलान् स्वभक्तान्॥२॥
यावत् श्रुतीह्युपगतो दुरुदन्त एषः,
स्तब्धोह्यगाध-विरहाम्बुनिधौ निमग्नः।
हा ऽवाक् स्थितः सकलभक्त सुमित्रवर्गः,
शोकाम्बुधिस्तर विहीन ह्यगाध तस्थौ। ॥३॥
नो बन्धुवर्ग इतरो न सुहृत्समूहो,
नैवात्मजो न च समाजगतः स्ववर्गः।
नाऽऽकारितो न गणितो भणितो नकिन्चित,
आश्वासनेनसुरधामगमोत्सुकेन। (४) ॥४॥
योऽलालयन् मृदुवचो रचना-विमर्शैः,
अस्मान्विहाय शिवगेहमसौ प्रतस्थे।
नो दीर्यतेऽशनि निपातनिभ प्रवृत्या,
हन्ताऽस्मदीय हृदयं कुलिश द्रढीयः (५) ॥५॥
नोदन्तमेतमपि विश्वसतः श्रुती मे,
नो वा मनः समनुमो दयितुं प्रवृत्तम्
किन्तु त्वदीय-विरहाकुलन्वात-घातः,
हा तात्। हीति परिदेवयतेऽन्तिकस्थः॥६॥
स्वर्गीर्विचक्षण-सभा-शुचि-भूषणेति,
हा शारदात्मज। बुधां वरवन्दनीय।
वेदा गमस्मृति रसाम्बुधि-पारगन्तः,
कस्माद्गतस्त्वरितमाशु सुराधिवासम् (७)॥७॥
नाऽन्योऽस्त्यनाथधरणौ तु बिहारिलालः,
नो वैद्यनाथ विरह क्षतिरस्ति पूर्णा।
शान्तं नऽवा प्यमरसिंह वियोग दुःखम्,
नो सत्यकेतु विरहानल दाह, शान्तिः।॥८॥
क्रूरं तु निर्घृण पुनः प्रहृतं त्वया हा।
नादायि काल किल सम्भलनावकाशः।
यत्सौम्यवृत्तिरधुनाऽपहृतः शिवो नः,
क्रूरान्तकस्य हृदये करुणा कुतस्ते।॥९॥

आम्नाय मन्त्र सरल व्यवहार मूला,
शास्त्रीय कौशल कला कलित प्रशस्ता।
व्याख्यान शैल्यपि विलापमुदीर यन्ती,
"हा। स्वर्गतःशिवकुमार सुधीवरेण्यः"।॥१०॥
ऋक्-साम-सोम-रस पायक-पण्डिताग्रयः,
दैव्या गिरोऽप्रतिम-वैभव-राशिरेषः।
वेद प्रचार निरतोऽविरतः सुधीरः,
हा स्वर्गतः शिवकुमार सुधीवरेण्यः॥११॥
लोके धरन्ति मनुजस्य कलेवरं तु,
अन्येऽपि किन्तु कमनीयजनुर्हितस्य।
यःसंसृतिं सुरभितां चरितेन कृत्वा,
जीवेत् सुकीर्तवपुषा पुरुषःसधन्यः॥१२॥
एष्वेव पूतचरितेषु सुधी समज्या-,
सन्मण्डनो बुधवरः सरल स्वभावः।
देवोपमो ह्यनुपमो गुणगौरवेण,
वैदग्ध्यवैभवभव प्रतिभा प्रभावः॥१३॥
अस्मासु ये निरतिशीति विशुद्धप्रेम,
कुर्वन्ति हा। स्म विमुखा विरतिंदधानाः
अस्मान् समान् विलपतः सहसाविहाय,
याता दिवालयमितः शिवधामवामम्॥१४॥
ज्वालापुरस्य भवतस्तु गुरोः कुलस्य,
अध्यापिताश्च वटवः खलु जेहलभस्य।
वेदामयूस्थ सहवासचरः स्मरन्ति,
दुर्दैव हा। कथमितोऽपहृतःशिवोनः॥१५॥
साहित्यशास्त्र रस सूक्ति सुभाषितानाम्,
आगार एष तिरहं कृतिभावनानाम्।
पाण्डित्य मण्डितमतिः शुचिशारदाग्रः,
सत्याश्रयो ह्यसमये क्व नु हा प्रयातः॥१६॥
अल्पं गुणं गिरिसमं तुलयन्मदीयम्,
प्राशंसदेव हृदये समुदारभावः।
भागीरथी रसरयः प्रणय प्रवाहः,
दुर्भाग्यतो मम नु हाऽसमये विशुष्कः॥१७॥
विश्वास एव भवतीह न मे नितान्तं,
यद्विष्णुरत्र मधुनाभवता धृतस्यात्।

मुक्त्वा गमिष्यति भवान् सहसाऽसहायां,
स्वर्गं सदा सदय सद्धृदयां स्वपत्नीम्॥१८॥
एषा नितान्तमसमर्थगतिः स्वपक्षा-
घातेन हा मुहुर सह्यवियोग वज्रैः।
एकाकिनस्तव दिवं प्रति हायियासोः,
कं वा ऽश्रयं विचिनुतां सुपतिव्रतेयम्॥१९॥
पाणिग्रहे खलु कृता भवता प्रतिज्ञा,
वैश्वानरस्य सविधे शुचि वेद मन्त्रैः।
"हे मत्सखे मम तु सप्तपदीभवत्वम्"
त्यक्ता त्वया गतवता सुकुलप्रसूता॥२०॥
साऽनुव्रता समभवत् शुचि जीवने स्वे,
पक्षाहताद्य विकलार्धे शरीर यष्टिः।
त्यक्ता त्वया गतवताऽनवता प्रतिज्ञाम्,
एकाकिना रघुकुलं नु कलंकितंऽकिम्।॥२१॥
"गृभ्णामि ते शुचिकरं सुभगत्वरक्षा-
सत्यव्रतं समवितुं जरदष्टिभावम्।
तद् व्यस्मरः प्ररुदितां नु विपद्भवाब्धौ,
मग्नां त्यजन्नपद शप्तपदीं गृहस्थाम्॥२२॥
प्राणार्पणैरपि कदाऽपि मनोः प्रसूतिः,
रीतिं न मुंचति परम्परया समेताम्।
प्राणानपि व्यसृज एव मिमां प्रतिज्ञाम्,
हे बुद्धिमन रघुकुलं न कलंकितं ते।॥२३॥
"शून्याःदिशःखलु निरर्थकमेव तावत्,
मज्जीवनं विधिहता हतभाग्य धेया
कस्याननं समवलोक्य विचार यिष्ये,
प्राणांनिमांश्च" परिदेवयते कलत्रम्।।॥२४॥
मुक्तैकतार परिरोदनबान्धवास्ते,
कं वाऽऽश्रयं विलपदार्य समाजभाजः।
किं देववाचि परियोचित शास्त्रवादान्,
शास्त्रार्थकाल इतरत् शरणं व्रजेयुः॥२५॥
विदद्वरा बहुलदुःखभराः समेऽपि,
श्रद्धांजलिनौपि समर्पयितुं समेताः
श्रद्धेय शास्त्रि वर जुष्ट विधि प्रदिष्टे,
मार्गे स्म एव चलितुं च कृत प्रतिज्ञाः।॥२६॥
सुधीदयानन्द महर्षि दर्शितम्,
सदा सुयत्नेन च येन सेवितम्।
सुवर्त्म तेनैव सदाहि गंस्यते,
स्वभाव पुष्पांजलिरेवमर्प्यते। ॥२७॥

□

सरस्वती के वरद पुत्र:
वैदिक वाङ्मय में निष्णात सुधी-पं. शिव कुमार शास्त्री

• श्रीमती सावित्री शर्मा
१०, केलाबाग, "सावित्री सदन"
बरेली

आचार्य प्रवर। इस धरा धाम को छोड़ अकेले चले गये।
व्याकुल हैं आर्यबन्धु सारे ममता के बन्धन तोड़ गये।।1।।
ब्रजभूमि अनाथ, अधीर हुई धार्मिक विद्वान् पुत्र खोकर।
आलोकित हुई अमर जिसकी चरि कीर्ति कौमुदी को पाकर ।।2।।
वाणी साहित्य सुधा सिंचित वेदामृत पान कराती थी।
मनु प्रोक्त धर्म का प्रतिपादन कर जीवन सफल बनाती थी।।3।।
शास्त्रार्थ नीति के निर्धारण में रहे अजेय कुशल नेता।
वाग्मी सिद्धान्त शिरोमणि थे वे धीर वीर अनुपम जेता ।।4।।
ये आर्य सभायें सदा रहीं उनके व्याख्यानों से गुंजित।
थी काव्य कला रस बरसाती गम्भीर चिन्तनों से प्रेरित।।5।।
आनन्दबोध के सहयोगी अग्रज प्रकाश जी के साथी।
अपनी संचालन की क्षमता से रोकी आन्दोलन की आँधी।।6।।
हिन्दी रक्षा गोरक्षा हित तन मन धन सदा किया अर्पण
स्वातन्त्र्यवीर। निज मातृभूमि का रहे करते श्रद्धा तर्पण।।7।।
थे लोकसभा के निर्वाचित सादर सम्मानित अधिकारी।
जिनके बौद्धिक निर्णय पाकर सभ्यों की सभा चकित सारी।।8।।
ज्वालापुर गुरुकुल ने सीखा अपने सद्गुरु से अनुशासन।
तुम ही तो करते रहे वहाँ आदर्शों का बीजारोपण।।9।।
वैदिक वाङ्मय के मन्थन से नवनीत मिला जो श्रुति सौरभ,
अक्षर अक्षर है मोती सा प्रति पृष्ठ गा रहा है गौरव।।10।।
है कार्तिकेय से शिवकुमार का प्रिय परिवार वियोगाकुल।
शोकातुर आर्य जगत अर्पित करता है। श्रद्धांजलि सविनय।।11।।
षट् शास्त्रों के विधिवेत्ता तुम बन गये षडानन विज्ञानी।
तजे मर्त्यभूमि को निर्मम से बन हुये अमर पथ के गामी।।12।।

निर्वाचन

जिला सभा मीरजापुर का निर्वाचन

प्रधान - श्री लालबहादुर सिंह
मंत्री - श्री कपिलदेव आर्य
कोषा० - श्री नागेन्द्र सिंह

आर्यसमाज मानपुर (गया)

प्रधान - श्री शंकर राम आर्य
मंत्री - श्री प्रेमचन्द्र प्रसाद
कोषा० - श्री ज्ञानप्रकाश आर्य

आर्यसमाज भूमानगर (मु०नगर)

प्रधान- श्री बाबा सिंह जी
मंत्री - श्री हुकुम सिंह जी
कोषाध्यक्ष- श्री तेजपाल सिंह

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जौनपुर

प्रधान - श्री रजईराम आर्य
मंत्री - श्री रमाशंकर आर्य
कोषा० - श्री सन्तप्रसाद आर्य

आ०स० अमरपुर कैड़ेला (अलीगढ़)

प्रधान - श्री अशोक कुमार आर्य
मंत्री - श्री यतीशकुमार आर्य
कोषा० - श्री मा० प्रेमपाल सिंह

उत्तर प्रदेश को द्विभाषी मत बनाओ

संकलन एवं प्रस्तुति : सन्तोष "कण्व" बरेली

उत्तर प्रदेश में उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाए जाने के प्रयासों की विद्वानों, मनीषियों, लेखकों व राजनीतिज्ञों द्वारा निन्दा तथा राष्ट्र के पुनर्विभाजन की चेतावनी।।

भारत विभाजन के बाद से ही उत्तर प्रदेश में उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाए जाने की माँग उठती रही है। राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन उस समय राज्य विधान सभा के अध्यक्ष थे। उन्होंने स्पष्ट कर दिया - **"राज्य की एक मात्र भाषा हिन्दी है, प्रान्त के समस्त कार्य हिन्दी में ही होंगे।"**

टंडन जी तेजस्वी राष्ट्र-भक्त थे। उन्होंने सदन में घोषणा की थी- "उत्तर प्रदेश विधान सभा में लगभग सवा चार सौ सदस्य हैं, उनमें से एक भी सदस्य मेरे विरूद्ध होगा तो मैं उसी दिन अध्यक्ष पद से त्याग-पत्र दे दूँगा।"

पूरे सदन में सन्नाटा छा गया था। किसी की हिम्मत नहीं पड़ी जो उर्दू की माँग उठाए। परन्तु टंडन जी जैसी तेजस्विता सत्तारूढ़ दल में बहुत कम देखने को मिली है।

उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाए जाने की माँग पर अनेक विद्वानों, मनीषियों लेखकों व राजनीतिज्ञों ने समय-समय पर अपने जो विचार व्यक्त किए, उनका संकलन यहाँ प्रस्तुत है:

१ष पं0 जवाहर लाल नेहरू

हम उर्दू की तरक्की चाहते हैं, किन्तु वह उत्तर प्रदेश की दूसरी भाषा नहीं बनाई जा सकती। ऐसा करने से राज्य का खर्च दुगुना हो जायगा और बहुत तरह की अड़चनें आएंगी।

2- भूतपूर्व प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई

यह कहना सरासर गलत है कि स्वतन्त्रता से पूर्व उत्तर प्रदेश में सारा काम-काज उर्दू में होता था। उस समय जो भाषा चलती थी वह "उर्दू" न होकर "हिन्दुस्तानी" थी। हाँ उसकी लिपि अवश्य फारसी थी।

वह भाषा बहुत सरल थी। लेकिन आजादी के बाद सारा कुछ बदल दिया गया। अब भाषा हिन्दी है। लिपि नागरी है।

अतः उत्तर प्रदेश को अब द्विभाषी बनाना गलत है। भाषा एक ही "हिन्दी" है। हिन्दी ही रहनी चाहिए।

3- सुप्रसिद्ध साहित्यकार
डॉ0 रामकुमार वर्मा

उत्तर प्रदेश की राजनीति उर्दू को हिन्दी से अलग भाषा मानकर प्रकारान्तर से साम्प्रदायिकता को बढ़ावा दे रही है।

मैंने अपने इतिहास में उर्दू को देवनागरी लिपि में लेखबद्ध कर हिन्दी के अन्तर्गत ही माना है।

भाषा और संस्कृति का अविच्छिन्न सम्बन्ध है। भाषा में भेद कर संस्कृति के विघटन का षड्यन्त्र भी सामने आने वाला है। उससे सतर्क रहने की आवश्यकता है।

4- **स्वामी आनन्दबोध सरस्वती**
{प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा} दिल्ली

आज उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने की माँग उठी है, तो कल को भाषा के आधार पर उत्तर प्रदेश के विभाजन की माँग भी उठेगी।

मुझे तो सन 1947 से पहले के दृश्य याद आते हैं। भगवान न करे कि वे दुर्दिन अब पुनः आएं।

5- प्रसिद्ध समालोचक **डॉ0हजारी-प्रसाद द्विवेदी**

मेरा निश्चित मत है कि उत्तर प्रदेश द्विभाषी राज्य नहीं है।

मैं उर्दू साहित्य का सम्मान करता हूँ। किसी भी भाषा में उच्च साहित्य लिखने वाले सम्मान के पात्र हैं।

हिन्दी और उर्दू वस्तुतः एक ही भाषा के दो रूप हैं। उर्दू का सम्मान करने से यह अभिप्राय निकालना गलत है कि प्रदेश को द्विभाषी बना दिया जाए।

प्रख्यात लेखिका **शिवानी**

उत्तर प्रदेश को द्विभाषी प्रान्त बनाने से राज्य की समस्याएं हल हो जाएंगी, ऐसा मैं नहीं मानती।

मेरे तुच्छ विचार में ऐसा करने से वैमनस्य ही बढ़ेगा।

7- **प्रो0 राम सिंह**

मुस्लिम जनता की सन्तुष्टि और चापलूसी के लिए ही उर्दू का षड्यन्त्र रचा जा रहा है।

उत्तर प्रदेश ही हिन्दी का मर्मस्थल है। इसे द्विभाषी राज्य बनाकर ही राष्ट्र विरोधी संस्कृति और विचारधारा को पनपाना आसान हो सकता है।

8- **प्रो0बलराज मधोक**{दिल्ली}

उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने का प्रयास कांग्रेस की तुष्टिकरण नीति का ही एक अंग है।

इस नीति पर चलकर कांग्रेस ने देश के टुकड़े करवाए और आज फिर वही सब हो रहा है। मेरी दृष्टि में यह सरासर अन्याय है।

9- **डॉ0 भवानीलाल भारतीय**
{चण्डीगढ़}

उत्तर प्रदेश में उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाना मेरी दृष्टि में सर्वथा अनुचित है।

इससे भाषायी साम्प्रदायिकता पनपेगी। अलगाव और पृथकता भाव को बढ़ावा मिलेगा। प्रगति की दौड़ में हम पिछड़ जाएंगे।

10- **पं0 श्रीनारायण चतुर्वेदी**

उर्दू का प्रश्न तुष्टीकरण से सम्बन्धित है। फ्रांस के बोर्बोस वंश की भाँति कांग्रेस भी न कोई पुरानी नीति भूलती है, और न ही अनुभव से कुछ सीखती है।

गाँधी जी के समय से शुरू हुई मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति को कांग्रेस लकीर के फकीर की तरह पीटे चले जा रही है। परिणामतः मुस्लिम साम्प्रदायिकता का नाग पुनः फन उठा रहा है।

मुझे डर है कि विभाजन से पूर्व की स्थिति कहीं फिर से न पैदा हो जाए।

11- स्व0 **पं0 प्रकाशवीर शास्त्री**

उर्दू की आड़ में आजादी से पहले जैसी साम्प्रदायिक भावना को सरकार स्वयं ही उभार रही है।

वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद उत्तर प्रदेश में जो साम्प्रदायिक सद्भाव पैदा हुआ था, आज उर्दू की आड़ में उसे नष्ट किया जा रहा है।

भाषा को जब किसी मजहब से जोड़ा जाएगा तो उसके दूरगामी परिणाम निश्चित ही सामने आएंगे।

मुसलमानों के तुष्टिकरण की यह नीति उत्तर प्रदेश को ही नहीं, पूरे देश को मँहगी बैठेगी।

12-स्व0 **ओम प्रकाश त्यागी**

आज उर्दू का क्या औचित्य है? कुछ भी नहीं? सब समझ चुके हैं कि तुष्टिकरण की नीति है। अब इसका परिणाम भी वही होगा जो पहले हुआ था।

गाँधी जी ने पहले ही मान लिया होता तो देश टूटने की नौबत क्यों आती? आज फिर उन्हीं गलतियों को दोहराया जा रहा है।

13- **महान कवियत्री महादेवी वर्मा**

उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने की बात हास्यास्पद ही नहीं अपितु घातक है।

भाषा की समस्या जो हल हो चुकी थी उसे राजनीतिज्ञों ने पुनः उलझा दिया है। इस प्रकार चन्द वोटों की खातिर वैमनस्य और विघटन के बीज बोए जा रहे हैं। उर्दू की आड़ में प्रथकता भाव को बढ़ावा दिया जा रहा है। भाषा को आगे कर हमारी संस्कृति पर प्रहार किए जा रहे हैं।

आज प्रश्न उर्दू भाषा का नहीं है, प्रश्न तो उसकी लिपि का है। उर्दू की परम्परागत लिपि विदेशी है- अवैज्ञानिक है। देवनागरी के समक्ष उर्दू की लिपि कहीं भी नहीं टिकती है।

शेष पृष्ठ ७ पर

उर्दू प्रदेश की द्वितिय भाषा क्यों ?

• ब्रह्मदत्त दीक्षित
गीता पल्ली, लखनऊ

सन् 1938 में श्री मुहम्मद अली जिन्ना ने एक फरमान जारी किया था और सरकार से मांग की थी कि उर्दू को सरकारी भाषा का दर्जा दिया जाय तथा सेवाओं में मुसलमानों को 34 प्रतिशत आरक्षण दिया जाय। तब से निरन्तर यह कहा जाता रहा कि मुसलमान एक स्वतन्त्र कौम है और उसका धर्म अलग, भाषा अलग, रहन-सहन, रीति-रिवाज अलग, संस्कृति अलग। एक समय था जब विदेशी शासन के सहारे उर्दू भाषा का उन्माद चरम सीमा पर था उसने भारत का विभाजन किया।

वास्तविक स्थिति तो यह है कि उर्दू मुसलमान बाहुल्य जनता की भी भाषा नहीं है। गांव में रहने वाली अधिकतर मुस्लिम जनता क्षेत्रीय बोलियों में ही जीवन चलाती है। हिन्दी बोलने वालों का चूंकि उससे सानिध्य है, अतएव वे सरल हिन्दी का अधिकाधिक व्यवहार करते हैं। उर्दू तो मुस्लिम आबादी के उन 2 प्रतिशत लोगों की भाषा कही जा सकती है जो शहरों में सम्पन्नता का जीवन व्यतीत करते हैं। उनमें भी अंग्रेजी का मोह अधिक है। वे ऐसी उर्दू के हामी हैं जिस उर्दू में इधर फारसी, अरबी का व्याकरण तथा शब्दों की भरमार करके उर्दू भाषा को भी कठिन बना दिया है।

इसके अतिरिक्त 40 वर्षों से राज्य की भाषा हिन्दी हो चुकी है और सारी जनता तथा सरकार के काम उसी में चल निकले हैं। कई शिक्षा पीढ़ियां बीत गईं अब पुनः उल्टी गंगा बहेगी और यह बीती पीढ़ियां पुनः उर्दू की शिक्षा प्राप्त करेंगी। आगे चलकर यदि उन्माद फिर बढ़ा तो राज्य भाषा होने के नाते समानान्तर कार्यालय, विद्यालय, कोर्ट कचेहरी आदि-आदि की मांग होगी और प्रदेश में दो समानान्तर सरकारें चलेंगी। यह स्थिति कौन सी होगी? प्रदेश बंटेगा, समाज बंटेगा, घर परिवार बंटेगा, मनुष्य के रिश्ते बंटेंगे, क्या यह हास्यास्पद कदम नहीं है? विरोध राजभाषा बनाने से है उर्दू से नहीं।

उर्दू राज्य विधेयक का पूर्वाभास

उत्तर प्रदेश सरकार ने अल्पसंख्यकों को क्या-क्या सुविधायें दे दी हैं इसकी एक पुस्तिका राज्य के सूचना विभाग से छपी है। इसमें लाखों रुपये उर्दू अकादमी को दिए गए, मक्तबों को दिए गए, 8000 अध्यापकों की नियुक्तियां की गई चाहे उनको पढ़ाने के लिए विद्यार्थी स्कूलों में हों या न हों। कुछ विद्यालयों को अल्पसंख्यक स्वरूप प्रदान करना जो उनके मुख्य धारा में मिलने का विरोधी होगा और साम्प्रदायिक कट्टरता का साधन, एकाएक मस्जिदों से जुड़े मक्तबों की अनुदान की राशि को दस गुना करना, चुनाव के निकट उर्दू अध्यापकों को बिन मांगे अनुदान देना, 400/- रु० प्रतिमाह छात्रवृत्ति कर देना, न्यायिक सेवा की परीक्षा में एक उर्दू प्रश्नपत्र जोड़ना, अरबी फारसी के लिए बोर्ड की स्थापना आदि सब चुनाव के ठीक एक महीने पहले हुआ है।

केवल थोक वोट के लालच में

उर्दू राज्यभाषा का काला कानून बनाकर उत्तर प्रदेश की जनता पर थोप दिया गया जिससे उन्हें तत्काल वोट मिल जाए।

यह भी एक रिश्वत का प्रकार है जो खुले आम लिया दिया जा रहा है। रिश्वत देने वाला व लेने वाला अपराधी माना जाता है जिनको दण्ड देने में यदि न्यायालय असमर्थ है तो जनतन्त्र में मालिक जनता होती है वही इस बार निपटेगी। ■

पृष्ठ ६ का शेष....

उर्दू की मांग करना चन्द लोगों के दुराग्रह एवं संकुचित मनोवृति का परिचय देना है। इसी उर्दू ने भारत का विभाजन कराया था। बाद में इसी उर्दू ने पाकिस्तान के टुकड़े कराए।

सत्ता के मतवाले लोग देश को गड्ढे में धकेल रहे हैं। विपक्ष और सत्ता पक्ष के नेता चन्द वोटों के लिए उर्दू को हवा दे रहे हैं।

इस सबका परिणाम बहुत घातक होगा। आज जो मूकदर्शक बने बैठे हैं, वे कायर और डरपोक हैं। इस राष्ट्र-विरोधी षड्यन्त्र का डटकर विरोध किया जाना चाहिए।

14- प्रो० बलराज मधोक (दिल्ली)

किसी राज्य में एक ही राजभाषा हो सकती है। पं० जवाहरलाल-नेहरू ने अपने प्रधान मन्त्रित्व काल में राज्यों के मुख्य मन्त्रियों की एक बैठक बुलाई थी। उसमें यह तय हुआ था कि यदि किसी राज्य में तीस प्रतिशत से अधिक लोग दूसरी भाषा के बोलने वाले हों तो उसे सरकारी भाषा की मान्यता देने पर विचार हो सकता है।

उत्तर प्रदेश में यह स्थिति लागू ही नहीं होती है, आज उर्दू के लिए जो कुछ किया जा रहा है, वह एक बहुत बड़ी भयंकर भूल है। इस प्रयास का डटकर विरोध होना चाहिए।

उर्दू के पश्चात् निश्चित् ही भारत विभाजन की मांग उठेगी।

15- उपन्यासकारः अमृतराय

उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाया जाना किसी भी प्रकार तर्कसंगत नहीं कहा जा सकता। कुछ कट्टरपन्थी साम्प्रदायिक तत्वों ने उर्दू को मजहब अर्थात् इस्लाम या मुसलमानों के साथ जोड़ दिया है।

कतिपय राष्ट्रविरोधी संस्थाएं उर्दू को अल्प संख्यकों की भाषा करार देकर उसे दूसरी राज-भाषा बनाए जाने की मांग करती रही हैं। इस देश में अनेक बोलियाँ और भाषाएं हैं। ऐसी स्थिति में अल्पमत की भाषा के नाम पर उर्दू को ही दूसरी भाषा कैसे बनाया जा सकता है?

16- प्रसिद्ध लेखक अमृतलाल नागर

जिस प्रकार एक सिंहासन पर दो राजा नहीं बैठ सकते उसी प्रकार एक राज्य में दो राजभाषाएं कदापि नहीं हो सकतीं।

उर्दू ही नहीं, बंगला, मराठी, तमिल, तेलगू आदि किसी भी भारतीय भाषा के पठन-पाठन की सुविधाएं यदि शासन देता है, तो इसमें किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती लेकिन यदि दूसरी राजभाषा बनाने के नाम पर गड़े मुर्दे उखाड़े जाएंगे तो फिर उसका डटकर विरोध भी करना पड़ेगा।

पहले हिन्दी में अरबी-फारसी के शब्दों को घुसेड़कर "हिन्दुस्तानी" चलाने का षड्यन्त्र चला था लेकिन बाबू श्याम सुन्दर दास सरीखे विद्वानों ने उसका डटकर विरोध किया था। आज फिर वही सब हो रहा है।

भारत की भाषा हिन्दी है। उर्दू दूसरी या पहली राष्ट्भाषा नहीं बन सकती। उर्दू भारतीय जनमानस में अपनी जगह नहीं बना सकी है। बना भी नहीं सकेगी। यह इतिहास की मजबूरी है।

17- पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी

उर्दू के नाम पर षड्यन्त्र रचा जा रहा है। जो लोग उर्दू शब्दों का अर्थ भी नहीं जानते उन्हें अपनी मातृ-भाषा उर्दू लिखाने को प्रेरित किया गया है।

यह भारत का दुर्भाग्य है कि स्वाधीन भारत के तीन दशकों में हिन्दी वास्तविक राजभाषा नहीं बन पाई है। भारत की एकता के लिए नागरी लिपि चाहिए।

उर्दू की लिपि विदेशी है। उसकी आत्मा विदेशी है। उसको दूसरी राजभाषा नहीं बनाया जा सकता। इस प्रयास का विरोध होना चाहिए।

उर्दू की आड़ में अलगाव-वाद पनप रहा है। वह अरब की जिस संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है, वह भारत में कैसे चल सकती है।

उर्दू की लिपि विदेशी है। स्वदेश में विदेश नहीं चलेगा। उर्दू जोड़ती नहीं, तोड़ती है। सन् 1947 में भारत तोड़ा। अब बचा हुआ पाकिस्तान पुनः टूटने वाला है। इस लिए अपने भारत में हम उर्दू को सरकारी कन्धों पर सवार होकर पुनः नहीं आने देंगे।

जिस भाषा ने भारत के दो टुकड़े कराए हों वह पुनः खण्डित भारत की राजभाषा क्योंकर हो सकती है। ■



आर्य समाज अमरोहा के 88वें वार्षिकोत्सव पर दिनांक- 17·10·89 को आयोजित राष्ट्ररक्षा सम्मेलन

अध्यक्ष डा0 धर्मपाल जी आर्य प्रधान देहली

मुख्य वक्ता श्री यशपाल आर्य बन्धु- यति संजीवनी अवनू

प्रो0 उत्तमचन्द्र जी "शरर", श्री अभयराम शर्मा

नवीन स्थापित आर्यसमाज

खानपुर (बिजनौर)

प्रधान - श्री बाबू सिंह
मंत्री - श्री ब्रह्मपाल सिंह
कोषाध्यक्ष - श्री मा० मूलचन्दसिंह

कुशौरा (बलिया)

प्रधान - श्री ब्रजेश कुमार सिंह
मंत्री - श्री रामकुमार आर्य
कोषाध्यक्ष - श्री चन्द्र भानसिंह

पनवड़िया (रामपुर)

आर्यसमाज बहेड़ी के मंत्री रामस्वरूप स्नातक के प्रयत्न से ग्राम पनवड़िया धावनी जि0 रामपुर में नवीन आर्यसमाज की स्थापना की गई। निम्न पदाधिकारी चुने गए।

प्रधान - श्री नारायण देव
मंत्री - श्री सत्यवीर

"गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रांगण में 14 सितम्बर को श्री स्वामी दर्शनानन्दजी व श्री पं0 शुद्ध बोध तीर्थ की प्रतिमा की स्थापना की गई।

- विद्याव्रत विद्यार्थी

गोरखपुर में "यज्ञ एवं वेदप्रचार मण्डल" का गठन....

गोरखपुर मण्डल में यज्ञ तथा वेद प्रचार और आर्य समाजों के संगठन की दृष्टि से आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के अन्तर्गत सभा उपमंत्री डॉ0 विनय प्रताप जी के निर्देशन में "यज्ञ एवं वेद प्रचार मण्डल" की स्थापना हुई। उक्त मण्डल का अध्यक्ष- श्रीराम-सिंह यादव (भू0पू0मंत्री-आर्यसमाज गोरखपुर) मंत्री- श्री दयाशंकर जायसवाल तथा कोषाध्यक्ष श्रीराम नरेश गाँधी (उपप्रधान-आर्यसमाज गोरखपुर) को चुना गया। यह यज्ञ तथा वेद प्रचार मण्डल डॉ0 विनय प्रताप जी के निर्देशन में गोरखपुर मण्डल में ग्राम-ग्राम-नगर नगर घूम कर यज्ञ तथा वेद प्रचार का कार्य करेगा साथ ही आर्यसमाजों के संगठन की दृष्टि से भी कार्य करेगा। यह मण्डल प्रचार संशाधन तथा अर्थ की व्यवस्था स्वयं करेगा। इसके अधिकारी तथा सदस्य विरक्त वानप्रस्थ लोग होंगे। वर्तमान में पदाधिकारियों के अतिरिक्त श्री भगौती सिंह, श्रीअवधेश-कुमार राय, श्री के0एन0 सिंह, श्रीसीताराम-सिंह तथा श्री राम प्रसाद आर्य इसके सक्रिय सदस्य चुने गये। यह मण्डल गोरखपुर मण्डल की सभी समाजों को प्रचार हेतु अपनी निःशुल्क सेवाएं उपदेश, भजनोपदेश यज्ञ, प्रवचन हेतु समर्पित करने की घोषणा करता है। सभी समाजें इसे पूर्ण सहयोग दे कर लाभान्वित हों। पत्र व्यवहार का पता- श्री दयाशंकर-जायसवाल-मंत्री- यज्ञ एवं वेद प्रचार मण्डल आर्यसमाज गोरखपुर (बक्शीपुर) गोरखपुर।

सभामंत्री

"मयंक" जी पर पी.एच.डी.

हिन्दी - बाल - साहित्य के वरिष्ठ साहित्यकार श्री चन्द्रपाल सिंह यादव "मयंक" के बाल- साहित्य पर कानपुर विश्वविद्यालय में श्री मती कंचन लता-यादव ने पी0एच0डी0 की है। उनके शोध का विषय था- "हिन्दी-बाल-साहित्य के संदर्भ में श्री चन्द्रपाल सिंह यादव"मयंक" की साहित्य - साधना का मूल्यांकन।"- कानपुर विश्वविद्यालय में अप्रैल 1989 में श्रीमती कंचनलता यादव को पी0एच0डी0 की उपाधि प्रदान कर दी है।

श्री चन्द्रपाल सिंह "मयंक" के बालकाव्य "महर्षि दयानन्द" आजकल "आर्यमित्र" साप्ताहिक में धारावाहिक रूप से प्रकाशित भी हो रहा है। "मयंक" जी को बधाई।।

सुश्री पद्मावती आर्या दिवंगत

श्री राम प्रसाद जी बिस्मिल के सहयोगी, नैष्ठिक आर्य श्री हरगोविन्द जी की पुत्रवधू तथा शाहजहाँपुर निवासी- श्री-हंसराज जी की पत्नी सुश्री पद्मावती जी आर्या का देहावसान दि0 11 अक्टूबर89 को दिल्ली के होली फैमिली हॉस्पिटल में हो गया। स्व0 सुश्री पद्मावती जी तथा उनके पति श्री हंस राज जी दोनों ही वानप्रस्थ की दीक्षा ले कर आर्यसमाज के प्रचार प्रसार तथा संगठन के कार्यों में तन मन धन से समर्पित थे। उनके निधन से आर्यसमाज शाहजहाँपुर का समस्त आर्यपरिवार अत्यन्त शोकाकुल है। साथ ही समाज के कार्यों की भी अपूरणीय क्षति हुई है। परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

- डॉ0 विनय प्रताप

रायबरेली दि0 8 सितम्बर से 14 अक्टूबर89 तक नवीन ग्रामीण अंचलों में आर्यसमाज द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार किया गया कई विद्वानों प्रचारकों ने कार्यक्रम को सफल बनाया। जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

- आर्यसमाज बसेड़ा (सहारनपुर) द्वारा एक हरिजन परिवार में यज्ञ किया गया जिसमें बहुत से सवर्णों ने भी भाग लिया। 17 रु0 दान भी प्राप्त हुआ।

आर्यसमाज बम्बई

श्री डा0 वागीश शर्मा आचार्य - परामर्शदाता
श्री जगनप्रसाद गौतम - प्रधान
श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय - मंत्री
श्री करसनदास जे0 राणा - कोषाध्यक्ष

द्वितीय राजभाषा राष्ट्रीय एकता के लिए घातक

• आचार्य वेदव्रत अवस्थी
प्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा, लखनऊ

भारत के संविधान निर्माताओं ने पूर्वापर का भलीभांति चिन्तन करके भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी सर्वसम्मति से स्वीकार की थी। उन्होंने राष्ट्रीय अखण्डता के लिए भारत के अधिसंख्य लोगों की सम्पर्क भाषा हिन्दी को जिसकी लिपि देवनागरी है, सम्पूर्ण राष्ट्र की सम्पर्क भाषा के रूप में होने के सर्वथा योग्य समझा था। परन्तु शासन में स्थापित कतिपय अंग्रेजी वातावरण से अभिसिक्त मस्तिष्कों ने उसे धीरे धीरे राष्ट्र भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए अंग्रेजी का दामन पकड़े रखा। जिसका परिणाम यह हुआ कि आज स्वाधीनता के 42 वर्ष बीत जाने के बाद भी हिन्दी को अपना स्थान नहीं मिला। विपरीत अंग्रेजी चतुर्दिक हावी हो गई है। आज हमारे केन्द्रीय नेतागण प्रधानमंत्री से लेकर 'छोटे से छोटे मंत्री तक अपने जीवन की प्रत्येक धारा में अंग्रेजी का ही प्रयोग करते हैं, वे शायद हिन्दी जानते ही नहीं - प्रधानमंत्री जी का जब भी दूरदर्शन पर हिन्दी में उच्चारण सुनने को मिलता है तो वह केवल तथाकथित ग्रामीण जनता से उनका अटूट सम्पर्क है यह दिखाने के लिए होता है, जिसके मूल में वोट की राजनीति मात्र होती है। अंग्रेजी और अंग्रेजियत कभी भी राष्ट्र को एकीकृत नहीं कर सकती। अंग्रेजों ने भारत में "फूट डालो और शासन करो की नीति का पालन करते हुए ही इतना लम्बा शासन किया और आज उस अंग्रेजियत के प्रभाव से ग्रस्त हमारे राजनेता भी फूट डालो और राज करो की नीति अपनाकर देश में चारों ओर अराजकता, साम्प्रदायिकता और विघटन को बढ़ावा दे रहे हैं। यह राष्ट्रीय अखण्डता के लिए शुभ लक्षण नहीं हैं।

हमारा देश बहुभाषी देश है। अनेकों भाषायें अपने प्रचुर साहित्य भंडार से भरपूर हमारे देश में हैं। परन्तु पता नहीं क्यों हमारे आज के नेताओं में चाहे वे शासक दल में हो चाहे विपक्ष में हों अधिकांश विदेशी भाषा, विदेशी संस्कृति को बढ़ावा देने और पोसने में लगे हैं। उन्हें पता नहीं क्यों उसी में देश हित दीखता है।

भारतीय संविधान के अनुसार समग्र राष्ट्र की राष्ट्रभाषा और प्रत्येक प्रदेश की उस प्रदेश की अधिसंख्य भाषी लोगों की भाषा राजभाषा के रूप में स्वीकार की गई है। संविधान में कहीं भी द्वितीय राजभाषा को स्थान नहीं दिया गया है। द्वितीय राजभाषा नबनने के लिए पं० जवाहर लाल जी नेहरू ने बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा था कि दो राजभाषायें बनाने पर प्रदेश पर दोहरा आर्थिक बोझ पड़ेगा, जो प्रदेश की अर्थव्यवस्था को निर्बल बनाएगा। राष्ट्रीय संघटन में उसका लाभ रंचमात्र न होगा। संविधान में यह निर्दिष्ट है कि जिस प्रदेश में किसी भाषा के 30 प्रतिशत या उससे अधिक भाषी होंगे उस प्रदेश में उस भाषा को सह भाषा के रूप में स्वीकार किया जाय न कि द्वितीय राजभाषा के रूप में।

यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि आज अपना वोट बैंक मजबूत करने के लिए सत्तापक्ष और अधिकांश विपक्ष द्वारा- आज विघटन वादी, साम्प्रदायिक विद्वेषवर्धक वृत्तियां धर्म निरपेक्ष मानी जाती हैं। **भगवान् राम भगवान् कृष्ण** जो इस प्रदेश की माटी में जन्मे, पले, बढ़े और देश धर्म समाज और राष्ट्र की समृद्धि के लिए आद्योपान्त संघर्षरत रहे जिसके कारण ही वे जन जन में भगवान् के रूप में पूज्य बने उनका नाम लेने वाले साम्प्रदायिक और बाबर जैसे दुष्ट विदेशी आक्रान्ताओं के नाम चिरस्थायी करने उसके लूटपाट तोड़-फोड़ की कार्यवाहियों को संरक्षण देने वाले राष्ट्रभक्त धर्म निरपेक्ष कहे जा रहे हैं। इसी भावना के तहत हमारे उत्तर प्रदेश की सरकार ने इस चुनाववर्ष में अल्पसंख्यक वोट अपनी झोली में भरने के लोभ में संविधान विरुद्ध- उर्दू को प्रदेश की द्वितीय राजभाषा घोषित कर दिया है। इस निर्णय का अनेक विपक्षी दलों ने भी समर्थन कर डाला है ताकि उनका वोट बैंक भी खाली न हो। उर्दू स्वयं में कोई भाषा नहीं है वह हिन्दी का ही एक स्वरूप है- उसका भेद केवल लिपि का है। हिन्दी की लिपि देवनागरी और उर्दू की लिपि विदेशी फारसी और अरबी है। उर्दू लिपि द्वारा विदेशी मानसिकता थोपने का कुचक्र रचा जा रहा है। हमारे प्रदेश में उर्दू भाषी लगभग 9-7 प्रतिशत हैं अधिक नहीं। उनमें भी 2 प्रतिशत से कम लोग उर्दू को राजभाषा बनाने का कुचक्र रचने वाले हैं। यह कुचक्र रचने वाले केवल द्विराष्ट्रवादी- पंच मांगी तत्व हैं। ऐसी ही मानसिकता से पाकिस्तान का सृजन हुआ था। अब उनके मन· प्रदेश को पुनः खण्डित करके एक और पाकिस्तान बनाने के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। सरकार केवल कुर्सी बचाने के लिए ऐसे षड्यन्त्रकारियों के आगे बार-बार झुककर देश और प्रदेश में उन अलगाववादी शक्तियों को बढ़ावा देती जा रही है।

भारत आध्यात्मिकता का केन्द्र है- यहाँ आने वाले सभी विदेशियों को हमने प्यार दिया, पाला पोसा गले लगाया। परन्तु हमारे इस प्यार को हमारी कमजोरी समझा जा रहा है और ये पंचमांगी तत्व खुले आम विघटनवाद, सम्प्रदायवाद को बढ़ा रहे हैं और सरकार उनके आगे झुक रही है। हम शान्ति प्रिय हैं, अन्तिम चरण तक शान्ति स्थापित करने के लिए सन्नद्ध रहेंगे। हम अब सचेत हैं, सजग हैं, पुनः पराधीनता का वरण नहीं करेंगे। राष्ट्र को विखण्डित नहीं होने देंगे। उत्तर प्रदेश शासन को चाहिए कि वह अपने इस कुत्सित निर्णय पर पुनर्विचार करके उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का निर्णय त्याग दे। यह निर्णय संविधान विरुद्ध, प्रदेश घाती है। यदि शासन ने अपनी जिद पकड़ी, निर्णय नहीं बदला तो भारत की अस्मिता भारत की संस्कृति की रक्षा के लिए- राष्ट्रभाषा हिन्दी को उसके पद पर अधिष्ठित कराने के लिए भारतमाता के प्रतिसमर्पित, राष्ट्रीय अखण्डता का पोषक भारत का बच्चा बच्चा अपना सर्वस्वार्पण करने को सन्नद्ध होगा। अन्ततः "सत्य मेव जयते नानृतम्" सत्य की ही जय होगी। शासक व विपक्ष सभी को यह स्वीकार करना होगा कि राष्ट्रभाषा हिन्दी ही राष्ट्र को एकताबद्ध करने में सक्षम है। अंग्रेजी या उर्दू जिनकी अस्मिता विदेशी है- वह भारतीय संस्कृति की रक्षा कभी न कर सकेंगी। अतः सबका धर्म है कि राष्ट्र भाषा हिन्दी एवं उत्तर प्रदेश की राजभाषा हिन्दी को सर्वथा शिरोधार्य करके देश, संस्कृति सभ्यता और धर्म की रक्षा करें देश को विखण्डित होने से बचायें।

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (कच्चाहारी)

• जयराम त्यागी
(गुरुकुल, दूल-भूल, कानपुर)

जन-मन में व्याप्त हो रहे तुम,
करते सब जन का परोपकार।
मृदुभाषी सज्जन साधु पुरुष,
साधक सच्चे करुणावतार।।1।।
तुम चेता चतुर चिकित्सक हो,
है खुला आपका दया-द्वार।
है दिव्य-दमक शुचि देवपुरुष,
दाता [illegible] तम गया हार।।2।।
आकृति में अरु[illegible] आभा है,
नेत्रों में पावन [illegible] भरा।
समदृष्टि और समरसता का
आन्तरिक जगत् हो रहा-हरा।3।
ब्राह्मण-कुल भूषण परिव्राट,
यशसा यति जीवन ओज भरा।
दर्शन से होते पाप शमन,
ऐसा सुदिव्य आलोक भरा।4।
ऋषि दयानन्द के भक्त प्रवर,
करते हो वेदों का प्रचार।
तुम चारु चरित् [illegible]
हो चतुर चितेरे चित्रकार।5।
हे कच्चाहारी। गुरुकुल पोषक,
गुरुकुलानन्द, तुम हो महान।
आजन्म ब्रह्मचारी विशाल,
स्वामिन् सच्चे सद्गुण निधान्।6।

योग साधनाशिविर सम्पन्न

श्री महात्मा नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ तल्ला (नैनीताल) में 8 दिन का योग साधना शिविर 24 सितम्बर को समाप्त हुआ। 24 सितम्बर को श्री हुकमचन्द्र वैद्य अमेरिका रिटर्न देवकन्त निवासी ने स्वामी योगानन्द द्वारा वानप्रस्थ की दीक्षा ली। तथा 3100/-रुपया शान्ती देवी राजवंशी ने तथा 3000/- रुपया शकुन्तला रस्तोगी पौढ़ी गढ़वाल ने आश्रम निर्माण के लिए दिया तथा और भी साथियों ने यथाशक्ति दान दिया।

- स्वामी सोमानन्द

उर्दू विरोध में एक लाख रूपये का पुरस्कार ठुकराने वाले श्री नारायण चतुर्वेदी के प्रति भाव-सुमनांजलि

• "प्रणव" शास्त्री एम॰ए॰
महोपदेशक, शास्त्री सदन, रामनगर (कररा) आगरा

श्री नारायण के चरणों में वन्दन बन्धु हमारा हो
जो हिन्दी माता की ममता की आँखों का तारा हो।।1।।
भारत माता के मस्तक पर सदा सुहागिनि हिन्दी है,
गौरव गाथा गाने वाली हृदय-हारिणी हिन्दी है।
सुखद सभ्यता, संस्कृति जल की शुचि संगम ध्रुवधारा है।।2।।
सावधान क्षण-क्षण में रक्षण करने में जो तत्पर है
बन्ध विचक्षण, विश्रुत लेखक, आदरणीय कला धर है।
भीष्मव्रती सम हिन्दी-हित का संयमव्रत मन-धारा है।।3।।
सतत साधना में रत रहतेकरता जो रखवाली है
यह हिन्दी-उद्यान आन का मान्य महोत्तम माली है।
शिव-संकल्प सूक्त कामानो उज्ज्वल स्वर्ण सितारा है।।4।।
एक दत्त हैं नारायण जो लक्ष-प्रलोभन के हामी
"आवे जम-जम" अमृत मानकर आकर्षण के बन स्वामी
सींचदें गट्ठे में सबको दे दे वोट सहारा है।।5।।
और एक यह श्री नारायण हैं, जो श्री को भी ठुकराता
पतन प्रलोभन-पंकराशि से खड़ा पृथक् है, मुसकाता।
पुरस्कार में दीखा जिसको तिरस्कार करतारा है।।6।।
ऋषि-निधि बीते वर्ष आयु के भी भी कदम न विचलित है
एक लाख को वापिस करता विरला ही तो अतुलित है।
इतिहासों के गगनांगण में गूँजेगा जयकारा है।।7।।
धन्य धन्य है श्री नारायण हिन्दी-भक्त, महाज्ञानी
चतुर्वेदियों की श्रेणी में प्रकटे तुम हो लासानी।
वयोवृद्ध का तरूण त्याग-तप रंग लायेगा प्यारा है।।8।।
हिन्दी महासमर-शूरों में अमर तुम्हीं हो चिरचन्दन
"प्रणव" काव्य की कड़ियाँ करतीं आज तुम्हारा अभिनन्दन
आन्दोलित कर दिया तुम्हीं ने जन-मन-गण का पारा है।।9।।

> हिन्दी भारतीय संस्कृत की आत्मा और सम्पूर्ण देश को एक सम्पर्क सूत्र में बांधने का सशक्त माध्यम है--
> **- कमलापति त्रिपाठी**

महर्षि दयानन्द वाक् प्रतियोगिता सम्पन्न

नैनीताल। आर्यसमाज मन्दिर में 15अक्टूबर 1989 को श्रीमती कला बिष्ट प्रधानाचार्य की अध्यक्षता में "देश की बढ़ती हुई जनसंख्या राष्ट्रीय उन्नति में बाधक एवं उसके निराकरण के उपाय" विषयक वाक् प्रतियोगिता सम्पन्न हुई।

दीपचन्द्र भारती{शहीद सैनिक-विद्यालय- नैनीताल} ने प्रथम-पुरस्कार, नरेन्द्रकुमार {आर्यसमाज- रूद्रपुर-नैनीताल} ने द्वितीय पुरस्कार और अनूप तिवारी-{कुमाऊँ विश्वविद्यालय} ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

दीपावली का संदेश

दीप जलाओ तुम ऐसे तमधरा को मिटजाये।
पावन तम हों अन्तस सब द्वेष भाव नश-जाये।।
वर्ध हस्त हो श्रद्धा का प्रेम पाश में बन्ध-जाये।
लीला स्थली धर्म की पुण्यभूमि बन जाये।।
कायर-क्रूर न व्याप सकें मानवता फल जाये।
संत हृदय की सज्जनता सब को उज्ज्वल कर-जाये।।
देव तुल्य कर्तव्य परायण जन गण मन हो-जाये।
शब्द-शब्द मधु मय निकले व्रतवाणी का मधु-हो-जाये।।
गृह-गृह और द्वार-द्वार पर खुशहाली आ-जाये।
"वेदभिक्षु" यह दीपों का शुभ धवल प्रकाश-छा-जाये।।

स्वा0 ब्रह्मानन्द "वेदभिक्षु"
आर्यसमाज - चन्दौसी
मुरादाबाद

पृष्ठ ४ का शेष...

समझती है। उसका नाजायज फायदा उठायेगी ही। परिणाम हो रहा है आर्य संस्कृति {भारत के तेज} का तिल-तिल करके नष्ट होना।

यदि भारत में रहकर सामान्य सम्भव सुविधाओं के अतिरिक्त हममें से कोई विशेषाधिकारों/सुविधाओं की मांग करता है, और उसे जो पूरा करता है उसे राष्ट्रघाती कहने में हमें कोई संकोच नहीं होना चाहिये। सरकार को ऐसे कुत्सित प्रयासों का पूरा मजा-चखाना चाहिये उसे निकट चुनाव में धराशायी करके। हमें जन-जन को ये राष्ट्रघाती चालें समझानी चाहिये और चुनाव सभाओं में सरकार से "भेद-डालो, राज करो" की नीति का जवाब माँगना चाहिये।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

1- दि0- 9,10,11 अक्टूबर 1989 में आर्यसमाज बाँगरमऊ {उन्नाव} के उत्सव में दि0- 10-10-89 को श्री श्याम सुन्दरगुप्ताजी के पुत्र का मुडनसंस्कार वैदिक रीति से किया।

2- दि0- 13,14 अक्टूबर 1989को ग्रा0 जसरापुर पो0 भिखारीपुर पतसिया जि0 उन्नाव के उत्सव में श्री ज्ञानप्रकाश जी गुप्ता की पुत्री का मुडनसंस्कार वैदिक रीति से किया गया।

राकेश केला भाषण प्रतियोगिता

"वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों एवं कालेजों के विद्यार्थियों की प्रतियोगिता आर्यसमाज हनुमान रोड दिल्ली के वार्षिकोत्सव के अवसर पर 25 नवम्बर 89 को होगी। वार्षिकोत्सव 20 से 26 नवम्बर89 तक मनाया जायगा।

भाई परमानन्द जयन्ती

1- 4-11-89 को दयानन्द बाल विद्यामन्दिर आर्यसमाज हसनगंज पार लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में मनायी गयी। प्रमुख वक्ता श्री पवनकुमार सिद्धान्त शास्त्री ने देवतास्वरूप भाई परमानन्द के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उनके चरित्र का अनुकरण करने का सन्देश दिया।

2- दिनांक- 5-11-89 को आर्यसमाज नगर रकाबगंज लखनऊ में भाई परमानन्द जयन्ती प्रातः 8 से 9 बजे मनाई गई। प्रमुख वक्ता श्री पवनकुमार सिद्धान्त शास्त्री ने बताया कि 'भाई परमानन्द जी आर्यसमाज की देन थे। उन्होंने वैदिक धर्म तथा भारत की सेवा की उन्होंने आर्य संस्कृति और राष्ट्रीयता के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

उत्सव सम्पन्न

सिकन्दरपुर{बलिया} आर्यसमाज का 64वाँ वार्षिक महोत्सव एवं वेद प्रचार समारोह बड़ी धूम धाम के साथ मनाया गया।

बाल जगत

महर्षि दयानन्द

• चन्द्रपाल सिंह "मयंक"
कानपुर

रियासतों में समाजसेवा

अब भारत की रियासतों में
जाने का था किया विचार।
ताकि महर्षि कर सकें अपना
रियासतों में धर्म-प्रचार।
कितनी ही रियासतों के
राजा बन गये शिष्य इनके।
उनको भी सब शिक्षाएँ दीं,
कर्तव्य सुझाये जीवन के।
पहले गये उदयपुर में,
फिर जोधपुर व शाहपुर - बीच।
था कर्तव्य महर्षि दयानन्द
को इस ओर रहा तब खींच।
इसी भ्रमण-क्रम में वे पहुँचे
जोधपुर में जाकर।
महाराज जसवन्त सिंह थे
शासक चतुर वहाँ पर।
वह भी शिष्य बन गये इनके,
सुनते अब उपदेश।
किन्तु स्वार्थी लोगों से है
भरा हुआ यह देश।
स्वार्थी लोगों को महर्षि की
बात न रंचक भायी।
महर्षि से बदला लेने की
दुष्टों ने ठहरायी।
वहाँ वेश्या एक बड़ी
सुन्दर थी नन्ही जान।
राजा की मुँह लगी बहुत वह,
थी भारी शैतान।
महर्षि को यह ज्ञात हुआ,
तो राजा पर झल्लाये।
बोलेः "महाराज। क्या करते?
ठीक नहीं यह, हाय।
क्षत्रिय-कुल के भूषण होकर
वेश्या का क्यों संग?
"सिंह" भला "कुतिया" से कैसे
करता है रस-रंग।"
महाराज को बात लग गई।
उसे कर दिया दूर।
वेश्या दुखी हो गई मन में,
थी अब तो मजबूर।
उसने सोचा- "इस स्वामी की
हत्या मैं करवा दूँ।
इसे मिले भड़काने का फल।
मैं इसको मरवा दूँ।"
प्रतिहिंसा की अग्नि भड़ककर,
हर लेती सब चैन।
क्रोधित मानव को हरदम
करती रहती बेचैन।
आठ प्रहर उसके मन में है
जलती रहती आग।
तन-मन का सन्तोष-शान्ति-सुख
सब जाते हैं भाग।

आर्यसमाज लाजपतनगर कानपुर का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज लाजपत नगर कानपुर का वार्षिकोत्सव 20 से 22 अक्टूबर 89 तक बड़े ही समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत के प्रसिद्ध वक्ता श्री निरूपण जी विद्यालंकार ने कहा कि चिन्तन, मनन, स्वाध्याय तीन सोपान हैं जो प्रभु के समीप को इंगित करते हैं। डा0 ज्वलन्त कुमारजी ने त्रैतवाद की व्याख्या करते हुए ईश्वर जीव, प्रकृति के स्वरूप का वर्णन किया और इन पर गहन दृष्टि से दार्शनिक प्रकाश डाला।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन पर बोलते हुए सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने कहा कि आज का नवयुवक मादक पदार्थों के सेवन के आदी हो रहे हैं जिससे वह भ्रमित होकर चिन्तन शक्ति से रहित होता रहा है। सभा प्रधान जी ने राष्ट्र की उन्नति के लिए चार सूत्रीय कार्यक्रमों गोहत्या बन्द हो, अंग्रेजी हटाओ, मद्यनिषेध, उर्दू द्वितीय राजभाषा का विरोध को सक्रिय रूप से आन्दोलन के रूप में चलाने का आह्वान किया। श्री जयन्त कुमार जी ने विदेशी शक्तियों द्वारा धर्मान्तरण रूपी कुचक्र का वर्णन करते हुए हिन्दू जनता को सावधान करने का आह्वान किया।

डा0 भारत भूषण (हरिद्वार) ने वेदों की अपौरुषेयता पर बल दिया। अन्य वक्ताओं में श्री दूधपुरी, श्री जयराम-सिंह, श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री श्याम लाल आदि थे।

समारोह का संचालन करते हुए डा0 आशारानी राय उपमंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 ने स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए ऋषि के उपकारों का वर्णन किया और अभ्यागतों का स्वागत किया। श्री आई0सी0 गुप्ता सचिव प्रबन्ध समिति कानपुर विद्या मन्दिर डिग्री कालेज ने सभा के श्रद्धानन्द अतिथि भवन निर्माण के लिए तीन हजार रूपया दान दिया।

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र

नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : ४५९९३
पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू/एन पी ७१
कार्तिक शुक्ल-१४
१२, नवम्बर, रविवार, १९८९

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।



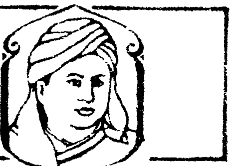
स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवान्दीन आर्यभास्कर प्रेस, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रायेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि० सं० २२४१/५७) मार्गशीर्ष कृष्ण-७ रविवार - संवत् २०४६ वि०, दिनांक-१९ नवम्बर, १९८९ (घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-८५)



सच्चे जन प्रतिनिधि

... वृषिरसि त्व्या ...तिरसि ...न्यु मेनरसि।

... श्रेयसंयति समं काम।।

- अथर्ववेद

वर्चस्वी ओजस्वी जनप्रतिनिधि - राष्ट्र की समस्या न बनकर उसके निवारक होते हैं। शक्तिपुंज बनकर आसुरी शक्तियों को नष्ट करने वाले होते हैं। दृढ़ संकल्पशक्ति से व्रत के ज्ञाता बनकर राष्ट्र के प्राणस्रोत बनते हैं और जनसामान्य को समृद्धि की ओर ले जाने में सक्षम होते हैं।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रु. २५१/-
वार्षिक	रु. ३०/-
एक प्रति	१.०० रु. मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ४६



विनम्र आह्वान

प्रजातांत्रिक भारत की लोकसभा एवं अधिकांश विधान सभाओं के जन प्रतिनिधियों का आम चुनाव इसी महीने सम्पन्न होने जा रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् इन चार दशकों में हमने भारत और भारतीयता की छवि को कितना समुज्वल बनाया है-- इसे आज भारत का प्रत्येक नागरिक भली भांति समझ रहा है। निःसन्देह आर्थिक प्रगति के क्षेत्र में हम आशातीत रूप में आगे बढ़े हैं। परन्तु भारतीयता की छवि निरन्तर धूमिल होती जा रही है। आज समाज में अनाचार और भ्रष्टाचार का बोलबाला है। राष्ट्र को विखण्डित करके भारत माँ के पावन स्वरूप को पुनः विकृत करने के बड़े ही सुनियोजित षड्यंत्र चल रहे हैं। आतंकवादी शक्तियाँ हिंसा के बल पर सम्पूर्ण भारतीय जन-मानस को आतंक के साए में जीने के लिए विवश कर रही हैं। सैकड़ों निर्दोष प्राण अपने ही भाईयों के हाथों अतीत की खून भरी कहानी बनते जा रहे हैं। यदि यही स्थिति रही और भारतीयता नष्ट हो गयी तो यह आर्थिक प्रगतियाँ भारत माँ के निष्प्राण शरीर पर अलंकरण मात्र बन कर रह जायगी और आर्यसमाज का उद्घोष **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** अतीत का घोष मात्र रह जायेगा।

इन्हीं सब बातों को दृष्टिगत रखते हुए समस्त भारतीयता- प्रेमी, विशेषरूप से जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभाओं/आर्यसमाजों/ आर्यकुमार सभाओं/ आर्यवीर दलों/एवं समस्त आर्य शिक्षण संस्थाओं से हार्दिक अनुरोध है कि वह सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा, दिल्ली द्वारा घोषित त्रिसूत्रीय कार्यक्रम- (1) गोरक्षा (2) मद्यनिषेध (3) अंग्रेजी-हटाओ को जन-जन में व्यापक रूप से अभियान चलाकर प्रचारित एवं प्रसारित करें। इसी के साथ ही उत्तर प्रदेशीय शासन ने संविधान में निहित निर्देशक तत्वों की अवहेलना करते हुए इस प्रदेश में उर्दू को जो द्वितीय राज्यभाषा का दर्जा दिया है- उसके विरुद्ध भी व्यापक अभियान चलाकर, जन सभाएं, प्रस्ताव आदि पारित करके केवल उन्हीं प्रत्याशियों को अपना मत प्रदान करें जो उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा बनाने के विरोधी हों और उक्त कार्यक्रमों में हमारा साथ देने के लिए वचनबद्ध हों।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश अपने अगामी वार्षिक बृहदधिवेशन के अवसर पर उक्त त्रिसूत्रीय कार्यक्रम के प्रसारितकरने के विषय में तथा प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा घोषित किए जाने के विरोध में, लखनऊ में एक विराट् जनसभा तथा रोष-यात्रा का आयोजन कर रही है। समस्त आर्य जनता से अनुरोध है कि इस सम्बन्ध में अपनी संस्था तथा अपने स्तर से व्यापक अभियान चलाएं, प्रस्ताव पारित करें और उसे यथास्थान भेजकर उसकी सूचना सभा कार्यालय को देने की कृपा करें।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०, लखनऊ

आर्य भूमि पर अरुणोदय था,
उठा उच्च-तू सजकर साज।
आर्य समाज ! आर्य समाज !!
———राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- मार्गशीर्ष कृष्ण-७, संवत २०४६ वि० १९ नवम्बर, १९८९, दयानन्दाब्द, १६५ सृष्टि संवत १९७२९४९०९०

सम्पादकीय

घोषणापत्र आर्यसमाज का (२)

राष्ट्र और भारतीय एकता की जितनी स्पष्ट अवधारणा ऋषि दयानन्द ने उपस्थित की है वह स्वयं अपने में पूर्ण है। राष्ट्र स्वयं अपने में पूर्ण है परन्तु वह भी मानवीयता का एक अंग है। मानवता स्वयं पूर्ण है, परन्तु वह भी परमतत्व के साक्षात्कार का एक साधन है। हमारा राष्ट्र वैदिक राष्ट्र है जिसमें मानव, समाज, राष्ट्र और मानवता की सम्पूर्णता अन्तर्निहित है। "सर्वे सन्तु सुखिनः" ही जिसका उद्घोष है। हम विश्व को "आर्य" इसी उद्देश्य की पूर्ति के हेतु बनाना चाहते हैं। हमने आज़ादी, आज़ादी के लिए नहीं हासिल की है और न यह हमारा उद्देश्य था। भूल यहीं से शुरू हुई जिसका परिणाम आज हमें आजादी बनाम अनुशासन-हीनता बनाम हुड़दंग बनाम जातिवाद-वर्गवाद बनाम धार्मिक उन्माद के रूप में दिखाई दे रहा है। मानवीयता और भारतीयता के समग्र विकास का मार्ग ही अवरुद्ध होता जा रहा है। वेद, जो समस्त मानव की सम्पत्ति हैं और जिनमें मानवीयता के समग्र विकास के उच्चतम निर्देशक तत्व निहित हैं, को हमने सम्प्रदाय-विशेष का ग्रन्थ मान लिया है। हमने संविधान का निर्माण वेदों में निहित शाश्वत सिद्धान्तों के आधार पर न करके समन्वयवादी खिचड़ी बना दिया है। वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना को हमने राष्ट्रगान के रूप में स्वीकार ही नहीं किया और न हमने अपने राष्ट्रीय झन्डे में उगते हुए सूर्य से कोई प्रकाश ही लिया। संसार का एक समान मातृवत पालन पोषण करने वाली गोमाता की हत्या के बन्द कराने के आहवान को हमने सम्प्रदाय विशेष की माँग समझा। मैकाले की दूषित शिक्षा प्रणाली पर चलना हमने अपनी शान समझ लिया है। गुण-कर्मानुसार वर्णव्यवस्था को प्रचलित करने के स्थान पर जातिवाद और वर्गवाद को बढ़ावा दिया है जिसका वीभत्स रूप हमें इस देश में हो रहे वर्तमान आम चुनावों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है।

सैकड़ों वर्षों की गुलामी के पश्चात जिस मातृभूमि को हमने विदेशी पंजों से मुक्त कराया है, आज भय है, कि वह कहीं फिर विदेशीयता के पंजों में जकड़ न जाय। भले ही वह विदेशीयता ईसाइयत की हो अथवा इस्लामियत की। चुनाव के इस अवसर पर साम्प्रदायिक उन्माद को बढ़ावा देने वाले घेरे में बहुचर्चित व्यक्तियों से हमारे राजनैतिक नेता वोटों के लिए मिन्नतें कर रहे हैं। दिल्ली की जामा मस्जिद के शाही इमाम से मिन्नतें की जा रही हैं और शाही इमाम फरमा रहे हैं - "हमें किसी के पास जाने की जरूरत नहीं है, जिसको जरूरत हो हमारे पास आये।" प्रधानमंत्री के दूत श्री एच0के0एल0भगत कई बार उनसे मिल चुके हैं। श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने तो उनके पास जाकर आश्वासन भी प्राप्त कर लिया है॥संभवतः कुछ गुप्त समझौते भी हुए हों॥। जिस प्रकार कांग्रेस के कर्णधारों ने मि0 जिन्ना की खुशामद कर करके उन्हें आस्मान पर चढ़ा दिया था और ऐसा चढ़ाया कि मातृभूमि के खण्डित करने की उनकी माँग के आगे हमें झुकना ही पड़ा और दुर्भाग्य ने फिर भी इस देश का अभीतक साथ नहीं छोड़ा।

आज आर्य जाति के जीवन में बड़ी ही भयानक घड़ी उपस्थित हो गई है। यदि इस स्थिति को न बदला गया तो हमारे अस्तित्व के ही विलुप्त हो जाने का खतरा है। अतः हर भारतीयता प्रेमी को इस स्थिति का मुकाबला करना है।

आर्य समाज कोई राजनैतिक संस्था नहीं है और न वह सामूहिक रूप से इस चुनाव में कूदा ही है। न वह अपने घोषणापत्र में भारतीय जनता को दिए गए अपने वायदे पूरा करने की स्थिति में ही है फिर भी वह अपनी दूरदृष्टि से इस राष्ट्र पर विनाश और हाहाकार के उमड़ते हुए घटाटोप के अन्धकार को देख रहा है। हम जानते हैं हमने जिस त्रिसूत्रीय कार्यक्रम को घोषित किया है उसका दायित्व उन जनप्रतिनिधियों पर है जो इस आम चुनाव में विजयी होकर प्रशासन की बागडोर सम्भालेंगे। अतः समस्त भारतीयता प्रेमी, विशेष रूप से आर्य जनता से अनुरोध है कि वह ऐसे ही प्रत्याशियों को अपना मत दें जो शिरोमणि सभा, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि द्वारा घोषित त्रिसूत्रीय कार्यक्रम ॥1॥ गोरक्षा॥2॥ मद्यनिषेध ॥3॥ अंग्रेजी हटाओ के साथ ही उर्दू को इस प्रदेश में द्वितीय राज्यभाषा बनाए जाने के विरोधी हों तथा राष्ट्र की एकता, अखण्डता और उसकी अस्मिता की रक्षा के लिए प्रत्येक बलिदान देने के लिए वचनबद्ध हों। —मनमोहन तिवारी

तपे तपाए राष्ट्र भक्तों को ही वोट दें.....

• सभा प्रधान श्री पं० इन्द्रराज

7 नवम्बर- आर्यसमाज बलरामपुर ॥जनपद-गोण्डा॥ के विराट आर्य सम्मेलन में उपस्थित विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराजजी ने कहा- "कि आज हमारा देश अपनी सभ्यता और संस्कृति को धीरे-धीरे भुलता जा रहा है। हमें विनष्ट करने के लिए चारों ओर से शत्रुओं ने कई मोर्चे खोल रखे हैं। एक ओर हिंसा और आतंकवाद की तलवार हमारा विनाश करती जा रही है तो दूसरी ओर बड़े व्यापक पैमाने पर धर्मान्तरण किया जा रहा है। राजा, जो धर्म का रक्षक माना गया है आज स्वयं सुप्त है, उसे वोट चाहिए, कुर्सी चाहिए। हिन्दूसंस्कृति विनष्ट होती रहे- इसकी उसे चिन्ता नहीं। स्वतन्त्रता के पश्चात हमने तो आर्यराष्ट्र की कल्पना की थी- वह तो साकार होने से रही, उल्टे हमारे अस्तित्व के ही विलुप्त होने का खतरा बढ़ता जा रहा है। इसलिए हर भारतीयता-प्रेमी जनता से अनुरोध है कि उसी उम्मीदवार को वोट दें जो आर्य सिद्धान्तों का पालन करने वाला और आर्यराष्ट्र की कल्पना को साकार बनाने में सहयोगी देने वाला हो"।

इससे पूर्व सभा प्रधान जी ने बयोवृद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी बाबू ईश्वरशरण भू0पू0 विधायक का गोण्डा जाकर हार्दिक अभिनन्दन किया।

मान्य अतिथि श्री पंजयन्त तथा आर्यमित्र के सम्पादक आचार्य इन्द्रदेव-पाठक ने आर्यराष्ट्र की वर्तमान अवनति का मर्मभेदी चित्रण प्रस्तुत करते हुए चुनाव में बहुत सतर्क होकर आर्यसंस्कृति के लिए वचनबद्ध व्यक्ति को ही समर्थन देने का आह्वान किया। सम्मेलन में श्री कड़क ब्रह्मचारी तथा अन्य उपदेशकों/प्रचारकों ने अपने प्रचार से धूम मचा दी। संचालन श्री बलराम-गोविन्द जी ने किया।

मत उसी को दीजिए

॥आर्यसमाज सरस्वती बिहार, दिल्ली, तथा देश बिदेश प्रदेश की अनेकों आर्यसमाजों के प्रस्ताव॥

जो --

॥1॥ हिन्दी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा के योग्य प्रतिष्ठा प्राप्त कराए।

॥2॥ सम्पूर्ण शिक्षा में संस्कृत को सम्मानजनक स्थान दिलाए।

॥3॥ सम्पूर्ण शिक्षा से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त कराए।

॥4॥ सभी स्तरों पर घूसखोरी और अन्य प्रकार के भ्रष्टाचारों का उन्मूलन कराए।

॥5॥ सम्पूर्ण देश में गोवध निषेध और मद्य निषेध लागू कराए।

॥6॥ संविधान में प्रदत्त काश्मीर का विशेष दर्जा समाप्त कराए।

॥7॥ आर्यों के पूर्वजों के सभी जन्मस्थान आर्यों को वापस कराए।

॥8॥ बाहर से प्राप्त होने वाले धन से गरीब अशिक्षित भोलीभाली हिन्दूजनता के धर्मान्तरण को कानून द्वारा प्रतिबन्धित कराए।

॥9॥ राष्ट्रद्रोहियों, राष्ट्रीय ध्वज का अपमान करने वालों भारत की एकता और अखण्डता को चुनौती देने वालों को कठोर से कठोर दण्ड दिए जाने की आवश्यकता है।

ऋषि दयानन्द के अनुसार दलित समस्या का समाधान

— डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री - अमेठी

{दिनांक । अक्टूबर 1989को दिल्ली में आयोजित अखिलभारतीय बुद्धिजीवी सम्मेलन में आर्यजगत के यशस्वी विद्वान डा0 ज्वलन्त-कुमार जी ने "सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं पर आर्यसमाज का दृष्टिकोण" विषय पर एक शोधपूर्ण निबन्ध पढ़ा था। उसके कतिपय अंश हम यहाँ पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं--

- सम्पादक}

{क} स्वामी दयानन्द और वर्णव्यवस्था

जातिवाद पर आधारित भारत के सामाजिक संगठन की बुराइयों को दूर करने के लिए जो सबसे अधिक सशक्त आन्दोलन उन्नीसवीं शती में चला वह आर्यसमाज का था और उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द थे। स्वामी दयानन्द की मान्यताएँ थीं--

{1} राजनियम और जातिनियम के द्वारा यह अनिवार्य हो कि सब बालकों और बालिकाओं को 8वर्ष की आयु में आवासीय गुरूकुलों {शिक्षणालयों} में पढ़ने के लिए भेज दिया जाए। शिक्षा सबके लिए अनिवार्य घोषित हो।

{2} विद्यालयों में सब विद्यार्थियों को समान आसन, समान वस्त्र तथा समान भोजन दिया जाए। इसी प्रकार शिक्षा की सभी सुविधाएँ सभी वर्ण के विद्यार्थियों के लिए समान हों। विद्यार्थी अपने विद्याध्ययन काल में तपस्वी जीवन बितायें, ऐश्वर्य और विलास की जिन्दगी नहीं।

{3} विद्याध्ययन-काल में विद्यार्थी के माता-पिता की आर्थिक स्थिति के आधार पर बालक-बालिकाओं के पठन-पाठन में भेदभाव न हो। अध्ययनकाल में माता-पिता से सन्तान का सम्पर्क न रहे।

{4} अध्ययन काल में अध्यापक वर्ग अपने शिष्यों के गुण-कर्म-स्वभाव पर दृष्टि रखें तथा उनकी गतिविधियों तथा प्रवृत्तियों का सूक्ष्मता से अध्ययन करें।

{5} शिक्षा पूर्ण होने पर गुरुजन कुमारों तथा कुमारियों का वर्ण उनकी अपनी-अपनी रूचियों तथा गतिविधियों के आधार पर निर्धारित करें।

{6} विद्यालयों से स्नातक बनकर विद्यार्थी जब सामाजिक जीवन में प्रवेश करें, तब उसका विवाह उसके गुण-कर्म-स्वभाव द्वारा निर्धारित वर्ण के अनुसार हो। अद्यतन प्रचलित जाति-पाँति की व्यवस्था पर आधारित विवाहों का समूलोच्छेद किया जाए।

{ख} आर्यसमाज में दलितों की भागीदारी

स्वतन्त्रता के बाद दलितों की समस्या का मूल कारण स्वामी दयानन्द-प्रतिपादित शैक्षणिक तथा सामाजिक मन्यताओं का लागू न होना है। दलित समस्या की समाधान के लिए देश में आज जितनी भी राजनैतिक तथा सामाजिक संस्थाएँ हैं सभी उन्हें दलित, अनुसूचित या हरिजन मानकर चलती हैं। गुण - कर्म - स्वभाव के आधार पर वर्ण परिवर्तन की बात कोई नहीं कहता। आर्यसमाज के वर्तमान संघटन में भी दलित वर्ग की भागीदारी न के बराबर है। क्योंकि आर्यसमाजों में 2 प्रतिशत सदस्य भी दलित वर्ग के नहीं हैं। दलितों का कोई भी महत्वपूर्ण नेता आर्यसमाज का सदस्य नहीं है। जबकि हमारे सदस्यों में सभी वर्गों और जातियों के लोग हैं। आर्थिक स्थिति की दृष्टि से भी उच्चवर्ग, उच्चमध्य वर्ग, मध्यवर्ग, निम्न-मध्यवर्ग के व्यक्ति आर्यसमाज के सदस्य हैं। किन्तु निम्नवर्ग, अतिनिम्नवर्ग, अर्थात् गरीबी की रेखा से नीचे आने वाले वर्गों के व्यक्ति हमारे समाज के सदस्य न के बराबर हैं। कोई भी रिक्शावाला, ताँगावाला, सब्जी बेचनेवाला, दिहाडी पर मजदूरी करने वाला, सफाई-कर्मचारी आदि हमारे आर्यसमाज का सदस्य नहीं है। जबकि अतिनिम्नवर्ग के लोगों की बड़ी संख्या दलित समुदायों की ही है। परिणाम यह है कि दलितों की वर्तमान समस्याओं से हमारा कोई सम्बन्ध या सम्पर्क नहीं रह गया है। समस्या का त्रासदी पहलू उस समय और भयंकर हो जाता है जब पड़रिया, बेलछी जैसे काण्ड होते हैं जिनमें सामाजिक तौर पर पिछड़े इन दलित वर्गों पर उच्चवर्ग का अत्याचार, सामूहिक हत्यायें, लूटपाट और उनकी महिलाओं पर बलात्कार की घटनाएँ प्रकाश में आती हैं। तब इन अमानवीय घटनाओं पर भी आर्यसमाज का कोई नेता या शिष्ट मण्डल वहाँ नहीं जाता। उनकी सामाजिक विषम स्थितियों का आकलन नहीं करता, सान्त्वना और राहत देने की बात कौन कहे। हमारी सभायें केवल भूकम्प, अकाल, बाढ़ या सूखे के समय राहतकार्य में जुटती हैं। पीड़ित हरिजन वाले स्थानों पर पुलिस प्रशासन, नेता और पत्रकार जाते हैं जबकि समस्या राजनैतिक कम सामाजिक ज्यादा होती है। हाँ हरिजन जब धर्मान्तरण करके मुसलमान, ईसाई या सिख बन जाते हैं तब आर्यनेताओं का वहाँ जाना प्रारम्भ हो जाता है। मेरा कहना यह नहीं है कि धर्मान्तरण की स्थिति में आये नेता हरिजनों से न मिलें या उनके पास न जाएँ लेकिन उन पर सामूहिक अमानवीय अत्याचार की स्थिति में तो उनके पास अवश्य ही जाना चाहिए। और उनके राहत की व्यवस्था करनी चाहिए।

{ग} आरक्षण समस्या

भारत के आजाद होने से पहले बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने हिन्दू समाज की स्थिति को देखते हुए यह प्रश्न उठाया कि स्वतन्त्र भारत में अछूत जातियों के लिए अलग से वोट का मताधिकार मिलना चाहिए और उनके क्षेत्र अलग होने चाहिए। जहाँ केवल उन्हें ही प्रतिनिधियों को चुनने का अधिकार होगा। इसी पृष्ठभूमि में गाँधी जी ने आमरण अनशन किया। फिर पुनः समझौता हुआ। इसी समझौते को आधार बना कर जब भारत का संविधान बनाया गया तो अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जन जातियों के लिए सरकारी नौकरियों तथा लोकसभा और विधानसभा में भी आरक्षण की व्यवस्था की गई।

{घ} पिछड़ेवर्ग का आरक्षण

अनुसूचित जाति और जनजातियों के अतिरिक्त सामाजिक और शैक्षणिक रूप से पिछड़े अन्य वर्गों के लिए भी विशेष प्रावधान और व्यवस्था के लिए संविधान में धारा 340 सम्मिलित की गई। इसमें यह कहा गया कि भारत के राष्ट्रपति एक अन्य आयोग बनायेंगे जो सामाजिक और शैक्षणिकरूप से पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए सिफारिश करेगा। इसी धारा के तहत काका कालेलकर-कमीशन बना, जिसने यह सिफारिश की कि सरकारी नौकरियों में केन्द्र से लेकर स्थानीय निकायों तक 25 प्रतिशत से 40 प्रतिशत तक आरक्षण पिछड़े वर्गों के लिए किया जाना चाहिए। दूसरा आयोग बी0पी0 मण्डल आयोग बना जिसने उच्चतम न्यायालय की राय का आदर करते हुए 27 प्रतिशत आरक्षण की सिफारिश की।

किन्तु ये सिफारिशें राजनैतिकरूप से लम्बित पड़ी हैं। गुजरात में आरक्षण के विरोध में दो बार आन्दोलन हुए। दोनों में व्यापक विनाशलीलाएं हुई--1975 में "नवनिर्माण आन्दोलन" और 1981 में" और 1981 में "आरक्षण विरोधी आन्दोलन" द्वारा। फिर भी कई राज्यों द्वारा अपने स्तर से पिछड़े वर्गों को आरक्षण दिया गया है। कर्नाटक और तमिलनाडू में पिछड़े वर्गों के लिए 50 प्रतिशत आरक्षण है। अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए 20 प्रतिशत अलग से है। केरल और आन्ध्रप्रदेश में अनुसूचित-जातियों और जनजातियों के अतिरिक्त पिछड़े वर्गों के लिए 25 प्रतिशत आरक्षण है। आरक्षण समर्थकों का तर्क है कि जब इन राज्यों में आरक्षणों से योग्यता और दक्षता प्रभावित नहीं हुई तो उत्तर के राज्यों में क्यों होगी? इनका यह भी कहना है कि आरक्षण इसलिए भी जरूरी है कि यह सत्ता में हिस्सेदारी का प्रश्न है जब पिछड़ों की जनसंख्या 62 प्रतिशत है तब उनकी सत्ता या प्रशासन में हिस्सेदारी 27 प्रतिशत भी न रहे यह कहाँ का न्याय है? उनका यह भी कहना है सरकारी नौकरियों में पिछड़े वर्गों की हिस्सेदारी मात्र 4प्रतिशत है और प्रथम श्रेणी की नौकरियों में {आई0ए0एस0, आई0पी0एस0 तथा अन्य उच्च केन्द्रीय नौकरियों में} उनका हिस्सा 1-1/2प्रतिशत से भी कम है। आरक्षण का आधार आर्थिक होने के विरोध में पिछड़े वर्गों के नेताओं का कहना है कि महिलाओं को जो 30 प्रतिशत आरक्षण देने की घोषणा प्रधान मन्त्री ने की है उसमें न योग्यता मापदण्ड है और न सामाजिक आर्थिक कमजोरी। इसी प्रकार स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों

— शेष पृष्ठ १० पर

योगाभ्यास-२

• रूपचन्द्र "दीपक", लखनऊ

वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः।। प्रमाणविपर्ययविकल्पनिद्रास्मृतयः।। प्रत्यक्षानुमानागमाः प्रमाणानि।। विपर्ययो मिथ्याज्ञानमतद्रूपप्रतिष्ठम्।।शब्दज्ञानानुपातीवस्तुशून्योविकल्पः।। अभावप्रत्ययालम्बना वृत्तिर्निद्रा।। अनुभूतविषयासंप्रमोषःस्मृतिः।। (योगदर्शन प्रथम पाद, सूत्र 5-11)

योग दर्शन में अन्तःकरण को चित्त कहा गया है। चित्त के समस्त व्यापार अर्थात कार्यों को वृत्ति कहते हैं। चित्त की समस्त वृत्तियों के दो भेद एवं पाँच प्रकार हैं। उक्त दो भेद हैं- (1) क्लिष्टवृत्ति, अर्थात् क्लेश, कष्ट,दुःख वाली वह वृत्ति जो ईश्वर से विमुख होकर सांसारिकता की ओर जाती है। (2) अक्लिष्टवृत्ति अर्थात् क्लेश कष्ट-दुःख से मुक्त सुख-शान्ति-आनन्द वाली वह वृत्ति जो संसार के भंवर से हटाकर ईश्वर की ओर ले जाती है। कभी-कभी क्लिष्ट वृत्तियों अर्थात् स्वार्थपूर्ण बुरी प्रेरणाओं से किये गये दुष्कर्मों से उत्पन्न दुःख, अशान्ति एवं पश्चात्ताप के कारण मन उनसे खिन्न हो जाता है और सत्कर्म कराने वाली अक्लिष्ट वृत्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। कभी-कभी अक्लिष्ट वृत्तियों अर्थात् परमार्थ- प्रेरणाओं से प्रेरित धर्म-प्रचार, विद्या-प्रसार एवं समाज-सुधार के कार्यों में संसार से प्राप्त उपेक्षा, भूख-प्यास, हानि, अभाव, अपमान आदि से कर्त्ता का साहस टूट जाता है और शारीरिक आराम एवं आर्थिक लाभ दिलाने वाली क्लिष्ट वृत्तियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। इस प्रकार क्लिष्ट वृत्तियों के छिद्रों से अक्लिष्ट वृत्तियाँ और अक्लिष्ट वृत्तियों के छिद्रों से क्लिष्ट वृत्तियाँ भी उत्पन्न होती रहती हैं। ये दोनों ही भेदों वाली वृत्तियाँ अपने तुल्य संस्कारों को जन्म देती हैं, अर्थात् अच्छी वृत्तियों से अच्छे एवं बुरी वृत्तियों से बुरे संस्कार उत्पन्न होते रहते हैं। इसके क्रम में अच्छे संस्कारों से अच्छी एवं बुरे संस्कारों से बुरी वृत्तियाँ पुनः उत्पन्न होती रहती हैं। यह वृत्ति-संस्कार चक्र मोक्ष तक चलता रहता है।

उपर्युक्त क्लिष्ट एवं अक्लिष्ट वृत्तियों के पाँच प्रकार हैं- प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा एवं स्मृति। इनमें प्रमाण के पुनः तीन प्रकार होते हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान एवं आगम। प्रत्यक्ष प्रमाण उसे कहते हैं, जिसमें ज्ञानेन्द्रियों द्वारा सीधा ज्ञान प्राप्त कराया जाए। जैसे- आँख से देखकर, कान से सुनकर, नाक से सूंघकर, जिह्वा से चखकर एवं त्वचा से छूकर किसी पदार्थ वा वस्तु को जाना जाए। अनुमान उसे कहते हैं जो प्रत्यक्ष के पीछे चले। अर्थात् प्रत्यक्ष का आंशिक अनुभव करके शेष को युक्ति से जान लिया जाए। जैसे- पुत्र से माता-पिता, धुँए से अग्नि, दिन-रात से पृथ्वी का अपनी कीली पर घूमना, ऋतु परिवर्तन से पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर घूमना, सृष्टि से सृष्टिकर्त्ता एवं जन्म की विभिन्न परिस्थितियों से पुनर्जन्म सिद्ध होता है। आगम से तात्पर्य है निर्भ्रान्त आप्त विद्वानों के लिखे वा कहे शब्दों को प्रमाण मानकर अपना ज्ञान बढ़ाना। जैसे-

जैसे- मनुस्मृति में महर्षि मनु ने लिखा है कि युग चार होते हैं और उनकी इतनी-इतनी अवधि होती है। सांख्य दर्शन में महर्षि कपिल ने लिखा है कि ज्ञान से मोक्ष एवं अज्ञान से बन्धन होता है। वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद ने कहा है कि सूर्य के उदय के नियम से पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण दिशायें होती हैं। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में श्री राम का तथा महर्षि व्यास ने महाभारत में कुरु-कुल का इतिहास लिखा है, इत्यादि। ये तीनों प्रत्यक्ष-अनुमान-आगम मिलकर प्रमाण कहाते हैं और इनसे प्राप्त ज्ञान यथार्थ-ज्ञान होता है।

विपर्यय का अर्थ है विपरीत अर्थात् उलटा ज्ञान, मिथ्याज्ञान, अज्ञान वा अविद्या। इसमें जो वस्तु जैसी होती है, वैसी न जानकर उससे उलटी जानी जाती है। जैसे- कर्म पर आधारित वर्ण-व्यवस्था के स्थान पर जन्म पर आधारित जाति-व्यवस्था को वैदिक संस्कृति मानना, हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई-जैन-पारसी मतों को धर्म मानना, इन्द्रियों के भोगों में वास्तविक सुख मानना, ब्रह्मचर्य आदि तपों में कष्ट मानना, जगत् को मिथ्या समझना, एक विद्वान् और एक मूर्ख के मत की समानता में सच्चा लोक तन्त्र मानना, ईश्वर का अस्तित्व न मानना, पुनर्जन्म को कल्पना मानना, मांसाहार में जीवों को कष्ट न समझना, लड़कों एवं लड़कियों को एकत्र शिक्षा देना उचित समझना, इत्यादि। जिस व्यक्ति के चित्त में जितनी विपर्यय वृत्ति होती है, उसका ज्ञान उतना ही उलटा होता है। यथार्थ विद्वान् विपर्यय वृत्ति से ऊपर उठकर व्यवहार करते हैं। यह विपर्यय वृत्ति प्रमाण-वृत्ति से उलटी एवं विवेक-प्राप्ति में सर्वाधिक बाधक है।

विकल्प से तात्पर्य है कपोल कल्पना अर्थात् किसी विषय में शब्द तो कह दिया जाए किन्तु वैसा कोई पदार्थ, वस्तु, घटना वा अर्थ न हो। जैसे कोई कहे कि मनुष्य के सींग देखे, आकाश-कुसुम को सूंघा, भूत-प्रेत ने आक्रमण किया, ईश्वर ने अवतार लिया, उसने पर्वत् उठाया, वह समुद्र पी गया, वह मरकर जीवित हो गया, उसने परकाया में प्रवेश किया, घड़े में से कन्या निकली, कान से पुत्र उत्पन्न हुआ, माता-पिता के बिना पुत्र हुआ, मछली के पेट से मनुष्य ने जन्म लिया, इत्यादि। ये सब शब्द तो अवश्य हैं, किन्तु इन्हें सार्थक करने वाला कोई सत्यार्थ नहीं है। अतः ये कपोल कल्पना अर्थात् विकल्प के अन्तर्गत आते हैं। निराधार होने के कारण इन कल्पनाओं का कोई अन्त नहीं होता। ये भी यथार्थ ज्ञान एवं योगाभ्यास में बाधक हैं।

निद्रा को कुछ विद्वान् पृथक् वृत्ति न मानकर सब वृत्तियों का अभाव मानते हैं और कहते हैं कि निद्रा में मनुष्य निष्क्रिय होकर कर्म या वृत्ति की दृष्टि से शून्य हो जाता है। यदि ऐसा वास्तव में होता तो मनुष्य को सोकर उठने के पश्चात् यह अनुभव कैसे होता कि मैं सुखपूर्वक सोया, मैं दुःखपूर्वक सोया, निद्रा से मेरी थकान दूर हो गयी है, मेरे अंग भारी हो रहे हैं, मैंने अच्छा स्वप्न देखा, मैंने भयंकर स्वप्न देखा, इत्यादि। वस्तुतः निद्रा में भी मनुष्य को अच्छी बुरी अनुभूति होती है। इस प्रकार निद्रा भी एक पृथक् वृत्ति है। हाँ, यह तमोगुण में डूबी हुई और अज्ञान-अविद्या के अन्धकार में फँसी हुई होने के कारण योगाभ्यास वा आध्यात्मिक साधना में बाधक है।

स्मृति से तात्पर्य है देखे हुए दृश्यों एवं सुने हुए शब्दों का चित्त से न हटना। इससे एक ओर तो मनुष्य का ज्ञान बढ़ता है किन्तु दूसरी ओर जब वह सब कुछ भुलाकर ईश्वर के ध्यान में बैठता है तो चित्त एकाग्र नहीं हो पाता है। यह स्मृति अपने जैसे संस्कार को तथा बाद में वह संस्कार स्मृति को जन्म एवं बढ़ावा देता है। स्मृति-संस्कार का यह चक्र भी चलता रहता है। योगाभ्यास में क्योंकि एकाग्रता का सम्पादन करना एवं उससे भी आगे बढ़ना होता है, अतः स्मृति की वृत्ति भी रोकने योग्य होती है।

प्रमाण - विपर्यय - विकल्प - निद्रा- स्मृतिरूप ये पाँचों वृत्तियाँ, सुख, दुख एवं मोह को जन्म देती हैं। जिस व्यक्ति से सुख मिलता है, उससे मनुष्य को राग हो जाता है और राग के कारण पक्षपात, चिन्ता, विरह-वेदना एवं उस व्यक्ति की मृत्यु से शोक प्राप्त होता है। इसी प्रकार जिस व्यक्ति से दुःख मिलता है, उससे मनुष्य को द्वेष हो जाता है और द्वेष के कारण क्रोध, जलन, विरोध, वैर, युद्ध एवं उस व्यक्ति की उन्नति से पीड़ा होती है। मोह तो यौगिक दृष्टि से अविद्या का पर्याय ही है जो कि सारी बुराइयों की जननी है। इस प्रकार ये सभी वृत्तियाँ निरोध करने के योग्य होती हैं। इन सबका निरोध ही योग कहलाता है। अतः योगाभ्यासी इनके निरोध का सतत् प्रयत्न करता रहे।

अद्भुत कृपा का अद्भुत स्वरूप

जीवन की राह में कई बार ऐसे मोड़ आते हैं, जब आदमी भगवान और उनकी सत्ता के बारे में सोचने को मजबूर हो जाता है कभी उसे लगता है, कि इस सारे दृश्यमान जगत के पीछे ऐसी कोई शक्ति है अवश्य जो इस सब का संचालन कर रही है, जो सूत्राधार है और कभी उसे लगता है कि नहीं। ऐसा कुछ भी नहीं है।

सब अपने आप हो रहा है, होता चला जा रहा है। महज कारण और परिणाम के रूप में। अपनी-अपनी अनुभूतियां और अपनी-अपनी "अभिव्यक्तियां" सनातन प्रश्न है यह, जो हर युग में रहा है, समय की हर सँध पर टकराया है। आदमी ने हर बार इसका उत्तर तलाशा है, इसे जानने की कोशिश की है। उसकी यह तलाश और उसकी यह कोशिश ही मंजिल की ओर जाने वाली उन तमाम सी पगडण्डियों के रूप में सहज ही बिखर गयी, जिसे धर्म कहते हैं, दर्शन कहते हैं।

लेकिन, हुआ क्या? पगडण्डियों के इस मोहक उलझाव में मूल प्रश्न जहां का तहां धरा रह गया। स्वाभाविक सी बात है। उत्तर पाने के लिए आवश्यक है, प्रश्न को समझना। कैसी विडम्बना है, आदमी प्रश्न को समझता नहीं, उत्तर की खोज में निकल पड़ता है। उसे अपने आदमीपन पर अभिमान होता है।

जब उसने इतनी बड़ी-बड़ी गुत्थियां सुलझा लीं, तो क्या मायने रखता है यह एक जरा सा सवाल। और यह सच है इसी अभिमान दर्प ने उसे हर बार डुबोया है गिराया है वह हर बार घूमफिर कर वहीं आ जाता है, जहां से वह कभी चला था।

हर चीज के लिए एक आधार चाहिए। हवाई जहाज आसमान में उड़ता है, लेकिन अपनी उड़ान शुरु करने के लिए पहले उसे धरती पर दौड़ना होता है। गगनचुम्बी इमारतें बनायी जाती है, लेकिन वे खड़ी कहां होती हैं नीवं पर या आधार पर।

भगवान और उनके सत्ता पर कुछ भी सोचने के पहले हमें भी आधार तो चाहिए ही और वह आधार भी ऐसा, कि जिस पर विश्वास किया जा सके। वैसे आधारों की कमी नहीं है इस दुनियां में। ऐसे ऐसे आधार मिलेंगे, जिन पर देखते ही विश्वास के पेर जम जाते हैं, लेकिन जब तक मंजिल मिले-मिले, वे ढह जाते हैं। बालू की भीत की तरह सा पानी पर तैरते बर्फ के छोटे से टुकड़े की तरह। हर बार यही होता है। यही इतिहास है यही नीयति है। फिर भी विश्वसनीय आधार तो है ही। उसके अस्तित्व को प्रश्नचिन्हित नहीं किया जा सकता।

मेरी समझ में, जो सबसे विश्वसनीय आधार हो सकता है, भगवान और उनकी सत्ता को जानने के लिये, वह है उनकी कृपा। अघट में घटना परीयसी कृपा। जिसके बल पर कुछ भी किया जा सकता है। गोस्वामी तुलसीदास-जी बड़े अनुभवी सन्त थे। राम को जानते थे। कृपा को पहचानते थे। अपनी सारी साधना का निचोड़ रखते हुए उन्होंने बड़े बेबाक शब्दों में कहा है:-

सोई जानइ जेहि देहु जनाई।
जानत तुम्हहिं तुम्हहिं होइ जाई।।

भगवान् को बिना उनकी कृपा के नहीं जाना जा सकता। कोई लाख ज्ञानी हो, पण्डित हो विद्वान् हो वह कुछ भी नहीं है। बिना कृपा के उसका सारा ज्ञान सारा पाण्डित्य और सारी विद्वता विधवा के श्रृंगार की भाँति निस्तेज है।

कृपा कैसे प्राप्त हो सकती है? इसका कोई सामान्य सिद्धान्त नहीं है कृपा एक ऐसी चीज है जो सारे नियमों कानूनों से ऊपर है भगवान् पर एक बार के लिए नियम लागू हो सकते हैं, लेकिन भगवत्कृपा पर नहीं। फिर भी वह कृपा माधुरी से वंचित नहीं रह सकता जो मन से निष्कपट है, जो सच्चाई की राह पर चल रहा है और जो प्रतिक्षण प्राणिमात्र के हित चिन्तन में रत है। सबसे खास बात है जन-जन के कल्याण की कामना करना। सब में समभाव रखना। दूसरे के दुखों को दूर करने के लिए अपने सारे सुखों को न्योछावर कर देना। यही असली धर्म है। सुख की राह है जो ऐसा कर सका, वह अपने आप कृपा प्राप्ति का भागी बन गया।

इस जन्म में नहीं तो न सही। किसी न किसी जन्म में तो कृपा का भागी बनना ही है। आधार मिलना ही है।

एक बार यदि भगवान् की कृपा हो गयी तो फिर कुछ बाकी नहीं रह जाता। बड़ी अजीब सी हो जाती है, दशा। दुनियां कहती है पागल हो गया। लेकिन उसका यह पागलपन ही उसकी निधि है पूंजी है। फकीर होकर भी वह बादशाह बन जाता है। ऐसा बादशाह जो दुनिया पर ही नहीं समन्दर और आसमान पर भी हुकूमत करता है।

जिन्दा रहने का असली आनन्द यहीं है। यहां पहुँचने के बाद तर्कों की कोई जरूरत नहीं रह जाती। पोथियां कागजी पुलिन्दों में बदल जाती हैं धर्म और कर्म अपना अर्थ खो बैठते हैं। आदमी सिर्फ आदमी होता है,जिसमें संवेदनायें होती हैं, प्रेम होता है, करूणा होती है, और होती है, सारे विश्व को अपने में जी लेने की उत्कट अभिलाषा। उसकी निगाह में सभी उस एक मालिक की सन्तान होते हैं, जिसने इस सारी दुनियां को बनाया है।

कृपा बस कृपा है। सच तो यह है कि इसके बारे में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। यह सर्वथा अकथनीय है। सबसे परे है परम तत्व है। भगवान् को जाना जा सकता है, लेकिन उनकी कृपा को नहीं। यह बरबस बरस पड़ती है। अपने आप। सावन के आवारा बादलों की तरह।

खोले रहो। अपनी जिन्दगी के द्वार को खोले रहो। कौन जाने कब किस रूप में कृपा उमड़ पड़े। कृपा, जो आधार है भगवान् और उनकी सत्ता को जानने का उसमें अन्तर्निहित हो जाने का।

—जागरण से साभार

एक देव

• डॉ० मुंशीराम शर्मा "सोम"
कानपुर

वही एक देव नाना नामों से पुकारा जाता,
एक-एक नाम में विशेषता का धाम है।
ऋषियों ने देखी उस एक की विशेषतायें,
विस्तृत है विश्व में, गुणों में गुण ग्राम है।
वही अग्नि देवता, आदित्य, वायु, चन्द्र वही,
द्यावा तक भूमि से उसी का रम्याराम है।
शुक्र है प्रजापति, वही है ब्रह्म - आपो नारा--
-क्षीर सिन्धु वासी विष्णु नारायण नाम है।।1।।
काल की कलायें, घटिका - निमेष जागे,
उसी विद्युत पुरूष से जो सर्व सविता पिता।
किन्तु वे भी उसे ऊर्ध्व, तिरछे, न मध्य,
में ही पकड़ सके हैं, ऐसी कान्तिमयी कविता ।
प्रतिमा न उसकी, न कोई सम प्रतिमान,
नाम की महान महिमा है कीर्ति सहिता ।
गर्भ में हिरण्य, ज्योति, लोक सब विद्यमान,
मारो मत, उससे बड़ा न कोई अविता।।2।।
देव यह प्रदिशा-दिशाओं में भरा हुआ है,
काल देश दोनों का जनक, दूर दोनों से।
पूर्व जात सत सब-जनित उसी से हुए,
गर्भ में गृहीत फिर देव कोन कोनों से।
जात में वही है, उसमें भी जो प्रजात होगा,
जादू चलता न वहाँ, दूर सदा दोनों से।
चारों ओर मुख ले खड़ा है सबके समक्ष,
स्पर्श पाता प्रेम मय छोनों के छ्योनों से।।3।।
पूर्व उसके न कोई, ऐसा है अपूर्व देव,
प्राप्त है उसी से हुआ विश्व भुवनों को रूप।
प्रजापति अपनी प्रजा के साथ रममाण,
तीन ज्योतियों के साथ षोडश कला अनूप।।4।।
द्यावा उग्र तेजो मय, भूमि दृढ़ ठोस,
स्वर्ग नाक सबका है, वही धारक धरूण स्तूप।
अन्तरिक्ष में जो लोक लोकों को चलाता सदा,
पूजा करें कन्द को जला के छवि-दीप-धूप।।5।।

क्यों लाई जा रही है- "उर्दू" उत्तर प्रदेश में ?

• संतोष "कण्व", बरेली

वे "उर्दू" ला रहे हैं। प्रान्त की दूसरी राजभाषा बना रहे हैं। मैं पूछता हूँ- क्यों?

§1§

भारत विभाजन के समय उर्दू में काम करने के अभ्यस्त लोगों की संख्या आज की अपेक्षा कहीं अधिक थी। उन्हें हिन्दी में काम करना कष्ट-प्रद था। जब उस समय उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ी तो आज कौन सा पहाड़ टूट पड़ा?

§2§

चार दशकों में पूरी पीढ़ी ही बदल जाती है। प्रान्त की भाषा-नीति के अन्तर्गत हिन्दी पढ़ना अनिवार्य है। अतः आज उत्तर प्रदेश में शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसे हिन्दी न आती हो। अब कोई बताए- उर्दू का औचित्य?

§3§

राष्ट्-भाषा हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं को जानने का यह अर्थ तो नहीं कि उन्हें क्रमशः दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवीं--- राजभाषाओं का स्तर प्रदान किया जाए?

§4§

क्या इससे कार्यालयों के काम काज में जटिलताएँ उत्पन्न न होंगी।?

§5§

फिर इस अनावश्यक अपव्यय के लिए अपेक्षित धन कहाँ से आएगा? क्या आम जनता पर अतिरिक्त कर भार डालकर उसकी कमर बिलकुल ही तोड़ने का विचार है।

§6§

उत्तर प्रदेश सरकार के पास क्या किसी जिलाधिकारी ने यह प्रतिवेदन भेजा था कि उर्दू के बिना सरकारी कामकाज में बाधा उत्पन्न हो रही है। जरा बताया जाय कि कितनों ने ऐसे प्रतिवेदन भेजे हैं? कब भेजे हैं?

§7§

अब एक कटु-सत्य की भी चर्चा कर ली जाए। भारत-विभाजन के मुख्य मुद्दों में एक मुद्दा "उर्दू" का भी था। जिन्ना और उनके साथियों का कहना था कि उनकी§मुसलमानों§ भाषा उर्दू है। वे हिन्दी वालों के साथ नहीं रह सकते। उन्हें अलग जगह चाहिए। इसी दुराग्रह के कारण भारत टूटा। पाकिस्तान बना। जिनको उर्दू राजभाषा बनानी थी, वे स्वेच्छा से पाकिस्तान चले गए। हमने किसी को रोका नहीं। अब इस बचे हुए भारत में अथवा उसके किसी राज्य में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने की हठ करना क्या अनुचित एवं राष्ट्रद्रोह नहीं है? यदि ऐसा ही करना था, तो विभाजन ही नहीं किया जाता। दोनों बातें एक साथ नहीं चल सकतीं।

§8§

भारत विभाजन के घाव अभी भी हरे हैं। उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाकर उन पर नमक क्यों छिड़का जा रहा है? क्या इससे करोड़ों देशभक्तों की भावनाओं को ठेस नहीं पहुँच रही है?

§9§

भारतवासियों ने उर्दू को पूर्णतः आत्मसात कर लिया है। उसका रूप ही बदल गया है। अभी भी बदल रहा है। उसमें सुधार हुआ है। क्षेत्र विशेष में अब वह हिन्दी की एक शैली बन चुकी है। अतः विदेशी लिपि का दुराग्रह करना और उसे दूसरी भाषा बनाना क्या अलगाव की साम्प्रदायिक भावना का परिचयक नहीं है?

§10§

उर्दू को अपनाने के लिए नागरीलिपि की वर्णमाला में आंशिक परिवर्तन भी किए गए हैं। आज मैं गर्व से कह सकता हूँ कि उत्तर प्रदेश के विभिन्न अंचलों में बोली जाने वाली बोली नागरीलिपि में ही शुद्ध लिखी जा सकती है, उर्दू की परम्परागत लिपि में नहीं। यदि कोई लिख सके तो मेरी चुनौती है। नागरी में शुद्ध लिखी भी जा सकती है, और पढ़ी भी जा सकती है। फिर परम्परागत लिपि का ही दुराग्रह क्यों?

§11§

कार्यालयों में कामकाज की दृष्टि से उर्दू की परम्परागत लिपि नितान्त अव्यावहारिक, अवैज्ञानिक और अक्षम है। यदि इसे थोपा गया तो अवरोध उत्पन्न हो जाएगा। कार्यक्षमता भी प्रभावित होगी। विश्वास न हो तो किसी विशेष विभाग में परीक्षण करके देख लो।

§12§

आज भाषा को मज़हब से जोड़ने का जो षड्यन्त्र पुनः हो रहा है, क्या वह अनुचित एवं भारतीय आत्मा के प्रतिकूल नहीं है? मैं मुसलमान भाइयों से पूछता हूँ कि वे उर्दू के नाम पर भड़क क्यों उठते हैं? क्या उर्दू मुसलमानों की भाषा है? जिन्ना की यह मानसिकता भारत में तो नहीं चलती। भाषा तो उसको पढ़ने और लिखने वालों की होती है। देखा जाए तो उर्दू के विकास में गैर मुस्लिमों का योगदान ज्यादा है।

§13§

जब उर्दू वाले हिन्दी की क्रियाएं और सर्वनाम वैसे के वैसे ही ले सकते हैं, तो नागरीलिपि से परहेज़ क्यों है? क्या उर्दू की परम्परागत लिपि नागरी से श्रेष्ठ है?

§14§

भगवान के बनाए इन्सानों को यदि काट-छाँट कर अपनी आस्थाओं के अनुकूल बनाया जा सकता है, तो संसार की श्रेष्ठतम लिपि "नागरी" को नुक़्ते लगाकर स्वीकार क्यों नहीं किया जा सकता?

§15§

प्रत्येक देश की अपनी एक "राष्ट्रभाषा" होती है, जो उस देश के जनमानस को न केवल आपस में जोड़ती है, अपितु अतीत, वर्तमान और भविष्य के मध्य एक सुदृढ़ सेतु का काम भी करती है। भारत में "हिन्दी" राष्ट्र भाषा है और पाकिस्तान में "उर्दू"। अतः नए विवादों को जन्म देना या पुराने गड़े मुर्दे उखाड़ना क्या राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा उत्पन्न करना न होगा?

§16§

उर्दू की परम्परागत लिपि विदेशी है। अवैज्ञानिक है। उसकी आत्मा विदेशी है। भारत में यदि उर्दू को जिन्दा रखना है, तो उसको पूरी तरह भारतीय रंग में रंगने दो। नागरीलिपि से काटोगे तो उर्दू मर जाएगी। उसका भला इसी में है कि उसे नागरीलिपि में लिखा जाए। ऐसा प्रयोग शत-प्रतिशत सफल रहा है। अब चक्का उलटा क्यों घुमाया जा रहा है?

है, कोई स्तर---? भारत-विभाजन चार दशक बाद उर्दू को सरकारी स्तर पर थोपने का क्या औचित्य है? उर्दू के पक्ष में कौन सा तर्क है? जिस लिपि में "प्रसाद" तक शुद्ध नहीं लिखा जा सकता वह सरकारी भाषा बनायी जा रही है, लानत है।

फिर, पाकिसतान ने "उर्दू" को स्पष्टतः अपनी राष्ट्रभाषा घोषित किया हुआ है। वही वहाँ की सरकारी भाषा बनाई गई है। "उर्दू" को यह स्थान देने के लिए ही हमने अपनी प्यारी मातृभूमि का विभाजन स्वीकार किया था। कलेजे पर पत्थर रखा था। माताओं ने लाल खोए थे- बहनों का सुहाग लुटा था। किसी का भाई बिछुड़ा था तो किसी की बहन लुटी थी। नृशंसता के उस ताण्डव नृत्य में धरती काँपी थी, आकाश रोया था, मानवता तड़पी थी, किसके लिए-- ?

उर्दू के लिए। उर्दू वालों की जिद्द के लिए जिन्ना के पागलपन के लिए। अब किस बात का हिस्सा माँगा जा रहा है? इस खण्डित भारत में उर्दू के लिए कहाँ जगह है? क्या वह कुर्बानी कम थी? क्या वह खून पानी था? अरे। उर्दू और उर्दू वालों के लिए हमने जो बलिदान दिया है, उसकी कोई मिसाल दे दो तो हम जानें।

उर्दू वालों की मानसिकता को मैं समझता हूँ। उनकी आस्थाओं के लिए पाकिस्तान बन चुका है। चाहें "उर्दू" चलाएँ, चाहें "इस्लाम", भारत में ये सिक्के नहीं चलेंगे। यहाँ तो प्रीतिपूर्वक यथायोग्य व्यवहार होगा। सत्य की कसौटी पर जो खरा उतरेगा वह स्वीकार्य होगा। वैज्ञानिक युग में अवैज्ञानिक लिपि हमें मान्य नहीं है।

पाकिस्तान में स्वतन्त्रता है। अपनी उर्दू को चाहें रानी बनाओ या पटरानी, हमारे यहाँ सौतों का चलन नहीं है।

उर्दू के लिए तड़पने वाले यदि वास्तव में उसका भला चाहते हैं, तो उर्दू के दामन को अरब के रेगिस्तान से न जोड़कर भारत की शस्य श्यामल भूमि से जोड़ें। यदि उर्दू अरब और इस्लाम से ही जुड़ी रही तो मर जाएगी। नागरीलिपि को स्वीकारे बिना भारत में उसका कोई भविष्य नहीं है। ■

महर्षि दयानन्द

महर्षि का निर्वाण

• चन्द्रपाल सिंह "मयंक"

कुटिल वेश्या ने हत्या-षड्यन्त्र
तुरन्त ही रच कर,
रसोइये को मिला लिया था
धन का लालच देकर।
क्या-क्या नहीं अनर्थ लोभ ने
इस जग में करवाये?
लोभ और लालच ने कितने
ही सज्जन मरवाये।
रसोइये ने काँच पीसा
दुग्ध में उसे मिलाया।
महर्षि को धोखे में रख कर,
था वह दूध पिलाया।
विष का किया प्रभाव काँच ने
स्वामी जी के ऊपर।
फोड़े फूट पड़े शरीर पर,
कष्ट भयानक देकर।
क्षमा शीलता का महर्षि ने
था दृष्टान्त दिखाया।
घोर अधर्मी उस घातक को
ऋषि ने दूर भगाया।
भला कहीं दृष्टान्त मिलेगा
ऐसा जग में, भाई।
अपने हत्यारे की घायल
ने हो जान बचाई।
भगा दिया स्वामी ने उसको,
पुलिस न कहीं पकड़ कर-
नीच - दुरात्मा - घातक को
रख दे जंजीर - जकड़ कर।
विष देने का फल न नीच वह
निज जीवन में पाये।
करके भी अपराध, दुरात्मा
दण्ड नहीं पा जाये।
देखो स्वामी की महानता।
कितना हृदय विशाल।
उनको भी था विष दे डाला,
था कितना चाण्डाल।
क्षमाशीलता का अति अद्भुत
दिखलाया दृष्टान्त ।
जिसने था विष दिया, उसी का
बचा दिया प्राणान्त।
हा। पूरे दो मास कष्ट
कितना महर्षि ने पाया।
ईश्वर की लीला अद्भुत -
सज्जन ने कष्ट उठाया।
"तीस अक्टूबर" "उन्नीस सौ"
तेईस" का था वह साल।
चला गया था दिव्य लोक को
भारत - माँ का लाल।
ईश्वर। तेरी इच्छा पूर्ण हो।-
स्वामी जी यह कह कर
छोड़ गये थे इस दुनिया को।
रहा यहाँ तन नश्वर।
हाय। हन्त। भारत में उस दिन
दीवाली की रात।
जब महर्षि का खत्म हो गया
था जीवन - जलजात।
महर्षि ने अपने जीवन भर
किये सुनहरे काम।
जिनसे उनका जगमग-जगमग
चमक रहा है नाम।
धन्य-धन्य ऋषि दयानन्द जी
धन्य-धन्य सत्कर्म महान्।
देते रहे सदा जीवन में
ज्ञान व सत्शिक्षा का दान।
निज आत्मा की उन्नति के संग
करते रहे जगत - कल्याण।
और अन्त में हँसते - हँसते
प्राप्त कर लिया था निर्वाण।

मैं दयानन्द अनुयायी हूँ

• डॉ. गंगाप्रसाद विद्यार्थी, एम.ए.
जबलपुर सिटी

मैं काल-जयी विष-पायी हूँ, मैं दयानन्द अनुयायी हूँ।
जो सवा लाख से एक लड़ावे, मैं उन गुरुओं का भाई हूँ।।1।।
मैं लड़ता झंझा वातों से, मैं लड़ता मेघाडम्बर से।
झगड़े-झंझट सब दूर करूँ, मैं न्याय मार्ग अनुगामी हूँ।।2।।
अज्ञान अँधेरा दूर करूँ, वेद मार्ग को प्रशस्त करूँ।
ऋषि ग्रन्थों को ही मान्य करूँ, श्रुति-शास्त्र पंथगामी हूँ।।3।।
अन्याय नहीं सह सकता हूँ, अन्याय नहीं कर सकता हूँ।
शोषित का जो त्राण करे वह निर्बल-रक्षक व्रतधारी हूँ।।4।।
हाहाकार की कौन कहे, दुःख दैन्य नहीं सह सकता हूँ।
भूखे को भोजन देकर ही, स्वाहा स्वधां व्रतधारी हूँ।।5।।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र, ये चारों मेरे भाई हैं।
अन्य धर्म वाले भी मेरे प्रिय-मान्य और सहकारी हैं।।6।।
सब सज्जन मानव धर्मी हैं, सब दुर्जन जाति विरोधी हैं।
सज्जन का मैं पक्ष करूँ, दुर्जन हित रोषानल धारी हूँ।।7।।
जिस देश जाति ने जन्म दिया, उसका अतिशय अभिमानी हूँ।
उनके गौरव की रक्षा हित, मैं प्राण समर्पणकारी हूँ।।8।।
मैं सदाचार का पोषक हूँ, मैं दुराचार का नाशक हूँ।
षड़यन्त्रों से जो बढ़ जाते, उनका उद्घाटन कारी हूँ।।9।।
मैं वेदज्ञान लेकर बढ़ता, मैं सत्यसुधा से हूँ पलता।
न्याय दुधारा ले कर मैं, अन्याय विनाशनकारी हूँ।।10।।
बाधाएं रोक नहीं सकतीं, अन्यायी रोक नहीं सकते।
सब मिलकर भी यदि आ जावें, मैं सबका भेदन कारी हूँ।।11।।
मैं सत्यव्रती ब्रह्मचारी हूँ, कर्तव्यनिष्ठ श्रुतिधारी हूँ।
मैं कालजयी विषपायी हूँ, मैं दयानन्द अनुयायी हूँ।।12।।

क्या उर्दू द्वितीय राज्यभाषा हो सकती है?

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नारायण-दत्त जी तिवारी उत्तर प्रदेश "में उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा घोषित करने के निर्णय पर आर्य समाज मैण्डू में श्री-सूर्यपाल सिंह वर्मा पूर्वमंत्री की अध्यक्षता में एक बैठक दिनांक 10.10.89 को सम्पन्न हुई।

इस अवसर पर आर्यसमाज मैण्डू के उपप्रधान महेशचन्द्र वर्मा ने कहा कि उर्दू को दूसरी राज्यभाषा घोषित करने की आवश्यकता नहीं थी। इस पर भी इसे हिन्दी पर थोपने से हिन्दी के नाम पर शत प्रतिशत उर्दू की भरमार कर क्या उत्तर प्रदेश सरकार हिन्दी की उपकारणी कही जा सकती है। बाद में उत्तर में यह आवेगा कि ऐसी सरकार हिन्दी की घोर उपेक्षा करने पर तुली है। अतः इस उर्दू के बिल को पुनः निरस्त कर दिया जाये। अन्यथा उसे व्यापक जनान्दोलन के सामने झुकना पड़ेगा। राष्ट्र हित और हिन्दी की रक्षा को लेकर आर्यसमाज के लोग भी आन्दोलन में सक्रिय रूप से तन मन धन से सक्रिय हो जायेंगे। ■

मिटा दें धर्मद्रोहि का मूल।

—विमलचक्षु
दिल्ली

चतुर्दिक् रुदन, तड़पता देश
भूलता ऋषियों का सन्देश
कहीं पर हो न अपना ठौर
कैसे यह देश जगत-सिरमौर
अस्मिता मेरे देश की आज
शीश धुनती अपना चुपचाप
कुचाली क्रूर जालिए नित्य-
फूलें-फूलें कर-कर के पाप
कहाँ हो ऋषियों की सन्तान
मौन क्यों साधा हे अनूचान
शान्त क्यों धनुषों की टंकार
बिसारी क्यों असियों की धार
बहा दें शोणित के नद आज
भूमि चखे लोहू का स्वाद
कलुषा में लिप्त, जिन्हें न लाज
भूमि पर सोयें वे चुपचाप
कण्ठ में हो मुण्डों का माल
दृष्टि में ज्योति जले विकराल
धरित्री कम्पित सुन पदचाप
जगत् में गूँजे जय का नाद
देशहित कटें शीश पर शीश
सन्तती सदा रहे निर्भीक
वक्ष पर झेलें सौ-सौ वार
बढ़ें पग आगे बारम्बार
मिटा दें धर्म द्रोह का मूल
उठाकर शंकर का त्रिशूल
प्रलय का नर्तन हो अविलम्ब
गड़ें दुष्टों के हृत में शूल
विजय ही सदा हमारा लक्ष्य
जीतता रहे सदा ही सत्य
बढ़ें अप्रतिहत अपने वीर
पृष्ठ पर धनुष और तूणीर
देव। दो गौरव का वरदान
सुशासक हो तेरी सन्तान
नहीं हो जीवों का संहार
बढ़े माता - बहनों का मान
शपथ है तेरी भारतमात।
करेंगे तेरे हित बलिदान
रहेगा जब तक द्रोही एक
रखे न शस्त्र तेरी सन्तान।

कहानी

मद्य सेवन का दुष्परिणाम

-डा० शकुनचन्द आर्य
लालगंज (रायबरेली)

कमल नारायण का पिता जमुनाप्रसाद सम्पन्न, दानी, धनी एवं मानी प्रकृति का व्यक्ति था। जिस प्रकार कि उसकी बाल्यावस्था कठिनाईयों एवं गरीबी में बीती थी तथा उसके पास जो कुछ सम्पत्ति थी, स्वयं उसकी उपार्जित की हुई थी, वह परिश्रम एवं पैसे का महत्व समझता था। जब तक वह जीवित रहा, कमलनारायण भी उसके पदचिन्हों पर चलता रहा परन्तु उसके आंख मूंदते ही उसका रवैया बदल गया। वह शराब पीने लगा तथा चापलूस युवक उसके दरबारी बन गये। जिससे उसके पिता के साथियों ने उसके यहां आना जाना छोड़ दिया। शराबखोरी की उसकी यह आदत दिनोंदिन जोर पकड़ती गई जिसके कारण उसका व्यापार ठप्प हो गया। जो दशा एक अनियंत्रित परन्तु यौवन एवं धन के मद से युक्त व्यक्ति की होती है, वही कमलनारायण की

सच्चा मित्र वह है जो कि मित्र को सही रास्ता दिखाये, उसकी विपत्ति में काम आये तथा उसकी दुर्दशा पर आँसू बहावे। मैं कमलनारायण को अपना मित्र समझता था इसलिए उसकी दुर्दशा मुझसे देखी नहीं गई। इसलिए मैंने उसे यह कह कर कई बार समझाने की कोशिश की कि "उसकी शराबखोरी की बुरी आदत तथा उसका बुरे एवं चापलूस लोगों का कुसंग उसे विनाश की ओर ले जा रहा है।" परन्तु उसने मेरी बातों की ओर ध्यान देने के बजाय एक दिन मुझे बुरी तरह फटकारते हुए कहा कि "मैं खाता हूँ तो अपना, खिलाता हूँ तो अपना, विनाश होगा तो मेरा, तुम मुझे उपदेश देने वाले कौन होते हो। मेरा तुम्हारा कोई संबंध नहीं है। तुम मेरे पास से फौरन चले जाओ।" तत्पश्चात् मैंने कुछ नहीं कहा। अपमान का घूंट पीकर वहां से चला आया।" "जाको प्रभु दारूण दुख देही, ताकि बुद्धि प्रथम हर लेही" तथा "विनाश काले विपरीत बुद्धिः" आदि के अनुसार भावनाएं मेरे मस्तिष्क में गूज रही थीं तथा कमलनारायण के अन्धकारमय भविष्य का संकेत दे रही थी। मेरी अन्तरात्मा कह रही थी कि "कोई बात नहीं, अपमानित हुये तो क्या, मित्र के प्रति अपने कर्तव्य का सच्चाई से पालन तो किया। यह कम संतोष की बात नहीं है।"

तब से तीस वर्ष से अधिक हो गये। मैं भी फौज से पेन्शन लेकर घर वापस आ गया। एक लम्बे अन्तराल के बाद मुझे भी अपने घर के आस-पास की दुनियां देखने को मिली। जानकारी प्राप्त करने के बाद पता चला कि बड़ा परिवर्तन हो गया। कोई बाबा बन गया, आदि आदि। परन्तु कमलनारायण के विषय में जानकारी प्राप्त कर विशेष दुख हुआ। पता चला कि उसका पचीस-वर्षीय पुत्र पागल होकर इधर-उधर घूमता है, कभी कभी तो कमलनारायण के ऊपर भी हाथ छोड़ देता है, दूसरा पुत्र शराब पीकर आवारागर्दी करता है तथा असामाजिक कार्यों में लिप्त रहता है, अन्य दो पुत्र यद्यपि उतने नहीं बिगड़े हैं परन्तु जिस प्रकार वे चुपचाप नशा करने लगे हैं तथा पढ़ने नहीं जाते, उनका भविष्य भी अन्धकारमय प्रतीत होता है, स्वयं कमलनारायण की दशा तो बहुत ही खराब है, वह सदैव परेशान रहता है, उसका स्वास्थ्य बहुत गिर गया है, वह आयु से अधिक वृद्ध प्रतीत होता है, उसकी सारी दौलत नशाखोरी में उड़गई है इसलिए वह गरीबी का शिकार होकर पेट पालने में असमर्थ है तथा उसके चापलूस साथियों ने उसका साथ छोड़ दिया है।"

यद्यपि मुझे वर्षों पूर्व कमलनारायण द्वारा मेरे प्रति किये गये दुर्व्यवहार का पूरी तरह स्मरण था परन्तु उसकी उपरोक्त दुखद स्थिति का समाचार पाकर मुझे बहुत दुख हुआ। मेरी अन्तरात्मा बोल उठी "कोई बात नहीं, सच्चा मित्र वही है जो कि विपत्ति में संकटग्रस्त मित्र के काम आये।" उपरोक्त भावना से प्रेरित होकर मैंने उससे मिलने का निश्चय किया।

कमलनारायण के यहां पहुँचकर मैंने देखा कि वह दरवाजे पर आँखें मूंदे चुपचाप पड़ा है, उसका स्वास्थ्य इतना गिर गया है कि चेहरे की रोशनी समाप्त हो चुकी है, शरीर में केवल ढांचा रह गया है, घर के चारों ओर केवल गन्दगी ही गन्दगी दिखाई पड़ी, घर की रौनक समाप्त हो चुकी है।

मैंने कमलनारायण को होश में लाने की दृष्टि से आवाज लगाई "मित्रवर। कमलनारायण।"

मेरी आवाज को सुनकर कमलनारायण उठ बैठा और मुझे देखते ही मुझसे लिपट गया और रोते हुए बोला "मित्रवर-अरूण। मैंने वर्षों पूर्व नशा त्यागने तथा गलत लोगों का साथ छोड़ने की तुम्हारी सलाह नहीं मानी थी, उसी का कुपरिणाम अब भुगत रहा हूँ। मेरा सब कुछ लुट गया। बना बनाया काम बिगड़ गया। निस्सन्देह जो व्यक्ति अपने सच्चे मित्र की सलाह नहीं मानता, उसकी वही दुर्दशा होती है जो मेरी हुई। आप मुझे क्षमा करो।"

मैंने उसे ढाढस बंधाते हुए कहा "मित्रवर। कमलनारायण। मनुष्य को अपने कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है। जब मनुष्य बबूल का वृक्ष लगाता है तो उसे आम खाने को कैसे मिल सकता है। परन्तु आप धैर्य रखें क्योंकि विपत्ति में धैर्य ही सबसे बड़ा सहारा होता है। जो हो गया सो हो गया, यदि आप अभी भी शराब का सेवन बन्द कर दें तो आपके स्वास्थ्य एवं आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकता है। यही नहीं मेरा दृढ़ विश्वास है कि तुम्हारे शराबत्याग के बाद तुम्हारे बच्चे भी तुम्हारा अनुकरण करेंगे क्योंकि बच्चे सदैव अपने बड़ों का अनुकरण करते हैं जिससे उनके सुधार में भी सहायता मिलेगी।"

मेरी बात सुनकर कमलनारायण विनम्रतापूर्वक बोले "मित्रवर अरूण। जो भूल हो गई सो हो गई, अब मैं भविष्य में आपकी सलाह पर ही चलूंगा।" ■

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर में निःशुल्क नेत्र-चिकित्सा शिविर सम्पन्न

दिनांक- 19·10·89 से 26·10·89 तक

श्री आसानन्द जी भजनीक एवं श्री जसवन्तराय मलिक के प्रयास एवं महाशय धर्मपाल जी के सौजन्य से दिल्ली के माता चननदेवी निःशुल्क नेत्र चिकित्सालय के नेत्र विशेषज्ञों के पुरुषार्थ से दिनांक 19·10·89 से 26·10·89 तक का नेत्र चिकित्सा शिविर सम्पन्न हुआ। उक्त शिविर का विधिवत् उद्घाटन दिनांक- 21·10·89 को महात्मा आर्यभिक्षु के कर-कमलों से "ओ३म्" की पवित्र ध्वजा के आरोहरण के उपरान्त, श्री हरिश्चन्द श्रीवास्तव, आई०ए०एस० उपाध्यक्ष विकास प्राधिकरण की अध्यक्षता में, डा० आर०एस०नेगी, मुख्य चिकित्साधिकारी, हरिद्वार के कर-कमलों से दीप प्रज्वलन के उपरान्त हुआ। रोगियों के नेत्रों की जांच का कार्य दिनांक 19·10·89 से ही प्रारम्भ हो गया था तथा इस शिविर में कुल 678 रोगियों के नेत्रों की जाँच एवं 85 रोगियों की सफल शल्य चिकित्सा हुई।

शिविर का समापन दिनांक- 25·10·89 को हरिद्वार के जिलाधीश श्री के०एन० पाण्डेय ने अपने आशीर्वचन से किया और आश्रम के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट की, जिसके सहयोग से उनके जिले के इतने रोगियों के कष्टों का निवारण हुआ। भविष्य में इस प्रकार के होने वाले जन-कल्याण के कार्यों हेतु अपने तथा अपने प्रशासन के पूर्ण सहयोग हेतु आश्वासन दिया। जिलाधीश महोदय ने सभी रोगियों में फल, बिस्कुट एवं हरी पट्टियां वितरित कीं।

डा० रामप्रसाद, उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ने उक्त शिविर को यज्ञ की संज्ञा दी। इस अवसर पर महात्मा आर्य भिक्षु मुख्य चिकित्साधिकारी एवं स्वामी सदानन्द ने अपने-अपने उद्गार प्रकट करते हुए, बिना भेदभाव सबकी सेवा कर सच्चे अर्थों में आर्य बनने की प्रेरणा दी।

दिनांक- 26·10·89 को सभी रोगी आश्वस्त एवं प्रसन्न-वदन स्वस्थ होकर तथा वैदिक-साहित्य एवं विचार लेकर अपने-अपने घरों को लौटे।

इस वृहद् यज्ञ-कार्य में यहां के स्थानीय हरमिलापी राजकीय चिकित्सालय, ऋषिकुल आयुर्वेदिक चिकित्सालय, राजकीय आयुर्वेदिक चिकित्सालय, गुरुकुल कांगड़ी के प्राचार्यों, मुख्य चिकित्साधिकारी एवं नेत्र विशेषज्ञ डाक्टरों का सक्रिय एवं प्रशंसनीय सहयोग प्राप्त हुआ।

आश्रम के सभी साधक एवं साधिकाओं ने दिनरात अपने अथक परिश्रम से इस शिविर को सफल बनाया। ■

आदर्श महापुरुषों की स्मृति में

— चन्द्रभूषण सिंह शास्त्री, लखनऊ

भूलोक में जिसका अधिक गौरव प्रकृति उत्कर्ष है।
गंगा हिमालय भूमि ऋषि की देश भारत वर्ष है।

गौतम व्यास जैमिनि पतंजलि से ब्रह्मलीन
कपिल व कणाद से महान् शास्त्र ज्ञानी थे।
अर्जुन से वीर अम्बरीस से महान भक्त
सत्य के महान हरिश्चन्द्र महा दानी थे।।
नारद से सन्त सती सीता अनुसुइया सम
सत्य सदाचार पूर्ण एक एक प्राणी थे।
ऐसा था आर्यो के भाग्य का अतीत काल
पाणिनि से महान् ऋषि व्याकरण के ज्ञानी थे।।
विश्वामित्र वशिष्ठ यास्क भृगु जाबालिसम
वायु अग्नि अंगिरा रवि वेद धारी थे।
भीष्म से वीर नृपति तेज भोज विक्रम सम
नहुष ययाति रघु अज धनुषधारी थे।।
पराशर शुकदेव सम बाल्मिकि वामदेव
धनवन्तरि अश्वनी कुमार चरक वैद्य भारी थे।
रामकृष्ण मनु दधीचि बलि नचिकेता सम
ध्रुव प्रहलाद मौरध्वज धर्मकारी थे।।
युधिष्ठिर बुद्ध शंकर हनुमान कुमारिल सम
रन्ति देव शिवि कर्ण दया दानकारी थे।
अपाला गार्गी घोष द्रुपदी मीरा सम
मदालसा अरुनधती नारी शिक्षा धारी थे।।
तुलसी कबीर सूर भूषण बिहारी सम
नानक सुन्दर दयाल कवि जन हितकारी थे।
बिरजानन्द दयानन्द श्रद्धानन्द लेखराम
आनन्द नारायण स्वामी वेद रखवारी थे।
शिवाजी राणाप्रताप गुरु गोविन्द सम
सावरकर से महान हिन्दूधार्म रखवारी थे
चन्द्र शेखर सुभाष मालवीय बिसमिल सम
गाँधी जवाहर पटेल क्रान्तिकारी थे।।
कहाँ तक सुनाऊँ एक एक वीर की कहानी हम
चन्द्र भूषण प्रभू के अनन्य विश्वासकारी थे।।
जब हमारे देश के सत् पुरुषों की याद आती है।
तभी-सम्मान से गर्दन मेरी झुक जाती है।।

हिन्द न हिन्दी का हो सका है अभी

● डा. अनन्त राम मिश्र "अनन्त"
(महापदेशक, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.)

बज्र की भाँति कठोर बनी कभी कोमल पुष्प - सी कान्ति की भाषा।
सूर्य की ज्योति के तुल्य परिस्फुट बोलती है, नहीं भ्रान्ति की भाषा।
स्फूर्तिमयी शुचि कर्म में मग्न रही न प्रमाद या श्रान्ति की भाषा।
एकता-सूत्र में बाँधती राष्ट्र को क्रान्तिमयी पर शान्ति की भाषा।।

सदा प्रश्रय दे निज अंक में संस्कृत वाणी ने, अम्ब-सा है दुलराया।
अवधी, ब्रजी, मैथिली, भोजपुरी है कनौजी में व्यापक रूप समाया।
कवियों ने नये - नये दे कृति-रत्न निरन्तर चन्दन-सा महकाया।
इसे नानक- से, दयानन्द-से, बापू-से सन्तों ने राष्ट्र की भाषा बनाया।।

जायसी-मीरा की पीर है प्रेम की, भूषण-चन्द का ओज उजागर।
सप्तशती मतिराम-बिहारी की, देव की छन्दमयी रस-गागर।
साखियाँ हैं कबिरा की प्रसिद्ध सुभाषित वृन्द-रहीम के नागर।
मानस है तुलसी का इसी में प्रवाहित पावन सूर का सागर।।

मैथिली" ने, महावीर, ने है पद्यों से खड़ी में हरिऔध ने ढाला।
उर्वशीकार, नवीन, सनेही ने पूर्ण प्रसार का भार सम्हाला।
नीरज से उड़े सौरभ-गीत, बनी-महकी इसी में मधुशाला।
सेवा में अर्पित हैं कितने महादेवी, प्रसाद जी, पन्त, निराला।।

उर-अन्तर में जो जमी युगों से, उस दासता को नहीं धो सका है अभी।
पड़ राजनीति के कर्दम-बीच, कहाँ दृढ़ निष्ठा सँजो सका है अभी?
नहीं मान्यता पूरी मिली जन-जीवन में, पद-लोभ न खो सका है अभी।
अरे। हिन्दी तो हिन्द की हो गयी है, पर हिन्द न हिन्दी का हो सका है अभी।।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का नैमित्तिक तथा वार्षिक बृहदधिवेशन

दिनांक० २४ तथा २५ दिसम्बर १९८९ को डी.ए.वी. कालेज लखनऊ में सम्पन्न होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश का दिनांक- 25 तथा 26 नवम्बर-1989 को लखनऊ में सम्पन्न होने वाला नैमित्तिक तथा वार्षिक बृहदधिवेशन, चुनाव आयोग द्वारा लोकसभा तथा उ0प्र0-विधानसभा के चुनाव के लिए आगामी तिथियाँ 22 से 26 नवम्बर 1989 घोषित हो जाने के कारण सभा के अधिवेशन की तिथियाँ परिवर्तित की जाती हैं।

अब सभा के उक्त अधिवेशनों की स्थगित तिथियाँ सभा के नियम सं0-8 (ए) के अनुसार निम्न प्रकार घोषित की जाती हैं:-

(1) नैमित्तिक अधिवेशन दिनांक- 24 दिसम्बर 1989 (रविवार)

(2) वार्षिक बृहदधिवेशन 25 दिसम्बर 1989 (सोमवार)

समय तथा स्थान डी0ए0वी0 कालेज ही रहेगा।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र.

शोक समाचार

महाराजपुर छतरपुर (म0प्र0) स्थानीय-आर्यसमाज के निरीक्षक उत्साही एवं समाज सेवी कार्यकर्ता तथा नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री रामसेवक जी मंत्री के पिताजी श्री नाथूराम चौरसिया का 86 वर्ष की उम्र में दिनांक-18.10.89 को निधन हो गया। दिवंगत आत्मा को ईश्वर शांति व शोक संतृप्त परिवार को इस महान् दुःख सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

●

आर्यसमाज मैण्डू के भूतपूर्व प्रधान श्री-पं0 नेत्रपाल शर्मा के ज्येष्ठ भ्राता जी श्री लीलाधर के आकस्मिक निधन दिनांक-26-9-89 को गभाहना में हो गया। प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना की।

द्वितीय राजभाषा के विरोध में विराट सम्मेलन

उर्दू को इस प्रदेश की द्वितीय राजभाषा घोषित करने वाले अधिनियम के विरोध में उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने शनिवार 14 अक्टूबर को डी0ए0वी0 कालेज लखनऊ के सभागार में एक विराट सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें हिन्दी साहित्यकारों, प्राध्यापकों, और हिन्दी प्रेमियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। लखीमपुर, जालौन, रायबरेली, सीतापुर, गोला गोरखनाथ, दिल्ली, आगरा, पीलीभीति, शिलोंग, और बस्ती के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए।

सम्मेलन दो सत्रों में चला। पहले सत्र की अध्यक्षता डा0 हर्षनारायण ने की और दूसरे सत्र की डा0 कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह ने। पहले सत्र में प्रो0 वासुदेव सिंह के चित्र पर माल्यार्पण किया गया। इसी प्रकार का विधेयक जब 1984 में विधान परिषद के समक्ष रखा गया था, तब प्रो0 वासुदेव सिंह ने, मन्त्रिमण्डल के सदस्य होते हुए भी, उसका कड़ा विरोध किया था। फलस्वरूप भूतपूर्व मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह ने, प्रो0 वासुदेव सिंह को अपने मंत्री मण्डल में शामिल नहीं किया। उनके इस त्याग के कारण, पं0 मदनमोहन-मालवीय और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन के बाद हिन्दी सेवियों में प्रो0 वासुदेव सिंह का नाम चिरस्मरणीय है। इसी कारण से इस अधिवेशन का पहला कार्यक्रम प्रो0 वासुदेव सिंह को माल्यार्पण करना था।

माल्यार्पण के बाद भातखण्डे संगीत महाविद्यालय के छात्रों और छात्राओं ने मंगलगान किया- निराला का "वीणावादनी-वर दें", जयशंकर प्रसाद का "हिमाद्रि-तुंग श्रृंग से" और मैथलीशरण गुप्त का "मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती"। मंगलगान के बाद श्री मनमोहन तिवारी, स्वागत समिति अध्यक्ष ने अपना अध्यक्षीय भाषण दिया। इसके बाद श्री ब्रह्मदत्त दीक्षित, भूतपूर्व प्रधानाचार्य राजकीय जुबली इन्टर कालेज, ने विषय का प्रतिपादन किया और श्री देवकी नन्दन मित्तल, भूतपूर्व सचिव विधान परिषद, ने अधिनियम के बीच में संवैधानिक अड़चनों पर प्रकाश डाला। डा0 हर्षनारायण के अध्यक्षीय भाषण के उपरान्त पहला सत्र समाप्त हुआ।

दूसरा सत्र सत्यनारायण पाण्डेय की सरस्वती की संस्कृत वन्दना और माधव प्रसाद शुक्ल की ब्रजभाषा में देवनागरी की स्तुति से आरम्भ हुआ। कुँवर चन्द्र प्रकाश सिंह ने प्रस्ताव प्रस्तुत किया। लखनऊ जनपद के प्रधानमंत्री श्री दुर्गाशंकर मिश्र ने प्रस्ताव में निम्न संशोधन का सुझाव दिया।

"हिन्दी भाषी जनता के साथ विश्वासघात करने वाले सभी विधायकों को आगामी आम चुनावों में सर्वसमत्ति से हम अपना मत न देने का संकल्प लेते हैं।"

प्रस्ताव के समर्थन में कई विद्वज्जनों के भाषण हुए और प्रस्ताव मय संशोधन के सर्व सम्मति से पारित किया गया। प्रस्ताव की प्रतिलिपि भारत सरकार के प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और संसदीय कार्य मंत्री तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री, शिक्षामंत्री, संसदीय कार्यमंत्री, मुख्यसचिव और सूचना निदेशक को उसी दिन डाक द्वारा भेज दी गयी।

इस सम्मेलन की गए विशेषता यह थी कि सभी कार्यकारिणी और स्वागत समिति के सदस्य और बाहर से आए हुए प्रतिनिधि अपने बाएँ हाथ में काला पट्टा बाँधे हुए थे। यह काला पट्टा सरकार के प्रति उनके आक्रोश का प्रतीक था। ◘

प्राणों की बाज़ी लगाकर गौ रक्षा

प्राप्त सूचना के आधार पर जनपद शाहजहाँपुर के तहसील तिलहर, विकास क्षेत्र जैतीपुर में स्थित ग्राम- बरी प्रसिद्दपुर निवासी श्री रोहन-सिंह "आनन्द" ने गत 1 जुलाई 1989 को यह अपूर्ण साहस कर दिखाया। महर्षि दयानन्द वैदिक आश्रम के निकट वर्ती ग्राम सिहरी (मेवात क्षेत्र) में कुछ गायों को लेकर कसाई लोगों को बध करने जाता देखा तो उक्त आर्य-नरेश पर न रहा गया और अकेला ही वह आगे बढ़ कर कसाईयों को ललकार बैठा। उसकी हिम्मत व शक्ति-पराक्रम के आगे उन कसाईयों को गायें छोड़नी पड़ीं। किन्तु उस आर्य वीर रोहन सिंह "आनन्द" को वहाँ के मुसलमानों से अपनी जान बचाने हेतु घोर संकट झेलना पड़ा। हरियाणा के पशु पालन मंत्री चौ0 अजमत खाँ के भी कोप का भाजन बनना पड़ा। उक्त घटना में पुलिस-थाना- नगीना के थानाध्यक्ष श्री चौ0शीश-राम जी ने अपनी सूझबूझ, बहादुरी और कुशल कार्यक्षमता द्वारा उक्त आर्यनरेश को सकुशल महाविद्यालय गुरुकुल तक पहुँचाकर उसकी जान बचाई।

पृष्ठ 3 का शेष....

फौजियों, पहाड़ी प्रदेशवासियों तथा अपंगों के आरक्षण के विरोध में कोई आर्थिक आधार पर आरक्षण देने की बात नहीं कहता। जाहिर है कि इन सभी वर्गों का स्तर ऊपर लाने के लिए आरक्षण दिया गया है तब सामाजिक तथा शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों को ऊपर लाने के लिए दिये जा रहे आरक्षण के विरोध में आर्थिक आचार करने की माँग का मतलब क्या है?

(ड) आर्यसमाज का दृष्टिकोण

आरक्षण के सम्बन्ध में आर्यसमाज का दृष्टिकोण स्पष्ट नहीं है। कभी-कभी नेताओं, सभाओं के मुख पत्रों तथा उपदेशकों द्वारा इसके विरोध में ही स्वर उठता रहा है। वस्तुतः आरक्षण सदा बनाये रखना अच्छी स्थिति नहीं है। सामाजिक और जातीय संघर्ष तथा कटुता में ही इसकी परिणति होती है। तब आर्य समाज क्या करें?

--क्रमशः

"सत्यार्थ प्रकाश" को नेपाली भाषा में प्रकाशनार्थ धन की अपील।

विश्व के एक मात्र हिन्दू अधिराज्य नेपाल में आर्यसमाज के व्यापक प्रचार-प्रसार करने लिए "सत्यार्थ प्रकाश" का नेपाली भाषा में अनुवाद कर प्रकाशित कराना आवश्यक है। इसी पवित्र उद्देश्य से नेपाल आर्यसमाज केन्द्रीय कार्यालय काठमांडौं ने सत्यार्थ प्रकाश का नेपाली रूपान्तर का कार्य पूर्ण कर लिया है, जो सरल एवं विशुद्ध नेपाली भाषा में है। जिसमें पृष्ठ 500 से ज्यादा होंगे। इस कार्य हेतु एक लाख की धनराशि की आवश्यकता है। यह ग्रन्थ विश्व के एक मात्र हिन्दू अधिराज्य नेपाल के लिए सबसे बड़ा धर्मग्रन्थ होगा, जो हम सब आर्यसमाजियों के लिए बड़े गौरव की बात होगी।

अतः यह महान कार्य आप सबके सहयोग से ही साकार हो सकेगा, आर्थिक सहयोग देने वाले दाता महानुभावों का नाम प्रथम पृष्ठ में अंकित किया जाएगा साथ ही रू0 10,000 (दसहजार) से अधिक आर्थिक सहयोग देनेवाले महानुभावों का फोटो सहित विवरण भी प्रकाशित किया जाएगा। आर्थिक सहयोग नेपाल आर्य समाज काठमाण्डौं के नाम से चेक या ड्राफ्ट द्वारा एकाउन्टपेई ही भेजें।

-टेक बहादुर रायामाझी
अध्यक्ष, नेपाल आर्यसमाज
केन्द्रीय कार्यालय, बातिसपुतली, काठमांडौं
(नेपाल)

प्रभु प्रार्थना

• ब्रह्मानन्द जिज्ञासु
अतरदह, मुजफ्फरपुर (बिहार)

प्रभु से संयुक्त होना सदा सुखदाई।
प्रभु से विमुख होना सदा दुखदाई।।
प्रभु ही सबका है कल्याणकारी।
प्रभु सब जीवों का है हितकारी।।
प्रभु के शरण में सर्वसुख पाना।
प्रभु से विलग होना, दुख उठाना।।
प्रभु है जगत का एक ही अधारा।
प्रभु है सभी का एक ही सहारा।।
प्रभु के मनन में यदि दिल लगावो।
तो निश्चय ही बन्धु। सदा सुख पावो।।
"ब्रह्मानन्द" प्रभुगान करते जावो।
प्रभु से संयुक्त हो, परम पद पावो।।

लखनऊ में ऋषि निर्वाण दिवस

लखनऊ, 28 अक्टूबर पश्चिमी अपसंस्कृति के अंधानुकरण से भारतीय समाज में अनेक विकृतियां पैदा हुई हैं, जिसके परिणाम स्वरूप यहां के महानगरों में मूल्यहीन और अपनी जड़ों से कटे हुए युवाओं का एक बहुत बड़ा वर्ग पैदा हो गया है। यदि इस विकृति को दूर कर भारतीय समाज को एक मर्यादित और मूल्यवान समाज बनाए रखना है तो आज भी और यहाँ तक कि 21वीं सदी में भी महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग को अपनाना होगा।

यह उद्‌गार उत्तर प्रदेश आर्य-प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री मनमोहन-तिवारी ने व्यक्त किये। वह आज यहाँ आर्य उपप्रतिनिधि सभा लखनऊ द्वारा आयोजित स्वामी दयानन्द सरस्वती के निर्वाण दिवस पर आर्यसमाज कैन्टूनमेंट के सभागार में आयोजित एक विशाल समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। आर्यमित्र के सम्पादक आचार्य इन्द्रदेवपाठक ने महर्षि के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें आधुनिक युग का महान समाज सुधारक तथा वेदनिष्णात बताया।

मुख्य वक्ता श्री रूपचन्द्र दीपक ने अपने भाषण में कहा कि महर्षि-दयानन्द ने हमें अपने जीवन को यशमय बनाकर पवित्र जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त किया।

आर्य उपप्रतिनिधि सभा के मंत्री चन्द्रकुमार छाबड़ा ने समस्त अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि महर्षि-दयानन्द ने ऊँच-नीच का भेद मिटाने के लिए सतत् संघर्ष किया। उन्होंने ऋषि निर्वाण दिवस पर देश में पुनः फैलते वर्गभेद, साम्प्रदायिक, विद्वेष, राष्ट्रभाषा हिन्दी के अपमान, नारी जाति के नष्ट होते सम्मान की रक्षार्थ संगठित होने का आह्वान किया।

समारोह का संचालन सभा के प्रधान आचार्य वेदव्रत अवस्थी ने करते हुए कहा कि यदि महर्षि न आते तो भारत की अस्मिता ही न बचती। श्री-मद्दयानन्द बालसदन गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अपने कार्यक्रमों द्वारा नई पीढ़ी से पुनिर्मित होने की दिशा का संकेत दिया। समारोह समापन शान्ती पाठ के पश्चात् प्रसाद वितरण के साथ हुआ। ◻

आर्ष गुरुकुल पेत्था कटरा (इटावा) का अष्टम वार्षिक महोत्सव सम्पन्न

19,20,21,22, अक्टूबर 1989 में इटावा जिले में स्थित एक मात्र वैदिक विद्यालय आर्ष गुरुकुल पेत्था कटरा का अष्टमवार्षिक महोत्सव यज्ञ भव्य समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ।

प्रथम दिवस 19 तारीख को शिक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसके अध्यक्ष श्री वानप्रस्थी आर्यबन्धु (बांदा) तथा मुख्यातिथि श्री प्रो० प्रभुदयाल जी-आर्य वानप्रस्थी (गुड़गांव हरयाणा) थे इस सम्मेलन का संयोजन पं० यशवन्त-राय जी शास्त्री उपाचार्य (गुरुकुल) ने किया। वक्ताओं ने शिक्षा विषय पर सारगर्भित विचार दिये।

-राजदेव शर्मा व्याकरणाचार्य
आर्ष गुरुकुल पेत्था कटरा
(इटावा)

"वेद प्रचार शिविर सम्पन्न"

बहेड़ी-दिनांक- 8, 9, 10 व 11 अक्टूबर 1989 को शिविर लगाया गया। दिनांक- 8 अक्टूबर को विशाल शोभा यात्रा श्री सुरेन्द्र सिंह जी एवं श्री राम स्वरूप स्नातक जी के नेतृत्व में सम्पूर्ण बहेड़ी नगर में बड़े धूम धाम के साथ निकाली गई। इस वेद प्रचार शिविर में डा० उर्मिला-आर्य कुजपुरा, करनाल, पं० नरेशदत्त, पं० राम चन्द शर्मा तथा अन्य भजनोपदेशकों के द्वारा ओजस्वी भजनों से सारी जनता को जागृत किया।

"वैदिक साहित्य प्रदर्शनी"

महर्षि स्वामी दयानन्द के कृपापात्र शिष्य क्रांतिवीर पं० श्यामजी कृष्ण वर्मा के जन्म दिवस 4·10·89 पूर्वान्ह दयानन्द बाल मन्दिर आर्य समाज हसनगंज पार लखनऊ में श्री पवनकुमार-जी ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला।

अपरान्ह सामने लाजपतनगर चौक में "वैदिक साहित्य प्रदर्शनी" आयोजित की गई।

भारत सरकार ने क्रांतिवीर की स्मृति में डाक टिकट जारी किया।

आर्यसमाज खाजपुरा (पटना) की ओर से योगधाम, हरिद्वार के स्वामी दिव्यानन्दजी के आचार्यत्व एवं महात्मा नारायण स्वामी आश्रम, रामगढ़ तल्ला (नैनीताल) के निर्देशन में दिनांक- 27 नवम्बर 1989 से 3 दिसम्बर 1989 तक एक योग साधना शिविर आयोजित हो रहा है। इच्छुक बन्धु शिविर में भाग लेने के लिए सादर आमन्त्रित हैं। शिविर में भाग लेने का कोई शुल्क नहीं है।

- उपेन्द्र कुमार सिंहा, मंत्री

आर्यसमाज सिरसी, मुरादाबाद

इस वर्ष वेद कथा व यज्ञ 25-9-89 से 4-10-89 तक 10 दिन रही जिसमें स्वामी ब्रह्मानन्द वेद भिक्षु व स्वामी सुकर्मानन्द जी व देवी सिंह जी व राम लाल जी भजनोपदेशक पधारे प्रोग्राम बड़ा सुन्दर शान्ति पूर्वक सम्पन्न हुआ।

पंजाब की भाषा पर राजनैतिक दल नीति स्पष्ट करें।

बिहार और उत्तर प्रदेश में उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाए जाने की घोषणा पर टिप्पणी करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने भारत सरकार से जोर देकर मांग की है कि पंजाब में हिन्दी को दूसरी राजभाषा घोषित किया जावे।

स्वामी जी ने कहा कि हिन्दी भारत के संविधान में राष्ट्रभाषा तथा राजभाषा है। पंजाब में अंग्रेजी दूसरी राजभाषा के रूप में सरकारी दफ्तरों में चलाई जा रही है, जबकि संविधान में अंग्रेजी का कोई स्थान नहीं है। पं· जवाहरलाल नेहरू ने केवल 15वर्ष तक अंग्रेजी में सरकारी कामकाज करने की घोषणा की थी, किन्तु कुछ अंग्रेजी समर्थक लोग सरकारी कर्मचारियों की चालाकी से अंग्रेजी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने का षडयन्त्र कर रहे हैं।

स्वामी जी ने कहा पंजाब की भाषा समस्या एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। बिहार और उत्तर प्रदेश में उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाए जाने के कारण पंजाब की भाषा नीति के विषय में कांग्रेस तथा सभी राजनैतिक दलों की क्या राय है? देश की बहुसंख्यक जनता इसे जानना चाहती है।

उन्होंने कहा बिहार में 12 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश में 15 प्रतिशत उर्दू समर्थक हैं, जबकि पंजाब में 42 प्रतिशत हिन्दी समर्थक हैं, इसलिए पंजाब की भाषा नीति तुरन्त स्पष्ट की जानी चाहिए।

-सच्चिदानन्द शास्त्री
सभामंत्री
सार्वदेशिक सभा, दिल्ली,

दानवीर का निधन

आर्यसमाज ओईवाला (देहरादून) के दानवीर एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री सुन्दर श्याम-जौहर का दुर्घटना में निधन हो गया। आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्‌गति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करे।

-आर्यसमाज लल्लापुरा (वाराणसी) आज की यह सभा आर्यजगत के मूर्धन्य विद्वान आर्य नेता पं० शिवकुमार जीशास्त्री के निधन होने पर शोक प्रगट करती है तथा ईश्वर से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं शोक सन्तप्त परिवार को धैर्य धारण करने की शक्ति दे।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : ७५९९६२
पजीकरण सं0 एल0डब्ल्यू/एन पी.७९
मार्गशीर्ष कृष्ण-७
१९ नवम्बर ,रविवार, १९८९

रश्मि-संजीव विवाह पर बधाई

आर्यसमाज श्रृंगारनगर, लखनऊ की उपमन्त्री आयु0 रश्मि शर्मा का विवाह धुरी {पंजाब} निवासी चिर0 संजीब भारद्वाज के साथ 19·10·89 को सम्पन्न हुआ। नव दम्पति को हार्दिक बधाई।

शिष्टमण्डल का कार्यक्रम स्थगित

आर्य सभा मॉरिशस का शिष्टमण्डल जो कि भारत की आर्यसमाज की गतिविधियों को देखने एवं भारत दर्शन के लिये दिनांक- 9·11·89 को दिल्ली पहुँचता, का कार्यक्रम भारत में चुनाव होने के कारण स्थगित हो गया है।

रामजन्मभूमि मुक्तियज्ञ

नगर आर्यसमाज लखनऊ ने अयोध्या के रामजन्म के मुक्त कराने हेतु एक विशाल यज्ञ का आयोजन दिनांक- 15 अक्टूबर, 1989 को किया जिसके वक्ताओं ने भगवान राम के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालते हुए रामजन्म-भूमि हिन्दुओं को सौंपे जाने का शासन से अनुरोध किया। श्री पं0 यज्ञदत्त शर्मा के पौरोहित्य में समस्त यज्ञ कार्यवाही सम्पन्न हुई।

नजीबाबाद {बिजनौर}

नजीबाबाद {बिजनौर} में श्री-मंगल सिंह आर्य के निवास स्थान पर महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस मनाया गया।

वैदिक विवाह

आर्यसमाज माडल टाउन बरेली में दिनांक- 15-10-89 रविवार को आर्योप प्रतिनिधि सभा बरेली के तत्वावधान, श्री पूरन लाल आर्य मंत्री-जिला सभा की अध्यक्षता एवं श्री वीरेन्द्र-"वीर" निरीक्षक उ0प्र0 सभा के पौरोहित्य में चि0 हरिजन सिंह {मौर्य} आत्मज-श्री डा0 राम लाल वर्मा नि0 अहमपुर {बदायूँ} का विवाह कु0 तुलसी पाठक सुपुत्री श्री रामदत्त पाठक नि0 बरेली के साथ सभी प्रकार के आडम्बर, कुरीतियों, दहेज और जन्मना जाति पाँति के मिथ्यावाद से रहित पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार सम्पन्न हुआ।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अवैतनिक रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि॰ सं॰ २२४१/५७) मार्गशीर्ष - १३ रविवार - संवत् २०४६ वि॰, दिनांक - २६ नवम्बर १९८९ (घोषणा पत्र सं॰ ७/२८-२-७५)



आर्यों का आदिदेश

यऽर्णविऽधि सलिलमग्र आसीद्यां मायाभिरन्वचरन्मनीषिणः।
यस्या हृदयं परमे व्योमन्सत्येनावृतममृतं पृथिव्याः।।
सा नो भूमिस्त्विषिं बलं राष्ट्रे दधातूत्तमे ।।

(अथर्व 12/1/8)

सर्वप्रथम भारत में आर्य (हिन्दू) ही बसे। आर्य उस समय भारत में आकर बसे जब भारतभूमि समुद्र से निकलनी शुरु हुई थी।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम॰ए॰

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम॰ए॰ साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१.०० रू. मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ४७

हैदराबाद में २६ से ३१ दिसम्बर तक

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का अर्द्धशताब्दी समारोह

विश्व के समस्त आर्यजन इसे अपनी उत्कृष्टतम गरिमा भव्यता से मनाएं

— स्वामी आनन्दबोध सरस्वती

भगवान कृष्ण के अमरवाक्य **"जब जब धर्म की हानि और उस पर अत्याचार होता है मैं संस्था बनकर, वीरपुरुष बनकर प्रकट हो जाता हूँ और साधुओं की रक्षा करता हूँ"**- को साकार रूप देते हुए आज से 50 वर्ष पूर्व आर्यसमाज ने हैदराबाद की निज़ामशाही के क्रूरतम पंजों के नीचे पिसती हुई मिटती हुई आर्य हिन्दूजाति की रक्षा के लिए सत्याग्रह किया था। इस सत्याग्रह में अविभाजित भारत के कोने-कोने से हजारों लोगों ने भाग लिया था। कई हजार लोगों को जेल यातना का दण्ड भोगना पड़ा था। रोंगटे खड़े कर देने वाली असह्य जेलयातनाओं की एक लम्बी कहानी है। आर्यसमाज यातनाओं के भय से कभी भी सत्यपथ से विमुख नही हुआ है। अनेकों आर्यवीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी और अन्ततः निज़ाम को झुकना पड़ा और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में चलाया गया यह सत्याग्रह सफल हुआ। सार्वदेशिक-सभा के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप भारत सरकार ने उक्त आन्दोलन को स्वतन्त्रता आन्दोलन मान लिया है और इसके सत्याग्रहियों को स्वतन्त्रता सेनानी मानकर सम्मान पेंशन देना भी प्रारम्भ कर दिया है। अब तक सैकड़ों लोगों को केन्द्र तथा राज्य सरकारों से सम्मान पेंशन मिलने लगी है। बहुत सारे और सत्याग्रहियों को भी शीघ्र मिलने वाली है।

सार्वदेशिक सभा के पूज्य प्रधान जी ने सूचित किया है कि इस महान समारोह के लिए व्यापक तैयारियां प्रारम्भ हो चुकी हैं और एक प्रभावशाली स्वागत समिति का भी गठन कर दिया गया है। इसका उपकार्यालय- कमला निलायम् 14-3-178, गोषा महल स्टेडियम हैदराबाद (आ॰प्र॰) में खोल दिया गया है। उप कार्यालय का फोन नं॰ 43779 है। इस महोत्सव के अवसर पर वृहद् यज्ञ, अनेकों सम्मेलन तथा दक्षिण भारत में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए व्यापक कार्यक्रम बनाया जायगा। आर्य सत्याग्रह के स्वतन्त्रता सेनानियों को भी विशेष रूप से वहां आमन्त्रित किया जा रहा है।

अतः प्रदेश की सभी आर्यसमाजों/आर्य शिक्षण संस्थाओं से निवेदन है कि वे इस समारोह को सफल बनाने के लिए तन मन धन से सहयोग प्रदान करें।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ॰प्र॰, लखनऊ

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज । आर्य समाज ।।
————राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ, मार्गशीर्ष .१३ संवत,२०४६ वि.
२६ नवम्बर १९८९. दयानन्दाब्द.१६५
सृष्टि संवत् १९६०८५३०९०

सम्पादकीय

चुनाव के पश्चात्

आम चुनाव में विजेता प्रत्याशियों को अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए चुनाव के पूर्व जो कुछ कहा गया था, सुना गया था अथवा प्रचारित किया गया था उसका विश्लेषण न करते हुए हम इस विशालराष्ट्र की गरिमा और अस्मिता की रक्षा के लिए समर्पित सभी चुने हुए अपने जनप्रतिनिधियों का साधुवाद करते हैं और परमपिता-परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे हमारे सभी निर्वाचित प्रतिनिधियों को शक्ति प्रदान करें जिससे कि वे इस राष्ट्र को विश्व का महानतम राष्ट्र बनाने में समर्थ हो सकें। भारत विश्व का सबसे बड़ा जनतन्त्रात्मक देश है। यहाँ का प्रत्येक नागरिक चाहे वह किसी पूजापद्धति, रहन-सहन या संस्कृति का पक्षधर हो, मूलतः और अन्ततः भारतीय है। सभी के पूर्वज एक ही हैं और वे विरासत में हमें ऐसी अनमोल धरोहर दे गये हैं जिस पर चलकर हम अपना ही नहीं सारे विश्व का मार्गदर्शन कर सकते हैं।

अब मुख्य बात देश के प्रशासन को सुशासन बनाकर चलाने की है। जो स्वराज्य हमें इतने बलिदानों के पश्चात प्राप्त हुआ है उसे सु-राज्य में परिणित करना है। विगत चार दशकों में हम आर्थिक क्षेत्र में भले ही उन्नतशील बने हों किन्तु सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में हम अवनति की ओर अग्रसर हुए हैं। शासनतन्त्र में भ्रष्टाचार पनप रहा है, महँगाई अपनी चरमसीमा पर है, जान-माल की सुरक्षा की कोई गारण्टी नहीं है, समान नागरिक संहिता के अभाव में विभिन्न प्रचलित सामाजिक शैलियों में टकराव बढ़ता जा रहा है। अल्पसंख्यक बहुसंख्यक नाम की नई जातियाँ प्रशासन की ही देन हैं। उच्चस्तरीय प्रशासन की बागडोर सम्भालने वाले जननेताओं की छवि धूमिल होती जा रही है। दलाली और भ्रष्टाचार के उमड़ते हुए सैलाब ने भारतीय जनमानस में जनतन्त्र की आस्था के प्रति प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। अतः जनप्रतिनिधियों के कर्तव्य की परीक्षा कसौटी तो अब प्रारम्भ होगी। यदि वे अपने कार्यों एवं आचरण से भारत को सच्चे अर्थों में भारत बनाने में समर्थ होते हैं, इस देश से जन्मगत जातिप्रथा का उन्मूलन करने में स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, दलीय स्वार्थों के स्थान पर निःस्वार्थ भाव से राष्ट्र के प्रति समर्पित रहते हैं, किसी वर्गविशेष के तुष्टीकरण के स्थान पर समान नागरिक संहिता समाज में प्रचलित करा सकते हैं तथा समता, समानता, बन्धुता के आदर्श को प्रश्रय देते हुए सम्पूर्ण भारतीय समाज को एकाकार कर सकते हैं तो निःसन्देह हमारा यह गणतन्त्रात्मक चुनाव पूर्ण सफल माना जायेगा।

आर्यसमाज प्रारम्भ से ही मानवीय श्रेष्ठता का पक्षधर रहा है। उसका विश्वास है कि चुनाव जीतकर प्रशासनिक कुर्सियों पर बैठने के अतिरिक्त जनसेवा के और भी माध्यम हैं। हमारी सार्वदेशिक सभा ने त्रिसूत्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया है- {1} गोहत्याबन्दी {2} शराबबन्दी {3} अंग्रेजी हटाओ- यह तीनों कार्यक्रम शासकीय स्तर पर बिना किसी विरोध के कानून बनाकर तुरन्त प्रस्तुत किये जा सकते हैं। कोई जनप्रतिनिधि इसका विरोध नहीं करेगा क्योंकि इसमें भारतीय जनता की समृद्धि और कल्याण अन्तर्निहित है। इसके अतिरिक्त और भी कार्यक्रम हैं जो आर्यसमाज समय-समय पर प्रस्तुत करता रहेगा। हम आशा करते हैं हमारे जनप्रतिनिधि भारत की छवि को निरन्तर समुज्वल करने में सफल होंगे।

सा. आर्यवीरदल कानपुर का १३ वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 3 व 4 नवम्बर 89 को सार्वदेशिक आर्य वीरदल आर्यसमाज हरजेन्द्रनगर कानपुर का 13वाँ वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न हो गया। इस उत्सव में सुश्री डा0 आशारानी राय उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश और श्री डा0 हरपाल सिंह प्रधान आर्य उपप्रतिनिधि सभा कानपुर महानगर तथा क्षेत्रीय गणमान्य सदस्यों ने भाग लिया। डा0 आशा रानी राय ने आर्य वीरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्वतन्त्रता की लड़ाई में आर्य वीरों ने अहम् भूमिका निभाई थी। स्वामी दयानन्द के सपनों को साकार करना आप लोगों का धर्म है।

आर्य (हिन्दुओं) शीघ्र उठो !

• भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर
प्रधान नगर, आर्य समाज- जयपुर

हे आर्य{हिन्दुओं} शीघ्र उठो अपना अस्तित्व बचाने को।
जो तुम्हें मिटाना चाहते हैं, उनके षड्यन्त्र मिटाने को।।
हैं आर्यावर्त महान् देश भारत से हिन्दुस्तान बना।
इन्डिया बना फिर एक भाग खण्डित हो पाकिस्तान बना।।
अब ऐसा ही षड्यन्त्र है कि यह भारत पुनः विभाजित हो।
हो भारत में इस्लामी राज्य हिन्दुत्व आर्य निष्कासित हो।।
इस कार्य हेतु ईसाई- मुस्लिम राष्ट्रों से धन आता है।
जो हिन्दू धर्म का परिवर्तन व दंगे नित करवाता है।।
ये हिन्दू - जैन - सिक्ख - ईसाई - बौद्ध, मुसलमान सभी।
भारत माता की राम - कृष्ण व आर्यों की सन्तान सभी।।
ये भूल गये अपना स्वरूप - स्वधर्म और स्वबन्धुजन।
ऐसे भटके इन सबही के ये गये प्रबल विरोधी बन।।
भारत में रहकर काश्मीर में भारत मुर्दाबाद करें।
हिन्दू मन्दिर व सम्पत्ति को आग लगा बरबाद करें।।
इनके विरुद्ध सरकार कोई कठोर उपाय नहीं करती।
कहीं वोट न इनके चले जाय इसही कारण इनसे डरती।।
इनको प्रसन्न रखने के लिए इनकी सुविधा पर बल देती।
सुप्रीम कोर्ट तक के निर्णय व संविधान बदल देती।।
संस्कृत हिन्दी का मान घटा इंगलिश उर्दू पनपाई है।
जिसने बिहार, उत्तर प्रदेश में साम्प्रदायिक आग जलाई है।।
पंजाब की हिंसक राजनीति ने कितने जन मरवा डाले।
अरुणांचल, मेघालय आदि ईसाई राज्य बना डाले।।
हिन्दुत्व विरोधी राजनीति सरकार को लगती है प्यारी।
नेपाल से रिश्ते टूट रहे पर मुस्लिम राष्ट्रों से यारी।।
परिवार नियोजन के कारण हिन्दू संख्या ही घटती है।
पर मुस्लिम बीबी तो अनेक, बच्चे दस दस तक जनती है।।
यह हाल रहा तो दस वर्षों में हिन्दू अल्पसंख्यक होंगे।
ईसाई - मुस्लिम बहु संख्यक होकर हिन्दू भक्षक होंगे।।
तब यहां धर्म-निर्पेक्ष राज्य क्या रामकृष्ण का नाम रहेगा।
क्या वेद - शास्त्र जलने से बचेंगे. हिन्दू रक्त क्या नहीं बहेगा।।
क्या मन्दिर फिर न टूटेंगे, नारि सतीत्व क्या नहीं लुटेगा।
ऋषि दयानन्द, गाँधी, सुभाष व भारत का क्या नाम बचेगा।।
आर्यत्व रहा तो हिन्दू बचेगा, हिन्दू रहा स्वराज्य रहेगा।
यह भारत हिन्दू राष्ट्र बना तो निश्चय ही अविभाज्य रहेगा।।
"भास्कर" पुरुषार्थ किया ऐसा तो आर्य जाति बच जायेगी।
सच्ची श्रद्धांजलि देशभक्त वीरों की यही कहायेगी।।

धर्म "रिलीजन" नहीं

— श्री नरेन्द्र मोहन
सम्पादक, दैनिक जागरण, कानपुर

हिन्दू दर्शन अर्थात् भारतीय दर्शन में हम धर्म शब्द का प्रयोग जिन अर्थों में करते हैं अर्थ अंग्रेजी के रिलीजन शब्द के आशय से बिलकुल भिन्न है। धर्म का आशय यहाँ उपासना पद्धति से नहीं है, जबकि रिलीजन का आशय एक विशेष उपासना पद्धति से होता है। धर्म का अर्थ होता है वह गुण या लक्षण जिससे किसी वस्तु विशेष की वास्तविकता और उसके अस्तित्व का परिचय मिलता हो।

अतः यही मनुष्य का धर्म होना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य की प्रवृत्ति यही है कि वह दिव्य सुख की अनुभूति चाहता है और दिव्य बनना चाहता है, अतः वे कार्य भी अपनी जीवन पद्धति में शामिल करना चाहता है, जिससे मनुष्य अपने आपको दिव्यता के निकट ला सके, स्वयं को दिव्य बना सके, श्रेष्ठ गुणों को धारण कर सके, अपनी तामसिक और राजसिक प्रवृत्तियों पर नियन्त्रण कर सके। ऐसा सब कुछ करना मनुष्य का धर्म है। जो मनुष्य का धर्म है वह मानवमात्र का धर्म है। हिन्दुओं का धर्म, मुसलमानों का धर्म, ईसाइयों का धर्म या पारसियों का धर्म अलग-अलग नहीं हो सकते अर्थात् मानव धर्म का बटवारा नहीं हो सकता। मानव धर्म तो एक ही हो सकता है और वह समस्त विश्व ... समस्त स्थानों पर सभी मानवों ... लागू होता है और उसका उद्देश्य ... चाहिए समस्त वह कार्य तथा ...न जिसके द्वारा मानवमात्र का ...ण हो सके तथा प्रत्येक मनुष्य को अपनी समस्त प्रतिभाओं के विकास के समुचित अवसर बिना किसी भेदभाव के प्राप्त होते रहें। यही वजह है कि हिन्दू धर्म अर्थात् भारतीय दर्शन में एक प्रार्थना अनिवार्य मानी जाती है और वह प्रार्थना है "सर्वे भवन्तु-सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मकश्चिद्दुः खभाग भवेत"। भारतीय दार्शनिकों की मान्यता - आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्। यही धर्म है, लेकिन धर्म का यह वास्तविक अर्थ जीवन में उतारने के लिए आज कितने लोग तैयार हैं? जो अपने आपको हिन्दू मान रहे हैं वे भी तो इसे नहीं उतारना चाहते। अतः उनकी शिकायत जब अन्य धर्मावलम्बियों से होती है, तब उसमें कोई शक्ति नहीं रह जाती। किसी भी हिन्दू, किसी भी मुसलमान या किसी भी ईसाई को अब यह कहने का अधिकार नहीं है कि उसके पन्थ के अलावा अन्य पन्थों वाले अधार्मिक हैं, क्योंकि जो स्वयं धर्म का आचरण नहीं कर रहा है, वह दूसरों के लिए धार्मिक उपदेशक कैसे बन सकता है? धर्मोपदेशक बनने के लिए सबसे पहले स्वयं धर्म पर आचरण करना सीखना होगा।

बेदाग आधार शिला

यदि कोई व्यक्ति अन्धकार में भटक रहा हो तो इसका अर्थ यह नहीं हो जाता कि वह यह दावा करने लगे कि अन्धकार ही सत्य है। भले ही औसत हिन्दू अन्धकार में भटक रहा हो, लेकिन उसकी जो मौलिक मान्यताएं हैं, उसके जीवन दर्शन की जो आधार शिला है, जब हम उसकी खोज करते हैं, तब हम यह पाते हैं कि उस आधारशिला में उस मौलिक दर्शन में कहीं कोई दोष नहीं है। आज यदि कहीं दोष है तो वह यह है कि हम श्रेष्ठ दर्शन को अपनाने के लिए तैयार नहीं हैं और राजनीतिक कारणों से अपना यह श्रेष्ठ दर्शन एक प्रकार से विस्मृत कर देना चाहते हैं।

वास्तविकता से भटकाव

यह तो अब हमें जानकारी मिल गयी कि दोष कहाँ है पर दोष क्यों है इसका भी तो पता लगाना होगा। हिन्दुस्तान में रहने वाले लोग (जिसमें-हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, जैन, पारसी, बौद्ध, वैदिक सनातनी, आर्य समाजी और सभी शामिल हैं। जो भारतीय हैं और जिन्हें हिन्दू भी कहा जा सकता है, वे अपने इस वास्तविक स्वरूप को स्वीकार करने के लिए तैयार क्यों नहीं हैं? यह कहना गलत होगा कि केवल अल्पसंख्यकों की ओर से ही वास्तविकता को नकारा जा रहा है। सच बात तो यह है कि बहुसंख्यक भी एक प्रकार से सच्चाई से दूर भाग रहे हैं, क्योंकि अगर बहुसंख्यक वास्तव में अपने आपको सच्चा हिन्दू समझ रहे हैं, तो फिर उन्हें अन्य पन्थों को मानने वालों से कहीं कोई घृणा नहीं होनी चाहिए। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं हुआ कि कोई बहुसंख्यक अपने इन सिद्धान्तों से इतनी दूर चला जाये कि उससे उसका स्वयं का व्यक्तित्व ही नष्ट हो जाये, क्योंकि यह भी एक कुटिल चाल देश के विरुद्धविदेशी आक्रान्ताओं ने चली थी। सत्य को कसौटी पर एक सीमा तक ही परखा जा सकता है। उस सीमा के बाद यदि सत्य को तर्क की कसौटी पर परखने की चेष्टा की जाती है, तो वह सत्य किसी अनुभूति को प्रदान नहीं करता, बल्कि समाज में विश्रृंखलता उत्पन्न करने लगता है।

संकीर्णता की देन

सच बात तो यह है कि मनुष्य जब अत्यन्त संकीर्ण हो जाता है, तब वह स्वार्थी भी हो जाता है। इसे यूं भी कहा जा सकता है कि जब मनुष्य निरास्वार्थी हो जाता है, तब वह संकीर्ण भी हो जाता है और यह स्वार्थपरता और संकीर्णता उसमें एक ऐसे अहंकार को जन्म दे देती है, जो उसकी आँखों के सामने एक ऐसा पर्दा डाल देती है कि उसे सत्य और वास्तविकता दिखाई ही नहीं देती। जब हमारे मन और बुद्धि के उपकरण संकीर्णता, स्वार्थपरता और अहंकार से ग्रस्त हो जाते हैं, तो हमारे सम्पर्क में जो कुछ भी आता है, उसका हम सही विश्लेषण नहीं कर पाते और जिस रंग में हमारा मन और बुद्धि रंगी होती है, उसी रंग में रंगी हुई हमें विश्व की सभी वस्तुएं दिखायी देने लगती हैं। विश्व का सुख और सत्य की खोज इसी मन और बुद्धि की संरचना पर निर्भर है। हमारे अन्दर दोनों प्रकार के व्यक्तित्व निवास करते हैं- एक हमारा दैवी व्यक्तित्व और दूसरा हमारा मानवीय व्यक्तित्व। मानवीय व्यक्तित्व के सहारे हम इन्द्रियों के दास हो जाते हैं और दैवी व्यक्तित्व के सहारे हम इन्द्रियों के स्वामी। जब हमारा मन विकृत होता है, तब वह किसी भी वस्तु के वास्तविक स्वरूप को समझ नहीं पाता। कभी हम लोक वासना से ग्रस्त होते हैं और कभी देह वासना से और कभी शास्त्र वासना से सामान्यतः औसत व्यक्ति शरीर की कामनाओं से प्रेरित होकर मोह और लोभ का ही जीवन व्यतीत करता है। आज यही दशा हमारे भारतीय समाज की है।

हमारी जीवन पद्धति

एक बात और जो अत्यन्त आवश्यक है वह यह है कि जो सत्ता में बैठे हैं उन्हें इस बात की खोज करनी चाहिए कि भारतीय जीवन पद्धति भारतीय आदर्श और भारतीय संस्कृति जैसे शब्दों का जब हम प्रयोग करते हैं, तो हम इन शब्दों के माध्यम से किस प्रकार की भावनाओं विचारों और आशय की अभिव्यक्ति करना चाहते हैं यदि आप यह मान लेते हैं कि भारतीय जीवन पद्धति और हिन्दू जीवन पद्धति दोनों अलग हैं, तब कठिनाइयाँ उत्पन्न होने लगती हैं, पर क्या यह मान लेना सही है? कौन सी जीवन पद्धति हिन्दू पद्धति है और कौन सी जीवन पद्धति भारतीय पद्धति है, इस पर भी विचार कर लिया जाये। यदि मन्थन से यह बात सामने आ जाती है कि इस देश की सभी पद्धतियाँ हिन्दू जीवन पद्धति के अन्तर्गत आ जाती हैं, तो फिर इस बात को कहने में क्या आपत्ति कि इस देश की जीवन पद्धति हिन्दू जीवन पद्धति है।

धर्म ग्रन्थों का अर्थ

पुनः उपासना पद्धति और धार्मिक ग्रन्थों की ही बात को ले लिया जाये। एक विचार यह प्रचलित है कि रामायण, गीता, महाभारत, वेदपुराण हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थ हैं। यहाँ मैंने "हिन्दू" शब्द का प्रयोग उस संकीर्ण अर्थ में किया है, जिस अर्थ में आज राजनीतिज्ञों द्वारा "हिन्दू" का प्रयोग किया जाता है। चलिए मैंने मान लिया कि ये हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थ हैं, पर जरा इसे कसौटी पर कसिए। सच बात तो यह है कि भारत के किसी भी मूल ऋषि ने ऐसा नहीं कहा कि उसने किसी धर्म ग्रन्थ की रचना की है। उसने तो केवल अपनी उन अनुभूतियों को लिपिबद्ध या रचनाबद्ध किया है, जो अनुभूतियाँ उसे सत्य की खोज में प्राप्त हुईं। इन अनुभूतियों को कभी भी हमारे मूल ऋषियों ने कर्मकाण्ड से नहीं जोड़ा, क्योंकि धर्म का कर्मकाण्ड से कोई सम्बन्ध नहीं। शेष पृष्ठ ११ पर

धर्म

श्री विजेन्द्र शर्मा
6 हेण्डली कालेज, लीमिंग, पश्चिमी आस्ट्रेलिया

धर्म क्या है? किसे धर्म कहते हैं? धर्म के नाम से बहुत ही भ्रांतियां फैली हुई हैं।

धर्म और परमेश्वर के नाम पर जितने जघन्य अत्याचार जितना रक्तपात, जितनी निर्दयता के साथ हत्यायें, लोमहर्षक कांड, क्रूरता के व्यवहार हुए उतना अन्य किसी बात को लेकर नहीं किए गए।

धर्म और परमेश्वर के नाम पर लाखों, लाखों को मार डाला गया, माँ की गोद से दुध पीते बच्चों को छीन कर ऊपर फेंक कर उनको भालों और तलवारों की नोकों पर रोका गया, हजारों हजारों को जीवित जला डाला गया, प्राण भय से घरों के अन्दर छुपे लोगों को आग लगा कर भून डाला गया, स्त्रियों और बालिकाओं के साथ दुर्व्यवहार करके उनके स्तनों को काट-काट कर बड़ी निर्दयता के साथ मार डाला गया। धर्म के नाम पर ऐसे होने वाले अत्याचारों को इतिहास के पृष्ठ साक्षी देते हैं। केवल भारत में ही नहीं, विदेशों में भी धर्म के नाम पर बड़े बड़े अत्याचार हुए हैं।

एक समय फ्रांस की कुछ भूमि को अंग्रेजों ने अपने अधिकार में ले किया। फ्रांसीसियों ने अपनी भूमि को वापस लेने के लिए कई प्रयत्न किए परन्तु उनकी पराजय होती गई। तब जान डी आर्क नाम की वीरांगना फ्रांसीसियों का नेतृत्व करने लगी और अंग्रेज सैनिकों को उसने कई लड़ाइयों में पराजित किया। एक बार की लड़ाई में वह अंग्रेज सैनिकों के घेरे में आ गई और उसको और उसके साथियों को बन्दी बना कर इग्लेण्ड ले जाया गया। धर्म के ठेकेदारों ने कहा कि वह चुड़ैल है, उसे आग द्वारा जीवित जला डालो और उस वीरांगना देवी और उसके फ्रांसीसी साथी सिपाहियों को जीवित जला डाला गया।

धर्म के नाम पर भारत में क्या नहीं हुआ? न मालूम कितनी देवियों को "सती प्रथा" में जीवित जला डाला गया। एक मात्र "काफिर" होने के कारण लोगों को कत्ल कर दिया जाता था। एक समय हिन्दू होने के कारण जजिया कर देना पड़ता था।

क्या ये सब कुकृत्य धर्म थे? नहीं घोर अधर्म थे। धर्म तो कहता है "या वसुधा कुटुम्ब सम" सारे विश्व के लोग एक कुटुम्ब, एक परिवार के हैं और विश्व के सभी लोगों को मित्रवत् दृष्टि से देखो। यह है वैदिक धर्म की शिक्षा।

धर्म की व्याख्या बड़े बड़े विद्वानों, तपस्वियों, ऋषियों, महात्माओं ने की है। धर्म की अति उत्तम व्याख्या मनु महाराज ने मनुस्मृति में की है जिसमें उन्होंने धर्म की व्याख्या में धर्म के दस लक्षण दिए हैं। गीता में भी धर्म की व्याख्या है। धर्म का विवरण देते हुए स्वामी दयानन्द जी ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है- "धर्म तो पक्षपातरहित न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा का पालन, परोपकार, सत्यभाषणादि सब आश्रमियों का अर्थात् सब मनुष्यमात्र का एक ही है" स्वामीजी के इन शब्दों में धर्म का पूरा विवरण निहित है।

धर्म की मेरी एक अति साधारण व्याख्या है। मैं धर्म को कर्तव्य और कर्तव्य को धर्म मानता हूं। कर्तव्य क्या है? हमें जो करना चाहिए वह कर्तव्य है। अगर हम वह करते हैं जो हमें करना चाहिए तब तो हम धर्म करते हैं और अगर हम वह करते हैं जो नहीं करना चाहिए तब हम अधर्म करते हैं। हम प्रतिपल प्रति क्षण कुछ न कुछ सोचते हैं, कुछ न कुछ करते हैं, कुछ न कुछ बोलते हैं और कुछ न कुछ देखते हैं। अगर हम वह बोलते हैं जो हमें बोलना चाहिए, वह करते हैं जो हमें करना चाहिए, वह सोचते हैं जो हमें सोचना चाहिए और वह देखते हैं जो हमें देखना चाहिए, तब तो हम धर्म कार्य में रत हैं। इनके विपरीत कर्म अधर्म हैं।

कुछ लोग मन्दिर जाना और हवन यज्ञ में भाग लेने को धर्म मानते हैं। मन्दिर जाना और हवन यज्ञ में भाग लेना धर्म का एक भाग है सम्पूर्ण धर्म नहीं है। धर्म के अनेक अंश है। जिस प्रकार हमारे शरीर के अनेक अंग हैं और सब मिल कर हमारा पूरा शरीर बनता है उसी प्रकार धर्म के ही अनेक भाग हैं और वे सब मिल कर धर्म भी बनता है।

भूखे को भोजन देना धर्म है, प्यासे को पानी देना धर्म है, बेवस्त्र को वस्त्र देना धर्म है। हमारे शास्त्रों की बात को सन्त याकूब ने अत्यन्त ही उत्तम ढंग से कही है। वे कहते हैं "हे मूर्ख मनुष्य तू परमेश्वर परमेश्वर क्या चिल्लाता है, तू ने अपने जीवन में किसी भूखे को भोजन न दिया, किसी प्यासे को पानी न दिया, किसी बेवस्त्र को वस्त्र न दिया, तेरा परमेश्वर परमेश्वर चिल्लाना व्यर्थ है।

हमें यह देखना चाहिए कि हमारे पास पड़ोस में कोई भूखा, प्यासा, बेवस्त्र, लाचार, बेसहारा, अभाव से दु:खी, संकट में, कष्ट में, रोगी, सेवा की आवश्यकता में, विधवा, अनाथ, निराश्रय तो नहीं है। और अगर है तब यथा-सम्भव धर्म के लिए, शुभ कर्म के नाम पर उसके लिए कुछ करिए नहीं तो मन्दिर जाना, हवन यज्ञ करना, परमेश्वर का नाम जपना, धर्म धर्म चिल्लाना किसी महत्व का नहीं हुआ।

अगर हमारे घरों में दिन में एक बार, या एक सप्ताह में दो तीन बार केवल एक मुट्ठी चावल या अन्य कोई पदार्थ, आर्यसमाज और धर्म के नाम पर, शुभ कर्म के नाम पर अलग निकाल कर रख दिया जाए और सप्ताह में एक दिन आर्यसमाज के सत्संग अथवा हवन यज्ञ के दिन आर्यसमाज के मन्दिर में लाकर दीन दु:खियों को बुला कर हवन यज्ञ के बाद, आर्यसमाज के नाम पर उससे कहें कि माता जी, या बाबाजी, या विधवा बहिन, आर्यसमाज आपके दु:ख को समझता है यह सहायता आर्यसमाज की ओर से स्वीकार करिए। इससे उसको सहारा मिलेगा, आर्यसमाज का कितना प्रचार होगा, आप कितना धर्म व पुण्य का काम करेंगे यह विचार करिए।

इसी बात को सन्त तुकड़ो दासजी ने गाया है "मन्दिर मन्दिर क्या फिरता है पहिले सेवा कर गरीबों की, पहिले सेवा कर गरीबों की।" और दीन दु:खियों की सहायत्ता करना भी धर्म का ही एक अंग है। महाकवि तुलसी दास जी ने कहा है- "तुलसी जग में आय के सबसे मिलिए धाय, न जाने किस रुप में नारायण मिल जाय। इसका यह अर्थ नहीं कि आप को किसी मनुष्य के रुप में परमेश्वर खड़े मिल जाएंगे। किसी भी दीन दु:खी की सेवा के द्वारा अर्थात् भले कर्मो के द्वारा आप को प्रभु का मिलन हो सकता है।

धर्म के सैकड़ों अंश हैं। सत्य बोलना, धैर्य धारण करना, दूसरों की साधारण भूलों को क्षमा करना, क्रोध न करना, अपने शरीर को शौच क्रिया के द्वारा शुद्ध रखना, अपने इन्द्रियों को वश में रखना, स्वाध्याय के द्वारा अपने ज्ञान की वृद्धि करना, रोगियों और अभावग्रस्तों की सेवा करना, वेदों का पढ़ना पढ़ाना, वैदिक साहित्य का वितरण करना कराना, शिक्षा देना दिलाना आदि धर्म के अंग हैं।

धर्म को अन्य श्रेणियों में भी विभाजित किया गया है। स्वधर्म- हमें जो अपने और अपने परिवार के लिए करना चाहिए वह स्वधर्म है। उदाहरण के लिए हमें अपने और अपने परिवार के लिए धन उपार्जन करना चाहिए। कमाओ, खूब धन उपार्जन करो परन्तु उचित ढंग से और व्यय भी उचित ढंग से करो। निर्धन की सहायता करो। अपने और अपने परिवार के लिए मकान बनाओ। अपने बच्चों को पढ़ा लिखा कर विद्वान् बनाओ। यह स्वधर्म है।

देश धर्म वह है जो हमें अपने देश के लिए करना चाहिए। अपने देश की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। अगर कोई शत्रु देश पर आक्रमण करता है तब देश की रक्षा करना हमारा धर्म है। देश के हित में काम करना हमारा धर्म है। इस समय भारत के शत्रु कश्मीर को भारत से अलग करने के लिए हलचल मचा रहे हैं। उग्रवादी सिख खालिस्तान का स्वप्न देखते हुए निर्दोष लोगों की हत्या कर रहे हैं। उत्तर पूरब में इसाईस्तान बनाने के लिए उपद्रव कर रहे हैं। इन सभी षड्यन्त्रों को विफल बनाना धर्म है।

इसी तरह समाज धर्म, मानव धर्म आदि में धर्म विभक्त है। ये सब मिल कर धर्म बनता है।

कर्तव्य ही धर्म है। कैसे कर्म? अच्छे कर्म। कर्म को ही हमारे शास्त्रों ने प्रधानता दी है। रामायण ने भी कहा है-"कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करे सो तस फल चाखा" और इसी बात को शास्त्र कहते हैं- अवश्यमेव-भोक्तव्यम् कृत कर्म शुभाशुभम् "हमारे द्वारा किए बुरे कर्म क्षमा नहीं होते" बुरे कर्मो के फल कुछ इसी जन्म में, कुछ अगले जन्म में, जन्मजन्मान्तर में भोगना ही पड़ेगा। सावधान, खोटेकर्मो के परिणाम अच्छे न होंगे। अपना भविष्य सोचिए। □

हिन्दुस्तानी मुसलमानों की रगों में भी राम, कृष्ण का खून बह रहा है

—श्री मुख्तार अब्बास नकवी

"राष्ट्रवादी युवा नेता मुख्तार अब्बास नकवी से अनेक ज्वलंत प्रश्नों पर भेटवार्ता :

श्री नकवी ने बताया कि सन्-1984 में उन्होंने भारतीय मुस्लिम युवा सम्मेलन का कार्यभार सम्भाला। इसके पहले इस संगठन को महाराष्ट्र के राष्ट्रवादी नेता हुसैन दलवई और फौजिया सुर्वे जैसे लोग चला रहे थे। नकवी साहब ने बताया कि इसके पहले वे ज०पी० मूवमेंट में सक्रिय रहे। मेरे {नकवी} मुस्लिम युवा सम्मेलन का कार्यभार सम्भालते ही शाहबानों केस तथा मुस्लिम महिला विधेयक इत्यादि की शुरुआत हुई। मुसलमानों को राष्ट्रीय धारा से काटने का षडयन्त्र चल पड़ा। इसका विरोध हर स्तर पर किया गया। कठमुल्लाओं ने भारतीय समाज हमें जो स्थिति पैदा कर रखी थी, उसका डटकर मुकाबला किया गया। परन्तु सरकार तथा राजनैतिक पार्टियां जिस मुस्लिम कट्टरपन्थियों के तुष्टिकरण की नीति पर चल रही थीं उसके चलते मुस्लिम महिला विधेयक संसद में सरकार ने पेश किया और पास भी करा लिया। कठमुल्लाओं के हौसले बढ़े। सन्-1947 की स्थिति जिसमें देश टूटा था, पुनः पैदा हुई। राजनीतिक दल {अपने को सैक्यूलर कहने वाले} इस षड्यन्त्र के खिलाफ बोल ही नहीं रहे थे। दूसरी तरफ सरकार लोगों की पीठ थपथपा रही थी। ...नों के केस में कठमुल्लाओं की जीत को हमने हार नहीं माना वरन् एक चुनौती माना। दिनांक- 3 फरवरी, 1986 को दिल्ली में विभिन्न प्रगतिशील मुस्लिम संगठनों की एक बैठक बुलाई। इसी में 16 फरवरी, 1986 को लखनऊ में राष्ट्रवादी मुस्लिम सम्मेलन की घोषणा की।

लखनऊ सम्मेलन सफल रहा। यहीं से कठमुल्लाओं के खिलाफ सड़कों पर विरोध प्रारम्भ हो गया। हम लोगों को काफिर करार कर दिया गया, फतवे जारी किए गए, हमले हुए जिससे कि हम उनके राष्ट्र विरोधी मंसूबों को तोड़ने का कार्य समाप्त करें। परन्तु वे हम लोगों को अपने रास्ते से हटा नहीं पाए। इस समय हमारे संगठन में 4500 सक्रिय सदस्य तथा कुल 10500 सदस्य हो गए हैं। पहले यह राष्ट्रवादी मुसलमानों का संगठन महाराष्ट्र, गुजरात तथा कर्नाटक के लोगों तक ही सीमित था, हमने उत्तर भारत में इस संगठन को विस्तार दिया।

प्रश्न : आजादी के बाद आशा की गई थी कि अलगाववादी मुसलमानों के पाकिस्तान चले जाने से हिन्दू-मुसलमान स्नेह और सौहार्द से रहेंगे, परन्तु बाद में इस स्थिति में परिवर्तन क्यों आ गया? सरकार ने राष्ट्रवादी मुसलमानों की उपेक्षा और कट्टरपन्थियों को महत्व दिया, पर ऐसा क्यों हुआ?

उत्तर : इसके लिए मैं पं० जवाहरलाल-नेहरू से लेकर श्रीमती इन्दिरागाँधी तथा राजीव गाँधी से लेकर तमाम विपक्षी नेताओं की उन नीतियों को मानता हूँ, जिनके चलते मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति पली बढ़ी। ये तमाम लोग आजादी के बाद भी जिस कारण देश टूटा यानि कि मुस्लिम सम्प्रदायवाद के खिलाफ आवाज उठाने में चूके। जो राष्ट्रवादी मुसलमान थे, उनके कुचलने का काम किया गया। सरकार साम्प्रदायिक मुस्लिम नेताओं के साथ अपने को जोड़कर धर्मनिरपेक्ष का तमगा लगाना पसन्द करती थी तथा राष्ट्रवादियों से दूर रहती थी। यही वजह थी कि राष्ट्रवादियों की पकड़ आम लोगों तक नहीं हो पायी और कट्टरपन्थी आम मुसलमानों को अपने चंगुल में फांसते गए। आम मुसलमान राष्ट्रवादी सोच का न होकर अलगाववादी बनता गया।

प्रश्न : क्या कारण है कि आप जैसे-सूझ-बूझ वाले और भाई-चारा निभाने वाले नेता मुसलमानों के नेता नहीं माने जाते?

उत्तर : ईमानदारी की बात यह है कि आम मुसलमानों पर पकड़ रही अलगाववादी और राष्ट्रद्रोही मुसलमानों की। आम मुसलमान हमारी सोच का नहीं है, वरन् वह बुखारी और शहाबुद्दीन के साथ है। सरकार भी वोट की लालच में कट्टरपंथियों के साथ अपना स्वर मिलाती है। यह एक गन्दी प्रवृत्ति है। मेरा मानना है कि जो राजनैतिक पार्टियां वोट और राष्ट्र को एक तराजू से तौलती हैं तथा राष्ट्र की परवाह किए बिना वोट की तरफ भागती हैं, वे मुल्क को एक-एक बार पुनः किसी मुगल या अंग्रेज को सुपुर्द करने की कोशिश कर रही हैं।

प्रश्न : मुस्लिम समुदाय का वह सुलझे दृष्टिकोण वाला वर्ग जो भारतीय समाज में समरस होकर एक होना चाहता है, उसके प्रति सरकार, मुस्लिम और गैरमुस्लिम समुदाय का बर्ताव कैसा रहता है।

उत्तर : सरकार तो राजनैतिक लोगों द्वारा चलायी जाती है। अतः उसका बर्ताव तो उपेक्षापूर्ण रहेगा ही क्योंकि वह वोटों की तरफ ही दृष्टि रखती है। मुस्लिम समुदाय के बर्ताव के विषय में मैं कहना चाहता हूँ कि आए मुसलमान इस समय पागलपन की स्थिति में है, वह ऐसे लोगों के चंगुल में फंसा हुआ है जो उसे राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल नहीं होने देता। 80 प्रतिशत मुसलमान मेरे जैसे लोगों को अपना दुश्मन मानता है। मेरे अभियान के लोगों में समझ बढ़ रही है, लोग सच्चाई को भी स्वीकार कर रहे हैं।

गैर-मुस्लिम समुदाय का आम आदमी इस तरह की सोच के लोगों को इज्जत देता है और ऐसा मानता है कि देश में मुसलमानों का नेतृत्व राष्ट्रवादियों के हाथ में होना चाहिए। यही राष्ट्रहित में है। परन्तु कुछ हिन्दू नेताओं का रुख ऐसा नहीं है बल्कि वह पता नहीं किन कारणों से ऐसे राष्ट्रवादी सोच के लोगों को गले लगाने में घबड़ाते हैं। हालांकि यह थोड़े ही लोग हैं।

प्रश्न : हाजी मस्तान जैसे तस्कर भी आप पर कड़ी नजर रखने की बात कहते हैं, क्योंकि उनकी दृष्टि में आप मुस्लिम विरोधी हैं, ऐसा क्यों?

उत्तर : हमारे समुदाय का दुर्भाग्य ही है कि इस समुदाय का नेतृत्व कभी हाजी मस्तान जैसे तस्कर के हाथ में रहा, कभी बुखारी जैसे साम्प्रदायिक, उग्रवादी के हाथ में रहा, कभी बनातवाला जैसे अरब देशों के एजेण्ट के हाथों में रहा। उन्हें लग रहा है कि यदि वे हमारे ऊपर नजर नहीं रखेंगे तथा हम आम मुसलमानों को यह समझाने में कामयाब हो गए {जिसके कि असार हैं} कि ये लोग तुमको नुकसान पहुँचा रहे हैं, तुम्हारा अहित कर रहे हैं, तुम्हें राष्ट्रीय मुख्यधारा से काट रहे हैं- तो मुसलमानों ने अगर इन लोगों के साथ बगावत कर दी तो इनकी रोजी रोटी खतरे में पड़ सकती है, इसीलिए ये हमारे जैसे लोगों पर नजर रखने की बात करते हैं, डराने की बात करते हैं, हत्या करने की बात करते हैं। लेकिन अब हम लोग इस राय के हो गए हैं कि हम लोगों पर नजर रखने वाले लोग जिस दिन भी हमारे ऊपर नजर उठाएंगे, उस दिन पूरे देश के बहुत बड़े वर्ग के लोग उनके ऊपर नजर उठा लेने को तैयार हैं, जिसमें बहुसंख्यक एवं अल्पसंख्यक दोनों शामिल हैं।

प्रश्न : कुछ लोग **श्रीराम** जन्मभूमि को राष्ट्रीय स्मारक बनाने की बात कहते हैं। क्या यह बात हास्यास्पद नहीं है?

उत्तर : जो लोग श्रीराम जन्मभूमि को राष्ट्रीय स्मारक बनाने की बात करते हैं, उनमें विशेषकर वे लोग हैं, जो अपने को सैक्यूलर कहते हैं तथा जिनका धर्म पर विश्वास नहीं है, जैसे कि कम्यूनिस्ट। श्रीराम-जन्मभूमि को स्मारक बनाने

शेष पृष्ठ 30 पर

आवश्यकता है राजार्य सभा की
महर्षि का त्रिशूल

— विश्वम्भरदेव शास्त्री
देवबन्द (सहारनपुर)

आज भारत की राजनैतिक बिगड़ती परिस्थितियों से प्रतीत होता है कि एक दिन पुनः भयंकर विस्फोट होगा। राजनैतिक अस्थिरता के कारण देश में अनैतिकता भ्रष्टाचार और अविश्वास के कारण हिंसा की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है। ऐसी दशा में जो लोग भारतभूमि पर अधिकार जमाने का स्वप्न देख रहे थे। उनकी बनती जा रही है। दूर नहीं जाते अंग्रेजों ने अपने शासनकाल में क्या नहीं किया। उस काल में- भारतीयों में परस्पर फूट, ब्रह्मचर्य का अभाव, विद्याहीनता, बालविवाह, विषयासक्ति, मिथ्या भाषणादि कुलक्षण तथा वेदविद्या का प्रचार न होने पर कुकर्म व्याप्त हो रहे थे। इस दशा को देख गुरु बृजानन्द ने संकल्प किया कि अंग्रेजी राज से कैसे छुटकारा मिले। अपने विचारों का शिष्य पाकर वे गद्गद हो गये और सब विद्यायें सिखाकर, भारत को अधोगति से उठाने का आदेश दिया कि वेदज्ञान ज्योति से प्रकाशित करो। महर्षि ने जनमानस को टटोला और वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार प्रारम्भ कर दिया। आर्यसमाज की स्थापना कर त्रिवेणी, का तीर्थ बताया। सत्यार्थ प्रकाश षष्ठसमुल्लास जिसको वर्तमान आर्यसमाज भूलता जा रहा है- उसमें समयानुसार "त्रीणि राजानां विदथे पुरूणि परिविश्वानि भूषथः सदांसि" में स्पष्ट किया है तीनसभा" विद्यार्य, धर्मार्य तथा राजार्यसभा" यही त्रिवेणी है आर्यसमाज ने जिसको उत्तराधिकार में पाया।

उस समय विद्या और धर्म के प्रचार द्वारा अंग्रेजों के पाखण्डों और दुर्नीति का भण्डाफोड़ किया। कितने शास्त्रार्थ होते थे पहले परन्तु स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात विदेशी लोगों ने शास्त्रार्थ करने तो दिये छोड़ और राजनीति पर उतर पड़े। आर्यसमाज ने धर्म और विद्या का जो प्रचार किया उसकी रक्षा करना अब बिना तृतीय शूल के असम्भव है। जब सभी दलों में आर्य समाज के विद्वान् राजनीतिज्ञ बंट गये और वहां जाकर अपने सिद्धान्तों की होली जलते देखकर भी कुछ साहस नहीं दिखा सकते तो राजनीति बिगड़ेगी ही। इस समय विदेशी राजनीतिज्ञ मैकियावेली का बोलबाला भारत वर्ष में हो रहा है। जिसका लक्ष्य था ऊपर से साधुवेश बनाये रखो और समय आने पर धर्म-अधर्म कुछ न देख कर तुरन्त दूसरों को दबोच लो। सदा मखमली दस्ताने में फौलाद का पन्जा रखो"।

पाठक वृन्द देखें क्या स्वतन्त्रता से पूर्व और अब 42 वर्ष के पश्चात यही नहीं हो रहा है। हमारे महापुरुषों ने नैतिकता का पाठ पढ़ाकर, अपने बलिदान देकर जो स्वतन्त्रता दिलाई क्या उसको हम अनैतिकता की अग्नि में नहीं झोंक रहे हैं। केवल भौतिकवाद का नारा लगाने से भारत नहीं बचेगा — भारत बचेगा कूटनीतिज्ञ चाणक्य की नीति से जिसने घोषणा की थी "शठे-शाठ्यं समाचरेत्" आचार्य चाणक्य धर्मात्मा, साधु पुरुष और भारतीय संस्कृति का पोषक था- उसकी कूटनीति दुष्ट शत्रु के लिये थी- साधु पुरुष के साथ कूटनीति को वह पाप समझता था। अत्याचार अनाचार, को भारतीय सहन नहीं कर सकते- जब विपत्ति सिर आ ही जाय तब उसको दूर करना भारतवासी जानते हैं। इसके त्रिशूल की आवश्यकता होती है। आज राजशक्ति से पुनः टक्कर लेनी है इस लिये राजार्यसभा की भावना को प्रबल बना कर चलने का समय आ गया है। "अभयमित्राद् भयं मित्रात् से मित्र और अमित्र को पहचानो और सावधान हो जाओ।

अहिंसा के सिद्धान्त को वही पालन कर सकते हैं जिनमें आत्मशक्ति होती है। भारतीय संस्कृति इसी की शिक्षा देती है। हिंसा में रत इसके महत्व को नहीं जान सकते। गान्धी जी ने अहिंसा का प्रयोग राजनीति में किया जो उनके लिये अमोघ अस्त्र सिद्ध हुआ। वह सिद्धान्त उन्हीं के साथ चला गया।

हमने संविधान बनाया और पन्थ निरपेक्ष राज्य की कल्पना की। यह अनेक मत मतान्तरों का घोसला है अतः प्रजातन्त्र राज्य के लिये यह होना भी उचित है। कुछ समय पश्चात् जब अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क बढ़ा तो देखा कि इस प्रकार की व्यवस्था अन्यत्र नहीं है। संसार के विभिन्न देश किसी न किसी सम्प्रदाय या दल से जुड़े हैं। वे अपने सम्प्रदाय का प्रचार करने में लगे हैं। व्यापारी देश हैं उनको अपना व्यापार बढ़ाने के लिये अपने मत वालों की आवश्यकता पड़ेगी जिसके लिये वे धन और जनशक्ति भारत जैसे देश में अपनी शक्ति बढ़ाने में लगा रहे हैं। उनको भारत जैसे शान्त और धनी देश कौन सा मिलेगा। अतः इसकी उन्नति में बाधक बन रहे हैं। पराधीनता में भारत कंगाल बन गया था पुनः बंटवारे में उदारता दिखाकर निर्धन बना। अब किस प्रकार देश का पालन पोषण हो अतः दूसरे धनी देशों से ऋण लेना प्रारम्भ हो गया। ऋणी व्यक्ति सदा दबा रहता है। 1962 तक अमेरिका के 5 अरब डालर के ऋणी हो गये। इस समय एक लाख-करोड़ का ऋणी है। धर्म निर्पेक्ष का मनमाना अर्थ लगा कर 1953 में विलियम फ्रेंक ने अमेरिका से घोषणा की "अमेरिका के लोगों अपनी सफलता हेतु भारत में पादरियों की सेना भेजो जो भारत के बूढ़े हिन्दू धर्म की लाश पर ईसाई धर्म का झण्डा गाड़ कर भारत पर राजनैतिक अधिकार जमा सके। वे अपने लक्ष्य पर बढ़ते जा रहे हैं। 1980 तक भारत के सभी प्रान्तों में विदेशी मिशनरियों की संख्या जो पंजीकृत है लगभग 4500 से अधिक है। क्या ये लोग भारतमाता को भारतीयों की भांति समझेंगे इसमें सन्देह है। जो भी ईसाई बन जाता है वह शराब पीना और मांस खाने को पाप नहीं समझता। अरब से जब धन बढ़ने लगा तब वे भी पूर्व की ओर दौड़ने लगे वहां कोई भी देश धर्मनिर्पेक्ष नहीं- वे भी अपने धर्म का प्रचार करने भारत को लक्ष्य बनाने लगे। बंटवारे के पश्चात शान्ति से मिल जुल कर रहना सीख रहे थे- परन्तु 1973 में कुवेत से यह प्रकाशित हुआ इस समय यदि प्रयास किया जाय तो भारत के समस्त हरिजनों को मुसलमान बनाकर यहाँ मुसलमानों की संख्या बढ़ाई जाय और राजनीति पर अधिकार जमाया जाय। मीनाक्षीपुरम की घटना अभी पुरानी नहीं हुई। हमें ईसाई या मुस्लिम बन्धुओं से कोई मतभेद नहीं- परन्तु हमारे नेताओं ने जिस संस्कृति की रक्षा के लिये अपने बलिदान दिये-क्या वे सुरक्षित रह सकेंगे। राम राज्य का स्वप्न सफल होगा।

आर्यसमाज ने धर्म और विद्या का प्रचार किया भारतीय संस्कृति को जीवित रखने का प्रयास किया। शास्त्रार्थ और सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। किन्तु अब सब खेल राजनीति का हो रहा है। आर्यसमाज ने तीन महाभियान घोषित किये हैं- इन तीन अभियानों के लिये शंकर के त्रिशूलों की आवश्यकता है। हमारी राजनीति धर्मप्रधान है जिसका लक्ष्य मानवमात्र का कल्याण है। भारतीय संस्कृति के जिन मूलतत्वों को पराधीनता में खो चुके थे उन्हीं की प्राप्ति चाहिये।

अहिंसा वादी देश में मांसाहारियों की बढ़ती संख्या निम्न लिखित से ज्ञात हो जावेंगे। बम्बई और कलकत्ते में मशीनों से पशु काटे ही जाते हैं। गांधी की जय कहने वाली सरकार- कसाईयों की मांगों को मानते हुए बड़े-बड़े कसाई खाने खुलवाने की स्वी[illegible] दिये जा रही है। बहुजन [illegible] बरेली- इज्जतनगर में 50 [illegible] मध्यप्रदेश खण्डवा में 244 हेक्टेयर भूमि पर, कर्नाटक में सात करोड़ लगाकर जिसमें प्रतिदिन एक हजार पशुबध होगा, जोधपुर में करोड़ों रुपये लगाकर कसाईखाना खोलने की स्वीकृति हो गई। ऐसी स्थिति में अहिंसा के पुजारी- राम, कृष्ण, गौतम, महावीर, गुरूनानक, दयानन्द, तिलक और महात्मागांधी के प्रति श्रद्धांजलि कैसी होगी? आर्यसमाज गौहत्या बन्दी के लिये क्या साधन अपनाये और कैसे? मद्य निषेध का प्रचार कागजों पर बहुत हो रहा है, किन्तु इसका प्रचार इतना व्यापक हो रहा है कि विवाह, आदि की दावतों में यदि शराब नहीं तो कुछ नहीं। गांव-गांव में ठेके खुले हैं। सरकार को ठेके निलामी के समय करोड़ों रुपया मिल जाता है। उन्हें क्या लेना-देना जनहानि से। गरीब नष्ट होने जा रहे हैं। इस विषपान से- चुनाव के समय तो पीने वालों का त्यौहार मनाया जाता है। राजनीति को प्रबल बनाने वाली शराब कैसे हट सकती है देश से। नवयुवक नानाप्रकार का नशा करने लगे हैं कैसे शराब के ठेके बन्द करायेगी आर्यसमाज- क्या इस राजनीति में सहयोग देने वाली वस्तु को सरकार अपने हाथ से बन्द कर देगी- अब मोहनदास कर्मचन्द गांधी का युग बहुत पुराना हो गया है?

शेष पृष्ठ ७ पर

ऋषि दयानन्द के अनुसार दलित समस्या का समाधान

— आ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री - अमेठी

हरिजनों का मन्दिर प्रवेश
गतांक से आगे....

जब तक सभी वर्गों के विद्यार्थियों को समान सुविधाएँ देकर, समान पाठ्यक्रम में प्रतिद्वन्दिता नहीं होती तब तक इसका समाधान नहीं होगा? क्यों नहीं हम शिक्षा को पूरी तरह सरकारी नियन्त्रण और विद्यार्थियों के भोजन, शिक्षण, आवास की जिम्मेदारी राज्य द्वारा उठाये जाने के लिए आन्दोलन करें? क्योंकि जब तक समान स्थिति में स्वस्थ प्रतिद्वन्दिता नहीं होगी तब तक यह समस्या रहेगी ही। एक बात और है जिससे हम आँखें नहीं मूँद सकते वह यह कि आज यदि विधानसभा लोकसभा या सरकारी नौकरियों में अनुसूचित जातियों का आरक्षण बन्द कर दिया जाए तो क्या अनुसूचित जाति-जनजाति के वर्तमान सदस्यों का दसवाँ हिस्सा भी चुनकर लोकसभा, विधानसभा या सरकारी नौकरियों में आ सकेगा? इसका एक ही उत्तर है- नहीं। क्योंकि देश में सभी जगह प्रशासन, राजनीति, शिक्षा में जातिवाद हावी है।

{च} सरकार क्या करे?

यदि हम राज्य को विद्यार्थियों की सभी आवश्यकताएँ:- आवास,भोजन

{3} आर्यसमाज की प्रत्येक इकाई से लेकर शिरोमणि सभा तक के अधिकारी वे ही बनाये जाएं, जिन्होंने अद्यतन प्रचलित विषमतामूलक जाति-पाँति के आधार पर अपनी सन्तानों का विवाह न किया हो। कम से कम सार्वदेशिक सभा प्रान्तीय सभाओं तथा जनपदीय सभाओं के अधिकारियों के लिए इस नियम का कड़ाई से पालन करना अपरिहार्य हो।

{4} आर्यसमाज के सदस्यों के लिए जातिगत आधार पर बने संस्थाओं में सदस्यता का न होना अनिवार्य किया जाए।

{5} आर्य पत्र-पत्रिकाओं में जातीय आधार पर विवाह का विज्ञापन प्रकाशित करना निषिद्ध हो।

{6} प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएँ अपने मुख-पत्रों में अन्तर्जातीय विवाह का विज्ञापन निःशुल्क या न्यून शुल्क लेकर प्रकाशित करें।

{7} प्रत्येक प्रान्तीय सभाओं में एक पृथक् अन्तर्जातीय विवाह का विभाग खोला जाए और उसके कार्यक्रम पर विशेष बल दिया जाए।

{8} आर्यसमाज अपने निष्ठावान् प्रचारकों तथा सदस्यों द्वारा एक प्रबल जनान्दोलन जाति-पाँति तथा जन्मगत वर्णाभिमान के विरोध में छेड़ें और इस सत्कार्य में उन सभी संस्थाओं तथा व्यक्तियों से सहयोग ले, जो जन्मगत मूर्खता व धूर्तता पूर्ण वर्ण या जाति-व्यवस्था में आस्था न रखते हों।

तथा शिक्षण का व्यय उठाने के लिए बाध्य नहीं कर सकते तो तात्कालिक तौर पर इस समस्या के समाधान की दिशा में सरकार को निम्न तीन पग उठाने के लिए बाध्य कर सकते हैं-

{1} जाति सूचक उपाधियों का लिखा जाना गैर कानूनी घोषित किया जाए।

{2} जातिवादी शिक्षण संस्थाओं {कायस्था, यादव, भूमिहार, ब्राह्मण आदि के नाम पर} तथा जातीय सभाओं {जायसवाल सभा, जाट सभा, गुर्जर-सभा, भूमिहार संघ आदि} को प्रतिबन्धित किया जाए। जातिवादी शिक्षण संस्थाओं के नाम बदल दिये जाएँ। उत्तर प्रदेश में श्री चरणसिंह ने एक अध्यादेश द्वारा जातिपरक शिक्षण संस्थाओं के नाम बदल दिये थे।

{3} अन्तर्जातीय विवाह करने वाले युवक और युवतियों को वाँछित योग्यताओं के आधार पर सरकारी नौकरियों में आरक्षण दिया जाए या प्राथमिकता दी जाए।

{छ} आर्यसमाज में रूढ़िवाद : पहले इसे हटाना होगा:-

दलित समस्याओं तथा आरक्षण के सवाल पर ईमानदारी से प्रयास और आन्दोलन से पूर्व तथा महर्षि दयानन्द के वैदिक वर्ण व्यवस्थापरक विचारों को प्रतिष्ठित करने के लिए आर्यसमाज में वर्तमान रूढ़िवाद को पहले हटाना होगा- अर्थात् आर्यसमाज को निम्न कार्यक्रम संचालित करने होंगे-

{1} आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य तथा अधिकारी वर्ग अपने नाम के आगे या पीछे वर्तमान जाति-सूचक उपाधियों को लिखना छोड़ दें। इस सम्बन्ध में आर्यसमाज की प्रान्तीय तथा सर्वोच्च संस्थाएँ आदेश जारी करें।

{2} आर्यसमाज के सभी पत्र-पत्रिकाओं में किसी भी व्यक्ति की जातिसूचक उपाधि न छापी जाए। ज्ञातव्य है कि लखनऊ से छपने वाली "सर्वगन्धा" नामक संस्कृत की मासिक पत्रिका जातिसूचक उपाधि नहीं छापती।

पृष्ठ ६ का शेष

अंग्रेजी हटाओ-

यह समस्या विधान निर्माताओं ने 15वर्ष के लिये हिन्दी को सक्षम होने के लिये अंग्रेजी को समय दिया। राष्ट्र के कर्णधार हिन्दी में भाषण देने लगे नेहरू जी जब प्रधान मन्त्री बने और रूस तथा योगोस्लाविया में हिन्दी में बोले तो देशवासीयों को प्रसन्नता हुई कि प्रधानमंत्री को अपनी राष्ट्रभाषा से प्रेम है। कुछ समय पश्चात् जब लोकसभा में अंग्रेजी के पक्ष में भाषण दिया तब राष्ट्रवादी नेताओं को भ्रम हो गया- जब किसी ने नेहरु जी से पूछा तो कहने लगे हमने हिन्दी विरोध तो नहीं किया केवल मैकेनिकल शिक्षा के लिये अंग्रेजी की उपयोगिता पर बल दिया। वही रोग इस समय व्याप्त हो रहा है। अभी हिन्दी की शोभा यात्रा निकाली जा रही है परन्तु यात्रा में पालकी में अंग्रेजी को ही बैठाया जा रहा है। जब तक नौकरियों में अंग्रेजी रहेगी तब तक न तो हिन्दी पनपेगी न प्रान्तीय भाषायें।

आर्यसमाज ने हिन्दी का प्रारम्भ से ही प्रचार किया- अपनी कार्यप्रणाली तथा शिक्षा संस्थानों में इसी को प्रमुखता दी- किन्तु अंग्रेजी की दासता ने डी0ए0वी0-पब्लिक स्कूलों को प्रोत्साहन दिया। अब प्रत्येक सामान्य व्यक्ति भी अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम में पढ़ाने को उत्सुक है। मोहल्ले मोहल्ले में अंग्रेजी के नाम से पैसा कमाया जा रहा है- जब तक हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान नहीं मिलता तब तक यही दुर्दशा रहेगी। महात्मागाँधी मशीन युग के विरोधी थे- परन्तु स्वतन्त्र भारत की सरकार मशीन युग को प्रोत्साहन देती चली आ रही है- इसी लिए ऋण बढ़ता जा रहा है। अंग्रेजी कब तक रहेगी इस बात की चर्चा ही बन्द हो गई है। केवल एक मद्रास ने पहले हिन्दी को गौण रूप में अपनाने को कहा- बस दक्षिण में होने लगा हिन्दी का विरोध गाँधी जी ने कहा था बिना राष्ट्र भाषा के राष्ट्र गूंगा है- वस्तुतः आज राष्ट्र की पूर्व अर्जित नैतिकता- राष्ट्रीयता लुप्त होती जा रही है। एक राज्य के विरोध करने पर उस पर हिन्दी नहीं थोपी जावेगी- परन्तु शेष राज्यों के विषय में कोई नहीं कहता कि अंग्रेजी नहीं थोपी जावेगी।

संविधान का उलंघन करने में उत्तर प्रदेश सरकार को जरा भी हिचकिचाहट नहीं हुई और तुष्टीकरण की नीति अपना कर उर्दू को दूसरी भाषा बना दिया। भाषा से कोई विरोध नहीं परन्तु नीति से विरोध है- ऐसी दशा में आर्यसमाज को कितना संघर्ष लेना होगा अंग्रेजी हटाने में।

आर्यसमाज के त्रिशूल की आवश्यकता इस समय और भी बढ़ गई है। विद्यार्यसभा- शिक्षा, धर्म आर्य सभा- शुद्ध मानव वैदिक धर्म का और राजार्यसभा- शुद्ध राजनीति को लेकर जब तक मैदान में नहीं आता तब तक दयानन्द का स्वप्न पूर्ण नहीं होता। तीनों शूलों का समन्वय हो तभी राष्ट्र की रक्षा हो सकती है।

अतः आर्यसमाज चरित्रवान, विधायकों और सांसदों को तैयार करें जो राजनीति को सुधार सकें- यही कामना है दयानन्द के त्रिशूल की। ■

मेला प्रचार

आर्यसमाज नेमदारगंज नवादा {बिहार} के तत्वावधान में विजयादशमी के उपलक्ष्य में स्थानीय दुर्गापूजा के प्रसिद्ध मेले में श्री महावीर सिंह जी भजनोपदेशक एवं श्री शिवदत आर्य कलाकार के द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार तीनदिनों तक होता रहा। क्षेत्रीय जनता ने रुचिपूर्वक उस कार्यक्रम को सुना।

क्रान्ति के अग्रदूत स्वामी श्रद्धानन्द

— डा० (श्रीमती) महाश्वेता चतुर्वेदी, बरेली

जालन्धर जिले के तलबन ग्राम को, अपने जन्म से पवित्र करने वाले, मुंशीराम, तथा बाद में स्वामी श्रद्धानन्द बनने वाले अमर क्रान्तिकारी नेता को कौन नहीं जानता? महर्षिदयानन्द के तर्कपूर्ण प्रवचनों को सुनकर मुंशीराम इतने प्रभावित हुए, कि मूर्तिपूजा छोड़कर तत्काल वैदिकधर्म के प्रति आस्थावान हो गये। "जीवनभर सार्वभौम वैदिक धर्म का प्रसार करते हुए अमरत्व को प्राप्त कर गये।

1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में, पंजाब की सेना ने जब अंग्रेजों का साथ दिया, तब अंग्रेजों को विश्वास हो गया था कि पंजाब की भूमि में, वातावरण अंग्रेजों के अनुकूल है। अतः अंग्रेजी हुकूमत के बीज बोने का षडयन्त्र रचा गया। किन्तु महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी विचारों से प्रभावित होकर स्वामी श्रद्धानन्द तथा लाला लाजपतराय ने, अपने जीवन को अंग्रेजी राज्य को नष्ट करने पर केन्द्रित किया, क्यों कि स्वामी जी जानते थे कि विदेशी शासन से अधिक, विदेशी भाषा, विदेशी संस्कृति, और सामाजिक अन्धविश्वास व कुरीतियाँ हानिकर हैं। तत्कालीन विदेशी शिक्षा दीक्षा पंजाब के युवकों को न केवल संस्कार हीन बना रही थी, अपितु देशद्रोही भी बना रही थी। स्वामी श्रद्धानन्द ने तेजस्विता के साथ उस कुचक्रमयी आँधी को प्रलयंकर बन दबाया। तथा उस समय के लोकप्रिय "सद्धर्म प्रचारक" नामक समाचार पत्र को उर्दू से हिन्दी में रूपान्तरित कर पाया। पंजाब को विदेशी भाषा से मुक्त कराने का सर्वप्रथम कार्य स्वामी श्रद्धानन्द ने ही किया क्योंकि आप स्वदेशी भाषा के महत्व को भलीभाँति पहचानते थे। जैसा कि भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा है- "निज भाषा उन्नति अहे
सब उन्नति को मूल।
बिना निज भाषा ज्ञान के,
मिटे न हिय को सूल।।"

अर्थात- राष्ट्रभाषा की उन्नति के अभाव में कोई राष्ट्र समुन्नत नहीं कहला सकता। जिन आदर्शों की प्राप्ति को स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया, जीवन पर्यन्त उनके लिए संघर्षरत रहे, एवं अन्ततः लक्ष्य प्राप्ति में सफलता प्राप्त की।

समाज की जर्जर कुप्रथाओं के विरुद्ध स्वामी श्रद्धानन्द निरन्तर लड़ते रहे। समर्पण की भावना से ओतप्रोत होकर आपने जाति-पाँति के विरुद्ध उद्घोष किया, तथा योग्यता गुण व कर्मानुसार सम्पन्न विवाहों का तीव्र समर्थन किया। उनके अनुसार ऐसे विवाह ही स्वस्थसमाज का आधार, तथा राष्ट्रीय अखण्डता की पहचान हैं।

स्वतन्त्रता संग्राम का नेतृत्व करते हुए, स्वामी श्रद्धानन्द ने चाँदनीचौक में, फिरंगियों के सामने निर्भीकता से अपना सीना खोल दिया था। जामा-मस्जिद के मंच पर खड़े होकर, वेदमन्त्रों के घोष के बाद नमाज़ के लिए एकत्रित मुसलमानों को राष्ट्रीय एकता का सन्देश देने वाले, ईद के अवसर पर, हिन्दुओं को उदारता की शिक्षा देने वाले, तथा विश्व को विश्वजनीन वैदिकधर्म की महानता बताने वाले, तेजस्वी एवं मानवतावादी स्वामी श्रद्धानन्द इतिहास के पृष्ठों में स्वर्णांकित रहेगें।

राष्ट्र को एकसूत्रता में बाँधने के लिए, तथा घटती हिन्दूशक्ति को संवर्धित करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धिकार्य को चारुता से सम्पन्न किया क्योंकि आप शुद्धिसभा के प्रधान थे। हजारों आगाखानियों को स्वामी-श्रद्धानन्द ने शुद्ध कर पुनः हिन्दूधर्म में मिलाया।

शैक्षिक जगत के अन्तर्गत किए गए स्वामी श्रद्धानन्द के कार्य अविस्मरणीय रहेगें। 1902 में श्रद्धानन्द ने गुरुकुल की स्थापना कर अपने दोनों पुत्रों हरिश्चन्द्र और इन्द्र को गुरुकुल में प्रवेश कराया। आपने पन्द्रह वर्ष तक गुरुकुल की अथक सेवा की और उसे विशाल राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान कर दिया।

रौलेट ऐक्ट के विरोध में, मार्च 1919 को, देहली में एक जुलूस निकाला गया, जिसका नेतृत्व स्वामी श्रद्धानन्द ने किया। सन् 1919 को, अंग्रेजों ने अमृतसर के जलियांवाले बाग में, सामूहिक नरसंहार कर, भारतीयों की आत्मा को झकझोर दिया था, तब अग्निपुत्र स्वामी श्रद्धानन्द ने घर घर पहुँचकर, परिवारों में धैर्य धारण कराने का यथोचित प्रयत्न किया था।

स्वामी जी ने अछूतोद्धार तथा दलितोद्धार के लिए भी अथक प्रयत्न किया। कांग्रेस मंच से स्वामी जी ने निर्भीकता से कहा था--"आज से करोड़ों दलित हमारे अछूत नहीं रहे, अपितु हमारे भाई बहिन हैं।"

भारतीय संस्कृति के सजग प्रहरी, एवं वैदिक धर्म के निर्भीक प्रसारक स्वामी-श्रद्धानन्द को अंग्रेजों ने कभी सहन नहीं किया। तथा देश में फूट डालने के लिए, साम्प्रदायिकतत्वों को निरन्तर भड़काया। यही कारण है कि शुद्धिकार्य से चिढ़कर, स्वामी श्रद्धानन्द को, छल से, अब्दुल रशीद नामक देशद्रोही ने स्वामी जी को अपनी गोलियों का निशाना बनाया, तथा 23 दिसम्बर 1926 को, स्वामी श्रद्धानन्द न्याय, एकता, धर्म, एवं संस्कृति के लिए बलिदान हो गए। पार्थिव शरीर भले ही नष्ट हो जाये, किन्तु महानात्माएँ यश शरीर से अमर हैं- "कीर्तिर्यस्य सः जीवति" स्वामी श्रद्धानन्द सदैव एकता, अखण्डता, एवं राष्ट्रीयता की प्रेरणा देते रहेंगे।

शोक समाचार

भागलपुर- देवरिया। नगर के सामाजिक कार्यकर्ता, युवा आर्य नेता एवं ऋषि भक्त श्री रामाज्ञाजी मिश्र "आर्यपुत्र" के पूज्य पितामह श्री रामकिशोर जीमिश्र का देहावसान विगत 22 अक्टूबर को सायंकाल 6:30 बजे हो गया।

नगर एवं जिले के समस्त आर्यजनों ने दिवंगत आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परिवार-जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का नैमित्तिक तथा वार्षिक वृहदधिवेशन

दिनांक० २४ तथा २५ दिसम्बर १६८६ को डी.ए.वी. कालेज लखनऊ में सम्पन्न होगा।

(1) नैमित्तिक अधिवेशन
दिनांक- 24 दिसम्बर 1989 (रविवार)

(2) वार्षिक वृहदधिवेशन
25 दिसम्बर 1989 (सोमवार)

समय तथा स्थान डी०ए०वी० कालेज ही रहेगा।

इन्द्रराज — प्रधान

मनमोहन तिवारी — मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

---

६० परिवारों के २०० से अधिक ईसाई वैदिक धर्म में

उड़ीसा का फुलवाणी जिला पर्वत एवं जंगल बहुल वनवासी क्षेत्र है यहाँ के निवासी अत्यन्त सरल एवं सीधे सादे हैं इसी का लाभ ईसाई पादरियों ने उठाया और एक बड़े भाग को अपने जाल में फंसा लिया। परन्तु अब आर्यसमाज के प्रचार से स्थिति बदल रही है उस क्षेत्र में आर्य प्रतिनिधि सभा के दो प्रचारक कार्यरत हैं जिनके प्रयास से वे लोग वैदिक धर्म की ओर आकृष्ट होते जा रहे हैं उनके आर्य बन्धु भी इनके सहयोगी हैं। उन सब प्रयास से आर्य प्रतिनिधि सभा की देखरेख में कई वर्ष से शुद्धि संस्कार होते आ रहे हैं।

गत आठ अक्टूबर को भी 200 से अधिक ईसाइयों ने वर्षा की बौछारों के बीच अत्यन्त श्रद्धा के साथ तिगि पंचायत के मुरुडी कुपुड़ा ग्राम में आहुति डाल यज्ञोपवीत लेकर वैदिक धर्म में प्रवेश किया। संस्कार कार्य भी पं०विशीकेशन जी शास्त्री मन्त्री उत्कल आर्य-प्रतिनिधि सभा तथा श्री वामदेव आर्य, मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल आमसेना ने कर यह सारा आयोजन श्रद्धेय श्री स्वामी-धर्मानन्द जी प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि-सभा की देख-रेख में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्थानीय सरपंच तथा भारी संख्या में सामान्य व्यक्तियों के साथ पुलिस एवं मजिस्ट्रेट भी उपस्थित थे।

वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज ससौर (बिजनौर) का वार्षिकोत्सव दिनांक- 11 से 14 अक्टूबर ... समारोह मनाया गया। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

वेदों की ओर लौटो

— श्री चन्द्र कुमार छाबड़ा

मंत्री, जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा, लखनऊ

"वेदों की ओर लौटो" का नारा देने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती ने समाज में व्याप्त अज्ञानता के अन्धकार के खिलाफ प्रथम लड़ाई लड़ी। उन्होंने अपने कहे को पूर्ण रूप से निभाया। वे दूसरों को जो भी आचरण समझाते, उस पर स्वयं भी दृढ़ता-पूर्वक अमल करते थे। फलस्वरूप उनका प्रभाव तीव्रता से बढ़ता गया।

स्वामी जी ने आर्य-समाज की स्थापना के माध्यम से तत्कालीन वातावरण में व्याप्त धार्मिक आडम्बरों, अन्ध-विश्वासों एवं कुरीतियों का बहिष्कार करने में व्यापक सफलता प्राप्त की। उनके जीवन में हमें अनेक ऐसे प्रेरणा दाई प्रसंग मिलते हैं जो युगों-युगों तक मानव समाज के अन्धकारमय पक्ष को ज्ञान रूपी प्रकाश से आलोकित करते रहेंगे।

इसके अतिरिक्त मानव-व्यवहार में तर्कपूर्ण ढंग से सुधार लाना उनके व्यक्तित्व का, उनके सद्व्यवहार का अपना अनूठा ही अंग था। इस संदर्भ में एक प्रसंग स्मरणीय है। स्वामी जी ने वैदिक ज्ञान का प्रचार करते हुए गंगा के पावन-तट पर डेरा जमाया था। नित्य वेद ज्ञान पर उनके प्रभावशाली व्याख्यान होने लगे। स्वामी जी की लोकप्रियता एवं उनकी प्रकाण्ड विद्वता से ईर्ष्या रखने वाला एक साधु, जो व्याख्यान-स्थल से कुछ ही दूरी पर कुटिया में रहता था, नियमित रूप से उन्हें भद्दी-भद्दी गालियाँ देने लगा। गालियाँ देने का क्रम लगभग दो सप्ताह तक चलने लगा। एक दिन किसी भक्त द्वारा दिये गए फलों की टोकरी भक्त के हाथों स्वामी जी ने उसी साधु के पास भिजवा दी। ज्ञात होने पर साधु को विश्वास न हुआ। उसने कहा कि वह तो प्रतिदिन गालियाँ देकर स्वामी जी का अपमान करता है। निश्चय ही उन्होंने यह फल किसी अन्य के लिए भेजे होंगे। भक्त टोकरी लेकर लौट आया एवं स्वामी जी से सभी बातों का निवेदन किया। किन्तु दया-निधि स्वामी जी ने पुनः टोकरी उस साधु के पास भिजवाई। उनकी निष्कपटता, निर्मलता एवं क्षमा शीलता देखकर वह साधु अत्यन्त लज्जित हुआ एवं उनके चरणों में आकर क्षमा याचना करने लगा। और इस प्रकार क्रोध विनम्रता के समक्ष एवं ईर्ष्या तथा कुव्यवहार क्षमाशीलता एवं सद्भाव के समक्ष झुक गया।

एक बार उनके व्याख्यान की घोषणा शहर भर में करवा दी गई। किन्तु दुर्भाग्यवश उस दिन उन्हें तीव्र ज्वर हो गया। परन्तु स्वामी जी ने इसके समक्ष अपने घुटने नहीं टेके। और उठकर व्याख्यान स्थल की तरफ जाने की तैयारी करने लगे। उनके समर्थकों ने उनसे आराम करने का आग्रह किया। किन्तु उन्होंने कहा "ज्वर अपना कार्य कर रहा है, और मैं अपना काम कर रहा हूँ। फिर भला इसमें अनुचित क्या है?

-----और उस दिन उन्होंने कर्म की महत्ता पर वैदिक दृष्टिकोण को तर्क पूर्वक समझाया। उनके अनुसार स्वावलम्बन एवं आत्म निर्भरता सफलता का अन्तिम साधन है।

इसके अतिरिक्त उन्होंने मितव्ययता का व्यवहार भी प्रस्तुत किया। वे अपनी रसोई में नपा-तुला भोजन बनवाते थे। रसोईयों द्वारा उस पर आपत्ति उठाए जाने पर उन्होंने उसे मुस्कुरा कर समझाया- "भैया, रसोई में नपा-तुला भोजन इसलिए बनवाता हूँ कि अधिक हो जाने पर भोजन जानवरों को दिया जायेगा अथवा बासी खाना पड़ेगा। अन्न का दुरुपयोग अनुचित है। हर काम व्यवस्थित रूप से करना चाहिए।

स्वामी जी के सुधारवादी विचारों से मन ही मन उनसे द्वेष रखने वालों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती जा रही थी जिनमें ब्राह्मण वर्ग प्रधान था। तभी एक मुस्लिम तहसीलदार उनके विचारों से प्रभावित हो उनका भक्त बन गया।

एक दिन एक ब्राह्मण ने अत्यन्त-भक्ति-भाव प्रदर्शित करते हुए उन्हें विष युक्त ताम्बूल खिला दिया। किन्तु ज्ञात होते ही स्वामी जी ने बस्ति एवं न्योली कर्म द्वारा विष-वमन कर दिया। बात आई गई हो गई।

परन्तु तहसीलदार ने यह बात ज्ञात होते ही उस ब्राह्मण को बन्दी बना लिया। स्वामी जी उसके इस व्यवहार से रुष्ट हो गए। उन्होंने उस ब्राह्मण को क्षमादान देते हुए जब तक तहसीलदार से छुड़वा नहीं दिया तब तक स्वामी जी की रुष्टता गई नहीं।

छुआ छूत-निवारण से सम्बन्धित उनके जीवन का एक अन्य प्रसंग प्रस्तुत करना अनुचित न होगा। एक हरिजन द्वारा प्रस्तुत भोज्य सामग्री को स्वामीजी ने उसकी श्रद्धाभाव को देखते हुए अत्यन्त प्रेम पूर्वक ग्रहण किया। किन्तु पास बैठे कुछ पंडितों ने इस पर असन्तोष जाहिर किया। तब स्वामी जी ने कहा- "अन्न दो प्रकार से अभोग्य है-वह भोजन जो दूसरे को दुःख देकर प्राप्त किया जाए अथवा भोज्य-सामग्री में कुछ ऐसी वस्तु पड़ी हो जो न खाने योग्य हो। किन्तु इस हरिजन द्वारा लाया गया भोजन उसकी पसीने की कमाई है। अतः सर्वथा योग्य है। इसमें मैं अपने भ्रष्ट हो जाने या भोजन के भ्रष्ट होने का कोई कारण नहीं देखता हूँ।"

छुआछूत जैसी तत्कालीन व्याप्त कुरीति के निवारण करने में उनका यह व्यवहारिक कदम निश्चय ही वन्दनीय है।

इस तरह उन्होंने कथनी एवं करनी में कोई भेद न रखते हुए अपने द्वारा दिए गए उपदेशों का स्वयं भी नियमित रूप से पालन किया।

उन्होंने हिन्दी का प्रयाप्ति प्रचार किया। "सत्यार्थ प्रकाश" उनका अमर ग्रन्थरत्न है। उनके विचारों को स्थायित्व देकर आचरण में उतार कर ही हम उनकी यशोगाथा को जीवित रख सकेंगे। ■

स्वास्थ्य-सुधा

उपचार दर्पण

रोगी अपना विवरण और दो डाक लिफाफे निम्न पते पर भेजें:-

डॉ० स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
{कच्चाहारी} आर्यसमाज-पिथौरागढ़
उ०प्र०}

प्रश्न:- "मुझे डाक्टर ने, स्वास्थ्य शिथिल होने पर, क्रानिक ब्रांकाइटिस घोषित की। मुझे प्राणायाम अथवा औषधि के बारे में जानकारी देने का कष्ट करेंगे।"

-- डी०के० उपाध्याय
स्टैनो- मुख्यचिकित्साधिकारी,
अल्मोड़ा।

उत्तर:- रुदन्ती टेबलेट {ज्वाला आयुर्वेदभवन, अलीगढ़} की एक गोली दिन में तीन बार मीठे गुनगुन दूध से लेवें। प्रातराश में च्यवनप्राश दो चम्मच दूध के साथ लिया करें। दही-तेल-मिर्च-डालडा का सेवन 3 मास के उपचार काल में न करें। प्रातः खालीपेट अन्नमयकोश के प्राणायाम {योगसाधना-प्रकाश- पुस्तक पृष्ठ 19 के अनुसार} किया करें। उक्त पुसतक, "श्री पूरनसिंह, पलटनबाजार-अल्मोड़ा- उ०प्र०" से प्राप्त करें।

— गुरुकुलानन्द सरस्वती

उत्सव सम्पन्न

धर्मधाम औहदपुर {हरदोई} का चतुर्थ वार्षिकोत्सव आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की द्वादशी से पूर्णिमा तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जनता पर अच्छा प्रभाव पड़ा।

शुभ सूचना

"काश गाँधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई नहीं कहते।

इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुस्तक के लेखक विष्णुस्वरूप पर केस चलाया जिसे माननीय मजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदीजी ने 29 नवम्बर सन88 को खारिज कर दिया जो सज्जन यह पुस्तक मंगवाना चाहें वे 1/- रुपए प्रति मंगवा सकते हैं। वितरण करने वालों को 50/- रु0 में सौ प्रति भेजी जायेंगी।

पता- व्यवस्थापक वेदप्रचारमण्डल

60/13 रामजस रोड, करोलबाग
नई दिल्ली- 5

आर्यसमाज गोला (लखीमपुर-खीरी)

प्रधान - श्री इन्द्रपाल भसीन
मंत्री - श्री टीकम सिंह वीसल
कोषाध्यक्ष - श्री विजय कुमार राठी

शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज हरजेन्द्र नगर कानपुर-7 के भूतपूर्व प्रधान श्री हरबन्स लाल गेरा के समधी माननीय इन्द्रसेन वरिष्ठ प्रबन्धक एच0ए0एल0 के निधन पर आर्यसमाज अपने साप्ताहिक सत्संग दिनांक- 15-10-89 के दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की सदगति एवं संतप्त परिवार के लिये धैर्य प्रदान हेतु परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की गई।

"वैदिक धर्म प्रचार"

1- आर्यसमाज गुरुआ (बिहार) के तत्वावधान में दिनांक-9, 10 अक्टूबर को वैदिक धर्मप्रचार का आयोजन स्थानीय विश्व हिन्दू परिषद एवं आर्य समाज ने मिल कर किया। आर्य जगत के प्रख्यात विद्वान् डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के प्रवचन का आयोजन तीनो दिन किया गया।

2- हिन्दु मुस्लिम एकता

शेरघाटी, गया स्थानीय - - "हिन्दुमुस्लीम एकता कमेटी के तत्वावधान में स्थानीय एस0डी0ओ0 श्री ललदास- पासवाँ के संयोजन में एक गोष्ठी का आयोजन 11 अक्टूबर को शेरघाटी बाजार में किया गया जिसमें आर्य विद्वान् डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी के प्रवचन का आयोजन किया गया।

- आर्यसमाज, मेस्टनरोड, कानपुर में 106वाँ महर्षिदयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस आमावस्या दीपावली रविवार, 29 अक्टूबर की प्रातः काल समारोह पूर्वक डा0 चन्द्रकान्ता रोहतगी की अध्यक्षता में मनाया गया।

ऋग्वेद पारायण यज्ञ

ग्राम- विश्राम दुबे का पुरवा जनपद सुल्तानपुर में श्री भागवतमुनि जी के निवास स्थान पर ऋग्वेद पारायण यज्ञ एवं वेद प्रचार सोल्लास दि0 30सितम्बर से 10 अक्टूबर तक मनाया गया।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

अमरोहा- आर्यसमाज अमरोहा का वार्षिक उत्सव पूर्ण हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन हुआ जिसका संयोजन श्री हरिश्चन्द्र आर्य ने किया। इस पावन पर्व पर पं0 इन्द्रराज, स्वामी-आनन्दबोध इत्यादि आर्य नेताओं एवं सन्यासीयों ने नवचेतना का संचार किया।

नवीन आर्यसमाज स्थापित

ग्राम- पुरेकोदई . (सुल्तानपुर) में श्री भागवतमुनि एवं श्री मनोज कुमार- सिंह जी के प्रयास से श्री महेन्द्र मुनि एवं सभा प्रचारक पं0 ओमप्रकाश भजनोपदेशक द्वारा वेदप्रचार एवं यज्ञ सम्पन्न हुआ। जिसमें 8 व्यक्तिओं के यज्ञोपवीत एवं नवीन आर्यसमाज की स्थापना की गई। निर्वाचन निम्नानुसार रहा-

प्रधान - श्री भागवत मुनि
मन्त्री - श्री ज्ञानेन्द्र प्रताप सिंह
कोषाध्यक्ष - श्री सूर्य प्रताप सिंह

पृष्ठ ५ का शेष....

की बात करने वाले लोग या तो **भगवान श्रीराम** के महत्व से तथा उससे जुड़ी भारतीय संस्कृति और मर्यादाओं से अनभिज्ञ हैं या जानबूझ कर भारत के 65 करोड़ लोगों की भावनओं से जुड़े मसले को सुलझने नहीं देना चाहते। क्योंकि विवादास्पद जगह राष्ट्रीय स्मारक बनाई ही नहीं जा सकती। मैं उनसे यह पूछना चाहता हूँ कि राष्ट्रीय स्मारक का स्वरूप क्या रहेगा? श्री राम जन्मभूमि अथवा बाबरी मस्जिद? यदि दोनों रहेगा तो क्या एक ऐसे विवाद की जगह जिसको लेकर पूरे देश में तनाव एवं दंगे हो रहे हैं, उसको सरकारी विवाद बनाकर जिन्दगी भर के लिए छोड़ देना चाहिए?

प्रश्नः राष्ट्रवादी मुसलमान श्रीराम जन्मभूमि मामले के प्रति पूरी सहानुभूति रखते हैं, पर दूसरे इस न्यायोचित माँग को विवाद का विषय क्यों बनाते हैं?

उत्तरः राष्ट्रवादी मुसलमान ही नहीं बल्कि देश के 70 प्रतिशत मुसलमान अब इसको दिल से मानने लगे हैं कि वह स्थान श्रीराम जन्मभूमि ही है, तथा उस पर हिन्दुओं का हक है। परन्तु वे कठमुल्लों के डर से खुलकर सामने नहीं आ रहे हैं, परन्तु फिर भी अब आम मुसलमान बुखारी तथा शहाबुद्दीन जैसे लोगों के साथ नहीं हैं।

जहाँ तक श्रीराम जन्मभूमि हिन्दुओं को सौंपने का सवाल है, उसे दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती। हमने स्वयं तय किया है कि हर हाल में बाबरी मस्जिद के तमाम निशानों को वहां से मिटा दिया जायगा जो कि भारतीय मुसलमानों के चेहरे पर कलंक की भाँति अयोध्या की श्रीराम जन्मभूमि पर चमक रहा है

प्रश्नः "मस्जिदे इत्तेहाद" के द्वारा श्रीराम जन्मभूमि मसले का समाधान कैसे होगा, स्पष्ट कीजिए?

उत्तरः अयोध्या और फैजाबाद के मुसलमानों को यह न लगे कि बाबरी मस्जिद के न रहने से उनका कोई बड़ा नुकसान हो गया है, इसलिए उन्हें अयोध्या में नमाज पढ़ने के लिए एक मस्जिद निर्माण की योजना है। इसका नाम "मस्जिदे इत्तेहाद" इसलिए रखा गया है कि अनेक हिन्दू भाइयों ने इसमें सहयोग करने को तथा विश्व हिन्दू परिषद के महामंत्री श्री अशोक सिंघल जी ने भी इसका स्वागत किया है। बाबरी मस्जिद को ध्वस्त करना तथा दूसरे स्थान पर मस्जिद के निर्माण के हमारे निर्णय का पूरे देश के मुसलमानों ने स्वागत किया है।

प्रश्नः क्या आपको लगता है कि भारतीय मुसलमानों को विदेशी ताकतें भड़का रही हैं?

उत्तरः भारतीय मुसलमानों को तो नहीं परन्तु भारतीय मुसलमानों के नाम पर कुछ लोग विदेशों से भारी मात्रा में धन पा रहे हैं। मैने एक बार शहाबुद्दीन को 30 करोड़ रूपया अरब देशों से प्राप्त होने के सम्बन्ध में प्रमाण सहित गृहमन्त्री को तथा सार्वजनिक रूप से बताया था। लेकिन कठमुल्लाओं के इशारों पर नाचने वाली सरकार ने हमारे इस आरोप के सम्बन्ध में कोई कार्यवाही न करके यह साबित कर दिया कि वे ऐसे लोगों को संरक्षण प्रदान कर रही है।

प्रश्नः भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने मुसलमान कवियों के बारे में कहा थाः

"इन मुसलमानकवि जनन पे,
कोटिन हिन्दू वारिये।"

अगर आप कहें तो हम आपके लिए भी ऐसा ही कहना चाहेंगे?

उत्तरः यह तो आपका हमारे प्रति स्नेह है।

प्रश्नः आशा है हर हालत में हमारे और आपके हृदय एक रहेंगे, क्योंकि मूलतः हम एक हैं?

उत्तरः मैं तो यही कहता हूँ कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों की रगों में राम, कृष्ण और बुद्ध का खून बह रहा है। हिन्दुस्तानी मुसलमान मूलतःभारत की संस्कृति, परम्पराओं और माटी से जुड़ा हुआ है। मजहब अनेक हो सकते हैं, परन्तु संस्कृति, खून और माटी का रिश्ता कभी नहीं बदलता और मैं ऐसा मानता हूँ कि भारत माँ की कोख में पैदा हुए और बढ़े तमाम लोग एक ही संस्कृति और परम्पराओं से जुड़े हुए हैं। ■

पृष्ठ ३ का शेष

धर्म तो किसी भी वस्तु की मूल प्रकृति होती है, जिसकी चर्चा मैं पहले कर चुका हूँ जैसे अग्नि का धर्म है जलना और ऊर्जा तथा ताप प्रदान करना, जल का धर्म है गीला करना लेकिन धर्मग्रन्थ से जो आशय पश्चिम में लिया जाता है, दुर्भाग्य से वैसा ही आशय भारतीय समाज ने भी कालान्तर में विशेष प्रभाव में आकर स्वीकार कर लिया और यह बहुत बड़ी भूल हुई. लेकिन आज भी जो भारतीय तत्व ज्ञानी हैं और श्रेष्ठ विचारक हैं, वे इस बात को मानते हैं कि वास्तविक धर्म ग्रन्थ को किसी गुट विशेष सम्प्रदाय विशेष के साथ जोड़कर रखना एक प्रकार से धर्म ग्रन्थ का अपमान है, क्योंकि धर्म तो मानव के लिए होता है सम्प्रदाय के लिए नहीं। धर्म का सीधा सम्बन्ध होता है मानव से और मानव के व्यक्तित्व से। उदाहरण स्वरूप भाई का भाई के प्रति धर्म क्या है, पति का पत्नी के प्रति क्या धर्म है, पुत्र का पिता के प्रति क्या धर्म है। धर्म से आशय यहाँ कर्तव्य से है और ऐसी रचनाएं जब भारत में हुईं, तो उन्हें आचार संहिता कहा गया। आचार संहिता को कोई भी अनुभूति प्रधान ग्रन्थ नहीं माना जा सकता। आचार संहिता का आशय होता है समाज को व्यवस्थित करने के लिए बनाये गये नियम और जो धार्मिक ग्रन्थ हैं, उनका उद्देश्य बिलकुल दूसरा होता है। उनका मूल उद्देश्य होता है मनुष्य को अन्तर्मुखी बनाकर उसमें सत्य की खोज करने की प्रवृत्ति को जगा देना।

अब यह देखा जाये कि क्या रामायण, गीता, महाभारत या वेद अर्थात ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद इनमें कुछ ऐसा है जिनके कारण साम्प्रदायिक दंगे होंगे या इनमें ऐसा कुछ है, जिससे यह कहा गया हो कि एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से घृणा करने का अधिकार है? क्या यह कहा जा रहा है कि जो उस ग्रन्थ को नहीं पढ़ेगा या उसे मान्यता नहीं देगा वह समाज विरोधी है या सम्प्रदाय विरोधी है? मेरी जानकारी में ऐसी कोई बात न रामायण में है, न गीता में और न वेद में। महाभारत में भी ऐसा कुछ नहीं है, अगर उसके तत्व ज्ञान को लिया जाये। पुराणों में कथाएं हैं और उन कथाओं में एक तत्व ज्ञान छुपा हुआ है, अतः उनके आधार पर कोई निर्णय नहीं लिया जा सकता। किसी भी वैदिक ऋचा या गीता के किसी भी श्लोक के आधार पर यह सिद्ध नहीं किया जा सकता कि जो लोग इस्लाम या ईसाई मजहब को मानते हैं वे अधार्मिक हैं या घृणा के पात्र हैं और उन्हें अपनी उपासना पद्धति छोड़ देनी चाहिए। जब ऐसा कुछ किसी भी ऋचा या श्लोक में नहीं है, तब किस आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह धर्म ग्रन्थ साम्प्रदायिकता का प्रचार करते हैं और ये केवल हिन्दुओं के धर्म ग्रन्थ हैं? जो धर्म ग्रन्थ साम्प्रदायिकता का प्रचार नहीं करता वह तो मानव मात्र का धर्म ग्रन्थ बन जाता है।

यह दिमागी गुलामी

पश्चिम में धर्म शब्द का दुरुपयोग किया गया है, पर क्या यह आवश्यक है कि भारत वर्ष में भी इसका दुरुपयोग किया जाए और इसे साम्प्रदायिक बना दिया जाए। पश्चिम में धर्म शब्द के साथ साम्प्रदायिकता और संकीर्णता को जोड़ा गया है, पर भारत में इसके साथ संकीर्णता और साम्प्रदायिकता को जोड़ा नहीं गया है और भारतीय दर्शन में तो कभी जोड़ा ही नहीं गया है। आज भारत वर्ष में भी जब हम धर्म की बात करते हैं, तब हम पश्चिम के संकीर्ण विचारों तथा संकीर्ण परिभाषा के साथ अपने को क्यों जोड़ें? हम भारत भूमि में उपजी श्रेष्ठ उदारवादी परिभाषाओं को मान्यता क्यों नहीं देते, इस पर तो जरा सोचिए, क्या इसका एक कारण यह नहीं है कि सत्ता में बने रहने की भूख ने हमें बिल्कुल अन्धा बना दिया है अथवा पश्चिम से जो एक आँधी आयी है उसने एक प्रकार से हमें बौद्धिक रूप से गुलाम बना दिया है और पश्चिम द्वारा दी गयी इस दिमागी दासता के कारण हम निरन्तर हीन भावना से ग्रस्त होते चले जा रहे हैं और जो हमारे श्रेष्ठतम गुण हैं और जो श्रेष्ठतम धरोहर है और संस्कृति है उसकी उपेक्षा करने पर तुले हुए हैं। जो भी हो समस्या गंभीर है और गंभीर समस्या का समाधान करने के लिए गंभीर चिन्तन आवश्यक हो चुका है।



शाबाश मुमताज!



शाबाश सुनीता!

दयानन्द विद्यामंदिर की छात्राएं पुरस्कृत

लखनऊ जनपद की बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा बाल क्रीडा प्रतियोगिताएं दिनांक- 25-10-89 से दिनांक 27-10-89 तक इटौंजा में आयोजित की गयीं। इन प्रतियोगिताओं में दयानन्द विद्यामन्दिर मोतीनगर, लखनऊ के छात्रों का प्रदर्शन विशेष प्रशंसनीय रहा। इस विद्यालय की कक्षा-6 की छात्रा मुमताज जहाँ ने ऊँची कूद तथा रिले रेस में तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी विद्यालय की दूसरी उदीयमान छात्रा कु0 सुनीता कक्षा-6 ने 400 मी0 800 मी0 तथा 1500 मीटर, इन तीनों दौड़ों में तृतीय स्थान प्राप्त किया।

विद्यालय को इन छात्राओं पर गर्व है। विद्यालय के प्रबन्धक एवं मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ0प्र0, श्री मनमोहन तिवारी ने इन छात्राओं को प्रोत्साहन स्वरूप विशेष पुरस्कार देने की घोषणा की है।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५- मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : ४५६६३
पंजीकरण सं0 एन0डब्ल्यू/एन पी・७६
मार्गशीर्ष १३
२६ नवम्बर, रविवार, १९८९

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

पुरानी गोदाम, गया का 26वाँ वार्षिकोत्सव 12, 13, 14 एवं 15 अक्टूबर को आयोजित किया गया इस अवसर पर आर्य जगत के बड़े-बड़े विदान पधारे सर्वश्री- सत्यदेव शास्त्री वाराणसी श्री प्रशस्य मित्र शास्त्री राय बरेली, श्री वीरेन्द्रजी- आर्य गाजीपुर श्री दवेन्द्रकुमार सत्यार्थी- नालन्दा, श्री शिवधार आर्य पटना, आदि विदानों के प्रवचन एवं भजन होते रहे इस अवसर पर 15ता0 को मगध प्रमण्डलीय आर्य सम्मेलन श्री जयकुमार जीप्रालित विधायक के सभापतित्व में हुआ।

●

- आर्यसमाज नगला माहेश्वरी {बिजनौर} का वार्षिकोत्सव 15 से 17 अक्टूबर तक धूमधाम से मनाया गया।

आर्यसमाज सांवली आदि पंचपुरी गढ़वाल

देशभक्त, समाज सुधारक, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी स्वर्गीय श्री जयानन्दजी भारतीय की दिनांक-17・10・89 को 108वीं जयन्ती उन्हीं की जन्मस्थली पंचपुरी गढ़वाल में आ0स0 पंचपुरी दारा समाज के अध्यक्ष श्री राजेसिंह जी नेगी ग्राम लेंगल, गढ़वाल की अध्यक्षता में मनाई गई।

●

- आर्यसमाज बीलसपुर {पीलीभीत} का 74वाँ वार्षिकोत्सव दि0 2 से 5 नवम्बर89 तक धूमधाम से मनाया गया जिसमें श्री प्रशस्यमित्र शास्त्री, स्वामी वेदमुनि जी, श्री योगेशदत्त आर्य के सारगर्भित प्रवचन हुए।

●

- आर्यसमाज फोर्ट {बम्बई} में ऋषि निर्वाण समारोह पूर्वक मनाया गया।

●

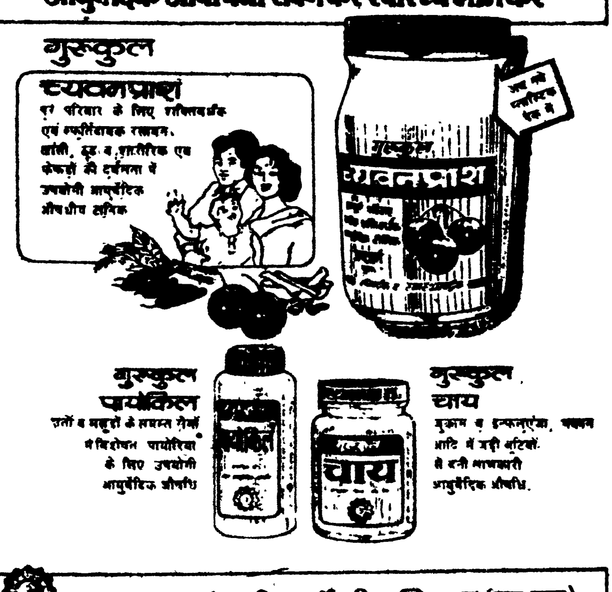
वेद प्रचार

जिला सभा मुरादाबाद के उपदेशक ब्र0 कड़कदेव आर्य, श्री रामलाल आर्य व प्रभात भजनो पदेशक के दारा जि0- बाराबंकी ग्राम रसौली में एक नई महिला समाज स्थापित हुई और 4,5 अक्टूबर को सोमैया नगर का उत्सव 6,7 अक्टूबर89 को ग्रीड गंज का उत्सव व अनाज मण्डी बाराबंकी में वेद प्रचार किया जिसमें हजारों की संख्या में जनता एकत्रित होती रही।

●

आर्य समाज नेमदारगंज {नवादा-बिहार} के कार्यकर्ताओं दारा 27 व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में दीपावली के अवसर पर हवन यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

●



स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवान्दीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त दारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(उ.जि. सं. २२४१/५७)) मार्गशीर्ष शुक्ल ३ रविवार - संवत् २०४६ वि., दिनांक ३ दिसम्बर १९८९ (घोषणा पत्र सं. ७/२८-२-७५)



सच्चे तीर्थ

वेदादि सत्यशास्त्रों का नाम तीर्थ है, जिनके पढ़ने और उनमें कहे गये मार्गों पर चलने से मनुष्य दुखसागर से उबरकर सुख को प्राप्त होते हैं।

वेदादि शास्त्रों को पढ़ाने वाले आचार्य, माता पिता और अतिथि भी तीर्थ हैं उनकी सेवा करने से जीवात्मा शुद्ध होकर दुख से पार हो जाता है।

-- **स्वामी दयानन्द**

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य	रू. २५१/-
वार्षिक	रू. ३०/-
एक प्रति	१.०० रू. मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ४८

अद्भुत पंछी

"द्वा सुपर्णा सयुजा सखायः समानं वृक्षं परिषस्वजाते"

न काला है न गोरा है न नीला है न पीला है। अनन्त आकाश में सर्वत्र स्वच्छन्द विचरण, स्वयं नही उड़ता अगतिक है परन्तु संसार को गति देता है, सबको उड़ाता है। मैं भी उसी के सान्निध्य में उड़ रहा हूँ सदियाँ बीत गई उड़ते उड़ते , संसार के कड़वे, मीठे, कसैले फल चखते-चखते। जहाँ दाना पड़ा मिलता है टूट पड़ता हूँ बिना विवेक किए, क्योंकि भूखा हूँ, प्यासा हूँ। अनेक बार मीठे-मीठे रस चखे पर मिठास की भूख अब भी बनी हुई है। अनेक बार संसार के ऐश्वर्यों को भोगा है पर कामना अभी भी अतृप्त है। पाप का परिणाम दुख है- जानता हूँ, विश्वास करता हूँ। प्रतिदिन कटते हुए इन्सानों को देखता हूँ, तड़पती हुई मछलियों को देखता हूँ- सोचता हूँ क्या वास्तव में इनके पापों का परिणाम है। हमने जिन्दा जलते हुए मूकों को देखा है, भाले पर उछलते हुए मासूमों को देखा है, दीवालों में चुने जाते हुए किशोरों को देखा है- हम जानते हैं उन्हें कितने कष्टों की अनुभूति हुई होगी। चीख नही सकते क्योंकि मुख सिले हुए हैं, भाग नही सकते क्योंकि हाथ पैर बन्धे हुए हैं। उड़ नही सकते क्यों कि पर काट दिए गये हैं, पुकार नही सकते क्योंकि कोई सुनने वाला नही है। अपील कर नही सकते क्योंकि दुनियाँ के मालिक ने अपील खारिज कर दी है। अब तो भोगना ही भोगना है।

वह बड़ा अद्भुत पंछी है, कर्म और भोग से सर्वथा अलग है। उसी पेड़ की डाल पर वह भी बैठा है जिस पर मैं बैठा हूँ। साथ-साथ रहता हूँ, देखता रहता है, साक्षी बना हुआ स्वयं न्याय करता रहता है। न्याय भी उसका अद्भुत है, न कोई साक्षी न कोई कोर्ट न कोई दण्डाधिकारी न कोई जेलखाना। यही शरीर जेलखाना बन जाता है, यही श्वास गले का फाँस बन जाती है। अपने इस सहोदर पंछी से प्यार तो उसे बहुत है मगर क्या करें दुनियाँ का सबसे बड़ा नियामक और न्यायाधीश जो है। जब न्याय के सिंहासन पर बैठ जाता है तो फिर कितना ही पुकारूँ गिड़गिड़ाऊँ- सुनने वाला नहीं--

राम भरोसे बैठिके सबका मुजरा लेय
जैसी जाकी करनी तैसी ताको देय।

लेकिन सावधान! उसने बहुत कर दिया है। दुनियाँ में हमारे आने से पहिले ही हमें सावधान कर दिया है! खबरदार! यह आग है यह पानी, यह छुओगे तो जल जाओगे इसमें बिना सोचे समझे कूद पड़े तो डूब जाओगे। अब हम न मानें तो भोगना तो पड़ेगा ही! --

"अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्"

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर आज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
————राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ, मार्गशीर्ष शुक्ल-३ संवत, २०४६ वि० ३ दिसम्बर १६८६, दयानन्दाब्द, १६५ सृष्टि संवत् १६७२६४६०६०

सम्पादकीय

चुनाव का खूनी महासमर

भारी हिंसा, मतदानपेटियों पर अवैध कब्ज़ा, गुटसंघर्ष, हत्याओं का खुले आम भयानक दौर, फर्जी मतदान, हजारों मतदाताओं के नाम नामावली से गायब कर देने की घिनौनी साजिश, झूठे वायदे और नैतिकता के स्तर से गिरे हुए आरोप प्रत्यारोपों ने लोकतन्त्र के नाम पर कलंक का धब्बा तो लगा ही दिया है, साथ ही इस चुनावी महासमर ने हमारे राजनैतिक क्षितिज पर एक प्रश्नचिन्ह भी उभारकर रख दिया है?। क्या लोकतन्त्र की बुनियाद पर जनता को यही सब कुपरिणाम भोगने होंगे। राज्यतन्त्र और अधिनायकवाद की जिन बुराइयों के प्रतिरोध में हमने जन-जन कल्याणकारी जिस लोकतन्त्र की कल्पना की थी और शासन, जनता से, जनता के लिए, जनता द्वारा का उद्घोष दिया था, वह सब व्यर्थ हो रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारा भारतीय समाज लोकतन्त्र की उस मूलभावना को अभी तक हृदयंगम नही कर सका है जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को अपने विवेक का प्रयोग करते हुए निष्पक्ष शासन का हिस्सेदार बनने का मूल प्राजातान्त्रिक अधिकार मिला हुआ है। आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी हम भारतीय जनता को निश्चित दिशा में लोकतन्त्रीय शिक्षा न दे सकने के कारण शासन को स्थायित्व देने में विफल हो रहे हैं। अहिंसा, शान्ति और प्रेम का मूलमन्त्र मानो हमारे राजनैतिक क्षितिज से प्रायः विलुप्त हो गया है और धीरे-धीरे हम गृहयुद्ध अथवा सर्वनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

चुनाव के दौरान अपराधी व्यक्तियों को प्रचार के मैदान में उतारना घोर आपराधिक प्रक्रिया है। यदि व्यक्ति को दबाव या आतंक के सहारे मत देने को विवश कर दिया गया तो चुनाव न तो निष्पक्ष रहा और न लोकतन्त्रीय। यह तो अधिनायकवाद से भी बुरी दशा है। वहाँ तो एक व्यक्ति का वर्चस्व होता है, उसके अत्याचार की सीमा भी हो सकती है। यहाँ तो व्यक्ति समूह के रूप में अधिनायकवादी बन जाता है और उसके अत्याचार की सीमा असीमित हो जाती है। वह बहुरूपिणी सर्पिणी बनकर घर घर गाँव-गाँव मोहल्ले-मोहल्ले में आतंक का प्रदूषण फैला सकती है। इस चुनावी महासमर में जान-माल की रक्षक पुलिस कितनी खरी उतरी है- यह कहना अभी मुश्किल है। बड़ी विचित्र स्थिति है कि जिस युवापीढ़ी को मतदान के कुछ समय पूर्व ही आयुसीमा घटाकर मत देने का अधिकारी बनाया गया था उनमें से अनेकों के नाम ही नामावली से गायब थे। यह किसी साजिश के तहत हुआ है अथवा प्रेस की भूल से- इस विषय पर अभी कुछ कहना मुश्किल है।

भारत के प्रजातन्त्रीय इतिहास के लगभग प्रत्येक चुनाव में जिस प्रकार का माहौल बनता जा रहा है और नये समीकरण होते जा रहे हैं उनसे लगता है कि इतनी विशाल धनराशि का अपव्यय करने के पश्चात् भी हम जनता को कुशल, निष्पक्ष एवं स्वच्छ प्रशासन देने में असमर्थ रहे हैं। वर्तमान चुनाव में किसी दल को बहुमत मिले या न मिले इतना निश्चित लगता है कि जो संघर्ष चुनावी माहौल में गलियों और सड़कों पर लड़ा जा रहा था और जिनमें न जाने कितनी निर्दोष जानें चली गई वह संघर्ष अब पार्लियामेन्ट और विधान सभाओं में उभरेगा और सम्भवतः लोकतन्त्र का यह स्वरूप खून से रंगता ही चला जायेगा। आज विश्व के राजनैतिक मनीषियों को कोई ऐसी राजनैतिक अथवा सामाजिक व्यवस्था के लिए सोचना होगा जो प्रशासन, राजनीति अथवा समाज के स्तर पर अपने मानवीय स्वरूप को न खो दे।

सार्वदेशिक सभा के मंत्री जी का अभिनन्दन

मैनपुरी आर्यसमाज का 109वाँ वार्षिकोत्सव, निष्ठावान सभासद ठा0-महावीर सिंह जू के संरक्षण तथा प्रधान-पं0 नरेन्द्रार्य की अध्यक्षता में पूर्ण सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

उत्सव में वृहद् यज्ञ, ध्वजोत्तोलन, नगर-कीर्तन के साथ-साथ आर्य राष्ट्र सम्मेलन, राष्ट्रभाषा, सम्मेलन, महिलासम्मेलन, वेद सम्मेलन, युवक सम्मेलन तथा गोरक्षा सम्मेलन आदि के आयोजन, मुख्य-संयोजक पं0 राम प्रकाश की सूझ-बूझ के फलस्वरूप, विशेष आकर्षक रहे। राष्ट्रभाषा सम्मेलन की वह वेला सर्वाधिक आकर्षक रही जब कविवर-दीन मुहम्मद "दीन" ने "हुलसी के तुलसी" नामक रामकाव्य का पाठ करते हुए उर्दू को "द्वितीय राजभाषा" घोषित किये जाने की घोर भर्त्सना की।

दि0 13·11·89 को आर्यजगत की शिरोमणि- संस्था-सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री पं0 सच्चिदानन्द-जी का नगर, जनपद तथा सीमावर्ती जनपदों के आर्य जनों मे प्रशस्ति पूर्वक हार्दिक अभिनन्दन किया।

उत्सव की सफलता में डॉ0 निरूपण जी विद्यालंकार §मेरठ§, डॉ0-रामप्रकाश जी शास्त्री §जसराना§, डॉ0-रामेश्वर दयालु जी, प्रिन्सीपल महावीर-सिंह, ठा0 ब्रजभूषण सिंह, प्रधान उपसभा, डॉ0 डोरीलाल जी §भोगाँव§, कविवर लाखन सिंह जी "सौमित्र", डा0 विजय पाल सिंह §अलीगढ़§ म0 विद्या भिक्षु जी §सिरसागंज§ तथा श्री मती मनोरमा देवी जी §अतरौली§ का सर्वात्मना योगदान रहा।

अन्त में- डॉ0 ज्ञान प्रकाशजी-शास्त्री, मन्त्री व पं0 मूलचन्द जी, स्वागत- मन्त्री ने संयुक्त रूप से आभार-प्रदर्शन, धन्यवाद ज्ञापन तथा शान्तिपाठ के पश्चात् सब को सादर विदा किया।

वेद वेदांग पुरस्कार एवं वेदोपदेशक पुरस्कार १६६०

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई अपने आगामी वार्षिकोत्सव पर जनवरी 1990 में निम्न दो पुरस्कारों से आर्य विद्वानों को सम्मानित करेगा।

1- वेद वेदांग पुरस्कार-

जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त वेद वेदांगों पर अनुसंधान किया हो एवं ग्रन्थ लिखें हों- उन्हें वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। जिसकी पुरस्कार राशि 21000/=होगी।

2- वेदोपदेशक पुरस्कार-

वेद वेदांगों के अनुसंधानकर्ताओं के अतिरिक्त जिस विद्वान ने जीवन पर्यन्त आर्यसमाज के उपदेशक भजनोपदेशक अथवा कार्यकर्ता के रूप में सेवा की हो- इस पुरस्कार की राशि 11000/- होगी उपरोक्त पुरस्कार राशि के अतिरिक्त पुरस्कृत किये जाने वाले विद्वान को अभिनन्दन पत्र, शालू एवं रजत ट्राफी से भी सम्मानित किया जाएगा।

उपरोक्त पुरस्कार हेतु आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई-54 योग्य विद्वानों के प्रस्ताव को आमन्त्रित करती है। जो आर्य पुरुष किसी विद्वान के नाम उपरोक्त पुरस्कार हेतु प्रस्तावित करना चाहते हैं। वे विद्वानों के जीवन परिचय, कार्य एवं लिखे गये ग्रन्थों की सूची आदि सहित, विस्तृत पत्र यथाशीघ्र भेजने की कृपा करें।

-कै0 देवरत्न आर्य, वरिष्ठ उपप्रधान
संयोजक- वेद वेदांग पुरस्कार समिति
सान्ताक्रुज §पश्चिम§

सोवियत क्रान्ति की ७२वीं वर्षगांठ सम्पन्न

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, में सोवियतक्रान्ति की 72वीं वर्षगांठ पूर्ण हर्षोल्लास के साथ दिनांक- 12·11·89 को मनाई गई।

इस सुअवसर पर गुरुकुल में एक वरिष्ठ सोवियत शिष्टमण्डल का भी आगमन हुआ। शिष्ट मण्डल का पूर्ण सम्मान के साथ अभिनन्दन हुआ। शिष्टमण्डल का प्रतिनिधित्व सोवियत सांस्कृतिक मन्त्रालय के प्रभारी का0 मार्केश कर रहे थे। तत्पश्चात् एक विचारगोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमें सोवियत वक्ताओं ने हिन्द सोवियत मैत्री पर प्रकाश डाला।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

• डा० धर्मपाल
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

गुरुकुल कांगड़ी के स्नातकों ने राष्ट्रीय जीवन के अनेक क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान किया है। उनके जीवन में अनेक बड़े बड़े तुफान भी आए और उन्हें अनेक सफलताएं भी मिलीं। इन सफलताओं पर उन्होंने कभी गर्व नहीं किया। विनम्रता उनका सहज स्वभाव ही रहा। गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक संसारी मोहमाया से विरक्त ही रहते हैं। यह विरक्ति उन्हें आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द से विरासत में मिली है। अनेक लोग जीवन के संध्याकाल में अध्यात्म का सहारा लेते हैं परन्तु ये लोग संसारी जीवन व्यतीत करते हुए भी सदा आध्यात्मिक ही रहे हैं। ऐसे ही महापुरुष थे पं0 इन्द्र विधावाचस्पति जो गुरुकुल कांगड़ी के पहले स्नातक थे तथा इसके संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी के द्वितीय पुत्र थे। वे ऐसे नागरिक थे जो [illegible]सिक स्वतन्त्रता, स्वाधीनता एवं राष्ट्रप्रेम की भावना से ओतप्रोत चरित्रवान तथा वैदिक धर्म, आर्य संस्कृति एवं भारतीय सभ्यता के रंग में रंगे थे। उनके मन में भारतीय संस्कृति के पुनरुद्धार एवं लोकसेवा की तड़प थी।

पं0 इन्द्र विधावाचस्पति को राष्ट्रप्रेम की भावना अपने पिता स्वामी-श्रद्धानन्द से विरासत में मिली थी। बाल्यावस्था से ही उनके जीवन में राष्ट्रीय विचारों का सूत्रपात हो गया था। मन ही मन उन्होंने लोकमान्य तिलक को अपना राजनीतिक गुरु मान लिया था। उनके जीवन का ध्येय था समाज व राष्ट्र की सेवा। उनमें भारतीयता व राष्ट्रीयता कूट कूट कर भरी हुई थी। उन्होंने "विजय" एवं "अर्जुन" के माध्यम से अपनी ओजस्वी लेखनी द्वारा सत्याग्रह एवं राष्ट्रीयता का सन्देश जन, जन तक पहुँचाने का प्रथम प्रयास किया। वे राजद्रोही के रूप में प्रसिद्ध [illegible] गये थे और ब्रिटिश सरकार की आंखों में खटकने लगे थे। उन्हें अनेक बार जेल की यात्रा भी करनी पड़ी थी परन्तु वे अपने ध्येय पर अडिग रहे। वे जीवन पर्यन्त देश, धर्म, व जाति की सेवा में लगे रहे। सन्-1952 में उन्हें राष्ट्रपति डा0 राजेन्द्र प्रसाद ने सच्चे राष्ट्रसेवक और विद्वान के रूप में राज्यसभा का सदस्य मनोनीत करके सम्मानित किया था।

पं0 इन्द्र विधावाचस्पति आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता थे। वे वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के मन्त्री व प्रधान आदि पदों पर बड़ी योग्यता से कार्य करते रहे। उन्होंने समय समय पर आर्य जगत का सही नेतृत्व व मार्गदर्शन किया। वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविधालय के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता के रूप में कार्य करते हुए संस्था को प्रगति पथ पर अग्रसर करके उन्होंने आर्यसमाज की अभूतपूर्व सेवा की। उन्होंने आर्य महासम्मेलनों, आर्य रक्षा समिति, सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समिति आदि का संचालन बड़ी सफलता के साथ किया।

पं0 इन्द्र विधावाचस्पति ने वैदिक साहित्य का अनुशीलन एवं वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार का कार्य तत्परता पूर्वक किया। सुप्रसिद्ध साहित्यकार सम्पादक राजनैतिक कार्यकर्ता एवं कुलपति पं0-इन्द्र विधावाचस्पति ने जहां उच्चकोटि की साहित्यक तथा ऐतिहासिक कृतियों की रचना की है वहां उन्होंने वैदिक ग्रन्थों का भी प्रणयन किया। उनकी पुस्तकें उपनिषदों की भूमिका और ईशोपनिषद भाष्य अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं। उनका संस्कृत के प्रति भी अत्याधिक अनुराग था। उन्होंने धार्मिक, सामाजिक सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं ऐतिहासिक विषयों पर लगभग 25 पुस्तकें लिखी हैं, जो बहुत ही लोकप्रिय हुई। अपराधी कौन, सरला की भाभी, सरला, जमींदार, आदि उपन्यास, महर्षि दयानन्द, नेपोलियन बोनापोर्ट, प्रिन्स बिस्मार्क, गेरीबाल्डी, एवं मेरे पिता आदि जीवन चरित्र, जीवन संग्राम, भारतीय संस्कृति का प्रवाह, आर्यसमाज का इतिहास का इतिहास, स्वतन्त्र भारत की रूपरेखा, मुगल साम्राज्य का क्षय और उसके कारण, आधुनिक भारत में वक्तृत्वकला की प्रगति आदि ऐतिहासिक ग्रन्थों ने काफी ख्याति प्राप्त की है। मेरे पिता पर उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया था।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया है। उन्हें दिल्ली में हिन्दी पत्रकारिता का जनक माना जाता है। बाल्यावस्था से ही पत्रकारिता की ओर उनका झुकाव था। 7-8 वर्ष की आयु में उन्होंने सत्यप्रकाशक नामक हस्तलिखित पत्रिका निकालकर एक अद्भुत कार्य किया था। उन्होंने सद्धर्म प्रचारक के साप्ताहिक संस्करण के सम्पादन का दायित्व सम्भाला। और उसे काफी समय तक सफलता पूर्वक निभाया। आपके मन में दैनिक पत्र निकालने की इच्छा बहुत प्रबल थी जो आगे चलकर विजय के रूप में फलवती हुई। इस पत्र के माध्यम से वे दिल्ली के यशस्वी पत्रकार एवं साहित्यकार के रूप में विख्यात हुए। उन्होंने साप्ताहिक सत्यवादी तथा दैनिक वैभव और भविष्य का सम्पादन भी किया। अर्जुन ने अपने जीवन काल में आर्यसमाज और सारे देश की जो सेवा की वह सर्वविदित है। उन्होंने अर्जुन का प्रथम अंक सत्यवादी अर्जुन के साप्ताहिक के रूप में निकाला था। आगे चलकर उन्होंने अर्जुन का नाम बदलकर वीर अर्जुन कर दिया। उन्होंने कुछ समय बम्बई के नवराष्ट्र और दिल्ली के जनसत्ता का भी सम्पादन किया था। इन पत्रों के माध्यम से उनकी स्वतन्त्र विचारधारा एवं राष्ट्रीय भावना खुलकर सामने आई। उनके सम्पादकीय व अग्रलेख भारतीयों के मन में राष्ट्रप्रेम व देश पर मर मिटने की भावना उत्पन्न करते थे। वे विरोधियों के हृदयों पर विष बुझे बाणों की तरह प्रहार करते थे। तत्कालीन शासक और उनके समर्थक पं0 इन्द्र जी को अपना प्रबल शत्रु समझते थे। उन्हीं के प्रयत्नों से हिन्दी पत्रकार सम्मेलन भी प्रारम्भ हुआ और वे इसके दो बार प्रधान भी चुने गये।

पं0 इन्द्र विधावाचस्पति का जन्म 9 नवम्बर 1889 को जालन्धर में महात्मा मुंशी राम (स्वामी श्रद्धानन्द) के घर में हुआ था। और उनका निधन 23 अगस्त 1960 में दिल्ली में हुआ। वे गुरुकुल कांगड़ी में संस्कृत साहित्य, तुलनात्मक आर्य सिद्धान्त व इतिहास के अध्यापक 1914 में नियुक्त किये गये। उसके बाद उनकी जीवन यात्रा बढ़ चली। वे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी के सहायक मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल कांगड़ी के मुख्याधिष्ठाता एवं कुलपति बने। उनका कार्यक्षेत्र अधिक समय दिल्ली में ही रहा। उन्होंने अनेक पत्र पत्रिकाओं का सफलतापूर्वक सम्पादन किया। उन्होंने अनेक संस्थाओं का गठन भी किया। कांगड़ी गांव में एक पाठशाला की स्थापना की और दिल्ली में हिन्दू पब्लीसिटी ट्रस्ट स्थापित किया। वे दिल्ली स्वदेशी संघ के प्रधान अस्पृश्यता निवारक लीग के महामन्त्री, दलितोद्धार सभा के मन्त्री, जिला व प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी दिल्ली के प्रधान, दिल्ली कांग्रेस कनवेंशन के स्वागताध्यक्ष, राष्ट्रभाषा सुरक्षा परिषद के स्वागताध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दी पत्रकार संघ के प्रधान, अखिल भारतीय संस्कृति सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष, संघ लोक सेवा आयोग के परामर्शदाता, भारत के शिक्षा मन्त्रालय का विश्व कोष परामर्शदात्री समिति के सदस्य नियुक्त किये गये। 1952 से 1958 तक वे राज्य सभा के भी मनोनीत सदस्य रहे। राज्य-सभा के सदस्य के रूप में भारतीय जनता को एक नई राष्ट्रीय चेतना प्रदान की उनके हृदय में भारतीय वैदिक संस्कृति कूट-कूट कर भरी थी। और अपने देशवासियों को वे आत्मबलिदानी एवं नैतिक बनने की प्रेरणा देते रहे। उनकी पुस्तकें भारत के स्वाधीनता संग्राम का इतिहास, संस्कृत साहित्य का अनुशीलन, आत्मबलिदान, महर्षि दयानन्द जीवन की झांकियां पं0 जवाहर लाल नेहरु, सम्राट रघु, हमारे कर्मयोगी राष्ट्रपति-मेरे पिता, मैं इनका ऋणी हूं। लोकमान्य-तिलक आदि सभी पाठकों को सच्चा मनुष्य बनने की प्रेरणा देती हैं। भारतीय संस्कृति व राजनीति, भारतीय संस्कृति का प्रवाह, राष्ट्रीयता का मूल मंत्र, राजधर्म आदि पुस्तकों के माध्यम से उन्होंने भारतीय जनमानस में राष्ट्रीयता सहयोग सद्भाव एवं एकता की भावना जगाने का सफल प्रयास किया। स्वाधीनता संग्राम के सिलसिले में उन्होंने कई बार जेल यात्राएं भी कीं और अपने अखबार भी उन्हें बन्द करने पड़े परन्तु उन्होंन भयभीत होकर कभी किसी प्रकार का समझौता नहीं किया। वे आजीवन भारतीय संस्कृति एवं आर्यसमाज के उन्नयन के लिए प्रयत्नशील रहे। राष्ट्रीय एवं आर्यनेता के रूप में प्रख्यात पं0 इन्द्र जी को साहित्यवाचस्पति की उपाधि से भी सम्मानित किया गया था। उस उद्भट विद्वान को उनकी जन्मशताब्दी के अवसर पर हम अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। □

आश्रम व्यवस्था और परिवारकल्याण

डा० स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती (फलाहारी)
शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य, योगाचार्य, बी.एस.सी., एम.बी.बी.एस.

हम बहुधा सुनते रहते हैं-"चार-दिन का जीवन है"। मुनष्य त्याग के साथ भोग करता हुआ, सुख-शान्ति पर सकता है। वेद के अनुसार ऋषियों ने 100 वर्ष के सामान्य मानव- जीवन को- ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास- इन चार -आश्रमों में, चार प्रकार के दिनों में बाँटा है। इन चार आश्रमों में, गृहस्थाश्रम ज्येष्ठ-श्रेष्ठ आश्रम है। शेष तीन आश्रम, गृहस्थाश्रम के सहारे हैं। गृहस्थाश्रम से- ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी और संन्यासी निकलते हैं।

परिवार में माता-पिता से जन्म पाकर, मनुष्य विकास पाता है। परिवार-का-कल्याण- व्यक्तिगत-समष्टिगत-राष्ट्रगत कल्याण है। 1989 ई0 में विश्व की जनसंख्या 5 अरब से अधिक हो चुकी। विश्व का हर सातवाँ व्यक्ति भारत का निवासी है। क्षेत्रफल में 7 गुणा बड़े रूस की जनसंख्या 28करोड़ है तथा 3 गुणा बड़े अमरीका की जनसंख्या 23 करोड़ है। अरब भी एक राष्ट्र है-

"अरब" की जनसंख्या,
एक अरब नहीं है ।
भारत की जनसंख्या ,
एक अरब हो रही ?

भारत की जनसंख्या हर वर्ष 2 प्रतिशत् बढ़ती हुई 80 करोड़ से आगे बढ़ रही है। हर वर्ष भारत की जनसंख्या में, आस्ट्रेलिया की जनसंख्या जुड़ जाती है।

परिवार कल्याण कार्यक्रम का मन्तव्य है- नियोजित परिवार और स्वास्थ्य-संरक्षण। जनसंख्या स्थिर करने हेतु, "दो बच्चों के छोटे परिवार" के, मानक को प्राप्त करना है।

जनसंख्या स्थिर, कैसे हो?
उत्तर है- हमदो-हमारे दो।।

तीन बच्चों के परिवार से जनसंख्या डेढ़गुनी होती है और चार बच्चों के परिवार से जनसंख्या दुगुनी होगी संसार रूपी सराय में, जनसंख्या तो तभी स्थिर रहेगी, जब दो जायें-दो रहें। माता-पिता संसार छोड़ेंगे, तो दो सन्तान उनके उत्तराधिकारी के रूप में रहेंगे। ऋग्वेद के अनुसार --

बहुप्रजा निर्ऋतिमा विवेश-बहु सन्तानों से है, मिलता क्लेश संस्कृत-व्याकरण के अनुसार- एक है एकवचन, दो है द्विवचन और दो से अधिक तो बहुवचन हो जाता है।

आश्रम व्यवस्था में परिवार-कल्याण-कार्यक्रम निहित है। आदर्श व कम सन्तान पर बल दिया गया है। "स्वानां वीरतमः जायताम" के अनुसार आनेवाली सन्तान पिछली पीढ़ी से अच्छी हो। इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु ब्रह्मचर्य- गृहस्थ-वानप्रस्थ-संन्यास- इन चार आश्रमों को 16 संस्कारों से संस्कारित करने का विधान है।

मानव जीवन का प्रथम आश्रम- ब्रह्मचर्याश्रम-शारीरिक-मानसिक विकास हेतु आधारशिला है। शिक्षा प्राप्त करने हेतु बालक गुरुकुल में प्रविष्ट होते हैं। कन्याओं का कन्या गुरुकुल अलग होता है। गुरुकुल में प्रवेश का अभिप्राय है- गुरु के कुल में- आश्रम में प्रविष्ट होना। बीसवीं शताब्दी के नवम दशक में प्रारम्भ किये गये- नवोदय विद्यालय, गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के आधुनिकरूप हैं। गुरुकुल में प्रविष्ट बालक को तीन प्रकियाओं से पार होना पड़ता है:-आश्रमवास, उपनयन संस्कार और ब्रह्मचर्यव्रत। गुरुकुलवास- आश्रम वास- ही ब्रह्मचर्याश्रम है। आश्रम का मूलभूत भाव "श्रम" या "तपस्या" है। उपनयन संस्कार- गुरु के सान्निध्य में ले जाने का संस्कार है। ब्रह्मचर्यव्रत, ब्रह्मचर्याश्रम का मुख्य लक्ष्य है तथा विद्या प्राप्त कर ऋषिऋण से उऋण होना चाहिये"। ब्रह्मणि-चरति इति ब्रह्मचारी" के अनुसार आध्यात्मिक भाव है- "जो ब्रह्म में विचरण करता है, वह ब्रह्मचारी है।" ऐसा बालक जीवन में महान् होने की अभिलाषा लिये गुरु के आश्रम में आता है। ब्रह्मचर्य का प्रसिद्ध आधिभौतिक अर्थ है- शरीर की शक्ति-वीर्य- को धारण करते हुऐ, सदाचार पूर्वक श्रम के साथ जीवन व्यतीत करना।

"आचारं ग्राह्यति इति आचार्यः" के अनुसार जो आचार ग्रहण कराता है, वह आचार्य है। ब्रह्मचर्याश्रम में ब्रह्मचारी और आचार्यशिक्षा के दो बिन्दु हैं- इन दोनों को सदाचार की रेखा मिलाती है।

ब्रह्मचर्याश्रम काल कम से कम 25 वर्ष होने से परिवार कल्याण कार्यक्रम की दृष्टि से, बालविवाह व किशोर विवाह की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। बालक की किशोरावस्था तब आती हैं, जब उसके शरीर में शुक्र अर्थात् वीर्य का उदय प्रारम्भ हो जाता है तथा उसके वीर्य से सन्तान उत्पन्न हो सकती है। इसी प्रकार बालिका में किशोरी अवस्था तब प्रारम्भ होती है, जब उसके मासिक धर्म होने लगता है। बाल्यावस्था तो किशोरावस्था से पहले की अवस्था है। किशोरावस्था में केवल शारीरिक विकास हो पाता है। शारीरिक विकास के साथ मानसिक विकास तो बालकों में 24 वर्ष तथा बालिकाओं में 18 वर्ष के बाद युवावस्था आने पर ही हो पाता है।

बालविवाह में सन्तानोत्पत्ति शरीर-नाश के साथ मृत्यु को जल्द बुलाने का निमन्त्रण देना है। किशोर विवाह के द्वारा गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट पति-पत्नी- अस्वस्थ-अल्पजीवी सन्तान को जन्म देते हैं। सन्तानें भी जल्दी-जल्दी बहुवचन में हो जाती है। किशोरावस्था में शरीर की अस्थियों की परिपक्वता पूर्ण नहीं हो चुकी होती है। अस्थियों के ही आधार पर तो- मांसपेशी संस्थान, तन्तुसंस्थान, रुधिरसंस्थान, पाचन संस्थान आदि रहते हैं।

ब्रह्मचर्याश्रम में स्वेच्छा से वसु ब्रह्मचारी 24 वर्ष तक, रुद्रब्रह्मचारी 36 वर्ष तक तथा आदित्य ब्रह्मचारी 48 वर्ष तक विद्या-शिक्षा प्राप्त करते हुये ब्रह्मचर्य का पालन करता है। इसके बाद समावर्तन संस्कार में ब्रह्मचारी, गृहस्थाश्रम में प्रवेश पाने हेतु- आचार्य से विवाह संस्कार की अनुमति पाता है। आजन्म ब्रह्मचारी रहने का इच्छुक, नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर- "मैं एक- अकेला एक" का नारा लेकर जनसंख्या वृद्धि में अवरोध बन सकता है। बढ़ती हुई जनसंख्या की भीड़ में ऐसा "नारा लगाने वाले" नरों का आदर कौन नहीं करेगा?

मानव जीवन का द्वितीय आश्रम- गृहस्थाश्रम है। युवावस्था आने पर ही विवाहसंस्कार के द्वारा गृहस्थाश्रम में प्रवेश की बात कही गई है। अथर्ववेद के अनुसार "ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्" अर्थात् ब्रह्मचर्य पूरा करके कन्या युवापति से विवाह करती है। युवावस्था में कम सन्तानें होती हैं, जो स्वस्थ और दीर्घजीवी होती हैं। ब्रह्मचर्य आश्रम से आने के बाद स्वास्थ्य की दृष्टि से 18 से 36 वर्ष की युवती का विवाह 24 से 48 वर्ष के युवा के साथ व्यावहारिक तथा कम सन्तान-सुसन्तान प्राप्ति हेतु वरदान है। प्रथम संस्कार-गर्भाधान संस्कार द्वारा अभीष्ट सुसन्तान का आवाहन किया जाता है। समाज और राष्ट्र-जनगुणा से नहीं-गुणीजन से उन्नत होता है। गृहस्थ आश्रम में एक या दो सन्तान पाकर मनुष्य, पितृऋण से उऋण हो जाता है। जीवात्मा- पुत्र या पुत्री में एक समान होती है।

पुत्र - पुत्री, एक समान।
बस केवल, दो सन्तान।।

गृहस्थाश्रम में अधिक से अधिक 25 वर्ष भोग-ऐश्वर्य का काल बिताने के बाद त्याग की ओर चलने हेतु तृतीय आश्रम-वानप्रस्थाश्रम-में प्रवेश किया जाता है। अपने अनुभवों से दूसरों को लाभ पहुँचाते हुए- देवऋण से उऋण होने का अवसर है। प्राचीनकाल में वानप्रस्थी मुनि गुरुकुलों में शिक्षक होते थे।

वानप्रस्थाश्रम में अधिक से अधिक 25 वर्ष व्यतीत करने के बाद जब वैराग्य आवे- अर्थात् पुत्रैषणा-वित्तैषणा-लोकैषणा की लालसा न रहे। तो संन्यासाश्रम- चतुर्थ आश्रम में प्रवेश करना चाहिये। संन्यासी हर परिवार का कल्याण करने वाला- "वसुधैव-कुटुम्बकम्" की भावना से युक्त- विश्वनागरिक है। कुछ लोग गृहस्थाश्रम में वैराग्य आने पर सन्यासी बनते हैं।

"ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेत् (ब्राह्मण ग्रन्थ)" के अनुसार विरले ब्रह्मचारी, ब्रह्मचार्याश्रम से सीधे संन्यासी बनते हैं। नैष्ठिक-ब्रह्मचारी संन्यासी को "आदित्यश्री" की उपाधि से विभूषित करना-"परिवार कल्याण कार्यक्रम" के मस्तक पर तिलक लगाना है। संन्यासी सब छोड़कर-स्वामी की उपाधि पाता है। संन्यासी-ऋषि- महर्षि बन सकता है। संन्यासी का भगवा वस्त्र-आग की उन लपटों की याद दिलाता है, जिनमें लपट कर सबको पंचतत्वों में मिल जाना है।

मानव-जीवन के चार-आश्रमों-की-दिनचर्या- हर परिवार को कल्याण-मार्ग पर ले जाने हेतु- सदाचार-परोपकार-सदाबहार की "आचार-संहिता" है। □

ऋषि दयानन्द के अनुसार दलित समस्या का समाधान

गतांक से आगे....

— डा॰ ज्वलन्त कुमार शास्त्री - अमेठी

हरिजनों का मन्दिर प्रवेश

दिवराला में रूप कँवर के सतीदाह तथा श्री निरंजनदेव तीर्थ द्वारा उसका समर्थन तथा हरिजनों के मन्दिर प्रवेश का अनधिकार की वकालत किये जाने पर आर्यसमाज - सभाओं के स्तर पर विरोध प्रदर्शन तथा वक्तव्य प्रसारण तक ही सीमित रहा। स्वामी अग्निवेश की दिवराला पद यात्रा, नाथमन्दिर में प्रवेशार्थ पदयात्रा तथा महादेवपुरा की ओर शास्त्रार्थ के लिए कूच करना उनके व्यक्तिगत प्रयास का उदाहरण था। सैद्धान्तिक सहमति के कारण व्यापक रूप से आर्य समाजियों का उन्हें सहयोग मिला। किन्तु यह कड़वी सच्चाई है कि शिरोमणि सभाओं द्वारा सक्रियता नहीं दिखाई गई। उल्टे सनातनधर्म के गोस्वामी गिरधारी लाल के साथ बैठक की गई और सभाओं के मुखपत्र में यह वक्तव्य छपाया गया कि "हरिजनों को हिन्दूधर्म में पूर्ण अधिकार और सम्मान दिया गया है। नाथ द्वारा मन्दिर प्रवेश-- आन्दोलन द्वारा किसी को राजनैतिक लाभ उठाने की छूट नहीं दी जा सकती"। हरिजनों को हिन्दूधर्म में पूर्ण अधिकार और सम्मान की तत्काल ही कलई खुल गई जब नाथद्वारा के पुजारियों ने हरिजनों के मन्दिर प्रवेशा पर उन्हें लाठियों से पीटा।

एक दूसरा कपटपूर्ण सवाल उछाल दिया गया कि आर्यसमाज मूर्तिपूजा का विरोधी है अतः हरिजनों के मन्दिर प्रवेशान्दोलन की अगुवाई उसे नहीं करनी चाहिए। जबकि लक्ष्य यह था कि हरिजनों का मन्दिर अन्य स्थानों की भाँति अव्याहत रूप से होना चाहिए यह उनके मौलिक अधिकार प्राप्त करने तथा अस्पृश्यता उन्मूलन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाने का प्रश्न था। जब हम आर्यसमाजी जो विभिन्न वर्णों- (ब्राह्मणों, क्षत्रियों तथा वैश्यों) या जातियों से आते हैं, इन मन्दिरों में प्रवेश करते हैं तो मूर्तिपूजा के लिए नहीं जाते। तो हरिजन भी मूर्तिपूजा न करने की स्थिति में उन मन्दिरों को देखने की हम लोगों के समान क्यों नहीं जा सकते?

लक्ष्य करने की बात यह है कि आज से छः दशक और चार दशक पूर्व जब पौराणिक पण्डितों और करपात्री- जी ने हरिजनों के मन्दिर प्रवेश को अशास्त्रीय और धर्मविरुद्ध बताया तब किसी आर्य विद्वान या नेता ने मूर्तिपूजा के दावे द्वारा मन्दिर प्रवेश के आन्दोलन को अनुचित नहीं बताया था। हम उस समय के जागरूक आर्य विद्वानों और नेताओं की गतिविधियों का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। प्रसिद्ध आर्य विद्वान जे०पी० चौधरी काव्यतीर्थ ने 1932ई० तथा 1957 ई० में दो पुस्तकें प्रकाशित की थीं जिनका शीर्षक था-- **मन्दिर-प्रवेश** (वेद, शास्त्र, पुराण के अनुसार सर्वथा उचित)। इस ग्रन्थ में हरिजनों का मन्दिर प्रवेश, सनातन धर्म के वेद पुराण शास्त्रों से सम्मत है, यह दिखलाया गया है। आर्य प्रतिनिधि-सभा यू०पी० के प्रमुख नेता और अधिष्ठाता पं० शिवदयालु जी ने भी शारदा पीठाधीश्वर श्रीस्वामी त्रिविक्रम तीर्थ जी महाराज के "पतित मीमांसासूत्र" के आधार पर **"शंकराचार्य और पतितोद्धार"** नामक पुस्तक 1934 ई० में लिखी थी। श्री जे०पी० चौधरी ने पहला ग्रन्थ तब लिखा जब मिश्र पोखरा वाराणसी में आयोजित ब्राह्मण महासम्मेलन में 80 दिग्गज विद्वानों के हस्ताक्षर से अन्त्यजों के मन्दिर प्रवेश निषेध पर व्यवस्था दी गई थी। उसी समय महात्मा गाँधी हरिजनों के मन्दिर प्रवेश को लेकर आमरण अनशन पर बैठे थे। तब किसी आर्य नेता या विद्वान् को हरिजनों का मन्दिर प्रवेश आन्दोलन सिद्धान्त विरुद्ध नहीं लगा था। दूसरी पुस्तक उन्होंने तब लिखी जब करपात्री जी ने हरिजनों के मन्दिर प्रवेश को शास्त्र विरुद्ध कहकर आन्दोलन खड़ा किया। इन्हीं करपात्री जी के साथ श्री निरंजनदेव तीर्थ द्वारा जब पिछले दिनों यही बात दुहराई गई तब हिन्दूवादी आर्यनेताओं को मूर्ति पूजा का बहाना बनाना पड़ा। जबकि इस बार पुस्तक की कौन कहे कोई ट्रैक्ट भी सभाओं ने नहीं छापा। मूर्तिपूजा वाला तर्क पता नहीं उस समय कहाँ चला गया था जब विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा राष्ट्रीय एकात्मता यज्ञ के लिए रथयात्राएँ निकाली गईं और **श्रीराम सीता** की मूर्तियों की पौराणिक पूजा-अर्चना की गई। अधिकांश जगहों पर रथयात्राओं का पड़ाव आर्यसमाज मन्दिर ही बना। इसी प्रकार धार्मिक दृष्टि से गंगाजल की बोतलों के क्रय-विक्रय रूप पाखण्ड के विरोध में भी सभाओं ने कोई वक्तव्य प्रसारित नहीं किया। हाँ, फ्रांस के किसी कथित ज्योतिषी की भविष्यवाणी आर्यपत्रों द्वारा अवश्य प्रसारित की गई जिसमें 10—15वर्षों बाद भारत के विश्वगुरु और राज्यनियामक हो जाने की बात दिवास्वप्न के समान कही गई थी। इस बात को कुछ आर्य नेता अपने भाषण में भी कहते हैं। सुना है कि आर्य नेतृवर्ग आन्ध्रप्रदेश और महाराष्ट्र के गणेशोत्सवों में भाग लेता है तथा **श्री गणपति बप्पा मोरिया (गणेशजी)** की मूर्ति पर फूल-मालाएँ चढ़ाता है।

आज एक से बढ़कर एक ज्वलन्त धार्मिक और सामाजिक समस्यायें उपस्थित होती हैं। हम अपनी प्रतिक्रिया आर्यसमाजी अखबारों में व्यक्त करके चुप हो जाते हैं। हमारी पत्रिकाओं की प्रसार संख्या आर्यसमाजियों तक सीमित है अतः आर्यसमाज से बाहर का विशाल पाठकवर्ग हमारी मान्यताओं से परिचित तक नहीं हो पाता। दैनिक पत्रों और मानक पत्रिकाओं में उन धार्मिक और सामाजिक ज्वलन्त समस्याओं पर जो लेख छपते हैं उनसे आर्य समाज की विचारधारा का पूरी तरह प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता। अब हमारे पास गिने-चुने लेखक ही रह गये हैं जो हमारी आर्य विचारधारा के आधार पर धार्मिक और सामाजिक अधुनातन विचारोत्तेजक समस्याओं पर लेखनी उठाते हों। अतः यह अत्यन्त ही आवश्यक है कि आज जो भी धार्मिक तथा सामाजिक समस्या या प्रश्न उपस्थित हो तुरन्त आर्यसमाज अपने दृष्टिकोण से उस पर अंग्रेजी, हिन्दी और भारतीय भाषाओं में स्तरीय ट्रैक्ट लिखवाये और छपवाये। साथ ही दैनिक पत्रों तथा स्तरीय पत्रिकाओं में भी अपनी दृष्टि से समुचित स्तरीय निबन्ध लिखवाकर प्रकाशित कराये।

हार्दिक अभिनन्दन

आर्यसमाज हसनपुर (मुरादाबाद) ने उ०प्र० सरकार द्वारा उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने के विरोध में प्रसिद्ध साहित्यकार श्री श्री नारायण चतुर्वेदी के सरकार के एक लाख रूपये का भारत-भारती पुरस्कार ठुकराने पर श्री चतुर्वेदी के इस त्याग पर उनका हार्दिक अभिनन्दन करता है।

आर्यसमाज बीकापुर (फैजाबाद) का 16वाँ वार्षिकोत्सव दि० 13 से 15- अक्टूबर 89 तक धूमधाम से मनाया गया। जनता पर वैदिक धर्म के प्रति सम्मान बढ़ा।

१५०० ईसाइयों द्वारा वैदिक धर्म में प्रवेश

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से जारी एक प्रेस वक्तव्य में बताया गया है कि गत 12 नवम्बर को महाराष्ट्र के बेलखेड़ा जिला- अकोला में एक विशाल वनवासी आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया था। सम्मेलन से पूर्व यज्ञ कुण्डों पर हजारों स्त्री-पुरुषों की उपस्थिति में लगभग 1500 ईसाईयों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म में प्रवेश किया। सत्य सनातन वैदिक धर्म की जय-जयकार के साथ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने जल प्रोक्षण करके इन बिछुड़े लोगों को वैदिक धर्म की दीक्षा दी। इसके बाद नगर में एक विशाल शोभायात्रा निकाली गई जिसमें हजारों नर-नारियों ने भाग लिया। श्री स्वामी जी महाराज का नगर वासियों की ओर से स्थान-स्थान पर स्वागत किया गया, और उनके रथ पर मकानों की छतों से पुष्प वर्षा होती रही।

आर्यसमाज सावधान ?

• स्वामी विद्यानन्द सरस्वती
डी-१४/१६, माडल टाउन, दिल्ली

डी०ए०वी० शताब्दी के उपलक्ष्य में अपनी पूर्वनिर्धारित योजना के अनुसार प्रो० वेद व्यास जी के नेतृत्व में डी०ए०वी० प्रबन्ध समिति का महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज की वेद तथा वैदिक कालीन मान्यताओं के विरुद्ध प्रचार करने का अभियान चालू है। तदनुसार उसकी ओर से "The Young World" नाम से अंग्रेजी में एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया गया है। यह पत्रिका डी०ए०वी० पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले प्रत्येक विद्यार्थी को प्रतिमास दो रुपये लेकर दी जाती है। ऐसे स्कूलों की संख्या वर्तमान में तीन सौ बताई जाती है जो जल्दी ही पाँच सौ होने वाली है (स्वयं प्रो० वेदव्यास जी की घोषणा के अनुसार)। प्रत्येक स्कूल में औसतन 1500 विद्यार्थी बताये जाते हैं। इस प्रकार डी०ए०वी० का लक्ष्य प्रतिमास साढ़े सात लाख (वर्तमान में साढ़े चार लाख) घरों में आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द तथा वेद विरोधी विचारों को पहुँचाना है - उन्हीं के पैसे से अर्थात "मियां की जूती मियां का सिर"।

'The Young World' में क्या है? इसका पता उसके मार्च 1989 के अंक के मुखपृष्ठ (Title) पर छपे इस लेख से लग जाता है-

Early Aryan Culture

The original habitat.of the Aryans muşt have been somewhere in North-West Asia. There was a dispersal of the Aryans. Some of them moved to the Sapta Sindhu region of India. Being better equipped than, the Dravadions and aborigiues, the Aryans drove them South and East. The sun, the earth, the winds, dawn, fire were their Gods and they prayed to them. In the course of the the few centuries they composed the vedas and the Upnishads. The aborigiues were looked down upon the Shudras (Serfs= Slaves) were Anaryans. Rituals and animal sacrifices were given prominence by the Brahmanas."

अर्थात आर्यों का मूल निवास कहीं पश्चिमोत्तर एशिया में था। उन्हें वहाँ से भागना पड़ा। उनमें से कुछ भारत के सप्तसिन्धु प्रदेश की ओर आये। द्रविड़ आदि भारत के आदिवासियों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होने से आर्यों ने उन्हें दक्षिण और पूर्व की ओर खदेड़ दिया। पृथ्वी, सूर्य, ऊषा, अग्नि, वायु आदि आर्यों के देवता थे जिनकी वे उपासना करते थे। कुछ शताब्दी बाद उन्होंने वेदों तथा उपनिषदों की रचना की। भारत के मूल निवासियों को आर्य लोग घृणा की दृष्टि से देखते थे। शूद्र अनार्य थे और दास समझे जाते थे।

ऋषि दयानन्द की शिक्षा नीति के तीन निर्देशक सिद्धान्त हैं-

1- प्रारम्भिक शिक्षा मातृभाषा में।
2- सहशिक्षा का निषेध ।
3- ऐसे विद्यालय जिनमें राजकुमार और दरिद्र की सन्तानें एक साथ पढ़ सकें।

डी०ए०वी० ने

1. English Medium.
2. Co-education
3. Public (जिससे 10 से 15 हजार रूपये देने पर नर्सरी क्लास में प्रवेश मिलता है और सैकड़ों रूपये मासिक खर्च होता है)

खोलकर घोषणापूर्वक सत्यार्थ प्रकाश को रद्दी की टोकरी में फेंक दिया है। भूतपूर्व केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री श्री कृष्णचन्द्र पन्त ने मुझसे कहा कि शिक्षा सम्बन्धी ऐसे जितने दोष हैं, उनके लिए आर्यसमाज दोषी है। उन्हीं की देखा देखी दूसरों ने भी स्कूल खोलने शुरू कर दिए। किन्तु सरकार ने ऐसे स्कूल अभी तक (1985 तक) नहीं खोले। यह सुनकर मेरा सिर शर्म से झुक गया। डी०ए०वी० की इसी आर्य विरोधी नीति को अपनाने के कारण भारत सरकार को संस्कृत पर प्रहार करने का अवसर मिल गया है। अंग्रेजी की अनिवार्यता (जिसकी प्रेरणा आर्यसमाज ने दी है) हटे बिना न संस्कृत रहेगी, न हिन्दी और न कोई अन्य भारतीय भाषा। आर्यो! सावधान- वेद मर रहे हैं, संस्कृत मर रही है, हिन्दी जा रही है, भारत और भारतीयता खतरे में है।

यद्यपि आर्यसमाज का दृष्टिकोण आर्यों के मूल निवास तथा आर्यों की शिक्षा दीक्षा के बारे में बड़ा सुस्पष्ट है। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में स्पष्ट लिखा है कि सृष्टि का जब निर्माण हुआ तो त्रिविष्टुप अर्थात जिसें आज की भाषा में तिब्बत कहा जाता है वह भाग ऊँचा होने के कारण सबसे पहले पृथ्वी के रूप में डाल से प्रकट हुआ और आर्य लोग वहीं से उस आर्यावर्त में आ कर बसें और उन्होंने वैदिक धर्म का इसी भूमि से संसार में प्रचार और प्रसार किया। स्वामी जी सहशिक्षा के घोर विरोधी थे तथा प्रारम्भिक शिक्षा मातृभाषा में देने के पक्षपाती भी। गुरुकुली शिक्षा प्रणाली में बालिकाओं और बालकों के गुरुकुलों की दूर-दूर व्यवस्था किये जाने का उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में वर्णन किया है। आर्यसमाज इसी सिद्धान्त का पोषक है, और इसे ही विश्व में प्रचलित करना चाहता है। ■

आर्यसमाज देवबन्द में शोक सभा

आचार्य श्री पं० सत्यव्रत जी शास्त्री विद्यावाचस्पति गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर जिन्होंने अपनें जीवन का अधिक भाग गुरुकुल की सेवा में व्यतीत किया।

पं० शिवकुमार शास्त्री आर्यसमाज के माननीय स्तम्भ/अपनी योग्यता के कारण दो बार लोकसभा के सदस्य चुने गये, निरभिमानी आर्यसमाज के विद्वान जो आर्यसमाज के लिये समर्पित थे।

ब्रहमचारी विजेन्द्र जी जिन्होंने पहले रणखण्डी संस्कृत पाठशाला की सेवा की। अब बबेल सहारनपुर में आश्रम बनाकर वृद्धावस्था को व्यतीत कर रहे थे। किसी अत्याचारी ने उनकी हत्या कर दी। वे बड़े उत्साही कर्मठ साधु थे।

यह शोक सभा उपरोक्त तीनों महापुरूषों की आत्माओं को सद्गति के लिये प्रभु से प्रार्थना करती है।

शोक प्रस्ताव

- आर्यसमाज गवाँ (बदायूँ) के सदस्य श्री आनन्द स्वरूप जी के पिता श्री शान्ति-स्वरूप जी का 85 वर्ष की आयु में निधन दिनांक- 29·9·89 को हो गया। आर्यसमाज ने अपने अधिवेशन में प्रस्ताव पारित कर दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

दिनांक- 28·9·89 को श्री ढेराशाहजी उपप्रधान आर्यसमाज गोला के आकस्मिक निधन पर आर्यसमाज- गोला की एक शोक सभा श्री गिरधारी लाल शर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें 2 मिनट मौन रहकर परम पितापरमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना की गयी। और यह भी सर्वनियन्ता से प्रार्थना की गयी कि उनके शोक सन्तप्त परिवार को इस भीषण आघात को सहन करने की क्षमता प्रदान करें।

देवता स्वरूप भाई परमानन्द

(जन्म-४ नवम्बर १८७५, निधन-८ दिसम्बर १९४७)

● पवन कुमार
एम.ए.बी.टी. सिद्धान्तशास्त्री

देवता स्वरूप भाई परमानन्दजी महर्षि दयानन्द के प्रमुख अनुयायी वैदिक धर्म के तथा आर्यसमाज के मिशन के प्रचारक दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज के जीवन दानी सदस्य तथा उसी कालेज के प्रवक्ता थे। भाई जी संकल्प में ढले योद्धा कर्मशूर एक महान चिन्तक लेखक और वक्ता थे। जैसे वे अपनी शौर्याकांक्षा से अद्वितीय थे वैसे ही वे इन क्षेत्रों में बेजोड़ व्यक्तित्व के धनी थे। इस महामानव के चरित्र की यह विशेषता थी कि बज्रदण्डों से दण्डित और पीड़ित अपने विरोधियों से लांछित और अपमानित तथा सन्तप्त रहकर भी उनकी मनस्विता कभी विचलित नहीं हुई। उनके मन का महासागर कभी भी मर्यादा से च्युत नहीं होने पाया।

भाई परमानन्द जी ने अपनी युवावस्था में देश विदेश में वैदिक धर्म और आर्यसमाज का सन्देश गुंजाया। वस्तुतः वे आर्यसमाज तथा दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज लाहौर की देन थे। उनका सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म, स्वदेश भक्ति तथा आर्य हिन्दुत्व में समर्पित था। श्री श्याम जी कृष्णवर्मा, स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर तथा लाला हरदयाल आदि क्रान्ति के अग्रदूतों के सहयोग से भारत भूमि को दासता की श्रृंखलाओं से मुक्ति दिलाने के लिए डटकर जूझे। वे प्रारम्भिक दिनों में अपने विद्यार्थी, सहयोगियों शिक्षकों तथा अपने सम्पर्क में आने वालों के प्रेरणास्रोत रहे। अमर हुतात्मा सरदार करतार सिंह, सरदार भगत सिंह, सुखदेव, यशपाल, भगवती चरण वोहरा, श्री रामप्रसाद बिसमिल, सदृश क्रान्तिकारी युवकों ने उन्हीं के चरणों में बैठ कर क्रान्ति का पाठ पढ़ा था। उन्होंने संगठन यज्ञ में अपना जीवन होमने के भाव सहस्त्रों युवकों में जगाए।

लाला लाजपत राय भाई परमानन्द के प्रमुख सहयोगी थे। लाला हरदयाल ने भाई जी के मार्ग दर्शन में राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के संघर्ष में कूदने का दृढ़ निश्चय किया था। श्री रास बिहारी बसु तथा जगत राम जी ने उनसे राष्ट्र सेवा की प्रेरणा ली थी। युग पुरुष विश्वबन्धु महात्मा मोहन दास-करमचन्द गाँधी ने उनके तपस्वी तथा त्यागमय जीवन सादगी तथा उच्चविचार से प्रभावित होकर उनका बिस्तर अपने कन्धे पर उठाया था तथा दक्षिण अफ्रीका में वैदिक धर्म के प्रचार में उनका सहयोग दिया था।

महाराणा प्रताप और छत्रपति-शिवाजी के पश्चात् आर्य हिन्दु राष्ट्र का दृढ़ संकल्प लेने वाले भाई जी प्रमुख महापुरुष थे। भाई परमानन्द उन मनीषियों में से एक थे। जिन्होंने आर्य हिन्दू राष्ट्र की मूल भावनाओं को भारतीय जनता के समक्ष स्पष्ट रूप से रखने का महान प्रयास किया। उन्होंने कहा कि आर्यत्व या हिन्दुत्व एक राष्ट्र है। भारत वर्ष अथवा आर्यावर्त आर्य हिन्दू की मातृभूमि, पितृभूमि और पुण्य भूमि है। इस आस्था को मानने वाला इस पर सर्वस्व बलिदान की भावना रखने वाला ही आर्य हिन्दू है। हिन्दू राष्ट्र पुरुष है। यह उदात्त भावना आर्य हिन्दुओं में सुदृढ़ हो यही भाई-परमानन्द जी के जीवन का एक मात्रलक्ष्य रहा। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने भारत और भारत से बाहर अफ्रीका यूरोप और अमरीका में धर्म प्रचार यात्राएं कीं और कठिनाईयाँ झेलीं।

अंग्रेज भाई परमानन्द जी के उत्कट धर्म प्रेम राष्ट्र प्रेम तथा भारत देशाभिमान को सहन न कर सके। अंग्रेज शासकों ने भाई जी को विशिष्ट क्रान्तिकारी मान कर लाहौर षडयन्त्र केस में फँसाकर मृत्युदण्ड की घोषणा की पश्चात जनमत के दबाव से श्री महात्मा गाँधी, पं० मदनमोहन मालवीय तथा दीनबन्धु ऐण्ड्रुज के सद प्रयासों से तथा भाई जी की पत्नी की तपस्या से उनकी मृत्युदण्ड आजीवन कारावास में बदल दिया गया। अण्डमान में 40 वर्ष तक रहते हुए इस महान तपस्वी ने जो नारकीय यम यातनाएं झेलीं वह अब वरीती है। उद्देश्य प्रिय मातृभूमि स्वतन्त्र हो। जेल की यातनाएं महर्षि दयानन्द के अनुयायी को अपने कर्तव्य से विचलित न कर सकें। तप की अग्नि में तप कर भाई परमानन्द कुन्दन के समान गुह बनकर निकले। उन्होंने महात्मागाँधी के नेतृत्व में चलाए जा रहे असहयोग आन्दोलन को क्रियात्मक योगदान दिया। लाहौर में जब राष्ट्रीय विद्यापीठ की स्थापना हुई तो महात्मा गाँधी तथा लाला लाजपतराय के परामर्श से भाई जी ने विद्यापीठ का उपकुलपति इतिहास का प्रवक्ता बनना स्वीकार किया। सन् 1923 से 1947 तक वे हिन्दू संगठन का कार्य करते रहे। उन्होंने राष्ट्र की सुदृढ़ता और अखण्डता के लिए संघर्ष किया। अन्त में अखण्ड भारत का स्वरूप अपनी आँख में संजोए तथा खंडित भारत की दुर्दशा से पीड़ित भाई जी ने 8 दिसम्बर 1947 को अपने भौतिक शरीर का परित्याग किया। इस महान देशभक्त का जन्म 4 नवम्बर 1875 को पंजाब राज्य के झेलम जिले के करियाला ग्राम मोहनाल-ब्रामक वंश भाई ताराचन्द्र जी के वंश में हुआ था। उनकी माता का नाम मथुरादेवी था।

इतिहास के मर्मज्ञ महान तत्ववेत्ता दूरदर्शी राष्ट्रदृष्टा तथा सजग प्रहरी भाई परमानन्द के समान कोई दूसरा नहीं हुआ! इस अपेक्षित दया भवत के चरणों में श्रद्धांजलि समर्पित है। ◘

उत्सव सम्पन्न

"आर्यसमाज शक्तिनगर का पंचमवार्षिकोत्सव" गत 7, 8, 9 नवम्बर 89 को उत्तरप्रदेश के सोनभद्र जिले के अन्तर्गत शक्तिनगर आर्यसमाज का 5वाँ वार्षिकोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया।

सभा प्रधान श्री पं॰- इन्द्रराज जी का प्रचार कार्यक्रम

आर्यसमाज साकेत मेरठ के वार्षिकोत्सव पर निम्नलिखित परिवारों में सभा प्रधानजी के व्याख्यान हुए:-

﴾1﴿ दि0 22·9·89 का श्री जे0पी0- गोयल जी प्रधान आर्यसमाज साकेत के निवास पर आध्यात्मिक व्याख्यान।

﴾2﴿ दि0 23·9·89 को श्री ओ0पी0- सप्रा एडवोकेट के निवास प्रभातनगर में वेद में धन ऐश्वर्य के कमाने की व्यवस्था पर व्याख्यान।

﴾3﴿ दि0-26·9·89 को श्री राजेन्द्रप्रसाद- जी गोयल साकेत मेरठ के निवास पर श्राद्ध व्यवस्था पर व्याख्यान

﴾4﴿ दि0- 27-9-89 को श्रीमती पुष्पा जी अग्रवाल के घर पी0डब्लू0डी0- क्वार्टर में नारी स्वतन्त्रता पर व्याख्यान।

﴾5﴿ दि0- 28·9·89 को श्री रमेशचन्द्र जी तायना मनोरंजनपार्क साकेत में परिवारों में संस्कार डालने की प्रेरणा-

-----

दि0- 28-9-89 आर्यसमाज आयुध निर्माणी मुरादनगर में वेदप्रचार सप्ताह के अन्तर्गत श्री धर्मपाल सिंह जी के निवास पर आर्यसमाज के मन्तव्यों पर सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी का भाषण।

दि0 30-9-89 आर्यसमाज बिजनौर के वार्षिकोत्सव के अन्तर्गत विशाल शोभायात्रा की समाप्ति पर उर्दू विधेयक को बलात लादने के सन्दर्भ में आर्यसमाज की ओर से आन्दोलन के लिए सभा प्रधान श्रीइन्द्रराज- जी की प्रेरणादायक घोषणा।

दि0- 1 अक्टूबर 89 को आर्य स्त्रीसमाज मेरठ शहर हीरक जयन्ती समारोह के कार्यालय के उद्घाटन पर सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी तथा प्रधानस्त्री- समाज मेरठ शहर श्री मती शकुन्तला- गोयल जी का उद्बोधन तथा जयन्ति को सफल बनाने की प्रेरणा।

बिजनौर में सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी

दि0- 13 अक्टूबर 89- सभा के उपप्रधान श्री जयनारायण जी अरुण बिजनौर के पौत्र के नामकरण पर सभा प्रधान जी ने बच्चे को आशीर्वाद देते हुए नामकरण संस्कार पर प्रकाश डालते हुए बताया कि बच्चे का सार्थक नाम रखना चाहिए तथा तदनुरूप उस को बनाने का अच्छे संस्कार देकर प्रयत्न करना चाहिए। नाम ही जीवन का उद्देश्य होना चाहिए ताकि बच्चा अपने नाम को सार्थक करे। तत्पश्चात श्री वेदमुनि परिव्राजक ने बच्चे को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर आए समस्त आगन्तुकों ने भी बच्चे को काव्य एवं पुष्पों द्वारा आशीर्वाद दिया। बाद में श्री अरुण जी ने सब आगन्तुकों के सम्मान में एक भव्य सहभोज दिया।

सभा प्रधान गाजियाबाद में

दि0 5 नवम्बर 89 को सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी व श्री जयन्त कुमारजी पाण्डेय के साथ आर्यसमाज रेलवे रोड निकट पुलिस चौकी बजरिया में भव्य- स्वागत किया गया। सभा प्रधान श्री- पं0 इन्द्रराज जी ने वर्तमान देश में हो रहे चुनावों में आर्यसमाज की भूमिका पर बोलते हुए आर्य समाज के 4 बिन्दुओं, प्रथम अंग्रेजी हटाओ द्वितीय नशाबन्दी तृतीय गोवधबन्द तथा चतुर्थ उर्दू विधेयक विरोध, पर विशेष प्रकाश डालते हुए आर्य जनता को इन चार बिन्दुओं को सामने रखकर वोट डालने की प्रेरणा की। आर्य युवक परिषद के आर्य युवकों को भी सभा प्रधान जी ने आशीर्वाद दिया।

सभा प्रधान गाजियाबाद में

दि0 12 नवम्बर 89 को सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी श्री बलराम गोविन्द जी के साथ ले कर श्री अविनाशचन्द्र जी- गोयल ﴾एक आर्यसमाजी परिवार﴿ के सुपुत्र प्रिय रजत के विवाह संस्कार में सम्मिलित हुए तथा उन्हें आशीर्वादो- परान्त मेरठ वापिस पहुँच गए। उल्लेखनीय है कि इस अवसर पर आचार्य सोमव्रत विद्या भास्कर एम0ए0 ने अपनी लिखी कई पुस्तकों का एक सैट सभा प्रधान- श्री पं0 इन्द्रराज जी को भेंट किया।

सभा प्रधान फरीदाबाद में

दि0 13 नवम्बर 89 को सभाप्रधान- श्री पं0 इन्द्रराज जी फरीदाबाद में एक पौराणिक परिवार में पहुँचे। श्री सभाप्रधान- जी द्वारा वैदिक विधि से संस्कार सम्पन्न करवाया गया। उस क्षेत्र में बहुत प्रभाव पड़ा क्योंकि संस्कार दिन में था। और वेदी मुहल्ले के बीचोबीच बनाई गई थी। आशीर्वादोपरान्त सभा प्रधान- जी ने मेरठ के लिए प्रस्थान किया।

सभा प्रधान चान्दपुर में

दि0- 19-10-89 को सभाप्रधान श्री- पं0 इन्द्रराज जी का, चान्दपुर वेदमन्दिर सत्संग मण्डल के 26वें वार्षिकोत्सव पहुँचने पर भव्य स्वागत किया गया। सभा प्रधान जी बिजननौर से श्री कपिलजी के साथ चान्दपुर पहुँचे थे तथा स्वागत करने वालों में श्री जयनारायण जी अरुण सभाउपप्रधान जी थे। सभाप्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने वेदमन्दिर में बोलते हुए सार्वदेशिक सभा द्वारा देश के निर्वाचन के अवसर पर अंग्रेजी हटाओ, नशाबन्दी तथा गोरक्षा के मुद्दों पर प्रकाश डालते हुए प्रेरणा की कि आप सबका वोट उसको जाना चाहिए जो इन तीनों के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश और बिहार में उर्दू विधेयक का विरोध करता हो। श्री सभा प्रधान जी रात्रि को ही श्री- जयनारायण जी अरुण. एवं प्रिय कपिल के साथ पहले बिजनौर और फिर मेरठ को लौट गए।

सभा प्रधान बहादुरगढ़ ﴾गाजियाबाद﴿ में

दि0- 22 अक्टूबर 89 को सभा प्रधान श्री इन्द्रराज जी रात्रि को आर्य उपप्रतिनिधि- सभा जिला गाजियाबाद के बहादुरगढ़ में हो रहे आर्य महासम्मेलन में सम्मिलित हुए। रात्रि को वेद सम्मेलन में, जिस की अध्यक्षता आचार्य विशुद्धानन्द जी ने की, बोलते हुए महर्षिदयानन्द जी द्वारा वेदों के सरलीकरण की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उन्होंने वैदिक सन्देशों और उपदेशों को महलों और झोपड़ियों में पहुँचाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जब तक वेद का सन्देश विश्व में नहीं फैलेगा तब तक विश्व में शान्ति नहीं होगी। महर्षि दयानन्द जी ने वेद के नित्य स्वाध्याय को परम धर्म माना है। अतः आर्यों को परम धर्म का पालन करते हुए नित्य प्रति वेद का पढ़ना, पढ़ाना, सुनना व सुनाना जारी रखना चाहिए। तभी हम ऋषि के ऋण से उऋण हो सकते हैं।

सभा प्रधान धामपुर में

दि0 1 नवम्बर89 को सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी, आर्य जगत के प्रसिद्ध महोपदेशक एवं नेता श्री स्व0 कान्तिचन्द्र जी के परिवार में धामपुर पहुँचे। श्री जयनारायण जी अरुण साथ थे। श्री कान्तिचन्द्र जी प्रभाकर के पौत्रों चि0 विपुल पुत्र श्री विनोद आभा जी तथा चि0 वरुण पुत्र डा0 रमाकान्त शारदा जी का उपनयन संस्कार श्री सभा प्रधान जी द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बच्चों को उपदेश देते हुए श्री सभा प्रधान जी ने यज्ञोपवीत के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बच्चों को व्रती बनने की प्रेरणा की। आज व्रतहीन युवा पीढ़ी पर चिन्ता व्यक्त करते हुए सभा प्रधान जी ने देश के भविष्य को भी व्रतहीनता के कारण खतरे में बताया। यज्ञोपवीत धारण करने के पश्चात नित्यप्रति ईश्वर उपासना, मांस मदिरा आदि से दूर रहना, सत्य का आचरण, मन लगाकर अध्ययन, माता पिता की आज्ञापालन आदि सद्गुणों पर चलने की प्रेरणा की। अन्त में श्री अरुण जी ने सभा प्रधानजी का धन्यवाद किया। तत्पश्चात सहभोज भी हुआ।

सभाप्रधान जी अम्बाला में

दि0 3 नवम्बर 89 को सभा प्रधान श्री पं0 इन्द राज जी आर्य समाज मवाना के प्रसिद्ध आर्यसमाजी परिवार के श्री पाल प्रशान्त जी की पुत्री आयु0 प्रणीता के विवाह संस्कार में अम्बाला पहुँचे। रात्रि को विवाह संस्कार के उपरान्त वर-वधू को आशीर्वाद प्रदान कर वापिस मेरठ को रवाना हो गए।

११०वाँ वार्षिकोत्सव आ.स. कानपुर, मेस्टनरोड

आर्यसमाज मेस्टनरोड, कानपुर का 110वाँ वार्षिकोत्सव शिवरात्रि के अवसर पर प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी वृहस्पतिवार, 22 फरवरी से रविवार 25 फरवरी 1990 तक श्रद्धानन्द- पार्क में मनाया जाना निश्चित हुआ है। शोभायात्रा, वृहस्पतिवार 22फरवरी- को सायंकाल ठीक 4 बजे से तथा 23-24-25 शुक्र,शनि व रविवार को महोत्सव होगा।

● डा॰ विजयपाल शास्त्री, मंत्री

हीरक जयन्ति आर्य स्त्रीसमाज बुढ़ाना द्वार मेरठ शहर

दि0- 14,15 और 16 अक्टूबर को आर्यस्त्री समाज बुढ़ाना द्वार मेरठ शहर की हीरक जयन्ति बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाई गई। राष्ट्ररक्षा महायज्ञ का संचालन श्रीमती ब्रह्मावती नारंग जी के ब्रह्मत्व एवं निर्देशन में हुआ। गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों एवं कन्या गुरुकुल हाथरस की ब्रह्मचारिणियों ने मधुर वेदपाठ किया। दोपहर को युवा सांस्कृतिक सम्मेलन हुआ जिस में आर्य कन्या इन्टर कालेज के बच्चों के अतिरिक्त कई अन्य शिक्षण संस्थाओं के बच्चों ने भी भाग लिया। रात्रि को राष्ट्रभाषा रक्षा सम्मेलन में श्री स्वामी-आनन्दबोध जी सरस्वती एवं प्रो0 शेरसिंह-जी के बड़े प्रभावशाली व्याख्यान हुए। अध्यक्षता स्वामी विवेकानन्द जी आचार्य गुरुकुल प्रभात आश्रम ने की। इन विद्वानों ने राष्ट्रभाषा की उपेक्षा सरकार और जनता द्वारा किए जाने पर खेद व्यक्त किया। सभा प्रधान श्री पं0-इन्द्रराज जी ने अनुचित ढंग से उर्दू विधेयक बिहार और उत्तर प्रदेश पर लादने की घोर निन्दा करते हुए जनता से अपील की कि वे जागरूक होकर इस विधेयक को उतार फैंके। दि0-5·10·89 को प्रातः यज्ञ, दोपहर को सफल आर्य महिला सम्मेलन हुआ जिसमें दहेजप्रथा, चलचित्र जगत में नारी नग्नता, सतीप्रथा बढ़ती हुई नशे की प्रवृत्ति पर चिन्ता व्यक्त करते हुए सरकार से अनुरोध किया गया कि वह इन पर तुरन्त रोक लगाए। रात्रि को कविसम्मेलन में कवियों ने देश में ज्वलन्त समस्याओं की तरफ जनता का ध्यान आकर्षित किया। कविसम्मेलन का उदघाटन श्रीमती आशारानी उपमन्त्रीसभा तथा समापन श्री जयनारायण जी अरुण सभा उपप्रधान द्वारा हुआ। अगले दिन दि0- 16-10-89 को राष्ट्ररक्षा महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर यजमानों को आशीर्वाद-। स्वामी विवेकानन्द का आध्यात्मिक प्रवचन तथा शकुन्तलाजी [illegible]वल का धन्यवाद ज्ञापन हुआ। हीरक जयन्ति पर भोजन की निःशुल्क व्यवस्था थी।

आर्य युवकों की रैली

दि0- 3·10·89 से आर्य युवकों की एक साईकिल रैली का आर्यसमाज ब्रह्मपुरी मेरठ में तत्पश्चात् आर्यसमाज बुढ़ाना द्वार मेरठ में हार्दिक स्वागत किया गया। स्वागत समारोह के संयोजक थे श्री जयन्त कुमार पाण्डेय। वक्ताओं में श्री धर्मपाल जी, श्री ओशरणजी श्री स्वराज्य चन्द्र जी तथा साईकिल रैली में से 3 प्रमुख व्यक्तियों ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए देश की वर्तमान परिस्थितियों पर आर्यसमाज की भूमिका पर प्रकाश डाला। सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज जी ने प्रान्तीय सभा की ओर से रैली का स्वागत करते हुए नवयुवकों को बड़ी संख्या में आगे आकर देश को विषमपरिस्थितियों से बचाने की प्रेरणा की। अन्त में स्वामी जगदीश्वरानन्द जी अध्यक्ष ने सब युवकों को आशीर्वाद दिया।

गान्धी जयन्ति पर सहभोज

दि0 2·10·89 को गान्धी जयन्ती पर आर्यसमाज मेरठ शहर की ओर से एक वृहद सहभोज दिया गया। जिस में नगर के विशिष्ट व्यक्तियों तथा हिन्दुओं के प्रत्येक वर्ग ने विशेष कर निर्बल पिछड़े वर्ग ने विशेष रूप से भाग लिया। इससे पूर्व यज्ञोपरान्त, जिस में यजमान आर्यसमाज के उपप्रधान श्री द्वारियाव सिंह जी थे, श्री तेजपाल-जी तथा श्रीमती आशा जी के भजन हुए। इस अवसर पर श्री डा0 ओमशरणजी अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग मेरठ कालेज श्री जयन्त कुमार पाण्डेय, डा0 निरूपणजी-विद्यालंकार, श्री प्रो0 शिवानन्द जी प्राचार्य एवं श्री डा0 गणेशदत्त जी प्राचार्य के प्रभावशाली भाषण हुए जिनमें विद्वानों ने देश में विघटनकारी शक्तियों की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए देश के प्रति चिन्ता व्यक्त की। इस समारोह के अध्यक्ष श्री मानसिंह जी वर्मा थे तथा संयोजक थे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान। आयोजन बहुत सफल रहा। सहयोगियों में श्री-ओमप्रकाश जी जौहरी, श्री भरत सिंहजी श्री राधेलाल जी एवं श्री स्वराज्य चन्द्रजी थे जिनके सहयोग से आयोजन सफल रहा।

उत्सव

आर्यसमाज मैनपुरी का वार्षिकोत्सव दिनांक- 10 से 13 नवम्बर तक बड़े उत्साहभरे वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री पं0 सच्चिदानन्द-शास्त्री ने समाजमन्दिर के प्रांगण में उपस्थित विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए धर्म और राजनीति के विविध पहलुओं को स्पष्ट करते हुए बताया कि राजनीति धर्म का ही एक अंग है। राजनीति के सभी आयाम,साम,दाम, दण्ड भेद धर्म की रक्षा के लिए प्रयुक्त होना चाहिए। डा0 निरूपण जी विद्यालंकार ने आर्यसमाज के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए नयी पीढ़ी का आह्वान किया कि वह आर्यजाति की रक्षा के लिए तनमन धन से समर्पित रहे। आर्यसमाज के युवा कार्यकर्ता एवं उदीयमान युवामन्त्री श्री ध्रुवपाल सिंह "अटल" समाज की गतिविधियों में गहन रुचि ले रहे हैं और जनता में आर्यसमाज के प्रति गहरी आस्था जागृत हो रही है।

- आर्यसमाज शास्त्री नगर गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव दि0 27 सितम्बर से 1 अक्टूबर 89 तक ससमारोह सम्पन्न हुआ जिसमें नगर के सम्भ्रान्त लोगों की अत्यधिक उपस्थिति होती रही। जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

- आर्यसमाज रहमतगंज (रामपुर) का 72वाँ वार्षिकोत्सव दि0- 7 से 10-नवम्बर तक ससमारोह मनाया गया क्षेत्रीय जनता में नवीन जागृति उत्पन्न हुई।

टटीरी मण्डी में निःशुल्क नेत्र चिकित्साशिविर

दि0- 9·10·89 को श्री पं0 इन्द्रराजजी सभा प्रधान के अग्रवाल मण्डी टटीरी में पहुँचने पर भव्यस्वागत किया गया। निःशुल्क नेत्र शिविर का उदघाटन खाद्य एवं उर्जा मन्त्री, श्री कोकब हमीदजी ने किया तथा विशेष अतिथि के रूप में सभा प्रधान श्री पं0 इन्द्रराजजी ने आर्यसमाज द्वारा मानवीय सेवा के कार्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए इस नेत्र चिकित्सा शिविर के द्वारा लोगों को बाह्य दृष्टि और अन्तः दृष्टि देने का संकल्प दोहराया। महाशय-धर्मपाल जी दिल्ली ने भी अपनी सेवाओं का सतत देते रहने का आश्वासन दिया।

आर्यसमाज लालगंज का उत्सव सम्पन्न

लालगंज 10 नवम्बर 89 आर्यसमाज लालगंज (रायबरेली) का वार्षिकोत्सव आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में 5 नवम्बर से 8नवम्बर-89 तक डा0 शकुनचन्द गुप्त विद्यावाचस्पति की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया गया। जिसमें नित्यप्रति प्रातः काल यज्ञ, भजनोपदेश तथा धार्मिक प्रवचन तथा सायंकाल धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सामयिक विषयों पर जौनपुर से आये भजनोपदेशक श्री-सूर्यबली पाण्डेय, वाराणसी से आये भजनोपदेशक श्री वेदपाल आर्य, तथा फिरोजाबाद से पधारे भजनोपदेशक श्री अर्जुन सिंह के प्रभावशाली एवं ओजस्वी व्याख्यान, प्रवचन तथा भजनोपदेश आदि के कार्यक्रम हुए। जिसमें पर्याप्त संख्या में जनता ने भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया तथा धार्मिक चर्चा का लाभ एवं आनन्द उठाया।

प्रभु भक्ति

आर्य दयाशंकर जैसवाल
आर्यमन्दिर बकशीपुर, गोरखपुर

जो सर्वव्यापी अजर अमर है,
उसी का सुमिरन सदा करो।।
सत्य अहिंसा परोपकार में,
अर्पित जीवन सदा करो ।।
न जावो काशी न जावो काबा न जावो
गिरजा मुर्दों का घर है।
जो तेरे अन्दर है वो मुसाफिर
उसी की चिन्ता सदा करो।।
है वेद माता प्रभु की वाणी
धारण कर लो समस्त प्राणी
मिलेगी युक्ति पावोगे मुक्ति
प्रभु के दर्शन सदा करो।।
ये भूले भटके हैं अपने भाई
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
मार्ग दिखाना वैदिक धर्म का
इन्हीं को पावन सदा करो ।।
मिलेगी तुम को प्रभु की छाया
शुद्ध करो तुम अपनी काया
करोगे भक्ति मिलेगी शक्ति
मन का सिरजन सदा करो।।

भर्तृहरि नीतिशतक का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक - श्री प्रताप कुमार
"साहित्यरत्न" "विद्यावचस्पति"

दशों दिशाओं में व्यापक, जो तीन काल में एक समान।
शुद्ध, बुद्ध, चैतन्य, सदा से व्याप्त सृष्टि में, प्रतिभावान।।
स्वानुभूत अनुभव से जाने योगी, करके यत्न महान।
उसे नमस्ते मेरा, जो है शान्त, प्रकाश रूप भगवान।।

अज्ञानी अन्जान मनुज को समझाना होता आसान।
उससे अधिक सरलता से वे ग्रहण करें, जो हैं विद्वान ।।
किन्तु न ज्ञानी अज्ञानी जो, होता जिसको अल्पज्ञान ।
उसको कौन प्रसन्न करेगा? ब्रह्मा क्या कर सके निदान?
सम्भव है यह मनुज मगर की दाढ़ों से मणि सके निकाल।
पार कर सके, सम्भव है कोई उद्वेलित जलधि विशाल।।
सम्भव है, क्रोधित विषधर को धारें ज्यों सुमनों की माल।
किन्तु मूर्ख को दुष्कर्मों से कौन हटावे माँ का लाल।।
यत्न करें तो सूखी बालू कर सकती है तेल प्रदान ।
मृग मरीचिका में भी प्यासा मानव कर सकता जल पान।।
ढूँढें तो सम्भव गदहे की सींगों का भी मिले निशान।
किन्तु असम्भव हठी मूर्ख को करना विमल बुद्धि का दान।।
एक महागुण मौन कि जिसको करे मूर्खजन अंगीकार।
सुदृढ़ मूर्खता का ढक्कन यह ईश- प्रदत्त अनोखा हार।।
विज्ञ पंडितों की बैठक में यदि जाने का करे विचार।
इससे बड़ा न भूषण दूजा, मूर्ख तुरन्त करले स्वीकार ।।

जब मैं था अज्ञान-लिप्त तो समझ रहा था अति मतिमान।
अपने कल्पित वृहत् ज्ञान का मुझ मदान्ध को था अभिमान।
किन्तु कृपा से विज्ञ जनों की जब कुछ मिला बुद्धि का दान।
ज्वर सम उतर गया मद मेरा समझा अपने को नादान।।
जैसे दूषित मनुज हाड़ को स्वादु समझ खाता है श्वान।
देवराज भी पास खड़े हों, करता नहीं किसी का ध्यान।।
इसी प्रकार महापुरुषों की निन्दा से होकर अन्जान।
नीच मनुष्य ग्रहण करते हैं निन्दित कर्मों के सोपान।।

शोक समाचार

- आर्यसमाज टी0टी0 नगर भोपाल के प्रधान श्री दलबीर सिंह राघव की धर्मशीला धर्मपत्नी श्रीमती शारदा देवी का दि0 25 अक्टूबर 1989 को निधन हो गया। वे स्त्री आर्यसमाज टी0टी0नगर की प्रधाना थीं श्री राघव ने उनकी पुण्यस्मृति में दस सहस्र रुपया कैंसर अस्पताल के लिए दान दिया। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

-गजराज सिंह राघव प्रचा0सभा0उ0प्र0

दयानन्द बाल मन्दिर सम्भल के प्रबन्धक एवं आर्यसमाज सम्भल के सक्रिय एवं कर्मठ कार्यकर्ता श्री नवलकिशोर-जी रस्तोगी का आकस्मिक निधन हो गया। उनकी मृत्यु से निश्चय ही एक ऐसे विश्वास पात्र सहयोगी का स्थान रिक्त हुआ है। जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में सम्भव नहीं है। वह सभा के सभी अधिवेशनों कार्यक्रमों में सपरिवार उत्साहपूर्वक भाग लेते थे।

परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं शोक संतप्त परिवार को धैर्य प्रदान करें।

- सभामन्त्री

शोक प्रस्ताव

वेदों के प्रचारक श्री गोपाल जी गुप्त प्रधानाचार्य राजकीय माध्यमिक विद्यालय, फदमचेन (सिक्किम) एवं सहयोगी आर्यसमाज महुआखेड़ागंज (नैनीताल) के पूज्य पिताजी- श्री हीरालाल गुप्त के निधन पर आर्यसमाज महुआखेड़ा के सदस्यगण हार्दिक दुःख प्रकट करते हैं एवं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि प्रभु उनकी पावन आत्मा को शान्ति, और पारिवारिक जनों को धैर्य प्रदान करें।

वैदिक धर्म प्रचार

1- आर्यसमाज मानसी (खगड़िया) के तत्वावधान में दिनांक 11 एवं 12 नवम्बर 89 को वैदिक धर्म प्रचार की व्यवस्था की की गयी अर्य जगत के सुप्रसिद्ध गवेषक डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री दयानन्द सत्यार्थी के पुरोगम होते रहे।

2- गोगरी जमालपुर गोशाला (खगड़िया) में उत्सव के तहत श्री दयानन्द सत्यार्थी के भजनोपदेश दिनांक- 8, 9, एवं 10 नवम्बर को हुए हजारों की संख्या में लोगों ने मेले में आकर वैदिक धर्म के संदेश को सुना।

3- आर्य - गोष्ठी-

विश्व प्रसिद्ध सोनपुर मेले में 14·11·89 को आर्य विचार गोष्ठी का आयोजन बिहार राज्य के उपदेशक एवं भजनीकों के तत्वावधान में किया गया इस अवसर पर डा0 देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी ने युवा उपदेशकों को बिहार में आर्यसमाज को समुन्नत करने को प्रोत्साहित किया तथा जातिवाद के फन को कुचल देने का आह्वान किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के अन्तर्गत कार्यरत उपदेशकों, प्रचारकों, ढोलक वादकों के माह-अक्तूबर, ८९ के प्रचार कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
के
अन्तर्गत कार्यरत उपदेशकों प्रचारकों के
कार्यक्रम
मास दिसम्बर 89

पं0 केशव देव जी शास्त्री,
1 से 3 लाहौरीनगर ﴾लखीमपुर﴿ 5,6,7 राजा का ताजपुर। ﴾बिजनौर, 9 से 12 फैजाबाद﴿

शिवकुमार जी शास्त्री,
अवैतनिक अवकाश

विश्वम्भर दत्त शर्मा,
1 से 6 नैनीताल जनपद 8 से 11 खेड़ा मजखेड़ा ﴾शाहजहांपुर﴿
15 से 30 रामपुर जनपद

डा0 विजय पाल सिंह जी,
आगरा- अलीगढ़ बुलन्दशहर जनपद

सुकर्मानन्दजी,
5 से 10 - रामपुर ﴾यज्ञ﴿

जयन्त कुमार जी आर्य,
श्री प्रधान जी के निर्देशन में

योगेश दत्त जी आर्य,
5-6-7 राजा का ताजपुर ﴾बिजनौर﴿ 8-9-10 चान्दपुर ﴾बिजनौर﴿ 20,21,22 सदरपुर ﴾मुरादाबाद﴿ 23-24-25 मुंडियापवार ﴾शाहजहांपुर﴿ 28 से 31- अमरोहा ﴾मुरादाबाद﴿।

ब्रह्मानन्द जी आर्य प्रचारक,
1 से 4 लाहौरीनगर सरैय्या ﴾लखीमपुर खीरी﴿ 7-8-9 बेहटागोकुल ﴾हरदोई﴿ 12 से 18 पराछिया वेला ﴾हरदोई﴿ 20-21-22- राहीवारी ﴾हरदोई﴿।

कमलदेव आर्य प्रचारक,
12 से 15, बलदेवमेला- कैम्प-﴾मथुरा﴿

नेम प्रकाश जी आर्य प्रचारक
2 से 4 लाहौरीनगर ﴾लखीमपुर खीरी﴿
5-6-7 राजा का ताजपुर ﴾बिजनौर﴿
12 से 18 पराछिया वेला- ﴾हरदोई﴿
20 से 22 राहीवारी ﴾हरदोई﴿
26 से 28 चमखरी ﴾सीतापुर﴿

युगल किशोर जी आर्य प्रचारक
2 से 4 लाहौरी नगर-﴾लखीमपुर खीरी﴿
12 से 18 पराछिया वेला-﴾हरदोई﴿
20 से 22 राहीवारी हरदोई।

विक्रम देव जी आर्य, प्रचारक
1 से 10 बिजनौर जनपद,
15 से 30 रामपुर जनपद।

ब्रजपाल जी शर्मा, प्रचारक
1 से 15 मोहद्दीनपुर धनौरा क्षेत्र﴾मुरादाबाद﴿

अमर लाल जी आर्य,
2 से 4 लाहौरीनगर ﴾लखीमपुर खीरी﴿
12 से 18 पराछिया वेला ﴾हरदोई﴿
20 से 22 राहीवारी ﴾हरदोई﴿

धर्म प्रकाश प्रेमी,
15 से 30 रामपुर जनपद

सुभाष चन्द्र आर्य,
15 से 30 रामपुर जनपद।

कश्मीरी लाल आर्य,
5-6-7 राजा का ताजपुर ﴾बिजनौर﴿
8-9-10 चान्दपुर ﴾बिजनौर﴿
20-21-22 सदरपुर ﴾मुरादाबाद﴿
23-24-25 मुंडियापवार- ﴾शाहजहांपुर﴿
28 से 31 - अमरोहा- ﴾मुरादाबाद﴿

मनमोहन तिवारी
मंत्री

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता, उपदेश विभाग
अमरोहा (मुरादाबाद)

आर्य प्रतिनिधि सभा-उ०प्र०, लखनऊ

आर्य उप प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद का स्वर्ण जयन्ती समारोह सम्पन्न

आर्योपप्रतिनिधि सभा, जनपद-फर्रुखाबाद का स्वर्ण जयन्ती समारोह दिनांक-4,5,6 नवम्बर 89 को डी0ए0वी0 कालेज रजलामई के पावन प्रांगण में राष्ट्रीय एकता, युवाशक्ति, गौरक्षा, वैदिकशिक्षा, धर्मरक्षा, एवं महिला सम्मेलन आदि विविध सम्मेलनों के साथ प्रभावपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ।

समारोह के पूर्व 3 नवम्बर को प्रथम यज्ञ तथा श्रीयुत् पं0 बाल दिवाकर-जी हंस प्रधान संचालक सार्वदेशिक आर्य-वीर दल ﴾दिल्ली﴿ के कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण होने के उपरान्त रजलामई, फैजबाग, हजियापुर, मंझना, रोशनाबाद, शमसाबाद आदि कस्बों में शोभायात्रा निकाली गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा-उत्तर प्रदेश (उपदेश विभाग) प्रस्तुत करता है प्रचार योजना

सस्ती उत्तम योजना- 500 रु0 दक्षिणा वेद प्रचार निधि में, इस योजना के अन्तर्गत द्वि दिवसीय उत्सव हेतु सभा की ओर से एक उपदेशक एवं दो सुयोग्य भजन मण्डली प्रदान की जायेंगी। पण्डाल ध्वनि विस्तारक यन्त्र मार्ग व्यय इत्यादि की समस्त व्यवस्था सम्बन्धित आर्यसमाज को करनी होगी।

प्रभावशाली प्रचार योजना- 200रु0 दक्षिणा वेद प्रचार निधि में। इस योजना के अन्तर्गत द्विदिवसीय प्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत सभा की ओर से एक उपदेशक एवं एक भजनोपदेशक प्रदान किये जायेगें। शेष व्यय भार सम्बन्धित आर्य समाज को वहन करना होगा।

मिशनरी प्रचार योजना- ﴾आप बुलायें हम आयें﴿ इस योजना के अन्तर्गत एक भजन मण्डली सभा की ओर से प्रदान की जायेगी। आपको केवल मार्ग व्यय भार वहन करना होगा, यह योजना धर्मान्तरण एवं अराष्ट्रीय गतिविधियों से प्रभावित क्षेत्रों में लागू की जायेगी।

आप के निमन्त्रण की प्रतीक्षा में
आज ही लिखें या मिलें।

हरिश्चन्द्रार्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग,
प्रचार कार्यालय अमरोहा
जनपद-मुरादाबाद।

लखनऊ दूरभाष सभा-45993
अमरोहा दूरभाष-554

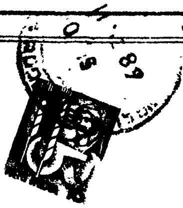
स्वामी त्यागानन्द शताब्दी सम्पन्न

- श्री स्वामी त्यागानन्द शताब्दी समारोह का उद्घाटन श्री स्वामी परमानन्द सरस्वती चम्बल घाटी मुरैना मध्यप्रदेश के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

वार्षिकोत्सव

- आर्यसमाज नई बाजार बस्ती का 19वाँ वार्षिकोत्सव दि0- 23 से 26दिसम्बर-89 तक, बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न होने जा रहा है जिसमें उच्चकोटि के विद्वान् सन्यासी तथा भजनोपदेशक पधारेंगे। जनता को आमंत्रित किया जाता है कि वह अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठायें।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुख पत्र
नारायण स्वामी भवन, ५- मीराबाई मार्ग, लखनऊ
दूरभाष : ४५६६३
पंजीकरण सं0 एल0 डब्ल्यू/एन पी० ७८
मार्गशीर्ष शुक्ल- ३
३ दिसम्बर १९८९



आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला सतवर्षीय वृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं! वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवान्दीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि० सं० २२४१ (५७)) मार्गशीर्ष शुक्ल-रविवार - संवत् २०४६ वि०, १० दिसम्बर १९८९ (घोषणा पत्र सं० ७/२८-२-७५)



उत्तम कर्मों की प्रेरणा

अव्यसश्च व्यचसश्च बिलं विष्यामि मायया।
ताभ्यामुद्धृत्य वेदम् अथ कर्माणि कृण्महे।।

-- अथर्ववेद

अव्यापक और व्यापक स्थूल और सूक्ष्म के भेद को अपने निर्भ्रान्त ज्ञान द्वारा मानव को हृदयंगम कराने वाले वेद के ज्ञान को लेकर हम उत्तम कर्मों का सम्पादन करें।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम०ए०

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम०ए० साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य रू० २५१/-
वार्षिक रू० ३०/-
एक प्रति १.०० रू० मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष
अंक - ४६

स्वागतम्

आर्यों की गरिमा और आकांक्षा की परम पुनीत प्रतिनिधि संस्था

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

आगामी 24 तथा 25 दिसम्बर को लखनऊ में ऊषा की प्रथम किरण के साथ ही समस्त आर्यजनता का अभिनन्दन करती है और आर्यों को अपने उमंग भरे नवजीवन का साक्षात्कार करने का आह्वान देती है। इसी का नाम है----- परिवर्तन----- जागरण ----- उत्थान। परमात्मा की अमर दिव्यवाणी वेदध्वनि का नाद दिग्दिगन्त में गुंजायमान हो रहा है। प्राची की अरुणिमा हमें विश्व को वैदिक ज्ञान से ओतप्रोत करने के लिए लालायित होकर निहार रही है। नहीं नहीं ---- हमें, हमारे शीर्षों पर चढ़कर हमें झकझोर रही है- "उठो। क्या तुम भूल गये विश्व मे मानवता का प्रचार और प्रसार तुमने ही तो किया था। उसे मानव से महामानव और महामानव से ऋषि महर्षि तुमने ही तो बनाया था-

अतुलनीय जिनके प्रताप का,
साक्षी है प्रत्यक्ष दिवाकर।
घूम घूम कर देख चुका है,
जिनकी निर्मल कीर्ति निशाकर।।
हे आर्यो! तुम उन्हीं पूर्वजों,
के वंशज, उनके ही प्रतिनिधि।।
तुम्हीं मान रक्षक हो उनके,
कीर्ति तरंगिणियों के वारिधि ।।

किसी कवि की यह पंक्तियाँ ऋषिसपूतों को अपने कर्तव्य के प्रति उन्मुख कर रही हैं।

जो लोग इस चुनावी महासमर के परिणामस्वरूप सत्ता परिवर्तन के साथ भारत की एकता, अखण्डता और अनाचार भ्रष्टाचारमुक्त वेदाधारित समाज की आशा संजो रहे हैं वे भूल में हैं। महानाश की लपटें देश के राजनीतिज्ञ ठीक नहीं कर सकते। इसे बचाने के लिए वैदिक धर्म के पहरेदारों को आगे आना होगा। आज का युग राजनीतिक अहम्मन्यता से परिपूर्ण है। राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए सब कुछ दाँव पर लगाया जा सकता है। सही दिशा केवल आर्यसमाज के पास है और वही इसे दे भी सकता है। यह विजय चक्र तो राजनीति का घूमा है। अब आर्यसमाज को धर्मचक्र चलाना होगा। भारत माँ के सपूतों को माँ की रक्षा के लिए शुद्ध चक्र चलाना होगा। एकता और बन्धुता के लिए गुणकर्म का चक्र चलाना होगा। और इससे पहिले कि महानाश की लपटें देश को भस्म करनेके लिए लपलपाती हुई उठें, हमें प्रेम और शान्ति की सरिता बहाकर शीतल वर्षा करनी होगी।

अतः इस धर्मचक्र को अपनी प्यारी प्रतिनिधि सभा के माध्यम से विश्वविजय वाहिनी जनमनमोहिनी बनाने के लिए उक्त तिथियों में लखनऊ पहुँचिए- हमारा आतिथ्य स्वीकार कीजिए "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को साकार कीजिए-----

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उच्च तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज॥
—राष्ट्रकवि मैथिलीशरण

सम्पादकीय

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- मार्गशीर्ष शुक्ल १२ संवत २०४६ वि. १०, दिसम्बर १९८९, दयानन्दाब्द १६५ सृष्टि संवत १९७२९४९०९०

हम पास हुए या फेल

हमें स्वतन्त्रता मिली- यह एक महान ऐतिहासिक उपलब्धि है। स्वतन्त्रता के साथ ही हमें बहुत कुछ मिला, स्वतन्त्रवायु में स्वतन्त्र रूप से जीने का अधिकार मिला। अपना संविधान और अपने रीति रिवाज बनाने का अवसर मिला। हमने विदेश और स्वदेश नीति बनाई और समाज के नवनिर्माण का जनता को आश्वासन दिया। आर्थिक उन्नति के लिए कई पंचवर्षीय योजनाएं बनाई और इन विगत चार दशकों में उन्नयन के लिए जो कुछ भी सम्भव था करते रहे मगर यह सब बेपेन्दी का लोटा रहा। शिक्षा मिली पर भाषा न मिली, आजादी मिली पर आत्मगौरव नहीं मिला। राष्ट्रीयता मिली पर अपनी ऐतिहासिक पहिचान नहीं मिली। माँ के शरीर की सजावट के लिए हमने बड़े-बड़े सुन्दर अलंकरण बनाए मगर भारत की आत्मा को बलिष्ठ और समुज्वल नहीं बना सके। हम पास होते हुए भी फेल घोषित किए गये और फिर हमने देखा—एक विस्फोट जनादेश के रूप में, सत्ता परिवर्तन के रूप में, निराशा और असन्तोष—जनाक्रोश के रूप में। हमने देखा जनता ने जिन्हें कल तक पलक पाँवड़े बिछाकर देवता के रूप में पूजा था आज उन्हीं को विस्मृत कर दिया।

कारण स्पष्ट है जनता सत्ता परिवर्तन की इच्छुक थी चाहे भारत का दक्षिणांचल हो अथवा उत्तरांचल, दोनों ही स्थानों पर हमने देखा जनता बदलाव चाहती है। उत्तरी भारत में सत्तारूढ़ दल ने जिन मुद्दों का सहारा लेकर विजय स्वप्न देखा था उनमें कोई भी मुद्दा जनता को प्रभावित नहीं कर सका। पंचायती राज विधेयक संसद में स्वीकृत नहीं हो सका था। सत्तारूढ़ दल ने इसके लिए विपक्षीदलों की जमकर आलोचना की और यहाँ तक कहा कि जनकल्याणकारी कार्यक्रमों से भरपूर इस पंचायती राज विधेयक का विरोध करके विपक्षीदलों ने जनता के दुश्मन की भूमिका निभाई है। इसी प्रकार पाँच सौ अरब की इन्दिरा योजना, उर्दू को द्वितीय राज्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करना, राम जन्मभूमि मन्दिर के निर्माणार्थ प्रथम तो शिलान्यास के लिए हरी झण्डी दिखा देना तथा बाद में निर्माण पर रोक लगा देना, वर्ग विशेष को अन्धाधुन्ध सुविधाएं देकर भी जनमानस को सत्तारूढ़ दल अपनी ओर आकर्षित करने में असमर्थ रहा। आर्यसमाज ने अपने प्रचार माध्यमों द्वारा तथा हमने भी अपने कई स्तम्भों में सत्तापक्ष को बहुत पूर्व सावधान करते हुए इसका पूर्वाभास दे दिया था।

अब जनादेश हमारे सम्मुख है। राष्ट्र के कर्णधारों को जिन्होंने प्रशासन की बागडोर सम्भाली है उन्हें हम बधाई और साधुवाद देते हुए केवल एक ही निवेदन करना चाहते हैं कि भारत की आत्मा भारतीयता है इसका विखण्डन न होने दें। यहाँ अल्पसंख्यक बहुसंख्यक नाम की कोई चीज नहीं है। समग्र भारतीय एक हैं। विदेशी शक्तियाँ धन-बल पर बड़े पैमाने पर धर्मान्तरण में लगी हुई हैं। यह धर्मान्तरण नहीं राष्ट्रान्तरण है और अजगर की तरह मुँह फैलाता बढ़ता आ रहा है। इसे रोकना होगा नहीं तो इस देश का भविष्य धूमिल हो जायेगा देश वास्तव में टूटकर बिखर जायेगा। यह परीक्षा की घड़ी है।

यदि हम कुशल बुद्धि भरा चातुर्य एवं दूरदर्शिता से काम लेंगे तो निश्चय ही हम इस कठिन परीक्षा में पास हो जायेंगे।

शतशत बधाइयां



माननीय श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह
प्रधान मन्त्री भारत सरकार

भारत वर्ष की नौवीं लोकसभा के प्रधानमन्त्री के गौरवशाली पद पर आपके निर्वाचित होने पर हमें पूर्ण आशा एवं विश्वास है कि आपके गरिमामय नेतृत्व में इस राष्ट्र को नई दिशा एवं नया आयाम प्राप्त होगा और देश प्रगति के चरमशिखर पर पहुँचकर अपने गौरवमय अतीत को पुनः प्राप्त करने में समर्थ हो सकेगा।

आपके इस प्रगतिपथ पर आर्यराष्ट्र का प्रत्येक आर्य नागरिक आपके कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ेगा।

इन्द्रराज — प्रधान
मनमोहन तिवारी — सभामन्त्री

श्री मुलायम सिंह यादव को शतशत बधाई



जनता दल के नेता तथा जनसेवा में समर्पित श्री मुलायम सिंह यादव के उत्तर प्रदेशीय शासन के मुख्यमन्त्री पद पर आसीन होने के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान-श्री पं0 इन्द्रराज तथा मन्त्री श्री मनमोहन-तिवारी ने शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए प्रदेश के चुहुँमुखी विकास में उनके सफल प्रयास की कामना की है।

संक्षिप्त परिचय :

श्री मुलायम सिंह यादव का जन्म ग्राम सैफई, जिला इटावा में 21 नवम्बर-1939 को एक साधारण किसान परिवार में हुआ। उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से एम0ए0बी0टी0 की परीक्षाएं उत्तीर्ण की। वह जैन इण्टर कालेज करहल (मैनपुरी) में प्रवक्ता भी रहे। उनका विवाह वर्ष 1957 में श्रीमती सामन्त श्री से हुआ।

श्री यादव बचपन से ही समाज में व्याप्त असमानताओं, विषमता, अनुसूचित जाति/जनजाति तथा पिछड़े वर्गों की समस्याओं के प्रति संवेदनशील रहे। प्रसिद्ध समाजवादी नेता एवं विचारक डा0 राम मनोहर लोहिया की विचारधारा का उन पर व्यापक प्रभाव पड़ा और अन्याय एवं उत्पीड़न के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा भी उन्हें डा0 लोहिया से ही मिली। बाद में पूर्व प्रधानमंत्री-स्वर्गीय श्री चरण सिंह के विचारों से भी वे प्रभावित हुए। गत लगभग 35 वर्षों से किसानों, मजदूरों, नौजवानों छात्रों, अल्पसंख्यकों एवं कमजोर वर्गों के हितों की रक्षा एवं उनके कल्याण के लिए संघर्षरत रहे और राजनीति में सक्रिय रहे।

वर्ष 1954 में मात्र 15 वर्ष की आयु में उन्होंने डा0 लोहिया के आह्वान पर छेड़े गए "नहर रेट" आन्दोलन में भाग लिया और पहली बार जेल गए। विभिन्न आन्दोलन के दौरान वह नौ बार जेल गए और तीन वर्ष से अधिक कारावास में रहे। आपातकाल के दौरान वह 19 माह जेल में रहे।

वर्ष 1961-62 में वे इटावा डिग्री कालेज छात्र संघ के अध्यक्ष चुने गए। वर्ष 1980 में वह उत्तर प्रदेश लोकदल के अध्यक्ष बने। लोकदल के विभाजन के बाद उन्होंने उत्तर-प्रदेश में क्रांतिकारी मोर्चा का गठन किया और बाद में पुनः उत्तर प्रदेश लोकदल (ब) के अध्यक्ष बने। बाद में जनता दल के गठन के साथ श्री यादव उत्तर-प्रदेश जनता दल के अध्यक्ष बने और गत आम चुनाव (1989) में प्रदेश-जनता दल के चुनाव अभियान का पूरी कुशलता के साथ सफल संचालन किया।

आवश्यकता दृढ़ संकल्प की है

• आचार्य वेदभूषण, हैदराबाद

हम भटक रहे हैं। हमारे सामने कोई सुनिश्चित ध्येय नहीं है। हम संगठन की दृष्टि से एकदम खोखले हो चुके हैं। हमारा नेतृत्व सन्देह और आशंकाओं में कुण्ठाग्रस्त हो चुका है।

वास्तविकता तो यह है कि हमारे तथाकथित नेताओं में दिशानिर्देश की योग्यता का अभाव है। अपने महान् उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए हमें किस पथ से जाना है इसका बोध उन्हें नहीं है।

स्वार्थी चाटुकारों के टोले में जब नेता या राष्ट्र फंस जाता है तब समाज और राष्ट्र के दुर्भाग्य का उदय होने लगता है।

आज आर्यसमाज के संगठन की स्थिति ऐसी हो चुकी है। पर आर्यसमाज संगठनात्मक दृष्टि से भले ही जर्जर हो रहा है पर सैद्धान्तिक दृष्टि से प्यारे महर्षि दयानन्द सरस्वती का तप और बलिदान रंग ला रहा है। वह कभी व्यर्थ नहीं जायेगा न हम व्यर्थ जाने देंगे।

महर्षि दयानन्द ने जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया और वेदों का पुनरुद्धार किया आज समूचे विश्व पर उसका प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। वेदों पर आज सारे विश्व में कार्य हो रहा है।

वेदों के बढ़ते हुए प्रचार को देखकर वेदों के प्रच्छन्न विरोधियों ने अब एक नया नारा दिया है। पहले वे कहते थे कि वेद गड़रियों के गीत थे पर अब वे कह रहे हैं कि - वेद केवल अध्यात्म विद्या के ग्रन्थ हैं।

झूठ के पैर नहीं होते। असत्य निराधार होता है। हमें उन लोगों के चिन्तन के स्तर पर हंसी आती है जो वेदों को केवल अध्यात्म ज्ञान के ग्रन्थ कहते हैं।

यह बात वैसी ही हास्यास्पद है जैसे कि कोई कहे कि अमुक व्यक्ति गणित का श्रेष्ठतम ज्ञाता है पर उसे एक से दस तक की गिनती का ज्ञान नहीं है।

समझदार व्यक्ति को जान लेना चाहिए कि- अध्यात्म विद्या भौतिक विद्या की ही चरम स्थिति है। भौतिक ज्ञान के बिना अध्यात्म जाना ही नहीं जा सकता।

पर हम सैद्धान्तिक दृष्टि से संसार के मस्तिष्क पर छा रहे हैं। किन्तु संगठनात्मक दृष्टि से हम दुर्बल और जर्जर हो गए हैं। इसका कारण हम बतला चुके हैं कि - केवल कोई अकेला व्यक्ति ही इसके लिए उत्तरदायी नहीं है। हम सब इस शिथिलता के लिए न्यूनाधिक जिम्मेदार हैं।

यदि हम किसी क्षात्रवृत्ति वाले को नेता बनायेंगे तो वह अपनी वृत्ति के अनुरूप ही समाज को ले जाएगा। यदि वणिक वृत्ति वाले को नेता बनाएंगे तो वह अपनी वृत्ति के अनुरूप ही कार्य करेगा। इसमें नेता का दोष नहीं है दोष है बनाने वालों का।

श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले (आनन्दबोध) के युग में मानना पड़ेगा कि- सार्वदेशिक सभा में धन और सम्पत्ति में भारी मात्रा में प्रगति हुई है। यह परिणाम उनकी कुशल वृत्ति का ही है।

आज हमारी स्थिति ऐसी हो है जैसी कि- मान लीजिए कि- अपने घर में एक सदस्य बीमार पड़ गया है उसके लिए वैद्य ने बहुमूल्य औषधियां लिख दीं। गृह के स्वामी ने उन औषधियों को मंगा लिया है पर गृहस्वामी रोगी को औषधि सेवन नहीं कराना चाहता। उसकी मान्यता है कि- यदि बहुमूल्य दवा अभी खिला दी गई तो फिर रोगी की मृत्यु के समय फिर इतनी बहुमूल्य दवा खरीदी न जा सकेगी?

बीमार को समय पर उचित दवा दे दी जाए तो वह स्वस्थ हो जायेगा। क्यों कर मरेगा? स्वस्थ हो जायेगा तो और भी धन कमा लेगा

आर्यसमाज की नियमावली में पहले मण्डल पद्धति थी। हर दस सदस्यों का एक मण्डल होगा, वह मण्डल अपने में से किसी एक को अन्तरंग सभा के लिए बहुमत से निर्वाचित कर भेजेगा। इस नियम को पूर्ववत् स्वीकार किया जाना चाहिए।

दूसरा नियम प्रत्येक व्यक्ति अपनी आय को दशांश भाग सदस्यता शुल्क के रूप में देगा। इसे भी बदला गया, इसे भी पूर्ववत् ही रखना चाहिए।

तीसरा नियम सत्संग में 25 प्रतिशत उपस्थिति का है। यह नियम अभी भी है, किन्तु इसमें 25 प्रतिशत की बजाय 75 प्रतिशत उपस्थिति का प्रावधान कर दिया जाए। इन तीनों नियमों का दृढ़ता से पालन करना अनिवार्य कर दिया जाए।

सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता

आर्यसमाज की नियमावली के इन्हीं आधारों को लेकर प्रान्तीय सभा और राष्ट्रीय सभा तथा सार्वदेशिक सभा की नियमावली में एक रूपता लाई जाए। प्रान्तीय सभायें अपने नियम स्वयं बनाने वाला प्रावधान समाप्त कर, सबकी समान नियमावली बने। नीचे से ऊपर तक प्रतिनिधि सदस्य भी आनुपातिक रूप में ही आएं न कि- सब प्रान्तों से समान संख्या में प्रतिनिधि लिये जाएं। सर्वत्र मण्डल पद्धति रखी जाए। इससे एकाधिकार नष्ट हो जाता है। एक पक्षीय मार्ग नहीं चल सकता।

तीसरी आवश्यकता

प्रत्येक प्रान्तीय सभा में आय व्यय लेखा निरीक्षक दल हो। प्रत्येक आर्यसमाज अपना आय व्यय प्रान्तीय आय व्यय लेखा निरीक्षक दल द्वारा प्रमाणित कराकर प्रमाण पत्र प्राप्त करे। कोई आर्यसमाज अपनी स्वतन्त्र रसीद बुकें न छपवाएं/प्रान्तीय सभाएं ही रसीद बुकें छापें और समाजें उन्हीं से रसीद बुकें क्रय करके प्राप्त करें और उन्हीं रसीद बुकों पर धन संग्रह हो।

इसी प्रकार प्रान्तीय सभायें राष्ट्रीय सभाओं से और राष्ट्रीय सभाएं सार्वदेशिक सभा से अपने आय व्यय की जांच करा प्रमाण पत्र लें।

आर्यसमाज कोई राजनीतिक संस्था नहीं है। हमें सिद्धान्तहीन व्यक्तियों की संख्या नहीं बढ़ानी है अपितु सच्चे ईमानदार, चरित्रवान आदर्श व्यक्तियों का निर्माण करना है।

आर्यसमाज के समारोहों में अवसरवादी और राजनीतिक लोगों को महत्व नहीं दिया जाना चाहिए।

भले ही हम संख्या में कम रहें पर भले लोगों का आदर्श पुरुषों का संगठन बनाकर शान्तिपूर्वक मानव निर्माण के कार्य को गतिशील बनाएं।

सबसे महत्वपूर्ण रचनात्मक कार्य

प्रत्येक आर्यसमाज में संस्कृत की सायंकालीन पाठशालाएं चलाई जाएं। इन पाठशालाओं में संस्कृत की ऐसी पुस्तकें तैयार करके पाठ्य क्रम में रखी जाएं, जिनसे संस्कृत भाषा के ज्ञान के साथ-साथ सैद्धान्तिक ज्ञान भी हो जाए।

दूसरी ओर हर आर्यसमाज में गोकृष्यादि रक्षिणि सभाएं स्थापित की जाएं। गोशालाओं की स्थापना शुद्ध व्यावसायिक आधार पर की जाए। जनता में गाय के दूध, मक्खन व घी के प्रयोग का प्रचार किया जाए। सहकारिता के आधार पर गोशालाएं चलाई जाएं इसमें भी हमें प्रशासन से व बैंकों से आर्थिक योगदान मिल सकता है। देशी ही खाद को कृषि में महत्व दिलाया जाए। सामूहिक कृषि योजना को प्रोत्साहित कर शुद्ध अन्न उत्पादन और उचित मूल्य पर सीधे अन्न का जनता में वितरण हेतु केन्द्र स्थापित किए जाएं। इस रोजगार में आर्य युवक-युवतियों को लिया जाए।

हमारी तीसरी योजना स्वास्थ्य निर्माण की हो। व्यायाम शालायें, शारीरिक व्यायाम व शारीरिक आसनों के प्रशिक्षण केन्द्र खोले जाएं। जनता में प्रातः शीघ्र उठने का आन्दोलन चलाया जाय। इन केन्द्रों में किसी प्रकार का साम्प्रदायिक भेदभाव न बरता जाय।

भारतीय खेलों को व भारतीय कुश्ती पर बल दिया जाए। शाकाहार व निर्व्यसनी बनने के आन्दोलन छेड़े जाएं।

आर्यसमाज जनता में बुराईयों के विरुद्ध आन्दोलन करे। सरकारों से न उलझे अच्छे मनुष्य बनाने का उद्देश्य स्वस्थ युवकों का निर्माण, गोकृषि पर आधारित व्यवसाय को प्रोत्साहन और संस्कृत और वेदों का प्रचार यही हमारा ध्येय और उद्देश्य हो।

इस प्रकार संस्कृत और संस्कृति प्रचार का कार्य दूसरा बच्चों और युवकों के स्वास्थ्य निर्माण का कार्य तीसरा गोपालन व कृषि व अन्न वितरण की व्यवस्था इन तीनों उद्देश्यों को लेकर यदि हम पूरी सक्रियता और शान्त

— शेष पृष्ठ ६ पर

आर्यसमाज की अग्नि परीक्षा हैदराबाद का आर्य सत्याग्रह

● श्री स्वामी वेदमुनि परिव्राजक
अध्यक्ष- वैदिक संस्थान, नजीबाबाद

सन् 1939 ई0 में आर्यसमाज को हैदराबाद राज्य (जो अब कर्नाटक, आन्ध्र और महाराष्ट्र में विभाजित है) में वहां की तात्कालिक सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह करना पड़ा। उस समय वहां बर्बर निजामशाही राज्य था। वहां का मुगल शासक आसफजाह निजामुल्मुल्क कहलाता था। वह नितान्त निरंकुश शासक था, किसी के प्रति (प्रजा हो या कोई अन्य) वह उत्तरदायी नहीं था। उसकी इच्छायें ही उसकी विधि-व्यवस्था थीं। मुसलमान होने के कारण हैदराबाद राज्य के हिन्दुओं को येन-केन-प्रकारेण मुसलमान बना लेना वह अपना धार्मिक कर्तव्य मानता था। कुरान के आदेशानुसार कि "और तुम काफिरों से तब तक लड़ते रहो, जब तक कि वह निश्शेष न हो जायें या जब तक तुम्हारा दीन स्वीकार न कर लें।" सूरा 2 अलबकरा पारा-1, आयत 190 से 192 तक।

वह हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के लिये कोई भी कमी उठा नहीं रखता था। उसका प्रयत्न था कि हिन्दु--जैसे भी हों-- इस्लाम ग्रहण कर लें। इसी कारण नये मन्दिर निर्माण करने की बात ही क्या? टूटे मन्दिरों की मरम्मत, मन्दिरों पर कलश चढ़ाने, पुराने के स्थान पर नया कलश लगाने, पुराने झण्डे के फट जाने पर नया झण्डा लगाने तथा घरों में हवन कुण्ड खोदने की भी स्वतन्त्रता हिन्दुओं को नहीं थी। यहां तक कि अपनी सन्तानों के विवाह भी हिन्दू स्वतन्त्रता पूर्वक नहीं कर सकते थे, इसके लिये भी निजामशाही से स्वीकृति लेनी पड़ती थी और यह स्वीकृति प्रायः नहीं ही मिलती थी। चुपके-चुपके ही विवाह हो जाते थे। स्वीकृति प्राप्त होती भी थी तो तब, जब नवदम्पति प्रायः दो या तीन बच्चों के माता-पिता हो जाते थे। असरकारी दल मुस्लिम संगठन रजाकारों के रूप में काम करता था। इस दल का कार्य हिन्दुओं को उत्पीड़ित करना था, जिससे या तो हिन्दू इस्लाम ग्रहण कर लें और या हैदराबाद राज्य की सीमा से बाहर जाकर अन्य क्षेत्रों में बसें।

आर्यसमाजी लोगों में ही वहां इतना जीवट था कि वह इसके लिये कुछ कर सकते थे। अतः उन्होंने वहां के हिन्दुओं में जीवन फूंकने के लिये प्रयत्न प्रारम्भ किये श्री श्यामलाल-आर्य एडवोकेट का जाति को जीवन देने वाले कार्यों और निजामशाही तथा रजाकारों के अत्याचारों के विरुद्ध नाद गुंजाने का कार्य करने के कारण बलिदान भी हो चुका था। ऐसी स्थिति में आर्यों के सर्वोच्च तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तात्कालिक प्रधान तपोनिष्ठ महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज ने स्वयं हैदराबाद जाकर वहां की स्थिति का सिंहावलोकन कर वहां की निजाम शाही से सम्पर्क स्थापित किया और चाहा कि समस्या सरलता से हल हो जाये। परन्तु निजामशाही के बारम्बार आश्वासन देते रहने पर भी परिस्थितियों में कोई सुधारात्मक परिवर्तन नहीं आया अपितु उत्तरोत्तर स्थिति बिगड़ती ही गयी। परिणामस्वरूप महात्मा जी को सत्याग्रह का बिगुल-बजा देना पड़ा।

सर्वप्रथम अधिनायक के रूप में स्वनाम धन्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज स्वयं गुरुकुल कांगड़ी के पन्द्रह विद्यार्थियों का जत्था लेकर सत्याग्रह करने गये और इधर प्रत्येक प्रदेश की आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने-अपने प्रदेश में हैदाराबाद की निजामशाही आसफजाही सरकार के अत्याचारों के विरुद्ध सत्याग्रह करने के लिये सत्याग्रही भर्ती करने का कार्य प्रारम्भ कर दिया।

भारत के प्रत्येक प्रदेश से बड़े-बड़े जत्थे सत्याग्रह के लिये जाने लगे प्रत्येक प्रदेश की राजधानी से विशेष रेलगाड़ियां सत्याग्रही जत्थों को लेकर हैदराबाद के लिये जाने लगीं। जब सुदूर विदेशों से भी आर्यजन सत्याग्रह के लिये आने लगे और हैदराबाद राज्य के हिन्दुओं ने भी यह अनुभव कर लिया 'कि हम अकेले नहीं हैं, न केवल भारत अपितु भारत से बाहर विदेशों में रहने वाले हमारे धर्मबन्धु हमारे इतने साथ हैं कि हम से भी पहले घरबार-परिवार का मोह त्याग कर और इतनी लम्बी यात्राओं का कष्ट उठाकर जीवन पर खेलने को निजामशाही के अत्याचार सहने के लिये उसके बन्दीगृहों को भरने आने लगे, तब वहां भी उत्साह की लहर उत्पन्न हो गयी।

जब सत्याग्रह पूर्ण योवन पर था और निजाम के बन्दीगृहों में इतनी भीड़ सत्याग्रहियों की एकत्र हो गयी थी कि घबरा कर निजाम ने भारत की अंग्रेज सरकार से सहायता की याचना भी कर डाली थी, यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने सहायता से स्पष्ट इनकार कर दिया था, ठीक उस अवसर पर एक मुस्लिम तुष्टीकरण का बाण श्री मोहनदास कर्मचन्द गांधी के तुणीर से निकला। उनके उस तुष्टीकरण के बाण ने आर्यसमाज की अग्निपरीक्षा में अग्निवर्षा का काम कर दिया। उन्होंने बयान दे दिया कि "आर्यसमाज का यह सत्यागृह बेवक्त की शहनाई है, इससे हिन्दु-मुस्लिम एकता में फूट पड़ेगी।" यद्यपि गांधी जी जीवन भर अपनी इच्छित हिन्दु-मुस्लिम एकता के दर्शन नहीं कर पाये, जिन दर्शनों की प्राप्ति के लिये उन्होंने मुसलमानों के तुष्टीकरण का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने दिया। यहां तक कि मुसलमानों की विशुद्ध धार्मिक समस्या "खिलाफत" के लिये भी उन्होंने कांग्रेस के माध्यम से हिन्दुओं को प्रयुक्त किया और हिन्दु प्रसन्नतापूर्वक यह गा गाकर कि "कहती अम्मा यह शोकत अली की, जान बेटा खिलाफत में दे दो" मुसलमानों और उनके विश्व स्तर के धार्मिक सम्राट के खलीफा पद के लिये अपने समर्थन और प्रेम का प्रदर्शन करते फिरे। परन्तु यह कटु सत्य है कि गांधी जी को तुष्टीकरण की नीति के परिणामस्वरूप ही मुसलमानों का अहम् जागा, पाकिस्तान बना और अब तक भी गांधीजी की इच्छित हिन्दु-मुस्लिम एकता के दर्शन नहीं हो सके। जिसकी मां के नाम पर खिलाफत के गीत गांधी जी ने हिन्दुओं से गवाये, उसी शोकत अली के भ्राता मोहम्मद-अली ने एक अवसर पर यह बयान भी दिया कि "गन्दे से गन्दा और बुरे से बुरा मुसलमान भी गांधी से अच्छा है।" जब कुछ लोगों ने मोहम्मद अली से इस विषय में पूछा तो उसका स्पष्ट और दो-टूक उत्तर था कि "मैंने जो कुछ कहा, इस्लाम की रूह से वह ठीक ही कहा है।" गांधी जी से जब उनके भक्तों ने यह बात सुनायी तो वह चुप हो रहे। और तो जो हुआ सो हुआ, पाकिस्तान और उसके पश्चात् पचपन करोड़ रुपये की इतनी बड़ी धनराशि लेने के पश्चात् अब भारत में कई और लघु पाकिस्तान बनाने तथा तत्पश्चात् सम्पूर्ण भारत को ही दारुल इस्लाम में परिवर्तित करने की उनकी योजना है।

गांधी जी का बयान जिस दिन समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ, उसी दिन आर्यसमाज के प्रसिद्ध वाग्मी श्रीयुत कुंवर सुखलाल जी अपना एक सौ एक सत्याग्रहियों का जत्था लेकर हैदराबाद जाते हुए बम्बई पहुंचे थे। सायंकाल बम्बई के प्रसिद्ध चौपाटी मैदान में उनका भाषण होना था। उन्होंने अपने भाषण में गांधीजी के उक्त वक्तव्य पर दुःख प्रगट करते हुए कहा था---

"ना दे शोक से साथ,
हमारा तू गांधी।
मगर यह तो कह दे,
बुरा हो रहा है।।"

गांधी जी के वक्तव्य को पढ़कर आर्यसमाज की सत्याग्रह समिति में विचार-विनिमय हुआ तथा तत्पश्चात् श्री घनश्यामसिंह-जी गुप्त को गांधी जी से वार्तालाप के लिए भेजा गया। जब गुप्त जी ने उन्हें सब स्थिति बतलायी और सत्याग्रह से पूर्व किये सार्वदेशिक सभा के प्रयत्नों की सूची उनके सामने रखी तो कहने लगे-- "यह सब तो मुझे पता नहीं था।" गुप्त जी ने कहा कि- "तब तो आपको पता करने के लिये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्पर्क करना चाहिये था, बिना परिस्थितियों की जानकारी किये इस प्रकार का वक्तव्य देने से आर्य जगत पर जो प्रभाव पड़ा और आपके विषय में जो विचार लोगों के बनने लगे हैं, उनका कुप्रभाव तो दूरगामी होगा और कुछ दिन बाद दिखायी देगा।" तब गांधी जी ने गुप्त जी से अपने वक्तव्य का निराकरण करने का वचन दिया तथा प्रेस वक्तव्य प्रसारित किया कि "आर्यसमाज के इस सत्याग्रह को मेरा समर्थन प्राप्त है।"

सत्याग्रही जत्थे निरन्तर चल रहे थे और निजामशाही दिन पर दिन

शेष पृष्ठ ६ पर

वैदिक साहित्य "ब्राह्मण-ग्रन्थ"

• आचार्य डॉ० सुरेन्द्रदेव, स्नातक
शास्त्री, शिरोमणि, एम०ए०
२८४, सिविल लाइन, एटा

ग्रन्थ वाचक "ब्राह्मण" शब्द का प्रयोग प्रायः नपुंसक लिंग में ही उपलब्ध होता है। नपुंसक- लिंग में इस शब्द का प्रयोग पाणिनीय अष्टाध्यायी के 3/4/36 में, निरुक्त 4/27 में, शतपथ-ब्राह्मण के 4/6/9/20 में, ऐतरेय ब्राह्मण के 6/25 तथा 8/2 में तो प्राप्त होता ही है, साथ ही इसका प्राचीनतक प्रयोग तैत्तिरीय-संहिता में भी उपलब्ध होता है:-

"एतद् ब्राह्मणान्येव पंचहवींषि"
§ तैत्तिरीय सं० 3/7/1/1 ।।

ब्राह्मण शब्द के अर्थ के विषय में कोई विशेष मतभेद नहीं है। "ब्राह्मण" "ब्रह्मणन्" के व्याख्या परक ग्रन्थों का नाम है:-

"ब्राह्मणोऽयमिति ब्राह्मणः"

अर्थात् ब्रह्म से सम्बद्ग्रन्थ "ब्राह्मण" कहलाता है। ब्रह्म-विषयक प्रतिपादन किये जाने के कारण ही इन ग्रन्थों का नाम भी "ब्राह्मण" पड़ गया।

इसके अतिरिक्त "ब्रह्म" शब्द का प्रयोग अन्य अनेक अर्थो में भी किया गया है। उन अनेक अर्थो में एक अर्थ "मन्त्र" भी है।

"ब्रह्म वै मन्त्रः" शतपथ ब्राह्मण 7/1/1/5 ।।

अतः वेदमन्त्रों की व्याख्या तथा विनियोग प्रस्तुत किये जाने के कारण इन ग्रन्थों को "ब्राह्मण" नाम से कहा गया है। "ब्रह्म" शब्द का एक अन्य अर्थ "यज्ञ" भी है। यज्ञ सम्बन्धी कर्मकाण्ड की व्याख्या तथा विवरण प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थों को "ब्राह्मण" कहा गया। "ब्रह्म" शब्द का एक अन्य अर्थ "रहस्य" भी है। अतएव वैदिक रहस्यों का उद्घाटन करने की दृष्टि से भी इन ग्रन्थों को "ब्राह्मण" कहा गया है। भट्टभास्कर ने कर्मकाण्ड तथा मन्त्रों के व्याख्यान-ग्रन्थों को "ब्राह्मण" कहा है:-

"ब्राह्मणं नाम कर्मणस्तन्मात्राणां व्याख्यानग्रन्थः"

भट्टभास्कर। तैत्तिरीय सं० 1/5/1/भाष्य, "आपस्तम्ब"- 36-37 में लिखा है-

"ब्राह्मणशेषोऽर्थवादो निन्दाप्रशंसापरकृतिः पुराकल्पश्च"

अर्थात् ब्राह्मणग्रन्थों में अर्थवाद, निन्दा, प्रशंसा, परकृति और पुराकल्प का वर्णन है। इसी भांति वैशेषिक के-दर्शन में 5/2/1 में --

"बुद्धिपूर्वावाक् प्रकृतिर्वेदे" लिखकर "ब्राह्मणे संज्ञाकर्म सिद्धिलिंगम्"

लिखा गया है जिस का अर्थ है "ब्राह्मणों में शब्दों की परिभाषा तथा शब्दों की सिद्धि के चिन्ह उपलब्ध होते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि ब्राह्मणग्रन्थ वेदमन्त्रों के अर्थो को और अधिक स्पष्ट करने वाले है। मीमासा- दर्शन के "विधिशब्दाश्च" सूत्र पर शबरस्वामी कहते हैं कि--

"मन्त्रव्याख्यानरूपो ब्राह्मणगनः शब्दोविधि शब्दवत इत्युच्यते"

अर्थात् ब्राह्मणों के शब्द मन्त्रों के व्याख्यानरूप होने से विधिशब्दों की ही भांति हैं।

छान्दोग्य-उपनिषद का भाष्य करते हुए 7/14/1 के भाष्य में श्री शंकराचार्य ने लिखा है:-

"ऋगादीन्मन्त्रानधीते धीत्य च तदर्थं।
ब्राह्मणेभ्यो विधींश्च श्रुत्वा कर्माणिकुरुते"

अर्थात् ऋग्वेदादि के मन्त्रों का अध्ययन कर उनके अर्थों तथा विधियों को ब्राह्मणग्रन्थों से सुनकर कर्मों को करते हैं। इस भांति उन्होंने भी ब्राह्मण ग्रन्थों को मन्त्रों का अर्थ करने वाला ही कहा है।

वाचस्पति मिश्र ने ब्राह्मणग्रन्थों को निर्वचन, मन्त्रों का विनियोग, अर्थवाद §प्रतिष्ठान§ तथा विधि- इन चार प्रकार के प्रयोजनों से युक्त बतलाया है-

"नैरुक्त्यं यस्य मन्त्रस्य विनियोगः प्रयोजनम् ।
प्रतिष्ठानं विधिश्चैव ब्राह्मणं तदिहोच्यते ।।

इस प्रकार अन्य अनेक प्राचीन, मध्यकालीन तथा, नर्वाचिन विद्वानों ने यह एक स्वर से स्वीकार किया है कि चारों वेदों के मन्त्र अपौरुषेय हैं, ईश्वर प्रदत्त हैं और ब्राह्मण ग्रन्थ उनके व्याख्यान है तथा मनुष्यकृत हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य विद्वानों ने ब्राह्मणग्रन्थों को वेदों का अर्थ प्रतिपादन करने वाला, उनके अभिप्राय को विस्तृत रूप प्रदान करने वाला तथा वेदमन्त्रों को यज्ञो में विनियुक्त करने वाला कहा है।

इतना सब कुछ कहने के उपरान्त तात्पर्यरूप में इतना कहना ही पर्याप्त होगा कि ऋषियों ने ब्राह्मग्रन्थो का निर्माण वेदमन्त्रों में आये हुए शब्दों के निर्वचन, मन्त्रों का विनियोग, अर्थवाद तथा विधि की दृष्टि से ही किया है।

ब्राह्मणग्रन्थों का प्रमुख अथवा विवेच्य विषय "विधि" ही है। किस मन्त्र का किस प्रकार की स्थिति में किस भांति प्रयोग किया जाना आवश्यक है। इस विषय के विवेचन के साथ ही, विभिन्न प्रकार के यज्ञो का विधान किस समय किया जाना आवश्यक है। उसके करने की विधि क्या है। उसमें किन-किन साधनों का होना आवश्यक है। किस किस यज्ञ के करने का कौन-कौन अधिकारी होता है। इस भांति यज्ञ सम्बन्धी प्रक्रिया को सुलझाने की दृष्टि से ब्राह्मणग्रन्थों सम्बन्धी वैदिक-साहित्य का जन्म हुआ। यदि यज्ञसम्बन्धी कुछ विरोध की प्रतीति कहीं, किसी समय उपस्थित होती है तो उनका उचित समाधान करना ब्राह्मण ग्रन्थों का ही कार्य है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य विषय भी हैं कि जिनका अन्तर्भाव "विधि" के अन्तर्गत ही हो जाता है। इस प्रकार के विषयों के मीमांसक-अभिधान को ही अर्थवाद नाम से कहा जाया करता है। अर्थवाद में याग §यज्ञ§:- निषिद्ध वस्तुओं की निन्दा की जाया करती है तथा यागोपयोगी द्रव्यों की प्रशंसा। विधि-विधान सयुक्तिक हुआ करता है। यह विधान कल्पनामात्र-जन्य न होकर युक्ति तथा तर्क की आधारशिला पर विद्यमान रहा करता है। अतः इनके निमित हेतु अथवा कारण का निर्देश करना भी ब्राह्मणग्रन्थों का ही कार्य है। स्थान स्थान पर अनुष्ठेय-वस्तुओं की पुष्टि के लिये अनेक आख्यान भी दिये हुए हैं। जो अनुष्ठानों की प्रशंसा कर उनके प्रति याज्ञिकों की श्रद्धा को बढ़ाने में समर्थ होते हैं।

कहने का अभिप्राय यह है कि ब्राह्मणग्रन्थों का केन्द्र बिन्दु "विधि" ही है। निरुक्त, स्तुति, आख्यान तथा हेतु, वचन आदि सब उसी के पोषक हैं। शबरस्वामी के अनुसार ब्राह्मणग्रन्थों में प्रतिपादित विधियों की संख्या दस प्रकार की है:-

"हेतुर्निर्वचनं निन्दा प्रशंसा-संशयो विधिः।
पर क्रिया पुराकल्पो व्यवधारण कल्पना।।
उपमानं दशैते तु विधयो ब्राह्मणस्य तु ।। शाबरभाष्य 2/1/8 ।।"

किन्तु इनमें प्रमुखता "विधि" को ही प्राप्त है। अन्य सभी प्रकार तदंग अथवा तन्निर्वाहक होने के कारण "गौण" ही हैं।

ब्राह्मणग्रन्थों में मन्त्रों के "विनियोग" का वर्णन भी उपलब्ध होता है। किस मन्त्र का उपयोग किस प्रकार के उद्देश्य की प्राप्ति के निमित्त किया जाता है, इसकी युक्तिपूर्ण व्यवस्था ब्राह्मण-ग्रन्थों में सर्वत्र उपलब्ध होती है। ब्राह्मण-ग्रन्थो ने वेद के मन्त्रों में प्रयुक्त पदों द्वारा ही विनियोग की युक्तिमत्ता प्रदर्शित की है। मन्त्रों के वास्तविक अर्थ का बोध भी हमें ब्राह्मण-ग्रन्थों की आध्यात्मक व्याख्या के आधार पर ही हुआ करता है।

डा० विन्टरनिट्ज के अनुसार सम्पूर्ण ब्राह्मण-साहित्य को दो रूपों में विभक्त किया जा सकता है §1§ विधि- और §2§ अर्थवाद। उनका कहना है:-

ब्राह्मणग्रन्थों को हम §1§ विधि और §2§ अर्थवाद- इन दो भागों मे रख सकते है। "विधि" का अर्थ है "नियम" तथा अर्थवाद का अभिप्राय है "प्रशस्तिपूर्ण-व्याख्या"। ब्राह्मणग्रन्थों में यज्ञादिकर्मो के अनुष्ठान की विधि भी उपलब्ध होती है और इन विधियों पर यज्ञ, कर्म तथा प्रार्थनाओं के अर्थ तथा उद्देश्य के ज्ञान के लिये भाष्य तथा व्याख्यायें मिलती हैं जैसा कि पाश्चात्य अनुसन्धान शास्त्रियों को भी मान्य है §वैदिक साहित्य की रूपरेखा, पाण्डे एवं जोशी§।

"वेद" शब्द मूलरूप से संहिताओं का ही वाचक है, ब्राह्मण आदि अन्य ग्रन्थो का नहीं। वैदिक-साहित्य के अन्तर्गत तो ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषदो की गणना की जाया करती है। वेद तो मूलरूप में उसके अन्तर्गत विद्यमान हैं ही। ब्राह्मणग्रन्थ उनके व्याख्यापरक ग्रन्थ हैं।

"अनुपलब्ध तथा उपलब्ध ब्राह्मण-ग्रन्थ"

ब्राह्मणग्रन्थो का साहित्य तो अत्यन्त विशाल था किन्तु आधुनिक

शेष पृष्ठ ११ पर

हैदराबाद सत्याग्रह की अर्द्ध-शताब्दी

• श्री ब्रह्मदत्त-स्नातक, दिल्ली

भारत को स्वाधीनता 15 अगस्त, 1947 को मिली थी, लेकिन उससे भी नौ साल पहले तत्कालीन निजाम रियासत में देशद्रोही, अंग्रेजों के पिट्ठू, घोर अत्याचारी और साम्प्रदायिकता के अलम्बरदार शासन को आर्यसमाज के राष्ट्रीय सत्याग्रह ने शिकस्त दी थी और 17 अगस्त, 1939 को सारे सत्याग्रही जेलों से रिहा किए गए थे। शुरू में इस सत्याग्रह का विरोध किया गया था, लेकिन विजयी होने पर बाद में विभिन्न नेताओं ने सत्याग्रहियों को बधाई दी और उनकी सफलता पर प्रसन्नता जाहिर की। इस सत्याग्रह आन्दोलन की सफलता का कारण यह था कि आर्यसमाज ने विशेष अधिकारों की मांग बहुसंख्यकों के आधार पर अथवा मुस्लिम शासक के विरोध में नहीं की थी। उन्होंने अपना सत्याग्रह मानव नागरिक अधिकारों को रियासत में लागू न करने तथा दमनकारी कानून और शासन में पक्षपात के विरोध में किया था। यह इसी से स्पष्ट है कि इस आन्दोलन में सिख, सनातनी, जैन और मुसलमान भी शामिल हुए थे और कारावास में गए थे।

1948 में हैदराबाद में पुलिस कार्यवाही के बाद उस रियासत का भारत में विलय हुआ। उसके पश्चात् लौह-पुरुष और तत्कालीन गृहमन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा था कि यदि 1938-39 में आर्यसमाज सत्याग्रह न करता तो हैदराबाद का भारत में विलय सम्भव न होता। सेवाग्राम वर्धा मे महात्मा गाँधी ने जेल से सत्याग्रहियों की वापसी पर फीजी, थाइलेण्ड और सीमाप्रान्त के गुरुकुल वृन्दावन के अन्तर्राष्ट्रीय जत्थे को भरपूर शाबाशी दी थी। उस समय द्वितीय विश्व युद्ध शुरू होने वाला ही था। गांधी जी ने तब उन्हें पूरे मन से राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़ने की भी प्रेरणा दी थी। रियासत तथा बाहर के प्रान्तों और विदेशों के बारह हजार से अधिक युवकों ने सत्याग्रह में भाग लिया था। सार्वदेशिक सभा, पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार, हैदराबाद गुजरात, की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधानों ने सर्वप्रथम इस आन्दोलन का नेतृत्व किया था। यह बलिदान और तपस्या की अग्नि परीक्षा थी जिसमें आर्यसमाज उत्तीर्ण हुआ।

सामयिकी

1921 का खिलाफत आन्दोलन, गुरु का बाग और अन्य अकाली आन्दोलन तथा मलाबार का मोपला विद्रोह भारतीय मुसलमानों, सिखों, और मोपलाओं द्वारा उन्हींके लिए छेड़े गए आन्दोलन थे। पर इन आन्दोलनों का सम्बन्ध मानवीय या नागरिक अथवा मौलिक अधिकारों से नहीं था। इनका उद्देश्य सीमित था। खिलाफत के पक्षधरों या अकालियों ने अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष तथा आन्दोलन अवश्य किया था, लेकिन ये सम्प्रदाय विशेष के लिए विशेष रूप से छेड़े गए थे।

1939 में द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ हुआ और उससे बरसों पहले विश्व की तत्कालीन महाशक्तियों यानी मित्र देशों और धुरी देशों में दुनिया को अपने प्रभाव क्षेत्र में लाने के लिए होड़-तोड़ शुरू हो गई थी। विश्व का कौन-सा भूखण्ड किस महाशक्ति के हिस्से में आएगा। उसकी निश्चित रूपरेखा बहुत पहले से बन रही थी। ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री चैंबरलेन के समय में ब्रिटेन के साम्राज्य के विखण्डन को भावी नियति मान लिया गया था। उस काल में भारत के राजे महाराजे और नवाब ही अंग्रेजों के सबसे बड़े सहायक और समर्थक थे। इन सबसे अधिक अग्रेजों का विश्वसनीय मित्र था- हैदराबाद का निजाम जिसे निजाम-उलमुल्क का खिताब मुगल साम्राज्य के पतन काल से मिल गया था।

अभी द्वितीय महायुद्ध शुरू नहीं हुआ था अंग्रेज इस देश में मौजूद थे और पाकिस्तान भी बना नहीं था। पाकिस्तान की कल्पना स्वाधीनता से पूर्व निजाम के ही राज्य में की गई और वह अपने को अमूरे-एमजहब यानी इस्लामी साम्राज्य का शासक मानता था। इस देशद्रोही वंश को राज्य से उतारने के लिए लौह पुरुष सरदार-पटेल को 1948 में पुलिस कार्यवाही करनी पड़ती थी।

देशी रियासतों में उत्तरदायी शासन के बारे में अस्पष्ट नीति रही। लुधियाना में 1939 में हुए रियासती प्रजा सम्मेलन में निजाम की सल्तनत में चलाए गए आर्यसमाज के सत्याग्रह को उचित मानकर भी तब असामयिक कहा गया था। इसके विपरीत ठीक उस सम्मेलन के दो दिन बाद 18फरवरी, 1939 को (हरिजन) के अंक में महात्मा-गाँधी ने इस सत्याग्रह को सर्वथा उचित ठहराया था। इस प्रकार शुरु से इस रियासत का शासक और इसका पूरा ढांचा घोर साम्राज्यवादी और साम्प्रदायिकता-वादी रहा, जिससे राज्य की 88 प्रतिशत बहुसंख्यक जनता नागरिक और धार्मिक अधिकारों से सर्वथा वंचित रही। राजनीतिक अधिकार तो गैर- मुस्लिमों के हाथ में न के बराबर थे। 320 मील लम्बाई और 270 मील चौड़ाई वाला तत्कालीन राज्य अब आन्ध्रप्रदेश कर्नाटक और महाराष्ट्र में बंट गया है।

निजाम और उसके समर्थक इस कोशिश में थे कि भारत से अंग्रेजी शासन का जुआ उतरते ही हैदराबाद रियासत को शेष भारत से पृथक करके उसे स्वाधीन करा लें। 1938-39 में जन प्रतिनिधियों के इस आक्रोश ने धीरे-धीरे जोर पकड़ना शुरू कर दिया था। स्टेट कांग्रेस, नागरिक स्वतन्त्रता समिति और हिन्दू महासभा ने उत्तरदायी शासन के लिए अपनी कार्यवाहीयां सीमित पैमाने पर शुरु कर दी थीं, परन्तु आन्दोलन में वास्तविक जान तब आई, जब कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज की ओर से सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया। लगभग सात महीने तक चले इस सत्याग्रह की शुरुआत प्रथम सर्वाधिकारी महात्मा नारायण स्वामी ने अपने जत्थे के साथ गिरफ्तारी देकर की थी। कुल मिलाकर लगभग 12,000 व्यक्तियों ने सत्याग्रह करके कारावास भुगता था। इस सत्याग्रह की अर्द्ध-शताब्दी इस महीने शुरु हो गई है और इसके उपलक्ष्य मे कार्यक्रम अगले साल 16 अगस्त, तक चलेंगे।

1938-39 का यह आन्दोलन अब समग्र राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम का एक प्रमुख अंग माना जा चुका है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय और राज्य सरकारों ने इन स्वाधीनता सेनानियों को नियमानुसार स्वाधीनता सेनानी सम्मान पेंशन एवं सुविधाएं भी देनी शुरु कर दी हैं। ◻

पृष्ठ ४ का शेष.....

अधिकाधिक धर्रा रही थी कि अब क्या होगा? बन्दीगृहों में स्थान नहीं थे। राजकीय बैरकों का प्रयोग बन्दीगृहों के लिये किया, वह भी भर चुकी थीं। तब सात मास के सत्याग्रह और अठारह सहस्र सत्याग्रहियों के जेल जाने के पश्चात् निजामशाही ने घुटने टेक दिये और बिना किसी परिवर्तन के आर्यसमाज की चौदहों मांगें स्वीकार कर लीं। समस्त सत्याग्रहियों को सम्मानपूर्वक पूरा मार्ग व्यय देकर यथास्थान पहुँचाया।

तपस्या रंग लाती है "सार्थ का फल तो धीरे-धीरे मिलता है" की इस उक्ति के अनुसार निजामशाही के पतन पश्चात् उस समय के भारत के गृहमन्त्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कहा था कि "सन् 1939 का आर्य सत्याग्रह हैदराबाद राज्य में जिन नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिये किया गया था, आज उसकी पूर्ण परिणति अनुत्तरदायी निरंकुश शासन को समाप्त कर पूर्ण उत्तरदायी प्रजातान्त्रिक शासन तन्त्र की विजय के रूप में हुइ है।"

अन्ततोगत्वा वह तपस्या यहीं तक रंग लायी कि तब के आर्य सत्याग्रह को नागरिक स्वाधीनता का संग्राम और उसके सत्याग्रहियों को स्वाधीनता संग्राम सेनानी स्वीकार कर भारत सरकार ने उनको सम्मान पेन्शन देना स्वीकार कर लिया है। यह उस साधना का फल उन स्वाधीनता सेनानियों को व्यक्तिगत रूप से भी प्राप्त हो गया। ◻

ऋषि दयानन्द के अनुसार दलित समस्या का समाधान

— डॉ० ज्वलन्त कुमार शास्त्री - अमेठी

दलित वर्ग को आर्य संस्कृति का विरोधी बनाने का षड्यन्त्र - गतांक से आगे-

स्वतन्त्रता के बाद वैदिक धर्म वे आर्य संस्कृति पर आक्रमण का नया और तेज ज्वर आया है। इसमें ईसाई और इस्लामी सम्प्रदायों और उनके लेखकों की ही भागीदारी नही है अपितु इसमें नई शिक्षा में दीक्षित आधुनिकतावादी, अपने को धर्मनिरपेक्ष कहने या प्रचारित करने वाले लेखक, कुछकम्युनिस्ट, नव बौद्ध और कुछ पत्रकार बन्धु शामिल हैं। चिन्ता की बात यह है कि अब संगठित रुप से दलित वर्ग को आर्य संस्कृति का विरोधी बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

अम्बेडकर की "रिडिल्स इन हिन्दुइज्म"-

डॉ0 भीमराव अम्बेडकर की अप्रकाशित रचनाओं को प्रकाशित करने का निर्णय महाराष्ट्र सरकार ने लिया। चतुर्थ खण्ड "रिडिल्स इन हिन्दुइज्म" के छपते ही खलबली मच गई। महाराष्ट्रियन हिन्दुओं ने इसका एक स्वर से विरोध किया। इस पुस्तक के समर्थन में श्री प्रकाश आम्बेडकर का "दलित पैंथर" "मुस्लिम अल्पसंख्यक सुरक्षा महासंघ" के नेता प्रो0 योगेन्द्र कबाड़े, हाजी मस्तान आदि आ गये और विशाल रैलियाँ की गई। श्रीमती सविता अम्बेडकर ने भी उत्तर भारत में विस्तृत दौरे किये और "रिडिल्स इन हिन्दुइज्म" का पत्र लिया और उन्होंने भी राम और कृष्ण के चरित्र पर आक्षेप किये। उत्तरी भारत के हिन्दुओं, विशेषकर पौराणिक पण्डितों तथा विश्वहिन्दू परिषद, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और भाजपा ने सविता अम्बेडकर का विरोध किया। कहीं-कहीं अम्बेडकर के पुतले जलाये गये और सविता जी की गिरफ्तारी की माँग की गई। इस समय प्रबल वेग से श्री कांसीराम और उनकी बहुजन समाजपार्टी तथा डी0एस0फोर के लोग इस प्रकार के अनेक साहित्य का प्रचार-प्रसार दलित वर्ग में कर रहे हैं। आर्यसमाज की स्थिति यहाँ स्पष्ट नहीं है। क्या हम पौराणिक हिन्दुओं, शिवसेना, बाल ठाकरे और विश्व हिन्दू परिषद के समान डॉ0 आम्बेडकर की रचनाओं का पूर्णतया विरोध करें या श्री कांसीराम, प्रकाश-अम्बेडकर, सविता अम्बेडकर के समान समर्थन। निश्चय ही आर्यसमाज अपनी मान्यताओं तथा अनुसन्धान परक निष्कर्षों के साथ गुण-दोष का विचार करते हुए विरोध या समर्थन करेगा। नमूने के रुप में हम "रिडिल्स इन हिन्दुइज्म" के दो उदाहरण देते हैं।

§1§ श्री डॉ0 अम्बेडकर ने वाल्मीकीय रामायण के उत्तरकाण्ड के निम्न श्लोकों के आधार पर राम और सीता के मद्यपान और मांस भक्षण की बात लिखी है--

कुशास्तरणसंस्तीर्णे रामः सन्निषसाद ह।
सीतामादाय हस्तेन मधु मैरेयकं शुचि।।18।।

पाययामास काकुत्स्थः शचीमिव-पुरन्दरः।
मांसानि च सुमृष्टानि फलानि विविधानि च।।19।।

रामस्याभ्यवहारार्थं किङ्करा स्तूर्णमाहरन्।
उपानृत्यंश्च राजानं नृत्यगीतविशारदाः।।20।।

अप्सरोरगसङ्घाश्च किन्नरीपरिवारिताः।
दक्षिणा रूपवत्यश्च स्त्रियः पानवशंगताः।।21।।

उपानृत्यन्त काकुत्स्थं नृत्यगीतविशारदाः।
मनोभिरामा रामास्ता रामो रमयतां वरः।।22।।

रमयामासधर्मात्मानित्यंपरमभूषिताः।
स तया सीतया सार्धमासीनो विरराज ह।। 23 ।।

§वाल्मीकिरामायण-उत्तरकाण्ड 42वाँ सर्ग§

अर्थ-

अयोध्या की अशोकवाटिका में फूलों से भूषित आसन पर जो एक कुश की चटाई पर बिछा हुआ था, श्रीरामचन्द्र जी बैठ गये। वहाँ सीता को अपने निकट बैठाकर अपने हाथ से स्वच्छ मैरेय नामक मदिरा काकुत्स्था श्रीरामचन्द्र जी ने सीता को वैसे ही पिलाई, जैसे इन्द्र अपनी इन्द्राणी शची को पिलाते हैं। वहां पर अच्छे सुस्वादु मांस और विविध प्रकार के फल श्रीरामचन्द्र जी के व्यवहारार्थ टहलुओं ने तुरन्त लाकर रख दिये। मांस मदिरा का आवश्यक अंग स्वरूप नाचना गाना भी श्री रामचन्द्र जी के सामने आरम्भ हुआ। वह नाच §मामूली नाच न था बल्कि§ नाचने गाने में निपुणों का था। तदुनन्तर अप्सरायें, नागिनें, किन्नरी व परमचतुर एवं रूपवती स्त्रियाँ मदमाती हो गई। गाने नाचने में निपुण स्त्रियाँ श्रीरामचन्द्र जी के सामने नाचने लगीं। इस तरह मन को प्रसन्न करने वाली एवं श्रृंगार किये हुए उन स्त्रियों का गान व नृत्य श्रीराम-जी जानकी के साथ उत्तम आसन पर बैठ देखते सुनते रहे।।

§अनुवादक- श्रीचतुर्वेदी द्वारका-प्रसाद शर्मा- श्रीमद्वाल्मीकि रामायण§
हिन्दी भाषानुवाद सहित उत्तरकाण्ड, पूर्वार्द्ध 9, पृ0 507-508§
पब्लिशर और बुकसेलर - रामनारायण लाल, इलाहाबाद 1927 ई0§

जाहिर है कि उत्तरकाण्ड के उपर्युक्त श्लोकों के आधार पर श्रीरामचन्द्र-जी और सीताजी का मांस भक्षण और मद्यपान सिद्ध हो जाता है। आर्यसमाज ने और रामायण साहित्य के प्रसिद्ध गवेषकों §यथा फादर कामिल बुल्के, डॉ0 रामकुमार वर्मा प्रभृति§ ने उत्तरकाण्ड को वाल्मीकि की कृति न मानकर प्रक्षेप माना है। इस प्रसंग का यही समाधान है कि ये सब प्रक्षेप है, और वाममार्गियों की मिलावट है। लेकिन पौराणिक और हिन्दू पण्डित इसे प्रक्षेप न मानकर श्लोकार्थ बदलने की चेष्टा करते हैं। गीताप्रेस से प्रकाशित वाल्मीकिय रामायण में यहां पर "मधु मैरेयकं शुचि" का अर्थ "पवित्र पेय मधु" तथा "मांसानि" का अर्थ "रोजोचित भोग्य पदार्थ" किया गया है। निस्सन्देह यह अर्थ खीचातानीपरक और गीत है। क्योंकि राक्षसों के प्रसंग में "मधु" का अर्थ शराब और "मांसानि" का अर्थ "मांस" किया जाता है। यही नहीं श्रीरामचन्द्रजी के प्रसंग में ही दूसरे स्थलों पर "मधु" का अर्थ शराब और "मांस" का अर्थ मांस किया गया है-- "न राघवो मांसं भुङ्क्ते न चैव मधु सेवते"।।

§वाल्मीकि रामायण- सुन्दरकाण्ड, अध्याय-36, श्लोक 41§

अर्थात्- हनुमान सीता से कह रहे हैं कि "राम न मांस खाते हैं और न मद्य पीते हैं।"

अतः आर्यसमाज "रिडिल्स इन हिन्दुइज्म" प्रभृति ग्रन्थों के एवं विधि स्थलों पर गवेषणा के आधार पर प्रक्षेप या मिलावट की बात कहेगा पौराणिकों के समान अनार्ष ग्रन्थों को प्रामाणिक नही मानेगा तथा प्रक्षेपांशों का अर्थ परिवर्तन का पक्षधर नहीं होगा।

ऐसा नहीं है कि डॉ0 आम्बेडकर ने सभी जगह अनार्ष ग्रन्थों और प्रक्षेपों के आधार पर ही श्रीराम और कृष्ण के चरित्र पर आक्षेप किया है या वैदिकधर्म और आर्य संस्कृति पर आक्रमण किया है। अधिकांश में उनका पूर्वग्रह, उच्चवर्गीय जातिवादी मानसिकता द्वारा पीड़ित होना और बौद्ध बन जाना रहा है। अतीत में भी बौद्धों और हिन्दुओं का विरोध अहि नकुलवत रहा है। अब हम डॉ0-अम्बेडकर द्वारा प्रस्तुत आर्य धर्म की उन आलोचनाओं का एक-दो उदाहरण प्रस्तुत करते हैं जो पूरी तरह अनर्गल है--

§1§ "ऋषियों की एक अन्य घृणित प्रवृत्ति थी आम जनसमूह के सामने ही खुली जगह पर सहवासरत होने की। -- अधिकांश हिन्दू जानते हैं कि सीता द्रौपदी और अन्य प्रसिद्ध स्त्रियाँ अयोनिजा थीं। शब्द व्युत्पत्ति के दृष्टिकोण से "योनि" का अर्थ "घर" होता है, अतः "योनिजा" का अर्थ हुआ "घर के अन्दर उत्पन्न सन्तान" और "अयोनिजा" का अर्थ हुआ "घर के बाहर उत्पन्न सन्तान"। इस प्रकार यदि यह अर्थ शब्दव्युत्पत्ति के अनुसार सही है तो "अयोनिजा" का अर्थ हुआ" वह सन्तान जो खुले मैदान उपस्थित जनसमूह के सामने कृत समागम से उत्पन्न हुई"।

समीक्षा- वास्तविकता यह है कि सीता और द्रौपदी प्रभृति नारियाँ भी अन्य स्त्रियों की भाँति अपने माँ बाप से पैदा हुई थीं। किन्तु पौराणिकों ने इन तेजोदीप्त नारियों के महत्व के आधार पर उनकी अलौकिक उत्पत्ति यज्ञकुण्ड और भूमि से हल द्वारा खनन किये जाने पर निरूपित की और इस प्रकार उन्हें "अयोनिजा" कहा। "अयोनिजा" शब्द व्याकरण की दृष्टि से भी यहाँ अपने मूल अर्थ में §योनि से उत्पन्न न होने वाली§ ही है, जो पौराणिक चमत्कार की प्रवृत्ति के कारण प्रयुक्त हुआ है। "अयोनिजा" शब्द का डॉ0 अम्बेडकर कृत अनर्गल घृणित अर्थ कदापि माननीय नहीं रहा और न यह आर्यों की परम्परा ही है। क्योंकि वैदिक विवाह संस्था में दृढ़ चारित्र्य और पति-पत्नी का ऐकान्तिक दृढ़ प्रेम-सम्बन्ध वर्णित है।

क्रमशः

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के दो युवा शहीद : श्री परमानन्द एवं श्री मलखान सिंह

• यतीन्द्र कुमार, ग्राम-मोहद्दीपुर डा० कमलेपुर (मुरादाबाद)

आज से 50 वर्ष पूर्व 10 जनवरी सन 1939 को एक स्वातन्त्र्य धार्मिक क्रान्ति फूटी थी "हैदरावाद-आर्य सत्याग्रह"। उल्लेखनीय है 1939 के वे दिन थे जब हैदराबाद की सत्ता मदान्ध शासकों के हाथ में थी। उनका लक्ष्य था हिन्दू जनसंख्या का ह्रास तथा मुस्लिम समुदाय की वृद्धि। "सठे साठ्यं समाचरेत" एवं वसुधैव कुटुम्बकम् का पालन करने वाला भारतीय जनमानस यह सौतेला व्यवहार सहन नहीं कर पाया। जब हद, की सीमाएं पार हो जाती हैं जब कि अन्य कोई रास्ता नहीं दीखता तब कोई न कोई आन्दोलन होता ही है। अत्याचार की सीमाएँ और बढ़ीं। हिन्दू जनता को पूजा-वन्दना से भी तंग किया जाने लगा, तथा उर्दू की यह कहावत "नंग आमद-बजगं आमद" चरितार्थ हुई। अन्ततः 10 जनवरी 1939 को हैदराबाद में एक भीषण निःशस्त्र आन्दोलन हुआ। इस स्वर्णिम अध्याय की रचना के लिए न जाने कितने वीर-शूरमाओं ने हंसते-हंसते "वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम" कहते हुए अपने को माँ भारती के चरणों में समर्पित कर दिया।

इस धर्मयुद्ध में जाने कितनी बहनों के भाई, कितनी माताओं के लाल, तथा कितनी पत्नियों के सिन्दूर इस क्रान्ति बेला में समर्पित हो गये। इनमें न जाने कितने अज्ञात वीर भी थे जिनका आज तक किसी को पता तक नहीं हुआ। इस सत्याग्रह की वीर- बलिदानी श्रृंखला में हरिद्वार जनपद के दो वीर-शूरमा शहीद हुए श्री परमानन्द एवं श्री मलखान सिंह।

श्री परमानन्द खास हरिद्वार के निवासी थे तथा श्री मलखान सिंह हरिद्वार जनपद की तहसील रुड़की के निवासी थे। दोनों वीर एक ही वर्ष सत्याग्रह में गये तथा दोनों ने एक ही जेल में बलिदान दिया।

श्री परमानन्द के पिता श्री-गोकुल प्रसाद एक कर्मठ आर्य पुरुष थे। परमवीर परमानन्द की आयु अभी मात्र 20 वर्ष ही थी। परन्तु परमानन्द का हृदय हैदराबाद में हो रहे अपमान की प्रतिकार हेतु लालायित हो उठा। वहां परमानन्द ने अन्य जत्थों के साथ सत्याग्रह आन्दोलन किया। फलस्वरूप निर्दयी सत्ता ने इस वीर को बन्दी बना लिया और गुलवर्गा-कारागार में डाल दिया। तत्पश्चात् गुलवर्गा जेल से इस हुतात्मा वीर को चचंलगुड़ा कारागार में पहुँचा दिया। वहां परमानन्द को कठोर से कठोर यातनाएँ दी गईं। अन्ततः परमानन्द के शरीर में अनेक घाव हो गये और यह वीर गम्भीर रूप से बीमार हो गया और अधिक बीमार होने पर परमानन्द ने इहलीला समाप्त कर स्वर्गधाम का वरण किया तत्पश्चात् इस वीर-बलिदानी के पार्थिव शरीर का पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार दाहसंस्कार किया गया। इस परमवीर की चिताग्नि मानो प्रत्येक युवा वीर को यह आदेश दे रही हो-

समझ लो कि मृत्यु है. मृत्यु
से न डरो कभी।
जियो तो ऐसे जियो कि
लोग याद करें सभी।।

रुड़की निवासी बलिदानी श्री-मलखान सिंह भी हैदराबाद सत्याग्रह में एक विशेष स्थान रखते हैं। आर्यसमाज के प्रति अनुरक्त इस युवक ने सत्याग्रह के लिए अधिकाधिक सत्याग्रहीयों को तैयार करने में प्रमुख भूमिका निभाई थी। आपने दूसरों के प्रेरित होने पर भी सन्तोष नहीं माना वरन् स्वयं भी रुड़की के एक जत्थे के साथ पुसद में सत्याग्रह करते हुए बन्दी बनाए गये। और चचंलगुडा कारागार में भेज दिये गये वहां की कठोर यातनाएँ मलखान परमानन्द की तरह भयानक बीमार हुआ। परिणामतः आपने इस नश्वर काया का परित्याग कर स्वयं को अनन्त में विलीन कर दिया।

आज ये वीर बलिदानी हमारे सम्मुख तो नहीं हैं परन्तु उनका साहस उनकी सत्यनिष्ठा उनका माँ भारती के प्रति दृष्टिकोण प्रत्येक जनमानस के सम्मुख है। जो सदैव निखिल विश्व को अन्याय अत्याचार से लड़ने के लिये निरुपित करता रहेगा।

अन्त में इन शब्दों के साथ
तुमने दिया बलिदान देश को,
देश तुम्हें क्या देगा।
जब भी कोई श्रेष्ठ कार्य होगा,
तो नाम तुम्हारा लेगा।।

□

महर्षि निर्वाण उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज दूर संचार कालोनी (बरेली) द्वारा दि0 29-10-89 को आर्य समाज प्रांगण में बड़े हर्ष उल्लास से दीपावली का कार्यक्रम यज्ञ, भजन और प्रवचनों के द्वारा मनाया गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय स्तर की विदुषी महिला डा0 सावित्री देवी शर्मा "वेदाचार्य" ने सब लोगों को इस अवसर पर सही रूप से समझकर लक्ष्मी और गणेश का पूजन करना चाहिए। अर्थात् अपने श्रम से कमाये हुए धन को अच्छे कार्यों में व्यय करना चाहिए। आतिसबाजी, जुआ और नशीले पदार्थों की निन्दा लोगों को इसका विरोध करना चाहिए। ऐसा विचार महर्षि दयानन्द का था जिनका आज निर्वाण दिवस है। दीपावली का पावन त्यौहार खरीफ की फसल के आगमन की प्रसन्नता का पर्व है इस लिये सभी भारतीयों को इसे प्रसन्नता पूर्वक मनाना चाहिए।

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का नैमित्तिक तथा वार्षिक बृहदधिवेशन

दिनांक २४ तथा २५ दिसम्बर १९८९ को डी.ए.वी. कालेज लखनऊ में सम्पन्न होगा।

(1) नैमित्तिक अधिवेशन दिनांक- 24 दिसम्बर 1989 (रविवार)

(2) वार्षिक बृहदधिवेशन 25 दिसम्बर 1989 (सोमवार)

समय तथा स्थान डी0ए0वी0 कालेज ही रहेगा।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

काला धन एवं राजनीतिक मान्यताएं

□ श्री सोती वीरेन्द्र चन्द्र
लखनऊ

राष्ट्रीय राजनीति को काले धन रूपी जाल ने जकड़ रखा है। इन्टरनेशनल मानीटरी फण्ड के अनुसार 3000 करोड़ रुपये की धनराशि लेखा-जोखा के अन्तर्गत नहीं आती। यह काला धन है। यद्यपि रिजर्व बैंक आफ इंडिया के अनुसार यह राशि इससे बहुत कम है। भारत सरकार ने नेशनल इंस्टीट्यूट आफ पब्लिक फाइनेन्स एण्ड पालिसी की एक समिति गठित की। उसके अनुसार काला धन राष्ट्रीय आय का चालीस प्रतिशत है। राष्ट्रीय आय चालू मूल्यों के आधार पर 1,95,707-करोड़ रुपये है।

काले धन को राजनीति से जोड़ कर न केवल समस्त अर्थ-व्यवस्था अस्त-व्यस्त हुई है बल्कि राजनीतिक मान्यताओं का तेजी से अवमूल्यन हुआ है। राजनीतिक गिरावट से राष्ट्रीय चरित्र में गिरावट आई है। राजनीति का काले धन से गठबन्धन स्वतन्त्रता के बाद की देन है। राजनीतिक पार्टियों का आडिट होता ही नहीं। वर्ष 1984 के चुनावों में अकेली कांग्रेस द्वारा प्राप्त काले धन के 400 करोड़ रुपए व्यय किए गए कहे जाते हैं।

काला धन प्राप्त किए हुए राजनीतिक दल के सत्ता में आ जाने पर उद्योगपति वस्तुओं का मूल्य बढ़ा कर अपनी क्षति-पूर्ति करते हैं। इससे मंहगाई बढ़ती है।

यह काला धन देश की समुन्नति एवं सुविकसित प्रगति में बाधक एवं घातक है। राजनेताओं ने राजनीति को एक समृद्धिशाली पेशे में बदल दिया है। इसने उनकी आत्मा का ही हनन कर दिया है।

राजनीति से काले धन का वर्चस्व समाप्त कैसे हो क्योंकि काले धन के बिना भी राजनीति हो सकती है। आखिरकार, स्वतन्त्रता के पूर्व भी कांग्रेस ने चुनाव लड़े थे। परन्तु तब काला धन प्राप्त करके चुनाव लड़ने या व्यक्तिगत लाभ के विषय में सोचना भी गुनाह था। हां, तब निराले इन्सान थे। उस समय उच्च आदर्शों के प्रकाश-स्तम्भ पर प्रज्जवलित देश की दीप-शिखा एक ऐसे प्रकाश-पुंज के समान थी जिसके दिव्य आलोक में देश नैतिक उदात्त-उत्थान की गौरव गरिमा से मंडित हो रहा था। तब हर स्वतन्त्रता सेनानी भौतिक-सम्पदा को तृणवत त्याग देता था। वे राजनीतिक जीवन में उच्च-चारित्रिक मूल्यों के पक्षपाती थे। उस समय विशुद्ध सर्वत्याग की भावना से वातावरण उद्वेलित था। वे फूंक फूंक कर कदम रखते थे कि कहीं उनके नाम में उनके किसी काम से बट्टा न लग जाय। निष्काम देश सेवा उनकी पुण्य-प्रवृत्ति थी। वे निरपेक्ष और निःस्पृह थे। उनके आदर्शों का जनता पर गहरा प्रभाव पड़ा था। उनके प्रति जनता के मन में बैठे सम्मान के कारण वह उनको चुन लेती थी।

अब सत्ता-सम्पत्ति की भावना ने घर लिया है। निष्काम कर्मियों का स्थान सकाम कर्मियों ने ले लिया है। स्वतन्त्रता के पूर्व जैसी गौरव और गरिमामयी विभूतियों का अब नितान्त अभाव है।

निःसन्देह, काले धन के बिना राजनीति हो सकती है। इसके लिए स्वतन्त्रता के पूर्व में प्रचलित त्याग और ईमानदारी की भव्य भावना को जिससे तब के राष्ट्रीय नेता अनुप्राणित थे और काले धन के बिना राजनीति करते थे, फिर जागृत कर वही आदरणीय स्थान देना होगा। लोगों के विवेक और अन्तरात्मा जगाने का जतन करना होगा।

अतः राजनीति और कालेधन के मिलन से जो पतन हुआ है उससे उभरने के लिए सार्वजनिक जीवन को उत्तम साफ सुथरा बनाना होगा। कालेधन के बिना राजनीति हो सकती है। परन्तु मूल मुद्दा है नैतिक स्तर उठाने का तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं महात्मा गांधी द्वारा प्रतिपादित नैतिक मान्यताओं को पुनः उजागर कर उनका अनुसरण करने का। ■

मेला प्रचार

कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आर्यसमाज मवाना ने यहाँ से 12 किलोमीटर दूर मखदूमपुर गंगाघाट पर होने वाले मेले में दिनांक- 11,12,13 नवम्बर1989 को शिविर द्वारा प्रचार करने का आयोजन किया।

इस शिविर में श्री वेदपाल शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज मवाना, कान्ति प्रकाश-मन्त्री आर्यसमाज मवाना, श्री वेद पालशास्त्री-प्राचार्य गुरुकुल सधारणपुर ने उपदेशों द्वारा तथा श्री बाजराम सिंह बिजनौर लच्छी सिंह मोरना कल्याण सिंह, केशवराम, ब्रह्मपाल आदि क्षेत्रीय भजनोपदेशकों ने अपने मधुर भजनों द्वारा आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचार तथा व्यापक कुरीतियों का खण्डन किया। नवनिर्मित गुरुकुलसधारणपुर के बाल ब्रह्मचारियों के आसन प्रदर्शन की जनता ने बड़ी प्रशंसा की।

जो कौम मज़बूत होगी वही राज करेगी

-इस धरती पर हमेशा वीरों की पूजा होती आयी है। इस धरती पर वही कौम जिन्दा रहती है, जो वीरों की पूजा करती है। ये शब्द श्री देवव्रत-आचार्य (गुरुकुल कुरुक्षेत्र) ने दिनांक-14 नवम्बर को आर्यसमाज नकुड़ के 59वें वार्षिकोत्सव पर विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहे।

योग साधना शिविर

आर्यसमाज दयानन्द राजकोट की ओर से श्री स्वामी सत्यप्रिय जी और पं० ज्ञानेश्वर आर्य के निर्देशन में दि० 22 से 31 दिसम्बर तक योग साधना शिविर का आयोजन किया गया। शिवरार्थी स्वस्थ, अधिक से अधिक संख्या में 60 हों प्रत्येक को 200रु०देय होगा, बिस्तर वर्दी, पुस्तकें साथ लावें, भोजन निशुल्क होगा। भाग लेने के इच्छुक 15 दिसम्बर तक पहुँच जावें। निम्न पते पर पहुँचे। स्वाश्रय सोसायटी, कम्युनिटि हाल, मवडी मेइन रोड, राजकोट-4

पृष्ठ 3 का शेष....

भाव से जुटे रहें तो हम सशक्त वैदिक संस्कृति की आधारशिला स्थापित कर सकते हैं। इसके आधार सत्य व्यवहार, न्याय पक्षपात रहितता और सभी के मित्रता का व्यवहार हो।

हिन्दी भाषा या राजनीतिक पदलिप्सा, भारत की राजनीतिक समस्याओं में उलझना या हिन्दू संगठन राम जन्म भूमि विवाद आदि में उलझकर अपने ही पैरों पर व मौलिक सिद्धान्तों पर कुठाराघात न करें। सस्ती लोकेष्णा व भ्रष्ट उपायों से अपनी संस्था को मठ न बनावें। नित नये चेहरे नया खून नवोन्मेष लिए कार्यकर्ताओं को कार्य करने का अवसर दें।

यही वह मार्ग है जिसके माध्यम से महर्षि संसार में वैदिक व्यवस्था व सिद्धान्तों को फैलाना चाहते थे। हमारे बुद्धिजीवी जन व कार्यकर्ता व शीर्षस्थ नेताओं से हमारा निवेदन है कि- वे सभ्य उपायों द्वारा पारस्परिक- विचार विनिमय व सरल शुद्ध नीति से अपने विवादों को आर्योचित ढंग से सुलझावें।

जो वयोवृद्ध हैं उनके अनुभवों का और उनकी प्रतिष्ठा को रखते हुए लाभ भी उठाना पितृयज्ञ का अंग है।

हम किसी व्यक्ति से नहीं अपितु सार्वदेशिक सभा के सभी मान्य सदस्यों से अपील करते हैं कि आर्य जगत् को नई दिशा व प्रेरणा देने के अपने दायित्व पर विचार करें और हिम्मत व साहस से आर्यसमाज के विराट् रथ को सही मार्ग पर लाकर खड़ा करें। जिससे आर्य जनता को किसी के नाम से रोना न पड़े बल्कि वे पूर्ण श्रद्धा से आपकी सेवाओं की सराहना करें।

हमें विश्वास है कि- सभी आर्य जन इस योजना पर सामूहिक चर्चा कर और एक गतिशील स्थाई मार्ग पर चलें जिससे हम अपने महान उद्देश्य "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को साकार कर सकें। □



आधुनिक नारी, वैदिक नारियों के पथ पर चलें

—श्री लक्ष्मीनारायण शास्त्री, साहित्यरत्न, आर्यसमाज लोकहवा गोण्डा

प्राचीन काल की ओर जब मैं अपनी दृष्टि डालता हूँ वैदिक नारियों की ओर, तो मेरा मस्तक स्वतः उन नारियों के चरणों में झुक जाता है। उन स्वर्णिम दिनों में नारियाँ जब अग्नि की प्रदक्षिणा करती हुई अपने आर्य पति का वरण करती थीं और उस समय पूज्य आचार्य, माता-पिता तथा अन्य गणमान्य आर्य जनों के समक्ष प्रतिज्ञा करती थीं कि अपने पति के अतिरिक्त अन्य पुरुष को पिता तथा भाई समझूँगी मैं यावत जीवन-पर्यन्त अग्नि तथा प्रभु को साक्षी देकर प्रतिज्ञा करती हूँ कि इन्हें कभी भी नहीं छोड़ूँगी, मुझ पर चाहे जितने संकट के बादल आते रहेंगे। मैं दुख में भी अपने दिन को अपने पति के संग में अपनी मृदुल मुस्कान एवं मृदुलवाणी से सुखद दिनों में परिणत करने का सदैव प्रयत्न करूँगी।

मैं नारी का स्थान नर की अपेक्षा सर्वोत्तम मानता हूँ। नारी तू सचमुच पीयूषमयी है। तेरा सौन्दर्य को प्रभु ने अपनी नैसर्गिक तूलिका से तेरे अन्दर भर दिया है। जब तू अपनी मृदुल-मुस्कान गुलाब की भाँति अपने पति के मानस में बिखेर देती है तो सचमुच पति का मानस आनन्द से भर जाता है। वैदिक नारियों ने जहाँ अपने पति के मानस में आनन्द का स्रोत्र प्रवाहित करती रहीं, वहीं यदि दूसरे पुरुष ने उसके सतीत्व को लूटने का प्रयत्न किया, वहीं वह सीता, सावित्री, द्रोपदी, दुर्गा, पद्मनी तथा किरन बनकर उनको अपने सतीत्व तथा पौरुष से उन्हें यमपुर भेजवा दिया। आज हमारा इतिहास इनकी वीर गाथाओं से भरा हुआ है। आज भले ही हमें अंग्रेज इतिहासकार जंगली, असभ्य कहलें किन्तु उस समय जब उनका कोई अस्तित्व नहीं था, उस समय हमारे यज्ञ की सुगन्ध विश्व में पवन के संग में बिखर रही थी। लोपामुद्रा, सावित्री, शकुन्तला आदि नारियाँ ऋषि की पावन कुटियों में बैठ कर वेद, वेदांग का अध्ययन करती थीं। शंकराचार्य को शास्त्रार्थ में हराने वाली मन्डन मिश्र की स्त्री भारती ही थी। उपनिषद काल पर जब मैं चिन्तन करता हूँ तब मैं भाव-विभोर हो जाता हूँ। महर्षि याज्ञवल्क्य जब वानप्रस्थ से सन्यासाश्रम में अपनी दोनों पत्नियों से कहा कि तुम दोनों मेरे पास जो धन है उसे बाँट लो और मैं अब तुम लोगों को छोड़कर सन्यास की दीक्षा लेना चाहता हूँ। उस समय उनकी पत्नी मैत्रेयी ने कहा कि स्वामी क्या इस धन से मुझे शान्ति मिल जायेगी क्या ये अगणितधन मेरी मृत्यु के बाद मेरे साथ जायेंगे। यदि जायेंगे तो स्वामिन इन्हें छोड़ कर तुम क्यों जा रहे हो। महर्षि ने कहा कि हे मैत्रेयी यह सब यहीं रह जायेंगे, तेरे कर्म के संस्कार ही तेरे साथ जायेंगे। हे मैत्रेयी तू विदुषी है अतः मोक्ष पद हेतु मेरे साथ चल। और सब शान्ति प्राप्ति हेतु जंगल की राह ली। जब आर्य सीता पर कामासक्त रावण ने अपनी दूषित दृष्टि डालकर हरण कर लिया, और एकान्त में सीता के समक्ष अपनी दूषित मनोवृत्ति प्रकट की- उस समय सीता ने जो सिंह गर्जना की है वह

बाल्मीकि के शब्दों में ओ आधुनिक तितली बन कर फुदकने वाली नारी सुनु, ऋषि आर्य सीता से कहलाते हैं कि ओ पापी, अधम, परनारियों का हरण करने वाला राक्षस रावण सुन मैंने अग्निदेव के समक्ष अपने पति राम तथा आचार्य तथा माता-पिता के सन्मुख प्रतिज्ञा की है कि मैं राम के अतिरिक्त अन्य पर पुरुष पर कभी भी काम की भावना नहीं करूँगी। हे रावण तूने न जाने पराये कितनी स्त्रियों का अपहरण कर अपनी कामपिपासा बुझाता रहा है अब तू मेरी सतीत्व की अग्नि में कुछ दिनों में जल जायेगा। अब तेरी मृत्यु मेरे आर्य वीर नरपुंगव राम पति तथा देवर आर्य लक्ष्मण द्वारा शीघ्र ही हो जायेगी। अब इस भूमण्डल पर तुझे कोई भी बचा नहीं सकता है। पुनः सीता ने कहा कि मैं तेरी बहिन सूपर्णखा की भाँति पराये पुरुष का वरण नहीं करती हूँ। मेरे आधार मेरे आर्य राम तथा प्रभु हैं जो मेरे दुख को दूर करने को सदैव मेरे सामने चल चित्र की भाँति आते रहते हैं। यदि कामी राक्षस मेरे अंग स्पर्श करने की चेष्टा की तो तू उसी समय मेरे सतीत्व की अग्नि में जल जायेगा। पद्मनी ने अपनी सौन्दर्य को अग्निदेव को समर्पित कर दिया।

महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर रोहतक की हीरक जयन्ती महोत्सव

आपको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि आपका अपना यह प्रिय संस्थान उत्तरोत्तर उन्नति करता हुआ अपनी स्थापना के 75वें वर्ष में पहुँच गया है। अतएव इस उपलक्ष्य में हर्षोल्लास के साथ फाल्गुन कृष्णा द्वादशी से अमावस्या पर्यन्त सं० 2046 शिवरात्रि के अवसर पर 22, 23, 24 एवं 25 फरवरी 1990 ई० में संस्था के हीरक जयन्ती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

इस शुभ अवसर पर आर्यजगत के अनेक धुरन्धर विद्वान्, तपःपूत वीतराग साधु-सन्यासी, प्रान्तीय तथा केन्द्र सरकार के प्रमुख राजनैतिक नेता तथा उच्चकोटि के आर्य भजनोपदेशक पधार रहे हैं। अतः आप सपरिवार भारी संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठायें।

सभी दानी सज्जनों से नम्र-निवेदन है कि इस आदर्श गुरुकुल की उन्नति एवं सुसंचालन के लिए मुक्तहस्त से दान देकर कृतार्थ करें।

प्रो शेरसिंह कुलपति	स्वामी ओमानन्द सरस्वती आचार्य
वैद्य बलवन्तसिंह प्रधान	वेदव्रत शास्त्री मन्त्री

स्वास्थ्य-सुधा

रोग-समस्या-समाधान

•गुरुकुलानन्द सरस्वती

रोगी अपना विवरण और दो डाक लिफाफे निम्न पते पर भेजें:-

- डॉ० स्वामी गुरुकुलानन्द • फलाहारी
आर्यसमाज-पिथौरागढ़ (उ०प्र०)

समस्या- "मेरी आयु 30 वर्ष है। मेरे एक बच्ची भी है। मेरे मुँह व हाथों पर काफी बाल हैं, जो देखने में अच्छे नहीं लगते।"
- बिजनौर की एक बहन।

समाधान- हारमोनल इम्बैलेन्स-सयन्द असन्तुलन- के कारण महिला-अंगर में अनावश्यक बाल (हिरस्युटिज्म) की समस्या पैदा होती है। बेसन-मैदा-शहद-नींबूरस चारों समान मात्रा में लेवें। कुछ पानी मिला कर लेप बनाकर स्थानीय त्वचा पर 15 मिनट तक मलने के बाद पानी से धोना चाहिये। ऐसा 90 दिन तक करें। अंग्रेजी मेडिकल स्टोर से प्रेडनीसोन की गोलियाँ ले लेवें। एक गोली दिन में तीन बार फिर एक गोली केवल एक बार बीस दिन तक खाने से अनावश्यक बालों का आना समाप्त हो जायेगा। भोजन के साथ सलाद-फल का प्रयोग आवश्यक है।

उपदेशकों प्रचारकों का साक्षात्कार

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत वैतनिक आधार पर कार्य करने के इच्छुक सभी प्रार्थियों का साक्षात्कार दिनांक 17-12-1989 रविवार को मध्यान्ह 11 बजे आर्यसमाज मोदी ब्रजघाट, गढ़मुक्तेश्वर पुनः जनपद गाजियाबाद में होगा। मूल प्रमाणपत्रों सहित यथासमय यथास्थान पधारें। इस निमित्त कोई मार्ग व्यय नहीं दिया जायगा।

-हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता उपदेश विभाग
आर्य प्रतिनिधि सभा,
उत्तर प्रदेश।

भूल सुधार

आर्यमित्र के अंक 48वें में सभा के उपदेश विभाग के प्रोग्राम में अक्टूबर छप गया है वास्तव में यह प्रोग्राम मास दिसम्बर 89 के हैं कृपया उपदेशक प्रचारक नोट करने की कृपा करें।

पृष्ठ ५ का शेष....

समय में अनेक ब्राह्मण-ग्रन्थ तो लुप्त हो चुके हैं। इस प्रकार के अनुपलब्ध ब्राह्मण-ग्रन्थों के नाम आदि का उल्लेख अन्य ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। डॉ0- बटकृष्ण घोष ने अपने ग्रन्थ" कलेक्शन ऑफ फ्रेगमेण्टस् ऑफ लौस्ट ब्राह्मन्स" §कलकत्ता 1935§ में अप्राप्य ब्राह्मणों से सम्बन्धित प्राप्त उद्धरणों के आधार पर निम्नलिखित 16 अप्राप्य ब्राह्मणग्रन्थों के नाम दिये है:-

§1§शाट्यायन§2§भाल्लवि§3§जैमिनीय §अथवा तवलकार§ §4§आहरक §5§कंकति §6§कालबवि §7§चरक §8§छागलेय §9§जाबालि §10§मैत्रायनि §11§माषशरावि §12§मैत्रायणीय §13§रौरुकि §14§शैलालि §15§श्वेताश्वतर §16§हारिद्रविक।

इन 16 ब्राह्मणग्रन्थों के अतिरिक्त आठ अन्य अप्राप्य ब्राह्मण ग्रन्थों के नाम श्री पं० भगवद्दत्त जी ने स्वरचित "वैदिक वाङ्मय का इतिहास" द्वितीय भाग में दिये हैं। इनके नाम निम्नलिखितहैं:- §1§ काठक §2§ खाण्डिकेय §3§औखेय §4§गालव§5§तुम्बरु §6§आरुणेय §7§सौलभ तथा §8§ पराशर।

उपलब्ध ऋग्वेदीय ब्राह्मण ग्रन्थ-

§1§ ऐतरेय ब्राह्मण §2§शांखायन §कौषीतकि-ब्राह्मण§।

ऋग्वेद से सम्बन्धित ब्राह्मण ग्रन्थों में सर्वाधिक प्रसिद्ध ब्राह्मण यही हैं। इनमें "एतरेय ब्राह्मण"के रचयिता ऋषिमहिदास ऐतरेय हैं। इस ब्राह्मण ग्रन्थ में चालीस 40 अध्याय हैं जो पाँच-पाँच अध्यायों की आठ पंचिकाओं में विभक्त हैं। इसमें ऋग्वेद सम्बन्धी यज्ञों में "होता" नामक ऋत्विक के विशिष्ट कार्यों का विशेष विवरण प्रस्तुत किया गया है। प्रमुख रूप से इसमें सोमयाग का वर्णन है। सोमयाग से सम्बन्धित अग्निष्टोम,द्वादशाह तथा अग्निहोत्र आदि का वर्णन है। तदन्तर राज्याभिषेक का तथा कुलपुरोहित से सम्बन्धित अधिकारों का वर्णन है। अन्तिम दश अध्यायों में उपाख्यानों आदि का वर्णन है। 31वें अध्याय से लेकर तैंतीसवें अध्याय तक प्रसिद्ध शुन:शेप का आख्यान है जिसकी ख्याति"चरैवेति चरैवेति" गाथाओं के कारण अधिक है।

शांखायन अथवा कौषीतकि ब्राह्मण ऋग्वेद का दूसरा ब्राह्मण है। यह ब्राह्मण 30 तीस अध्यायों में विभक्त है। विषय की दृष्टि से यह ऐतरेय ब्राह्मण का ही अनुगामी है। प्रस्तुत ब्राह्मण ऐतरेय, ब्राह्मण के प्रथम पाँच अध्यायों का परिवर्धित रूप है। इसमें अग्न्याधान,अग्निहोत्र, दर्शपौर्णमास तथा चातुर्मास्य इष्टियों का वर्णन है। इसका भी प्रमुख विषय सोमयाग ही है।

हा ! सुधीन्द्रनाथ शास्त्री दिवंगत:

विश्ववेद परिषद् लखनऊ के मन्त्री, वेदज्योति के सम्पादक 73 वर्षीय आचार्य-प्रवर प्रसिद्ध वक्ता श्री सुधीन्द्रनाथ-शास्त्री, एम0ए0, सिद्धान्तशिरोमणि का दिनांक- 23-11-89 को हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

आचार्य जी आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान ओजस्वी वक्ता एवं सर्वात्मना समर्पित ऋषिभक्त थे। उनके निधन से आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति हुई है। वे आर्यसमाज गणेशगंज के आजीवन कर्मठ सभासद रहे और आर्यसमाज तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के उन्नयन में सदा लगे रहे। सभाप्रधान श्री- पं0 इन्द्रराज जी तथा मन्त्री श्री मनमोहन- तिवारी ने उनके निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए प्रभु से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की है। उनके निधन पर आर्यसमाज गणेशगंज, विकास नगर, श्रृंगारनगर, आदर्शनगर, चौक तथा प्रदेश की कई समाजों से शोक प्रस्ताव आये हैं।

— सभा मंत्री

वैदिक ज्ञान मेला सम्पन्न

उन्नाव। महिला आर्यसमाज उन्नाव के तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी कार्तिक पूर्णिमा के पर्व पर दिनांक- 13 से 16 नवम्बर 1989 तक वैदिक ज्ञान मेला आर्यसमाज मन्दिर के प्रांगण में विविध सम्मेलनों के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पदाधिकारियों के निर्वाचन में सम्मान्या कैलाश सूरी जी प्रधान, श्रीमती प्रवेश- तुली जी मंत्रिणी एवं श्रीमती विद्यावती- त्रिवेदी जी कोषाध्यक्षा सर्व सम्मति से निर्वाचित हुई।

शुभ-सूचना

"काश गाँधी जी ने कुरान पढ़ा होता तो हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई नहीं कहते।

इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुस्तक के लेखक पर केस चलाया जिसे माननीय- मजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदी जी ने खारिज कर दिया जो सज्जन यह पुस्तक मंगवाना चाहें वे 1/- रुपया प्रति मंगवा सकते हैं। वितरण करने वालों को 50/- रु0 में सौ प्रति भेजी जायेंगी।

पता- व्यवस्थापक वेद प्रचारकमण्डल 60/13 रामजस रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5

नवीन आर्यसमाज स्थापना

आज दिनांक-18·11·89 को उ0प्र0 सभा के निरीक्षक श्री वीरेन्द्रवीर" की अध्यक्षता एवं श्री राम स्वरूप स्नातक जी मंत्री आ0स0 बहेड़ी §बरेली§ के सतप्रयास से एक साधारण सभा का आयोजन करके आर्यसमाज मल्हपुर सवराहा का नया गठन किया गया, जिसमें निम्न पदाधिकारी मनोनीत किये गये।

प्रधान - श्री भोलानाथ आर्य
मन्त्री - श्री ओ म् प्रकाश आर्य
कोषा0 - श्री धर्मवीर आर्य

नाम परिवर्तन

श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम के अधिष्ठाता श्री महेन्द्र देव वानप्रस्थ हैं इन्होंने सन्यास लेकर अपना नाम स्वामी मुमेक्षानन्द रख लिया है कृपया पत्र व्यवहार स्वामी मुमेक्षानन्दसरस्वती के नाम से करने की कृपा करें।

मारीशस में अश्वमेध ब्रह्मपरायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य भवन में पूर्णाहुति: मारीशस के प्रधान मन्त्री मुख्य यजमान

मारीशस में अश्वमेध ब्रह्मपारायण यज्ञ का आयोजन पूरे देश में आयोजित किया गया था और आर्य प्रतिनिधि सभा के आर्य भवन में यज्ञ की पूर्णाहुति 28 अक्टूबर 1989 को हुई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा यजमान के रूप में मारीशस के प्रधानमन्त्री श्री- जगन्नाथ, शिक्षामन्त्री श्री परशुराम तथा गवर्नर जनरल श्री वीरासामी रिंगाडू अपनी धर्मपत्नी सहित उपस्थित हुए थे। पूर्णाहुति में लगभग 10 हजार व्यक्ति उपस्थित थे। आर्यसमाज के महोपदेशक श्री सुखदेव शास्त्री यज्ञ के ब्रह्मा थे। इस अवसर पर मारीशस में सनातन धर्म सभा के प्रधान श्री- रामावतार तथा रविवेद प्रचारिणी सभा के प्रधान भी उपस्थित थे।

यह कार्यक्रम पोप के मारीशस में पधारने और उनके प्रभाव को कम करने के लिए विशेष रूप से किया गया था जो बहुत सफल रहा। इस आयोजन से मारीशस में पोप का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। आर्यसभा मारीशस आगामी 23 दिसम्बर 89 को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस का आयोजन भी समारोह पूर्वक करने जा रही है। इस अवसर पर भारत के मारीशस स्थित राजदूत श्री कृष्ण कुमार जी राणा को सम्मानित किए जाने की योजना है।

- आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के निरीक्षक श्री आर्यमुनि वानप्रस्थ ने निम्न आर्यसमाजों का निरीक्षण किया। आर्यसमाज मड़ियाहूँ, मीरगंज, मछलीशहर, नगर- आर्यसमाज जौनपुर शाहगंज, रत्नासराय, जमालपुर नेवादिया, थाना गद्दी, जौनपुर भेदवरा में निरीक्षण किया तथा शराब के ठेके हटाओ, गोवध बन्द करो, अंग्रेजी हटाओ के लिए प्रेरणा की।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ
पंजीकरण सं. एल. डब्ल्यू / एन.पी. ४८
दूरभाष: २५२६६३
[illegible]
१० दिसम्बर [illegible]

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शतवर्षीय बृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अतः जिन समाजों, पाठशालाओं, इण्टर कालिजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री ।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए [illegible] 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रेस, लखनऊ से श्री [illegible] गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७)) पौष कृष्ण-५ रविवार - संवत २०४६ वि. दिनांक १७ दिसम्बर १९८९ (घोषणा पत्र सं. ७/२८-२-८५)



ज्ञान सूर्य की पहली किरण
प्रथम प्रभात उदयतव गगने
प्रथम साम रवतव तपोवने

हे मेरे देश भारत! सभ्यता-संस्कृति और ज्ञान का स्वर्णिम प्रभात इस विश्व में सबसे पहिले तुम्हारे ही क्षितिज पर उदित हुआ था। सामवेद का मधुर गान सबसे पहले तुम्हारे ही तपोवनों में गुंजित हुआ था।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम. ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम. ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य..रु. २५१/-
वार्षिक..........रु. ३०/-
एक प्रति..........१.०० रु. मात्र

प्रकाशन का ६२वाँ वर्ष
अंक - ५०

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्धशताब्दी को पूर्ण सहयोग दीजिए

आर्य जगत को यह जानकर महान प्रसन्नता होगी कि आर्यजगत की शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आगामी 29 से 31 दिसम्बर 1989 तक हैदराबाद के विवेकवर्धनी कालेज के प्रागंण में "हैदराबाद आर्य सत्याग्रह अर्द्धशताब्दी समारोह" बड़ी ही शालीनता और भव्यता से मनाया जा रहा है।

आर्यसमाज अपने स्थापनाकाल से ही आर्य (हिन्दू) जाति का रक्षक एवं समुद्धारक रहा है। आर्यजाति के गतगौरव को प्रतिष्ठापित करना ही उसका मुख्य उद्देश्य है और इस निमित्तविश्व में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार तथा "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को साकार बनाने में समर्पित है। विश्व के क्षितिज से आर्य (हिन्दू) जाति को समूल नष्ट करने के लिए कई शताब्दियों से विधर्मियों विदेशियों द्वारा अनेक प्रकार के षड्यन्त्र किए जा रहे हैं। जनबल धनबल आतंक और तलवार के बल पर इन विगत शताब्दियों में आर्य जनता को अपार हानि उठानी पड़ी है। उसके प्यारे आर्यावर्त्त राष्ट्र का ही केवल खण्डन नहीं हुआ अपितु हजारों लाखों की संख्या में हमारे आर्यवीर और वीरांगनाएं बलिदान की वेदी पर चढ़ा दी गईं।

सन् 1939 ई0 में आर्यसमाज को, हैदराबाद राज्य (जो अब कर्नाटक, आन्ध्र और महाराष्ट्र में विभाजित है) में वहाँ की निरंकुश निजामशाही सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह करना पड़ा था। हैदराबाद ब्रिटिश भारत की सबसे बड़ी मुस्लिम रियासत थी। वहाँ का मुगल शासक आसफ़जाह निज़ामुलमुल्क कहलाता था। वह नितान्त निरंकुश तथा आर्यजाति का विरोधी था। उसका हुक्म ही वहाँ का क़ानून था। वह हैदराबाद राज्य के हिन्दुओं को येनकेन प्रकारेण मुसलमान बना लेना चाहता था जिसके लिए उसने हिन्दूजनता पर अकथनीय अत्याचार किए। इन दिल दहलाने वाले अत्याचारों की एक लम्बी श्रृंखला है जिसे हम उक्त समारोह में सविस्तृत प्रस्तुत करेंगे। यह निश्चित है कि हिन्दू जाति का प्रहरी आर्यसमाज यदि उस समय इस निजामशाही के विरुद्ध सत्याग्रहरूपी रणसंग्राम में न कूदा होता तो यह जाति उस राज्य से निःशेष हो जाती। आर्यसमाज ने अपनी दूरदृष्टि से जाति के इस भयानक विनाश को देखकर ही अपने स्वनामधन्य नेता महात्मा नारायण स्वामी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय स्तर पर 1939 में सत्याग्रह की घोषणा कर दी। हजारों वीरों ने, जिनमें हिन्दू मुसल्मान सिख ईसाई सभी शामिल थे, हैदराबाद पहुँचकर सत्याग्रह किया, जेलों की सीखचों में अपने को बन्द कराया और सैकड़ों ने अपनी बलि दी। तभी तो सरदार पटेल ने कहा था- "यदि आर्यसमाज हैदराबाद स्टेट में न होता तो पुलिस ऐक्शन निजाम को झुका नहीं सकता था।"

ऐसे अमर सेनानियों की पुण्यस्मृति में आयोजित इस अर्द्धशताब्दी समारोह को सफल बनाना प्रत्येक भारतीय एवं आर्य (हिन्दू) का परम कर्तव्य है। समारोह को सफल बनाने के लिए बलिवेदी पर चढ़े हुए अमर सपूतों की पुण्यवेदी पुण्यस्थली (हैदराबाद) उक्त तिथियों में अधिक से अधिक संख्या में पहुँचिए और तन मन के सहयोग के साथ ही अधिक से अधिक धनराशि "सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दयानन्दभवन रामलीला मैदान, नईदिल्ली" अथवा अपनी इस "प्रदेशीय आर्यप्रतिनिधि सभा लखनऊ" के नाम तुरन्त भेजिए।

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी,
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- पौष कृष्ण- ५ संवत् २०४६ वि.
१७ दिसम्बर १९८९, दयानन्दाब्द-१६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

ओ३म् सम्पादकीय

नवस्फूर्ति का प्रेरक बृहदधिवेशन

कुछ विचारणीय प्रश्न

आगामी 24 तथा 25 दिसम्बर को हमारी प्रिय आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 का, लखनऊ में, बृहदधिवेशन होने जा रहा है। इस अवसर पर प्रदेश एवं देश के प्रख्यात बुद्धिजीवी नेताओं के अतिरिक्त प्रदेश के कोने-कोने से आर्यप्रतिनिधि भी उपस्थित होंगे। विचारों का आदान-प्रदान होगा और विश्व के गगनमण्डल पर घहराती हुई कालीघटाओं के बीच वेदज्ञानरूपी सूर्य के प्रकाश को कैसे अधिक से अधिक उज्वलरूप में प्रकाशित किया जाय-- इसकी भावी रूपरेखा भी निश्चित करेंगे। हम "सत्यमेव जयते" के आप्तवाक्य पर विश्वास करते हैं परन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि इसका अर्थ यह नहीं है कि सत्य की विजय अपने आप हो जाती है वरन् इसका सीधा सादा भाव यही है कि हमें सत्य की विजय सदा कराते रहना चाहिए। हमारे संस्थापक ने "सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहने का इसीलिए आह्वान भी दिया था।

सौभाग्य से आज हम स्वतन्त्र हैं। हमारा चिन्तन और वायुमण्डल दोनों स्वतन्त्र हैं। हमें निर्भीक होकर सत्य के लिए आवाज उठानी चाहिए। परन्तु हम देख रहे हैं कि राजनीतिक क्षितिज पर उभरे हुए हमारे आज के राष्ट्रनेता समस्याओं को सुलझाने में सत्य की अनदेखी कर रहे हैं। इसी का परिणाम है एक समस्या सुलझती नहीं है तो दूसरी खड़ी हो जाती है। वे यह तो स्वीकारते हैं कि भूल है कहीं अवश्य, लेकिन सत्य को जानकर या तो मुँह मोड़ लेते हैं अथवा सत्य की पहिचान ही नहीं कर पाते। इसलिए सत्य के लिए सदा समर्पित आर्यसमाज को ही आगे आना होगा। जिस आर्यसमाज को आज देश एवं विश्व के हर क्षेत्र का अग्रणी होना चाहिए था वह स्वयं आपसी विवादों में इतना घिर गया है कि सत्य के क्रियान्वयन के लिए समय ही नहीं निकाल पा रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेशीय आर्यसमाजों की मान्य प्रतिनिधि संस्था है। इसे महात्मा नारायण स्वामी, राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, पं0 गंगाप्रसाद-उपाध्याय, पं0 रासबिहारी तिवारी तथा पं0 प्रकाशवीर शास्त्री जैसे योग्य महात्मा, विद्वान् तथा दबंग नेताओं का आशीर्वाद प्राप्त है। इन तपस्वियों ने इसे भूमि की रज से उठाकर स्वर्णिम युग की ऊँची ऊँची अट्टालिकाओं तक पहुँचा दिया था। तभी तो आर्यसमाज की उन दिनों दिग्दिगन्त में दुन्दुभी बजने लगी थी। उस युग को हम भी ला सकते हैं आखिर हमारी रगों में भी इन्हीं सपूतों का खून है।

हमारे अधिकांश आर्य प्रतिनिधि प्रतिवर्ष यह समझकर आते और चले जाते हैं कि हमारा काम तो अधिकारियों और अन्तरंग सभासदों को चुन देनामात्र है, बाकी वे जानें और उनका काम। हमारी समझ से यह सबसे बड़ी भूल है। बिना समाजों के सहयोग के कोई अधिकारी कुछ नहीं कर सकता। योजनाओं के क्रियान्वयन का उत्तरदायित्व तो समाजों पर ही है। सभा का अधिकारी तो केवल मार्गदर्शन दे सकता है, यथासम्भव वांछित सहायता भी उपलब्ध करा सकता है।

आर्यसमाज के आगे इस समय सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि इस संगठन को आपसी खींचतान से दूर परमऐक्य के सूत्र में कैसे बान्धा जाय। अनुशासन का तकाजा है कि सभी समाजें सभा के अनुशासन में सिपाही की भान्ति रहें। जो सिपाही या सैनिक अपने सेनापति की ठीक-ठीक आज्ञा नहीं मानते और मर्यादा का आदर भी नहीं करते वह सेना न तो कभी विजय श्री प्राप्त कर सकता है और न वह संस्था।

आज सभा के सन्मुख कतिपय मुख्य विचारणीय बिन्दु निम्न हैं-

(1) वेद प्रचार को प्रगति देने के लिए किस प्रकार गुणात्मक सुधार लाया जाय।

(2) सभा का उपदेश विभाग किस प्रकार सक्रिय, सुदृढ़ एवं सुसंगठित किया जाय जिससे कि योग्य उपदेशक/प्रचारक आकर्षित हों और समर्पित होकर प्रचारकार्य में जुट जायें।

(3) सेवानिवृत्त बौद्धिकवर्ग/सरकारी कर्मचारी/अधिकारी/शिक्षक/वकील अथवा सम्पन्न घरानों के वे लोग जो घर गृहस्थी के कार्यों से एक प्रकार से अवकाश ग्रहण कर चुके हैं- उनकी सेवाएं किस प्रकार आर्यसमाज के कार्मों में ली जायें।

(4) समाज के साधारण वर्ग, ग्रामों में फैले हुए कृषक एवं श्रमिकवर्ग को किस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश अथवा छोटे-छोटे ट्रैक्टों की सहायता से गांवों की जनता में प्रचारार्थ जुटाया जाय।

(5) प्रदेश के शिक्षा केन्द्रों में जहाँ सहस्रों छात्र छात्राएं शिक्षा ग्रहण करती हैं वहाँ विदुषी आर्य प्रचारिकाओं एवं प्रचारकों को भेजकर किस प्रकार उन छात्रों को वैदिकधर्म के प्रति उन्मुख किया जाय।

(6) आर्यजाति में क्षत्रिय शक्ति जागृत करने के लिए किस प्रकार के कार्यक्रम तैयार किए जायें जिससे युवावर्ग आ0स0 के कार्यों में भाग लेकर वैदिक धर्म का अजेय रक्षक बन सके।

(7) शुद्धि अभियान को जाति के जीवन मरण का प्रश्न समझकर सम्पूर्ण हिन्दूसमाज की क्रियात्मक सहानुभूति एवं तनमन धन का सहयोग किस प्रकार लिया जाय।

(8) कुछ सामाजिक कार्य ऐसे हैं जिनमें सुधार कानून के सहारे हो ही नहीं सकते- जैसे दहेजप्रथा, नशाखोरी आदि। इनकी बुराइयों के प्रचार को अभियान के रूप इस प्रकार कैसे चलाया जाय ताकि समाज स्वयं इन बुराइयों से घृणा करने लगे।

इन सब योजनाओं को क्रियान्वित करने के लिए त्रिवर्षीय अथवा पंचवर्षीय योजना और उनका प्रारूप बनाना होगा, और उनके क्रियान्वयन का उत्तरदायित्व समूहों अथवा समितियों पर सुनिश्चित करना होगा। साधन सभा और समाजें मिलकर उपलब्ध कराएं। इस प्रकार हम देखेंगे कि हमारा स्वर्णयुग फिर इस धरती पर वापस लौट रहा है।

हमारी कामना है बृहदधिवेशन में पधारे हुए हमारे मनीषी नेता, विद्वन्मण्डली एवं आर्यसमाज के दीवाने इन सुझावों पर गम्भीरता से विचार करें और हमारा यह सम्मिलन आर्यजनता में नवस्फूर्ति का संचरण करने वाला सिद्ध हो। ▣

धन्य-धन्य तू! हे सन्यासी!!

— राधेश्याम 'आर्य'
सुल्तानपुर

धर्म-सत्य के अहे! प्रणेता।
लोभ-मोह-मद-मत्सर जेता।
मानवता के थे उद्धारक -
कालजयी थे, विश्व-विजेता!
ऋणी तुम्हारा सदा रहेगा-
भारत क्या सब भूमि निवासी।
धन्य-धन्य तू! हे सन्यासी!!
तुम सच्चे थे, ऋषि अनुयायी,
जग में वैदिक धार बहायी,
वेदों के पावन पथ चल कर-
तुमने जाग्रत ज्योति जगाई,
जामा-मस्जिद के मिम्बर से-
सौम्य मिलाया काबा-काशी।
धन्य-धन्य तू! हे सन्यासी!!
गुरुकुल का खोला विद्यालय,
धन्य हुआ था महा हिमालय,
तेरी ललकारों को सुनकर-
जाग उठे गिरि-भूमि-शिवालय,
"श्रद्धानन्द" तुम्हीं ने फूंका-
मंत्र, जगे जिससे जग-वासी!
धन्य-धन्य तू! हे सन्यासी!!

तथ्यान्वेषण की आवश्यकता

स्वामी श्रद्धानन्द महाराज के बलिदान का कारण

— आचार्य धर्मविज्ञानमुनि जी
आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार)

आर्यसमाज के इतिहास में 23,दिसम्बर 1926 ई0 का दिन अत्यन्त अशुभ सिद्ध हुआ है। इस दिन एक धर्मान्ध मुसलमान अब्दुल रशीद ने स्वामी श्रद्धानन्द-महाराज को तीन गोलियाँ मार उनके प्राण हर लिए। वे उस समय रोगग्रस्त अवस्था में शय्या पर लेटे थे।

सुना जाता है कि असगरी वेगम नाम मुस्लिम महिला का धर्मपरिवर्तन कर, उसका नाम शान्ति देवी रखा था। उसे पूर्ण संरक्षण भी दिया था। एक हिन्दू युवक से उसकी शादी करवा दी थी। मुसलमान बहुत उत्तेजित हो गए थे। इस कारण अब्दुल रशीद, जो कि एक धर्मान्ध मुसलमान था, ने अन्धी भावुकता में, स्वामी जी महाराज की हत्या कर दी थी। स्वामी जी महाराज उन दिनों मुसलमान बने हिन्दुओं को पुनः हिन्दूधर्म में वापिस लाने वाले "शुद्धि आन्दोलन" का कार्य अत्यन्त उत्साह और तत्परता से कर रहे थे। इससे मुसलमान उद्विग्न एवं उद्वेलित हो गए। परिणामस्वरूप स्वामीजीमहाराज की हत्या कर दी गई।

यह तथ्य और तर्क हम आर्य वर्षों से सुनते आ रहे हैं, और हम इस पर विश्वास करते आ रहे हैं। जरा गहराई से विचार करें, तो यह विश्वास का आधार प्रतीत नहीं होता। इसमें निम्न तथ्य विचारणीय हैः-

(1) स्वामी जी अमृतसर में होने वाले कांग्रेस के महाधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बने। उस समय जलियाँवाला काण्ड में नृशंस नर-संहार हो चुका था। कांग्रेस के बड़े-बड़े नेताओं का मनोबल गिर चुका था। कोई भी अधिवेशन का उत्तरदायित्व लेना नहीं चाहता था। हिम्मत ही नहीं थी। इस दयनीय दशा को देखकर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुदायित्व स्वयम् स्वीकार किया। उन्होंने मात्र अधिवेशन की व्यवस्था ही नहीं की,अपितु घर-घर इसका प्रचार किया। अधिवेशन की व्यवस्था तो प्रशंसनीय थी ही, उपस्थिति भी सामान्य से अधिक थी। प्रत्येक वक्ता- नेता के आवास की व्यवस्था गृहस्थों के घरो में थी। इस असाधारण साहस और अपूर्व सफलता से कांग्रेस के पदाधिकारी प्रसन्न हुए, वहां जनता का मनोबल भी बढ़ा।

इसके साथ ही इतने साहस को धारण करने वाला व्यक्ति दमनकारी शासकों-अंग्रेजों- की दृष्टि में अवान्छित व्यक्ति बन गया।

(2) एक दिन ऐसा भी आया कि स्वामीजी ने कांग्रेस छोड दी। मुहम्मद अली और शौकत अली मुस्लिम नेता कांग्रेस में प्रतिष्ठा प्राप्त किए हुए थे। उन्होंने कुछ हिन्दुओं को मुसलमान बनाया।

स्वामी श्रद्धानन्द जो मुसलमान बने हिन्दुओं को पुनः हिन्दुधर्म में दीक्षा दे दी। अली- बन्धुओं ने म0 गाँधी से स्वामी जी की शिकायत की। स्वामी जी से बात करके महात्मागाँधी ने स्वामी जी के विरुद्ध अपनी सम्मति दी। स्वामी जी को बहुत कष्ट हुआ और यह मत पक्षपातपूर्ण, न्यायविरुद्ध एवं हिन्दू जाति के लिए घातक प्रतीत हुआ। स्वामी जी ने कांग्रेस छोड दी।

शासक अंग्रेज हिन्दू और मुसलमानों में फूट डालकर शासन कर रहे थे। चोर से कहते कि चोरी कर और साहू को सावधान करते थे। मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध उभारने और हिन्दुओं को मुसलमानों से सावधान करने। दोनों को लड़ाते और स्वयं धर्मनिरपेक्ष, न्यायीबन फैसला करते। कभी मुसलमानों का पक्ष लेने तो कभी हिन्दुओं का। इससे दोनों समझते कि अंग्रेज शासक न्यायकारी हैं।

कांग्रेस का हिन्दुवर्ग, मुसलमानों को सन्तुष्ट रखना चाहता था। अतः उनके अन्यायपूर्ण रवैये का विरोध न कर चुप रह जाता। यह तुष्टिकरण की नीति स्वामी जी की रुचि के अनुकूल नहीं थी। शासक अंग्रेज, हिन्दु-मुसलमानों में गहरी फूट डालकर शासन करना चाहता है। कांग्रेस ने इसका उपाय सोचा कि मुसलमानों को उनकी अन्यायपूर्ण बात मान कर भी, उन्हें सन्तुष्ट रखकर देश की एकता स्थापित कर अंग्रेजी शासन को समाप्त किया जाए। परन्तु इससे लाडले बेटा की इच्छाएं समाप्त न होकर बढ़ती हैं, यह स्वामी श्रद्धानन्द जानते थे। इसलिए उन्होंने कांग्रेस को त्यागा और [illegible] सिद्धान्तों के आधार पर मुसलमानों और हिन्दुओं में एकता स्थापित करने का अभियान छेड़ा। उन्होंने घोषणा कि

मुसलमानइस देश के नागरिक हैं और हमारे भाई हैं।

सन् 1919 के आरम्भ में- मार्चमास से पूर्व एवं कांग्रेस में आए और तीन वर्ष बाद 1922 में कांग्रेस छोड़ अलग हो गए इससे 22 वर्ष पूर्व सन् 1897 में पं0 लेखराम जीकी शहादत के बाद, पं0 लेखराम जी द्वारा संग्रहीत पं0 दयानन्द के जीवन सम्बन्धी तथ्यों को पुस्तकरूप प्रदान करते हुए, उस पुस्तक की भूमिका में स्वामी जी में मुसलमान और इसाईयों का आख्यान निम्न शब्दों में किया हैः-

"हे मेरे बिछुड़े हुए मोहम्मदी और इसाई मित्रो! अविद्या की अन्धकारमयी रात्रि में, जब कि हाथ पसारा नहीं सूझता था, उस समय तुमने अपने भाईयों का हाथ छोड़ कर, अन्यों के हाथ में अपना हाथ दे दिया। जब क्रियात्मकरूप में तुम्हें विदित हो गया कि तुमने मूर्खता की है, और तुम्हारी आत्माओं ने साक्षी दी कि तुम निज गृह से दूर जा रहे हो, तो तुमने व्याकुल होकर, आतुरवचनों से अपने भाइयों की ओर देखा। तुम्हारे भाई उस समय स्वयं देखने योग्य न थे। फिर तुम्हारा हाथ क्यों कर पकड़ते अब अन्धकार दूर हो गया है। वेद-रूपी सूर्य का प्रकाश हो गया है। जीवन के उद्देश्य को समझो और अपने उस भाई के जीवनवृत्तान्त को पढ़ो (स्वामी-दयानन्द के) जिसने कि तुम्हारे लिए-नहीं, नहीं केवल तुम्हारे लिए नहीं, प्रत्युत सत्य की खोज करने वाले के लिये-

अपनी जान को हेय समझा,
सांसारिक सुख तथा आनन्द (मोक्षके)
को हेय समझा,
और परमेश्वर के अटल नियम
के आगे सिर झुकाए हुए
अपने मिशन को पूरा किया।"

इस लेख का लिखने वाला निरन्तर 22 वर्षों तक अपने बिछुड़े भाइयों में आत्मीयता उत्पन्न करने की तीव्र आतुरता के लिए कितना प्रयत्न शील रहा होगा और बिछुड़े मित्र एवं भाई उसके हृदय की वेदना और सांसारिक कठोर सत्यों को समझ कर आपस में मिलने को आतुर हुए होंगे। यह मात्र कल्पना कर कितनी विचित्र प्रसन्नता होती है।

हिन्दू-मुसलमान-इसाईयों को आपस में मिला एकता स्थापित करने की टीस कितनी गहरी बैठ चुकी थी, स्वामी जी के जीवन के आचरण में। यही टीस थी, जिसे मुसलमानों ने अपने हृदय में गहराई और सच्चाई से अनुभव किया और 4-अप्रैल 1919 के शुभदिन स्वामी जी को मुसलमानों की जगतप्रसिद्ध जामा मस्जिद दिल्ली में बुला ले गए। राह में गुजरते हुए स्वामी जी अचानक दिख गए, तो बुला लिया, ऐसा नहीं था। मुसलमान अपनी समस्याओं से, शासकवर्ग से परेशान, चिन्तित और उद्विग्न थे। उन्हें सहारे की, मार्गदर्शन की आवश्यकता थी। डा0 अंसारी और हकीम अफजलखां उन दिनों मुसलमानों के मशहूर नेता थे। बड़े मौलवी और दूसरे लोग थे। पर मुसलमान उन्हें छोड़ स्वामीजी के पास, उनके निवास स्थान नयाबाजार पहुँचे। बड़े आदर और सम्मान से बुला ले गए। जामा मस्जिद की वेदीपर मुसलमानों को पथ प्रदर्शन कराने वाला गैर-मुसलमान स्वामी श्रद्धानन्द पहला और अन्तिम व्यक्ति है। इतिहास की यह अर्थभूत और भविष्यशून्य है एक मात्र अनुपमेय घटना है। स्वामी जी ने वेदी पर से अपना व्याख्यान ऋग्वेद के (8-97-11) निम्न मंत्र से आरम्भ किया।

"त्वं हि नह पिता वसो, त्वं माता
शतक्रतो बभूविथ।
अथा ते सुम्नमीम हे।।"

" हम सब एक ही पिता, उस परमात्मा की सन्तान हैं। हजारों प्रकार से पालन करने वाली हमारी प्यारी माँ भी वही है। आओ। हम उसकी गोद में, आपस में मिलकर, भरपूर सुखों को पावें"

सारे व्याख्यान में क्या कहा होगा, इस मंत्र के भावार्थ से अनुमान लगाया जा सकता है। इस घटना के तीसरे दिन स्वामी जी को सुनने के लिए

6-4-1919 को मुसलमानों ने उन्हें फतह-पुरी मस्जिद, दिल्ली में भी बड़े आग्रह से आमंत्रित किया।

इसी प्रसंग में, उनके सुपुत्र श्री-

— शेष पृष्ठ १० पर

अमर शहीद की अन्तिम अभिलाषा और हमारा कर्तव्य

लेखक - यशपाल आर्य बन्धु, आर्य निवास, चन्द्र नगर मुरादाबाद

वे लोग जो अपने जीवन में किसी महान् कार्य को करने की ठान लेते हैं, संसार से विदा होते समय, यदि वह कार्य अधूरा रह जाता है तो उनकी प्रायः यही अन्तिम अभिलाषा होती है कि वह कार्य अवश्य पूरा हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती की यह अभिलाषा थी कि चारों वेदों का भाष्य पूरा करूं और संसार में वेदों का प्रचार करूं और यदि इसके लिए दूसरा जन्म भी लेना पडे तो भी यह कार्य अवश्य पूरा करूँगा। किन्तु प्राणघातक विषों के प्रभाव से उन्हें अपना शरीर बिना यह कार्य पूरा किये ही त्याग देना पड़ा। और अन्तिम समय में अपनी इच्छा से भी अधिक ईश्वर की इच्छा को मानते हुए, उसके आगे आत्मसमर्पण उन्होंने कर दिया। पण्डित लेखराम आर्यमुसाफिर लेखन कार्य पर अधिक जोर दिया करते थे और उसे प्रचार का ठोस और स्थायी साधन मानते थे और स्वयं भी बहुत कुछ लिखना चाहते थे। इसी लिए उनकी यही अन्तिम इच्छा थी कि "आर्यसमाज में तहरीर (लेखन) का काम नहीं रुकना चाहिए।"

स्वनामधन्य स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने जीवन में कई एक महत्वपूर्ण महान कार्यों को एक साथ छेड़ दिया था। गुरुकुल शिक्षा- पद्धति, दलितोद्धार एवं शुद्धि- ये तीन कार्य राष्ट्रीय दृष्टि से वे अत्यन्त महत्वपूर्ण समझते थे। उन्होंने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में दलितोद्धार और शुद्धि पर सर्वाधिक बल दिया था। रायसाहब रामविलास शारदा से अपनी अन्तिम भेंट में श्रीस्वामी- जी ने इस बात को स्वयं स्वीकारा है। उन्होंने रायसाहब रामविलास शारदा से कहा था कि- "रामविलास! लोग और तुम भी बार-बार मुझको अपना कार्यक्रम शीघ्र-शीघ्र बदलने का उलाहना देते हो, परन्तु क्या करूं, आर्य जाति की किसी भी नई क्षति को मैं जब देखता हूँ, चिन्त काल में नहीं रहना और उसको ठीक करने के लिये मुझे उद्यत होना पड़ता है। मैंने शेष जीवन के लिये अपना अन्तिम प्रोग्राम अछूतोद्धार, शुद्धि, संगठन ही निश्चय किया है। इसके बिना आर्य जाति जीवित नहीं रह सकती।" (द्रष्टव्य- स्वामी श्रद्धानन्द एक विलक्षण व्यक्तित्व, पृष्ठ- 348)

आनरेबल सर राजा रामपाल सिंह जी को अपने एक पत्र में श्री स्वामीजी ने अपनी रुग्ण अवस्था में श्री स्वामी चिदानन्द जी से लिखवाया था कि "इस समय यद्यपि मैं कुछ स्वस्थ हूँ, किन्तु मेरा यह शरीर इस योग्य नहीं रहा कि जिससे कोई काम ले सकूं। इस लिए अब तो मेरी यह कामना है कि इस पुराने शरीर को छोडकर दूसरा शरीर धारण करूं और फिर भारत में आकर शुद्धि के द्वारा देश व जाति की सेवा करूं।" (द्रष्टव्य- वही पुस्तक पृष्ठ 363) उपरोक्त पत्र लिखवाने के पश्चात् श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज अपने सहयोगी स्वामी चिदानन्द जी से बोले कि- "स्वामी चिदानन्द जी, देखो मैं रहूँ या न रहूँ, किन्तु मेरे पश्चात शुद्धि का काम बन्द न होने पाये। शुद्धि आर्य हिन्दु जाति के लिए अमर बूटी है, इसे बराबर सींचते रहना। पता नहीं कल क्या हो, आप मेरी इस बात को खूब याद रखना कि हिन्दुओं का जोश पानी के बुलबुले जैसा है। मैंने अमृतसर सिक्ख आन्दोलन में जेल-यात्रा के पश्चात् 1923 ई0 में- जब कि आगरा के आस-पास मुस्लिम मुवल्लिगों ने मलकानों में बड़ा उधम मचा रखा था, शुद्धि के काम को बडे उत्साह के साथ आरम्भ किया था। उस समय आर्य हिन्दुओं को जोश शुद्धि के पक्ष में बेताह उबल पड़ा था और ऐसा प्रतीत होता था मानों हिन्दुओं से करोडों नोमुसिलम बने हुए भाइयों को कुछ दिनों में ही शुद्ध करके हिन्दु उन्हें अपने में एक रस मिला लेवेंगे। किन्तु वह जोश पानी के बुलबुले जैसा ही साबित हुआ। इस लिए मेरा कहना है कि आर्य हिन्दुओं में शुद्धि के लिए उस समय तक बराबर जोश भरते रहने की आवश्यकता है जब तक कि हिन्दुओं से बने करोडो नौ-मुस्लिम भाई पुनः अपनी पुरानी आर्य जाति में पूर्ण शामिल नहीं हो जाते।" (वही पुस्तक, 363-364) इस पर श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज लिखते हैं कि- "यह थी हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की अन्तिम कामना, जो आज भी उसी तरह कानों में गूंज रही है।" और फिर स्वामी चिदानन्द जी महाराज पूछते हैं कि-"पर प्रश्न होता है कि क्या हमने, हमारे सहयोगियों ने और सम्पूर्ण आर्य-जाति ने श्रद्धेय स्वामी जी की कामना को पूरा करने के निमित्त कोई कदम आगे बढ़ाया, क्या हमने उस अमर हुतात्मा के आदेश रूप शुद्धि को अपनी अन्तरात्मा की तुष्टि के लिए, आर्य जाति के संगठन एवं उसकी उन्नति के लिए भारत देश के हित के लिए और समस्त विश्व की सुख-शान्ति के लिए सच्चे हृदय से अपनाया और उसके प्रति अपने कर्तव्य का पालन किया है" (वही, पृष्ठ 364) हमें यह लिखने में कोई संकोच नहीं कि अपितु खेद तो है कि हम अपना कर्तव्य पालन करने में पिछड गये हैं। हमने शहीद की अन्तिम अभिलाषा के प्रति कोई ध्यान नहीं दिया। न हम में शुद्धि के प्रति वैसा जोश है और न ही हम आर्यों में शुद्धि के प्रति जोश को जगाने में ही प्रयत्नशील हैं।

एक अन्य प्रकार से भी हम शुद्धि के कार्य को हतोत्साहित कर रहे हैं। जन्मगत जातिभेद की भद्दी भावनायें हम छोड़ नहीं सके, इस लिए शुद्ध हुए व्यक्तियों को हम पूर्णरूपेण समाज में खपा नहीं पाये। उन्हें आत्मसात् नहीं कर पाये; यह शुद्धि आन्दोलन की सफलताओं पर पानी फेरने के सदृश्य है। आवश्यकता इस बात की है कि हम जन्मगत जाति भेद को जड़ से उखाड़ फेंके, तभी स्वामी श्रद्धानन्द की अन्तिम अभिलाषा पूर्ण हो सकती है। अन्यथा केवल नारेबाजी से कुछ होने का नहीं। हिन्दू जाति की दशा आज भी उस उलटी चूहे दानी की सी है जिसमें से एक बार कोई बाहर निकल जावे तो फिर उसमें प्रवेश पा ही नहीं सकता। कल्पना कीजिए वह जलाशय कितने दिन चलेगा जिसमें पानी की निकासी की तो व्यवस्था हो पर नवीन जल के प्रवेश के सभी द्वार बन्द हों।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने "कितने अवसर विसार दिये" नामक अपने एक लेख में सम्राट अकबर के हिन्दू बनने और बीरबल द्वारा गधे को घोड़ा बनाने के भौंडे उदाहरण द्वारा मना करने की घटना का वर्णन किया है। यह घटना लिखने के बाद श्री स्वामी जी लिखते हैं कि- "बीरबल का वह 350 वर्ष पुराना उत्तर अब तक आर्य जाति के संकुचित विचारों का उदाहरण है। यदि उस समय अकबर को आर्य जाति में मिला लिया जाता तो न औरंगजेबी जमाना आता और न भारत की वह दुर्दशा होती जो आचारहीन मुगल बादशाहों के नीचे रहने से हुई और न जाने उस वीरता का कदम उठाने पर आज संसार ने कैसा पलटा खाया होता। वह अकबर जिसने अपने सारे जीवन में पक्षपात मोहम्मदी मत से किनारा रखा, अपनी मृत्यु के सयम मुसलमान मुल्ला को बुला कर कलमा पढ़ता है, क्योंकि आर्य-जाति के संकुचित विचार रखने वालों ने उसे धर्म भाई मानकर अंगीकार न किया। जो बर्ताव आर्य सभ्यता की कुंजीबरदार (प्रहरी) आर्यजाति ने अकबर के साथ किया था, वही बर्ताव उसका अब तक विदेशी हितचिन्तकों के साथ जारी है। आर्य सभ्यता के पुराने आदर्श पर मोहित होकर कितने भद्र पुरुष बाहर से मातृभूमि के (भारत के) सेवक बनकर आये, परन्तु आर्य जाति ने उनको अपने से अलग ही रखा और अन्त को वे, प्रबल इच्छा रखते हुए भी, भारतमाता की वह सेवा न कर सके जो वे हम से मिलकर कर सकेन।" (देखें श्रद्धानन्द ग्रन्थ संग्रह, पृष्ठ 93)

पाठकवृन्द! कितनी मार्मिक पीड़ा है स्वामी जी के उपरोक्त शब्दों में, इस पर भी हम न चेतें तो दोष किस का है, आवश्यकता इस बात की है कि हम शुद्धि को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में सोचें और उसके महत्व को जानते हुए उसे और अधिक उत्साह के साथ अपनावें। साथ ही अपना हाजमा इतना तेज रखें कि शुद्ध हुए भाइयों को अपने में पचा सकें। यह सब तभी हो सकेगा जब हम जन्मगत जाति-पाँति को तिलांजलि दे डालेंगे। याद रहे, स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कहा था कि- "मुझे पता नहीं था कि आर्यसमाजी लोग जातपांत तोडने से इतना भयभीत हैं।- मुझे ऐसा पता होता तो मैं गुरुकुल न बना कर जातपांत तोड़क मण्डल

— शेष पृष्ठ १० पर

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

— पवन कुमार शास्त्री
एम.ए. बी.टी.
सिद्धान्तशास्त्री आर्य सिद्धान्तरत्न, लखनऊ

मानवों की जीवनी ही, यह
यह हमें बलता रही।
अनुकरण कर मार्ग उनका
उच्च बन सकते सभी।
काल रूपी रेत पर
चिन्ह जो तज जायेंगे।
आदर्श उनका मानकर
आगन्तुक ख्याति पायेंगे।

× × × × ×

जो जीवन भर संघर्षों से
खेला मृदु कुसकान लिये।
बाधाओं के वक्ष चीरता
बढ़ा वेद का ज्ञान लिए।
तोपों बन्दूकों के आगे हटा
रहा जो सीना तान ।
धन्य धन्य वह वीर तपस्वी
श्रद्धानन्द राष्ट्र अभियान।

महापुरूषों की जीवनियां वे प्रकाश स्तम्भ हैं जो अविधा, अंधकार और पतन के गहरे गड्ढे में पड़े हुए मनुष्यों को दिव्यप्रकाश प्रदान कर उन्हें आगे बढ़ने उमर उठने और उन्नीत करने का संदेश देती हैं। जब हम अमर सेनानी स्वामी-श्रद्धानन्द के जीवन का अवलोकन करते हैं तो हमारे जीवन में आशा का संचार होने लगता है। हमारी आंखों के सामने एक परदा सा उठता है और हम सोचते हैं कि जब एक अनीश्वर वादी, नास्तिक, शराबी, कबाबी, जुआ खेलने वाला, हुक्का पीने वाला व्यक्ति भी सारे दुगुणों और दुर्व्यसनों को छोडकर मुंशीराम जिज्ञासु, महात्मा मुंशीराम और अन्त में स्वामी श्रद्धानन्द बन सकता है तो हम उनके जैसा महान क्यों नहीं बन सकते

इस परिवर्तनशील संसार में मरने के लिए तो सभी जन्म ग्रहण करते हैं परन्तु जीवन उन्हीं का सार्थक है जिनके जन्म लेने से वंश की उन्नीत हो। स्वामी श्रद्धानन्द जी एक ही धर्मवीर थे और कर्मयोगियों में से एक थे, जिनका जीवन धर्म और राष्ट्र पर बलिदान हुआ। भारत देश उनका गौरव संस्मरण कर आज भी गौरव से अपना सिर उंचा कर सकता है।

सन् 1856 में जब भारत के प्रथम स्वंतन्त्रता संग्राम के लिए पूरी जोरदार तैयारी हो रही थी संम्बत 1913 विक्रमी मास फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी के दिन पंजाब राज्य जालंधर जि्ले के तलवन ग्राम में एक होनहार बालक का जन्म हुआ। इस शिशु का नाम मंशीराम रखा गया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के पिता लाला नानक चन्द जी पुलिस विभाग में नौकर थे। पिता के पुलिस विभाग में होने के कारण स्वामी मुंशीराम जी की शिक्षा का कम नियमित न हो सका। अतः बरेली, प्रयाग और वारणसी में अध्ययन करते हुए सन् 1877 में आपने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और अगले वर्ष 1878 में कालेज में प्रविष्ट हुए। उन्हीं दिनों श्री-नानकचन्द जी का बनारस से बरेली स्थानांतरण हो गया। पिता से दूर होते ही मुंशीराम जी को दुव्यसनों ने आ घेरा। जुआं, मदय, मांस सेवन नाच और दुर्जनों की संगति ने उनके जीवन को निरंकुश उच्छृंखल, अन्धकारमय और पतित बना दिया। बीमारी के कारण उन्हें पिता के पास बरेली अना पड़ा।

जिन दिनों मुंशीराम जी अन्धकार और निराशा पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे उन्हीं दिनों महर्षि स्वामी दयानन्द जी बरेली पधारे। स्वामी दयानन्द जी के व्याख्यान और व्यक्तित्व का उनके उमर व्यापक प्रभाव पड़ा। मुंशीराम जी के जीवन की काया पलट गयी। स्वामी-दयानन्द के सत्य निष्ठ यौगिक शक्ति, निर्भीकता, अखण्ड, ब्रह्मचर्य तथा प्रबल तार्किकता ने मुंशीराम के हृदय को आलोकित कर दिया। उत्तरकालीन जीवन में सत्यार्थप्रकाश के गहन स्वाध्याय से तथा सत्य को श्रद्धापूर्वक हृदय में धारण करने से मुंशीराम जी के जीवन में ईश्वर, विश्वास और आस्तिकता के प्रकाश का उदय हुआ जिसने उनके जीवन का मार्गदर्शन किया। मुंशीराम जी के व्यक्तित्व ने उनकी धर्मपत्नी शिवदेवी की विनम्रता और सेवाभावना का महत्वपूर्ण योगदान है।

मुंशीराम जी की नियुक्ति बरेली में नायब तहसीलदार के पद पर हुई। पर कुछ कारणों में स्वाभिमानी मुंशीराम ने त्याग पत्र दे दिया। और लाहौर में वकालत पढ़ने लगे। सन 1885 से 1902 तक उन्होंने विकालत की।

प्रथम आर्य कन्या शिक्षण संस्था की स्थापना

मुंशीराम जी ने कन्याओं की शिक्षा की व्यवस्था करने का निश्चय किया। उन्होंने लाला देवराज के सहयोग से जालन्धर में एक आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना की ।

प्रथम गुरुकुल शिक्षण संस्था के संस्थापकमहात्मा मुंशीराम जी का दृढ़ विश्वास था कि महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में ही भारत अपने विनष्टवैभवऔर गौरव को पुनः प्राप्त कर सकता है। अपने इस संकल्प को मूर्त रूप देने के लिए उन्होंने थोड़े ही दिनोंमें 30 हजार रूपया एकत्रित कर मुंशी अजान सिंह के सहयोग से गंगा के किनारे गुरु कुल की स्थापना कर दी। सन 1902 से 1917 तक आपने आचार्य के रूप में सेवा की।

मुंशीराम जी ने सन् 1917 में सन्यास ले लिया। सन् 1918 में प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हुआ। भारतीयों को स्वराज मिलने की आशा थी पर रौलट एक्ट मिला। जनता का हृदय क्षुब्ध हो गया। देश भर में विद्रोह की आग भड़क उठी।

मेरी छाती में संगीने भोंक दो

30 मार्च 1919 को देहली में निष्क्रिय प्रतिरोध सत्यागृह के रूप धर्मभारी हड़ताल हुई। जनता सेना के प्रदर्शन से क्षुब्ध थी। शान्ति का सारा उत्तरदायित्व श्रद्धानन्द जी ने अपने ऊपर लिया हुआ था। वे जनता के एक क्षेत्र चांदनी चौक घण्टा घर पर स्थिति बिगड़ने का समाचार मिलने पर स्वामी श्रद्धानन्द उधर गये तो कुछ गोरखों ने उनकी छाती पर किरचें तानकर डराना चाहा। स्वामी जी छाती खोलकर सामने आते हैं और गर्ज कर बोले-"निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती में संगीन भोंक दो। चलाओ गोलियां।" स्वामी जी का इतना कहना था कि गोरखों की संगीने झुक गयीं। उनका खौलता हुआ रक्त ठंडा पड गया। आपने अनुपम साहस का उदाहरण प्रस्तुत करके सम्पूर्ण भारत की वीरता और निर्भयता का सन्देश दिया।

राष्ट्रीस एकता के मूर्त स्वरूप

स्वामी श्रद्धानन्द सार्वभौम मानवता और राष्ट्रीय एकता के मूर्त रूप थे। जिस समय असहयोग आन्दोलन के समय खिलाफ्त के कारण मुसलमानों के दिल दुखी थे आपने उनमें पूर्ण विश्वास प्रकट किया। 4 अप्रैल 1919 को मुसलमानों के निमन्त्रण पर विख्यात जामा मस्जिद के मिम्बर में स्वामी-श्रद्धान्द जी ने ओ३म त्वं हिनः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ अधाते सुम्नमीमहे" इस मंत्र को पढ़ते हुए सार्वभौम मानव धर्म का उपदेश दिया। उन्होंने कहा संसार के सभी मानव परमात्मा के अमर सन्तान होने से भाई-भाई हैं। वेद पर आधारित धर्म मानव धर्म है। वेद का मन्त्र परस्पर सहयोग, का संदेश सुना रहा था। मस्जिद की मुस्लिम भीड़ ने प्रभावित होकर स्वामी श्रद्धानन्द की जय कहकर उनका स्वागत किया।

अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष में जलियांवाला हत्याकाण्ड के पश्चात समूचे देश में विशेष रूप से पंजाब में दमन चक्र चला। उसे देखते हुए साहस मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द उस राष्ट्रीय अधिवेशन के सभापति बने और उनके सहपाठी पंडित मोती लाल नेहरु राष्ट्रीय अधिवेशन के समापति1 इस राष्ट्रीय महासभा के मंच में स्वामी जी ने अपना भाषण हिन्दी में दिया। इसी मंच में उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा तथा दलितोद्धार का संदेश दिया।

राष्ट भाषा हिन्दी के उन्नायक

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने न केवल अमृतसर अधिवेशन में हिन्दी में भाषण दिया। आज के गुरुकुल कांगडी में शिक्षा के माध्यम के रूप में हिन्दी को स्वीकार किया था। उन्होंने अपने पत्र संद्धर्म प्रचारक को उर्दू से हिन्दी में निकाला। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में हिन्दी का संदेश दिया।

सर्व प्रिय नेता

सन 1922 के अविस्मरणीय दिन स्वामी श्रद्धानन्द ने अमृतसर के अकाल तख्त पर भी भाषण दिया। गुरु के बाग के आन्दोलन में वे सिक्खों के साथ बन्दी बनाए गए। उन्होंने मियां वाली जेल में कारावास भोगा।

— शेष पृष्ठ ६ पर

ऋषि दयानन्द के अनुसार दलित समस्या का समाधान

— डा० ज्वलन्त कुमार शास्त्री - अमेठी

गतांक से आगे....

"रिडिल्स इन हिन्दुइज्म" का एक दूसरा सन्दर्भ है..

(2) "आर्यों को दूसरा एक और विशेषाधिकार या बलात् गृहीत अधिकार प्राप्त था, वह था आर्यों की स्त्रियों से मनोवांछित काम-क्रीड़ा का आनन्द लेने की वरीयता। ऋग्वेद (10-85-40) में ऐसा उल्लेख मिलता है कि आर्य-स्त्री के उपर सर्वप्रथम अधिकार सोमदेव का है, इसके बाद दूसरे नम्बर पर गन्धर्व, तीसरे नम्बर पर अग्नि और अन्तिम नम्बर पर आर्यों का होता है। प्रत्येक आर्य की स्त्री किसी न किसी देव को अर्पित होती थी। उस देव को सर्वप्रथम उस स्त्री को ऋतुमती होने के बाद भोगने का अधिकार रहता था। किसी युवा कन्या के पूर्व देव उससे अपनी काम पिपासा की भूख मिटाकर अपना उचित मूल्य प्राप्त कर लेते थे।"

समीक्षा-- डा० अम्बेडकर ने आर्यों की स्त्रियों के विवाह पूर्व जिस घृणित और अश्लील स्थिति का वर्णन किया है वह पूरी तरह काल्पनिक और अनर्गल लेखन का उदाहरण है। ऋग्वेद का वह मन्त्र निम्न है--

सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः।
तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मुनष्यजाः ।।
सोमो ददद् गन्धर्वाय गन्धर्वो दददग्नये।
रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम्।।

(ऋ0,10/85/40-41)

अर्थात-- पहला पति सोम है, दूसरा गन्धर्व है, तीसरा अग्नि है और चौथा मनुष्य है। सोम गन्धर्व को देता है, गन्धर्व अग्नि को देता है और अग्नि धन और पुत्रों के लिए मुझको देता है। इन मन्त्रों का तात्पर्य बताते हुए "अत्रि स्मृति" में कहा है--

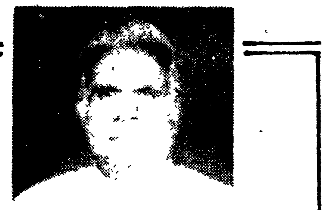
।-पूर्वास्त्रया सुरैर्भुङ्क्ते देवगन्धर्ववह्नाभः।।
पश्चात्तु मानवाः भुंक्ते न तां दुष्यन्ति कर्हिचित।।
रोमदर्शनसंप्राप्ते सोमो भुङ्क्ते तु कन्यकाम्।
कुचौ दृष्ट्वा तु गन्धर्वः रजो दृष्ट्वा तु पावकः।।

अत्रिस्मृति

"मनुष्य के पूर्व कन्या को सोम, गन्धर्व और अग्नि देवता भोगते हैं अर्थात् रोमकाल में सोम, स्तनकाल में गन्धर्व और रजोदर्शनकाल में अग्नि का प्रभाव रहता है। इसलिए कन्या का विवाह रोम, स्तन और रजोधर्म के बाद ही होना चाहिए। यह मन्त्र स्त्रियों के युवावस्था में विवाह का समर्थक और बालविवाह का निषेधक है। सोम, गन्धर्व और अग्नि शरीरधारी देवता नहीं है अपितु विशेष प्राकृतिक शक्तियाँ हैं जिनका प्रभाव कन्या के युवति बनने की प्रक्रिया में तीन दशाओं से गुजरने की अवस्था में पड़ता है।

डॉ0 अम्बेडकर के समान ही, पुराने बौद्धों ने भी हिन्दुओं के ऋषियों, देवताओं और श्रीराम, कृष्ण के चरित्र को लांछित करने का योजनाबद्ध प्रयास किया था। "दशरथजातक" आदि ग्रन्थ इसके प्रमाण हैं। रामकथा के प्रसिद्ध गवेषक कामिल बुल्के ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है। इसी कड़ी में नव-बौद्ध बने डॉ0 अम्बेडकर के अधिकांश आक्षेप हैं। पुराने काल के हिन्दू आचार्यों द्वारा दिये गये जवाब लचर और तर्कहीन हैं। जबकि स्वामी दयानन्द ने वेदों का यथार्थ भाष्य करके, अनार्य ग्रन्थों को अप्रामाणिक घोषित करके तथा प्रक्षेपों को परवर्ती, स्वार्थी और वाममार्गियों की मिलावट बताकर वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति का परिशुद्ध-प्रोज्वल रूप जनता जनार्दन के सामने प्रस्तुत कर दिया है। आवश्यकता इस बात की है कि आर्यसमाज ऋषि दयानन्द की सरणि के आधार पर वैदिक धर्म, दर्शन तथा संस्कृति का वास्तविक रूप उन दलितों के सामने रखे जिससे वे राजनैतिक या आर्थिकरूप से किसी भी दल से सम्बद्ध रहें लेकिन धार्मिक, सांस्कृतिक तथा दार्शनिक दृष्टि से वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति के अनुयायी और पक्षधर बने रहें। हमें योगेन्द्र-कवाड़े, श्रीप्रकाश अम्बेडकर, कांशीराम, सविता अम्बेडकर, रामधन, रामविलास पासवान और वी0पी0 मौर्य प्रभृति दलितवर्ग के नेताओं से भी इस विषय में संवाद जारी रखना चाहिए जिससे वे डॉ0 आम्बेडकर के अन्धानुयायी न बनें। हमें दलितों और उनके नेताओं को बौद्ध बनने या वैदिक धर्म की मान्यताओं का विरोधी होने से रोकना होगा।

दलित राजनीति के बदलते परिवेश और उनके नेताओं द्वारा दिये जा रहे नेतृत्व तथा डॉ0 अम्बेडकर के प्रति उनकी बढ़ रही दृढ़ निष्ठा के कारण भी यह बहुत बड़ा खतरा उपस्थित हो गया है कि कहीं हिन्दू समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग-- दलित वर्ग सामूहिक रूप से और संगठित तौर पर आर्यसंस्कृति का बिल्कुल विरोधी न बन जाए। अब तक आर्यधर्म और संस्कृति पर आक्रमण करने वाले दूसरे सम्प्रदायों के व्यक्ति तथा हिन्दुओं में भी फुटकर असंगठित या इक्के-दुक्के के रूप में रहे हैं चाहे वे आधुनिक बुद्धिजीवी, कुछ पत्रकार, कुछ कम्यूनिस्ट या विदेशी विद्वानों से प्रभावित भारतीय लेखक ही क्यों न रहे हों। इसी श्रृंखला में "सरिता" जैसी पत्रिकाओं को भी रखा जा सकता है। किन्तु दलितों के ख्याति प्राप्त नेता डॉ0-अम्बेडकर के प्रचारकों तथा सभी पार्टियों के दलित-नेताओं की मानसिकता इस प्रकार की बनती जा रही है (और जिसके कारण आशंका है) कि वे और उनके अनुयायी बिना धर्म परिवर्तन किये भी हिन्दू धर्म के विरोधी न बन जायें। ▣



टंकारा उपदेशक विद्यालय में

आचार्य ओमप्रकाश शास्त्री

की नियुक्ति

महर्षि दयानन्द जन्मस्थान टंकारा के उपदेशक विद्यालय में आचार्य-ओमप्रकाश शास्त्री की नियुक्ति की गई है। श्री ओमप्रकाश शास्त्री स्वामी विश्वानन्दजी सरस्वती पूर्व नाम पं0-जवाहरलाल जी के होनहार सुपुत्र हैं। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के स्नातक हैं। वहां से आयुर्वेद भास्कर एवं आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त की है। आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी एवं संस्कृत में एम0ए0 किया है तथा काशी विश्वविदयालय से शास्त्री।
आप 40 वर्षों से वेद प्रचार का कार्य कर रहे हैं। पूरी आशा है कि इनके नेतृत्व में उपदेशक विद्यालय टंकारा उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेगा।

जिला सभा मथुरा द्वारा वैदिक धर्मप्रचार

3 दिसम्बर 89 को तहसील मांट (आ0स0सुरीर) 5 दिसम्बर को तहसील सादाबाद (रोशनलाल उ0मा0विद्यालय) 7 दिसम्बर को तहसील मथुरा (आ0स0अडींग) दि0- 9 दिसम्बर को तहसील छात्रा (आ0स0 कोसीकलाँ) तथा 12 से 15 दिसम्बर 89 तक बलदेव मेला में वैदिक धर्म का धूमधाम से प्रचार हुआ जिसमें अनेक सन्यासी विद्वान, भजनोपदेशकों ने भाग लिया। जनता पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

आह्वान

कविवर "प्रणव" शास्त्री एम०ए०,
महोपदेशक शास्त्री-सदन रामनगर (कटरा) आगरा

चलो हैदरबाद चलें फिर गौरव-गाथा गाने को।
बलिदानी वीरत्व-प्रथा के सोते भाग्य जगाने को।।

अर्द्धशती से पूर्व वहाँ जब एक जल-जला आया था।
वैदिक धर्म ध्वजा नौका को गहरे गर्त डुबाया था।।

"उसमानी" शासन ने देखो उल्टा चक्र चलाया था।
वह तत्पर था सत्य धर्म का नाम निशान मिटाने को।।1।।
सन्ध्या, पूजा पाठ, कथाएं जप-तप सारे बन्दी थे।
घंटा, झालर, शंख, आरती मन्त्रों के स्वर मन्दी थे।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश जेल में पाहन - वाहन नन्दी थे।
वेद शास्त्र की चर्चा अर्चा विवश हुई सो जाने को ।।2।।

बनकर रहने लगी अमा थी मानो नूर जहानी सी।
रवि किरणों पर हुक्म चलाती जुमरात बन रानी थी।
रजाकार करतूत कालिमा प्रकटी कपट कहानी सी।
तब ही आर्यसमाज चला था सोता सिंह जगाने को ।।3।।

सत्याग्रह का विगुल बज उठा वीर चले रण वंका थे।

प्राण हथेली पर धरे-धर कर करते जो किन शंका थे।
हनूमान बन चले फूंक ने अत्याचारी लंका थे।
आहुति पर आहुति दे डाली विजयी ज्वाल जलाने को।।4।।

श्री नारायण, चाँदकरण, खुशहाल, धुरेन्द्र दहाड़े थे।
वेदव्रत श्रीकृष्ण व्रती ने निर्भय पाप पछाड़े थे
वीर विनायक ने गिनवाये अरि से विजय पहाड़े थे।
दक्षिण ने दी पूर्ण दक्षिणा सही दिशा मनाने को।।5।।

आज उसी की शुभास्मृति का हम सब करते गायन हैं।
भव्य भावनाओं का देते उज्जवल उच्च उपायन हैं।।
वैदिक धर्म ध्वजा फहराये भूतल में अ-भावन है।
देव दयानन्द के पौरुष का "प्रणव" प्रभाव पगाने को ।।6।।

हिन्दी

डॉ० गणेशदत्त सारस्वत
सारस्वत सदन, सीतापुर

(1)

भक्ति बनी तुलसी की कभी तो विरक्ति-सनी कभी सूर की बानी ।
चन्द - छटा छिटकाये हुए कभी मीरा बनी, कभी ताज दिवानी ।
पीर बनी धन आनन्द की कभी, ठाकुर की बनी प्रेम - कहानी ।
हिन्दी बिहारी की बिन्दी कभी कवि भूषण की असि - धार का पानी।

(2)

है रसखान रहीम से पोषित, घोषित विश्व में कीर्ति अपार है ।
शेख से आलम से अभिनन्दित, वन्दित जायसी का उपहार है ।
सन्त कबीर की बानी प्रसिद्ध है, सिद्धजनों के सुकण्ठ का हार है।
सार है उक्ति के वैभव का खुला, भुक्ति - सुयुक्ति का मुक्ति का द्वार है।

(3)

"अश्रु" प्रसाद की आँख का है, कवि पन्त का "मौननिमन्त्रण" है।
उर्ध्व निराला के पौरुष शक्ति से, पूजित राम का प्रप्रण है ।
आह भरे महादेवी के आहत अन्तस का रिसता व्रण है ।
है "कुरुक्षेत्र", प्रचण्ड है "जौहर", "झाँसी की रानी" का ये प्रण है।

(4)

संस्कृत की दुहिता है अमोल, मिला इसको वर शम्भु उमा का ।
ज्ञान की मोहिनी डाल रही है, प्रकाश बिखेर रही सविता का ।
प्राणप्रिया जगतीतल की, दे महीतल को रही दान सुधा का ।
अम्बर में लहरा रही है प्रिय नागरी की कलकीर्ति पताका।

(5)

सम्पदा है इसकी अनमोल, न ऐसी विभूति कहीं गई पायी।
देश - विदेश के तत्सम - तद्भव शब्द मिले हैं बड़े फलदायी ।
बोलने में लिखने में न भेद इसीलिये विश्व को ये लिपि भायी।
भारती - भाल की देख अनिन्दित, हिन्दी है बिन्दी बनी सुखदायी ।

स्वास्थ्य-सुधा

उपचार दर्पण

प्रश्न- "मेरी जनमतिथि 9 अगस्त" 1946 है। पढ़ाई में सदैव प्रथम आता रहा। शारीरिक दृष्टि से लोग मुझे अधिक आयु का तथा निर्बल बताते हैं। कृपया खान-पान-औषधि बतावें। मैं अपना कम से कम 5 किलो भार बढ़ाना चाहता हूँ। 1990ई0 में मेरा गृहस्थाश्रम में प्रवेश होगा।"

-- डॉ0 सुमेधामित्र वेदालंकार, एम0ए0, पीएच0डी0
संस्कृत विभाग, सर्वोदय डिग्री-कालेज, घोसी (मऊ) उ0प्र0

उत्तर- आपका रंगीन फोटो देखा।
आपके शरीर में प्रोटीन व वसा की कमी के कारण ही आयु अधिक दिखती है। प्रातराश में 2 चम्मच च्यवनप्राश चाट कर शहदयुक्त एक गिलास दूध पिया करें। सबसे अधिक प्रोटीन 44 प्रतिशत सोयाबीन में होती है। सभी दालों में 25-30 प्रतिशत प्रोटीन तथा मूंगफली में 31 प्रतिशत होती है। सायं 50 ग्राम सोयाबीन पानी में भिगोयें। दिन के भोजन में चावल- पिसा सोयाबीन (छिलकारहित) दूध-खजूर/चीनी की खीर खाने के पहले एक प्याला सब्जी खाया करें। रात्रि भोजन में दाल-सब्जी-शुद्धघी से चुपड़ी रोटी लिया करें। प्रत्येक भोजन के साथ सलाद-फल लिया करें। भोजन के 5 मिनट बाद 2 ढक्कन कुमार्यासव में समान जल मिला कर पिया करें। शौच जाने से पहले एक नींबू का रस एक गिलास गुनगुन पानी में मिलाकर पिया करें। उषाकाल में एक किलोमीटर वायुसेवन हेतु तेज चला करें।

-- रोगी अपना विवरण और दो-डाक लिफाफे निम्न पते पर भेजा करें:-

पता- गुरुकुलानन्द सरस्वती,
स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्यसमाज पिथौरागढ़
(उत्तर प्रदेश)

महिला जगत

दाम्पत्य जीवन का आधार-प्रेम

— चन्द्र भूषण सिंह शास्त्री,
आर्यसमाज गणेशगंज, लखनऊ

वैदिक धर्म में पति और पत्नी को समान अधिकार दिया गया है, और विवाह के अवसर पर सप्तपदी के अन्तिम प्रतिज्ञा में "सखा सप्तपदीभव" कह कर दोनों को मित्रवत् व्यवहार करने की आज्ञा दी गई है, एवं विवाह शब्द का अर्थ ही यही होता है वि=विशेष, वाह=वहन अर्थात् ढोना, जैसे वाहन(गाड़ी) के द्वारा वस्तु ढोयी जाती है वैसे ही विवाह विशेष प्रकार का यान है जिसमें पति और पत्नी गाड़ी के दो पहियों की तरह समान महत्व वाले हैं तथा दोनों ही गृहस्थ रूपी गाड़ी को लेकर चलते हैं। यदि पुरुष नारी के साथ अत्याचार करता है तो यह अनुचित है पुरुषों से स्त्रियों के हितार्थ हमारा एक निवेदन है--

। स्त्रियों की आयुरूपी नौका के पार लगाने वाले पुरुषों ध्यान दो कि जिस मन में शान्ति नहीं, हर्ष नहीं, सुख नहीं, चैन नहीं वहाँ अति आवश्यक है कि नरकरूपी भट्ठी की ज्वाला प्रज्वलित हो जब अग्नि लगती है तब वह नहीं जानती कि कौन सी नई छानी है कौन सी पुरानी वह झाड़ तक नहीं छोड़ती और समस्त घरवालों पर एक सी प्रभावित होती है, स्त्री के दुःखी और जले मन का धुँआ पुरुष के सुख के पौधे को जलाकर भस्म कर देता है।

हाय ! तुम स्त्रियों को देवियां कहते हो क्या कारण है कि तुम्हारे घर में एक देवी आती है परन्तु तुम्हारा घर देव स्थान के बजाय नर्क स्थान बन जाता है क्या आप उसको समझने में चूक गये या वास्तव में वह कोई वस्तुयें अपने साथ लाती हैं जिससे आपके घर में आग भड़क उठती है और सारा घर जलने लगता है। तुम विवाह करके अधिक शोकातुर हो जाते हो इससे तो अच्छे विवाह न होने की दशा में थे तुम्हारे मन का सुख और चैन कहाँ चला गया ।

अतः हे विवाहित और अविवाहित पुरुषों देवी का निरादर मत करो अपराध उनका नहीं आपका है क्योंकि आपने विवाह से प्रथम इस बात को समझने का यत्न नहीं किया कि जिसको हम अपने घर बुलाते हैं उसके साथ हमारा क्या व्यवहार होना चाहिए आप यह समझते हो कि वह हमारी प्रसन्नता के लिए आयी है और उसका कर्तव्य है कि वह आपको प्रसन्न रखे परन्तु तुम इस बात को क्यों भूल जाते हो कि तुम्हारा यह कर्तव्य है वा नहीं कि तुम उसकी प्रसन्नता के कारण बनो।

यदि आप अपने हर्ष और सुख की परवाह घर आये हुए मेहमान की अपेक्षा अधिक करते हो तो आपको अपने घर के द्वार पर ऐसा विज्ञापन लगा देना चाहिए कि यह वह घर है जहाँ पर घर आये हुए मेहमान के सुख की अपेक्षा अपने सुख को श्रेष्ठ समझा जाता है। जिससे आपके घर कोई आने की इच्छा ही न करे। एक पवित्र पुस्तक में लिखा है कि तुम अपनी स्त्री से ऐसा प्रेम करो जैसा अपने आप से करते हो।

प्रेमचन्द्र जी ने प्रेम नापने का पैमाना बताया है कि आप जिसके लिए जितना अधिक मात्रा में स्वार्थ छोड़ सकते हो उससे उतना अधिक प्रेम करते हो परन्तु आप यदि ऐसा नहीं करते तो स्वार्थी ठहरे और परमात्मा की दृष्टि में पापी होकर फल भुगतना पड़ेगा ।

सच तो यह है कि हमारे देश में अनाथों की संख्या लगभग 12 करोड़ है वह अनाथ जिनका जीवन भारागहन है जो जीवित मृतक के सदृश हैं आप विस्मित होंगे वे कौन हैं और कहां हैं। हां, यह आपकी प्राण-प्यारी स्त्रियां हैं आपकी चहेती पत्नियाँ हैं जिनको बड़े लाड़ चाव से घर में लाये थे परन्तु अनाथों की कदर आप ने नहीं किया। अनाथ वह हैं जिनके सिर से माता-पिता की रक्षा का हाथ उठ जावे। वधू नितान्त एक अनाथ की अवस्था में आपके घर आती है वह अपने माता-पिता के प्यार को भाइयों के दुलार को छोड़ती है इसलिए उससे अधिक अनाथ कौन होगा और वह किसके लिए अपना अनाथ बनना स्वीकार करती है अपने लिए नहीं वरन् आपके लिए इतना त्याग स्वीकार करती है।

जब तक तुम अपने पवित्र प्रेम से अपनी स्त्री को निश्चय नहीं करा देते कि यदि उसने अपने पिता के प्रेम को आपके लिए निछावर किया है तो आपके मन में पिता का प्रेम उपस्थित है यदि आपके घर में वही प्रेम है जो उसके माता-पिता के घर में था यदि आपके दिल में वह ही प्यार भरी प्रतिष्ठा है जो उसके भाई के मन में हैं तो समझा जा सकता है कि आपने अपने कर्तव्य को पूर्ण किया और आप एक अनाथ के माता-पिता-भ्राता सिद्ध हुए। ऐसे निर्मल प्रेम के अभाव में ही घर नर्क सदृश हो जाता है और रात दिन देवासुर संग्राम घर में छिड़ा रहता है। यदि आप अपनी स्त्री के लिए पिता प्रतीत नहीं हुए वरन् मजिस्ट्रेट सिद्ध हुए, भाई नहीं प्रतीत हुए वरन् चोर प्रतीत हुए, सखा नहीं निकले वरन् ठग निकले, साथी नहीं बने वरन् कारागार के दरोगा बने, रक्षक नहीं बने वरन् भक्षक बन गये।

यही कारण है कि हमारे आपके घरों में उन दुखिताओं के शब्दों से जो उनके हृदय रूपी भट्ठी में अशान्ति रूपी अग्नि से सुलग और प्रज्वलित होकर उस पर उनके दिन रात के रोने के आंसुओं के गिरने से धूम्र रूप में बदल कर जो मेघ मण्डल में पहुँचता है वही अंगारों का रूप धारण करके आप और हम पर गिरता है और सारे सुखों का सत्यानाश कर देता है फलस्वरूप जीवन जी का जंजाल बन जाता है यही कारण है कि गृह मरघट श्मशान भूमि वा दुःख क्षेत्र बन रहे हैं क्योंकि हमारे घरों में अनाथ कैद हैं और वह अनाथ हैं जिन्हें हमने अनाथ बनाया है उनके माता-पिता से पृथक करके घर में कैद कर लिया है जिसके साथ आपने पाणिग्रहण में दृढ़प्रतिज्ञा अग्नि की साक्षी करके किया था उसके पिता भाई सखा न बनकर इन्द्रियों के स्वाद के दास बन गये।

अतः आप कपटी छली धोखेबाज सिद्ध हुए और कपट का फल ईश्वर दुःख रूप में ब्याज सहित लौटाता है, यदि सावधान न हुए तो किसका दोष है। एक महापुरुष ने कहा है कि जो कन्या अपने सारे सामान सहित दासी बनाकर दासत्व में बेच दी जाती है उसकी दशा एक विवाहिता स्त्री की अपेक्षा फिर भी अच्छी कही जा सकती है क्योंकि उस दासी को तो उस दासीपने की अवस्था में मजदूरी तो मिल जाती है पर यह विवाहिता तो अपनी कमाई से अपने पावों के लिए साकड़ें मोल लेती जाती है जो एक खोई हुई स्वतन्त्रता का बहुत बड़ा बदला है।

एक महापुरुष ने पति-पत्नी के नाते को शरीर और आत्मा से उदाहृत किया है- कि स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध ऐसा है जैसा शरीर और जीव का, यदि पुरुष जीव है तो स्त्री शरीर है जीव कदापि नहीं चाहता कि शरीर को उसकी आवश्यकताओं से रोके जीव शरीर की रक्षा करता है उसको राह बताता है उसके लिए आवश्यक पदार्थ एकत्रित करता है उसकी सम्पूर्ण उचित इच्छाओं को पूरा करता है इसके बदले में शरीर अपने आपको जीव को सौंप देता है इसलिए कि जीव उससे उत्तम काम ले शरीर के बिना जीव का क्या महत्व है इसी तरह जीव के बिना शरीर भी भट्टी के समान है। जीव चाहता है कि एक पहाड़ पर चढ़कर चमत्कार देखे परन्तु यदि शरीर उसे चलने के लिए पैर और देखने के लिए आंख नहीं देता तो जीव क्या कर सकता है शरीर शीतोष्ण से कैसे बच सकता है यदि जीव उसे वह साधन न बताये जो उसकी रक्षा के लिए आवश्यक है इससे स्पष्टतया ज्ञात हो गया जैसा शरीर का जीव पर और जीव का शरीर पर अधिकार और सम्बन्ध है वैसे ही स्त्री का पुरुष पर और पुरुष का स्त्री पर है।

अच्छे अच्छे घरों में देखा गया है कि स्त्री पुरुषों में अनबन होकर डण्डे चलने की नौबत आ पहुँचती है पुरुष स्त्री पर क्यों हाथ उठाता है इसलिए कि वह समझता है कि वह बागी हो गई है वह उसके अधिकार से बाहर जा रही है वास्तव में यह तो उसकी निर्बलता और पुरुषार्थ हीनता नपुंसकता का कारण है।

स्त्री-पुरुष कोई ऊँट नहीं है परन्तु निर्बल पुरुष ऊँट के नकेल इसलिए डालता है और डंडे मार कर बिठाता है कि वह उस पर चढ़कर उसे अपने आधीन करे जो पुरुष डण्डे के बल नकेल डालकर स्त्रियों को आधीन करना चाहते हैं वे इस बात का परिचय देते हैं कि उनकी दृष्टि में स्त्रियों की अवस्था (पोजीशन) ऊँट से अधिक नहीं कि जो यदि नकेल से सीधी नहीं होती तो डण्डे मारकर सीधा करो।

इसलिए आप उन्हें अवश्य ही आत्मवत समझिये और उन्हें धार्मिक, सदाचारी, सत्यवादी, परोपकारी, स्वयं बनकर बनाइये। जब वह प्रसन्न रहेंगी तभी तो हम और आने वाली सन्तानों को स्व योग्य बना सकेंगी। यदि आप इस समय उनके साथ अनुचित व्यवहार करेंगे तो यहां तो क्लेश भोगने ही पड़ेंगे वरन् कर्मफलानुसार क्या जाने दूसरे जन्म में तुम्हें ही स्त्री योनि में- पहुँचकर उसी की स्त्री बनकर ब्याज सहित बदले में दुःख भोगने पड़ें और जब वह ऐसा दुष्ट बर्ताव तुम्हारे साथ करे जैसा आज तुम कर रहे हो तो सच बताइये कि आप का क्या हाल हो और यह धरा ही हुआ है क्या खूब सौदा नकद है

शेष पृष्ठ ९ पर

विचार-गोष्ठी

बुधवार, 29 नवम्बर 1989 डॉ0 रमेश आर्य के निवास बी-79-शास्त्री नगर, मेरठ पर एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय था "राष्ट्रीय चेतना"। युवावर्ग में राष्ट्रीय भावनाएँ जागृत करने के उद्देश्य से इस विषय पर विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार रखे। सर्वप्रथम डा0 अजय जैन ने विषय से सम्बन्धित भूमिका विचारकों के समक्ष रखी। अखिल-भारतीय विद्यार्थी परिषद के संगठन मन्त्री, श्री रवीन्द्र जी राजौरा ने मानसिकता परिवर्तन पर जोर देते हुए "राष्ट्रीय चेतना" के सम्बन्ध में क्रान्तिकारी विचार रखे। डॉ0 नरेन्द्र रतूड़ी व डॉ0 अनिल-चौहान ने कविताओं के द्वारा, समाज में व्याप्त दूषित व्यवस्थाओं पर करारे प्रहार किये। डा0 संजय तिवारी जी ने मानव धर्म को स्थापित करने पर जोर दिया।

श्री रमेश चन्द्र जी ने महापुरुषों के जीवन चरित्र से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय चेतना जगाने पर बल दिया। श्री श्री-भगवान जी शर्मा ने सुझाव दिया कि गोष्ठी में खाली पेट आया जाये, ताकि गरीबों की भूख को समझा जा सके। पं0 जयन्त जी पाण्डे, महामन्त्री राष्ट्र-रक्षा युवा आन्दोलन, ने धर्मान्धता, विघटनकारी शक्तियां, सामाजिक कुरीतियां आदि को समाप्त कर ममता और नव-निर्माण की ओर राष्ट्रीय चेतना जागृत करने पर बल दिया। प्रो0 राय (एस0के0) ने आध्यात्मिकता को राष्ट्र में चेतना लाने का मूलमन्त्र बताया। प्रो0 ओमशरण-गुप्त अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, मेरठ कालेज मेरठ, ने राष्ट्रीय चेतना के सम्बन्ध में भावात्मक व रागात्मक एकता की बात कही। आर्यप्रतिनिधि सभा-उ0प्र0 के अध्यक्ष पं0 इन्द्रराज जी ने अन्त में उपसंहार करते हुए भौतिकवाद आध्यात्मवाद को स्पष्ट करते हुए बताया कि गन्दे काम करते हैं, दुष्ट लोग, बदनाम होता है धर्म, अतः धर्म को समझना जरूरी है। अन्त में प्रो0-एस0एस0एल0 श्रीवास्तव, (मेडिसिन-विभाग, मेडिकल कालेज मेरठ) ने परहित सेवा को धर्म बताया तथा युवा डाक्टरों को आशीर्वाद दिया। गोष्ठी के अध्यक्ष रहे, डा0 बी0एस0 सिंह (अध्यक्ष जब रसायन विभाग मेडिकल-कालेज मेरठ)। उन्होंने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में स्वयं सुधार तथा सेवा पर बल दिया। पं0 इन्द्रराज जी ने अन्त में सभी विशिष्ठ अतिथियों को धन्यवाद व युवाओं को आशीर्वाद प्रदान किया। विचार गोष्ठी का आयोजन "विवेक-दयानन्दमंच" के तत्वावधान में डा0 रमेश आर्य, डा0 अजय जैन व डॉ0 भगराम ने किया। विचार-गोष्ठी का विधिवत् संचालन डॉ0 रमेश आर्य ने किया। गोष्ठी से सभी ने आन्तरिक आनन्द का अनुभव किया।

-इन्द्रराज,
मंत्री
आर्यसमाज बुढ़ाना गेट, मेरठशहर।

राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन उ.प्र. लखनऊ। शाखा मेरठ जनपद के अधिकारियों का चुनाव।

दिनांक 3-12-89 को दोपहर 1-00 बजे राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन उ0प्र0 लखनऊ के मेरठ शाखा के जनपदीय अधिकारियों का चुनाव किया गया। यह चुनाव प्रान्तीय अध्यक्ष पं0-इन्द्रराज जी की अध्यक्षता तथा राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन के प्रदेशीय महामन्त्री जयन्त कुमार के संयोजकत्व में सम्पन्न हुआ। इसमें मेरठ जनपद में संगठन के कार्य को तीव्रगामी बनाने का संकल्प-नव-निर्वाचित युवा अधिकारियों द्वारा व्यक्त किया गया। अधिकारियों के नाम तथा पद निम्नलिखित हैं:-

1- श्री जितेन्द्र कुमार गुप्त
जनपदीय अध्यक्ष
2- श्री अशोक सुधाकर
जनपदीय सचिव
3- श्री डा0 अजय जैन
जनपदीय उपाध्यक्ष
4- श्री डा0 रमेशचन्द्र
जनपदीय प्रचार सचिव
5- श्री सोम प्रकाश
जनपदीय कोषाध्यक्ष
6- श्री सीताराम गोयल
जनपदीय संगठन सचिव
7- श्री वेदप्रकाश जी गुप्ता
जनपदीय लेखा परीक्षक

एक्जीक्यूटिव कमेटी:-

1- श्री धीरज अग्निहोत्री, 2- श्री लोकेश कुमार, 3- श्रीमती सरोज रस्तोगी 4- श्रीमती विनोद बाला, 5- श्रीमती-उर्मिला गुप्ता।

आर्य नेता विजयी

आर्यसमाज मैनपुरी के सदस्य, ग्राम-खरपरी के निवासी तथा कुं0 ध्रुव-पाल सिंह जी "अटल" के अग्रज कुं0 इन्दलसिंह चौहान, मैनपुरी विधानसभा क्षेत्र से, अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी नियोजन मन्त्री श्री रघुवीर सिंह यादव (इं0 का) को लगभग 18 हजार मतों से पराजित कर, विजई घोषित हुए हैं।

- डॉ0 ज्ञान प्रकाश शास्त्री
मन्त्री,
आर्यसमाज मैनपुरी (उ0प्र0)

पृष्ठ ८ का शेष....

इस हाथ दे उस हाथ ले- "अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।"

आप स्वयं बुद्धिमान हैं बुद्धिमान ऐसा कार्य नहीं करते हैं कि जिसके परिणाम में लज्जित होना पड़े। आप मेरे निवेदन पर ध्यान देकर अग्रशोचि बनकर अवश्य ही नारी का उचित मान कीजिए जिससे घर शान्ति का धाम और सुख प्राप्त हो।

यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्रदेवताः/ मनु0/ जहां नारी का सम्मान होता है वही देवता निवास करते हैं अर्थात वहां शान्ति और सुख का वास होती है।

पृष्ठ ५ का शेष....

स्वामी श्रद्धानन्द का विश्वास था सभी भारतवासी एक ही धरती माता की सन्तान हैं। राष्ट्रीय एकता के लिए साम्प्रदायिक सद्भाव आवश्यक है। पर एकता के पूर्व घटकों का संगठित होना आवश्यक है। एकता का आधार अपने अस्तित्व की पूर्ण सुरक्षा करते हुए समानता और न्याय के आधार पर एकता के सूत्र में बांधना है। यह एकता आन्तरिक होनी चाहिए। इस सच्ची एकता के लिए वे आजीवन प्रयत्नशील रहे।

अमर बलिदान

स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या मतान्धता स्वार्थ परायणता और क्रोध-काम कर रहे थे। उस मनोवृत्ति को प्रोत्साहित करने में ब्रिटिश शासकों की कूटनीति भी एक प्रमुख भूमिका निभा रही थी। शासन तन्त्र गुरुकुल की राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली के प्रयोग से आतंकित था। उनको यह सह्य नहीं था कि स्वामी श्रद्धानन्द जैसा आर्यनेता राष्ट्रभक्त भारत के सभी धार्मिक पक्षों का विशेषकर हिन्दू मुसलमानों का एक क्षत्र नेता हो। अतः उस राष्ट्रीय नेता को मार्ग से हटाने के लिए कूटनीतिक प्रयास किया गया। घोर साम्प्रदायिक तत्वों को प्रोत्साहित किया जाता रहा अन्त में यही साम्प्रदायिक उन्माद स्वामी जी के बलिदान का कारण बना। 23 दिसम्बर 1926 को राष्ट्रीय एकता भारत की अखण्डता तथा मानवता की बलिवेदी पर अमर हुतात्मा स्वामी-श्रद्धानन्द जी का बलिदान हुआ। □

राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन

किसी भी राष्ट्र का युवा वर्ग उस राष्ट्र की शक्ति होता है तथा राष्ट्र का वर्तमान और भविष्य युवावर्ग पर ही पूर्णतया निर्भर रहता है। जिस राष्ट्र का युवा वर्ग दिशाहीन होकर नैतिकता तथा अनुशासन का परित्याग कर बैठे और चरस, ड्रग्स, ब्राउनशुगर, मद्यपान जैसे घातक नशों का शिकार बनकर रह जाय, उससे अपने राष्ट्र की स्वतन्त्रता तथा अखण्डतता की रक्षा की आशा करना मृगमरीचिका में विचरण करना है। दूषित तथा अव्यावहारिक शिक्षा पद्धति, जहाँ एक ओर युवाओं में ज्ञान और आत्मविश्वास के स्थान पर दिशाहीनता तथा हीन भावना उत्पन्न कर रही है वहीं दूसरी ओर जातिवाद, पाखण्ड, अस्पृश्यता, दहेज और सती प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयाँ उन्हें कुण्ठाग्रस्त कर रही हैं। युवा वर्ग पश्चिमी भौतिकवाद के चकाचौंध में फंसकर अध्यात्म से दूर हो रहा है तथा अपनी आत्मिक शक्ति को नहीं पहचान पा रहा है। राजनीतिक पार्टियों द्वारा अपने राजनीतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए युवा-शक्ति का दुरुपयोग किया जा रहा है। धार्मिक संगठनों के द्वारा युवाओं में धार्मिक उन्माद पैदा करके धर्म के नाम पर उन्हें मानवता तथा मनुष्यता का नाश करने को प्रेरित किया जा रहा है। सामाजिक संगठनों में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा बेईमानी युवा वर्ग में निराशा भर रही है। डिग्रियों का बोझ लादकर युवा रोजगार की तलाश में दर-दर का भिखारी बनकर अपमानित किया जा रहा है तथा रोजगार दिलाने के नाम पर रोजगार संगठनों और सम्बद्ध अधिकारियों द्वारा युवा वर्ग का शोषण किया जा रहा है। दहेज के नाम पर सुन्दर, सुशिक्षित, सुयोग्य बहनों को आज भी मार डालना जारी है। आज भी युवा वर्ग को अपनी इच्छानुसार अपना जीवन-साथी चुनने का अधिकार नहीं है। यदि कोई युवक या युवती ऐसा सत्साहस करते हैं तो धर्म, जाति तथा सम्प्रदाय के नाम पर उन्हें तरह-तरह से प्रताड़ित किया जाता है तथा उनका सामाजिक बहिष्कार भी किया जाता है। ऐसी निराशाजनक स्थिति में राष्ट्रद्रोही तथा असामाजिक शक्तियाँ युवाओं को रोजगार, मन की शान्ति तथा वैभव-विलास का लालच देकर उनसे हत्या, तोड़-फोड़ तथा तस्करी जैसी असामाजिक गतिविधियों में फंसा देती है और इस तरह राष्ट्र का निर्माता और रक्षक युवा वर्ग राष्ट्र और समाज के सुख-शान्ति का शत्रु बन जाता है।

"राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" युवाओं के एक सशक्त स्वतन्त्र संगठन के रूप में सम्पूर्ण प्रदेश में तीव्र गति से उभर रहा है। यह संगठन किसी भी तरह के धार्मिक या राजनीतिक कठमुल्लाओं की कठपुतली न होकर युवा शक्ति का स्वतन्त्र प्रतीक होगा। ब्रह्म, जातिवाद, अस्पृश्यता, सती-प्रथा दहेज-प्रथा के विरुद्ध एक अजेय शक्ति के रूप में अपना वर्चस्व स्थापित करेगा।

आइये इस पुनीत राष्ट्र-रक्षा अभियान में हमारा साथ देकर भारतमाता की स्वतन्त्रता, अखण्डता की सुनिश्चित कीजिए और युवा वर्ग में एक नया आत्मविश्वास, एक सही दिशा और नई शक्ति उत्पन्न करने में योगदान कीजिए। वर्तमान हमारा है, भविष्य हमारा है, "राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन" का यही नारा है।

— जयन्त कुमार पाण्डेय,
महामन्त्री,
राष्ट्र रक्षा युवा आन्दोलन,
उ०प्र०, लखनऊ।

निवास
1245, गौरीपुरा,
निकट ओडियन सिनेमा
मेरठ1

डा० संजय सिंह के स्वास्थ्यलाभ की कामना

आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के पूर्व प्रधान स्व0 राजर्षि रणंजय सिंह के पुत्र डा0संजय सिंह कुछ समय पूर्व चुनाव के दौरान बर्बर, हमले में गोली लगने से घायल हो गये थे। उनका इलाज जसलोक अस्पताल बम्बई में कुशल चिकित्सकों की देख रेख में चल रहा था किन्तु कुछ विशेष लाभ न होने के कारण अब वे लन्दन चिकित्सा हेतु गये हैं और ब्रिटिश विशेषज्ञ डाक्टरों की देखभाल में हैं। उनकी अवस्था स्थिर है।

आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा मंत्री श्री मनमोहन तिवारी ने प्रभु से उनके शीघ्र स्वास्थ्यलाभ की कामना की है।

मेला वैदिक धर्मप्रचार

दिनांक 12-11-89 से 15-11-89तक क्षेत्रीय वैदिक धर्म प्रचार समिति प्रयाग द्वारा शृंगवेरपुर मेले में मन्सूरा बाद बहारीकपुर एवं सराय गोपाल भदरी आदि कस्बों में श्री ब्रम्हानन्द जी आर्य एवं नेमप्रकाश जी धनुर्धर एवं अन्य भजनोपदेशकों द्वारा सफल वैदिक धर्म प्रचार कराया गया। जिसमें दिनांक 15-11-89 को सराय गोपाल भदरी में दो युवकों श्री राजेन्द्रप्रसाद-पटेल एवं राम किशुन गुप्त का यज्ञोपवीत संस्कार भी कराया गया।

पृष्ठ ४ का शेष....

ही बनाता।" ये शब्द उन्होंने जात-पांत तोड़क मण्डल के वार्षिकोत्सव पर तब कहे थे जब उन्होंने देखा कि इसमें एक भी आर्य नेता शामिल नहीं हुआ। आज जात-पात के विरुद्ध भाषण देने वाले तो बहुत मिल जाते हैं किन्तु व्यवहार में विशेषतया शादी-ब्याह के अवसर पर जात-बिरादरी ही ढूंढते दिखाई देते हैं। यह स्थिति समाप्त होनी चाहिए। हमारी कथनी और करनी में अन्तर नहीं होना चाहिए। यही समय की पुकार है और यही है वह संदेश जो स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस लेकर आया है।

पृष्ठ ३ का शेष.....

इन्द्र विद्यावाचस्पति ने अपने संस्मरण "मेरे पिता" में इस प्रकार लिखे हैं:-

"जिस समय इधर अब्दुल-रशीद अपनी मूर्खता भरी चेष्टा से इस्लाम के माथे पर कलंक का टीका लगा रहा था,उधर गोहाटी में अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा के अधिवेशन में सन्देश तार द्वारा निम्नप्रकार का भेजा था-

"ON HINDU-MUSLIM UNITY DEPENDS FUTURE WELLBEING, OF INDIA"

"भारत का भावी सुख हिन्दू-मुस्लिम एकता पर आश्रित है।"

------ स्वामी का विश्वास था कि वह एकता तब तक जन्म नहीं ले सकती जब तक निर्बल हिन्दू, सबल मुसलमानों के मित्र नहीं बन सकेंगे। इस कारण वे हिन्दुओं को मुसलमानों के समान मित्र बनाने के पक्षपाती थे। उनके हिन्दू संगठन का अभिप्राय मुस्लिम विरोधी नहीं था अपितु जाति के आन्तरिक दोषों को दूर करना था।"

मित्रता समान गुणशील व्यसनों वाले व्यक्तियों में होती है। बलवान का मित्र बनने के लिए स्वयं बलवान और संगठित बनना आवश्यक है। साथ बिछुड़े हुए या रूठे हुए को वापिस लाना भी आवश्यक है। सन 1923 के फरवरी में आगरा में हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की।

क्रमशः----

श्रद्धांजलियाँ

स्वामी श्रद्धानन्द जी सुधारक थे। वे कर्मशूर थे, वाक शूर नहीं। उनका जीवित जागृत विश्वास था। इसके लिए उन्होंने अनेक कष्ट उठाये। वे वीरता और साहस की प्रति मूर्ति थे। वे साहस आने पर कभी नहीं घबराते थे। वे एक सच्चे शूर वीर योद्धा की भाँति मरे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी से बढ़कर बहादुर आदमी मैंने संसार में नहीं देखा। जब कोई मुझे महात्मा कहता है तो मेरा दिल कहता है कि स्वामी श्रद्धानन्द ही सच्चे महात्मा हैं मैं नहीं।

विश्ववंद्य महात्मा गांधी

स्वामी श्रद्धानन्द जी में निर्भीकता की मात्रा आश्चर्यजनक थी। लम्बाकद शाही शक्ल, सन्यासी के वेश में बहुत उम्र हो जाने पर भी बिलकुल सीधी सी चमकती सी आँखें और चेहरों पर दूसरों की कमजोरियों पर आनेवाली चिड़चिड़ाहट और गुस्से की छाया का गुजरना, मैं इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हूँ। अक्सर वह मेरी आँखों के सामने आ जाती है।

-राष्ट्रनायक पंडित
जवाहरलाल नेहरू।

आर्य समाज गिरिहिन्दा शेखपुरा

प्रधान - डा0 कविराजदुर्गा प्रसाद आर्य
मंत्री - श्री रामस्वरूप प्रसाद आर्य
कोषाध्यक्ष -श्री रघुनाथ प्रसाद आर्य।

"वेद विद्यापीठ का शुभारंभ

"इस वर्ष ऋषि निर्वाण समारोह के अवसर पर ऋषि उद्यान, पुष्करगेड, अजमेर में श्री मद्दयानन्द वेद विद्यापीठ का विधिवत शुभारम्भ हुआ है।

विद्यापीठ में संस्कृत विषय सहित बी0ए0 उत्तीर्ण अथवा तत्समकक्ष योग्यता के विद्यार्थी प्रविष्ट किये जा सकेंगे। विद्यापीठ का पाठ्यक्रम तीनवर्ष का होगा। इसमें वेद, व्याकरण, दर्शनसिद्यान्त, सांस्कृतिक एवं सामाजिक इतिहास का गहन अध्ययन कराया जायेगा।

विद्यापीठ में प्रवेश प्राप्त छात्रों के भोजन, आवास, शिक्षा आदि का सम्पूर्ण व्यय परोपकारिणी सभा वहन करेगी। तीन वर्ष में स्नातक बने कार्यकर्ताओं के लिए सभा ने पन्द्रह सौ रुपये मासिक व्यवस्था भी की है। इच्छुक विद्यार्थी निम्न पते पर यथाशीघ्र सम्पर्क करें अथवा योग्यता एवं प्रमाण-पत्र (प्रतिष्ठित आर्य जनों से) के साथ साक्षात्कार हेतु उपस्थित हों।

-मंत्री
परोपकारिणी सभा,
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर (राज0)

नवीन आर्यसमाज स्थापित

दिनांक- 3·12·89 रविवार को उ0प्र0 सभा निरीक्षक श्री वीरेन्द्र "वीर" के द्वारा आर्यसमाज पटेलनगर (मियाँपुर) जि0 बरेली का चुनाव सम्पन्न कराया गया, जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये-

प्रधान - श्री अविनाश चन्द्र आर्य
मंत्री - श्री धर्मेन्द्र सिंह आर्य
कोषाध्यक्ष- श्री सुरेन्द्र पालसिंह आर्य

जिलासभा बरेली द्वारा वैदिक धर्मप्रचार

आर्य उपप्रतिनिधि सभा जनपद बरेली के वेदप्रचार कार्य क्रम की श्रृंखला में दिनांक- 12, 13 और 14 नवम्बर-1989 को, रामगंगा मेला चौबारी में प्रचार शिविर का आयोजन किया गया। स्थानीय जनता ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें :-

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह अगस्त-सितम्बर 1989 को समाप्त हो गया है। वी0पी0 भेजने में 7-50 रु0 अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु0 मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी0पी0 भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जनवरी 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु0 हो गया है।

अगस्त 1989

566, 694, 1607, 3786, 4372,
5301, 6193, 6201, 6781,
8091, 8325, 8424, 8428,
8640, 9498, 9500, 9969,
11235, 11971, 11963, 12344,
12704, 12721, 12956, 13180,
13181, 13188, 13507, 13539,
13540, 13544, 13548, 13555,
13560, 13563, 13565, 13570,
13573, 13574, 13576, 13579,
13580, 13587, 13958, 13969,
14325, 14328, 14785, 14786,
14707, 14788, 14789, 14790,
14791, 14792, 14793, 14794,
14795, 14796, 14797, 14798,
14800, 14801, 14802, 14803,
14804, 14805, 14806, 14807,
14809, 14810, 14811, 14812

सितम्बर 1989

351, 994, 2415, 2993, 3097
5027, 5614, 5921, 5948,
6701, 6801, 6968, 8106,
8113, 8331, 8377, 8648,
8660, 9009, 9117, 9242,
9252, 9714, 9974, 9980,
9981, 11037, 11255, 11270,
11272, 11273, 11703, 11994,
12000, 12002, 12399, 12405,
12732, 12968, 13198, 13200,
13208, 13229, 13250, 13595,
13598, 13604, 13980, 13994,
14006, 14026, 14027, 14037,
14039, 14040, 14042, 14339,
14344, 14407, 14408, 14413,
14814, 14815, 14816, 14817,
14818, 14819, 14820, 14821,
14823, 14824, 14825, 14826,
14827, 14828, 14829, 14830,
14831, 14832, 14834, 14835,
14836, 14837, 14838, 14839,
14840, 14841, 148442, 14843,
14844

— व्यवस्थापक

अर्थव0 पारायण बृहद यज्ञ

मैनपुरी, 20·11·89, मैं ने अपने ज्येष्ठ पुत्र चि0 कुं ध्रुव पाल सिंह "अटल" मुख्य निरीक्षक, सभा की पचासवीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में, दि0 7-12-89 से दि0 12-12-89 तक, अथर्ववेद पारायण वृहद यज्ञ का आयोजन सुनिश्चित किया है जिसमें स्वामी लक्ष्मणानन्द जी (औरय्या) डॉ0 रामप्रकाश जी आचार्य (जसराना), डॉ ज्ञान प्रकाश जी आचार्य (भोगाँव) तथा वेद-पाठी ब्रह्मचारी (गुरुकुल, एटा) आदि विद्वान पधार रहे हैं। इस शुभ अवसर पर मैं, अपने पुत्र की दीर्घ-आयुष्य की शुभकामनाओं हेतु अपने समस्त आर्य बन्धुओं को सप्रेम आमन्त्रित कर रहा हूँ।

-डा0 महावीर सिंह
आर्यसमाज, मैनपुरी।

शुभ-सूचना

"काश गाँधी जी ने कुरान पढ़ी होती तो हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई नहीं कहते।

इस पुस्तक को 2 वर्ष पहले भारत सरकार ने जब्त करके पुस्तक के लेखक पर केस चलाया जिसे माननीय-मजिस्ट्रेट श्री चतुर्वेदी जी ने खारिज कर दिया जो सज्जन यह पुस्तक मंगवाना चाहें वे 1/- रुपय प्रति मंगवा सकते हैं। वितरण करने वालों को 50/- रु0 में सौ प्रति भेजी जायेंगी।

पता- व्यवस्थापक वेद प्रचारकमण्डल
60/13 रामजस रोड, करोलबाग,
नई दिल्ली-5

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ
पंजीकरण सं. एल. ३६०यू /एन.पी. ७६
पौष कृष्ण- ५
दिनांक. १७ दिसम्बर १९८९

दूरभाष:
२४५९९३

पशुबलि प्रथा बन्द हो।

पौड़ी गढ़वाल में पौड़ी के पास दि0- 2 दिसम्बर 89 के बुंगरखाल-देवालय में कई धार्मिक लोगों को जिसमें 300 भैंसा, 3035 बकरों की बलि दी गई और एक कटा हाथ मन्दिर में मिला है। भैंसा मारते समय भैंसा बधिक के ऊपर गिर गया जिससे उसकी टाँग टूट गई जो पौड़ी अस्पताल में भर्ती कराया गया जानवरों को मारकर बाहर फेंक दिया जिससे वातावरण दूषित हुआ आस-पास के लोगों ने पशु बलि बन्द कराने का जोरदार आन्दोलन किया।

गबरसिंह राणा,
कालीमठ केदारनाथ क्षेत्र,
जि0 चमोली, गढ़वाल।

आर्यसमाज एटा का १०४वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज एटा का 104वाँ वार्षिकोत्सव दि0- 4-5-6-7 नवम्बर-89 में बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ इसमें आर्यजगत के प्रसिद्ध विद्वान श्री-पूज्य स्वामी वेदानन्द दण्डी, श्री डा0-वागीश शर्मा आचार्य, श्री ब्रह्मदेव जी-शास्त्री, श्री नरदेव जी शास्त्री भजनोपदेशक एवं श्री कमलदेव जी भजनोपदेशक तथा आचार्य श्री गोपालदत्त शर्मा शास्त्री के बड़े सारगर्भित प्रभावशाली भाषण एवं उपदेशों को भारी भीड़ में बड़े उत्साह पूर्वक सुना गया। जनता पर वैदिक धर्म का बड़ा प्रभाव पड़ा।

अम्बाला छावनी में सत्संग

वैदिक प्रचार मण्डल अम्बाला छावनी के तत्वावधान में श्री वेदप्रकाश शर्मा आर्यनगर के गृह पर पारिवारिक सत्संग (यज्ञ, भजन, उपदेश) समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री शर्मा जी का आर्यसमाज से बहुत गहरा सम्बन्ध है यह समाज के मंत्री, कोषाध्यक्ष भी रहे। मण्डल के नव निर्मित भवन हेतु ... रु0 दान दिया। अन्य आर्य ... से निवेदन है कि वह तन, मन, धन से सहयोग करें।

वेदमित्र हापुड़ वाले
वैदिक प्रचार मण्डल,
72बी0 गोविन्दनगर अ/कैंट

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदास आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रायेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य मित्र

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

रजि॰ सं॰ २२४१/५७)) पौष कृष्ण-१२ रविवार - संवत् २०४६ वि॰, दिनांक २४ दिसम्बर १९८९ (घोषणा पत्र सं॰ ७/२८-२-२५



राष्ट्र रक्षा सर्वोपरि

ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्रं विरक्षति

राष्ट्ररक्षा में वे ही राजा अथवा राज्य प्रतिनिधि समर्थ हो सकते हैं जो तपस्वी हों ब्रह्मचारी हों और राष्ट्ररक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने वाले हों। व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र ऊँचा होता है। अतः जो राष्ट्राध्यक्ष, व्यक्ति के हित के लिए राष्ट्र की अस्मिता सुरक्षा का बलिदान नहीं करता और न राष्ट्र द्रोहियों की कोई शर्त मानता है वही सच्चा राष्ट्राध्यक्ष है।

प्रधान सम्पादक

मनमोहन तिवारी

एम॰ ए॰

प्रबन्ध सम्पादक

इन्द्रदेव पाठक

एम॰ ए॰ साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क

आजीवन सदस्य... रु॰ २५१/-

वार्षिक............रु॰ ३०/-

एक प्रति.........१.०० रु॰ मात्र

प्रकाशन का ९२वाँ वर्ष

अंक - ५१

आर्थिक विषमता समाज के हर वर्ग में है

आरक्षण की वर्तमान विधा दोषपूर्ण है

— पं॰ इन्द्रराज

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान एवं महान जनसेवी श्री पं॰ इन्द्रराज जी ने इस संवाददाता को एक भेंटवार्ता में वर्तमान आरक्षण व्यवस्था की विधा को दोषपूर्ण बताते हुए कहा कि आर्थिक विषमता समाज के हर वर्ग में विद्यमान है। यदि आरक्षण की मूल भावना इस विषमता को दूर करना है तो इसका आधार जातिगत न होकर आर्थिक ही होना चाहिए। आचार्य काका कालेलकर आयोग ने भी इसी प्रकार की सिफारिश की है।

उन्होंने कहा कि समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता के कई कारण हैं। एक हजार वर्ष की दासता तथा शताब्दियों तक भारत के सन्तों महन्तों द्वारा भाग्यवादी बने रहने की प्रेरणा ने हमें श्रम के प्रति उपेक्षाशील बना दिया। "अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम, दास मलूका कहि गये सबके दाता राम।।", "यल्लिखितं विधिना ललाट पटले तन्मार्जितुं कः क्षमः" की समाज में व्याप्त भावना इसका उदाहरण है। यह भावना वेद के आदेशों के बिल्कुल विपरीत है। वेद में स्थान स्थान पर धन और सम्पत्तियों का स्वामी बनने का निर्देश दिया गया है। हम प्रतिदिन की प्रार्थना में "**वयं स्याम पतयो रयीणाम्**" की प्रार्थना करते हैं। परन्तु यह धन समाज की सम्पत्ति है। समाज के अशक्त साहाय्येच्छुक, आर्थिक दृष्टि से कमजोर व्यक्तियों में आवश्यकता से अधिक अर्जित किए धन को वितरित करने की आज्ञा है। वेद तो यहाँ तक कहता है "**केवलाघो भवति केवलादी**" केवल स्वयं खाने वाला पाप खाता है।

आरक्षण की वर्तमान नीति ने जहाँ एक वर्ग को सन्तुष्ट किया है वहीं दूसरा वर्ग असन्तुष्ट हुआ है और वर्ग संघर्ष की भावना ने जन्म ले लिया है जिसका उदाहरण हम यत्र-तत्र प्रदर्शनों तथा हिंसा के रूप में देख रहे हैं। जो लोग पूंजीवादी व्यवस्था को आर्थिक वैषम्य के लिए दोषी ठहराते हैं उन्हें अमेरिका, जापान, जर्मनी, जैसे पूंजीवादी देशों की ओर भी देखना चाहिए कि किस प्रकार वहाँ हर वर्ग के व्यक्ति ने अपनी योग्यता और श्रम से आर्थिक स्तर को उन्नत बना लिया है। वहाँ आरक्षण जैसा कोई सवाल ही नहीं है। हमारी संस्कृति में आवश्यकता से अधिक संचित धन को दान कर देना महान पुण्य कार्य माना गया है। राजा हरिश्चन्द्र, राजा बलि, दिलीप, सम्राट हर्षवर्धन आदि अनेकों चक्रवर्ती राजाओं ने अपने कोष का सर्वस्व जनहित में बिना किसी भेदभाव के अर्पित कर दिया था और स्वयं अपने को बेचकर, अपने मांस के टुकड़े खिला-खिला कर प्रजा की सेवा की थी।

इस दोषपूर्ण आरक्षण व्यवस्था ने योग्यता के मापदण्ड को तिरोहित कर दिया है जिसका परिणाम यह है कि एक वर्ग के अयोग्य छात्र को प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में प्रवेश, परीक्षापरिणाम सरकारी नौकरियों में नियुक्ति और प्रोन्नति आदि में चार-चार बार अवसर मिल जाते हैं जब कि एक वर्ग के छात्रों को योग्य होते हुए भी प्रत्येक स्थान पर असफलता का मुँह देखना पड़ता है जिससे उसमें कुण्ठा जागृत हो जाती है और वह आजीवन, असन्तोष की आग में सुलगता रहता है। दूसरी ओर राष्ट्र भी ऐसी मेधाविनी प्रतिभाओं के योगदान से वंचित रह जाता है। अतः यह स्थिति समाज तथा राष्ट्र के लिए हितकर नहीं कही जा सकती।

श्री पं॰ जी ने प्रदेश तथा केन्द्र की नई सरकारों के प्रति अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए आशा प्रकट की है कि यह सरकारें समाज के नव निर्माण में प्रत्येक व्यक्ति की आर्थिक स्थिति तथा उसकी योग्यता को देखते हुए उन्नति का समान अवसर देंगी।

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
—राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- पौष कृष्ण-१२ संवत् २०४६ वि.
२४ दिसम्बर १९८९, दयानन्दाब्द-१६५
सृष्टि संवत् १९७२९४९०९०

ओ३म् सम्पादकीय

१९८९ उपलब्धियां और आत्मनिरीक्षण

किसी संस्था के जीवनकाल में एक वर्ष का कोई महत्व नहीं होता है। किन्तु अतीत की उपलब्धियों के परिप्रेक्ष्य में उसकी वर्तमान गति का मूल्यांकन तो किया ही जा सकता है। आर्यप्रतिनिधि सभाओं एवं शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना एक निश्चित उद्देश्य को लेकर की गई थी और वह उद्देश्य था संसार का उपकार करना अर्थात्-----।

वह आर्यसमाज का स्वर्णयुग था। हम दिन दूने रात चौगुने बढ़ रहे थे। जगह-जगह समाजों की स्थापना, उत्सवों की धूम, गली गली में सत्यार्थप्रकाश का वितरण, नये नये गुरुकुलों, कन्यागुरुकुलों, आर्यशिक्षण संस्थाओं, अनाथालयों, यज्ञशालाओं एवं डी0ए0वी0 कालेजों आदि की स्थापना, शास्त्रार्थ की दुन्दुभी, नये नये आकर्षक वैचारिक क्रान्ति से भरे हुए साहित्य का सृजन, वितरण और पठनपाठन, वाणी और लेखनी का उमड़ता हुआ प्रचार और प्रसार---- ऐसा मालूम होने लगा था मानो उस प्रभु का दिया हुआ आप्तघोष "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" अब विश्व में साकार होने ही वाला है। क्या कारण थे इसकी समीक्षा हम नहीं करना चाहते। हो सकता है, तत्कालीन आर्यसमाज की उर्वरा ने ऐसे-ऐसे महान् कर्मठ, प्रातः स्मरणीय विभूतियों को जन्म दिया हो, जिनकी कुशलता, कर्मठता और आर्य संस्कृति के प्रति अनन्य प्रेम ने उस युग की रचना कर डाली हो। परन्तु हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि वह उर्वराभूमि तो अब भी है। हमारे शाश्वत सिद्धान्त चले कहीं गये हैं वे तो अजर हैं अमर हैं नित्य हैं केवल हमीं विश्रृंखलित हो गये हैं। आज हमने प्रचार तो इतना कर डाला है कि सारा मनीषी मानवसमाज हमारे अलावा और कहीं सुधार का, आध्यात्मिक आधिभौतिक शान्ति का बिन्दु नहीं खोज पा रहा है। हमारे दिए हुए कलेवर को पहिनकर वह बहुत कुछ चमकने लगा है परन्तु हमारी चमक जो दूसरों को चमका रही है, हमसे क्यों धीरे धीरे विलग होती जा रही है- प्रश्न तो यह है?।

और उत्तर भी बड़ा साफ है। हम अपनी शक्ति को भूल गये हैं, चाहे संगठन की हो, प्रचार की हो, धर्म के लिए मरमिटने की हो, हम आत्मविस्मृति की गहरी निद्रा में सो गये हैं। कोई जगाने वाला चाहिए- यह कहकर जगाए-"का चुपि साधरहा बलवाना"। फिर देखिए- हनुमान ने क्या कर दिखाया--- हम तो उससे भी बलिष्ठ हैं, ब्रह्मचारी हैं, संगठित हैं, अपने आराध्य के लिए जान हथेली पर रख कर चलने वाले हैं। और यह जगाने का काम प्रतिनिधिसभाओं को करना है, इन्हें आह्वान देना है, रणभेरी बजानी है- आप देखेंगे रणभेरी बजी नहीं कि सब दीवाने वैदिक धर्म के, उठकर इनके पीछे-पीछे कटिबद्ध होकर दौड़ने लगेंगे। मगर यह रणभेरी ऐसे नहीं बजेगी- यह जनतन्त्र का युग है, इस शिवधनुष को अकेले राम नहीं तोड़ पायेगा चाहे वह सभा का प्रधान हो या मन्त्री, यह बड़ा बोझिल धनुष है "सारे विश्व को आर्य बनाना आसान नहीं है। इसे उठाने के लिए सौ सौ नहीं नहीं हज़ार हज़ार हाथ चाहिए। इसलिए आपका, सहकर्मियों का सहयोग चाहिए सहयोग जो नितान्त नितान्त नितान्त अपेक्षित है।

पिछले वर्ष सभा का चुनाव सम्पन्न होने के कुछ समय बाद ही हमें पता चला था कि लखनऊ शहर में ऐशबाग के अम्बेडकर नगर में दो-सौ हरिजन परिवार शिवरात्रि को धर्मपरिवर्तन करने वाले हैं। अरब देशों से आया हुआ पेट्रो डालर उन्हें मुस्लिम बनाने के लिए बेतहाशा तरीके से झोंक दिया गया है। हम तुरन्त जिला सभा लखनऊ का सहयोग लेकर वहाँ पहुँचे और साम दाम दण्डभेद की नीति अपनाई। हरिजन परिवारों को धर्म परिवर्तन की ओर प्रेरित करने वाले मुख्य सूत्रधार श्री नन्हकऊ हरिद्रोही तथा हरिजन भाइयों को शान्त किया। जिलाधिकारी तथा तत्कालीन नगर विकासमन्त्री श्री-बलदेव सिंह आर्य से मिलकर उनकी कतिपय स्थानीय समस्याओं का निराकरण कराया और आज वे आपके अंग हैं आर्यसमाज के भक्त हैं। आर्यसमाज के सिद्धान्तों ने उन्हें प्रभावित किया है। धर्मान्तरण रुक गया क्योंकि हम भी सतर्क थे जिलासभा भी सतर्क थी- दोनों एकाकार होकर जुट गये।

हमने सभा भवन परिसर में विशाल श्रद्धानन्द अतिथि भवन के निर्माण का महान कार्य प्रारम्भ कर दिया। यह कितना दुष्कर और व्ययसाध्य कार्य है इसकी अनुभूति केवल उसी को हो सकती है जो इस कार्य को करता है। इसके लिए अपेक्षित सहयोग तथा धन की आवश्यकता है। हमने देखा अयोध्या में राममन्दिर के निर्माण के लिए लाखों रुपये सिर्फ चढ़ावे में ही आ गये। ईंटें शीर्षों पर चढ़ चढ़कर विश्व के कोने-कोने से पहुँच गईं। क्या श्रद्धानन्द अतिथि शाला हमारी पुण्यस्थली नहीं है। क्या इस कार्य में धन देना अधार्मिक कार्य है यदि नहीं, तो क्यों नहीं धनाभाव की पूर्ति अब तक नहीं की गई। हमें अनेकों दानी महानुभावों तथा संस्थाओं से आश्वासन प्राप्त हो रहे हैं। हमें विश्वास है हम इस विशालभवन का निर्माण जन सहयोग से अतिशीघ्र करने में सफल हो सकेंगे।

हमने गंगा के पावन तट बृजघाट पर वैदिक धर्म प्रचारक महाविद्यालय खोला। निवास भोजन पठन पाठन आदि की सब व्यवस्था निःशुल्क/आर्यजनता क्यों नहीं अपने बच्चों को भेजती। क्या उपदेशक प्रचारक बनाना धार्मिक कार्य नहीं है?। यह उपदेशक विद्यालय अभी प्रारम्भिक अवस्था में है हम इसे प्रगतिशील बनाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

हमने आर्यमित्र को नई साजसज्जा और उन्नत सामग्री से भरे हुए वैदिक विचारों की वाहिनी बनाकर घर-घर पहुँचाने का यत्न किया है, इसे हर परिवार में पहुँचाना हमारा आपका कर्तव्य है। इस पत्र की देश विदेश में प्रशंसा हो रही है। कई व्यक्तियों संस्थाओं ने इसके अधिक से अधिक ग्राहक बनाने का अभियान चला रखा है और हमें आशातीत सफलता मिल रही है।

पूरे प्रदेश में समाज के वार्षिकोत्सवों को नया रूप दिए जाने की योजना है। यद्यपि प्रचार कार्य सम्मेलनों आदि के द्वारा पुराने ढंग पर उत्साहपूर्वक चल रहा है परन्तु समाज के युवा, निर्बलवर्ग, तथा हरिजन भाइयों को सामूहिक रूप में इस ओर आकर्षित करने के कार्यक्रम विचाराधीन हैं।

इन कुछेक उपलब्धियों के संक्षिप्त वर्णन के साथ हम आपके इस मंगलमय मिलन पर सुख की, समृद्धि की, एकता की, संगठन की, कदम से कदम मिलाकर, चलने की आशा करते हैं। हमारा अतीत महान था भविष्य भी महान है यदि वर्तमान को गतिशील बना लें-----

नव वर्ष की शुभकामनाओं सहित

आपका "मित्र"

आवश्यक निवेदन

समस्त जिला आर्य उपसभाओं की सेवा में निवेदन है कि दिनांक- 24, 25 दिसम्बर 1989 रविवार, सोमवार आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का वार्षिक निर्वाचन है।

कृपया अपने जिले के प्रतिनिधियों को साथ लेकर 24 दिसम्बर 1989 को आप अवश्य पधारने की कृपा करें, एवं सभा को अपना अमूल्य योगदान दे कर कृतार्थ करें।

निर्वाचन स्थल- डी0ए0वी0 कालेज - लखनऊ

इन्द्रराज
प्रधान

मनमोहन तिवारी
मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा
उत्तर प्रदेश
5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ।

कितना घातक हो सकता है, द्वितीय राजभाषा का प्रावधान !

—सन्तोष "कण्व"

"राज्य पुनर्गठन आयोग- 1956" ने राजभाषा के सम्बन्ध में एक भयंकर अनुशंसा की है-

"जिस राज्य में 70 प्रतिशत से अधिक एक भाषाई समूह हो, उस राज्य को एक भाषी तथा उसके अतिरिक्त 30 प्रतिशत से अधिक बोलने वाला कोई अन्य भाषा समूह हो, उस राज्य को द्विभाषी घोषित किया जा सकता है।"

यह भाषा समस्या पर "नेहरू-फार्मूला" का ही अनुमोदन है। आयोग आगे कहता है-

"जिन जिलों में राज्य की घोषित भाषा के अतिरिक्त 70 प्रतिशत से अधिक बोलने वाला कोई अन्य भाषा समूह हो तो उस जिला विशेष में सरकारी काम काज के लिए अतिरिक्त राजभाषा घोषित किया जा सकता है।"

सन 1975 में इन्द्र कुमार गुजराल की अध्यक्षता में "उर्दू प्रोन्नति समिति" (कमेटी फार प्रमोशन आफ उर्दू) गठित की गई थी। उसने भी आयोग की उपर्युक्त अनुशंसा को दोहरा दिया था।

उत्तर प्रदेश और बिहार की झूठी जनगणना को ही लें तो उर्दू भाषियों की संख्या 30 प्रतिशत से बहुत कम है। जनगणना को झूठा मैं इस आधार पर घोषित करता हूं कि मुसलमानों पर अपनी भाषा उर्दू लिखाने के लिए दबाव डाला गया है। ये दोनों राज्य हिन्दी भाषी हैं। यहाँ उर्दू भाषी कहां से आ गए?

कुछ लोग इस आधार पर भी उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का विरोध कर रहे हैं कि इसके लिए अपेक्षित 30 प्रतिशत से अधिक का प्रतिबन्ध पूरा नहीं होता। परन्तु मैं पूछता हूं कि यदि इसी प्रकार खींचतान करके 30 प्रतिशत से अधिक उर्दू भाषी बना दिए जाएं तो क्या उर्दू को दूसरी राजभाषा बना दिया जाना चाहिए?

आज मुसलमान येन-केन-प्रकारेण अपनी संख्या बढ़ाने पर तुला हुआ है। एक-एक परिवार में एक-एक दर्जन से अधिक बच्चे पैदा किए जा रहे हैं। बच्चों की इस हवस ने औरतों को तपेदिक का मरीज बनाकर रख दिया है। बेचारी पुरुषों के अत्याचार सह रही हैं। इस्लाम की सेवा के नाम पर उन्हें सूली चढ़ाया जा रहा है। आबादी बढ़ाई जा रही है। यह सब योजनाबद्ध है। इस्लामीकरण का अभियान भी तीव्र कर दिया गया है। यदि यही मानसिकता रही तो उनकी संख्या 30 प्रतिशत से अधिक भी हो सकती है। उस समय संख्या के आधार पर उर्दू को दूसरी भाषा बनाए जाने का विरोध करने वालों के पास क्या तर्क बचेगा?

जनसंख्या बढ़ाने तथा अपनी दादागीरी चलाने का एक निकृष्टतम ढंग और चल निकला है। एक सम्प्रदाय के लोग दूसरे सम्प्रदाय के लोगों की सामूहिक हत्याएं क्रमशः करते हैं। बच्चों और युवतियों का अपहरण करते हैं। इस प्रकार एक गुट की संख्या तो कम होती ही है, साथ ही कुछ लोग आतंकित होकर वहां से दूर चले जाते हैं। कुछ अपना गुट छोड़कर हत्यारों के गुट में शामिल हो जाते हैं। उन्हीं के बाह्य चिन्ह धारण कर जैसे-तैसे अपनी जान बचाते हैं। हमारा देश इस सबका भुक्त भोगी रहा है।

जनसंख्या असन्तुलन ने समय-समय पर इस देश में अपने करतब दिखाए हैं। सन 1871 में बंगाल में 170 लाख हिन्दू और 65 लाख मुसलमान थे। परन्तु सन् 1901 में मुसलमानों की संख्या 200 लाख और हिन्दुओं की 180 लाख हो गई। तीस वर्ष में अनुपात बदला और अगले पचास वर्षों में बंगाल का नक्शा बदल गया।

सिन्ध हिन्दू बहुल प्रान्त था। वहाँ की भाषा हिन्दी थी। नाम उसका सिन्धी था। हिन्दी की वह भी एक शैली थी। पाकिस्तान में शामिल करने के लिए उसे मुस्लिम बहुल बनाया गया। इसके लिए हिन्दू युवतियों का अपहरण कर उनसे बलात्कार किया गया। उन्हें जबरन मुसलमान बना कर घरों में कैद कर लिया गया। जिन्होंने प्रतिरोध किया उन्हें मौत मिली और स्वाभिमानी औरतों ने मौका पाकर आत्महत्या कर ली। शेष ने हालात से समझौता कर लिया। बच्चों को मुसलमान बनाकर दीन का काम किया गया। बचे-खुचे लोग भाग गए। कुछ रोते-बिलखते भारत आ गए तो कुछ मार्ग में ही मर-खप गए।

यों तो पूरे पंजाब और बंगाल की भी यही कहानी है। आज भी बंगला देश से चकमा बौद्धों को मार-मार कर भगाया जा रहा है। उनकी युवतियों को हर प्रकार से प्रताड़ित किया जा रहा है। दर्दनाक स्थिति है।

मैं सिन्ध की चर्चा कर रहा था। वहां के हिन्दुओं को समाप्त करने के लिए जी0एम0 सय्यद के नेतृत्व में एक विचित्र आन्दोलन चला था "Buy Muslims" केवल मुसलमानों से ही खरीदो, हिन्दुओं से नहीं। यह आर्थिक मोर्चे की लड़ाई थी। जनसंख्या बढ़ाने का एक यह भी साधन था। सिन्ध की अहरार पार्टी के नेता चौ0 अफजल-हक अपनी पुस्तक "Pakistan and Untouchability" में लिखते हैं:-

"Whenever any, and commercial agitation is started, it always follows or ends inslogans of defensive bycott of the Hindu-Shops. This slogan touches the heart of the people more than any thing else."

वे आगे लिखते हैं:-

"This defensive bycott of Hindu-Shops, therefore, is essentially a mass movement with the awakening of Muslim masses, the bycott movement will gain strength and volume."

(पृष्ठ 54-55)

"हिन्दुओं की दुकानों से कोई सामान न खरीदो", सिन्ध में छेड़े गए आर्थिक युद्ध का यह वह ब्रह्मास्त्र था जिससे हिन्दुओं के पैर उखड़ गए। मुसलमान निरन्तर शक्तिशाली होते गए। हालात तेजी से बदलने लगे। हिन्दुओं का आर्थिक बहिष्कार मुसलमानों का स्वभाव बन गया। अफजल हक अपने सम्बन्ध में लिखते हैं:-

It has become my habit not to buy anything from a Hindu-Shop.

यह वह महत्वपूर्ण अभियान था जिसने सिन्ध के हिन्दुओं की कमर तोड़ दी। मुसलमानों ने चतुर्दिक प्रहारकर अपनी संख्या बढ़ा ली। सिन्धी की जगह उर्दू चला ली। सिन्ध को पाकिस्तान में मिला लिया।

संख्या बढ़ाने के ये कुछ ऐसे साधन हैं, जिनका सफल प्रयोग भारत में हो चुका है। विस्तार भय से मैं अन्य साधनों का उल्लेख नहीं करता। 30 प्रतिशत की बात उठाकर उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने को असंवैधानिक घोषित करने वाले मोर्चे कि उनकी यह दलील कब तक चल सकती है।

लगता है कि कहीं न कहीं हमारी शिक्षा में दोष है। उसकी दिशा उलट गई है। मानव को मनुष्यत्व, देवत्व और ऋषित्व की ओर ले जाने के स्थान पर उसे क्रमशः पशु, पिशाच और राक्षस बनाया जा रहा है। यह अपने आप में अत्यन्त शोचनीय स्थिति है। सम्पूर्ण मनुष्य जाति आत्महत्या कर रही है। इस दिशा को उलटना होगा।

सवाल हिन्दू और मुसलमान का नहीं है। आज का महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि संकीर्णता व असहिष्णुता को पनपने दिया जाए या नहीं? अविद्या और पाखण्ड के झण्डे गढ़ने चाहिए या उखड़ने चाहिए? सरकार एवं बुद्धिजीवियों को साम्प्रदायिक शक्तियों से समझौते करने चाहिए या नहीं करने चाहिए?

आज तक हमने संकीर्णता और असहिष्णुता को पनपाया है। अविद्या व पाखण्ड को बढ़ावा दिया है। साम्प्रदायिक शक्तियों से समझौते किए हैं। परिणाम सामने है। यदि यही परम्परा जारी रही तो आने वाले दिन और भी भयावह होंगे।

इन सब को प्रोत्साहन देने से न हिन्दू का कल्याण होगा, न मुसलमान का। न सिख का भला होगा, न ईसाई का। सम्पूर्ण मानवता त्राहि-त्राहि करेगी। प्राणीमात्र आर्तनाद करेगा। अतः होश में रहने की आवश्यकता है।

महर्षिदयानन्द और आर्यसमाज ने संकीर्णता, असहिष्णुता, अविद्या, पाखण्ड और सम्प्रदायवाद के विरुद्ध सदैव संघर्ष किया है। हमारा संघर्ष अभी भी जारी है। आगे भी जारी रहेगा। अपने इस महाभियान में सर्वथा एकाकी रहते हुए, आर्यसमाज ने मात्र अपमान और कष्ट ही नहीं सहे हैं, बलिदानों की एक श्रृंखला भी प्रारम्भ की, जिसकी प्रथम कड़ी उसके संस्थापक महर्षि दयानन्द-सरस्वती थे।

क्रमशः

स्वामी श्रद्धानन्द के धर्मोपदेश

• डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए०,
रिसर्च स्कालर, आ० स०, गोरखपुर

स्वामी श्रद्धानन्द के उपदेश उनके हृदय से निकलते थे। उनके उपदेशों का पालन कर हम श्रद्धा और विश्वास के साथ एक अद्भुत आनन्द अनुभव कर सकते हैं। श्रद्धा दूसरों के व्यवहार के लिए और विश्वास अपने साथ व्यवहार के लिए या आत्म निष्ठ बनने के लिए आवश्यक है। दूसरों के साथ व्यवहार में श्रद्धा का अर्थ सरसता है। अपने प्रति व्यवहार में श्रद्धा का अर्थ आग्नेयधर्म का अर्थ रूक्षता है। व्यक्ति को अपने प्रति रूक्ष, शुष्क और नियन्त्रण के भाव से बरतना आवश्यक है। जो अपने प्रति सरसता और दूसरों के प्रति रूक्षता से बरतता है वह जीवन के व्यवहार से अनभिज्ञ है। जब तक अपना आग्नेय केन्द्र जागृत नहीं होता अर्थात् जब तक हम अपने प्रति रूक्ष नहीं बनते तब तक दूसरों के प्रति सरस नहीं हो सकते क्यों कि रूक्षता ही सरसता की आवश्यकता को उत्पन्न करती है। श्री श्रद्धा इसी सरसता की सूचिका है और विश्वास अपने साथ व्यवहार के लिए है। स्वामी श्रद्धानन्द इसी प्रकार की दोनों भावनाओं से समन्वित व्यक्ति थे, उनके धर्मोपदेश सुनिए--

उद्‌बोधन प्रार्थना

जगत पिता तुम्हारे अन्दर विद्यमान है। उनकी अनन्त शक्ति अपने अनन्तबलों से तुम्हारी आत्मा का प्रकाश देने को तैयार है। उसकी प्राप्ति के साधन तुम्हारे अन्दर ही अवस्थित हैं। फिर क्यों अज्ञात सागर में डूबे हुए हम सब इधर उधर हाथ पैर मार रहे हैं। उठो। चेतो। अमूल्य समय व्यर्थ जा रहा है। जो संसार में भ्रष्टभाव फैलाने सच्चाई का राज्य लाने और प्राणी मात्र के उपकार को दर्शाने में लगाना चाहिए था। वह हम सब देषाग्नि के भड़काने और पाप तथा दुराचार के फैलाने में लगा रहे हैं। दयामय प्रभो। आप हम मूर्खों को अपने ब्रह्मधाम का सीधा मार्ग दिखाओ ताकि हम तुम्हारी शरण को ग्रहण करके शान्तचित्त हो सकें। {धर्मोपदेश पृ० 56}

आर्य और पवित्र जीवन

जो पुराने संस्कारों और लौकि कामनाओं के वशीभूत होकर अपने आत्मा और धर्म की कुछ भी कीमत नहीं समझते, उनको उचित है कि वे अपने आपको धार्मिक और आर्य कहना छोड़ दें। जो मनुष्य अपने को संसार की बेहूदगियों से परे नहीं रख सकते, जो मित्र को पाप करते देखकर उसे रोकना तो दूर रहा उसके पाप में मिल जाते हैं, उन्हें किसी धार्मिक संस्था का नेता होने का अधिकार नहीं। {धर्मोपदेश}

क्या आर्यसमाज के वर्तमान नेता, देश के लीडर स्वामी श्रद्धानन्द के इस आदेश पर ध्यान देकर राष्ट्र एवं समाज निर्माण में सहयोग देंगे?

पाप का परित्याग

पाठकगण। आओ एक पल शुद्ध हृदय से विचार करें क्या चलते फिरते, उठते बैठते, हमारे अन्दर दुष्ट विचार नहीं उठते? जब प्रसन्नमुख और उससे प्रकाशयुक्तता मालूम होता है उस समय हृदय कैसा मलिन और मन कैसा कलुषित होता है। क्या हम समझते हैं कि यह सब मन की कलुषिता एवं मालनता हमने प्रभु से छिपा ली है। कौन सा विचार है जो उसके सम्मुख शीशे की तरह स्पष्ट नहीं। फिर बाह्य आडम्बरों से वास्तव में छुटकारा कब हो सकता है। तुम समझते हो कि एक बार पाप का विचार करके यदि किसी प्रकार से बच गए तो बस छुटकारा हो गया। परन्तु, तुम क्या नहीं जानते कि तुम्हारी स्मरण शक्ति तुम्हारे साथ है। वह कदाचित् कभी दम नहीं लेने देगी। वह उस पाप से डूबे हुए विचार के भयानक चित्र को हर समय तुम्हारे सम्मुख रखेगी। कहीं जाओ, कहीं ठहरो, उठते बैठते जागते और सोते हुए भी स्वप्न में वही चित्र तुम्हारे सामने रहेगा। तुम्हारे चित्त को वह चित्र तुम्हारे जीवन को खाता जाएगा। इसलिए बन्धुवर्ग, आओ। सम्भलने का समय है। जहां न्यायकारी परमात्मा हर समय हमारे कुकर्मों के लिए हमें दण्ड देने के लिए तैयार रहते है वहां सच्चा पश्चाताप करके उल्टे मार्ग को छोड़ने की इच्छा पर हमारी उस जलता हुई आग से मातृवात् रक्षा भी करते हैं।
{धर्मोपदेश पृष्ठ 44}

इस दैवीय विश्वास का हम पापों के परित्याग द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द के मार्ग का अनुसरण कर उन्हें श्रद्धांजलि समर्पित करने का प्रयत्न करें।

आत्मिक स्वतन्त्रता

न्यायकारी, सर्वशक्तिमान्, सर्वनियन्ता परमेश्वर की शरण लो। यदि हम देहरूपी कारागार से स्वतन्त्र होना चाहता हो तो उसी की स्तुति करो। उसी से बल के लिए प्रार्थना करो। अपने कर्मों को शुद्ध करते हुए और उसकी एक एक आज्ञा पालते हुए शनैः शनैः उसके समीप होते जाओ। अर्थात् उसकी उपासना करो ताकि वे तुम्हारे समस्त दुःखों के बन्धनों को काटकर तुम्हें प्रत्येक बन्धन से स्वतन्त्र करके अपने परमधाम का अधिकारी बना देवें। {धर्मोपदेश-पृष्ठ 34}

आत्म निरीक्षण और ईश्वर विश्वास

प्रिय पाठक गण। अपने हृदयों में प्रवेश कर अपनी अवस्था पर विचार करो। क्या सचमुच हम उस परमपुरुष की आज्ञा पर आचरण करके ब्रह्मधाम की ओर चल रहे हैं। यदि नहीं तो विलम्ब क्या? जीवन का भरोसा किसको है? एक पल हम अपना नहीं कह सकते। इसलिए आओ इसी समय जब कि हमारे हृदयों पर चोट लगी है जड़ संसार से मुँह मोड़कर ब्रह्मधाम की ओर चलना आरम्भ करें। {धर्मोपदेश-पृष्ठ 77}

स्वाध्याय कीजिए

अग्निहोत्र इकट्ठे करने के पश्चात् सब जुदे जुदे बैठ कर स्वाध्याय में लग जायें। इसमें वृद्ध, बाल, नर-नारी का कोई भेद नहीं। बूढ़े, जवान, बाल, स्त्री पुरुष सबको ही स्वाध्याय नित्यप्रति करना चाहिए।--- आर्य गृह में कोई भी स्त्री-पुरुष ऐसा नहीं होना चाहिए जो नित्य स्वाध्याय न कर ले। इससे धर्म में तुम्हारी श्रद्धा बढ़ेगी। आपत्काल में भी धैर्य स्थिर रखने का अभ्यास करना पड़ेगा।
{आर्यों के नित्यकर्म पृष्ठ 2।}

संकल्प की पवित्रता

शरीर कुछ नहीं। कर्मेन्द्रियां भी कुछ अधिक सत्ता नहीं रखतीं, केवल संकल्प प्रबल है। इस संकल्प को शुद्ध रखना और जिस मन के अन्दर वह संकल्प उत्पन्न होता है उसको पवित्र करना यही मानव जीवन का उद्देश्य है। यही कारण है कि परमात्मा ने अपने वैदिक ज्ञान द्वारा हम जीवों को मन की शुद्धि के लिए बड़ी प्रबल प्रेरणा की है। सारी सृष्टि की कला इस मन के चारों ओर घूम रही है। वेद और शास्त्रों का ज्ञान, मानसिक और आत्मिक यज्ञों की क्रिया का अभिप्राय यह है कि ब्रह्माण्ड का प्रबन्ध इसी मन के चारों ओर चक्कर काट रहा है। इसलिए पाठक गण। बड़े शुद्धभाव और पूर्ण पुरुषार्थ से इस मन के संकल्प शुद्ध करने का यत्न करो जिससे कि तुम उत्तम योनियों को प्राप्त होते हुए अन्त में मुक्तिधाम तक पहुँच सको। {धर्मोपदेश}

श्रद्धानन्द स्वामी के इस उपदेश को जीवन में धारण कर अपने को उच्च बनाना यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ◘

तथ्यान्वेषण की आवश्यकता

स्वामी श्रद्धानन्द महाराज के बलिदान का कारण

— आचार्य धर्मविज्ञानमुनि जी
आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर (हरिद्वार)

गतांक से आगे....

आर्यसमाज में प्रवेश करते ही स्वामी जी ने छुआछूत का विरोध आरम्भ कर दिया था। उस समय अछूत कहलाने वालों का नाम "दलित वर्ग" रखा गया जिसे 1921 में महात्मा गाँधी ने "हरिजन" नाम दिया। इसलिए "जात-पात -तोड़क मण्डल" की स्थापना बहुत पहले की और अपनी लड़की अमृतकला का विवाह, भिन्न जाति वाले डा0 सुखदेव से किया।

कोकोनाडा कांग्रेस के अध्यक्षपद से भाषण में मोहम्मद अली ने अछूतों को लावारिस कहा। उन 6 1/2करोड़ अछूतों को इसाइयों के साथ 1/2-1/2 बांट लेने की योजना बनाई। तब स्वामीजी ने कांग्रेस छोड़ दी और साधु समाज तथा हिन्दू महासभा में प्रवेश किया। परन्तु उनकी मान्यताओं से मेल न खाया तो आगरा में हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की। साथ ही दलितोद्धार सभा का कार्य भी तेज कर दिया। कांग्रेस ने मोपलाकाण्ड की निन्दा नहीं की तो स्वामी जी चमके। फिर मलकानों की शुद्धि से मुसलमान चपके। दलितों को समाज में सम्मान मिले, अ तः उनका यज्ञोपवीत संस्कार आरम्भ करा दिए। उनकी आर्थिक स्थिति सुधारने के भी अनेकों प्रयत्न किए। 1917 से 1919 तक, कांग्रेस में आने के पूर्व उन्होंने दलितोद्धार का कार्य प्रबल वेग एवं सम्पूर्ण शक्ति से किया। यही कमजोर वर्ग ही दबाव या लालच में मुसलमान बनता था। फिर दयनीय दशा यह थी कि एकबार छूलेने मात्र से भी धर्मभ्रष्ट मान लिया जाता था। और उसे पुनः हिन्दू समाज ग्रहण नहीं करता था। स्वामी जी ने इसे अपने जीवन के तीन मुख्य कार्यों में से एक माना हुआ था। सन् 1894 में पं0 लेखराम इसी कार्य पूर्ति में बलिदान हुए थे। सन् 1897 में सद्धर्म "प्रचारक" अपने पत्र में स्वामी जी ने चार पृष्ठ इसी विषय के लिए बढ़ा दिए थे।

§4§ नारी शिक्षा- स्वामी जी ने आर्यसमाज में प्रवेश 1886 में किया। उसके साथ ही नारी शिक्षा का प्रचार किया। श्री देवराज ने, पं0 मुंशीराम की प्रेरणा से जालन्धर में पहली कन्या पाठशाला खोली। फिर उसके बाद तो प्रत्येक आर्यसमाज में कन्या पाठ शालाएं खुल गईं।

§5§ गुरुकुल शिक्षा प्रणाली- गुरुकुलखोलन के लिए स्वामीजी के मन की अवस्था को समझने के लिए निम्न घटना पर ध्यान देना आवश्यक है। जब दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल खुला तो स्वामी जी ने व पण्डित गुरुदत्त जी ने निम्न उद्देश्य बताए थे। वेद एवं शास्त्रों का अध्यापन एवं अनुसन्धान होगा। उपदेशकों की आवश्यकता पूरी होगी। अतः संस्कृत शिक्षा का ऐसा पाठ्यक्रम रखा जायगा कि छात्र वेदों के विद्वान् बनेंगे। परन्तु कालेज सोसाइटी इसके पक्ष में न थी। अतः इस प्रकार के वेद-विद्वान्, शोधकर्ता, उपदेशक, जो ब्रह्मचारी हों। और देश, जाति और धर्म पर समर्पित हों। तैयार करने के उद्देश्य से सन् 1902 में गंगा के किनारे, जिला बिजनौर के ग्राम कांगड़ी में गुरुकुल की स्थापना की गई।

इससे पूर्व इस योजना के लिए 30,000/- रु0 एकत्रित करने निकले और डेढ़ मास में 40,000/-रु0 एकत्र कर लाए। सबसे पहले अपने ही पुत्रों को इसमें दाखिल किया। इसके लिए अपना धन, अपनी जायदाद, कोठी और अपनी आजीविका का अन्तिम साधन प्रेस भी गुरुकुल को दे दिया।

यह कार्य मेकाले शिक्षा पद्धति के विरुद्ध था। ब्रिटिश सरकार हिन्दुस्तानी फौजियों के द्वारा राज्य कर रही थी। उन्हें अपने भक्त नागरिक भी चाहिए थे। ब्रिटिश सरकार ने ऐसी योजनाएं बनाई कि जन्म से भारतीय जन, आचरण से, मन और बुद्धि से भारतविरोधी एवं अंग्रेज भक्त हों। इस घातक योजना की नाशक थी यह "गुरुकुल-शिक्षा-पद्धति"। कारण कि इसमें विद्या एवं शुद्ध आचरण की शिक्षा प्राप्त कर बालक कपिल, कणाद, व्यास, पतंजलि और पाणिनी सदृश जहां विद्वान् बनेगा, वहां अपनी सभ्यता, संस्कृति, साहित्य, कला पर अभिमान से सिर ऊँचा कर अंग्रेजों में हीनताओं को बताकर भारत को स्वतन्त्र करा सकेगा।

गुरुकुल के जन्मकाल से ही यह संस्था अंग्रेजों की कोपभाजन रही। निरन्तर जासूसों की गतिविधियों का केन्द्र रही। यहां तक कि भारत के गर्वनर सर जेम्सफोर्ड और इग्लैंड के भावी प्रधानमंत्री लार्ड रेम्जे मैक्डानल्ड भी गुरुकुल में उपस्थित हुए। उनका भरपूर स्वागत हुआ। जब नहीं रहा गया, तो पूछ ही बैठे- " सुना है कि गुरुकुल में बनते हैं।" स्वामी जी- "जी हाँ।" रैम्जे- "क्या मैं देख सकता हूँ? स्वामी जी- "अवश्य।"

थोड़ी ही देर में 10 ब्रह्मचारी, नंगे सिर, नंगे पैर, खद्दर के श्वेत साफ वस्त्र पहिने, चमकते चेहरे वाले, पुष्ट शरीर वाले सामने खड़े थे। लार्ड-महोदय, स्वामी जी मुस्कुराए।

भारत का वायसराय समझ गया कि ये, वे बम्ब नहीं जो एक बार धमाका करके निर्वीर्य हो जाते हैं। ये प्रतिदिन न जाने कितने धमाके करेंगे? तब क्या ब्रिटिश सरकार भारत में रह पाएगी?

गुरुकुल कांगड़ी शिक्षा पद्धति की निम्न विशेषताएं थीं:-

§1§ गुरु और शिष्य का निरन्तर परस्पर जिसमें गुरु, शिष्य की छोटी- से छोटी कमजोरी को दूर करके उसका सर्वांगीण विकास सम्भव हो।
§2§ हिन्दी, संस्कृत साहित्य वेद, शास्त्र एवं उपनिषदों का अध्ययन।
§3§ भौतिकी; रसायन, आयुर्विज्ञान आदि का हिन्दी माध्यम से शिक्षण।
§4§ भारतीय, समाज, संस्कृति एवं राजनीति सम्बन्धी सम्पूर्ण तथ्यों के इतिहास का पुनर्लेखन।
§5§ शिल्प शिक्षण, आदि।

§6§ देश को गौरवप्रदान करने वाले, उन्नत करने वाले और स्वतन्त्र कराने वाले कार्यों की संक्षेप में निम्न प्रकार से. गणना की जा सकती है।

§क§ आर्यसमाज को राजद्रोही मान कर किए गए अत्याचारों का निवारण, अपने , तन, मन और समाचार- पत्रों द्वारा:-

1- झांसी आर्यसमाज के उपदेशक श्री दौलतराम पर चलाया गया मुकदमा।
2- 1909 में पटियाला समाज से 84 आर्यों का पटियाला से निष्कासन।
3- 1912 में जोधपुर आर्यसमाज का झण्डा पुलिस ने उतारा।
4- 1918 में धौलपुर समाज मन्दिर की दिवार गिरने पर, कब्जा किये जाने पर सत्याग्रह करना।

§ख§ हिन्दी भाषा का प्रचार-

1- गुरुकुल कांगड़ी में सन् 1902 से शिक्षा का माध्यम बनाना।
2- 1907 में अपना अखबार "सद्धर्म-प्रचारक" की भाषा उर्दू हटाकर हिन्दी करना।
3- 1913 में आर्य कुमार का भाषण।
4- 1919 में अमृतसर में कांग्रेस-अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष का भाषण हिन्दी में दिया।

§ग§ अन्य कार्य-

1- सन् 1918 में गढ़वाल में दुर्भिक्ष पड़ा। सरकार ने इसे प्रसारित होने से रोका। पर स्वामी जी को जैसे ही पता चला, सहायता पहुँचानी आरम्भ कर दी।
2- 1921 में मोपलाकाण्ड पर चिन्ता एवं सहायता।
3- 1922 में "गुरु का बाग" सिखों के आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया तथा 16 मास जेल में रहे।
4- 1922 में मलकानों की शुद्धि।
5- 1928 में मद्रास का दौरा किया। हिन्दू संगठन अर्थात् दलितोद्धार तथा शुद्धि आन्दोलन का प्रचार किया।
6- समाचार पत्रों- उर्दू में तेज, हिन्दी में विजय और अर्जुन, तथा अंग्रेजी में लिबरेटर का प्रकाशन कर अपने उद्देश्यों का प्रसार-प्रचार।

ये समस्त उपरिलिखित कार्य भारत को स्वतन्त्र कराने और अंग्रेजी राज्य को ध्वस्त करने के महत्वपूर्ण कार्य थे, जो अनायास अंग्रेजों को नाराज करने वाले थे। अंग्रेज बड़ा समझदार है। वह अपने ऊपर

— शेष पृष्ठ ८ पर

देही और देह

श्री प्रियव्रतशास्त्री साहित्यरत्न
एम.ए.
साधना

संसार परिवर्तनशील है। मानव देह भी परिवर्तनशील है। इस परिवर्तनशीलता का वर्णन गीता के द्वितीय अध्याय के 22वें श्लोक में बहुत सुन्दरता से किया गया है। जिसमें स्पष्टतः देही और देह अथवा आत्मा व शरीर का उल्लेख है:-

"वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानिगृह्णाति नरोऽपराणि
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि
संयाति नवानि देही।।

जिस प्रकार फटे पुराने वस्त्र उतार कर मनुष्य दूसरे नये वस्त्र धारण कर लेता है उसही प्रकार देही {जीवात्मा} पुराने शरीर छोड़कर नये दूसरे धारण कर लेता है।

इस श्लोक में देही {जीवात्मा} नित्य है तथा शरीर अनित्य है इस बात को स्पष्ट कर दिया है। वेद में भी "भसमान्तं शरीरम्" अर्थात् यह शरीर भस्म होने वाला है कहकर शरीर की अनित्यता सिद्ध कर दी है। पुनरपि जीवित मनुष्य प्रायः सारे संसाधन शरीर के लिये ही करते हैं। यक्ष ने युधिष्ठिर से प्रश्न किया "किमाश्चर्यम्" युधिष्ठिर ने उत्तर दियाः- "अहरहः मनुष्याः
यान्ति यम मन्दिरम्"
अन्ये स्थावरत्वमिच्छन्ति
किमाश्चर्यमतः परम्"।।

मनुष्य नित्य मृत्यु को प्राप्त होते हैं, परन्तु शेष स्वयं को सदा स्थिर रहने वाले समझते हैं इससे बड़ा आश्चर्य क्या हो सकता है। योगशास्त्र में पाँच प्रकार के क्लेशों का वर्णन है "अविद्याऽस्मिता रागद्वेषाभिनिवेशाः पंच क्लेशाः "अविद्या अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश ये पांच प्रकार के क्लेश हैं। इनमें दूसरा क्लेश अस्मिता है जिसका अभिप्राय है, बुद्धि को आत्मा से भिन्न न समझना। और पाँचवां क्लेश "अभिनिवेश" है जिसका तात्पर्य है कि प्राणी यह समझता है कि मैं सदा शरीरस्थ रहूँ मरूँ नहीं। मृत्यु दुःख से त्रास "अभिनिवेश" कहलाता है।

शरीर की अस्थिरता के विषय में एक उर्दू शायर लिखता है:-

"आदमी का जिस्म क्या है
जिसपै शैदा है जहाँ।
एक मिट्टी की इमारत एक
एक मिट्टी का मकाँ।।
खून का गारा है इसमें
और ईंटें हड्डियाँ।
चन्द स्वासों पर खड़ा है
यह ख्याली आस्माँ।।
मौत की पुरज़ोर आंधी
इससे जब टकरायेगी।
देख लेना यह इमारत
मिट्टी में मिल जायेगी।।

शरीर की अस्थिरता का कितना बेमिसाल वर्णन है।

संस्कृत के कवि ने भी लिखा है :-

"धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे
नारी गृहद्वार जनाः श्मशाने।
देहश्चितायां परलोक मार्गे
धर्मानुगोगच्छति जीव एकः।।

एक हिन्दी कवि ने इसका पद्यमय अर्थ इस प्रकार किया है:-

------ धन धरनि के बीच में सारा गड़ा रह जायेगा, पशु भी बंधे रह जायेंगे जब मौत का दिन आयेगा। नारी घर के द्वार तक ही साथ देगी लोक में, मित्रदल मरघट से आगे साथ नहीं दिखलायेगा।।
तब बता तू परलोक में साथ किसको पायेगा, धर्म ही केवल परलोक में साथ तेरे जायेगा।।

ये सब कुछ लिखा होने पर भी तथा यह जानते हुए भी कि मृत्यु अवश्यंभावि है मानव सब कुछ देह की सुन्दरता आरोग्यता के लिये ही करता है। गीता में भी स्पष्ट लिखा है कि -- " जातस्य हि ध्रुवो मृत्यु ध्रुवं जन्म मृतस्य हि"। परन्तु मानव सुखापेक्षी है वह बाहरी सुख को ही वास्तविक सुख समझता है और सांसारिक विषयों में लिप्त रहता है। जिस समय कोई भी व्यक्ति किसी कार्य के लिये चलता है उस समय वह शीशे में स्वयं के रूप को देखता है, स्वरूप को नहीं। यदि स्वरूप को मानव पहिचान ले या जान ले तो देही को जान जाये। गीता में देही {जीवात्मा} के लिये स्पष्ट लिखा है:-

न जायते म्रियते वा कदाचित्
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

यह जीवात्मा {देही} अनादि अनन्त है। न कभी पैदा होता है, न कभी होकर फिर नहीं होगा। यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत् निरन्तर चेतनाशील सनातन तत्व है। मरण धर्मा शरीर के मारे जाने पर या स्वयं मरजाने पर भी यह नहीं मरता।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि
नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो
न शोषयति मारुतः।
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽ
ऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयम्
सनातनः।।
अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते

इस प्रकार गीता में अनेकों श्लोक आत्मा के सम्बन्ध में श्री कृष्ण ने रणक्षेत्र में अर्जुन से कहे कि इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, अग्नि नहीं जला सकती, जल नहीं गला सकता, हवा नहीं सुखा सकती यह आत्मा काटा नहीं जा सकता जलाया नहीं जा सकता सुखाया नहीं जा सकता यह नित्य है, सम्पूर्ण शरीर में व्यापक है, स्थिर है, अचल और सनातन है। यह अव्यक्त है, अचिन्त्य है तथा अविकारी है।

ऐसे विशेष गुणों वाले तथा परमेश्वर के सखा आत्मा को जिससे यह देह चेतन रहती है यह मानव संसार के विषयों में लिप्त रह कर नानाविध दुःख भोगता तथा अनेक योनियों में भटकता रहता है। श्री आद्य शंकराचार्य ने लिखा है "के शत्रवः सन्ति" वहीं उत्तर भी लिखा "निजेन्द्रियाणी" अपनी इन्द्रियाँ ही शत्रु हैं परन्तु यह भी लिखा कि "तान्येव मित्राणि जितानियानि" वश में की गई ये इन्द्रियाँ ही मित्र हैं।

अतः सुख पूर्वक जीवनव्यतीत करने के लिये हमें देह तथा देही को समझ कर अपनी इन्द्रियों को वश में करना आवश्यक है तथा परोपकारी बनकर अपनी आत्मध्वनि को पहिचानना तथा जानना एवं तदनुकूल जीवन बनाना आवश्यक है। ______ ◘

आचार्य रमेशचन्द्र को पुत्र शोक

आर्यमित्र के सम्पादक यशस्वी लेखक एवं देवतास्वरूप आचार्य पं0 रमेशचन्द्रजी के कनिष्ठ पुत्र का पिछले दिन असामयिक निधन हो गया। आचार्य जी और उनके परिवार में यह बज्रपात हुआ है। आर्यप्रतिनिधि सभा कार्यालय में एक शोकसभा में इस निधन पर हार्दिक शोक प्रकट किया गया तथा परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों को यह असहृय बज्रपात सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई। सभाप्रधान श्री पं0 इन्द्रराज तथा मंत्री-श्री मनमोहन तिवारी ने अपने शोक सन्देश में उक्त हृदयविदारक निधन पर शोक व्यक्त करते हुए प्रभु से पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रार्थना की है।

सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्

— सत्य भाषणी देवी, साहित्यरत्न- नई दिल्ली

प्रतिदिन सब लोग आकाशवाणी (दूरदर्शन) के पट पर सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् के ये तीन शब्द चित्र लिपि के रूप में देखते और पढ़ते हैं। तीनों शब्दों के अर्थ का अपना-अपना विशेष महत्व है। हमारे प्राचीन मनीषियों ने बड़ी ही गम्भीरता से इनके अर्थों पर विचार मनन कर इन्हें बहुत ही महत्व दिया है। इन तीनों शब्दों का परस्पर एक दूसरे से विशेष सम्बन्ध भी है।

पहला सत्यम्- दूसरा शिवम्- तीसरा- सुन्दरम् ।

।- सत्यम् के अर्थ में- सच सदैव रहने वाला, एक ही रूप में, शाश्वत सत्य जो आदिकाल से सृष्टि रचना के साथ अपनी विशेषताओं को साथ-साथ लिये भूमण्डल के कण-कण में व्याप्त है। अणु-अणु में है। आदिकाल से लेकर वर्तमान काल (समय अभी चल रहा है) और भविष्यतकाल (जो आगे आने वाला है) में भी रहेगा। कभी भी इस सच्चाई में किसी प्रकार का अन्तर नहीं हुआ, और न भविष्य में कभी होगा। ईश्वर या सृष्टि की रचना में, या प्रकृति की रचना के कण-कण में सत्य प्रकट हो रहा है। शाश्वत, झलक दीख रही है।

शिवम्- कल्याण करने वाला- सत्य ऐसा हो जिसमें या जिससे सारे विश्व का कल्याण हो, सब की भलाई हो। किसी भी प्रकार- मन,वचन,कर्म से हानि न हो पावे। कष्ट देने वाला न हो। कहा गया है- सत्य के साथ साथ (शिवम्) कल्याण की भावना भी सदा बनी रही। वही सर्वोत्तम और श्रेयस्कर है। वही सदैव लाभदायक है।

तीसरा शब्द सुन्दरम् है। जब सत्य के साथ साथ कल्याणकारी विचारों के साथ होते हुए भी, सौन्दर्य का, सुन्दरता का भी निखार हो, तब ही सत्य की सच्चाई के साथ दूसरों की भलाई का, कल्याण का भी समावेश का आदेश दिया गया है- वहां सुन्दरता के साथ, मिलने से, सत्यता में उसकी विशेष झलक दिखाई पड़ती है। इन तीनों शब्दों में सत्य को ही प्रथम स्थान दिया गया है।

सृष्टि रचना- सृष्टि क्रम की रचना के साथ-साथ सत्य शब्द के साथ, (शिवम्) उसमें दूसरों के कल्याण की भलाई की भावना सदा बनी रहे। वही सत्य उत्तम है- जो सच्चाई के साथ दूसरों की भलाई की भावना और सुन्दरता प्रकट करने वाला हो। सारा साहित्य चाहे वैदिक संस्कृत- हिन्दी का हो- या संसार की किसी भी अन्य भाषा का हो, वह तब ही श्रेष्ठ- उत्तम सार्थक माना जाता है जब उसमें तीनों गुणों का समावेश हो- सार्थकता हो।

संसार में कोई भी साहित्य इन गुणों के बिना पूरा नहीं हो सकता है। सत्य को रोचक बनाने वाले ये दोनों ही शब्द उसके सखा हैं। इतना गूढ़ अर्थ इन शब्दों में भरा है। सदा ही मनुष्य को आदेश देते हैं कि- अपने अमूल्य जीवन को उच्च से उच्चतम बनाने के लिये सत्य पर (सच्चाई) चलते हुए कल्याणकारी और सुन्दरता से ओत-प्रोत करने वाला बनाओ।

प्रकृति हमें हर क्षण-क्षण पर सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् की याद दिला रही है। दिन-रात, प्रातः सांयः, ऋतुएं सब अपना-अपना कार्य नियमपूर्वक कर रही हैं। प्रकृति के प्रत्येक कण-कण में इसकी छाप दृष्टिगोचर रही है- परन्तु अल्प बुद्धि वाला मानव इसेजानने समझने का प्रयत्न ही नहीं करता। प्रकृति के किसी भी स्थान-वस्तु-नदी-पहाड़, सूर्य-चन्द्र,पृथ्वी-आकाश,पेड़-पौधे, फल-फूल सब में अपना-अपना कार्य नियम पूर्वक करते हुए स्वर्गीय आनन्द को देने वाली अपनी छटा (सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम्) संजोई हुई है- लहलहाते हुए हरे भरे खेतों, मैदानों को देखिये पहाड़ों से निकल कर बहती हुई जल की धाराओं, नदियों झरनों को देखिये। उदय और अस्त होते सूर्य के प्रकाश और रात्रि में चन्द्रमा की चांदनी जो सर्वत्र अपनी छटा फैलाती हुई आनन्द विभोर शीतलता देती है- नियम पूर्वक संसार की भलाई सच्चाई से करती हुई, स्वर्गीय आनन्द देने वाली सुन्दरता का प्रसार करते हुए- सत्य पर आरूढ़ रहते हुए निरन्तर अपना कार्य समगति से चराचर जगत में सदा से करती आ रही है। बाह्य जगत में तो यह सब कुछ दृष्टिगोचर हो रहा है। यदि मानव इससे चाहे-तो इससे ज्ञान प्राप्त कर सकता है। मनुष्य के अन्तःकरण में भी- सत्य की सच्चाई- शिव की कल्याणकारी भावना- सौन्दर्य को साथ लिये अपनी अनुभूतियों को बड़ी ही समात के साथ- मन,वाणी और कर्म द्वारा प्रकट करती रहती है- केवल मनुष्य में इतना ज्ञान हो जो आन्तरिक और बाह्य जगत को जानकर, रुचि लेता हुआ- जीवन को सात्विक, शुद्ध, पवित्र, भलाई करने वाला, सत्य पर चलने वाला, आनन्ददायक, सद्गुणों से युक्त होकर आनन्द को प्राप्त कर सके। सृष्टि रचना का गम्भीरता से ध्यान-अध्ययन करे। मनुष्य को ये तीनों शब्दों के अर्थ संसार में उसके सामने ही दृष्यमान हैं। कहीं दूर जाने, इधर उधर भटकने या खोजने की आवश्यकता नहीं है।

ब्रह्माण्ड का अटल नियम कार्य का सदा से ही चलता आ रहा है। मानव की आदयात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविकता का सदा से ही इससे अटूट सम्बन्ध है- जीवन के प्रत्येक अंश से बँधा हुआ है। सत्य के आधार पर ही अपने सामर्थ्य से, बिना किसी की सहायता के कार्य कर रहा है। मानव जब तक इसका आधार लेकर जीवन में अपनाता रहा- तब तक वह जीवन में सब प्रकार से सुखी शान्त और संतुष्ट रहा- अपने प्रत्येक दैनिक कार्य में मन, वचन, कर्म से इस पर आचरण करता रहा- दीर्घ आयु को पाता रहा। यह एक स्वर्गीय आनन्द की सच्चाई द्वारा सत्यता का उदाहरण लोगों के सामने रखता रहा। और जब से उसने इस सत्य का साथ छोड़ दिया, विमुख हुआ- अपने जीवन के अस्तित्व की यथार्थता को खो बैठा- अपना नैतिक पतन कर बैठा और कलपने लगा है। अपनी ही कृतियों द्वारा अपनी यह दुर्दशा कर अपना विनाश कर रहा है। जीवन में सम्भल न पा रहा है। यह है- सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् शब्दों के गूढ़ अर्थों की महानता।

आज मानव अपनी प्राचीन परम्पराओं को त्याग कर अपनी वर्तमान स्थिति में- अपना रूप दिखा रहा है। जब तक उस स्वयं को अपने जीवन में लाने के विचार मन बुद्धि, मस्तिष्क में नहीं जगाऐंगे तब तक उसकी यही दशा रहेगी। अपने दोषों को न देखकर स्वयं विनाश की ओर जा रहा है।

जीवन दर्शन का- सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् ही श्रेष्ठ और उत्कृष्ट मार्ग है। भारत के संविधान में भी सत्यमेव शब्द को उच्च प्रमुख स्थान दिया गया है। ◙

प्रिय पाठकों से नम्र निवेदन

आर्यजगत के लिए यह बड़े गौरव की बात है कि हमारी प्रिय आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 के मन्त्री-तथा "आर्यमित्र" के यशस्वी प्रधान सम्पादक, श्री मनमोहन तिवारी उ0प्र0-विधान परिषद के आगामी स्नातक-निर्वाचन क्षेत्र {लखनऊ} से स्वतन्त्र-प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ रहे हैं।

इस निर्वाचन में वे ही स्नातक मत देने के अधिकारी होंगे जो किसी भी मान्यता-प्राप्त विश्वविद्यालय से 1986 अथवा उसके पूर्व स्नातक अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण हैं। इसके लिए निर्वाचन नामावली में अपना नाम नामांकित करने हेतु निर्धारित प्रपत्र पर आवेदन करना होगा। अतः {प्रतापगढ़, बाराबंकी, लखनऊ, हरदोई, रायबरेली, लखीमपुर तथा सीतापुर} के सभी स्नातक भाइयों से निवेदन है कि यदि उन्हें अभी तक उक्त निर्धारित आवेदन पत्र प्राप्त नहीं हुए हों तो वे तुरन्त मुझसे अथवा "आर्य प्रतिनिधिसभा-कार्यालय, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ" से सम्पर्क स्थापित करके अथवा पत्र लिखकर आवेदन पत्र मंगवा लें और उसे भरकर सभा कार्यालय लखनऊ में 10 जनवरी 1990 तक अवश्य भेज देने की कृपा करें।

- इन्द्रदेव पाठक
प्रबन्ध सम्पादक

आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं के अधिकारी
एवं
आर्यसमाजों के प्रधानमन्त्री महोदयों की सेवा में निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश उपदेशविभाग-सेवा निवृत्त-पारिवारिक चिन्ताओं से मुक्त महानुभावों की वैदिक धर्म प्रचार प्रसार में सक्रिय सहयोग चाहता है जो पूरे प्रदेश में निस्वार्थभाव से कार्य कर वैदिक धर्म की दुन्दुभि बजा सकें- सभा उनके आने जाने का मार्गव्यय तथा भोजन का भार वहन करेगी।

आपके ज्ञान में यदि ऐसे कोई महानुभाव हों तो पूर्ण विवरण सहित उनका प्रार्थना पत्र भिजवायें।

भवदीय,

प्रचार कार्यालय — हरिश्चन्द्र आर्य,
अमरोहा — अधिष्ठाता उपदेश विभाग

मण्डल प्रतियोगिता सम्पन्न

वैदिक धर्म प्रचारार्थ आर्य कन्या इण्टर-कालेज गोरखपुर मण्डल की रैली सम्पन्न हुई, जिसमें विभिन्न प्रतियोगितायें हुई उनमें अधिकांश में आर्य कन्या इण्टर-कालेज प्रथम रहा, कुछ में द्वितीय व तृतीय स्थान भी आई, इस कार्य में कालेज की प्रधानाचार्या सुश्री तिवारी तथा श्रीमती सुमित्रा कुमारी जायसवाल का विशाल योगदान रहा।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के 104वें वार्षिक वृहद् अधिवेशन के अवसर पर

आर्य भजनोपदेशक प्रतियोगिता

दिनांक- 24 दिसम्बर 89 रविवार
समय- रात्रि 8 बजे
स्थान- दयानन्द महाविद्यालय {डी0ए0वी0-कालेज} लखनऊ

प्रतियोगिता के नियम

1- आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश उपदेशविभाग में कार्यरत भजनोपदेशक ही इस प्रतियोगिता में भाग लेंगे।
2- आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के विषय में एक-एक भजन प्रस्तुत करना होगा।
3- वाद्ययन्त्र सभा स्थल पर ही उपलब्ध होंगे।
4- प्रत्येक प्रतियोगी को एक भजन प्रस्तुत करने के लिए केवल 15 मिनट का समय दिया जायगा।
5- प्रथम, द्वितीय व तृतीय विजेताओं को सभा की ओर से पुरस्कृत किया जायेगा।
6- निर्णायकों का निर्णय अन्तिम और सर्वमान्य होगा।
7- बोलने का क्रम वर्णानुक्रम के आधार पर होगा।

इन्द्रराज — हरिश्चन्द्र आर्य — मनमोहन-
प्रधान — अधिष्ठता उपदेश विभाग — सभामन्त्री

उत्तर प्रदेशीय आर्य-प्रतिनिधि सभा का नैमित्तिक तथा वार्षिक बृहदधिवेशन

दिनांक० २४ तथा २५ दिसम्बर १९८९ को डी.ए.वी. कालेज लखनऊ में सम्पन्न होगा।

{1} नैमित्तिक अधिवेशन
दिनांक- 24 दिसम्बर 1989 {रविवार}
{2} वार्षिक बृहदाधिवेशन
25 दिसम्बर 1989 {सोमवार}

समय तथा स्थान डी0ए0वी0 कालेज ही रहेगा।

इन्द्रराज — मनमोहन तिवारी
प्रधान — मंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

पृष्ठ ५ का शेष.....

जिम्मेदारी नहीं लेता। दूसरों द्वारा करा कर, किसी और ढंग से प्रचार करके जहां स्वयं बच जाता है, दूसरों को फंसा देता है, वहां स्वयं प्रशंसा भी पा लेता है।

अब जरा अब्दुल रशीद की ओर पुनः ध्यान दें।

अब्दुल रशीद की हरकतों से ऐसा प्रतीत नहीं होता कि उसके हृदय में द्वेष या प्रतिशोध की आग जल रही थी। और अपने इस नृशंस कार्य की सफलता पर बहादुरी का गर्व था। ऐसा व्यक्ति बहादुरी के साथ पर्दे पर प्रवेश करता है, वीरता से काम करता है, अभिमान से लौटता है और अन्तिम क्षण तक प्रसन्न-वदन रहता है। उसकी आत्मा को सन्तोष होता है, चाहे दुनिया के लोग कुछ भी कहें। धर्म और देश पर बलिदान होने वालों को हमने ऐसा ही पाया है। उन्होंने फांसी के तख्ते पर भी, पुनर्जन्म लेकर पुनः ऐसा ही कार्य करने की शपथ ली है। उन्होंने हंसते-हंसते फांसी का फन्दा चूमा है। मृत्यु को आमंत्रित किया है।

अब्दुल रशीद ने ऐसी कोई हरकत नहीं की। जब वह आया, तो घबराया हुआ था। पौषमास की सर्दी में उसे इतनी अधिक प्यास लगी थी कि वह लोटाभर पानी पी गया। गोली मारकर भाग न सका। अपने को छुड़ा न सका। उसके चेहरे पर सफलता की प्रसन्नता दिखाई नहीं दी। वह आत्मग्लानि से तड़पता रहा। घटना- स्थल पर डा0 अंसारी भी आए थे। उनको उसने देखा। डा0 अंसारी ने भी उसे देखा। वह मुस्कुराया नहीं, उसका माथा झुक गया। न ही वह अपने बयानों में जोश अथवा सन्तोष प्रकट कर सका। वह फांसी के फंदे पर जाते हुए गमगीन था।

क्या यह सम्भव नहीं कि वह लालच में अथवा दबाव में यह कुकर्म करने के लिए मजबूर किया गया। क्योंकि उसे इस दुष्कर्म का पछतावा अन्तिम समय तक था।

उसे अपने कर्म का पछतावा क्यों था? वह अदृश्य दबाव किसका था? हिन्दू- मुस्लिम एकता, भारतीयों का उत्थान, शिक्षा किसके लिए हानिकारक थी। हमें सभ्यता एवं विद्या का पाठ पढ़ाने वाले क्या हमारे उत्थान को अपने लिए प्राणाघातक समझने लगे थे? यह अपराजेय शक्ति, अनुपम बुद्धि-चातुर्य, विलक्षण कूटनीति वाला सिवाय अंग्रेज के और कौन हो सकता है? असली हत्यारा इतना समझदार है कि आजतक किसी को उस पर शक ही नहीं हुआ।

अतः यह सत्य प्रतीत नहीं होता कि धार्मिक भावना के वशीभूत होकर, विवेक खोकर, एक व्यक्ति ने द्वेष और ईर्ष्या से प्रतिशोध लिया है। यह तो पूर्व योजना- बद्ध कार्य है। यह मानने में अतिशयोक्ति नहीं कि स्वामी जी कूटनीति के शिकार हुए हैं। इस ओर शोध कार्य करने की आवश्यकता है।

उत्तर प्रदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन

जनता भारत-भारती पुरस्कार योजना

हिन्दी-प्रेमी जनता से अपील....

हिन्दी गगन के ध्रुव नक्षत्र पं० श्री नारायण चतुर्वेदी ने अपने दीर्घकालीन जीवन में हिन्दी के उन्नयन तथा हिन्दी के लेखकों की सहायता के लिये जो कुछ किया है, उससे आप सुपरिचित हैं। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने में राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन को उन्होंने जिस प्रकार सहयोग दिया, वह हिन्दी के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

इधर संवैधानिक प्रावधानों के विरुद्ध और क्षुद्र राजनैतिक लाभ के लिये उत्तर प्रदेश शासन द्वारा उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने के विरोध में चतुर्वेदी जी ने एक लाख रुपये का भारत-भारती पुरस्कार ठुकरा कर कोटि-कोटि हिन्दी प्रेमियों के आहत सम्मान को अभिव्यक्ति दी है। उनके इस अप्रतिम त्याग ने हिन्दी के आत्म-सम्मान की न केवल रक्षा की है अपितु उसे उच्च पीठिका पर स्थापित किया है।

देश के अनेक भागों के हिन्दी प्रेमियों ने आग्रह किया है कि चतुर्वेदी जी के प्रति हिन्दी-संसार की कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिये उन्हें जनता भारत-भारती-पुरस्कार से सम्मानित किया जाना चाहिये। हम इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार करते हैं और समस्त हिन्दी-प्रेमियों से अनुरोध करते हैं कि वे इस कार्य में यथाशक्ति सहयोग दें। इसके लिये एक, दस, पचास और सौ रुपये के कूपन तैयार कराये गये हैं, जिससे प्राप्य धनराशि आदरणीय चतुर्वेदी जी को एक सार्वजनिक समारोह में भेंट की जाएगी। एकत्र धन उ०प्र० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधानमंत्री-श्री कैलाश भूषण जिन्दल, अजिताश्रम, गनेशगंज लखनऊ को मनीआर्डर या बैंक-ड्राफ्ट द्वारा भेजा जाये।

श्री चतुर्वेदी जी 97वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं और आजकल अस्वस्थ हैं। उनके स्वास्थ्य के लिये मंगलकामना करते हुए हम सम्मान-समारोह का आयोजन जनवरी 1990 के प्रथम सप्ताह में करना चाहते हैं। हमें विश्वास है कि कृतज्ञता ज्ञापन के इस अभूतपूर्व आयोजन में हमें हिन्दी-प्रेमियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

निवेदक :
मनमोहन तिवारी
मंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र.

प्रार्थना इस प्रकार करनी चाहिए-"हे जगदीश, कृपानिधे हमारे पिता मुझे असत् से निकाल कर सत् में स्थिर करो। अविद्यान्धकार और अधर्माचरण से पृथक करके ज्ञान और धर्माचरण में सदा के लिए स्थापन करो जन्म मरण रूप संसार से मुक्त करके अपनी दया से मोक्ष प्रदान करो।" प्रार्थना का फल यह है कि जब कोई जन सच्चे मन से अपनी आत्मा से, अपने प्राण से अपने सारे सामर्थ्य से परमेश्वर का भजन करता है तब वह कृपा मय परमात्मा उसको अपने आनन्द में निमग्न कर देता है।

- • -

मैंने आर्यसमाज का उद्यान लगाया है इसमें मेरी अवस्था एक माली की है पौधों में खाद्य डालते समय राख और मिट्टी माली के सिर पर भी पड़ जाया करती है मुझ पर राख मिट्टी चाहें जितनी पड़े मुझे इसका कुछ भी ध्यान नहीं परन्तु वाटिका हरी भरी बनी रहे और निर्विघ्न फूले फले।

—महर्षि दयानन्द सरस्वती

शोक समाचार

श्री रणधीर सिंह सुपुत्र श्री हरफूल सिंह ग्राम नन्दगढ़ (जीन्द) का 24-11-89 को अचानक स्वर्गवास हो गया। उनकी आयु लगभग 28 वर्ष की थी। वे पिछले चार वर्षों से अस्वस्थ से थे। वे विशुद्ध रूप से आर्य विचारों के नवयुवक थे। आर्यसमाज एवं सामाजिक कार्यों में उनकी गहरी रुचि थी। उनके निधन से काफी क्षति हुई है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति तथा उनके परिवार को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

-राम कुमार आर्य

ओ पहरेदारो

"प्रणव" शास्त्री एम०ए०
शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा

देश का कैसा है, दुर्भाग्य सो गये सारे पहरेदार।
राष्ट्र के रक्षक भक्षक बने नष्ट हैं होते मित परिवार।।

विषमता विष की बढ़ती बेल गया समता का साहस टूट,
जिधर भी देखो दृष्टि पसार हो रही भारी लूट-खसूट।
बुझे हैं सदाचार के दीप बढ़ रहा दुर्गम दुष्टाचार।।1।।

खौलता सतलज व्यास सुनीर लग रहा घर-घर में है आग,
दूर से खड़े देखते सभी उजड़ता है पंजाबी बाग।
राष्ट्रपति शासन भी है पंगु निवासी रोते हैं लाचार ।।2।।

अस्त हो करता अस्त-व्यस्त सभी को आतंकी उत्पात,
कहो फिर पावें कैसे चैन नक्सली चलता झंझावात।
न जाने कब यह होगा बन्द निरीहों पर जो अत्याचार ।।3।।

सुखों की सरगम देखो मौन नहीं नव जागृति के संगीत,
हँस रहा है शमशान मसान देखकर अपनी भारी जीत।
पड़ा अब टूटा-टूटा यहीं श्वास की हर वीणा का तार।।4।।

हो रहा सन्देही हिमपात सूखती केसर क्यारी है,
तिरंगा सहमा-सहमा वहीं धधकता सबकी नारी है।
उफन पड़ती है चाहे जभी वहीं झेलम की धारा।।5।।

शहर में कहर नगर में डगर-डगर में होने लगी अजान,
चतुर्दिश ऊँचे स्वर में सुनो सभी यह लाउडस्पीकर गान।
कौन नहिं देख रहा चुपचाप बह रही अरबी स्वर्णिम धार।।6।।

कहीं पर नाच रही इंजील कहीं पर झारखण्ड का शोर,
स्वार्थ की दल दल में हैं फँसे सभी दल दीख रहे कमजोर।
उछलते मेढ़क पंसेरी में नहीं है तुलने को तैयार ।।7।।

बावरी कैसे हो गई है, राम की जन्मभूमि अवदात,
महल में अपने ही रानी हुई हो जैसे दासी-जात।
बहुत पर हावी होवे अल्प कहीं का न्यायिक सत्याचार।।8।।

अतः हे प्रहरी जाओ चेत हुआ अब काल पुनः उदण्ड,
विभाजन घन घुमड़े हैं घने राष्ट्र को राखो एक अखण्ड।
"प्रणव" के संदेशों को सुनो ध्यान से करिए मित्र विचार।।9।।

स्वास्थ्य-सुधा

उपचार दर्पण

प्रश्न- "मैं 21 वर्ष का हूँ। मेरे सिर के बालों के साथ-साथ मुँह के बाल भी सफेद होने लगे। सुबह सिर-दर्द होता है। मेरा मुँह पिचका जा रहा है।"

-विनोदकुमार, विनोद फोटोस्टूडियो
श्री विजय- नगर (श्रीगंगानगर) राजस्थान।

उत्तर- मेंहदी पत्ती का चूर्ण 1 कप, कॉफी चूर्ण 1 चम्मच, नींबूरस- 1 चम्मज, कत्थाचूर्ण 1 चम्मज, ब्राह्मपत्ती चूर्ण 1 चम्मच, पोदीनापत्ती चूर्ण 1 चम्मच, दही 1 चम्मच और कुछ पानी मिला कर गाढ़ा लेप बनावें। दो घन्टे बाद इस लेप को सिर के बालों में दो मिनट तक मलें। एक घन्टा बाद स्नान करें। सप्ताह में एक या दो बार लेप करने से 6 मास के अन्दर बाल-काले-घने-मजबूत-रूसीरहित हो जाते हैं। बालों में भृंगराज तेल लगाना चाहिये। सिर में साबुन का प्रयोग न करें। एक लीटर पानी में चार आँवले उबाल कर आधा करें। इस पानी में दही मिलाकर सप्ताह में 1 या 2 बार सिर के बाल धोया करें।

: प्रातः खाली पेट "सर्वांगासन" किया करें। भोजन के साथ सोयाबीन की दही और फल-सलाद लिया करें। शारीरिक भार बढ़ाने के लिये पिछला "आर्यमित्र" का अंक भी देखें। प्रातराश में 2 चम्मच च्यवनप्राश चाटकर 1 गिलास गुनगुन दूध पिया करें।

0 रोगी अपना विवरण और दो डाक-लिफाफे निम्नपता पर भेजा करें:-

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्यसमाज पिथौरागढ़ (उ0प्र0)

स्वामी श्रद्धानन्द

रमेश चन्द्र आर्य "सिद्धान्त शास्त्री"
बी.एस.सी. तृतीय
बरदहा बाजार (बहराइच)

एक अविचल सन्यासी,
पाखण्डों के अभेद्य दुर्ग तोड़कर
लोगों की गलत मानसिकता मोड़कर
आगे ही आगे बढ़ने लगा
लोगों का उत्साह जगने लगा
शिक्षा का अधूरा कार्य देखकर-
गुरुकुल कांगड़ी स्थापित किया।
तभी लोगों के हृदय में
हुआ प्रदीप्त ज्ञान का दिया।।
मुंशीराम से श्रद्धानन्द तक-
की महायात्रा में,
वह पथिक अविराम चलता रहा।
विधर्मियों की आँखों में खटकता रहा।
फिर भी शुद्धि अभियान
नहीं छोड़ा।
धर्म की राह में खाया छुरा,
बलिदानियों की पंक्ति में
अपना नाम जोड़ा।
"रमेश" युवा मन की है आकांक्षा-
यही
करें हम उनका कार्य पूरा।

आवश्यक बैठक

पूर्वी उ0प्र0 आर्यवीरदल के समस्त अधिकारियों एवं सदस्य महानुभावों को सूचित किया जाता है कि दिनांक- 7-1-90 दिन रविवार को समय 1 बजे दिन से एक आवश्यक बैठक श्री अवधबिहारी खन्ना संचालक आर्य वीरदल पूर्वी उ0प्र0 के निवास स्थान विश्वनाथ गली वाराणसी के निकट टेढ़ी नीम पर होगी।

सभी महानुभावों से प्रार्थना है कि यथा समय बैठक में अवश्य पहुँचने की कृपा करें।

- प्रयागदीन जायसवाल,
मन्त्री, सार्वदेशिक आर्यवीरदल,
पूर्वी उ0प्र0, सुलतानपुर।

उत्सव सम्पन्न

-आर्यसमाज लल्लापुरा, वाराणसी का 54वाँ वार्षिकोत्सव दि0- 25 दिसम्बर सोमवार से 28 दिसम्बर 89 गुरुवार तक स्थान बिक्रीकर कार्यालय का प्रांगण, चेतगंज, वाराणसी में सम्पन्न होगा।

शोक-प्रस्ताव

महिला आर्यसमाज, गणेशगंज, लखनऊ ने अपने साप्ताहिक सत्संग दिनांक- 2-12-89 में वर्णित प्रस्ताव द्वारा आर्यजगत के उद्भट विद्वान् आचार्य सुधीन्द्रनाथ शास्त्री के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक जनों के धैर्य हेतु प्रभु से प्रार्थना की है।

- श्रीमती विमला श्रीवास्तव,
मन्त्राणी।

शोक प्रस्ताव

श्री ब्रह्मानन्द जी जिज्ञासु के अग्रज कर्मठ समाज-सेवी एवं धार्मिक विचारधारा के पालक विष्णुदेव नारायण जी का निधन दिनांक- 2-12-89 को 11 बजे दिन में अकस्मात् हो गया।

आर्यसमाज, मुजफ्फरपुर तथा जिला सभा के रविवारीय अधिवेशन में शोक-प्रस्ताव पारित करके दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना तथा शोक-संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गई।

श्री धर्मवीर आर्य का माननीय प्रधानमंत्री को पत्र

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता, वेदपथिक, व्याख्यानभूषण, स्वतन्त्रता-सेनानी श्री पं0 धर्मवीर आर्य दिल्ली ने राष्ट्र की कतिपय ज्वलन्त समस्याओं के समाधान हेतु मा0 प्रधानमंत्री भारत-सरकार को दिनांक 6 दिसम्बर 1989 को एक पत्र लिखा है। उनके निम्न सुझावों से हम पूर्णतया सहमति व्यक्त करते हैं--

सम्पादक।

1- शराब सर्वनाश का मूल है अतः शराब देश भर में आप बन्द करायें।

2- अंग्रेजी गुलामी भाषा है इस को समाप्त करके हिन्दी और संस्कृत को अन्तर्राष्ट्रीय भाषा बनायें।

3- गौ-हत्यारों को फांसी का सजा देने की घोषणा आप करें।

4- अयोध्या का श्रीराम जन्म मन्दिर 9 लाख वर्ष प्राचीन है जिस मन्दिर को बाबर ने तोड़ा था और मन्दिर को तोड़कर मस्जिद बनाया था। जब बाबरी मस्जिद को खोदवाकर उस स्थान पर 25 करोड़ रुपयों की लागत से आप श्रीराम जन्म मन्दिर को सरकारी खर्च से बनवायें।

5- मथुरा के श्री कृष्ण मन्दिर को भी मुसलमान बादशाहों ने तोड़ा था और मन्दिर पर मस्जिद बनाया है इसलिए मथुरा की मस्जिद को तोड़वा कर आप मन्दिर बनवायें।

6- काशी के विश्व नाथमन्दिर को भी मुगलों ने तोड़ा था इसलिए आप हमारे मन्दिरों की रक्षा करें और सरकारी खर्च से बनवायें।

देश का विभाजन जिन मुसलमानों ने कराया था और भारत माता की हत्या एवं लाखों हिन्दुओं की हत्या जिन मुसलमानों ने किया था उन मुसलमानों को बचे हुए भारत में रखना यह भारत-माता के साथ और देश के अनगिनत-शहीदों के साथ विश्वास घात है।

उत्तर प्रदेश और बिहार से उर्दू भाषा को आप समाप्त करने की घोषणा करें। यह पत्र आप की सेवा में देश के स्वतन्त्रता सेनानियों की ओर से तथा 60 करोड़ हिन्दुओं की ओर से मैं लिख रहा हूँ।

सम्पादक के नाम पत्र

किसका-आरक्षण

प्राचीन काल में कर्मों के अनुसार जातियों का सृजन हुआ था और कालान्तर में कर्मों के बदलने पर भी जातियों में बदलाव थम गया तथा जातियाँ स्थायित्व स्थान ले गयीं।

भौगोलिक परिस्थितियाँ समान होने पर भिन्न-भिन्न प्रकार के पेड़ पौधे आदि पैदा होते हैं और इसी प्रकार भिन्न भिन्न प्रतिभा युक्त मानव जन्म भी प्रकृति की ही देन है। जो किसी जाति अथवा वर्ग से बंधा हुआ नहीं है। महर्षि वाल्मीकि, निषादराज, भीलनी, एकलव्य, सूतपुत्र कर्ण, दासी पुत्र विदुर, नन्दवंशीय शासक महापदमनन्द, धननन्द, संत रविदास तथा डा0 अम्बेडकर अथवा अन्य विभूतियां इस तथ्य के साक्षात प्रमाण हैं।

समाज के बदलते परिवेश में जो लोग शिक्षा में पिछड़ गये उनका आर्थिक और राजनीतिक स्तर स्वतः गिरता चला गया और शनैः शनैः वह वर्ग अपने मूल संस्कारों से विमुख होता चला गया और अन्य वर्गों की अपेक्षा शिक्षा के क्षेत्र में, आर्थिक दृष्टि से, सामाजिक प्रतिष्ठा और राजनीति में अत्यन्त पिछड़ गया अतः उसे पिछड़ी जातियों की संज्ञा से विभूषित किया गया जो अब लोकतान्त्रिक भारत में अनुसूचित अथवा जनजाति के नाम से जानी जाती हैं।

मानव धर्म सर्वोपरि है लोकतान्त्रिक भारत में मानव को समान अधिकार प्राप्त होने के तहत अनुसूचित अथवा जनजातियों का उत्थान निःसन्देह आवश्यक है परन्तु वर्तमान आरक्षण नीति त्रुटिपूर्ण है फलतः आरक्षण का सही लाभ इन जातियों के जन-जन को उपलब्ध नहीं है वरन् चन्द सीमित परिवारों को पुनःपुनः प्राप्त हो रहा है जिसके फलस्वरूप यह लाभान्वित परिवार शिक्षा, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टि से आज पिछड़े नहीं रहे हैं और तदनुसार व्यवहार में अनुसूचित एवं जनजातियों से पृथक भी होते जा रहे हैं और यह एक पृथक वर्ग तैयार होने लगा है अतः ऐसे परिवारों को प्रदान आरक्षण पर प्रश्नचिन्ह लगना स्वाभाविक और आवश्यक है।

आरक्षण का सही लाभ अपेक्षित जन-जन तक पहुँचने के लिए यह अति आवश्यक है कि अब तक जिन परिवारों के दो सदस्यों को आरक्षण के अन्तर्गत कोई लाभ जैसे भूमि आवंटन, एजेन्सी, लाइसेंस, कोटा, शासकीय सेवा, प्रोन्नति आदि आदि किसी भी प्रकार के प्राप्त हो चुके हैं उन्हें भविष्य में कोई किस प्रकार के लाभ प्रदान न किये जायें और इस ओर विधान, शासन, तथा प्रशासन सभी को सतर्क रहना भी अनिवार्य हो।

त्रुटिपूर्ण एवं दूषित आरक्षण नीति से सामाजिक भेदभाव एवं जाति पाँत की खाई दिन प्रतिदिन चौड़ी और गहरी होती जा रही है अतः आरक्षण, जातिगत न होकर अब आर्थिक होना चाहिए जिससे प्रत्येक वर्ग की प्रतिभा को अपनी योग्यता के अनुसार पूर्ण लाभ प्राप्त हो सके। यदि प्रधानमन्त्री श्री वी0 पी0 सिंह जी वास्तव में राष्ट्रहित और कमजोर गरीब एवं पिछड़े व्यक्तियों की मदद करना चाहते हैं तो आरक्षण को आर्थिक आधार पर लागू करना होगा। कैसी अजीब बिडम्बना है कि एक डी0एम0 अथवा आई0जी0 एवं डी0आई0जी0 के बच्चों को आरक्षण की सुविधा दी जाती हैं, परन्तु एक निर्धन अध्यापक एवं निर्धन लिपिक के बच्चों को नहीं। भारत सरकार की इस दोषपूर्ण आरक्षण नीति से सवर्ण जाति में असन्तोष फैल रहा है यदि समय रहते इसमें विराम न लगाया गया तो भारत एक जटिल एवं पेचीदा उलझन में फंस जायेगा।

यह न्याय संगत नहीं कहा जा सकता है कि आर्थिक रूप से कमजोर सवर्ण वर्ग के अच्छी प्रतिभा युक्त व्यक्ति को उसकी योग्यता के लाभ से वंचित किया जाय। आज की युवा पीढ़ी में जाति-पाँत का अधिक महत्व भी नहीं रह गया है और स्वतः ही ह्रास की ओर अग्रसर भी है क्योंकि पापी, और पुण्यात्मा की कोई जाति नहीं होती है। जातिरूपी आरक्षण गरीब सवर्णों के साथ घोर अन्याय है।

अतः यह आवश्यक है कि किसी प्रतिभा को अनायास दबाने के भयंकर परिणामों से बचने के लिए प्रत्येक राजनीतिक पार्टी एवं समाज का यह उत्तरदायित्व है कि युवा वर्ग में आक्रोश न भड़कने दें ताकि देश की सही शक्ति देश के उत्थान में सहर्ष अपने को समर्पित रख सके।

—पं० विनय कुमार भारत

364, आवास विकास कालोनी, सासनीगेट, अलीगढ़।

गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी का उत्सव

गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी, भोलाझाल, (मेरठ) का 18वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक- 13 तथा 14 जनवरी 1990 को बड़े समारोह के साथ सम्पन्न होने जा रहा है। इसमें आर्यजगत के पूज्य सन्यासी एवं अनेक विद्वान उपदेशक प्रचारक पधार रहे हैं। जनता से प्रार्थना है कि इष्टमित्रों तथा परिवार सहित पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्
आर्य मित्र
आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ
पंजीकरण सं. एल. डब्ल्यू./एन.पी. ७६
पौष कृष्ण - १२
दिनांक २९, दिसम्बर १९९६
दूरभाष: २४५९९३

आवश्यक सूचना

उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य सामाजिक गतिविधियों से सम्बन्ध रखने वाला शताब्दीय बृहद इतिहास लिखा जा रहा है। अत: जिन समाजों, पाठशालाओं, इन्टर कालेजों, महाविद्यालयों तथा गुरुकुलों ने अपने इतिहास अभी तक नहीं भेजे हैं। वे कृपया शीघ्र भेजने का कष्ट करें।

-- सभामंत्री।

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए भगवानदीन आर्यभास्कर प्रेस 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में प्रीमियर प्रासेस लखनऊ से श्री विश्वम्भरदयाल गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

आर्य ओ३म् मित्र

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुखपत्र

(रजि. सं. २२४१/५७) पौष शुक्ल ३, रविवार - संवत् २०४६ वि. दिनांक: ३१ दिसम्बर १९८९ (घोषणा पत्र सं. ७/२८-२-७५)



अहर्निश सेवामहे

अं अहः केतुना जुषता ५
सुज्योतिर्ज्योतिषा ।
रात्रिः केतुना जुषता ५
सुज्योतिर्ज्योतिषा स्वाहा । ।

सत्क्रिया से, ज्ञान से,
सूर्यादि के सुप्रकाश से,
संगठन से, एकता से,
प्रेम और बलिदान से,
जोक्त हों हम आर्य,
वैदिक प्रेरणा और ज्ञान से,
रातोदिन सेवा करें हम,
श्रुति सुबुद्धि विकास से।

प्रधान सम्पादक
मनमोहन तिवारी
एम. ए.

प्रबन्ध सम्पादक
इन्द्रदेव पाठक
एम. ए. साहित्याचार्य

सदस्यता शुल्क
आजीवन सदस्य...रु. २५१/-
वार्षिक..........रु. ३०/-
एक प्रति..........१.०० रु. मात्र

प्रकाशन का ६२वाँ वर्ष
अंक - ५२

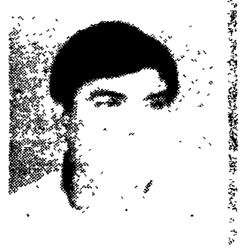
आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का बृहदधिवेशन सोल्लास सम्पन्न

आगामी वर्ष के लिए श्री पं. इन्द्रराज प्रधान एवं श्री मनमोहन तिवारी मंत्री निर्वाचित

हिन्दी के मूर्धन्य विद्वान श्री पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी के सम्मान का निर्णय।



श्री पं0 इन्द्रराज, सभाप्रधान



श्री मनमोहन तिवारी, मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश का 104वाँ बृहदधिवेशन दिनांक 24 तथा 25 दिसम्बर-1989 को डी0ए0वी0 कालेज, लखनऊ के प्रांगण में निर्मित भव्य पंडाल में बड़े ही हर्ष और उल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। प्रदेश के कोने-कोने की हजारों आर्यसमाजों से भारी संख्या में पधारे हुए आर्य प्रतिनिधियों ने समारोह में भाग लेकर प्रदेश में बढ़ते हुए साम्प्रदायिक उन्माद के पूर्णतः परिसमापन, प्रदेश की सुख समृद्धि और राष्ट्र की एकता के सम्वर्धन तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिए तन मन धन समर्पित करने का संकल्प लिया। प्रदेश के पूर्व शासन द्वारा उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा बनाये जाने का प्रबल विरोध करते हुए सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि नयी सरकार से उक्त विधेयक को वापस लेने की मांग की जाय और शासन को चेतावनी के स्वर में बता दिया जाय कि विधेयक वापस न लिए जाने की दशा में आर्यसमाज आन्दोलन के लिए विवश होगा। इस अवसर पर हिन्दी के लिए समर्पित वयोवृद्ध विद्वान श्री पं0 श्री नारायण चतुर्वेदी, जिन्होंने शासन द्वारा उर्दू को द्वितीय राज्यभाषा बनाने के विरोध में, एक लाख रुपये का 'भारतभारती' पुरस्कार ठुकराकर हिन्दी के गौरव को बढ़ाया है, उनके प्रति श्रद्धा और आदर से नतमस्तक होकर उनका विशेष सम्मान करने के लिए विशेष समारोह आयोजित करने का सर्वसम्मत निर्णय लिया गया। इसके अतिरिक्त शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा प्रचारित "त्रिसूत्रीय" आन्दोलन के क्रियान्वयन के अभियान को प्रबल वेग से प्रदेश में प्रचारित एवं प्रसारित करने आदि के अनेकों जनहितकारी निर्णय भी लिए गये।

बड़ी ही निष्ठा और उल्लासमय वातावरण में आगामी वर्ष के लिए श्री पं0 इन्द्रराज जी, मेरठ, प्रधान, श्री पं0 मनमोहन तिवारी, लखनऊ, मन्त्री, श्री यशपाल जी आर्य, देहरादून, कोषाध्यक्ष को निर्वाचित करके आर्य प्रतिनिधियों ने सभा और आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ बनाने का दायित्व सौंप दिया।

आर्यमित्र अपने तपोनिष्ठ नवनिर्वाचित अधिकारियों का हार्दिक स्वागत करता है और प्रदेश तथा राष्ट्र में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार प्रसार एवं जनता के सुख शान्ति की अभिवृद्धि के उनके निश्चय की सराहना करते हुए उनके इन पुनीत संकल्पों के पूर्ण करने की प्रभु से प्रार्थना करता है।

(शेष निर्वाचित सभा पदाधिकारियों की सूची अगले पृष्ठों में देखें)

आर्य भूमि पर अरुणोदय सा,
उठा उष्ण तू सजकर साज।
आर्य समाज। आर्य समाज।।
— राष्ट्र कवि मैथिलीशरण

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

आर्य मित्र

लखनऊ- पौष शुक्ल- 3, संवत् 2046 वि.
24 दिसम्बर 1989, दयानन्दाब्द-165
सृष्टि संवत् 1972949090

ओ३म् सम्पादकीय

स्वागतम्

आर्यप्रतिनिधि सभा, उ0प्र0 का वार्षिक बृहदधिवेशन एवं निर्वाचन डी0ए0वी0 कालेज, लखनऊ के भव्य प्रांगण में दिनांक 25 दिसम्बर 1989 को सोल्लास सम्पन्न हो गया। सभी निर्वाचित पदाधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, प्रतिनिधियों एवं अभ्यागत भाई बहिनों का "आर्यमित्र" हृदय से स्वागत करता है।

सच्ची श्रद्धा और लगन के पथ पर चलने वाले प्रतिनिधि राही, आर्यों के वंशज! परमपुरुष की परमपावन अनमोलकृति!! परमज्ञान के परमवाहक!!! ऋषिवर्य की आशाओं के सच्चे प्रतीक!!! लक्ष्मण की इस पुनीत नगरी लक्ष्मणपुरी में आज तुम्हारा स्वागत है। प्रेम के आँसुओं से स्वागत है, पलकपाँवड़े बिछाकर स्वागत है। तभी तो मेघमाला ने उमड़ घुमड़ कर तुम्हें अपनी स्नेहिल पीयूषवर्षा से आप्लावित कर दिया है।

----- और आज सचमुच पौने दो अरब वर्ष से चलने वाला तुम्हारा कारवाँ न जाने कितने झंझावातों को चीरता हुआ आगे ही बढ़ रहा है। तुमने उसके परमज्ञान को इतने अनन्तकाल से अनवरत उठाए रखा, संजोए रखा, स्वरों में बान्धकर रखा, नंगे पैर भूखे रहकर, कौपीन पहिनकर, जंगलों के बेर खा खाकर उसके स्वरों को आज तक अविराम गुंजायमान रखा है। दुनियाँ चकित है तुम्हारी आत्मशक्ति देखकर। कौन कहता है हम बरसाती दादुर हैं। हम अजर हैं, अमर हैं। विश्व को शान्ति का सन्देश देने वाले अमरसपूत हैं उस अमरसत्ता के। हम सत्य पथ पर चलने वाले राही, सत्य के लिए हमने हर कुर्बानी को नगण्य समझा है। हमारा मुख्यकार्य वैदिक धर्म का प्रचार है और यही दायित्व तो तुमने सम्भाला है क्योंकि यही तुम्हारे संगठन का मूल है चाहे उसका माध्यम आर्यसमाज हो अथवा आर्य प्रतिनिधि सभा।

----- और आज आर्यसमाज दिन दूनी रात चौगुनी प्रगति से बढ़ता जा रहा है। श्रेष्ठतम मानवीय मूल्यों पर आधारित समाज रचना के कार्य को आर्यसमाज ने ही आगे बढ़ाया है। इसीलिए यह विश्व की सर्वश्रेष्ठ सामाजिक एवं धार्मिक संस्था है। यह ठीक है कि जिस गति से हमारा कार्य बढ़ रहा है उसी गति से संगठन तथा प्रशासन से सम्बन्धित समस्याएं भी बढ़ी हैं। परन्तु दूरदृष्टि, कुशल प्रशासनिक क्षमता एवं ऐक्य से इन समस्याओं पर विजय पाई जा सकती है, यही इतिहास पुकार रहा है और यही आर्यों की, आर्य प्रतिनिधियों की पुकार है।

आज उत्थान पतन के इन विगत पाँच हजार वर्षों में तुम्हारे इस ऐतिहासिक निर्वाचन को हम आशा की किरण समझते हैं। तुमने जिस प्रतिनिधि सभा का दायित्व अपने कन्धों पर सम्भाला है वह बड़ी पावन संस्था है। इसे महात्मा नारायण स्वामी, राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, प्रकाशवीर शास्त्री, रासबिहारी तिवारी जैसी अद्भुत क्षमता-सम्पन्न विभूतियों ने अपने खून पसीने से सींचा है। इसका अतीत महान था और भविष्य उससे भी महान हो सकता है यदि थोड़ी कमर और कस ली जाय।

----- और आज इस सभा के माध्यम से तुमने हजारों हजार आर्यसमाजों, आर्यपुरुषों महिलाओं, शिक्षा के क्षेत्र में अनवरत अध्ययनरत राष्ट्र के नौनिहालों का अन्तस्तल छू लिया है। अब इस प्रतिनिधि सभा को गौरवागार के उच्चशिखर पर पहुँचाना तुम्हारा काम है। विजयश्री ने तुम्हारे चरण चूमे हैं। आकाश ने तुम पर फूल बरसाए हैं। दिशाओं ने वन्दना के स्वरों में तुम्हारा गान गाया है क्योंकि तुमने निःस्वार्थ होकर, समर्पित होकर जनसेवा का संकल्प दोहराया है। प्रदेश एवं देश की आर्यजनता के पथ को आलोकित करने का बीड़ा उठाया है। आज इस नैराश्यभरे वातावरण में जहाँ हमारा प्रिय राष्ट्र, प्रिय मानवसमाज, अनेक विसंगतियों, विपत्तियों और अराजकताओं में ग्रस्त है, आपको एक नई दिशा और नया सन्देश देना है।

आर्यमित्र आपकी आवाज़ है। हमारे स्वर वही हैं जो आप देंगे और आपने दिए हैं। हो सकता है आपके दिए हुए स्वरों के अनुरूप हम अपनी आवाज मिलाने में संगीत के स्वरों के आरोह अवरोह में कुछ त्रुटियाँ कर बैठे हों। पर आपका स्नेह तो कभी कम नहीं हुआ-- यही हमारा सौभाग्य है। विगत त्रुटियों की क्षमा याचना के साथ-साथ नव वर्ष का अभिनन्दन करते हुए हम पुनः अपने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, आर्य प्रतिनिधियों, अभ्यागत अतिथियों का हार्दिक स्वागत करते हैं।

वेद कथा का आयोजन

आर्यसमाज आर्यनगर बदायूँ में चि0 अंशुल आर्य पुत्र श्री सुशीलकुमार-आर्य की वर्षगाँठ पर श्री पं0 वीरसिंह आर्य द्वारा यज्ञ एवं वेद कथा का आयोजन दि0 12 दिसम्बर 89 को किया गया।

- रामकुमार आर्य प्रधान आर्यसमाज आर्यनगर।

मुस्कुराइये

— आचार्य इन्द्र

नववर्ष की बेला में,
दुराशा और निराशा में,
आशा की किरण देख,
आर्यों के चिन्ह देख,
चिन्हों की रेख देख;
जीवन मुस्कराया है।
कुछ मैंने गुनगुनाया है।।
आर्यों ने जीवन में,
हार कभी मानी नहीं,
दुनियाँ को ज्योति दी,
जिसकी कोई सानी नहीं,
दुनियाँ चकित है,
यद्यपि भ्रमित है,
सच्चा आर्य है वही,
होता न जो धाकत है,
उन्नीस सौ नब्बे के,
स्वर्णिम प्रभात में,
तुमने मुस्कराया है।
कुछ मैंने गुन गुनाया है।।

शुभास्ते पन्थानः सन्तु

वन्दना एवं बधाइयों के गूंजते स्वर

दिनांक 24 तथा 25 दिसम्बर 1989 को लखनऊ के डी0ए0वी0 कालेज में सम्पन्न आर्यप्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश लखनऊ के निर्वाचित पदाधिकारी 1989- 90 :-

प्रधान- श्री पं0 इन्द्रराज, मेरठ
उपप्रधान- (1) श्री जयनारायण "अरुण" बिजनौर
(2) श्री सुशील कुमार आर्य, लखीमपुर
(3) श्री हरिगोपाल सिंह एडवोकेट, आगरा
(4) श्री मती डा0 आशारानी-राय, कानपुर

मन्त्री- श्री मनमोहन तिवारी, लखनऊ
उपमन्त्री- (1) श्री वीरेन्द्र पाल शर्मा, बुलन्दशहर
(2) डा0 विनय प्रताप, गोरखपुर
(3) डा0 ओमवीर सिंह, बड़ौत
(4) श्री वेद प्रकाश आर्य, औरैय्या

कोषाध्यक्ष- श्री यशपाल आर्य, देहरादून

सहायक कोषाध्यक्ष- श्री वीरेन्द्र आर्य, अमरोहा

पुस्तकाध्यक्ष- डा0 विजयभूषण, हापुड़

सहपुस्तकाध्यक्ष- श्री विद्यासागर, सहारनपुर

प्रतिष्ठित अन्तरंग सदस्य

सर्वश्री सच्चिदानन्द शास्त्री हरदोई, विशुद्धानन्द-शास्त्री, बदायूँ, एवं माधव सिंह चौधरी मेरठ।

कुरआन की क़समें

- श्री उत्तमचन्द्र "शरर"
पानीपत

कसम {शपथ} खाना सत्य वक्ताओं को प्रायः नापसन्द है। सत्यवादी अपनी बात पर मर मिटता है परन्तु बात बदलता नहीं। श्रीराम को यह गौरव प्राप्त है कि उनकी वाणी से निकला शब्द अर्थ नहीं जा सकता है। "प्राण जांय - पर वचन न जाई" यह रघुकुल की रीति है। ऋषि दयानन्द भी शपथ खाने के पक्ष में नहीं है और सत्य यह है कि कोई सत्यवादी शपथ खाना अपना अपमान मानता है। आखिर कसम क्यों खाएँ? या तो अपनी बात की सत्यता को जितलाने के लिए अथवा विरोधी के मन पर अपना सत्यता का विश्वास दिलाने के लिए। पहली अवस्था में वक्ता को अपने सत्य के प्रभाव पर स्वयं विश्वास नहीं होता और दूसरी अवस्था जैसे तैसे विरोधी पर प्रभाव डालने को द्योतक है, दोनों ही अवस्थाएँ दुर्बलता का प्रतीक हैं।

एक सत्यवादी तो अपनी बात से पलटता नहीं, शपथ खाना तो दूर रहा, वह शपथ को बात सत्य कथन पर कलंकहीनता है और यह भी एक तथ्य है कि झूठा व्यक्ति प्रायः कसम खाकर अपनी सत्यता का विश्वास दिलाता है। जो जितनी अधिक कसमें खाता है श्रोता उसकी बात पर उतना अधिक सन्देह करता है। यह एक विचित्र बात है, कि कुरआन का खुदा अपनी बात की सत्यता जतलाने के लिए बार-बार कसमें खा लेता है। सत्य स्वरूप ईश्वर को तो इसकी आवश्यकता नहीं, वह तो किसी बात पर बल देने के लिए कहता है, तो इतना ही सत्य दामान वधरत्स तस्थ{वेद} परन्तु कुरआन का खुदा कसमें खाने में कीर्तिमान स्थापित करता है, शायद अरब के लोग कसमें खाने का स्वभाव रखते हैं और कुरआन के कथनानुसार कुरआन अरब तथा उसके पास के लोगों के लिए है। इसलिए अल्लाहमियाँ को अरब के स्वभाव को अपनाना पड़ा है। अब आइये जरा खुदा की खाई कसमों पर विचार करें सर्वप्रथम तो अल्लाह अपने कुरआन की सत्यता में स्वयं आरम्भ में कहता है- "यह किताब {कुरआन मजीद} के आसमानी किताब होने में कोई सन्देह नहीं {सूरा अल बकर आयत २} लगता है अल्लाह को अपनी किताब के लिए स्वयं सन्देह को मिटाना आवश्यक हो गया है शायद उसे सन्देह है कि लोग इस आसमानी {इलहामी} किताब नहीं मानेंगे। ऋषि दयानन्द को इस वाक्य में अपनी प्रशंसा स्वयं करने की भी बुराई दीख पाई है। व्यक्ति अपनी प्रशंसा स्वयं करे तो अच्छा नहीं गिना जाता, अल्लाहमियाँ की बात जुदा है।

इश्क की एक बात पर लाख तरह की बन्दिशें आप तो कहें बजा। आप की बात और है। आइये अब जरा कसमों पर नजर डालें।

1- कसम है सूर्य की और उसके चढ़ते तेज की और चांद की कि वह उसको पीछे-पीछे आता है और दिन की और रात्रि की और आकाश की और धरती की कि सफल हो गया वह जिसने आत्मा को निखारा {सूरा-अशशम्स} यहाँ खुदा ने आकाश में स्थित नक्षत्रों की तथा धरती की कसम खाई अब और देखें।

2- कसम है उन फरिश्तों की जो डुबाकर खींचे लेते हैं उनकी कसम जो तैरते फिरते हैं कि वह दिन आकर रहेगा जिस दिन जमीन को भूचाल आयेगा {सूराअन नाजियात} प्रलय पर विश्वास दिलाने के लिए खुदा कसम खा रहा है, परन्तु नास्तक हैं कि खुद खुदा पर विश्वास नहीं करते। कसमें खाने की आदत खुदा को बहुत है।

3- अतः फिर कहता है "नूर पर्वत की कसम और किताब की जो लिखी हुई है और आबाद घर की और खुली छत की, और उमड़ते दरिया की। {सूरा अत् तूर} शायद छत तथा आबाद घर के अर्थ आध्यात्मिक होंगे, जिसे मुसलमान और विशेष रूप से अरब के लोग जानते होंगे। अल्लाह मियाँ अरब से जियादह प्यार रखता है अतः कहता है "कसम उन सरपट दौड़ने वाले घोड़ों की जो हाँफ उठते हैं फिर पत्थरों में आग झाड़ते हैं फिर प्रातःकाल छापा मारते हैं और धूल उड़ाते हैं" {सूरा अल आदयात} कहाँ तक गिनायें कुरआन का खुदा संसार की प्रायः सभी वस्तुओं की कसम खाता है, ढलते सूर्य की रात्रि के सितारों की कसमें खाकर वह अपने मन्तव्य का विश्वास दिलाता है, भय और लालच भी देता है, परन्तु इसपर भी उसकी बात लोग न मानें तो क्या किया जाये? इतना अवश्य कि कुरआन का खुदा कितना सत्यवादी है यह उसकी बार बार कसम खाने से साफ जाहिर है।

कुरान ईश्वरीय ज्ञान है या नहीं, यह अभी साध्य है। खुदा ने कुरआन के प्रारम्भ में इस पुस्तक को निःसन्देह ईश्वरीय ज्ञान मानने का आदेश दिया है, परन्तु अभी तक कुरआन की कसम नहीं खाई थी। यह कमी भी सूरा यासीन में पूरी हो गई जहाँ अल्लाह मियाँ फरमाते हैं "कसम है हिकमत वाले कुरआन की निश्चय ही {ऐ मुहम्मद} तुम रसूलों में हो, सीधे मार्ग पर हो और {कुरआन की कसम खाकर कुरआन की सत्यता के सम्बन्ध में फरमाते हैं} यह कुरआन प्रभुत्वशाली और दयावान का उतारा हुआ है {आयत 3-45}

कुरआन की सत्यता के लिए कुरआन की कसम खाना ऐसे लगता है जैसे वादी अपने पक्ष की सत्यता के लिए अपना लिखा पत्र न्यायालय में प्रस्तुत कर दे। न्यायाधीश उसके अपने पत्र की गवाही कहाँ तक मानेगा, यह कुरआन के पाठक स्वयं सोचें। □

गुरुकुल प्रभात आश्रम (मेरठ) का वार्षिकोत्सव

गुरुकुल प्रभात आश्रम टीकरी भोलाझाल {मेरठ} का 18वाँ वार्षिकोत्सव आगामी 13-14 जनवरी 1990 को गुरुकुल में बड़े समारोह के साथ मनाया जा रहा है जिसमें पूज्य स्वामी आनन्दबोध सरस्वती प्रधान सार्वदेशिक सभा, आचार्य प्रियव्रतजी, डा० कृष्णकुमार, डा० ओमशरण, डा० भारत भूषण विद्यालंकार, श्री-बालदिवाकर हंस, डा०निरूपण विद्यालंकार, डा० धर्मपाल जी, डा० वेदप्रकाश जी, पं० जयन्त कुमार जी पाण्डेय आदि महान विभूतियाँ पधार रही हैं।

13 जनवरी मध्यान्ह 11 बजे से स्वामी-समर्पणानन्द वैदिकशोध संस्थान के अन्तर्गत वेद गोष्ठी।
विषय- आधुनिक पर्यावरण-प्रदूषण समस्या का वैदिक समाधान।

14 जनवरी-प्रातः ८ बजे से 10-15 तक विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति एवं नवीन प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार।
10-15 बजे से 10·30-भक्ति संगीत, 10-30बजे से बाहर के पधारे विद्वानों के प्रवचन एवं भजनोपदेश, 12-10 से 2 बजे तक भोजन

मध्यान्ह- 2 से2·30 तक भक्तिसंगीत
2·30 से 3 बजे तक ब्रह्मचारियों के कार्यक्रम भाषणादि
3 से 4·30 बजे तक बाहर से पधारे विद्वानों के भाषण
4·30 बजे से स्वामी-विवेकानन्द जी का आशीवर्चन मन्त्री द्वारा धन्यवाद तथा शान्तिपाठ।

मनोहरलाल सर्राफ — प्रधान
इन्द्रराज — मन्त्री
स्वामी विवेकानन्द सरस्वती
आचार्य
गुरुकुल प्रभात आश्रम भोलाझाल टीकरी मेरठ।

विद्वानों से नम्र निवेदन

दिनांक- 23 फरवरी 1990 को शिवरात्रि के अवसर पर आर्यमित्र का "ऋषिबोध-पर्व विशेषांक" बड़ी सजधज के साथ प्रकाशित हो रहा है। इसमें प्रकाशनार्थ समसामयिक विषयों पर आर्यसमाज के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने वाले लेख/कविता/कथनानक/ व्यंग्य आदि सादर आमन्त्रित हैं। कृपया पृष्ठ के एक ही ओर सुन्दर अक्षरों में लिखकर मुझे विलम्बतम 31 जनवरी 1990 तक अवश्य भेज देने का कष्ट करें।

-विदुषामनुचरः
आचार्य इन्द्रदेव पाठक
प्रबन्ध सम्पादक

गतांक से आगे....

कितना घातक हो सकता है द्वितीय राजभाषा का प्रावधान

• सन्तोष "कण्व"

तो में 30 प्र0श0 से अधिक की चर्चा कर रहा था। इसी प्रकार यदि यह संख्या 60 प्र0श0 से अधिक हो गई तो क्या वहाँ "इस्लामी राज" घोषित कर दिया जाएगा? कश्मीर में आज यही माँग तो उठ रही है।

पंजाब में 50 प्र0श0 से अधिक सिख हैं। वहाँ "खालसाराज" के लिए निर्दोष जनों का वध किया जा रहा है। मिजोरम में स्वयंभूप्रधान मन्त्री "ईसाईराज" का वादा करते हैं। मैं पूछता हूँ-"यह हो क्या रहा है? आज इस देश को कहाँ ले जाया जा रहा है? ।

बात-बात पर अलगाव। बात-बात पर झगड़ा। आखिर, क्या यह देश मरघट बनेगा? नरमुंडों §लाशों§ पर सरकारें चलेंगी?

चारों ओर का वातावरण विषाक्त किया जा रहा है। राष्ट्र को बनाना तो दूर, उसको तोड़ा जा रहा है। अन्याय और अत्याचार का बोल-बाला है। मैं पूछता हूँ- "आतंक, अविश्वास, घृणा और विद्वेष के इस दमघोटू वातावरण में कोई कब तक जी सकेगा?"

उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने की माँग एक गहरे षड्यन्त्र का हिस्सा है। प्रश्न 30 प्र0श0 से अधिक का नहीं है; उर्दू के लिए पाकिस्तान बन चुका है। शेष भारत में अब उसका कोई भविष्य नहीं है। इस सत्य को स्वीकारने में किसी को किसी प्रकार की विप्रतिपत्ति नहीं होनी चाहिए, न हिन्दू को- न मुसलमान को।

देखा जाए तो द्वितीय राजभाषा" का प्रावधान ही घातक है। इसे हमेशा के लिए समाप्त कर देना चाहिए, अन्यथा आए दिन विवाद उठते रहेंगे। कल को महाराष्ट्र और गुजरात में भी उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाने की माँग उठेगी। बंगाल भी कब बचने वाला है। आन्ध्रप्रदेश तमिलनाडु और केरल को भी लपेटा जाएगा। मध्य प्रदेश में भी स्वर उठेगा। राजस्थान भी अछूता नहीं रहेगा। सारा देश व्यर्थ के विवाद में फँस जाएगा। जन-धन की भी क्षति होगी। परस्पर अविश्वास और भी बढ़ेगा।

हमारे देश में भाषा की आड़ में निहित स्वार्थ साधने वालों की कोई कमी नहीं है। असम में बोडो भाषा की माँग उठ रही है। वहाँ के मुख्यमन्त्री कहते हैं कि बोडो भाषा भाषियों की संख्या 30 प्रतिशत से बहुत कम है। उसे राज्य की दूसरी भाषा नहीं बनाया जा सकता।

उनकी सबसे बड़ी चिन्ता यह है कि यदि दबाव में आकर ऐसा कर भी दिया जाए तो कल को अन्य गुट भी अपनी-अपनी भाषाओं को सरकारी भाषा बनाने की माँग को लेकर हिंसा भड़काएंगे। असम में केवल बोडो लोग ही नहीं हैं। मिशिंग हैं, सोनवाल हैं, लालुंग हैं, सभी अपनी अपनी भाषाओं की माँग करेंगे करेंगे।

लेकिन बोडो आन्दोलन कारी अपनी हठ पर अड़े हुए हैं। कहते हैं- तो फिर असम का विभाजन कर हमारा "बोडोलैण्ड" हमें दे दो। उसमें हमारी भाषा राजभाषा होगी।

प्रस्तावित बोडोलैण्ड का नक्शा भी छप गया है। इसमें बोडो लोगों की संख्या 60 प्र0श0 से अधिक बताई गई है। सरकार को चेतावनी दे दी गई है कि यदि सन् 1990 तक "बोडोलैण्ड" नहीं बनाया तो असम एक बार फिर जलेगा।

विचित्र स्थिति है। "भारत भूमि" में एक लैण्ड §भूमि§ "नागालैण्ड" भी है। "गोरखालैण्ड" की माँग उठ रही है। कल तक लाल डैंगा "मिजोलैण्ड" पर अड़े थे। सिखों को भी "होमलैण्ड" चाहिए। "बोडोलैण्ड" भी माँगा जा रहा है। बहुत "लैण्ड" है भारत के पास। बाँटो। बाँटो देश को,। कहाँ तक बाँटोगे।?

यह सब उस चिन्तन और मानसिकता का परिणाम है, जिसने सन् 1947 में भारत तोड़ा था। हमारे दूसरे भाग §पाकिस्तान§ में भी यही समस्या है। बंगला और उर्दू के नाम पर पाकिस्तान का टूटना तथा उर्दू और सिन्धी के नाम पर अवशिष्ट पाकिस्तान का बिखरना, इस रोग की व्यापकता के लक्षण नहीं तो और क्या है?

अभी क्या देखा है। असम में बंगला भाषी पर्याप्त संख्या में हैं। देखा देखी वे भी उसे §बंगला§ वहाँ की दूसरी भाषा बनाने हेतु आन्दोलन छेड़ सकते हैं, जिसकी लपटें मणीपुर भी पहुँच सकती हैं। मुझे तो डर है कि कहीं सत्ता के लोभ में बंगाल में भी उर्दू को द्वितीय भाषा बनाने का वादा न कर लिया जाए। उत्तरप्रदेश और बिहार में उर्दू थोप ही दी गई है, बंगाल को शामिल कर बंगला देश की सीमा तक "लाइनक्लियर" हो जाएगी।

गोवा की भाषा कोंकणी है। कल को वहाँ मराठी को दूसरी भाषा बनाने के लिए आन्दोलन उठ खड़ा हुआ तो क्या करोगे? राज्य पुनर्गठन आयोग ने तो जनपदों में भी द्वितीय राजभाषा के प्रावधान की संस्तुति की है। अब इसी आधार पर यदि कुछ मनचले मद्रास में तेलगू को दूसरी भाषा बनाने की माँग करने लगें तो--? बेलगाँव §कर्नाटक§ में मराठी की माँग उठ सकती है। बम्बई में तो उर्दू और गुजराती को लेकर आन्दोलन खड़े होने की पूरी सम्भावनाएं हैं।

पंजाबी के साथ भेद भाव की बात तो सिखों के बहुचर्चित "आनन्दपुर-साहब प्रस्ताव" में स्पष्ट रूप से कही गई है। प्रस्ताव सं0 4 में यह माँग है कि पंजाब के समीपवर्ती राज्यों-हिमाचलप्रदेश, हरयाणा, जम्मू-कश्मीर और केन्द्र शासित दिल्ली में पंजाबी को दूसरी राजभाषा बनाया जाए, क्योंकि इन राज्यों में पंजाबी भाषी लोग पर्याप्त संख्या में हैं।

आनन्दपुर साहब प्रस्ताव सं0-2 §ख§ में एक और दिलचस्प माँग की है कि ग्राम को इकाई मानकर अन्य राज्यों के वे क्षेत्र पंजाब को हस्तान्तरित किए जाएं जिनकी भाषा पंजाबी है। शिरोमणी अकालीदल पंजाब के पुनर्गठन के समय से ही इस माँग को उठाए हुए है, आनन्दपुर साहब प्रस्ताव में तो इसे शामिल किया गया है। यह समस्या पंजाब के साथ ही नहीं, अन्य राज्यों के साथ भी है।

अब रहा उत्तर प्रदेश, तो यहाँ तो भाषाएं ही भाषाएं हैं। पंजाबी भाषा भाषियों की संख्या उर्दू भाषियों से अधिक ही है। वे भी अड़ सकते हैं। पंजाबी के लिए लड़ सकते हैं। गढ़वाली और कुमाऊँनी भी भाषाएं हैं। भोजपुरी के लिए तो कब से लोग उत्सुक हैं। अवधी भी है। किस-किस को बनाओगे दूसरी, तीसरी, चौथी, पांचवीं---- भाषा?

तो, उर्दू को दूसरी भाषा बनाया जाना तो घातक है ही, "द्वितीय राजभाषा" का प्रावधान भी कम घातक नहीं है। नेहरू जी की अनेक देनों में एक देन "नेहरू भाषा फार्मूला" भी है। राज्य पुनर्गठन आयोग, राजभाषा अधिनियम, उर्दू प्रोन्नति समिति आदि ने राष्ट्र हित की उपेक्षा की है। उन्होंने सदैव नेहरू के विचारों का ही अनुमोदन किया है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि देश उस मोहजाल से मुक्त है। नेहरू जन्मशती वर्ष में "नेहरू भाषा फार्मूला" को तिलांजलि दे दी जाय। इससे आज तक अहित ही हुआ है। आगे भी कोई लाभ नहीं होने वाला है। समय की माँग है कि उत्तर प्रदेश-सरकार उर्दू विधेयक वापस ले साथ ही केन्द्र सरकार अपनी भाषानीति में सुधार कर द्वितीय राजभाषा के प्रावधान को सदा के लिए समाप्त कर दे। □

प्रभात आश्रम द्वारा ग्रामों में वेद प्रचार

गाँव में वेद प्रचार योजना के अन्तर्गत गुरुकुल प्रभात आश्रम द्वारा ग्रा0 बद्दलडुबे का पुरवा, जि0 सुल्तानपुर, में श्री भगवत्मुनि जी के घर ऋग्वेद पारायण महायज्ञ गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा श्री वाचस्पति मिश्र एवं श्री महेन्द्र मुनि जी के उद्बोधनों तथा परमपूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज के आध्यात्मिक प्रवचनों के साथ सम्पन्न हुआ। इसी परम्परा में ग्राम तमेलागढ़ी जि0 मेरठ, श्री0 रतनसिंहजी तथा अन्य ग्रामवासियों द्वारा अथर्ववेद खण्ड पारायण नवम्बर 12, 13 व 14 को पं0 पू0 स्वामी विवेकानन्दजी महाराज के ब्रह्मत्व में गुरुकुल प्रभात आश्रम के ब्रह्मचारियों द्वारा सम्पन्न हुआ। जिसमें अनेक विद्वान् वक्ता तथा श्री यज्ञमुनि वानप्रस्थ तथा प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री शोभाराम "प्रेमी" ने भाग लिया।

आर्यसमाज क्यों पिछड़ रहा है?

एक समीक्षात्मक दृष्टि

□ ब्र॰ अखिलेश: आर्य:
गुरुकुल गौतम नगर-नई दिल्ली

आर्यसमाज में कुछ बातों को भुला जा रहा है जिनके कारण आर्यसमाज की उन्नति अवरुद्ध है। उन्हें हम पुनः धारण करके फिर से दुनियां में नई क्रान्ति कर सकें- कोई भी जाति, कोई भी देश, कोई भी समाज तब पिछड़ता है जब उसमें अनुशासन की कमी आ जाती है या वह अपने बनाये हुए नियमों का स्वत:पालन नहीं करता। जिस प्रकार की हम आज आर्यसमाज की अवस्था को देख रहे हैं। वास्तव में इस संसार में आर्यसमाज के नियमों को कोई खण्डित नहीं कर सकता है वेद है जिनके समतुल्य संसार में कोई भी दूसरा ज्ञान स्रोत नहीं है परन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी जो समाज पिछड़े बड़ी शर्म की बात है। इसलिए हमें चाहिए की हम उन कारणों को निकालें जिनसे समाज जाति व देश पिछड़ रहा है।

"गुरुकुल शिक्षा"- आर्यसमाज एवं देश को यदि कोई शिक्षा संस्थान आगे बड़ा सकता है तो वह है गुरुकुल शिक्षा। परन्तु आजकल तो गुरुकुल शिक्षा की सर्वत्र ही उपेक्षा की जा रही है। यदि आर्य समाजी ऋषि दयानन्द को मानते हैं तो प्रत्येक को अपने पुत्र पुत्रियों को गुरुकुलों में भेजना चाहिए परन्तु खेद एवं आश्चर्य है कि आर्यसमाज के नेता जो कि अपने आपको ऋषि भक्त कहते हैं जो आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान हैं जो अपने आपको आर्यसमाज का रक्षक कहते हैं शायद ही किसी का पुत्र गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त कर रहा हो, अब हम यह सोचें आर्यसमाज का प्रचार हो, आर्यसमाज, आगे बढ़े कभी हो सकता है? कभी नहीं। अब हम यह देखें कि कहाँ हमारी वर्तमान गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में तो दोष नहीं है। जब हम गम्भीरता पूर्वक विचारेंगे तो पायेंगे कि क्या आज के गुरुकुलों का पाठ्यक्रम आर्यसमाज एवं देश और विज्ञान की उन्नति कर सकता है जितनी अपेक्षित है। तो हमें उत्तर नहीं में मिलेगा। तब फिर क्या हम हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहें या गुरुकुल शिक्षा-पद्धति में समुचित सुधार करके महर्षि-दयानन्द और आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ायें। आर्यसमाज में दूसरा दुर्गुण हो रहा है वह है।

"वर्ण व्यवस्था"- ऋषिवर ने अपने ग्रन्थों में साफ-साफ लिखा है कि वर्ण व्यवस्था कर्मानुसार मानकर विवाह आदि संस्कार एवं वर्ण ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इत्यादि होना चाहिए। आर्यसमाजी भी मनु-महाराज का प्रमाण देकर कहते हैं-"जन्मना-जायते शूद्रः कर्मणा द्विजोच्यते" अब हम यह देखें कि हम आर्यसमाजी भाई कितने दृढ़ता से इस बात का पालन कर रहे हैं केवल कुछ अपवादों को छोड़कर बड़े से लेकर छोटे तक अपने तथाकथित जाति वालों से ही अपने पुत्र पुत्रियों का विवाह करते हैं और यह कहते सुने जाते हैं कि "यदि हम अन्तरजातीय विवाह करेंगे तो समाज क्या कहेगा पुत्र-पुत्रियों को बाद में कष्ट होगा। बताओ ऐसे विचार वालों से कभी आर्यसमाज आगे बढ़ सकता है। कदापि नहीं अतएव हमें वर्ण व्यवस्था को दृढ़ता से पालन करना, करवाना होगा। तीसरा औ जो दुर्गुण हमारे समाज में पनपा या पनप रहा है वह है-

आर्य प्रचारक-यदि हम आज के एवं प्राचीन प्रचारकों को देखें तो हमें पता चलेगा कि इन सब में जमीन आसमान का परिवर्तन आ गया है जो प्रचारक पहले कभी सब कुछ त्यागकर आर्यसमाज की सेवा में ही तत्पर रहते थे आज उनके ही शिष्य उनके ही पथानुगामी स्वार्थ में लिप्त होकर आर्यसमाज का प्रचार करना चाहते हैं जो कि कभी सम्भव नहीं हो सकता। हमारे वर्तमान प्रचारकों का तो अलग ही राग है यदि इन्हें कोई आर्यसमाज बुलाती है तो ये कहते हैं हमें इतने रुपये चाहिए ये व्यवस्थायें होनी चाहिए रेल का फस्ट क्लास का टिकट होना चाहिए इत्यादि वाह रे ऋषि दयानन्द के सपूतों ऐसे से हो जायेगा आर्यसमाज का प्रचार? कदापि नहीं, अच्छा अब हम यह देखें कि उपदेशक ऐसा क्यों करते हैं क्योंकि आर्यसमाजी उन्हें बुलाकर उनका उचित सम्मान नहीं करते तब उन्हें भी ये कदम उठाना पड़ता है। अतएव हमें चाहिए कि हम अपने उपदेशकों एवं आर्यसमाजों को सुधारें तभी आर्यसमाजोन्नति सम्भव है वरना आर्यसमाज का प्रचार रुक जायेगा।

अब जो चौथा दुर्गुण आर्यसमाज में पनपा है वह है-

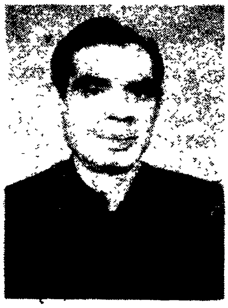
आर्य सन्यासी- वास्तव में हम जब समाज की ओर देखते हैं एवं ऋषि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट सत्यार्थ प्रकाश के पांचवें समुल्लास एवं संस्कार विधि के सन्यास प्रकरण की ओर तो हमें पता चलता है कि आजकल जो सन्यासी हो रहे हैं क्या वे सन्यास के योग्य हैं? सन्यासी के लिए क्या कर्तव्य या क्या अकर्तव्य है। जो आर्यसमाज के प्रचार के उज्जवल भविष्य की सोचें जो सन्यासी के कर्तव्यों पर श्रद्धानन्द की तरह डटे रहें।

और सबसे बड़ी जो बिमारी आर्यसमाज में है वह है- अनुशासनहीनता- यदि मैं अन्य सारी बातों को न कहकर यदि केवल इसे ही कह देता तो ठीक रहता परन्तु विशेष बातों को दर्शाना आवश्यक था। हम ध्यान से विचारें तो हमें पता चलेगा कि जिस अनुशासन हीनता से हमारा देश गुलाम हुआ और हमें 1000 वर्ष तक परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़े रहना पड़ा। वही अनुशासन हीनता हमारे आर्यसमाज में तेजी से फैल रही है। अनुशासन की कमी के कारण समाज में ऐसे अवांछनीय तत्व घुस गये हैं जो कि आर्यसमाज को बदनाम कररहे हैं- हम यदि कुछ विषयों में देखे तो न हममें सृष्टि उत्पत्ति विषय में, न मृत्यु निश्चित अनिश्चित विषय में, न वेदों में नित्य या अनित्य इतिहास के विषय में इत्यादि अनेकों बातों में हमारा ऐक्य नहीं है। जबकि महर्षि ने उपर्युक्त सभी बातों को यथोचित ठीक प्रकार से अपने ग्रन्थों में लिख दिया है परन्तु इन्हें कौन समझाये जब हमारा आपस में ही अपने सिद्धान्त विषयक मेल नहीं है तब हम चाहे कितना ही चिल्लायें कितना ही राग आलापें परन्तु कभी भी "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" का नारा क्या सार्थक हो सकता है?कदापि नहीं यहां तो इसे सुधारने के लिए मात्र दो विकल्प हैं एक तो यह कि सारे आर्यविद्वान एक मंच पर आकर महर्षि के बताये हुए मार्ग पर चलकर अपने-अपने राग अलापना बन्द कर देवें यह तो पहला एवं दूसरा विकल्प यह है कि जिन्हें महर्षि की या आर्यसमाज की बातों को न मानना हो वे आर्यसमाज से इस्तिफा दे देवें तत्पश्चात अपना पृथक जो कुछ करना है वो करें पर आर्यसमाज में यदि रहना है तो महर्षि की बातों को मानना पड़ेगा। अन्यथा यह अनुशासन हीनता आर्यसमाज को ले डूबेगी।

मेरी ही नहीं सभी आर्यजनों की ओर से भगवान् से प्रार्थना है कि हम आर्यों को सद्बुद्धि दें जिससे कि ये महर्षि के बताये मार्ग पर चलकर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" को सार्थक कर सकें। □

आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन
राष्ट्रीय एवं सामाजिक क्रान्ति के लिए सिंहनाद

● डा. प्रशान्त वेदालंकार
संयोजक
आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन
७/२, रूपनगर, दिल्ली



महात्मा हंसराज कालेज, दिल्ली के सभागार में आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन राष्ट्रीय, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक क्रान्ति के लिए संकल्प लेकर समाप्त हुआ। यह सम्मेलन 30 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक चला जिसमें अनेक विषयों पर सम्मेलन आयोजित किये गये। इस सम्मेलन का आयोजन आर्यजगत् के प्रसिद्ध नेता एवं विद्वान् डा0 प्रशान्त वेदालंकार ने किया।

प्रारम्भ में आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए डा0 प्रशान्त वेदालंकार ने कहा कि आधुनिक काल में भारत के पुनर्जागरण और पुनर्निर्माण में आर्यसमाज का सर्वाधिक योगदान रहा है। परन्तु गत अनेक वर्षों से आर्यसमाज अकर्मण्य और शिथिलता की बाहों में बेहोश पड़ा है। आर्यसमाज का संगठन किंकर्तव्यविमूढ़ स्थिति में है। राष्ट्र और समाज के प्रति आर्यसमाज का क्या दायित्व है उसका बोध कराने के लिए एवं इस दिशा में आर्यसमाज के संगठन को गतिशील बनाने के लिये आर्यसमाज के इस बुद्धिजीवियों के सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

प्रारम्भ में यतिमण्डल के प्रधान-स्वामी सर्वानन्द जी ने इस सम्मेलन को अपना आशीर्वाद प्रदान किया। उनका कहना था कि प्रत्येक आर्य को आर्यसमाज के नियमों का कड़ाई से पालन करना चाहिए। स्वामी सुमेधानन्द जी भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

गुरुकुल व आर्ष शिक्षा प्रणाली सम्मेलन की अध्यक्षता दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के संस्कृत विभाग के भू0पू0-आचार्य एवं अध्यक्ष डा0 जयदेव वेदालंकार ने की। स्वामी ओमानन्द इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। स्वामी सत्यपति तथा प्रो0 वेदव्रत ने विषय प्रतिपादन किया। डा0 निरूपण विद्यालंकार, डा0 महावीर, आचार्य हरिदेव, रेलमन्त्रालय एवं राजभाषा निदेशक श्री विजयकुमार मल्होत्रा ने कहा कि शिक्षा का वास्तविक विकास आर्ष और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली द्वारा ही सम्भव है। परन्तु इन संस्थाओं को आधुनिक परिवेश के अनुरूप ढालना होगा। इन संस्थाओं के प्रति जनता तभी आकृष्ट होगी जब हम इनमें पढ़ने वाले छात्रों-छात्राओं को अन्य शिक्षण संस्थाओं की भांति प्रगति की दौड़ में भाग लेने के लिए सक्षम बनाने का सामर्थ्य हो। सम्मेलन का संयोजन डा0 सत्यकाम वर्मा ने किया।

"नयी शिक्षा: विश्वविद्यालय शिक्षा और आर्यसमाज" पर आयोजित शिक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता श्रीमद्दयानन्द-विश्वविद्यालय रोहतक के अंग्रेजी विभाग के भू0पू0 अध्यक्ष डा0 तुलसीराम ने की। विषय प्रतिपादन स्वामी विद्यानन्द व श्री अनिल विद्यालंकार ने किया। डा0 वेदप्रताप वैदिक, प्रो0 रत्नसिंह, डा0 कृष्णलाल, श्री रामचन्द्र विकल-(संसद सदस्य) आदि विद्वानों ने नयी शिक्षा नीति पर तीव्र प्रहार करते हुए कहा कि यह शिक्षा प्रणाली पश्चिम की नकल है। इस सम्मेलन में आर्यसमाज की डी0ए0वी0 संस्थायें तथा अन्य सरकारी सहायता प्राप्त आर्य विद्यालय आलोचना का मुख्य शिकार रहे। वक्ताओं ने कहा कि नई शिक्षा प्रणाली "तनुपोषक व उदर भरने की" दृष्टि से शिक्षा देती है। इसी लिये राष्ट्र और समाज का नैतिक पतन हो रहा है। इसमें भारत सरकार की संस्कृत विरोधी एवं उर्दू समर्थक नीति की तीव्र भर्त्सना की गयी। शिक्षा प्रणाली में भारतीयता के प्रति उपेक्षा पर भी तीव्र रोष प्रकट किया गया। विशेष रूप से इतिहास की पाठ्य पुस्तकों को भारतीय दृष्टि से लिखने पर बल दिया गया। सम्मेलन का संयोजन श्री जयपाल विद्यालंकार ने किया।

"सामाजिक व राष्ट्रीय प्रश्न" सम्मेलन की अध्यक्षता पूर्व राज्य रक्षा मंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान प्रो0 शेरसिंह ने की। प्रसिद्ध पत्रकार पं0 क्षितीश वेदालंकार तथा पं0 चिन्तामणि ने विषय प्रतिपादन किया। श्री क्षितीश वेदालंकार ने गरीबी के उन्मूलन तथा असाम्प्रदायिक दृष्टि पर अपने विचार व्यक्त किये। श्री चिन्तामणि ने हरिजन व दलितोद्धार की समस्या की जड़ में जाकर इस बीमारी के निदान के लिये क्रांतिकारी योजना बनाने पर बल दिया। भाजपा के विजयकुमार मल्होत्रा ने सरकार की अल्पसंख्यकों के सामने घुटने टेकने की नीति की भर्त्सना की। स्वामी अग्निवेश ने आर्यसमाज को किसान-आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए आह्वान किया। जनता दल के वीरेश-प्रताप चौधरी ने शराबबन्दी के आन्दोलन को तीव्र करने का आग्रह किया। श्रीमती प्रभात शोभा, श्रीमती माधुरीसिंह-(एडवोकेट), श्री ज्वलन्तकुमार तथा श्री के0 नरेन्द्र ने सामाजिक बुराईयों को दूर करने पर बल दिया। प्रकाशन विभाग भारत सरकार के निदेशक डा0-श्याम सिंह शशि ने बनवासियों के मध्य जाकर कार्य करने की प्रेरणा दी। सम्मेलन के अध्यक्ष प्रो0 शेरसिंह ने मद्यनिषेध के आन्दोलन को तीव्र करके देश की गरीबी दूर करने के लिए जनता का आह्वान किया। सम्मेलन के संयोजक डा0 वेदव्रत थे।

"राजनीति और आर्यसमाज" सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध जी महाराज ने की। अपने विषय का प्रतिपादन करते हुए राजस्थान आर्य प्रतिनिधिसभा के भू0पू0 मन्त्री सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि भारत में राजनीतिक चेतना का सूत्रपात महर्षिदयानन्द ने किया था, परन्तु लाला लाजपतराय स्वामी-श्रद्धानन्द की मृत्यु के बाद आर्यसमाज ने राजनीति से पृथक् रहकर अक्षम्य अपराध किया। अतः आर्यसमाज को सुराज्य के लिये जबर्दस्त आन्दोलन चलाना चाहिये।

सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री रामचन्द्र-वन्दे मातरम्, भू0पू0 सांसद भाई-महावीर ने परामर्श किया कि आर्यसमाज को आज की भ्रष्ट राजनीति से दूर रहना चाहिये पर स्वामी चन्द्रवेश, श्री मंगलसेन चिपड़ा व प्रायः सभी उपस्थित प्रतिनिधि आर्यसमाज द्वारा उसकी राजनीति में सक्रिय भाग लेने के पक्षधर थे। जनसंघ के अध्यक्ष डा0 बलराज मधोक ने हिन्दूराष्ट्र बनाने के लिए आर्यसमाज का आह्वान किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्रजी ने सुझाव दिया कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्द बोध इस विषय के विचारार्थ एक परिपत्र समस्त प्रतिनिधि समाजों को भेज दें, और इस विषय पर उनके विचार मांगें, जिसे स्वामी ने मान लिया। साथ ही स्वामी जी ने डा0 प्रशान्त से इस प्रश्न पर शीघ्र ही विचार विमर्श के लिए एक और गोष्ठी बुलाने के लिए कहा। सम्मेलन का संयोजन श्री भीमचन्द रिवारिया ने किया।

आर्यसमाज का वर्तमान संगठन भी अधिकांश प्रतिनिधियों के रोष का शिकार रहा। प्रतिनिधियों ने आलोचना की कि आर्यसमाज के संगठन में भी वही तत्व आ गये हैं जो अन्य राजनीतिक दलों में हैं। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र-ने की तथा विषय प्रतिपादन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डा0धर्मपाल ने किया। श्री लक्ष्मीलाल एडवोकेट ने कहा कि आर्यसमाज के नियम-उपनियमों में यह प्रावधान होना चाहिये कि कोई व्यक्ति दो वर्ष से अधिक किसी एक पद पर न रहे। आचार्य नरेश ने कहा कि आर्यसमाज में युवकों की सक्रिय भूमिका होनी चाहिये। हिमांचल प्रदेश के प्रधान श्री कृष्णलाल आर्य ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कुछ वक्ताओं ने आर्यसमाज संगठन में चुनाव समाप्त करने का भी परामर्श किया। आर्यसमाज के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए वैदिक शोध सम्मेलन आदि गठित करना एवं योग्य पुरोहितों, उपदेशकों के प्रशिक्षण हेतु संस्थाएं गठित करने के सभी प्रस्ताव पारित हुए। इस सम्मेलन में उत्तर पूर्वी राज्यों की स्थिति पर आसाम के डा0 नारायणदास का आलेख पढ़कर सुनाया गया। प्रतिनिधियों ने अपने-

— शेष पृष्ठ ११ पर



आर्यसमाज शास्त्रीनगर के सातवें वार्षिकोत्सव के समापन समारोह में (बायें से) आर्यप्रतिनिधिसभा के प्रधान पण्डित इन्द्रराज व (बीच में) केन्द्रीय आर्य समिति के प्रधान मान सिंह वर्मा।

सुखी होने का सरल उपाय है कामनाएं कम करना....

मेरठ, 3 दिसम्बर। आर्यसमाज के विद्वान उत्तमचन्द्र शरर ने कहा कि जिस एक कार्य में किसी प्रकार की हिंसा न हो वही कार्य यज्ञ के समान है।

आर्यसमाज की शास्त्रीनगर इकाई के सातवें वार्षिकोत्सव के अन्तिम दिन प्रवचन करते हुए उन्होंने कहा कि क्रोध की जगह हमें अपने हृदय में प्रेम की भावना को जगह देनी और बढ़ाना चाहिए। कामनाएं कम करना सुखी होने का एक सरल उपाय है। श्री शरर ने महर्षिदयानन्द को मानवता का पैगम्बर बताते हुए कहा कि उन्होंने विश्व कल्याण के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

हरियाणा से आये आर्य समाज के विद्वान् शरर ने कहा कि देश ही नहीं वरन् संसार की उन्नति और कल्याण के लिए महर्षि दयानन्द के विचारों और वेद के उपदेशों की आवश्यकता है। देश की सभी समस्याओं का समाधान आर्यसमाज के कार्यक्रमों के अनुसार ही हो सकता है।

श्री महावीर सिंह ने कहा कि देश में बढ़ते भ्रष्टाचार और व्यभिचार को मिटाने के लिए युवाओं को आगे आना होगा।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए आर्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान पंडित इन्द्रराज ने कहा कि आज आवश्यकता इस बात की है कि हम परिवारों को क्रियान्वित रूप से जागरूक करें। आर्यसमाज की शिक्षा पद्धति को जीवन में उतारने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि हमें यहां से संकल्प लेकर जाना चाहिए।

केन्द्रीय आर्यसमाज के प्रधान व प्रदेश के पूर्व मन्त्री श्री मान सिंह वर्मा ने आर्यसमाज के सिद्धान्तों को कल्याणकारी और सुख प्रदान करने वाले बताया।

समारोह में "राष्ट्र निर्माण में आर्यसमाज का योगदान" विषय पर हुई वाक प्रतियोगिता में कमला देवी सरस्वती शिशु मन्दिर के छात्र आशुतोष चौधरी ने प्रथम और इसी विद्यालय के अरुण कुमार ने द्वितीय स्थान पाया। अमित रुहेला ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। प्रतियोगिता में कई विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

आर्यसमाज शास्त्रीनगर के अध्यक्ष वेदप्रकाश मित्तल ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन शाखा के मंत्री हरवीर सिंह सुमन ने किया।

शास्त्रीनगर में डी ब्लाक स्थित आर्यसमाज मन्दिर स्थल पर आयोजित वार्षिकोत्सव समारोह के चौथे दिन के कार्यक्रम सुबह यज्ञ व भजन के साथ शुरू हुए थे। वीरपाल व तेजपाल सिंह ने भजन प्रस्तुत किये।

उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज विकास नगर कुर्सीरोड, लखनऊ का तृतीय वार्षिकोत्सव दिनांक- 10,11,12 नवम्बर 89 को बड़े ही हर्षोल्लास के साथ श्रीमती उर्मिलासेवक के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ प्रतिदिन वे ब्रह्मा भी रहीं। आपने बड़े ही सुमधुर वेद मंत्रों द्वारा यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में दूर-दूर से विद्वानों के वेदोपदेश एवं ईश भजन द्वारा लोगों को मोहित किया।

आवश्यकता

श्री चन्द्रवली गुरुकुल वासुदेवपुर प० मझवलिया-देवरिया के लिए एक सुयोग्य प्राचार्य पद हेतु प्राचीन व्याकरणाचार्य की आवश्यकता है जो प्राचीन व्याकरण विधिवत पढ़ा सके गुरुकुल के स्नातक को वरीयता दी जाएगी। अवकाश प्राप्त विद्वानों पर भी विचार किया जायगा। शैक्षिक योग्यता प्रमाण-पत्रों की प्रमाणित प्रतिलिपि संलग्न प्रतिलिपि दि०-15·1·90 तक भेजें।

- शंकर मुनि वानप्रस्थ
संरक्षक- संस्थापक, गुरुकुल।

स्वास्थ्य-सुधा

उपचार दर्पण

समस्या- "मेरा पुत्र संजय 10 वर्ष का है। हथेली सफेद हो गई है। सांस- परिश्रम करने पर फूलने लगती है। हीमोग्लोबिन 305 ग्राम है। कृपया उपचार बतायें।"

-- पी०पी० सिंह, राज्यविद्युत परिषद् उ०प्र०, पंचोली (पिथौरागढ़) उ०प्र०

समाधान - आपके पुत्र को रक्ताल्पता हो गई है। भोजन में पके लाल-टमाटर, पालक, गाजर, केला-दूध-गुड़-शहद, खजूर, मूंगफली, दाल, सोयाबीन का दही आदि उचित मात्रा में विधिवत् देना चाहिये। प्रातराश में दूध-शहद- च्यवनप्राश देवें।

सफेदमूसली, काली मूसली और असगन्ध- तीनों को समान मात्रा में मिलाकर चूर्ण बना लेवें। इसे दूध में मिलाकर इतना उबालें, कि दूध सूख जाय। उतार कर धूप में सुखाने के बाद चूर्ण बनाकर शीशी में भर लेवें। रात्रि भोजन बाद दो चम्मच चूर्ण खाकर शहद या मीठा युक्त दूध पीने से 40 दिन बाद शरीर- भार की वृद्धि के साथ रक्त की कमी दूर हो जायेगी। प्रत्येक भोजन के बाद लोहासव 2 ढक्कन और कुमार्यासव 2 ढक्कन में समान जल मिला कर पीना चाहिये।

रात्रि भोजन से 3 घण्टे पहले एक साथ पिपराजीन की 8 गोलियाँ पानी से लेने से आंत में पड़े स्कैरिस नामक कीड़े निकल जाते हैं। ऐसा क्रम 2 सप्ताह बाद दुहरा देना चाहिये। रक्ताल्पता के कारणों में स्कैरिस एक विशेष कारण है।

::रोगी अपना विवरण और दो डाक-लिफाफे निम्न पता पर भेजें:-

स्वामी गुरुकुलानन्द सरस्वती
आर्यसमाज पिथौरागढ़
(उत्तर प्रदेश)

आर्यसमाज अनारकली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज "अनारकली" मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली का 65वाँ वार्षिकोत्सव दि० 13 से 19 नवम्बर 89 तक समारोह पूर्वक मनाया गया। इसमें गायत्री महायज्ञ का भी आयोजन किया गया, वेद कथा भी हुई, यज्ञ के यजमान आ०स० के प्रधान श्री शान्तिलाल जी सूरी और मन्त्री श्री रामनाथ सहगल सपत्नीक यजमान बने। डी०ए०वी० कालेज के छात्रों की प्रतियोगिता हुई इसमें लगभग 1700 छात्र - छात्राओं ने भाग लिया। दिनांक- 17 नवम्बर को स्त्री आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। 43 सेवक कार्यकर्ताओं को 500/- प्रत्येक को नकद। शाल भेंट किया गया। श्री दरबारी लाल जी ने डी०ए०वी० आन्दोलन का विस्तृत विवरण दिया। कुलाची हंसराज माडल टाउन में महिलाओं को 8 मास की ट्रेनिंग देकर सिलाई-मशीनें दी जाती हैं। उपस्थित जनता ने कार्यक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

वैदिक धर्म के प्रचार कार्य को गति देने के लिए कुछ सुझाव

• ब्र० विवेक भूषण दर्शनाचार्य
दर्शन- योग- विद्यालय
आर्य वन विकास क्षेत्र, रोजड,
पत्रा० सागपुर, जि० साबरकांठा
गुजरात पिन 383307

आर्य समाज के क्षेत्र में यह निर्विवाद सत्य है कि वेद के सिद्धान्त संसार में सर्वोत्कृष्ट एवं पूर्ण सत्य हैं। फिर भी आर्य समाज की ओर से जो वैदिक धर्म का प्रचार किया जा रहा है, उसमें कुछ वर्षों से प्रचार के प्रभाव की न्यूनता प्रायः सभी लोग अनुभव करते हैं। जब मैं इसके कारणों पर विचार करता हूँ तो मुझे मुख्य रूप से दो कारण समझ में आते हैं।

पहला - वैदिक साहित्य का स्वाध्याय कम करने के कारण आर्यों को "वैदिक सिद्धान्तों का ठीक से ज्ञान न होना।"
दूसरा - जिन्हें वैदिक सिद्धान्तों का ठीक से ज्ञान है, उनकी "कथनी और करनी में एकता कम होना।"

कारणों को ध्यान में रखते हुए आर्यों के व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन की उन्नति के लिए तथा वैदिक धर्म के प्रचार को प्रभावशाली बनाने के लिए मैं यथामति कुछ सुझाव प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है बुद्धिजीवी लोग इन सुझावों से लाभ उठायेंगे।

{1} प्रत्येक आर्य यह नियम बनाये कि प्रतिदिन यज्ञ और संध्या किये बिना प्रातः सायं भोजन नहीं करूंगा। इसी नियम को अपनी सन्तानों पर भी लागू करे।

{2} प्रत्येक आर्य व्यवहार काल {दैनिक जीवन} में यथाशक्ति यम-नियमों का पालन करे और अपनी सन्तानों से भी कराये।

{3} प्रतिदिन रात्रि में शयन से पूर्व परिवार के सभी सदस्य इकट्ठे होकर "आत्मनिरीक्षण" करें अर्थात् अपनी-अपनी त्रुटियों को स्वयं सुनायें। उन त्रुटियों का प्रायश्चित करें और "अगले दिन वे त्रुटियां नहीं" ऐसा संकल्प और पुरुषार्थ करें। इस कार्यक्रम का संचालन परिवार का मुख्य व्यक्ति करे।

{4} प्रतिदिन परिवार का प्रत्येक सदस्य कम से कम 15-20 मिनट वैदिक साहित्य का स्वाध्याय करे। स्वाध्याय के लिए वेद, दर्शन, उपनिषद और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के या अन्य ऋषियों के बनाये ग्रन्थ हो सकते हैं।

{5} प्रत्येक आर्य अपनी आय का कम से कम शतांश {सौ में से एक रुपया} वैदिक धर्म के प्रचार में दान अवश्य दे। इससे अधिक भी दे तो अच्छा है।

{6} प्रत्येक आर्य का खान-पान शुद्ध हो {मांस मदिरा आदि रोगोत्पादक एवं बुद्धिनाशक पदार्थों का सेवन न करें}।

{7} प्रत्येक वेद प्रचारक, आर्य समाज के प्रधान, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान, मन्त्री और इसी प्रकार के अधिकारी लोग अपनी सन्तानों में से कम से कम एक सन्तान को ऋषि-निर्दिष्ट गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से वेद आदि शास्त्रों का विद्वान बनायें। {इससे गुरुकुलों की स्थिति में सुधार होगा, आर्यसमाज को प्रचारक मिलेंगे और वैदिक धर्म का सच्चा प्रचार होगा। अन्यथा वैदिक धर्म के ठोस प्रचार की आशा कम ही है, क्योंकि आज पत्र-पत्रिकाओं में जो लेख छपते हैं, उनके बारे में अधिकांश पाठकों की मान्यता यह बन चुकी है कि - जैसा लेख यह लेखक लिख रहा है, क्या ऐसा आचरण लेखक स्वयं करता भी होगा कि नहीं} अतः "कथनी-करनी में एकता" लाने की आवश्यकता है।

{8} आर्यसमाज द्वारा संचालित सभी विद्यालयों में सहशिक्षा समाप्त हो। इससे अनेक हानियां समाज को हुई हैं और हो रही हैं।

{9} प्रत्येक आर्य समाज में कम से कम एक विद्वान स्थाई रूप से रहे, जो वैदिक रीति से संस्कार कराये और प्रतिदिन आर्यसमाज में सत्यार्थ प्रकाश आदि ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्यापन भी करे। आर्य सभासद् इस कार्यक्रम से सैद्धान्तिक ज्ञान बढ़ायें और यथाशक्ति आचरण भी करें।

{10} प्रत्येक प्रचारक की योग्यता का परीक्षण हो। अर्थात उसके पास आर्य समाज के किसी भी विद्यालय अथवा गुरुकुल का दिया हुआ कोई प्रमाणपत्र हो, जिसमें उसकी योग्यता लिखी हो। उस प्रमाणपत्र के आधार पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा अथवा संबंधित प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभायें उस प्रचारक को एक परिचय पत्र जारी कर देवें, जिसे दिखाने पर किसी भी आर्यसमाज या आर्यसंस्था में उस प्रचारक के ठहरने, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था हो सके। यह परिचय पत्र दुर्घटना होने या मिथ्या आरोप लगा दिये जाने जैसे अनेक आपत्तिकालों में भी लाभदायक होता है।

{11} जो व्यक्ति ऐसा संकल्प ले कि - "मैं आजीवन ब्रह्मचारी रहकर केवल वैदिक धर्म का ही प्रचार, अध्यापन, लेखन आदि कार्य करूंगा, अन्य किसी सम्प्रदाय का कार्य नहीं करूंगा।" उसके अध्ययन काल में उसका भोजन, वस्त्र, पुस्तक आदि का समस्त व्यय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की ओर से दिया जाये। परन्तु यह तभी दिया जाय जब उस ब्रह्मचारी का आचार्य उसकी परीक्षा करके उसकी योग्यता का प्रमाणपत्र संबंधित आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजे।

{12} आर्यसमाजों में वार्षिकोत्सवों के अतिरिक्त वेदकथा, दार्शनिकप्रवचन, वैदिक दर्शनों का अध्यापन और योग प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन समय-समय पर किये जायें, जिससे सब प्रकार की उन्नति हो सके।

{13} महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हठयोग का निषेध और पातंजल योग को स्वीकार किया है। अतः आर्यसमाजों में "नेति, धोती" आदि हठयोग की क्रियाएँ छोड़कर, पातंजल योग के अनुसार "यम, नियम" आदि आठ अंगों का ही प्रशिक्षण दिया जाये।

{14} आकाशवाणी {=रेडियो} और दूरदर्शन {=टेलिविजन} पर आर्यसमाज की ओर से वेद-प्रचार के कार्यक्रम प्रस्तुत किये जायें।

{15} जो प्रचारक कम से कम 25 वर्ष तक केवल वैदिक धर्म का प्रचार, अध्यापन, लेखन आदि कार्य करे और इसके अतिरिक्त कोई व्यवसाय न करे, उसे आर्य प्रतिनिधि सभाओं की ओर से मासिक पुरस्कार राशि {=पेंशन} आजीवन मिलती रहे। यह व्यवस्था केवल उन्हीं प्रचारकों के लिये हो, जिन्हें अन्यत्र कहीं से भी कोई पेंशन न मिलती हो। जो प्रचारक सरकारी विद्यालयों या महाविद्यालयों में अध्यापन आदि कार्य भी करते रहे हों और उन्हें वहाँ से पेंशन भी मिलती हो, तो उन्हें इस योजना में सम्मिलित न किया जाये।

{16} जो प्रचारक वृद्धावस्था के कारण प्रचार करने में असमर्थ हो जायें, ऐसे वानप्रस्थी और सन्यासी प्रचारकों के लिये "वृद्धाश्रमों" की व्यवस्था की जाये, जहाँ उनकी चिकित्सा और सेवा आदि की समुचित व्यवस्था हो तथा वे अपने जीवन का अन्तिम काल सुखपूर्वक व्यतीत कर सकें। {इस सुविधा के अभाव में वानप्रस्थी और सन्यासी प्रचारकों को विवश होकर अपने पूर्व सम्बन्धियों {=पुत्र-पौत्रादि} की शरण लेनी पड़ती है, जिससे वैदिक आश्रम व्यवस्था भंग होने से समाज पर बुरा प्रभाव पड़ता है।}

मैं नम्रतापूर्वक निवेदन करता हूँ कि धर्म का प्रचार, प्रचारकों पर ही आधारित होता है। अतः प्रचारकों को यथोचित सुविधाएँ अवश्य ही देनी चाहिएँ, जिससे वे अधिक उत्साहित होकर अधिक प्रचार कर सकें।



आर्यसमाज-शास्त्रीनगर के वार्षिकोत्सव पर निकाली गई शोभायात्रा का दृश्य

आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर शोभायात्रा

मेरठ, 30 नवम्बर। आर्यसमाज शास्त्रीनगर का सातवां वार्षिकोत्सव शुरू हो गया। यह समारोह 3 दिसम्बर तक चलेगा। इस दौरान अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया ।

वार्षिकोत्सव समारोह में पहले दिन एक शोभायात्रा निकाली गई, जो शास्त्रीनगर में विभिन्न मार्गो से होते हुए मन्दिर स्थल पर जाकर सम्पन्न हो गई। शोभायात्रा में आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पंडित इन्द्रराज सहित अनेक आर्यसमाजियों ने भाग लिया।

एक दिसम्बर को भजन, प्रवचन तथा योग प्रदर्शन हुआ। 2दिसम्बर को नारी उत्थान कार्यक्रम का आयोजन किया गया , जिसमें अनेक विद्वानोंने विचार व्यक्त किया। 3 दिसम्बर को राष्ट्रनिर्माण में आर्यसमाज का योगदान विषय पर विचार गोष्ठी हुई इसी दिन समारोह का समापन भी हुआ।

आर्य लेखक कोश के प्रकाशन में सहयोग दें।

आर्यसमाज के विख्यात विद्वान तथा शोध निर्देशक डा0 भवानीलाल भारतीय ने अपने 20 वर्षों के घोर परिश्रम से ऋषि दयानन्द से लेकर आज तक के डेढ़ हजार आर्य लेखकों, विद्वानों, पत्रकारों, शोध कर्मियों, कवियों तथा साहित्यकारों का एक विशाल विवरणात्मक कोश तैयार किया है। छपने पर इसकी पृष्ठ संख्या 700 के लगभग होगी तथा इसमें बहुमूल्य सामग्री का संग्रह रहेगा। मैं इस प्रान्त की प्रत्येक आर्यसमाज से अपील करता हूँ कि वह डा0 भारतीय-द्वारा सम्पादित इस कोश का अग्रिम ग्राहक बनने हेतु उन्हें 100 रु0 अग्रिम मूल्य के रूप में प्रेषित करने की कृपा करें। प्रकाशित होने पर कोश का मूल्य अधिक हो सकता है। किन्तु छपने पर यह ग्रन्थ आर्य साहित्य में सर्वथा अद्वितीय होगा और पाठक इस ग्रन्थ के लेखक को साधुवाद देंगे। धन भेजने का पता-

डॉ0 भवानीलाल भारतीय
कोठी नं0 41, सैक्टर 15ए
चण्डीगढ़- 160015

— मनमोहन तिवारी
मन्त्री, आर्यप्रतिनिधि सभा उ0प्र0

स्वामी समर्पणानन्द स्मृति ग्रन्थ का प्रकाशन

जिन सज्जन के पास स्वामी जी के जीवन सम्बन्धी तथ्य, संस्मरण, पत्र, लेख/शास्त्रार्थ, चित्र आदि सामग्री हो वह निम्न पते पर भेजने की कृपा करें।

-डा0 विनोदचन्द्र विद्यालंकार एम0ए0
1/116 फूलबाग, पंतनगर-
263145, जिला-नैनीताल, उ0प्र0

आर्यसमाज अमरोहा द्वारा लिहाफ वितरण

आर्यसमाज अमरोहा (मुरादाबाद) 8 वर्षों से ठंड से पीड़ित निर्धन असहाय स्त्री पुरुषों को लिहाफ वितरित कर रहा है। इस शरद ऋतु का पहला कार्यक्रम 10 दिसम्बर रविवार को प्रातः साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर सम्पन्न हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि अमरोहा क्षेत्र से नव निर्वाचित संसद सदस्य - श्री हर गोविन्द सिंह जी थे। मुख्य-अतिथि का स्वागत करते हुए आर्यसमाज अमरोहा के कर्मठ प्रधान श्री वीरेन्द्र-कुमार आर्य ने आर्यसमाज के कार्यों के बारे में बोलते हुए कहा कि आर्यसमाज ने अपने जन्मकाल से ही देश धर्म जाति के लिए अनेकानेक कार्य किए। देश के स्वतन्त्रता युद्ध में 80/ प्रतिशत आर्यसमाजी ही गये थे। सेवा कार्य में भी आर्यसमाज के द्वारा बढ़चढ़कर कर भाग लिया जाता रहा है। जब भी कोई दैवीयप्रकोप भूकम्प, बाढ़ आदि आये आर्यसमाज की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा के माध्यम से स्थान-स्थान पर सेवा शिविर लगाकर कार्य किये गये हैं। आर्यसमाज अमरोहा के द्वारा भी इन सब सेवा कार्यों में सदैव बढ़चढ़कर भाग लिया जाता रहा है। अब हम 8 वर्षों से लिहाफ वितरण का कार्य कर रहे हैं। आर्यसमाज अमरोहा द्वारा संचालित आर्य धर्मार्थ औषधालय के द्वारा भी जनता को लाभ पहुँचाया जा रहा है।

मुख्य अतिथि के स्वागत में बोलते हुए प्रधान जी ने कहा कि मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आज मैं अपने पुराने कर्मठ आर्यवीर साथी श्री हर गोविन्द सिंह जी का स्वागत कर रहा हूँ। आपने आज से लगभग 35 वर्ष पूर्व मेरे साथ आर्यवीर दल अमरोहा की शाखा में अनुशासित सैनिक की भांति मेरे साथ कार्य किया था। आपका पुष्पमाला द्वारा प्रधान जी ने हार्दिक अभिनन्दन किया तथा ऋग्वेद के 4 अन्तिम सूक्त श्री सत्य प्रकाश जी ने भेंट किये। मुख्य अतिथि संसद सदस्य श्री हरगोविन्द सिंह ने बोलते हुए कहा कि निर्धन एवं असहायों की सेवा ही ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा है। आर्य समाज अमरोहा की भांति ही अन्य संस्थाओं को भी इस प्रकार श्रेष्ठ कार्य करने चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति महर्षि दयानन्द जैसे महापुरुषों के शौर्य की वजह से ही पूरे विश्व में देदीप्यमान है। मानवता के इन पुजारियों ने जो रास्ता देशवासियों को दिखाया उसका अनेक रास्तों से पालन हो रहा है। आर्यसमाज अमरोहा द्वारा समय-समय पर होते रहे सेवा कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अगले कार्यक्रम में उन्होंने 5 लिहाफ देने की घोषणा की। ठंड में भी अमरोहा व आस-पास के देहातों से भी बहुत बड़ी संख्या में इस कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर 60 लिहाफ वितरित किये गये। दूसरा कार्यक्रम 19 दिसम्बर मंगलवार को काकोरी केस के अमर शहीद रामप्रसाद-बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां तथा रोशनसिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी के शहीद दिवस पर आयोजित हुआ। दयानन्द बाल मन्दिर के बच्चों ने तथा प्रधान जी, श्री हरिशचन्द्रजी, श्री सीताराम जी, श्री प्रो0 रामवीरसिंहजी, आदि ने अपनी श्रद्धांजलि शहीदों को अर्पित की। इस अवसर पर भी 63लिहाफ वितरित किये गये। अब तक कुल 2012 लिहाफ वितरित किये जा चुके हैं। आर्यसमाज अमरोहा के इस कार्य की नगर में तथा दूर-दूर तक सभी लोग अत्यधिक प्रशंसा कर रहे हैं। अभी बहुत जल्दीही आगे भी लिहाफ वितरित होंगे। □

संस्कृत अपने पूर्ववत् स्थान पर रहेगी उच्चतम न्यायालय द्वारा स्थगन आदेश की पुष्टि

दिल्ली 14 दिसम्बर । उच्चतम न्यायालय ने आज संस्कृत के संबंध में 17 मार्च89 को दिए गए स्थगन आदेश की पुष्टि कर दी है।

दिल्ली संस्कृत परिषद् की याचिका के साथ सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती द्वारा दाखिल याचिका पर भी आज सुनवाई हुई। सरकारी पक्ष के वकील ने स्थगन आदेश को रद्द कराने का अनुरोध किया था। लेकिन मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति ई0एस0वेंकट रमैया ने यह कहकर इसे ठुकरा दिया कि विदेशों में भी 100 से अधिक विश्वविद्यालयों में संस्कृत को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। अतः संस्कृत को इस देश की शिक्षा प्रणाली से हटाना कदापि उचित नहीं है।

उच्चतम न्यायालय के आदेश में यह भी स्पष्ट कर दिया गया है कि विद्यालयों में संस्कृत की पढ़ाई पूर्ववत रहेगी और संस्कृत का कोई भी अध्यापक हटाया नहीं जायगा।

स्वामी आनन्दबोध सरस्वती की तरफ से यह याचिका केन्द्रीय कानूनी समिति के अध्यक्ष मण्डल के सदस्य तथा सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील-श्री बलराज त्रिखा तथा समिति के संयोजक श्री विमल वधावन ने पेश की थी।

- सच्चिदानन्द शास्त्री
सभामन्त्री

कौन हृदय में आ बैठा है?

● -डॉ0 गणेशदत्त सारस्वत
सीतापुर।

नयनों के पथ से चलकर के---
कौन हृदय में आ बैठा है।
किसकी छवि मानस पर अंकित।
पुलक बनी करती रोमंचित।
साँसों के सरगम सा कोई--
सहज रूप प्राणों में स्पन्दित।
अन्तरतम के मधुरभाव सा--
कौन हृदय में आ बैठा है"
सान्ध्य-मगन की बनी लुनाई।
किसके अधरों की अरुणाई।
किसकी तरलहँसी फूलों सी-
मानस की बन गई जुन्हाई।
अंग - अंग में सिहरन बनकर--
कौन हृदय में आ बैठा है"
किसका राग पिकी - सा मुखरित।
तार - तार करता है झंकृत।
किसका रूप सलोना इतना-
जड़-चेतन है सभी विमोहित।
कलिकाओं के सुरभि-श्वास-सा---
कौन हृदय में आ बैठा है"
किसने मधु-घट खोल दियाहै।
प्रणय-मंत्र अनमोल दिया है।
किसने अन्तरिक्ष में स्वर्णिम-
किरणों का रंग घोल दिया है।

किरणों का रंग घोल दिया है।
तम के अणु-अणु में विद्युत सा--
कौन हृदय में आ बैठा है।
नयनों के पथ पर चलकर के--
कौन हृदय में आ बैठा है"

पूर्वान्चल आर्य महा सम्मेलन

दिनांक-3 फरवरी [शनिवार] एवं 4 फरवरी 1990 [रविवार] स्थान- डी0ए0वी0 डिग्री कालेज प्रांगण [बक्शीपुर] गोरखपुर में सम्पन्न होगा।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के अन्तर्गत "पूर्वी प्रचार विभाग" के तत्वावधान में, आर्य सामाजिक संगठन, प्रचार, प्रसार तथा सामाजिक कार्यों के संचालन में जागृति एवं नवीन चेतना लाने और समस्याओं के समाधान हेतु सामूहिक विचार विमर्श, तथा नवीन योजनाओं, विचारों एवं प्रकल्पों के माध्यम से कार्य को नई दिशा, तीव्र गति और प्रेरणा प्रदान करने हेतु उपर्युक्त दिनांक तथा निर्धारित स्थान पर गोरखपुर नगर में पूर्वांचल आर्य महा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। उक्त सम्मेलन में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान- पू0 स्वामी आनन्दबोध सरस्वतीजी महामन्त्री- श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 के प्रधान- मा0 पं0 इन्द्रराज जी- मन्त्री- मा0- श्री मनमोहन तिवारी जी एवं अन्य पदाधिकारी तथा विद्वज्जन पधार रहे हैं। जिससे हम सबको उनके साथ सम्मलित रूप से विचारों के आदान-प्रदान तथा मार्ग निर्देशन भी प्राप्त होगा।

अतः निम्नलिखित जिलों की सभी आर्यसमाजों के प्रधान व मन्त्री गण तथा जिला उपसभाओं के प्रधान तथा मन्त्री गण एवं समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों से अनुरोध है कि उक्त सम्मेलन में अधिक से अधिक संख्या में पधार कर लाभान्वित हों। कृपया ध्यान दें कि प्रत्येक आर्यसमाजों का प्रतिनिधित्व इस सम्मेलन में नितान्त आवश्यक है। अपने पँहुचने की सूचना तत्काल "संयोजक- पूर्वी प्रचार विभाग" आर्यसमाज गोरखपुर [बक्शीपुर] गोरखपुर [उ0प्र0] इस पते पर प्रेषित करें। दि0- 3 फरवरी- 1990 की प्रातः 8 बजे तक अथवा 2 फरवरी 1990 की रात्रि तक अवश्य पहुँचें। विस्तृत सूचना पत्र आपको प्राप्त होगा तदनुसार आप सम्मेलन में अवश्य ही भाग लें।

जिले जिनकी समस्त समाजों के प्रतिनिधि उक्त सम्मेलन में भाग लेंगे। गोरखपुर, बस्ती, देवरिया, आजमगढ़, बलिया, गाजीपुर, जौनपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, प्रतापगढ़, सुल्तानपुर, इलाहाबाद, फैजाबाद, गोण्डा तथा बहराइच। जिलों की समस्त समाजों के प्रतिनिधियों से अपेक्षा है कि वे इस सम्मेलन में अवश्य भाग लेंगे।

[डॉ0 विनय प्रताप] संयोजक पूर्वी प्रचार विभाग — [मनमोहन तिवारी] सभामन्त्री

— उ0प्र0 के नवनिर्मित जनपद मऊ में दिनांक- 24·12·89 से 31·12·89 तक "आर्यवीरदल" के एक कार्यकर्ता शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में हाथरस के श्री अभेदमुनी जी ने शिक्षक का कार्य किया। □

शुभ सूचना

अप्रैल 1990 में जिनकी शताब्दी मनाई जा रही है। आर्यसमाज के लिए जीवन सर्वस्व अर्पित करने वाले डी0ए0वी0 संस्थाओं के लिए नींव के पत्थर का कार्य करने वाले बलिदानी- पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी का जीवन चरित्र जो उनके सहपाठी लाला लाजपतराय ने आज से सौ वर्ष पूर्व अंग्रेजी में लिखी थी, उसका हिन्दी अनुवाद यशस्वी लेखक श्री भवानीलाल जी भारतीय ने हिन्दी अनुवाद किया है।

आकर्षक साज सज्जा, बल्यापेपर, सुन्दर छपाई मूल्य केवल 30/-रु0 प्रति- दस प्रतियाँ लेने पर केवल 200/-रु0 में मिलेंगी।

शीघ्र आदेश लेकर लाभ उठावें।

प्रकाशक- आर्यप्रकाशन 814 कुण्डेवालान- अजमेरी गेट, दिल्ली।

आदर्श डायरी १९९० श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री

इस आदर्श डायरी में विक्रमी, ईस्वी तक शब्द सम्वत् दिये गए हैं। तिथियां हिन्दी और अंग्रेजी में मुद्रित हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर वेद, मन्त्र की सूक्तियां तथा अर्थ दिये गए हैं। एक पृष्ठ में एक तिथि। रूलदार पृष्ठ। आफसैट वाला बढ़िया कागज। अनेक दिवंगत आर्यनेताओं के चित्र भी देखने को मिलेंगे। सजिल्द, प्लास्टिक कवर से युक्त है। मूल्य 20/- रुपये।

मधुर-प्रकाशन
2804, गली आर्यसमाज, बाजार सीताराम- दिल्ली- 110006
फोनः 268231:513206

आर्यसमाज बढ़ौली का वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज बढ़ौली पो0[अलीगढ़] का दि0 1 से 3 जनवरी 1990 को सम्पन्न होगा जिसमें उच्चकोटि के विद्वान् सन्यासी भजनोपदेशक पधार रहे हैं स्थानीय जनता से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर धर्म लाभ उठावें।

श्री मुर्तजा अली मोहन सिंह आर्य बने.

श्री लक्ष्मीकान्त अग्निहोत्री एडवोकेट मन्त्री आर्यसमाज चौक लखनऊ के प्रयास से दिनांक- 17 दिसम्बर 89 को आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ में एक शुद्धि समारोह सम्पन्न हुआ जिसमें लखनऊ निवासी- श्री मुर्तजा अली ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण किया और उनका नाम श्रीमोहन- सिंह आर्य रखा गया। इस अवसर पर श्री मोहन सिंह आर्य ने वैदिक धर्म की उत्कृष्टताओं के प्रति अपना पूर्ण समर्पण व्यक्त करते हुए आजीवन वैदिकधर्म की सेवा का व्रत लिया।

- संवाददाता

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के अन्तर्गत कार्यरत उपदेशकों, प्रचारकों, ढोलक वादकों के माह-जनवरी-१९९० के प्रचार कार्यक्रम

उपदेशक

1- श्री विश्वम्भर दत्त जी,
1 से 5 ब्रजघाट-8 से 31 रामपुर नैनीताल

2- 2- श्री विजयपाल सिंह जी,
1 से 5 ब्रजघाट-
आगरा- अलीगढ़ बुलन्दशहर जनपद

3- श्री सुकर्मानन्द जी,
1 से 5 ब्रजघाट

4- श्री केशवदेव जी शास्त्री,
1 से 5 ब्रजघाट

5- श्री जयन्त कुमार जी आर्य
1 से 5 ब्रजघाट

6- श्री योगेशदत्त जी आर्य,
1 से 5 ब्रजघाट
7 से 30 खसौर कितरपुर क्षेत्र

7- श्री [illegible] सिंह जी, [illegible]
1 से 5 ब्रजघाट

8- श्री ब्रह्मानन्द जी आर्य,
1 से 5 ब्रजघाट 10 से 13जसवन्तनगर जनपद- शाहजहाँपुर
15 से 31-नरमा गासीनपुर निज़ामपुर सैदपुर [illegible]डरपुर सलेमपुर टोलवा हरदोई जनपद।

9- श्री युगल किशोर जी आर्य,
1 से 5 ब्रजघाट
15 से 31- जनपद हरदोई

10-श्री नेम प्रकाश जी आर्य
1 से 5 ब्रजघाट 6-7 बांगरमऊ जनपद उन्नाव 13,14,15-चन्दपुरवा बुजुर्ग-हमीरपुर
17 से 31 जनपद हरदोई

11-श्री कमल देव जी आर्य
1 से 5 ब्रजघाट,
मथुरा जनपद

12-श्री राम चन्द्र जी शर्मा
1 से 5 ब्रजघाट
10 से 30 गढ़मुक्तेश्वर क्षेत्र जनपद गाजियाबाद
बहादुरगढ- भदस्याना- आलमनगर [illegible]सवाड़, [illegible]लवाड़ा सेह[illegible]-चान्दनेर सिंहनपुर सिंभावली कसर।

13-श्री सीताराम जी आर्य,
1 से 5 ब्रजघाट- 12 से 14 मकूर जनपद उन्नाव 18 से 24 कानपुर देहात 26 से 29 बांगरमऊ जनपद उन्नाव- 30-31 कानपुर।

14-श्री सीताराम जी शर्मा,
1 से 5 ब्रजघाट 10 से 30महेशरक्षेत्र जनपद - मुरादाबाद

15-श्री तेजपाल सिंह जी आर्य,
1 से 5 ब्रजघाट-

16-श्री विक्रम देव जी आर्य
1 से 5 ब्रजघाट
10 से 20-फतेहपुर विश्नोई जनपद - मुरादाबाद 23 से 31 कैलसा क्षेत्र जनपद-मुरादाबाद

17-श्री ब्रजपाल जी शर्मा
1 से 5 ब्रजघाट
10 से 31 गढमुक्तेश्वर क्षेत्र जनपद गाजियाबाद

18-श्री खेमचन्द्र जी आर्य
1 से 5 ब्रजघाट
10 से 30 कण्वाश्रम-कलालघाटी गढ़वाल जनपद

19-श्री मनवीर सिंह जी आर्य
1 से 5 ब्रजघाट
प्रधान जी के निर्देशन में

20-श्री धर्म प्रकाश जी प्रेमी
1 से 5 ब्रजघाट
10 से 20 फतेहपुर विश्नोई क्षेत्र परगना अमरोहा
23 से 31 कैलसा क्षेत्र परगना अमरोहा

21-श्री खासेराम जी आर्य
1 से 5 ब्रजघाट
10 से 31 गढ़मुक्तेश्वर क्षेत्र

22-श्री ओमलाल जी आर्य, ढोलक वादक
1 से 5 ब्रजघाट
10 से 31 गढ़मुक्तेश्वर क्षेत्र

23-श्री अमरलाल जी आर्य, ढोलकवादक
1 से 5 ब्रजघाट
12 से 15 चन्दपुरवा-हमीरपुर
17 से 31- जनपद हरदोई

24-श्री सुभाष चन्द्र जी आर्य, ढोलकवादक
1 से 5 ब्रजघाट
10 से 20 फतेहपुर विश्नोई
23 से 31 कैलसा क्षेत्र

25-श्री कशमीरी लाल जी ढोलक वादक
1 से 5 ब्रजघाट
23 से 31 कैलसा क्षेत्र अमरोहा

26-श्री आशा आर्या
1 तेजपाल सिंह जी [illegible]

समस्त उपदेशकों प्रचारकों को निर्देशित किया जाता है कि 1 से 5 जनवरी 1990 प्रशिक्षण शिविर हेतु ब्रजघाट पहुँचना सुनिश्चित करें।

मनमोहन तिवारी
मंत्री

हरिश्चन्द्र आर्य
अधिष्ठाता, उपदेश विभाग
अमरोहा (मुरादाबाद)

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ

पृष्ठ ६ का शेष.....

अपने प्रदेशों की स्थिति पर प्रकाश डाला। सम्मेलन का संयोजन सुभाष विद्यालंकार ने किया।

समापन समारोह की अध्यक्षता पं० क्षितीज वेदालंकार ने की। इस सम्मेलन में डा० प्रशान्त द्वारा प्रस्तुत निम्नलिखित कार्यक्रम सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए--(1) वैदिक व भारतीय संस्कृति के अनुसन्धान को प्रश्रय देने के लिए शोध पुस्तकालयों (संस्थानों) की स्थापना (2) सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति व साहित्य के प्रकाशन की वृहद योजना (3) प्रत्येक प्रदेश में बुद्धिजीवियों का संगठन। उन सब विद्वानों का संगठन जो भारतीय संस्कारों से ओतप्रोत हैं, पर भारतीयता के प्रचार की किसी योजना से उदासीन हैं (4) प्रत्येक आर्य समाज में योग्य पुरोहित की नियुक्ति, पुरोहित के कर्तव्यों में आर्यसमाज के वातावरण को भव्य बनाना भी है। (5) प्रत्येक आर्यसमाज को पिछड़ी जातियों के बच्चों को गोद लेकर उन्हें संस्कारी व शिक्षित बनाने का उत्तरदायित्व सौंपना (6) (क) प्रत्येक जिले में किसी गुरुकुल की स्थापना की योजना, ताकि प्रत्येक को शिक्षित करने का स्वप्न पूरा किया जा सके। (ख) सरकारी सहायता प्राप्त आर्य विद्यालयों में संस्कृत को अनिवार्य शिक्षा (ग) देश की राजनीति को प्रभावित करने के लिए विविध दलों में कार्यरत नेताओं का संगठन (8) किसी साहित्यिक व सांस्कृतिक पारिवारिक पत्रिका का प्रकाशन।

इस अवसर पर डा० प्रशान्त वेदालंकार, पं० क्षितीश जी वेदालंकार तथा सुभाष विद्यालंकार द्वारा सम्मेलनों के निर्णयों को सार्वदेशिक सभा के प्रधान-स्वामी आनन्द बोध जी के सामने रखने का निर्णय लिया गया। एक समिति का भी गठन किया जो उन निर्णयों को क्रियान्वित कराने में सक्रिय भूमिका का निर्वाह करेगी। डा० प्रशान्त वेदालंकार ने प्रतिनिधियों से कहा कि वे अपने अपने प्रदेश में अपनी प्रतिनिधि सभाओं व अध्यक्षों के सहयोग से इसी प्रकार के सम्मेलन करके बुद्धिजीवियों को आर्यसमाज के कार्य में सक्रिय करें तथा उपर्युक्त कार्यक्रमों को पूरा करें।

इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशित हुई, जिसका सम्पादन श्री सतीश दत्तात्रेय व विराट दिव्यकीर्ति ने किया।

इस सम्मेलन में देश के प्रायः प्रत्येक प्रदेश से लगभग 500 प्रतिनिधि आए थे। प्रत्येक सम्मेलन में अनेक प्रतिनिधियों ने अपनी प्रतिक्रियाएं व उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किये। विस्तार भय से उनके नाम यहां नहीं दिये जा सके। इस सम्मेलन की विशेषता यह थी कि इसमें विश्वविद्यालय के प्राध्यापक व पत्रकार तथा लेखक आदि बड़ी मात्रा में थे। आर्यसमाज के प्रत्येक नेता व प्रत्येक प्रतिनिधि ने इस सम्मेलन को ऐतिहासिक बताया। सम्मेलन में प्रस्तुत विचारों व सुझावों का पुस्तक रूप में संकलन शीघ्र ही प्रकाशित होगा। □

पंजीकरण सं० एल० डब्ल्यू /एन० पी० ७६
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मित्र

आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० का मुखपत्र
नारायण स्वामी भवन, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ

पौष शुक्ल - ३
दिनांक ३१ दिसम्बर १९८९

दूरभाष: २४५९९३

सेवा में:

आवश्यक सूचना

कृपया ग्राहक अपना नम्बर अवश्य देखने की कृपा करें -

आर्यमित्र के निम्न सदस्यों का शुल्क माह अगस्त-सितम्बर 1989 को समाप्त हो गया है। वी०पी० भेजने में 7-50 रु० अधिक पोस्टेज लगते हैं इसलिए सदस्यों से विनम्र प्रार्थना है कि वे अपना शुल्क 15 दिन के अन्दर 30 रु० मनीआर्डर द्वारा अवश्य भेज दें। रुपया प्राप्त न होने की दशा में हम वी०पी० भेजने के लिए विवश होंगे। कृपया अपने-अपने ग्राहक नम्बर नोट कर लें, नम्बर नीचे लिखे हैं। 1 जन० 1988 से वार्षिक शुल्क 30 रु० है।

अगस्त 1989

506, 694, 1007, 3786 4372, 5301, 6193, 6201, 6781, 8091, 8325, 8424, 8428, 8640, 9498, 9500, 9969, 11235, 11971, 11963, 12344, 12704, 12721, 12956, 13180, 13181, 13178, 13507, 13539, 13540, 13544, 13548, 13555, 13560, 13563, 13565, 13570, 13573, 13574, 13576, 13579, 13580, 13587, 13958, 13969, 14325, 14328, 14785, 14786, 14707, 14788, 14789, 14790, 14791, 14792, 14793, 14794, 14795, 14796, 14797, 14798, 14800, 14801, 14802, 14803, 14804, 14805, 14806, 14807, 14809, 14810, 14811, 14812

सितम्बर 1969

351, 994, 2415, 2993, 3097, 5027, 5014, 592[illegible], 5948, 6701, 6801, 6968, 8106, 8113, 8331, 8377, 8648, 8660, 9009, 9117, 9242, 925_, 9714, 9974, 998_, 9981, 11037, 11255 1127, 11272, 11273, 11703, 11994, 12000, 12002, 12399, 12405, 12732, 12968, 13198, 13200, 13208, 13229, 13250, 13595, 13598, 13604, 13980, 13994, 14006, 14026, 14027, 14037, 14039, 14040, 14042, 14339, 14344, 14407, 14408, 14413, 14814, 14815, 14816, 14817, 14818, 14819, 14820, 14821, 14823, 14824, 14825, 14826, 14827, 14828, 14829, 14830, 14831, 14832, 44334, 14835, 14836, 14837, 14838, 14839, 14840, 14841, 148442, 14843, 14844

— व्यवस्थापक

स्वत्वाधिकारिणी आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के लिए नारायण स्वामी भवन 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ से ... रूप में प्रीमियर प्रायस लखनऊ से श्री ... गुप्त द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित